All word databse making, text arrangement, conversion to Devanagari and formatting etc by:
Kulbir Singh Thind, MD

Any use of this text for commercial or internet projects requires express written approval from:
Kulbir S Thind, MD.

****

पन्ना १

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१-१, मः १)
॥ जपु ॥ (१-३, मः १)
आदि सचु जुगादि सचु ॥ (१-४, जपु, मः १)
है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥ (१-४, जपु, मः १)
सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ (१-५, जपु, मः १)
चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ (१-५, जपु, मः १)
भुखिआ भुख न उतरी जे बन्ना पुरीआ भार ॥ (१-५, जपु, मः १)
सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ (१-६, जपु, मः १)
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ (१-६, जपु, मः १)
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥ (१-७, जपु, मः १)
हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ (१-७, जपु, मः १)
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ (१-८, जपु, मः १)
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ (१-८, जपु, मः १)
इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ (१-९, जपु, मः १)
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ (१-९, जपु, मः १)
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥ (१-१०, जपु, मः १)
गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ (१-१०, जपु, मः १)
गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ (१-११, जपु, मः १)
गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ (१-११, जपु, मः १)
गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ (१-११, जपु, मः १)
गावै को साजि करे तनु खेह ॥ (१-१२, जपु, मः १)
गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ (१-१२, जपु, मः १)
गावै को जापै दिसै दूरि ॥ (१-१२, जपु, मः १)

पन्ना २

गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ (२-१, जपु, मः १)
कथना कथी न आवै तोटि ॥ (२-१, जपु, मः १)

कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ (२-१, जपु, मः १)
देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ (२-२, जपु, मः १)
जुगा जुगंतरि खाही खाहि ॥ (२-२, जपु, मः १)
हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ (२-२, जपु, मः १)
नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥ (२-३, जपु, मः १)
साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ (२-३, जपु, मः १)
आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ (२-३, जपु, मः १)
फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ (२-४, जपु, मः १)
मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ (२-४, जपु, मः १)
अमृत वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ (२-५, जपु, मः १)
करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ (२-५, जपु, मः १)
नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥ (२-६, जपु, मः १)
थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ (२-६, जपु, मः १)
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ (२-७, जपु, मः १)
जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ (२-७, जपु, मः १)
नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ (२-७, जपु, मः १)
गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ (२-८, जपु, मः १)
दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ (२-८, जपु, मः १)
गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि रहिआ समाई ॥ (२-८, जपु, मः १)
गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ (२-९, जपु, मः १)
जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ (२-९, जपु, मः १)
गुरा इक देहि बुझाई ॥ (२-१०, जपु, मः १)
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥ (२-१०, जपु, मः १)
तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ (२-११, जपु, मः १)
जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ (२-११, जपु, मः १)
मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ (२-१२, जपु, मः १)
गुरा इक देहि बुझाई ॥ (२-१२, जपु, मः १)
सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥ (२-१३, जपु, मः १)
जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ (२-१३, जपु, मः १)
नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ (२-१४, जपु, मः १)
चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ (२-१४, जपु, मः १)
जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ (२-१५, जपु, मः १)
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ (२-१५, जपु, मः १)
नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ (२-१५, जपु, मः १)
तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥ (२-१६, जपु, मः १)

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ (२-१६, जपु, मः १)
सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ (२-१७, जपु, मः १)
सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ (२-१७, जपु, मः १)
सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ (२-१७, जपु, मः १)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (२-१८, जपु, मः १)
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥ (२-१८, जपु, मः १)
सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ (२-१८, जपु, मः १)
सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ (२-१६, जपु, मः १)
सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ (२-१६, जपु, मः १)
सुणिऐ सासत सिमृति वेद ॥ (२-१६, जपु, मः १)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (२-१६, जपु, मः १)

पन्ना ३

सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥६॥ (३-१, जपु, मः १)
सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ (३-१, जपु, मः १)
सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ (३-१, जपु, मः १)
सुणिऐ पड़ि पड़ि पावहि मानु ॥ (३-२, जपु, मः १)
सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ (३-२, जपु, मः १)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (३-२, जपु, मः १)
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥ (३-३, जपु, मः १)
सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ (३-३, जपु, मः १)
सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ (३-३, जपु, मः १)
सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ (३-३, जपु, मः १)
सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ (३-४, जपु, मः १)
नानक भगता सदा विगासु ॥ (३-४, जपु, मः १)
सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥ (३-४, जपु, मः १)
मन्ने की गति कही न जाइ ॥ (३-५, जपु, मः १)
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ (३-५, जपु, मः १)
कागदि कलम न लिखणहारु ॥ (३-५, जपु, मः १)
मन्ने का बहि करनि वीचारु ॥ (३-५, जपु, मः १)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (३-६, जपु, मः १)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥ (३-६, जपु, मः १)
मन्नै सुरति होवै मनि बुधि ॥ (३-६, जपु, मः १)
मन्नै सगल भवण की सुधि ॥ (३-७, जपु, मः १)
मन्नै मुहि चोटा ना खाइ ॥ (३-७, जपु, मः १)

मन्नै जम कै साथि न जाइ ॥ (३-७, जपु, मः १)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (३-७, जपु, मः १)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१३॥ (३-८, जपु, मः १)
मन्नै मारगि ठाक न पाइ ॥ (३-८, जपु, मः १)
मन्नै पति सिउ परगटु जाइ ॥ (३-८, जपु, मः १)
मन्नै मगु न चलै पंथु ॥ (३-९, जपु, मः १)
मन्नै धर्म सेती सनबंधु ॥ (३-९, जपु, मः १)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (३-९, जपु, मः १)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥ (३-९, जपु, मः १)
मन्नै पावहि मोखु दुआरु ॥ (३-१०, जपु, मः १)
मन्नै परवारै साधारु ॥ (३-१०, जपु, मः १)
मन्नै तरै तारे गुरु सिख ॥ (३-१०, जपु, मः १)
मन्नै नानक भवहि न भिख ॥ (३-१०, जपु, मः १)
ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ (३-११, जपु, मः १)
जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥ (३-११, जपु, मः १)
पंच परवाण पंच प्रधानु ॥ (३-११, जपु, मः १)
पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ (३-१२, जपु, मः १)
पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ (३-१२, जपु, मः १)
पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ (३-१२, जपु, मः १)
जे को कहै करै वीचारु ॥ (३-१२, जपु, मः १)
करते कै करणै नाही सुमारु ॥ (३-१३, जपु, मः १)
धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ (३-१३, जपु, मः १)
संतोखु थापि रखिआ जिनि सूति ॥ (३-१३, जपु, मः १)
जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ (३-१४, जपु, मः १)
धवलै उपरि केता भारु ॥ (३-१४, जपु, मः १)
धरती होरु परै होरु होरु ॥ (३-१४, जपु, मः १)
तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ (३-१४, जपु, मः १)
जीअ जाति रंगा के नाव ॥ (३-१५, जपु, मः १)
सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ (३-१५, जपु, मः १)
एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ (३-१५, जपु, मः १)
लेखा लिखिआ केता होइ ॥ (३-१५, जपु, मः १)
केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ (३-१६, जपु, मः १)
केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ (३-१६, जपु, मः १)
कीता पसाउ एको कवाउ ॥ (३-१६, जपु, मः १)
तिस ते होए लख दरीआउ ॥ (३-१७, जपु, मः १)

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ (३-१७, जपु, मः १)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (३-१७, जपु, मः १)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (३-१८, जपु, मः १)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥ (३-१८, जपु, मः १)
असंख जप असंख भाउ ॥ (३-१८, जपु, मः १)
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ (३-१९, जपु, मः १)
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ (३-१९, जपु, मः १)
असंख जोग मनि रहहि उदास ॥ (३-१९, जपु, मः १)

पन्ना ४

असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥ (४-१, जपु, मः १)
असंख सती असंख दातार ॥ (४-१, जपु, मः १)
असंख सूर मुह भख सार ॥ (४-१, जपु, मः १)
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ (४-२, जपु, मः १)
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ (४-२, जपु, मः १)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (४-२, जपु, मः १)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (४-२, जपु, मः १)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥ (४-३, जपु, मः १)
असंख मूरख अंध घोर ॥ (४-३, जपु, मः १)
असंख चोर हरामखोर ॥ (४-३, जपु, मः १)
असंख अमर करि जाहि जोर ॥ (४-४, जपु, मः १)
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥ (४-४, जपु, मः १)
असंख पापी पापु करि जाहि ॥ (४-४, जपु, मः १)
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ (४-४, जपु, मः १)
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ (४-५, जपु, मः १)
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ (४-५, जपु, मः १)
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ (४-५, जपु, मः १)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (४-६, जपु, मः १)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (४-६, जपु, मः १)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥ (४-६, जपु, मः १)
असंख नाव असंख थाव ॥ (४-७, जपु, मः १)
अगम्म अगम्म असंख लोअ ॥ (४-७, जपु, मः १)
असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ (४-७, जपु, मः १)
अखरी नामु अखरी सालाह ॥ (४-७, जपु, मः १)
अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ (४-८, जपु, मः १)

अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ (४-८, जपु, मः १)
अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ (४-८, जपु, मः १)
जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ (४-९, जपु, मः १)
जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ (४-९, जपु, मः १)
जेता कीता तेता नाउ ॥ (४-९, जपु, मः १)
विणु नावै नाही को थाउ ॥ (४-१०, जपु, मः १)
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ (४-१०, जपु, मः १)
वारिआ न जावा एक वार ॥ (४-१०, जपु, मः १)
जो तुधु भावै साई भली कार ॥ (४-१०, जपु, मः १)
तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥ (४-११, जपु, मः १)
भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ (४-११, जपु, मः १)
पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ (४-११, जपु, मः १)
मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ (४-१२, जपु, मः १)
दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ (४-१२, जपु, मः १)
भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ (४-१२, जपु, मः १)
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ (४-१३, जपु, मः १)
पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ (४-१३, जपु, मः १)
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥ (४-१३, जपु, मः १)
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ (४-१३, जपु, मः १)
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥ (४-१४, जपु, मः १)
तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ (४-१४, जपु, मः १)
जे को पावै तिल का मानु ॥ (४-१४, जपु, मः १)
सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ (४-१५, जपु, मः १)
अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ (४-१५, जपु, मः १)
सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ (४-१५, जपु, मः १)
विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ (४-१६, जपु, मः १)
सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ (४-१६, जपु, मः १)
सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ (४-१६, जपु, मः १)
कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ (४-१६, जपु, मः १)
कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ (४-१७, जपु, मः १)
वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ (४-१७, जपु, मः १)
वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ (४-१८, जपु, मः १)
थिति वारु ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ (४-१८, जपु, मः १)
जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै सोई ॥ (४-१९, जपु, मः १)
किव करि आखा किव सालाही किउ वरनी किव जाणा ॥ (४-१९, जपु, मः १)

पन्ना ५

नानक आखणि सभु को आखै इक दू इकु सिआणा ॥ (५-१, जपु, मः १)
वडा साहिबु वडी नाई कीता जा का होवै ॥ (५-१, जपु, मः १)
नानक जे को आपौ जाणै अगै गइआ न सोहै ॥२१॥ (५-२, जपु, मः १)
पाताला पाताल लख आगासा आगास ॥ (५-२, जपु, मः १)
ओड़क ओड़क भालि थके वेद कहनि इक वात ॥ (५-३, जपु, मः १)
सहस अठारह कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ (५-३, जपु, मः १)
लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥ (५-४, जपु, मः १)
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥ (५-४, जपु, मः १)
सालाही सालाहि एती सुरति न पाईआ ॥ (५-५, जपु, मः १)
नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि न जाणीअहि ॥ (५-५, जपु, मः १)
समुंद साह सुलतान गिरहा सेती मालु धनु ॥ (५-६, जपु, मः १)
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥ (५-६, जपु, मः १)
अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ (५-६, जपु, मः १)
अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ (५-७, जपु, मः १)
अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ (५-७, जपु, मः १)
अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ (५-७, जपु, मः १)
अंतु न जापै कीता आकारु ॥ (५-८, जपु, मः १)
अंतु न जापै पारावारु ॥ (५-८, जपु, मः १)
अंत कारणि केते बिललाहि ॥ (५-८, जपु, मः १)
ता के अंत न पाए जाहि ॥ (५-९, जपु, मः १)
एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ (५-९, जपु, मः १)
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ (५-९, जपु, मः १)
वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ (५-९, जपु, मः १)
ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ (५-१०, जपु, मः १)
एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ (५-१०, जपु, मः १)
तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ (५-१०, जपु, मः १)
जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ (५-१०, जपु, मः १)
नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥ (५-११, जपु, मः १)
बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ (५-११, जपु, मः १)
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ (५-११, जपु, मः १)
केते मंगहि जोध अपार ॥ (५-१२, जपु, मः १)
केतिआ गणत नही वीचारु ॥ (५-१२, जपु, मः १)
केते खपि तुटहि वेकार ॥ (५-१२, जपु, मः १)

केते लै लै मुकरु पाहि ॥ (५-१२, जपु, मः १)
केते मूरख खाही खाहि ॥ (५-१३, जपु, मः १)
केतिआ दूख भूख सद मार ॥ (५-१३, जपु, मः १)
एहि भि दाति तेरी दातार ॥ (५-१३, जपु, मः १)
बंदि खलासी भाणै होइ ॥ (५-१३, जपु, मः १)
होरु आखि न सकै कोइ ॥ (५-१४, जपु, मः १)
जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ (५-१४, जपु, मः १)
ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ (५-१४, जपु, मः १)
आपे जाणै आपे देइ ॥ (५-१४, जपु, मः १)
आखहि सि भि केई केइ ॥ (५-१५, जपु, मः १)
जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ (५-१५, जपु, मः १)
नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥ (५-१५, जपु, मः १)
अमुल गुण अमुल वापार ॥ (५-१६, जपु, मः १)
अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ (५-१६, जपु, मः १)
अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ (५-१६, जपु, मः १)
अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ (५-१७, जपु, मः १)
अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ (५-१७, जपु, मः १)
अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ (५-१७, जपु, मः १)
अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ (५-१७, जपु, मः १)
अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ (५-१८, जपु, मः १)
अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ (५-१८, जपु, मः १)
आखि आखि रहे लिव लाइ ॥ (५-१८, जपु, मः १)
आखहि वेद पाठ पुराण ॥ (५-१९, जपु, मः १)
आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ (५-१९, जपु, मः १)
आखहि बरमे आखहि इंद ॥ (५-१९, जपु, मः १)

पन्ना ६

आखहि गोपी तै गोविंद ॥ (६-१, जपु, मः १)
आखहि ईसर आखहि सिध ॥ (६-१, जपु, मः १)
आखहि केते कीते बुध ॥ (६-१, जपु, मः १)
आखहि दानव आखहि देव ॥ (६-१, जपु, मः १)
आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ (६-२, जपु, मः १)
केते आखहि आखणि पाहि ॥ (६-२, जपु, मः १)
केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ (६-२, जपु, मः १)
एते कीते होरि करेहि ॥ (६-३, जपु, मः १)

ता आखि न सकहि केई केइ ॥ (६-३, जपु, मः १)
जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ (६-३, जपु, मः १)
नानक जाणै साचा सोइ ॥ (६-३, जपु, मः १)
जे को आखै बोलुविगाड़ु ॥ (६-४, जपु, मः १)
ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥ (६-४, जपु, मः १)
सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सर्ब समाले ॥ (६-४, जपु, मः १)
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ (६-५, जपु, मः १)
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ (६-५, जपु, मः १)
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ (६-६, जपु, मः १)
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ (६-६, जपु, मः १)
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ (६-७, जपु, मः १)
गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ (६-७, जपु, मः १)
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ (६-८, जपु, मः १)
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ (६-८, जपु, मः १)
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ (६-९, जपु, मः १)
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ (६-९, जपु, मः १)
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीर्थ नाले ॥ (६-१०, जपु, मः १)
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ (६-१०, जपु, मः १)
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ (६-११, जपु, मः १)
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ (६-११, जपु, मः १)
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे ॥ (६-१२, जपु, मः १)
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ (६-१३, जपु, मः १)
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ (६-१३, जपु, मः १)
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ (६-१४, जपु, मः १)
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ (६-१४, जपु, मः १)
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ (६-१५, जपु, मः १)
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥ (६-१५, जपु, मः १)
मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ (६-१६, जपु, मः १)
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ (६-१६, जपु, मः १)
आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ (६-१७, जपु, मः १)
आदेसु तिसै आदेसु ॥ (६-१७, जपु, मः १)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥ (६-१७, जपु, मः १)
भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि घटि वाजहि नाद ॥ (६-१८, जपु, मः १)
आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ (६-१९, जपु, मः १)
संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ (६-१९, जपु, मः १)

ਪੰਨਾ ੭

आदेसु तिसै आदेसु ॥ (७-१, जपु, मः १)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥ (७-१, जपु, मः १)
एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ (७-२, जपु, मः १)
इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीबाणु ॥ (७-२, जपु, मः १)
जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ (७-२, जपु, मः १)
ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ (७-३, जपु, मः १)
आदेसु तिसै आदेसु ॥ (७-३, जपु, मः १)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥ (७-४, जपु, मः १)
आसणु लोइ लोइ भंडार ॥ (७-४, जपु, मः १)
जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ (७-५, जपु, मः १)
करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ (७-५, जपु, मः १)
नानक सचे की साची कार ॥ (७-५, जपु, मः १)
आदेसु तिसै आदेसु ॥ (७-५, जपु, मः १)
आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥ (७-६, जपु, मः १)
इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ (७-६, जपु, मः १)
लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ (७-७, जपु, मः १)
एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥ (७-७, जपु, मः १)
सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ (७-८, जपु, मः १)
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥ (७-८, जपु, मः १)
आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ (७-९, जपु, मः १)
जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ (७-९, जपु, मः १)
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ (७-९, जपु, मः १)
जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ (७-९, जपु, मः १)
जोरु न सुरती गिआनि वीचारि ॥ (७-१०, जपु, मः १)
जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ (७-१०, जपु, मः १)
जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ (७-१०, जपु, मः १)
नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥ (७-११, जपु, मः १)
राती रुती थिती वार ॥ (७-११, जपु, मः १)
पवण पाणी अगनी पाताल ॥ (७-११, जपु, मः १)
तिसु विचि धरती थापि रखी धर्म साल ॥ (७-१२, जपु, मः १)
तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ (७-१२, जपु, मः १)
तिन के नाम अनेक अनंत ॥ (७-१२, जपु, मः १)
करमी करमी होइ वीचारु ॥ (७-१३, जपु, मः १)

सचा आपि सचा दरबारु ॥ (७-१३, जपु, मः १)
तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ (७-१३, जपु, मः १)
नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ (७-१३, जपु, मः १)
कच पकाई ओथै पाइ ॥ (७-१४, जपु, मः १)
नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥ (७-१४, जपु, मः १)
धर्म खंड का एहो धरमु ॥ (७-१४, जपु, मः १)
गिआन खंड का आखहु करमु ॥ (७-१५, जपु, मः १)
केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ (७-१५, जपु, मः १)
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ (७-१५, जपु, मः १)
केतीआ कर्म भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ (७-१६, जपु, मः १)
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ (७-१६, जपु, मः १)
केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ (७-१७, जपु, मः १)
केते देव दानव मुनि केते केते रतन समुंद ॥ (७-१७, जपु, मः १)
केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ (७-१८, जपु, मः १)
केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥ (७-१८, जपु, मः १)
गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥ (७-१९, जपु, मः १)
तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ (७-१९, जपु, मः १)

पन्ना ८

सर्म खंड की बाणी रूपु ॥ (८-१, जपु, मः १)
तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ (८-१, जपु, मः १)
ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ (८-१, जपु, मः १)
जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ (८-१, जपु, मः १)
तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ (८-२, जपु, मः १)
तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥ (८-२, जपु, मः १)
कर्म खंड की बाणी जोरु ॥ (८-३, जपु, मः १)
तिथै होरु न कोई होरु ॥ (८-३, जपु, मः १)
तिथै जोध महाबल सूर ॥ (८-३, जपु, मः १)
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ (८-३, जपु, मः १)
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ (८-४, जपु, मः १)
ता के रूप न कथने जाहि ॥ (८-४, जपु, मः १)
ना ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥ (८-४, जपु, मः १)
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ (८-४, जपु, मः १)
तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ (८-५, जपु, मः १)
करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ (८-५, जपु, मः १)

सच खंडि वसै निरंकारु ॥ (८-५, जपु, मः १)
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ (८-६, जपु, मः १)
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ (८-६, जपु, मः १)
जे को कथै त अंत न अंत ॥ (८-६, जपु, मः १)
तिथै लोअ लोअ आकार ॥ (८-६, जपु, मः १)
जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ॥ (८-७, जपु, मः १)
वेखै विगसै करि वीचारु ॥ (८-७, जपु, मः १)
नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥ (८-७, जपु, मः १)
जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ (८-८, जपु, मः १)
अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ (८-८, जपु, मः १)
भउ खला अगनि तप ताउ ॥ (८-८, जपु, मः १)
भाँडा भाउ अमृतु तितु ढालि ॥ (८-९, जपु, मः १)
घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ (८-९ जपु, मः १)
जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ (८-९ जपु, मः १)
नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥ (८-१० जपु, मः १)
सलोकु ॥ (८-१०)
पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ (८-१०, सलोकु)
दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ (८-११, सलोकु)
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ (८-११, सलोकु)
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ (८-१२, सलोकु)
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ (८-१२, सलोकु)
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥ (८-१२, सलोकु)
सो दरु रागु आसा महला १ (८-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८-१४)
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सर्ब समाले ॥(८-१४, आसा, मः १)
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ (८-१५, आसा, मः १)
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ (८-१५, आसा, मः १)
गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ (८-१६, आसा, मः १)
गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ (८-१७, आसा, मः १)
गावनि तुधनो ईसरु ब्रह्मा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ (८-१७, आसा, मः १)
गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ (८-१८, आसा, मः १)
गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ (८-१९, आसा, मः १)

पन्ना ९

गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ (९-१, आसा, मः १)

गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ (६-१, आसा, मः १)
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ (६-२, आसा, मः १)
गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीर्थ नाले ॥ (६-२, आसा, मः १)
गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ (६-३, आसा, मः १)
गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ (६-४, आसा, मः १)
सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ (६-४, आसा, मः १)
होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ (६-५, आसा, मः १)
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ (६-५, आसा, मः १)
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ (६-६, आसा, मः १)
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ (६-६, आसा, मः १)
करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ (६-७, आसा, मः १)
जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ (६-७, आसा, मः १)
सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥ (६-८, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (६-९)
सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ (६-९, आसा, मः १)
केवडु वडा डीठा होइ ॥ (६-९, आसा, मः १)
कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ (६-९, आसा, मः १)
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥ (६-१०, आसा, मः १)
वडे मेरे साहिबा गहिर गम्भीरा गुणी गहीरा ॥ (६-१०, आसा, मः १)
कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६-१०, आसा, मः १)
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ (६-११, आसा, मः १)
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ (६-११, आसा, मः १)
गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ (६-१२, आसा, मः १)
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ (६-१२, आसा, मः १)
सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ (६-१२, आसा, मः १)
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥ (६-१३, आसा, मः १)
तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ (६-१३, आसा, मः १)
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ (६-१३, आसा, मः १)
आखण वाला किआ वेचारा ॥ (६-१४, आसा, मः १)
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ (६-१४, आसा, मः १)
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ (६-१४, आसा, मः १)
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥२॥ (६-१५, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (६-१५)
आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ (६-१५, आसा, मः १)
आखणि अउखा साचा नाउ ॥ (६-१५, आसा, मः १)

साचे नाम की लागै भूख ॥ (९-१६, आसा, मः १)
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥ (९-१६, आसा, मः १)
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ (९-१६, आसा, मः १)
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (९-१७, आसा, मः १)
साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ (९-१७, आसा, मः १)
आखि थके कीमति नही पाई ॥ (९-१७, आसा, मः १)
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ (९-१८, आसा, मः १)
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥ (९-१८, आसा, मः १)
ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ (९-१८, आसा, मः १)
देदा रहै न चूकै भोगु ॥ (९-१८, आसा, मः १)
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ (९-१९, आसा, मः १)
ना को होआ ना को होइ ॥३॥ (९-१९, आसा, मः १)
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ (९-१९, आसा, मः १)

पन्ना १०

जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ (१०-१, आसा, मः १)
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ (१०-१, आसा, मः १)
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥ (१०-१, आसा, मः १)
रागु गूजरी महला ४ ॥ (१०-१)
हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ (१०-२, गूजरी, मः ४)
हम कीरे किर्म सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥ (१०-२, गूजरी, मः ४)
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ (१०-३, गूजरी, मः ४)
गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ (१०-३, गूजरी, मः ४)
हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ (१०-४, गूजरी, मः ४)
हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥ (१०-५, गूजरी, मः ४)
जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ (१०-६, गूजरी, मः ४)
जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ (१०-६, गूजरी, मः ४)
जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ (१०-७, गूजरी, मः ४)
धनु धन्नु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥ (१०-८, गूजरी, मः ४)
रागु गूजरी महला ५ ॥ (१०-८)
काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ (१०-९, गूजरी, मः ५)
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ (१०-९, गूजरी, मः ५)
मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ (१०-१०, गूजरी, मः ५)
गुर परसादि पर्म पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१०-१०, गूजरी, मः ५)
जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ (१०-११, गूजरी, मः ५)

सिरि सिरि रिजकु सम्बाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ (१०-१२, गूजरी, मः ५)
ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ (१०-१२, गूजरी, मः ५)
तिन कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ (१०-१३, गूजरी, मः ५)
सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ (१०-१३, गूजरी, मः ५)
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥ (१०-१४, गूजरी, मः ५)
रागु आसा महला ४ सो पुरखु (१०-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०-१७)
सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ (१०-१७, आसा, मः ४)
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ (१०-१८, आसा, मः ४)
सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ (१०-१८, आसा, मः ४)
हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ (१०-१९, आसा, मः ४)
हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ (१०-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ११

तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ (११-१, आसा, मः ४)
इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ (११-१, आसा, मः ४)
तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ (११-२, आसा, मः ४)
तूं पारब्रह्मु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ (११-३, आसा, मः ४)
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥ (११-३, आसा, मः ४)
हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ (११-४, आसा, मः ४)
से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ (११-४, आसा, मः ४)
जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ (११-५, आसा, मः ४)
जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ (११-६, आसा, मः ४)
से धन्नु से धन्नु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ (११-७, आसा, मः ४)
तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥ (११-७, आसा, मः ४)
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ (११-८, आसा, मः ४)
तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ (११-९, आसा, मः ४)
तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिमृति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ (११-१०, आसा, मः ४)
से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥ (११-१०, आसा, मः ४)
तूं आदि पुरखु अपरम्परु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (११-११, आसा, मः ४)
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ (११-१२, आसा, मः ४)
तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ (११-१२, आसा, मः ४)
तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ (११-१३, आसा, मः ४)
जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥ (११-१३, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (११-१४)

तूं करता सचिआरु मैडा साँई ॥ (११-१४, आसा, मः ४)
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११-१५, आसा, मः ४)
सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ (११-१५, आसा, मः ४)
जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ (११-१६, आसा, मः ४)
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ (११-१६, आसा, मः ४)
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ (११-१६, आसा, मः ४)
तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ (११-१७, आसा, मः ४)
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ (११-१७, आसा, मः ४)
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ (११-१८, आसा, मः ४)
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ (११-१८, आसा, मः ४)
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ (११-१८, आसा, मः ४)
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ (११-१९, आसा, मः ४)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ (११-१९, आसा, मः ४)
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥ (११-१९, आसा, मः ४)

पन्ना १२

तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ (१२-१, आसा, मः ४)
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (१२-१, आसा, मः ४)
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ (१२-१, आसा, मः ४)
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥ (१२-२, आसा, मः ४)
आसा महला १ ॥ (१२-२)
तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ (१२-२, आसा, मः १)
पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ (१२-३, आसा, मः १)
मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ (१२-४, आसा, मः १)
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२-४, आसा, मः १)
ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ (१२-४, आसा, मः १)
प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तू नाही वीसरिआ ॥२॥३॥ (१२-५, आसा, मः १)
आसा महला ५ ॥ (१२-६)
भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ (१२-६, आसा, मः ५)
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ (१२-६, आसा, मः ५)
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ (१२-६, आसा, मः ५)
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥ (१२-७, आसा, मः ५)
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ (१२-७, आसा, मः ५)
जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२-८, आसा, मः ५)
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ (१२-८, आसा, मः ५)

सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ (१२-८, आसा, मः ५)
कहु नानक हम नीच करम्मा ॥ (१२-९, आसा, मः ५)
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥ (१२-९, आसा, मः ५)
सोहिला रागु गउड़ी दीपकी महला १ (१२-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२-१०)
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ (१२-११, गउड़ी दीपकी, मः १)
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ (१२-११, गउड़ी दीपकी, मः १)
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ (१२-१२, गउड़ी दीपकी, मः १)
हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२-१२, गउड़ी दीपकी, मः १)
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ (१२-१३, गउड़ी दीपकी, मः १)
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ (१२-१३, गउड़ी दीपकी, मः १)
सम्बति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ (१२-१४, गउड़ी दीपकी, मः १)
देहु सजण असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ (१२-१४, गउड़ी दीपकी, मः १)
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ (१२-१५, गउड़ी दीपकी, मः १)
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥ (१२-१६, गउड़ी दीपकी, मः १)
रागु आसा महला १ ॥ (१२-१६)
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ (१२-१६, आसा, मः १)
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ (१२-१७, आसा, मः १)
बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ (१२-१७, आसा, मः १)
सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२-१७, आसा, मः १)
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ (१२-१८, आसा, मः १)
सूरजु एको रुति अनेक ॥ (१२-१८, आसा, मः १)

पन्ना १३

नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥ (१३-१, आसा, मः १)
रागु धनासरी महला १ ॥ (१३-१)
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ (१३-१, धनासरी, मः १)
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ (१३-२, धनासरी, मः १)
कैसी आरती होइ ॥ (१३-३, धनासरी, मः १)
भव खंडना तेरी आरती ॥ (१३-३, धनासरी, मः १)
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३-३, धनासरी, मः १)
सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ (१३-३, धनासरी, मः १)
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥ (१३-४, धनासरी, मः १)
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ (१३-५, धनासरी, मः १)
तिस दै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ (१३-५, धनासरी, मः १)

गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ (१३-६, धनासरी, मः १)
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ (१३-६, धनासरी, मः १)
हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ (१३-६, धनासरी, मः १)
कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥ (१३-७, धनासरी, मः १)
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१३-८)
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ (१३-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ (१३-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ (१३-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ (१३-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ (१३-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ (१३-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ (१३-१२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ (१३-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥ (१३-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ (१३-१४)
करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ (१३-१४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ (१३-१५, गउड़ी पूरबी, मः ५)
अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ (१३-१५, गउड़ी पूरबी, मः ५)
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३-१६, गउड़ी पूरबी, मः ५)
इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रह्म गिआनी ॥ (१३-१६, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ (१३-१७, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ (१३-१७, गउड़ी पूरबी, मः ५)
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥ (१३-१८, गउड़ी पूरबी, मः ५)
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ (१३-१८, गउड़ी पूरबी, मः ५)
नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥ (१३-१९, गउड़ी पूरबी, मः ५)

पन्ना १४

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१४-१)
रागु सिरीरागु महला पहिला १ घरु १ ॥ (१४-२)
मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥ (१४-३, सिरीरागु, मः १)
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥ (१४-३, सिरीरागु, मः १)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥१॥ (१४-३, सिरीरागु, मः १)
हरि बिनु जीउ जलि बलि जाउ ॥ (१४-४, सिरीरागु, मः १)
मै आपणा गुरु पूछि देखिआ अवरु नाही थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१४-४, सिरीरागु, मः १)

धरती त हीरे लाल जड़ती पलघि लाल जड़ाउ ॥ (१४-५, सिरीरागु, मः १)
मोहणी मुखि मणी सोहै करे रंगि पसाउ ॥ (१४-५, सिरीरागु, मः १)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥२॥ (१४-६, सिरीरागु, मः १)
सिधु होवा सिधि लाई रिधि आखा आउ ॥ (१४-६, सिरीरागु, मः १)
गुपतु परगटु होइ बैसा लोकु राखै भाउ ॥ (१४-७, सिरीरागु, मः १)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥३॥ (१४-७, सिरीरागु, मः १)
सुलतानु होवा मेलि लसकर तखति राखा पाउ ॥ (१४-८, सिरीरागु, मः १)
हुकमु हासलु करी बैठा नानका सभ वाउ ॥ (१४-८, सिरीरागु, मः १)
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥४॥१॥ (१४-९, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१४-९)
कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अपिआउ ॥ (१४-१०, सिरीरागु, मः १)
चंदु सूरजु दुइ गुफै न देखा सुपनै सउण न थाउ ॥ (१४-१०, सिरीरागु, मः १)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥१॥ (१४-११, सिरीरागु, मः १)
साचा निरंकारु निज थाइ ॥ (१४-११, सिरीरागु, मः १)
सुणि सुणि आखणु आखणा जे भावै करे तमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१४-११, सिरीरागु, मः १)
कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ ॥ (१४-१२, सिरीरागु, मः १)
अगी सेती जालीआ भसम सेती रलि जाउ ॥ (१४-१२, सिरीरागु, मः १)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥२॥ (१४-१३, सिरीरागु, मः १)
पंखी होइ कै जे भवा सै असमानी जाउ ॥ (१४-१३, सिरीरागु, मः १)
नदरी किसै न आवऊ ना किछु पीआ न खाउ ॥ (१४-१४, सिरीरागु, मः १)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥३॥ (१४-१४, सिरीरागु, मः १)

पन्ना १५

नानक कागद लख मणा पड़ि पड़ि कीचै भाउ ॥ (१५-१, सिरीरागु, मः १)
मसू तोटि न आवई लेखणि पउणु चलाउ ॥ (१५-१, सिरीरागु, मः १)
भी तेरी कीमति ना पवै हउ केवडु आखा नाउ ॥४॥२॥ (१५-२, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१५-२)
लेखै बोलणु बोलणा लेखै खाणा खाउ ॥ (१५-३, सिरीरागु, मः १)
लेखै वाट चलाईआ लेखै सुणि वेखाउ ॥ (१५-३, सिरीरागु, मः १)
लेखै साह लवाईअहि पड़े कि पुछण जाउ ॥१॥ (१५-३, सिरीरागु, मः १)
बाबा माइआ रचना धोहु ॥ (१५-४, सिरीरागु, मः १)
अंधै नामु विसारिआ ना तिसु एह न ओहु ॥१॥ रहाउ ॥ (१५-४, सिरीरागु, मः १)
जीवण मरणा जाइ कै एथै खाजै कालि ॥ (१५-५, सिरीरागु, मः १)
जिथै बहि समझाईऐ तिथै कोइ न चलिओ नालि ॥ (१५-५, सिरीरागु, मः १)
रोवण वाले जेतड़े सभि बन्नहि पंड परालि ॥२॥ (१५-६, सिरीरागु, मः १)

सभु को आखै बहुतु बहुतु घटि न आखै कोइ ॥ (१५-६, सिरीरागु, मः १)
कीमति किनै न पाईआ कहणि न वडा होइ ॥ (१५-७, सिरीरागु, मः १)
साचा साहबु एकु तू होरि जीआ केते लोअ ॥३॥ (१५-७, सिरीरागु, मः १)
नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥ (१५-८, सिरीरागु, मः १)
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ (१५-८, सिरीरागु, मः १)
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥३॥ (१५-६, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१५-६)
लबु कुता कूड़ु चूहड़ा ठगि खाधा मुरदारु ॥ (१५-६, सिरीरागु, मः १)
पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥ (१५-१०, सिरीरागु, मः १)
रस कस आपु सलाहणा ए कर्म मेरे करतार ॥१॥ (१५-१०, सिरीरागु, मः १)
बाबा बोलीऐ पति होइ ॥ (१५-११, सिरीरागु, मः १)
ऊतम से दरि ऊतम कहीअहि नीच कर्म बहि रोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१५-११, सिरीरागु, मः १)
रसु सुइना रसु रुपा कामणि रसु परमल की वासु ॥ (१५-१२, सिरीरागु, मः १)
रसु घोड़े रसु सेजा मंदर रसु मीठा रसु मासु ॥ (१५-१२, सिरीरागु, मः १)
एते रस सरीर के कै घटि नाम निवासु ॥२॥ (१५-१३, सिरीरागु, मः १)
जितु बोलिऐ पति पाईऐ सो बोलिआ परवाणु ॥ (१५-१३, सिरीरागु, मः १)
फिका बोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ॥ (१५-१४, सिरीरागु, मः १)
जो तिसु भावहि से भले होरि कि कहण वखाण ॥३॥ (१५-१४, सिरीरागु, मः १)
तिन मति तिन पति तिन धनु पलै जिन हिरदै रहिआ समाइ ॥ (१५-१५, सिरीरागु, मः १)
तिन का किआ सालाहणा अवर सुआलिउ काइ ॥ (१५-१६, सिरीरागु, मः १)
नानक नदरी बाहरे राचहि दानि न नाइ ॥४॥४॥ (१५-१६, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१५-१७)
अमलु गलोला कूड़ का दिता देवणहारि ॥ (१५-१७, सिरीरागु, मः १)
मती मरणु विसारिआ खुसी कीती दिन चारि ॥ (१५-१७, सिरीरागु, मः १)
सचु मिलिआ तिन सोफीआ राखण कउ दरवारु ॥१॥ (१५-१८, सिरीरागु, मः १)
नानक साचे कउ सचु जाणु ॥ (१५-१८, सिरीरागु, मः १)
जितु सेविऐ सुखु पाईऐ तेरी दरगह चलै माणु ॥१॥ रहाउ ॥ (१५-१६, सिरीरागु, मः १)
सचु सरा गुड़ बाहरा जिसु विचि सचा नाउ ॥ (१५-१६, सिरीरागु, मः १)

पन्ना १६

सुणहि वखाणहि जेतड़े हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (१६-१, सिरीरागु, मः १)
ता मनु खीवा जाणीऐ जा महली पाए थाउ ॥२॥ (१६-१, सिरीरागु, मः १)
नाउ नीरु चंगिआईआ सतु परमलु तनि वासु ॥ (१६-२, सिरीरागु, मः १)
ता मुखु होवै उजला लख दाती इक दाति ॥ (१६-२, सिरीरागु, मः १)
दूख तिसै पहि आखीअहि सूख जिसै ही पासि ॥३॥ (१६-३, सिरीरागु, मः १)

सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥ (१६-३, सिरीरागु, मः १)
तिसु विणु सभु अपवित्रु है जेता पैनणु खाणु ॥ (१६-४, सिरीरागु, मः १)
होरि गलाँ सभि कूड़ीआ तुधु भावै परवाणु ॥४॥५॥ (१६-४, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महलु १ ॥ (१६-५)
जालि मोहु घसि मसु करि मति कागदु करि सारु ॥ (१६-५, सिरीरागु, मः १)
भाउ कलम करि चितु लेखारी गुर पुछि लिखु बीचारु ॥ (१६-५, सिरीरागु, मः १)
लिखु नामु सालाह लिखु लिखु अंतु न पारावारु ॥१॥ (१६-६, सिरीरागु, मः १)
बाबा एहु लेखा लिखि जाणु ॥ (१६-६, सिरीरागु, मः १)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै होइ सचा नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (१६-७, सिरीरागु, मः १)
जिथै मिलहि वडिआईआ सद खुसीआ सद चाउ ॥ (१६-७, सिरीरागु, मः १)
तिन मुखि टिके निकलहि जिन मनि सचा नाउ ॥ (१६-८, सिरीरागु, मः १)
करमि मिलै ता पाईऐ नाही गली वाउ दुआउ ॥२॥ (१६-८, सिरीरागु, मः १)
इकि आवहि इकि जाहि उठि रखीअहि नाव सलार ॥ (१६-९, सिरीरागु, मः १)
इकि उपाए मंगते इकना वडे दरवार ॥ (१६-९, सिरीरागु, मः १)
अगै गइआ जाणीऐ विणु नावै वेकार ॥३॥ (१६-१०, सिरीरागु, मः १)
भै तेरै डरु अगला खपि खपि छिजै देह ॥ (१६-१०, सिरीरागु, मः १)
नाव जिना सुलतान खान होदे डिठे खेह ॥ (१६-११, सिरीरागु, मः १)
नानक उठी चलिआ सभि कूड़े तुटे नेह ॥४॥६॥ (१६-११, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१६-१२)
सभि रस मिठे मंनिऐ सुणिऐ सालोणे ॥ (१६-१२, सिरीरागु, मः १)
खट तुरसी मुखि बोलणा मारण नाद कीए ॥ (१६-१२, सिरीरागु, मः १)
छतीह अमृत भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ ॥१॥ (१६-१३, सिरीरागु, मः १)
बाबा होरु खाणा खुसी खुआरु ॥ (१६-१३, सिरीरागु, मः १)
जितु खाधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (१६-१४, सिरीरागु, मः १)
रता पैनणु मनु रता सुपेदी सतु दानु ॥ (१६-१४, सिरीरागु, मः १)
नीली सिआही कदा करणी पहिरणु पैर धिआनु ॥ (१६-१५, सिरीरागु, मः १)
कमरबंदु संतोख का धनु जोबनु तेरा नामु ॥२॥ (१६-१५, सिरीरागु, मः १)
बाबा होरु पैनणु खुसी खुआरु ॥ (१६-१६, सिरीरागु, मः १)
जितु पैधै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (१६-१६, सिरीरागु, मः १)
घोड़े पाखर सुइने साखति बूझणु तेरी वाट ॥ (१६-१७, सिरीरागु, मः १)
तरकस तीर कमाण साँग तेगबंद गुण धातु ॥ (१६-१७, सिरीरागु, मः १)
वाजा नेजा पति सिउ परगटु करमु तेरा मेरी जाति ॥३॥ (१६-१७, सिरीरागु, मः १)
बाबा होरु चड़णा खुसी खुआरु ॥ (१६-१८, सिरीरागु, मः १)
जितु चड़िऐ तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (१६-१८, सिरीरागु, मः १)
घर मंदर खुसी नाम की नदरि तेरी परवारु ॥ (१६-१९, सिरीरागु, मः १)

हुकमु सोई तुधु भावसी होरु आखणु बहुतु अपारु ॥ (१७-१, सिरीरागु, मः १)
नानक सचा पातिसाहु पूछि न करे बीचारु ॥४॥ (१७-१, सिरीरागु, मः १)
बाबा होरु सउणा खुसी खुआरु ॥ (१७-२, सिरीरागु, मः १)
जितु सुतै तनु पीड़ीऐ मन महि चलहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥४॥७॥ (१७-२, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१७-३)
कुंगू की काँइआ रतना की ललिता अगरि वासु तनि सासु ॥ (१७-३, सिरीरागु, मः १)
अठसठि तीर्थ का मुखि टिका तितु घटि मति विगासु ॥ (१७-३, सिरीरागु, मः १)
ओतु मती सालाहणा सचु नामु गुणतासु ॥१॥ (१७-४, सिरीरागु, मः १)
बाबा होर मति होर होर ॥ (१७-४, सिरीरागु, मः १)
जे सउ वेर कमाईऐ कूड़ै कूड़ा जोरु ॥१॥ रहाउ ॥ (१७-५, सिरीरागु, मः १)
पूज लगै पीरु आखीऐ सभु मिलै संसारु ॥ (१७-५, सिरीरागु, मः १)
नाउ सदाए आपणा होवै सिधु सुमारु ॥ (१७-६, सिरीरागु, मः १)
जा पति लेखै ना पवै सभा पूज खुआरु ॥२॥ (१७-६, सिरीरागु, मः १)
जिन कउ सतिगुरि थापिआ तिन मेटि न सकै कोइ ॥ (१७-६, सिरीरागु, मः १)
ओना अंदरि नामु निधानु है नामो परगटु होइ ॥ (१७-७, सिरीरागु, मः १)
नाउ पूजीऐ नाउ मन्नीऐ अखंडु सदा सचु सोइ ॥३॥ (१७-७, सिरीरागु, मः १)
खेहू खेह रलाईऐ ता जीउ केहा होइ ॥ (१७-८, सिरीरागु, मः १)
जलीआ सभि सिआणपा उठी चलिआ रोइ ॥ (१७-८, सिरीरागु, मः १)
नानक नामि विसारिऐ दरि गइआ किआ होइ ॥४॥८॥ (१७-९, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१७-९)
गुणवंती गुण वीथरै अउगुणवंती झूरि ॥ (१७-१०, सिरीरागु, मः १)
जे लोड़हि वरु कामणी नह मिलीऐ पिर कूरि ॥ (१७-१०, सिरीरागु, मः १)
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना पाईऐ पिरु दूरि ॥१॥ (१७-१०, सिरीरागु, मः १)
मेरे ठाकुर पूरै तखति अडोलु ॥ (१७-११, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि पूरा जे करे पाईऐ साचु अतोलु ॥१॥ रहाउ ॥ (१७-११, सिरीरागु, मः १)
प्रभु हरिमंदरु सोहणा तिसु महि माणक लाल ॥ (१७-१२, सिरीरागु, मः १)
मोती हीरा निरमला कंचन कोट रीसाल ॥ (१७-१२, सिरीरागु, मः १)
बिनु पउड़ी गड़ि किउ चड़उ गुर हरि धिआन निहाल ॥२॥ (१७-१३, सिरीरागु, मः १)
गुरु पउड़ी बेड़ी गुरू गुरु तुलहा हरि नाउ ॥ (१७-१३, सिरीरागु, मः १)
गुरु सरु सागरु बोहिथो गुरु तीरथु दरीआउ ॥ (१७-१४, सिरीरागु, मः १)
जे तिसु भावै ऊजली सत सरि नावण जाउ ॥३॥ (१७-१४, सिरीरागु, मः १)
पूरो पूरो आखीऐ पूरै तखति निवास ॥ (१७-१५, सिरीरागु, मः १)
पूरै थानि सुहावणै पूरै आस निरास ॥ (१७-१५, सिरीरागु, मः १)

नानक पूरा जे मिलै किउ घाटै गुण तास ॥४॥६॥ (१७-१६, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१७-१६)
आवहु भैणे गलि मिलह अंकि सहेलड़ीआह ॥ (१७-१६, सिरीरागु, मः १)
मिलि कै करह कहाणीआ सम्रथ कंत कीआह ॥ (१७-१७, सिरीरागु, मः १)
साचे साहिब सभि गुण अउगण सभि असाह ॥१॥ (१७-१७, सिरीरागु, मः १)
करता सभु को तेरै जोरि ॥ (१७-१८, सिरीरागु, मः १)
एकु सबदु बीचारीऐ जा तू ता किआ होरि ॥१॥ रहाउ ॥ (१७-१८, सिरीरागु, मः १)
जाइ पुछहु सोहागणी तुसी राविआ किनी गुणंी ॥ (१७-१६, सिरीरागु, मः १)
सहजि संतोखि सीगारीआ मिठा बोलणी ॥ (१७-१६, सिरीरागु, मः १)
पिरु रीसालू ता मिलै जा गुर का सबदु सुणी ॥२॥ (१७-१६, सिरीरागु, मः १)

पन्ना १८

केतीआ तेरीआ कुदरती केवड तेरी दाति ॥ (१८-१, सिरीरागु, मः १)
केते तेरे जीअ जंत सिफति करहि दिनु राति ॥ (१८-१, सिरीरागु, मः १)
केते तेरे रूप रंग केते जाति अजाति ॥३॥ (१८-२, सिरीरागु, मः १)
सचु मिलै सचु ऊपजै सच महि साचि समाइ ॥ (१८-२, सिरीरागु, मः १)
सुरति होवै पति ऊगवै गुरबचनी भउ खाइ ॥ (१८-३, सिरीरागु, मः १)
नानक सचा पातिसाहु आपे लए मिलाइ ॥४॥१०॥ (१८-३, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१८-४)
भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु ॥ (१८-४, सिरीरागु, मः १)
दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ॥ (१८-४, सिरीरागु, मः १)
कलप तिआगी बादि है सचा वेपरवाहु ॥१॥ (१८-५, सिरीरागु, मः १)
मन रे सचु मिलै भउ जाइ ॥ (१८-५, सिरीरागु, मः १)
भै बिनु निरभउ किउ थीऐ गुरमुखि सबदि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८-६, सिरीरागु, मः १)
केता आखणु आखीऐ आखणि तोटि न होइ ॥ (१८-६, सिरीरागु, मः १)
मंगण वाले केतड़े दाता एको सोइ ॥ (१८-७, सिरीरागु, मः १)
जिस के जीअ पराण है मनि वसिऐ सुखु होइ ॥२॥ (१८-७, सिरीरागु, मः १)
जगु सुपना बाजी बनी खिन महि खेलु खेलाइ ॥ (१८-८, सिरीरागु, मः १)
संजोगी मिलि एकसे विजोगी उठि जाइ ॥ (१८-८, सिरीरागु, मः १)
जो तिसु भाणा सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥३॥ (१८-६, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि वसतु वेसाहीऐ सचु वखरु सचु रासि ॥ (१८-६, सिरीरागु, मः १)
जिनी सचु वणंजिआ गुर पूरे साबासि ॥ (१८-१०, सिरीरागु, मः १)
नानक वसतु पछाणसी सचु सउदा जिसु पासि ॥४॥११॥ (१८-१०, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महलु १ ॥ (१८-११)
धातु मिलै फुनि धातु कउ सिफती सिफति समाइ ॥ (१८-११, सिरीरागु, मः १)

लालु गुलालु गहबरा सचा रंगु चड़ाउ ॥ (१८-११, सिरीरागु, मः १)
सचु मिलै संतोखीआ हरि जपि एकै भाइ ॥१॥ (१८-१२, सिरीरागु, मः १)
भाई रे संत जना की रेणु ॥ (१८-१२, सिरीरागु, मः १)
संत सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेणु ॥१॥ रहाउ ॥ (१८-१२, सिरीरागु, मः १)
ऊचउ थानु सुहावणा ऊपरि महलु मुरारि ॥ (१८-१३, सिरीरागु, मः १)
सचु करणी दे पाईऐ दरु घरु महलु पिआरि ॥ (१८-१४, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि मनु समझाईऐ आतम रामु बीचारि ॥२॥ (१८-१४, सिरीरागु, मः १)
तृबिधि कर्म कमाईअहि आस अंदेसा होइ ॥ (१८-१५, सिरीरागु, मः १)
किउ गुर बिनु तृकुटी छुटसी सहजि मिलिऐ सुखु होइ ॥ (१८-१५, सिरीरागु, मः १)
निज घरि महलु पछाणीऐ नदरि करे मलु धोइ ॥३॥ (१८-१६, सिरीरागु, मः १)
बिनु गुर मैलु न उतरै बिनु हरि किउ घर वासु ॥ (१८-१६, सिरीरागु, मः १)
एको सबदु वीचारीऐ अवर तिआगै आस ॥ (१८-१७, सिरीरागु, मः १)
नानक देखि दिखाईऐ हउ सद बलिहारै जासु ॥४॥१२॥ (१८-१७, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१८-१८)
ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ ॥ (१८-१८, सिरीरागु, महल १)
कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पाइ ॥ (१८-१८, सिरीरागु, महल १)
बिनु सबदै सुखु ना थीऐ पिर बिनु दूखु न जाइ ॥१॥ (१८-१९, सिरीरागु, महल १)
मुंधे पिर बिनु किआ सीगारु ॥ (१८-१९, सिरीरागु, महल १)

पन्ना १९

दरि घरि ढोई न लहै दरगह झूठु खुआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (१९-१, सिरीरागु, महल १)
आपि सुजाणु न भुलई सचा वड किरसाणु ॥ (१९-१, सिरीरागु, महल १)
पहिला धरती साधि कै सचु नामु दे दाणु ॥ (१९-२, सिरीरागु, महल १)
नउ निधि उपजै नामु एकु करमि पवै नीसाणु ॥२॥ (१९-२, सिरीरागु, महल १)
गुर कउ जाणि न जाणई किआ तिसु चजु अचारु ॥ (१९-२, सिरीरागु, महल १)
अंधुलै नामु विसारिआ मनमुखि अंध गुबारु ॥ (१९-३, सिरीरागु, महल १)
आवणु जाणु न चुकई मरि जनमै होइ खुआरु ॥३॥ (१९-३, सिरीरागु, महल १)
चंदनु मोलि अणाइआ कुंगू माँग संधूरु ॥ (१९-४, सिरीरागु, महल १)
चोआ चंदनु बहु घणा पाना नालि कपूरु ॥ (१९-४, सिरीरागु, महल १)
जे धन कंति न भावई त सभि अडम्बर कूड़ु ॥४॥ (१९-५, सिरीरागु, महल १)
सभि रस भोगण बादि हहि सभि सीगार विकार ॥ (१९-५, सिरीरागु, मः १)
जब लगु सबदि न भेदीऐ किउ सोहै गुरदुआरि ॥ (१९-६, सिरीरागु, मः १)
नानक धन्नु सुहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥५॥१३॥ (१९-६, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (१९-७)
सुंञी देह डरावणी जा जीउ विचहु जाइ ॥ (१९-७, सिरीरागु, मः १)

भाहि बलंदी विझवी धूउ न निकसिओ काइ ॥ (१६-८, सिरीरागु, मः १)
पंचे रुन्ने दुखि भरे बिनसे दूजै भाइ ॥१॥ (१६-८, सिरीरागु, मः १)
मूड़े रामु जपहु गुण सारि ॥ (१६-८, सिरीरागु, मः १)
हउमै ममता मोहणी सभ मुठी अहंकारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१६-६, सिरीरागु, मः १)
जिनी नामु विसारिआ दूजी कारै लगि ॥ (१६-६, सिरीरागु, मः १)
दुबिधा लागे पचि मुए अंतरि तृसना अगि ॥ (१६-१०, सिरीरागु, मः १)
गुरि राखे से उबरे होरि मुठी धंधै ठगि ॥२॥ (१६-१०, सिरीरागु, मः १)
मुई परीति पिआरु गइआ मुआ वैरु विरोधु ॥ (१६-११, सिरीरागु, मः १)
धंधा थका हउ मुई ममता माइआ क्रोधु ॥ (१६-११, सिरीरागु, मः १)
करमि मिलै सचु पाईऐ गुरमुखि सदा निरोधु ॥३॥ (१६-११, सिरीरागु, मः १)
सची कारै सचु मिलै गुरमति पलै पाइ ॥ (१६-१२, सिरीरागु, मः १)
सो नरु जम्मै ना मरै ना आवै ना जाइ ॥ (१६-१२, सिरीरागु, मः १)
नानक दरि प्रधानु सो दरगहि पैधा जाइ ॥४॥१४॥ (१६-१३, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महल १ ॥ (१६-१३)
तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि मनूरु ॥ (१६-१४, सिरीरागु, मः १)
अउगण फिरि लागू भए कूरि वजावै तूरु ॥ (१६-१४, सिरीरागु, मः १)
बिनु सबदै भरमाईऐ दुबिधा डोबे पूरु ॥१॥ (१६-१५, सिरीरागु, मः १)
मन रे सबदि तरहु चितु लाइ ॥ (१६-१५, सिरीरागु, मः १)
जिनि गुरमुखि नामु न बूझिआ मरि जनमै आवै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६-१५, सिरीरागु, मः १)
तनु सूचा सो आखीऐ जिसु महि साचा नाउ ॥ (१६-१६, सिरीरागु, मः १)
भै सचि राती देहुरी जिहवा सचु सुआउ ॥ (१६-१७, सिरीरागु, मः १)
सची नदरि निहालीऐ बहुड़ि न पावै ताउ ॥२॥ (१६-१७, सिरीरागु, मः १)
साचे ते पवना भइआ पवनै ते जलु होइ ॥ (१६-१८, सिरीरागु, मः १)
जल ते तृभवणु साजिआ घटि घटि जोति समोइ ॥ (१६-१८, सिरीरागु, मः १)
निरमलु मैला ना थीऐ सबदि रते पति होइ ॥३॥ (१६-१६, सिरीरागु, मः १)
इहु मनु साचि संतोखिआ नदरि करे तिसु माहि ॥ (१६-१६, सिरीरागु, मः १)

पन्ना २०

पंच भूत सचि भै रते जोति सची मन माहि ॥ (२०-१, सिरीरागु, मः १)
नानक अउगण वीसरे गुरि राखे पति ताहि ॥४॥१५॥ (२०-१, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२०-२)
नानक बेड़ी सच की तरीऐ गुर वीचारि ॥ (२०-२, सिरीरागु, मः १)
इकि आवहि इकि जावही पूरि भरे अहंकारि ॥ (२०-२, सिरीरागु, मः १)
मनहठि मती बूडीऐ गुरमुखि सचु सु तारि ॥१॥ (२०-३, सिरीरागु, मः १)
गुर बिनु किउ तरीऐ सुखु होइ ॥ (२०-३, सिरीरागु, मः १)

जिउ भावै तिउ राखु तू मै अवरु न दूजा कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०-४, सिरीरागु, मः १)
आगै देखउ डउ जलै पाछै हरिओ अंगूरु ॥ (२०-४, सिरीरागु, मः १)
जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घटि घटि सचु भरपूरि ॥ (२०-५, सिरीरागु, मः १)
आपे मेलि मिलावही साचै महलि हदूरि ॥२॥ (२०-५, सिरीरागु, मः १)
साहि साहि तुझु सम्मला कदे न विसारेउ ॥ (२०-६, सिरीरागु, मः १)
जिउ जिउ साहबु मनि वसै गुरमुखि अमृतु पेउ ॥ (२०-६, सिरीरागु, मः १)
मनु तनु तेरा तू धणी गरबु निवारि समेउ ॥३॥ (२०-६, सिरीरागु, मः १)
जिनि एहु जगतु उपाइआ तृभवणु करि आकारु ॥ (२०-७, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि चानणु जाणीऐ मनमुखि मुगधु गुबारु ॥ (२०-८, सिरीरागु, मः १)
घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारु ॥४॥ (२०-८, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि जिनी जाणिआ तिन कीचै साबासि ॥ (२०-९, सिरीरागु, मः १)
सचे सेती रलि मिले सचे गुण परगासि ॥ (२०-९, सिरीरागु, मः १)
नानक नामि संतोखीआ जीउ पिंडु प्रभ पासि ॥५॥१६॥ (२०-९, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२०-१०)
सुणि मन मित्र पिआरिआ मिलु वेला है एह ॥ (२०-१०, सिरीरागु, मः १)
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु इहु तनु देह ॥ (२०-११, सिरीरागु, मः १)
बिनु गुण कामि न आवई ढहि ढेरी तनु खेह ॥१॥ (२०-११, सिरीरागु, मः १)
मेरे मन लै लाहा घरि जाहि ॥ (२०-१२, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि नामु सलाहीऐ हउमै निवरी भाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (२०-१२, सिरीरागु, मः १)
सुणि सुणि गंढणु गंढीऐ लिखि पड़ि बुझहि भारु ॥ (२०-१३, सिरीरागु, मः १)
तृसना अहिनिसि अगली हउमै रोगु विकारु ॥ (२०-१३, सिरीरागु, मः १)
ओहु वेपरवाहु अतोलवा गुरमति कीमति सारु ॥२॥ (२०-१४, सिरीरागु, मः १)
लख सिआणप जे करी लख सिउ प्रीति मिलापु ॥ (२०-१४, सिरीरागु, मः १)
बिनु संगति साध न ध्रापीआ बिनु नावै दूख संतापु ॥ (२०-१५, सिरीरागु, मः १)
हरि जपि जीअरे छुटीऐ गुरमुखि चीनै आपु ॥३॥ (२०-१५, सिरीरागु, मः १)
तनु मनु गुर पहि वेचिआ मनु दीआ सिरु नालि ॥ (२०-१६, सिरीरागु, मः १)
तृभवणु खोजि ढंढोलिआ गुरमुखि खोजि निहालि ॥ (२०-१६, सिरीरागु, मः १)
सतगुरि मेलि मिलाइआ नानक सो प्रभु नालि ॥४॥१७॥ (२०-१७, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२०-१७)
मरणै की चिंता नही जीवण की नही आस ॥ (२०-१८, सिरीरागु, मः १)
तू सर्ब जीआ प्रतिपालही लेखै सास गिरास ॥ (२०-१८, सिरीरागु, मः १)
अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि ॥१॥ (२०-१९, सिरीरागु, मः १)
जीअरे राम जपत मनु मानु ॥ (२०-१९, सिरीरागु, मः १)
अंतरि लागी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (२०-१९, सिरीरागु, मः १)

अंतर की गति जाणीऐ गुर मिलीऐ संक उतारि ॥ (२१-१, सिरीरागु, मः १)
मुइआ जितु घरि जाईऐ तितु जीवदिआ मरु मारि ॥ (२१-२, सिरीरागु, मः १)
अनहद सबदि सुहावणे पाईऐ गुर वीचारि ॥२॥ (२१-२, सिरीरागु, मः १)
अनहद बाणी पाईऐ तह हउमै होइ बिनासु ॥ (२१-३, सिरीरागु, मः १)
सतगुरु सेवे आपणा हउ सद कुरबाणै तासु ॥ (२१-३, सिरीरागु, मः १)
खड़ि दरगह पैनाईऐ मुखि हरि नाम निवासु ॥३॥ (२१-४, सिरीरागु, मः १)
जह देखा तह रवि रहे सिव सकती का मेलु ॥ (२१-४, सिरीरागु, मः १)
त्रिहु गुण बंधी देहुरी जो आइआ जगि सो खेलु ॥ (२१-५, सिरीरागु, मः १)
विजोगी दुखि विछुड़े मनमुखि लहहि न मेलु ॥४॥ (२१-५, सिरीरागु, मः १)
मनु बैरागी घरि वसै सच भै राता होइ ॥ (२१-६, सिरीरागु, मः १)
गिआन महारसु भोगवै बाहुड़ि भूख न होइ ॥ (२१-६, सिरीरागु, मः १)
नानक इहु मनु मारि मिलु भी फिरि दुखु न होइ ॥५॥१८॥ (२१-७, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२१-७)
एहु मनो मूरखु लोभीआ लोभे लगा लोभानु ॥ (२१-७, सिरीरागु, मः १)
सबदि न भीजै साकता दुरमति आवनु जानु ॥ (२१-८, सिरीरागु, मः १)
साधू सतगुरु जे मिलै ता पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥ (२१-८, सिरीरागु, मः १)
मन रे हउमै छोडि गुमानु ॥ (२१-९, सिरीरागु, मः १)
हरि गुरु सरवरु सेवि तू पावहि दरगह मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (२१-९, सिरीरागु, मः १)
राम नामु जपि दिनसु राति गुरमुखि हरि धनु जानु ॥ (२१-१०, सिरीरागु, मः १)
सभि सुख हरि रस भोगणे संत सभा मिलि गिआनु ॥ (२१-१०, सिरीरागु, मः १)
निति अहिनिसि हरि प्रभु सेविआ सतगुरि दीआ नामु ॥२॥ (२१-११, सिरीरागु, मः १)
कूकर कूड़ु कमाईऐ गुर निंदा पचै पचानु ॥ (२१-११, सिरीरागु, मः १)
भरमे भूला दुखु घणो जमु मारि करै खुलहानु ॥ (२१-१२, सिरीरागु, मः १)
मनमुखि सुखु न पाईऐ गुरमुखि सुखु सुभानु ॥३॥ (२१-१२, सिरीरागु, मः १)
ऐथै धंधु पिटाईऐ सचु लिखतु परवानु ॥ (२१-१३, सिरीरागु, मः १)
हरि सजणु गुरु सेवदा गुर करणी प्रधानु ॥ (२१-१३, सिरीरागु, मः १)
नानक नामु न वीसरै करमि सचै नीसाणु ॥४॥१९॥ (२१-१४, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२१-१४)
इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मन माहि ॥ (२१-१४, सिरीरागु, मः १)
किउ दरगह पति पाईऐ जा हरि न वसै मन माहि ॥ (२१-१५, सिरीरागु, मः १)
गुरि मिलिऐ सुखु पाईऐ अगनि मरै गुण माहि ॥१॥ (२१-१५, सिरीरागु, मः १)
मन रे अहिनिसि हरि गुण सारि ॥ (२१-१६, सिरीरागु, मः १)
जिन खिनु पलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (२१-१६, सिरीरागु, मः १)

जोती जोति मिलाईऐ सुरती सुरति संजोगु ॥ (२१-१७, सिरीरागु, मः १)
हिंसा हउमै गतु गए नाही सहसा सोगु ॥ (२१-१७, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि जिसु हरि मनि वसै तिसु मेले गुरु संजोगु ॥२॥ (२१-१८, सिरीरागु, मः १)
काइआ कामणि जे करी भोगे भोगणहारु ॥ (२१-१८, सिरीरागु, मः १)
तिसु सिउ नेहु न कीजई जो दीसै चलणहारु ॥ (२१-१९, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि रवहि सोहागणी सो प्रभु सेज भतारु ॥३॥ (२१-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना २२

चारे अगनि निवारि मरु गुरमुखि हरि जलु पाइ ॥ (२२-१, सिरीरागु, मः १)
अंतरि कमलु प्रगासिआ अमृतु भरिआ अघाइ ॥ (२२-१, सिरीरागु, मः १)
नानक सतगुरु मीतु करि सचु पावहि दरगह जाइ ॥४॥२०॥ (२२-२, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२२-३)
हरि हरि जपहु पिआरिआ गुरमति ले हरि बोलि ॥ (२२-३, सिरीरागु, मः १)
मनु सच कसवटी लाईऐ तुलीऐ पूरै तोलि ॥ (२२-३, सिरीरागु, मः १)
कीमति किनै न पाईऐ रिद माणक मोलि अमोलि ॥१॥ (२२-४, सिरीरागु, मः १)
भाई रे हरि हीरा गुर माहि ॥ (२२-४, सिरीरागु, मः १)
सतसंगति सतगुरु पाईऐ अहिनिसि सबदि सलाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (२२-५, सिरीरागु, मः १)
सचु वखरु धनु रासि लै पाईऐ गुर परगासि ॥ (२२-५, सिरीरागु, मः १)
जिउ अगनि मरै जलि पाइऐ तिउ तृसना दासनि दासि ॥ (२२-६, सिरीरागु, मः १)
जम जंदारु न लगई इउ भउजलु तरै तरासि ॥२॥ (२२-६, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि कूड़ु न भावई सचि रते सच भाइ ॥ (२२-७, सिरीरागु, मः १)
साकत सचु न भावई कूड़ै कूड़ी पाँइ ॥ (२२-७, सिरीरागु, मः १)
सचि रते गुरि मेलिऐ सचे सचि समाइ ॥३॥ (२२-८, सिरीरागु, मः १)
मन महि माणकु लालु नामु रतनु पदारथु हीरु ॥ (२२-८, सिरीरागु, मः १)
सचु वखरु धनु नामु है घटि घटि गहिर गम्भीरु ॥ (२२-९, सिरीरागु, मः १)
नानक गुरमुखि पाईऐ दइआ करे हरि हीरु ॥४॥२१॥ (२२-९, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२२-१०)
भरमे भाहि न विझवै जे भवै दिसंतर देसु ॥ (२२-१०, सिरीरागु, मः १)
अंतरि मैलु न उतरै ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वेसु ॥ (२२-१०, सिरीरागु, मः १)
होरु कितै भगति न होवई बिनु सतिगुर के उपदेस ॥१॥ (२२-११, सिरीरागु, मः १)
मन रे गुरमुखि अगनि निवारि ॥ (२२-११, सिरीरागु, मः १)
गुर का कहिआ मनि वसै हउमै तृसना मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (२२-१२, सिरीरागु, मः १)
मनु माणकु निरमोलु है राम नामि पति पाइ ॥ (२२-१२, सिरीरागु, मः १)
मिलि सतसंगति हरि पाईऐ गुरमुखि हरि लिव लाइ ॥ (२२-१३, सिरीरागु, मः १)
आपु गइआ सुखु पाइआ मिलि सललै सलल समाइ ॥२॥ (२२-१३, सिरीरागु, मः १)

जिनि हरि हरि नामु न चेतिओ सु अउगुणि आवै जाइ ॥ (२२-१४, सिरीरागु, मः १)
जिसु सतगुरु पुरखु न भेटिओ सु भउजलि पचै पचाइ ॥ (२२-१५, सिरीरागु, मः १)
इहु माणकु जीउ निरमोलु है इउ कउडी बदलै जाइ ॥३॥ (२२-१५, सिरीरागु, मः १)
जिन्ना सतगुरु रसि मिलै से पूरे पुरख सुजाण ॥ (२२-१६, सिरीरागु, मः १)
गुर मिलि भउजलु लंघीऐ दरगह पति परवाणु ॥ (२२-१६, सिरीरागु, मः १)
नानक ते मुख उजले धुनि उपजै सबदु नीसाणु ॥४॥२२॥ (२२-१७, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (२२-१७)
वणजु करहु वणजारिहो वखरु लेहु समालि ॥ (२२-१८, सिरीरागु, मः १)
तैसी वसतु विसाहीऐ जैसी निबहै नालि ॥ (२२-१८, सिरीरागु, मः १)
अगै साहु सुजाणु है लैसी वसतु समालि ॥१॥ (२२-१९, सिरीरागु, मः १)
भाई रे रामु कहहु चितु लाइ ॥ (२२-१९, सिरीरागु, मः १)
हरि जसु वखरु लै चलहु सहु देखै पतीआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना २३

जिना रासि न सचु है किउ तिना सुखु होइ ॥ (२३-१, सिरीरागु, मः १)
खोटै वणजि वणंजिऐ मनु तनु खोटा होइ ॥ (२३-१, सिरीरागु, मः १)
फाही फाथे मिरग जिउ दूखु घणो नित रोइ ॥२॥ (२३-२, सिरीरागु, मः १)
खोटे पोतै ना पवहि तिन हरि गुर दरसु न होइ ॥ (२३-२, सिरीरागु, मः १)
खोटे जाति न पति है खोटि न सीझसि कोइ ॥ (२३-३, सिरीरागु, मः १)
खोटे खोटु कमावणा आइ गइआ पति खोइ ॥३॥ (२३-३, सिरीरागु, मः १)
नानक मनु समझाईऐ गुर कै सबदि सालाह ॥ (२३-४, सिरीरागु, मः १)
राम नाम रंगि रतिआ भारु न भरमु तिनाह ॥ (२३-४, सिरीरागु, मः १)
हरि जपि लाहा अगला निरभउ हरि मन माह ॥४॥२३॥ (२३-५, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ (२३-५)
धनु जोबनु अरु फुलड़ा नाठीअड़े दिन चारि ॥ (२३-५, सिरीरागु, मः १)
पबणि केरे पत जिउ ढलि ढुलि जुम्मणहार ॥१॥ (२३-६, सिरीरागु, मः १)
रंगु माणि लै पिआरिआ जा जोबनु नउ हुला ॥ (२३-६, सिरीरागु, मः १)
दिन थोड़ड़े थके भइआ पुराणा चोला ॥१॥ रहाउ ॥ (२३-७, सिरीरागु, मः १)
सजण मेरे रंगुले जाइ सुते जीराणि ॥ (२३-७, सिरीरागु, मः १)
हं भी वंञा डुमणी रोवा झीणी बाणि ॥२॥ (२३-८, सिरीरागु, मः १)
की न सुणेही गोरीए आपण कन्नी सोइ ॥ (२३-८, सिरीरागु, मः १)
लगी आवहि साहुरै नित न पेईआ होइ ॥३॥ (२३-९, सिरीरागु, मः १)
नानक सुती पेईऐ जाणु विरती संनि ॥ (२३-९, सिरीरागु, मः १)
गुणा गवाई गंठड़ी अवगण चली बंनि ॥४॥२४॥ (२३-१०, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु दूजा २ ॥ (२३-१०)

आपे रसीआ आपि रसु आपे रावणहारु ॥ (२३-१०, सिरीरागु, मः १)
आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतारु ॥१॥ (२३-११, सिरीरागु, मः १)
रंगि रता मेरा साहिबु रवि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (२३-११, सिरीरागु, मः १)
आपे माछी मछुली आपे पाणी जालु ॥ (२३-१२, सिरीरागु, मः १)
आपे जाल मणकड़ा आपे अंदरि लालु ॥२॥ (२३-१२, सिरीरागु, मः १)
आपे बहु बिधि रंगुला सखीए मेरा लालु ॥ (२३-१३, सिरीरागु, मः १)
नित रवै सोहागणी देखु हमारा हालु ॥३॥ (२३-१३, सिरीरागु, मः १)
प्रणवै नानकु बेनती तू सरवरु तू हंसु ॥ (२३-१४, सिरीरागु, मः १)
कउलु तू है कवीआ तू है आपे वेखि विगसु ॥४॥२५॥ (२३-१४, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ (२३-१५)
इहु तनु धरती बीजु करमा करो सलिल आपाउ सारिंगपाणी ॥ (२३-१५, सिरीरागु, मः १)
मनु किरसाणु हरि रिदै जम्माइ लै इउ पावसि पदु निरबाणी ॥१॥ (२३-१५, सिरीरागु, मः १)
काहे गरबसि मूड़े माइआ ॥ (२३-१६, सिरीरागु, मः १)
पित सुतो सगल कालत्र माता तेरे होहि न अंति सखाइआ ॥ रहाउ ॥ (२३-१६, सिरीरागु, मः १)
बिखै बिकार दुसट किरखा करे इन तजि आतमै होइ धिआई ॥ (२३-१७, सिरीरागु, मः १)
जपु तपु संजमु होहि जब राखे कमलु बिगसै मधु आस्रमाई ॥२॥ (२३-१८, सिरीरागु, मः १)
बीस सपताहरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित कालु सारै ॥ (२३-१८, सिरीरागु, मः १)
दस अठार मै अपरम्परो चीनै कहै नानकु इव एकु तारै ॥३॥२६॥ (२३-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना २४

सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ (२४-१)
अमलु करि धरती बीजु सबदो करि सच की आब नित देहि पाणी ॥ (२४-१, सिरीरागु, मः १)
होइ किरसाणु ईमानु जम्माइ लै भिसतु दोजकु मूड़े एव जाणी ॥१॥ (२४-२, सिरीरागु, मः १)
मतु जाण सहि गली पाइआ ॥ (२४-२, सिरीरागु, मः १)
माल कै माणै रूप की सोभा इतु बिधी जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२४-३, सिरीरागु, मः १)
ऐब तनि चिकड़ो इहु मनु मीडको कमल की सार नही मूलि पाई ॥ (२४-३, सिरीरागु, मः १)
भउरु उसतादु नित भाखिआ बोले किउ बूझै जा नह बुझाई ॥२॥ (२४-४, सिरीरागु, मः १)
आखणु सुनणा पउण की बाणी इहु मनु रता माइआ ॥ (२४-५, सिरीरागु, मः १)
खसम की नदरि दिलहि पसिंदे जिनी करि एकु धिआइआ ॥३॥ (२४-५, सिरीरागु, मः १)
तीह करि रखे पंज करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाई ॥ (२४-६, सिरीरागु, मः १)
नानकु आखै राहि पै चलणा मालु धनु कित कू संजिआही ॥४॥२७॥ (२४-६, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (२४-७)
सोई मउला जिनि जगु मउलिआ हरिआ कीआ संसारो ॥ (२४-७, सिरीरागु, मः १)
आब खाकु जिनि बंधि रहाई धन्नु सिरजणहारो ॥१॥ (२४-८, सिरीरागु, मः १)
मरणा मुला मरणा ॥ (२४-८, सिरीरागु, मः १)

भी करतारहु डरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (२४-९, सिरीरागु, मः १)
ता तू मुला ता तू काजी जाणहि नामु खुदाई ॥ (२४-९, सिरीरागु, मः १)
जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाई ॥२॥ (२४-१०, सिरीरागु, मः १)
सोई काजी जिनि आपु तजिआ इकु नामु कीआ आधारो ॥ (२४-१०, सिरीरागु, मः १)
है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो ॥३॥ (२४-११, सिरीरागु, मः १)
पंज वखत निवाज गुजारहि पड़हि कतेब कुराणा ॥ (२४-११, सिरीरागु, मः १)
नानकु आखै गोर सदेई रहिओ पीणा खाणा ॥४॥२८॥ (२४-१२, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (२४-१२)
एकु सुआनु दुइ सुआनी नालि ॥ (२४-१३, सिरीरागु, मः १)
भलके भउकहि सदा बइआलि ॥ (२४-१३, सिरीरागु, मः १)
कूड़ु छुरा मुठा मुरदारु ॥ (२४-१३, सिरीरागु, मः १)
धाणक रूपि रहा करतार ॥१॥ (२४-१३, सिरीरागु, मः १)
मै पति की पंदि न करणी की कार ॥ (२४-१४, सिरीरागु, मः १)
हउ बिगड़ै रूपि रहा बिकराल ॥ (२४-१४, सिरीरागु, मः १)
तेरा एकु नामु तारे संसारु ॥ (२४-१५, सिरीरागु, मः १)
मै एहा आस एहो आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (२४-१५, सिरीरागु, मः १)
मुखि निंदा आखा दिनु राति ॥ (२४-१५, सिरीरागु, मः १)
पर घरु जोही नीच सनाति ॥ (२४-१५, सिरीरागु, मः १)
कामु क्रोधु तनि वसहि चंडाल ॥ (२४-१६, सिरीरागु, मः १)
धाणक रूपि रहा करतार ॥२॥ (२४-१६, सिरीरागु, मः १)
फाही सुरति मलूकी वेसु ॥ (२४-१६, सिरीरागु, मः १)
हउ ठगवाड़ा ठगी देसु ॥ (२४-१७, सिरीरागु, मः १)
खरा सिआणा बहुता भारु ॥ (२४-१७, सिरीरागु, मः १)
धाणक रूपि रहा करतार ॥३॥ (२४-१७, सिरीरागु, मः १)
मै कीता न जाता हरामखोरु ॥ (२४-१७, सिरीरागु, मः १)
हउ किआ मुहु देसा दुसटु चोरु ॥ (२४-१८, सिरीरागु, मः १)
नानकु नीचु कहै बीचारु ॥ (२४-१८, सिरीरागु, मः १)
धाणक रूपि रहा करतार ॥४॥२९॥ (२४-१८, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (२४-१९)
एका सुरति जेते है जीअ ॥ (२४-१९, सिरीरागु, मः १)
सुरति विहूणा कोइ न कीअ ॥ (२४-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना २५

जेही सुरति तेहा तिन राहु ॥ (२५-१, सिरीरागु, मः १)
लेखा इको आवहु जाहु ॥१॥ (२५-१, सिरीरागु, मः १)

काहे जीअ करहि चतुराई ॥ (२५-१, सिरीरागु, मः १)
लेवै देवै ढिल न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (२५-१, सिरीरागु, मः १)
तेरे जीअ जीआ का तोहि ॥ (२५-२, सिरीरागु, मः १)
कित कउ साहिब आवहि रोहि ॥ (२५-२, सिरीरागु, मः १)
जे तू साहिब आवहि रोहि ॥ (२५-२, सिरीरागु, मः १)
तू ओना का तेरे ओहि ॥२॥ (२५-३, सिरीरागु, मः १)
असी बोलविगाड़ विगाड़ह बोल ॥ (२५-३, सिरीरागु, मः १)
तू नदरी अंदरि तोलहि तोल ॥ (२५-३, सिरीरागु, मः १)
जह करणी तह पूरी मति ॥ (२५-३, सिरीरागु, मः १)
करणी बाझहु घटे घटि ॥३॥ (२५-४, सिरीरागु, मः १)
प्रणवति नानक गिआनी कैसा होइ ॥ (२५-४, सिरीरागु, मः १)
आपु पछाणै बूझै सोइ ॥ (२५-४, सिरीरागु, मः १)
गुर परसादि करे बीचारु ॥ (२५-५, सिरीरागु, मः १)
सो गिआनी दरगह परवाणु ॥४॥३०॥ (२५-५, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (२५-५)
तू दरीआउ दाना बीना मै मछुली कैसे अंतु लहा ॥ (२५-६, सिरीरागु, मः १)
जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा ॥१॥ (२५-६, सिरीरागु, मः १)
न जाणा मेउ न जाणा जाली ॥ (२५-७, सिरीरागु, मः १)
जा दुखु लागै ता तुझै समाली ॥१॥ रहाउ ॥ (२५-७, सिरीरागु, मः १)
तू भरपूरि जानिआ मै दूरि ॥ (२५-८, सिरीरागु, मः १)
जो कछु करी सु तेरै हदूरि ॥ (२५-८, सिरीरागु, मः १)
तू देखहि हउ मुकरि पाउ ॥ (२५-८, सिरीरागु, मः १)
तेरै कंमि न तेरै नाइ ॥२॥ (२५-८, सिरीरागु, मः १)
जेता देहि तेता हउ खाउ ॥ (२५-९, सिरीरागु, मः १)
बिआ दरु नाही कै दरि जाउ ॥ (२५-९, सिरीरागु, मः १)
नानकु एक कहै अरदासि ॥ (२५-९, सिरीरागु, मः १)
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥ (२५-१०, सिरीरागु, मः १)
आपे नेड़ै दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनुो ॥ (२५-१०, सिरीरागु, मः १)
आपे वेखै सुणे आपे ही कुदरति करे जहानुो ॥ (२५-१०, सिरीरागु, मः १)
जो तिसु भावै नानका हुकमु सोई परवानुो ॥४॥३१॥ (२५-११, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु ४ ॥ (२५-११)
कीता कहा करे मनि मानु ॥ (२५-१२, सिरीरागु, मः १)
देवणहारे कै हथि दानु ॥ (२५-१२, सिरीरागु, मः १)
भावै देइ न देई सोइ ॥ (२५-१२, सिरीरागु, मः १)
कीते कै कहिऐ किआ होइ ॥१॥ (२५-१२, सिरीरागु, मः १)

आपे सचु भावै तिसु सचु ॥ (२५-१३, सिरीरागु, मः १)
अंधा कचा कचु निकचु ॥१॥ रहाउ ॥ (२५-१३, सिरीरागु, मः १)
जा के रुख बिरख आराउ ॥ (२५-१३, सिरीरागु, मः १)
जेही धातु तेहा तिन नाउ ॥ (२५-१४, सिरीरागु, मः १)
फुलु भाउ फलु लिखिआ पाइ ॥ (२५-१४, सिरीरागु, मः १)
आपि बीजि आपे ही खाइ ॥२॥ (२५-१४, सिरीरागु, मः १)
कची कंध कचा विचि राजु ॥ (२५-१४, सिरीरागु, मः १)
मति अलूणी फिका सादु ॥ (२५-१५, सिरीरागु, मः १)
नानक आणे आवै रासि ॥ (२५-१५, सिरीरागु, मः १)
विणु नावै नाही साबासि ॥३॥३२॥ (२५-१५, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु ५ ॥ (२५-१६)
अछल छलाई नह छलै नह घाउ कटारा करि सकै ॥ (२५-१६, सिरीरागु, मः १)
जिउ साहिबु राखै तिउ रहै इसु लोभी का जीउ टल पलै ॥१॥ (२५-१६, सिरीरागु, मः १)
बिनु तेल दीवा किउ जलै ॥१॥ रहाउ ॥ (२५-१७, सिरीरागु, मः १)
पोथी पुराण कमाईऐ ॥ (२५-१८, सिरीरागु, मः १)
भउ वटी इतु तनि पाईऐ ॥ (२५-१८, सिरीरागु, मः १)
सचु बूझणु आणि जलाईऐ ॥२॥ (२५-१८, सिरीरागु, मः १)
इहु तेलु दीवा इउ जलै ॥ (२५-१८, सिरीरागु, मः १)
करि चानणु साहिब तउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥ (२५-१९, सिरीरागु, मः १)
इतु तनि लागै बाणीआ ॥ (२५-१९, सिरीरागु, मः १)
सुखु होवै सेव कमाणीआ ॥ (२५-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना २६

सभ दुनीआ आवण जाणीआ ॥३॥ (२६-१, सिरीरागु, मः १)
विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥ (२६-१, सिरीरागु, मः १)
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (२६-१, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥४॥३३॥ (२६-२, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला ३ घरु १ (२६-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२६-३)
हउ सतिगुरु सेवी आपणा इक मनि इक चिति भाइ ॥ (२६-४, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु मन कामना तीरथु है जिस नो देइ बुझाइ ॥ (२६-४, सिरीरागु, मः ३)
मन चिंदिआ वरु पावणा जो इछै सो फलु पाइ ॥ (२६-५, सिरीरागु, मः ३)
नाउ धिआईऐ नाउ मंगीऐ नामे सहजि समाइ ॥१॥ (२६-५, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे हरि रसु चाखु तिख जाइ ॥ (२६-६, सिरीरागु, मः ३)
जिनी गुरमुखि चाखिआ सहजे रहे समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२६-६, सिरीरागु, मः ३)

जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी पाइआ नामु निधानु ॥ (२६-७, सिरीरागु, मः ३)
अंतरि हरि रसु रवि रहिआ चूका मनि अभिमानु ॥ (२६-७, सिरीरागु, मः ३)
हिरदै कमलु प्रगासिआ लागा सहजि धिआनु ॥ (२६-८, सिरीरागु, मः ३)
मनु निरमलु हरि रवि रहिआ पाइआ दरगहि मानु ॥२॥ (२६-८, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु सेवनि आपणा ते विरले संसारि ॥ (२६-९, सिरीरागु, मः ३)
हउमै ममता मारि कै हरि राखिआ उर धारि ॥ (२६-१०, सिरीरागु, मः ३)
हउ तिन कै बलिहारणै जिना नामे लगा पिआरु ॥ (२६-१०, सिरीरागु, मः ३)
सेई सुखीए चहु जुगी जिना नामु अखुटु अपारु ॥३॥ (२६-११, सिरीरागु, मः ३)
गुर मिलिऐ नामु पाईऐ चूकै मोह पिआस ॥ (२६-११, सिरीरागु, मः ३)
हरि सेती मनु रवि रहिआ घर ही माहि उदासु ॥ (२६-११, सिरीरागु, मः ३)
जिना हरि का सादु आइआ हउ तिन बलिहारै जासु ॥ (२६-१२, सिरीरागु, मः ३)
नानक नदरी पाईऐ सचु नामु गुणतासु ॥४॥१॥३४॥ (२६-१३, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (२६-१३)
बहु भेख करि भरमाईऐ मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ (२६-१३, सिरीरागु, मः ३)
हरि का महलु न पावई मरि विसटा माहि समाइ ॥१॥ (२६-१४, सिरीरागु, मः ३)
मन रे गृह ही माहि उदासु ॥ (२६-१४, सिरीरागु, मः ३)
सचु संजमु करणी सो करे गुरमुखि होइ परगासु ॥१॥ रहाउ ॥ (२६-१५, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै सबदि मनु जीतिआ गति मुकति घरै महि पाइ ॥ (२६-१५, सिरीरागु, मः ३)
हरि का नामु धिआईऐ सतसंगति मेलि मिलाइ ॥२॥ (२६-१६, सिरीरागु, मः ३)
जे लख इसतरीआ भोग करहि नव खंड राजु कमाहि ॥ (२६-१६, सिरीरागु, मः ३)
बिनु सतिगुर सुखु न पावई फिरि फिरि जोनी पाहि ॥३॥ (२६-१७, सिरीरागु, मः ३)
हरि हारु कंठि जिनी पहिरिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥ (२६-१८, सिरीरागु, मः ३)
तिना पिछै रिधि सिधि फिरै ओना तिलु न तमाइ ॥४॥ (२६-१८, सिरीरागु, मः ३)
जो प्रभ भावै सो थीऐ अवरु न करणा जाइ ॥ (२६-१९, सिरीरागु, मः ३)
जनु नानकु जीवै नामु लै हरि देवहु सहजि सुभाइ ॥५॥२॥३५॥ (२६-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना २७

सिरीरागु महला ३ घरु १ ॥ (२७-१)
जिस ही की सिरकार है तिस ही का सभु कोइ ॥ (२७-१, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि कार कमावणी सचु घटि परगटु होइ ॥ (२७-२, सिरीरागु, मः ३)
अंतरि जिस कै सचु वसै सचे सची सोइ ॥ (२७-२, सिरीरागु, मः ३)
सचि मिले से न विछुड़हि तिन निज घरि वासा होइ ॥१॥ (२७-२, सिरीरागु, मः ३)
मेरे राम मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (२७-३, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरु सचु प्रभु निरमला सबदि मिलावा होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२७-३, सिरीरागु, मः ३)
सबदि मिलै सो मिलि रहै जिस नउ आपे लए मिलाइ ॥ (२७-४, सिरीरागु, मः ३)

दूजै भाइ को ना मिलै फिरि फिरि आवै जाइ ॥ (२७-५, सिरीरागु, मः ३)
सभ महि इकु वरतदा एको रहिआ समाइ ॥ (२७-५, सिरीरागु, मः ३)
जिस नउ आपि दइआलु होइ सो गुरमुखि नामि समाइ ॥२॥ (२७-६, सिरीरागु, मः ३)
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी वाद करहि बीचारु ॥ (२७-६, सिरीरागु, मः ३)
मति बुधि भवी न बुझई अंतरि लोभ विकारु ॥ (२७-७, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह भरमदे भ्रमि भ्रमि होइ खुआरु ॥ (२७-७, सिरीरागु, मः ३)
पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ (२७-८, सिरीरागु, मः ३)
सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ (२७-८, सिरीरागु, मः ३)
सबदि मिलहि ता हरि मिलै सेवा पवै सभ थाइ ॥ (२७-९, सिरीरागु, मः ३)
पारसि परसिऐ पारसु होइ जोती जोति समाइ ॥ (२७-९, सिरीरागु, मः ३)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतगुरु मिलिआ आइ ॥४॥ (२७-१०, सिरीरागु, मः ३)
मन भुखा भुखा मत करहि मत तू करहि पूकार ॥ (२७-१०, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह जिनि सिरी सभसै देइ अधारु ॥ (२७-११, सिरीरागु, मः ३)
निरभउ सदा दइआलु है सभना करदा सार ॥ (२७-११, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमुखि बुझीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥५॥३॥३६॥ (२७-१२, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (२७-१२)
जिनी सुणि कै मंनिआ तिना निज घरि वासु ॥ (२७-१२, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती सालाहि सचु हरि पाइआ गुणतासु ॥ (२७-१३, सिरीरागु, मः ३)
सबदि रते से निरमले हउ सद बलिहारै जासु ॥ (२७-१३, सिरीरागु, मः ३)
हिरदै जिन कै हरि वसै तितु घटि है परगासु ॥१॥ (२७-१४, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे हरि हरि निरमलु धिआइ ॥ (२७-१४, सिरीरागु, मः ३)
धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ से गुरमुखि रहे लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२७-१५, सिरीरागु, मः ३)
हरि संतहु देखहु नदरि करि निकटि वसै भरपूरि ॥ (२७-१६, सिरीरागु, मः ३)
गुरमति जिनी पछाणिआ से देखहि सदा हदूरि ॥ (२७-१६, सिरीरागु, मः ३)
जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥ (२७-१७, स्रीरागु, मः ३)
मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥२॥ (२७-१७, स्रीरागु, मः ३)
जिन सबदि गुरू सुणि मंनिआ तिन मनि धिआइआ हरि सोइ ॥ (२७-१८, स्रीरागु, मः ३)
अनदिनु भगती रतिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ (२७-१८, स्रीरागु, मः ३)
कूड़ा रंगु कसुम्भ का बिनसि जाइ दुखु रोइ ॥ (२७-१९, स्रीरागु, मः ३)
जिसु अंदरि नाम प्रगासु है ओहु सदा सदा थिरु होइ ॥३॥ (२७-१९, स्रीरागु, मः ३)

पन्ना २८

इहु जनमु पदारथु पाइ कै हरि नामु न चेतै लिव लाइ ॥ (२८-१, स्रीरागु, मः ३)
पगि खिसिऐ रहणा नही आगै ठउरु न पाइ ॥ (२८-२, स्रीरागु, मः ३)
ओह वेला हथि न आवई अंति गइआ पछुताइ ॥ (२८-२, स्रीरागु, मः ३)

जिसु नदरि करे सो उबरै हरि सेती लिव लाइ ॥४॥ (२८-३, स्रीरागु, मः ३)
देखा देखी सभ करे मनमुखि बूझ न पाइ ॥ (२८-३, स्रीरागु, मः ३)
जिन गुरमुखि हिरदा सुधु है सेव पई तिन थाइ ॥ (२८-३, स्रीरागु, मः ३)
हरि गुण गावहि हरि नित पड़हि हरि गुण गाइ समाइ ॥ (२८-४, स्रीरागु, मः ३)
नानक तिन की बाणी सदा सचु है जि नामि रहे लिव लाइ ॥५॥४॥३७॥ (२८-५, स्रीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (२८-५)
जिनी इक मनि नामु धिआइआ गुरमती वीचारि ॥ (२८-६, सिरीरागु, मः ३)
तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ (२८-६, सिरीरागु, मः ३)
ओइ अमृतु पीवहि सदा सदा सचै नामि पिआरि ॥१॥ (२८-७, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे गुरमुखि सदा पति होइ ॥ (२८-७, सिरीरागु, मः ३)
हरि हरि सदा धिआईऐ मलु हउमै कढै धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२८-७, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख नामु न जाणनी विणु नावै पति जाइ ॥ (२८-८, सिरीरागु, मः ३)
सबदै सादु न आइओ लागे दूजै भाइ ॥ (२८-९, सिरीरागु, मः ३)
विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ॥२॥ (२८-९, सिरीरागु, मः ३)
तिन का जनमु सफलु है जो चलहि सतगुर भाइ ॥ (२८-१०, सिरीरागु, मः ३)
कुलु उधारहि आपणा धन्नु जणेदी माइ ॥ (२८-१०, सिरीरागु, मः ३)
हरि हरि नामु धिआईऐ जिस नउ किरपा करे रजाइ ॥३॥ (२८-११, सिरीरागु, मः ३)
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ विचहु आपु गवाइ ॥ (२८-११, सिरीरागु, मः ३)
ओइ अंदरहु बाहरहु निरमले सचे सचि समाइ ॥ (२८-१२, सिरीरागु, मः ३)
नानक आए से परवाणु हहि जिन गुरमती हरि धिआइ ॥४॥५॥३८॥ (२८-१२, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (२८-१३)
हरि भगता हरि धनु रासि है गुर पूछि करहि वापारु ॥ (२८-१३, सिरीरागु, मः ३)
हरि नामु सलाहनि सदा सदा वखरु हरि नामु अधारु ॥ (२८-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइआ हरि भगता अतुटु भंडारु ॥१॥ (२८-१४, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे इसु मन कउ समझाइ ॥ (२८-१५, सिरीरागु, मः ३)
ए मन आलसु किआ करहि गुरमुखि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२८-१५, सिरीरागु, मः ३)
हरि भगति हरि का पिआरु है जे गुरमुखि करे बीचारु ॥ (२८-१६, सिरीरागु, मः ३)
पाखंडि भगति न होवई दुबिधा बोलु खुआरु ॥ (२८-१७, सिरीरागु, मः ३)
सो जनु रलाइआ ना रलै जिसु अंतरि बिबेक बीचारु ॥२॥ (२८-१७, सिरीरागु, मः ३)
सो सेवकु हरि आखीऐ जो हरि राखै उरि धारि ॥ (२८-१८, सिरीरागु, मः ३)
मनु तनु सउपे आगै धरे हउमै विचहु मारि ॥ (२८-१८, सिरीरागु, मः ३)
धनु गुरमुखि सो परवाणु है जि कदे न आवै हारि ॥३॥ (२८-१९, सिरीरागु, मः ३)
करमि मिलै ता पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ (२८-१९, सिरीरागु, मः ३)

लख चउरासीह तरसदे जिसु मेले सो मिलै हरि आइ ॥ (२६-१, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमुखि हरि पाइआ सदा हरि नामि समाइ ॥४॥६॥३६॥ (२६-१, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (२६-२)
सुख सागरु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (२६-२, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु नामु धिआईऐ सहजे नामि समाइ ॥ (२६-३, सिरीरागु, मः ३)
अंदरु रचै हरि सच सिउ रसना हरि गुण गाइ ॥१॥ (२६-३, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे जगु दुखीआ दूजै भाइ ॥ (२६-४, सिरीरागु, मः ३)
गुर सरणाई सुखु लहहि अनदिनु नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२६-४, सिरीरागु, मः ३)
साचे मैलु न लागई मनु निरमलु हरि धिआइ ॥ (२६-५, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि सबदु पछाणीऐ हरि अमृत नामि समाइ ॥ (२६-५, सिरीरागु, मः ३)
गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ अगिआनु अंधेरा जाइ ॥२॥ (२६-६, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख मैले मलु भरे हउमै तृसना विकारु ॥ (२६-७, सिरीरागु, मः ३)
बिनु सबदै मैलु न उतरै मरि जम्महि होइ खुआरु ॥ (२६-७, सिरीरागु, मः ३)
धातुर बाजी पलचि रहे ना उरवारु न पारु ॥३॥ (२६-८, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि जप तप संजमी हरि कै नामि पिआरु ॥ (२६-८, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि सदा धिआईऐ एकु नामु करतारु ॥ (२६-६, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामु धिआईऐ सभना जीआ का आधारु ॥४॥७॥४०॥ (२६-६, सिरीरागु, मः ३)
स्रीरागु महला ३ ॥ (२६-१०)
मनमुखु मोहि विआपिआ बैरागु उदासी न होइ ॥ (२६-१०, सिरीरागु, मः ३)
सबदु न चीनै सदा दुखु हरि दरगहि पति खोइ ॥ (२६-११, सिरीरागु, मः ३)
हउमै गुरमुखि खोईऐ नामि रते सुखु होइ ॥१॥ (२६-११, सिरीरागु, मः ३)
मेरे मन अहिनिसि पूरि रही नित आसा ॥ (२६-१२, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरु सेवि मोहु परजलै घर ही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ (२६-१२, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि कर्म कमावै बिगसै हरि बैरागु अनंदु ॥ (२६-१३, सिरीरागु, मः ३)
अहिनिसि भगति करे दिनु राती हउमै मारि निचंदु ॥ (२६-१३, सिरीरागु, मः ३)
वडै भागि सतसंगति पाई हरि पाइआ सहजि अनंदु ॥२॥ (२६-१४, सिरीरागु, मः ३)
सो साधू बैरागी सोई हिरदै नामु वसाए ॥ (२६-१४, सिरीरागु, मः ३)
अंतरि लागि न तामसु मूले विचहु आपु गवाए ॥ (२६-१५, सिरीरागु, मः ३)
नामु निधानु सतगुरू दिखालिआ हरि रसु पीआ अघाए ॥३॥ (२६-१५, सिरीरागु, मः ३)
जिनि किनै पाइआ साधसंगती पूरै भागि बैरागि ॥ (२६-१६, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख फिरहि न जाणहि सतगुरु हउमै अंदरि लागि ॥ (२६-१६, सिरीरागु, मः ३)
नानक सबदि रते हरि नामि रंगाए बिनु भै केही लागि ॥४॥८॥४१॥ (२६-१७, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (२६-१८)

घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥ (२६-१८, सिरीरागु, मः ३)
खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ (२६-१८, सिरीरागु, मः ३)
नामु निधानु अखुटु है वडभागि परापति होइ ॥१॥ (२६-१६, सिरीरागु, मः ३)
मेरे मन तजि निंदा हउमै अहंकारु ॥ (२६-१६, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३०

हरि जीउ सदा धिआइ तू गुरमुखि एकंकारु ॥१॥ रहाउ ॥ (३०-१, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखा के मुख उजले गुर सबदी बीचारि ॥ (३०-१, सिरीरागु, मः ३)
हलति पलति सुखु पाइदे जपि जपि रिदै मुरारि ॥ (३०-२, सिरीरागु, मः ३)
घर ही विचि महलु पाइआ गुर सबदी वीचारि ॥२॥ (३०-२, सिरीरागु, मः ३)
सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥ (३०-३, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥ (३०-३, सिरीरागु, मः ३)
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥३॥ (३०-४, सिरीरागु, मः ३)
सभना का दाता एकु है आपे बखस करेइ ॥ (३०-४, सिरीरागु, मः ३)
कहणा किछू न जावई जिसु भावै तिसु देइ ॥ (३०-५, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमुखि पाईऐ आपे जाणै सोइ ॥४॥६॥४२॥ (३०-५, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३०-६)
सचा साहिबु सेवीऐ सचु वडिआई देइ ॥ (३०-६, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी मनि वसै हउमै दूरि करेइ ॥ (३०-६, सिरीरागु, मः ३)
इहु मनु धावतु ता रहै जा आपे नदरि करेइ ॥१॥ (३०-७, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे गुरमुखि हरि नामु धिआइ ॥ (३०-७, सिरीरागु, मः ३)
नामु निधानु सद मनि वसै महली पावै थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (३०-८, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ ॥ (३०-८, सिरीरागु, मः ३)
बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञैं घरि काउ ॥ (३०-६, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती घटि चानणा सबदि मिलै हरि नाउ ॥२॥ (३०-६, सिरीरागु, मः ३)
त्रै गुण बिखिआ अंधु है माइआ मोह गुबार ॥ (३०-१०, सिरीरागु, मः ३)
लोभी अन कउ सेवदे पड़ि वेदा करै पूकार ॥ (३०-१०, सिरीरागु, मः ३)
बिखिआ अंदरि पचि मुए ना उरवारु न पारु ॥३॥ (३०-११, सिरीरागु, मः ३)
माइआ मोहि विसारिआ जगत पिता प्रतिपालि ॥ (३०-११, सिरीरागु, मः ३)
बाझहु गुरू अचेतु है सभ बधी जमकालि ॥ (३०-१२, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमति उबरे सचा नामु समालि ॥४॥१०॥४३॥ (३०-१२, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३०-१३)
त्रै गुण माइआ मोहु है गुरमुखि चउथा पदु पाइ ॥ (३०-१३, सिरीरागु, मः ३)
करि किरपा मेलाइअनु हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ (३०-१३, सिरीरागु, मः ३)
पोतै जिन कै पुंनु है तिन सतसंगति मेलाइ ॥१॥ (३०-१४, सिरीरागु, मः ३)

भाई रे गुरमति साचि रहाउ ॥ (३०-१४, सिरीरागु, मः ३)
साचो साचु कमावणा साचै सबदि मिलाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (३०-१५, सिरीरागु, मः ३)
जिनी नामु पछाणिआ तिन विटहु बलि जाउ ॥ (३०-१५, सिरीरागु, मः ३)
आपु छोडि चरणी लगा चला तिन कै भाइ ॥ (३०-१६, सिरीरागु, मः ३)
लाहा हरि हरि नामु मिलै सहजे नामि समाइ ॥२॥ (३०-१६, सिरीरागु, मः ३)
बिनु गुर महलु न पाईऐ नामु न परापति होइ ॥ (३०-१७, सिरीरागु, मः ३)
ऐसा सतगुरु लोड़ि लहु जिदू पाईऐ सचु सोइ ॥ (३०-१७, सिरीरागु, मः ३)
असुर संघारै सुखि वसै जो तिसु भावै सु होइ ॥३॥ (३०-१८, सिरीरागु, मः ३)
जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥ (३०-१८, सिरीरागु, मः ३)
एहु सहसा मूले नाही भाउ लाए जनु कोइ ॥ (३०-१९, सिरीरागु, मः ३)
नानक एक जोति दुइ मूरती सबदि मिलावा होइ ॥४॥११॥४४॥ (३०-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३१

सिरीरागु महला ३ ॥ (३१-१)
अमृतु छोडि बिखिआ लोभाणे सेवा करहि विडाणी ॥ (३१-१, सिरीरागु, मः ३)
आपणा धरमु गवावहि बूझहि नाही अनदिनु दुखि विहाणी ॥ (३१-२, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख अंध न चेतही डूबि मुए बिनु पाणी ॥१॥ (३१-२, सिरीरागु, मः ३)
मन रे सदा भजहु हरि सरणाई ॥ (३१-३, सिरीरागु, मः ३)
गुर का सबदु अंतरि वसै ता हरि विसरि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३१-३, सिरीरागु, मः ३)
इहु सरीरु माइआ का पुतला विचि हउमै दुसटी पाई ॥ (३१-४, सिरीरागु, मः ३)
आवणु जाणा जम्मणु मरणा मनमुखि पति गवाई ॥ (३१-४, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलाई ॥२॥ (३१-५, सिरीरागु, मः ३)
सतगुर की सेवा अति सुखाली जो इछे सो फलु पाए ॥ (३१-५, सिरीरागु, मः ३)
जतु सतु तपु पवितु सरीरा हरि हरि मंनि वसाए ॥ (३१-६, सिरीरागु, मः ३)
सदा अनंदि रहै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥३॥ (३१-६, सिरीरागु, मः ३)
जो सतगुर की सरणागती हउ तिन कै बलि जाउ ॥ (३१-७, सिरीरागु, मः ३)
दरि सचै सची वडिआई सहजे सचि समाउ ॥ (३१-७, सिरीरागु, मः ३)
नानक नदरी पाईऐ गुरमुखि मेलि मिलाउ ॥४॥१२॥४५॥ (३१-८, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३१-८)
मनमुख कर्म कमावणे जिउ दोहागणि तनि सीगारु ॥ (३१-९, सिरीरागु, मः ३)
सेजै कंतु न आवई नित नित होइ खुआरु ॥ (३१-९, सिरीरागु, मः ३)
पिर का महलु न पावई ना दीसै घरु बारु ॥१॥ (३१-१०, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे इक मनि नामु धिआइ ॥ (३१-१०, सिरीरागु, मः ३)
संता संगति मिलि रहै जपि राम नामु सुखु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३१-१०, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि सदा सोहागणी पिरु राखिआ उर धारि ॥ (३१-११, सिरीरागु, मः ३)

मिठा बोलहि निवि चलहि सेजै रवै भतारु ॥ (३१-१२, सिरीरागु, मः ३)
सोभावंती सोहागणी जिन गुर का हेतु अपारु ॥२॥ (३१-१२, सिरीरागु, मः ३)
पूरै भागि सतगुरु मिलै जा भागै का उदउ होइ ॥ (३१-१३, सिरीरागु, मः ३)
अंतरहु दुखु भ्रमु कटीऐ सुखु परापति होइ ॥ (३१-१३, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै भाणै जो चलै दुखु न पावै कोइ ॥३॥ (३१-१३, सिरीरागु, मः ३)
गुर के भाणे विचि अमृतु है सहजे पावै कोइ ॥ (३१-१४, सिरीरागु, मः ३)
जिना परापति तिन पीआ हउमै विचहु खोइ ॥ (३१-१४, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सचि मिलावा होइ ॥४॥१३॥४६॥ (३१-१५, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३१-१६)
जा पिरु जाणै आपणा तनु मनु अगै धरेइ ॥ (३१-१६, सिरीरागु, मः ३)
सोहागणी कर्म कमावदीआ सेई कर्म करेइ ॥ (३१-१६, सिरीरागु, मः ३)
सहजे साचि मिलावड़ा साचु वडाई देइ ॥१॥ (३१-१७, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे गुर बिनु भगति न होइ ॥ (३१-१७, सिरीरागु, मः ३)
बिनु गुर भगति न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३१-१७, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह फेरु पइआ कामणि दूजै भाइ ॥ (३१-१८, सिरीरागु, मः ३)
बिनु गुर नीद न आवई दुखी रैणि विहाइ ॥ (३१-१९, सिरीरागु, मः ३)
बिनु सबदै पिरु न पाईऐ बिरथा जनमु गवाइ ॥२॥ (३१-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३२

हउ हउ करती जगु फिरी ना धनु सम्पै नालि ॥ (३२-१, सिरीरागु, मः ३)
अंधी नामु न चेतई सभ बाधी जमकालि ॥ (३२-१, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरि मिलिऐ धनु पाइआ हरि नामा रिदै समालि ॥३॥ (३२-१, सिरीरागु, मः ३)
नामि रते से निरमले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (३२-२, सिरीरागु, मः ३)
मनु तनु राता रंग सिउ रसना रसन रसाइ ॥ (३२-३, सिरीरागु, मः ३)
नानक रंगु न उतरै जो हरि धुरि छोडिआ लाइ ॥४॥१४॥४७॥ (३२-३, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३२-४)
गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होई ॥ (३२-४, सिरीरागु, मः ३)
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै सोई ॥ (३२-५, सिरीरागु, मः ३)
हरि जीउ साचा साची बाणी सबदि मिलावा होई ॥१॥ (३२-५, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ (३२-६, सिरीरागु, मः ३)
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२-६, सिरीरागु, मः ३)
आपे जगजीवनु सुखदाता आपे बखसि मिलाए ॥ (३२-७, सिरीरागु, मः ३)
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ (३२-७, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि आपे देइ वडाई आपे सेव कराए ॥२॥ (३२-८, सिरीरागु, मः ३)
देखि कुटम्बु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ (३२-८, सिरीरागु, मः ३)

सतगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस दी कीम न पाई ॥ (३२-९, सिरीरागु, मः ३)
हरि प्रभु सखा मीतु प्रभु मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥ (३२-९, सिरीरागु, मः ३)
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ (३२-१०, सिरीरागु, मः ३)
हरि जीउ दाता भगति वछलु है करि किरपा मंनि वसाई ॥ (३२-१०, सिरीरागु, मः ३)
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥४॥१५॥४८॥ (३२-११, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३२-१२)
धनु जननी जिनि जाइआ धंनु पिता प्रधानु ॥ (३२-१२, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरु सेवि सुखु पाइआ विचहु गइआ गुमानु ॥ (३२-१२, सिरीरागु, मः ३)
दरि सेवनि संत जन खड़े पाइनि गुणी निधानु ॥१॥ (३२-१३, सिरीरागु, मः ३)
मेरे मन गुर मुखि धिआइ हरि सोइ ॥ (३२-१३, सिरीरागु, मः ३)
गुर का सबदु मनि वसै मनु तनु निरमलु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२-१४, सिरीरागु, मः ३)
करि किरपा घरि आइआ आपे मिलिआ आइ ॥ (३२-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी सालाहीऐ रंगे सहजि सुभाइ ॥ (३२-१५, सिरीरागु, मः ३)
सचै सचि समाइआ मिलि रहै न विछुड़ि जाइ ॥२॥ (३२-१५, सिरीरागु, मः ३)
जो किछु करणा सु करि रहिआ अवरु न करणा जाइ ॥ (३२-१६, सिरीरागु, मः ३)
चिरी विछुंने मेलिअनु सतगुर पंनै पाइ ॥ (३२-१६, सिरीरागु, मः ३)
आपे कार कराइसी अवरु न करणा जाइ ॥३॥ (३२-१७, सिरीरागु, मः ३)
मनु तनु रता रंग सिउ हउमै तजि विकार ॥ (३२-१७, सिरीरागु, मः ३)
अहिनिसि हिरदै रवि रहै निरभउ नामु निरंकार ॥ (३२-१८, सिरीरागु, मः ३)
नानक आपि मिलाइअनु पूरै सबदि अपार ॥४॥१६॥४९॥ (३२-१८, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३२-१९)
गोविदु गुणी निधानु है अंतु न पाइआ जाइ ॥ (३२-१९, सिरीरागु, मः ३)
कथनी बदनी न पाईऐ हउमै विचहु जाइ ॥ (३२-१९, सिरीरागु, मः ३)

पंना ३३

सतगुरि मिलिऐ सद भै रचै आपि वसै मनि आइ ॥१॥ (३३-१, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे गुरमुखि बूझै कोइ ॥ (३३-१, सिरीरागु, मः ३)
बिनु बूझे कर्म कमावणे जनमु पदारथु खोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३-२, सिरीरागु, मः ३)
जिनी चाखिआ तिनी सादु पाइआ बिनु चाखे भरमि भुलाइ ॥ (३३-२, सिरीरागु, मः ३)
अमृतु साचा नामु है कहणा कछू न जाइ ॥ (३३-३, सिरीरागु, मः ३)
पीवत हू परवाणु भइआ पूरै सबदि समाइ ॥२॥ (३३-३, सिरीरागु, मः ३)
आपे देइ त पाईऐ होरु करणा किछू न जाइ ॥ (३३-४, सिरीरागु, मः ३)
देवण वाले कै हथि दाति है गुरू दुआरै पाइ ॥ (३३-४, सिरीरागु, मः ३)
जेहा कीतोनु तेहा होआ जेहे कर्म कमाइ ॥३॥ (३३-५, सिरीरागु, मः ३)
जतु सतु संजमु नामु है विणु नावै निरमलु न होइ ॥ (३३-५, सिरीरागु, मः ३)

पूरै भागि नामु मनि वसै सबदि मिलावा होइ ॥ (३३-६, सिरीरागु, मः ३)
नानक सहजे ही रंगि वरतदा हरि गुण पावै सोइ ॥४॥१७॥५०॥ (३३-६, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३३-७)
काँइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥ (३३-७, सिरीरागु, मः ३)
अधिआतम कर्म जे करे नामु न कब ही पाइ ॥ (३३-८, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥१॥ (३३-८, सिरीरागु, मः ३)
सुणि मन मेरे भजु सतगुर सरणा ॥ (३३-९, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी छुटीऐ बिखु भवजलु सबदि गुर तरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (३३-९, सिरीरागु, मः ३)
त्रै गुण सभा धातु है दूजा भाउ विकारु ॥ (३३-१०, सिरीरागु, मः ३)
पंडितु पड़ै बंधन मोह बाधा नह बूझै बिखिआ पिआरि ॥ (३३-१०, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरि मिलिऐ तृकुटी छूटै चउथै पदि मुकति दुआरु ॥२॥ (३३-११, सिरीरागु, मः ३)
गुर ते मारगु पाईऐ चूकै मोहु गुबारु ॥ (३३-११, सिरीरागु, मः ३)
सबदि मरै ता उधरै पाए मोख दुआरु ॥ (३३-१२, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी मिलि रहै सचु नामु करतारु ॥३॥ (३३-१२, सिरीरागु, मः ३)
इहु मनूआ अति सबल है छडे न कितै उपाइ ॥ (३३-१३, सिरीरागु, मः ३)
दूजै भाइ दुखु लाइदा बहुती देइ सजाइ ॥ (३३-१३, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामि लगे से उबरे हउमै सबदि गवाइ ॥४॥१८॥५१॥ (३३-१४, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३३-१४)
किरपा करे गुरु पाईऐ हरि नामो देइ दृड़ाइ ॥ (३३-१५, सिरीरागु, मः ३)
बिनु गुर किनै न पाइओ बिरथा जनमु गवाइ ॥ (३३-१५, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख कर्म कमावणे दरगह मिलै सजाइ ॥१॥ (३३-१६, सिरीरागु, मः ३)
मन रे दूजा भाउ चुकाइ ॥ (३३-१६, सिरीरागु, मः ३)
अंतरि तेरै हरि वसै गुर सेवा सुखु पाइ ॥ रहाउ ॥ (३३-१६, सिरीरागु, मः ३)
सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥ (३३-१७, सिरीरागु, मः ३)
हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥ (३३-१७, सिरीरागु, मः ३)
मनि निर्मल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥२॥ (३३-१८, सिरीरागु, मः ३)
हउमै विचि जगु बिनसदा मरि जम्मै आवै जाइ ॥ (३३-१८, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख सबदु न जाणनी जासनि पति गवाइ ॥ (३३-१९, सिरीरागु, मः ३)
गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहै समाइ ॥३॥ (३३-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३४

सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ (३४-१, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥ (३४-१, सिरीरागु, मः ३)
नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥४॥१९॥५२॥ (३४-२, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३४-२)

जिनी पुरखी सतगुरु न सेविओ से दुखीए जुग चारि ॥ (३४-३, सिरीरागु, मः ३)
घरि होदा पुरखु न पछाणिआ अभिमानि मुठे अहंकारि ॥ (३४-३, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरू किआ फिटकिआ मंगि थके संसारि ॥ (३४-४, सिरीरागु, मः ३)
सचा सबदु न सेविओ सभि काज सवारणहारु ॥१॥ (३४-४, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे सदा हरि वेखु हदूरि ॥ (३४-५, स्रीरागु, मः ३)
जनम मरन दुखु परहरै सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (३४-५, स्रीरागु, मः ३)
सचु सलाहनि से सचे सचा नामु अधारु ॥ (३४-६, स्रीरागु, मः ३)
सची कार कमावणी सचे नालि पिआरु ॥ (३४-६, स्रीरागु, मः ३)
सचा साहु वरतदा कोइ न मेटणहारु ॥ (३४-६, स्रीरागु, मः ३)
मनमुख महलु न पाइनी कूड़ि मुठे कूड़िआर ॥२॥ (३४-७, स्रीरागु, मः ३)
हउमै करता जगु मुआ गुर बिनु घोर अंधारु ॥ (३४-७, स्रीरागु, मः ३)
माइआ मोहि विसारिआ सुखदाता दातारु ॥ (३४-८, स्रीरागु, मः ३)
सतगुरु सेवहि ता उबरहि सचु रखहि उर धारि ॥ (३४-८, स्रीरागु, मः ३)
किरपा ते हरि पाईऐ सचि सबदि वीचारि ॥३॥ (३४-९, स्रीरागु, मः ३)
सतगुरु सेवि मनु निरमला हउमै तजि विकार ॥ (३४-९, स्रीरागु, मः ३)
आपु छोडि जीवत मरै गुर कै सबदि वीचार ॥ (३४-१०, स्रीरागु, मः ३)
धंधा धावत रहि गए लागा साचि पिआरु ॥ (३४-१०, स्रीरागु, मः ३)
सचि रते मुख उजले तितु साचै दरबारि ॥४॥ (३४-११, स्रीरागु, मः ३)
सतगुरु पुरखु न मंनिओ सबदि न लगो पिआरु ॥ (३४-११, सिरीरागु, मः ३)
इसनानु दानु जेता करहि दूजै भाइ खुआरु ॥ (३४-१२, सिरीरागु, मः ३)
हरि जीउ आपणी कृपा करे ता लागै नाम पिआरु ॥ (३४-१२, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामु समालि तू गुर कै हेति अपारि ॥५॥२०॥५३॥ (३४-१३, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३४-१३)
किसु हउ सेवी किआ जपु करी सतगुर पूछउ जाइ ॥ (३४-१३, सिरीरागु, मः ३)
सतगुर का भाणा मंनि लई विचहु आपु गवाइ ॥ (३४-१४, सिरीरागु, मः ३)
एहा सेवा चाकरी नामु वसै मनि आइ ॥ (३४-१४, सिरीरागु, मः ३)
नामै ही ते सुखु पाईऐ सचै सबदि सुहाइ ॥१॥ (३४-१५, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे अनदिनु जागु हरि चेति ॥ (३४-१५, सिरीरागु, मः ३)
आपणी खेती रखि लै कूंज पड़ैगी खेति ॥१॥ रहाउ ॥ (३४-१६, सिरीरागु, मः ३)
मन कीआ इछा पूरीआ सबदि रहिआ भरपूरि ॥ (३४-१६, सिरीरागु, मः ३)
भै भाइ भगति करहि दिनु राती हरि जीउ वेखै सदा हदूरि ॥ (३४-१७, सिरीरागु, मः ३)
सचै सबदि सदा मनु राता भ्रमु गइआ सरीरहु दूरि ॥ (३४-१७, सिरीरागु, मः ३)
निरमलु साहिबु पाइआ साचा गुणी गहीरु ॥२॥ (३४-१८, सिरीरागु, मः ३)
जो जागे से उबरे सूते गए मुहाइ ॥ (३४-१८, सिरीरागु, मः ३)
सचा सबदु न पछाणिओ सुपना गइआ विहाइ ॥ (३४-१९, सिरीरागु, मः ३)

सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाइ ॥ (३४-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३५

मनमुख जनमु बिरथा गइआ किआ मुहु देसी जाइ ॥३॥ (३५-१, सिरीरागु, मः ३)
सभ किछु आपे आपि है हउमै विचि कहनु न जाइ ॥ (३५-१, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै सबदि पछाणीऐ दुखु हउमै विचहु गवाइ ॥ (३५-२, सिरीरागु, मः ३)
सतगुरु सेवनि आपणा हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ (३५-२, सिरीरागु, मः ३)
नानक दरि सचै सचिआर हहि हउ तिन बलिहारै जाउ ॥४॥२१॥५४॥ (३५-३, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३५-४)
जे वेला वखतु वीचारीऐ ता कितु वेला भगति होइ ॥ (३५-४, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु नामे रतिआ सचे सची सोइ ॥ (३५-४, सिरीरागु, मः ३)
इकु तिलु पिआरा विसरै भगति किनेही होइ ॥ (३५-५, सिरीरागु, मः ३)
मनु तनु सीतलु साच सिउ सासु न बिरथा कोइ ॥१॥ (३५-५, सिरीरागु, मः ३)
मेरे मन हरि का नामु धिआइ ॥ (३५-६, सिरीरागु, मः ३)
साची भगति ता थीऐ जा हरि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३५-६, सिरीरागु, मः ३)
सहजे खेती राहीऐ सचु नामु बीजु पाइ ॥ (३५-७, सिरीरागु, मः ३)
खेती जम्मी अगली मनूआ रजा सहजि सुभाइ ॥ (३५-७, सिरीरागु, मः ३)
गुर का सबदु अमृतु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ (३५-८, सिरीरागु, मः ३)
इहु मनु साचा सचि रता सचे रहिआ समाइ ॥२॥ (३५-८, सिरीरागु, मः ३)
आखणु वेखणु बोलणा सबदे रहिआ समाइ ॥ (३५-९, सिरीरागु, मः ३)
बाणी वजी चहु जुगी सचो सचु सुणाइ ॥ (३५-९, सिरीरागु, मः ३)
हउमै मेरा रहि गइआ सचै लइआ मिलाइ ॥ (३५-९, सिरीरागु, मः ३)
तिन कउ महलु हदूरि है जो सचि रहे लिव लाइ ॥३॥ (३५-१०, सिरीरागु, मः ३)
नदरी नामु धिआईऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ (३५-१०, सिरीरागु, मः ३)
पूरै भागि सतसंगति लहै सतगुरु भेटै जिसु आइ ॥ (३५-११, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु नामे रतिआ दुखु बिखिआ विचहु जाइ ॥ (३५-१२, सिरीरागु, मः ३)
नानक सबदि मिलावड़ा नामे नामि समाइ ॥४॥२२॥५५॥ (३५-१२, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३५-१३)
आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ (३५-१३, सिरीरागु, मः ३)
सतसंगती सदा मिलि रहे सचे के गुण सारि ॥ (३५-१३, सिरीरागु, मः ३)
दुबिधा मैलु चुकाईअनु हरि राखिआ उर धारि ॥ (३५-१४, सिरीरागु, मः ३)
सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥१॥ (३५-१४, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे हउमै मैलु भर नालि ॥ (३५-१५, सिरीरागु, मः ३)
हरि निरमलु सदा सोहणा सबदि सवारणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (३५-१५, सिरीरागु, मः ३)
सचै सबदि मनु मोहिआ प्रभि आपे लए मिलाइ ॥ (३५-१६, सिरीरागु, मः ३)

अनदिनु नामे रतिआ जोती जोति समाइ ॥ (३५-१६, सिरीरागु, मः ३)
जोती हू प्रभु जापदा बिनु सतगुर बूझ न पाइ ॥ (३५-१७, सिरीरागु, मः ३)
जिन कउ पूरबि लिखिआ सतगुरु भेटिआ तिन आइ ॥२॥ (३५-१७, सिरीरागु, मः ३)
विणु नावै सभ डुमणी दूजै भाइ खुआइ ॥ (३५-१८, सिरीरागु, मः ३)
तिसु बिनु घड़ी न जीवदी दुखी रैणि विहाइ ॥ (३५-१८, सिरीरागु, मः ३)
भरमि भुलाणा अंधुला फिरि फिरि आवै जाइ ॥ (३५-१९, सिरीरागु, मः ३)
नदरि करे प्रभु आपणी आपे लए मिलाइ ॥३॥ (३५-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३६

सभु किछु सुणदा वेखदा किउ मुकरि पइआ जाइ ॥ (३६-१, सिरीरागु, मः ३)
पापो पापु कमावदे पापे पचहि पचाइ ॥ (३६-१, सिरीरागु, मः ३)
सो प्रभु नदरि न आवई मनमुखि बूझ न पाइ ॥ (३६-२, सिरीरागु, मः ३)
जिसु वेखाले सोई वेखै नानक गुरमुखि पाइ ॥४॥२३॥५६॥ (३६-२, सिरीरागु, मः ३)
स्रीरागु महला ३ ॥ (३६-३)
बिनु गुर रोगु न तुटई हउमै पीड़ न जाइ ॥ (३६-३, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी मनि वसै नामे रहै समाइ ॥ (३६-३, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी हरि पाईऐ बिनु सबदै भरमि भुलाइ ॥१॥ (३६-४, सिरीरागु, मः ३)
मन रे निज घरि वासा होइ ॥ (३६-४, सिरीरागु, मः ३)
राम नामु सालाहि तू फिरि आवण जाणु न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६-५, सिरीरागु, मः ३)
हरि इको दाता वरतदा दूजा अवरु न कोइ ॥ (३६-५, सिरीरागु, मः ३)
सबदि सालाही मनि वसै सहजे ही सुखु होइ ॥ (३६-६, सिरीरागु, मः ३)
सभ नदरी अंदरि वेखदा जै भावै तै देइ ॥२॥ (३६-६, सिरीरागु, मः ३)
हउमै सभा गणत है गणतै नउ सुखु नाहि ॥ (३६-७, सिरीरागु, मः ३)
बिखु की कार कमावणी बिखु ही माहि समाहि ॥ (३६-७, सिरीरागु, मः ३)
बिनु नावै ठउरु न पाइनी जमपुरि दूख सहाहि ॥३॥ (३६-८, सिरीरागु, मः ३)
जीउ पिंडु सभु तिस दा तिसै दा आधारु ॥ (३६-८, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी बुझीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ (३६-९, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामु सलाहि तूं अंतु न पारावारु ॥४॥२४॥५७॥ (३६-९, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३६-१०)
तिना अनंदु सदा सुखु है जिना सचु नामु आधारु ॥ (३६-१०, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी सचु पाइआ दूख निवारणहारु ॥ (३६-१०, सिरीरागु, मः ३)
सदा सदा साचे गुण गावहि साचै नाइ पिआरु ॥ (३६-११, सिरीरागु, मः ३)
किरपा करि कै आपणी दितोनु भगति भंडारु ॥१॥ (३६-११, सिरीरागु, मः ३)
मन रे सदा अनंदु गुण गाइ ॥ (३६-१२, सिरीरागु, मः ३)
सची बाणी हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६-१२, सिरीरागु, मः ३)

सची भगती मनु लालु थीआ रता सहजि सुभाइ ॥ (३६-१३, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी मनु मोहिआ कहणा कछू न जाइ ॥ (३६-१३, सिरीरागु, मः ३)
जिहवा रती सबदि सचै अमृतु पीवै रसि गुण गाइ ॥ (३६-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि एहु रंगु पाईऐ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ (३६-१४, सिरीरागु, मः ३)
संसा इहु संसारु है सुतिआ रैणि विहाइ ॥ (३६-१५, सिरीरागु, मः ३)
इकि आपणै भाणै कढि लइअनु आपे लइओनु मिलाइ ॥ (३६-१५, सिरीरागु, मः ३)
आपे ही आपि मनि वसिआ माइआ मोहु चुकाइ ॥ (३६-१६, सिरीरागु, मः ३)
आपि वडाई दितीअनु गुरमुखि देइ बुझाइ ॥३॥ (३६-१६, सिरीरागु, मः ३)
सभना का दाता एकु है भुलिआ लए समझाइ ॥ (३६-१७, सिरीरागु, मः ३)
इकि आपे आपि खुआइअनु दूजै छडिअनु लाइ ॥ (३६-१७, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती हरि पाईऐ जोती जोति मिलाइ ॥ (३६-१८, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु नामे रतिआ नानक नामि समाइ ॥४॥२५॥५८॥ (३६-१८, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३६-१९)
गुणवंती सचु पाइआ तृसना तजि विकार ॥ (३६-१९, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी मनु रंगिआ रसना प्रेम पिआरि ॥ (३६-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३७

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ करि वेखहु मनि वीचारि ॥ (३७-१, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख मैलु न उतरै जिचरु गुर सबदि न करे पिआरु ॥१॥ (३७-१, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे सतिगुर कै भाणै चलु ॥ (३७-२, सिरीरागु, मः ३)
निज घरि वसहि अमृतु पीवहि ता सुख लहहि महलु ॥१॥ रहाउ ॥ (३७-२, सिरीरागु, मः ३)
अउगुणवंती गुणु को नही बहणि न मिलै हदूरि ॥ (३७-३, सिरीरागु, मः ३)
मनमुखि सबदु न जाणई अवगणि सो प्रभु दूरि ॥ (३७-३, सिरीरागु, मः ३)
जिनी सचु पछाणिआ सचि रते भरपूरि ॥ (३७-४, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी मनु बेधिआ प्रभु मिलिआ आपि हदूरि ॥२॥ (३७-४, सिरीरागु, मः ३)
आपे रंगणि रंगिओनु सबदे लइओनु मिलाइ ॥ (३७-५, सिरीरागु, मः ३)
सचा रंगु न उतरै जो सचि रते लिव लाइ ॥ (३७-५, सिरीरागु, मः ३)
चारे कुंडा भवि थके मनमुख बूझ न पाइ ॥ (३७-६, सिरीरागु, मः ३)
जिसु सतिगुरु मेले सो मिलै सचै सबदि समाइ ॥३॥ (३७-६, सिरीरागु, मः ३)
मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुखु काटै कोइ ॥ (३७-७, सिरीरागु, मः ३)
मिलि प्रीतम दुखु कटिआ सबदि मिलावा होइ ॥ (३७-७, सिरीरागु, मः ३)
सचु खटणा सचु रासि है सचे सची सोइ ॥ (३७-८, सिरीरागु, मः ३)
सचि मिले से न विछुड़हि नानक गुरमुखि होइ ॥४॥२६॥५९॥ (३७-८, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३७-९)
आपे कारणु करता करे सृसटि देखै आपि उपाइ ॥ (३७-९, सिरीरागु, मः ३)

सभ एको इकु वरतदा अलखु न लखिआ जाइ ॥ (३७-९, सिरीरागु, मः ३)
आपे प्रभू दइआलु है आपे देइ बुझाइ ॥ (३७-१०, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती सद मनि वसिआ सचि रहे लिव लाइ ॥१॥ (३७-१०, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे गुर की मंनि लै रजाइ ॥ (३७-११, सिरीरागु, मः ३)
मनु तनु सीतलु सभु थीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७-११, सिरीरागु, मः ३)
जिनि करि कारणु धारिआ सोई सार करेइ ॥ (३७-१२, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै सबदि पछाणीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥ (३७-१२, सिरीरागु, मः ३)
से जन सबदे सोहणे तितु सचै दरबारि ॥ (३७-१३, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि सचै सबदि रते आपि मेले करतारि ॥२॥ (३७-१३, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती सचु सलाहणा जिस दा अंतु न पारावारु ॥ (३७-१४, सिरीरागु, मः ३)
घटि घटि आपे हुकमि वसै हुकमे करे बीचारु ॥ (३७-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी सालाहीऐ हउमै विचहु खोइ ॥ (३७-१५, सिरीरागु, मः ३)
सा धन नावै बाहरी अवगणवंती रोइ ॥३॥ (३७-१५, सिरीरागु, मः ३)
सचु सलाही सचि लगा सचै नाइ तृपति होइ ॥ (३७-१६, सिरीरागु, मः ३)
गुण वीचारी गुण संग्रहा अवगुण कढा धोइ ॥ (३७-१६, सिरीरागु, मः ३)
आपे मेलि मिलाइदा फिरि वेछोड़ा न होइ ॥ (३७-१७, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरु सालाही आपणा जिदू पाई प्रभु सोइ ॥४॥२७॥६०॥ (३७-१७, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३७-१८)
सुणि सुणि काम गहेलीए किआ चलहि बाह लुडाइ ॥ (३७-१८, सिरीरागु, मः ३)
आपणा पिरु न पछाणही किआ मुहु देसहि जाइ ॥ (३७-१८, सिरीरागु, मः ३)
जिनी सखीं कंतु पछाणिआ हउ तिन कै लागउ पाइ ॥ (३७-१९, सिरीरागु, मः ३)
तिन ही जैसी थी रहा सतसंगति मेलि मिलाइ ॥१॥ (३७-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३८

मुंधे कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥ (३८-१, सिरीरागु, मः ३)
पिरु प्रभु साचा सोहणा पाईऐ गुर बीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ (३८-१, सिरीरागु, मः ३)
मनमुखि कंतु न पछाणई तिन किउ रैणि विहाइ ॥ (३८-२, सिरीरागु, मः ३)
गरबि अटीआ तृसना जलहि दुखु पावहि दूजै भाइ ॥ (३८-२, सिरीरागु, मः ३)
सबदि रतीआ सोहागणी तिन विचहु हउमै जाइ ॥ (३८-३, सिरीरागु, मः ३)
सदा पिरु रावहि आपणा तिना सुखे सुखि विहाइ ॥२॥ (३८-३, सिरीरागु, मः ३)
गिआन विहूणी पिर मुतीआ पिरमु न पाइआ जाइ ॥ (३८-४, सिरीरागु, मः ३)
अगिआन मती अंधेरु है बिनु पिर देखे भुख न जाइ ॥ (३८-५, सिरीरागु, मः ३)
आवहु मिलहु सहेलीहो मै पिरु देहु मिलाइ ॥ (३८-५, सिरीरागु, मः ३)
पूरै भागि सतिगुरु मिलै पिरु पाइआ सचि समाइ ॥३॥ (३८-६, सिरीरागु, मः ३)
से सहीआ सोहागणी जिन कउ नदरि करेइ ॥ (३८-६, सिरीरागु, मः ३)

खसमु पछाणहि आपणा तनु मनु आगै देइ ॥ (३८-७, सिरीरागु, मः ३)
घरि वरु पाइआ आपणा हउमै दूरि करेइ ॥ (३८-७, सिरीरागु, मः ३)
नानक सोभावंतीआ सोहागणी अनदिनु भगति करेइ ॥४॥२८॥६१॥ (३८-८, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३८-८)
इकि पिरु रावहि आपणा हउ कै दरि पूछउ जाइ ॥ (३८-८, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु सेवी भाउ करि मै पिरु देहु मिलाइ ॥ (३८-९, सिरीरागु, मः ३)
सभु उपाए आपे वेखै किसु नेड़ै किसु दूरि ॥ (३८-९, सिरीरागु, मः ३)
जिनि पिरु संगे जाणिआ पिरु रावे सदा हदूरि ॥१॥ (३८-१०, सिरीरागु, मः ३)
मुंधे तू चलु गुर कै भाइ ॥ (३८-१०, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु रावहि पिरु आपणा सहजे सचि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८-११, सिरीरागु, मः ३)
सबदि रतीआ सोहागणी सचै सबदि सीगारि ॥ (३८-११, सिरीरागु, मः ३)
हरि वरु पाइनि घरि आपणै गुर कै हेति पिआरि ॥ (३८-१२, सिरीरागु, मः ३)
सेज सुहावी हरि रंगि रवै भगति भरे भंडार ॥ (३८-१२, सिरीरागु, मः ३)
सो प्रभु प्रीतमु मनि वसै जि सभसै देइ अधारु ॥२॥ (३८-१३, सिरीरागु, मः ३)
पिरु सालाहनि आपणा तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ (३८-१३, सिरीरागु, मः ३)
मनु तनु अरपी सिरु देई तिन कै लागा पाइ ॥ (३८-१४, सिरीरागु, मः ३)
जिनी इकु पछाणिआ दूजा भाउ चुकाइ ॥ (३८-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि नामु पछाणीऐ नानक सचि समाइ ॥३॥२९॥६२॥ (३८-१५, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३८-१६)
हरि जी सचा सचु तू सभु किछु तेरै चीरै ॥ (३८-१६, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह तरसदे फिरे बिनु गुर भेटे पीरै ॥ (३८-१६, सिरीरागु, मः ३)
हरि जीउ बखसे बखसि लए सूख सदा सरीरै ॥ (३८-१७, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी सेव करी सचु गहिर गम्भीरै ॥१॥ (३८-१७, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे नामि रते सुखु होइ ॥ (३८-१८, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती नामु सलाहीऐ दूजा अवरु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८-१८, सिरीरागु, मः ३)
धर्म राइ नो हुकमु है बहि सचा धरमु बीचारि ॥ (३८-१८, सिरीरागु, मः ३)
दूजै भाइ दुसटु आतमा ओहु तेरी सरकार ॥ (३८-१९, सिरीरागु, मः ३)
अधिआतमी हरि गुण तासु मनि जपहि एकु मुरारि ॥ (३८-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ३९

तिन की सेवा धर्म राइ करै धन्नु सवारणहारु ॥२॥ (३९-१, सिरीरागु, मः ३)
मन के बिकार मनहि तजै मनि चूकै मोहु अभिमानु ॥ (३९-१, सिरीरागु, मः ३)
आतम रामु पछाणिआ सहजे नामि समानु ॥ (३९-२, सिरीरागु, मः ३)
बिनु सतिगुर मुकति न पाईऐ मनमुखि फिरै दिवानु ॥ (३९-२, सिरीरागु, मः ३)
सबदु न चीनै कथनी बदनी करे बिखिआ माहि समानु ॥३॥ (३९-३, सिरीरागु, मः ३)

सभु किछु आपे आपि है दूजा अवरु न कोइ ॥ (३६-४, सिरीरागु, मः ३)
जिउ बोलाए तिउ बोलीऐ जा आपि बुलाए सोइ ॥ (३६-४, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि बाणी ब्रह्मु है सबदि मिलावा होइ ॥ (३६-५, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामु समालि तू जितु सेविऐ सुखु होइ ॥४॥३०॥६३॥ (३६-५, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (३६-६)
जगि हउमै मैलु दुखु पाइआ मलु लागी दूजै भाइ ॥ (३६-६, सिरीरागु, मः ३)
मलु हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीर्थ नाइ ॥ (३६-६, सिरीरागु, मः ३)
बहु बिधि कर्म कमावदे दूणी मलु लागी आइ ॥ (३६-७, सिरीरागु, मः ३)
पड़िऐ मैलु न उतरै पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥ (३६-७, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमलु होइ ॥ (३६-८, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख हरि हरि करि थके मैलु न सकी धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६-८, सिरीरागु, मः ३)
मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥ (३६-९, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ॥ (३६-९, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी मनि वसै मलु हउमै जाइ समाइ ॥ (३६-१०, सिरीरागु, मः ३)
जिउ अंधेरै दीपकु बालीऐ तिउ गुर गिआनि अगिआनु तजाइ ॥२॥ (३६-१०, सिरीरागु, मः ३)
हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार ॥ (३६-११, सिरीरागु, मः ३)
करणै वाला विसरिआ दूजै भाइ पिआरु ॥ (३६-१२, सिरीरागु, मः ३)
माइआ जेवडु दुखु नही सभि भवि थके संसारु ॥ (३६-१२, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती सुखु पाईऐ सचु नामु उर धारि ॥३॥ (३६-१२, सिरीरागु, मः ३)
जिस नो मेले सो मिलै हउ तिसु बलिहारै जाउ ॥ (३६-१३, सिरीरागु, मः ३)
ए मन भगती रतिआ सचु बाणी निज थाउ ॥ (३६-१३, सिरीरागु, मः ३)
मनि रते जिहवा रती हरि गुण सचे गाउ ॥ (३६-१४, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामु न वीसरै सचे माहि समाउ ॥४॥३१॥६४॥ (३६-१४, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ४ घरु १ ॥ (३६-१५)
मै मनि तनि बिरहु अति अगला किउ प्रीतमु मिलै घरि आइ ॥ (३६-१५, सिरीरागु, मः ४)
जा देखा प्रभु आपणा प्रभि देखिऐ दुखु जाइ ॥ (३६-१६, सिरीरागु, मः ४)
जाइ पुछा तिन सजणा प्रभु कितु बिधि मिलै मिलाइ ॥१॥ (३६-१६, सिरीरागु, मः ४)
मेरे सतिगुरा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ (३६-१७, सिरीरागु, मः ४)
हम मूरख मुगध सरणागती करि किरपा मेले हरि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६-१७, सिरीरागु, मः ४)
सतिगुरु दाता हरि नाम का प्रभु आपि मिलावै सोइ ॥ (३६-१८, सिरीरागु, मः ४)
सतिगुरि हरि प्रभु बुझिआ गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (३६-१८, सिरीरागु, मः ४)
हउ गुर सरणाई ढहि पवा करि दइआ मेले प्रभु सोइ ॥२॥ (३६-१९, सिरीरागु, मः ४)
मनहठि किनै न पाइआ करि उपाव थके सभु कोइ ॥ (३६-१९, सिरीरागु, मः ४)

सहस सिआणप करि रहे मनि कोरै रंगु न होइ ॥ (४०-१, सिरीरागु, मः ४)
कूड़ि कपटि किनै न पाइओ जो बीजै खावै सोइ ॥३॥ (४०-१, सिरीरागु, मः ४)
सभना तेरी आस प्रभु सभ जीअ तेरे तूं रासि ॥ (४०-२, सिरीरागु, मः ४)
प्रभ तुधहु खाली को नही दरि गुरमुखा नो साबासि ॥ (४०-२, सिरीरागु, मः ४)
बिखु भउजल डुबदे कढि लै जन नानक की अरदासि ॥४॥१॥६५॥ (४०-३, सिरीरागु, मः ४)
सिरीरागु महला ४ ॥ (४०-४)
नामु मिलै मनु तृपतीऐ बिनु नामै ध्रिगु जीवासु ॥ (४०-४, सिरीरागु, मः ४)
कोई गुरमुखि सजणु जे मिलै मै दसे प्रभु गुणतासु ॥ (४०-४, सिरीरागु, मः ४)
हउ तिसु विटहु चउ खन्नीऐ मै नाम करे परगासु ॥१॥ (४०-५, सिरीरागु, मः ४)
मेरे प्रीतमा हउ जीवा नामु धिआइ ॥ (४०-५, सिरीरागु, मः ४)
बिनु नावै जीवणु ना थीऐ मेरे सतिगुर नामु दृड़ाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०-६, सिरीरागु, मः ४)
नामु अमोलकु रतनु है पूरे सतिगुर पासि ॥ (४०-६, सिरीरागु, मः ४)
सतिगुर सेवै लगिआ कढि रतनु देवै परगासि ॥ (४०-७, सिरीरागु, मः ४)
धन्नु वडभागी वड भागीआ जो आइ मिले गुर पासि ॥२॥ (४०-७, सिरीरागु, मः ४)
जिना सतिगुरु पुरखु न भेटिओ से भागहीण वसि काल ॥ (४०-८, सिरीरागु, मः ४)
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि विचि विसटा करि विकराल ॥ (४०-८, सिरीरागु, मः ४)
ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥३॥ (४०-९, सिरीरागु, मः ४)
सतिगुरु पुरखु अमृत सरु वडभागी नावहि आइ ॥ (४०-१०, सिरीरागु, मः ४)
उन जनम जनम की मैलु उतरै निर्मल नामु दृड़ाइ ॥ (४०-१०, सिरीरागु, मः ४)
जन नानक उतम पदु पाइआ सतिगुर की लिव लाइ ॥४॥२॥६६॥ (४०-११, सिरीरागु, मः ४)
सिरीरागु महला ४ ॥ (४०-१२)
गुण गावा गुण विथरा गुण बोली मेरी माइ ॥ (४०-१२, सिरीरागु, मः ४)
गुरमुखि सजणु गुणकारीआ मिलि सजण हरि गुण गाइ ॥ (४०-१२, सिरीरागु, मः ४)
हीरै हीरु मिलि बेधिआ रंगि चलूलै नाइ ॥१॥ (४०-१३, सिरीरागु, मः ४)
मेरे गोविंदा गुण गावा तृपति मनि होइ ॥ (४०-१३, सिरीरागु, मः ४)
अंतरि पिआस हरि नाम की गुरु तुसि मिलावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०-१४, सिरीरागु, मः ४)
मनु रंगहु वडभागीहो गुरु तुठा करे पसाउ ॥ (४०-१४, सिरीरागु, मः ४)
गुरु नामु दृड़ाए रंग सिउ हउ सतिगुर कै बलि जाउ ॥ (४०-१५, सिरीरागु, मः ४)
बिनु सतिगुर हरि नामु न लभई लख कोटी कर्म कमाउ ॥२॥ (४०-१५, सिरीरागु, मः ४)
बिनु भागा सतिगुरु ना मिलै घरि बैठिआ निकटि नित पासि ॥ (४०-१६, सिरीरागु, मः ४)
अंतरि अगिआन दुखु भरमु है विचि पड़दा दूरि पईआसि ॥ (४०-१७, सिरीरागु, मः ४)
बिनु सतिगुर भेटे कंचनु ना थीऐ मनमुखु लोहु बूडा बेड़ी पासि ॥३॥ (४०-१७, सिरीरागु, मः ४)
सतिगुरु बोहिथु हरि नाव है कितु बिधि चड़िआ जाइ ॥ (४०-१८, सिरीरागु, मः ४)

सतिगुर कै भाणै जो चलै विचि बोहिथ बैठा आइ ॥ (४०-१८, सिरीरागु, मः ४)
धन्नु धन्नु वडभागी नानका जिना सतिगुरु लए मिलाइ ॥४॥३॥६७॥ (४०-१९, सिरीरागु, मः ४)

पन्ना ४१

सिरीरागु महला ४ ॥ (४१-१)
हउ पंथु दसाई नित खड़ी कोई प्रभु दसे तिनि जाउ ॥ (४१-१, सिरीरागु, मः ४)
जिनी मेरा पिआरा राविआ तिन पीछै लागि फिराउ ॥ (४१-१, सिरीरागु, मः ४)
करि मिन्नति करि जोदड़ी मै प्रभु मिलणै का चाउ ॥१॥ (४१-२, सिरीरागु, मः ४)
मेरे भाई जना कोई मो कउ हरि प्रभु मेलि मिलाइ ॥ (४१-२, सिरीरागु, मः ४)
हउ सतिगुर विटहु वारिआ जिनि हरि प्रभु दीआ दिखाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४१-३, सिरीरागु, मः ४)
होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ॥ (४१-४, सिरीरागु, मः ४)
निमाणिआ गुरु माणु है गुरु सतिगुरु करे साबासि ॥ (४१-४, सिरीरागु, मः ४)
हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभु पासि ॥२॥ (४१-५, सिरीरागु, मः ४)
सतिगुर नो सभ को लोचदा जेता जगतु सभु कोइ ॥ (४१-५, सिरीरागु, मः ४)
बिनु भागा दरसनु ना थीऐ भागहीण बहि रोइ ॥ (४१-६, सिरीरागु, मः ४)
जो हरि प्रभ भाणा सो थीआ धुरि लिखिआ न मेटै कोइ ॥३॥ (४१-६, सिरीरागु, मः ४)
आपे सतिगुरु आपि हरि आपे मेलि मिलाइ ॥ (४१-७, सिरीरागु, मः ४)
आपि दइआ करि मेलसी गुर सतिगुर पीछै पाइ ॥ (४१-७, सिरीरागु, मः ४)
सभु जगजीवनु जगि आपि है नानक जलु जलहि समाइ ॥४॥४॥६८॥ (४१-८, सिरीरागु, मः ४)
सिरीरागु महला ४ ॥ (४१-९)
रसु अमृतु नामु रसु अति भला कितु बिधि मिलै रसु खाइ ॥ (४१-९, सिरीरागु, मः ४)
जाइ पुछहु सोहागणी तुसा किउ करि मिलिआ प्रभु आइ ॥ (४१-९, सिरीरागु, मः ४)
ओइ वेपरवाह न बोलनी हउ मलि मलि धोवा तिन पाइ ॥१॥ (४१-१०, सिरीरागु, मः ४)
भाई रे मिलि सजण हरि गुण सारि ॥ (४१-११, सिरीरागु, मः ४)
सजणु सतिगुरु पुरखु है दुखु कढै हउमै मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (४१-११, सिरीरागु, मः ४)
गुरमुखीआ सोहागणी तिन दइआ पई मनि आइ ॥ (४१-१२, सिरीरागु, मः ४)
सतिगुर वचनु रतन्नु है जो मन्ने सु हरि रसु खाइ ॥ (४१-१२, सिरीरागु, मः ४)
से वडभागी वड जाणीअहि जिन हरि रसु खाधा गुर भाइ ॥२॥ (४१-१३, सिरीरागु, मः ४)
इहु हरि रसु वणि तिणि सभतु है भागहीण नही खाइ ॥ (४१-१३, सिरीरागु, मः ४)
बिनु सतिगुर पलै ना पवै मनमुख रहे बिललाइ ॥ (४१-१४, सिरीरागु, मः ४)
ओइ सतिगुर आगै ना निवहि ओना अंतरि क्रोधु बलाइ ॥३॥ (४१-१४, सिरीरागु, मः ४)
हरि हरि हरि रसु आपि है आपे हरि रसु होइ ॥ (४१-१५, सिरीरागु, मः ४)
आपि दइआ करि देवसी गुरमुखि अमृतु चोइ ॥ (४१-१६, सिरीरागु, मः ४)
सभु तनु मनु हरिआ होइआ नानक हरि वसिआ मनि सोइ ॥४॥५॥६९॥ (४१-१६, सिरीरागु, मः ४)
सिरीरागु महला ४ ॥ (४१-१७)

दिनसु चड़ै फिरि आथवै रैणि सबाई जाइ ॥ (४१-१७, सिरीरागु, मः ४)
आव घटै नरु ना बुझै निति मूसा लाजु टुकाइ ॥ (४१-१७, सिरीरागु, मः ४)
गुड़ु मिठा माइआ पसरिआ मनमुखु लगि माखी पचै पचाइ ॥१॥ (४१-१८, सिरीरागु, मः ४)
भाई रे मै मीतु सखा प्रभु सोइ ॥ (४१-१९, सिरीरागु, मः ४)
पुतु कलतु मोहु बिखु है अंति बेली कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४१-१९, सिरीरागु, मः ४)
गुरमति हरि लिव उबरे अलिपतु रहे सरणाइ ॥ (४१-१९, सिरीरागु, मः ४)

पन्ना ४२

ओनी चलणु सदा निहालिआ हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ (४२-१, सिरीरागु, मः ४)
गुरमुखि दरगह मन्नीअहि हरि आपि लए गलि लाइ ॥२॥ (४२-२, सिरीरागु, मः ४)
गुरमुखा नो पंथु परगटा दरि ठाक न कोई पाइ ॥ (४२-२, सिरीरागु, मः ४)
हरि नामु सलाहनि नामु मनि नामि रहनि लिव लाइ ॥ (४२-३, सिरीरागु, मः ४)
अनहद धुनी दरि वजदे दरि सचै सोभा पाइ ॥३॥ (४२-३, सिरीरागु, मः ४)
जिनी गुरमुखि नामु सलाहिआ तिना सभ को कहै साबासि ॥ (४२-४, सिरीरागु, मः ४)
तिन की संगति देहि प्रभ मै जाचिक की अरदासि ॥ (४२-४, सिरीरागु, मः ४)
नानक भाग वडे तिना गुरमुखा जिन अंतरि नामु परगासि ॥४॥३३॥३१॥६॥७०॥ (४२-५, सिरीरागु, मः ४)
सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ (४२-६)
किआ तू रता देखि कै पुत्र कलत्र सीगार ॥ (४२-६, सिरीरागु, मः ५)
रस भोगहि खुसीआ करहि माणहि रंग अपार ॥ (४२-६, सिरीरागु, मः ५)
बहुतु करहि फुरमाइसी वरतहि होइ अफार ॥ (४२-७, सिरीरागु, मः ५)
करता चिति न आवई मनमुख अंध गवार ॥१॥ (४२-७, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन सुखदाता हरि सोइ ॥ (४२-८, सिरीरागु, मः ५)
गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४२-८, सिरीरागु, मः ५)
कपड़ि भोगि लपटाइआ सुइना रुपा खाकु ॥ (४२-९, सिरीरागु, मः ५)
हैवर गैवर बहु रंगे कीए रथ अथाक ॥ (४२-९, सिरीरागु, मः ५)
किस ही चिति न पावही बिसरिआ सभ साक ॥ (४२-१०, सिरीरागु, मः ५)
सिरजणहारि भुलाइआ विणु नावै नापाक ॥२॥ (४२-१०, सिरीरागु, मः ५)
लैदा बद दुआइ तूं माइआ करहि इकत ॥ (४२-१०, सिरीरागु, मः ५)
जिस नो तूं पतीआइदा सो सणु तुझै अनित ॥ (४२-११, सिरीरागु, मः ५)
अहंकारु करहि अहंकारीआ विआपिआ मन की मति ॥ (४२-११, सिरीरागु, मः ५)
तिनि प्रभि आपि भुलाइआ ना तिसु जाति न पति ॥३॥ (४२-१२, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुरि पुरखि मिलाइआ इको सजणु सोइ ॥ (४२-१३, सिरीरागु, मः ५)
हरि जन का राखा एकु है किआ माणस हउमै रोइ ॥ (४२-१३, सिरीरागु, मः ५)
जो हरि जन भावै सो करे दरि फेरु न पावै कोइ ॥ (४२-१३, सिरीरागु, मः ५)
नानक रता रंगि हरि सभ जग महि चानणु होइ ॥४॥१॥७१॥ (४२-१४, सिरीरागु, मः ५)

सिरीरागु महला ५ ॥ (४२-१५)
मनि बिलासु बहु रंगु घणा द्रिसटि भूलि खुसीआ ॥ (४२-१५, सिरीरागु, मः ५)
छत्रधार बादिसाहीआ विचि सहसे परीआ ॥१॥ (४२-१५, सिरीरागु, मः ५)
भाई रे सुखु साधसंगि पाइआ ॥ (४२-१६, सिरीरागु, मः ५)
लिखिआ लेखु तिनि पुरखि बिधातै दुखु सहसा मिटि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४२-१६, सिरीरागु, मः ५)
जेते थान थनंतरा तेते भवि आइआ ॥ (४२-१७, सिरीरागु, मः ५)
धन पाती वड भूमीआ मेरी मेरी करि परिआ ॥२॥ (४२-१७, सिरीरागु, मः ५)
हुकमु चलाए निसंग होइ वरतै अफरिआ ॥ (४२-१८, सिरीरागु, मः ५)
सभु को वसगति करि लइओनु बिनु नावै खाकु रलिआ ॥३॥ (४२-१८, सिरीरागु, मः ५)
कोटि तेतीस सेवका सिध साधिक दरि खरिआ ॥ (४२-१९, सिरीरागु, मः ५)
गिरम्बारी वड साहबी सभु नानक सुपनु थीआ ॥४॥२॥७२॥ (४२-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ४३

सिरीरागु महला ५ ॥ (४३-१)
भलके उठि पपोलीऐ विणु बुझे मुगध अजाणि ॥ (४३-१, सिरीरागु, मः ५)
सो प्रभु चिति न आइओ छुटैगी बेबाणि ॥ (४३-२, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर सेती चितु लाइ सदा सदा रंगु माणि ॥१॥ (४३-२, सिरीरागु, मः ५)
प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि ॥ (४३-३, सिरीरागु, मः ५)
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि ॥१॥ रहाउ ॥ (४३-३, सिरीरागु, मः ५)
कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाही कालु ॥ (४३-३, सिरीरागु, मः ५)
ओतै साथि मनुखु है फाथा माइआ जालि ॥ (४३-४, सिरीरागु, मः ५)
मुकते सेई भालीअहि जि सचा नामु समालि ॥२॥ (४३-४, सिरीरागु, मः ५)
जो घरु छडि गवावणा सो लगा मन माहि ॥ (४३-५, सिरीरागु, मः ५)
जिथै जाइ तुधु वरतणा तिस की चिंता नाहि ॥ (४३-५, सिरीरागु, मः ५)
फाथे सेई निकले जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥ (४३-६, सिरीरागु, मः ५)
कोई रखि न सकई दूजा को न दिखाइ ॥ (४३-६, सिरीरागु, मः ५)
चारे कुंडा भालि कै आइ पइआ सरणाइ ॥ (४३-७, सिरीरागु, मः ५)
नानक सचै पातिसाहि डुबदा लइआ कढाइ ॥४॥३॥७३॥ (४३-७, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४३-८)
घड़ी मुहत का पाहुणा काज सवारणहारु ॥ (४३-८, सिरीरागु, मः ५)
माइआ कामि विआपिआ समझै नाही गावारु ॥ (४३-८, सिरीरागु, मः ५)
उठि चलिआ पछुताइआ परिआ वसि जंदार ॥१॥ (४३-९, सिरीरागु, मः ५)
अंधे तूं बैठा कंधी पाहि ॥ (४३-९, सिरीरागु, मः ५)
जे होवी पूरबि लिखिआ ता गुर का बचनु कमाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (४३-१०, सिरीरागु, मः ५)
हरी नाही नह डडुरी पकी वढणहार ॥ (४३-१०, सिरीरागु, मः ५)

लै लै दात पहुतिआ लावे करि तईआरु ॥ (४३-११, सिरीरागु, मः ५)
जा होआ हुकमु किरसाण दा ता लुणि मिणिआ खेतारु ॥२॥ (४३-११, सिरीरागु, मः ५)
पहिला पहरु धंधै गइआ दूजै भरि सोइआ ॥ (४३-१२, सिरीरागु, मः ५)
तीजै झाख झखाइआ चउथै भोरु भइआ ॥ (४३-१२, सिरीरागु, मः ५)
कद ही चिति न आइओ जिनि जीउ पिंडु दीआ ॥३॥ (४३-१२, सिरीरागु, मः ५)
साधसंगति कउ वारिआ जीउ कीआ कुरबाणु ॥ (४३-१३, सिरीरागु, मः ५)
जिस ते सोझी मनि पई मिलिआ पुरखु सुजाणु ॥ (४३-१४, सिरीरागु, मः ५)
नानक डिठा सदा नालि हरि अंतरजामी जाणु ॥४॥४॥७४॥ (४३-१४, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४३-१५)
सभे गला विसरनु इको विसरि न जाउ ॥ (४३-१५, सिरीरागु, मः ५)
धंधा सभु जलाइ कै गुरि नामु दीआ सचु सुआउ ॥ (४३-१५, सिरीरागु, मः ५)
आसा सभे लाहि कै इका आस कमाउ ॥ (४३-१६, सिरीरागु, मः ५)
जिनी सतिगुरु सेविआ तिन अगै मिलिआ थाउ ॥१॥ (४३-१६, सिरीरागु, मः ५)
मन मेरे करते नो सालाहि ॥ (४३-१७, सिरीरागु, मः ५)
सभे छडि सिआणपा गुर की पैरी पाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (४३-१७, सिरीरागु, मः ५)
दुख भुख नह विआपई जे सुखदाता मनि होइ ॥ (४३-१८, सिरीरागु, मः ५)
कित ही कंमि न छिजीऐ जा हिरदै सचा सोइ ॥ (४३-१८, सिरीरागु, मः ५)
जिसु तूं रखहि हथ दे तिसु मारि न सकै कोइ ॥ (४३-१८, सिरीरागु, मः ५)
सुखदाता गुरु सेवीऐ सभि अवगण कढै धोइ ॥२॥ (४३-१९, सिरीरागु, मः ५)
सेवा मंगै सेवको लाईआँ अपुनी सेव ॥ (४३-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ४४

साधू संगु मसकते तूठै पावा देव ॥ (४४-१, सिरीरागु, मः ५)
सभु किछु वसगति साहिबै आपे करण करेव ॥ (४४-१, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर कै बलिहारणै मनसा सभ पूरेव ॥३॥ (४४-२, सिरीरागु, मः ५)
इको दिसै सजणो इको भाई मीतु ॥ (४४-२, सिरीरागु, मः ५)
इकसै दी सामगरी इकसै दी है रीति ॥ (४४-२, सिरीरागु, मः ५)
इकस सिउ मनु मानिआ ता होआ निहचलु चीतु ॥ (४४-३, सिरीरागु, मः ५)
सचु खाणा सचु पैनणा टेक नानक सचु कीतु ॥४॥५॥७५॥ (४४-३, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४४-४)
सभे थोक परापते जे आवै इकु हथि ॥ (४४-४, सिरीरागु, मः ५)
जनमु पदारथु सफलु है जे सचा सबदु कथि ॥ (४४-५, सिरीरागु, मः ५)
गुर ते महलु परापते जिसु लिखिआ होवै मथि ॥१॥ (४४-५, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन एकस सिउ चितु लाइ ॥ (४४-६, सिरीरागु, मः ५)
एकस बिनु सभ धंधु है सभ मिथिआ मोहु माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४४-६, सिरीरागु, मः ५)

लख खुसीआ पातिसाहीआ जे सतिगुरु नदरि करेइ ॥ (४४-७, सिरीरागु, मः ५)
निमख एक हरि नामु देइ मेरा मनु तनु सीतलु होइ ॥ (४४-७, सिरीरागु, मः ५)
जिस कउ पूरबि लिखिआ तिनि सतिगुर चरन गहे ॥२॥ (४४-८, सिरीरागु, मः ५)
सफल मूरतु सफला घड़ी जितु सचे नालि पिआरु ॥ (४४-८, सिरीरागु, मः ५)
दूखु संतापु न लगई जिसु हरि का नामु अधारु ॥ (४४-९, सिरीरागु, मः ५)
बाह पकड़ि गुरि काढिआ सोई उतरिआ पारि ॥३॥ (४४-९, सिरीरागु, मः ५)
थानु सुहावा पवितु है जिथै संत सभा ॥ (४४-१०, सिरीरागु, मः ५)
ढोई तिस ही नो मिलै जिनि पूरा गुरू लभा ॥ (४४-१०, सिरीरागु, मः ५)
नानक बधा घरु तहाँ जिथै मिरतु न जनमु जरा ॥४॥६॥७६॥ (४४-११, सिरीरागु, मः ५)
स्रीरागु महला ५ ॥ (४४-११)
सोई धिआईऐ जीअड़े सिरि साहाँ पातिसाहु ॥ (४४-११, स्रीरागु, मः ५)
तिस ही की करि आस मन जिस का सभसु वेसाहु ॥ (४४-१२, स्रीरागु, मः ५)
सभि सिआणपा छडि कै गुर की चरणी पाहु ॥१॥ (४४-१२, स्रीरागु, मः ५)
मन मेरे सुख सहज सेती जपि नाउ ॥ (४४-१३, स्रीरागु, मः ५)
आठ पहर प्रभु धिआइ तूं गुण गोइंद नित गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (४४-१३, स्रीरागु, मः ५)
तिस की सरनी परु मना जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (४४-१४, स्रीरागु, मः ५)
जिसु सिमरत सुखु होइ घणा दुखु दरदु न मूले होइ ॥ (४४-१४, स्रीरागु, मः ५)
सदा सदा करि चाकरी प्रभु साहिबु सचा सोइ ॥२॥ (४४-१५, स्रीरागु, मः ५)
साधसंगति होइ निरमला कटीऐ जम की फास ॥ (४४-१५, स्रीरागु, मः ५)
सुखदाता भै भंजनो तिसु आगै करि अरदासि ॥ (४४-१६, स्रीरागु, मः ५)
मिहर करे जिसु मिहरवानु ताँ कारजु आवै रासि ॥३॥ (४४-१६, स्रीरागु, मः ५)
बहुतो बहुतु वखाणीऐ ऊचो ऊचा थाउ ॥ (४४-१७, स्रीरागु, मः ५)
वरना चिहना बाहरा कीमति कहि न सकाउ ॥ (४४-१७, स्रीरागु, मः ५)
नानक कउ प्रभ मइआ करि सचु देवहु अपुणा नाउ ॥४॥७॥७७॥ (४४-१८, स्रीरागु, मः ५)
स्रीरागु महला ५ ॥ (४४-१८)
नामु धिआए सो सुखी तिसु मुखु ऊजलु होइ ॥ (४४-१८, स्रीरागु, मः ५)
पूरे गुर ते पाईऐ परगटु सभनी लोइ ॥ (४४-१९, स्रीरागु, मः ५)
साधसंगति कै घरि वसै एको सचा सोइ ॥१॥ (४४-१९, स्रीरागु, मः ५)

पन्ना ४५

मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ (४५-१, स्रीरागु, मः ५)
नामु सहाई सदा संगि आगै लए छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४५-१, स्रीरागु, मः ५)
दुनीआ कीआ वडिआईआ कवनै आवहि कामि ॥ (४५-२, स्रीरागु, मः ५)
माइआ का रंगु सभु फिका जातो बिनसि निदानि ॥ (४५-२, स्रीरागु, मः ५)
जा कै हिरदै हरि वसै सो पूरा प्रधानु ॥२॥ (४५-३, स्रीरागु, मः ५)

साधू की होहु रेणुका अपणा आपु तिआगि ॥ (४५-३, स्रीरागु, मः ५)
उपाव सिआणप सगल छडि गुर की चरणी लागु ॥ (४५-३, स्रीरागु, मः ५)
तिसहि परापति रतनु होइ जिसु मसतकि होवै भागु ॥३॥ (४५-४, स्रीरागु, मः ५)
तिसै परापति भाईहो जिसु देवै प्रभु आपि ॥ (४५-५, स्रीरागु, मः ५)
सतिगुर की सेवा सो करे जिसु बिनसै हउमै तापु ॥ (४५-५, स्रीरागु, मः ५)
नानक कउ गुरु भेटिआ बिनसे सगल संताप ॥४॥८॥७८॥ (४५-५, स्रीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४५-६)
इकु पछाणू जीअ का इको रखणहारु ॥ (४५-६, सिरीरागु, मः ५)
इकस का मनि आसरा इको प्राण अधारु ॥ (४५-७, सिरीरागु, मः ५)
तिसु सरणाई सदा सुखु पारब्रह्मु करतारु ॥१॥ (४५-७, सिरीरागु, मः ५)
मन मेरे सगल उपाव तिआगु ॥ (४५-८, सिरीरागु, मः ५)
गुरु पूरा आराधि नित इकसु की लिव लागु ॥१॥ रहाउ ॥ (४५-८, सिरीरागु, मः ५)
इको भाई मितु इकु इको मात पिता ॥ (४५-८, सिरीरागु, मः ५)
इकस की मनि टेक है जिनि जीउ पिंडु दिता ॥ (४५-९, सिरीरागु, मः ५)
सो प्रभु मनहु न विसरै जिनि सभु किछु वसि कीता ॥२॥ (४५-९, सिरीरागु, मः ५)
घरि इको बाहरि इको थान थनंतरि आपि ॥ (४५-१०, सिरीरागु, मः ५)
जीअ जंत सभि जिनि कीए आठ पहर तिसु जापि ॥ (४५-१०, सिरीरागु, मः ५)
इकसु सेती रतिआ न होवी सोग संतापु ॥३॥ (४५-११, सिरीरागु, मः ५)
पारब्रह्मु प्रभु एकु है दूजा नाही कोइ ॥ (४५-११, सिरीरागु, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तिस का जो तिसु भावै सु होइ ॥ (४५-१२, सिरीरागु, मः ५)
गुरि पूरै पूरा भइआ जपि नानक सचा सोइ ॥४॥९॥७९॥ (४५-१२, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४५-१३)
जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे प्रधान ॥ (४५-१३, सिरीरागु, मः ५)
जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु ॥ (४५-१३, सिरीरागु, मः ५)
जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु ॥१॥ (४५-१४, सिरीरागु, मः ५)
मन मेरे एको नामु धिआइ ॥ (४५-१५, सिरीरागु, मः ५)
सर्ब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४५-१५, सिरीरागु, मः ५)
जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल ॥ (४५-१६, सिरीरागु, मः ५)
साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल ॥ (४५-१६, सिरीरागु, मः ५)
जनम मरण की मलु कटीऐ गुर दरसनु देखि निहाल ॥२॥ (४५-१६, सिरीरागु, मः ५)
थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रह्मु प्रभु सोइ ॥ (४५-१७, सिरीरागु, मः ५)
सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ ॥ (४५-१८, सिरीरागु, मः ५)
तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ ॥३॥ (४५-१८, सिरीरागु, मः ५)
जिन मनि वसिआ पारब्रह्मु से पूरे प्रधान ॥ (४५-१८, सिरीरागु, मः ५)
तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान ॥ (४५-१९, सिरीरागु, मः ५)

जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान ॥४॥१०॥८०॥ (४५-१६, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ४६

सिरीरागु महला ५ ॥ (४६-१)
मिलि सतिगुर सभु दुखु गइआ हरि सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (४६-१, सिरीरागु, मः ५)
अंतरि जोति प्रगासीआ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (४६-२, सिरीरागु, मः ५)
मिलि साधू मुखु ऊजला पूरबि लिखिआ पाइ ॥ (४६-२, सिरीरागु, मः ५)
गुण गोविंद नित गावणे निर्मल साचै नाइ ॥१॥ (४६-३, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन गुर सबदी सुखु होइ ॥ (४६-३, सिरीरागु, मः ५)
गुर पूरे की चाकरी बिरथा जाइ न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६-४, सिरीरागु, मः ५)
मन कीआ इछाँ पूरीआ पाइआ नामु निधानु ॥ (४६-४, सिरीरागु, मः ५)
अंतरजामी सदा संगि करणैहारु पछानु ॥ (४६-५, सिरीरागु, मः ५)
गुर परसादी मुखु ऊजला जपि नामु दानु इसनानु ॥ (४६-५, सिरीरागु, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु बिनसिआ तजिआ सभु अभिमानु ॥२॥ (४६-६, सिरीरागु, मः ५)
पाइआ लाहा लाभु नामु पूरन होए काम ॥ (४६-६, सिरीरागु, मः ५)
करि किरपा प्रभि मेलिआ दीआ अपणा नामु ॥ (४६-७, सिरीरागु, मः ५)
आवण जाणा रहि गइआ आपि होआ मिहरवानु ॥ (४६-७, सिरीरागु, मः ५)
सचु महलु घरु पाइआ गुर का सबदु पछानु ॥३॥ (४६-८, सिरीरागु, मः ५)
भगत जना कउ राखदा आपणी किरपा धारि ॥ (४६-८, सिरीरागु, मः ५)
हलति पलति मुख ऊजले साचे के गुण सारि ॥ (४६-९, सिरीरागु, मः ५)
आठ पहर गुण सारदे रते रंगि अपार ॥ (४६-९, सिरीरागु, मः ५)
पारब्रह्मु सुख सागरो नानक सद बलिहार ॥४॥११॥८१॥ (४६-१०, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४६-१०)
पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥ (४६-१०, सिरीरागु, मः ५)
करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अमृत नामु ॥ (४६-११, सिरीरागु, मः ५)
जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥१॥ (४६-११, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन प्रभ सरणाई पाइ ॥ (४६-१२, सिरीरागु, मः ५)
हरि बिनु दूजा को नही एको नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६-१२, सिरीरागु, मः ५)
कीमति कहणु न जाईऐ सागरु गुणी अथाहु ॥ (४६-१३, सिरीरागु, मः ५)
वडभागी मिलु संगती सचा सबदु विसाहु ॥ (४६-१३, सिरीरागु, मः ५)
करि सेवा सुख सागरै सिरि साहा पातिसाहु ॥२॥ (४६-१४, सिरीरागु, मः ५)
चरण कमल का आसरा दूजा नाही ठाउ ॥ (४६-१४, सिरीरागु, मः ५)
मै धर तेरी पारब्रह्म तेरै ताणि रहाउ ॥ (४६-१५, सिरीरागु, मः ५)
निमाणिआ प्रभु माणु तूं तेरै संगि समाउ ॥३॥ (४६-१५, सिरीरागु, मः ५)
हरि जपीऐ आराधीऐ आठ पहर गोविंदु ॥ (४६-१५, सिरीरागु, मः ५)

जीअ प्राण तनु धनु रखे करि किरपा राखी जिंदु ॥ (४६-१६, सिरीरागु, मः ५)
नानक सगले दोख उतारिअनु प्रभु पारब्रह्म बखसिंदु ॥४॥१२॥८२॥ (४६-१६, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४६-१७)
प्रीति लगी तिसु सच सिउ मरै न आवै जाइ ॥ (४६-१७, सिरीरागु, मः ५)
ना वेछोड़िआ विछुड़ै सभ महि रहिआ समाइ ॥ (४६-१८, सिरीरागु, मः ५)
दीन दरद दुख भंजना सेवक कै सत भाइ ॥ (४६-१८, सिरीरागु, मः ५)
अचरज रूपु निरंजनो गुरि मेलाइआ माइ ॥१॥ (४६-१६, सिरीरागु, मः ५)
भाई रे मीतु करहु प्रभु सोइ ॥ (४६-१६, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ४७

माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४७-१, सिरीरागु, मः ५)
दाना दाता सीलवंतु निरमलु रूपु अपारु ॥ (४७-१, सिरीरागु, मः ५)
सखा सहाई अति वडा ऊचा वडा अपारु ॥ (४७-२, सिरीरागु, मः ५)
बालकु बिरधि न जाणीऐ निहचलु तिसु दरवारु ॥ (४७-२, सिरीरागु, मः ५)
जो मंगीऐ सोई पाईऐ निधारा आधारु ॥२॥ (४७-३, सिरीरागु, मः ५)
जिसु पेखत किलविख हिरहि मनि तनि होवै साँति ॥ (४७-३, सिरीरागु, मः ५)
इक मनि एकु धिआईऐ मन की लाहि भराँति ॥ (४७-४, सिरीरागु, मः ५)
गुण निधानु नवतनु सदा पूरन जा की दाति ॥ (४७-४, सिरीरागु, मः ५)
सदा सदा आराधीऐ दिनु विसरहु नही राति ॥३॥ (४७-५, सिरीरागु, मः ५)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन का सखा गोविंदु ॥ (४७-५, सिरीरागु, मः ५)
तनु मनु धनु अरपी सभो सगल वारीऐ इह जिंदु ॥ (४७-६, सिरीरागु, मः ५)
देखै सुणै हदूरि सद घटि घटि ब्रह्मु रविंदु ॥ (४७-६, सिरीरागु, मः ५)
अकिरतघणा नो पालदा प्रभ नानक सद बखसिंदु ॥४॥१३॥८३॥ (४७-७, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४७-७)
मनु तनु धनु जिनि प्रभि दीआ रखिआ सहजि सवारि ॥ (४७-७, सिरीरागु, मः ५)
सर्ब कला करि थापिआ अंतरि जोति अपार ॥ (४७-८, सिरीरागु, मः ५)
सदा सदा प्रभु सिमरीऐ अंतरि रखु उर धारि ॥१॥ (४७-६, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (४७-६, सिरीरागु, मः ५)
प्रभ सरणाई सदा रहु दूखु न विआपै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४७-६, सिरीरागु, मः ५)
रतन पदार्थ माणका सुइना रुपा खाकु ॥ (४७-१०, सिरीरागु, मः ५)
मात पिता सुत बंधपा कूड़े सभे साक ॥ (४७-१०, सिरीरागु, मः ५)
जिनि कीता तिसहि न जाणई मनमुख पसु नापाक ॥२॥ (४७-११, सिरीरागु, मः ५)
अंतरि बाहरि रवि रहिआ तिस नो जाणै दूरि ॥ (४७-११, सिरीरागु, मः ५)
तृसना लागी रचि रहिआ अंतरि हउमै कूरि ॥ (४७-१२, सिरीरागु, मः ५)
भगती नाम विहूणिआ आवहि वंञहि पूर ॥३॥ (४७-१२, सिरीरागु, मः ५)

राखि लेहु प्रभु करणहार जीअ जंत करि दइआ ॥ (४७-१३, सिरीरागु, मः ५)
बिनु प्रभ कोइ न रखनहारु महा बिकट जम भइआ ॥ (४७-१३, सिरीरागु, मः ५)
नानक नामु न वीसरउ करि अपुनी हरि मइआ ॥४॥१४॥८४॥ (४७-१४, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४७-१५)
मेरा तनु अरु धनु मेरा राज रूप मै देसु ॥ (४७-१५, सिरीरागु, मः ५)
सुत दारा बनिता अनेक बहुतु रंग अरु वेस ॥ (४७-१५, सिरीरागु, मः ५)
हरि नामु रिदै न वसई कारजि कितै न लेखि ॥१॥ (४७-१६, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन हरि हरि नामु धिआइ ॥ (४७-१६, सिरीरागु, मः ५)
करि संगति नित साध की गुर चरणी चितु लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४७-१७, सिरीरागु, मः ५)
नामु निधानु धिआईऐ मसतकि होवै भागु ॥ (४७-१७, सिरीरागु, मः ५)
कारज सभि सवारीअहि गुर की चरणी लागु ॥ (४७-१८, सिरीरागु, मः ५)
हउमै रोगु भ्रमु कटीऐ ना आवै ना जागु ॥२॥ (४७-१८, सिरीरागु, मः ५)
करि संगति तू साध की अठसठि तीर्थ नाउ ॥ (४७-१९, सिरीरागु, मः ५)
जीउ प्राण मनु तनु हरे साचा एहु सुआउ ॥ (४७-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ४८

ऐथै मिलहि वडाईआ दरगहि पावहि थाउ ॥३॥ (४८-१, सिरीरागु, मः ५)
करे कराए आपि प्रभु सभु किछु तिस ही हाथि ॥ (४८-१, सिरीरागु, मः ५)
मारि आपे जीवालदा अंतरि बाहरि साथि ॥ (४८-२, सिरीरागु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती सर्ब घटा के नाथ ॥४॥१५॥८५॥ (४८-२, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४८-३)
सरणि पए प्रभ आपणे गुरु होआ किरपालु ॥ (४८-३, सिरीरागु, मः ५)
सतगुर कै उपदेसिऐ बिनसे सर्ब जंजाल ॥ (४८-३, सिरीरागु, मः ५)
अंदरु लगा राम नामि अमृत नदरि निहालु ॥१॥ (४८-४, सिरीरागु, मः ५)
मन मेरे सतिगुर सेवा सारु ॥ (४८-४, सिरीरागु, मः ५)
करे दइआ प्रभु आपणी इक निमख न मनहु विसारु ॥ रहाउ ॥ (४८-५, सिरीरागु, मः ५)
गुण गोविंद नित गावीअहि अवगुण कटणहार ॥ (४८-५, सिरीरागु, मः ५)
बिनु हरि नाम न सुखु होइ करि डिठे बिसथार ॥ (४८-६, सिरीरागु, मः ५)
सहजे सिफती रतिआ भवजलु उतरे पारि ॥२॥ (४८-६, सिरीरागु, मः ५)
तीर्थ वरत लख संजमा पाईऐ साधू धूरि ॥ (४८-७, सिरीरागु, मः ५)
लूकि कमावै किस ते जा वेखै सदा हदूरि ॥ (४८-७, सिरीरागु, मः ५)
थान थनंतरि रवि रहिआ प्रभु मेरा भरपूरि ॥३॥ (४८-८, सिरीरागु, मः ५)
सचु पातिसाही अमरु सचु सचे सचा थानु ॥ (४८-८, सिरीरागु, मः ५)
सची कुदरति धारीअनु सचि सिरजिओनु जहानु ॥ (४८-८, सिरीरागु, मः ५)
नानक जपीऐ सचु नामु हउ सदा सदा कुरबानु ॥४॥१६॥८६॥ (४८-९, सिरीरागु, मः ५)

सिरीरागु महला ५ ॥ (४८-१०)
उदमु करि हरि जापणा वडभागी धनु खाटि ॥ (४८-१०, सिरीरागु, मः ५)
संतसंगि हरि सिमरणा मलु जनम जनम की काटि ॥१॥ (४८-१०, सिरीरागु, मः ५)
मन मेरे राम नामु जपि जापु ॥ (४८-११, सिरीरागु, मः ५)
मन इछे फल भुंचि तू सभु चूकै सोगु संतापु ॥ रहाउ ॥ (४८-११, सिरीरागु, मः ५)
जिसु कारणि तनु धारिआ सो प्रभु डिठा नालि ॥ (४८-१२, सिरीरागु, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरिआ प्रभु आपणी नदरि निहालि ॥२॥ (४८-१२, सिरीरागु, मः ५)
मनु तनु निरमलु होइआ लागी साचु परीति ॥ (४८-१३, सिरीरागु, मः ५)
चरण भजे पारब्रह्म के सभि जप तप तिन ही कीति ॥३॥ (४८-१३, सिरीरागु, मः ५)
रतन जवेहर माणिका अमृतु हरि का नाउ ॥ (४८-१४, सिरीरागु, मः ५)
सूख सहज आनंद रस जन नानक हरि गुण गाउ ॥४॥१७॥८७॥ (४८-१५, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४८-१५)
सोई सासतु सउणु सोइ जितु जपीऐ हरि नाउ ॥ (४८-१५, सिरीरागु, मः ५)
चरण कमल गुरि धनु दीआ मिलिआ निथावे थाउ ॥ (४८-१६, सिरीरागु, मः ५)
साची पूंजी सचु संजमो आठ पहर गुण गाउ ॥ (४८-१७, सिरीरागु, मः ५)
करि किरपा प्रभु भेटिआ मरणु न आवणु जाउ ॥१॥ (४८-१७, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन हरि भजु सदा इक रंगि ॥ (४८-१८, सिरीरागु, मः ५)
घट घट अंतरि रवि रहिआ सदा सहाई संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (४८-१८, सिरीरागु, मः ५)
सुखा की मिति किआ गणी जा सिमरी गोविंदु ॥ (४८-१९, सिरीरागु, मः ५)
जिन चाखिआ से तृपतासिआ उह रसु जाणै जिंदु ॥ (४८-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ४९

संता संगति मनि वसै प्रभु प्रीतमु बखसिंदु ॥ (४९-१, सिरीरागु, मः ५)
जिनि सेविआ प्रभु आपणा सोई राज नरिंदु ॥२॥ (४९-१, सिरीरागु, मः ५)
अउसरि हरि जसु गुण रमण जितु कोटि मजन इसनानु ॥ (४९-२, सिरीरागु, मः ५)
रसना उचरै गुणवती कोइ न पुजै दानु ॥ (४९-२, सिरीरागु, मः ५)
दृसटि धारि मनि तनि वसै दइआल पुरखु मिहरवानु ॥ (४९-३, सिरीरागु, मः ५)
जीउ पिंडु धनु तिस दा हउ सदा सदा कुरबानु ॥३॥ (४९-३, सिरीरागु, मः ५)
मिलिआ कदे न विछुड़ै जो मेलिआ करतारि ॥ (४९-४, सिरीरागु, मः ५)
दासा के बंधन कटिआ साचै सिरजणहारि ॥ (४९-४, सिरीरागु, मः ५)
भूला मारगि पाइओनु गुण अवगुण न बीचारि ॥ (४९-५, सिरीरागु, मः ५)
नानक तिसु सरणागती जि सगल घटा आधारु ॥४॥१८॥८८॥ (४९-५, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४९-६)
रसना सचा सिमरीऐ मनु तनु निरमलु होइ ॥ (४९-६, सिरीरागु, मः ५)
मात पिता साक अगले तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (४९-७, सिरीरागु, मः ५)

मिहर करे जे आपणी चसा न विसरै सोइ ॥१॥ (४९-७, सिरीरागु, मः ५)
मन मेरे साचा सेवि जिचरु सासु ॥ (४९-८, सिरीरागु, मः ५)
बिनु सचे सभ कूड़ु है अंते होइ बिनासु ॥१॥ रहाउ ॥ (४९-८, सिरीरागु, मः ५)
साहिबु मेरा निरमला तिसु बिनु रहणु न जाइ ॥ (४९-८, सिरीरागु, मः ५)
मेरै मनि तनि भुख अति अगली कोई आणि मिलावै माइ ॥ (४९-९, सिरीरागु, मः ५)
चारे कुंडा भालीआ सह बिनु अवरु न जाइ ॥२॥ (४९-१०, सिरीरागु, मः ५)
तिसु आगै अरदासि करि जो मेले करतारु ॥ (४९-१०, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुरु दाता नाम का पूरा जिसु भंडारु ॥ (४९-१०, सिरीरागु, मः ५)
सदा सदा सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥३॥ (४९-११, सिरीरागु, मः ५)
परवदगारु सालाहीऐ जिस दे चलत अनेक ॥ (४९-११, सिरीरागु, मः ५)
सदा सदा आराधीऐ एहा मति विसेख ॥ (४९-१२, सिरीरागु, मः ५)
मनि तनि मिठा तिसु लगै जिसु मसतकि नानक लेख ॥४॥१९॥८९॥ (४९-१२, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (४९-१३)
संत जनहु मिलि भाईहो सचा नामु समालि ॥ (४९-१३, सिरीरागु, मः ५)
तोसा बंधहु जीअ का ऐथै ओथै नालि ॥ (४९-१३, सिरीरागु, मः ५)
गुर पूरे ते पाईऐ अपणी नदरि निहालि ॥ (४९-१४, सिरीरागु, मः ५)
करमि परापति तिसु होवै जिस नो होइ दइआलु ॥१॥ (४९-१४, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (४९-१५, सिरीरागु, मः ५)
दूजा थाउ न को सुझै गुर मेले सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४९-१५, सिरीरागु, मः ५)
सगल पदारथ तिसु मिले जिनि गुरु डिठा जाइ ॥ (४९-१६, सिरीरागु, मः ५)
गुर चरणी जिन मनु लगा से वडभागी माइ ॥ (४९-१६, सिरीरागु, मः ५)
गुरु दाता समरथु गुरु गुरु सभ महि रहिआ समाइ ॥ (४९-१७, सिरीरागु, मः ५)
गुरु परमेसरु पारब्रह्मु गुरु डुबदा लए तराइ ॥२॥ (४९-१७, सिरीरागु, मः ५)
कितु मुखि गुरु सालाहीऐ करण कारण समरथु ॥ (४९-१८, सिरीरागु, मः ५)
से मथे निहचल रहे जिन गुरि धारिआ हथु ॥ (४९-१८, सिरीरागु, मः ५)
गुरि अमृत नामु पीआलिआ जनम मरन का पथु ॥ (४९-१९, सिरीरागु, मः ५)
गुरु परमेसरु सेविआ भै भंजनु दुख लथु ॥३॥ (४९-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ५०

सतिगुरु गहिर गभीरु है सुख सागरु अघखंडु ॥ (५०-१, सिरीरागु, मः ५)
जिनि गुरु सेविआ आपणा जमदूत न लागै डंडु ॥ (५०-१, सिरीरागु, मः ५)
गुर नालि तुलि न लगई खोजि डिठा ब्रहमंडु ॥ (५०-२, सिरीरागु, मः ५)
नामु निधानु सतिगुरि दीआ सुखु नानक मन महि मंडु ॥४॥२०॥९०॥ (५०-२, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (५०-३)
मिठा करि कै खाइआ कउड़ा उपजिआ सादु ॥ (५०-३, सिरीरागु, मः ५)

भाई मीत सुरिद कीए बिखिआ रचिआ बादु ॥ (५०-४, सिरीरागु, मः ५)
जाँदे बिलम न होवई विणु नावै बिसमादु ॥१॥ (५०-४, सिरीरागु, मः ५)
मेरे मन सतगुर की सेवा लागु ॥ (५०-५, सिरीरागु, मः ५)
जो दीसै सो विणसणा मन की मति तिआगु ॥१॥ रहाउ ॥ (५०-५, सिरीरागु, मः ५)
जिउ कूकरु हरकाइआ धावै दह दिस जाइ ॥ (५०-६, सिरीरागु, मः ५)
लोभी जंतु न जाणई भखु अभखु सभ खाइ ॥ (५०-६, सिरीरागु, मः ५)
काम क्रोध मदि बिआपिआ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२॥ (५०-७, सिरीरागु, मः ५)
माइआ जालु पसारिआ भीतरि चोग बणाइ ॥ (५०-७, सिरीरागु, मः ५)
तृसना पंखी फासिआ निकसु न पाए माइ ॥ (५०-८, सिरीरागु, मः ५)
जिनि कीता तिसहि न जाणई फिरि फिरि आवै जाइ ॥३॥ (५०-८, सिरीरागु, मः ५)
अनिक प्रकारी मोहिआ बहु बिधि इहु संसारु ॥ (५०-९, सिरीरागु, मः ५)
जिस नो रखै सो रहै सम्रिथु पुरखु अपारु ॥ (५०-९, सिरीरागु, मः ५)
हरि जन हरि लिव उधरे नानक सद बलिहारु ॥४॥२१॥९१॥ (५०-९, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ घरु २ ॥ (५०-१०)
गोइलि आइआ गोइली किआ तिसु डम्फु पसारु ॥ (५०-१०, सिरीरागु, मः ५)
मुहलति पुन्नी चलणा तूं सम्मलु घर बारु ॥१॥ (५०-११, सिरीरागु, मः ५)
हरि गुण गाउ मना सतिगुरु सेवि पिआरि ॥ (५०-११, सिरीरागु, मः ५)
किआ थोड़ड़ी बात गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥ (५०-१२, सिरीरागु, मः ५)
जैसे रैणि पराहुणे उठि चलसहि परभाति ॥ (५०-१२, सिरीरागु, मः ५)
किआ तूं रता गिरसत सिउ सभ फुला की बागाति ॥२॥ (५०-१३, सिरीरागु, मः ५)
मेरी मेरी किआ करहि जिनि दीआ सो प्रभु लोड़ि ॥ (५०-१३, सिरीरागु, मः ५)
सरपर उठी चलणा छडि जासी लख करोड़ि ॥३॥ (५०-१४, सिरीरागु, मः ५)
लख चउरासीह भ्रमतिआ दुलभ जनमु पाइओइ ॥ (५०-१४, सिरीरागु, मः ५)
नानक नामु समालि तूं सो दिनु नेड़ा आइओइ ॥४॥२२॥९२॥ (५०-१५, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (५०-१६)
तिचरु वसहि सुहेलड़ी जिचरु साथी नालि ॥ (५०-१६, सिरीरागु, मः ५)
जा साथी उठी चलिआ ता धन खाकू रालि ॥१॥ (५०-१६, सिरीरागु, मः ५)
मनि बैरागु भइआ दरसनु देखणै का चाउ ॥ (५०-१७, सिरीरागु, मः ५)
धन्नु सु तेरा थानु ॥१॥ रहाउ ॥ (५०-१७, सिरीरागु, मः ५)
जिचरु वसिआ कंतु घरि जीउ जीउ सभि कहाति ॥ (५०-१७, सिरीरागु, मः ५)
जा उठी चलसी कंतड़ा ता कोइ न पुछै तेरी बात ॥२॥ (५०-१८, सिरीरागु, मः ५)
पेईअड़ै सहु सेवि तूं साहुरड़ै सुखि वसु ॥ (५०-१८, सिरीरागु, मः ५)
गुर मिलि चजु अचारु सिखु तुधु कदे न लगै दुखु ॥३॥ (५०-१९, सिरीरागु, मः ५)
सभना साहुरै वंञणा सभि मुकलावणहार ॥ (५०-१९, सिरीरागु, मः ५)

नानक धन्नु सोहागणी जिन सह नालि पिआरु ॥४॥२३॥९३॥ (५१-१, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ घरु ६ ॥ (५१-२)
करण कारण एकु ओही जिनि कीआ आकारु ॥ (५१-२, सिरीरागु, मः ५)
तिसहि धिआवहु मन मेरे सर्ब को आधारु ॥१॥ (५१-२, सिरीरागु, मः ५)
गुर के चरन मन महि धिआइ ॥ (५१-३, सिरीरागु, मः ५)
छोडि सगल सिआणपा साचि सबदि लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५१-३, सिरीरागु, मः ५)
दुखु कलेसु न भउ बिआपै गुर मंत्रु हिरदै होइ ॥ (५१-४, सिरीरागु, मः ५)
कोटि जतना करि रहे गुर बिनु तरिओ न कोइ ॥२॥ (५१-४, सिरीरागु, मः ५)
देखि दरसनु मनु साधारै पाप सगले जाहि ॥ (५१-५, सिरीरागु, मः ५)
हउ तिन कै बलिहारणै जि गुर की पैरी पाहि ॥३॥ (५१-५, सिरीरागु, मः ५)
साधसंगति मनि वसै साचु हरि का नाउ ॥ (५१-६, सिरीरागु, मः ५)
से वडभागी नानका जिना मनि इहु भाउ ॥४॥२४॥९४॥ (५१-६, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (५१-७)
संचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥ (५१-७, सिरीरागु, मः ५)
जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥१॥ (५१-७, सिरीरागु, मः ५)
जपि मन नामु एकु अपारु ॥ (५१-८, सिरीरागु, मः ५)
प्रान मनु तनु जिनहि दीआ रिदे का आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (५१-८, सिरीरागु, मः ५)
कामि क्रोधि अहंकारि माते विआपिआ संसारु ॥ (५१-९, सिरीरागु, मः ५)
पउ संत सरणी लागु चरणी मिटै दूखु अंधारु ॥२॥ (५१-९, सिरीरागु, मः ५)
सतु संतोखु दइआ कमावै एह करणी सार ॥ (५१-१०, सिरीरागु, मः ५)
आपु छोडि सभ होइ रेणा जिसु देइ प्रभु निरंकारु ॥३॥ (५१-१०, सिरीरागु, मः ५)
जो दीसै सो सगल तूंहै पसरिआ पासारु ॥ (५१-११, सिरीरागु, मः ५)
कहु नानक गुरि भरमु काटिआ सगल ब्रह्म बीचारु ॥४॥२५॥९५॥ (५१-११, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (५१-१२)
दुकृत सुकृत मंधे संसारु सगलाणा ॥ (५१-१२, सिरीरागु, मः ५)
दुहहूं ते रहत भगतु है कोई विरला जाणा ॥१॥ (५१-१३, सिरीरागु, मः ५)
ठाकुरु सरबे समाणा ॥ (५१-१३, सिरीरागु, मः ५)
किआ कहउ सुणउ सुआमी तूं वड पुरखु सुजाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (५१-१३, सिरीरागु, मः ५)
मान अभिमान मंधे सो सेवकु नाही ॥ (५१-१४, सिरीरागु, मः ५)
तत समदरसी संतहु कोई कोटि मंधाही ॥२॥ (५१-१४, सिरीरागु, मः ५)
कहन कहावन इहु कीरति करला ॥ (५१-१५, सिरीरागु, मः ५)
कथन कहन ते मुकता गुरमुखि कोई विरला ॥३॥ (५१-१५, सिरीरागु, मः ५)
गति अविगति कछु नदरि न आइआ ॥ (५१-१६, सिरीरागु, मः ५)

संतन की रेणु नानक दानु पाइआ ॥४॥२६॥९६॥ (५१-१६, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ घरु ७ ॥ (५१-१७)
तेरै भरोसै पिआरे मै लाड लडाइआ ॥ (५१-१७, सिरीरागु, मः ५)
भूलहि चूकहि बारिक तूं हरि पिता माइआ ॥१॥ (५१-१७, सिरीरागु, मः ५)
सुहेला कहनु कहावनु ॥ (५१-१७, सिरीरागु, मः ५)
तेरा बिखमु भावनु ॥१॥ रहाउ ॥ (५१-१७, सिरीरागु, मः ५)
हउ माणु ताणु करउ तेरा हउ जानउ आपा ॥ (५१-१७, सिरीरागु, मः ५)
सभ ही मधि सभहि ते बाहरि बेमुहताज बापा ॥२॥ (५१-१८, सिरीरागु, मः ५)
पिता हउ जानउ नाही तेरी कवन जुगता ॥ (५१-१८, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ५२

बंधन मुकतु संतहु मेरी राखै ममता ॥३॥ (५२-१, सिरीरागु, मः ५)
भए किरपाल ठाकुर रहिओ आवण जाणा ॥ (५२-१, सिरीरागु, मः ५)
गुर मिलि नानक पारब्रह्मु पछाणा ॥४॥२७॥९७॥ (५२-१, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ घरु १ ॥ (५२-२)
संत जना मिलि भाईआ कटिअड़ा जमकालु ॥ (५२-२, सिरीरागु, मः ५)
सचा साहिबु मनि वुठा होआ खसमु दइआलु ॥ (५२-३, सिरीरागु, मः ५)
पूरा सतिगुरु भेटिआ बिनसिआ सभु जंजालु ॥१॥ (५२-३, सिरीरागु, मः ५)
मेरे सतिगुरा हउ तुधु विटहु कुरबाणु ॥ (५२-४, सिरीरागु, मः ५)
तेरे दरसन कउ बलिहारणै तुसि दिता अमृत नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (५२-४, सिरीरागु, मः ५)
जिन तूं सेविआ भाउ करि सेई पुरख सुजान ॥ (५२-५, सिरीरागु, मः ५)
तिना पिछै छुटीऐ जिन अंदरि नामु निधानु ॥ (५२-५, सिरीरागु, मः ५)
गुर जेवडु दाता को नही जिनि दिता आतम दानु ॥२॥ (५२-६, सिरीरागु, मः ५)
आए से परवाणु हहि जिन गुरु मिलिआ सुभाइ ॥ (५२-६, सिरीरागु, मः ५)
सचे सेती रतिआ दरगह बैसणु जाइ ॥ (५२-७, सिरीरागु, मः ५)
करते हथि वडिआईआ पूरबि लिखिआ पाइ ॥३॥ (५२-७, सिरीरागु, मः ५)
सचु करता सचु करणहारु सचु साहिबु सचु टेक ॥ (५२-८, सिरीरागु, मः ५)
सचो सचु वखाणीऐ सचो बुधि बिबेक ॥ (५२-८, सिरीरागु, मः ५)
सर्ब निरंतरि रवि रहिआ जपि नानक जीवै एक ॥४॥२८॥९८॥ (५२-९, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (५२-९)
गुरु परमेसुरु पूजीऐ मनि तनि लाइ पिआरु ॥ (५२-९, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुरु दाता जीअ का सभसै देइ अधारु ॥ (५२-१०, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर बचन कमावणे सचा एहु वीचारु ॥ (५२-१०, सिरीरागु, मः ५)
बिनु साधू संगति रतिआ माइआ मोहु सभु छारु ॥१॥ (५२-११, सिरीरागु, मः ५)
मेरे साजन हरि हरि नामु समालि ॥ (५२-११, सिरीरागु, मः ५)

साधू संगति मनि वसै पूरन होवै घाल ॥१॥ रहाउ ॥ (५२-१२, सिरीरागु, मः ५)
गुरु समरथु अपारु गुरु वडभागी दरसनु होइ ॥ (५२-१२, सिरीरागु, मः ५)
गुरु अगोचरु निरमला गुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (५२-१३, सिरीरागु, मः ५)
गुरु करता गुरु करणहारु गुरमुखि सची सोइ ॥ (५२-१३, सिरीरागु, मः ५)
गुर ते बाहरि किछु नही गुरु कीता लोड़े सु होइ ॥२॥ (५२-१४, सिरीरागु, मः ५)
गुरु तीरथु गुरु पारजातु गुरु मनसा पूरणहारु ॥ (५२-१४, सिरीरागु, मः ५)
गुरु दाता हरि नामु देइ उधरै सभु संसारु ॥ (५२-१५, सिरीरागु, मः ५)
गुरु समरथु गुरु निरंकारु गुरु ऊचा अगम अपारु ॥ (५२-१५, सिरीरागु, मः ५)
गुर की महिमा अगम है किआ कथे कथनहारु ॥३॥ (५२-१६, सिरीरागु, मः ५)
जितड़े फल मनि बाछीअहि तितड़े सतिगुर पासि ॥ (५२-१६, सिरीरागु, मः ५)
पूरब लिखे पावणे साचु नामु दे रासि ॥ (५२-१७, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर सरणी आइआँ बाहुड़ि नही बिनासु ॥ (५२-१७, सिरीरागु, मः ५)
हरि नानक कदे न विसरउ एहु जीउ पिंडु तेरा सासु ॥४॥२९॥९९॥ (५२-१८, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ ॥ (५२-१८)
संत जनहु सुणि भाईहो छूटनु साचै नाइ ॥ (५२-१८, सिरीरागु, मः ५)
गुर के चरण सरेवणे तीर्थ हरि का नाउ ॥ (५२-१९, सिरीरागु, मः ५)
आगै दरगहि मन्नीअहि मिलै निथावे थाउ ॥१॥ (५२-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ५३

भाई रे साची सतिगुर सेव ॥ (५३-१, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर तुठै पाईऐ पूरन अलख अभेव ॥१॥ रहाउ ॥ (५३-१, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर विटहु वारिआ जिनि दिता सचु नाउ ॥ (५३-२, सिरीरागु, मः ५)
अनदिनु सचु सलाहणा सचे के गुण गाउ ॥ (५३-२, सिरीरागु, मः ५)
सचु खाणा सचु पैनणा सचे सचा नाउ ॥२॥ (५३-३, सिरीरागु, मः ५)
सासि गिरासि न विसरै सफलु मूरति गुरु आपि ॥ (५३-३, सिरीरागु, मः ५)
गुर जेवडु अवरु न दिसई आठ पहर तिसु जापि ॥ (५३-४, सिरीरागु, मः ५)
नदरि करे ता पाईऐ सचु नामु गुणतासि ॥३॥ (५३-४, सिरीरागु, मः ५)
गुरु परमेसरु एकु है सभ महि रहिआ समाइ ॥ (५३-५, सिरीरागु, मः ५)
जिन कउ पूरबि लिखिआ सेई नामु धिआइ ॥ (५३-५, सिरीरागु, मः ५)
नानक गुर सरणागती मरै न आवै जाइ ॥४॥३०॥१००॥ (५३-६, सिरीरागु, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३-७)
सिरीरागु महला १ घरु १ असटपदीआ ॥ (५३-८)
आखि आखि मनु वावणा जिउ जिउ जापै वाइ ॥ (५३-८, सिरीरागु, मः १)
जिस नो वाइ सुणाईऐ सो केवडु कितु थाइ ॥ (५३-९, सिरीरागु, मः १)
आखण वाले जेतड़े सभि आखि रहे लिव लाइ ॥१॥ (५३-९, सिरीरागु, मः १)

बाबा अलहु अगम अपारु ॥ (५३-१०, सिरीरागु, मः १)
पाकी नाई पाक थाइ सचा परवदिगारु ॥१॥ रहाउ ॥ (५३-१०, सिरीरागु, मः १)
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा लिखि न जाणै कोइ ॥ (५३-१०, सिरीरागु, मः १)
जे सउ साइर मेलीअहि तिलु न पुजावहि रोइ ॥ (५३-११, सिरीरागु, मः १)
कीमति किनै न पाईआ सभि सुणि सुणि आखहि सोइ ॥२॥ (५३-११, सिरीरागु, मः १)
पीर पैकामर सालक सादक सुहदे अउरु सहीद ॥ (५३-१२, सिरीरागु, मः १)
सेख मसाइक काजी मुला दरि दरवेस रसीद ॥ (५३-१२, सिरीरागु, मः १)
बरकति तिन कउ अगली पड़दे रहनि दरूद ॥३॥ (५३-१३, सिरीरागु, मः १)
पुछि न साजे पुछि न ढाहे पुछि न देवै लेइ ॥ (५३-१३, सिरीरागु, मः १)
आपणी कुदरति आपे जाणै आपे करणु करेइ ॥ (५३-१४, सिरीरागु, मः १)
सभना वेखै नदरि करि जै भावै तै देइ ॥४॥ (५३-१४, सिरीरागु, मः १)
थावा नाव न जाणीअहि नावा केवडु नाउ ॥ (५३-१५, सिरीरागु, मः १)
जिथै वसै मेरा पातिसाहु सो केवडु है थाउ ॥ (५३-१५, सिरीरागु, मः १)
अम्बड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ ॥५॥ (५३-१६, सिरीरागु, मः १)
वरना वरन न भावनी जे किसै वडा करेइ ॥ (५३-१६, सिरीरागु, मः १)
वडे हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ (५३-१७, सिरीरागु, मः १)
हुकमि सवारे आपणै चसा न ढिल करेइ ॥६॥ (५३-१७, सिरीरागु, मः १)
सभु को आखै बहुतु बहुतु लैणै कै वीचारि ॥ (५३-१८, सिरीरागु, मः १)
केवडु दाता आखीऐ दे कै रहिआ सुमारि ॥ (५३-१८, सिरीरागु, मः १)
नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ॥७॥१॥ (५३-१९, सिरीरागु, मः १)
महला १ ॥ (५३-१९)
सभे कंत महेलीआ सगलीआ करहि सीगारु ॥ (५३-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ५४

गणत गणावणि आईआ सूहा वेसु विकारु ॥ (५४-१, सिरीरागु, मः १)
पाखंडि प्रेमु न पाईऐ खोटा पाजु खुआरु ॥१॥ (५४-१, सिरीरागु, मः १)
हरि जीउ इउ पिरु रावै नारि ॥ (५४-२, सिरीरागु, मः १)
तुधु भावनि सोहागणी अपणी किरपा लैहि सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (५४-२, सिरीरागु, मः १)
गुर सबदी सीगारीआ तनु मनु पिर कै पासि ॥ (५४-३, सिरीरागु, मः १)
दुइ कर जोड़ि खड़ी तकै सचु कहै अरदासि ॥ (५४-३, सिरीरागु, मः १)
लालि रती सच भै वसी भाइ रती रंगि रासि ॥२॥ (५४-४, सिरीरागु, मः १)
पृअ की चेरी काँढीऐ लाली मानै नाउ ॥ (५४-४, सिरीरागु, मः १)
साची प्रीति न तुटई साचे मेलि मिलाउ ॥ (५४-५, सिरीरागु, मः १)
सबदि रती मनु वेधिआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥३॥ (५४-५, सिरीरागु, मः १)
सा धन रंड न बैसई जे सतिगुर माहि समाइ ॥ (५४-६, सिरीरागु, मः १)

पिरु रीसालू नउतनो साचउ मरै न जाइ ॥ (५४-६, सिरीरागु, मः १)
नित रवै सोहागणी साची नदरि रजाइ ॥४॥ (५४-७, सिरीरागु, मः १)
साचु धड़ी धन माडीऐ कापड़ु प्रेम सीगारु ॥ (५४-७, सिरीरागु, मः १)
चंदनु चीति वसाइआ मंदरु दसवा दुआरु ॥ (५४-७, सिरीरागु, मः १)
दीपकु सबदि विगासिआ राम नामु उर हारु ॥५॥ (५४-८, सिरीरागु, मः १)
नारी अंदरि सोहणी मसतकि मणी पिआरु ॥ (५४-८, सिरीरागु, मः १)
सोभा सुरति सुहावणी साचै प्रेमि अपार ॥ (५४-९, सिरीरागु, मः १)
बिनु पिर पुरखु न जाणई साचे गुर कै हेति पिआरि ॥६॥ (५४-९, सिरीरागु, मः १)
निसि अंधिआरी सुतीए किउ पिर बिनु रैणि विहाइ ॥ (५४-१०, सिरीरागु, मः १)
अंकु जलउ तनु जालीअउ मनु धनु जलि बलि जाइ ॥ (५४-१०, सिरीरागु, मः १)
जा धन कंति न रावीआ ता बिरथा जोबनु जाइ ॥७॥ (५४-११, सिरीरागु, मः १)
सेजै कंत महेलड़ी सूती बूझ न पाइ ॥ (५४-१२, सिरीरागु, मः १)
हउ सुती पिरु जागणा किस कउ पूछउ जाइ ॥ (५४-१२, सिरीरागु, मः १)
सतिगुरि मेली भै वसी नानक प्रेमु सखाइ ॥८॥२॥ (५४-१२, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५४-१३)
आपे गुण आपे कथै आपे सुणि वीचारु ॥ (५४-१३, सिरीरागु, मः १)
आपे रतनु परखि तूं आपे मोलु अपारु ॥ (५४-१४, सिरीरागु, मः १)
साचउ मानु महतु तूं आपे देवणहारु ॥१॥ (५४-१४, सिरीरागु, मः १)
हरि जीउ तूं करता करतारु ॥ (५४-१५, सिरीरागु, मः १)
जिउ भावै तिउ राखु तूं हरि नामु मिलै आचारु ॥१॥ रहाउ ॥ (५४-१५, सिरीरागु, मः १)
आपे हीरा निरमला आपे रंगु मजीठ ॥ (५४-१५, सिरीरागु, मः १)
आपे मोती ऊजलो आपे भगत बसीठु ॥ (५४-१६, सिरीरागु, मः १)
गुर कै सबदि सलाहणा घटि घटि डीठु अडीठु ॥२॥ (५४-१६, सिरीरागु, मः १)
आपे सागरु बोहिथा आपे पारु अपारु ॥ (५४-१७, सिरीरागु, मः १)
साची वाट सुजाणु तूं सबदि लघावणहारु ॥ (५४-१७, सिरीरागु, मः १)
निडरिआ डरु जाणीऐ बाझु गुरू गुबारु ॥३॥ (५४-१८, सिरीरागु, मः १)
असथिरु करता देखीऐ होरु केती आवै जाइ ॥ (५४-१८, सिरीरागु, मः १)
आपे निरमलु एकु तूं होर बंधी धंधै पाइ ॥ (५४-१९, सिरीरागु, मः १)
गुरि राखे से उबरे साचे सिउ लिव लाइ ॥४॥ (५४-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ५५

हरि जीउ सबदि पछाणीऐ साचि रते गुर वाकि ॥ (५५-१, सिरीरागु, मः १)
तितु तनि मैलु न लगई सच घरि जिसु ओताकु ॥ (५५-१, सिरीरागु, मः १)
नदरि करे सचु पाईऐ बिनु नावै किआ साकु ॥५॥ (५५-२, सिरीरागु, मः १)
जिनी सचु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि ॥ (५५-२, सिरीरागु, मः १)

हउमै तृसना मारि कै सचु रखिआ उर धारि ॥ (५५-३, सिरीरागु, मः १)
जग महि लाहा एकु नामु पाईऐ गुर वीचारि ॥६॥ (५५-३, सिरीरागु, मः १)
साचउ वखरु लादीऐ लाभु सदा सचु रासि ॥ (५५-४, सिरीरागु, मः १)
साची दरगह बैसई भगति सची अरदासि ॥ (५५-४, सिरीरागु, मः १)
पति सिउ लेखा निबड़ै राम नामु परगासि ॥७॥ (५५-५, सिरीरागु, मः १)
ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ (५५-५, सिरीरागु, मः १)
जह देखा तह एकु तूं सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (५५-६, सिरीरागु, मः १)
जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ ॥८॥३॥ (५५-६, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५५-७)
मछुली जालु न जाणिआ सरु खारा असगाहु ॥ (५५-७, सिरीरागु, मः १)
अति सिआणी सोहणी किउ कीतो वेसाहु ॥ (५५-७, सिरीरागु, मः १)
कीते कारणि पाकड़ी कालु न टलै सिराहु ॥१॥ (५५-८, सिरीरागु, मः १)
भाई रे इउ सिरि जाणहु कालु ॥ (५५-८, सिरीरागु, मः १)
जिउ मछी तिउ माणसा पवै अचिंता जालु ॥१॥ रहाउ ॥ (५५-८, सिरीरागु, मः १)
सभु जगु बाधो काल को बिनु गुर कालु अफारु ॥ (५५-९, सिरीरागु, मः १)
सचि रते से उबरे दुबिधा छोडि विकार ॥ (५५-९, सिरीरागु, मः १)
हउ तिन कै बलिहारणै दरि सचै सचिआर ॥२॥ (५५-१०, सिरीरागु, मः १)
सीचाने जिउ पंखीआ जाली बधिक हाथि ॥ (५५-१०, सिरीरागु, मः १)
गुरि राखे से उबरे होरि फाथे चोगै साथि ॥ (५५-११, सिरीरागु, मः १)
बिनु नावै चुणि सुटीअहि कोइ न संगी साथि ॥३॥ (५५-११, सिरीरागु, मः १)
सचो सचा आखीऐ सचे सचा थानु ॥ (५५-१२, सिरीरागु, मः १)
जिनी सचा मंनिआ तिन मनि सचु धिआनु ॥ (५५-१२, सिरीरागु, मः १)
मनि मुखि सूचे जाणीअहि गुरमुखि जिना गिआनु ॥४॥ (५५-१२, सिरीरागु, मः १)
सतिगुर अगै अरदासि करि साजनु देइ मिलाइ ॥ (५५-१३, सिरीरागु, मः १)
साजनि मिलिऐ सुखु पाइआ जमदूत मुए बिखु खाइ ॥ (५५-१४, सिरीरागु, मः १)
नावै अंदरि हउ वसाँ नाउ वसै मनि आइ ॥५॥ (५५-१४, सिरीरागु, मः १)
बाझु गुरू गुबारु है बिनु सबदै बूझ न पाइ ॥ (५५-१५, सिरीरागु, मः १)
गुरमती परगासु होइ सचि रहै लिव लाइ ॥ (५५-१५, सिरीरागु, मः १)
तिथै कालु न संचरै जोती जोति समाइ ॥६॥ (५५-१६, सिरीरागु, मः १)
तूंहै साजनु तूं सुजाणु तूं आपे मेलणहारु ॥ (५५-१६, सिरीरागु, मः १)
गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥ (५५-१६, सिरीरागु, मः १)
तिथै कालु न अपड़ै जिथै गुर का सबदु अपारु ॥७॥ (५५-१७, सिरीरागु, मः १)
हुकमी सभे ऊपजहि हुकमी कार कमाहि ॥ (५५-१७, सिरीरागु, मः १)
हुकमी कालै वसि है हुकमी साचि समाहि ॥ (५५-१८, सिरीरागु, मः १)
नानक जो तिसु भावै सो थीऐ इना जंता वसि किछु नाहि ॥८॥४॥ (५५-१८, सिरीरागु, मः १)

सिरीरागु महला १ ॥ (५५-१६)
मनि जूठै तनि जूठि है जिहवा जूठी होइ ॥ (५५-१६, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ५६

मुखि झूठै झूठु बोलणा किउ करि सूचा होइ ॥ (५६-१, सिरीरागु, मः १)
बिनु अभ सबद न माँजीऐ साचे ते सचु होइ ॥१॥ (५६-१, सिरीरागु, मः १)
मुंधे गुणहीणी सुखु केहि ॥ (५६-२, सिरीरागु, मः १)
पिरु रलीआ रसि माणसी साचि सबदि सुखु नेहि ॥१॥ रहाउ ॥ (५६-२, सिरीरागु, मः १)
पिरु परदेसी जे थीऐ धन वाँढी झूरेइ ॥ (५६-२, सिरीरागु, मः १)
जिउ जलि थोड़ै मछुली करण पलाव करेइ ॥ (५६-३, सिरीरागु, मः १)
पिर भावै सुखु पाईऐ जा आपे नदरि करेइ ॥२॥ (५६-३, सिरीरागु, मः १)
पिरु सालाही आपणा सखी सहेली नालि ॥ (५६-४, सिरीरागु, मः १)
तनि सोहै मनु मोहिआ रती रंगि निहालि ॥ (५६-४, सिरीरागु, मः १)
सबदि सवारी सोहणी पिरु रावे गुण नालि ॥३॥ (५६-५, सिरीरागु, मः १)
कामणि कामि न आवई खोटी अवगणिआरि ॥ (५६-५, सिरीरागु, मः १)
ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि ॥ (५६-६, सिरीरागु, मः १)
आवणु वंञणु डाखड़ो छोडी कंति विसारि ॥४॥ (५६-६, सिरीरागु, मः १)
पिर की नारि सुहावणी मुती सो कितु सादि ॥ (५६-७, सिरीरागु, मः १)
पिर कै कामि न आवई बोले फादिलु बादि ॥ (५६-७, सिरीरागु, मः १)
दरि घरि ढोई ना लहै छूटी दूजै सादि ॥५॥ (५६-७, सिरीरागु, मः १)
पंडित वाचहि पोथीआ ना बूझहि वीचारु ॥ (५६-८, सिरीरागु, मः १)
अन कउ मती दे चलहि माइआ का वापारु ॥ (५६-८, सिरीरागु, मः १)
कथनी झूठी जगु भवै रहणी सबदु सु सारु ॥६॥ (५६-९, सिरीरागु, मः १)
केते पंडित जोतकी बेदा करहि बीचारु ॥ (५६-९, सिरीरागु, मः १)
वादि विरोधि सलाहणे वादे आवणु जाणु ॥ (५६-१०, सिरीरागु, मः १)
बिनु गुर कर्म न छुटसी कहि सुणि आखि वखाणु ॥७॥ (५६-१०, सिरीरागु, मः १)
सभि गुणवंती आखीअहि मै गुणु नाही कोइ ॥ (५६-११, सिरीरागु, मः १)
हरि वरु नारि सुहावणी मै भावै प्रभु सोइ ॥ (५६-११, सिरीरागु, मः १)
नानक सबदि मिलावड़ा ना वेछोड़ा होइ ॥८॥५॥ (५६-१२, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५६-१२)
जपु तपु संजमु साधीऐ तीरथि कीचै वासु ॥ (५६-१२, सिरीरागु, मः १)
पुन्न दान चंगिआईआ बिनु साचे किआ तासु ॥ (५६-१३, सिरीरागु, मः १)
जेहा राधे तेहा लुणै बिनु गुण जनमु विणासु ॥१॥ (५६-१३, सिरीरागु, मः १)
मुंधे गुण दासी सुखु होइ ॥ (५६-१४, सिरीरागु, मः १)
अवगण तिआगि समाईऐ गुरमति पूरा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५६-१४, सिरीरागु, मः १)

विणु रासी वापारीआ तके कुंडा चारि ॥ (५६-१५, सिरीरागु, मः १)
मूलु न बुझै आपणा वसतु रही घर बारि ॥ (५६-१५, सिरीरागु, मः १)
विणु वखर दुखु अगला कूड़ि मुठी कूड़िआरि ॥२॥ (५६-१५, सिरीरागु, मः १)
लाहा अहिनिसि नउतना परखे रतनु वीचारि ॥ (५६-१६, सिरीरागु, मः १)
वसतु लहै घरि आपणै चलै कारजु सारि ॥ (५६-१६, सिरीरागु, मः १)
वणजारिआ सिउ वणजु करि गुरमुखि ब्रह्मु बीचारि ॥३॥ (५६-१७, सिरीरागु, मः १)
संताँ संगति पाईऐ जे मेले मेलणहारु ॥ (५६-१७, सिरीरागु, मः १)
मिलिआ होइ न विछुड़ै जिसु अंतरि जोति अपार ॥ (५६-१८, सिरीरागु, मः १)
सचै आसणि सचि रहै सचै प्रेम पिआर ॥४॥ (५६-१८, सिरीरागु, मः १)
जिनी आपु पछाणिआ घर महि महलु सुथाइ ॥ (५६-१९, सिरीरागु, मः १)
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥ (५६-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ५७

तृभवणि सो प्रभु जाणीऐ साचो साचै नाइ ॥५॥ (५७-१, सिरीरागु, मः १)
सा धन खरी सुहावणी जिनि पिरु जाता संगि ॥ (५७-१, सिरीरागु, मः १)
महली महलि बुलाईऐ सो पिरु रावे रंगि ॥ (५७-२, सिरीरागु, मः १)
सचि सुहागणि सा भली पिरि मोही गुण संगि ॥६॥ (५७-२, सिरीरागु, मः १)
भूली भूली थलि चड़ा थलि चड़ि डूगरि जाउ ॥ (५७-३, सिरीरागु, मः १)
बन महि भूली जे फिरा बिनु गुर बूझ न पाउ ॥ (५७-३, सिरीरागु, मः १)
नावहु भूली जे फिरा फिरि फिरि आवउ जाउ ॥७॥ (५७-३, सिरीरागु, मः १)
पुछहु जाइ पधाऊआ चले चाकर होइ ॥ (५७-४, सिरीरागु, मः १)
राजनु जाणहि आपणा दरि घरि ठाक न होइ ॥ (५७-४, सिरीरागु, मः १)
नानक एको रवि रहिआ दूजा अवरु न कोइ ॥८॥६॥ (५७-५, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५७-५)
गुर ते निरमलु जाणीऐ निर्मल देह सरीरु ॥ (५७-६, सिरीरागु, मः १)
निरमलु साचो मनि वसै सो जाणै अभ पीर ॥ (५७-६, सिरीरागु, मः १)
सहजै ते सुखु अगलो ना लागै जम तीरु ॥१॥ (५७-७, सिरीरागु, मः १)
भाई रे मैलु नाही निर्मल जलि नाइ ॥ (५७-७, सिरीरागु, मः १)
निरमलु साचा एकु तू होरु मैलु भरी सभ जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५७-७, सिरीरागु, मः १)
हरि का मंदरु सोहणा कीआ करणैहारि ॥ (५७-८, सिरीरागु, मः १)
रवि ससि दीप अनूप जोति तृभवणि जोति अपार ॥ (५७-८, सिरीरागु, मः १)
हाट पटण गड़ कोठड़ी सचु सउदा वापार ॥२॥ (५७-९, सिरीरागु, मः १)
गिआन अंजनु भै भंजना देखु निरंजन भाइ ॥ (५७-९, सिरीरागु, मः १)
गुपतु प्रगटु सभ जाणीऐ जे मनु राखै ठाइ ॥ (५७-१०, सिरीरागु, मः १)
ऐसा सतिगुरु जे मिलै ता सहजे लए मिलाइ ॥३॥ (५७-१०, सिरीरागु, मः १)

कसि कसवटी लाईऐ परखे हितु चितु लाइ ॥ (५७-११, सिरीरागु, मः १)
खोटे ठउर न पाइनी खरे खजानै पाइ ॥ (५७-११, सिरीरागु, मः १)
आस अंदेसा दूरि करि इउ मलु जाइ समाइ ॥४॥ (५७-१२, सिरीरागु, मः १)
सुख कउ मागै सभु को दुखु न मागै कोइ ॥ (५७-१२, सिरीरागु, मः १)
सुखै कउ दुखु अगला मनमुखि बूझ न होइ ॥ (५७-१३, सिरीरागु, मः १)
सुख दुख सम करि जाणीअहि सबदि भेदि सुखु होइ ॥५॥ (५७-१३, सिरीरागु, मः १)
बेदु पुकारे वाचीऐ बाणी ब्रह्म बिआसु ॥ (५७-१४, सिरीरागु, मः १)
मुनि जन सेवक साधिका नामि रते गुणतासु ॥ (५७-१४, सिरीरागु, मः १)
सचि रते से जिणि गए हउ सद बलिहारै जासु ॥६॥ (५७-१५, सिरीरागु, मः १)
चहु जुगि मैले मलु भरे जिन मुखि नामु न होइ ॥ (५७-१५, सिरीरागु, मः १)
भगती भाइ विहूणिआ मुहु काला पति खोइ ॥ (५७-१६, सिरीरागु, मः १)
जिनी नामु विसारिआ अवगण मुठी रोइ ॥७॥ (५७-१६, सिरीरागु, मः १)
खोजत खोजत पाइआ डरु करि मिलै मिलाइ ॥ (५७-१७, सिरीरागु, मः १)
आपु पछाणै घरि वसै हउमै तृसना जाइ ॥ (५७-१७, सिरीरागु, मः १)
नानक निर्मल ऊजले जो राते हरि नाइ ॥८॥७॥ (५७-१८, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५७-१८)
सुणि मन भूले बावरे गुर की चरणी लागु ॥ (५७-१८, सिरीरागु, मः १)
हरि जपि नामु धिआइ तू जमु डरपै दुख भागु ॥ (५७-१९, सिरीरागु, मः १)
दूखु घणो दोहागणी किउ थिरु रहै सुहागु ॥१॥ (५७-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ५८

भाई रे अवरु नाही मै थाउ ॥ (५८-१, सिरीरागु, मः १)
मै धनु नामु निधानु है गुरि दीआ बलि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (५८-१, सिरीरागु, मः १)
गुरमति पति साबासि तिसु तिस कै संगि मिलाउ ॥ (५८-२, सिरीरागु, मः १)
तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु नावै मरि जाउ ॥ (५८-२, सिरीरागु, मः १)
मै अंधुले नामु न वीसरै टेक टिकी घरि जाउ ॥२॥ (५८-३, सिरीरागु, मः १)
गुरू जिना का अंधुला चेले नाही ठाउ ॥ (५८-३, सिरीरागु, मः १)
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बिनु नावै किआ सुआउ ॥ (५८-३, सिरीरागु, मः १)
आइ गइआ पछुतावणा जिउ सुंञै घरि काउ ॥३॥ (५८-४, सिरीरागु, मः १)
बिनु नावै दुखु देहुरी जिउ कलर की भीति ॥ (५८-५, सिरीरागु, मः १)
तब लगु महलु न पाईऐ जब लगु साचु न चीति ॥ (५८-५, सिरीरागु, मः १)
सबदि रपै घरु पाईऐ निरबाणी पदु नीति ॥४॥ (५८-५, सिरीरागु, मः १)
हउ गुर पूछउ आपणे गुर पुछि कार कमाउ ॥ (५८-६, सिरीरागु, मः १)
सबदि सलाही मनि वसै हउमै दुखु जलि जाउ ॥ (५८-६, सिरीरागु, मः १)
सहजे होइ मिलावड़ा साचे साचि मिलाउ ॥५॥ (५८-७, सिरीरागु, मः १)

सबदि रते से निरमले तजि काम क्रोधु अहंकारु ॥ (५८-७, सिरीरागु, मः १)
नामु सलाहनि सद सदा हरि राखहि उर धारि ॥ (५८-८, सिरीरागु, मः १)
सो किउ मनहु विसारीऐ सभ जीआ का आधारु ॥६॥ (५८-८, सिरीरागु, मः १)
सबदि मरै सो मरि रहै फिरि मरै न दूजी वार ॥ (५८-९, सिरीरागु, मः १)
सबदै ही ते पाईऐ हरि नामे लगै पिआरु ॥ (५८-९, सिरीरागु, मः १)
बिनु सबदै जगु भूला फिरै मरि जनमै वारो वार ॥७॥ (५८-१०, सिरीरागु, मः १)
सभ सालाहै आप कउ वडहु वडेरी होइ ॥ (५८-१०, सिरीरागु, मः १)
गुर बिनु आपु न चीनीऐ कहे सुणे किआ होइ ॥ (५८-११, सिरीरागु, मः १)
नानक सबदि पछाणीऐ हउमै करै न कोइ ॥८॥८॥ (५८-११, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५८-१२)
बिनु पिर धन सीगारीऐ जोबनु बादि खुआरु ॥ (५८-१२, सिरीरागु, मः १)
ना माणे सुखि सेजड़ी बिनु पिर बादि सीगारु ॥ (५८-१३, सिरीरागु, मः १)
दूखु घणो दोहागणी ना घरि सेज भतारु ॥१॥ (५८-१३, सिरीरागु, मः १)
मन रे राम जपहु सुखु होइ ॥ (५८-१३, सिरीरागु, मः १)
बिनु गुर प्रेमु न पाईऐ सबदि मिलै रंगु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५८-१४, सिरीरागु, मः १)
गुर सेवा सुखु पाईऐ हरि वरु सहजि सीगारु ॥ (५८-१४, सिरीरागु, मः १)
सचि माणे पिर सेजड़ी गूड़ा हेतु पिआरु ॥ (५८-१५, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि जाणि सिञाणीऐ गुरि मेली गुण चारु ॥२॥ (५८-१५, सिरीरागु, मः १)
सचि मिलहु वर कामणी पिरि मोही रंगु लाइ ॥ (५८-१६, सिरीरागु, मः १)
मनु तनु साचि विगसिआ कीमति कहणु न जाइ ॥ (५८-१६, सिरीरागु, मः १)
हरि वरु घरि सोहागणी निर्मल साचै नाइ ॥३॥ (५८-१७, सिरीरागु, मः १)
मन महि मनूआ जे मरै ता पिरु रावै नारि ॥ (५८-१७, सिरीरागु, मः १)
इकतु तागै रलि मिलै गलि मोतीअन का हारु ॥ (५८-१८, सिरीरागु, मः १)
संत सभा सुखु ऊपजै गुरमुखि नाम अधारु ॥४॥ (५८-१८, सिरीरागु, मः १)
खिन महि उपजै खिनि खपै खिनु आवै खिनु जाइ ॥ (५८-१९, सिरीरागु, मः १)
सबदु पछाणै रवि रहै ना तिसु कालु संताइ ॥ (५८-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ५९

साहिबु अतुलु न तोलीऐ कथनि न पाइआ जाइ ॥५॥ (५९-१, सिरीरागु, मः १)
वापारी वणजारिआ आए वजहु लिखाइ ॥ (५९-१, सिरीरागु, मः १)
कार कमावहि सच की लाहा मिलै रजाइ ॥ (५९-२, सिरीरागु, मः १)
पूंजी साची गुरु मिलै ना तिसु तिलु न तमाइ ॥६॥ (५९-२, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि तोलि तोलाइसी सचु तराजी तोलु ॥ (५९-३, सिरीरागु, मः १)
आसा मनसा मोहणी गुरि ठाकी सचु बोलु ॥ (५९-३, सिरीरागु, मः १)
आपि तुलाए तोलसी पूरे पूरा तोलु ॥७॥ (५९-४, सिरीरागु, मः १)

कथनै कहणि न छुटीऐ ना पड़ि पुसतक भार ॥ (५६-४, सिरीरागु, मः १)
काइआ सोच न पाईऐ बिनु हरि भगति पिआर ॥ (५६-४, सिरीरागु, मः १)
नानक नामु न वीसरै मेले गुरु करतार ॥८॥६॥ (५६-५, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५६-६)
सतिगुरु पूरा जे मिलै पाईऐ रतनु बीचारु ॥ (५६-६, सिरीरागु, मः १)
मनु दीजै गुर आपणे पाईऐ सरब पिआरु ॥ (५६-६, सिरीरागु, मः १)
मुकति पदारथु पाईऐ अवगण मेटणहारु ॥१॥ (५६-७, सिरीरागु, मः १)
भाई रे गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ (५६-७, सिरीरागु, मः १)
पूछहु ब्रहमे नारदै बेद बिआसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५६-८, सिरीरागु, मः १)
गिआनु धिआनु धुनि जाणीऐ अकथु कहावै सोइ ॥ (५६-८, सिरीरागु, मः १)
सफलिओ बिरखु हरीआवला छाव घणेरी होइ ॥ (५६-६, सिरीरागु, मः १)
लाल जवेहर माणकी गुर भंडारै सोइ ॥२॥ (५६-६, सिरीरागु, मः १)
गुर भंडारै पाईऐ निरमल नाम पिआरु ॥ (५६-१०, सिरीरागु, मः १)
साचो वखरु संचीऐ पूरै करमि अपारु ॥ (५६-१०, सिरीरागु, मः १)
सुखदाता दुख मेटणो सतिगुरु असुर संघारु ॥३॥ (५६-१०, सिरीरागु, मः १)
भवजलु बिखमु डरावणो ना कंधी ना पारु ॥ (५६-११, सिरीरागु, मः १)
ना बेड़ी ना तुलहड़ा ना तिसु वंझु मलारु ॥ (५६-११, सिरीरागु, मः १)
सतिगुरु भै का बोहिथा नदरी पारि उतारु ॥४॥ (५६-१२, सिरीरागु, मः १)
इकु तिलु पिआरा विसरै दुखु लागै सुखु जाइ ॥ (५६-१२, सिरीरागु, मः १)
जिहवा जलउ जलावणी नामु न जपै रसाइ ॥ (५६-१३, सिरीरागु, मः १)
घटु बिनसै दुखु अगलो जमु पकड़ै पछुताइ ॥५॥ (५६-१३, सिरीरागु, मः १)
मेरी मेरी करि गए तनु धनु कलतु न साथि ॥ (५६-१४, सिरीरागु, मः १)
बिनु नावै धनु बादि है भूलो मारगि आथि ॥ (५६-१४, सिरीरागु, मः १)
साचउ साहिबु सेवीऐ गुरमुखि अकथो काथि ॥६॥ (५६-१४, सिरीरागु, मः १)
आवै जाइ भवाईऐ पइऐ किरति कमाइ ॥ (५६-१५, सिरीरागु, मः १)
पूरबि लिखिआ किउ मेटीऐ लिखिआ लेखु रजाइ ॥ (५६-१५, सिरीरागु, मः १)
बिनु हरि नाम न छुटीऐ गुरमति मिलै मिलाइ ॥७॥ (५६-१६, सिरीरागु, मः १)
तिसु बिनु मेरा को नही जिस का जीउ परानु ॥ (५६-१७, सिरीरागु, मः १)
हउमै ममता जलि बलउ लोभु जलउ अभिमानु ॥ (५६-१७, सिरीरागु, मः १)
नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ॥८॥१०॥ (५६-१८, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (५६-१८)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि ॥ (५६-१८, सिरीरागु, मः १)
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि ॥ (५६-१६, सिरीरागु, मः १)
जल महि जीअ उपाइ कै बिनु जल मरणु तिनेहि ॥१॥ (५६-१६, सिरीरागु, मः १)

मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर ॥ (६०-१, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार ॥१॥ रहाउ ॥ (६०-१, सिरीरागु, मः १)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी मछुली नीर ॥ (६०-२, सिरीरागु, मः १)
जिउ अधिकउ तिउ सुखु घणो मनि तनि साँति सरीर ॥ (६०-२, सिरीरागु, मः १)
बिनु जल घड़ी न जीवई प्रभु जाणै अभ पीर ॥२॥ (६०-३, सिरीरागु, मः १)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चातृक मेह ॥ (६०-४, सिरीरागु, मः १)
सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह ॥ (६०-४, सिरीरागु, मः १)
करमि मिलै सो पाईऐ किरतु पइआ सिरि देह ॥३॥ (६०-५, सिरीरागु, मः १)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल दुध होइ ॥ (६०-५, सिरीरागु, मः १)
आवटणु आपे खवै दुध कउ खपणि न देइ ॥ (६०-६, सिरीरागु, मः १)
आपे मेलि विछुंनिआ सचि वडिआई देइ ॥४॥ (६०-६, सिरीरागु, मः १)
रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी चकवी सूर ॥ (६०-७, सिरीरागु, मः १)
खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दूरि हजूरि ॥ (६०-७, सिरीरागु, मः १)
मनमुखि सोझी ना पवै गुरमुखि सदा हजूरि ॥५॥ (६०-८, सिरीरागु, मः १)
मनमुखि गणत गणावणी करता करे सु होइ ॥ (६०-८, सिरीरागु, मः १)
ता की कीमति ना पवै जे लोचै सभु कोइ ॥ (६०-९, सिरीरागु, मः १)
गुरमति होइ त पाईऐ सचि मिलै सुखु होइ ॥६॥ (६०-९, सिरीरागु, मः १)
सचा नेहु न तुटई जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥ (६०-१०, सिरीरागु, मः १)
गिआन पदारथु पाईऐ तृभवण सोझी होइ ॥ (६०-१०, सिरीरागु, मः १)
निरमलु नामु न वीसरै जे गुण का गाहकु होइ ॥७॥ (६०-१०, सिरीरागु, मः १)
खेलि गए से पंखणूं जो चुगदे सर तलि ॥ (६०-११, सिरीरागु, मः १)
घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलणु अजु कि कलि ॥ (६०-११, सिरीरागु, मः १)
जिसु तूं मेलहि सो मिलै जाइ सचा पिड़ु मलि ॥८॥ (६०-१२, सिरीरागु, मः १)
बिनु गुर प्रीति न ऊपजै हउमै मैलु न जाइ ॥ (६०-१२, सिरीरागु, मः १)
सोहं आपु पछाणीऐ सबदि भेदि पतीआइ ॥ (६०-१३, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि आपु पछाणीऐ अवर कि करे कराइ ॥९॥ (६०-१३, सिरीरागु, मः १)
मिलिआ का किआ मेलीऐ सबदि मिले पतीआइ ॥ (६०-१४, सिरीरागु, मः १)
मनमुखि सोझी ना पवै वीछुड़ि चोटा खाइ ॥ (६०-१४, सिरीरागु, मः १)
नानक दरु घरु एकु है अवरु न दूजी जाइ ॥१०॥११॥ (६०-१५, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (६०-१५)
मनमुखि भुलै भुलाईऐ भूली ठउर न काइ ॥ (६०-१६, सिरीरागु, मः १)
गुर बिनु को न दिखावई अंधी आवै जाइ ॥ (६०-१६, सिरीरागु, मः १)
गिआन पदारथु खोइआ ठगिआ मुठा जाइ ॥१॥ (६०-१६, सिरीरागु, मः १)

बाबा माइआ भरमि भुलाइ ॥ (६०-१७, सिरीरागु, मः १)
भरमि भुली डोहागणी ना पिर अंकि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६०-१७, सिरीरागु, मः १)
भूली फिरै दिसंतरी भूली गृहु तजि जाइ ॥ (६०-१८, सिरीरागु, मः १)
भूली डूंगरि थलि चड़ै भरमै मनु डोलाइ ॥ (६०-१८, सिरीरागु, मः १)
धुरहु विछुन्नी किउ मिलै गरबि मुठी बिललाइ ॥२॥ (६०-१६, सिरीरागु, मः १)
विछुड़िआ गुरु मेलसी हरि रसि नाम पिआरि ॥ (६०-१६, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ६१

साचि सहजि सोभा घणी हरि गुण नाम अधारि ॥ (६१-१, सिरीरागु, मः १)
जिउ भावै तिउ रखु तूं मै तुझ बिनु कवनु भतारु ॥३॥ (६१-१, सिरीरागु, मः १)
अखर पड़ि पड़ि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ॥ (६१-२, सिरीरागु, मः १)
तीर्थ नाता किआ करे मन महि मैलु गुमानु ॥ (६१-२, सिरीरागु, मः १)
गुर बिनु किनि समझाईऐ मनु राजा सुलतानु ॥४॥ (६१-३, सिरीरागु, मः १)
प्रेम पदारथु पाईऐ गुरमुखि ततु वीचारु ॥ (६१-३, सिरीरागु, मः १)
सा धन आपु गवाइआ गुर कै सबदि सीगारु ॥ (६१-४, सिरीरागु, मः १)
घर ही सो पिरु पाइआ गुर कै हेति अपारु ॥५॥ (६१-४, सिरीरागु, मः १)
गुर की सेवा चाकरी मनु निरमलु सुखु होइ ॥ (६१-५, सिरीरागु, मः १)
गुर का सबदु मनि वसिआ हउमै विचहु खोइ ॥ (६१-५, सिरीरागु, मः १)
नामु पदारथु पाइआ लाभु सदा मनि होइ ॥६॥ (६१-६, सिरीरागु, मः १)
करमि मिलै ता पाईऐ आपि न लइआ जाइ ॥ (६१-६, सिरीरागु, मः १)
गुर की चरणी लगि रहु विचहु आपु गवाइ ॥ (६१-७, सिरीरागु, मः १)
सचे सेती रतिआ सचो पलै पाइ ॥७॥ (६१-७, सिरीरागु, मः १)
भुलण अंदरि सभु को अभुलु गुरू करतारु ॥ (६१-७, सिरीरागु, मः १)
गुरमति मनु समझाइआ लागा तिसै पिआरु ॥ (६१-८, सिरीरागु, मः १)
नानक साचु न वीसरै मेले सबदु अपारु ॥८॥१२॥ (६१-८, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (६१-६)
तृसना माइआ मोहणी सुत बंधप घर नारि ॥ (६१-६, सिरीरागु, मः १)
धनि जोबनि जगु ठगिआ लबि लोभि अहंकारि ॥ (६१-१०, सिरीरागु, मः १)
मोह ठगउली हउ मुई सा वरतै संसारि ॥१॥ (६१-१०, सिरीरागु, मः १)
मेरे प्रीतमा मै तुझ बिनु अवरु न कोइ ॥ (६१-१०, सिरीरागु, मः १)
मै तुझ बिनु अवरु न भावई तूं भावहि सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६१-११, सिरीरागु, मः १)
नामु सालाही रंग सिउ गुर कै सबदि संतोखु ॥ (६१-११, सिरीरागु, मः १)
जो दीसै सो चलसी कूड़ा मोहु न वेखु ॥ (६१-१२, सिरीरागु, मः १)
वाट वटाऊ आइआ नित चलदा साथु देखु ॥२॥ (६१-१२, सिरीरागु, मः १)
आखणि आखहि केतड़े गुर बिनु बूझ न होइ ॥ (६१-१३, सिरीरागु, मः १)

नामु वडाई जे मिलै सचि रपै पति होइ ॥ (६१-१३, सिरीरागु, मः १)
जो तुधु भावहि से भले खोटा खरा न कोइ ॥३॥ (६१-१४, सिरीरागु, मः १)
गुर सरणाई छुटीऐ मनमुख खोटी रासि ॥ (६१-१४, सिरीरागु, मः १)
असट धातु पातिसाह की घड़ीऐ सबदि विगासि ॥ (६१-१४, सिरीरागु, मः १)
आपे परखे पारखू पवै खजानै रासि ॥४॥ (६१-१५, सिरीरागु, मः १)
तेरी कीमति ना पवै सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥ (६१-१५, सिरीरागु, मः १)
कहणै हाथ न लभई सचि टिकै पति पाइ ॥ (६१-१६, सिरीरागु, मः १)
गुरमति तूं सालाहणा होरु कीमति कहणु न जाइ ॥५॥ (६१-१६, सिरीरागु, मः १)
जितु तनि नामु न भावई तितु तनि हउमै वादु ॥ (६१-१७, सिरीरागु, मः १)
गुर बिनु गिआनु न पाईऐ बिखिआ दूजा सादु ॥ (६१-१७, सिरीरागु, मः १)
बिनु गुण कामि न आवई माइआ फीका सादु ॥६॥ (६१-१८, सिरीरागु, मः १)
आसा अंदरि जंमिआ आसा रस कस खाइ ॥ (६१-१८, सिरीरागु, मः १)
आसा बंधि चलाईऐ मुहे मुहि चोटा खाइ ॥ (६१-१९, सिरीरागु, मः १)
अवगणि बधा मारीऐ छूटै गुरमति नाइ ॥७॥ (६१-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ६२

सरबे थाई एकु तूं जिउ भावै तिउ राखु ॥ (६२-१, सिरीरागु, मः १)
गुरमति साचा मनि वसै नामु भलो पति साखु ॥ (६२-१, सिरीरागु, मः १)
हउमै रोगु गवाईऐ सबदि सचै सचु भाखु ॥८॥ (६२-१, सिरीरागु, मः १)
आकासी पातालि तूं त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥ (६२-२, सिरीरागु, मः १)
आपे भगती भाउ तूं आपे मिलहि मिलाइ ॥ (६२-२, सिरीरागु, मः १)
नानक नामु न वीसरै जिउ भावै तिवै रजाइ ॥९॥१३॥ (६२-३, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (६२-३)
राम नामि मनु बेधिआ अवरु कि करी वीचारु ॥ (६२-४, सिरीरागु, मः १)
सबद सुरति सुखु ऊपजै प्रभ रातउ सुख सारु ॥ (६२-४, सिरीरागु, मः १)
जिउ भावै तिउ राखु तूं मै हरि नामु अधारु ॥१॥ (६२-४, सिरीरागु, मः १)
मन रे साची खसम रजाइ ॥ (६२-५, सिरीरागु, मः १)
जिनि तनु मनु साजि सीगारिआ तिसु सेती लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२-५, सिरीरागु, मः १)
तनु बैसंतरि होमीऐ इक रती तोलि कटाइ ॥ (६२-६, सिरीरागु, मः १)
तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ ॥ (६२-६, सिरीरागु, मः १)
हरि नामै तुलि न पुजई जे लख कोटी कर्म कमाइ ॥२॥ (६२-७, सिरीरागु, मः १)
अर्ध सरीरु कटाईऐ सिरि करवतु धराइ ॥ (६२-७, सिरीरागु, मः १)
तनु हैमंचलि गालीऐ भी मन ते रोगु न जाइ ॥ (६२-८, सिरीरागु, मः १)
हरि नामै तुलि न पुजई सभ डिठी ठोकि वजाइ ॥३॥ (६२-८, सिरीरागु, मः १)
कंचन के कोट दतु करी बहु हैवर गैवर दानु ॥ (६२-९, सिरीरागु, मः १)

भूमि दानु गऊआ घणी भी अंतरि गरबु गुमानु ॥ (६२-९, सिरीरागु, मः १)
राम नामि मनु बेधिआ गुरि दीआ सचु दानु ॥४॥ (६२-१०, सिरीरागु, मः १)
मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥ (६२-१०, सिरीरागु, मः १)
केते बंधन जीअ के गुरमुखि मोख दुआर ॥ (६२-११, सिरीरागु, मः १)
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥५॥ (६२-११, सिरीरागु, मः १)
सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥ (६२-१२, सिरीरागु, मः १)
इकनै भाँडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥ (६२-१२, सिरीरागु, मः १)
करमि मिलै सचु पाईऐ धुरि बखस न मेटै कोइ ॥६॥ (६२-१३, सिरीरागु, मः १)
साधु मिलै साधू जनै संतोखु वसै गुर भाइ ॥ (६२-१३, सिरीरागु, मः १)
अकथ कथा वीचारीऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ (६२-१४, सिरीरागु, मः १)
पी अमृतु संतोखिआ दरगहि पैधा जाइ ॥७॥ (६२-१४, सिरीरागु, मः १)
घटि घटि वाजै किंगुरी अनदिनु सबदि सुभाइ ॥ (६२-१४, सिरीरागु, मः १)
विरले कउ सोझी पई गुरमुखि मनु समझाइ ॥ (६२-१५, सिरीरागु, मः १)
नानक नामु न वीसरै छूटै सबदु कमाइ ॥८॥१४॥ (६२-१५, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (६२-१६)
चिते दिसहि धउलहर बगे बंक दुआर ॥ (६२-१६, सिरीरागु, मः १)
करि मन खुसी उसारिआ दूजै हेति पिआरि ॥ (६२-१७, सिरीरागु, मः १)
अंदरु खाली प्रेम बिनु ढहि ढेरी तनु छारु ॥१॥ (६२-१७, सिरीरागु, मः १)
भाई रे तनु धनु साथि न होइ ॥ (६२-१८, सिरीरागु, मः १)
राम नामु धनु निरमलो गुरु दाति करे प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२-१८, सिरीरागु, मः १)
राम नामु धनु निरमलो जे देवै देवणहारु ॥ (६२-१८, सिरीरागु, मः १)
आगै पूछ न होवई जिसु बेली गुरु करतारु ॥ (६२-१९, सिरीरागु, मः १)
आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥२॥ (६२-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ६३

मनमुखु जाणै आपणे धीआ पूत संजोगु ॥ (६३-१, सिरीरागु, मः १)
नारी देखि विगासीअहि नाले हरखु सु सोगु ॥ (६३-१, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि सबदि रंगावले अहिनिसि हरि रसु भोगु ॥३॥ (६३-२, सिरीरागु, मः १)
चितु चलै वितु जावणो साकत डोलि डोलाइ ॥ (६३-२, सिरीरागु, मः १)
बाहरि ढूंढि विगुचीऐ घर महि वसतु सुथाइ ॥ (६३-३, सिरीरागु, मः १)
मनमुखि हउमै करि मुसी गुरमुखि पलै पाइ ॥४॥ (६३-३, सिरीरागु, मः १)
साकत निरगुणिआरिआ आपणा मूलु पछाणु ॥ (६३-४, सिरीरागु, मः १)
रकतु बिंदु का इहु तनो अगनी पासि पिराणु ॥ (६३-४, सिरीरागु, मः १)
पवणै कै वसि देहुरी मसतकि सचु नीसाणु ॥५॥ (६३-५, सिरीरागु, मः १)
बहुता जीवणु मंगीऐ मुआ न लोड़ै कोइ ॥ (६३-५, सिरीरागु, मः १)

सुख जीवणु तिसु आखीऐ जिसु गुरमुखि वसिआ सोइ ॥ (६३-६, सिरीरागु, मः १)
नाम विहूणे किआ गणी जिसु हरि गुर दरसु न होइ ॥६॥ (६३-६, सिरीरागु, मः १)
जिउ सुपनै निसि भुलीऐ जब लगि निद्रा होइ ॥ (६३-७, सिरीरागु, मः १)
इउ सरपनि कै वसि जीअड़ा अंतरि हउमै दोइ ॥ (६३-७, सिरीरागु, मः १)
गुरमति होइ वीचारीऐ सुपना इहु जगु लोइ ॥७॥ (६३-८, सिरीरागु, मः १)
अगनि मरै जलु पाईऐ जिउ बारिक दूधै माइ ॥ (६३-८, सिरीरागु, मः १)
बिनु जल कमल सु ना थीऐ बिनु जल मीनु मराइ ॥ (६३-९, सिरीरागु, मः १)
नानक गुरमुखि हरि रसि मिलै जीवा हरि गुण गाइ ॥८॥१५॥ (६३-९, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (६३-१०)
डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥ (६३-१०, सिरीरागु, मः १)
ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥ (६३-११, सिरीरागु, मः १)
गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥१॥ (६३-११, सिरीरागु, मः १)
भाई रे भवजलु बिखमु डरांउ ॥ (६३-११, सिरीरागु, मः १)
पूरा सतिगुरु रसि मिलै गुरु तारे हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (६३-१२, सिरीरागु, मः १)
चला चला जे करी जाणा चलणहारु ॥ (६३-१२, सिरीरागु, मः १)
जो आइआ सो चलसी अमरु सु गुरु करतारु ॥ (६३-१३, सिरीरागु, मः १)
भी सचा सालाहणा सचै थानि पिआरु ॥२॥ (६३-१३, सिरीरागु, मः १)
दर घर महला सोहणे पके कोट हजार ॥ (६३-१४, सिरीरागु, मः १)
हसती घोड़े पाखरे लसकर लख अपार ॥ (६३-१४, सिरीरागु, मः १)
किस ही नालि न चलिआ खपि खपि मुए असार ॥३॥ (६३-१४, सिरीरागु, मः १)
सुइना रुपा संचीऐ मालु जालु जंजालु ॥ (६३-१५, सिरीरागु, मः १)
सभ जग महि दोही फेरीऐ बिनु नावै सिरि कालु ॥ (६३-१५, सिरीरागु, मः १)
पिंडु पड़ै जीउ खेलसी बदफैली किआ हालु ॥४॥ (६३-१६, सिरीरागु, मः १)
पुता देखि विगसीऐ नारी सेज भतार ॥ (६३-१६, सिरीरागु, मः १)
चोआ चंदनु लाईऐ कापड़ु रूपु सीगारु ॥ (६३-१७, सिरीरागु, मः १)
खेहू खेह रलाईऐ छोडि चलै घर बारु ॥५॥ (६३-१७, सिरीरागु, मः १)
महर मलूक कहाईऐ राजा राउ कि खानु ॥ (६३-१८, सिरीरागु, मः १)
चउधरी राउ सदाईऐ जलि बलीऐ अभिमान ॥ (६३-१८, सिरीरागु, मः १)
मनमुखि नामु विसारिआ जिउ डवि दधा कानु ॥६॥ (६३-१९, सिरीरागु, मः १)
हउमै करि करि जाइसी जो आइआ जग माहि ॥ (६३-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ६४

सभु जगु काजल कोठड़ी तनु मनु देह सुआहि ॥ (६४-१, सिरीरागु, मः १)
गुरि राखे से निरमले सबदि निवारी भाहि ॥७॥ (६४-१, सिरीरागु, मः १)
नानक तरीऐ सचि नामि सिरि साहा पातिसाहु ॥ (६४-२, सिरीरागु, मः १)

मै हरि नामु न वीसरै हरि नामु रतनु वेसाहु ॥ (६४-२, सिरीरागु, मः १)
मनमुख भउजलि पचि मुए गुरमुखि तरे अथाहु ॥८॥१६॥ (६४-३, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ घरु २ ॥ (६४-३)
मुकामु करि घरि बैसणा नित चलणै की धोख ॥ (६४-४, सिरीरागु, मः १)
मुकामु ता परु जाणीऐ जा रहै निहचलु लोक ॥१॥ (६४-४, सिरीरागु, मः १)
दुनीआ कैसि मुकामे ॥ (६४-५, सिरीरागु, मः १)
करि सिदकु करणी खरचु बाधहु लागि रहु नामे ॥१॥ रहाउ ॥ (६४-५, सिरीरागु, मः १)
जोगी त आसणु करि बहै मुला बहै मुकामि ॥ (६४-५, सिरीरागु, मः १)
पंडित वखाणहि पोथीआ सिध बहहि देव सथानि ॥२॥ (६४-६, सिरीरागु, मः १)
सुर सिध गण गंधरब मुनि जन सेख पीर सलार ॥ (६४-६, सिरीरागु, मः १)
दरि कूच कूचा करि गए अवरे भि चलणहार ॥३॥ (६४-७, सिरीरागु, मः १)
सुलतान खान मलूक उमरे गए करि करि कूचु ॥ (६४-७, सिरीरागु, मः १)
घड़ी मुहति कि चलणा दिल समझु तूं भि पहूचु ॥४॥ (६४-८, सिरीरागु, मः १)
सबदाह माहि वखाणीऐ विरला त बूझै कोइ ॥ (६४-८, सिरीरागु, मः १)
नानकु वखाणै बेनती जलि थलि महीअलि सोइ ॥५॥ (६४-९, सिरीरागु, मः १)
अलाहु अलखु अगम्मु कादरु करणहारु करीमु ॥ (६४-९, सिरीरागु, मः १)
सभ दुनी आवण जावणी मुकामु एकु रहीमु ॥६॥ (६४-१०, सिरीरागु, मः १)
मुकामु तिस नो आखीऐ जिसु सिसि न होवी लेखु ॥ (६४-१०, सिरीरागु, मः १)
असमानु धरती चलसी मुकामु ओही एकु ॥७॥ (६४-११, सिरीरागु, मः १)
दिन रवि चलै निसि ससि चलै तारिका लख पलोइ ॥ (६४-११, सिरीरागु, मः १)
मुकामु ओही एकु है नानका सचु बुगोइ ॥८॥१७॥ (६४-१२, सिरीरागु, मः १)
महले पहिले सतारह असटपदीआ ॥ (६४-१३)
सिरीरागु महला ३ घरु १ असटपदीआ (६४-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६४-१४)
गुरमुखि कृपा करे भगति कीजै बिनु गुर भगति न होइ ॥ (६४-१५, सिरीरागु, मः ३)
आपै आपु मिलाए बूझै ता निरमलु होवै कोइ ॥ (६४-१५, सिरीरागु, मः ३)
हरि जीउ सचा सची बाणी सबदि मिलावा होइ ॥१॥ (६४-१६, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे भगतिहीणु काहे जगि आइआ ॥ (६४-१६, सिरीरागु, मः ३)
पूरे गुर की सेव न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६४-१७, सिरीरागु, मः ३)
आपे हरि जगजीवनु दाता आपे बखसि मिलाए ॥ (६४-१८, सिरीरागु, मः ३)
जीअ जंत ए किआ वेचारे किआ को आखि सुणाए ॥ (६४-१८, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि आपे दे वडिआई आपे सेव कराए ॥२॥ (६४-१९, सिरीरागु, मः ३)
देखि कुटम्बु मोहि लोभाणा चलदिआ नालि न जाई ॥ (६४-१९, सिरीरागु, मः ३)

सतिगुरु सेवि गुण निधानु पाइआ तिस की कीम न पाई ॥ (६५-१, सिरीरागु, मः ३)
प्रभु सखा हरि जीउ मेरा अंते होइ सखाई ॥३॥ (६५-१, सिरीरागु, मः ३)
पेईअड़ै जगजीवनु दाता मनमुखि पति गवाई ॥ (६५-२, सिरीरागु, मः ३)
बिनु सतिगुर को मगु न जाणै अंधे ठउर न काई ॥ (६५-२, सिरीरागु, मः ३)
हरि सुखदाता मनि नही वसिआ अंति गइआ पछुताई ॥४॥ (६५-३, सिरीरागु, मः ३)
पेईअड़ै जगजीवनु दाता गुरमति मंनि वसाइआ ॥ (६५-३, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु भगति करहि दिनु राती हउमै मोहु चुकाइआ ॥ (६५-४, सिरीरागु, मः ३)
जिसु सिउ राता तैसो होवै सचे सचि समाइआ ॥५॥ (६५-५, सिरीरागु, मः ३)
आपे नदरि करे भाउ लाए गुर सबदी बीचारि ॥ (६५-५, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु सेविऐ सहजु ऊपजै हउमै तृसना मारि ॥ (६५-६, सिरीरागु, मः ३)
हरि गुणदाता सद मनि वसै सचु रखिआ उर धारि ॥६॥ (६५-६, सिरीरागु, मः ३)
प्रभु मेरा सदा निरमला मनि निरमलि पाइआ जाइ ॥ (६५-७, सिरीरागु, मः ३)
नामु निधानु हरि मनि वसै हउमै दुखु सभु जाइ ॥ (६५-७, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरि सबदु सुणाइआ हउ सद बलिहारै जाउ ॥७॥ (६५-८, सिरीरागु, मः ३)
आपणै मनि चिति कहै कहाए बिनु गुर आपु न जाई ॥ (६५-८, सिरीरागु, मः ३)
हरि जीउ भगति वछलु सुखदाता करि किरपा मंनि वसाई ॥ (६५-९, सिरीरागु, मः ३)
नानक सोभा सुरति देइ प्रभु आपे गुरमुखि दे वडिआई ॥८॥१॥१८॥ (६५-९, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (६५-१०)
हउमै कर्म कमावदे जमडंडु लगै तिन आइ ॥ (६५-१०, सिरीरागु, मः ३)
जि सतिगुरु सेवनि से उबरे हरि सेती लिव लाइ ॥१॥ (६५-११, सिरीरागु, मः ३)
मन रे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (६५-११, सिरीरागु, मः ३)
धुरि पूरबि करतै लिखिआ तिना गुरमति नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६५-१२, सिरीरागु, मः ३)
विणु सतिगुर परतीति न आवई नामि न लागो भाउ ॥ (६५-१२, सिरीरागु, मः ३)
सुपनै सुखु न पावई दुख महि सवै समाइ ॥२॥ (६५-१३, सिरीरागु, मः ३)
जे हरि हरि कीचै बहुतु लोचीऐ किरतु न मेटिआ जाइ ॥ (६५-१३, सिरीरागु, मः ३)
हरि का भाणा भगती मंनिआ से भगत पए दरि थाइ ॥३॥ (६५-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुरु सबदु दिड़ावै रंग सिउ बिनु किरपा लइआ न जाइ ॥ (६५-१५, सिरीरागु, मः ३)
जे सउ अमृतु नीरीऐ भी बिखु फलु लागै धाइ ॥४॥ (६५-१५, सिरीरागु, मः ३)
से जन सचे निरमले जिन सतिगुर नालि पिआरु ॥ (६५-१६, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुर का भाणा कमावदे बिखु हउमै तजि विकारु ॥५॥ (६५-१६, सिरीरागु, मः ३)
मनहठि कितै उपाइ न छूटीऐ सिमृति सासत्र सोधहु जाइ ॥ (६५-१७, सिरीरागु, मः ३)
मिलि संगति साधू उबरे गुर का सबदु कमाइ ॥६॥ (६५-१७, सिरीरागु, मः ३)
हरि का नामु निधानु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ (६५-१८, सिरीरागु, मः ३)

गुरमुखि सेई सोहदे जिन किरपा करे करतारु ॥७॥ (६५-१८, सिरीरागु, मः ३)
नानक दाता एकु है दूजा अउरु न कोइ ॥ (६५-१६, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी पाईऐ करमि परापति होइ ॥८॥२॥१६॥ (६५-१६, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ६६

सिरीरागु महला ३ ॥ (६६-१)
पंखी बिरखि सुहावड़ा सचु चुगै गुर भाइ ॥ (६६-१, सिरीरागु, मः ३)
हरि रसु पीवै सहजि रहै उडै न आवै जाइ ॥ (६६-२, सिरीरागु, मः ३)
निज घरि वासा पाइआ हरि हरि नामि समाइ ॥१॥ (६६-२, सिरीरागु, मः ३)
मन रे गुर की कार कमाइ ॥ (६६-३, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै भाणै जे चलहि ता अनदिनु राचहि हरि नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६-३, सिरीरागु, मः ३)
पंखी बिरख सुहावड़े ऊडहि चहु दिसि जाहि ॥ (६६-४, सिरीरागु, मः ३)
जेता ऊडहि दुख घणे नित दाझहि तै बिललाहि ॥ (६६-४, सिरीरागु, मः ३)
बिनु गुर महलु न जापई ना अमृत फल पाहि ॥२॥ (६६-४, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि ब्रह्मु हरीआवला साचै सहजि सुभाइ ॥ (६६-५, सिरीरागु, मः ३)
साखा तीनि निवारीआ एक सबदि लिव लाइ ॥ (६६-६, सिरीरागु, मः ३)
अमृत फलु हरि एकु है आपे देइ खवाइ ॥३॥ (६६-६, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख ऊभे सुकि गए ना फलु तिन्ना छाउ ॥ (६६-७, सिरीरागु, मः ३)
तिन्ना पासि न बैसीऐ ओना घरु न गिराउ ॥ (६६-७, सिरीरागु, मः ३)
कटीअहि तै नित जालीअहि ओना सबदु न नाउ ॥४॥ (६६-७, सिरीरागु, मः ३)
हुकमे कर्म कमावणे पइऐ किरति फिराउ ॥ (६६-८, सिरीरागु, मः ३)
हुकमे दरसनु देखणा जह भेजहि तह जाउ ॥ (६६-८, सिरीरागु, मः ३)
हुकमे हरि हरि मनि वसै हुकमे सचि समाउ ॥५॥ (६६-९, सिरीरागु, मः ३)
हुकमु न जाणहि बपुड़े भूले फिरहि गवार ॥ (६६-९, सिरीरागु, मः ३)
मनहठि कर्म कमावदे नित नित होहि खुआरु ॥ (६६-१०, सिरीरागु, मः ३)
अंतरि साँति न आवई ना सचि लगै पिआरु ॥६॥ (६६-१०, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखीआ मुह सोहणे गुर कै हेति पिआरि ॥ (६६-११, सिरीरागु, मः ३)
सची भगती सचि रते दरि सचै सचिआर ॥ (६६-११, सिरीरागु, मः ३)
आए से परवाणु है सभ कुल का करहि उधारु ॥७॥ (६६-१२, सिरीरागु, मः ३)
सभ नदरी कर्म कमावदे नदरी बाहरि न कोइ ॥ (६६-१२, सिरीरागु, मः ३)
जैसी नदरि करि देखै सचा तैसा ही को होइ ॥ (६६-१३, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामि वडाईआ करमि परापति होइ ॥८॥३॥२०॥ (६६-१३, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (६६-१४)
गुरमुखि नामु धिआईऐ मनमुखि बूझ न पाइ ॥ (६६-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि सदा मुख ऊजले हरि वसिआ मनि आइ ॥ (६६-१५, सिरीरागु, मः ३)

सहजे ही सुखु पाईऐ सहजे रहै समाइ ॥१॥ (६६-१५, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे दासनि दासा होइ ॥ (६६-१५, सिरीरागु, मः ३)
गुर की सेवा गुर भगति है विरला पाए कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६-१६, सिरीरागु, मः ३)
सदा सुहागु सुहागणी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (६६-१६, सिरीरागु, मः ३)
सदा पिरु निहचलु पाईऐ ना ओहु मरै न जाइ ॥ (६६-१७, सिरीरागु, मः ३)
सबदि मिली ना वीछुड़ै पिर कै अंकि समाइ ॥२॥ (६६-१७, सिरीरागु, मः ३)
हरि निरमलु अति ऊजला बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ (६६-१८, सिरीरागु, मः ३)
पाठु पड़ै ना बूझई भेखी भरमि भुलाइ ॥ (६६-१८, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती हरि सदा पाइआ रसना हरि रसु समाइ ॥३॥ (६६-१९, सिरीरागु, मः ३)
माइआ मोहु चुकाइआ गुरमती सहजि सुभाइ ॥ (६६-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ६७

बिनु सबदै जगु दुखीआ फिरै मनमुखा नो गई खाइ ॥ (६७-१, सिरीरागु, मः ३)
सबदे नामु धिआईऐ सबदे सचि समाइ ॥४॥ (६७-१, सिरीरागु, मः ३)
माइआ भूले सिध फिरहि समाधि न लगै सुभाइ ॥ (६७-२, सिरीरागु, मः ३)
तीने लोअ विआपत है अधिक रही लपटाइ ॥ (६७-२, सिरीरागु, मः ३)
बिनु गुर मुकति न पाईऐ ना दुबिधा माइआ जाइ ॥५॥ (६७-३, सिरीरागु, मः ३)
माइआ किस नो आखीऐ किआ माइआ कर्म कमाइ ॥ (६७-३, सिरीरागु, मः ३)
दुखि सुखि एहु जीउ बधु है हउमै कर्म कमाइ ॥ (६७-४, सिरीरागु, मः ३)
बिनु सबदै भरमु न चूकई ना विचहु हउमै जाइ ॥६॥ (६७-४, सिरीरागु, मः ३)
बिनु प्रीती भगति न होवई बिनु सबदै थाइ न पाइ ॥ (६७-५, सिरीरागु, मः ३)
सबदे हउमै मारीऐ माइआ का भ्रमु जाइ ॥ (६७-६, सिरीरागु, मः ३)
नामु पदारथु पाईऐ गुरमुखि सहजि सुभाइ ॥७॥ (६७-६, सिरीरागु, मः ३)
बिनु गुर गुण न जापनी बिनु गुण भगति न होइ ॥ (६७-७, सिरीरागु, मः ३)
भगति वछलु हरि मनि वसिआ सहजि मिलिआ प्रभु सोइ ॥ (६७-७, सिरीरागु, मः ३)
नानक सबदे हरि सालाहीऐ करमि परापति होइ ॥८॥४॥२१॥ (६७-८, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (६७-८)
माइआ मोहु मेरै प्रभि कीना आपे भरमि भुलाए ॥ (६७-९, सिरीरागु, मः ३)
मनमुखि कर्म करहि नही बूझहि बिरथा जनमु गवाए ॥ (६७-९, सिरीरागु, मः ३)
गुरबाणी इसु जग महि चानणु करमि वसै मनि आए ॥१॥ (६७-१०, सिरीरागु, मः ३)
मन रे नामु जपहु सुखु होइ ॥ (६७-१०, सिरीरागु, मः ३)
गुरु पूरा सालाहीऐ सहजि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७-११, सिरीरागु, मः ३)
भरमु गइआ भउ भागिआ हरि चरणी चितु लाइ ॥ (६७-११, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि सबदु कमाईऐ हरि वसै मनि आइ ॥ (६७-१२, सिरीरागु, मः ३)
घरि महलि सचि समाईऐ जमकालु न सकै खाइ ॥२॥ (६७-१२, सिरीरागु, मः ३)

नामा छीबा कबीरु जोलाहा पूरे गुर ते गति पाई ॥ (६७-१३, सिरीरागु, मः ३)
ब्रह्म के बेते सबदु पछाणहि हउमै जाति गवाई ॥ (६७-१३, सिरीरागु, मः ३)
सुरि नर तिन की बाणी गावहि कोइ न मेटै भाई ॥३॥ (६७-१४, सिरीरागु, मः ३)
दैत पुतु कर्म धर्म किछु संजम न पड़ै दूजा भाउ न जाणै ॥ (६७-१४, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु भेटिऐ निरमलु होआ अनदिनु नामु वखाणै ॥ (६७-१५, सिरीरागु, मः ३)
एको पड़ै एको नाउ बूझै दूजा अवरु न जाणै ॥४॥ (६७-१५, सिरीरागु, मः ३)
खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ (६७-१६, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु सेवहि ता गति मिति पावहि हरि जीउ मंनि वसाए ॥ (६७-१७, सिरीरागु, मः ३)
सची बाणी सिउ चितु लागै आवणु जाणु रहाए ॥५॥ (६७-१७, सिरीरागु, मः ३)
पंडित पड़ि पड़ि वादु वखाणहि बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ (६७-१८, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह फेरु पइआ बिनु सबदै मुकति न पाए ॥ (६७-१८, सिरीरागु, मः ३)
जा नाउ चेतै ता गति पाए जा सतिगुरु मेलि मिलाए ॥६॥ (६७-१९, सिरीरागु, मः ३)
सतसंगति महि नामु हरि उपजै जा सतिगुरु मिलै सुभाए ॥ (६७-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ६८

मनु तनु अरपी आपु गवाई चला सतिगुर भाए ॥ (६८-१, सिरीरागु, मः ३)
सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जि हरि सेती चितु लाए ॥७॥ (६८-१, सिरीरागु, मः ३)
सो ब्राहमणु ब्रह्मु जो बिंदे हरि सेती रंगि राता ॥ (६८-२, सिरीरागु, मः ३)
प्रभु निकटि वसै सभना घट अंतरि गुरमुखि विरलै जाता ॥ (६८-३, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई गुर कै सबदि पछाता ॥८॥५॥२२॥ (६८-३, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (६८-४)
सहजै नो सभ लोचदी बिनु गुर पाइआ न जाइ ॥ (६८-४, सिरीरागु, मः ३)
पड़ि पड़ि पंडित जोतकी थके भेखी भरमि भुलाए ॥ (६८-५, सिरीरागु, मः ३)
गुर भेटे सहजु पाइआ आपणी किरपा करे रजाइ ॥१॥ (६८-५, सिरीरागु, मः ३)
भाई रे गुर बिनु सहजु न होइ ॥ (६८-६, सिरीरागु, मः ३)
सबदै ही ते सहजु ऊपजै हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६८-६, सिरीरागु, मः ३)
सहजे गाविआ थाइ पवै बिनु सहजै कथनी बादि ॥ (६८-७, सिरीरागु, मः ३)
सहजे ही भगति ऊपजै सहजि पिआरि बैरागि ॥ (६८-७, सिरीरागु, मः ३)
सहजै ही ते सुख साति होइ बिनु सहजै जीवणु बादि ॥२॥ (६८-८, सिरीरागु, मः ३)
सहजि सालाही सदा सदा सहजि समाधि लगाइ ॥ (६८-८, सिरीरागु, मः ३)
सहजे ही गुण ऊचरै भगति करे लिव लाइ ॥ (६८-९, सिरीरागु, मः ३)
सबदे ही हरि मनि वसै रसना हरि रसु खाइ ॥३॥ (६८-९, सिरीरागु, मः ३)
सहजे कालु विडारिआ सच सरणाई पाइ ॥ (६८-१०, सिरीरागु, मः ३)
सहजे हरि नामु मनि वसिआ सची कार कमाइ ॥ (६८-१०, सिरीरागु, मः ३)
से वडभागी जिनी पाइआ सहजे रहे समाइ ॥४॥ (६८-११, सिरीरागु, मः ३)

माइआ विचि सहजु न ऊपजै माइआ दूजै भाइ ॥ (६८-११, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख कर्म कमावणे हउमै जलै जलाइ ॥ (६८-१२, सिरीरागु, मः ३)
जम्मणु मरणु न चूकई फिरि फिरि आवै जाइ ॥५॥ (६८-१२, सिरीरागु, मः ३)
तृहु गुणा विचि सहजु न पाईऐ त्रै गुण भरमि भुलाइ ॥ (६८-१३, सिरीरागु, मः ३)
पड़ीऐ गुणीऐ किआ कथीऐ जा मुंढहु घुथा जाइ ॥ (६८-१३, सिरीरागु, मः ३)
चउथे पद महि सहजु है गुरमुखि पलै पाइ ॥६॥ (६८-१४, सिरीरागु, मः ३)
निरगुण नामु निधानु है सहजे सोझी होइ ॥ (६८-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुणवंती सालाहिआ सचे सची सोइ ॥ (६८-१५, सिरीरागु, मः ३)
भुलिआ सहजि मिलाइसी सबदि मिलावा होइ ॥७॥ (६८-१५, सिरीरागु, मः ३)
बिनु सहजै सभु अंधु है माइआ मोहु गुबारु ॥ (६८-१५, सिरीरागु, मः ३)
सहजे ही सोझी पई सचै सबदि अपारि ॥ (६८-१६, सिरीरागु, मः ३)
आपे बखसि मिलाइअनु पूरे गुर करतारि ॥८॥ (६८-१६, सिरीरागु, मः ३)
सहजे अदिसटु पछाणीऐ निरभउ जोति निरंकारु ॥ (६८-१७, सिरीरागु, मः ३)
सभना जीआ का इकु दाता जोती जोति मिलावणहारु ॥ (६८-१७, सिरीरागु, मः ३)
पूरै सबदि सलाहीऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥९॥ (६८-१८, सिरीरागु, मः ३)
गिआनीआ का धनु नामु है सहजि करहि वापारु ॥ (६८-१८, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु लाहा हरि नामु लैनि अखुट भरे भंडार ॥ (६८-१९, सिरीरागु, मः ३)
नानक तोटि न आवई दीए देवणहारि ॥१०॥६॥२३॥ (६८-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ६९

सिरीरागु महला ३ ॥ (६९-१)
सतिगुरि मिलिऐ फेरु न पवै जनम मरण दुखु जाइ ॥ (६९-१, सिरीरागु, मः ३)
पूरै सबदि सभ सोझी होई हरि नामै रहै समाइ ॥१॥ (६९-२, सिरीरागु, मः ३)
मन मेरे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ (६९-२, सिरीरागु, मः ३)
निरमलु नामु सद नवतनो आपि वसै मनि आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६९-३, सिरीरागु, मः ३)
हरि जीउ राखहु अपुनी सरणाई जिउ राखहि तिउ रहणा ॥ (६९-३, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै सबदि जीवतु मरै गुरमुखि भवजलु तरणा ॥२॥ (६९-४, सिरीरागु, मः ३)
वडै भागि नाउ पाईऐ गुरमति सबदि सुहाई ॥ (६९-४, सिरीरागु, मः ३)
आपे मनि वसिआ प्रभु करता सहजे रहिआ समाई ॥३॥ (६९-५, सिरीरागु, मः ३)
इकना मनमुखि सबदु न भावै बंधनि बंधि भवाइआ ॥ (६९-५, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह फिरि फिरि आवै बिरथा जनमु गवाइआ ॥४॥ (६९-६, सिरीरागु, मः ३)
भगता मनि आनंदु है सचै सबदि रंगि राते ॥ (६९-७, सिरीरागु, मः ३)
अनदिनु गुण गावहि सद निर्मल सहजे नामि समाते ॥५॥ (६९-७, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि अमृत बाणी बोलहि सभ आतम रामु पछाणी ॥ (६९-८, सिरीरागु, मः ३)
एको सेवनि एकु अराधहि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥६॥ (६९-८, सिरीरागु, मः ३)

सचा साहिबु सेवीऐ गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ (६६-६, सिरीरागु, मः ३)
सदा रंगि राते सच सिउ अपुनी किरपा करे मिलाइ ॥७॥ (६६-६, सिरीरागु, मः ३)
आपे करे कराए आपे इकना सुतिआ देइ जगाइ ॥ (६६-१०, सिरीरागु, मः ३)
आपे मेलि मिलाइदा नानक सबदि समाइ ॥८॥७॥२४॥ (६६-११, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ३ ॥ (६६-११)
सतिगुरि सेविऐ मनु निरमला भए पवितु सरीर ॥ (६६-११, सिरीरागु, मः ३)
मनि आनंदु सदा सुखु पाइआ भेटिआ गहिर गम्भीरु ॥ (६६-१२, सिरीरागु, मः ३)
सची संगति बैसणा सचि नामि मनु धीर ॥१॥ (६६-१२, सिरीरागु, मः ३)
मन रे सतिगुरु सेवि निसंगु ॥ (६६-१३, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु सेविऐ हरि मनि वसै लगै न मैलु पतंगु ॥१॥ रहाउ ॥ (६६-१३, सिरीरागु, मः ३)
सचै सबदि पति ऊपजै सचे सचा नाउ ॥ (६६-१४, सिरीरागु, मः ३)
जिनी हउमै मारि पछाणिआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (६६-१४, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख सचु न जाणनी तिन ठउर न कतहू थाउ ॥२॥ (६६-१५, सिरीरागु, मः ३)
सचु खाणा सचु पैनणा सचे ही विचि वासु ॥ (६६-१५, सिरीरागु, मः ३)
सदा सचा सालाहणा सचै सबदि निवासु ॥ (६६-१६, सिरीरागु, मः ३)
सभु आतम रामु पछाणिआ गुरमती निज घरि वासु ॥३॥ (६६-१६, सिरीरागु, मः ३)
सचु वेखणु सचु बोलणा तनु मनु सचा होइ ॥ (६६-१७, सिरीरागु, मः ३)
सची साखी उपदेसु सचु सचे सची सोइ ॥ (६६-१७, सिरीरागु, मः ३)
जिन्नी सचु विसारिआ से दुखीए चले रोइ ॥४॥ (६६-१८, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु जिनी न सेविओ से कितु आए संसारि ॥ (६६-१८, सिरीरागु, मः ३)
जम दरि बधे मारीअहि कूक न सुणै पूकार ॥ (६६-१६, सिरीरागु, मः ३)
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जम्महि वारो वार ॥५॥ (६६-१६, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ७०

एहु जगु जलता देखि कै भजि पए सतिगुर सरणा ॥ (७०-१, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरि सचु दिड़ाइआ सदा सचि संजमि रहणा ॥ (७०-१, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुर सचा है बोहिथा सबदे भवजलु तरणा ॥६॥ (७०-२, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह फिरदे रहे बिनु सतिगुर मुकति न होई ॥ (७०-२, सिरीरागु, मः ३)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके दूजै भाइ पति खोई ॥ (७०-३, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरि सबदु सुणाइआ बिनु सचे अवरु न कोई ॥७॥ (७०-३, सिरीरागु, मः ३)
जो सचै लाए से सचि लगे नित सची कार करंनि ॥ (७०-४, सिरीरागु, मः ३)
तिना निज घरि वासा पाइआ सचै महलि रहंनि ॥ (७०-५, सिरीरागु, मः ३)
नानक भगत सुखीए सदा सचै नामि रचंनि ॥८॥१७॥८॥२५॥ (७०-५, सिरीरागु, मः ३)
सिरीरागु महला ५ ॥ (७०-६)
जा कउ मुसकलु अति बणै ढोई कोइ न देइ ॥ (७०-६, सिरीरागु, मः ५)

लागू होए दुसमना साक भि भजि खले ॥ (७०-६, सिरीरागु, मः ५)
सभो भजै आसरा चुकै सभु असराउ ॥ (७०-७, सिरीरागु, मः ५)
चिति आवै ओसु पारब्रह्मु लगै न तती वाउ ॥१॥ (७०-७, सिरीरागु, मः ५)
साहिबु निताणिआ का ताणु ॥ (७०-८, सिरीरागु, मः ५)
आइ न जाई थिरु सदा गुर सबदी सचु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (७०-८, सिरीरागु, मः ५)
जे को होवै दुबला नंग भुख की पीर ॥ (७०-६, सिरीरागु, मः ५)
दमड़ा पलै ना पवै ना को देवै धीर ॥ (७०-६, सिरीरागु, मः ५)
सुआरथु सुआउ न को करे ना किछु होवै काजु ॥ (७०-६, सिरीरागु, मः ५)
चिति आवै ओसु पारब्रह्मु ता निहचलु होवै राजु ॥२॥ (७०-१०, सिरीरागु, मः ५)
जा कउ चिंता बहुतु बहुतु देही विआपै रोगु ॥ (७०-१०, सिरीरागु, मः ५)
गृसति कुटंबि पलेटिआ कदे हरखु कदे सोगु ॥ (७०-११, सिरीरागु, मः ५)
गउणु करे चहु कुंट का घड़ी न बैसणु सोइ ॥ (७०-११, सिरीरागु, मः ५)
चिति आवै ओसु पारब्रह्मु तनु मनु सीतलु होइ ॥३॥ (७०-१२, सिरीरागु, मः ५)
कामि करोधि मोहि वसि कीआ किरपन लोभि पिआरु ॥ (७०-१२, सिरीरागु, मः ५)
चारे किलविख उनि अघ कीए होआ असुर संघारु ॥ (७०-१३, सिरीरागु, मः ५)
पोथी गीत कवित किछु कदे न करनि धरिआ ॥ (७०-१३, सिरीरागु, मः ५)
चिति आवै ओसु पारब्रह्मु ता निमख सिमरत तरिआ ॥४॥ (७०-१४, सिरीरागु, मः ५)
सासत सिम्मृति बेद चारि मुखागर बिचरे ॥ (७०-१५, सिरीरागु, मः ५)
तपे तपीसर जोगीआ तीरथि गवनु करे ॥ (७०-१५, सिरीरागु, मः ५)
खटु करमा ते दुगुणे पूजा करता नाइ ॥ (७०-१५, सिरीरागु, मः ५)
रंगु न लगी पारब्रह्म ता सरपर नरके जाइ ॥५॥ (७०-१६, सिरीरागु, मः ५)
राज मिलक सिकदारीआ रस भोगण बिसथार ॥ (७०-१६, सिरीरागु, मः ५)
बाग सुहावे सोहणे चलै हुकमु अफार ॥ (७०-१७, सिरीरागु, मः ५)
रंग तमासे बहु बिधी चाइ लगि रहिआ ॥ (७०-१७, सिरीरागु, मः ५)
चिति न आइओ पारब्रह्मु ता सर्प की जूनि गइआ ॥६॥ (७०-१८, सिरीरागु, मः ५)
बहुतु धनाढि अचारवंतु सोभा निर्मल रीति ॥ (७०-१८, सिरीरागु, मः ५)
मात पिता सुत भाईआ साजन संगि परीति ॥ (७०-१६, सिरीरागु, मः ५)
लसकर तरकसबंद बंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ (७०-१६, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ७१

चिति न आइओ पारब्रह्मु ता खड़ि रसातलि दीत ॥७॥ (७१-१, सिरीरागु, मः ५)
काइआ रोगु न छिद्रु किछु ना किछु काड़ा सोगु ॥ (७१-१, सिरीरागु, मः ५)
मिरतु न आवी चिति तिसु अहिनिसि भोगै भोगु ॥ (७१-२, सिरीरागु, मः ५)
सभ किछु कीतोनु आपणा जीइ न संक धरिआ ॥ (७१-२, सिरीरागु, मः ५)
चिति न आइओ पारब्रह्मु जमकंकर वसि परिआ ॥८॥ (७१-३, सिरीरागु, मः ५)

किरपा करे जिसु पारब्रह्मु होवै साधू संगु ॥ (७१-३, सिरीरागु, मः ५)
जिउ जिउ ओहु वधाईऐ तिउ तिउ हरि सिउ रंगु ॥ (७१-४, सिरीरागु, मः ५)
दुहा सिरिआ का खसमु आपि अवरु न दूजा थाउ ॥ (७१-४, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर तुठै पाइआ नानक सचा नाउ ॥६॥१॥२६॥ (७१-५, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ५ घरु ५ ॥ (७१-५)
जानउ नही भावै कवन बाता ॥ (७१-६, सिरीरागु, मः ५)
मन खोजि मारगु ॥१॥ रहाउ ॥ (७१-६, सिरीरागु, मः ५)
धिआनी धिआनु लावहि ॥ (७१-६, सिरीरागु, मः ५)
गिआनी गिआनु कमावहि ॥ (७१-७, सिरीरागु, मः ५)
प्रभु किन ही जाता ॥१॥ (७१-७, सिरीरागु, मः ५)
भगउती रहत जुगता ॥ (७१-७, सिरीरागु, मः ५)
जोगी कहत मुकता ॥ (७१-७, सिरीरागु, मः ५)
तपसी तपहि राता ॥२॥ (७१-८, सिरीरागु, मः ५)
मोनी मोनिधारी ॥ (७१-८, सिरीरागु, मः ५)
सनिआसी ब्रह्मचारी ॥ (७१-८, सिरीरागु, मः ५)
उदासी उदासि राता ॥३॥ (७१-८, सिरीरागु, मः ५)
भगति नवै परकारा ॥ (७१-९, सिरीरागु, मः ५)
पंडितु वेदु पुकारा ॥ (७१-९, सिरीरागु, मः ५)
गिरसती गिरसति धरमाता ॥४॥ (७१-९, सिरीरागु, मः ५)
इक सबदी बहु रूपि अवधूता ॥ (७१-९, सिरीरागु, मः ५)
कापड़ी कउते जागूता ॥ (७१-१०, सिरीरागु, मः ५)
इकि तीरथि नाता ॥५॥ (७१-१०, सिरीरागु, मः ५)
निरहार वरती आपरसा ॥ (७१-१०, सिरीरागु, मः ५)
इकि लूकि न देवहि दरसा ॥ (७१-११, सिरीरागु, मः ५)
इकि मन ही गिआता ॥६॥ (७१-११, सिरीरागु, मः ५)
घाटि न किन ही कहाइआ ॥ (७१-११, सिरीरागु, मः ५)
सभ कहते है पाइआ ॥ (७१-११, सिरीरागु, मः ५)
जिसु मेले सो भगता ॥७॥ (७१-१२, सिरीरागु, मः ५)
सगल उकति उपावा ॥ (७१-१२, सिरीरागु, मः ५)
तिआगी सरनि पावा ॥ (७१-१२, सिरीरागु, मः ५)
नानकु गुर चरणि पराता ॥८॥२॥२७॥ (७१-१२, सिरीरागु, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१-१४)
सिरीरागु महला १ घरु ३ ॥ (७१-१५)
जोगी अंदरि जोगीआ ॥ (७१-१५, सिरीरागु, मः १)
तूं भोगी अंदरि भोगीआ ॥ (७१-१५, सिरीरागु, मः १)

तेरा अंतु न पाइआ सुरगि मछि पइआलि जीउ ॥१॥ (७१-१५, सिरीरागु, मः १)
हउ वारी हउ वारणै कुरबाणु तेरे नाव नो ॥१॥ रहाउ ॥ (७१-१६, सिरीरागु, मः १)
तुधु संसारु उपाइआ ॥ (७१-१७, सिरीरागु, मः १)
सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥ (७१-१७, सिरीरागु, मः १)
वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥२॥ (७१-१७, सिरीरागु, मः १)
परगटि पाहारै जापदा ॥ (७१-१८, सिरीरागु, मः १)
सभु नावै नो परतापदा ॥ (७१-१८, सिरीरागु, मः १)
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ मोही माइआ जालि जीउ ॥३॥ (७१-१८, सिरीरागु, मः १)
सतिगुर कउ बलि जाईऐ ॥ (७१-१९, सिरीरागु, मः १)
जितु मिलिऐ परम गति पाईऐ ॥ (७१-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ७२

सुरि नर मुनि जन लोचदे सो सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥४॥ (७२-१, सिरीरागु, मः १)
सतसंगति कैसी जाणीऐ ॥ (७२-१, सिरीरागु, मः १)
जिथै एको नामु वखाणीऐ ॥ (७२-१, सिरीरागु, मः १)
एको नामु हुकमु है नानक सतिगुरि दीआ बुझाइ जीउ ॥५॥ (७२-२, सिरीरागु, मः १)
इहु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ (७२-२, सिरीरागु, मः १)
आपहु तुधु खुआइआ ॥ (७२-३, सिरीरागु, मः १)
परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ॥६॥ (७२-३, सिरीरागु, मः १)
दोहागणी किआ नीसाणीआ ॥ (७२-४, सिरीरागु, मः १)
खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ ॥ (७२-४, सिरीरागु, मः १)
मैले वेस तिना कामणी दुखी रैणि विहाइ जीउ ॥७॥ (७२-४, सिरीरागु, मः १)
सोहागणी किआ करमु कमाइआ ॥ (७२-५, सिरीरागु, मः १)
पूरबि लिखिआ फलु पाइआ ॥ (७२-५, सिरीरागु, मः १)
नदरि करे कै आपणी आपे लए मिलाइ जीउ ॥८॥ (७२-५, सिरीरागु, मः १)
हुकमु जिना नो मनाइआ ॥ (७२-६, सिरीरागु, मः १)
तिन अंतरि सबदु वसाइआ ॥ (७२-६, सिरीरागु, मः १)
सहीआ से सोहागणी जिन सह नालि पिआरु जीउ ॥९॥ (७२-७, सिरीरागु, मः १)
जिना भाणे का रसु आइआ ॥ (७२-७, सिरीरागु, मः १)
तिन विचहु भरमु चुकाइआ ॥ (७२-७, सिरीरागु, मः १)
नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥१०॥ (७२-८, सिरीरागु, मः १)
सतिगुरि मिलिऐ फलु पाइआ ॥ (७२-८, सिरीरागु, मः १)
जिनि विचहु अहकरणु चुकाइआ ॥ (७२-९, सिरीरागु, मः १)
दुरमति का दुखु कटिआ भागु बैठा मसतकि आइ जीउ ॥११॥ (७२-९, सिरीरागु, मः १)
अमृतु तेरी बाणीआ ॥ (७२-१०, सिरीरागु, मः १)

तेरिआ भगता रिदै समाणीआ ॥ (७२-१०, सिरीरागु, मः १)
सुख सेवा अंदरि रखिऐ आपणी नदरि करहि निसतारि जीउ ॥१२॥ (७२-१०, सिरीरागु, मः १)
सतिगुरु मिलिआ जाणीऐ ॥ (७२-११, सिरीरागु, मः १)
जितु मिलिऐ नामु वखाणीऐ ॥ (७२-११, सिरीरागु, मः १)
सतिगुर बाझु न पाइओ सभ थकी कर्म कमाइ जीउ ॥१३॥ (७२-१२, सिरीरागु, मः १)
हउ सतिगुर विटहु घुमाइआ ॥ (७२-१२, सिरीरागु, मः १)
जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥ (७२-१३, सिरीरागु, मः १)
नदरि करे जे आपणी आपे लए रलाइ जीउ ॥१४॥ (७२-१३, सिरीरागु, मः १)
तूं सभना माहि समाइआ ॥ (७२-१४, सिरीरागु, मः १)
तिनि करतै आपु लुकाइआ ॥ (७२-१४, सिरीरागु, मः १)
नानक गुरमुखि परगटु होइआ जा कउ जोति धरी करतारि जीउ ॥१५॥ (७२-१४, सिरीरागु, मः १)
आपे खसमि निवाजिआ ॥ (७२-१५, सिरीरागु, मः १)
जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ (७२-१५, सिरीरागु, मः १)
आपणे सेवक की पैज रखीआ दुइ कर मसतकि धारि जीउ ॥१६॥ (७२-१५, सिरीरागु, मः १)
सभि संजम रहे सिआणपा ॥ (७२-१६, सिरीरागु, मः १)
मेरा प्रभु सभु किछु जाणदा ॥ (७२-१६, सिरीरागु, मः १)
प्रगट प्रतापु वरताइओ सभु लोकु करै जैकारु जीउ ॥१७॥ (७२-१७, सिरीरागु, मः १)
मेरे गुण अवगन न बीचारिआ ॥ (७२-१७, सिरीरागु, मः १)
प्रभि अपणा बिरदु समारिआ ॥ (७२-१८, सिरीरागु, मः १)
कंठि लाइ कै रखिओनु लगै न तती वाउ जीउ ॥१८॥ (७२-१८, सिरीरागु, मः १)
मै मनि तनि प्रभू धिआइआ ॥ (७२-१८, सिरीरागु, मः १)
जीइ इछिअड़ा फलु पाइआ ॥ (७२-१९, सिरीरागु, मः १)
साह पातिसाह सिरि खसमु तूं जपि नानक जीवै नाउ जीउ ॥१९॥ (७२-१९, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ७३

तुधु आपे आपु उपाइआ ॥ (७३-१, सिरीरागु, मः १)
दूजा खेलु करि दिखलाइआ ॥ (७३-१, सिरीरागु, मः १)
सभु सचो सचु वरतदा जिसु भावै तिसै बुझाइ जीउ ॥२०॥ (७३-१, सिरीरागु, मः १)
गुर परसादी पाइआ ॥ (७३-२, सिरीरागु, मः १)
तिथै माइआ मोहु चुकाइआ ॥ (७३-२, सिरीरागु, मः १)
किरपा करि कै आपणी आपे लए समाइ जीउ ॥२१॥ (७३-३, सिरीरागु, मः १)
गोपी नै गोआलीआ ॥ (७३-३, सिरीरागु, मः १)
तुधु आपे गोइ उठालीआ ॥ (७३-३, सिरीरागु, मः १)
हुकमी भाँडे साजिआ तूं आपे भंनि सवारि जीउ ॥२२॥ (७३-४, सिरीरागु, मः १)
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥ (७३-४, सिरीरागु, मः १)

तिनी दूजा भाउ चुकाइआ ॥ (७३-४, सिरीरागु, मः १)
निर्मल जोति तिन प्राणीआ ओइ चले जनमु सवारि जीउ ॥२३॥ (७३-५, सिरीरागु, मः १)
तेरीआ सदा सदा चंगिआईआ ॥ (७३-५, सिरीरागु, मः १)
मै राति दिहै वडिआईआँ ॥ (७३-६, सिरीरागु, मः १)
अणमंगिआ दानु देवणा कहु नानक सचु समालि जीउ ॥२४॥१॥ (७३-६, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला ५ ॥ (७३-७)
पै पाइ मनाई सोइ जीउ ॥ (७३-७, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर पुरखि मिलाइआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७३-७, सिरीरागु, मः ५)
गोसाई मिहंडा इठड़ा ॥ (७३-८, सिरीरागु, मः ५)
अम्म अबे थावहु मिठड़ा ॥ (७३-८, सिरीरागु, मः ५)
भैण भाई सभि सजणा तुधु जेहा नाही कोइ जीउ ॥१॥ (७३-९, सिरीरागु, मः ५)
तेरै हुकमे सावणु आइआ ॥ (७३-९, सिरीरागु, मः ५)
मै सत का हलु जोआइआ ॥ (७३-९, सिरीरागु, मः ५)
नाउ बीजण लगा आस करि हरि बोहल बखस जमाइ जीउ ॥२॥ (७३-१०, सिरीरागु, मः ५)
हउ गुर मिलि इकु पछाणदा ॥ (७३-१०, सिरीरागु, मः ५)
दुया कागलु चिति न जाणदा ॥ (७३-११, सिरीरागु, मः ५)
हरि इकतै कारै लाइओनु जिउ भावै तिंवै निबाहि जीउ ॥३॥ (७३-११, सिरीरागु, मः ५)
तुसी भोगिहु भुंचहु भाईहो ॥ (७३-१२, सिरीरागु, मः ५)
गुरि दीबाणि कवाइ पैनाईओ ॥ (७३-१२, सिरीरागु, मः ५)
हउ होआ माहरु पिंड दा बंनि आदे पंजि सरीक जीउ ॥४॥ (७३-१२, सिरीरागु, मः ५)
हउ आइआ सामै तिहंडीआ ॥ (७३-१३, सिरीरागु, मः ५)
पंजि किरसाण मुजेरे मिहडिआ ॥ (७३-१३, सिरीरागु, मः ५)
कन्नु कोई कढि न हंघई नानक वुठा घुघि गिराउ जीउ ॥५॥ (७३-१४, सिरीरागु, मः ५)
हउ वारी घुम्मा जावदा ॥ (७३-१४, सिरीरागु, मः ५)
इक साहा तुधु धिआइदा ॥ (७३-१४, सिरीरागु, मः ५)
उजड़ु थेहु वसाइओ हउ तुध विटहु कुरबाणु जीउ ॥६॥ (७३-१५, सिरीरागु, मः ५)
हरि इठै नित धिआइदा ॥ (७३-१५, सिरीरागु, मः ५)
मनि चिंदी सो फलु पाइदा ॥ (७३-१६, सिरीरागु, मः ५)
सभे काज सवारिअनु लाहीअनु मन की भुख जीउ ॥७॥ (७३-१६, सिरीरागु, मः ५)
मै छडिआ सभो धंधड़ा ॥ (७३-१६, सिरीरागु, मः ५)
गोसाई सेवी सचड़ा ॥ (७३-१७, सिरीरागु, मः ५)
नउ निधि नामु निधानु हरि मै पलै बधा छिकि जीउ ॥८॥ (७३-१७, सिरीरागु, मः ५)
मै सुखी हूं सुखु पाइआ ॥ (७३-१७, सिरीरागु, मः ५)
गुरि अंतरि सबदु वसाइआ ॥ (७३-१८, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुरि पुरखि विखालिआ मसतकि धरि कै हथु जीउ ॥९॥ (७३-१८, सिरीरागु, मः ५)

मै बधी सचु धर्म साल है ॥ (७३-१६, सिरीरागु, मः ५)
गुरसिखा लहदा भालि कै ॥ (७३-१६, सिरीरागु, मः ५)
पैर धोवा पखा फेरदा तिसु निवि निवि लगा पाइ जीउ ॥१०॥ (७३-१६, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ७४

सुणि गला गुर पहि आइआ ॥ (७४-१, सिरीरागु, मः ५)
नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ॥ (७४-१, सिरीरागु, मः ५)
सभु मुकतु होआ सैसारड़ा नानक सची बेड़ी चाड़ि जीउ ॥११॥ (७४-१, सिरीरागु, मः ५)
सभ सृसटि सेवे दिनु राति जीउ ॥ (७४-२, सिरीरागु, मः ५)
दे कन्नु सुणहु अरदासि जीउ ॥ (७४-२, सिरीरागु, मः ५)
ठोकि वजाइ सभ डिठीआ तुसि आपे लइअनु छडाइ जीउ ॥१२॥ (७४-३, सिरीरागु, मः ५)
हुणि हुकमु होआ मिहरवाण दा ॥ (७४-३, सिरीरागु, मः ५)
पै कोइ न किसै रञाणदा ॥ (७४-४, सिरीरागु, मः ५)
सभ सुखाली वुठीआ इहु होआ हलेमी राजु जीउ ॥१३॥ (७४-४, सिरीरागु, मः ५)
झिंमि झिंमि अमृतु वरसदा ॥ (७४-५, सिरीरागु, मः ५)
बोलाइआ बोली खसम दा ॥ (७४-५, सिरीरागु, मः ५)
बहु माणु कीआ तुधु उपरे तूं आपे पाइहि थाइ जीउ ॥१४॥ (७४-५, सिरीरागु, मः ५)
तेरिआ भगता भुख सद तेरीआ ॥ (७४-६, सिरीरागु, मः ५)
हरि लोचा पूरन मेरीआ ॥ (७४-६, सिरीरागु, मः ५)
देहु दरसु सुखदातिआ मै गल विचि लैहु मिलाइ जीउ ॥१५॥ (७४-६, सिरीरागु, मः ५)
तुधु जेवडु अवरु न भालिआ ॥ (७४-७, सिरीरागु, मः ५)
तूं दीप लोअ पइआलिआ ॥ (७४-७, सिरीरागु, मः ५)
तूं थानि थनंतरि रवि रहिआ नानक भगता सचु अधारु जीउ ॥१६॥ (७४-८, सिरीरागु, मः ५)
हउ गोसाई दा पहिलवानड़ा ॥ (७४-८, सिरीरागु, मः ५)
मै गुर मिलि उच दुमालड़ा ॥ (७४-९, सिरीरागु, मः ५)
सभ होई छिंझ इकठीआ दयु बैठा वेखै आपि जीउ ॥१७॥ (७४-९, सिरीरागु, मः ५)
वात वजनि टम्मक भेरीआ ॥ (७४-१०, सिरीरागु, मः ५)
मल लथे लैदे फेरीआ ॥ (७४-१०, सिरीरागु, मः ५)
निहते पंजि जुआन मै गुर थापी दिती कंडि जीउ ॥१८॥ (७४-१०, सिरीरागु, मः ५)
सभ इकठे होइ आइआ ॥ (७४-११, सिरीरागु, मः ५)
घरि जासनि वाट वटाइआ ॥ (७४-११, सिरीरागु, मः ५)
गुरमुखि लाहा लै गए मनमुख चले मूलु गवाइ जीउ ॥१९॥ (७४-११, सिरीरागु, मः ५)
तूं वरना चिहना बाहरा ॥ (७४-१२, सिरीरागु, मः ५)
हरि दिसहि हाजरु जाहरा ॥ (७४-१२, सिरीरागु, मः ५)
सुणि सुणि तुझै धिआइदे तेरे भगत रते गुणतासु जीउ ॥२०॥ (७४-१२, सिरीरागु, मः ५)

मै जुगि जुगि दयै सेवड़ी ॥ (७४-१३, सिरीरागु, मः ५)
गुरि कटी मिहडी जेवड़ी ॥ (७४-१३, सिरीरागु, मः ५)
हउ बाहुड़ि छिंझ न नचऊ नानक अउसरु लधा भालि जीउ ॥२१॥२॥२६॥ (७४-१४, सिरीरागु, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७४-१५)
सिरीरागु महला १ पहरे घरु १ ॥ (७४-१५)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हुकमि पइआ गरभासि ॥ (७४-१६, सिरीरागु, मः १)
उरध तपु अंतरि करे वणजारिआ मित्रा खसम सेती अरदासि ॥ (७४-१६, सिरीरागु, मः १)
खसम सेती अरदासि वखाणै उरध धिआनि लिव लागा ॥ (७४-१७, सिरीरागु, मः १)
ना मरजादु आइआ कलि भीतरि बाहुड़ि जासी नागा ॥ (७४-१७, सिरीरागु, मः १)
जैसी कलम वुड़ी है मसतकि तैसी जीअड़े पासि ॥ (७४-१८, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हुकमि पइआ गरभासि ॥१॥ (७४-१८, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ७५

दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा विसरि गइआ धिआनु ॥ (७५-१, सिरीरागु, मः १)
हथो हथि नचाईऐ वणजारिआ मित्रा जिउ जसुदा घरि कानु ॥ (७५-२, सिरीरागु, मः १)
हथो हथि नचाईऐ प्राणी मात कहै सुतु मेरा ॥ (७५-२, सिरीरागु, मः १)
चेति अचेत मूड़ मन मेरे अंति नही कछु तेरा ॥ (७५-३, सिरीरागु, मः १)
जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै मन भीतरि धरि गिआनु ॥ (७५-३, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक प्राणी दूजै पहरै विसरि गइआ धिआनु ॥२॥ (७५-४, सिरीरागु, मः १)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धन जोबन सिउ चितु ॥ (७५-४, सिरीरागु, मः १)
हरि का नामु न चेतही वणजारिआ मित्रा बधा छुटहि जितु ॥ (७५-५, सिरीरागु, मः १)
हरि का नामु न चेतै प्राणी बिकलु भइआ संगि माइआ ॥ (७५-६, सिरीरागु, मः १)
धन सिउ रता जोबनि मता अहिला जनमु गवाइआ ॥ (७५-६, सिरीरागु, मः १)
धर्म सेती वापारु न कीतो करमु न कीतो मितु ॥ (७५-७, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी धन जोबन सिउ चितु ॥३॥ (७५-७, सिरीरागु, मः १)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा लावी आइआ खेतु ॥ (७५-८, सिरीरागु, मः १)
जा जमि पकड़ि चलाइआ वणजारिआ मित्रा किसै न मिलिआ भेतु ॥ (७५-८, सिरीरागु, मः १)
भेतु चेतु हरि किसै न मिलिओ जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ (७५-९, सिरीरागु, मः १)
झूठा रुदनु होआ दुोआलै खिन महि भइआ पराइआ ॥ (७५-१०, सिरीरागु, मः १)
साई वसतु परापति होई जिसु सिउ लाइआ हेतु ॥ (७५-१०, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै लावी लुणिआ खेतु ॥४॥१॥ (७५-११, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला १ ॥ (७५-११)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बालक बुधि अचेतु ॥ (७५-१२, सिरीरागु, मः १)
खीरु पीऐ खेलाईऐ वणजारिआ मित्रा मात पिता सुत हेतु ॥ (७५-१२, सिरीरागु, मः १)
मात पिता सुत नेहु घनेरा माइआ मोहु सबाई ॥ (७५-१३, सिरीरागु, मः १)

संजोगी आइआ किरतु कमाइआ करणी कार कराई ॥ (७५-१३, सिरीरागु, मः १)
राम नाम बिनु मुकति न होई बूडी दूजै हेति ॥ (७५-१४, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै छूटहिगा हरि चेति ॥१॥ (७५-१४, सिरीरागु, मः १)
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जोबनि मै मति ॥ (७५-१५, सिरीरागु, मः १)
अहिनिसि कामि विआपिआ वणजारिआ मित्रा अंधुले नामु न चिति ॥ (७५-१६, सिरीरागु, मः १)
राम नामु घट अंतरि नाही होरि जाणै रस कस मीठे ॥ (७५-१६, सिरीरागु, मः १)
गिआनु धिआनु गुण संजमु नाही जनमि मरहुगे झूठे ॥ (७५-१७, सिरीरागु, मः १)
तीर्थ वरत सुचि संजमु नाही करमु धरमु नही पूजा ॥ (७५-१७, सिरीरागु, मः १)
नानक भाइ भगति निसतारा दुबिधा विआपै दूजा ॥२॥ (७५-१८, सिरीरागु, मः १)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा सरि हंस उलथड़े आइ ॥ (७५-१६, सिरीरागु, मः १)
जोबनु घटै जरूआ जिणै वणजारिआ मित्रा आव घटै दिनु जाइ ॥ (७५-१६, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ७६

अंति कालि पछुतासी अंधुले जा जमि पकड़ि चलाइआ ॥ (७६-१, सिरीरागु, मः १)
सभु किछु अपुना करि करि राखिआ खिन महि भइआ पराइआ ॥ (७६-२, सिरीरागु, मः १)
बुधि विसरजी गई सिआणप करि अवगण पछुताइ ॥ (७६-२, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक प्राणी तीजै पहरै प्रभु चेतहु लिव लाइ ॥३॥ (७६-३, सिरीरागु, मः १)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिरधि भइआ तनु खीणु ॥ (७६-३, सिरीरागु, मः १)
अखी अंधु न दीसई वणजारिआ मित्रा कन्नी सुणै न वैण ॥ (७६-४, सिरीरागु, मः १)
अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउ ताणा ॥ (७६-५, सिरीरागु, मः १)
गुण अंतरि नाही किउ सुखु पावै मनमुख आवण जाणा ॥ (७६-५, सिरीरागु, मः १)
खड़ु पकी कुड़ि भजै बिनसै आइ चलै किआ माणु ॥ (७६-६, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै गुरमुखि सबदु पछाणु ॥४॥ (७६-६, सिरीरागु, मः १)
ओड़कु आइआ तिन साहिआ वणजारिआ मित्रा जरु जरवाणा कंनि ॥ (७६-७, सिरीरागु, मः १)
इक रती गुण न समाणिआ वणजारिआ मित्रा अवगण खड़सनि बंनि ॥ (७६-७, सिरीरागु, मः १)
गुण संजमि जावै चोट न खावै ना तिसु जम्मणु मरणा ॥ (७६-८, सिरीरागु, मः १)
कालु जालु जमु जोहि न साकै भाइ भगति भै तरणा ॥ (७६-६, सिरीरागु, मः १)
पति सेती जावै सहजि समावै सगले दूख मिटावै ॥ (७६-६, सिरीरागु, मः १)
कहु नानक प्राणी गुरमुखि छूटै साचे ते पति पावै ॥५॥२॥ (७६-१०, सिरीरागु, मः १)
सिरीरागु महला ४ ॥ (७६-१०)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि पाइआ उदर मंझारि ॥ (७६-११, सिरीरागु, मः ४)
हरि धिआवै हरि उचरै वणजारिआ मित्रा हरि हरि नामु समारि ॥ (७६-११, सिरीरागु, मः ४)
हरि हरि नामु जपे आराधे विचि अगनी हरि जपि जीविआ ॥ (७६-१२, सिरीरागु, मः ४)
बाहरि जनमु भइआ मुखि लागा सरसे पिता मात थीविआ ॥ (७६-१३, सिरीरागु, मः ४)
जिस की वसतु तिसु चेतहु प्राणी करि हिरदै गुरमुखि बीचारि ॥ (७६-१३, सिरीरागु, मः ४)

कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै हरि जपीऐ किरपा धारि ॥१॥ (७६-१४, सिरीरागु, मः ४)
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लागा दूजै भाइ ॥ (७६-१४, सिरीरागु, मः ४)
मेरा मेरा करि पालीऐ वणजारिआ मित्रा ले मात पिता गलि लाइ ॥ (७६-१५, सिरीरागु, मः ४)
लावै मात पिता सदा गल सेती मनि जाणै खटि खवाए ॥ (७६-१६, सिरीरागु, मः ४)
जो देवै तिसै न जाणै मूड़ा दिते नो लपटाए ॥ (७६-१६, सिरीरागु, मः ४)
कोई गुरमुखि होवै सु करै वीचारु हरि धिआवै मनि लिव लाइ ॥ (७६-१७, सिरीरागु, मः ४)
कहु नानक दूजै पहरै प्राणी तिसु कालु न कबहूं खाइ ॥२॥ (७६-१७, सिरीरागु, मः ४)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा मनु लगा आलि जंजालि ॥ (७६-१८, सिरीरागु, मः ४)
धनु चितवै धनु संचवै वणजारिआ मित्रा हरि नामा हरि न समालि ॥ (७६-१९, सिरीरागु, मः ४)
हरि नामा हरि हरि कदे न समालै जि होवै अंति सखाई ॥ (७६-१९, सिरीरागु, मः ४)

पन्ना ७७

इहु धनु सम्पै माइआ झूठी अंति छोडि चलिआ पछुताई ॥ (७७-१, सिरीरागु, मः ४)
जिस नो किरपा करे गुरु मेले सो हरि हरि नामु समालि ॥ (७७-१, सिरीरागु, मः ४)
कहु नानक तीजै पहरै प्राणी से जाइ मिले हरि नालि ॥३॥ (७७-२, सिरीरागु, मः ४)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा हरि चलण वेला आदी ॥ (७७-३, सिरीरागु, मः ४)
करि सेवहु पूरा सतिगुरू वणजारिआ मित्रा सभ चली रैणि विहादी ॥ (७७-३, सिरीरागु, मः ४)
हरि सेवहु खिनु खिनु ढिल मूलि न करिहु जितु असथिरु जुगु जुगु होवहु ॥ (७७-४, सिरीरागु, मः ४)
हरि सेती सद माणहु रलीआ जनम मरण दुख खोवहु ॥ (७७-५, सिरीरागु, मः ४)
गुर सतिगुर सुआमी भेदु न जाणहु जितु मिलि हरि भगति सुखाँदी ॥ (७७-५, सिरीरागु, मः ४)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै सफलिओु रैणि भगता दी ॥४॥१॥३॥ (७७-६, सिरीरागु, मः ४)
सिरीरागु महला ५ ॥ (७७-७)
पहिलै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा धरि पाइता उदरै माहि ॥ (७७-७, सिरीरागु, मः ५)
दसी मासी मानसु कीआ वणजारिआ मित्रा करि मुहलति कर्म कमाहि ॥ (७७-८, सिरीरागु, मः ५)
मुहलति करि दीनी कर्म कमाणे जैसा लिखतु धुरि पाइआ ॥ (७७-८, सिरीरागु, मः ५)
मात पिता भाई सुत बनिता तिन भीतरि प्रभू संजोइआ ॥ (७७-९, सिरीरागु, मः ५)
कर्म सुकर्म कराए आपे इसु जंतै वसि किछु नाहि ॥ (७७-९, सिरीरागु, मः ५)
कहु नानक प्राणी पहिलै पहरै धरि पाइता उदरै माहि ॥१॥ (७७-१०, सिरीरागु, मः ५)
दूजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा भरि जुआनी लहरी देइ ॥ (७७-११, सिरीरागु, मः ५)
बुरा भला न पछाणई वणजारिआ मित्रा मनु मता अहम्मेइ ॥ (७७-११, सिरीरागु, मः ५)
बुरा भला न पछाणै प्राणी आगै पंथु करारा ॥ (७७-१२, सिरीरागु, मः ५)
पूरा सतिगुरु कबहूं न सेविआ सिरि ठाढे जम जंदारा ॥ (७७-१२, सिरीरागु, मः ५)
धर्म राइ जब पकरसि बवरे तब किआ जबाबु करेइ ॥ (७७-१३, सिरीरागु, मः ५)
कहु नानक दूजै पहरै प्राणी भरि जोबनु लहरी देइ ॥२॥ (७७-१३, सिरीरागु, मः ५)
तीजै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा बिखु संचै अंधु अगिआनु ॥ (७७-१४, सिरीरागु, मः ५)

पुतृ कलतृ मोहि लपटिआ वणजारिआ मित्रा अंतरि लहरि लोभानु ॥ (७७-१५, सिरीरागु, मः ५)
अंतरि लहरि लोभानु परानी सो प्रभु चिति न आवै ॥ (७७-१५, सिरीरागु, मः ५)
साधसंगति सिउ संगु न कीआ बहु जोनी दुखु पावै ॥ (७७-१६, सिरीरागु, मः ५)
सिरजनहारु विसारिआ सुआमी इक निमख न लगो धिआनु ॥ (७७-१७, सिरीरागु, मः ५)
कहु नानक प्राणी तीजै पहरै बिखु संचे अंधु अगिआनु ॥३॥ (७७-१७, सिरीरागु, मः ५)
चउथै पहरै रैणि कै वणजारिआ मित्रा दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥ (७७-१८, सिरीरागु, मः ५)
गुरमुखि नामु समालि तूं वणजारिआ मित्रा तेरा दरगह बेली होइ ॥ (७७-१८, सिरीरागु, मः ५)
गुरमुखि नामु समालि पराणी अंते होइ सखाई ॥ (७७-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ७८

इहु मोहु माइआ तेरै संगि न चालै झूठी प्रीति लगाई ॥ (७८-१, सिरीरागु, मः ५)
सगली रैणि गुदरी अंधिआरी सेवि सतिगुरु चानणु होइ ॥ (७८-१, सिरीरागु, मः ५)
कहु नानक प्राणी चउथै पहरै दिनु नेड़ै आइआ सोइ ॥४॥ (७८-२, सिरीरागु, मः ५)
लिखिआ आइआ गोविंद का वणजारिआ मित्रा उठि चले कमाणा साथि ॥ (७८-३, सिरीरागु, मः ५)
इक रती बिलम न देवनी वणजारिआ मित्रा ओनी तकड़े पाए हाथ ॥ (७८-३, सिरीरागु, मः ५)
लिखिआ आइआ पकड़ि चलाइआ मनमुख सदा दुहेले ॥ (७८-४, सिरीरागु, मः ५)
जिनी पूरा सतिगुरु सेविआ से दरगह सदा सुहेले ॥ (७८-५, सिरीरागु, मः ५)
कर्म धरती सरीरु जुग अंतरि जो बोवै सो खाति ॥ (७८-५, सिरीरागु, मः ५)
कहु नानक भगत सोहहि दरवारे मनमुख सदा भवाति ॥५॥१॥४॥ (७८-६, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ४ घरु २ छंत (७८-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७८-७)
मुंध इआणी पेईअड़ै किउ करि हरि दरसनु पिखै ॥ (७८-८, सिरीरागु, मः ४)
हरि हरि अपनी किरपा करे गुरमुखि साहुरड़ै कम्म सिखै ॥ (७८-८, सिरीरागु, मः ४)
साहुरड़ै कम्म सिखै गुरमुखि हरि हरि सदा धिआए ॥ (७८-९, सिरीरागु, मः ४)
सहीआ विचि फिरै सुहेली हरि दरगह बाह लुडाए ॥ (७८-९, सिरीरागु, मः ४)
लेखा धर्म राइ की बाकी जपि हरि हरि नामु किरखै ॥ (७८-१०, सिरीरागु, मः ४)
मुंध इआणी पेईअड़ै गुरमुखि हरि दरसनु दिखै ॥१॥ (७८-१०, सिरीरागु, मः ४)
वीआहु होआ मेरे बाबुला गुरमुखे हरि पाइआ ॥ (७८-११, सिरीरागु, मः ४)
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु प्रचंडु बलाइआ ॥ (७८-११, सिरीरागु, मः ४)
बलिआ गुर गिआनु अंधेरा बिनसिआ हरि रतनु पदारथु लाधा ॥ (७८-१२, सिरीरागु, मः ४)
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा आपु आपै गुरमति खाधा ॥ (७८-१३, सिरीरागु, मः ४)
अकाल मूरति वरु पाइआ अबिनासी ना कदे मरै न जाइआ ॥ (७८-१३, सिरीरागु, मः ४)
वीआहु होआ मेरे बाबोला गुरमुखे हरि पाइआ ॥२॥ (७८-१४, सिरीरागु, मः ४)
हरि सति सते मेरे बाबुला हरि जन मिलि जंञ सुहंदी ॥ (७८-१५, सिरीरागु, मः ४)
पेवकड़ै हरि जपि सुहेली विचि साहुरड़ै खरी सोहंदी ॥ (७८-१५, सिरीरागु, मः ४)

साहुरड़ै विचि खरी सोहंदी जिनि पेवकड़ै नामु समालिआ ॥ (७८-१६, सिरीरागु, मः ४)
सभु सफलिओ जनमु तिना दा गुरमुखि जिना मनु जिणि पासा ढालिआ ॥ (७८-१६, सिरीरागु, मः ४)
हरि संत जना मिलि कारजु सोहिआ वरु पाइआ पुरखु अनंदी ॥ (७८-१७, सिरीरागु, मः ४)
हरि सति सति मेरे बाबोला हरि जन मिलि जंञ सुोहंदी ॥३॥ (७८-१८, सिरीरागु, मः ४)
हरि प्रभु मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥ (७८-१८, सिरीरागु, मः ४)

पन्ना ७९

हरि कपड़ो हरि सोभा देवहु जितु सवरै मेरा काजो ॥ (७९-१, सिरीरागु, मः ४)
हरि हरि भगती काजु सुहेला गुरि सतिगुरि दानु दिवाइआ ॥ (७९-१, सिरीरागु, मः ४)
खंडि वरभंडि हरि सोभा होई इहु दानु न रलै रलाइआ ॥ (७९-२, सिरीरागु, मः ४)
होरि मनमुख दाजु जि रखि दिखालहि सु कूड़ु अहंकारु कचु पाजो ॥ (७९-२, सिरीरागु, मः ४)
हरि प्रभ मेरे बाबुला हरि देवहु दानु मै दाजो ॥४॥ (७९-३, सिरीरागु, मः ४)
हरि राम राम मेरे बाबोला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥ (७९-४, सिरीरागु, मः ४)
हरि जुगह जुगो जुग जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी ॥ (७९-४, सिरीरागु, मः ४)
जुगि जुगि पीड़ी चलै सतिगुर की जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ (७९-५, सिरीरागु, मः ४)
हरि पुरखु न कब ही बिनसै जावै नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ (७९-५, सिरीरागु, मः ४)
नानक संत संत हरि एको जपि हरि हरि नामु सोहंदी ॥ (७९-६, सिरीरागु, मः ४)
हरि राम राम मेरे बाबुला पिर मिलि धन वेल वधंदी ॥५॥१॥ (७९-७, सिरीरागु, मः ४)
सिरीरागु महला ५ छंत (७९-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७९-८)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा गोबिंद नामु समाले ॥ (७९-९, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि निबहै तेरै नाले ॥ (७९-९, सिरीरागु, मः ५)
संगि सहाई हरि नामु धिआई बिरथा कोइ न जाए ॥ (७९-१०, सिरीरागु, मः ५)
मन चिंदे सेई फल पावहि चरण कमल चितु लाए ॥ (७९-१०, सिरीरागु, मः ५)
जलि थलि पूरि रहिआ बनवारी घटि घटि नदरि निहाले ॥ (७९-११, सिरीरागु, मः ५)
नानकु सिख देइ मन प्रीतम साधसंगि भ्रमु जाले ॥१॥ (७९-११, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जी मित्रा हरि बिनु झूठु पसारे ॥ (७९-१२, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा बिखु सागरु संसारे ॥ (७९-१२, सिरीरागु, मः ५)
चरण कमल करि बोहिथु करते सहसा दूखु न बिआपै ॥ (७९-१३, सिरीरागु, मः ५)
गुरु पूरा भेटै वडभागी आठ पहर प्रभु जापै ॥ (७९-१३, सिरीरागु, मः ५)
आदि जुगादी सेवक सुआमी भगता नामु अधारे ॥ (७९-१४, सिरीरागु, मः ५)
नानकु सिख देइ मन प्रीतम बिनु हरि झूठ पसारे ॥२॥ (७९-१४, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि लदे खेप सवली ॥ (७९-१५, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि दरु निहचलु मली ॥ (७९-१५, सिरीरागु, मः ५)
हरि दरु सेवे अलख अभेवे निहचलु आसणु पाइआ ॥ (७९-१६, सिरीरागु, मः ५)

तह जनम न मरणु न आवण जाणा संसा दूखु मिटाइआ ॥ (७६-१७, सिरीरागु, मः ५)
चित्र गुप्त का कागदु फारिआ जमदूता कछू न चली ॥ (७६-१७, सिरीरागु, मः ५)
नानकु सिख देइ मन प्रीतम हरि लदे खेप सवली ॥३॥ (७६-१८, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा करि संता संगि निवासो ॥ (७६-१८, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि नामु जपत परगासो ॥ (७६-१६, सिरीरागु, मः ५)
सिमरि सुआमी सुखह गामी इछ सगली पुन्नीआ ॥ (७६-१६, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ८०

पुरबे कमाए स्रीरंग पाए हरि मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (८०-१, सिरीरागु, मः ५)
अंतरि बाहरि सरबति रविआ मनि उपजिआ बिसुआसो ॥ (८०-१, सिरीरागु, मः ५)
नानकु सिख देइ मन प्रीतम करि संता संगि निवासो ॥४॥ (८०-२, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥ (८०-३, सिरीरागु, मः ५)
मन पिआरिआ जीउ मित्रा हरि जल मिलि जीवे मीना ॥ (८०-३, सिरीरागु, मः ५)
हरि पी आघाने अमृत बाने स्रब सुखा मन वुठे ॥ (८०-४, सिरीरागु, मः ५)
स्रीधर पाए मंगल गाए इछ पुन्नी सतिगुर तुठे ॥ (८०-४, सिरीरागु, मः ५)
लड़ि लीने लाए नउ निधि पाए नाउ सरबसु ठाकुरि दीना ॥ (८०-५, सिरीरागु, मः ५)
नानक सिख संत समझाई हरि प्रेम भगति मनु लीना ॥५॥१॥२॥ (८०-५, सिरीरागु, मः ५)
सिरीराग के छंत महला ५ (८०-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८०-७)
डखणा ॥ (८०-७)
हठ मझाहू मा पिरी पसे किउ दीदार ॥ (८०-८, सिरीरागु, मः ५)
संत सरणाई लभणे नानक प्राण अधार ॥१॥ (८०-८, सिरीरागु, मः ५)
छंतु ॥ (८०-६)
चरन कमल सिउ प्रीति रीति संतन मनि आवए जीउ ॥ (८०-६, सिरीरागु, मः ५)
दुतीआ भाउ बिपरीति अनीति दासा नह भावए जीउ ॥ (८०-१०, सिरीरागु, मः ५)
दासा नह भावए बिनु दरसावए इक खिनु धीरजु किउ करै ॥ (८०-१०, सिरीरागु, मः ५)
नाम बिहूना तनु मनु हीना जल बिनु मछुली जिउ मरै ॥ (८०-११, सिरीरागु, मः ५)
मिलु मेरे पिआरे प्रान अधारे गुण साधसंगि मिलि गावए ॥ (८०-११, सिरीरागु, मः ५)
नानक के सुआमी धारि अनुग्रहु मनि तनि अंकि समावए ॥१॥ (८०-१२, सिरीरागु, मः ५)
डखणा ॥ (८०-१३)
सोहंदड़ो हभ ठाइ कोइ न दिसै डूजड़ो ॥ (८०-१३, सिरीरागु, मः ५)
खुलड़े कपाट नानक सतिगुर भेटते ॥१॥ (८०-१३, सिरीरागु, मः ५)
छंतु ॥ (८०-१४)
तेरे बचन अनूप अपार संतन आधार बाणी बीचारीऐ जीउ ॥ (८०-१४, सिरीरागु, मः ५)
सिमरत सास गिरास पूरन बिसुआस किउ मनहु बिसारीऐ जीउ ॥ (८०-१४, सिरीरागु, मः ५)

किउ मनहु बेसारीऐ निमख नही टारीऐ गुणवंत प्रान हमारे ॥ (८०-१५, सिरीरागु, मः ५)
मन बाँछत फल देत है सुआमी जीअ की बिरथा सारे ॥ (८०-१६, सिरीरागु, मः ५)
अनाथ के नाथे स्रब कै साथे जपि जूऐ जनमु न हारीऐ ॥ (८०-१६, सिरीरागु, मः ५)
नानक की बेनंती प्रभ पहि कृपा करि भवजलु तारीऐ ॥२॥ (८०-१७, सिरीरागु, मः ५)
डखणा ॥ (८०-१८)
धूड़ी मजनु साध खे साई थीए कृपाल ॥ (८०-१८, सिरीरागु, मः ५)
लधे हभे थोकड़े नानक हरि धनु माल ॥१॥ (८०-१८, सिरीरागु, मः ५)
छंतु ॥ (८०-१९)
सुंदर सुआमी धाम भगतह बिस्राम आसा लगि जीवते जीउ ॥ (८०-१९, सिरीरागु, मः ५)
मनि तने गलतान सिमरत प्रभ नाम हरि अमृतु पीवते जीउ ॥ (८०-१९, सिरीरागु, मः ५)

पन्ना ८१

अमृतु हरि पीवते सदा थिरु थीवते बिखै बनु फीका जानिआ ॥ (८१-१, सिरीरागु, मः ५)
भए किरपाल गोपाल प्रभ मेरे साधसंगति निधि मानिआ ॥ (८१-२, सिरीरागु, मः ५)
सरबसो सूख आनंद घन पिआरे हरि रतनु मन अंतरि सीवते ॥ (८१-२, सिरीरागु, मः ५)
इकु तिलु नही विसरै प्रान आधारा जपि जपि नानक जीवते ॥३॥ (८१-३, सिरीरागु, मः ५)
डखणा ॥ (८१-४)
जो तउ कीने आपणे तिना कूं मिलिओहि ॥ (८१-४, सिरीरागु, मः ५)
आपे ही आपि मोहिओहु जसु नानक आपि सुणिओहि ॥१॥ (८१-४, सिरीरागु, मः ५)
छंतु ॥ (८१-५)
प्रेम ठगउरी पाइ रीझाइ गोबिंद मनु मोहिआ जीउ ॥ (८१-५, सिरीरागु, मः ५)
संतन कै परसादि अगाधि कंठे लगि सोहिआ जीउ ॥ (८१-५, सिरीरागु, मः ५)
हरि कंठि लगि सोहिआ दोख सभि जोहिआ भगति लख्यण करि वसि भए ॥ (८१-६, सिरीरागु, मः ५)
मनि सर्ब सुख वुठे गोविद तुठे जनम मरणा सभि मिटि गए ॥ (८१-७, सिरीरागु, मः ५)
सखी मंगलो गाइआ इछ पुजाइआ बहुड़ि न माइआ होहिआ ॥ (८१-७, सिरीरागु, मः ५)
करु गहि लीने नानक प्रभ पिआरे संसारु सागरु नही पोहिआ ॥४॥ (८१-८, सिरीरागु, मः ५)
डखणा ॥ (८१-९)
साई नामु अमोलु कीम न कोई जाणदो ॥ (८१-९, सिरीरागु, मः ५)
जिना भाग मथाहि से नानक हरि रंगु माणदो ॥१॥ (८१-९, सिरीरागु, मः ५)
छंतु ॥ (८१-१०)
कहते पवित्र सुणते सभि धन्नु लिखतीं कुलु तारिआ जीउ ॥ (८१-१०, सिरीरागु, मः ५)
जिन कउ साधू संगु नाम हरि रंगु तिनी ब्रह्मु बीचारिआ जीउ ॥ (८१-१०, सिरीरागु, मः ५)
ब्रह्मु बीचारिआ जनमु सवारिआ पूरन किरपा प्रभि करी ॥ (८१-११, सिरीरागु, मः ५)
करु गहि लीने हरि जसो दीने जोनि ना धावै नह मरी ॥ (८१-१२, सिरीरागु, मः ५)
सतिगुर दइआल किरपाल भेटत हरे कामु क्रोधु लोभु मारिआ ॥ (८१-१२, सिरीरागु, मः ५)

कथनु न जाइ अकथु सुआमी सदकै जाइ नानकु वारिआ ॥५॥१॥३॥ (८१-१३, सिरीरागु, मः ५)
सिरीरागु महला ४ वणजारा (८१-१५)
ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥ (८१-१५)
हरि हरि उतमु नामु है जिनि सिरिआ सभु कोइ जीउ ॥ (८१-१६, सिरीरागु, मः ४)
हरि जीअ सभे प्रतिपालदा घटि घटि रमईआ सोइ ॥ (८१-१६, सिरीरागु, मः ४)
सो हरि सदा धिआईऐ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (८१-१७, सिरीरागु, मः ४)
जो मोहि माइआ चितु लाइदे से छोडि चले दुखु रोइ ॥ (८१-१७, सिरीरागु, मः ४)
जन नानक नामु धिआइआ हरि अंति सखाई होइ ॥१॥ (८१-१८, सिरीरागु, मः ४)
मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (८१-१८, सिरीरागु, मः ४)
हरि गुर सरणाई पाईऐ वणजारिआ मित्रा वडभागि परापति होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८१-१९, सिरीरागु, मः ४)

पन्ना ८२

संत जना विणु भाईआ हरि किनै न पाइआ नाउ ॥ (८२-१, सिरीरागु, मः ४)
विचि हउमै कर्म कमावदे जिउ वेसुआ पुतु निनाउ ॥ (८२-१, सिरीरागु, मः ४)
पिता जाति ता होईऐ गुरु तुठा करे पसाउ ॥ (८२-२, सिरीरागु, मः ४)
वडभागी गुरु पाइआ हरि अहिनिसि लगा भाउ ॥ (८२-२, सिरीरागु, मः ४)
जन नानकि ब्रह्मु पछाणिआ हरि कीरति कर्म कमाउ ॥२॥ (८२-३, सिरीरागु, मः ४)
मनि हरि हरि लगा चाउ ॥ (८२-३, सिरीरागु, मः ४)
गुरि पूरै नामु दृड़ाइआ हरि मिलिआ हरि प्रभ नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८२-४, सिरीरागु, मः ४)
जब लगु जोबनि सासु है तब लगु नामु धिआइ ॥ (८२-४, सिरीरागु, मः ४)
चलदिआ नालि हरि चलसी हरि अंते लए छडाइ ॥ (८२-५, सिरीरागु, मः ४)
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि मनि वुठा आइ ॥ (८२-५, सिरीरागु, मः ४)
जिनी हरि हरि नामु न चेतिओ से अंति गए पछुताइ ॥ (८२-६, सिरीरागु, मः ४)
धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ जन नानक नामु धिआइ ॥३॥ (८२-६, सिरीरागु, मः ४)
मन हरि हरि प्रीति लगाइ ॥ (८२-७, सिरीरागु, मः ४)
वडभागी गुरु पाइआ गुर सबदी पारि लघाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८२-७, सिरीरागु, मः ४)
हरि आपे आपु उपाइदा हरि आपे देवै लेइ ॥ (८२-८, सिरीरागु, मः ४)
हरि आपे भरमि भुलाइदा हरि आपे ही मति देइ ॥ (८२-९, सिरीरागु, मः ४)
गुरमुखा मनि परगासु है से विरले केई केइ ॥ (८२-९, सिरीरागु, मः ४)
हउ बलिहारी तिन कउ जिन हरि पाइआ गुरमते ॥ (८२-१०, सिरीरागु, मः ४)
जन नानकि कमलु परगासिआ मनि हरि हरि वुठड़ा हे ॥४॥ (८२-१०, सिरीरागु, मः ४)
मनि हरि हरि जपनु करे ॥ (८२-११, सिरीरागु, मः ४)
हरि गुर सरणाई भजि पउ जिंदू सभ किलविख दुख परहरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८२-११, सिरीरागु, मः ४)
घटि घटि रमईआ मनि वसै किउ पाईऐ कितु भति ॥ (८२-१२, सिरीरागु, मः ४)
गुरु पूरा सतिगुरु भेटीऐ हरि आइ वसै मनि चिति ॥ (८२-१२, सिरीरागु, मः ४)

मै धर नामु अधारु है हरि नामै ते गति मति ॥ (८२-१३, सिरीरागु, मः ४)
मै हरि हरि नामु विसाहु है हरि नामे ही जति पति ॥ (८२-१३, सिरीरागु, मः ४)
जन नानक नामु धिआइआ रंगि रतड़ा हरि रंगि रति ॥५॥ (८२-१४, सिरीरागु, मः ४)
हरि धिआवहु हरि प्रभु सति ॥ (८२-१५, सिरीरागु, मः ४)
गुर बचनी हरि प्रभु जाणिआ सभ हरि प्रभु ते उतपति ॥१॥ रहाउ ॥ (८२-१५, सिरीरागु, मः ४)
जिन कउ पूरबि लिखिआ से आइ मिले गुर पासि ॥ (८२-१६, सिरीरागु, मः ४)
सेवक भाइ वणजारिआ मित्रा गुरु हरि हरि नामु प्रगासि ॥ (८२-१६, सिरीरागु, मः ४)
धनु धनु वणजु वापारीआ जिन वखरु लदिअड़ा हरि रासि ॥ (८२-१७, सिरीरागु, मः ४)
गुरमुखा दरि मुख उजले से आइ मिले हरि पासि ॥ (८२-१७, सिरीरागु, मः ४)
जन नानक गुरु तिन पाइआ जिना आपि तुठा गुणतासि ॥६॥ (८२-१८, सिरीरागु, मः ४)
हरि धिआवहु सासि गिरासि ॥ (८२-१८, सिरीरागु, मः ४)
मनि प्रीति लगी तिना गुरमुखा हरि नामु जिना रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥१॥ (८२-१९, सिरीरागु, मः ४)

पन्ना ८३

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३-१)
सिरीराग की वार महला ४ सलोका नालि ॥ (८३-१)
सलोक मः ३ ॥ (८३-२)
रागा विचि स्रीरागु है जे सचि धरे पिआरु ॥ (८३-२, सिरीरागु, मः ३)
सदा हरि सचु मनि वसै निहचल मति अपारु ॥ (८३-२, सिरीरागु, मः ३)
रतनु अमोलकु पाइआ गुर का सबदु बीचारु ॥ (८३-३, सिरीरागु, मः ३)
जिहवा सची मनु सचा सचा सरीर अकारु ॥ (८३-३, सिरीरागु, मः ३)
नानक सचै सतिगुरि सेविऐ सदा सचु वापारु ॥१॥ (८३-४, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८३-४)
होरु बिरहा सभ धातु है जब लगु साहिब प्रीति न होइ ॥ (८३-४, सिरीरागु, मः ३)
इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ ॥ (८३-५, सिरीरागु, मः ३)
सह देखे बिनु प्रीति न ऊपजै अंधा किआ करेइ ॥ (८३-५, सिरीरागु, मः ३)
नानक जिनि अखी लीतीआ सोई सचा देइ ॥२॥ (८३-६, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८३-६)
हरि इको करता इकु इको दीबाणु हरि ॥ (८३-६, सिरीरागु, मः ३)
हरि इकसै दा है अमरु इको हरि चिति धरि ॥ (८३-७, सिरीरागु, मः ३)
हरि तिसु बिनु कोई नाहि डरु भ्रमु भउ दूरि करि ॥ (८३-७, सिरीरागु, मः ३)
हरि तिसै नो सालाहि जि तुधु रखै बाहरि घरि ॥ (८३-८, सिरीरागु, मः ३)
हरि जिस नो होइ दइआलु सो हरि जपि भउ बिखमु तरि ॥१॥ (८३-८, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः १ ॥ (८३-९)
दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ (८३-९, सिरीरागु, मः १)

इक जागंदे ना लहंनि इकना सुतिआ देइ उठालि ॥१॥ (८३-६, सिरीरागु, मः १)
मः १ ॥ (८३-१०)
सिदकु सबूरी सादिका सबरु तोसा मलाइकाँ ॥ (८३-१०, सिरीरागु, मः १)
दीदारु पूरे पाइसा थाउ नाही खाइका ॥२॥ (८३-१०, सिरीरागु, मः १)
पउड़ी ॥ (८३-११)
सभ आपे तुधु उपाइ कै आपि कारै लाई ॥ (८३-११, सिरीरागु, मः १)
तूं आपे वेखि विगसदा आपणी वडिआई ॥ (८३-११, सिरीरागु, मः १)
हरि तुधहु बाहरि किछु नाही तूं सचा साई ॥ (८३-१२, सिरीरागु, मः १)
तूं आपे आपि वरतदा सभनी ही थाई ॥ (८३-१२, सिरीरागु, मः १)
हरि तिसै धिआवहु संत जनहु जो लए छडाई ॥२॥ (८३-१३, सिरीरागु, मः १)
सलोक मः १ ॥ (८३-१३)
फकड़ जाती फकड़ु नाउ ॥ (८३-१३, सिरीरागु, मः १)
सभना जीआ इका छाउ ॥ (८३-१४, सिरीरागु, मः १)
आपहु जे को भला कहाए ॥ (८३-१४, सिरीरागु, मः १)
नानक ता परु जापै जा पति लेखै पाए ॥१॥ (८३-१४, सिरीरागु, मः १)
मः २ ॥ (८३-१५)
जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ ॥ (८३-१५, सिरीरागु, मः २)
ध्रिगु जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा ॥२॥ (८३-१५, सिरीरागु, मः २)
पउड़ी ॥ (८३-१६)
तुधु आपे धरती साजीऐ चंदु सूरजु दुइ दीवे ॥ (८३-१६, सिरीरागु, मः २)
दस चारि हट तुधु साजिआ वापारु करीवे ॥ (८३-१६, सिरीरागु, मः २)
इकना नो हरि लाभु देइ जो गुरमुखि थीवे ॥ (८३-१७, सिरीरागु, मः २)
तिन जमकालु न विआपई जिन सचु अमृतु पीवे ॥ (८३-१७, सिरीरागु, मः २)
ओइ आपि छुटे परवार सिउ तिन पिछै सभु जगतु छुटीवे ॥३॥ (८३-१७, सिरीरागु, मः २)
सलोक मः १ ॥ (८३-१८)
कुदरति करि कै वसिआ सोइ ॥ (८३-१८, सिरीरागु, मः १)

पन्ना ८४

वखतु वीचारे सु बंदा होइ ॥ (८४-१, सिरीरागु, मः १)
कुदरति है कीमति नही पाइ ॥ (८४-१, सिरीरागु, मः १)
जा कीमति पाइ त कही न जाइ ॥ (८४-१, सिरीरागु, मः १)
सरै सरीअति करहि बीचारु ॥ (८४-१, सिरीरागु, मः १)
बिनु बूझे कैसे पावहि पारु ॥ (८४-२, सिरीरागु, मः १)
सिदकु करि सिजदा मनु करि मखसूदु ॥ (८४-२, सिरीरागु, मः १)
जिह धिरि देखा तिह धिरि मउजूदु ॥१॥ (८४-२, सिरीरागु, मः १)

मः ३ ॥ (८४-३)
गुर सभा एव न पाईऐ ना नेड़ै ना दूरि ॥ (८४-३, सिरीरागु, मः ३)
नानक सतिगुरु ताँ मिलै जा मनु रहै हदूरि ॥२॥ (८४-३, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८४-४)
सपत दीप सपत सागरा नव खंड चारि वेद दस असट पुराणा ॥ (८४-४, सिरीरागु, मः ३)
हरि सभना विचि तूं वरतदा हरि सभना भाणा ॥ (८४-५, सिरीरागु, मः ३)
सभि तुझै धिआवहि जीअ जंत हरि सारग पाणा ॥ (८४-५, सिरीरागु, मः ३)
जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन हउ कुरबाणा ॥ (८४-६, सिरीरागु, मः ३)
तूं आपे आपि वरतदा करि चोज विडाणा ॥४॥ (८४-६, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८४-७)
कलउ मसाजनी किआ सदाईऐ हिरदै ही लिखि लेहु ॥ (८४-७, सिरीरागु, मः ३)
सदा साहिब कै रंगि रहै कबहूं न तूटसि नेहु ॥ (८४-७, सिरीरागु, मः ३)
कलउ मसाजनी जाइसी लिखिआ भी नाले जाइ ॥ (८४-८, सिरीरागु, मः ३)
नानक सह प्रीति न जाइसी जो धुरि छोडी सचै पाइ ॥१॥ (८४-८, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८४-९)
नदरी आवदा नालि न चलई वेखहु को विउपाइ ॥ (८४-९, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरि सचु दृड़ाइआ सचि रहहु लिव लाइ ॥ (८४-१०, सिरीरागु, मः ३)
नानक सबदी सचु है करमी पलै पाइ ॥२॥ (८४-१०, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८४-१०)
हरि अंदरि बाहरि इकु तूं तूं जाणहि भेतु ॥ (८४-११, सिरीरागु, मः ३)
जो कीचै सो हरि जाणदा मेरे मन हरि चेतु ॥ (८४-११, सिरीरागु, मः ३)
सो डरै जि पाप कमावदा धरमी विगसेतु ॥ (८४-११, सिरीरागु, मः ३)
तूं सचा आपि निआउ सचु ता डरीऐ केतु ॥ (८४-१२, सिरीरागु, मः ३)
जिना नानक सचु पछाणिआ से सचि रलेतु ॥५॥ (८४-१२, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८४-१३)
कलम जलउ सणु मसवाणीऐ कागदु भी जलि जाउ ॥ (८४-१३, सिरीरागु, मः ३)
लिखण वाला जलि बलउ जिनि लिखिआ दूजा भाउ ॥ (८४-१४, सिरीरागु, मः ३)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥१॥ (८४-१४, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८४-१५)
होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु बोलणा माइआ नालि पिआरु ॥ (८४-१५, सिरीरागु, मः ३)
नानक विणु नावै को थिरु नही पड़ि पड़ि होइ खुआरु ॥२॥ (८४-१५, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८४-१६)
हरि की वडिआई वडी है हरि कीरतनु हरि का ॥ (८४-१६, सिरीरागु, मः ३)
हरि की वडिआई वडी है जा निआउ है धर्म का ॥ (८४-१६, सिरीरागु, मः ३)
हरि की वडिआई वडी है जा फलु है जीअ का ॥ (८४-१७, सिरीरागु, मः ३)

हरि की वडिआई वडी है जा न सुणई कहिआ चुगल का ॥ (८४-१७, सिरीरागु, मः ३)
हरि की वडिआई वडी है अपुछिआ दानु देवका ॥६॥ (८४-१८, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८४-१९)
हउ हउ करती सभ मुई सम्पउ किसै न नालि ॥ (८४-१९, सिरीरागु, मः ३)
दूजै भाइ दुखु पाइआ सभ जोही जमकालि ॥ (८४-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ८५

नानक गुरमुखि उबरे साचा नामु समालि ॥१॥ (८५-१, सिरीरागु, मः ३)
मः १ ॥ (८५-१)
गलंी असी चंगीआ आचारी बुरीआह ॥ (८५-१, सिरीरागु, मः १)
मनहु कुसुधा कालीआ बाहरि चिटवीआह ॥ (८५-२, सिरीरागु, मः १)
रीसा करिह तिनाड़ीआ जो सेवहि दरु खड़ीआह ॥ (८५-२, सिरीरागु, मः १)
नालि खसमै रतीआ माणहि सुखि रलीआह ॥ (८५-३, सिरीरागु, मः १)
होदै ताणि निताणीआ रहहि निमानणीआह ॥ (८५-३, सिरीरागु, मः १)
नानक जनमु सकारथा जे तिन कै संगि मिलाह ॥२॥ (८५-४, सिरीरागु, मः १)
पउड़ी ॥ (८५-४)
तूं आपे जलु मीना है आपे आपे ही आपि जालु ॥ (८५-४, सिरीरागु, मः १)
तूं आपे जालु वताइदा आपे विचि सेबालु ॥ (८५-५, सिरीरागु, मः १)
तूं आपे कमलु अलिपतु है सै हथा विचि गुलालु ॥ (८५-५, सिरीरागु, मः १)
तूं आपे मुकति कराइदा इक निमख घड़ी करि खिआलु ॥ (८५-६, सिरीरागु, मः १)
हरि तुधहु बाहरि किछु नही गुर सबदी वेखि निहालु ॥७॥ (८५-६, सिरीरागु, मः १)
सलोक मः ३ ॥ (८५-७)
हुकमु न जाणै बहुता रोवै ॥ (८५-७, सिरीरागु, मः ३)
अंदरि धोखा नीद न सोवै ॥ (८५-७, सिरीरागु, मः ३)
जे धन खसमै चलै रजाई ॥ (८५-७, सिरीरागु, मः ३)
दरि घरि सोभा महलि बुलाई ॥ (८५-८, सिरीरागु, मः ३)
नानक करमी इह मति पाई ॥ (८५-८, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी सचि समाई ॥१॥ (८५-८, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५-९)
मनमुख नाम विहूणिआ रंगु कसुम्भा देखि न भुलु ॥ (८५-९, सिरीरागु, मः ३)
इस का रंगु दिन थोड़िआ छोछा इस दा मुलु ॥ (८५-९, सिरीरागु, मः ३)
दूजै लगे पचि मुए मूरख अंध गवार ॥ (८५-१०, सिरीरागु, मः ३)
बिसटा अंदरि कीट से पइ पचहि वारो वार ॥ (८५-१०, सिरीरागु, मः ३)
नानक नाम रते से रंगुले गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (८५-११, सिरीरागु, मः ३)
भगती रंगु न उतरै सहजे रहै समाइ ॥२॥ (८५-११, सिरीरागु, मः ३)

पउड़ी ॥ (८५-१२)
सिसटि उपाई सभ तुधु आपे रिजकु सम्बाहिआ ॥ (८५-१२, सिरीरागु, मः ३)
इकि वलु छलु करि कै खावदे मुहहु कूड़ु कुसतु तिनी ढाहिआ ॥ (८५-१२, सिरीरागु, मः ३)
तुधु आपे भावै सो करहि तुधु ओतै कंमि ओइ लाइआ ॥ (८५-१३, सिरीरागु, मः ३)
इकना सचु बुझाइओनु तिना अतुट भंडार देवाइआ ॥ (८५-१३, सिरीरागु, मः ३)
हरि चेति खाहि तिना सफलु है अचेता हथ तडाइआ ॥८॥ (८५-१४, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५-१५)
पड़ि पड़ि पंडित बेद वखाणहि माइआ मोह सुआइ ॥ (८५-१५, सिरीरागु, मः ३)
दूजै भाइ हरि नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ (८५-१५, सिरीरागु, मः ३)
जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु कबहूं न चेतै जो देंदा रिजकु सम्बाहि ॥ (८५-१६, सिरीरागु, मः ३)
जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवै जाइ ॥ (८५-१६, सिरीरागु, मः ३)
मनमुखि किछू न सूझै अंधुले पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ (८५-१७, सिरीरागु, मः ३)
पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखदाता नामु वसै मनि आइ ॥ (८५-१८, सिरीरागु, मः ३)
सुखु माणहि सुखु पैनणा सुखे सुखि विहाइ ॥ (८५-१८, सिरीरागु, मः ३)
नानक सो नाउ मनहु न विसारीऐ जितु दरि सचै सोभा पाइ ॥१॥ (८५-१९, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५-१९)
सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ सचु नामु गुणतासु ॥ (८५-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ८६

गुरमती आपु पछाणिआ राम नाम परगासु ॥ (८६-१, सिरीरागु, मः ३)
सचो सचु कमावणा वडिआई वडे पासि ॥ (८६-१, सिरीरागु, मः ३)
जीउ पिंडु सभु तिस का सिफति करे अरदासि ॥ (८६-२, सिरीरागु, मः ३)
सचै सबदि सालाहणा सुखे सुखि निवासु ॥ (८६-२, सिरीरागु, मः ३)
जपु तपु संजमु मनै माहि बिनु नावै ध्रिगु जीवासु ॥ (८६-३, सिरीरागु, मः ३)
गुरमती नाउ पाईऐ मनमुख मोहि विणासु ॥ (८६-३, सिरीरागु, मः ३)
जिउ भावै तिउ राखु तूं नानकु तेरा दासु ॥२॥ (८६-४, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८६-४)
सभु को तेरा तूं सभसु दा तूं सभना रासि ॥ (८६-४, सिरीरागु, मः ३)
सभि तुधै पासहु मंगदे नित करि अरदासि ॥ (८६-५, सिरीरागु, मः ३)
जिसु तूं देहि तिसु सभु किछु मिलै इकना दूरि है पासि ॥ (८६-५, सिरीरागु, मः ३)
तुधु बाझहु थाउ को नाही जिसु पासहु मंगीऐ मनि वेखहु को निरजासि ॥ (८६-६, सिरीरागु, मः ३)
सभि तुधै नो सालाहदे दरि गुरमुखा नो परगासि ॥९॥ (८६-६, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८६-७)
पंडितु पड़ि पड़ि उचा कूकदा माइआ मोहि पिआरु ॥ (८६-७, सिरीरागु, मः ३)
अंतरि ब्रह्मु न चीनई मनि मूरखु गावारु ॥ (८६-८, सिरीरागु, मः ३)

दूजै भाइ जगतु परबोधदा ना बूझै बीचारु ॥ (८६-८, सिरीरागु, मः ३)
बिरथा जनमु गवाइआ मरि जम्मै वारो वार ॥१॥ (८६-९, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८६-९)
जिनी सतिगुरु सेविआ तिनी नाउ पाइआ बूझहु करि बीचारु ॥ (८६-९, सिरीरागु, मः ३)
सदा साँति सुखु मनि वसै चूकै कूक पुकार ॥ (८६-१०, सिरीरागु, मः ३)
आपै नो आपु खाइ मनु निरमलु होवै गुर सबदी वीचारु ॥ (८६-१०, सिरीरागु, मः ३)
नानक सबदि रते से मुकतु है हरि जीउ हेति पिआरु ॥२॥ (८६-११, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८६-११)
हरि की सेवा सफल है गुरमुखि पावै थाइ ॥ (८६-१२, सिरीरागु, मः ३)
जिसु हरि भावै तिसु गुरु मिलै सो हरि नामु धिआइ ॥ (८६-१२, सिरीरागु, मः ३)
गुर सबदी हरि पाईऐ हरि पारि लघाइ ॥ (८६-१३, सिरीरागु, मः ३)
मनहठि किनै न पाइओ पुछहु वेदा जाइ ॥ (८६-१३, सिरीरागु, मः ३)
नानक हरि की सेवा सो करे जिसु लए हरि लाइ ॥१०॥ (८६-१३, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८६-१४)
नानक सो सूरा वरीआमु जिनि विचहु दुसटु अहंकरणु मारिआ ॥ (८६-१४, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि नामु सालाहि जनमु सवारिआ ॥ (८६-१५, सिरीरागु, मः ३)
आपि होआ सदा मुकतु सभु कुलु निसतारिआ ॥ (८६-१५, सिरीरागु, मः ३)
सोहनि सचि दुआरि नामु पिआरिआ ॥ (८६-१६, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख मरहि अहंकारि मरणु विगाड़िआ ॥ (८६-१६, सिरीरागु, मः ३)
सभो वरतै हुकमु किआ करहि विचारिआ ॥ (८६-१७, सिरीरागु, मः ३)
आपहु दूजै लगि खसमु विसारिआ ॥ (८६-१७, सिरीरागु, मः ३)
नानक बिनु नावै सभु दुखु सुखु विसारिआ ॥१॥ (८६-१७, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८६-१८)
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ तिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ (८६-१८, सिरीरागु, मः ३)
राम नामु हरि कीरति गाई करि चानणु मगु दिखाइआ ॥ (८६-१९, सिरीरागु, मः ३)
हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ (८६-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ८७

गुरमती जमु जोहि न साकै साचै नामि समाइआ ॥ (८७-१, सिरीरागु, मः ३)
सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ (८७-१, सिरीरागु, मः ३)
जन नानकु नामु लए ता जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥२॥ (८७-२, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८७-२)
जो मिलिआ हरि दीबाण सिउ सो सभनी दीबाणी मिलिआ ॥ (८७-३, सिरीरागु, मः ३)
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु सुरखरू उस कै मुहि डिठै सभ पापी तरिआ ॥ (८७-३, सिरीरागु, मः ३)
ओसु अंतरि नामु निधानु है नामो परवरिआ ॥ (८७-४, सिरीरागु, मः ३)

नाउ पूजीऐ नाउ मन्नीऐ नाइ किलविख सभ हिरिआ ॥ (८७-४, सिरीरागु, मः ३)
जिनी नामु धिआइआ इक मनि इक चिति से असथिरु जगि रहिआ ॥११॥ (८७-५, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८७-६)
आतमा देउ पूजीऐ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (८७-६, सिरीरागु, मः ३)
आतमे नो आतमे दी प्रतीति होइ ता घर ही परचा पाइ ॥ (८७-६, सिरीरागु, मः ३)
आतमा अडोलु न डोलई गुर कै भाइ सुभाइ ॥ (८७-७, सिरीरागु, मः ३)
गुर विणु सहजु न आवई लोभु मैलु न विचहु जाइ ॥ (८७-७, सिरीरागु, मः ३)
खिनु पलु हरि नामु मनि वसै सभ अठसठि तीर्थ नाइ ॥ (८७-८, सिरीरागु, मः ३)
सचे मैलु न लगई मलु लागै दूजै भाइ ॥ (८७-८, सिरीरागु, मः ३)
धोती मूलि न उतरै जे अठसठि तीर्थ नाइ ॥ (८७-९, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख कर्म करे अहंकारी सभु दुखो दुखु कमाइ ॥ (८७-९, सिरीरागु, मः ३)
नानक मैला ऊजलु ता थीऐ जा सतिगुर माहि समाइ ॥१॥ (८७-१०, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८७-१०)
मनमुखु लोकु समझाईऐ कदहु समझाइआ जाइ ॥ (८७-११, सिरीरागु, मः ३)
मनमुखु रलाइआ ना रलै पइऐ किरति फिराइ ॥ (८७-११, सिरीरागु, मः ३)
लिव धातु दुइ राह है हुकमी कार कमाइ ॥ (८७-१२, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि आपणा मनु मारिआ सबदि कसवटी लाइ ॥ (८७-१२, सिरीरागु, मः ३)
मन ही नालि झगड़ा मन ही नालि सथ मन ही मंझि समाइ ॥ (८७-१३, सिरीरागु, मः ३)
मनु जो इछे सो लहै सचै सबदि सुभाइ ॥ (८७-१३, सिरीरागु, मः ३)
अमृत नामु सद भुंचीऐ गुरमुखि कार कमाइ ॥ (८७-१४, सिरीरागु, मः ३)
विणु मनै जि होरी नालि लुझणा जासी जनमु गवाइ ॥ (८७-१४, सिरीरागु, मः ३)
मनमुखी मनहठि हारिआ कूड़ु कुसतु कमाइ ॥ (८७-१५, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी मनु जिणै हरि सेती लिव लाइ ॥ (८७-१५, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमुखि सचु कमावै मनमुखि आवै जाइ ॥२॥ (८७-१६, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८७-१६)
हरि के संत सुणहु जन भाई हरि सतिगुर की इक साखी ॥ (८७-१६, सिरीरागु, मः ३)
जिसु धुरि भागु होवै मुखि मसतकि तिनि जनि लै हिरदै राखी ॥ (८७-१७, सिरीरागु, मः ३)
हरि अमृत कथा सरेसट ऊतम गुर बचनी सहजे चाखी ॥ (८७-१७, सिरीरागु, मः ३)
तह भइआ प्रगासु मिटिआ अंधिआरा जिउ सूरज रैणि किराखी ॥ (८७-१८, सिरीरागु, मः ३)
अदिसटु अगोचरु अलखु निरंजनु सो देखिआ गुरमुखि आखी ॥१२॥ (८७-१९, सिरीरागु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (८७-१९)

पन्ना ८८

सतिगुरु सेवे आपणा सो सिरु लेखै लाइ ॥ (८८-१, सिरीरागु, मः ३)
विचहु आपु गवाइ कै रहनि सचि लिव लाइ ॥ (८८-१, सिरीरागु, मः ३)

सतिगुरु जिनी न सेविओ तिना बिरथा जनमु गवाइ ॥ (८८-१, सिरीरागु, मः ३)
नानक जो तिसु भावै सो करे कहणा किछू न जाइ ॥१॥ (८८-२, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८८-३)
मनु वेकारी वेड़िआ वेकारा कर्म कमाइ ॥ (८८-३, सिरीरागु, मः ३)
दूजै भाइ अगिआनी पूजदे दरगह मिलै सजाइ ॥ (८८-३, सिरीरागु, मः ३)
आतम देउ पूजीऐ बिनु सतिगुर बूझ न पाइ ॥ (८८-४, सिरीरागु, मः ३)
जपु तपु संजमु भाणा सतिगुरू का करमी पलै पाइ ॥ (८८-४, सिरीरागु, मः ३)
नानक सेवा सुरति कमावणी जो हरि भावै सो थाइ पाइ ॥२॥ (८८-५, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८८-५)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सदा सुखु होवै दिनु राती ॥ (८८-५, सिरीरागु, मः ३)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु सिमरत सभि किलविख पाप लहाती ॥ (८८-६, सिरीरागु, मः ३)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जाती ॥ (८८-७, सिरीरागु, मः ३)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे मुखि गुरमुखि प्रीति लगाती ॥ (८८-७, सिरीरागु, मः ३)
जितु मुखि भागु लिखिआ धुरि साचै हरि तितु मुखि नामु जपाती ॥१३॥ (८८-८, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८८-९)
सतिगुरु जिनी न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ (८८-९, सिरीरागु, मः ३)
अंतरि गिआनु न आइओ मिरतकु है संसारि ॥ (८८-९, सिरीरागु, मः ३)
लख चउरासीह फेरु पइआ मरि जम्मै होइ खुआरु ॥ (८८-१०, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुर की सेवा सो करे जिस नो आपि कराए सोइ ॥ (८८-११, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुर विचि नामु निधानु है करमि परापति होइ ॥ (८८-११, सिरीरागु, मः ३)
सचि रते गुर सबद सिउ तिन सची सदा लिव होइ ॥ (८८-१२, सिरीरागु, मः ३)
नानक जिस नो मेले न विछुड़ै सहजि समावै सोइ ॥१॥ (८८-१२, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८८-१३)
सो भगउती जुो भगवंतै जाणै ॥ (८८-१३, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी आपु पछाणै ॥ (८८-१३, सिरीरागु, मः ३)
धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ (८८-१३, सिरीरागु, मः ३)
जीवतु मरै हरि नामु वखाणै ॥ (८८-१४, सिरीरागु, मः ३)
ऐसा भगउती उतमु होइ ॥ (८८-१४, सिरीरागु, मः ३)
नानक सचि समावै सोइ ॥२॥ (८८-१४, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८८-१५)
अंतरि कपटु भगउती कहाए ॥ (८८-१५, सिरीरागु, मः ३)
पाखंडि पारब्रहमु कदे न पाए ॥ (८८-१५, सिरीरागु, मः ३)
पर निंदा करे अंतरि मलु लाए ॥ (८८-१५, सिरीरागु, मः ३)
बाहरि मलु धोवै मन की जूठि न जाए ॥ (८८-१६, सिरीरागु, मः ३)
सतसंगति सिउ बादु रचाए ॥ (८८-१६, सिरीरागु, मः ३)

अनदिनु दुखीआ दूजै भाइ रचाए ॥ (८८-१७, सिरीरागु, मः ३)
हरि नामु न चेतै बहु कर्म कमाए ॥ (८८-१७, सिरीरागु, मः ३)
पूरब लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ (८८-१७, सिरीरागु, मः ३)
नानक बिनु सतिगुर सेवे मोखु न पाए ॥३॥ (८८-१८, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८८-१८)
सतिगुरु जिनी धिआइआ से कड़ि न सवाही ॥ (८८-१८, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु जिनी धिआइआ से तृपति अघाही ॥ (८८-१९, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु जिनी धिआइआ तिन जम डरु नाही ॥ (८८-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ८९

जिन कउ होआ कृपालु हरि से सतिगुर पैरी पाही ॥ (८९-१, सिरीरागु, मः ३)
तिन ऐथै ओथै मुख उजले हरि दरगह पैधे जाही ॥१४॥ (८९-१, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः २ ॥ (८९-२)
जो सिरु साँई ना निवै सो सिरु दीजै डारि ॥ (८९-२, सिरीरागु, मः २)
नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नही सो पिंजरु लै जारि ॥१॥ (८९-२, सिरीरागु, मः २)
मः ५ ॥ (८९-३)
मुंढहु भुली नानका फिरि फिरि जनमि मुईआसु ॥ (८९-३, सिरीरागु, मः ५)
कसतूरी कै भोलड़ै गंदे डुंमि पईआसु ॥२॥ (८९-४, सिरीरागु, मः ५)
पउड़ी ॥ (८९-४)
सो ऐसा हरि नामु धिआईऐ मन मेरे जो सभना उपरि हुकमु चलाए ॥ (८९-४, सिरीरागु, मः ५)
सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जो अंती अउसरि लए छडाए ॥ (८९-५, सिरीरागु, मः ५)
सो ऐसा हरि नामु जपीऐ मन मेरे जु मन की तृसना सभ भुख गवाए ॥ (८९-६, सिरीरागु, मः ५)
सो गुरमुखि नामु जपिआ वडभागी तिन निंदक दुसट सभि पैरी पाए ॥ (८९-६, सिरीरागु, मः ५)
नानक नामु अराधि सभना ते वडा सभि नावै अगै आणि निवाए ॥१५॥ (८९-७, सिरीरागु, मः ५)
सलोक मः ३ ॥ (८९-८)
वेस करे कुरूपि कुलखणी मनि खोटै कूड़िआरि ॥ (८९-८, सिरीरागु, मः ३)
पिर कै भाणै ना चलै हुकमु करे गावारि ॥ (८९-९, सिरीरागु, मः ३)
गुर कै भाणै जो चलै सभि दुख निवारणहारि ॥ (८९-९, सिरीरागु, मः ३)
लिखिआ मेटि न सकीऐ जो धुरि लिखिआ करतारि ॥ (८९-९, सिरीरागु, मः ३)
मनु तनु सउपे कंत कउ सबदे धरे पिआरु ॥ (८९-१०, सिरीरागु, मः ३)
बिनु नावै किनै न पाइआ देखहु रिदै बीचारि ॥ (८९-१०, सिरीरागु, मः ३)
नानक सा सुआलिओ सुलखणी जि रावी सिरजनहारि ॥१॥ (८९-११, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (८९-१२)
माइआ मोहु गुबारु है तिस दा न दिसै उरवारु न पारु ॥ (८९-१२, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख अगिआनी महा दुखु पाइदे डुबे हरि नामु विसारि ॥ (८९-१२, सिरीरागु, मः ३)

भलके उठि बहु कर्म कमावहि दूजै भाइ पिआरु ॥ (८९-१३, सिरीरागु, मः ३)
सतिगुरु सेवहि आपणा भउजलु उतरे पारि ॥ (८९-१३, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमुखि सचि समावहि सचु नामु उर धारि ॥२॥ (८९-१४, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८९-१४)
हरि जलि थलि महीअलि भरपूरि दूजा नाहि कोइ ॥ (८९-१५, सिरीरागु, मः ३)
हरि आपि बहि करे निआउ कूड़िआर सभ मारि कढोइ ॥ (८९-१५, सिरीरागु, मः ३)
सचिआरा देइ वडिआई हरि धर्म निआउ कीओइ ॥ (८९-१६, सिरीरागु, मः ३)
सभ हरि की करहु उसतति जिनि गरीब अनाथ राखि लीओइ ॥ (८९-१६, सिरीरागु, मः ३)
जैकारु कीओ धरमीआ का पापी कउ डंडु दीओइ ॥१६॥ (८९-१७, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८९-१८)
मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥ (८९-१८, सिरीरागु, मः ३)
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥ (८९-१८, सिरीरागु, मः ३)
तृसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥ (८९-१९, सिरीरागु, मः ३)
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥१॥ (८९-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ९०

मः ३ ॥ (९०-१)
सबदि रती सोहागणी सतिगुर कै भाइ पिआरि ॥ (९०-१, सिरीरागु, मः ३)
सदा रावे पिरु आपणा सचै प्रेमि पिआरि ॥ (९०-१, सिरीरागु, मः ३)
अति सुआलिउ सुंदरी सोभावंती नारि ॥ (९०-२, सिरीरागु, मः ३)
नानक नामि सोहागणी मेली मेलणहारि ॥२॥ (९०-२, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (९०-३)
हरि तेरी सभ करहि उसतति जिनि फाथे काढिआ ॥ (९०-३, सिरीरागु, मः ३)
हरि तुधनो करहि सभ नमसकारु जिनि पापै ते राखिआ ॥ (९०-३, सिरीरागु, मः ३)
हरि निमाणिआ तूं माणु हरि डाढी हूं तूं डाढिआ ॥ (९०-४, सिरीरागु, मः ३)
हरि अहंकारीआ मारि निवाए मनमुख मूड़ साधिआ ॥ (९०-४, सिरीरागु, मः ३)
हरि भगता देइ वडिआई गरीब अनाथिआ ॥१७॥ (९०-५, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (९०-६)
सतिगुर कै भाणै जो चलै तिसु वडिआई वडी होइ ॥ (९०-६, सिरीरागु, मः ३)
हरि का नामु उतमु मनि वसै मेटि न सकै कोइ ॥ (९०-६, सिरीरागु, मः ३)
किरपा करे जिसु आपणी तिसु करमि परापति होइ ॥ (९०-७, सिरीरागु, मः ३)
नानक कारणु करते वसि है गुरमुखि बूझै कोइ ॥१॥ (९०-७, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (९०-८)
नानक हरि नामु जिनी आराधिआ अनदिनु हरि लिव तार ॥ (९०-८, सिरीरागु, मः ३)
माइआ बंदी खसम की तिन अगै कमावै कार ॥ (९०-९, सिरीरागु, मः ३)

पूरै पूरा करि छोडिआ हुकमि सवारणहार ॥ (९०-९, सिरीरागु, मः ३)
गुर परसादी जिनि बुझिआ तिनि पाइआ मोख दुआरु ॥ (९०-१०, सिरीरागु, मः ३)
मनमुख हुकमु न जाणनी तिन मारे जम जंदारु ॥ (९०-१०, सिरीरागु, मः ३)
गुरमुखि जिनी अराधिआ तिनी तरिआ भउजलु संसारु ॥ (९०-११, सिरीरागु, मः ३)
सभि अउगण गुणी मिटाइआ गुरु आपे बखसणहारु ॥२॥ (९०-११, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (९०-१२)
हरि की भगता परतीति हरि सभ किछु जाणदा ॥ (९०-१२, सिरीरागु, मः ३)
हरि जेवडु नाही कोई जाणु हरि धरमु बीचारदा ॥ (९०-१३, सिरीरागु, मः ३)
काड़ा अंदेसा किउ कीजै जा नाही अधरमि मारदा ॥ (९०-१३, सिरीरागु, मः ३)
सचा साहिबु सचु निआउ पापी नरु हारदा ॥ (९०-१४, सिरीरागु, मः ३)
सालाहिहु भगतहु कर जोड़ि हरि भगत जन तारदा ॥१८॥ (९०-१४, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (९०-१५)
आपणे प्रीतम मिलि रहा अंतरि रखा उरि धारि ॥ (९०-१५, सिरीरागु, मः ३)
सालाही सो प्रभ सदा सदा गुर कै हेति पिआरि ॥ (९०-१५, सिरीरागु, मः ३)
नानक जिसु नदरि करे तिसु मेलि लए साई सुहागणि नारि ॥१॥ (९०-१६, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (९०-१७)
गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ (९०-१७, सिरीरागु, मः ३)
माणस ते देवते भए धिआइआ नामु हरे ॥ (९०-१७, सिरीरागु, मः ३)
हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि तरे ॥ (९०-१८, सिरीरागु, मः ३)
नानक सहजि समाइअनु हरि आपणी कृपा करे ॥२॥ (९०-१८, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (९०-१९)
हरि आपणी भगति कराइ वडिआई वेखालीअनु ॥ (९०-१९, सिरीरागु, मः ३)
आपणी आपि करे परतीति आपे सेव घालीअनु ॥ (९०-१९, सिरीरागु, मः ३)

पन्ना ९१

हरि भगता नो देइ अनंदु थिरु घरी बहालिअनु ॥ (९१-१, सिरीरागु, मः ३)
पापीआ नो न देई थिरु रहणि चुणि नरक घोरि चालिअनु ॥ (९१-१, सिरीरागु, मः ३)
हरि भगता नो देइ पिआरु करि अंगु निसतारिअनु ॥१९॥ (९१-२, सिरीरागु, मः ३)
सलोक मः १ ॥ (९१-३)
कुबुधि डूमणी कुदइआ कसाइणि पर निंदा घट चूहड़ी मुठी क्रोधि चंडालि ॥ (९१-३, सिरीरागु, मः १)
कारी कढी किआ थीऐ जाँ चारे बैठीआ नालि ॥ (९१-४, सिरीरागु, मः १)
सचु संजमु करणी काराँ नावणु नाउ जपेही ॥ (९१-४, सिरीरागु, मः १)
नानक अगै ऊतम सेई जि पापाँ पंदि न देही ॥१॥ (९१-४, सिरीरागु, मः १)
मः १ ॥ (९१-५)
किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि करेइ ॥ (९१-५, सिरीरागु, मः १)

जो तिसु भावै नानका कागहु हंसु करेइ ॥२॥ (६१-६, सिरीरागु, मः १)
पउड़ी ॥ (६१-६)
कीता लोड़ीऐ कम्मु सु हरि पहि आखीऐ ॥ (६१-६, सिरीरागु, मः १)
कारजु देइ सवारि सतिगुर सचु साखीऐ ॥ (६१-६, सिरीरागु, मः १)
संता संगि निधानु अमृतु चाखीऐ ॥ (६१-७, सिरीरागु, मः १)
भै भंजन मिहरवान दास की राखीऐ ॥ (६१-७, सिरीरागु, मः १)
नानक हरि गुण गाइ अलखु प्रभु लाखीऐ ॥२०॥ (६१-८, सिरीरागु, मः १)
सलोक मः ३ ॥ (६१-८)
जीउ पिंडु सभु तिस का सभसै देइ अधारु ॥ (६१-८, सिरीरागु, मः ३)
नानक गुरमुखि सेवीऐ सदा सदा दातारु ॥ (६१-९, सिरीरागु, मः ३)
हउ बलिहारी तिन कउ जिनि धिआइआ हरि निरंकारु ॥ (६१-९, सिरीरागु, मः ३)
ओना के मुख सद उजले ओना नो सभु जगतु करे नमसकारु ॥१॥ (६१-१०, सिरीरागु, मः ३)
मः ३ ॥ (६१-१०)
सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥ (६१-११, सिरीरागु, मः ३)
अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥ (६१-११, सिरीरागु, मः ३)
अनहद धुनी सद वजदे उनमनि हरि लिव लाइ ॥ (६१-१२, सिरीरागु, मः ३)
नानक हरि भगति तिना कै मनि वसै जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥२॥ (६१-१२, सिरीरागु, मः ३)
पउड़ी ॥ (६१-१३)
हउ ढाढी हरि प्रभ खसम का हरि कै दरि आइआ ॥ (६१-१३, सिरीरागु, मः ३)
हरि अंदरि सुणी पूकार ढाढी मुखि लाइआ ॥ (६१-१४, सिरीरागु, मः ३)
हरि पुछिआ ढाढी सदि कै कितु अरथि तूं आइआ ॥ (६१-१४, सिरीरागु, मः ३)
नित देवहु दानु दइआल प्रभ हरि नामु धिआइआ ॥ (६१-१५, सिरीरागु, मः ३)
हरि दातै हरि नामु जपाइआ नानकु पैनाइआ ॥२१॥१॥ सुधु (६१-१५, सिरीरागु, मः ३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६१-१७)
सिरीरागु कबीर जीउ का ॥ (६१-१८)
एकु सुआनु कै घरि गावणा (६१-१८)
जननी जानत सुतु बडा होतु है इतना कु न जानै जि दिन दिन अवध घटतु है ॥ (६१-१९, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
मोर मोर करि अधिक लाडु धरि पेखत ही जमराउ हसै ॥१॥ (६१-१९, सिरीरागु, भगत कबीर जी)

पन्ना ६२

ऐसा तैं जगु भरमि लाइआ ॥ (६२-१, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
कैसे बूझै जब मोहिआ है माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२-१, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
कहत कबीर छोडि बिखिआ रस इतु संगति निहचउ मरणा ॥ (६२-२, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
रमईआ जपहु प्राणी अनत जीवण बाणी इन बिधि भव सागरु तरणा ॥२॥ (६२-२, सिरीरागु, भगत कबीर जी)

जाँ तिसु भावै ता लागै भाउ ॥ (९२-३, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
भरमु भुलावा विचहु जाइ ॥ (९२-३, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
उपजै सहजु गिआन मति जागै ॥ (९२-४, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
गुर प्रसादि अंतरि लिव लागै ॥३॥ (९२-४, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
इतु संगति नाही मरणा ॥ (९२-४, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
हुकमु पछाणि ता खसमै मिलणा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥ (९२-५, सिरीरागु, भगत कबीर जी)
सिरीरागु तृलोचन का ॥ (९२-५)
माइआ मोहु मनि आगलड़ा प्राणी जरा मरणु भउ विसरि गइआ ॥ (९२-५, सिरीरागु, तृलोचन)
कुटम्बु देखि बिगसहि कमला जिउ पर घरि जोहहि कपट नरा ॥१॥ (९२-६, सिरीरागु, तृलोचन)
दूड़ा आइओहि जमहि तणा ॥ (९२-७, सिरीरागु, तृलोचन)
तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥ (९२-७, सिरीरागु, तृलोचन)
कोई कोई साजणु आइ कहै ॥ (९२-७, सिरीरागु, तृलोचन)
मिलु मेरे बीठुला लै बाहड़ी वलाइ ॥ (९२-८, सिरीरागु, तृलोचन)
मिलु मेरे रमईआ मै लेहि छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (९२-८, सिरीरागु, तृलोचन)
अनिक अनिक भोग राज बिसरे प्राणी संसार सागर पै अमरु भइआ ॥ (९२-९, सिरीरागु, तृलोचन)
माइआ मूठा चेतसि नाही जनमु गवाइओ आलसीआ ॥२॥ (९२-९, सिरीरागु, तृलोचन)
बिखम घोर पंथि चालणा प्राणी रवि ससि तह न प्रवेसं ॥ (९२-१०, सिरीरागु, तृलोचन)
माइआ मोहु तब बिसरि गइआ जाँ तजीअले संसारं ॥३॥ (९२-१०, सिरीरागु, तृलोचन)
आजु मेरै मनि प्रगटु भइआ है पेखीअले धरमराओ ॥ (९२-११, सिरीरागु, तृलोचन)
तह कर दल करनि महाबली तिन आगलड़ै मै रहणु न जाइ ॥४॥ (९२-१२, सिरीरागु, तृलोचन)
जे को मूं उपदेसु करतु है ता वणि तृणि रतड़ा नाराइणा ॥ (९२-१२, सिरीरागु, तृलोचन)
ऐ जी तूं आपे सभ किछु जाणदा बदति तृलोचनु रामईआ ॥५॥२॥ (९२-१३, सिरीरागु, तृलोचन)
स्रीरागु भगत कबीर जीउ का ॥ (९२-१४)
अचरज एकु सुनहु रे पंडीआ अब किछु कहनु न जाई ॥ (९२-१४, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
सुरि नर गण गंध्रब जिनि मोहे तृभवण मेखुली लाई ॥१॥ (९२-१४, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
राजा राम अनहद किंगुरी बाजै ॥ (९२-१५, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
जा की दिसटि नाद लिव लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (९२-१५, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
भाठी गगनु सिंङिआ अरु चुंङिआ कनक कलस इकु पाइआ ॥ (९२-१६, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
तिसु महि धार चुऐ अति निर्मल रस महि रसन चुआइआ ॥२॥ (९२-१६, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
एक जु बात अनूप बनी है पवन पिआला साजिआ ॥ (९२-१७, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
तीनि भवन महि एको जोगी कहहु कवनु है राजा ॥३॥ (९२-१८, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
ऐसे गिआन प्रगटिआ पुरखोतम कहु कबीर रंगि राता ॥ (९२-१८, स्रीरागु, भगत कबीर जी)
अउर दुनी सभ भरमि भुलानी मनु राम रसाइन माता ॥४॥३॥ (९२-१९, स्रीरागु, भगत कबीर जी)

स्रीराग बाणी भगत बेणी जीउ की ॥ (६३-१)
पहरिआ कै घरि गावणा ॥ (६३-१, स्रीरागु, बेणी जीउ)
१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६३-१)
रे नर गरभ कुंडल जब आछत उरध धिआन लिव लागा ॥ (६३-२, स्रीरागु, बेणी जीउ)
मिरतक पिंडि पद मद ना अहिनिसि एकु अगिआन सु नागा ॥ (६३-२, स्रीरागु, बेणी जीउ)
ते दिन सम्मलु कसट महा दुख अब चितु अधिक पसारिआ ॥ (६३-३, स्रीरागु, बेणी जीउ)
गरभ छोडि मृत मंडल आइआ तउ नरहरि मनहु बिसारिआ ॥१॥ (६३-४, स्रीरागु, बेणी जीउ)
फिरि पछुतावहिगा मूड़िआ तूं कवन कुमति भ्रमि लागा ॥ (६३-४, स्रीरागु, बेणी जीउ)
चेति रामु नाही जम पुरि जाहिगा जनु बिचरै अनराधा ॥१॥ रहाउ ॥ (६३-५, स्रीरागु, बेणी जीउ)
बाल बिनोद चिंद रस लागा खिनु खिनु मोहि बिआपै ॥ (६३-६, स्रीरागु, बेणी जीउ)
रसु मिसु मेधु अमृतु बिखु चाखी तउ पंच प्रगट संतापै ॥ (६३-६, स्रीरागु, बेणी जीउ)
जपु तपु संजमु छोडि सुकृत मति राम नामु न अराधिआ ॥ (६३-७, स्रीरागु, बेणी जीउ)
उछलिआ कामु काल मति लागी तउ आनि सकति गलि बाँधिआ ॥२॥ (६३-७, स्रीरागु, बेणी जीउ)
तरुण तेजु पर तृअ मुखु जोहहि सरु अपसरु न पछाणिआ ॥ (६३-८, स्रीरागु, बेणी जीउ)
उनमत कामि महा बिखु भूलै पापु पुन्नु न पछानिआ ॥ (६३-९, स्रीरागु, बेणी जीउ)
सुत सम्पति देखि इहु मनु गरबिआ रामु रिदै ते खोइआ ॥ (६३-९, स्रीरागु, बेणी जीउ)
अवर मरत माइआ मनु तोले तउ भग मुखि जनमु विगोइआ ॥३॥ (६३-१०, स्रीरागु, बेणी जीउ)
पुंडर केस कुसम ते धउले सपत पाताल की बाणी ॥ (६३-११, स्रीरागु, बेणी जीउ)
लोचन स्रमहि बुधि बल नाठी ता कामु पवसि माधाणी ॥ (६३-११, स्रीरागु, बेणी जीउ)
ता ते बिखै भई मति पावसि काइआ कमलु कुमलाणा ॥ (६३-१२, स्रीरागु, बेणी जीउ)
अवगति बाणि छोडि मृत मंडलि तउ पाछै पछुताणा ॥४॥ (६३-१२, स्रीरागु, बेणी जीउ)
निकुटी देह देखि धुनि उपजै मान करत नही बूझै ॥ (६३-१३, स्रीरागु, बेणी जीउ)
लालचु करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥ (६३-१३, स्रीरागु, बेणी जीउ)
थाका तेजु उडिआ मनु पंखी घरि आँगनि न सुखाई ॥ (६३-१४, स्रीरागु, बेणी जीउ)
बेणी कहै सुनहु रे भगतहु मरन मुकति किनि पाई ॥५॥ (६३-१४, स्रीरागु, बेणी जीउ)
सिरीरागु ॥ (६३-१५)
तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा ॥ (६३-१५, स्रीरागु, रविदास)
कनक कटिक जल तरंग जैसा ॥१॥ (६३-१६, स्रीरागु, रविदास)
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता ॥ (६३-१६, स्रीरागु, रविदास)
पतित पावन नामु कैसे हुंता ॥१॥ रहाउ ॥ (६३-१६, स्रीरागु, रविदास)
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी ॥ (६३-१७, स्रीरागु, रविदास)
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी ॥२॥ (६३-१७, स्रीरागु, रविदास)
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू ॥ (६३-१८, स्रीरागु, रविदास)

रविदास सम दल समझावै कोऊ ॥३॥ (६३-१८, स्रीरागु, रविदास)

पन्ना ६४

रागु माझ चउपदे घरु १ महला ४ (६४-१)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (६४-२)
हरि हरि नामु मै हरि मनि भाइआ ॥ (६४-४, माझ, मः ४)
वडभागी हरि नामु धिआइआ ॥ (६४-४, माझ, मः ४)
गुरि पूरै हरि नाम सिधि पाई को विरला गुरमति चलै जीउ ॥१॥ (६४-४, माझ, मः ४)
मै हरि हरि खरचु लइआ बंनि पलै ॥ (६४-५, माझ, मः ४)
मेरा प्राण सखाई सदा नालि चलै ॥ (६४-५, माझ, मः ४)
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ हरि निहचलु हरि धनु पलै जीउ ॥२॥ (६४-६, माझ, मः ४)
हरि हरि सजणु मेरा प्रीतमु राइआ ॥ (६४-६, माझ, मः ४)
कोई आणि मिलावै मेरे प्राण जीवाइआ ॥ (६४-७, माझ, मः ४)
हउ रहि न सका बिनु देखे प्रीतमा मै नीरु वहे वहि चलै जीउ ॥३॥ (६४-७, माझ, मः ४)
सतिगुरु मित्रु मेरा बाल सखाई ॥ (६४-८, माझ, मः ४)
हउ रहि न सका बिनु देखे मेरी माई ॥ (६४-८, माझ, मः ४)
हरि जीउ कृपा करहु गुरु मेलहु जन नानक हरि धनु पलै जीउ ॥४॥१॥ (६४-९, माझ, मः ४)
माझ महला ४ ॥ (६४-९)
मधुसूदन मेरे मन तन प्राना ॥ (६४-९, माझ, मः ४)
हउ हरि बिनु दूजा अवरु न जाना ॥ (६४-१०, माझ, मः ४)
कोई सजणु संतु मिलै वडभागी मै हरि प्रभु पिआरा दसै जीउ ॥१॥ (६४-१०, माझ, मः ४)
हउ मनु तनु खोजी भालि भालाई ॥ (६४-११, माझ, मः ४)
किउ पिआरा प्रीतमु मिलै मेरी माई ॥ (६४-११, माझ, मः ४)
मिलि सतसंगति खोजु दसाई विचि संगति हरि प्रभु वसै जीउ ॥२॥ (६४-१२, माझ, मः ४)
मेरा पिआरा प्रीतमु सतिगुरु रखवाला ॥ (६४-१२, माझ, मः ४)
हम बारिक दीन करहु प्रतिपाला ॥ (६४-१३, माझ, मः ४)
मेरा मात पिता गुरु सतिगुरु पूरा गुर जल मिलि कमलु विगसै जीउ ॥३॥ (६४-१३, माझ, मः ४)
मै बिनु गुर देखे नीद न आवै ॥ (६४-१४, माझ, मः ४)
मेरे मन तनि वेदन गुर बिरहु लगावै ॥ (६४-१४, माझ, मः ४)
हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु जन नानक गुर मिलि रहसै जीउ ॥४॥२॥ (६४-१५, माझ, मः ४)

पन्ना ६५

माझ महला ४ ॥ (६५-१)
हरि गुण पड़ीऐ हरि गुण गुणीऐ ॥ (६५-१, माझ, मः ४)
हरि हरि नाम कथा नित सुणीऐ ॥ (६५-१, माझ, मः ४)

मिलि सतसंगति हरि गुण गाए जगु भउजलु दुतरु तरीऐ जीउ ॥१॥ (६५-१, माझ, मः ४)
आउ सखी हरि मेलु करेहा ॥ (६५-२, माझ, मः ४)
मेरे प्रीतम का मै देइ सनेहा ॥ (६५-२, माझ, मः ४)
मेरा मित्रु सखा सो प्रीतमु भाई मै दसे हरि नरहरीऐ जीउ ॥२॥ (६५-३, माझ, मः ४)
मेरी बेदन हरि गुरु पूरा जाणै ॥ (६५-३, माझ, मः ४)
हउ रहि न सका बिनु नाम वखाणे ॥ (६५-४, माझ, मः ४)
मै अउखधु मंत्रु दीजै गुर पूरे मै हरि हरि नामि उधरीऐ जीउ ॥३॥ (६५-४, माझ, मः ४)
हम चातृक दीन सतिगुर सरणाई ॥ (६५-५, माझ, मः ४)
हरि हरि नामु बूंद मुखि पाई ॥ (६५-५, माझ, मः ४)
हरि जलनिधि हम जल के मीने जन नानक जल बिनु मरीऐ जीउ ॥४॥३॥ (६५-५, माझ, मः ४)
माझ महला ४ ॥ (६५-६)
हरि जन संत मिलहु मेरे भाई ॥ (६५-६, माझ, मः ४)
मेरा हरि प्रभु दसहु मै भुख लगाई ॥ (६५-७, माझ, मः ४)
मेरी सरधा पूरि जगजीवन दाते मिलि हरि दरसनि मनु भीजै जीउ ॥१॥ (६५-७, माझ, मः ४)
मिलि सतसंगि बोली हरि बाणी ॥ (६५-८, माझ, मः ४)
हरि हरि कथा मेरै मनि भाणी ॥ (६५-८, माझ, मः ४)
हरि हरि अमृतु हरि मनि भावै मिलि सतिगुर अमृतु पीजै जीउ ॥२॥ (६५-९, माझ, मः ४)
वडभागी हरि संगति पावहि ॥ (६५-९, माझ, मः ४)
भागहीन भ्रमि चोटा खावहि ॥ (६५-१०, माझ, मः ४)
बिनु भागा सतसंगु न लभै बिनु संगति मैलु भरीजै जीउ ॥३॥ (६५-१०, माझ, मः ४)
मै आइ मिलहु जगजीवन पिआरे ॥ (६५-११, माझ, मः ४)
हरि हरि नामु दइआ मनि धारे ॥ (६५-११, माझ, मः ४)
गुरमति नामु मीठा मनि भाइआ जन नानक नामि मनु भीजै जीउ ॥४॥४॥ (६५-११, माझ, मः ४)
माझ महला ४ ॥ (६५-१२)
हरि गुर गिआनु हरि रसु हरि पाइआ ॥ (६५-१२, माझ, मः ४)
मनु हरि रंगि राता हरि रसु पीआइआ ॥ (६५-१३, माझ, मः ४)
हरि हरि नामु मुखि हरि हरि बोली मनु हरि रसि टुलि टुलि पउदा जीउ ॥१॥ (६५-१३, माझ, मः ४)
आवहु संत मै गलि मेलाईऐ ॥ (६५-१४, माझ, मः ४)
मेरे प्रीतम की मै कथा सुणाईऐ ॥ (६५-१४, माझ, मः ४)
हरि के संत मिलहु मनु देवा जो गुरबाणी मुखि चउदा जीउ ॥२॥ (६५-१५, माझ, मः ४)
वडभागी हरि संतु मिलाइआ ॥ (६५-१५, माझ, मः ४)
गुरि पूरै हरि रसु मुखि पाइआ ॥ (६५-१६, माझ, मः ४)
भागहीन सतिगुरु नही पाइआ मनमुखु गरभ जूनी निति पउदा जीउ ॥३॥ (६५-१६, माझ, मः ४)
आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ (६५-१७, माझ, मः ४)
मलु हउमै बिखिआ सभ निवारी ॥ (६५-१७, माझ, मः ४)

नानक हट पटण विचि काँइआ हरि लैंदे गुरमुखि सउदा जीउ ॥४॥५॥ (९५-१८, माझ, मः ४)
माझ महला ४ ॥ (९५-१८)
हउ गुण गोविंद हरि नामु धिआई ॥ (९५-१८, माझ, मः ४)
मिलि संगति मनि नामु वसाई ॥ (९५-१९, माझ, मः ४)
हरि प्रभ अगम अगोचर सुआमी मिलि सतिगुर हरि रसु कीचै जीउ ॥१॥ (९५-१९, माझ, मः ४)

पन्ना ९६

धनु धनु हरि जन जिनि हरि प्रभु जाता ॥ (९६-१, माझ, मः ४)
जाइ पुछा जन हरि की बाता ॥ (९६-१, माझ, मः ४)
पाव मलोवा मलि मलि धोवा मिलि हरि जन हरि रसु पीचै जीउ ॥२॥ (९६-२, माझ, मः ४)
सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ ॥ (९६-२, माझ, मः ४)
वडभागी गुर दरसनु पाइआ ॥ (९६-३, माझ, मः ४)
अमृत रसु सचु अमृतु बोली गुरि पूरै अमृतु लीचै जीउ ॥३॥ (९६-३, माझ, मः ४)
हरि सतसंगति सत पुरखु मिलाईऐ ॥ (९६-४, माझ, मः ४)
मिलि सतसंगति हरि नामु धिआईऐ ॥ (९६-४, माझ, मः ४)
नानक हरि कथा सुणी मुखि बोली गुरमति हरि नामि परीचै जीउ ॥४॥६॥ (९६-५, माझ, मः ४)
माझ महला ४ ॥ (९६-५)
आवहु भैणे तुसी मिलहु पिआरीआ ॥ (९६-६, माझ, मः ४)
जो मेरा प्रीतमु दसे तिस कै हउ वारीआ ॥ (९६-६, माझ, मः ४)
मिलि सतसंगति लधा हरि सजणु हउ सतिगुर विटहु घुमाईआ जीउ ॥१॥ (९६-६, माझ, मः ४)
जह जह देखा तह तह सुआमी ॥ (९६-७, माझ, मः ४)
तू घटि घटि रविआ अंतरजामी ॥ (९६-८, माझ, मः ४)
गुरि पूरै हरि नालि दिखालिआ हउ सतिगुर विटहु सद वारिआ जीउ ॥२॥ (९६-८, माझ, मः ४)
एको पवणु माटी सभ एका सभ एका जोति सबाईआ ॥ (९६-९, माझ, मः ४)
सभ इका जोति वरतै भिनि भिनि न रलई किसै दी रलाईआ ॥ (९६-९, माझ, मः ४)
गुर परसादी इकु नदरी आइआ हउ सतिगुर विटहु वताइआ जीउ ॥३॥ (९६-१०, माझ, मः ४)
जनु नानकु बोलै अमृत बाणी ॥ (९६-११, माझ, मः ४)
गुरसिखाँ कै मनि पिआरी भाणी ॥ (९६-११, माझ, मः ४)
उपदेसु करे गुरु सतिगुरु पूरा गुरु सतिगुरु परउपकारीआ जीउ ॥४॥७॥ (९६-१२, माझ, मः ४)
सत चउपदे महले चउथे के ॥ (९६-१२, माझ, मः ४)
माझ महला ५ चउपदे घरु १ ॥ (९६-१४)
मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ (९६-१५, माझ, मः ५)
बिलप करे चातृक की निआई ॥ (९६-१५, माझ, मः ५)
तृखा न उतरै साँति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ (९६-१५, माझ, मः ५)
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (९६-१६, माझ, मः ५)

तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ (९६-१७, माझ, मः ५)
चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ (९६-१७, माझ, मः ५)
धन्नु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥ (९६-१८, माझ, मः ५)
हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (९६-१८, माझ, मः ५)
इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ (९६-१९, माझ, मः ५)
हुणि कदि मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ (९६-१९, माझ, मः ५)

पन्ना ९७

मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥ (९७-१, माझ, मः ५)
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (९७-१, माझ, मः ५)
भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ (९७-२, माझ, मः ५)
प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ (९७-३, माझ, मः ५)
सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥ (९७-३, माझ, मः ५)
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥ रहाउ ॥१॥८॥ (९७-४, माझ, मः ५)
रागु माझ महला ५ ॥ (९७-४)
सा रुति सुहावी जितु तुधु समाली ॥ (९७-४, माझ, मः ५)
सो कम्मु सुहेला जो तेरी घाली ॥ (९७-५, माझ, मः ५)
सो रिदा सुहेला जितु रिदै तूं वुठा सभना के दातारा जीउ ॥१॥ (९७-५, माझ, मः ५)
तूं साझा साहिबु बापु हमारा ॥ (९७-६, माझ, मः ५)
नउ निधि तेरै अखुट भंडारा ॥ (९७-६, माझ, मः ५)
जिसु तूं देहि सु त्रिपति अघावै सोई भगतु तुमारा जीउ ॥२॥ (९७-६, माझ, मः ५)
सभु को आसै तेरी बैठा ॥ (९७-७, माझ, मः ५)
घट घट अंतरि तूंहै वुठा ॥ (९७-७, माझ, मः ५)
सभे साझीवाल सदाइनि तूं किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥३॥ (९७-८, माझ, मः ५)
तूं आपे गुरमुखि मुकति कराइहि ॥ (९७-८, माझ, मः ५)
तूं आपे मनमुखि जनमि भवाइहि ॥ (९७-९, माझ, मः ५)
नानक दास तेरै बलिहारै सभु तेरा खेलु दसाहरा जीउ ॥४॥२॥९॥ (९७-९, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९७-१०)
अनहदु वाजै सहजि सुहेला ॥ (९७-१०, माझ, मः ५)
सबदि अनंद करे सद केला ॥ (९७-१०, माझ, मः ५)
सहज गुफा महि ताड़ी लाई आसणु ऊच सवारिआ जीउ ॥१॥ (९७-१०, माझ, मः ५)
फिरि घिरि अपुने गृह महि आइआ ॥ (९७-११, माझ, मः ५)
जो लोड़ीदा सोई पाइआ ॥ (९७-११, माझ, मः ५)
त्रिपति अघाइ रहिआ है संतहु गुरि अनभउ पुरखु दिखारिआ जीउ ॥२॥ (९७-१२, माझ, मः ५)
आपे राजनु आपे लोगा ॥ (९७-१२, माझ, मः ५)

आपि निरबाणी आपे भोगा ॥ (९७-१३, माझ, मः ५)
आपे तखति बहै सचु निआई सभ चूकी कूक पुकारिआ जीउ ॥३॥ (९७-१३, माझ, मः ५)
जेहा डिठा मै तेहो कहिआ ॥ (९७-१४, माझ, मः ५)
तिसु रसु आइआ जिनि भेदु लहिआ ॥ (९७-१४, माझ, मः ५)
जोती जोति मिली सुखु पाइआ जन नानक इकु पसारिआ जीउ ॥४॥३॥१०॥ (९७-१४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९७-१५)
जितु घरि पिरि सोहागु बणाइआ ॥ (९७-१५, माझ, मः ५)
तितु घरि सखीए मंगलु गाइआ ॥ (९७-१६, माझ, मः ५)
अनद बिनोद तितै घरि सोहहि जो धन कंति सिगारी जीउ ॥१॥ (९७-१६, माझ, मः ५)
सा गुणवंती सा वडभागणि ॥ (९७-१७, माझ, मः ५)
पुत्रवंती सीलवंति सोहागणि ॥ (९७-१७, माझ, मः ५)
रूपवंति सा सुघड़ि बिचखणि जो धन कंत पिआरी जीउ ॥२॥ (९७-१७, माझ, मः ५)
अचारवंति साई परधाने ॥ (९७-१८, माझ, मः ५)
सभ सिंगार बणे तिसु गिआने ॥ (९७-१८, माझ, मः ५)
सा कुलवंती सा सभराई जो पिरि कै रंगि सवारी जीउ ॥३॥ (९७-१८, माझ, मः ५)
महिमा तिस की कहणु न जाए ॥ (९७-१९, माझ, मः ५)
जो पिरि मेलि लई अंगि लाए ॥ (९७-१९, माझ, मः ५)

पन्ना ९८

थिरु सुहागु वरु अगमु अगोचरु जन नानक प्रेम साधारी जीउ ॥४॥४॥११॥ (९८-१, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९८-१)
खोजत खोजत दरसन चाहे ॥ (९८-२, माझ, मः ५)
भाति भाति बन बन अवगाहे ॥ (९८-२, माझ, मः ५)
निरगुणु सरगुणु हरि हरि मेरा कोई है जीउ आणि मिलावै जीउ ॥१॥ (९८-२, माझ, मः ५)
खटु सासत बिचरत मुखि गिआना ॥ (९८-३, माझ, मः ५)
पूजा तिलकु तीर्थ इसनाना ॥ (९८-३, माझ, मः ५)
निवली कर्म आसन चउरासीह इन महि साँति न आवै जीउ ॥२॥ (९८-४, माझ, मः ५)
अनिक बरख कीए जप तापा ॥ (९८-४, माझ, मः ५)
गवनु कीआ धरती भरमाता ॥ (९८-५, माझ, मः ५)
इकु खिनु हिरदै साँति न आवै जोगी बहुड़ि बहुड़ि उठि धावै जीउ ॥३॥ (९८-५, माझ, मः ५)
करि किरपा मोहि साधु मिलाइआ ॥ (९८-६, माझ, मः ५)
मनु तनु सीतलु धीरजु पाइआ ॥ (९८-६, माझ, मः ५)
प्रभु अबिनासी बसिआ घट भीतरि हरि मंगलु नानकु गावै जीउ ॥४॥५॥१२॥ (९८-६, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९८-७)
पारब्रह्म अपरम्पर देवा ॥ (९८-७, माझ, मः ५)

अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ (९८-८, माझ, मः ५)
दीन दइआल गोपाल गोबिंदा हरि धिआवहु गुरमुखि गाती जीउ ॥१॥ (९८-८, माझ, मः ५)
गुरमुखि मधुसूदनु निसतारे ॥ (९८-९, माझ, मः ५)
गुरमुखि संगी क्रिसन मुरारे ॥ (९८-९, माझ, मः ५)
दइआल दमोदरु गुरमुखि पाईऐ होरतु कितै न भाती जीउ ॥२॥ (९८-९, माझ, मः ५)
निरहारी केसव निरवैरा ॥ (९८-१०, माझ, मः ५)
कोटि जना जा के पूजहि पैरा ॥ (९८-१०, माझ, मः ५)
गुरमुखि हिरदै जा कै हरि हरि सोई भगतु इकाती जीउ ॥३॥ (९८-१०, माझ, मः ५)
अमोघ दरसन बेअंत अपारा ॥ (९८-११, माझ, मः ५)
वड समरथु सदा दातारा ॥ (९८-११, माझ, मः ५)
गुरमुखि नामु जपीऐ तितु तरीऐ गति नानक विरली जाती जीउ ॥४॥६॥१३॥ (९८-१२, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९८-१३)
कहिआ करणा दिता लैणा ॥ (९८-१३, माझ, मः ५)
गरीबा अनाथा तेरा माणा ॥ (९८-१३, माझ, मः ५)
सभ किछु तूंहै तूंहै मेरे पिआरे तेरी कुदरति कउ बलि जाई जीउ ॥१॥ (९८-१३, माझ, मः ५)
भाणै उझड़ भाणै राहा ॥ (९८-१४, माझ, मः ५)
भाणै हरि गुण गुरमुखि गावाहा ॥ (९८-१४, माझ, मः ५)
भाणै भरमि भवै बहु जूनी सभ किछु तिसै रजाई जीउ ॥२॥ (९८-१५, माझ, मः ५)
ना को मूरखु ना को सिआणा ॥ (९८-१५, माझ, मः ५)
वरतै सभ किछु तेरा भाणा ॥ (९८-१६, माझ, मः ५)
अगम अगोचर बेअंत अथाहा तेरी कीमति कहणु न जाई जीउ ॥३॥ (९८-१६, माझ, मः ५)
खाकु संतन की देहु पिआरे ॥ (९८-१७, माझ, मः ५)
आइ पइआ हरि तेरै दुआरै ॥ (९८-१७, माझ, मः ५)
दरसनु पेखत मनु आघावै नानक मिलणु सुभाई जीउ ॥४॥७॥१४॥ (९८-१७, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९८-१८)
दुखु तदे जा विसरि जावै ॥ (९८-१८, माझ, मः ५)
भुख विआपै बहु बिधि धावै ॥ (९८-१८, माझ, मः ५)
सिमरत नामु सदा सुहेला जिसु देवै दीन दइआला जीउ ॥१॥ (९८-१९, माझ, मः ५)
सतिगुरु मेरा वड समरथा ॥ (९८-१९, माझ, मः ५)

पन्ना ९९

जीइ समाली ता सभु दुखु लथा ॥ (९९-१, माझ, मः ५)
चिंता रोगु गई हउ पीड़ा आपि करे प्रतिपाला जीउ ॥२॥ (९९-१, माझ, मः ५)
बारिक वाँगी हउ सभ किछु मंगा ॥ (९९-२, माझ, मः ५)
देदे तोटि नाही प्रभ रंगा ॥ (९९-२, माझ, मः ५)

पैरी पै पै बहुतु मनाई दीन दइआल गोपाला जीउ ॥३॥ (९९-२, माझ, मः ५)
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ (९९-३, माझ, मः ५)
जिनि बंधन काटे सगले मेरे ॥ (९९-३, माझ, मः ५)
हिरदै नामु दे निर्मल कीए नानक रंगि रसाला जीउ ॥४॥८॥१५॥ (९९-४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९९-४)
लाल गोपाल दइआल रंगीले ॥ (९९-४, माझ, मः ५)
गहिर गम्भीर बेअंत गोविंदे ॥ (९९-५, माझ, मः ५)
ऊच अथाह बेअंत सुआमी सिमरि सिमरि हउ जीवाँ जीउ ॥१॥ (९९-५, माझ, मः ५)
दुख भंजन निधान अमोले ॥ (९९-६, माझ, मः ५)
निरभउ निरवैर अथाह अतोले ॥ (९९-६, माझ, मः ५)
अकाल मूरति अजूनी सम्भौ मन सिमरत ठंढा थीवाँ जीउ ॥२॥ (९९-६, माझ, मः ५)
सदा संगी हरि रंग गोपाला ॥ (९९-७, माझ, मः ५)
ऊच नीच करे प्रतिपाला ॥ (९९-७, माझ, मः ५)
नामु रसाइणु मनु तृपताइणु गुरमुखि अमृतु पीवाँ जीउ ॥३॥ (९९-७, माझ, मः ५)
दुखि सुखि पिआरे तुधु धिआई ॥ (९९-८, माझ, मः ५)
एह सुमति गुरू ते पाई ॥ (९९-८, माझ, मः ५)
नानक की धर तूंहै ठाकुर हरि रंगि पारि परीवाँ जीउ ॥४॥९॥१६॥ (९९-९, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९९-१०)
धन्नु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ ॥ (९९-१०, माझ, मः ५)
सफलु दरसनु नेत्र पेखत तरिआ ॥ (९९-१०, माझ, मः ५)
धन्नु मूरत चसे पल घड़ीआ धंनि सु ओइ संजोगा जीउ ॥१॥ (९९-१०, माझ, मः ५)
उदमु करत मनु निरमलु होआ ॥ (९९-११, माझ, मः ५)
हरि मारगि चलत भ्रमु सगला खोइआ ॥ (९९-११, माझ, मः ५)
नामु निधानु सतिगुरू सुणाइआ मिटि गए सगले रोगा जीउ ॥२॥ (९९-१२, माझ, मः ५)
अंतरि बाहरि तेरी बाणी ॥ (९९-१३, माझ, मः ५)
तुधु आपि कथी तै आपि वखाणी ॥ (९९-१३, माझ, मः ५)
गुरि कहिआ सभु एको एको अवरु न कोई होइगा जीउ ॥३॥ (९९-१३, माझ, मः ५)
अमृत रसु हरि गुर ते पीआ ॥ (९९-१४, माझ, मः ५)
हरि पैनणु नामु भोजनु थीआ ॥ (९९-१४, माझ, मः ५)
नामि रंग नामि चोज तमासे नाउ नानक कीने भोगा जीउ ॥४॥१०॥१७॥ (९९-१४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (९९-१५)
सगल संतन पहि वसतु इक माँगउ ॥ (९९-१५, माझ, मः ५)
करउ बिनंती मानु तिआगउ ॥ (९९-१६, माझ, मः ५)
वारि वारि जाई लख वरीआ देहु संतन की धूरा जीउ ॥१॥ (९९-१६, माझ, मः ५)
तुम दाते तुम पुरख बिधाते ॥ (९९-१७, माझ, मः ५)

तुम समरथ सदा सुखदाते ॥ (९९-१७, माझ, मः ५)
सभ को तुम ही ते वरसावै अउसरु करहु हमारा पूरा जीउ ॥२॥ (९९-१७, माझ, मः ५)
दरसनि तेरै भवन पुनीता ॥ (९९-१८, माझ, मः ५)
आतम गड़ु बिखमु तिना ही जीता ॥ (९९-१८, माझ, मः ५)
तुम दाते तुम पुरख बिधाते तुधु जेवडु अवरु न सूरा जीउ ॥३॥ (९९-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १००

रेनु संतन की मेरै मुखि लागी ॥ (१००-१, माझ, मः ५)
दुरमति बिनसी कुबुधि अभागी ॥ (१००-१, माझ, मः ५)
सच घरि बैसि रहे गुण गाए नानक बिनसे कूरा जीउ ॥४॥११॥१८॥ (१००-१, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१००-२)
विसरु नाही एवड दाते ॥ (१००-२, माझ, मः ५)
करि किरपा भगतन संगि राते ॥ (१००-२, माझ, मः ५)
दिनसु रैणि जिउ तुधु धिआई एहु दानु मोहि करणा जीउ ॥१॥ (१००-३, माझ, मः ५)
माटी अंधी सुरति समाई ॥ (१००-३, माझ, मः ५)
सभ किछु दीआ भलीआ जाई ॥ (१००-४, माझ, मः ५)
अनद बिनोद चोज तमासे तुधु भावै सो होणा जीउ ॥२॥ (१००-४, माझ, मः ५)
जिस दा दिता सभु किछु लैणा ॥ (१००-५, माझ, मः ५)
छतीह अमृत भोजनु खाणा ॥ (१००-५, माझ, मः ५)
सेज सुखाली सीतलु पवणा सहज केल रंग करणा जीउ ॥३॥ (१००-५, माझ, मः ५)
सा बुधि दीजै जितु विसरहि नाही ॥ (१००-६, माझ, मः ५)
सा मति दीजै जितु तुधु धिआई ॥ (१००-६, माझ, मः ५)
सास सास तेरे गुण गावा ओट नानक गुर चरणा जीउ ॥४॥१२॥१९॥ (१००-६, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१००-७)
सिफति सालाहणु तेरा हुकमु रजाई ॥ (१००-७, माझ, मः ५)
सो गिआनु धिआनु जो तुधु भाई ॥ (१००-८, माझ, मः ५)
सोई जपु जो प्रभ जीउ भावै भाणै पूर गिआना जीउ ॥१॥ (१००-८, माझ, मः ५)
अमृतु नामु तेरा सोई गावै ॥ (१००-९, माझ, मः ५)
जो साहिब तेरै मनि भावै ॥ (१००-९, माझ, मः ५)
तूं संतन का संत तुमारे संत साहिब मनु माना जीउ ॥२॥ (१००-९, माझ, मः ५)
तूं संतन की करहि प्रतिपाला ॥ (१००-१०, माझ, मः ५)
संत खेलहि तुम संगि गोपाला ॥ (१००-१०, माझ, मः ५)
अपुने संत तुधु खरे पिआरे तू संतन के प्राना जीउ ॥३॥ (१००-१०, माझ, मः ५)
उन संतन कै मेरा मनु कुरबाने ॥ (१००-११, माझ, मः ५)
जिन तूं जाता जो तुधु मनि भाने ॥ (१००-११, माझ, मः ५)

तिन कै संगि सदा सुखु पाइआ हरि रस नानक तृपति अघाना जीउ ॥४॥१३॥२०॥ (१००-१२, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१००-१३)
तूं जलनिधि हम मीन तुमारे ॥ (१००-१३, माझ, मः ५)
तेरा नामु बूंद हम चातृक तिखहारे ॥ (१००-१३, माझ, मः ५)
तुमरी आस पिआसा तुमरी तुम ही संगि मनु लीना जीउ ॥१॥ (१००-१३, माझ, मः ५)
जिउ बारिकु पी खीरु अघावै ॥ (१००-१४, माझ, मः ५)
जिउ निरधनु धनु देखि सुखु पावै ॥ (१००-१४, माझ, मः ५)
तृखावंत जलु पीवत ठंढा तिउ हरि संगि इहु मनु भीना जीउ ॥२॥ (१००-१५, माझ, मः ५)
जिउ अंधिआरै दीपकु परगासा ॥ (१००-१५, माझ, मः ५)
भरता चितवत पूरन आसा ॥ (१००-१६, माझ, मः ५)
मिलि प्रीतम जिउ होत अनंदा तिउ हरि रंगि मनु रंगीना जीउ ॥३॥ (१००-१६, माझ, मः ५)
संतन मो कउ हरि मारगि पाइआ ॥ (१००-१७, माझ, मः ५)
साध कृपालि हरि संगि गिझाइआ ॥ (१००-१७, माझ, मः ५)
हरि हमरा हम हरि के दासे नानक सबदु गुरू सचु दीना जीउ ॥४॥१४॥२१॥ (१००-१८, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१००-१८)
अमृत नामु सदा निरमलीआ ॥ (१००-१९, माझ, मः ५)
सुखदाई दूख बिडारन हरीआ ॥ (१००-१९, माझ, मः ५)
अवरि साद चखि सगले देखे मन हरि रसु सभ ते मीठा जीउ ॥१॥ (१००-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०१

जो जो पीवै सो तृपतावै ॥ (१०१-१, माझ, मः ५)
अमरु होवै जो नाम रसु पावै ॥ (१०१-१, माझ, मः ५)
नाम निधान तिसहि परापति जिसु सबदु गुरू मनि वूठा जीउ ॥२॥ (१०१-१, माझ, मः ५)
जिनि हरि रसु पाइआ सो तृपति अघाना ॥ (१०१-२, माझ, मः ५)
जिनि हरि सादु पाइआ सो नाहि डुलाना ॥ (१०१-३, माझ, मः ५)
तिसहि परापति हरि हरि नामा जिसु मसतकि भागीठा जीउ ॥३॥ (१०१-३, माझ, मः ५)
हरि इकसु हथि आइआ वरसाणे बहुतेरे ॥ (१०१-४, माझ, मः ५)
तिसु लगि मुकतु भए घणेरे ॥ (१०१-४, माझ, मः ५)
नामु निधाना गुरमुखि पाईऐ कहु नानक विरली डीठा जीउ ॥४॥१५॥२२॥ (१०१-४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०१-५)
निधि सिधि रिधि हरि हरि हरि मेरै ॥ (१०१-५, माझ, मः ५)
जनमु पदारथु गहिर गम्भीरै ॥ (१०१-६, माझ, मः ५)
लाख कोट खुसीआ रंग रावै जो गुर लागा पाई जीउ ॥१॥ (१०१-६, माझ, मः ५)
दरसनु पेखत भए पुनीता ॥ (१०१-७, माझ, मः ५)
सगल उधारे भाई मीता ॥ (१०१-७, माझ, मः ५)

अगम अगोचरु सुआमी अपुना गुर किरपा ते सचु धिआई जीउ ॥२॥ (१०१-७, माझ, मः ५)
जा कउ खोजहि सर्ब उपाए ॥ (१०१-८, माझ, मः ५)
वडभागी दरसनु को विरला पाए ॥ (१०१-८, माझ, मः ५)
ऊच अपार अगोचर थाना ओहु महलु गुरू देखाई जीउ ॥३॥ (१०१-९, माझ, मः ५)
गहिर गम्भीर अमृत नामु तेरा ॥ (१०१-९, माझ, मः ५)
मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ (१०१-१०, माझ, मः ५)
गुरि बंधन तिन के सगले काटे जन नानक सहजि समाई जीउ ॥४॥१६॥२३॥ (१०१-१०, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०१-११)
प्रभ किरपा ते हरि हरि धिआवउ ॥ (१०१-११, माझ, मः ५)
प्रभू दइआ ते मंगलु गावउ ॥ (१०१-११, माझ, मः ५)
ऊठत बैठत सोवत जागत हरि धिआईऐ सगल अवरदा जीउ ॥१॥ (१०१-१२, माझ, मः ५)
नामु अउखधु मो कउ साधू दीआ ॥ (१०१-१२, माझ, मः ५)
किलबिख काटे निरमलु थीआ ॥ (१०१-१३, माझ, मः ५)
अनदु भइआ निकसी सभ पीरा सगल बिनासे दरदा जीउ ॥२॥ (१०१-१३, माझ, मः ५)
जिस का अंगु करे मेरा पिआरा ॥ (१०१-१४, माझ, मः ५)
सो मुकता सागर संसारा ॥ (१०१-१४, माझ, मः ५)
सति करे जिनि गुरू पछाता सो काहे कउ डरदा जीउ ॥३॥ (१०१-१४, माझ, मः ५)
जब ते साधू संगति पाए ॥ (१०१-१५, माझ, मः ५)
गुर भेटत हउ गई बलाए ॥ (१०१-१५, माझ, मः ५)
सासि सासि हरि गावै नानकु सतिगुर ढाकि लीआ मेरा पड़दा जीउ ॥४॥१७॥२४॥ (१०१-१५, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०१-१६)
ओति पोति सेवक संगि राता ॥ (१०१-१६, माझ, मः ५)
प्रभ प्रतिपाले सेवक सुखदाता ॥ (१०१-१७, माझ, मः ५)
पाणी पखा पीसउ सेवक कै ठाकुर ही का आहरु जीउ ॥१॥ (१०१-१७, माझ, मः ५)
काटि सिलक प्रभि सेवा लाइआ ॥ (१०१-१८, माझ, मः ५)
हुकमु साहिब का सेवक मनि भाइआ ॥ (१०१-१८, माझ, मः ५)
सोई कमावै जो साहिब भावै सेवकु अंतरि बाहरि माहरु जीउ ॥२॥ (१०१-१८, माझ, मः ५)
तूं दाना ठाकुरु सभ बिधि जानहि ॥ (१०१-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०२

ठाकुर के सेवक हरि रंग माणहि ॥ (१०२-१, माझ, मः ५)
जो किछु ठाकुर का सो सेवक का सेवकु ठाकुर ही संगि जाहरु जीउ ॥३॥ (१०२-१, माझ, मः ५)
अपुनै ठाकुरि जो पहिराइआ ॥ (१०२-२, माझ, मः ५)
बहुरि न लेखा पुछि बुलाइआ ॥ (१०२-२, माझ, मः ५)
तिसु सेवक कै नानक कुरबाणी सो गहिर गभीरा गउहरु जीउ ॥४॥१८॥२५॥ (१०२-२, माझ, मः ५)

माझ महला ५ ॥ (१०२-३)
सभ किछु घर महि बाहरि नाही ॥ (१०२-३, माझ, मः ५)
बाहरि टोलै सो भरमि भुलाही ॥ (१०२-४, माझ, मः ५)
गुर परसादी जिनी अंतरि पाइआ सो अंतरि बाहरि सुहेला जीउ ॥१॥ (१०२-४, माझ, मः ५)
झिमि झिमि वरसै अमृत धारा ॥ (१०२-५, माझ, मः ५)
मनु पीवै सुनि सबदु बीचारा ॥ (१०२-५, माझ, मः ५)
अनद बिनोद करे दिन राती सदा सदा हरि केला जीउ ॥२॥ (१०२-५, माझ, मः ५)
जनम जनम का विछुड़िआ मिलिआ ॥ (१०२-६, माझ, मः ५)
साध कृपा ते सूका हरिआ ॥ (१०२-६, माझ, मः ५)
सुमति पाए नामु धिआए गुरमुखि होए मेला जीउ ॥३॥ (१०२-७, माझ, मः ५)
जल तरंगु जिउ जलहि समाइआ ॥ (१०२-७, माझ, मः ५)
तिउ जोती संगि जोति मिलाइआ ॥ (१०२-७, माझ, मः ५)
कहु नानक भ्रम कटे किवाड़ा बहुड़ि न होईऐ जउला जीउ ॥४॥१६॥२६॥ (१०२-८, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०२-९)
तिसु कुरबाणी जिनि तूं सुणिआ ॥ (१०२-९, माझ, मः ५)
तिसु बलिहारी जिनि रसना भणिआ ॥ (१०२-९, माझ, मः ५)
वारि वारि जाई तिसु विटहु जो मनि तनि तुधु आराधे जीउ ॥१॥ (१०२-९, माझ, मः ५)
तिसु चरण पखाली जो तेरै मारगि चालै ॥ (१०२-१०, माझ, मः ५)
नैन निहाली तिसु पुरख दइआलै ॥ (१०२-१०, माझ, मः ५)
मनु देवा तिसु अपुने साजन जिनि गुर मिलि सो प्रभु लाधे जीउ ॥२॥ (१०२-११, माझ, मः ५)
से वडभागी जिनि तुम जाणे ॥ (१०२-१२, माझ, मः ५)
सभ कै मधे अलिपत निरबाणे ॥ (१०२-१२, माझ, मः ५)
साध कै संगि उनि भउजलु तरिआ सगल दूत उनि साधे जीउ ॥३॥ (१०२-१२, माझ, मः ५)
तिन की सरणि परिआ मनु मेरा ॥ (१०२-१३, माझ, मः ५)
माणु ताणु तजि मोहु अंधेरा ॥ (१०२-१३, माझ, मः ५)
नामु दानु दीजै नानक कउ तिसु प्रभ अगम अगाधे जीउ ॥४॥२०॥२७॥ (१०२-१४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०२-१४)
तूं पेडु साख तेरी फूली ॥ (१०२-१५, माझ, मः ५)
तूं सूखमु होआ असथूली ॥ (१०२-१५, माझ, मः ५)
तूं जलनिधि तूं फेनु बुदबुदा तुधु बिनु अवरु न भालीऐ जीउ ॥१॥ (१०२-१५, माझ, मः ५)
तूं सूतु मणीए भी तूंहै ॥ (१०२-१६, माझ, मः ५)
तूं गंठी मेरु सिरि तूंहै ॥ (१०२-१६, माझ, मः ५)
आदि मधि अंति प्रभु सोई अवरु न कोइ दिखालीऐ जीउ ॥२॥ (१०२-१६, माझ, मः ५)
तूं निरगुणु सरगुणु सुखदाता ॥ (१०२-१७, माझ, मः ५)
तूं निरबाणु रसीआ रंगि राता ॥ (१०२-१७, माझ, मः ५)

अपणे करतब आपे जाणहि आपे तुधु समालीऐ जीउ ॥३॥ (१०२-१८, माझ, मः ५)
तूं ठाकुरु सेवकु फुनि आपे ॥ (१०२-१८, माझ, मः ५)
तूं गुपतु परगटु प्रभ आपे ॥ (१०२-१९, माझ, मः ५)
नानक दासु सदा गुण गावै इक भोरी नदरि निहालीऐ जीउ ॥४॥२१॥२८॥ (१०२-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०३

माझ महला ५ ॥ (१०३-१)
सफल सु बाणी जितु नामु वखाणी ॥ (१०३-१, माझ, मः ५)
गुर परसादि किनै विरलै जाणी ॥ (१०३-१, माझ, मः ५)
धन्नु सु वेला जितु हरि गावत सुनणा आए ते परवाना जीउ ॥१॥ (१०३-२, माझ, मः ५)
से नेत्र परवाणु जिनी दरसनु पेखा ॥ (१०३-२, माझ, मः ५)
से कर भले जिनी हरि जसु लेखा ॥ (१०३-३, माझ, मः ५)
से चरण सुहावे जो हरि मारगि चले हउ बलि तिन संगि पछाणा जीउ ॥२॥ (१०३-३, माझ, मः ५)
सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ (१०३-४, माझ, मः ५)
साधसंगि खिन माहि उधारे ॥ (१०३-४, माझ, मः ५)
किलविख काटि होआ मनु निरमलु मिटि गए आवण जाणा जीउ ॥३॥ (१०३-४, माझ, मः ५)
दुइ कर जोड़ि इकु बिनउ करीजै ॥ (१०३-५, माझ, मः ५)
करि किरपा डुबदा पथरु लीजै ॥ (१०३-६, माझ, मः ५)
नानक कउ प्रभ भए कृपाला प्रभ नानक मनि भाणा जीउ ॥४॥२२॥२९॥ (१०३-६, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०३-७)
अमृत बाणी हरि हरि तेरी ॥ (१०३-७, माझ, मः ५)
सुणि सुणि होवै पर्म गति मेरी ॥ (१०३-७, माझ, मः ५)
जलनि बुझी सीतलु होइ मनूआ सतिगुर का दरसनु पाए जीउ ॥१॥ (१०३-७, माझ, मः ५)
सूखु भइआ दुखु दूरि पराना ॥ (१०३-८, माझ, मः ५)
संत रसन हरि नामु वखाना ॥ (१०३-८, माझ, मः ५)
जल थल नीरि भरे सर सुभर बिरथा कोइ न जाए जीउ ॥२॥ (१०३-९, माझ, मः ५)
दइआ धारी तिनि सिरजनहारे ॥ (१०३-९, माझ, मः ५)
जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ (१०३-१०, माझ, मः ५)
मिहरवान किरपाल दइआला सगले तृपति अघाए जीउ ॥३॥ (१०३-१०, माझ, मः ५)
वणु तृणु तृभवणु कीतोनु हरिआ ॥ (१०३-११, माझ, मः ५)
करणहारि खिन भीतरि करिआ ॥ (१०३-११, माझ, मः ५)
गुरमुखि नानक तिसै अराधे मन की आस पुजाए जीउ ॥४॥२३॥३०॥ (१०३-११, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०३-१२)
तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता ॥ (१०३-१२, माझ, मः ५)
तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता ॥ (१०३-१३, माझ, मः ५)

तूं मेरा राखा सभनी थाई ता भउ केहा काड़ा जीउ ॥१॥ (१०३-१३, माझ, मः ५)
तुमरी कृपा ते तुधु पछाणा ॥ (१०३-१४, माझ, मः ५)
तूं मेरी ओट तूंहै मेरा माणा ॥ (१०३-१४, माझ, मः ५)
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा खेलु अखाड़ा जीउ ॥२॥ (१०३-१४, माझ, मः ५)
जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥ (१०३-१५, माझ, मः ५)
जितु जितु भाणा तितु तितु लाए ॥ (१०३-१५, माझ, मः ५)
सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु असाड़ा जीउ ॥३॥ (१०३-१५, माझ, मः ५)
नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥ (१०३-१६, माझ, मः ५)
हरि गुण गाइ मेरा मनु सीतलाइआ ॥ (१०३-१६, माझ, मः ५)
गुरि पूरै वजी वाधाई नानक जिता बिखाड़ा जीउ ॥४॥२४॥३१॥ (१०३-१७, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०३-१८)
जीअ प्राण प्रभ मनहि अधारा ॥ (१०३-१८, माझ, मः ५)
भगत जीवहि गुण गाइ अपारा ॥ (१०३-१८, माझ, मः ५)
गुण निधान अमृतु हरि नामा हरि धिआइ धिआइ सुखु पाइआ जीउ ॥१॥ (१०३-१८, माझ, मः ५)
मनसा धारि जो घर ते आवै ॥ (१०३-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०४

साधसंगि जनमु मरणु मिटावै ॥ (१०४-१, माझ, मः ५)
आस मनोरथु पूरनु होवै भेटत गुर दरसाइआ जीउ ॥२॥ (१०४-१, माझ, मः ५)
अगम अगोचर किछु मिति नही जानी ॥ (१०४-१, माझ, मः ५)
साधिक सिध धिआवहि गिआनी ॥ (१०४-२, माझ, मः ५)
खुदी मिटी चूका भोलावा गुरि मन ही महि प्रगटाइआ जीउ ॥३॥ (१०४-२, माझ, मः ५)
अनद मंगल कलिआण निधाना ॥ (१०४-३, माझ, मः ५)
सूख सहज हरि नामु वखाना ॥ (१०४-३, माझ, मः ५)
होइ कृपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥४॥२५॥३२॥ (१०४-४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०४-४)
सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ (१०४-५, माझ, मः ५)
तूं प्रीतमु ठाकुरु अति भारी ॥ (१०४-५, माझ, मः ५)
तुमरे करतब तुम ही जाणहु तुमरी ओट गोपाला जीउ ॥१॥ (१०४-५, माझ, मः ५)
गुण गावत मनु हरिआ होवै ॥ (१०४-६, माझ, मः ५)
कथा सुणत मलु सगली खोवै ॥ (१०४-६, माझ, मः ५)
भेटत संगि साध संतन कै सदा जपउ दइआला जीउ ॥२॥ (१०४-६, माझ, मः ५)
प्रभु अपुना सासि सासि समारउ ॥ (१०४-७, माझ, मः ५)
इह मति गुर प्रसादि मनि धारउ ॥ (१०४-७, माझ, मः ५)
तुमरी कृपा ते होइ प्रगासा सरब मइआ प्रतिपाला जीउ ॥३॥ (१०४-८, माझ, मः ५)

सति सति सति प्रभु सोई ॥ (१०४-८, माझ, मः ५)
सदा सदा सद आपे होई ॥ (१०४-९, माझ, मः ५)
चलित तुमारे प्रगट पिआरे देखि नानक भए निहाला जीउ ॥४॥२६॥३३॥ (१०४-९, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०४-१०)
हुकमी वरसण लागे मेहा ॥ (१०४-१०, माझ, मः ५)
साजन संत मिलि नामु जपेहा ॥ (१०४-१०, माझ, मः ५)
सीतल साँति सहज सुखु पाइआ ठाढि पाई प्रभि आपे जीउ ॥१॥ (१०४-१०, माझ, मः ५)
सभु किछु बहुतो बहुतु उपाइआ ॥ (१०४-११, माझ, मः ५)
करि किरपा प्रभि सगल रजाइआ ॥ (१०४-११, माझ, मः ५)
दाति करहु मेरे दातारा जीअ जंत सभि ध्रापे जीउ ॥२॥ (१०४-१२, माझ, मः ५)
सचा साहिबु सची नाई ॥ (१०४-१२, माझ, मः ५)
गुर परसादि तिसु सदा धिआई ॥ (१०४-१३, माझ, मः ५)
जनम मरण भै काटे मोहा बिनसे सोग संतापे जीउ ॥३॥ (१०४-१३, माझ, मः ५)
सासि सासि नानकु सालाहे ॥ (१०४-१३, माझ, मः ५)
सिमरत नामु काटे सभि फाहे ॥ (१०४-१४, माझ, मः ५)
पूरन आस करी खिन भीतरि हरि हरि हरि गुण जापे जीउ ॥४॥२७॥३४॥ (१०४-१४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०४-१५)
आउ साजन संत मीत पिआरे ॥ (१०४-१५, माझ, मः ५)
मिलि गावह गुण अगम अपारे ॥ (१०४-१५, माझ, मः ५)
गावत सुणत सभे ही मुकते सो धिआईऐ जिनि हम कीए जीउ ॥१॥ (१०४-१६, माझ, मः ५)
जनम जनम के किलबिख जावहि ॥ (१०४-१६, माझ, मः ५)
मनि चिंदे सेई फल पावहि ॥ (१०४-१७, माझ, मः ५)
सिमरि साहिबु सो सचु सुआमी रिजकु सभसु कउ दीए जीउ ॥२॥ (१०४-१७, माझ, मः ५)
नामु जपत सर्ब सुखु पाईऐ ॥ (१०४-१८, माझ, मः ५)
सभु भउ बिनसै हरि हरि धिआईऐ ॥ (१०४-१८, माझ, मः ५)
जिनि सेविआ सो पारगिरामी कारज सगले थीए जीउ ॥३॥ (१०४-१८, माझ, मः ५)
आइ पइआ तेरी सरणाई ॥ (१०४-१९, माझ, मः ५)
जिउ भावै तिउ लैहि मिलाई ॥ (१०४-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०५

करि किरपा प्रभु भगती लावहु सचु नानक अमृतु पीए जीउ ॥४॥२८॥३५॥ (१०५-१, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०५-१)
भए कृपाल गोविंद गुसाई ॥ (१०५-२, माझ, मः ५)
मेघु वरसै सभनी थाई ॥ (१०५-२, माझ, मः ५)
दीन दइआल सदा किरपाला ठाढि पाई करतारे जीउ ॥१॥ (१०५-२, माझ, मः ५)

अपुने जीअ जंत प्रतिपारे ॥ (१०५-३, माझ, मः ५)
जिउ बारिक माता सम्मारे ॥ (१०५-३, माझ, मः ५)
दुख भंजन सुख सागर सुआमी देत सगल आहारे जीउ ॥२॥ (१०५-३, माझ, मः ५)
जलि थलि पूरि रहिआ मिहरवाना ॥ (१०५-४, माझ, मः ५)
सद बलिहारि जाईऐ कुरबाना ॥ (१०५-४, माझ, मः ५)
रैणि दिनसु तिसु सदा धिआई जि खिन महि सगल उधारे जीउ ॥३॥ (१०५-५, माझ, मः ५)
राखि लीए सगले प्रभि आपे ॥ (१०५-५, माझ, मः ५)
उतरि गए सभ सोग संतापे ॥ (१०५-६, माझ, मः ५)
नामु जपत मनु तनु हरीआवलु प्रभ नानक नदरि निहारे जीउ ॥४॥२६॥३६॥ (१०५-६, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०५-७)
जिथै नामु जपीऐ प्रभ पिआरे ॥ (१०५-७, माझ, मः ५)
से असथल सोइन चउबारे ॥ (१०५-७, माझ, मः ५)
जिथै नामु न जपीऐ मेरे गोइदा सेई नगर उजाड़ी जीउ ॥१॥ (१०५-७, माझ, मः ५)
हरि रुखी रोटी खाइ समाले ॥ (१०५-८, माझ, मः ५)
हरि अंतरि बाहरि नदरि निहाले ॥ (१०५-८, माझ, मः ५)
खाइ खाइ करे बदफैली जाणु विसू की वाड़ी जीउ ॥२॥ (१०५-९, माझ, मः ५)
संता सेती रंगु न लाए ॥ (१०५-९, माझ, मः ५)
साकत संगि विकर्म कमाए ॥ (१०५-१०, माझ, मः ५)
दुलभ देह खोई अगिआनी जड़ अपुणी आपि उपाड़ी जीउ ॥३॥ (१०५-१०, माझ, मः ५)
तेरी सरणि मेरे दीन दइआला ॥ (१०५-११, माझ, मः ५)
सुख सागर मेरे गुर गोपाला ॥ (१०५-११, माझ, मः ५)
करि किरपा नानकु गुण गावै राखहु सर्म असाड़ी जीउ ॥४॥३०॥३७॥ (१०५-११, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०५-१२)
चरण ठाकुर के रिदै समाणे ॥ (१०५-१२, माझ, मः ५)
कलि कलेस सभ दूरि पइआणे ॥ (१०५-१२, माझ, मः ५)
साँति सूख सहज धुनि उपजी साधू संगि निवासा जीउ ॥१॥ (१०५-१३, माझ, मः ५)
लागी प्रीति न तूटै मूले ॥ (१०५-१३, माझ, मः ५)
हरि अंतरि बाहरि रहिआ भरपूरे ॥ (१०५-१४, माझ, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि गुण गावा काटी जम की फासा जीउ ॥२॥ (१०५-१४, माझ, मः ५)
अमृतु वरखै अनहद बाणी ॥ (१०५-१५, माझ, मः ५)
मन तन अंतरि साँति समाणी ॥ (१०५-१५, माझ, मः ५)
तृपति अघाइ रहे जन तेरे सतिगुरि कीआ दिलासा जीउ ॥३॥ (१०५-१५, माझ, मः ५)
जिस का सा तिस ते फलु पाइआ ॥ (१०५-१६, माझ, मः ५)
करि किरपा प्रभ संगि मिलाइआ ॥ (१०५-१६, माझ, मः ५)
आवण जाण रहे वडभागी नानक पूरन आसा जीउ ॥४॥३१॥३८॥ (१०५-१७, माझ, मः ५)

माझ महला ५ ॥ (१०५-१७)
मीहु पइआ परमेसरि पाइआ ॥ (१०५-१७, माझ, मः ५)
जीअ जंत सभि सुखी वसाइआ ॥ (१०५-१८, माझ, मः ५)
गइआ कलेसु भइआ सुखु साचा हरि हरि नामु समाली जीउ ॥१॥ (१०५-१८, माझ, मः ५)
जिस के से तिन ही प्रतिपारे ॥ (१०५-१९, माझ, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ भए रखवारे ॥ (१०५-१९, माझ, मः ५)
सुणी बेनंती ठाकुरि मेरै पूरन होई घाली जीउ ॥२॥ (१०५-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०६

सर्ब जीआ कउ देवणहारा ॥ (१०६-१, माझ, मः ५)
गुर परसादी नदरि निहारा ॥ (१०६-१, माझ, मः ५)
जल थल महीअल सभि तृपताणे साधू चरन पखाली जीउ ॥३॥ (१०६-२, माझ, मः ५)
मन की इछ पुजावणहारा ॥ (१०६-२, माझ, मः ५)
सदा सदा जाई बलिहारा ॥ (१०६-३, माझ, मः ५)
नानक दानु कीआ दुख भंजनि रते रंगि रसाली जीउ ॥४॥३२॥३९॥ (१०६-३, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०६-४)
मनु तनु तेरा धनु भी तेरा ॥ (१०६-४, माझ, मः ५)
तूं ठाकुरु सुआमी प्रभु मेरा ॥ (१०६-४, माझ, मः ५)
जीउ पिंडु सभु रासि तुमारी तेरा जोरु गोपाला जीउ ॥१॥ (१०६-४, माझ, मः ५)
सदा सदा तूंहै सुखदाई ॥ (१०६-५, माझ, मः ५)
निवि निवि लागा तेरी पाई ॥ (१०६-५, माझ, मः ५)
कार कमावा जे तुधु भावा जा तूं देहि दइआला जीउ ॥२॥ (१०६-६, माझ, मः ५)
प्रभ तुम ते लहणा तूं मेरा गहणा ॥ (१०६-६, माझ, मः ५)
जो तूं देहि सोई सुखु सहणा ॥ (१०६-७, माझ, मः ५)
जिथै रखहि बैकुंठु तिथाई तूं सभना के प्रतिपाला जीउ ॥३॥ (१०६-७, माझ, मः ५)
सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ ॥ (१०६-८, माझ, मः ५)
आठ पहर तेरे गुण गाइआ ॥ (१०६-८, माझ, मः ५)
सगल मनोरथ पूरन होए कदे न होइ दुखाला जीउ ॥४॥३३॥४०॥ (१०६-८, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०६-९)
पारब्रहमि प्रभि मेघु पठाइआ ॥ (१०६-९, माझ, मः ५)
जलि थलि महीअलि दह दिसि वरसाइआ ॥ (१०६-९, माझ, मः ५)
साँति भई बुझी सभ तृसना अनदु भइआ सभ ठाई जीउ ॥१॥ (१०६-१०, माझ, मः ५)
सुखदाता दुख भंजनहारा ॥ (१०६-११, माझ, मः ५)
आपे बखसि करे जीअ सारा ॥ (१०६-११, माझ, मः ५)
अपने कीते नो आपि प्रतिपाले पइ पैरी तिसहि मनाई जीउ ॥२॥ (१०६-११, माझ, मः ५)

जा की सरणि पइआ गति पाईऐ ॥ (१०६-१२, माझ, मः ५)
सासि सासि हरि नामु धिआईऐ ॥ (१०६-१२, माझ, मः ५)
तिसु बिनु होरु न दूजा ठाकुरु सभ तिसै कीआ जाई जीउ ॥३॥ (१०६-१३, माझ, मः ५)
तेरा माणु ताणु प्रभ तेरा ॥ (१०६-१३, माझ, मः ५)
तूं सचा साहिबु गुणी गहेरा ॥ (१०६-१३, माझ, मः ५)
नानकु दासु कहै बेनंती आठ पहर तुधु धिआई जीउ ॥४॥३४॥४१॥ (१०६-१४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०६-१५)
सभे सुख भए प्रभ तुठे ॥ (१०६-१५, माझ, मः ५)
गुर पूरे के चरण मनि वुठे ॥ (१०६-१५, माझ, मः ५)
सहज समाधि लगी लिव अंतरि सो रसु सोई जाणै जीउ ॥१॥ (१०६-१५, माझ, मः ५)
अगम अगोचरु साहिबु मेरा ॥ (१०६-१६, माझ, मः ५)
घट घट अंतरि वरतै नेरा ॥ (१०६-१६, माझ, मः ५)
सदा अलिपतु जीआ का दाता को विरला आपु पछाणै जीउ ॥२॥ (१०६-१६, माझ, मः ५)
प्रभ मिलणै की एह नीसाणी ॥ (१०६-१७, माझ, मः ५)
मनि इको सचा हुकमु पछाणी ॥ (१०६-१७, माझ, मः ५)
सहजि संतोखि सदा तृपतासे अनदु खसम कै भाणै जीउ ॥३॥ (१०६-१८, माझ, मः ५)
हथी दिती प्रभि देवणहारै ॥ (१०६-१८, माझ, मः ५)
जनम मरण रोग सभि निवारे ॥ (१०६-१९, माझ, मः ५)
नानक दास कीए प्रभि अपुने हरि कीरतनि रंग माणे जीउ ॥४॥३५॥४२॥ (१०६-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०७

माझ महला ५ ॥ (१०७-१)
कीनी दइआ गोपाल गुसाई ॥ (१०७-१, माझ, मः ५)
गुर के चरण वसे मन माही ॥ (१०७-१, माझ, मः ५)
अंगीकारु कीआ तिनि करतै दुख का डेरा ढाहिआ जीउ ॥१॥ (१०७-२, माझ, मः ५)
मनि तनि वसिआ सचा सोई ॥ (१०७-२, माझ, मः ५)
बिखड़ा थानु न दिसै कोई ॥ (१०७-२, माझ, मः ५)
दूत दुसमण सभि सजण होए एको सुआमी आहिआ जीउ ॥२॥ (१०७-३, माझ, मः ५)
जो किछु करे सु आपे आपै ॥ (१०७-३, माझ, मः ५)
बुधि सिआणप किछू न जापै ॥ (१०७-४, माझ, मः ५)
आपणिआ संता नो आपि सहाई प्रभि भर्म भुलावा लाहिआ जीउ ॥३॥ (१०७-४, माझ, मः ५)
चरण कमल जन का आधारो ॥ (१०७-५, माझ, मः ५)
आठ पहर राम नामु वापारो ॥ (१०७-५, माझ, मः ५)
सहज अनंद गावहि गुण गोविंद प्रभ नानक सर्ब समाहिआ जीउ ॥४॥३६॥४३॥ (१०७-५)
माझ महला ५ ॥ (१०७-६)

सो सचु मंदरु जितु सचु धिआईऐ ॥ (१०७-६, माझ, मः ५)
सो रिदा सुहेला जितु हरि गुण गाईऐ ॥ (१०७-७, माझ, मः ५)
सा धरति सुहावी जितु वसहि हरि जन सचे नाम विटहु कुरबाणो जीउ ॥१॥ (१०७-७, माझ, मः ५)
सचु वडाई कीम न पाई ॥ (१०७-८, माझ, मः ५)
कुदरति करमु न कहणा जाई ॥ (१०७-८, माझ, मः ५)
धिआइ धिआइ जीवहि जन तेरे सचु सबदु मनि माणो जीउ ॥२॥ (१०७-८, माझ, मः ५)
सचु सालाहणु वडभागी पाईऐ ॥ (१०७-९, माझ, मः ५)
गुर परसादी हरि गुण गाईऐ ॥ (१०७-१०, माझ, मः ५)
रंगि रते तेरै तुधु भावहि सचु नामु नीसाणो जीउ ॥३॥ (१०७-१०, माझ, मः ५)
सचे अंतु न जाणै कोई ॥ (१०७-१०, माझ, मः ५)
थानि थनंतरि सचा सोई ॥ (१०७-११, माझ, मः ५)
नानक सचु धिआईऐ सद ही अंतरजामी जाणो जीउ ॥४॥३७॥४४॥ (१०७-११, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०७-१२)
रैणि सुहावड़ी दिनसु सुहेला ॥ (१०७-१२, माझ, मः ५)
जपि अमृत नामु संतसंगि मेला ॥ (१०७-१२, माझ, मः ५)
घड़ी मूरत सिमरत पल वंञहि जीवणु सफलु तिथाई जीउ ॥१॥ (१०७-१२, माझ, मः ५)
सिमरत नामु दोख सभि लाथे ॥ (१०७-१३, माझ, मः ५)
अंतरि बाहरि हरि प्रभु साथे ॥ (१०७-१३, माझ, मः ५)
भै भउ भरमु खोइआ गुरि पूरै देखा सभनी जाई जीउ ॥२॥ (१०७-१४, माझ, मः ५)
प्रभु समरथु वड ऊच अपारा ॥ (१०७-१४, माझ, मः ५)
नउ निधि नामु भरे भंडारा ॥ (१०७-१५, माझ, मः ५)
आदि अंति मधि प्रभु सोई दूजा लवै न लाई जीउ ॥३॥ (१०७-१५, माझ, मः ५)
करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ (१०७-१६, माझ, मः ५)
जाचिकु जाचै साध रवाला ॥ (१०७-१६, माझ, मः ५)
देहि दानु नानकु जनु मागै सदा सदा हरि धिआई जीउ ॥४॥३८॥४५॥ (१०७-१६, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०७-१७)
ऐथै तूंहै आगै आपे ॥ (१०७-१७, माझ, मः ५)
जीअ जंत्र सभि तेरे थापे ॥ (१०७-१७, माझ, मः ५)
तुधु बिनु अवरु न कोई करते मै धर ओट तुमारी जीउ ॥१॥ (१०७-१८, माझ, मः ५)
रसना जपि जपि जीवै सुआमी ॥ (१०७-१८, माझ, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ अंतरजामी ॥ (१०७-१८, माझ, मः ५)
जिनि सेविआ तिन ही सुखु पाइआ सो जनमु न जूऐ हारी जीउ ॥२॥ (१०७-१९, माझ, मः ५)
नामु अवखधु जिनि जन तेरै पाइआ ॥ (१०७-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०८

जनम जनम का रोगु गवाइआ ॥ (१०८-१, माझ, मः ५)
हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥३॥ (१०८-१, माझ, मः ५)
दृसटि धारि अपना दासु सवारिआ ॥ (१०८-२, माझ, मः ५)
घट घट अंतरि पारब्रह्मु नमसकारिआ ॥ (१०८-२, माझ, मः ५)
इकसु विणु होरु दूजा नाही बाबा नानक इह मति सारी जीउ ॥४॥३९॥४६॥ (१०८-३, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०८-४)
मनु तनु रता राम पिआरे ॥ (१०८-४, माझ, मः ५)
सरबसु दीजै अपना वारे ॥ (१०८-४, माझ, मः ५)
आठ पहर गोविंद गुण गाईऐ बिसरु न कोई सासा जीउ ॥१॥ (१०८-४, माझ, मः ५)
सोई साजन मीतु पिआरा ॥ (१०८-५, माझ, मः ५)
राम नामु साधसंगि बीचारा ॥ (१०८-५, माझ, मः ५)
साधू संगि तरीजै सागरु कटीऐ जम की फासा जीउ ॥२॥ (१०८-६, माझ, मः ५)
चारि पदार्थ हरि की सेवा ॥ (१०८-६, माझ, मः ५)
पारजातु जपि अलख अभेवा ॥ (१०८-६, माझ, मः ५)
कामु क्रोधु किलबिख गुरि काटे पूरन होई आसा जीउ ॥३॥ (१०८-७, माझ, मः ५)
पूरन भाग भए जिसु प्राणी ॥ (१०८-७, माझ, मः ५)
साधसंगि मिले सारंगपाणी ॥ (१०८-८, माझ, मः ५)
नानक नामु वसिआ जिसु अंतरि परवाणु गिरसत उदासा जीउ ॥४॥४०॥४७॥ (१०८-८, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०८-९)
सिमरत नामु रिदै सुखु पाइआ ॥ (१०८-९, माझ, मः ५)
करि किरपा भगतंी प्रगटाइआ ॥ (१०८-९, माझ, मः ५)
संतसंगि मिलि हरि हरि जपिआ बिनसे आलस रोगा जीउ ॥१॥ (१०८-१०, माझ, मः ५)
जा कै गृहि नव निधि हरि भाई ॥ (१०८-१०, माझ, मः ५)
तिसु मिलिआ जिसु पुरब कमाई ॥ (१०८-११, माझ, मः ५)
गिआन धिआन पूरन परमेसुर प्रभु सभना गला जोगा जीउ ॥२॥ (१०८-११, माझ, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (१०८-१२, माझ, मः ५)
आपि इकंती आपि पसारा ॥ (१०८-१२, माझ, मः ५)
लेपु नही जगजीवन दाते दरसन डिठे लहनि विजोगा जीउ ॥३॥ (१०८-१२, माझ, मः ५)
अंचलि लाइ सभ सिसटि तराई ॥ (१०८-१३, माझ, मः ५)
आपणा नाउ आपि जपाई ॥ (१०८-१३, माझ, मः ५)
गुर बोहिथु पाइआ किरपा ते नानक धुरि संजोगा जीउ ॥४॥४१॥४८॥ (१०८-१४, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१०८-१४)
सोई करणा जि आपि कराए ॥ (१०८-१५, माझ, मः ५)

जिथै रखै सा भली जाए ॥ (१०८-१५, माझ, मः ५)
सोई सिआणा सो पतिवंता हुकमु लगै जिसु मीठा जीउ ॥१॥ (१०८-१५, माझ, मः ५)
सभ परोई इकतु धागै ॥ (१०८-१६, माझ, मः ५)
जिसु लाइ लए सो चरणी लागै ॥ (१०८-१६, माझ, मः ५)
ऊंध कवलु जिसु होइ प्रगासा तिनि सर्ब निरंजनु डीठा जीउ ॥२॥ (१०८-१६, माझ, मः ५)
तेरी महिमा तूंहै जाणहि ॥ (१०८-१७, माझ, मः ५)
अपणा आपु तूं आपि पछाणहि ॥ (१०८-१७, माझ, मः ५)
हउ बलिहारी संतन तेरे जिनि कामु क्रोधु लोभु पीठा जीउ ॥३॥ (१०८-१८, माझ, मः ५)
तूं निरवैरु संत तेरे निर्मल ॥ (१०८-१८, माझ, मः ५)
जिन देखे सभ उतरहि कलमल ॥ (१०८-१९, माझ, मः ५)
नानक नामु धिआइ धिआइ जीवै बिनसिआ भ्रमु भउ धीठा जीउ ॥४॥४२॥४९॥ (१०८-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १०९

माँझ महला ५ ॥ (१०९-१)
झूठा मंगणु जे कोई मागै ॥ (१०९-१, माझ, मः ५)
तिस कउ मरते घड़ी न लागै ॥ (१०९-१, माझ, मः ५)
पारब्रह्मु जो सद ही सेवै सो गुर मिलि निहचलु कहणा ॥१॥ (१०९-२, माझ, मः ५)
प्रेम भगति जिस कै मनि लागी ॥ (१०९-२, माझ, मः ५)
गुण गावै अनदिनु निति जागी ॥ (१०९-३, माझ, मः ५)
बाह पकड़ि तिसु सुआमी मेलै जिस कै मसतकि लहणा ॥२॥ (१०९-३, माझ, मः ५)
चरन कमल भगताँ मनि वुठे ॥ (१०९-४, माझ, मः ५)
विणु परमेसर सगले मुठे ॥ (१०९-४, माझ, मः ५)
संत जनाँ की धूड़ि नित बाँछहि नामु सचे का गहणा ॥३॥ (१०९-४, माझ, मः ५)
ऊठत बैठत हरि हरि गाईऐ ॥ (१०९-५, माझ, मः ५)
जिसु सिमरत वरु निहचलु पाईऐ ॥ (१०९-५, माझ, मः ५)
नानक कउ प्रभ होइ दइआला तेरा कीता सहणा ॥४॥४३॥५०॥ (१०९-६, माझ, मः ५)
रागु माझ असटपदीआ महला १ घरु १ (१०९-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०९-७)
सबदि रंगाए हुकमि सबाए ॥ (१०९-८, माझ, मः १)
सची दरगह महलि बुलाए ॥ (१०९-८, माझ, मः १)
सचे दीन दइआल मेरे साहिबा सचे मनु पतीआवणिआ ॥१॥ (१०९-८, माझ, मः १)
हउ वारी जीउ वारी सबदि सुहावणिआ ॥ (१०९-९, माझ, मः १)
अमृत नामु सदा सुखदाता गुरमती मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१०९-१०, माझ, मः १)
ना को मेरा हउ किसु केरा ॥ (१०९-१०, माझ, मः १)
साचा ठाकुरु तृभवणि मेरा ॥ (१०९-११, माझ, मः १)

हउमै करि करि जाइ घणेरी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ (१०६-११, माझ, मः १)
हुकमु पछाणै सु हरि गुण वखाणै ॥ (१०६-१२, माझ, मः १)
गुर कै सबदि नामि नीसाणै ॥ (१०६-१२, माझ, मः १)
सभना का दरि लेखा सचै छूटसि नामि सुहावणिआ ॥३॥ (१०६-१२, माझ, मः १)
मनमुखु भूला ठउरु न पाए ॥ (१०६-१३, माझ, मः १)
जम दरि बधा चोटा खाए ॥ (१०६-१३, माझ, मः १)
बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ ॥४॥ (१०६-१३, माझ, मः १)
साकत कूड़े सचु न भावै ॥ (१०६-१४, माझ, मः १)
दुबिधा बाधा आवै जावै ॥ (१०६-१४, माझ, मः १)
लिखिआ लेखु न मेटै कोई गुरमुखि मुकति करावणिआ ॥५॥ (१०६-१५, माझ, मः १)
पेईअड़ै पिरु जातो नाही ॥ (१०६-१५, माझ, मः १)
झूठि विछुन्नी रोवै धाही ॥ (१०६-१६, माझ, मः १)
अवगणि मुठी महलु न पाए अवगण गुणि बखसावणिआ ॥६॥ (१०६-१६, माझ, मः १)
पेईअड़ै जिनि जाता पिआरा ॥ (१०६-१७, माझ, मः १)
गुरमुखि बूझै ततु बीचारा ॥ (१०६-१७, माझ, मः १)
आवणु जाणा ठाकि रहाए सचै नामि समावणिआ ॥७॥ (१०६-१७, माझ, मः १)
गुरमुखि बूझै अकथु कहावै ॥ (१०६-१८, माझ, मः १)
सचे ठाकुर साचो भावै ॥ (१०६-१८, माझ, मः १)
नानक सचु कहै बेनंती सचु मिलै गुण गावणिआ ॥८॥१॥ (१०६-१६, माझ, मः १)
माझ महला ३ घरु १ ॥ (१०६-१६)
करमु होवै सतिगुरू मिलाए ॥ (१०६-१६, माझ, मः ३)

पन्ना ११०

सेवा सुरति सबदि चितु लाए ॥ (११०-१, माझ, मः ३)
हउमै मारि सदा सुखु पाइआ माइआ मोहु चुकावणिआ ॥१॥ (११०-१, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी सतिगुर कै बलिहारणिआ ॥ (११०-२, माझ, मः ३)
गुरमती परगासु होआ जी अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११०-२, माझ, मः ३)
तनु मनु खोजे ता नाउ पाए ॥ (११०-३, माझ, मः ३)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (११०-३, माझ, मः ३)
गुर की बाणी अनदिनु गावै सहजे भगति करावणिआ ॥२॥ (११०-४, माझ, मः ३)
इसु काइआ अंदरि वसतु असंखा ॥ (११०-४, माझ, मः ३)
गुरमुखि साचु मिलै ता वेखा ॥ (११०-५, माझ, मः ३)
नउ दरवाजे दसवै मुकता अनहद सबदु वजावणिआ ॥३॥ (११०-५, माझ, मः ३)
सचा साहिबु सची नाई ॥ (११०-५, माझ, मः ३)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (११०-६, माझ, मः ३)

अनदिनु सदा रहै रंगि राता दरि सचै सोझी पावणिआ ॥४॥ (११०-६, माझ, मः ३)
पाप पुन्न की सार न जाणी ॥ (११०-७, माझ, मः ३)
दूजै लागी भरमि भुलाणी ॥ (११०-७, माझ, मः ३)
अगिआनी अंधा मगु न जाणै फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥५॥ (११०-७, माझ, मः ३)
गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ ॥ (११०-८, माझ, मः ३)
हउमै मेरा ठाकि रहाइआ ॥ (११०-८, माझ, मः ३)
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआ ॥६॥ (११०-९, माझ, मः ३)
हउमै मारि मंनि वसाइआ ॥ (११०-९, माझ, मः ३)
गुर चरणी सदा चितु लाइआ ॥ (११०-१०, माझ, मः ३)
गुर किरपा ते मनु तनु निरमलु निर्मल नामु धिआवणिआ ॥७॥ (११०-१०, माझ, मः ३)
जीवणु मरणा सभु तुधै ताई ॥ (११०-११, माझ, मः ३)
जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ (११०-११, माझ, मः ३)
नानक नामु धिआइ सदा तूं जम्मणु मरणु सवारणिआ ॥८॥१॥२॥ (११०-११, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११०-१२)
मेरा प्रभु निरमलु अगम अपारा ॥ (११०-१२, माझ, मः ३)
बिनु तकड़ी तोलै संसारा ॥ (११०-१३, माझ, मः ३)
गुरमुखि होवै सोई बूझै गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ (११०-१३, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी हरि का नामु मंनि वसावणिआ ॥ (११०-१३, माझ, मः ३)
जो सचि लागे से अनदिनु जागे दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११०-१४, माझ, मः ३)
आपि सुणै तै आपे वेखै ॥ (११०-१५, माझ, मः ३)
जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ (११०-१५, माझ, मः ३)
आपे लाइ लए सो लागै गुरमुखि सचु कमावणिआ ॥२॥ (११०-१५, माझ, मः ३)
जिसु आपि भुलाए सु किथै हथु पाए ॥ (११०-१६, माझ, मः ३)
पूरबि लिखिआ सु मेटणा न जाए ॥ (११०-१६, माझ, मः ३)
जिन सतिगुरु मिलिआ से वडभागी पूरै करमि मिलावणिआ ॥३॥ (११०-१७, माझ, मः ३)
पेईअड़ै धन अनदिनु सुती ॥ (११०-१७, माझ, मः ३)
कंति विसारी अवगणि मुती ॥ (११०-१८, माझ, मः ३)
अनदिनु सदा फिरै बिललादी बिनु पिर नीद न पावणिआ ॥४॥ (११०-१८, माझ, मः ३)
पेईअड़ै सुखदाता जाता ॥ (११०-१९, माझ, मः ३)
हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ (११०-१९, माझ, मः ३)
सेज सुहावी सदा पिरु रावे सचु सीगारु बणावणिआ ॥५॥ (११०-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १११

लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ (१११-१, माझ, मः ३)
जिस नो नदरि करे तिसु गुरू मिलाए ॥ (१११-१, माझ, मः ३)

किलबिख काटि सदा जन निर्मल दरि सचै नामि सुहावणिआ ॥६॥ (१११-२, माझ, मः ३)
लेखा मागै ता किनि दीऐ ॥ (१११-२, माझ, मः ३)
सुखु नाही फुनि दूऐ तीऐ ॥ (१११-३, माझ, मः ३)
आपे बखसि लए प्रभु साचा आपे बखसि मिलावणिआ ॥७॥ (१११-३, माझ, मः ३)
आपि करे तै आपि कराए ॥ (१११-३, माझ, मः ३)
पूरे गुर कै सबदि मिलाए ॥ (१११-४, माझ, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई आपे मेलि मिलावणिआ ॥८॥२॥३॥ (१११-४, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१११-५)
इको आपि फिरै परछन्ना ॥ (१११-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि वेखा ता इहु मनु भिन्ना ॥ (१११-५, माझ, मः ३)
तृसना तजि सहज सुखु पाइआ एको मंनि वसावणिआ ॥१॥ (१११-५, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी इकसु सिउ चितु लावणिआ ॥ (१११-६, माझ, मः ३)
गुरमती मनु इकतु घरि आइआ सचै रंगि रंगावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१११-७, माझ, मः ३)
इहु जगु भूला तैं आपि भुलाइआ ॥ (१११-७, माझ, मः ३)
इकु विसारि दूजै लोभाइआ ॥ (१११-८, माझ, मः ३)
अनदिनु सदा फिरै भ्रमि भूला बिनु नावै दुखु पावणिआ ॥२॥ (१११-८, माझ, मः ३)
जो रंगि राते करम बिधाते ॥ (१११-९, माझ, मः ३)
गुर सेवा ते जुग चारे जाते ॥ (१११-९, माझ, मः ३)
जिस नो आपि देइ वडिआई हरि कै नामि समावणिआ ॥३॥ (१११-९, माझ, मः ३)
माइआ मोहि हरि चेतै नाही ॥ (१११-१०, माझ, मः ३)
जमपुरि बधा दुख सहाही ॥ (१११-१०, माझ, मः ३)
अन्ना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥४॥ (१११-१०, माझ, मः ३)
इकि रंगि राते जो तुधु आपि लिव लाए ॥ (१११-११, माझ, मः ३)
भाइ भगति तेरै मनि भाए ॥ (१११-११, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवनि सदा सुखदाता सभ इछा आपि पुजावणिआ ॥५॥ (१११-१२, माझ, मः ३)
हरि जीउ तेरी सदा सरणाई ॥ (१११-१२, माझ, मः ३)
आपे बखसिहि दे वडिआई ॥ (१११-१३, माझ, मः ३)
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै जो हरि हरि नामु धिआवणिआ ॥६॥ (१११-१३, माझ, मः ३)
अनदिनु राते जो हरि भाए ॥ (१११-१४, माझ, मः ३)
मेरै प्रभि मेले मेलि मिलाए ॥ (१११-१४, माझ, मः ३)
सदा सदा सचे तेरी सरणाई तूं आपे सचु बुझावणिआ ॥७॥ (१११-१४, माझ, मः ३)
जिन सचु जाता से सचि समाणे ॥ (१११-१५, माझ, मः ३)
हरि गुण गावहि सचु वखाणे ॥ (१११-१५, माझ, मः ३)
नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लावणिआ ॥८॥३॥४॥ (१११-१६, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१११-१६)

सबदि मरै सु मुआ जापै ॥ (१११-१६, माझ, मः ३)
कालु न चापै दुखु न संतापै ॥ (१११-१७, माझ, मः ३)
जोती विचि मिलि जोति समाणी सुणि मन सचि समावणिआ ॥१॥ (१११-१७, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी हरि कै नाइ सोभा पावणिआ ॥ (१११-१८, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवि सचि चितु लाइआ गुरमती सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१११-१८, माझ, मः ३)
काइआ कची कचा चीरु हंढाए ॥ (१११-१९, माझ, मः ३)
दूजै लागी महलु न पाए ॥ (१११-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११२

अनदिनु जलदी फिरै दिनु राती बिनु पिर बहु दुखु पावणिआ ॥२॥ (११२-१, माझ, मः ३)
देही जाति न आगै जाए ॥ (११२-१, माझ, मः ३)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै छुटै सचु कमाए ॥ (११२-२, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवनि से धनवंते ऐथै ओथै नामि समावणिआ ॥३॥ (११२-२, माझ, मः ३)
भै भाइ सीगारु बणाए ॥ (११२-३, माझ, मः ३)
गुर परसादी महलु घरु पाए ॥ (११२-३, माझ, मः ३)
अनदिनु सदा रवै दिनु राती मजीठै रंगु बणावणिआ ॥४॥ (११२-३, माझ, मः ३)
सभना पिरु वसै सदा नाले ॥ (११२-४, माझ, मः ३)
गुर परसादी को नदरि निहाले ॥ (११२-४, माझ, मः ३)
मेरा प्रभु अति ऊचो ऊचा करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥५॥ (११२-४, माझ, मः ३)
माइआ मोहि इहु जगु सुता ॥ (११२-५, माझ, मः ३)
नामु विसारि अंति विगुता ॥ (११२-५, माझ, मः ३)
जिस ते सुता सो जागाए गुरमति सोझी पावणिआ ॥६॥ (११२-६, माझ, मः ३)
अपिउ पीऐ सो भरमु गवाए ॥ (११२-६, माझ, मः ३)
गुर परसादि मुकति गति पाए ॥ (११२-६, माझ, मः ३)
भगती रता सदा बैरागी आपु मारि मिलावणिआ ॥७॥ (११२-७, माझ, मः ३)
आपि उपाए धंधै लाए ॥ (११२-७, माझ, मः ३)
लख चउरासी रिजकु आपि अपड़ाए ॥ (११२-८, माझ, मः ३)
नानक नामु धिआइ सचि राते जो तिसु भावै सु कार करावणिआ ॥८॥४॥५॥ (११२-८, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११२-९)
अंदरि हीरा लालु बणाइआ ॥ (११२-९, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि परखि परखाइआ ॥ (११२-९, माझ, मः ३)
जिन सचु पलै सचु वखाणहि सचु कसवटी लावणिआ ॥१॥ (११२-१०, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी गुर की बाणी मंनि वसावणिआ ॥ (११२-१०, माझ, मः ३)
अंजन माहि निरंजनु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२-११, माझ, मः ३)
इसु काइआ अंदरि बहुतु पसारा ॥ (११२-१२, माझ, मः ३)

नामु निरंजनु अति अगम अपारा ॥ (११२-१२, माझ, मः ३)
गुरमुखि होवै सोई पाए आपे बखसि मिलावणिआ ॥२॥ (११२-१२, माझ, मः ३)
मेरा ठाकुरु सचु दृड़ाए ॥ (११२-१३, माझ, मः ३)
गुर परसादी सचि चितु लाए ॥ (११२-१३, माझ, मः ३)
सचो सचु वरतै सभनी थाई सचे सचि समावणिआ ॥३॥ (११२-१३, माझ, मः ३)
वेपरवाहु सचु मेरा पिआरा ॥ (११२-१४, माझ, मः ३)
किलविख अवगण काटणहारा ॥ (११२-१४, माझ, मः ३)
प्रेम प्रीति सदा धिआईऐ भै भाइ भगति दृड़ावणिआ ॥४॥ (११२-१५, माझ, मः ३)
तेरी भगति सची जे सचे भावै ॥ (११२-१५, माझ, मः ३)
आपे देइ न पछोतावै ॥ (११२-१६, माझ, मः ३)
सभना जीआ का एको दाता सबदे मारि जीवावणिआ ॥५॥ (११२-१६, माझ, मः ३)
हरि तुधु बाझहु मै कोई नाही ॥ (११२-१६, माझ, मः ३)
हरि तुधै सेवी तै तुधु सालाही ॥ (११२-१७, माझ, मः ३)
आपे मेलि लैहु प्रभ साचे पूरै करमि तूं पावणिआ ॥६॥ (११२-१७, माझ, मः ३)
मै होरु न कोई तुधै जेहा ॥ (११२-१८, माझ, मः ३)
तेरी नदरी सीझसि देहा ॥ (११२-१८, माझ, मः ३)
अनदिनु सारि समालि हरि राखहि गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥७॥ (११२-१८, माझ, मः ३)
तुधु जेवडु मै होरु न कोई ॥ (११२-१९, माझ, मः ३)
तुधु आपे सिरजी आपे गोई ॥ (११२-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११३

तूं आपे ही घड़ि भंनि सवारहि नानक नामि सुहावणिआ ॥८॥५॥६॥ (११३-१, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११३-१)
सभ घट आपे भोगणहारा ॥ (११३-१, माझ, मः ३)
अलखु वरतै अगम अपारा ॥ (११३-२, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि मेरा हरि प्रभु धिआईऐ सहजे सचि समावणिआ ॥१॥ (११३-२, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी गुर सबदु मंनि वसावणिआ ॥ (११३-३, माझ, मः ३)
सबदु सूझै ता मन सिउ लूझै मनसा मारि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११३-३, माझ, मः ३)
पंच दूत मुहहि संसारा ॥ (११३-४, माझ, मः ३)
मनमुख अंधे सुधि न सारा ॥ (११३-४, माझ, मः ३)
गुरमुखि होवै सु अपणा घरु राखै पंच दूत सबदि पचावणिआ ॥२॥ (११३-५, माझ, मः ३)
इकि गुरमुखि सदा सचै रंगि राते ॥ (११३-५, माझ, मः ३)
सहजे प्रभु सेवहि अनदिनु माते ॥ (११३-६, माझ, मः ३)
मिलि प्रीतम सचे गुण गावहि हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥ (११३-६, माझ, मः ३)
एकम एकै आपु उपाइआ ॥ (११३-७, माझ, मः ३)

दुबिधा दूजा तृबिधि माइआ ॥ (११३-७, माझ, मः ३)
चउथी पउड़ी गुरमुखि ऊची सचो सचु कमावणिआ ॥४॥ (११३-७, माझ, मः ३)
सभु है सचा जे सचे भावै ॥ (११३-८, माझ, मः ३)
जिनि सचु जाता सो सहजि समावै ॥ (११३-८, माझ, मः ३)
गुरमुखि करणी सचे सेवहि साचे जाइ समावणिआ ॥५॥ (११३-८, माझ, मः ३)
सचे बाझहु को अवरु न दूआ ॥ (११३-९, माझ, मः ३)
दूजै लागि जगु खपि खपि मूआ ॥ (११३-९, माझ, मः ३)
गुरमुखि होवै सु एको जाणै एको सेवि सुखु पावणिआ ॥६॥ (११३-१०, माझ, मः ३)
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी ॥ (११३-१०, माझ, मः ३)
आपे धरि देखहि कची पकी सारी ॥ (११३-१०, माझ, मः ३)
अनदिनु आपे कार कराए आपे मेलि मिलावणिआ ॥७॥ (११३-११, माझ, मः ३)
तूं आपे मेलहि वेखहि हदूरि ॥ (११३-११, माझ, मः ३)
सभ महि आपि रहिआ भरपूरि ॥ (११३-१२, माझ, मः ३)
नानक आपे आपि वरतै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥८॥९॥७॥ (११३-१२, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११३-१३)
अमृत बाणी गुर की मीठी ॥ (११३-१३, माझ, मः ३)
गुरमुखि विरलै किनै चखि डीठी ॥ (११३-१३, माझ, मः ३)
अंतरि परगासु महा रसु पीवै दरि सचै सबदु वजावणिआ ॥१॥ (११३-१३, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी गुर चरणी चितु लावणिआ ॥ (११३-१४, माझ, मः ३)
सतिगुरु है अमृत सरु साचा मनु नावै मैलु चुकावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११३-१५, माझ, मः ३)
तेरा सचे किनै अंतु न पाइआ ॥ (११३-१५, माझ, मः ३)
गुर परसादि किनै विरलै चितु लाइआ ॥ (११३-१६, माझ, मः ३)
तुधु सालाहि न रजा कबहूं सचे नावै की भुख लावणिआ ॥२॥ (११३-१६, माझ, मः ३)
एको वेखा अवरु न बीआ ॥ (११३-१७, माझ, मः ३)
गुर परसादी अमृतु पीआ ॥ (११३-१७, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि तिखा निवारी सहजे सूखि समावणिआ ॥३॥ (११३-१७, माझ, मः ३)
रतनु पदारथु पलरि तिआगै ॥ (११३-१८, माझ, मः ३)
मनमुखु अंधा दूजै भाइ लागै ॥ (११३-१८, माझ, मः ३)
जो बीजै सोई फलु पाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥ (११३-१९, माझ, मः ३)
अपनी किरपा करे सोई जनु पाए ॥ (११३-१९, माझ, मः ३)
गुर का सबदु मंनि वसाए ॥ (११३-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११४

अनदिनु सदा रहै भै अंदरि भै मारि भरमु चुकावणिआ ॥५॥ (११४-१, माझ, मः ३)
भरमु चुकाइआ सदा सुखु पाइआ ॥ (११४-१, माझ, मः ३)

गुर परसादि पर्म पदु पाइआ ॥ (११४-२, माझ, मः ३)
अंतरु निरमलु निर्मल बाणी हरि गुण सहजे गावणिआ ॥६॥ (११४-२, माझ, मः ३)
सिमृति सासत बेद वखाणै ॥ (११४-३, माझ, मः ३)
भरमे भूला ततु न जाणै ॥ (११४-३, माझ, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे सुखु न पाए दुखो दुखु कमावणिआ ॥७॥ (११४-३, माझ, मः ३)
आपि करे किसु आखै कोई ॥ (११४-४, माझ, मः ३)
आखणि जाईऐ जे भूला होई ॥ (११४-४, माझ, मः ३)
नानक आपे करे कराए नामे नामि समावणिआ ॥८॥७॥८॥ (११४-४, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११४-५)
आपे रंगे सहजि सुभाए ॥ (११४-५, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि हरि रंगु चड़ाए ॥ (११४-५, माझ, मः ३)
मनु तनु रता रसना रंगि चलूली भै भाइ रंगु चड़ावणिआ ॥१॥ (११४-६, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी निरभउ मंनि वसावणिआ ॥ (११४-६, माझ, मः ३)
गुर किरपा ते हरि निरभउ धिआइआ बिखु भउजलु सबदि तरावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४-७, माझ, मः ३)
मनमुख मुगध करहि चतुराई ॥ (११४-८, माझ, मः ३)
नाता धोता थाइ न पाई ॥ (११४-८, माझ, मः ३)
जेहा आइआ तेहा जासी करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ (११४-८, माझ, मः ३)
मनमुख अंधे किछू न सूझै ॥ (११४-९, माझ, मः ३)
मरणु लिखाइ आए नही बूझै ॥ (११४-९, माझ, मः ३)
मनमुख कर्म करे नही पाए बिनु नावै जनमु गवावणिआ ॥३॥ (११४-१०, माझ, मः ३)
सचु करणी सबदु है सारु ॥ (११४-१०, माझ, मः ३)
पूरै गुरि पाईऐ मोख दुआरु ॥ (११४-११, माझ, मः ३)
अनदिनु बाणी सबदि सुणाए सचि राते रंगि रंगावणिआ ॥४॥ (११४-११, माझ, मः ३)
रसना हरि रसि राती रंगु लाए ॥ (११४-१२, माझ, मः ३)
मनु तनु मोहिआ सहजि सुभाए ॥ (११४-१२, माझ, मः ३)
सहजे प्रीतमु पिआरा पाइआ सहजे सहजि मिलावणिआ ॥५॥ (११४-१२, माझ, मः ३)
जिसु अंदरि रंगु सोई गुण गावै ॥ (११४-१३, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि सहजे सुखि समावै ॥ (११४-१३, माझ, मः ३)
हउ बलिहारी सदा तिन विटहु गुर सेवा चितु लावणिआ ॥६॥ (११४-१४, माझ, मः ३)
सचा सचो सचि पतीजै ॥ (११४-१४, माझ, मः ३)
गुर परसादी अंदरु भीजै ॥ (११४-१४, माझ, मः ३)
बैसि सुथानि हरि गुण गावहि आपे करि सति मनावणिआ ॥७॥ (११४-१५, माझ, मः ३)
जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ (११४-१५, माझ, मः ३)
गुर परसादी हउमै जाए ॥ (११४-१६, माझ, मः ३)
नानक नामु वसै मन अंतरि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥८॥८॥९॥ (११४-१६, माझ, मः ३)

माझ महला ३ ॥ (११४-१७)
सतिगुरु सेविऐ वडी वडिआई ॥ (११४-१७, माझ, मः ३)
हरि जी अचिंतु वसै मनि आई ॥ (११४-१७, माझ, मः ३)
हरि जीउ सफलिओ बिरखु है अमृतु जिनि पीता तिसु तिखा लहावणिआ ॥१॥ (११४-१७, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी सचु संगति मेलि मिलावणिआ ॥ (११४-१८, माझ, मः ३)
हरि सतसंगति आपे मेलै गुर सबदी हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११५

सतिगुरु सेवी सबदि सुहाइआ ॥ (११५-१, माझ, मः ३)
जिनि हरि का नामु मंनि वसाइआ ॥ (११५-१, माझ, मः ३)
हरि निरमलु हउमै मैलु गवाए दरि सचै सोभा पावणिआ ॥२॥ (११५-१, माझ, मः ३)
बिनु गुर नामु न पाइआ जाइ ॥ (११५-२, माझ, मः ३)
सिध साधिक रहे बिललाइ ॥ (११५-२, माझ, मः ३)
बिनु गुर सेवे सुखु न होवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥३॥ (११५-२, माझ, मः ३)
इहु मनु आरसी कोई गुरमुखि वेखै ॥ (११५-३, माझ, मः ३)
मोरचा न लागै जा हउमै सोखै ॥ (११५-३, माझ, मः ३)
अनहत बाणी निर्मल सबदु वजाए गुर सबदी सचि समावणिआ ॥४॥ (११५-४, माझ, मः ३)
बिनु सतिगुर किहु न देखिआ जाइ ॥ (११५-४, माझ, मः ३)
गुरि किरपा करि आपु दिता दिखाइ ॥ (११५-५, माझ, मः ३)
आपे आपि आपि मिलि रहिआ सहजे सहजि समावणिआ ॥५॥ (११५-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि होवै सु इकसु सिउ लिव लाए ॥ (११५-६, माझ, मः ३)
दूजा भरमु गुर सबदि जलाए ॥ (११५-६, माझ, मः ३)
काइआ अंदरि वणजु करे वापारा नामु निधानु सचु पावणिआ ॥६॥ (११५-७, माझ, मः ३)
गुरमुखि करणी हरि कीरति सारु ॥ (११५-७, माझ, मः ३)
गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ (११५-८, माझ, मः ३)
अनदिनु रंगि रता गुण गावै अंदरि महलि बुलावणिआ ॥७॥ (११५-८, माझ, मः ३)
सतिगुरु दाता मिलै मिलाइआ ॥ (११५-९, माझ, मः ३)
पूरै भागि मनि सबदु वसाइआ ॥ (११५-९, माझ, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई हरि सचे के गुण गावणिआ ॥८॥९॥१०॥ (११५-९, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११५-१०)
आपु वंञाए ता सभ किछु पाए ॥ (११५-१०, माझ, मः ३)
गुर सबदी सची लिव लाए ॥ (११५-११, माझ, मः ३)
सचु वणंजहि सचु संघरहि सचु वापारु करावणिआ ॥१॥ (११५-११, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी हरि गुण अनदिनु गावणिआ ॥ (११५-११, माझ, मः ३)
हउ तेरा तूं ठाकुरु मेरा सबदि वडिआई देवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११५-१२, माझ, मः ३)

वेला वखत सभि सुहाइआ ॥ (११५-१३, माझ, मः ३)
जितु सचा मेरे मनि भाइआ ॥ (११५-१३, माझ, मः ३)
सचे सेविऐ सचु वडिआई गुर किरपा ते सचु पावणिआ ॥२॥ (११५-१३, माझ, मः ३)
भाउ भोजनु सतिगुरि तुठै पाए ॥ (११५-१४, माझ, मः ३)
अन रसु चूकै हरि रसु मंनि वसाए ॥ (११५-१४, माझ, मः ३)
सचु संतोखु सहज सुखु बाणी पूरे गुर ते पावणिआ ॥३॥ (११५-१५, माझ, मः ३)
सतिगुरु न सेवहि मूरख अंध गवारा ॥ (११५-१५, माझ, मः ३)
फिरि ओइ किथहु पाइनि मोख दुआरा ॥ (११५-१६, माझ, मः ३)
मरि मरि जम्महि फिरि फिरि आवहि जम दरि चोटा खावणिआ ॥४॥ (११५-१६, माझ, मः ३)
सबदै सादु जाणहि ता आपु पछाणहि ॥ (११५-१७, माझ, मः ३)
निर्मल बाणी सबदि वखाणहि ॥ (११५-१७, माझ, मः ३)
सचे सेवि सदा सुखु पाइनि नउ निधि नामु मंनि वसावणिआ ॥५॥ (११५-१७, माझ, मः ३)
सो थानु सुहाइआ जो हरि मनि भाइआ ॥ (११५-१८, माझ, मः ३)
सतसंगति बहि हरि गुण गाइआ ॥ (११५-१९, माझ, मः ३)
अनदिनु हरि सालाहहि साचा निर्मल नादु वजावणिआ ॥६॥ (११५-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११६

मनमुख खोटी रासि खोटा पासारा ॥ (११६-१, माझ, मः ३)
कूड़ु कमावनि दुखु लागै भारा ॥ (११६-१, माझ, मः ३)
भरमे भूले फिरनि दिन राती मरि जनमहि जनमु गवावणिआ ॥७॥ (११६-१, माझ, मः ३)
सचा साहिबु मै अति पिआरा ॥ (११६-२, माझ, मः ३)
पूरे गुर कै सबदि अधारा ॥ (११६-२, माझ, मः ३)
नानक नामि मिलै वडिआई दुखु सुखु सम करि जानणिआ ॥८॥१०॥११॥ (११६-३, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११६-३)
तेरीआ खाणी तेरीआ बाणी ॥ (११६-४, माझ, मः ३)
बिनु नावै सभ भरमि भुलाणी ॥ (११६-४, माझ, मः ३)
गुर सेवा ते हरि नामु पाइआ बिनु सतिगुर कोइ न पावणिआ ॥१॥ (११६-४, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी हरि सेती चितु लावणिआ ॥ (११६-५, माझ, मः ३)
हरि सचा गुर भगती पाईऐ सहजे मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६-५, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवे ता सभ किछु पाए ॥ (११६-६, माझ, मः ३)
जेही मनसा करि लागै तेहा फलु पाए ॥ (११६-६, माझ, मः ३)
सतिगुरु दाता सभना वथू का पूरै भागि मिलावणिआ ॥२॥ (११६-७, माझ, मः ३)
इहु मनु मैला इकु न धिआए ॥ (११६-७, माझ, मः ३)
अंतरि मैलु लागी बहु दूजै भाए ॥ (११६-८, माझ, मः ३)
तटि तीरथि दिसंतरि भवै अहंकारी होरु वधेरै हउमै मलु लावणिआ ॥३॥ (११६-८, माझ, मः ३)

सतिगुरु सेवे ता मलु जाए ॥ (११६-९, माझ, मः ३)
जीवतु मरै हरि सिउ चितु लाए ॥ (११६-९, माझ, मः ३)
हरि निरमलु सचु मैलु न लागै सचि लागै मैलु गवावणिआ ॥४॥ (११६-९, माझ, मः ३)
बाझु गुरू है अंध गुबारा ॥ (११६-१०, माझ, मः ३)
अगिआनी अंधा अंधु अंधारा ॥ (११६-१०, माझ, मः ३)
बिसटा के कीड़े बिसटा कमावहि फिरि बिसटा माहि पचावणिआ ॥५॥ (११६-११, माझ, मः ३)
मुकते सेवे मुकता होवै ॥ (११६-११, माझ, मः ३)
हउमै ममता सबदे खोवै ॥ (११६-१२, माझ, मः ३)
अनदिनु हरि जीउ सचा सेवी पूरै भागि गुरु पावणिआ ॥६॥ (११६-१२, माझ, मः ३)
आपे बखसे मेलि मिलाए ॥ (११६-१३, माझ, मः ३)
पूरे गुर ते नामु निधि पाए ॥ (११६-१३, माझ, मः ३)
सचै नामि सदा मनु सचा सचु सेवे दुखु गवावणिआ ॥७॥ (११६-१३, माझ, मः ३)
सदा हजूरि दूरि न जाणहु ॥ (११६-१४, माझ, मः ३)
गुर सबदी हरि अंतरि पछाणहु ॥ (११६-१४, माझ, मः ३)
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥११॥१२॥ (११६-१४, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११६-१५)
ऐथै साचे सु आगै साचे ॥ (११६-१५, माझ, मः ३)
मनु सचा सचै सबदि राचे ॥ (११६-१६, माझ, मः ३)
सचा सेवहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥१॥ (११६-१६, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी सचा नामु मंनि वसावणिआ ॥ (११६-१६, माझ, मः ३)
सचे सेवहि सचि समावहि सचे के गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६-१७, माझ, मः ३)
पंडित पड़हि सादु न पावहि ॥ (११६-१८, माझ, मः ३)
दूजै भाइ माइआ मनु भरमावहि ॥ (११६-१८, माझ, मः ३)
माइआ मोहि सभ सुधि गवाई करि अवगण पछोतावणिआ ॥२॥ (११६-१८, माझ, मः ३)
सतिगुरु मिलै ता ततु पाए ॥ (११६-१९, माझ, मः ३)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (११६-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११७

सबदि मरै मनु मारै अपुना मुकती का दरु पावणिआ ॥३॥ (११७-१, माझ, मः ३)
किलविख काटै क्रोधु निवारे ॥ (११७-१, माझ, मः ३)
गुर का सबदु रखै उर धारे ॥ (११७-१, माझ, मः ३)
सचि रते सदा बैरागी हउमै मारि मिलावणिआ ॥४॥ (११७-२, माझ, मः ३)
अंतरि रतनु मिलै मिलाइआ ॥ (११७-२, माझ, मः ३)
तृबिधि मनसा तृबिधि माइआ ॥ (११७-३, माझ, मः ३)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके चउथे पद की सार न पावणिआ ॥५॥ (११७-३, माझ, मः ३)

आपे रंगे रंगु चड़ाए ॥ (११७-४, माझ, मः ३)
से जन राते गुर सबदि रंगाए ॥ (११७-४, माझ, मः ३)
हरि रंगु चड़िआ अति अपारा हरि रसि रसि गुण गावणिआ ॥६॥ (११७-४, माझ, मः ३)
गुरमुखि रिधि सिधि सचु संजमु सोई ॥ (११७-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि गिआनु नामि मुकति होई ॥ (११७-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि कार सचु कमावहि सचे सचि समावणिआ ॥७॥ (११७-६, माझ, मः ३)
गुरमुखि थापे थापि उथापे ॥ (११७-६, माझ, मः ३)
गुरमुखि जाति पति सभु आपे ॥ (११७-७, माझ, मः ३)
नानक गुरमुखि नामु धिआए नामे नामि समावणिआ ॥८॥१२॥१३॥ (११७-७, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११७-८)
उतपति परलउ सबदे होवै ॥ (११७-८, माझ, मः ३)
सबदे ही फिरि ओपति होवै ॥ (११७-८, माझ, मः ३)
गुरमुखि वरतै सभु आपे सचा गुरमुखि उपाइ समावणिआ ॥१॥ (११७-८, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी गुरु पूरा मंनि वसावणिआ ॥ (११७-९, माझ, मः ३)
गुर ते साति भगति करे दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७-९, माझ, मः ३)
गुरमुखि धरती गुरमुखि पाणी ॥ (११७-१०, माझ, मः ३)
गुरमुखि पवणु बैसंतरु खेलै विडाणी ॥ (११७-११, माझ, मः ३)
सो निगुरा जो मरि मरि जम्मै निगुरे आवण जावणिआ ॥२॥ (११७-११, माझ, मः ३)
तिनि करतै इकु खेलु रचाइआ ॥ (११७-१२, माझ, मः ३)
काइआ सरीरै विचि सभु किछु पाइआ ॥ (११७-१२, माझ, मः ३)
सबदि भेदि कोई महलु पाए महले महलि बुलावणिआ ॥३॥ (११७-१२, माझ, मः ३)
सचा साहु सचे वणजारे ॥ (११७-१३, माझ, मः ३)
सचु वणंजहि गुर हेति अपारे ॥ (११७-१३, माझ, मः ३)
सचु विहाझहि सचु कमावहि सचो सचु कमावणिआ ॥४॥ (११७-१४, माझ, मः ३)
बिनु रासी को वथु किउ पाए ॥ (११७-१४, माझ, मः ३)
मनमुख भूले लोक सबाए ॥ (११७-१४, माझ, मः ३)
बिनु रासी सभ खाली चले खाली जाइ दुखु पावणिआ ॥५॥ (११७-१५, माझ, मः ३)
इकि सचु वणंजहि गुर सबदि पिआरे ॥ (११७-१५, माझ, मः ३)
आपि तरहि सगले कुल तारे ॥ (११७-१६, माझ, मः ३)
आए से परवाणु होए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥६॥ (११७-१६, माझ, मः ३)
अंतरि वसतु मूड़ा बाहरु भाले ॥ (११७-१७, माझ, मः ३)
मनमुख अंधे फिरहि बेताले ॥ (११७-१७, माझ, मः ३)
जिथै वथु होवै तिथहु कोइ न पावै मनमुख भरमि भुलावणिआ ॥७॥ (११७-१७, माझ, मः ३)
आपे देवै सबदि बुलाए ॥ (११७-१८, माझ, मः ३)
महली महलि सहज सुखु पाए ॥ (११७-१८, माझ, मः ३)

नानक नामि मिलै वडिआई आपे सुणि सुणि धिआवणिआ ॥८॥१३॥१४॥ (११७-१८, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११७-१९)
सतिगुर साची सिख सुणाई ॥ (११७-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११८

हरि चेतहु अंति होइ सखाई ॥ (११८-१, माझ, मः ३)
हरि अगमु अगोचरु अनाथु अजोनी सतिगुर कै भाइ पावणिआ ॥१॥ (११८-१, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी आपु निवारणिआ ॥ (११८-२, माझ, मः ३)
आपु गवाए ता हरि पाए हरि सिउ सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११८-२, माझ, मः ३)
पूरबि लिखिआ सु करमु कमाइआ ॥ (११८-३, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥ (११८-३, माझ, मः ३)
बिनु भागा गुरु पाईऐ नाही सबदै मेलि मिलावणिआ ॥२॥ (११८-४, माझ, मः ३)
गुरमुखि अलिपतु रहै संसारे ॥ (११८-४, माझ, मः ३)
गुर कै तकीऐ नामि अधारे ॥ (११८-४, माझ, मः ३)
गुरमुखि जोरु करे किआ तिस नो आपे खपि दुखु पावणिआ ॥३॥ (११८-५, माझ, मः ३)
मनमुखि अंधे सुधि न काई ॥ (११८-५, माझ, मः ३)
आतम घाती है जगत कसाई ॥ (११८-६, माझ, मः ३)
निंदा करि करि बहु भारु उठावै बिनु मजूरी भारु पहुचावणिआ ॥४॥ (११८-६, माझ, मः ३)
इहु जगु वाड़ी मेरा प्रभु माली ॥ (११८-७, माझ, मः ३)
सदा समाले को नाही खाली ॥ (११८-७, माझ, मः ३)
जेही वासना पाए तेही वरतै वासू वासु जणावणिआ ॥५॥ (११८-७, माझ, मः ३)
मनमुखु रोगी है संसारा ॥ (११८-८, माझ, मः ३)
सुखदाता विसरिआ अगम अपारा ॥ (११८-८, माझ, मः ३)
दुखीए निति फिरहि बिललादे बिनु गुर साँति न पावणिआ ॥६॥ (११८-९, माझ, मः ३)
जिनि कीते सोई बिधि जाणै ॥ (११८-९, माझ, मः ३)
आपि करे ता हुकमि पछाणै ॥ (११८-१०, माझ, मः ३)
जेहा अंदरि पाए तेहा वरतै आपे बाहरि पावणिआ ॥७॥ (११८-१०, माझ, मः ३)
तिसु बाझहु सचे मै होरु न कोई ॥ (११८-१०, माझ, मः ३)
जिसु लाइ लए सो निरमलु होई ॥ (११८-११, माझ, मः ३)
नानक नामु वसै घट अंतरि जिसु देवै सो पावणिआ ॥८॥१४॥१५॥ (११८-११, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११८-१२)
अमृत नामु मंनि वसाए ॥ (११८-१२, माझ, मः ३)
हउमै मेरा सभु दुखु गवाए ॥ (११८-१२, माझ, मः ३)
अमृत बाणी सदा सलाहे अमृति अमृतु पावणिआ ॥१॥ (११८-१३, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी अमृत बाणी मंनि वसावणिआ ॥ (११८-१३, माझ, मः ३)

अमृत बाणी मंनि वसाए अमृतु नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११८-१४, माझ, मः ३)
अमृतु बोलै सदा मुखि वैणी ॥ (११८-१४, माझ, मः ३)
अमृतु वेखै परखै सदा नैणी ॥ (११८-१५, माझ, मः ३)
अमृत कथा कहै सदा दिनु राती अवरा आखि सुनावणिआ ॥२॥ (११८-१५, माझ, मः ३)
अमृत रंगि रता लिव लाए ॥ (११८-१६, माझ, मः ३)
अमृतु गुर परसादी पाए ॥ (११८-१६, माझ, मः ३)
अमृतु रसना बोलै दिनु राती मनि तनि अमृतु पीआवणिआ ॥३॥ (११८-१६, माझ, मः ३)
सो किछु करै जु चिति न होई ॥ (११८-१७, माझ, मः ३)
तिस दा हुकमु मेटि न सकै कोई ॥ (११८-१७, माझ, मः ३)
हुकमे वरतै अमृत बाणी हुकमे अमृतु पीआवणिआ ॥४॥ (११८-१८, माझ, मः ३)
अजब कम्म करते हरि केरे ॥ (११८-१८, माझ, मः ३)
इहु मनु भूला जाँदा फेरे ॥ (११८-१९, माझ, मः ३)
अमृत बाणी सिउ चितु लाए अमृत सबदि वजावणिआ ॥५॥ (११८-१९, माझ, मः ३)

पन्ना ११९

खोटे खरे तुधु आपि उपाए ॥ (११९-१, माझ, मः ३)
तुधु आपे परखे लोक सबाए ॥ (११९-१, माझ, मः ३)
खरे परखि खजानै पाइहि खोटे भरमि भुलावणिआ ॥६॥ (११९-१, माझ, मः ३)
किउ करि वेखा किउ सालाही ॥ (११९-२, माझ, मः ३)
गुर परसादी सबदि सलाही ॥ (११९-२, माझ, मः ३)
तेरे भाणे विचि अमृतु वसै तूं भाणै अमृतु पीआवणिआ ॥७॥ (११९-२, माझ, मः ३)
अमृत सबदु अमृत हरि बाणी ॥ (११९-३, माझ, मः ३)
सतिगुरि सेविऐ रिदै समाणी ॥ (११९-३, माझ, मः ३)
नानक अमृत नामु सदा सुखदाता पी अमृतु सभ भुख लहि जावणिआ ॥८॥१५॥१६॥ (११९-४, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११९-५)
अमृतु वरसै सहजि सुभाए ॥ (११९-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि विरला कोई जनु पाए ॥ (११९-५, माझ, मः ३)
अमृतु पी सदा तृपतासे करि किरपा तृसना बुझावणिआ ॥१॥ (११९-५, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि अमृतु पीआवणिआ ॥ (११९-६, माझ, मः ३)
रसना रसु चाखि सदा रहै रंगि राती सहजे हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११९-७, माझ, मः ३)
गुर परसादी सहजु को पाए ॥ (११९-७, माझ, मः ३)
दुबिधा मारे इकसु सिउ लिव लाए ॥ (११९-८, माझ, मः ३)
नदरि करे ता हरि गुण गावै नदरी सचि समावणिआ ॥२॥ (११९-८, माझ, मः ३)
सभना उपरि नदरि प्रभ तेरी ॥ (११९-९, माझ, मः ३)
किसै थोड़ी किसै है घणेरी ॥ (११९-९, माझ, मः ३)

तुझ ते बाहरि किछु न होवै गुरमुखि सोझी पावणिआ ॥३॥ (११९-९, माझ, मः ३)
गुरमुखि ततु है बीचारा ॥ (११९-१०, माझ, मः ३)
अमृति भरे तेरे भंडारा ॥ (११९-१०, माझ, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे कोई न पावै गुर किरपा ते पावणिआ ॥४॥ (११९-१०, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवै सो जनु सोहै ॥ (११९-११, माझ, मः ३)
अमृत नामि अंतरु मनु मोहै ॥ (११९-११, माझ, मः ३)
अमृति मनु तनु बाणी रता अमृतु सहजि सुणावणिआ ॥५॥ (११९-१२, माझ, मः ३)
मनमुखु भूला दूजै भाइ खुआए ॥ (११९-१२, माझ, मः ३)
नामु न लेवै मरै बिखु खाए ॥ (११९-१३, माझ, मः ३)
अनदिनु सदा विसटा महि वासा बिनु सेवा जनमु गवावणिआ ॥६॥ (११९-१३, माझ, मः ३)
अमृतु पीवै जिस नो आपि पीआए ॥ (११९-१४, माझ, मः ३)
गुर परसादी सहजि लिव लाए ॥ (११९-१४, माझ, मः ३)
पूरन पूरि रहिआ सभ आपे गुरमति नदरी आवणिआ ॥७॥ (११९-१४, माझ, मः ३)
आपे आपि निरंजनु सोई ॥ (११९-१५, माझ, मः ३)
जिनि सिरजी तिनि आपे गोई ॥ (११९-१५, माझ, मः ३)
नानक नामु समालि सदा तूं सहजे सचि समावणिआ ॥८॥१६॥१७॥ (११९-१५, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (११९-१६)
से सचि लागे जो तुधु भाए ॥ (११९-१६, माझ, मः ३)
सदा सचु सेवहि सहज सुभाए ॥ (११९-१७, माझ, मः ३)
सचै सबदि सचा सालाही सचै मेलि मिलावणिआ ॥१॥ (११९-१७, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी सचु सालाहणिआ ॥ (११९-१७, माझ, मः ३)
सचु धिआइनि से सचि राते सचे सचि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११९-१८, माझ, मः ३)
जह देखा सचु सभनी थाई ॥ (११९-१८, माझ, मः ३)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (११९-१९, माझ, मः ३)
तनु सचा रसना सचि राती सचु सुणि आखि वखानणिआ ॥२॥ (११९-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२०

मनसा मारि सचि समाणी ॥ (१२०-१, माझ, मः ३)
इनि मनि डीठी सभ आवण जाणी ॥ (१२०-१, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवे सदा मनु निहचलु निज घरि वासा पावणिआ ॥३॥ (१२०-१, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥ (१२०-२, माझ, मः ३)
माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ (१२०-२, माझ, मः ३)
सचो सचा वेखि सालाही गुर सबदी सचु पावणिआ ॥४॥ (१२०-३, माझ, मः ३)
जो सचि राते तिन सची लिव लागी ॥ (१२०-३, माझ, मः ३)
हरि नामु समालहि से वडभागी ॥ (१२०-४, माझ, मः ३)

सचै सबदि आपि मिलाए सतसंगति सचु गुण गावणिआ ॥५॥ (१२०-४, माझ, मः ३)
लेखा पड़ीऐ जे लेखे विचि होवै ॥ (१२०-५, माझ, मः ३)
ओहु अगमु अगोचरु सबदि सुधि होवै ॥ (१२०-५, माझ, मः ३)
अनदिनु सच सबदि सालाही होरु कोइ न कीमति पावणिआ ॥६॥ (१२०-५, माझ, मः ३)
पड़ि पड़ि थाके साँति न आई ॥ (१२०-६, माझ, मः ३)
तृसना जाले सुधि न काई ॥ (१२०-६, माझ, मः ३)
बिखु बिहाझहि बिखु मोह पिआसे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥७॥ (१२०-७, माझ, मः ३)
गुर परसादी एको जाणा ॥ (१२०-७, माझ, मः ३)
दूजा मारि मनु सचि समाणा ॥ (१२०-८, माझ, मः ३)
नानक एको नामु वरतै मन अंतरि गुर परसादी पावणिआ ॥८॥१७॥१८॥ (१२०-८, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२०-९)
वरन रूप वरतहि सभ तेरे ॥ (१२०-९, माझ, मः ३)
मरि मरि जम्महि फेर पवहि घणेरे ॥ (१२०-९, माझ, मः ३)
तूं एको निहचलु अगम अपारा गुरमती बूझ बुझावणिआ ॥१॥ (१२०-९, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी राम नामु मंनि वसावणिआ ॥ (१२०-१०, माझ, मः ३)
तिसु रूपु न रेखिआ वरनु न कोई गुरमती आपि बुझावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०-११, माझ, मः ३)
सभ एका जोति जाणै जे कोई ॥ (१२०-११, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेविऐ परगटु होई ॥ (१२०-१२, माझ, मः ३)
गुपतु परगटु वरतै सभ थाई जोती जोति मिलावणिआ ॥२॥ (१२०-१२, माझ, मः ३)
तिसना अगनि जलै संसारा ॥ (१२०-१३, माझ, मः ३)
लोभु अभिमानु बहुतु अहंकारा ॥ (१२०-१३, माझ, मः ३)
मरि मरि जनमै पति गवाए अपणी बिरथा जनमु गवावणिआ ॥३॥ (१२०-१३, माझ, मः ३)
गुर का सबदु को विरला बूझै ॥ (१२०-१४, माझ, मः ३)
आपु मारे ता तृभवणु सूझै ॥ (१२०-१४, माझ, मः ३)
फिरि ओहु मरै न मरणा होवै सहजे सचि समावणिआ ॥४॥ (१२०-१५, माझ, मः ३)
माइआ महि फिरि चितु न लाए ॥ (१२०-१५, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि सद रहै समाए ॥ (१२०-१६, माझ, मः ३)
सचु सलाहे सभ घट अंतरि सचो सचु सुहावणिआ ॥५॥ (१२०-१६, माझ, मः ३)
सचु सालाही सदा हजूरे ॥ (१२०-१६, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि रहिआ भरपूरे ॥ (१२०-१७, माझ, मः ३)
गुर परसादी सचु नदरी आवै सचे ही सुखु पावणिआ ॥६॥ (१२०-१७, माझ, मः ३)
सचु मन अंदरि रहिआ समाइ ॥ (१२०-१८, माझ, मः ३)
सदा सचु निहचलु आवै न जाइ ॥ (१२०-१८, माझ, मः ३)
सचे लागै सो मनु निरमलु गुरमती सचि समावणिआ ॥७॥ (१२०-१८, माझ, मः ३)
सचु सालाही अवरु न कोई ॥ (१२०-१९, माझ, मः ३)

जितु सेविऐ सदा सुखु होई ॥ (१२०-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२१

नानक नामि रते वीचारी सचो सचु कमावणिआ ॥८॥१८॥१९॥ (१२१-१, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२१-१)
निर्मल सबदु निर्मल है बाणी ॥ (१२१-१, माझ, मः ३)
निर्मल जोति सभ माहि समाणी ॥ (१२१-२, माझ, मः ३)
निर्मल बाणी हरि सालाही जपि हरि निरमलु मैलु गवावणिआ ॥१॥ (१२१-२, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी सुखदाता मंनि वसावणिआ ॥ (१२१-३, माझ, मः ३)
हरि निरमलु गुर सबदि सलाही सबदो सुणि तिसा मिटावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१-३, माझ, मः ३)
निर्मल नामु वसिआ मनि आए ॥ (१२१-४, माझ, मः ३)
मनु तनु निरमलु माइआ मोहु गवाए ॥ (१२१-५, माझ, मः ३)
निर्मल गुण गावै नित साचे के निर्मल नादु वजावणिआ ॥२॥ (१२१-५, माझ, मः ३)
निर्मल अमृतु गुर ते पाइआ ॥ (१२१-६, माझ, मः ३)
विचहु आपु मुआ तिथै मोहु न माइआ ॥ (१२१-६, माझ, मः ३)
निर्मल गिआनु धिआनु अति निरमलु निर्मल बाणी मंनि वसावणिआ ॥३॥ (१२१-६, माझ, मः ३)
जो निरमलु सेवे सु निरमलु होवै ॥ (१२१-७, माझ, मः ३)
हउमै मैलु गुर सबदे धोवै ॥ (१२१-८, माझ, मः ३)
निर्मल वाजै अनहद धुनि बाणी दरि सचै सोभा पावणिआ ॥४॥ (१२१-८, माझ, मः ३)
निर्मल ते सभ निर्मल होवै ॥ (१२१-९, माझ, मः ३)
निरमलु मनूआ हरि सबदि परोवै ॥ (१२१-९, माझ, मः ३)
निर्मल नामि लगे बडभागी निरमलु नामि सुहावणिआ ॥५॥ (१२१-९, माझ, मः ३)
सो निरमलु जो सबदे सोहै ॥ (१२१-१०, माझ, मः ३)
निर्मल नामि मनु तनु मोहै ॥ (१२१-१०, माझ, मः ३)
सचि नामि मलु कदे न लागै मुखु ऊजलु सचु करावणिआ ॥६॥ (१२१-१०, माझ, मः ३)
मनु मैला है दूजै भाइ ॥ (१२१-११, माझ, मः ३)
मैला चउका मैलै थाइ ॥ (१२१-११, माझ, मः ३)
मैला खाइ फिरि मैलु वधाए मनमुख मैलु दुखु पावणिआ ॥७॥ (१२१-१२, माझ, मः ३)
मैले निर्मल सभि हुकमि सबाए ॥ (१२१-१२, माझ, मः ३)
से निर्मल जो हरि साचे भाए ॥ (१२१-१३, माझ, मः ३)
नानक नामु वसै मन अंतरि गुरमुखि मैलु चुकावणिआ ॥८॥१९॥२०॥ (१२१-१३, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२१-१४)
गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥ (१२१-१४, माझ, मः ३)
मनु बाणी निर्मल मेरी मनसा ॥ (१२१-१४, माझ, मः ३)
मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥१॥ (१२१-१४, माझ, मः ३)

हउ वारी जीउ वारी गोबिंद गुण गावणिआ ॥ (१२१-१५, माझ, मः ३)
गोबिदु गोबिदु कहै दिन राती गोबिद गुण सबदि सुणावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१-१५, माझ, मः ३)
गोबिदु गावहि सहजि सुभाए ॥ (१२१-१६, माझ, मः ३)
गुर कै भै ऊजल हउमै मलु जाए ॥ (१२१-१७, माझ, मः ३)
सदा अनंदि रहहि भगति करहि दिनु राती सुणि गोबिद गुण गावणिआ ॥२॥ (१२१-१७, माझ, मः ३)
मनूआ नाचै भगति दृड़ाए ॥ (१२१-१८, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि मनै मनु मिलाए ॥ (१२१-१८, माझ, मः ३)
सचा तालु पूरे माइआ मोहु चुकाए सबदे निरति करावणिआ ॥३॥ (१२१-१८, माझ, मः ३)
ऊचा कूके तनहि पछाड़े ॥ (१२१-१९, माझ, मः ३)
माइआ मोहि जोहिआ जमकाले ॥ (१२१-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२२

माइआ मोहु इसु मनहि नचाए अंतरि कपटु दुखु पावणिआ ॥४॥ (१२२-१, माझ, मः ३)
गुरमुखि भगति जा आपि कराए ॥ (१२२-१, माझ, मः ३)
तनु मनु राता सहजि सुभाए ॥ (१२२-२, माझ, मः ३)
बाणी वजै सबदि वजाए गुरमुखि भगति थाइ पावणिआ ॥५॥ (१२२-२, माझ, मः ३)
बहु ताल पूरे वाजे वजाए ॥ (१२२-३, माझ, मः ३)
ना को सुणे न मंनि वसाए ॥ (१२२-३, माझ, मः ३)
माइआ कारणि पिड़ बंधि नाचै दूजै भाइ दुखु पावणिआ ॥६॥ (१२२-३, माझ, मः ३)
जिसु अंतरि प्रीति लगै सो मुकता ॥ (१२२-४, माझ, मः ३)
इंद्री वसि सच संजमि जुगता ॥ (१२२-४, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि सदा हरि धिआए एहा भगति हरि भावणिआ ॥७॥ (१२२-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि भगति जुग चारे होई ॥ (१२२-५, माझ, मः ३)
होरतु भगति न पाए कोई ॥ (१२२-६, माझ, मः ३)
नानक नामु गुर भगती पाईऐ गुर चरणी चितु लावणिआ ॥८॥२०॥२१॥ (१२२-६, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२२-७)
सचा सेवी सचु सालाही ॥ (१२२-७, माझ, मः ३)
सचै नाइ दुखु कब ही नाही ॥ (१२२-७, माझ, मः ३)
सुखदाता सेवनि सुखु पाइनि गुरमति मंनि वसावणिआ ॥१॥ (१२२-७, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी सुख सहजि समाधि लगावणिआ ॥ (१२२-८, माझ, मः ३)
जो हरि सेवहि से सदा सोहहि सोभा सुरति सुहावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२-९, माझ, मः ३)
सभु को तेरा भगतु कहाए ॥ (१२२-९, माझ, मः ३)
सेई भगत तेरै मनि भाए ॥ (१२२-१०, माझ, मः ३)
सचु बाणी तुधै सालाहनि रंगि राते भगति करावणिआ ॥२॥ (१२२-१०, माझ, मः ३)
सभु को सचे हरि जीउ तेरा ॥ (१२२-१०, माझ, मः ३)

गुरमुखि मिलै ता चूकै फेरा ॥ (१२२-११, माझ, मः ३)
जा तुधु भावै ता नाइ रचावहि तूं आपे नाउ जपावणिआ ॥३॥ (१२२-११, माझ, मः ३)
गुरमती हरि मंनि वसाइआ ॥ (१२२-१२, माझ, मः ३)
हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥ (१२२-१२, माझ, मः ३)
इकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥४॥ (१२२-१२, माझ, मः ३)
भगत रंगि राते सदा तेरै चाए ॥ (१२२-१३, माझ, मः ३)
नउ निधि नामु वसिआ मनि आए ॥ (१२२-१३, माझ, मः ३)
पूरै भागि सतिगुरु पाइआ सबदे मेलि मिलावणिआ ॥५॥ (१२२-१४, माझ, मः ३)
तूं दइआलु सदा सुखदाता ॥ (१२२-१४, माझ, मः ३)
तूं आपे मेलिहि गुरमुखि जाता ॥ (१२२-१५, माझ, मः ३)
तूं आपे देवहि नामु वडाई नामि रते सुखु पावणिआ ॥६॥ (१२२-१५, माझ, मः ३)
सदा सदा साचे तुधु सालाही ॥ (१२२-१६, माझ, मः ३)
गुरमुखि जाता दूजा को नाही ॥ (१२२-१६, माझ, मः ३)
एकसु सिउ मनु रहिआ समाए मनि मंनिऐ मनहि मिलावणिआ ॥७॥ (१२२-१६, माझ, मः ३)
गुरमुखि होवै सो सालाहे ॥ (१२२-१७, माझ, मः ३)
साचे ठाकुर वेपरवाहे ॥ (१२२-१७, माझ, मः ३)
नानक नामु वसै मन अंतरि गुर सबदी हरि मेलावणिआ ॥८॥२१॥२२॥ (१२२-१७, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२२-१८)
तेरे भगत सोहहि साचै दरबारे ॥ (१२२-१८, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि नामि सवारे ॥ (१२२-१९, माझ, मः ३)
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुण कहि गुणी समावणिआ ॥१॥ (१२२-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२३

हउ वारी जीउ वारी नामु सुणि मंनि वसावणिआ ॥ (१२३-१, माझ, मः ३)
हरि जीउ सचा ऊचो ऊचा हउमै मारि मिलावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३-१, माझ, मः ३)
हरि जीउ साचा साची नाई ॥ (१२३-२, माझ, मः ३)
गुर परसादी किसै मिलाई ॥ (१२३-२, माझ, मः ३)
गुर सबदि मिलहि से विछुड़हि नाही सहजे सचि समावणिआ ॥२॥ (१२३-२, माझ, मः ३)
तुझ ते बाहरि कछू न होइ ॥ (१२३-३, माझ, मः ३)
तूं करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ (१२३-३, माझ, मः ३)
आपे करे कराए करता गुरमति आपि मिलावणिआ ॥३॥ (१२३-४, माझ, मः ३)
कामणि गुणवंती हरि पाए ॥ (१२३-४, माझ, मः ३)
भै भाइ सीगारु बणाए ॥ (१२३-५, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा सोहागणि सच उपदेसि समावणिआ ॥४॥ (१२३-५, माझ, मः ३)
सबदु विसारनि तिना ठउरु न ठाउ ॥ (१२३-६, माझ, मः ३)

भ्रमि भूले जिउ सुंञै घरि काउ ॥ (१२३-६, माझ, मः ३)
हलतु पलतु तिनी दोवै गवाए दुखे दुखि विहावणिआ ॥५॥ (१२३-६, माझ, मः ३)
लिखदिआ लिखदिआ कागद मसु खोई ॥ (१२३-७, माझ, मः ३)
दूजै भाइ सुखु पाए न कोई ॥ (१२३-७, माझ, मः ३)
कूड़ु लिखहि तै कूड़ु कमावहि जलि जावहि कूड़ि चितु लावणिआ ॥६॥ (१२३-८, माझ, मः ३)
गुरमुखि सचो सचु लिखहि वीचारु ॥ (१२३-८, माझ, मः ३)
से जन सचे पावहि मोख दुआरु ॥ (१२३-९, माझ, मः ३)
सचु कागदु कलम मसवाणी सचु लिखि सचि समावणिआ ॥७॥ (१२३-९, माझ, मः ३)
मेरा प्रभु अंतरि बैठा वेखै ॥ (१२३-१०, माझ, मः ३)
गुर परसादी मिलै सोई जनु लेखै ॥ (१२३-१०, माझ, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२२॥२३॥ (१२३-१०, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२३-११)
आतम राम परगासु गुर ते होवै ॥ (१२३-११, माझ, मः ३)
हउमै मैलु लागी गुर सबदी खोवै ॥ (१२३-१२, माझ, मः ३)
मनु निरमलु अनदिनु भगती राता भगति करे हरि पावणिआ ॥१॥ (१२३-१२, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी आपि भगति करनि अवरा भगति करावणिआ ॥ (१२३-१३, माझ, मः ३)
तिना भगत जना कउ सद नमसकारु कीजै जो अनदिनु हरि गुण गावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३-१४, माझ, मः ३)
आपे करता कारणु कराए ॥ (१२३-१५, माझ, मः ३)
जितु भावै तितु कारै लाए ॥ (१२३-१५, माझ, मः ३)
पूरै भागि गुर सेवा होवै गुर सेवा ते सुखु पावणिआ ॥२॥ (१२३-१५, माझ, मः ३)
मरि मरि जीवै ता किछु पाए ॥ (१२३-१६, माझ, मः ३)
गुर परसादी हरि मंनि वसाए ॥ (१२३-१६, माझ, मः ३)
सदा मुकतु हरि मंनि वसाए सहजे सहजि समावणिआ ॥३॥ (१२३-१६, माझ, मः ३)
बहु कर्म कमावै मुकति न पाए ॥ (१२३-१७, माझ, मः ३)
देसंतरु भवै दूजै भाइ खुआए ॥ (१२३-१७, माझ, मः ३)
बिरथा जनमु गवाइआ कपटी बिनु सबदै दुखु पावणिआ ॥४॥ (१२३-१८, माझ, मः ३)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (१२३-१८, माझ, मः ३)
गुर परसादी पर्म पदु पाए ॥ (१२३-१९, माझ, मः ३)
सतिगुरु आपे मेलि मिलाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥५॥ (१२३-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२४

इकि कूड़ि लागे कूड़े फल पाए ॥ (१२४-१, माझ, मः ३)
दूजै भाइ बिरथा जनमु गवाए ॥ (१२४-१, माझ, मः ३)
आपि डुबे सगले कुल डोबे कूड़ु बोलि बिखु खावणिआ ॥६॥ (१२४-१, माझ, मः ३)

इसु तन महि मनु को गुरमुखि देखै ॥ (१२४-२, माझ, मः ३)
भाइ भगति जा हउमै सोखै ॥ (१२४-२, माझ, मः ३)
सिध साधिक मोनिधारी रहे लिव लाइ तिन भी तन महि मनु न दिखावणिआ ॥७॥ (१२४-३, माझ, मः ३)
आपि कराए करता सोई ॥ (१२४-३, माझ, मः ३)
होरु कि करे कीतै किआ होई ॥ (१२४-४, माझ, मः ३)
नानक जिसु नामु देवै सो लेवै नामो मंनि वसावणिआ ॥८॥२३॥२४॥ (१२४-४, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२४-५)
इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥ (१२४-५, माझ, मः ३)
तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥ (१२४-५, माझ, मः ३)
आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥१॥ (१२४-६, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी अमृत नामु मंनि वसावणिआ ॥ (१२४-६, माझ, मः ३)
अमृत नामु महा रसु मीठा गुरमती अमृतु पीआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२४-७, माझ, मः ३)
हउमै मारि बजर कपाट खुलाइआ ॥ (१२४-८, माझ, मः ३)
नामु अमोलकु गुर परसादी पाइआ ॥ (१२४-८, माझ, मः ३)
बिनु सबदै नामु न पाए कोई गुर किरपा मंनि वसावणिआ ॥२॥ (१२४-८, माझ, मः ३)
गुर गिआन अंजनु सचु नेत्री पाइआ ॥ (१२४-९, माझ, मः ३)
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ (१२४-९, माझ, मः ३)
जोती जोति मिली मनु मानिआ हरि दरि सोभा पावणिआ ॥३॥ (१२४-१०, माझ, मः ३)
सरीरहु भालणि को बाहरि जाए ॥ (१२४-११, माझ, मः ३)
नामु न लहै बहुतु वेगारि दुखु पाए ॥ (१२४-११, माझ, मः ३)
मनमुख अंधे सूझै नाही फिरि घिरि आइ गुरमुखि वथु पावणिआ ॥४॥ (१२४-११, माझ, मः ३)
गुर परसादी सचा हरि पाए ॥ (१२४-१२, माझ, मः ३)
मनि तनि वेखै हउमै मैलु जाए ॥ (१२४-१२, माझ, मः ३)
बैसि सुथानि सद हरि गुण गावै सचै सबदि समावणिआ ॥५॥ (१२४-१३, माझ, मः ३)
नउ दर ठाके धावतु रहाए ॥ (१२४-१३, माझ, मः ३)
दसवै निज घरि वासा पाए ॥ (१२४-१४, माझ, मः ३)
ओथै अनहद सबद वजहि दिनु राती गुरमती सबदु सुणावणिआ ॥६॥ (१२४-१४, माझ, मः ३)
बिनु सबदै अंतरि आनेरा ॥ (१२४-१५, माझ, मः ३)
न वसतु लहै न चूकै फेरा ॥ (१२४-१५, माझ, मः ३)
सतिगुर हथि कुंजी होरतु दरु खुलै नाही गुरु पूरै भागि मिलावणिआ ॥७॥ (१२४-१५, माझ, मः ३)
गुपतु परगटु तूं सभनी थाई ॥ (१२४-१६, माझ, मः ३)
गुर परसादी मिलि सोझी पाई ॥ (१२४-१६, माझ, मः ३)
नानक नामु सलाहि सदा तूं गुरमुखि मंनि वसावणिआ ॥८॥२४॥२५॥ (१२४-१७, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२४-१७)
गुरमुखि मिलै मिलाए आपे ॥ (१२४-१८, माझ, मः ३)

कालु न जोहै दुखु न संतापे ॥ (१२४-१८, माझ, मः ३)
हउमै मारि बंधन सभ तोड़ै गुरमुखि सबदि सुहावणिआ ॥१॥ (१२४-१८, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी हरि हरि नामि सुहावणिआ ॥ (१२४-१९, माझ, मः ३)
गुरमुखि गावै गुरमुखि नाचै हरि सेती चितु लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२४-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२५

गुरमुखि जीवै मरै परवाणु ॥ (१२५-१, माझ, मः ३)
आरजा न छीजै सबदु पछाणु ॥ (१२५-१, माझ, मः ३)
गुरमुखि मरै न कालु न खाए गुरमुखि सचि समावणिआ ॥२॥ (१२५-२, माझ, मः ३)
गुरमुखि हरि दरि सोभा पाए ॥ (१२५-२, माझ, मः ३)
गुरमुखि विचहु आपु गवाए ॥ (१२५-२, माझ, मः ३)
आपि तरै कुल सगले तारे गुरमुखि जनमु सवारणिआ ॥३॥ (१२५-३, माझ, मः ३)
गुरमुखि दुखु कदे न लगै सरीरि ॥ (१२५-३, माझ, मः ३)
गुरमुखि हउमै चूकै पीर ॥ (१२५-४, माझ, मः ३)
गुरमुखि मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥४॥ (१२५-४, माझ, मः ३)
गुरमुखि नामु मिलै वडिआई ॥ (१२५-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि गुण गावै सोभा पाई ॥ (१२५-५, माझ, मः ३)
सदा अनंदि रहै दिनु राती गुरमुखि सबदु करावणिआ ॥५॥ (१२५-५, माझ, मः ३)
गुरमुखि अनदिनु सबदे राता ॥ (१२५-६, माझ, मः ३)
गुरमुखि जुग चारे है जाता ॥ (१२५-६, माझ, मः ३)
गुरमुखि गुण गावै सदा निरमलु सबदे भगति करावणिआ ॥६॥ (१२५-७, माझ, मः ३)
बाझु गुरू है अंध अंधारा ॥ (१२५-७, माझ, मः ३)
जमकालि गरठे करहि पुकारा ॥ (१२५-८, माझ, मः ३)
अनदिनु रोगी बिसटा के कीड़े बिसटा महि दुखु पावणिआ ॥७॥ (१२५-८, माझ, मः ३)
गुरमुखि आपे करे कराए ॥ (१२५-९, माझ, मः ३)
गुरमुखि हिरदै वुठा आपि आए ॥ (१२५-९, माझ, मः ३)
नानक नामि मिलै वडिआई पूरे गुर ते पावणिआ ॥८॥२५॥२६॥ (१२५-९, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२५-१०)
एका जोति जोति है सरीरा ॥ (१२५-१०, माझ, मः ३)
सबदि दिखाए सतिगुरु पूरा ॥ (१२५-१०, माझ, मः ३)
आपे फरकु कीतोनु घट अंतरि आपे बणत बणावणिआ ॥१॥ (१२५-११, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी हरि सचे के गुण गावणिआ ॥ (१२५-११, माझ, मः ३)
बाझु गुरू को सहजु न पाए गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५-१२, माझ, मः ३)
तूं आपे सोहहि आपे जगु मोहहि ॥ (१२५-१३, माझ, मः ३)
तूं आपे नदरी जगतु परोवहि ॥ (१२५-१३, माझ, मः ३)

तूं आपे दुखु सुखु देवहि करते गुरमुखि हरि देखावणिआ ॥२॥ (१२५-१३, माझ, मः ३)
आपे करता करे कराए ॥ (१२५-१४, माझ, मः ३)
आपे सबदु गुर मंनि वसाए ॥ (१२५-१४, माझ, मः ३)
सबदे उपजै अमृत बाणी गुरमुखि आखि सुणावणिआ ॥३॥ (१२५-१४, माझ, मः ३)
आपे करता आपे भुगता ॥ (१२५-१५, माझ, मः ३)
बंधन तोड़े सदा है मुकता ॥ (१२५-१५, माझ, मः ३)
सदा मुकतु आपे है सचा आपे अलखु लखावणिआ ॥४॥ (१२५-१६, माझ, मः ३)
आपे माइआ आपे छाइआ ॥ (१२५-१६, माझ, मः ३)
आपे मोहु सभु जगतु उपाइआ ॥ (१२५-१६, माझ, मः ३)
आपे गुणदाता गुण गावै आपे आखि सुणावणिआ ॥५॥ (१२५-१७, माझ, मः ३)
आपे करे कराए आपे ॥ (१२५-१७, माझ, मः ३)
आपे थापि उथापे आपे ॥ (१२५-१८, माझ, मः ३)
तुझ ते बाहरि कछू न होवै तूं आपे कारै लावणिआ ॥६॥ (१२५-१८, माझ, मः ३)
आपे मारे आपि जीवाए ॥ (१२५-१९, माझ, मः ३)
आपे मेले मेलि मिलाए ॥ (१२५-१९, माझ, मः ३)
सेवा ते सदा सुखु पाइआ गुरमुखि सहजि समावणिआ ॥७॥ (१२५-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२६

आपे ऊचा ऊचो होई ॥ (१२६-१, माझ, मः ३)
जिसु आपि विखाले सु वेखै कोई ॥ (१२६-१, माझ, मः ३)
नानक नामु वसै घट अंतरि आपे वेखि विखालणिआ ॥८॥२६॥२७॥ (१२६-१, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२६-२)
मेरा प्रभु भरपूरि रहिआ सभ थाई ॥ (१२६-२, माझ, मः ३)
गुर परसादी घर ही महि पाई ॥ (१२६-३, माझ, मः ३)
सदा सरेवी इक मनि धिआई गुरमुखि सचि समावणिआ ॥१॥ (१२६-३, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी जगजीवनु मंनि वसावणिआ ॥ (१२६-४, माझ, मः ३)
हरि जगजीवनु निरभउ दाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६-४, माझ, मः ३)
घर महि धरती धउलु पाताला ॥ (१२६-५, माझ, मः ३)
घर ही महि प्रीतमु सदा है बाला ॥ (१२६-५, माझ, मः ३)
सदा अनंदि रहै सुखदाता गुरमति सहजि समावणिआ ॥२॥ (१२६-६, माझ, मः ३)
काइआ अंदरि हउमै मेरा ॥ (१२६-६, माझ, मः ३)
जम्मण मरणु न चूकै फेरा ॥ (१२६-६, माझ, मः ३)
गुरमुखि होवै सु हउमै मारे सचो सचु धिआवणिआ ॥३॥ (१२६-७, माझ, मः ३)
काइआ अंदरि पापु पुन्नु दुइ भाई ॥ (१२६-७, माझ, मः ३)
दुही मिलि कै सृसटि उपाई ॥ (१२६-८, माझ, मः ३)

दोवै मारि जाइ इकतु घरि आवै गुरमति सहजि समावणिआ ॥४॥ (१२६-८, माझ, मः ३)
घर ही माहि दूजै भाइ अनेरा ॥ (१२६-९, माझ, मः ३)
चानणु होवै छोडै हउमै मेरा ॥ (१२६-९, माझ, मः ३)
परगटु सबदु है सुखदाता अनदिनु नामु धिआवणिआ ॥५॥ (१२६-९, माझ, मः ३)
अंतरि जोति परगटु पासारा ॥ (१२६-१०, माझ, मः ३)
गुर साखी मिटिआ अंधिआरा ॥ (१२६-१०, माझ, मः ३)
कमलु बिगासि सदा सुखु पाइआ जोती जोति मिलावणिआ ॥६॥ (१२६-११, माझ, मः ३)
अंदरि महल रतनी भरे भंडारा ॥ (१२६-११, माझ, मः ३)
गुरमुखि पाए नामु अपारा ॥ (१२६-१२, माझ, मः ३)
गुरमुखि वणजे सदा वापारी लाहा नामु सद पावणिआ ॥७॥ (१२६-१२, माझ, मः ३)
आपे वथु राखै आपे देइ ॥ (१२६-१३, माझ, मः ३)
गुरमुखि वणजहि केई केइ ॥ (१२६-१३, माझ, मः ३)
नानक जिसु नदरि करे सो पाए करि किरपा मंनि वसावणिआ ॥८॥२७॥२८॥ (१२६-१३, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२६-१४)
हरि आपे मेले सेव कराए ॥ (१२६-१४, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि भाउ दूजा जाए ॥ (१२६-१४, माझ, मः ३)
हरि निरमलु सदा गुणदाता हरि गुण महि आपि समावणिआ ॥१॥ (१२६-१५, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी सचु सचा हिरदै वसावणिआ ॥ (१२६-१६, माझ, मः ३)
सचा नामु सदा है निरमलु गुर सबदी मंनि वसावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६-१६, माझ, मः ३)
आपे गुरु दाता करमि बिधाता ॥ (१२६-१७, माझ, मः ३)
सेवक सेवहि गुरमुखि हरि जाता ॥ (१२६-१७, माझ, मः ३)
अमृत नामि सदा जन सोहहि गुरमति हरि रसु पावणिआ ॥२॥ (१२६-१७, माझ, मः ३)
इसु गुफा महि इकु थानु सुहाइआ ॥ (१२६-१८, माझ, मः ३)
पूरै गुरि हउमै भरमु चुकाइआ ॥ (१२६-१९, माझ, मः ३)
अनदिनु नामु सलाहनि रंगि राते गुर किरपा ते पावणिआ ॥३॥ (१२६-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२७

गुर कै सबदि इहु गुफा वीचारे ॥ (१२७-१, माझ, मः ३)
नामु निरंजनु अंतरि वसै मुरारे ॥ (१२७-१, माझ, मः ३)
हरि गुण गावै सबदि सुहाए मिलि प्रीतम सुखु पावणिआ ॥४॥ (१२७-१, माझ, मः ३)
जमु जागाती दूजै भाइ करु लाए ॥ (१२७-२, माझ, मः ३)
नावहु भूले देइ सजाए ॥ (१२७-२, माझ, मः ३)
घड़ी मुहत का लेखा लेवै रतीअहु मासा तोल कढावणिआ ॥५॥ (१२७-२, माझ, मः ३)
पेईअड़ै पिरु चेते नाही ॥ (१२७-३, माझ, मः ३)
दूजै मुठी रोवै धाही ॥ (१२७-३, माझ, मः ३)

खरी कुआलिओ कुरूपि कुलखणी सुपनै पिरु नही पावणिआ ॥६॥ (१२७-४, माझ, मः ३)
पेईअड़ै पिरु मंनि वसाइआ ॥ (१२७-४, माझ, मः ३)
पूरै गुरि हदूरि दिखाइआ ॥ (१२७-५, माझ, मः ३)
कामणि पिरु राखिआ कंठि लाइ सबदे पिरु रावै सेज सुहावणिआ ॥७॥ (१२७-५, माझ, मः ३)
आपे देवै सदि बुलाए ॥ (१२७-६, माझ, मः ३)
आपणा नाउ मंनि वसाए ॥ (१२७-६, माझ, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई अनदिनु सदा गुण गावणिआ ॥८॥२८॥२९॥ (१२७-६, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२७-७)
ऊतम जनमु सुथानि है वासा ॥ (१२७-७, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवहि घर माहि उदासा ॥ (१२७-७, माझ, मः ३)
हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते हरि रसि मनु तृपतावणिआ ॥१॥ (१२७-८, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी पड़ि बुझि मंनि वसावणिआ ॥ (१२७-८, माझ, मः ३)
गुरमुखि पड़हि हरि नामु सलाहहि दरि सचै सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७-९, माझ, मः ३)
अलख अभेउ हरि रहिआ समाए ॥ (१२७-१०, माझ, मः ३)
उपाइ न किती पाइआ जाए ॥ (१२७-१०, माझ, मः ३)
किरपा करे ता सतिगुरु भेटै नदरी मेलि मिलावणिआ ॥२॥ (१२७-१०, माझ, मः ३)
दूजै भाइ पड़ै नही बूझै ॥ (१२७-११, माझ, मः ३)
तृबिधि माइआ कारणि लूझै ॥ (१२७-११, माझ, मः ३)
तृबिधि बंधन तूटहि गुर सबदी गुर सबदी मुकति करावणिआ ॥३॥ (१२७-१२, माझ, मः ३)
इहु मनु चंचलु वसि न आवै ॥ (१२७-१२, माझ, मः ३)
दुबिधा लागै दह दिसि धावै ॥ (१२७-१३, माझ, मः ३)
बिखु का कीड़ा बिखु महि राता बिखु ही माहि पचावणिआ ॥४॥ (१२७-१३, माझ, मः ३)
हउ हउ करे तै आपु जणाए ॥ (१२७-१४, माझ, मः ३)
बहु कर्म करै किछु थाइ न पाए ॥ (१२७-१४, माझ, मः ३)
तुझ ते बाहरि किछू न होवै बखसे सबदि सुहावणिआ ॥५॥ (१२७-१४, माझ, मः ३)
उपजै पचै हरि बूझै नाही ॥ (१२७-१५, माझ, मः ३)
अनदिनु दूजै भाइ फिराही ॥ (१२७-१५, माझ, मः ३)
मनमुख जनमु गइआ है बिरथा अंति गइआ पछुतावणिआ ॥६॥ (१२७-१५, माझ, मः ३)
पिरु परदेसि सिगारु बणाए ॥ (१२७-१६, माझ, मः ३)
मनमुख अंधु ऐसे कर्म कमाए ॥ (१२७-१६, माझ, मः ३)
हलति न सोभा पलति न ढोई बिरथा जनमु गवावणिआ ॥७॥ (१२७-१७, माझ, मः ३)
हरि का नामु किनै विरलै जाता ॥ (१२७-१७, माझ, मः ३)
पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ (१२७-१८, माझ, मः ३)
अनदिनु भगति करे दिनु राती सहजे ही सुखु पावणिआ ॥८॥ (१२७-१८, माझ, मः ३)
सभ महि वरतै एको सोई ॥ (१२७-१९, माझ, मः ३)

गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (१२७-१९, माझ, मः ३)
नानक नामि रते जन सोहहि करि किरपा आपि मिलावणिआ ॥६॥२९॥३०॥ (१२७-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२८

माझ महला ३ ॥ (१२८-१)
मनमुख पड़हि पंडित कहावहि ॥ (१२८-१, माझ, मः ३)
दूजै भाइ महा दुखु पावहि ॥ (१२८-१, माझ, मः ३)
बिखिआ माते किछु सूझै नाही फिरि फिरि जूनी आवणिआ ॥१॥ (१२८-२, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी हउमै मारि मिलावणिआ ॥ (१२८-२, माझ, मः ३)
गुर सेवा ते हरि मनि वसिआ हरि रसु सहजि पीआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२८-३, माझ, मः ३)
वेदु पड़हि हरि रसु नही आइआ ॥ (१२८-४, माझ, मः ३)
वादु वखाणहि मोहे माइआ ॥ (१२८-४, माझ, मः ३)
अगिआनमती सदा अंधिआरा गुरमुखि बूझि हरि गावणिआ ॥२॥ (१२८-४, माझ, मः ३)
अकथो कथीऐ सबदि सुहावै ॥ (१२८-५, माझ, मः ३)
गुरमती मनि सचो भावै ॥ (१२८-५, माझ, मः ३)
सचो सचु रवहि दिनु राती इहु मनु सचि रंगावणिआ ॥३॥ (१२८-६, माझ, मः ३)
जो सचि रते तिन सचो भावै ॥ (१२८-६, माझ, मः ३)
आपे देइ न पछोतावै ॥ (१२८-६, माझ, मः ३)
गुर कै सबदि सदा सचु जाता मिलि सचे सुखु पावणिआ ॥४॥ (१२८-७, माझ, मः ३)
कूड़ु कुसतु तिना मैलु न लागै ॥ (१२८-७, माझ, मः ३)
गुर परसादी अनदिनु जागै ॥ (१२८-८, माझ, मः ३)
निर्मल नामु वसै घट भीतरि जोती जोति मिलावणिआ ॥५॥ (१२८-८, माझ, मः ३)
त्रै गुण पड़हि हरि ततु न जाणहि ॥ (१२८-९, माझ, मः ३)
मूलहु भुले गुर सबदु न पछाणहि ॥ (१२८-९, माझ, मः ३)
मोह बिआपे किछु सूझै नाही गुर सबदी हरि पावणिआ ॥६॥ (१२८-९, माझ, मः ३)
वेदु पुकारै तृबिधि माइआ ॥ (१२८-१०, माझ, मः ३)
मनमुख न बूझहि दूजै भाइआ ॥ (१२८-१०, माझ, मः ३)
त्रै गुण पड़हि हरि एकु न जाणहि बिनु बूझे दुखु पावणिआ ॥७॥ (१२८-११, माझ, मः ३)
जा तिसु भावै ता आपि मिलाए ॥ (१२८-११, माझ, मः ३)
गुर सबदी सहसा दूखु चुकाए ॥ (१२८-१२, माझ, मः ३)
नानक नावै की सची वडिआई नामो मंनि सुखु पावणिआ ॥८॥३०॥३१॥ (१२८-१२, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२८-१३)
निरगुणु सरगुणु आपे सोई ॥ (१२८-१३, माझ, मः ३)
ततु पछाणै सो पंडितु होई ॥ (१२८-१३, माझ, मः ३)
आपि तरै सगले कुल तारै हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥१॥ (१२८-१३, माझ, मः ३)

हउ वारी जीउ वारी हरि रसु चखि सादु पावणिआ ॥ (१२८-१४, माझ, मः ३)
हरि रसु चाखहि से जन निर्मल निर्मल नामु धिआवणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२८-१४, माझ, मः ३)
सो निहकरमी जो सबदु बीचारे ॥ (१२८-१५, माझ, मः ३)
अंतरि ततु गिआनि हउमै मारे ॥ (१२८-१६, माझ, मः ३)
नामु पदारथु नउ निधि पाए त्रै गुण मेटि समावणिआ ॥२॥ (१२८-१६, माझ, मः ३)
हउमै करै निहकरमी न होवै ॥ (१२८-१६, माझ, मः ३)
गुर परसादी हउमै खोवै ॥ (१२८-१७, माझ, मः ३)
अंतरि बिबेकु सदा आपु वीचारे गुर सबदी गुण गावणिआ ॥३॥ (१२८-१७, माझ, मः ३)
हरि सरु सागरु निरमलु सोई ॥ (१२८-१८, माझ, मः ३)
संत चुगहि नित गुरमुखि होई ॥ (१२८-१८, माझ, मः ३)
इसनानु करहि सदा दिनु राती हउमै मैलु चुकावणिआ ॥४॥ (१२८-१८, माझ, मः ३)
निर्मल हंसा प्रेम पिआरि ॥ (१२८-१९, माझ, मः ३)
हरि सरि वसै हउमै मारि ॥ (१२८-१९, माझ, मः ३)

पन्ना १२९

अहिनिसि प्रीति सबदि साचै हरि सरि वासा पावणिआ ॥५॥ (१२९-१, माझ, मः ३)
मनमुखु सदा बगु मैला हउमै मलु लाई ॥ (१२९-१, माझ, मः ३)
इसनानु करै परु मैलु न जाई ॥ (१२९-२, माझ, मः ३)
जीवतु मरै गुर सबदु बीचारै हउमै मैलु चुकावणिआ ॥६॥ (१२९-२, माझ, मः ३)
रतनु पदारथु घर ते पाइआ ॥ (१२९-३, माझ, मः ३)
पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (१२९-३, माझ, मः ३)
गुर परसादि मिटिआ अंधिआरा घटि चानणु आपु पछानणिआ ॥७॥ (१२९-३, माझ, मः ३)
आपि उपाए तै आपे वेखै ॥ (१२९-४, माझ, मः ३)
सतिगुरु सेवै सो जनु लेखै ॥ (१२९-४, माझ, मः ३)
नानक नामु वसै घट अंतरि गुर किरपा ते पावणिआ ॥८॥३१॥३२॥ (१२९-५, माझ, मः ३)
माझ महला ३ ॥ (१२९-५)
माइआ मोहु जगतु सबाइआ ॥ (१२९-६, माझ, मः ३)
त्रै गुण दीसहि मोहे माइआ ॥ (१२९-६, माझ, मः ३)
गुर परसादी को विरला बूझै चउथै पदि लिव लावणिआ ॥१॥ (१२९-६, माझ, मः ३)
हउ वारी जीउ वारी माइआ मोहु सबदि जलावणिआ ॥ (१२९-७, माझ, मः ३)
माइआ मोहु जलाए सो हरि सिउ चितु लाए हरि दरि महली सोभा पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२९-७, माझ, मः ३)
देवी देवा मूलु है माइआ ॥ (१२९-८, माझ, मः ३)
सिम्मृति सासत जिंनि उपाइआ ॥ (१२९-९, माझ, मः ३)
कामु क्रोधु पसरिआ संसारे आइ जाइ दुखु पावणिआ ॥२॥ (१२९-९, माझ, मः ३)

तिसु विचि गिआन रतनु इकु पाइआ ॥ (१२६-६, माझ, मः ३)
गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥ (१२६-१०, माझ, मः ३)
जतु सतु संजमु सचु कमावै गुरि पूरै नामु धिआवणिआ ॥३॥ (१२६-१०, माझ, मः ३)
पेईअड़ै धन भरमि भुलाणी ॥ (१२६-११, माझ, मः ३)
दूजै लागी फिरि पछोताणी ॥ (१२६-११, माझ, मः ३)
हलतु पलतु दोवै गवाए सुपनै सुखु न पावणिआ ॥४॥ (१२६-११, माझ, मः ३)
पेईअड़ै धन कंतु समाले ॥ (१२६-१२, माझ, मः ३)
गुर परसादी वेखै नाले ॥ (१२६-१२, माझ, मः ३)
पिर कै सहजि रहै रंगि राती सबदि सिंगारु बणावणिआ ॥५॥ (१२६-१३, माझ, मः ३)
सफलु जनमु जिना सतिगुरु पाइआ ॥ (१२६-१३, माझ, मः ३)
दूजा भाउ गुर सबदि जलाइआ ॥ (१२६-१४, माझ, मः ३)
एको रवि रहिआ घट अंतरि मिलि सतसंगति हरि गुण गावणिआ ॥६॥ (१२६-१४, माझ, मः ३)
सतिगुरु न सेवे सो काहे आइआ ॥ (१२६-१५, माझ, मः ३)
ध्रिगु जीवणु बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (१२६-१५, माझ, मः ३)
मनमुखि नामु चिति न आवै बिनु नावै बहु दुखु पावणिआ ॥७॥ (१२६-१५, माझ, मः ३)
जिनि सिसटि साजी सोई जाणै ॥ (१२६-१६, माझ, मः ३)
आपे मेलै सबदि पछाणै ॥ (१२६-१६, माझ, मः ३)
नानक नामु मिलिआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखावणिआ ॥८॥१॥३२॥३३॥ (१२६-१७, माझ, मः ३)
माझ महला ४ ॥ (१२६-१८)
आदि पुरखु अपरम्परु आपे ॥ (१२६-१८, माझ, मः ४)
आपे थापे थापि उथापे ॥ (१२६-१८, माझ, मः ४)
सभ महि वरतै एको सोई गुरमुखि सोभा पावणिआ ॥१॥ (१२६-१८, माझ, मः ४)
हउ वारी जीउ वारी निरंकारी नामु धिआवणिआ ॥ (१२६-१६, माझ, मः ४)

पन्ना १३०

तिसु रूपु न रेखिआ घटि घटि देखिआ गुरमुखि अलखु लखावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०-१, माझ, मः ४)
तू दइआलु किरपालु प्रभु सोई ॥ (१३०-१, माझ, मः ४)
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (१३०-२, माझ, मः ४)
गुरु परसादु करे नामु देवै नामे नामि समावणिआ ॥२॥ (१३०-२, माझ, मः ४)
तूं आपे सचा सिरजणहारा ॥ (१३०-३, माझ, मः ४)
भगती भरे तेरे भंडारा ॥ (१३०-३, माझ, मः ४)
गुरमुखि नामु मिलै मनु भीजै सहजि समाधि लगावणिआ ॥३॥ (१३०-३, माझ, मः ४)
अनदिनु गुण गावा प्रभ तेरे ॥ (१३०-४, माझ, मः ४)
तुधु सालाही प्रीतम मेरे ॥ (१३०-४, माझ, मः ४)

तुधु बिनु अवरु न कोई जाचा गुर परसादी तूं पावणिआ ॥४॥ (१३०-४, माझ, मः ४)
अगमु अगोचरु मिति नही पाई ॥ (१३०-५, माझ, मः ४)
अपणी कृपा करहि तूं लैहि मिलाई ॥ (१३०-५, माझ, मः ४)
पूरे गुर कै सबदि धिआईऐ सबदु सेवि सुखु पावणिआ ॥५॥ (१३०-६, माझ, मः ४)
रसना गुणवंती गुण गावै ॥ (१३०-६, माझ, मः ४)
नामु सलाहे सचे भावै ॥ (१३०-७, माझ, मः ४)
गुरमुखि सदा रहै रंगि राती मिलि सचे सोभा पावणिआ ॥६॥ (१३०-७, माझ, मः ४)
मनमुखु कर्म करे अहंकारी ॥ (१३०-८, माझ, मः ४)
जूऐ जनमु सभ बाजी हारी ॥ (१३०-८, माझ, मः ४)
अंतरि लोभु महा गुबारा फिरि फिरि आवण जावणिआ ॥७॥ (१३०-८, माझ, मः ४)
आपे करता दे वडिआई ॥ (१३०-९, माझ, मः ४)
जिन कउ आपि लिखतु धुरि पाई ॥ (१३०-९, माझ, मः ४)
नानक नामु मिलै भउ भंजनु गुर सबदी सुखु पावणिआ ॥८॥१॥३४॥ (१३०-९, माझ, मः ४)
माझ महला ५ घरु १ ॥ (१३०-१०)
अंतरि अलखु न जाई लखिआ ॥ (१३०-१०, माझ, मः ५)
नामु रतनु लै गुझा रखिआ ॥ (१३०-११, माझ, मः ५)
अगमु अगोचरु सभ ते ऊचा गुर कै सबदि लखावणिआ ॥१॥ (१३०-११, माझ, मः ५)
हउ वारी जीउ वारी कलि महि नामु सुणावणिआ ॥ (१३०-१२, माझ, मः ५)
संत पिआरे सचै धारे वडभागी दरसनु पावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०-१२, माझ, मः ५)
साधिक सिध जिसै कउ फिरदे ॥ (१३०-१३, माझ, मः ५)
ब्रहमे इंद्र धिआइनि हिरदे ॥ (१३०-१३, माझ, मः ५)
कोटि तेतीसा खोजहि ता कउ गुर मिलि हिरदै गावणिआ ॥२॥ (१३०-१३, माझ, मः ५)
आठ पहर तुधु जापे पवना ॥ (१३०-१४, माझ, मः ५)
धरती सेवक पाइक चरना ॥ (१३०-१४, माझ, मः ५)
खाणी बाणी सर्ब निवासी सभना कै मनि भावणिआ ॥३॥ (१३०-१५, माझ, मः ५)
साचा साहिबु गुरमुखि जापै ॥ (१३०-१५, माझ, मः ५)
पूरे गुर कै सबदि सिञापै ॥ (१३०-१६, माझ, मः ५)
जिन पीआ सेई तृपतासे सचे सचि अघावणिआ ॥४॥ (१३०-१६, माझ, मः ५)
तिसु घरि सहजा सोई सुहेला ॥ (१३०-१६, माझ, मः ५)
अनद बिनोद करे सद केला ॥ (१३०-१७, माझ, मः ५)
सो धनवंता सो वड साहा जो गुर चरणी मनु लावणिआ ॥५॥ (१३०-१७, माझ, मः ५)
पहिलो दे तैं रिजकु समाहा ॥ (१३०-१८, माझ, मः ५)
पिछो दे तैं जंतु उपाहा ॥ (१३०-१८, माझ, मः ५)
तुधु जेवडु दाता अवरु न सुआमी लवै न कोई लावणिआ ॥६॥ (१३०-१८, माझ, मः ५)
जिसु तूं तुठा सो तुधु धिआए ॥ (१३०-१९, माझ, मः ५)

साध जना का मंत्रु कमाए ॥ (१३०-१६, माझ, मः ५)
आपि तरै सगले कुल तारे तिसु दरगह ठाक न पावणिआ ॥७॥ (१३०-१६, माझ, मः ५)

पन्ना १३१

तूं वडा तूं ऊचो ऊचा ॥ (१३१-१, माझ, मः ५)
तूं बेअंतु अति मूचो मूचा ॥ (१३१-१, माझ, मः ५)
हउ कुरबाणी तेरै वंञा नानक दास दसावणिआ ॥८॥१॥३५॥ (१३१-१, माझ, मः ५)
माझ महला ५ ॥ (१३१-२)
कउणु सु मुकता कउणु सु जुगता ॥ (१३१-२, माझ, मः ५)
कउणु सु गिआनी कउणु सु बकता ॥ (१३१-३, माझ, मः ५)
कउणु सु गिरही कउणु उदासी कउणु सु कीमति पाए जीउ ॥१॥ (१३१-३, माझ, मः ५)
किनि बिधि बाधा किनि बिधि छूटा ॥ (१३१-४, माझ, मः ५)
किनि बिधि आवणु जावणु तूटा ॥ (१३१-४, माझ, मः ५)
कउण कर्म कउण निहकरमा कउणु सु कहै कहाए जीउ ॥२॥ (१३१-४, माझ, मः ५)
कउणु सु सुखीआ कउणु सु दुखीआ ॥ (१३१-५, माझ, मः ५)
कउणु सु सनमुखु कउणु वेमुखीआ ॥ (१३१-५, माझ, मः ५)
किनि बिधि मिलीऐ किनि बिधि बिछुरै इह बिधि कउणु प्रगटाए जीउ ॥३॥ (१३१-६, माझ, मः ५)
कउणु सु अखरु जितु धावतु रहता ॥ (१३१-६, माझ, मः ५)
कउणु उपदेसु जितु दुखु सुखु सम सहता ॥ (१३१-७, माझ, मः ५)
कउणु सु चाल जितु पारब्रह्मु धिआए किनि बिधि कीरतनु गाए जीउ ॥४॥ (१३१-७, माझ, मः ५)
गुरमुखि मुकता गुरमुखि जुगता ॥ (१३१-८, माझ, मः ५)
गुरमुखि गिआनी गुरमुखि बकता ॥ (१३१-८, माझ, मः ५)
धन्नु गिरही उदासी गुरमुखि गुरमुखि कीमति पाए जीउ ॥५॥ (१३१-९, माझ, मः ५)
हउमै बाधा गुरमुखि छूटा ॥ (१३१-९, माझ, मः ५)
गुरमुखि आवणु जावणु तूटा ॥ (१३१-९, माझ, मः ५)
गुरमुखि कर्म गुरमुखि निहकरमा गुरमुखि करे सु सुभाए जीउ ॥६॥ (१३१-१०, माझ, मः ५)
गुरमुखि सुखीआ मनमुखि दुखीआ ॥ (१३१-१०, माझ, मः ५)
गुरमुखि सनमुखु मनमुखि वेमुखीआ ॥ (१३१-११, माझ, मः ५)
गुरमुखि मिलीऐ मनमुखि विछुरै गुरमुखि बिधि प्रगटाए जीउ ॥७॥ (१३१-११, माझ, मः ५)
गुरमुखि अखरु जितु धावतु रहता ॥ (१३१-१२, माझ, मः ५)
गुरमुखि उपदेसु दुखु सुखु सम सहता ॥ (१३१-१२, माझ, मः ५)
गुरमुखि चाल जितु पारब्रह्मु धिआए गुरमुखि कीरतनु गाए जीउ ॥८॥ (१३१-१३, माझ, मः ५)
सगली बणत बणाई आपे ॥ (१३१-१३, माझ, मः ५)
आपे करे कराए थापे ॥ (१३१-१४, माझ, मः ५)
इकसु ते होइओ अनंता नानक एकसु माहि समाए जीउ ॥९॥२॥३६॥ (१३१-१४, माझ, मः ५)

माझ महला ५ ॥ (१३१-१५)
प्रभु अबिनासी ता किआ काड़ा ॥ (१३१-१५, माझ, मः ५)
हरि भगवंता ता जनु खरा सुखाला ॥ (१३१-१५, माझ, मः ५)
जीअ प्रान मान सुखदाता तूं करहि सोई सुखु पावणिआ ॥१॥ (१३१-१६, माझ, मः ५)
हउ वारी जीउ वारी गुरमुखि मनि तनि भावणिआ ॥ (१३१-१६, माझ, मः ५)
तूं मेरा परबतु तूं मेरा ओला तुम संगि लवै न लावणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३१-१७, माझ, मः ५)
तेरा कीता जिसु लागै मीठा ॥ (१३१-१७, माझ, मः ५)
घटि घटि पारब्रह्मु तिनि जनि डीठा ॥ (१३१-१८, माझ, मः ५)
थानि थनंतरि तूंहै तूंहै इको इकु वरतावणिआ ॥२॥ (१३१-१८, माझ, मः ५)
सगल मनोरथ तूं देवणहारा ॥ (१३१-१९, माझ, मः ५)
भगती भाइ भरे भंडारा ॥ (१३१-१९, माझ, मः ५)
दइआ धारि राखे तुधु सेई पूरै करमि समावणिआ ॥३॥ (१३१-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १३२

अंध कूप ते कंढै चाड़े ॥ (१३२-१, माझ, मः ५)
करि किरपा दास नदरि निहाले ॥ (१३२-१, माझ, मः ५)
गुण गावहि पूरन अबिनासी कहि सुणि तोटि न आवणिआ ॥४॥ (१३२-२, माझ, मः ५)
ऐथै ओथै तूंहै रखवाला ॥ (१३२-२, माझ, मः ५)
मात गरभ महि तुम ही पाला ॥ (१३२-२, माझ, मः ५)
माइआ अगनि न पोहै तिन कउ रंगि रते गुण गावणिआ ॥५॥ (१३२-३, माझ, मः ५)
किआ गुण तेरे आखि समाली ॥ (१३२-३, माझ, मः ५)
मन तन अंतरि तुधु नदरि निहाली ॥ (१३२-४, माझ, मः ५)
तूं मेरा मीतु साजनु मेरा सुआमी तुधु बिनु अवरु न जानणिआ ॥६॥ (१३२-४, माझ, मः ५)
जिस कउ तूं प्रभ भइआ सहाई ॥ (१३२-५, माझ, मः ५)
तिसु तती वाउ न लगै काई ॥ (१३२-५, माझ, मः ५)
तू साहिबु सरणि सुखदाता सतसंगति जपि प्रगटावणिआ ॥७॥ (१३२-५, माझ, मः ५)
तूं ऊच अथाहु अपारु अमोला ॥ (१३२-६, माझ, मः ५)
तूं साचा साहिबु दासु तेरा गोला ॥ (१३२-६, माझ, मः ५)
तूं मीरा साची ठकुराई नानक बलि बलि जावणिआ ॥८॥३॥३७॥ (१३२-७, माझ, मः ५)
माझ महला ५ घरु २ ॥ (१३२-७)
नित नित दयु समालीऐ ॥ (१३२-८, माझ, मः ५)
मूलि न मनहु विसारीऐ ॥ रहाउ ॥ (१३२-८, माझ, मः ५)
संता संगति पाईऐ ॥ (१३२-८, माझ, मः ५)
जितु जम कै पंथि न जाईऐ ॥ (१३२-८, माझ, मः ५)
तोसा हरि का नामु लै तेरे कुलहि न लागै गालि जीउ ॥१॥ (१३२-९, माझ, मः ५)

जो सिमरंदे साँईऐ ॥ (१३२-९, माझ, मः ५)
नरकि न सेई पाईऐ ॥ (१३२-१०, माझ, मः ५)
तती वाउ न लगई जिन मनि वुठा आइ जीउ ॥२॥ (१३२-१०, माझ, मः ५)
सेई सुंदर सोहणे ॥ (१३२-१०, माझ, मः ५)
साधसंगि जिन बैहणे ॥ (१३२-११, माझ, मः ५)
हरि धनु जिनी संजिआ सेई गम्भीर अपार जीउ ॥३॥ (१३२-११, माझ, मः ५)
हरि अमिउ रसाइणु पीवीऐ ॥ (१३२-११, माझ, मः ५)
मुहि डिठै जन कै जीवीऐ ॥ (१३२-१२, माझ, मः ५)
कारज सभि सवारि लै नित पूजहु गुर के पाव जीउ ॥४॥ (१३२-१२, माझ, मः ५)
जो हरि कीता आपणा ॥ (१३२-१३, माझ, मः ५)
तिनहि गुसाई जापणा ॥ (१३२-१३, माझ, मः ५)
सो सूरा प्रधानु सो मसतकि जिस दै भागु जीउ ॥५॥ (१३२-१३, माझ, मः ५)
मन मंधे प्रभु अवगाहीआ ॥ (१३२-१४, माझ, मः ५)
एहि रस भोगण पातिसाहीआ ॥ (१३२-१४, माझ, मः ५)
मंदा मूलि न उपजिओ तरे सची कारै लागि जीउ ॥६॥ (१३२-१४, माझ, मः ५)
करता मंनि वसाइआ ॥ (१३२-१५, माझ, मः ५)
जनमै का फलु पाइआ ॥ (१३२-१५, माझ, मः ५)
मनि भावंदा कंतु हरि तेरा थिरु होआ सोहागु जीउ ॥७॥ (१३२-१५, माझ, मः ५)
अटल पदारथु पाइआ ॥ (१३२-१६, माझ, मः ५)
भै भंजन की सरणाइआ ॥ (१३२-१६, माझ, मः ५)
लाइ अंचलि नानक तारिअनु जिता जनमु अपार जीउ ॥८॥४॥३८॥ (१३२-१६, माझ, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३२-१८)
माझ महला ५ घरु ३ ॥ (१३२-१८)
हरि जपि जपे मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२-१९, माझ, मः ५)
सिमरि सिमरि गुरदेउ मिटि गए भै दूरे ॥१॥ (१३२-१९, माझ, मः ५)
सरनि आवै पारब्रह्म की ता फिरि काहे झूरे ॥२॥ (१३२-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १३३

चरन सेव संत साध के सगल मनोरथ पूरे ॥३॥ (१३३-१, माझ, मः ५)
घटि घटि एकु वरतदा जलि थलि महीअलि पूरे ॥४॥ (१३३-२, माझ, मः ५)
पाप बिनासनु सेविआ पवित्र संतन की धूरे ॥५॥ (१३३-२, माझ, मः ५)
सभ छडाई खसमि आपि हरि जपि भई ठरूरे ॥६॥ (१३३-३, माझ, मः ५)
करतै कीआ तपावसो दुसट मुए होइ मूरे ॥७॥ (१३३-३, माझ, मः ५)
नानक रता सचि नाइ हरि वेखै सदा हजूरे ॥८॥५॥३९॥१॥३२॥१॥५॥३९॥ (१३३-४, माझ, मः ५)
बारह माहा माँझ महला ५ घरु ४ (१३३-५)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३३-५)
किरति कर्म के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ (१३३-६, माझ, मः ५)
चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ (१३३-६, माझ, मः ५)
धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ (१३३-७, माझ, मः ५)
जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ (१३३-७, माझ, मः ५)
हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ (१३३-७, माझ, मः ५)
जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ (१३३-८, माझ, मः ५)
स्रब सीगार तम्बोल रस सणु देही सभ खाम ॥ (१३३-९, माझ, मः ५)
प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥ (१३३-९, माझ, मः ५)
नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ (१३३-१०, माझ, मः ५)
हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥ (१३३-१०, माझ, मः ५)
चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥ (१३३-११, माझ, मः ५)
संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ (१३३-११, माझ, मः ५)
जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥ (१३३-१२, माझ, मः ५)
इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ (१३३-१२, माझ, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ (१३३-१३, माझ, मः ५)
सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ (१३३-१३, माझ, मः ५)
जिनी राविआ सो प्रभू तिन्ना भागु मणा ॥ (१३३-१४, माझ, मः ५)
हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ (१३३-१४, माझ, मः ५)
चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥ (१३३-१५, माझ, मः ५)
वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ (१३३-१५, माझ, मः ५)
हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ (१३३-१६, माझ, मः ५)
पुत्र कलत्र न संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ (१३३-१६, माझ, मः ५)
पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ (१३३-१७, माझ, मः ५)
इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ (१३३-१७, माझ, मः ५)
दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥ (१३३-१८, माझ, मः ५)
प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निर्मल सोइ ॥ (१३३-१८, माझ, मः ५)

पन्ना १३४

नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ (१३४-१, माझ, मः ५)
वैसाखु सुहावा ताँ लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥ (१३४-१, माझ, मः ५)
हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ (१३४-२, माझ, मः ५)
हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥ (१३४-२, माझ, मः ५)
माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ (१३४-३, माझ, मः ५)
रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ (१३४-३, माझ, मः ५)

जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ (१३४-३, माझ, मः ५)
जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥ (१३४-४, माझ, मः ५)
आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि किउ रोवंनि ॥ (१३४-४, माझ, मः ५)
साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ (१३४-५, माझ, मः ५)
हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥ (१३४-५, माझ, मः ५)
आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिन्ना पासि ॥ (१३४-६, माझ, मः ५)
जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ (१३४-६, माझ, मः ५)
दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ (१३४-७, माझ, मः ५)
जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ (१३४-७, माझ, मः ५)
रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ (१३४-८, माझ, मः ५)
जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ (१३४-८, माझ, मः ५)
करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ (१३४-९, माझ, मः ५)
प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ (१३४-९, माझ, मः ५)
आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥ (१३४-१०, माझ, मः ५)
सावणि सरसी कामणी चरन कमल सिउ पिआरु ॥ (१३४-१०, माझ, मः ५)
मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ (१३४-११, माझ, मः ५)
बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ (१३४-११, माझ, मः ५)
हरि अमृत बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ (१३४-१२, माझ, मः ५)
वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ सम्म्रथ पुरख अपारु ॥ (१३४-१२, माझ, मः ५)
हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ (१३४-१३, माझ, मः ५)
जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ (१३४-१३, माझ, मः ५)
नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ (१३४-१४, माझ, मः ५)
सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥ (१३४-१४, माझ, मः ५)
भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ (१३४-१५, माझ, मः ५)
लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ (१३४-१५, माझ, मः ५)
जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ (१३४-१६, माझ, मः ५)
पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥ (१३४-१६, माझ, मः ५)
छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥ (१३४-१७, माझ, मः ५)
हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ (१३४-१७, माझ, मः ५)
जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ (१३४-१८, माझ, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ (१३४-१८, माझ, मः ५)
से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥ (१३४-१९, माझ, मः ५)
असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ (१३४-१९, माझ, मः ५)

मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ (१३५-१, माझ, मः ५)
संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥ (१३५-१, माझ, मः ५)
विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ (१३५-२, माझ, मः ५)
जिन्नी चाखिआ प्रेम रसु से तृपति रहे आघाइ ॥ (१३५-२, माझ, मः ५)
आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ (१३५-३, माझ, मः ५)
जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ (१३५-३, माझ, मः ५)
प्रभ विणु दूजा को नही नानक हरि सरणाइ ॥ (१३५-४, माझ, मः ५)
असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥ (१३५-४, माझ, मः ५)
कतिकि कर्म कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ (१३५-५, माझ, मः ५)
परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥ (१३५-५, माझ, मः ५)
वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ (१३५-६, माझ, मः ५)
खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ (१३५-६, माझ, मः ५)
विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ (१३५-७, माझ, मः ५)
कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ (१३५-७, माझ, मः ५)
वडभागी मेरा प्रभु मिलै ताँ उतरहि सभि बिओग ॥ (१३५-७, माझ, मः ५)
नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ (१३५-८, माझ, मः ५)
कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥९॥ (१३५-८, माझ, मः ५)
मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ (१३५-९, माझ, मः ५)
तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ (१३५-९, माझ, मः ५)
तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध सहेलड़ीआह ॥ (१३५-१०, माझ, मः ५)
साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ (१३५-१०, माझ, मः ५)
तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ (१३५-११, माझ, मः ५)
जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ (१३५-११, माझ, मः ५)
रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ (१३५-१२, माझ, मः ५)
नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ (१३५-१३, माझ, मः ५)
मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥ (१३५-१३, माझ, मः ५)
पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ (१३५-१४, माझ, मः ५)
मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ (१३५-१४, माझ, मः ५)
ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ (१३५-१५, माझ, मः ५)
बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ (१३५-१५, माझ, मः ५)
जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ (१३५-१६, माझ, मः ५)
करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ (१३५-१६, माझ, मः ५)
बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ (१३५-१७, माझ, मः ५)

सर्म पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥ (१३५-१७, माझ, मः ५)
पोखु सोहंदा सर्ब सुख जिसु बखसे वेपरवाहु ॥११॥ (१३५-१८, माझ, मः ५)
माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥ (१३५-१८, माझ, मः ५)
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥ (१३५-१९, माझ, मः ५)
जनम कर्म मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ (१३५-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १३६

कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ (१३६-१, माझ, मः ५)
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥ (१३६-१, माझ, मः ५)
अठसठि तीर्थ सगल पुन्न जीअ दइआ परवानु ॥ (१३६-२, माझ, मः ५)
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥ (१३६-२, माझ, मः ५)
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ (१३६-३, माझ, मः ५)
माघि सुचे से काँढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥१२॥ (१३६-३, माझ, मः ५)
फलगुणि अनंद उपारजना हरि सजण प्रगटे आइ ॥ (१३६-४, माझ, मः ५)
संत सहाई राम के करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ (१३६-४, माझ, मः ५)
सेज सुहावी सर्ब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ (१३६-५, माझ, मः ५)
इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ (१३६-५, माझ, मः ५)
मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ (१३६-६, माझ, मः ५)
हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ (१३६-६, माझ, मः ५)
हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ (१३६-७, माझ, मः ५)
संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥ (१३६-७, माझ, मः ५)
जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ (१३६-८, माझ, मः ५)
फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३॥ (१३६-८, माझ, मः ५)
जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥ (१३६-९, माझ, मः ५)
हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ (१३६-१०, माझ, मः ५)
सर्ब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ (१३६-१०, माझ, मः ५)
प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ (१३६-११, माझ, मः ५)
कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥ (१३६-११, माझ, मः ५)
पारब्रह्मु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥ (१३६-११, माझ, मः ५)
माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ (१३६-१२, माझ, मः ५)
नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥ (१३६-१२, माझ, मः ५)
माझ महला ५ दिन रैणि (१३६-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३६-१४)
सेवी सतिगुरु आपणा हरि सिमरी दिन सभि रैण ॥ (१३६-१५, माझ, मः ५)
आपु तिआगि सरणी पवाँ मुखि बोली मिठड़े वैण ॥ (१३६-१५, माझ, मः ५)

जनम जनम का विछुड़िआ हरि मेलहु सजणु सैण ॥ (१३६-१६, माझ, मः ५)
जो जीअ हरि ते विछुड़े से सुखि न वसनि भैण ॥ (१३६-१६, माझ, मः ५)
हरि पिर बिनु चैनु न पाईऐ खोजि डिठे सभि गैण ॥ (१३६-१६, माझ, मः ५)
आप कमाणै विछुड़ी दोसु न काहू देण ॥ (१३६-१७, माझ, मः ५)
करि किरपा प्रभ राखि लेहु होरु नाही करण करेण ॥ (१३६-१७, माझ, मः ५)
हरि तुधु विणु खाकू रूलणा कहीऐ किथै वैण ॥ (१३६-१८, माझ, मः ५)
नानक की बेनंतीआ हरि सुरजनु देखा नैण ॥१॥ (१३६-१८, माझ, मः ५)
जीअ की बिरथा सो सुणे हरि सम्मृथ पुरखु अपारु ॥ (१३६-१९, माझ, मः ५)
मरणि जीवणि आराधणा सभना का आधारु ॥ (१३६-१९, माझ, मः ५)

पन्ना १३७

ससुरै पेईऐ तिसु कंत की वडा जिसु परवारु ॥ (१३७-१, माझ, मः ५)
ऊचा अगम अगाधि बोध किछु अंतु न पारावारु ॥ (१३७-१, माझ, मः ५)
सेवा सा तिसु भावसी संता की होइ छारु ॥ (१३७-२, माझ, मः ५)
दीना नाथ दैआल देव पतित उधारणहारु ॥ (१३७-२, माझ, मः ५)
आदि जुगादी रखदा सचु नामु करतारु ॥ (१३७-३, माझ, मः ५)
कीमति कोइ न जाणई को नाही तोलणहारु ॥ (१३७-३, माझ, मः ५)
मन तन अंतरि वसि रहे नानक नही सुमारु ॥ (१३७-४, माझ, मः ५)
दिनु रैणि जि प्रभ कंउ सेवदे तिन कै सद बलिहार ॥२॥ (१३७-४, माझ, मः ५)
संत अराधनि सद सदा सभना का बखसिंदु ॥ (१३७-५, माझ, मः ५)
जीउ पिंडु जिनि साजिआ करि किरपा दितीनु जिंदु ॥ (१३७-५, माझ, मः ५)
गुर सबदी आराधीऐ जपीऐ निर्मल मंतु ॥ (१३७-६, माझ, मः ५)
कीमति कहणु न जाईऐ परमेसुरु बेअंतु ॥ (१३७-६, माझ, मः ५)
जिसु मनि वसै नराइणो सो कहीऐ भगवंतु ॥ (१३७-६, माझ, मः ५)
जीअ की लोचा पूरीऐ मिलै सुआमी कंतु ॥ (१३७-७, माझ, मः ५)
नानकु जीवै जपि हरी दोख सभे ही हंतु ॥ (१३७-७, माझ, मः ५)
दिनु रैणि जिसु न विसरै सो हरिआ होवै जंतु ॥३॥ (१३७-८, माझ, मः ५)
सर्ब कला प्रभ पूरणो मंञु निमाणी थाउ ॥ (१३७-८, माझ, मः ५)
हरि ओट गही मन अंदरे जपि जपि जीवाँ नाउ ॥ (१३७-९, माझ, मः ५)
करि किरपा प्रभ आपणी जन धूड़ी संगि समाउ ॥ (१३७-९, माझ, मः ५)
जिउ तूं राखहि तिउ रहा तेरा दिता पैना खाउ ॥ (१३७-१०, माझ, मः ५)
उदमु सोई कराइ प्रभ मिलि साधू गुण गाउ ॥ (१३७-१०, माझ, मः ५)
दूजी जाइ न सुझई किथै कूकण जाउ ॥ (१३७-१०, माझ, मः ५)
अगिआन बिनासन तम हरण ऊचे अगम अमाउ ॥ (१३७-११, माझ, मः ५)
मनु विछुड़िआ हरि मेलीऐ नानक एहु सुआउ ॥ (१३७-११, माझ, मः ५)

सर्ब कलिआणा तितु दिनि हरि परसी गुर के पाउ ॥४॥१॥ (१३७-१२, माझ, मः ५)
वार माझ की तथा सलोक महला १ मलक मुरीद तथा चंद्रहड़ा सोहीआ की धुनी गावणी ॥ (१३७-१३)
ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (१३७-१४)
सलोकु मः १ ॥ (१३७-१५)
गुरु दाता गुरु हिवै घरु गुरु दीपकु तिह लोइ ॥ (१३७-१५, माझ, मः १)
अमर पदारथु नानका मनि मानिऐ सुखु होइ ॥१॥ (१३७-१६, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१३७-१६)
पहिलै पिआरि लगा थण दुधि ॥ (१३७-१६, माझ, मः १)
दूजै माइ बाप की सुधि ॥ (१३७-१६, माझ, मः १)
तीजै भया भाभी बेब ॥ (१३७-१७, माझ, मः १)
चउथै पिआरि उपन्नी खेड ॥ (१३७-१७, माझ, मः १)
पंजवै खाण पीअण की धातु ॥ (१३७-१७, माझ, मः १)
छिवै कामु न पुछै जाति ॥ (१३७-१८, माझ, मः १)
सतवै संजि कीआ घर वासु ॥ (१३७-१८, माझ, मः १)
अठवै क्रोधु होआ तन नासु ॥ (१३७-१८, माझ, मः १)
नावै धउले उभे साह ॥ (१३७-१८, माझ, मः १)
दसवै दधा होआ सुआह ॥ (१३७-१९, माझ, मः १)
गए सिगीत पुकारी धाह ॥ (१३७-१९, माझ, मः १)
उडिआ हंसु दसाए राह ॥ (१३७-१९, माझ, मः १)

पन्ना १३८

आइआ गइआ मुइआ नाउ ॥ (१३८-१, माझ, मः १)
पिछै पतलि सदिहु काव ॥ (१३८-१, माझ, मः १)
नानक मनमुखि अंधु पिआरु ॥ (१३८-१, माझ, मः १)
बाझु गुरू डुबा संसारु ॥२॥ (१३८-१, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१३८-२)
दस बालतणि बीस रवणि तीसा का सुंदरु कहावै ॥ (१३८-२, माझ, मः १)
चालीसी पुरु होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै ॥ (१३८-२, माझ, मः १)
सतरि का मतिहीणु असीहाँ का विउहारु न पावै ॥ (१३८-३, माझ, मः १)
नवै का सिहजासणी मूलि न जाणै अप बलु ॥ (१३८-३, माझ, मः १)
ढंढोलिमु ढूढिमु डिठु मै नानक जगु धूए का धवलहरु ॥३॥ (१३८-४, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१३८-५)
तूं करता पुरखु अगम्मु है आपि सृसटि उपाती ॥ (१३८-५, माझ, मः १)
रंग परंग उपारजना बहु बहु बिधि भाती ॥ (१३८-५, माझ, मः १)
तूं जाणहि जिनि उपाईऐ सभु खेलु तुमाती ॥ (१३८-६, माझ, मः १)

इकि आवहि इकि जाहि उठि बिनु नावै मरि जाती ॥ (१३८-६, माझ, मः १)
गुरमुखि रंगि चलूलिआ रंगि हरि रंगि राती ॥ (१३८-७, माझ, मः १)
सो सेवहु सति निरंजनो हरि पुरखु बिधाती ॥ (१३८-७, माझ, मः १)
तूं आपे आपि सुजाणु है वड पुरखु वडाती ॥ (१३८-७, माझ, मः १)
जो मनि चिति तुधु धिआइदे मेरे सचिआ बलि बलि हउ तिन जाती ॥१॥ (१३८-८, माझ, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१३८-९)
जीउ पाइ तनु साजिआ रखिआ बणत बणाइ ॥ (१३८-९, माझ, मः १)
अखी देखै जिहवा बोलै कन्नी सुरति समाइ ॥ (१३८-९, माझ, मः १)
पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ॥ (१३८-१०, माझ, मः १)
जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ (१३८-१०, माझ, मः १)
जा भजै ता ठीकरु होवै घाड़त घड़ी न जाइ ॥ (१३८-११, माझ, मः १)
नानक गुर बिनु नाहि पति पति विणु पारि न पाइ ॥१॥ (१३८-११, माझ, मः १)
मः २ ॥ (१३८-१२)
देंदे थावहु दिता चंगा मनमुखि ऐसा जाणीऐ ॥ (१३८-१२, माझ, मः २)
सुरति मति चतुराई ता की किआ करि आखि वखाणीऐ ॥ (१३८-१२, माझ, मः २)
अंतरि बहि कै कर्म कमावै सो चहु कुंडी जाणीऐ ॥ (१३८-१३, माझ, मः २)
जो धरमु कमावै तिसु धर्म नाउ होवै पापि कमाणै पापी जाणीऐ ॥ (१३८-१३, माझ, मः २)
तूं आपे खेल करहि सभि करते किआ दूजा आखि वखाणीऐ ॥ (१३८-१४, माझ, मः २)
जिचरु तेरी जोति तिचरु जोती विचि तूं बोलहि विणु जोती कोई किछु करिहु दिखा सिआणीऐ ॥ (१३८-१५, माझ, मः २)
नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि इको सुघड़ु सुजाणीऐ ॥२॥ (१३८-१५, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१३८-१६)
तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे धंधै लाइआ ॥ (१३८-१६, माझ, मः २)
मोह ठगउली पाइ कै तुधु आपहु जगतु खुआइआ ॥ (१३८-१७, माझ, मः २)
तिसना अंदरि अगनि है नह तिपतै भुखा तिहाइआ ॥ (१३८-१७, माझ, मः २)
सहसा इहु संसारु है मरि जम्मै आइआ जाइआ ॥ (१३८-१८, माझ, मः २)
बिनु सतिगुर मोहु न तुटई सभि थके कर्म कमाइआ ॥ (१३८-१८, माझ, मः २)
गुरमती नामु धिआईऐ सुखि रजा जा तुधु भाइआ ॥ (१३८-१९, माझ, मः २)
कुलु उधारे आपणा धन्नु जणेदी माइआ ॥ (१३८-१९, माझ, मः २)

पन्ना १३९

सोभा सुरति सुहावणी जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥२॥ (१३९-१, माझ, मः २)
सलोकु मः २ ॥ (१३९-२)
अखी बाझहु वेखणा विणु कन्ना सुनणा ॥ (१३९-२, माझ, मः २)
पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा ॥ (१३९-२, माझ, मः २)

जीभै बाझहु बोलणा इउ जीवत मरणा ॥ (१३६-२, माझ, मः २)
नानक हुकमु पछाणि कै तउ खसमै मिलणा ॥१॥ (१३६-३, माझ, मः २)
मः २ ॥ (१३६-३)
दिसै सुणीऐ जाणीऐ साउ न पाइआ जाइ ॥ (१३६-३, माझ, मः २)
रुहला टुंडा अंधुला किउ गलि लगै धाइ ॥ (१३६-४, माझ, मः २)
भै के चरण कर भाव के लोइण सुरति करेइ ॥ (१३६-४, माझ, मः २)
नानकु कहै सिआणीए इव कंत मिलावा होइ ॥२॥ (१३६-५, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१३६-५)
सदा सदा तूं एकु है तुधु दूजा खेलु रचाइआ ॥ (१३६-५, माझ, मः २)
हउमै गरबु उपाइ कै लोभु अंतरि जंता पाइआ ॥ (१३६-६, माझ, मः २)
जिउ भावै तिउ रखु तू सभ करे तेरा कराइआ ॥ (१३६-६, माझ, मः २)
इकना बखसहि मेलि लैहि गुरमती तुधै लाइआ ॥ (१३६-७, माझ, मः २)
इकि खड़े करहि तेरी चाकरी विणु नावै होरु न भाइआ ॥ (१३६-७, माझ, मः २)
होरु कार वेकार है इकि सची कारै लाइआ ॥ (१३६-८, माझ, मः २)
पुतु कलतु कुटम्बु है इकि अलिपतु रहे जो तुधु भाइआ ॥ (१३६-८, माझ, मः २)
ओहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचै नाइ समाइआ ॥३॥ (१३६-६, माझ, मः २)
सलोकु मः १ ॥ (१३६-१०)
सुइने कै परबति गुफा करी कै पाणी पइआलि ॥ (१३६-१०, माझ, मः १)
कै विचि धरती कै आकासी उरधि रहा सिरि भारि ॥ (१३६-१०, माझ, मः १)
पुरु करि काइआ कपड़ु पहिरा धोवा सदा कारि ॥ (१३६-११, माझ, मः १)
बगा रता पीअला काला बेदा करी पुकार ॥ (१३६-११, माझ, मः १)
होइ कुचीलु रहा मलु धारी दुरमति मति विकार ॥ (१३६-१२, माझ, मः १)
ना हउ ना मै ना हउ होवा नानक सबदु वीचारि ॥१॥ (१३६-१२, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१३६-१३)
वसत्र पखालि पखाले काइआ आपे संजमि होवै ॥ (१३६-१३, माझ, मः १)
अंतरि मैलु लगी नही जाणै बाहरहु मलि मलि धोवै ॥ (१३६-१३, माझ, मः १)
अंधा भूलि पइआ जम जाले ॥ (१३६-१४, माझ, मः १)
वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ (१३६-१४, माझ, मः १)
नानक गुरमुखि हउमै तुटै ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ (१३६-१५, माझ, मः १)
नामु जपे नामो आराधे नामे सुखि समावै ॥२॥ (१३६-१५, माझ, मः १)
पवड़ी ॥ (१३६-१६)
काइआ हंसि संजोगु मेलि मिलाइआ ॥ (१३६-१६, माझ, मः १)
तिन ही कीआ विजोगु जिनि उपाइआ ॥ (१३६-१६, माझ, मः १)
मूरखु भोगे भोगु दुख सबाइआ ॥ (१३६-१७, माझ, मः १)
सुखहु उठे रोग पाप कमाइआ ॥ (१३६-१७, माझ, मः १)

हरखहु सोगु विजोगु उपाइ खपाइआ ॥ (१३६-१७, माझ, मः १)
मूरख गणत गणाइ झगड़ा पाइआ ॥ (१३६-१८, माझ, मः १)
सतिगुर हथि निबेड़ु झगड़ु चुकाइआ ॥ (१३६-१८, माझ, मः १)
करता करे सु होगु न चलै चलाइआ ॥४॥ (१३६-१६, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१३६-१६)
कूड़ु बोलि मुरदारु खाइ ॥ (१३६-१६, माझ, मः १)

पन्ना १४०

अवरी नो समझावणि जाइ ॥ (१४०-१, माझ, मः १)
मुठा आपि मुहाए साथै ॥ (१४०-१, माझ, मः १)
नानक ऐसा आगू जापै ॥१॥ (१४०-१, माझ, मः १)
महला ४ ॥ (१४०-१)
जिस दै अंदरि सचु है सो सचा नामु मुखि सचु अलाए ॥ (१४०-२, माझ, मः ४)
ओहु हरि मारगि आपि चलदा होरना नो हरि मारगि पाए ॥ (१४०-२, माझ, मः ४)
जे अगै तीरथु होइ ता मलु लहै छपड़ि नातै सगवी मलु लाए ॥ (१४०-३, माझ, मः ४)
तीरथु पूरा सतिगुरू जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआए ॥ (१४०-३, माझ, मः ४)
ओहु आपि छुटा कुटम्ब सिउ दे हरि हरि नामु सभ सृसटि छडाए ॥ (१४०-४, माझ, मः ४)
जन नानक तिसु बलिहारणै जो आपि जपै अवरा नामु जपाए ॥२॥ (१४०-५, माझ, मः ४)
पउड़ी ॥ (१४०-५)
इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंडि वासा ॥ (१४०-५, माझ, मः ४)
इकि भगवा वेसु करि फिरहि जोगी संनिआसा ॥ (१४०-६, माझ, मः ४)
अंदरि तृसना बहुतु छादन भोजन की आसा ॥ (१४०-६, माझ, मः ४)
बिरथा जनमु गवाइ न गिरही न उदासा ॥ (१४०-७, माझ, मः ४)
जमकालु सिरहु न उतरै तृबिधि मनसा ॥ (१४०-७, माझ, मः ४)
गुरमती कालु न आवै नेड़ै जा होवै दासनि दासा ॥ (१४०-८, माझ, मः ४)
सचा सबदु सचु मनि घर ही माहि उदासा ॥ (१४०-८, माझ, मः ४)
नानक सतिगुरु सेवनि आपणा से आसा ते निरासा ॥५॥ (१४०-८, माझ, मः ४)
सलोकु मः १ ॥ (१४०-६)
जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥ (१४०-६, माझ, मः १)
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमलु चीतु ॥ (१४०-१०, माझ, मः १)
नानक नाउ खुदाइ का दिलि हछै मुखि लेहु ॥ (१४०-१०, माझ, मः १)
अवरि दिवाजे दुनी के झूठे अमल करेहु ॥१॥ (१४०-११, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४०-११)
जा हउ नाही ता किआ आखा किहु नाही किआ होवा ॥ (१४०-११, माझ, मः १)
कीता करणा कहिआ कथना भरिआ भरि भरि धोवाँ ॥ (१४०-१२, माझ, मः १)

आपि न बुझा लोक बुझाई ऐसा आगू होवाँ ॥ (१४०-१२, माझ, मः १)
नानक अंधा होइ कै दसे राहै सभसु मुहाए साथै ॥ (१४०-१३, माझ, मः १)
अगै गइआ मुहे मुहि पाहि सु ऐसा आगू जापै ॥२॥ (१४०-१३, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४०-१४)
माहा रुती सभ तूं घड़ी मूरत वीचारा ॥ (१४०-१४, माझ, मः १)
तूं गणतै किनै न पाइओ सचे अलख अपारा ॥ (१४०-१४, माझ, मः १)
पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥ (१४०-१५, माझ, मः १)
नाउ पड़ीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती वीचारा ॥ (१४०-१५, माझ, मः १)
गुरमती नामु धनु खटिआ भगती भरे भंडारा ॥ (१४०-१६, माझ, मः १)
निरमलु नामु मंनिआ दरि सचै सचिआरा ॥ (१४०-१६, माझ, मः १)
जिस दा जीउ पराणु है अंतरि जोति अपारा ॥ (१४०-१७, माझ, मः १)
सचा साहु इकु तूं होरु जगतु वणजारा ॥६॥ (१४०-१७, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४०-१८)
मिहर मसीति सिदकु मुसला हकु हलालु कुराणु ॥ (१४०-१८, माझ, मः १)
सरम सुन्नति सीलु रोजा होहु मुसलमाणु ॥ (१४०-१८, माझ, मः १)
करणी काबा सचु पीरु कलमा करम निवाज ॥ (१४०-१९, माझ, मः १)
तसबी सा तिसु भावसी नानक रखै लाज ॥१॥ (१४०-१९, माझ, मः १)

पन्ना १४१

मः १ ॥ (१४१-१)
हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥ (१४१-१, माझ, मः १)
गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाइ ॥ (१४१-१, माझ, मः १)
गली भिसति न जाईऐ छुटै सचु कमाइ ॥ (१४१-२, माझ, मः १)
मारण पाहि हराम महि होइ हलालु न जाइ ॥ (१४१-२, माझ, मः १)
नानक गली कूड़ीई कूड़ो पलै पाइ ॥२॥ (१४१-३, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४१-३)
पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ (१४१-३, माझ, मः १)
पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ (१४१-४, माझ, मः १)
चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ (१४१-४, माझ, मः १)
करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ (१४१-५, माझ, मः १)
नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥३॥ (१४१-५, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४१-६)
इकि रतन पदारथ वणजदे इकि कचै दे वापारा ॥ (१४१-६, माझ, मः १)
सतिगुरि तुठै पाईअनि अंदरि रतन भंडारा ॥ (१४१-६, माझ, मः १)
विणु गुर किनै न लधिआ अंधे भउकि मुए कूड़िआरा ॥ (१४१-७, माझ, मः १)

मनमुख दूजै पचि मुए ना बूझहि वीचारा ॥ (१४१-७, माझ, मः १)
इकसु बाझहु दूजा को नही किसु अगै करहि पुकारा ॥ (१४१-८, माझ, मः १)
इकि निर्धन सदा भउकदे इकना भरे तुजारा ॥ (१४१-८, माझ, मः १)
विणु नावै होरु धनु नाही होरु बिखिआ सभु छारा ॥ (१४१-९, माझ, मः १)
नानक आपि कराए करे आपि हुकमि सवारणहारा ॥७॥ (१४१-९, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४१-१०)
मुसलमाणु कहावणु मुसकलु जा होइ ता मुसलमाणु कहावै ॥ (१४१-१०, माझ, मः १)
अवलि अउलि दीनु करि मिठा मसकल माना मालु मुसावै ॥ (१४१-११, माझ, मः १)
होइ मुसलिमु दीन मुहाणै मरण जीवण का भरमु चुकावै ॥ (१४१-११, माझ, मः १)
रब की रजाइ मन्ने सिर उपरि करता मन्ने आपु गवावै ॥ (१४१-१२, माझ, मः १)
तउ नानक सर्ब जीआ मिहरम्मति होइ त मुसलमाणु कहावै ॥१॥ (१४१-१२, माझ, मः १)
महला ४ ॥ (१४१-१३)
परहरि काम क्रोधु झूठु निंदा तजि माइआ अहंकारु चुकावै ॥ (१४१-१३, माझ, मः ४)
तजि कामु कामिनी मोहु तजै ता अंजन माहि निरंजनु पावै ॥ (१४१-१४, माझ, मः ४)
तजि मानु अभिमानु प्रीति सुत दारा तजि पिआस आस राम लिव लावै ॥ (१४१-१४, माझ, मः ४)
नानक साचा मनि वसै साच सबदि हरि नामि समावै ॥२॥ (१४१-१५, माझ, मः ४)
पउड़ी ॥ (१४१-१६)
राजे रयति सिकदार कोइ न रहसीओ ॥ (१४१-१६, माझ, मः ४)
हट पटण बाजार हुकमी ढहसीओ ॥ (१४१-१६, माझ, मः ४)
पके बंक दुआर मूरखु जाणै आपणे ॥ (१४१-१७, माझ, मः ४)
दरबि भरे भंडार रीते इकि खणे ॥ (१४१-१७, माझ, मः ४)
ताजी रथ तुखार हाथी पाखरे ॥ (१४१-१७, माझ, मः ४)
बाग मिलख घर बार किथै सि आपणे ॥ (१४१-१८, माझ, मः ४)
तम्बू पलंघ निवार सराइचे लालती ॥ (१४१-१८, माझ, मः ४)
नानक सच दातारु सिनाखतु कुदरती ॥८॥ (१४१-१८, माझ, मः ४)
सलोकु मः १ ॥ (१४१-१९)
नदीआ होवहि धेणवा सुम्म होवहि दुधु घीउ ॥ (१४१-१९, माझ, मः १)
सगली धरती सकर होवै खुसी करे नित जीउ ॥ (१४१-१९, माझ, मः १)

पन्ना १४२

परबतु सुइना रुपा होवै हीरे लाल जड़ाउ ॥ (१४२-१, माझ, मः १)
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥१॥ (१४२-१, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४२-२)
भार अठारह मेवा होवै गरुड़ा होइ सुआउ ॥ (१४२-२, माझ, मः १)
चंदु सूरजु दुइ फिरदे रखीअहि निहचलु होवै थाउ ॥ (१४२-२, माझ, मः १)

भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥२॥ (१४२-३, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४२-३)
जे देहै दुखु लाईऐ पाप गरह दुइ राहु ॥ (१४२-३, माझ, मः १)
रतु पीणे राजे सिरै उपरि रखीअहि एवै जापै भाउ ॥ (१४२-४, माझ, मः १)
भी तूंहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥३॥ (१४२-४, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४२-५)
अगी पाला कपड़ु होवै खाणा होवै वाउ ॥ (१४२-५, माझ, मः १)
सुरगै दीआ मोहणीआ इसतरीआ होवनि नानक सभो जाउ ॥ (१४२-५, माझ, मः १)
भी तूहै सालाहणा आखण लहै न चाउ ॥४॥ (१४२-६, माझ, मः १)
पवड़ी ॥ (१४२-६)
बदफैली गैबाना खसमु न जाणई ॥ (१४२-६, माझ, मः १)
सो कहीऐ देवाना आपु न पछाणई ॥ (१४२-७, माझ, मः १)
कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ (१४२-७, माझ, मः १)
विणु नावै वेकारि भरमे पचीऐ ॥ (१४२-८, माझ, मः १)
राह दोवै इकु जाणै सोई सिझसी ॥ (१४२-८, माझ, मः १)
कुफर गोअ कुफराणै पइआ दझसी ॥ (१४२-८, माझ, मः १)
सभ दुनीआ सुबहानु सचि समाईऐ ॥ (१४२-९, माझ, मः १)
सिझै दरि दीवानि आपु गवाईऐ ॥९॥ (१४२-९, माझ, मः १)
मः १ सलोकु ॥ (१४२-९)
सो जीविआ जिसु मनि वसिआ सोइ ॥ (१४२-१०, माझ, मः १)
नानक अवरु न जीवै कोइ ॥ (१४२-१०, माझ, मः १)
जे जीवै पति लथी जाइ ॥ (१४२-१०, माझ, मः १)
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (१४२-१०, माझ, मः १)
राजि रंगु मालि रंगु ॥ (१४२-११, माझ, मः १)
रंगि रता नचै नंगु ॥ (१४२-११, माझ, मः १)
नानक ठगिआ मुठा जाइ ॥ (१४२-११, माझ, मः १)
विणु नावै पति गइआ गवाइ ॥१॥ (१४२-११, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४२-१२)
किआ खाधै किआ पैधै होइ ॥ (१४२-१२, माझ, मः १)
जा मनि नाही सचा सोइ ॥ (१४२-१२, माझ, मः १)
किआ मेवा किआ घिउ गुड़ु मिठा किआ मैदा किआ मासु ॥ (१४२-१२, माझ, मः १)
किआ कपड़ु किआ सेज सुखाली कीजहि भोग बिलास ॥ (१४२-१३, माझ, मः १)
किआ लसकर किआ नेब खवासी आवै महली वासु ॥ (१४२-१४, माझ, मः १)
नानक सचे नाम विणु सभे टोल विणासु ॥२॥ (१४२-१४, माझ, मः १)
पवड़ी ॥ (१४२-१५)

जाती दै किआ हथि सचु परखीऐ ॥ (१४२-१५, माझ, मः १)
महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ॥ (१४२-१५, माझ, मः १)
सचे की सिरकार जुगु जुगु जाणीऐ ॥ (१४२-१५, माझ, मः १)
हुकमु मन्ने सिरदारु दरि दीबाणीऐ ॥ (१४२-१६, माझ, मः १)
फुरमानी है कार खसमि पठाइआ ॥ (१४२-१६, माझ, मः १)
तबलबाज बीचार सबदि सुणाइआ ॥ (१४२-१६, माझ, मः १)
इकि होए असवार इकना साखती ॥ (१४२-१७, माझ, मः १)
इकनी बधे भार इकना ताखती ॥१०॥ (१४२-१७, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४२-१७)
जा पका ता कटिआ रही सु पलरि वाड़ि ॥ (१४२-१८, माझ, मः १)
सणु कीसारा चिथिआ कणु लइआ तनु झाड़ि ॥ (१४२-१८, माझ, मः १)
दुइ पुड़ चकी जोड़ि कै पीसण आइ बहिठु ॥ (१४२-१८, माझ, मः १)
जो दरि रहे सु उबरे नानक अजबु डिठु ॥१॥ (१४२-१९, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४२-१९)
वेखु जि मिठा कटिआ कटि कुटि बधा पाइ ॥ (१४२-१९, माझ, मः १)

पन्ना १४३

खुंढा अंदरि रखि कै देनि सु मल सजाइ ॥ (१४३-१, माझ, मः १)
रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै विललाइ ॥ (१४३-१, माझ, मः १)
भी सो फोगु समालीऐ दिचै अगि जालाइ ॥ (१४३-२, माझ, मः १)
नानक मिठै पतरीऐ वेखहु लोका आइ ॥२॥ (१४३-२, माझ, मः १)
पवड़ी ॥ (१४३-३)
इकना मरणु न चिति आस घणेरिआ ॥ (१४३-३, माझ, मः १)
मरि मरि जम्महि नित किसै न केरिआ ॥ (१४३-३, माझ, मः १)
आपनड़ै मनि चिति कहनि चंगेरिआ ॥ (१४३-४, माझ, मः १)
जमराजै नित नित मनमुख हेरिआ ॥ (१४३-४, माझ, मः १)
मनमुख लूण हाराम किआ न जाणिआ ॥ (१४३-४, माझ, मः १)
बधे करनि सलाम खसम न भाणिआ ॥ (१४३-५, माझ, मः १)
सचु मिलै मुखि नामु साहिब भावसी ॥ (१४३-५, माझ, मः १)
करसनि तखति सलामु लिखिआ पावसी ॥११॥ (१४३-५, माझ, मः १)
मः १ सलोकु ॥ (१४३-६)
मछी तारू किआ करे पंखी किआ आकासु ॥ (१४३-६, माझ, मः १)
पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु ॥ (१४३-६, माझ, मः १)
कुते चंदनु लाईऐ भी सो कुती धातु ॥ (१४३-७, माझ, मः १)
बोला जे समझाईऐ पड़ीअहि सिम्मृति पाठ ॥ (१४३-७, माझ, मः १)

अंधा चानणि रखीऐ दीवे बलहि पचास ॥ (१४३-८, माझ, मः १)
चउणे सुइना पाईऐ चुणि चुणि खावै घासु ॥ (१४३-८, माझ, मः १)
लोहा मारणि पाईऐ ढहै न होइ कपास ॥ (१४३-९, माझ, मः १)
नानक मूरख एहि गुण बोले सदा विणासु ॥१॥ (१४३-९, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४३-१०)
कैहा कंचनु तुटै सारु ॥ (१४३-१०, माझ, मः १)
अगनी गंढु पाए लोहारु ॥ (१४३-१०, माझ, मः १)
गोरी सेती तुटै भतारु ॥ (१४३-१०, माझ, मः १)
पुतंी गंढु पवै संसारि ॥ (१४३-१०, माझ, मः १)
राजा मंगै दितै गंढु पाइ ॥ (१४३-११, माझ, मः १)
भुखिआ गंढु पवै जा खाइ ॥ (१४३-११, माझ, मः १)
काला गंढु नदीआ मीह झोल ॥ (१४३-११, माझ, मः १)
गंढु परीती मिठे बोल ॥ (१४३-११, माझ, मः १)
बेदा गंढु बोले सचु कोइ ॥ (१४३-१२, माझ, मः १)
मुइआ गंढु नेकी सतु होइ ॥ (१४३-१२, माझ, मः १)
एतु गंढि वरतै संसारु ॥ (१४३-१२, माझ, मः १)
मूरख गंढु पवै मुहि मार ॥ (१४३-१२, माझ, मः १)
नानकु आखै एहु बीचारु ॥ (१४३-१३, माझ, मः १)
सिफती गंढु पवै दरबारि ॥२॥ (१४३-१३, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४३-१३)
आपे कुदरति साजि कै आपे करे बीचारु ॥ (१४३-१३, माझ, मः १)
इकि खोटे इकि खरे आपे परखणहारु ॥ (१४३-१४, माझ, मः १)
खरे खजानै पाईअहि खोटे सटीअहि बाहर वारि ॥ (१४३-१४, माझ, मः १)
खोटे सची दरगह सुटीअहि किसु आगै करहि पुकार ॥ (१४३-१५, माझ, मः १)
सतिगुर पिछै भजि पवहि एहा करणी सारु ॥ (१४३-१५, माझ, मः १)
सतिगुरु खोटिअहु खरे करे सबदि सवारणहारु ॥ (१४३-१६, माझ, मः १)
सची दरगह मन्नीअनि गुर कै प्रेम पिआरि ॥ (१४३-१६, माझ, मः १)
गणत तिना दी को किआ करे जो आपि बखसे करतारि ॥१२॥ (१४३-१७, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४३-१८)
हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ ॥ (१४३-१८, माझ, मः १)
मे रवदि बादिसाहा अफजू खुदाइ ॥ (१४३-१८, माझ, मः १)
एक तूही एक तुही ॥१॥ (१४३-१९, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४३-१९)
न देव दानवा नरा ॥ (१४३-१९, माझ, मः १)
न सिध साधिका धरा ॥ (१४३-१९, माझ, मः १)

असति एक दिगरि कुई ॥ (१४३-१६, माझ, मः १)

पन्ना १४४

एक तुई एक तुई ॥२॥ (१४४-१, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४४-१)
न दादे दिहंद आदमी ॥ (१४४-१, माझ, मः १)
न सपत जेर जिमी ॥ (१४४-१, माझ, मः १)
असति एक दिगरि कुई ॥ (१४४-२, माझ, मः १)
एक तुई एक तुई ॥३॥ (१४४-२, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४४-२)
न सूर ससि मंडलो ॥ (१४४-२, माझ, मः १)
न सपत दीप नह जलो ॥ (१४४-२, माझ, मः १)
अन्न पउण थिरु न कुई ॥ (१४४-३, माझ, मः १)
एकु तुई एकु तुई ॥४॥ (१४४-३, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४४-३)
न रिजकु दसत आ कसे ॥ (१४४-३, माझ, मः १)
हमा रा एकु आस वसे ॥ (१४४-३, माझ, मः १)
असति एकु दिगर कुई ॥ (१४४-४, माझ, मः १)
एक तुई एकु तुई ॥५॥ (१४४-४, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४४-४)
परंदए न गिराह जर ॥ (१४४-४, माझ, मः १)
दरखत आब आस कर ॥ (१४४-५, माझ, मः १)
दिहंद सुई ॥ (१४४-५, माझ, मः १)
एक तुई एक तुई ॥६॥ (१४४-५, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४४-५)
नानक लिलारि लिखिआ सोइ ॥ (१४४-५, माझ, मः १)
मेटि न साकै कोइ ॥ (१४४-६, माझ, मः १)
कला धरै हिरै सुई ॥ (१४४-६, माझ, मः १)
एकु तुई एकु तुई ॥७॥ (१४४-६, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४४-६)
सचा तेरा हुकमु गुरमुखि जाणिआ ॥ (१४४-६, माझ, मः १)
गुरमती आपु गवाइ सचु पछाणिआ ॥ (१४४-७, माझ, मः १)
सचु तेरा दरबारु सबदु नीसाणिआ ॥ (१४४-७, माझ, मः १)
सचा सबदु वीचारि सचि समाणिआ ॥ (१४४-८, माझ, मः १)
मनमुख सदा कूड़िआर भरमि भुलाणिआ ॥ (१४४-८, माझ, मः १)

विसटा अंदरि वासु सादु न जाणिआ ॥ (१४४-८, माझ, मः १)
विणु नावै दुखु पाइ आवण जाणिआ ॥ (१४४-९, माझ, मः १)
नानक पारखु आपि जिनि खोटा खरा पछाणिआ ॥१३॥ (१४४-९, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४४-१०)
सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥ (१४४-१०, माझ, मः १)
घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥ (१४४-१०, माझ, मः १)
नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥ (१४४-११, माझ, मः १)
कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥ (१४४-११, माझ, मः १)
जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥ (१४४-१२, माझ, मः १)
नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥१॥ (१४४-१२, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४४-१३)
इकि मासहारी इकि तृणु खाहि ॥ (१४४-१३, माझ, मः १)
इकना छतीह अमृत पाहि ॥ (१४४-१३, माझ, मः १)
इकि मिटीआ महि मिटीआ खाहि ॥ (१४४-१४, माझ, मः १)
इकि पउण सुमारी पउण सुमारि ॥ (१४४-१४, माझ, मः १)
इकि निरंकारी नाम आधारि ॥ (१४४-१४, माझ, मः १)
जीवै दाता मरै न कोइ ॥ (१४४-१५, माझ, मः १)
नानक मुठे जाहि नाही मनि सोइ ॥२॥ (१४४-१५, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४४-१५)
पूरे गुर की कार करमि कमाईऐ ॥ (१४४-१६, माझ, मः १)
गुरमती आपु गवाइ नामु धिआईऐ ॥ (१४४-१६, माझ, मः १)
दूजी कारै लगि जनमु गवाईऐ ॥ (१४४-१६, माझ, मः १)
विणु नावै सभ विसु पैझै खाईऐ ॥ (१४४-१७, माझ, मः १)
सचा सबदु सालाहि सचि समाईऐ ॥ (१४४-१७, माझ, मः १)
विणु सतिगुरु सेवे नाही सुखि निवासु फिरि फिरि आईऐ ॥ (१४४-१७, माझ, मः १)
दुनीआ खोटी रासि कूड़ु कमाईऐ ॥ (१४४-१८, माझ, मः १)
नानक सचु खरा सालाहि पति सिउ जाईऐ ॥१४॥ (१४४-१८, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४४-१९)
तुधु भावै ता वावहि गावहि तुधु भावै जलि नावहि ॥ (१४४-१९, माझ, मः १)

पन्ना १४५

जा तुधु भावहि ता करहि बिभूता सिंङी नादु वजावहि ॥ (१४५-१, माझ, मः १)
जा तुधु भावै ता पड़हि कतेबा मुला सेख कहावहि ॥ (१४५-१, माझ, मः १)
जा तुधु भावै ता होवहि राजे रस कस बहुतु कमावहि ॥ (१४५-२, माझ, मः १)
जा तुधु भावै तेग वगावहि सिर मुंडी कटि जावहि ॥ (१४५-२, माझ, मः १)

जा तुधु भावै जाहि दिसंतरि सुणि गला घरि आवहि ॥ (१४५-३, माझ, मः १)
जा तुधु भावै नाइ रचावहि तुधु भाणे तूं भावहि ॥ (१४५-३, माझ, मः १)
नानकु एक कहै बेनंती होरि सगले कूड़ु कमावहि ॥१॥ (१४५-४, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४५-४)
जा तूं वडा सभि वडिआँईआ चंगै चंगा होई ॥ (१४५-४, माझ, मः १)
जा तूं सचा ता सभु को सचा कूड़ा कोइ न कोई ॥ (१४५-५, माझ, मः १)
आखणु वेखणु बोलणु चलणु जीवणु मरणा धातु ॥ (१४५-५, माझ, मः १)
हुकमु साजि हुकमै विचि रखै नानक सचा आपि ॥२॥ (१४५-६, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४५-६)
सतिगुरु सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ॥ (१४५-६, माझ, मः १)
सतिगुरु आखै कार सु कार कमाईऐ ॥ (१४५-७, माझ, मः १)
सतिगुरु होइ दइआलु त नामु धिआईऐ ॥ (१४५-७, माझ, मः १)
लाहा भगति सु सारु गुरमुखि पाईऐ ॥ (१४५-८, माझ, मः १)
मनमुखि कूड़ु गुबारु कूड़ु कमाईऐ ॥ (१४५-८, माझ, मः १)
सचे दै दरि जाइ सचु चवाँईऐ ॥ (१४५-८, माझ, मः १)
सचै अंदरि महलि सचि बुलाईऐ ॥ (१४५-९, माझ, मः १)
नानक सचु सदा सचिआरु सचि समाईऐ ॥१५॥ (१४५-९, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४५-१०)
कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ ॥ (१४५-१०, माझ, मः १)
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ ॥ (१४५-१०, माझ, मः १)
हउ भालि विकुन्नी होई ॥ (१४५-११, माझ, मः १)
आधेरै राहु न कोई ॥ (१४५-११, माझ, मः १)
विचि हउमै करि दुखु रोई ॥ (१४५-११, माझ, मः १)
कहु नानक किनि बिधि गति होई ॥१॥ (१४५-१२, माझ, मः १)
मः ३ ॥ (१४५-१२)
कलि कीरति परगटु चानणु संसारि ॥ (१४५-१२, माझ, मः ३)
गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ (१४५-१३, माझ, मः ३)
जिस नो नदरि करे तिसु देवै ॥ (१४५-१३, माझ, मः ३)
नानक गुरमुखि रतनु सो लेवै ॥२॥ (१४५-१३, माझ, मः ३)
पउड़ी ॥ (१४५-१३)
भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ ॥ (१४५-१४, माझ, मः ३)
करता आपि अभुलु है न भुलै किसै दा भुलाइआ ॥ (१४५-१४, माझ, मः ३)
भगत आपे मेलिअनु जिनी सचो सचु कमाइआ ॥ (१४५-१४, माझ, मः ३)
सैसारी आपि खुआइअनु जिनी कूड़ु बोलि बोलि बिखु खाइआ ॥ (१४५-१५, माझ, मः ३)
चलण सार न जाणनी कामु करोधु विसु वधाइआ ॥ (१४५-१६, माझ, मः ३)

भगत करनि हरि चाकरी जिनी अनदिनु नामु धिआइआ ॥ (१४५-१६, माझ, मः ३)
दासनि दास होइ कै जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ (१४५-१७, माझ, मः ३)
ओना खसमै कै दरि मुख उजले सचै सबदि सुहाइआ ॥१६॥ (१४५-१७, माझ, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (१४५-१८)
सबाही सालाह जिनी धिआइआ इक मनि ॥ (१४५-१८, माझ, मः १)
सेई पूरे साह वखतै उपरि लड़ि मुए ॥ (१४५-१९, माझ, मः १)
दूजै बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ ॥ (१४५-१९, माझ, मः १)
बहुतु पए असगाह गोते खाहि न निकलहि ॥ (१४५-१९, माझ, मः १)

पन्ना १४६

तीजै मुही गिराह भुख तिखा दुइ भउकीआ ॥ (१४६-१, माझ, मः १)
खाधा होइ सुआह भी खाणे सिउ दोसती ॥ (१४६-१, माझ, मः १)
चउथै आई ऊंघ अखी मीटि पवारि गइआ ॥ (१४६-२, माझ, मः १)
भी उठि रचिओनु वादु सै वर्हिआ की पिड़ बधी ॥ (१४६-२, माझ, मः १)
सभे वेला वखत सभि जे अठी भउ होइ ॥ (१४६-३, माझ, मः १)
नानक साहिबु मनि वसै सचा नावणु होइ ॥१॥ (१४६-३, माझ, मः १)
मः २ ॥ (१४६-३)
सेई पूरे साह जिनी पूरा पाइआ ॥ (१४६-४, माझ, मः २)
अठी वेपरवाह रहनि इकतै रंगि ॥ (१४६-४, माझ, मः २)
दरसनि रूपि अथाह विरले पाईअहि ॥ (१४६-४, माझ, मः २)
करमि पूरै पूरा गुरू पूरा जा का बोलु ॥ (१४६-५, माझ, मः २)
नानक पूरा जे करे घटै नाही तोलु ॥२॥ (१४६-५, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१४६-५)
जा तूं ता किआ होरि मै सचु सुणाईऐ ॥ (१४६-५, माझ, मः २)
मुठी धंधै चोरि महलु न पाईऐ ॥ (१४६-६, माझ, मः २)
एनै चिति कठोरि सेव गवाईऐ ॥ (१४६-६, माझ, मः २)
जितु घटि सचु न पाइ सु भंनि घड़ाईऐ ॥ (१४६-७, माझ, मः २)
किउ करि पूरै वटि तोलि तुलाईऐ ॥ (१४६-७, माझ, मः २)
कोइ न आखै घटि हउमै जाईऐ ॥ (१४६-७, माझ, मः २)
लईअनि खरे परखि दरि बीनाईऐ ॥ (१४६-८, माझ, मः २)
सउदा इकतु हटि पूरै गुरि पाईऐ ॥१७॥ (१४६-८, माझ, मः २)
सलोक मः २ ॥ (१४६-९)
अठी पहरी अठ खंड नावा खंडु सरीरु ॥ (१४६-९, माझ, मः २)
तिसु विचि नउ निधि नामु एकु भालहि गुणी गहीरु ॥ (१४६-९, माझ, मः २)
करमवंती सालाहिआ नानक करि गुरु पीरु ॥ (१४६-१०, माझ, मः २)

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ ॥ (१४६-१०, माझ, मः २)
तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ ॥ (१४६-११, माझ, मः २)
ओथै अमृतु वंडीऐ करमी होइ पसाउ ॥ (१४६-११, माझ, मः २)
कंचन काइआ कसीऐ वन्नी चड़ै चड़ाउ ॥ (१४६-११, माझ, मः २)
जे होवै नदरि सराफ की बहुड़ि न पाई ताउ ॥ (१४६-१२, माझ, मः २)
सती पहरी सतु भला बहीऐ पड़िआ पासि ॥ (१४६-१२, माझ, मः २)
ओथै पापु पुन्नु बीचारीऐ कूड़ै घटै रासि ॥ (१४६-१३, माझ, मः २)
ओथै खोटे सटीअहि खरे कीचहि साबासि ॥ (१४६-१३, माझ, मः २)
बोलणु फादलु नानका दुखु सुखु खसमै पासि ॥१॥ (१४६-१४, माझ, मः २)
मः २ ॥ (१४६-१४)
पउणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ (१४६-१४, माझ, मः २)
दिनसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ (१४६-१५, माझ, मः २)
चंगिआईआ बुरिआईआ वाचे धरमु हदूरि ॥ (१४६-१५, माझ, मः २)
करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ (१४६-१६, माझ, मः २)
जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ (१४६-१६, माझ, मः २)
नानक ते मुख उजले होर केती छुटी नालि ॥२॥ (१४६-१७, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१४६-१७)
सचा भोजनु भाउ सतिगुरि दसिआ ॥ (१४६-१७, माझ, मः २)
सचे ही पतीआइ सचि विगसिआ ॥ (१४६-१८, माझ, मः २)
सचै कोटि गिराँइ निज घरि वसिआ ॥ (१४६-१८, माझ, मः २)
सतिगुरि तुठै नाउ प्रेमि रहसिआ ॥ (१४६-१८, माझ, मः २)
सचै दै दीबाणि कूड़ि न जाईऐ ॥ (१४६-१९, माझ, मः २)
झूठो झूठु वखाणि सु महलु खुआईऐ ॥ (१४६-१९, माझ, मः २)

पन्ना १४७

सचै सबदि नीसाणि ठाक न पाईऐ ॥ (१४७-१, माझ, मः २)
सचु सुणि बुझि वखाणि महलि बुलाईऐ ॥१८॥ (१४७-१, माझ, मः २)
सलोकु मः १ ॥ (१४७-१)
पहिरा अगनि हिवै घरु बाधा भोजनु सारु कराई ॥ (१४७-२, माझ, मः १)
सगले दूख पाणी करि पीवा धरती हाक चलाई ॥ (१४७-२, माझ, मः १)
धरि ताराजी अम्बरु तोली पिछै टंकु चड़ाई ॥ (१४७-३, माझ, मः १)
एवडु वधा मावा नाही सभसै नथि चलाई ॥ (१४७-३, माझ, मः १)
एता ताणु होवै मन अंदरि करी भि आखि कराई ॥ (१४७-३, माझ, मः १)
जेवडु साहिबु तेवड दाती दे दे करे रजाई ॥ (१४७-४, माझ, मः १)
नानक नदरि करे जिसु उपरि सचि नामि वडिआई ॥१॥ (१४७-४, माझ, मः १)

मः २ ॥ (१४७-५)
आखणु आखि न रजिआ सुनणि न रजे कन्न ॥ (१४७-५, माझ, मः २)
अखी देखि न रजीआ गुण गाहक इक वन्न ॥ (१४७-५, माझ, मः २)
भुखिआ भुख न उतरै गली भुख न जाइ ॥ (१४७-६, माझ, मः २)
नानक भुखा ता रजै जा गुण कहि गुणी समाइ ॥२॥ (१४७-६, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१४७-७)
विणु सचे सभु कूड़ु कूड़ु कमाईऐ ॥ (१४७-७, माझ, मः २)
विणु सचे कूड़िआरु बंनि चलाईऐ ॥ (१४७-७, माझ, मः २)
विणु सचे तनु छारु छारु रलाईऐ ॥ (१४७-८, माझ, मः २)
विणु सचे सभ भुख जि पैझै खाईऐ ॥ (१४७-८, माझ, मः २)
विणु सचे दरबारु कूड़ि न पाईऐ ॥ (१४७-८, माझ, मः २)
कूड़ै लालचि लगि महलु खुआईऐ ॥ (१४७-९, माझ, मः २)
सभु जगु ठगिओ ठगि आईऐ जाईऐ ॥ (१४७-९, माझ, मः २)
तन महि तृसना अगि सबदि बुझाईऐ ॥१९॥ (१४७-९, माझ, मः २)
सलोक मः १ ॥ (१४७-१०)
नानक गुरु संतोखु रुखु धरमु फुलु फल गिआनु ॥ (१४७-१०, माझ, मः १)
रसि रसिआ हरिआ सदा पकै करमि धिआनि ॥ (१४७-११, माझ, मः १)
पति के साद खादा लहै दाना कै सिरि दानु ॥१॥ (१४७-११, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४७-१२)
सुइने का बिरखु पत परवाला फुल जवेहर लाल ॥ (१४७-१२, माझ, मः १)
तितु फल रतन लगहि मुखि भाखित हिरदै रिदै निहालु ॥ (१४७-१२, माझ, मः १)
नानक करमु होवै मुखि मसतकि लिखिआ होवै लेखु ॥ (१४७-१३, माझ, मः १)
अठिसठि तीर्थ गुर की चरणी पूजै सदा विसेखु ॥ (१४७-१३, माझ, मः १)
हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥ (१४७-१४, माझ, मः १)
पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥२॥ (१४७-१४, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४७-१५)
जीवदिआ मरु मारि न पछोताईऐ ॥ (१४७-१५, माझ, मः १)
झूठा इहु संसारु किनि समझाईऐ ॥ (१४७-१५, माझ, मः १)
सचि न धरे पिआरु धंधै धाईऐ ॥ (१४७-१५, माझ, मः १)
कालु बुरा खै कालु सिरि दुनीआईऐ ॥ (१४७-१६, माझ, मः १)
हुकमी सिरि जंदारु मारे दाईऐ ॥ (१४७-१६, माझ, मः १)
आपे देइ पिआरु मंनि वसाईऐ ॥ (१४७-१७, माझ, मः १)
मुहतु न चसा विलम्मु भरीऐ पाईऐ ॥ (१४७-१७, माझ, मः १)
गुर परसादी बुझि सचि समाईऐ ॥२०॥ (१४७-१७, माझ, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१४७-१८)

तुमी तुमा विसु अकु धतूरा निमु फलु ॥ (१४७-१८, माझ, मः १)
मनि मुखि वसहि तिसु जिसु तूं चिति न आवही ॥ (१४७-१८, माझ, मः १)
नानक कहीऐ किसु हंढनि करमा बाहरे ॥१॥ (१४७-१९, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४७-१९)
मति पंखेरू किरतु साथि कब उतम कब नीच ॥ (१४७-१९, माझ, मः १)

पन्ना १४८

कब चंदनि कब अकि डालि कब उची परीति ॥ (१४८-१, माझ, मः १)
नानक हुकमि चलाईऐ साहिब लगी रीति ॥२॥ (१४८-१, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१४८-२)
केते कहहि वखाण कहि कहि जावणा ॥ (१४८-२, माझ, मः १)
वेद कहहि वखिआण अंतु न पावणा ॥ (१४८-२, माझ, मः १)
पड़िऐ नाही भेदु बुझिऐ पावणा ॥ (१४८-३, माझ, मः १)
खटु दरसन कै भेखि किसै सचि समावणा ॥ (१४८-३, माझ, मः १)
सचा पुरखु अलखु सबदि सुहावणा ॥ (१४८-३, माझ, मः १)
मन्ने नाउ बिसंख दरगह पावणा ॥ (१४८-४, माझ, मः १)
खालक कउ आदेसु ढाढी गावणा ॥ (१४८-४, माझ, मः १)
नानक जुगु जुगु एकु मंनि वसावणा ॥२१॥ (१४८-४, माझ, मः १)
सलोकु महला २ ॥ (१४८-५)
मंत्री होइ अठूहिआ नागी लगै जाइ ॥ (१४८-५, माझ, मः २)
आपण हथी आपणै दे कूचा आपे लाइ ॥ (१४८-५, माझ, मः २)
हुकमु पइआ धुरि खसम का अती हू धका खाइ ॥ (१४८-६, माझ, मः २)
गुरमुख सिउ मनमुखु अड़ै डुबै हकि निआइ ॥ (१४८-६, माझ, मः २)
दुहा सिरिआ आपे खसमु वेखै करि विउपाइ ॥ (१४८-७, माझ, मः २)
नानक एवै जाणीऐ सभ किछु तिसहि रजाइ ॥१॥ (१४८-७, माझ, मः २)
महला २ ॥ (१४८-८)
नानक परखे आप कउ ता पारखु जाणु ॥ (१४८-८, माझ, मः २)
रोगु दारू दोवै बुझै ता वैदु सुजाणु ॥ (१४८-८, माझ, मः २)
वाट न करई मामला जाणै मिहमाणु ॥ (१४८-९, माझ, मः २)
मूलु जाणि गला करे हाणि लाए हाणु ॥ (१४८-९, माझ, मः २)
लबि न चलई सचि रहै सो विसटु परवाणु ॥ (१४८-१०, माझ, मः २)
सरु संधे आगास कउ किउ पहुचै बाणु ॥ (१४८-१०, माझ, मः २)
अगै ओहु अगम्मु है वाहेदड़ु जाणु ॥२॥ (१४८-१०, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१४८-११)
नारी पुरख पिआरु प्रेमि सीगारीआ ॥ (१४८-११, माझ, मः २)

करनि भगति दिनु राति न रहनी वारीआ ॥ (१४८-११, माझ, मः २)
महला मंझि निवासु सबदि सवारीआ ॥ (१४८-१२, माझ, मः २)
सचु कहनि अरदासि से वेचारीआ ॥ (१४८-१२, माझ, मः २)
सोहनि खसमै पासि हुकमि सिधारीआ ॥ (१४८-१३, माझ, मः २)
सखी कहनि अरदासि मनहु पिआरीआ ॥ (१४८-१३, माझ, मः २)
बिनु नावै ध्रिगु वासु फिटु सु जीविआ ॥ (१४८-१३, माझ, मः २)
सबदि सवारीआसु अमृतु पीविआ ॥२२॥ (१४८-१४, माझ, मः २)
सलोकु मः १ ॥ (१४८-१४)
मारू मीहि न तृपतिआ अगी लहै न भुख ॥ (१४८-१४, माझ, मः १)
राजा राजि न तृपतिआ साइर भरे किसुक ॥ (१४८-१५, माझ, मः १)
नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ ॥१॥ (१४८-१५, माझ, मः १)
महला २ ॥ (१४८-१६)
निहफलं तसि जनमसि जावतु ब्रह्म न बिंदते ॥ (१४८-१६, माझ, मः २)
सागरं संसारसि गुर परसादी तरहि के ॥ (१४८-१६, माझ, मः २)
करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ (१४८-१७, माझ, मः २)
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥ (१४८-१७, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१४८-१८)
खसमै कै दरबारि ढाढी वसिआ ॥ (१४८-१८, माझ, मः २)
सचा खसमु कलाणि कमलु विगसिआ ॥ (१४८-१८, माझ, मः २)
खसमहु पूरा पाइ मनहु रहसिआ ॥ (१४८-१९, माझ, मः २)
दुसमन कढे मारि सजण सरसिआ ॥ (१४८-१९, माझ, मः २)
सचा सतिगुरु सेवनि सचा मारगु दसिआ ॥ (१४८-१९, माझ, मः २)

पन्ना १४९

सचा सबदु बीचारि कालु विधउसिआ ॥ (१४९-१, माझ, मः २)
ढाढी कथे अकथु सबदि सवारिआ ॥ (१४९-१, माझ, मः २)
नानक गुण गहि रासि हरि जीउ मिले पिआरिआ ॥२३॥ (१४९-१, माझ, मः २)
सलोकु मः १ ॥ (१४९-२)
खतिअहु जम्मे खते करनि त खतिआ विचि पाहि ॥ (१४९-२, माझ, मः १)
धोते मूलि न उतरहि जे सउ धोवण पाहि ॥ (१४९-३, माझ, मः १)
नानक बखसे बखसीअहि नाहि त पाही पाहि ॥१॥ (१४९-३, माझ, मः १)
मः १ ॥ (१४९-४)
नानक बोलणु झखणा दुख छडि मंगीअहि सुख ॥ (१४९-४, माझ, मः १)
सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े पहिरहि जाइ मनुख ॥ (१४९-४, माझ, मः १)
जिथै बोलणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ॥२॥ (१४९-५, माझ, मः १)

पउड़ी ॥ (१४६-५)
चारे कुंडा देखि अंदरु भालिआ ॥ (१४६-५, माझ, मः १)
सचै पुरखि अलखि सिरजि निहालिआ ॥ (१४६-६, माझ, मः १)
उझड़ि भुले राह गुरि वेखालिआ ॥ (१४६-६, माझ, मः १)
सतिगुर सचे वाहु सचु समालिआ ॥ (१४६-६, माझ, मः १)
पाइआ रतनु घराहु दीवा बालिआ ॥ (१४६-७, माझ, मः १)
सचै सबदि सलाहि सुखीए सच वालिआ ॥ (१४६-७, माझ, मः १)
निडरिआ डरु लगि गरबि सि गालिआ ॥ (१४६-८, माझ, मः १)
नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ ॥२४॥ (१४६-८, माझ, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (१४६-८)
भै विचि जम्मै भै मरै भी भउ मन महि होइ ॥ (१४६-९, माझ, मः ३)
नानक भै विचि जे मरै सहिला आइआ सोइ ॥१॥ (१४६-९, माझ, मः ३)
मः ३ ॥ (१४६-९)
भै विणु जीवै बहुतु बहुतु खुसीआ खुसी कमाइ ॥ (१४६-१०, माझ, मः ३)
नानक भै विणु जे मरै मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥ (१४६-१०, माझ, मः ३)
पउड़ी ॥ (१४६-११)
सतिगुरु होइ दइआलु त सरधा पूरीऐ ॥ (१४६-११, माझ, मः ३)
सतिगुरु होइ दइआलु न कबहूं झूरीऐ ॥ (१४६-११, माझ, मः ३)
सतिगुरु होइ दइआलु ता दुखु न जाणीऐ ॥ (१४६-११, माझ, मः ३)
सतिगुरु होइ दइआलु ता हरि रंगु माणीऐ ॥ (१४६-१२, माझ, मः ३)
सतिगुरु होइ दइआलु ता जम का डरु केहा ॥ (१४६-१२, माझ, मः ३)
सतिगुरु होइ दइआलु ता सद ही सुखु देहा ॥ (१४६-१३, माझ, मः ३)
सतिगुरु होइ दइआलु ता नव निधि पाईऐ ॥ (१४६-१३, माझ, मः ३)
सतिगुरु होइ दइआलु त सचि समाईऐ ॥२५॥ (१४६-१४, माझ, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (१४६-१४)
सिरु खोहाइ पीअहि मलवाणी जूठा मंगि मंगि खाही ॥ (१४६-१५, माझ, मः १)
फोलि फदीहति मुहि लैनि भड़ासा पाणी देखि सगाही ॥ (१४६-१५, माझ, मः १)
भेडा वागी सिरु खोहाइनि भरीअनि हथ सुआही ॥ (१४६-१६, माझ, मः १)
माऊ पीऊ किरतु गवाइनि टबर रोवनि धाही ॥ (१४६-१६, माझ, मः १)
ओना पिंडु न पतलि किरिआ न दीवा मुए किथाऊ पाही ॥ (१४६-१७, माझ, मः १)
अठसठि तीर्थ देनि न ढोई ब्रह्मण अन्नु न खाही ॥ (१४६-१७, माझ, मः १)
सदा कुचील रहहि दिनु राती मथै टिके नाही ॥ (१४६-१८, माझ, मः १)
झुंडी पाइ बहनि निति मरणै दड़ि दीबाणि न जाही ॥ (१४६-१८, माझ, मः १)
लकी कासे हथी फुम्मण अगो पिछी जाही ॥ (१४६-१९, माझ, मः १)
ना ओइ जोगी ना ओइ जंगम ना ओइ काजी मुंला ॥ (१४६-१९, माझ, मः १)

दयि विगोए फिरहि विगुते फिटा वतै गला ॥ (१५०-१, माझ, मः १)
जीआ मारि जीवाले सोई अवरु न कोई रखै ॥ (१५०-१, माझ, मः १)
दानहु तै इसनानहु वंजे भसु पई सिरि खुथै ॥ (१५०-२, माझ, मः १)
पाणी विचहु रतन उपन्ने मेरु कीआ माधाणी ॥ (१५०-२, माझ, मः १)
अठसठि तीर्थ देवी थापे पुरबी लगै बाणी ॥ (१५०-३, माझ, मः १)
नाइ निवाजा नातै पूजा नावनि सदा सुजाणी ॥ (१५०-३, माझ, मः १)
मुइआ जीवदिआ गति होवै जाँ सिरि पाईऐ पाणी ॥ (१५०-४, माझ, मः १)
नानक सिरखुथे सैतानी एना गल न भाणी ॥ (१५०-४, माझ, मः १)
वुठै होइऐ होइ बिलावलु जीआ जुगति समाणी ॥ (१५०-५, माझ, मः १)
वुठै अन्नु कमादु कपाहा सभसै पड़दा होवै ॥ (१५०-५, माझ, मः १)
वुठै घाहु चरहि निति सुरही सा धन दही विलोवै ॥ (१५०-५, माझ, मः १)
तितु घिइ होम जग सद पूजा पइऐ कारजु सोहै ॥ (१५०-६, माझ, मः १)
गुरू समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई ॥ (१५०-६, माझ, मः १)
नानक जे सिरखुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई ॥१॥ (१५०-७, माझ, मः १)
मः २ ॥ (१५०-८)
अगी पाला कि करे सूरज केही राति ॥ (१५०-८, माझ, मः २)
चंद अनेरा कि करे पउण पाणी किआ जाति ॥ (१५०-८, माझ, मः २)
धरती चीजी कि करे जिसु विचि सभु किछु होइ ॥ (१५०-९, माझ, मः २)
नानक ता पति जाणीऐ जा पति रखै सोइ ॥२॥ (१५०-९, माझ, मः २)
पउड़ी ॥ (१५०-९)
तुधु सचे सुबहानु सदा कलाणिआ ॥ (१५०-१०, माझ, मः २)
तूं सचा दीबाणु होरि आवण जाणिआ ॥ (१५०-१०, माझ, मः २)
सचु जि मंगहि दानु सि तुधै जेहिआ ॥ (१५०-१०, माझ, मः २)
सचु तेरा फुरमानु सबदे सोहिआ ॥ (१५०-११, माझ, मः २)
मंनिऐ गिआनु धिआनु तुधै ते पाइआ ॥ (१५०-११, माझ, मः २)
करमि पवै नीसानु न चलै चलाइआ ॥ (१५०-११, माझ, मः २)
तूं सचा दातारु नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ (१५०-१२, माझ, मः २)
नानकु मंगै दानु जो तुधु भाइआ ॥२६॥ (१५०-१२, माझ, मः २)
सलोकु मः २ ॥ (१५०-१३)
दीखिआ आखि बुझाइआ सिफती सचि समेउ ॥ (१५०-१३, माझ, मः २)
तिन कउ किआ उपदेसीऐ जिन गुरु नानक देउ ॥१॥ (१५०-१३, माझ, मः २)
मः १ ॥ (१५०-१४)
आपि बुझाए सोई बूझै ॥ (१५०-१४, माझ, मः १)

जिसु आपि सुझाए तिसु सभु किछु सूझै ॥ (१५०-१४, माझ, मः १)
कहि कहि कथना माइआ लूझै ॥ (१५०-१५, माझ, मः १)
हुकमी सगल करे आकार ॥ (१५०-१५, माझ, मः १)
आपे जाणै सर्ब वीचार ॥ (१५०-१५, माझ, मः १)
अखर नानक अखिओ आपि ॥ (१५०-१६, माझ, मः १)
लहै भराति होवै जिसु दाति ॥२॥ (१५०-१६, माझ, मः १)
पउड़ी ॥ (१५०-१६)
हउ ढाढी वेकारु कारै लाइआ ॥ (१५०-१६, माझ, मः १)
राति दिहै कै वार धुरहु फुरमाइआ ॥ (१५०-१७, माझ, मः १)
ढाढी सचै महलि खसमि बुलाइआ ॥ (१५०-१७, माझ, मः १)
सची सिफति सालाह कपड़ा पाइआ ॥ (१५०-१७, माझ, मः १)
सचा अमृत नामु भोजनु आइआ ॥ (१५०-१८, माझ, मः १)
गुरमती खाधा रजि तिनि सुखु पाइआ ॥ (१५०-१८, माझ, मः १)
ढाढी करे पसाउ सबदु वजाइआ ॥ (१५०-१९, माझ, मः १)
नानक सचु सालाहि पूरा पाइआ ॥२७॥ सुधु (१५०-१९, माझ, मः १)

पन्ना १५१

रागु गउड़ी गुआरेरी महला १ चउपदे दुपदे (१५१-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१५१-२)
भउ मुचु भारा वडा तोलु ॥ (१५१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मन मति हउली बोले बोलु ॥ (१५१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सिरि धरि चलीऐ सहीऐ भारु ॥ (१५१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नदरी करमी गुर बीचारु ॥१॥ (१५१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
भै बिनु कोइ न लंघसि पारि ॥ (१५१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
भै भउ राखिआ भाइ सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१५१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
भै तनि अगनि भखै भै नालि ॥ (१५१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
भै भउ घड़ीऐ सबदि सवारि ॥ (१५१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
भै बिनु घाड़त कचु निकच ॥ (१५१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
अंधा सचा अंधी सट ॥२॥ (१५१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
बुधी बाजी उपजै चाउ ॥ (१५१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सहस सिआणप पवै न ताउ ॥ (१५१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नानक मनमुखि बोलणु वाउ ॥ (१५१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
अंधा अखरु वाउ दुआउ ॥३॥१॥ (१५१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५१-७)
डरि घरु घरि डरु डरि डरु जाइ ॥ (१५१-७, गउड़ी, मः १)

सो डरु केहा जितु डरि डरु पाइ ॥ (१५१-७, गउड़ी, मः १)
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ (१५१-८, गउड़ी, मः १)
जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ (१५१-८, गउड़ी, मः १)
डरीऐ जे डरु होवै होरु ॥ (१५१-९, गउड़ी, मः १)
डरि डरि डरणा मन का सोरु ॥१॥ रहाउ ॥ (१५१-९, गउड़ी, मः १)
ना जीउ मरै न डूबै तरै ॥ (१५१-९, गउड़ी, मः १)
जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ (१५१-१०, गउड़ी, मः १)
हुकमे आवै हुकमे जाइ ॥ (१५१-१०, गउड़ी, मः १)
आगै पाछै हुकमि समाइ ॥२॥ (१५१-१०, गउड़ी, मः १)
हंसु हेतु आसा असमानु ॥ (१५१-१०, गउड़ी, मः १)
तिसु विचि भूख बहुतु नै सानु ॥ (१५१-११, गउड़ी, मः १)
भउ खाणा पीणा आधारु ॥ (१५१-११, गउड़ी, मः १)
विणु खाधे मरि होहि गवार ॥३॥ (१५१-११, गउड़ी, मः १)
जिस का कोइ कोई कोइ कोइ ॥ (१५१-१२, गउड़ी, मः १)
सभु को तेरा तूं सभना का सोइ ॥ (१५१-१२, गउड़ी, मः १)
जा के जीअ जंत धनु मालु ॥ (१५१-१२, गउड़ी, मः १)
नानक आखणु बिखमु बीचारु ॥४॥२॥ (१५१-१३, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५१-१३)
माता मति पिता संतोखु ॥ (१५१-१३, गउड़ी, मः १)
सतु भाई करि एहु विसेखु ॥१॥ (१५१-१४, गउड़ी, मः १)
कहणा है किछु कहणु न जाइ ॥ (१५१-१४, गउड़ी, मः १)
तउ कुदरति कीमति नही पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१५१-१४, गउड़ी, मः १)

पन्ना १५२

सरम सुरति दुइ ससुर भए ॥ (१५२-१, गउड़ी, मः १)
करणी कामणि करि मन लए ॥२॥ (१५२-१, गउड़ी, मः १)
साहा संजोगु वीआहु विजोगु ॥ (१५२-१, गउड़ी, मः १)
सचु संतति कहु नानक जोगु ॥३॥३॥ (१५२-२, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५२-२)
पउणै पाणी अगनी का मेलु ॥ (१५२-२, गउड़ी, मः १)
चंचल चपल बुधि का खेलु ॥ (१५२-३, गउड़ी, मः १)
नउ दरवाजे दसवा दुआरु ॥ (१५२-३, गउड़ी, मः १)
बुझु रे गिआनी एहु बीचारु ॥१॥ (१५२-३, गउड़ी, मः १)
कथता बकता सुनता सोई ॥ (१५२-४, गउड़ी, मः १)
आपु बीचारे सु गिआनी होई ॥१॥ रहाउ ॥ (१५२-४, गउड़ी, मः १)

देही माटी बोलै पउणु ॥ (१५२-४, गउड़ी, मः १)
बुझु रे गिआनी मूआ है कउणु ॥ (१५२-५, गउड़ी, मः १)
मूई सुरति बादु अहंकारु ॥ (१५२-५, गउड़ी, मः १)
ओहु न मूआ जो देखणहारु ॥२॥ (१५२-५, गउड़ी, मः १)
जै कारणि तटि तीर्थ जाही ॥ (१५२-५, गउड़ी, मः १)
रतन पदार्थ घट ही माही ॥ (१५२-६, गउड़ी, मः १)
पड़ि पड़ि पंडितु बादु वखाणै ॥ (१५२-६, गउड़ी, मः १)
भीतरि होदी वसतु न जाणै ॥३॥ (१५२-६, गउड़ी, मः १)
हउ न मूआ मेरी मुई बलाइ ॥ (१५२-७, गउड़ी, मः १)
ओहु न मूआ जो रहिआ समाइ ॥ (१५२-७, गउड़ी, मः १)
कहु नानक गुरि ब्रह्मु दिखाइआ ॥ (१५२-७, गउड़ी, मः १)
मरता जाता नदरि न आइआ ॥४॥४॥ (१५२-८, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ दखणी ॥ (१५२-८)
सुणि सुणि बूझै मानै नाउ ॥ (१५२-९, गउड़ी दखणी, मः १)
ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ (१५२-९, गउड़ी दखणी, मः १)
आपि भुलाए ठउर न ठाउ ॥ (१५२-९, गउड़ी दखणी, मः १)
तूं समझावहि मेलि मिलाउ ॥१॥ (१५२-९, गउड़ी दखणी, मः १)
नामु मिलै चलै मै नालि ॥ (१५२-१०, गउड़ी दखणी, मः १)
बिनु नावै बाधी सभ कालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१५२-१०, गउड़ी दखणी, मः १)
खेती वणजु नावै की ओट ॥ (१५२-११, गउड़ी दखणी, मः १)
पापु पुन्नु बीज की पोट ॥ (१५२-११, गउड़ी दखणी, मः १)
कामु क्रोधु जीअ महि चोट ॥ (१५२-११, गउड़ी दखणी, मः १)
नामु विसारि चले मनि खोट ॥२॥ (१५२-११, गउड़ी दखणी, मः १)
साचे गुर की साची सीख ॥ (१५२-१२, गउड़ी दखणी, मः १)
तनु मनु सीतलु साचु परीख ॥ (१५२-१२, गउड़ी दखणी, मः १)
जल पुराइनि रस कमल परीख ॥ (१५२-१२, गउड़ी दखणी, मः १)
सबदि रते मीठे रस ईख ॥३॥ (१५२-१३, गउड़ी दखणी, मः १)
हुकमि संजोगी गड़ि दस दुआर ॥ (१५२-१३, गउड़ी दखणी, मः १)
पंच वसहि मिलि जोति अपार ॥ (१५२-१३, गउड़ी दखणी, मः १)
आपि तुलै आपे वणजार ॥ (१५२-१४, गउड़ी दखणी, मः १)
नानक नामि सवारणहार ॥४॥५॥ (१५२-१४, गउड़ी दखणी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५२-१५)
जातो जाइ कहा ते आवै ॥ (१५२-१५, गउड़ी, मः १)
कह उपजै कह जाइ समावै ॥ (१५२-१५, गउड़ी, मः १)
किउ बाधिओ किउ मुकती पावै ॥ (१५२-१५, गउड़ी, मः १)

किउ अबिनासी सहजि समावै ॥१॥ (१५२-१६, गउड़ी, मः १)
नामु रिदै अमृतु मुखि नामु ॥ (१५२-१६, गउड़ी, मः १)
नरहर नामु नरहर निहकामु ॥१॥ रहाउ ॥ (१५२-१६, गउड़ी, मः १)
सहजे आवै सहजे जाइ ॥ (१५२-१७, गउड़ी, मः १)
मन ते उपजै मन माहि समाइ ॥ (१५२-१७, गउड़ी, मः १)
गुरमुखि मुकतो बंधु न पाइ ॥ (१५२-१८, गउड़ी, मः १)
सबदु बीचारि छुटै हरि नाइ ॥२॥ (१५२-१८, गउड़ी, मः १)
तरवर पंखी बहु निसि बासु ॥ (१५२-१८, गउड़ी, मः १)
सुख दुखीआ मनि मोह विणासु ॥ (१५२-१९, गउड़ी, मः १)
साझ बिहाग तकहि आगासु ॥ (१५२-१९, गउड़ी, मः १)
दह दिसि धावहि करमि लिखिआसु ॥३॥ (१५२-१९, गउड़ी, मः १)

पन्ना १५३

नाम संजोगी गोइलि थाटु ॥ (१५३-१, गउड़ी, मः १)
काम क्रोध फूटै बिखु माटु ॥ (१५३-१, गउड़ी, मः १)
बिनु वखर सूनो घरु हाटु ॥ (१५३-१, गउड़ी, मः १)
गुर मिलि खोले बजर कपाट ॥४॥ (१५३-२, गउड़ी, मः १)
साधु मिलै पूरब संजोग ॥ (१५३-२, गउड़ी, मः १)
सचि रहसे पूरे हरि लोग ॥ (१५३-२, गउड़ी, मः १)
मनु तनु दे लै सहजि सुभाइ ॥ (१५३-२, गउड़ी, मः १)
नानक तिन कै लागउ पाइ ॥५॥६॥ (१५३-३, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५३-३)
कामु क्रोधु माइआ महि चीतु ॥ (१५३-३, गउड़ी, मः १)
झूठ विकारि जागै हित चीतु ॥ (१५३-४, गउड़ी, मः १)
पूंजी पाप लोभ की कीतु ॥ (१५३-४, गउड़ी, मः १)
तरु तारी मनि नामु सुचीतु ॥१॥ (१५३-४, गउड़ी, मः १)
वाहु वाहु साचे मै तेरी टेक ॥ (१५३-४, गउड़ी, मः १)
हउ पापी तूं निरमलु एक ॥१॥ रहाउ ॥ (१५३-५, गउड़ी, मः १)
अगनि पाणी बोलै भड़वाउ ॥ (१५३-५, गउड़ी, मः १)
जिहवा इंद्री एकु सुआउ ॥ (१५३-५, गउड़ी, मः १)
दिसटि विकारी नाही भउ भाउ ॥ (१५३-६, गउड़ी, मः १)
आपु मारे ता पाए नाउ ॥२॥ (१५३-६, गउड़ी, मः १)
सबदि मरै फिरि मरणु न होइ ॥ (१५३-६, गउड़ी, मः १)
बिनु मूए किउ पूरा होइ ॥ (१५३-७, गउड़ी, मः १)
परपंचि विआपि रहिआ मनु दोइ ॥ (१५३-७, गउड़ी, मः १)

थिरु नाराइणु करे सु होइ ॥३॥ (१५३-७, गउड़ी, मः १)
बोहिथि चड़उ जा आवै वारु ॥ (१५३-८, गउड़ी, मः १)
ठाके बोहिथ दरगह मार ॥ (१५३-८, गउड़ी, मः १)
सचु सालाही धन्नु गुरदुआरु ॥ (१५३-८, गउड़ी, मः १)
नानक दरि घरि एकंकारु ॥४॥७॥ (१५३-९, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५३-९)
उलटिओ कमलु ब्रह्मु बीचारि ॥ (१५३-९, गउड़ी, मः १)
अमृत धार गगनि दस दुआरि ॥ (१५३-९, गउड़ी, मः १)
तृभवणु बेधिआ आपि मुरारि ॥१॥ (१५३-१०, गउड़ी, मः १)
रे मन मेरे भरमु न कीजै ॥ (१५३-१०, गउड़ी, मः १)
मनि मानिऐ अमृत रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१५३-१०, गउड़ी, मः १)
जनमु जीति मरणि मनु मानिआ ॥ (१५३-११, गउड़ी, मः १)
आपि मूआ मनु मन ते जानिआ ॥ (१५३-११, गउड़ी, मः १)
नजरि भई घरु घर ते जानिआ ॥२॥ (१५३-१२, गउड़ी, मः १)
जतु सतु तीरथु मजनु नामि ॥ (१५३-१२, गउड़ी, मः १)
अधिक बिथारु करउ किसु कामि ॥ (१५३-१२, गउड़ी, मः १)
नर नाराइण अंतरजामि ॥३॥ (१५३-१३, गउड़ी, मः १)
आन मनउ तउ पर घर जाउ ॥ (१५३-१३, गउड़ी, मः १)
किसु जाचउ नाही को थाउ ॥ (१५३-१३, गउड़ी, मः १)
नानक गुरमति सहजि समाउ ॥४॥८॥ (१५३-१४, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५३-१४)
सतिगुरु मिलै सु मरणु दिखाए ॥ (१५३-१४, गउड़ी, मः १)
मरण रहण रसु अंतरि भाए ॥ (१५३-१५, गउड़ी, मः १)
गरबु निवारि गगन पुरु पाए ॥१॥ (१५३-१५, गउड़ी, मः १)
मरणु लिखाइ आए नही रहणा ॥ (१५३-१५, गउड़ी, मः १)
हरि जपि जापि रहणु हरि सरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (१५३-१६, गउड़ी, मः १)
सतिगुरु मिलै त दुबिधा भागै ॥ (१५३-१६, गउड़ी, मः १)
कमलु बिगासि मनु हरि प्रभ लागै ॥ (१५३-१६, गउड़ी, मः १)
जीवतु मरै महा रसु आगै ॥२॥ (१५३-१७, गउड़ी, मः १)
सतिगुरि मिलिऐ सच संजमि सूचा ॥ (१५३-१७, गउड़ी, मः १)
गुर की पउड़ी ऊचो ऊचा ॥ (१५३-१८, गउड़ी, मः १)
करमि मिलै जम का भउ मूचा ॥३॥ (१५३-१८, गउड़ी, मः १)
गुरि मिलिऐ मिलि अंकि समाइआ ॥ (१५३-१८, गउड़ी, मः १)
करि किरपा घरु महलु दिखाइआ ॥ (१५३-१९, गउड़ी, मः १)
नानक हउमै मारि मिलाइआ ॥४॥९॥ (१५३-१९, गउड़ी, मः १)

गउड़ी महला १ ॥ (१५४-१)
किरतु पइआ नह मेटै कोइ ॥ (१५४-१, गउड़ी, मः १)
किआ जाणा किआ आगै होइ ॥ (१५४-१, गउड़ी, मः १)
जो तिसु भाणा सोई हूआ ॥ (१५४-१, गउड़ी, मः १)
अवरु न करणै वाला दूआ ॥१॥ (१५४-२, गउड़ी, मः १)
ना जाणा कर्म केवड तेरी दाति ॥ (१५४-२, गउड़ी, मः १)
करमु धरमु तेरे नाम की जाति ॥१॥ रहाउ ॥ (१५४-२, गउड़ी, मः १)
तू एवडु दाता देवणहारु ॥ (१५४-३, गउड़ी, मः १)
तोटि नाही तुधु भगति भंडार ॥ (१५४-३, गउड़ी, मः १)
कीआ गरबु न आवै रासि ॥ (१५४-३, गउड़ी, मः १)
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥२॥ (१५४-४, गउड़ी, मः १)
तू मारि जीवालहि बखसि मिलाइ ॥ (१५४-४, गउड़ी, मः १)
जिउ भावी तिउ नामु जपाइ ॥ (१५४-४, गउड़ी, मः १)
तूं दाना बीना साचा सिरि मेरै ॥ (१५४-५, गउड़ी, मः १)
गुरमति देइ भरोसै तेरै ॥३॥ (१५४-५, गउड़ी, मः १)
तन महि मैलु नाही मनु राता ॥ (१५४-५, गउड़ी, मः १)
गुर बचनी सचु सबदि पछाता ॥ (१५४-६, गउड़ी, मः १)
तेरा ताणु नाम की वडिआई ॥ (१५४-६, गउड़ी, मः १)
नानक रहणा भगति सरणाई ॥४॥१०॥ (१५४-६, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५४-७)
जिनि अकथु कहाइआ अपिओ पीआइआ ॥ (१५४-७, गउड़ी, मः १)
अन भै विसरे नामि समाइआ ॥१॥ (१५४-७, गउड़ी, मः १)
किआ डरीऐ डरु डरहि समाना ॥ (१५४-८, गउड़ी, मः १)
पूरे गुर कै सबदि पछाना ॥१॥ रहाउ ॥ (१५४-८, गउड़ी, मः १)
जिसु नर रामु रिदै हरि रासि ॥ (१५४-९, गउड़ी, मः १)
सहजि सुभाइ मिले साबासि ॥२॥ (१५४-९, गउड़ी, मः १)
जाहि सवारै साझ बिआल ॥ (१५४-९, गउड़ी, मः १)
इत उत मनमुख बाधे काल ॥३॥ (१५४-९, गउड़ी, मः १)
अहिनिसि रामु रिदै से पूरे ॥ (१५४-१०, गउड़ी, मः १)
नानक राम मिले भ्रम दूरे ॥४॥११॥ (१५४-१०, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (१५४-१०)
जनमि मरै त्रै गुण हितकारु ॥ (१५४-११, गउड़ी, मः १)
चारे बेद कथहि आकारु ॥ (१५४-११, गउड़ी, मः १)

तीनि अवसथा कहहि वखिआनु ॥ (१५४-११, गउड़ी, मः १)
तुरीआवसथा सतिगुर ते हरि जानु ॥१॥ (१५४-१२, गउड़ी, मः १)
राम भगति गुर सेवा तरणा ॥ (१५४-१२, गउड़ी, मः १)
बाहुड़ि जनमु न होइ है मरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (१५४-१२, गउड़ी, मः १)
चारि पदार्थ कहै सभु कोई ॥ (१५४-१३, गउड़ी, मः १)
सिम्मृति सासत पंडित मुखि सोई ॥ (१५४-१३, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर अर्थु बीचारु न पाइआ ॥ (१५४-१३, गउड़ी, मः १)
मुकति पदारथु भगति हरि पाइआ ॥२॥ (१५४-१४, गउड़ी, मः १)
जा कै हिरदै वसिआ हरि सोई ॥ (१५४-१४, गउड़ी, मः १)
गुरमुखि भगति परापति होई ॥ (१५४-१५, गउड़ी, मः १)
हरि की भगति मुकति आनंदु ॥ (१५४-१५, गउड़ी, मः १)
गुरमति पाए परमानंदु ॥३॥ (१५४-१५, गउड़ी, मः १)
जिनि पाइआ गुरि देखि दिखाइआ ॥ (१५४-१६, गउड़ी, मः १)
आसा माहि निरासु बुझाइआ ॥ (१५४-१६, गउड़ी, मः १)
दीना नाथु सर्ब सुखदाता ॥ (१५४-१६, गउड़ी, मः १)
नानक हरि चरणी मनु राता ॥४॥१२॥ (१५४-१७, गउड़ी, मः १)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (१५४-१७)
अमृत काइआ रहै सुखाली बाजी इहु संसारो ॥ (१५४-१७, गउड़ी चेती, मः १)
लबु लोभु मुचु कूड़ु कमावहि बहुतु उठावहि भारो ॥ (१५४-१८, गउड़ी चेती, मः १)
तूं काइआ मै रुलदी देखी जिउ धर उपरि छारो ॥१॥ (१५४-१८, गउड़ी चेती, मः १)
सुणि सुणि सिख हमारी ॥ (१५४-१९, गउड़ी चेती, मः १)
सुकृतु कीता रहसी मेरे जीअड़े बहुड़ि न आवै वारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१५४-१९, गउड़ी चेती, मः १)

पन्ना १५५

हउ तुधु आखा मेरी काइआ तूं सुणि सिख हमारी ॥ (१५५-१, गउड़ी चेती, मः १)
निंदा चिंदा करहि पराई झूठी लाइतबारी ॥ (१५५-१, गउड़ी चेती, मः १)
वेलि पराई जोहहि जीअड़े करहि चोरी बुरिआरी ॥ (१५५-२, गउड़ी चेती, मः १)
हंसु चलिआ तूं पिछै रहीएहि छुटड़ि होईअहि नारी ॥२॥ (१५५-२, गउड़ी चेती, मः १)
तूं काइआ रहीअहि सुपनंतरि तुधु किआ कर्म कमाइआ ॥ (१५५-३, गउड़ी चेती, मः १)
करि चोरी मै जा किछु लीआ ता मनि भला भाइआ ॥ (१५५-४, गउड़ी चेती, मः १)
हलति न सोभा पलति न ढोई अहिला जनमु गवाइआ ॥३॥ (१५५-४, गउड़ी चेती, मः १)
हउ खरी दुहेली होई बाबा नानक मेरी बात न पुछै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (१५५-५, गउड़ी चेती, मः १)
ताजी तुरकी सुइना रुपा कपड़ केरे भारा ॥ (१५५-५, गउड़ी चेती, मः १)
किस ही नालि न चले नानक झड़ि झड़ि पए गवारा ॥ (१५५-६, गउड़ी चेती, मः १)
कूजा मेवा मै सभ किछु चाखिआ इकु अमृतु नामु तुमारा ॥४॥ (१५५-६, गउड़ी चेती, मः १)

दे दे नीव दिवाल उसारी भसमंदर की ढेरी ॥ (१५५-७, गउड़ी चेती, मः १)
संचे संचि न देई किस ही अंधु जाणै सभ मेरी ॥ (१५५-७, गउड़ी चेती, मः १)
सोइन लंका सोइन माड़ी सम्पै किसै न केरी ॥५॥ (१५५-८, गउड़ी चेती, मः १)
सुणि मूरख मन्न अजाणा ॥ (१५५-८, गउड़ी चेती, मः १)
होगु तिसै का भाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (१५५-९, गउड़ी चेती, मः १)
साहु हमारा ठाकुरु भारा हम तिस के वणजारे ॥ (१५५-९, गउड़ी चेती, मः १)
जीउ पिंडु सभ रासि तिसै की मारि आपे जीवाले ॥६॥१॥१३॥ (१५५-९, गउड़ी चेती, मः १)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (१५५-१०)
अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥ (१५५-१०, गउड़ी चेती, मः १)
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥१॥ (१५५-११, गउड़ी चेती, मः १)
स्री राम नामा उचरु मना ॥ (१५५-११, गउड़ी चेती, मः १)
आगै जम दलु बिखमु घना ॥१॥ रहाउ ॥ (१५५-१२, गउड़ी चेती, मः १)
उसारि मड़ोली राखै दुआरा भीतरि बैठी सा धना ॥ (१५५-१२, गउड़ी चेती, मः १)
अमृत केल करे नित कामणि अवरि लुटेनि सु पंच जना ॥२॥ (१५५-१३, गउड़ी चेती, मः १)
ढाहि मड़ोली लूटिआ देहुरा सा धन पकड़ी एक जना ॥ (१५५-१३, गउड़ी चेती, मः १)
जम डंडा गलि संगलु पड़िआ भागि गए से पंच जना ॥३॥ (१५५-१४, गउड़ी चेती, मः १)
कामणि लोड़ै सुइना रुपा मित्र लुड़ेनि सु खाधाता ॥ (१५५-१४, गउड़ी चेती, मः १)
नानक पाप करे तिन कारणि जासी जमपुरि बाधाता ॥४॥२॥१४॥ (१५५-१५, गउड़ी चेती, मः १)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (१५५-१६)
मुंद्रा ते घट भीतरि मुंद्रा काँइआ कीजै खिंथाता ॥ (१५५-१६, गउड़ी चेती, मः १)
पंच चेले वसि कीजहि रावल इहु मनु कीजै डंडाता ॥१॥ (१५५-१६, गउड़ी चेती, मः १)
जोग जुगति इव पावसिता ॥ (१५५-१७, गउड़ी चेती, मः १)
एकु सबदु दूजा होरु नासति कंद मूलि मनु लावसिता ॥१॥ रहाउ ॥ (१५५-१७, गउड़ी चेती, मः १)
मूंडि मुंडाइऐ जे गुरु पाईऐ हम गुरु कीनी गंगाता ॥ (१५५-१८, गउड़ी चेती, मः १)
तृभवण तारणहारु सुआमी एकु न चेतसि अंधाता ॥२॥ (१५५-१९, गउड़ी चेती, मः १)
करि पटम्बु गली मनु लावसि संसा मूलि न जावसिता ॥ (१५५-१९, गउड़ी चेती, मः १)

पन्ना १५६

एकसु चरणी जे चितु लावहि लबि लोभि की धावसिता ॥३॥ (१५६-१, गउड़ी चेती, मः १)
जपसि निरंजनु रचसि मना ॥ (१५६-१, गउड़ी चेती, मः १)
काहे बोलहि जोगी कपटु घना ॥१॥ रहाउ ॥ (१५६-२, गउड़ी चेती, मः १)
काइआ कमली हंसु इआणा मेरी मेरी करत बिहाणीता ॥ (१५६-२, गउड़ी चेती, मः १)
प्रणवति नानकु नागी दाझै फिरि पाछै पछुताणीता ॥४॥३॥१५॥ (१५६-३, गउड़ी चेती, मः १)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (१५६-३)
अउखध मंत्र मूलु मन एकै जे करि दृड़ु चितु कीजै रे ॥ (१५६-३, गउड़ी चेती, मः १)

जनम जनम के पाप कर्म के काटनहारा लीजै रे ॥१॥ (१५६-४, गउड़ी चेती, मः १)
मन एको साहिबु भाई रे ॥ (१५६-५, गउड़ी चेती, मः १)
तेरे तीनि गुणा संसारि समावहि अलखु न लखणा जाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (१५६-५, गउड़ी चेती, मः १)
सकर खंडु माइआ तनि मीठी हम तउ पंड उचाई रे ॥ (१५६-६, गउड़ी चेती, मः १)
राति अनेरी सूझसि नाही लजु टूकसि मूसा भाई रे ॥२॥ (१५६-६, गउड़ी चेती, मः १)
मनमुखि करहि तेता दुखु लागै गुरमुखि मिलै वडाई रे ॥ (१५६-७, गउड़ी चेती, मः १)
जो तिनि कीआ सोई होआ किरतु न मेटिआ जाई रे ॥३॥ (१५६-७, गउड़ी चेती, मः १)
सुभर भरे न होवहि ऊणे जो राते रंगु लाई रे ॥ (१५६-८, गउड़ी चेती, मः १)
तिन की पंक होवै जे नानकु तउ मूड़ा किछु पाई रे ॥४॥४॥१६॥ (१५६-८, गउड़ी चेती, मः १)
गउड़ी चेती महला १ ॥ (१५६-९)
कत की माई बापु कत केरा किदू थावहु हम आए ॥ (१५६-९, गउड़ी चेती, मः १)
अगनि बिम्ब जल भीतरि निपजे काहे कंमि उपाए ॥१॥ (१५६-१०, गउड़ी चेती, मः १)
मेरे साहिबा कउणु जाणै गुण तेरे ॥ (१५६-१०, गउड़ी चेती, मः १)
कहे न जानी अउगण मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (१५६-११, गउड़ी चेती, मः १)
केते रुख बिरख हम चीने केते पसू उपाए ॥ (१५६-११, गउड़ी चेती, मः १)
केते नाग कुली महि आए केते पंख उडाए ॥२॥ (१५६-११, गउड़ी चेती, मः १)
हट पटण बिज मंदर भन्नै करि चोरी घरि आवै ॥ (१५६-१२, गउड़ी चेती, मः १)
अगहु देखै पिछहु देखै तुझ ते कहा छपावै ॥३॥ (१५६-१२, गउड़ी चेती, मः १)
तट तीर्थ हम नव खंड देखे हट पटण बाजारा ॥ (१५६-१३, गउड़ी चेती, मः १)
लै कै तकड़ी तोलणि लागा घट ही महि वणजारा ॥४॥ (१५६-१३, गउड़ी चेती, मः १)
जेता समुंदु सागरु नीरि भरिआ तेते अउगण हमारे ॥ (१५६-१४, गउड़ी चेती, मः १)
दइआ करहु किछु मिहर उपावहु डुबदे पथर तारे ॥५॥ (१५६-१५, गउड़ी चेती, मः १)
जीअड़ा अगनि बराबरि तपै भीतरि वगै काती ॥ (१५६-१५, गउड़ी चेती, मः १)
प्रणवति नानकु हुकमु पछाणै सुखु होवै दिनु राती ॥६॥५॥१७॥ (१५६-१६, गउड़ी चेती, मः १)
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ (१५६-१६)
रैणि गवाई सोइ कै दिवसु गवाइआ खाइ ॥ (१५६-१७, गउड़ी बैरागणि, मः १)
हीरे जैसा जनमु है कउडी बदले जाइ ॥१॥ (१५६-१७, गउड़ी बैरागणि, मः १)
नामु न जानिआ राम का ॥ (१५६-१७, गउड़ी बैरागणि, मः १)
मूड़े फिरि पाछै पछुताहि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (१५६-१८, गउड़ी बैरागणि, मः १)
अनता धनु धरणी धरे अनत न चाहिआ जाइ ॥ (१५६-१८, गउड़ी बैरागणि, मः १)
अनत कउ चाहन जो गए से आए अनत गवाइ ॥२॥ (१५६-१९, गउड़ी बैरागणि, मः १)
आपण लीआ जे मिलै ता सभु को भागठु होइ ॥ (१५६-१९, गउड़ी बैरागणि, मः १)

पन्ना १५७

करमा उपरि निबड़ै जे लोचै सभु कोइ ॥३॥ (१५७-१, गउड़ी बैरागणि, मः १)

नानक करणा जिनि कीआ सोई सार करेइ ॥ (१५७-१, गउड़ी बैरागणि, मः १)
हुकमु न जापी खसम का किसै वडाई देइ ॥४॥१॥१८॥ (१५७-२, गउड़ी बैरागणि, मः १)
गउड़ी बैरागणि महला १ ॥ (१५७-२)
हरणी होवा बनि बसा कंद मूल चुणि खाउ ॥ (१५७-२, गउड़ी बैरागणि, मः १)
गुर परसादी मेरा सहु मिलै वारि वारि हउ जाउ जीउ ॥१॥ (१५७-३, गउड़ी बैरागणि, मः १)
मै बनजारनि राम की ॥ (१५७-३, गउड़ी बैरागणि, मः १)
तेरा नामु वखरु वापारु जी ॥१॥ रहाउ ॥ (१५७-४, गउड़ी बैरागणि, मः १)
कोकिल होवा अंबि बसा सहजि सबद बीचारु ॥ (१५७-४, गउड़ी बैरागणि, मः १)
सहजि सुभाइ मेरा सहु मिलै दरसनि रूपि अपारु ॥२॥ (१५७-५, गउड़ी बैरागणि, मः १)
मछुली होवा जलि बसा जीअ जंत सभि सारि ॥ (१५७-५, गउड़ी बैरागणि, मः १)
उरवारि पारि मेरा सहु वसै हउ मिलउगी बाह पसारि ॥३॥ (१५७-६, गउड़ी बैरागणि, मः १)
नागनि होवा धर वसा सबदु वसै भउ जाइ ॥ (१५७-६, गउड़ी बैरागणि, मः १)
नानक सदा सोहागणी जिन जोती जोति समाइ ॥४॥२॥१९॥ (१५७-७, गउड़ी बैरागणि, मः १)
गउड़ी पूरबी दीपकी महला १ (१५७-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१५७-८)
जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ (१५७-९, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
तितु घरि गावहु सोहिला सिवरहु सिरजणहारो ॥१॥ (१५७-९, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ (१५७-१०, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
हउ वारी जाउ जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१५७-१०, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ (१५७-११, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ (१५७-११, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
सम्बति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ (१५७-१२, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
देहु सजण आसीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ (१५७-१२, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ (१५७-१३, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥२०॥ (१५७-१३, गउड़ी पूरबी दीपकी, मः १)
रागु गउड़ी गुआरेरी ॥ (१५७-१५)
महला ३ चउपदे ॥ (१५७-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१५७-१५)
गुरि मिलिऐ हरि मेला होई ॥ (१५७-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपे मेलि मिलावै सोई ॥ (१५७-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मेरा प्रभु सभ बिधि आपे जाणै ॥ (१५७-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हुकमे मेले सबदि पछाणै ॥१॥ (१५७-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सतिगुर कै भइ भ्रमु भउ जाइ ॥ (१५७-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
भै राचै सच रंगि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१५७-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरि मिलिऐ हरि मनि वसै सुभाइ ॥ (१५७-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

मेरा प्रभु भारा कीमति नही पाइ ॥ (१५७-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सबदि सालाहै अंतु न पारावारु ॥ (१५७-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मेरा प्रभु बखसे बखसणहारु ॥२॥ (१५७-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरि मिलिऐ सभ मति बुधि होइ ॥ (१५७-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

पन्ना १५८

मनि निरमलि वसै सचु सोइ ॥ (१५८-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
साचि वसिऐ साची सभ कार ॥ (१५८-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
ऊतम करणी सबद बीचार ॥३॥ (१५८-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर ते साची सेवा होइ ॥ (१५८-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि नामु पछाणै कोइ ॥ (१५८-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जीवै दाता देवणहारु ॥ (१५८-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक हरि नामे लगै पिआरु ॥४॥१॥२१॥ (१५८-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१५८-३)
गुर ते गिआनु पाए जनु कोइ ॥ (१५८-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर ते बूझै सीझै सोइ ॥ (१५८-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर ते सहजु साचु बीचारु ॥ (१५८-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर ते पाए मुकति दुआरु ॥१॥ (१५८-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
पूरै भागि मिलै गुरु आइ ॥ (१५८-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
साचै सहजि साचि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१५८-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरि मिलिऐ तृसना अगनि बुझाए ॥ (१५८-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर ते साँति वसै मनि आए ॥ (१५८-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर ते पवित पावन सुचि होइ ॥ (१५८-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर ते सबदि मिलावा होइ ॥२॥ (१५८-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बाझु गुरू सभ भरमि भुलाई ॥ (१५८-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बिनु नावै बहुता दुखु पाई ॥ (१५८-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि होवै सु नामु धिआई ॥ (१५८-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
दरसनि सचै सची पति होई ॥३॥ (१५८-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
किस नो कहीऐ दाता इकु सोई ॥ (१५८-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
किरपा करे सबदि मिलावा होई ॥ (१५८-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ (१५८-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक साचे साचि समावा ॥४॥२॥२२॥ (१५८-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१५८-९)
सु थाउ सचु मनु निरमलु होइ ॥ (१५८-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सचि निवासु करे सचु सोइ ॥ (१५८-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

सची बाणी जुग चारे जापै ॥ (१५८-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सभु किछु साचा आपे आपै ॥१॥ (१५८-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
करमु होवै सतसंगि मिलाए ॥ (१५८-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हरि गुण गावै बैसि सु थाए ॥१॥ रहाउ ॥ (१५८-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जलउ इह जिहवा दूजै भाइ ॥ (१५८-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हरि रसु न चाखै फीका आलाइ ॥ (१५८-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बिनु बूझे तनु मनु फीका होइ ॥ (१५८-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बिनु नावै दुखीआ चलिआ रोइ ॥२॥ (१५८-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
रसना हरि रसु चाखिआ सहजि सुभाइ ॥ (१५८-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर किरपा ते सचि समाइ ॥ (१५८-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
साचे राती गुर सबदु वीचार ॥ (१५८-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अमृतु पीवै निर्मल धार ॥३॥ (१५८-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नामि समावै जो भाडा होइ ॥ (१५८-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
ऊंधै भाँडै टिकै न कोइ ॥ (१५८-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर सबदी मनि नामि निवासु ॥ (१५८-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक सचु भाँडा जिसु सबद पिआस ॥४॥३॥२३॥ (१५८-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१५८-१६)
इकि गावत रहे मनि सादु न पाइ ॥ (१५८-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हउमै विचि गावहि बिरथा जाइ ॥ (१५८-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गावणि गावहि जिन नाम पिआरु ॥ (१५८-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
साची बाणी सबद बीचारु ॥१॥ (१५८-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गावत रहै जे सतिगुर भावै ॥ (१५८-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनु तनु राता नामि सुहावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१५८-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
इकि गावहि इकि भगति करेहि ॥ (१५८-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नामु न पावहि बिनु असनेह ॥ (१५८-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सची भगति गुर सबद पिआरि ॥ (१५८-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अपना पिरु राखिआ सदा उरि धारि ॥२॥ (१५८-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

पन्ना १५९

भगति करहि मूरख आपु जणावहि ॥ (१५९-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नचि नचि टपहि बहुतु दुखु पावहि ॥ (१५९-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नचिऐ टपिऐ भगति न होइ ॥ (१५९-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सबदि मरै भगति पाए जनु सोइ ॥३॥ (१५९-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
भगति वछलु भगति कराए सोइ ॥ (१५९-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सची भगति विचहु आपु खोइ ॥ (१५९-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

मेरा प्रभु साचा सभ बिधि जाणै ॥ (१५६-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक बखसे नामु पछाणै ॥४॥४॥२४॥ (१५६-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१५६-४)
मनु मारे धातु मरि जाइ ॥ (१५६-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बिनु मूए कैसे हरि पाइ ॥ (१५६-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ (१५६-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥ (१५६-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जिस नो बखसे दे वडिआई ॥ (१५६-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर परसादि हरि वसै मनि आई ॥१॥ रहाउ ॥ (१५६-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ (१५६-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
ता इसु मन की सोझी पावै ॥ (१५६-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ (१५६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥ (१५६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनु असाधु साधै जनु कोइ ॥ (१५६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अचरु चरै ता निरमलु होइ ॥ (१५६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ (१५६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हउमै विचहु तजे विकार ॥३॥ (१५६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जो धुरि राखिअनु मेलि मिलाइ ॥ (१५६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ (१५६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपणी कला आपे ही जाणै ॥ (१५६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥५॥२५॥ (१५६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१५६-१०)
हउमै विचि सभु जगु बउराना ॥ (१५६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
दूजै भाइ भरमि भुलाना ॥ (१५६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बहु चिंता चितवै आपु न पछाना ॥ (१५६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
धंधा करतिआ अनदिनु विहाना ॥१॥ (१५६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हिरदै रामु रमहु मेरे भाई ॥ (१५६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि रसना हरि रसन रसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१५६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि हिरदै जिनि रामु पछाता ॥ (१५६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जगजीवनु सेवि जुग चारे जाता ॥ (१५६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हउमै मारि गुर सबदि पछाता ॥ (१५६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कृपा करे प्रभ कर्म बिधाता ॥२॥ (१५६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
से जन सचे जो गुर सबदि मिलाए ॥ (१५६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
धावत वरजे ठाकि रहाए ॥ (१५६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नामु नव निधि गुर ते पाए ॥ (१५६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

हरि किरपा ते हरि वसै मनि आए ॥३॥ (१५६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
राम राम करतिआ सुखु साँति सरीर ॥ (१५६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अंतरि वसै न लागै जम पीर ॥ (१५६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपे साहिबु आपि वजीर ॥ (१५६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक सेवि सदा हरि गुणी गहीर ॥४॥६॥२६॥ (१५६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१५६-१७)
सो किउ विसरै जिस के जीअ पराना ॥ (१५६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सो किउ विसरै सभ माहि समाना ॥ (१५६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जितु सेविऐ दरगह पति परवाना ॥१॥ (१५६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हरि के नाम विटहु बलि जाउ ॥ (१५६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
तूं विसरहि तदि ही मरि जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१५६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
तिन तूं विसरहि जि तुधु आपि भुलाए ॥ (१५६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

पन्ना १६०

तिन तूं विसरहि जि दूजै भाए ॥ (१६०-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनमुख अगिआनी जोनी पाए ॥२॥ (१६०-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जिन इक मनि तुठा से सतिगुर सेवा लाए ॥ (१६०-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जिन इक मनि तुठा तिन हरि मंनि वसाए ॥ (१६०-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमती हरि नामि समाए ॥३॥ (१६०-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जिना पोतै पुन्नु से गिआन बीचारी ॥ (१६०-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जिना पोतै पुन्नु तिन हउमै मारी ॥ (१६०-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक जो नामि रते तिन कउ बलिहारी ॥४॥७॥२७॥ (१६०-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१६०-४)
तूं अकथु किउ कथिआ जाहि ॥ (१६०-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर सबदु मारणु मन माहि समाहि ॥ (१६०-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
तेरे गुण अनेक कीमति नह पाहि ॥१॥ (१६०-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जिस की बाणी तिसु माहि समाणी ॥ (१६०-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
तेरी अकथ कथा गुर सबदि वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जह सतिगुरु तह सतसंगति बणाई ॥ (१६०-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जह सतिगुरु सहजे हरि गुण गाई ॥ (१६०-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जह सतिगुरु तहा हउमै सबदि जलाई ॥२॥ (१६०-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि सेवा महली थाउ पाए ॥ (१६०-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि अंतरि हरि नामु वसाए ॥ (१६०-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि भगति हरि नामि समाए ॥३॥ (१६०-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपे दाति करे दातारु ॥ (१६०-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

पूरे सतिगुर सिउ लगै पिआरु ॥ (१६०-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥४॥८॥२८॥ (१६०-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१६०-१०)
एकसु ते सभि रूप हहि रंगा ॥ (१६०-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
पउणु पाणी बैसंतरु सभि सहलंगा ॥ (१६०-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
भिन्न भिन्न वेखै हरि प्रभु रंगा ॥१॥ (१६०-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
एकु अचरजु एको है सोई ॥ (१६०-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि वीचारे विरला कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सहजि भवै प्रभु सभनी थाई ॥ (१६०-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कहा गुपतु प्रगटु प्रभि बणत बणाई ॥ (१६०-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपे सुतिआ देइ जगाई ॥२॥ (१६०-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
तिस की कीमति किनै न होई ॥ (१६०-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कहि कहि कथनु कहै सभु कोई ॥ (१६०-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर सबदि समावै बूझै हरि सोई ॥३॥ (१६०-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सुणि सुणि वेखै सबदि मिलाए ॥ (१६०-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
वडी वडिआई गुर सेवा ते पाए ॥ (१६०-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक नामि रते हरि नामि समाए ॥४॥९॥२९॥ (१६०-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१६०-१५)
मनमुखि सूता माइआ मोहि पिआरि ॥ (१६०-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि जागे गुण गिआन बीचारि ॥ (१६०-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
से जन जागे जिन नाम पिआरि ॥१॥ (१६०-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सहजे जागै सवै न कोइ ॥ (१६०-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
पूरे गुर ते बूझै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
असंतु अनाड़ी कदे न बूझै ॥ (१६०-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कथनी करे तै माइआ नालि लूझै ॥ (१६०-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अंधु अगिआनी कदे न सीझै ॥२॥ (१६०-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
इसु जुग महि राम नामि निसतारा ॥ (१६०-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
विरला को पाए गुर सबदि वीचारा ॥ (१६०-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपि तरै सगले कुल उधारा ॥३॥ (१६०-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

पन्ना १६१

इसु कलिजुग महि कर्म धरमु न कोई ॥ (१६१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कली का जनमु चंडाल कै घरि होई ॥ (१६१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक नाम बिना को मुकति न होई ॥४॥१०॥३०॥ (१६१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी महला ३ गुआरेरी ॥ (१६१-२)

सचा अमरु सचा पातिसाहु ॥ (१६१-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनि साचै राते हरि वेपरवाहु ॥ (१६१-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सचै महलि सचि नामि समाहु ॥१॥ (१६१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सुणि मन मेरे सबदु वीचारि ॥ (१६१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
राम जपहु भवजलु उतरहु पारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१६१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
भरमे आवै भरमे जाइ ॥ (१६१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
इहु जगु जनमिआ दूजै भाइ ॥ (१६१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनमुखि न चेतै आवै जाइ ॥२॥ (१६१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपि भुला कि प्रभि आपि भुलाइआ ॥ (१६१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
इहु जीउ विडाणी चाकरी लाइआ ॥ (१६१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
महा दुखु खटे बिरथा जनमु गवाइआ ॥३॥ (१६१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
किरपा करि सतिगुरू मिलाए ॥ (१६१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
एको नामु चेते विचहु भरमु चुकाए ॥ (१६१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक नामु जपे नाउ नउ निधि पाए ॥४॥११॥३१॥ (१६१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१६१-७)
जिना गुरमुखि धिआइआ तिन पूछउ जाइ ॥ (१६१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर सेवा ते मनु पतीआइ ॥ (१६१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
से धनवंत हरि नामु कमाइ ॥ (१६१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
पूरे गुर ते सोझी पाइ ॥१॥ (१६१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ (१६१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि सेवा हरि घाल थाइ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१६१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥ (१६१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥ (१६१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥ (१६१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सहजे सहजि समावै सोइ ॥२॥ (१६१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
दूजै भाइ न सेविआ जाइ ॥ (१६१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हउमै माइआ महा बिखु खाइ ॥ (१६१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
पुति कुटंबि गृहि मोहिआ माइ ॥ (१६१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनमुखि अंधा आवै जाइ ॥३॥ (१६१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हरि हरि नामु देवै जनु सोइ ॥ (१६१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अनदिनु भगति गुर सबदी होइ ॥ (१६१-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमति विरला बूझै कोइ ॥ (१६१-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक नामि समावै सोइ ॥४॥१२॥३२॥ (१६१-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१६१-१४)
गुर सेवा जुग चारे होई ॥ (१६१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

पूरा जनु कार कमावै कोई ॥ (१६१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अखुटु नाम धनु हरि तोटि न होई ॥ (१६१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
ऐथै सदा सुखु दरि सोभा होई ॥१॥ (१६१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
ए मन मेरे भरमु न कीजै ॥ (१६१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि सेवा अमृत रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१६१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सतिगुरु सेवहि से महापुरख संसारे ॥ (१६१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
आपि उधरे कुल सगल निसतारे ॥ (१६१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हरि का नामु रखहि उर धारे ॥ (१६१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नामि रते भउजल उतरहि पारे ॥२॥ (१६१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सतिगुरु सेवहि सदा मनि दासा ॥ (१६१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हउमै मारि कमलु परगासा ॥ (१६१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अनहदु वाजै निज घरि वासा ॥ (१६१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नामि रते घर माहि उदासा ॥३॥ (१६१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सतिगुरु सेवहि तिन की सची बाणी ॥ (१६१-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जुगु जुगु भगती आखि वखाणी ॥ (१६१-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
अनदिनु जपहि हरि सारंगपाणी ॥ (१६१-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)

पन्ना १६२

नानक नामि रते निहकेवल निरबाणी ॥४॥१३॥३३॥ (१६२-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ३ ॥ (१६२-१)
सतिगुरु मिलै वडभागि संजोग ॥ (१६२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
हिरदै नामु नित हरि रस भोग ॥१॥ (१६२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुरमुखि प्राणी नामु हरि धिआइ ॥ (१६२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जनमु जीति लाहा नामु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गिआनु धिआनु गुर सबदु है मीठा ॥ (१६२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गुर किरपा ते किनै विरलै चखि डीठा ॥२॥ (१६२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कर्म काँड बहु करहि अचार ॥ (१६२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु अहंकार ॥३॥ (१६२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
बंधनि बाधिओ माइआ फास ॥ (१६२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जन नानक छूटै गुर परगास ॥४॥१४॥३४॥ (१६२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
महला ३ गउड़ी बैरागणि ॥ (१६२-६)
जैसी धरती ऊपरिमेघुला बरसतु है किआ धरती मधे पाणी नाही ॥ (१६२-६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जैसे धरती मधे पाणी परगासिआ बिनु पगा वरसत फिराही ॥१॥ (१६२-६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
बाबा तूं ऐसे भरमु चुकाही ॥ (१६२-७, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जो किछु करतु है सोई कोई है रे तैसे जाइ समाही ॥१॥ रहाउ ॥ (१६२-७, गउड़ी बैरागणि, मः ३)

इसतरी पुरख होइ कै किआ ओइ कर्म कमाही ॥ (१६२-८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
नाना रूप सदा हहि तेरे तुझ ही माहि समाही ॥२॥ (१६२-९, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
इतने जनम भूलि परे से जा पाइआ ता भूले नाही ॥ (१६२-९, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जा का कारजु सोई परु जाणै जे गुर कै सबदि समाही ॥३॥ (१६२-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
तेरा सबदु तूंहै हहि आपे भरमु कहाही ॥ (१६२-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
नानक ततु तत सिउ मिलिआ पुनरपि जनमि न आही ॥४॥१॥१५॥३५॥ (१६२-११, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (१६२-११)
सभु जगु कालै वसि है बाधा दूजै भाइ ॥ (१६२-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हउमै कर्म कमावदे मनमुखि मिलै सजाइ ॥१॥ (१६२-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
मेरे मन गुर चरणी चितु लाइ ॥ (१६२-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गुरमुखि नामु निधानु लै दरगह लए छडाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६२-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
लख चउरासीह भरमदे मनहठि आवै जाइ ॥ (१६२-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गुर का सबदु न चीनिओ फिरि फिरि जोनी पाइ ॥२॥ (१६२-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गुरमुखि आपु पछाणिआ हरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ (१६२-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
अनदिनु भगती रतिआ हरि नामे सुखि समाइ ॥३॥ (१६२-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
मनु सबदि मरै परतीति होइ हउमै तजे विकार ॥ (१६२-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जन नानक करमी पाईअनि हरि नामा भगति भंडार ॥४॥२॥१६॥३६॥ (१६२-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (१६२-१७)
पेईअड़ै दिन चारि है हरि हरि लिखि पाइआ ॥ (१६२-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सोभावंती नारि है गुरमुखि गुण गाइआ ॥ (१६२-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
पेवकड़ै गुण सम्मलै साहुरै वासु पाइआ ॥ (१६२-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गुरमुखि सहजि समाणीआ हरि हरि मनि भाइआ ॥१॥ (१६२-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
ससुरै पेईऐ पिरु वसै कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ (१६२-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
आपि निरंजनु अलखु है आपे मेलाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६२-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ३)

पन्ना १६३

आपे ही प्रभु देहि मति हरि नामु धिआईऐ ॥ (१६३-१, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
वडभागी सतिगुरु मिलै मुखि अमृतु पाईऐ ॥ (१६३-१, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हउमै दुबिधा बिनसि जाइ सहजे सुखि समाईऐ ॥ (१६३-२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सभु आपे आपि वरतदा आपे नाइ लाईऐ ॥२॥ (१६३-२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
मनमुखि गरबि न पाइओ अगिआन इआणे ॥ (१६३-३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सतिगुर सेवा ना करहि फिरि फिरि पछुताणे ॥ (१६३-३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गरभ जोनी वासु पाइदे गरभे गलि जाणे ॥ (१६३-४, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
मेरे करते एवै भावदा मनमुख भरमाणे ॥३॥ (१६३-४, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
मेरै हरि प्रभि लेखु लिखाइआ धुरि मसतकि पूरा ॥ (१६३-५, गउड़ी बैरागणि, मः ३)

हरि हरि नामु धिआइआ भेटिआ गुरु सूरा ॥ (१६३-५, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
मेरा पिता माता हरि नामु है हरि बंधपु बीरा ॥ (१६३-६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि हरि बखसि मिलाइ प्रभ जनु नानकु कीरा ॥४॥३॥१७॥३७॥ (१६३-६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (१६३-७)
सतिगुर ते गिआनु पाइआ हरि ततु बीचारा ॥ (१६३-७, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
मति मलीण परगटु भई जपि नामु मुरारा ॥ (१६३-८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सिवि सकति मिटाईआ चूका अंधिआरा ॥ (१६३-८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
धुरि मसतकि जिन कउ लिखिआ तिन हरि नामु पिआरा ॥१॥ (१६३-८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि कितु बिधि पाईऐ संत जनहु जिसु देखि हउ जीवा ॥ (१६३-९, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि बिनु चसा न जीवती गुर मेलिहु हरि रसु पीवा ॥१॥ रहाउ ॥ (१६३-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हउ हरि गुण गावा नित हरि सुणी हरि हरि गति कीनी ॥ (१६३-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि रसु गुर ते पाइआ मेरा मनु तनु लीनी ॥ (१६३-११, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
धनु धनु गुरु सत पुरखु है जिनि भगति हरि दीनी ॥ (१६३-११, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जिसु गुर ते हरि पाइआ सो गुरु हम कीनी ॥२॥ (१६३-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गुणदाता हरि राइ है हम अवगणिआरे ॥ (१६३-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
पापी पाथर डूबदे गुरमति हरि तारे ॥ (१६३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
तूं गुणदाता निरमला हम अवगणिआरे ॥ (१६३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि सरणागति राखि लेहु मूड़ मुगध निसतारे ॥३॥ (१६३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सहजु अनंदु सदा गुरमती हरि हरि मनि धिआइआ ॥ (१६३-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सजणु हरि प्रभु पाइआ घरि सोहिला गाइआ ॥ (१६३-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि दइआ धारि प्रभ बेनती हरि हरि चेताइआ ॥ (१६३-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जन नानकु मंगै धूड़ि तिन जिन सतिगुरु पाइआ ॥४॥४॥१८॥३८॥ (१६३-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ चउथा चउपदे (१६३-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१६३-१७)
पंडितु सासत सिम्रिति पड़िआ ॥ (१६३-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जोगी गोरखु गोरखु करिआ ॥ (१६३-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मै मूरख हरि हरि जपु पड़िआ ॥१॥ (१६३-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
ना जाना किआ गति राम हमारी ॥ (१६३-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि भजु मन मेरे तरु भउजलु तू तारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१६३-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)

पन्ना १६४

संनिआसी बिभूत लाइ देह सवारी ॥ (१६४-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
पर त्रिअ तिआगु करी ब्रहमचारी ॥ (१६४-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मै मूरख हरि आस तुमारी ॥२॥ (१६४-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
खत्री कर्म करे सूरतणु पावै ॥ (१६४-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)

सूदु वैसु पर किरति कमावै ॥ (१६४-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मै मूरख हरि नामु छडावै ॥३॥ (१६४-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
सभ तेरी सृसटि तूं आपि रहिआ समाई ॥ (१६४-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुरमुखि नानक दे वडिआई ॥ (१६४-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मै अंधुले हरि टेक टिकाई ॥४॥१॥३९॥ (१६४-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (१६४-४)
निरगुण कथा कथा है हरि की ॥ (१६४-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
भजु मिलि साधू संगति जन की ॥ (१६४-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
तरु भउजलु अकथ कथा सुनि हरि की ॥१॥ (१६४-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गोबिंद सतसंगति मेलाइ ॥ (१६४-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि रसु रसना राम गुन गाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जो जन धिआवहि हरि हरि नामा ॥ (१६४-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
तिन दासनि दास करहु हम रामा ॥ (१६४-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जन की सेवा ऊतम कामा ॥२॥ (१६४-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जो हरि की हरि कथा सुणावै ॥ (१६४-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
सो जनु हमरै मनि चिति भावै ॥ (१६४-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जन पग रेणु वडभागी पावै ॥३॥ (१६४-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
संत जना सिउ प्रीति बनि आई ॥ (१६४-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जिन कउ लिखतु लिखिआ धुरि पाई ॥ (१६४-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
ते जन नानक नामि समाई ॥४॥२॥४०॥ (१६४-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (१६४-९)
माता प्रीति करे पुतु खाइ ॥ (१६४-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मीने प्रीति भई जलि नाइ ॥ (१६४-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
सतिगुर प्रीति गुरसिख मुखि पाइ ॥१॥ (१६४-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
ते हरि जन हरि मेलहु हम पिआरे ॥ (१६४-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जिन मिलिआ दुख जाहि हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जिउ मिलि बछरे गऊ प्रीति लगावै ॥ (१६४-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
कामनि प्रीति जा पिरु घरि आवै ॥ (१६४-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि जन प्रीति जा हरि जसु गावै ॥२॥ (१६४-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
सारिंग प्रीति बसै जल धारा ॥ (१६४-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
नरपति प्रीति माइआ देखि पसारा ॥ (१६४-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि जन प्रीति जपै निरंकारा ॥३॥ (१६४-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
नर प्राणी प्रीति माइआ धनु खाटे ॥ (१६४-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुरसिख प्रीति गुरु मिलै गलाटे ॥ (१६४-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जन नानक प्रीति साध पग चाटे ॥४॥३॥४१॥ (१६४-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (१६४-१५)
भीखक प्रीति भीख प्रभ पाइ ॥ (१६४-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
भूखे प्रीति होवै अन्नु खाइ ॥ (१६४-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुरसिख प्रीति गुर मिलि आघाइ ॥१॥ (१६४-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि दरसनु देहु हरि आस तुमारी ॥ (१६४-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
करि किरपा लोच पूरि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
चकवी प्रीति सूरजु मुखि लागै ॥ (१६४-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मिलै पिआरे सभ दुख तिआगै ॥ (१६४-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लागै ॥२॥ (१६४-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
बछरे प्रीति खीरु मुखि खाइ ॥ (१६४-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हिरदै बिगसै देखै माइ ॥ (१६४-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुरसिख प्रीति गुरू मुखि लाइ ॥३॥ (१६४-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
होरु सभ प्रीति माइआ मोहु काचा ॥ (१६४-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
बिनसि जाइ कूरा कचु पाचा ॥ (१६४-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जन नानक प्रीति तृपति गुरु साचा ॥४॥४॥४२॥ (१६४-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)

पन्ना १६५

गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (१६५-१)
सतिगुर सेवा सफल है बणी ॥ (१६५-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जितु मिलि हरि नामु धिआइआ हरि धणी ॥ (१६५-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जिन हरि जपिआ तिन पीछै छूटी घणी ॥१॥ (१६५-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुरसिख हरि बोलहु मेरे भाई ॥ (१६५-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि बोलत सभ पाप लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१६५-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जब गुरु मिलिआ तब मनु वसि आइआ ॥ (१६५-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
धावत पंच रहे हरि धिआइआ ॥ (१६५-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
अनदिनु नगरी हरि गुण गाइआ ॥२॥ (१६५-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
सतिगुर पग धूरि जिना मुखि लाई ॥ (१६५-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
तिन कूड़ तिआगे हरि लिव लाई ॥ (१६५-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
ते हरि दरगह मुख ऊजल भाई ॥३॥ (१६५-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुर सेवा आपि हरि भावै ॥ (१६५-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
कृसनु बलभद्रु गुर पग लगि धिआवै ॥ (१६५-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
नानक गुरमुखि हरि आपि तरावै ॥४॥५॥४३॥ (१६५-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (१६५-७)
हरि आपे जोगी डंडाधारी ॥ (१६५-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपे रवि रहिआ बनवारी ॥ (१६५-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)

हरि आपे तपु तापै लाइ तारी ॥१॥ (१६५-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
ऐसा मेरा रामु रहिआ भरपूरि ॥ (१६५-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
निकटि वसै नाही हरि दूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (१६५-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपे सबदु सुरति धुनि आपे ॥ (१६५-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपे वेखै विगसै आपे ॥ (१६५-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपि जपाइ आपे हरि जापे ॥२॥ (१६५-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपे सारिंग अमृतधारा ॥ (१६५-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि अमृतु आपि पीआवणहारा ॥ (१६५-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपि करे आपे निसतारा ॥३॥ (१६५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपे बेड़ी तुलहा तारा ॥ (१६५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपे गुरमती निसतारा ॥ (१६५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हरि आपे नानक पावै पारा ॥४॥६॥४४॥ (१६५-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (१६५-१२)
साहु हमारा तूं धणी जैसी तूं रासि देहि तैसी हम लेहि ॥ (१६५-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि नामु वणंजह रंग सिउ जे आपि दइआलु होइ देहि ॥१॥ (१६५-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हम वणजारे राम के ॥ (१६५-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि वणजु करावै दे रासि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (१६५-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
लाहा हरि भगति धनु खटिआ हरि सचे साह मनि भाइआ ॥ (१६५-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि जपि हरि वखरु लदिआ जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥२॥ (१६५-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
होरु वणजु करहि वापारीए अनंत तरंगी दुखु माइआ ॥ (१६५-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
ओइ जेहै वणजि हरि लाइआ फलु तेहा तिन पाइआ ॥३॥ (१६५-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि हरि वणजु सो जनु करे जिसु कृपालु होइ प्रभु देई ॥ (१६५-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जन नानक साहु हरि सेविआ फिरि लेखा मूलि न लेई ॥४॥१॥७॥४५॥ (१६५-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (१६५-१८)
जिउ जननी गरभु पालती सुत की करि आसा ॥ (१६५-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
वडा होइ धनु खाटि देइ करि भोग बिलासा ॥ (१६५-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तिउ हरि जन प्रीति हरि राखदा दे आपि हथासा ॥१॥ (१६५-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)

पन्ना १६६

मेरे राम मै मूरख हरि राखु मेरे गुसईआ ॥ (१६६-१, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जन की उपमा तुझहि वडईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६६-१, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मंदरि घरि आनंदु हरि हरि जसु मनि भावै ॥ (१६६-२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
सभ रस मीठे मुखि लगहि जा हरि गुण गावै ॥ (१६६-२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि जनु परवारु सधारु है इकीह कुली सभु जगतु छडावै ॥२॥ (१६६-३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जो किछु कीआ सो हरि कीआ हरि की वडिआई ॥ (१६६-३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)

हरि जीअ तेरे तूं वरतदा हरि पूज कराई ॥ (१६६-४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि भगति भंडार लहाइदा आपे वरताई ॥३॥ (१६६-४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
लाला हाटि विहाझिआ किआ तिसु चतुराई ॥ (१६६-५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जे राजि बहाले ता हरि गुलामु घासी कउ हरि नामु कढाई ॥ (१६६-५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि की वडिआई ॥४॥२॥८॥४६॥ (१६६-६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
गउड़ी गुआरेरी महला ४ ॥ (१६६-६)
किरसाणी किरसाणु करे लोचै जीउ लाइ ॥ (१६६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
हलु जोतै उदमु करे मेरा पुतु धी खाइ ॥ (१६६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
तिउ हरि जनु हरि हरि जपु करे हरि अंति छडाइ ॥१॥ (१६६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मै मूरख की गति कीजै मेरे राम ॥ (१६६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुर सतिगुर सेवा हरि लाइ हम काम ॥१॥ रहाउ ॥ (१६६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
लै तुरे सउदागरी सउदागरु धावै ॥ (१६६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
धनु खटै आसा करै माइआ मोहु वधावै ॥ (१६६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
तिउ हरि जनु हरि हरि बोलता हरि बोलि सुखु पावै ॥२॥ (१६६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
बिखु संचै हटवाणीआ बहि हाटि कमाइ ॥ (१६६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
मोह झूठु पसारा झूठ का झूठे लपटाइ ॥ (१६६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
तिउ हरि जनि हरि धनु संचिआ हरि खरचु लै जाइ ॥३॥ (१६६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
इहु माइआ मोह कुटम्बु है भाइ दूजै फास ॥ (१६६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गुरमती सो जनु तरै जो दासनि दास ॥ (१६६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
जनि नानकि नामु धिआइआ गुरमुखि परगास ॥४॥३॥९॥४७॥ (१६६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ४)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (१६६-१३)
नित दिनसु राति लालचु करे भरमै भरमाइआ ॥ (१६६-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
वेगारि फिरै वेगारीआ सिरि भारु उठाइआ ॥ (१६६-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जो गुर की जनु सेवा करे सो घर कै कंमि हरि लाइआ ॥१॥ (१६६-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मेरे राम तोड़ि बंधन माइआ घर कै कंमि लाइ ॥ (१६६-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
नित हरि गुण गावह हरि नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६६-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
नरु प्राणी चाकरी करे नरपति राजे अरथि सभ माइआ ॥ (१६६-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
कै बंधै कै डानि लेइ कै नरपति मरि जाइआ ॥ (१६६-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
धन्नु धनु सेवा सफल सतिगुरू की जितु हरि हरि नामु जपि हरि सुखु पाइआ ॥२॥ (१६६-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
नित सउदा सूदु कीचै बहु भाति करि माइआ कै ताई ॥ (१६६-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जा लाहा देइ ता सुखु मने तोटै मरि जाई ॥ (१६६-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जो गुण साझी गुर सिउ करे नित नित सुखु पाई ॥३॥ (१६६-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)

जितनी भूख अन रस साद है तितनी भूख फिरि लागै ॥ (१६७-१, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जिसु हरि आपि कृपा करे सो वेचे सिरु गुर आगै ॥ (१६७-१, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जन नानक हरि रसि तृपतिआ फिरि भूख न लागै ॥४॥४॥१०॥४८॥ (१६७-२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (१६७-२)
हमरै मनि चिति हरि आस नित किउ देखा हरि दरसु तुमारा ॥ (१६७-३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जिनि प्रीति लाई सो जाणता हमरै मनि चिति हरि बहुतु पिआरा ॥ (१६७-३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हउ कुरबानी गुर आपणे जिनि विछुड़िआ मेलिआ मेरा सिरजनहारा ॥१॥ (१६७-४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मेरे राम हम पापी सरणि परे हरि दुआरि ॥ (१६७-५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मतु निरगुण हम मेलै कबहूं अपुनी किरपा धारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१६७-५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हमरे अवगुण बहुतु बहुतु है बहु बार बार हरि गणत न आवै ॥ (१६७-६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तूं गुणवंता हरि हरि दइआलु हरि आपे बखसि लैहि हरि भावै ॥ (१६७-६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हम अपराधी राखे गुर संगती उपदेसु दीओ हरि नामु छडावै ॥२॥ (१६७-७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ ॥ (१६७-८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ ॥ (१६७-८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ ॥३॥ (१६७-९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जो हमरी बिधि होती मेरे सतिगुरा सा बिधि तुम हरि जाणहु आपे ॥ (१६७-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता गुर सतिगुर संगि कीरे हम थापे ॥ (१६७-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
धन्नु धन्नु गुरू नानक जन केरा जितु मिलिऐ चूके सभि सोग संतापे ॥४॥५॥११॥४९॥ (१६७-११, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (१६७-१२)
कंचन नारी महि जीउ लुभतु है मोहु मीठा माइआ ॥ (१६७-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
घर मंदर घोड़े खुसी मनु अन रसि लाइआ ॥ (१६७-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि प्रभु चिति न आवई किउ छूटा मेरे हरि राइआ ॥१॥ (१६७-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मेरे राम इह नीच कर्म हरि मेरे ॥ (१६७-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
गुणवंता हरि हरि दइआलु करि किरपा बखसि अवगण सभि मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (१६७-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
किछु रूपु नही किछु जाति नाही किछु ढंगु न मेरा ॥ (१६७-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
किआ मुहु लै बोलह गुण बिहून नामु जपिआ न तेरा ॥ (१६७-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हम पापी संगि गुर उबरे पुन्नु सतिगुर केरा ॥२॥ (१६७-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
सभु जीउ पिंडु मुखु नकु दीआ वरतण कउ पाणी ॥ (१६७-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
अन्नु खाणा कपड़ु पैनणु दीआ रस अनि भोगाणी ॥ (१६७-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जिनि दीए सु चिति न आवई पसू हउ करि जाणी ॥३॥ (१६७-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
सभु कीता तेरा वरतदा तूं अंतरजामी ॥ (१६७-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हम जंत विचारे किआ करह सभु खेलु तुम सुआमी ॥ (१६७-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)

जन नानकु हाटि विहाझिआ हरि गुलम गुलामी ॥४॥६॥१२॥५०॥ (१६७-१९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)

गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (१६८-१)
जिउ जननी सुतु जणि पालती राखै नदरि मझारि ॥ (१६८-१, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
अंतरि बाहरि मुखि दे गिरासु खिनु खिनु पोचारि ॥ (१६८-२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तिउ सतिगुरु गुरसिख राखता हरि प्रीति पिआरि ॥१॥ (१६८-२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मेरे राम हम बारिक हरि प्रभ के है इआणे ॥ (१६८-३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
धन्नु धन्नु गुरू गुरु सतिगुरु पाधा जिनि हरि उपदेसु दे कीए सिआणे ॥१॥ रहाउ ॥ (१६८-३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जैसी गगनि फिरंती ऊडती कपरे बागे वाली ॥ (१६८-४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
ओह राखै चीतु पीछै बिचि बचरे नित हिरदै सारि समाली ॥ (१६८-५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तिउ सतिगुर सिख प्रीति हरि हरि की गुरु सिख रखै जीअ नाली ॥२॥ (१६८-५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जैसे काती तीस बतीस है विचि राखै रसना मास रतु केरी ॥ (१६८-६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
कोई जाणहु मास काती कै किछु हाथि है सभ वसगति है हरि केरी ॥ (१६८-६, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तिउ संत जना की नर निंदा करहि हरि राखै पैज जन केरी ॥३॥ (१६८-७, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
भाई मत कोई जाणहु किसी कै किछु हाथि है सभ करे कराइआ ॥ (१६८-८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जरा मरा तापु सिरति सापु सभु हरि कै वसि है कोई लागि न सकै बिनु हरि का लाइआ ॥ (१६८-८, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
ऐसा हरि नामु मनि चिति निति धिआवहु जन नानक जो अंती अउसरि लए छडाइआ ॥४॥७॥१३॥५१॥ (१६८-९, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
गउड़ी बैरागणि महला ४ ॥ (१६८-१०)
जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥ (१६८-११, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥१॥ (१६८-११, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
मेरा सतिगुरु पिआरा कितु बिधि मिलै ॥ (१६८-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हउ खिनु खिनु करी नमसकारु मेरा गुरु पूरा किउ मिलै ॥१॥ रहाउ ॥ (१६८-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
करि किरपा हरि मेलिआ मेरा सतिगुरु पूरा ॥ (१६८-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
इछ पुन्नी जन केरीआ ले सतिगुर धूरा ॥२॥ (१६८-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
हरि भगति दृड़ावै हरि भगति सुणै तिसु सतिगुर मिलीऐ ॥ (१६८-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
तोटा मूलि न आवई हरि लाभु निति दृड़ीऐ ॥३॥ (१६८-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
जिस कउ रिदै विगासु है भाउ दूजा नाही ॥ (१६८-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
नानक तिसु गुर मिलि उधरै हरि गुण गावाही ॥४॥८॥१४॥५२॥ (१६८-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ४)
महला ४ गउड़ी पूरबी ॥ (१६८-१६)
हरि दइआलि दइआ प्रभि कीनी मेरै मनि तनि मुखि हरि बोली ॥ (१६८-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गुरमुखि रंगु भइआ अति गूड़ा हरि रंगि भीनी मेरी चोली ॥१॥ (१६८-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)

अपुने हरि प्रभ की हउ गोली ॥ (१६८-१८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जब हम हरि सेती मनु मानिआ करि दीनो जगतु सभु गोल अमोली ॥१॥ रहाउ ॥ (१६८-१८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
करहु बिबेकु संत जन भाई खोजि हिरदै देखि ढंढोली ॥ (१६८-१९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि हरि रूपु सभ जोति सबाई हरि निकटि वसै हरि कोली ॥२॥ (१६८-१९, गउड़ी पूरबी, मः ४)

पन्ना १६९

हरि हरि निकटि वसै सभ जग कै अपरम्पर पुरखु अतोली ॥ (१६९-१, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि हरि प्रगटु कीओ गुरि पूरै सिरु वेचिओ गुर पहि मोली ॥३॥ (१६९-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि जी अंतरि बाहरि तुम सरणागति तुम वड पुरख वडोली ॥ (१६९-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जनु नानकु अनदिनु हरि गुण गावै मिलि सतिगुर गुर वेचोली ॥४॥१॥१५॥५३॥ (१६९-३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१६९-४)
जगजीवन अपरम्पर सुआमी जगदीसुर पुरख बिधाते ॥ (१६९-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जितु मारगि तुम प्रेरहु सुआमी तितु मारगि हम जाते ॥१॥ (१६९-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम मेरा मनु हरि सेती राते ॥ (१६९-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
सतसंगति मिलि राम रसु पाइआ हरि रामै नामि समाते ॥१॥ रहाउ ॥ (१६९-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि हरि नामु हरि हरि जगि अवखधु हरि हरि नामु हरि साते ॥ (१६९-६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
तिन के पाप दोख सभि बिनसे जो गुरमति राम रसु खाते ॥२॥ (१६९-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिन कउ लिखतु लिखे धुरि मसतकि ते गुर संतोख सरि नाते ॥ (१६९-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
दुरमति मैलु गई सभ तिन की जो राम नाम रंगि राते ॥३॥ (१६९-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम तुम आपे आपि आपि प्रभु ठाकुर तुम जेवड अवरु न दाते ॥ (१६९-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जनु नानकु नामु लए ताँ जीवै हरि जपीऐ हरि किरपा ते ॥४॥२॥१६॥५४॥ (१६९-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१६९-१०)
करहु कृपा जगजीवन दाते मेरा मनु हरि सेती राचे ॥ (१६९-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
सतिगुरि बचनु दीओ अति निरमलु जपि हरि हरि हरि मनु माचे ॥१॥ (१६९-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम मेरा मनु तनु बेधि लीओ हरि साचे ॥ (१६९-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिह काल कै मुखि जगतु सभु ग्रसिआ गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम बाचे ॥१॥ रहाउ ॥ (१६९-१२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिन कउ प्रीति नाही हरि सेती ते साकत मूड़ नर काचे ॥ (१६९-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
तिन कउ जनमु मरणु अति भारी विचि विसटा मरि मरि पाचे ॥२॥ (१६९-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
तुम दइआल सरणि प्रतिपालक मो कउ दीजै दानु हरि हम जाचे ॥ (१६९-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि के दास दास हम कीजै मनु निरति करे करि नाचे ॥३॥ (१६९-१५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
आपे साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे हहि ता चे ॥ (१६९-१५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरा मनु तनु जीउ रासि सभ तेरी जन नानक के साह प्रभ साचे ॥४॥३॥१७॥५५॥ (१६९-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)

गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१६६-१७)
तुम दइआल सर्ब दुख भंजन इक बिनउ सुनहु दे काने ॥ (१६६-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिस ते तुम हरि जाने सुआमी सो सतिगुरु मेलि मेरा प्राने ॥१॥ (१६६-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम हम सतिगुर पारब्रह्म करि माने ॥ (१६६-१८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हम मूड़ मुगध असुध मति होते गुर सतिगुर कै बचनि हरि हम जाने ॥१॥ रहाउ ॥ (१६६-१८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जितने रस अन रस हम देखे सभ तितने फीक फीकाने ॥ (१६६-१९, गउड़ी पूरबी, मः ४)

पन्ना १७०

हरि का नामु अमृत रसु चाखिआ मिलि सतिगुर मीठ रस गाने ॥२॥ (१७०-१, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिन कउ गुरु सतिगुरु नही भेटिआ ते साकत मूड़ दिवाने ॥ (१७०-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
तिन के करमहीन धुरि पाए देखि दीपकु मोहि पचाने ॥३॥ (१७०-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिन कउ तुम दइआ करि मेलहु ते हरि हरि सेव लगाने ॥ (१७०-३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जन नानक हरि हरि हरि जपि प्रगटे मति गुरमति नामि समाने ॥४॥४॥१८॥५६॥ (१७०-३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७०-४)
मेरे मन सो प्रभु सदा नालि है सुआमी कहु किथै हरि पहु नसीऐ ॥ (१७०-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि आपे बखसि लए प्रभु साचा हरि आपि छडाए छुटीऐ ॥१॥ (१७०-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरे मन जपि हरि हरि हरि मनि जपीऐ ॥ (१७०-६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
सतिगुर की सरणाई भजि पउ मेरे मना गुर सतिगुर पीछै छुटीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१७०-६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरे मन सेवहु सो प्रभ स्रब सुखदाता जितु सेविऐ निज घरि वसीऐ ॥ (१७०-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गुरमुखि जाइ लहहु घरु अपना घसि चंदनु हरि जसु घसीऐ ॥२॥ (१७०-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरे मन हरि हरि हरि हरि हरि जसु ऊतमु लै लाहा हरि मनि हसीऐ ॥ (१७०-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि हरि आपि दइआ करि देवै ता अमृतु हरि रसु चखीऐ ॥३॥ (१७०-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरे मन नाम बिना जो दूजै लागे ते साकत नर जमि घुटीऐ ॥ (१७०-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
ते साकत चोर जिना नामु विसारिआ मन तिन कै निकटि न भिटीऐ ॥४॥ (१७०-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरे मन सेवहु अलख निरंजन नरहरि जितु सेविऐ लेखा छुटीऐ ॥ (१७०-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जन नानक हरि प्रभि पूरे कीए खिनु मासा तोलु न घटीऐ ॥५॥५॥१९॥५७॥ (१७०-१२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७०-१३)
हमरे प्रान वसगति प्रभ तुमरै मेरा जीउ पिंडु सभ तेरी ॥ (१७०-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
दइआ करहु हरि दरसु दिखावहु मेरै मनि तनि लोच घणेरी ॥१॥ (१७०-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम मेरै मनि तनि लोच मिलण हरि केरी ॥ (१७०-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गुर कृपालि कृपा किंचत गुरि कीनी हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१७०-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जो हमरै मन चिति है सुआमी सा बिधि तुम हरि जानहु मेरी ॥ (१७०-१५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
अनदिनु नामु जपी सुखु पाई नित जीवा आस हरि तेरी ॥२॥ (१७०-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गुरि सतिगुरि दातै पंथु बताइआ हरि मिलिआ आइ प्रभु मेरी ॥ (१७०-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)

अनदिनु अनदु भइआ वडभागी सभ आस पुजी जन केरी ॥३॥ (१७०-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जगन्नाथ जगदीसुर करते सभ वसगति है हरि केरी ॥ (१७०-१८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जन नानक सरणागति आए हरि राखहु पैज जन केरी ॥४॥६॥२०॥५८॥ (१७०-१८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७०-१९)
इहु मनूआ खिनु न टिकै बहु रंगी दह दह दिसि चलि चलि हाढे ॥ (१७०-१९, गउड़ी पूरबी, मः ४)

पन्ना १७१

गुरु पूरा पाइआ वडभागी हरि मंत्रु दीआ मनु ठाढे ॥१॥ (१७१-१, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम हम सतिगुर लाले काँढे ॥१॥ रहाउ ॥ (१७१-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हमरै मसतकि दागु दगाना हम करज गुरू बहु साढे ॥ (१७१-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
परउपकारु पुन्नु बहु कीआ भउ दुतरु तारि पराढे ॥२॥ (१७१-३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिन कउ प्रीति रिदै हरि नाही तिन कूरे गाढन गाढे ॥ (१७१-३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिउ पाणी कागदु बिनसि जात है तिउ मनमुख गरभि गलाढे ॥३॥ (१७१-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हम जानिआ कछू न जानह आगै जिउ हरि राखै तिउ ठाढे ॥ (१७१-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हम भूल चूक गुर किरपा धारहु जन नानक कुतरे काढे ॥४॥७॥२१॥५९॥ (१७१-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७१-६)
कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ (१७१-६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
पूरबि लिखत लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ (१७१-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
करि साधू अंजुली पुन्नु वडा हे ॥ (१७१-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ (१७१-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
साकत हरि रस सादु न जानिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ (१७१-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ (१७१-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ (१७१-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ (१७१-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ (१७१-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥८॥२२॥६०॥ (१७१-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७१-१२)
इसु गड़ महि हरि राम राइ है किछु सादु न पावै धीठा ॥ (१७१-१२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि दीन दइआलि अनुग्रहु कीआ हरि गुर सबदी चखि डीठा ॥१॥ (१७१-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम हरि कीरतनु गुर लिव मीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (१७१-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि अगमु अगोचरु पारब्रह्मु है मिलि सतिगुर लागि बसीठा ॥ (१७१-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिन गुर बचन सुखाने हीअरै तिन आगै आणि परीठा ॥२॥ (१७१-१५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मनमुख हीअरा अति कठोरु है तिन अंतरि कार करीठा ॥ (१७१-१५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
बिसीअर कउ बहु दूधु पीआईऐ बिखु निकसै फोलि फुलीठा ॥३॥ (१७१-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि प्रभ आनि मिलावहु गुरु साधू घसि गरुड़ु सबदु मुखि लीठा ॥ (१७१-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)

जन नानक गुर के लाले गोले लगि संगति करूआ मीठा ॥४॥६॥२३॥६१॥ (१७१-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७१-१८)
हरि हरि अरथि सरीरु हम बेचिआ पूरे गुर कै आगे ॥ (१७१-१८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
सतिगुर दातै नामु दिड़ाइआ मुखि मसतकि भाग सभागे ॥१॥ (१७१-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम गुरमति हरि लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (१७१-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)

पन्ना १७२

घटि घटि रमईआ रमत राम राइ गुर सबदि गुरू लिव लागे ॥ (१७२-१, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हउ मनु तनु देवउ काटि गुरू कउ मेरा भ्रमु भउ गुर बचनी भागे ॥२॥ (१७२-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
अंधिआरै दीपक आनि जलाए गुर गिआनि गुरू लिव लागे ॥ (१७२-२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
अगिआनु अंधेरा बिनसि बिनासिओ घरि वसतु लही मन जागे ॥३॥ (१७२-३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
साकत बधिक माइआधारी तिन जम जोहनि लागे ॥ (१७२-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
उन सतिगुर आगै सीसु न बेचिआ ओइ आवहि जाहि अभागे ॥४॥ (१७२-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हमरा बिनउ सुनहु प्रभ ठाकुर हम सरणि प्रभू हरि मागे ॥ (१७२-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जन नानक की लज पाति गुरू है सिरु बेचिओ सतिगुर आगे ॥५॥१०॥२४॥६२॥ (१७२-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७२-६)
हम अहंकारी अहंकार अगिआन मति गुरि मिलिऐ आपु गवाइआ ॥ (१७२-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ धनु धन्नु गुरू हरि राइआ ॥१॥ (१७२-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
राम गुर कै बचनि हरि पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१७२-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरै हीअरै प्रीति राम राइ की गुरि मारगु पंथु बताइआ ॥ (१७२-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरा जीउ पिंडु सभु सतिगुर आगै जिनि विछुड़िआ हरि गलि लाइआ ॥२॥ (१७२-६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मेरै अंतरि प्रीति लगी देखन कउ गुरि हिरदे नालि दिखाइआ ॥ (१७२-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
सहज अनंदु भइआ मनि मोरै गुर आगै आपु वेचाइआ ॥३॥ (१७२-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हम अपराध पाप बहु कीने करि दुसटी चोर चुराइआ ॥ (१७२-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
अब नानक सरणागति आए हरि राखहु लाज हरि भाइआ ॥४॥११॥२५॥६३॥ (१७२-१२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी पूरबी महला ४ ॥ (१७२-१३)
गुरमति बाजै सबदु अनाहदु गुरमति मनूआ गावै ॥ (१७२-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धन्नु गुरू लिव लावै ॥१॥ (१७२-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गुरमुखि हरि लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१७२-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हमरा ठाकुरु सतिगुरु पूरा मनु गुर की कार कमावै ॥ (१७२-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हम मलि मलि धोवह पाव गुरू के जो हरि हरि कथा सुनावै ॥२॥ (१७२-१५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हिरदै गुरमति राम रसाइणु जिहवा हरि गुण गावै ॥ (१७२-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन रसकि रसकि हरि रसि आघाने फिरि बहुरि न भूख लगावै ॥३॥ (१७२-१६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
कोई करै उपाव अनेक बहुतेरे बिनु किरपा नामु न पावै ॥ (१७२-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जन नानक कउ हरि किरपा धारी मति गुरमति नामु दृड़ावै ॥४॥१२॥२६॥६४॥ (१७२-१७, गउड़ी पूरबी, मः ४)

रागु गउड़ी माझ महला ४ ॥ (१७२-१८)
गुरमुखि जिंदू जपि नामु करम्मा ॥ (१७२-१९, गउड़ी माझ, मः ४)
मति माता मति जीउ नामु मुखि रामा ॥ (१७२-१९, गउड़ी माझ, मः ४)
संतोखु पिता करि गुरु पुरखु अजनमा ॥ (१७२-१९, गउड़ी माझ, मः ४)

पन्ना १७३

वडभागी मिलु रामा ॥१॥ (१७३-१, गउड़ी माझ, मः ४)
गुरु जोगी पुरखु मिलिआ रंगु माणी जीउ ॥ (१७३-१, गउड़ी माझ, मः ४)
गुरु हरि रंगि रतड़ा सदा निरबाणी जीउ ॥ (१७३-२, गउड़ी माझ, मः ४)
वडभागी मिलु सुघड़ सुजाणी जीउ ॥ (१७३-२, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरा मनु तनु हरि रंगि भिन्ना ॥२॥ (१७३-२, गउड़ी माझ, मः ४)
आवहु संतहु मिलि नामु जपाहा ॥ (१७३-३, गउड़ी माझ, मः ४)
विचि संगति नामु सदा लै लाहा जीउ ॥ (१७३-३, गउड़ी माझ, मः ४)
करि सेवा संता अमृतु मुखि पाहा जीउ ॥ (१७३-३, गउड़ी माझ, मः ४)
मिलु पूरबि लिखिअड़े धुरि करमा ॥३॥ (१७३-४, गउड़ी माझ, मः ४)
सावणि वरसु अमृति जगु छाइआ जीउ ॥ (१७३-४, गउड़ी माझ, मः ४)
मनु मोरु कुहुकिअड़ा सबदु मुखि पाइआ ॥ (१७३-५, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि अमृतु वुठड़ा मिलिआ हरि राइआ जीउ ॥ (१७३-५, गउड़ी माझ, मः ४)
जन नानक प्रेमि रतन्ना ॥४॥१॥२७॥६५॥ (१७३-६, गउड़ी माझ, मः ४)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (१७३-६)
आउ सखी गुण कामण करीहा जीउ ॥ (१७३-६, गउड़ी माझ, मः ४)
मिलि संत जना रंगु माणिह रलीआ जीउ ॥ (१७३-७, गउड़ी माझ, मः ४)
गुर दीपकु गिआनु सदा मनि बलीआ जीउ ॥ (१७३-७, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि तुठै ढुलि ढुलि मिलीआ जीउ ॥१॥ (१७३-८, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि ढोले जीउ ॥ (१७३-८, गउड़ी माझ, मः ४)
मै मेले मित्रु सतिगुरु वेचोले जीउ ॥ (१७३-९, गउड़ी माझ, मः ४)
मनु देवाँ संता मेरा प्रभु मेले जीउ ॥ (१७३-९, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि विटड़िअहु सदा घोले जीउ ॥२॥ (१७३-९, गउड़ी माझ, मः ४)
वसु मेरे पिआरिआ वसु मेरे गोविदा हरि करि किरपा मनि वसु जीउ ॥ (१७३-१०, गउड़ी माझ, मः ४)
मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ मेरे गोविंदा गुरु पूरा वेखि विगसु जीउ ॥ (१७३-१०, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि नामु मिलिआ सोहागणी मेरे गोविंदा मनि अनदिनु अनदु रहसु जीउ ॥ (१७३-११, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि पाइअड़ा वडभागीई मेरे गोविंदा नित लै लाहा मनि हसु जीउ ॥३॥ (१७३-१२, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि आपि उपाए हरि आपे वेखै हरि आपे कारै लाइआ जीउ ॥ (१७३-१३, गउड़ी माझ, मः ४)
इकि खावहि बखस तोटि न आवै इकना फका पाइआ जीउ ॥ (१७३-१३, गउड़ी माझ, मः ४)
इकि राजे तखति बहहि नित सुखीए इकना भिख मंगाइआ जीउ ॥ (१७३-१४, गउड़ी माझ, मः ४)

सभु इको सबदु वरतदा मेरे गोविदा जन नानक नामु धिआइआ जीउ ॥४॥२॥२८॥६६॥ (१७३-१५, गउड़ी माझ, मः ४)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (१७३-१६)
मन माही मन माही मेरे गोविंदा हरि रंगि रता मन माही जीउ ॥ (१७३-१६, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि रंगु नालि न लखीऐ मेरे गोविदा गुरु पूरा अलखु लखाही जीउ ॥ (१७३-१६, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि हरि नामु परगासिआ मेरे गोविंदा सभ दालद दुख लहि जाही जीउ ॥ (१७३-१७, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि पदु ऊतमु पाइआ मेरे गोविंदा वडभागी नामि समाही जीउ ॥१॥ (१७३-१८, गउड़ी माझ, मः ४)
नैणी मेरे पिआरिआ नैणी मेरे गोविदा किनै हरि प्रभु डिठड़ा नैणी जीउ ॥ (१७३-१९, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ मेरे गोविंदा हरि बाझहु धन कुमलैणी जीउ ॥ (१७३-१९, गउड़ी माझ, मः ४)

पन्ना १७४

संत जना मिलि पाइआ मेरे गोविदा मेरा हरि प्रभु सजणु सैणी जीउ ॥ (१७४-१, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि आइ मिलिआ जगजीवनु मेरे गोविंदा मै सुखि विहाणी रैणी जीउ ॥२॥ (१७४-२, गउड़ी माझ, मः ४)
मै मेलहु संत मेरा हरि प्रभु सजणु मै मनि तनि भुख लगाईआ जीउ ॥ (१७४-३, गउड़ी माझ, मः ४)
हउ रहि न सकउ बिनु देखे मेरे प्रीतम मै अंतरि बिरहु हरि लाईआ जीउ ॥ (१७४-३, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि राइआ मेरा सजणु पिआरा गुरु मेले मेरा मनु जीवाईआ जीउ ॥ (१७४-४, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरै मनि तनि आसा पूरीआ मेरे गोविंदा हरि मिलिआ मनि वाधाईआ जीउ ॥३॥ (१७४-५, गउड़ी माझ, मः ४)
वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥ (१७४-६, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरै मनि तनि प्रेमु पिरम्म का मेरे गोविदा हरि पूंजी राखु हमारी जीउ ॥ (१७४-६, गउड़ी माझ, मः ४)
सतिगुरु विसटु मेलि मेरे गोविंदा हरि मेले करि रैबारी जीउ ॥ (१७४-७, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि नामु दइआ करि पाइआ मेरे गोविंदा जन नानकु सरणि तुमारी जीउ ॥४॥३॥२९॥६७॥ (१७४-८, गउड़ी माझ, मः ४)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (१७४-९)
चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥ (१७४-९, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि आपे कानु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥ (१७४-१०, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि आपे सभ घट भोगदा मेरे गोविंदा आपे रसीआ भोगी जीउ ॥ (१७४-१०, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि सुजाणु न भुलई मेरे गोविंदा आपे सतिगुरु जोगी जीउ ॥१॥ (१७४-११, गउड़ी माझ, मः ४)
आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि आपि खेलै बहु रंगी जीउ ॥ (१७४-१२, गउड़ी माझ, मः ४)
इकना भोग भोगाइदा मेरे गोविंदा इकि नगन फिरहि नंग नंगी जीउ ॥ (१७४-१२, गउड़ी माझ, मः ४)
आपे जगतु उपाइदा मेरे गोविदा हरि दानु देवै सभ मंगी जीउ ॥ (१७४-१३, गउड़ी माझ, मः ४)
भगता नामु आधारु है मेरे गोविंदा हरि कथा मंगहि हरि चंगी जीउ ॥२॥ (१७४-१४, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि आपे भगति कराइदा मेरे गोविंदा हरि भगता लोच मनि पूरी जीउ ॥ (१७४-१४, गउड़ी माझ, मः ४)
आपे जलि थलि वरतदा मेरे गोविदा रवि रहिआ नही दूरी जीउ ॥ (१७४-१५, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि अंतरि बाहरि आपि है मेरे गोविदा हरि आपि रहिआ भरपूरी जीउ ॥ (१७४-१६, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि आतम रामु पसारिआ मेरे गोविंदा हरि वेखै आपि हदूरी जीउ ॥३॥ (१७४-१७, गउड़ी माझ, मः ४)

हरि अंतरि वाजा पउणु है मेरे गोविंदा हरि आपि वजाए तिउ वाजै जीउ ॥ (१७४-१७, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि अंतरि नामु निधानु है मेरे गोविंदा गुर सबदी हरि प्रभु गाजै जीउ ॥ (१७४-१८, गउड़ी माझ, मः ४)
आपे सरणि पवाइदा मेरे गोविंदा हरि भगत जना राखु लाजै जीउ ॥ (१७४-१९, गउड़ी माझ, मः ४)

पन्ना १७५

वडभागी मिलु संगती मेरे गोविंदा जन नानक नाम सिधि काजै जीउ ॥४॥४॥३०॥६८॥ (१७५-१, गउड़ी माझ, मः ४)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (१७५-२)
मै हरि नामै हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ (१७५-२, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरा हरि प्रभु मितु मिलै सुखु पाई जीउ ॥ (१७५-२, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि प्रभु देखि जीवा मेरी माई जीउ ॥ (१७५-३, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरा नामु सखा हरि भाई जीउ ॥१॥ (१७५-३, गउड़ी माझ, मः ४)
गुण गावहु संत जीउ मेरे हरि प्रभ केरे जीउ ॥ (१७५-३, गउड़ी माझ, मः ४)
जपि गुरमुखि नामु जीउ भाग वडेरे जीउ ॥ (१७५-४, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि हरि नामु जीउ प्रान हरि मेरे जीउ ॥ (१७५-४, गउड़ी माझ, मः ४)
फिरि बहुड़ि न भवजल फेरे जीउ ॥२॥ (१७५-५, गउड़ी माझ, मः ४)
किउ हरि प्रभ वेखा मेरै मनि तनि चाउ जीउ ॥ (१७५-५, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि मेलहु संत जीउ मनि लगा भाउ जीउ ॥ (१७५-६, गउड़ी माझ, मः ४)
गुर सबदी पाईऐ हरि प्रीतम राउ जीउ ॥ (१७५-६, गउड़ी माझ, मः ४)
वडभागी जपि नाउ जीउ ॥३॥ (१७५-७, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरै मनि तनि वडड़ी गोविंद प्रभ आसा जीउ ॥ (१७५-७, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि मेलहु संत जीउ गोविद प्रभ पासा जीउ ॥ (१७५-७, गउड़ी माझ, मः ४)
सतिगुर मति नामु सदा परगासा जीउ ॥ (१७५-८, गउड़ी माझ, मः ४)
जन नानक पूरिअड़ी मनि आसा जीउ ॥४॥५॥३१॥६९॥ (१७५-८, गउड़ी माझ, मः ४)
गउड़ी माझ महला ४ ॥ (१७५-९)
मेरा बिरही नामु मिलै ता जीवा जीउ ॥ (१७५-९, गउड़ी माझ, मः ४)
मन अंदरि अमृतु गुरमति हरि लीवा जीउ ॥ (१७५-९, गउड़ी माझ, मः ४)
मनु हरि रंगि रतड़ा हरि रसु सदा पीवा जीउ ॥ (१७५-१०, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि पाइअड़ा मनि जीवा जीउ ॥१॥ (१७५-१०, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरै मनि तनि प्रेमु लगा हरि बाणु जीउ ॥ (१७५-११, गउड़ी माझ, मः ४)
मेरा प्रीतमु मित्रु हरि पुरखु सुजाणु जीउ ॥ (१७५-११, गउड़ी माझ, मः ४)
गुरु मेले संत हरि सुघड़ु सुजाणु जीउ ॥ (१७५-१२, गउड़ी माझ, मः ४)
हउ नाम विटहु कुरबाणु जीउ ॥२॥ (१७५-१२, गउड़ी माझ, मः ४)
हउ हरि हरि सजणु हरि मीतु दसाई जीउ ॥ (१७५-१३, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि दसहु संतहु जी हरि खोजु पवाई जीउ ॥ (१७५-१३, गउड़ी माझ, मः ४)

सतिगुरु तुठड़ा दसे हरि पाई जीउ ॥ (१७५-१३, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि नामे नामि समाई जीउ ॥३॥ (१७५-१४, गउड़ी माझ, मः ४)
मै वेदन प्रेमु हरि बिरहु लगाई जीउ ॥ (१७५-१४, गउड़ी माझ, मः ४)
गुर सरधा पूरि अमृतु मुखि पाई जीउ ॥ (१७५-१५, गउड़ी माझ, मः ४)
हरि होहु दइआलु हरि नामु धिआई जीउ ॥ (१७५-१५, गउड़ी माझ, मः ४)
जन नानक हरि रसु पाई जीउ ॥४॥६॥२०॥१८॥३२॥७०॥ (१७५-१५, गउड़ी माझ, मः ४)
महला ५ रागु गउड़ी गुआरेरी चउपदे (१७५-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१७५-१७)
किन बिधि कुसलु होत मेरे भाई ॥ (१७५-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
किउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१७५-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कुसलु न गृहि मेरी सभ माइआ ॥ (१७५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ऊचे मंदर सुंदर छाइआ ॥ (१७५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
झूठे लालचि जनमु गवाइआ ॥१॥ (१७५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १७६

हसती घोड़े देखि विगासा ॥ (१७६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
लसकर जोड़े नेब खवासा ॥ (१७६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गलि जेवड़ी हउमै के फासा ॥२॥ (१७६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
राजु कमावै दह दिस सारी ॥ (१७६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
माणै रंग भोग बहु नारी ॥ (१७६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिउ नरपति सुपनै भेखारी ॥३॥ (१७६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
एकु कुसलु मो कउ सतिगुरू बताइआ ॥ (१७६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि जो किछु करे सु हरि किआ भगता भाइआ ॥ (१७६-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जन नानक हउमै मारि समाइआ ॥४॥ (१७६-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इनि बिधि कुसल होत मेरे भाई ॥ (१७६-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इउ पाईऐ हरि राम सहाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥ (१७६-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७६-५)
किउ भ्रमीऐ भ्रमु किस का होई ॥ (१७६-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा जलि थलि महीअलि रविआ सोई ॥ (१७६-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुरमुखि उबरे मनमुख पति खोई ॥१॥ (१७६-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु राखै आपि रामु दइआरा ॥ (१७६-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तिसु नही दूजा को पहुचनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१७६-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सभ महि वरतै एकु अनंता ॥ (१७६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता तूं सुखि सोउ होइ अचिंता ॥ (१७६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ओहु सभु किछु जाणै जो वरतंता ॥२॥ (१७६-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

मनमुख मुए जिन दूजी पिआसा ॥ (१७६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बहु जोनी भवहि धुरि किरति लिखिआसा ॥ (१७६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जैसा बीजहि तैसा खासा ॥३॥ (१७६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
देखि दरसु मनि भइआ विगासा ॥ (१७६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सभु नदरी आइआ ब्रह्मु परगासा ॥ (१७६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जन नानक की हरि पूरन आसा ॥४॥२॥७१॥ (१७६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७६-१०)
कई जनम भए कीट पतंगा ॥ (१७६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कई जनम गज मीन कुरंगा ॥ (१७६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कई जनम पंखी सरप होइओ ॥ (१७६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कई जनम हैवर बृख जोइओ ॥१॥ (१७६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मिलु जगदीस मिलन की बरीआ ॥ (१७६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
चिरंकाल इह देह संजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१७६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कई जनम सैल गिरि करिआ ॥ (१७६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कई जनम गरभ हिरि खरिआ ॥ (१७६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कई जनम साख करि उपाइआ ॥ (१७६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
लख चउरासीह जोनि भ्रमाइआ ॥२॥ (१७६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधसंगि भइओ जनमु परापति ॥ (१७६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि सेवा भजु हरि हरि गुरमति ॥ (१७६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तिआगि मानु झूठु अभिमानु ॥ (१७६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जीवत मरहि दरगह परवानु ॥३॥ (१७६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो किछु होआ सु तुझ ते होगु ॥ (१७६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अवरु न दूजा करणै जोगु ॥ (१७६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता मिलीऐ जा लैहि मिलाइ ॥ (१७६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक हरि हरि गुण गाइ ॥४॥३॥७२॥ (१७६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७६-१७)
करम भूमि महि बोअहु नामु ॥ (१७६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पूरन होइ तुमारा कामु ॥ (१७६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
फल पावहि मिटै जम त्रास ॥ (१७६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नित गावहि हरि हरि गुण जास ॥१॥ (१७६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि हरि नामु अंतरि उरि धारि ॥ (१७६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सीघर कारजु लेहु सवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१७६-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अपने प्रभ सिउ होहु सावधानु ॥ (१७६-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता तूं दरगह पावहि मानु ॥ (१७६-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

उकति सिआणप सगली तिआगु ॥ (१७७-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत जना की चरणी लागु ॥२॥ (१७७-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब जीअ हहि जा कै हाथि ॥ (१७७-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कदे न विछुड़ै सभ कै साथि ॥ (१७७-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उपाव छोडि गहु तिस की ओट ॥ (१७७-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
निमख माहि होवै तेरी छोटि ॥३॥ (१७७-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सदा निकटि करि तिस नो जाणु ॥ (१७७-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ की आगिआ सति करि मानु ॥ (१७७-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि मिटावहु आपु ॥ (१७७-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि हरि नामु नानक जपि जापु ॥४॥४॥७३॥ (१७७-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७७-४)
गुर का बचनु सदा अबिनासी ॥ (१७७-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि कटी जम फासी ॥ (१७७-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर का बचनु जीअ कै संगि ॥ (१७७-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि रचै राम कै रंगि ॥१॥ (१७७-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो गुरि दीआ सु मन कै कामि ॥ (१७७-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत का कीआ सति करि मानि ॥१॥ रहाउ ॥ (१७७-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर का बचनु अटल अछेद ॥ (१७७-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि कटे भ्रम भेद ॥ (१७७-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर का बचनु कतहु न जाइ ॥ (१७७-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि हरि के गुण गाइ ॥२॥ (१७७-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर का बचनु जीअ कै साथ ॥ (१७७-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर का बचनु अनाथ को नाथ ॥ (१७७-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि नरकि न पवै ॥ (१७७-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि रसना अमृतु रवै ॥३॥ (१७७-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर का बचनु परगटु संसारि ॥ (१७७-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर कै बचनि न आवै हारि ॥ (१७७-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु जन होए आपि कृपाल ॥ (१७७-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नानक सतिगुर सदा दइआल ॥४॥५॥७४॥ (१७७-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७७-१०)
जिनि कीता माटी ते रतनु ॥ (१७७-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गरभ महि राखिआ जिनि करि जतनु ॥ (१७७-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि दीनी सोभा वडिआई ॥ (१७७-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

तिसु प्रभ कउ आठ पहर धिआई ॥१॥ (१७७-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
रमईआ रेनु साध जन पावउ ॥ (१७७-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर मिलि अपुना खसमु धिआवउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१७७-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि कीता मूड़ ते बकता ॥ (१७७-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि कीता बेसुरत ते सुरता ॥ (१७७-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु परसादि नवै निधि पाई ॥ (१७७-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सो प्रभु मन ते बिसरत नाही ॥२॥ (१७७-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि दीआ निथावे कउ थानु ॥ (१७७-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि दीआ निमाने कउ मानु ॥ (१७७-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि कीनी सभ पूरन आसा ॥ (१७७-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सिमरउ दिनु रैनि सास गिरासा ॥३॥ (१७७-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु प्रसादि माइआ सिलक काटी ॥ (१७७-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर प्रसादि अमृतु बिखु खाटी ॥ (१७७-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक इस ते किछु नाही ॥ (१७७-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
राखनहारे कउ सालाही ॥४॥६॥७५॥ (१७७-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७७-१७)
तिस की सरणि नाही भउ सोगु ॥ (१७७-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उस ते बाहरि कछू न होगु ॥ (१७७-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तजी सिआणप बल बुधि बिकार ॥ (१७७-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दास अपने की राखनहार ॥१॥ (१७७-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जपि मन मेरे राम राम रंगि ॥ (१७७-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
घरि बाहरि तेरै सद संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (१७७-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तिस की टेक मनै महि राखु ॥ (१७७-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १७८

गुर का सबदु अमृत रसु चाखु ॥ (१७८-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अवरि जतन कहहु कउन काज ॥ (१७८-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा राखै आपि लाज ॥२॥ (१७८-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
किआ मानुख कहहु किआ जोरु ॥ (१७८-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
झूठा माइआ का सभु सोरु ॥ (१७८-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करण करावनहार सुआमी ॥ (१७८-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ (१७८-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब सुखा सुखु साचा एहु ॥ (१७८-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर उपदेसु मनै महि लेहु ॥ (१७८-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा कउ राम नाम लिव लागी ॥ (१७८-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

कहु नानक सो धन्नु वडभागी ॥४॥७॥७६॥ (१७८-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७८-४)
सुणि हरि कथा उतारी मैलु ॥ (१७८-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
महा पुनीत भए सुख सैलु ॥ (१७८-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
वडै भागि पाइआ साधसंगु ॥ (१७८-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पारब्रह्म सिउ लागो रंगु ॥१॥ (१७८-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि हरि नामु जपत जनु तारिओ ॥ (१७८-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अगनि सागरु गुरि पारि उतारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१७८-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि कीरतनु मन सीतल भए ॥ (१७८-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जनम जनम के किलविख गए ॥ (१७८-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब निधान पेखे मन माहि ॥ (१७८-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अब ढूढन काहे कउ जाहि ॥२॥ (१७८-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ अपुने जब भए दइआल ॥ (१७८-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पूरन होई सेवक घाल ॥ (१७८-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बंधन काटि कीए अपने दास ॥ (१७८-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि गुणतास ॥३॥ (१७८-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
एको मनि एको सभ ठाइ ॥ (१७८-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ सभ जाइ ॥ (१७८-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुरि पूरै सभु भरमु चुकाइआ ॥ (१७८-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि सिमरत नानक सुखु पाइआ ॥४॥८॥७७॥ (१७८-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७८-१०)
अगले मुए सि पाछै परे ॥ (१७८-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो उबरे से बंधि लकु खरे ॥ (१७८-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिह धंधे महि ओइ लपटाए ॥ (१७८-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उन ते दुगुण दिड़ी उन माए ॥१॥ (१७८-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ओह बेला कछु चीति न आवै ॥ (१७८-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिनसि जाइ ताहू लपटावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१७८-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आसा बंधी मूरख देह ॥ (१७८-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
काम क्रोध लपटिओ असनेह ॥ (१७८-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सिर ऊपरि ठाढो धर्म राइ ॥ (१७८-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मीठी करि करि बिखिआ खाइ ॥२॥ (१७८-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हउ बंधउ हउ साधउ बैरु ॥ (१७८-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हमरी भूमि कउणु घालै पैरु ॥ (१७८-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हउ पंडितु हउ चतुरु सिआणा ॥ (१७८-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करणैहारु न बुझै बिगाना ॥३॥ (१७८-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

अपुनी गति मिति आपे जानै ॥ (१७८-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
किआ को कहै किआ आखि वखानै ॥ (१७८-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ (१७८-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अपना भला सभ काहू मंगना ॥४॥ (१७८-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सभ किछु तेरा तूं करणैहारु ॥ (१७८-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अंतु नाही किछु पारावारु ॥ (१७८-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दास अपने कउ दीजै दानु ॥ (१७८-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कबहू न विसरै नानक नामु ॥५॥६॥७८॥ (१७८-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७८-१८)
अनिक जतन नही होत छुटारा ॥ (१७८-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बहुतु सिआणप आगल भारा ॥ (१७८-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि की सेवा निर्मल हेत ॥ (१७८-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ की दरगह सोभा सेत ॥१॥ (१७८-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १७९

मन मेरे गहु हरि नाम का ओला ॥ (१७९-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तुझै न लागै ताता झोला ॥१॥ रहाउ ॥ (१७९-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिउ बोहिथु भै सागर माहि ॥ (१७९-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अंधकार दीपक दीपाहि ॥ (१७९-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अगनि सीत का लाहसि दूख ॥ (१७९-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नामु जपत मनि होवत सूख ॥२॥ (१७९-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उतरि जाइ तेरे मन की पिआस ॥ (१७९-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पूरन होवै सगली आस ॥ (१७९-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
डोलै नाही तुमरा चीतु ॥ (१७९-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमृत नामु जपि गुरमुखि मीत ॥३॥ (१७९-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नामु अउखधु सोई जनु पावै ॥ (१७९-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा जिसु आपि दिवावै ॥ (१७९-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि हरि नामु जा कै हिरदै वसै ॥ (१७९-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दूखु दरदु तिह नानक नसै ॥४॥१०॥७९॥ (१७९-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७९-६)
बहुतु दरबु करि मनु न अघाना ॥ (१७९-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अनिक रूप देखि नह पतीआना ॥ (१७९-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पुत्र कलत्र उरझिओ जानि मेरी ॥ (१७९-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ओह बिनसै ओइ भसमै ढेरी ॥१॥ (१७९-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिनु हरि भजन देखउ बिललाते ॥ (१७९-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु माइआ संगि राते ॥१॥ रहाउ ॥ (१७६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिउ बिगारी कै सिरि दीजहि दाम ॥ (१७६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ओइ खसमै कै गृहि उन दूख सहाम ॥ (१७६-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिउ सुपनै होइ बैसत राजा ॥ (१७६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नेत्र पसारै ता निरारथ काजा ॥२॥ (१७६-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिउ राखा खेत ऊपरि पराए ॥ (१७६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
खेतु खसम का राखा उठि जाए ॥ (१७६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उसु खेत कारणि राखा कड़ै ॥ (१७६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तिस कै पालै कछू न पड़ै ॥३॥ (१७६-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिस का राजु तिसै का सुपना ॥ (१७६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि माइआ दीनी तिनि लाई तृसना ॥ (१७६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आपि बिनाहे आपि करे रासि ॥ (१७६-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नानक प्रभ आगै अरदासि ॥४॥११॥८०॥ (१७६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७६-१२)
बहु रंग माइआ बहु बिधि पेखी ॥ (१७६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कलम कागद सिआनप लेखी ॥ (१७६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
महर मलूक होइ देखिआ खान ॥ (१७६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता ते नाही मनु तृपतान ॥१॥ (१७६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सो सुखु मो कउ संत बतावहु ॥ (१७६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तृसना बूझै मनु तृपतावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (१७६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
असु पवन हसति असवारी ॥ (१७६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
चोआ चंदनु सेज सुंदरि नारी ॥ (१७६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नट नाटिक आखारे गाइआ ॥ (१७६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता महि मनि संतोखु न पाइआ ॥२॥ (१७६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तखतु सभा मंडन दोलीचे ॥ (१७६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सगल मेवे सुंदर बागीचे ॥ (१७६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आखेड़ बिरति राजन की लीला ॥ (१७६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मनु न सुहेला परपंचु हीला ॥३॥ (१७६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा संतन सचु कहिआ ॥ (१७६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब सूख इहु आनंदु लहिआ ॥ (१७६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (१७६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥४॥ (१७६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा कै हरि धनु सोई सुहेला ॥ (१७६-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ किरपा ते साधसंगि मेला ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥८१॥ (१७६-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१७६-१९)

प्राणी जाणै इहु तनु मेरा ॥ (१८०-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बहुरि बहुरि उआहू लपटेरा ॥ (१८०-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पुत्र कलत्र गिरसत का फासा ॥ (१८०-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
होनु न पाईऐ राम के दासा ॥१॥ (१८०-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कवन सु बिधि जितु राम गुण गाइ ॥ (१८०-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कवन सु मति जितु तरै इह माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८०-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो भलाई सो बुरा जानै ॥ (१८०-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साचु कहै सो बिखै समानै ॥ (१८०-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जाणै नाही जीत अरु हार ॥ (१८०-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इहु वलेवा साकत संसार ॥२॥ (१८०-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो हलाहल सो पीवै बउरा ॥ (१८०-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमृतु नामु जानै करि कउरा ॥ (१८०-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधसंग कै नाही नेरि ॥ (१८०-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
लख चउरासीह भ्रमता फेरि ॥३॥ (१८०-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
एकै जालि फहाए पंखी ॥ (१८०-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
रसि रसि भोग करहि बहु रंगी ॥ (१८०-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक जिसु भए कृपाल ॥ (१८०-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुरि पूरै ता के काटे जाल ॥४॥१३॥८२॥ (१८०-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८०-६)
तउ किरपा ते मारगु पाईऐ ॥ (१८०-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ किरपा ते नामु धिआईऐ ॥ (१८०-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ किरपा ते बंधन छुटै ॥ (१८०-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तउ किरपा ते हउमै तुटै ॥१॥ (१८०-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तुम लावहु तउ लागह सेव ॥ (१८०-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हम ते कछू न होवै देव ॥१॥ रहाउ ॥ (१८०-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तुधु भावै ता गावा बाणी ॥ (१८०-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तुधु भावै ता सचु वखाणी ॥ (१८०-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तुधु भावै ता सतिगुर मइआ ॥ (१८०-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब सुखा प्रभ तेरी दइआ ॥२॥ (१८०-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो तुधु भावै सो निर्मल करमा ॥ (१८०-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो तुधु भावै सो सचु धरमा ॥ (१८०-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब निधान गुण तुम ही पासि ॥ (१८०-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं साहिबु सेवक अरदासि ॥३॥ (१८०-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

मनु तनु निरमलु होइ हरि रंगि ॥ (१८०-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब सुखा पावउ सतसंगि ॥ (१८०-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नामि तेरै रहै मनु राता ॥ (१८०-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इहु कलिआणु नानक करि जाता ॥४॥१४॥८३॥ (१८०-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८०-१३)
आन रसा जेते तै चाखे ॥ (१८०-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
निमख न तृसना तेरी लाथे ॥ (१८०-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि रस का तूं चाखहि सादु ॥ (१८०-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
चाखत होइ रहहि बिसमादु ॥१॥ (१८०-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमृतु रसना पीउ पिआरी ॥ (१८०-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इह रस राती होइ तृपतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८०-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हे जिहवे तूं राम गुण गाउ ॥ (१८०-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
निमख निमख हरि हरि हरि धिआउ ॥ (१८०-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आन न सुनीऐ कतहूं जाईऐ ॥ (१८०-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधसंगति वडभागी पाईऐ ॥२॥ (१८०-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आठ पहर जिहवे आराधि ॥ (१८०-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पारब्रह्म ठाकुर आगाधि ॥ (१८०-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ईहा ऊहा सदा सुहेली ॥ (१८०-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि गुण गावत रसन अमोली ॥३॥ (१८०-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बनसपति मउली फल फुल पेडे ॥ (१८०-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इह रस राती बहुरि न छोडे ॥ (१८०-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आन न रस कस लवै न लाई ॥ (१८०-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक गुर भए है सहाई ॥४॥१५॥८४॥ (१८०-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८०-१९)
मनु मंदरु तनु साजी बारि ॥ (१८०-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १८१

इस ही मधे बसतु अपार ॥ (१८१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इस ही भीतरि सुनीअत साहु ॥ (१८१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कवनु बापारी जा का ऊहा विसाहु ॥१॥ (१८१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नाम रतन को को बिउहारी ॥ (१८१-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमृत भोजनु करे आहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८१-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मनु तनु अरपी सेव करीजै ॥ (१८१-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कवन सु जुगति जितु करि भीजै ॥ (१८१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पाइ लगउ तजि मेरा तेरै ॥ (१८१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

कवनु सु जनु जो सउदा जोरै ॥२॥ (१८१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
महलु साह का किन बिधि पावै ॥ (१८१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कवन सु बिधि जितु भीतरि बुलावै ॥ (१८१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं वड साहु जा के कोटि वणजारे ॥ (१८१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कवनु सु दाता ले संचारे ॥३॥ (१८१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
खोजत खोजत निज घरु पाइआ ॥ (१८१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमोल रतनु साचु दिखलाइआ ॥ (१८१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा जब मेले साहि ॥ (१८१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक गुर कै वेसाहि ॥४॥१६॥८५॥ (१८१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी महला ५ गुआरेरी ॥ (१८१-६)
रैणि दिनसु रहै इक रंगा ॥ (१८१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ कउ जाणै सद ही संगा ॥ (१८१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ठाकुर नामु कीओ उनि वरतनि ॥ (१८१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तृपति अघावनु हरि कै दरसनि ॥१॥ (१८१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि संगि राते मन तन हरे ॥ (१८१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर पूरे की सरनी परे ॥१॥ रहाउ ॥ (१८१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
चरण कमल आतम आधार ॥ (१८१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
एकु निहारहि आगिआकार ॥ (१८१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
एको बनजु एको बिउहारी ॥ (१८१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अवरु न जानहि बिनु निरंकारी ॥२॥ (१८१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥ (१८१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥ (१८१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥ (१८१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पारब्रह्म का ओइ धिआनु धरते ॥३॥ (१८१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संतन की महिमा कवन वखानउ ॥ (१८१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अगाधि बोधि किछु मिति नही जानउ ॥ (१८१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पारब्रह्म मोहि किरपा कीजै ॥ (१८१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
धूरि संतन की नानक दीजै ॥४॥१७॥८६॥ (१८१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८१-१३)
तूं मेरा सखा तूंही मेरा मीतु ॥ (१८१-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं मेरा प्रीतमु तुम संगि हीतु ॥ (१८१-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं मेरी पति तूहै मेरा गहणा ॥ (१८१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तुझ बिनु निमखु न जाई रहणा ॥१॥ (१८१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं मेरे लालन तूं मेरे प्रान ॥ (१८१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं मेरे साहिब तूं मेरे खान ॥१॥ रहाउ ॥ (१८१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

जिउ तुम राखहु तिव ही रहना ॥ (१८१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो तुम कहहु सोई मोहि करना ॥ (१८१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जह पेखउ तहा तुम बसना ॥ (१८१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
निरभउ नामु जपउ तेरा रसना ॥२॥ (१८१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥ (१८१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥ (१८१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥ (१८१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥३॥ (१८१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मन तन अंतरि तुही धिआइआ ॥ (१८१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मरमु तुमारा गुर ते पाइआ ॥ (१८१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सतिगुर ते दृड़िआ इकु एकै ॥ (१८१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नानक दास हरि हरि हरि टेकै ॥४॥१८॥८७॥ (१८१-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८१-१९)

पन्ना १८२

बिआपत हरख सोग बिसथार ॥ (१८२-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत सुरग नरक अवतार ॥ (१८२-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत धन निर्धन पेखि सोभा ॥ (१८२-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मूलु बिआधी बिआपसि लोभा ॥१॥ (१८२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
माइआ बिआपत बहु परकारी ॥ (१८२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत जीवहि प्रभ ओट तुमारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत अहम्बुधि का माता ॥ (१८२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत पुत्र कलत्र संगि राता ॥ (१८२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत हसति घोड़े अरु बसता ॥ (१८२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत रूप जोबन मद मसता ॥२॥ (१८२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत भूमि रंक अरु रंगा ॥ (१८२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत गीत नाद सुणि संगा ॥ (१८२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत सेज महल सीगार ॥ (१८२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पंच दूत बिआपत अंधिआर ॥३॥ (१८२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपत कर्म करै हउ फासा ॥ (१८२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिआपति गिरसत बिआपत उदासा ॥ (१८२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आचार बिउहार बिआपत इह जाति ॥ (१८२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सभ किछु बिआपत बिनु हरि रंग रात ॥४॥ (१८२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संतन के बंधन काटे हरि राइ ॥ (१८२-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता कउ कहा बिआपै माइ ॥ (१८२-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

कहु नानक जिनि धूरि संत पाई ॥ (१८२-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता कै निकटि न आवै माई ॥५॥१६॥८८॥ (१८२-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८२-८)
नैनहु नीद पर द्रिसटि विकार ॥ (१८२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
स्रवण सोए सुणि निंद वीचार ॥ (१८२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
रसना सोई लोभि मीठै सादि ॥ (१८२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मनु सोइआ माइआ बिसमादि ॥१॥ (१८२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इसु गृह महि कोई जागतु रहै ॥ (१८२-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साबतु वसतु ओहु अपनी लहै ॥१॥ रहाउ ॥ (१८२-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सगल सहेली अपनै रस माती ॥ (१८२-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गृह अपुने की खबरि न जाती ॥ (१८२-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मुसनहार पंच बटवारे ॥ (१८२-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सूने नगरि परे ठगहारे ॥२॥ (१८२-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उन ते राखै बापु न माई ॥ (१८२-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उन ते राखै मीतु न भाई ॥ (१८२-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दरबि सिआणप ना ओइ रहते ॥ (१८२-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधसंगि ओइ दुसट वसि होते ॥३॥ (१८२-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा मोहि सारिंगपाणि ॥ (१८२-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संतन धूरि सरब निधान ॥ (१८२-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साबतु पूंजी सतिगुर संगि ॥ (१८२-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नानकु जागै पारब्रह्म कै रंगि ॥४॥ (१८२-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सो जागै जिसु प्रभु किरपालु ॥ (१८२-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इह पूंजी साबतु धनु मालु ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२०॥८६॥ (१८२-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८२-१५)
जा कै वसि खान सुलतान ॥ (१८२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा कै वसि है सगल जहान ॥ (१८२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ (१८२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तिस ते बाहरि नाही कोइ ॥१॥ (१८२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु बेनंती अपुने सतिगुर पाहि ॥ (१८२-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
काज तुमारे देइ निबाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (१८२-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ (१८२-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सगल भगत जा का नामु अधारु ॥ (१८२-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सरब बिआपित पूरन धनी ॥ (१८२-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा की सोभा घटि घटि बनी ॥२॥ (१८२-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु सिमरत दुख डेरा ढहै ॥ (१८२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

जिसु सिमरत जमु किछू न कहै ॥ (१८२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु सिमरत होत सूके हरे ॥ (१८२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १८३

जिसु सिमरत डूबत पाहन तरे ॥३॥ (१८३-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत सभा कउ सदा जैकारु ॥ (१८३-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि हरि नामु जन प्रान अधारु ॥ (१८३-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक मेरी सुणी अरदासि ॥ (१८३-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत प्रसादि मो कउ नाम निवासि ॥४॥२१॥९०॥ (१८३-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८३-३)
सतिगुर दरसनि अगनि निवारी ॥ (१८३-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सतिगुर भेटत हउमै मारी ॥ (१८३-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सतिगुर संगि नाही मनु डोलै ॥ (१८३-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमृत बाणी गुरमुखि बोलै ॥१॥ (१८३-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सभु जगु साचा जा सच महि राते ॥ (१८३-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सीतल साति गुर ते प्रभ जाते ॥१॥ रहाउ ॥ (१८३-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत प्रसादि जपै हरि नाउ ॥ (१८३-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत प्रसादि हरि कीरतनु गाउ ॥ (१८३-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत प्रसादि सगल दुख मिटे ॥ (१८३-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत प्रसादि बंधन ते छुटे ॥२॥ (१८३-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत कृपा ते मिटे मोह भर्म ॥ (१८३-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साध रेण मजन सभि धर्म ॥ (१८३-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साध कृपाल दइआल गोविंदु ॥ (१८३-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधा महि इह हमरी जिंदु ॥३॥ (१८३-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
किरपा निधि किरपाल धिआवउ ॥ (१८३-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधसंगि ता बैठणु पावउ ॥ (१८३-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मोहि निरगुण कउ प्रभि कीनी दइआ ॥ (१८३-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साधसंगि नानक नामु लइआ ॥४॥२२॥९१॥ (१८३-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८३-९)
साधसंगि जपिओ भगवंतु ॥ (१८३-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
केवल नामु दीओ गुरि मंतु ॥ (१८३-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तजि अभिमान भए निरवैर ॥ (१८३-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आठ पहर पूजहु गुर पैर ॥१॥ (१८३-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अब मति बिनसी दुसट बिगानी ॥ (१८३-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब ते सुणिआ हरि जसु कानी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८३-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

सहज सूख आनंद निधान ॥ (१८३-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
राखनहार रखि लेइ निदान ॥ (१८३-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दूख दरद बिनसे भै भर्म ॥ (१८३-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आवण जाण रखे करि कर्म ॥२॥ (१८३-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पेखै बोलै सुणै सभु आपि ॥ (१८३-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सदा संगि ता कउ मन जापि ॥ (१८३-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
संत प्रसादि भइओ परगासु ॥ (१८३-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पूरि रहे एकै गुणतासु ॥३॥ (१८३-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहत पवित्र सुणत पुनीत ॥ (१८३-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुण गोविंद गावहि नित नीत ॥ (१८३-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक जा कउ होहु कृपाल ॥ (१८३-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तिसु जन की सभ पूरन घाल ॥४॥२३॥६२॥ (१८३-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८३-१५)
बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥ (१८३-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मन महि लागै साचु धिआनु ॥ (१८३-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥ (१८३-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥१॥ (१८३-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सो सुखदाता जि नामु जपावै ॥ (१८३-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा तिसु संगि मिलावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१८३-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु होइ दइआलु तिसु आपि मिलावै ॥ (१८३-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब निधान गुरू ते पावै ॥ (१८३-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आपु तिआगि मिटै आवण जाणा ॥ (१८३-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साध कै संगि पारब्रह्मु पछाणा ॥२॥ (१८३-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जन ऊपरि प्रभ भए दइआल ॥ (१८३-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १८४

जन की टेक एक गोपाल ॥ (१८४-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
एका लिव एको मनि भाउ ॥ (१८४-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सर्ब निधान जन कै हरि नाउ ॥३॥ (१८४-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पारब्रह्म सिउ लागी प्रीति ॥ (१८४-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
निर्मल करणी साची रीति ॥ (१८४-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुरि पूरै मेटिआ अंधिआरा ॥ (१८४-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नानक का प्रभु अपर अपारा ॥४॥२४॥६३॥ (१८४-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८४-३)
जिसु मनि वसै तरै जनु सोइ ॥ (१८४-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

जा कै करमि परापति होइ ॥ (१८४-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दूखु रोगु कछु भउ न बिआपै ॥ (१८४-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमृत नामु रिदै हरि जापै ॥१॥ (१८४-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पारब्रह्मु परमेसुरु धिआईऐ ॥ (१८४-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुर पूरे ते इह मति पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८४-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करण करावनहार दइआल ॥ (१८४-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ (१८४-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अगम अगोचर सदा बेअंता ॥ (१८४-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सिमरि मना पूरे गुर मंता ॥२॥ (१८४-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा की सेवा सर्ब निधानु ॥ (१८४-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ की पूजा पाईऐ मानु ॥ (१८४-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा की टहल न बिरथी जाइ ॥ (१८४-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सदा सदा हरि के गुण गाइ ॥३॥ (१८४-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा प्रभ अंतरजामी ॥ (१८४-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सुख निधान हरि अलख सुआमी ॥ (१८४-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ (१८४-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नानक नामु मिलै वडिआई ॥४॥२५॥९४॥ (१८४-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८४-९)
जीअ जुगति जा कै है हाथ ॥ (१८४-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सो सिमरहु अनाथ को नाथु ॥ (१८४-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ चिति आए सभु दुखु जाइ ॥ (१८४-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
भै सभ बिनसहि हरि कै नाइ ॥१॥ (१८४-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिनु हरि भउ काहे का मानहि ॥ (१८४-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि बिसरत काहे सुखु जानहि ॥१॥ रहाउ ॥ (१८४-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिनि धारे बहु धरणि अगास ॥ (१८४-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा की जोति जीअ परगास ॥ (१८४-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा की बखस न मेटै कोइ ॥ (१८४-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सिमरि सिमरि प्रभु निरभउ होइ ॥२॥ (१८४-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आठ पहर सिमरहु प्रभ नामु ॥ (१८४-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अनिक तीर्थ मजनु इसनानु ॥ (१८४-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पारब्रह्म की सरणी पाहि ॥ (१८४-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कोटि कलंक खिन महि मिटि जाहि ॥३॥ (१८४-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ (१८४-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ सेवक साचा वेसाहु ॥ (१८४-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गुरि पूरै राखे दे हाथ ॥ (१८४-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

नानक पारब्रह्म समराथ ॥४॥२६॥९५॥ (१८४-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८४-१५)
गुर परसादि नामि मनु लागा ॥ (१८४-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जनम जनम का सोइआ जागा ॥ (१८४-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
अमृत गुण उचरै प्रभ बाणी ॥ (१८४-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पूरे गुर की सुमति पराणी ॥१॥ (१८४-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
प्रभ सिमरत कुसल सभि पाए ॥ (१८४-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
घरि बाहरि सुख सहज सबाए ॥१॥ रहाउ ॥ (१८४-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सोई पछाता जिनहि उपाइआ ॥ (१८४-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा प्रभि आपि मिलाइआ ॥ (१८४-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बाह पकरि लीनो करि अपना ॥ (१८४-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि हरि कथा सदा जपु जपना ॥२॥ (१८४-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मंत्रु तंत्रु अउखधु पुनहचारु ॥ (१८४-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १८५

हरि हरि नामु जीअ प्रान अधारु ॥ (१८५-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
साचा धनु पाइओ हरि रंगि ॥ (१८५-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दुतरु तरे साध कै संगि ॥३॥ (१८५-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सुखि बैसहु संत सजन परवारु ॥ (१८५-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि धनु खटिओ जा का नाहि सुमारु ॥ (१८५-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसहि परापति तिसु गुरु देइ ॥ (१८५-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नानक बिरथा कोइ न हेइ ॥४॥२७॥९६॥ (१८५-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८५-३)
हसत पुनीत होहि ततकाल ॥ (१८५-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बिनसि जाहि माइआ जंजाल ॥ (१८५-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
रसना रमहु राम गुण नीत ॥ (१८५-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सुखु पावहु मेरे भाई मीत ॥१॥ (१८५-४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
लिखु लेखणि कागदि मसवाणी ॥ (१८५-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
राम नाम हरि अमृत बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८५-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
इह कारजि तेरे जाहि बिकार ॥ (१८५-५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सिमरत राम नाही जम मार ॥ (१८५-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
धर्म राइ के दूत न जोहै ॥ (१८५-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
माइआ मगन न कछूऐ मोहै ॥२॥ (१८५-६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
उधरहि आपि तरै संसारु ॥ (१८५-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
राम नाम जपि एकंकारु ॥ (१८५-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

आपि कमाउ अवरा उपदेस ॥ (१८५-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
राम नाम हिरदै परवेस ॥३॥ (१८५-७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जा कै माथै एहु निधानु ॥ (१८५-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सोई पुरखु जपै भगवानु ॥ (१८५-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आठ पहर हरि हरि गुण गाउ ॥ (१८५-८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक हउ तिसु बलि जाउ ॥४॥२८॥९७॥ (१८५-९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ चउपदे दुपदे (१८५-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१८५-१०)
जो पराइओ सोई अपना ॥ (१८५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो तजि छोडन तिसु सिउ मनु रचना ॥१॥ (१८५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहहु गुसाई मिलीऐ केह ॥ (१८५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जो बिबरजत तिस सिउ नेह ॥१॥ रहाउ ॥ (१८५-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
झूठु बात सा सचु करि जाती ॥ (१८५-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सति होवनु मनि लगै न राती ॥२॥ (१८५-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
बावै मारगु टेढा चलना ॥ (१८५-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सीधा छोडि अपूठा बुनना ॥३॥ (१८५-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दुहा सिरिआ का खसमु प्रभु सोई ॥ (१८५-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिसु मेले नानक सो मुकता होई ॥४॥२९॥९८॥ (१८५-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८५-१४)
कलिजुग महि मिलि आए संजोग ॥ (१८५-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जिचरु आगिआ तिचरु भोगहि भोग ॥१॥ (१८५-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जलै न पाईऐ राम सनेही ॥ (१८५-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
किरति संजोगि सती उठि होई ॥१॥ रहाउ ॥ (१८५-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
देखा देखी मनहठि जलि जाईऐ ॥ (१८५-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पृअ संगु न पावै बहु जोनि भवाईऐ ॥२॥ (१८५-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सील संजमि पृअ आगिआ मानै ॥ (१८५-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तिसु नारी कउ दुखु न जमानै ॥३॥ (१८५-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक जिनि पृउ परमेसरु करि जानिआ ॥ (१८५-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
धन्नु सती दरगह परवानिआ ॥४॥३०॥९९॥ (१८५-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी गुआरेरी महला ५ ॥ (१८५-१९)
हम धनवंत भागठ सच नाइ ॥ (१८५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
हरि गुण गावह सहजि सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना १८६

पीऊ दादे का खोलि डिठा खजाना ॥ (१८६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

ता मेरै मनि भइआ निधाना ॥१॥ (१८६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
रतन लाल जा का कछू न मोलु ॥ (१८६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
भरे भंडार अखूट अतोल ॥२॥ (१८६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
खावहि खरचहि रलि मिलि भाई ॥ (१८६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तोटि न आवै वधदो जाई ॥३॥ (१८६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
कहु नानक जिसु मसतकि लेखु लिखाइ ॥ (१८६-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सु एतु खजानै लइआ रलाइ ॥४॥३१॥१००॥ (१८६-३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-४)
डरि डरि मरते जब जानीऐ दूरि ॥ (१८६-४, गउड़ी, मः ५)
डरु चूका देखिआ भरपूरि ॥१॥ (१८६-४, गउड़ी, मः ५)
सतिगुर अपुने कउ बलिहारै ॥ (१८६-५, गउड़ी, मः ५)
छोडि न जाई सरपर तारै ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-५, गउड़ी, मः ५)
दूखु रोगु सोगु बिसरै जब नामु ॥ (१८६-५, गउड़ी, मः ५)
सदा अनंदु जा हरि गुण गामु ॥२॥ (१८६-६, गउड़ी, मः ५)
बुरा भला कोई न कहीजै ॥ (१८६-६, गउड़ी, मः ५)
छोडि मानु हरि चरन गहीजै ॥३॥ (१८६-६, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक गुर मंतु चितारि ॥ (१८६-७, गउड़ी, मः ५)
सुखु पावहि साचै दरबारि ॥४॥३२॥१०१॥ (१८६-७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-७)
जा का मीतु साजनु है समीआ ॥ (१८६-८, गउड़ी, मः ५)
तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥१॥ (१८६-८, गउड़ी, मः ५)
जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥ (१८६-८, गउड़ी, मः ५)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-९, गउड़ी, मः ५)
जा कउ रसु हरि रसु है आइओ ॥ (१८६-९, गउड़ी, मः ५)
सो अन रस नाही लपटाइओ ॥२॥ (१८६-९, गउड़ी, मः ५)
जा का कहिआ दरगह चलै ॥ (१८६-१०, गउड़ी, मः ५)
सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥३॥ (१८६-१०, गउड़ी, मः ५)
जा का सभु किछु ता का होइ ॥ (१८६-१०, गउड़ी, मः ५)
नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥४॥३३॥१०२॥ (१८६-११, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-११)
जा कै दुखु सुखु सम करि जापै ॥ (१८६-११, गउड़ी, मः ५)
ता कउ काड़ा कहा बिआपै ॥१॥ (१८६-१२, गउड़ी, मः ५)
सहज अनंद हरि साधू माहि ॥ (१८६-१२, गउड़ी, मः ५)
आगिआकारी हरि हरि राइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-१२, गउड़ी, मः ५)
जा कै अचिंतु वसै मनि आइ ॥ (१८६-१३, गउड़ी, मः ५)

ता कउ चिंता कतहूं नाहि ॥२॥ (१८६-१३, गउड़ी, मः ५)
जा कै बिनसिओ मन ते भरमा ॥ (१८६-१३, गउड़ी, मः ५)
ता कै कछू नाही डरु जमा ॥३॥ (१८६-१४, गउड़ी, मः ५)
जा कै हिरदै दीओ गुरि नामा ॥ (१८६-१४, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक ता कै सगल निधाना ॥४॥३४॥१०३॥ (१८६-१४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-१५)
अगम रूप का मन महि थाना ॥ (१८६-१५, गउड़ी, मः ५)
गुर प्रसादि किनै विरलै जाना ॥१॥ (१८६-१५, गउड़ी, मः ५)
सहज कथा के अमृत कुंटा ॥ (१८६-१६, गउड़ी, मः ५)
जिसहि परापति तिसु लै भुंचा ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-१६, गउड़ी, मः ५)
अनहत बाणी थानु निराला ॥ (१८६-१७, गउड़ी, मः ५)
ता की धुनि मोहे गोपाला ॥२॥ (१८६-१७, गउड़ी, मः ५)
तह सहज अखारे अनेक अनंता ॥ (१८६-१७, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म के संगी संता ॥३॥ (१८६-१८, गउड़ी, मः ५)
हरख अनंत सोग नही बीआ ॥ (१८६-१८, गउड़ी, मः ५)
सो घरु गुरि नानक कउ दीआ ॥४॥३५॥१०४॥ (१८६-१८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी मः ५ ॥ (१८६-१९)
कवन रूपु तेरा आराधउ ॥ (१८६-१९, गउड़ी, मः ५)
कवन जोग काइआ ले साधउ ॥१॥ (१८६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १८७

कवन गुनु जो तुझु लै गावउ ॥ (१८७-१, गउड़ी, मः ५)
कवन बोल पारब्रह्म रीझावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८७-१, गउड़ी, मः ५)
कवन सु पूजा तेरी करउ ॥ (१८७-१, गउड़ी, मः ५)
कवन सु बिधि जितु भवजल तरउ ॥२॥ (१८७-२, गउड़ी, मः ५)
कवन तपु जितु तपीआ होइ ॥ (१८७-२, गउड़ी, मः ५)
कवनु सु नामु हउमै मलु खोइ ॥३॥ (१८७-२, गउड़ी, मः ५)
गुण पूजा गिआन धिआन नानक सगल घाल ॥ (१८७-३, गउड़ी, मः ५)
जिसु करि किरपा सतिगुरु मिलै दइआल ॥४॥ (१८७-३, गउड़ी, मः ५)
तिस ही गुनु तिन ही प्रभु जाता ॥ (१८७-४, गउड़ी, मः ५)
जिस की मानि लेइ सुखदाता ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३६॥१०५॥ (१८७-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८७-५)
आपन तनु नही जा को गरबा ॥ (१८७-५, गउड़ी, मः ५)
राज मिलख नही आपन दरबा ॥१॥ (१८७-५, गउड़ी, मः ५)
आपन नही का कउ लपटाइओ ॥ (१८७-६, गउड़ी, मः ५)

आपन नामु सतिगुर ते पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८७-६, गउड़ी, मः ५)
सुत बनिता आपन नही भाई ॥ (१८७-७, गउड़ी, मः ५)
इसट मीत आप बापु न माई ॥२॥ (१८७-७, गउड़ी, मः ५)
सुइना रूपा फुनि नही दाम ॥ (१८७-७, गउड़ी, मः ५)
हैवर गैवर आपन नही काम ॥३॥ (१८७-८, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जो गुरि बखसि मिलाइआ ॥ (१८७-८, गउड़ी, मः ५)
तिस का सभु किछु जिस का हरि राइआ ॥४॥३७॥१०६॥ (१८७-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८७-९)
गुर के चरण ऊपरि मेरे माथे ॥ (१८७-९, गउड़ी, मः ५)
ता ते दुख मेरे सगले लाथे ॥१॥ (१८७-९, गउड़ी, मः ५)
सतिगुर अपुने कउ कुरबानी ॥ (१८७-१०, गउड़ी, मः ५)
आतम चीनि परम रंग मानी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८७-१०, गउड़ी, मः ५)
चरण रेणु गुर की मुखि लागी ॥ (१८७-११, गउड़ी, मः ५)
अहम्बुधि तिनि सगल तिआगी ॥२॥ (१८७-११, गउड़ी, मः ५)
गुर का सबदु लगो मनि मीठा ॥ (१८७-११, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्मु ता ते मोहि डीठा ॥३॥ (१८७-१२, गउड़ी, मः ५)
गुरु सुखदाता गुरु करतारु ॥ (१८७-१२, गउड़ी, मः ५)
जीअ प्राण नानक गुरु आधारु ॥४॥३८॥१०७॥ (१८७-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८७-१३)
रे मन मेरे तूं ता कउ आहि ॥ (१८७-१३, गउड़ी, मः ५)
जा कै ऊणा कछहू नाहि ॥१॥ (१८७-१३, गउड़ी, मः ५)
हरि सा प्रीतमु करि मन मीत ॥ (१८७-१३, गउड़ी, मः ५)
प्रान अधारु राखहु सद चीत ॥१॥ रहाउ ॥ (१८७-१४, गउड़ी, मः ५)
रे मन मेरे तूं ता कउ सेवि ॥ (१८७-१४, गउड़ी, मः ५)
आदि पुरख अपरम्पर देव ॥२॥ (१८७-१५, गउड़ी, मः ५)
तिसु ऊपरि मन करि तूं आसा ॥ (१८७-१५, गउड़ी, मः ५)
आदि जुगादि जा का भरवासा ॥३॥ (१८७-१५, गउड़ी, मः ५)
जा की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ (१८७-१६, गउड़ी, मः ५)
नानकु गावै गुर मिलि सोइ ॥४॥३९॥१०८॥ (१८७-१६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८७-१६)
मीतु करै सोई हम माना ॥ (१८७-१७, गउड़ी, मः ५)
मीत के करतब कुसल समाना ॥१॥ (१८७-१७, गउड़ी, मः ५)
एका टेक मेरै मनि चीत ॥ (१८७-१७, गउड़ी, मः ५)
जिसु किछु करणा सु हमरा मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (१८७-१७, गउड़ी, मः ५)
मीतु हमारा वेपरवाहा ॥ (१८७-१८, गउड़ी, मः ५)

गुर किरपा ते मोहि असनाहा ॥२॥ (१८७-१८, गउड़ी, मः ५)
मीतु हमारा अंतरजामी ॥ (१८७-१९, गउड़ी, मः ५)
समरथ पुरखु पारब्रह्मु सुआमी ॥३॥ (१८७-१९, गउड़ी, मः ५)
हम दासे तुम ठाकुर मेरे ॥ (१८७-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १८८

मानु महतु नानक प्रभु तेरे ॥४॥४०॥१०९॥ (१८८-१, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८८-१)
जा कउ तुम भए समरथ अंगा ॥ (१८८-१, गउड़ी, मः ५)
ता कउ कछु नाही कालंगा ॥१॥ (१८८-२, गउड़ी, मः ५)
माधउ जा कउ है आस तुमारी ॥ (१८८-२, गउड़ी, मः ५)
ता कउ कछु नाही संसारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८८-२, गउड़ी, मः ५)
जा कै हिरदै ठाकुरु होइ ॥ (१८८-३, गउड़ी, मः ५)
ता कउ सहसा नाही कोइ ॥२॥ (१८८-३, गउड़ी, मः ५)
जा कउ तुम दीनी प्रभ धीर ॥ (१८८-३, गउड़ी, मः ५)
ता कै निकटि न आवै पीर ॥३॥ (१८८-४, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक मै सो गुरु पाइआ ॥ (१८८-४, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म पूरन देखाइआ ॥४॥४१॥११०॥ (१८८-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८८-५)
दुलभ देह पाई वडभागी ॥ (१८८-५, गउड़ी, मः ५)
नामु न जपहि ते आतम घाती ॥१॥ (१८८-५, गउड़ी, मः ५)
मरि न जाही जिना बिसरत राम ॥ (१८८-६, गउड़ी, मः ५)
नाम बिहून जीवन कउन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (१८८-६, गउड़ी, मः ५)
खात पीत खेलत हसत बिसथार ॥ (१८८-७, गउड़ी, मः ५)
कवन अर्थ मिरतक सीगार ॥२॥ (१८८-७, गउड़ी, मः ५)
जो न सुनहि जसु परमानंदा ॥ (१८८-७, गउड़ी, मः ५)
पसु पंखी तृगद जोनि ते मंदा ॥३॥ (१८८-८, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥ (१८८-८, गउड़ी, मः ५)
केवल नामु रिद माहि समाइआ ॥४॥४२॥१११॥ (१८८-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८८-९)
का की माई का को बाप ॥ (१८८-९, गउड़ी, मः ५)
नाम धारीक झूठे सभि साक ॥१॥ (१८८-९, गउड़ी, मः ५)
काहे कउ मूरख भखलाइआ ॥ (१८८-१०, गउड़ी, मः ५)
मिलि संजोगि हुकमि तूं आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८८-१०, गउड़ी, मः ५)
एका माटी एका जोति ॥ (१८८-१०, गउड़ी, मः ५)

एको पवनु कहा कउनु रीति ॥२॥ (१८८-११, गउड़ी, मः ५)
मेरा मेरा करि बिललाही ॥ (१८८-११, गउड़ी, मः ५)
मरणहारु इहु जीअरा नाही ॥३॥ (१८८-११, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक गुरि खोले कपाट ॥ (१८८-१२, गउड़ी, मः ५)
मुकतु भए बिनसे भ्रम थाट ॥४॥४३॥११२॥ (१८८-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८८-१३)
वडे वडे जो दीसहि लोग ॥ (१८८-१३, गउड़ी, मः ५)
तिन कउ बिआपै चिंता रोग ॥१॥ (१८८-१३, गउड़ी, मः ५)
कउन वडा माइआ वडिआई ॥ (१८८-१३, गउड़ी, मः ५)
सो वडा जिनि राम लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१८८-१४, गउड़ी, मः ५)
भूमीआ भूमि ऊपरि नित लुझै ॥ (१८८-१४, गउड़ी, मः ५)
छोडि चलै तृसना नही बुझै ॥२॥ (१८८-१४, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक इहु ततु बीचारा ॥ (१८८-१५, गउड़ी, मः ५)
बिनु हरि भजन नाही छुटकारा ॥३॥४४॥११३॥ (१८८-१५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८८-१६)
पूरा मारगु पूरा इसनानु ॥ (१८८-१६, गउड़ी, मः ५)
सभु किछु पूरा हिरदै नामु ॥१॥ (१८८-१६, गउड़ी, मः ५)
पूरी रही जा पूरै राखी ॥ (१८८-१६, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म की सरणि जन ताकी ॥१॥ रहाउ ॥ (१८८-१७, गउड़ी, मः ५)
पूरा सुखु पूरा संतोखु ॥ (१८८-१७, गउड़ी, मः ५)
पूरा तपु पूरन राजु जोगु ॥२॥ (१८८-१७, गउड़ी, मः ५)
हरि कै मारगि पतित पुनीत ॥ (१८८-१८, गउड़ी, मः ५)
पूरी सोभा पूरा लोकीक ॥३॥ (१८८-१८, गउड़ी, मः ५)
करणहारु सद वसै हदूरा ॥ (१८८-१८, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा ॥४॥४५॥११४॥ (१८८-१९, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८८-१९)
संत की धूरि मिटे अघ कोट ॥ (१८८-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १८९

संत प्रसादि जनम मरण ते छोट ॥१॥ (१८९-१, गउड़ी, मः ५)
संत का दरसु पूरन इसनानु ॥ (१८९-१, गउड़ी, मः ५)
संत कृपा ते जपीऐ नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (१८९-१, गउड़ी, मः ५)
संत कै संगि मिटिआ अहंकारु ॥ (१८९-२, गउड़ी, मः ५)
दृसटि आवै सभु एकंकारु ॥२॥ (१८९-२, गउड़ी, मः ५)
संत सुप्रसन्न आए वसि पंचा ॥ (१८९-२, गउड़ी, मः ५)

अमृतु नामु रिदै लै संचा ॥३॥ (१८६-३, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जा का पूरा कर्म ॥ (१८६-३, गउड़ी, मः ५)
तिसु भेटे साधू के चरन ॥४॥४६॥११५॥ (१८६-३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-४)
हरि गुण जपत कमलु परगासै ॥ (१८६-४, गउड़ी, मः ५)
हरि सिमरत त्रास सभ नासै ॥१॥ (१८६-४, गउड़ी, मः ५)
सा मति पूरी जितु हरि गुण गावै ॥ (१८६-५, गउड़ी, मः ५)
वडै भागि साधू संगु पावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-५, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि पाईऐ निधि नामा ॥ (१८६-५, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि पूरन सभि कामा ॥२॥ (१८६-६, गउड़ी, मः ५)
हरि की भगति जनमु परवाणु ॥ (१८६-६, गउड़ी, मः ५)
गुर किरपा ते नामु वखाणु ॥३॥ (१८६-६, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक सो जनु परवानु ॥ (१८६-७, गउड़ी, मः ५)
जा कै रिदै वसै भगवानु ॥४॥४७॥११६॥ (१८६-७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-७)
एकसु सिउ जा का मनु राता ॥ (१८६-८, गउड़ी, मः ५)
विसरी तिसै पराई ताता ॥१॥ (१८६-८, गउड़ी, मः ५)
बिनु गोबिंद न दीसै कोई ॥ (१८६-८, गउड़ी, मः ५)
करन करावन करता सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-९, गउड़ी, मः ५)
मनहि कमावै मुखि हरि हरि बोलै ॥ (१८६-९, गउड़ी, मः ५)
सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥२॥ (१८६-९, गउड़ी, मः ५)
जा कै हरि धनु सो सच साहु ॥ (१८६-१०, गउड़ी, मः ५)
गुरि पूरै करि दीनो विसाहु ॥३॥ (१८६-१०, गउड़ी, मः ५)
जीवन पुरखु मिलिआ हरि राइआ ॥ (१८६-१०, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक पर्म पदु पाइआ ॥४॥४८॥११७॥ (१८६-११, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-११)
नामु भगत कै प्रान अधारु ॥ (१८६-११, गउड़ी, मः ५)
नामो धनु नामो बिउहारु ॥१॥ (१८६-१२, गउड़ी, मः ५)
नाम वडाई जनु सोभा पाए ॥ (१८६-१२, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा जिसु आपि दिवाए ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-१२, गउड़ी, मः ५)
नामु भगत कै सुख असथानु ॥ (१८६-१३, गउड़ी, मः ५)
नाम रतु सो भगतु परवानु ॥२॥ (१८६-१३, गउड़ी, मः ५)
हरि का नामु जन कउ धारै ॥ (१८६-१३, गउड़ी, मः ५)
सासि सासि जनु नामु समारै ॥३॥ (१८६-१४, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जिसु पूरा भागु ॥ (१८६-१४, गउड़ी, मः ५)

नाम संगि ता का मनु लागु ॥४॥४६॥११८॥ (१८६-१४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-१५)
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ ॥ (१८६-१५, गउड़ी, मः ५)
तब ते धावतु मनु तृपताइआ ॥१॥ (१८६-१५, गउड़ी, मः ५)
सुख बिस्रामु पाइआ गुण गाइ ॥ (१८६-१६, गउड़ी, मः ५)
स्रमु मिटिआ मेरी हती बलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१८६-१६, गउड़ी, मः ५)
चरन कमल अराधि भगवंता ॥ (१८६-१७, गउड़ी, मः ५)
हरि सिमरन ते मिटी मेरी चिंता ॥२॥ (१८६-१७, गउड़ी, मः ५)
सभ तजि अनाथु एक सरणि आइओ ॥ (१८६-१७, गउड़ी, मः ५)
ऊच असथानु तब सहजे पाइओ ॥३॥ (१८६-१८, गउड़ी, मः ५)
दूखु दरदु भरमु भउ नसिआ ॥ (१८६-१८, गउड़ी, मः ५)
करणहारु नानक मनि बसिआ ॥४॥५०॥११६॥ (१८६-१८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१८६-१६)
कर करि टहल रसना गुण गावउ ॥ (१८६-१६, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १६०

चरन ठाकुर कै मारगि धावउ ॥१॥ (१६०-१, गउड़ी, मः ५)
भलो समो सिमरन की बरीआ ॥ (१६०-१, गउड़ी, मः ५)
सिमरत नामु भै पारि उतरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-१, गउड़ी, मः ५)
नेत्र संतन का दरसनु पेखु ॥ (१६०-२, गउड़ी, मः ५)
प्रभ अविनासी मन महि लेखु ॥२॥ (१६०-२, गउड़ी, मः ५)
सुणि कीरतनु साध पहि जाइ ॥ (१६०-२, गउड़ी, मः ५)
जनम मरण की त्रास मिटाइ ॥३॥ (१६०-३, गउड़ी, मः ५)
चरण कमल ठाकुर उरि धारि ॥ (१६०-३, गउड़ी, मः ५)
दुलभ देह नानक निसतारि ॥४॥५१॥१२०॥ (१६०-३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६०-४)
जा कउ अपनी किरपा धारै ॥ (१६०-४, गउड़ी, मः ५)
सो जनु रसना नामु उचारै ॥१॥ (१६०-४, गउड़ी, मः ५)
हरि बिसरत सहसा दुखु बिआपै ॥ (१६०-५, गउड़ी, मः ५)
सिमरत नामु भरमु भउ भागै ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-५, गउड़ी, मः ५)
हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ (१६०-५, गउड़ी, मः ५)
तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥२॥ (१६०-६, गउड़ी, मः ५)
हरि की टहल करत जनु सोहै ॥ (१६०-६, गउड़ी, मः ५)
ता कउ माइआ अगनि न पोहै ॥३॥ (१६०-७, गउड़ी, मः ५)
मनि तनि मुखि हरि नामु दइआल ॥ (१६०-७, गउड़ी, मः ५)

नानक तजीअले अवरि जंजाल ॥४॥५२॥१२१॥ (१६०-७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६०-८)
छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ (१६०-८, गउड़ी, मः ५)
गुर पूरे की टेक टिकाई ॥१॥ (१६०-८, गउड़ी, मः ५)
दुख बिनसे सुख हरि गुण गाइ ॥ (१६०-९, गउड़ी, मः ५)
गुरु पूरा भेटिआ लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-९, गउड़ी, मः ५)
हरि का नामु दीओ गुरि मंत्रु ॥ (१६०-९, गउड़ी, मः ५)
मिटे विसूरे उतरी चिंत ॥२॥ (१६०-१०, गउड़ी, मः ५)
अनद भए गुर मिलत कृपाल ॥ (१६०-१०, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा काटे जम जाल ॥३॥ (१६०-१०, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ (१६०-११, गउड़ी, मः ५)
ता ते बहुरि न बिआपै माइआ ॥४॥५३॥१२२॥ (१६०-११, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६०-१२)
राखि लीआ गुरि पूरै आपि ॥ (१६०-१२, गउड़ी, मः ५)
मनमुख कउ लागो संतापु ॥१॥ (१६०-१२, गउड़ी, मः ५)
गुरू गुरू जपि मीत हमारे ॥ (१६०-१२, गउड़ी, मः ५)
मुख ऊजल होवहि दरबारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-१३, गउड़ी, मः ५)
गुर के चरण हिरदै वसाइ ॥ (१६०-१३, गउड़ी, मः ५)
दुख दुसमन तेरी हतै बलाइ ॥२॥ (१६०-१३, गउड़ी, मः ५)
गुर का सबदु तेरै संगि सहाई ॥ (१६०-१४, गउड़ी, मः ५)
दइआल भए सगले जीअ भाई ॥३॥ (१६०-१४, गउड़ी, मः ५)
गुरि पूरै जब किरपा करी ॥ (१६०-१४, गउड़ी, मः ५)
भनति नानक मेरी पूरी परी ॥४॥५४॥१२३॥ (१६०-१५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६०-१५)
अनिक रसा खाए जैसे ढोर ॥ (१६०-१५, गउड़ी, मः ५)
मोह की जेवरी बाधिओ चोर ॥१॥ (१६०-१६, गउड़ी, मः ५)
मिरतक देह साधसंग बिहूना ॥ (१६०-१६, गउड़ी, मः ५)
आवत जात जोनी दुख खीना ॥१॥ रहाउ ॥ (१६०-१६, गउड़ी, मः ५)
अनिक बसत्र सुंदर पहिराइआ ॥ (१६०-१७, गउड़ी, मः ५)
जिउ डरना खेत माहि डराइआ ॥२॥ (१६०-१७, गउड़ी, मः ५)
सगल सरीर आवत सभ काम ॥ (१६०-१८, गउड़ी, मः ५)
निहफल मानुखु जपै नही नाम ॥३॥ (१६०-१८, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जा कउ भए दइआला ॥ (१६०-१८, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि मिलि भजहि गोपाला ॥४॥५५॥१२४॥ (१६०-१९, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६०-१९)

कलि कलेस गुर सबदि निवारे ॥ (१९१-१, गउड़ी, मः ५)
आवण जाण रहे सुख सारे ॥१॥ (१९१-१, गउड़ी, मः ५)
भै बिनसे निरभउ हरि धिआइआ ॥ (१९१-१, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१९१-२, गउड़ी, मः ५)
चरन कवल रिद अंतरि धारे ॥ (१९१-२, गउड़ी, मः ५)
अगनि सागर गुरि पारि उतारे ॥२॥ (१९१-२, गउड़ी, मः ५)
बूडत जात पूरै गुरि काढे ॥ (१९१-३, गउड़ी, मः ५)
जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ (१९१-३, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ (१९१-३, गउड़ी, मः ५)
जिसु भेटत गति भई हमारी ॥४॥५६॥१२५॥ (१९१-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९१-४)
साधसंगि ता की सरनी परहु ॥ (१९१-४, गउड़ी, मः ५)
मनु तनु अपना आगै धरहु ॥१॥ (१९१-५, गउड़ी, मः ५)
अमृत नामु पीवहु मेरे भाई ॥ (१९१-५, गउड़ी, मः ५)
सिमरि सिमरि सभ तपति बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१९१-५, गउड़ी, मः ५)
तजि अभिमानु जनम मरणु निवारहु ॥ (१९१-६, गउड़ी, मः ५)
हरि के दास के चरण नमसकारहु ॥२॥ (१९१-६, गउड़ी, मः ५)
सासि सासि प्रभु मनहि समाले ॥ (१९१-७, गउड़ी, मः ५)
सो धनु संचहु जो चालै नाले ॥३॥ (१९१-७, गउड़ी, मः ५)
तिसहि परापति जिसु मसतकि भागु ॥ (१९१-७, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक ता की चरणी लागु ॥४॥५७॥१२६॥ (१९१-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९१-८)
सूके हरे कीए खिन माहे ॥ (१९१-८, गउड़ी, मः ५)
अमृत दृसटि संचि जीवाए ॥१॥ (१९१-९, गउड़ी, मः ५)
काटे कसट पूरे गुरदेव ॥ (१९१-९, गउड़ी, मः ५)
सेवक कउ दीनी अपुनी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (१९१-९, गउड़ी, मः ५)
मिटि गई चिंत पुनी मन आसा ॥ (१९१-१०, गउड़ी, मः ५)
करी दइआ सतिगुरि गुणतासा ॥२॥ (१९१-१०, गउड़ी, मः ५)
दुख नाठे सुख आइ समाए ॥ (१९१-१०, गउड़ी, मः ५)
ढील न परी जा गुरि फुरमाए ॥३॥ (१९१-११, गउड़ी, मः ५)
इछ पुनी पूरे गुर मिले ॥ (१९१-११, गउड़ी, मः ५)
नानक ते जन सुफल फले ॥४॥५८॥१२७॥ (१९१-११, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९१-१२)

ताप गए पाई प्रभि साँति ॥ (१६१-१२, गउड़ी, मः ५)
सीतल भए कीनी प्रभ दाति ॥१॥ (१६१-१२, गउड़ी, मः ५)
प्रभ किरपा ते भए सुहेले ॥ (१६१-१३, गउड़ी, मः ५)
जनम जनम के बिछुरे मेले ॥१॥ रहाउ ॥ (१६१-१३, गउड़ी, मः ५)
सिमरत सिमरत प्रभ का नाउ ॥ (१६१-१३, गउड़ी, मः ५)
सगल रोग का बिनसिआ थाउ ॥२॥ (१६१-१४, गउड़ी, मः ५)
सहजि सुभाइ बोलै हरि बाणी ॥ (१६१-१४, गउड़ी, मः ५)
आठ पहर प्रभ सिमरहु प्राणी ॥३॥ (१६१-१४, गउड़ी, मः ५)
दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥ (१६१-१५, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥४॥५६॥१२८॥ (१६१-१५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६१-१६)
भले दिनस भले संजोग ॥ (१६१-१६, गउड़ी, मः ५)
जितु भेटे पारब्रह्म निरजोग ॥१॥ (१६१-१६, गउड़ी, मः ५)
ओह बेला कउ हउ बलि जाउ ॥ (१६१-१६, गउड़ी, मः ५)
जितु मेरा मनु जपै हरि नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६१-१७, गउड़ी, मः ५)
सफल मूरतु सफल ओह घरी ॥ (१६१-१७, गउड़ी, मः ५)
जितु रसना उचरै हरि हरी ॥२॥ (१६१-१७, गउड़ी, मः ५)
सफलु ओहु माथा संत नमसकारसि ॥ (१६१-१८, गउड़ी, मः ५)
चरण पुनीत चलहि हरि मारगि ॥३॥ (१६१-१८, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक भला मेरा कर्म ॥ (१६१-१६, गउड़ी, मः ५)
जितु भेटे साधू के चरन ॥४॥६०॥१२६॥ (१६१-१६, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १६२

गउड़ी महला ५ ॥ (१६२-१)
गुर का सबदु राखु मन माहि ॥ (१६२-१, गउड़ी, मः ५)
नामु सिमरि चिंता सभ जाहि ॥१॥ (१६२-१, गउड़ी, मः ५)
बिनु भगवंत नाही अन कोइ ॥ (१६२-१, गउड़ी, मः ५)
मारै राखै एको सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१६२-२, गउड़ी, मः ५)
गुर के चरण रिदै उरि धारि ॥ (१६२-२, गउड़ी, मः ५)
अगनि सागरु जपि उतरहि पारि ॥२॥ (१६२-२, गउड़ी, मः ५)
गुर मूरति सिउ लाइ धिआनु ॥ (१६२-३, गउड़ी, मः ५)
ईहा ऊहा पावहि मानु ॥३॥ (१६२-३, गउड़ी, मः ५)
सगल तिआगि गुर सरणी आइआ ॥ (१६२-३, गउड़ी, मः ५)
मिटे अंदेसे नानक सुखु पाइआ ॥४॥६१॥१३०॥ (१६२-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६२-४)

जिसु सिमरत दूखु सभु जाइ ॥ (१९२-५, गउड़ी, मः ५)
नामु रतनु वसै मनि आइ ॥१॥ (१९२-५, गउड़ी, मः ५)
जपि मन मेरे गोविंद की बाणी ॥ (१९२-५, गउड़ी, मः ५)
साधू जन रामु रसन वखाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (१९२-६, गउड़ी, मः ५)
इकसु बिनु नाही दूजा कोइ ॥ (१९२-६, गउड़ी, मः ५)
जा की दृसटि सदा सुखु होइ ॥२॥ (१९२-६, गउड़ी, मः ५)
साजनु मीतु सखा करि एकु ॥ (१९२-७, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि अखर मन महि लेखु ॥३॥ (१९२-७, गउड़ी, मः ५)
रवि रहिआ सरबत सुआमी ॥ (१९२-७, गउड़ी, मः ५)
गुण गावै नानकु अंतरजामी ॥४॥६२॥१३१॥ (१९२-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९२-८)
भै महि रचिओ सभु संसारा ॥ (१९२-८, गउड़ी, मः ५)
तिसु भउ नाही जिसु नामु अधारा ॥१॥ (१९२-९, गउड़ी, मः ५)
भउ न विआपै तेरी सरणा ॥ (१९२-९, गउड़ी, मः ५)
जो तुधु भावै सोई करणा ॥१॥ रहाउ ॥ (१९२-९, गउड़ी, मः ५)
सोग हरख महि आवण जाणा ॥ (१९२-१०, गउड़ी, मः ५)
तिनि सुखु पाइआ जो प्रभ भाणा ॥२॥ (१९२-१०, गउड़ी, मः ५)
अगनि सागरु महा विआपै माइआ ॥ (१९२-१०, गउड़ी, मः ५)
से सीतल जिन सतिगुरु पाइआ ॥३॥ (१९२-११, गउड़ी, मः ५)
राखि लेइ प्रभु राखनहारा ॥ (१९२-११, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक किआ जंत विचारा ॥४॥६३॥१३२॥ (१९२-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९२-१२)
तुमरी कृपा ते जपीऐ नाउ ॥ (१९२-१२, गउड़ी, मः ५)
तुमरी कृपा ते दरगह थाउ ॥१॥ (१९२-१३, गउड़ी, मः ५)
तुझ बिनु पारब्रह्म नही कोइ ॥ (१९२-१३, गउड़ी, मः ५)
तुमरी कृपा ते सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१९२-१३, गउड़ी, मः ५)
तुम मनि वसे तउ दूखु न लागै ॥ (१९२-१४, गउड़ी, मः ५)
तुमरी कृपा ते भ्रमु भउ भागै ॥२॥ (१९२-१४, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म अपरम्पर सुआमी ॥ (१९२-१४, गउड़ी, मः ५)
सगल घटा के अंतरजामी ॥३॥ (१९२-१५, गउड़ी, मः ५)
करउ अरदासि अपने सतिगुर पासि ॥ (१९२-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक नामु मिलै सचु रासि ॥४॥६४॥१३३॥ (१९२-१५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९२-१६)
कण बिना जैसे थोथर तुखा ॥ (१९२-१६, गउड़ी, मः ५)
नाम बिहून सूने से मुखा ॥१॥ (१९२-१६, गउड़ी, मः ५)

हरि हरि नामु जपहु नित प्राणी ॥ (१६२-१७, गउड़ी, मः ५)
नाम बिहून ध्रिगु देह बिगानी ॥१॥ रहाउ ॥ (१६२-१७, गउड़ी, मः ५)
नाम बिना नाही मुखि भागु ॥ (१६२-१८, गउड़ी, मः ५)
भरत बिहून कहा सोहागु ॥२॥ (१६२-१८, गउड़ी, मः ५)
नामु बिसारि लगै अन सुआइ ॥ (१६२-१८, गउड़ी, मः ५)
ता की आस न पूजै काइ ॥३॥ (१६२-१९, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभ अपनी दाति ॥ (१६२-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक नामु जपै दिन राति ॥४॥६५॥१३४॥ (१६२-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १६३

गउड़ी महला ५ ॥ (१६३-१)
तूं समरथु तूंहै मेरा सुआमी ॥ (१६३-१, गउड़ी, मः ५)
सभु किछु तुम ते तूं अंतरजामी ॥१॥ (१६३-१, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म पूरन जन ओट ॥ (१६३-२, गउड़ी, मः ५)
तेरी सरणि उधरहि जन कोटि ॥१॥ रहाउ ॥ (१६३-२, गउड़ी, मः ५)
जेते जीअ तेते सभि तेरे ॥ (१६३-२, गउड़ी, मः ५)
तुमरी कृपा ते सूख घनेरे ॥२॥ (१६३-३, गउड़ी, मः ५)
जो किछु वरतै सभ तेरा भाणा ॥ (१६३-३, गउड़ी, मः ५)
हुकमु बूझै सो सचि समाणा ॥३॥ (१६३-३, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा दीजै प्रभ दानु ॥ (१६३-४, गउड़ी, मः ५)
नानक सिमरै नामु निधानु ॥४॥६६॥१३५॥ (१६३-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६३-४)
ता का दरसु पाईऐ वडभागी ॥ (१६३-५, गउड़ी, मः ५)
जा की राम नामि लिव लागी ॥१॥ (१६३-५, गउड़ी, मः ५)
जा कै हरि वसिआ मन माही ॥ (१६३-५, गउड़ी, मः ५)
ता कउ दुखु सुपनै भी नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (१६३-६, गउड़ी, मः ५)
सर्ब निधान राखे जन माहि ॥ (१६३-६, गउड़ी, मः ५)
ता कै संगि किलविख दुख जाहि ॥२॥ (१६३-६, गउड़ी, मः ५)
जन की महिमा कथी न जाइ ॥ (१६३-७, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्मु जनु रहिआ समाइ ॥३॥ (१६३-७, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ (१६३-७, गउड़ी, मः ५)
दास की धूरि नानक कउ दीजै ॥४॥६७॥१३६॥ (१६३-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६३-८)
हरि सिमरत तेरी जाइ बलाइ ॥ (१६३-९, गउड़ी, मः ५)
सर्ब कलिआण वसै मनि आइ ॥१॥ (१६३-९, गउड़ी, मः ५)

भजु मन मेरे एको नाम ॥ (१६३-६, गउड़ी, मः ५)
जीअ तेरै कै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (१६३-१०, गउड़ी, मः ५)
रैणि दिनसु गुण गाउ अनंता ॥ (१६३-१०, गउड़ी, मः ५)
गुर पूरे का निर्मल मंता ॥२॥ (१६३-१०, गउड़ी, मः ५)
छोडि उपाव एक टेक राखु ॥ (१६३-११, गउड़ी, मः ५)
महा पदारथु अमृत रसु चाखु ॥३॥ (१६३-११, गउड़ी, मः ५)
बिखम सागरु तेई जन तरे ॥ (१६३-११, गउड़ी, मः ५)
नानक जा कउ नदरि करे ॥४॥६८॥१३७॥ (१६३-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६३-१२)
हिरदै चरन कमल प्रभ धारे ॥ (१६३-१२, गउड़ी, मः ५)
पूरे सतिगुर मिलि निसतारे ॥१॥ (१६३-१३, गउड़ी, मः ५)
गोविंद गुण गावहु मेरे भाई ॥ (१६३-१३, गउड़ी, मः ५)
मिलि साधू हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (१६३-१३, गउड़ी, मः ५)
दुलभ देह होई परवानु ॥ (१६३-१४, गउड़ी, मः ५)
सतिगुर ते पाइआ नाम नीसानु ॥२॥ (१६३-१४, गउड़ी, मः ५)
हरि सिमरत पूरन पदु पाइआ ॥ (१६३-१४, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि भै भर्म मिटाइआ ॥३॥ (१६३-१५, गउड़ी, मः ५)
जत कत देखउ तत रहिआ समाइ ॥ (१६३-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक दास हरि की सरणाइ ॥४॥६६॥१३८॥ (१६३-१६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६३-१६)
गुर जी के दरसन कउ बलि जाउ ॥ (१६३-१६, गउड़ी, मः ५)
जपि जपि जीवा सतिगुर नाउ ॥१॥ (१६३-१७, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म पूरन गुरदेव ॥ (१६३-१७, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा लागउ तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (१६३-१७, गउड़ी, मः ५)
चरन कमल हिरदै उर धारी ॥ (१६३-१८, गउड़ी, मः ५)
मन तन धन गुर प्रान अधारी ॥२॥ (१६३-१८, गउड़ी, मः ५)
सफल जनमु होवै परवाणु ॥ (१६३-१८, गउड़ी, मः ५)
गुरु पारब्रह्मु निकटि करि जाणु ॥३॥ (१६३-१९, गउड़ी, मः ५)
संत धूरि पाईऐ वडभागी ॥ (१६३-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक गुर भेटत हरि सिउ लिव लागी ॥४॥७०॥१३९॥ (१६३-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १६४

गउड़ी महला ५ ॥ (१६४-१)
करै दुहकर्म दिखावै होरु ॥ (१६४-१, गउड़ी, मः ५)
राम की दरगह बाधा चोरु ॥१॥ (१६४-२, गउड़ी, मः ५)

रामु रमै सोई रामाणा ॥ (१६४-२, गउड़ी, मः ५)
जलि थलि महीअलि एकु समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-२, गउड़ी, मः ५)
अंतरि बिखु मुखि अमृतु सुणावै ॥ (१६४-३, गउड़ी, मः ५)
जम पुरि बाधा चोटा खावै ॥२॥ (१६४-३, गउड़ी, मः ५)
अनिक पड़दे महि कमावै विकार ॥ (१६४-३, गउड़ी, मः ५)
खिन महि प्रगट होहि संसार ॥३॥ (१६४-४, गउड़ी, मः ५)
अंतरि साचि नामि रसि राता ॥ (१६४-४, गउड़ी, मः ५)
नानक तिसु किरपालु बिधाता ॥४॥७१॥१४०॥ (१६४-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६४-५)
राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥ (१६४-५, गउड़ी, मः ५)
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥१॥ (१६४-५, गउड़ी, मः ५)
हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥ (१६४-६, गउड़ी, मः ५)
लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-६, गउड़ी, मः ५)
संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥ (१६४-७, गउड़ी, मः ५)
ता का रंगु न उतरै जाइ ॥२॥ (१६४-७, गउड़ी, मः ५)
बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥ (१६४-७, गउड़ी, मः ५)
आन रंग फीके सभ माइआ ॥३॥ (१६४-८, गउड़ी, मः ५)
गुरि रंगे से भए निहाल ॥ (१६४-८, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक गुर भए है दइआल ॥४॥७२॥१४१॥ (१६४-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६४-९)
सिमरत सुआमी किलविख नासे ॥ (१६४-९, गउड़ी, मः ५)
सूख सहज आनंद निवासे ॥१॥ (१६४-९, गउड़ी, मः ५)
राम जना कउ राम भरोसा ॥ (१६४-१०, गउड़ी, मः ५)
नामु जपत सभु मिटिओ अंदेसा ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-१०, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि कछु भउ न भराती ॥ (१६४-१०, गउड़ी, मः ५)
गुण गोपाल गाईअहि दिनु राती ॥२॥ (१६४-११, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभ बंधन छोट ॥ (१६४-११, गउड़ी, मः ५)
चरण कमल की दीनी ओट ॥३॥ (१६४-११, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक मनि भई परतीति ॥ (१६४-१२, गउड़ी, मः ५)
निर्मल जसु पीवहि जन नीति ॥४॥७३॥१४२॥ (१६४-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६४-१३)
हरि चरणी जा का मनु लागा ॥ (१६४-१३, गउड़ी, मः ५)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागा ॥१॥ (१६४-१३, गउड़ी, मः ५)
हरि धन को वापारी पूरा ॥ (१६४-१३, गउड़ी, मः ५)
जिसहि निवाजे सो जनु सूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-१४, गउड़ी, मः ५)

जा कउ भए क्रिपाल गुसाई ॥ (१६४-१४, गउड़ी, मः ५)
से जन लागे गुर की पाई ॥२॥ (१६४-१४, गउड़ी, मः ५)
सूख सहज साँति आनंदा ॥ (१६४-१५, गउड़ी, मः ५)
जपि जपि जीवे परमानंदा ॥३॥ (१६४-१५, गउड़ी, मः ५)
नाम रासि साध संगि खाटी ॥ (१६४-१५, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक प्रभि अपदा काटी ॥४॥७४॥१४३॥ (१६४-१६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६४-१६)
हरि सिमरत सभि मिटहि कलेस ॥ (१६४-१६, गउड़ी, मः ५)
चरण कमल मन महि परवेस ॥१॥ (१६४-१७, गउड़ी, मः ५)
उचरहु राम नामु लख बारी ॥ (१६४-१७, गउड़ी, मः ५)
अमृत रसु पीवहु प्रभ पिआरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१६४-१७, गउड़ी, मः ५)
सूख सहज रस महा अनंदा ॥ (१६४-१८, गउड़ी, मः ५)
जपि जपि जीवे परमानंदा ॥२॥ (१६४-१८, गउड़ी, मः ५)
काम क्रोध लोभ मद खोए ॥ (१६४-१८, गउड़ी, मः ५)
साध कै संगि किलबिख सभ धोए ॥३॥ (१६४-१९, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (१६४-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक दीजै साध रवाला ॥४॥७५॥१४४॥ (१६४-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १६५

गउड़ी महला ५ ॥ (१६५-१)
जिस का दीआ पैनै खाइ ॥ (१६५-१, गउड़ी, मः ५)
तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥१॥ (१६५-१, गउड़ी, मः ५)
खसमु बिसारि आन कंमि लागहि ॥ (१६५-२, गउड़ी, मः ५)
कउडी बदले रतनु तिआगहि ॥१॥ रहाउ ॥ (१६५-२, गउड़ी, मः ५)
प्रभू तिआगि लागत अन लोभा ॥ (१६५-३, गउड़ी, मः ५)
दासि सलामु करत कत सोभा ॥२॥ (१६५-३, गउड़ी, मः ५)
अमृत रसु खावहि खान पान ॥ (१६५-३, गउड़ी, मः ५)
जिनि दीए तिसहि न जानहि सुआन ॥३॥ (१६५-४, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक हम लूण हरामी ॥ (१६५-४, गउड़ी, मः ५)
बखसि लेहु प्रभ अंतरजामी ॥४॥७६॥१४५॥ (१६५-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६५-५)
प्रभ के चरन मन माहि धिआनु ॥ (१६५-५, गउड़ी, मः ५)
सगल तीर्थ मजन इसनानु ॥१॥ (१६५-५, गउड़ी, मः ५)
हरि दिनु हरि सिमरनु मेरे भाई ॥ (१६५-६, गउड़ी, मः ५)
कोटि जनम की मलु लहि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१६५-६, गउड़ी, मः ५)

हरि की कथा रिद माहि बसाई ॥ (१९५-७, गउड़ी, मः ५)
मन बाँछत सगले फल पाई ॥२॥ (१९५-७, गउड़ी, मः ५)
जीवन मरणु जनमु परवानु ॥ (१९५-७, गउड़ी, मः ५)
जा कै रिदै वसै भगवानु ॥३॥ (१९५-८, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक सेई जन पूरे ॥ (१९५-८, गउड़ी, मः ५)
जिना परापति साधू धूरे ॥४॥७७॥१४६॥ (१९५-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९५-९)
खादा पैनदा मूकरि पाइ ॥ (१९५-९, गउड़ी, मः ५)
तिस नो जोहहि दूत धरमराइ ॥१॥ (१९५-९, गउड़ी, मः ५)
तिसु सिउ बेमुखु जिनि जीउ पिंडु दीना ॥ (१९५-९, गउड़ी, मः ५)
कोटि जनम भरमहि बहु जूना ॥१॥ रहाउ ॥ (१९५-१०, गउड़ी, मः ५)
साकत की ऐसी है रीति ॥ (१९५-१०, गउड़ी, मः ५)
जो किछु करै सगल बिपरीति ॥२॥ (१९५-१०, गउड़ी, मः ५)
जीउ प्राण जिनि मनु तनु धारिआ ॥ (१९५-११, गउड़ी, मः ५)
सोई ठाकुरु मनहु बिसारिआ ॥३॥ (१९५-११, गउड़ी, मः ५)
बधे बिकार लिखे बहु कागर ॥ (१९५-१२, गउड़ी, मः ५)
नानक उधरु कृपा सुख सागर ॥४॥ (१९५-१२, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म तेरी सरणाइ ॥ (१९५-१२, गउड़ी, मः ५)
बंधन काटि तरै हरि नाइ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७८॥१४७॥ (१९५-१३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९५-१३)
अपने लोभ कउ कीनो मीतु ॥ (१९५-१३, गउड़ी, मः ५)
सगल मनोरथ मुकति पदु दीतु ॥१॥ (१९५-१४, गउड़ी, मः ५)
ऐसा मीतु करहु सभु कोइ ॥ (१९५-१४, गउड़ी, मः ५)
जा ते बिरथा कोइ न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१९५-१४, गउड़ी, मः ५)
अपुनै सुआइ रिदै लै धारिआ ॥ (१९५-१५, गउड़ी, मः ५)
दूख दरद रोग सगल बिदारिआ ॥२॥ (१९५-१५, गउड़ी, मः ५)
रसना गीधी बोलत राम ॥ (१९५-१६, गउड़ी, मः ५)
पूरन होए सगले काम ॥३॥ (१९५-१६, गउड़ी, मः ५)
अनिक बार नानक बलिहारा ॥ (१९५-१६, गउड़ी, मः ५)
सफल दरसनु गोबिंदु हमारा ॥४॥७९॥१४८॥ (१९५-१६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९५-१७)
कोटि बिघन हिरे खिन माहि ॥ (१९५-१७, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि कथा साधसंगि सुनाहि ॥१॥ (१९५-१८, गउड़ी, मः ५)
पीवत राम रसु अमृत गुण जासु ॥ (१९५-१८, गउड़ी, मः ५)
जपि हरि चरण मिटी खुधि तासु ॥१॥ रहाउ ॥ (१९५-१८, गउड़ी, मः ५)

सर्ब कलिआण सुख सहज निधान ॥ (१९५-१९, गउड़ी, मः ५)
जा कै रिदै वसहि भगवान ॥२॥ (१९५-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १९६

अउखध मंत्र तंत सभि छारु ॥ (१९६-१, गउड़ी, मः ५)
करणैहारु रिदे महि धारु ॥३॥ (१९६-१, गउड़ी, मः ५)
तजि सभि भर्म भजिओ पारब्रह्मु ॥ (१९६-१, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक अटल इहु धरमु ॥४॥८०॥१४९॥ (१९६-२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९६-२)
करि किरपा भेटे गुर सोई ॥ (१९६-२, गउड़ी, मः ५)
तितु बलि रोगु न बिआपै कोई ॥१॥ (१९६-३, गउड़ी, मः ५)
राम रमण तरण भै सागर ॥ (१९६-३, गउड़ी, मः ५)
सरणि सूर फारे जम कागर ॥१॥ रहाउ ॥ (१९६-३, गउड़ी, मः ५)
सतिगुरि मंत्रु दीओ हरि नाम ॥ (१९६-४, गउड़ी, मः ५)
इह आसर पूरन भए काम ॥२॥ (१९६-४, गउड़ी, मः ५)
जप तप संजम पूरी वडिआई ॥ (१९६-४, गउड़ी, मः ५)
गुर किरपाल हरि भए सहाई ॥३॥ (१९६-५, गउड़ी, मः ५)
मान मोह खोए गुरि भर्म ॥ (१९६-५, गउड़ी, मः ५)
पेखु नानक पसरे पारब्रह्म ॥४॥८१॥१५०॥ (१९६-५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९६-६)
बिखै राज ते अंधुला भारी ॥ (१९६-६, गउड़ी, मः ५)
दुखि लागै राम नामु चितारी ॥१॥ (१९६-६, गउड़ी, मः ५)
तेरे दास कउ तुही वडिआई ॥ (१९६-७, गउड़ी, मः ५)
माइआ मगनु नरकि लै जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१९६-७, गउड़ी, मः ५)
रोग गिरसत चितारे नाउ ॥ (१९६-८, गउड़ी, मः ५)
बिखु माते का ठउर न ठाउ ॥२॥ (१९६-८, गउड़ी, मः ५)
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (१९६-८, गउड़ी, मः ५)
आन सुखा नही आवहि चीति ॥३॥ (१९६-९, गउड़ी, मः ५)
सदा सदा सिमरउ प्रभ सुआमी ॥ (१९६-९, गउड़ी, मः ५)
मिलु नानक हरि अंतरजामी ॥४॥८२॥१५१॥ (१९६-९, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९६-१०)
आठ पहर संगी बटवारे ॥ (१९६-१०, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभि लए निवारे ॥१॥ (१९६-१०, गउड़ी, मः ५)
ऐसा हरि रसु रमहु सभु कोइ ॥ (१९६-११, गउड़ी, मः ५)
सर्ब कला पूरन प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१९६-११, गउड़ी, मः ५)

महा तपति सागर संसार ॥ (१९६-११, गउड़ी, मः ५)
प्रभ खिन महि पारि उतारणहार ॥२॥ (१९६-१२, गउड़ी, मः ५)
अनिक बंधन तोरे नही जाहि ॥ (१९६-१२, गउड़ी, मः ५)
सिमरत नाम मुकति फल पाहि ॥३॥ (१९६-१२, गउड़ी, मः ५)
उकति सिआनप इस ते कछु नाहि ॥ (१९६-१३, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा नानक गुण गाहि ॥४॥८३॥१५२॥ (१९६-१३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९६-१४)
थाती पाई हरि को नाम ॥ (१९६-१४, गउड़ी, मः ५)
बिचरु संसार पूरन सभि काम ॥१॥ (१९६-१४, गउड़ी, मः ५)
वडभागी हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (१९६-१५, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म तूं देहि त पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१९६-१५, गउड़ी, मः ५)
हरि के चरण हिरदै उरि धारि ॥ (१९६-१५, गउड़ी, मः ५)
भव सागरु चड़ि उतरहि पारि ॥२॥ (१९६-१६, गउड़ी, मः ५)
साधू संगु करहु सभु कोइ ॥ (१९६-१६, गउड़ी, मः ५)
सदा कलिआण फिरि दूखु न होइ ॥३॥ (१९६-१६, गउड़ी, मः ५)
प्रेम भगति भजु गुणी निधानु ॥ (१९६-१७, गउड़ी, मः ५)
नानक दरगह पाईऐ मानु ॥४॥८४॥१५३॥ (१९६-१७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९६-१८)
जलि थलि महीअलि पूरन हरि मीत ॥ (१९६-१८, गउड़ी, मः ५)
भ्रम बिनसे गाए गुण नीत ॥१॥ (१९६-१८, गउड़ी, मः ५)
ऊठत सोवत हरि संगि पहरूआ ॥ (१९६-१९, गउड़ी, मः ५)
जा कै सिमरणि जम नही डरूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१९६-१९, गउड़ी, मः ५)
चरण कमल प्रभ रिदै निवासु ॥ (१९६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १९७

सगल दूख का होइआ नासु ॥२॥ (१९७-१, गउड़ी, मः ५)
आसा माणु ताणु धनु एक ॥ (१९७-१, गउड़ी, मः ५)
साचे साह की मन महि टेक ॥३॥ (१९७-१, गउड़ी, मः ५)
महा गरीब जन साध अनाथ ॥ (१९७-२, गउड़ी, मः ५)
नानक प्रभि राखे दे हाथ ॥४॥८५॥१५४॥ (१९७-२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९७-३)
हरि हरि नामि मजनु करि सूचे ॥ (१९७-३, गउड़ी, मः ५)
कोटि ग्रहण पुन्न फल मूचे ॥१॥ रहाउ ॥ (१९७-३, गउड़ी, मः ५)
हरि के चरण रिदे महि बसे ॥ (१९७-३, गउड़ी, मः ५)
जनम जनम के किलविख नसे ॥१॥ (१९७-४, गउड़ी, मः ५)

साधसंगि कीर्तन फलु पाइआ ॥ (१६७-४, गउड़ी, मः ५)
जम का मारगु दृसटि न आइआ ॥२॥ (१६७-५, गउड़ी, मः ५)
मन बच क्रम गोविंद अधारु ॥ (१६७-५, गउड़ी, मः ५)
ता ते छुटिओ बिखु संसारु ॥३॥ (१६७-५, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभि कीनो अपना ॥ (१६७-६, गउड़ी, मः ५)
नानक जापु जपे हरि जपना ॥४॥८६॥१५५॥ (१६७-६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६७-६)
पउ सरणाई जिनि हरि जाते ॥ (१६७-७, गउड़ी, मः ५)
मनु तनु सीतलु चरण हरि राते ॥१॥ (१६७-७, गउड़ी, मः ५)
भै भंजन प्रभ मनि न बसाही ॥ (१६७-७, गउड़ी, मः ५)
डरपत डरपत जनम बहुतु जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (१६७-८, गउड़ी, मः ५)
जा कै रिदै बसिओ हरि नाम ॥ (१६७-८, गउड़ी, मः ५)
सगल मनोरथ ता के पूरन काम ॥२॥ (१६७-८, गउड़ी, मः ५)
जनमु जरा मिरतु जिसु वासि ॥ (१६७-९, गउड़ी, मः ५)
सो समरथु सिमरि सासि गिरासि ॥३॥ (१६७-९, गउड़ी, मः ५)
मीतु साजनु सखा प्रभु एक ॥ (१६७-९, गउड़ी, मः ५)
नामु सुआमी का नानक टेक ॥४॥८७॥१५६॥ (१६७-१०, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६७-१०)
बाहरि राखिओ रिदै समालि ॥ (१६७-१०, गउड़ी, मः ५)
घरि आए गोविंदु लै नालि ॥१॥ (१६७-११, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि नामु संतन कै संगि ॥ (१६७-११, गउड़ी, मः ५)
मनु तनु राता राम कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (१६७-११, गउड़ी, मः ५)
गुर परसादी सागरु तरिआ ॥ (१६७-१२, गउड़ी, मः ५)
जनम जनम के किलविख सभि हिरिआ ॥२॥ (१६७-१२, गउड़ी, मः ५)
सोभा सुरति नामि भगवंतु ॥ (१६७-१३, गउड़ी, मः ५)
पूरे गुर का निर्मल मंतु ॥३॥ (१६७-१३, गउड़ी, मः ५)
चरण कमल हिरदे महि जापु ॥ (१६७-१३, गउड़ी, मः ५)
नानकु पेखि जीवै परतापु ॥४॥८८॥१५७॥ (१६७-१४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१६७-१४)
धन्नु इहु थानु गोविंद गुण गाए ॥ (१६७-१४, गउड़ी, मः ५)
कुसल खेम प्रभि आपि बसाए ॥१॥ रहाउ ॥ (१६७-१५, गउड़ी, मः ५)
बिपति तहा जहा हरि सिमरनु नाही ॥ (१६७-१५, गउड़ी, मः ५)
कोटि अनंद जह हरि गुन गाही ॥१॥ (१६७-१५, गउड़ी, मः ५)
हरि बिसरिऐ दुख रोग घनेरे ॥ (१६७-१६, गउड़ी, मः ५)
प्रभ सेवा जमु लगै न नेरे ॥२॥ (१६७-१६, गउड़ी, मः ५)

सो वडभागी निहचल थानु ॥ (१९७-१६, गउड़ी, मः ५)
जह जपीऐ प्रभ केवल नामु ॥३॥ (१९७-१७, गउड़ी, मः ५)
जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी ॥ (१९७-१७, गउड़ी, मः ५)
नानक कउ मिलिआ अंतरजामी ॥४॥८९॥१५८॥ (१९७-१७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९७-१८)
जो प्राणी गोविंदु धिआवै ॥ (१९७-१८, गउड़ी, मः ५)
पड़िआ अणपड़िआ पर्म गति पावै ॥१॥ (१९७-१८, गउड़ी, मः ५)
साधू संगि सिमरि गोपाल ॥ (१९७-१९, गउड़ी, मः ५)
बिनु नावै झूठा धनु मालु ॥१॥ रहाउ ॥ (१९७-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १९८

रूपवंतु सो चतुरु सिआणा ॥ (१९८-१, गउड़ी, मः ५)
जिनि जनि मानिआ प्रभ का भाणा ॥२॥ (१९८-१, गउड़ी, मः ५)
जग महि आइआ सो परवाणु ॥ (१९८-१, गउड़ी, मः ५)
घटि घटि अपणा सुआमी जाणु ॥३॥ (१९८-२, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जा के पूरन भाग ॥ (१९८-२, गउड़ी, मः ५)
हरि चरणी ता का मनु लाग ॥४॥९०॥१५९॥ (१९८-२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९८-३)
हरि के दास सिउ साकत नही संगु ॥ (१९८-३, गउड़ी, मः ५)
ओहु बिखई ओसु राम को रंगु ॥१॥ रहाउ ॥ (१९८-३, गउड़ी, मः ५)
मन असवार जैसे तुरी सीगारी ॥ (१९८-४, गउड़ी, मः ५)
जिउ कापुरखु पुचारै नारी ॥१॥ (१९८-४, गउड़ी, मः ५)
बैल कउ नेत्रा पाइ दुहावै ॥ (१९८-४, गउड़ी, मः ५)
गऊ चरि सिंघ पाछै पावै ॥२॥ (१९८-५, गउड़ी, मः ५)
गाडर ले कामधेनु करि पूजी ॥ (१९८-५, गउड़ी, मः ५)
सउदे कउ धावै बिनु पूंजी ॥३॥ (१९८-५, गउड़ी, मः ५)
नानक राम नामु जपि चीत ॥ (१९८-६, गउड़ी, मः ५)
सिमरि सुआमी हरि सा मीत ॥४॥९१॥१६०॥ (१९८-६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९८-६)
सा मति निर्मल कहीअत धीर ॥ (१९८-७, गउड़ी, मः ५)
राम रसाइणु पीवत बीर ॥१॥ (१९८-७, गउड़ी, मः ५)
हरि के चरण हिरदै करि ओट ॥ (१९८-७, गउड़ी, मः ५)
जनम मरण ते होवत छोट ॥१॥ रहाउ ॥ (१९८-८, गउड़ी, मः ५)
सो तनु निरमलु जितु उपजै न पापु ॥ (१९८-८, गउड़ी, मः ५)
राम रंगि निर्मल परतापु ॥२॥ (१९८-८, गउड़ी, मः ५)

साधसंगि मिटि जात बिकार ॥ (१९८-९, गउड़ी, मः ५)
सभ ते ऊच एहो उपकार ॥३॥ (१९८-९, गउड़ी, मः ५)
प्रेम भगति राते गोपाल ॥ (१९८-९, गउड़ी, मः ५)
नानक जाचै साध रवाल ॥४॥६२॥१६१॥ (१९८-१०, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९८-१०)
ऐसी प्रीति गोविंद सिउ लागी ॥ (१९८-१०, गउड़ी, मः ५)
मेलि लए पूरन वडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (१९८-११, गउड़ी, मः ५)
भरता पेखि बिगसै जिउ नारी ॥ (१९८-११, गउड़ी, मः ५)
तिउ हरि जनु जीवै नामु चितारी ॥१॥ (१९८-११, गउड़ी, मः ५)
पूत पेखि जिउ जीवत माता ॥ (१९८-१२, गउड़ी, मः ५)
ओति पोति जनु हरि सिउ राता ॥२॥ (१९८-१२, गउड़ी, मः ५)
लोभी अनदु करै पेखि धना ॥ (१९८-१२, गउड़ी, मः ५)
जन चरन कमल सिउ लागो मना ॥३॥ (१९८-१३, गउड़ी, मः ५)
बिसरु नही इकु तिलु दातार ॥ (१९८-१३, गउड़ी, मः ५)
नानक के प्रभ प्रान अधार ॥४॥६३॥१६२॥ (१९८-१४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९८-१४)
राम रसाइणि जो जन गीधे ॥ (१९८-१४, गउड़ी, मः ५)
चरन कमल प्रेम भगती बीधे ॥१॥ रहाउ ॥ (१९८-१४, गउड़ी, मः ५)
आन रसा दीसहि सभि छारु ॥ (१९८-१५, गउड़ी, मः ५)
नाम बिना निहफल संसार ॥१॥ (१९८-१५, गउड़ी, मः ५)
अंध कूप ते काढे आपि ॥ (१९८-१६, गउड़ी, मः ५)
गुण गोविंद अचरज परताप ॥२॥ (१९८-१६, गउड़ी, मः ५)
वणि तृणि तृभवणि पूरन गोपाल ॥ (१९८-१६, गउड़ी, मः ५)
ब्रहम पसारु जीअ संगि दइआल ॥३॥ (१९८-१७, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक सा कथनी सारु ॥ (१९८-१७, गउड़ी, मः ५)
मानि लेतु जिसु सिरजनहारु ॥४॥६४॥१६३॥ (१९८-१७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९८-१८)
नितप्रति नावणु राम सरि कीजै ॥ (१९८-१८, गउड़ी, मः ५)
झोलि महा रसु हरि अमृतु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१९८-१८, गउड़ी, मः ५)
निर्मल उदकु गोविंद का नाम ॥ (१९८-१९, गउड़ी, मः ५)
मजनु करत पूरन सभि काम ॥१॥ (१९८-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना १९९

संतसंगि तह गोसटि होइ ॥ (१९९-१, गउड़ी, मः ५)
कोटि जनम के किलविख खोइ ॥२॥ (१९९-१, गउड़ी, मः ५)

सिमरहि साध करहि आनंदु ॥ (१९९-१, गउड़ी, मः ५)
मनि तनि रविआ परमानंदु ॥३॥ (१९९-२, गउड़ी, मः ५)
जिसहि परापति हरि चरण निधान ॥ (१९९-२, गउड़ी, मः ५)
नानक दास तिसहि कुरबान ॥४॥९५॥१६४॥ (१९९-२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९९-३)
सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥ (१९९-३, गउड़ी, मः ५)
हरि कीर्तन महि एहु मनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ (१९९-३, गउड़ी, मः ५)
एको सिमरि न दूजा भाउ ॥ (१९९-४, गउड़ी, मः ५)
संतसंगि जपि केवल नाउ ॥१॥ (१९९-४, गउड़ी, मः ५)
कर्म धर्म नेम ब्रत पूजा ॥ (१९९-५, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म बिनु जानु न दूजा ॥२॥ (१९९-५, गउड़ी, मः ५)
ता की पूरन होई घाल ॥ (१९९-५, गउड़ी, मः ५)
जा की प्रीति अपुने प्रभ नालि ॥३॥ (१९९-५, गउड़ी, मः ५)
सो बैसनो है अपर अपारु ॥ (१९९-६, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जिनि तजे बिकार ॥४॥९६॥१६५॥ (१९९-६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९९-७)
जीवत छाडि जाहि देवाने ॥ (१९९-७, गउड़ी, मः ५)
मुइआ उन ते को वरसाँने ॥१॥ (१९९-७, गउड़ी, मः ५)
सिमरि गोविंदु मनि तनि धुरि लिखिआ ॥ (१९९-७, गउड़ी, मः ५)
काहू काज न आवत बिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१९९-८, गउड़ी, मः ५)
बिखै ठगउरी जिनि जिनि खाई ॥ (१९९-८, गउड़ी, मः ५)
ता की तृसना कबहूं न जाई ॥२॥ (१९९-९, गउड़ी, मः ५)
दारन दुख दुतर संसारु ॥ (१९९-९, गउड़ी, मः ५)
राम नाम बिनु कैसे उतरसि पारि ॥३॥ (१९९-९, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि मिलि दुइ कुल साधि ॥ (१९९-१०, गउड़ी, मः ५)
राम नाम नानक आराधि ॥४॥९७॥१६६॥ (१९९-१०, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९९-१०)
गरीबा उपरि जि खिंजै दाड़ी ॥ (१९९-११, गउड़ी, मः ५)
पारब्रहमि सा अगनि महि साड़ी ॥१॥ (१९९-११, गउड़ी, मः ५)
पूरा निआउ करे करतारु ॥ (१९९-११, गउड़ी, मः ५)
अपुने दास कउ राखनहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (१९९-१२, गउड़ी, मः ५)
आदि जुगादि प्रगटि परतापु ॥ (१९९-१२, गउड़ी, मः ५)
निंदकु मुआ उपजि वड तापु ॥२॥ (१९९-१२, गउड़ी, मः ५)
तिनि मारिआ जि रखै न कोइ ॥ (१९९-१३, गउड़ी, मः ५)
आगै पाछै मंदी सोइ ॥३॥ (१९९-१३, गउड़ी, मः ५)

अपुने दास राखै कंठि लाइ ॥ (१९९-१३, गउड़ी, मः ५)
सरणि नानक हरि नामु धिआइ ॥४॥९८॥१६७॥ (१९९-१४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९९-१४)
महजरु झूठा कीतोनु आपि ॥ (१९९-१४, गउड़ी, मः ५)
पापी कउ लागा संतापु ॥१॥ (१९९-१५, गउड़ी, मः ५)
जिसहि सहाई गोबिदु मेरा ॥ (१९९-१५, गउड़ी, मः ५)
तिसु कउ जमु नही आवै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (१९९-१५, गउड़ी, मः ५)
साची दरगह बोलै कूड़ु ॥ (१९९-१६, गउड़ी, मः ५)
सिरु हाथ पछोड़ै अंधा मूड़ु ॥२॥ (१९९-१६, गउड़ी, मः ५)
रोग बिआपे करदे पाप ॥ (१९९-१६, गउड़ी, मः ५)
अदली होइ बैठा प्रभु आपि ॥३॥ (१९९-१७, गउड़ी, मः ५)
अपन कमाइऐ आपे बाधे ॥ (१९९-१७, गउड़ी, मः ५)
दरबु गइआ सभु जीअ कै साथै ॥४॥ (१९९-१७, गउड़ी, मः ५)
नानक सरनि परे दरबारि ॥ (१९९-१८, गउड़ी, मः ५)
राखी पैज मेरै करतारि ॥५॥९९॥१६८॥ (१९९-१८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (१९९-१८)
जन की धूरि मन मीठ खटानी ॥ (१९९-१९, गउड़ी, मः ५)
पूरबि करमि लिखिआ धुरि प्रानी ॥१॥ रहाउ ॥ (१९९-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २००

अहम्बुधि मन पूरि थिधाई ॥ (२००-१, गउड़ी, मः ५)
साध धूरि करि सुध मंजाई ॥१॥ (२००-१, गउड़ी, मः ५)
अनिक जला जे धोवै देही ॥ (२००-१, गउड़ी, मः ५)
मैलु न उतरै सुधु न तेही ॥२॥ (२००-१, गउड़ी, मः ५)
सतिगुरु भेटिओ सदा कृपाल ॥ (२००-२, गउड़ी, मः ५)
हरि सिमरि सिमरि काटिआ भउ काल ॥३॥ (२००-२, गउड़ी, मः ५)
मुकति भुगति जुगति हरि नाउ ॥ (२००-३, गउड़ी, मः ५)
प्रेम भगति नानक गुण गाउ ॥४॥१००॥१६९॥ (२००-३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२००-३)
जीवन पदवी हरि के दास ॥ (२००-४, गउड़ी, मः ५)
जिन मिलिआ आतम परगासु ॥१॥ (२००-४, गउड़ी, मः ५)
हरि का सिमरनु सुनि मन कानी ॥ (२००-४, गउड़ी, मः ५)
सुखु पावहि हरि दुआर परानी ॥१॥ रहाउ ॥ (२००-५, गउड़ी, मः ५)
आठ पहर धिआईऐ गोपालु ॥ (२००-५, गउड़ी, मः ५)
नानक दरसनु देखि निहालु ॥२॥१०१॥१७०॥ (२००-५, गउड़ी, मः ५)

गउड़ी महला ५ ॥ (२००-६)
साँति भई गुर गोबिदि पाई ॥ (२००-६, गउड़ी, मः ५)
ताप पाप बिनसे मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (२००-६, गउड़ी, मः ५)
राम नामु नित रसन बखान ॥ (२००-७, गउड़ी, मः ५)
बिनसे रोग भए कलिआन ॥१॥ (२००-७, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म गुण अगम बीचार ॥ (२००-७, गउड़ी, मः ५)
साधू संगमि है निसतार ॥२॥ (२००-८, गउड़ी, मः ५)
निर्मल गुण गावहु नित नीत ॥ (२००-८, गउड़ी, मः ५)
गई बिआधि उबरे जन मीत ॥३॥ (२००-८, गउड़ी, मः ५)
मन बच क्रम प्रभु अपना धिआई ॥ (२००-९, गउड़ी, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाई ॥४॥१०२॥१७१॥ (२००-९, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२००-१०)
नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव ॥ (२००-१०, गउड़ी, मः ५)
भर्म गए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (२००-१०, गउड़ी, मः ५)
सीतला ते रखिआ बिहारी ॥ (२००-११, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ किरपा धारी ॥१॥ (२००-११, गउड़ी, मः ५)
नानक नामु जपै सो जीवै ॥ (२००-११, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि हरि अमृतु पीवै ॥२॥१०३॥१७२॥ (२००-११, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२००-१२)
धनु ओहु मसतकु धनु तेरे नेत ॥ (२००-१२, गउड़ी, मः ५)
धनु ओइ भगत जिन तुम संगि हेत ॥१॥ (२००-१२, गउड़ी, मः ५)
नाम बिना कैसे सुखु लहीऐ ॥ (२००-१३, गउड़ी, मः ५)
रसना राम नाम जसु कहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (२००-१३, गउड़ी, मः ५)
तिन ऊपरि जाईऐ कुरबाणु ॥ (२००-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक जिनि जपिआ निरबाणु ॥२॥१०४॥१७३॥ (२००-१४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२००-१५)
तूंहै मसलति तूंहै नालि ॥ (२००-१५, गउड़ी, मः ५)
तूहै राखहि सारि समालि ॥१॥ (२००-१५, गउड़ी, मः ५)
ऐसा रामु दीन दुनी सहाई ॥ (२००-१५, गउड़ी, मः ५)
दास की पैज रखै मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (२००-१६, गउड़ी, मः ५)
आगै आपि इहु थानु वसि जा कै ॥ (२००-१६, गउड़ी, मः ५)
आठ पहर मनु हरि कउ जापै ॥२॥ (२००-१७, गउड़ी, मः ५)
पति परवाणु सचु नीसाणु ॥ (२००-१७, गउड़ी, मः ५)
जा कउ आपि करहि फुरमानु ॥३॥ (२००-१७, गउड़ी, मः ५)
आपे दाता आपि प्रतिपालि ॥ (२००-१८, गउड़ी, मः ५)

नित नित नानक राम नामु समालि ॥४॥१०५॥१७४॥ (२००-१८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२००-१९)
सतिगुरु पूरा भइआ कृपालु ॥ (२००-१९, गउड़ी, मः ५)
हिरदै वसिआ सदा गुपालु ॥१॥ (२००-१९, गउड़ी, मः ५)
रामु रवत सद ही सुखु पाइआ ॥ (२००-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २०१

मइआ करी पूरन हरि राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०१-१, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ (२०१-१, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि नामु असथिरु सोहागु ॥२॥१०६॥ (२०१-२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०१-२)
धोती खोलि विछाए हेठि ॥ (२०१-२, गउड़ी, मः ५)
गरधप वाँगू लाहे पेटि ॥१॥ (२०१-३, गउड़ी, मः ५)
बिनु करतूती मुकति न पाईऐ ॥ (२०१-३, गउड़ी, मः ५)
मुकति पदारथु नामु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०१-३, गउड़ी, मः ५)
पूजा तिलक करत इसनानाँ ॥ (२०१-४, गउड़ी, मः ५)
छुरी काढि लेवै हथि दाना ॥२॥ (२०१-४, गउड़ी, मः ५)
बेदु पड़ै मुखि मीठी बाणी ॥ (२०१-४, गउड़ी, मः ५)
जीआँ कुहत न संगै पराणी ॥३॥ (२०१-५, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जिसु किरपा धारै ॥ (२०१-५, गउड़ी, मः ५)
हिरदा सुधु ब्रह्मु बीचारै ॥४॥१०७॥ (२०१-५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०१-६)
थिरु घरि बैसहु हरि जन पिआरे ॥ (२०१-६, गउड़ी, मः ५)
सतिगुरि तुमरे काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (२०१-६, गउड़ी, मः ५)
दुसट दूत परमेसरि मारे ॥ (२०१-७, गउड़ी, मः ५)
जन की पैज रखी करतारे ॥१॥ (२०१-७, गउड़ी, मः ५)
बादिसाह साह सभ वसि करि दीने ॥ (२०१-७, गउड़ी, मः ५)
अमृत नाम महा रस पीने ॥२॥ (२०१-८, गउड़ी, मः ५)
निरभउ होइ भजहु भगवान ॥ (२०१-८, गउड़ी, मः ५)
साधसंगति मिलि कीनो दानु ॥३॥ (२०१-८, गउड़ी, मः ५)
सरणि परे प्रभ अंतरजामी ॥ (२०१-९, गउड़ी, मः ५)
नानक ओट पकरी प्रभ सुआमी ॥४॥१०८॥ (२०१-९, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०१-१०)
हरि संगि राते भाहि न जलै ॥ (२०१-१०, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते माइआ नही छलै ॥ (२०१-१०, गउड़ी, मः ५)

हरि संगि राते नही डूबै जला ॥ (२०१-१०, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते सुफल फला ॥१॥ (२०१-११, गउड़ी, मः ५)
सभ भै मिटहि तुमारै नाइ ॥ (२०१-११, गउड़ी, मः ५)
भेटत संगि हरि हरि गुन गाइ ॥ रहाउ ॥ (२०१-११, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते मिटै सभ चिंता ॥ (२०१-१२, गउड़ी, मः ५)
हरि सिउ सो रचै जिसु साध का मंता ॥ (२०१-१२, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते जम की नही त्रास ॥ (२०१-१३, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते पूरन आस ॥२॥ (२०१-१३, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते दूखु न लागै ॥ (२०१-१३, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राता अनदिनु जागै ॥ (२०१-१४, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राता सहज घरि वसै ॥ (२०१-१४, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते भ्रमु भउ नसै ॥३॥ (२०१-१४, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते मति ऊतम होइ ॥ (२०१-१५, गउड़ी, मः ५)
हरि संगि राते निर्मल सोइ ॥ (२०१-१५, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक तिन कउ बलि जाई ॥ (२०१-१५, गउड़ी, मः ५)
जिन कउ प्रभु मेरा बिसरत नाही ॥४॥१०६॥ (२०१-१६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०१-१६)
उदमु करत सीतल मन भए ॥ (२०१-१६, गउड़ी, मः ५)
मारगि चलत सगल दुख गए ॥ (२०१-१७, गउड़ी, मः ५)
नामु जपत मनि भए अनंद ॥ (२०१-१७, गउड़ी, मः ५)
रसि गाए गुन परमानंद ॥१॥ (२०१-१७, गउड़ी, मः ५)
खेम भइआ कुसल घरि आए ॥ (२०१-१८, गउड़ी, मः ५)
भेटत साधसंगि गई बलाए ॥ रहाउ ॥ (२०१-१८, गउड़ी, मः ५)
नेत्र पुनीत पेखत ही दरस ॥ (२०१-१९, गउड़ी, मः ५)
धनि मसतक चरन कमल ही परस ॥ (२०१-१९, गउड़ी, मः ५)
गोबिंद की टहल सफल इह कांइआ ॥ (२०१-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २०२

संत प्रसादि पर्म पदु पाइआ ॥२॥ (२०२-१, गउड़ी, मः ५)
जन की कीनी आपि सहाइ ॥ (२०२-१, गउड़ी, मः ५)
सुखु पाइआ लगि दासह पाइ ॥ (२०२-१, गउड़ी, मः ५)
आपु गइआ ता आपहि भए ॥ (२०२-२, गउड़ी, मः ५)
कृपा निधान की सरनी पए ॥३॥ (२०२-२, गउड़ी, मः ५)
जो चाहत सोई जब पाइआ ॥ (२०२-२, गउड़ी, मः ५)
तब ढूंढन कहा को जाइआ ॥ (२०२-३, गउड़ी, मः ५)

असथिर भए बसे सुख आसन ॥ (२०२-३, गउड़ी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक सुख बासन ॥४॥११०॥ (२०२-३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०२-४)
कोटि मजन कीनो इसनान ॥ (२०२-४, गउड़ी, मः ५)
लाख अरब खरब दीनो दानु ॥ (२०२-४, गउड़ी, मः ५)
जा मनि वसिओ हरि को नामु ॥१॥ (२०२-५, गउड़ी, मः ५)
सगल पवित गुन गाइ गुपाल ॥ (२०२-५, गउड़ी, मः ५)
पाप मिटहि साधू सरनि दइआल ॥ रहाउ ॥ (२०२-५, गउड़ी, मः ५)
बहुतु उरध तप साधन साधे ॥ (२०२-६, गउड़ी, मः ५)
अनिक लाभ मनोरथ लाधे ॥ (२०२-६, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि नाम रसन आराधे ॥२॥ (२०२-६, गउड़ी, मः ५)
सिम्मृति सासत बेद बखाने ॥ (२०२-७, गउड़ी, मः ५)
जोग गिआन सिध सुख जाने ॥ (२०२-७, गउड़ी, मः ५)
नामु जपत प्रभ सिउ मन माने ॥३॥ (२०२-७, गउड़ी, मः ५)
अगाधि बोधि हरि अगम अपारे ॥ (२०२-८, गउड़ी, मः ५)
नामु जपत नामु रिदे बीचारे ॥ (२०२-८, गउड़ी, मः ५)
नानक कउ प्रभ किरपा धारे ॥४॥१११॥ (२०२-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी मः ५ ॥ (२०२-९)
सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ ॥ (२०२-९, गउड़ी, मः ५)
चरन कमल गुर रिदै बसाइआ ॥१॥ (२०२-९, गउड़ी, मः ५)
गुर गोबिंदु पारब्रह्मु पूरा ॥ (२०२-१०, गउड़ी, मः ५)
तिसहि अराधि मेरा मनु धीरा ॥ रहाउ ॥ (२०२-१०, गउड़ी, मः ५)
अनदिनु जपउ गुरू गुर नाम ॥ (२०२-१०, गउड़ी, मः ५)
ता ते सिधि भए सगल काँम ॥२॥ (२०२-११, गउड़ी, मः ५)
दरसन देखि सीतल मन भए ॥ (२०२-११, गउड़ी, मः ५)
जनम जनम के किलबिख गए ॥३॥ (२०२-११, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक कहा भै भाई ॥ (२०२-१२, गउड़ी, मः ५)
अपने सेवक की आपि पैज रखाई ॥४॥११२॥ (२०२-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०२-१३)
अपने सेवक कउ आपि सहाई ॥ (२०२-१३, गउड़ी, मः ५)
नित प्रतिपारै बाप जैसे माई ॥१॥ (२०२-१३, गउड़ी, मः ५)
प्रभ की सरनि उबरै सभ कोइ ॥ (२०२-१३, गउड़ी, मः ५)
करन करावन पूरन सचु सोइ ॥ रहाउ ॥ (२०२-१४, गउड़ी, मः ५)
अब मनि बसिआ करनैहारा ॥ (२०२-१४, गउड़ी, मः ५)
भै बिनसे आतम सुख सारा ॥२॥ (२०२-१४, गउड़ी, मः ५)

करि किरपा अपने जन राखे ॥ (२०२-१५, गउड़ी, मः ५)
जनम जनम के किलबिख लाथे ॥३॥ (२०२-१५, गउड़ी, मः ५)
कहनु न जाइ प्रभ की वडिआई ॥ (२०२-१६, गउड़ी, मः ५)
नानक दास सदा सरनाई ॥४॥११३॥ (२०२-१६, गउड़ी, मः ५)
रागु गउड़ी चेती महला ५ दुपदे (२०२-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२०२-१७)
राम को बलु पूरन भाई ॥ (२०२-१८, गउड़ी चेती, मः ५)
ता ते बृथा न बिआपै काई ॥१॥ रहाउ ॥ (२०२-१८, गउड़ी चेती, मः ५)
जो जो चितवै दासु हरि माई ॥ (२०२-१८, गउड़ी चेती, मः ५)
सो सो करता आपि कराई ॥१॥ (२०२-१९, गउड़ी चेती, मः ५)
निंदक की प्रभि पति गवाई ॥ (२०२-१९, गउड़ी चेती, मः ५)
नानक हरि गुण निरभउ गाई ॥२॥११४॥ (२०२-१९, गउड़ी चेती, मः ५)

पन्ना २०३

गउड़ी महला ५ ॥ (२०३-१)
भुज बल बीर ब्रह्म सुख सागर गरत परत गहि लेहु अंगुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०३-१, गउड़ी, मः ५)
स्रवनि न सुरति नैन सुंदर नही आरत दुआरि रटत पिंगुरीआ ॥१॥ (२०३-२, गउड़ी, मः ५)
दीना नाथ अनाथ करुणा मै साजन मीत पिता महतरीआ ॥ (२०३-३, गउड़ी, मः ५)
चरन कवल हिरदै गहि नानक भै सागर संत पारि उतरीआ ॥२॥२॥११५॥ (२०३-३, गउड़ी, मः ५)
रागु गउड़ी बैरागणि महला ५ (२०३-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२०३-५)
दय गुसाई मीतुला तूं संगि हमारै बासु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०३-६, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
तुझ बिनु घरी न जीवना ध्रिगु रहणा संसारि ॥ (२०३-६, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
जीअ प्राण सुखदातिआ निमख निमख बलिहारि जी ॥१॥ (२०३-७, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
हसत अलम्बनु देहु प्रभ गरतहु उधरु गोपाल ॥ (२०३-७, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
मोहि निरगुन मति थोरीआ तूं सद ही दीन दइआल ॥२॥ (२०३-८, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
किआ सुख तेरे सम्मला कवन बिधी बीचार ॥ (२०३-८, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
सरणि समाई दास हित ऊचे अगम अपार ॥३॥ (२०३-९, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
सगल पदार्थ असट सिधि नाम महा रस माहि ॥ (२०३-९, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
सुप्रसन्न भए केसवा से जन हरि गुण गाहि ॥४॥ (२०३-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
मात पिता सुत बंधपो तूं मेरे प्राण अधार ॥ (२०३-१०, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
साधसंगि नानकु भजै बिखु तरिआ संसारु ॥५॥१॥११६॥ (२०३-११, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
गउड़ी बैरागणि रहोए के छंत के घरि मः ५ (२०३-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२०३-१२)
है कोई राम पिआरो गावै ॥ (२०३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ५)

सर्ब कलिआण सूख सचु पावै ॥ रहाउ ॥ (२०३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
बनु बनु खोजत फिरत बैरागी ॥ (२०३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
बिरले काहू एक लिव लागी ॥ (२०३-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
जिनि हरि पाइआ से वडभागी ॥१॥ (२०३-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
ब्रहमादिक सनकादिक चाहै ॥ (२०३-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
जोगी जती सिध हरि आहै ॥ (२०३-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
जिसहि परापति सो हरि गुण गाहै ॥२॥ (२०३-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
ता की सरणि जिन बिसरत नाही ॥ (२०३-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
वडभागी हरि संत मिलाही ॥ (२०३-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
जनम मरण तिह मूले नाही ॥३॥ (२०३-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
करि किरपा मिलु प्रीतम पिआरे ॥ (२०३-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
बिनउ सुनहु प्रभ ऊच अपारे ॥ (२०३-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ५)
नानकु माँगतु नामु अधारे ॥४॥१॥११७॥ (२०३-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ५)

पन्ना २०४

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ (२०४-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२०४-१)
कवन गुन प्रानपति मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (२०४-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
रूप हीन बुधि बल हीनी मोहि परदेसनि दूर ते आई ॥१॥ (२०४-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
नाहिन दरबु न जोबन माती मोहि अनाथ की करहु समाई ॥२॥ (२०४-३, गउड़ी पूरबी, मः ५)
खोजत खोजत भई बैरागनि प्रभ दरसन कउ हउ फिरत तिसाई ॥३॥ (२०४-३, गउड़ी पूरबी, मः ५)
दीन दइआल कृपाल प्रभ नानक साधसंगि मेरी जलनि बुझाई ॥४॥१॥११८॥ (२०४-४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०४-५)
प्रभ मिलबे कउ प्रीति मनि लागी ॥ (२०४-५, गउड़ी, मः ५)
पाइ लगउ मोहि करउ बेनती कोऊ संतु मिलै बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (२०४-५, गउड़ी, मः ५)
मनु अरपउ धनु राखउ आगै मन की मति मोहि सगल तिआगी ॥ (२०४-६, गउड़ी, मः ५)
जो प्रभ की हरि कथा सुनावै अनदिनु फिरउ तिसु पिछै विरागी ॥१॥ (२०४-७, गउड़ी, मः ५)
पूरब कर्म अंकुर जब प्रगटे भेटिओ पुरखु रसिक बैरागी ॥ (२०४-७, गउड़ी, मः ५)
मिटिओ अंधेरु मिलत हरि नानक जनम जनम की सोई जागी ॥२॥२॥११९॥ (२०४-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०४-९)
निकसु रे पंखी सिमरि हरि पाँख ॥ (२०४-९, गउड़ी, मः ५)
मिलि साधू सरणि गहु पूरन राम रतनु हीअरे संगि राखु ॥१॥ रहाउ ॥ (२०४-९, गउड़ी, मः ५)
भ्रम की कूई तृसना रस पंकज अति तीख्यण मोह की फास ॥ (२०४-१०, गउड़ी, मः ५)
काटनहार जगत गुर गोबिद चरन कमल ता के करहु निवास ॥१॥ (२०४-१०, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा गोबिंद प्रभ प्रीतम दीना नाथ सुनहु अरदासि ॥ (२०४-११, गउड़ी, मः ५)

करु गहि लेहु नानक के सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरी रासि ॥२॥३॥१२०॥ (२०४-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०४-१२)
हरि पेखन कउ सिमरत मनु मेरा ॥ (२०४-१३, गउड़ी, मः ५)
आस पिआसी चितवउ दिनु रैनी है कोई संतु मिलावै नेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (२०४-१३, गउड़ी, मः ५)
सेवा करउ दास दासन की अनिक भाँति तिसु करउ निहोरा ॥ (२०४-१४, गउड़ी, मः ५)
तुला धारि तोले सुख सगले बिनु हरि दरस सभो ही थोरा ॥१॥ (२०४-१४, गउड़ी, मः ५)
संत प्रसादि गाए गुन सागर जनम जनम को जात बहोरा ॥ (२०४-१५, गउड़ी, मः ५)
आनद सूख भेटत हरि नानक जनमु कृतारथु सफलु सवेरा ॥२॥४॥१२१॥ (२०४-१६, गउड़ी, मः ५)
रागु गउड़ी पूरबी महला ५ (२०४-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२०४-१७)
किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ ॥ (२०४-१८, गउड़ी पूरबी, मः ५)
कोई ऐसा संतु सहज सुखदाता मोहि मारगु देइ बताई ॥१॥ रहाउ ॥ (२०४-१८, गउड़ी पूरबी, मः ५)

पन्ना २०५

अंतरि अलखु न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई ॥ (२०५-१, गउड़ी पूरबी, मः ५)
माइआ मोहि सभो जगु सोइआ इहु भरमु कहहु किउ जाई ॥१॥ (२०५-१, गउड़ी पूरबी, मः ५)
एका संगति इकतु गृहि बसते मिलि बात न करते भाई ॥ (२०५-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
एक बसतु बिनु पंच दुहेले ओह बसतु अगोचर ठाई ॥२॥ (२०५-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जिस का गृहु तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई ॥ (२०५-३, गउड़ी पूरबी, मः ५)
अनिक उपाव करे नही पावै बिनु सतिगुर सरणाई ॥३॥ (२०५-४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ॥ (२०५-४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
पंच जना मिलि मंगलु गाइआ हरि नानक भेदु न भाई ॥४॥ (२०५-५, गउड़ी पूरबी, मः ५)
मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई ॥ (२०५-५, गउड़ी पूरबी, मः ५)
सहजु भइआ भ्रमु खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२२॥ (२०५-६, गउड़ी पूरबी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०५-७)
ऐसो परचउ पाइओ ॥ (२०५-७, गउड़ी, मः ५)
करी कृपा दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०५-७, गउड़ी, मः ५)
जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसुआसु होइ आइओ ॥ (२०५-८, गउड़ी, मः ५)
कै पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ॥१॥ (२०५-८, गउड़ी, मः ५)
लहिओ सहसा बंधन गुरि तोरे ताँ सदा सहज सुखु पाइओ ॥ (२०५-९, गउड़ी, मः ५)
होणा सा सोई फुनि होसी सुखु दुखु कहा दिखाइओ ॥२॥ (२०५-१०, गउड़ी, मः ५)
खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुरि परदा खोलि दिखाइओ ॥ (२०५-१०, गउड़ी, मः ५)
नउ निधि नामु निधानु इक ठाई तउ बाहरि कैठै जाइओ ॥३॥ (२०५-११, गउड़ी, मः ५)
एकै कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ ॥ (२०५-११, गउड़ी, मः ५)

कहु नानक भरमु गुरि खोई है इव ततै ततु मिलाइओ ॥४॥२॥१२३॥ (२०५-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०५-१३)
अउध घटै दिनसु रैनारे ॥ (२०५-१३, गउड़ी, मः ५)
मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (२०५-१३, गउड़ी, मः ५)
करउ बेनंती सुनहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ (२०५-१४, गउड़ी, मः ५)
ईहा खाटि चलहु हरि लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ (२०५-१४, गउड़ी, मः ५)
इहु संसारु बिकारु सहसे महि तरिओ ब्रह्म गिआनी ॥ (२०५-१५, गउड़ी, मः ५)
जिसहि जगाइ पीआए हरि रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ (२०५-१५, गउड़ी, मः ५)
जा कउ आए सोई विहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ (२०५-१६, गउड़ी, मः ५)
निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥ (२०५-१६, गउड़ी, मः ५)
अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ (२०५-१७, गउड़ी, मः ५)
नानकु दासु इही सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥३॥१२४॥ (२०५-१८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०५-१८)
राखु पिता प्रभ मेरे ॥ (२०५-१८, गउड़ी, मः ५)
मोहि निरगुनु सभ गुन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (२०५-१९, गउड़ी, मः ५)
पंच बिखादी एकु गरीबा राखहु राखनहारे ॥ (२०५-१९, गउड़ी, मः ५)
खेदु करहि अरु बहुतु संतावहि आइओ सरनि तुहारे ॥१॥ (२०५-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २०६

करि करि हारिओ अनिक बहु भाती छोडहि कतहूं नाही ॥ (२०६-१, गउड़ी, मः ५)
एक बात सुनि ताकी ओटा साधसंगि मिटि जाही ॥२॥ (२०६-२, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा संत मिले मोहि तिन ते धीरजु पाइआ ॥ (२०६-२, गउड़ी, मः ५)
संती मंतु दीओ मोहि निरभउ गुर का सबदु कमाइआ ॥३॥ (२०६-३, गउड़ी, मः ५)
जीति लए ओइ महा बिखादी सहज सुहेली बाणी ॥ (२०६-३, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक मनि भइआ परगासा पाइआ पदु निरबाणी ॥४॥४॥१२५॥ (२०६-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०६-५)
ओहु अबिनासी राइआ ॥ (२०६-५, गउड़ी, मः ५)
निरभउ संगि तुमारै बसते इहु डरनु कहा ते आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०६-५, गउड़ी, मः ५)
एक महलि तूं होहि अफारो एक महलि निमानो ॥ (२०६-६, गउड़ी, मः ५)
एक महलि तूं आपे आपे एक महलि गरीबानो ॥१॥ (२०६-६, गउड़ी, मः ५)
एक महलि तूं पंडितु बकता एक महलि खलु होता ॥ (२०६-७, गउड़ी, मः ५)
एक महलि तूं सभु किछु ग्राहजु एक महलि कछू न लेता ॥२॥ (२०६-७, गउड़ी, मः ५)
काठ की पुतरी कहा करै बपुरी खिलावनहारो जानै ॥ (२०६-८, गउड़ी, मः ५)
जैसा भेखु करावै बाजीगरु ओहु तैसो ही साजु आनै ॥३॥ (२०६-८, गउड़ी, मः ५)
अनिक कोठरी बहुतु भाति करीआ आपि होआ रखवारा ॥ (२०६-९, गउड़ी, मः ५)

जैसे महलि राखै तैसै रहना किआ इहु करै बिचारा ॥४॥ (२०६-१०, गउड़ी, मः ५)
जिनि किछु कीआ सोई जानै जिनि इह सभ बिधि साजी ॥ (२०६-१०, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक अपरम्पर सुआमी कीमति अपुने काजी ॥५॥५॥१२६॥ (२०६-११, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०६-११)
छोडि छोडि रे बिखिआ के रसूआ ॥ (२०६-१२, गउड़ी, मः ५)
उरझि रहिओ रे बावर गावर जिउ किरखै हरिआइओ पसूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०६-१२, गउड़ी, मः ५)
जो जानहि तूं अपुने काजै सो संगि न चालै तेरै तसूआ ॥ (२०६-१३, गउड़ी, मः ५)
नागो आइओ नाग सिधासी फेरि फिरिओ अरु कालि गरसूआ ॥१॥ (२०६-१३, गउड़ी, मः ५)
पेखि पेखि रे कसुम्भ की लीला राचि माचि तिनहूं लउ हसूआ ॥ (२०६-१४, गउड़ी, मः ५)
छीजत डोरि दिनसु अरु रैनी जीअ को काजु न कीनो कछूआ ॥२॥ (२०६-१५, गउड़ी, मः ५)
करत करत इव ही बिरधानो हारिओ उकते तनु खीनसूआ ॥ (२०६-१५, गउड़ी, मः ५)
जिउ मोहिओ उनि मोहनी बाला उस ते घटै नाही रुच चसूआ ॥३॥ (२०६-१६, गउड़ी, मः ५)
जगु ऐसा मोहि गुरहि दिखाइओ तउ सरणि परिओ तजि गरबसूआ ॥ (२०६-१६, गउड़ी, मः ५)
मारगु प्रभ को संति बताइओ दृड़ी नानक दास भगति हरि जसूआ ॥४॥६॥१२७॥ (२०६-१७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०६-१८)
तुझ बिनु कवनु हमारा ॥ (२०६-१८, गउड़ी, मः ५)
मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (२०६-१८, गउड़ी, मः ५)
अंतर की बिधि तुम ही जानी तुम ही सजन सुहेले ॥ (२०६-१९, गउड़ी, मः ५)
सर्ब सुखा मै तुझ ते पाए मेरे ठाकुर अगह अतोले ॥१॥ (२०६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २०७

बरनि न साकउ तुमरे रंगा गुण निधान सुखदाते ॥ (२०७-१, गउड़ी, मः ५)
अगम अगोचर प्रभ अबिनासी पूरे गुर ते जाते ॥२॥ (२०७-१, गउड़ी, मः ५)
भ्रमु भउ काटि कीए निहकेवल जब ते हउमै मारी ॥ (२०७-२, गउड़ी, मः ५)
जनम मरण को चूको सहसा साधसंगति दरसारी ॥३॥ (२०७-२, गउड़ी, मः ५)
चरण पखारि करउ गुर सेवा बारि जाउ लख बरीआ ॥ (२०७-३, गउड़ी, मः ५)
जिह प्रसादि इहु भउजलु तरिआ जन नानक प्रिअ संगि मिरीआ ॥४॥७॥१२८॥ (२०७-३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०७-४)
तुझ बिनु कवनु रीझावै तोही ॥ (२०७-५, गउड़ी, मः ५)
तेरो रूपु सगल देखि मोही ॥१॥ रहाउ ॥ (२०७-५, गउड़ी, मः ५)
सुरग पइआल मिरत भूअ मंडल सर्ब समानो एकै ओही ॥ (२०७-५, गउड़ी, मः ५)
सिव सिव करत सगल कर जोरहि सर्ब मइआ ठाकुर तेरी दोही ॥१॥ (२०७-६, गउड़ी, मः ५)
पतित पावन ठाकुर नामु तुमरा सुखदाई निर्मल सीतलोही ॥ (२०७-७, गउड़ी, मः ५)
गिआन धिआन नानक वडिआई संत तेरे सिउ गाल गलोही ॥२॥८॥१२९॥ (२०७-७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०७-८)

मिलहु पिआरे जीआ ॥ (२०७-८, गउड़ी, मः ५)
प्रभ कीआ तुमारा थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०७-९, गउड़ी, मः ५)
अनिक जनम बहु जोनी भ्रमिआ बहुरि बहुरि दुखु पाइआ ॥ (२०७-९, गउड़ी, मः ५)
तुमरी कृपा ते मानुख देह पाई है देहु दरसु हरि राइआ ॥१॥ (२०७-१०, गउड़ी, मः ५)
सोई होआ जो तिसु भाणा अवरु न किन ही कीता ॥ (२०७-१०, गउड़ी, मः ५)
तुमरै भाणै भरमि मोहि मोहिआ जागतु नाही सूता ॥२॥ (२०७-११, गउड़ी, मः ५)
बिनउ सुनहु तुम प्रानपति पिआरे किरपा निधि दइआला ॥ (२०७-११, गउड़ी, मः ५)
राखि लेहु पिता प्रभ मेरे अनाथह करि प्रतिपाला ॥३॥ (२०७-१२, गउड़ी, मः ५)
जिस नो तुमहि दिखाइओ दरसनु साधसंगति कै पाछै ॥ (२०७-१२, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा धूरि देहु संतन की सुखु नानकु इहु बाछै ॥४॥९॥१३०॥ (२०७-१३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०७-१४)
हउ ता कै बलिहारी ॥ (२०७-१४, गउड़ी, मः ५)
जा कै केवल नामु अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (२०७-१४, गउड़ी, मः ५)
महिमा ता की केतक गनीऐ जन पारब्रह्म रंगि राते ॥ (२०७-१५, गउड़ी, मः ५)
सूख सहज आनंद तिना संगि उन समसरि अवर न दाते ॥१॥ (२०७-१५, गउड़ी, मः ५)
जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा ॥ (२०७-१६, गउड़ी, मः ५)
उन की सरणि परै सो तरिआ संतसंगि पूरन आसा ॥२॥ (२०७-१६, गउड़ी, मः ५)
ता कै चरणि परउ ता जीवा जन कै संगि निहाला ॥ (२०७-१७, गउड़ी, मः ५)
भगतन की रेणु होइ मनु मेरा होहु प्रभू किरपाला ॥३॥ (२०७-१८, गउड़ी, मः ५)
राजु जोबनु अवध जो दीसै सभु किछु जुग महि घाटिआ ॥ (२०७-१८, गउड़ी, मः ५)
नामु निधानु सद नवतनु निरमलु इहु नानक हरि धनु खाटिआ ॥४॥१०॥१३१॥ (२०७-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २०८

गउड़ी महला ५ ॥ (२०८-१)
जोग जुगति सुनि आइओ गुर ते ॥ (२०८-१, गउड़ी, मः ५)
मो कउ सतिगुर सबदि बुझाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (२०८-१, गउड़ी, मः ५)
नउ खंड पृथमी इसु तन महि रविआ निमख निमख नमसकारा ॥ (२०८-२, गउड़ी, मः ५)
दीखिआ गुर की मुंद्रा कानी दृड़िओ एकु निरंकारा ॥१॥ (२०८-२, गउड़ी, मः ५)
पंच चेले मिलि भए इकत्रा एकसु कै वसि कीए ॥ (२०८-३, गउड़ी, मः ५)
दस बैरागनि आगिआकारी तब निर्मल जोगी थीए ॥२॥ (२०८-३, गउड़ी, मः ५)
भरमु जराइ चराई बिभूता पंथु एकु करि पेखिआ ॥ (२०८-४, गउड़ी, मः ५)
सहज सूख सो कीनी भुगता जो ठाकुरि मसतकि लेखिआ ॥३॥ (२०८-५, गउड़ी, मः ५)
जह भउ नाही तहा आसनु बाधिओ सिंगी अनहत बानी ॥ (२०८-५, गउड़ी, मः ५)
ततु बीचारु डंडा करि राखिओ जुगति नामु मनि भानी ॥४॥ (२०८-६, गउड़ी, मः ५)
ऐसा जोगी वडभागी भेटै माइआ के बंधन काटै ॥ (२०८-६, गउड़ी, मः ५)

सेवा पूज करउ तिसु मूरति की नानकु तिसु पग चाटै ॥५॥११॥१३२॥ (२०८-७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०८-८)
अनूप पदारथु नामु सुनहु सगल धिआइले मीता ॥ (२०८-८, गउड़ी, मः ५)
हरि अउखधु जा कउ गुरि दीआ ता के निर्मल चीता ॥१॥ रहाउ ॥ (२०८-८, गउड़ी, मः ५)
अंधकारु मिटिओ तिह तन ते गुरि सबदि दीपकु परगासा ॥ (२०८-९, गउड़ी, मः ५)
भ्रम की जाली ता की काटी जा कउ साधसंगति बिस्वासा ॥१॥ (२०८-१०, गउड़ी, मः ५)
तारीले भवजलु तारू बिखड़ा बोहिथ साधू संगा ॥ (२०८-१०, गउड़ी, मः ५)
पूरन होई मन की आसा गुरु भेटिओ हरि रंगा ॥२॥ (२०८-११, गउड़ी, मः ५)
नाम खजाना भगती पाइआ मन तन तृपति अघाए ॥ (२०८-११, गउड़ी, मः ५)
नानक हरि जीउ ता कउ देवै जा कउ हुकमु मनाए ॥३॥१२॥१३३॥ (२०८-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०८-१३)
दइआ मइआ करि प्रानपति मोरे मोहि अनाथ सरणि प्रभ तोरी ॥ (२०८-१३, गउड़ी, मः ५)
अंध कूप महि हाथ दे राखहु कछू सिआनप उकति न मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (२०८-१४, गउड़ी, मः ५)
करन करावन सभ किछु तुम ही तुम समरथ नाही अन होरी ॥ (२०८-१४, गउड़ी, मः ५)
तुमरी गति मिति तुम ही जानी से सेवक जिन भाग मथोरी ॥१॥ (२०८-१५, गउड़ी, मः ५)
अपुने सेवक संगि तुम प्रभ राते ओति पोति भगतन संगि जोरी ॥ (२०८-१६, गउड़ी, मः ५)
प्रिउ प्रिउ नामु तेरा दरसनु चाहै जैसे द्रिसटि ओह चंद चकोरी ॥२॥ (२०८-१६, गउड़ी, मः ५)
राम संत महि भेदु किछु नाही एकु जनु कई महि लाख करोरी ॥ (२०८-१७, गउड़ी, मः ५)
जा कै हीऐ प्रगटु प्रभु होआ अनदिनु कीरतनु रसन रमोरी ॥३॥ (२०८-१८, गउड़ी, मः ५)
तुम समरथ अपार अति ऊचे सुखदाते प्रभ प्रान अधोरी ॥ (२०८-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक कउ प्रभ कीजै किरपा उन संतन कै संगि संगोरी ॥४॥१३॥१३४॥ (२०८-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २०९

गउड़ी महला ५ ॥ (२०९-१)
तुम हरि सेती राते संतहु ॥ (२०९-१, गउड़ी, मः ५)
निबाहि लेहु मो कउ पुरख बिधाते ओड़ि पहुचावहु दाते ॥१॥ रहाउ ॥ (२०९-२, गउड़ी, मः ५)
तुमरा मरमु तुमा ही जानिआ तुम पूरन पुरख बिधाते ॥ (२०९-२, गउड़ी, मः ५)
राखहु सरणि अनाथ दीन कउ करहु हमारी गाते ॥१॥ (२०९-३, गउड़ी, मः ५)
तरण सागर बोहिथ चरण तुमारे तुम जानहु अपुनी भाते ॥ (२०९-३, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा जिसु राखहु संगे ते ते पारि पराते ॥२॥ (२०९-४, गउड़ी, मः ५)
ईत ऊत प्रभ तुम समरथा सभु किछु तुमरै हाथे ॥ (२०९-५, गउड़ी, मः ५)
ऐसा निधानु देहु मो कउ हरि जन चलै हमारै साथे ॥३॥ (२०९-५, गउड़ी, मः ५)
निरगुनीआरे कउ गुनु कीजै हरि नामु मेरा मनु जापे ॥ (२०९-६, गउड़ी, मः ५)
संत प्रसादि नानक हरि भेटे मन तन सीतल ध्रापे ॥४॥१४॥१३५॥ (२०९-६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०९-७)

सहजि समाइओ देव ॥ (२०६-७, गउड़ी, मः ५)
मो कउ सतिगुर भए दइआल देव ॥१॥ रहाउ ॥ (२०६-७, गउड़ी, मः ५)
काटि जेवरी कीओ दासरो संतन टहलाइओ ॥ (२०६-८, गउड़ी, मः ५)
एक नाम को थीओ पूजारी मो कउ अचरजु गुरहि दिखाइओ ॥१॥ (२०६-८, गउड़ी, मः ५)
भइओ प्रगासु सर्ब उजीआरा गुर गिआनु मनहि प्रगटाइओ ॥ (२०६-६, गउड़ी, मः ५)
अमृतु नामु पीओ मनु तृपतिआ अनभै ठहराइओ ॥२॥ (२०६-१०, गउड़ी, मः ५)
मानि आगिआ सर्ब सुख पाए दूखह ठाउ गवाइओ ॥ (२०६-१०, गउड़ी, मः ५)
जउ सुप्रसन्न भए प्रभ ठाकुर सभु आनद रूपु दिखाइओ ॥३॥ (२०६-११, गउड़ी, मः ५)
ना किछु आवत ना किछु जावत सभु खेलु कीओ हरि राइओ ॥ (२०६-११, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक अगम अगम है ठाकुर भगत टेक हरि नाइओ ॥४॥१५॥१३६॥ (२०६-१२, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२०६-१३)
पारब्रह्म पूरन परमेसुर मन ता की ओट गहीजै रे ॥ (२०६-१३, गउड़ी, मः ५)
जिनि धारे ब्रहमंड खंड हरि ता को नामु जपीजै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (२०६-१४, गउड़ी, मः ५)
मन की मति तिआगहु हरि जन हुकमु बूझि सुखु पाईऐ रे ॥ (२०६-१४, गउड़ी, मः ५)
जो प्रभु करै सोई भल मानहु सुखि दुखि ओही धिआईऐ रे ॥१॥ (२०६-१५, गउड़ी, मः ५)
कोटि पतित उधारे खिन महि करते बार न लागै रे ॥ (२०६-१५, गउड़ी, मः ५)
दीन दरद दुख भंजन सुआमी जिसु भावै तिसहि निवाजै रे ॥२॥ (२०६-१६, गउड़ी, मः ५)
सभ को मात पिता प्रतिपालक जीअ प्रान सुख सागरु रे ॥ (२०६-१७, गउड़ी, मः ५)
देंदे तोटि नाही तिसु करते पूरि रहिओ रतनागरु रे ॥३॥ (२०६-१७, गउड़ी, मः ५)
जाचिकु जाचै नामु तेरा सुआमी घट घट अंतरि सोई रे ॥ (२०६-१८, गउड़ी, मः ५)
नानकु दासु ता की सरणाई जा ते बृथा न कोई रे ॥४॥१६॥१३७॥ (२०६-१८, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २१०

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ (२१०-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१०-१)
हरि हरि कबहू न मनहु बिसारे ॥ (२१०-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
ईहा ऊहा सर्ब सुखदाता सगल घटा प्रतिपारे ॥१॥ रहाउ ॥ (२१०-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
महा कसट काटै खिन भीतरि रसना नामु चितारे ॥ (२१०-३, गउड़ी पूरबी, मः ५)
सीतल सांति सूख हरि सरणी जलती अगनि निवारे ॥१॥ (२१०-३, गउड़ी पूरबी, मः ५)
गरभ कुंड नरक ते राखै भवजलु पारि उतारे ॥ (२१०-४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
चरन कमल आराधत मन महि जम की त्रास बिदारे ॥२॥ (२१०-४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
पूरन पारब्रह्म परमेसुर ऊचा अगम अपारे ॥ (२१०-५, गउड़ी पूरबी, मः ५)
गुण गावत धिआवत सुख सागर जूए जनमु न हारे ॥३॥ (२१०-५, गउड़ी पूरबी, मः ५)
कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीनो निरगुण के दातारे ॥ (२१०-६, गउड़ी पूरबी, मः ५)
करि किरपा अपुनो नामु दीजै नानक सद बलिहारे ॥४॥१॥१३८॥ (२१०-६, गउड़ी पूरबी, मः ५)

रागु गउड़ी चेती महला ५ (२१०-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१०-८)
सुखु नाही रे हरि भगति बिना ॥ (२१०-९, गउड़ी चेती, मः ५)
जीति जनमु इहु रतनु अमोलकु साधसंगति जपि इक खिना ॥१॥ रहाउ ॥ (२१०-९, गउड़ी चेती, मः ५)
सुत सम्पति बनिता बिनोद ॥ (२१०-१०, गउड़ी चेती, मः ५)
छोडि गए बहु लोग भोग ॥१॥ (२१०-१०, गउड़ी चेती, मः ५)
हैवर गैवर राज रंग ॥ (२१०-१०, गउड़ी चेती, मः ५)
तिआगि चलिओ है मूड़ नंग ॥२॥ (२१०-१०, गउड़ी चेती, मः ५)
चोआ चंदन देह फूलिआ ॥ (२१०-११, गउड़ी चेती, मः ५)
सो तनु धर संगि रूलिआ ॥३॥ (२१०-११, गउड़ी चेती, मः ५)
मोहि मोहिआ जानै दूरि है ॥ (२१०-११, गउड़ी चेती, मः ५)
कहु नानक सदा हदूरि है ॥४॥१॥१३९॥ (२१०-१२, गउड़ी चेती, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१०-१२)
मन धर तरबे हरि नाम नो ॥ (२१०-१२, गउड़ी, मः ५)
सागर लहरि संसा संसारु गुरु बोहिथु पार गरामनो ॥१॥ रहाउ ॥ (२१०-१३, गउड़ी, मः ५)
कलि कालख अंधिआरीआ ॥ (२१०-१३, गउड़ी, मः ५)
गुर गिआन दीपक उजिआरीआ ॥१॥ (२१०-१३, गउड़ी, मः ५)
बिखु बिखिआ पसरी अति घनी ॥ (२१०-१४, गउड़ी, मः ५)
उबरे जपि जपि हरि गुनी ॥२॥ (२१०-१४, गउड़ी, मः ५)
मतवारो माइआ सोइआ ॥ (२१०-१५, गउड़ी, मः ५)
गुर भेटत भ्रमु भउ खोइआ ॥३॥ (२१०-१५, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक एकु धिआइआ ॥ (२१०-१५, गउड़ी, मः ५)
घटि घटि नदरी आइआ ॥४॥२॥१४०॥ (२१०-१५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१०-१६)
दीबानु हमारो तुही एक ॥ (२१०-१६, गउड़ी, मः ५)
सेवा थारी गुरहि टेक ॥१॥ रहाउ ॥ (२१०-१६, गउड़ी, मः ५)
अनिक जुगति नही पाइआ ॥ (२१०-१७, गउड़ी, मः ५)
गुरि चाकर लै लाइआ ॥१॥ (२१०-१७, गउड़ी, मः ५)
मारे पंच बिखादीआ ॥ (२१०-१७, गउड़ी, मः ५)
गुर किरपा ते दलु साधिआ ॥२॥ (२१०-१८, गउड़ी, मः ५)
बखसीस वजहु मिलि एकु नाम ॥ (२१०-१८, गउड़ी, मः ५)
सूख सहज आनंद बिस्राम ॥३॥ (२१०-१८, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २११

प्रभ के चाकर से भले ॥ (२११-१, गउड़ी, मः ५)

नानक तिन मुख ऊजले ॥४॥३॥१४१॥ (२११-१, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२११-१)
जीअरे ओल्हा नाम का ॥ (२११-१, गउड़ी, मः ५)
अवरु जि करन करावनो तिन महि भउ है जाम का ॥१॥ रहाउ ॥ (२११-२, गउड़ी, मः ५)
अवर जतनि नही पाईऐ ॥ (२११-२, गउड़ी, मः ५)
वडै भागि हरि धिआईऐ ॥१॥ (२११-३, गउड़ी, मः ५)
लाख हिकमती जानीऐ ॥ (२११-३, गउड़ी, मः ५)
आगै तिलु नही मानीऐ ॥२॥ (२११-३, गउड़ी, मः ५)
अहम्बुधि कर्म कमावने ॥ (२११-३, गउड़ी, मः ५)
गृह बालू नीरि बहावने ॥३॥ (२११-४, गउड़ी, मः ५)
प्रभु कृपालु किरपा करै ॥ (२११-४, गउड़ी, मः ५)
नामु नानक साधू संगि मिलै ॥४॥४॥१४२॥ (२११-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२११-५)
बारनै बलिहारनै लख बरीआ ॥ (२११-५, गउड़ी, मः ५)
नामो हो नामु साहिब को प्रान अधरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२११-५, गउड़ी, मः ५)
करन करावन तुही एक ॥ (२११-६, गउड़ी, मः ५)
जीअ जंत की तुही टेक ॥१॥ (२११-६, गउड़ी, मः ५)
राज जोबन प्रभ तूं धनी ॥ (२११-६, गउड़ी, मः ५)
तूं निरगुन तूं सरगुनी ॥२॥ (२११-७, गउड़ी, मः ५)
ईहा ऊहा तुम रखे ॥ (२११-७, गउड़ी, मः ५)
गुर किरपा ते को लखे ॥३॥ (२११-७, गउड़ी, मः ५)
अंतरजामी प्रभ सुजानु ॥ (२११-७, गउड़ी, मः ५)
नानक तकीआ तुही ताणु ॥४॥५॥१४३॥ (२११-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२११-८)
हरि हरि हरि आराधीऐ ॥ (२११-८, गउड़ी, मः ५)
संतसंगि हरि मनि वसै भरमु मोहु भउ साधीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (२११-९, गउड़ी, मः ५)
बेद पुराण सिमृति भने ॥ (२११-९, गउड़ी, मः ५)
सभ ऊच बिराजित जन सुने ॥१॥ (२११-९, गउड़ी, मः ५)
सगल असथान भै भीत चीन ॥ (२११-१०, गउड़ी, मः ५)
राम सेवक भै रहत कीन ॥२॥ (२११-१०, गउड़ी, मः ५)
लख चउरासीह जोनि फिरहि ॥ (२११-१०, गउड़ी, मः ५)
गोबिंद लोक नही जनमि मरहि ॥३॥ (२११-११, गउड़ी, मः ५)
बल बुधि सिआनप हउमै रही ॥ (२११-११, गउड़ी, मः ५)
हरि साध सरणि नानक गही ॥४॥६॥१४४॥ (२११-११, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२११-१२)

मन राम नाम गुन गाईऐ ॥ (२११-१२, गउड़ी, मः ५)
नीत नीत हरि सेवीऐ सासि सासि हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (२११-१२, गउड़ी, मः ५)
संतसंगि हरि मनि वसै ॥ (२११-१३, गउड़ी, मः ५)
दुखु दरदु अनेरा भ्रमु नसै ॥१॥ (२११-१३, गउड़ी, मः ५)
संत प्रसादि हरि जापीऐ ॥ (२११-१४, गउड़ी, मः ५)
सो जनु दूखि न विआपीऐ ॥२॥ (२११-१४, गउड़ी, मः ५)
जा कउ गुरु हरि मंत्रु दे ॥ (२११-१४, गउड़ी, मः ५)
सो उबरिआ माइआ अगनि ते ॥३॥ (२११-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक कउ प्रभ मइआ करि ॥ (२११-१५, गउड़ी, मः ५)
मेरै मनि तनि वासै नामु हरि ॥४॥७॥१४५॥ (२११-१५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२११-१६)
रसना जपीऐ एकु नाम ॥ (२११-१६, गउड़ी, मः ५)
ईहा सुखु आनंदु घना आगै जीअ कै संगि काम ॥१॥ रहाउ ॥ (२११-१६, गउड़ी, मः ५)
कटीऐ तेरा अहं रोगु ॥ (२११-१७, गउड़ी, मः ५)
तूं गुर प्रसादि करि राज जोगु ॥१॥ (२११-१७, गउड़ी, मः ५)
हरि रसु जिनि जनि चाखिआ ॥ (२११-१७, गउड़ी, मः ५)
ता की तृसना लाथीआ ॥२॥ (२११-१८, गउड़ी, मः ५)
हरि बिस्राम निधि पाइआ ॥ (२११-१८, गउड़ी, मः ५)
सो बहुरि न कत ही धाइआ ॥३॥ (२११-१८, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि नामु जा कउ गुरि दीआ ॥ (२११-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक ता का भउ गइआ ॥४॥८॥१४६॥ (२११-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २१२

गउड़ी महला ५ ॥ (२१२-१)
जा कउ बिसरै राम नाम ताहू कउ पीर ॥ (२१२-१, गउड़ी, मः ५)
साधसंगति मिलि हरि रवहि से गुणी गहीर ॥१॥ रहाउ ॥ (२१२-१, गउड़ी, मः ५)
जा कउ गुरमुखि रिदै बुधि ॥ (२१२-२, गउड़ी, मः ५)
ता कै कर तल नव निधि सिधि ॥१॥ (२१२-२, गउड़ी, मः ५)
जो जानहि हरि प्रभ धनी ॥ (२१२-२, गउड़ी, मः ५)
किछु नाही ता कै कमी ॥२॥ (२१२-३, गउड़ी, मः ५)
करणैहारु पछानिआ ॥ (२१२-३, गउड़ी, मः ५)
सर्ब सूख रंग माणिआ ॥३॥ (२१२-३, गउड़ी, मः ५)
हरि धनु जा कै गृहि वसै ॥ (२१२-३, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक तिन संगि दुखु नसै ॥४॥९॥१४७॥ (२१२-४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१२-४)

गरबु बडो मूलु इतनो ॥ (२१२-४, गउड़ी, मः ५)
रहनु नही गहु कितनो ॥१॥ रहाउ ॥ (२१२-५, गउड़ी, मः ५)
बेबरजत बेद संतना उआहू सिउ रे हितनो ॥ (२१२-५, गउड़ी, मः ५)
हार जूआर जूआ बिधे इंद्री वसि लै जितनो ॥१॥ (२१२-५, गउड़ी, मः ५)
हरन भरन सम्पूरना चरन कमल रंगि रितनो ॥ (२१२-६, गउड़ी, मः ५)
नानक उधरे साधसंगि किरपा निधि मै दितनो ॥२॥१०॥१४८॥ (२१२-६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१२-७)
मोहि दासरो ठाकुर को ॥ (२१२-७, गउड़ी, मः ५)
धानु प्रभ का खाना ॥१॥ रहाउ ॥ (२१२-८, गउड़ी, मः ५)
ऐसो है रे खसमु हमारा ॥ (२१२-८, गउड़ी, मः ५)
खिन महि साजि सवारणहारा ॥१॥ (२१२-८, गउड़ी, मः ५)
कामु करी जे ठाकुर भावा ॥ (२१२-८, गउड़ी, मः ५)
गीत चरित प्रभ के गुन गावा ॥२॥ (२१२-९, गउड़ी, मः ५)
सरणि परिओ ठाकुर वजीरा ॥ (२१२-९, गउड़ी, मः ५)
तिना देखि मेरा मनु धीरा ॥३॥ (२१२-९, गउड़ी, मः ५)
एक टेक एको आधारा ॥ (२१२-१०, गउड़ी, मः ५)
जन नानक हरि की लागा कारा ॥४॥११॥१४९॥ (२१२-१०, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१२-११)
है कोई ऐसा हउमै तोरै ॥ (२१२-११, गउड़ी, मः ५)
इसु मीठी ते इहु मनु होरै ॥१॥ रहाउ ॥ (२१२-११, गउड़ी, मः ५)
अगिआनी मानुखु भइआ जो नाही सो लोरै ॥ (२१२-११, गउड़ी, मः ५)
रैणि अंधारी कारीआ कवन जुगति जितु भोरै ॥१॥ (२१२-१२, गउड़ी, मः ५)
भ्रमतो भ्रमतो हारिआ अनिक बिधी करि टोरै ॥ (२१२-१२, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक किरपा भई साधसंगति निधि मोरै ॥२॥१२॥१५०॥ (२१२-१३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१२-१४)
चिंतामणि करुणा मए ॥१॥ रहाउ ॥ (२१२-१४, गउड़ी, मः ५)
दीन दइआला पारब्रह्म ॥ (२१२-१४, गउड़ी, मः ५)
जा कै सिमरणि सुख भए ॥१॥ (२१२-१४, गउड़ी, मः ५)
अकाल पुरख अगाधि बोध ॥ (२१२-१५, गउड़ी, मः ५)
सुनत जसो कोटि अघ खए ॥२॥ (२१२-१५, गउड़ी, मः ५)
किरपा निधि प्रभ मइआ धारि ॥ (२१२-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक हरि हरि नाम लए ॥३॥१३॥१५१॥ (२१२-१६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ (२१२-१६)
मेरे मन सरणि प्रभू सुख पाए ॥ (२१२-१७, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जा दिनि बिसरै प्रान सुखदाता सो दिनु जात अजाए ॥१॥ रहाउ ॥ (२१२-१७, गउड़ी पूरबी, मः ५)

एक रैण के पाहुन तुम आए बहु जुग आस बधाए ॥ (२१२-१८, गउड़ी पूरबी, मः ५)
गृह मंदर सम्पै जो दीसै जिउ तरवर की छाए ॥१॥ (२१२-१८, गउड़ी पूरबी, मः ५)
तनु मेरा सम्पै सभ मेरी बाग मिलख सभ जाए ॥ (२१२-१६, गउड़ी पूरबी, मः ५)
देवनहारा बिसरिओ ठाकुरु खिन महि होत पराए ॥२॥ (२१२-१६, गउड़ी पूरबी, मः ५)

पन्ना २१३

पहिरै बागा करि इसनाना चोआ चंदन लाए ॥ (२१३-१, गउड़ी पूरबी, मः ५)
निरभउ निरंकार नही चीनिआ जिउ हसती नावाए ॥३॥ (२१३-१, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जउ होइ कृपाल त सतिगुरु मेलै सभि सुख हरि के नाए ॥ (२१३-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
मुकतु भइआ बंधन गुरि खोले जन नानक हरि गुण गाए ॥४॥१४॥१५२॥ (२१३-२, गउड़ी पूरबी, मः ५)
गउड़ी पूरबी महला ५ ॥ (२१३-३)
मेरे मन गुरु गुरु गुरु सद करीऐ ॥ (२१३-३, गउड़ी पूरबी, मः ५)
रतन जनमु सफलु गुरि कीआ दरसन कउ बलिहरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (२१३-४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जेते सास ग्रास मनु लेता तेते ही गुन गाईऐ ॥ (२१३-४, गउड़ी पूरबी, मः ५)
जउ होइ दैआलु सतिगुरु अपुना ता इह मति बुधि पाईऐ ॥१॥ (२१३-५, गउड़ी पूरबी, मः ५)
मेरे मन नामि लए जम बंध ते छूटहि सर्ब सुखा सुख पाईऐ ॥ (२१३-६, गउड़ी पूरबी, मः ५)
सेवि सुआमी सतिगुरु दाता मन बंछत फल आईऐ ॥२॥ (२१३-६, गउड़ी पूरबी, मः ५)
नामु इसटु मीत सुत करता मन संगि तुहारै चालै ॥ (२१३-७, गउड़ी पूरबी, मः ५)
करि सेवा सतिगुर अपुने की गुर ते पाईऐ पालै ॥३॥ (२१३-७, गउड़ी पूरबी, मः ५)
गुरि किरपालि कृपा प्रभि धारी बिनसे सर्ब अंदेसा ॥ (२१३-८, गउड़ी पूरबी, मः ५)
नानक सुखु पाइआ हरि कीरतनि मिटिओ सगल कलेसा ॥४॥१५॥१५३॥ (२१३-८, गउड़ी पूरबी, मः ५)
रागु गउड़ी महला ५ (२१३-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१३-१०)
तृसना बिरले ही की बुझी हे ॥१॥ रहाउ ॥ (२१३-११, गउड़ी, मः ५)
कोटि जोरे लाख क्रोरे मनु न होरे ॥ (२१३-११, गउड़ी, मः ५)
परै परै ही कउ लुझी हे ॥१॥ (२१३-११, गउड़ी, मः ५)
सुंदर नारी अनिक परकारी पर गृह बिकारी ॥ (२१३-१२, गउड़ी, मः ५)
बुरा भला नही सुझी हे ॥२॥ (२१३-१२, गउड़ी, मः ५)
अनिक बंधन माइआ भरमतु भरमाइआ गुण निधि नही गाइआ ॥ (२१३-१२, गउड़ी, मः ५)
मन बिखै ही महि लुझी हे ॥३॥ (२१३-१३, गउड़ी, मः ५)
जा कउ रे किरपा करै जीवत सोई मरै साधसंगि माइआ तरै ॥ (२१३-१३, गउड़ी, मः ५)
नानक सो जनु दरि हरि सिझी हे ॥४॥१॥१५४॥ (२१३-१४, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१३-१५)
सभहू को रसु हरि हो ॥१॥ रहाउ ॥ (२१३-१५, गउड़ी, मः ५)
काहू जोग काहू भोग काहू गिआन काहू धिआन ॥ (२१३-१५, गउड़ी, मः ५)

काहू हो डंड धरि हो ॥१॥ (२१३-१६, गउड़ी, मः ५)
काहू जाप काहू ताप काहू पूजा होम नेम ॥ (२१३-१६, गउड़ी, मः ५)
काहू हो गउनु करि हो ॥२॥ (२१३-१६, गउड़ी, मः ५)
काहू तीर काहू नीर काहू बेद बीचार ॥ (२१३-१७, गउड़ी, मः ५)
नानका भगति प्रिअ हो ॥३॥२॥१५५॥ (२१३-१७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१३-१७)
गुन कीरति निधि मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (२१३-१८, गउड़ी, मः ५)
तूंही रस तूंही जस तूंही रूप तूही रंग ॥ (२१३-१८, गउड़ी, मः ५)
आस ओट प्रभ तोरी ॥१॥ (२१३-१८, गउड़ी, मः ५)
तूही मान तूंही धान तूही पति तूही प्रान ॥ (२१३-१९, गउड़ी, मः ५)
गुरि तूटी लै जोरी ॥२॥ (२१३-१९, गउड़ी, मः ५)
तूही ग्रिहि तूही बनि तूही गाउ तूही सुनि ॥ (२१३-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २१४

है नानक नेर नेरी ॥३॥३॥१५६॥ (२१४-१, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२१४-१)
मातो हरि रंगि मातो ॥१॥ रहाउ ॥ (२१४-१, गउड़ी, मः ५)
ओुही पीओ ओुही खीओ गुरहि दीओ दानु कीओ ॥ (२१४-२, गउड़ी, मः ५)
उआहू सिउ मनु रातो ॥१॥ (२१४-२, गउड़ी, मः ५)
ओुही भाठी ओुही पोचा उही पिआरो उही रूचा ॥ (२१४-२, गउड़ी, मः ५)
मनि ओहो सुखु जातो ॥२॥ (२१४-३, गउड़ी, मः ५)
सहज केल अनद खेल रहे फेर भए मेल ॥ (२१४-३, गउड़ी, मः ५)
नानक गुर सबदि परातो ॥३॥४॥१५७॥ (२१४-४, गउड़ी, मः ५)
रागु गौड़ी मालवा महला ५ (२१४-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१४-५)
हरि नामु लेहु मीता लेहु आगै बिखम पंथु भैआन ॥१॥ रहाउ ॥ (२१४-६, गौड़ी मालवा, मः ५)
सेवत सेवत सदा सेवि तेरै संगि बसतु है कालु ॥ (२१४-७, गौड़ी मालवा, मः ५)
करि सेवा तूं साध की हो काटीऐ जम जालु ॥१॥ (२१४-७, गौड़ी मालवा, मः ५)
होम जग तीर्थ कीए बिचि हउमै बधे बिकार ॥ (२१४-८, गौड़ी मालवा, मः ५)
नरकु सुरगु दुइ भुंचना होइ बहुरि बहुरि अवतार ॥२॥ (२१४-८, गौड़ी मालवा, मः ५)
सिव पुरी ब्रह्म इंद्र पुरी निहचलु को थाउ नाहि ॥ (२१४-९, गौड़ी मालवा, मः ५)
बिनु हरि सेवा सुखु नही हो साकत आवहि जाहि ॥३॥ (२१४-९, गौड़ी मालवा, मः ५)
जैसो गुरि उपदेसिआ मै तैसो कहिआ पुकारि ॥ (२१४-१०, गौड़ी मालवा, मः ५)
नानकु कहै सुनि रे मना करि कीरतनु होइ उधारु ॥४॥१॥१५८॥ (२१४-१०, गौड़ी मालवा, मः ५)
रागु गउड़ी माला महला ५ (२१४-१२)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१४-१२)
पाइओ बाल बुधि सुखु रे ॥ (२१४-१३, गउड़ी माला , मः ५)
हरख सोग हानि मिरतु दूख सुख चिति समसरि गुर मिले ॥१॥ रहाउ ॥ (२१४-१३, गउड़ी माला , मः ५)
जउ लउ हउ किछु सोचउ चितवउ तउ लउ दुखनु भरे ॥ (२१४-१४, गउड़ी माला , मः ५)
जउ कृपालु गुरु पूरा भेटिआ तउ आनद सहजे ॥१॥ (२१४-१४, गउड़ी माला , मः ५)
जेती सिआनप कर्म हउ कीए तेते बंध परे ॥ (२१४-१५, गउड़ी माला , मः ५)
जउ साधू करु मसतकि धरिओ तब हम मुकत भए ॥२॥ (२१४-१५, गउड़ी माला , मः ५)
जउ लउ मेरो मेरो करतो तउ लउ बिखु घेरे ॥ (२१४-१६, गउड़ी माला , मः ५)
मनु तनु बुधि अरपी ठाकुर कउ तब हम सहजि सोए ॥३॥ (२१४-१६, गउड़ी माला , मः ५)
जउ लउ पोट उठाई चलिअउ तउ लउ डान भरे ॥ (२१४-१७, गउड़ी माला , मः ५)
पोट डारि गुरु पूरा मिलिआ तउ नानक निरभए ॥४॥१॥१५६॥ (२१४-१७, गउड़ी माला , मः ५)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (२१४-१८)
भावनु तिआगिओ री तिआगिओ ॥ (२१४-१८, गउड़ी माला , मः ५)
तिआगिओ मै गुर मिलि तिआगिओ ॥ (२१४-१९, गउड़ी माला , मः ५)
सर्ब सुख आनंद मंगल रस मानि गोबिंदै आगिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (२१४-१९, गउड़ी माला , मः ५)

पन्ना २१५

मानु अभिमानु दोऊ समाने मसतकु डारि गुर पागिओ ॥ (२१५-१, गउड़ी माला , मः ५)
सम्पत हरखु न आपत दूखा रंगु ठाकुरै लागिओ ॥१॥ (२१५-१, गउड़ी माला , मः ५)
बास बासरी एकै सुआमी उदिआन दृसटागिओ ॥ (२१५-२, गउड़ी माला , मः ५)
निरभउ भए संत भ्रमु डारिओ पूरन सरबागिओ ॥२॥ (२१५-२, गउड़ी माला , मः ५)
जो किछु करतै कारणु कीनो मनि बुरो न लागिओ ॥ (२१५-३, गउड़ी माला , मः ५)
साधसंगति परसादि संतन कै सोइओ मनु जागिओ ॥३॥ (२१५-३, गउड़ी माला , मः ५)
जन नानक ओड़ि तुहारी परिओ आइओ सरणागिओ ॥ (२१५-४, गउड़ी माला , मः ५)
नाम रंग सहज रस माणे फिरि दूखु न लागिओ ॥४॥२॥१६०॥ (२१५-५, गउड़ी माला , मः ५)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (२१५-५)
पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ ॥ (२१५-५, गउड़ी माला , मः ५)
तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ सतगुर सबदि समाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२१५-६, गउड़ी माला , मः ५)
लाथी भूख तृसन सभ लाथी चिंता सगल बिसारी ॥ (२१५-७, गउड़ी माला , मः ५)
करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ मनु जीतो जगु सारी ॥१॥ (२१५-७, गउड़ी माला , मः ५)
तृपति अघाइ रहे रिद अंतरि डोलन ते अब चूके ॥ (२१५-८, गउड़ी माला , मः ५)
अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ तोटि नही रे मूके ॥२॥ (२१५-८, गउड़ी माला , मः ५)
अचरजु एकु सुनहु रे भाई गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥ (२१५-९, गउड़ी माला , मः ५)
लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ तउ बिसरी ताति पराई ॥३॥ (२१५-९, गउड़ी माला , मः ५)
कहिओ न जाई एहु अचम्भउ सो जानै जिनि चाखिआ ॥ (२१५-१०, गउड़ी माला , मः ५)

कहु नानक सच भए बिगासा गुरि निधानु रिदै लै राखिआ ॥४॥३॥१६१॥ (२१५-१०, गउड़ी माला , मः ५)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (२१५-११)
उबरत राजा राम की सरणी ॥ (२१५-११, गउड़ी माला , मः ५)
सर्ब लोक माइआ के मंडल गिरि गिरि परते धरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (२१५-१२, गउड़ी माला , मः ५)
सासत सिम्मृति बेद बीचारे महा पुरखन इउ कहिआ ॥ (२१५-१२, गउड़ी माला , मः ५)
बिनु हरि भजन नाही निसतारा सूखु न किनहूं लहिआ ॥१॥ (२१५-१३, गउड़ी माला , मः ५)
तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥ (२१५-१४, गउड़ी माला , मः ५)
बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥२॥ (२१५-१४, गउड़ी माला , मः ५)
अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥ (२१५-१५, गउड़ी माला , मः ५)
जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल बृथे बिनु नामा ॥३॥ (२१५-१५, गउड़ी माला , मः ५)
हरि का नामु जपहु मेरे मीता इहै सार सुखु पूरा ॥ (२१५-१६, गउड़ी माला , मः ५)
साधसंगति जनम मरणु निवारै नानक जन की धूरा ॥४॥४॥१६२॥ (२१५-१६, गउड़ी माला , मः ५)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (२१५-१७)
मो कउ इह बिधि को समझावै ॥ (२१५-१७, गउड़ी माला , मः ५)
करता होइ जनावै ॥१॥ रहाउ ॥ (२१५-१८, गउड़ी माला , मः ५)
अनजानत किछु इनहि कमानो जप तप कछू न साधा ॥ (२१५-१८, गउड़ी माला , मः ५)
दह दिसि लै इहु मनु दउराइओ कवन कर्म करि बाधा ॥१॥ (२१५-१८, गउड़ी माला , मः ५)
मन तन धन भूमि का ठाकुरु हउ इस का इहु मेरा ॥ (२१५-१९, गउड़ी माला , मः ५)

पन्ना २१६

भर्म मोह कछु सूझसि नाही इह पैखर पए पैरा ॥२॥ (२१६-१, गउड़ी माला , मः ५)
तब इहु कहा कमावन परिआ जब इहु कछू न होता ॥ (२१६-१, गउड़ी माला , मः ५)
जब एक निरंजन निरंकार प्रभ सभु किछु आपहि करता ॥३॥ (२१६-२, गउड़ी माला , मः ५)
अपने करतब आपे जानै जिनि इहु रचनु रचाइआ ॥ (२१६-२, गउड़ी माला , मः ५)
कहु नानक करणहारु है आपे सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥४॥५॥१६३॥ (२१६-३, गउड़ी माला , मः ५)
गउड़ी माला महला ५ ॥ (२१६-४)
हरि बिनु अवर क्रिआ बिरथे ॥ (२१६-४, गउड़ी माला , मः ५)
जप तप संजम कर्म कमाणे इहि ओरै मूसे ॥१॥ रहाउ ॥ (२१६-४, गउड़ी माला , मः ५)
बरत नेम संजम महि रहता तिन का आढु न पाइआ ॥ (२१६-५, गउड़ी माला , मः ५)
आगै चलणु अउरु है भाई ऊंहा कामि न आइआ ॥१॥ (२१६-५, गउड़ी माला , मः ५)
तीरथि नाइ अरु धरनी भ्रमता आगै ठउर न पावै ॥ (२१६-६, गउड़ी माला , मः ५)
ऊहा कामि न आवै इह बिधि ओहु लोगन ही पतीआवै ॥२॥ (२१६-७, गउड़ी माला , मः ५)
चतुर बेद मुख बचनी उचरै आगै महलु न पाईऐ ॥ (२१६-७, गउड़ी माला , मः ५)
बूझै नाही एकु सुधाखरु ओहु सगली झाख झखाईऐ ॥३॥ (२१६-८, गउड़ी माला , मः ५)
नानकु कहतो इहु बीचारा जि कमावै सु पार गरामी ॥ (२१६-८, गउड़ी माला , मः ५)

गुरु सेवहु अरु नामु धिआवहु तिआगहु मनहु गुमानी ॥४॥६॥१६४॥ (२१६-९, गउड़ी माला , मः ५)
गउड़ी माला ५ ॥ (२१६-१०)
माधउ हरि हरि हरि मुखि कहीऐ ॥ (२१६-१०, गउड़ी माला , मः ५)
हम ते कछू न होवै सुआमी जिउ राखहु तिउ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (२१६-१०, गउड़ी माला , मः ५)
किआ किछु करै कि करणैहारा किआ इसु हाथि बिचारे ॥ (२१६-११, गउड़ी माला , मः ५)
जितु तुम लावहु तित ही लागा पूरन खसम हमारे ॥१॥ (२१६-११, गउड़ी माला , मः ५)
करहु कृपा सर्ब के दाते एक रूप लिव लावहु ॥ (२१६-१२, गउड़ी माला , मः ५)
नानक की बेनंती हरि पहि अपुना नामु जपावहु ॥२॥७॥१६५॥ (२१६-१३, गउड़ी माला , मः ५)
रागु गउड़ी माझ महला ५ (२१६-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१६-१४)
दीन दइआल दमोदर राइआ जीउ ॥ (२१६-१५, गउड़ी माझ , मः ५)
कोटि जना करि सेव लगाइआ जीउ ॥ (२१६-१५, गउड़ी माझ , मः ५)
भगत वछलु तेरा बिरदु रखाइआ जीउ ॥ (२१६-१५, गउड़ी माझ , मः ५)
पूरन सभनी जाई जीउ ॥१॥ (२१६-१६, गउड़ी माझ , मः ५)
किउ पेखा प्रीतमु कवण सुकरणी जीउ ॥ (२१६-१६, गउड़ी माझ , मः ५)
संता दासी सेवा चरणी जीउ ॥ (२१६-१६, गउड़ी माझ , मः ५)
इहु जीउ वताई बलि बलि जाई जीउ ॥ (२१६-१७, गउड़ी माझ , मः ५)
तिसु निवि निवि लागउ पाई जीउ ॥२॥ (२१६-१७, गउड़ी माझ , मः ५)
पोथी पंडित बेद खोजंता जीउ ॥ (२१६-१८, गउड़ी माझ , मः ५)
होइ बैरागी तीरथि नावंता जीउ ॥ (२१६-१८, गउड़ी माझ , मः ५)
गीत नाद कीरतनु गावंता जीउ ॥ (२१६-१८, गउड़ी माझ , मः ५)
हरि निरभउ नामु धिआई जीउ ॥३॥ (२१६-१९, गउड़ी माझ , मः ५)
भए कृपाल सुआमी मेरे जीउ ॥ (२१६-१९, गउड़ी माझ , मः ५)
पतित पवित लगि गुर के पैरे जीउ ॥ (२१६-१९, गउड़ी माझ , मः ५)

पन्ना २१७

भ्रमु भउ काटि कीए निरवैरे जीउ ॥ (२१७-१, गउड़ी माझ , मः ५)
गुर मन की आस पूराई जीउ ॥४॥ (२१७-१, गउड़ी माझ , मः ५)
जिनि नाउ पाइआ सो धनवंता जीउ ॥ (२१७-१, गउड़ी माझ , मः ५)
जिनि प्रभु धिआइआ सु सोभावंता जीउ ॥ (२१७-२, गउड़ी माझ , मः ५)
जिसु साधू संगति तिसु सभ सुकरणी जीउ ॥ (२१७-२, गउड़ी माझ , मः ५)
जन नानक सहजि समाई जीउ ॥५॥१॥१६६॥ (२१७-३, गउड़ी माझ , मः ५)
गउड़ी महला ५ माझ ॥ (२१७-३)
आउ हमारै राम पिआरे जीउ ॥ (२१७-३, गउड़ी माझ , मः ५)
रैणि दिनसु सासि सासि चितारे जीउ ॥ (२१७-४, गउड़ी माझ , मः ५)

संत देउ संदेसा पै चरणारे जीउ ॥ (२१७-४, गउड़ी माझ , मः ५)
तुधु बिनु कितु बिधि तरीऐ जीउ ॥१॥ (२१७-४, गउड़ी माझ , मः ५)
संगि तुमारै मै करे अनंदा जीउ ॥ (२१७-५, गउड़ी माझ , मः ५)
वणि तिणि तृभवणि सुख परमानंदा जीउ ॥ (२१७-५, गउड़ी माझ , मः ५)
सेज सुहावी इहु मनु बिगसंदा जीउ ॥ (२१७-६, गउड़ी माझ , मः ५)
पेखि दरसनु इहु सुखु लहीऐ जीउ ॥२॥ (२१७-६, गउड़ी माझ , मः ५)
चरण पखारि करी नित सेवा जीउ ॥ (२१७-७, गउड़ी माझ , मः ५)
पूजा अरचा बंदन देवा जीउ ॥ (२१७-७, गउड़ी माझ , मः ५)
दासनि दासु नामु जपि लेवा जीउ ॥ (२१७-७, गउड़ी माझ , मः ५)
बिनउ ठाकुर पहि कहीऐ जीउ ॥३॥ (२१७-८, गउड़ी माझ , मः ५)
इछ पुन्नी मेरी मनु तनु हरिआ जीउ ॥ (२१७-८, गउड़ी माझ , मः ५)
दरसन पेखत सभ दुख परहरिआ जीउ ॥ (२१७-८, गउड़ी माझ , मः ५)
हरि हरि नामु जपे जपि तरिआ जीउ ॥ (२१७-९, गउड़ी माझ , मः ५)
इहु अजरु नानक सुखु सहीऐ जीउ ॥४॥२॥१६७॥ (२१७-९, गउड़ी माझ , मः ५)
गउड़ी माझ महला ५ ॥ (२१७-१०)
सुणि सुणि साजन मन मित पिआरे जीउ ॥ (२१७-१०, गउड़ी माझ , मः ५)
मनु तनु तेरा इहु जीउ भि वारे जीउ ॥ (२१७-१०, गउड़ी माझ , मः ५)
विसरु नाही प्रभ प्राण अधारे जीउ ॥ (२१७-११, गउड़ी माझ , मः ५)
सदा तेरी सरणाई जीउ ॥१॥ (२१७-११, गउड़ी माझ , मः ५)
जिसु मिलिऐ मनु जीवै भाई जीउ ॥ (२१७-११, गउड़ी माझ , मः ५)
गुर परसादी सो हरि हरि पाई जीउ ॥ (२१७-१२, गउड़ी माझ , मः ५)
सभ किछु प्रभ का प्रभ कीआ जाई जीउ ॥ (२१७-१२, गउड़ी माझ , मः ५)
प्रभ कउ सद बलि जाई जीउ ॥२॥ (२१७-१३, गउड़ी माझ , मः ५)
एहु निधानु जपै वडभागी जीउ ॥ (२१७-१३, गउड़ी माझ , मः ५)
नाम निरंजन एक लिव लागी जीउ ॥ (२१७-१३, गउड़ी माझ , मः ५)
गुरु पूरा पाइआ सभु दुखु मिटाइआ जीउ ॥ (२१७-१४, गउड़ी माझ , मः ५)
आठ पहर गुण गाइआ जीउ ॥३॥ (२१७-१४, गउड़ी माझ , मः ५)
रतन पदारथ हरि नामु तुमारा जीउ ॥ (२१७-१५, गउड़ी माझ , मः ५)
तूं सचा साहु भगतु वणजारा जीउ ॥ (२१७-१५, गउड़ी माझ , मः ५)
हरि धनु रासि सचु वापारा जीउ ॥ (२१७-१५, गउड़ी माझ , मः ५)
जन नानक सद बलिहारा जीउ ॥४॥३॥१६८॥ (२१७-१६, गउड़ी माझ , मः ५)
रागु गउड़ी माझ महला ५ (२१७-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१७-१७)
तूं मेरा बहु माणु करते तूं मेरा बहु माणु ॥ (२१७-१८, गउड़ी माझ , मः ५)
जोरि तुमारै सुखि वसा सचु सबदु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (२१७-१८, गउड़ी माझ , मः ५)

सभे गला जातीआ सुणि कै चुप कीआ ॥ (२१७-१६, गउड़ी माझ , मः ५)
कद ही सुरति न लधीआ माइआ मोहड़िआ ॥१॥ (२१७-१६, गउड़ी माझ , मः ५)
देइ बुझारत सारता से अखी डिठड़िआ ॥ (२१७-१६, गउड़ी माझ , मः ५)

पन्ना २१८

कोई जि मूरखु लोभीआ मूलि न सुणी कहिआ ॥२॥ (२१८-१, गउड़ी माझ , मः ५)
इकसु दुहु चहु किआ गणी सभ इकतु सादि मुठी ॥ (२१८-१, गउड़ी माझ , मः ५)
इकु अधु नाइ रसीअड़ा का विरली जाइ वुठी ॥३॥ (२१८-२, गउड़ी माझ , मः ५)
भगत सचे दरि सोहदे अनद करहि दिन राति ॥ (२१८-२, गउड़ी माझ , मः ५)
रंगि रते परमेसरै जन नानक तिन बलि जात ॥४॥१॥१६९॥ (२१८-३, गउड़ी माझ , मः ५)
गउड़ी महला ५ माँझ ॥ (२१८-४)
दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥ (२१८-४, गउड़ी माझ, मः ५)
आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (२१८-४, गउड़ी माझ, मः ५)
जितु घटि वसै पारब्रह्मु सोई सुहावा थाउ ॥ (२१८-५, गउड़ी माझ, मः ५)
जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥१॥ (२१८-५, गउड़ी माझ, मः ५)
सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥ (२१८-६, गउड़ी माझ, मः ५)
ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥२॥ (२१८-६, गउड़ी माझ, मः ५)
भए कृपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥ (२१८-७, गउड़ी माझ, मः ५)
तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥३॥ (२१८-७, गउड़ी माझ, मः ५)
गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥ (२१८-८, गउड़ी माझ, मः ५)
गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥४॥२॥१७०॥ (२१८-८, गउड़ी माझ, मः ५)
गउड़ी माझ महला ५ ॥ (२१८-९)
हरि राम राम राम रामा ॥ (२१८-९, गउड़ी माझ, मः ५)
जपि पूरन होए कामा ॥१॥ रहाउ ॥ (२१८-१०, गउड़ी माझ, मः ५)
राम गोबिंद जपेदिआ होआ मुखु पवितु ॥ (२१८-१०, गउड़ी माझ, मः ५)
हरि जसु सुणीऐ जिस ते सोई भाई मितु ॥१॥ (२१८-१०, गउड़ी माझ, मः ५)
सभि पदार्थ सभि फला सर्ब गुणा जिसु माहि ॥ (२१८-११, गउड़ी माझ, मः ५)
किउ गोबिंदु मनहु विसारीऐ जिसु सिमरत दुख जाहि ॥२॥ (२१८-११, गउड़ी माझ, मः ५)
जिसु लड़ि लगिऐ जीवीऐ भवजलु पईऐ पारि ॥ (२१८-१२, गउड़ी माझ, मः ५)
मिलि साधू संगि उधारु होइ मुख ऊजल दरबारि ॥३॥ (२१८-१२, गउड़ी माझ, मः ५)
जीवन रूप गोपाल जसु संत जना की रासि ॥ (२१८-१३, गउड़ी माझ, मः ५)
नानक उबरे नामु जपि दरि सचै साबासि ॥४॥३॥१७१॥ (२१८-१३, गउड़ी माझ, मः ५)
गउड़ी माझ महला ५ ॥ (२१८-१४)
मीठे हरि गुण गाउ जिंदू तूं मीठे हरि गुण गाउ ॥ (२१८-१४, गउड़ी माझ, मः ५)
सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (२१८-१५, गउड़ी माझ, मः ५)

होरि साद सभि फिकिआ तनु मनु फिका होइ ॥ (२१८-१५, गउड़ी माझ, मः ५)
विणु परमेसर जो करे फिटु सु जीवणु सोइ ॥१॥ (२१८-१६, गउड़ी माझ, मः ५)
अंचलु गहि कै साध का तरणा इहु संसारु ॥ (२१८-१६, गउड़ी माझ, मः ५)
पारब्रह्मु आराधीऐ उधरै सभ परवारु ॥२॥ (२१८-१७, गउड़ी माझ, मः ५)
साजनु बंधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥ (२१८-१७, गउड़ी माझ, मः ५)
अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥३॥ (२१८-१८, गउड़ी माझ, मः ५)
मालु खजाना थेहु घरु हरि के चरण निधान ॥ (२१८-१८, गउड़ी माझ, मः ५)
नानकु जाचकु दरि तेरै प्रभ तुधनो मंगै दानु ॥४॥४॥१७२॥ (२१८-१९, गउड़ी माझ, मः ५)

पन्ना २१९

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२१९-१)
रागु गउड़ी महला ९ ॥ (२१९-१)
साधो मन का मानु तिआगउ ॥ (२१९-१, गउड़ी, मः ९)
कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ ॥ (२१९-१, गउड़ी, मः ९)
सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥ (२१९-२, गउड़ी, मः ९)
हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥ (२१९-३, गउड़ी, मः ९)
उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥ (२१९-३, गउड़ी, मः ९)
जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥ (२१९-४, गउड़ी, मः ९)
गउड़ी महला ९ ॥ (२१९-४)
साधो रचना राम बनाई ॥ (२१९-४, गउड़ी, मः ९)
इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (२१९-५, गउड़ी, मः ९)
काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥ (२१९-५, गउड़ी, मः ९)
झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥१॥ (२१९-६, गउड़ी, मः ९)
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥ (२१९-६, गउड़ी, मः ९)
जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥२॥२॥ (२१९-७, गउड़ी, मः ९)
गउड़ी महला ९ ॥ (२१९-८)
प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥ (२१९-८, गउड़ी, मः ९)
अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (२१९-८, गउड़ी, मः ९)
पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥ (२१९-९, गउड़ी, मः ९)
मृग तृसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥ (२१९-९, गउड़ी, मः ९)
भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥ (२१९-१०, गउड़ी, मः ९)
जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥ (२१९-११, गउड़ी, मः ९)
गउड़ी महला ९ ॥ (२१९-११)
साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥ (२१९-११, गउड़ी, मः ९)
चंचल तृसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (२१९-१२, गउड़ी, मः ९)

कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥ (२१६-१२, गउड़ी, मः ६)
रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥ (२१६-१३, गउड़ी, मः ६)
जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥ (२१६-१४, गउड़ी, मः ६)
जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥४॥ (२१६-१४, गउड़ी, मः ६)
गउड़ी महला ६ ॥ (२१६-१५)
साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥ (२१६-१५, गउड़ी, मः ६)
मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (२१६-१५, गउड़ी, मः ६)
पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥ (२१६-१६, गउड़ी, मः ६)
गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥ (२१६-१६, गउड़ी, मः ६)
तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥ (२१६-१७, गउड़ी, मः ६)
नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥२॥५॥ (२१८-१६, गउड़ी, मः ६)
गउड़ी महला ६ ॥ (२१६-१८)
कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥ (२१६-१८, गउड़ी, मः ६)

पन्ना २२०

बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (२२०-१, गउड़ी, मः ६)
दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥ (२२०-१, गउड़ी, मः ६)
माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥१॥ (२२०-२, गउड़ी, मः ६)
अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥ (२२०-३, गउड़ी, मः ६)
नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥२॥६॥ (२२०-३, गउड़ी, मः ६)
गउड़ी महला ६ ॥ (२२०-४)
साधो राम सरनि बिसरामा ॥ (२२०-४, गउड़ी, मः ६)
बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ ॥ (२२०-४, गउड़ी, मः ६)
लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥ (२२०-५, गउड़ी, मः ६)
हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥ (२२०-५, गउड़ी, मः ६)
सुरग नरक अमृत बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥ (२२०-६, गउड़ी, मः ६)
उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥ (२२०-६, गउड़ी, मः ६)
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥ (२२०-७, गउड़ी, मः ६)
नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥७॥ (२२०-८, गउड़ी, मः ६)
गउड़ी महला ६ ॥ (२२०-८)
मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥ (२२०-८, गउड़ी, मः ६)
अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (२२०-६, गउड़ी, मः ६)
जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर गृह नारी ॥ (२२०-६, गउड़ी, मः ६)
इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥ (२२०-१०, गउड़ी, मः ६)
रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥ (२२०-११, गउड़ी, मः ६)

निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥ (२२०-११, गउड़ी, मः ९)
कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥ (२२०-१२, गउड़ी, मः ९)
अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥ (२२०-१२, गउड़ी, मः ९)
गउड़ी महला ९ ॥ (२२०-१३)
नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ (२२०-१३, गउड़ी, मः ९)
दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥ रहाउ ॥ (२२०-१३, गउड़ी, मः ९)
बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥ (२२०-१४, गउड़ी, मः ९)
पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥ (२२०-१५, गउड़ी, मः ९)
मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥ (२२०-१५, गउड़ी, मः ९)
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥९॥२५१॥ (२२०-१६, गउड़ी, मः ९)
रागु गउड़ी असटपदीआ महला १ गउड़ी गुआरेरी (२२०-१८)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (२२०-१८)
निधि सिधि निर्मल नामु बीचारु ॥ (२२०-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
पूरन पूरि रहिआ बिखु मारि ॥ (२२०-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
त्रिकुटी छूटी बिमल मझारि ॥ (२२०-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)

पन्ना २२१

गुर की मति जीइ आई कारि ॥१॥ (२२१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
इन बिधि राम रमत मनु मानिआ ॥ (२२१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गिआन अंजनु गुर सबदि पछानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२१-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
इकु सुखु मानिआ सहजि मिलाइआ ॥ (२२१-२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
निर्मल बाणी भरमु चुकाइआ ॥ (२२१-२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
लाल भए सूहा रंगु माइआ ॥ (२२१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नदरि भई बिखु ठाकि रहाइआ ॥२॥ (२२१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
उलट भई जीवत मरि जागिआ ॥ (२२१-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सबदि रवे मनु हरि सिउ लागिआ ॥ (२२१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
रसु संग्रहि बिखु परहरि तिआगिआ ॥ (२२१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
भाइ बसे जम का भउ भागिआ ॥३॥ (२२१-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
साद रहे बादं अहंकारा ॥ (२२१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
चितु हरि सिउ राता हुकमि अपारा ॥ (२२१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जाति रहे पति के आचारा ॥ (२२१-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
दृसटि भई सुखु आतम धारा ॥४॥ (२२१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु ॥ (२२१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
किसु सेवउ किसु देवउ चीतु ॥ (२२१-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
किसु पूछउ किसु लागउ पाइ ॥ (२२१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)

किसु उपदेसि रहा लिव लाइ ॥५॥ (२२१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुर सेवी गुर लागउ पाइ ॥ (२२१-७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
भगति करी राचउ हरि नाइ ॥ (२२१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सिखिआ दीखिआ भोजन भाउ ॥ (२२१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
हुकमि संजोगी निज घरि जाउ ॥६॥ (२२१-८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गरब गतं सुख आतम धिआना ॥ (२२१-९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जोति भई जोती माहि समाना ॥ (२२१-९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
लिखतु मिटै नही सबदु नीसाना ॥ (२२१-९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
करता करणा करता जाना ॥७॥ (२२१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नह पंडितु नह चतुरु सिआना ॥ (२२१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नह भूलो नह भरमि भुलाना ॥ (२२१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
कथउ न कथनी हुकमु पछाना ॥ (२२१-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नानक गुरमति सहजि समाना ॥८॥१॥ (२२१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ (२२१-११)
मनु कुंचरु काइआ उदिआनै ॥ (२२१-११, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुरु अंकसु सचु सबदु नीसानै ॥ (२२१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
राज दुआरै सोभ सु मानै ॥१॥ (२२१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
चतुराई नह चीनिआ जाइ ॥ (२२१-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
बिनु मारे किउ कीमति पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२१-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
घर महि अमृतु तसकरु लेई ॥ (२२१-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नंनाकारु न कोइ करेई ॥ (२२१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
राखै आपि वडिआई देई ॥२॥ (२२१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नील अनील अगनि इक ठाई ॥ (२२१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जलि निवरी गुरि बूझ बुझाई ॥ (२२१-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु दे लीआ रहसि गुण गाई ॥३॥ (२२१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जैसा घरि बाहरि सो तैसा ॥ (२२१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
बैसि गुफा महि आखउ कैसा ॥ (२२१-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सागरि डूगरि निरभउ ऐसा ॥४॥ (२२१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मूए कउ कहु मारे कउनु ॥ (२२१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
निडरे कउ कैसा डरु कवनु ॥ (२२१-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सबदि पछानै तीने भउन ॥५॥ (२२१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जिनि कहिआ तिनि कहनु वखानिआ ॥ (२२१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जिनि बूझिआ तिनि सहजि पछानिआ ॥ (२२१-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
देखि बीचारि मेरा मनु मानिआ ॥६॥ (२२१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
कीरति सूरति मुकति इक नाई ॥ (२२१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)

तही निरंजनु रहिआ समाई ॥ (२२१-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
निज घरि बिआपि रहिआ निज ठाई ॥७॥ (२२१-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
उसतति करहि केते मुनि प्रीति ॥ (२२१-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)

पन्ना २२२

तनि मनि सूचै साचु सु चीति ॥ (२२२-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नानक हरि भजु नीता नीति ॥८॥२॥ (२२२-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ (२२२-१)
ना मनु मरै न कारजु होइ ॥ (२२२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु वसि दूता दुरमति दोइ ॥ (२२२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु मानै गुर ते इकु होइ ॥१॥ (२२२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
निरगुण रामु गुणह वसि होइ ॥ (२२२-२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
आपु निवारि बीचारे सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु भूलो बहु चितै विकारु ॥ (२२२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु भूलो सिरि आवै भारु ॥ (२२२-३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु मानै हरि एकंकारु ॥२॥ (२२२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु भूलो माइआ घरि जाइ ॥ (२२२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
कामि बिरूधउ रहै न ठाइ ॥ (२२२-४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
हरि भजु प्राणी रसन रसाइ ॥३॥ (२२२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गैवर हैवर कंचन सुत नारी ॥ (२२२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
बहु चिंता पिड़ चालै हारी ॥ (२२२-५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जूऐ खेलणु काची सारी ॥४॥ (२२२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सम्पउ संची भए विकार ॥ (२२२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
हरख सोक उभे दरवारि ॥ (२२२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सुखु सहजे जपि रिदै मुरारि ॥५॥ (२२२-६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नदरि करे ता मेलि मिलाए ॥ (२२२-७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुण संग्रहि अउगण सबदि जलाए ॥ (२२२-७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥६॥ (२२२-७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
बिनु नावै सभ दूख निवासु ॥ (२२२-८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनमुख मूड़ माइआ चित वासु ॥ (२२२-८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुरमुखि गिआनु धुरि करमि लिखिआसु ॥७॥ (२२२-८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनु चंचलु धावतु फुनि धावै ॥ (२२२-९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
साचे सूचे मैलु न भावै ॥ (२२२-९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नानक गुरमुखि हरि गुण गावै ॥८॥३॥ (२२२-९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गउड़ी गुआरेरी महला १ ॥ (२२२-१०)

हउमै करतिआ नह सुखु होइ ॥ (२२२-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनमति झूठी सचा सोइ ॥ (२२२-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सगल बिगूते भावै दोइ ॥ (२२२-११, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सो कमावै धुरि लिखिआ होइ ॥१॥ (२२२-११, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
ऐसा जगु देखिआ जूआरी ॥ (२२२-११, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सभि सुख मागै नामु बिसारी ॥१॥ रहाउ ॥ (२२२-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
अदिसटु दिसै ता कहिआ जाइ ॥ (२२२-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ ॥ (२२२-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुरमुखि दीसै सहजि सुभाइ ॥ (२२२-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सेवा सुरति एक लिव लाइ ॥२॥ (२२२-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सुखु माँगत दुखु आगल होइ ॥ (२२२-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सगल विकारी हारु परोइ ॥ (२२२-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
एक बिना झूठे मुकति न होइ ॥ (२२२-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
करि करि करता देखै सोइ ॥३॥ (२२२-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
तृसना अगनि सबदि बुझाए ॥ (२२२-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
दूजा भरमु सहजि सुभाए ॥ (२२२-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुरमती नामु रिदै वसाए ॥ (२२२-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
साची बाणी हरि गुण गाए ॥४॥ (२२२-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
तन महि साचो गुरमुखि भाउ ॥ (२२२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नाम बिना नाही निज ठाउ ॥ (२२२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
प्रेम पराइण प्रीतम राउ ॥ (२२२-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
नदरि करे ता बूझै नाउ ॥५॥ (२२२-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
माइआ मोहु सर्ब जंजाला ॥ (२२२-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
मनमुख कुचील कुछित बिकराला ॥ (२२२-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
सतिगुरु सेवे चूकै जंजाला ॥ (२२२-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
अमृत नामु सदा सुखु नाला ॥६॥ (२२२-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गुरमुखि बूझै एक लिव लाए ॥ (२२२-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
निज घरि वासै साचि समाए ॥ (२२२-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
जम्मणु मरणा ठाकि रहाए ॥ (२२२-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
पूरे गुर ते इह मति पाए ॥७॥ (२२२-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
कथनी कथउ न आवै ओरु ॥ (२२२-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः १)

पन्ना २२३

गुरु पुछि देखिआ नाही दरु होरु ॥ (२२३-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
दुखु सुखु भाणै तिसै रजाइ ॥ (२२३-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)

नानकु नीचु कहै लिव लाइ ॥८॥४॥ (२२३-१, गउड़ी गुआरेरी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२३-२)
दूजी माइआ जगत चित वासु ॥ (२२३-२, गउड़ी, मः १)
काम क्रोध अहंकार बिनासु ॥१॥ (२२३-२, गउड़ी, मः १)
दूजा कउणु कहा नही कोई ॥ (२२३-३, गउड़ी, मः १)
सभ महि एकु निरंजनु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (२२३-३, गउड़ी, मः १)
दूजी दुरमति आखै दोइ ॥ (२२३-३, गउड़ी, मः १)
आवै जाइ मरि दूजा होइ ॥२॥ (२२३-४, गउड़ी, मः १)
धरणि गगन नह देखउ दोइ ॥ (२२३-४, गउड़ी, मः १)
नारी पुरख सबाई लोइ ॥३॥ (२२३-४, गउड़ी, मः १)
रवि ससि देखउ दीपक उजिआला ॥ (२२३-५, गउड़ी, मः १)
सर्ब निरंतरि प्रीतमु बाला ॥४॥ (२२३-५, गउड़ी, मः १)
करि किरपा मेरा चितु लाइआ ॥ (२२३-५, गउड़ी, मः १)
सतिगुरि मो कउ एकु बुझाइआ ॥५॥ (२२३-६, गउड़ी, मः १)
एकु निरंजनु गुरमुखि जाता ॥ (२२३-६, गउड़ी, मः १)
दूजा मारि सबदि पछाता ॥६॥ (२२३-६, गउड़ी, मः १)
एको हुकमु वरतै सभ लोई ॥ (२२३-७, गउड़ी, मः १)
एकसु ते सभ ओपति होई ॥७॥ (२२३-७, गउड़ी, मः १)
राह दोवै खसमु एको जाणु ॥ (२२३-७, गउड़ी, मः १)
गुर कै सबदि हुकमु पछाणु ॥८॥ (२२३-८, गउड़ी, मः १)
सगल रूप वरन मन माही ॥ (२२३-८, गउड़ी, मः १)
कहु नानक एको सालाही ॥९॥५॥ (२२३-८, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२३-९)
अधिआतम कर्म करे ता साचा ॥ (२२३-९, गउड़ी, मः १)
मुकति भेदु किआ जाणै काचा ॥१॥ (२२३-९, गउड़ी, मः १)
ऐसा जोगी जुगति बीचारै ॥ (२२३-९, गउड़ी, मः १)
पंच मारि साचु उरि धारै ॥१॥ रहाउ ॥ (२२३-१०, गउड़ी, मः १)
जिस कै अंतरि साचु वसावै ॥ (२२३-१०, गउड़ी, मः १)
जोग जुगति की कीमति पावै ॥२॥ (२२३-१०, गउड़ी, मः १)
रवि ससि एको गृह उदिआनै ॥ (२२३-११, गउड़ी, मः १)
करणी कीरति कर्म समानै ॥३॥ (२२३-११, गउड़ी, मः १)
एक सबद इक भिखिआ मागै ॥ (२२३-११, गउड़ी, मः १)
गिआनु धिआनु जुगति सचु जागै ॥४॥ (२२३-१२, गउड़ी, मः १)
भै रचि रहै न बाहरि जाइ ॥ (२२३-१२, गउड़ी, मः १)
कीमति कउण रहै लिव लाइ ॥५॥ (२२३-१३, गउड़ी, मः १)

आपे मेले भरमु चुकाए ॥ (२२३-१३, गउड़ी, मः १)
गुर परसादि पर्म पदु पाए ॥६॥ (२२३-१३, गउड़ी, मः १)
गुर की सेवा सबदु वीचारु ॥ (२२३-१४, गउड़ी, मः १)
हउमै मारे करणी सारु ॥७॥ (२२३-१४, गउड़ी, मः १)
जप तप संजम पाठ पुराणु ॥ (२२३-१४, गउड़ी, मः १)
कहु नानक अपरम्पर मानु ॥८॥६॥ (२२३-१४, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२३-१५)
खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥ (२२३-१५, गउड़ी, मः १)
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥ (२२३-१५, गउड़ी, मः १)
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥१॥ (२२३-१६, गउड़ी, मः १)
जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥ (२२३-१६, गउड़ी, मः १)
रूखि बिरखि गृहि बाहरि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२३-१६, गउड़ी, मः १)
निरभउ जोगी निरंजनु धिआवै ॥ (२२३-१७, गउड़ी, मः १)
अनदिनु जागै सचि लिव लावै ॥ (२२३-१७, गउड़ी, मः १)
सो जोगी मेरै मनि भावै ॥२॥ (२२३-१७, गउड़ी, मः १)
कालु जालु ब्रह्म अगनी जारे ॥ (२२३-१८, गउड़ी, मः १)
जरा मरण गतु गरबु निवारे ॥ (२२३-१८, गउड़ी, मः १)
आपि तरै पितरी निसतारे ॥३॥ (२२३-१८, गउड़ी, मः १)
सतिगुरु सेवे सो जोगी होइ ॥ (२२३-१९, गउड़ी, मः १)
भै रचि रहै सु निरभउ होइ ॥ (२२३-१९, गउड़ी, मः १)
जैसा सेवै तैसो होइ ॥४॥ (२२३-१९, गउड़ी, मः १)

पन्ना २२४

नर निहकेवल निरभउ नाउ ॥ (२२४-१, गउड़ी, मः १)
अनाथह नाथ करे बलि जाउ ॥ (२२४-१, गउड़ी, मः १)
पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ॥५॥ (२२४-१, गउड़ी, मः १)
अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ (२२४-२, गउड़ी, मः १)
गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ (२२४-२, गउड़ी, मः १)
साचै सबदि दरि नीसाणै ॥६॥ (२२४-२, गउड़ी, मः १)
सबदि मरै तिसु निज घरि वासा ॥ (२२४-२, गउड़ी, मः १)
आवै न जावै चूकै आसा ॥ (२२४-३, गउड़ी, मः १)
गुर कै सबदि कमलु परगासा ॥७॥ (२२४-३, गउड़ी, मः १)
जो दीसै सो आस निरासा ॥ (२२४-३, गउड़ी, मः १)
काम क्रोध बिखु भूख पिआसा ॥ (२२४-४, गउड़ी, मः १)
नानक बिरले मिलहि उदासा ॥८॥७॥ (२२४-४, गउड़ी, मः १)

गउड़ी महला १ ॥ (२२४-४)
ऐसो दासु मिलै सुखु होई ॥ (२२४-५, गउड़ी, मः १)
दुखु विसरै पावै सचु सोई ॥१॥ (२२४-५, गउड़ी, मः १)
दरसनु देखि भई मति पूरी ॥ (२२४-५, गउड़ी, मः १)
अठसठि मजनु चरनह धूरी ॥१॥ रहाउ ॥ (२२४-५, गउड़ी, मः १)
नेत्र संतोखे एक लिव तारा ॥ (२२४-६, गउड़ी, मः १)
जिहवा सूची हरि रस सारा ॥२॥ (२२४-६, गउड़ी, मः १)
सचु करणी अभ अंतरि सेवा ॥ (२२४-७, गउड़ी, मः १)
मनु तृपतासिआ अलख अभेवा ॥३॥ (२२४-७, गउड़ी, मः १)
जह जह देखउ तह तह साचा ॥ (२२४-७, गउड़ी, मः १)
बिनु बूझे झगरत जगु काचा ॥४॥ (२२४-८, गउड़ी, मः १)
गुरु समझावै सोझी होई ॥ (२२४-८, गउड़ी, मः १)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥५॥ (२२४-८, गउड़ी, मः १)
करि किरपा राखहु रखवाले ॥ (२२४-८, गउड़ी, मः १)
बिनु बूझे पसू भए बेताले ॥६॥ (२२४-९, गउड़ी, मः १)
गुरि कहिआ अवरु नही दूजा ॥ (२२४-९, गउड़ी, मः १)
किसु कहु देखि करउ अन पूजा ॥७॥ (२२४-९, गउड़ी, मः १)
संत हेति प्रभि तृभवण धारे ॥ (२२४-१०, गउड़ी, मः १)
आतमु चीनै सु ततु बीचारे ॥८॥ (२२४-१०, गउड़ी, मः १)
साचु रिदै सचु प्रेम निवास ॥ (२२४-११, गउड़ी, मः १)
प्रणवति नानक हम ता के दास ॥९॥८॥ (२२४-११, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२४-११)
ब्रह्मै गरबु कीआ नही जानिआ ॥ (२२४-११, गउड़ी, मः १)
बेद की बिपति पड़ी पछुतानिआ ॥ (२२४-१२, गउड़ी, मः १)
जह प्रभ सिमरे तही मनु मानिआ ॥१॥ (२२४-१२, गउड़ी, मः १)
ऐसा गरबु बुरा संसारै ॥ (२२४-१३, गउड़ी, मः १)
जिसु गुरु मिलै तिसु गरबु निवारै ॥१॥ रहाउ ॥ (२२४-१३, गउड़ी, मः १)
बलि राजा माइआ अहंकारी ॥ (२२४-१३, गउड़ी, मः १)
जगन करै बहु भार अफारी ॥ (२२४-१४, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर पूछे जाइ पइआरी ॥२॥ (२२४-१४, गउड़ी, मः १)
हरीचंदु दानु करै जसु लेवै ॥ (२२४-१४, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर अंतु न पाइ अभेवै ॥ (२२४-१५, गउड़ी, मः १)
आपि भुलाइ आपे मति देवै ॥३॥ (२२४-१५, गउड़ी, मः १)
दुरमति हरणाखसु दुराचारी ॥ (२२४-१५, गउड़ी, मः १)
प्रभु नाराइणु गरब प्रहारी ॥ (२२४-१६, गउड़ी, मः १)

प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥४॥ (२२४-१६, गउड़ी, मः १)
भूलो रावणु मुगधु अचेति ॥ (२२४-१६, गउड़ी, मः १)
लूटी लंका सीस समेति ॥ (२२४-१७, गउड़ी, मः १)
गरबि गइआ बिनु सतिगुर हेति ॥५॥ (२२४-१७, गउड़ी, मः १)
सहसबाहु मधु कीट महिखासा ॥ (२२४-१७, गउड़ी, मः १)
हरणाखसु ले नखहु बिधासा ॥ (२२४-१८, गउड़ी, मः १)
दैत संघारे बिनु भगति अभिआसा ॥६॥ (२२४-१८, गउड़ी, मः १)
जरासंधि कालजमुन संघारे ॥ (२२४-१६, गउड़ी, मः १)
रक्तबिजु कालुनेमु बिदारे ॥ (२२४-१६, गउड़ी, मः १)
दैत संघारि संत निसतारे ॥७॥ (२२४-१६, गउड़ी, मः १)
आपे सतिगुरु सबदु बीचारे ॥ (२२४-१६, गउड़ी, मः १)

पन्ना २२५

दूजै भाइ दैत संघारे ॥ (२२५-१, गउड़ी, मः १)
गुरमुखि साचि भगति निसतारे ॥८॥ (२२५-१, गउड़ी, मः १)
बूडा दुरजोधनु पति खोई ॥ (२२५-१, गउड़ी, मः १)
रामु न जानिआ करता सोई ॥ (२२५-२, गउड़ी, मः १)
जन कउ दूखि पचै दुखु होई ॥६॥ (२२५-२, गउड़ी, मः १)
जनमेजै गुर सबदु न जानिआ ॥ (२२५-२, गउड़ी, मः १)
किउ सुखु पावै भरमि भुलानिआ ॥ (२२५-३, गउड़ी, मः १)
इकु तिलु भूले बहुरि पछुतानिआ ॥१०॥ (२२५-३, गउड़ी, मः १)
कंसु केसु चाँडूरु न कोई ॥ (२२५-३, गउड़ी, मः १)
रामु न चीनिआ अपनी पति खोई ॥ (२२५-४, गउड़ी, मः १)
बिनु जगदीस न राखै कोई ॥११॥ (२२५-४, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर गरबु न मेटिआ जाइ ॥ (२२५-४, गउड़ी, मः १)
गुरमति धरमु धीरजु हरि नाइ ॥ (२२५-५, गउड़ी, मः १)
नानक नामु मिलै गुण गाइ ॥१२॥६॥ (२२५-५, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२५-६)
चोआ चंदनु अंकि चड़ावउ ॥ (२२५-६, गउड़ी, मः १)
पाट पटम्बर पहिरि हढावउ ॥ (२२५-६, गउड़ी, मः १)
बिनु हरि नाम कहा सुखु पावउ ॥१॥ (२२५-६, गउड़ी, मः १)
किआ पहिरउ किआ ओढि दिखावउ ॥ (२२५-७, गउड़ी, मः १)
बिनु जगदीस कहा सुखु पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२५-७, गउड़ी, मः १)
कानी कुंडल गलि मोतीअन की माला ॥ (२२५-८, गउड़ी, मः १)
लाल निहाली फूल गुलाला ॥ (२२५-८, गउड़ी, मः १)

बिनु जगदीस कहा सुखु भाला ॥२॥ (२२५-८, गउड़ी, मः १)
नैन सलोनी सुंदर नारी ॥ (२२५-९, गउड़ी, मः १)
खोड़ सीगार करै अति पिआरी ॥ (२२५-९, गउड़ी, मः १)
बिनु जगदीस भजे नित खुआरी ॥३॥ (२२५-९, गउड़ी, मः १)
दर घर महला सेज सुखाली ॥ (२२५-१०, गउड़ी, मः १)
अहिनिसि फूल बिछावै माली ॥ (२२५-१०, गउड़ी, मः १)
बिनु हरि नाम सु देह दुखाली ॥४॥ (२२५-१०, गउड़ी, मः १)
हैवर गैवर नेजे वाजे ॥ (२२५-११, गउड़ी, मः १)
लसकर नेब खवासी पाजे ॥ (२२५-११, गउड़ी, मः १)
बिनु जगदीस झूठे दिवाजे ॥५॥ (२२५-११, गउड़ी, मः १)
सिधु कहावउ रिधि सिधि बुलावउ ॥ (२२५-१२, गउड़ी, मः १)
ताज कुलह सिरि छत्रु बनावउ ॥ (२२५-१२, गउड़ी, मः १)
बिनु जगदीस कहा सचु पावउ ॥६॥ (२२५-१२, गउड़ी, मः १)
खानु मलूकु कहावउ राजा ॥ (२२५-१३, गउड़ी, मः १)
अबे तबे कूड़े है पाजा ॥ (२२५-१३, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर सबद न सवरसि काजा ॥७॥ (२२५-१३, गउड़ी, मः १)
हउमै ममता गुर सबदि विसारी ॥ (२२५-१४, गउड़ी, मः १)
गुरमति जानिआ रिदै मुरारी ॥ (२२५-१४, गउड़ी, मः १)
प्रणवति नानक सरणि तुमारी ॥८॥१०॥ (२२५-१४, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२५-१५)
सेवा एक न जानसि अवरे ॥ (२२५-१५, गउड़ी, मः १)
परपंच बिआधि तिआगै कवरे ॥ (२२५-१५, गउड़ी, मः १)
भाइ मिलै सचु साचै सचु रे ॥१॥ (२२५-१६, गउड़ी, मः १)
ऐसा राम भगतु जनु होई ॥ (२२५-१६, गउड़ी, मः १)
हरि गुण गाइ मिलै मलु धोई ॥१॥ रहाउ ॥ (२२५-१६, गउड़ी, मः १)
ऊंधो कवलु सगल संसारै ॥ (२२५-१७, गउड़ी, मः १)
दुरमति अगनि जगत परजारै ॥ (२२५-१७, गउड़ी, मः १)
सो उबरै गुर सबदु बीचारै ॥२॥ (२२५-१७, गउड़ी, मः १)
भ्रिंग पतंगु कुंचरु अरु मीना ॥ (२२५-१८, गउड़ी, मः १)
मिरगु मरै सहि अपुना कीना ॥ (२२५-१८, गउड़ी, मः १)
तृसना राचि ततु नही बीना ॥३॥ (२२५-१८, गउड़ी, मः १)
कामु चितै कामणि हितकारी ॥ (२२५-१९, गउड़ी, मः १)
क्रोधु बिनासै सगल विकारी ॥ (२२५-१९, गउड़ी, मः १)
पति मति खोवहि नामु विसारी ॥४॥ (२२५-१९, गउड़ी, मः १)

पन्ना २२६

पर घरि चीतु मनमुखि डोलाइ ॥ (२२६-१, गउड़ी, मः १)
गलि जेवरी धंधै लपटाइ ॥ (२२६-१, गउड़ी, मः १)
गुरमुखि छूटसि हरि गुण गाइ ॥५॥ (२२६-१, गउड़ी, मः १)
जिउ तनु बिधवा पर कउ देई ॥ (२२६-२, गउड़ी, मः १)
कामि दामि चितु पर वसि सेई ॥ (२२६-२, गउड़ी, मः १)
बिनु पिर तृपति न कबहूं होई ॥६॥ (२२६-२, गउड़ी, मः १)
पड़ि पड़ि पोथी सिम्मृति पाठा ॥ (२२६-३, गउड़ी, मः १)
बेद पुराण पड़ै सुणि थाटा ॥ (२२६-३, गउड़ी, मः १)
बिनु रस राते मनु बहु नाटा ॥७॥ (२२६-३, गउड़ी, मः १)
जिउ चातृक जल प्रेम पिआसा ॥ (२२६-४, गउड़ी, मः १)
जिउ मीना जल माहि उलासा ॥ (२२६-४, गउड़ी, मः १)
नानक हरि रसु पी तृपतासा ॥८॥११॥ (२२६-४, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२६-५)
हठु करि मरै न लेखै पावै ॥ (२२६-५, गउड़ी, मः १)
वेस करै बहु भसम लगावै ॥ (२२६-५, गउड़ी, मः १)
नामु बिसारि बहुरि पछुतावै ॥१॥ (२२६-५, गउड़ी, मः १)
तूं मनि हरि जीउ तूं मनि सूख ॥ (२२६-६, गउड़ी, मः १)
नामु बिसारि सहहि जम दूख ॥१॥ रहाउ ॥ (२२६-६, गउड़ी, मः १)
चोआ चंदन अगर कपूरि ॥ (२२६-७, गउड़ी, मः १)
माइआ मगनु पर्म पदु दूरि ॥ (२२६-७, गउड़ी, मः १)
नामि बिसारिऐ सभु कूड़ो कूरि ॥२॥ (२२६-७, गउड़ी, मः १)
नेजे वाजे तखति सलामु ॥ (२२६-७, गउड़ी, मः १)
अधकी तृसना विआपै कामु ॥ (२२६-८, गउड़ी, मः १)
बिनु हरि जाचे भगति न नामु ॥३॥ (२२६-८, गउड़ी, मः १)
वादि अहंकारि नाही प्रभ मेला ॥ (२२६-८, गउड़ी, मः १)
मनु दे पावहि नामु सुहेला ॥ (२२६-९, गउड़ी, मः १)
दूजै भाइ अगिआनु दुहेला ॥४॥ (२२६-९, गउड़ी, मः १)
बिनु दम के सउदा नही हाट ॥ (२२६-९, गउड़ी, मः १)
बिनु बोहिथ सागर नही वाट ॥ (२२६-१०, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर सेवे घाटे घाटि ॥५॥ (२२६-१०, गउड़ी, मः १)
तिस कउ वाहु वाहु जि वाट दिखावै ॥ (२२६-१०, गउड़ी, मः १)
तिस कउ वाहु वाहु जि सबदु सुणावै ॥ (२२६-११, गउड़ी, मः १)
तिस कउ वाहु वाहु जि मेलि मिलावै ॥६॥ (२२६-११, गउड़ी, मः १)

वाहु वाहु तिस कउ जिस का इहु जीउ ॥ (२२६-११, गउड़ी, मः १)
गुर सबदी मथि अमृतु पीउ ॥ (२२६-१२, गउड़ी, मः १)
नाम वडाई तुधु भाणै दीउ ॥७॥ (२२६-१२, गउड़ी, मः १)
नाम बिना किउ जीवा माइ ॥ (२२६-१३, गउड़ी, मः १)
अनदिनु जपतु रहउ तेरी सरणाइ ॥ (२२६-१३, गउड़ी, मः १)
नानक नामि रते पति पाइ ॥८॥१२॥ (२२६-१३, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२६-१४)
हउमै करत भेखी नही जानिआ ॥ (२२६-१४, गउड़ी, मः १)
गुरमुखि भगति विरले मनु मानिआ ॥१॥ (२२६-१४, गउड़ी, मः १)
हउ हउ करत नही सचु पाईऐ ॥ (२२६-१५, गउड़ी, मः १)
हउमै जाइ परम पदु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२६-१५, गउड़ी, मः १)
हउमै करि राजे बहु धावहि ॥ (२२६-१५, गउड़ी, मः १)
हउमै खपहि जनमि मरि आवहि ॥२॥ (२२६-१६, गउड़ी, मः १)
हउमै निवरै गुर सबदु वीचारै ॥ (२२६-१६, गउड़ी, मः १)
चंचल मति तिआगै पंच संघारै ॥३॥ (२२६-१६, गउड़ी, मः १)
अंतरि साचु सहज घरि आवहि ॥ (२२६-१७, गउड़ी, मः १)
राजनु जाणि परम गति पावहि ॥४॥ (२२६-१७, गउड़ी, मः १)
सचु करणी गुरु भरमु चुकावै ॥ (२२६-१८, गउड़ी, मः १)
निरभउ कै घरि ताड़ी लावै ॥५॥ (२२६-१८, गउड़ी, मः १)
हउ हउ करि मरणा किआ पावै ॥ (२२६-१८, गउड़ी, मः १)
पूरा गुरु भेटे सो झगरु चुकावै ॥६॥ (२२६-१९, गउड़ी, मः १)
जेती है तेती किहु नाही ॥ (२२६-१९, गउड़ी, मः १)
गुरमुखि गिआन भेटि गुण गाही ॥७॥ (२२६-१९, गउड़ी, मः १)

पन्ना २२७

हउमै बंधन बंधि भवावै ॥ (२२७-१, गउड़ी, मः १)
नानक राम भगति सुखु पावै ॥८॥१३॥ (२२७-१, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२७-१)
प्रथमे ब्रह्मा कालै घरि आइआ ॥ (२२७-२, गउड़ी, मः १)
ब्रह्म कमलु पइआलि न पाइआ ॥ (२२७-२, गउड़ी, मः १)
आगिआ नही लीनी भरमि भुलाइआ ॥१॥ (२२७-२, गउड़ी, मः १)
जो उपजै सो कालि संघारिआ ॥ (२२७-३, गउड़ी, मः १)
हम हरि राखे गुर सबदु बीचारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२७-३, गउड़ी, मः १)
माइआ मोहे देवी सभि देवा ॥ (२२७-४, गउड़ी, मः १)
कालु न छोडै बिनु गुर की सेवा ॥ (२२७-४, गउड़ी, मः १)

ओहु अबिनासी अलख अभेवा ॥२॥ (२२७-४, गउड़ी, मः १)
सुलतान खान बादिसाह नही रहना ॥ (२२७-५, गउड़ी, मः १)
नामहु भूलै जम का दुखु सहना ॥ (२२७-५, गउड़ी, मः १)
मै धर नामु जिउ राखहु रहना ॥३॥ (२२७-५, गउड़ी, मः १)
चउधरी राजे नही किसै मुकामु ॥ (२२७-६, गउड़ी, मः १)
साह मरहि संचहि माइआ दाम ॥ (२२७-६, गउड़ी, मः १)
मै धनु दीजै हरि अमृत नामु ॥४॥ (२२७-६, गउड़ी, मः १)
रयति महर मुकदम सिकदारै ॥ (२२७-७, गउड़ी, मः १)
निहचलु कोइ न दिसै संसारै ॥ (२२७-७, गउड़ी, मः १)
अफरिउ कालु कूड़ु सिरि मारै ॥५॥ (२२७-७, गउड़ी, मः १)
निहचलु एकु सचा सचु सोई ॥ (२२७-८, गउड़ी, मः १)
जिनि करि साजी तिनहि सभ गोई ॥ (२२७-८, गउड़ी, मः १)
ओहु गुरमुखि जापै ताँ पति होई ॥६॥ (२२७-८, गउड़ी, मः १)
काजी सेख भेख फकीरा ॥ (२२७-९, गउड़ी, मः १)
वडे कहावहि हउमै तनि पीरा ॥ (२२७-९, गउड़ी, मः १)
कालु न छोडै बिनु सतिगुर की धीरा ॥७॥ (२२७-९, गउड़ी, मः १)
कालु जालु जिहवा अरु नैणी ॥ (२२७-१०, गउड़ी, मः १)
कानी कालु सुणै बिखु बैणी ॥ (२२७-१०, गउड़ी, मः १)
बिनु सबदै मूठे दिनु रैणी ॥८॥ (२२७-१०, गउड़ी, मः १)
हिरदै साचु वसै हरि नाइ ॥ (२२७-११, गउड़ी, मः १)
कालु न जोहि सकै गुण गाइ ॥ (२२७-११, गउड़ी, मः १)
नानक गुरमुखि सबदि समाइ ॥९॥१४॥ (२२७-११, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२७-१२)
बोलहि साचु मिथिआ नही राई ॥ (२२७-१२, गउड़ी, मः १)
चालहि गुरमुखि हुकमि रजाई ॥ (२२७-१२, गउड़ी, मः १)
रहहि अतीत सचे सरणाई ॥१॥ (२२७-१२, गउड़ी, मः १)
सच घरि बैसै कालु न जोहै ॥ (२२७-१३, गउड़ी, मः १)
मनमुख कउ आवत जावत दुखु मोहै ॥१॥ रहाउ ॥ (२२७-१३, गउड़ी, मः १)
अपिउ पीअउ अकथु कथि रहीऐ ॥ (२२७-१४, गउड़ी, मः १)
निज घरि बैसि सहज घरु लहीऐ ॥ (२२७-१४, गउड़ी, मः १)
हरि रसि माते इहु सुखु कहीऐ ॥२॥ (२२७-१४, गउड़ी, मः १)
गुरमति चाल निहचल नही डोलै ॥ (२२७-१५, गउड़ी, मः १)
गुरमति साचि सहजि हरि बोलै ॥ (२२७-१५, गउड़ी, मः १)
पीवै अमृतु ततु विरोलै ॥३॥ (२२७-१५, गउड़ी, मः १)
सतिगुरु देखिआ दीखिआ लीनी ॥ (२२७-१६, गउड़ी, मः १)

मनु तनु अरपिओ अंतर गति कीनी ॥ (२२७-१६, गउड़ी, मः १)
गति मिति पाई आतमु चीनी ॥४॥ (२२७-१६, गउड़ी, मः १)
भोजनु नामु निरंजन सारु ॥ (२२७-१७, गउड़ी, मः १)
पर्म हंसु सचु जोति अपार ॥ (२२७-१७, गउड़ी, मः १)
जह देखउ तह एकंकारु ॥५॥ (२२७-१७, गउड़ी, मः १)
रहै निरालमु एका सचु करणी ॥ (२२७-१८, गउड़ी, मः १)
पर्म पदु पाइआ सेवा गुर चरणी ॥ (२२७-१८, गउड़ी, मः १)
मन ते मनु मानिआ चूकी अहं भ्रमणी ॥६॥ (२२७-१८, गउड़ी, मः १)
इन बिधि कउणु कउणु नही तारिआ ॥ (२२७-१९, गउड़ी, मः १)
हरि जसि संत भगत निसतारिआ ॥ (२२७-१९, गउड़ी, मः १)

पन्ना २२८

प्रभ पाए हम अवरु न भारिआ ॥७॥ (२२८-१, गउड़ी, मः १)
साच महलि गुरि अलखु लखाइआ ॥ (२२८-१, गउड़ी, मः १)
निहचल महलु नही छाइआ माइआ ॥ (२२८-१, गउड़ी, मः १)
साचि संतोखे भरमु चुकाइआ ॥८॥ (२२८-२, गउड़ी, मः १)
जिन कै मनि वसिआ सचु सोई ॥ (२२८-२, गउड़ी, मः १)
तिन की संगति गुरमुखि होई ॥ (२२८-३, गउड़ी, मः १)
नानक साचि नामि मलु खोई ॥९॥१५॥ (२२८-३, गउड़ी, मः १)
गउड़ी महला १ ॥ (२२८-३)
रामि नामि चितु रापै जा का ॥ (२२८-३, गउड़ी, मः १)
उपजंपि दरसनु कीजै ता का ॥१॥ (२२८-४, गउड़ी, मः १)
राम न जपहु अभागु तुमारा ॥ (२२८-४, गउड़ी, मः १)
जुगि जुगि दाता प्रभु रामु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (२२८-४, गउड़ी, मः १)
गुरमति रामु जपै जनु पूरा ॥ (२२८-५, गउड़ी, मः १)
तितु घट अनहत बाजे तूरा ॥२॥ (२२८-५, गउड़ी, मः १)
जो जन राम भगति हरि पिआरि ॥ (२२८-५, गउड़ी, मः १)
से प्रभि राखे किरपा धारि ॥३॥ (२२८-६, गउड़ी, मः १)
जिन कै हिरदै हरि हरि सोई ॥ (२२८-६, गउड़ी, मः १)
तिन का दरसु परसि सुखु होई ॥४॥ (२२८-६, गउड़ी, मः १)
सर्ब जीआ महि एको रवै ॥ (२२८-७, गउड़ी, मः १)
मनमुखि अहंकारी फिरि जूनी भवै ॥५॥ (२२८-७, गउड़ी, मः १)
सो बूझै जो सतिगुरु पाए ॥ (२२८-७, गउड़ी, मः १)
हउमै मारे गुर सबदे पाए ॥६॥ (२२८-८, गउड़ी, मः १)
अर्ध उरध की संधि किउ जानै ॥ (२२८-८, गउड़ी, मः १)

गुरमुखि संधि मिलै मनु मानै ॥७॥ (२२८-८, गउड़ी, मः १)
हम पापी निरगुण कउ गुणु करीऐ ॥ (२२८-९, गउड़ी, मः १)
प्रभ होइ दइआलु नानक जन तरीऐ ॥८॥१६॥ (२२८-९, गउड़ी, मः १)
सोलह असटपदीआ गुआरेरी गउड़ी कीआ ॥ (२२८-१०, गउड़ी, मः १)
गउड़ी बैरागणि महला १ (२२८-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२२८-११)
जिउ गाई कउ गोइली राखहि करि सारा ॥ (२२८-१२, गउड़ी बैरागणि, मः १)
अहिनिसि पालहि राखि लेहि आतम सुखु धारा ॥१॥ (२२८-१२, गउड़ी बैरागणि, मः १)
इत उत राखहु दीन दइआला ॥ (२२८-१३, गउड़ी बैरागणि, मः १)
तउ सरणागति नदरि निहाला ॥१॥ रहाउ ॥ (२२८-१३, गउड़ी बैरागणि, मः १)
जह देखउ तह रवि रहे रखु राखनहारा ॥ (२२८-१३, गउड़ी बैरागणि, मः १)
तूं दाता भुगता तूंहै तूं प्राण अधारा ॥२॥ (२२८-१४, गउड़ी बैरागणि, मः १)
किरतु पइआ अध ऊरधी बिनु गिआन बीचारा ॥ (२२८-१४, गउड़ी बैरागणि, मः १)
बिनु उपमा जगदीस की बिनसै न अंधिआरा ॥३॥ (२२८-१५, गउड़ी बैरागणि, मः १)
जगु बिनसत हम देखिआ लोभे अहंकारा ॥ (२२८-१५, गउड़ी बैरागणि, मः १)
गुर सेवा प्रभु पाइआ सचु मुकति दुआरा ॥४॥ (२२८-१६, गउड़ी बैरागणि, मः १)
निज घरि महलु अपार को अपरम्परु सोई ॥ (२२८-१६, गउड़ी बैरागणि, मः १)
बिनु सबदै थिरु को नही बूझै सुखु होई ॥५॥ (२२८-१७, गउड़ी बैरागणि, मः १)
किआ लै आइआ ले जाइ किआ फासहि जम जाला ॥ (२२८-१७, गउड़ी बैरागणि, मः १)
डोलु बधा कसि जेवरी आकासि पताला ॥६॥ (२२८-१८, गउड़ी बैरागणि, मः १)
गुरमति नामु न वीसरै सहजे पति पाईऐ ॥ (२२८-१८, गउड़ी बैरागणि, मः १)
अंतरि सबदु निधानु है मिलि आपु गवाईऐ ॥७॥ (२२८-१८, गउड़ी बैरागणि, मः १)
नदरि करे प्रभु आपणी गुण अंकि समावै ॥ (२२८-१९, गउड़ी बैरागणि, मः १)
नानक मेलु न चूकई लाहा सचु पावै ॥८॥१॥१७॥ (२२८-१९, गउड़ी बैरागणि, मः १)

पन्ना २२९

गउड़ी महला १ ॥ (२२९-१)
गुर परसादी बूझि ले तउ होइ निबेरा ॥ (२२९-१, गउड़ी, मः १)
घरि घरि नामु निरंजना सो ठाकुरु मेरा ॥१॥ (२२९-२, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर सबद न छूटीऐ देखहु वीचारा ॥ (२२९-२, गउड़ी, मः १)
जे लख कर्म कमावही बिनु गुर अंधिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (२२९-२, गउड़ी, मः १)
अंधे अकली बाहरे किआ तिन सिउ कहीऐ ॥ (२२९-३, गउड़ी, मः १)
बिनु गुर पंथु न सूझई कितु बिधि निरबहीऐ ॥२॥ (२२९-३, गउड़ी, मः १)
खोटे कउ खरा कहै खरे सार न जाणै ॥ (२२९-४, गउड़ी, मः १)
अंधे का नाउ पारखू कली काल विडाणै ॥३॥ (२२९-४, गउड़ी, मः १)

सूते कउ जागतु कहै जागत कउ सूता ॥ (२२६-५, गउड़ी, मः १)
जीवत कउ मूआ कहै मूए नही रोता ॥४॥ (२२६-५, गउड़ी, मः १)
आवत कउ जाता कहै जाते कउ आइआ ॥ (२२६-६, गउड़ी, मः १)
पर की कउ अपुनी कहै अपुनो नही भाइआ ॥५॥ (२२६-६, गउड़ी, मः १)
मीठे कउ कउड़ा कहै कड़ूए कउ मीठा ॥ (२२६-७, गउड़ी, मः १)
राते की निंदा करहि ऐसा कलि महि डीठा ॥६॥ (२२६-७, गउड़ी, मः १)
चेरी की सेवा करहि ठाकुरु नही दीसै ॥ (२२६-७, गउड़ी, मः १)
पोखरु नीरु विरोलीऐ माखनु नही रीसै ॥७॥ (२२६-८, गउड़ी, मः १)
इसु पद जो अरथाइ लेइ सो गुरू हमारा ॥ (२२६-८, गउड़ी, मः १)
नानक चीनै आप कउ सो अपर अपारा ॥८॥ (२२६-९, गउड़ी, मः १)
सभु आपे आपि वरतदा आपे भरमाइआ ॥ (२२६-९, गउड़ी, मः १)
गुर किरपा ते बूझीऐ सभु ब्रह्मु समाइआ ॥९॥२॥१८॥ (२२६-१०, गउड़ी, मः १)
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ३ असटपदीआ (२२६-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२२६-११)
मन का सूतकु दूजा भाउ ॥ (२२६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
भरमे भूले आवउ जाउ ॥१॥ (२२६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मनमुखि सूतकु कबहि न जाइ ॥ (२२६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जिचरु सबदि न भीजै हरि कै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२२६-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सभो सूतकु जेता मोहु आकारु ॥ (२२६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मरि मरि जम्मै वारो वार ॥२॥ (२२६-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सूतकु अगनि पउणै पाणी माहि ॥ (२२६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सूतकु भोजनु जेता किछु खाहि ॥३॥ (२२६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सूतकि कर्म न पूजा होइ ॥ (२२६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नामि रते मनु निरमलु होइ ॥४॥ (२२६-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सतिगुरु सेविऐ सूतकु जाइ ॥ (२२६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
मरै न जनमै कालु न खाइ ॥५॥ (२२६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
सासत सिम्मृति सोधि देखहु कोइ ॥ (२२६-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
विणु नावै को मुकति न होइ ॥६॥ (२२६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
जुग चारे नामु उतमु सबदु बीचारि ॥ (२२६-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
कलि महि गुरमुखि उतरसि पारि ॥७॥ (२२६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
साचा मरै न आवै जाइ ॥ (२२६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
नानक गुरमुखि रहै समाइ ॥८॥१॥ (२२६-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२२६-१८)
गुरमुखि सेवा प्रान अधारा ॥ (२२६-१८, गउड़ी, मः ३)
हरि जीउ राखहु हिरदै उर धारा ॥ (२२६-१८, गउड़ी, मः ३)

गुरमुखि सोभा साच दुआरा ॥१॥ (२२९-१९, गउड़ी, मः ३)
पंडित हरि पड़ु तजहु विकारा ॥ (२२९-१९, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि भउजलु उतरहु पारा ॥१॥ रहाउ ॥ (२२९-१९, गउड़ी, मः ३)

गुरमुखि विचहु हउमै जाइ ॥ (२३०-१, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि मैलु न लागै आइ ॥ (२३०-१, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥२॥ (२३०-१, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि कर्म धर्म सचि होई ॥ (२३०-२, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि अहंकारु जलाए दोई ॥ (२३०-२, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि नामि रते सुखु होई ॥३॥ (२३०-२, गउड़ी, मः ३)
आपणा मनु परबोधहु बूझहु सोई ॥ (२३०-३, गउड़ी, मः ३)
लोक समझावहु सुणे न कोई ॥ (२३०-३, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि समझहु सदा सुखु होई ॥४॥ (२३०-३, गउड़ी, मः ३)
मनमुखि डम्फु बहुतु चतुराई ॥ (२३०-४, गउड़ी, मः ३)
जो किछु कमावै सु थाइ न पाई ॥ (२३०-४, गउड़ी, मः ३)
आवै जावै ठउर न काई ॥५॥ (२३०-४, गउड़ी, मः ३)
मनमुख कर्म करे बहुतु अभिमाना ॥ (२३०-५, गउड़ी, मः ३)
बग जिउ लाइ बहै नित धिआना ॥ (२३०-५, गउड़ी, मः ३)
जमि पकड़िआ तब ही पछुताना ॥६॥ (२३०-५, गउड़ी, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ (२३०-६, गउड़ी, मः ३)
गुर परसादी मिलै हरि सोई ॥ (२३०-६, गउड़ी, मः ३)
गुरु दाता जुग चारे होई ॥७॥ (२३०-६, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि जाति पति नामे वडिआई ॥ (२३०-७, गउड़ी, मः ३)
साइर की पुत्री बिदारि गवाई ॥ (२३०-७, गउड़ी, मः ३)
नानक बिनु नावै झूठी चतुराई ॥८॥२॥ (२३०-७, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी मः ३ ॥ (२३०-८)
इसु जुग का धरमु पड़हु तुम भाई ॥ (२३०-८, गउड़ी, मः ३)
पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ (२३०-८, गउड़ी, मः ३)
ऐथै अगै हरि नामु सखाई ॥१॥ (२३०-९, गउड़ी, मः ३)
राम पड़हु मनि करहु बीचारु ॥ (२३०-९, गउड़ी, मः ३)
गुर परसादी मैलु उतारु ॥१॥ रहाउ ॥ (२३०-९, गउड़ी, मः ३)
वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥ (२३०-१०, गउड़ी, मः ३)
मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥ (२३०-१०, गउड़ी, मः ३)
गुर कै सबदि सचि लिव लाइ ॥२॥ (२३०-१०, गउड़ी, मः ३)

हउमै मैला इहु संसारा ॥ (२३०-११, गउड़ी, मः ३)
नित तीरथि नावै न जाइ अहंकारा ॥ (२३०-११, गउड़ी, मः ३)
बिनु गुर भेटे जमु करे खुआरा ॥३॥ (२३०-११, गउड़ी, मः ३)
सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥ (२३०-१२, गउड़ी, मः ३)
गुर कै सबदि पंच संघारै ॥ (२३०-१२, गउड़ी, मः ३)
आपि तरै सगले कुल तारै ॥४॥ (२३०-१२, गउड़ी, मः ३)
माइआ मोहि नटि बाजी पाई ॥ (२३०-१३, गउड़ी, मः ३)
मनमुख अंध रहे लपटाई ॥ (२३०-१३, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि अलिपत रहे लिव लाई ॥५॥ (२३०-१३, गउड़ी, मः ३)
बहुते भेख करै भेखधारी ॥ (२३०-१४, गउड़ी, मः ३)
अंतरि तिसना फिरै अहंकारी ॥ (२३०-१४, गउड़ी, मः ३)
आपु न चीनै बाजी हारी ॥६॥ (२३०-१४, गउड़ी, मः ३)
कापड़ पहिरि करे चतुराई ॥ (२३०-१५, गउड़ी, मः ३)
माइआ मोहि अति भरमि भुलाई ॥ (२३०-१५, गउड़ी, मः ३)
बिनु गुर सेवे बहुतु दुखु पाई ॥७॥ (२३०-१५, गउड़ी, मः ३)
नामि रते सदा बैरागी ॥ (२३०-१६, गउड़ी, मः ३)
गृही अंतरि साचि लिव लागी ॥ (२३०-१६, गउड़ी, मः ३)
नानक सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥८॥३॥ (२३०-१६, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२३०-१७)
ब्रह्मा मूलु वेद अभिआसा ॥ (२३०-१७, गउड़ी, मः ३)
तिस ते उपजे देव मोह पिआसा ॥ (२३०-१७, गउड़ी, मः ३)
त्रै गुण भरमे नाही निज घरि वासा ॥१॥ (२३०-१८, गउड़ी, मः ३)
हम हरि राखे सतिगुरू मिलाइआ ॥ (२३०-१८, गउड़ी, मः ३)
अनदिनु भगति हरि नामु दृड़ाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२३०-१६, गउड़ी, मः ३)
त्रै गुण बाणी ब्रह्म जंजाला ॥ (२३०-१६, गउड़ी, मः ३)
पड़ि वादु वखाणहि सिरि मारे जमकाला ॥ (२३०-१६, गउड़ी, मः ३)

पन्ना २३१

ततु न चीनहि बन्नहि पंड पराला ॥२॥ (२३१-१, गउड़ी, मः ३)
मनमुख अगिआनि कुमारगि पाए ॥ (२३१-१, गउड़ी, मः ३)
हरि नामु बिसारिआ बहु कर्म दृड़ाए ॥ (२३१-२, गउड़ी, मः ३)
भवजलि डूबे दूजै भाए ॥३॥ (२३१-२, गउड़ी, मः ३)
माइआ का मुहताजु पंडितु कहावै ॥ (२३१-२, गउड़ी, मः ३)
बिखिआ राता बहुतु दुखु पावै ॥ (२३१-३, गउड़ी, मः ३)
जम का गलि जेवड़ा नित कालु संतावै ॥४॥ (२३१-३, गउड़ी, मः ३)

गुरमुखि जमकालु नेड़ि न आवै ॥ (२३१-३, गउड़ी, मः ३)
हउमै दूजा सबदि जलावै ॥ (२३१-४, गउड़ी, मः ३)
नामे राते हरि गुण गावै ॥५॥ (२३१-४, गउड़ी, मः ३)
माइआ दासी भगता की कार कमावै ॥ (२३१-४, गउड़ी, मः ३)
चरणी लागै ता महलु पावै ॥ (२३१-५, गउड़ी, मः ३)
सद ही निरमलु सहजि समावै ॥६॥ (२३१-५, गउड़ी, मः ३)
हरि कथा सुणहि से धनवंत दिसहि जुग माही ॥ (२३१-५, गउड़ी, मः ३)
तिन कउ सभि निवहि अनदिनु पूज कराही ॥ (२३१-६, गउड़ी, मः ३)
सहजे गुण रवहि साचे मन माही ॥७॥ (२३१-६, गउड़ी, मः ३)
पूरै सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (२३१-७, गउड़ी, मः ३)
त्रै गुण मेटे चउथै चितु लाइआ ॥ (२३१-७, गउड़ी, मः ३)
नानक हउमै मारि ब्रह्म मिलाइआ ॥८॥४॥ (२३१-७, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२३१-८)
ब्रह्मा वेदु पड़ै वादु वखाणै ॥ (२३१-८, गउड़ी, मः ३)
अंतरि तामसु आपु न पछाणै ॥ (२३१-८, गउड़ी, मः ३)
ता प्रभु पाए गुर सबदु वखाणै ॥१॥ (२३१-९, गउड़ी, मः ३)
गुर सेवा करउ फिरि कालु न खाइ ॥ (२३१-९, गउड़ी, मः ३)
मनमुख खाधे दूजै भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२३१-९, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि प्राणी अपराधी सीधे ॥ (२३१-१०, गउड़ी, मः ३)
गुर कै सबदि अंतरि सहजि रीधे ॥ (२३१-१०, गउड़ी, मः ३)
मेरा प्रभु पाइआ गुर कै सबदि सीधे ॥२॥ (२३१-१०, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरि मेले प्रभि आपि मिलाए ॥ (२३१-११, गउड़ी, मः ३)
मेरे प्रभ साचे कै मनि भाए ॥ (२३१-११, गउड़ी, मः ३)
हरि गुण गावहि सहजि सुभाए ॥३॥ (२३१-१२, गउड़ी, मः ३)
बिनु गुर साचे भरमि भुलाए ॥ (२३१-१२, गउड़ी, मः ३)
मनमुख अंधे सदा बिखु खाए ॥ (२३१-१२, गउड़ी, मः ३)
जम डंडु सहहि सदा दुखु पाए ॥४॥ (२३१-१३, गउड़ी, मः ३)
जमूआ न जोहै हरि की सरणाई ॥ (२३१-१३, गउड़ी, मः ३)
हउमै मारि सचि लिव लाई ॥ (२३१-१३, गउड़ी, मः ३)
सदा रहै हरि नामि लिव लाई ॥५॥ (२३१-१४, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरु सेवहि से जन निर्मल पविता ॥ (२३१-१४, गउड़ी, मः ३)
मन सिउ मनु मिलाइ सभु जगु जीता ॥ (२३१-१४, गउड़ी, मः ३)
इन बिधि कुसलु तेरै मेरे मीता ॥६॥ (२३१-१५, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरू सेवे सो फलु पाए ॥ (२३१-१५, गउड़ी, मः ३)
हिरदै नामु विचहु आपु गवाए ॥ (२३१-१५, गउड़ी, मः ३)

अनहद बाणी सबदु वजाए ॥७॥ (२३१-१६, गउड़ी, मः ३)
सतिगुर ते कवनु कवनु न सीधो मेरे भाई ॥ (२३१-१६, गउड़ी, मः ३)
भगती सीधे दरि सोभा पाई ॥ (२३१-१७, गउड़ी, मः ३)
नानक राम नामि वडिआई ॥८॥५॥ (२३१-१७, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२३१-१७)
त्रै गुण वखाणै भरमु न जाइ ॥ (२३१-१७, गउड़ी, मः ३)
बंधन न तूटहि मुकति न पाइ ॥ (२३१-१८, गउड़ी, मः ३)
मुकति दाता सतिगुरु जुग माहि ॥१॥ (२३१-१८, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि प्राणी भरमु गवाइ ॥ (२३१-१९, गउड़ी, मः ३)
सहज धुनि उपजै हरि लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२३१-१९, गउड़ी, मः ३)
त्रै गुण कालै की सिरि कारा ॥ (२३१-१९, गउड़ी, मः ३)

पन्ना २३२

नामु न चेतहि उपावणहारा ॥ (२३२-१, गउड़ी, मः ३)
मरि जम्महि फिरि वारो वारा ॥२॥ (२३२-१, गउड़ी, मः ३)
अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥ (२३२-१, गउड़ी, मः ३)
मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥ (२३२-२, गउड़ी, मः ३)
बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥३॥ (२३२-२, गउड़ी, मः ३)
माइआ करि मूलु जंत्र भरमाए ॥ (२३२-२, गउड़ी, मः ३)
हरि जीउ विसरिआ दूजै भाए ॥ (२३२-३, गउड़ी, मः ३)
जिसु नदरि करे सो पर्म गति पाए ॥४॥ (२३२-३, गउड़ी, मः ३)
अंतरि साचु बाहरि साचु वरताए ॥ (२३२-३, गउड़ी, मः ३)
साचु न छपै जे को रखै छपाए ॥ (२३२-४, गउड़ी, मः ३)
गिआनी बूझहि सहजि सुभाए ॥५॥ (२३२-४, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि साचि रहिआ लिव लाए ॥ (२३२-४, गउड़ी, मः ३)
हउमै माइआ सबदि जलाए ॥ (२३२-५, गउड़ी, मः ३)
मेरा प्रभु साचा मेलि मिलाए ॥६॥ (२३२-५, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरु दाता सबदु सुणाए ॥ (२३२-५, गउड़ी, मः ३)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (२३२-६, गउड़ी, मः ३)
पूरे गुर ते सोझी पाए ॥७॥ (२३२-६, गउड़ी, मः ३)
आपे करता सृसटि सिरजि जिनि गोई ॥ (२३२-६, गउड़ी, मः ३)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (२३२-७, गउड़ी, मः ३)
नानक गुरमुखि बूझै कोई ॥८॥६॥ (२३२-७, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२३२-७)
नामु अमोलकु गुरमुखि पावै ॥ (२३२-८, गउड़ी, मः ३)

नामो सेवे नामि सहजि समावै ॥ (२३२-८, गउड़ी, मः ३)
अमृतु नामु रसना नित गावै ॥ (२३२-८, गउड़ी, मः ३)
जिस नो कृपा करे सो हरि रसु पावै ॥१॥ (२३२-८, गउड़ी, मः ३)
अनदिनु हिरदै जपउ जगदीसा ॥ (२३२-९, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि पावउ पर्म पदु सूखा ॥१॥ रहाउ ॥ (२३२-९, गउड़ी, मः ३)
हिरदै सूखु भइआ परगासु ॥ (२३२-१०, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि गावहि सचु गुणतासु ॥ (२३२-१०, गउड़ी, मः ३)
दासनि दास नित होवहि दासु ॥ (२३२-१०, गउड़ी, मः ३)
गृह कुटम्ब महि सदा उदासु ॥२॥ (२३२-११, गउड़ी, मः ३)
जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥ (२३२-११, गउड़ी, मः ३)
पर्म पदारथु पावै सोई ॥ (२३२-११, गउड़ी, मः ३)
त्रै गुण मेटे निरमलु होई ॥ (२३२-१२, गउड़ी, मः ३)
सहजे साचि मिलै प्रभु सोई ॥३॥ (२३२-१२, गउड़ी, मः ३)
मोह कुटम्ब सिउ प्रीति न होइ ॥ (२३२-१२, गउड़ी, मः ३)
जा हिरदै वसिआ सचु सोइ ॥ (२३२-१३, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि मनु बेधिआ असथिरु होइ ॥ (२३२-१३, गउड़ी, मः ३)
हुकमु पछाणै बूझै सचु सोइ ॥४॥ (२३२-१३, गउड़ी, मः ३)
तूं करता मै अवरु न कोइ ॥ (२३२-१४, गउड़ी, मः ३)
तुझु सेवी तुझ ते पति होइ ॥ (२३२-१४, गउड़ी, मः ३)
किरपा करहि गावा प्रभु सोइ ॥ (२३२-१४, गउड़ी, मः ३)
नाम रतनु सभ जग महि लोइ ॥५॥ (२३२-१५, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि बाणी मीठी लागी ॥ (२३२-१५, गउड़ी, मः ३)
अंतरु बिगसै अनदिनु लिव लागी ॥ (२३२-१५, गउड़ी, मः ३)
सहजे सचु मिलिआ परसादी ॥ (२३२-१६, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरु पाइआ पूरै वडभागी ॥६॥ (२३२-१६, गउड़ी, मः ३)
हउमै ममता दुरमति दुख नासु ॥ (२३२-१६, गउड़ी, मः ३)
जब हिरदै राम नाम गुणतासु ॥ (२३२-१७, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि बुधि प्रगटी प्रभ जासु ॥ (२३२-१७, गउड़ी, मः ३)
जब हिरदै रविआ चरण निवासु ॥७॥ (२३२-१७, गउड़ी, मः ३)
जिसु नामु देइ सोई जनु पाए ॥ (२३२-१८, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि मेले आपु गवाए ॥ (२३२-१८, गउड़ी, मः ३)
हिरदै साचा नामु वसाए ॥ (२३२-१८, गउड़ी, मः ३)
नानक सहजे साचि समाए ॥८॥७॥ (२३२-१९, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२३२-१९)
मन ही मनु सवारिआ भै सहजि सुभाइ ॥ (२३२-१९, गउड़ी, मः ३)

सबदि मनु रंगिआ लिव लाइ ॥ (२३३-१, गउड़ी, मः ३)
निज घरि वसिआ प्रभ की रजाइ ॥१॥ (२३३-१, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरु सेविऐ जाइ अभिमानु ॥ (२३३-१, गउड़ी, मः ३)
गोविदु पाईऐ गुणी निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (२३३-२, गउड़ी, मः ३)
मनु बैरागी जा सबदि भउ खाइ ॥ (२३३-२, गउड़ी, मः ३)
मेरा प्रभु निरमला सभ तै रहिआ समाइ ॥ (२३३-२, गउड़ी, मः ३)
गुर किरपा ते मिलै मिलाइ ॥२॥ (२३३-३, गउड़ी, मः ३)
हरि दासन को दासु सुखु पाए ॥ (२३३-३, गउड़ी, मः ३)
मेरा हरि प्रभु इन बिधि पाइआ जाए ॥ (२३३-४, गउड़ी, मः ३)
हरि किरपा ते राम गुण गाए ॥३॥ (२३३-४, गउड़ी, मः ३)
ध्रिगु बहु जीवणु जितु हरि नामि न लगै पिआरु ॥ (२३३-४, गउड़ी, मः ३)
ध्रिगु सेज सुखाली कामणि मोह गुबारु ॥ (२३३-५, गउड़ी, मः ३)
तिन सफलु जनमु जिन नामु अधारु ॥४॥ (२३३-५, गउड़ी, मः ३)
ध्रिगु ध्रिगु गृहु कुटम्बु जितु हरि प्रीति न होइ ॥ (२३३-६, गउड़ी, मः ३)
सोई हमारा मीतु जो हरि गुण गावै सोइ ॥ (२३३-६, गउड़ी, मः ३)
हरि नाम बिना मै अवरु न कोइ ॥५॥ (२३३-७, गउड़ी, मः ३)
सतिगुर ते हम गति पति पाई ॥ (२३३-७, गउड़ी, मः ३)
हरि नामु धिआइआ दूखु सगल मिटाई ॥ (२३३-७, गउड़ी, मः ३)
सदा अनंदु हरि नामि लिव लाई ॥६॥ (२३३-८, गउड़ी, मः ३)
गुरि मिलिऐ हम कउ सरीर सुधि भई ॥ (२३३-८, गउड़ी, मः ३)
हउमै तृसना सभ अगनि बुझाई ॥ (२३३-९, गउड़ी, मः ३)
बिनसे क्रोध खिमा गहि लई ॥७॥ (२३३-९, गउड़ी, मः ३)
हरि आपे कृपा करे नामु देवै ॥ (२३३-९, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि रतनु को विरला लेवै ॥ (२३३-१०, गउड़ी, मः ३)
नानकु गुण गावै हरि अलख अभेवै ॥८॥८॥ (२३३-१०, गउड़ी, मः ३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२३३-११)
रागु गउड़ी बैरागणि महला ३ ॥ (२३३-११)
सतिगुर ते जो मुह फेरे ते वेमुख बुरे दिसंनि ॥ (२३३-११, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
अनदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला ना लहंनि ॥१॥ (२३३-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि हरि राखहु कृपा धारि ॥ (२३३-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सतसंगति मेलाइ प्रभ हरि हिरदै हरि गुण सारि ॥१॥ रहाउ ॥ (२३३-१२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
से भगत हरि भावदे जो गुरमुखि भाइ चलंनि ॥ (२३३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
आपु छोडि सेवा करनि जीवत मुए रहंनि ॥२॥ (२३३-१३, गउड़ी बैरागणि, मः ३)

जिस दा पिंडु पराण है तिस की सिरि कार ॥ (२३३-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
ओहु किउ मनहु विसारीऐ हरि रखीऐ हिरदै धारि ॥३॥ (२३३-१४, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
नामि मिलिऐ पति पाईऐ नामि मंनिऐ सुखु होइ ॥ (२३३-१५, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सतिगुर ते नामु पाईऐ करमि मिलै प्रभु सोइ ॥४॥ (२३३-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सतिगुर ते जो मुहु फेरे ओइ भ्रमदे ना टिकंनि ॥ (२३३-१६, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
धरति असमानु न झलई विचि विसटा पए पचंनि ॥५॥ (२३३-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
इहु जगु भरमि भुलाइआ मोह ठगउली पाइ ॥ (२३३-१७, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जिना सतिगुरु भेटिआ तिन नेड़ि न भिटै माइ ॥६॥ (२३३-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
सतिगुरु सेवनि सो सोहणे हउमै मैलु गवाइ ॥ (२३३-१८, गउड़ी बैरागणि, मः ३)

पन्ना २३४

सबदि रते से निरमले चलहि सतिगुर भाइ ॥७॥ (२३४-१, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
हरि प्रभ दाता एकु तूं तूं आपे बखसि मिलाइ ॥ (२३४-१, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
जनु नानकु सरणागती जिउ भावै तिवै छडाइ ॥८॥१॥९॥ (२३४-२, गउड़ी बैरागणि, मः ३)
रागु गउड़ी पूरबी महला ४ करहले (२३४-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२३४-३)
करहले मन परदेसीआ किउ मिलीऐ हरि माइ ॥ (२३४-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गुरु भागि पूरै पाइआ गलि मिलिआ पिआरा आइ ॥१॥ (२३४-४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला सतिगुरु पुरखु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२३४-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला वीचारीआ हरि राम नाम धिआइ ॥ (२३४-५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
जिथै लेखा मंगीऐ हरि आपे लए छडाइ ॥२॥ (२३४-६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला अति निरमला मलु लागी हउमै आइ ॥ (२३४-६, गउड़ी पूरबी, मः ४)
परतखि पिरु घरि नालि पिआरा विछुड़ि चोटा खाइ ॥३॥ (२३४-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला मेरे प्रीतमा हरि रिदै भालि भालाइ ॥ (२३४-७, गउड़ी पूरबी, मः ४)
उपाइ कितै न लभई गुरु हिरदै हरि देखाइ ॥४॥ (२३४-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला मेरे प्रीतमा दिनु रैणि हरि लिव लाइ ॥ (२३४-८, गउड़ी पूरबी, मः ४)
घरु जाइ पावहि रंग महली गुरु मेले हरि मेलाइ ॥५॥ (२३४-९, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला तूं मीतु मेरा पाखंडु लोभु तजाइ ॥ (२३४-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
पाखंडि लोभी मारीऐ जम डंडु देइ सजाइ ॥६॥ (२३४-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला मेरे प्रान तूं मैलु पाखंडु भरमु गवाइ ॥ (२३४-१०, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि अमृत सरु गुरि पूरिआ मिलि संगती मलु लहि जाइ ॥७॥ (२३४-११, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला मेरे पिआरिआ इक गुर की सिख सुणाइ ॥ (२३४-१२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
इहु मोहु माइआ पसरिआ अंति साथि न कोई जाइ ॥८॥ (२३४-१२, गउड़ी पूरबी, मः ४)
मन करहला मेरे साजना हरि खरचु लीआ पति पाइ ॥ (२३४-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)
हरि दरगह पैनाइआ हरि आपि लइआ गलि लाइ ॥९॥ (२३४-१३, गउड़ी पूरबी, मः ४)

मन करहला गुरि मंनिआ गुरमुखि कार कमाइ ॥ (२३४-१४, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गुर आगै करि जोदड़ी जन नानक हरि मेलाइ ॥१०॥१॥ (२३४-१५, गउड़ी पूरबी, मः ४)
गउड़ी महला ४ ॥ (२३४-१५)
मन करहला वीचारीआ वीचारि देखु समालि ॥ (२३४-१५, गउड़ी, मः ४)
बन फिरि थके बन वासीआ पिरु गुरमति रिदै निहालि ॥१॥ (२३४-१६, गउड़ी, मः ४)
मन करहला गुर गोविंदु समालि ॥१॥ रहाउ ॥ (२३४-१६, गउड़ी, मः ४)
मन करहला वीचारीआ मनमुख फाथिआ महा जालि ॥ (२३४-१७, गउड़ी, मः ४)
गुरमुखि प्राणी मुकतु है हरि हरि नामु समालि ॥२॥ (२३४-१८, गउड़ी, मः ४)
मन करहला मेरे पिआरिआ सतसंगति सतिगुरु भालि ॥ (२३४-१८, गउड़ी, मः ४)
सतसंगति लगि हरि धिआईऐ हरि हरि चलै तेरै नालि ॥३॥ (२३४-१९, गउड़ी, मः ४)
मन करहला वडभागीआ हरि एक नदरि निहालि ॥ (२३४-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना २३५

आपि छडाए छुटीऐ सतिगुर चरण समालि ॥४॥ (२३५-१, गउड़ी, मः ४)
मन करहला मेरे पिआरिआ विचि देही जोति समालि ॥ (२३५-१, गउड़ी, मः ४)
गुरि नउ निधि नामु विखालिआ हरि दाति करी दइआलि ॥५॥ (२३५-२, गउड़ी, मः ४)
मन करहला तूं चंचला चतुराई छडि विकरालि ॥ (२३५-३, गउड़ी, मः ४)
हरि हरि नामु समालि तूं हरि मुकति करे अंत कालि ॥६॥ (२३५-३, गउड़ी, मः ४)
मन करहला वडभागीआ तूं गिआनु रतनु समालि ॥ (२३५-४, गउड़ी, मः ४)
गुर गिआनु खड़गु हथि धारिआ जमु मारिअड़ा जमकालि ॥७॥ (२३५-४, गउड़ी, मः ४)
अंतरि निधानु मन करहले भ्रमि भवहि बाहरि भालि ॥ (२३५-५, गउड़ी, मः ४)
गुरु पुरखु पूरा भेटिआ हरि सजणु लधड़ा नालि ॥८॥ (२३५-५, गउड़ी, मः ४)
रंगि रतड़े मन करहले हरि रंगु सदा समालि ॥ (२३५-६, गउड़ी, मः ४)
हरि रंगु कदे न उतरै गुर सेवा सबदु समालि ॥९॥ (२३५-६, गउड़ी, मः ४)
हम पंखी मन करहले हरि तरवरु पुरखु अकालि ॥ (२३५-७, गउड़ी, मः ४)
वडभागी गुरमुखि पाइआ जन नानक नामु समालि ॥१०॥२॥ (२३५-७, गउड़ी, मः ४)
रागु गउड़ी गुआरेरी महला ५ असटपदीआ (२३५-९)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (२३५-९)
जब इहु मन महि करत गुमाना ॥ (२३५-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तब इहु बावरु फिरत बिगाना ॥ (२३५-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इहु हूआ सगल की रीना ॥ (२३५-१०, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता ते रमईआ घटि घटि चीना ॥१॥ (२३५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सहज सुहेला फलु मसकीनी ॥ (२३५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सतिगुर अपुनै मोहि दानु दीनी ॥१॥ रहाउ ॥ (२३५-११, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब किस कउ इहु जानसि मंदा ॥ (२३५-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

तब सगले इसु मेलहि फंदा ॥ (२३५-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मेर तेर जब इनहि चुकाई ॥ (२३५-१२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
ता ते इसु संगि नही बैराई ॥२॥ (२३५-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इनि अपुनी अपनी धारी ॥ (२३५-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तब इस कउ है मुसकलु भारी ॥ (२३५-१३, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इनि करणैहारु पछाता ॥ (२३५-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तब इस नो नाही किछु ताता ॥३॥ (२३५-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इनि अपुनो बाधिओ मोहा ॥ (२३५-१४, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आवै जाइ सदा जमि जोहा ॥ (२३५-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इस ते सभ बिनसे भरमा ॥ (२३५-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
भेदु नाही है पारब्रह्मा ॥४॥ (२३५-१५, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इनि किछु करि माने भेदा ॥ (२३५-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तब ते दूख डंड अरु खेदा ॥ (२३५-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इनि एको एकी बूझिआ ॥ (२३५-१६, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तब ते इस नो सभु किछु सूझिआ ॥५॥ (२३५-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इहु धावै माइआ अरथी ॥ (२३५-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
नह तृपतावै नह तिस लाथी ॥ (२३५-१७, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जब इस ते इहु होइओ जउला ॥ (२३५-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
पीछै लागि चली उठि कउला ॥६॥ (२३५-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
करि किरपा जउ सतिगुरु मिलिओ ॥ (२३५-१८, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
मन मंदर महि दीपकु जलिओ ॥ (२३५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
जीत हार की सोझी करी ॥ (२३५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
तउ इसु घर की कीमति परी ॥७॥ (२३५-१९, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)

पन्ना २३६

करन करावन सभु किछु एकै ॥ (२३६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
आपे बुधि बीचारि बिबेकै ॥ (२३६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
दूरि न नेरै सभ कै संगा ॥ (२३६-१, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
सचु सालाहणु नानक हरि रंगा ॥८॥१॥ (२३६-२, गउड़ी गुआरेरी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२३६-२)
गुर सेवा ते नामे लागा ॥ (२३६-२, गउड़ी, मः ५)
तिस कउ मिलिआ जिसु मसतकि भागा ॥ (२३६-२, गउड़ी, मः ५)
तिस कै हिरदै रविआ सोइ ॥ (२३६-३, गउड़ी, मः ५)
मनु तनु सीतलु निहचलु होइ ॥१॥ (२३६-३, गउड़ी, मः ५)
ऐसा कीरतनु करि मन मेरे ॥ (२३६-४, गउड़ी, मः ५)

ईहा ऊहा जो कामि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (२३६-४, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत भउ अपदा जाइ ॥ (२३६-४, गउड़ी, मः ५)
धावत मनूआ आवै ठाइ ॥ (२३६-५, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत फिरि दूखु न लागै ॥ (२३६-५, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत इह हउमै भागै ॥२॥ (२३६-५, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत वसि आवहि पंचा ॥ (२३६-५, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत रिदै अमृतु संचा ॥ (२३६-६, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत इह तृसना बुझै ॥ (२३६-६, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत हरि दरगह सिझै ॥३॥ (२३६-६, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत कोटि मिटहि अपराध ॥ (२३६-७, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत हरि होवहि साध ॥ (२३६-७, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत मनु सीतलु होवै ॥ (२३६-७, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत मलु सगली खोवै ॥४॥ (२३६-८, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत रतनु हरि मिलै ॥ (२३६-८, गउड़ी, मः ५)
बहुरि न छोडै हरि संगि हिलै ॥ (२३६-८, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत कई बैकुंठ वासु ॥ (२३६-९, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत सुख सहजि निवासु ॥५॥ (२३६-९, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत इह अगनि न पोहत ॥ (२३६-९, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत इहु कालु न जोहत ॥ (२३६-१०, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत तेरा निर्मल माथा ॥ (२३६-१०, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत सगला दुखु लाथा ॥६॥ (२३६-१०, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत मुसकलु कछू न बनै ॥ (२३६-११, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत सुणि अनहत धुनै ॥ (२३६-११, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत इह निर्मल सोइ ॥ (२३६-११, गउड़ी, मः ५)
जासु जपत कमलु सीधा होइ ॥७॥ (२३६-१२, गउड़ी, मः ५)
गुरि सुभ दृसटि सभ ऊपरि करी ॥ (२३६-१२, गउड़ी, मः ५)
जिस कै हिरदै मंत्रु दे हरी ॥ (२३६-१२, गउड़ी, मः ५)
अखंड कीरतनु तिनि भोजनु चूरा ॥ (२३६-१३, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥८॥२॥ (२३६-१३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२३६-१४)
गुर का सबदु रिद अंतरि धारै ॥ (२३६-१४, गउड़ी, मः ५)
पंच जना सिउ संगु निवारै ॥ (२३६-१४, गउड़ी, मः ५)
दस इंद्री करि राखै वासि ॥ (२३६-१४, गउड़ी, मः ५)
ता कै आतमै होइ परगासु ॥१॥ (२३६-१५, गउड़ी, मः ५)
ऐसी दृड़ता ता कै होइ ॥ (२३६-१५, गउड़ी, मः ५)

जा कउ दइआ मइआ प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (२३६-१५, गउड़ी, मः ५)
साजनु दुसटु जा कै एक समानै ॥ (२३६-१६, गउड़ी, मः ५)
जेता बोलणु तेता गिआनै ॥ (२३६-१६, गउड़ी, मः ५)
जेता सुनणा तेता नामु ॥ (२३६-१६, गउड़ी, मः ५)
जेता पेखनु तेता धिआनु ॥२॥ (२३६-१७, गउड़ी, मः ५)
सहजे जागणु सहजे सोइ ॥ (२३६-१७, गउड़ी, मः ५)
सहजे होता जाइ सु होइ ॥ (२३६-१७, गउड़ी, मः ५)
सहजि बैरागु सहजे ही हसना ॥ (२३६-१८, गउड़ी, मः ५)
सहजे चूप सहजे ही जपना ॥३॥ (२३६-१८, गउड़ी, मः ५)
सहजे भोजनु सहजे भाउ ॥ (२३६-१८, गउड़ी, मः ५)
सहजे मिटिओ सगल दुराउ ॥ (२३६-१८, गउड़ी, मः ५)
सहजे होआ साधू संगु ॥ (२३६-१९, गउड़ी, मः ५)
सहजि मिलिओ पारब्रह्मु निसंगु ॥४॥ (२३६-१९, गउड़ी, मः ५)
सहजे गृह महि सहजि उदासी ॥ (२३६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २३७

सहजे दुबिधा तन की नासी ॥ (२३७-१, गउड़ी, मः ५)
जा कै सहजि मनि भइआ अनंदु ॥ (२३७-१, गउड़ी, मः ५)
ता कउ भेटिआ परमानंदु ॥५॥ (२३७-१, गउड़ी, मः ५)
सहजे अमृतु पीओ नामु ॥ (२३७-२, गउड़ी, मः ५)
सहजे कीनो जीअ को दानु ॥ (२३७-२, गउड़ी, मः ५)
सहज कथा महि आतमु रसिआ ॥ (२३७-२, गउड़ी, मः ५)
ता कै संगि अबिनासी वसिआ ॥६॥ (२३७-३, गउड़ी, मः ५)
सहजे आसणु असथिरु भाइआ ॥ (२३७-३, गउड़ी, मः ५)
सहजे अनहत सबदु वजाइआ ॥ (२३७-३, गउड़ी, मः ५)
सहजे रुण झुणकारु सुहाइआ ॥ (२३७-४, गउड़ी, मः ५)
ता कै घरि पारब्रह्मु समाइआ ॥७॥ (२३७-४, गउड़ी, मः ५)
सहजे जा कउ परिओ करमा ॥ (२३७-४, गउड़ी, मः ५)
सहजे गुरु भेटिओ सचु धरमा ॥ (२३७-५, गउड़ी, मः ५)
जा कै सहजु भइआ सो जाणै ॥ (२३७-५, गउड़ी, मः ५)
नानक दास ता कै कुरबाणै ॥८॥३॥ (२३७-५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२३७-६)
प्रथमे गरभ वास ते टरिआ ॥ (२३७-६, गउड़ी, मः ५)
पुत्र कलत्र कुटम्ब संगि जुरिआ ॥ (२३७-६, गउड़ी, मः ५)
भोजनु अनिक प्रकार बहु कपरे ॥ (२३७-६, गउड़ी, मः ५)

सरपर गवनु करहिगे बपुरे ॥१॥ (२३७-७, गउड़ी, मः ५)
कवनु असथानु जो कबहु न टरै ॥ (२३७-७, गउड़ी, मः ५)
कवनु सबदु जितु दुरमति हरै ॥१॥ रहाउ ॥ (२३७-७, गउड़ी, मः ५)
इंद्र पुरी महि सरपर मरणा ॥ (२३७-८, गउड़ी, मः ५)
ब्रह्म पुरी निहचलु नही रहणा ॥ (२३७-८, गउड़ी, मः ५)
सिव पुरी का होइगा काला ॥ (२३७-९, गउड़ी, मः ५)
त्रै गुण माइआ बिनसि बिताला ॥२॥ (२३७-९, गउड़ी, मः ५)
गिरि तर धरणि गगन अरु तारे ॥ (२३७-९, गउड़ी, मः ५)
रवि ससि पवणु पावकु नीरारे ॥ (२३७-१०, गउड़ी, मः ५)
दिनसु रैणि बरत अरु भेदा ॥ (२३७-१०, गउड़ी, मः ५)
सासत सिम्मृति बिनसहिगे बेदा ॥३॥ (२३७-१०, गउड़ी, मः ५)
तीर्थ देव देहुरा पोथी ॥ (२३७-११, गउड़ी, मः ५)
माला तिलकु सोच पाक होती ॥ (२३७-११, गउड़ी, मः ५)
धोती डंडउति परसादन भोगा ॥ (२३७-११, गउड़ी, मः ५)
गवनु करैगो सगलो लोगा ॥४॥ (२३७-१२, गउड़ी, मः ५)
जाति वरन तुरक अरु हिंदू ॥ (२३७-१२, गउड़ी, मः ५)
पसु पंखी अनिक जोनि जिंदू ॥ (२३७-१२, गउड़ी, मः ५)
सगल पासारु दीसै पासारा ॥ (२३७-१२, गउड़ी, मः ५)
बिनसि जाइगो सगल आकारा ॥५॥ (२३७-१३, गउड़ी, मः ५)
सहज सिफति भगति ततु गिआना ॥ (२३७-१३, गउड़ी, मः ५)
सदा अनंदु निहचलु सचु थाना ॥ (२३७-१४, गउड़ी, मः ५)
तहा संगति साध गुण रसै ॥ (२३७-१४, गउड़ी, मः ५)
अनभउ नगरु तहा सद वसै ॥६॥ (२३७-१४, गउड़ी, मः ५)
तह भउ भरमा सोगु न चिंता ॥ (२३७-१५, गउड़ी, मः ५)
आवणु जावणु मिरतु न होता ॥ (२३७-१५, गउड़ी, मः ५)
तह सदा अनंद अनहत आखारे ॥ (२३७-१५, गउड़ी, मः ५)
भगत वसहि कीर्तन आधारे ॥७॥ (२३७-१६, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म का अंतु न पारु ॥ (२३७-१६, गउड़ी, मः ५)
कउणु करै ता का बीचारु ॥ (२३७-१६, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक जिसु किरपा करै ॥ (२३७-१६, गउड़ी, मः ५)
निहचल थानु साधसंगि तरै ॥८॥४॥ (२३७-१७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२३७-१७)
जो इसु मारे सोई सूरा ॥ (२३७-१७, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सोई पूरा ॥ (२३७-१८, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे तिसहि वडिआई ॥ (२३७-१८, गउड़ी, मः ५)

जो इसु मारे तिस का दुखु जाई ॥१॥ (२३७-१८, गउड़ी, मः ५)
ऐसा कोइ जि दुबिधा मारि गवावै ॥ (२३७-१६, गउड़ी, मः ५)
इसहि मारि राज जोगु कमावै ॥१॥ रहाउ ॥ (२३७-१६, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २३८

जो इसु मारे तिस कउ भउ नाहि ॥ (२३८-१, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सु नामि समाहि ॥ (२३८-१, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे तिस की तृसना बुझै ॥ (२३८-१, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सु दरगह सिझै ॥२॥ (२३८-२, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सो धनवंता ॥ (२३८-२, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सो पतिवंता ॥ (२३८-२, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सोई जती ॥ (२३८-२, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे तिसु होवै गती ॥३॥ (२३८-३, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे तिस का आइआ गनी ॥ (२३८-३, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सु निहचलु धनी ॥ (२३८-३, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सो वडभागा ॥ (२३८-४, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सु अनदिनु जागा ॥४॥ (२३८-४, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥ (२३८-४, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे तिस की निर्मल जुगता ॥ (२३८-५, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सोई सुगिआनी ॥ (२३८-५, गउड़ी, मः ५)
जो इसु मारे सु सहज धिआनी ॥५॥ (२३८-५, गउड़ी, मः ५)
इसु मारी बिनु थाइ न परै ॥ (२३८-६, गउड़ी, मः ५)
कोटि कर्म जाप तप करै ॥ (२३८-६, गउड़ी, मः ५)
इसु मारी बिनु जनमु न मिटै ॥ (२३८-६, गउड़ी, मः ५)
इसु मारी बिनु जम ते नही छुटै ॥६॥ (२३८-७, गउड़ी, मः ५)
इसु मारी बिनु गिआनु न होई ॥ (२३८-७, गउड़ी, मः ५)
इसु मारी बिनु जूठि न धोई ॥ (२३८-७, गउड़ी, मः ५)
इसु मारी बिनु सभु किछु मैला ॥ (२३८-८, गउड़ी, मः ५)
इसु मारी बिनु सभु किछु जउला ॥७॥ (२३८-८, गउड़ी, मः ५)
जा कउ भए कृपाल कृपा निधि ॥ (२३८-८, गउड़ी, मः ५)
तिसु भई खलासी होई सगल सिधि ॥ (२३८-६, गउड़ी, मः ५)
गुरि दुबिधा जा की है मारी ॥ (२३८-६, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक सो ब्रह्म बीचारी ॥८॥५॥ (२३८-६, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२३८-१०)
हरि सिउ जुरै त सभु को मीतु ॥ (२३८-१०, गउड़ी, मः ५)

हरि सिउ जुरै त निहचलु चीतु ॥ (२३८-१०, गउड़ी, मः ५)
हरि सिउ जुरै न विआपै काड़्हा ॥ (२३८-११, गउड़ी, मः ५)
हरि सिउ जुरै त होइ निसतारा ॥१॥ (२३८-११, गउड़ी, मः ५)
रे मन मेरे तूं हरि सिउ जोरु ॥ (२३८-११, गउड़ी, मः ५)
काजि तुहारै नाही होरु ॥१॥ रहाउ ॥ (२३८-१२, गउड़ी, मः ५)
वडे वडे जो दुनीआदार ॥ (२३८-१२, गउड़ी, मः ५)
काहू काजि नाही गावार ॥ (२३८-१२, गउड़ी, मः ५)
हरि का दासु नीच कुलु सुणहि ॥ (२३८-१२, गउड़ी, मः ५)
तिस कै संगि खिन महि उधरहि ॥२॥ (२३८-१३, गउड़ी, मः ५)
कोटि मजन जा कै सुणि नाम ॥ (२३८-१३, गउड़ी, मः ५)
कोटि पूजा जा कै है धिआन ॥ (२३८-१३, गउड़ी, मः ५)
कोटि पुन्न सुणि हरि की बाणी ॥ (२३८-१४, गउड़ी, मः ५)
कोटि फला गुर ते बिधि जाणी ॥३॥ (२३८-१४, गउड़ी, मः ५)
मन अपुने महि फिरि फिरि चेत ॥ (२३८-१४, गउड़ी, मः ५)
बिनसि जाहि माइआ के हेत ॥ (२३८-१५, गउड़ी, मः ५)
हरि अबिनासी तुमरै संगि ॥ (२३८-१५, गउड़ी, मः ५)
मन मेरे रचु राम कै रंगि ॥४॥ (२३८-१५, गउड़ी, मः ५)
जा कै कामि उतरै सभ भूख ॥ (२३८-१६, गउड़ी, मः ५)
जा कै कामि न जोहहि दूत ॥ (२३८-१६, गउड़ी, मः ५)
जा कै कामि तेरा वड गमरु ॥ (२३८-१६, गउड़ी, मः ५)
जा कै कामि होवहि तूं अमरु ॥५॥ (२३८-१६, गउड़ी, मः ५)
जा के चाकर कउ नही डान ॥ (२३८-१७, गउड़ी, मः ५)
जा के चाकर कउ नही बान ॥ (२३८-१७, गउड़ी, मः ५)
जा कै दफतरि पुछै न लेखा ॥ (२३८-१७, गउड़ी, मः ५)
ता की चाकरी करहु बिसेखा ॥६॥ (२३८-१८, गउड़ी, मः ५)
जा कै ऊन नाही काहू बात ॥ (२३८-१८, गउड़ी, मः ५)
एकहि आपि अनेकहि भाति ॥ (२३८-१८, गउड़ी, मः ५)
जा की दृसटि होइ सदा निहाल ॥ (२३८-१९, गउड़ी, मः ५)
मन मेरे करि ता की घाल ॥७॥ (२३८-१९, गउड़ी, मः ५)
ना को चतुरु नाही को मूड़ा ॥ (२३८-१९, गउड़ी, मः ५)
ना को हीणु नाही को सूरा ॥ (२३८-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २३९

जितु को लाइआ तित ही लागा ॥ (२३९-१, गउड़ी, मः ५)
सो सेवकु नानक जिसु भागा ॥८॥६॥ (२३९-१, गउड़ी, मः ५)

गउड़ी महला ५ ॥ (२३६-१)
बिनु सिमरन जैसे सर्प आरजारी ॥ (२३६-२, गउड़ी, मः ५)
तिउ जीवहि साकत नामु बिसारी ॥१॥ (२३६-२, गउड़ी, मः ५)
एक निमख जो सिमरन महि जीआ ॥ (२३६-२, गउड़ी, मः ५)
कोटि दिनस लाख सदा थिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२३६-३, गउड़ी, मः ५)
बिनु सिमरन ध्रिगु कर्म करास ॥ (२३६-३, गउड़ी, मः ५)
काग बतन बिसटा महि वास ॥२॥ (२३६-४, गउड़ी, मः ५)
बिनु सिमरन भए कूकर काम ॥ (२३६-४, गउड़ी, मः ५)
साकत बेसुआ पूत निनाम ॥३॥ (२३६-४, गउड़ी, मः ५)
बिनु सिमरन जैसे सीङ छतारा ॥ (२३६-५, गउड़ी, मः ५)
बोलहि कूरु साकत मुखु कारा ॥४॥ (२३६-५, गउड़ी, मः ५)
बिनु सिमरन गरधभ की निआई ॥ (२३६-५, गउड़ी, मः ५)
साकत थान भरिसट फिराही ॥५॥ (२३६-६, गउड़ी, मः ५)
बिनु सिमरन कूकर हरकाइआ ॥ (२३६-६, गउड़ी, मः ५)
साकत लोभी बंधु न पाइआ ॥६॥ (२३६-६, गउड़ी, मः ५)
बिनु सिमरन है आतम घाती ॥ (२३६-७, गउड़ी, मः ५)
साकत नीच तिसु कुलु नही जाती ॥७॥ (२३६-७, गउड़ी, मः ५)
जिसु भइआ कृपालु तिसु सतसंगि मिलाइआ ॥ (२३६-७, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक गुरि जगतु तराइआ ॥८॥७॥ (२३६-८, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२३६-८)
गुर कै बचनि मोहि पर्म गति पाई ॥ (२३६-८, गउड़ी, मः ५)
गुरि पूरै मेरी पैज रखाई ॥१॥ (२३६-९, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि धिआइओ मोहि नाउ ॥ (२३६-९, गउड़ी, मः ५)
गुर परसादि मोहि मिलिआ थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (२३६-१०, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि सुणि रसन वखाणी ॥ (२३६-१०, गउड़ी, मः ५)
गुर किरपा ते अमृत मेरी बाणी ॥२॥ (२३६-१०, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि मिटिआ मेरा आपु ॥ (२३६-११, गउड़ी, मः ५)
गुर की दइआ ते मेरा वड परतापु ॥३॥ (२३६-११, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि मिटिआ मेरा भरमु ॥ (२३६-१२, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि पेखिओ सभु ब्रह्मु ॥४॥ (२३६-१२, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि कीनो राजु जोगु ॥ (२३६-१२, गउड़ी, मः ५)
गुर कै संगि तरिआ सभु लोगु ॥५॥ (२३६-१३, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि मेरे कारज सिधि ॥ (२३६-१३, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि पाइआ नाउ निधि ॥६॥ (२३६-१३, गउड़ी, मः ५)
जिनि जिनि कीनी मेरे गुर की आसा ॥ (२३६-१४, गउड़ी, मः ५)

तिस की कटीऐ जम की फासा ॥७॥ (२३६-१४, गउड़ी, मः ५)
गुर कै बचनि जागिआ मेरा करमु ॥ (२३६-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक गुरु भेटिआ पारब्रह्मु ॥८॥८॥ (२३६-१५, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२३६-१५)
तिसु गुर कउ सिमरउ सासि सासि ॥ (२३६-१५, गउड़ी, मः ५)
गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि ॥१॥ रहाउ ॥ (२३६-१६, गउड़ी, मः ५)
गुर का दरसनु देखि देखि जीवा ॥ (२३६-१६, गउड़ी, मः ५)
गुर के चरण धोइ धोइ पीवा ॥१॥ (२३६-१७, गउड़ी, मः ५)
गुर की रेणु नित मजनु करउ ॥ (२३६-१७, गउड़ी, मः ५)
जनम जनम की हउमै मलु हरउ ॥२॥ (२३६-१७, गउड़ी, मः ५)
तिसु गुर कउ झूलावउ पाखा ॥ (२३६-१८, गउड़ी, मः ५)
महा अगनि ते हाथु दे राखा ॥३॥ (२३६-१८, गउड़ी, मः ५)
तिसु गुर कै गृहि ढोवउ पाणी ॥ (२३६-१८, गउड़ी, मः ५)
जिसु गुर ते अकल गति जाणी ॥४॥ (२३६-१९, गउड़ी, मः ५)
तिसु गुर कै गृहि पीसउ नीत ॥ (२३६-१९, गउड़ी, मः ५)
जिसु परसादि वैरी सभ मीत ॥५॥ (२३६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २४०

जिनि गुरि मो कउ दीना जीउ ॥ (२४०-१, गउड़ी, मः ५)
आपुना दासरा आपे मुलि लीउ ॥६॥ (२४०-१, गउड़ी, मः ५)
आपे लाइओ अपना पिआरु ॥ (२४०-२, गउड़ी, मः ५)
सदा सदा तिसु गुर कउ करी नमसकारु ॥७॥ (२४०-२, गउड़ी, मः ५)
कलि कलेस भै भ्रम दुख लाथा ॥ (२४०-२, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक मेरा गुरु समराथा ॥८॥९॥ (२४०-३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२४०-३)
मिलु मेरे गोबिंद अपना नामु देहु ॥ (२४०-३, गउड़ी, मः ५)
नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु असनेहु ॥१॥ रहाउ ॥ (२४०-४, गउड़ी, मः ५)
नाम बिना जो पहिरै खाइ ॥ (२४०-४, गउड़ी, मः ५)
जिउ कूकरु जूठन महि पाइ ॥१॥ (२४०-४, गउड़ी, मः ५)
नाम बिना जेता बिउहारु ॥ (२४०-५, गउड़ी, मः ५)
जिउ मिरतक मिथिआ सीगारु ॥२॥ (२४०-५, गउड़ी, मः ५)
नामु बिसारि करे रस भोग ॥ (२४०-५, गउड़ी, मः ५)
सुखु सुपनै नही तन महि रोग ॥३॥ (२४०-६, गउड़ी, मः ५)
नामु तिआगि करे अन काज ॥ (२४०-६, गउड़ी, मः ५)
बिनसि जाइ झूठे सभि पाज ॥४॥ (२४०-६, गउड़ी, मः ५)

नाम संगि मनि प्रीति न लावै ॥ (२४०-७, गउड़ी, मः ५)
कोटि कर्म करतो नरकि जावै ॥५॥ (२४०-७, गउड़ी, मः ५)
हरि का नामु जिनि मनि न आराधा ॥ (२४०-७, गउड़ी, मः ५)
चोर की निआई जम पुरि बाधा ॥६॥ (२४०-८, गउड़ी, मः ५)
लाख अडम्बर बहुतु बिसथारा ॥ (२४०-८, गउड़ी, मः ५)
नाम बिना झूठे पासारा ॥७॥ (२४०-८, गउड़ी, मः ५)
हरि का नामु सोई जनु लेइ ॥ (२४०-९, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा नानक जिसु देइ ॥८॥१०॥ (२४०-९, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२४०-९)
आदि मधि जो अंति निबाहै ॥ (२४०-१०, गउड़ी, मः ५)
सो साजनु मेरा मनु चाहै ॥१॥ (२४०-१०, गउड़ी, मः ५)
हरि की प्रीति सदा संगि चालै ॥ (२४०-१०, गउड़ी, मः ५)
दइआल पुरख पूरन प्रतिपालै ॥१॥ रहाउ ॥ (२४०-११, गउड़ी, मः ५)
बिनसत नाही छोडि न जाइ ॥ (२४०-११, गउड़ी, मः ५)
जह पेखा तह रहिआ समाइ ॥२॥ (२४०-११, गउड़ी, मः ५)
सुंदरु सुघड़ु चतुरु जीअ दाता ॥ (२४०-१२, गउड़ी, मः ५)
भाई पूतु पिता प्रभु माता ॥३॥ (२४०-१२, गउड़ी, मः ५)
जीवन प्रान अधार मेरी रासि ॥ (२४०-१२, गउड़ी, मः ५)
प्रीति लाई करि रिदै निवासि ॥४॥ (२४०-१३, गउड़ी, मः ५)
माइआ सिलक काटी गोपालि ॥ (२४०-१३, गउड़ी, मः ५)
करि अपुना लीनो नदरि निहालि ॥५॥ (२४०-१३, गउड़ी, मः ५)
सिमरि सिमरि काटे सभि रोग ॥ (२४०-१४, गउड़ी, मः ५)
चरण धिआन सर्ब सुख भोग ॥६॥ (२४०-१४, गउड़ी, मः ५)
पूरन पुरखु नवतनु नित बाला ॥ (२४०-१४, गउड़ी, मः ५)
हरि अंतरि बाहरि संगि रखवाला ॥७॥ (२४०-१५, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक हरि हरि पदु चीन ॥ (२४०-१५, गउड़ी, मः ५)
सरबसु नामु भगत कउ दीन ॥८॥११॥ (२४०-१६, गउड़ी, मः ५)
रागु गउड़ी माझ महला ५ (२४०-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२४०-१७)
खोजत फिरे असंख अंतु न पारीआ ॥ (२४०-१८, गउड़ी माझ, मः ५)
सेई होए भगत जिना किरपारीआ ॥१॥ (२४०-१८, गउड़ी माझ, मः ५)
हउ वारीआ हरि वारीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (२४०-१८, गउड़ी माझ, मः ५)
सुणि सुणि पंथु डराउ बहुतु भैहारीआ ॥ (२४०-१९, गउड़ी माझ, मः ५)
मै तकी ओट संताह लेहु उबारीआ ॥२॥ (२४०-१९, गउड़ी माझ, मः ५)

मोहन लाल अनूप सर्ब साधारीआ ॥ (२४१-१, गउड़ी माझ, मः ५)
गुर निवि निवि लागउ पाइ देहु दिखारीआ ॥३॥ (२४१-१, गउड़ी माझ, मः ५)
मै कीए मित्र अनेक इकसु बलिहारीआ ॥ (२४१-१, गउड़ी माझ, मः ५)
सभ गुण किस ही नाहि हरि पूर भंडारीआ ॥४॥ (२४१-२, गउड़ी माझ, मः ५)
चहु दिसि जपीऐ नाउ सूखि सवारीआ ॥ (२४१-२, गउड़ी माझ, मः ५)
मै आही ओड़ि तुहारि नानक बलिहारीआ ॥५॥ (२४१-३, गउड़ी माझ, मः ५)
गुरि काढिओ भुजा पसारि मोह कूपारीआ ॥ (२४१-३, गउड़ी माझ, मः ५)
मै जीतिओ जनमु अपारु बहुरि न हारीआ ॥६॥ (२४१-४, गउड़ी माझ, मः ५)
मै पाइओ सर्ब निधानु अकथु कथारीआ ॥ (२४१-४, गउड़ी माझ, मः ५)
हरि दरगह सोभावंत बाह लुडारीआ ॥७॥ (२४१-५, गउड़ी माझ, मः ५)
जन नानक लधा रतनु अमोलु अपारीआ ॥ (२४१-५, गउड़ी माझ, मः ५)
गुर सेवा भउजलु तरीऐ कहउ पुकारीआ ॥८॥१२॥ (२४१-६, गउड़ी माझ, मः ५)
गउड़ी महला ५ (२४१-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२४१-७)
नाराइण हरि रंग रंगो ॥ (२४१-८, गउड़ी, मः ५)
जपि जिहवा हरि एक मंगो ॥१॥ रहाउ ॥ (२४१-८, गउड़ी, मः ५)
तजि हउमै गुर गिआन भजो ॥ (२४१-८, गउड़ी, मः ५)
मिलि संगति धुरि कर्म लिखिओ ॥१॥ (२४१-९, गउड़ी, मः ५)
जो दीसै सो संगि न गइओ ॥ (२४१-९, गउड़ी, मः ५)
साकतु मूड़ु लगे पचि मुइओ ॥२॥ (२४१-९, गउड़ी, मः ५)
मोहन नामु सदा रवि रहिओ ॥ (२४१-१०, गउड़ी, मः ५)
कोटि मधे किनै गुरमुखि लहिओ ॥३॥ (२४१-१०, गउड़ी, मः ५)
हरि संतन करि नमो नमो ॥ (२४१-१०, गउड़ी, मः ५)
नउ निधि पावहि अतुलु सुखो ॥४॥ (२४१-११, गउड़ी, मः ५)
नैन अलोवउ साध जनो ॥ (२४१-११, गउड़ी, मः ५)
हिरदै गावहु नाम निधो ॥५॥ (२४१-११, गउड़ी, मः ५)
काम क्रोध लोभु मोहु तजो ॥ (२४१-११, गउड़ी, मः ५)
जनम मरन दुहु ते रहिओ ॥६॥ (२४१-१२, गउड़ी, मः ५)
दूखु अंधेरा घर ते मिटिओ ॥ (२४१-१२, गउड़ी, मः ५)
गुरि गिआनु दृड़ाइओ दीप बलिओ ॥७॥ (२४१-१२, गउड़ी, मः ५)
जिनि सेविआ सो पारि परिओ ॥ (२४१-१३, गउड़ी, मः ५)
जन नानक गुरमुखि जगतु तरिओ ॥८॥१॥१३॥ (२४१-१३, गउड़ी, मः ५)
महला ५ गउड़ी ॥ (२४१-१४)

हरि हरि गुरु गुरु करत भर्म गए ॥ (२४१-१४, गउड़ी, मः ५)
मेरै मनि सभि सुख पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (२४१-१४, गउड़ी, मः ५)
बलतो जलतो तउकिआ गुर चंदनु सीतलाइओ ॥१॥ (२४१-१५, गउड़ी, मः ५)
अगिआन अंधेरा मिटि गइआ गुर गिआनु दीपाइओ ॥२॥ (२४१-१५, गउड़ी, मः ५)
पावकु सागरु गहरो चरि संतन नाव तराइओ ॥३॥ (२४१-१६, गउड़ी, मः ५)
ना हम कर्म न धर्म सुच प्रभि गहि भुजा आपाइओ ॥४॥ (२४१-१७, गउड़ी, मः ५)
भउ खंडनु दुख भंजनो भगति वछल हरि नाइओ ॥५॥ (२४१-१७, गउड़ी, मः ५)
अनाथह नाथ कृपाल दीन सम्मृथ संत ओटाइओ ॥६॥ (२४१-१८, गउड़ी, मः ५)
निरगुनीआरे की बेनती देहु दरसु हरि राइओ ॥७॥ (२४१-१८, गउड़ी, मः ५)
नानक सरनि तुहारी ठाकुर सेवकु दुआरै आइओ ॥८॥२॥१४॥ (२४१-१६, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २४२

गउड़ी महला ५ ॥ (२४२-१)
रंगि संगि बिखिआ के भोगा इन संगि अंध न जानी ॥१॥ (२४२-१, गउड़ी, मः ५)
हउ संचउ हउ खाटता सगली अवध बिहानी ॥ रहाउ ॥ (२४२-१, गउड़ी, मः ५)
हउ सूरा प्रधानु हउ को नाही मुझहि समानी ॥२॥ (२४२-२, गउड़ी, मः ५)
जोबनवंत अचार कुलीना मन महि होइ गुमानी ॥३॥ (२४२-२, गउड़ी, मः ५)
जिउ उलझाइओ बाध बुधि का मरतिआ नही बिसरानी ॥४॥ (२४२-३, गउड़ी, मः ५)
भाई मीत बंधप सखे पाछे तिनहू कउ सम्पानी ॥५॥ (२४२-४, गउड़ी, मः ५)
जितु लागो मनु बासना अंति साई प्रगटानी ॥६॥ (२४२-४, गउड़ी, मः ५)
अहम्बुधि सुचि कर्म करि इह बंधन बंधानी ॥७॥ (२४२-५, गउड़ी, मः ५)
दइआल पुरख किरपा करहु नानक दास दसानी ॥८॥३॥१५॥४४॥ जुमला (२४२-५, गउड़ी, मः ५)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (२४२-७)
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला १ ॥ (२४२-७)
मुंध रैणि दुहेलड़ीआ जीउ नीद न आवै ॥ (२४२-७, गउड़ी पूरबी, मः १)
सा धन दुबलीआ जीउ पिर कै हावै ॥ (२४२-८, गउड़ी पूरबी, मः १)
धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए ॥ (२४२-८, गउड़ी पूरबी, मः १)
सीगार मिठ रस भोग भोजन सभु झूठु कितै न लेखए ॥ (२४२-६, गउड़ी पूरबी, मः १)
मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ॥ (२४२-६, गउड़ी पूरबी, मः १)
नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु पिर नीद न आवए ॥१॥ (२४२-१०, गउड़ी पूरबी, मः १)
मुंध निमानड़ीआ जीउ बिनु धनी पिआरे ॥ (२४२-१०, गउड़ी पूरबी, मः १)
किउ सुखु पावैगी बिनु उर धारे ॥ (२४२-११, गउड़ी पूरबी, मः १)
नाह बिनु घर वासु नाही पुछहु सखी सहेलीआ ॥ (२४२-११, गउड़ी पूरबी, मः १)
बिनु नाम प्रीति पिआरु नाही वसहि साचि सुहेलीआ ॥ (२४२-११, गउड़ी पूरबी, मः १)
सचु मनि सजन संतोखि मेला गुरमती सहु जाणिआ ॥ (२४२-१२, गउड़ी पूरबी, मः १)

नानक नामु न छोडै सा धन नामि सहजि समाणीआ ॥२॥ (२४२-१२, गउड़ी पूरबी, मः १)
मिलु सखी सहेलड़ीहो हम पिरु रावेहा ॥ (२४२-१३, गउड़ी पूरबी, मः १)
गुर पुछि लिखउगी जीउ सबदि सनेहा ॥ (२४२-१३, गउड़ी पूरबी, मः १)
सबदु साचा गुरि दिखाइआ मनमुखी पछुताणीआ ॥ (२४२-१४, गउड़ी पूरबी, मः १)
निकसि जातउ रहै असथिरु जामि सचु पछाणिआ ॥ (२४२-१४, गउड़ी पूरबी, मः १)
साच की मति सदा नउतन सबदि नेहु नवेलओ ॥ (२४२-१५, गउड़ी पूरबी, मः १)
नानक नदरी सहजि साचा मिलहु सखी सहेलीहो ॥३॥ (२४२-१५, गउड़ी पूरबी, मः १)
मेरी इछ पुनी जीउ हम घरि साजनु आइआ ॥ (२४२-१६, गउड़ी पूरबी, मः १)
मिलि वरु नारी मंगलु गाइआ ॥ (२४२-१६, गउड़ी पूरबी, मः १)
गुण गाइ मंगलु प्रेमि रहसी मुंध मनि ओमाहओ ॥ (२४२-१७, गउड़ी पूरबी, मः १)
साजन रहंसे दुसट विआपे साचु जपि सचु लाहओ ॥ (२४२-१७, गउड़ी पूरबी, मः १)
कर जोड़ि सा धन करै बिनती रैणि दिनु रसि भिन्नीआ ॥ (२४२-१८, गउड़ी पूरबी, मः १)
नानक पिरु धन करहि रलीआ इछ मेरी पुन्नीआ ॥४॥१॥ (२४२-१८, गउड़ी पूरबी, मः १)

पन्ना २४३

गउड़ी छंत महला १ ॥ (२४३-१)
सुणि नाह प्रभू जीउ एकलड़ी बन माहे ॥ (२४३-१, गउड़ी, मः १)
किउ धीरैगी नाह बिना प्रभ वेपरवाहे ॥ (२४३-१, गउड़ी, मः १)
धन नाह बाझहु रहि न साकै बिखम रैणि घणेरीआ ॥ (२४३-२, गउड़ी, मः १)
नह नीद आवै प्रेमु भावै सुणि बेनंती मेरीआ ॥ (२४३-२, गउड़ी, मः १)
बाझहु पिआरे कोइ न सारे एकलड़ी कुरलाए ॥ (२४३-३, गउड़ी, मः १)
नानक सा धन मिलै मिलाई बिनु प्रीतम दुखु पाए ॥१॥ (२४३-३, गउड़ी, मः १)
पिरि छोडिअड़ी जीउ कवणु मिलावै ॥ (२४३-४, गउड़ी, मः १)
रसि प्रेमि मिली जीउ सबदि सुहावै ॥ (२४३-४, गउड़ी, मः १)
सबदे सुहावै ता पति पावै दीपक देह उजारै ॥ (२४३-५, गउड़ी, मः १)
सुणि सखी सहेली साचि सुहेली साचे के गुण सारै ॥ (२४३-५, गउड़ी, मः १)
सतिगुरि मेली ता पिरि रावी बिगसी अमृत बाणी ॥ (२४३-६, गउड़ी, मः १)
नानक सा धन ता पिरु रावे जा तिस कै मनि भाणी ॥२॥ (२४३-६, गउड़ी, मः १)
माइआ मोहणी नीघरीआ जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ (२४३-७, गउड़ी, मः १)
किउ खूलै गल जेवड़ीआ जीउ बिनु गुर अति पिआरे ॥ (२४३-७, गउड़ी, मः १)
हरि प्रीति पिआरे सबदि वीचारे तिस ही का सो होवै ॥ (२४३-८, गउड़ी, मः १)
पुन्न दान अनेक नावण किउ अंतर मलु धोवै ॥ (२४३-८, गउड़ी, मः १)
नाम बिना गति कोइ न पावै हठि निग्रहि बेबाणै ॥ (२४३-९, गउड़ी, मः १)
नानक सच घरु सबदि सिञापै दुबिधा महलु कि जाणै ॥३॥ (२४३-९, गउड़ी, मः १)
तेरा नामु सचा जीउ सबदु सचा वीचारो ॥ (२४३-१०, गउड़ी, मः १)

तेरा महलु सचा जीउ नामु सचा वापारो ॥ (२४३-१०, गउड़ी, मः १)
नाम का वापारु मीठा भगति लाहा अनदिनो ॥ (२४३-११, गउड़ी, मः १)
तिसु बाझु वखरु कोइ न सूझै नामु लेवहु खिनु खिनो ॥ (२४३-११, गउड़ी, मः १)
परखि लेखा नदरि साची करमि पूरै पाइआ ॥ (२४३-१२, गउड़ी, मः १)
नानक नामु महा रसु मीठा गुरि पूरै सचु पाइआ ॥४॥२॥ (२४३-१२, गउड़ी, मः १)
रागु गउड़ी पूरबी छंत महला ३ (२४३-१४)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (२४३-१४)
सा धन बिनउ करे जीउ हरि के गुण सारे ॥ (२४३-१५, गउड़ी पूरबी, मः ३)
खिनु पलु रहि न सकै जीउ बिनु हरि पिआरे ॥ (२४३-१५, गउड़ी पूरबी, मः ३)
बिनु हरि पिआरे रहि न साकै गुर बिनु महलु न पाईऐ ॥ (२४३-१५, गउड़ी पूरबी, मः ३)
जो गुरु कहै सोई परु कीजै तिसना अगनि बुझाईऐ ॥ (२४३-१६, गउड़ी पूरबी, मः ३)
हरि साचा सोई तिसु बिनु अवरु न कोई बिनु सेविऐ सुखु न पाए ॥ (२४३-१७, गउड़ी पूरबी, मः ३)
नानक सा धन मिलै मिलाई जिस नो आपि मिलाए ॥१॥ (२४३-१७, गउड़ी पूरबी, मः ३)
धन रैणि सुहेलड़ीए जीउ हरि सिउ चितु लाए ॥ (२४३-१८, गउड़ी पूरबी, मः ३)
सतिगुरु सेवे भाउ करे जीउ विचहु आपु गवाए ॥ (२४३-१८, गउड़ी पूरबी, मः ३)
विचहु आपु गवाए हरि गुण गाए अनदिनु लागा भाओ ॥ (२४३-१९, गउड़ी पूरबी, मः ३)
सुणि सखी सहेली जीअ की मेली गुर कै सबदि समाओ ॥ (२४३-१९, गउड़ी पूरबी, मः ३)

पन्ना २४४

हरि गुण सारी ता कंत पिआरी नामे धरी पिआरो ॥ (२४४-१, गउड़ी पूरबी, मः ३)
नानक कामणि नाह पिआरी राम नामु गलि हारो ॥२॥ (२४४-१, गउड़ी पूरबी, मः ३)
धन एकलड़ी जीउ बिनु नाह पिआरे ॥ (२४४-२, गउड़ी पूरबी, मः ३)
दूजै भाइ मुठी जीउ बिनु गुर सबद करारे ॥ (२४४-२, गउड़ी पूरबी, मः ३)
बिनु सबद पिआरे कउणु दुतरु तारे माइआ मोहि खुआई ॥ (२४४-३, गउड़ी पूरबी, मः ३)
कूड़ि विगुती ता पिरि मुती सा धन महलु न पाई ॥ (२४४-३, गउड़ी पूरबी, मः ३)
गुर सबदे राती सहजे माती अनदिनु रहै समाए ॥ (२४४-४, गउड़ी पूरबी, मः ३)
नानक कामणि सदा रंगि राती हरि जीउ आपि मिलाए ॥३॥ (२४४-४, गउड़ी पूरबी, मः ३)
ता मिलीऐ हरि मेले जीउ हरि बिनु कवणु मिलाए ॥ (२४४-५, गउड़ी पूरबी, मः ३)
बिनु गुर प्रीतम आपणे जीउ कउणु भरमु चुकाए ॥ (२४४-६, गउड़ी पूरबी, मः ३)
गुरु भरमु चुकाए इउ मिलीऐ माए ता सा धन सुखु पाए ॥ (२४४-६, गउड़ी पूरबी, मः ३)
गुर सेवा बिनु घोर अंधारु बिनु गुर मगु न पाए ॥ (२४४-७, गउड़ी पूरबी, मः ३)
कामणि रंगि राती सहजे माती गुर कै सबदि वीचारे ॥ (२४४-७, गउड़ी पूरबी, मः ३)
नानक कामणि हरि वरु पाइआ गुर कै भाइ पिआरे ॥४॥१॥ (२४४-८, गउड़ी पूरबी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२४४-८)
पिर बिनु खरी निमाणी जीउ बिनु पिर किउ जीवा मेरी माई ॥ (२४४-८, गउड़ी, मः ३)

पिर बिनु नीद न आवै जीउ कापड़ु तनि न सुहाई ॥ (२४४-६, गउड़ी, मः ३)
कापरु तनि सुहावै जा पिर भावै गुरमती चितु लाईऐ ॥ (२४४-१०, गउड़ी, मः ३)
सदा सुहागणि जा सतिगुरु सेवे गुर कै अंकि समाईऐ ॥ (२४४-१०, गउड़ी, मः ३)
गुर सबदै मेला ता पिरु रावी लाहा नामु संसारे ॥ (२४४-११, गउड़ी, मः ३)
नानक कामणि नाह पिआरी जा हरि के गुण सारे ॥१॥ (२४४-११, गउड़ी, मः ३)
सा धन रंगु माणे जीउ आपणे नालि पिआरे ॥ (२४४-१२, गउड़ी, मः ३)
अहिनिसि रंगि राती जीउ गुर सबदु वीचारे ॥ (२४४-१२, गउड़ी, मः ३)
गुर सबदु वीचारे हउमै मारे इन बिधि मिलहु पिआरे ॥ (२४४-१३, गउड़ी, मः ३)
सा धन सोहागणि सदा रंगि राती साचै नामि पिआरे ॥ (२४४-१३, गउड़ी, मः ३)
अपुने गुर मिलि रहीऐ अमृतु गहीऐ दुबिधा मारि निवारे ॥ (२४४-१४, गउड़ी, मः ३)
नानक कामणि हरि वरु पाइआ सगले दूख विसारे ॥२॥ (२४४-१५, गउड़ी, मः ३)
कामणि पिरहु भुली जीउ माइआ मोहि पिआरे ॥ (२४४-१५, गउड़ी, मः ३)
झूठी झूठि लगी जीउ कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ (२४४-१६, गउड़ी, मः ३)
कूड़ु निवारे गुरमति सारे जूऐ जनमु न हारे ॥ (२४४-१६, गउड़ी, मः ३)
गुर सबदु सेवे सचि समावै विचहु हउमै मारे ॥ (२४४-१७, गउड़ी, मः ३)
हरि का नामु रिदै वसाए ऐसा करे सीगारो ॥ (२४४-१७, गउड़ी, मः ३)
नानक कामणि सहजि समाणी जिसु साचा नामु अधारो ॥३॥ (२४४-१७, गउड़ी, मः ३)
मिलु मेरे प्रीतमा जीउ तुधु बिनु खरी निमाणी ॥ (२४४-१८, गउड़ी, मः ३)
मै नैणी नीद न आवै जीउ भावै अन्नु न पाणी ॥ (२४४-१६, गउड़ी, मः ३)
पाणी अन्नु न भावै मरीऐ हावै बिनु पिर किउ सुखु पाईऐ ॥ (२४४-१६, गउड़ी, मः ३)

पन्ना २४५

गुर आगै करउ बिनंती जे गुर भावै जिउ मिलै तिवै मिलाईऐ ॥ (२४५-१, गउड़ी, मः ३)
आपे मेलि लए सुखदाता आपि मिलिआ घरि आए ॥ (२४५-१, गउड़ी, मः ३)
नानक कामणि सदा सुहागणि ना पिरु मरै न जाए ॥४॥२॥ (२४५-२, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२४५-२)
कामणि हरि रसि बेधी जीउ हरि कै सहजि सुभाए ॥ (२४५-३, गउड़ी, मः ३)
मनु मोहनि मोहि लीआ जीउ दुबिधा सहजि समाए ॥ (२४५-३, गउड़ी, मः ३)
दुबिधा सहजि समाए कामणि वरु पाए गुरमती रंगु लाए ॥ (२४५-४, गउड़ी, मः ३)
इहु सरीरु कूड़ि कुसति भरिआ गल ताई पाप कमाए ॥ (२४५-४, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि भगति जितु सहज धुनि उपजै बिनु भगती मैलु न जाए ॥ (२४५-५, गउड़ी, मः ३)
नानक कामणि पिरहि पिआरी विचहु आपु गवाए ॥१॥ (२४५-६, गउड़ी, मः ३)
कामणि पिरु पाइआ जीउ गुर कै भाइ पिआरे ॥ (२४५-६, गउड़ी, मः ३)
रैणि सुखि सुती जीउ अंतरि उरि धारे ॥ (२४५-७, गउड़ी, मः ३)
अंतरि उरि धारे मिलीऐ पिआरे अनदिनु दुखु निवारे ॥ (२४५-७, गउड़ी, मः ३)

अंतरि महलु पिरु रावे कामणि गुरमती वीचारे ॥ (२४५-८, गउड़ी, मः ३)
अमृतु नामु पीआ दिन राती दुबिधा मारि निवारे ॥ (२४५-८, गउड़ी, मः ३)
नानक सचि मिली सोहागणि गुर कै हेति अपारे ॥२॥ (२४५-९, गउड़ी, मः ३)
आवहु दइआ करे जीउ प्रीतम अति पिआरे ॥ (२४५-९, गउड़ी, मः ३)
कामणि बिनउ करे जीउ सचि सबदि सीगारे ॥ (२४५-१०, गउड़ी, मः ३)
सचि सबदि सीगारे हउमै मारे गुरमुखि कारज सवारे ॥ (२४५-१०, गउड़ी, मः ३)
जुगि जुगि एको सचा सोई बूझै गुर बीचारे ॥ (२४५-११, गउड़ी, मः ३)
मनमुखि कामि विआपी मोहि संतापी किसु आगै जाइ पुकारे ॥ (२४५-११, गउड़ी, मः ३)
नानक मनमुखि थाउ न पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥३॥ (२४५-१२, गउड़ी, मः ३)
मुंध इआणी भोली निगुणीआ जीउ पिरु अगम अपारा ॥ (२४५-१२, गउड़ी, मः ३)
आपे मेलि मिलीऐ जीउ आपे बखसणहारा ॥ (२४५-१३, गउड़ी, मः ३)
अवगण बखसणहारा कामणि कंतु पिआरा घटि घटि रहिआ समाई ॥ (२४५-१३, गउड़ी, मः ३)
प्रेम प्रीति भाइ भगती पाईऐ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (२४५-१४, गउड़ी, मः ३)
सदा अनंदि रहै दिन राती अनदिनु रहै लिव लाई ॥ (२४५-१५, गउड़ी, मः ३)
नानक सहजे हरि वरु पाइआ सा धन नउ निधि पाई ॥४॥३॥ (२४५-१५, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२४५-१६)
माइआ सरु सबलु वरतै जीउ किउ करि दुतरु तरिआ जाइ ॥ (२४५-१६, गउड़ी, मः ३)
राम नामु करि बोहिथा जीउ सबदु खेवटु विचि पाइ ॥ (२४५-१७, गउड़ी, मः ३)
सबदु खेवटु विचि पाए हरि आपि लघाए इन बिधि दुतरु तरीऐ ॥ (२४५-१७, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि भगति परापति होवै जीवतिआ इउ मरीऐ ॥ (२४५-१८, गउड़ी, मः ३)
खिन महि राम नामि किलविख काटे भए पवितु सरीरा ॥ (२४५-१८, गउड़ी, मः ३)
नानक राम नामि निसतारा कंचन भए मनूरा ॥१॥ (२४५-१९, गउड़ी, मः ३)

पन्ना २४६

इसतरी पुरख कामि विआपे जीउ राम नाम की बिधि नही जाणी ॥ (२४६-१, गउड़ी, मः ३)
मात पिता सुत भाई खरे पिआरे जीउ डूबि मुए बिनु पाणी ॥ (२४६-१, गउड़ी, मः ३)
डूबि मुए बिनु पाणी गति नही जाणी हउमै धातु संसारे ॥ (२४६-२, गउड़ी, मः ३)
जो आइआ सो सभु को जासी उबरे गुर वीचारे ॥ (२४६-२, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि होवै राम नामु वखाणै आपि तरै कुल तारे ॥ (२४६-३, गउड़ी, मः ३)
नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमति मिले पिआरे ॥२॥ (२४६-४, गउड़ी, मः ३)
राम नाम बिनु को थिरु नाही जीउ बाजी है संसारा ॥ (२४६-४, गउड़ी, मः ३)
दृड़ु भगति सची जीउ राम नामु वापारा ॥ (२४६-५, गउड़ी, मः ३)
राम नामु वापारा अगम अपारा गुरमती धनु पाईऐ ॥ (२४६-५, गउड़ी, मः ३)
सेवा सुरति भगति इह साची विचहु आपु गवाईऐ ॥ (२४६-६, गउड़ी, मः ३)
हम मति हीण मूरख मुगध अंधे सतिगुरि मारगि पाए ॥ (२४६-६, गउड़ी, मः ३)

नानक गुरमुखि सबदि सुहावे अनदिनु हरि गुण गाए ॥३॥ (२४६-७, गउड़ी, मः ३)
आपि कराए करे आपि जीउ आपे सबदि सवारे ॥ (२४६-७, गउड़ी, मः ३)
आपे सतिगुरु आपि सबदु जीउ जुगु जुगु भगत पिआरे ॥ (२४६-८, गउड़ी, मः ३)
जुगु जुगु भगत पिआरे हरि आपि सवारे आपे भगती लाए ॥ (२४६-९, गउड़ी, मः ३)
आपे दाना आपे बीना आपे सेव कराए ॥ (२४६-९, गउड़ी, मः ३)
आपे गुणदाता अवगुण काटे हिरदै नामु वसाए ॥ (२४६-१०, गउड़ी, मः ३)
नानक सद बलिहारी सचे विटहु आपे करे कराए ॥४॥४॥ (२४६-१०, गउड़ी, मः ३)
गउड़ी महला ३ ॥ (२४६-११)
गुर की सेवा करि पिरा जीउ हरि नामु धिआए ॥ (२४६-११, गउड़ी, मः ३)
मंञहु दूरि न जाहि पिरा जीउ घरि बैठिआ हरि पाए ॥ (२४६-११, गउड़ी, मः ३)
घरि बैठिआ हरि पाए सदा चितु लाए सहजे सति सुभाए ॥ (२४६-१२, गउड़ी, मः ३)
गुर की सेवा खरी सुखाली जिस नो आपि कराए ॥ (२४६-१३, गउड़ी, मः ३)
नामो बीजे नामो जम्मै नामो मंनि वसाए ॥ (२४६-१३, गउड़ी, मः ३)
नानक सचि नामि वडिआई पूरबि लिखिआ पाए ॥१॥ (२४६-१४, गउड़ी, मः ३)
हरि का नामु मीठा पिरा जीउ जा चाखहि चितु लाए ॥ (२४६-१४, गउड़ी, मः ३)
रसना हरि रसु चाखु मुये जीउ अन रस साद गवाए ॥ (२४६-१५, गउड़ी, मः ३)
सदा हरि रसु पाए जा हरि भाए रसना सबदि सुहाए ॥ (२४६-१५, गउड़ी, मः ३)
नामु धिआए सदा सुखु पाए नामि रहै लिव लाए ॥ (२४६-१६, गउड़ी, मः ३)
नामे उपजै नामे बिनसै नामे सचि समाए ॥ (२४६-१६, गउड़ी, मः ३)
नानक नामु गुरमती पाईऐ आपे लए लवाए ॥२॥ (२४६-१७, गउड़ी, मः ३)
एह विडाणी चाकरी पिरा जीउ धन छोडि परदेसि सिधाए ॥ (२४६-१७, गउड़ी, मः ३)
दूजै किनै सुखु न पाइओ पिरा जीउ बिखिआ लोभि लुभाए ॥ (२४६-१८, गउड़ी, मः ३)
बिखिआ लोभि लुभाए भरमि भुलाए ओहु किउ करि सुखु पाए ॥ (२४६-१८, गउड़ी, मः ३)
चाकरी विडाणी खरी दुखाली आपु वेचि धरमु गवाए ॥ (२४६-१९, गउड़ी, मः ३)

पन्ना २४७

माइआ बंधन टिकै नाही खिनु खिनु दुखु संताए ॥ (२४७-१, गउड़ी, मः ३)
नानक माइआ का दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाए ॥३॥ (२४७-१, गउड़ी, मः ३)
मनमुख मुगध गावारु पिरा जीउ सबदु मनि न वसाए ॥ (२४७-२, गउड़ी, मः ३)
माइआ का भ्रमु अंधु पिरा जीउ हरि मारगु किउ पाए ॥ (२४७-२, गउड़ी, मः ३)
किउ मारगु पाए बिनु सतिगुर भाए मनमुखि आपु गणाए ॥ (२४७-३, गउड़ी, मः ३)
हरि के चाकर सदा सुहेले गुर चरणी चितु लाए ॥ (२४७-४, गउड़ी, मः ३)
जिस नो हरि जीउ करे किरपा सदा हरि के गुण गाए ॥ (२४७-४, गउड़ी, मः ३)
नानक नामु रतनु जगि लाहा गुरमुखि आपि बुझाए ॥४॥५॥७॥ (२४७-५, गउड़ी, मः ३)
रागु गउड़ी छंत महला ५ (२४७-६)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२४७-६)
मेरै मनि बैरागु भइआ जीउ किउ देखा प्रभ दाते ॥ (२४७-७, गउड़ी, मः ५)
मेरे मीत सखा हरि जीउ गुर पुरख बिधाते ॥ (२४७-७, गउड़ी, मः ५)
पुरखो बिधाता एकु स्रीधरु किउ मिलह तुझै उडीणीआ ॥ (२४७-८, गउड़ी, मः ५)
कर करहि सेवा सीसु चरणी मनि आस दरस निमाणीआ ॥ (२४७-८, गउड़ी, मः ५)
सासि सासि न घड़ी विसरै पलु मूरतु दिनु राते ॥ (२४७-९, गउड़ी, मः ५)
नानक सारिंग जिउ पिआसे किउ मिलीऐ प्रभ दाते ॥१॥ (२४७-९, गउड़ी, मः ५)
इक बिनउ करउ जीउ सुणि कंत पिआरे ॥ (२४७-१०, गउड़ी, मः ५)
मेरा मनु तनु मोहि लीआ जीउ देखि चलत तुमारे ॥ (२४७-१०, गउड़ी, मः ५)
चलता तुमारे देखि मोही उदास धन किउ धीरए ॥ (२४७-११, गउड़ी, मः ५)
गुणवंत नाह दइआलु बाला सर्ब गुण भरपूरए ॥ (२४७-१२, गउड़ी, मः ५)
पिर दोसु नाही सुखह दाते हउ विछुड़ी बुरिआरे ॥ (२४७-१२, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानक दइआ धारहु घरि आवहु नाह पिआरे ॥२॥ (२४७-१३, गउड़ी, मः ५)
हउ मनु अरपी सभु तनु अरपी अरपी सभि देसा ॥ (२४७-१३, गउड़ी, मः ५)
हउ सिरु अरपी तिसु मीत पिआरे जो प्रभ देइ सदेसा ॥ (२४७-१४, गउड़ी, मः ५)
अरपिआ त सीसु सुथानि गुर पहि संगि प्रभू दिखाइआ ॥ (२४७-१४, गउड़ी, मः ५)
खिन माहि सगला दूखु मिटिआ मनहु चिंदिआ पाइआ ॥ (२४७-१५, गउड़ी, मः ५)
दिनु रैणि रलीआ करै कामणि मिटे सगल अंदेसा ॥ (२४७-१५, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानकु कंतु मिलिआ लोड़ते हम जैसा ॥३॥ (२४७-१६, गउड़ी, मः ५)
मेरै मनि अनदु भइआ जीउ वजी वाधाई ॥ (२४७-१६, गउड़ी, मः ५)
घरि लालु आइआ पिआरा सभ तिखा बुझाई ॥ (२४७-१७, गउड़ी, मः ५)
मिलिआ त लालु गुपालु ठाकुरु सखी मंगलु गाइआ ॥ (२४७-१७, गउड़ी, मः ५)
सभ मीत बंधप हरखु उपजिआ दूत थाउ गवाइआ ॥ (२४७-१८, गउड़ी, मः ५)
अनहत वाजे वजहि घर महि पिर संगि सेज विछाई ॥ (२४७-१९, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानकु सहजि रहै हरि मिलिआ कंतु सुखदाई ॥४॥१॥ (२४७-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २४८

गउड़ी महला ५ ॥ (२४८-१)
मोहन तेरे ऊचे मंदर महल अपारा ॥ (२४८-१, गउड़ी, मः ५)
मोहन तेरे सोहनि दुआर जीउ संत धर्म साला ॥ (२४८-१, गउड़ी, मः ५)
धर्म साल अपार दैआर ठाकुर सदा कीरतनु गावहे ॥ (२४८-२, गउड़ी, मः ५)
जह साध संत इकत्र होवहि तहा तुझहि धिआवहे ॥ (२४८-२, गउड़ी, मः ५)
करि दइआ मइआ दइआल सुआमी होहु दीन क्रिपारा ॥ (२४८-३, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानक दरस पिआसे मिलि दरसन सुखु सारा ॥१॥ (२४८-४, गउड़ी, मः ५)
मोहन तेरे बचन अनूप चाल निराली ॥ (२४८-४, गउड़ी, मः ५)

मोहन तूं मानहि एकु जी अवर सभ राली ॥ (२४८-५, गउड़ी, मः ५)
मानहि त एकु अलेखु ठाकुरु जिनहि सभ कल धारीआ ॥ (२४८-५, गउड़ी, मः ५)
तुधु बचनि गुर कै वसि कीआ आदि पुरखु बनवारीआ ॥ (२४८-६, गउड़ी, मः ५)
तूं आपि चलिआ आपि रहिआ आपि सभ कल धारीआ ॥ (२४८-६, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानक पैज राखहु सभ सेवक सरनि तुमारीआ ॥२॥ (२४८-७, गउड़ी, मः ५)
मोहन तुधु सतसंगति धिआवै दरस धिआना ॥ (२४८-७, गउड़ी, मः ५)
मोहन जमु नेड़ि न आवै तुधु जपहि निदाना ॥ (२४८-८, गउड़ी, मः ५)
जमकालु तिन कउ लगै नाही जो इक मनि धिआवहे ॥ (२४८-८, गउड़ी, मः ५)
मनि बचनि करमि जि तुधु अराधहि से सभे फल पावहे ॥ (२४८-९, गउड़ी, मः ५)
मल मूत मूड़ जि मुगध होते सि देखि दरसु सुगिआना ॥ (२४८-९, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानक राजु निहचलु पूरन पुरख भगवाना ॥३॥ (२४८-१०, गउड़ी, मः ५)
मोहन तूं सुफलु फलिआ सणु परवारे ॥ (२४८-११, गउड़ी, मः ५)
मोहन पुत्र मीत भाई कुटम्ब सभि तारे ॥ (२४८-११, गउड़ी, मः ५)
तारिआ जहानु लहिआ अभिमानु जिनी दरसनु पाइआ ॥ (२४८-११, गउड़ी, मः ५)
जिनी तुधनो धन्नु कहिआ तिन जमु नेड़ि न आइआ ॥ (२४८-१२, गउड़ी, मः ५)
बेअंत गुण तेरे कथे न जाही सतिगुर पुरख मुरारे ॥ (२४८-१२, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानक टेक राखी जितु लगि तरिआ संसारे ॥४॥२॥ (२४८-१३, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२४८-१४)
सलोकु ॥ (२४८-१४)
पतित असंख पुनीत करि पुनह पुनह बलिहार ॥ (२४८-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक राम नामु जपि पावको तिन किलबिख दाहनहार ॥१॥ (२४८-१४, गउड़ी, मः ५)
छंत ॥ (२४८-१५)
जपि मना तूं राम नराइणु गोविंदा हरि माधो ॥ (२४८-१५, गउड़ी, मः ५)
धिआइ मना मुरारि मुकंदे कटीऐ काल दुख फाधो ॥ (२४८-१६, गउड़ी, मः ५)
दुखहरण दीन सरण स्रीधर चरन कमल अराधीऐ ॥ (२४८-१६, गउड़ी, मः ५)
जम पंथु बिखड़ा अगनि सागरु निमख सिमरत साधीऐ ॥ (२४८-१७, गउड़ी, मः ५)
कलिमलह दहता सुधु करता दिनसु रैणि अराधो ॥ (२४८-१७, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानक करहु किरपा गोपाल गोबिंद माधो ॥१॥ (२४८-१८, गउड़ी, मः ५)
सिमरि मना दामोदरु दुखहरु भै भंजनु हरि राइआ ॥ (२४८-१८, गउड़ी, मः ५)
स्रीरंगो दइआल मनोहरु भगति वछलु बिरदाइआ ॥ (२४८-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २४९

भगति वछल पुरख पूरन मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ (२४९-१, गउड़ी, मः ५)
तम अंध कूप ते उधारै नामु मंनि वसाईऐ ॥ (२४९-१, गउड़ी, मः ५)
सुर सिध गण गंधरब मुनि जन गुण अनिक भगती गाइआ ॥ (२४९-२, गउड़ी, मः ५)

बिनवंति नानक करहु किरपा पारब्रह्म हरि राइआ ॥२॥ (२४९-२, गउड़ी, मः ५)
चेति मना पारब्रह्मु परमेसरु सर्ब कला जिनि धारी ॥ (२४९-३, गउड़ी, मः ५)
करुणा मै समरथु सुआमी घट घट प्राण अधारी ॥ (२४९-३, गउड़ी, मः ५)
प्राण मन तन जीअ दाता बेअंत अगम अपारो ॥ (२४९-४, गउड़ी, मः ५)
सरणि जोगु समरथु मोहनु सर्ब दोख बिदारो ॥ (२४९-४, गउड़ी, मः ५)
रोग सोग सभि दोख बिनसहि जपत नामु मुरारी ॥ (२४९-५, गउड़ी, मः ५)
बिनवंति नानक करहु किरपा समरथ सभ कल धारी ॥३॥ (२४९-५, गउड़ी, मः ५)
गुण गाउ मना अचुत अबिनासी सभ ते ऊच दइआला ॥ (२४९-६, गउड़ी, मः ५)
बिसम्भरु देवन कउ एकै सर्ब करै प्रतिपाला ॥ (२४९-७, गउड़ी, मः ५)
प्रतिपाल महा दइआल दाना दइआ धारे सभ किसै ॥ (२४९-७, गउड़ी, मः ५)
कालु कंटकु लोभु मोहु नासै जीअ जा कै प्रभु बसै ॥ (२४९-८, गउड़ी, मः ५)
सुप्रसन्न देवा सफल सेवा भई पूरन घाला ॥ (२४९-८, गउड़ी, मः ५)
बिनवंत नानक इछ पुनी जपत दीन दैआला ॥४॥३॥ (२४९-९, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी महला ५ ॥ (२४९-९)
सुणि सखीए मिलि उदमु करेहा मनाइ लैहि हरि कंतै ॥ (२४९-९, गउड़ी, मः ५)
मानु तिआगि करि भगति ठगउरी मोहह साधू मंतै ॥ (२४९-१०, गउड़ी, मः ५)
सखी वसि आइआ फिरि छोडि न जाई इह रीति भली भगवंतै ॥ (२४९-१०, गउड़ी, मः ५)
नानक जरा मरण भै नरक निवारै पुनीत करै तिसु जंतै ॥१॥ (२४९-११, गउड़ी, मः ५)
सुणि सखीए इह भली बिनंती एहु मताँतु पकाईऐ ॥ (२४९-१२, गउड़ी, मः ५)
सहजि सुभाइ उपाधि रहत होइ गीत गोविंदहि गाईऐ ॥ (२४९-१२, गउड़ी, मः ५)
कलि कलेस मिटहि भ्रम नासहि मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ (२४९-१३, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म पूरन परमेसर नानक नामु धिआईऐ ॥२॥ (२४९-१३, गउड़ी, मः ५)
सखी इछ करी नित सुख मनाई प्रभ मेरी आस पुजाए ॥ (२४९-१४, गउड़ी, मः ५)
चरन पिआसी दरस बैरागनि पेखउ थान सबाए ॥ (२४९-१५, गउड़ी, मः ५)
खोजि लहउ हरि संत जना संगु सम्मृथ पुरख मिलाए ॥ (२४९-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक तिन मिलिआ सुरिजनु सुखदाता से वडभागी माए ॥३॥ (२४९-१६, गउड़ी, मः ५)
सखी नालि वसा अपुने नाह पिआरे मेरा मनु तनु हरि संगि हिलिआ ॥ (२४९-१६, गउड़ी, मः ५)
सुणि सखीए मेरी नीद भली मै आपनड़ा पिरु मिलिआ ॥ (२४९-१७, गउड़ी, मः ५)
भ्रमु खोइओ साँति सहजि सुआमी परगासु भइआ कउलु खिलिआ ॥ (२४९-१८, गउड़ी, मः ५)
वरु पाइआ प्रभु अंतरजामी नानक सोहागु न टलिआ ॥४॥४॥२॥५॥११॥ (२४९-१८, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५०

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२५०-१)
गउड़ी बावन अखरी महला ५ ॥ (२५०-१)
सलोकु ॥ (२५०-१)

गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ (२५०-१, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ (२५०-२, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ (२५०-२, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव साँति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ (२५०-३, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव तीरथु अमृत सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरम्परा ॥ (२५०-३, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ (२५०-४, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ (२५०-५, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ (२५०-५, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव सतिगुरु पारब्रह्मु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥ (२५०-६, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५०-७)
आपहि कीआ कराइआ आपहि करनै जोगु ॥ (२५०-७, गउड़ी, मः ५)
नानक एको रवि रहिआ दूसर होआ न होगु ॥१॥ (२५०-७, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५०-८)
ओअं साध सतिगुर नमसकारं ॥ (२५०-८, गउड़ी, मः ५)
आदि मधि अंति निरंकारं ॥ (२५०-८, गउड़ी, मः ५)
आपहि सुन्न आपहि सुख आसन ॥ (२५०-८, गउड़ी, मः ५)
आपहि सुनत आप ही जासन ॥ (२५०-९, गउड़ी, मः ५)
आपन आपु आपहि उपाइओ ॥ (२५०-९, गउड़ी, मः ५)
आपहि बाप आप ही माइओ ॥ (२५०-९, गउड़ी, मः ५)
आपहि सूखम आपहि असथूला ॥ (२५०-१०, गउड़ी, मः ५)
लखी न जाई नानक लीला ॥१॥ (२५०-१०, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (२५०-१०, गउड़ी, मः ५)
तेरे संतन की मनु होइ रवाला ॥ रहाउ ॥ (२५०-११, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५०-११)
निरंकार आकार आपि निरगुन सरगुन एक ॥ (२५०-११, गउड़ी, मः ५)
एकहि एक बखाननो नानक एक अनेक ॥१॥ (२५०-१२, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५०-१२)
ओअं गुरमुखि कीओ अकारा ॥ (२५०-१२, गउड़ी, मः ५)
एकहि सूति परोवनहारा ॥ (२५०-१२, गउड़ी, मः ५)
भिन्न भिन्न त्रै गुण बिसथारं ॥ (२५०-१३, गउड़ी, मः ५)
निरगुन ते सरगुन दृसटारं ॥ (२५०-१३, गउड़ी, मः ५)
सगल भाति करि करहि उपाइओ ॥ (२५०-१३, गउड़ी, मः ५)
जनम मरन मन मोहु बढाइओ ॥ (२५०-१४, गउड़ी, मः ५)
दुहू भाति ते आपि निरारा ॥ (२५०-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक अंतु न पारावारा ॥२॥ (२५०-१४, गउड़ी, मः ५)

सलोकु ॥ (२५०-१५)
सेई साह भगवंत से सचु सम्पै हरि रासि ॥ (२५०-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक सचु सुचि पाईऐ तिह संतन कै पासि ॥१॥ (२५०-१५, गउड़ी, मः ५)
पवड़ी ॥ (२५०-१६)
ससा सति सति सति सोऊ ॥ (२५०-१६, गउड़ी, मः ५)
सति पुरख ते भिन्न न कोऊ ॥ (२५०-१६, गउड़ी, मः ५)
सोऊ सरनि परै जिह पायं ॥ (२५०-१६, गउड़ी, मः ५)
सिमरि सिमरि गुन गाइ सुनायं ॥ (२५०-१७, गउड़ी, मः ५)
संसै भरमु नही कछु बिआपत ॥ (२५०-१७, गउड़ी, मः ५)
प्रगट प्रतापु ताहू को जापत ॥ (२५०-१७, गउड़ी, मः ५)
सो साधू इह पहुचनहारा ॥ (२५०-१७, गउड़ी, मः ५)
नानक ता कै सद बलिहारा ॥३॥ (२५०-१८, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५०-१८)
धनु धनु कहा पुकारते माइआ मोह सभ कूर ॥ (२५०-१८, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५१

नाम बिहूने नानका होत जात सभु धूर ॥१॥ (२५१-१, गउड़ी, मः ५)
पवड़ी ॥ (२५१-१)
धधा धूरि पुनीत तेरे जनूआ ॥ (२५१-१, गउड़ी, मः ५)
धनि तेऊ जिह रुच इआ मनूआ ॥ (२५१-१, गउड़ी, मः ५)
धनु नही बाछहि सुरग न आछहि ॥ (२५१-२, गउड़ी, मः ५)
अति प्रिअ प्रीति साध रज राचहि ॥ (२५१-२, गउड़ी, मः ५)
धंधे कहा बिआपहि ताहू ॥ (२५१-२, गउड़ी, मः ५)
जो एक छाडि अन कतहि न जाहू ॥ (२५१-२, गउड़ी, मः ५)
जा कै हीऐ दीओ प्रभ नाम ॥ (२५१-३, गउड़ी, मः ५)
नानक साध पूरन भगवान ॥४॥ (२५१-३, गउड़ी, मः ५)
सलोक ॥ (२५१-४)
अनिक भेख अरु ङिआन धिआन मनहठि मिलिअउ न कोइ ॥ (२५१-४, गउड़ी, मः ५)
कहु नानक किरपा भई भगतु ङिआनी सोइ ॥१॥ (२५१-४, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५१-५)
ङंङा ङिआनु नही मुख बातउ ॥ (२५१-५, गउड़ी, मः ५)
अनिक जुगति सासत्र करि भातउ ॥ (२५१-५, गउड़ी, मः ५)
ङिआनी सोइ जा कै दृड़ सोऊ ॥ (२५१-६, गउड़ी, मः ५)
कहत सुनत कछु जोगु न होऊ ॥ (२५१-६, गउड़ी, मः ५)
ङिआनी रहत आगिआ दृड़ु जा कै ॥ (२५१-६, गउड़ी, मः ५)

उसन सीत समसरि सभ ता कै ॥ (२५१-७, गउड़ी, मः ५)
ङिआनी ततु गुरमुखि बीचारी ॥ (२५१-७, गउड़ी, मः ५)
नानक जा कउ किरपा धारी ॥५॥ (२५१-७, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५१-८)
आवन आए सृसटि महि बिनु बूझे पसु ढोर ॥ (२५१-८, गउड़ी, मः ५)
नानक गुरमुखि सो बुझै जा कै भाग मथोर ॥१॥ (२५१-८, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५१-९)
या जुग महि एकहि कउ आइआ ॥ (२५१-९, गउड़ी, मः ५)
जनमत मोहिओ मोहनी माइआ ॥ (२५१-९, गउड़ी, मः ५)
गरभ कुंट महि उरध तप करते ॥ (२५१-९, गउड़ी, मः ५)
सासि सासि सिमरत प्रभु रहते ॥ (२५१-१०, गउड़ी, मः ५)
उरझि परे जो छोडि छडाना ॥ (२५१-१०, गउड़ी, मः ५)
देवनहारु मनहि बिसराना ॥ (२५१-१०, गउड़ी, मः ५)
धारहु किरपा जिसहि गुसाई ॥ (२५१-११, गउड़ी, मः ५)
इत उत नानक तिसु बिसरहु नाही ॥६॥ (२५१-११, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५१-११)
आवत हुकमि बिनास हुकमि आगिआ भिन्न न कोइ ॥ (२५१-११, गउड़ी, मः ५)
आवन जाना तिह मिटै नानक जिह मनि सोइ ॥१॥ (२५१-१२, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५१-१३)
एऊ जीअ बहुतु ग्रभ वासे ॥ (२५१-१३, गउड़ी, मः ५)
मोह मगन मीठ जोनि फासे ॥ (२५१-१३, गउड़ी, मः ५)
इनि माइआ त्रै गुण बसि कीने ॥ (२५१-१३, गउड़ी, मः ५)
आपन मोह घटे घटि दीने ॥ (२५१-१४, गउड़ी, मः ५)
ए साजन कछु कहहु उपाइआ ॥ (२५१-१४, गउड़ी, मः ५)
जा ते तरउ बिखम इह माइआ ॥ (२५१-१४, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा सतसंगि मिलाए ॥ (२५१-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक ता कै निकटि न माए ॥७॥ (२५१-१५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५१-१५)
किरत कमावन सुभ असुभ कीने तिनि प्रभि आपि ॥ (२५१-१५, गउड़ी, मः ५)
पसु आपन हउ हउ करै नानक बिनु हरि कहा कमाति ॥१॥ (२५१-१६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५१-१६)
एकहि आपि करावनहारा ॥ (२५१-१६, गउड़ी, मः ५)
आपहि पाप पुन्न बिसथारा ॥ (२५१-१७, गउड़ी, मः ५)
इआ जुग जितु जितु आपहि लाइओ ॥ (२५१-१७, गउड़ी, मः ५)
सो सो पाइओ जु आपि दिवाइओ ॥ (२५१-१७, गउड़ी, मः ५)

उआ का अंतु न जानै कोऊ ॥ (२५१-१८, गउड़ी, मः ५)
जो जो करै सोऊ फुनि होऊ ॥ (२५१-१८, गउड़ी, मः ५)
एकहि ते सगला बिसथारा ॥ (२५१-१८, गउड़ी, मः ५)
नानक आपि सवारनहारा ॥८॥ (२५१-१६, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५१-१६)
राचि रहे बनिता बिनोद कुसम रंग बिख सोर ॥ (२५१-१६, गउड़ी, मः ५)
नानक तिह सरनी परउ बिनसि जाइ मै मोर ॥१॥ (२५१-१६, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५२

पउड़ी ॥ (२५२-१)
रे मन बिनु हरि जह रचहु तह तह बंधन पाहि ॥ (२५२-१, गउड़ी, मः ५)
जिह बिधि कतहू न छूटीऐ साकत तेऊ कमाहि ॥ (२५२-१, गउड़ी, मः ५)
हउ हउ करते करम रत ता को भारु अफार ॥ (२५२-२, गउड़ी, मः ५)
प्रीति नही जउ नाम सिउ तउ एऊ करम बिकार ॥ (२५२-२, गउड़ी, मः ५)
बाधे जम की जेवरी मीठी माइआ रंग ॥ (२५२-३, गउड़ी, मः ५)
भ्रम के मोहे नह बुझहि सो प्रभु सदहू संग ॥ (२५२-३, गउड़ी, मः ५)
लेखै गणत न छूटीऐ काची भीति न सुधि ॥ (२५२-४, गउड़ी, मः ५)
जिसहि बुझाए नानका तिह गुरमुखि निरमल बुधि ॥६॥ (२५२-४, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५२-५)
टूटे बंधन जासु के होआ साधू संगु ॥ (२५२-५, गउड़ी, मः ५)
जो राते रंग एक कै नानक गूड़ा रंगु ॥१॥ (२५२-५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५२-५)
रारा रंगहु इआ मनु अपना ॥ (२५२-६, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि नामु जपहु जपु रसना ॥ (२५२-६, गउड़ी, मः ५)
रे रे दरगह कहै न कोऊ ॥ (२५२-६, गउड़ी, मः ५)
आउ बैठु आदरु सुभ देऊ ॥ (२५२-६, गउड़ी, मः ५)
उआ महली पावहि तू बासा ॥ (२५२-७, गउड़ी, मः ५)
जनम मरन नह होइ बिनासा ॥ (२५२-७, गउड़ी, मः ५)
मसतकि करमु लिखिओ धुरि जा कै ॥ (२५२-७, गउड़ी, मः ५)
हरि सम्पै नानक घरि ता कै ॥१०॥ (२५२-८, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५२-८)
लालच झूठ बिकार मोह बिआपत मूड़े अंध ॥ (२५२-८, गउड़ी, मः ५)
लागि परे दुरगंध सिउ नानक माइआ बंध ॥१॥ (२५२-६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५२-६)
लला लपटि बिखै रस राते ॥ (२५२-६, गउड़ी, मः ५)

अहम्बुधि माइआ मद माते ॥ (२५२-९, गउड़ी, मः ५)
इआ माइआ महि जनमहि मरना ॥ (२५२-१०, गउड़ी, मः ५)
जिउ जिउ हुकमु तिवै तिउ करना ॥ (२५२-१०, गउड़ी, मः ५)
कोऊ ऊन न कोऊ पूरा ॥ (२५२-१०, गउड़ी, मः ५)
कोऊ सुघरु न कोऊ मूरा ॥ (२५२-११, गउड़ी, मः ५)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ (२५२-११, गउड़ी, मः ५)
नानक ठाकुर सदा अलिपना ॥११॥ (२५२-११, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५२-१२)
लाल गुपाल गोबिंद प्रभ गहिर गम्भीर अथाह ॥ (२५२-१२, गउड़ी, मः ५)
दूसर नाही अवर को नानक बेपरवाह ॥१॥ (२५२-१२, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५२-१३)
लला ता कै लवै न कोऊ ॥ (२५२-१३, गउड़ी, मः ५)
एकहि आपि अवर नह होऊ ॥ (२५२-१३, गउड़ी, मः ५)
होवनहारु होत सद आइआ ॥ (२५२-१३, गउड़ी, मः ५)
उआ का अंतु न काहू पाइआ ॥ (२५२-१४, गउड़ी, मः ५)
कीट हसति महि पूर समाने ॥ (२५२-१४, गउड़ी, मः ५)
प्रगट पुरख सभ ठाऊ जाने ॥ (२५२-१४, गउड़ी, मः ५)
जा कउ दीनो हरि रसु अपना ॥ (२५२-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक गुरमुखि हरि हरि तिह जपना ॥१२॥ (२५२-१५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५२-१५)
आतम रसु जिह जानिआ हरि रंग सहजे माणु ॥ (२५२-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक धनि धनि धंनि जन आए ते परवाणु ॥१॥ (२५२-१६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५२-१६)
आइआ सफल ताहू को गनीऐ ॥ (२५२-१६, गउड़ी, मः ५)
जासु रसन हरि हरि जसु भनीऐ ॥ (२५२-१७, गउड़ी, मः ५)
आइ बसहि साधू कै संगे ॥ (२५२-१७, गउड़ी, मः ५)
अनदिनु नामु धिआवहि रंगे ॥ (२५२-१७, गउड़ी, मः ५)
आवत सो जनु नामहि राता ॥ (२५२-१८, गउड़ी, मः ५)
जा कउ दइआ मइआ बिधाता ॥ (२५२-१८, गउड़ी, मः ५)
एकहि आवन फिरि जोनि न आइआ ॥ (२५२-१८, गउड़ी, मः ५)
नानक हरि कै दरसि समाइआ ॥१३॥ (२५२-१९, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५२-१९)
यासु जपत मनि होइ अनंदु बिनसै दूजा भाउ ॥ (२५२-१९, गउड़ी, मः ५)
दूख दरद तृसना बुझै नानक नामि समाउ ॥१॥ (२५२-१९, गउड़ी, मः ५)

पउड़ी ॥ (२५३-१)
यया जारउ दुरमति दोऊ ॥ (२५३-१, गउड़ी, मः ५)
तिसहि तिआगि सुख सहजे सोऊ ॥ (२५३-१, गउड़ी, मः ५)
यया जाइ परहु संत सरना ॥ (२५३-२, गउड़ी, मः ५)
जिह आसर इआ भवजलु तरना ॥ (२५३-२, गउड़ी, मः ५)
यया जनमि न आवै सोऊ ॥ (२५३-२, गउड़ी, मः ५)
एक नाम ले मनहि परोऊ ॥ (२५३-३, गउड़ी, मः ५)
यया जनमु न हारीऐ गुर पूरे की टेक ॥ (२५३-३, गउड़ी, मः ५)
नानक तिह सुखु पाइआ जा कै हीअरै एक ॥१४॥ (२५३-३, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५३-४)
अंतरि मन तन बसि रहे ईत ऊत के मीत ॥ (२५३-४, गउड़ी, मः ५)
गुरि पूरै उपदेसिआ नानक जपीऐ नीत ॥१॥ (२५३-४, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५३-५)
अनदिनु सिमरहु तासु कउ जो अंति सहाई होइ ॥ (२५३-५, गउड़ी, मः ५)
इह बिखिआ दिन चारि छिअ छाडि चलिओ सभु कोइ ॥ (२५३-५, गउड़ी, मः ५)
का को मात पिता सुत धीआ ॥ (२५३-६, गउड़ी, मः ५)
गृह बनिता कछु संगि न लीआ ॥ (२५३-६, गउड़ी, मः ५)
ऐसी संचि जु बिनसत नाही ॥ (२५३-६, गउड़ी, मः ५)
पति सेती अपुनै घरि जाही ॥ (२५३-७, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि कलि कीरतनु गाइआ ॥ (२५३-७, गउड़ी, मः ५)
नानक ते ते बहुरि न आइआ ॥१५॥ (२५३-७, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५३-८)
अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत ॥ (२५३-८, गउड़ी, मः ५)
मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत ॥१॥ (२५३-८, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५३-९)
ङंङा खटु सासत्र होइ ङिआता ॥ (२५३-९, गउड़ी, मः ५)
पूरकु कुम्भक रेचक करमाता ॥ (२५३-९, गउड़ी, मः ५)
ङिआन धिआन तीर्थ इसनानी ॥ (२५३-१०, गउड़ी, मः ५)
सोमपाक अपरस उदिआनी ॥ (२५३-१०, गउड़ी, मः ५)
राम नाम संगि मनि नही हेता ॥ (२५३-१०, गउड़ी, मः ५)
जो कछु कीनो सोऊ अनेता ॥ (२५३-११, गउड़ी, मः ५)
उआ ते ऊतमु गनउ चंडाला ॥ (२५३-११, गउड़ी, मः ५)
नानक जिह मनि बसहि गुपाला ॥१६॥ (२५३-११, गउड़ी, मः ५)

सलोकु ॥ (२५३-१२)
कुंट चारि दह दिसि भ्रमे करम किरति की रेख ॥ (२५३-१२, गउड़ी, मः ५)
सूख दूख मुकति जोनि नानक लिखिओ लेख ॥१॥ (२५३-१२, गउड़ी, मः ५)
पवड़ी ॥ (२५३-१३)
कका कारन करता सोऊ ॥ (२५३-१३, गउड़ी, मः ५)
लिखिओ लेखु न मेटत कोऊ ॥ (२५३-१३, गउड़ी, मः ५)
नही होत कछु दोऊ बारा ॥ (२५३-१३, गउड़ी, मः ५)
करनैहारु न भूलनहारा ॥ (२५३-१३, गउड़ी, मः ५)
काहू पंथु दिखारै आपै ॥ (२५३-१४, गउड़ी, मः ५)
काहू उदिआन भ्रमत पछुतापै ॥ (२५३-१४, गउड़ी, मः ५)
आपन खेलु आप ही कीनो ॥ (२५३-१४, गउड़ी, मः ५)
जो जो दीनो सु नानक लीनो ॥१७॥ (२५३-१५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५३-१५)
खात खरचत बिलछत रहे टूटि न जाहि भंडार ॥ (२५३-१५, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि जपत अनेक जन नानक नाहि सुमार ॥१॥ (२५३-१५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५३-१६)
खखा खूना कछु नही तिसु सम्रथ कै पाहि ॥ (२५३-१६, गउड़ी, मः ५)
जो देना सो दे रहिओ भावै तह तह जाहि ॥ (२५३-१६, गउड़ी, मः ५)
खरचु खजाना नाम धनु इआ भगतन की रासि ॥ (२५३-१७, गउड़ी, मः ५)
खिमा गरीबी अनद सहज जपत रहहि गुणतास ॥ (२५३-१७, गउड़ी, मः ५)
खेलहि बिगसहि अनद सिउ जा कउ होत क्रिपाल ॥ (२५३-१८, गउड़ी, मः ५)
सदीव गनीव सुहावने राम नाम ग्रिहि माल ॥ (२५३-१८, गउड़ी, मः ५)
खेदु न दूखु न डानु तिह जा कउ नदरि करी ॥ (२५३-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक जो प्रभ भाणिआ पूरी तिना परी ॥१८॥ (२५३-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५४

सलोकु ॥ (२५४-१)
गनि मिनि देखहु मनै माहि सरपर चलनो लोग ॥ (२५४-१, गउड़ी, मः ५)
आस अनित गुरमुखि मिटै नानक नाम अरोग ॥१॥ (२५४-१, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५४-२)
गगा गोबिद गुण रवहु सासि सासि जपि नीत ॥ (२५४-२, गउड़ी, मः ५)
कहा बिसासा देह का बिलम न करिहो मीत ॥ (२५४-२, गउड़ी, मः ५)
नह बारिक नह जोबनै नह बिरधी कछु बंधु ॥ (२५४-३, गउड़ी, मः ५)
ओह बेरा नह बूझीऐ जउ आइ परै जम फंधु ॥ (२५४-३, गउड़ी, मः ५)
गिआनी धिआनी चतुर पेखि रहनु नही इह ठाइ ॥ (२५४-४, गउड़ी, मः ५)

छाडि छाडि सगली गई मूड़ तहा लपटाहि ॥ (२५४-४, गउड़ी, मः ५)
गुर प्रसादि सिमरत रहै जाहू मसतकि भाग ॥ (२५४-५, गउड़ी, मः ५)
नानक आए सफल ते जा कउ प्रिअहि सुहाग ॥१९॥ (२५४-५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५४-६)
घोखे सासत्र बेद सभ आन न कथतउ कोइ ॥ (२५४-६, गउड़ी, मः ५)
आदि जुगादी हुणि होवत नानक एकै सोइ ॥१॥ (२५४-६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५४-७)
घघा घालहु मनहि एह बिनु हरि दूसर नाहि ॥ (२५४-७, गउड़ी, मः ५)
नह होआ नह होवना जत कत ओही समाहि ॥ (२५४-७, गउड़ी, मः ५)
घूलहि तउ मन जउ आवहि सरना ॥ (२५४-८, गउड़ी, मः ५)
नाम ततु कलि महि पुनहचरना ॥ (२५४-८, गउड़ी, मः ५)
घालि घालि अनिक पछुतावहि ॥ (२५४-८, गउड़ी, मः ५)
बिनु हरि भगति कहा थिति पावहि ॥ (२५४-९, गउड़ी, मः ५)
घोलि महा रसु अमृतु तिह पीआ ॥ (२५४-९, गउड़ी, मः ५)
नानक हरि गुरि जा कउ दीआ ॥२०॥ (२५४-१०, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५४-१०)
ङणि घाले सभ दिवस सास नह बढन घटन तिलु सार ॥ (२५४-१०, गउड़ी, मः ५)
जीवन लोरहि भर्म मोह नानक तेऊ गवार ॥१॥ (२५४-११, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५४-११)
ङंङा ङ्रासै कालु तिह जो साकत प्रभि कीन ॥ (२५४-११, गउड़ी, मः ५)
अनिक जोनि जनमहि मरहि आतम रामु न चीन ॥ (२५४-१२, गउड़ी, मः ५)
ङिआन धिआन ताहू कउ आए ॥ (२५४-१२, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा जिह आपि दिवाए ॥ (२५४-१२, गउड़ी, मः ५)
ङणती ङणी नही कोऊ छूटै ॥ (२५४-१३, गउड़ी, मः ५)
काची गागरि सरपर फूटै ॥ (२५४-१३, गउड़ी, मः ५)
सो जीवत जिह जीवत जपिआ ॥ (२५४-१३, गउड़ी, मः ५)
प्रगट भए नानक नह छपिआ ॥२१॥ (२५४-१४, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५४-१४)
चिति चितवउ चरणारबिंद ऊध कवल बिगसाँत ॥ (२५४-१४, गउड़ी, मः ५)
प्रगट भए आपहि गोबिंद नानक संत मताँत ॥१॥ (२५४-१५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५४-१५)
चचा चरन कमल गुर लागा ॥ (२५४-१५, गउड़ी, मः ५)
धनि धनि उआ दिन संजोग सभागा ॥ (२५४-१५, गउड़ी, मः ५)
चारि कुंट दह दिसि भ्रमि आइओ ॥ (२५४-१६, गउड़ी, मः ५)
भई कृपा तब दरसनु पाइओ ॥ (२५४-१६, गउड़ी, मः ५)

चार बिचार बिनसिओ सभ दूआ ॥ (२५४-१६, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि मनु निर्मल हूआ ॥ (२५४-१७, गउड़ी, मः ५)
चिंत बिसारी एक दृसटेता ॥ (२५४-१७, गउड़ी, मः ५)
नानक गिआन अंजनु जिह नेत्रा ॥२२॥ (२५४-१७, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५४-१८)
छाती सीतल मनु सुखी छंत गोबिद गुन गाइ ॥ (२५४-१८, गउड़ी, मः ५)
ऐसी किरपा करहु प्रभ नानक दास दसाइ ॥१॥ (२५४-१८, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५४-१६)
छछा छोहरे दास तुमारे ॥ (२५४-१६, गउड़ी, मः ५)
दास दासन के पानीहारे ॥ (२५४-१६, गउड़ी, मः ५)
छछा छारु होत तेरे संता ॥ (२५४-१६, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५५

अपनी कृपा करहु भगवंता ॥ (२५५-१, गउड़ी, मः ५)
छाडि सिआनप बहु चतुराई ॥ (२५५-१, गउड़ी, मः ५)
संतन की मन टेक टिकाई ॥ (२५५-१, गउड़ी, मः ५)
छारु की पुतरी पर्म गति पाई ॥ (२५५-२, गउड़ी, मः ५)
नानक जा कउ संत सहाई ॥२३॥ (२५५-२, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५५-२)
जोर जुलम फूलहि घनो काची देह बिकार ॥ (२५५-२, गउड़ी, मः ५)
अहम्बुधि बंधन परे नानक नाम छुटार ॥१॥ (२५५-३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५५-३)
जजा जानै हउ कछु हूआ ॥ (२५५-३, गउड़ी, मः ५)
बाधिओ जिउ नलिनी भ्रमि सूआ ॥ (२५५-४, गउड़ी, मः ५)
जउ जानै हउ भगतु गिआनी ॥ (२५५-४, गउड़ी, मः ५)
आगै ठाकुरि तिलु नही मानी ॥ (२५५-४, गउड़ी, मः ५)
जउ जानै मै कथनी करता ॥ (२५५-५, गउड़ी, मः ५)
बिआपारी बसुधा जिउ फिरता ॥ (२५५-५, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि जिह हउमै मारी ॥ (२५५-५, गउड़ी, मः ५)
नानक ता कउ मिले मुरारी ॥२४॥ (२५५-५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५५-६)
झालाघे उठि नामु जपि निसि बासुर आराधि ॥ (२५५-६, गउड़ी, मः ५)
कारहा तुझै न बिआपई नानक मिटै उपाधि ॥१॥ (२५५-६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५५-७)
झझा झूरनु मिटै तुमारो ॥ (२५५-७, गउड़ी, मः ५)

राम नाम सिउ करि बिउहारो ॥ (२५५-७, गउड़ी, मः ५)
झूरत झूरत साकत मूआ ॥ (२५५-८, गउड़ी, मः ५)
जा कै रिदै होत भाउ बीआ ॥ (२५५-८, गउड़ी, मः ५)
झरहि कसम्मल पाप तेरे मनूआ ॥ (२५५-८, गउड़ी, मः ५)
अमृत कथा संतसंगि सुनूआ ॥ (२५५-८, गउड़ी, मः ५)
झरहि काम क्रोध द्रुसटाई ॥ (२५५-९, गउड़ी, मः ५)
नानक जा कउ कृपा गुसाई ॥२५॥ (२५५-९, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५५-९)
ञतन करहु तुम अनिक बिधि रहनु न पावहु मीत ॥ (२५५-९, गउड़ी, मः ५)
जीवत रहहु हरि हरि भजहु नानक नाम परीति ॥१॥ (२५५-१०, गउड़ी, मः ५)
पवड़ी ॥ (२५५-१०)
ञंञा ञाणहु दृड़ु सही बिनसि जात एह हेत ॥ (२५५-११, गउड़ी, मः ५)
गणती गणउ न गणि सकउ ऊठि सिधारे केत ॥ (२५५-११, गउड़ी, मः ५)
ञो पेखउ सो बिनसतउ का सिउ करीऐ संगु ॥ (२५५-११, गउड़ी, मः ५)
ञाणहु इआ बिधि सही चित झूठउ माइआ रंगु ॥ (२५५-१२, गउड़ी, मः ५)
ञाणत सोई संतु सुइ भ्रम ते कीचित भिन्न ॥ (२५५-१२, गउड़ी, मः ५)
अंध कूप ते तिह कढहु जिह होवहु सुप्रसन्न ॥ (२५५-१३, गउड़ी, मः ५)
ञा कै हाथि समरथ ते कारन करनै जोग ॥ (२५५-१३, गउड़ी, मः ५)
नानक तिह उसतति करउ ञाहू कीओ संजोग ॥२६॥ (२५५-१४, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५५-१४)
टूटे बंधन जनम मरन साध सेव सुखु पाइ ॥ (२५५-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक मनहु न बीसरै गुण निधि गोबिद राइ ॥१॥ (२५५-१५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५५-१५)
टहल करहु तउ एक की जा ते बृथा न कोइ ॥ (२५५-१५, गउड़ी, मः ५)
मनि तनि मुखि हीऐ बसै जो चाहहु सो होइ ॥ (२५५-१६, गउड़ी, मः ५)
टहल महल ता कउ मिलै जा कउ साध कृपाल ॥ (२५५-१६, गउड़ी, मः ५)
साधू संगति तउ बसै जउ आपन होहि दइआल ॥ (२५५-१७, गउड़ी, मः ५)
टोहे टाहे बहु भवन बिनु नावै सुखु नाहि ॥ (२५५-१७, गउड़ी, मः ५)
टलहि जाम के दूत तिह जु साधू संगि समाहि ॥ (२५५-१८, गउड़ी, मः ५)
बारि बारि जाउ संत सदके ॥ (२५५-१८, गउड़ी, मः ५)
नानक पाप बिनासे कदि के ॥२७॥ (२५५-१९, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५५-१९)
ठाक न होती तिनहु दरि जिह होवहु सुप्रसन्न ॥ (२५५-१९, गउड़ी, मः ५)
जो जन प्रभि अपुने करे नानक ते धनि धंनि ॥१॥ (२५५-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५६

पउड़ी ॥ (२५६-१)
ठठा मनूआ ठाहहि नाही ॥ (२५६-१, गउड़ी, मः ५)
जो सगल तिआगि एकहि लपटाही ॥ (२५६-१, गउड़ी, मः ५)
ठहकि ठहकि माइआ संगि मूए ॥ (२५६-२, गउड़ी, मः ५)
उआ कै कुसल न कतहू हूए ॥ (२५६-२, गउड़ी, मः ५)
ठाँढि परी संतह संगि बसिआ ॥ (२५६-२, गउड़ी, मः ५)
अमृत नामु तहा जीअ रसिआ ॥ (२५६-३, गउड़ी, मः ५)
ठाकुर अपुने जो जनु भाइआ ॥ (२५६-३, गउड़ी, मः ५)
नानक उआ का मनु सीतलाइआ ॥२८॥ (२५६-३, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५६-४)
डंडउति बंदन अनिक बार सर्ब कला समरथ ॥ (२५६-४, गउड़ी, मः ५)
डोलन ते राखहु प्रभू नानक दे करि हथ ॥१॥ (२५६-४, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-५)
डडा डेरा इहु नही जह डेरा तह जानु ॥ (२५६-५, गउड़ी, मः ५)
उआ डेरा का संजमो गुर कै सबदि पछानु ॥ (२५६-५, गउड़ी, मः ५)
इआ डेरा कउ स्रमु करि घालै ॥ (२५६-६, गउड़ी, मः ५)
जा का तसू नही संगि चालै ॥ (२५६-६, गउड़ी, मः ५)
उआ डेरा की सो मिति जानै ॥ (२५६-६, गउड़ी, मः ५)
जा कउ दृसटि पूरन भगवानै ॥ (२५६-७, गउड़ी, मः ५)
डेरा निहचलु सचु साधसंग पाइआ ॥ (२५६-७, गउड़ी, मः ५)
नानक ते जन नह डोलाइआ ॥२९॥ (२५६-७, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५६-८)
ढाहन लागे धर्म राइ किनहि न घालिओ बंध ॥ (२५६-८, गउड़ी, मः ५)
नानक उबरे जपि हरी साधसंगि सनबंध ॥१॥ (२५६-८, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-९)
ढढा ढूढत कह फिरहु ढूढनु इआ मन माहि ॥ (२५६-९, गउड़ी, मः ५)
संगि तुहारै प्रभु बसै बनु बनु कहा फिराहि ॥ (२५६-९, गउड़ी, मः ५)
ढेरी ढाहहु साधसंगि अहम्बुधि बिकराल ॥ (२५६-१०, गउड़ी, मः ५)
सुखु पावहु सहजे बसहु दरसनु देखि निहाल ॥ (२५६-१०, गउड़ी, मः ५)
ढेरी जामै जमि मरै गरभ जोनि दुख पाइ ॥ (२५६-११, गउड़ी, मः ५)
मोह मगन लपटत रहै हउ हउ आवै जाइ ॥ (२५६-११, गउड़ी, मः ५)
ढहत ढहत अब ढहि परे साध जना सरनाइ ॥ (२५६-१२, गउड़ी, मः ५)
दुख के फाहे काटिआ नानक लीए समाइ ॥३०॥ (२५६-१२, गउड़ी, मः ५)

सलोकु ॥ (२५६-१३)
जह साधू गोबिद भजनु कीरतनु नानक नीत ॥ (२५६-१३, गउड़ी, मः ५)
णा हउ णा तूं णह छुटहि निकटि न जाईअहु दूत ॥१॥ (२५६-१३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-१४)
णाणा रण ते सीझीऐ आतम जीतै कोइ ॥ (२५६-१४, गउड़ी, मः ५)
हउमै अन सिउ लरि मरै सो सोभा दू होइ ॥ (२५६-१४, गउड़ी, मः ५)
मणी मिटाइ जीवत मरै गुर पूरे उपदेस ॥ (२५६-१५, गउड़ी, मः ५)
मनूआ जीतै हरि मिलै तिह सूरतण वेस ॥ (२५६-१५, गउड़ी, मः ५)
णा को जाणै आपणो एकहि टेक अधार ॥ (२५६-१६, गउड़ी, मः ५)
रैणि दिणसु सिमरत रहै सो प्रभु पुरखु अपार ॥ (२५६-१६, गउड़ी, मः ५)
रेण सगल इआ मनु करै एऊ कर्म कमाइ ॥ (२५६-१६, गउड़ी, मः ५)
हुकमै बूझै सदा सुखु नानक लिखिआ पाइ ॥३१॥ (२५६-१७, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५६-१८)
तनु मनु धनु अरपउ तिसै प्रभू मिलावै मोहि ॥ (२५६-१८, गउड़ी, मः ५)
नानक भ्रम भउ काटीऐ चूकै जम की जोह ॥१॥ (२५६-१८, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-१९)
तता ता सिउ प्रीति करि गुण निधि गोबिद राइ ॥ (२५६-१९, गउड़ी, मः ५)
फल पावहि मन बाछते तपति तुहारी जाइ ॥ (२५६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५७

त्रास मिटै जम पंथ की जासु बसै मनि नाउ ॥ (२५७-१, गउड़ी, मः ५)
गति पावहि मति होइ प्रगास महली पावहि ठाउ ॥ (२५७-१, गउड़ी, मः ५)
ताहू संगि न धनु चलै गृह जोबन नह राज ॥ (२५७-२, गउड़ी, मः ५)
संतसंगि सिमरत रहहु इहै तुहारै काज ॥ (२५७-२, गउड़ी, मः ५)
ताता कछू न होई है जउ ताप निवारै आप ॥ (२५७-३, गउड़ी, मः ५)
प्रतिपालै नानक हमहि आपहि माई बाप ॥३२॥ (२५७-३, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५७-४)
थाके बहु बिधि घालते तृपति न तृसना लाथ ॥ (२५७-४, गउड़ी, मः ५)
संचि संचि साकत मूए नानक माइआ न साथ ॥१॥ (२५७-४, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५७-५)
थथा थिरु कोऊ नही काइ पसारहु पाव ॥ (२५७-५, गउड़ी, मः ५)
अनिक बंच बल छल करहु माइआ एक उपाव ॥ (२५७-५, गउड़ी, मः ५)
थैली संचहु स्रमु करहु थाकि परहु गावार ॥ (२५७-६, गउड़ी, मः ५)
मन कै कामि न आवई अंते अउसर बार ॥ (२५७-६, गउड़ी, मः ५)
थिति पावहु गोबिद भजहु संतह की सिख लेहु ॥ (२५७-७, गउड़ी, मः ५)

प्रीति करहु सद एक सिउ इआ साचा असनेहु ॥ (२५७-७, गउड़ी, मः ५)
कारन करन करावनो सभ बिधि एकै हाथ ॥ (२५७-८, गउड़ी, मः ५)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि नानक जंत अनाथ ॥३३॥ (२५७-८, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५७-९)
दासह एकु निहारिआ सभु कछु देवनहार ॥ (२५७-९, गउड़ी, मः ५)
सासि सासि सिमरत रहहि नानक दरस अधार ॥१॥ (२५७-९, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५७-१०)
ददा दाता एकु है सभ कउ देवनहार ॥ (२५७-१०, गउड़ी, मः ५)
देंदे तोटि न आवई अगनत भरे भंडार ॥ (२५७-१०, गउड़ी, मः ५)
दैनहारु सद जीवनहारा ॥ (२५७-११, गउड़ी, मः ५)
मन मूरख किउ ताहि बिसारा ॥ (२५७-११, गउड़ी, मः ५)
दोसु नही काहू कउ मीता ॥ (२५७-११, गउड़ी, मः ५)
माइआ मोह बंधु प्रभि कीता ॥ (२५७-१२, गउड़ी, मः ५)
दरद निवारहि जा के आपे ॥ (२५७-१२, गउड़ी, मः ५)
नानक ते ते गुरमुखि ध्रापे ॥३४॥ (२५७-१२, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५७-१२)
धर जीअरे इक टेक तू लाहि बिडानी आस ॥ (२५७-१३, गउड़ी, मः ५)
नानक नामु धिआईऐ कारजु आवै रासि ॥१॥ (२५७-१३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५७-१३)
धधा धावत तउ मिटै संतसंगि होइ बासु ॥ (२५७-१४, गउड़ी, मः ५)
धुर ते किरपा करहु आपि तउ होइ मनहि परगासु ॥ (२५७-१४, गउड़ी, मः ५)
धनु साचा तेऊ सच साहा ॥ (२५७-१४, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि पूंजी नाम बिसाहा ॥ (२५७-१५, गउड़ी, मः ५)
धीरजु जसु सोभा तिह बनिआ ॥ (२५७-१५, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि नामु स्रवन जिह सुनिआ ॥ (२५७-१५, गउड़ी, मः ५)
गुरमुखि जिह घटि रहे समाई ॥ (२५७-१६, गउड़ी, मः ५)
नानक तिह जन मिली वडाई ॥३५॥ (२५७-१६, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५७-१७)
नानक नामु नामु जपु जपिआ अंतरि बाहरि रंगि ॥ (२५७-१७, गउड़ी, मः ५)
गुरि पूरै उपदेसिआ नरकु नाहि साधसंगि ॥१॥ (२५७-१७, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५७-१८)
नन्ना नरकि परहि ते नाही ॥ (२५७-१८, गउड़ी, मः ५)
जा कै मनि तनि नामु बसाही ॥ (२५७-१८, गउड़ी, मः ५)
नामु निधानु गुरमुखि जो जपते ॥ (२५७-१८, गउड़ी, मः ५)
बिखु माइआ महि ना ओइ खपते ॥ (२५७-१९, गउड़ी, मः ५)

नन्नाकारु न होता ता कहु ॥ (२५७-१९, गउड़ी, मः ५)
नामु मंत्रु गुरि दीनो जा कहु ॥ (२५७-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५८

निधि निधान हरि अमृत पूरे ॥ (२५८-१, गउड़ी, मः ५)
तह बाजे नानक अनहद तूरे ॥३६॥ (२५८-१, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५८-१)
पति राखी गुरि पारब्रह्म तजि परपंच मोह बिकार ॥ (२५८-१, गउड़ी, मः ५)
नानक सोऊ आराधीऐ अंतु न पारावारु ॥१॥ (२५८-२, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५८-२)
पपा परमिति पारु न पाइआ ॥ (२५८-२, गउड़ी, मः ५)
पतित पावन अगम हरि राइआ ॥ (२५८-३, गउड़ी, मः ५)
होत पुनीत कोट अपराधू ॥ (२५८-३, गउड़ी, मः ५)
अमृत नामु जपहि मिलि साधू ॥ (२५८-३, गउड़ी, मः ५)
परपच ध्रोह मोह मिटनाई ॥ (२५८-४, गउड़ी, मः ५)
जा कउ राखहु आपि गुसाई ॥ (२५८-४, गउड़ी, मः ५)
पातिसाहु छत्र सिर सोऊ ॥ (२५८-४, गउड़ी, मः ५)
नानक दूसर अवरु न कोऊ ॥३७॥ (२५८-५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५८-५)
फाहे काटे मिटे गवन फतिह भई मनि जीत ॥ (२५८-५, गउड़ी, मः ५)
नानक गुर ते थित पाई फिरन मिटे नित नीत ॥१॥ (२५८-५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५८-६)
फफा फिरत फिरत तू आइआ ॥ (२५८-६, गउड़ी, मः ५)
द्रुलभ देह कलिजुग महि पाइआ ॥ (२५८-६, गउड़ी, मः ५)
फिरि इआ अउसरु चरै न हाथा ॥ (२५८-७, गउड़ी, मः ५)
नामु जपहु तउ कटीअहि फासा ॥ (२५८-७, गउड़ी, मः ५)
फिरि फिरि आवन जानु न होई ॥ (२५८-७, गउड़ी, मः ५)
एकहि एक जपहु जपु सोई ॥ (२५८-८, गउड़ी, मः ५)
करहु कृपा प्रभ करनैहारे ॥ (२५८-८, गउड़ी, मः ५)
मेलि लेहु नानक बेचारे ॥३८॥ (२५८-८, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५८-९)
बिनउ सुनहु तुम पारब्रह्म दीन दइआल गुपाल ॥ (२५८-९, गउड़ी, मः ५)
सुख सम्पै बहु भोग रस नानक साध रवाल ॥१॥ (२५८-९, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५८-१०)
बबा ब्रह्मु जानत ते ब्रह्मा ॥ (२५८-१०, गउड़ी, मः ५)

बैसनो ते गुरमुखि सुच धरमा ॥ (२५८-१०, गउड़ी, मः ५)
बीरा आपन बुरा मिटावै ॥ (२५८-१०, गउड़ी, मः ५)
ताहू बुरा निकटि नही आवै ॥ (२५८-११, गउड़ी, मः ५)
बाधिओ आपन हउ हउ बंधा ॥ (२५८-११, गउड़ी, मः ५)
दोसु देत आगह कउ अंधा ॥ (२५८-११, गउड़ी, मः ५)
बात चीत सभ रही सिआनप ॥ (२५८-१२, गउड़ी, मः ५)
जिसहि जनावहु सो जानै नानक ॥३६॥ (२५८-१२, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५८-१२)
भै भंजन अघ दूख नास मनहि अराधि हरे ॥ (२५८-१२, गउड़ी, मः ५)
संतसंग जिह रिद बसिओ नानक ते न भ्रमे ॥१॥ (२५८-१३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५८-१३)
भभा भरमु मिटावहु अपना ॥ (२५८-१३, गउड़ी, मः ५)
इआ संसारु सगल है सुपना ॥ (२५८-१४, गउड़ी, मः ५)
भरमे सुरि नर देवी देवा ॥ (२५८-१४, गउड़ी, मः ५)
भरमे सिध साधिक ब्रहमेवा ॥ (२५८-१४, गउड़ी, मः ५)
भरमि भरमि मानुख डहकाए ॥ (२५८-१५, गउड़ी, मः ५)
दुतर महा बिखम इह माए ॥ (२५८-१५, गउड़ी, मः ५)
गुरमुखि भ्रम भै मोह मिटाइआ ॥ (२५८-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक तेह परम सुख पाइआ ॥४०॥ (२५८-१६, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५८-१६)
माइआ डोलै बहु बिधी मनु लपटिओ तिह संग ॥ (२५८-१६, गउड़ी, मः ५)
मागन ते जिह तुम रखहु सु नानक नामहि रंग ॥१॥ (२५८-१७, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५८-१७)
ममा मागनहार इआना ॥ (२५८-१७, गउड़ी, मः ५)
देनहार दे रहिओ सुजाना ॥ (२५८-१८, गउड़ी, मः ५)
जो दीनो सो एकहि बार ॥ (२५८-१८, गउड़ी, मः ५)
मन मूरख कह करहि पुकार ॥ (२५८-१८, गउड़ी, मः ५)
जउ मागहि तउ मागहि बीआ ॥ (२५८-१८, गउड़ी, मः ५)
जा ते कुसल न काहू थीआ ॥ (२५८-१९, गउड़ी, मः ५)
मागनि माग त एकहि माग ॥ (२५८-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक जा ते परहि पराग ॥४१॥ (२५८-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २५९

सलोक ॥ (२५९-१)
मति पूरी प्रधान ते गुर पूरे मन मंत ॥ (२५९-१, गउड़ी, मः ५)

जिह जानिओ प्रभु आपुना नानक ते भगवंत ॥१॥ (२५६-१, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-२)
ममा जाहू मरमु पछाना ॥ (२५६-२, गउड़ी, मः ५)
भेटत साधसंग पतीआना ॥ (२५६-२, गउड़ी, मः ५)
दुख सुख उआ कै समत बीचारा ॥ (२५६-२, गउड़ी, मः ५)
नरक सुरग रहत अउतारा ॥ (२५६-३, गउड़ी, मः ५)
ताहू संग ताहू निरलेपा ॥ (२५६-३, गउड़ी, मः ५)
पूरन घट घट पुरख बिसेखा ॥ (२५६-३, गउड़ी, मः ५)
उआ रस महि उआहू सुखु पाइआ ॥ (२५६-४, गउड़ी, मः ५)
नानक लिपत नही तिह माइआ ॥४२॥ (२५६-४, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५६-४)
यार मीत सुनि साजनहु बिनु हरि छूटनु नाहि ॥ (२५६-४, गउड़ी, मः ५)
नानक तिह बंधन कटे गुर की चरनी पाहि ॥१॥ (२५६-५, गउड़ी, मः ५)
पवड़ी ॥ (२५६-५)
यया जतन करत बहु बिधीआ ॥ (२५६-६, गउड़ी, मः ५)
एक नाम बिनु कह लउ सिधीआ ॥ (२५६-६, गउड़ी, मः ५)
याहू जतन करि होत छुटारा ॥ (२५६-६, गउड़ी, मः ५)
उआहू जतन साध संगारा ॥ (२५६-७, गउड़ी, मः ५)
या उबरन धारै सभु कोऊ ॥ (२५६-७, गउड़ी, मः ५)
उआहि जपे बिनु उबर न होऊ ॥ (२५६-७, गउड़ी, मः ५)
याहू तरन तारन समराथा ॥ (२५६-७, गउड़ी, मः ५)
राखि लेहु निरगुन नरनाथा ॥ (२५६-८, गउड़ी, मः ५)
मन बच क्रम जिह आपि जनाई ॥ (२५६-८, गउड़ी, मः ५)
नानक तिह मति प्रगटी आई ॥४३॥ (२५६-८, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५६-९)
रोसु न काहू संग करहु आपन आपु बीचारि ॥ (२५६-९, गउड़ी, मः ५)
होइ निमाना जगि रहहु नानक नदरी पारि ॥१॥ (२५६-९, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-१०)
रारा रेन होत सभ जा की ॥ (२५६-१०, गउड़ी, मः ५)
तजि अभिमानु छुटै तेरी बाकी ॥ (२५६-१०, गउड़ी, मः ५)
रणि दरगहि तउ सीझहि भाई ॥ (२५६-११, गउड़ी, मः ५)
जउ गुरमुखि राम नाम लिव लाई ॥ (२५६-११, गउड़ी, मः ५)
रहत रहत रहि जाहि बिकारा ॥ (२५६-११, गउड़ी, मः ५)
गुर पूरे कै सबदि अपारा ॥ (२५६-१२, गउड़ी, मः ५)
राते रंग नाम रस माते ॥ (२५६-१२, गउड़ी, मः ५)

नानक हरि गुर कीनी दाते ॥४४॥ (२५६-१२, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५६-१२)
लालच झूठ बिखै बिआधि इआ देही महि बास ॥ (२५६-१३, गउड़ी, मः ५)
हरि हरि अमृतु गुरमुखि पीआ नानक सूखि निवास ॥१॥ (२५६-१३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-१४)
लला लावउ अउखध जाहू ॥ (२५६-१४, गउड़ी, मः ५)
दूख दरद तिह मिटहि खिनाहू ॥ (२५६-१४, गउड़ी, मः ५)
नाम अउखधु जिह रिदै हितावै ॥ (२५६-१४, गउड़ी, मः ५)
ताहि रोगु सुपनै नही आवै ॥ (२५६-१५, गउड़ी, मः ५)
हरि अउखधु सभ घट है भाई ॥ (२५६-१५, गउड़ी, मः ५)
गुर पूरे बिनु बिधि न बनाई ॥ (२५६-१५, गउड़ी, मः ५)
गुरि पूरै संजमु करि दीआ ॥ (२५६-१६, गउड़ी, मः ५)
नानक तउ फिरि दूख न थीआ ॥४५॥ (२५६-१६, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२५६-१६)
वासुदेव सरबत्र मै ऊन न कतहू ठाइ ॥ (२५६-१६, गउड़ी, मः ५)
अंतरि बाहरि संगि है नानक काइ दुराइ ॥१॥ (२५६-१७, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२५६-१७)
ववा वैरु न करीऐ काहू ॥ (२५६-१७, गउड़ी, मः ५)
घट घट अंतरि ब्रह्म समाहू ॥ (२५६-१८, गउड़ी, मः ५)
वासुदेव जल थल महि रविआ ॥ (२५६-१८, गउड़ी, मः ५)
गुर प्रसादि विरलै ही गविआ ॥ (२५६-१८, गउड़ी, मः ५)
वैर विरोध मिटे तिह मन ते ॥ (२५६-१९, गउड़ी, मः ५)
हरि कीरतनु गुरमुखि जो सुनते ॥ (२५६-१९, गउड़ी, मः ५)
वरन चिहन सगलह ते रहता ॥ (२५६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २६०

नानक हरि हरि गुरमुखि जो कहता ॥४६॥ (२६०-१, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६०-१)
हउ हउ करत बिहानीआ साकत मुगध अजान ॥ (२६०-१, गउड़ी, मः ५)
ड़ड़कि मुए जिउ तृखावंत नानक किरति कमान ॥१॥ (२६०-२, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६०-२)
ड़ाड़ा ड़ाड़ि मिटै संगि साधू ॥ (२६०-२, गउड़ी, मः ५)
कर्म धर्म ततु नाम अराधू ॥ (२६०-३, गउड़ी, मः ५)
रूड़ो जिह बसिओ रिद माही ॥ (२६०-३, गउड़ी, मः ५)
उआ की ड़ाड़ि मिटत बिनसाही ॥ (२६०-३, गउड़ी, मः ५)

ड़ाड़ि करत साकत गावारा ॥ (२६०-४, गउड़ी, मः ५)
जेह हीऐ अहम्बुधि बिकारा ॥ (२६०-४, गउड़ी, मः ५)
ड़ाड़ा गुरमुखि ड़ाड़ि मिटाई ॥ (२६०-४, गउड़ी, मः ५)
निमख माहि नानक समझाई ॥४७॥ (२६०-५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६०-५)
साधू की मन ओट गहु उकति सिआनप तिआगु ॥ (२६०-५, गउड़ी, मः ५)
गुर दीखिआ जिह मनि बसै नानक मसतकि भागु ॥१॥ (२६०-५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६०-६)
ससा सरनि परे अब हारे ॥ (२६०-६, गउड़ी, मः ५)
सासत्र सिमृति बेद पूकारे ॥ (२६०-६, गउड़ी, मः ५)
सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ (२६०-७, गउड़ी, मः ५)
बिनु हरि भजन नही छुटकारा ॥ (२६०-७, गउड़ी, मः ५)
सासि सासि हम भूलनहारे ॥ (२६०-७, गउड़ी, मः ५)
तुम समरथ अगनत अपारे ॥ (२६०-८, गउड़ी, मः ५)
सरनि परे की राखु दइआला ॥ (२६०-८, गउड़ी, मः ५)
नानक तुमरे बाल गुपाला ॥४८॥ (२६०-८, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६०-९)
खुदी मिटी तब सुख भए मन तन भए अरोग ॥ (२६०-९, गउड़ी, मः ५)
नानक दृसटी आइआ उसतति करनै जोगु ॥१॥ (२६०-९, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६०-१०)
खखा खरा सराहउ ताहू ॥ (२६०-१०, गउड़ी, मः ५)
जो खिन महि ऊने सुभर भराहू ॥ (२६०-१०, गउड़ी, मः ५)
खरा निमाना होत परानी ॥ (२६०-१०, गउड़ी, मः ५)
अनदिनु जापै प्रभ निरबानी ॥ (२६०-११, गउड़ी, मः ५)
भावै खसम त उआ सुखु देता ॥ (२६०-११, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्मु ऐसो आगनता ॥ (२६०-११, गउड़ी, मः ५)
असंख खते खिन बखसनहारा ॥ (२६०-११, गउड़ी, मः ५)
नानक साहिब सदा दइआरा ॥४९॥ (२६०-१२, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६०-१२)
सति कहउ सुनि मन मेरे सरनि परहु हरि राइ ॥ (२६०-१२, गउड़ी, मः ५)
उकति सिआनप सगल तिआगि नानक लए समाइ ॥१॥ (२६०-१३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६०-१३)
ससा सिआनप छाडु इआना ॥ (२६०-१३, गउड़ी, मः ५)
हिकमति हुकमि न प्रभु पतीआना ॥ (२६०-१४, गउड़ी, मः ५)
सहस भाति करहि चतुराई ॥ (२६०-१४, गउड़ी, मः ५)

संगि तुहारै एक न जाई ॥ (२६०-१४, गउड़ी, मः ५)
सोऊ सोऊ जपि दिन राती ॥ (२६०-१५, गउड़ी, मः ५)
रे जीअ चलै तुहारै साथी ॥ (२६०-१५, गउड़ी, मः ५)
साध सेवा लावै जिह आपै ॥ (२६०-१५, गउड़ी, मः ५)
नानक ता कउ दूखु न बिआपै ॥५०॥ (२६०-१५, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६०-१६)
हरि हरि मुख ते बोलना मनि वूठै सुखु होइ ॥ (२६०-१६, गउड़ी, मः ५)
नानक सभ महि रवि रहिआ थान थनंतरि सोइ ॥१॥ (२६०-१६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६०-१७)
हेरउ घटि घटि सगल कै पूरि रहे भगवान ॥ (२६०-१७, गउड़ी, मः ५)
होवत आए सद सदीव दुख भंजन गुर गिआन ॥ (२६०-१८, गउड़ी, मः ५)
हउ छुटकै होइ अनंदु तिह हउ नाही तह आपि ॥ (२६०-१८, गउड़ी, मः ५)
हते दूख जनमह मरन संतसंग परताप ॥ (२६०-१९, गउड़ी, मः ५)
हित करि नाम दृड़ै दइआला ॥ (२६०-१९, गउड़ी, मः ५)
संतह संगि होत किरपाला ॥ (२६०-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना २६१

ओरै कछू न किनहू कीआ ॥ (२६१-१, गउड़ी, मः ५)
नानक सभु कछु प्रभ ते हूआ ॥५१॥ (२६१-१, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६१-१)
लेखै कतहि न छूटीऐ खिनु खिनु भूलनहार ॥ (२६१-१, गउड़ी, मः ५)
बखसनहार बखसि लै नानक पारि उतार ॥१॥ (२६१-२, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६१-२)
लूण हरामी गुनहगार बेगाना अलप मति ॥ (२६१-२, गउड़ी, मः ५)
जीउ पिंडु जिनि सुख दीए ताहि न जानत तत ॥ (२६१-३, गउड़ी, मः ५)
लाहा माइआ कारने दह दिसि ढूढन जाइ ॥ (२६१-३, गउड़ी, मः ५)
देवनहार दातार प्रभ निमख न मनहि बसाइ ॥ (२६१-४, गउड़ी, मः ५)
लालच झूठ बिकार मोह इआ सम्पै मन माहि ॥ (२६१-४, गउड़ी, मः ५)
लम्पट चोर निंदक महा तिनहू संगि बिहाइ ॥ (२६१-५, गउड़ी, मः ५)
तुधु भावै ता बखसि लैहि खोटे संगि खरे ॥ (२६१-५, गउड़ी, मः ५)
नानक भावै पारब्रह्म पाहन नीरि तरे ॥५२॥ (२६१-६, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६१-६)
खात पीत खेलत हसत भरमे जनम अनेक ॥ (२६१-६, गउड़ी, मः ५)
भवजल ते काढहु प्रभू नानक तेरी टेक ॥१॥ (२६१-७, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६१-७)

खेलत खेलत आइओ अनिक जोनि दुख पाइ ॥ (२६१-७, गउड़ी, मः ५)
खेद मिटे साधू मिलत सतिगुर बचन समाइ ॥ (२६१-७, गउड़ी, मः ५)
खिमा गही सचु संचिओ खाइओ अमृतु नाम ॥ (२६१-८, गउड़ी, मः ५)
खरी कृपा ठाकुर भई अनद सूख बिस्राम ॥ (२६१-८, गउड़ी, मः ५)
खेप निबाही बहुतु लाभ घरि आए पतिवंत ॥ (२६१-९, गउड़ी, मः ५)
खरा दिलासा गुरि दीआ आइ मिले भगवंत ॥ (२६१-९, गउड़ी, मः ५)
आपन कीआ करहि आपि आगै पाछै आपि ॥ (२६१-१०, गउड़ी, मः ५)
नानक सोऊ सराहीऐ जि घटि घटि रहिआ बिआपि ॥५३॥ (२६१-१०, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६१-११)
आए प्रभ सरनागती किरपा निधि दइआल ॥ (२६१-११, गउड़ी, मः ५)
एक अखरु हरि मनि बसत नानक होत निहाल ॥१॥ (२६१-११, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६१-१२)
अखर महि तृभवन प्रभि धारे ॥ (२६१-१२, गउड़ी, मः ५)
अखर करि करि बेद बीचारे ॥ (२६१-१२, गउड़ी, मः ५)
अखर सासत्र सिम्मृति पुराना ॥ (२६१-१३, गउड़ी, मः ५)
अखर नाद कथन वख्याना ॥ (२६१-१३, गउड़ी, मः ५)
अखर मुकति जुगति भै भरमा ॥ (२६१-१३, गउड़ी, मः ५)
अखर कर्म किरति सुच धरमा ॥ (२६१-१४, गउड़ी, मः ५)
दृसटिमान अखर है जेता ॥ (२६१-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक पारब्रह्म निरलेपा ॥५४॥ (२६१-१४, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६१-१५)
हथि कलम्म अगम्म मसतकि लिखावती ॥ (२६१-१५, गउड़ी, मः ५)
उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ (२६१-१५, गउड़ी, मः ५)
उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ (२६१-१५, गउड़ी, मः ५)
मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥ (२६१-१६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६१-१६)
हे अचुत हे पारब्रह्म अबिनासी अघनास ॥ (२६१-१६, गउड़ी, मः ५)
हे पूरन हे सर्ब मै दुख भंजन गुणतास ॥ (२६१-१७, गउड़ी, मः ५)
हे संगी हे निरंकार हे निरगुण सभ टेक ॥ (२६१-१७, गउड़ी, मः ५)
हे गोबिद हे गुण निधान जा कै सदा बिबेक ॥ (२६१-१८, गउड़ी, मः ५)
हे अपरम्पर हरि हरे हहि भी होवनहार ॥ (२६१-१८, गउड़ी, मः ५)
हे संतह कै सदा संगि निधारा आधार ॥ (२६१-१९, गउड़ी, मः ५)
हे ठाकुर हउ दासरो मै निरगुन गुनु नही कोइ ॥ (२६१-१९, गउड़ी, मः ५)

नानक दीजै नाम दानु राखउ हीऐ परोइ ॥५५॥ (२६२-१, गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६२-१)
गुरदेव माता गुरदेव पिता गुरदेव सुआमी परमेसुरा ॥ (२६२-१, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव सखा अगिआन भंजनु गुरदेव बंधिप सहोदरा ॥ (२६२-२, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव दाता हरि नामु उपदेसै गुरदेव मंतु निरोधरा ॥ (२६२-२, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव साँति सति बुधि मूरति गुरदेव पारस परस परा ॥ (२६२-३, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव तीरथु अमृत सरोवरु गुर गिआन मजनु अपरम्परा ॥ (२६२-३, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव करता सभि पाप हरता गुरदेव पतित पवित करा ॥ (२६२-४, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव आदि जुगादि जुगु जुगु गुरदेव मंतु हरि जपि उधरा ॥ (२६२-५, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव संगति प्रभ मेलि करि किरपा हम मूड़ पापी जितु लगि तरा ॥ (२६२-५, गउड़ी, मः ५)
गुरदेव सतिगुरु पारब्रह्मु परमेसरु गुरदेव नानक हरि नमसकरा ॥१॥ (२६२-६, गउड़ी, मः ५)
एहु सलोकु आदि अंति पड़णा ॥ (२६२-७, गउड़ी, मः ५)
गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥ (२६२-८)
सलोकु ॥ (२६२-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२६२-८)
आदि गुरए नमह ॥ (२६२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जुगादि गुरए नमह ॥ (२६२-९, गउड़ी, मः ५)
सतिगुरए नमह ॥ (२६२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
स्री गुरदेवए नमह ॥१॥ (२६२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६२-९)
सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ (२६२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ (२६२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरउ जासु बिसुम्भर एकै ॥ (२६२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु जपत अगनत अनेकै ॥ (२६२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बेद पुरान सिम्मृति सुधाख्यर ॥ (२६२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कीने राम नाम इक आख्यर ॥ (२६२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ (२६२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता की महिमा गनी न आवै ॥ (२६२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
काँखी एकै दरस तुहारो ॥ (२६२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥ (२६२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुखमनी सुख अमृत प्रभ नामु ॥ (२६२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ (२६२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ (२६२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ (२६२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ (२६२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ (२६२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ (२६२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ (२६२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ (२६२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ (२६२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि गिआनु धिआनु ततु बुधि ॥ (२६२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ (२६२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ (२६२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि तीर्थ इसनानी ॥ (२६२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ (२६२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ (२६२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ (२६२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ (२६२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६३

नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥ (२६३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ (२६३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ (२६३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि तृसना बुझै ॥ (२६३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ (२६३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ (२६३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ (२६३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ (२६३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमृत नामु रिद माहि समाइ ॥ (२६३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ (२६३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जन का दासनि दसना ॥४॥ (२६३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि से धनवंते ॥ (२६३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥ (२६३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ (२६३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ (२६३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि सि सर्ब के राजे ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ (२६३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥ (२६३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥ (२६३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ (२६३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ (२६३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ (२६३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ (२६३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ (२६३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि तिन निर्मल रीता ॥ (२६३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ (२६३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कउ सिमरहि बसहि हरि नेरे ॥ (२६३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कृपा ते अनदिनु जागि ॥ (२६३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥ (२६३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि कारज पूरे ॥ (२६३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि कबहु न झूरे ॥ (२६३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि हरि गुन बानी ॥ (२६३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि सहजि समानी ॥ (२६३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि निहचल आसनु ॥ (२६३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि कमल बिगासनु ॥ (२६३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै सिमरनि अनहद झुनकार ॥ (२६३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुखु प्रभ सिमरन का अंतु न पार ॥ (२६३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरहि से जन जिन कउ प्रभ मइआ ॥ (२६३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिन जन सरनी पइआ ॥७॥ (२६३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि सिमरनु करि भगत प्रगटाए ॥ (२६३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि सिमरनि लगि बेद उपाए ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि सिमरनि भए सिध जती दाते ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि सिमरनि नीच चहु कुंट जाते ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥ (२६३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ (२६३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ (२६३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ (२६३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ (२६३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥ (२६३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६३-१६)
दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६४

असटपदी ॥ (२६४-१)
जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ (२६४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ (२६४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ (२६४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ (२६४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह मुसकल होवै अति भारी ॥ (२६४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ (२६४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ (२६४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥ (२६४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ (२६४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ (२६४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल सृसटि को राजा दुखीआ ॥ (२६४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ (२६४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
लाख करोरी बंधु न परै ॥ (२६४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जपत निसतरै ॥ (२६४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जपत आघावै ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥ (२६४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ (२६४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक गुरमुखि पर्म गति पाईऐ ॥२॥ (२६४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
छूटत नही कोटि लख बाही ॥ (२६४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु जपत तह पारि पराही ॥ (२६४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥ (२६४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु जपत पावै बिस्राम ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥ (२६४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ (२६४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥ (२६४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥ (२६४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ (२६४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥ (२६४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ (२६४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु संगि उजीआरा ॥ (२६४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥ (२६४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ (२६४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ (२६४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ (२६४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जहा तृखा मन तुझु आकरखै ॥ (२६४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह नानक हरि हरि अमृतु बरखै ॥४॥ (२६४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगत जना की बरतनि नामु ॥ (२६४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत जना कै मनि बिस्रामु ॥ (२६४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु दास की ओट ॥ (२६४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ (२६४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि जसु करत संत दिनु राति ॥ (२६४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ (२६४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ (२६४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ (२६४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तन रंगि रते रंग एकै ॥ (२६४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥ (२६४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥ (२६४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि कै नामि जन कउ तृपति भुगति ॥ (२६४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥ (२६४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि नामु जपत कब परै न भंगु ॥ (२६४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जन की वडिआई ॥ (२६४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि कै नामि जन सोभा पाई ॥ (२६४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६५

हरि का नामु जन कउ भोग जोग ॥ (२६५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि नामु जपत कछु नाहि बिओगु ॥ (२६५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनु राता हरि नाम की सेवा ॥ (२६५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥ (२६५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ (२६५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

हरि धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ (२६५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि जन कै ओट सताणी ॥ (२६५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि प्रतापि जन अवर न जाणी ॥ (२६५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओति पोति जन हरि रसि राते ॥ (२६५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुन्न समाधि नाम रस माते ॥ (२६५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥ (२६५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ (२६५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि की भगति मुकति बहु करे ॥ (२६५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जन संगि केते तरे ॥७॥ (२६५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारजातु इहु हरि को नाम ॥ (२६५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ (२६५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम की महिमा संत रिद वसै ॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ (२६५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥ (२६५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥ (२६५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ (२६५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥ (२६५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६५-८)
बहु सासत्र बहु सिमृती पेखे सर्ब ढढोलि ॥ (२६५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥ (२६५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६५-९)
जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ (२६५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खट सासत्र सिमृति वखिआन ॥ (२६५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जोग अभिआस कर्म ध्रम किरिआ ॥ (२६५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ (२६५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ (२६५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पुन्न दान होमे बहु रतना ॥ (२६५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥ (२६५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
वरत नेम करै बहु भाती ॥ (२६५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नही तुलि राम नाम बीचार ॥ (२६५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥ (२६५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नउ खंड पृथमी फिरै चिरु जीवै ॥ (२६५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ (२६५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

अगनि माहि होमत परान ॥ (२६५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ (२६५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निउली कर्म करै बहु आसन ॥ (२६५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैन मारग संजम अति साधन ॥ (२६५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥ (२६५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ (२६५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ (२६५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥ (२६५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन कामना तीर्थ देह छुटै ॥ (२६५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गरबु गुमानु न मन ते हुटै ॥ (२६५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सोच करै दिनसु अरु राति ॥ (२६५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन की मैलु न तन ते जाति ॥ (२६५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ (२६५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ (२६५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ (२६५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुध कहा होइ काची भीति ॥ (२६५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ (२६५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ (२६५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥ (२६५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६६

अनिक जतन करि तृसन ना ध्रापै ॥ (२६६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ (२६६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ (२६६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चारि पदार्थ जे को मागै ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध जना की सेवा लागै ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जे को आपुना दूखु मिटावै ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

साधसंगि इह हउमै छोरै ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जे को जनम मरण ते डरै ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध जना की सरनी परै ॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पेखै सगल सृसटि साजना ॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सूख दूख जन सम दृसटेता ॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक पाप पुन्न नही लेपा ॥६॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निर्धन कउ धनु तेरो नाउ ॥ (२६६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निथावे कउ नाउ तेरा थाउ ॥ (२६६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ (२६६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ (२६६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन करावनहार सुआमी ॥ (२६६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (२६६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ (२६६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन संगि आपि प्रभ राते ॥ (२६६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥ (२६६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥ (२६६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब धर्म महि स्रेसट धरमु ॥ (२६६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि को नामु जपि निर्मल करमु ॥ (२६६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल कृआ महि ऊतम किरिआ ॥ (२६६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥ (२६६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल उदम महि उदमु भला ॥ (२६६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ (२६६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल बानी महि अमृत बानी ॥ (२६६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ (२६६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ (२६६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥ (२६६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सलोकु ॥ (२६६-१६)
निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ (२६६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥ (२६६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६६-१७)
रमईआ के गुन चेति परानी ॥ (२६६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कवन मूल ते कवन दृसटानी ॥ (२६६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ (२६६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ (२६६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ (२६६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ (२६६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥ (२६६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६७

मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ (२६७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ (२६७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥ (२६७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ (२६७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥ (२६७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ (२६७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ (२६७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ (२६७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ (२६७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ (२६७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ (२६७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ (२६७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥ (२६७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आदि अंति जो राखनहारु ॥ (२६७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ (२६७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा की सेवा नव निधि पावै ॥ (२६७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ (२६७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥ (२६७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता कउ अंधा जानत दूरे ॥ (२६७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ (२६७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ (२६७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ (२६७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नानक राखनहारु अपारु ॥३॥ (२६७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥ (२६७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥ (२६७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ (२६७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो होवनु सो दूरि परानै ॥ (२६७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ (२६७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संगि सहाई तिसु परहरै ॥ (२६७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चंदन लेपु उतारै धोइ ॥ (२६७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥ (२६७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ (२६७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥ (२६७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करतूति पसू की मानस जाति ॥ (२६७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
लोक पचारा करै दिनु राति ॥ (२६७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥ (२६७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥ (२६७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ (२६७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ (२६७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ (२६७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ (२६७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥ (२६७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥ (२६७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥ (२६७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥ (२६७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ (२६७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ (२६७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहा बिसनपद गावै गुंग ॥ (२६७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ (२६७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कह पिंगुल पर्बत पर भवन ॥ (२६७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नही होत ऊहा उसु गवन ॥ (२६७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करतार करुणा मै दीनु बेनती करै ॥ (२६७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ (२६७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ (२६७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ (२६७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बलूआ के गृह भीतरि बसै ॥ (२६७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ (२६७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

दृड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ (२६७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कालु न आवै मूड़े चीति ॥ (२६७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ (२६७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ (२६७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६८

इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ (२६८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक राखि लेहु आपन करि कर्म ॥७॥ (२६८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ (२६८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥ (२६८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ (२६८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥ (२६८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥ (२६८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥ (२६८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल समग्री तुमरै सूतृ धारी ॥ (२६८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ (२६८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ (२६८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥ (२६८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६८-४)
देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥ (२६८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥ (२६८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६८-६)
दस बसतू ले पाछै पावै ॥ (२६८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ (२६८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥ (२६८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ (२६८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ (२६८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ (२६८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ (२६८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब सूख ताहू मनि वूठा ॥ (२६८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥ (२६८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब थोक नानक तिनि पाइआ ॥१॥ (२६८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ (२६८-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ (२६८-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥ (२६८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥ (२६८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ (२६८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ (२६८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ (२६८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ (२६८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उस ते चउगुन करै निहालु ॥ (२६८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥ (२६८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक भाति माइआ के हेत ॥ (२६८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सरपर होवत जानु अनेत ॥ (२६८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥ (२६८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ (२६८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो दीसै सो चालनहारु ॥ (२६८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥ (२६८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बटाऊ सिउ जो लावै नेह ॥ (२६८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता कउ हाथि न आवै केह ॥ (२६८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥ (२६८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥ (२६८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ तनु धनु कुटम्बु सबाइआ ॥ (२६८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥ (२६८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ राज जोबन धन माल ॥ (२६८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ काम क्रोध बिकराल ॥ (२६८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ रथ हसती अस्व बसत्रा ॥ (२६८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ रंग संगि माइआ पेखि हसता ॥ (२६८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ ध्रोह मोह अभिमानु ॥ (२६८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ आपस ऊपरि करत गुमानु ॥ (२६८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असथिरु भगति साध की सरन ॥ (२६८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जपि जपि जीवै हरि के चरन ॥४॥ (२६८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ स्रवन पर निंदा सुनहि ॥ (२६८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ हसत पर दरब कउ हिरहि ॥ (२६८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६९

मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ रूपाद ॥ (२६९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ रसना भोजन अन स्वाद ॥ (२६९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ चरन पर बिकार कउ धावहि ॥ (२६९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ मन पर लोभ लुभावहि ॥ (२६९-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिरथी साकत की आरजा ॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साच बिना कह होवत सूचा ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिनु सिमरन दिनु रैनि बृथा बिहाइ ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गोबिद भजन बिनु बृथे सभ काम ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जाननहार प्रभू परबीन ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बाहरि भेख न काहू भीन ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवर उपदेसै आपि न करै ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आवत जावत जनमै मरै ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस की सीख तरै संसारु ॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक उन जन चरन पराता ॥७॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करउ बेनती पारब्रह्मु सभु जानै ॥ (२६६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपना कीआ आपहि मानै ॥ (२६६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ (२६६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ (२६६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ (२६६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ (२६६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ (२६६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥ (२६६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ (२६६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥ (२६६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६६-१३)

काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहम्मेव ॥ (२६९-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥ (२६९-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६९-१४)
जिह प्रसादि छतीह अमृत खाहि ॥ (२६९-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ (२६९-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥ (२६९-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥ (२६९-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥ (२६९-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥ (२६९-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि गृह संगि सुख बसना ॥ (२६९-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ (२६९-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥ (२६९-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥ (२६९-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि पाट पटम्बर हढावहि ॥ (२६९-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ (२६९-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ (२६९-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ (२६९-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥ (२६९-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७०

मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ (२७०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरो रहता धरमु ॥ (२७०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन सदा धिआइ केवल पारब्रह्मु ॥ (२७०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ (२७०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥ (२७०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥ (२७०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ (२७०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ (२७०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ (२७०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ (२७०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ (२७०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ (२७०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ (२७०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥ (२७०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ता की भगति करेह ॥३॥ (२७०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ (२७०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ (२७०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ (२७०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ (२७०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ (२७०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राखु परोइ प्रभु अपुने मना ॥ (२७०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥ (२७०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ (२७०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि धिआइ जो एक अलखै ॥ (२७०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ईहा ऊहा नानक तेरी रखै ॥४॥ (२७०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि करहि पुन्न बहु दान ॥ (२७०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन आठ पहर करि तिस का धिआन ॥ (२७०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तू आचार बिउहारी ॥ (२७०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु प्रभ कउ सासि सासि चितारी ॥ (२७०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥ (२७०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥ (२७०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ (२७०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो प्रभु सिमरि सदा दिन राति ॥ (२७०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरी पति रहै ॥ (२७०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक जसु कहै ॥५॥ (२७०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि सुनहि करन नाद ॥ (२७०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥ (२७०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि बोलहि अमृत रसना ॥ (२७०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ (२७०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि हसत कर चलहि ॥ (२७०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि सम्पूरन फलहि ॥ (२७०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि पर्म गति पावहि ॥ (२७०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥ (२७०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ (२७०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥ (२७०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ (२७०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ (२७०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ (२७०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ (२७०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ (२७०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ (२७०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ (२७०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ (२७०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ (२७०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥ (२७०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ (२७०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ (२७०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७१

प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ (२७१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ (२७१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ सुप्रसन्न बसै मनि सोइ ॥ (२७१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥ (२७१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ (२७१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ (२७१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ (२७१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥ (२७१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२७१-३)
अगम अगाधि पारब्रह्मु सोइ ॥ (२७१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥ (२७१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥ (२७१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध जना की अचरज कथा ॥१॥ (२७१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२७१-५)
साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥ (२७१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि मलु सगली खोत ॥ (२७१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥ (२७१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि प्रगटै सुगिआनु ॥ (२७१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥ (२७१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि सभु होत निबेरा ॥ (२७१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥ (२७१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥ (२७१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥ (२७१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥ (२७१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥ (२७१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि सदा परफुलै ॥ (२७१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥ (२७१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि अमृत रसु भुंचा ॥ (२७१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि होइ सभ की रेन ॥ (२७१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि मनोहर बैन ॥ (२७१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि न कतहूं धावै ॥ (२७१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि असथिति मनु पावै ॥ (२७१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि माइआ ते भिन्न ॥ (२७१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसन्न ॥२॥ (२७१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥ (२७१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधू कै संगि महा पुनीत ॥ (२७१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥ (२७१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि न बीगा पैरु ॥ (२७१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि नाही को मंदा ॥ (२७१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि जाने परमानंदा ॥ (२७१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि नाही हउ तापु ॥ (२७१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि तजै सभु आपु ॥ (२७१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे जानै साध बडाई ॥ (२७१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥ (२७१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि न कबहू धावै ॥ (२७१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥ (२७१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥ (२७१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधू कै संगि अजरु सहै ॥ (२७१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥ (२७१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधू कै संगि महलि पहूचै ॥ (२७१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि दृड़ै सभि धर्म ॥ (२७१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि केवल पारब्रह्म ॥ (२७१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि पाए नाम निधान ॥ (२७१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ (२७१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥ (२७१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि साजन मीत कुटम्ब निसतारै ॥ (२७१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधू कै संगि सो धनु पावै ॥ (२७१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ (२७१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि धर्म राइ करे सेवा ॥ (२७१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥ (२७१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधू कै संगि पाप पलाइन ॥ (२७१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

साधसंगि अमृत गुन गाइन ॥ (२७१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥ (२७१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७२

नानक साध कै संगि सफल जनम्म ॥५॥ (२७२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि नही कछु घाल ॥ (२७२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दरसनु भेटत होत निहाल ॥ (२७२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि कलूखत हरै ॥ (२७२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि नरक परहरै ॥ (२७२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला ॥ (२७२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥ (२७२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो इछै सोई फलु पावै ॥ (२७२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि न बिरथा जावै ॥ (२७२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्मु साध रिद बसै ॥ (२७२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥ (२७२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥ (२७२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥ (२७२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि न मन ते बिसरै ॥ (२७२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि सरपर निसतरै ॥ (२७२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा ॥ (२७२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥ (२७२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि भए आगिआकारी ॥ (२७२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि गति भई हमारी ॥ (२७२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध कै संगि मिटे सभि रोग ॥ (२७२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक साध भेटे संजोग ॥७॥ (२७२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की महिमा बेद न जानहि ॥ (२७२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ (२७२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ (२७२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की उपमा रही भरपूरि ॥ (२७२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की सोभा का नाही अंत ॥ (२७२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की सोभा सदा बेअंत ॥ (२७२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥ (२७२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की सोभा मूच ते मूची ॥ (२७२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की सोभा साध बनि आई ॥ (२७२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक साध प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥ (२७२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सलोकु ॥ (२७२-१०)
मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥ (२७२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ (२७२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक इह लछण ब्रह्म गिआनी होइ ॥१॥ (२७२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२७२-११)
ब्रह्म गिआनी सदा निरलेप ॥ (२७२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसे जल महि कमल अलेप ॥ (२७२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी सदा निरदोख ॥ (२७२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥ (२७२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥ (२७२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ (२७२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै धीरजु एक ॥ (२७२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ (२७२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी का इहै गुनाउ ॥ (२७२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥ (२७२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी निरमल ते निरमला ॥ (२७२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसे मैलु न लागै जला ॥ (२७२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ (२७२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ (२७२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ (२७२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै नाही अभिमान ॥ (२७२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ (२७२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ (२७२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी से जन भए ॥ (२७२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥ (२७२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी सगल की रीना ॥ (२७२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आतम रसु ब्रह्म गिआनी चीना ॥ (२७२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥ (२७२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ (२७२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी सदा समदरसी ॥ (२७२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७३

ब्रह्म गिआनी की द्रिसटि अम्रितु बरसी ॥ (२७३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी बंधन ते मुकता ॥ (२७३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी की निरमल जुगता ॥ (२७३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

ब्रह्म गिआनी का भोजनु गिआन ॥ (२७३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ब्रह्म गिआनी का ब्रह्म धिआनु ॥३॥ (२७३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी एक ऊपरि आस ॥ (२७३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी का नही बिनास ॥ (२७३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ (२७३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी परउपकार उमाहा ॥ (२७३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै नाही धंधा ॥ (२७३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी ले धावतु बंधा ॥ (२७३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै होइ सु भला ॥ (२७३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी सुफल फला ॥ (२७३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी संगि सगल उधारु ॥ (२७३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ब्रह्म गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥ (२७३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै एकै रंग ॥ (२७३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥ (२७३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै नामु आधारु ॥ (२७३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै नामु परवारु ॥ (२७३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी सदा सद जागत ॥ (२७३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी अहम्बुधि तिआगत ॥ (२७३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै मनि परमानंद ॥ (२७३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥ (२७३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी सुख सहज निवास ॥ (२७३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ब्रह्म गिआनी का नही बिनास ॥५॥ (२७३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी ब्रह्म का बेता ॥ (२७३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी एक संगि हेता ॥ (२७३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै होइ अचिंत ॥ (२७३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी का निर्मल मंत ॥ (२७३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ (२७३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी का बड परताप ॥ (२७३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ (२७३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥ (२७३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ (२७३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ब्रह्म गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ (२७३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी की कीमति नाहि ॥ (२७३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी कै सगल मन माहि ॥ (२७३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ (२७३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ (२७३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ॥ (२७३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी सर्ब का ठाकुरु ॥ (२७३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ (२७३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ (२७३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥ (२७३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ (२७३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी सभ सृसटि का करता ॥ (२७३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ (२७३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ (२७३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ (२७३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी अनाथ का नाथु ॥ (२७३-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ (२७३-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥ (२७३-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७४

ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥ (२७४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥ (२७४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ब्रहम गिआनी सर्ब का धनी ॥८॥८॥ (२७४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२७४-२)
उरि धारै जो अंतरि नामु ॥ (२७४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब मै पेखै भगवानु ॥ (२७४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ (२७४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥ (२७४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२७४-३)
मिथिआ नाही रसना परस ॥ (२७४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥ (२७४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पर तृअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ (२७४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की टहल संतसंगि हेत ॥ (२७४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन न सुनै काहू की निंदा ॥ (२७४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥ (२७४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ (२७४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन की बासना मन ते टरै ॥ (२७४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इंद्री जित पंच दोख ते रहत ॥ (२७४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥ (२७४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसन्न ॥ (२७४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिसन की माइआ ते होइ भिन्न ॥ (२७४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कर्म करत होवै निहकरम ॥ (२७४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु बैसनो का निर्मल धर्म ॥ (२७४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
काहू फल की इछा नही बाछै ॥ (२७४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
केवल भगति कीर्तन संगि राचै ॥ (२७४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥ (२७४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ (२७४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि दृड़ै अवरह नामु जपावै ॥ (२७४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ओहु बैसनो पर्म गति पावै ॥२॥ (२७४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥ (२७४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल तिआगै दुसट का संगु ॥ (२७४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ (२७४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि पूजै सगल पारब्रह्मु ॥ (२७४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि पापा मलु खोवै ॥ (२७४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु भगउती की मति ऊतम होवै ॥ (२७४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ (२७४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ (२७४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ (२७४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥ (२७४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥ (२७४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नामु आतम महि सोधै ॥ (२७४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नाम सारु रसु पीवै ॥ (२७४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ (२७४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ (२७४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥ (२७४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बेद पुरान सिमृति बूझै मूल ॥ (२७४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सूखम महि जानै असथूलु ॥ (२७४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ (२७४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥ (२७४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बीज मंत्रु सर्ब को गिआनु ॥ (२७४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चहु वरना महि जपै कोऊ नामु ॥ (२७४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ (२७४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि पावै जनु कोइ ॥ (२७४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा अंतरि उर धारै ॥ (२७४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै ॥ (२७४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब रोग का अउखदु नामु ॥ (२७४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ (२७४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥ (२७४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥ (२७४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस कै मनि पारब्रह्म का निवासु ॥ (२७४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७५

तिस का नामु सति रामदासु ॥ (२७५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥ (२७५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥ (२७५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ (२७५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो दासु दरगह परवानु ॥ (२७५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ (२७५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ (२७५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल संगि आतम उदासु ॥ (२७५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥ (२७५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ (२७५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ (२७५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ (२७५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥ (२७५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥ (२७५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तैसा अमृतु तैसी बिखु खाटी ॥ (२७५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ (२७५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥ (२७५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो वरताए साई जुगति ॥ (२७५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥ (२७५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्म के सगले ठाउ ॥ (२७५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ (२७५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे करन करावन जोगु ॥ (२७५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ (२७५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ (२७५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
लखे न जाहि पारब्रह्म के रंग ॥ (२७५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसी मति देइ तैसा परगास ॥ (२७५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्मु करता अबिनास ॥ (२७५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सदा सदा सदा दइआल ॥ (२७५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥९॥ (२७५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२७५-१०)
उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥ (२७५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥ (२७५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२७५-११)
कई कोटि होए पूजारी ॥ (२७५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि आचार बिउहारी ॥ (२७५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि भए तीर्थ वासी ॥ (२७५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ (२७५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि बेद के स्रोते ॥ (२७५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि तपीसुर होते ॥ (२७५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ (२७५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ (२७५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ (२७५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥ (२७५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि भए अभिमानी ॥ (२७५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि अंध अगिआनी ॥ (२७५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि किरपन कठोर ॥ (२७५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ (२७५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ (२७५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि पर दूखना करहि ॥ (२७५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥ (२७५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ (२७५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ (२७५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक करते की जानै करता रचना ॥२॥ (२७५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि सिध जती जोगी ॥ (२७५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि राजे रस भोगी ॥ (२७५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि पंखी सर्प उपाए ॥ (२७५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ (२७५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥ (२७५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि देस भू मंडल ॥ (२७५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि ससीअर सूर नख्यत्र ॥ (२७५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७६

कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ (२७६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ (२७६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥ (२७६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि राजस तामस सातक ॥ (२७६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि बेद पुरान सिमृति अरु सासत ॥ (२७६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि कीए रतन समुद ॥ (२७६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ (२७६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ (२७६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ (२७६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि जख्य किन्नर पिसाच ॥ (२७६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगाच ॥ (२७६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते नेरै सभहू ते दूरि ॥ (२७६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥ (२७६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि पाताल के वासी ॥ (२७६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ (२७६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ (२७६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ (२७६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ (२७६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ (२७६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि कीए धनवंत ॥ (२७६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि माइआ महि चिंत ॥ (२७६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह जह भाणा तह तह राखे ॥ (२७६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥ (२७६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि भए बैरागी ॥ (२७६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥ (२७६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥ (२७६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आतम महि पारब्रह्मु लहंते ॥ (२७६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ (२७६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥ (२७६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि मागहि सतसंगु ॥ (२७६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्म तिन लागा रंगु ॥ (२७६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिन कउ होए आपि सुप्रसन्न ॥ (२७६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥ (२७६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ (२७६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥ (२७६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि होए अवतार ॥ (२७६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई जुगति कीनो बिसथार ॥ (२७६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई बार पसरिओ पासार ॥ (२७६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा इकु एकंकार ॥ (२७६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि कीने बहु भाति ॥ (२७६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥ (२७६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता का अंतु न जानै कोइ ॥ (२७६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥ (२७६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि पारब्रह्म के दास ॥ (२७६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिन होवत आतम परगास ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि तत के बेते ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥ (२७६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥ (२७६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२७६-१७)
करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ (२७६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥ (२७६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२७६-१९)
करन करावन करनै जोगु ॥ (२७६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो तिसु भावै सोई होगु ॥ (२७६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (२७६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७७

अंतु नही किछु पारावारा ॥ (२७७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हुकमे धारि अधर रहावै ॥ (२७७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ (२७७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ (२७७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हुकमे अनिक रंग परकार ॥ (२७७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ (२७७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ (२७७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ (२७७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ (२७७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ (२७७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ (२७७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ (२७७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि करै आपन बीचारै ॥ (२७७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ (२७७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ (२७७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो भावै सो कार करावै ॥ (२७७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक दृसटी अवरु न आवै ॥२॥ (२७७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ (२७७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो तिसु भावै सोई करावै ॥ (२७७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ (२७७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ (२७७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ (२७७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जे जानत आपन आप बचै ॥ (२७७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ (२७७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥ (२७७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ (२७७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥ (२७७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ (२७७-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्म गरीब निवाज ॥ (२७७-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा का दृसटि कछू न आवै ॥ (२७७-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ (२७७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ (२७७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ (२७७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ (२७७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
घटि घटि पूरन ब्रह्म प्रगास ॥ (२७७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपनी बणत आपि बनाई ॥ (२७७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥ (२७७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ (२७७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन करावन सरब को नाथ ॥ (२७७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ (२७७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ (२७७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ (२७७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥ (२७७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ (२७७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ (२७७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू बेता ब्रह्म बीचार ॥ (२७७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक आपि मिलावणहार ॥५॥ (२७७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू निरति करै बहु भाति ॥ (२७७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ (२७७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ (२७७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहूं सर्ब की होत रवाल ॥ (२७७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू होइ बहै बड राजा ॥ (२७७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ (२७७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू अपकीरति महि आवै ॥ (२७७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू भला भला कहावै ॥ (२७७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ (२७७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥ (२७७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू होइ पंडितु करे बख्यानु ॥ (२७७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ (२७७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू तट तीर्थ इसनान ॥ (२७७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ (२७७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ (२७७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥ (२७७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७८

नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ (२७८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ (२७८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो तिसु भावै सोई होइ ॥ (२७८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥ (२७८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कबहू साधसंगति इहु पावै ॥ (२७८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ (२७८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरि होइ गिआन परगासु ॥ (२७८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उसु असथान का नही बिनासु ॥ (२७८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तन नामि रते इक रंगि ॥ (२७८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा बसहि पारब्रह्म कै संगि ॥ (२७८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥ (२७८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ (२७८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ (२७८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥ (२७८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२७८-५)
सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ (२७८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥ (२७८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२७८-६)
जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥ (२७८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो नरकपाती होवत सुआनु ॥ (२७८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो जानै मै जोबनवंतु ॥ (२७८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो होवत बिसटा का जंतु ॥ (२७८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपस कउ करमवंतु कहावै ॥ (२७८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ (२७८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ (२७८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो मूरखु अंधा अगिआनु ॥ (२७८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ (२७८-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥ (२७८-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धनवंता होइ करि गरबावै ॥ (२७८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तृण समानि कछु संगि न जावै ॥ (२७८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ (२७८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ (२७८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते आप जानै बलवंतु ॥ (२७८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥ (२७८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
किसै न बदै आपि अहंकारी ॥ (२७८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धर्म राइ तिसु करे खुआरी ॥ (२७८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥ (२७८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥ (२७८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कोटि कर्म करै हउ धारे ॥ (२७८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ (२७८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥ (२७८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ (२७८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥ (२७८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥ (२७८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपस कउ जो भला कहावै ॥ (२७८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥ (२७८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सर्ब की रेन जा का मनु होइ ॥ (२७८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहु नानक ता की निर्मल सोइ ॥३॥ (२७८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ (२७८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ (२७८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब इह जानै मै किछु करता ॥ (२७८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ (२७८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ (२७८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ (२७८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥ (२७८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब लगु धर्म राइ देइ सजाइ ॥ (२७८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ (२७८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥ (२७८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ (२७८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २७९

तृपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥ (२७९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ (२७९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नह तृपतावै खपि खपि मरै ॥ (२७९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ (२७९-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुपन मनोरथ बृथे सभ काजै ॥ (२७९-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम रंगि सर्ब सुखु होइ ॥ (२७९-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बडभागी किसै परापति होइ ॥ (२७९-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन करावन आपे आपि ॥ (२७९-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥ (२७९-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन करावन करनैहारु ॥ (२७९-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इस कै हाथि कहा बीचारु ॥ (२७९-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसी दृसटि करे तैसा होइ ॥ (२७९-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥ (२७९-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥ (२७९-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥ (२७९-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बूझै देखै करै बिबेक ॥ (२७९-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपहि एक आपहि अनेक ॥ (२७९-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥ (२७९-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥ (२७९-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि उपदेसै समझै आपि ॥ (२७९-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

आपे रचिआ सभ कै साथि ॥ (२७६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ (२७६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥ (२७६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उस ते भिन्न कहहु किछु होइ ॥ (२७६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
थान थनंतरि एकै सोइ ॥ (२७६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपुने चलित आपि करणैहार ॥ (२७६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कउतक करै रंग आपार ॥ (२७६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन महि आपि मन अपुने माहि ॥ (२७६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥ (२७६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति सति सति प्रभु सुआमी ॥ (२७६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ (२७६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सचु सचु सचु सभु कीना ॥ (२७६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ (२७६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भला भला भला तेरा रूप ॥ (२७६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अति सुंदर अपार अनूप ॥ (२७६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निर्मल निर्मल निर्मल तेरी बाणी ॥ (२७६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
घटि घटि सुनी स्रवन बख्याणी ॥ (२७६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ (२७६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥ (२७६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२७६-१२)
संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ (२७६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥ (२७६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२७६-१४)
संत कै दूखनि आरजा घटै ॥ (२७६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ (२७६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥ (२७६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के हते कउ रखै न कोइ ॥ (२७६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कृपाल कृपा जे करै ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दूखन ते मुखु भवै ॥ (२७६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ (२७६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

संतन कै दूखनि सर्प जोनि पाइ ॥ (२७६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि तृगद जोनि किरमाइ ॥ (२७६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संतन कै दूखनि तृसना महि जलै ॥ (२७६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि सभु को छलै ॥ (२७६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत दोखी का थाउ को नाहि ॥ (२७६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८०

नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥ (२८०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का निंदकु महा अतताई ॥ (२८०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥ (२८०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का निंदकु महा हतिआरा ॥ (२८०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥ (२८०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का निंदकु राज ते हीनु ॥ (२८०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ (२८०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के निंदक कउ सर्ब रोग ॥ (२८०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ (२८०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत की निंदा दोख महि दोखु ॥ (२८०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥ (२८०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी सदा अपवितु ॥ (२८०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी किसै का नही मितु ॥ (२८०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी कउ डानु लागै ॥ (२८०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ (२८०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी महा अहंकारी ॥ (२८०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी सदा बिकारी ॥ (२८०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी जनमै मरै ॥ (२८०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत की दूखना सुख ते टरै ॥ (२८०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ (२८०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक संत भावै ता लए मिलाइ ॥४॥ (२८०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ (२८०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥ (२८०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ (२८०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥ (२८०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ (२८०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ (२८०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ (२८०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ (२८०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ (२८०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥ (२८०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ (२८०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ (२८०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ (२८०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै ॥ (२८०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी छुटै इकेला ॥ (२८०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ (२८०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी धर्म ते रहत ॥ (२८०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी सद मिथिआ कहत ॥ (२८०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥ (२८०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥ (२८०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥ (२८०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ (२८०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ (२८०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ (२८०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ (२८०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ (२८०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत कै दोखि न तृसटै कोइ ॥ (२८०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ (२८०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ (२८०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जानै सचा सोइ ॥७॥ (२८०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ (२८०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ (२८०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ (२८०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥ (२८०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ (२८०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसा करे तैसा को थीआ ॥ (२८०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ (२८०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दूसर कउनु कहै बीचारु ॥ (२८०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जिस नो कृपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ (२८१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥ (२८१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२८१-१)
तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ (२८१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥ (२८१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२८१-३)
मानुख की टेक बृथी सभ जानु ॥ (२८१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
देवन कउ एकै भगवानु ॥ (२८१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ (२८१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बहुरि न तृसना लागै आइ ॥ (२८१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मारै राखै एको आपि ॥ (२८१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ (२८१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ (२८१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ (२८१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ (२८१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥ (२८१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उसतति मन महि करि निरंकार ॥ (२८१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि मन मेरे सति बिउहार ॥ (२८१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निर्मल रसना अमृतु पीउ ॥ (२८१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ (२८१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥ (२८१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥ (२८१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥ (२८१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥ (२८१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कर हरि कर्म स्रवनि हरि कथा ॥ (२८१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥ (२८१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बडभागी ते जन जग माहि ॥ (२८१-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ (२८१-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नाम जो करहि बीचार ॥ (२८१-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
से धनवंत गनी संसार ॥ (२८१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ (२८१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ (२८१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एको एकु एकु पछानै ॥ (२८१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

इत उत की ओहु सोझी जानै ॥ (२८१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥ (२८१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥ (२८१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥ (२८१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस की जानहु तृसना बुझै ॥ (२८१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥ (२८१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ (२८१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥ (२८१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गृहसत महि सोई निरबानु ॥ (२८१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥ (२८१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥ (२८१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्म की जिसु मनि भूख ॥ (२८१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥ (२८१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥ (२८१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥ (२८१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥ (२८१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥ (२८१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसा सा तैसा दृसटाइआ ॥ (२८१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥ (२८१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥ (२८१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥ (२८१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥ (२८१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सो सूखमु सोई असथूलु ॥५॥ (२८१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ (२८१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन चलितु आप ही करै ॥ (२८१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आवनु जावनु दृसटि अनदृसटि ॥ (२८१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आगिआकारी धारी सभ सृसटि ॥ (२८१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८२

आपे आपि सगल महि आपि ॥ (२८२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ (२८२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अबिनासी नाही किछु खंड ॥ (२८२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥ (२८२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अलख अभेव पुरख परताप ॥ (२८२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥ (२८२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥ (२८२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ (२८२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ (२८२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ (२८२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे मेलि लए किरपाल ॥ (२८२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ (२८२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उन की सेवा सोई लागै ॥ (२८२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस नो कृपा करहि बडभागै ॥ (२८२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ (२८२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु ॥७॥ (२८२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ (२८२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा बसै हरि संगि ॥ (२८२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ (२८२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करणैहारु पछाणै सोइ ॥ (२८२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ (२८२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसा सा तैसा दृसटाना ॥ (२८२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ (२८२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ (२८२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ (२८२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥ (२८२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२८२-९)
सर्ब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ (२८२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥ (२८२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२८२-१०)
टूटी गाढनहार गोपाल ॥ (२८२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ (२८२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥ (२८२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥ (२८२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ (२८२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ (२८२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन कीआ कछू न होइ ॥ (२८२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ (२८२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ (२८२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥ (२८२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ (२८२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ (२८२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धनवंता होइ किआ को गरबै ॥ (२८२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ (२८२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ (२८२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ (२८२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जे को होइ बहै दातारु ॥ (२८२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ (२८२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ (२८२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥ (२८२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ मंदर कउ थामै थम्मनु ॥ (२८२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिउ गुर का सबदु मनहि असथम्मनु ॥ (२८२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ (२८२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ (२८२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ अंधकार दीपक परगासु ॥ (२८२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ (२८२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ (२८२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ (२८२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ (२८२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥ (२८२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ (२८२-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८३

पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ (२८३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ (२८३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ (२८३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ (२८३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भूला काहे फिरहि अजान ॥ (२८३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कउन बसतु आई तेरै संग ॥ (२८३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥ (२८३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ (२८३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥ (२८३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥ (२८३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ (२८३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ (२८३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ (२८३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

लादि खेप संतह संगि चालु ॥ (२८३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ (२८३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥ (२८३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥ (२८३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इहु वापारु विरला वापारै ॥ (२८३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥ (२८३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥ (२८३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ (२८३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध की धूरि करहु इसनानु ॥ (२८३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ (२८३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ (२८३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (२८३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ (२८३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि गुन गाइ अमृत रसु चाखै ॥ (२८३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओट गही संतह दरि आइआ ॥ (२८३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥ (२८३-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिरतक कउ जीवालनहार ॥ (२८३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भूखे कउ देवत अधार ॥ (२८३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निधान जा की दृसटी माहि ॥ (२८३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ (२८३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ (२८३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु बिनु दूसर होआ न होगु ॥ (२८३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ (२८३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते ऊच निर्मल इह करणी ॥ (२८३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ (२८३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥ (२८३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै मनि गुर की परतीति ॥ (२८३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ (२८३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥ (२८३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै हिरदै एको होइ ॥ (२८३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सचु करणी सचु ता की रहत ॥ (२८३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥ (२८३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साची दृसटि साचा आकारु ॥ (२८३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सचु वरतै साचा पासारु ॥ (२८३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्मु जिनि सचु करि जाता ॥ (२८३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥ (२८३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२८३-१६)
रूपु न रेख न रंगु किछु तृहु गुण ते प्रभ भिन्न ॥ (२८३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसन्न ॥१॥ (२८३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२८३-१७)
अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ (२८३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ (२८३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥ (२८३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निरंतरि एको सोइ ॥ (२८३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे बीना आपे दाना ॥ (२८३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गहिर गम्भीरु गहीरु सुजाना ॥ (२८३-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्म परमेसुर गोबिंद ॥ (२८३-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कृपा निधान दइआल बखसंद ॥ (२८३-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध तेरे की चरनी पाउ ॥ (२८३-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८४

नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥ (२८४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनसा पूरन सरना जोग ॥ (२८४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो करि पाइआ सोई होगु ॥ (२८४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ (२८४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥ (२८४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ (२८४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ (२८४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ (२८४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तप महि तपीसरु गृहसत महि भोगी ॥ (२८४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥ (२८४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥ (२८४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा की लीला की मिति नाहि ॥ (२८४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल देव हारे अवगाहि ॥ (२८४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ (२८४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल परोई अपुनै सूति ॥ (२८४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ (२८४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ (२८४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ (२८४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ (२८४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

ऊच नीच तिस के असथान ॥ (२८४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ (२८४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाना रूप नाना जा के रंग ॥ (२८४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाना भेख करहि इक रंग ॥ (२८४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ (२८४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥ (२८४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाना चलित करे खिन माहि ॥ (२८४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥ (२८४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ (२८४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपनी कीमति आपे पाई ॥ (२८४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ घट तिस के सभ तिस के ठाउ ॥ (२८४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥ (२८४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम के धारे सगले जंत ॥ (२८४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ (२८४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम के धारे सिमृति बेद पुरान ॥ (२८४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ (२८४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम के धारे आगास पाताल ॥ (२८४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम के धारे सगल आकार ॥ (२८४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ (२८४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥ (२८४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥ (२८४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥ (२८४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रूपु सति जा का सति असथानु ॥ (२८४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पुरखु सति केवल प्रधानु ॥ (२८४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करतूति सति सति जा की बाणी ॥ (२८४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ (२८४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति करमु जा की रचना सति ॥ (२८४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मूलु सति सति उतपति ॥ (२८४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति करणी निर्मल निरमली ॥ (२८४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसहि बुझाए तिसहि सभ भली ॥ (२८४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥ (२८४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥ (२८४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति बचन साधू उपदेस ॥ (२८४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति ते जन जा कै रिदै प्रवेस ॥ (२८४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति निरति बूझै जे कोइ ॥ (२८४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नामु जपत ता की गति होइ ॥ (२८४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि सति कीआ सभु सति ॥ (२८४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे जानै अपनी मिति गति ॥ (२८४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८५

जिस की स्रिसटि सु करणैहारु ॥ (२८५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवर न बूझि करत बीचारु ॥ (२८५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करते की मिति न जानै कीआ ॥ (२८५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जो तिसु भावै सो वरतीआ ॥७॥ (२८५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिसमन बिसम भए बिसमाद ॥ (२८५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिनि बूझिआ तिसु आइआ स्वाद ॥ (२८५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥ (२८५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर कै बचनि पदार्थ लहे ॥ (२८५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओइ दाते दुख काटनहार ॥ (२८५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै संगि तरै संसार ॥ (२८५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जन का सेवकु सो वडभागी ॥ (२८५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जन कै संगि एक लिव लागी ॥ (२८५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुन गोबिद कीरतनु जनु गावै ॥ (२८५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥ (२८५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२८५-५)
आदि सचु जुगादि सचु ॥ (२८५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥ (२८५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२८५-६)
चरन सति सति परसनहार ॥ (२८५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूजा सति सति सेवदार ॥ (२८५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दरसनु सति सति पेखनहार ॥ (२८५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु सति सति धिआवनहार ॥ (२८५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि सति सति सभ धारी ॥ (२८५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे गुण आपे गुणकारी ॥ (२८५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ (२८५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुरति सति सति जसु सुनता ॥ (२८५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ (२८५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥ (२८५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ (२८५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ (२८५-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ आइआ ॥ (२८५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ (२८५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ (२८५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ (२८५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ (२८५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता कउ भिन्न न कहना जाई ॥ (२८५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ (२८५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाराइन मिले नानक एक ॥२॥ (२८५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ (२८५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ (२८५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ (२८५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ठाकुर के सेवक की निर्मल रीति ॥ (२८५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥ (२८५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ (२८५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ (२८५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सेवक की राखै निरंकारा ॥ (२८५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥ (२८५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥ (२८५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपुने जन का परदा ढाकै ॥ (२८५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपने सेवक की सरपर राखै ॥ (२८५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपने दास कउ देइ वडाई ॥ (२८५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ (२८५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपने सेवक की आपि पति राखै ॥ (२८५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥ (२८५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ (२८५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ (२८५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ (२८५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥ (२८५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नीकी कीरी महि कल राखै ॥ (२८५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ (२८५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस का सासु न काढत आपि ॥ (२८५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८६

ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ (२८६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मानस जतन करत बहु भाति ॥ (२८६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

तिस के करतब बिरथे जाति ॥ (२८६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मारै न राखै अवरु न कोइ ॥ (२८६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब जीआ का राखा सोइ ॥ (२८६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ (२८६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ (२८६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥ (२८६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पी अमृतु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥ (२८६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥ (२८६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु किछु अवरु नाही दृसटाइआ ॥ (२८६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥ (२८६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥ (२८६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नाम रसि जो जन तृपताने ॥ (२८६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तन नामहि नामि समाने ॥ (२८६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ (२८६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥ (२८६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ (२८६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ (२८६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करहि भगति आतम कै चाइ ॥ (२८६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ (२८६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो होआ होवत सो जानै ॥ (२८६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ (२८६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ (२८६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ (२८६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ (२८६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ (२८६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ (२८६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ (२८६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिनि जनि अपना प्रभू पछाता ॥ (२८६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो जनु सर्ब थोक का दाता ॥ (२८६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस की सरनि सर्ब सुख पावहि ॥ (२८६-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ (२८६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवर सिआनप सगली छाडु ॥ (२८६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ (२८६-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आवनु जानु न होवी तेरा ॥ (२८६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥ (२८६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सलोकु ॥ (२८६-१२)
सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ (२८६-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥ (२८६-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२८६-१३)
सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ (२८६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ (२८६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ (२८६-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ (२८६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥ (२८६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर का सिखु बिकार ते हाटै ॥ (२८६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥ (२८६-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर का सिखु वडभागी हे ॥ (२८६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ (२८६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥ (२८६-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर कै गृहि सेवकु जो रहै ॥ (२८६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ (२८६-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ (२८६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ (२८६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ (२८६-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु सेवक के कारज रासि ॥ (२८६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सेवा करत होइ निहकामी ॥ (२८६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ (२८६-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८७

अपनी कृपा जिसु आपि करेइ ॥ (२८७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥ (२८७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ (२८७-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ (२८७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ (२८७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ (२८७-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निधान जीअ का दाता ॥ (२८७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आठ पहर पारब्रह्म रंगि राता ॥ (२८७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ब्रह्म महि जनु जन महि पारब्रह्मु ॥ (२८७-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एकहि आपि नही कछु भरमु ॥ (२८७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥ (२८७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥ (२८७-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ (२८७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
परसत चरन गति निर्मल रीति ॥ (२८७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भेटत संगि राम गुन रवे ॥ (२८७-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्म की दरगह गवे ॥ (२८७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनि करि बचन करन आघाने ॥ (२८७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनि संतोखु आतम पतीआने ॥ (२८७-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूरा गुरु अख्यओ जा का मंत्र ॥ (२८७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमृत दृसटि पेखै होइ संत ॥ (२८७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥ (२८७-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥ (२८७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिहबा एक उसतति अनेक ॥ (२८७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति पुरख पूरन बिबेक ॥ (२८७-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ (२८७-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ (२८७-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निराहार निरवैर सुखदाई ॥ (२८७-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता की कीमति किनै न पाई ॥ (२८७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक भगत बंदन नित करहि ॥ (२८७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ (२८७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ (२८७-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥ (२८७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥ (२८७-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमृतु पीवै अमरु सो होइ ॥ (२८७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ (२८७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ (२८७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥ (२८७-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ (२८७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥ (२८७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ (२८७-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंधकार दीपक परगासे ॥ (२८७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक भर्म मोह दुख तह ते नासे ॥६॥ (२८७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तपति माहि ठाढि वरताई ॥ (२८७-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ (२८७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ (२८७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधू के पूरन उपदेसे ॥ (२८७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

भउ चूका निरभउ होइ बसे ॥ (२८७-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥ (२८७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥ (२८७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥ (२८७-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
थिति पाई चूके भ्रम गवन ॥ (२८७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनि नानक हरि हरि जसु स्रवन ॥७॥ (२८७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निरगुनु आपि सरगुनु भी ओही ॥ (२८७-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कला धारि जिनि सगली मोही ॥ (२८७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपने चरित प्रभि आपि बनाए ॥ (२८७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपुनी कीमति आपे पाए ॥ (२८७-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (२८७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निरंतरि एको सोइ ॥ (२८७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओति पोति रविआ रूप रंग ॥ (२८७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भए प्रगास साध कै संग ॥ (२८७-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८८

रचि रचना अपनी कल धारी ॥ (२८८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक बार नानक बलिहारी ॥८॥१८॥ (२८८-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२८८-१)
साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ सगली छारु ॥ (२८८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि नामु कमावना नानक इहु धनु सारु ॥१॥ (२८८-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२८८-३)
संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ (२८८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एकु सिमरि नाम आधारु ॥ (२८८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ (२८८-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ (२८८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ (२८८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दृड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ (२८८-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ (२८८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत जना का निर्मल मंत ॥ (२८८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक आस राखहु मन माहि ॥ (२८८-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥ (२८८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ (२८८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ (२८८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ (२८८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सो सुखु साधू संगि परीति ॥ (२८८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ (२८८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥ (२८८-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ (२८८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ (२८८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निधान महि हरि नामु निधानु ॥ (२८८-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥ (२८८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥ (२८८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ (२८८-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ (२८८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ (२८८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥ (२८८-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ (२८८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ (२८८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगति भाइ आतम परगास ॥ (२८८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ (२८८-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥ (२८८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ (२८८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनमि मरै सो काचो काचा ॥ (२८८-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ (२८८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ (२८८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥ (२८८-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ (२८८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ (२८८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिम्मृति सासत बेद बीचारे ॥ (२८८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि की भगति करहु मनु लाइ ॥ (२८८-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥ (२८८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संगि न चालसि तेरै धना ॥ (२८८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥ (२८८-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुत मीत कुटम्ब अरु बनिता ॥ (२८८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ (२८८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राज रंग माइआ बिसथार ॥ (२८८-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ (२८८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असु हसती रथ असवारी ॥ (२८८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
झूठा डम्फु झूठु पासारी ॥ (२८८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जिनि दीए तिसु बुझै न बिगाना ॥ (२८८-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥ (२८८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ (२८८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ (२८८-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि की भगति करहु मन मीत ॥ (२८८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निर्मल होइ तुम्हारो चीत ॥ (२८८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चरन कमल राखहु मन माहि ॥ (२८८-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २८९

जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ (२८९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ (२८९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ (२८९-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सार भूत सति हरि को नाउ ॥ (२८९-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥ (२८९-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ (२८९-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ (२८९-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥ (२८९-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ (२८९-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
छाडि सिआनप सगली मना ॥ (२८९-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि पावहि सचु धना ॥ (२८९-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥ (२८९-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ (२८९-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब निरंतरि एको देखु ॥ (२८९-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥ (२८९-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एको जपि एको सालाहि ॥ (२८९-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एकु सिमरि एको मन आहि ॥ (२८९-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एकस के गुन गाउ अनंत ॥ (२८९-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनि तनि जापि एक भगवंत ॥ (२८९-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एको एकु एकु हरि आपि ॥ (२८९-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ (२८९-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक बिसथार एक ते भए ॥ (२८९-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एकु अराधि पराछत गए ॥ (२८९-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥ (२८९-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१९॥ (२८९-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२८९-९)

फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ (२८९-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥ (२८९-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२८९-१०)
जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ (२८९-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ (२८९-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध जना की मागउ धूरि ॥ (२८९-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्म मेरी सरधा पूरि ॥ (२८९-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ (२८९-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ (२८९-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ (२८९-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ (२८९-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक ओट एको आधारु ॥ (२८९-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥ (२८९-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ की दृसटि महा सुखु होइ ॥ (२८९-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥ (२८९-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिन चाखिआ से जन तृपताने ॥ (२८९-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूरन पुरख नही डोलाने ॥ (२८९-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥ (२८९-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उपजै चाउ साध कै संगि ॥ (२८९-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ (२८९-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ (२८९-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥ (२८९-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥ (२८९-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सेवक की मनसा पूरी भई ॥ (२८९-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सतिगुर ते निर्मल मति लई ॥ (२८९-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥ (२८९-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ (२८९-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥ (२८९-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥ (२८९-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ (२८९-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥ (२८९-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥ (२८९-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक भगती नामि समाइ ॥३॥ (२८९-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥ (२८९-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥ (२८९-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ (२९०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो किउ बिसरै जि जीवन जीआ ॥ (२९०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ (२९०-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ (२९०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥ (२९०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनम जनम का टूटा गाढै ॥ (२९०-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥ (२९०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥ (२९०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साजन संत करहु इहु कामु ॥ (२९०-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥ (२९०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ (२९०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ (२९०-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥ (२९०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ (२९०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब कलिआण सूख निधि नामु ॥ (२९०-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ (२९०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल दूख का होवत नासु ॥ (२९०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥ (२९०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ (२९०-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन तन अंतरि इही सुआउ ॥ (२९०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥ (२९०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनु बिगसै साध चरन धोइ ॥ (२९०-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥ (२९०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिरला कोऊ पावै संगु ॥ (२९०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक बसतु दीजै करि मइआ ॥ (२९०-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ (२९०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता की उपमा कही न जाइ ॥ (२९०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक रहिआ सर्ब समाइ ॥६॥ (२९०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥ (२९०-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगति वछल सदा किरपाल ॥ (२९०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ (२९०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब घटा करत प्रतिपाल ॥ (२९०-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आदि पुरख कारण करतार ॥ (२९०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

भगत जना के प्रान अधार ॥ (२६०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ (२६०-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगति भाइ लावै मन हीत ॥ (२६०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ (२६०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥ (२६०-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥ (२६०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक निमख हरि के गुन गाए ॥ (२६०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक राज भोग बडिआई ॥ (२६०-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ (२६०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बहु भोजन कापर संगीत ॥ (२६०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
रसना जपती हरि हरि नीत ॥ (२६०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भली सु करनी सोभा धनवंत ॥ (२६०-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥ (२६०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥ (२६०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥ (२६०-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६०-१६)
सरगुन निरगुन निरंकार सुन्न समाधी आपि ॥ (२६०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥ (२६०-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६०-१७)
जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥ (२६०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पाप पुन्न तब कह ते होता ॥ (२६०-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब धारी आपन सुन्न समाधि ॥ (२६०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥ (२६०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥ (२६०-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ (२६०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब आपन आप आपि पारब्रह्म ॥ (२६०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब मोह कहा किसु होवत भर्म ॥ (२६०-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६१

आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ (२६१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥ (२६१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ (२६१-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ (२६१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब एकहि हरि अगम अपार ॥ (२६१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ (२६१-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥ (२९१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥ (२९१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ (२९१-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ (२९१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन चलित आपि करनैहार ॥ (२९१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥ (२९१-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अबिनासी सुख आपन आसन ॥ (२९१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ (२९१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ (२९१-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥ (२९१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ (२९१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब चित्र गुप्त किसु पूछत लेखा ॥ (२९१-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे ॥ (२९१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥ (२९१-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन आप आप ही अचरजा ॥ (२९१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥ (२९१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह निर्मल पुरखु पुरख पति होता ॥ (२९१-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ (२९१-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह निरंजन निरंकार निरबान ॥ (२९१-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ (२९१-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह सरूप केवल जगदीस ॥ (२९१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ (२९१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥ (२९१-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह किसहि भूख कवनु तृपतावै ॥ (२९१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन करावन करनैहारु ॥ (२९१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥ (२९१-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥ (२९१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ (२९१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह सर्ब कला आपहि परबीन ॥ (२९१-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ (२९१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जब आपन आपु आपि उरि धारै ॥ (२९१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ (२९१-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ (२९१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥ (२९१-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ (२९१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥ (२९१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥ (२९१-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥ (२९१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपस कउ आपहि आदेसु ॥ (२९१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ (२९१-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह एकहि एक एक भगवंता ॥ (२९१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥ (२९१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ (२९१-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ (२९१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ (२९१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥ (२९१-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥ (२९१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥ (२९१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पापु पुन्नु तह भई कहावत ॥ (२९१-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २९२

कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ (२९२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आल जाल माइआ जंजाल ॥ (२९२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हउमै मोह भर्म भै भार ॥ (२९२-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दूख सूख मान अपमान ॥ (२९२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक प्रकार कीओ बख्यान ॥ (२९२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन खेलु आपि करि देखै ॥ (२९२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥ (२९२-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ (२९२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जह पसरै पासारु संत परतापि ॥ (२९२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दुहू पाख का आपहि धनी ॥ (२९२-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उन की सोभा उनहू बनी ॥ (२९२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ (२९२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपहि रस भोगन निरजोग ॥ (२९२-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ (२९२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ (२९२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ (२९२-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥ (२९२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९२-६)
जीअ जंत के ठाकुरा आपे वरतणहार ॥ (२९२-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥१॥ (२६२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६२-७)
आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ (२६२-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ (२६२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥ (२६२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपनै भाणै लए समाए ॥ (२६२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तुम ते भिन्न नही किछु होइ ॥ (२६२-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ (२६२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ (२६२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सचु नामु सोई जनु पाए ॥ (२६२-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो समदरसी तत का बेता ॥ (२६२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥ (२६२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥ (२६२-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥ (२६२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥ (२६२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ (२६२-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥ (२६२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥ (२६२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥ (२६२-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥ (२६२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुन निधान बेअंत अपार ॥ (२६२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक दास सदा बलिहार ॥२॥ (२६२-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूरन पूरि रहे दइआल ॥ (२६२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ (२६२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अपने करतब जानै आपि ॥ (२६२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥ (२६२-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ (२६२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ (२६२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ (२६२-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ (२६२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस की आस न बिरथी जाइ ॥ (२६२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ (२६२-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

हुकमु बूझि पर्म पदु पाई ॥ (२६२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥ (२६२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥ (२६२-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बंधन तोरि भए निरवैर ॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥ (२६२-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६३

नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥ (२६३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥ (२६३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ (२६३-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ (२६३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥ (२६३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमृत बचन हरि के गुन गाउ ॥ (२६३-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ (२६३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ (२६३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥ (२६३-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ (२६३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ (२६३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ (२६३-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥ (२६३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ (२६३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ (२६३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ (२६३-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सचु वापारु करहु वापारी ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एका टेक रखहु मन माहि ॥ (२६३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥ (२६३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ (२६३-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उबरै राखनहारु धिआइ ॥ (२६३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ (२६३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ (२६३-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु जपत मनि होवत सूख ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ (२६३-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ (२६३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ (२६३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक ता के कारज पूरा ॥७॥ (२६३-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मति पूरी अमृतु जा की दृसटि ॥ (२६३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दरसनु पेखत उधरत सृसटि ॥ (२६३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चरन कमल जा के अनूप ॥ (२६३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ (२६३-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धन्नु सेवा सेवकु परवानु ॥ (२६३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ (२६३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ (२६३-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता कै निकटि न आवत कालु ॥ (२६३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥ (२६३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥ (२६३-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६३-१४)
गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥ (२६३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥ (२६३-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
असटपदी ॥ (२६३-१५)
संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ (२६३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ (२६३-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक रंग नाना दृसटाहि ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नउ निधि अमृतु प्रभ का नामु ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
देही महि इस का बिस्रामु ॥ (२६३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुन्न समाधि अनहत तह नाद ॥ (२६३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ (२६३-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ (२६३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥ (२६३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ (२६३-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
घटि घटि बिआपि रहिआ भगवंत ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धरनि माहि आकास पइआल ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ (२६३-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६४

बनि तिनि परबति है पारब्रह्मु ॥ (२६४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ (२६४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ (२६४-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ (२६४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस ते भिन्न नही को ठाउ ॥ (२६४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ (२६४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बेद पुरान सिम्मृति महि देखु ॥ (२६४-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ससीअर सूर नख्यत्र महि एकु ॥ (२६४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ (२६४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ (२६४-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब कला करि खेलै खेल ॥ (२६४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥ (२६४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब जोति महि जा की जोति ॥ (२६४-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ (२६४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर परसादि भर्म का नासु ॥ (२६४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥ (२६४-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत जना का पेखनु सभु ब्रह्म ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत जना कै हिरदै सभि धर्म ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत जना सुनहि सुभ बचन ॥ (२६४-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब बिआपी राम संगि रचन ॥ (२६४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिनि जाता तिस की इह रहत ॥ (२६४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सति बचन साधू सभि कहत ॥ (२६४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो जो होइ सोई सुखु मानै ॥ (२६४-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करन करावनहारु प्रभु जानै ॥ (२६४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥ (२६४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥ (२६४-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि सति कीआ सभु सति ॥ (२६४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु प्रभ ते सगली उतपति ॥ (२६४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु भावै ता करे बिसथारु ॥ (२६४-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु भावै ता एकंकारु ॥ (२६४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अनिक कला लखी नह जाइ ॥ (२६४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ (२६४-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कवन निकटि कवन कहीऐ दूरि ॥ (२६४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे आपि आप भरपूरि ॥ (२६४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥ (२६४-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥ (२६४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सर्ब भूत आपि वरतारा ॥ (२६४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब नैन आपि पेखनहारा ॥ (२६४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल समग्री जा का तना ॥ (२६४-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपन जसु आप ही सुना ॥ (२६४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥ (२६४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आगिआकारी कीनी माइआ ॥ (२६४-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ कै मधि अलिपतो रहै ॥ (२६४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो किछु कहणा सु आपे कहै ॥ (२६४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आगिआ आवै आगिआ जाइ ॥ (२६४-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जा भावै ता लए समाइ ॥६॥ (२६४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इस ते होइ सु नाही बुरा ॥ (२६४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ (२६४-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि भला करतूति अति नीकी ॥ (२६४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपे जानै अपने जी की ॥ (२६४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि साचु धारी सभ साचु ॥ (२६४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओति पोति आपन संगि राचु ॥ (२६४-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ता की गति मिति कही न जाइ ॥ (२६४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दूसर होइ त सोझी पाइ ॥ (२६४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिस का कीआ सभु परवानु ॥ (२६४-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक इहु जानु ॥७॥ (२६४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जो जानै तिसु सदा सुखु होइ ॥ (२६४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥ (२६४-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ (२६४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ (२६४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
धन्नु धन्नु धन्नु जनु आइआ ॥ (२६४-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६५

जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥ (२६५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जन आवन का इहै सुआउ ॥ (२६५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ (२६५-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ (२६५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥ (२६५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६५-२)
पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ (२६५-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥ (२६५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

असटपदी ॥ (२६५-३)
पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ (२६५-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पारब्रह्मु निकटि करि पेखु ॥ (२६५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ (२६५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मन अंतर की उतरै चिंद ॥ (२६५-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आस अनित तिआगहु तरंग ॥ (२६५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
संत जना की धूरि मन मंग ॥ (२६५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपु छोडि बेनती करहु ॥ (२६५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि अगनि सागरु तरहु ॥ (२६५-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक गुर पूरे नमस्कार ॥१॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खेम कुसल सहज आनंद ॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साधसंगि भजु परमानंद ॥ (२६५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नरक निवारि उधारहु जीउ ॥ (२६५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुन गोबिंद अमृत रसु पीउ ॥ (२६५-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चिति चितवहु नाराइण एक ॥ (२६५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एक रूप जा के रंग अनेक ॥ (२६५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गोपाल दामोदर दीन दइआल ॥ (२६५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दुख भंजन पूरन किरपाल ॥ (२६५-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमरि सिमरि नामु बारं बार ॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जीअ का इहै अधार ॥२॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
उतम सलोक साध के बचन ॥ (२६५-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमुलीक लाल एहि रतन ॥ (२६५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनत कमावत होत उधार ॥ (२६५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आपि तरै लोकह निसतार ॥ (२६५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सफल जीवनु सफलु ता का संगु ॥ (२६५-१०, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै मनि लागा हरि रंगु ॥ (२६५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जै जै सबदु अनाहदु वाजै ॥ (२६५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥ (२६५-११, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रगटे गुपाल महाँत कै माथे ॥ (२६५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक उधरे तिन कै साथे ॥३॥ (२६५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सरनि जोगु सुनि सरनी आए ॥ (२६५-१२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि किरपा प्रभ आप मिलाए ॥ (२६५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
मिटि गए बैर भए सभ रेन ॥ (२६५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
अमृत नामु साधसंगि लैन ॥ (२६५-१३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

सुप्रसन्न भए गुरदेव ॥ (२६५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
पूरन होई सेवक की सेव ॥ (२६५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
आल जंजाल बिकार ते रहते ॥ (२६५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
राम नाम सुनि रसना कहते ॥ (२६५-१४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ (२६५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक निबही खेप हमारी ॥४॥ (२६५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रभ की उसतति करहु संत मीत ॥ (२६५-१५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सावधान एकागर चीत ॥ (२६५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुखमनी सहज गोबिंद गुन नाम ॥ (२६५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु मनि बसै सु होत निधान ॥ (२६५-१६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सर्ब इछा ता की पूरन होइ ॥ (२६५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥ (२६५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते ऊच पाए असथानु ॥ (२६५-१७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बहुरि न होवै आवन जानु ॥ (२६५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
हरि धनु खाटि चलै जनु सोइ ॥ (२६५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक जिसहि परापति होइ ॥५॥ (२६५-१८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
खेम साँति रिधि नव निधि ॥ (२६५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बुधि गिआनु सर्ब तह सिधि ॥ (२६५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥ (२६५-१९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

पन्ना २६६

गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ (२६६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
चारि पदार्थ कमल प्रगास ॥ (२६६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ (२६६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ (२६६-१, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
समदरसी एक दृसटेता ॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥ (२६६-२, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ (२६६-३, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सिमृति सासत्र बेद बखाणी ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सगल मताँत केवल हरि नाम ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥ (२६६-४, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)

संत कृपा ते जम ते छुटै ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जा कै मसतकि कर्म प्रभि पाए ॥ (२६६-५, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जिसु मनि बसै सुनै लाइ प्रीति ॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ (२६६-६, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
निर्मल सोभा अमृत ता की बानी ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
एकु नामु मन माहि समानी ॥ (२६६-७, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
दूख रोग बिनसे भै भर्म ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
साध नाम निर्मल ता के कर्म ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ (२६६-८, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥ (२६६-९, गउड़ी सुखमनी, मः ५)
थिती गउड़ी महला ५ ॥ (२६६-१०)
सलोकु ॥ (२६६-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (२६६-१०)
जलि थलि महीअलि पूरिआ सुआमी सिरजनहारु ॥ (२६६-११, थिती गउड़ी, मः ५)
अनिक भाँति होइ पसरिआ नानक एकंकारु ॥१॥ (२६६-११, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६६-१२)
एकम एकंकारु प्रभु करउ बंदना धिआइ ॥ (२६६-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
गुण गोबिंद गुपाल प्रभ सरनि परउ हरि राइ ॥ (२६६-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
ता की आस कलिआण सुख जा ते सभु कछु होइ ॥ (२६६-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
चारि कुंट दह दिसि भ्रमिओ तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (२६६-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
बेद पुरान सिमृति सुने बहु बिधि करउ बीचारु ॥ (२६६-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
पतित उधारन भै हरन सुख सागर निरंकार ॥ (२६६-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
दाता भुगता देनहारु तिसु बिनु अवरु न जाइ ॥ (२६६-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
जो चाहहि सोई मिलै नानक हरि गुन गाइ ॥१॥ (२६६-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
गोबिंद जसु गाईऐ हरि नीत ॥ (२६६-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
मिलि भजीऐ साधसंगि मेरे मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (२६६-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६६-१६)
करउ बंदना अनिक वार सरनि परउ हरि राइ ॥ (२६६-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
भ्रमु कटीऐ नानक साधसंगि दुतीआ भाउ मिटाइ ॥२॥ (२६६-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६६-१८)
दुतीआ दुरमति दूरि करि गुर सेवा करि नीत ॥ (२६६-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
राम रतनु मनि तनि बसै तजि कामु क्रोधु लोभु मीत ॥ (२६६-१८, थिती गउड़ी, मः ५)

मरणु मिटै जीवनु मिलै बिनसहि सगल कलेस ॥ (२६६-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
आपु तजहु गोबिंद भजहु भाउ भगति परवेस ॥ (२६६-१६, थिती गउड़ी, मः ५)

पन्ना २६७

लाभु मिलै तोटा हिरै हरि दरगह पतिवंत ॥ (२६७-१, थिती गउड़ी, मः ५)
राम नाम धनु संचवै साच साह भगवंत ॥ (२६७-१, थिती गउड़ी, मः ५)
ऊठत बैठत हरि भजहु साधू संगि परीति ॥ (२६७-२, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक दुरमति छुटि गई पारब्रह्म बसे चीति ॥२॥ (२६७-२, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६७-३)
तीनि बिआपहि जगत कउ तुरीआ पावै कोइ ॥ (२६७-३, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक संत निर्मल भए जिन मनि वसिआ सोइ ॥३॥ (२६७-३, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६७-४)
तृतीआ त्रै गुण बिखै फल कब उतम कब नीचु ॥ (२६७-४, थिती गउड़ी, मः ५)
नरक सुरग भ्रमतउ घणो सदा संघारै मीचु ॥ (२६७-४, थिती गउड़ी, मः ५)
हरख सोग सहसा संसारु हउ हउ करत बिहाइ ॥ (२६७-५, थिती गउड़ी, मः ५)
जिनि कीए तिसहि न जाणनी चितवहि अनिक उपाइ ॥ (२६७-५, थिती गउड़ी, मः ५)
आधि बिआधि उपाधि रस कबहु न तूटै ताप ॥ (२६७-६, थिती गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्म पूरन धनी नह बूझै परताप ॥ (२६७-६, थिती गउड़ी, मः ५)
मोह भर्म बूडत घणो महा नरक महि वास ॥ (२६७-७, थिती गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक तेरी आस ॥३॥ (२६७-७, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६७-८)
चतुर सिआणा सुघड़ु सोइ जिनि तजिआ अभिमानु ॥ (२६७-८, थिती गउड़ी, मः ५)
चारि पदार्थ असट सिधि भजु नानक हरि नामु ॥४॥ (२६७-८, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६७-९)
चतुरथि चारे बेद सुणि सोधिओ ततु बीचारु ॥ (२६७-९, थिती गउड़ी, मः ५)
सर्ब खेम कलिआण निधि राम नामु जपि सारु ॥ (२६७-९, थिती गउड़ी, मः ५)
नरक निवारै दुख हरै तूटहि अनिक कलेस ॥ (२६७-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
मीचु हुटै जम ते छुटै हरि कीर्तन परवेस ॥ (२६७-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
भउ बिनसै अमृतु रसै रंगि रते निरंकार ॥ (२६७-११, थिती गउड़ी, मः ५)
दुख दारिद अपवित्रता नासहि नाम अधार ॥ (२६७-११, थिती गउड़ी, मः ५)
सुरि नर मुनि जन खोजते सुख सागर गोपाल ॥ (२६७-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
मनु निरमलु मुखु ऊजला होइ नानक साध रवाल ॥४॥ (२६७-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६७-१३)
पंच बिकार मन महि बसे राचे माइआ संगि ॥ (२६७-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
साधसंगि होइ निरमला नानक प्रभ कै रंगि ॥५॥ (२६७-१३, थिती गउड़ी, मः ५)

पउड़ी ॥ (२९७-१४)
पंचमि पंच प्रधान ते जिह जानिओ परपंचु ॥ (२९७-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
कुसम बास बहु रंगु घणो सभ मिथिआ बलबंचु ॥ (२९७-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
नह जापै नह बूझीऐ नह कछु करत बीचारु ॥ (२९७-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
सुआद मोह रस बेधिओ अगिआनि रचिओ संसारु ॥ (२९७-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
जनम मरण बहु जोनि भ्रमण कीने कर्म अनेक ॥ (२९७-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
रचनहारु नह सिमरिओ मनि न बीचारि बिबेक ॥ (२९७-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
भाउ भगति भगवान संगि माइआ लिपत न रंच ॥ (२९७-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक बिरले पाईअहि जो न रचहि परपंच ॥५॥ (२९७-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९७-१८)
खट सासत्र ऊचौ कहहि अंतु न पारावार ॥ (२९७-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
भगत सोहहि गुण गावते नानक प्रभ कै दुआर ॥६॥ (२९७-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२९७-१९)
खसटमि खट सासत्र कहहि सिम्रिति कथहि अनेक ॥ (२९७-१९, थिती गउड़ी, मः ५)

पन्ना २९८

ऊतमु ऊचौ पारब्रह्मु गुण अंतु न जाणहि सेख ॥ (२९८-१, थिती गउड़ी, मः ५)
नारद मुनि जन सुक बिआस जसु गावत गोबिंद ॥ (२९८-१, थिती गउड़ी, मः ५)
रस गीधे हरि सिउ बीधे भगत रचे भगवंत ॥ (२९८-२, थिती गउड़ी, मः ५)
मोह मान भ्रमु बिनसिओ पाई सरनि दइआल ॥ (२९८-२, थिती गउड़ी, मः ५)
चरन कमल मनि तनि बसे दरसनु देखि निहाल ॥ (२९८-३, थिती गउड़ी, मः ५)
लाभु मिलै तोटा हिरै साधसंगि लिव लाइ ॥ (२९८-३, थिती गउड़ी, मः ५)
खाटि खजाना गुण निधि हरे नानक नामु धिआइ ॥६॥ (२९८-३, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९८-४)
संत मंडल हरि जसु कथहि बोलहि सति सुभाइ ॥ (२९८-४, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक मनु संतोखीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥७॥ (२९८-५, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२९८-५)
सपतमि संचहु नाम धनु टूटि न जाहि भंडार ॥ (२९८-५, थिती गउड़ी, मः ५)
संतसंगति महि पाईऐ अंतु न पारावार ॥ (२९८-६, थिती गउड़ी, मः ५)
आपु तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राइ ॥ (२९८-६, थिती गउड़ी, मः ५)
दूख हरै भवजलु तरै मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ (२९८-७, थिती गउड़ी, मः ५)
आठ पहर मनि हरि जपै सफलु जनमु परवाणु ॥ (२९८-७, थिती गउड़ी, मः ५)
अंतरि बाहरि सदा संगि करनैहारु पछाणु ॥ (२९८-८, थिती गउड़ी, मः ५)
सो साजनु सो सखा मीतु जो हरि की मति देइ ॥ (२९८-८, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक तिसु बलिहारणै हरि हरि नामु जपेइ ॥७॥ (२९८-८, थिती गउड़ी, मः ५)

सलोकु ॥ (२६८-६)
आठ पहर गुन गाईअहि तजीअहि अवरि जंजाल ॥ (२६८-६, थिती गउड़ी, मः ५)
जमकंकरु जोहि न सकई नानक प्रभू दइआल ॥८॥ (२६८-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६८-१०)
असटमी असट सिधि नव निधि ॥ (२६८-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
सगल पदारथ पूरन बुधि ॥ (२६८-११, थिती गउड़ी, मः ५)
कवल प्रगास सदा आनंद ॥ (२६८-११, थिती गउड़ी, मः ५)
निर्मल रीति निरोधर मंत ॥ (२६८-११, थिती गउड़ी, मः ५)
सगल धर्म पवित्र इसनानु ॥ (२६८-११, थिती गउड़ी, मः ५)
सभ महि ऊच बिसेख गिआनु ॥ (२६८-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि हरि भजनु पूरे गुर संगि ॥ (२६८-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
जपि तरीऐ नानक नाम हरि रंगि ॥८॥ (२६८-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६८-१३)
नाराइणु नह सिमरिओ मोहिओ सुआद बिकार ॥ (२६८-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक नामि बिसारिऐ नरक सुरग अवतार ॥६॥ (२६८-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६८-१४)
नउमी नवे छिद्र अपवीत ॥ (२६८-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि नामु न जपहि करत बिपरीति ॥ (२६८-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
पर तृअ रमहि बकहि साध निंद ॥ (२६८-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
करन न सुनही हरि जसु बिंद ॥ (२६८-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
हिरहि पर दरबु उदर कै ताई ॥ (२६८-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
अगनि न निवरै तृसना न बुझाई ॥ (२६८-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि सेवा बिनु एह फल लागे ॥ (२६८-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक प्रभ बिसरत मरि जमहि अभागे ॥६॥ (२६८-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२६८-१७)
दस दिस खोजत मै फिरिओ जत देखउ तत सोइ ॥ (२६८-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
मनु बसि आवै नानका जे पूरन किरपा होइ ॥१०॥ (२६८-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२६८-१८)
दसमी दस दुआर बसि कीने ॥ (२६८-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
मनि संतोखु नाम जपि लीने ॥ (२६८-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
करनी सुनीऐ जसु गोपाल ॥ (२६८-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
नैनी पेखत साध दइआल ॥ (२६८-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
रसना गुन गावै बेअंत ॥ (२६८-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
मन महि चितवै पूरन भगवंत ॥ (२६८-१६, थिती गउड़ी, मः ५)

हसत चरन संत टहल कमाईऐ ॥ (२९९-१, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक इहु संजमु प्रभ किरपा पाईऐ ॥१०॥ (२९९-१, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९९-२)
एको एकु बखानीऐ बिरला जाणै स्वादु ॥ (२९९-२, थिती गउड़ी, मः ५)
गुण गोबिंद न जाणीऐ नानक सभु बिसमादु ॥११॥ (२९९-२, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२९९-३)
एकादसी निकटि पेखहु हरि रामु ॥ (२९९-३, थिती गउड़ी, मः ५)
इंद्री बसि करि सुणहु हरि नामु ॥ (२९९-३, थिती गउड़ी, मः ५)
मनि संतोखु सर्ब जीअ दइआ ॥ (२९९-३, थिती गउड़ी, मः ५)
इन बिधि बरतु सम्पूरन भइआ ॥ (२९९-४, थिती गउड़ी, मः ५)
धावत मनु राखै इक ठाइ ॥ (२९९-४, थिती गउड़ी, मः ५)
मनु तनु सुधु जपत हरि नाइ ॥ (२९९-४, थिती गउड़ी, मः ५)
सभ महि पूरि रहे पारब्रह्म ॥ (२९९-५, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक हरि कीरतनु करि अटल एहु धर्म ॥११॥ (२९९-५, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९९-६)
दुरमति हरी सेवा करी भेटे साध कृपाल ॥ (२९९-६, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक प्रभ सिउ मिलि रहे बिनसे सगल जंजाल ॥१२॥ (२९९-६, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२९९-७)
दुआदसी दानु नामु इसनानु ॥ (२९९-७, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि की भगति करहु तजि मानु ॥ (२९९-७, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि अमृत पान करहु साधसंगि ॥ (२९९-७, थिती गउड़ी, मः ५)
मन तृपतासै कीर्तन प्रभ रंगि ॥ (२९९-८, थिती गउड़ी, मः ५)
कोमल बाणी सभ कउ संतोखै ॥ (२९९-८, थिती गउड़ी, मः ५)
पंच भू आतमा हरि नाम रसि पोखै ॥ (२९९-८, थिती गउड़ी, मः ५)
गुर पूरे ते एह निहचउ पाईऐ ॥ (२९९-९, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक राम रमत फिरि जोनि न आईऐ ॥१२॥ (२९९-९, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९९-१०)
तीनि गुणा महि बिआपिआ पूरन होत न काम ॥ (२९९-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
पतित उधारणु मनि बसै नानक छूटै नाम ॥१३॥ (२९९-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२९९-११)
त्रउदसी तीनि ताप संसार ॥ (२९९-११, थिती गउड़ी, मः ५)
आवत जात नरक अवतार ॥ (२९९-११, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि हरि भजनु न मन महि आइओ ॥ (२९९-११, थिती गउड़ी, मः ५)

सुख सागर प्रभु निमख न गाइओ ॥ (२९९-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
हरख सोग का देह करि बाधिओ ॥ (२९९-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
दीरघ रोगु माइआ आसाधिओ ॥ (२९९-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
दिनहि बिकार करत स्रमु पाइओ ॥ (२९९-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
नैनी नीद सुपन बरड़ाइओ ॥ (२९९-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि बिसरत होवत एह हाल ॥ (२९९-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
सरनि नानक प्रभ पुरख दइआल ॥१३॥ (२९९-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९९-१४)
चारि कुंट चउदह भवन सगल बिआपत राम ॥ (२९९-१४, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम ॥१४॥ (२९९-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२९९-१५)
चउदहि चारि कुंट प्रभ आप ॥ (२९९-१५, थिती गउड़ी, मः ५)
सगल भवन पूरन परताप ॥ (२९९-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
दसे दिसा रविआ प्रभु एकु ॥ (२९९-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
धरनि अकास सभ महि प्रभ पेखु ॥ (२९९-१६, थिती गउड़ी, मः ५)
जल थल बन पर्बत पाताल ॥ (२९९-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
परमेस्वर तह बसहि दइआल ॥ (२९९-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
सूखम असथूल सगल भगवान ॥ (२९९-१७, थिती गउड़ी, मः ५)
नानक गुरमुखि ब्रह्मु पछान ॥१४॥ (२९९-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (२९९-१८)
आतमु जीता गुरमती गुण गाए गोबिंद ॥ (२९९-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
संत प्रसादी भै मिटे नानक बिनसी चिंद ॥१५॥ (२९९-१८, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (२९९-१९)
अमावस आतम सुखी भए संतोखु दीआ गुरदेव ॥ (२९९-१९, थिती गउड़ी, मः ५)

पन्ना ३००

मनु तनु सीतलु साँति सहज लागा प्रभ की सेव ॥ (३००-१, थिती गउड़ी, मः ५)
टूटे बंधन बहु बिकार सफल पूरन ता के काम ॥ (३००-१, थिती गउड़ी, मः ५)
दुरमति मिटी हउमै छुटी सिमरत हरि को नाम ॥ (३००-२, थिती गउड़ी, मः ५)
सरनि गही पारब्रह्म की मिटिआ आवा गवन ॥ (३००-२, थिती गउड़ी, मः ५)
आपि तरिआ कुटम्ब सिउ गुण गुबिंद प्रभ रवन ॥ (३००-३, थिती गउड़ी, मः ५)
हरि की टहल कमावणी जपीऐ प्रभ का नामु ॥ (३००-३, थिती गउड़ी, मः ५)
गुर पूरे ते पाइआ नानक सुख बिस्रामु ॥१५॥ (३००-३, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (३००-४)
पूरनु कबहु न डोलता पूरा कीआ प्रभ आपि ॥ (३००-४, थिती गउड़ी, मः ५)

दिनु दिनु चड़ै सवाइआ नानक होत न घाटि ॥१६॥ (३००-५, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३००-५)
पूरनमा पूरन प्रभ एकु करण कारण समरथु ॥ (३००-५, थिती गउड़ी, मः ५)
जीअ जंत दइआल पुरखु सभ ऊपरि जा का हथु ॥ (३००-६, थिती गउड़ी, मः ५)
गुण निधान गोबिंद गुर कीआ जा का होइ ॥ (३००-६, थिती गउड़ी, मः ५)
अंतरजामी प्रभु सुजानु अलख निरंजन सोइ ॥ (३००-७, थिती गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्मु परमेसरो सभ बिधि जानणहार ॥ (३००-७, थिती गउड़ी, मः ५)
संत सहाई सरनि जोगु आठ पहर नमस्कार ॥ (३००-७, थिती गउड़ी, मः ५)
अकथ कथा नह बूझीऐ सिमरहु हरि के चरन ॥ (३००-८, थिती गउड़ी, मः ५)
पतित उधारन अनाथ नाथ नानक प्रभ की सरन ॥१६॥ (३००-८, थिती गउड़ी, मः ५)
सलोकु ॥ (३००-९)
दुख बिनसे सहसा गइओ सरनि गही हरि राइ ॥ (३००-९, थिती गउड़ी, मः ५)
मनि चिंदे फल पाइआ नानक हरि गुन गाइ ॥१७॥ (३००-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३००-१०)
कोई गावै को सुणै कोई करै बीचारु ॥ (३००-१०, थिती गउड़ी, मः ५)
को उपदेसै को दृड़ै तिस का होइ उधारु ॥ (३००-११, थिती गउड़ी, मः ५)
किलबिख काटै होइ निरमला जनम जनम मलु जाइ ॥ (३००-११, थिती गउड़ी, मः ५)
हलति पलति मुखु ऊजला नह पोहै तिसु माइ ॥ (३००-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
सो सुरता सो बैसनो सो गिआनी धनवंतु ॥ (३००-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
सो सूरा कुलवंतु सोइ जिनि भजिआ भगवंतु ॥ (३००-१२, थिती गउड़ी, मः ५)
खत्री ब्राहमणु सूदु बैसु उधरै सिमरि चंडाल ॥ (३००-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
जिनि जानिओ प्रभु आपना नानक तिसहि रवाल ॥१७॥ (३००-१३, थिती गउड़ी, मः ५)
गउड़ी की वार महला ४ ॥ (३००-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३००-१५)
सलोक मः ४ ॥ (३००-१६)
सतिगुरु पुरखु दइआलु है जिस नो समतु सभु कोइ ॥ (३००-१६, गउड़ी, मः ४)
एक दृसटि करि देखदा मन भावनी ते सिधि होइ ॥ (३००-१६, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर विचि अमृतु है हरि उतमु हरि पदु सोइ ॥ (३००-१७, गउड़ी, मः ४)
नानक किरपा ते हरि धिआईऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥१॥ (३००-१७, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३००-१८)
हउमै माइआ सभ बिखु है नित जगि तोटा संसारि ॥ (३००-१८, गउड़ी, मः ४)
लाहा हरि धनु खटिआ गुरमुखि सबदु वीचारि ॥ (३००-१८, गउड़ी, मः ४)
हउमै मैलु बिखु उतरै हरि अमृतु हरि उर धारि ॥ (३००-१९, गउड़ी, मः ४)

सभि कारज तिन के सिधि हहि जिन गुरमुखि किरपा धारि ॥ (३०१-१, गउड़ी, मः ४)
नानक जो धुरि मिले से मिलि रहे हरि मेले सिरजणहारि ॥२॥ (३०१-१, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०१-२)
तू सचा साहिबु सचु है सचु सचा गोसाई ॥ (३०१-२, गउड़ी, मः ४)
तुधुनो सभ धिआइदी सभ लगै तेरी पाई ॥ (३०१-२, गउड़ी, मः ४)
तेरी सिफति सुआलिउ सरूप है जिनि कीती तिसु पारि लघाई ॥ (३०१-३, गउड़ी, मः ४)
गुरमुखा नो फलु पाइदा सचि नामि समाई ॥ (३०१-३, गउड़ी, मः ४)
वडे मेरे साहिबा वडी तेरी वडिआई ॥१॥ (३०१-४, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०१-४)
विणु नावै होरु सलाहणा सभु बोलणु फिका सादु ॥ (३०१-४, गउड़ी, मः ४)
मनमुख अहंकारु सलाहदे हउमै ममता वादु ॥ (३०१-५, गउड़ी, मः ४)
जिन सालाहनि से मरहि खपि जावै सभु अपवादु ॥ (३०१-५, गउड़ी, मः ४)
जन नानक गुरमुखि उबरे जपि हरि हरि परमानादु ॥१॥ (३०१-६, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०१-७)
सतिगुर हरि प्रभु दसि नामु धिआई मनि हरी ॥ (३०१-७, गउड़ी, मः ४)
नानक नामु पवितु हरि मुखि बोली सभि दुख परहरी ॥२॥ (३०१-७, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०१-८)
तू आपे आपि निरंकारु है निरंजन हरि राइआ ॥ (३०१-८, गउड़ी, मः ४)
जिनी तू इक मनि सचु धिआइआ तिन का सभु दुखु गवाइआ ॥ (३०१-८, गउड़ी, मः ४)
तेरा सरीकु को नाही जिस नो लवै लाइ सुणाइआ ॥ (३०१-९, गउड़ी, मः ४)
तुधु जेवडु दाता तूहै निरंजना तूहै सचु मेरै मनि भाइआ ॥ (३०१-१०, गउड़ी, मः ४)
सचे मेरे साहिबा सचे सचु नाइआ ॥२॥ (३०१-१०, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०१-११)
मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ (३०१-११, गउड़ी, मः ४)
नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥१॥ (३०१-११, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०१-१२)
मनु तनु रता रंग सिउ गुरमुखि हरि गुणतासु ॥ (३०१-१२, गउड़ी, मः ४)
जन नानक हरि सरणागती हरि मेले गुर साबासि ॥२॥ (३०१-१२, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०१-१३)
तू करता पुरखु अगम्मु है किसु नालि तू वड़ीऐ ॥ (३०१-१३, गउड़ी, मः ४)
तुधु जेवडु होइ सु आखीऐ तुधु जेहा तूहै पड़ीऐ ॥ (३०१-१४, गउड़ी, मः ४)
तू घटि घटि इकु वरतदा गुरमुखि परगड़ीऐ ॥ (३०१-१४, गउड़ी, मः ४)
तू सचा सभस दा खसमु है सभ दू तू चड़ीऐ ॥ (३०१-१५, गउड़ी, मः ४)

तू करहि सु सचे होइसी ता काइतु कड़ीऐ ॥३॥ (३०१-१५, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०१-१५)
मै मनि तनि प्रेमु पिरम्म का अठे पहर लगंनि ॥ (३०१-१६, गउड़ी, मः ४)
जन नानक किरपा धारि प्रभ सतिगुर सुखि वसंनि ॥१॥ (३०१-१६, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०१-१७)
जिन अंदरि प्रीति पिरम्म की जिउ बोलनि तिवै सोहंनि ॥ (३०१-१७, गउड़ी, मः ४)
नानक हरि आपे जाणदा जिनि लाई प्रीति पिरंनि ॥२॥ (३०१-१७, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०१-१८)
तू करता आपि अभुलु है भुलण विचि नाही ॥ (३०१-१८, गउड़ी, मः ४)
तू करहि सु सचे भला है गुर सबदि बुझाही ॥ (३०१-१८, गउड़ी, मः ४)
तू करण कारण समरथु है दूजा को नाही ॥ (३०१-१९, गउड़ी, मः ४)
तू साहिबु अगमु दइआलु है सभि तुधु धिआही ॥ (३०१-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३०२

सभि जीअ तेरे तू सभस दा तू सभ छडाही ॥४॥ (३०२-१, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०२-१)
सुणि साजन प्रेम संदेसरा अखी तार लगंनि ॥ (३०२-१, गउड़ी, मः ४)
गुरि तुठै सजणु मेलिआ जन नानक सुखि सवंनि ॥१॥ (३०२-२, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०२-२)
सतिगुरु दाता दइआलु है जिस नो दइआ सदा होइ ॥ (३०२-३, गउड़ी, मः ४)
सतिगुरु अंदरहु निरवैरु है सभु देखै ब्रह्मु इकु सोइ ॥ (३०२-३, गउड़ी, मः ४)
निरवैरा नालि जि वैरु चलाइदे तिन विचहु तिसटिआ न कोइ ॥ (३०२-४, गउड़ी, मः ४)
सतिगुरु सभना दा भला मनाइदा तिस दा बुरा किउ होइ ॥ (३०२-४, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर नो जेहा को इछदा तेहा फलु पाए कोइ ॥ (३०२-५, गउड़ी, मः ४)
नानक करता सभु किछु जाणदा जिदू किछु गुझा न होइ ॥२॥ (३०२-५, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०२-६)
जिस नो साहिबु वडा करे सोई वड जाणी ॥ (३०२-६, गउड़ी, मः ४)
जिसु साहिब भावै तिसु बखसि लए सो साहिब मनि भाणी ॥ (३०२-७, गउड़ी, मः ४)
जे को ओस दी रीस करे सो मूड़ अजाणी ॥ (३०२-७, गउड़ी, मः ४)
जिस नो सतिगुरु मेले सु गुण रवै गुण आखि वखाणी ॥ (३०२-८, गउड़ी, मः ४)
नानक सचा सचु है बुझि सचि समाणी ॥५॥ (३०२-८, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०२-९)
हरि सति निरंजन अमरु है निरभउ निरवैरु निरंकारु ॥ (३०२-९, गउड़ी, मः ४)
जिन जपिआ इक मनि इक चिति तिन लथा हउमै भारु ॥ (३०२-९, गउड़ी, मः ४)
जिन गुरमुखि हरि आराधिआ तिन संत जना जैकारु ॥ (३०२-१०, गउड़ी, मः ४)

कोई निंदा करे पूरे सतिगुरू की तिस नो फिटु फिटु कहै सभु संसारु ॥ (३०२-१०, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर विचि आपि वरतदा हरि आपे रखणहारु ॥ (३०२-११, गउड़ी, मः ४)
धनु धन्नु गुरू गुण गावदा तिस नो सदा सदा नमसकारु ॥ (३०२-१२, गउड़ी, मः ४)
जन नानक तिन कउ वारिआ जिन जपिआ सिरजणहारु ॥१॥ (३०२-१२, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०२-१३)
आपे धरती साजीअनु आपे आकासु ॥ (३०२-१३, गउड़ी, मः ४)
विचि आपे जंत उपाइअनु मुखि आपे देइ गिरासु ॥ (३०२-१३, गउड़ी, मः ४)
सभु आपे आपि वरतदा आपे ही गुणतासु ॥ (३०२-१४, गउड़ी, मः ४)
जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख कटे तासु ॥२॥ (३०२-१४, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०२-१५)
तू सचा साहिबु सचु है सचु सचे भावै ॥ (३०२-१५, गउड़ी, मः ४)
जो तुधु सचु सलाहदे तिन जम कंकरु नेड़ि न आवै ॥ (३०२-१५, गउड़ी, मः ४)
तिन के मुख दरि उजले जिन हरि हिरदै सचा भावै ॥ (३०२-१६, गउड़ी, मः ४)
कूड़िआर पिछाहा सटीअनि कूड़ु हिरदै कपटु महा दुखु पावै ॥ (३०२-१६, गउड़ी, मः ४)
मुह काले कूड़िआरीआ कूड़िआर कूड़ो होइ जावै ॥६॥ (३०२-१७, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०२-१७)
सतिगुरु धरती धर्म है तिसु विचि जेहा को बीजे तेहा फलु पाए ॥ (३०२-१८, गउड़ी, मः ४)
गुरसिखी अमृतु बीजिआ तिन अमृत फलु हरि पाए ॥ (३०२-१८, गउड़ी, मः ४)
ओना हलति पलति मुख उजले ओइ हरि दरगह सची पैनाए ॥ (३०२-१९, गउड़ी, मः ४)
इकन्हा अंदरि खोटु नित खोटु कमावहि ओहु जेहा बीजे तेहा फलु खाए ॥ (३०२-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३०३

जा सतिगुरु सराफु नदरि करि देखै सुआवगीर सभि उघड़ि आए ॥ (३०३-१, गउड़ी, मः ४)
ओइ जेहा चितवहि नित तेहा पाइनि ओइ तेहो जेहे दयि वजाए ॥ (३०३-२, गउड़ी, मः ४)
नानक दुही सिरी खसमु आपे वरतै नित करि करि देखै चलत सबाए ॥१॥ (३०३-३, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०३-३)
इकु मनु इकु वरतदा जितु लगै सो थाइ पाइ ॥ (३०३-३, गउड़ी, मः ४)
कोई गला करे घनेरीआ जि घरि वथु होवै साई खाइ ॥ (३०३-४, गउड़ी, मः ४)
बिनु सतिगुर सोझी ना पवै अहंकारु न विचहु जाइ ॥ (३०३-४, गउड़ी, मः ४)
अहंकारीआ नो दुख भुख है हथु तडहि घरि घरि मंगाइ ॥ (३०३-५, गउड़ी, मः ४)
कूड़ु ठगी गुझी ना रहै मुलम्मा पाजु लहि जाइ ॥ (३०३-६, गउड़ी, मः ४)
जिसु होवै पूरबि लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ (३०३-६, गउड़ी, मः ४)
जिउ लोहा पारसि भेटीऐ मिलि संगति सुवरनु होइ जाइ ॥ (३०३-७, गउड़ी, मः ४)
जन नानक के प्रभ तू धणी जिउ भावै तिवै चलाइ ॥२॥ (३०३-७, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०३-८)

जिन हरि हिरदै सेविआ तिन हरि आपि मिलाए ॥ (३०३-८, गउड़ी, मः ४)
गुण की साझि तिन सिउ करी सभि अवगण सबदि जलाए ॥ (३०३-८, गउड़ी, मः ४)
अउगण विकणि पलरी जिसु देहि सु सचे पाए ॥ (३०३-९, गउड़ी, मः ४)
बलिहारी गुर आपणे जिनि अउगण मेटि गुण परगटीआए ॥ (३०३-९, गउड़ी, मः ४)
वडी वडिआई वडे की गुरमुखि आलाए ॥७॥ (३०३-१०, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०३-११)
सतिगुर विचि वडी वडिआई जो अनदिनु हरि हरि नामु धिआवै ॥ (३०३-११, गउड़ी, मः ४)
हरि हरि नामु रमत सुच संजमु हरि नामे ही तृपतावै ॥ (३०३-११, गउड़ी, मः ४)
हरि नामु ताणु हरि नामु दीबाणु हरि नामो रख करावै ॥ (३०३-१२, गउड़ी, मः ४)
जो चितु लाइ पूजे गुर मूरति सो मन इछे फल पावै ॥ (३०३-१२, गउड़ी, मः ४)
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की तिसु करता मार दिवावै ॥ (३०३-१३, गउड़ी, मः ४)
फेरि ओह वेला ओसु हथि न आवै ओहु आपणा बीजिआ आपे खावै ॥ (३०३-१३, गउड़ी, मः ४)
नरकि घोरि मुहि कालै खड़िआ जिउ तसकरु पाइ गलावै ॥ (३०३-१४, गउड़ी, मः ४)
फिरि सतिगुर की सरणी पवै ता उबरै जा हरि हरि नामु धिआवै ॥ (३०३-१५, गउड़ी, मः ४)
हरि बाता आखि सुणाए नानकु हरि करते एवै भावै ॥१॥ (३०३-१५, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०३-१६)
पूरे गुर का हुकमु न मन्नै ओहु मनमुखु अगिआनु मुठा बिखु माइआ ॥ (३०३-१६, गउड़ी, मः ४)
ओसु अंदरि कूड़ु कूड़ो करि बुझै अणहोदे झगड़े दयि ओस दै गलि पाइआ ॥ (३०३-१७, गउड़ी, मः ४)
ओहु गल फरोसी करे बहुतेरी ओस दा बोलिआ किसै न भाइआ ॥ (३०३-१७, गउड़ी, मः ४)
ओहु घरि घरि हंढै जिउ रन्न दोहागणि ओसु नालि मुहु जोड़े ओसु भी लछणु लाइआ ॥ (३०३-१८, गउड़ी, मः ४)
गुरमुखि होइ सु अलिपतो वरतै ओस दा पासु छडि गुर पासि बहि जाइआ ॥ (३०३-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३०४

जो गुरु गोपे आपणा सु भला नाही पंचहु ओनि लाहा मूलु सभु गवाइआ ॥ (३०४-१, गउड़ी, मः ४)
पहिला आगमु निगमु नानकु आखि सुणाए पूरे गुर का बचनु उपरि आइआ ॥ (३०४-१, गउड़ी, मः ४)
गुरसिखा वडिआई भावै गुर पूरे की मनमुखा ओह वेला हथि न आइआ ॥२॥ (३०४-२, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०४-३)
सचु सचा सभ दू वडा है सो लए जिसु सतिगुरु टिके ॥ (३०४-३, गउड़ी, मः ४)
सो सतिगुरु जि सचु धिआइदा सचु सचा सतिगुरु इके ॥ (३०४-४, गउड़ी, मः ४)
सोई सतिगुरु पुरखु है जिनि पंजे दूत कीते वसि छिके ॥ (३०४-४, गउड़ी, मः ४)
जि बिनु सतिगुर सेवे आपु गणाइदे तिन अंदरि कूड़ु फिटु फिटु मुह फिके ॥ (३०४-५, गउड़ी, मः ४)
ओइ बोले किसै न भावनी मुह काले सतिगुर ते चुके ॥८॥ (३०४-६, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०४-६)
हरि प्रभ का सभु खेतु है हरि आपि किरसाणी लाइआ ॥ (३०४-६, गउड़ी, मः ४)

गुरमुखि बखसि जमाईअनु मनमुखी मूलु गवाइआ ॥ (३०४-७, गउड़ी, मः ४)
सभु को बीजे आपणे भले नो हरि भावै सो खेतु जमाइआ ॥ (३०४-७, गउड़ी, मः ४)
गुरसिखी हरि अमृतु बीजिआ हरि अमृत नामु फलु अमृतु पाइआ ॥ (३०४-८, गउड़ी, मः ४)
जमु चूहा किरस नित कुरकदा हरि करतै मारि कढाइआ ॥ (३०४-९, गउड़ी, मः ४)
किरसाणी जम्मी भाउ करि हरि बोहल बखस जमाइआ ॥ (३०४-९, गउड़ी, मः ४)
तिन का काड़ा अंदेसा सभु लाहिओनु जिनी सतिगुरु पुरखु धिआइआ ॥ (३०४-१०, गउड़ी, मः ४)
जन नानक नामु अराधिआ आपि तरिआ सभु जगतु तराइआ ॥१॥ (३०४-११, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०४-११)
सारा दिनु लालचि अटिआ मनमुखि होरे गला ॥ (३०४-११, गउड़ी, मः ४)
राती ऊघै दबिआ नवे सोत सभि ढिला ॥ (३०४-१२, गउड़ी, मः ४)
मनमुखा दै सिरि जोरा अमरु है नित देवहि भला ॥ (३०४-१२, गउड़ी, मः ४)
जोरा दा आखिआ पुरख कमावदे से अपवित अमेध खला ॥ (३०४-१३, गउड़ी, मः ४)
कामि विआपे कुसुध नर से जोरा पुछि चला ॥ (३०४-१३, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर कै आखिऐ जो चलै सो सति पुरखु भल भला ॥ (३०४-१४, गउड़ी, मः ४)
जोरा पुरख सभि आपि उपाइअनु हरि खेल सभि खिला ॥ (३०४-१४, गउड़ी, मः ४)
सभ तेरी बणत बणावणी नानक भल भला ॥२॥ (३०४-१५, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०४-१५)
तू वेपरवाहु अथाहु है अतुलु किउ तुलीऐ ॥ (३०४-१५, गउड़ी, मः ४)
से वडभागी जि तुधु धिआइदे जिन सतिगुरु मिलीऐ ॥ (३०४-१६, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर की बाणी सति सरूपु है गुरबाणी बणीऐ ॥ (३०४-१६, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर की रीसै होरि कचु पिचु बोलदे से कूड़िआर कूड़े झड़ि पड़ीऐ ॥ (३०४-१७, गउड़ी, मः ४)
ओन्हा अंदरि होरु मुखि होरु है बिखु माइआ नो झखि मरदे कड़ीऐ ॥९॥ (३०४-१८, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०४-१८)
सतिगुर की सेवा निरमली निर्मल जनु होइ सु सेवा घाले ॥ (३०४-१८, गउड़ी, मः ४)
जिन अंदरि कपटु विकारु झूठु ओइ आपे सचै वखि कढे जजमाले ॥ (३०४-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३०५

सचिआर सिख बहि सतिगुर पासि घालनि कूड़िआर न लभनी कितै थाइ भाले ॥ (३०५-१, गउड़ी, मः ४)
जिना सतिगुर का आखिआ सुखावै नाही तिना मुह भलेरे फिरहि दयि गाले ॥ (३०५-१, गउड़ी, मः ४)
जिन अंदरि प्रीति नही हरि केरी से किचरकु वेराईअनि मनमुख बेताले ॥ (३०५-२, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर नो मिलै सु आपणा मनु थाइ रखै ओहु आपि वरतै आपणी वथु नाले ॥ (३०५-३, गउड़ी, मः ४)
जन नानक इकना गुरु मेलि सुखु देवै इकि आपे वखि कढै ठगवाले ॥१॥ (३०५-४, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०५-४)
जिना अंदरि नामु निधानु हरि तिन के काज दयि आदे रासि ॥ (३०५-४, गउड़ी, मः ४)
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि प्रभु अंगु करि बैठा पासि ॥ (३०५-५, गउड़ी, मः ४)

जाँ करता वलि ता सभु को वलि सभि दरसनु देखि करहि साबासि ॥ (३०५-६, गउड़ी, मः ४)
साहु पातिसाहु सभु हरि का कीआ सभि जन कउ आइ करहि रहरासि ॥ (३०५-६, गउड़ी, मः ४)
गुर पूरे की वडी वडिआई हरि वडा सेवि अतुलु सुखु पाइआ ॥ (३०५-७, गउड़ी, मः ४)
गुरि पूरै दानु दीआ हरि निहचलु नित बखसे चड़ै सवाइआ ॥ (३०५-८, गउड़ी, मः ४)
कोई निंदकु वडिआई देखि न सकै सो करतै आपि पचाइआ ॥ (३०५-८, गउड़ी, मः ४)
जनु नानकु गुण बोलै करते के भगता नो सदा रखदा आइआ ॥२॥ (३०५-९, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०५-१०)
तू साहिबु अगम दइआलु है वड दाता दाणा ॥ (३०५-१०, गउड़ी, मः ४)
तुधु जेवडु मै होरु को दिसि ना आवई तूहैं सुघड़ु मेरै मनि भाणा ॥ (३०५-१०, गउड़ी, मः ४)
मोहु कुटम्बु दिसि आवदा सभु चलणहारा आवण जाणा ॥ (३०५-११, गउड़ी, मः ४)
जो बिनु सचे होरतु चितु लाइदे से कूड़िआर कूड़ा तिन माणा ॥ (३०५-११, गउड़ी, मः ४)
नानक सचु धिआइ तू बिनु सचे पचि पचि मुए अजाणा ॥१०॥ (३०५-१२, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०५-१३)
अगो दे सत भाउ न दिचै पिछो दे आखिआ कंमि न आवै ॥ (३०५-१३, गउड़ी, मः ४)
अध विचि फिरै मनमुखु वेचारा गली किउ सुखु पावै ॥ (३०५-१३, गउड़ी, मः ४)
जिसु अंदरि प्रीति नही सतिगुर की सु कूड़ी आवै कूड़ी जावै ॥ (३०५-१४, गउड़ी, मः ४)
जे कृपा करे मेरा हरि प्रभु करता ताँ सतिगुरु पारब्रह्मु नदरी आवै ॥ (३०५-१४, गउड़ी, मः ४)
ता अपिउ पीवै सबदु गुर केरा सभु काड़ा अंदेसा भरमु चुकावै ॥ (३०५-१५, गउड़ी, मः ४)
सदा अनंदि रहै दिनु राती जन नानक अनदिनु हरि गुण गावै ॥१॥ (३०५-१६, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०५-१६)
गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए सु भलके उठि हरि नामु धिआवै ॥ (३०५-१६, गउड़ी, मः ४)
उदमु करे भलके परभाती इसनानु करे अमृत सरि नावै ॥ (३०५-१७, गउड़ी, मः ४)
उपदेसि गुरू हरि हरि जपु जापै सभि किलविख पाप दोख लहि जावै ॥ (३०५-१८, गउड़ी, मः ४)
फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवै ॥ (३०५-१८, गउड़ी, मः ४)
जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि सो गुरसिखु गुरू मनि भावै ॥ (३०५-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३०६

जिस नो दइआलु होवै मेरा सुआमी तिसु गुरसिख गुरू उपदेसु सुणावै ॥ (३०६-१, गउड़ी, मः ४)
जनु नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की जो आपि जपै अवरह नामु जपावै ॥२॥ (३०६-२, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०६-२)
जो तुधु सचु धिआइदे से विरले थोड़े ॥ (३०६-२, गउड़ी, मः ४)
जो मनि चिति इकु अराधदे तिन की बरकति खाहि असंख करोड़े ॥ (३०६-३, गउड़ी, मः ४)
तुधुनो सभ धिआइदी से थाइ पए जो साहिब लोड़े ॥ (३०६-३, गउड़ी, मः ४)
जो बिनु सतिगुर सेवे खादे पैनदे से मुए मरि जम्मे कोड़्हे ॥ (३०६-४, गउड़ी, मः ४)
ओइ हाजरु मिठा बोलदे बाहरि विसु कढहि मुखि घोले ॥ (३०६-४, गउड़ी, मः ४)

मनि खोटे दयि विछोड़े ॥११॥ (३०६-५, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०६-५)
मलु जूई भरिआ नीला काला खिधोलड़ा तिनि वेमुखि वेमुखै नो पाइआ ॥ (३०६-५, गउड़ी, मः ४)
पासि न देई कोई बहणि जगत महि गूह पड़ि सगवी मलु लाइ मनमुखु आइआ ॥ (३०६-६, गउड़ी, मः ४)
पराई जो निंदा चुगली नो वेमुखु करि कै भेजिआ ओथै भी मुहु काला दुहा वेमुखा दा कराइआ ॥ (३०६-७, गउड़ी, मः ४)
तड़ सुणिआ सभतु जगत विचि भाई वेमुखु सणै नफरै पउली पउदी फावा होइ कै उठि घरि आइआ ॥ (३०६-८, गउड़ी, मः ४)
अगै संगती कुड़मी वेमुखु रलणा न मिलै ता वहुटी भतीजंी फिरि आणि घरि पाइआ ॥ (३०६-९, गउड़ी, मः ४)
हलतु पलतु दोवै गए नित भुखा कूके तिहाइआ ॥ (३०६-१०, गउड़ी, मः ४)
धनु धनु सुआमी करता पुरखु है जिनि निआउ सचु बहि आपि कराइआ ॥ (३०६-१०, गउड़ी, मः ४)
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सो साचै मारि पचाइआ ॥ (३०६-११, गउड़ी, मः ४)
एहु अखरु तिनि आखिआ जिनि जगतु सभु उपाइआ ॥१॥ (३०६-१२, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०६-१२)
साहिबु जिस का नंगा भुखा होवै तिस दा नफरु किथहु रजि खाए ॥ (३०६-१२, गउड़ी, मः ४)
जि साहिब कै घरि वथु होवै सु नफरै हथि आवै अणहोदी किथहु पाए ॥ (३०६-१३, गउड़ी, मः ४)
जिस दी सेवा कीती फिरि लेखा मंगीऐ सा सेवा अउखी होई ॥ (३०६-१४, गउड़ी, मः ४)
नानक सेवा करहु हरि गुर सफल दरसन की फिरि लेखा मंगै न कोई ॥२॥ (३०६-१४, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०६-१५)
नानक वीचारहि संत जन चारि वेद कहंदे ॥ (३०६-१५, गउड़ी, मः ४)
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ (३०६-१६, गउड़ी, मः ४)
प्रगट पहारा जापदा सभि लोक सुणंदे ॥ (३०६-१६, गउड़ी, मः ४)
सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ (३०६-१६, गउड़ी, मः ४)
ओइ लोचनि ओना गुणै नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ (३०६-१७, गउड़ी, मः ४)
ओइ विचारे किआ करहि जा भाग धुरि मंदे ॥ (३०६-१७, गउड़ी, मः ४)
जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ (३०६-१८, गउड़ी, मः ४)
वैरु करहि निरवैर नालि धर्म निआइ पचंदे ॥ (३०६-१८, गउड़ी, मः ४)
जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ (३०६-१९, गउड़ी, मः ४)
पेडु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥१२॥ (३०६-१९, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०६-१९)

पन्ना ३०७

अंतरि हरि गुरू धिआइदा वडी वडिआई ॥ (३०७-१, गउड़ी, मः ४)
तुसि दिती पूरै सतिगुरू घटै नाही इकु तिलु किसै दी घटाई ॥ (३०७-१, गउड़ी, मः ४)

सचु साहिबु सतिगुरू कै वलि है ताँ झखि झखि मरै सभ लोकाई ॥ (३०७-२, गउड़ी, मः ४)
निंदका के मुह काले करे हरि करतै आपि वधाई ॥ (३०७-२, गउड़ी, मः ४)
जिउ जिउ निंदक निंद करहि तिउ तिउ नित नित चड़ै सवाई ॥ (३०७-३, गउड़ी, मः ४)
जन नानक हरि आराधिआ तिनि पैरी आणि सभ पाई ॥१॥ (३०७-३, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०७-४)
सतिगुर सेती गणत जि रखै हलतु पलतु सभु तिस का गइआ ॥ (३०७-४, गउड़ी, मः ४)
नित झहीआ पाए झगू सुटे झखदा झखदा झड़ि पइआ ॥ (३०७-५, गउड़ी, मः ४)
नित उपाव करै माइआ धन कारणि अगला धनु भी उडि गइआ ॥ (३०७-५, गउड़ी, मः ४)
किआ ओहु खटे किआ ओहु खावै जिसु अंदरि सहसा दुखु पइआ ॥ (३०७-६, गउड़ी, मः ४)
निरवैरै नालि जि वैरु रचाए सभु पापु जगतै का तिनि सिरि लइआ ॥ (३०७-७, गउड़ी, मः ४)
ओसु अगै पिछै ढोई नाही जिसु अंदरि निंदा मुहि अम्बु पइआ ॥ (३०७-७, गउड़ी, मः ४)
जे सुइने नो ओहु हथु पाए ता खेहू सेती रलि गइआ ॥ (३०७-८, गउड़ी, मः ४)
जे गुर की सरणी फिरि ओहु आवै ता पिछले अउगण बखसि लइआ ॥ (३०७-९, गउड़ी, मः ४)
जन नानक अनदिनु नामु धिआइआ हरि सिमरत किलविख पाप गइआ ॥२॥ (३०७-९, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०७-१०)
तूहै सचा सचु तू सभ दू उपरि तू दीबाणु ॥ (३०७-१०, गउड़ी, मः ४)
जो तुधु सचु धिआइदे सचु सेवनि सचे तेरा माणु ॥ (३०७-११, गउड़ी, मः ४)
ओना अंदरि सचु मुख उजले सचु बोलनि सचे तेरा ताणु ॥ (३०७-११, गउड़ी, मः ४)
से भगत जिनी गुरमुखि सालाहिआ सचु सबदु नीसाणु ॥ (३०७-१२, गउड़ी, मः ४)
सचु जि सचे सेवदे तिन वारी सद कुरबाणु ॥१३॥ (३०७-१२, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०७-१३)
धुरि मारे पूरै सतिगुरू सेई हुणि सतिगुरि मारे ॥ (३०७-१३, गउड़ी, मः ४)
जे मेलण नो बहुतेरा लोचीऐ न देई मिलण करतारे ॥ (३०७-१३, गउड़ी, मः ४)
सतसंगति ढोई ना लहनि विचि संगति गुरि वीचारे ॥ (३०७-१४, गउड़ी, मः ४)
कोई जाइ मिलै हुणि ओना नो तिसु मारे जमु जंदारे ॥ (३०७-१४, गउड़ी, मः ४)
गुरि बाबै फिटके से फिटे गुरि अंगदि कीते कूड़िआरे ॥ (३०७-१५, गउड़ी, मः ४)
गुरि तीजी पीड़ी वीचारिआ किआ हथि एना वेचारे ॥ (३०७-१६, गउड़ी, मः ४)
गुरु चउथी पीड़ी टिकिआ तिनि निंदक दुसट सभि तारे ॥ (३०७-१६, गउड़ी, मः ४)
कोई पुतु सिखु सेवा करे सतिगुरू की तिसु कारज सभि सवारे ॥ (३०७-१७, गउड़ी, मः ४)
जो इछै सो फलु पाइसी पुतु धनु लखमी खड़ि मेले हरि निसतारे ॥ (३०७-१७, गउड़ी, मः ४)
सभि निधान सतिगुरू विचि जिसु अंदरि हरि उर धारे ॥ (३०७-१८, गउड़ी, मः ४)
सो पाए पूरा सतिगुरू जिसु लिखिआ लिखतु लिलारे ॥ (३०७-१९, गउड़ी, मः ४)
जनु नानकु मागै धूड़ि तिन जो गुरसिख मित पिआरे ॥१॥ (३०७-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३०८

मः ४ ॥ (३०८-१)
जिन कउ आपि देइ वडिआई जगतु भी आपे आणि तिन कउ पैरी पाए ॥ (३०८-१, गउड़ी, मः ४)
डरीऐ ताँ जे किछु आप दू कीचै सभु करता आपणी कला वधाए ॥ (३०८-२, गउड़ी, मः ४)
देखहु भाई एहु अखाड़ा हरि प्रीतम सचे का जिनि आपणै जोरि सभि आणि निवाए ॥ (३०८-२, गउड़ी, मः ४)
आपणिआ भगता की रख करे हरि सुआमी निंदका दुसटा के मुह काले कराए ॥ (३०८-३, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर की वडिआई नित चड़ै सवाई हरि कीरति भगति नित आपि कराए ॥ (३०८-४, गउड़ी, मः ४)
अनदिनु नामु जपहु गुरसिखहु हरि करता सतिगुरु घरी वसाए ॥ (३०८-५, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर की बाणी सति सति करि जाणहु गुरसिखहु हरि करता आपि मुहहु कढाए ॥ (३०८-५, गउड़ी, मः ४)
गुरसिखा के मुह उजले करे हरि पिआरा गुर का जैकारु संसारि सभतु कराए ॥ (३०८-६, गउड़ी, मः ४)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दासन की हरि पैज रखाए ॥२॥ (३०८-७, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०८-८)
तू सचा साहिबु आपि है सचु साह हमारे ॥ (३०८-८, गउड़ी, मः ४)
सचु पूजी नामु दृड़ाइ प्रभ वणजारे थारे ॥ (३०८-८, गउड़ी, मः ४)
सचु सेवहि सचु वणंजि लैहि गुण कथह निरारे ॥ (३०८-८, गउड़ी, मः ४)
सेवक भाइ से जन मिले गुर सबदि सवारे ॥ (३०८-९, गउड़ी, मः ४)
तू सचा साहिबु अलखु है गुर सबदि लखारे ॥१४॥ (३०८-९, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०८-१०)
जिसु अंदरि ताति पराई होवै तिस दा कदे न होवी भला ॥ (३०८-१०, गउड़ी, मः ४)
ओस दै आखिऐ कोई न लगै नित ओजाड़ी पूकारे खला ॥ (३०८-११, गउड़ी, मः ४)
जिसु अंदरि चुगली चुगलो वजै कीता करतिआ ओस दा सभु गइआ ॥ (३०८-११, गउड़ी, मः ४)
नित चुगली करे अणहोदी पराई मुहु कढि न सकै ओस दा काला भइआ ॥ (३०८-१२, गउड़ी, मः ४)
करम धरती सरीरु कलिजुग विचि जेहा को बीजे तेहा को खाए ॥ (३०८-१३, गउड़ी, मः ४)
गला उपरि तपावसु न होई विसु खाधी ततकाल मरि जाए ॥ (३०८-१३, गउड़ी, मः ४)
भाई वेखहु निआउ सचु करते का जेहा कोई करे तेहा कोई पाए ॥ (३०८-१४, गउड़ी, मः ४)
जन नानक कउ सभ सोझी पाई हरि दर कीआ बाता आखि सुणाए ॥१॥ (३०८-१४, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०८-१५)
होदै परतखि गुरू जो विछुड़े तिन कउ दरि ढोई नाही ॥ (३०८-१५, गउड़ी, मः ४)
कोई जाइ मिलै तिन निंदका मुह फिके थुक थुक मुहि पाही ॥ (३०८-१६, गउड़ी, मः ४)
जो सतिगुरि फिटके से सभ जगति फिटके नित भम्भल भूसे खाही ॥ (३०८-१६, गउड़ी, मः ४)
जिन गुरु गोपिआ आपणा से लैदे ढहा फिराही ॥ (३०८-१७, गउड़ी, मः ४)
तिन की भुख कदे न उतरै नित भुखा भुख कूकाही ॥ (३०८-१८, गउड़ी, मः ४)
ओना दा आखिआ को न सुणै नित हउले हउलि मराही ॥ (३०८-१८, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर की वडिआई वेखि न सकनी ओना अगै पिछै थाउ नाही ॥ (३०८-१९, गउड़ी, मः ४)

जो सतिगुरि मारे तिन जाइ मिलहि रहदी खुहदी सभ पति गवाही ॥ (३०८-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३०९

ओइ अगै कुसटी गुर के फिटके जि ओसु मिलै तिसु कुसटु उठाही ॥ (३०९-१, गउड़ी, मः ४)
हरि तिन का दरसनु ना करहु जो दूजै भाइ चितु लाही ॥ (३०९-२, गउड़ी, मः ४)
धुरि करतै आपि लिखि पाइआ तिसु नालि किहु चारा नाही ॥ (३०९-२, गउड़ी, मः ४)
जन नानक नामु अराधि तू तिसु अपड़ि को न सकाही ॥ (३०९-३, गउड़ी, मः ४)
नावै की वडिआई वडी है नित सवाई चड़ै चड़ाही ॥२॥ (३०९-३, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०९-४)
जि होंदै गुरू बहि टिकिआ तिसु जन की वडिआई वडी होई ॥ (३०९-४, गउड़ी, मः ४)
तिसु कउ जगतु निविआ सभु पैरी पइआ जसु वरतिआ लोई ॥ (३०९-५, गउड़ी, मः ४)
तिस कउ खंड ब्रहमंड नमसकारु करहि जिस कै मसतकि हथु धरिआ गुरि पूरै सो पूरा होई ॥ (३०९-५, गउड़ी, मः ४)
गुर की वडिआई नित चड़ै सवाई अपड़ि को न सकोई ॥ (३०९-६, गउड़ी, मः ४)
जनु नानकु हरि करतै आपि बहि टिकिआ आपे पैज रखै प्रभु सोई ॥३॥ (३०९-७, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३०९-८)
काइआ कोटु अपारु है अंदरि हटनाले ॥ (३०९-८, गउड़ी, मः ४)
गुरमुखि सउदा जो करे हरि वसतु समाले ॥ (३०९-८, गउड़ी, मः ४)
नामु निधानु हरि वणजीऐ हीरे परवाले ॥ (३०९-८, गउड़ी, मः ४)
विणु काइआ जि होर थै धनु खोजदे से मूड़ बेताले ॥ (३०९-९, गउड़ी, मः ४)
से उझड़ि भरमि भवाईअहि जिउ झाड़ मिरगु भाले ॥१५॥ (३०९-९, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३०९-१०)
जो निंदा करे सतिगुर पूरे की सु अउखा जग महि होइआ ॥ (३०९-१०, गउड़ी, मः ४)
नरक घोरु दुख खूहु है ओथै पकड़ि ओहु ढोइआ ॥ (३०९-११, गउड़ी, मः ४)
कूक पुकार को न सुणे ओहु अउखा होइ होइ रोइआ ॥ (३०९-११, गउड़ी, मः ४)
ओनि हलतु पलतु सभु गवाइआ लाहा मूलु सभु खोइआ ॥ (३०९-१२, गउड़ी, मः ४)
ओहु तेली संदा बलदु करि नित भलके उठि प्रभि जोइआ ॥ (३०९-१२, गउड़ी, मः ४)
हरि वेखै सुणै नित सभु किछु तिदू किछु गुझा न होइआ ॥ (३०९-१३, गउड़ी, मः ४)
जैसा बीजे सो लुणै जेहा पुरबि किनै बोइआ ॥ (३०९-१४, गउड़ी, मः ४)
जिसु कृपा करे प्रभु आपणी तिसु सतिगुर के चरण धोइआ ॥ (३०९-१४, गउड़ी, मः ४)
गुर सतिगुर पिछै तरि गइआ जिउ लोहा काठ संगोइआ ॥ (३०९-१५, गउड़ी, मः ४)
जन नानक नामु धिआइ तू जपि हरि हरि नामि सुखु होइआ ॥१॥ (३०९-१५, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३०९-१६)
वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ (३०९-१६, गउड़ी, मः ४)
अंतर जोति प्रगासीआ नानक नामि समाइ ॥२॥ (३०९-१७, गउड़ी, मः ४)

पउड़ी ॥ (३०६-१७)
इहु सरीरु सभु धरमु है जिसु अंदरि सचे की विचि जोति ॥ (३०६-१७, गउड़ी, मः ४)
गुहज रतन विचि लुकि रहे कोई गुरमुखि सेवकु कढै खोति ॥ (३०६-१८, गउड़ी, मः ४)
सभु आतम रामु पछाणिआ ताँ इकु रविआ इको ओति पोति ॥ (३०६-१८, गउड़ी, मः ४)
इकु देखिआ इकु मंनिआ इको सुणिआ स्रवण सरोति ॥ (३०६-१६, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३१०

जन नानक नामु सलाहि तू सचु सचे सेवा तेरी होति ॥१६॥ (३१०-१, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३१०-१)
सभि रस तिन कै रिदै हहि जिन हरि वसिआ मन माहि ॥ (३१०-१, गउड़ी, मः ४)
हरि दरगहि ते मुख उजले तिन कउ सभि देखण जाहि ॥ (३१०-२, गउड़ी, मः ४)
जिन निरभउ नामु धिआइआ तिन कउ भउ कोई नाहि ॥ (३१०-२, गउड़ी, मः ४)
हरि उतमु तिनी सरेविआ जिन कउ धुरि लिखिआ आहि ॥ (३१०-३, गउड़ी, मः ४)
ते हरि दरगहि पैनाईअहि जिन हरि वुठा मन माहि ॥ (३१०-४, गउड़ी, मः ४)
ओइ आपि तरे सभ कुटम्ब सिउ तिन पिछै सभु जगतु छडाहि ॥ (३१०-४, गउड़ी, मः ४)
जन नानक कउ हरि मेलि जन तिन वेखि वेखि हम जीवाहि ॥१॥ (३१०-५, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३१०-५)
सा धरती भई हरीआवली जिथै मेरा सतिगुरु बैठा आइ ॥ (३१०-५, गउड़ी, मः ४)
से जंत भए हरीआवले जिनी मेरा सतिगुरु देखिआ जाइ ॥ (३१०-६, गउड़ी, मः ४)
धनु धन्नु पिता धनु धन्नु कुलु धनु धनु सु जननी जिनि गुरू जणिआ माइ ॥ (३१०-७, गउड़ी, मः ४)
धनु धन्नु गुरू जिनि नामु अराधिआ आपि तरिआ जिनी डिठा तिना लए छडाइ ॥ (३१०-७, गउड़ी, मः ४)
हरि सतिगुरु मेलहु दइआ करि जनु नानकु धोवै पाइ ॥२॥ (३१०-८, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३१०-६)
सचु सचा सतिगुरु अमरु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ (३१०-६, गउड़ी, मः ४)
सचु सचा सतिगुरु पुरखु है जिनि कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ (३१०-६, गउड़ी, मः ४)
जा डिठा पूरा सतिगुरू ताँ अंदरहु मनु साधारिआ ॥ (३१०-१०, गउड़ी, मः ४)
बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमि वारिआ ॥ (३१०-११, गउड़ी, मः ४)
गुरमुखि जिता मनमुखि हारिआ ॥१७॥ (३१०-११, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३१०-११)
करि किरपा सतिगुरु मेलिओनु मुखि गुरमुखि नामु धिआइसी ॥ (३१०-१२, गउड़ी, मः ४)
सो करे जि सतिगुर भावसी गुरु पूरा घरी वसाइसी ॥ (३१०-१२, गउड़ी, मः ४)
जिन अंदरि नामु निधानु है तिन का भउ सभु गवाइसी ॥ (३१०-१३, गउड़ी, मः ४)
जिन रखण कउ हरि आपि होइ होर केती झखि झखि जाइसी ॥ (३१०-१३, गउड़ी, मः ४)
जन नानक नामु धिआइ तू हरि हलति पलति छोडाइसी ॥१॥ (३१०-१४, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३१०-१५)

गुरसिखा कै मनि भावदी गुर सतिगुर की वडिआई ॥ (३१०-१५, गउड़ी, मः ४)
हरि राखहु पैज सतिगुरू की नित चड़ै सवाई ॥ (३१०-१५, गउड़ी, मः ४)
गुर सतिगुर कै मनि पारब्रह्मु है पारब्रह्मु छडाई ॥ (३१०-१६, गउड़ी, मः ४)
गुर सतिगुर ताणु दीबाणु हरि तिनि सभ आणि निवाई ॥ (३१०-१६, गउड़ी, मः ४)
जिनी डिठा मेरा सतिगुरु भाउ करि तिन के सभि पाप गवाई ॥ (३१०-१७, गउड़ी, मः ४)
हरि दरगह ते मुख उजले बहु सोभा पाई ॥ (३१०-१७, गउड़ी, मः ४)
जनु नानकु मंगै धूड़ि तिन जो गुर के सिख मेरे भाई ॥२॥ (३१०-१८, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३१०-१९)
हउ आखि सलाही सिफति सचु सचु सचे की वडिआई ॥ (३१०-१९, गउड़ी, मः ४)
सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाई ॥ (३१०-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३११

सचु सचा रसु जिनी चखिआ से तृपति रहे आघाई ॥ (३११-१, गउड़ी, मः ४)
इहु हरि रसु सेई जाणदे जिउ गूंगै मिठिआई खाई ॥ (३११-१, गउड़ी, मः ४)
गुरि पूरै हरि प्रभु सेविआ मनि वजी वाधाई ॥१८॥ (३११-२, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३११-२)
जिना अंदरि उमरथल सेई जाणनि सूलीआ ॥ (३११-२, गउड़ी, मः ४)
हरि जाणहि सेई बिरहु हउ तिन विटहु सद घुमि घोलीआ ॥ (३११-३, गउड़ी, मः ४)
हरि मेलहु सजणु पुरखु मेरा सिरु तिन विटहु तल रोलीआ ॥ (३११-४, गउड़ी, मः ४)
जो सिख गुर कार कमावहि हउ गुलमु तिना का गोलीआ ॥ (३११-४, गउड़ी, मः ४)
हरि रंगि चलूलै जो रते तिन भिनी हरि रंगि चोलीआ ॥ (३११-५, गउड़ी, मः ४)
करि किरपा नानक मेलि गुर पहि सिरु वेचिआ मोलीआ ॥१॥ (३११-५, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३११-६)
अउगणी भरिआ सरीरु है किउ संतहु निरमलु होइ ॥ (३११-६, गउड़ी, मः ४)
गुरमुखि गुण वेहाझीअहि मलु हउमै कढै धोइ ॥ (३११-७, गउड़ी, मः ४)
सचु वणंजहि रंग सिउ सचु सउदा होइ ॥ (३११-७, गउड़ी, मः ४)
तोटा मूलि न आवई लाहा हरि भावै सोइ ॥ (३११-८, गउड़ी, मः ४)
नानक तिन सचु वणंजिआ जिना धुरि लिखिआ परापति होइ ॥२॥ (३११-८, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३११-९)
सालाही सचु सालाहणा सचु सचा पुरखु निराले ॥ (३११-९, गउड़ी, मः ४)
सचु सेवी सचु मनि वसै सचु सचा हरि रखवाले ॥ (३११-९, गउड़ी, मः ४)
सचु सचा जिनी अराधिआ से जाइ रले सच नाले ॥ (३११-१०, गउड़ी, मः ४)
सचु सचा जिनी न सेविआ से मनमुख मूड़ बेताले ॥ (३११-१०, गउड़ी, मः ४)
ओह आलु पतालु मुहहु बोलदे जिउ पीतै मदि मतवाले ॥१९॥ (३११-११, गउड़ी, मः ४)
सलोक महला ३ ॥ (३११-११)

गउड़ी रागि सुलखणी जे खसमै चिति करेइ ॥ (३११-१२, गउड़ी, मः ३)
भाणै चलै सतिगुरू कै ऐसा सीगारु करेइ ॥ (३११-१२, गउड़ी, मः ३)
सचा सबदु भतारु है सदा सदा रावेइ ॥ (३११-१२, गउड़ी, मः ३)
जिउ उबली मजीठै रंगु गहगहा तिउ सचे नो जीउ देइ ॥ (३११-१३, गउड़ी, मः ३)
रंगि चलूलै अति रती सचे सिउ लगा नेहु ॥ (३११-१३, गउड़ी, मः ३)
कूड़ु ठगी गुझी ना रहै कूड़ु मुलम्मा पलेटि धरेहु ॥ (३११-१४, गउड़ी, मः ३)
कूड़ी करनि वडाईआ कूड़े सिउ लगा नेहु ॥ (३११-१४, गउड़ी, मः ३)
नानक सचा आपि है आपे नदरि करेइ ॥१॥ (३११-१५, गउड़ी, मः ३)
मः ४ ॥ (३११-१५)
सतसंगति महि हरि उसतति है संगि साधू मिले पिआरिआ ॥ (३११-१५, गउड़ी, मः ४)
ओइ पुरख प्राणी धंनि जन हहि उपदेसु करहि परउपकारिआ ॥ (३११-१६, गउड़ी, मः ४)
हरि नामु दृड़ावहि हरि नामु सुणावहि हरि नामे जगु निसतारिआ ॥ (३११-१७, गउड़ी, मः ४)
गुर वेखण कउ सभु कोई लोचै नव खंड जगति नमसकारिआ ॥ (३११-१७, गउड़ी, मः ४)
तुधु आपे आपु रखिआ सतिगुर विचि गुरु आपे तुधु सवारिआ ॥ (३११-१८, गउड़ी, मः ४)
तू आपे पूजहि पूज करावहि सतिगुर कउ सिरजणहारिआ ॥ (३११-१९, गउड़ी, मः ४)
कोई विछुड़ि जाइ सतिगुरू पासहु तिसु काला मुहु जमि मारिआ ॥ (३११-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३१२

तिसु अगै पिछै ढोई नाही गुरसिखी मनि वीचारिआ ॥ (३१२-१, गउड़ी, मः ४)
सतिगुरू नो मिले सेई जन उबरे जिन हिरदै नामु समारिआ ॥ (३१२-२, गउड़ी, मः ४)
जन नानक के गुरसिख पुतहहु हरि जपिअहु हरि निसतारिआ ॥२॥ (३१२-२, गउड़ी, मः ४)
महला ३ ॥ (३१२-३)
हउमै जगतु भुलाइआ दुरमति बिखिआ बिकार ॥ (३१२-३, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरु मिलै त नदरि होइ मनमुख अंध अंधिआर ॥ (३१२-३, गउड़ी, मः ३)
नानक आपे मेलि लए जिस नो सबदि लाए पिआरु ॥३॥ (३१२-४, गउड़ी, मः ३)
पउड़ी ॥ (३१२-५)
सचु सचे की सिफति सलाह है सो करे जिसु अंदरु भिजै ॥ (३१२-५, गउड़ी, मः ३)
जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन का कंधु न कबहू छिजै ॥ (३१२-५, गउड़ी, मः ३)
धनु धनु पुरख साबासि है जिन सचु रसना अमृतु पिजै ॥ (३१२-६, गउड़ी, मः ३)
सचु सचा जिन मनि भावदा से मनि सची दरगह लिजै ॥ (३१२-६, गउड़ी, मः ३)
धनु धन्नु जनमु सचिआरीआ मुख उजल सचु करिजै ॥२०॥ (३१२-७, गउड़ी, मः ३)
सलोक मः ४ ॥ (३१२-८)
साकत जाइ निवहि गुर आगै मनि खोटे कूड़ि कूड़िआरे ॥ (३१२-८, गउड़ी, मः ४)
जा गुरु कहै उठहु मेरे भाई बहि जाहि घुसरि बगुलारे ॥ (३१२-८, गउड़ी, मः ४)
गुरसिखा अंदरि सतिगुरु वरतै चुणि कढे लधोवारे ॥ (३१२-९, गउड़ी, मः ४)

ओइ अगै पिछै बहि मुहु छपाइनि न रलनी खोटेआरे ॥ (३१२-९, गउड़ी, मः ४)
ओना दा भखु सु ओथै नाही जाइ कूड़ु लहनि भेडारे ॥ (३१२-१०, गउड़ी, मः ४)
जे साकतु नरु खावाईऐ लोचीऐ बिखु कढै मुखि उगलारे ॥ (३१२-१०, गउड़ी, मः ४)
हरि साकत सेती संगु न करीअहु ओइ मारे सिरजणहारे ॥ (३१२-११, गउड़ी, मः ४)
जिस का इहु खेलु सोई करि वेखै जन नानक नामु समारे ॥१॥ (३१२-१२, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३१२-१२)
सतिगुरु पुरखु अगम्मु है जिसु अंदरि हरि उरि धारिआ ॥ (३१२-१२, गउड़ी, मः ४)
सतिगुरू नो अपड़ि कोइ न सकई जिसु वलि सिरजणहारिआ ॥ (३१२-१३, गउड़ी, मः ४)
सतिगुरू का खड़गु संजोउ हरि भगति है जितु कालु कंटकु मारि विडारिआ ॥ (३१२-१३, गउड़ी, मः ४)
सतिगुरू का रखणहारा हरि आपि है सतिगुरू कै पिछै हरि सभि उबारिआ ॥ (३१२-१४, गउड़ी, मः ४)
जो मंदा चितवै पूरे सतिगुरू का सो आपि उपावणहारै मारिआ ॥ (३१२-१५, गउड़ी, मः ४)
एह गल होवै हरि दरगह सचे की जन नानक अगमु वीचारिआ ॥२॥ (३१२-१६, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३१२-१६)
सचु सुतिआ जिनी अराधिआ जा उठे ता सचु चवे ॥ (३१२-१६, गउड़ी, मः ४)
से विरले जुग महि जाणीअहि जो गुरमुखि सचु रवे ॥ (३१२-१७, गउड़ी, मः ४)
हउ बलिहारी तिन कउ जि अनदिनु सचु लवे ॥ (३१२-१७, गउड़ी, मः ४)
जिन मनि तनि सचा भावदा से सची दरगह गवे ॥ (३१२-१८, गउड़ी, मः ४)
जनु नानकु बोलै सचु नामु सचु सचा सदा नवे ॥२१॥ (३१२-१८, गउड़ी, मः ४)
सलोकु मः ४ ॥ (३१२-१९)
किआ सवणा किआ जागणा गुरमुखि ते परवाणु ॥ (३१२-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३१३

जिना सासि गिरासि न विसरै से पूरे पुरख प्रधान ॥ (३१३-१, गउड़ी, मः ४)
करमी सतिगुरु पाईऐ अनदिनु लगै धिआनु ॥ (३१३-१, गउड़ी, मः ४)
तिन की संगति मिलि रहा दरगह पाई मानु ॥ (३१३-२, गउड़ी, मः ४)
सउदे वाहु वाहु उचरहि उठदे भी वाहु करेनि ॥ (३१३-२, गउड़ी, मः ४)
नानक ते मुख उजले जि नित उठि सम्मालेनि ॥१॥ (३१३-३, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३१३-३)
सतिगुरु सेवीऐ आपणा पाईऐ नामु अपारु ॥ (३१३-३, गउड़ी, मः ४)
भउजलि डुबदिआ कढि लए हरि दाति करे दातारु ॥ (३१३-४, गउड़ी, मः ४)
धन्नु धन्नु से साह है जि नामि करहि वापारु ॥ (३१३-४, गउड़ी, मः ४)
वणजारे सिख आवदे सबदि लघावणहारु ॥ (३१३-५, गउड़ी, मः ४)
जन नानक जिन कउ कृपा भई तिन सेविआ सिरजणहारु ॥२॥ (३१३-५, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३१३-६)
सचु सचे के जन भगत हहि सचु सचा जिनी अराधिआ ॥ (३१३-६, गउड़ी, मः ४)

जिन गुरमुखि खोजि ढंढोलिआ तिन अंदरहु ही सचु लाधिआ ॥ (३१३-६, गउड़ी, मः ४)
सचु साहिबु सचु जिनी सेविआ कालु कंटकु मारि तिनी साधिआ ॥ (३१३-७, गउड़ी, मः ४)
सचु सचा सभ दू वडा है सचु सेवनि से सचि रलाधिआ ॥ (३१३-८, गउड़ी, मः ४)
सचु सचे नो साबासि है सचु सचा सेवि फलाधिआ ॥२२॥ (३१३-८, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३१३-९)
मनमुखु प्राणी मुगधु है नामहीण भरमाइ ॥ (३१३-९, गउड़ी, मः ४)
बिनु गुर मनूआ ना टिकै फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ (३१३-९, गउड़ी, मः ४)
हरि प्रभु आपि दइआल होहि ताँ सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (३१३-१०, गउड़ी, मः ४)
जन नानक नामु सलाहि तू जनम मरण दुखु जाइ ॥१॥ (३१३-११, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३१३-११)
गुरु सालाही आपणा बहु बिधि रंगि सुभाइ ॥ (३१३-११, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर सेती मनु रता रखिआ बणत बणाइ ॥ (३१३-१२, गउड़ी, मः ४)
जिहवा सालाहि न रजई हरि प्रीतम चितु लाइ ॥ (३१३-१२, गउड़ी, मः ४)
नानक नावै की मनि भुख है मनु तृपतै हरि रसु खाइ ॥२॥ (३१३-१३, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी ॥ (३१३-१३)
सचु सचा कुदरति जाणीऐ दिनु राती जिनि बणाईआ ॥ (३१३-१३, गउड़ी, मः ४)
सो सचु सलाही सदा सदा सचु सचे कीआ वडिआईआ ॥ (३१३-१४, गउड़ी, मः ४)
सालाही सचु सलाह सचु सचु कीमति किनै न पाईआ ॥ (३१३-१४, गउड़ी, मः ४)
जा मिलिआ पूरा सतिगुरू ता हाजरु नदरी आईआ ॥ (३१३-१५, गउड़ी, मः ४)
सचु गुरमुखि जिनी सलाहिआ तिना भुखा सभि गवाईआ ॥२३॥ (३१३-१५, गउड़ी, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (३१३-१६)
मै मनु तनु खोजि खोजेदिआ सो प्रभु लधा लोड़ि ॥ (३१३-१६, गउड़ी, मः ४)
विसटु गुरू मै पाइआ जिनि हरि प्रभु दिता जोड़ि ॥१॥ (३१३-१७, गउड़ी, मः ४)
मः ३ ॥ (३१३-१७)
माइआधारी अति अन्ना बोला ॥ (३१३-१७, गउड़ी, मः ३)
सबदु न सुणई बहु रोल घचोला ॥ (३१३-१८, गउड़ी, मः ३)
गुरमुखि जापै सबदि लिव लाइ ॥ (३१३-१८, गउड़ी, मः ३)
हरि नामु सुणि मन्ने हरि नामि समाइ ॥ (३१३-१८, गउड़ी, मः ३)
जो तिसु भावै सु करे कराइआ ॥ (३१३-१९, गउड़ी, मः ३)
नानक वजदा जंतु वजाइआ ॥२॥ (३१३-१९, गउड़ी, मः ३)

पन्ना ३१४

पउड़ी ॥ (३१४-१)
तू करता सभु किछु जाणदा जो जीआ अंदरि वरतै ॥ (३१४-१, गउड़ी, मः ३)
तू करता आपि अगणतु है सभु जगु विचि गणतै ॥ (३१४-१, गउड़ी, मः ३)

सभु कीता तेरा वरतदा सभ तेरी बणतै ॥ (३१४-२, गउड़ी, मः ३)
तू घटि घटि इकु वरतदा सचु साहिब चलतै ॥ (३१४-२, गउड़ी, मः ३)
सतिगुर नो मिले सु हरि मिले नाही किसै परतै ॥२४॥ (३१४-३, गउड़ी, मः ३)
सलोकु मः ४ ॥ (३१४-३)
इहु मनूआ दृड़ु करि रखीऐ गुरमुखि लाईऐ चितु ॥ (३१४-३, गउड़ी, मः ४)
किउ सासि गिरासि विसारीऐ बहदिआ उठदिआ नित ॥ (३१४-४, गउड़ी, मः ४)
मरण जीवण की चिंता गई इहु जीअड़ा हरि प्रभ वसि ॥ (३१४-४, गउड़ी, मः ४)
जिउ भावै तिउ रखु तू जन नानक नामु बखसि ॥१॥ (३१४-५, गउड़ी, मः ४)
मः ३ ॥ (३१४-५)
मनमुखु अहंकारी महलु न जाणै खिनु आगै खिनु पीछै ॥ (३१४-६, गउड़ी, मः ३)
सदा बुलाईऐ महलि न आवै किउ करि दरगह सीझै ॥ (३१४-६, गउड़ी, मः ३)
सतिगुर का महलु विरला जाणै सदा रहै कर जोड़ि ॥ (३१४-७, गउड़ी, मः ३)
आपणी कृपा करे हरि मेरा नानक लए बहोड़ि ॥२॥ (३१४-७, गउड़ी, मः ३)
पउड़ी ॥ (३१४-८)
सा सेवा कीती सफल है जितु सतिगुर का मनु मन्ने ॥ (३१४-८, गउड़ी, मः ३)
जा सतिगुर का मनु मंनिआ ता पाप कसम्मल भन्ने ॥ (३१४-८, गउड़ी, मः ३)
उपदेसु जि दिता सतिगुरू सो सुणिआ सिखी कन्ने ॥ (३१४-९, गउड़ी, मः ३)
जिन सतिगुर का भाणा मंनिआ तिन चड़ी चवगणि वन्ने ॥ (३१४-९, गउड़ी, मः ३)
इह चाल निराली गुरमुखी गुर दीखिआ सुणि मनु भिन्ने ॥२५॥ (३१४-१०, गउड़ी, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (३१४-११)
जिनि गुरु गोपिआ आपणा तिसु ठउर न ठाउ ॥ (३१४-११, गउड़ी, मः ३)
हलतु पलतु दोवै गए दरगह नाही थाउ ॥ (३१४-११, गउड़ी, मः ३)
ओह वेला हथि न आवई फिरि सतिगुर लगहि पाइ ॥ (३१४-१२, गउड़ी, मः ३)
सतिगुर की गणतै घुसीऐ दुखे दुखि विहाइ ॥ (३१४-१२, गउड़ी, मः ३)
सतिगुरु पुरखु निरवैरु है आपे लए जिसु लाइ ॥ (३१४-१३, गउड़ी, मः ३)
नानक दरसनु जिना वेखालिओनु तिना दरगह लए छडाइ ॥१॥ (३१४-१३, गउड़ी, मः ३)
मः ३ ॥ (३१४-१४)
मनमुखु अगिआनु दुरमति अहंकारी ॥ (३१४-१४, गउड़ी, मः ३)
अंतरि क्रोधु जूऐ मति हारी ॥ (३१४-१४, गउड़ी, मः ३)
कूड़ु कुसतु ओहु पाप कमावै ॥ (३१४-१५, गउड़ी, मः ३)
किआ ओहु सुणै किआ आखि सुणावै ॥ (३१४-१५, गउड़ी, मः ३)
अन्ना बोला खुइ उझड़ि पाइ ॥ (३१४-१५, गउड़ी, मः ३)
मनमुखु अंधा आवै जाइ ॥ (३१४-१६, गउड़ी, मः ३)
बिनु सतिगुर भेटे थाइ न पाइ ॥ (३१४-१६, गउड़ी, मः ३)
नानक पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥ (३१४-१६, गउड़ी, मः ३)

पउड़ी ॥ (३१४-१७)
जिन के चित कठोर हहि से बहहि न सतिगुर पासि ॥ (३१४-१७, गउड़ी, मः ३)
ओथै सचु वरतदा कूड़िआरा चित उदासि ॥ (३१४-१७, गउड़ी, मः ३)
ओइ वलु छलु करि झति कढदे फिरि जाइ बहहि कूड़िआरा पासि ॥ (३१४-१८, गउड़ी, मः ३)
विचि सचे कूड़ु न गडई मनि वेखहु को निरजासि ॥ (३१४-१८, गउड़ी, मः ३)
कूड़िआर कूड़िआरी जाइ रले सचिआर सिख बैठे सतिगुर पासि ॥२६॥ (३१४-१९, गउड़ी, मः ३)

पन्ना ३१५

सलोक मः ५ ॥ (३१५-१)
रहदे खुहदे निंदक मारिअनु करि आपे आहरु ॥ (३१५-१, गउड़ी, मः ५)
संत सहाई नानका वरतै सभ जाहरु ॥१॥ (३१५-१, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१५-२)
मुंढहु भुले मुंढ ते किथै पाइनि हथु ॥ (३१५-२, गउड़ी, मः ५)
तिन्नै मारे नानका जि करण कारण समरथु ॥२॥ (३१५-२, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ५ ॥ (३१५-३)
लै फाहे राती तुरहि प्रभु जाणै प्राणी ॥ (३१५-३, गउड़ी, मः ५)
तकहि नारि पराईआ लुकि अंदरि ठाणी ॥ (३१५-३, गउड़ी, मः ५)
सन्ही देन्हि विखम्म थाइ मिठा मदु माणी ॥ (३१५-४, गउड़ी, मः ५)
करमी आपो आपणी आपे पछुताणी ॥ (३१५-४, गउड़ी, मः ५)
अजराईलु फरेसता तिल पीड़े घाणी ॥२७॥ (३१५-४, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१५-५)
सेवक सचे साह के सेई परवाणु ॥ (३१५-५, गउड़ी, मः ५)
दूजा सेवनि नानका से पचि पचि मुए अजाण ॥१॥ (३१५-५, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१५-६)
जो धुरि लिखिआ लेखु प्रभ मेटणा न जाइ ॥ (३१५-६, गउड़ी, मः ५)
राम नामु धनु वखरो नानक सदा धिआइ ॥२॥ (३१५-६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ५ ॥ (३१५-७)
नाराइणि लइआ नाठूंगड़ा पैर किथै रखै ॥ (३१५-७, गउड़ी, मः ५)
करदा पाप अमितिआ नित विसो चखै ॥ (३१५-७, गउड़ी, मः ५)
निंदा करदा पचि मुआ विचि देही भखै ॥ (३१५-८, गउड़ी, मः ५)
सचै साहिब मारिआ कउणु तिस नो रखै ॥ (३१५-८, गउड़ी, मः ५)
नानक तिसु सरणागती जो पुरखु अलखै ॥२८॥ (३१५-९, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१५-९)
नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थानु ॥ (३१५-९, गउड़ी, मः ५)
तिनि प्रभि मारे नानका होइ होइ मुए हरामु ॥१॥ (३१५-१०, गउड़ी, मः ५)

मः ५ ॥ (३१५-१०)
अवखध सभे कीतिअनु निंदक का दारू नाहि ॥ (३१५-१०, गउड़ी, मः ५)
आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी पाहि ॥२॥ (३१५-११, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ५ ॥ (३१५-११)
तुसि दिता पूरै सतिगुरू हरि धनु सचु अखुटु ॥ (३१५-११, गउड़ी, मः ५)
सभि अंदेसे मिटि गए जम का भउ छुटु ॥ (३१५-१२, गउड़ी, मः ५)
काम क्रोध बुरिआईआँ संगि साधू तुटु ॥ (३१५-१२, गउड़ी, मः ५)
विणु सचे दूजा सेवदे हुइ मरसनि बुटु ॥ (३१५-१३, गउड़ी, मः ५)
नानक कउ गुरि बखसिआ नामै संगि जुटु ॥२९॥ (३१५-१३, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ४ ॥ (३१५-१४)
तपा न होवै अंद्रहु लोभी नित माइआ नो फिरै जजमालिआ ॥ (३१५-१४, गउड़ी, मः ४)
अगो दे सदिआ सतै दी भिखिआ लए नाही पिछो दे पछुताइ कै आणि तपै पुतु विचि बहालिआ ॥ (३१५-१४, गउड़ी, मः ४)
पंच लोग सभि हसण लगे तपा लोभि लहरि है गालिआ ॥ (३१५-१५, गउड़ी, मः ४)
जिथै थोड़ा धनु वेखै तिथै तपा भिटै नाही धनि बहुतै डिठै तपै धरमु हारिआ ॥ (३१५-१६, गउड़ी, मः ४)
भाई एहु तपा न होवी बगुला है बहि साध जना वीचारिआ ॥ (३१५-१७, गउड़ी, मः ४)
सत पुरख की तपा निंदा करै संसारै की उसतती विचि होवै एतु दोखै तपा दयि मारिआ ॥ (३१५-१७, गउड़ी, मः ४)
महा पुरखाँ की निंदा का वेखु जि तपे नो फलु लगा सभु गइआ तपे का घालिआ ॥ (३१५-१८, गउड़ी, मः ४)
बाहरि बहै पंचा विचि तपा सदाए ॥ (३१५-१९, गउड़ी, मः ४)
अंदरि बहै तपा पाप कमाए ॥ (३१५-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३१६

हरि अंदरला पापु पंचा नो उघा करि वेखालिआ ॥ (३१६-१, गउड़ी, मः ४)
धर्म राइ जमकंकरा नो आखि छडिआ एसु तपे नो तिथै खड़ि पाइहु जिथै महा महाँ हतिआरिआ ॥ (३१६-१, गउड़ी, मः ४)
फिरि एसु तपे दै मुहि कोई लगहु नाही एहु सतिगुरि है फिटकारिआ ॥ (३१६-२, गउड़ी, मः ४)
हरि कै दरि वरतिआ सु नानकि आखि सुणाइआ ॥ (३१६-३, गउड़ी, मः ४)
सो बूझै जु दयि सवारिआ ॥१॥ (३१६-३, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३१६-४)
हरि भगताँ हरि आराधिआ हरि की वडिआई ॥ (३१६-४, गउड़ी, मः ४)
हरि कीरतनु भगत नित गाँवदे हरि नामु सुखदाई ॥ (३१६-४, गउड़ी, मः ४)
हरि भगताँ नो नित नावै दी वडिआई बखसीअनु नित चड़ै सवाई ॥ (३१६-५, गउड़ी, मः ४)
हरि भगताँ नो थिरु घरी बहालिअनु अपणी पैज रखाई ॥ (३१६-६, गउड़ी, मः ४)
निंदकाँ पासहु हरि लेखा मंगसी बहु देइ सजाई ॥ (३१६-६, गउड़ी, मः ४)

जेहा निंदक अपणै जीइ कमावदे तेहो फलु पाई ॥ (३१६-७, गउड़ी, मः ४)
अंदरि कमाणा सरपर उघड़ै भावै कोई बहि धरती विचि कमाई ॥ (३१६-७, गउड़ी, मः ४)
जन नानकु देखि विगसिआ हरि की वडिआई ॥२॥ (३१६-८, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी मः ५ ॥ (३१६-८)
भगत जनाँ का राखा हरि आपि है किआ पापी करीऐ ॥ (३१६-९, गउड़ी, मः ५)
गुमानु करहि मूड़ गुमानीआ विसु खाधी मरीऐ ॥ (३१६-९, गउड़ी, मः ५)
आइ लगे नी दिह थोड़ड़े जिउ पका खेतु लुणीऐ ॥ (३१६-१०, गउड़ी, मः ५)
जेहे कर्म कमावदे तेवेहो भणीऐ ॥ (३१६-१०, गउड़ी, मः ५)
जन नानक का खसमु वडा है सभना दा धणीऐ ॥३०॥ (३१६-१०, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ४ ॥ (३१६-११)
मनमुख मूलहु भुलिआ विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ (३१६-११, गउड़ी, मः ४)
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करहि वीचारु ॥ (३१६-१२, गउड़ी, मः ४)
सुधि मति करतै सभ हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ (३१६-१२, गउड़ी, मः ४)
दितै कितै न संतोखीअहि अंतरि तिसना बहु अगिआनु अंध्यारु ॥ (३१६-१३, गउड़ी, मः ४)
नानक मनमुखा नालो तुटी भली जिन माइआ मोह पिआरु ॥१॥ (३१६-१३, गउड़ी, मः ४)
मः ४ ॥ (३१६-१४)
जिना अंदरि दूजा भाउ है तिन्ा गुरमुखि प्रीति न होइ ॥ (३१६-१४, गउड़ी, मः ४)
ओहु आवै जाइ भवाईऐ सुपनै सुखु न कोइ ॥ (३१६-१५, गउड़ी, मः ४)
कूड़ु कमावै कूड़ु उचरै कूड़ि लगिआ कूड़ु होइ ॥ (३१६-१५, गउड़ी, मः ४)
माइआ मोहु सभु दुखु है दुखि बिनसै दुखु रोइ ॥ (३१६-१६, गउड़ी, मः ४)
नानक धातु लिवै जोड़ु न आवई जे लोचै सभु कोइ ॥ (३१६-१६, गउड़ी, मः ४)
जिन कउ पोतै पुंनु पइआ तिना गुर सबदी सुखु होइ ॥२॥ (३१६-१७, गउड़ी, मः ४)
पउड़ी मः ५ ॥ (३१६-१७)
नानक वीचारहि संत मुनि जनाँ चारि वेद कहंदे ॥ (३१६-१७, गउड़ी, मः ५)
भगत मुखै ते बोलदे से वचन होवंदे ॥ (३१६-१८, गउड़ी, मः ५)
परगट पाहारै जापदे सभि लोक सुणंदे ॥ (३१६-१८, गउड़ी, मः ५)
सुखु न पाइनि मुगध नर संत नालि खहंदे ॥ (३१६-१९, गउड़ी, मः ५)
ओइ लोचनि ओना गुणा नो ओइ अहंकारि सड़ंदे ॥ (३१६-१९, गउड़ी, मः ५)
ओइ वेचारे किआ करहि जाँ भाग धुरि मंदे ॥ (३१६-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना ३१७

जो मारे तिनि पारब्रहमि से किसै न संदे ॥ (३१७-१, गउड़ी, मः ५)
वैरु करनि निरवैर नालि धरमि निआइ पचंदे ॥ (३१७-१, गउड़ी, मः ५)
जो जो संति सरापिआ से फिरहि भवंदे ॥ (३१७-२, गउड़ी, मः ५)
पेडु मुंढाहू कटिआ तिसु डाल सुकंदे ॥३१॥ (३१७-२, गउड़ी, मः ५)

सलोक मः ५ ॥ (३१७-३)
गुर नानक हरि नामु दृड़ाइआ भन्नण घड़ण समरथु ॥ (३१७-३, गउड़ी, मः ५)
प्रभु सदा समालहि मित्र तू दुखु सबाइआ लथु ॥१॥ (३१७-३, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१७-४)
खुधिआवंतु न जाणई लाज कुलाज कुबोलु ॥ (३१७-४, गउड़ी, मः ५)
नानकु माँगै नामु हरि करि किरपा संजोगु ॥२॥ (३१७-४, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१७-५)
जेवेहे कर्म कमावदा तेवेहे फलते ॥ (३१७-५, गउड़ी, मः ५)
चबे तता लोह सारु विचि संघै पलते ॥ (३१७-५, गउड़ी, मः ५)
घति गलावाँ चालिआ तिनि दूति अमल ते ॥ (३१७-६, गउड़ी, मः ५)
काई आस न पुन्नीआ नित पर मलु हिरते ॥ (३१७-६, गउड़ी, मः ५)
कीआ न जाणै अकिरतघण विचि जोनी फिरते ॥ (३१७-७, गउड़ी, मः ५)
सभे धिराँ निखुटीअसु हिरि लईअसु धर ते ॥ (३१७-७, गउड़ी, मः ५)
विझण कलह न देवदा ताँ लइआ करते ॥ (३१७-८, गउड़ी, मः ५)
जो जो करते अहम्मेउ झड़ि धरती पड़ते ॥३२॥ (३१७-८, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ३ ॥ (३१७-८)
गुरमुखि गिआनु बिबेक बुधि होइ ॥ (३१७-९, गउड़ी, मः ३)
हरि गुण गावै हिरदै हारु परोइ ॥ (३१७-९, गउड़ी, मः ३)
पवितु पावनु पर्म बीचारी ॥ (३१७-९, गउड़ी, मः ३)
जि ओसु मिलै तिसु पारि उतारी ॥ (३१७-१०, गउड़ी, मः ३)
अंतरि हरि नामु बासना समाणी ॥ (३१७-१०, गउड़ी, मः ३)
हरि दरि सोभा महा उतम बाणी ॥ (३१७-१०, गउड़ी, मः ३)
जि पुरखु सुणै सु होइ निहालु ॥ (३१७-११, गउड़ी, मः ३)
नानक सतिगुर मिलिऐ पाइआ नामु धनु मालु ॥१॥ (३१७-११, गउड़ी, मः ३)
मः ४ ॥ (३१७-१२)
सतिगुर के जीअ की सार न जापै कि पूरै सतिगुर भावै ॥ (३१७-१२, गउड़ी, मः ४)
गुरसिखाँ अंदरि सतिगुरू वरतै जो सिखाँ नो लोचै सो गुर खुसी आवै ॥ (३१७-१२, गउड़ी, मः ४)
सतिगुर आखै सु कार कमावनि सु जपु कमावहि गुरसिखाँ की घाल सचा थाइ पावै ॥ (३१७-१३, गउड़ी, मः ४)
विणु सतिगुर के हुकमै जि गुरसिखाँ पासहु कम्मु कराइआ लोड़े तिसु गुरसिखु फिरि नेड़ि न आवै ॥ (३१७-१४, गउड़ी, मः ४)
गुर सतिगुर अगै को जीउ लाइ घालै तिसु अगै गुरसिखु कार कमावै ॥ (३१७-१५, गउड़ी, मः ४)
जि ठगी आवै ठगी उठि जाइ तिसु नेड़ै गुरसिखु मूलि न आवै ॥ (३१७-१५, गउड़ी, मः ४)
ब्रह्मु बीचारु नानकु आखि सुणावै ॥ (३१७-१६, गउड़ी, मः ४)
जि विणु सतिगुर के मनु मन्ने कम्मु कराए सो जंतु महा दुखु पावै ॥२॥ (३१७-१६, गउड़ी, मः ४)

पउड़ी ॥ (३१७-१७)
तूं सचा साहिबु अति वडा तुहि जेवडु तूं वड वडे ॥ (३१७-१७, गउड़ी, मः ४)
जिसु तूं मेलहि सो तुधु मिलै तूं आपे बखसि लैहि लेखा छडे ॥ (३१७-१८, गउड़ी, मः ४)
जिस नो तूं आपि मिलाइदा सो सतिगुरु सेवे मनु गड गडे ॥ (३१७-१८, गउड़ी, मः ४)
तूं सचा साहिबु सचु तू सभु जीउ पिंडु चम्मु तेरा हडे ॥ (३१७-१९, गउड़ी, मः ४)
जिउ भावै तिउ रखु तूं सचिआ नानक मनि आस तेरी वड वडे ॥३३॥१॥ सुधु ॥ (३१७-१९, गउड़ी, मः ४)

पन्ना ३१८

गउड़ी की वार महला ५ राइ कमालदी मोजदी की वार की धुनि उपरि गावणी (३१८-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३१८-३)
सलोक मः ५ ॥ (३१८-३)
हरि हरि नामु जो जनु जपै सो आइआ परवाणु ॥ (३१८-३, गउड़ी, मः ५)
तिसु जन कै बलिहारणै जिनि भजिआ प्रभु निरबाणु ॥ (३१८-३, गउड़ी, मः ५)
जनम मरन दुखु कटिआ हरि भेटिआ पुरखु सुजाणु ॥ (३१८-४, गउड़ी, मः ५)
संत संगि सागरु तरे जन नानक सचा ताणु ॥१॥ (३१८-४, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१८-५)
भलके उठि पराहुणा मेरै घरि आवउ ॥ (३१८-५, गउड़ी, मः ५)
पाउ पखाला तिस के मनि तनि नित भावउ ॥ (३१८-५, गउड़ी, मः ५)
नामु सुणे नामु संग्रहै नामे लिव लावउ ॥ (३१८-६, गउड़ी, मः ५)
गृहु धनु सभु पवित्रु होइ हरि के गुण गावउ ॥ (३१८-६, गउड़ी, मः ५)
हरि नाम वापारी नानका वडभागी पावउ ॥२॥ (३१८-७, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१८-७)
जो तुधु भावै सो भला सचु तेरा भाणा ॥ (३१८-७, गउड़ी, मः ५)
तू सभ महि एकु वरतदा सभ माहि समाणा ॥ (३१८-८, गउड़ी, मः ५)
थान थनंतरि रवि रहिआ जीअ अंदरि जाणा ॥ (३१८-८, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि मिलि पाईऐ मनि सचे भाणा ॥ (३१८-९, गउड़ी, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती सद सद कुरबाणा ॥१॥ (३१८-९, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१८-१०)
चेता ई ताँ चेति साहिबु सचा सो धणी ॥ (३१८-१०, गउड़ी, मः ५)
नानक सतिगुरु सेवि चड़ि बोहिथि भउजलु पारि पउ ॥१॥ (३१८-१०, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१८-११)
वाऊ संदे कपड़े पहिरहि गरबि गवार ॥ (३१८-११, गउड़ी, मः ५)
नानक नालि न चलनी जलि बलि होए छारु ॥२॥ (३१८-११, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१८-१२)
सेई उबरे जगै विचि जो सचै रखे ॥ (३१८-१२, गउड़ी, मः ५)

मुहि डिठै तिन कै जीवीऐ हरि अमृतु चखे ॥ (३१८-१२, गउड़ी, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु मोहु संगि साधा भखे ॥ (३१८-१३, गउड़ी, मः ५)
करि किरपा प्रभि आपणी हरि आपि परखे ॥ (३१८-१३, गउड़ी, मः ५)
नानक चलत न जापनी को सकै न लखे ॥२॥ (३१८-१३, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१८-१४)
नानक सोई दिनसु सुहावड़ा जितु प्रभु आवै चिति ॥ (३१८-१४, गउड़ी, मः ५)
जितु दिनि विसरै पारब्रह्मु फिटु भलेरी रुति ॥१॥ (३१८-१५, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१८-१५)
नानक मित्राई तिसु सिउ सभ किछु जिस कै हाथि ॥ (३१८-१५, गउड़ी, मः ५)
कुमित्रा सेई काँढीअहि इक विख न चलहि साथि ॥२॥ (३१८-१६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१८-१६)
अमृतु नामु निधानु है मिलि पीवहु भाई ॥ (३१८-१६, गउड़ी, मः ५)
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ सभ तिखा बुझाई ॥ (३१८-१७, गउड़ी, मः ५)
करि सेवा पारब्रह्म गुर भुख रहै न काई ॥ (३१८-१७, गउड़ी, मः ५)
सगल मनोरथ पुंनिआ अमरा पदु पाई ॥ (३१८-१८, गउड़ी, मः ५)
तुधु जेवडु तूहै पारब्रह्म नानक सरणाई ॥३॥ (३१८-१८, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१८-१९)
डिठड़ो हभ ठाइ ऊण न काई जाइ ॥ (३१८-१९, गउड़ी, मः ५)
नानक लधा तिन सुआउ जिना सतिगुरु भेटिआ ॥१॥ (३१८-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना ३१९

मः ५ ॥ (३१९-१)
दामनी चमतकार तिउ वरतारा जग खे ॥ (३१९-१, गउड़ी, मः ५)
वथु सुहावी साइ नानक नाउ जपंदो तिसु धणी ॥२॥ (३१९-१, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१९-२)
सिमृति सासत्र सोधि सभि किनै कीम न जाणी ॥ (३१९-२, गउड़ी, मः ५)
जो जनु भेटै साधसंगि सो हरि रंगु माणी ॥ (३१९-२, गउड़ी, मः ५)
सचु नामु करता पुरखु एह रतना खाणी ॥ (३१९-३, गउड़ी, मः ५)
मसतकि होवै लिखिआ हरि सिमरि पराणी ॥ (३१९-३, गउड़ी, मः ५)
तोसा दिचै सचु नामु नानक मिहमाणी ॥४॥ (३१९-४, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१९-४)
अंतरि चिंता नैणी सुखी मूलि न उतरै भुख ॥ (३१९-४, गउड़ी, मः ५)
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथो दुखु ॥१॥ (३१९-५, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१९-५)
मुठड़े सेई साथ जिनी सचु न लदिआ ॥ (३१९-५, गउड़ी, मः ५)

नानक से साबासि जिनी गुर मिलि इकु पछाणिआ ॥२॥ (३१६-६, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१६-६)
जिथै बैसनि साध जन सो थानु सुहंदा ॥ (३१६-६, गउड़ी, मः ५)
ओइ सेवनि सम्मृथु आपणा बिनसै सभु मंदा ॥ (३१६-७, गउड़ी, मः ५)
पतित उधारण पारब्रह्म संत बेदु कहंदा ॥ (३१६-७, गउड़ी, मः ५)
भगति वछलु तेरा बिरदु है जुगि जुगि वरतंदा ॥ (३१६-८, गउड़ी, मः ५)
नानकु जाचै एकु नामु मनि तनि भावंदा ॥५॥ (३१६-८, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१६-९)
चिड़ी चुहकी पहु फुटी वगनि बहुतु तरंग ॥ (३१६-९, गउड़ी, मः ५)
अचरज रूप संतन रचे नानक नामहि रंग ॥१॥ (३१६-९, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१६-१०)
घर मंदर खुसीआ तही जह तू आवहि चिति ॥ (३१६-१०, गउड़ी, मः ५)
दुनीआ कीआ वडिआईआ नानक सभि कुमित ॥२॥ (३१६-१०, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१६-११)
हरि धनु सची रासि है किनै विरलै जाता ॥ (३१६-११, गउड़ी, मः ५)
तिसै परापति भाइरहु जिसु देइ बिधाता ॥ (३१६-११, गउड़ी, मः ५)
मन तन भीतरि मउलिआ हरि रंगि जनु राता ॥ (३१६-१२, गउड़ी, मः ५)
साधसंगि गुण गाइआ सभि दोखह खाता ॥ (३१६-१२, गउड़ी, मः ५)
नानक सोई जीविआ जिनि इकु पछाता ॥६॥ (३१६-१३, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१६-१३)
खखड़ीआ सुहावीआ लगड़ीआ अक कंठि ॥ (३१६-१३, गउड़ी, मः ५)
बिरह विछोड़ा धणी सिउ नानक सहसै गंठि ॥१॥ (३१६-१४, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१६-१४)
विसारेदे मरि गए मरि भि न सकहि मूलि ॥ (३१६-१४, गउड़ी, मः ५)
वेमुख होए राम ते जिउ तस्कर उपरि सूलि ॥२॥ (३१६-१५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३१६-१५)
सुख निधानु प्रभु एकु है अबिनासी सुणिआ ॥ (३१६-१५, गउड़ी, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरिआ घटि घटि हरि भणिआ ॥ (३१६-१६, गउड़ी, मः ५)
ऊच नीच सभ इक समानि कीट हसती बणिआ ॥ (३१६-१६, गउड़ी, मः ५)
मीत सखा सुत बंधिपो सभि तिस दे जणिआ ॥ (३१६-१७, गउड़ी, मः ५)
तुसि नानकु देवै जिसु नामु तिनि हरि रंगु मणिआ ॥७॥ (३१६-१७, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३१६-१८)
जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामाँ मनि मंतु ॥ (३१६-१८, गउड़ी, मः ५)
धन्नु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥१॥ (३१६-१८, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३१६-१९)

अठे पहर भउदा फिरै खावण संदड़ै सूलि ॥ (३१९-१९, गउड़ी, मः ५)
दोजकि पउदा किउ रहै जा चिति न होइ रसूलि ॥२॥ (३१९-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना ३२०

पउड़ी ॥ (३२०-१)
तिसै सरेवहु प्राणीहो जिस दै नाउ पलै ॥ (३२०-१, गउड़ी, मः ५)
ऐथै रहहु सुहेलिआ अगै नालि चलै ॥ (३२०-१, गउड़ी, मः ५)
घरु बंधहु सच धर्म का गडि थम्मु अहलै ॥ (३२०-२, गउड़ी, मः ५)
ओट लैहु नाराइणै दीन दुनीआ झलै ॥ (३२०-२, गउड़ी, मः ५)
नानक पकड़े चरण हरि तिसु दरगह मलै ॥८॥ (३२०-३, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२०-३)
जाचकु मंगै दानु देहि पिआरिआ ॥ (३२०-३, गउड़ी, मः ५)
देवणहारु दातारु मै नित चितारिआ ॥ (३२०-४, गउड़ी, मः ५)
निखुटि न जाई मूलि अतुल भंडारिआ ॥ (३२०-४, गउड़ी, मः ५)
नानक सबदु अपारु तिनि सभु किछु सारिआ ॥१॥ (३२०-४, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२०-५)
सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ (३२०-५, गउड़ी, मः ५)
मुख ऊजल सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥२॥ (३२०-५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२०-६)
ओथै अमृतु वंडीऐ सुखीआ हरि करणे ॥ (३२०-६, गउड़ी, मः ५)
जम कै पंथि न पाईअहि फिरि नाही मरणे ॥ (३२०-६, गउड़ी, मः ५)
जिस नो आइआ प्रेम रसु तिसै ही जरणे ॥ (३२०-७, गउड़ी, मः ५)
बाणी उचरहि साध जन अमिउ चलहि झरणे ॥ (३२०-७, गउड़ी, मः ५)
पेखि दरसनु नानकु जीविआ मन अंदरि धरणे ॥९॥ (३२०-८, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२०-८)
सतिगुरि पूरै सेविऐ दूखा का होइ नासु ॥ (३२०-९, गउड़ी, मः ५)
नानक नामि अराधिऐ कारजु आवै रासि ॥१॥ (३२०-९, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२०-९)
जिसु सिमरत संकट छुटहि अनद मंगल बिस्राम ॥ (३२०-१०, गउड़ी, मः ५)
नानक जपीऐ सदा हरि निमख न बिसरउ नामु ॥२॥ (३२०-१०, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२०-११)
तिन की सोभा किआ गणी जिनी हरि हरि लधा ॥ (३२०-११, गउड़ी, मः ५)
साधा सरणी जो पवै सु छुटै बधा ॥ (३२०-११, गउड़ी, मः ५)
गुण गावै अबिनासीऐ जोनि गरभि न दधा ॥ (३२०-१२, गउड़ी, मः ५)
गुरु भेटिआ पारब्रह्मु हरि पड़ि बुझि समधा ॥ (३२०-१२, गउड़ी, मः ५)

नानक पाइआ सो धणी हरि अगम अगधा ॥१०॥ (३२०-१२, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२०-१३)
कामु न करही आपणा फिरहि अवता लोइ ॥ (३२०-१३, गउड़ी, मः ५)
नानक नाइ विसारिऐ सुखु किनेहा होइ ॥१॥ (३२०-१४, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२०-१४)
बिखै कउड़तणि सगल माहि जगति रही लपटाइ ॥ (३२०-१४, गउड़ी, मः ५)
नानक जनि वीचारिआ मीठा हरि का नाउ ॥२॥ (३२०-१५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२०-१५)
इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥ (३२०-१५, गउड़ी, मः ५)
जमकंकरु नेड़ि न आवई फिरि बहुड़ि न मरीऐ ॥ (३२०-१६, गउड़ी, मः ५)
भव सागरु संसारु बिखु सो पारि उतरीऐ ॥ (३२०-१६, गउड़ी, मः ५)
हरि गुण गुम्फहु मनि माल हरि सभ मलु परहरीऐ ॥ (३२०-१७, गउड़ी, मः ५)
नानक प्रीतम मिलि रहे पारब्रह्म नरहरीऐ ॥११॥ (३२०-१७, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२०-१८)
नानक आए से परवाणु है जिन हरि वुठा चिति ॥ (३२०-१८, गउड़ी, मः ५)
गाल्ही अल पलालीआ कंमि न आवहि मित ॥१॥ (३२०-१८, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२०-१९)
पारब्रह्मु प्रभु दृसटी आइआ पूरन अगम बिसमाद ॥ (३२०-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना ३२१

नानक राम नामु धनु कीता पूरे गुर परसादि ॥२॥ (३२१-१, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२१-१)
धोहु न चली खसम नालि लबि मोहि विगुते ॥ (३२१-१, गउड़ी, मः ५)
करतब करनि भलेरिआ मदि माइआ सुते ॥ (३२१-२, गउड़ी, मः ५)
फिरि फिरि जूनि भवाईअनि जम मारगि मुते ॥ (३२१-२, गउड़ी, मः ५)
कीता पाइनि आपणा दुख सेती जुते ॥ (३२१-३, गउड़ी, मः ५)
नानक नाइ विसारिऐ सभ मंदी रुते ॥१२॥ (३२१-३, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२१-३)
उठंदिआ बहंदिआ सवंदिआ सुखु सोइ ॥ (३२१-४, गउड़ी, मः ५)
नानक नामि सलाहिऐ मनु तनु सीतलु होइ ॥१॥ (३२१-४, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२१-४)
लालचि अटिआ नित फिरै सुआरथु करे न कोइ ॥ (३२१-५, गउड़ी, मः ५)
जिसु गुरु भेटै नानका तिसु मनि वसिआ सोइ ॥२॥ (३२१-५, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२१-६)
सभे वसतू कउड़ीआ सचे नाउ मिठा ॥ (३२१-६, गउड़ी, मः ५)

सादु आइआ तिन हरि जनाँ चखि साधी डिठा ॥ (३२१-६, गउड़ी, मः ५)
पारब्रहमि जिसु लिखिआ मनि तिसै वुठा ॥ (३२१-७, गउड़ी, मः ५)
इकु निरंजनु रवि रहिआ भाउ दुया कुठा ॥ (३२१-७, गउड़ी, मः ५)
हरि नानकु मंगै जोड़ि कर प्रभु देवै तुठा ॥१३॥ (३२१-७, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२१-८)
जाचड़ी सा सारु जो जाचंदी हेकड़ो ॥ (३२१-८, गउड़ी, मः ५)
गाल्ही बिआ विकार नानक धणी विहूणीआ ॥१॥ (३२१-८, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२१-९)
नीहि जि विधा मन्नु पछाणू विरलो थिओ ॥ (३२१-९, गउड़ी, मः ५)
जोड़णहारा संतु नानक पाधरु पधरो ॥२॥ (३२१-९, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२१-१०)
सोई सेविहु जीअड़े दाता बखसिंदु ॥ (३२१-१०, गउड़ी, मः ५)
किलविख सभि बिनासु होनि सिमरत गोविंदु ॥ (३२१-१०, गउड़ी, मः ५)
हरि मारगु साधू दसिआ जपीऐ गुरमंतु ॥ (३२१-११, गउड़ी, मः ५)
माइआ सुआद सभि फिकिआ हरि मनि भावंदु ॥ (३२१-११, गउड़ी, मः ५)
धिआइ नानक परमेसरै जिनि दिती जिंदु ॥१४॥ (३२१-१२, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२१-१२)
वत लगी सचे नाम की जो बीजे सो खाइ ॥ (३२१-१२, गउड़ी, मः ५)
तिसहि परापति नानका जिस नो लिखिआ आइ ॥१॥ (३२१-१३, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२१-१३)
मंगणा त सचु इकु जिसु तुसि देवै आपि ॥ (३२१-१३, गउड़ी, मः ५)
जितु खाधै मनु तृपतीऐ नानक साहिब दाति ॥२॥ (३२१-१४, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२१-१४)
लाहा जग महि से खटहि जिन हरि धनु रासि ॥ (३२१-१४, गउड़ी, मः ५)
दुतीआ भाउ न जाणनी सचे दी आस ॥ (३२१-१५, गउड़ी, मः ५)
निहचलु एकु सरेविआ होरु सभ विणासु ॥ (३२१-१५, गउड़ी, मः ५)
पारब्रह्मु जिसु विसरै तिसु बिरथा सासु ॥ (३२१-१६, गउड़ी, मः ५)
कंठि लाइ जन रखिआ नानक बलि जासु ॥१५॥ (३२१-१६, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२१-१७)
पारब्रहमि फुरमाइआ मीहु वुठा सहजि सुभाइ ॥ (३२१-१७, गउड़ी, मः ५)
अन्नु धन्नु बहुतु उपजिआ पृथमी रजी तिपति अघाइ ॥ (३२१-१७, गउड़ी, मः ५)
सदा सदा गुण उचरै दुखु दालदु गइआ बिलाइ ॥ (३२१-१८, गउड़ी, मः ५)
पूरबि लिखिआ पाइआ मिलिआ तिसै रजाइ ॥ (३२१-१८, गउड़ी, मः ५)
परमेसरि जीवालिआ नानक तिसै धिआइ ॥१॥ (३२१-१९, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२१-१९)

जीवन पदु निरबाणु इको सिमरीऐ ॥ (३२२-१, गउड़ी, मः ५)
दूजी नाही जाइ किनि बिधि धीरीऐ ॥ (३२२-१, गउड़ी, मः ५)
डिठा सभु संसारु सुखु न नाम बिनु ॥ (३२२-१, गउड़ी, मः ५)
तनु धनु होसी छारु जाणै कोइ जनु ॥ (३२२-२, गउड़ी, मः ५)
रंग रूप रस बादि कि करहि पराणीआ ॥ (३२२-२, गउड़ी, मः ५)
जिसु भुलाए आपि तिसु कल नही जाणीआ ॥ (३२२-२, गउड़ी, मः ५)
रंगि रते निरबाणु सचा गावही ॥ (३२२-३, गउड़ी, मः ५)
नानक सरणि दुआरि जे तुधु भावही ॥२॥ (३२२-३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२२-४)
जम्मणु मरणु न तिन्ह कउ जो हरि लड़ि लागे ॥ (३२२-४, गउड़ी, मः ५)
जीवत से परवाणु होए हरि कीरतनि जागे ॥ (३२२-४, गउड़ी, मः ५)
साधसंगु जिन पाइआ सेई वडभागे ॥ (३२२-५, गउड़ी, मः ५)
नाइ विसरिऐ ध्रिगु जीवणा तूटे कच धागे ॥ (३२२-५, गउड़ी, मः ५)
नानक धूड़ि पुनीत साध लख कोटि पिरागे ॥१६॥ (३२२-६, गउड़ी, मः ५)
सलोकु मः ५ ॥ (३२२-६)
धरणि सुवन्नी खड़ रतन जड़ावी हरि प्रेम पुरखु मनि वुठा ॥ (३२२-६, गउड़ी, मः ५)
सभे काज सुहेलड़े थीए गुरु नानकु सतिगुरु तुठा ॥१॥ (३२२-७, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२२-७)
फिरदी फिरदी दह दिसा जल पर्बत बनराइ ॥ (३२२-७, गउड़ी, मः ५)
जिथै डिठा मिरतको इल बहिठी आइ ॥२॥ (३२२-८, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२२-८)
जिसु सर्ब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमावउ ॥ (३२२-९, गउड़ी, मः ५)
नेड़ै देखउ पारब्रह्मु इकु नामु धिआवउ ॥ (३२२-९, गउड़ी, मः ५)
होइ सगल की रेणुका हरि संगि समावउ ॥ (३२२-९, गउड़ी, मः ५)
दूखु न देई किसै जीअ पति सिउ घरि जावउ ॥ (३२२-१०, गउड़ी, मः ५)
पतित पुनीत करता पुरखु नानक सुणावउ ॥१७॥ (३२२-१०, गउड़ी, मः ५)
सलोक दोहा मः ५ ॥ (३२२-११)
एकु जि साजनु मै कीआ सर्ब कला समरथु ॥ (३२२-११, गउड़ी, मः ५)
जीउ हमारा खन्नीऐ हरि मन तन संदड़ी वथु ॥१॥ (३२२-१२, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२२-१२)
जे करु गहहि पिआरड़े तुधु न छोडा मूलि ॥ (३२२-१२, गउड़ी, मः ५)
हरि छोडनि से दुरजना पड़हि दोजक कै सूलि ॥२॥ (३२२-१३, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२२-१३)

सभि निधान घरि जिस दै हरि करे सु होवै ॥ (३२२-१३, गउड़ी, मः ५)
जपि जपि जीवहि संत जन पापा मलु धोवै ॥ (३२२-१४, गउड़ी, मः ५)
चरन कमल हिरदै वसहि संकट सभि खोवै ॥ (३२२-१४, गउड़ी, मः ५)
गुरु पूरा जिसु भेटीऐ मरि जनमि न रोवै ॥ (३२२-१५, गउड़ी, मः ५)
प्रभ दरस पिआस नानक घणी किरपा करि देवै ॥१८॥ (३२२-१५, गउड़ी, मः ५)
सलोक डखणा मः ५ ॥ (३२२-१६)
भोरी भरमु वञाइ पिरी मुहबति हिकु तू ॥ (३२२-१६, गउड़ी, मः ५)
जिथहु वंञै जाइ तिथाऊ मउजूदु सोइ ॥१॥ (३२२-१६, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२२-१७)
चड़ि कै घोड़ड़ै कुंदे पकड़हि खूंडी दी खेडारी ॥ (३२२-१७, गउड़ी, मः ५)
हंसा सेती चितु उलासहि कुकड़ दी ओडारी ॥२॥ (३२२-१७, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२२-१८)
रसना उचरै हरि स्रवणी सुणै सो उधरै मिता ॥ (३२२-१८, गउड़ी, मः ५)
हरि जसु लिखहि लाइ भावनी से हसत पविता ॥ (३२२-१८, गउड़ी, मः ५)
अठसठि तीर्थ मजना सभि पुन्न तिनि किता ॥ (३२२-१९, गउड़ी, मः ५)
संसार सागर ते उधरे बिखिआ गड़ु जिता ॥ (३२२-१९, गउड़ी, मः ५)

पन्ना ३२३

नानक लड़ि लाइ उधारिअनु दयु सेवि अमिता ॥१९॥ (३२३-१, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२३-१)
धंधड़े कुलाह चिति न आवै हेकड़ो ॥ (३२३-१, गउड़ी, मः ५)
नानक सेई तन्न फुटंनि जिना साँई विसरै ॥१॥ (३२३-२, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२३-२)
परेतहु कीतोनु देवता तिनि करणैहारे ॥ (३२३-२, गउड़ी, मः ५)
सभे सिख उबारिअनु प्रभि काज सवारे ॥ (३२३-३, गउड़ी, मः ५)
निंदक पकड़ि पछाड़िअनु झूठे दरबारे ॥ (३२३-३, गउड़ी, मः ५)
नानक का प्रभु वडा है आपि साजि सवारे ॥२॥ (३२३-४, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२३-४)
प्रभु बेअंतु किछु अंतु नाहि सभु तिसै करणा ॥ (३२३-४, गउड़ी, मः ५)
अगम अगोचरु साहिबो जीआँ का परणा ॥ (३२३-५, गउड़ी, मः ५)
हसत देइ प्रतिपालदा भरण पोखणु करणा ॥ (३२३-५, गउड़ी, मः ५)
मिहरवानु बखसिंदु आपि जपि सचे तरणा ॥ (३२३-६, गउड़ी, मः ५)
जो तुधु भावै सो भला नानक दास सरणा ॥२०॥ (३२३-६, गउड़ी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (३२३-६)
तिन्ना भुख न का रही जिस दा प्रभु है सोइ ॥ (३२३-७, गउड़ी, मः ५)

नानक चरणी लगिआ उधरै सभो कोइ ॥१॥ (३२३-७, गउड़ी, मः ५)
मः ५ ॥ (३२३-७)
जाचिकु मंगै नित नामु साहिबु करे कबूलु ॥ (३२३-८, गउड़ी, मः ५)
नानक परमेसरु जजमानु तिसहि भुख न मूलि ॥२॥ (३२३-८, गउड़ी, मः ५)
पउड़ी ॥ (३२३-९)
मनु रता गोविंद संगि सचु भोजनु जोड़े ॥ (३२३-९, गउड़ी, मः ५)
प्रीति लगी हरि नाम सिउ ए हसती घोड़े ॥ (३२३-९, गउड़ी, मः ५)
राज मिलख खुसीआ घणी धिआइ मुखु न मोड़े ॥ (३२३-९, गउड़ी, मः ५)
ढाढी दरि प्रभ मंगणा दरु कदे न छोड़े ॥ (३२३-१०, गउड़ी, मः ५)
नानक मनि तनि चाउ एहु नित प्रभ कउ लोड़े ॥२१॥१॥ सुधु कीचे (३२३-१०, गउड़ी, मः ५)
रागु गउड़ी भगताँ की बाणी (३२३-१२)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (३२३-१२)
गउड़ी गुआरेरी स्री कबीर जीउ के चउपदे १४ ॥ (३२३-१३)
अब मोहि जलत राम जलु पाइआ ॥ (३२३-१३, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
राम उदकि तनु जलत बुझाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२३-१३, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
मनु मारण कारणि बन जाईऐ ॥ (३२३-१४, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
सो जलु बिनु भगवंत न पाईऐ ॥१॥ (३२३-१४, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
जिह पावक सुरि नर है जारे ॥ (३२३-१५, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
राम उदकि जन जलत उबारे ॥२॥ (३२३-१५, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
भव सागर सुख सागर माही ॥ (३२३-१५, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
पीवि रहे जल निखुटत नाही ॥३॥ (३२३-१६, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर भजु सारिंगपानी ॥ (३२३-१६, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
राम उदकि मेरी तिखा बुझानी ॥४॥१॥ (३२३-१६, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२३-१७)
माधउ जल की पिआस न जाइ ॥ (३२३-१७, गउड़ी, कबीर जी)
जल महि अगनि उठी अधिकाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२३-१७, गउड़ी, कबीर जी)
तूं जलनिधि हउ जल का मीनु ॥ (३२३-१८, गउड़ी, कबीर जी)
जल महि रहउ जलहि बिनु खीनु ॥१॥ (३२३-१८, गउड़ी, कबीर जी)
तूं पिंजरु हउ सूअटा तोर ॥ (३२३-१८, गउड़ी, कबीर जी)
जमु मंजारु कहा करै मोर ॥२॥ (३२३-१९, गउड़ी, कबीर जी)
तूं तरवरु हउ पंखी आहि ॥ (३२३-१९, गउड़ी, कबीर जी)
मंदभागी तेरो दरसनु नाहि ॥३॥ (३२३-१९, गउड़ी, कबीर जी)

पन्ना ३२४

तूं सतिगुरु हउ नउतनु चेला ॥ (३२४-१, गउड़ी, कबीर जी)

कहि कबीर मिलु अंत की बेला ॥४॥२॥ (३२४-१, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२४-१)
जब हम एको एकु करि जानिआ ॥ (३२४-१, गउड़ी, कबीर जी)
तब लोगह काहे दुखु मानिआ ॥१॥ (३२४-२, गउड़ी, कबीर जी)
हम अपतह अपुनी पति खोई ॥ (३२४-२, गउड़ी, कबीर जी)
हमरै खोजि परहु मति कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (३२४-२, गउड़ी, कबीर जी)
हम मंदे मंदे मन माही ॥ (३२४-३, गउड़ी, कबीर जी)
साझ पाति काहू सिउ नाही ॥२॥ (३२४-३, गउड़ी, कबीर जी)
पति अपति ता की नही लाज ॥ (३२४-३, गउड़ी, कबीर जी)
तब जानहुगे जब उघरैगो पाज ॥३॥ (३२४-४, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर पति हरि परवानु ॥ (३२४-४, गउड़ी, कबीर जी)
सर्ब तिआगि भजु केवल रामु ॥४॥३॥ (३२४-४, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२४-५)
नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥ (३२४-५, गउड़ी, कबीर जी)
बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥ (३२४-५, गउड़ी, कबीर जी)
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥ (३२४-६, गउड़ी, कबीर जी)
जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥ रहाउ ॥ (३२४-६, गउड़ी, कबीर जी)
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥ (३२४-६, गउड़ी, कबीर जी)
मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥ (३२४-७, गउड़ी, कबीर जी)
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥ (३२४-७, गउड़ी, कबीर जी)
खुसरै किउ न पर्म गति पाई ॥३॥ (३२४-७, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥ (३२४-८, गउड़ी, कबीर जी)
राम नाम बिनु किनि गति पाई ॥४॥४॥ (३२४-८, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२४-८)
संधिआ प्रात इसनानु कराही ॥ (३२४-९, गउड़ी, कबीर जी)
जिउ भए दादुर पानी माही ॥१॥ (३२४-९, गउड़ी, कबीर जी)
जउ पै राम राम रति नाही ॥ (३२४-९, गउड़ी, कबीर जी)
ते सभि धर्म राइ कै जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (३२४-९, गउड़ी, कबीर जी)
काइआ रति बहु रूप रचाही ॥ (३२४-१०, गउड़ी, कबीर जी)
तिन कउ दइआ सुपनै भी नाही ॥२॥ (३२४-१०, गउड़ी, कबीर जी)
चारि चरन कहहि बहु आगर ॥ (३२४-११, गउड़ी, कबीर जी)
साधू सुखु पावहि कलि सागर ॥३॥ (३२४-११, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर बहु काइ करीजै ॥ (३२४-११, गउड़ी, कबीर जी)
सरबसु छोडि महा रसु पीजै ॥४॥५॥ (३२४-१२, गउड़ी, कबीर जी)
कबीर जी गउड़ी ॥ (३२४-१२)

किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥ (३२४-१२, गउड़ी, कबीर जी)
जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥ (३२४-१३, गउड़ी, कबीर जी)
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥ (३२४-१३, गउड़ी, कबीर जी)
चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ (३२४-१३, गउड़ी, कबीर जी)
परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥ (३२४-१४, गउड़ी, कबीर जी)
परहरु कामु क्रोधु अहंकारु ॥२॥ (३२४-१४, गउड़ी, कबीर जी)
कर्म करत बधे अहम्मेव ॥ (३२४-१४, गउड़ी, कबीर जी)
मिलि पाथर की करही सेव ॥३॥ (३२४-१५, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥ (३२४-१५, गउड़ी, कबीर जी)
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥४॥६॥ (३२४-१५, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२४-१६)
गरभ वास महि कुलु नही जाती ॥ (३२४-१६, गउड़ी, कबीर जी)
ब्रह्म बिंदु ते सभ उतपाती ॥१॥ (३२४-१६, गउड़ी, कबीर जी)
कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥ (३२४-१७, गउड़ी, कबीर जी)
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥ रहाउ ॥ (३२४-१७, गउड़ी, कबीर जी)
जौ तूं ब्राहमणु ब्रह्मणी जाइआ ॥ (३२४-१८, गउड़ी, कबीर जी)
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥ (३२४-१८, गउड़ी, कबीर जी)
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥ (३२४-१८, गउड़ी, कबीर जी)
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥ (३२४-१९, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर जो ब्रह्मु बीचारै ॥ (३२४-१९, गउड़ी, कबीर जी)
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारै ॥४॥७॥ (३२४-१९, गउड़ी, कबीर जी)

पन्ना ३२५

गउड़ी कबीर जी ॥ (३२५-१)
अंधकार सुखि कबहि न सोई है ॥ (३२५-१, गउड़ी, कबीर जी)
राजा रंकु दोऊ मिलि रोई है ॥१॥ (३२५-१, गउड़ी, कबीर जी)
जउ पै रसना रामु न कहिबो ॥ (३२५-१, गउड़ी, कबीर जी)
उपजत बिनसत रोवत रहिबो ॥१॥ रहाउ ॥ (३२५-२, गउड़ी, कबीर जी)
जस देखीऐ तरवर की छाइआ ॥ (३२५-२, गउड़ी, कबीर जी)
प्रान गए कहु का की माइआ ॥२॥ (३२५-३, गउड़ी, कबीर जी)
जस जंती महि जीउ समाना ॥ (३२५-३, गउड़ी, कबीर जी)
मूए मरमु को का कर जाना ॥३॥ (३२५-३, गउड़ी, कबीर जी)
हंसा सरवरु कालु सरीर ॥ (३२५-४, गउड़ी, कबीर जी)
राम रसाइन पीउ रे कबीर ॥४॥८॥ (३२५-४, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२५-४)

जोति की जाति जाति की जोती ॥ (३२५-४, गउड़ी, कबीर जी)
तितु लागे कंचूआ फल मोती ॥१॥ (३२५-५, गउड़ी, कबीर जी)
कवनु सु घरु जो निरभउ कहीऐ ॥ (३२५-५, गउड़ी, कबीर जी)
भउ भजि जाइ अभै होइ रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२५-५, गउड़ी, कबीर जी)
तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥ (३२५-६, गउड़ी, कबीर जी)
चार अचार रहे उरझाइ ॥२॥ (३२५-६, गउड़ी, कबीर जी)
पाप पुन्न दुइ एक समान ॥ (३२५-७, गउड़ी, कबीर जी)
निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥३॥ (३२५-७, गउड़ी, कबीर जी)
कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥ (३२५-७, गउड़ी, कबीर जी)
इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥४॥६॥ (३२५-७, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२५-८)
जो जन परमिति परमनु जाना ॥ (३२५-८, गउड़ी, कबीर जी)
बातन ही बैकुंठ समाना ॥१॥ (३२५-८, गउड़ी, कबीर जी)
ना जाना बैकुंठ कहा ही ॥ (३२५-९, गउड़ी, कबीर जी)
जानु जानु सभि कहहि तहा ही ॥१॥ रहाउ ॥ (३२५-९, गउड़ी, कबीर जी)
कहन कहावन नह पतीअई है ॥ (३२५-९, गउड़ी, कबीर जी)
तउ मनु मानै जा ते हउमै जई है ॥२॥ (३२५-१०, गउड़ी, कबीर जी)
जब लगु मनि बैकुंठ की आस ॥ (३२५-१०, गउड़ी, कबीर जी)
तब लगु होइ नही चरन निवासु ॥३॥ (३२५-११, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर इह कहीऐ काहि ॥ (३२५-११, गउड़ी, कबीर जी)
साधसंगति बैकुंठै आहि ॥४॥१०॥ (३२५-११, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२५-१२)
उपजै निपजै निपजि समाई ॥ (३२५-१२, गउड़ी, कबीर जी)
नैनह देखत इहु जगु जाई ॥१॥ (३२५-१२, गउड़ी, कबीर जी)
लाज न मरहु कहहु घरु मेरा ॥ (३२५-१२, गउड़ी, कबीर जी)
अंत की बार नही कछु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३२५-१३, गउड़ी, कबीर जी)
अनिक जतन करि काइआ पाली ॥ (३२५-१३, गउड़ी, कबीर जी)
मरती बार अगनि संगि जाली ॥२॥ (३२५-१४, गउड़ी, कबीर जी)
चोआ चंदनु मरदन अंगा ॥ (३२५-१४, गउड़ी, कबीर जी)
सो तनु जलै काठ कै संगा ॥३॥ (३२५-१४, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर सुनहु रे गुनीआ ॥ (३२५-१५, गउड़ी, कबीर जी)
बिनसैगो रूपु देखै सभ दुनीआ ॥४॥११॥ (३२५-१५, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२५-१५)
अवर मूए किआ सोगु करीजै ॥ (३२५-१५, गउड़ी, कबीर जी)
तउ कीजै जउ आपन जीजै ॥१॥ (३२५-१६, गउड़ी, कबीर जी)

मै न मरउ मरिबो संसारा ॥ (३२५-१६, गउड़ी, कबीर जी)
अब मोहि मिलिओ है जीआवनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (३२५-१६, गउड़ी, कबीर जी)
इआ देही परमल महकंदा ॥ (३२५-१७, गउड़ी, कबीर जी)
ता सुख बिसरे परमानंदा ॥२॥ (३२५-१७, गउड़ी, कबीर जी)
कूअटा एकु पंच पनिहारी ॥ (३२५-१८, गउड़ी, कबीर जी)
टूटी लाजु भरै मति हारी ॥३॥ (३२५-१८, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ (३२५-१८, गउड़ी, कबीर जी)
ना ओहु कूअटा ना पनिहारी ॥४॥१२॥ (३२५-१९, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२५-१९)
असथावर जंगम कीट पतंगा ॥ (३२५-१९, गउड़ी, कबीर जी)
अनिक जनम कीए बहु रंगा ॥१॥ (३२५-१९, गउड़ी, कबीर जी)

पन्ना ३२६

ऐसे घर हम बहुतु बसाए ॥ (३२६-१, गउड़ी, कबीर जी)
जब हम राम गरभ होइ आए ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-१, गउड़ी, कबीर जी)
जोगी जती तपी ब्रह्मचारी ॥ (३२६-२, गउड़ी, कबीर जी)
कबहू राजा छत्रपति कबहू भेखारी ॥२॥ (३२६-२, गउड़ी, कबीर जी)
साकत मरहि संत सभि जीवहि ॥ (३२६-२, गउड़ी, कबीर जी)
राम रसाइनु रसना पीवहि ॥३॥ (३२६-३, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर प्रभ किरपा कीजै ॥ (३२६-३, गउड़ी, कबीर जी)
हारि परे अब पूरा दीजै ॥४॥१३॥ (३२६-३, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी की नालि रलाइ लिखिआ महला ५ ॥ (३२६-४)
ऐसो अचरजु देखिओ कबीर ॥ (३२६-४, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
दधि कै भोलै बिरोलै नीरु ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-४, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
हरी अंगूरी गदहा चरै ॥ (३२६-५, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
नित उठि हासै हीगै मरै ॥१॥ (३२६-५, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
माता भैसा अम्मुहा जाइ ॥ (३२६-५, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
कुदि कुदि चरै रसातलि पाइ ॥२॥ (३२६-६, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
कहु कबीर परगटु भई खेड ॥ (३२६-६, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
लेले कउ चूघै नित भेड ॥३॥ (३२६-६, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
राम रमत मति परगटी आई ॥ (३२६-७, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
कहु कबीर गुरि सोझी पाई ॥४॥१॥१४॥ (३२६-७, गउड़ी, कबीर जी मः ५)
गउड़ी कबीर जी पंचपदे ॥ (३२६-७)
जिउ जल छोडि बाहरि भइओ मीना ॥ (३२६-८, गउड़ी, कबीर जी)
पूरब जनम हउ तप का हीना ॥१॥ (३२६-८, गउड़ी, कबीर जी)

अब कहु राम कवन गति मोरी ॥ (३२६-८, गउड़ी, कबीर जी)
तजी ले बनारस मति भई थोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-९, गउड़ी, कबीर जी)
सगल जनमु सिव पुरी गवाइआ ॥ (३२६-९, गउड़ी, कबीर जी)
मरती बार मगहरि उठि आइआ ॥२॥ (३२६-१०, गउड़ी, कबीर जी)
बहुतु बरस तपु कीआ कासी ॥ (३२६-१०, गउड़ी, कबीर जी)
मरनु भइआ मगहर की बासी ॥३॥ (३२६-१०, गउड़ी, कबीर जी)
कासी मगहर सम बीचारी ॥ (३२६-११, गउड़ी, कबीर जी)
ओछी भगति कैसे उतरसि पारी ॥४॥ (३२६-११, गउड़ी, कबीर जी)
कहु गुर गज सिव सभु को जानै ॥ (३२६-११, गउड़ी, कबीर जी)
मुआ कबीरु रमत स्री रामै ॥५॥१५॥ (३२६-१२, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२६-१२)
चोआ चंदन मरदन अंगा ॥ (३२६-१२, गउड़ी, कबीर जी)
सो तनु जलै काठ कै संगा ॥१॥ (३२६-१२, गउड़ी, कबीर जी)
इसु तन धन की कवन बडाई ॥ (३२६-१३, गउड़ी, कबीर जी)
धरनि परै उरवारि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-१३, गउड़ी, कबीर जी)
राति जि सोवहि दिन करहि काम ॥ (३२६-१४, गउड़ी, कबीर जी)
इकु खिनु लेहि न हरि को नाम ॥२॥ (३२६-१४, गउड़ी, कबीर जी)
हाथि त डोर मुखि खाइओ तम्बोर ॥ (३२६-१४, गउड़ी, कबीर जी)
मरती बार कसि बाधिओ चोर ॥३॥ (३२६-१५, गउड़ी, कबीर जी)
गुरमति रसि रसि हरि गुन गावै ॥ (३२६-१५, गउड़ी, कबीर जी)
रामै राम रमत सुखु पावै ॥४॥ (३२६-१५, गउड़ी, कबीर जी)
किरपा करि कै नामु दृड़ाई ॥ (३२६-१६, गउड़ी, कबीर जी)
हरि हरि बासु सुगंध बसाई ॥५॥ (३२६-१६, गउड़ी, कबीर जी)
कहत कबीर चेति रे अंधा ॥ (३२६-१६, गउड़ी, कबीर जी)
सति रामु झूठा सभु धंधा ॥६॥१६॥ (३२६-१७, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी तिपदे चारतुके ॥ (३२६-१७)
जम ते उलटि भए है राम ॥ (३२६-१७, गउड़ी, कबीर जी)
दुख बिनसे सुख कीओ बिसराम ॥ (३२६-१८, गउड़ी, कबीर जी)
बैरी उलटि भए है मीता ॥ (३२६-१८, गउड़ी, कबीर जी)
साकत उलटि सुजन भए चीता ॥१॥ (३२६-१८, गउड़ी, कबीर जी)
अब मोहि सर्ब कुसल करि मानिआ ॥ (३२६-१९, गउड़ी, कबीर जी)
साँति भई जब गोबिदु जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-१९, गउड़ी, कबीर जी)

पन्ना ३२७

तन महि होती कोटि उपाधि ॥ (३२७-१, गउड़ी, कबीर जी)

उलटि भई सुख सहजि समाधि ॥ (३२७-१, गउड़ी, कबीर जी)
आपु पछानै आपै आप ॥ (३२७-१, गउड़ी, कबीर जी)
रोगु न बिआपै तीनौ ताप ॥२॥ (३२७-१, गउड़ी, कबीर जी)
अब मनु उलटि सनातनु हूआ ॥ (३२७-२, गउड़ी, कबीर जी)
तब जानिआ जब जीवत मूआ ॥ (३२७-२, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥ (३२७-२, गउड़ी, कबीर जी)
आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥३॥१७॥ (३२७-३, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२७-३)
पिंडि मूऐ जीउ किह घरि जाता ॥ (३२७-३, गउड़ी, कबीर जी)
सबदि अतीति अनाहदि राता ॥ (३२७-४, गउड़ी, कबीर जी)
जिनि रामु जानिआ तिनहि पछानिआ ॥ (३२७-४, गउड़ी, कबीर जी)
जिउ गूंगे साकर मनु मानिआ ॥१॥ (३२७-५, गउड़ी, कबीर जी)
ऐसा गिआनु कथै बनवारी ॥ (३२७-५, गउड़ी, कबीर जी)
मन रे पवन दृड़ सुखमन नारी ॥१॥ रहाउ ॥ (३२७-५, गउड़ी, कबीर जी)
सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥ (३२७-६, गउड़ी, कबीर जी)
सो पदु रवहु जि बहुरि न रवना ॥ (३२७-६, गउड़ी, कबीर जी)
सो धिआनु धरहु जि बहुरि न धरना ॥ (३२७-६, गउड़ी, कबीर जी)
ऐसे मरहु जि बहुरि न मरना ॥२॥ (३२७-७, गउड़ी, कबीर जी)
उलटी गंगा जमुन मिलावउ ॥ (३२७-७, गउड़ी, कबीर जी)
बिनु जल संगम मन महि न्हावउ ॥ (३२७-७, गउड़ी, कबीर जी)
लोचा समसरि इहु बिउहारा ॥ (३२७-८, गउड़ी, कबीर जी)
ततु बीचारि किआ अवरि बीचारा ॥३॥ (३२७-८, गउड़ी, कबीर जी)
अपु तेजु बाइ पृथमी आकासा ॥ (३२७-८, गउड़ी, कबीर जी)
ऐसी रहत रहउ हरि पासा ॥ (३२७-९, गउड़ी, कबीर जी)
कहै कबीर निरंजन धिआवउ ॥ (३२७-९, गउड़ी, कबीर जी)
तितु घरि जाउ जि बहुरि न आवउ ॥४॥१८॥ (३२७-९, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी तिपदे ॥ (३२७-१०)
कंचन सिउ पाईऐ नही तोलि ॥ (३२७-१०, गउड़ी, कबीर जी)
मनु दे रामु लीआ है मोलि ॥१॥ (३२७-१०, गउड़ी, कबीर जी)
अब मोहि रामु अपुना करि जानिआ ॥ (३२७-११, गउड़ी, कबीर जी)
सहज सुभाइ मेरा मनु मानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२७-११, गउड़ी, कबीर जी)
ब्रहमै कथि कथि अंतु न पाइआ ॥ (३२७-१२, गउड़ी, कबीर जी)
राम भगति बैठे घरि आइआ ॥२॥ (३२७-१२, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर चंचल मति तिआगी ॥ (३२७-१२, गउड़ी, कबीर जी)
केवल राम भगति निज भागी ॥३॥१॥१९॥ (३२७-१३, गउड़ी, कबीर जी)

गउड़ी कबीर जी ॥ (३२७-१३)
जिह मरनै सभु जगतु तरासिआ ॥ (३२७-१३, गउड़ी, कबीर जी)
सो मरना गुर सबदि प्रगासिआ ॥१॥ (३२७-१४, गउड़ी, कबीर जी)
अब कैसे मरउ मरनि मनु मानिआ ॥ (३२७-१४, गउड़ी, कबीर जी)
मरि मरि जाते जिन रामु न जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२७-१४, गउड़ी, कबीर जी)
मरनो मरनु कहै सभु कोई ॥ (३२७-१५, गउड़ी, कबीर जी)
सहजे मरै अमरु होइ सोई ॥२॥ (३२७-१५, गउड़ी, कबीर जी)
कहु कबीर मनि भइआ अनंदा ॥ (३२७-१६, गउड़ी, कबीर जी)
गइआ भरमु रहिआ परमानंदा ॥३॥२०॥ (३२७-१६, गउड़ी, कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२७-१६)
कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥ (३२७-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥१॥ (३२७-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
लागी होइ सु जानै पीर ॥ (३२७-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राम भगति अनीआले तीर ॥१॥ रहाउ ॥ (३२७-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
एक भाइ देखउ सभ नारी ॥ (३२७-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥२॥ (३२७-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥ (३२७-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सभ परहरि ता कउ मिलै सुहागु ॥३॥२१॥ (३२७-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३२८

गउड़ी कबीर जी ॥ (३२८-१)
जा कै हरि सा ठाकुरु भाई ॥ (३२८-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मुकति अनंत पुकारणि जाई ॥१॥ (३२८-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ (३२८-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तब काहू का कवनु निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३२८-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तीनि लोक जा कै हहि भार ॥ (३२८-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सो काहे न करै प्रतिपार ॥२॥ (३२८-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर इक बुधि बीचारी ॥ (३२८-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
किआ बसु जउ बिखु दे महतारी ॥३॥२२॥ (३२८-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२८-३)
बिनु सत सती होइ कैसे नारि ॥ (३२८-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पंडित देखहु रिदै बीचारि ॥१॥ (३२८-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
प्रीति बिना कैसे बधै सनेहु ॥ (३२८-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जब लगु रसु तब लगु नही नेहु ॥१॥ रहाउ ॥ (३२८-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
साहनि सतु करै जीअ अपनै ॥ (३२८-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)

सो रमये कउ मिलै न सुपनै ॥२॥ (३२८-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तनु मनु धनु गृहु सउपि सरीरु ॥ (३२८-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सोई सुहागनि कहै कबीरु ॥३॥२३॥ (३२८-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२८-६)
बिखिआ बिआपिआ सगल संसारु ॥ (३२८-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बिखिआ लै डूबी परवारु ॥१॥ (३२८-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रे नर नाव चउड़ि कत बोड़ी ॥ (३२८-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हरि सिउ तोड़ि बिखिआ संगि जोड़ी ॥१॥ रहाउ ॥ (३२८-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सुरि नर दाधे लागी आगि ॥ (३२८-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निकटि नीरु पसु पीवसि न झागि ॥२॥ (३२८-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
चेतत चेतत निकसिओ नीरु ॥ (३२८-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सो जलु निरमलु कथत कबीरु ॥३॥२४॥ (३२८-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२८-१०)
जिह कुलि पूतु न गिआन बीचारी ॥ (३२८-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बिधवा कस न भई महतारी ॥१॥ (३२८-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जिह नर राम भगति नहि साधी ॥ (३२८-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जनमत कस न मुओ अपराधी ॥१॥ रहाउ ॥ (३२८-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मुचु मुचु गरभ गए कीन बचिआ ॥ (३२८-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बुडभुज रूप जीवे जग मझिआ ॥२॥ (३२८-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ (३२८-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
नाम बिना जैसे कुबज कुरूप ॥३॥२५॥ (३२८-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२८-१३)
जो जन लेहि खसम का नाउ ॥ (३२८-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥१॥ (३२८-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सो निरमलु निर्मल हरि गुन गावै ॥ (३२८-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सो भाई मेरै मनि भावै ॥१॥ रहाउ ॥ (३२८-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जिह घट रामु रहिआ भरपूरि ॥ (३२८-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तिन की पग पंकज हम धूरि ॥२॥ (३२८-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जाति जुलाहा मति का धीरु ॥ (३२८-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सहजि सहजि गुण रमै कबीरु ॥३॥२६॥ (३२८-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२८-१६)
गगनि रसाल चुऐ मेरी भाठी ॥ (३२८-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
संचि महा रसु तनु भइआ काठी ॥१॥ (३२८-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
उआ कउ कहीऐ सहज मतवारा ॥ (३२८-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पीवत राम रसु गिआन बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥ (३२८-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)

सहज कलालनि जउ मिलि आई ॥ (३२८-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
आनंदि माते अनदिनु जाई ॥२॥ (३२८-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
चीनत चीतु निरंजन लाइआ ॥ (३२८-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर तौ अनभउ पाइआ ॥३॥२७॥ (३२८-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२८-१६)
मन का सुभाउ मनहि बिआपी ॥ (३२८-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३२६

मनहि मारि कवन सिधि थापी ॥१॥ (३२६-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कवनु सु मुनि जो मनु मारै ॥ (३२६-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मन कउ मारि कहहु किसु तारै ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मन अंतरि बोलै सभु कोई ॥ (३२६-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मन मारे बिनु भगति न होई ॥२॥ (३२६-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जो जानै भेउ ॥ (३२६-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मनु मधुसूदनु तृभवण देउ ॥३॥२८॥ (३२६-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२६-३)
ओइ जु दीसहि अम्बरि तारे ॥ (३२६-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
किनि ओइ चीते चीतनहारे ॥१॥ (३२६-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु रे पंडित अम्बरु का सिउ लागा ॥ (३२६-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बूझै बूझनहारु सभागा ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सूरज चंदु करहि उजीआरा ॥ (३२६-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सभ महि पसरिआ ब्रह्म पसारा ॥२॥ (३२६-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जानैगा सोइ ॥ (३२६-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हिरदै रामु मुखि रामै होइ ॥३॥२६॥ (३२६-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२६-६)
बेद की पुत्री सिम्मृति भाई ॥ (३२६-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
साँकल जेवरी लै है आई ॥१॥ (३२६-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
आपन नगरु आप ते बाधिआ ॥ (३२६-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मोह कै फाधि काल सरु साँधिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२६-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कटी न कटै तूटि नह जाई ॥ (३२६-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सा सापनि होइ जग कउ खाई ॥२॥ (३२६-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ ॥ (३२६-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर मै राम कहि छूटिआ ॥३॥३०॥ (३२६-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२६-६)
देइ मुहार लगामु पहिरावउ ॥ (३२६-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)

सगल त जीनु गगन दउरावउ ॥१॥ (३२९-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अपनै बीचारि असवारी कीजै ॥ (३२९-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सहज कै पावड़ै पगु धरि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (३२९-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
चलु रे बैकुंठ तुझहि ले तारउ ॥ (३२९-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हिचहि त प्रेम कै चाबुक मारउ ॥२॥ (३२९-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहत कबीर भले असवारा ॥ (३२९-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बेद कतेब ते रहहि निरारा ॥३॥३१॥ (३२९-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२९-१२)
जिह मुखि पाँचउ अमृत खाए ॥ (३२९-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तिह मुख देखत लूकट लाए ॥१॥ (३२९-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इकु दुखु राम राइ काटहु मेरा ॥ (३२९-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अगनि दहै अरु गरभ बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३२९-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
काइआ बिगूती बहु बिधि भाती ॥ (३२९-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
को जारे को गडि ले माटी ॥२॥ (३२९-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर हरि चरण दिखावहु ॥ (३२९-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पाछै ते जमु किउ न पठावहु ॥३॥३२॥ (३२९-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३२९-१५)
आपे पावकु आपे पवना ॥ (३२९-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जारै खसमु त राखै कवना ॥१॥ (३२९-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राम जपत तनु जरि की न जाइ ॥ (३२९-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राम नाम चितु रहिआ समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३२९-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
का को जरै काहि होइ हानि ॥ (३२९-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
नट वट खेलै सारिगपानि ॥२॥ (३२९-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर अखर दुइ भाखि ॥ (३२९-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
होइगा खसमु त लेइगा राखि ॥३॥३३॥ (३२९-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी दुपदे ॥ (३२९-१८)
ना मै जोग धिआन चितु लाइआ ॥ (३२९-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बिनु बैराग न छूटसि माइआ ॥१॥ (३२९-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कैसे जीवनु होइ हमारा ॥ (३२९-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३०

जब न होइ राम नाम अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (३३०-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर खोजउ असमान ॥ (३३०-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राम समान न देखउ आन ॥२॥३४॥ (३३०-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी कबीर जी ॥ (३३०-२)

जिह सिरि रचि रचि बाधत पाग ॥ (३३०-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सो सिरु चुंच सवारहि काग ॥१॥ (३३०-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इसु तन धन को किआ गरबईआ ॥ (३३०-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राम नामु काहे न दृड़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३०-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ (३३०-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इही हवाल होहिगे तेरे ॥२॥३५॥ (३३०-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी गुआरेरी के पदे पैतीस ॥ (३३०-४)
रागु गउड़ी गुआरेरी असटपदी कबीर जी की (३३०-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३३०-६)
सुखु माँगत दुखु आगै आवै ॥ (३३०-६, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
सो सुखु हमहु न माँगिआ भावै ॥१॥ (३३०-६, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
बिखिआ अजहु सुरति सुख आसा ॥ (३३०-६, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
कैसे होई है राजा राम निवासा ॥१॥ रहाउ ॥ (३३०-७, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
इसु सुख ते सिव ब्रह्म डराना ॥ (३३०-७, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
सो सुखु हमहु साचु करि जाना ॥२॥ (३३०-८, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
सनकादिक नारद मुनि सेखा ॥ (३३०-८, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
तिन भी तन महि मनु नही पेखा ॥३॥ (३३०-८, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ (३३०-९, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
तन छूटे मनु कहा समाई ॥४॥ (३३०-९, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
गुर परसादी जैदेउ नामाँ ॥ (३३०-९, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
भगति कै प्रेमि इन ही है जानाँ ॥५॥ (३३०-१०, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
इसु मन कउ नही आवन जाना ॥ (३३०-१०, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
जिस का भरमु गइआ तिनि साचु पछाना ॥६॥ (३३०-१०, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
इसु मन कउ रूपु न रेखिआ काई ॥ (३३०-११, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
हुकमे होइआ हुकमु बूझि समाई ॥७॥ (३३०-११, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
इस मन का कोई जानै भेउ ॥ (३३०-११, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
इह मनि लीण भए सुखदेउ ॥८॥ (३३०-१२, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
जीउ एकु अरु सगल सरीरा ॥ (३३०-१२, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
इसु मन कउ रवि रहे कबीरा ॥९॥१॥३६॥ (३३०-१२, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
गउड़ी गुआरेरी ॥ (३३०-१३)
अहिनिसि एक नाम जो जागे ॥ (३३०-१३, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
केतक सिध भए लिव लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (३३०-१३, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
साधक सिध सगल मुनि हारे ॥ (३३०-१४, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
एक नाम कलिप तर तारे ॥१॥ (३३०-१४, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
जो हरि हरे सु होहि न आना ॥ (३३०-१४, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)

कहि कबीर राम नाम पछाना ॥२॥३७॥ (३३०-१५, गउड़ी गुआरेरी, भगत कबीर जी)
गउड़ी भी सोरठि भी ॥ (३३०-१५)
रे जीअ निलज लाज तुोहि नाही ॥ (३३०-१५, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
हरि तजि कत काहू के जाँही ॥१॥ रहाउ ॥ (३३०-१६, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जा को ठाकुरु ऊचा होई ॥ (३३०-१६, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
सो जनु पर घर जात न सोही ॥१॥ (३३०-१६, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
सो साहिबु रहिआ भरपूरि ॥ (३३०-१७, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
सदा संगि नाही हरि दूरि ॥२॥ (३३०-१७, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कवला चरन सरन है जा के ॥ (३३०-१७, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥ (३३०-१८, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥ (३३०-१८, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
सो सम्रथु निज पति है दाता ॥४॥ (३३०-१८, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥ (३३०-१९, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जा के हिरदै अवरु न होई ॥५॥३८॥ (३३०-१९, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३१

कउनु को पूतु पिता को का को ॥ (३३१-१, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कउनु मरै को देइ संतापो ॥१॥ (३३१-१, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
हरि ठग जग कउ ठगउरी लाई ॥ (३३१-१, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
हरि के बिओग कैसे जीअउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (३३१-२, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कउन को पुरखु कउन की नारी ॥ (३३१-२, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
इआ तत लेहु सरीर बिचारी ॥२॥ (३३१-२, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कहि कबीर ठग सिउ मनु मानिआ ॥ (३३१-३, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
गई ठगउरी ठगु पहिचानिआ ॥३॥३९॥ (३३१-३, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥ (३३१-४, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जनम मरन कटि पर्म गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३३१-४, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
साधू संगति दीओ रलाइ ॥ (३३१-५, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥ (३३१-५, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
अमृत नामु जपउ जपु रसना ॥ (३३१-५, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
अमोल दासु करि लीनो अपना ॥१॥ (३३१-५, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
सतिगुर कीनो परउपकारु ॥ (३३१-६, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
काढि लीन सागर संसार ॥ (३३१-६, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (३३१-६, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥२॥ (३३१-७, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥ (३३१-७, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)

मनि संतोखु नामु आधारु ॥ (३३१-८, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥ (३३१-८, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जत पेखउ तत अंतरजामी ॥३॥ (३३१-८, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
अपनी भगति आप ही दृड़ाई ॥ (३३१-९, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥ (३३१-९, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जिसु कृपा करे तिसु पूरन साज ॥ (३३१-९, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥४॥४०॥ (३३१-१०, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जलि है सूतकु थलि है सूतकु सूतक ओपति होई ॥ (३३१-१०, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
जनमे सूतकु मूए फुनि सूतकु सूतक परज बिगोई ॥१॥ (३३१-११, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कहु रे पंडीआ कउन पवीता ॥ (३३१-११, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
ऐसा गिआनु जपहु मेरे मीता ॥१॥ रहाउ ॥ (३३१-१२, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
नैनहु सूतकु बैनहु सूतकु सूतकु स्रवनी होई ॥ (३३१-१२, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
ऊठत बैठत सूतकु लागै सूतकु परै रसोई ॥२॥ (३३१-१२, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
फासन की बिधि सभु कोऊ जानै छूटन की इकु कोई ॥ (३३१-१३, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
कहि कबीर रामु रिदै बिचारै सूतकु तिनै न होई ॥३॥४१॥ (३३१-१४, गउड़ी अते सोरठि, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३१-१४)
झगरा एकु निबेरहु राम ॥ (३३१-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (३३१-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥ (३३१-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥१॥ (३३१-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
ब्रह्मा बडा कि जासु उपाइआ ॥ (३३१-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बेदु बडा कि जहाँ ते आइआ ॥२॥ (३३१-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥ (३३१-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥३॥४२॥ (३३१-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रागु गउड़ी चेती ॥ (३३१-१७)
देखौ भाई ज्ञान की आई आँधी ॥ (३३१-१८, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बाँधी ॥१॥ रहाउ ॥ (३३१-१८, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
दुचिते की दुइ थूनि गिरानी मोह बलेडा टूटा ॥ (३३१-१९, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
तिसना छानि परी धर ऊपरि दुरमति भाँडा फूटा ॥१॥ (३३१-१९, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३२

आँधी पाछे जो जलु बरखै तिहि तेरा जनु भीनाँ ॥ (३३२-१, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
कहि कबीर मनि भइआ प्रगासा उदै भानु जब चीना ॥२॥४३॥ (३३२-१, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
गउड़ी चेती (३३२-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३३२-३)

हरि जसु सुनहि न हरि गुन गावहि ॥ (३३२-४, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
बातन ही असमानु गिरावहि ॥१॥ (३३२-४, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
ऐसे लोगन सिउ किआ कहीऐ ॥ (३३२-४, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
जो प्रभ कीए भगति ते बाहज तिन ते सदा डराने रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३२-५, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
आपि न देहि चुरू भरि पानी ॥ (३३२-५, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
तिह निंदहि जिह गंगा आनी ॥२॥ (३३२-६, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
बैठत उठत कुटिलता चालहि ॥ (३३२-६, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
आपु गए अउरन हू घालहि ॥३॥ (३३२-६, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
छाडि कुचरचा आन न जानहि ॥ (३३२-७, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
ब्रह्मा हू को कहिओ न मानहि ॥४॥ (३३२-७, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
आपु गए अउरन हू खोवहि ॥ (३३२-७, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
आगि लगाइ मंदर मै सोवहि ॥५॥ (३३२-८, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
अवरन हसत आप हहि काँने ॥ (३३२-८, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
तिन कउ देखि कबीर लजाने ॥६॥१॥४४॥ (३३२-८, गउड़ी चेती, भगत कबीर जी)
रागु गउड़ी बैरागणि कबीर जी (३३२-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३३२-१०)
जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥ (३३२-११, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥१॥ (३३२-११, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥ (३३२-१२, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥१॥ रहाउ ॥ (३३२-१२, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥ (३३२-१३, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन कहिआ न लेही ॥२॥ (३३२-१३, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
सरजीउ काटहि निरजीउ पूजहि अंत काल कउ भारी ॥ (३३२-१४, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
राम नाम की गति नही जानी भै डूबे संसारी ॥३॥ (३३२-१४, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
देवी देवा पूजहि डोलहि पारब्रह्मु नही जाना ॥ (३३२-१५, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
कहत कबीर अकुलु नही चेतिआ बिखिआ सिउ लपटाना ॥४॥१॥४५॥ (३३२-१५, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३२-१६)
जीवत मरै मरै फुनि जीवै ऐसे सुंनि समाइआ ॥ (३३२-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ बहुड़ि न भवजलि पाइआ ॥१॥ (३३२-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मेरे राम ऐसा खीरु बिलोईऐ ॥ (३३२-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गुरमति मनूआ असथिरु राखहु इन बिधि अमृतु पीओईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३२-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गुर कै बाणि बजर कल छेदी प्रगटिआ पदु परगासा ॥ (३३२-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सकति अधेर जेवड़ी भ्रमु चूका निहचलु सिव घरि बासा ॥२॥ (३३२-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तिनि बिनु बाणै धनखु चढाईऐ इहु जगु बेधिआ भाई ॥ (३३२-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

दह दिस बूडी पवनु झुलावै डोरि रही लिव लाई ॥३॥ (३३३-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
उनमनि मनूआ सुंनि समाना दुबिधा दुरमति भागी ॥ (३३३-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर अनभउ इकु देखिआ राम नामि लिव लागी ॥४॥२॥४६॥ (३३३-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी बैरागणि तिपदे ॥ (३३३-३)
उलटत पवन चक्र खटु भेदे सुरति सुन्न अनरागी ॥ (३३३-३, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
आवै न जाइ मरै न जीवै तासु खोजु बैरागी ॥१॥ (३३३-४, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
मेरे मन मन ही उलटि समाना ॥ (३३३-४, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
गुर परसादि अकलि भई अवरै नातरु था बेगाना ॥१॥ रहाउ ॥ (३३३-५, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
निवरै दूरि दूरि फुनि निवरै जिनि जैसा करि मानिआ ॥ (३३३-५, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
अलउती का जैसे भइआ बरेडा जिनि पीआ तिनि जानिआ ॥२॥ (३३३-६, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
तेरी निरगुन कथा काइ सिउ कहीऐ ऐसा कोइ बिबेकी ॥ (३३३-६, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जिनि दीआ पलीता तिनि तैसी झल देखी ॥३॥३॥४७॥ (३३३-७, गउड़ी बैरागणि, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३३-८)
तह पावस सिंधु धूप नही छहीआ तह उतपति परलउ नाही ॥ (३३३-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जीवन मिरतु न दुखु सुखु बिआपै सुन्न समाधि दोऊ तह नाही ॥१॥ (३३३-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सहज की अकथ कथा है निरारी ॥ (३३३-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तुलि नही चढै जाइ न मुकाती हलुकी लगै न भारी ॥१॥ रहाउ ॥ (३३३-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अर्ध उरध दोऊ तह नाही राति दिनसु तह नाही ॥ (३३३-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जलु नही पवनु पावकु फुनि नाही सतिगुर तहा समाही ॥२॥ (३३३-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अगम अगोचरु रहै निरंतरि गुर किरपा ते लहीऐ ॥ (३३३-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर बलि जाउ गुर अपुने सतसंगति मिलि रहीऐ ॥३॥४॥४८॥ (३३३-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३३-१३)
पापु पुन्नु दुइ बैल बिसाहे पवनु पूजी परगासिओ ॥ (३३३-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तृसना गूणि भरी घट भीतरि इन बिधि टाँड बिसाहिओ ॥१॥ (३३३-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
ऐसा नाइकु रामु हमारा ॥ (३३३-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सगल संसारु कीओ बनजारा ॥१॥ रहाउ ॥ (३३३-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कामु क्रोधु दुइ भए जगाती मन तरंग बटवारा ॥ (३३३-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पंच ततु मिलि दानु निबेरहि टाँडा उतरिओ पारा ॥२॥ (३३३-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहत कबीरु सुनहु रे संतहु अब ऐसी बनि आई ॥ (३३३-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
घाटी चढत बैलु इकु थाका चलो गोनि छिटकाई ॥३॥५॥४९॥ (३३३-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी पंचपदा ॥ (३३३-१७)
पेवकड़ै दिन चारि है साहुरड़ै जाणा ॥ (३३३-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अंधा लोकु न जाणई मूरखु एआणा ॥१॥ (३३३-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)

कहु डडीआ बाधै धन खड़ी ॥ (३३३-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पाहू घरि आए मुकलाऊ आए ॥१॥ रहाउ ॥ (३३३-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
ओह जि दिसै खूहड़ी कउन लाजु वहारी ॥ (३३३-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
लाजु घड़ी सिउ तूटि पड़ी उठि चली पनिहारी ॥२॥ (३३३-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
साहिबु होइ दइआलु कृपा करे अपुना कारजु सवारे ॥ (३३३-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३४

ता सोहागणि जाणीऐ गुर सबदु बीचारे ॥३॥ (३३४-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
किरत की बाँधी सभ फिरै देखहु बीचारी ॥ (३३४-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
एस नो किआ आखीऐ किआ करे विचारी ॥४॥ (३३४-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
भई निरासी उठि चली चित बंधि न धीरा ॥ (३३४-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हरि की चरणी लागि रहु भजु सरणि कबीरा ॥५॥६॥५०॥ (३३४-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३४-३)
जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई ॥ (३३४-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रुंडित मुंडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई ॥१॥ (३३४-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हरि बिनु भरमि भुलाने अंधा ॥ (३३४-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जा पहि जाउ आपु छुटकावनि ते बाधे बहु फंधा ॥१॥ रहाउ ॥ (३३४-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥ (३३४-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही ॥२॥ (३३४-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जिसहि बुझाए सोई बूझै बिनु बूझे किउ रहीऐ ॥ (३३४-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सतिगुरु मिलै अंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ ॥३॥ (३३४-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तजि बावे दाहने बिकारा हरि पदु दृड़ु करि रहीऐ ॥ (३३४-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर गूंगै गुड़ु खाइआ पूछे ते किआ कहीऐ ॥४॥७॥५१॥ (३३४-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रागु गउड़ी पूरबी कबीर जी ॥ (३३४-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३३४-१०)
जह कछु अहा तहा किछु नाही पंच ततु तह नाही ॥ (३३४-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
इड़ा पिंगुला सुखमन बंदे ए अवगन कत जाही ॥१॥ (३३४-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तागा तूटा गगनु बिनसि गइआ तेरा बोलतु कहा समाई ॥ (३३४-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
एह संसा मो कउ अनदिनु बिआपै मो कउ को न कहै समझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३३४-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जह बरभंडु पिंडु तह नाही रचनहारु तह नाही ॥ (३३४-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जोड़नहारो सदा अतीता इह कहीऐ किसु माही ॥२॥ (३३४-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जोड़ी जुड़ै न तोड़ी तूटै जब लगु होइ बिनासी ॥ (३३४-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
का को ठाकुरु का को सेवकु को काहू कै जासी ॥३॥ (३३४-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर लिव लागि रही है जहा बसे दिन राती ॥ (३३४-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

उआ का मरमु ओही परु जानै ओहु तउ सदा अबिनासी ॥४॥१॥५२॥ (३३४-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३४-१६)
सुरति सिमृति दुइ कन्नी मुंदा परमिति बाहरि खिंथा ॥ (३३४-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सुन्न गुफा महि आसणु बैसणु कलप बिबरजित पंथा ॥१॥ (३३४-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मेरे राजन मै बैरागी जोगी ॥ (३३४-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मरत न सोग बिओगी ॥१॥ रहाउ ॥ (३३४-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
खंड ब्रहमंड महि सिंङी मेरा बटूआ सभु जगु भसमाधारी ॥ (३३४-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
ताड़ी लागी तृपलु पलटीऐ छूटै होइ पसारी ॥२॥ (३३४-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मनु पवनु दुइ तूम्बा करी है जुग जुग सारद साजी ॥ (३३४-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३५

थिरु भई तंती तूटसि नाही अनहद किंगुरी बाजी ॥३॥ (३३५-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सुनि मन मगन भए है पूरे माइआ डोल न लागी ॥ (३३५-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर ता कउ पुनरपि जनमु नही खेलि गइओ बैरागी ॥४॥२॥५३॥ (३३५-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३५-३)
गज नव गज दस गज इकीस पुरीआ एक तनाई ॥ (३३५-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
साठ सूत नव खंड बहतरि पाटु लगो अधिकाई ॥१॥ (३३५-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गई बुनावन माहो ॥ (३३५-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
घर छोडिऐ जाइ जुलाहो ॥१॥ रहाउ ॥ (३३५-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गजी न मिनीऐ तोलि न तुलीऐ पाचनु सेर अढाई ॥ (३३५-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जौ करि पाचनु बेगि न पावै झगरु करै घरहाई ॥२॥ (३३५-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
दिन की बैठ खसम की बरकस इह बेला कत आई ॥ (३३५-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
छूटे कूंडे भीगै पुरीआ चलिओ जुलाहो रीसाई ॥३॥ (३३५-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
छोछी नली तंतु नही निकसै नतर रही उरझाई ॥ (३३५-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
छोडि पसारु ईहा रहु बपुरी कहु कबीर समझाई ॥४॥३॥५४॥ (३३५-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३५-८)
एक जोति एका मिली किम्बा होइ महोइ ॥ (३३५-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जितु घटि नामु न ऊपजै फूटि मरै जनु सोइ ॥१॥ (३३५-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सावल सुंदर रामईआ ॥ (३३५-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मेरा मनु लागा तोहि ॥१॥ रहाउ ॥ (३३५-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
साधु मिलै सिधि पाईऐ कि एहु जोगु कि भोगु ॥ (३३५-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
दुहु मिलि कारजु ऊपजै राम नाम संजोगु ॥२॥ (३३५-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रह्म बीचार ॥ (३३५-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जिउ कासी उपदेसु होइ मानस मरती बार ॥३॥ (३३५-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥ (३३५-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)

कहु कबीर संसा नही अंति पर्म गति पाइ ॥४॥१॥४॥५५॥ (३३५-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३५-१२)
जेते जतन करत ते डूबे भव सागरु नही तारिओ रे ॥ (३३५-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कर्म धर्म करते बहु संजम अहम्बुधि मनु जारिओ रे ॥१॥ (३३५-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सास ग्रास को दातो ठाकुरु सो किउ मनहु बिसारिओ रे ॥ (३३५-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हीरा लालु अमोलु जनमु है कउडी बदलै हारिओ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३३५-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तृसना तृखा भूख भ्रमि लागी हिरदै नाहि बीचारिओ रे ॥ (३३५-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
उनमत मान हिरिओ मन माही गुर का सबदु न धारिओ रे ॥२॥ (३३५-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सुआद लुभत इंद्री रस प्रेरिओ मद रस लैत बिकारिओ रे ॥ (३३५-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कर्म भाग संतन संगाने कासट लोह उधारिओ रे ॥३॥ (३३५-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
धावत जोनि जनम भ्रमि थाके अब दुख करि हम हारिओ रे ॥ (३३५-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर गुर मिलत महा रसु प्रेम भगति निसतारिओ रे ॥४॥१॥५॥५६॥ (३३५-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३५-१९)
कालबूत की हसतनी मन बउरा रे चलतु रचिओ जगदीस ॥ (३३५-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
काम सुआइ गज बसि परे मन बउरा रे अंकसु सहिओ सीस ॥१॥ (३३५-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३६

बिखै बाचु हरि राचु समझु मन बउरा रे ॥ (३३६-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निरभै होइ न हरि भजे मन बउरा रे गहिओ न राम जहाजु ॥१॥ रहाउ ॥ (३३६-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मरकट मुसटी अनाज की मन बउरा रे लीनी हाथु पसारि ॥ (३३६-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
छूटन को सहसा परिआ मन बउरा रे नाचिओ घर घर बारि ॥२॥ (३३६-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जिउ नलनी सूअटा गहिओ मन बउरा रे माया इहु बिउहारु ॥ (३३६-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जैसा रंगु कसुम्भ का मन बउरा रे तिउ पसरिओ पासारु ॥३॥ (३३६-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
नावन कउ तीर्थ घने मन बउरा रे पूजन कउ बहु देव ॥ (३३६-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर छूटनु नही मन बउरा रे छूटनु हरि की सेव ॥४॥१॥६॥५७॥ (३३६-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३६-६)
अगनि न दहै पवनु नही मगनै तसकरु नेरि न आवै ॥ (३३६-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राम नाम धनु करि संचउनी सो धनु कत ही न जावै ॥१॥ (३३६-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हमरा धनु माधउ गोबिंदु धरणीधरु इहै सार धनु कहीऐ ॥ (३३६-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जो सुखु प्रभ गोबिंद की सेवा सो सुखु राजि न लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३६-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इसु धन कारणि सिव सनकादिक खोजत भए उदासी ॥ (३३६-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मनि मुकंदु जिहबा नाराइनु परै न जम की फासी ॥२॥ (३३६-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निज धनु गिआनु भगति गुरि दीनी तासु सुमति मनु लागा ॥ (३३६-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जलत अम्भ थंभि मनु धावत भर्म बंधन भउ भागा ॥३॥ (३३६-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहै कबीरु मदन के माते हिरदै देखु बीचारी ॥ (३३६-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)

तुम घरि लाख कोटि अस्व हसती हम घरि एकु मुरारी ॥४॥१॥७॥५८॥ (३३६-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३६-१२)
जिउ कपि के कर मुसटि चनन की लुबधि न तिआगु दइओ ॥ (३३६-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जो जो कर्म कीए लालच सिउ ते फिरि गरहि परिओ ॥१॥ (३३६-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
भगति बिनु बिरथे जनमु गइओ ॥ (३३६-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३६-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जिउ उदिआन कुसम परफुलित किनहि न घ्राउ लइओ ॥ (३३६-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तैसे भ्रमत अनेक जोनि महि फिरि फिरि काल हइओ ॥२॥ (३३६-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इआ धन जोबन अरु सुत दारा पेखन कउ जु दइओ ॥ (३३६-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तिन ही माहि अटकि जो उरझे इंद्री प्रेरि लइओ ॥३॥ (३३६-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अउध अनल तनु तिन को मंदरु चहु दिस ठाटु ठइओ ॥ (३३६-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर भै सागर तरन कउ मै सतिगुर ओट लइओ ॥४॥१॥८॥५९॥ (३३६-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३६-१८)
पानी मैला माटी गोरी ॥ (३३६-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इस माटी की पुतरी जोरी ॥१॥ (३३६-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मै नाही कछु आहि न मोरा ॥ (३३६-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तनु धनु सभु रसु गोबिंद तोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३३६-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इस माटी महि पवनु समाइआ ॥ (३३६-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३७

झूठा परपंचु जोरि चलाइआ ॥२॥ (३३७-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
किनहू लाख पाँच की जोरी ॥ (३३७-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अंत की बार गगरीआ फोरी ॥३॥ (३३७-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर इक नीव उसारी ॥ (३३७-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
खिन महि बिनसि जाइ अहंकारी ॥४॥१॥९॥६०॥ (३३७-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३७-३)
राम जपउ जीअ ऐसे ऐसे ॥ (३३७-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
ध्रू प्रहिलाद जपिओ हरि जैसे ॥१॥ (३३७-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
दीन दइआल भरोसे तेरे ॥ (३३७-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सभु परवारु चड़ाइआ बेड़े ॥१॥ रहाउ ॥ (३३७-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जा तिसु भावै ता हुकमु मनावै ॥ (३३७-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
इस बेड़े कउ पारि लघावै ॥२॥ (३३७-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गुर परसादि ऐसी बुधि समानी ॥ (३३७-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
चूकि गई फिरि आवन जानी ॥३॥ (३३७-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ (३३७-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)

उरवारि पारि सभ एको दानी ॥४॥२॥१०॥६१॥ (३३७-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ६ ॥ (३३७-६)
जोनि छाडि जउ जग महि आइओ ॥ (३३७-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
लागत पवन खसमु बिसराइओ ॥१॥ (३३७-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जीअरा हरि के गुना गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३७-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गरभ जोनि महि उरध तपु करता ॥ (३३७-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तउ जठर अगनि महि रहता ॥२॥ (३३७-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
लख चउरासीह जोनि भ्रमि आइओ ॥ (३३७-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अब के छुटके ठउर न ठाइओ ॥३॥ (३३७-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहु कबीर भजु सारिगपानी ॥ (३३७-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
आवत दीसै जात न जानी ॥४॥१॥११॥६२॥ (३३७-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी पूरबी ॥ (३३७-१०)
सुरग बासु न बाछीऐ डरीऐ न नरकि निवासु ॥ (३३७-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
होना है सो होई है मनहि न कीजै आस ॥१॥ (३३७-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
रमईआ गुन गाईऐ ॥ (३३७-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जा ते पाईऐ पर्म निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (३३७-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
किआ जपु किआ तपु संजमो किआ बरतु किआ इसनानु ॥ (३३७-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जब लगु जुगति न जानीऐ भाउ भगति भगवान ॥२॥ (३३७-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सम्पै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ ॥ (३३७-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जिउ सम्पै तिउ बिपति है बिध ने रचिआ सो होइ ॥३॥ (३३७-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर अब जानिआ संतन रिदै मझारि ॥ (३३७-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सेवक सो सेवा भले जिह घट बसै मुरारि ॥४॥१॥१२॥६३॥ (३३७-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३७-१५)
रे मन तेरो कोइ नही खिंचि लेइ जिनि भारु ॥ (३३७-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसारु ॥१॥ (३३७-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राम रसु पीआ रे ॥ (३३७-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जिह रस बिसरि गए रस अउर ॥१॥ रहाउ ॥ (३३७-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अउर मुए किआ रोईऐ जउ आपा थिरु न रहाइ ॥ (३३७-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जो उपजै सो बिनसि है दुखु करि रोवै बलाइ ॥२॥ (३३७-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जह की उपजी तह रची पीवत मरदन लाग ॥ (३३७-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर चिति चेतिआ राम सिमरि बैराग ॥३॥२॥१३॥६४॥ (३३७-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रागु गउड़ी ॥ (३३७-१९)
पंथु निहारै कामनी लोचन भरी ले उसासा ॥ (३३७-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

उर न भीजै पगु ना खिसै हरि दरसन की आसा ॥१॥ (३३८-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
उडहु न कागा कारे ॥ (३३८-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बेगि मिलीजै अपुने राम पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (३३८-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर जीवन पद कारनि हरि की भगति करीजै ॥ (३३८-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
एकु आधारु नामु नाराइन रसना रामु रवीजै ॥२॥१॥१४॥६५॥ (३३८-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रागु गउड़ी ११ ॥ (३३८-३)
आस पास घन तुरसी का बिरवा माझ बना रसि गाऊं रे ॥ (३३८-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
उआ का सरूपु देखि मोही गुआरनि मो कउ छोडि न आउ न जाहू रे ॥१॥ (३३८-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तोहि चरन मनु लागो सारिंगधर ॥ (३३८-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सो मिलै जो बडभागो ॥१॥ रहाउ ॥ (३३८-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बिंद्राबन मन हरन मनोहर कृसन चरावत गाऊ रे ॥ (३३८-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जा का ठाकुरु तुही सारिंगधर मोहि कबीरा नाऊ रे ॥२॥२॥१५॥६६॥ (३३८-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी पूरबी १२ ॥ (३३८-७)
बिपल बसत्र केते है पहिरे किआ बन मधे बासा ॥ (३३८-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
कहा भइआ नर देवा धोखे किआ जलि बोरिओ गिआता ॥१॥ (३३८-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जीअरे जाहिगा मै जानाँ ॥ (३३८-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अबिगत समझु इआना ॥ (३३८-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जत जत देखउ बहुरि न पेखउ संगि माइआ लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥ (३३८-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
गिआनी धिआनी बहु उपदेसी इहु जगु सगलो धंधा ॥ (३३८-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर इक राम नाम बिनु इआ जगु माइआ अंधा ॥२॥१॥१६॥६७॥ (३३८-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
गउड़ी १२ ॥ (३३८-११)
मन रे छाडहु भरमु प्रगट होइ नाचहु इआ माइआ के डाँडे ॥ (३३८-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सूरु कि सनमुख रन ते डरपै सती कि साँचै भाँडे ॥१॥ (३३८-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
डगमग छाडि रे मन बउरा ॥ (३३८-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अब तउ जरे मरे सिधि पाईऐ लीनो हाथि संधउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३३८-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
काम क्रोध माइआ के लीने इआ बिधि जगतु बिगूता ॥ (३३८-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर राजा राम न छोडउ सगल ऊच ते ऊचा ॥२॥२॥१७॥६८॥ (३३८-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी १३ ॥ (३३८-१४)
फुरमानु तेरा सिरै ऊपरि फिरि न करत बीचार ॥ (३३८-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तुही दरीआ तुही करीआ तुझै ते निसतार ॥१॥ (३३८-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बंदे बंदगी इकतीआर ॥ (३३८-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
साहिबु रोसु धरउ कि पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (३३८-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
नामु तेरा आधारु मेरा जिउ फूलु जई है नारि ॥ (३३८-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)

कहि कबीर गुलामु घर का जीआइ भावै मारि ॥२॥१८॥६९॥ (३३८-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३८-१७)
लख चउरासीह जीअ जोनि महि भ्रमत नंदु बहु थाको रे ॥ (३३८-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
भगति हेति अवतारु लीओ है भागु बडो बपुरा को रे ॥१॥ (३३८-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तुम्ह जु कहत हउ नंद को नंदनु नंद सु नंदनु का को रे ॥ (३३८-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
धरनि अकासु दसो दिस नाही तब इहु नंदु कहा थो रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३३८-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३३९

संकटि नही परै जोनि नही आवै नामु निरंजन जा को रे ॥ (३३९-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कबीर को सुआमी ऐसो ठाकुरु जा कै माई न बापो रे ॥२॥१९॥७०॥ (३३९-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३९-२)
निंदउ निंदउ मो कउ लोगु निंदउ ॥ (३३९-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदा जन कउ खरी पिआरी ॥ (३३९-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदा बापु निंदा महतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (३३९-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदा होइ त बैकुंठि जाईऐ ॥ (३३९-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
नामु पदारथु मनहि बसाईऐ ॥ (३३९-३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रिदै सुध जउ निंदा होइ ॥ (३३९-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हमरे कपरे निंदकु धोइ ॥१॥ (३३९-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदा करै सु हमरा मीतु ॥ (३३९-४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदक माहि हमारा चीतु ॥ (३३९-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदकु सो जो निंदा होरै ॥ (३३९-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हमरा जीवनु निंदकु लोरै ॥२॥ (३३९-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदा हमरी प्रेम पिआरु ॥ (३३९-५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदा हमरा करै उधारु ॥ (३३९-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जन कबीर कउ निंदा सारु ॥ (३३९-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
निंदकु डूबा हम उतरे पारि ॥३॥२०॥७१॥ (३३९-६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
राजा राम तूं ऐसा निरभउ तरन तारन राम राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३३९-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जब हम होते तब तुम नाही अब तुम हहु हम नाही ॥ (३३९-७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अब हम तुम एक भए हहि एकै देखत मनु पतीआही ॥१॥ (३३९-८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जब बुधि होती तब बलु कैसा अब बुधि बलु न खटाई ॥ (३३९-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर बुधि हरि लई मेरी बुधि बदली सिधि पाई ॥२॥२१॥७२॥ (३३९-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३९-१०)
खट नेम करि कोठड़ी बाँधी बसतु अनूपु बीच पाई ॥ (३३९-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कुंजी कुलफु प्रान करि राखे करते बार न लाई ॥१॥ (३३९-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अब मन जागत रहु रे भाई ॥ (३३९-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)

गाफलु होइ कै जनमु गवाइओ चोरु मुसै घरु जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३३९-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पंच पहरूआ दर महि रहते तिन का नही पतीआरा ॥ (३३९-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
चेति सुचेत चित होइ रहु तउ लै परगासु उजारा ॥२॥ (३३९-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
नउ घर देखि जु कामनि भूली बसतु अनूप न पाई ॥ (३३९-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहतु कबीर नवै घर मूसे दसवैं ततु समाई ॥३॥२२॥७३॥ (३३९-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गउड़ी ॥ (३३९-१४)
माई मोहि अवरु न जानिओ आनानाँ ॥ (३३९-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सिव सनकादि जासु गुन गावहि तासु बसहि मोरे प्रानानाँ ॥ रहाउ ॥ (३३९-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हिरदे प्रगासु गिआन गुर गंमित गगन मंडल महि धिआनानाँ ॥ (३३९-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बिखै रोग भै बंधन भागे मन निज घरि सुखु जानाना ॥१॥ (३३९-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
एक सुमति रति जानि मानि प्रभ दूसर मनहि न आनाना ॥ (३३९-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
चंदन बासु भए मन बासन तिआगि घटिओ अभिमानाना ॥२॥ (३३९-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जो जन गाइ धिआइ जसु ठाकुर तासु प्रभू है थानानाँ ॥ (३३९-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तिह बड भाग बसिओ मनि जा कै कर्म प्रधान मथानाना ॥३॥ (३३९-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
काटि सकति सिव सहजु प्रगासिओ एकै एक समानाना ॥ (३३९-१९, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३४०

कहि कबीर गुर भेटि महा सुख भ्रमत रहे मनु मानानाँ ॥४॥२३॥७४॥ (३४०-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रागु गउड़ी पूरबी बावन अखरी कबीर जीउ की (३४०-२)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (३४०-२)
बावन अछर लोक त्रै सभु कछु इन ही माहि ॥ (३४०-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ए अखर खिरि जाहिगे ओइ अखर इन महि नाहि ॥१॥ (३४०-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जहा बोल तह अछर आवा ॥ (३४०-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जह अबोल तह मनु न रहावा ॥ (३४०-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बोल अबोल मधि है सोई ॥ (३४०-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जस ओहु है तस लखै न कोई ॥२॥ (३४०-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अलह लहउ तउ किआ कहउ कहउ त को उपकार ॥ (३४०-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बटक बीज महि रवि रहिओ जा को तीनि लोक बिसथार ॥३॥ (३४०-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अलह लहंता भेद छै कछु कछु पाइओ भेद ॥ (३४०-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
उलटि भेद मनु बेधिओ पाइओ अभंग अछेद ॥४॥ (३४०-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तुरक तरीकति जानीऐ हिंदू बेद पुरान ॥ (३४०-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
मन समझावन कारने कछूअक पड़ीऐ गिआन ॥५॥ (३४०-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ओअंकार आदि मै जाना ॥ (३४०-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
लिखि अरु मेटै ताहि न माना ॥ (३४०-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ओअंकार लखै जउ कोई ॥ (३४०-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

सोई लखि मेटणा न होई ॥६॥ (३४०-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
कका किरणि कमल महि पावा ॥ (३४०-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ससि बिगास सम्पट नही आवा ॥ (३४०-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अरु जे तहा कुसम रसु पावा ॥ (३४०-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अकह कहा कहि का समझावा ॥७॥ (३४०-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खखा इहै खोड़ि मन आवा ॥ (३४०-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खोड़े छाडि न दह दिस धावा ॥ (३४०-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खसमहि जाणि खिमा करि रहै ॥ (३४०-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तउ होइ निखिअउ अखै पदु लहै ॥८॥ (३४०-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
गगा गुर के बचन पछाना ॥ (३४०-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
दूजी बात न धरई काना ॥ (३४०-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
रहै बिहंगम कतहि न जाई ॥ (३४०-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अगह गहै गहि गगन रहाई ॥६॥ (३४०-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
घघा घटि घटि निमसै सोई ॥ (३४०-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
घट फूटे घटि कबहि न होई ॥ (३४०-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ता घट माहि घाट जउ पावा ॥ (३४०-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सो घटु छाडि अवघट कत धावा ॥१०॥ (३४०-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ङंङा निग्रहि सनेहु करि निरवारो संदेह ॥ (३४०-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
नाही देखि न भाजीऐ पर्म सिआनप एह ॥११॥ (३४०-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
चचा रचित चित्र है भारी ॥ (३४०-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तजि चित्रै चेतहु चितकारी ॥ (३४०-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
चित्र बचित्र इहै अवझेरा ॥ (३४०-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तजि चित्रै चितु राखि चितेरा ॥१२॥ (३४०-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
छछा इहै छत्रपति पासा ॥ (३४०-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
छकि कि न रहहु छाडि कि न आसा ॥ (३४०-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
रे मन मै तउ छिन छिन समझावा ॥ (३४०-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ताहि छाडि कत आपु बधावा ॥१३॥ (३४०-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जजा जउ तन जीवत जरावै ॥ (३४०-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जोबन जारि जुगति सो पावै ॥ (३४०-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अस जरि पर जरि जरि जब रहै ॥ (३४०-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तब जाइ जोति उजारउ लहै ॥१४॥ (३४०-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३४१

झझा उरझि सुरझि नही जाना ॥ (३४१-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
रहिओ झझकि नाही परवाना ॥ (३४१-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

कत झखि झखि अउरन समझावा ॥ (३४१-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
झगरु कीए झगरउ ही पावा ॥१५॥ (३४१-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ञंञा निकटि जु घट रहिओ दूरि कहा तजि जाइ ॥ (३४१-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जा कारणि जगु ढूढिअउ नेरउ पाइअउ ताहि ॥१६॥ (३४१-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
टटा बिकट घाट घट माही ॥ (३४१-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खोलि कपाट महलि कि न जाही ॥ (३४१-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
देखि अटल टलि कतहि न जावा ॥ (३४१-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
रहै लपटि घट परचउ पावा ॥१७॥ (३४१-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ठठा इहै दूरि ठग नीरा ॥ (३४१-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
नीठि नीठि मनु कीआ धीरा ॥ (३४१-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जिनि ठगि ठगिआ सगल जगु खावा ॥ (३४१-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सो ठगु ठगिआ ठउर मनु आवा ॥१८॥ (३४१-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
डडा डर उपजे डरु जाई ॥ (३४१-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ता डर महि डरु रहिआ समाई ॥ (३४१-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जउ डर डरै ता फिरि डरु लागै ॥ (३४१-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
निडर हूआ डरु उर होइ भागै ॥१९॥ (३४१-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ढढा ढिग ढूढहि कत आना ॥ (३४१-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ढूढत ही ढहि गए पराना ॥ (३४१-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
चड़ि सुमेरि ढूढि जब आवा ॥ (३४१-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जिह गड़ु गड़िओ सु गड़ महि पावा ॥२०॥ (३४१-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
णाणा रणि रूतउ नर नेही करै ॥ (३४१-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ना निवै ना फुनि संचरै ॥ (३४१-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
धंनि जनमु ताही को गणै ॥ (३४१-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
मारै एकहि तजि जाइ घणै ॥२१॥ (३४१-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तता अतर तरिओ नह जाई ॥ (३४१-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तन तृभवण महि रहिओ समाई ॥ (३४१-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जउ तृभवण तन माहि समावा ॥ (३४१-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तउ ततहि तत मिलिआ सचु पावा ॥२२॥ (३४१-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
थथा अथाह थाह नही पावा ॥ (३४१-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ओहु अथाह इहु थिरु न रहावा ॥ (३४१-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
थोड़ै थलि थानक आरम्भै ॥ (३४१-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बिनु ही थाभह मंदिरु थम्भै ॥२३॥ (३४१-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ददा देखि जु बिनसनहारा ॥ (३४१-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जस अदेखि तस राखि बिचारा ॥ (३४१-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
दसवै दुआरि कुंची जब दीजै ॥ (३४१-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

तउ दइआल को दरसनु कीजै ॥२४॥ (३४१-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
धधा अरधहि उरध निबेरा ॥ (३४१-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अरधहि उरधह मंझि बसेरा ॥ (३४१-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अरधह छाडि उरध जउ आवा ॥ (३४१-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तउ अरधहि उरध मिलिआ सुख पावा ॥२५॥ (३४१-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
नंना निसि दिनु निरखत जाई ॥ (३४१-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
निरखत नैन रहे रतवाई ॥ (३४१-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
निरखत निरखत जब जाइ पावा ॥ (३४१-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तब ले निरखहि निरख मिलावा ॥२६॥ (३४१-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
पपा अपर पारु नही पावा ॥ (३४१-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
पर्म जोति सिउ परचउ लावा ॥ (३४१-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
पाँचउ इंद्री निग्रह करई ॥ (३४१-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
पापु पुन्नु दोऊ निरवरई ॥२७॥ (३४१-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
फफा बिनु फूलह फलु होई ॥ (३४१-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ता फल फंक लखै जउ कोई ॥ (३४१-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
दूणि न परई फंक बिचारै ॥ (३४१-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ता फल फंक सभै तन फारै ॥२८॥ (३४१-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बबा बिंदहि बिंद मिलावा ॥ (३४१-१९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बिंदहि बिंदि न बिछुरन पावा ॥ (३४१-१९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बंदउ होइ बंदगी गहै ॥ (३४१-१९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३४२

बंदक होइ बंध सुधि लहै ॥२९॥ (३४२-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
भभा भेदहि भेद मिलावा ॥ (३४२-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अब भउ भानि भरोसउ आवा ॥ (३४२-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जो बाहरि सो भीतरि जानिआ ॥ (३४२-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
भइआ भेदु भूपति पहिचानिआ ॥३०॥ (३४२-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ममा मूल गहिआ मनु मानै ॥ (३४२-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
मरमी होइ सु मन कउ जानै ॥ (३४२-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
मत कोई मन मिलता बिलमावै ॥ (३४२-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
मगन भइआ ते सो सचु पावै ॥३१॥ (३४२-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ममा मन सिउ काजु है मन साधे सिधि होइ ॥ (३४२-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
मन ही मन सिउ कहै कबीरा मन सा मिलिआ न कोइ ॥३२॥ (३४२-४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
इहु मनु सकती इहु मनु सीउ ॥ (३४२-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
इहु मनु पंच तत को जीउ ॥ (३४२-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

इहु मनु ले जउ उनमनि रहै ॥ (३४२-५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तउ तीनि लोक की बातै कहै ॥३३॥ (३४२-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
यया जउ जानहि तउ दुरमति हनि करि बसि काइआ गाउ ॥ (३४२-६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
रणि रूतउ भाजै नही सूरउ थारउ नाउ ॥३४॥ (३४२-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
रारा रसु निरस करि जानिआ ॥ (३४२-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
होइ निरस सु रसु पहिचानिआ ॥ (३४२-७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
इह रस छाडे उह रसु आवा ॥ (३४२-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
उह रसु पीआ इह रसु नही भावा ॥३५॥ (३४२-८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
लला ऐसे लिव मनु लावै ॥ (३४२-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अनत न जाइ पर्म सचु पावै ॥ (३४२-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अरु जउ तहा प्रेम लिव लावै ॥ (३४२-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तउ अलह लहै लहि चरन समावै ॥३६॥ (३४२-९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ववा बार बार बिसन सम्हारि ॥ (३४२-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बिसन सम्हारि न आवै हारि ॥ (३४२-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
बलि बलि जे बिसनतना जसु गावै ॥ (३४२-१०, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
विसन मिले सभ ही सचु पावै ॥३७॥ (३४२-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
वावा वाही जानीऐ वा जाने इहु होइ ॥ (३४२-११, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
इहु अरु ओहु जब मिलै तब मिलत न जानै कोइ ॥३८॥ (३४२-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ससा सो नीका करि सोधहु ॥ (३४२-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
घट परचा की बात निरोधहु ॥ (३४२-१२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
घट परचै जउ उपजै भाउ ॥ (३४२-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
पूरि रहिआ तह तृभवण राउ ॥३९॥ (३४२-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खखा खोजि परै जउ कोई ॥ (३४२-१३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जो खोजै सो बहुरि न होई ॥ (३४२-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खोज बूझि जउ करै बीचारा ॥ (३४२-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तउ भवजल तरत न लावै बारा ॥४०॥ (३४२-१४, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ससा सो सह सेज सवारै ॥ (३४२-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सोई सही संदेह निवारै ॥ (३४२-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अलप सुख छाडि पर्म सुख पावा ॥ (३४२-१५, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तब इह त्रीअ ओुहु कंतु कहावा ॥४१॥ (३४२-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
हाहा होत होइ नही जाना ॥ (३४२-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जब ही होइ तबहि मनु माना ॥ (३४२-१६, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
है तउ सही लखै जउ कोई ॥ (३४२-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
तब ओही उहु एहु न होई ॥४२॥ (३४२-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
लिंउ लिंउ करत फिरै सभु लोगु ॥ (३४२-१७, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

ता कारणि बिआपै बहु सोगु ॥ (३४२-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
लखिमी बर सिउ जउ लिउ लावै ॥ (३४२-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सोगु मिटै सभ ही सुख पावै ॥४३॥ (३४२-१८, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खखा खिरत खपत गए केते ॥ (३४२-१९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
खिरत खपत अजहूं नह चेते ॥ (३४२-१९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
अब जगु जानि जउ मना रहै ॥ (३४२-१९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जह का बिछुरा तह थिरु लहै ॥४४॥ (३४२-१९, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३४३

बावन अखर जोरे आनि ॥ (३४३-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सकिआ न अखरु एकु पछानि ॥ (३४३-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
सत का सबदु कबीरा कहै ॥ (३४३-१, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
पंडित होइ सु अनभै रहै ॥ (३४३-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
पंडित लोगह कउ बिउहार ॥ (३४३-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
गिआनवंत कउ ततु बीचार ॥ (३४३-२, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
जा कै जीअ जैसी बुधि होई ॥ (३४३-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर जानैगा सोई ॥४५॥ (३४३-३, गउड़ी पूरबी, भगत कबीर जी)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३४३-४)
रागु गउड़ी थितीं कबीर जी कीं ॥ (३४३-४)
सलोकु ॥ (३४३-४)
पंद्रह थितीं सात वार ॥ (३४३-४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
कहि कबीर उरवार न पार ॥ (३४३-४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
साधिक सिध लखै जउ भेउ ॥ (३४३-५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
आपे करता आपे देउ ॥१॥ (३४३-५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
थितीं ॥ (३४३-५)
अम्मावस महि आस निवारहु ॥ (३४३-५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
अंतरजामी रामु समारहु ॥ (३४३-६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
जीवत पावहु मोख दुआर ॥ (३४३-६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
अनभउ सबदु ततु निजु सार ॥१॥ (३४३-६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
चरन कमल गोबिंद रंगु लागा ॥ (३४३-७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
संत प्रसादि भए मन निर्मल हरि कीर्तन महि अनदिनु जागा ॥१॥ रहाउ ॥ (३४३-७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
परिवा प्रीतम करहु बीचार ॥ (३४३-८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
घट महि खेलै अघट अपार ॥ (३४३-८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
काल कलपना कदे न खाइ ॥ (३४३-८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)

आदि पुरख महि रहै समाइ ॥२॥ (३४३-९, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
दुतीआ दुह करि जानै अंग ॥ (३४३-९, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
माइआ ब्रह्म रमै सभ संग ॥ (३४३-९, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
ना ओहु बढै न घटता जाइ ॥ (३४३-१०, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
अकुल निरंजन एकै भाइ ॥३॥ (३४३-१०, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
तृतीआ तीने सम करि लिआवै ॥ (३४३-१०, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
आनद मूल पर्म पदु पावै ॥ (३४३-१०, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
साधसंगति उपजै बिस्वास ॥ (३४३-११, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥४॥ (३४३-११, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
चउथहि चंचल मन कउ गहहु ॥ (३४३-११, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
काम क्रोध संगि कबहु न बहहु ॥ (३४३-१२, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
जल थल माहे आपहि आप ॥ (३४३-१२, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
आपै जपहु आपना जाप ॥५॥ (३४३-१२, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
पाँचै पंच तत बिसथार ॥ (३४३-१३, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
कनिक कामिनी जुग बिउहार ॥ (३४३-१३, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
प्रेम सुधा रसु पीवै कोइ ॥ (३४३-१३, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
जरा मरण दुखु फेरि न होइ ॥६॥ (३४३-१३, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
छठि खटु चक्र छहूं दिस धाइ ॥ (३४३-१४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
बिनु परचै नही थिरा रहाइ ॥ (३४३-१४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
दुबिधा मेटि खिमा गहि रहहु ॥ (३४३-१४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
कर्म धर्म की सूल न सहहु ॥७॥ (३४३-१५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
सातैं सति करि बाचा जाणि ॥ (३४३-१५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
आतम रामु लेहु परवाणि ॥ (३४३-१५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
छूटै संसा मिटि जाहि दुख ॥ (३४३-१६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
सुन्न सरोवरि पावहु सुख ॥८॥ (३४३-१६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
असटमी असट धातु की काइआ ॥ (३४३-१६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
ता महि अकुल महा निधि राइआ ॥ (३४३-१७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
गुर गम गिआन बतावै भेद ॥ (३४३-१७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
उलटा रहै अभंग अछेद ॥९॥ (३४३-१७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
नउमी नवै दुआर कउ साधि ॥ (३४३-१८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
बहती मनसा राखहु बाँधि ॥ (३४३-१८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
लोभ मोह सभ बीसरि जाहु ॥ (३४३-१८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)

पन्ना ३४४

जुगु जुगु जीवहु अमर फल खाहु ॥१०॥ (३४४-१, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)

दसमी दह दिस होइ अनंद ॥ (३४४-१, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
छूटै भरमु मिलै गोबिंद ॥ (३४४-१, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
जोति सरूपी तत अनूप ॥ (३४४-१, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
अमल न मल न छाह नही धूप ॥११॥ (३४४-२, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
एकादसी एक दिस धावै ॥ (३४४-२, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
तउ जोनी संकट बहुरि न आवै ॥ (३४४-२, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
सीतल निर्मल भइआ सरीरा ॥ (३४४-३, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
दूरि बतावत पाइआ नीरा ॥१२॥ (३४४-३, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
बारसि बारह उगवै सूर ॥ (३४४-३, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
अहिनिसि बाजे अनहद तूर ॥ (३४४-४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
देखिआ तिहूं लोक का पीउ ॥ (३४४-४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
अचरजु भइआ जीव ते सीउ ॥१३॥ (३४४-४, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
तेरसि तेरह अगम बखाणि ॥ (३४४-५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
अर्ध उरध बिचि सम पहिचाणि ॥ (३४४-५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
नीच ऊच नही मान अमान ॥ (३४४-५, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
बिआपिक राम सगल सामान ॥१४॥ (३४४-६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
चउदसि चउदह लोक मझारि ॥ (३४४-६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
रोम रोम महि बसहि मुरारि ॥ (३४४-६, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
सत संतोख का धरहु धिआन ॥ (३४४-७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
कथनी कथीऐ ब्रह्म गिआन ॥१५॥ (३४४-७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
पूनिउ पूरा चंद अकास ॥ (३४४-७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
पसरहि कला सहज परगास ॥ (३४४-७, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
आदि अंति मधि होइ रहिआ थीर ॥ (३४४-८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
सुख सागर महि रमहि कबीर ॥१६॥ (३४४-८, गउड़ी थितीं, भगत कबीर जी)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३४४-९)
रागु गउड़ी वार कबीर जीउ के ७ ॥ (३४४-९)
बार बार हरि के गुन गावउ ॥ (३४४-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गुर गमि भेदु सु हरि का पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (३४४-९, गउड़ी, भगत कबीर जी)
आदित करै भगति आरम्भ ॥ (३४४-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
काइआ मंदर मनसा थम्भ ॥ (३४४-१०, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अहिनिसि अखंड सुरही जाइ ॥ (३४४-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तउ अनहद बेणु सहज महि बाइ ॥१॥ (३४४-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सोमवारि ससि अमृतु झरै ॥ (३४४-११, गउड़ी, भगत कबीर जी)
चाखत बेगि सगल बिख हरै ॥ (३४४-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बाणी रोकिआ रहै दुआर ॥ (३४४-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)

तउ मनु मतवारो पीवनहार ॥२॥ (३४४-१२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
मंगलवारे ले माहीति ॥ (३४४-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
पंच चोर की जाणै रीति ॥ (३४४-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
घर छोडें बाहरि जिनि जाइ ॥ (३४४-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
नातरु खरा रिसै है राइ ॥३॥ (३४४-१३, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बुधवारि बुधि करै प्रगास ॥ (३४४-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
हिरदै कमल महि हरि का बास ॥ (३४४-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
गुर मिलि दोऊ एक सम धरै ॥ (३४४-१४, गउड़ी, भगत कबीर जी)
उरध पंक लै सूधा करै ॥४॥ (३४४-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बृहसपति बिखिआ देइ बहाइ ॥ (३४४-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तीनि देव एक संगि लाइ ॥ (३४४-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तीनि नदी तह तृकुटी माहि ॥ (३४४-१५, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अहिनिसि कसमल धोवहि नाहि ॥५॥ (३४४-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सुकृतु सहारै सु इह ब्रति चड़ै ॥ (३४४-१६, गउड़ी, भगत कबीर जी)
अनदिन आपि आप सिउ लड़ै ॥ (३४४-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
सुरखी पाँचउ राखै सबै ॥ (३४४-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तउ दूजी दृसटि न पैसै कबै ॥६॥ (३४४-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
थावर थिरु करि राखै सोइ ॥ (३४४-१७, गउड़ी, भगत कबीर जी)
जोति दी वटी घट महि जोइ ॥ (३४४-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
बाहरि भीतरि भइआ प्रगासु ॥ (३४४-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तब हूआ सगल कर्म का नासु ॥७॥ (३४४-१८, गउड़ी, भगत कबीर जी)

पन्ना ३४५

जब लगु घट महि दूजी आन ॥ (३४५-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
तउ लउ महलि न लाभै जान ॥ (३४५-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रमत राम सिउ लागो रंगु ॥ (३४५-१, गउड़ी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर तब निर्मल अंग ॥८॥१॥ (३४५-२, गउड़ी, भगत कबीर जी)
रागु गउड़ी चेती बाणी नामदेउ जीउ की (३४५-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३४५-३)
देवा पाहन तारीअले ॥ (३४५-४, गउड़ी चेती, भगत नामदेव जी)
राम कहत जन कस न तरे ॥१॥ रहाउ ॥ (३४५-४, गउड़ी चेती, भगत नामदेव जी)
तारीले गनिका बिनु रूप कुबिजा बिआधि अजामलु तारीअले ॥ (३४५-४, गउड़ी चेती, भगत नामदेव जी)
चरन बधिक जन तेऊ मुकति भए ॥ (३४५-५, गउड़ी चेती, भगत नामदेव जी)
हउ बलि बलि जिन राम कहे ॥१॥ (३४५-५, गउड़ी चेती, भगत नामदेव जी)
दासी सुत जनु बिदरु सुदामा उग्रसैन कउ राज दीए ॥ (३४५-६, गउड़ी चेती, भगत नामदेव जी)

जप हीन तप हीन कुल हीन क्रम हीन नामे के सुआमी तेऊ तरे ॥२॥१॥ (३४५-६, गउड़ी चेती, भगत नामदेव जी)
रागु गउड़ी रविदास जी के पदे गउड़ी गुआरेरी (३४५-८)
ੴ सतिनामु करता पुरखु गुरप्रसादि ॥ (३४५-६)
मेरी संगति पोच सोच दिनु राती ॥ (३४५-६, गउड़ी, भगत रविदास जी)
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभाँती ॥१॥ (३४५-६, गउड़ी, भगत रविदास जी)
राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥ (३४५-१०, गउड़ी, भगत रविदास जी)
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३४५-१०, गउड़ी, भगत रविदास जी)
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई ॥ (३४५-११, गउड़ी, भगत रविदास जी)
चरण न छाडउ सरीर कल जाई ॥२॥ (३४५-११, गउड़ी, भगत रविदास जी)
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥ (३४५-११, गउड़ी, भगत रविदास जी)
बेगि मिलहु जन करि न बिलाँबा ॥३॥१॥ (३४५-१२, गउड़ी, भगत रविदास जी)
बेगम पुरा सहर को नाउ ॥ (३४५-१२, गउड़ी, भगत रविदास जी)
दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ ॥ (३४५-१२, गउड़ी, भगत रविदास जी)
नाँ तसवीस खिराजु न मालु ॥ (३४५-१३, गउड़ी, भगत रविदास जी)
खउफु न खता न तरसु जवालु ॥१॥ (३४५-१३, गउड़ी, भगत रविदास जी)
अब मोहि खूब वतन गह पाई ॥ (३४५-१३, गउड़ी, भगत रविदास जी)
ऊहाँ खैरि सदा मेरे भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३४५-१४, गउड़ी, भगत रविदास जी)
काइमु दाइमु सदा पातिसाही ॥ (३४५-१४, गउड़ी, भगत रविदास जी)
दोम न सेम एक सो आही ॥ (३४५-१४, गउड़ी, भगत रविदास जी)
आबादानु सदा मसहूर ॥ (३४५-१५, गउड़ी, भगत रविदास जी)
ऊहाँ गनी बसहि मामूर ॥२॥ (३४५-१५, गउड़ी, भगत रविदास जी)
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै ॥ (३४५-१५, गउड़ी, भगत रविदास जी)
महरम महल न को अटकावै ॥ (३४५-१६, गउड़ी, भगत रविदास जी)
कहि रविदास खलास चमारा ॥ (३४५-१६, गउड़ी, भगत रविदास जी)
जो हम सहरी सु मीतु हमारा ॥३॥२॥ (३४५-१६, गउड़ी, भगत रविदास जी)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३४५-१७)
गउड़ी बैरागणि रविदास जीउ ॥ (३४५-१७)
घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥ (३४५-१७, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥ (३४५-१८, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
को बनजारो राम को मेरा टाँडा लादिआ जाइ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३४५-१८, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)

पन्ना ३४६

हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥ (३४६-१, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२॥ (३४६-१, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥ (३४६-२, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)

मोहि जम डंडु न लागई तजीले सर्ब जंजाल ॥३॥ (३४६-२, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
जैसा रंगु कसुम्भ का तैसा इहु संसारु ॥ (३४६-३, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४॥१॥ (३४६-३, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
गउड़ी पूरबी रविदास जीउ (३४६-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३४६-५)
कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥ (३४६-६, गउड़ी पूरबी, भगत रविदास जी)
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥१॥ (३४६-६, गउड़ी पूरबी, भगत रविदास जी)
सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१॥ रहाउ ॥ (३४६-७, गउड़ी पूरबी, भगत रविदास जी)
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥ (३४६-७, गउड़ी पूरबी, भगत रविदास जी)
करहु कृपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥ (३४६-८, गउड़ी पूरबी, भगत रविदास जी)
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥ (३४६-८, गउड़ी पूरबी, भगत रविदास जी)
प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥३॥१॥ (३४६-९, गउड़ी पूरबी, भगत रविदास जी)
गउड़ी बैरागणि (३४६-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३४६-१०)
सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार ॥ (३४६-११, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार ॥१॥ (३४६-११, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
पारु कैसे पाइबो रे ॥ (३४६-११, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
मो सउ कोऊ न कहै समझाइ ॥ (३४६-१२, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
जा ते आवा गवनु बिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३४६-१२, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
बहु बिधि धर्म निरूपीऐ करता दीसै सभ लोइ ॥ (३४६-१२, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
कवन कर्म ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ ॥२॥ (३४६-१३, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
कर्म अकर्म बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान ॥ (३४६-१३, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु ॥३॥ (३४६-१४, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार ॥ (३४६-१४, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥४॥ (३४६-१५, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार ॥ (३४६-१५, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार ॥५॥ (३४६-१६, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
पर्म परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट ॥ (३४६-१६, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट ॥६॥ (३४६-१७, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार ॥ (३४६-१७, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार ॥७॥ (३४६-१८, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास ॥ (३४६-१९, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)
प्रेम भगति नही ऊपजै ता ते रविदास उदास ॥८॥१॥ (३४६-१९, गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास जी)

पन्ना ३४७

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (३४७-१)
रागु आसा महला १ घरु १ सो दरु ॥ (३४७-३)
सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सर्ब समाले ॥ (३४७-४, आसा, मः १)
वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ (३४७-४, आसा, मः १)
केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ (३४७-५, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धर्म दुआरे ॥ (३४७-५, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ (३४७-६, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो ईसरु ब्रह्मा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ (३४७-७, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ (३४७-७, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावन्हि तुधनो साध बीचारे ॥ (३४७-८, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ (३४७-८, आसा, मः १)
गावनि तुधनो पंडित पड़े रखीसुर जुगु जुगु बेदा नाले ॥ (३४७-९, आसा, मः १)
गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ (३४७-१०, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो रतन उपाए तेरे जेते अठसठि तीर्थ नाले ॥ (३४७-१०, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो जोध महाबल सूरा गावन्हि तुधनो खाणी चारे ॥ (३४७-११, आसा, मः १)
गावन्हि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ (३४७-११, आसा, मः १)
सेई तुधनो गावन्हि जो तुधु भावन्हि रते तेरे भगत रसाले ॥ (३४७-१२, आसा, मः १)
होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ (३४७-१३, आसा, मः १)
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ (३४७-१३, आसा, मः १)
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ (३४७-१४, आसा, मः १)
रंगी रंगी भाती जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ (३४७-१४, आसा, मः १)
करि करि देखै कीता अपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ (३४७-१५, आसा, मः १)
जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा जाई ॥ (३४७-१५, आसा, मः १)

पन्ना ३४८

सो पातिसाहु साहा पति साहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥१॥ (३४८-१, आसा, मः १)
आसा महला ४ ॥ (३४८-१)
सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ (३४८-२, आसा, मः ४)
सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ (३४८-२, आसा, मः ४)
सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ (३४८-३, आसा, मः ४)
हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ (३४८-३, आसा, मः ४)
हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ (३४८-४, आसा, मः ४)
तूं घट घट अंतरि सर्ब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ (३४८-४, आसा, मः ४)

इकि दाते इकि भेखारी जी सभि तेरे चोज विडाणा ॥ (३४८-५, आसा, मः ४)
तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ (३४८-६, आसा, मः ४)
तूं पारब्रह्मु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ (३४८-६, आसा, मः ४)
जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन् कुरबाणा ॥२॥ (३४८-७, आसा, मः ४)
हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुख वासी ॥ (३४८-७, आसा, मः ४)
से मुकतु से मुकतु भए जिन् हरि धिआइआ जीउ तिन टूटी जम की फासी ॥ (३४८-८, आसा, मः ४)
जिन निरभउ जिन् हरि निरभउ धिआइआ जीउ तिन का भउ सभु गवासी ॥ (३४८-९, आसा, मः ४)
जिन् सेविआ जिन् सेविआ मेरा हरि जीउ ते हरि हरि रूपि समासी ॥ (३४८-९, आसा, मः ४)
से धन्नु से धन्नु जिन हरि धिआइआ जीउ जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ (३४८-१०, आसा, मः ४)
तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बेअंत बेअंता ॥ (३४८-११, आसा, मः ४)
तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ (३४८-११, आसा, मः ४)
तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ (३४८-१२, आसा, मः ४)
तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्मृति सासत जी करि किरिआ खटु कर्म करंता ॥ (३४८-१३, आसा, मः ४)
से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥ (३४८-१४, आसा, मः ४)
तूं आदि पुरखु अपरम्परु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (३४८-१४, आसा, मः ४)
तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ (३४८-१५, आसा, मः ४)
तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ (३४८-१६, आसा, मः ४)
तुधु आपे सृसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ (३४८-१६, आसा, मः ४)
जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥२॥ (३४८-१७, आसा, मः ४)
१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३४८-१८)
रागु आसा महला १ चउपदे घरु २ ॥ (३४८-१९)
सुणि वडा आखै सभ कोई ॥ (३४८-१९, आसा, मः १)
केवडु वडा डीठा होई ॥ (३४८-१९, आसा, मः १)

पन्ना ३४९

कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ (३४९-१, आसा, मः १)
कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥ (३४९-१, आसा, मः १)
वडे मेरे साहिबा गहिर गम्भीरा गुणी गहीरा ॥ (३४९-१, आसा, मः १)
कोई न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३४९-२, आसा, मः १)
सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ (३४९-२, आसा, मः १)
सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ (३४९-३, आसा, मः १)
गिआनी धिआनी गुर गुर हाई ॥ (३४९-३, आसा, मः १)
कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ (३४९-३, आसा, मः १)
सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ (३४९-४, आसा, मः १)
सिधा पुरखा कीआ वडिआईआँ ॥ (३४९-४, आसा, मः १)

तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ (३४६-४, आसा, मः १)
करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ (३४६-५, आसा, मः १)
आखण वाला किआ बेचारा ॥ (३४६-५, आसा, मः १)
सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ (३४६-५, आसा, मः १)
जिसु तूं देहि तिसै किआ चारा ॥ (३४६-६, आसा, मः १)
नानक सचु सवारणहारा ॥४॥१॥ (३४६-६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३४६-६)
आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ (३४६-७, आसा, मः १)
आखणि अउखा साचा नाउ ॥ (३४६-७, आसा, मः १)
साचे नाम की लागै भूख ॥ (३४६-७, आसा, मः १)
तितु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥ (३४६-७, आसा, मः १)
सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ (३४६-८, आसा, मः १)
साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३४६-८, आसा, मः १)
साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ (३४६-८, आसा, मः १)
आखि थके कीमति नही पाई ॥ (३४६-९, आसा, मः १)
जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ (३४६-९, आसा, मः १)
वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥ (३४६-९, आसा, मः १)
ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ (३४६-१०, आसा, मः १)
देंदा रहै न चूकै भोगु ॥ (३४६-१०, आसा, मः १)
गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ (३४६-१०, आसा, मः १)
ना को होआ ना को होइ ॥३॥ (३४६-१०, आसा, मः १)
जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ (३४६-११, आसा, मः १)
जिनि दिनु करि कै कीती राति ॥ (३४६-११, आसा, मः १)
खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ (३४६-११, आसा, मः १)
नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥२॥ (३४६-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३४६-१२)
जे दरि माँगतु कूक करे महली खसमु सुणे ॥ (३४६-१२, आसा, मः १)
भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ ॥१॥ (३४६-१३, आसा, मः १)
जाणहु जोति न पूछहु जाती आगै जाति न हे ॥१॥ रहाउ ॥ (३४६-१३, आसा, मः १)
आपि कराए आपि करेइ ॥ (३४६-१४, आसा, मः १)
आपि उलाम्हे चिति धरेइ ॥ (३४६-१४, आसा, मः १)
जा तूं करणहारु करतारु ॥ (३४६-१४, आसा, मः १)
किआ मुहताजी किआ संसारु ॥२॥ (३४६-१४, आसा, मः १)
आपि उपाए आपे देइ ॥ (३४६-१५, आसा, मः १)
आपे दुरमति मनहि करेइ ॥ (३४६-१५, आसा, मः १)

गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ (३४९-१५, आसा, मः १)
दुखु अनेरा विचहु जाइ ॥३॥ (३४९-१६, आसा, मः १)
साचु पिआरा आपि करेइ ॥ (३४९-१६, आसा, मः १)
अवरी कउ साचु न देइ ॥ (३४९-१६, आसा, मः १)
जे किसै देइ वखाणै नानकु आगै पूछ न लेइ ॥४॥३॥ (३४९-१६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३४९-१७)
ताल मदीरे घट के घाट ॥ (३४९-१७, आसा, मः १)
दोलक दुनीआ वाजहि वाज ॥ (३४९-१७, आसा, मः १)
नारदु नाचै कलि का भाउ ॥ (३४९-१८, आसा, मः १)
जती सती कह राखहि पाउ ॥१॥ (३४९-१८, आसा, मः १)
नानक नाम विटहु कुरबाणु ॥ (३४९-१८, आसा, मः १)
अंधी दुनीआ साहिबु जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (३४९-१९, आसा, मः १)
गुरू पासहु फिरि चेला खाइ ॥ (३४९-१९, आसा, मः १)
तामि परीति वसै घरि आइ ॥ (३४९-१९, आसा, मः १)

पन्ना ३५०

जे सउ वरिहआ जीवण खाणु ॥ (३५०-१, आसा, मः १)
खसम पछाणै सो दिनु परवाणु ॥२॥ (३५०-१, आसा, मः १)
दरसनि देखिऐ दइआ न होइ ॥ (३५०-१, आसा, मः १)
लए दिते विणु रहै न कोइ ॥ (३५०-२, आसा, मः १)
राजा निआउ करे हथि होइ ॥ (३५०-२, आसा, मः १)
कहै खुदाइ न मानै कोइ ॥३॥ (३५०-२, आसा, मः १)
माणस मूरति नानकु नामु ॥ (३५०-३, आसा, मः १)
करणी कुता दरि फुरमानु ॥ (३५०-३, आसा, मः १)
गुर परसादि जाणै मिहमानु ॥ (३५०-३, आसा, मः १)
ता किछु दरगह पावै मानु ॥४॥४॥ (३५०-३, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५०-४)
जेता सबदु सुरति धुनि तेती जेता रूपु काइआ तेरी ॥ (३५०-४, आसा, मः १)
तूं आपे रसना आपे बसना अवरु न दूजा कहउ माई ॥१॥ (३५०-४, आसा, मः १)
साहिबु मेरा एको है ॥ (३५०-५, आसा, मः १)
एको है भाई एको है ॥१॥ रहाउ ॥ (३५०-५, आसा, मः १)
आपे मारे आपे छोडै आपे लेवै देइ ॥ (३५०-६, आसा, मः १)
आपे वेखै आपे विगसै आपे नदरि करेइ ॥२॥ (३५०-६, आसा, मः १)
जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥ (३५०-६, आसा, मः १)
जैसा वरतै तैसो कहीऐ सभ तेरी वडिआई ॥३॥ (३५०-७, आसा, मः १)

कलि कलवाली माइआ मदु मीठा मनु मतवाला पीवतु रहै ॥ (३५०-७, आसा, मः १)
आपे रूप करे बहु भाँतीं नानकु बपुड़ा एव कहै ॥४॥५॥ (३५०-८, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५०-९)
वाजा मति पखावजु भाउ ॥ (३५०-९, आसा, मः १)
होइ अनंदु सदा मनि चाउ ॥ (३५०-९, आसा, मः १)
एहा भगति एहो तप ताउ ॥ (३५०-९, आसा, मः १)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥१॥ (३५०-१०, आसा, मः १)
पूरे ताल जाणै सालाह ॥ (३५०-१०, आसा, मः १)
होरु नचणा खुसीआ मन माह ॥१॥ रहाउ ॥ (३५०-१०, आसा, मः १)
सतु संतोखु वजहि दुइ ताल ॥ (३५०-११, आसा, मः १)
पैरी वाजा सदा निहाल ॥ (३५०-११, आसा, मः १)
रागु नादु नही दूजा भाउ ॥ (३५०-११, आसा, मः १)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥२॥ (३५०-१२, आसा, मः १)
भउ फेरी होवै मन चीति ॥ (३५०-१२, आसा, मः १)
बहदिआ उठदिआ नीता नीति ॥ (३५०-१२, आसा, मः १)
लेटणि लेटि जाणै तनु सुआहु ॥ (३५०-१३, आसा, मः १)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पाउ ॥३॥ (३५०-१३, आसा, मः १)
सिख सभा दीखिआ का भाउ ॥ (३५०-१३, आसा, मः १)
गुरमुखि सुणणा साचा नाउ ॥ (३५०-१४, आसा, मः १)
नानक आखणु वेरा वेर ॥ (३५०-१४, आसा, मः १)
इतु रंगि नाचहु रखि रखि पैर ॥४॥६॥ (३५०-१४, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५०-१५)
पउणु उपाइ धरी सभ धरती जल अगनी का बंधु कीआ ॥ (३५०-१५, आसा, मः १)
अंधुलै दहसिरि मूंडु कटाइआ रावणु मारि किआ वडा भइआ ॥१॥ (३५०-१५, आसा, मः १)
किआ उपमा तेरी आखी जाइ ॥ (३५०-१६, आसा, मः १)
तूं सरबे पूरि रहिआ लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३५०-१६, आसा, मः १)
जीअ उपाइ जुगति हथि कीनी काली नथि किआ वडा भइआ ॥ (३५०-१७, आसा, मः १)
किसु तूं पुरखु जोरू कउण कहीऐ सर्ब निरंतरि रवि रहिआ ॥२॥ (३५०-१७, आसा, मः १)
नालि कुटम्बु साथि वरदाता ब्रह्मा भालण सृसटि गइआ ॥ (३५०-१८, आसा, मः १)
आगै अंतु न पाइओ ता का कंसु छेदि किआ वडा भइआ ॥३॥ (३५०-१९, आसा, मः १)
रतन उपाइ धरे खीरु मथिआ होरि भखलाए जि असी कीआ ॥ (३५०-१९, आसा, मः १)

पन्ना ३५१

कहै नानकु छपै किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ॥४॥७॥ (३५१-१, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५१-२)

कर्म करतूति बेलि बिसथारी राम नामु फलु हूआ ॥ (३५१-२, आसा, मः १)
तिसु रूपु न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनि कीआ ॥१॥ (३५१-२, आसा, मः १)
करे वखिआणु जाणै जे कोई ॥ (३५१-३, आसा, मः १)
अमृतु पीवै सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (३५१-३, आसा, मः १)
जिन्ह पीआ से मसत भए है तूटे बंधन फाहे ॥ (३५१-४, आसा, मः १)
जोती जोति समाणी भीतरि ता छोडे माइआ के लाहे ॥२॥ (३५१-४, आसा, मः १)
सर्ब जोति रूपु तेरा देखिआ सगल भवन तेरी माइआ ॥ (३५१-५, आसा, मः १)
रारै रूपि निरालमु बैठा नदरि करे विचि छाइआ ॥३॥ (३५१-५, आसा, मः १)
बीणा सबदु वजावै जोगी दरसनि रूपि अपारा ॥ (३५१-६, आसा, मः १)
सबदि अनाहदि सो सहु राता नानकु कहै विचारा ॥४॥८॥ (३५१-६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५१-७)
मै गुण गला के सिरि भार ॥ (३५१-७, आसा, मः १)
गली गला सिरजणहार ॥ (३५१-७, आसा, मः १)
खाणा पीणा हसणा बादि ॥ (३५१-८, आसा, मः १)
जब लगु रिदै न आवहि यादि ॥१॥ (३५१-८, आसा, मः १)
तउ परवाह केही किआ कीजै ॥ (३५१-८, आसा, मः १)
जनमि जनमि किछु लीजी लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (३५१-८, आसा, मः १)
मन की मति मतागलु मता ॥ (३५१-९, आसा, मः १)
जो किछु बोलीऐ सभु खतो खता ॥ (३५१-९, आसा, मः १)
किआ मुहु लै कीचै अरदासि ॥ (३५१-१०, आसा, मः १)
पापु पुन्नु दुइ साखी पासि ॥२॥ (३५१-१०, आसा, मः १)
जैसा तूं करहि तैसा को होइ ॥ (३५१-१०, आसा, मः १)
तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (३५१-१०, आसा, मः १)
जेही तूं मति देहि तेही को पावै ॥ (३५१-११, आसा, मः १)
तुधु आपे भावै तिवै चलावै ॥३॥ (३५१-११, आसा, मः १)
राग रतन परीआ परवार ॥ (३५१-११, आसा, मः १)
तिसु विचि उपजै अमृतु सार ॥ (३५१-१२, आसा, मः १)
नानक करते का इहु धनु मालु ॥ (३५१-१२, आसा, मः १)
जे को बूझै एहु बीचारु ॥४॥९॥ (३५१-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५१-१३)
करि किरपा अपनै घरि आइआ ता मिलि सखीआ काजु रचाइआ ॥ (३५१-१३, आसा, मः १)
खेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ ॥१॥ (३५१-१४, आसा, मः १)
गावहु गावहु कामणी बिबेक बीचारु ॥ (३५१-१४, आसा, मः १)
हमरै घरि आइआ जगजीवनु भतारु ॥१॥ रहाउ ॥ (३५१-१५, आसा, मः १)
गुरू दुआरै हमरा वीआहु जि होआ जाँ सहु मिलिआ ताँ जानिआ ॥ (३५१-१५, आसा, मः १)

तिहु लोका महि सबदु रविआ है आपु गइआ मनु मानिआ ॥२॥ (३५१-१६, आसा, मः १)
आपणा कारजु आपि सवारे होरनि कारजु न होई ॥ (३५१-१६, आसा, मः १)
जितु कारजि सतु संतोखु दइआ धरमु है गुरमुखि बूझै कोई ॥३॥ (३५१-१७, आसा, मः १)
भनति नानकु सभना का पिरु एको सोइ ॥ (३५१-१८, आसा, मः १)
जिस नो नदरि करे सा सोहागणि होइ ॥४॥१०॥ (३५१-१८, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५१-१८)
गृहु बनु समसरि सहजि सुभाइ ॥ (३५१-१९, आसा, मः १)
दुरमति गतु भई कीरति ठाइ ॥ (३५१-१९, आसा, मः १)
सच पउड़ी साचउ मुखि नाँउ ॥ (३५१-१९, आसा, मः १)

पन्ना ३५२

सतिगुरु सेवि पाए निज थाउ ॥१॥ (३५२-१, आसा, मः १)
मन चूरे खटु दरसन जाणु ॥ (३५२-१, आसा, मः १)
सर्ब जोति पूरन भगवानु ॥१॥ रहाउ ॥ (३५२-१, आसा, मः १)
अधिक तिआस भेख बहु करै ॥ (३५२-२, आसा, मः १)
दुखु बिखिआ सुखु तनि परहरै ॥ (३५२-२, आसा, मः १)
कामु क्रोधु अंतरि धनु हिरै ॥ (३५२-२, आसा, मः १)
दुबिधा छोडि नामि निसतरै ॥२॥ (३५२-३, आसा, मः १)
सिफति सलाहणु सहज अनंद ॥ (३५२-३, आसा, मः १)
सखा सैनु प्रेमु गोबिंद ॥ (३५२-३, आसा, मः १)
आपे करे आपे बखसिंदु ॥ (३५२-३, आसा, मः १)
तनु मनु हरि पहि आगै जिंदु ॥३॥ (३५२-४, आसा, मः १)
झूठ विकार महा दुखु देह ॥ (३५२-४, आसा, मः १)
भेख वरन दीसहि सभि खेह ॥ (३५२-४, आसा, मः १)
जो उपजै सो आवै जाइ ॥ (३५२-५, आसा, मः १)
नानक असथिरु नामु रजाइ ॥४॥११॥ (३५२-५, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५२-५)
एको सरवरु कमल अनूप ॥ (३५२-५, आसा, मः १)
सदा बिगासै परमल रूप ॥ (३५२-६, आसा, मः १)
ऊजल मोती चूगहि हंस ॥ (३५२-६, आसा, मः १)
सर्ब कला जगदीसै अंस ॥१॥ (३५२-६, आसा, मः १)
जो दीसै सो उपजै बिनसै ॥ (३५२-७, आसा, मः १)
बिनु जल सरवरि कमलु न दीसै ॥१॥ रहाउ ॥ (३५२-७, आसा, मः १)
बिरला बूझै पावै भेदु ॥ (३५२-७, आसा, मः १)
साखा तीनि कहै नित बेदु ॥ (३५२-८, आसा, मः १)

नाद बिंद की सुरति समाइ ॥ (३५२-८, आसा, मः १)
सतिगुरु सेवि पर्म पदु पाइ ॥२॥ (३५२-८, आसा, मः १)
मुकतो रातउ रंगि रवाँतउ ॥ (३५२-६, आसा, मः १)
राजन राजि सदा बिगसाँतउ ॥ (३५२-६, आसा, मः १)
जिसु तूं राखहि किरपा धारि ॥ (३५२-६, आसा, मः १)
बूडत पाहन तारहि तारि ॥३॥ (३५२-६, आसा, मः १)
तृभवण महि जोति तृभवण महि जाणिआ ॥ (३५२-१०, आसा, मः १)
उलट भई घरु घर महि आणिआ ॥ (३५२-१०, आसा, मः १)
अहिनिसि भगति करे लिव लाइ ॥ (३५२-११, आसा, मः १)
नानकु तिन कै लागै पाइ ॥४॥१२॥ (३५२-११, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५२-११)
गुरमति साची हुजति दूरि ॥ (३५२-१२, आसा, मः १)
बहुतु सिआणप लागै धूरि ॥ (३५२-१२, आसा, मः १)
लागी मैलु मिटै सच नाइ ॥ (३५२-१२, आसा, मः १)
गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥१॥ (३५२-१२, आसा, मः १)
है हजूरि हाजरु अरदासि ॥ (३५२-१३, आसा, मः १)
दुखु सुखु साचु करते प्रभ पासि ॥१॥ रहाउ ॥ (३५२-१३, आसा, मः १)
कूड़ु कमावै आवै जावै ॥ (३५२-१३, आसा, मः १)
कहणि कथनि वारा नही आवै ॥ (३५२-१४, आसा, मः १)
किआ देखा सूझ बूझ न पावै ॥ (३५२-१४, आसा, मः १)
बिनु नावै मनि तृपति न आवै ॥२॥ (३५२-१४, आसा, मः १)
जो जनमे से रोगि विआपे ॥ (३५२-१५, आसा, मः १)
हउमै माइआ दूखि संतापे ॥ (३५२-१५, आसा, मः १)
से जन बाचे जो प्रभि राखे ॥ (३५२-१५, आसा, मः १)
सतिगुरु सेवि अमृत रसु चाखे ॥३॥ (३५२-१६, आसा, मः १)
चलतउ मनु राखै अमृतु चाखै ॥ (३५२-१६, आसा, मः १)
सतिगुर सेवि अमृत सबदु भाखै ॥ (३५२-१६, आसा, मः १)
साचै सबदि मुकति गति पाए ॥ (३५२-१७, आसा, मः १)
नानक विचहु आपु गवाए ॥४॥१३॥ (३५२-१७, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५२-१८)
जो तिनि कीआ सो सचु थीआ ॥ (३५२-१८, आसा, मः १)
अमृत नामु सतिगुरि दीआ ॥ (३५२-१८, आसा, मः १)
हिरदै नामु नाही मनि भंगु ॥ (३५२-१८, आसा, मः १)
अनदिनु नालि पिआरे संगु ॥१॥ (३५२-१६, आसा, मः १)
हरि जीउ राखहु अपनी सरणाई ॥ (३५२-१६, आसा, मः १)

गुर परसादी हरि रसु पाइआ नामु पदारथु नउ निधि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३५३-१, आसा, मः १)
कर्म धर्म सचु साचा नाउ ॥ (३५३-१, आसा, मः १)
ता कै सद बलिहारै जाउ ॥ (३५३-२, आसा, मः १)
जो हरि राते से जन परवाणु ॥ (३५३-२, आसा, मः १)
तिन की संगति पर्म निधानु ॥२॥ (३५३-२, आसा, मः १)
हरि वरु जिनि पाइआ धन नारी ॥ (३५३-३, आसा, मः १)
हरि सिउ राती सबदु वीचारी ॥ (३५३-३, आसा, मः १)
आपि तरै संगति कुल तारै ॥ (३५३-३, आसा, मः १)
सतिगुरु सेवि ततु वीचारै ॥३॥ (३५३-४, आसा, मः १)
हमरी जाति पति सचु नाउ ॥ (३५३-४, आसा, मः १)
कर्म धर्म संजमु सत भाउ ॥ (३५३-४, आसा, मः १)
नानक बखसे पूछ न होइ ॥ (३५३-५, आसा, मः १)
दूजा मेटे एको सोइ ॥४॥१४॥ (३५३-५, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५३-५)
इकि आवहि इकि जावहि आई ॥ (३५३-५, आसा, मः १)
इकि हरि राते रहहि समाई ॥ (३५३-६, आसा, मः १)
इकि धरनि गगन महि ठउर न पावहि ॥ (३५३-६, आसा, मः १)
से करमहीण हरि नामु न धिआवहि ॥१॥ (३५३-६, आसा, मः १)
गुर पूरे ते गति मिति पाई ॥ (३५३-७, आसा, मः १)
इहु संसारु बिखु वत अति भउजलु गुर सबदी हरि पारि लंघाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३५३-७, आसा, मः १)
जिन्ह कउ आप लए प्रभु मेलि ॥ (३५३-८, आसा, मः १)
तिन कउ कालु न साकै पेलि ॥ (३५३-८, आसा, मः १)
गुरमुखि निर्मल रहहि पिआरे ॥ (३५३-९, आसा, मः १)
जिउ जल अम्भ ऊपरि कमल निरारे ॥२॥ (३५३-९, आसा, मः १)
बुरा भला कहु किस नो कहीऐ ॥ (३५३-१०, आसा, मः १)
दीसै ब्रह्मु गुरमुखि सचु लहीऐ ॥ (३५३-१०, आसा, मः १)
अकथु कथउ गुरमति वीचारु ॥ (३५३-१०, आसा, मः १)
मिलि गुर संगति पावउ पारु ॥३॥ (३५३-११, आसा, मः १)
सासत बेद सिम्रिति बहु भेद ॥ (३५३-११, आसा, मः १)
अठसठि मजनु हरि रसु रेद ॥ (३५३-११, आसा, मः १)
गुरमुखि निरमलु मैलु न लागै ॥ (३५३-१२, आसा, मः १)
नानक हिरदै नामु वडे धुरि भागै ॥४॥१५॥ (३५३-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५३-१२)

निवि निवि पाइ लगउ गुर अपुने आतम रामु निहारिआ ॥ (३५३-१३, आसा, मः १)
करत बीचारु हिरदै हरि रविआ हिरदै देखि बीचारिआ ॥१॥ (३५३-१३, आसा, मः १)
बोलहु रामु करे निसतारा ॥ (३५३-१४, आसा, मः १)
गुर परसादि रतनु हरि लाभै मिटै अगिआनु होइ उजीआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३५३-१४, आसा, मः १)
रवनी रवै बंधन नही तूटहि विचि हउमै भरमु न जाई ॥ (३५३-१५, आसा, मः १)
सतिगुरु मिलै त हउमै तूटै ता को लेखै पाई ॥२॥ (३५३-१५, आसा, मः १)
हरि हरि नामु भगति पृअ प्रीतमु सुख सागरु उर धारे ॥ (३५३-१६, आसा, मः १)
भगति वछलु जगजीवनु दाता मति गुरमति हरि निसतारे ॥३॥ (३५३-१६, आसा, मः १)
मन सिउ जूझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाए ॥ (३५३-१७, आसा, मः १)
नानक कृपा करे जगजीवनु सहज भाइ लिव लाए ॥४॥१६॥ (३५३-१८, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५३-१८)
किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किसु समझावहि समझि रहे ॥ (३५३-१८, आसा, मः १)
किसै पड़ावहि पड़ि गुणि बूझे सतिगुर सबदि संतोखि रहे ॥१॥ (३५३-१९, आसा, मः १)

पन्ना ३५४

ऐसा गुरमति रमतु सरीरा ॥ (३५४-१, आसा, मः १)
हरि भजु मेरे मन गहिर गम्भीरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३५४-१, आसा, मः १)
अनत तरंग भगति हरि रंगा ॥ (३५४-२, आसा, मः १)
अनदिनु सूचे हरि गुण संगा ॥ (३५४-२, आसा, मः १)
मिथिआ जनमु साकत संसारा ॥ (३५४-२, आसा, मः १)
राम भगति जनु रहै निरारा ॥२॥ (३५४-२, आसा, मः १)
सूची काइआ हरि गुण गाइआ ॥ (३५४-३, आसा, मः १)
आतमु चीनि रहै लिव लाइआ ॥ (३५४-३, आसा, मः १)
आदि अपारु अपरम्परु हीरा ॥ (३५४-४, आसा, मः १)
लालि रता मेरा मनु धीरा ॥३॥ (३५४-४, आसा, मः १)
कथनी कहहि कहहि से मूए ॥ (३५४-४, आसा, मः १)
सो प्रभु दूरि नाही प्रभु तूं है ॥ (३५४-५, आसा, मः १)
सभु जगु देखिआ माइआ छाइआ ॥ (३५४-५, आसा, मः १)
नानक गुरमति नामु धिआइआ ॥४॥१७॥ (३५४-५, आसा, मः १)
आसा महला १ तितुका ॥ (३५४-६)
कोई भीखकु भीखिआ खाइ ॥ (३५४-६, आसा, मः १)
कोई राजा रहिआ समाइ ॥ (३५४-६, आसा, मः १)
किस ही मानु किसै अपमानु ॥ (३५४-७, आसा, मः १)
ढाहि उसारे धरे धिआनु ॥ (३५४-७, आसा, मः १)
तुझ ते वडा नाही कोइ ॥ (३५४-७, आसा, मः १)

किसु वेखाली चंगा होइ ॥१॥ (३५४-७, आसा, मः १)
मै ताँ नामु तेरा आधारु ॥ (३५४-८, आसा, मः १)
तूं दाता करणहारु करतारु ॥१॥ रहाउ ॥ (३५४-८, आसा, मः १)
वाट न पावउ वीगा जाउ ॥ (३५४-८, आसा, मः १)
दरगह बैसण नाही थाउ ॥ (३५४-९, आसा, मः १)
मन का अंधुला माइआ का बंधु ॥ (३५४-९, आसा, मः १)
खीन खराबु होवै नित कंधु ॥ (३५४-९, आसा, मः १)
खाण जीवण की बहुती आस ॥ (३५४-१०, आसा, मः १)
लेखै तेरै सास गिरास ॥२॥ (३५४-१०, आसा, मः १)
अहिनिसि अंधुले दीपकु देइ ॥ (३५४-१०, आसा, मः १)
भउजल डूबत चिंत करेइ ॥ (३५४-१०, आसा, मः १)
कहहि सुणहि जो मानहि नाउ ॥ (३५४-११, आसा, मः १)
हउ बलिहारै ता कै जाउ ॥ (३५४-११, आसा, मः १)
नानकु एक कहै अरदासि ॥ (३५४-११, आसा, मः १)
जीउ पिंडु सभु तेरै पासि ॥३॥ (३५४-१२, आसा, मः १)
जाँ तूं देहि जपी तेरा नाउ ॥ (३५४-१२, आसा, मः १)
दरगह बैसण होवै थाउ ॥ (३५४-१२, आसा, मः १)
जाँ तुधु भावै ता दुरमति जाइ ॥ (३५४-१२, आसा, मः १)
गिआन रतनु मनि वसै आइ ॥ (३५४-१३, आसा, मः १)
नदरि करे ता सतिगुरु मिलै ॥ (३५४-१३, आसा, मः १)
प्रणवति नानकु भवजलु तरै ॥४॥१८॥ (३५४-१३, आसा, मः १)
आसा महला १ पंचपदे ॥ (३५४-१४)
दुध बिनु धेनु पंख बिनु पंखी जल बिनु उतभुज कामि नाही ॥ (३५४-१४, आसा, मः १)
किआ सुलतानु सलाम विहूणा अंधी कोठी तेरा नामु नाही ॥१॥ (३५४-१५, आसा, मः १)
की विसरहि दुखु बहुता लागै ॥ (३५४-१५, आसा, मः १)
दुखु लागै तूं विसरु नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (३५४-१६, आसा, मः १)
अखी अंधु जीभ रसु नाही कन्नी पवणु न वाजै ॥ (३५४-१६, आसा, मः १)
चरणी चलै पजूता आगै विणु सेवा फल लागे ॥२॥ (३५४-१७, आसा, मः १)
अखर बिरख बाग भुइ चोखी सिंचित भाउ करेही ॥ (३५४-१७, आसा, मः १)
सभना फलु लागै नामु एको बिनु करमा कैसे लेही ॥३॥ (३५४-१८, आसा, मः १)
जेते जीअ तेते सभि तेरे विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ (३५४-१८, आसा, मः १)
दुखु सुखु भाणा तेरा होवै विणु नावै जीउ रहै नाही ॥४॥ (३५४-१९, आसा, मः १)
मति विचि मरणु जीवणु होरु कैसा जा जीवा ताँ जुगति नाही ॥ (३५४-१९, आसा, मः १)

कहै नानकु जीवाले जीआ जह भावै तह राखु तुही ॥५॥१६॥ (३५५-१, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५५-२)
काइआ ब्रह्मा मनु है धोती ॥ (३५५-२, आसा, मः १)
गिआनु जनेऊ धिआनु कुसपाती ॥ (३५५-२, आसा, मः १)
हरि नामा जसु जाचउ नाउ ॥ (३५५-२, आसा, मः १)
गुर परसादी ब्रहमि समाउ ॥१॥ (३५५-३, आसा, मः १)
पाँडे ऐसा ब्रह्म बीचारु ॥ (३५५-३, आसा, मः १)
नामे सुचि नामो पड़उ नामे चजु आचारु ॥१॥ रहाउ ॥ (३५५-३, आसा, मः १)
बाहरि जनेऊ जिचरु जोति है नालि ॥ (३५५-४, आसा, मः १)
धोती टिका नामु समालि ॥ (३५५-४, आसा, मः १)
ऐथै ओथै निबही नालि ॥ (३५५-४, आसा, मः १)
विणु नावै होरि कर्म न भालि ॥२॥ (३५५-५, आसा, मः १)
पूजा प्रेम माइआ परजालि ॥ (३५५-५, आसा, मः १)
एको वेखहु अवरु न भालि ॥ (३५५-५, आसा, मः १)
चीन्है ततु गगन दस दुआर ॥ (३५५-६, आसा, मः १)
हरि मुखि पाठ पड़ै बीचार ॥३॥ (३५५-६, आसा, मः १)
भोजनु भाउ भरमु भउ भागै ॥ (३५५-६, आसा, मः १)
पाहरूअरा छबि चोरु न लागै ॥ (३५५-७, आसा, मः १)
तिलकु लिलाटि जाणै प्रभु एकु ॥ (३५५-७, आसा, मः १)
बूझै ब्रह्मु अंतरि बिबेकु ॥४॥ (३५५-७, आसा, मः १)
आचारी नही जीतिआ जाइ ॥ (३५५-८, आसा, मः १)
पाठ पड़ै नही कीमति पाइ ॥ (३५५-८, आसा, मः १)
असट दसी चहु भेदु न पाइआ ॥ (३५५-८, आसा, मः १)
नानक सतिगुरि ब्रह्मु दिखाइआ ॥५॥२०॥ (३५५-९, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५५-९)
सेवकु दासु भगतु जनु सोई ॥ (३५५-९, आसा, मः १)
ठाकुर का दासु गुरमुखि होई ॥ (३५५-९, आसा, मः १)
जिनि सिरि साजी तिनि फुनि गोई ॥ (३५५-१०, आसा, मः १)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥१॥ (३५५-१०, आसा, मः १)
साचु नामु गुर सबदि वीचारि ॥ (३५५-११, आसा, मः १)
गुरमुखि साचे साचै दरबारि ॥१॥ रहाउ ॥ (३५५-११, आसा, मः १)
सचा अरजु सची अरदासि ॥ (३५५-११, आसा, मः १)
महली खसमु सुणे साबासि ॥ (३५५-१२, आसा, मः १)

सचै तखति बुलावै सोइ ॥ (३५५-१२, आसा, मः १)
दे वडिआई करे सु होइ ॥२॥ (३५५-१२, आसा, मः १)
तेरा ताणु तूहै दीबाणु ॥ (३५५-१२, आसा, मः १)
गुर का सबदु सचु नीसाणु ॥ (३५५-१३, आसा, मः १)
मन्ने हुकमु सु परगटु जाइ ॥ (३५५-१३, आसा, मः १)
सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥३॥ (३५५-१३, आसा, मः १)
पंडित पड़हि वखाणहि वेदु ॥ (३५५-१४, आसा, मः १)
अंतरि वसतु न जाणहि भेदु ॥ (३५५-१४, आसा, मः १)
गुर बिनु सोझी बूझ न होइ ॥ (३५५-१४, आसा, मः १)
साचा रवि रहिआ प्रभु सोइ ॥४॥ (३५५-१४, आसा, मः १)
किआ हउ आखा आखि वखाणी ॥ (३५५-१५, आसा, मः १)
तूं आपे जाणहि सर्ब विडाणी ॥ (३५५-१५, आसा, मः १)
नानक एको दरु दीबाणु ॥ (३५५-१५, आसा, मः १)
गुरमुखि साचु तहा गुदराणु ॥५॥२१॥ (३५५-१६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५५-१६)
काची गागरि देह दुहेली उपजै बिनसै दुखु पाई ॥ (३५५-१६, आसा, मः १)
इहु जगु सागरु दुतरु किउ तरीऐ बिनु हरि गुर पारि न पाई ॥१॥ (३५५-१७, आसा, मः १)
तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे पिआरे तुझ बिनु अवरु न कोइ हरे ॥ (३५५-१७, आसा, मः १)
सरबी रंगी रूपी तूंहै तिसु बखसे जिसु नदरि करे ॥१॥ रहाउ ॥ (३५५-१८, आसा, मः १)
सासु बुरी घरि वासु न देवै पिर सिउ मिलण न देइ बुरी ॥ (३५५-१९, आसा, मः १)
सखी साजनी के हउ चरन सरेवउ हरि गुर किरपा ते नदरि धरी ॥२॥ (३५५-१९, आसा, मः १)

पन्ना ३५६

आपु बीचारि मारि मनु देखिआ तुम सा मीतु न अवरु कोई ॥ (३५६-१, आसा, मः १)
जिउ तूं राखहि तिव ही रहणा दुखु सुखु देवहि करहि सोई ॥३॥ (३५६-२, आसा, मः १)
आसा मनसा दोऊ बिनासत त्रिहु गुण आस निरास भई ॥ (३५६-२, आसा, मः १)
तुरीआवसथा गुरमुखि पाईऐ संत सभा की ओट लही ॥४॥ (३५६-३, आसा, मः १)
गिआन धिआन सगले सभि जप तप जिसु हरि हिरदै अलख अभेवा ॥ (३५६-४, आसा, मः १)
नानक राम नामि मनु राता गुरमति पाए सहज सेवा ॥५॥२२॥ (३५६-४, आसा, मः १)
आसा महला १ पंचपदे ॥ (३५६-५)
मोहु कुटम्बु मोहु सभ कार ॥ (३५६-५, आसा, मः १)
मोहु तुम तजहु सगल वेकार ॥१॥ (३५६-५, आसा, मः १)
मोहु अरु भरमु तजहु तुम्ह बीर ॥ (३५६-६, आसा, मः १)
साचु नामु रिदे रवै सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ (३५६-६, आसा, मः १)
सचु नामु जा नव निधि पाई ॥ (३५६-७, आसा, मः १)

रोवै पूतु न कलपै माई ॥२॥ (३५६-७, आसा, मः १)
एतु मोहि डूबा संसारु ॥ (३५६-७, आसा, मः १)
गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥३॥ (३५६-७, आसा, मः १)
एतु मोहि फिरि जूनी पाहि ॥ (३५६-८, आसा, मः १)
मोहे लागा जम पुरि जाहि ॥४॥ (३५६-८, आसा, मः १)
गुर दीखिआ ले जपु तपु कमाहि ॥ (३५६-८, आसा, मः १)
ना मोहु तूटै ना थाइ पाहि ॥५॥ (३५६-९, आसा, मः १)
नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥ (३५६-९, आसा, मः १)
नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥६॥२३॥ (३५६-९, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५६-१०)
आपि करे सचु अलख अपारु ॥ (३५६-१०, आसा, मः १)
हउ पापी तूं बखसणहारु ॥१॥ (३५६-१०, आसा, मः १)
तेरा भाणा सभु किछु होवै ॥ (३५६-११, आसा, मः १)
मनहठि कीचै अंति विगोवै ॥१॥ रहाउ ॥ (३५६-११, आसा, मः १)
मनमुख की मति कूड़ि विआपी ॥ (३५६-११, आसा, मः १)
बिनु हरि सिमरण पापि संतापी ॥२॥ (३५६-१२, आसा, मः १)
दुरमति तिआगि लाहा किछु लेवहु ॥ (३५६-१२, आसा, मः १)
जो उपजै सो अलख अभेवहु ॥३॥ (३५६-१२, आसा, मः १)
ऐसा हमरा सखा सहाई ॥ (३५६-१३, आसा, मः १)
गुर हरि मिलिआ भगति दृड़ाई ॥४॥ (३५६-१३, आसा, मः १)
सगलीं सउदीं तोटा आवै ॥ (३५६-१३, आसा, मः १)
नानक राम नामु मनि भावै ॥५॥२४॥ (३५६-१४, आसा, मः १)
आसा महला १ चउपदे ॥ (३५६-१४)
विदिआ वीचारी ताँ परउपकारी ॥ (३५६-१४, आसा, मः १)
जाँ पंच रासी ताँ तीर्थ वासी ॥१॥ (३५६-१५, आसा, मः १)
घुंघरू वाजै जे मनु लागै ॥ (३५६-१५, आसा, मः १)
तउ जमु कहा करे मो सिउ आगै ॥१॥ रहाउ ॥ (३५६-१५, आसा, मः १)
आस निरासी तउ संनिआसी ॥ (३५६-१६, आसा, मः १)
जाँ जतु जोगी ताँ काइआ भोगी ॥२॥ (३५६-१६, आसा, मः १)
दइआ दिगम्बरु देह बीचारी ॥ (३५६-१६, आसा, मः १)
आपि मरै अवरा नह मारी ॥३॥ (३५६-१७, आसा, मः १)
एकु तू होरि वेस बहुतेरे ॥ (३५६-१७, आसा, मः १)
नानकु जाणै चोज न तेरे ॥४॥२५॥ (३५६-१७, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५६-१८)
एक न भरीआ गुण करि धोवा ॥ (३५६-१८, आसा, मः १)

मेरा सहु जागै हउ निसि भरि सोवा ॥१॥ (३५६-१८, आसा, मः १)
इउ किउ कंत पिआरी होवा ॥ (३५६-१६, आसा, मः १)
सहु जागै हउ निस भरि सोवा ॥१॥ रहाउ ॥ (३५६-१६, आसा, मः १)

पन्ना ३५७

आस पिआसी सेजै आवा ॥ (३५७-१, आसा, मः १)
आगै सह भावा कि न भावा ॥२॥ (३५७-१, आसा, मः १)
किआ जाना किआ होइगा री माई ॥ (३५७-१, आसा, मः १)
हरि दरसन बिनु रहनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३५७-१, आसा, मः १)
प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी ॥ (३५७-२, आसा, मः १)
गइआ सु जोबनु धन पछुतानी ॥३॥ (३५७-२, आसा, मः १)
अजै सु जागउ आस पिआसी ॥ (३५७-३, आसा, मः १)
भईले उदासी रहउ निरासी ॥१॥ रहाउ ॥ (३५७-३, आसा, मः १)
हउमै खोइ करे सीगारु ॥ (३५७-४, आसा, मः १)
तउ कामणि सेजै रवै भतारु ॥४॥ (३५७-४, आसा, मः १)
तउ नानक कंतै मनि भावै ॥ (३५७-४, आसा, मः १)
छोडि वडाई अपणे खसम समावै ॥१॥ रहाउ ॥२६॥ (३५७-४, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५७-५)
पेवकड़ै धन खरी इआणी ॥ (३५७-५, आसा, मः १)
तिसु सह की मै सार न जाणी ॥१॥ (३५७-६, आसा, मः १)
सहु मेरा एकु दूजा नही कोई ॥ (३५७-६, आसा, मः १)
नदरि करे मेलावा होई ॥१॥ रहाउ ॥ (३५७-६, आसा, मः १)
साहुरड़ै धन साचु पछाणिआ ॥ (३५७-७, आसा, मः १)
सहजि सुभाइ अपणा पिरु जाणिआ ॥२॥ (३५७-७, आसा, मः १)
गुर परसादी ऐसी मति आवै ॥ (३५७-८, आसा, मः १)
ताँ कामणि कंतै मनि भावै ॥३॥ (३५७-८, आसा, मः १)
कहतु नानकु भै भाव का करे सीगारु ॥ (३५७-८, आसा, मः १)
सद ही सेजै रवै भतारु ॥४॥२७॥ (३५७-६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५७-६)
न किस का पूतु न किस की माई ॥ (३५७-६, आसा, मः १)
झूठै मोहि भरमि भुलाई ॥१॥ (३५७-६, आसा, मः १)
मेरे साहिब हउ कीता तेरा ॥ (३५७-१०, आसा, मः १)
जाँ तूं देहि जपी नाउ तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३५७-१०, आसा, मः १)
बहुते अउगण कूकै कोई ॥ (३५७-१०, आसा, मः १)
जा तिसु भावै बखसे सोई ॥२॥ (३५७-११, आसा, मः १)

गुर परसादी दुरमति खोई ॥ (३५७-११, आसा, मः १)
जह देखा तह एको सोई ॥३॥ (३५७-११, आसा, मः १)
कहत नानक ऐसी मति आवै ॥ (३५७-१२, आसा, मः १)
ताँ को सचे सचि समावै ॥४॥२८॥ (३५७-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ दुपदे ॥ (३५७-१२)
तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ (३५७-१३, आसा, मः १)
पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ (३५७-१३, आसा, मः १)
मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ (३५७-१४, आसा, मः १)
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३५७-१४, आसा, मः १)
ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ (३५७-१५, आसा, मः १)
प्रणवति नानक तिन् की सरणा जिन् तूं नाही वीसरिआ ॥२॥२९॥ (३५७-१५, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५७-१६)
छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ (३५७-१६, आसा, मः १)
गुर गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ (३५७-१६, आसा, मः १)
जै घरि करते कीरति होइ ॥ (३५७-१७, आसा, मः १)
सो घरु राखु वडाई तोहि ॥१॥ रहाउ ॥ (३५७-१७, आसा, मः १)
विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु भइआ ॥ (३५७-१७, आसा, मः १)
सूरजु एको रुति अनेक ॥ (३५७-१८, आसा, मः १)
नानक करते के केते वेस ॥२॥३०॥ (३५७-१८, आसा, मः १)

पन्ना ३५८

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३५८-१)
आसा घरु ३ महला १ ॥ (३५८-१)
लख लसकर लख वाजे नेजे लख उठि करहि सलामु ॥ (३५८-१, आसा, मः १)
लखा उपरि फुरमाइसि तेरी लख उठि राखहि मानु ॥ (३५८-२, आसा, मः १)
जाँ पति लेखै ना पवै ताँ सभि निराफल काम ॥१॥ (३५८-२, आसा, मः १)
हरि के नाम बिना जगु धंधा ॥ (३५८-३, आसा, मः १)
जे बहुता समझाईऐ भोला भी सो अंधो अंधा ॥१॥ रहाउ ॥ (३५८-३, आसा, मः १)
लख खटीअहि लख संजीअहि खाजहि लख आवहि लख जाहि ॥ (३५८-३, आसा, मः १)
जाँ पति लेखै ना पवै ताँ जीअ किथै फिरि पाहि ॥२॥ (३५८-४, आसा, मः १)
लख सासत समझावणी लख पंडित पड़हि पुराण ॥ (३५८-५, आसा, मः १)
जाँ पति लेखै ना पवै ताँ सभे कुपरवाण ॥३॥ (३५८-५, आसा, मः १)
सच नामि पति ऊपजै करमि नामु करतारु ॥ (३५८-६, आसा, मः १)
अहिनिसि हिरदै जे वसै नानक नदरी पारु ॥४॥१॥३१॥ (३५८-६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५८-७)

दीवा मेरा एकु नामु दुखु विचि पाइआ तेलु ॥ (३५८-७, आसा, मः १)
उनि चानणि ओहु सोखिआ चूका जम सिउ मेलु ॥१॥ (३५८-७, आसा, मः १)
लोका मत को फकड़ि पाइ ॥ (३५८-८, आसा, मः १)
लख मड़िआ करि एकठे एक रती ले भाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (३५८-८, आसा, मः १)
पिंडु पतलि मेरी केसउ किरिआ सचु नामु करतारु ॥ (३५८-९, आसा, मः १)
ऐथै ओथै आगै पाछै एहु मेरा आधारु ॥२॥ (३५८-९, आसा, मः १)
गंग बनारसि सिफति तुमारी नावै आतम राउ ॥ (३५८-९, आसा, मः १)
सचा नावणु ताँ थीऐ जाँ अहिनिसि लागै भाउ ॥३॥ (३५८-१०, आसा, मः १)
इक लोकी होरु छमिछरी ब्राहमणु वटि पिंडु खाइ ॥ (३५८-१०, आसा, मः १)
नानक पिंडु बखसीस का कबहूं निखूटसि नाहि ॥४॥२॥३२॥ (३५८-११, आसा, मः १)
आसा घरु ४ महला १ (३५८-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३५८-१३)
देवतिआ दरसन कै ताई दूख भूख तीर्थ कीए ॥ (३५८-१३, आसा, मः १)
जोगी जती जुगति महि रहते करि करि भगवे भेख भए ॥१॥ (३५८-१३, आसा, मः १)
तउ कारणि साहिबा रंगि रते ॥ (३५८-१४, आसा, मः १)
तेरे नाम अनेका रूप अनंता कहणु न जाही तेरे गुण केते ॥१॥ रहाउ ॥ (३५८-१४, आसा, मः १)
दर घर महला हसती घोड़े छोडि विलाइति देस गए ॥ (३५८-१५, आसा, मः १)
पीर पेकाँबर सालिक सादिक छोडी दुनीआ थाइ पए ॥२॥ (३५८-१५, आसा, मः १)
साद सहज सुख रस कस तजीअले कापड़ छोडे चमड़ लीए ॥ (३५८-१६, आसा, मः १)
दुखीए दरदवंद दरि तेरै नामि रते दरवेस भए ॥३॥ (३५८-१७, आसा, मः १)
खलड़ी खपरी लकड़ी चमड़ी सिखा सूतु धोती कीन्ही ॥ (३५८-१७, आसा, मः १)
तूं साहिबु हउ साँगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥४॥१॥३३॥ (३५८-१८, आसा, मः १)

पन्ना ३५९

आसा घरु ५ महला १ (३५९-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३५९-२)
भीतरि पंच गुप्त मनि वासे ॥ (३५९-२, आसा, मः १)
थिरु न रहहि जैसे भवहि उदासे ॥१॥ (३५९-२, आसा, मः १)
मनु मेरा दइआल सेती थिरु न रहै ॥ (३५९-२, आसा, मः १)
लोभी कपटी पापी पाखंडी माइआ अधिक लगै ॥१॥ रहाउ ॥ (३५९-३, आसा, मः १)
फूल माला गलि पहिरउगी हारो ॥ (३५९-४, आसा, मः १)
मिलैगा प्रीतमु तब करउगी सीगारो ॥२॥ (३५९-४, आसा, मः १)
पंच सखी हम एकु भतारो ॥ (३५९-४, आसा, मः १)
पेडि लगी है जीअड़ा चालणहारो ॥३॥ (३५९-५, आसा, मः १)
पंच सखी मिलि रुदनु करेहा ॥ (३५९-५, आसा, मः १)

साहु पजूता प्रणवति नानक लेखा देहा ॥४॥१॥३४॥ (३५६-५, आसा, मः १)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३५६-७)
आसा घरु ६ महला १ ॥ (३५६-८)
मनु मोती जे गहणा होवै पउणु होवै सूत धारी ॥ (३५६-८, आसा, मः १)
खिमा सीगारु कामणि तनि पहिरै रावै लाल पिआरी ॥१॥ (३५६-८, आसा, मः १)
लाल बहु गुणि कामणि मोही ॥ (३५६-९, आसा, मः १)
तेरे गुण होहि न अवरी ॥१॥ रहाउ ॥ (३५६-९, आसा, मः १)
हरि हरि हारु कंठि ले पहिरै दामोदरु दंतु लेई ॥ (३५६-१०, आसा, मः १)
कर करि करता कंगन पहिरै इन बिधि चितु धरेई ॥२॥ (३५६-१०, आसा, मः १)
मधुसूदनु कर मुंदरी पहिरै परमेसरु पटु लेई ॥ (३५६-११, आसा, मः १)
धीरजु धड़ी बंधावै कामणि स्रीरंगु सुरमा देई ॥३॥ (३५६-११, आसा, मः १)
मन मंदरि जे दीपकु जाले काइआ सेज करेई ॥ (३५६-१२, आसा, मः १)
गिआन राउ जब सेजै आवै त नानक भोगु करेई ॥४॥१॥३५॥ (३५६-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५६-१३)
कीता होवै करे कराइआ तिसु किआ कहीऐ भाई ॥ (३५६-१३, आसा, मः १)
जो किछु करणा सो करि रहिआ कीते किआ चतुराई ॥१॥ (३५६-१४, आसा, मः १)
तेरा हुकमु भला तुधु भावै ॥ (३५६-१४, आसा, मः १)
नानक ता कउ मिलै वडाई साचे नामि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ (३५६-१४, आसा, मः १)
किरतु पइआ परवाणा लिखिआ बाहुड़ि हुकमु न होई ॥ (३५६-१५, आसा, मः १)
जैसा लिखिआ तैसा पड़िआ मेटि न सकै कोई ॥२॥ (३५६-१६, आसा, मः १)
जे को दरगह बहुता बोलै नाउ पवै बाजारी ॥ (३५६-१६, आसा, मः १)
सतरंज बाजी पकै नाही कची आवै सारी ॥३॥ (३५६-१७, आसा, मः १)
ना को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा ॥ (३५६-१७, आसा, मः १)
बंदी अंदरि सिफति कराए ता कउ कहीऐ बंदा ॥४॥२॥३६॥ (३५६-१८, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३५६-१८)
गुर का सबदु मनै महि मुंद्रा खिंथा खिमा हढावउ ॥ (३५६-१८, आसा, मः १)
जो किछु करै भला करि मानउ सहज जोग निधि पावउ ॥१॥ (३५६-१९, आसा, मः १)

पन्ना ३६०

बाबा जुगता जीउ जुगह जुग जोगी परम तंत महि जोगं ॥ (३६०-१, आसा, मः १)
अमृतु नामु निरंजन पाइआ गिआन काइआ रस भोगं ॥१॥ रहाउ ॥ (३६०-१, आसा, मः १)
सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप तिआगी बादं ॥ (३६०-२, आसा, मः १)
सिंङी सबदु सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं ॥२॥ (३६०-२, आसा, मः १)
पतु वीचारु गिआन मति डंडा वरतमान बिभूतं ॥ (३६०-३, आसा, मः १)
हरि कीरति रहरासि हमारी गुरमुखि पंथु अतीतं ॥३॥ (३६०-३, आसा, मः १)

सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरन अनेकं ॥ (३६०-४, आसा, मः १)
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी पारब्रह्म लिव एकं ॥४॥३॥३७॥ (३६०-५, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३६०-५)
गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि धावै करि करणी कसु पाईऐ ॥ (३६०-५, आसा, मः १)
भाठी भवनु प्रेम का पोचा इतु रसि अमिउ चुआईऐ ॥१॥ (३६०-६, आसा, मः १)
बाबा मनु मतवारो नाम रसु पीवै सहज रंग रचि रहिआ ॥ (३६०-७, आसा, मः १)
अहिनिसि बनी प्रेम लिव लागी सबदु अनाहद गहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६०-७, आसा, मः १)
पूरा साचु पिआला सहजे तिसहि पीआए जा कउ नदरि करे ॥ (३६०-८, आसा, मः १)
अमृत का वापारी होवै किआ मदि छूछै भाउ धरे ॥२॥ (३६०-९, आसा, मः १)
गुर की साखी अमृत बाणी पीवत ही परवाणु भइआ ॥ (३६०-९, आसा, मः १)
दर दरसन का प्रीतमु होवै मुकति बैकुंठै करै किआ ॥३॥ (३६०-१०, आसा, मः १)
सिफती रता सद बैरागी जूऐ जनमु न हारै ॥ (३६०-१०, आसा, मः १)
कहु नानक सुणि भरथरि जोगी खीवा अमृत धारै ॥४॥४॥३८॥ (३६०-११, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (३६०-१२)
खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ ॥ (३६०-१२, आसा, मः १)
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ ॥ (३६०-१२, आसा, मः १)
एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ ॥१॥ (३६०-१३, आसा, मः १)
करता तूं सभना का सोई ॥ (३६०-१३, आसा, मः १)
जे सकता सकते कउ मारे ता मनि रोसु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (३६०-१४, आसा, मः १)
सकता सीहु मारे पै वगै खसमै सा पुरसाई ॥ (३६०-१४, आसा, मः १)
रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई ॥ (३६०-१५, आसा, मः १)
आपे जोड़ि विछोड़े आपे वेखु तेरी वडिआई ॥२॥ (३६०-१५, आसा, मः १)
जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥ (३६०-१६, आसा, मः १)
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥ (३६०-१६, आसा, मः १)
मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥३॥५॥३९॥ (३६०-१७, आसा, मः १)
रागु आसा घरु २ महला ३ (३६०-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६०-१८)
हरि दरसनु पावै वडभागि ॥ (३६०-१९, आसा, मः ३)
गुर कै सबदि सचै बैरागि ॥ (३६०-१९, आसा, मः ३)
खटु दरसनु वरतै वरतारा ॥ (३६०-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ३६१

गुर का दरसनु अगम अपारा ॥१॥ (३६१-१, आसा, मः ३)
गुर कै दरसनि मुकति गति होइ ॥ (३६१-१, आसा, मः ३)
साचा आपि वसै मनि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६१-१, आसा, मः ३)

गुर दरसनि उधरै संसारा ॥ (३६१-२, आसा, मः ३)
जे को लाए भाउ पिआरा ॥ (३६१-२, आसा, मः ३)
भाउ पिआरा लाए विरला कोइ ॥ (३६१-२, आसा, मः ३)
गुर कै दरसनि सदा सुखु होइ ॥२॥ (३६१-३, आसा, मः ३)
गुर कै दरसनि मोख दुआरु ॥ (३६१-३, आसा, मः ३)
सतिगुरु सेवै परवार साधारु ॥ (३६१-३, आसा, मः ३)
निगुरे कउ गति काई नाही ॥ (३६१-४, आसा, मः ३)
अवगणि मुठे चोटा खाही ॥३॥ (३६१-४, आसा, मः ३)
गुर कै सबदि सुखु साँति सरीर ॥ (३६१-४, आसा, मः ३)
गुरमुखि ता कउ लगै न पीर ॥ (३६१-५, आसा, मः ३)
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै ॥ (३६१-५, आसा, मः ३)
नानक गुरमुखि साचि समावै ॥४॥१॥४०॥ (३६१-५, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६१-६)
सबदि मुआ विचहु आपु गवाइ ॥ (३६१-६, आसा, मः ३)
सतिगुरु सेवे तिलु न तमाइ ॥ (३६१-६, आसा, मः ३)
निरभउ दाता सदा मनि होइ ॥ (३६१-७, आसा, मः ३)
सची बाणी पाए भागि कोइ ॥१॥ (३६१-७, आसा, मः ३)
गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥ (३६१-७, आसा, मः ३)
पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (३६१-८, आसा, मः ३)
गुणा का गाहकु होवै सो गुण जाणै ॥ (३६१-८, आसा, मः ३)
अमृत सबदि नामु वखाणै ॥ (३६१-८, आसा, मः ३)
साची बाणी सूचा होइ ॥ (३६१-९, आसा, मः ३)
गुण ते नामु परापति होइ ॥२॥ (३६१-९, आसा, मः ३)
गुण अमोलक पाए न जाहि ॥ (३६१-९, आसा, मः ३)
मनि निर्मल साचै सबदि समाहि ॥ (३६१-९, आसा, मः ३)
से वडभागी जिन्ह नामु धिआइआ ॥ (३६१-१०, आसा, मः ३)
सदा गुणदाता मंनि वसाइआ ॥३॥ (३६१-१०, आसा, मः ३)
जो गुण संग्रहै तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ (३६१-११, आसा, मः ३)
दरि साचै साचे गुण गाउ ॥ (३६१-११, आसा, मः ३)
आपे देवै सहजि सुभाइ ॥ (३६१-११, आसा, मः ३)
नानक कीमति कहणु न जाइ ॥४॥२॥४१॥ (३६१-१२, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६१-१२)
सतिगुर विचि वडी वडिआई ॥ (३६१-१२, आसा, मः ३)
चिरी विछुन्ने मेलि मिलाई ॥ (३६१-१२, आसा, मः ३)
आपे मेले मेलि मिलाए ॥ (३६१-१३, आसा, मः ३)

आपणी कीमति आपे पाए ॥१॥ (३६१-१३, आसा, मः ३)
हरि की कीमति किन बिधि होइ ॥ (३६१-१३, आसा, मः ३)
हरि अपरम्परु अगम अगोचरु गुर कै सबदि मिलै जनु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६१-१४, आसा, मः ३)
गुरमुखि कीमति जाणै कोइ ॥ (३६१-१५, आसा, मः ३)
विरले करमि परापति होइ ॥ (३६१-१५, आसा, मः ३)
ऊची बाणी ऊचा होइ ॥ (३६१-१५, आसा, मः ३)
गुरमुखि सबदि वखाणै कोइ ॥२॥ (३६१-१५, आसा, मः ३)
विणु नावै दुखु दरदु सरीरि ॥ (३६१-१६, आसा, मः ३)
सतिगुरु भेटे ता उतरै पीर ॥ (३६१-१६, आसा, मः ३)
बिनु गुर भेटे दुखु कमाइ ॥ (३६१-१६, आसा, मः ३)
मनमुखि बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ (३६१-१७, आसा, मः ३)
हरि का नामु मीठा अति रसु होइ ॥ (३६१-१७, आसा, मः ३)
पीवत रहै पीआए सोइ ॥ (३६१-१७, आसा, मः ३)
गुर किरपा ते हरि रसु पाए ॥ (३६१-१८, आसा, मः ३)
नानक नामि रते गति पाए ॥४॥३॥४२॥ (३६१-१८, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६१-१८)
मेरा प्रभु साचा गहिर गम्भीर ॥ (३६१-१९, आसा, मः ३)
सेवत ही सुखु साँति सरीर ॥ (३६१-१९, आसा, मः ३)
सबदि तरे जन सहजि सुभाइ ॥ (३६१-१९, आसा, मः ३)
तिन कै हम सद लागह पाइ ॥१॥ (३६१-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ३६२

जो मनि राते हरि रंगु लाइ ॥ (३६२-१, आसा, मः ३)
तिन का जनम मरण दुखु लाथा ते हरि दरगह मिले सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६२-१, आसा, मः ३)
सबदु चाखै साचा सादु पाए ॥ (३६२-२, आसा, मः ३)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (३६२-२, आसा, मः ३)
हरि प्रभु सदा रहिआ भरपूरि ॥ (३६२-२, आसा, मः ३)
आपे नेड़ै आपे दूरि ॥२॥ (३६२-३, आसा, मः ३)
आखणि आखै बकै सभु कोइ ॥ (३६२-३, आसा, मः ३)
आपे बखसि मिलाए सोइ ॥ (३६२-३, आसा, मः ३)
कहणै कथनि न पाइआ जाइ ॥ (३६२-४, आसा, मः ३)
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥३॥ (३६२-४, आसा, मः ३)
गुरमुखि विचहु आपु गवाइ ॥ (३६२-४, आसा, मः ३)
हरि रंगि राते मोहु चुकाइ ॥ (३६२-५, आसा, मः ३)
अति निरमलु गुर सबद वीचार ॥ (३६२-५, आसा, मः ३)

नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥४३॥ (३६२-५, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६२-६)
दूजै भाइ लगे दुखु पाइआ ॥ (३६२-६, आसा, मः ३)
बिनु सबदै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (३६२-६, आसा, मः ३)
सतिगुरु सेवै सोझी होइ ॥ (३६२-७, आसा, मः ३)
दूजै भाइ न लागै कोइ ॥१॥ (३६२-७, आसा, मः ३)
मूलि लागे से जन परवाणु ॥ (३६२-७, आसा, मः ३)
अनदिनु राम नामु जपि हिरदै गुर सबदी हरि एको जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (३६२-७, आसा, मः ३)
डाली लागै निहफलु जाइ ॥ (३६२-८, आसा, मः ३)
अंधीं कम्मी अंध सजाइ ॥ (३६२-८, आसा, मः ३)
मनमुखु अंधा ठउर न पाइ ॥ (३६२-९, आसा, मः ३)
बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि पचाइ ॥२॥ (३६२-९, आसा, मः ३)
गुर की सेवा सदा सुखु पाए ॥ (३६२-९, आसा, मः ३)
संतसंगति मिलि हरि गुण गाए ॥ (३६२-१०, आसा, मः ३)
नामे नामि करे वीचारु ॥ (३६२-१०, आसा, मः ३)
आपि तरै कुल उधरणहारु ॥३॥ (३६२-१०, आसा, मः ३)
गुर की बाणी नामि वजाए ॥ (३६२-११, आसा, मः ३)
नानक महलु सबदि घरु पाए ॥ (३६२-११, आसा, मः ३)
गुरमति सत सरि हरि जलि नाइआ ॥ (३६२-११, आसा, मः ३)
दुरमति मैलु सभु दुरतु गवाइआ ॥४॥५॥४४॥ (३६२-१२, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६२-१२)
मनमुख मरहि मरि मरणु विगाड़हि ॥ (३६२-१३, आसा, मः ३)
दूजै भाइ आतम संघारहि ॥ (३६२-१३, आसा, मः ३)
मेरा मेरा करि करि विगूता ॥ (३६२-१३, आसा, मः ३)
आतमु न चीनै भरमै विचि सूता ॥१॥ (३६२-१४, आसा, मः ३)
मरु मुइआ सबदे मरि जाइ ॥ (३६२-१४, आसा, मः ३)
उसतति निंदा गुरि सम जाणाई इसु जुग महि लाहा हरि जपि लै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६२-१४, आसा, मः ३)
नाम विहूण गरभ गलि जाइ ॥ (३६२-१५, आसा, मः ३)
बिरथा जनमु दूजै लोभाइ ॥ (३६२-१५, आसा, मः ३)
नाम बिहूणी दुखि जलै सबाई ॥ (३६२-१६, आसा, मः ३)
सतिगुरि पूरै बूझ बुझाई ॥२॥ (३६२-१६, आसा, मः ३)
मनु चंचलु बहु चोटा खाइ ॥ (३६२-१६, आसा, मः ३)
एथहु छुड़किआ ठउर न पाइ ॥ (३६२-१७, आसा, मः ३)
गरभ जोनि विसटा का वासु ॥ (३६२-१७, आसा, मः ३)
तितु घरि मनमुखु करे निवासु ॥३॥ (३६२-१७, आसा, मः ३)

अपुने सतिगुर कउ सदा बलि जाई ॥ (३६२-१८, आसा, मः ३)
गुरमुखि जोती जोति मिलाई ॥ (३६२-१८, आसा, मः ३)
निर्मल बाणी निज घरि वासा ॥ (३६२-१८, आसा, मः ३)
नानक हउमै मारे सदा उदासा ॥४॥६॥४५॥ (३६२-१९, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६२-१९)
लालै आपणी जाति गवाई ॥ (३६२-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ३६३

तनु मनु अरपे सतिगुर सरणाई ॥ (३६३-१, आसा, मः ३)
हिरदै नामु वडी वडिआई ॥ (३६३-१, आसा, मः ३)
सदा प्रीतमु प्रभु होइ सखाई ॥१॥ (३६३-१, आसा, मः ३)
सो लाला जीवतु मरै ॥ (३६३-२, आसा, मः ३)
सोगु हरखु दुइ सम करि जाणै गुर परसादी सबदि उधरै ॥१॥ रहाउ ॥ (३६३-२, आसा, मः ३)
करणी कार धुरहु फुरमाई ॥ (३६३-३, आसा, मः ३)
बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥ (३६३-३, आसा, मः ३)
करणी कीरति नामु वसाई ॥ (३६३-३, आसा, मः ३)
आपे देवै ढिल न पाई ॥२॥ (३६३-४, आसा, मः ३)
मनमुखि भरमि भुलै संसारु ॥ (३६३-४, आसा, मः ३)
बिनु रासी कूड़ा करे वापारु ॥ (३६३-४, आसा, मः ३)
विणु रासी वखरु पलै न पाइ ॥ (३६३-४, आसा, मः ३)
मनमुखि भुला जनमु गवाइ ॥३॥ (३६३-५, आसा, मः ३)
सतिगुरु सेवे सु लाला होइ ॥ (३६३-५, आसा, मः ३)
ऊतम जाती ऊतमु सोइ ॥ (३६३-५, आसा, मः ३)
गुर पउड़ी सभ दू ऊचा होइ ॥ (३६३-६, आसा, मः ३)
नानक नामि वडाई होइ ॥४॥७॥४६॥ (३६३-६, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६३-६)
मनमुखि झूठो झूठु कमावै ॥ (३६३-७, आसा, मः ३)
खसमै का महलु कदे न पावै ॥ (३६३-७, आसा, मः ३)
दूजै लगी भरमि भुलावै ॥ (३६३-७, आसा, मः ३)
ममता बाधा आवै जावै ॥१॥ (३६३-७, आसा, मः ३)
दोहागणी का मन देखु सीगारु ॥ (३६३-८, आसा, मः ३)
पुत्र कलति धनि माइआ चितु लाए झूठु मोहु पाखंड विकारु ॥ रहाउ ॥१॥ (३६३-८, आसा, मः ३)
सदा सोहागणि जो प्रभ भावै ॥ (३६३-९, आसा, मः ३)
गुर सबदी सीगारु बणावै ॥ (३६३-९, आसा, मः ३)
सेज सुखाली अनदिनु हरि रावै ॥ (३६३-९, आसा, मः ३)

मिलि प्रीतम सदा सुखु पावै ॥२॥ (३६३-१०, आसा, मः ३)
सा सोहागणि साची जिसु साचि पिआरु ॥ (३६३-१०, आसा, मः ३)
अपणा पिरु राखै सदा उर धारि ॥ (३६३-११, आसा, मः ३)
नेड़ै वेखै सदा हदूरि ॥ (३६३-११, आसा, मः ३)
मेरा प्रभु सर्ब रहिआ भरपूरि ॥३॥ (३६३-११, आसा, मः ३)
आगै जाति रूपु न जाइ ॥ (३६३-११, आसा, मः ३)
तेहा होवै जेहे कर्म कमाइ ॥ (३६३-१२, आसा, मः ३)
सबदे ऊचो ऊचा होइ ॥ (३६३-१२, आसा, मः ३)
नानक साचि समावै सोइ ॥४॥८॥४७॥ (३६३-१२, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६३-१३)
भगति रता जनु सहजि सुभाइ ॥ (३६३-१३, आसा, मः ३)
गुर कै भै साचै साचि समाइ ॥ (३६३-१३, आसा, मः ३)
बिनु गुर पूरे भगति न होइ ॥ (३६३-१३, आसा, मः ३)
मनमुख रुन्ने अपनी पति खोइ ॥१॥ (३६३-१४, आसा, मः ३)
मेरे मन हरि जपि सदा धिआइ ॥ (३६३-१४, आसा, मः ३)
सदा अनंदु होवै दिनु राती जो इछै सोई फलु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६३-१४, आसा, मः ३)
गुर पूरे ते पूरा पाए ॥ (३६३-१५, आसा, मः ३)
हिरदै सबदु सचु नामु वसाए ॥ (३६३-१५, आसा, मः ३)
अंतरु निरमलु अमृत सरि नाए ॥ (३६३-१६, आसा, मः ३)
सदा सूचे साचि समाए ॥२॥ (३६३-१६, आसा, मः ३)
हरि प्रभु वेखै सदा हजूरि ॥ (३६३-१६, आसा, मः ३)
गुर परसादि रहिआ भरपूरि ॥ (३६३-१७, आसा, मः ३)
जहा जाउ तह वेखा सोइ ॥ (३६३-१७, आसा, मः ३)
गुर बिनु दाता अवरु न कोइ ॥३॥ (३६३-१७, आसा, मः ३)
गुरु सागरु पूरा भंडार ॥ (३६३-१८, आसा, मः ३)
ऊतम रतन जवाहर अपार ॥ (३६३-१८, आसा, मः ३)
गुर परसादी देवणहारु ॥ (३६३-१८, आसा, मः ३)
नानक बखसे बखसणहारु ॥४॥९॥४८॥ (३६३-१८, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६३-१९)
गुरु साइरु सतिगुरु सचु सोइ ॥ (३६३-१९, आसा, मः ३)
पूरै भागि गुर सेवा होइ ॥ (३६३-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ३६४

सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ (३६४-१, आसा, मः ३)
गुर परसादी सेव कराए ॥१॥ (३६४-१, आसा, मः ३)

गिआन रतनि सभ सोझी होइ ॥ (३६४-१, आसा, मः ३)
गुर परसादि अगिआनु बिनासै अनदिनु जागै वेखै सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६४-२, आसा, मः ३)
मोहु गुमानु गुर सबदि जलाए ॥ (३६४-२, आसा, मः ३)
पूरे गुर ते सोझी पाए ॥ (३६४-३, आसा, मः ३)
अंतरि महलु गुर सबदि पछाणै ॥ (३६४-३, आसा, मः ३)
आवण जाणु रहै थिरु नामि समाणे ॥२॥ (३६४-३, आसा, मः ३)
जम्मणु मरणा है संसारु ॥ (३६४-४, आसा, मः ३)
मनमुखु अचेतु माइआ मोहु गुबारु ॥ (३६४-४, आसा, मः ३)
पर निंदा बहु कूड़ु कमावै ॥ (३६४-४, आसा, मः ३)
विसटा का कीड़ा विसटा माहि समावै ॥३॥ (३६४-५, आसा, मः ३)
सतसंगति मिलि सभ सोझी पाए ॥ (३६४-५, आसा, मः ३)
गुर का सबदु हरि भगति दृड़ाए ॥ (३६४-५, आसा, मः ३)
भाणा मन्ने सदा सुखु होइ ॥ (३६४-६, आसा, मः ३)
नानक सचि समावै सोइ ॥४॥१०॥४९॥ (३६४-६, आसा, मः ३)
आसा महला ३ पंचपदे ॥ (३६४-६)
सबदि मरै तिसु सदा अनंद ॥ (३६४-७, आसा, मः ३)
सतिगुर भेटे गुर गोबिंद ॥ (३६४-७, आसा, मः ३)
ना फिरि मरै न आवै जाइ ॥ (३६४-७, आसा, मः ३)
पूरे गुर ते साचि समाइ ॥१॥ (३६४-७, आसा, मः ३)
जिन् कउ नामु लिखिआ धुरि लेखु ॥ (३६४-८, आसा, मः ३)
ते अनदिनु नामु सदा धिआवहि गुर पूरे ते भगति विसेखु ॥१॥ रहाउ ॥ (३६४-८, आसा, मः ३)
जिन् कउ हरि प्रभु लए मिलाइ ॥ (३६४-९, आसा, मः ३)
तिन् की गहण गति कही न जाइ ॥ (३६४-९, आसा, मः ३)
पूरै सतिगुर दिती वडिआई ॥ (३६४-१०, आसा, मः ३)
ऊतम पदवी हरि नामि समाई ॥२॥ (३६४-१०, आसा, मः ३)
जो किछु करे सु आपे आपि ॥ (३६४-१०, आसा, मः ३)
एक घड़ी महि थापि उथापि ॥ (३६४-११, आसा, मः ३)
कहि कहि कहणा आखि सुणाए ॥ (३६४-११, आसा, मः ३)
जे सउ घाले थाइ न पाए ॥३॥ (३६४-११, आसा, मः ३)
जिन् कै पोतै पुन्नु तिना गुरू मिलाए ॥ (३६४-१२, आसा, मः ३)
सचु बाणी गुरु सबदु सुणाए ॥ (३६४-१२, आसा, मः ३)
जहाँ सबदु वसै तहाँ दुखु जाए ॥ (३६४-१२, आसा, मः ३)
गिआनि रतनि साचै सहजि समाए ॥४॥ (३६४-१३, आसा, मः ३)
नावै जेवडु होरु धनु नाही कोइ ॥ (३६४-१३, आसा, मः ३)
जिस नो बखसे साचा सोइ ॥ (३६४-१३, आसा, मः ३)

पूरै सबदि मंनि वसाए ॥ (३६४-१४, आसा, मः ३)
नानक नामि रते सुखु पाए ॥५॥११॥५०॥ (३६४-१४, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (३६४-१४)
निरति करे बहु वाजे वजाए ॥ (३६४-१५, आसा, मः ३)
इहु मनु अंधा बोला है किसु आखि सुणाए ॥ (३६४-१५, आसा, मः ३)
अंतरि लोभु भरमु अनल वाउ ॥ (३६४-१५, आसा, मः ३)
दीवा बलै न सोझी पाइ ॥१॥ (३६४-१६, आसा, मः ३)
गुरमुखि भगति घटि चानणु होइ ॥ (३६४-१६, आसा, मः ३)
आपु पछाणि मिलै प्रभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६४-१६, आसा, मः ३)
गुरमुखि निरति हरि लागै भाउ ॥ (३६४-१७, आसा, मः ३)
पूरे ताल विचहु आपु गवाइ ॥ (३६४-१७, आसा, मः ३)
मेरा प्रभु साचा आपे जाणु ॥ (३६४-१७, आसा, मः ३)
गुर कै सबदि अंतरि ब्रह्मु पछाणु ॥२॥ (३६४-१८, आसा, मः ३)
गुरमुखि भगति अंतरि प्रीति पिआरु ॥ (३६४-१८, आसा, मः ३)
गुर का सबदु सहजि वीचारु ॥ (३६४-१९, आसा, मः ३)
गुरमुखि भगति जुगति सचु सोइ ॥ (३६४-१९, आसा, मः ३)
पाखंडि भगति निरति दुखु होइ ॥३॥ (३६४-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ३६५

एहा भगति जनु जीवत मरै ॥ (३६५-१, आसा, मः ३)
गुर परसादी भवजलु तरै ॥ (३६५-१, आसा, मः ३)
गुर कै बचनि भगति थाइ पाइ ॥ (३६५-१, आसा, मः ३)
हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥४॥ (३६५-२, आसा, मः ३)
हरि कृपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ (३६५-२, आसा, मः ३)
निहचल भगति हरि सिउ चितु लाए ॥ (३६५-२, आसा, मः ३)
भगति रते तिन्ह सची सोइ ॥ (३६५-३, आसा, मः ३)
नानक नामि रते सुखु होइ ॥५॥१२॥५१॥ (३६५-३, आसा, मः ३)
आसा घरु ८ काफी महला ३ (३६५-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६५-४)
हरि कै भाणै सतिगुरु मिलै सचु सोझी होई ॥ (३६५-५, आसा काफी, मः ३)
गुर परसादी मनि वसै हरि बूझै सोई ॥१॥ (३६५-५, आसा काफी, मः ३)
मै सहु दाता एकु है अवरु नाही कोई ॥ (३६५-५, आसा काफी, मः ३)
गुर किरपा ते मनि वसै ता सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (३६५-६, आसा काफी, मः ३)
इसु जुग महि निरभउ हरि नामु है पाईऐ गुर वीचारि ॥ (३६५-६, आसा काफी, मः ३)
बिनु नावै जम कै वसि है मनमुखि अंध गवारि ॥२॥ (३६५-७, आसा काफी, मः ३)

हरि कै भाणै जनु सेवा करै बूझै सचु सोई ॥ (३६५-८, आसा काफी, मः ३)
हरि कै भाणै सालाहीऐ भाणै मंनिऐ सुखु होई ॥३॥ (३६५-८, आसा काफी, मः ३)
हरि कै भाणै जनमु पदारथु पाइआ मति ऊतम होई ॥ (३६५-९, आसा काफी, मः ३)
नानक नामु सलाहि तूं गुरमुखि गति होई ॥४॥३९॥१३॥५२॥ (३६५-९, आसा काफी, मः ३)
आसा महला ४ घरु २ (३६५-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६५-११)
तूं करता सचिआरु मैडा साँई ॥ (३६५-१२, आसा, मः ४)
जो तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३६५-१२, आसा, मः ४)
सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ (३६५-१२, आसा, मः ४)
जिस नो कृपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ (३६५-१३, आसा, मः ४)
गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ (३६५-१३, आसा, मः ४)
तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ (३६५-१४, आसा, मः ४)
तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ (३६५-१४, आसा, मः ४)
तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ (३६५-१४, आसा, मः ४)
जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ (३६५-१५, आसा, मः ४)
विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ (३६५-१५, आसा, मः ४)
जिस नो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ (३६५-१५, आसा, मः ४)
हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ (३६५-१६, आसा, मः ४)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ (३६५-१६, आसा, मः ४)
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥ (३६५-१७, आसा, मः ४)
तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ (३६५-१७, आसा, मः ४)
तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (३६५-१७, आसा, मः ४)
तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ (३६५-१८, आसा, मः ४)
जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥१॥५३॥ (३६५-१८, आसा, मः ४)

पन्ना ३६६

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६६-१)
रागु आसा घरु २ महला ४ ॥ (३६६-१)
किस ही धड़ा कीआ मित्र सुत नालि भाई ॥ (३६६-१, आसा, मः ४)
किस ही धड़ा कीआ कुड़म सके नालि जवाई ॥ (३६६-२, आसा, मः ४)
किस ही धड़ा कीआ सिकदार चउधरी नालि आपणै सुआई ॥ (३६६-२, आसा, मः ४)
हमारा धड़ा हरि रहिआ समाई ॥१॥ (३६६-३, आसा, मः ४)
हम हरि सिउ धड़ा कीआ मेरी हरि टेक ॥ (३६६-३, आसा, मः ४)
मै हरि बिनु पखु धड़ा अवरु न कोई हउ हरि गुण गावा असंख अनेक ॥१॥ रहाउ ॥ (३६६-३, आसा, मः ४)
जिन्ह सिउ धड़े करहि से जाहि ॥ (३६६-४, आसा, मः ४)

झूठु धड़े करि पछोताहि ॥ (३६६-५, आसा, मः ४)
थिरु न रहहि मनि खोटु कमाहि ॥ (३६६-५, आसा, मः ४)
हम हरि सिउ धड़ा कीआ जिस का कोई समरथु नाहि ॥२॥ (३६६-५, आसा, मः ४)
एह सभि धड़े माइआ मोह पसारी ॥ (३६६-६, आसा, मः ४)
माइआ कउ लूझहि गावारी ॥ (३६६-६, आसा, मः ४)
जनमि मरहि जूऐ बाजी हारी ॥ (३६६-७, आसा, मः ४)
हमरै हरि धड़ा जि हलतु पलतु सभु सवारी ॥३॥ (३६६-७, आसा, मः ४)
कलिजुग महि धड़े पंच चोर झगड़ाए ॥ (३६६-७, आसा, मः ४)
कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु वधाए ॥ (३६६-८, आसा, मः ४)
जिस नो कृपा करे तिसु सतसंगि मिलाए ॥ (३६६-८, आसा, मः ४)
हमरा हरि धड़ा जिनि एह धड़े सभि गवाए ॥४॥ (३६६-९, आसा, मः ४)
मिथिआ दूजा भाउ धड़े बहि पावै ॥ (३६६-९, आसा, मः ४)
पराइआ छिद्रु अटकलै आपणा अहंकारु वधावै ॥ (३६६-९, आसा, मः ४)
जैसा बीजै तैसा खावै ॥ (३६६-१०, आसा, मः ४)
जन नानक का हरि धड़ा धरमु सभ सृसटि जिणि आवै ॥५॥२॥५४॥ (३६६-१०, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६६-११)
हिरदै सुणि सुणि मनि अमृतु भाइआ ॥ (३६६-११, आसा, मः ४)
गुरबाणी हरि अलखु लखाइआ ॥१॥ (३६६-१२, आसा, मः ४)
गुरमुखि नामु सुनहु मेरी भैना ॥ (३६६-१२, आसा, मः ४)
एको रवि रहिआ घट अंतरि मुखि बोलहु गुर अमृत बैना ॥१॥ रहाउ ॥ (३६६-१२, आसा, मः ४)
मै मनि तनि प्रेमु महा बैरागु ॥ (३६६-१३, आसा, मः ४)
सतिगुरु पुरखु पाइआ वडभागु ॥२॥ (३६६-१३, आसा, मः ४)
दूजै भाइ भवहि बिखु माइआ ॥ (३६६-१४, आसा, मः ४)
भागहीन नही सतिगुरु पाइआ ॥३॥ (३६६-१४, आसा, मः ४)
अमृतु हरि रसु हरि आपि पीआइआ ॥ (३६६-१५, आसा, मः ४)
गुरि पूरै नानक हरि पाइआ ॥४॥३॥५५॥ (३६६-१५, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६६-१५)
मेरै मनि तनि प्रेमु नामु आधारु ॥ (३६६-१६, आसा, मः ४)
नामु जपी नामो सुख सारु ॥१॥ (३६६-१६, आसा, मः ४)
नामु जपहु मेरे साजन सैना ॥ (३६६-१६, आसा, मः ४)
नाम बिना मै अवरु न कोई वडै भागि गुरमुखि हरि लैना ॥१॥ रहाउ ॥ (३६६-१७, आसा, मः ४)
नाम बिना नही जीविआ जाइ ॥ (३६६-१७, आसा, मः ४)
वडै भागि गुरमुखि हरि पाइ ॥२॥ (३६६-१८, आसा, मः ४)
नामहीन कालख मुखि माइआ ॥ (३६६-१८, आसा, मः ४)
नाम बिना ध्रिगु ध्रिगु जीवाइआ ॥३॥ (३६६-१८, आसा, मः ४)

पन्ना ३६७

वडा वडा हरि भाग करि पाइआ ॥ (३६७-१, आसा, मः ४)
नानक गुरमुखि नामु दिवाइआ ॥४॥४॥५६॥ (३६७-१, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६७-२)
गुण गावा गुण बोली बाणी ॥ (३६७-२, आसा, मः ४)
गुरमुखि हरि गुण आखि वखाणी ॥१॥ (३६७-२, आसा, मः ४)
जपि जपि नामु मनि भइआ अनंदा ॥ (३६७-३, आसा, मः ४)
सति सति सतिगुरि नामु दिड़ाइआ रसि गाए गुण परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-३, आसा, मः ४)
हरि गुण गावै हरि जन लोगा ॥ (३६७-४, आसा, मः ४)
वडै भागि पाए हरि निरजोगा ॥२॥ (३६७-४, आसा, मः ४)
गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥ (३६७-५, आसा, मः ४)
विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥३॥ (३६७-५, आसा, मः ४)
सरीरि सरोवरि गुण परगटि कीए ॥ (३६७-५, आसा, मः ४)
नानक गुरमुखि मथि ततु कढीए ॥४॥५॥५७॥ (३६७-६, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६७-६)
नामु सुणी नामो मनि भावै ॥ (३६७-६, आसा, मः ४)
वडै भागि गुरमुखि हरि पावै ॥१॥ (३६७-७, आसा, मः ४)
नामु जपहु गुरमुखि परगासा ॥ (३६७-७, आसा, मः ४)
नाम बिना मै धर नही काई नामु रविआ सभ सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-७, आसा, मः ४)
नामै सुरति सुनी मनि भाई ॥ (३६७-८, आसा, मः ४)
जो नामु सुनावै सो मेरा मीतु सखाई ॥२॥ (३६७-८, आसा, मः ४)
नामहीण गए मूड़ नंगा ॥ (३६७-९, आसा, मः ४)
पचि पचि मुए बिखु देखि पतंगा ॥३॥ (३६७-९, आसा, मः ४)
आपे थापे थापि उथापे ॥ (३६७-१०, आसा, मः ४)
नानक नामु देवै हरि आपे ॥४॥६॥५८॥ (३६७-१०, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६७-१०)
गुरमुखि हरि हरि वेलि वधाई ॥ (३६७-१०, आसा, मः ४)
फल लागे हरि रसक रसाई ॥१॥ (३६७-११, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु जपि अनत तरंगा ॥ (३६७-११, आसा, मः ४)
जपि जपि नामु गुरमति सालाही मारिआ कालु जमकंकर भुइअंगा ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-१२, आसा, मः ४)
हरि हरि गुर महि भगति रखाई ॥ (३६७-१२, आसा, मः ४)
गुरु तुठा सिख देवै मेरे भाई ॥२॥ (३६७-१३, आसा, मः ४)
हउमै कर्म किछु बिधि नही जाणै ॥ (३६७-१३, आसा, मः ४)
जिउ कुंचरु नाइ खाकु सिरि छाणै ॥३॥ (३६७-१३, आसा, मः ४)

जे वड भाग होवहि वड ऊचे ॥ (३६७-१४, आसा, मः ४)
नानक नामु जपहि सचि सूचे ॥४॥७॥५६॥ (३६७-१४, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६७-१५)
हरि हरि नाम की मनि भूख लगाई ॥ (३६७-१५, आसा, मः ४)
नामि सुनिऐ मनु तृपतै मेरे भाई ॥१॥ (३६७-१५, आसा, मः ४)
नामु जपहु मेरे गुरसिख मीता ॥ (३६७-१६, आसा, मः ४)
नामु जपहु नामे सुखु पावहु नामु रखहु गुरमति मनि चीता ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-१६, आसा, मः ४)
नामो नामु सुणी मनु सरसा ॥ (३६७-१७, आसा, मः ४)
नामु लाहा लै गुरमति बिगसा ॥२॥ (३६७-१७, आसा, मः ४)
नाम बिना कुसटी मोह अंधा ॥ (३६७-१८, आसा, मः ४)
सभ निहफल कर्म कीए दुखु धंधा ॥३॥ (३६७-१८, आसा, मः ४)
हरि हरि हरि जसु जपै वडभागी ॥ (३६७-१८, आसा, मः ४)
नानक गुरमति नामि लिव लागी ॥४॥८॥६०॥ (३६७-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ३६८

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६८-१)
महला ४ रागु आसा घरु ६ के ३ ॥ (३६८-१)
हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन ॥ (३६८-१, आसा, मः ४)
गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन ॥१॥ (३६८-२, आसा, मः ४)
जोगी हरि देहु मती उपदेसु ॥ (३६८-२, आसा, मः ४)
जुगु जुगु हरि हरि एको वरतै तिसु आगै हम आदेसु ॥१॥ रहाउ ॥ (३६८-२, आसा, मः ४)
गावहि राग भाति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल ॥ (३६८-३, आसा, मः ४)
जोवहि कूप सिंचन कउ बसुधा उठि बैल गए चरि बेल ॥२॥ (३६८-४, आसा, मः ४)
काइआ नगर महि कर्म हरि बोवहु हरि जामै हरिआ खेतु ॥ (३६८-४, आसा, मः ४)
मनूआ असथिरु बैलु मनु जोवहु हरि सिंचहु गुरमति जेतु ॥३॥ (३६८-५, आसा, मः ४)
जोगी जंगम सृसटि सभ तुमरी जो देहु मती तितु चेल ॥ (३६८-५, आसा, मः ४)
जन नानक के प्रभ अंतरजामी हरि लावहु मनूआ पेल ॥४॥९॥६१॥ (३६८-६, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६८-७)
कब को भालै घुंघरू ताला कब को बजावै रबाबु ॥ (३६८-७, आसा, मः ४)
आवत जात बार खिनु लागै हउ तब लगु समारउ नामु ॥१॥ (३६८-७, आसा, मः ४)
मेरै मनि ऐसी भगति बनि आई ॥ (३६८-८, आसा, मः ४)
हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे जल बिनु मीनु मरि जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३६८-८, आसा, मः ४)
कब कोऊ मेलै पंच सत गाइण कब को राग धुनि उठावै ॥ (३६८-९, आसा, मः ४)
मेलत चुनत खिनु पलु चसा लागै तब लगु मेरा मनु राम गुन गावै ॥२॥ (३६८-९, आसा, मः ४)
कब को नाचै पाव पसारै कब को हाथ पसारै ॥ (३६८-१०, आसा, मः ४)

हाथ पाव पसारत बिलमु तिलु लागै तब लगु मेरा मनु राम समारै ॥३॥ (३६८-११, आसा, मः ४)
कब कोऊ लोगन कउ पतीआवै लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ (३६८-११, आसा, मः ४)
जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु ता जै जै करे सभु कोइ ॥४॥१०॥६२॥ (३६८-१२, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६८-१३)
सतसंगति मिलीऐ हरि साधू मिलि संगति हरि गुण गाइ ॥ (३६८-१३, आसा, मः ४)
गिआन रतनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरा जाइ ॥१॥ (३६८-१३, आसा, मः ४)
हरि जन नाचहु हरि हरि धिआइ ॥ (३६८-१४, आसा, मः ४)
ऐसे संत मिलहि मेरे भाई हम जन के धोवह पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६८-१४, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे अनदिनु हरि लिव लाइ ॥ (३६८-१५, आसा, मः ४)
जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि भूख न लागै आइ ॥२॥ (३६८-१६, आसा, मः ४)
आपे हरि अपरम्परु करता हरि आपे बोलि बुलाइ ॥ (३६८-१६, आसा, मः ४)
सेई संत भले तुधु भावहि जिन् की पति पावहि थाइ ॥३॥ (३६८-१७, आसा, मः ४)
नानकु आखि न राजै हरि गुण जिउ आखै तिउ सुखु पाइ ॥ (३६८-१७, आसा, मः ४)
भगति भंडार दीए हरि अपुने गुण गाहकु वणजि लै जाइ ॥४॥११॥६३॥ (३६८-१८, आसा, मः ४)

पन्ना ३६९

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६९-१)
रागु आसा घरु ८ के काफी महला ४ ॥ (३६९-१)
आइआ मरणु धुराहु हउमै रोईऐ ॥ (३६९-१, आसा काफी, मः ४)
गुरमुखि नामु धिआइ असथिरु होईऐ ॥१॥ (३६९-२, आसा काफी, मः ४)
गुर पूरे साबासि चलणु जाणिआ ॥ (३६९-२, आसा काफी, मः ४)
लाहा नामु सु सारु सबदि समाणिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६९-२, आसा काफी, मः ४)
पूरबि लिखे डेह सि आए माइआ ॥ (३६९-३, आसा काफी, मः ४)
चलणु अजु कि कलि् धुरहु फुरमाइआ ॥२॥ (३६९-३, आसा काफी, मः ४)
बिरथा जनमु तिना जिन्ी नामु विसारिआ ॥ (३६९-४, आसा काफी, मः ४)
जूऐ खेलणु जगि कि इहु मनु हारिआ ॥३॥ (३६९-४, आसा काफी, मः ४)
जीवणि मरणि सुखु होइ जिन्ा गुरु पाइआ ॥ (३६९-५, आसा काफी, मः ४)
नानक सचे सचि सचि समाइआ ॥४॥१२॥६४॥ (३६९-५, आसा काफी, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (३६९-६)
जनमु पदारथु पाइ नामु धिआइआ ॥ (३६९-६, आसा, मः ४)
गुर परसादी बुझि सचि समाइआ ॥१॥ (३६९-६, आसा, मः ४)
जिन् धुरि लिखिआ लेखु तिन्ी नामु कमाइआ ॥ (३६९-७, आसा, मः ४)
दरि सचै सचिआर महलि बुलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६९-७, आसा, मः ४)
अंतरि नामु निधानु गुरमुखि पाईऐ ॥ (३६९-८, आसा, मः ४)
अनदिनु नामु धिआइ हरि गुण गाईऐ ॥२॥ (३६९-८, आसा, मः ४)

अंतरि वसतु अनेक मनमुखि नही पाईऐ ॥ (३६९-८, आसा, मः ४)
हउमै गरबै गरबु आपि खुआईऐ ॥३॥ (३६९-९, आसा, मः ४)
नानक आपे आपि आपि खुआईऐ ॥ (३६९-९, आसा, मः ४)
गुरमति मनि परगासु सचा पाईऐ ॥४॥१३॥६५॥ (३६९-१०, आसा, मः ४)
रागु आसावरी घरु १६ के २ महला ४ सुधंग (३६९-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६९-११)
हउ अनदिनु हरि नामु कीरतनु करउ ॥ (३६९-१२, आसावरी, मः ४)
सतिगुरि मो कउ हरि नामु बताइआ हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६९-१२, आसावरी, मः ४)
हमरै स्रवणु सिमरनु हरि कीरतनु हउ हरि बिनु रहि न सकउ हउ इकु खिनु ॥ (३६९-१३, आसावरी, मः ४)
जैसे हंसु सरवर बिनु रहि न सकै तैसे हरि जनु किउ रहै हरि सेवा बिनु ॥१॥ (३६९-१४, आसावरी, मः ४)
किनहूं प्रीति लाई दूजा भाउ रिद धारि किनहूं प्रीति लाई मोह अपमान ॥ (३६९-१५, आसावरी, मः ४)
हरि जन प्रीति लाई हरि निरबाण पद नानक सिमरत हरि हरि भगवान ॥२॥१४॥६६॥ (३६९-१५, आसावरी, मः ४)
आसावरी महला ४ ॥ (३६९-१६)
माई मोरो प्रीतमु रामु बतावहु री माई ॥ (३६९-१७, आसावरी, मः ४)
हउ हरि बिनु खिनु पलु रहि न सकउ जैसे करहलु बेलि रीझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३६९-१७, आसावरी, मः ४)
हमरा मनु बैराग बिरकतु भइओ हरि दरसन मीत कै ताई ॥ (३६९-१८, आसावरी, मः ४)
जैसे अलि कमला बिनु रहि न सकै तैसे मोहि हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥ (३६९-१८, आसावरी, मः ४)

राखु सरणि जगदीसुर पिआरे मोहि सरधा पूरि हरि गुसाई ॥ (३७०-१, आसावरी, मः ४)
जन नानक कै मनि अनदु होत है हरि दरसनु निमख दिखाई ॥२॥३९॥१३॥१५॥६७॥ (३७०-२, आसावरी, मः ४)
रागु आसा घरु २ महला ५ (३७०-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३७०-४)
जिनि लाई प्रीति सोई फिरि खाइआ ॥ (३७०-५, आसा, मः ५)
जिनि सुखि बैठाली तिसु भउ बहुतु दिखाइआ ॥ (३७०-५, आसा, मः ५)
भाई मीत कुटम्ब देखि बिबादे ॥ (३७०-५, आसा, मः ५)
हम आई वसगति गुर परसादे ॥१॥ (३७०-६, आसा, मः ५)
ऐसा देखि बिमोहित होए ॥ (३७०-६, आसा, मः ५)
साधिक सिध सुरदेव मनुखा बिनु साधू सभि ध्रोहनि ध्रोहे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७०-६, आसा, मः ५)
इकि फिरहि उदासी तिन् कामि विआपै ॥ (३७०-७, आसा, मः ५)
इकि संचहि गिरही तिन् होइ न आपै ॥ (३७०-८, आसा, मः ५)
इकि सती कहावहि तिन् बहुतु कलपावै ॥ (३७०-८, आसा, मः ५)

हम हरि राखे लगि सतिगुर पावै ॥२॥ (३७०-८, आसा, मः ५)
तपु करते तपसी भूलाए ॥ (३७०-९, आसा, मः ५)
पंडित मोहे लोभि सबाए ॥ (३७०-९, आसा, मः ५)
त्रै गुण मोहे मोहिआ आकासु ॥ (३७०-९, आसा, मः ५)
हम सतिगुर राखे दे करि हाथु ॥३॥ (३७०-१०, आसा, मः ५)
गिआनी की होइ वरती दासि ॥ (३७०-१०, आसा, मः ५)
कर जोड़े सेवा करे अरदासि ॥ (३७०-१०, आसा, मः ५)
जो तूं कहहि सु कार कमावा ॥ (३७०-११, आसा, मः ५)
जन नानक गुरमुख नेड़ि न आवा ॥४॥१॥ (३७०-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७०-११)
ससू ते पिरि कीनी वाखि ॥ (३७०-१२, आसा, मः ५)
देर जिठाणी मुई दूखि संतापि ॥ (३७०-१२, आसा, मः ५)
घर के जिठेरे की चूकी काणि ॥ (३७०-१२, आसा, मः ५)
पिरि रखिआ कीनी सुघड़ सुजाणि ॥१॥ (३७०-१२, आसा, मः ५)
सुनहु लोका मै प्रेम रसु पाइआ ॥ (३७०-१३, आसा, मः ५)
दुरजन मारे वैरी संघारे सतिगुरि मो कउ हरि नामु दिवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७०-१३, आसा, मः ५)
प्रथमे तिआगी हउमै प्रीति ॥ (३७०-१४, आसा, मः ५)
दुतीआ तिआगी लोगा रीति ॥ (३७०-१४, आसा, मः ५)
त्रै गुण तिआगि दुरजन मीत समाने ॥ (३७०-१४, आसा, मः ५)
तुरीआ गुणु मिलि साध पछाने ॥२॥ (३७०-१५, आसा, मः ५)
सहज गुफा महि आसणु बाधिआ ॥ (३७०-१५, आसा, मः ५)
जोति सरूप अनाहदु वाजिआ ॥ (३७०-१६, आसा, मः ५)
महा अनंदु गुर सबदु वीचारि ॥ (३७०-१६, आसा, मः ५)
प्रिअ सिउ राती धन सोहागणि नारि ॥३॥ (३७०-१६, आसा, मः ५)
जन नानकु बोले ब्रह्म बीचारु ॥ (३७०-१७, आसा, मः ५)
जो सुणे कमावै सु उतरै पारि ॥ (३७०-१७, आसा, मः ५)
जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ (३७०-१७, आसा, मः ५)
हरि सेती ओहु रहै समाइ ॥४॥२॥ (३७०-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७०-१८)
निज भगती सीलवंती नारि ॥ (३७०-१८, आसा, मः ५)
रूपि अनूप पूरी आचारि ॥ (३७०-१८, आसा, मः ५)
जितु गृहि वसै सो गृहु सोभावंता ॥ (३७०-१९, आसा, मः ५)
गुरमुखि पाई किनै विरलै जंता ॥१॥ (३७०-१९, आसा, मः ५)
सुकरणी कामणि गुर मिलि हम पाई ॥ (३७०-१९, आसा, मः ५)

जजि काजि परथाइ सुहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३७१-१, आसा, मः ५)
जिचरु वसी पिता कै साथि ॥ (३७१-१, आसा, मः ५)
तिचरु कंतु बहु फिरै उदासि ॥ (३७१-१, आसा, मः ५)
करि सेवा सत पुरखु मनाइआ ॥ (३७१-२, आसा, मः ५)
गुरि आणी घर महि ता सर्ब सुख पाइआ ॥२॥ (३७१-२, आसा, मः ५)
बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥ (३७१-३, आसा, मः ५)
आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥ (३७१-३, आसा, मः ५)
इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥ (३७१-३, आसा, मः ५)
सगल संतोखी देर जेठानी ॥३॥ (३७१-४, आसा, मः ५)
सभ परवारै माहि सरेसट ॥ (३७१-४, आसा, मः ५)
मती देवी देवर जेसट ॥ (३७१-४, आसा, मः ५)
धन्नु सु गृहु जितु प्रगटी आइ ॥ (३७१-४, आसा, मः ५)
जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥४॥३॥ (३७१-५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७१-५)
मता करउ सो पकनि न देई ॥ (३७१-५, आसा, मः ५)
सील संजम कै निकटि खलोई ॥ (३७१-६, आसा, मः ५)
वेस करे बहु रूप दिखावै ॥ (३७१-६, आसा, मः ५)
गृहि बसनि न देई वखि वखि भरमावै ॥१॥ (३७१-६, आसा, मः ५)
घर की नाइकि घर वासु न देवै ॥ (३७१-७, आसा, मः ५)
जतन करउ उरझाइ परेवै ॥१॥ रहाउ ॥ (३७१-७, आसा, मः ५)
धुर की भेजी आई आमरि ॥ (३७१-७, आसा, मः ५)
नउ खंड जीते सभि थान थनंतर ॥ (३७१-८, आसा, मः ५)
तटि तीरथि न छोडै जोग संनिआस ॥ (३७१-८, आसा, मः ५)
पड़ि थाके सिम्मृति बेद अभिआस ॥२॥ (३७१-८, आसा, मः ५)
जह बैसउ तह नाले बैसै ॥ (३७१-९, आसा, मः ५)
सगल भवन महि सबल प्रवेसै ॥ (३७१-९, आसा, मः ५)
होछी सरणि पइआ रहणु न पाई ॥ (३७१-९, आसा, मः ५)
कहु मीता हउ कै पहि जाई ॥३॥ (३७१-१०, आसा, मः ५)
सुणि उपदेसु सतिगुर पहि आइआ ॥ (३७१-१०, आसा, मः ५)
गुरि हरि हरि नामु मोहि मंत्रु दृड़ाइआ ॥ (३७१-११, आसा, मः ५)
निज घरि वसिआ गुण गाइ अनंता ॥ (३७१-११, आसा, मः ५)
प्रभु मिलिओ नानक भए अचिंता ॥४॥ (३७१-११, आसा, मः ५)
घरु मेरा इह नाइकि हमारी ॥ (३७१-१२, आसा, मः ५)

इह आमरि हम गुरि कीए दरबारी ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥ (३७१-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७१-१३)
प्रथमे मता जि पत्री चलावउ ॥ (३७१-१३, आसा, मः ५)
दुतीए मता दुइ मानुख पहुचावउ ॥ (३७१-१३, आसा, मः ५)
तृतीए मता किछु करउ उपाइआ ॥ (३७१-१४, आसा, मः ५)
मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ ॥१॥ (३७१-१४, आसा, मः ५)
महा अनंद अचिंत सहजाइआ ॥ (३७१-१५, आसा, मः ५)
दुसमन दूत मुए सुखु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७१-१५, आसा, मः ५)
सतिगुरि मो कउ दीआ उपदेसु ॥ (३७१-१६, आसा, मः ५)
जीउ पिंडु सभु हरि का देसु ॥ (३७१-१६, आसा, मः ५)
जो किछु करी सु तेरा ताणु ॥ (३७१-१६, आसा, मः ५)
तूं मेरी ओट तूंहै दीबाणु ॥२॥ (३७१-१६, आसा, मः ५)
तुधनो छोडि जाईऐ प्रभ कैं धरि ॥ (३७१-१७, आसा, मः ५)
आन न बीआ तेरी समसरि ॥ (३७१-१७, आसा, मः ५)
तेरे सेवक कउ किस की काणि ॥ (३७१-१७, आसा, मः ५)
साकतु भूला फिरै बेबाणि ॥३॥ (३७१-१८, आसा, मः ५)
तेरी वडिआई कही न जाइ ॥ (३७१-१८, आसा, मः ५)
जह कह राखि लैहि गलि लाइ ॥ (३७१-१८, आसा, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाई ॥ (३७१-१९, आसा, मः ५)
प्रभि राखी पैज वजी वाधाई ॥४॥५॥ (३७१-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३७२

आसा महला ५ ॥ (३७२-१)
परदेसु झागि सउदे कउ आइआ ॥ (३७२-१, आसा, मः ५)
वसतु अनूप सुणी लाभाइआ ॥ (३७२-१, आसा, मः ५)
गुण रासि बंन्हि पलै आनी ॥ (३७२-१, आसा, मः ५)
देखि रतनु इहु मनु लपटानी ॥१॥ (३७२-२, आसा, मः ५)
साह वापारी दुआरै आए ॥ (३७२-२, आसा, मः ५)
वखरु काढहु सउदा कराए ॥१॥ रहाउ ॥ (३७२-२, आसा, मः ५)
साहि पठाइआ साहै पासि ॥ (३७२-३, आसा, मः ५)
अमोल रतन अमोला रासि ॥ (३७२-३, आसा, मः ५)
विसटु सुभाई पाइआ मीत ॥ (३७२-३, आसा, मः ५)
सउदा मिलिआ निहचल चीत ॥२॥ (३७२-४, आसा, मः ५)
भउ नही तस्कर पउण न पानी ॥ (३७२-४, आसा, मः ५)
सहजि विहाझी सहजि लै जानी ॥ (३७२-४, आसा, मः ५)

सत कै खटिऐ दुखु नही पाइआ ॥ (३७२-५, आसा, मः ५)
सही सलामति घरि लै आइआ ॥३॥ (३७२-५, आसा, मः ५)
मिलिआ लाहा भए अनंद ॥ (३७२-५, आसा, मः ५)
धन्नु साह पूरे बखसिंद ॥ (३७२-६, आसा, मः ५)
इहु सउदा गुरमुखि किनै विरलै पाइआ ॥ (३७२-६, आसा, मः ५)
सहली खेप नानकु लै आइआ ॥४॥६॥ (३७२-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७२-७)
गुनु अवगनु मेरो कछु न बीचारो ॥ (३७२-७, आसा, मः ५)
नह देखिओ रूप रंग सींगारो ॥ (३७२-७, आसा, मः ५)
चज अचार किछु बिधि नही जानी ॥ (३७२-८, आसा, मः ५)
बाह पकरि प्रिअ सेजै आनी ॥१॥ (३७२-८, आसा, मः ५)
सुनिबो सखी कंति हमारो कीअलो खसमाना ॥ (३७२-८, आसा, मः ५)
करु मसतकि धारि राखिओ करि अपुना किआ जानै इहु लोकु अजाना ॥१॥ रहाउ ॥ (३७२-९, आसा, मः ५)
सुहागु हमारो अब हुणि सोहिओ ॥ (३७२-१०, आसा, मः ५)
कंतु मिलिओ मेरो सभु दुखु जोहिओ ॥ (३७२-१०, आसा, मः ५)
आँगनि मेरै सोभा चंद ॥ (३७२-१०, आसा, मः ५)
निसि बासुर प्रिअ संगि अनंद ॥२॥ (३७२-११, आसा, मः ५)
बसत्र हमारे रंगि चलूल ॥ (३७२-११, आसा, मः ५)
सगल आभरण सोभा कंठि फूल ॥ (३७२-११, आसा, मः ५)
प्रिअ पेखी द्रिसटि पाए सगल निधान ॥ (३७२-१२, आसा, मः ५)
दुसट दूत की चूकी कानि ॥३॥ (३७२-१२, आसा, मः ५)
सद खुसीआ सदा रंग माणे ॥ (३७२-१२, आसा, मः ५)
नउ निधि नामु ग्रिह महि त्रिपताने ॥ (३७२-१३, आसा, मः ५)
कहु नानक जउ पिरहि सीगारी ॥ (३७२-१३, आसा, मः ५)
थिरु सोहागनि संगि भतारी ॥४॥७॥ (३७२-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७२-१४)
दानु देइ करि पूजा करना ॥ (३७२-१४, आसा, मः ५)
लैत देत उन्हु मूकरि परना ॥ (३७२-१४, आसा, मः ५)
जितु दरि तुम्ह है ब्राहमण जाणा ॥ (३७२-१४, आसा, मः ५)
तितु दरि तूंही है पछुताणा ॥१॥ (३७२-१५, आसा, मः ५)
ऐसे ब्राहमण डूबे भाई ॥ (३७२-१५, आसा, मः ५)
निरापराध चितवहि बुरिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (३७२-१५, आसा, मः ५)
अंतरि लोभु फिरहि हलकाए ॥ (३७२-१६, आसा, मः ५)
निंदा करहि सिरि भारु उठाए ॥ (३७२-१६, आसा, मः ५)
माइआ मूठा चेतै नाही ॥ (३७२-१६, आसा, मः ५)

भरमे भूला बहुती राही ॥२॥ (३७२-१७, आसा, मः ५)
बाहरि भेख करहि घनेरे ॥ (३७२-१७, आसा, मः ५)
अंतरि बिखिआ उतरी घेरे ॥ (३७२-१७, आसा, मः ५)
अवर उपदेसै आपि न बूझै ॥ (३७२-१८, आसा, मः ५)
ऐसा ब्राहमणु कही न सीझै ॥३॥ (३७२-१८, आसा, मः ५)
मूरख बामण प्रभू समालि ॥ (३७२-१८, आसा, मः ५)
देखत सुनत तेरै है नालि ॥ (३७२-१८, आसा, मः ५)
कहु नानक जे होवी भागु ॥ (३७२-१९, आसा, मः ५)
मानु छोडि गुर चरणी लागु ॥४॥८॥ (३७२-१९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७२-१९)

पन्ना ३७३

दूख रोग भए गतु तन ते मनु निरमलु हरि हरि गुण गाइ ॥ (३७३-१, आसा, मः ५)
भए अनंद मिलि साधू संगि अब मेरा मनु कत ही न जाइ ॥१॥ (३७३-१, आसा, मः ५)
तपति बुझी गुर सबदी माइ ॥ (३७३-२, आसा, मः ५)
बिनसि गइओ ताप सभ सहसा गुरु सीतलु मिलिओ सहजि सुभाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७३-२, आसा, मः ५)
धावत रहे एकु इकु बूझिआ आइ बसे अब निहचलु थाइ ॥ (३७३-३, आसा, मः ५)
जगतु उधारन संत तुमारे दरसनु पेखत रहे अघाइ ॥२॥ (३७३-४, आसा, मः ५)
जनम दोख परे मेरे पाछै अब पकरे निहचलु साधू पाइ ॥ (३७३-४, आसा, मः ५)
सहज धुनि गावै मंगल मनूआ ॥ (३७३-५, आसा, मः ५)
अब ता कउ फुनि कालु न खाइ ॥३॥ (३७३-५, आसा, मः ५)
करन कारन समरथ हमारे सुखदाई मेरे हरि हरि राइ ॥ (३७३-५, आसा, मः ५)
नामु तेरा जपि जीवै नानकु ओति पोति मेरै संगि सहाइ ॥४॥९॥ (३७३-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७३-७)
अरड़ावै बिललावै निंदकु ॥ (३७३-७, आसा, मः ५)
पारब्रह्मु परमेसरु बिसरिआ अपणा कीता पावै निंदकु ॥१॥ रहाउ ॥ (३७३-७, आसा, मः ५)
जे कोई उस का संगी होवै नाले लए सिधावै ॥ (३७३-८, आसा, मः ५)
अणहोदा अजगरु भारु उठाए निंदकु अगनी माहि जलावै ॥१॥ (३७३-८, आसा, मः ५)
परमेसर कै दुआरै जि होइ बितीतै सु नानकु आखि सुणावै ॥ (३७३-९, आसा, मः ५)
भगत जना कउ सदा अनंदु है हरि कीरतनु गाइ बिगसावै ॥२॥१०॥ (३७३-१०, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७३-१०)
जउ मै कीओ सगल सीगारा ॥ (३७३-११, आसा, मः ५)
तउ भी मेरा मनु न पतीआरा ॥ (३७३-११, आसा, मः ५)
अनिक सुगंधत तन महि लावउ ॥ (३७३-११, आसा, मः ५)
ओहु सुखु तिलु समानि नही पावउ ॥ (३७३-१२, आसा, मः ५)

मन महि चितवउ ऐसी आसाई ॥ (३७३-१२, आसा, मः ५)
पृअ देखत जीवउ मेरी माई ॥१॥ (३७३-१२, आसा, मः ५)
माई कहा करउ इहु मनु न धीरै ॥ (३७३-१३, आसा, मः ५)
पृअ प्रीतम बैरागु हिरै ॥१॥ रहाउ ॥ (३७३-१३, आसा, मः ५)
बसत्र बिभूखन सुख बहुत बिसेखै ॥ (३७३-१३, आसा, मः ५)
ओइ भी जानउ कितै न लेखै ॥ (३७३-१४, आसा, मः ५)
पति सोभा अरु मानु महतु ॥ (३७३-१४, आसा, मः ५)
आगिआकारी सगल जगतु ॥ (३७३-१४, आसा, मः ५)
गृहु ऐसा है सुंदर लाल ॥ (३७३-१५, आसा, मः ५)
प्रभ भावा ता सदा निहाल ॥२॥ (३७३-१५, आसा, मः ५)
बिंजन भोजन अनिक परकार ॥ (३७३-१५, आसा, मः ५)
रंग तमासे बहुतु बिसथार ॥ (३७३-१५, आसा, मः ५)
राज मिलख अरु बहुतु फुरमाइसि ॥ (३७३-१६, आसा, मः ५)
मनु नही ध्रापै तृसना ना जाइसि ॥ (३७३-१६, आसा, मः ५)
बिनु मिलबे इहु दिनु न बिहावै ॥ (३७३-१७, आसा, मः ५)
मिलै प्रभू ता सभ सुख पावै ॥३॥ (३७३-१७, आसा, मः ५)
खोजत खोजत सुनी इह सोइ ॥ (३७३-१७, आसा, मः ५)
साधसंगति बिनु तरिओ न कोइ ॥ (३७३-१८, आसा, मः ५)
जिसु मसतकि भागु तिनि सतिगुरु पाइआ ॥ (३७३-१८, आसा, मः ५)
पूरी आसा मनु तृपताइआ ॥ (३७३-१८, आसा, मः ५)
प्रभ मिलिआ ता चूकी डंझा ॥ (३७३-१९, आसा, मः ५)
नानक लधा मन तन मंझा ॥४॥११॥ (३७३-१९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ पंचपदे ॥ (३७३-१९)

पन्ना ३७४

प्रथमे तेरी नीकी जाति ॥ (३७४-१, आसा, मः ५)
दुतीआ तेरी मनीऐ पाँति ॥ (३७४-१, आसा, मः ५)
तृतीआ तेरा सुंदर थानु ॥ (३७४-१, आसा, मः ५)
बिगड़ रूपु मन महि अभिमानु ॥१॥ (३७४-१, आसा, मः ५)
सोहनी सरूपि सुजाणि बिचखनि ॥ (३७४-२, आसा, मः ५)
अति गरबै मोहि फाकी तूं ॥१॥ रहाउ ॥ (३७४-२, आसा, मः ५)
अति सूची तेरी पाकसाल ॥ (३७४-३, आसा, मः ५)
करि इसनानु पूजा तिलकु लाल ॥ (३७४-३, आसा, मः ५)
गली गरबहि मुखि गोवहि गिआन ॥ (३७४-३, आसा, मः ५)
सभि बिधि खोई लोभि सुआन ॥२॥ (३७४-४, आसा, मः ५)

कापर पहिरहि भोगहि भोग ॥ (३७४-४, आसा, मः ५)
आचार करहि सोभा महि लोग ॥ (३७४-४, आसा, मः ५)
चोआ चंदन सुगंध बिसथार ॥ (३७४-४, आसा, मः ५)
संगी खोटा क्रोधु चंडाल ॥३॥ (३७४-५, आसा, मः ५)
अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥ (३७४-५, आसा, मः ५)
इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ (३७४-५, आसा, मः ५)
सुइना रूपा तुझ पहि दाम ॥ (३७४-६, आसा, मः ५)
सीलु बिगारिओ तेरा काम ॥४॥ (३७४-६, आसा, मः ५)
जा कउ दृसटि मइआ हरि राइ ॥ (३७४-६, आसा, मः ५)
सा बंदी ते लई छडाइ ॥ (३७४-७, आसा, मः ५)
साधसंगि मिलि हरि रसु पाइआ ॥ (३७४-७, आसा, मः ५)
कहु नानक सफल ओह काइआ ॥५॥ (३७४-७, आसा, मः ५)
सभि रूप सभि सुख बने सुहागनि ॥ (३७४-८, आसा, मः ५)
अति सुंदरि बिचखनि तूं ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१२॥ (३७४-८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ इकतुके २ ॥ (३७४-९)
जीवत दीसै तिसु सरपर मरणा ॥ (३७४-९, आसा, मः ५)
मुआ होवै तिसु निहचलु रहणा ॥१॥ (३७४-९, आसा, मः ५)
जीवत मुए मुए से जीवे ॥ (३७४-१०, आसा, मः ५)
हरि हरि नामु अवखधु मुखि पाइआ गुर सबदी रसु अमृतु पीवे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७४-१०, आसा, मः ५)
काची मटुकी बिनसि बिनासा ॥ (३७४-११, आसा, मः ५)
जिसु छूटै तृकुटी तिसु निज घरि वासा ॥२॥ (३७४-११, आसा, मः ५)
ऊचा चड़ै सु पवै पइआला ॥ (३७४-११, आसा, मः ५)
धरनि पड़ै तिसु लगै न काला ॥३॥ (३७४-१२, आसा, मः ५)
भ्रमत फिरे तिन किछू न पाइआ ॥ (३७४-१२, आसा, मः ५)
से असथिर जिन गुर सबदु कमाइआ ॥४॥ (३७४-१२, आसा, मः ५)
जीउ पिंडु सभु हरि का मालु ॥ (३७४-१३, आसा, मः ५)
नानक गुर मिलि भए निहाल ॥५॥१३॥ (३७४-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७४-१४)
पुतरी तेरी बिधि करि थाटी ॥ (३७४-१४, आसा, मः ५)
जानु सति करि होइगी माटी ॥१॥ (३७४-१४, आसा, मः ५)
मूलु समालहु अचेत गवारा ॥ (३७४-१४, आसा, मः ५)
इतने कउ तुम् किआ गरबे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७४-१५, आसा, मः ५)
तीनि सेर का दिहाड़ी मिहमानु ॥ (३७४-१५, आसा, मः ५)
अवर वसतु तुझ पाहि अमान ॥२॥ (३७४-१५, आसा, मः ५)
बिसटा असत रकतु परेटे चाम ॥ (३७४-१६, आसा, मः ५)

इसु ऊपरि ले राखिओ गुमान ॥३॥ (३७४-१६, आसा, मः ५)
एक वसतु बूझहि ता होवहि पाक ॥ (३७४-१७, आसा, मः ५)
बिनु बूझे तूं सदा नापाक ॥४॥ (३७४-१७, आसा, मः ५)
कहु नानक गुर कउ कुरबानु ॥ (३७४-१७, आसा, मः ५)
जिस ते पाईऐ हरि पुरखु सुजानु ॥५॥१४॥ (३७४-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ इकतुके चउपदे ॥ (३७४-१८, आसा, मः ५)
इक घड़ी दिनसु मो कउ बहुतु दिहारे ॥ (३७४-१८, आसा, मः ५)
मनु न रहै कैसे मिलउ पिआरे ॥१॥ (३७४-१९, आसा, मः ५)
इकु पलु दिनसु मो कउ कबहु न बिहावै ॥ (३७४-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३७५

दरसन की मनि आस घनेरी कोई ऐसा संतु मो कउ पिरहि मिलावै ॥१॥ रहाउ ॥ (३७५-१, आसा, मः ५)
चारि पहर चहु जुगह समाने ॥ (३७५-१, आसा, मः ५)
रैणि भई तब अंतु न जाने ॥२॥ (३७५-२, आसा, मः ५)
पंच दूत मिलि पिरहु विछोड़ी ॥ (३७५-२, आसा, मः ५)
भ्रमि भ्रमि रोवै हाथ पछोड़ी ॥३॥ (३७५-२, आसा, मः ५)
जन नानक कउ हरि दरसु दिखाइआ ॥ (३७५-३, आसा, मः ५)
आतमु चीन्हि पर्म सुखु पाइआ ॥४॥१५॥ (३७५-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७५-४)
हरि सेवा महि पर्म निधानु ॥ (३७५-४, आसा, मः ५)
हरि सेवा मुखि अमृत नामु ॥१॥ (३७५-४, आसा, मः ५)
हरि मेरा साथी संगि सखाई ॥ (३७५-४, आसा, मः ५)
दुखि सुखि सिमरी तह मउजूदु जमु बपुरा मो कउ कहा डराई ॥१॥ रहाउ ॥ (३७५-५, आसा, मः ५)
हरि मेरी ओट मै हरि का ताणु ॥ (३७५-५, आसा, मः ५)
हरि मेरा सखा मन माहि दीबाणु ॥२॥ (३७५-६, आसा, मः ५)
हरि मेरी पूंजी मेरा हरि वेसाहु ॥ (३७५-६, आसा, मः ५)
गुरमुखि धनु खटी हरि मेरा साहु ॥३॥ (३७५-७, आसा, मः ५)
गुर किरपा ते इह मति आवै ॥ (३७५-७, आसा, मः ५)
जन नानकु हरि कै अंकि समावै ॥४॥१६॥ (३७५-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७५-८)
प्रभु होइ कृपालु त इहु मनु लाई ॥ (३७५-८, आसा, मः ५)
सतिगुरु सेवि सभै फल पाई ॥१॥ (३७५-८, आसा, मः ५)
मन किउ बैरागु करहिगा सतिगुरु मेरा पूरा ॥ (३७५-९, आसा, मः ५)
मनसा का दाता सभ सुख निधानु अमृत सरि सद ही भरपूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३७५-९, आसा, मः ५)
चरण कमल रिद अंतरि धारे ॥ (३७५-१०, आसा, मः ५)

प्रगटी जोति मिले राम पिआरे ॥२॥ (३७५-१०, आसा, मः ५)
पंच सखी मिलि मंगलु गाइआ ॥ (३७५-११, आसा, मः ५)
अनहद बाणी नादु वजाइआ ॥३॥ (३७५-११, आसा, मः ५)
गुरु नानकु तुठा मिलिआ हरि राइ ॥ (३७५-११, आसा, मः ५)
सुखि रैणि विहाणी सहजि सुभाइ ॥४॥१७॥ (३७५-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७५-१२)
करि किरपा हरि परगटी आइआ ॥ (३७५-१२, आसा, मः ५)
मिलि सतिगुर धनु पूरा पाइआ ॥१॥ (३७५-१३, आसा, मः ५)
ऐसा हरि धनु संचीऐ भाई ॥ (३७५-१३, आसा, मः ५)
भाहि न जालै जलि नही डूबै संगु छोडि करि कतहु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३७५-१३, आसा, मः ५)
तोटि न आवै निखुटि न जाइ ॥ (३७५-१४, आसा, मः ५)
खाइ खरचि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥ (३७५-१५, आसा, मः ५)
सो सचु साहु जिसु घरि हरि धनु संचाणा ॥ (३७५-१५, आसा, मः ५)
इसु धन ते सभु जगु वरसाणा ॥३॥ (३७५-१५, आसा, मः ५)
तिनि हरि धनु पाइआ जिसु पुरब लिखे का लहणा ॥ (३७५-१६, आसा, मः ५)
जन नानक अंति वार नामु गहणा ॥४॥१८॥ (३७५-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७५-१७)
जैसे किरसाणु बोवै किरसानी ॥ (३७५-१७, आसा, मः ५)
काची पाकी बाढि परानी ॥१॥ (३७५-१७, आसा, मः ५)
जो जनमै सो जानहु मूआ ॥ (३७५-१७, आसा, मः ५)
गोविंद भगतु असथिरु है थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७५-१८, आसा, मः ५)
दिन ते सरपर पउसी राति ॥ (३७५-१८, आसा, मः ५)
रैणि गई फिरि होइ परभाति ॥२॥ (३७५-१९, आसा, मः ५)
माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ (३७५-१९, आसा, मः ५)
गुर प्रसादि को विरला जागे ॥३॥ (३७५-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३७६

कहु नानक गुण गाईअहि नीत ॥ (३७६-१, आसा, मः ५)
मुख ऊजल होइ निर्मल चीत ॥४॥१९॥ (३७६-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७६-१)
नउ निधि तेरै सगल निधान ॥ (३७६-२, आसा, मः ५)
इछा पूरकु रखै निदान ॥१॥ (३७६-२, आसा, मः ५)
तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥ (३७६-२, आसा, मः ५)
तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥१॥ रहाउ ॥ (३७६-२, आसा, मः ५)
जो तूं करहि सोई परवाणु ॥ (३७६-३, आसा, मः ५)

साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥२॥ (३७६-३, आसा, मः ५)
जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥ (३७६-३, आसा, मः ५)
तेरै घरि सदा सदा है निआउ ॥३॥ (३७६-४, आसा, मः ५)
साचे साहिब अलख अभेव ॥ (३७६-४, आसा, मः ५)
नानक लाइआ लागा सेव ॥४॥२०॥ (३७६-४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७६-५)
निकटि जीअ कै सद ही संगा ॥ (३७६-५, आसा, मः ५)
कुदरति वरतै रूप अरु रंगा ॥१॥ (३७६-५, आसा, मः ५)
करहै न झुरै ना मनु रोवनहारा ॥ (३७६-६, आसा, मः ५)
अविनासी अविगतु अगोचरु सदा सलामति खसमु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (३७६-६, आसा, मः ५)
तेरे दासरे कउ किस की काणि ॥ (३७६-७, आसा, मः ५)
जिस की मीरा राखै आणि ॥२॥ (३७६-७, आसा, मः ५)
जो लउडा प्रभि कीआ अजाति ॥ (३७६-७, आसा, मः ५)
तिसु लउडे कउ किस की ताति ॥३॥ (३७६-८, आसा, मः ५)
वेमुहताजा वेपरवाहु ॥ (३७६-८, आसा, मः ५)
नानक दास कहहु गुर वाहु ॥४॥२१॥ (३७६-८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७६-९)
हरि रसु छोडि होछै रसि माता ॥ (३७६-९, आसा, मः ५)
घर महि वसतु बाहरि उठि जाता ॥१॥ (३७६-९, आसा, मः ५)
सुनी न जाई सचु अमृत काथा ॥ (३७६-१०, आसा, मः ५)
रारि करत झूठी लगि गाथा ॥१॥ रहाउ ॥ (३७६-१०, आसा, मः ५)
वजहु साहिब का सेव बिरानी ॥ (३७६-१०, आसा, मः ५)
ऐसे गुनह अछादिओ प्रानी ॥२॥ (३७६-११, आसा, मः ५)
तिसु सिउ लूक जो सद ही संगी ॥ (३७६-११, आसा, मः ५)
कामि न आवै सो फिरि फिरि मंगी ॥३॥ (३७६-११, आसा, मः ५)
कहु नानक प्रभ दीन दइआला ॥ (३७६-१२, आसा, मः ५)
जिउ भावै तिउ करि प्रतिपाला ॥४॥२२॥ (३७६-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७६-१३)
जीअ प्रान धनु हरि को नामु ॥ (३७६-१३, आसा, मः ५)
ईहा ऊहाँ उन संगि कामु ॥१॥ (३७६-१३, आसा, मः ५)
बिनु हरि नाम अवरु सभु थोरा ॥ (३७६-१३, आसा, मः ५)
तृपति अघावै हरि दरसनि मनु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३७६-१४, आसा, मः ५)
भगति भंडार गुरबाणी लाल ॥ (३७६-१४, आसा, मः ५)
गावत सुनत कमावत निहाल ॥२॥ (३७६-१५, आसा, मः ५)
चरण कमल सिउ लागो मानु ॥ (३७६-१५, आसा, मः ५)

सतिगुरि तूठै कीनो दानु ॥३॥ (३७६-१५, आसा, मः ५)
नानक कउ गुरि दीखिआ दीन्ह ॥ (३७६-१६, आसा, मः ५)
प्रभ अबिनासी घटि घटि चीन्ह ॥४॥२३॥ (३७६-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७६-१६)
अनद बिनोद भरेपुरि धारिआ ॥ (३७६-१७, आसा, मः ५)
अपुना कारजु आपि सवारिआ ॥१॥ (३७६-१७, आसा, मः ५)
पूर समग्री पूरे ठाकुर की ॥ (३७६-१७, आसा, मः ५)
भरिपुरि धारि रही सोभ जा की ॥१॥ रहाउ ॥ (३७६-१८, आसा, मः ५)
नामु निधानु जा की निर्मल सोइ ॥ (३७६-१८, आसा, मः ५)
आपे करता अवरु न कोइ ॥२॥ (३७६-१८, आसा, मः ५)
जीअ जंत सभि ता कै हाथि ॥ (३७६-१९, आसा, मः ५)
रवि रहिआ प्रभु सभ कै साथि ॥३॥ (३७६-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३७७

पूरा गुरु पूरी बणत बणाई ॥ (३७७-१, आसा, मः ५)
नानक भगत मिली वडिआई ॥४॥२४॥ (३७७-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७७-१)
गुर कै सबदि बनावहु इहु मनु ॥ (३७७-२, आसा, मः ५)
गुर का दरसनु संचहु हरि धनु ॥१॥ (३७७-२, आसा, मः ५)
ऊतम मति मेरै रिदै तूं आउ ॥ (३७७-२, आसा, मः ५)
धिआवउ गावउ गुण गोविंदा अति प्रीतम मोहि लागै नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७७-३, आसा, मः ५)
तृपति अघावनु साचै नाइ ॥ (३७७-३, आसा, मः ५)
अठसठि मजनु संत धूराइ ॥२॥ (३७७-४, आसा, मः ५)
सभ महि जानउ करता एक ॥ (३७७-४, आसा, मः ५)
साधसंगति मिलि बुधि बिबेक ॥३॥ (३७७-४, आसा, मः ५)
दासु सगल का छोडि अभिमानु ॥ (३७७-५, आसा, मः ५)
नानक कउ गुरि दीनो दानु ॥४॥२५॥ (३७७-५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७७-५)
बुधि प्रगास भई मति पूरी ॥ (३७७-६, आसा, मः ५)
ता ते बिनसी दुरमति दूरी ॥१॥ (३७७-६, आसा, मः ५)
ऐसी गुरमति पाईअले ॥ (३७७-६, आसा, मः ५)
बूडत घोर अंध कूप महि निकसिओ मेरे भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७७-६, आसा, मः ५)
महा अगाह अगनि का सागरु ॥ (३७७-७, आसा, मः ५)
गुरु बोहिथु तारे रतनागरु ॥२॥ (३७७-७, आसा, मः ५)
दुतर अंध बिखम इह माइआ ॥ (३७७-८, आसा, मः ५)

ਗੁਰਿ पूरै परगटु मारगु दिखाइआ ॥३॥ (३७७-८, आसा, मः ५)
जाप ताप कछु उकति न मोरी ॥ (३७७-९, आसा, मः ५)
गुर नानक सरणागति तोरी ॥४॥२६॥ (३७७-९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ तिपदे २ ॥ (३७७-९)
हरि रसु पीवत सद ही राता ॥ (३७७-१०, आसा, मः ५)
आन रसा खिन महि लहि जाता ॥ (३७७-१०, आसा, मः ५)
हरि रस के माते मनि सदा अनंद ॥ (३७७-१०, आसा, मः ५)
आन रसा महि विआपै चिंद ॥१॥ (३७७-११, आसा, मः ५)
हरि रसु पीवै अलमसतु मतवारा ॥ (३७७-११, आसा, मः ५)
आन रसा सभि होछे रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७७-११, आसा, मः ५)
हरि रस की कीमति कही न जाइ ॥ (३७७-१२, आसा, मः ५)
हरि रसु साधू हाटि समाइ ॥ (३७७-१२, आसा, मः ५)
लाख करोरी मिलै न केह ॥ (३७७-१२, आसा, मः ५)
जिसहि परापति तिस ही देहि ॥२॥ (३७७-१३, आसा, मः ५)
नानक चाखि भए बिसमादु ॥ (३७७-१३, आसा, मः ५)
नानक गुर ते आइआ सादु ॥ (३७७-१३, आसा, मः ५)
ईत ऊत कत छोडि न जाइ ॥ (३७७-१३, आसा, मः ५)
नानक गीधा हरि रस माहि ॥३॥२७॥ (३७७-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७७-१४)
कामु क्रोधु लोभु मोहु मिटावै छुटकै दुरमति अपुनी धारी ॥ (३७७-१४, आसा, मः ५)
होइ निमाणी सेव कमावहि ता प्रीतम होवहि मनि पिआरी ॥१॥ (३७७-१५, आसा, मः ५)
सुणि सुंदरि साधू बचन उधारी ॥ (३७७-१६, आसा, मः ५)
दूख भूख मिटै तेरो सहसा सुख पावहि तूं सुखमनि नारी ॥१॥ रहाउ ॥ (३७७-१६, आसा, मः ५)
चरण पखारि करउ गुर सेवा आतम सुधु बिखु तिआस निवारी ॥ (३७७-१७, आसा, मः ५)
दासन की होइ दासि दासरी ता पावहि सोभा हरि दुआरी ॥२॥ (३७७-१७, आसा, मः ५)
इही अचार इही बिउहारा आगिआ मानि भगति होइ तुमारी ॥ (३७७-१८, आसा, मः ५)
जो इहु मंत्रु कमावै नानक सो भउजलु पारि उतारी ॥३॥२८॥ (३७७-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३७८

आसा महला ५ दुपदे ॥ (३७८-१)
भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ (३७८-१, आसा, मः ५)
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ (३७८-१, आसा, मः ५)
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ (३७८-२, आसा, मः ५)
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥१॥ (३७८-२, आसा, मः ५)
सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ (३७८-२, आसा, मः ५)

जनमु बृथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥ (३७८-३, आसा, मः ५)
जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ (३७८-३, आसा, मः ५)
सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ (३७८-४, आसा, मः ५)
कहु नानक हम नीच करम्मा ॥ (३७८-४, आसा, मः ५)
सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥२९॥ (३७८-४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७८-५)
तुझ बिनु अवरु नाही मै दूजा तूं मेरे मन माही ॥ (३७८-५, आसा, मः ५)
तूं साजनु संगी प्रभु मेरा काहे जीअ डराही ॥१॥ (३७८-५, आसा, मः ५)
तुमरी ओट तुमारी आसा ॥ (३७८-६, आसा, मः ५)
बैठत ऊठत सोवत जागत विसरु नाही तूं सास गिरासा ॥१॥ रहाउ ॥ (३७८-६, आसा, मः ५)
राखु राखु सरणि प्रभ अपनी अगनि सागर विकराला ॥ (३७८-७, आसा, मः ५)
नानक के सुखदाते सतिगुर हम तुमरे बाल गुपाला ॥२॥३०॥ (३७८-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७८-८)
हरि जन लीने प्रभू छडाइ ॥ (३७८-८, आसा, मः ५)
प्रीतम सिउ मेरो मनु मानिआ तापु मुआ बिखु खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७८-९, आसा, मः ५)
पाला ताऊ कछू न बिआपै राम नाम गुन गाइ ॥ (३७८-९, आसा, मः ५)
डाकी को चिति कछू न लागै चरन कमल सरनाइ ॥१॥ (३७८-१०, आसा, मः ५)
संत प्रसादि भए किरपाला होए आपि सहाइ ॥ (३७८-१०, आसा, मः ५)
गुन निधान निति गावै नानकु सहसा दुखु मिटाइ ॥२॥३१॥ (३७८-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७८-१२)
अउखधु खाइओ हरि को नाउ ॥ (३७८-१२, आसा, मः ५)
सुख पाए दुख बिनसिआ थाउ ॥१॥ (३७८-१२, आसा, मः ५)
तापु गइआ बचनि गुर पूरे ॥ (३७८-१२, आसा, मः ५)
अनदु भइआ सभि मिटे विसूरे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७८-१३, आसा, मः ५)
जीअ जंत सगल सुखु पाइआ ॥ (३७८-१३, आसा, मः ५)
पारब्रह्मु नानक मनि धिआइआ ॥२॥३२॥ (३७८-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७८-१४)
बाँछत नाही सु बेला आई ॥ (३७८-१४, आसा, मः ५)
बिनु हुकमै किउ बुझै बुझाई ॥१॥ (३७८-१५, आसा, मः ५)
ठंढी ताती मिटी खाई ॥ (३७८-१५, आसा, मः ५)
ओहु न बाला बूढा भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३७८-१५, आसा, मः ५)
नानक दास साध सरणाई ॥ (३७८-१६, आसा, मः ५)
गुर प्रसादि भउ पारि पराई ॥२॥३३॥ (३७८-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७८-१६)
सदा सदा आतम परगासु ॥ (३७८-१६, आसा, मः ५)

साधसंगति हरि चरण निवासु ॥१॥ (३७८-१७, आसा, मः ५)
राम नाम निति जपि मन मेरे ॥ (३७८-१७, आसा, मः ५)
सीतल सांँति सदा सुख पावहि किलविख जाहि सभे मन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७८-१७, आसा, मः ५)
कहु नानक जा के पूरन कर्म ॥ (३७८-१८, आसा, मः ५)
सतिगुर भेटे पूरन पारब्रह्म ॥२॥३४॥ (३७८-१८, आसा, मः ५)
दूजे घर के चउतीस ॥ (३७८-१९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७८-१९)
जा का हरि सुआमी प्रभु बेली ॥ (३७८-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३७९

पीड़ गई फिरि नही दुहेली ॥१॥ रहाउ ॥ (३७९-१, आसा, मः ५)
करि किरपा चरन संगि मेली ॥ (३७९-१, आसा, मः ५)
सूख सहज आनंद सुहेली ॥१॥ (३७९-१, आसा, मः ५)
साधसंगि गुण गाइ अतोली ॥ (३७९-२, आसा, मः ५)
हरि सिमरत नानक भई अमोली ॥२॥३५॥ (३७९-२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७९-३)
काम क्रोध माइआ मद मतसर ए खेलत सभि जूऐ हारे ॥ (३७९-३, आसा, मः ५)
सतु संतोखु दइआ धरमु सचु इह अपुनै गृह भीतरि वारे ॥१॥ (३७९-३, आसा, मः ५)
जनम मरन चूके सभि भारे ॥ (३७९-४, आसा, मः ५)
मिलत संगि भइओ मनु निरमलु गुरि पूरै लै खिन महि तारे ॥१॥ रहाउ ॥ (३७९-४, आसा, मः ५)
सभ की रेनु होइ रहै मनूआ सगले दीसहि मीत पिआरे ॥ (३७९-५, आसा, मः ५)
सभ मधे रविआ मेरा ठाकुरु दानु देत सभि जीअ समारे ॥२॥ (३७९-६, आसा, मः ५)
एको एकु आपि इकु एकै एकै है सगला पासारे ॥ (३७९-६, आसा, मः ५)
जपि जपि होए सगल साध जन एकु नामु धिआइ बहुतु उधारे ॥३॥ (३७९-७, आसा, मः ५)
गहिर गम्भीर बिअंत गुसाई अंतु नही किछु पारावारे ॥ (३७९-७, आसा, मः ५)
तुमरी कृपा ते गुन गावै नानक धिआइ धिआइ प्रभ कउ नमसकारे ॥४॥३६॥ (३७९-८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३७९-९)
तू बिअंतु अविगतु अगोचरु इहु सभु तेरा आकारु ॥ (३७९-९, आसा, मः ५)
किआ हम जंत करह चतुराई जांँ सभु किछु तुझै मझारि ॥१॥ (३७९-९, आसा, मः ५)
मेरे सतिगुर अपने बालिक राखहु लीला धारि ॥ (३७९-१०, आसा, मः ५)
देहु सुमति सदा गुण गावा मेरे ठाकुर अगम अपार ॥१॥ रहाउ ॥ (३७९-११, आसा, मः ५)
जैसे जननि जठर महि प्रानी ओहु रहता नाम अधारि ॥ (३७९-११, आसा, मः ५)
अनदु करै सासि सासि समारै ना पोहै अगनारि ॥२॥ (३७९-१२, आसा, मः ५)
पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥ (३७९-१२, आसा, मः ५)
चरन कमल सेवी रिद अंतरि गुर पूरे कै आधारि ॥३॥ (३७९-१३, आसा, मः ५)

गृहु मंदर महला जो दीसहि ना कोई संगारि ॥ (३७६-१४, आसा, मः ५)
जब लगु जीवहि कली काल महि जन नानक नामु समारि ॥४॥३७॥ (३७६-१४, आसा, मः ५)
आसा घरु ३ महला ५ (३७६-१६)
१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३७६-१६)
राज मिलक जोबन गृह सोभा रूपवंतु जुोआनी ॥ (३७६-१७, आसा, मः ५)
बहुतु दरबु हसती अरु घोड़े लाल लाख बै आनी ॥ (३७६-१७, आसा, मः ५)
आगै दरगहि कामि न आवै छोडि चलै अभिमानी ॥१॥ (३७६-१८, आसा, मः ५)
काहे एक बिना चितु लाईऐ ॥ (३७६-१८, आसा, मः ५)
ऊठत बैठत सोवत जागत सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (३७६-१८, आसा, मः ५)
महा बचित्र सुंदर आखाड़े रण महि जिते पवाड़े ॥ (३७६-१६, आसा, मः ५)

पन्ना ३८०

हउ मारउ हउ बंधउ छोडउ मुख ते एव बबाड़े ॥ (३८०-१, आसा, मः ५)
आइआ हुकमु पारब्रह्म का छोडि चलिआ एक दिहाड़े ॥२॥ (३८०-१, आसा, मः ५)
कर्म धर्म जुगति बहु करता करणैहारु न जानै ॥ (३८०-२, आसा, मः ५)
उपदेसु करै आपि न कमावै ततु सबदु न पछानै ॥ (३८०-२, आसा, मः ५)
नाँगा आइआ नाँगो जासी जिउ हसती खाकु छानै ॥३॥ (३८०-३, आसा, मः ५)
संत सजन सुनहु सभि मीता झूठा एहु पसारा ॥ (३८०-३, आसा, मः ५)
मेरी मेरी करि करि डूबे खपि खपि मुए गवारा ॥ (३८०-४, आसा, मः ५)
गुर मिलि नानक नामु धिआइआ साचि नामि निसतारा ॥४॥१॥३८॥ (३८०-४, आसा, मः ५)
रागु आसा घरु ५ महला ५ (३८०-६)
१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३८०-६)
भ्रम महि सोई सगल जगत धंध अंध ॥ (३८०-७, आसा, मः ५)
कोऊ जागै हरि जनु ॥१॥ (३८०-७, आसा, मः ५)
महा मोहनी मगन पृअ प्रीति प्रान ॥ (३८०-७, आसा, मः ५)
कोऊ तिआगै विरला ॥२॥ (३८०-८, आसा, मः ५)
चरन कमल आनूप हरि संत मंत ॥ (३८०-८, आसा, मः ५)
कोऊ लागै साधू ॥३॥ (३८०-८, आसा, मः ५)
नानक साधू संगि जागे गिआन रंगि ॥ (३८०-८, आसा, मः ५)
वडभागे किरपा ॥४॥१॥३६॥ (३८०-६, आसा, मः ५)
१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३८०-१०)
रागु आसा घरु ६ महला ५ ॥ (३८०-११)
जो तुधु भावै सो परवाना सूखु सहजु मनि सोई ॥ (३८०-११, आसा, मः ५)
करण कारण समरथ अपारा अवरु नाही रे कोई ॥१॥ (३८०-११, आसा, मः ५)
तेरे जन रसकि रसकि गुण गावहि ॥ (३८०-१२, आसा, मः ५)

मसलति मता सिआणप जन की जो तूं करहि करावहि ॥१॥ रहाउ ॥ (३८०-१२, आसा, मः ५)
अमृतु नामु तुमारा पिआरे साधसंगि रसु पाइआ ॥ (३८०-१३, आसा, मः ५)
तृपति अघाइ सेई जन पूरे सुख निधानु हरि गाइआ ॥२॥ (३८०-१४, आसा, मः ५)
जा कउ टेक तुमारी सुआमी ता कउ नाही चिंता ॥ (३८०-१४, आसा, मः ५)
जा कउ दइआ तुमारी होई से साह भले भगवंता ॥३॥ (३८०-१५, आसा, मः ५)
भर्म मोह ध्रोह सभि निकसे जब का दरसनु पाइआ ॥ (३८०-१५, आसा, मः ५)
वरतणि नामु नानक सचु कीना हरि नामे रंगि समाइआ ॥४॥१॥४०॥ (३८०-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८०-१७)
जनम जनम की मलु धोवै पराई आपणा कीता पावै ॥ (३८०-१७, आसा, मः ५)
ईहा सुखु नही दरगह ढोई जम पुरि जाइ पचावै ॥१॥ (३८०-१७, आसा, मः ५)
निंदकि अहिला जनमु गवाइआ ॥ (३८०-१८, आसा, मः ५)
पहुचि न साकै काहू बातै आगै ठउर न पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८०-१८, आसा, मः ५)
किरतु पइआ निंदक बपुरे का किआ ओहु करै बिचारा ॥ (३८०-१९, आसा, मः ५)
तहा बिगूता जह कोइ न राखै ओहु किसु पहि करे पुकारा ॥२॥ (३८०-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८१

निंदक की गति कतहूं नाही खसमै एवै भाणा ॥ (३८१-१, आसा, मः ५)
जो जो निंद करे संतन की तिउ संतन सुखु माना ॥३॥ (३८१-२, आसा, मः ५)
संता टेक तुमारी सुआमी तूं संतन का सहाई ॥ (३८१-२, आसा, मः ५)
कहु नानक संत हरि राखे निंदक दीए रुड़ाई ॥४॥२॥४१॥ (३८१-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८१-३)
बाहरु धोइ अंतरु मनु मैला दुइ ठउर अपुने खोए ॥ (३८१-३, आसा, मः ५)
ईहा कामि क्रोधि मोहि विआपिआ आगै मुसि मुसि रोए ॥१॥ (३८१-४, आसा, मः ५)
गोविंद भजन की मति है होरा ॥ (३८१-५, आसा, मः ५)
वरमी मारी सापु न मरई नामु न सुनई डोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३८१-५, आसा, मः ५)
माइआ की किरति छोडि गवाई भगती सार न जानै ॥ (३८१-५, आसा, मः ५)
बेद सासत्र कउ तरकनि लागा ततु जोगु न पछानै ॥२॥ (३८१-६, आसा, मः ५)
उघरि गइआ जैसा खोटा ढबूआ नदरि सराफा आइआ ॥ (३८१-७, आसा, मः ५)
अंतरजामी सभु किछु जानै उस ते कहा छपाइआ ॥३॥ (३८१-७, आसा, मः ५)
कूड़ि कपटि बंचि निम्मुनीआदा बिनसि गइआ ततकाले ॥ (३८१-८, आसा, मः ५)
सति सति सति नानकि कहिआ अपनै हिरदै देखु समाले ॥४॥३॥४२॥ (३८१-८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८१-९)
उदमु करत होवै मनु निरमलु नाचै आपु निवारे ॥ (३८१-९, आसा, मः ५)
पंच जना ले वसगति राखै मन महि एकंकारे ॥१॥ (३८१-१०, आसा, मः ५)
तेरा जनु निरति करे गुन गावै ॥ (३८१-१०, आसा, मः ५)

रबाबु पखावज ताल घुंघरू अनहद सबदु वजावै ॥१॥ रहाउ ॥ (३८१-११, आसा, मः ५)
प्रथमे मनु परबोधै अपना पाछै अवर रीझावै ॥ (३८१-११, आसा, मः ५)
राम नाम जपु हिरदै जापै मुख ते सगल सुनावै ॥२॥ (३८१-१२, आसा, मः ५)
कर संगि साधू चरन पखारै संत धूरि तनि लावै ॥ (३८१-१२, आसा, मः ५)
मनु तनु अरपि धरे गुर आगै सति पदारथु पावै ॥३॥ (३८१-१३, आसा, मः ५)
जो जो सुनै पेखै लाइ सरधा ता का जनम मरन दुखु भागै ॥ (३८१-१३, आसा, मः ५)
ऐसी निरति नरक निवारै नानक गुरमुखि जागै ॥४॥४॥४३॥ (३८१-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८१-१५)
अधम चंडाली भई ब्रहमणी सूदी ते स्रेसटाई रे ॥ (३८१-१५, आसा, मः ५)
पाताली आकासी सखनी लहबर बूझी खाई रे ॥१॥ (३८१-१५, आसा, मः ५)
घर की बिलाई अवर सिखाई मूसा देखि डराई रे ॥ (३८१-१६, आसा, मः ५)
अज कै वसि गुरि कीनो केहरि कूकर तिनहि लगाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८१-१७, आसा, मः ५)
बाझु थूनीआ छपरा थामिआ नीघरिआ घरु पाइआ रे ॥ (३८१-१७, आसा, मः ५)
बिनु जड़ीए लै जड़िओ जड़ावा थेवा अचरजु लाइआ रे ॥२॥ (३८१-१८, आसा, मः ५)
दादी दादि न पहुचनहारा चूपी निरनउ पाइआ रे ॥ (३८१-१८, आसा, मः ५)
मालि दुलीचै बैठी ले मिरतकु नैन दिखालनु धाइआ रे ॥३॥ (३८१-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८२

सोई अजाणु कहै मै जाना जानणहारु न छाना रे ॥ (३८२-१, आसा, मः ५)
कहु नानक गुरि अमिउ पीआइआ रसकि रसकि बिगसाना रे ॥४॥५॥४४॥ (३८२-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८२-२)
बंधन काटि बिसारे अउगन अपना बिरदु सम्हारिआ ॥ (३८२-२, आसा, मः ५)
होए कृपाल मात पित निआई बारिक जिउ प्रतिपारिआ ॥१॥ (३८२-३, आसा, मः ५)
गुरसिख राखे गुर गोपालि ॥ (३८२-३, आसा, मः ५)
काढि लीए महा भवजल ते अपनी नदरि निहालि ॥१॥ रहाउ ॥ (३८२-४, आसा, मः ५)
जा कै सिमरणि जम ते छुटीऐ हलति पलति सुखु पाईऐ ॥ (३८२-४, आसा, मः ५)
सासि गिरासि जपहु जपु रसना नीत नीत गुण गाईऐ ॥२॥ (३८२-५, आसा, मः ५)
भगति प्रेम परम पदु पाइआ साधसंगि दुख नाठे ॥ (३८२-६, आसा, मः ५)
छिजै न जाइ किछु भउ न बिआपे हरि धनु निरमलु गाठे ॥३॥ (३८२-६, आसा, मः ५)
अंति काल प्रभ भए सहाई इत उत राखनहारे ॥ (३८२-७, आसा, मः ५)
प्रान मीत हीत धनु मेरै नानक सद बलिहारे ॥४॥६॥४५॥ (३८२-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८२-८)
जा तूं साहिबु ता भउ केहा हउ तुधु बिनु किसु सालाही ॥ (३८२-८, आसा, मः ५)
एकु तूं ता सभु किछु है मै तुधु बिनु दूजा नाही ॥१॥ (३८२-९, आसा, मः ५)
बाबा बिखु देखिआ संसारु ॥ (३८२-९, आसा, मः ५)

रखिआ करहु गुसाई मेरे मै नामु तेरा आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (३८२-९, आसा, मः ५)
जाणहि बिरथा सभा मन की होरु किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ (३८२-१०, आसा, मः ५)
विणु नावै सभु जगु बउराइआ नामु मिलै सुखु पाईऐ ॥२॥ (३८२-११, आसा, मः ५)
किआ कहीऐ किसु आखि सुणाईऐ जि कहणा सु प्रभ जी पासि ॥ (३८२-११, आसा, मः ५)
सभु किछु कीता तेरा वरतै सदा सदा तेरी आस ॥३॥ (३८२-१२, आसा, मः ५)
जे देहि वडिआई ता तेरी वडिआई इत उत तुझहि धिआउ ॥ (३८२-१२, आसा, मः ५)
नानक के प्रभ सदा सुखदाते मै ताणु तेरा इकु नाउ ॥४॥७॥४६॥ (३८२-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८२-१४)
अमृतु नामु तुम्हारा ठाकुर एहु महा रसु जनहि पीओ ॥ (३८२-१४, आसा, मः ५)
जनम जनम चूके भै भारे दुरतु बिनासिओ भरमु बीओ ॥१॥ (३८२-१५, आसा, मः ५)
दरसनु पेखत मै जीओ ॥ (३८२-१५, आसा, मः ५)
सुनि करि बचन तुम्हारे सतिगुर मनु तनु मेरा ठारु थीओ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८२-१५, आसा, मः ५)
तुम्हरी कृपा ते भइओ साधसंगु एहु काजु तुम्ह आपि कीओ ॥ (३८२-१६, आसा, मः ५)
दिड़ु करि चरण गहे प्रभ तुम्हरे सहजे बिखिआ भई खीओ ॥२॥ (३८२-१७, आसा, मः ५)
सुख निधान नामु प्रभ तुमरा एहु अबिनासी मंत्रु लीओ ॥ (३८२-१७, आसा, मः ५)
करि किरपा मोहि सतिगुरि दीना तापु संतापु मेरा बैरु गीओ ॥३॥ (३८२-१८, आसा, मः ५)
धन्नु सु माणस देही पाई जितु प्रभि अपनै मेलि लीओ ॥ (३८२-१९, आसा, मः ५)
धन्नु सु कलिजुगु साधसंगि कीरतनु गाईऐ नानक नामु अधारु हीओ ॥४॥८॥४७॥ (३८२-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८३

आसा महला ५ ॥ (३८३-१)
आगै ही ते सभु किछु हूआ अवरु कि जाणै गिआना ॥ (३८३-१, आसा, मः ५)
भूल चूक अपना बारिकु बखसिआ पारब्रह्म भगवाना ॥१॥ (३८३-२, आसा, मः ५)
सतिगुरु मेरा सदा दइआला मोहि दीन कउ राखि लीआ ॥ (३८३-२, आसा, मः ५)
काटिआ रोगु महा सुखु पाइआ हरि अमृतु मुखि नामु दीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८३-३, आसा, मः ५)
अनिक पाप मेरे परहरिआ बंधन काटे मुकत भए ॥ (३८३-४, आसा, मः ५)
अंध कूप महा घोर ते बाह पकरि गुरि काढि लीए ॥२॥ (३८३-४, आसा, मः ५)
निरभउ भए सगल भउ मिटिआ राखे राखनहारे ॥ (३८३-५, आसा, मः ५)
ऐसी दाति तेरी प्रभ मेरे कारज सगल सवारे ॥३॥ (३८३-५, आसा, मः ५)
गुण निधान साहिब मनि मेला ॥ (३८३-६, आसा, मः ५)
सरणि पइआ नानक सोहेला ॥४॥९॥४८॥ (३८३-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८३-७)
तूं विसरहि ताँ सभु को लागू चीति आवहि ताँ सेवा ॥ (३८३-७, आसा, मः ५)
अवरु न कोऊ दूजा सूझै साचे अलख अभेवा ॥१॥ (३८३-७, आसा, मः ५)
चीति आवै ताँ सदा दइआला लोगन किआ वेचारे ॥ (३८३-८, आसा, मः ५)

बुरा भला कहु किस नो कहीऐ सगले जीअ तुम्ारे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८३-८, आसा, मः ५)
तेरी टेक तेरा आधारा हाथ देइ तूं राखहि ॥ (३८३-९, आसा, मः ५)
जिसु जन ऊपरि तेरी किरपा तिस कउ बिपु न कोऊ भाखै ॥२॥ (३८३-९, आसा, मः ५)
ओहो सुखु ओहा वडिआई जो प्रभ जी मनि भाणी ॥ (३८३-१०, आसा, मः ५)
तूं दाना तूं सद मिहरवाना नामु मिलै रंगु माणी ॥३॥ (३८३-११, आसा, मः ५)
तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥ (३८३-११, आसा, मः ५)
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥४॥१०॥४९॥ (३८३-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८३-१२)
करि किरपा प्रभ अंतरजामी साधसंगि हरि पाईऐ ॥ (३८३-१२, आसा, मः ५)
खोलि किवार दिखाले दरसनु पुनरपि जनमि न आईऐ ॥१॥ (३८३-१३, आसा, मः ५)
मिलउ परीतम सुआमी अपुने सगले दूख हरउ रे ॥ (३८३-१४, आसा, मः ५)
पारब्रह्मु जिन्हि रिदै अराधिआ ता कै संगि तरउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८३-१४, आसा, मः ५)
महा उदिआन पावक सागर भए हरख सोग महि बसना ॥ (३८३-१५, आसा, मः ५)
सतिगुरु भेटि भइआ मनु निरमलु जपि अमृतु हरि रसना ॥२॥ (३८३-१६, आसा, मः ५)
तनु धनु थापि कीओ सभु अपना कोमल बंधन बाँधिआ ॥ (३८३-१६, आसा, मः ५)
गुर परसादि भए जन मुकते हरि हरि नामु अराधिआ ॥३॥ (३८३-१७, आसा, मः ५)
राखि लीए प्रभि राखनहारै जो प्रभ अपुने भाणे ॥ (३८३-१७, आसा, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तुम्रा दाते नानक सद कुरबाणे ॥४॥११॥५०॥ (३८३-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८३-१९)
मोह मलन नीद ते छुटकी कउनु अनुग्रहु भइओ री ॥ (३८३-१९, आसा, मः ५)
महा मोहनी तुधु न विआपै तेरा आलसु कहा गइओ री ॥१॥ रहाउ ॥ (३८३-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८४

कामु क्रोधु अहंकारु गाखरो संजमि कउन छुटिओ री ॥ (३८४-१, आसा, मः ५)
सुरि नर देव असुर त्रै गुनीआ सगलो भवनु लुटिओ री ॥१॥ (३८४-२, आसा, मः ५)
दावा अगनि बहुतु तृण जाले कोई हरिआ बूटु रहिओ री ॥ (३८४-२, आसा, मः ५)
ऐसो समरथु वरनि न साकउ ता की उपमा जात न कहिओ री ॥२॥ (३८४-३, आसा, मः ५)
काजर कोठ महि भई न कारी निरमल बरनु बनिओ री ॥ (३८४-४, आसा, मः ५)
महा मंत्रु गुर हिरदै बसिओ अचरज नामु सुनिओ री ॥३॥ (३८४-४, आसा, मः ५)
करि किरपा प्रभ नदरि अवलोकन अपुनै चरणि लगाई ॥ (३८४-५, आसा, मः ५)
प्रेम भगति नानक सुखु पाइआ साधू संगि समाई ॥४॥१२॥५१॥ (३८४-५, आसा, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३८४-७)
रागु आसा घरु ७ महला ५ ॥ (३८४-७)
लालु चोलना तै तनि सोहिआ ॥ (३८४-७, आसा, मः ५)
सुरिजन भानी ताँ मनु मोहिआ ॥१॥ (३८४-७, आसा, मः ५)

कवन बनी री तेरी लाली ॥ (३८४-८, आसा, मः ५)
कवन रंगि तूं भई गुलाली ॥१॥ रहाउ ॥ (३८४-८, आसा, मः ५)
तुम ही सुंदरि तुमहि सुहागु ॥ (३८४-८, आसा, मः ५)
तुम घरि लालनु तुम घरि भागु ॥२॥ (३८४-९, आसा, मः ५)
तूं सतवंती तूं परधानि ॥ (३८४-९, आसा, मः ५)
तूं प्रीतम भानी तुही सुर गिआनि ॥३॥ (३८४-९, आसा, मः ५)
प्रीतम भानी ताँ रंगि गुलाल ॥ (३८४-१०, आसा, मः ५)
कहु नानक सुभ द्रिसटि निहाल ॥४॥ (३८४-१०, आसा, मः ५)
सुनि री सखी इह हमरी घाल ॥ (३८४-१०, आसा, मः ५)
प्रभ आपि सीगारि सवारनहार ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥५२॥ (३८४-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८४-११)
दूखु घनो जब होते दूरि ॥ (३८४-१२, आसा, मः ५)
अब मसलति मोहि मिली हदूरि ॥१॥ (३८४-१२, आसा, मः ५)
चुका निहोरा सखी सहेरी ॥ (३८४-१२, आसा, मः ५)
भरमु गइआ गुरि पिर संगि मेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (३८४-१३, आसा, मः ५)
निकटि आनि प्रिअ सेज धरी ॥ (३८४-१३, आसा, मः ५)
काणि कढन ते छूटि परी ॥२॥ (३८४-१३, आसा, मः ५)
मंदरि मेरै सबदि उजारा ॥ (३८४-१४, आसा, मः ५)
अनद बिनोदी खसमु हमारा ॥३॥ (३८४-१४, आसा, मः ५)
मसतकि भागु मै पिरु घरि आइआ ॥ (३८४-१४, आसा, मः ५)
थिरु सोहागु नानक जन पाइआ ॥४॥२॥५३॥ (३८४-१५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८४-१५)
साचि नामि मेरा मनु लागा ॥ (३८४-१५, आसा, मः ५)
लोगन सिउ मेरा ठाठा बागा ॥१॥ (३८४-१६, आसा, मः ५)
बाहरि सूतु सगल सिउ मउला ॥ (३८४-१६, आसा, मः ५)
अलिपतु रहउ जैसे जल महि कउला ॥१॥ रहाउ ॥ (३८४-१६, आसा, मः ५)
मुख की बात सगल सिउ करता ॥ (३८४-१७, आसा, मः ५)
जीअ संगि प्रभु अपुना धरता ॥२॥ (३८४-१७, आसा, मः ५)
दीसि आवत है बहुतु भीहाला ॥ (३८४-१७, आसा, मः ५)
सगल चरन की इहु मनु राला ॥३॥ (३८४-१८, आसा, मः ५)
नानक जनि गुरु पूरा पाइआ ॥ (३८४-१८, आसा, मः ५)

पन्ना ३८५

अंतरि बाहरि एकु दिखाइआ ॥४॥३॥५४॥ (३८५-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८५-१)

पावतु रलीआ जोबनि बलीआ ॥ (३८५-१, आसा, मः ५)
नाम बिना माटी संगि रलीआ ॥१॥ (३८५-१, आसा, मः ५)
कान कुंडलीआ बसत्र ओढलीआ ॥ (३८५-२, आसा, मः ५)
सेज सुखलीआ मनि गरबलीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८५-२, आसा, मः ५)
तलै कुंचरीआ सिरि कनिक छतरीआ ॥ (३८५-३, आसा, मः ५)
हरि भगति बिना ले धरनि गडलीआ ॥२॥ (३८५-३, आसा, मः ५)
रूप सुंदरीआ अनिक इसतरीआ ॥ (३८५-४, आसा, मः ५)
हरि रस बिनु सभि सुआद फिकरीआ ॥३॥ (३८५-४, आसा, मः ५)
माइआ छलीआ बिकार बिखलीआ ॥ (३८५-४, आसा, मः ५)
सरणि नानक प्रभ पुरख दइअलीआ ॥४॥४॥५५॥ (३८५-५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८५-५)
एकु बगीचा पेड घन करिआ ॥ (३८५-५, आसा, मः ५)
अमृत नामु तहा महि फलिआ ॥१॥ (३८५-६, आसा, मः ५)
ऐसा करहु बीचारु गिआनी ॥ (३८५-६, आसा, मः ५)
जा ते पाईऐ पदु निरबानी ॥ (३८५-६, आसा, मः ५)
आसि पासि बिखूआ के कुंटा बीचि अमृतु है भाई रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८५-७, आसा, मः ५)
सिंचनहारे एकै माली ॥ (३८५-८, आसा, मः ५)
खबरि करतु है पात पत डाली ॥२॥ (३८५-८, आसा, मः ५)
सगल बनसपति आणि जड़ाई ॥ (३८५-८, आसा, मः ५)
सगली फूली निफल न काई ॥३॥ (३८५-८, आसा, मः ५)
अमृत फलु नामु जिनि गुर ते पाइआ ॥ (३८५-९, आसा, मः ५)
नानक दास तरी तिनि माइआ ॥४॥५॥५६॥ (३८५-९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८५-१०)
राज लीला तेरै नामि बनाई ॥ (३८५-१०, आसा, मः ५)
जोगु बनिआ तेरा कीरतनु गाई ॥१॥ (३८५-१०, आसा, मः ५)
सर्ब सुखा बने तेरै ओल्है ॥ (३८५-११, आसा, मः ५)
भ्रम के परदे सतिगुर खोल्हे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८५-११, आसा, मः ५)
हुकमु बूझि रंग रस माणे ॥ (३८५-११, आसा, मः ५)
सतिगुर सेवा महा निरबाणे ॥३॥ (३८५-१२, आसा, मः ५)
जिनि तूं जाता सो गिरसत उदासी परवाणु ॥ (३८५-१२, आसा, मः ५)
नामि रता सोई निरबाणु ॥२॥ (३८५-१२, आसा, मः ५)
जा कउ मिलिओ नामु निधाना ॥ (३८५-१३, आसा, मः ५)
भनति नानक ता का पूर खजाना ॥४॥६॥५७॥ (३८५-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८५-१३)
तीरथि जाउ त हउ हउ करते ॥ (३८५-१४, आसा, मः ५)

पंडित पूछउ त माइआ राते ॥१॥ (३८५-१४, आसा, मः ५)
सो असथानु बतावहु मीता ॥ (३८५-१४, आसा, मः ५)
जा कै हरि हरि कीरतनु नीता ॥१॥ रहाउ ॥ (३८५-१५, आसा, मः ५)
सासत्र बेद पाप पुन्न वीचार ॥ (३८५-१५, आसा, मः ५)
नरकि सुरगि फिरि फिरि अउतार ॥२॥ (३८५-१५, आसा, मः ५)
गिरसत महि चिंत उदास अहंकार ॥ (३८५-१६, आसा, मः ५)
कर्म करत जीअ कउ जंजार ॥३॥ (३८५-१६, आसा, मः ५)
प्रभ किरपा ते मनु वसि आइआ ॥ (३८५-१७, आसा, मः ५)
नानक गुरमुखि तरी तिनि माइआ ॥४॥ (३८५-१७, आसा, मः ५)
साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (३८५-१७, आसा, मः ५)
इहु असथानु गुरू ते पाईऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥७॥५८॥ (३८५-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८५-१८)
घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा ॥ (३८५-१८, आसा, मः ५)
हरि सिमरत सगल बिनासे दूखा ॥१॥ (३८५-१९, आसा, मः ५)
सगल सूख जाँ तूं चिति आँवैं ॥ (३८५-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८६

सो नामु जपै जो जनु तुधु भावै ॥१॥ रहाउ ॥ (३८६-१, आसा, मः ५)
तनु मनु सीतलु जपि नामु तेरा ॥ (३८६-१, आसा, मः ५)
हरि हरि जपत ढहै दुख डेरा ॥२॥ (३८६-१, आसा, मः ५)
हुकमु बूझै सोई परवानु ॥ (३८६-२, आसा, मः ५)
साचु सबदु जा का नीसानु ॥३॥ (३८६-२, आसा, मः ५)
गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइआ ॥ (३८६-२, आसा, मः ५)
भनति नानकु मेरै मनि सुखु पाइआ ॥४॥८॥५९॥ (३८६-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८६-३)
जहा पठावहु तह तह जाईं ॥ (३८६-३, आसा, मः ५)
जो तुम देहु सोई सुखु पाईं ॥१॥ (३८६-४, आसा, मः ५)
सदा चेरे गोविंद गोसाई ॥ (३८६-४, आसा, मः ५)
तुमरी कृपा ते तृपति अघाईं ॥१॥ रहाउ ॥ (३८६-४, आसा, मः ५)
तुमरा दीआ पैनउ खाईं ॥ (३८६-५, आसा, मः ५)
तउ प्रसादि प्रभ सुखी वलाईं ॥२॥ (३८६-५, आसा, मः ५)
मन तन अंतरि तुझै धिआईं ॥ (३८६-५, आसा, मः ५)
तुमरै लवै न कोऊ लाईं ॥३॥ (३८६-६, आसा, मः ५)
कहु नानक नित इवै धिआईं ॥ (३८६-६, आसा, मः ५)
गति होवै संतह लगि पाईं ॥४॥९॥६०॥ (३८६-६, आसा, मः ५)

आसा महला ५ ॥ (३८६-७)
ऊठत बैठत सोवत धिआईऐ ॥ (३८६-७, आसा, मः ५)
मारगि चलत हरे हरि गाईऐ ॥१॥ (३८६-७, आसा, मः ५)
स्रवन सुनीजै अमृत कथा ॥ (३८६-८, आसा, मः ५)
जासु सुनी मनि होइ अनंदा दूख रोग मन सगले लथा ॥१॥ रहाउ ॥ (३८६-८, आसा, मः ५)
कारजि कामि बाट घाट जपीजै ॥ (३८६-९, आसा, मः ५)
गुर प्रसादि हरि अमृतु पीजै ॥२॥ (३८६-९, आसा, मः ५)
दिनसु रैनि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ (३८६-९, आसा, मः ५)
सो जनु जम की वाट न पाईऐ ॥३॥ (३८६-१०, आसा, मः ५)
आठ पहर जिसु विसरहि नाही ॥ (३८६-१०, आसा, मः ५)
गति होवै नानक तिसु लगि पाई ॥४॥१०॥६१॥ (३८६-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८६-११)
जा कै सिमरनि सूख निवासु ॥ (३८६-११, आसा, मः ५)
भई कलिआण दुख होवत नासु ॥१॥ (३८६-१२, आसा, मः ५)
अनदु करहु प्रभ के गुन गावहु ॥ (३८६-१२, आसा, मः ५)
सतिगुरु अपना सद सदा मनावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (३८६-१२, आसा, मः ५)
सतिगुर का सचु सबदु कमावहु ॥ (३८६-१३, आसा, मः ५)
थिरु घरि बैठे प्रभु अपना पावहु ॥२॥ (३८६-१३, आसा, मः ५)
पर का बुरा न राखहु चीत ॥ (३८६-१४, आसा, मः ५)
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥३॥ (३८६-१४, आसा, मः ५)
हरि हरि तंतु मंतु गुरि दीन्हा ॥ (३८६-१४, आसा, मः ५)
इहु सुखु नानक अनदिनु चीन्हा ॥४॥११॥६२॥ (३८६-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८६-१५)
जिसु नीच कउ कोई न जानै ॥ (३८६-१५, आसा, मः ५)
नामु जपत उहु चहु कुंट मानै ॥१॥ (३८६-१५, आसा, मः ५)
दरसनु मागउ देहि पिआरे ॥ (३८६-१६, आसा, मः ५)
तुमरी सेवा कउन कउन न तारे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८६-१६, आसा, मः ५)
जा कै निकटि न आवै कोई ॥ (३८६-१७, आसा, मः ५)
सगल सृसटि उआ के चरन मलि धोई ॥२॥ (३८६-१७, आसा, मः ५)
जो प्रानी काहू न आवत काम ॥ (३८६-१७, आसा, मः ५)
संत प्रसादि ता को जपीऐ नाम ॥३॥ (३८६-१८, आसा, मः ५)
साधसंगि मन सोवत जागे ॥ (३८६-१८, आसा, मः ५)
तब प्रभ नानक मीठे लागे ॥४॥१२॥६३॥ (३८६-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८६-१९)
एको एकी नैन निहारउ ॥ (३८६-१९, आसा, मः ५)

सदा सदा हरि नामु सम्हारउ ॥१॥ (३८६-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८७

राम रामा रामा गुन गावउ ॥ (३८७-१, आसा, मः ५)
संत प्रतापि साध कै संगे हरि हरि नामु धिआवउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८७-१, आसा, मः ५)
सगल समग्री जा कै सूति परोई ॥ (३८७-२, आसा, मः ५)
घट घट अंतरि रविआ सोई ॥२॥ (३८७-२, आसा, मः ५)
ओपति परलउ खिन महि करता ॥ (३८७-२, आसा, मः ५)
आपि अलेपा निरगुनु रहता ॥३॥ (३८७-३, आसा, मः ५)
करन करावन अंतरजामी ॥ (३८७-३, आसा, मः ५)
अनंद करै नानक का सुआमी ॥४॥१३॥६४॥ (३८७-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८७-४)
कोटि जनम के रहे भवारे ॥ (३८७-४, आसा, मः ५)
दुलभ देह जीती नही हारे ॥१॥ (३८७-४, आसा, मः ५)
किलबिख बिनासे दुख दरद दूरि ॥ (३८७-५, आसा, मः ५)
भए पुनीत संतन की धूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (३८७-५, आसा, मः ५)
प्रभ के संत उधारन जोग ॥ (३८७-६, आसा, मः ५)
तिसु भेटे जिसु धुरि संजोग ॥२॥ (३८७-६, आसा, मः ५)
मनि आनंदु मंत्रु गुरि दीआ ॥ (३८७-६, आसा, मः ५)
तृसन बुझी मनु निहचलु थीआ ॥३॥ (३८७-६, आसा, मः ५)
नामु पदारथु नउ निधि सिधि ॥ (३८७-७, आसा, मः ५)
नानक गुर ते पाई बुधि ॥४॥१४॥६५॥ (३८७-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८७-८)
मिटी तिआस अगिआन अंधेरे ॥ (३८७-८, आसा, मः ५)
साध सेवा अघ कटे घनेरे ॥१॥ (३८७-८, आसा, मः ५)
सूख सहज आनंदु घना ॥ (३८७-८, आसा, मः ५)
गुर सेवा ते भए मन निर्मल हरि हरि हरि हरि नामु सुना ॥१॥ रहाउ ॥ (३८७-९, आसा, मः ५)
बिनसिओ मन का मूरखु ढीठा ॥ (३८७-१०, आसा, मः ५)
प्रभ का भाणा लागा मीठा ॥२॥ (३८७-१०, आसा, मः ५)
गुर पूरे के चरण गहे ॥ (३८७-१०, आसा, मः ५)
कोटि जनम के पाप लहे ॥३॥ (३८७-१०, आसा, मः ५)
रतन जनमु इहु सफल भइआ ॥ (३८७-११, आसा, मः ५)
कहु नानक प्रभ करी मइआ ॥४॥१५॥६६॥ (३८७-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८७-१२)
सतिगुरु अपना सद सदा सम्हारे ॥ (३८७-१२, आसा, मः ५)

गुर के चरन केस संगि झारे ॥१॥ (३८७-१२, आसा, मः ५)
जागु रे मन जागनहारे ॥ (३८७-१२, आसा, मः ५)
बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥१॥ रहाउ ॥ (३८७-१३, आसा, मः ५)
गुर की बाणी सिउ रंगु लाइ ॥ (३८७-१३, आसा, मः ५)
गुरु किरपालु होइ दुखु जाइ ॥२॥ (३८७-१४, आसा, मः ५)
गुर बिनु दूजा नाही थाउ ॥ (३८७-१४, आसा, मः ५)
गुरु दाता गुरु देवै नाउ ॥३॥ (३८७-१४, आसा, मः ५)
गुरु पारब्रह्मु परमेसरु आपि ॥ (३८७-१५, आसा, मः ५)
आठ पहर नानक गुर जापि ॥४॥१६॥६७॥ (३८७-१५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८७-१६)
आपे पेडु बिसथारी साख ॥ (३८७-१६, आसा, मः ५)
अपनी खेती आपे राख ॥१॥ (३८७-१६, आसा, मः ५)
जत कत पेखउ एकै ओही ॥ (३८७-१६, आसा, मः ५)
घट घट अंतरि आपे सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (३८७-१७, आसा, मः ५)
आपे सूरु किरणि बिसथारु ॥ (३८७-१७, आसा, मः ५)
सोई गुपतु सोई आकारु ॥२॥ (३८७-१७, आसा, मः ५)
सरगुण निरगुण थापै नाउ ॥ (३८७-१८, आसा, मः ५)
दुह मिलि एकै कीनो ठाउ ॥३॥ (३८७-१८, आसा, मः ५)
कहु नानक गुरि भ्रमु भउ खोइआ ॥ (३८७-१८, आसा, मः ५)
अनद रूपु सभु नैन अलोइआ ॥४॥१७॥६८॥ (३८७-१९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८७-१९)
उकति सिआनप किछू न जाना ॥ (३८७-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८८

दिनु रैणि तेरा नामु वखाना ॥१॥ (३८८-१, आसा, मः ५)
मै निरगुन गुणु नाही कोइ ॥ (३८८-१, आसा, मः ५)
करन करावनहार प्रभ सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८८-१, आसा, मः ५)
मूरख मुगध अगिआन अवीचारी ॥ (३८८-२, आसा, मः ५)
नाम तेरे की आस मनि धारी ॥२॥ (३८८-२, आसा, मः ५)
जपु तपु संजमु करम न साधा ॥ (३८८-२, आसा, मः ५)
नामु प्रभू का मनहि अराधा ॥३॥ (३८८-३, आसा, मः ५)
किछू न जाना मति मेरी थोरी ॥ (३८८-३, आसा, मः ५)
बिनवति नानक ओट प्रभ तोरी ॥४॥१८॥६९॥ (३८८-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८८-४)
हरि हरि अखर दुइ इह माला ॥ (३८८-४, आसा, मः ५)

जपत जपत भए दीन दइआला ॥१॥ (३८८-४, आसा, मः ५)
करउ बेनती सतिगुर अपुनी ॥ (३८८-५, आसा, मः ५)
करि किरपा राखहु सरणाई मो कउ देहु हरे हरि जपनी ॥१॥ रहाउ ॥ (३८८-५, आसा, मः ५)
हरि माला उर अंतरि धारै ॥ (३८८-६, आसा, मः ५)
जनम मरण का दूखु निवारै ॥२॥ (३८८-६, आसा, मः ५)
हिरदै समालै मुखि हरि हरि बोलै ॥ (३८८-६, आसा, मः ५)
सो जनु इत उत कतहि न डोलै ॥३॥ (३८८-७, आसा, मः ५)
कहु नानक जो राचै नाइ ॥ (३८८-७, आसा, मः ५)
हरि माला ता कै संगि जाइ ॥४॥१९॥७०॥ (३८८-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८८-८)
जिस का सभु किछु तिस का होइ ॥ (३८८-८, आसा, मः ५)
तिसु जन लेपु न बिआपै कोइ ॥१॥ (३८८-८, आसा, मः ५)
हरि का सेवकु सद ही मुकता ॥ (३८८-९, आसा, मः ५)
जो किछु करै सोई भल जन कै अति निर्मल दास की जुगता ॥१॥ रहाउ ॥ (३८८-९, आसा, मः ५)
सगल तिआगि हरि सरणी आइआ ॥ (३८८-१०, आसा, मः ५)
तिसु जन कहा बिआपै माइआ ॥२॥ (३८८-१०, आसा, मः ५)
नामु निधानु जा के मन माहि ॥ (३८८-११, आसा, मः ५)
तिस कउ चिंता सुपनै नाहि ॥३॥ (३८८-११, आसा, मः ५)
कहु नानक गुरु पूरा पाइआ ॥ (३८८-११, आसा, मः ५)
भरमु मोहु सगल बिनसाइआ ॥४॥२०॥७१॥ (३८८-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८८-१२)
जउ सुप्रसन्न होइओ प्रभु मेरा ॥ (३८८-१२, आसा, मः ५)
ताँ दूखु भरमु कहु कैसे नेरा ॥१॥ (३८८-१३, आसा, मः ५)
सुनि सुनि जीवा सोइ तुम्हारी ॥ (३८८-१३, आसा, मः ५)
मोहि निरगुन कउ लेहु उधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (३८८-१३, आसा, मः ५)
मिटि गइआ दूखु बिसारी चिंता ॥ (३८८-१४, आसा, मः ५)
फलु पाइआ जपि सतिगुर मंता ॥२॥ (३८८-१४, आसा, मः ५)
सोई सति सति है सोइ ॥ (३८८-१५, आसा, मः ५)
सिमरि सिमरि रखु कंठि परोइ ॥३॥ (३८८-१५, आसा, मः ५)
कहु नानक कउन उह करमा ॥ (३८८-१५, आसा, मः ५)
जा कै मनि वसिआ हरि नामा ॥४॥२१॥७२॥ (३८८-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८८-१६)
कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥ (३८८-१६, आसा, मः ५)
हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥१॥ (३८८-१६, आसा, मः ५)
सोइ रहे माइआ मद माते ॥ (३८८-१७, आसा, मः ५)

जागत भगत सिमरत हरि राते ॥१॥ रहाउ ॥ (३८८-१७, आसा, मः ५)
मोह भरमि बहु जोनि भवाइआ ॥ (३८८-१८, आसा, मः ५)
असथिरु भगत हरि चरण धिआइआ ॥२॥ (३८८-१८, आसा, मः ५)
बंधन अंध कूप गृह मेरा ॥ (३८८-१८, आसा, मः ५)
मुकते संत बुझहि हरि नेरा ॥३॥ (३८८-१९, आसा, मः ५)
कहु नानक जो प्रभ सरणाई ॥ (३८८-१९, आसा, मः ५)
ईहा सुखु आगै गति पाई ॥४॥२२॥७३॥ (३८८-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३८९

आसा महला ५ ॥ (३८९-१)
तू मेरा तरंगु हम मीन तुमारे ॥ (३८९-१, आसा, मः ५)
तू मेरा ठाकुरु हम तेरै दुआरे ॥१॥ (३८९-१, आसा, मः ५)
तूं मेरा करता हउ सेवकु तेरा ॥ (३८९-२, आसा, मः ५)
सरणि गही प्रभ गुनी गहेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (३८९-२, आसा, मः ५)
तू मेरा जीवनु तू आधारु ॥ (३८९-२, आसा, मः ५)
तुझहि पेखि बिगसै कउलारु ॥२॥ (३८९-३, आसा, मः ५)
तू मेरी गति पति तू परवानु ॥ (३८९-३, आसा, मः ५)
तू समरथु मै तेरा ताणु ॥३॥ (३८९-३, आसा, मः ५)
अनदिनु जपउ नाम गुणतासि ॥ (३८९-४, आसा, मः ५)
नानक की प्रभ पहि अरदासि ॥४॥२३॥७४॥ (३८९-४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८९-५)
रोवनहारै झूठु कमाना ॥ (३८९-५, आसा, मः ५)
हसि हसि सोगु करत बेगाना ॥१॥ (३८९-५, आसा, मः ५)
को मूआ का कै घरि गावनु ॥ (३८९-५, आसा, मः ५)
को रोवै को हसि हसि पावनु ॥१॥ रहाउ ॥ (३८९-६, आसा, मः ५)
बाल बिवसथा ते बिरधाना ॥ (३८९-६, आसा, मः ५)
पहुचि न मूका फिरि पछुताना ॥२॥ (३८९-६, आसा, मः ५)
तृहु गुण महि वरतै संसारा ॥ (३८९-७, आसा, मः ५)
नरक सुरग फिरि फिरि अउतारा ॥३॥ (३८९-७, आसा, मः ५)
कहु नानक जो लाइआ नाम ॥ (३८९-७, आसा, मः ५)
सफल जनमु ता का परवान ॥४॥२४॥७५॥ (३८९-८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८९-८)
सोइ रही प्रभ खबरि न जानी ॥ (३८९-८, आसा, मः ५)
भोरु भइआ बहुरि पछुतानी ॥१॥ (३८९-९, आसा, मः ५)
पृअ प्रेम सहजि मनि अनदु धरउ री ॥ (३८९-९, आसा, मः ५)

प्रभ मिलबे की लालसा ता ते आलसु कहा करउ री ॥१॥ रहाउ ॥ (३८९-९, आसा, मः ५)
कर महि अमृतु आणि निसारिओ ॥ (३८९-१०, आसा, मः ५)
खिसरि गइओ भूम परि डारिओ ॥२॥ (३८९-११, आसा, मः ५)
सादि मोहि लादी अहंकारे ॥ (३८९-११, आसा, मः ५)
दोसु नाही प्रभ करणैहारे ॥३॥ (३८९-११, आसा, मः ५)
साधसंगि मिटे भर्म अंधारे ॥ (३८९-१२, आसा, मः ५)
नानक मेली सिरजणहारे ॥४॥२५॥७६॥ (३८९-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८९-१२)
चरन कमल की आस पिआरे ॥ (३८९-१३, आसा, मः ५)
जमकंकर नसि गए विचारे ॥१॥ (३८९-१३, आसा, मः ५)
तू चिति आवहि तेरी मइआ ॥ (३८९-१३, आसा, मः ५)
सिमरत नाम सगल रोग खइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३८९-१४, आसा, मः ५)
अनिक दूख देवहि अवरा कउ ॥ (३८९-१४, आसा, मः ५)
पहुचि न साकहि जन तेरे कउ ॥२॥ (३८९-१४, आसा, मः ५)
दरस तेरे की पिआस मनि लागी ॥ (३८९-१५, आसा, मः ५)
सहज अनंद बसै बैरागी ॥३॥ (३८९-१५, आसा, मः ५)
नानक की अरदासि सुणीजै ॥ (३८९-१५, आसा, मः ५)
केवल नामु रिदे महि दीजै ॥४॥२६॥७७॥ (३८९-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३८९-१६)
मनु तृपतानो मिटे जंजाल ॥ (३८९-१६, आसा, मः ५)
प्रभु अपुना होइआ किरपाल ॥१॥ (३८९-१७, आसा, मः ५)
संत प्रसादि भली बनी ॥ (३८९-१७, आसा, मः ५)
जा कै गृहि सभु किछु है पूरनु सो भेटिआ निरभै धनी ॥१॥ रहाउ ॥ (३८९-१७, आसा, मः ५)
नामु दृड़ाइआ साध कृपाल ॥ (३८९-१८, आसा, मः ५)
मिटि गई भूख महा बिकराल ॥२॥ (३८९-१८, आसा, मः ५)
ठाकुरि अपुनै कीनी दाति ॥ (३८९-१९, आसा, मः ५)
जलनि बुझी मनि होई साँति ॥३॥ (३८९-१९, आसा, मः ५)
मिटि गई भाल मनु सहजि समाना ॥ (३८९-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३९०

नानक पाइआ नाम खजाना ॥४॥२७॥७८॥ (३९०-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९०-१)
ठाकुर सिउ जा की बनि आई ॥ (३९०-१, आसा, मः ५)
भोजन पूरन रहे अघाई ॥१॥ (३९०-२, आसा, मः ५)
कछू न थोरा हरि भगतन कउ ॥ (३९०-२, आसा, मः ५)

खात खरचत बिलछत देवन कउ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६०-२, आसा, मः ५)
जा का धनी अगम गुसाई ॥ (३६०-३, आसा, मः ५)
मानुख की कहु केत चलाई ॥२॥ (३६०-३, आसा, मः ५)
जा की सेवा दस असट सिधाई ॥ (३६०-३, आसा, मः ५)
पलक दिसटि ता की लागहु पाई ॥३॥ (३६०-४, आसा, मः ५)
जा कउ दइआ करहु मेरे सुआमी ॥ (३६०-४, आसा, मः ५)
कहु नानक नाही तिन कामी ॥४॥२८॥७६॥ (३६०-५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६०-५)
जउ मै अपुना सतिगुरु धिआइआ ॥ (३६०-५, आसा, मः ५)
तब मेरै मनि महा सुखु पाइआ ॥१॥ (३६०-६, आसा, मः ५)
मिटि गई गणत बिनासिउ संसा ॥ (३६०-६, आसा, मः ५)
नामि रते जन भए भगवंता ॥१॥ रहाउ ॥ (३६०-६, आसा, मः ५)
जउ मै अपुना साहिबु चीति ॥ (३६०-७, आसा, मः ५)
तउ भउ मिटिओ मेरे मीत ॥२॥ (३६०-७, आसा, मः ५)
जउ मै ओट गही प्रभ तेरी ॥ (३६०-७, आसा, मः ५)
ताँ पूरन होई मनसा मेरी ॥३॥ (३६०-८, आसा, मः ५)
देखि चलित मनि भए दिलासा ॥ (३६०-८, आसा, मः ५)
नानक दास तेरा भरवासा ॥४॥२६॥८०॥ (३६०-८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६०-६)
अनदिनु मूसा लाजु टुकाई ॥ (३६०-६, आसा, मः ५)
गिरत कूप महि खाहि मिठाई ॥१॥ (३६०-६, आसा, मः ५)
सोचत साचत रैनि बिहानी ॥ (३६०-१०, आसा, मः ५)
अनिक रंग माइआ के चितवत कबहू न सिमरै सारिंगपानी ॥१॥ रहाउ ॥ (३६०-१०, आसा, मः ५)
द्रुम की छाइआ निहचल गृहु बाँधिआ ॥ (३६०-११, आसा, मः ५)
काल कै फाँसि सकत सरु साँधिआ ॥२॥ (३६०-११, आसा, मः ५)
बालू कनारा तरंग मुखि आइआ ॥ (३६०-१२, आसा, मः ५)
सो थानु मूड़ि निहचलु करि पाइआ ॥३॥ (३६०-१२, आसा, मः ५)
साधसंगि जपिओ हरि राइ ॥ (३६०-१२, आसा, मः ५)
नानक जीवै हरि गुण गाइ ॥४॥३०॥८१॥ (३६०-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ दुतुके ६ ॥ (३६०-१३)
उन कै संगि तू करती केल ॥ (३६०-१३, आसा, मः ५)
उन कै संगि हम तुम संगि मेल ॥ (३६०-१४, आसा, मः ५)
उन्ह कै संगि तुम सभु कोऊ लोरै ॥ (३६०-१४, आसा, मः ५)
ओसु बिना कोऊ मुखु नही जोरै ॥१॥ (३६०-१४, आसा, मः ५)
ते बैरागी कहा समाए ॥ (३६०-१५, आसा, मः ५)

तिसु बिनु तुही दुहेरी री ॥१॥ रहाउ ॥ (३६०-१५, आसा, मः ५)
उन् कै संगि तू गृह महि माहरि ॥ (३६०-१५, आसा, मः ५)
उन् कै संगि तू होई है जाहरि ॥ (३६०-१६, आसा, मः ५)
उन् कै संगि तू रखी पपोलि ॥ (३६०-१६, आसा, मः ५)
ओसु बिना तूं छुटकी रोलि ॥२॥ (३६०-१६, आसा, मः ५)
उन् कै संगि तेरा मानु महतु ॥ (३६०-१७, आसा, मः ५)
उन् कै संगि तुम साकु जगतु ॥ (३६०-१७, आसा, मः ५)
उन् कै संगि तेरी सभ बिधि थाटी ॥ (३६०-१७, आसा, मः ५)
ओसु बिना तूं होई है माटी ॥३॥ (३६०-१८, आसा, मः ५)
ओहु बैरागी मरै न जाइ ॥ (३६०-१८, आसा, मः ५)
हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ (३६०-१८, आसा, मः ५)
जोड़ि विछोड़े नानक थापि ॥ (३६०-१९, आसा, मः ५)
अपनी कुदरति जाणै आपि ॥४॥३१॥८२॥ (३६०-१९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६०-१९)

पन्ना ३६१

ना ओहु मरता ना हम डरिआ ॥ (३६१-१, आसा, मः ५)
ना ओहु बिनसै ना हम कड़िआ ॥ (३६१-१, आसा, मः ५)
ना ओहु निरधनु ना हम भूखे ॥ (३६१-१, आसा, मः ५)
ना ओसु दूखु न हम कउ दूखे ॥१॥ (३६१-१, आसा, मः ५)
अवरु न कोऊ मारनवारा ॥ (३६१-२, आसा, मः ५)
जीअउ हमारा जीउ देनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (३६१-२, आसा, मः ५)
ना उसु बंधन ना हम बाधे ॥ (३६१-३, आसा, मः ५)
ना उसु धंधा ना हम धाधे ॥ (३६१-३, आसा, मः ५)
ना उसु मैलु न हम कउ मैला ॥ (३६१-३, आसा, मः ५)
ओसु अनंदु त हम सद केला ॥२॥ (३६१-३, आसा, मः ५)
ना उसु सोचु न हम कउ सोचा ॥ (३६१-४, आसा, मः ५)
ना उसु लेपु न हम कउ पोचा ॥ (३६१-४, आसा, मः ५)
ना उसु भूख न हम कउ तृसना ॥ (३६१-४, आसा, मः ५)
जा उहु निरमलु ताँ हम जचना ॥३॥ (३६१-५, आसा, मः ५)
हम किछु नाही एकै ओही ॥ (३६१-५, आसा, मः ५)
आगै पाछै एको सोई ॥ (३६१-५, आसा, मः ५)
नानक गुरि खोए भ्रम भंगा ॥ (३६१-६, आसा, मः ५)
हम ओइ मिलि होए इक रंगा ॥४॥३२॥८३॥ (३६१-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६१-६)

अनिक भाँति करि सेवा करीऐ ॥ (३९१-७, आसा, मः ५)
जीउ प्रान धनु आगै धरीऐ ॥ (३९१-७, आसा, मः ५)
पानी पखा करउ तजि अभिमानु ॥ (३९१-७, आसा, मः ५)
अनिक बार जाईऐ कुरबानु ॥१॥ (३९१-८, आसा, मः ५)
साई सुहागणि जो प्रभ भाई ॥ (३९१-८, आसा, मः ५)
तिस कै संगि मिलउ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (३९१-८, आसा, मः ५)
दासनि दासी की पनिहारि ॥ (३९१-९, आसा, मः ५)
उन् की रेणु बसै जीअ नालि ॥ (३९१-९, आसा, मः ५)
माथै भागु त पावउ संगु ॥ (३९१-९, आसा, मः ५)
मिलै सुआमी अपुनै रंगि ॥२॥ (३९१-१०, आसा, मः ५)
जाप ताप देवउ सभ नेमा ॥ (३९१-१०, आसा, मः ५)
कर्म धर्म अरपउ सभ होमा ॥ (३९१-१०, आसा, मः ५)
गरबु मोहु तजि होवउ रेन ॥ (३९१-१०, आसा, मः ५)
उन् कै संगि देखउ प्रभु नैन ॥३॥ (३९१-११, आसा, मः ५)
निमख निमख एही आराधउ ॥ (३९१-११, आसा, मः ५)
दिनसु रैणि एह सेवा साधउ ॥ (३९१-११, आसा, मः ५)
भए कृपाल गुपाल गोबिंद ॥ (३९१-१२, आसा, मः ५)
साधसंगि नानक बखसिंद ॥४॥३३॥८४॥ (३९१-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९१-१३)
प्रभ की प्रीति सदा सुखु होइ ॥ (३९१-१३, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति दुखु लगै न कोइ ॥ (३९१-१३, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति हउमै मलु खोइ ॥ (३९१-१३, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति सद निर्मल होइ ॥१॥ (३९१-१४, आसा, मः ५)
सुनहु मीत ऐसा प्रेम पिआरु ॥ (३९१-१४, आसा, मः ५)
जीअ प्रान घट घट आधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (३९१-१४, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति भए सगल निधान ॥ (३९१-१५, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति रिदै निर्मल नाम ॥ (३९१-१५, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति सद सोभावंत ॥ (३९१-१६, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति सभ मिटी है चिंत ॥२॥ (३९१-१६, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति इहु भवजलु तरै ॥ (३९१-१६, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति जम ते नही डरै ॥ (३९१-१७, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति सगल उधारै ॥ (३९१-१७, आसा, मः ५)
प्रभ की प्रीति चलै संगारै ॥३॥ (३९१-१७, आसा, मः ५)
आपहु कोई मिलै न भूलै ॥ (३९१-१८, आसा, मः ५)
जिसु कृपालु तिसु साधसंगि घूलै ॥ (३९१-१८, आसा, मः ५)

कहु नानक तेरै कुरबाणु ॥ (३९१-१८, आसा, मः ५)
संत ओट प्रभ तेरा ताणु ॥४॥३४॥८५॥ (३९१-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९१-१९)
भूपति होइ कै राजु कमाइआ ॥ (३९१-१९, आसा, मः ५)
करि करि अनरथ विहाझी माइआ ॥ (३९१-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३९२

संचत संचत थैली कीन्ी ॥ (३९२-१, आसा, मः ५)
प्रभि उस ते डारि अवर कउ दीन्ी ॥१॥ (३९२-१, आसा, मः ५)
काच गगरीआ अम्भ मझरीआ ॥ (३९२-१, आसा, मः ५)
गरबि गरबि उआहू महि परीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३९२-२, आसा, मः ५)
निरभउ होइओ भइआ निहंगा ॥ (३९२-२, आसा, मः ५)
चीति न आइओ करता संगा ॥ (३९२-३, आसा, मः ५)
लसकर जोड़े कीआ सम्बाहा ॥ (३९२-३, आसा, मः ५)
निकसिआ फूक त होइ गइओ सुआहा ॥२॥ (३९२-३, आसा, मः ५)
ऊचे मंदर महल अरु रानी ॥ (३९२-४, आसा, मः ५)
हसति घोड़े जोड़े मनि भानी ॥ (३९२-४, आसा, मः ५)
वड परवारु पूत अरु धीआ ॥ (३९२-४, आसा, मः ५)
मोहि पचे पचि अंधा मूआ ॥३॥ (३९२-४, आसा, मः ५)
जिनहि उपाहा तिनहि बिनाहा ॥ (३९२-५, आसा, मः ५)
रंग रसा जैसे सुपनाहा ॥ (३९२-५, आसा, मः ५)
सोई मुकता तिसु राजु मालु ॥ (३९२-५, आसा, मः ५)
नानक दास जिसु खसमु दइआलु ॥४॥३५॥८६॥ (३९२-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९२-६)
इन् सिउ प्रीति करी घनेरी ॥ (३९२-६, आसा, मः ५)
जउ मिलीऐ तउ वधै वधेरी ॥ (३९२-७, आसा, मः ५)
गलि चमड़ी जउ छोडै नाही ॥ (३९२-७, आसा, मः ५)
लागि छुटो सतिगुर की पाई ॥१॥ (३९२-७, आसा, मः ५)
जग मोहनी हम तिआगि गवाई ॥ (३९२-८, आसा, मः ५)
निरगुनु मिलिओ वजी वधाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३९२-८, आसा, मः ५)
ऐसी सुंदरि मन कउ मोहै ॥ (३९२-८, आसा, मः ५)
बाटि घाटि गृहि बनि बनि जोहै ॥ (३९२-९, आसा, मः ५)
मनि तनि लागै होइ कै मीठी ॥ (३९२-९, आसा, मः ५)
गुर प्रसादि मै खोटी डीठी ॥२॥ (३९२-९, आसा, मः ५)
अगरक उस के वडे ठगाऊ ॥ (३९२-१०, आसा, मः ५)

छोडहि नाही बाप न माऊ ॥ (३६२-१०, आसा, मः ५)
मेली अपने उनि ले बाँधे ॥ (३६२-१०, आसा, मः ५)
गुर किरपा ते मै सगले साधे ॥३॥ (३६२-११, आसा, मः ५)
अब मोरै मनि भइआ अनंद ॥ (३६२-११, आसा, मः ५)
भउ चूका टूटे सभि फंद ॥ (३६२-११, आसा, मः ५)
कहु नानक जा सतिगुरु पाइआ ॥ (३६२-१२, आसा, मः ५)
घरु सगला मै सुखी बसाइआ ॥४॥३६॥८७॥ (३६२-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६२-१२)
आठ पहर निकटि करि जानै ॥ (३६२-१३, आसा, मः ५)
प्रभ का कीआ मीठा मानै ॥ (३६२-१३, आसा, मः ५)
एकु नामु संतन आधारु ॥ (३६२-१३, आसा, मः ५)
होइ रहे सभ की पग छारु ॥१॥ (३६२-१३, आसा, मः ५)
संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥ (३६२-१४, आसा, मः ५)
उआ की महिमा कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (३६२-१४, आसा, मः ५)
वरतणि जा कै केवल नाम ॥ (३६२-१५, आसा, मः ५)
अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥ (३६२-१५, आसा, मः ५)
मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥ (३६२-१५, आसा, मः ५)
प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥२॥ (३६२-१५, आसा, मः ५)
कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ (३६२-१६, आसा, मः ५)
दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥ (३६२-१६, आसा, मः ५)
सूरबीर बचन के बली ॥ (३६२-१६, आसा, मः ५)
कउला बपुरी संती छली ॥३॥ (३६२-१७, आसा, मः ५)
ता का संगु बाछहि सुरदेव ॥ (३६२-१७, आसा, मः ५)
अमोघ दरसु सफल जा की सेव ॥ (३६२-१७, आसा, मः ५)
कर जोड़ि नानकु करे अरदासि ॥ (३६२-१८, आसा, मः ५)
मोहि संतह टहल दीजै गुणतासि ॥४॥३७॥८८॥ (३६२-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६२-१९)
सगल सूख जपि एकै नाम ॥ (३६२-१९, आसा, मः ५)
सगल धर्म हरि के गुण गाम ॥ (३६२-१९, आसा, मः ५)
महा पवित्र साध का संगु ॥ (३६२-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३६३

जिसु भेटत लागै प्रभ रंगु ॥१॥ (३६३-१, आसा, मः ५)
गुर प्रसादि ओइ आनंद पावै ॥ (३६३-१, आसा, मः ५)
जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासा ता की गति मिति कहनु न जावै ॥१॥ रहाउ ॥ (३६३-१, आसा, मः ५)

वरत नेम मजन तिसु पूजा ॥ (३६३-२, आसा, मः ५)
बेद पुरान तिनि सिम्मृति सुनीजा ॥ (३६३-२, आसा, मः ५)
महा पुनीत जा का निर्मल थानु ॥ (३६३-३, आसा, मः ५)
साधसंगति जा कै हरि हरि नामु ॥२॥ (३६३-३, आसा, मः ५)
प्रगटिओ सो जनु सगले भवन ॥ (३६३-४, आसा, मः ५)
पतित पुनीत ता की पग रेन ॥ (३६३-४, आसा, मः ५)
जा कउ भेटिओ हरि हरि राइ ॥ (३६३-४, आसा, मः ५)
ता की गति मिति कथनु न जाइ ॥३॥ (३६३-४, आसा, मः ५)
आठ पहर कर जोड़ि धिआवउ ॥ (३६३-५, आसा, मः ५)
उन साधा का दरसनु पावउ ॥ (३६३-५, आसा, मः ५)
मोहि गरीब कउ लेहु रलाइ ॥ (३६३-५, आसा, मः ५)
नानक आइ पए सरणाइ ॥४॥३८॥८६॥ (३६३-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६३-६)
आठ पहर उदक इसनानी ॥ (३६३-६, आसा, मः ५)
सद ही भोगु लगाइ सुगिआनी ॥ (३६३-७, आसा, मः ५)
बिरथा काहू छोडै नाही ॥ (३६३-७, आसा, मः ५)
बहुरि बहुरि तिसु लागह पाई ॥१॥ (३६३-७, आसा, मः ५)
सालगिरामु हमारै सेवा ॥ (३६३-८, आसा, मः ५)
पूजा अरचा बंदन देवा ॥१॥ रहाउ ॥ (३६३-८, आसा, मः ५)
घंटा जा का सुनीऐ चहु कुंट ॥ (३६३-८, आसा, मः ५)
आसनु जा का सदा बैकुंठ ॥ (३६३-६, आसा, मः ५)
जा का चवरु सभ ऊपरि झूलै ॥ (३६३-६, आसा, मः ५)
ता का धूपु सदा परफुलै ॥२॥ (३६३-६, आसा, मः ५)
घटि घटि सम्पटु है रे जा का ॥ (३६३-१०, आसा, मः ५)
अभग सभा संगि है साधा ॥ (३६३-१०, आसा, मः ५)
आरती कीरतनु सदा अनंद ॥ (३६३-१०, आसा, मः ५)
महिमा सुंदर सदा बेअंत ॥३॥ (३६३-१०, आसा, मः ५)
जिसहि परापति तिस ही लहना ॥ (३६३-११, आसा, मः ५)
संत चरन ओहु आइओ सरना ॥ (३६३-११, आसा, मः ५)
हाथि चड़िओ हरि सालगिरामु ॥ (३६३-११, आसा, मः ५)
कहु नानक गुरि कीनो दानु ॥४॥३६॥६०॥ (३६३-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ पंचपदा ॥ (३६३-१२)
जिह पैडै लूटी पनिहारी ॥ (३६३-१२, आसा, मः ५)
सो मारगु संतन दूरारी ॥१॥ (३६३-१३, आसा, मः ५)
सतिगुर पूरै साचु कहिआ ॥ (३६३-१३, आसा, मः ५)

नाम तेरे की मुकते बीथी जम का मारगु दूरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६३-१३, आसा, मः ५)
जह लालच जागाती घाट ॥ (३६३-१४, आसा, मः ५)
दूरि रही उह जन ते बाट ॥२॥ (३६३-१४, आसा, मः ५)
जह आवटे बहुत घन साथ ॥ (३६३-१५, आसा, मः ५)
पारब्रह्म के संगी साध ॥३॥ (३६३-१५, आसा, मः ५)
चित्र गुपतु सभ लिखते लेखा ॥ (३६३-१५, आसा, मः ५)
भगत जना कउ दृसटि न पेखा ॥४॥ (३६३-१६, आसा, मः ५)
कहु नानक जिसु सतिगुरु पूरा ॥ (३६३-१६, आसा, मः ५)
वाजे ता कै अनहद तूरा ॥५॥४०॥६१॥ (३६३-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ दुपदा १ ॥ (३६३-१७)
साधू संगि सिखाइओ नामु ॥ (३६३-१७, आसा, मः ५)
सर्ब मनोरथ पूरन काम ॥ (३६३-१७, आसा, मः ५)
बुझि गई तृसना हरि जसहि अघाने ॥ (३६३-१८, आसा, मः ५)
जपि जपि जीवा सारिगपाने ॥१॥ (३६३-१८, आसा, मः ५)
करन करावन सरनि परिआ ॥ (३६३-१८, आसा, मः ५)
गुर परसादि सहज घरु पाइआ मिटिआ अंधेरा चंदु चड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६३-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३६४

लाल जवेहर भरे भंडार ॥ (३६४-१, आसा, मः ५)
तोटि न आवै जपि निरंकार ॥ (३६४-१, आसा, मः ५)
अमृत सबदु पीवै जनु कोइ ॥ (३६४-१, आसा, मः ५)
नानक ता की पर्म गति होइ ॥२॥४१॥६२॥ (३६४-१, आसा, मः ५)
आसा घरु ७ महला ५ ॥ (३६४-२)
हरि का नामु रिदै नित धिआई ॥ (३६४-२, आसा, मः ५)
संगी साथी सगल तराँई ॥१॥ (३६४-२, आसा, मः ५)
गुरु मेरै संगि सदा है नाले ॥ (३६४-३, आसा, मः ५)
सिमरि सिमरि तिसु सदा सम्हाले ॥१॥ रहाउ ॥ (३६४-३, आसा, मः ५)
तेरा कीआ मीठा लागै ॥ (३६४-४, आसा, मः ५)
हरि नामु पदारथु नानकु माँगै ॥२॥४२॥६३॥ (३६४-४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६४-४)
साधू संगति तरिआ संसारु ॥ (३६४-५, आसा, मः ५)
हरि का नामु मनहि आधारु ॥१॥ (३६४-५, आसा, मः ५)
चरन कमल गुरदेव पिआरे ॥ (३६४-५, आसा, मः ५)
पूजहि संत हरि प्रीति पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (३६४-६, आसा, मः ५)
जा कै मसतकि लिखिआ भागु ॥ (३६४-६, आसा, मः ५)

कहु नानक ता का थिरु सोहागु ॥२॥४३॥९४॥ (३९४-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९४-७)
मीठी आगिआ पिर की लागी ॥ (३९४-७, आसा, मः ५)
सउकनि घर की कंति तिआगी ॥ (३९४-७, आसा, मः ५)
पृअ सोहागनि सीगारि करी ॥ (३९४-८, आसा, मः ५)
मन मेरे की तपति हरी ॥१॥ (३९४-८, आसा, मः ५)
भलो भइओ पृअ कहिआ मानिआ ॥ (३९४-८, आसा, मः ५)
सूखु सहजु इसु घर का जानिआ ॥ रहाउ ॥ (३९४-९, आसा, मः ५)
हउ बंदी पृअ खिजमतदार ॥ (३९४-९, आसा, मः ५)
ओहु अबिनासी अगम अपार ॥ (३९४-९, आसा, मः ५)
ले पखा पृअ झलउ पाए ॥ (३९४-१०, आसा, मः ५)
भागि गए पंच दूत लावे ॥२॥ (३९४-१०, आसा, मः ५)
ना मै कुलु ना सोभावंत ॥ (३९४-१०, आसा, मः ५)
किआ जाना किउ भानी कंत ॥ (३९४-११, आसा, मः ५)
मोहि अनाथ गरीब निमानी ॥ (३९४-११, आसा, मः ५)
कंत पकरि हम कीनी रानी ॥३॥ (३९४-११, आसा, मः ५)
जब मुखि प्रीतमु साजनु लागा ॥ (३९४-१२, आसा, मः ५)
सूख सहज मेरा धनु सोहागा ॥ (३९४-१२, आसा, मः ५)
कहु नानक मोरी पूरन आसा ॥ (३९४-१२, आसा, मः ५)
सतिगुर मेली प्रभ गुणतासा ॥४॥१॥९५॥ (३९४-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९४-१३)
माथै तृकुटी दृसटि करूरि ॥ (३९४-१३, आसा, मः ५)
बोलै कउड़ा जिहबा की फूड़ि ॥ (३९४-१३, आसा, मः ५)
सदा भूखी पिरु जानै दूरि ॥१॥ (३९४-१४, आसा, मः ५)
ऐसी इसत्री इक रामि उपाई ॥ (३९४-१४, आसा, मः ५)
उनि सभु जगु खाइआ हम गुरि राखे मेरे भाई ॥ रहाउ ॥ (३९४-१५, आसा, मः ५)
पाइ ठगउली सभु जगु जोहिआ ॥ (३९४-१५, आसा, मः ५)
ब्रहमा बिसनु महादेउ मोहिआ ॥ (३९४-१६, आसा, मः ५)
गुरमुखि नामि लगे से सोहिआ ॥२॥ (३९४-१६, आसा, मः ५)
वरत नेम करि थाके पुनहचरना ॥ (३९४-१६, आसा, मः ५)
तट तीर्थ भवे सभ धरना ॥ (३९४-१७, आसा, मः ५)
से उबरे जि सतिगुर की सरना ॥३॥ (३९४-१७, आसा, मः ५)
माइआ मोहि सभो जगु बाधा ॥ (३९४-१७, आसा, मः ५)
हउमै पचै मनमुख मूराखा ॥ (३९४-१८, आसा, मः ५)
गुर नानक बाह पकरि हम राखा ॥४॥२॥९६॥ (३९४-१८, आसा, मः ५)

आसा महला ५ ॥ (३६४-१६)
सर्ब दूख जब बिसरहि सुआमी ॥ (३६४-१६, आसा, मः ५)
ईहा ऊहा कामि न प्रानी ॥१॥ (३६४-१६, आसा, मः ५)
संत तृपतासे हरि हरि ध्याइ ॥ (३६४-१६, आसा, मः ५)

पन्ना ३६५

करि किरपा अपुनै नाइ लाए सर्ब सूख प्रभ तुमरी रजाइ ॥ रहाउ ॥ (३६५-१, आसा, मः ५)
संगि होवत कउ जानत दूरि ॥ (३६५-१, आसा, मः ५)
सो जनु मरता नित नित झूरि ॥२॥ (३६५-२, आसा, मः ५)
जिनि सभु किछु दीआ तिसु चितवत नाहि ॥ (३६५-२, आसा, मः ५)
महा बिखिआ महि दिनु रैनि जाहि ॥३॥ (३६५-२, आसा, मः ५)
कहु नानक प्रभु सिमरहु एक ॥ (३६५-३, आसा, मः ५)
गति पाईऐ गुर पूरे टेक ॥४॥३॥९७॥ (३६५-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६५-४)
नामु जपत मनु तनु सभु हरिआ ॥ (३६५-४, आसा, मः ५)
कलमल दोख सगल परहरिआ ॥१॥ (३६५-४, आसा, मः ५)
सोई दिवसु भला मेरे भाई ॥ (३६५-५, आसा, मः ५)
हरि गुन गाइ पर्म गति पाई ॥ रहाउ ॥ (३६५-५, आसा, मः ५)
साध जना के पूजे पैर ॥ (३६५-५, आसा, मः ५)
मिटे उपद्रह मन ते बैर ॥२॥ (३६५-६, आसा, मः ५)
गुर पूरे मिलि झगरु चुकाइआ ॥ (३६५-६, आसा, मः ५)
पंच दूत सभि वसगति आइआ ॥३॥ (३६५-६, आसा, मः ५)
जिसु मनि वसिआ हरि का नामु ॥ (३६५-७, आसा, मः ५)
नानक तिसु ऊपरि कुरबान ॥४॥४॥९८॥ (३६५-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६५-७)
गावि लेहि तू गावनहारे ॥ (३६५-८, आसा, मः ५)
जीअ पिंड के प्रान अधारे ॥ (३६५-८, आसा, मः ५)
जा की सेवा सर्ब सुख पावहि ॥ (३६५-८, आसा, मः ५)
अवर काहू पहि बहुड़ि न जावहि ॥१॥ (३६५-८, आसा, मः ५)
सदा अनंद अनंदी साहिबु गुन निधान नित नित जापीऐ ॥ (३६५-९, आसा, मः ५)
बलिहारी तिसु संत पिआरे जिसु प्रसादि प्रभु मनि वासीऐ ॥ रहाउ ॥ (३६५-९, आसा, मः ५)
जा का दानु निखूटै नाही ॥ (३६५-१०, आसा, मः ५)
भली भाति सभ सहजि समाही ॥ (३६५-१०, आसा, मः ५)
जा की बखस न मेटै कोई ॥ (३६५-११, आसा, मः ५)
मनि वासाईऐ साचा सोई ॥२॥ (३६५-११, आसा, मः ५)

सगल समग्री गृह जा कै पूरन ॥ (३६५-११, आसा, मः ५)
प्रभ के सेवक दूख न झूरन ॥ (३६५-१२, आसा, मः ५)
ओटि गही निरभउ पदु पाईऐ ॥ (३६५-१२, आसा, मः ५)
सासि सासि सो गुन निधि गाईऐ ॥३॥ (३६५-१२, आसा, मः ५)
दूरि न होई कतहू जाईऐ ॥ (३६५-१३, आसा, मः ५)
नदरि करे ता हरि हरि पाईऐ ॥ (३६५-१३, आसा, मः ५)
अरदासि करी पूरे गुर पासि ॥ (३६५-१३, आसा, मः ५)
नानकु मंगै हरि धनु रासि ॥४॥५॥६६॥ (३६५-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६५-१४)
प्रथमे मिटिआ तन का दूख ॥ (३६५-१४, आसा, मः ५)
मन सगल कउ होआ सूखु ॥ (३६५-१५, आसा, मः ५)
करि किरपा गुर दीनो नाउ ॥ (३६५-१५, आसा, मः ५)
बलि बलि तिसु सतिगुर कउ जाउ ॥१॥ (३६५-१५, आसा, मः ५)
गुरु पूरा पाइओ मेरे भाई ॥ (३६५-१६, आसा, मः ५)
रोग सोग सभ दूख बिनासे सतिगुर की सरणाई ॥ रहाउ ॥ (३६५-१६, आसा, मः ५)
गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ (३६५-१७, आसा, मः ५)
मन चिंतत सगले फल पाए ॥ (३६५-१७, आसा, मः ५)
अगनि बुझी सभ होई साँति ॥ (३६५-१७, आसा, मः ५)
करि किरपा गुरि कीनी दाति ॥२॥ (३६५-१७, आसा, मः ५)
निथावे कउ गुरि दीनो थानु ॥ (३६५-१८, आसा, मः ५)
निमाने कउ गुरि कीनो मानु ॥ (३६५-१८, आसा, मः ५)
बंधन काटि सेवक करि राखे ॥ (३६५-१८, आसा, मः ५)
अमृत बानी रसना चाखे ॥३॥ (३६५-१९, आसा, मः ५)
वडै भागि पूज गुर चरना ॥ (३६५-१९, आसा, मः ५)
सगल तिआगि पाई प्रभ सरना ॥ (३६५-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३६६

गुरु नानक जा कउ भइआ दइआला ॥ (३६६-१, आसा, मः ५)
सो जनु होआ सदा निहाला ॥४॥६॥१००॥ (३६६-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६६-२)
सतिगुर साचै दीआ भेजि ॥ (३६६-२, आसा, मः ५)
चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि ॥ (३६६-२, आसा, मः ५)
उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥ (३६६-२, आसा, मः ५)
माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥१॥ (३६६-३, आसा, मः ५)
जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥ (३६६-३, आसा, मः ५)

प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का ॥ रहाउ ॥ (३६६-३, आसा, मः ५)
दसी मासी हुकमि बालक जनमु लीआ ॥ (३६६-४, आसा, मः ५)
मिटिआ सोगु महा अनंदु थीआ ॥ (३६६-४, आसा, मः ५)
गुरबाणी सखी अनंदु गावै ॥ (३६६-५, आसा, मः ५)
साचे साहिब कै मनि भावै ॥२॥ (३६६-५, आसा, मः ५)
वधी वेलि बहु पीड़ी चाली ॥ (३६६-५, आसा, मः ५)
धर्म कला हरि बंधि बहाली ॥ (३६६-६, आसा, मः ५)
मन चिंदिआ सतिगुरू दिवाइआ ॥ (३६६-६, आसा, मः ५)
भए अचिंत एक लिव लाइआ ॥३॥ (३६६-६, आसा, मः ५)
जिउ बालकु पिता ऊपरि करे बहु माणु ॥ (३६६-७, आसा, मः ५)
बुलाइआ बोलै गुर कै भाणि ॥ (३६६-७, आसा, मः ५)
गुझी छन्नी नाही बात ॥ (३६६-७, आसा, मः ५)
गुरु नानकु तुठा कीनी दाति ॥४॥७॥१०१॥ (३६६-८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६६-८)
गुर पूरे राखिआ दे हाथ ॥ (३६६-८, आसा, मः ५)
प्रगटु भइआ जन का परतापु ॥१॥ (३६६-९, आसा, मः ५)
गुरु गुरु जपी गुरू गुरु धिआई ॥ (३६६-९, आसा, मः ५)
जीअ की अरदासि गुरू पहि पाई ॥ रहाउ ॥ (३६६-९, आसा, मः ५)
सरनि परे साचे गुरदेव ॥ (३६६-१०, आसा, मः ५)
पूरन होई सेवक सेव ॥२॥ (३६६-१०, आसा, मः ५)
जीउ पिंडु जोबनु राखै प्रान ॥ (३६६-१०, आसा, मः ५)
कहु नानक गुर कउ कुरबान ॥३॥८॥१०२॥ (३६६-११, आसा, मः ५)
आसा घरु ८ काफी महला ५ (३६६-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (३६६-१२)
मै बंदा बै खरीदु सचु साहिबु मेरा ॥ (३६६-१३, आसा काफी, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तिस दा सभु किछु है तेरा ॥१॥ (३६६-१३, आसा काफी, मः ५)
माणु निमाणे तूं धणी तेरा भरवासा ॥ (३६६-१३, आसा काफी, मः ५)
बिनु साचे अन टेक है सो जाणहु काचा ॥१॥ रहाउ ॥ (३६६-१४, आसा काफी, मः ५)
तेरा हुकमु अपार है कोई अंतु न पाए ॥ (३६६-१४, आसा काफी, मः ५)
जिसु गुरु पूरा भेटसी सो चलै रजाए ॥२॥ (३६६-१५, आसा काफी, मः ५)
चतुराई सिआणपा कितै कामि न आईऐ ॥ (३६६-१५, आसा काफी, मः ५)
तुठा साहिबु जो देवै सोई सुखु पाईऐ ॥३॥ (३६६-१६, आसा काफी, मः ५)
जे लख कर्म कमाईअहि किछु पवै न बंधा ॥ (३६६-१६, आसा काफी, मः ५)
जन नानक कीता नामु धर होरु छोडिआ धंधा ॥४॥१॥१०३॥ (३६६-१६, आसा काफी, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६६-१७)

सर्ब सुखा मै भालिआ हरि जेवडु न कोई ॥ (३६६-१७, आसा, मः ५)
गुर तुठे ते पाईऐ सचु साहिबु सोई ॥१॥ (३६६-१८, आसा, मः ५)
बलिहारी गुर आपणे सद सद कुरबाना ॥ (३६६-१८, आसा, मः ५)
नामु न विसरउ इकु खिनु चसा इहु कीजै दाना ॥१॥ रहाउ ॥ (३६६-१८, आसा, मः ५)
भागठु सचा सोइ है जिसु हरि धनु अंतरि ॥ (३६६-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३६७

सो छूटै महा जाल ते जिसु गुर सबदु निरंतरि ॥२॥ (३६७-१, आसा, मः ५)
गुर की महिमा किआ कहा गुरु बिबेक सत सरु ॥ (३६७-१, आसा, मः ५)
ओहु आदि जुगादी जुगह जुगु पूरा परमेसरु ॥३॥ (३६७-२, आसा, मः ५)
नामु धिआवहु सद सदा हरि हरि मनु रंगे ॥ (३६७-२, आसा, मः ५)
जीउ प्राण धनु गुरू है नानक कै संगे ॥४॥२॥१०४॥ (३६७-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६७-३)
साई अलखु अपारु भोरी मनि वसै ॥ (३६७-३, आसा, मः ५)
दूखु दरदु रोगु माइ मैडा हभु नसै ॥१॥ (३६७-४, आसा, मः ५)
हउ वंञा कुरबाणु साई आपणे ॥ (३६७-४, आसा, मः ५)
होवै अनदु घणा मनि तनि जापणे ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-४, आसा, मः ५)
बिंदक गालि्ह सुणी सचे तिसु धणी ॥ (३६७-५, आसा, मः ५)
सूखी हूं सुखु पाइ माइ न कीम गणी ॥२॥ (३६७-५, आसा, मः ५)
नैण पसंदो सोइ पेखि मुसताक भई ॥ (३६७-६, आसा, मः ५)
मै निरगुणि मेरी माइ आपि लड़ि लाइ लई ॥३॥ (३६७-६, आसा, मः ५)
बेद कतेब संसार हभा हूं बाहरा ॥ (३६७-७, आसा, मः ५)
नानक का पातिसाहु दिसै जाहरा ॥४॥३॥१०५॥ (३६७-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६७-८)
लाख भगत आराधहि जपते पीउ पीउ ॥ (३६७-८, आसा, मः ५)
कवन जुगति मेलावउ निरगुण बिखई जीउ ॥१॥ (३६७-८, आसा, मः ५)
तेरी टेक गोविंद गुपाल दइआल प्रभ ॥ (३६७-९, आसा, मः ५)
तूं सभना के नाथ तेरी सृसटि सभ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-९, आसा, मः ५)
सदा सहाई संत पेखहि सदा हजूरि ॥ (३६७-१०, आसा, मः ५)
नाम बिहूनड़िआ से मरनि्ह विसूरि विसूरि ॥२॥ (३६७-१०, आसा, मः ५)
दास दासतण भाइ मिटिआ तिना गउणु ॥ (३६७-१०, आसा, मः ५)
विसरिआ जिन्हा नामु तिनाड़ा हालु कउणु ॥३॥ (३६७-११, आसा, मः ५)
जैसे पसु हरि्आउ तैसा संसारु सभ ॥ (३६७-११, आसा, मः ५)
नानक बंधन काटि मिलावहु आपि प्रभ ॥४॥४॥१०६॥ (३६७-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६७-१२)

हभे थोक विसारि हिको खिआलु करि ॥ (३६७-१२, आसा, मः ५)
झूठा लाहि गुमानु मनु तनु अरपि धरि ॥१॥ (३६७-१३, आसा, मः ५)
आठ पहर सालाहि सिरजनहार तूं ॥ (३६७-१३, आसा, मः ५)
जीवाँ तेरी दाति किरपा करहु मूं ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-१४, आसा, मः ५)
सोई कम्मु कमाइ जितु मुखु उजला ॥ (३६७-१४, आसा, मः ५)
सोई लगै सचि जिसु तूं देहि अला ॥२॥ (३६७-१५, आसा, मः ५)
जो न ढहंदो मूलि सो घरु रासि करि ॥ (३६७-१५, आसा, मः ५)
हिको चिति वसाइ कदे न जाइ मरि ॥३॥ (३६७-१५, आसा, मः ५)
तिन्हा पिआरा रामु जो प्रभ भाणिआ ॥ (३६७-१६, आसा, मः ५)
गुर परसादि अकथु नानकि वखाणिआ ॥४॥५॥१०७॥ (३६७-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६७-१७)
जिन्हा न विसरै नामु से किनेहिआ ॥ (३६७-१७, आसा, मः ५)
भेदु न जाणहु मूलि साँई जेहिआ ॥१॥ (३६७-१७, आसा, मः ५)
मनु तनु होइ निहालु तुम्ह संगि भेटिआ ॥ (३६७-१८, आसा, मः ५)
सुखु पाइआ जन परसादि दुखु सभु मेटिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६७-१८, आसा, मः ५)
जेते खंड ब्रहमंड उधारे तिन्ह खे ॥ (३६७-१९, आसा, मः ५)
जिन्ह मनि वुठा आपि पूरे भगत से ॥२॥ (३६७-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३६८

जिस नो मन्ने आपि सोई मानीऐ ॥ (३६८-१, आसा, मः ५)
प्रगट पुरखु परवाणु सभ ठाई जानीऐ ॥३॥ (३६८-१, आसा, मः ५)
दिनसु रैणि आराधि सम्हाले साह साह ॥ (३६८-१, आसा, मः ५)
नानक की लोचा पूरि सचे पातिसाह ॥४॥६॥१०८॥ (३६८-२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६८-२)
पूरि रहिआ स्रब ठाइ हमारा खसमु सोइ ॥ (३६८-२, आसा, मः ५)
एकु साहिबु सिरि छतु दूजा नाहि कोइ ॥१॥ (३६८-३, आसा, मः ५)
जिउ भावै तिउ राखु राखणहारिआ ॥ (३६८-३, आसा, मः ५)
तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३६८-४, आसा, मः ५)
प्रतिपाले प्रभु आपि घटि घटि सारीऐ ॥ (३६८-४, आसा, मः ५)
जिसु मनि वुठा आपि तिसु न विसारीऐ ॥२॥ (३६८-५, आसा, मः ५)
जो किछु करे सु आपि आपण भाणिआ ॥ (३६८-५, आसा, मः ५)
भगता का सहाई जुगि जुगि जाणिआ ॥३॥ (३६८-६, आसा, मः ५)
जपि जपि हरि का नामु कदे न झूरीऐ ॥ (३६८-६, आसा, मः ५)
नानक दरस पिआस लोचा पूरीऐ ॥४॥७॥१०९॥ (३६८-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३६८-७)

किआ सोवहि नामु विसारि गाफल गहिलिआ ॥ (३९८-७, आसा, मः ५)
कितंी इतु दरीआइ वंञनि् वहदिआ ॥१॥ (३९८-८, आसा, मः ५)
बोहिथड़ा हरि चरण मन चड़ि लंघीऐ ॥ (३९८-८, आसा, मः ५)
आठ पहर गुण गाइ साधू संगीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (३९८-९, आसा, मः ५)
भोगहि भोग अनेक विणु नावै सुंञिआ ॥ (३९८-९, आसा, मः ५)
हरि की भगति बिना मरि मरि रुंनिआ ॥२॥ (३९८-१०, आसा, मः ५)
कपड़ भोग सुगंध तनि मरदन मालणा ॥ (३९८-१०, आसा, मः ५)
बिनु सिमरन तनु छारु सरपर चालणा ॥३॥ (३९८-१०, आसा, मः ५)
महा बिखमु संसारु विरलै पेखिआ ॥ (३९८-११, आसा, मः ५)
छूटनु हरि की सरणि लेखु नानक लेखिआ ॥४॥८॥११०॥ (३९८-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९८-१२)
कोइ न किस ही संगि काहे गरबीऐ ॥ (३९८-१२, आसा, मः ५)
एकु नामु आधारु भउजलु तरबीऐ ॥१॥ (३९८-१२, आसा, मः ५)
मै गरीब सचु टेक तूं मेरे सतिगुर पूरे ॥ (३९८-१३, आसा, मः ५)
देखि तुम्हारा दरसनो मेरा मनु धीरे ॥१॥ रहाउ ॥ (३९८-१३, आसा, मः ५)
राजु मालु जंजालु काजि न कितै गनो ॥ (३९८-१४, आसा, मः ५)
हरि कीरतनु आधारु निहचलु एहु धनो ॥२॥ (३९८-१४, आसा, मः ५)
जेते माइआ रंग तेत पछाविआ ॥ (३९८-१५, आसा, मः ५)
सुख का नामु निधानु गुरमुखि गाविआ ॥३॥ (३९८-१५, आसा, मः ५)
सचा गुणी निधानु तूं प्रभ गहिर गम्भीरे ॥ (३९८-१५, आसा, मः ५)
आस भरोसा खसम का नानक के जीअरे ॥४॥९॥१११॥ (३९८-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९८-१६)
जिसु सिमरत दुखु जाइ सहज सुखु पाईऐ ॥ (३९८-१६, आसा, मः ५)
रैणि दिनसु कर जोड़ि हरि हरि धिआईऐ ॥१॥ (३९८-१७, आसा, मः ५)
नानक का प्रभु सोइ जिस का सभु कोइ ॥ (३९८-१७, आसा, मः ५)
सर्ब रहिआ भरपूरि सचा सचु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (३९८-१८, आसा, मः ५)
अंतरि बाहरि संगि सहाई गिआन जोगु ॥ (३९८-१८, आसा, मः ५)
तिसहि अराधि मना बिनासै सगल रोगु ॥२॥ (३९८-१९, आसा, मः ५)
राखनहारु अपारु राखै अगनि माहि ॥ (३९८-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ३९९

सीतलु हरि हरि नामु सिमरत तपति जाइ ॥३॥ (३९९-१, आसा, मः ५)
सूख सहज आनंद घणा नानक जन धूरा ॥ (३९९-१, आसा, मः ५)
कारज सगले सिधि भए भेटिआ गुरु पूरा ॥४॥१०॥११२॥ (३९९-२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९९-२)

गोबिंदु गुणी निधानु गुरमुखि जाणीऐ ॥ (३९९-२, आसा, मः ५)
होइ कृपालु दइआलु हरि रंगु माणीऐ ॥१॥ (३९९-३, आसा, मः ५)
आवहु संत मिलाह हरि कथा कहाणीआ ॥ (३९९-३, आसा, मः ५)
अनदिनु सिमरह नामु तजि लाज लोकाणीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३९९-४, आसा, मः ५)
जपि जपि जीवा नामु होवै अनदु घणा ॥ (३९९-४, आसा, मः ५)
मिथिआ मोहु संसारु झूठा विणसणा ॥२॥ (३९९-५, आसा, मः ५)
चरण कमल संगि नेहु किनै विरलै लाइआ ॥ (३९९-५, आसा, मः ५)
धन्नु सुहावा मुखु जिनि हरि धिआइआ ॥३॥ (३९९-६, आसा, मः ५)
जनम मरण दुख काल सिमरत मिटि जावई ॥ (३९९-६, आसा, मः ५)
नानक कै सुखु सोइ जो प्रभ भावई ॥४॥११॥११३॥ (३९९-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९९-७)
आवहु मीत इकत्र होइ रस कस सभि भुंचह ॥ (३९९-७, आसा, मः ५)
अमृत नामु हरि हरि जपह मिलि पापा मुंचह ॥१॥ (३९९-८, आसा, मः ५)
ततु वीचारहु संत जनहु ता ते बिघनु न लागै ॥ (३९९-८, आसा, मः ५)
खीन भए सभि तसकरा गुरमुखि जनु जागै ॥१॥ रहाउ ॥ (३९९-९, आसा, मः ५)
बुधि गरीबी खरचु लैहु हउमै बिखु जारहु ॥ (३९९-९, आसा, मः ५)
साचा हटु पूरा सउदा वखरु नामु वापारहु ॥२॥ (३९९-१०, आसा, मः ५)
जीउ पिंडु धनु अरपिआ सेई पतिवंते ॥ (३९९-१०, आसा, मः ५)
आपनड़े प्रभ भाणिआ नित केल करंते ॥३॥ (३९९-११, आसा, मः ५)
दुरमति मदु जो पीवते बिखली पति कमली ॥ (३९९-११, आसा, मः ५)
राम रसाइणि जो रते नानक सच अमली ॥४॥१२॥११४॥ (३९९-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९९-१२)
उदमु कीआ कराइआ आरम्भु रचाइआ ॥ (३९९-१२, आसा, मः ५)
नामु जपे जपि जीवणा गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥१॥ (३९९-१३, आसा, मः ५)
पाइ परह सतिगुरू कै जिनि भरमु बिदारिआ ॥ (३९९-१३, आसा, मः ५)
करि किरपा प्रभि आपणी सचु साजि सवारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (३९९-१४, आसा, मः ५)
करु गहि लीने आपणे सचु हुकमि रजाई ॥ (३९९-१४, आसा, मः ५)
जो प्रभि दिती दाति सा पूरन वडिआई ॥२॥ (३९९-१५, आसा, मः ५)
सदा सदा गुण गाईअहि जपि नामु मुरारी ॥ (३९९-१५, आसा, मः ५)
नेमु निबाहिओ सतिगुरू प्रभि किरपा धारी ॥३॥ (३९९-१६, आसा, मः ५)
नामु धनु गुण गाउ लाभु पूरै गुरि दिता ॥ (३९९-१६, आसा, मः ५)
वणजारे संत नानका प्रभु साहु अमिता ॥४॥१३॥११५॥ (३९९-१७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (३९९-१७)
जा का ठाकुरु तुही प्रभ ता के वडभागा ॥ (३९९-१७, आसा, मः ५)
ओहु सुहेला सद सुखी सभु भ्रमु भउ भागा ॥१॥ (३९९-१८, आसा, मः ५)

हम चाकर गोबिंद के ठाकुरु मेरा भारा ॥ (३९९-१८, आसा, मः ५)
करन करावन सगल बिधि सो सतिगुरू हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (३९९-१९, आसा, मः ५)
दूजा नाही अउरु को ता का भउ करीऐ ॥ (३९९-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४००

गुर सेवा महलु पाईऐ जगु दुतरु तरीऐ ॥२॥ (४००-१, आसा, मः ५)
दृसटि तेरी सुखु पाईऐ मन माहि निधाना ॥ (४००-१, आसा, मः ५)
जा कउ तुम किरपाल भए सेवक से परवाना ॥३॥ (४००-२, आसा, मः ५)
अमृत रसु हरि कीरतनो को विरला पीवै ॥ (४००-२, आसा, मः ५)
वजहु नानक मिलै एकु नामु रिद जपि जपि जीवै ॥४॥१४॥११६॥ (४००-२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४००-३)
जा प्रभ की हउ चेरुली सो सभ ते ऊचा ॥ (४००-३, आसा, मः ५)
सभु किछु ता का काँढीऐ थोरा अरु मूचा ॥१॥ (४००-४, आसा, मः ५)
जीअ प्रान मेरा धनो साहिब की मनीआ ॥ (४००-४, आसा, मः ५)
नामि जिसै कै ऊजली तिसु दासी गनीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४००-५, आसा, मः ५)
वेपरवाहु अनंद मै नाउ माणक हीरा ॥ (४००-५, आसा, मः ५)
रजी धाई सदा सुखु जा का तूं मीरा ॥२॥ (४००-६, आसा, मः ५)
सखी सहेरी संग की सुमति दृड़ावउ ॥ (४००-६, आसा, मः ५)
सेवहु साधू भाउ करि तउ निधि हरि पावउ ॥३॥ (४००-६, आसा, मः ५)
सगली दासी ठाकुरै सभ कहती मेरा ॥ (४००-७, आसा, मः ५)
जिसहि सीगारे नानका तिसु सुखहि बसेरा ॥४॥१५॥११७॥ (४००-७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४००-८)
संता की होइ दासरी एहु अचारा सिखु री ॥ (४००-८, आसा, मः ५)
सगल गुणा गुण ऊतमो भरता दूरि न पिखु री ॥१॥ (४००-८, आसा, मः ५)
इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥ (४००-९, आसा, मः ५)
तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥१॥ रहाउ ॥ (४००-१०, आसा, मः ५)
भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥ (४००-१०, आसा, मः ५)
दूजा भाउ विसारीऐ एहु तम्बोला खाइ री ॥२॥ (४००-११, आसा, मः ५)
गुर का सबदु करि दीपको इह सत की सेज बिछाइ री ॥ (४००-११, आसा, मः ५)
आठ पहर कर जोड़ि रहु तउ भेटै हरि राइ री ॥३॥ (४००-१२, आसा, मः ५)
तिस ही चजु सीगारु सभु साई रूपि अपारि री ॥ (४००-१२, आसा, मः ५)
साई सोहागणि नानका जो भाणी करतारि री ॥४॥१६॥११८॥ (४००-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४००-१४)
डीगन डोला तऊ लउ जउ मन के भरमा ॥ (४००-१४, आसा, मः ५)
भ्रम काटे गुरि आपणै पाए बिसरामा ॥१॥ (४००-१४, आसा, मः ५)

ओइ बिखादी दोखीआ ते गुर ते हूटे ॥ (४००-१५, आसा, मः ५)
हम छूटे अब उन्हा ते ओइ हम ते छूटे ॥१॥ रहाउ ॥ (४००-१५, आसा, मः ५)
मेरा तेरा जानता तब ही ते बंधा ॥ (४००-१५, आसा, मः ५)
गुरि काटी अगिआनता तब छुटके फंधा ॥२॥ (४००-१६, आसा, मः ५)
जब लगु हुकमु न बूझता तब ही लउ दुखीआ ॥ (४००-१६, आसा, मः ५)
गुर मिलि हुकमु पछाणिआ तब ही ते सुखीआ ॥३॥ (४००-१७, आसा, मः ५)
ना को दुसमनु दोखीआ नाही को मंदा ॥ (४००-१७, आसा, मः ५)
गुर की सेवा सेवको नानक खसमै बंदा ॥४॥१७॥११९॥ (४००-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४००-१८)
सूख सहज आनदु घणा हरि कीरतनु गाउ ॥ (४००-१८, आसा, मः ५)
गरह निवारे सतिगुरू दे अपणा नाउ ॥१॥ (४००-१९, आसा, मः ५)
बलिहारी गुर आपणे सद सद बलि जाउ ॥ (४००-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०१

गुरू विटहु हउ वारिआ जिसु मिलि सचु सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०१-१, आसा, मः ५)
सगुन अपसगुन तिस कउ लगहि जिसु चीति न आवै ॥ (४०१-१, आसा, मः ५)
तिसु जमु नेड़ि न आवई जो हरि प्रभि भावै ॥२॥ (४०१-२, आसा, मः ५)
पुन्न दान जप तप जेते सभ ऊपरि नामु ॥ (४०१-२, आसा, मः ५)
हरि हरि रसना जो जपै तिसु पूरन कामु ॥३॥ (४०१-३, आसा, मः ५)
भै बिनसे भ्रम मोह गए को दिसै न बीआ ॥ (४०१-३, आसा, मः ५)
नानक राखे पारब्रहमि फिरि दूखु न थीआ ॥४॥१८॥१२०॥ (४०१-४, आसा, मः ५)
आसा घरु ९ महला ५ (४०१-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०१-५)
चितवउ चितवि सरब सुख पावउ आगै भावउ कि न भावउ ॥ (४०१-६, आसा, मः ५)
एकु दातारु सगल है जाचिक दूसर कै पहि जावउ ॥१॥ (४०१-६, आसा, मः ५)
हउ मागउ आन लजावउ ॥ (४०१-७, आसा, मः ५)
सगल छत्रपति एको ठाकुरु कउनु समसरि लावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०१-७, आसा, मः ५)
ऊठउ बैसउ रहि भि न साकउ दरसनु खोजि खोजावउ ॥ (४०१-८, आसा, मः ५)
ब्रहमादिक सनकादिक सनक सनंदन सनातन सनतकुमार तिन्ह कउ महलु दुलभावउ ॥२॥ (४०१-८, आसा, मः ५)
अगम अगम आगाधि बोध कीमति परै न पावउ ॥ (४०१-९, आसा, मः ५)
ताकी सरणि सति पुरख की सतिगुरु पुरखु धिआवउ ॥३॥ (४०१-१०, आसा, मः ५)
भइओ कृपालु दइआलु प्रभु ठाकुरु काटिओ बंधु गरावउ ॥ (४०१-१०, आसा, मः ५)
कहु नानक जउ साधसंगु पाइओ तउ फिरि जनमि न आवउ ॥४॥१॥१२१॥ (४०१-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०१-१२)

अंतरि गावउ बाहरि गावउ गावउ जागि सवारी ॥ (४०१-१२, आसा, मः ५)
संगि चलन कउ तोसा दीन्हा गोबिंद नाम के बिउहारी ॥१॥ (४०१-१२, आसा, मः ५)
अवर बिसारी बिसारी ॥ (४०१-१३, आसा, मः ५)
नाम दानु गुरि पूरै दीओ मै एहो आधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (४०१-१३, आसा, मः ५)
दूखनि गावउ सुखि भी गावउ मारगि पंथि सम्हारी ॥ (४०१-१४, आसा, मः ५)
नाम दृड़ु गुरि मन महि दीआ मोरी तिसा बुझारी ॥२॥ (४०१-१४, आसा, मः ५)
दिनु भी गावउ रैनी गावउ गावउ सासि सासि रसनारी ॥ (४०१-१५, आसा, मः ५)
सतसंगति महि बिसासु होइ हरि जीवत मरत संगारी ॥३॥ (४०१-१६, आसा, मः ५)
जन नानक कउ इहु दानु देहु प्रभ पावउ संत रेन उरि धारी ॥ (४०१-१६, आसा, मः ५)
स्रवनी कथा नैन दरसु पेखउ मसतकु गुर चरनारी ॥४॥२॥१२२॥ (४०१-१७, आसा, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०१-१८)
आसा घरु १० महला ५ ॥ (४०१-१९)
जिस नो तूं असथिरु करि मानहि ते पाहुन दो दाहा ॥ (४०१-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०२

पुत्र कलत्र गृह सगल समग्री सभ मिथिआ असनाहा ॥१॥ (४०२-१, आसा, मः ५)
रे मन किआ करहि है हा हा ॥ (४०२-१, आसा, मः ५)
दृसटि देखु जैसे हरिचंदउरी इकु राम भजनु लै लाहा ॥१॥ रहाउ ॥ (४०२-१, आसा, मः ५)
जैसे बसतर देह ओढाने दिन दोइ चारि भोराहा ॥ (४०२-२, आसा, मः ५)
भीति ऊपरे केतकु धाईऐ अंति ओरको आहा ॥२॥ (४०२-३, आसा, मः ५)
जैसे अम्भ कुंड करि राखिओ परत सिंधु गलि जाहा ॥ (४०२-३, आसा, मः ५)
आवगि आगिआ पारब्रह्म की उठि जासी मुहत चसाहा ॥३॥ (४०२-४, आसा, मः ५)
रे मन लेखै चालहि लेखै बैसहि लेखै लैदा साहा ॥ (४०२-४, आसा, मः ५)
सदा कीरति करि नानक हरि की उबरे सतिगुर चरण ओटाहा ॥४॥१॥१२३॥ (४०२-५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०२-६)
अपुसट बात ते भई सीधरी दूत दुसट सजनई ॥ (४०२-६, आसा, मः ५)
अंधकार महि रतनु प्रगासिओ मलीन बुधि हछनई ॥१॥ (४०२-६, आसा, मः ५)
जउ किरपा गोबिंद भई ॥ (४०२-७, आसा, मः ५)
सुख सम्पति हरि नाम फल पाए सतिगुर मिलई ॥१॥ रहाउ ॥ (४०२-७, आसा, मः ५)
मोहि किरपन कउ कोइ न जानत सगल भवन प्रगटई ॥ (४०२-८, आसा, मः ५)
संगि बैठनो कही न पावत हुणि सगल चरण सेवई ॥२॥ (४०२-८, आसा, मः ५)
आढ आढ कउ फिरत ढूंढते मन सगल तृसन बुझि गई ॥ (४०२-९, आसा, मः ५)
एकु बोलु भी खवतो नाही साधसंगति सीतलई ॥३॥ (४०२-९, आसा, मः ५)
एक जीह गुण कवन वखानै अगम अगम अगमई ॥ (४०२-१०, आसा, मः ५)
दासु दास दास को करीअहु जन नानक हरि सरणई ॥४॥२॥१२४॥ (४०२-१०, आसा, मः ५)

आसा महला ५ ॥ (४०२-११)
रे मूड़े लाहे कउ तूं ढीला ढीला तोटे कउ बेगि धाइआ ॥ (४०२-११, आसा, मः ५)
ससत वखरु तूं घिन्नहि नाही पापी बाधा रेनाइआ ॥१॥ (४०२-१२, आसा, मः ५)
सतिगुर तेरी आसाइआ ॥ (४०२-१३, आसा, मः ५)
पतित पावनु तेरो नामु पारब्रह्म मै एहा ओटाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०२-१३, आसा, मः ५)
गंधण वैण सुणहि उरझावहि नामु लैत अलकाइआ ॥ (४०२-१४, आसा, मः ५)
निंद चिंद कउ बहुतु उमाहिओ बूझी उलटाइआ ॥२॥ (४०२-१४, आसा, मः ५)
पर धन पर तन पर ती निंदा अखाधि खाहि हरकाइआ ॥ (४०२-१५, आसा, मः ५)
साच धर्म सिउ रुचि नही आवै सति सुनत छोहाइआ ॥३॥ (४०२-१५, आसा, मः ५)
दीन दइआल कृपाल प्रभ ठाकुर भगत टेक हरि नाइआ ॥ (४०२-१६, आसा, मः ५)
नानक आहि सरण प्रभ आइओ राखु लाज अपनाइआ ॥४॥३॥१२५॥ (४०२-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०२-१७)
मिथिआ संगि संगि लपटाए मोह माइआ करि बाधे ॥ (४०२-१७, आसा, मः ५)
जह जानो सो चीति न आवै अहम्बुधि भए आँधे ॥१॥ (४०२-१८, आसा, मः ५)
मन बैरागी किउ न अराधे ॥ (४०२-१८, आसा, मः ५)
काच कोठरी माहि तूं बसता संगि सगल बिखै की बिआधे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०२-१९, आसा, मः ५)
मेरी मेरी करत दिनु रैनि बिहावै पलु खिनु छीजै अरजाधे ॥ (४०२-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०३

जैसे मीठै सादि लोभाए झूठ धंधि दुरगाधे ॥२॥ (४०३-१, आसा, मः ५)
काम क्रोध अरु लोभ मोह इह इंद्री रसि लपटाधे ॥ (४०३-१, आसा, मः ५)
दीई भवारी पुरखि बिधातै बहुरि बहुरि जनमाधे ॥३॥ (४०३-२, आसा, मः ५)
जउ भइओ कृपालु दीन दुख भंजनु तउ गुर मिलि सभ सुख लाधे ॥ (४०३-२, आसा, मः ५)
कहु नानक दिनु रैनि धिआवउ मारि काढी सगल उपाधे ॥४॥ (४०३-३, आसा, मः ५)
इउ जपिओ भाई पुरखु बिधाते ॥ (४०३-४, आसा, मः ५)
भइओ कृपालु दीन दुख भंजनु जनम मरण दुख लाथे ॥१॥ रहाउ दूजा ॥४॥४॥१२६॥ (४०३-४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०३-५)
निमख काम सुआद कारणि कोटि दिनस दुखु पावहि ॥ (४०३-५, आसा, मः ५)
घरी मुहत रंग माणहि फिरि बहुरि बहुरि पछुतावहि ॥१॥ (४०३-६, आसा, मः ५)
अंधे चेति हरि हरि राइआ ॥ (४०३-६, आसा, मः ५)
तेरा सो दिनु नेड़ै आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०३-७, आसा, मः ५)
पलक दृसटि देखि भूलो आक नीम को तूम्मरु ॥ (४०३-७, आसा, मः ५)
जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे तैसो ही इहु पर गृहु ॥२॥ (४०३-७, आसा, मः ५)
बैरी कारणि पाप करता बसतु रही अमाना ॥ (४०३-८, आसा, मः ५)
छोडि जाहि तिन ही सिउ संगी साजन सिउ बैराना ॥३॥ (४०३-९, आसा, मः ५)

सगल संसारु इहै बिधि बिआपिओ सो उबरिओ जिसु गुरु पूरा ॥ (४०३-९, आसा, मः ५)
कहु नानक भव सागरु तरिओ भए पुनीत सरीरा ॥४॥५॥१२७॥ (४०३-१०, आसा, मः ५)
आसा महला ५ दुपदे ॥ (४०३-१०)
लूकि कमानो सोई तुम् पेखिओ मूड़ मुगध मुकरानी ॥ (४०३-११, आसा, मः ५)
आप कमाने कउ ले बाँधे फिरि पाछै पछुतानी ॥१॥ (४०३-११, आसा, मः ५)
प्रभ मेरे सभ बिधि आगै जानी ॥ (४०३-१२, आसा, मः ५)
भ्रम के मूसे तूं राखत परदा पाछै जीअ की मानी ॥१॥ रहाउ ॥ (४०३-१२, आसा, मः ५)
जितु जितु लाए तितु तितु लागे किआ को करै परानी ॥ (४०३-१३, आसा, मः ५)
बखसि लैहु पारब्रह्म सुआमी नानक सद कुरबानी ॥२॥६॥१२८॥ (४०३-१३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०३-१४)
अपुने सेवक की आपे राखै आपे नामु जपावै ॥ (४०३-१४, आसा, मः ५)
जह जह काज किरति सेवक की तहा तहा उठि धावै ॥१॥ (४०३-१४, आसा, मः ५)
सेवक कउ निकटी होइ दिखावै ॥ (४०३-१५, आसा, मः ५)
जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु ततकाल होइ आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (४०३-१५, आसा, मः ५)
तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो अपने प्रभ भावै ॥ (४०३-१६, आसा, मः ५)
तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ तिसु नानक परसणि आवै ॥२॥७॥१२९॥ (४०३-१६, आसा, मः ५)
आसा घरु ११ महला ५ (४०३-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०३-१८)
नटूआ भेख दिखावै बहु बिधि जैसा है ओहु तैसा रे ॥ (४०३-१९, आसा, मः ५)
अनिक जोनि भ्रमिओ भ्रम भीतरि सुखहि नाही परवेसा रे ॥१॥ (४०३-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०४

साजन संत हमारे मीता बिनु हरि हरि आनीता रे ॥ (४०४-१, आसा, मः ५)
साधसंगि मिलि हरि गुण गाए इहु जनमु पदारथु जीता रे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०४-१, आसा, मः ५)
त्रै गुण माइआ ब्रह्म की कीन्ी कहहु कवन बिधि तरीऐ रे ॥ (४०४-२, आसा, मः ५)
घूमन घेर अगाह गाखरी गुर सबदी पारि उतरीऐ रे ॥२॥ (४०४-३, आसा, मः ५)
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ ततु नानक इहु जाना रे ॥ (४०४-३, आसा, मः ५)
सिमरत नामु निधानु निरमोलकु मनु माणकु पतीआना रे ॥३॥१॥१३०॥ (४०४-४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ दुपदे ॥ (४०४-५)
गुर परसादि मेरै मनि वसिआ जो मागउ सो पावउ रे ॥ (४०४-५, आसा, मः ५)
नाम रंगि इहु मनु तृपताना बहुरि न कतहूं धावउ रे ॥१॥ (४०४-५, आसा, मः ५)
हमरा ठाकुरु सभ ते ऊचा रैणि दिनसु तिसु गावउ रे ॥ (४०४-६, आसा, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारा तिस ते तुझहि डरावउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०४-६, आसा, मः ५)
जब देखउ प्रभु अपुना सुआमी तउ अवरहि चीति न पावउ रे ॥ (४०४-७, आसा, मः ५)
नानकु दासु प्रभि आपि पहिराइआ भ्रमु भउ मेटि लिखावउ रे ॥२॥२॥१३१॥ (४०४-८, आसा, मः ५)

आसा महला ५ ॥ (४०४-९)
चारि बरन चउहा के मरदन खटु दरसन कर तली रे ॥ (४०४-९, आसा, मः ५)
सुंदर सुघर सरूप सिआने पंचहु ही मोहि छली रे ॥१॥ (४०४-९, आसा, मः ५)
जिनि मिलि मारे पंच सूरबीर ऐसो कउनु बली रे ॥ (४०४-१०, आसा, मः ५)
जिनि पंच मारि बिदारि गुदारे सो पूरा इह कली रे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०४-११, आसा, मः ५)
वडी कोम वसि भागहि नाही मुहकम फउज हठली रे ॥ (४०४-११, आसा, मः ५)
कहु नानक तिनि जनि निरदलिआ साधसंगति कै झली रे ॥२॥३॥१३२॥ (४०४-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०४-१३)
नीकी जीअ की हरि कथा ऊतम आन सगल रस फीकी रे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०४-१३, आसा, मः ५)
बहु गुनि धुनि मुनि जन खटु बेते अवरु न किछु लाईकी रे ॥१॥ (४०४-१३, आसा, मः ५)
बिखारी निरारी अपारी सहजारी साधसंगि नानक पीकी रे ॥२॥४॥१३३॥ (४०४-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०४-१५)
हमारी पिआरी अमृत धारी गुरि निमख न मन ते टारी रे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०४-१५, आसा, मः ५)
दरसन परसन सरसन हरसन रंगि रंगी करतारी रे ॥१॥ (४०४-१६, आसा, मः ५)
खिनु रम गुर गम हरि दम नह जम हरि कंठि नानक उरि हारी रे ॥२॥५॥१३४॥ (४०४-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०४-१७)
नीकी साध संगानी ॥ रहाउ ॥ (४०४-१७, आसा, मः ५)
पहर मूरत पल गावत गावत गोविंद गोविंद वखानी ॥१॥ (४०४-१८, आसा, मः ५)
चालत बैसत सोवत हरि जसु मनि तनि चरन खटानी ॥२॥ (४०४-१८, आसा, मः ५)
हंउ हउरो तू ठाकुरु गउरो नानक सरनि पछानी ॥३॥६॥१३५॥ (४०४-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०५

रागु आसा महला ५ घरु १२ (४०५-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०५-२)
तिआगि सगल सिआनपा भजु पारब्रह्म निरंकारु ॥ (४०५-२, आसा, मः ५)
एक साचे नाम बाझहु सगल दीसै छारु ॥१॥ (४०५-२, आसा, मः ५)
सो प्रभु जाणीऐ सद संगि ॥ (४०५-३, आसा, मः ५)
गुर प्रसादी बूझीऐ एक हरि कै रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (४०५-३, आसा, मः ५)
सरणि समरथ एक केरी दूजा नाही ठाउ ॥ (४०५-४, आसा, मः ५)
महा भउजलु लंघीऐ सदा हरि गुण गाउ ॥२॥ (४०५-४, आसा, मः ५)
जनम मरणु निवारीऐ दुखु न जम पुरि होइ ॥ (४०५-४, आसा, मः ५)
नामु निधानु सोई पाए कृपा करे प्रभु सोइ ॥३॥ (४०५-५, आसा, मः ५)
एक टेक अधारु एको एक का मनि जोरु ॥ (४०५-५, आसा, मः ५)
नानक जपीऐ मिलि साधसंगति हरि बिनु अवरु न होरु ॥४॥१॥१३६॥ (४०५-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०५-७)

जीउ मनु तनु प्रान प्रभ के दीए सभि रस भोग ॥ (४०५-७, आसा, मः ५)
दीन बंधप जीअ दाता सरणि राखण जोगु ॥१॥ (४०५-७, आसा, मः ५)
मेरे मन धिआइ हरि हरि नाउ ॥ (४०५-८, आसा, मः ५)
हलति पलति सहाइ संगे एक सिउ लिव लाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०५-८, आसा, मः ५)
बेद सासत्र जन धिआवहि तरण कउ संसारु ॥ (४०५-९, आसा, मः ५)
कर्म धर्म अनेक किरिआ सभ ऊपरि नामु अचारु ॥२॥ (४०५-९, आसा, मः ५)
कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिलै सतिगुर देव ॥ (४०५-१०, आसा, मः ५)
नामु दृड़ु करि भगति हरि की भली प्रभ की सेव ॥३॥ (४०५-१०, आसा, मः ५)
चरण सरण दइआल तेरी तूं निमाणे माणु ॥ (४०५-११, आसा, मः ५)
जीअ प्राण अधारु तेरा नानक का प्रभु ताणु ॥४॥२॥१३७॥ (४०५-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०५-१२)
डोलि डोलि महा दुखु पाइआ बिना साधू संग ॥ (४०५-१२, आसा, मः ५)
खाटि लाभु गोबिंद हरि रसु पारब्रह्म इक रंग ॥१॥ (४०५-१२, आसा, मः ५)
हरि को नामु जपीऐ नीति ॥ (४०५-१३, आसा, मः ५)
सासि सासि धिआइ सो प्रभु तिआगि अवर परीति ॥१॥ रहाउ ॥ (४०५-१३, आसा, मः ५)
करण कारण समरथ सो प्रभु जीअ दाता आपि ॥ (४०५-१४, आसा, मः ५)
तिआगि सगल सिआणपा आठ पहर प्रभु जापि ॥२॥ (४०५-१४, आसा, मः ५)
मीतु सखा सहाइ संगी ऊच अगम अपारु ॥ (४०५-१५, आसा, मः ५)
चरण कमल बसाइ हिरदै जीअ को आधारु ॥३॥ (४०५-१५, आसा, मः ५)
करि किरपा प्रभ पारब्रह्म गुण तेरा जसु गाउ ॥ (४०५-१६, आसा, मः ५)
सर्ब सूख वडी वडिआई जपि जीवै नानकु नाउ ॥४॥३॥१३८॥ (४०५-१६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०५-१७)
उदमु करउ करावहु ठाकुर पेखत साधू संगि ॥ (४०५-१७, आसा, मः ५)
हरि हरि नामु चरावहु रंगनि आपे ही प्रभ रंगि ॥१॥ (४०५-१८, आसा, मः ५)
मन महि राम नामा जापि ॥ (४०५-१८, आसा, मः ५)
करि किरपा वसहु मेरै हिरदै होइ सहाई आपि ॥१॥ रहाउ ॥ (४०५-१८, आसा, मः ५)
सुणि सुणि नामु तुमारा प्रीतम प्रभु पेखन का चाउ ॥ (४०५-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०६

दइआ करहु किर्म अपुने कउ इहै मनोरथु सुआउ ॥२॥ (४०६-१, आसा, मः ५)
तनु धनु तेरा तूं प्रभु मेरा हमरै वसि किछु नाहि ॥ (४०६-१, आसा, मः ५)
जिउ जिउ राखहि तिउ तिउ रहणा तेरा दीआ खाहि ॥३॥ (४०६-२, आसा, मः ५)
जनम जनम के किलविख काटै मजनु हरि जन धूरि ॥ (४०६-२, आसा, मः ५)
भाइ भगति भर्म भउ नासै हरि नानक सदा हजूरि ॥४॥४॥१३९॥ (४०६-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०६-४)

अगम अगोचरु दरसु तेरा सो पाए जिसु मसतकि भागु ॥ (४०६-४, आसा, मः ५)
आपि कृपालि कृपा प्रभि धारी सतिगुरि बखसिआ हरि नामु ॥१॥ (४०६-४, आसा, मः ५)
कलिजुगु उधारिआ गुरदेव ॥ (४०६-५, आसा, मः ५)
मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (४०६-५, आसा, मः ५)
तू आपि करता सभ सृसटि धरता सभ महि रहिआ समाइ ॥ (४०६-६, आसा, मः ५)
धर्म राजा बिसमादु होआ सभ पई पैरी आइ ॥२॥ (४०६-७, आसा, मः ५)
सतजुगु त्रेता दुआपरु भणीऐ कलिजुगु ऊतमो जुगा माहि ॥ (४०६-७, आसा, मः ५)
अहि करु करे सु अहि करु पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाइ ॥३॥ (४०६-८, आसा, मः ५)
हरि जीउ सोई करहि जि भगत तेरे जाचहि एहु तेरा बिरदु ॥ (४०६-८, आसा, मः ५)
कर जोड़ि नानक दानु मागै अपणिआ संता देहि हरि दरसु ॥४॥५॥१४०॥ (४०६-९, आसा, मः ५)
रागु आसा महला ५ घरु १३ (४०६-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०६-११)
सतिगुर बचन तुम्हारे ॥ (४०६-१२, आसा, मः ५)
निरगुण निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०६-१२, आसा, मः ५)
महा बिखादी दुसट अपवादी ते पुनीत संगारे ॥१॥ (४०६-१२, आसा, मः ५)
जनम भवंते नरकि पड़ंते तिन्ह के कुल उधारे ॥२॥ (४०६-१३, आसा, मः ५)
कोइ न जानै कोइ न मानै से परगटु हरि दुआरे ॥३॥ (४०६-१३, आसा, मः ५)
कवन उपमा देउ कवन वडाई नानक खिनु खिनु वारे ॥४॥१॥१४१॥ (४०६-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०६-१५)
बावर सोइ रहे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०६-१५, आसा, मः ५)
मोह कुटम्ब बिखै रस माते मिथिआ गहन गहे ॥१॥ (४०६-१५, आसा, मः ५)
मिथन मनोरथ सुपन आनंद उलास मनि मुखि सति कहे ॥२॥ (४०६-१६, आसा, मः ५)
अमृतु नामु पदारथु संगे तिलु मरमु न लहे ॥३॥ (४०६-१६, आसा, मः ५)
करि किरपा राखे सतसंगे नानक सरणि आहे ॥४॥२॥१४२॥ (४०६-१७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ तिपदे ॥ (४०६-१७)
ओहा प्रेम पिरी ॥१॥ रहाउ ॥ (४०६-१८, आसा, मः ५)
कनिक माणिक गज मोतीअन लालन नह नाह नही ॥१॥ (४०६-१८, आसा, मः ५)
राज न भाग न हुकम न सादन ॥ (४०६-१८, आसा, मः ५)

पन्ना ४०७

किछु किछु न चाही ॥२॥ (४०७-१, आसा, मः ५)
चरनन सरनन संतन बंदन ॥ (४०७-१, आसा, मः ५)
सुखो सुखु पाही ॥ (४०७-१, आसा, मः ५)
नानक तपति हरी ॥ (४०७-१, आसा, मः ५)
मिले प्रेम पिरी ॥३॥३॥१४३॥ (४०७-२, आसा, मः ५)

आसा महला ५ ॥ (४०७-२)
गुरहि दिखाइओ लोइना ॥१॥ रहाउ ॥ (४०७-२, आसा, मः ५)
ईतहि ऊतहि घटि घटि घटि घटि तूंही तूंही मोहिना ॥१॥ (४०७-३, आसा, मः ५)
कारन करना धारन धरना एकै एकै सोहिना ॥२॥ (४०७-३, आसा, मः ५)
संतन परसन बलिहारी दरसन नानक सुखि सुखि सोइना ॥३॥४॥१४४॥ (४०७-४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०७-५)
हरि हरि नामु अमोला ॥ (४०७-५, आसा, मः ५)
ओहु सहजि सुहेला ॥१॥ रहाउ ॥ (४०७-५, आसा, मः ५)
संगि सहाई छोडि न जाई ओहु अगह अतोला ॥१॥ (४०७-५, आसा, मः ५)
प्रीतमु भाई बापु मोरो माई भगतन का ओल्हा ॥२॥ (४०७-६, आसा, मः ५)
अलखु लखाइआ गुर ते पाइआ नानक इहु हरि का चोल्हा ॥३॥५॥१४५॥ (४०७-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०७-७)
आपुनी भगति निबाहि ॥ (४०७-७, आसा, मः ५)
ठाकुर आइओ आहि ॥१॥ रहाउ ॥ (४०७-८, आसा, मः ५)
नामु पदारथु होइ सकारथु हिरदै चरन बसाहि ॥१॥ (४०७-८, आसा, मः ५)
एह मुकता एह जुगता राखहु संत संगाहि ॥२॥ (४०७-८, आसा, मः ५)
नामु धिआवउ सहजि समावउ नानक हरि गुन गाहि ॥३॥६॥१४६॥ (४०७-९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०७-१०)
ठाकुर चरण सुहावे ॥ (४०७-१०, आसा, मः ५)
हरि संतन पावे ॥१॥ रहाउ ॥ (४०७-१०, आसा, मः ५)
आपु गवाइआ सेव कमाइआ गुन रसि रसि गावे ॥१॥ (४०७-१०, आसा, मः ५)
एकहि आसा दरस पिआसा आन न भावे ॥२॥ (४०७-११, आसा, मः ५)
दइआ तुहारी किआ जंत विचारी नानक बलि बलि जावे ॥३॥७॥१४७॥ (४०७-१२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०७-१२)
एकु सिमरि मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (४०७-१३, आसा, मः ५)
नामु धिआवहु रिदै बसावहु तिसु बिनु को नाही ॥१॥ (४०७-१३, आसा, मः ५)
प्रभ सरनी आईऐ सरब फल पाईऐ सगले दुख जाही ॥२॥ (४०७-१३, आसा, मः ५)
जीअन को दाता पुरखु बिधाता नानक घटि घटि आही ॥३॥८॥१४८॥ (४०७-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०७-१५)
हरि बिसरत सो मूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०७-१५, आसा, मः ५)
नामु धिआवै सरब फल पावै सो जनु सुखीआ हूआ ॥१॥ (४०७-१५, आसा, मः ५)
राजु कहावै हउ करम कमावै बाधिओ नलिनी भ्रमि सूआ ॥२॥ (४०७-१६, आसा, मः ५)
कहु नानक जिसु सतिगुरु भेटिआ सो जनु निहचलु थीआ ॥३॥९॥१४९॥ (४०७-१७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ घरु १४ (४०७-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०७-१८)

ओहु नेहु नवेला ॥ (४०७-१९, आसा, मः ५)
अपुने प्रीतम सिउ लागि रहै ॥१॥ रहाउ ॥ (४०७-१९, आसा, मः ५)
जो प्रभ भावै जनमि न आवै ॥ (४०७-१९, आसा, मः ५)
हरि प्रेम भगति हरि प्रीति रचै ॥१॥ (४०७-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०८

प्रभ संगि मिलीजै इहु मनु दीजै ॥ (४०८-१, आसा, मः ५)
नानक नामु मिलै अपनी दइआ करहु ॥२॥१॥१५०॥ (४०८-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०८-२)
मिलु राम पिआरे तुम बिनु धीरजु को न करै ॥१॥ रहाउ ॥ (४०८-२, आसा, मः ५)
सिम्मृति सासत्र बहु कर्म कमाए प्रभ तुमरे दरस बिनु सुखु नाही ॥१॥ (४०८-३, आसा, मः ५)
वरत नेम संजम करि थाके नानक साध सरनि प्रभ संगि वसै ॥२॥२॥१५१॥ (४०८-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ घरु १५ पड़ताल (४०८-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०८-५)
बिकार माइआ मादि सोइओ सूझ बूझ न आवै ॥ (४०८-६, आसा, मः ५)
पकरि केस जमि उठारिओ तद ही घरि जावै ॥१॥ (४०८-६, आसा, मः ५)
लोभ बिखिआ बिखै लागे हिरि वित चित दुखाही ॥ (४०८-७, आसा, मः ५)
खिन भंगुना कै मानि माते असुर जाणहि नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (४०८-७, आसा, मः ५)
बेद सासत्र जन पुकारहि सुनै नाही डोरा ॥ (४०८-८, आसा, मः ५)
निपटि बाजी हारि मूका पछुताइओ मनि भोरा ॥२॥ (४०८-८, आसा, मः ५)
डानु सगल गैर वजहि भरिआ दीवान लेखै न परिआ ॥ (४०८-९, आसा, मः ५)
जेंह कारजि रहै ओला सोइ कामु न करिआ ॥३॥ (४०८-९, आसा, मः ५)
ऐसो जगु मोहि गुरि दिखाइओ तउ एक कीरति गाइआ ॥ (४०८-१०, आसा, मः ५)
मानु तानु तजि सिआनप सरणि नानकु आइआ ॥४॥१॥१५२॥ (४०८-१०, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०८-११)
बापारि गोविंद नाए ॥ (४०८-११, आसा, मः ५)
साध संत मनाए प्रिअ पाए गुन गाए पंच नाद तूर बजाए ॥१॥ रहाउ ॥ (४०८-११, आसा, मः ५)
किरपा पाए सहजाए दरसाए अब रातिआ गोविंद सिउ ॥ (४०८-१२, आसा, मः ५)
संत सेवि प्रीति नाथ रंगु लालन लाए ॥१॥ (४०८-१३, आसा, मः ५)
गुर गिआनु मनि दृड़ाए रहसाए नही आए सहजाए मनि निधानु पाए ॥ (४०८-१३, आसा, मः ५)
सभ तजी मनै की काम करा ॥ (४०८-१४, आसा, मः ५)
चिरु चिरु चिरु चिरु भइआ मनि बहुतु पिआस लागी ॥ (४०८-१४, आसा, मः ५)
हरि दरसनो दिखावहु मोहि तुम बतावहु ॥ (४०८-१५, आसा, मः ५)
नानक दीन सरणि आए गलि लाए ॥२॥२॥१५३॥ (४०८-१५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०८-१६)

कोऊ बिखम गार तोरै ॥ (४०८-१६, आसा, मः ५)
आस पिआस धोह मोह भर्म ही ते होरै ॥१॥ रहाउ ॥ (४०८-१६, आसा, मः ५)
काम क्रोध लोभ मान इह बिआधि छोरै ॥१॥ (४०८-१७, आसा, मः ५)
संतसंगि नाम रंगि गुन गोविंद गावउ ॥ (४०८-१७, आसा, मः ५)
अनदिनो प्रभ धिआवउ ॥ (४०८-१८, आसा, मः ५)
भ्रम भीति जीति मिटावउ ॥ (४०८-१८, आसा, मः ५)
निधि नामु नानक मोरै ॥२॥३॥१५४॥ (४०८-१८, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०८-१९)
कामु क्रोधु लोभु तिआगु ॥ (४०८-१९, आसा, मः ५)
मनि सिमरि गोबिंद नाम ॥ (४०८-१९, आसा, मः ५)
हरि भजन सफल काम ॥१॥ रहाउ ॥ (४०८-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४०९

तजि मान मोह विकार मिथिआ जपि राम राम राम ॥ (४०९-१, आसा, मः ५)
मन संतना कै चरनि लागु ॥१॥ (४०९-१, आसा, मः ५)
प्रभ गोपाल दीन दइआल पतित पावन पारब्रह्म हरि चरण सिमरि जागु ॥ (४०९-२, आसा, मः ५)
करि भगति नानक पूरन भागु ॥२॥४॥१५५॥ (४०९-२, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४०९-३)
हरख सोग बैराग अनंदी खेलु री दिखाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (४०९-३, आसा, मः ५)
खिनहूं भै निरभै खिनहूं खिनहूं उठि धाइओ ॥ (४०९-४, आसा, मः ५)
खिनहूं रस भोगन खिनहूं खिनहू तजि जाइओ ॥१॥ (४०९-४, आसा, मः ५)
खिनहूं जोग ताप बहु पूजा खिनहूं भरमाइओ ॥ (४०९-५, आसा, मः ५)
खिनहूं किरपा साधू संग नानक हरि रंगु लाइओ ॥२॥५॥१५६॥ (४०९-५, आसा, मः ५)
रागु आसा महला ५ घरु १७ आसावरी (४०९-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४०९-७)
गोबिंद गोबिंद करि हाँ ॥ (४०९-८, आसा आसावरी, मः ५)
हरि हरि मनि पिआरि हाँ ॥ (४०९-८, आसा आसावरी, मः ५)
गुरि कहिआ सु चिति धरि हाँ ॥ (४०९-८, आसा आसावरी, मः ५)
अन सिउ तोरि फेरि हाँ ॥ (४०९-८, आसा आसावरी, मः ५)
ऐसे लालनु पाइओ री सखी ॥१॥ रहाउ ॥ (४०९-९, आसा आसावरी, मः ५)
पंकज मोह सरि हाँ ॥ (४०९-९, आसा आसावरी, मः ५)
पगु नही चलै हरि हाँ ॥ (४०९-९, आसा आसावरी, मः ५)
गहडिओ मूड़ नरि हाँ ॥ (४०९-९, आसा आसावरी, मः ५)
अनिन उपाव करि हाँ ॥ (४०९-१०, आसा आसावरी, मः ५)
तउ निकसै सरनि पै री सखी ॥१॥ (४०९-१०, आसा आसावरी, मः ५)

थिर थिर चित थिर हाँ ॥ (४०६-१०, आसा आसावरी, मः ५)
बनु गृहु समसरि हाँ ॥ (४०६-११, आसा आसावरी, मः ५)
अंतरि एक पिर हाँ ॥ (४०६-११, आसा आसावरी, मः ५)
बाहरि अनेक धरि हाँ ॥ (४०६-११, आसा आसावरी, मः ५)
राजन जोगु करि हाँ ॥ (४०६-११, आसा आसावरी, मः ५)
कहु नानक लोग अलोगी री सखी ॥२॥१॥१५७॥ (४०६-११, आसा आसावरी, मः ५)
आसावरी महला ५ ॥ (४०६-१२)
मनसा एक मानि हाँ ॥ (४०६-१२, आसावरी, मः ५)
गुर सिउ नेत धिआनि हाँ ॥ (४०६-१२, आसावरी, मः ५)
दृड़ु संत मंत गिआनि हाँ ॥ (४०६-१३, आसावरी, मः ५)
सेवा गुर चरानि हाँ ॥ (४०६-१३, आसावरी, मः ५)
तउ मिलीऐ गुर कृपानि मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (४०६-१३, आसावरी, मः ५)
टूटे अन भरानि हाँ ॥ (४०६-१४, आसावरी, मः ५)
रविओ सर्ब थानि हाँ ॥ (४०६-१४, आसावरी, मः ५)
लहिओ जम भइआनि हाँ ॥ (४०६-१४, आसावरी, मः ५)
पाइओ पेड थानि हाँ ॥ (४०६-१४, आसावरी, मः ५)
तउ चूकी सगल कानि ॥१॥ (४०६-१५, आसावरी, मः ५)
लहनो जिसु मथानि हाँ ॥ (४०६-१५, आसावरी, मः ५)
भै पावक पारि परानि हाँ ॥ (४०६-१५, आसावरी, मः ५)
निज घरि तिसहि थानि हाँ ॥ (४०६-१५, आसावरी, मः ५)
हरि रस रसहि मानि हाँ ॥ (४०६-१६, आसावरी, मः ५)
लाथी तिस भुखानि हाँ ॥ (४०६-१६, आसावरी, मः ५)
नानक सहजि समाइओ रे मना ॥२॥२॥१५८॥ (४०६-१६, आसावरी, मः ५)
आसावरी महला ५ ॥ (४०६-१७)
हरि हरि हरि गुनी हाँ ॥ (४०६-१७, आसावरी, मः ५)
जपीऐ सहज धुनी हाँ ॥ (४०६-१७, आसावरी, मः ५)
साधू रसन भनी हाँ ॥ (४०६-१७, आसावरी, मः ५)
छूटन बिधि सुनी हाँ ॥ (४०६-१७, आसावरी, मः ५)
पाईऐ वड पुनी मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (४०६-१८, आसावरी, मः ५)
खोजहि जन मुनी हाँ ॥ (४०६-१८, आसावरी, मः ५)
स्रब का प्रभ धनी हाँ ॥ (४०६-१८, आसावरी, मः ५)
दुलभ कलि दुनी हाँ ॥ (४०६-१६, आसावरी, मः ५)
दूख बिनासनी हाँ ॥ (४०६-१६, आसावरी, मः ५)
प्रभ पूरन आसनी मेरे मना ॥१॥ (४०६-१६, आसावरी, मः ५)
मन सो सेवीऐ हाँ ॥ (४०६-१६, आसावरी, मः ५)

अलख अभेवीऐ हाँ ॥ (४१०-१, आसावरी, मः ५)
ताँ सिउ प्रीति करि हाँ ॥ (४१०-१, आसावरी, मः ५)
बिनसि न जाइ मरि हाँ ॥ (४१०-१, आसावरी, मः ५)
गुर ते जानिआ हाँ ॥ (४१०-१, आसावरी, मः ५)
नानक मनु मानिआ मेरे मना ॥२॥३॥१५६॥ (४१०-१, आसावरी, मः ५)
आसावरी महला ५ ॥ (४१०-२)
एका ओट गहु हाँ ॥ (४१०-२, आसावरी, मः ५)
गुर का सबदु कहु हाँ ॥ (४१०-२, आसावरी, मः ५)
आगिआ सति सहु हाँ ॥ (४१०-३, आसावरी, मः ५)
मनहि निधानु लहु हाँ ॥ (४१०-३, आसावरी, मः ५)
सुखहि समाईऐ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (४१०-३, आसावरी, मः ५)
जीवत जो मरै हाँ ॥ (४१०-३, आसावरी, मः ५)
दुतरु सो तरै हाँ ॥ (४१०-४, आसावरी, मः ५)
सभ की रेनु होइ हाँ ॥ (४१०-४, आसावरी, मः ५)
निरभउ कहउ सोइ हाँ ॥ (४१०-४, आसावरी, मः ५)
मिटे अंदेसिआ हाँ ॥ (४१०-४, आसावरी, मः ५)
संत उपदेसिआ मेरे मना ॥१॥ (४१०-४, आसावरी, मः ५)
जिसु जन नाम सुखु हाँ ॥ (४१०-५, आसावरी, मः ५)
तिसु निकटि न कदे दुखु हाँ ॥ (४१०-५, आसावरी, मः ५)
जो हरि हरि जसु सुने हाँ ॥ (४१०-५, आसावरी, मः ५)
सभु को तिसु मन्ने हाँ ॥ (४१०-६, आसावरी, मः ५)
सफलु सु आइआ हाँ ॥ (४१०-६, आसावरी, मः ५)
नानक प्रभ भाइआ मेरे मना ॥२॥४॥१६०॥ (४१०-६, आसावरी, मः ५)
आसावरी महला ५ ॥ (४१०-७)
मिलि हरि जसु गाईऐ हाँ ॥ (४१०-७, आसावरी, मः ५)
पर्म पदु पाईऐ हाँ ॥ (४१०-७, आसावरी, मः ५)
उआ रस जो बिधे हाँ ॥ (४१०-७, आसावरी, मः ५)
ता कउ सगल सिधे हाँ ॥ (४१०-८, आसावरी, मः ५)
अनदिनु जागिआ हाँ ॥ (४१०-८, आसावरी, मः ५)
नानक बडभागिआ मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (४१०-८, आसावरी, मः ५)
संत पग धोईऐ हाँ ॥ (४१०-८, आसावरी, मः ५)
दुरमति खोईऐ हाँ ॥ (४१०-९, आसावरी, मः ५)
दासह रेनु होइ हाँ ॥ (४१०-९, आसावरी, मः ५)

बिआपै दुखु न कोइ हाँ ॥ (४१०-९, आसावरी, मः ५)
भगताँ सरनि परु हाँ ॥ (४१०-९, आसावरी, मः ५)
जनमि न कदे मरु हाँ ॥ (४१०-१०, आसावरी, मः ५)
असथिरु से भए हाँ ॥ (४१०-१०, आसावरी, मः ५)
हरि हरि जिन् जपि लए मेरे मना ॥१॥ (४१०-१०, आसावरी, मः ५)
साजनु मीतु तूं हाँ ॥ (४१०-१०, आसावरी, मः ५)
नामु दृड़ाइ मूं हाँ ॥ (४१०-११, आसावरी, मः ५)
तिसु बिनु नाहि कोइ हाँ ॥ (४१०-११, आसावरी, मः ५)
मनहि अराधि सोइ हाँ ॥ (४१०-११, आसावरी, मः ५)
निमख न वीसरै हाँ ॥ (४१०-११, आसावरी, मः ५)
तिसु बिनु किउ सरै हाँ ॥ (४१०-१२, आसावरी, मः ५)
गुर कउ कुरबानु जाउ हाँ ॥ (४१०-१२, आसावरी, मः ५)
नानकु जपे नाउ मेरे मना ॥२॥५॥१६१॥ (४१०-१२, आसावरी, मः ५)
आसावरी महला ५ ॥ (४१०-१३)
कारन करन तूं हाँ ॥ (४१०-१३, आसावरी, मः ५)
अवरु ना सुझै मूं हाँ ॥ (४१०-१३, आसावरी, मः ५)
करहि सु होईऐ हाँ ॥ (४१०-१३, आसावरी, मः ५)
सहजि सुखि सोईऐ हाँ ॥ (४१०-१३, आसावरी, मः ५)
धीरज मनि भए हाँ ॥ (४१०-१४, आसावरी, मः ५)
प्रभ कै दरि पए मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (४१०-१४, आसावरी, मः ५)
साधू संगमे हाँ ॥ (४१०-१४, आसावरी, मः ५)
पूरन संजमे हाँ ॥ (४१०-१४, आसावरी, मः ५)
जब ते छुटे आप हाँ ॥ (४१०-१५, आसावरी, मः ५)
तब ते मिटे ताप हाँ ॥ (४१०-१५, आसावरी, मः ५)
किरपा धारीआ हाँ ॥ (४१०-१५, आसावरी, मः ५)
पति रखु बनवारीआ मेरे मना ॥१॥ (४१०-१५, आसावरी, मः ५)
इहु सुखु जानीऐ हाँ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)
हरि करे सु मानीऐ हाँ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)
मंदा नाहि कोइ हाँ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)
संत की रेन होइ हाँ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)
आपे जिसु रखै हाँ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)
हरि अमृतु सो चखै मेरे मना ॥२॥ (४१०-१७, आसावरी, मः ५)
जिस का नाहि कोइ हाँ ॥ (४१०-१७, आसावरी, मः ५)
तिस का प्रभू सोइ हाँ ॥ (४१०-१७, आसावरी, मः ५)
अंतरगति बुझै हाँ ॥ (४१०-१७, आसावरी, मः ५)

सभु किछु तिसु सुझै हाँ ॥ (४१०-१८, आसावरी, मः ५)
पतित उधारि लेहु हाँ ॥ (४१०-१८, आसावरी, मः ५)
नानक अरदासि एहु मेरे मना ॥३॥६॥१६२॥ (४१०-१८, आसावरी, मः ५)
आसावरी महला ५ इकतुका ॥ (४१०-१६)
ओइ परदेसीआ हाँ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)
सुनत संदेसिआ हाँ ॥१॥ रहाउ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)
जा सिउ रचि रहे हाँ ॥ (४१०-१६, आसावरी, मः ५)

पन्ना ४११

सभ कउ तजि गए हाँ ॥ (४११-१, आसावरी, मः ५)
सुपना जिउ भए हाँ ॥ (४११-१, आसावरी, मः ५)
हरि नामु जिन्हि लए ॥१॥ (४११-१, आसावरी, मः ५)
हरि तजि अन लगे हाँ ॥ (४११-१, आसावरी, मः ५)
जनमहि मरि भगे हाँ ॥ (४११-२, आसावरी, मः ५)
हरि हरि जनि लहे हाँ ॥ (४११-२, आसावरी, मः ५)
जीवत से रहे हाँ ॥ (४११-२, आसावरी, मः ५)
जिसहि कृपालु होइ हाँ ॥ (४११-२, आसावरी, मः ५)
नानक भगतु सोइ ॥२॥७॥१६३॥२३२॥ (४११-२, आसावरी, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४११-४)
रागु आसा महला ६ ॥ (४११-४)
बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥ (४११-४, आसा, मः ६)
लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥ (४११-५, आसा, मः ६)
सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥ (४११-५, आसा, मः ६)
दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥ (४११-६, आसा, मः ६)
मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥ (४११-७, आसा, मः ६)
नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥ (४११-७, आसा, मः ६)
रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु २ (४११-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४११-६)
उतरि अवघटि सरवरि न्हावै ॥ (४११-१०, आसा, मः १)
बकै न बोलै हरि गुण गावै ॥ (४११-१०, आसा, मः १)
जलु आकासी सुंनि समावै ॥ (४११-१०, आसा, मः १)
रसु सतु झोलि महा रसु पावै ॥१॥ (४११-१०, आसा, मः १)
ऐसा गिआनु सुनहु अभ मोरे ॥ (४११-११, आसा, मः १)
भरिपुरि धारि रहिआ सभ ठउरे ॥१॥ रहाउ ॥ (४११-११, आसा, मः १)
सचु ब्रतु नेमु न कालु संतावै ॥ (४११-१२, आसा, मः १)

सतिगुर सबदि करोधु जलावै ॥ (४११-१२, आसा, मः १)
गगनि निवासि समाधि लगावै ॥ (४११-१२, आसा, मः १)
पारसु परसि परम पदु पावै ॥२॥ (४११-१३, आसा, मः १)
सचु मन कारणि ततु बिलोवै ॥ (४११-१३, आसा, मः १)
सुभर सरवरि मैलु न धोवै ॥ (४११-१३, आसा, मः १)
जै सिउ राता तैसो होवै ॥ (४११-१४, आसा, मः १)
आपे करता करे सु होवै ॥३॥ (४११-१४, आसा, मः १)
गुर हिव सीतलु अगनि बुझावै ॥ (४११-१४, आसा, मः १)
सेवा सुरति बिभूत चड़ावै ॥ (४११-१४, आसा, मः १)
दरसनु आपि सहज घरि आवै ॥ (४११-१५, आसा, मः १)
निरमल बाणी नादु वजावै ॥४॥ (४११-१५, आसा, मः १)
अंतरि गिआनु महा रसु सारा ॥ (४११-१५, आसा, मः १)
तीरथ मजनु गुर वीचारा ॥ (४११-१६, आसा, मः १)
अंतरि पूजा थानु मुरारा ॥ (४११-१६, आसा, मः १)
जोती जोति मिलावणहारा ॥५॥ (४११-१६, आसा, मः १)
रसि रसिआ मति एकै भाइ ॥ (४११-१७, आसा, मः १)
तखत निवासी पंच समाइ ॥ (४११-१७, आसा, मः १)
कार कमाई खसम रजाइ ॥ (४११-१७, आसा, मः १)
अविगत नाथु न लखिआ जाइ ॥६॥ (४११-१८, आसा, मः १)
जल महि उपजै जल ते दूरि ॥ (४११-१८, आसा, मः १)
जल महि जोति रहिआ भरपूरि ॥ (४११-१८, आसा, मः १)
किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥ (४११-१९, आसा, मः १)
निधि गुण गावा देखि हदूरि ॥७॥ (४११-१९, आसा, मः १)
अंतरि बाहरि अवरु न कोइ ॥ (४११-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४१२

जो तिसु भावै सो फुनि होइ ॥ (४१२-१, आसा, मः १)
सुणि भरथरि नानकु कहै बीचारु ॥ (४१२-१, आसा, मः १)
निरमल नामु मेरा आधारु ॥८॥१॥ (४१२-१, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१२-२)
सभि जप सभि तप सभ चतुराई ॥ (४१२-२, आसा, मः १)
ऊझड़ि भरमै राहि न पाई ॥ (४१२-२, आसा, मः १)
बिनु बूझे को थाइ न पाई ॥ (४१२-२, आसा, मः १)
नाम बिहूणै माथे छाई ॥१॥ (४१२-३, आसा, मः १)
साच धणी जगु आइ बिनासा ॥ (४१२-३, आसा, मः १)

छूटसि प्राणी गुरमुखि दासा ॥१॥ रहाउ ॥ (४१२-३, आसा, मः १)
जगु मोहि बाधा बहुती आसा ॥ (४१२-४, आसा, मः १)
गुरमती इकि भए उदासा ॥ (४१२-४, आसा, मः १)
अंतरि नामु कमलु परगासा ॥ (४१२-४, आसा, मः १)
तिन् कउ नाही जम की त्रासा ॥२॥ (४१२-५, आसा, मः १)
जगु तृअ जितु कामणि हितकारी ॥ (४१२-५, आसा, मः १)
पुत्र कलत्र लगि नामु विसारी ॥ (४१२-५, आसा, मः १)
बिरथा जनमु गवाइआ बाजी हारी ॥ (४१२-६, आसा, मः १)
सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥३॥ (४१२-६, आसा, मः १)
बाहरहु हउमै कहै कहाए ॥ (४१२-७, आसा, मः १)
अंदरहु मुकतु लेपु कदे न लाए ॥ (४१२-७, आसा, मः १)
माइआ मोहु गुर सबदि जलाए ॥ (४१२-७, आसा, मः १)
निर्मल नामु सद हिरदै धिआए ॥४॥ (४१२-८, आसा, मः १)
धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (४१२-८, आसा, मः १)
सिख संगति करमि मिलाए ॥ (४१२-८, आसा, मः १)
गुर बिनु भूलो आवै जाए ॥ (४१२-८, आसा, मः १)
नदरि करे संजोगि मिलाए ॥५॥ (४१२-९, आसा, मः १)
रूड़ो कहउ न कहिआ जाई ॥ (४१२-९, आसा, मः १)
अकथ कथउ नह कीमति पाई ॥ (४१२-९, आसा, मः १)
सभ दुख तेरे सूख रजाई ॥ (४१२-१०, आसा, मः १)
सभि दुख मेटे साचै नाई ॥६॥ (४१२-१०, आसा, मः १)
कर बिनु वाजा पग बिनु ताला ॥ (४१२-१०, आसा, मः १)
जे सबदु बुझै ता सचु निहाला ॥ (४१२-११, आसा, मः १)
अंतरि साचु सभे सुख नाला ॥ (४१२-११, आसा, मः १)
नदरि करे राखै रखवाला ॥७॥ (४१२-११, आसा, मः १)
तृभवण सूझै आपु गवावै ॥ (४१२-१२, आसा, मः १)
बाणी बूझै सचि समावै ॥ (४१२-१२, आसा, मः १)
सबदु वीचारे एक लिव तारा ॥ (४१२-१२, आसा, मः १)
नानक धन्नु सवारणहारा ॥८॥२॥ (४१२-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१२-१३)
लेख असंख लिखि लिखि मानु ॥ (४१२-१३, आसा, मः १)
मनि मानिऐ सचु सुरति वखानु ॥ (४१२-१३, आसा, मः १)
कथनी बदनी पड़ि पड़ि भारु ॥ (४१२-१४, आसा, मः १)
लेख असंख अलेखु अपारु ॥१॥ (४१२-१४, आसा, मः १)
ऐसा साचा तूं एको जाणु ॥ (४१२-१४, आसा, मः १)

जम्मणु मरणा हुकमु पछाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (४१२-१५, आसा, मः १)
माइआ मोहि जगु बाधा जमकालि ॥ (४१२-१५, आसा, मः १)
बाँधा छूटै नामु सम्हालि ॥ (४१२-१५, आसा, मः १)
गुरु सुखदाता अवरु न भालि ॥ (४१२-१६, आसा, मः १)
हलति पलति निबही तुधु नालि ॥२॥ (४१२-१६, आसा, मः १)
सबदि मरै ताँ एक लिव लाए ॥ (४१२-१६, आसा, मः १)
अचरु चरै ताँ भरमु चुकाए ॥ (४१२-१७, आसा, मः १)
जीवन मुकतु मनि नामु वसाए ॥ (४१२-१७, आसा, मः १)
गुरमुखि होइ त सचि समाए ॥३॥ (४१२-१७, आसा, मः १)
जिनि धर साजी गगनु अकासु ॥ (४१२-१८, आसा, मः १)
जिनि सभ थापी थापि उथापि ॥ (४१२-१८, आसा, मः १)
सर्ब निरंतरि आपे आपि ॥ (४१२-१८, आसा, मः १)
किसै न पूछे बखसे आपि ॥४॥ (४१२-१९, आसा, मः १)
तू पुरु सागरु माणक हीरु ॥ (४१२-१९, आसा, मः १)
तू निरमलु सचु गुणी गहीरु ॥ (४१२-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४१३

सुखु मानै भेटै गुर पीरु ॥ (४१३-१, आसा, मः १)
एको साहिबु एकु वजीरु ॥५॥ (४१३-१, आसा, मः १)
जगु बंदी मुकते हउ मारी ॥ (४१३-१, आसा, मः १)
जगि गिआनी विरला आचारी ॥ (४१३-१, आसा, मः १)
जगि पंडितु विरला वीचारी ॥ (४१३-२, आसा, मः १)
बिनु सतिगुरु भेटे सभ फिरै अहंकारी ॥६॥ (४१३-२, आसा, मः १)
जगु दुखीआ सुखीआ जनु कोइ ॥ (४१३-२, आसा, मः १)
जगु रोगी भोगी गुण रोइ ॥ (४१३-३, आसा, मः १)
जगु उपजै बिनसै पति खोइ ॥ (४१३-३, आसा, मः १)
गुरमुखि होवै बूझै सोइ ॥७॥ (४१३-३, आसा, मः १)
महघो मोलि भारि अफारु ॥ (४१३-४, आसा, मः १)
अटल अछलु गुरमती धारु ॥ (४१३-४, आसा, मः १)
भाइ मिलै भावै भइकारु ॥ (४१३-४, आसा, मः १)
नानकु नीचु कहै बीचारु ॥८॥३॥ (४१३-४, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१३-५)
एकु मरै पंचे मिलि रोवहि ॥ (४१३-५, आसा, मः १)
हउमै जाइ सबदि मलु धोवहि ॥ (४१३-५, आसा, मः १)
समझि सूझि सहज घरि होवहि ॥ (४१३-६, आसा, मः १)

बिनु बूझे सगली पति खोवहि ॥१॥ (४१३-६, आसा, मः १)
कउणु मरै कउणु रोवै ओही ॥ (४१३-६, आसा, मः १)
करण कारण सभसै सिरि तोही ॥१॥ रहाउ ॥ (४१३-७, आसा, मः १)
मूए कउ रोवै दुखु कोइ ॥ (४१३-७, आसा, मः १)
सो रोवै जिसु बेदन होइ ॥ (४१३-७, आसा, मः १)
जिसु बीती जाणै प्रभ सोइ ॥ (४१३-८, आसा, मः १)
आपे करता करे सु होइ ॥२॥ (४१३-८, आसा, मः १)
जीवत मरणा तारे तरणा ॥ (४१३-८, आसा, मः १)
जै जगदीस पर्म गति सरणा ॥ (४१३-८, आसा, मः १)
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥ (४१३-९, आसा, मः १)
गुरु बोहिथु सबदि भै तरणा ॥३॥ (४१३-९, आसा, मः १)
निरभउ आपि निरंतरि जोति ॥ (४१३-९, आसा, मः १)
बिनु नावै सूतकु जगि छोति ॥ (४१३-१०, आसा, मः १)
दुरमति बिनसै किआ कहि रोति ॥ (४१३-१०, आसा, मः १)
जनमि मूए बिनु भगति सरोति ॥४॥ (४१३-१०, आसा, मः १)
मूए कउ सचु रोवहि मीत ॥ (४१३-११, आसा, मः १)
त्रै गुण रोवहि नीता नीत ॥ (४१३-११, आसा, मः १)
दुखु सुखु परहरि सहजि सुचीत ॥ (४१३-११, आसा, मः १)
तनु मनु सउपउ कृसन परीति ॥५॥ (४१३-१२, आसा, मः १)
भीतरि एकु अनेक असंख ॥ (४१३-१२, आसा, मः १)
कर्म धर्म बहु संख असंख ॥ (४१३-१२, आसा, मः १)
बिनु भै भगती जनमु बिरंथ ॥ (४१३-१३, आसा, मः १)
हरि गुण गावहि मिलि परमारंथ ॥६॥ (४१३-१३, आसा, मः १)
आपि मरै मारे भी आपि ॥ (४१३-१३, आसा, मः १)
आपि उपाए थापि उथापि ॥ (४१३-१४, आसा, मः १)
सृसटि उपाई जोती तू जाति ॥ (४१३-१४, आसा, मः १)
सबदु वीचारि मिलणु नही भ्राति ॥७॥ (४१३-१४, आसा, मः १)
सूतकु अगनि भखै जगु खाइ ॥ (४१३-१५, आसा, मः १)
सूतकु जलि थलि सभ ही थाइ ॥ (४१३-१५, आसा, मः १)
नानक सूतकि जनमि मरीजै ॥ (४१३-१५, आसा, मः १)
गुर परसादी हरि रसु पीजै ॥८॥४॥ (४१३-१६, आसा, मः १)
रागु आसा महला १ ॥ (४१३-१६)
आपु वीचारै सु परखे हीरा ॥ (४१३-१६, आसा, मः १)
एक दृसटि तारे गुर पूरा ॥ (४१३-१६, आसा, मः १)
गुरु मानै मन ते मनु धीरा ॥१॥ (४१३-१७, आसा, मः १)

ऐसा साहु सराफी करै ॥ (४१३-१७, आसा, मः १)
साची नदरि एक लिव तरै ॥१॥ रहाउ ॥ (४१३-१७, आसा, मः १)
पूंजी नामु निरंजन सारु ॥ (४१३-१८, आसा, मः १)
निरमलु साचि रता पैकारु ॥ (४१३-१८, आसा, मः १)
सिफति सहज घरि गुरु करतारु ॥२॥ (४१३-१८, आसा, मः १)
आसा मनसा सबदि जलाए ॥ (४१३-१९, आसा, मः १)
राम नराइणु कहै कहाए ॥ (४१३-१९, आसा, मः १)
गुर ते वाट महलु घरु पाए ॥३॥ (४१३-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४१४

कंचन काइआ जोति अनूपु ॥ (४१४-१, आसा, मः १)
तृभवण देवा सगल सरूपु ॥ (४१४-१, आसा, मः १)
मै सो धनु पलै साचु अखूटु ॥४॥ (४१४-१, आसा, मः १)
पंच तीनि नव चारि समावै ॥ (४१४-२, आसा, मः १)
धरणि गगनु कल धारि रहावै ॥ (४१४-२, आसा, मः १)
बाहरि जातउ उलटि परावै ॥५॥ (४१४-२, आसा, मः १)
मूरखु होइ न आखी सूझै ॥ (४१४-३, आसा, मः १)
जिहवा रसु नही कहिआ बूझै ॥ (४१४-३, आसा, मः १)
बिखु का माता जग सिउ लूझै ॥६॥ (४१४-३, आसा, मः १)
ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥ (४१४-३, आसा, मः १)
गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ (४१४-४, आसा, मः १)
बिनु गुर सेवे सहजु न होवै ॥७॥ (४१४-४, आसा, मः १)
हीरा नामु जवेहर लालु ॥ (४१४-४, आसा, मः १)
मनु मोती है तिस का मालु ॥ (४१४-५, आसा, मः १)
नानक परखै नदरि निहालु ॥८॥५॥ (४१४-५, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१४-५)
गुरमुखि गिआनु धिआनु मनि मानु ॥ (४१४-५, आसा, मः १)
गुरमुखि महली महलु पछानु ॥ (४१४-६, आसा, मः १)
गुरमुखि सुरति सबदु नीसानु ॥१॥ (४१४-६, आसा, मः १)
ऐसे प्रेम भगति वीचारी ॥ (४१४-६, आसा, मः १)
गुरमुखि साचा नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥ (४१४-७, आसा, मः १)
अहिनिसि निरमलु थानि सुथानु ॥ (४१४-७, आसा, मः १)
तीन भवन निहकेवल गिआनु ॥ (४१४-८, आसा, मः १)
साचे गुर ते हुकमु पछानु ॥२॥ (४१४-८, आसा, मः १)
साचा हरखु नाही तिसु सोगु ॥ (४१४-८, आसा, मः १)

अमृतु गिआनु महा रसु भोगु ॥ (४१४-९, आसा, मः १)
पंच समाई सुखी सभु लोगु ॥३॥ (४१४-९, आसा, मः १)
सगली जोति तेरा सभु कोई ॥ (४१४-९, आसा, मः १)
आपे जोड़ि विछोड़े सोई ॥ (४१४-९, आसा, मः १)
आपे करता करे सु होई ॥४॥ (४१४-१०, आसा, मः १)
ढाहि उसारे हुकमि समावै ॥ (४१४-१०, आसा, मः १)
हुकमो वरतै जो तिसु भावै ॥ (४१४-१०, आसा, मः १)
गुर बिनु पूरा कोइ न पावै ॥५॥ (४१४-११, आसा, मः १)
बालक बिरधि न सुरति परानि ॥ (४१४-११, आसा, मः १)
भरि जोबनि बूडै अभिमानि ॥ (४१४-११, आसा, मः १)
बिनु नावै किआ लहसि निदानि ॥६॥ (४१४-१२, आसा, मः १)
जिस का अनु धनु सहजि न जाना ॥ (४१४-१२, आसा, मः १)
भरमि भुलाना फिरि पछुताना ॥ (४१४-१२, आसा, मः १)
गलि फाही बउरा बउराना ॥७॥ (४१४-१३, आसा, मः १)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे ॥ (४१४-१३, आसा, मः १)
सतिगुरि राखे से वडभागे ॥ (४१४-१३, आसा, मः १)
नानक गुर की चरणी लागे ॥८॥६॥ (४१४-१४, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१४-१४)
गावहि गीते चीति अनीते ॥ (४१४-१४, आसा, मः १)
राग सुणाइ कहावहि बीते ॥ (४१४-१५, आसा, मः १)
बिनु नावै मनि झूठु अनीते ॥१॥ (४१४-१५, आसा, मः १)
कहा चलहु मन रहहु घरे ॥ (४१४-१५, आसा, मः १)
गुरमुखि राम नामि तृपतासे खोजत पावहु सहजि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (४१४-१५, आसा, मः १)
कामु क्रोधु मनि मोहु सरीरा ॥ (४१४-१६, आसा, मः १)
लबु लोभु अहंकारु सु पीरा ॥ (४१४-१६, आसा, मः १)
राम नाम बिनु किउ मनु धीरा ॥२॥ (४१४-१७, आसा, मः १)
अंतरि नावणु साचु पछाणै ॥ (४१४-१७, आसा, मः १)
अंतर की गति गुरमुखि जाणै ॥ (४१४-१७, आसा, मः १)
साच सबद बिनु महलु न पछाणै ॥३॥ (४१४-१८, आसा, मः १)
निरंकार महि आकारु समावै ॥ (४१४-१८, आसा, मः १)
अकल कला सचु साचि टिकावै ॥ (४१४-१९, आसा, मः १)
सो नरु गरभ जोनि नही आवै ॥४॥ (४१४-१९, आसा, मः १)
जहाँ नामु मिलै तह जाउ ॥ (४१४-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४१५

गुर परसादी कर्म कमाउ ॥ (४१५-१, आसा, मः १)
नामे राता हरि गुण गाउ ॥५॥ (४१५-१, आसा, मः १)
गुर सेवा ते आपु पछाता ॥ (४१५-१, आसा, मः १)
अमृत नामु वसिआ सुखदाता ॥ (४१५-१, आसा, मः १)
अनदिनु बाणी नामे राता ॥६॥ (४१५-२, आसा, मः १)
मेरा प्रभु लाए ता को लागै ॥ (४१५-२, आसा, मः १)
हउमै मारे सबदे जागै ॥ (४१५-२, आसा, मः १)
ऐथै ओथै सदा सुखु आगै ॥७॥ (४१५-३, आसा, मः १)
मनु चंचलु बिधि नाही जाणै ॥ (४१५-३, आसा, मः १)
मनमुखि मैला सबदु न पछाणै ॥ (४१५-३, आसा, मः १)
गुरमुखि निरमलु नामु वखाणै ॥८॥ (४१५-४, आसा, मः १)
हरि जीउ आगै करी अरदासि ॥ (४१५-४, आसा, मः १)
साधू जन संगति होइ निवासु ॥ (४१५-४, आसा, मः १)
किलविख दुख काटे हरि नामु प्रगासु ॥९॥ (४१५-५, आसा, मः १)
करि बीचारु आचारु पराता ॥ (४१५-५, आसा, मः १)
सतिगुर बचनी एको जाता ॥ (४१५-५, आसा, मः १)
नानक राम नामि मनु राता ॥१०॥७॥ (४१५-६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१५-६)
मनु मैगलु साकतु देवाना ॥ (४१५-६, आसा, मः १)
बन खंडि माइआ मोहि हैराना ॥ (४१५-७, आसा, मः १)
इत उत जाहि काल के चापे ॥ (४१५-७, आसा, मः १)
गुरमुखि खोजि लहै घरु आपे ॥१॥ (४१५-७, आसा, मः १)
बिनु गुर सबदै मनु नही ठउरा ॥ (४१५-८, आसा, मः १)
सिमरहु राम नामु अति निरमलु अवर तिआगहु हउमै कउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (४१५-८, आसा, मः १)
इहु मनु मुगधु कहहु किउ रहसी ॥ (४१५-९, आसा, मः १)
बिनु समझे जम का दुखु सहसी ॥ (४१५-९, आसा, मः १)
आपे बखसे सतिगुरु मेलै ॥ (४१५-९, आसा, मः १)
कालु कंटकु मारे सचु पेलै ॥२॥ (४१५-१०, आसा, मः १)
इहु मनु करमा इहु मनु धरमा ॥ (४१५-१०, आसा, मः १)
इहु मनु पंच ततु ते जनमा ॥ (४१५-१०, आसा, मः १)
साकतु लोभी इहु मनु मूड़ा ॥ (४१५-११, आसा, मः १)
गुरमुखि नामु जपै मनु रूड़ा ॥३॥ (४१५-११, आसा, मः १)
गुरमुखि मनु असथाने सोई ॥ (४१५-११, आसा, मः १)

गुरमुखि तृभवणि सोझी होई ॥ (४१५-१२, आसा, मः १)
इहु मनु जोगी भोगी तपु तापै ॥ (४१५-१२, आसा, मः १)
गुरमुखि चीनै हरि प्रभु आपै ॥४॥ (४१५-१२, आसा, मः १)
मनु बैरागी हउमै तिआगी ॥ (४१५-१३, आसा, मः १)
घटि घटि मनसा दुबिधा लागी ॥ (४१५-१३, आसा, मः १)
राम रसाइणु गुरमुखि चाखै ॥ (४१५-१३, आसा, मः १)
दरि घरि महली हरि पति राखै ॥५॥ (४१५-१४, आसा, मः १)
इहु मनु राजा सूर संग्रामि ॥ (४१५-१४, आसा, मः १)
इहु मनु निरभउ गुरमुखि नामि ॥ (४१५-१४, आसा, मः १)
मारे पंच अपुनै वसि कीए ॥ (४१५-१५, आसा, मः १)
हउमै ग्रासि इकतु थाइ कीए ॥६॥ (४१५-१५, आसा, मः १)
गुरमुखि राग सुआद अन तिआगे ॥ (४१५-१५, आसा, मः १)
गुरमुखि इहु मनु भगती जागे ॥ (४१५-१६, आसा, मः १)
अनहद सुणि मानिआ सबदु वीचारी ॥ (४१५-१६, आसा, मः १)
आतमु चीन्हि भए निरंकारी ॥७॥ (४१५-१६, आसा, मः १)
इहु मनु निरमलु दरि घरि सोई ॥ (४१५-१७, आसा, मः १)
गुरमुखि भगति भाउ धुनि होई ॥ (४१५-१७, आसा, मः १)
अहिनिसि हरि जसु गुर परसादि ॥ (४१५-१७, आसा, मः १)
घटि घटि सो प्रभु आदि जुगादि ॥८॥ (४१५-१८, आसा, मः १)
राम रसाइणि इहु मनु माता ॥ (४१५-१८, आसा, मः १)
सर्ब रसाइणु गुरमुखि जाता ॥ (४१५-१९, आसा, मः १)
भगति हेतु गुर चरण निवासा ॥ (४१५-१९, आसा, मः १)
नानक हरि जन के दासनि दासा ॥९॥८॥ (४१५-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४१६

आसा महला १ ॥ (४१६-१)
तनु बिनसै धनु का को कहीऐ ॥ (४१६-१, आसा, मः १)
बिनु गुर राम नामु कत लहीऐ ॥ (४१६-१, आसा, मः १)
राम नाम धनु संगि सखाई ॥ (४१६-२, आसा, मः १)
अहिनिसि निरमलु हरि लिव लाई ॥१॥ (४१६-२, आसा, मः १)
राम नाम बिनु कवनु हमारा ॥ (४१६-२, आसा, मः १)
सुख दुख सम करि नामु न छोडउ आपे बखसि मिलावणहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (४१६-३, आसा, मः १)
कनिक कामनी हेतु गवारा ॥ (४१६-३, आसा, मः १)
दुबिधा लागे नामु विसारा ॥ (४१६-४, आसा, मः १)
जिसु तूं बखसहि नामु जपाइ ॥ (४१६-४, आसा, मः १)

दूतु न लागि सकै गुन गाइ ॥२॥ (४१६-४, आसा, मः १)
हरि गुरु दाता राम गुपाला ॥ (४१६-५, आसा, मः १)
जिउ भावै तिउ राखु दइआला ॥ (४१६-५, आसा, मः १)
गुरमुखि रामु मेरै मनि भाइआ ॥ (४१६-५, आसा, मः १)
रोग मिटे दुखु ठाकि रहाइआ ॥३॥ (४१६-६, आसा, मः १)
अवरु न अउखधु तंत न मंता ॥ (४१६-६, आसा, मः १)
हरि हरि सिमरणु किलविख हंता ॥ (४१६-६, आसा, मः १)
तूं आपि भुलावहि नामु विसारि ॥ (४१६-७, आसा, मः १)
तूं आपे राखहि किरपा धारि ॥४॥ (४१६-७, आसा, मः १)
रोगु भरमु भेदु मनि दूजा ॥ (४१६-७, आसा, मः १)
गुर बिनु भरमि जपहि जपु दूजा ॥ (४१६-८, आसा, मः १)
आदि पुरख गुर दरस न देखहि ॥ (४१६-८, आसा, मः १)
विणु गुर सबदै जनमु कि लेखहि ॥५॥ (४१६-८, आसा, मः १)
देखि अचरजु रहे बिसमादि ॥ (४१६-९, आसा, मः १)
घटि घटि सुर नर सहज समाधि ॥ (४१६-९, आसा, मः १)
भरिपुरि धारि रहे मन माही ॥ (४१६-९, आसा, मः १)
तुम समसरि अवरु को नाही ॥६॥ (४१६-१०, आसा, मः १)
जा की भगति हेतु मुखि नामु ॥ (४१६-१०, आसा, मः १)
संत भगत की संगति रामु ॥ (४१६-१०, आसा, मः १)
बंधन तोरे सहजि धिआनु ॥ (४१६-११, आसा, मः १)
छूटै गुरमुखि हरि गुर गिआनु ॥७॥ (४१६-११, आसा, मः १)
ना जमदूत दूखु तिसु लागै ॥ (४१६-११, आसा, मः १)
जो जनु राम नामि लिव जागै ॥ (४१६-१२, आसा, मः १)
भगति वछलु भगता हरि संगि ॥ (४१६-१२, आसा, मः १)
नानक मुकति भए हरि रंगि ॥८॥९॥ (४१६-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ इकतुकी ॥ (४१६-१३)
गुरु सेवे सो ठाकुर जानै ॥ (४१६-१३, आसा, मः १)
दूखु मिटै सचु सबदि पछानै ॥१॥ (४१६-१३, आसा, मः १)
रामु जपहु मेरी सखी सखैनी ॥ (४१६-१४, आसा, मः १)
सतिगुरु सेवि देखहु प्रभु नैनी ॥१॥ रहाउ ॥ (४१६-१४, आसा, मः १)
बंधन मात पिता संसारि ॥ (४१६-१४, आसा, मः १)
बंधन सुत कंनिआ अरु नारि ॥२॥ (४१६-१५, आसा, मः १)
बंधन कर्म धर्म हउ कीआ ॥ (४१६-१५, आसा, मः १)
बंधन पुतु कलतु मनि बीआ ॥३॥ (४१६-१५, आसा, मः १)
बंधन किरखी करहि किरसान ॥ (४१६-१६, आसा, मः १)

हउमै डन्नु सहै राजा मंगै दान ॥४॥ (४१६-१६, आसा, मः १)
बंधन सउदा अणवीचारी ॥ (४१६-१६, आसा, मः १)
तिपति नाही माइआ मोह पसारी ॥५॥ (४१६-१७, आसा, मः १)
बंधन साह संचहि धनु जाइ ॥ (४१६-१७, आसा, मः १)
बिनु हरि भगति न पवई थाइ ॥६॥ (४१६-१७, आसा, मः १)
बंधन बेदु बादु अहंकार ॥ (४१६-१८, आसा, मः १)
बंधनि बिनसै मोह विकार ॥७॥ (४१६-१८, आसा, मः १)
नानक राम नाम सरणाई ॥ (४१६-१८, आसा, मः १)
सतिगुरि राखे बंधु न पाई ॥८॥१०॥ (४१६-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४१७

रागु आसा महला १ असटपदीआ घरु ३ (४१७-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४१७-१)
जिन सिरि सोहनि पटीआ माँगी पाइ संधूरु ॥ (४१७-२, आसा, मः १)
से सिर काती मुन्नीअन्हि गल विचि आवै धूड़ि ॥ (४१७-२, आसा, मः १)
महला अंदरि होदीआ हुणि बहणि न मिलन्हि हदूरि ॥१॥ (४१७-२, आसा, मः १)
आदेसु बाबा आदेसु ॥ (४१७-३, आसा, मः १)
आदि पुरख तेरा अंतु न पाइआ करि करि देखहि वेस ॥१॥ रहाउ ॥ (४१७-३, आसा, मः १)
जदहु सीआ वीआहीआ लाड़े सोहनि पासि ॥ (४१७-४, आसा, मः १)
हीडोली चड़ि आईआ दंद खंड कीते रासि ॥ (४१७-४, आसा, मः १)
उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि ॥२॥ (४१७-५, आसा, मः १)
इकु लखु लहन्हि बहिठीआ लखु लहन्हि खड़ीआ ॥ (४१७-५, आसा, मः १)
गरी छुहारे खाँदीआ माणन्हि सेजड़ीआ ॥ (४१७-६, आसा, मः १)
तिन्ह गलि सिलका पाईआ तुटन्हि मोतसरीआ ॥३॥ (४१७-६, आसा, मः १)
धनु जोबनु दुइ वैरी होए जिन्ही रखे रंगु लाइ ॥ (४१७-७, आसा, मः १)
दूता नो फुरमाइआ लै चले पति गवाइ ॥ (४१७-७, आसा, मः १)
जे तिसु भावै दे वडिआई जे भावै देइ सजाइ ॥४॥ (४१७-८, आसा, मः १)
अगो दे जे चेतीऐ ताँ काइतु मिलै सजाइ ॥ (४१७-८, आसा, मः १)
साहाँ सुरति गवाईआ रंगि तमासै चाइ ॥ (४१७-९, आसा, मः १)
बाबरवाणी फिरि गई कुइरु न रोटी खाइ ॥५॥ (४१७-९, आसा, मः १)
इकना वखत खुआईअहि इकन्हा पूजा जाइ ॥ (४१७-१०, आसा, मः १)
चउके विणु हिंदवाणीआ किउ टिके कढहि नाइ ॥ (४१७-१०, आसा, मः १)
रामु न कबहू चेतिओ हुणि कहणि न मिलै खुदाइ ॥६॥ (४१७-१०, आसा, मः १)
इकि घरि आवहि आपणै इकि मिलि मिलि पुछहि सुख ॥ (४१७-११, आसा, मः १)
इकन्हा एहो लिखिआ बहि बहि रोवहि दुख ॥ (४१७-१२, आसा, मः १)

जो तिसु भावै सो थीऐ नानक किआ मानुख ॥७॥११॥ (४१७-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१७-१३)
कहा सु खेल तबेला घोड़े कहा भेरी सहनाई ॥ (४१७-१३, आसा, मः १)
कहा सु तेगबंद गाडेरड़ि कहा सु लाल कवाई ॥ (४१७-१३, आसा, मः १)
कहा सु आरसीआ मुह बंके ऐथै दिसहि नाही ॥१॥ (४१७-१४, आसा, मः १)
इहु जगु तेरा तू गोसाई ॥ (४१७-१४, आसा, मः १)
एक घड़ी महि थापि उथापे जरु वंडि देवै भाँई ॥१॥ रहाउ ॥ (४१७-१४, आसा, मः १)
कहाँ सु घर दर मंडप महला कहा सु बंक सराई ॥ (४१७-१५, आसा, मः १)
कहाँ सु सेज सुखाली कामणि जिसु वेखि नीद न पाई ॥ (४१७-१६, आसा, मः १)
कहा सु पान तम्बोली हरमा होईआ छाई माई ॥२॥ (४१७-१६, आसा, मः १)
इसु जर कारणि घणी विगुती इनि जर घणी खुआई ॥ (४१७-१७, आसा, मः १)
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥ (४१७-१७, आसा, मः १)
जिस नो आपि खुआए करता खुसि लए चंगिआई ॥३॥ (४१७-१८, आसा, मः १)
कोटी हू पीर वरजि रहाए जा मीरु सुणिआ धाइआ ॥ (४१७-१८, आसा, मः १)

पन्ना ४१८

थान मुकाम जले बिज मंदर मुछि मुछि कुइर रुलाइआ ॥ (४१८-१, आसा, मः १)
कोई मुगलु न होआ अंधा किनै न परचा लाइआ ॥४॥ (४१८-१, आसा, मः १)
मुगल पठाणा भई लड़ाई रण महि तेग वगाई ॥ (४१८-२, आसा, मः १)
ओन्ही तुपक ताणि चलाई ओन्ही हसति चिड़ाई ॥ (४१८-२, आसा, मः १)
जिन्ह की चीरी दरगह पाटी तिन्हा मरणा भाई ॥५॥ (४१८-३, आसा, मः १)
इक हिंदवाणी अवर तुरकाणी भटिआणी ठकुराणी ॥ (४१८-३, आसा, मः १)
इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी ॥ (४१८-४, आसा, मः १)
जिन्ह के बंके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी ॥६॥ (४१८-४, आसा, मः १)
आपे करे कराए करता किस नो आखि सुणाईऐ ॥ (४१८-५, आसा, मः १)
दुखु सुखु तेरै भाणै होवै किस थै जाइ रूआईऐ ॥ (४१८-५, आसा, मः १)
हुकमी हुकमि चलाए विगसै नानक लिखिआ पाईऐ ॥७॥१२॥ (४१८-६, आसा, मः १)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४१८-७)
आसा काफी महला १ घरु ८ असटपदीआ ॥ (४१८-७)
जैसे गोइलि गोइली तैसे संसारा ॥ (४१८-७, आसा काफी, मः १)
कूड़ु कमावहि आदमी बाँधहि घर बारा ॥१॥ (४१८-८, आसा काफी, मः १)
जागहु जागहु सूतिहो चलिआ वणजारा ॥१॥ रहाउ ॥ (४१८-८, आसा काफी, मः १)
नीत नीत घर बाँधीअहि जे रहणा होई ॥ (४१८-९, आसा काफी, मः १)
पिंडु पवै जीउ चलसी जे जाणै कोई ॥२॥ (४१८-९, आसा काफी, मः १)
ओही ओही किआ करहु है होसी सोई ॥ (४१८-९, आसा काफी, मः १)

तुम रोवहुगे ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई ॥३॥ (४१८-१०, आसा काफी, मः १)
धंधा पिटिहु भाईहो तुम्ह कूड़ु कमावहु ॥ (४१८-१०, आसा काफी, मः १)
ओहु न सुणई कत ही तुम्ह लोक सुणावहु ॥४॥ (४१८-११, आसा काफी, मः १)
जिस ते सुता नानका जागाए सोई ॥ (४१८-११, आसा काफी, मः १)
जे घरु बूझै आपणा ताँ नीद न होई ॥५॥ (४१८-११, आसा काफी, मः १)
जे चलदा लै चलिआ किछु सम्पै नाले ॥ (४१८-१२, आसा काफी, मः १)
ता धनु संचहु देखि कै बूझहु बीचारे ॥६॥ (४१८-१२, आसा काफी, मः १)
वणजु करहु मखसूदु लैहु मत पछोतावहु ॥ (४१८-१२, आसा काफी, मः १)
अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥७॥ (४१८-१३, आसा काफी, मः १)
धरमु भूमि सतु बीजु करि ऐसी किरस कमावहु ॥ (४१८-१३, आसा काफी, मः १)
ताँ वापारी जाणीअहु लाहा लै जावहु ॥८॥ (४१८-१४, आसा काफी, मः १)
करमु होवै सतिगुरु मिलै बूझै बीचारा ॥ (४१८-१४, आसा काफी, मः १)
नामु वखाणै सुणे नामु नामे बिउहारा ॥९॥ (४१८-१५, आसा काफी, मः १)
जिउ लाहा तोटा तिवै वाट चलदी आई ॥ (४१८-१५, आसा काफी, मः १)
जो तिसु भावै नानका साई वडिआई ॥१०॥१३॥ (४१८-१६, आसा काफी, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१८-१६)
चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ॥ (४१८-१६, आसा, मः १)
जे तुधु भावै साहिबा तू मै हउ तैडा ॥१॥ (४१८-१७, आसा, मः १)
दरु बीभा मै नीम्हि को कै करी सलामु ॥ (४१८-१७, आसा, मः १)
हिको मैडा तू धणी साचा मुखि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (४१८-१७, आसा, मः १)
सिधा सेवनि सिध पीर मागहि रिधि सिधि ॥ (४१८-१८, आसा, मः १)
मै इकु नामु न वीसरै साचे गुर बुधि ॥२॥ (४१८-१८, आसा, मः १)

पन्ना ४१९

जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥ (४१९-१, आसा, मः १)
गुर का सबदु न चीन्ही ततु सारु निरंतर ॥३॥ (४१९-१, आसा, मः १)
पंडित पाधे जोइसी नित पड़हहि पुराणा ॥ (४१९-२, आसा, मः १)
अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रह्मु लुकाणा ॥४॥ (४१९-२, आसा, मः १)
इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीर्थ वासा ॥ (४१९-२, आसा, मः १)
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥५॥ (४१९-३, आसा, मः १)
इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥ (४१९-३, आसा, मः १)
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥६॥ (४१९-४, आसा, मः १)
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥ (४१९-४, आसा, मः १)
नामु दानु इसनानु दृड़ु हरि भगति सु जागे ॥७॥ (४१९-५, आसा, मः १)
गुर ते दरु घरु जाणीऐ सो जाइ सिञाणै ॥ (४१९-५, आसा, मः १)

नानक नामु न वीसरै साचे मनु मानै ॥८॥१४॥ (४१९-६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१९-६)
मनसा मनहि समाइले भउजलु सचि तरणा ॥ (४१९-७, आसा, मः १)
आदि जुगादि दइआलु तू ठाकुर तेरी सरणा ॥१॥ (४१९-७, आसा, मः १)
तू दातौ हम जाचिका हरि दरसनु दीजै ॥ (४१९-८, आसा, मः १)
गुरमुखि नामु धिआईऐ मन मंदरु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (४१९-८, आसा, मः १)
कूड़ा लालचु छोडीऐ तउ साचु पछाणै ॥ (४१९-९, आसा, मः १)
गुर कै सबदि समाईऐ परमारथु जाणै ॥२॥ (४१९-९, आसा, मः १)
इहु मनु राजा लोभीआ लुभतउ लोभाई ॥ (४१९-९, आसा, मः १)
गुरमुखि लोभु निवारीऐ हरि सिउ बणि आई ॥३॥ (४१९-१०, आसा, मः १)
कलरि खेती बीजीऐ किउ लाहा पावै ॥ (४१९-१०, आसा, मः १)
मनमुखु सचि न भीजई कूड़ु कूड़ि गडावै ॥४॥ (४१९-११, आसा, मः १)
लालचु छोडहु अंधिहो लालचि दुखु भारी ॥ (४१९-११, आसा, मः १)
साचौ साहिबु मनि वसै हउमै बिखु मारी ॥५॥ (४१९-१२, आसा, मः १)
दुबिधा छोडि कुवाटड़ी मूसहुगे भाई ॥ (४१९-१२, आसा, मः १)
अहिनिसि नामु सलाहीऐ सतिगुर सरणाई ॥६॥ (४१९-१३, आसा, मः १)
मनमुख पथरु सैलु है ध्रिगु जीवणु फीका ॥ (४१९-१३, आसा, मः १)
जल महि केता राखीऐ अभ अंतरि सूका ॥७॥ (४१९-१४, आसा, मः १)
हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ ॥ (४१९-१४, आसा, मः १)
नानक नामु न वीसरै मथि अमृतु पीआ ॥८॥१५॥ (४१९-१४, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४१९-१५)
चले चलणहार वाट वटाइआ ॥ (४१९-१५, आसा, मः १)
धंधु पिटे संसारु सचु न भाइआ ॥१॥ (४१९-१५, आसा, मः १)
किआ भवीऐ किआ ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ ॥ (४१९-१६, आसा, मः १)
ममता मोहु विसरजिआ अपनै घरि आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४१९-१६, आसा, मः १)
सचि मिलै सचिआरु कूड़ि न पाईऐ ॥ (४१९-१७, आसा, मः १)
सचे सिउ चितु लाइ बहुड़ि न आईऐ ॥२॥ (४१९-१७, आसा, मः १)
मोइआ कउ किआ रोवहु रोइ न जाणहू ॥ (४१९-१८, आसा, मः १)
रोवहु सचु सलाहि हुकमु पछाणहू ॥३॥ (४१९-१८, आसा, मः १)
हुकमी वजहु लिखाइ आइआ जाणीऐ ॥ (४१९-१९, आसा, मः १)
लाहा पलै पाइ हुकमु सिञाणीऐ ॥४॥ (४१९-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४२०

हुकमी पैधा जाइ दरगह भाणीऐ ॥ (४२०-१, आसा, मः १)
हुकमे ही सिरि मार बंदि रबाणीऐ ॥५॥ (४२०-१, आसा, मः १)

लाहा सचु निआउ मनि वसाईऐ ॥ (४२०-१, आसा, मः १)
लिखिआ पलै पाइ गरबु वञाईऐ ॥६॥ (४२०-२, आसा, मः १)
मनमुखीआ सिरि मार वादि खपाईऐ ॥ (४२०-२, आसा, मः १)
ठगि मुठी कूड़िआर बंन्हि चलाईऐ ॥७॥ (४२०-२, आसा, मः १)
साहिबु रिदै वसाइ न पछोतावही ॥ (४२०-३, आसा, मः १)
गुनहाँ बखसणहारु सबदु कमावही ॥८॥ (४२०-३, आसा, मः १)
नानकु मंगै सचु गुरमुखि घालीऐ ॥ (४२०-४, आसा, मः १)
मै तुझ बिनु अवरु न कोइ नदरि निहालीऐ ॥६॥१६॥ (४२०-४, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४२०-५)
किआ जंगलु ढूढी जाइ मै घरि बनु हरीआवला ॥ (४२०-५, आसा, मः १)
सचि टिकै घरि आइ सबदि उतावला ॥१॥ (४२०-५, आसा, मः १)
जह देखा तह सोइ अवरु न जाणीऐ ॥ (४२०-६, आसा, मः १)
गुर की कार कमाइ महलु पछाणीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (४२०-६, आसा, मः १)
आपि मिलावै सचु ता मनि भावई ॥ (४२०-७, आसा, मः १)
चलै सदा रजाइ अंकि समावई ॥२॥ (४२०-७, आसा, मः १)
सचा साहिबु मनि वसै वसिआ मनि सोई ॥ (४२०-७, आसा, मः १)
आपे दे वडिआईआ दे तोटि न होई ॥३॥ (४२०-८, आसा, मः १)
अबे तबे की चाकरी किउ दरगह पावै ॥ (४२०-८, आसा, मः १)
पथर की बेड़ी जे चड़ै भर नालि बुडावै ॥४॥ (४२०-६, आसा, मः १)
आपनड़ा मनु वेचीऐ सिरु दीजै नाले ॥ (४२०-६, आसा, मः १)
गुरमुखि वसतु पछाणीऐ अपना घरु भाले ॥५॥ (४२०-१०, आसा, मः १)
जम्मण मरणा आखीऐ तिनि करतै कीआ ॥ (४२०-१०, आसा, मः १)
आपु गवाइआ मरि रहे फिरि मरणु न थीआ ॥६॥ (४२०-११, आसा, मः १)
साई कार कमावणी धुर की फुरमाई ॥ (४२०-११, आसा, मः १)
जे मनु सतिगुर दे मिलै किनि कीमति पाई ॥७॥ (४२०-१२, आसा, मः १)
रतना पारखु सो धणी तिनि कीमति पाई ॥ (४२०-१२, आसा, मः १)
नानक साहिबु मनि वसै सची वडिआई ॥८॥१७॥ (४२०-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४२०-१३)
जिन्ही नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई ॥ (४२०-१३, आसा, मः १)
मूलु छोडि डाली लगे किआ पावहि छाई ॥१॥ (४२०-१४, आसा, मः १)
बिनु नावै किउ छूटीऐ जे जाणै कोई ॥ (४२०-१४, आसा, मः १)
गुरमुखि होइ त छूटीऐ मनमुखि पति खोई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२०-१५, आसा, मः १)
जिन्ही एको सेविआ पूरी मति भाई ॥ (४२०-१५, आसा, मः १)
आदि जुगादि निरंजना जन हरि सरणाई ॥२॥ (४२०-१५, आसा, मः १)
साहिबु मेरा एकु है अवरु नही भाई ॥ (४२०-१६, आसा, मः १)

किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई ॥३॥ (४२०-१६, आसा, मः १)
गुर बिनु किनै न पाइओ केती कहै कहाए ॥ (४२०-१७, आसा, मः १)
आपि दिखावै वाटड़ीं सची भगति दृड़ाए ॥४॥ (४२०-१७, आसा, मः १)
मनमुखु जे समझाईऐ भी उझड़ि जाए ॥ (४२०-१८, आसा, मः १)
बिनु हरि नाम न छूटसी मरि नरक समाए ॥५॥ (४२०-१८, आसा, मः १)
जनमि मरै भरमाईऐ हरि नामु न लेवै ॥ (४२०-१९, आसा, मः १)
ता की कीमति ना पवै बिनु गुर की सेवै ॥६॥ (४२०-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४२१

जेही सेव कराईऐ करणी भी साई ॥ (४२१-१, आसा, मः १)
आपि करे किसु आखीऐ वेखै वडिआई ॥७॥ (४२१-१, आसा, मः १)
गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए ॥ (४२१-१, आसा, मः १)
नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए ॥८॥१८॥ (४२१-२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४२१-२)
रूड़ो ठाकुर माहरो रूड़ी गुरबाणी ॥ (४२१-२, आसा, मः १)
वडै भागि सतिगुरु मिलै पाईऐ पदु निरबाणी ॥१॥ (४२१-३, आसा, मः १)
मै ओलगीआ ओलगी हम छोरू थारे ॥ (४२१-३, आसा, मः १)
जिउ तूं राखहि तिउ रहा मुखि नामु हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (४२१-४, आसा, मः १)
दरसन की पिआसा घणी भाणै मनि भाईऐ ॥ (४२१-४, आसा, मः १)
मेरे ठाकुर हाथि वडिआईआ भाणै पति पाईऐ ॥२॥ (४२१-५, आसा, मः १)
साचउ दूरि न जाणीऐ अंतरि है सोई ॥ (४२१-५, आसा, मः १)
जह देखा तह रवि रहे किनि कीमति होई ॥३॥ (४२१-६, आसा, मः १)
आपि करे आपे हरे वेखै वडिआई ॥ (४२१-६, आसा, मः १)
गुरमुखि होइ निहालीऐ इउ कीमति पाई ॥४॥ (४२१-६, आसा, मः १)
जीवदिआ लाहा मिलै गुर कार कमावै ॥ (४२१-७, आसा, मः १)
पूरबि होवै लिखिआ ता सतिगुरु पावै ॥५॥ (४२१-७, आसा, मः १)
मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ॥ (४२१-८, आसा, मः १)
मनमुखु अंधु न चेतई किउ दरसनु पाए ॥६॥ (४२१-८, आसा, मः १)
ता जगि आइआ जाणीऐ साचै लिव लाए ॥ (४२१-९, आसा, मः १)
गुर भेटे पारसु भए जोती जोति मिलाए ॥७॥ (४२१-९, आसा, मः १)
अहिनिसि रहै निरालमो कार धुर की करणी ॥ (४२१-९, आसा, मः १)
नानक नामि संतोखीआ राते हरि चरणी ॥८॥१९॥ (४२१-१०, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४२१-१०)
केता आखणु आखीऐ ता के अंत न जाणा ॥ (४२१-११, आसा, मः १)
मै निधरिआ धर एक तूं मै ताणु सताणा ॥१॥ (४२१-११, आसा, मः १)

नानक की अरदासि है सच नामि सुहेला ॥ (४२१-११, आसा, मः १)
आपु गइआ सोझी पई गुर सबदी मेला ॥१॥ रहाउ ॥ (४२१-१२, आसा, मः १)
हउमै गरबु गवाईऐ पाईऐ वीचारु ॥ (४२१-१२, आसा, मः १)
साहिब सिउ मनु मानिआ दे साचु अधारु ॥२॥ (४२१-१३, आसा, मः १)
अहिनिसि नामि संतोखीआ सेवा सचु साई ॥ (४२१-१३, आसा, मः १)
ता कउ बिघनु न लागई चालै हुकमि रजाई ॥३॥ (४२१-१४, आसा, मः १)
हुकमि रजाई जो चलै सो पवै खजानै ॥ (४२१-१४, आसा, मः १)
खोटे ठवर न पाइनी रले जूठानै ॥४॥ (४२१-१५, आसा, मः १)
नित नित खरा समालीऐ सचु सउदा पाईऐ ॥ (४२१-१५, आसा, मः १)
खोटे नदरि न आवनी ले अगनि जलाईऐ ॥५॥ (४२१-१५, आसा, मः १)
जिनी आतमु चीनिआ परमातमु सोई ॥ (४२१-१६, आसा, मः १)
एको अमृत बिरखु है फलु अमृतु होई ॥६॥ (४२१-१६, आसा, मः १)
अमृत फलु जिनी चाखिआ सचि रहे अघाई ॥ (४२१-१७, आसा, मः १)
तिन्ना भरमु न भेदु है हरि रसन रसाई ॥७॥ (४२१-१७, आसा, मः १)
हुकमि संजोगी आइआ चलु सदा रजाई ॥ (४२१-१८, आसा, मः १)
अउगणिआरे कउ गुणु नानकै सचु मिलै वडाई ॥८॥२०॥ (४२१-१८, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४२१-१९)
मनु रातउ हरि नाइ सचु वखाणिआ ॥ (४२१-१९, आसा, मः १)
लोका दा किआ जाइ जा तुधु भाणिआ ॥१॥ (४२१-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४२२

जउ लगु जीउ पराण सचु धिआईऐ ॥ (४२२-१, आसा, मः १)
लाहा हरि गुण गाइ मिलै सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (४२२-१, आसा, मः १)
सची तेरी कार देहि दइआल तूं ॥ (४२२-२, आसा, मः १)
हउ जीवा तुधु सालाहि मै टेक अधारु तूं ॥२॥ (४२२-२, आसा, मः १)
दरि सेवकु दरवानु दरदु तूं जाणही ॥ (४२२-३, आसा, मः १)
भगति तेरी हैरानु दरदु गवावही ॥३॥ (४२२-३, आसा, मः १)
दरगह नामु हदूरि गुरमुखि जाणसी ॥ (४२२-३, आसा, मः १)
वेला सचु परवाणु सबदु पछाणसी ॥४॥ (४२२-४, आसा, मः १)
सतु संतोखु करि भाउ तोसा हरि नामु सेइ ॥ (४२२-४, आसा, मः १)
मनहु छोडि विकार सचा सचु देइ ॥५॥ (४२२-५, आसा, मः १)
सचे सचा नेहु सचै लाइआ ॥ (४२२-५, आसा, मः १)
आपे करे निआउ जो तिसु भाइआ ॥६॥ (४२२-५, आसा, मः १)
सचे सची दाति देहि दइआलु है ॥ (४२२-६, आसा, मः १)
तिसु सेवी दिनु राति नामु अमोलु है ॥७॥ (४२२-६, आसा, मः १)

तूं उतमु हउ नीचु सेवकु काँढीआ ॥ (४२२-७, आसा, मः १)
नानक नदरि करेहु मिलै सचु वाँढीआ ॥८॥२१॥ (४२२-७, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४२२-८)
आवण जाणा किउ रहै किउ मेला होई ॥ (४२२-८, आसा, मः १)
जनम मरण का दुखु घणो नित सहसा दोई ॥१॥ (४२२-८, आसा, मः १)
बिनु नावै किआ जीवना फिटु ध्रिगु चतुराई ॥ (४२२-६, आसा, मः १)
सतिगुर साधु न सेविआ हरि भगति न भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२२-६, आसा, मः १)
आवणु जावणु तउ रहै पाईऐ गुरु पूरा ॥ (४२२-१०, आसा, मः १)
राम नामु धनु रासि देइ बिनसै भ्रमु कूरा ॥२॥ (४२२-१०, आसा, मः १)
संत जना कउ मिलि रहै धनु धनु जसु गाए ॥ (४२२-११, आसा, मः १)
आदि पुरखु अपरम्परा गुरमुखि हरि पाए ॥३॥ (४२२-११, आसा, मः १)
नटूऐ साँगु बणाइआ बाजी संसारा ॥ (४२२-१२, आसा, मः १)
खिनु पलु बाजी देखीऐ उझरत नही बारा ॥४॥ (४२२-१२, आसा, मः १)
हउमै चउपड़ि खेलणा झूठे अहंकारा ॥ (४२२-१३, आसा, मः १)
सभु जगु हारै सो जिणै गुर सबदु वीचारा ॥५॥ (४२२-१३, आसा, मः १)
जिउ अंधुलै हथि टोहणी हरि नामु हमारै ॥ (४२२-१३, आसा, मः १)
राम नामु हरि टेक है निसि दउत सवारै ॥६॥ (४२२-१४, आसा, मः १)
जिउ तूं राखहि तिउ रहा हरि नाम अधारा ॥ (४२२-१४, आसा, मः १)
अंति सखाई पाइआ जन मुकति दुआरा ॥७॥ (४२२-१५, आसा, मः १)
जनम मरण दुख मेटिआ जपि नामु मुरारे ॥ (४२२-१५, आसा, मः १)
नानक नामु न वीसरै पूरा गुरु तारे ॥८॥२२॥ (४२२-१६, आसा, मः १)
आसा महला ३ असटपदीआ घरु २ (४२२-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४२२-१७)
सासतु बेदु सिम्मृति सरु तेरा सुरसरी चरण समाणी ॥ (४२२-१८, आसा, मः ३)
साखा तीनि मूलु मति रावै तूं ताँ सर्ब विडाणी ॥१॥ (४२२-१८, आसा, मः ३)
ता के चरण जपै जनु नानकु बोले अमृत बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (४२२-१६, आसा, मः ३)
तेतीस करोड़ी दास तुम्हारे रिधि सिधि प्राण अधारी ॥ (४२२-१६, आसा, मः ३)

पन्ना ४२३

ता के रूप न जाही लखणे किआ करि आखि वीचारी ॥२॥ (४२३-१, आसा, मः ३)
तीनि गुणा तेरे जुग ही अंतरि चारे तेरीआ खाणी ॥ (४२३-१, आसा, मः ३)
करमु होवै ता पर्म पदु पाईऐ कथे अकथ कहाणी ॥३॥ (४२३-२, आसा, मः ३)
तूं करता कीआ सभु तेरा किआ को करे पराणी ॥ (४२३-३, आसा, मः ३)
जा कउ नदरि करहि तूं अपणी साई सचि समाणी ॥४॥ (४२३-३, आसा, मः ३)
नामु तेरा सभु कोई लेतु है जेती आवण जाणी ॥ (४२३-४, आसा, मः ३)

जा तुधु भावै ता गुरमुखि बूझै होर मनमुखि फिरै इआणी ॥५॥ (४२३-४, आसा, मः ३)
चारे वेद ब्रह्मै कउ दीए पड़ि पड़ि करे वीचारी ॥ (४२३-५, आसा, मः ३)
ता का हुकमु न बूझै बपुड़ा नरकि सुरगि अवतारी ॥६॥ (४२३-५, आसा, मः ३)
जुगह जुगह के राजे कीए गावहि करि अवतारी ॥ (४२३-६, आसा, मः ३)
तिन भी अंतु न पाइआ ता का किआ करि आखि वीचारी ॥७॥ (४२३-६, आसा, मः ३)
तूं सचा तेरा कीआ सभु साचा देहि त साचु वखाणी ॥ (४२३-७, आसा, मः ३)
जा कउ सचु बुझावहि अपणा सहजे नामि समाणी ॥८॥१॥२३॥ (४२३-८, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२३-८)
सतिगुर हमरा भरमु गवाइआ ॥ (४२३-९, आसा, मः ३)
हरि नामु निरंजनु मंनि वसाइआ ॥ (४२३-९, आसा, मः ३)
सबदु चीनि सदा सुखु पाइआ ॥१॥ (४२३-९, आसा, मः ३)
सुणि मन मेरे ततु गिआनु ॥ (४२३-१०, आसा, मः ३)
देवण वाला सभ बिधि जाणै गुरमुखि पाईऐ नामु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (४२३-१०, आसा, मः ३)
सतिगुर भेटे की वडिआई ॥ (४२३-११, आसा, मः ३)
जिनि ममता अगनि तृसना बुझाई ॥ (४२३-११, आसा, मः ३)
सहजे माता हरि गुण गाई ॥२॥ (४२३-११, आसा, मः ३)
विणु गुर पूरे कोइ न जाणी ॥ (४२३-१२, आसा, मः ३)
माइआ मोहि दूजै लोभाणी ॥ (४२३-१२, आसा, मः ३)
गुरमुखि नामु मिलै हरि बाणी ॥३॥ (४२३-१२, आसा, मः ३)
गुर सेवा तपाँ सिरि तपु सारु ॥ (४२३-१३, आसा, मः ३)
हरि जीउ मनि वसै सभ दूख विसारणहारु ॥ (४२३-१३, आसा, मः ३)
दरि साचै दीसै सचिआरु ॥४॥ (४२३-१३, आसा, मः ३)
गुर सेवा ते तृभवण सोझी होइ ॥ (४२३-१४, आसा, मः ३)
आपु पछाणि हरि पावै सोइ ॥ (४२३-१४, आसा, मः ३)
साची बाणी महलु परापति होइ ॥५॥ (४२३-१४, आसा, मः ३)
गुर सेवा ते सभ कुल उधारे ॥ (४२३-१५, आसा, मः ३)
निर्मल नामु रखै उरि धारे ॥ (४२३-१५, आसा, मः ३)
साची सोभा साचि दुआरे ॥६॥ (४२३-१५, आसा, मः ३)
से वडभागी जि गुरि सेवा लाए ॥ (४२३-१६, आसा, मः ३)
अनदिनु भगति सचु नामु दृड़ाए ॥ (४२३-१६, आसा, मः ३)
नामे उधरे कुल सबाए ॥७॥ (४२३-१६, आसा, मः ३)
नानकु साचु कहै वीचारु ॥ (४२३-१७, आसा, मः ३)
हरि का नामु रखहु उरि धारि ॥ (४२३-१७, आसा, मः ३)
हरि भगती राते मोख दुआरु ॥८॥२॥२४॥ (४२३-१७, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२३-१८)

आसा आस करे सभु कोई ॥ (४२३-१८, आसा, मः ३)
हुकमै बूझै निरासा होई ॥ (४२३-१८, आसा, मः ३)
आसा विचि सुते कई लोई ॥ (४२३-१९, आसा, मः ३)
सो जागै जागावै सोई ॥१॥ (४२३-१९, आसा, मः ३)
सतिगुरि नामु बुझाइआ विणु नावै भुख न जाई ॥ (४२३-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ४२४

नामे तृसना अगनि बुझै नामु मिलै तिसै रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२४-१, आसा, मः ३)
कलि कीरति सबदु पछानु ॥ (४२४-१, आसा, मः ३)
एहा भगति चूकै अभिमानु ॥ (४२४-२, आसा, मः ३)
सतिगुरु सेविऐ होवै परवानु ॥ (४२४-२, आसा, मः ३)
जिनि आसा कीती तिस नो जानु ॥२॥ (४२४-२, आसा, मः ३)
तिसु किआ दीजै जि सबदु सुणाए ॥ (४२४-२, आसा, मः ३)
करि किरपा नामु मंनि वसाए ॥ (४२४-३, आसा, मः ३)
इहु सिरु दीजै आपु गवाए ॥ (४२४-३, आसा, मः ३)
हुकमै बूझे सदा सुखु पाए ॥३॥ (४२४-३, आसा, मः ३)
आपि करे तै आपि कराए ॥ (४२४-४, आसा, मः ३)
आपे गुरमुखि नामु वसाए ॥ (४२४-४, आसा, मः ३)
आपि भुलावै आपि मारगि पाए ॥ (४२४-४, आसा, मः ३)
सचै सबदि सचि समाए ॥४॥ (४२४-५, आसा, मः ३)
सचा सबदु सची है बाणी ॥ (४२४-५, आसा, मः ३)
गुरमुखि जुगि जुगि आखि वखाणी ॥ (४२४-५, आसा, मः ३)
मनमुखि मोहि भरमि भोलाणी ॥ (४२४-६, आसा, मः ३)
बिनु नावै सभ फिरै बउराणी ॥५॥ (४२४-६, आसा, मः ३)
तीनि भवन महि एका माइआ ॥ (४२४-६, आसा, मः ३)
मूरखि पड़ि पड़ि दूजा भाउ दृड़ाइआ ॥ (४२४-७, आसा, मः ३)
बहु कर्म कमावै दुखु सबाइआ ॥ (४२४-७, आसा, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ॥६॥ (४२४-७, आसा, मः ३)
अमृतु मीठा सबदु वीचारि ॥ (४२४-८, आसा, मः ३)
अनदिनु भोगे हउमै मारि ॥ (४२४-८, आसा, मः ३)
सहजि अनंदि किरपा धारि ॥ (४२४-८, आसा, मः ३)
नामि रते सदा सचि पिआरि ॥७॥ (४२४-९, आसा, मः ३)
हरि जपि पड़ीऐ गुर सबदु वीचारि ॥ (४२४-९, आसा, मः ३)
हरि जपि पड़ीऐ हउमै मारि ॥ (४२४-९, आसा, मः ३)
हरि जपीऐ भइ सचि पिआरि ॥ (४२४-१०, आसा, मः ३)

नानक नामु गुरमति उर धारि ॥८॥३॥२५॥ (४२४-१०, आसा, मः ३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४२४-११)
रागु आसा महला ३ असटपदीआ घरु ८ काफी ॥ (४२४-११)
गुर ते साँति ऊपजै जिनि तृसना अगनि बुझाई ॥ (४२४-११, आसा काफी, मः ३)
गुर ते नामु पाईऐ वडी वडिआई ॥१॥ (४२४-१२, आसा काफी, मः ३)
एको नामु चेति मेरे भाई ॥ (४२४-१२, आसा काफी, मः ३)
जगतु जलंदा देखि कै भजि पए सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२४-१२, आसा काफी, मः ३)
गुर ते गिआनु ऊपजै महा ततु बीचारा ॥ (४२४-१३, आसा काफी, मः ३)
गुर ते घरु दरु पाइआ भगती भरे भंडारा ॥२॥ (४२४-१३, आसा काफी, मः ३)
गुरमुखि नामु धिआईऐ बूझै वीचारा ॥ (४२४-१४, आसा काफी, मः ३)
गुरमुखि भगति सलाह है अंतरि सबदु अपारा ॥३॥ (४२४-१४, आसा काफी, मः ३)
गुरमुखि सूखु ऊपजै दुखु कदे न होई ॥ (४२४-१५, आसा काफी, मः ३)
गुरमुखि हउमै मारीऐ मनु निरमलु होई ॥४॥ (४२४-१५, आसा काफी, मः ३)
सतिगुरि मिलिऐ आपु गइआ तृभवण सोझी पाई ॥ (४२४-१६, आसा काफी, मः ३)
निर्मल जोति पसरि रही जोती जोति मिलाई ॥५॥ (४२४-१६, आसा काफी, मः ३)
पूरै गुरि समझाइआ मति ऊतम होई ॥ (४२४-१७, आसा काफी, मः ३)
अंतरु सीतलु साँति होइ नामे सुखु होई ॥६॥ (४२४-१७, आसा काफी, मः ३)
पूरा सतिगुरु ताँ मिलै जाँ नदरि करेई ॥ (४२४-१८, आसा काफी, मः ३)
किलविख पाप सभ कटीअहि फिरि दुखु बिघनु न होई ॥७॥ (४२४-१८, आसा काफी, मः ३)

पन्ना ४२५

आपणै हथि वडिआईआ दे नामे लाए ॥ (४२५-१, आसा काफी, मः ३)
नानक नामु निधानु मनि वसिआ वडिआई पाए ॥८॥४॥२६॥ (४२५-१, आसा काफी, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२५-२)
सुणि मन मंनि वसाइ तूं आपे आइ मिलै मेरे भाई ॥ (४२५-२, आसा, मः ३)
अनदिनु सची भगति करि सचै चितु लाई ॥१॥ (४२५-२, आसा, मः ३)
एको नामु धिआइ तूं सुखु पावहि मेरे भाई ॥ (४२५-३, आसा, मः ३)
हउमै दूजा दूरि करि वडी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२५-३, आसा, मः ३)
इसु भगती नो सुरि नर मुनि जन लोचदे विणु सतिगुर पाई न जाइ ॥ (४२५-४, आसा, मः ३)
पंडित पड़्दे जोतिकी तिन बूझ न पाइ ॥२॥ (४२५-५, आसा, मः ३)
आपै थै सभु रखिओनु किछु कहणु न जाई ॥ (४२५-५, आसा, मः ३)
आपे देइ सु पाईऐ गुरि बूझ बुझाई ॥३॥ (४२५-५, आसा, मः ३)
जीअ जंत सभि तिस दे सभना का सोई ॥ (४२५-६, आसा, मः ३)
मंदा किस नो आखीऐ जे दूजा होई ॥४॥ (४२५-६, आसा, मः ३)
इको हुकमु वरतदा एका सिरि कारा ॥ (४२५-७, आसा, मः ३)

आपि भवाली दितीअनु अंतरि लोभु विकारा ॥५॥ (४२५-७, आसा, मः ३)
इक आपे गुरमुखि कीतिअनु बूझनि वीचारा ॥ (४२५-८, आसा, मः ३)
भगति भी ओना नो बखसीअनु अंतरि भंडारा ॥६॥ (४२५-८, आसा, मः ३)
गिआनीआ नो सभु सचु है सचु सोझी होई ॥ (४२५-९, आसा, मः ३)
ओइ भुलाए किसै दे न भुलन्ी सचु जाणनि सोई ॥७॥ (४२५-९, आसा, मः ३)
घर महि पंच वरतदे पंचे वीचारी ॥ (४२५-९, आसा, मः ३)
नानक बिनु सतिगुर वसि न आवन्ी नामि हउमै मारी ॥८॥५॥२७॥ (४२५-१०, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२५-११)
घरै अंदरि सभु वथु है बाहरि किछु नाही ॥ (४२५-११, आसा, मः ३)
गुर परसादी पाईऐ अंतरि कपट खुलाही ॥१॥ (४२५-११, आसा, मः ३)
सतिगुर ते हरि पाईऐ भाई ॥ (४२५-१२, आसा, मः ३)
अंतरि नामु निधानु है पूरै सतिगुरि दीआ दिखाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२५-१२, आसा, मः ३)
हरि का गाहकु होवै सो लए पाए रतनु वीचारा ॥ (४२५-१३, आसा, मः ३)
अंदरु खोलै दिब दिसटि देखै मुकति भंडारा ॥२॥ (४२५-१३, आसा, मः ३)
अंदरि महल अनेक हहि जीउ करे वसेरा ॥ (४२५-१४, आसा, मः ३)
मन चिंदिआ फलु पाइसी फिरि होइ न फेरा ॥३॥ (४२५-१४, आसा, मः ३)
पारखीआ वथु समालि लई गुर सोझी होई ॥ (४२५-१५, आसा, मः ३)
नामु पदारथु अमुलु सा गुरमुखि पावै कोई ॥४॥ (४२५-१५, आसा, मः ३)
बाहरु भाले सु किआ लहै वथु घरै अंदरि भाई ॥ (४२५-१६, आसा, मः ३)
भरमे भूला सभु जगु फिरै मनमुखि पति गवाई ॥५॥ (४२५-१६, आसा, मः ३)
घरु दरु छोडे आपणा पर घरि झूठा जाई ॥ (४२५-१७, आसा, मः ३)
चोरै वाँगू पकड़ीऐ बिनु नावै चोटा खाई ॥६॥ (४२५-१७, आसा, मः ३)
जिन्ी घरु जाता आपणा से सुखीए भाई ॥ (४२५-१७, आसा, मः ३)
अंतरि ब्रह्मु पछाणिआ गुर की वडिआई ॥७॥ (४२५-१८, आसा, मः ३)
आपे दानु करे किसु आखीऐ आपे देइ बुझाई ॥ (४२५-१८, आसा, मः ३)
नानक नामु धिआइ तूं दरि सचै सोभा पाई ॥८॥६॥२८॥ (४२५-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ४२६

आसा महला ३ ॥ (४२६-१)
आपै आपु पछाणिआ सादु मीठा भाई ॥ (४२६-१, आसा, मः ३)
हरि रसि चाखिऐ मुकतु भए जिन्ा साचो भाई ॥१॥ (४२६-१, आसा, मः ३)
हरि जीउ निर्मल निरमला निर्मल मनि वासा ॥ (४२६-२, आसा, मः ३)
गुरमती सालाहीऐ बिखिआ माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ (४२६-२, आसा, मः ३)
बिनु सबदै आपु न जापई सभ अंधी भाई ॥ (४२६-३, आसा, मः ३)
गुरमती घटि चानणा नामु अंति सखाई ॥२॥ (४२६-३, आसा, मः ३)

नामे ही नामि वरतदे नामे वरतारा ॥ (४२६-४, आसा, मः ३)
अंतरि नामु मुखि नामु है नामे सबदि वीचारा ॥३॥ (४२६-४, आसा, मः ३)
नामु सुणीऐ नामु मन्नीऐ नामे वडिआई ॥ (४२६-५, आसा, मः ३)
नामु सलाहे सदा सदा नामे महलु पाई ॥४॥ (४२६-५, आसा, मः ३)
नामे ही घटि चानणा नामे सोभा पाई ॥ (४२६-५, आसा, मः ३)
नामे ही सुखु ऊपजै नामे सरणाई ॥५॥ (४२६-६, आसा, मः ३)
बिनु नावै कोइ न मन्नीऐ मनमुखि पति गवाई ॥ (४२६-६, आसा, मः ३)
जम पुरि बाधे मारीअहि बिरथा जनमु गवाई ॥६॥ (४२६-७, आसा, मः ३)
नामै की सभ सेवा करै गुरमुखि नामु बुझाई ॥ (४२६-७, आसा, मः ३)
नामहु ही नामु मन्नीऐ नामे वडिआई ॥७॥ (४२६-८, आसा, मः ३)
जिस नो देवै तिसु मिलै गुरमती नामु बुझाई ॥ (४२६-८, आसा, मः ३)
नानक सभ किछु नावै कै वसि है पूरै भागि को पाई ॥८॥७॥२९॥ (४२६-९, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२६-९)
दोहागणी महलु न पाइन्ी न जाणनि पिर का सुआउ ॥ (४२६-१०, आसा, मः ३)
फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥१॥ (४२६-१०, आसा, मः ३)
इहु मनूआ किउ करि वसि आवै ॥ (४२६-११, आसा, मः ३)
गुर परसादी ठाकीऐ गिआन मती घरि आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (४२६-११, आसा, मः ३)
सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥ (४२६-१२, आसा, मः ३)
सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥२॥ (४२६-१२, आसा, मः ३)
सदा रावहि पिरु आपणा सची सेज सुभाइ ॥ (४२६-१३, आसा, मः ३)
पिर कै प्रेमि मोहीआ मिलि प्रीतम सुखु पाइ ॥३॥ (४२६-१३, आसा, मः ३)
गिआन अपारु सीगारु है सोभावंती नारि ॥ (४२६-१३, आसा, मः ३)
सा सभराई सुंदरी पिर कै हेति पिआरि ॥४॥ (४२६-१४, आसा, मः ३)
सोहागणी विचि रंगु रखिओनु सचै अलखि अपारि ॥ (४२६-१४, आसा, मः ३)
सतिगुरु सेवनि आपणा सचै भाइ पिआरि ॥५॥ (४२६-१५, आसा, मः ३)
सोहागणी सीगारु बणाइआ गुण का गलि हारु ॥ (४२६-१५, आसा, मः ३)
प्रेम पिरमलु तनि लावणा अंतरि रतनु वीचारु ॥६॥ (४२६-१६, आसा, मः ३)
भगति रते से ऊतमा जति पति सबदे होइ ॥ (४२६-१६, आसा, मः ३)
बिनु नावै सभ नीच जाति है बिसटा का कीड़ा होइ ॥७॥ (४२६-१७, आसा, मः ३)
हउ हउ करदी सभ फिरै बिनु सबदै हउ न जाइ ॥ (४२६-१७, आसा, मः ३)
नानक नामि रते तिन हउमै गई सचै रहे समाइ ॥८॥८॥३०॥ (४२६-१८, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२६-१९)
सचे रते से निरमले सदा सची सोइ ॥ (४२६-१९, आसा, मः ३)
ऐथै घरि घरि जापदे आगै जुगि जुगि परगटु होइ ॥१॥ (४२६-१९, आसा, मः ३)

ए मन रूड़े रंगुले तूं सचा रंगु चड़ाइ ॥ (४२७-१, आसा, मः ३)
रूड़ी बाणी जे रपै ना इहु रंगु लहै न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४२७-१, आसा, मः ३)
हम नीच मैले अति अभिमानी दूजै भाइ विकार ॥ (४२७-२, आसा, मः ३)
गुरि पारसि मिलिऐ कंचनु होए निर्मल जोति अपार ॥२॥ (४२७-२, आसा, मः ३)
बिनु गुर कोइ न रंगीऐ गुरि मिलिऐ रंगु चड़ाउ ॥ (४२७-३, आसा, मः ३)
गुर कै भै भाइ जो रते सिफती सचि समाउ ॥३॥ (४२७-३, आसा, मः ३)
भै बिनु लागि न लगई ना मनु निरमलु होइ ॥ (४२७-४, आसा, मः ३)
बिनु भै कर्म कमावणे झूठे ठाउ न कोइ ॥४॥ (४२७-४, आसा, मः ३)
जिस नो आपे रंगे सु रपसी सतसंगति मिलाइ ॥ (४२७-५, आसा, मः ३)
पूरे गुर ते सतसंगति ऊपजै सहजे सचि सुभाइ ॥५॥ (४२७-५, आसा, मः ३)
बिनु संगती सभि ऐसे रहहि जैसे पसु ढोर ॥ (४२७-६, आसा, मः ३)
जिन्हि कीते तिसै न जाणन्ही बिनु नावै सभि चोर ॥६॥ (४२७-६, आसा, मः ३)
इकि गुण विहाझहि अउगण विकणहि गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (४२७-७, आसा, मः ३)
गुर सेवा ते नाउ पाइआ वुठा अंदरि आइ ॥७॥ (४२७-७, आसा, मः ३)
सभना का दाता एकु है सिरि धंधै लाइ ॥ (४२७-८, आसा, मः ३)
नानक नामे लाइ सवारिअनु सबदे लए मिलाइ ॥८॥९॥३१॥ (४२७-८, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२७-९)
सभ नावै नो लोचदी जिसु कृपा करे सो पाए ॥ (४२७-९, आसा, मः ३)
बिनु नावै सभु दुखु है सुखु तिसु जिसु मंनि वसाए ॥१॥ (४२७-१०, आसा, मः ३)
तूं बेअंतु दइआलु है तेरी सरणाई ॥ (४२७-१०, आसा, मः ३)
गुर पूरे ते पाईऐ नामे वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२७-११, आसा, मः ३)
अंतरि बाहरि एकु है बहु बिधि सृसटि उपाई ॥ (४२७-११, आसा, मः ३)
हुकमे कार कराइदा दूजा किसु कहीऐ भाई ॥२॥ (४२७-१२, आसा, मः ३)
बुझणा अबुझणा तुधु कीआ इह तेरी सिरि कार ॥ (४२७-१२, आसा, मः ३)
इकन्हा बखसिहि मेलि लैहि इकि दरगह मारि कढे कूड़िआर ॥३॥ (४२७-१३, आसा, मः ३)
इकि धुरि पवित पावन हहि तुधु नामे लाए ॥ (४२७-१३, आसा, मः ३)
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै सचै सबदि बुझाए ॥४॥ (४२७-१४, आसा, मः ३)
इकि कुचल कुचील विखली पते नावहु आपि खुआए ॥ (४२७-१४, आसा, मः ३)
ना ओन सिधि न बुधि है न संजमी फिरहि उतवताए ॥५॥ (४२७-१५, आसा, मः ३)
नदरि करे जिसु आपणी तिस नो भावनी लाए ॥ (४२७-१५, आसा, मः ३)
सतु संतोखु इह संजमी मनु निरमलु सबदु सुणाए ॥६॥ (४२७-१६, आसा, मः ३)
लेखा पड़ि न पहूचीऐ कथि कहणै अंतु न पाइ ॥ (४२७-१६, आसा, मः ३)
गुर ते कीमति पाईऐ सचि सबदि सोझी पाइ ॥७॥ (४२७-१७, आसा, मः ३)

इहु मनु देही सोधि तूं गुर सबदि वीचारि ॥ (४२७-१७, आसा, मः ३)
नानक इसु देही विचि नामु निधानु है पाईऐ गुर कै हेति अपारि ॥८॥१०॥३२॥ (४२७-१८, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२७-१९)
सचि रतीआ सोहागणी जिना गुर कै सबदि सीगारि ॥ (४२७-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ४२८

घर ही सो पिरु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥१॥ (४२८-१, आसा, मः ३)
अवगण गुणी बखसाइआ हरि सिउ लिव लाई ॥ (४२८-१, आसा, मः ३)
हरि वरु पाइआ कामणी गुरि मेलि मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४२८-२, आसा, मः ३)
इकि पिरु हदूरि न जाणन्ही दूजै भरमि भुलाइ ॥ (४२८-२, आसा, मः ३)
किउ पाइन्हि डोहागणी दुखी रैणि विहाइ ॥२॥ (४२८-३, आसा, मः ३)
जिन कै मनि सचु वसिआ सची कार कमाइ ॥ (४२८-३, आसा, मः ३)
अनदिनु सेवहि सहज सिउ सचे माहि समाइ ॥३॥ (४२८-४, आसा, मः ३)
दोहागणी भरमि भुलाईआ कूड़ु बोलि बिखु खाहि ॥ (४२८-४, आसा, मः ३)
पिरु न जाणनि आपणा सुंञी सेज दुखु पाहि ॥४॥ (४२८-५, आसा, मः ३)
सचा साहिबु एकु है मतु मन भरमि भुलाहि ॥ (४२८-५, आसा, मः ३)
गुर पूछि सेवा करहि सचु निरमलु मंनि वसाहि ॥५॥ (४२८-६, आसा, मः ३)
सोहागणी सदा पिरु पाइआ हउमै आपु गवाइ ॥ (४२८-६, आसा, मः ३)
पिर सेती अनदिनु गहि रही सची सेज सुखु पाइ ॥६॥ (४२८-७, आसा, मः ३)
मेरी मेरी करि गए पलै किछु न पाइ ॥ (४२८-७, आसा, मः ३)
महलु नाही डोहागणी अंति गई पछुताइ ॥७॥ (४२८-८, आसा, मः ३)
सो पिरु मेरा एकु है एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (४२८-८, आसा, मः ३)
नानक जे सुखु लोड़हि कामणी हरि का नामु मंनि वसाइ ॥८॥११॥३३॥ (४२८-९, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२८-९)
अमृतु जिन्हा चखाइओनु रसु आइआ सहजि सुभाइ ॥ (४२८-९, आसा, मः ३)
सचा वेपरवाहु है तिस नो तिलु न तमाइ ॥१॥ (४२८-१०, आसा, मः ३)
अमृतु सचा वरसदा गुरमुखा मुखि पाइ ॥ (४२८-१०, आसा, मः ३)
मनु सदा हरीआवला सहजे हरि गुण गाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४२८-११, आसा, मः ३)
मनमुखि सदा दोहागणी दरि खड़ीआ बिललाहि ॥ (४२८-१२, आसा, मः ३)
जिन्हा पिर का सुआदु न आइओ जो धुरि लिखिआ सुो कमाहि ॥२॥ (४२८-१२, आसा, मः ३)
गुरमुखि बीजे सचु जमै सचु नामु वापारु ॥ (४२८-१३, आसा, मः ३)
जो इतु लाहै लाइअनु भगती देइ भंडार ॥३॥ (४२८-१३, आसा, मः ३)
गुरमुखि सदा सोहागणी भै भगति सीगारि ॥ (४२८-१४, आसा, मः ३)
अनदिनु रावहि पिरु आपणा सचु रखहि उर धारि ॥४॥ (४२८-१४, आसा, मः ३)
जिन्हा पिरु राविआ आपणा तिन्हा विटहु बलि जाउ ॥ (४२८-१५, आसा, मः ३)

सदा पिर कै संगि रहहि विचहु आपु गवाइ ॥५॥ (४२८-१५, आसा, मः ३)
तनु मनु सीतलु मुख उजले पिर कै भाइ पिआरि ॥ (४२८-१६, आसा, मः ३)
सेज सुखाली पिरु रवै हउमै तृसना मारि ॥६॥ (४२८-१६, आसा, मः ३)
करि किरपा घरि आइआ गुर कै हेति अपारि ॥ (४२८-१७, आसा, मः ३)
वरु पाइआ सोहागणी केवल एकु मुरारि ॥७॥ (४२८-१७, आसा, मः ३)
सभे गुनह बखसाइ लइओनु मेले मेलणहारि ॥ (४२८-१८, आसा, मः ३)
नानक आखणु आखीऐ जे सुणि धरे पिआरु ॥८॥१२॥३४॥ (४२८-१८, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२८-१९)
सतिगुर ते गुण ऊपजै जा प्रभु मेलै सोइ ॥ (४२८-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ४२९

सहजे नामु धिआईऐ गिआनु परगटु होइ ॥१॥ (४२९-१, आसा, मः ३)
ए मन मत जाणहि हरि दूरि है सदा वेखु हदूरि ॥ (४२९-१, आसा, मः ३)
सद सुणदा सद वेखदा सबदि रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (४२९-२, आसा, मः ३)
गुरमुखि आपु पछाणिआ तिन्ही इक मनि धिआइआ ॥ (४२९-२, आसा, मः ३)
सदा रवहि पिरु आपणा सचै नामि सुखु पाइआ ॥२॥ (४२९-३, आसा, मः ३)
ए मन तेरा को नही करि वेखु सबदि वीचारु ॥ (४२९-३, आसा, मः ३)
हरि सरणाई भजि पउ पाइहि मोख दुआरु ॥३॥ (४२९-४, आसा, मः ३)
सबदि सुणीऐ सबदि बुझीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ (४२९-४, आसा, मः ३)
सबदे हउमै मारीऐ सचै महलि सुखु पाइ ॥४॥ (४२९-५, आसा, मः ३)
इसु जुग महि सोभा नाम की बिनु नावै सोभ न होइ ॥ (४२९-५, आसा, मः ३)
इह माइआ की सोभा चारि दिहाड़े जादी बिलमु न होइ ॥५॥ (४२९-६, आसा, मः ३)
जिनी नामु विसारिआ से मुए मरि जाहि ॥ (४२९-६, आसा, मः ३)
हरि रस सादु न आइओ बिसटा माहि समाहि ॥६॥ (४२९-७, आसा, मः ३)
इकि आपे बखसि मिलाइअनु अनदिनु नामे लाइ ॥ (४२९-७, आसा, मः ३)
सचु कमावहि सचि रहहि सचे सचि समाहि ॥७॥ (४२९-८, आसा, मः ३)
बिनु सबदै सुणीऐ न देखीऐ जगु बोला अन्न्हा भरमाइ ॥ (४२९-८, आसा, मः ३)
बिनु नावै दुखु पाइसी नामु मिलै तिसै रजाइ ॥८॥ (४२९-९, आसा, मः ३)
जिन बाणी सिउ चितु लाइआ से जन निर्मल परवाणु ॥ (४२९-९, आसा, मः ३)
नानक नामु तिन्हा कदे न वीसरै से दरि सचे जाणु ॥९॥१३॥३५॥ (४२९-१०, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४२९-११)
सबदौ ही भगत जापदे जिन्ह की बाणी सची होइ ॥ (४२९-११, आसा, मः ३)
विचहु आपु गइआ नाउ मंनिआ सचि मिलावा होइ ॥१॥ (४२९-११, आसा, मः ३)
हरि हरि नामु जन की पति होइ ॥ (४२९-१२, आसा, मः ३)
सफलु तिन्हा का जनमु है तिन्ह मानै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४२९-१२, आसा, मः ३)

हउमै मेरा जाति है अति क्रोधु अभिमानु ॥ (४२६-१३, आसा, मः ३)
सबदि मरै ता जाति जाइ जोती जोति मिलै भगवानु ॥२॥ (४२६-१३, आसा, मः ३)
पूरा सतिगुरु भेटिआ सफल जनमु हमारा ॥ (४२६-१४, आसा, मः ३)
नामु नवै निधि पाइआ भरे अखुट भंडारा ॥३॥ (४२६-१४, आसा, मः ३)
आवहि इसु रासी के वापारीए जिन्हा नामु पिआरा ॥ (४२६-१५, आसा, मः ३)
गुरमुखि होवै सो धनु पाए तिन्हा अंतरि सबदु वीचारा ॥४॥ (४२६-१५, आसा, मः ३)
भगती सार न जाणन्ही मनमुख अहंकारी ॥ (४२६-१६, आसा, मः ३)
धुरहु आपि खुआइअनु जूऐ बाजी हारी ॥५॥ (४२६-१६, आसा, मः ३)
बिनु पिआरै भगति न होवई ना सुखु होइ सरीरि ॥ (४२६-१७, आसा, मः ३)
प्रेम पदारथु पाईऐ गुर भगती मन धीरि ॥६॥ (४२६-१७, आसा, मः ३)
जिस नो भगति कराए सो करे गुर सबद वीचारि ॥ (४२६-१८, आसा, मः ३)
हिरदै एको नामु वसै हउमै दुबिधा मारि ॥७॥ (४२६-१८, आसा, मः ३)
भगता की जति पति एको नामु है आपे लए सवारि ॥ (४२६-१९, आसा, मः ३)
सदा सरणाई तिस की जिउ भावै तिउ कारजु सारि ॥८॥ (४२६-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ४३०

भगति निराली अलाह दी जापै गुर वीचारि ॥ (४३०-१, आसा, मः ३)
नानक नामु हिरदै वसै भै भगती नामि सवारि ॥९॥१४॥३६॥ (४३०-१, आसा, मः ३)
आसा महला ३ ॥ (४३०-२)
अन रस महि भोलाइआ बिनु नामै दुख पाइ ॥ (४३०-२, आसा, मः ३)
सतिगुरु पुरखु न भेटिओ जि सची बूझ बुझाइ ॥१॥ (४३०-३, आसा, मः ३)
ए मन मेरे बावले हरि रसु चखि सादु पाइ ॥ (४३०-३, आसा, मः ३)
अन रसि लागा तूं फिरहि बिरथा जनमु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४३०-४, आसा, मः ३)
इसु जुग महि गुरमुख निरमले सचि नामि रहहि लिव लाइ ॥ (४३०-४, आसा, मः ३)
विणु करमा किछु पाईऐ नही किआ करि कहिआ जाइ ॥२॥ (४३०-५, आसा, मः ३)
आपु पछाणहि सबदि मरहि मनहु तजि विकार ॥ (४३०-५, आसा, मः ३)
गुर सरणाई भजि पए बखसे बखसणहार ॥३॥ (४३०-६, आसा, मः ३)
बिनु नावै सुखु न पाईऐ ना दुखु विचहु जाइ ॥ (४३०-६, आसा, मः ३)
इहु जगु माइआ मोहि विआपिआ दूजै भरमि भुलाइ ॥४॥ (४३०-७, आसा, मः ३)
दोहागणी पिर की सार न जाणही किआ करि करहि सीगारु ॥ (४३०-७, आसा, मः ३)
अनदिनु सदा जलदीआ फिरहि सेजै रवै न भतारु ॥५॥ (४३०-८, आसा, मः ३)
सोहागणी महलु पाइआ विचहु आपु गवाइ ॥ (४३०-९, आसा, मः ३)
गुर सबदी सीगारीआ अपणे सहि लईआ मिलाइ ॥६॥ (४३०-९, आसा, मः ३)
मरणा मनहु विसारिआ माइआ मोहु गुबारु ॥ (४३०-१०, आसा, मः ३)
मनमुख मरि मरि जम्महि भी मरहि जम दरि होहि खुआरु ॥७॥ (४३०-१०, आसा, मः ३)

आपि मिलाइअनु से मिले गुर सबदि वीचारि ॥ (४३०-११, आसा, मः ३)
नानक नामि समाणे मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥८॥२२॥१५॥३७॥ (४३०-११, आसा, मः ३)
आसा महला ५ असटपदीआ घरु २ (४३०-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३०-१३)
पंच मनाए पंच रुसाए ॥ (४३०-१३, आसा, मः ५)
पंच वसाए पंच गवाए ॥१॥ (४३०-१३, आसा, मः ५)
इन्ह बिधि नगरु वुठा मेरे भाई ॥ (४३०-१४, आसा, मः ५)
दुरतु गइआ गुरि गिआनु दृड़ाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४३०-१४, आसा, मः ५)
साच धर्म की करि दीनी वारि ॥ (४३०-१५, आसा, मः ५)
फरहे मुहकम गुर गिआनु बीचारि ॥२॥ (४३०-१५, आसा, मः ५)
नामु खेती बीजहु भाई मीत ॥ (४३०-१५, आसा, मः ५)
सउदा करहु गुरु सेवहु नीत ॥३॥ (४३०-१६, आसा, मः ५)
साँति सहज सुख के सभि हाट ॥ (४३०-१६, आसा, मः ५)
साह वापारी एकै थाट ॥४॥ (४३०-१६, आसा, मः ५)
जेजीआ डन्नु को लए न जगाति ॥ (४३०-१७, आसा, मः ५)
सतिगुरि करि दीनी धुर की छाप ॥५॥ (४३०-१७, आसा, मः ५)
वखरु नामु लदि खेप चलावहु ॥ (४३०-१७, आसा, मः ५)
लै लाहा गुरमुखि घरि आवहु ॥६॥ (४३०-१८, आसा, मः ५)
सतिगुरु साहु सिख वणजारे ॥ (४३०-१८, आसा, मः ५)
पूंजी नामु लेखा साचु सम्हारे ॥७॥ (४३०-१८, आसा, मः ५)
सो वसै इतु घरि जिसु गुरु पूरा सेव ॥ (४३०-१९, आसा, मः ५)
अबिचल नगरी नानक देव ॥८॥१॥ (४३०-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४३१

आसावरी महला ५ घरु ३ (४३१-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३१-२)
मेरे मन हरि सिउ लागी प्रीति ॥ (४३१-२, आसावरी, मः ५)
साधसंगि हरि हरि जपत निर्मल साची रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (४३१-२, आसावरी, मः ५)
दरसन की पिआस घणी चितवत अनिक प्रकार ॥ (४३१-३, आसावरी, मः ५)
करहु अनुग्रहु पारब्रह्म हरि किरपा धारि मुरारि ॥१॥ (४३१-३, आसावरी, मः ५)
मनु परदेसी आइआ मिलिओ साध कै संगि ॥ (४३१-४, आसावरी, मः ५)
जिसु वखर कउ चाहता सो पाइओ नामहि रंगि ॥२॥ (४३१-४, आसावरी, मः ५)
जेते माइआ रंग रस बिनसि जाहि खिन माहि ॥ (४३१-५, आसावरी, मः ५)
भगत रते तेरे नाम सिउ सुखु भुंचहि सभ ठाइ ॥३॥ (४३१-५, आसावरी, मः ५)
सभु जगु चलतउ पेखीऐ निहचलु हरि को नाउ ॥ (४३१-६, आसावरी, मः ५)

करि मित्राई साध सिउ निहचलु पावहि ठाउ ॥४॥ (४३१-६, आसावरी, मः ५)
मीत साजन सुत बंधपा कोऊ होत न साथ ॥ (४३१-७, आसावरी, मः ५)
एकु निवाहू राम नाम दीना का प्रभु नाथ ॥५॥ (४३१-७, आसावरी, मः ५)
चरन कमल बोहिथ भए लगि सागरु तरिओ तेह ॥ (४३१-८, आसावरी, मः ५)
भेटिओ पूरा सतिगुरू साचा प्रभ सिउ नेह ॥६॥ (४३१-८, आसावरी, मः ५)
साध तेरे की जाचना विसरु न सासि गिरासि ॥ (४३१-६, आसावरी, मः ५)
जो तुधु भावै सो भला तेरै भाणै कारज रासि ॥७॥ (४३१-६, आसावरी, मः ५)
सुख सागर प्रीतम मिले उपजे महा अनंद ॥ (४३१-१०, आसावरी, मः ५)
कहु नानक सभ दुख मिटे प्रभ भेटे परमानंद ॥८॥१॥२॥ (४३१-१०, आसावरी, मः ५)
आसा महला ५ बिरहड़े घरु ४ छंता की जति (४३१-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३१-१२)
पारब्रह्मु प्रभु सिमरीऐ पिआरे दरसन कउ बलि जाउ ॥१॥ (४३१-१२, आसा, मः ५)
जिसु सिमरत दुख बीसरहि पिआरे सो किउ तजणा जाइ ॥२॥ (४३१-१२, आसा, मः ५)
इहु तनु वेची संत पहि पिआरे प्रीतमु देइ मिलाइ ॥३॥ (४३१-१३, आसा, मः ५)
सुख सीगार बिखिआ के फीके तजि छोडे मेरी माइ ॥४॥ (४३१-१४, आसा, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु तजि गए पिआरे सतिगुर चरनी पाइ ॥५॥ (४३१-१४, आसा, मः ५)
जो जन राते राम सिउ पिआरे अनत न काहू जाइ ॥६॥ (४३१-१५, आसा, मः ५)
हरि रसु जिन्ही चाखिआ पिआरे तृपति रहे आघाइ ॥७॥ (४३१-१५, आसा, मः ५)
अंचलु गहिआ साध का नानक भै सागरु पारि पराइ ॥८॥१॥३॥ (४३१-१६, आसा, मः ५)
जनम मरण दुखु कटीऐ पिआरे जब भेटै हरि राइ ॥१॥ (४३१-१७, आसा, मः ५)
सुंदरु सुघरु सुजाणु प्रभु मेरा जीवनु दरसु दिखाइ ॥२॥ (४३१-१७, आसा, मः ५)
जो जीअ तुझ ते बीछुरे पिआरे जनमि मरहि बिखु खाइ ॥३॥ (४३१-१८, आसा, मः ५)
जिसु तूं मेलहि सो मिलै पिआरे तिस कै लागउ पाइ ॥४॥ (४३१-१८, आसा, मः ५)
जो सुखु दरसनु पेखते पिआरे मुख ते कहणु न जाइ ॥५॥ (४३१-१६, आसा, मः ५)
साची प्रीति न तुटई पिआरे जुगु जुगु रही समाइ ॥६॥ (४३१-१६, आसा, मः ५)

पन्ना ४३२

जो तुधु भावै सो भला पिआरे तेरी अमरु रजाइ ॥७॥ (४३२-१, आसा, मः ५)
नानक रंगि रते नाराइणै पिआरे माते सहजि सुभाइ ॥८॥२॥४॥ (४३२-२, आसा, मः ५)
सभ बिधि तुम ही जानते पिआरे किसु पहि कहउ सुनाइ ॥१॥ (४३२-२, आसा, मः ५)
तूं दाता जीआ सभना का तेरा दिता पहिरहि खाइ ॥२॥ (४३२-३, आसा, मः ५)
सुखु दुखु तेरी आगिआ पिआरे दूजी नाही जाइ ॥३॥ (४३२-३, आसा, मः ५)
जो तूं करावहि सो करी पिआरे अवरु किछु करणु न जाइ ॥४॥ (४३२-४, आसा, मः ५)
दिनु रैणि सभ सुहावणे पिआरे जितु जपीऐ हरि नाउ ॥५॥ (४३२-५, आसा, मः ५)
साई कार कमावणी पिआरे धुरि मसतकि लेखु लिखाइ ॥६॥ (४३२-५, आसा, मः ५)

एको आपि वरतदा पिआरे घटि घटि रहिआ समाइ ॥७॥ (४३२-६, आसा, मः ५)
संसार कूप ते उधरि लै पिआरे नानक हरि सरणाइ ॥८॥३॥२२॥१५॥२॥४२॥ (४३२-६, आसा, मः ५)
रागु आसा महला १ पटी लिखी (४३२-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३२-८)
ससै सोइ सृसटि जिनि साजी सभना साहिबु एकु भइआ ॥ (४३२-९, आसा, मः १)
सेवत रहे चितु जिन्ह का लागा आइआ तिन्ह का सफलु भइआ ॥१॥ (४३२-९, आसा, मः १)
मन काहे भूले मूड़ मना ॥ (४३२-१०, आसा, मः १)
जब लेखा देवहि बीरा तउ पड़िआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४३२-१०, आसा, मः १)
ईवड़ी आदि पुरखु है दाता आपे सचा सोई ॥ (४३२-११, आसा, मः १)
एना अखरा महि जो गुरमुखि बूझै तिसु सिरि लेखु न होई ॥२॥ (४३२-११, आसा, मः १)
ऊड़ै उपमा ता की कीजै जा का अंतु न पाइआ ॥ (४३२-१२, आसा, मः १)
सेवा करहि सेई फलु पावहि जिन्ही सचु कमाइआ ॥३॥ (४३२-१२, आसा, मः १)
ङंङै ङिआनु बूझै जे कोई पड़िआ पंडितु सोई ॥ (४३२-१३, आसा, मः १)
सर्ब जीआ महि एको जाणै ता हउमै कहै न कोई ॥४॥ (४३२-१३, आसा, मः १)
ककै केस पुंडर जब हूए विणु साबूणै उजलिआ ॥ (४३२-१४, आसा, मः १)
जम राजे के हेरू आए माइआ कै संगलि बंधि लइआ ॥५॥ (४३२-१४, आसा, मः १)
खखै खुंदकारु साह आलमु करि खरीदि जिनि खरचु दीआ ॥ (४३२-१५, आसा, मः १)
बंधनि जा कै सभु जगु बाधिआ अवरी का नही हुकमु पइआ ॥६॥ (४३२-१६, आसा, मः १)
गगै गोइ गाइ जिनि छोडी गली गोबिदु गरबि भइआ ॥ (४३२-१६, आसा, मः १)
घड़ि भाँडे जिनि आवी साजी चाड़ण वाहै तई कीआ ॥७॥ (४३२-१७, आसा, मः १)
घघै घाल सेवकु जे घालै सबदि गुरू कै लागि रहै ॥ (४३२-१७, आसा, मः १)
बुरा भला जे सम करि जाणै इन बिधि साहिबु रमतु रहै ॥८॥ (४३२-१८, आसा, मः १)
चचै चारि वेद जिनि साजे चारे खाणी चारि जुगा ॥ (४३२-१९, आसा, मः १)
जुगु जुगु जोगी खाणी भोगी पड़िआ पंडितु आपि थीआ ॥९॥ (४३२-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४३३

छछै छाइआ वरती सभ अंतरि तेरा कीआ भरमु होआ ॥ (४३३-१, आसा, मः १)
भरमु उपाइ भुलाईअनु आपे तेरा करमु होआ तिन्ह गुरू मिलिआ ॥१०॥ (४३३-१, आसा, मः १)
जजै जानु मंगत जनु जाचै लख चउरासीह भीख भविआ ॥ (४३३-२, आसा, मः १)
एको लेवै एको देवै अवरु न दूजा मै सुणिआ ॥११॥ (४३३-३, आसा, मः १)
झझै झूरि मरहु किआ प्राणी जो किछु देणा सु दे रहिआ ॥ (४३३-३, आसा, मः १)
दे दे वेखै हुकमु चलाए जिउ जीआ का रिजकु पइआ ॥१२॥ (४३३-४, आसा, मः १)
ञंञै नदरि करे जा देखा दूजा कोई नाही ॥ (४३३-४, आसा, मः १)
एको रवि रहिआ सभ थाई एकु वसिआ मन माही ॥१३॥ (४३३-५, आसा, मः १)
टटै टंचु करहु किआ प्राणी घड़ी कि मुहति कि उठि चलणा ॥ (४३३-५, आसा, मः १)

जूऐ जनमु न हारहु अपणा भाजि पड़हु तुम हरि सरणा ॥१४॥ (४३३-६, आसा, मः १)
ठठै ठाढि वरती तिन अंतरि हरि चरणी जिन्ह का चितु लागा ॥ (४३३-६, आसा, मः १)
चितु लागा सेई जन निसतरे तउ परसादी सुखु पाइआ ॥१५॥ (४३३-७, आसा, मः १)
डडै डम्फु करहु किआ प्राणी जो किछु होआ सु सभु चलणा ॥ (४३३-८, आसा, मः १)
तिसै सरेवहु ता सुखु पावहु सर्ब निरंतरि रवि रहिआ ॥१६॥ (४३३-८, आसा, मः १)
ढढै ढाहि उसारै आपे जिउ तिसु भावै तिवै करे ॥ (४३३-९, आसा, मः १)
करि करि वेखै हुकमु चलाए तिसु निसतारे जा कउ नदरि करे ॥१७॥ (४३३-९, आसा, मः १)
णाणै रवतु रहै घट अंतरि हरि गुण गावै सोई ॥ (४३३-१०, आसा, मः १)
आपे आपि मिलाए करता पुनरपि जनमु न होई ॥१८॥ (४३३-११, आसा, मः १)
ततै तारू भवजलु होआ ता का अंतु न पाइआ ॥ (४३३-११, आसा, मः १)
ना तर ना तुलहा हम बूडसि तारि लेहि तारण राइआ ॥१९॥ (४३३-१२, आसा, मः १)
थथै थानि थानंतरि सोई जा का कीआ सभु होआ ॥ (४३३-१२, आसा, मः १)
किआ भरमु किआ माइआ कहीऐ जो तिसु भावै सोई भला ॥२०॥ (४३३-१३, आसा, मः १)
ददै दोसु न देऊ किसै दोसु करम्मा आपणिआ ॥ (४३३-१३, आसा, मः १)
जो मै कीआ सो मै पाइआ दोसु न दीजै अवर जना ॥२१॥ (४३३-१४, आसा, मः १)
धधै धारि कला जिनि छोडी हरि चीजी जिनि रंग कीआ ॥ (४३३-१४, आसा, मः १)
तिस दा दीआ सभनी लीआ करमी करमी हुकमु पइआ ॥२२॥ (४३३-१५, आसा, मः १)
नन्नै नाह भोग नित भोगै ना डीठा ना सम्हलिआ ॥ (४३३-१६, आसा, मः १)
गली हउ सोहागणि भैणे कंतु न कबहूं मै मिलिआ ॥२३॥ (४३३-१६, आसा, मः १)
पपै पातिसाहु परमेसरु वेखण कउ परपंचु कीआ ॥ (४३३-१७, आसा, मः १)
देखै बूझै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥२४॥ (४३३-१७, आसा, मः १)
फफै फाही सभु जगु फासा जम कै संगलि बंधि लइआ ॥ (४३३-१८, आसा, मः १)
गुर परसादी से नर उबरे जि हरि सरणागति भजि पइआ ॥२५॥ (४३३-१८, आसा, मः १)
बबै बाजी खेलण लागा चउपड़ि कीते चारि जुगा ॥ (४३३-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४३४

जीअ जंत सभ सारी कीते पासा ढालणि आपि लगा ॥२६॥ (४३४-१, आसा, मः १)
भभै भालहि से फलु पावहि गुर परसादी जिन्ह कउ भउ पइआ ॥ (४३४-१, आसा, मः १)
मनमुख फिरहि न चेतहि मूड़े लख चउरासीह फेरु पइआ ॥२७॥ (४३४-२, आसा, मः १)
मम्मै मोहु मरणु मधुसूदनु मरणु भइआ तब चेतविआ ॥ (४३४-२, आसा, मः १)
काइआ भीतरि अवरो पड़िआ मम्मा अखरु वीसरिआ ॥२८॥ (४३४-३, आसा, मः १)
ययै जनमु न होवी कद ही जे करि सचु पछाणै ॥ (४३४-४, आसा, मः १)
गुरमुखि आखै गुरमुखि बूझै गुरमुखि एको जाणै ॥२९॥ (४३४-४, आसा, मः १)
रारै रवि रहिआ सभ अंतरि जेते कीए जंता ॥ (४३४-५, आसा, मः १)
जंत उपाइ धंधै सभ लाए करमु होआ तिन नामु लइआ ॥३०॥ (४३४-५, आसा, मः १)

ललै लाइ धंधै जिनि छोडी मीठा माइआ मोहु कीआ ॥ (४३४-६, आसा, मः १)
खाणा पीणा सम करि सहणा भाणै ता कै हुकमु पइआ ॥३१॥ (४३४-६, आसा, मः १)
ववै वासुदेउ परमेसरु वेखण कउ जिनि वेसु कीआ ॥ (४३४-७, आसा, मः १)
वेखै चाखै सभु किछु जाणै अंतरि बाहरि रवि रहिआ ॥३२॥ (४३४-७, आसा, मः १)
ड़ाड़ै राड़ि करहि किआ प्राणी तिसहि धिआवहु जि अमरु होआ ॥ (४३४-८, आसा, मः १)
तिसहि धिआवहु सचि समावहु ओसु विटहु कुरबाणु कीआ ॥३३॥ (४३४-९, आसा, मः १)
हाहै होरु न कोई दाता जीअ उपाइ जिनि रिजकु दीआ ॥ (४३४-९, आसा, मः १)
हरि नामु धिआवहु हरि नामि समावहु अनदिनु लाहा हरि नामु लीआ ॥३४॥ (४३४-१०, आसा, मः १)
आइड़ै आपि करे जिनि छोडी जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥ (४३४-११, आसा, मः १)
करे कराए सभ किछु जाणै नानक साइर इव कहिआ ॥३५॥१॥ (४३४-११, आसा, मः १)
रागु आसा महला ३ पटी (४३४-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३४-१३)
अयो अंङै सभु जगु आइआ काखै घंङै कालु भइआ ॥ (४३४-१४, आसा, मः ३)
रीरी लली पाप कमाणे पड़ि अवगण गुण वीसरिआ ॥१॥ (४३४-१४, आसा, मः ३)
मन ऐसा लेखा तूं की पड़िआ ॥ (४३४-१५, आसा, मः ३)
लेखा देणा तेरै सिरि रहिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४३४-१५, आसा, मः ३)
सिधंङाइऐ सिमरहि नाही नंनै ना तुधु नामु लइआ ॥ (४३४-१६, आसा, मः ३)
छछै छीजहि अहिनिसि मूड़े किउ छूटहि जमि पाकड़िआ ॥२॥ (४३४-१६, आसा, मः ३)
बबै बूझहि नाही मूड़े भरमि भुले तेरा जनमु गइआ ॥ (४३४-१७, आसा, मः ३)
अणहोदा नाउ धराइओ पाधा अवरा का भारु तुधु लइआ ॥३॥ (४३४-१७, आसा, मः ३)
जजै जोति हिरि लई तेरी मूड़े अंति गइआ पछुतावहिगा ॥ (४३४-१८, आसा, मः ३)
एकु सबदु तूं चीनहि नाही फिरि फिरि जूनी आवहिगा ॥४॥ (४३४-१८, आसा, मः ३)
तुधु सिरि लिखिआ सो पड़ु पंडित अवरा नो न सिखालि बिखिआ ॥ (४३४-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ४३५

पहिला फाहा पइआ पाधे पिछो दे गलि चाटड़िआ ॥५॥ (४३५-१, आसा, मः ३)
ससै संजमु गइओ मूड़े एकु दानु तुधु कुथाइ लइआ ॥ (४३५-१, आसा, मः ३)
साई पुत्री जजमान की सा तेरी एतु धानि खाधै तेरा जनमु गइआ ॥६॥ (४३५-२, आसा, मः ३)
मम्मै मति हिरि लई तेरी मूड़े हउमै वडा रोगु पइआ ॥ (४३५-३, आसा, मः ३)
अंतर आतमै ब्रह्मु न चीन्हिआ माइआ का मुहताजु भइआ ॥७॥ (४३५-३, आसा, मः ३)
ककै कामि क्रोधि भरमिओहु मूड़े ममता लागे तुधु हरि विसरिआ ॥ (४३५-४, आसा, मः ३)
पड़हि गुणहि तूं बहुतु पुकारहि विणु बूझे तूं डूबि मुआ ॥८॥ (४३५-४, आसा, मः ३)
ततै तामसि जलिओहु मूड़े थथै थान भरिसटु होआ ॥ (४३५-५, आसा, मः ३)
घघै घरि घरि फिरहि तूं मूड़े ददै दानु न तुधु लइआ ॥९॥ (४३५-६, आसा, मः ३)
पपै पारि न पवही मूड़े परपंचि तूं पलचि रहिआ ॥ (४३५-६, आसा, मः ३)

सचै आपि खुआइओहु मूड़े इहु सिरि तेरै लेखु पइआ ॥१०॥ (४३५-७, आसा, मः ३)
भभै भवजलि डुबोहु मूड़े माइआ विचि गलतानु भइआ ॥ (४३५-७, आसा, मः ३)
गुर परसादी एको जाणै एक घड़ी महि पारि पइआ ॥११॥ (४३५-८, आसा, मः ३)
ववै वारी आईआ मूड़े वासुदेउ तुधु वीसरिआ ॥ (४३५-९, आसा, मः ३)
एह वेला न लहसहि मूड़े फिरि तूं जम कै वसि पइआ ॥१२॥ (४३५-९, आसा, मः ३)
झझै कदे न झूरहि मूड़े सतिगुर का उपदेसु सुणि तूं विखा ॥ (४३५-१०, आसा, मः ३)
सतिगुर बाझहु गुरु नही कोई निगुरे का है नाउ बुरा ॥१३॥ (४३५-१०, आसा, मः ३)
धधै धावत वरजि रखु मूड़े अंतरि तेरै निधानु पइआ ॥ (४३५-११, आसा, मः ३)
गुरमुखि होवहि ता हरि रसु पीवहि जुगा जुगंतरि खाहि पइआ ॥१४॥ (४३५-११, आसा, मः ३)
गगै गोबिदु चिति करि मूड़े गली किनै न पाइआ ॥ (४३५-१२, आसा, मः ३)
गुर के चरन हिरदै वसाइ मूड़े पिछले गुनह सभ बखसि लइआ ॥१५॥ (४३५-१३, आसा, मः ३)
हाहै हरि कथा बूझु तूं मूड़े ता सदा सुखु होई ॥ (४३५-१३, आसा, मः ३)
मनमुखि पड़हि तेता दुखु लागै विणु सतिगुर मुकति न होई ॥१६॥ (४३५-१४, आसा, मः ३)
रारै रामु चिति करि मूड़े हिरदै जिन्ह कै रवि रहिआ ॥ (४३५-१५, आसा, मः ३)
गुर परसादी जिन्ही रामु पछाता निरगुण रामु तिन्ही बूझि लहिआ ॥१७॥ (४३५-१५, आसा, मः ३)
तेरा अंतु न जाई लखिआ अकथु न जाई हरि कथिआ ॥ (४३५-१६, आसा, मः ३)
नानक जिन्ह कउ सतिगुरु मिलिआ तिन्ह का लेखा निबड़िआ ॥१८॥१॥२॥ (४३५-१७, आसा, मः ३)
रागु आसा महला १ छंत घरु १ (४३५-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३५-१९)
मुंध जोबनि बालड़ीए मेरा पिरु रलीआला राम ॥ (४३५-१९, आसा, मः १)
धन पिर नेहु घणा रसि प्रीति दइआला राम ॥ (४३५-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४३६

धन पिरहि मेला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे ॥ (४३६-१, आसा, मः १)
सेजा सुहावी संगि पिर कै सात सर अमृत भरे ॥ (४३६-१, आसा, मः १)
करि दइआ मइआ दइआल साचे सबदि मिलि गुण गावओ ॥ (४३६-२, आसा, मः १)
नानका हरि वरु देखि बिगसी मुंध मनि ओमाहओ ॥१॥ (४३६-३, आसा, मः १)
मुंध सहजि सलोनड़ीए इक प्रेम बिनंती राम ॥ (४३६-३, आसा, मः १)
मै मनि तनि हरि भावै प्रभ संगमि राती राम ॥ (४३६-४, आसा, मः १)
प्रभ प्रेमि राती हरि बिनंती नामि हरि कै सुखि वसै ॥ (४३६-४, आसा, मः १)
तउ गुण पछाणहि ता प्रभु जाणहि गुणह वसि अवगण नसै ॥ (४३६-५, आसा, मः १)
तुधु बाझु इकु तिलु रहि न साका कहणि सुनणि न धीजए ॥ (४३६-५, आसा, मः १)
नानका पृउ पृउ करि पुकारे रसन रसि मनु भीजए ॥२॥ (४३६-६, आसा, मः १)
सखीहो सहेलड़ीहो मेरा पिरु वणजारा राम ॥ (४३६-६, आसा, मः १)
हरि नामो वणंजड़िआ रसि मोलि अपारा राम ॥ (४३६-७, आसा, मः १)

मोलि अमोलो सच घरि ढोलो प्रभ भावै ता मुंध भली ॥ (४३६-७, आसा, मः १)
इकि संगि हरि कै करहि रलीआ हउ पुकारी दरि खली ॥ (४३६-८, आसा, मः १)
करण कारण समरथ स्रीधर आपि कारजु सारए ॥ (४३६-८, आसा, मः १)
नानक नदरी धन सोहागणि सबदु अभ साधारए ॥३॥ (४३६-९, आसा, मः १)
हम घरि साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ॥ (४३६-९, आसा, मः १)
रावे रंगि रातड़िआ मनु लीअड़ा दीता राम ॥ (४३६-१०, आसा, मः १)
आपणा मनु दीआ हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए ॥ (४३६-१०, आसा, मः १)
तनु मनु पिर आगै सबदि सभागै घरि अमृत फलु पावए ॥ (४३६-११, आसा, मः १)
बुधि पाठि न पाईऐ बहु चतुराईऐ भाइ मिलै मनि भाणे ॥ (४३६-१२, आसा, मः १)
नानक ठाकुर मीत हमारे हम नाही लोकाणे ॥४॥१॥ (४३६-१२, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४३६-१३)
अनहदो अनहदु वाजै रुण झुणकारे राम ॥ (४३६-१३, आसा, मः १)
मेरा मनो मेरा मनु राता लाल पिआरे राम ॥ (४३६-१३, आसा, मः १)
अनदिनु राता मनु बैरागी सुन्न मंडलि घरु पाइआ ॥ (४३६-१४, आसा, मः १)
आदि पुरखु अपरम्परु पिआरा सतिगुरि अलखु लखाइआ ॥ (४३६-१४, आसा, मः १)
आसणि बैसणि थिरु नाराइणु तितु मनु राता वीचारे ॥ (४३६-१५, आसा, मः १)
नानक नामि रते बैरागी अनहद रुण झुणकारे ॥१॥ (४३६-१५, आसा, मः १)
तितु अगम तितु अगम पुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम ॥ (४३६-१६, आसा, मः १)
सचु संजमो सारि गुणा गुर सबदु कमाईऐ राम ॥ (४३६-१७, आसा, मः १)
सचु सबदु कमाईऐ निज घरि जाईऐ पाईऐ गुणी निधाना ॥ (४३६-१७, आसा, मः १)
तितु साखा मूलु पतु नही डाली सिरि सभना परधाना ॥ (४३६-१८, आसा, मः १)
जपु तपु करि करि संजम थाकी हठि निग्रहि नही पाईऐ ॥ (४३६-१८, आसा, मः १)
नानक सहजि मिले जगजीवन सतिगुर बूझ बुझाईऐ ॥२॥ (४३६-१९, आसा, मः १)
गुरु सागरो रतनागरु तितु रतन घणेरे राम ॥ (४३६-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४३७

करि मजनो सपत सरे मन निर्मल मेरे राम ॥ (४३७-१, आसा, मः १)
निर्मल जलि नाए जा प्रभ भाए पंच मिले वीचारे ॥ (४३७-१, आसा, मः १)
कामु करोधु कपटु बिखिआ तजि सचु नामु उरि धारे ॥ (४३७-२, आसा, मः १)
हउमै लोभ लहरि लब थाके पाए दीन दइआला ॥ (४३७-२, आसा, मः १)
नानक गुर समानि तीरथु नही कोई साचे गुर गोपाला ॥३॥ (४३७-३, आसा, मः १)
हउ बनु बनो देखि रही तृणु देखि सबाइआ राम ॥ (४३७-३, आसा, मः १)
तृभवणो तुझहि कीआ सभु जगतु सबाइआ राम ॥ (४३७-४, आसा, मः १)
तेरा सभु कीआ तूं थिरु थीआ तुधु समानि को नाही ॥ (४३७-५, आसा, मः १)
तूं दाता सभ जाचिक तेरे तुधु बिनु किसु सालाही ॥ (४३७-५, आसा, मः १)

अणमंगिआ दानु दीजै दाते तेरी भगति भरे भंडारा ॥ (४३७-६, आसा, मः १)
राम नाम बिनु मुकति न होई नानकु कहै वीचारा ॥४॥२॥ (४३७-६, आसा, मः १)
आसा महला १ ॥ (४३७-७)
मेरा मनो मेरा मनु राता राम पिआरे राम ॥ (४३७-७, आसा, मः १)
सचु साहिबो आदि पुरखु अपरम्परो धारे राम ॥ (४३७-७, आसा, मः १)
अगम अगोचरु अपर अपारा पारब्रह्मु परधानो ॥ (४३७-८, आसा, मः १)
आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ॥ (४३७-८, आसा, मः १)
कर्म धर्म की सार न जाणै सुरति मुकति किउ पाईऐ ॥ (४३७-९, आसा, मः १)
नानक गुरमुखि सबदि पछाणै अहिनिसि नामु धिआईऐ ॥१॥ (४३७-९, आसा, मः १)
मेरा मनो मेरा मनु मानिआ नामु सखाई राम ॥ (४३७-१०, आसा, मः १)
हउमै ममता माइआ संगि न जाई राम ॥ (४३७-११, आसा, मः १)
माता पित भाई सुत चतुराई संगि न सम्पै नारे ॥ (४३७-११, आसा, मः १)
साइर की पुत्री परहरि तिआगी चरण तलै वीचारे ॥ (४३७-१२, आसा, मः १)
आदि पुरखि इकु चलतु दिखाइआ जह देखा तह सोई ॥ (४३७-१२, आसा, मः १)
नानक हरि की भगति न छोडउ सहजे होइ सु होई ॥२॥ (४३७-१३, आसा, मः १)
मेरा मनो मेरा मनु निरमलु साचु समाले राम ॥ (४३७-१३, आसा, मः १)
अवगण मेटि चले गुण संगम नाले राम ॥ (४३७-१४, आसा, मः १)
अवगण परहरि करणी सारी दरि सचै सचिआरो ॥ (४३७-१४, आसा, मः १)
आवणु जावणु ठाकि रहाए गुरमुखि ततु वीचारो ॥ (४३७-१५, आसा, मः १)
साजनु मीतु सुजाणु सखा तूं सचि मिलै वडिआई ॥ (४३७-१५, आसा, मः १)
नानक नामु रतनु परगासिआ ऐसी गुरमति पाई ॥३॥ (४३७-१६, आसा, मः १)
सचु अंजनो अंजनु सारि निरंजनि राता राम ॥ (४३७-१६, आसा, मः १)
मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनो दाता राम ॥ (४३७-१७, आसा, मः १)
जगजीवनु दाता हरि मनि राता सहजि मिलै मेलाइआ ॥ (४३७-१७, आसा, मः १)
साध सभा संता की संगति नदरि प्रभू सुखु पाइआ ॥ (४३७-१८, आसा, मः १)
हरि की भगति रते बैरागी चूके मोह पिआसा ॥ (४३७-१८, आसा, मः १)
नानक हउमै मारि पतीणे विरले दास उदासा ॥४॥३॥ (४३७-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४३८

रागु आसा महला १ छंत घरु २ (४३८-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३८-२)
तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥ (४३८-२, आसा, मः १)
सभना का दाता कर्म बिधाता दूख बिसारणहारु जीउ ॥ (४३८-२, आसा, मः १)
दूख बिसारणहारु सुआमी कीता जा का होवै ॥ (४३८-३, आसा, मः १)
कोट कोटंतर पापा केरे एक घड़ी महि खोवै ॥ (४३८-३, आसा, मः १)

हंस सि हंसा बग सि बगा घट घट करे बीचारु जीउ ॥ (४३८-४, आसा, मः १)
तूं सभनी थाई जिथै हउ जाई साचा सिरजणहारु जीउ ॥१॥ (४३८-४, आसा, मः १)
जिन्‍ इक मनि धिआइआ तिन्‍ सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥ (४३८-५, आसा, मः १)
तिन जमु नेड़ि न आवै गुर सबदु कमावै कबहु न आवहि हारि जीउ ॥ (४३८-६, आसा, मः १)
ते कबहु न हारहि हरि हरि गुण सारहि तिन्‍ जमु नेड़ि न आवै ॥ (४३८-६, आसा, मः १)
जम्मणु मरणु तिन्‍ा का चूका जो हरि लागे पावै ॥ (४३८-७, आसा, मः १)
गुरमति हरि रसु हरि फलु पाइआ हरि हरि नामु उर धारि जीउ ॥ (४३८-८, आसा, मः १)
जिन्‍ इक मनि धिआइआ तिन्‍ सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ ॥२॥ (४३८-८, आसा, मः १)
जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ तिसै विटहु कुरबाणु जीउ ॥ (४३८-९, आसा, मः १)
ता की सेव करीजै लाहा लीजै हरि दरगह पाईऐ माणु जीउ ॥ (४३८-१०, आसा, मः १)
हरि दरगह मानु सोई जनु पावै जो नरु एकु पछाणै ॥ (४३८-१०, आसा, मः १)
ओहु नव निधि पावै गुरमति हरि धिआवै नित हरि गुण आखि वखाणै ॥ (४३८-११, आसा, मः १)
अहिनिसि नामु तिसै का लीजै हरि ऊतमु पुरखु प्रधानु जीउ ॥ (४३८-१२, आसा, मः १)
जिनि जगतु उपाइआ धंधै लाइआ हउ तिसै विटहु कुरबानु जीउ ॥३॥ (४३८-१२, आसा, मः १)
नामु लैनि सि सोहहि तिन सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥ (४३८-१३, आसा, मः १)
तिन फल तोटि न आवै जा तिसु भावै जे जुग केते जाहि जीउ ॥ (४३८-१४, आसा, मः १)
जे जुग केते जाहि सुआमी तिन फल तोटि न आवै ॥ (४३८-१४, आसा, मः १)
तिन्‍ जरा न मरणा नरकि न परणा जो हरि नामु धिआवै ॥ (४३८-१५, आसा, मः १)
हरि हरि करहि सि सूकहि नाही नानक पीड़ न खाहि जीउ ॥ (४३८-१५, आसा, मः १)
नामु लैन्‍ि सि सोहहि तिन्‍ सुख फल होवहि मानहि से जिणि जाहि जीउ ॥४॥१॥४॥ (४३८-१६, आसा, मः १)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३८-१८)
आसा महला १ छंत घरु ३ ॥ (४३८-१८)
तूं सुणि हरणा कालिआ की वाड़ीऐ राता राम ॥ (४३८-१८, आसा, मः १)
बिखु फलु मीठा चारि दिन फिरि होवै ताता राम ॥ (४३८-१९, आसा, मः १)
फिरि होइ ताता खरा माता नाम बिनु परतापए ॥ (४३८-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४३९

ओहु जेव साइर देइ लहरी बिजुल जिवै चमकए ॥ (४३९-१, आसा, मः १)
हरि बाझु राखा कोइ नाही सोइ तुझहि बिसारिआ ॥ (४३९-१, आसा, मः १)
सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि हरणा कालिआ ॥१॥ (४३९-२, आसा, मः १)
भवरा फूलि भवंतिआ दुखु अति भारी राम ॥ (४३९-२, आसा, मः १)
मै गुरु पूछिआ आपणा साचा बीचारी राम ॥ (४३९-३, आसा, मः १)
बीचारि सतिगुरु मुझै पूछिआ भवरु बेली रातओ ॥ (४३९-३, आसा, मः १)
सूरजु चड़िआ पिंडु पड़िआ तेलु तावणि तातओ ॥ (४३९-३, आसा, मः १)
जम मगि बाधा खाहि चोटा सबद बिनु बेतालिआ ॥ (४३९-४, आसा, मः १)

सचु कहै नानकु चेति रे मन मरहि भवरा कालिआ ॥२॥ (४३६-४, आसा, मः १)
मेरे जीअड़िआ परदेसीआ कितु पवहि जंजाले राम ॥ (४३६-५, आसा, मः १)
साचा साहिबु मनि वसै की फासहि जम जाले राम ॥ (४३६-६, आसा, मः १)
मछुली विछुन्नी नैण रुन्नी जालु बधिकि पाइआ ॥ (४३६-६, आसा, मः १)
संसारु माइआ मोहु मीठा अंति भरमु चुकाइआ ॥ (४३६-७, आसा, मः १)
भगति करि चितु लाइ हरि सिउ छोडि मनहु अंदेसिआ ॥ (४३६-७, आसा, मः १)
सचु कहै नानकु चेति रे मन जीअड़िआ परदेसीआ ॥३॥ (४३६-८, आसा, मः १)
नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम ॥ (४३६-८, आसा, मः १)
जुगु जुगु मीठा विसु भरे को जाणै जोगी राम ॥ (४३६-९, आसा, मः १)
कोई सहजि जाणै हरि पछाणै सतिगुरू जिनि चेतिआ ॥ (४३६-९, आसा, मः १)
बिनु नाम हरि के भरमि भूले पचहि मुगध अचेतिआ ॥ (४३६-१०, आसा, मः १)
हरि नामु भगति न रिदै साचा से अंति धाही रुंनिआ ॥ (४३६-१०, आसा, मः १)
सचु कहै नानकु सबदि साचै मेलि चिरी विछुंनिआ ॥४॥१॥५॥ (४३६-११, आसा, मः १)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४३६-१२)
आसा महला ३ छंत घरु १ ॥ (४३६-१२)
हम घरे साचा सोहिला साचै सबदि सुहाइआ राम ॥ (४३६-१२, आसा, मः ३)
धन पिर मेलु भइआ प्रभि आपि मिलाइआ राम ॥ (४३६-१३, आसा, मः ३)
प्रभि आपि मिलाइआ सचु मंनि वसाइआ कामणि सहजे माती ॥ (४३६-१३, आसा, मः ३)
गुर सबदि सीगारी सचि सवारी सदा रावे रंगि राती ॥ (४३६-१४, आसा, मः ३)
आपु गवाए हरि वरु पाए ता हरि रसु मंनि वसाइआ ॥ (४३६-१४, आसा, मः ३)
कहु नानक गुर सबदि सवारी सफलिउ जनमु सबाइआ ॥१॥ (४३६-१५, आसा, मः ३)
दूजड़ै कामणि भरमि भुली हरि वरु न पाए राम ॥ (४३६-१५, आसा, मः ३)
कामणि गुणु नाही बिरथा जनमु गवाए राम ॥ (४३६-१६, आसा, मः ३)
बिरथा जनमु गवाए मनमुखि इआणी अउगणवंती झूरे ॥ (४३६-१६, आसा, मः ३)
आपणा सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ ता पिरु मिलिआ हदूरे ॥ (४३६-१७, आसा, मः ३)
देखि पिरु विगसी अंदरहु सरसी सचै सबदि सुभाए ॥ (४३६-१८, आसा, मः ३)
नानक विणु नावै कामणि भरमि भुलाणी मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥२॥ (४३६-१८, आसा, मः ३)

पन्ना ४४०

पिरु संगि कामणि जाणिआ गुरि मेलि मिलाई राम ॥ (४४०-१, आसा, मः ३)
अंतरि सबदि मिली सहजे तपति बुझाई राम ॥ (४४०-१, आसा, मः ३)
सबदि तपति बुझाई अंतरि सांति आई सहजे हरि रसु चाखिआ ॥ (४४०-२, आसा, मः ३)
मिलि प्रीतम अपणे सदा रंगु माणे सचै सबदि सुभाखिआ ॥ (४४०-२, आसा, मः ३)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थाके भेखी मुकति न पाई ॥ (४४०-३, आसा, मः ३)
नानक बिनु भगती जगु बउराना सचै सबदि मिलाई ॥३॥ (४४०-४, आसा, मः ३)

सा धन मनि अनदु भइआ हरि जीउ मेलि पिआरे राम ॥ (४४०-४, आसा, मः ३)
सा धन हरि कै रसि रसी गुर कै सबदि अपारे राम ॥ (४४०-५, आसा, मः ३)
सबदि अपारे मिले पिआरे सदा गुण सारे मनि वसे ॥ (४४०-५, आसा, मः ३)
सेज सुहावी जा पिरि रावी मिलि प्रीतम अवगण नसे ॥ (४४०-६, आसा, मः ३)
जितु घरि नामु हरि सदा धिआईऐ सोहिलड़ा जुग चारे ॥ (४४०-६, आसा, मः ३)
नानक नामि रते सदा अनदु है हरि मिलिआ कारज सारे ॥४॥१॥६॥ (४४०-७, आसा, मः ३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४४०-८)
आसा महला ३ छंत घरु ३ ॥ (४४०-८)
साजन मेरे प्रीतमहु तुम सह की भगति करेहो ॥ (४४०-८, आसा, मः ३)
गुरु सेवहु सदा आपणा नामु पदारथु लेहो ॥ (४४०-९, आसा, मः ३)
भगति करहु तुम सहै केरी जो सह पिआरे भावए ॥ (४४०-९, आसा, मः ३)
आपणा भाणा तुम करहु ता फिरि सह खुसी न आवए ॥ (४४०-१०, आसा, मः ३)
भगति भाव इहु मारगु बिखड़ा गुर दुआरै को पावए ॥ (४४०-१०, आसा, मः ३)
कहै नानकु जिसु करे किरपा सो हरि भगती चितु लावए ॥१॥ (४४०-११, आसा, मः ३)
मेरे मन बैरागीआ तूं बैरागु करि किसु दिखावहि ॥ (४४०-११, आसा, मः ३)
हरि सोहिला तिन्ह सद सदा जो हरि गुण गावहि ॥ (४४०-१२, आसा, मः ३)
करि बैरागु तूं छोडि पाखंडु सो सहु सभु किछु जाणए ॥ (४४०-१२, आसा, मः ३)
जलि थलि महीअलि एको सोई गुरमुखि हुकमु पछाणए ॥ (४४०-१३, आसा, मः ३)
जिनि हुकमु पछाता हरी केरा सोई सर्ब सुख पावए ॥ (४४०-१३, आसा, मः ३)
इव कहै नानकु सो बैरागी अनदिनु हरि लिव लावए ॥२॥ (४४०-१४, आसा, मः ३)
जह जह मन तूं धावदा तह तह हरि तेरै नाले ॥ (४४०-१४, आसा, मः ३)
मन सिआणप छोडीऐ गुर का सबदु समाले ॥ (४४०-१५, आसा, मः ३)
साथि तेरै सो सहु सदा है इकु खिनु हरि नामु समालहे ॥ (४४०-१५, आसा, मः ३)
जनम जनम के तेरे पाप कटे अंति पर्म पदु पावहे ॥ (४४०-१६, आसा, मः ३)
साचे नालि तेरा गंढु लागै गुरमुखि सदा समाले ॥ (४४०-१६, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु जह मन तूं धावदा तह हरि तेरै सदा नाले ॥३॥ (४४०-१७, आसा, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ (४४०-१८, आसा, मः ३)
नामु विहाझे नामु लए नामि रहे समाए ॥ (४४०-१८, आसा, मः ३)

पन्ना ४४१

धावतु थंम्हिआ सतिगुरि मिलिऐ दसवा दुआरु पाइआ ॥ (४४१-१, आसा, मः ३)
तिथै अमृत भोजनु सहज धुनि उपजै जितु सबदि जगतु थंम्हि रहाइआ ॥ (४४१-१, आसा, मः ३)
तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥ (४४१-२, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु सतिगुरि मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥४॥ (४४१-२, आसा, मः ३)
मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥ (४४१-३, आसा, मः ३)

मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥ (४४१-४, आसा, मः ३)
मूलु पछाणहि ताँ सहु जाणहि मरण जीवण की सोझी होई ॥ (४४१-४, आसा, मः ३)
गुर परसादी एको जाणहि ताँ दूजा भाउ न होई ॥ (४४१-५, आसा, मः ३)
मनि साँति आई वजी वधाई ता होआ परवाणु ॥ (४४१-५, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु मन तूं जोति सरूपु है अपणा मूलु पछाणु ॥५॥ (४४१-६, आसा, मः ३)
मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जाहि ॥ (४४१-६, आसा, मः ३)
माइआ मोहणी मोहिआ फिरि फिरि जूनी भवाहि ॥ (४४१-७, आसा, मः ३)
गारबि लागा जाहि मुगध मन अंति गइआ पछुतावहे ॥ (४४१-७, आसा, मः ३)
अहंकारु तिसना रोगु लगा बिरथा जनमु गवावहे ॥ (४४१-८, आसा, मः ३)
मनमुख मुगध चेतहि नाही अगै गइआ पछुतावहे ॥ (४४१-८, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु मन तूं गारबि अटिआ गारबि लदिआ जावहे ॥६॥ (४४१-९, आसा, मः ३)
मन तूं मत माणु करहि जि हउ किछु जाणदा गुरमुखि निमाणा होहु ॥ (४४१-९, आसा, मः ३)
अंतरि अगिआनु हउ बुधि है सचि सबदि मलु खोहु ॥ (४४१-१०, आसा, मः ३)
होहु निमाणा सतिगुरू अगै मत किछु आपु लखावहे ॥ (४४१-११, आसा, मः ३)
आपणै अहंकारि जगतु जलिआ मत तूं आपणा आपु गवावहे ॥ (४४१-११, आसा, मः ३)
सतिगुर कै भाणै करहि कार सतिगुर कै भाणै लागि रहु ॥ (४४१-१२, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु आपु छडि सुख पावहि मन निमाणा होइ रहु ॥७॥ (४४१-१२, आसा, मः ३)
धन्नु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥ (४४१-१३, आसा, मः ३)
महा अनंदु सहजु भइआ मनि तनि सुखु पाइआ ॥ (४४१-१४, आसा, मः ३)
सो सहु चिति आइआ मंनि वसाइआ अवगण सभि विसारे ॥ (४४१-१४, आसा, मः ३)
जा तिसु भाणा गुण परगट होए सतिगुर आपि सवारे ॥ (४४१-१५, आसा, मः ३)
से जन परवाणु होए जिन्ी इकु नामु दिड़िआ दुतीआ भाउ चुकाइआ ॥ (४४१-१५, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु धन्नु सु वेला जितु मै सतिगुरु मिलिआ सो सहु चिति आइआ ॥८॥ (४४१-१६, आसा, मः ३)
इकि जंत भरमि भुले तिनि सहि आपि भुलाए ॥ (४४१-१७, आसा, मः ३)
दूजै भाइ फिरहि हउमै कर्म कमाए ॥ (४४१-१७, आसा, मः ३)
तिनि सहि आपि भुलाए कुमारगि पाए तिन का किछु न वसाई ॥ (४४१-१८, आसा, मः ३)
तिन की गति अवगति तूंहै जाणहि जिनि इह रचन रचाई ॥ (४४१-१८, आसा, मः ३)
हुकमु तेरा खरा भारा गुरमुखि किसै बुझाए ॥ (४४१-१९, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु किआ जंत विचारे जा तुधु भरमि भुलाए ॥९॥ (४४१-१९, आसा, मः ३)

पन्ना ४४२

सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥ (४४२-१, आसा, मः ३)
तूं पारब्रह्मु बेअंतु सुआमी तेरी कुदरति कहणु न जाई ॥ (४४२-१, आसा, मः ३)
सची तेरी वडिआई जा कउ तुधु मंनि वसाई सदा तेरे गुण गावहे ॥ (४४२-२, आसा, मः ३)
तेरे गुण गावहि जा तुधु भावहि सचे सिउ चितु लावहे ॥ (४४२-३, आसा, मः ३)

जिस नो तूं आपे मेलहि सु गुरमुखि रहै समाई ॥ (४४२-३, आसा, मः ३)
इउ कहै नानकु सचे मेरे साहिबा सची तेरी वडिआई ॥१०॥२॥७॥५॥२॥७॥ (४४२-४, आसा, मः ३)
रागु आसा छंत महला ४ घरु १ (४४२-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४४२-६)
जीवनो मै जीवनु पाइआ गुरमुखि भाए राम ॥ (४४२-६, आसा, मः ४)
हरि नामो हरि नामु देवै मेरै प्रानि वसाए राम ॥ (४४२-६, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु मेरै प्रानि वसाए सभु संसा दूखु गवाइआ ॥ (४४२-७, आसा, मः ४)
अदिसटु अगोचरु गुर बचनि धिआइआ पवित्र पर्म पदु पाइआ ॥ (४४२-७, आसा, मः ४)
अनहद धुनि वाजहि नित वाजे गाई सतिगुर बाणी ॥ (४४२-८, आसा, मः ४)
नानक दाति करी प्रभि दातै जोती जोति समाणी ॥१॥ (४४२-९, आसा, मः ४)
मनमुखा मनमुखि मुए मेरी करि माइआ राम ॥ (४४२-९, आसा, मः ४)
खिनु आवै खिनु जावै दुरगंध मड़ै चितु लाइआ राम ॥ (४४२-१०, आसा, मः ४)
लाइआ दुरगंध मड़ै चितु लागा जिउ रंगु कसुम्भ दिखाइआ ॥ (४४२-१०, आसा, मः ४)
खिनु पूरबि खिनु पछमि छाए जिउ चकु कुम्हिआरि भवाइआ ॥ (४४२-११, आसा, मः ४)
दुखु खावहि दुखु संचहि भोगहि दुख की बिरधि वधाई ॥ (४४२-११, आसा, मः ४)
नानक बिखमु सुहेला तरीऐ जा आवै गुर सरणाई ॥२॥ (४४२-१२, आसा, मः ४)
मेरा ठाकुरो ठाकुरु नीका अगम अथाहा राम ॥ (४४२-१२, आसा, मः ४)
हरि पूजी हरि पूजी चाही मेरे सतिगुर साहा राम ॥ (४४२-१३, आसा, मः ४)
हरि पूजी चाही नामु बिसाही गुण गावै गुण भावै ॥ (४४२-१३, आसा, मः ४)
नीद भूख सभ परहरि तिआगी सुन्ने सुंनि समावै ॥ (४४२-१४, आसा, मः ४)
वणजारे इक भाती आवहि लाहा हरि नामु लै जाहे ॥ (४४२-१४, आसा, मः ४)
नानक मनु तनु अरपि गुर आगै जिसु प्रापति सो पाए ॥३॥ (४४२-१५, आसा, मः ४)
रतना रतन पदार्थ बहु सागरु भरिआ राम ॥ (४४२-१६, आसा, मः ४)
बाणी गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ राम ॥ (४४२-१६, आसा, मः ४)
गुरबाणी लागे तिन्ह हथि चड़िआ निरमोलकु रतनु अपारा ॥ (४४२-१६, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु अतोलकु पाइआ तेरी भगति भरे भंडारा ॥ (४४२-१७, आसा, मः ४)
समुंदु विरोलि सरीरु हम देखिआ इक वसतु अनूप दिखाई ॥ (४४२-१८, आसा, मः ४)
गुर गोविंदु गुोविंदु गुरू है नानक भेदु न भाई ॥४॥१॥८॥ (४४२-१८, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४४२-१९)
झिमि झिमे झिमि झिमि वरसै अमृत धारा राम ॥ (४४२-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ४४३

गुरमुखे गुरमुखि नदरी रामु पिआरा राम ॥ (४४३-१, आसा, मः ४)
राम नामु पिआरा जगत निसतारा राम नामि वडिआई ॥ (४४३-१, आसा, मः ४)
कलिजुगि राम नामु बोहिथा गुरमुखि पारि लघाई ॥ (४४३-२, आसा, मः ४)

हलति पलति राम नामि सुहेले गुरमुखि करणी सारी ॥ (४४३-२, आसा, मः ४)
नानक दाति दइआ करि देवै राम नामि निसतारी ॥१॥ (४४३-३, आसा, मः ४)
रामो राम नामु जपिआ दुख किलविख नास गवाइआ राम ॥ (४४३-३, आसा, मः ४)
गुर परचै गुर परचै धिआइआ मै हिरदै रामु रवाइआ राम ॥ (४४३-४, आसा, मः ४)
रविआ रामु हिरदै पर्म गति पाई जा गुर सरणाई आए ॥ (४४३-५, आसा, मः ४)
लोभ विकार नाव डुबदी निकली जा सतिगुरि नामु दिड़ाए ॥ (४४३-५, आसा, मः ४)
जीअ दानु गुरि पूरै दीआ राम नामि चितु लाए ॥ (४४३-६, आसा, मः ४)
आपि कृपालु कृपा करि देवै नानक गुर सरणाए ॥२॥ (४४३-६, आसा, मः ४)
बाणी राम नाम सुणी सिधि कारज सभि सुहाए राम ॥ (४४३-७, आसा, मः ४)
रोमे रोमि रोमि रोमे मै गुरमुखि रामु धिआए राम ॥ (४४३-७, आसा, मः ४)
राम नामु धिआए पवितु होइ आए तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ (४४३-८, आसा, मः ४)
रामो रामु रविआ घट अंतरि सभ तृसना भूख गवाई ॥ (४४३-९, आसा, मः ४)
मनु तनु सीतलु सीगारु सभु होआ गुरमति रामु प्रगासा ॥ (४४३-९, आसा, मः ४)
नानक आपि अनुग्रहु कीआ हम दासनि दासनि दासा ॥३॥ (४४३-१०, आसा, मः ४)
जिनी रामो राम नामु विसारिआ से मनमुख मूड़ अभागी राम ॥ (४४३-१०, आसा, मः ४)
तिन अंतरे मोहु विआपै खिनु खिनु माइआ लागी राम ॥ (४४३-११, आसा, मः ४)
माइआ मलु लागी मूड़ भए अभागी जिन राम नामु नह भाइआ ॥ (४४३-१२, आसा, मः ४)
अनेक कर्म करहि अभिमानी हरि रामो नामु चोराइआ ॥ (४४३-१२, आसा, मः ४)
महा बिखमु जम पंथु दुहेला कालूखत मोह अंधिआरा ॥ (४४३-१३, आसा, मः ४)
नानक गुरमुखि नामु धिआइआ ता पाए मोख दुआरा ॥४॥ (४४३-१३, आसा, मः ४)
रामो राम नामु गुरू रामु गुरमुखे जाणै राम ॥ (४४३-१४, आसा, मः ४)
इहु मनूआ खिनु ऊभ पइआली भरमदा इकतु घरि आणै राम ॥ (४४३-१४, आसा, मः ४)
मनु इकतु घरि आणै सभ गति मिति जाणै हरि रामो नामु रसाए ॥ (४४३-१५, आसा, मः ४)
जन की पैज रखै राम नामा प्रहिलाद उधारि तराए ॥ (४४३-१६, आसा, मः ४)
रामो रामु रमो रमु ऊचा गुण कहतिआ अंतु न पाइआ ॥ (४४३-१६, आसा, मः ४)
नानक राम नामु सुणि भीने रामै नामि समाइआ ॥५॥ (४४३-१७, आसा, मः ४)
जिन अंतरे राम नामु वसै तिन चिंता सभ गवाइआ राम ॥ (४४३-१७, आसा, मः ४)
सभि अर्था सभि धर्म मिले मनि चिंदिआ सो फलु पाइआ राम ॥ (४४३-१८, आसा, मः ४)
मन चिंदिआ फलु पाइआ राम नामु धिआइआ राम नाम गुण गाए ॥ (४४३-१९, आसा, मः ४)
दुरमति कबुधि गई सुधि होई राम नामि मनु लाए ॥ (४४३-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ४४४

सफलु जनमु सरीरु सभु होआ जितु राम नामु परगासिआ ॥ (४४४-१, आसा, मः ४)
नानक हरि भजु सदा दिनु राती गुरमुखि निज घरि वासिआ ॥६॥ (४४४-१, आसा, मः ४)
जिन सरधा राम नामि लगी तिन्ह दूजै चितु न लाइआ राम ॥ (४४४-२, आसा, मः ४)

जे धरती सभ कंचनु करि दीजै बिनु नावै अवरु न भाइआ राम ॥ (४४४-३, आसा, मः ४)
राम नामु मनि भाइआ पर्म सुखु पाइआ अंति चलदिआ नालि सखाई ॥ (४४४-३, आसा, मः ४)
राम नाम धनु पूंजी संची ना डूबै ना जाई ॥ (४४४-४, आसा, मः ४)
राम नामु इसु जुग महि तुलहा जमकालु नेड़ि न आवै ॥ (४४४-४, आसा, मः ४)
नानक गुरमुखि रामु पछाता करि किरपा आपि मिलावै ॥७॥ (४४४-५, आसा, मः ४)
रामो राम नामु सते सति गुरमुखि जाणिआ राम ॥ (४४४-६, आसा, मः ४)
सेवको गुर सेवा लागा जिनि मनु तनु अरपि चड़ाइआ राम ॥ (४४४-६, आसा, मः ४)
मनु तनु अरपिआ बहुतु मनि सरधिआ गुर सेवक भाइ मिलाए ॥ (४४४-७, आसा, मः ४)
दीना नाथु जीआ का दाता पूरे गुर ते पाए ॥ (४४४-७, आसा, मः ४)
गुरू सिखु सिखु गुरू है एको गुर उपदेसु चलाए ॥ (४४४-८, आसा, मः ४)
राम नाम मंतु हिरदै देवै नानक मिलणु सुभाए ॥८॥२॥६॥ (४४४-८, आसा, मः ४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४४४-१०)
आसा छंत महला ४ घरु २ ॥ (४४४-१०)
हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥ (४४४-१०, आसा, मः ४)
हरि सेवा भाई पर्म गति पाई हरि ऊतमु हरि हरि कामु जीउ ॥ (४४४-११, आसा, मः ४)
हरि ऊतमु कामु जपीऐ हरि नामु हरि जपीऐ असथिरु होवै ॥ (४४४-११, आसा, मः ४)
जनम मरण दोवै दुख मेटे सहजे ही सुखि सोवै ॥ (४४४-१२, आसा, मः ४)
हरि हरि किरपा धारहु ठाकुर हरि जपीऐ आतम रामु जीउ ॥ (४४४-१३, आसा, मः ४)
हरि हरि करता दूख बिनासनु पतित पावनु हरि नामु जीउ ॥१॥ (४४४-१३, आसा, मः ४)
हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥ (४४४-१४, आसा, मः ४)
गुरमुखि हरि पड़ीऐ गुरमुखि हरि सुणीऐ हरि जपत सुणत दुखु जाइ जीउ ॥ (४४४-१५, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु जपिआ दुखु बिनसिआ हरि नामु पर्म सुखु पाइआ ॥ (४४४-१५, आसा, मः ४)
सतिगुर गिआनु बलिआ घटि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥ (४४४-१६, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि धुरि लिखि पाइ जीउ ॥ (४४४-१७, आसा, मः ४)
हरि नामु पदारथु कलिजुगि ऊतमु हरि जपीऐ सतिगुर भाइ जीउ ॥२॥ (४४४-१७, आसा, मः ४)
हरि हरि मनि भाइआ पर्म सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥ (४४४-१८, आसा, मः ४)
हरि प्रीति लगाई हरि नामु सखाई भ्रमु चूका आवणु जाणु जीउ ॥ (४४४-१६, आसा, मः ४)

पन्ना ४४५

आवण जाणा भ्रमु भउ भागा हरि हरि हरि गुण गाइआ ॥ (४४५-१, आसा, मः ४)
जनम जनम के किलविख दुख उतरे हरि हरि नामि समाइआ ॥ (४४५-१, आसा, मः ४)
जिन हरि धिआइआ धुरि भाग लिखि पाइआ तिन सफलु जनमु परवाणु जीउ ॥ (४४५-२, आसा, मः ४)
हरि हरि मनि भाइआ पर्म सुख पाइआ हरि लाहा पदु निरबाणु जीउ ॥३॥ (४४५-३, आसा, मः ४)
जिन्ह हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥ (४४५-३, आसा, मः ४)
हरि नामु वडाई हरि नामु सखाई गुर सबदी हरि रस भोग जीउ ॥ (४४५-४, आसा, मः ४)

हरि रस भोग महा निरजोग वडभागी हरि रसु पाइआ ॥ (४४५-५, आसा, मः ४)
से धन्नु वडे सत पुरखा पूरे जिन गुरमति नामु धिआइआ ॥ (४४५-५, आसा, मः ४)
जनु नानकु रेणु मंगै पग साधू मनि चूका सोगु विजोगु जीउ ॥ (४४५-६, आसा, मः ४)
जिन् हरि मीठ लगाना ते जन परधाना ते ऊतम हरि हरि लोग जीउ ॥४॥३॥१०॥ (४४५-६, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४४५-७)
सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥ (४४५-८, आसा, मः ४)
मनि तनि हरि गावहि पर्म सुखु पावहि हरि हिरदै हरि गुण गिआनु जीउ ॥ (४४५-८, आसा, मः ४)
गुण गिआनु पदारथु हरि हरि किरतारथु सोभा गुरमुखि होई ॥ (४४५-९, आसा, मः ४)
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको दूजा अवरु न कोई ॥ (४४५-१०, आसा, मः ४)
हरि हरि लिव लाई हरि नामु सखाई हरि दरगह पावै मानु जीउ ॥ (४४५-१०, आसा, मः ४)
सतजुगि सभु संतोख सरीरा पग चारे धरमु धिआनु जीउ ॥१॥ (४४५-११, आसा, मः ४)
तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम कर्म कमाइ जीउ ॥ (४४५-११, आसा, मः ४)
पगु चउथा खिसिआ त्रै पग टिकिआ मनि हिरदै क्रोधु जलाइ जीउ ॥ (४४५-१२, आसा, मः ४)
मनि हिरदै क्रोधु महा बिसलोधु निरप धावहि लड़ि दुखु पाइआ ॥ (४४५-१३, आसा, मः ४)
अंतरि ममता रोगु लगाना हउमै अहंकारु वधाइआ ॥ (४४५-१३, आसा, मः ४)
हरि हरि कृपा धारी मेरै ठाकुरि बिखु गुरमति हरि नामि लहि जाइ जीउ ॥ (४४५-१४, आसा, मः ४)
तेता जुगु आइआ अंतरि जोरु पाइआ जतु संजम कर्म कमाइ जीउ ॥२॥ (४४५-१५, आसा, मः ४)
जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कानु उपाइ जीउ ॥ (४४५-१५, आसा, मः ४)
तपु तापन तापहि जग पुन्न आरम्भहि अति किरिआ कर्म कमाइ जीउ ॥ (४४५-१६, आसा, मः ४)
किरिआ कर्म कमाइआ पग दुइ खिसकाइआ दुइ पग टिकै टिकाइ जीउ ॥ (४४५-१७, आसा, मः ४)
महा जुध जोध बहु कीन्हे विचि हउमै पचै पचाइ जीउ ॥ (४४५-१८, आसा, मः ४)
दीन दइआलि गुरु साधु मिलाइआ मिलि सतिगुर मलु लहि जाइ जीउ ॥ (४४५-१८, आसा, मः ४)
जुगु दुआपुरु आइआ भरमि भरमाइआ हरि गोपी कानु उपाइ जीउ ॥३॥ (४४५-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ४४६

कलिजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥ (४४६-१, आसा, मः ४)
गुर सबदु कमाइआ अउखधु हरि पाइआ हरि कीरति हरि साँति पाइ जीउ ॥ (४४६-२, आसा, मः ४)
हरि कीरति रुति आई हरि नामु वडाई हरि हरि नामु खेतु जमाइआ ॥ (४४६-२, आसा, मः ४)
कलिजुगि बीजु बीजे बिनु नावै सभु लाहा मूलु गवाइआ ॥ (४४६-३, आसा, मः ४)
जन नानकि गुरु पूरा पाइआ मनि हिरदै नामु लखाइ जीउ ॥ (४४६-४, आसा, मः ४)
कलजुगु हरि कीआ पग त्रै खिसकीआ पगु चउथा टिकै टिकाइ जीउ ॥४॥४॥११॥ (४४६-४, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४४६-५)
हरि कीरति मनि भाई पर्म गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥ (४४६-५, आसा, मः ४)
हरि हरि रसु पाइआ गुरमति हरि धिआइआ धुरि मसतकि भाग पुरान जीउ ॥ (४४६-६, आसा, मः ४)
धुरि मसतकि भागु हरि नामि सुहागु हरि नामै हरि गुण गाइआ ॥ (४४६-७, आसा, मः ४)

मसतकि मणी प्रीति बहु प्रगटी हरि नामै हरि सोहाइआ ॥ (४४६-८, आसा, मः ४)
जोती जोति मिली प्रभु पाइआ मिलि सतिगुर मनूआ मान जीउ ॥ (४४६-८, आसा, मः ४)
हरि कीरति मनि भाई पर्म गति पाई हरि मनि तनि मीठ लगान जीउ ॥१॥ (४४६-९, आसा, मः ४)
हरि हरि जसु गाइआ पर्म पदु पाइआ ते ऊतम जन प्रधान जीउ ॥ (४४६-१०, आसा, मः ४)
तिन्ह हम चरण सरेवह खिनु खिनु पग धोवह जिन हरि मीठ लगान जीउ ॥ (४४६-१०, आसा, मः ४)
हरि मीठा लाइआ पर्म सुख पाइआ मुखि भागा रती चारे ॥ (४४६-११, आसा, मः ४)
गुरमति हरि गाइआ हरि हारु उरि पाइआ हरि नामा कंठि धारे ॥ (४४६-१२, आसा, मः ४)
सभ एक दृसटि समतु करि देखै सभु आतम रामु पछान जीउ ॥ (४४६-१२, आसा, मः ४)
हरि हरि जसु गाइआ पर्म पदु पाइआ ते ऊतम जन प्रधान जीउ ॥२॥ (४४६-१३, आसा, मः ४)
सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥ (४४६-१४, आसा, मः ४)
हरि हरि आराधिआ गुर सबदि विगासिआ बीजा अवरु न कोइ जीउ ॥ (४४६-१४, आसा, मः ४)
अवरु न कोइ हरि अमृतु सोइ जिनि पीआ सो बिधि जाणै ॥ (४४६-१५, आसा, मः ४)
धनु धन्नु गुरू पूरा प्रभु पाइआ लगि संगति नामु पछाणै ॥ (४४६-१६, आसा, मः ४)
नामो सेवि नामो आराधै बिनु नामै अवरु न कोइ जीउ ॥ (४४६-१६, आसा, मः ४)
सतसंगति मनि भाई हरि रसन रसाई विचि संगति हरि रसु होइ जीउ ॥३॥ (४४६-१७, आसा, मः ४)
हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥ (४४६-१८, आसा, मः ४)
मोह चीकड़ि फाथे निघरत हम जाते हरि बाँह प्रभू पकराइ जीउ ॥ (४४६-१८, आसा, मः ४)
प्रभि बाँह पकराई ऊतम मति पाई गुर चरणी जनु लागा ॥ (४४६-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ४४७

हरि हरि नामु जपिआ आराधिआ मुखि मसतकि भागु सभागा ॥ (४४७-१, आसा, मः ४)
जन नानक हरि किरपा धारी मनि हरि हरि मीठा लाइ जीउ ॥ (४४७-१, आसा, मः ४)
हरि दइआ प्रभ धारहु पाखण हम तारहु कढि लेवहु सबदि सुभाइ जीउ ॥४॥५॥१२॥ (४४७-२, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४४७-३)
मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥ (४४७-३, आसा, मः ४)
जो जन मरि जीवे तिन्ह अमृतु पीवे मनि लागा गुरमति भाउ जीउ ॥ (४४७-४, आसा, मः ४)
मनि हरि हरि भाउ गुरु करे पसाउ जीवन मुकतु सुखु होई ॥ (४४७-४, आसा, मः ४)
जीवणि मरणि हरि नामि सुहेले मनि हरि हरि हिरदै सोई ॥ (४४७-५, आसा, मः ४)
मनि हरि हरि वसिआ गुरमति हरि रसिआ हरि हरि रस गटाक पीआउ जीउ ॥ (४४७-६, आसा, मः ४)
मनि नामु जपाना हरि हरि मनि भाना हरि भगत जना मनि चाउ जीउ ॥१॥ (४४७-६, आसा, मः ४)
जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥ (४४७-७, आसा, मः ४)
हरि अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको इहु जीअड़ा रखिआ न जाइ जीउ ॥ (४४७-८, आसा, मः ४)
किउ जीउ रखीजै हरि वसतु लोड़ीजै जिस की वसतु सो लै जाइ जीउ ॥ (४४७-९, आसा, मः ४)
मनमुख करण पलाव करि भरमे सभि अउखध दारू लाइ जीउ ॥ (४४७-९, आसा, मः ४)
जिस की वसतु प्रभु लए सुआमी जन उबरे सबदु कमाइ जीउ ॥ (४४७-१०, आसा, मः ४)

जगि मरणु न भाइआ नित आपु लुकाइआ मत जमु पकरै लै जाइ जीउ ॥२॥ (४४७-१०, आसा, मः ४)
धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥ (४४७-११, आसा, मः ४)
हरि सोभा पाई हरि नामि वडिआई हरि दरगह पैधे जानि जीउ ॥ (४४७-१२, आसा, मः ४)
हरि दरगह पैधे हरि नामै सीधे हरि नामै ते सुखु पाइआ ॥ (४४७-१३, आसा, मः ४)
जनम मरण दोवै दुख मेटे हरि रामै नामि समाइआ ॥ (४४७-१३, आसा, मः ४)
हरि जन प्रभु रलि एको होए हरि जन प्रभु एक समानि जीउ ॥ (४४७-१४, आसा, मः ४)
धुरि मरणु लिखाइआ गुरमुखि सोहाइआ जन उबरे हरि हरि धिआनि जीउ ॥३॥ (४४७-१५, आसा, मः ४)
जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥ (४४७-१५, आसा, मः ४)
गुरु मंत्रु दृड़ाए हरि रसकि रसाए हरि अमृतु हरि मुखि चोइ जीउ ॥ (४४७-१६, आसा, मः ४)
हरि अमृत रसु पाइआ मुआ जीवाइआ फिरि बाहुड़ि मरणु न होई ॥ (४४७-१७, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु अमर पदु पाइआ हरि नामि समावै सोई ॥ (४४७-१७, आसा, मः ४)
जन नानक नामु अधारु टेक है बिनु नावै अवरु न कोइ जीउ ॥ (४४७-१८, आसा, मः ४)
जगु उपजै बिनसै बिनसि बिनासै लगि गुरमुखि असथिरु होइ जीउ ॥४॥६॥१३॥ (४४७-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ४४८

आसा महला ४ छंत ॥ (४४८-१)
वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥ (४४८-१, आसा, मः ४)
ता की गति कही न जाई अमिति वडिआई मेरा गोविंदु अलख अपार जीउ ॥ (४४८-१, आसा, मः ४)
गोविंदु अलख अपारु अपरम्परु आपु आपणा जाणै ॥ (४४८-२, आसा, मः ४)
किआ इह जंत विचारे कहीअहि जो तुधु आखि वखाणै ॥ (४४८-३, आसा, मः ४)
जिस नो नदरि करहि तूं अपणी सो गुरमुखि करे वीचारु जीउ ॥ (४४८-३, आसा, मः ४)
वडा मेरा गोविंदु अगम अगोचरु आदि निरंजनु निरंकारु जीउ ॥१॥ (४४८-४, आसा, मः ४)
तूं आदि पुरखु अपरम्परु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥ (४४८-५, आसा, मः ४)
तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥ (४४८-५, आसा, मः ४)
घट अंतरि पारब्रह्मु परमेसरु ता का अंतु न पाइआ ॥ (४४८-६, आसा, मः ४)
तिसु रूपु न रेख अदिसटु अगोचरु गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ (४४८-६, आसा, मः ४)
सदा अनंदि रहै दिनु राती सहजे नामि समाइ जीउ ॥ (४४८-७, आसा, मः ४)
तूं आदि पुरखु अपरम्परु करता तेरा पारु न पाइआ जाइ जीउ ॥२॥ (४४८-८, आसा, मः ४)
तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥ (४४८-८, आसा, मः ४)
हरि हरि प्रभु एको अवरु न कोई तूं आपे पुरखु सुजानु जीउ ॥ (४४८-९, आसा, मः ४)
पुरखु सुजानु तूं प्रधानु तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (४४८-१०, आसा, मः ४)
तेरा सबदु सभु तूंहै वरतहि तूं आपे करहि सु होई ॥ (४४८-१०, आसा, मः ४)
हरि सभ महि रविआ एको सोई गुरमुखि लखिआ हरि नामु जीउ ॥ (४४८-११, आसा, मः ४)
तूं सति परमेसरु सदा अबिनासी हरि हरि गुणी निधानु जीउ ॥३॥ (४४८-११, आसा, मः ४)
सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥ (४४८-१२, आसा, मः ४)

तुधु आपे भावै तिवै चलावहि सभ तेरै सबदि समाइ जीउ ॥ (४४८-१३, आसा, मः ४)
सभ सबदि समावै जाँ तुधु भावै तेरै सबदि वडिआई ॥ (४४८-१३, आसा, मः ४)
गुरमुखि बुधि पाईऐ आपु गवाईऐ सबदे रहिआ समाई ॥ (४४८-१४, आसा, मः ४)
तेरा सबदु अगोचरु गुरमुखि पाईऐ नानक नामि समाइ जीउ ॥ (४४८-१४, आसा, मः ४)
सभु तूंहै करता सभ तेरी वडिआई जिउ भावै तिवै चलाइ जीउ ॥४॥७॥१४॥ (४४८-१५, आसा, मः ४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४४८-१७)
आसा महला ४ छंत घरु ४ ॥ (४४८-१७)
हरि अमृत भिन्ने लोइणा मनु प्रेमि रतन्ना राम राजे ॥ (४४८-१७, आसा, मः ४)
मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविन्ना ॥ (४४८-१८, आसा, मः ४)
गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिन्ना ॥ (४४८-१८, आसा, मः ४)

पन्ना ४४९

जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धन्ना ॥१॥ (४४९-१, आसा, मः ४)
हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ (४४९-१, आसा, मः ४)
जिसु लागी पीर पिरम्म की सो जाणै जरीआ ॥ (४४९-२, आसा, मः ४)
जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ (४४९-२, आसा, मः ४)
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥२॥ (४४९-३, आसा, मः ४)
हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ (४४९-३, आसा, मः ४)
गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ (४४९-४, आसा, मः ४)
मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ (४४९-४, आसा, मः ४)
मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥३॥ (४४९-५, आसा, मः ४)
दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ (४४९-५, आसा, मः ४)
हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ (४४९-६, आसा, मः ४)
भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ (४४९-६, आसा, मः ४)
जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥ (४४९-७, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४४९-८)
गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ (४४९-८, आसा, मः ४)
कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ (४४९-८, आसा, मः ४)
हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ (४४९-९, आसा, मः ४)
धुरि भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥ (४४९-९, आसा, मः ४)
पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ (४४९-१०, आसा, मः ४)
हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ (४४९-१०, आसा, मः ४)
मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ (४४९-११, आसा, मः ४)
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥ (४४९-११, आसा, मः ४)
गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुन्ने राम राजे ॥ (४४९-१२, आसा, मः ४)

मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिन्ने ॥ (४४६-१२, आसा, मः ४)
मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मन्ने ॥ (४४६-१३, आसा, मः ४)
हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कम्मे ॥३॥ (४४६-१३, आसा, मः ४)
गुर अमृत भिन्नी देहुरी अमृतु बुरके राम राजे ॥ (४४६-१४, आसा, मः ४)
जिना गुरबाणी मनि भाईआ अमृति छकि छके ॥ (४४६-१४, आसा, मः ४)
गुर तुठै हरि पाइआ चूके धक धके ॥ (४४६-१५, आसा, मः ४)
हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥४॥६॥१६॥ (४४६-१५, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४४६-१६)
हरि अमृत भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ (४४६-१६, आसा, मः ४)
गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ (४४६-१७, आसा, मः ४)
धनु धन्नु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ (४४६-१७, आसा, मः ४)
जनु नानकु गुरु तिन्ी पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥ (४४६-१८, आसा, मः ४)
सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ (४४६-१८, आसा, मः ४)
सभ भाँडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ (४४६-१६, आसा, मः ४)
जो पावहि भाँडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ (४४६-१६, आसा, मः ४)

पन्ना ४५०

जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥ (४५०-१, आसा, मः ४)
हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी तूं अपर अपारो राम राजे ॥ (४५०-२, आसा, मः ४)
हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ (४५०-२, आसा, मः ४)
हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ (४५०-३, आसा, मः ४)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥ (४५०-३, आसा, मः ४)
जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ (४५०-४, आसा, मः ४)
हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ (४५०-४, आसा, मः ४)
हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ (४५०-५, आसा, मः ४)
जनु नानकु दासु हरि काँढिआ हरि पैज रखाए ॥४॥१०॥१७॥ (४५०-५, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४५०-६)
जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ (४५०-६, आसा, मः ४)
अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ (४५०-७, आसा, मः ४)
हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ (४५०-७, आसा, मः ४)
जन नानक नामु आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥ (४५०-८, आसा, मः ४)
जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ (४५०-८, आसा, मः ४)
इहु माणस जनमु दुलम्भु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ (४५०-६, आसा, मः ४)
हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥ (४५०-६, आसा, मः ४)
मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥२॥ (४५०-१०, आसा, मः ४)

तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ (४५०-१०, आसा, मः ४)
किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥ (४५०-११, आसा, मः ४)
जिन्ह तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ (४५०-११, आसा, मः ४)
जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥३॥ (४५०-१२, आसा, मः ४)
कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ (४५०-१२, आसा, मः ४)
जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ (४५०-१३, आसा, मः ४)
हरि करता सभु किछु जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ (४५०-१४, आसा, मः ४)
जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥ (४५०-१४, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४५०-१५)
जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ (४५०-१५, आसा, मः ४)
जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ (४५०-१६, आसा, मः ४)
हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ (४५०-१६, आसा, मः ४)
जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥ (४५०-१७, आसा, मः ४)
जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ (४५०-१७, आसा, मः ४)
गुरसिखंी सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ (४५०-१८, आसा, मः ४)
गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ (४५०-१८, आसा, मः ४)
जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥ (४५०-१९, आसा, मः ४)
गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम हरि तेरी राम राजे ॥ (४५०-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ४५१

करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ (४५१-१, आसा, मः ४)
गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ (४५१-१, आसा, मः ४)
जन नानक हरि पुन्नु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुन्न केरी ॥३॥ (४५१-२, आसा, मः ४)
गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ (४५१-३, आसा, मः ४)
कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ (४५१-३, आसा, मः ४)
हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिन्हा मेरा सतिगुरु तुठा ॥ (४५१-४, आसा, मः ४)
जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१९॥ (४५१-४, आसा, मः ४)
आसा महला ४ ॥ (४५१-५)
जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु दृड़ावै राम राजे ॥ (४५१-५, आसा, मः ४)
तिस की तृसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु धिआवै ॥ (४५१-६, आसा, मः ४)
जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ (४५१-६, आसा, मः ४)
जन नानक कउ हरि कृपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥ (४५१-७, आसा, मः ४)
जिनी गुरमुखि नामु धिआइआ तिना फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ (४५१-८, आसा, मः ४)
जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ (४५१-८, आसा, मः ४)
जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ (४५१-९, आसा, मः ४)

जिन्। नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्। मिलिआ हरि सोई ॥२॥ (४५१-९, आसा, मः ४)
जिन्। अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन् हरि रखणहारा राम राजे ॥ (४५१-१०, आसा, मः ४)
तिन् की निंदा कोई किआ करे जिन् हरि नामु पिआरा ॥ (४५१-११, आसा, मः ४)
जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ (४५१-११, आसा, मः ४)
जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥३॥ (४५१-१२, आसा, मः ४)
हरि जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ (४५१-१२, आसा, मः ४)
हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ (४५१-१३, आसा, मः ४)
अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ (४५१-१३, आसा, मः ४)
जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥४॥१३॥२०॥ (४५१-१४, आसा, मः ४)
आसा महला ४ छंत घरु ५ (४५१-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४५१-१६)
मेरे मन परदेसी वे पिआरे आउ घरे ॥ (४५१-१६, आसा, मः ४)
हरि गुरू मिलावहु मेरे पिआरे घरि वसै हरे ॥ (४५१-१६, आसा, मः ४)
रंगि रलीआ माणहु मेरे पिआरे हरि किरपा करे ॥ (४५१-१७, आसा, मः ४)
गुरु नानकु तुठा मेरे पिआरे मेले हरे ॥१॥ (४५१-१७, आसा, मः ४)
मै प्रेमु न चाखिआ मेरे पिआरे भाउ करे ॥ (४५१-१८, आसा, मः ४)
मनि तृसना न बुझी मेरे पिआरे नित आस करे ॥ (४५१-१८, आसा, मः ४)
नित जोबनु जावै मेरे पिआरे जमु सास हिरे ॥ (४५१-१८, आसा, मः ४)
भाग मणी सोहागणि मेरे पिआरे नानक हरि उरि धारे ॥२॥ (४५१-१९, आसा, मः ४)

पन्ना ४५२

पिर रतिअड़े मैडे लोइण मेरे पिआरे चातृक बूंद जिवै ॥ (४५२-१, आसा, मः ४)
मनु सीतलु होआ मेरे पिआरे हरि बूंद पीवै ॥ (४५२-१, आसा, मः ४)
तनि बिरहु जगावै मेरे पिआरे नीद न पवै किवै ॥ (४५२-२, आसा, मः ४)
हरि सजणु लधा मेरे पिआरे नानक गुरू लिवै ॥३॥ (४५२-२, आसा, मः ४)
चड़ि चेतु बसंतु मेरे पिआरे भलीअ रुते ॥ (४५२-३, आसा, मः ४)
पिर बाझड़िअहु मेरे पिआरे आँगणि धूड़ि लुते ॥ (४५२-३, आसा, मः ४)
मनि आस उडीणी मेरे पिआरे दुइ नैन जुते ॥ (४५२-३, आसा, मः ४)
गुरु नानकु देखि विगसी मेरे पिआरे जिउ मात सुते ॥४॥ (४५२-४, आसा, मः ४)
हरि कीआ कथा कहाणीआ मेरे पिआरे सतिगुरू सुणाईआ ॥ (४५२-४, आसा, मः ४)
गुर विटड़िअहु हउ घोली मेरे पिआरे जिनि हरि मेलाईआ ॥ (४५२-५, आसा, मः ४)
सभि आसा हरि पूरीआ मेरे पिआरे मनि चिंदिअड़ा फलु पाइआ ॥ (४५२-६, आसा, मः ४)
हरि तुठड़ा मेरे पिआरे जनु नानकु नामि समाइआ ॥५॥ (४५२-६, आसा, मः ४)
पिआरे हरि बिनु प्रेमु न खेलसा ॥ (४५२-७, आसा, मः ४)
किउ पाई गुरु जितु लगि पिआरा देखसा ॥ (४५२-७, आसा, मः ४)

हरि दातड़े मेलि गुरू मुखि गुरमुखि मेलसा ॥ (४५२-८, आसा, मः ४)
गुरु नानकु पाइआ मेरे पिआरे धुरि मसतकि लेखु सा ॥६॥१४॥२१॥ (४५२-८, आसा, मः ४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४५२-१०)
रागु आसा महला ५ छंत घरु १ ॥ (४५२-१०)
अनदो अनदु घणा मै सो प्रभु डीठा राम ॥ (४५२-१०, आसा, मः ५)
चाखिअड़ा चाखिअड़ा मै हरि रसु मीठा राम ॥ (४५२-११, आसा, मः ५)
हरि रसु मीठा मन महि वूठा सतिगुरु तूठा सहजु भइआ ॥ (४५२-११, आसा, मः ५)
गृहु वसि आइआ मंगलु गाइआ पंच दुसट ओइ भागि गइआ ॥ (४५२-१२, आसा, मः ५)
सीतल आघाणे अमृत बाणे साजन संत बसीठा ॥ (४५२-१३, आसा, मः ५)
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ सो प्रभु नैणी डीठा ॥१॥ (४५२-१३, आसा, मः ५)
सोहिअड़े सोहिअड़े मेरे बंक दुआरे राम ॥ (४५२-१४, आसा, मः ५)
पाहुनड़े पाहुनड़े मेरे संत पिआरे राम ॥ (४५२-१४, आसा, मः ५)
संत पिआरे कारज सारे नमस्कार करि लगे सेवा ॥ (४५२-१४, आसा, मः ५)
आपे जाञी आपे माञी आपि सुआमी आपि देवा ॥ (४५२-१५, आसा, मः ५)
अपणा कारजु आपि सवारे आपे धारन धारे ॥ (४५२-१५, आसा, मः ५)
कहु नानक सहु घर महि बैठा सोहे बंक दुआरे ॥२॥ (४५२-१६, आसा, मः ५)
नव निधे नउ निधे मेरे घर महि आई राम ॥ (४५२-१६, आसा, मः ५)
सभु किछु मै सभु किछु पाइआ नामु धिआई राम ॥ (४५२-१७, आसा, मः ५)
नामु धिआई सदा सखाई सहज सुभाई गोविंदा ॥ (४५२-१७, आसा, मः ५)
गणत मिटाई चूकी धाई कदे न विआपै मन चिंदा ॥ (४५२-१८, आसा, मः ५)
गोविंद गाजे अनहद वाजे अचरज सोभ बणाई ॥ (४५२-१८, आसा, मः ५)
कहु नानक पिरु मेरै संगे ता मै नव निधि पाई ॥३॥ (४५२-१९, आसा, मः ५)
सरसिअड़े सरसिअड़े मेरे भाई सभ मीता राम ॥ (४५२-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४५३

बिखमो बिखमु अखाड़ा मै गुर मिलि जीता राम ॥ (४५३-१, आसा, मः ५)
गुर मिलि जीता हरि हरि कीता तूटी भीता भर्म गड़ा ॥ (४५३-१, आसा, मः ५)
पाइआ खजाना बहुतु निधाना साणथ मेरी आपि खड़ा ॥ (४५३-२, आसा, मः ५)
सोई सुगिआना सो परधाना जो प्रभि अपना कीता ॥ (४५३-२, आसा, मः ५)
कहु नानक जाँ वलि सुआमी ता सरसे भाई मीता ॥४॥१॥ (४५३-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४५३-४)
अकथा हरि अकथ कथा किछु जाइ न जाणी राम ॥ (४५३-४, आसा, मः ५)
सुरि नर सुरि नर मुनि जन सहजि वखाणी राम ॥ (४५३-४, आसा, मः ५)
सहजे वखाणी अमिउ बाणी चरण कमल रंगु लाइआ ॥ (४५३-५, आसा, मः ५)
जपि एकु अलखु प्रभु निरंजनु मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ (४५३-५, आसा, मः ५)

तजि मानु मोहु विकारु दूजा जोती जोति समाणी ॥ (४५३-६, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक गुर प्रसादी सदा हरि रंगु माणी ॥१॥ (४५३-६, आसा, मः ५)
हरि संता हरि संत सजन मेरे मीत सहाई राम ॥ (४५३-७, आसा, मः ५)
वडभागी वडभागी सतसंगति पाई राम ॥ (४५३-७, आसा, मः ५)
वडभागी पाए नामु धिआए लाथे दूख संतापै ॥ (४५३-८, आसा, मः ५)
गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे आपु मिटाइआ आपै ॥ (४५३-८, आसा, मः ५)
करि किरपा मेले प्रभि अपुनै विछुड़ि कतहि न जाई ॥ (४५३-९, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक दासु तेरा सदा हरि सरणाई ॥२॥ (४५३-९, आसा, मः ५)
हरि दरे हरि दरि सोहनि तेरे भगत पिआरे राम ॥ (४५३-१०, आसा, मः ५)
वारी तिन वारी जावा सद बलिहारे राम ॥ (४५३-१०, आसा, मः ५)
सद बलिहारे करि नमसकारे जिन भेटत प्रभु जाता ॥ (४५३-११, आसा, मः ५)
घटि घटि रवि रहिआ सभ थाई पूरन पुरखु बिधाता ॥ (४५३-११, आसा, मः ५)
गुरु पूरा पाइआ नामु धिआइआ जूऐ जनमु न हारे ॥ (४५३-१२, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि तेरी राखु किरपा धारे ॥३॥ (४५३-१३, आसा, मः ५)
बेअंता बेअंत गुण तेरे केतक गावा राम ॥ (४५३-१३, आसा, मः ५)
तेरे चरणा तेरे चरण धूड़ि वडभागी पावा राम ॥ (४५३-१३, आसा, मः ५)
हरि धूड़ी न्हाईऐ मैलु गवाईऐ जनम मरण दुख लाथे ॥ (४५३-१४, आसा, मः ५)
अंतरि बाहरि सदा हदूरे परमेसरु प्रभु साथे ॥ (४५३-१५, आसा, मः ५)
मिटे दूख कलिआण कीर्तन बहुड़ि जोनि न पावा ॥ (४५३-१५, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक गुर सरणि तरीऐ आपणे प्रभ भावा ॥४॥२॥ (४५३-१६, आसा, मः ५)
आसा छंत महला ५ घरु ४ (४५३-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४५३-१७)
हरि चरन कमल मनु बेधिआ किछु आन न मीठा राम राजे ॥ (४५३-१८, आसा, मः ५)
मिलि संतसंगति आराधिआ हरि घटि घटे डीठा राम राजे ॥ (४५३-१८, आसा, मः ५)
हरि घटि घटे डीठा अमृतो वूठा जनम मरन दुख नाठे ॥ (४५३-१९, आसा, मः ५)
गुण निधि गाइआ सभ दूख मिटाइआ हउमै बिनसी गाठे ॥ (४५३-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४५४

प्रिउ सहज सुभाई छोडि न जाई मनि लागा रंगु मजीठा ॥ (४५४-१, आसा, मः ५)
हरि नानक बेधे चरन कमल किछु आन न मीठा ॥१॥ (४५४-२, आसा, मः ५)
जिउ राती जलि माछुली तिउ राम रसि माते राम राजे ॥ (४५४-२, आसा, मः ५)
गुर पूरै उपदेसिआ जीवन गति भाते राम राजे ॥ (४५४-३, आसा, मः ५)
जीवन गति सुआमी अंतरजामी आपि लीए लड़ि लाए ॥ (४५४-३, आसा, मः ५)
हरि रतन पदारथो परगटो पूरनो छोडि न कतहू जाए ॥ (४५४-४, आसा, मः ५)
प्रभु सुघरु सरूपु सुजानु सुआमी ता की मिटै न दाते ॥ (४५४-४, आसा, मः ५)

जल संगि राती माछुली नानक हरि माते ॥२॥ (४५४-५, आसा, मः ५)
चातृकु जाचै बूंद जिउ हरि प्रान अधारा राम राजे ॥ (४५४-५, आसा, मः ५)
मालु खजीना सुत भ्रात मीत सभहूं ते पिआरा राम राजे ॥ (४५४-६, आसा, मः ५)
सभहूं ते पिआरा पुरखु निरारा ता की गति नही जाणीऐ ॥ (४५४-६, आसा, मः ५)
हरि सासि गिरासि न बिसरै कबहूं गुर सबदी रंगु माणीऐ ॥ (४५४-७, आसा, मः ५)
प्रभु पुरखु जगजीवनो संत रसु पीवनो जपि भर्म मोह दुख डारा ॥ (४५४-८, आसा, मः ५)
चातृकु जाचै बूंद जिउ नानक हरि पिआरा ॥३॥ (४५४-८, आसा, मः ५)
मिले नराइण आपणे मानोरथो पूरा राम राजे ॥ (४५४-९, आसा, मः ५)
ढाठी भीति भरम्म की भेटत गुरु सूरा राम राजे ॥ (४५४-९, आसा, मः ५)
पूरन गुर पाए पुरबि लिखाए सभ निधि दीन दइआला ॥ (४५४-१०, आसा, मः ५)
आदि मधि अंति प्रभु सोई सुंदर गुर गोपाला ॥ (४५४-१०, आसा, मः ५)
सूख सहज आनंद घनेरे पतित पावन साधू धूरा ॥ (४५४-११, आसा, मः ५)
हरि मिले नराइण नानका मानोरथो पूरा ॥४॥१॥३॥ (४५४-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ छंत घरु ६ (४५४-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४५४-१४)
सलोकु ॥ (४५४-१४)
जा कउ भए कृपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ (४५४-१४, आसा, मः ५)
नानक प्रीति लगी तिन्ह राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥ (४५४-१४, आसा, मः ५)
छंतु ॥ (४५४-१५)
जल दुध निआई रीति अब दुध आच नही मन ऐसी प्रीति हरे ॥ (४५४-१५, आसा, मः ५)
अब उरझिओ अलि कमलेह बासन माहि मगन इकु खिनु भी नाहि टरै ॥ (४५४-१६, आसा, मः ५)
खिनु नाहि टरीऐ प्रीति हरीऐ सीगार हभि रस अरपीऐ ॥ (४५४-१६, आसा, मः ५)
जह दूखु सुणीऐ जम पंथु भणीऐ तह साधसंगि न डरपीऐ ॥ (४५४-१७, आसा, मः ५)
करि कीरति गोविंद गुणीऐ सगल प्राछत दुख हरे ॥ (४५४-१८, आसा, मः ५)
कहु नानक छंत गोविंद हरि के मन हरि सिउ नेहु करेहु ऐसी मन प्रीति हरे ॥१॥ (४५४-१८, आसा, मः ५)
जैसी मछुली नीर इकु खिनु भी ना धीरे मन ऐसा नेहु करेहु ॥ (४५४-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४५५

जैसी चातृक पिआस खिनु खिनु बूंद चवै बरसु सुहावे मेहु ॥ (४५५-१, आसा, मः ५)
हरि प्रीति करीजै इहु मनु दीजै अति लाईऐ चितु मुरारी ॥ (४५५-१, आसा, मः ५)
मानु न कीजै सरणि परीजै दरसन कउ बलिहारी ॥ (४५५-२, आसा, मः ५)
गुर सुप्रसन्ने मिलु नाह विछुन्ने धन देदी साचु सनेहा ॥ (४५५-२, आसा, मः ५)
कहु नानक छंत अनंत ठाकुर के हरि सिउ कीजै नेहा मन ऐसा नेहु करेहु ॥२॥ (४५५-३, आसा, मः ५)
चकवी सूर सनेहु चितवै आस घणी कदि दिनीअरु देखीऐ ॥ (४५५-४, आसा, मः ५)
कोकिल अम्ब परीति चवै सुहावीआ मन हरि रंगु कीजीऐ ॥ (४५५-४, आसा, मः ५)

हरि प्रीति करीजै मानु न कीजै इक राती के हभि पाहुणिआ ॥ (४५५-५, आसा, मः ५)
अब किआ रंगु लाइओ मोहु रचाइओ नागे आवण जावणिआ ॥ (४५५-६, आसा, मः ५)
थिरु साधू सरणी पड़ीऐ चरणी अब टूटसि मोहु जु कितीऐ ॥ (४५५-६, आसा, मः ५)
कहु नानक छंत दइआल पुरख के मन हरि लाइ परीति कब दिनीअरु देखीऐ ॥३॥ (४५५-७, आसा, मः ५)
निसि कुरंक जैसे नाद सुणि स्रवणी हीउ डिवै मन ऐसी प्रीति कीजै ॥ (४५५-८, आसा, मः ५)
जैसी तरुणि भतार उरझी पिरहि सिवै इहु मनु लाल दीजै ॥ (४५५-८, आसा, मः ५)
मनु लालहि दीजै भोग करीजै हभि खुसीआ रंग माणे ॥ (४५५-९, आसा, मः ५)
पिरु अपना पाइआ रंगु लालु बणाइआ अति मिलिओ मित्र चिराणे ॥ (४५५-१०, आसा, मः ५)
गुरु थीआ साखी ता डिठमु आखी पिर जेहा अवरु न दीसै ॥ (४५५-१०, आसा, मः ५)
कहु नानक छंत दइआल मोहन के मन हरि चरण गहीजै ऐसी मन प्रीति कीजै ॥४॥१॥४॥ (४५५-११, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४५५-१२)
सलोकु ॥ (४५५-१२)
बनु बनु फिरती खोजती हारी बहु अवगाहि ॥ (४५५-१२, आसा, मः ५)
नानक भेटे साध जब हरि पाइआ मन माहि ॥१॥ (४५५-१३, आसा, मः ५)
छंत ॥ (४५५-१३)
जा कउ खोजहि असंख मुनी अनेक तपे ॥ (४५५-१३, आसा, मः ५)
ब्रह्मे कोटि अराधहि गिआनी जाप जपे ॥ (४५५-१४, आसा, मः ५)
जप ताप संजम किरिआ पूजा अनिक सोधन बंदना ॥ (४५५-१४, आसा, मः ५)
करि गवनु बसुधा तीरथह मजनु मिलन कउ निरंजना ॥ (४५५-१५, आसा, मः ५)
मानुख बनु तिनु पसू पंखी सगल तुझहि अराधते ॥ (४५५-१५, आसा, मः ५)
दइआल लाल गोबिंद नानक मिलु साधसंगति होइ गते ॥१॥ (४५५-१६, आसा, मः ५)
कोटि बिसन अवतार संकर जटाधार ॥ (४५५-१६, आसा, मः ५)
चाहहि तुझहि दइआर मनि तनि रुच अपार ॥ (४५५-१७, आसा, मः ५)
अपार अगम गोबिंद ठाकुर सगल पूरक प्रभ धनी ॥ (४५५-१७, आसा, मः ५)
सुर सिध गण गंधरब धिआवहि जख किंनर गुण भनी ॥ (४५५-१८, आसा, मः ५)
कोटि इंद्र अनेक देवा जपत सुआमी जै जै कार ॥ (४५५-१८, आसा, मः ५)
अनाथ नाथ दइआल नानक साधसंगति मिलि उधार ॥२॥ (४५५-१९, आसा, मः ५)
कोटि देवी जा कउ सेवहि लखिमी अनिक भाति ॥ (४५५-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४५६

गुप्त प्रगट जा कउ अराधहि पउण पाणी दिनसु राति ॥ (४५६-१, आसा, मः ५)
नखिअत्र ससीअर सूर धिआवहि बसुध गगना गावए ॥ (४५६-१, आसा, मः ५)
सगल खाणी सगल बाणी सदा सदा धिआवए ॥ (४५६-२, आसा, मः ५)
सिमृति पुराण चतुर बेदह खटु सासत्र जा कउ जपाति ॥ (४५६-३, आसा, मः ५)

पतित पावन भगति वछल नानक मिलीऐ संगि साति ॥३॥ (४५६-३, आसा, मः ५)
जेती प्रभू जनाई रसना तेत भनी ॥ (४५६-४, आसा, मः ५)
अनजानत जो सेवै तेती नह जाइ गनी ॥ (४५६-४, आसा, मः ५)
अविगत अगनत अथाह ठाकुर सगल मंझे बाहरा ॥ (४५६-४, आसा, मः ५)
सर्ब जाचिक एकु दाता नह दूरि संगी जाहरा ॥ (४५६-५, आसा, मः ५)
वसि भगत थीआ मिले जीआ ता की उपमा कित गनी ॥ (४५६-५, आसा, मः ५)
इहु दानु मानु नानकु पाए सीसु साधह धरि चरनी ॥४॥२॥५॥ (४५६-६, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४५६-७)
सलोक ॥ (४५६-७)
उदमु करहु वडभागीहो सिमरहु हरि हरि राइ ॥ (४५६-७, आसा, मः ५)
नानक जिसु सिमरत सभ सुख होवहि दूखु दरदु भ्रमु जाइ ॥१॥ (४५६-७, आसा, मः ५)
छंतु ॥ (४५६-८)
नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥ (४५६-८, आसा, मः ५)
भेटत साधू संग जम पुरि नह जाईऐ ॥ (४५६-८, आसा, मः ५)
दूख दरद न भउ बिआपै नामु सिमरत सद सुखी ॥ (४५६-९, आसा, मः ५)
सासि सासि अराधि हरि हरि धिआइ सो प्रभु मनि मुखी ॥ (४५६-९, आसा, मः ५)
कृपाल दइआल रसाल गुण निधि करि दइआ सेवा लाईऐ ॥ (४५६-१०, आसा, मः ५)
नानकु पइअम्पै चरण जम्पै नामु जपत गोबिंद नह अलसाईऐ ॥१॥ (४५६-११, आसा, मः ५)
पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥ (४५६-११, आसा, मः ५)
भर्म अंधेर बिनास गिआन गुर अंजना ॥ (४५६-१२, आसा, मः ५)
गुर गिआन अंजन प्रभ निरंजन जलि थलि महीअलि पूरिआ ॥ (४५६-१२, आसा, मः ५)
इक निमख जा कै रिदै वसिआ मिटे तिसहि विसूरिआ ॥ (४५६-१३, आसा, मः ५)
अगाधि बोध समरथ सुआमी सर्ब का भउ भंजना ॥ (४५६-१३, आसा, मः ५)
नानकु पइअम्पै चरण जम्पै पावन पतित पुनीत नाम निरंजना ॥२॥ (४५६-१४, आसा, मः ५)
ओट गही गोपाल दइआल कृपा निधे ॥ (४५६-१५, आसा, मः ५)
मोहि आसर तुअ चरन तुमारी सरनि सिधे ॥ (४५६-१५, आसा, मः ५)
हरि चरन कारन करन सुआमी पतित उधरन हरि हरे ॥ (४५६-१५, आसा, मः ५)
सागर संसार भव उतार नामु सिमरत बहु तरे ॥ (४५६-१६, आसा, मः ५)
आदि अंति बेअंत खोजहि सुनी उधरन संतसंग बिधे ॥ (४५६-१६, आसा, मः ५)
नानकु पइअम्पै चरन जम्पै ओट गही गोपाल दइआल कृपा निधे ॥३॥ (४५६-१७, आसा, मः ५)
भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥ (४५६-१८, आसा, मः ५)
जह जह संत अराधहि तह तह प्रगटाइआ ॥ (४५६-१८, आसा, मः ५)
प्रभि आपि लीए समाइ सहजि सुभाइ भगत कारज सारिआ ॥ (४५६-१९, आसा, मः ५)
आनंद हरि जस महा मंगल सर्ब दूख विसारिआ ॥ (४५६-१९, आसा, मः ५)

चमतकार प्रगासु दह दिस एकु तह द्रिसटाइआ ॥ (४५७-१, आसा, मः ५)
नानकु पइअम्पै चरण जम्पै भगति वछलु हरि बिरदु आपि बनाइआ ॥४॥३॥६॥ (४५७-१, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४५७-२)
थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥ (४५७-२, आसा, मः ५)
जा कै ग्रिहि हरि नाहु सु सद ही रावए ॥ (४५७-३, आसा, मः ५)
अविनासी अविगतु सो प्रभु सदा नवतनु निरमला ॥ (४५७-३, आसा, मः ५)
नह दूरि सदा हदूरि ठाकुरु दह दिस पूरनु सद सदा ॥ (४५७-४, आसा, मः ५)
प्रानपति गति मति जा ते प्रिअ प्रीति प्रीतमु भावए ॥ (४५७-४, आसा, मः ५)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै थिरु संतन सोहागु मरै न जावए ॥१॥ (४५७-५, आसा, मः ५)
जा कउ राम भतारु ता कै अनदु घणा ॥ (४५७-५, आसा, मः ५)
सुखवंती सा नारि सोभा पूरि बणा ॥ (४५७-६, आसा, मः ५)
माणु महतु कलिआणु हरि जसु संगि सुरजनु सो प्रभू ॥ (४५७-६, आसा, मः ५)
सरब सिधि नव निधि तितु ग्रिहि नही ऊना सभु कछू ॥ (४५७-७, आसा, मः ५)
मधुर बानी पिरहि मानी थिरु सोहागु ता का बणा ॥ (४५७-७, आसा, मः ५)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा को रामु भतारु ता कै अनदु घणा ॥२॥ (४५७-८, आसा, मः ५)
आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥ (४५७-९, आसा, मः ५)
पीसउ चरण पखारि आपु तिआगीऐ ॥ (४५७-९, आसा, मः ५)
तजि आपु मिटै संतापु आपु नह जाणाईऐ ॥ (४५७-९, आसा, मः ५)
सरणि गहीजै मानि लीजै करे सो सुखु पाईऐ ॥ (४५७-१०, आसा, मः ५)
करि दास दासी तजि उदासी कर जोड़ि दिनु रैणि जागीऐ ॥ (४५७-१०, आसा, मः ५)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै आउ सखी संत पासि सेवा लागीऐ ॥३॥ (४५७-११, आसा, मः ५)
जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥ (४५७-१२, आसा, मः ५)
ता की पूरन आस जिन्ह साधसंगु पाइआ ॥ (४५७-१२, आसा, मः ५)
साधसंगि हरि कै रंगि गोबिंद सिमरण लागिआ ॥ (४५७-१२, आसा, मः ५)
भरमु मोहु विकारु दूजा सगल तिनहि तिआगिआ ॥ (४५७-१३, आसा, मः ५)
मनि सांँति सहजु सुभाउ वूठा अनद मंगल गुण गाइआ ॥ (४५७-१३, आसा, मः ५)
नानकु वखाणै गुर बचनि जाणै जा कै मसतकि भाग सि सेवा लाइआ ॥४॥४॥७॥ (४५७-१४, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४५७-१५)
सलोकु ॥ (४५७-१५)
हरि हरि नामु जपंतिआ कछु न कहै जमकालु ॥ (४५७-१५, आसा, मः ५)
नानक मनु तनु सुखी होइ अंते मिलै गोपालु ॥१॥ (४५७-१६, आसा, मः ५)
छंत ॥ (४५७-१६)
मिलउ संतन कै संगि मोहि उधारि लेहु ॥ (४५७-१६, आसा, मः ५)

बिनउ करउ कर जोड़ि हरि हरि नामु देहु ॥ (४५७-१७, आसा, मः ५)
हरि नामु मागउ चरण लागउ मानु तिआगउ तुम् दइआ ॥ (४५७-१७, आसा, मः ५)
कतहूं न धावउ सरणि पावउ करुणा मै प्रभ करि मइआ ॥ (४५७-१८, आसा, मः ५)
समरथ अगथ अपार निर्मल सुणहु सुआमी बिनउ एहु ॥ (४५७-१८, आसा, मः ५)
कर जोड़ि नानक दानु मागै जनम मरण निवारि लेहु ॥१॥ (४५७-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४५८

अपराधी मतिहीनु निरगुनु अनाथु नीचु ॥ (४५८-१, आसा, मः ५)
सठ कठोरु कुलहीनु बिआपत मोह कीचु ॥ (४५८-१, आसा, मः ५)
मल भर्म कर्म अहं ममता मरणु चीति न आवए ॥ (४५८-१, आसा, मः ५)
बनिता बिनोद अनंद माइआ अगिआनता लपटावए ॥ (४५८-२, आसा, मः ५)
खिसै जोबनु बधै जरूआ दिन निहारे संगि मीचु ॥ (४५८-३, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक आस तेरी सरणि साधू राखु नीचु ॥२॥ (४५८-३, आसा, मः ५)
भरमे जनम अनेक संकट महा जोन ॥ (४५८-४, आसा, मः ५)
लपटि रहिओ तिह संगि मीठे भोग सोन ॥ (४५८-४, आसा, मः ५)
भ्रमत भार अगनत आइओ बहु प्रदेसह धाइओ ॥ (४५८-४, आसा, मः ५)
अब ओट धारी प्रभ मुरारी सर्ब सुख हरि नाइओ ॥ (४५८-५, आसा, मः ५)
राखनहारे प्रभ पिआरे मुझ ते कछू न होआ होन ॥ (४५८-५, आसा, मः ५)
सूख सहज आनंद नानक कृपा तेरी तरै भउन ॥३॥ (४५८-६, आसा, मः ५)
नाम धारीक उधारे भगतह संसा कउन ॥ (४५८-६, आसा, मः ५)
जेन केन परकारे हरि हरि जसु सुनहु स्रवन ॥ (४५८-७, आसा, मः ५)
सुनि स्रवन बानी पुरख गिआनी मनि निधाना पावहे ॥ (४५८-७, आसा, मः ५)
हरि रंगि राते प्रभ बिधाते राम के गुण गावहे ॥ (४५८-८, आसा, मः ५)
बसुध कागद बनराज कलमा लिखण कउ जे होइ पवन ॥ (४५८-८, आसा, मः ५)
बेअंत अंतु न जाइ पाइआ गही नानक चरण सरन ॥४॥५॥८॥ (४५८-९, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४५८-१०)
पुरख पते भगवान ता की सरणि गही ॥ (४५८-१०, आसा, मः ५)
निरभउ भए परान चिंता सगल लही ॥ (४५८-१०, आसा, मः ५)
मात पिता सुत मीत सुरिजन इसट बंधप जाणिआ ॥ (४५८-११, आसा, मः ५)
गहि कंठि लाइआ गुरि मिलाइआ जसु बिमल संत वखाणिआ ॥ (४५८-११, आसा, मः ५)
बेअंत गुण अनेक महिमा कीमति कछू न जाइ कही ॥ (४५८-१२, आसा, मः ५)
प्रभ एक अनिक अलख ठाकुर ओट नानक तिसु गही ॥१॥ (४५८-१२, आसा, मः ५)
अमृत बनु संसारु सहाई आपि भए ॥ (४५८-१३, आसा, मः ५)
राम नामु उर हारु बिखु के दिवस गए ॥ (४५८-१३, आसा, मः ५)
गतु भर्म मोह बिकार बिनसे जोनि आवण सभ रहे ॥ (४५८-१४, आसा, मः ५)

अगनि सागर भए सीतल साध अंचल गहि रहे ॥ (४५८-१४, आसा, मः ५)
गोविंद गुपाल दइआल सम्मृथ बोलि साधू हरि जै जए ॥ (४५८-१५, आसा, मः ५)
नानक नामु धिआइ पूरन साधसंगि पाई पर्म गते ॥२॥ (४५८-१५, आसा, मः ५)
जह देखउ तह संगि एको रवि रहिआ ॥ (४५८-१६, आसा, मः ५)
घट घट वासी आपि विरलै किनै लहिआ ॥ (४५८-१६, आसा, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरि पूरन कीट हसति समानिआ ॥ (४५८-१७, आसा, मः ५)
आदि अंते मधि सोई गुर प्रसादी जानिआ ॥ (४५८-१७, आसा, मः ५)
ब्रह्मु पसरिआ ब्रह्म लीला गोविंद गुण निधि जनि कहिआ ॥ (४५८-१८, आसा, मः ५)
सिमरि सुआमी अंतरजामी हरि एकु नानक रवि रहिआ ॥३॥ (४५८-१९, आसा, मः ५)
दिनु रैणि सुहावड़ी आई सिमरत नामु हरे ॥ (४५८-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४५९

चरण कमल संगि प्रीति कलमल पाप टरे ॥ (४५९-१, आसा, मः ५)
दूख भूख दारिद्र नाठे प्रगटु मगु दिखाइआ ॥ (४५९-१, आसा, मः ५)
मिलि साधसंगे नाम रंगे मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ (४५९-२, आसा, मः ५)
हरि देखि दरसनु इछ पुन्नी कुल सम्बूहा सभि तरे ॥ (४५९-२, आसा, मः ५)
दिनसु रैणि अनंद अनदिनु सिमरंत नानक हरि हरे ॥४॥६॥९॥ (४५९-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ छंत घरु ७ (४५९-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४५९-४)
सलोकु ॥ (४५९-५)
सुभ चिंतन गोबिंद रमण निर्मल साधू संग ॥ (४५९-५, आसा, मः ५)
नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥१॥ (४५९-५, आसा, मः ५)
छंत ॥ (४५९-६)
भिन्नी रैनड़ीऐ चामकनि तारे ॥ (४५९-६, आसा, मः ५)
जागहि संत जना मेरे राम पिआरे ॥ (४५९-६, आसा, मः ५)
राम पिआरे सदा जागहि नामु सिमरहि अनदिनो ॥ (४५९-६, आसा, मः ५)
चरण कमल धिआनु हिरदै प्रभ बिसरु नाही इकु खिनो ॥ (४५९-७, आसा, मः ५)
तजि मानु मोहु बिकारु मन का कलमला दुख जारे ॥ (४५९-७, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक सदा जागहि हरि दास संत पिआरे ॥१॥ (४५९-८, आसा, मः ५)
मेरी सेजड़ीऐ आडम्बरु बणिआ ॥ (४५९-९, आसा, मः ५)
मनि अनदु भइआ प्रभु आवत सुणिआ ॥ (४५९-९, आसा, मः ५)
प्रभ मिले सुआमी सुखह गामी चाव मंगल रस भरे ॥ (४५९-९, आसा, मः ५)
अंग संगि लागे दूख भागे प्राण मन तन सभि हरे ॥ (४५९-१०, आसा, मः ५)
मन इछ पाई प्रभ धिआई संजोगु साहा सुभ गणिआ ॥ (४५९-१०, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक मिले स्रीधर सगल आनंद रसु बणिआ ॥२॥ (४५९-११, आसा, मः ५)

मिलि सखीआ पुछहि कहु कंत नीसाणी ॥ (४५६-१२, आसा, मः ५)
रसि प्रेम भरी कछु बोलि न जाणी ॥ (४५६-१२, आसा, मः ५)
गुण गूड़ गुप्त अपार करते निगम अंतु न पावहे ॥ (४५६-१२, आसा, मः ५)
भगति भाइ धिआइ सुआमी सदा हरि गुण गावहे ॥ (४५६-१३, आसा, मः ५)
सगल गुण सुगिआन पूरन आपणे प्रभ भाणी ॥ (४५६-१३, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक रंगि राती प्रेम सहजि समाणी ॥३॥ (४५६-१४, आसा, मः ५)
सुख सोहिलड़े हरि गावण लागे ॥ (४५६-१४, आसा, मः ५)
साजन सरसिअड़े दुख दुसमन भागे ॥ (४५६-१५, आसा, मः ५)
सुख सहज सरसे हरि नामि रहसे प्रभि आपि किरपा धारीआ ॥ (४५६-१५, आसा, मः ५)
हरि चरण लागे सदा जागे मिले प्रभ बनवारीआ ॥ (४५६-१६, आसा, मः ५)
सुभ दिवस आए सहजि पाए सगल निधि प्रभ पागे ॥ (४५६-१६, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी सदा हरि जन तागे ॥४॥१॥१०॥ (४५६-१७, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४५६-१७)
उठि वंञु वटाऊड़िआ तै किआ चिरु लाइआ ॥ (४५६-१८, आसा, मः ५)
मुहलति पुन्नड़ीआ कितु कूड़ि लोभाइआ ॥ (४५६-१८, आसा, मः ५)
कूड़े लुभाइआ धोहु माइआ करहि पाप अमितिआ ॥ (४५६-१६, आसा, मः ५)
तनु भसम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़ै जितिआ ॥ (४५६-१६, आसा, मः ५)

पन्ना ४६०

मालु जोबनु छोडि वैसी रहिओ पैनणु खाइआ ॥ (४६०-१, आसा, मः ५)
नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरतु मिटाइआ ॥१॥ (४६०-१, आसा, मः ५)
फाथोहु मिरग जिवै पेखि रैणि चंद्राइणु ॥ (४६०-२, आसा, मः ५)
सूखहु दूख भए नित पाप कमाइणु ॥ (४६०-२, आसा, मः ५)
पापा कमाणे छडहि नाही लै चले घति गलाविआ ॥ (४६०-२, आसा, मः ५)
हरिचंदउरी देखि मूठा कूड़ु सेजा राविआ ॥ (४६०-३, आसा, मः ५)
लबि लोभि अहंकारि माता गरबि भइआ समाइणु ॥ (४६०-३, आसा, मः ५)
नानक मृग अगिआनि बिनसे नह मिटै आवणु जाइणु ॥२॥ (४६०-४, आसा, मः ५)
मिठै मखु मुआ किउ लए ओडारी ॥ (४६०-५, आसा, मः ५)
हसती गरति पइआ किउ तरीऐ तारी ॥ (४६०-५, आसा, मः ५)
तरणु दुहेला भइआ खिन महि खसमु चिति न आइओ ॥ (४६०-५, आसा, मः ५)
दूखा सजाई गणत नाही कीआ अपणा पाइओ ॥ (४६०-६, आसा, मः ५)
गुझा कमाणा प्रगटु होआ ईत उतहि खुआरी ॥ (४६०-७, आसा, मः ५)
नानक सतिगुर बाझु मूठा मनमुखो अहंकारी ॥३॥ (४६०-७, आसा, मः ५)
हरि के दास जीवे लगि प्रभ की चरणी ॥ (४६०-७, आसा, मः ५)
कंठि लगाइ लीए तिसु ठाकुर सरणी ॥ (४६०-८, आसा, मः ५)

बल बुधि गिआनु धिआनु अपणा आपि नामु जपाइआ ॥ (४६०-८, आसा, मः ५)
साधसंगति आपि होआ आपि जगतु तराइआ ॥ (४६०-९, आसा, मः ५)
राखि लीए रखणहारै सदा निर्मल करणी ॥ (४६०-९, आसा, मः ५)
नानक नरकि न जाहि कबहूं हरि संत हरि की सरणी ॥४॥२॥११॥ (४६०-१०, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४६०-११)
वंञु मेरे आलसा हरि पासि बेनंती ॥ (४६०-११, आसा, मः ५)
रावउ सहु आपनड़ा प्रभ संगि सोहंती ॥ (४६०-११, आसा, मः ५)
संगे सोहंती कंत सुआमी दिनसु रैणी रावीऐ ॥ (४६०-११, आसा, मः ५)
सासि सासि चितारि जीवा प्रभु पेखि हरि गुण गावीऐ ॥ (४६०-१२, आसा, मः ५)
बिरहा लजाइआ दरसु पाइआ अमिउ दृसटि सिंचंती ॥ (४६०-१३, आसा, मः ५)
बिनवंति नानकु मेरी इछ पुन्नी मिले जिसु खोजंती ॥१॥ (४६०-१३, आसा, मः ५)
नसि वंञहु किलविखहु करता घरि आइआ ॥ (४६०-१४, आसा, मः ५)
दूतह दहनु भइआ गोविंदु प्रगटाइआ ॥ (४६०-१४, आसा, मः ५)
प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन साधसंगि वखाणिआ ॥ (४६०-१५, आसा, मः ५)
आचरजु डीठा अमिउ वूठा गुर प्रसादी जाणिआ ॥ (४६०-१५, आसा, मः ५)
मनि साँति आई वजी वधाई नह अंतु जाई पाइआ ॥ (४६०-१६, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक सुख सहजि मेला प्रभू आपि बणाइआ ॥२॥ (४६०-१६, आसा, मः ५)
नरक न डीठड़िआ सिमरत नाराइण ॥ (४६०-१७, आसा, मः ५)
जै जै धरमु करे दूत भए पलाइण ॥ (४६०-१७, आसा, मः ५)
धर्म धीरज सहज सुखीए साधसंगति हरि भजे ॥ (४६०-१८, आसा, मः ५)
करि अनुग्रहु राखि लीने मोह ममता सभ तजे ॥ (४६०-१८, आसा, मः ५)
गहि कंठि लाए गुरि मिलाए गोविंद जपत अघाइण ॥ (४६०-१९, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक सिमरि सुआमी सगल आस पुजाइण ॥३॥ (४६०-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४६१

निधि सिधि चरण गहे ता केहा काड़ा ॥ (४६१-१, आसा, मः ५)
सभु किछु वसि जिसै सो प्रभू असाड़ा ॥ (४६१-१, आसा, मः ५)
गहि भुजा लीने नाम दीने करु धारि मसतकि राखिआ ॥ (४६१-१, आसा, मः ५)
संसार सागरु नह विआपै अमिउ हरि रसु चाखिआ ॥ (४६१-२, आसा, मः ५)
साधसंगे नाम रंगे रणु जीति वडा अखाड़ा ॥ (४६१-३, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी बहुड़ि जमि न उपाड़ा ॥४॥३॥१२॥ (४६१-३, आसा, मः ५)
आसा महला ५ ॥ (४६१-४)
दिनु राति कमाइअड़ो सो आइओ माथै ॥ (४६१-४, आसा, मः ५)
जिसु पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ॥ (४६१-४, आसा, मः ५)
संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाईऐ ॥ (४६१-५, आसा, मः ५)

सुकृतु कीजै नामु लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥ (४६१-५, आसा, मः ५)
आठ पहर हरि नामु सिमरहु चलै तेरै साथे ॥ (४६१-६, आसा, मः ५)
भजु साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ॥१॥ (४६१-६, आसा, मः ५)
वलवंच करि उदरु भरहि मूरख गावारा ॥ (४६१-७, आसा, मः ५)
सभु किछु दे रहिआ हरि देवणहारा ॥ (४६१-७, आसा, मः ५)
दातारु सदा दइआलु सुआमी काइ मनहु विसारीऐ ॥ (४६१-८, आसा, मः ५)
मिलु साधसंगे भजु निसंगे कुल समूहा तारीऐ ॥ (४६१-८, आसा, मः ५)
सिध साधिक देव मुनि जन भगत नामु अधारा ॥ (४६१-९, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक सदा भजीऐ प्रभु एकु करणैहारा ॥२॥ (४६१-९, आसा, मः ५)
खोटु न कीचई प्रभु परखणहारा ॥ (४६१-१०, आसा, मः ५)
कूड़ु कपटु कमावदड़े जनमहि संसारा ॥ (४६१-१०, आसा, मः ५)
संसारु सागरु तिन्ही तरिआ जिन्ही एकु धिआइआ ॥ (४६१-१०, आसा, मः ५)
तजि कामु क्रोधु अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ॥ (४६१-११, आसा, मः ५)
जलि थलि महीअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा ॥ (४६१-१२, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ॥३॥ (४६१-१२, आसा, मः ५)
पेखु हरिचंदउरड़ी असथिरु किछु नाही ॥ (४६१-१३, आसा, मः ५)
माइआ रंग जेते से संगि न जाही ॥ (४६१-१३, आसा, मः ५)
हरि संगि साथी सदा तेरै दिनसु रैणि समालीऐ ॥ (४६१-१३, आसा, मः ५)
हरि एक बिनु कछु अवरु नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ॥ (४६१-१४, आसा, मः ५)
मीतु जोबनु मालु सरबसु प्रभु एकु करि मन माही ॥ (४६१-१५, आसा, मः ५)
बिनवंति नानकु वडभागि पाईऐ सूखि सहजि समाही ॥४॥४॥१३॥ (४६१-१५, आसा, मः ५)
आसा महला ५ छंत घरु ८ (४६१-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६१-१८)
कमला भ्रम भीति कमला भ्रम भीति हे तीखण मद बिपरीति हे अवध अकारथ जात ॥ (४६१-१८, आसा, मः ५)
गहबर बन घोर गहबर बन घोर हे गृह मूसत मन चोर हे दिनकरो अनदिनु खात ॥ (४६१-१९, आसा, मः ५)
दिन खात जात बिहात प्रभ बिनु मिलहु प्रभ करुणा पते ॥ (४६१-१९, आसा, मः ५)

पन्ना ४६२

जनम मरण अनेक बीते प्रिअ संग बिनु कछु नह गते ॥ (४६२-१, आसा, मः ५)
कुल रूप धूप गिआनहीनी तुझ बिना मोहि कवन मात ॥ (४६२-२, आसा, मः ५)
कर जोड़ि नानकु सरणि आइओ प्रिअ नाथ नरहर करहु गात ॥१॥ (४६२-२, आसा, मः ५)
मीना जलहीन मीना जलहीन हे ओहु बिछुरत मन तन खीन हे कत जीवनु प्रिअ बिनु होत ॥ (४६२-३, आसा, मः ५)

सनमुख सहि बान सनमुख सहि बान हे मृग अरपे मन तन प्रान हे ओहु बेधिओ सहज सरोत ॥ (४६२-४, आसा, मः ५)
पृअ प्रीति लागी मिलु बैरागी खिनु रहनु ध्रिगु तनु तिसु बिना ॥ (४६२-५, आसा, मः ५)
पलका न लागै पृअ प्रेम पागै चितवंति अनदिनु प्रभ मना ॥ (४६२-५, आसा, मः ५)
स्रीरंग राते नाम माते भै भर्म दुतीआ सगल खोत ॥ (४६२-६, आसा, मः ५)
करि मइआ दइआ दइआल पूरन हरि प्रेम नानक मगन होत ॥२॥ (४६२-६, आसा, मः ५)
अलीअल गुंजात अलीअल गुंजात हे मकरंद रस बासन मात हे प्रीति कमल बंधावत आप ॥ (४६२-७, आसा, मः ५)
चातृक चित पिआस चातृक चित पिआस हे घन बूंद बचित्रि मनि आस हे अल पीवत बिनसत ताप ॥ (४६२-८, आसा, मः ५)
तापा बिनासन दूख नासन मिलु प्रेमु मनि तनि अति घना ॥ (४६२-९, आसा, मः ५)
सुंदरु चतुरु सुजान सुआमी कवन रसना गुण भना ॥ (४६२-१०, आसा, मः ५)
गहि भुजा लेवहु नामु देवहु दृसटि धारत मिटत पाप ॥ (४६२-१०, आसा, मः ५)
नानकु जम्पै पतित पावन हरि दरसु पेखत नह संताप ॥३॥ (४६२-११, आसा, मः ५)
चितवउ चित नाथ चितवउ चित नाथ हे रखि लेवहु सरणि अनाथ हे मिलु चाउ चाईले प्रान ॥ (४६२-११, आसा, मः ५)
सुंदर तन धिआन सुंदर तन धिआन हे मनु लुबध गोपाल गिआन हे जाचिक जन राखत मान ॥ (४६२-१२, आसा, मः ५)
प्रभ मान पूरन दुख बिदीरन सगल इछ पुजंतीआ ॥ (४६२-१३, आसा, मः ५)
हरि कंठि लागे दिन सभागे मिलि नाह सेज सोहंतीआ ॥ (४६२-१४, आसा, मः ५)
प्रभ दृसटि धारी मिले मुरारी सगल कलमल भए हान ॥ (४६२-१४, आसा, मः ५)
बिनवंति नानक मेरी आस पूरन मिले स्रीधर गुण निधान ॥४॥१॥१४॥ (४६२-१५, आसा, मः ५)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (४६२-१७)
आसा महला १ ॥ (४६२-१८)
वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥ (४६२-१८)
सलोकु मः १ ॥ (४६२-१९)
बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ (४६२-१९, आसा, मः १)
जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥ (४६२-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४६३

महला २ ॥ (४६३-१)
जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ (४६३-१, आसा, मः २)
एते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥ (४६३-१, आसा, मः २)
मः १ ॥ (४६३-२)
नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ (४६३-२, आसा, मः १)
छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ (४६३-२, आसा, मः १)

खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ (४६३-३, आसा, मः १)
फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥ (४६३-३, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६३-४)
आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ (४६३-४, आसा, मः १)
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ (४६३-४, आसा, मः १)
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ (४६३-५, आसा, मः १)
तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ (४६३-५, आसा, मः १)
करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥ (४६३-५, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४६३-६)
सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ (४६३-६, आसा, मः १)
सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ (४६३-६, आसा, मः १)
सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ (४६३-६, आसा, मः १)
सचा तेरा अमरु सचा दीबाणु ॥ (४६३-७, आसा, मः १)
सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ (४६३-७, आसा, मः १)
सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ (४६३-७, आसा, मः १)
सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ (४६३-८, आसा, मः १)
सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ (४६३-८, आसा, मः १)
सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ (४६३-८, आसा, मः १)
सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ (४६३-९, आसा, मः १)
नानक सचु धिआइनि सचु ॥ (४६३-९, आसा, मः १)
जो मरि जम्मे सु कचु निकचु ॥१॥ (४६३-९, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६३-१०)
वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ (४६३-१०, आसा, मः १)
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ (४६३-१०, आसा, मः १)
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ (४६३-१०, आसा, मः १)
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ (४६३-११, आसा, मः १)
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ (४६३-११, आसा, मः १)
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ (४६३-११, आसा, मः १)
वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ (४६३-१२, आसा, मः १)
नानक कार न कथनी जाइ ॥ (४६३-१२, आसा, मः १)
कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥ (४६३-१२, आसा, मः १)
महला २ ॥ (४६३-१३)
इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ (४६३-१३, आसा, मः २)
इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ (४६३-१३, आसा, मः २)
इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ (४६३-१४, आसा, मः २)

एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ (४६३-१४, आसा, मः २)
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥ (४६३-१५, आसा, मः २)
पउड़ी ॥ (४६३-१६)
नानक जीअ उपाइ कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ (४६३-१६, आसा, मः २)
ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ (४६३-१६, आसा, मः २)
थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह काल्है दोजकि चालिआ ॥ (४६३-१७, आसा, मः २)
तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ (४६३-१७, आसा, मः २)
लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥ (४६३-१८, आसा, मः २)
सलोक मः १ ॥ (४६३-१८)
विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ (४६३-१८, आसा, मः १)
विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ (४६३-१९, आसा, मः १)
विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ (४६३-१९, आसा, मः १)
विसमादु नागे फिरहि जंत ॥ (४६३-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४६४

विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ (४६४-१, आसा, मः १)
विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ (४६४-१, आसा, मः १)
विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ (४६४-१, आसा, मः १)
विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ (४६४-२, आसा, मः १)
विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ (४६४-२, आसा, मः १)
विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ (४६४-२, आसा, मः १)
विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ (४६४-३, आसा, मः १)
विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ (४६४-३, आसा, मः १)
विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ (४६४-३, आसा, मः १)
विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ (४६४-४, आसा, मः १)
वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ (४६४-४, आसा, मः १)
नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥ (४६४-४, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६४-५)
कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ (४६४-५, आसा, मः १)
कुदरति पाताली आकासी कुदरति सर्ब आकारु ॥ (४६४-५, आसा, मः १)
कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सर्ब वीचारु ॥ (४६४-६, आसा, मः १)
कुदरति खाणा पीणा पैन्णु कुदरति सर्ब पिआरु ॥ (४६४-६, आसा, मः १)
कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ (४६४-७, आसा, मः १)
कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ (४६४-७, आसा, मः १)
कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ (४६४-८, आसा, मः १)

सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ (४६४-८, आसा, मः १)
नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥ (४६४-९, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६४-९)
आपीनै् भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ (४६४-९, आसा, मः १)
वडा होआ दुनीदारु गलि संगलु घति चलाइआ ॥ (४६४-१०, आसा, मः १)
अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ (४६४-१०, आसा, मः १)
थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ (४६४-११, आसा, मः १)
मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥ (४६४-१२, आसा, मः १)
सलोक मः १ ॥ (४६४-१२)
भै विचि पवणु वहै सदवाउ ॥ (४६४-१२, आसा, मः १)
भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ (४६४-१२, आसा, मः १)
भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ (४६४-१३, आसा, मः १)
भै विचि धरती दबी भारि ॥ (४६४-१३, आसा, मः १)
भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ (४६४-१३, आसा, मः १)
भै विचि राजा धर्म दुआरु ॥ (४६४-१४, आसा, मः १)
भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ (४६४-१४, आसा, मः १)
कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ (४६४-१४, आसा, मः १)
भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ (४६४-१५, आसा, मः १)
भै विचि आडाणे आकास ॥ (४६४-१५, आसा, मः १)
भै विचि जोध महाबल सूर ॥ (४६४-१५, आसा, मः १)
भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ (४६४-१५, आसा, मः १)
सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ (४६४-१६, आसा, मः १)
नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥ (४६४-१६, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६४-१६)
नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥ (४६४-१७, आसा, मः १)
केतीआ कन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ (४६४-१७, आसा, मः १)
केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ (४६४-१७, आसा, मः १)
बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ (४६४-१८, आसा, मः १)
गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ (४६४-१८, आसा, मः १)
लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥ (४६४-१९, आसा, मः १)
जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥ (४६४-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४६५

गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ (४६५-१, आसा, मः १)
करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥ (४६५-१, आसा, मः १)

पउड़ी ॥ (४६५-२)
नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ (४६५-२, आसा, मः १)
एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (४६५-२, आसा, मः १)
सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ (४६५-३, आसा, मः १)
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ी विचहु आपु गवाइआ ॥ (४६५-४, आसा, मः १)
जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥ (४६५-४, आसा, मः १)
सलोक मः १ ॥ (४६५-५)
घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कन्ह गोपाल ॥ (४६५-५, आसा, मः १)
गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ (४६५-५, आसा, मः १)
सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ (४६५-६, आसा, मः १)
नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥ (४६५-६, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६५-७)
वाइनि चेले नचनि गुर ॥ (४६५-७, आसा, मः १)
पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ (४६५-७, आसा, मः १)
उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ (४६५-७, आसा, मः १)
वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ (४६५-८, आसा, मः १)
रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ (४६५-८, आसा, मः १)
आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ (४६५-८, आसा, मः १)
गावनि गोपीआ गावनि कान्ह ॥ (४६५-९, आसा, मः १)
गावनि सीता राजे राम ॥ (४६५-९, आसा, मः १)
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ (४६५-९, आसा, मः १)
जा का कीआ सगल जहानु ॥ (४६५-१०, आसा, मः १)
सेवक सेवहि करमि चड़ाउ ॥ (४६५-१०, आसा, मः १)
भिन्नी रैणि जिन्हा मनि चाउ ॥ (४६५-१०, आसा, मः १)
सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥ (४६५-१०, आसा, मः १)
नदरी करमि लघाए पारि ॥ (४६५-११, आसा, मः १)
कोलू चरखा चकी चकु ॥ (४६५-११, आसा, मः १)
थल वारोले बहुतु अनंतु ॥ (४६५-११, आसा, मः १)
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ (४६५-१२, आसा, मः १)
पंखी भउदीआ लैनि न साह ॥ (४६५-१२, आसा, मः १)
सूऐ चाड़ि भवाईअहि जंत ॥ (४६५-१२, आसा, मः १)
नानक भउदिआ गणत न अंत ॥ (४६५-१२, आसा, मः १)
बंधन बंधि भवाए सोइ ॥ (४६५-१३, आसा, मः १)
पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥ (४६५-१३, आसा, मः १)
नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥ (४६५-१३, आसा, मः १)

उडि न जाही सिध न होहि ॥ (४६५-१४, आसा, मः १)
नचणु कुदणु मन का चाउ ॥ (४६५-१४, आसा, मः १)
नानक जिन्‍ मनि भउ तिन्‍ा मनि भाउ ॥२॥ (४६५-१४, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६५-१५)
नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ (४६५-१५, आसा, मः १)
जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ (४६५-१५, आसा, मः १)
जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंन्हहु नीचु सदाईऐ ॥ (४६५-१६, आसा, मः १)
जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ (४६५-१६, आसा, मः १)
को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥ (४६५-१७, आसा, मः १)
सलोक मः १ ॥ (४६५-१७)
मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ (४६५-१७, आसा, मः १)
बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ (४६५-१८, आसा, मः १)
हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ (४६५-१८, आसा, मः १)
तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ (४६५-१९, आसा, मः १)
जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ (४६५-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४६६

सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ (४६६-१, आसा, मः १)
सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥ (४६६-१, आसा, मः १)
दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसारु ॥ (४६६-२, आसा, मः १)
चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ (४६६-२, आसा, मः १)
इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ (४६६-३, आसा, मः १)
जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ (४६६-३, आसा, मः १)
ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ (४६६-४, आसा, मः १)
नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ (४६६-४, आसा, मः १)
सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥१॥ (४६६-५, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६६-५)
मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुमि्आर ॥ (४६६-५, आसा, मः १)
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ (४६६-६, आसा, मः १)
जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ (४६६-६, आसा, मः १)
नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥ (४६६-७, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६६-७)
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ (४६६-७, आसा, मः १)
सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ (४६६-८, आसा, मः १)
सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ (४६६-८, आसा, मः १)

उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ (४६६-९, आसा, मः १)
जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥ (४६६-१०, आसा, मः १)
सलोक मः १ ॥ (४६६-१०)
हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ (४६६-१०, आसा, मः १)
हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ (४६६-१०, आसा, मः १)
हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ (४६६-११, आसा, मः १)
हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ (४६६-११, आसा, मः १)
हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ (४६६-१२, आसा, मः १)
हउ विचि पाप पुन्न वीचारु ॥ (४६६-१२, आसा, मः १)
हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ (४६६-१२, आसा, मः १)
हउ विचि हसै हउ विचि रोवै ॥ (४६६-१२, आसा, मः १)
हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ (४६६-१३, आसा, मः १)
हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ (४६६-१३, आसा, मः १)
हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ (४६६-१३, आसा, मः १)
मोख मुकति की सार न जाणा ॥ (४६६-१४, आसा, मः १)
हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ (४६६-१४, आसा, मः १)
हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ (४६६-१५, आसा, मः १)
हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ (४६६-१५, आसा, मः १)
गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ (४६६-१५, आसा, मः १)
नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ (४६६-१५, आसा, मः १)
जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥ (४६६-१६, आसा, मः १)
महला २ ॥ (४६६-१६)
हउमै एहा जाति है हउमै कर्म कमाहि ॥ (४६६-१६, आसा, मः २)
हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ (४६६-१७, आसा, मः २)
हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ (४६६-१७, आसा, मः २)
हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ (४६६-१७, आसा, मः २)
हउमै दीरघ रोगु है दारू भी इसु माहि ॥ (४६६-१८, आसा, मः २)
किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥ (४६६-१८, आसा, मः २)
नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥ (४६६-१९, आसा, मः २)
पउड़ी ॥ (४६६-१९)
सेव कीती संतोखीईं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ (४६६-१९, आसा, मः २)

पन्ना ४६७

ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुकृतु धरमु कमाइआ ॥ (४६७-१, आसा, मः २)
ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अन्नु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ (४६७-१, आसा, मः २)

तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ (४६७-२, आसा, मः २)
वडिआई वडा पाइआ ॥७॥ (४६७-३, आसा, मः २)
सलोक मः १ ॥ (४६७-३)
पुरखाँ बिरखाँ तीरथाँ तटाँ मेघाँ खेताँह ॥ (४६७-३, आसा, मः १)
दीपाँ लोआँ मंडलाँ खंडाँ वरभंडाँह ॥ (४६७-३, आसा, मः १)
अंडज जेरज उतभुजाँ खाणी सेतजाँह ॥ (४६७-४, आसा, मः १)
सो मिति जाणै नानका सराँ मेराँ जंताह ॥ (४६७-४, आसा, मः १)
नानक जंत उपाइ कै सम्माले सभनाह ॥ (४६७-५, आसा, मः १)
जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ (४६७-५, आसा, मः १)
सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ (४६७-५, आसा, मः १)
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ (४६७-६, आसा, मः १)
नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥ (४६७-६, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६७-७)
लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुन्ना परवाणु ॥ (४६७-७, आसा, मः १)
लख तप उपरि तीरथाँ सहज जोग बेबाण ॥ (४६७-७, आसा, मः १)
लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ (४६७-८, आसा, मः १)
लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ (४६७-८, आसा, मः १)
जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ (४६७-९, आसा, मः १)
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥ (४६७-९, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६७-१०)
सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ (४६७-१०, आसा, मः १)
जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ी सचु कमाइआ ॥ (४६७-१०, आसा, मः १)
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन् कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ (४६७-११, आसा, मः १)
मूरख सचु न जाणन्ी मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ (४६७-१२, आसा, मः १)
विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥ (४६७-१२, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४६७-१३)
पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ (४६७-१३, आसा, मः १)
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ (४६७-१३, आसा, मः १)
पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ (४६७-१४, आसा, मः १)
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ (४६७-१४, आसा, मः १)
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥ (४६७-१५, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६७-१५)
लिखि लिखि पड़िआ ॥ (४६७-१५, आसा, मः १)
तेता कड़िआ ॥ (४६७-१५, आसा, मः १)
बहु तीर्थ भविआ ॥ (४६७-१५, आसा, मः १)

तेतो लविआ ॥ (४६७-१६, आसा, मः १)
बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ ॥ (४६७-१६, आसा, मः १)
सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ (४६७-१६, आसा, मः १)
अन्नु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ (४६७-१६, आसा, मः १)
बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ (४६७-१७, आसा, मः १)
बसत्र न पहिरै ॥ (४६७-१७, आसा, मः १)
अहिनिसि कहरै ॥ (४६७-१७, आसा, मः १)
मोनि विगूता ॥ (४६७-१७, आसा, मः १)
किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ (४६७-१८, आसा, मः १)
पग उपेताणा ॥ (४६७-१८, आसा, मः १)
अपणा कीआ कमाणा ॥ (४६७-१८, आसा, मः १)
अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ (४६७-१८, आसा, मः १)
मूरखि अंधै पति गवाई ॥ (४६७-१९, आसा, मः १)
विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ (४६७-१९, आसा, मः १)
रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ (४६७-१९, आसा, मः १)
अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ (४६७-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४६८

सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥ (४६८-१, आसा, मः १)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (४६८-१, आसा, मः १)
नानक नदरि करे सो पाए ॥ (४६८-१, आसा, मः १)
आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥२॥ (४६८-२, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६८-२)
भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ (४६८-२, आसा, मः १)
नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ी धावदे ॥ (४६८-३, आसा, मः १)
इकि मूलु न बुझन्ि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ (४६८-३, आसा, मः १)
हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ (४६८-४, आसा, मः १)
तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥६॥ (४६८-४, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४६८-५)
कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ (४६८-५, आसा, मः १)
कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ (४६८-५, आसा, मः १)
कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्णहारु ॥ (४६८-५, आसा, मः १)
कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ (४६८-६, आसा, मः १)
कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ (४६८-६, आसा, मः १)
कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ (४६८-७, आसा, मः १)

किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ (४६८-७, आसा, मः १)
कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ (४६८-७, आसा, मः १)
नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥ (४६८-८, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६८-८)
सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ (४६८-८, आसा, मः १)
कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ (४६८-९, आसा, मः १)
सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ (४६८-९, आसा, मः १)
नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ (४६८-९, आसा, मः १)
सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ (४६८-१०, आसा, मः १)
धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ (४६८-१०, आसा, मः १)
सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ (४६८-११, आसा, मः १)
दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ (४६८-११, आसा, मः १)
सचु ताँ परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ (४६८-१२, आसा, मः १)
सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ (४६८-१२, आसा, मः १)
सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥ (४६८-१३, आसा, मः १)
नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥ (४६८-१३, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६८-१३)
दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ (४६८-१४, आसा, मः १)
कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ (४६८-१४, आसा, मः १)
फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ (४६८-१५, आसा, मः १)
जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥ (४६८-१५, आसा, मः १)
मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥ (४६८-१६, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४६८-१६)
सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ (४६८-१६, आसा, मः १)
बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ (४६८-१६, आसा, मः १)
जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ (४६८-१७, आसा, मः १)
नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ (४६८-१७, आसा, मः १)
भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ (४६८-१८, आसा, मः १)
नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥ (४६८-१८, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६८-१९)
लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ (४६८-१९, आसा, मः १)
कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥ (४६८-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४६९

अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ (४६९-१, आसा, मः १)

गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ (४६६-१, आसा, मः १)
ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥ (४६६-२, आसा, मः १)
मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ (४६६-२, आसा, मः १)
धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥ (४६६-३, आसा, मः १)
जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ (४६६-३, आसा, मः १)
सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥ (४६६-४, आसा, मः १)
पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥ (४६६-४, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४६६-५)
वदी सु वजगि नानका सचा वेखै सोइ ॥ (४६६-५, आसा, मः १)
सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ (४६६-५, आसा, मः १)
अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ (४६६-६, आसा, मः १)
जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥ (४६६-६, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६६-६)
धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ (४६६-७, आसा, मः १)
एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ (४६६-७, आसा, मः १)
इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ (४६६-८, आसा, मः १)
गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ (४६६-८, आसा, मः १)
सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥ (४६६-९, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४६६-९)
दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ (४६६-९, आसा, मः १)
तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥ (४६६-१०, आसा, मः १)
बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ (४६६-१०, आसा, मः १)
तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६६-११, आसा, मः १)
जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ (४६६-११, आसा, मः १)
तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ (४६६-१२, आसा, मः १)
कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥ (४६६-१२, आसा, मः १)
मः २ ॥ (४६६-१३)
जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥ (४६६-१३, आसा, मः २)
खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा कृतह ॥ (४६६-१४, आसा, मः २)
सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ (४६६-१४, आसा, मः २)
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥ (४६६-१४, आसा, मः २)
मः २ ॥ (४६६-१५)
एक कृसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ (४६६-१५, आसा, मः २)
आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ (४६६-१५, आसा, मः २)
नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥ (४६६-१६, आसा, मः २)

मः १ ॥ (४६६-१६)
कुम्भे बधा जलु रहै जल बिनु कुम्भु न होइ ॥ (४६६-१६, आसा, मः १)
गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥ (४६६-१७, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४६६-१७)
पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ (४६६-१७, आसा, मः १)
जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ (४६६-१८, आसा, मः १)
ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ (४६६-१८, आसा, मः १)
पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ (४६६-१६, आसा, मः १)
मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥ (४६६-१६, आसा, मः १)

पन्ना ४७०

सलोकु मः १ ॥ (४७०-१)
नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ (४७०-१, आसा, मः १)
जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ (४७०-१, आसा, मः १)
सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ॥ (४७०-२, आसा, मः १)
त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ (४७०-२, आसा, मः १)
दुआपुरि रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ (४७०-३, आसा, मः १)
कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥ (४७०-३, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७०-४)
साम कहै सेतम्बरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ (४७०-४, आसा, मः १)
सभु को सचि समावै ॥ (४७०-४, आसा, मः १)
रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ (४७०-४, आसा, मः १)
राम नामु देवा महि सूरु ॥ (४७०-५, आसा, मः १)
नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ (४७०-५, आसा, मः १)
नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ (४७०-५, आसा, मः १)
जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह् कृसनु जादमु भइआ ॥ (४७०-६, आसा, मः १)
पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ (४७०-६, आसा, मः १)
कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ (४७०-७, आसा, मः १)
नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ (४७०-७, आसा, मः १)
चारे वेद होए सचिआर ॥ (४७०-८, आसा, मः १)
पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ (४७०-८, आसा, मः १)
भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ (४७०-८, आसा, मः १)
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥ (४७०-६, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४७०-६)
सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ (४७०-६, आसा, मः १)

जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इनी नेत्री जगतु निहालिआ ॥ (४७०-१०, आसा, मः १)
खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ (४७०-१०, आसा, मः १)
सतिगुरू है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ (४७०-११, आसा, मः १)
करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥ (४७०-११, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४७०-१२)
सिम्मल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ (४७०-१२, आसा, मः १)
ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ (४७०-१२, आसा, मः १)
फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ (४७०-१३, आसा, मः १)
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ (४७०-१३, आसा, मः १)
सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ (४७०-१४, आसा, मः १)
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ (४७०-१४, आसा, मः १)
अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥ (४७०-१५, आसा, मः १)
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥ (४७०-१५, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७०-१६)
पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ (४७०-१६, आसा, मः १)
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ (४७०-१६, आसा, मः १)
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ (४७०-१६, आसा, मः १)
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ (४७०-१६, आसा, मः १)
गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ (४७०-१७, आसा, मः १)
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ (४७०-१७, आसा, मः १)
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ (४७०-१७, आसा, मः १)
सभि फोकट निसचउ करमं ॥ (४७०-१८, आसा, मः १)
कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ (४७०-१८, आसा, मः १)
विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥ (४७०-१८, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४७०-१८)
कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ (४७०-१९, आसा, मः १)
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ (४७०-१९, आसा, मः १)
हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ (४७०-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४७१

नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥ (४७१-१, आसा, मः १)
करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥ (४७१-१, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४७१-२)
दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ (४७१-२, आसा, मः १)
एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ (४७१-२, आसा, मः १)

ना एहु तुटै ना मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ (४७१-३, आसा, मः १)
धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ (४७१-३, आसा, मः १)
चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ (४७१-४, आसा, मः १)
सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ (४७१-४, आसा, मः १)
ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥ (४७१-५, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७१-५)
लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ (४७१-५, आसा, मः १)
लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ (४७१-६, आसा, मः १)
तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥ (४७१-६, आसा, मः १)
कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ (४७१-७, आसा, मः १)
होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ (४७१-७, आसा, मः १)
नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥ (४७१-८, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७१-८)
नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ (४७१-८, आसा, मः १)
दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥ (४७१-९, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७१-९)
तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ (४७१-९, आसा, मः १)
भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ (४७१-९, आसा, मः १)
तगु न पैरी तगु न हथी ॥ (४७१-१०, आसा, मः १)
तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ (४७१-१०, आसा, मः १)
वेतगा आपे वतै ॥ (४७१-१०, आसा, मः १)
वटि धागे अवरा घतै ॥ (४७१-१०, आसा, मः १)
लै भाड़ि करे वीआहु ॥ (४७१-११, आसा, मः १)
कढि कागलु दसे राहु ॥ (४७१-११, आसा, मः १)
सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥ (४७१-११, आसा, मः १)
मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥ (४७१-१२, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४७१-१२)
साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ (४७१-१२, आसा, मः १)
सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥ (४७१-१२, आसा, मः १)
हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ (४७१-१३, आसा, मः १)
खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ (४७१-१४, आसा, मः १)
ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥ (४७१-१४, आसा, मः १)
सलोक मः १ ॥ (४७१-१४)
गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ (४७१-१५, आसा, मः १)
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछाँ खाई ॥ (४७१-१५, आसा, मः १)

अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ (४७१-१६, आसा, मः १)
छोडीले पाखंडा ॥ (४७१-१६, आसा, मः १)
नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥ (४७१-१६, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७१-१७)
माणस खाणे करहि निवाज ॥ (४७१-१७, आसा, मः १)
छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥ (४७१-१७, आसा, मः १)
तिन घरि ब्रह्मण पूरहि नाद ॥ (४७१-१७, आसा, मः १)
उन्हा भि आवहि ओई साद ॥ (४७१-१८, आसा, मः १)
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ (४७१-१८, आसा, मः १)
कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ (४७१-१८, आसा, मः १)
सर्म धर्म का डेरा दूरि ॥ (४७१-१८, आसा, मः १)
नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ (४७१-१९, आसा, मः १)
मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ (४७१-१९, आसा, मः १)
हथि छुरी जगत कासाई ॥ (४७१-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४७२

नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ (४७२-१, आसा, मः १)
मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ (४७२-१, आसा, मः १)
अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ (४७२-१, आसा, मः १)
चउके उपरि किसै न जाणा ॥ (४७२-२, आसा, मः १)
दे कै चउका कढी कार ॥ (४७२-२, आसा, मः १)
उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ (४७२-२, आसा, मः १)
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ (४७२-३, आसा, मः १)
इहु अन्नु असाडा फिटै ॥ (४७२-३, आसा, मः १)
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ (४७२-३, आसा, मः १)
मनि जूठै चुली भरेनि ॥ (४७२-३, आसा, मः १)
कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ (४७२-३, आसा, मः १)
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥ (४७२-४, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४७२-४)
चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ (४७२-४, आसा, मः १)
आपे दे वडिआईआ आपे ही कर्म कराइदा ॥ (४७२-५, आसा, मः १)
वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ (४७२-५, आसा, मः १)
नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ (४७२-६, आसा, मः १)
दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥ (४७२-६, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४७२-७)

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ (४७२-७, आसा, मः १)
अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ (४७२-७, आसा, मः १)
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ (४७२-८, आसा, मः १)
नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥ (४७२-८, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७२-८)
जिउ जोरू सिरनावणी आवै वारो वार ॥ (४७२-९, आसा, मः १)
जूठे जूठा मुखि वसै नित नित होइ खुआरु ॥ (४७२-९, आसा, मः १)
सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ (४७२-९, आसा, मः १)
सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥ (४७२-१०, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४७२-१०)
तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हर्म सवारिआ ॥ (४७२-१०, आसा, मः १)
कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ (४७२-११, आसा, मः १)
चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ (४७२-१२, आसा, मः १)
करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ (४७२-१२, आसा, मः १)
जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥ (४७२-१३, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४७२-१३)
जे करि सूतकु मन्नीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ (४७२-१३, आसा, मः १)
गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ (४७२-१४, आसा, मः १)
जेते दाणे अन्न के जीआ बाझु न कोइ ॥ (४७२-१४, आसा, मः १)
पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ (४७२-१४, आसा, मः १)
सूतकु किउ करि रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ (४७२-१५, आसा, मः १)
नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥१॥ (४७२-१५, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७२-१६)
मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ (४७२-१६, आसा, मः १)
अखी सूतकु वेखणा पर तृअ पर धन रूपु ॥ (४७२-१६, आसा, मः १)
कन्नी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ (४७२-१७, आसा, मः १)
नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥ (४७२-१७, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७२-१८)
सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ (४७२-१८, आसा, मः १)
जम्मणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ (४७२-१८, आसा, मः १)
खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु सम्बाहि ॥ (४७२-१९, आसा, मः १)
नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि ॥३॥ (४७२-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४७३

पउड़ी ॥ (४७३-१)

सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ (४७३-१, आसा, मः १)
सहि मेले ता नदरी आईआ ॥ (४७३-१, आसा, मः १)
जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ (४७३-२, आसा, मः १)
करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ (४७३-२, आसा, मः १)
सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥ (४७३-३, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४७३-३)
पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ (४७३-३, आसा, मः १)
सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ (४७३-४, आसा, मः १)
सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ (४७३-४, आसा, मः १)
कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ (४७३-५, आसा, मः १)
अन्नु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ (४७३-५, आसा, मः १)
ता होआ पाकु पवितु ॥ (४७३-६, आसा, मः १)
पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ (४७३-६, आसा, मः १)
जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ (४७३-६, आसा, मः १)
नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥ (४७३-७, आसा, मः १)
मः १ ॥ (४७३-७)
भंडि जम्मीऐ भंडि निम्मीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ (४७३-८, आसा, मः १)
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ (४७३-८, आसा, मः १)
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ (४७३-८, आसा, मः १)
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जम्महि राजान ॥ (४७३-९, आसा, मः १)
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥ (४७३-९, आसा, मः १)
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ (४७३-१०, आसा, मः १)
जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ (४७३-१०, आसा, मः १)
नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥ (४७३-१०, आसा, मः १)
पउड़ी ॥ (४७३-११)
सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ (४७३-११, आसा, मः १)
कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ (४७३-१२, आसा, मः १)
जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ (४७३-१२, आसा, मः १)
मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ (४७३-१३, आसा, मः १)
मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥ (४७३-१३, आसा, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (४७३-१३)
नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ (४७३-१४, आसा, मः १)
फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ (४७३-१४, आसा, मः १)
फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ (४७३-१४, आसा, मः १)
फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥ (४७३-१५, आसा, मः १)

मः १ ॥ (४७३-१५)
अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ (४७३-१५, आसा, मः १)
अठसठि तीर्थ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ (४७३-१६, आसा, मः १)
जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥ (४७३-१६, आसा, मः १)
तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥ (४७३-१७, आसा, मः १)
रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ (४७३-१७, आसा, मः १)
परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ (४७३-१८, आसा, मः १)
दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥ (४७३-१८, आसा, मः १)
दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ (४७३-१९, आसा, मः १)
दरि लए लेखा पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥२॥ (४७३-१९, आसा, मः १)

पन्ना ४७४

पउड़ी ॥ (४७४-१)
आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ (४७४-१, आसा, मः १)
देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ (४७४-१, आसा, मः १)
जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ (४७४-२, आसा, मः १)
जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ (४७४-२, आसा, मः १)
आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥ (४७४-३, आसा, मः १)
सलोकु महला २ ॥ (४७४-३)
एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ (४७४-३, आसा, मः २)
नानक आसकु काँढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ (४७४-४, आसा, मः २)
चंगै चंगा करि मन्ने मंदै मंदा होइ ॥ (४७४-४, आसा, मः २)
आसकु एहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥ (४७४-५, आसा, मः २)
महला २ ॥ (४७४-५)
सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा जाइ ॥ (४७४-५, आसा, मः २)
नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥ (४७४-६, आसा, मः २)
पउड़ी ॥ (४७४-६)
जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ (४७४-६, आसा, मः २)
जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ (४७४-७, आसा, मः २)
मंदा मूलि न कीचई दे लम्मी नदरि निहालीऐ ॥ (४७४-७, आसा, मः २)
जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ (४७४-८, आसा, मः २)
किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥ (४७४-८, आसा, मः २)
सलोकु महला २ ॥ (४७४-९)
चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ (४७४-९, आसा, मः २)
गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ (४७४-९, आसा, मः २)

आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ (४७४-१०, आसा, मः २)
नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥ (४७४-१०, आसा, मः २)
महला २ ॥ (४७४-११)
जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ (४७४-११, आसा, मः २)
बीजे बिखु मंगै अमृतु वेखहु एहु निआउ ॥२॥ (४७४-११, आसा, मः २)
महला २ ॥ (४७४-१२)
नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ (४७४-१२, आसा, मः २)
जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ (४७४-१२, आसा, मः २)
वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ (४७४-१३, आसा, मः २)
साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ (४७४-१३, आसा, मः २)
कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥ (४७४-१४, आसा, मः २)
महला २ ॥ (४७४-१४)
नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ (४७४-१४, आसा, मः २)
पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥ (४७४-१५, आसा, मः २)
महला २ ॥ (४७४-१५)
होइ इआणा करे कम्मु आणि न सकै रासि ॥ (४७४-१५, आसा, मः २)
जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥ (४७४-१६, आसा, मः २)
पउड़ी ॥ (४७४-१६)
चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ (४७४-१६, आसा, मः २)
हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ (४७४-१७, आसा, मः २)
खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ (४७४-१७, आसा, मः २)
वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ (४७४-१८, आसा, मः २)
जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ (४७४-१८, आसा, मः २)
नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥ (४७४-१९, आसा, मः २)
सलोकु महला २ ॥ (४७४-१९)
एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ (४७४-१९, आसा, मः २)

पन्ना ४७५

नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥ (४७५-१, आसा, मः २)
महला २ ॥ (४७५-१)
एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ (४७५-१, आसा, मः २)
नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥ (४७५-२, आसा, मः २)
पउड़ी ॥ (४७५-२)
नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥ (४७५-३, आसा, मः २)
आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ (४७५-३, आसा, मः २)

इकना गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ (४७५-३, आसा, मः २)
आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ (४७५-४, आसा, मः २)
नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥२३॥ (४७५-४, आसा, मः २)
सलोकु मः १ ॥ (४७५-५)
आपे भाँडे साजिअनु आपे पूर्णु देइ ॥ (४७५-५, आसा, मः १)
इकनी दुधु समाईऐ इकि चुलै रहन्हि चड़े ॥ (४७५-६, आसा, मः १)
इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ (४७५-६, आसा, मः १)
तिना सवारे नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥१॥ (४७५-७, आसा, मः १)
महला २ ॥ (४७५-७)
आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ (४७५-७, आसा, मः २)
तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥ (४७५-८, आसा, मः २)
किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥२॥ (४७५-८, आसा, मः २)
पउड़ी ॥ (४७५-८)
वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥ (४७५-९, आसा, मः २)
सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु सम्बाहि ॥ (४७५-९, आसा, मः २)
साई कार कमावणी धुरि छोडी तिन्नै पाइ ॥ (४७५-१०, आसा, मः २)
नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ (४७५-१०, आसा, मः २)
सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु (४७५-१०, आसा, मः २)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुरप्रसादि ॥ (४७५-१२)
रागु आसा बाणी भगता की ॥ (४७५-१३)
कबीर जीउ नामदेउ जीउ रविदास जीउ ॥ (४७५-१३)
आसा स्री कबीर जीउ ॥ (४७५-१३)
गुर चरण लागि हम बिनवता पूछत कह जीउ पाइआ ॥ (४७५-१४, आसा, भगत कबीर जी)
कवन काजि जगु उपजै बिनसै कहहु मोहि समझाइआ ॥१॥ (४७५-१४, आसा, भगत कबीर जी)
देव करहु दइआ मोहि मारगि लावहु जितु भै बंधन तूटै ॥ (४७५-१५, आसा, भगत कबीर जी)
जनम मरन दुख फेड़ कर्म सुख जीअ जनम ते छूटै ॥१॥ रहाउ ॥ (४७५-१५, आसा, भगत कबीर जी)
माइआ फास बंध नही फारै अरु मन सुंनि न लूके ॥ (४७५-१६, आसा, भगत कबीर जी)
आपा पदु निरबाणु न चीन्हिआ इन बिधि अभिउ न चूके ॥२॥ (४७५-१७, आसा, भगत कबीर जी)
कही न उपजै उपजी जाणै भाव अभाव बिहूणा ॥ (४७५-१७, आसा, भगत कबीर जी)
उदै असत की मन बुधि नासी तउ सदा सहजि लिव लीणा ॥३॥ (४७५-१८, आसा, भगत कबीर जी)
जिउ प्रतिबिम्बु बिम्ब कउ मिली है उदक कुम्भु बिगराना ॥ (४७५-१८, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर ऐसा गुण भ्रमु भागा तउ मनु सुंनि समानाँ ॥४॥१॥ (४७५-१९, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४७६

आसा ॥ (४७६-१)

गज साढे तै तै धोतीआ तिहरे पाइनि तग ॥ (४७६-१, आसा, भगत कबीर जी)
गली जिन्हा जपमालीआ लोटे हथि निबग ॥ (४७६-१, आसा, भगत कबीर जी)
ओइ हरि के संत न आखीअहि बानारसि के ठग ॥१॥ (४७६-२, आसा, भगत कबीर जी)
ऐसे संत न मो कउ भावहि ॥ (४७६-२, आसा, भगत कबीर जी)
डाला सिउ पेडा गटकावहि ॥१॥ रहाउ ॥ (४७६-२, आसा, भगत कबीर जी)
बासन माँजि चरावहि ऊपरि काठी धोइ जलावहि ॥ (४७६-३, आसा, भगत कबीर जी)
बसुधा खोदि करहि दुइ चूल्हे सारे माणस खावहि ॥२॥ (४७६-३, आसा, भगत कबीर जी)
ओइ पापी सदा फिरहि अपराधी मुखहु अपरस कहावहि ॥ (४७६-४, आसा, भगत कबीर जी)
सदा सदा फिरहि अभिमानी सगल कुटम्ब डुबावहि ॥३॥ (४७६-५, आसा, भगत कबीर जी)
जितु को लाइआ तित ही लागा तैसे कर्म कमावै ॥ (४७६-५, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जिसु सतिगुरु भेटै पुनरपि जनमि न आवै ॥४॥२॥ (४७६-६, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७६-६)
बापि दिलासा मेरो कीन्हा ॥ (४७६-६, आसा, भगत कबीर जी)
सेज सुखाली मुखि अमृतु दीन्हा ॥ (४७६-७, आसा, भगत कबीर जी)
तिसु बाप कउ किउ मनहु विसारी ॥ (४७६-७, आसा, भगत कबीर जी)
आगै गइआ न बाजी हारी ॥१॥ (४७६-७, आसा, भगत कबीर जी)
मुई मेरी माई हउ खरा सुखाला ॥ (४७६-८, आसा, भगत कबीर जी)
पहिरउ नही दगली लगै न पाला ॥१॥ रहाउ ॥ (४७६-८, आसा, भगत कबीर जी)
बलि तिसु बापै जिनि हउ जाइआ ॥ (४७६-८, आसा, भगत कबीर जी)
पंचा ते मेरा संगु चुकाइआ ॥ (४७६-९, आसा, भगत कबीर जी)
पंच मारि पावा तलि दीने ॥ (४७६-९, आसा, भगत कबीर जी)
हरि सिमरनि मेरा मनु तनु भीने ॥२॥ (४७६-९, आसा, भगत कबीर जी)
पिता हमारो वड गोसाई ॥ (४७६-१०, आसा, भगत कबीर जी)
तिसु पिता पहि हउ किउ करि जाई ॥ (४७६-१०, आसा, भगत कबीर जी)
सतिगुर मिले त मारगु दिखाइआ ॥ (४७६-१०, आसा, भगत कबीर जी)
जगत पिता मेरै मनि भाइआ ॥३॥ (४७६-११, आसा, भगत कबीर जी)
हउ पूतु तेरा तूं बापु मेरा ॥ (४७६-११, आसा, भगत कबीर जी)
एकै ठाहर दुहा बसेरा ॥ (४७६-११, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जनि एको बूझिआ ॥ (४७६-१२, आसा, भगत कबीर जी)
गुर प्रसादि मै सभु किछु सूझिआ ॥४॥३॥ (४७६-१२, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७६-१२)
इकतु पतरि भरि उरकट कुरकट इकतु पतरि भरि पानी ॥ (४७६-१२, आसा, भगत कबीर जी)
आसि पासि पंच जोगीआ बैठे बीचि नकट दे रानी ॥१॥ (४७६-१३, आसा, भगत कबीर जी)
नकटी को ठनगनु बाडा डूं ॥ (४७६-१४, आसा, भगत कबीर जी)
किनहि बिबेकी काटी तूं ॥१॥ रहाउ ॥ (४७६-१४, आसा, भगत कबीर जी)

सगल माहि नकटी का वासा सगल मारि अउहेरी ॥ (४७६-१४, आसा, भगत कबीर जी)
सगलिआ की हउ बहिन भानजी जिनहि बरी तिसु चेरी ॥२॥ (४७६-१५, आसा, भगत कबीर जी)
हमरो भरता बडो बिबेकी आपे संतु कहावै ॥ (४७६-१५, आसा, भगत कबीर जी)
ओहु हमारै माथै काइमु अउरु हमरै निकटि न आवै ॥३॥ (४७६-१६, आसा, भगत कबीर जी)
नाकहु काटी कानहु काटी काटि कूटि कै डारी ॥ (४७६-१६, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर संतन की बैरनि तीनि लोक की पिआरी ॥४॥४॥ (४७६-१७, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७६-१८)
जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीर्थ भ्रमना ॥ (४७६-१८, आसा, भगत कबीर जी)
लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥१॥ (४७६-१८, आसा, भगत कबीर जी)
ता ते सेवीअले रामना ॥ (४७६-१९, आसा, भगत कबीर जी)
रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥१॥ रहाउ ॥ (४७६-१९, आसा, भगत कबीर जी)
आगम निरगम जोतिक जानहि बहु बहु बिआकरना ॥ (४७६-१९, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४७७

तंत मंत्र सभ अउखध जानहि अंति तऊ मरना ॥२॥ (४७७-१, आसा, भगत कबीर जी)
राज भोग अरु छत्र सिंघासन बहु सुंदरि रमना ॥ (४७७-१, आसा, भगत कबीर जी)
पान कपूर सुबासक चंदन अंति तऊ मरना ॥३॥ (४७७-२, आसा, भगत कबीर जी)
बेद पुरान सिम्रिति सभ खोजे कहू न ऊबरना ॥ (४७७-२, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर इउ रामहि जम्पउ मेटि जनम मरना ॥४॥५॥ (४७७-३, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७७-३)
फीलु रबाबी बलदु पखावज कऊआ ताल बजावै ॥ (४७७-४, आसा, भगत कबीर जी)
पहिरि चोलना गदहा नाचै भैसा भगति करावै ॥१॥ (४७७-४, आसा, भगत कबीर जी)
राजा राम ककरीआ बरे पकाए ॥ (४७७-५, आसा, भगत कबीर जी)
किनै बूझनहारै खाए ॥१॥ रहाउ ॥ (४७७-५, आसा, भगत कबीर जी)
बैठि सिंघु घरि पान लगावै घीस गलउरे लिआवै ॥ (४७७-५, आसा, भगत कबीर जी)
घरि घरि मुसरी मंगलु गावहि कछूआ संखु बजावै ॥२॥ (४७७-६, आसा, भगत कबीर जी)
बंस को पूतु बीआहन चलिआ सुइने मंडप छाए ॥ (४७७-६, आसा, भगत कबीर जी)
रूप कंनिआ सुंदरि बेधी ससै सिंघ गुन गाए ॥३॥ (४७७-७, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर सुनहु रे संतहु कीटी परबतु खाइआ ॥ (४७७-७, आसा, भगत कबीर जी)
कछूआ कहै अंगार भि लोरउ लूकी सबदु सुनाइआ ॥४॥६॥ (४७७-८, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७७-९)
बटूआ एकु बहतरि आधारी एको जिसहि दुआरा ॥ (४७७-९, आसा, भगत कबीर जी)
नवै खंड की प्रिथमी मागै सो जोगी जगि सारा ॥१॥ (४७७-९, आसा, भगत कबीर जी)
ऐसा जोगी नउ निधि पावै ॥ (४७७-१०, आसा, भगत कबीर जी)
तल का ब्रहमु ले गगनि चरावै ॥१॥ रहाउ ॥ (४७७-१०, आसा, भगत कबीर जी)

खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥ (४७७-१०, आसा, भगत कबीर जी)
पंच ततु की करि मिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥२॥ (४७७-११, आसा, भगत कबीर जी)
दइआ फाहुरी काइआ करि धूई द्रिसटि की अगनि जलावै ॥ (४७७-१२, आसा, भगत कबीर जी)
तिस का भाउ लए रिद अंतरि चहु जुग ताड़ी लावै ॥३॥ (४७७-१२, आसा, भगत कबीर जी)
सभ जोगतण राम नामु है जिस का पिंडु पराना ॥ (४७७-१३, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जे किरपा धारै देइ सचा नीसाना ॥४॥७॥ (४७७-१३, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७७-१४)
हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥ (४७७-१४, आसा, भगत कबीर जी)
दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक किनि पाई ॥१॥ (४७७-१४, आसा, भगत कबीर जी)
काजी तै कवन कतेब बखानी ॥ (४७७-१५, आसा, भगत कबीर जी)
पड़्हत गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥१॥ रहाउ ॥ (४७७-१५, आसा, भगत कबीर जी)
सकति सनेहु करि सुन्नति करीऐ मै न बदउगा भाई ॥ (४७७-१६, आसा, भगत कबीर जी)
जउ रे खुदाइ मोहि तुरकु करैगा आपन ही कटि जाई ॥२॥ (४७७-१७, आसा, भगत कबीर जी)
सुन्नति कीए तुरकु जे होइगा अउरत का किआ करीऐ ॥ (४७७-१७, आसा, भगत कबीर जी)
अर्ध सरीरी नारि न छोडै ता ते हिंदू ही रहीऐ ॥३॥ (४७७-१८, आसा, भगत कबीर जी)
छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥ (४७७-१८, आसा, भगत कबीर जी)
कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥४॥८॥ (४७७-१९, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७७-१९)
जब लगु तेलु दीवे मुखि बाती तब सूझै सभु कोई ॥ (४७७-१९, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४७८

तेल जले बाती ठहरानी सूंना मंदरु होई ॥१॥ (४७८-१, आसा, भगत कबीर जी)
रे बउरे तुहि घरी न राखै कोई ॥ (४७८-१, आसा, भगत कबीर जी)
तूं राम नामु जपि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (४७८-२, आसा, भगत कबीर जी)
का की मात पिता कहु का को कवन पुरख की जोई ॥ (४७८-२, आसा, भगत कबीर जी)
घट फूटे कोऊ बात न पूछै काढहु काढहु होई ॥२॥ (४७८-३, आसा, भगत कबीर जी)
देहुरी बैठी माता रोवै खटीआ ले गए भाई ॥ (४७८-३, आसा, भगत कबीर जी)
लट छिटकाए तिरीआ रोवै हंसु इकेला जाई ॥३॥ (४७८-४, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर सुनहु रे संतहु भै सागर कै ताई ॥ (४७८-४, आसा, भगत कबीर जी)
इसु बंदे सिरि जुलमु होत है जमु नही हटै गुसाई ॥४॥९॥ (४७८-५, आसा, भगत कबीर जी)
दुतुके (४७८-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४७८-६)
आसा स्री कबीर जीउ के चउपदे इकतुके ॥ (४७८-६, आसा, भगत कबीर जी)
सनक सनंद अंतु नही पाइआ ॥ (४७८-६, आसा, भगत कबीर जी)
बेद पड़े पड़ि ब्रहमे जनमु गवाइआ ॥१॥ (४७८-७, आसा, भगत कबीर जी)

हरि का बिलोवना बिलोवहु मेरे भाई ॥ (४७८-७, आसा, भगत कबीर जी)
सहजि बिलोवहु जैसे ततु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४७८-७, आसा, भगत कबीर जी)
तनु करि मटुकी मन माहि बिलोई ॥ (४७८-८, आसा, भगत कबीर जी)
इसु मटुकी महि सबदु संजोई ॥२॥ (४७८-८, आसा, भगत कबीर जी)
हरि का बिलोवना मन का बीचारा ॥ (४७८-९, आसा, भगत कबीर जी)
गुर प्रसादि पावै अमृत धारा ॥३॥ (४७८-९, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर नदरि करे जे मींरा ॥ (४७८-९, आसा, भगत कबीर जी)
राम नाम लगि उतरे तीरा ॥४॥१॥१०॥ (४७८-१०, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७८-१०)
बाती सूकी तेलु निखूटा ॥ (४७८-१०, आसा, भगत कबीर जी)
मंदलु न बाजै नटु पै सूता ॥१॥ (४७८-१०, आसा, भगत कबीर जी)
बुझि गई अगनि न निकसिओ धूंआ ॥ (४७८-११, आसा, भगत कबीर जी)
रवि रहिआ एकु अवरु नही दूआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४७८-११, आसा, भगत कबीर जी)
टूटी तंतु न बजै रबाबु ॥ (४७८-१२, आसा, भगत कबीर जी)
भूलि बिगारिओ अपना काजु ॥२॥ (४७८-१२, आसा, भगत कबीर जी)
कथनी बदनी कहनु कहावनु ॥ (४७८-१२, आसा, भगत कबीर जी)
समझि परी तउ बिसरिओ गावनु ॥३॥ (४७८-१३, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर पंच जो चूरे ॥ (४७८-१३, आसा, भगत कबीर जी)
तिन ते नाहि पर्म पदु दूरे ॥४॥२॥११॥ (४७८-१३, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७८-१४)
सुतु अपराध करत है जेते ॥ (४७८-१४, आसा, भगत कबीर जी)
जननी चीति न राखसि तेते ॥१॥ (४७८-१४, आसा, भगत कबीर जी)
रामईआ हउ बारिकु तेरा ॥ (४७८-१४, आसा, भगत कबीर जी)
काहे न खंडसि अवगनु मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (४७८-१५, आसा, भगत कबीर जी)
जे अति क्रोप करे करि धाइआ ॥ (४७८-१५, आसा, भगत कबीर जी)
ता भी चीति न राखसि माइआ ॥२॥ (४७८-१५, आसा, भगत कबीर जी)
चिंत भवनि मनु परिओ हमारा ॥ (४७८-१६, आसा, भगत कबीर जी)
नाम बिना कैसे उतरसि पारा ॥३॥ (४७८-१६, आसा, भगत कबीर जी)
देहि बिमल मति सदा सरीरा ॥ (४७८-१७, आसा, भगत कबीर जी)
सहजि सहजि गुन रवै कबीरा ॥४॥३॥१२॥ (४७८-१७, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७८-१७)
हज हमारी गोमती तीर ॥ (४७८-१७, आसा, भगत कबीर जी)
जहा बसहि पीतम्बर पीर ॥१॥ (४७८-१८, आसा, भगत कबीर जी)
वाहु वाहु किआ खूबु गावता है ॥ (४७८-१८, आसा, भगत कबीर जी)
हरि का नामु मेरै मनि भावता है ॥१॥ रहाउ ॥ (४७८-१८, आसा, भगत कबीर जी)

नारद सारद करहि खवासी ॥ (४७६-१, आसा, भगत कबीर जी)
पासि बैठी बीबी कवला दासी ॥२॥ (४७६-१, आसा, भगत कबीर जी)
कंठे माला जिहवा रामु ॥ (४७६-२, आसा, भगत कबीर जी)
सहंस नामु लै लै करउ सलामु ॥३॥ (४७६-२, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर राम गुन गावउ ॥ (४७६-२, आसा, भगत कबीर जी)
हिंदू तुरक दोऊ समझावउ ॥४॥४॥१३॥ (४७६-३, आसा, भगत कबीर जी)
आसा स्री कबीर जीउ के पंचपदे ९ दुतुके ५ (४७६-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४७६-४)
पाती तोरै मालिनी पाती पाती जीउ ॥ (४७६-५, आसा, भगत कबीर जी)
जिसु पाहन कउ पाती तोरै सो पाहन निरजीउ ॥१॥ (४७६-५, आसा, भगत कबीर जी)
भूली मालनी है एउ ॥ (४७६-५, आसा, भगत कबीर जी)
सतिगुरु जागता है देउ ॥१॥ रहाउ ॥ (४७६-६, आसा, भगत कबीर जी)
ब्रहमु पाती बिसनु डारी फूल संकरदेउ ॥ (४७६-६, आसा, भगत कबीर जी)
तीनि देव प्रतखि तोरहि करहि किस की सेउ ॥२॥ (४७६-६, आसा, भगत कबीर जी)
पाखान गढि कै मूरति कीन्ी दे कै छाती पाउ ॥ (४७६-७, आसा, भगत कबीर जी)
जे एह मूरति साची है तउ गड़हणहारे खाउ ॥३॥ (४७६-७, आसा, भगत कबीर जी)
भातु पहिति अरु लापसी करकरा कासारु ॥ (४७६-८, आसा, भगत कबीर जी)
भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥४॥ (४७६-८, आसा, भगत कबीर जी)
मालिनि भूली जगु भुलाना हम भुलाने नाहि ॥ (४७६-९, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर हम राम राखे क्रिपा करि हरि राइ ॥५॥१॥१४॥ (४७६-९, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४७६-१०)
बारह बरस बालपन बीते बीस बरस कछु तपु न कीओ ॥ (४७६-१०, आसा, भगत कबीर जी)
तीस बरस कछु देव न पूजा फिरि पछुताना बिरधि भइओ ॥१॥ (४७६-१०, आसा, भगत कबीर जी)
मेरी मेरी करते जनमु गइओ ॥ (४७६-११, आसा, भगत कबीर जी)
साइरु सोखि भुजं बलइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (४७६-११, आसा, भगत कबीर जी)
सूके सरवरि पालि बंधावै लूणै खेति हथ वारि करै ॥ (४७६-१२, आसा, भगत कबीर जी)
आइओ चोरु तुरंतह ले गइओ मेरी राखत मुगधु फिरै ॥२॥ (४७६-१२, आसा, भगत कबीर जी)
चरन सीसु कर कम्पन लागे नैनी नीरु असार बहै ॥ (४७६-१३, आसा, भगत कबीर जी)
जिहवा बचनु सुधु नही निकसै तब रे धरम की आस करै ॥३॥ (४७६-१३, आसा, भगत कबीर जी)
हरि जीउ क्रिपा करै लिव लावै लाहा हरि हरि नामु लीओ ॥ (४७६-१४, आसा, भगत कबीर जी)
गुर परसादी हरि धनु पाइओ अंते चलदिआ नालि चलिओ ॥४॥ (४७६-१५, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर सुनहु रे संतहु अनु धनु कछूऐ लै न गइओ ॥ (४७६-१५, आसा, भगत कबीर जी)
आई तलब गोपाल राइ की माइआ मंदर छोडि चलिओ ॥५॥२॥१५॥ (४७६-१६, आसा, भगत कबीर जी)

आसा ॥ (४७६-१७)
काहू दीन्हे पाट पटम्बर काहू पलघ निवारा ॥ (४७६-१७, आसा, भगत कबीर जी)
काहू गरी गोदरी नाही काहू खान परारा ॥१॥ (४७६-१७, आसा, भगत कबीर जी)
अहिरख वादु न कीजै रे मन ॥ (४७६-१८, आसा, भगत कबीर जी)
सुकृतु करि करि लीजै रे मन ॥१॥ रहाउ ॥ (४७६-१८, आसा, भगत कबीर जी)
कुम्हारै एक जु माटी गूंधी बहु बिधि बानी लाई ॥ (४७६-१८, आसा, भगत कबीर जी)
काहू महि मोती मुकताहल काहू बिआधि लगाई ॥२॥ (४७६-१६, आसा, भगत कबीर जी)
सूमहि धनु राखन कउ दीआ मुगधु कहै धनु मेरा ॥ (४७६-१६, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४८०

जम का डंडु मूंड महि लागै खिन महि करै निबेरा ॥३॥ (४८०-१, आसा, भगत कबीर जी)
हरि जनु ऊतमु भगतु सदावै आगिआ मनि सुखु पाई ॥ (४८०-२, आसा, भगत कबीर जी)
जो तिसु भावै सति करि मानै भाणा मंनि वसाई ॥४॥ (४८०-२, आसा, भगत कबीर जी)
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु मेरी मेरी झूठी ॥ (४८०-३, आसा, भगत कबीर जी)
चिरगट फारि चटारा लै गइओ तरी तागरी छूटी ॥५॥३॥१६॥ (४८०-३, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८०-४)
हम मसकीन खुदाई बंदे तुम राजसु मनि भावै ॥ (४८०-४, आसा, भगत कबीर जी)
अलह अवलि दीन को साहिबु जोरु नही फुरमावै ॥१॥ (४८०-४, आसा, भगत कबीर जी)
काजी बोलिआ बनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (४८०-५, आसा, भगत कबीर जी)
रोजा धरै निवाज गुजारै कलमा भिसति न होई ॥ (४८०-५, आसा, भगत कबीर जी)
सतरि काबा घट ही भीतरि जे करि जानै कोई ॥२॥ (४८०-६, आसा, भगत कबीर जी)
निवाज सोई जो निआउ बिचारै कलमा अकलहि जानै ॥ (४८०-६, आसा, भगत कबीर जी)
पाचहु मुसि मुसला बिछावै तब तउ दीनु पछानै ॥३॥ (४८०-७, आसा, भगत कबीर जी)
खसमु पछानि तरस करि जीअ महि मारि मणी करि फीकी ॥ (४८०-७, आसा, भगत कबीर जी)
आपु जनाइ अवर कउ जानै तब होइ भिसत सरीकी ॥४॥ (४८०-८, आसा, भगत कबीर जी)
माटी एक भेख धरि नाना ता महि ब्रह्मु पछाना ॥ (४८०-६, आसा, भगत कबीर जी)
कहै कबीरा भिसत छोडि करि दोजक सिउ मनु माना ॥५॥४॥१७॥ (४८०-६, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८०-१०)
गगन नगरि इक बूंद न बरखै नादु कहा जु समाना ॥ (४८०-१०, आसा, भगत कबीर जी)
पारब्रह्म परमेसुर माधो पर्म हंसु ले सिधाना ॥१॥ (४८०-१०, आसा, भगत कबीर जी)
बाबा बोलते ते कहा गए देही के संगि रहते ॥ (४८०-११, आसा, भगत कबीर जी)
सुरति माहि जो निरते करते कथा बारता कहते ॥१॥ रहाउ ॥ (४८०-११, आसा, भगत कबीर जी)
बजावनहारो कहा गइओ जिनि इहु मंदरु कीन्हा ॥ (४८०-१२, आसा, भगत कबीर जी)
साखी सबदु सुरति नही उपजै खिंचि तेजु सभु लीन्हा ॥२॥ (४८०-१२, आसा, भगत कबीर जी)
स्रवनन बिकल भए संगि तेरे इंद्री का बलु थाका ॥ (४८०-१३, आसा, भगत कबीर जी)

चरन रहे कर ढरकि परे है मुखहु न निकसै बाता ॥३॥ (४८०-१३, आसा, भगत कबीर जी)
थाके पंच दूत सभ तस्कर आप आपणै भ्रमते ॥ (४८०-१४, आसा, भगत कबीर जी)
थाका मनु कुंचर उरु थाका तेजु सूतु धरि रमते ॥४॥ (४८०-१४, आसा, भगत कबीर जी)
मिरतक भए दसै बंद छूटे मित्र भाई सभ छोरे ॥ (४८०-१५, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीरा जो हरि धिआवै जीवत बंधन तोरे ॥५॥५॥१८॥ (४८०-१५, आसा, भगत कबीर जी)
आसा इकतुके ४ ॥ (४८०-१६)
सरपनी ते ऊपरि नही बलीआ ॥ (४८०-१६, आसा, भगत कबीर जी)
जिनि ब्रह्मा बिसनु महादेउ छलीआ ॥१॥ (४८०-१७, आसा, भगत कबीर जी)
मारु मारु स्रपनी निर्मल जलि पैठी ॥ (४८०-१७, आसा, भगत कबीर जी)
जिनि तृभवणु डसीअले गुर प्रसादि डीठी ॥१॥ रहाउ ॥ (४८०-१७, आसा, भगत कबीर जी)
स्रपनी स्रपनी किआ कहहु भाई ॥ (४८०-१८, आसा, भगत कबीर जी)
जिनि साचु पछानिआ तिनि स्रपनी खाई ॥२॥ (४८०-१८, आसा, भगत कबीर जी)
स्रपनी ते आन छूछ नही अवरा ॥ (४८०-१९, आसा, भगत कबीर जी)
स्रपनी जीती कहा करै जमरा ॥३॥ (४८०-१९, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४८१

इह स्रपनी ता की कीती होई ॥ (४८१-१, आसा, भगत कबीर जी)
बलु अबलु किआ इस ते होई ॥४॥ (४८१-१, आसा, भगत कबीर जी)
इह बसती ता बसत सरीरा ॥ (४८१-१, आसा, भगत कबीर जी)
गुर प्रसादि सहजि तरे कबीरा ॥५॥६॥१९॥ (४८१-२, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८१-२)
कहा सुआन कउ सिमृति सुनाए ॥ (४८१-२, आसा, भगत कबीर जी)
कहा साकत पहि हरि गुन गाए ॥१॥ (४८१-३, आसा, भगत कबीर जी)
राम राम राम रमे रमि रहीऐ ॥ (४८१-३, आसा, भगत कबीर जी)
साकत सिउ भूलि नही कहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (४८१-३, आसा, भगत कबीर जी)
कऊआ कहा कपूर चराए ॥ (४८१-४, आसा, भगत कबीर जी)
कह बिसीअर कउ दूधु पीआए ॥२॥ (४८१-४, आसा, भगत कबीर जी)
सतसंगति मिलि बिबेक बुधि होई ॥ (४८१-४, आसा, भगत कबीर जी)
पारसु परसि लोहा कंचनु सोई ॥३॥ (४८१-५, आसा, भगत कबीर जी)
साकतु सुआनु सभु करे कराइआ ॥ (४८१-५, आसा, भगत कबीर जी)
जो धुरि लिखिआ सु कर्म कमाइआ ॥४॥ (४८१-५, आसा, भगत कबीर जी)
अमृतु लै लै नीमु सिंचाई ॥ (४८१-६, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर उआ को सहजु न जाई ॥५॥७॥२०॥ (४८१-६, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८१-७)
लंका सा कोटु समुंद सी खाई ॥ (४८१-७, आसा, भगत कबीर जी)

तिह रावन घर खबरि न पाई ॥१॥ (४८१-७, आसा, भगत कबीर जी)
किआ मागउ किछु थिरु न रहाई ॥ (४८१-७, आसा, भगत कबीर जी)
देखत नैन चलिओ जगु जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४८१-८, आसा, भगत कबीर जी)
इकु लखु पूत सवा लखु नाती ॥ (४८१-८, आसा, भगत कबीर जी)
तिह रावन घर दीआ न बाती ॥२॥ (४८१-८, आसा, भगत कबीर जी)
चंदु सूरजु जा के तपत रसोई ॥ (४८१-९, आसा, भगत कबीर जी)
बैसंतरु जा के कपरे धोई ॥३॥ (४८१-९, आसा, भगत कबीर जी)
गुरमति रामै नामि बसाई ॥ (४८१-९, आसा, भगत कबीर जी)
असथिरु रहै न कतहूं जाई ॥४॥ (४८१-१०, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर सुनहु रे लोई ॥ (४८१-१०, आसा, भगत कबीर जी)
राम नाम बिनु मुकति न होई ॥५॥८॥२१॥ (४८१-१०, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८१-११)
पहिला पूतु पिछैरी माई ॥ (४८१-११, आसा, भगत कबीर जी)
गुरु लागो चेले की पाई ॥१॥ (४८१-११, आसा, भगत कबीर जी)
एकु अचम्भउ सुनहु तुम्ह भाई ॥ (४८१-११, आसा, भगत कबीर जी)
देखत सिंघु चरावत गाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४८१-१२, आसा, भगत कबीर जी)
जल की मछुली तरवरि बिआई ॥ (४८१-१२, आसा, भगत कबीर जी)
देखत कुतरा लै गई बिलाई ॥२॥ (४८१-१३, आसा, भगत कबीर जी)
तलै रे बैसा ऊपरि सूला ॥ (४८१-१३, आसा, भगत कबीर जी)
तिस कै पेडि लगे फल फूला ॥३॥ (४८१-१३, आसा, भगत कबीर जी)
घोरै चरि भैस चरावन जाई ॥ (४८१-१४, आसा, भगत कबीर जी)
बाहरि बैलु गोनि घरि आई ॥४॥ (४८१-१४, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर जु इस पद बूझै ॥ (४८१-१४, आसा, भगत कबीर जी)
राम रमत तिसु सभु किछु सूझै ॥५॥९॥२२॥ (४८१-१४, आसा, भगत कबीर जी)
बाईस चउपदे तथा पंचपदे आसा स्री कबीर जीउ के तिपदे ८ दुतुके ७ इकतुका १ (४८१-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४८१-१६)
बिंदु ते जिनि पिंडु कीआ अगनि कुंड रहाइआ ॥ (४८१-१७, आसा, भगत कबीर जी)
दस मास माता उदरि राखिआ बहुरि लागी माइआ ॥१॥ (४८१-१७, आसा, भगत कबीर जी)
प्रानी काहे कउ लोभि लागे रतन जनमु खोइआ ॥ (४८१-१८, आसा, भगत कबीर जी)
पूरब जनमि करम भूमि बीजु नाही बोइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४८१-१८, आसा, भगत कबीर जी)
बारिक ते बिरधि भइआ होना सो होइआ ॥ (४८१-१९, आसा, भगत कबीर जी)
जा जमु आइ झोट पकरै तबहि काहे रोइआ ॥२॥ (४८१-१९, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४८२

जीवनै की आस करहि जमु निहारै सासा ॥ (४८२-१, आसा, भगत कबीर जी)

बाजीगरी संसारु कबीरा चेति ढालि पासा ॥३॥१॥२३॥ (४८२-१, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८२-२)
तनु रैनी मनु पुन रपि करि हउ पाचउ तत बराती ॥ (४८२-२, आसा, भगत कबीर जी)
राम राइ सिउ भावरि लैहउ आतम तिह रंगि राती ॥१॥ (४८२-२, आसा, भगत कबीर जी)
गाउ गाउ री दुलहनी मंगलचारा ॥ (४८२-३, आसा, भगत कबीर जी)
मेरे गृह आए राजा राम भतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (४८२-३, आसा, भगत कबीर जी)
नाभि कमल महि बेदी रचि ले ब्रह्म गिआन उचारा ॥ (४८२-४, आसा, भगत कबीर जी)
राम राइ सो दूलहु पाइओ अस बडभाग हमारा ॥२॥ (४८२-४, आसा, भगत कबीर जी)
सुरि नर मुनि जन कउतक आए कोटि तेतीस उजानाँ ॥ (४८२-५, आसा, भगत कबीर जी)
कहि कबीर मोहि बिआहि चले है पुरख एक भगवाना ॥३॥२॥२४॥ (४८२-५, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८२-६)
सासु की दुखी ससुर की पिआरी जेठ के नामि डरउ रे ॥ (४८२-६, आसा, भगत कबीर जी)
सखी सहेली ननद गहेली देवर कै बिरहि जरउ रे ॥१॥ (४८२-७, आसा, भगत कबीर जी)
मेरी मति बउरी मै रामु बिसारिओ किन बिधि रहनि रहउ रे ॥ (४८२-७, आसा, भगत कबीर जी)
सेजै रमतु नैन नही पेखउ इहु दुखु का सउ कहउ रे ॥१॥ रहाउ ॥ (४८२-८, आसा, भगत कबीर जी)
बापु सावका करै लराई माइआ सद मतवारी ॥ (४८२-९, आसा, भगत कबीर जी)
बडे भाई कै जब संगि होती तब हउ नाह पिआरी ॥२॥ (४८२-९, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर पंच को झगरा झगरत जनमु गवाइआ ॥ (४८२-१०, आसा, भगत कबीर जी)
झूठी माइआ सभु जगु बाधिआ मै राम रमत सुखु पाइआ ॥३॥३॥२५॥ (४८२-१०, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८२-११)
हम घरि सूतु तनहि नित ताना कंठि जनेऊ तुमारे ॥ (४८२-११, आसा, भगत कबीर जी)
तुम्ह तउ बेद पड़हु गाइत्री गोबिंदु रिदै हमारे ॥१॥ (४८२-११, आसा, भगत कबीर जी)
मेरी जिहबा बिसनु नैन नाराइन हिरदै बसहि गोबिंदा ॥ (४८२-१२, आसा, भगत कबीर जी)
जम दुआर जब पूछसि बवरे तब किआ कहसि मुकंदा ॥१॥ रहाउ ॥ (४८२-१३, आसा, भगत कबीर जी)
हम गोरू तुम गुआर गुसाई जनम जनम रखवारे ॥ (४८२-१३, आसा, भगत कबीर जी)
कबहूं न पारि उतारि चराइहु कैसे खसम हमारे ॥२॥ (४८२-१४, आसा, भगत कबीर जी)
तूं बाम्हनु मै कासीक जुलहा बूझहु मोर गिआना ॥ (४८२-१४, आसा, भगत कबीर जी)
तुम्ह तउ जाचे भूपति राजे हरि सउ मोर धिआना ॥३॥४॥२६॥ (४८२-१५, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८२-१५)
जगि जीवनु ऐसा सुपने जैसा जीवनु सुपन समानं ॥ (४८२-१६, आसा, भगत कबीर जी)
साचु करि हम गाठि दीनी छोडि परम निधानं ॥१॥ (४८२-१६, आसा, भगत कबीर जी)
बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥ (४८२-१७, आसा, भगत कबीर जी)
जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥१॥ रहाउ ॥ (४८२-१७, आसा, भगत कबीर जी)
नैन देखि पतंगु उरझै पसु न देखै आगि ॥ (४८२-१७, आसा, भगत कबीर जी)
काल फास न मुगधु चेतै कनिक कामिनि लागि ॥२॥ (४८२-१८, आसा, भगत कबीर जी)

करि बिचारु बिकार परहरि तरन तारन सोइ ॥ (४८२-१८, आसा, भगत कबीर जी)
कहि कबीर जगजीवनु ऐसा दुतीअ नाही कोइ ॥३॥५॥२७॥ (४८२-१९, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८२-१९)

पन्ना ४८३

जउ मै रूप कीए बहुतेरे अब फुनि रूपु न होई ॥ (४८३-१, आसा, भगत कबीर जी)
तागा तंतु साजु सभु थाका राम नाम बसि होई ॥१॥ (४८३-१, आसा, भगत कबीर जी)
अब मोहि नाचनो न आवै ॥ (४८३-२, आसा, भगत कबीर जी)
मेरा मनु मंदरीआ न बजावै ॥१॥ रहाउ ॥ (४८३-२, आसा, भगत कबीर जी)
कामु क्रोधु माइआ लै जारी त्रिसना गागरि फूटी ॥ (४८३-२, आसा, भगत कबीर जी)
काम चोलना भइआ है पुराना गइआ भरमु सभु छूटी ॥२॥ (४८३-३, आसा, भगत कबीर जी)
सर्ब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥ (४८३-३, आसा, भगत कबीर जी)
कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥३॥६॥२८॥ (४८३-४, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८३-५)
रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥ (४८३-५, आसा, भगत कबीर जी)
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥१॥ (४८३-५, आसा, भगत कबीर जी)
काजी साहिबु एकु तोही महि तेरा सोचि बिचारि न देखै ॥ (४८३-६, आसा, भगत कबीर जी)
खबरि न करहि दीन के बउरे ता ते जनमु अलेखै ॥१॥ रहाउ ॥ (४८३-६, आसा, भगत कबीर जी)
साचु कतेब बखानै अलहु नारि पुरखु नही कोई ॥ (४८३-७, आसा, भगत कबीर जी)
पढे गुने नाही कछु बउरे जउ दिल महि खबरि न होई ॥२॥ (४८३-७, आसा, भगत कबीर जी)
अलहु गैबु सगल घट भीतरि हिरदै लेहु बिचारी ॥ (४८३-८, आसा, भगत कबीर जी)
हिंदू तुरक दुहूं महि एकै कहै कबीर पुकारी ॥३॥७॥२९॥ (४८३-८, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ तिपदा ॥ इकतुका ॥ (४८३-९)
कीओ सिंगारु मिलन के ताई ॥ (४८३-९, आसा, भगत कबीर जी)
हरि न मिले जगजीवन गुसाई ॥१॥ (४८३-१०, आसा, भगत कबीर जी)
हरि मेरो पिरु हउ हरि की बहुरीआ ॥ (४८३-१०, आसा, भगत कबीर जी)
राम बडे मै तनक लहुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४८३-१०, आसा, भगत कबीर जी)
धन पिर एकै संगि बसेरा ॥ (४८३-११, आसा, भगत कबीर जी)
सेज एक पै मिलनु दुहेरा ॥२॥ (४८३-११, आसा, भगत कबीर जी)
धंनि सुहागनि जो पीअ भावै ॥ (४८३-११, आसा, भगत कबीर जी)
कहि कबीर फिरि जनमि न आवै ॥३॥८॥३०॥ (४८३-१२, आसा, भगत कबीर जी)
आसा स्री कबीर जीउ के दुपदे (४८३-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४८३-१३)
हीरै हीरा बेधि पवन मनु सहजे रहिआ समाई ॥ (४८३-१४, आसा, भगत कबीर जी)
सगल जोति इनि हीरै बेधी सतिगुर बचनी मै पाई ॥१॥ (४८३-१४, आसा, भगत कबीर जी)

हरि की कथा अनाहद बानी ॥ (४८३-१५, आसा, भगत कबीर जी)
हंसु हुइ हीरा लेइ पछानी ॥१॥ रहाउ ॥ (४८३-१५, आसा, भगत कबीर जी)
कहि कबीर हीरा अस देखिओ जग मह रहा समाई ॥ (४८३-१५, आसा, भगत कबीर जी)
गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥२॥१॥३१॥ (४८३-१६, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८३-१७)
पहिली करूपि कुजाति कुलखनी साहुरै पेईऐ बुरी ॥ (४८३-१७, आसा, भगत कबीर जी)
अब की सरूपि सुजानि सुलखनी सहजे उदरि धरी ॥१॥ (४८३-१७, आसा, भगत कबीर जी)
भली सरी मुई मेरी पहिली बरी ॥ (४८३-१८, आसा, भगत कबीर जी)
जुगु जुगु जीवउ मेरी अब की धरी ॥१॥ रहाउ ॥ (४८३-१८, आसा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जब लहुरी आई बडी का सुहागु टरिओ ॥ (४८३-१९, आसा, भगत कबीर जी)
लहुरी संगि भई अब मेरै जेठी अउरु धरिओ ॥२॥२॥३२॥ (४८३-१९, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४८४

आसा ॥ (४८४-१)
मेरी बहुरीआ को धनीआ नाउ ॥ (४८४-१, आसा, भगत कबीर जी)
ले राखिओ राम जनीआ नाउ ॥१॥ (४८४-१, आसा, भगत कबीर जी)
इन्ह मुंडीअन मेरा घरु धुंधरावा ॥ (४८४-१, आसा, भगत कबीर जी)
बिटवहि राम रमऊआ लावा ॥१॥ रहाउ ॥ (४८४-२, आसा, भगत कबीर जी)
कहतु कबीर सुनहु मेरी माई ॥ (४८४-२, आसा, भगत कबीर जी)
इन्ह मुंडीअन मेरी जाति गवाई ॥२॥३॥३३॥ (४८४-३, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८४-३)
रहु रहु री बहुरीआ घूंघटु जिनि काढै ॥ (४८४-३, आसा, भगत कबीर जी)
अंत की बार लहैगी न आढै ॥१॥ रहाउ ॥ (४८४-४, आसा, भगत कबीर जी)
घूंघटु काढि गई तेरी आगै ॥ (४८४-४, आसा, भगत कबीर जी)
उन की गैलि तोहि जिनि लागै ॥१॥ (४८४-४, आसा, भगत कबीर जी)
घूंघट काढे की इहै बडाई ॥ (४८४-५, आसा, भगत कबीर जी)
दिन दस पाँच बहू भले आई ॥२॥ (४८४-५, आसा, भगत कबीर जी)
घूंघटु तेरो तउ परि साचै ॥ (४८४-५, आसा, भगत कबीर जी)
हरि गुन गाइ कूदहि अरु नाचै ॥३॥ (४८४-६, आसा, भगत कबीर जी)
कहत कबीर बहू तब जीतै ॥ (४८४-६, आसा, भगत कबीर जी)
हरि गुन गावत जनमु बितीतै ॥४॥१॥३४॥ (४८४-६, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८४-७)
करवतु भला न करवट तेरी ॥ (४८४-७, आसा, भगत कबीर जी)
लागु गले सुनु बिनती मेरी ॥१॥ (४८४-७, आसा, भगत कबीर जी)
हउ वारी मुखु फेरि पिआरे ॥ (४८४-७, आसा, भगत कबीर जी)

करवटु दे मो कउ काहे कउ मारे ॥१॥ रहाउ ॥ (४८४-८, आसा, भगत कबीर जी)
जउ तनु चीरहि अंगु न मोरउ ॥ (४८४-८, आसा, भगत कबीर जी)
पिंडु परै तउ प्रीति न तोरउ ॥२॥ (४८४-९, आसा, भगत कबीर जी)
हम तुम बीचु भइओ नही कोई ॥ (४८४-९, आसा, भगत कबीर जी)
तुमहि सु कंत नारि हम सोई ॥३॥ (४८४-९, आसा, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई ॥ (४८४-१०, आसा, भगत कबीर जी)
अब तुमरी परतीति न होई ॥४॥२॥३५॥ (४८४-१०, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८४-१०)
कोरी को काहू मरमु न जानाँ ॥ (४८४-१०, आसा, भगत कबीर जी)
सभु जगु आनि तनाइओ तानाँ ॥१॥ रहाउ ॥ (४८४-११, आसा, भगत कबीर जी)
जब तुम सुनि ले बेद पुरानाँ ॥ (४८४-११, आसा, भगत कबीर जी)
तब हम इतनकु पसरिओ तानाँ ॥१॥ (४८४-११, आसा, भगत कबीर जी)
धरनि अकास की करगह बनाई ॥ (४८४-१२, आसा, भगत कबीर जी)
चंदु सूरजु दुइ साथ चलाई ॥२॥ (४८४-१२, आसा, भगत कबीर जी)
पाई जोरि बात इक कीनी तह ताँती मनु मानाँ ॥ (४८४-१३, आसा, भगत कबीर जी)
जोलाहे घरु अपना चीन्ाँ घट ही रामु पछानाँ ॥३॥ (४८४-१३, आसा, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु कारगह तोरी ॥ (४८४-१४, आसा, भगत कबीर जी)
सूतै सूत मिलाए कोरी ॥४॥३॥३६॥ (४८४-१४, आसा, भगत कबीर जी)
आसा ॥ (४८४-१४)
अंतरि मैलु जे तीर्थ नावै तिसु बैकुंठ न जानाँ ॥ (४८४-१४, आसा, भगत कबीर जी)
लोक पतीणे कछू न होवै नाही रामु अयाना ॥१॥ (४८४-१५, आसा, भगत कबीर जी)
पूजहु रामु एकु ही देवा ॥ (४८४-१५, आसा, भगत कबीर जी)
साचा नावणु गुर की सेवा ॥१॥ रहाउ ॥ (४८४-१५, आसा, भगत कबीर जी)
जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥ (४८४-१६, आसा, भगत कबीर जी)
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥२॥ (४८४-१६, आसा, भगत कबीर जी)
मनहु कठोरु मरै बानारसि नरकु न बाँचिआ जाई ॥ (४८४-१७, आसा, भगत कबीर जी)
हरि का संतु मरै हाड़म्बै त सगली सैन तराई ॥३॥ (४८४-१८, आसा, भगत कबीर जी)
दिनसु न रैनि बेदु नही सासत्र तहा बसै निरंकारा ॥ (४८४-१८, आसा, भगत कबीर जी)
कहि कबीर नर तिसहि धिआवहु बावरिआ संसारा ॥४॥४॥३७॥ (४८४-१९, आसा, भगत कबीर जी)

पन्ना ४८५

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४८५-१)
आसा बाणी स्री नामदेउ जी की (४८५-१)
एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई ॥ (४८५-२, आसा, भगत नामदेव जी)
माइआ चित्र बचित्र बिमोहित बिरला बूझै कोई ॥१॥ (४८५-२, आसा, भगत नामदेव जी)

सभु गोबिंदु है सभु गोबिंदु है गोबिंद बिनु नही कोई ॥ (४८५-३, आसा, भगत नामदेव जी)
सूतु एकु मणि सत सहंस जैसे ओति पोति प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (४८५-३, आसा, भगत नामदेव जी)
जल तरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई ॥ (४८५-४, आसा, भगत नामदेव जी)
इहु परपंचु पारब्रह्म की लीला बिचरत आन न होई ॥२॥ (४८५-४, आसा, भगत नामदेव जी)
मिथिआ भरमु अरु सुपन मनोरथ सति पदारथु जानिआ ॥ (४८५-५, आसा, भगत नामदेव जी)
सुकृत मनसा गुर उपदेसी जागत ही मनु मानिआ ॥३॥ (४८५-५, आसा, भगत नामदेव जी)
कहत नामदेउ हरि की रचना देखहु रिदै बीचारी ॥ (४८५-६, आसा, भगत नामदेव जी)
घट घट अंतरि सर्ब निरंतरि केवल एक मुरारी ॥४॥१॥ (४८५-६, आसा, भगत नामदेव जी)
आसा ॥ (४८५-७)
आनीले कुम्भ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ ॥ (४८५-७, आसा, भगत नामदेव जी)
बइआलीस लख जी जल महि होते बीठलु भैला काइ करउ ॥१॥ (४८५-८, आसा, भगत नामदेव जी)
जत्र जाउ तत बीठलु भैला ॥ (४८५-८, आसा, भगत नामदेव जी)
महा अनंद करे सद केला ॥१॥ रहाउ ॥ (४८५-९, आसा, भगत नामदेव जी)
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ ॥ (४८५-९, आसा, भगत नामदेव जी)
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ ॥२॥ (४८५-१०, आसा, भगत नामदेव जी)
आनीले दूधु रीधाईले खीरं ठाकुर कउ नैवेदु करउ ॥ (४८५-१०, आसा, भगत नामदेव जी)
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ ॥३॥ (४८५-११, आसा, भगत नामदेव जी)
ईभै बीठलु ऊभै बीठलु बीठल बिनु संसारु नही ॥ (४८५-११, आसा, भगत नामदेव जी)
थान थनंतरि नामा प्रणवै पूरि रहिओ तूं सर्ब मही ॥४॥२॥ (४८५-१२, आसा, भगत नामदेव जी)
आसा ॥ (४८५-१२)
मनु मेरो गजु जिहबा मेरी काती ॥ (४८५-१३, आसा, भगत नामदेव जी)
मपि मपि काटउ जम की फासी ॥१॥ (४८५-१३, आसा, भगत नामदेव जी)
कहा करउ जाती कह करउ पाती ॥ (४८५-१३, आसा, भगत नामदेव जी)
राम को नामु जपउ दिन राती ॥१॥ रहाउ ॥ (४८५-१४, आसा, भगत नामदेव जी)
राँगनि राँगउ सीवनि सीवउ ॥ (४८५-१४, आसा, भगत नामदेव जी)
राम नाम बिनु घरीअ न जीवउ ॥२॥ (४८५-१४, आसा, भगत नामदेव जी)
भगति करउ हरि के गुन गावउ ॥ (४८५-१५, आसा, भगत नामदेव जी)
आठ पहर अपना खसमु धिआवउ ॥३॥ (४८५-१५, आसा, भगत नामदेव जी)
सुइने की सूई रुपे का धागा ॥ (४८५-१६, आसा, भगत नामदेव जी)
नामे का चितु हरि सउ लागा ॥४॥३॥ (४८५-१६, आसा, भगत नामदेव जी)
आसा ॥ (४८५-१६)
सापु कुंच छोडै बिखु नही छाडै ॥ (४८५-१६, आसा, भगत नामदेव जी)
उदक माहि जैसे बगु धिआनु माडै ॥१॥ (४८५-१७, आसा, भगत नामदेव जी)
काहे कउ कीजै धिआनु जपन्ना ॥ (४८५-१७, आसा, भगत नामदेव जी)
जब ते सुधु नाही मनु अपना ॥१॥ रहाउ ॥ (४८५-१७, आसा, भगत नामदेव जी)

सिंघच भोजनु जो नरु जानै ॥ (४८५-१८, आसा, भगत नामदेव जी)
ऐसे ही ठगदेउ बखानै ॥२॥ (४८५-१८, आसा, भगत नामदेव जी)
नामे के सुआमी लाहि ले झगरा ॥ (४८५-१८, आसा, भगत नामदेव जी)

पन्ना ४८६

राम रसाइन पीउ रे दगरा ॥३॥४॥ (४८६-१, आसा, भगत नामदेव जी)
आसा ॥ (४८६-१)
पारब्रह्मु जि चीन्सी आसा ते न भावसी ॥ (४८६-१, आसा, भगत नामदेव जी)
रामा भगतह चेतीअले अचिंत मनु राखसी ॥१॥ (४८६-२, आसा, भगत नामदेव जी)
कैसे मन तरहिगा रे संसारु सागरु बिखै को बना ॥ (४८६-२, आसा, भगत नामदेव जी)
झूठी माइआ देखि कै भूला रे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (४८६-३, आसा, भगत नामदेव जी)
छीपे के घरि जनमु दैला गुर उपदेसु भैला ॥ (४८६-३, आसा, भगत नामदेव जी)
संतह कै परसादि नामा हरि भेटुला ॥२॥५॥ (४८६-४, आसा, भगत नामदेव जी)
आसा बाणी स्री रविदास जीउ की (४८६-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४८६-५)
मृग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास ॥ (४८६-६, आसा, भगत रविदास जी)
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस ॥१॥ (४८६-६, आसा, भगत रविदास जी)
माधो अबिदिआ हित कीन ॥ (४८६-७, आसा, भगत रविदास जी)
बिबेक दीप मलीन ॥१॥ रहाउ ॥ (४८६-७, आसा, भगत रविदास जी)
तृगद जोनि अचेत सम्भव पुन्न पाप असोच ॥ (४८६-७, आसा, भगत रविदास जी)
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच ॥२॥ (४८६-८, आसा, भगत रविदास जी)
जीअ जंत जहा जहा लगु कर्म के बसि जाइ ॥ (४८६-८, आसा, भगत रविदास जी)
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ ॥३॥ (४८६-९, आसा, भगत रविदास जी)
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन ॥ (४८६-९, आसा, भगत रविदास जी)
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥४॥१॥ (४८६-१०, आसा, भगत रविदास जी)
आसा ॥ (४८६-१०)
संत तुझी तनु संगति प्रान ॥ (४८६-१०, आसा, भगत रविदास जी)
सतिगुर गिआन जानै संत देवा देव ॥१॥ (४८६-११, आसा, भगत रविदास जी)
संत ची संगति संत कथा रसु ॥ (४८६-११, आसा, भगत रविदास जी)
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥१॥ रहाउ ॥ (४८६-११, आसा, भगत रविदास जी)
संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी ॥२॥ (४८६-१२, आसा, भगत रविदास जी)
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥ (४८६-१२, आसा, भगत रविदास जी)
जणी लखावहु असंत पापी सणि ॥३॥ (४८६-१३, आसा, भगत रविदास जी)
रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु ॥ (४८६-१३, आसा, भगत रविदास जी)
संत अनंतहि अंतरु नाही ॥४॥२॥ (४८६-१३, आसा, भगत रविदास जी)

आसा ॥ (४८६-१४)
तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा ॥ (४८६-१४, आसा, भगत रविदास जी)
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा ॥१॥ (४८६-१४, आसा, भगत रविदास जी)
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी ॥ (४८६-१५, आसा, भगत रविदास जी)
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥१॥ रहाउ ॥ (४८६-१५, आसा, भगत रविदास जी)
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥ (४८६-१६, आसा, भगत रविदास जी)
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥२॥ (४८६-१६, आसा, भगत रविदास जी)
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥ (४८६-१७, आसा, भगत रविदास जी)
राजा राम की सेव न कीनी कहि रविदास चमारा ॥३॥३॥ (४८६-१७, आसा, भगत रविदास जी)
आसा ॥ (४८६-१८)
कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥ (४८६-१८, आसा, भगत रविदास जी)
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥१॥ (४८६-१८, आसा, भगत रविदास जी)
तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥ (४८६-१८, आसा, भगत रविदास जी)
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥१॥ रहाउ ॥ (४८६-१९, आसा, भगत रविदास जी)
सम्पति बिपति पटल माइआ धनु ॥ (४८६-१९, आसा, भगत रविदास जी)

पन्ना ४८७

ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥२॥ (४८७-१, आसा, भगत रविदास जी)
प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन ॥ (४८७-१, आसा, भगत रविदास जी)
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन ॥३॥४॥ (४८७-१, आसा, भगत रविदास जी)
आसा ॥ (४८७-२)
हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे ॥ (४८७-२, आसा, भगत रविदास जी)
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे ॥१॥ रहाउ ॥ (४८७-२, आसा, भगत रविदास जी)
हरि के नाम कबीर उजागर ॥ (४८७-३, आसा, भगत रविदास जी)
जनम जनम के काटे कागर ॥१॥ (४८७-३, आसा, भगत रविदास जी)
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ ॥ (४८७-३, आसा, भगत रविदास जी)
तउ जग जनम संकट नही आइआ ॥२॥ (४८७-४, आसा, भगत रविदास जी)
जन रविदास राम रंगि राता ॥ (४८७-४, आसा, भगत रविदास जी)
इउ गुर परसादि नरक नही जाता ॥३॥५॥ (४८७-५, आसा, भगत रविदास जी)
माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥ (४८७-५, आसा, भगत रविदास जी)
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥ (४८७-५, आसा, भगत रविदास जी)
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥ (४८७-६, आसा, भगत रविदास जी)
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥ (४८७-६, आसा, भगत रविदास जी)
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥ (४८७-७, आसा, भगत रविदास जी)
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥२॥ (४८७-७, आसा, भगत रविदास जी)

कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥ (४८७-७, आसा, भगत रविदास जी)
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥३॥६॥ (४८७-८, आसा, भगत रविदास जी)
आसा बाणी भगत धन्ने जी की (४८७-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४८७-६)
भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥ (४८७-१०, आसा, भगत धन्ना जी)
लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥ रहाउ ॥ (४८७-१०, आसा, भगत धन्ना जी)
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥ (४८७-११, आसा, भगत धन्ना जी)
गुन ते प्रीति बढी अन भाँती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥ (४८७-११, आसा, भगत धन्ना जी)
जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥ (४८७-१२, आसा, भगत धन्ना जी)
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे पर्म पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥ (४८७-१३, आसा, भगत धन्ना जी)
गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥ (४८७-१३, आसा, भगत धन्ना जी)
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ तृपति अघाने मुकति भए ॥३॥ (४८७-१४, आसा, भगत धन्ना जी)
जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥ (४८७-१४, आसा, भगत धन्ना जी)
धन्नै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥४॥१॥ (४८७-१५, आसा, भगत धन्ना जी)
महला ५ ॥ (४८७-१६)
गोबिंद गोबिंद गोबिंद संगि नामदेउ मनु लीणा ॥ (४८७-१६, आसा, मः ५)
आढ दाम को छीपरो होइओ लाखीणा ॥१॥ रहाउ ॥ (४८७-१६, आसा, मः ५)
बुनना तनना तिआगि कै प्रीति चरन कबीरा ॥ (४८७-१७, आसा, मः ५)
नीच कुला जोलाहरा भइओ गुनीय गहीरा ॥१॥ (४८७-१७, आसा, मः ५)
रविदासु ढुवंता ढोर नीति तिनि तिआगी माइआ ॥ (४८७-१८, आसा, मः ५)
परगटु होआ साधसंगि हरि दरसनु पाइआ ॥२॥ (४८७-१८, आसा, मः ५)
सैनु नाई बुतकारीआ ओहु घरि घरि सुनिआ ॥ (४८७-१६, आसा, मः ५)
हिरदे वसिआ पारब्रह्मु भगता महि गनिआ ॥३॥ (४८७-१६, आसा, मः ५)

पन्ना ४८८

इह बिधि सुनि कै जाटरो उठि भगती लागा ॥ (४८८-१, आसा, मः ५)
मिले प्रतखि गुसाईआ धन्ना वडभागा ॥४॥२॥ (४८८-१, आसा, मः ५)
रे चित चेतसि की न दयाल दमोदर बिबहि न जानसि कोई ॥ (४८८-२, आसा, मः ५)
जे धावहि ब्रहमंड खंड कउ करता करै सु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (४८८-२, आसा, मः ५)
जननी केरे उदर उदक महि पिंडु कीआ दस दुआरा ॥ (४८८-३, आसा, मः ५)
देइ अहारु अगनि महि राखै ऐसा खसमु हमारा ॥१॥ (४८८-३, आसा, मः ५)
कुम्मी जल माहि तन तिसु बाहरि पंख खीरु तिन नाही ॥ (४८८-४, आसा, मः ५)
पूरन परमानंद मनोहर समझि देखु मन माही ॥२॥ (४८८-५, आसा, मः ५)
पाखणि कीटु गुपतु होइ रहता ता चो मारगु नाही ॥ (४८८-५, आसा, मः ५)
कहै धन्ना पूरन ताहू को मत रे जीअ डराँही ॥३॥३॥ (४८८-६, आसा, भगत धन्ना जी)

आसा सेख फरीद जीउ की बाणी (४८८-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४८८-७)
दिलहु मुहबति जिन्नु सेई सचिआ ॥ (४८८-८, आसा, सेख फरीद जी)
जिन्नु मनि होरु मुखि होरु सि काँढे कचिआ ॥१॥ (४८८-८, आसा, सेख फरीद जी)
रते इसक खुदाइ रंगि दीदार के ॥ (४८८-८, आसा, सेख फरीद जी)
विसरिआ जिन्नु नामु ते भुइ भारु थीए ॥१॥ रहाउ ॥ (४८८-९, आसा, सेख फरीद जी)
आपि लीए लड़ि लाइ दरि दरवेस से ॥ (४८८-९, आसा, सेख फरीद जी)
तिन धन्नु जणेदी माउ आए सफलु से ॥२॥ (४८८-१०, आसा, सेख फरीद जी)
परवदगार अपार अगम बेअंत तू ॥ (४८८-१०, आसा, सेख फरीद जी)
जिना पछाता सचु चुम्मा पैर मूं ॥३॥ (४८८-१०, आसा, सेख फरीद जी)
तेरी पनह खुदाइ तू बखसंदगी ॥ (४८८-११, आसा, सेख फरीद जी)
सेख फरीदै खैरु दीजै बंदगी ॥४॥१॥ (४८८-११, आसा, सेख फरीद जी)
आसा ॥ (४८८-१२)
बोलै सेख फरीदु पिआरे अलह लगे ॥ (४८८-१२, आसा, सेख फरीद जी)
इहु तनु होसी खाक निमाणी गोर घरे ॥१॥ (४८८-१२, आसा, सेख फरीद जी)
आजु मिलावा सेख फरीद टाकिम कूंजड़ीआ मनहु मचिंदड़ीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४८८-१२, आसा, सेख फरीद जी)
जे जाणा मरि जाईऐ घुमि न आईऐ ॥ (४८८-१३, आसा, सेख फरीद जी)
झूठी दुनीआ लगि न आपु वञाईऐ ॥२॥ (४८८-१४, आसा, सेख फरीद जी)
बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥ (४८८-१४, आसा, सेख फरीद जी)
जो गुरु दसै वाट मुरीदा जोलीऐ ॥३॥ (४८८-१४, आसा, सेख फरीद जी)
छैल लंघंदे पारि गोरी मनु धीरिआ ॥ (४८८-१५, आसा, सेख फरीद जी)
कंचन वन्ने पासे कलवति चीरिआ ॥४॥ (४८८-१५, आसा, सेख फरीद जी)
सेख हैयाती जगि न कोई थिरु रहिआ ॥ (४८८-१६, आसा, सेख फरीद जी)
जिसु आसणि हम बैठे केते बैसि गइआ ॥५॥ (४८८-१६, आसा, सेख फरीद जी)
कतिक कूंजाँ चेति डउ सावणि बिजुलीआँ ॥ (४८८-१७, आसा, सेख फरीद जी)
सीआले सोहंदीआँ पिर गलि बाहड़ीआँ ॥६॥ (४८८-१७, आसा, सेख फरीद जी)
चले चलणहार विचारा लेइ मनो ॥ (४८८-१७, आसा, सेख फरीद जी)
गंढेदिआँ छिअ माह तुड़ंदिआ हिकु खिनो ॥७॥ (४८८-१८, आसा, सेख फरीद जी)
जिमी पुछै असमान फरीदा खेवट किंनि गए ॥ (४८८-१८, आसा, सेख फरीद जी)
जालण गोराँ नालि उलामे जीअ सहे ॥८॥२॥ (४८८-१९, आसा, सेख फरीद जी)

पन्ना ४८९

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (४८९-१)
रागु गूजरी महला १ चउपदे घरु १ ॥ (४८९-३)
तेरा नामु करी चनणाठीआ जे मनु उरसा होइ ॥ (४८९-४, गूजरी, मः १)

करणी कुंगू जे रलै घट अंतरि पूजा होइ ॥१॥ (४८६-४, गूजरी, मः १)
पूजा कीचै नामु धिआईऐ बिनु नावै पूज न होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४८६-५, गूजरी, मः १)
बाहरि देव पखालीअहि जे मनु धोवै कोइ ॥ (४८६-५, गूजरी, मः १)
जूठि लहै जीउ माजीऐ मोख पइआणा होइ ॥२॥ (४८६-६, गूजरी, मः १)
पसू मिलहि चंगिआईआ खड़ु खावहि अमृतु देहि ॥ (४८६-६, गूजरी, मः १)
नाम विहूणे आदमी ध्रिगु जीवण कर्म करेहि ॥३॥ (४८६-७, गूजरी, मः १)
नेड़ा है दूरि न जाणिअहु नित सारे सम्हाले ॥ (४८६-७, गूजरी, मः १)
जो देवै सो खावणा कहु नानक साचा हे ॥४॥१॥ (४८६-८, गूजरी, मः १)
गूजरी महला १ ॥ (४८६-८)
नाभि कमल ते ब्रह्मा उपजे बेद पड़हि मुखि कंठि सवारि ॥ (४८६-८, गूजरी, मः १)
ता को अंतु न जाई लखणा आवत जात रहै गुबारि ॥१॥ (४८६-९, गूजरी, मः १)
प्रीतम किउ बिसरहि मेरे प्राण अधार ॥ (४८६-१०, गूजरी, मः १)
जा की भगति करहि जन पूरे मुनि जन सेवहि गुर वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ (४८६-१०, गूजरी, मः १)
रवि ससि दीपक जा के तृभवणि एका जोति मुरारि ॥ (४८६-११, गूजरी, मः १)
गुरमुखि होइ सु अहिनिसि निरमलु मनमुखि रैणि अंधारि ॥२॥ (४८६-११, गूजरी, मः १)
सिध समाधि करहि नित झगरा दुहु लोचन किआ हेरै ॥ (४८६-१२, गूजरी, मः १)
अंतरि जोति सबदु धुनि जागै सतिगुरु झगरु निबेरै ॥३॥ (४८६-१२, गूजरी, मः १)
सुरि नर नाथ बेअंत अजोनी साचै महलि अपारा ॥ (४८६-१३, गूजरी, मः १)
नानक सहजि मिले जगजीवन नदरि करहु निसतारा ॥४॥२॥ (४८६-१४, गूजरी, मः १)

पन्ना ४९०

रागु गूजरी महला ३ घरु १ (४९०-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४९०-२)
ध्रिगु इवेहा जीवणा जितु हरि प्रीति न पाइ ॥ (४९०-२, गूजरी, मः ३)
जितु कंमि हरि वीसरै दूजै लगै जाइ ॥१॥ (४९०-२, गूजरी, मः ३)
ऐसा सतिगुरु सेवीऐ मना जितु सेविऐ गोविद प्रीति ऊपजै अवर विसरि सभ जाइ ॥ (४९०-३, गूजरी, मः ३)
हरि सेती चितु गहि रहै जरा का भउ न होवई जीवन पदवी पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४९०-४, गूजरी, मः ३)
गोबिंद प्रीति सिउ इकु सहजु उपजिआ वेखु जैसी भगति बनी ॥ (४९०-४, गूजरी, मः ३)
आप सेती आपु खाइआ ता मनु निरमलु होआ जोती जोति समई ॥२॥ (४९०-५, गूजरी, मः ३)
बिनु भागा ऐसा सतिगुरु न पाईऐ जे लोचै सभु कोइ ॥ (४९०-६, गूजरी, मः ३)
कूड़ै की पालि विचहु निकलै ता सदा सुखु होइ ॥३॥ (४९०-६, गूजरी, मः ३)
नानक ऐसे सतिगुर की किआ ओहु सेवकु सेवा करे गुर आगै जीउ धरेइ ॥ (४९०-७, गूजरी, मः ३)
सतिगुर का भाणा चिति करे सतिगुरु आपे कृपा करेइ ॥४॥१॥३॥ (४९०-८, गूजरी, मः ३)
गूजरी महला ३ ॥ (४९०-८)
हरि की तुम सेवा करहु दूजी सेवा करहु न कोइ जी ॥ (४९०-८, गूजरी, मः ३)

हरि की सेवा ते मनहु चिंदिआ फलु पाईऐ दूजी सेवा जनमु बिरथा जाइ जी ॥१॥ (४६०-९, गूजरी, मः ३)
हरि मेरी प्रीति रीति है हरि मेरी हरि मेरी कथा कहानी जी ॥ (४६०-१०, गूजरी, मः ३)
गुर प्रसादि मेरा मनु भीजै एहा सेव बनी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६०-१०, गूजरी, मः ३)
हरि मेरा सिमृति हरि मेरा सासत्र हरि मेरा बंधपु हरि मेरा भाई ॥ (४६०-११, गूजरी, मः ३)
हरि की मै भूख लागै हरि नामि मेरा मनु तृपतै हरि मेरा साकु अंति होइ सखाई ॥२॥ (४६०-१२, गूजरी, मः ३)
हरि बिनु होर रासि कूड़ी है चलदिआ नालि न जाई ॥ (४६०-१३, गूजरी, मः ३)
हरि मेरा धनु मेरै साथि चालै जहा हउ जाउ तह जाई ॥३॥ (४६०-१३, गूजरी, मः ३)
सो झूठा जो झूठे लागै झूठे कर्म कमाई ॥ (४६०-१४, गूजरी, मः ३)
कहै नानकु हरि का भाणा होआ कहणा कछू न जाई ॥४॥२॥४॥ (४६०-१४, गूजरी, मः ३)
गूजरी महला ३ ॥ (४६०-१५)
जुग माहि नामु दुलम्भु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (४६०-१५, गूजरी, मः ३)
बिनु नावै मुकति न होवई वेखहु को विउपाइ ॥१॥ (४६०-१५, गूजरी, मः ३)
बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ (४६०-१६, गूजरी, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ हरि मनि वसै सहजे रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६०-१६, गूजरी, मः ३)
जाँ भउ पाए आपणा बैरागु उपजै मनि आइ ॥ (४६०-१७, गूजरी, मः ३)
बैरागै ते हरि पाईऐ हरि सिउ रहै समाइ ॥२॥ (४६०-१८, गूजरी, मः ३)
सेइ मुकत जि मनु जिणहि फिरि धातु न लागै आइ ॥ (४६०-१८, गूजरी, मः ३)
दसवै दुआरि रहत करे तृभवण सोझी पाइ ॥३॥ (४६०-१९, गूजरी, मः ३)
नानक गुर ते गुरु होइआ वेखहु तिस की रजाइ ॥ (४६०-१९, गूजरी, मः ३)

पन्ना ४६१

इहु कारणु करता करे जोती जोति समाइ ॥४॥३॥५॥ (४६१-१, गूजरी, मः ३)
गूजरी महला ३ ॥ (४६१-१)
राम राम सभु को कहै कहिऐ रामु न होइ ॥ (४६१-१, गूजरी, मः ३)
गुर परसादी रामु मनि वसै ता फलु पावै कोइ ॥१॥ (४६१-२, गूजरी, मः ३)
अंतरि गोविंद जिसु लागै प्रीति ॥ (४६१-२, गूजरी, मः ३)
हरि तिसु कदे न वीसरै हरि हरि करहि सदा मनि चीति ॥१॥ रहाउ ॥ (४६१-३, गूजरी, मः ३)
हिरदै जिन् कै कपटु वसै बाहरहु संत कहाहि ॥ (४६१-३, गूजरी, मः ३)
तृसना मूलि न चुकई अंति गए पछुताहि ॥२॥ (४६१-४, गूजरी, मः ३)
अनेक तीर्थ जे जतन करै ता अंतर की हउमै कदे न जाइ ॥ (४६१-४, गूजरी, मः ३)
जिसु नर की दुबिधा न जाइ धर्म राइ तिसु देइ सजाइ ॥३॥ (४६१-५, गूजरी, मः ३)
करमु होवै सोई जनु पाए गुरमुखि बूझै कोई ॥ (४६१-६, गूजरी, मः ३)
नानक विचहु हउमै मारे ताँ हरि भेटै सोई ॥४॥४॥६॥ (४६१-६, गूजरी, मः ३)
गूजरी महला ३ ॥ (४६१-७)

तिसु जन साँति सदा मति निहचल जिस का अभिमानु गवाए ॥ (४९१-७, गूजरी, मः ३)
सो जनु निरमलु जि गुरमुखि बूझै हरि चरणी चितु लाए ॥१॥ (४९१-७, गूजरी, मः ३)
हरि चेति अचेत मना जो इछहि सो फलु होई ॥ (४९१-८, गूजरी, मः ३)
गुर परसादी हरि रसु पावहि पीवत रहहि सदा सुखु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (४९१-९, गूजरी, मः ३)
सतिगुरु भेटे ता पारसु होवै पारसु होइ त पूज कराए ॥ (४९१-९, गूजरी, मः ३)
जो उसु पूजे सो फलु पाए दीखिआ देवै साचु बुझाए ॥२॥ (४९१-१०, गूजरी, मः ३)
विणु पारसै पूज न होवई विणु मन परचे अवरा समझाए ॥ (४९१-१०, गूजरी, मः ३)
गुरू सदाए अगिआनी अंधा किसु ओहु मारगि पाए ॥३॥ (४९१-११, गूजरी, मः ३)
नानक विणु नदरी किछू न पाईऐ जिसु नदरि करे सो पाए ॥ (४९१-१२, गूजरी, मः ३)
गुर परसादी दे वडिआई अपणा सबदु वरताए ॥४॥५॥७॥ (४९१-१२, गूजरी, मः ३)
गूजरी महला ३ पंचपदे ॥ (४९१-१३)
ना कासी मति ऊपजै ना कासी मति जाइ ॥ (४९१-१३, गूजरी, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ मति ऊपजै ता इह सोझी पाइ ॥१॥ (४९१-१४, गूजरी, मः ३)
हरि कथा तूं सुणि रे मन सबदु मंनि वसाइ ॥ (४९१-१४, गूजरी, मः ३)
इह मति तेरी थिरु रहै ताँ भरमु विचहु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (४९१-१५, गूजरी, मः ३)
हरि चरण रिदै वसाइ तू किलविख होवहि नासु ॥ (४९१-१५, गूजरी, मः ३)
पंच भू आतमा वसि करहि ता तीर्थ करहि निवासु ॥२॥ (४९१-१६, गूजरी, मः ३)
मनमुखि इहु मनु मुगधु है सोझी किछू न पाइ ॥ (४९१-१६, गूजरी, मः ३)
हरि का नामु न बुझई अंति गइआ पछुताइ ॥३॥ (४९१-१७, गूजरी, मः ३)
इहु मनु कासी सभि तीर्थ सिमृति सतिगुर दीआ बुझाइ ॥ (४९१-१७, गूजरी, मः ३)
अठसठि तीर्थ तिसु संगि रहहि जिन हरि हिरदै रहिआ समाइ ॥४॥ (४९१-१८, गूजरी, मः ३)
नानक सतिगुर मिलिऐ हुकमु बुझिआ एकु वसिआ मनि आइ ॥ (४९१-१९, गूजरी, मः ३)
जो तुधु भावै सभु सचु है सचे रहै समाइ ॥५॥६॥८॥ (४९१-१९, गूजरी, मः ३)

पन्ना ४९२

गूजरी महला ३ तीजा ॥ (४९२-१)
एको नामु निधानु पंडित सुणि सिखु सचु सोई ॥ (४९२-१, गूजरी, मः ३)
दूजै भाइ जेता पड़हि पड़त गुणत सदा दुखु होई ॥१॥ (४९२-१, गूजरी, मः ३)
हरि चरणी तूं लागि रहु गुर सबदि सोझी होई ॥ (४९२-२, गूजरी, मः ३)
हरि रसु रसना चाखु तूं ताँ मनु निरमलु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (४९२-३, गूजरी, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ मनु संतोखीऐ ता फिरि तृसना भूख न होइ ॥ (४९२-३, गूजरी, मः ३)
नामु निधानु पाइआ पर घरि जाइ न कोइ ॥२॥ (४९२-४, गूजरी, मः ३)
कथनी बदनी जे करे मनमुखि बूझ न होइ ॥ (४९२-४, गूजरी, मः ३)
गुरमती घटि चानणा हरि नामु पावै सोइ ॥३॥ (४९२-५, गूजरी, मः ३)
सुणि सासत्र तूं न बुझही ता फिरहि बारो बार ॥ (४९२-५, गूजरी, मः ३)

सो मूरखु जो आपु न पछाणई सचि न धरे पिआरु ॥४॥ (४६२-६, गूजरी, मः ३)
सचै जगतु डहकाइआ कहणा कछू न जाइ ॥ (४६२-६, गूजरी, मः ३)
नानक जो तिसु भावै सो करे जिउ तिस की रजाइ ॥५॥७॥६॥ (४६२-७, गूजरी, मः ३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६२-८)
रागु गूजरी महला ४ चउपदे घरु १ ॥ (४६२-८)
हरि के जन सतिगुर सत पुरखा हउ बिनउ करउ गुर पासि ॥ (४६२-८, गूजरी, मः ४)
हम कीरे किर्म सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥ (४६२-६, गूजरी, मः ४)
मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ (४६२-६, गूजरी, मः ४)
गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ (४६२-१०, गूजरी, मः ४)
हरि जन के वडभाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ (४६२-११, गूजरी, मः ४)
हरि हरि नामु मिलै तृपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥ (४६२-११, गूजरी, मः ४)
जिन्ह हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ (४६२-१२, गूजरी, मः ४)
जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ (४६२-१३, गूजरी, मः ४)
जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ (४६२-१३, गूजरी, मः ४)
धन्नु धन्नु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि नानक नामु परगासि ॥४॥१॥ (४६२-१४, गूजरी, मः ४)
गूजरी महला ४ ॥ (४६२-१५)
गोविंदु गोविंदु प्रीतमु मनि प्रीतमु मिलि सतसंगति सबदि मनु मोहै ॥ (४६२-१५, गूजरी, मः ४)
जपि गोविंदु गोविंदु धिआईऐ सभ कउ दानु देइ प्रभु ओहै ॥१॥ (४६२-१६, गूजरी, मः ४)
मेरे भाई जना मो कउ गोविंदु गोविंदु गोविंदु मनु मोहै ॥ (४६२-१६, गूजरी, मः ४)
गोविंद गोविंद गोविंद गुण गावा मिलि गुर साधसंगति जनु सोहै ॥१॥ रहाउ ॥ (४६२-१७, गूजरी, मः ४)
सुख सागर हरि भगति है गुरमति कउला रिधि सिधि लागै पगि ओहै ॥ (४६२-१८, गूजरी, मः ४)
जन कउ राम नामु आधारा हरि नामु जपत हरि नामे सोहै ॥२॥ (४६२-१८, गूजरी, मः ४)

पन्ना ४६३

दुरमति भागहीन मति फीके नामु सुनत आवै मनि रोहै ॥ (४६३-१, गूजरी, मः ४)
कऊआ काग कउ अमृत रसु पाईऐ तृपतै विसटा खाइ मुखि गोहै ॥३॥ (४६३-२, गूजरी, मः ४)
अमृत सरु सतिगुरु सतिवादी जितु नातै कऊआ हंसु होहै ॥ (४६३-२, गूजरी, मः ४)
नानक धनु धन्नु वडे वडभागी जिन्ह गुरमति नामु रिदै मलु धोहै ॥४॥२॥ (४६३-३, गूजरी, मः ४)
गूजरी महला ४ ॥ (४६३-४)
हरि जन ऊतम ऊतम बाणी मुखि बोलहि परउपकारे ॥ (४६३-४, गूजरी, मः ४)
जो जनु सुणै सरधा भगति सेती करि किरपा हरि निसतारे ॥१॥ (४६३-४, गूजरी, मः ४)
राम मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ (४६३-५, गूजरी, मः ४)
मेरे प्रीतम प्रान सतिगुरु गुरु पूरा हम पापी गुरि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (४६३-५, गूजरी, मः ४)
गुरमुखि वडभागी वडभागे जिन हरि हरि नामु अधारे ॥ (४६३-६, गूजरी, मः ४)
हरि हरि अमृतु हरि रसु पावहि गुरमति भगति भंडारे ॥२॥ (४६३-७, गूजरी, मः ४)

जिन दरसनु सतिगुर सत पुरख न पाइआ ते भागहीण जमि मारे ॥ (४६३-७, गूजरी, मः ४)
से कूकर सूकर गरधभ पवहि गरभ जोनी दयि मारे महा हतिआरे ॥३॥ (४६३-८, गूजरी, मः ४)
दीन दइआल होहु जन ऊपरि करि किरपा लेहु उबारे ॥ (४६३-९, गूजरी, मः ४)
नानक जन हरि की सरणाई हरि भावै हरि निसतारे ॥४॥३॥ (४६३-९, गूजरी, मः ४)
गूजरी महला ४ ॥ (४६३-१०)
होहु दइआल मेरा मनु लावहु हउ अनदिनु राम नामु नित धिआई ॥ (४६३-१०, गूजरी, मः ४)
सभि सुख सभि गुण सभि निधान हरि जितु जपिऐ दुख भुख सभ लहि जाई ॥१॥ (४६३-११, गूजरी, मः ४)
मन मेरे मेरा राम नामु सखा हरि भाई ॥ (४६३-१२, गूजरी, मः ४)
गुरमति राम नामु जसु गावा अंति बेली दरगह लए छडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४६३-१२, गूजरी, मः ४)
तूं आपे दाता प्रभु अंतरजामी करि किरपा लोच मेरै मनि लाई ॥ (४६३-१३, गूजरी, मः ४)
मै मनि तनि लोच लगी हरि सेती प्रभि लोच पूरी सतिगुर सरणाई ॥२॥ (४६३-१४, गूजरी, मः ४)
माणस जनमु पुंनि करि पाइआ बिनु नावै ध्रिगु ध्रिगु बिरथा जाई ॥ (४६३-१४, गूजरी, मः ४)
नाम बिना रस कस दुखु खावै मुखु फीका थुक थूक मुखि पाई ॥३॥ (४६३-१५, गूजरी, मः ४)
जो जन हरि प्रभ हरि हरि सरणा तिन दरगह हरि हरि दे वडिआई ॥ (४६३-१६, गूजरी, मः ४)
धन्नु धन्नु साबासि कहै प्रभु जन कउ जन नानक मेलि लए गलि लाई ॥४॥४॥ (४६३-१६, गूजरी, मः ४)
गूजरी महला ४ ॥ (४६३-१७)
गुरमुखि सखी सहेली मेरी मो कउ देवहु दानु हरि प्रान जीवाइआ ॥ (४६३-१७, गूजरी, मः ४)
हम होवह लाले गोले गुरसिखा के जिन्हा अनदिनु हरि प्रभु पुरखु धिआइआ ॥१॥ (४६३-१८, गूजरी, मः ४)
मेरै मनि तनि बिरहु गुरसिख पग लाइआ ॥ (४६३-१९, गूजरी, मः ४)
मेरे प्रान सखा गुर के सिख भाई मो कउ करहु उपदेसु हरि मिलै मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६३-१९, गूजरी, मः ४)

पन्ना ४६४

जा हरि प्रभ भावै ता गुरमुखि मेले जिन्ह वचन गुरू सतिगुर मनि भाइआ ॥ (४६४-१, गूजरी, मः ४)
वडभागी गुर के सिख पिआरे हरि निरबाणी निरबाण पदु पाइआ ॥२॥ (४६४-२, गूजरी, मः ४)
सतसंगति गुर की हरि पिआरी जिन हरि हरि नामु मीठा मनि भाइआ ॥ (४६४-३, गूजरी, मः ४)
जिन सतिगुर संगति संगु न पाइआ से भागहीण पापी जमि खाइआ ॥३॥ (४६४-३, गूजरी, मः ४)
आपि कृपालु कृपा प्रभु धारे हरि आपे गुरमुखि मिलै मिलाइआ ॥ (४६४-४, गूजरी, मः ४)
जनु नानकु बोले गुण बाणी गुरबाणी हरि नामि समाइआ ॥४॥५॥ (४६४-५, गूजरी, मः ४)
गूजरी महला ४ ॥ (४६४-६)
जिन सतिगुरु पुरखु जिनि हरि प्रभु पाइआ मो कउ करि उपदेसु हरि मीठ लगावै ॥ (४६४-६, गूजरी, मः ४)
मनु तनु सीतलु सभ हरिआ होआ वडभागी हरि नामु धिआवै ॥१॥ (४६४-७, गूजरी, मः ४)
भाई रे मो कउ कोई आइ मिलै हरि नामु दृड़ावै ॥ (४६४-७, गूजरी, मः ४)
मेरे प्रीतम प्रान मनु तनु सभु देवा मेरे हरि प्रभ की हरि कथा सुनावै ॥१॥ रहाउ ॥ (४६४-८, गूजरी, मः ४)
धीरजु धरमु गुरमति हरि पाइआ नित हरि नामै हरि सिउ चितु लावै ॥ (४६४-९, गूजरी, मः ४)

अमृत बचन सतिगुर की बाणी जो बोलै सो मुखि अमृतु पावै ॥२॥ (४६४-९, गूजरी, मः ४)
निरमलु नामु जितु मैलु न लागै गुरमति नामु जपै लिव लावै ॥ (४६४-१०, गूजरी, मः ४)
नामु पदारथु जिन नर नही पाइआ से भागहीण मुए मरि जावै ॥३॥ (४६४-११, गूजरी, मः ४)
आनद मूलु जगजीवन दाता सभ जन कउ अनदु करहु हरि धिआवै ॥ (४६४-११, गूजरी, मः ४)
तूं दाता जीअ सभि तेरे जन नानक गुरमुखि बखसि मिलावै ॥४॥६॥ (४६४-१२, गूजरी, मः ४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६४-१४)
गूजरी महला ४ घरु ३ ॥ (४६४-१५)
माई बाप पुत्र सभि हरि के कीए ॥ (४६४-१५, गूजरी, मः ४)
सभना कउ सनबंधु हरि करि दीए ॥१॥ (४६४-१५, गूजरी, मः ४)
हमरा जोरु सभु रहिओ मेरे बीर ॥ (४६४-१६, गूजरी, मः ४)
हरि का तनु मनु सभु हरि कै वसि है सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ (४६४-१६, गूजरी, मः ४)
भगत जना कउ सरधा आपि हरि लाई ॥ (४६४-१६, गूजरी, मः ४)
विचे गृसत उदास रहाई ॥२॥ (४६४-१७, गूजरी, मः ४)
जब अंतरि प्रीति हरि सिउ बनि आई ॥ (४६४-१७, गूजरी, मः ४)
तब जो किछु करे सु मेरे हरि प्रभ भाई ॥३॥ (४६४-१८, गूजरी, मः ४)
जितु कारै कंमि हम हरि लाए ॥ (४६४-१८, गूजरी, मः ४)
सो हम करह जु आपि कराए ॥४॥ (४६४-१८, गूजरी, मः ४)
जिन की भगति मेरे प्रभ भाई ॥ (४६४-१९, गूजरी, मः ४)
ते जन नानक राम नाम लिव लाई ॥५॥१॥७॥१६॥ (४६४-१९, गूजरी, मः ४)

पन्ना ४६५

गूजरी महला ५ चउपदे घरु १ (४६५-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६५-१)
काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ (४६५-२, गूजरी, मः ५)
सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ (४६५-२, गूजरी, मः ५)
मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सि तरिआ ॥ (४६५-३, गूजरी, मः ५)
गुर परसादि परम पदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६५-३, गूजरी, मः ५)
जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ (४६५-४, गूजरी, मः ५)
सिरि सिरि रिजकु सम्बाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ (४६५-४, गूजरी, मः ५)
ऊडै ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ (४६५-५, गूजरी, मः ५)
उन कवनु खलावै कवनु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३॥ (४६५-६, गूजरी, मः ५)
सभ निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ (४६५-६, गूजरी, मः ५)
जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥१॥ (४६५-७, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ चउपदे घरु २ (४६५-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६५-८)

किरिआचार करहि खटु करमा इतु राते संसारी ॥ (४६५-९, गूजरी, मः ५)
अंतरि मैलु न उतरै हउमै बिनु गुर बाजी हारी ॥१॥ (४६५-९, गूजरी, मः ५)
मेरे ठाकुर रखि लेवहु किरपा धारी ॥ (४६५-१०, गूजरी, मः ५)
कोटि मधे को विरला सेवकु होरि सगले बिउहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (४६५-१०, गूजरी, मः ५)
सासत बेद सिमृति सभि सोधे सभ एका बात पुकारी ॥ (४६५-११, गूजरी, मः ५)
बिनु गुर मुकति न कोऊ पावै मनि वेखहु करि बीचारी ॥२॥ (४६५-११, गूजरी, मः ५)
अठसठि मजनु करि इसनाना भ्रमि आए धर सारी ॥ (४६५-१२, गूजरी, मः ५)
अनिक सोच करहि दिन राती बिनु सतिगुर अंधिआरी ॥३॥ (४६५-१२, गूजरी, मः ५)
धावत धावत सभु जगु धाइओ अब आए हरि दुआरी ॥ (४६५-१३, गूजरी, मः ५)
दुरमति मेटि बुधि परगासी जन नानक गुरमुखि तारी ॥४॥१॥२॥ (४६५-१३, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६५-१४)
हरि धनु जाप हरि धनु ताप हरि धनु भोजनु भाइआ ॥ (४६५-१४, गूजरी, मः ५)
निमख न बिसरउ मन ते हरि हरि साधसंगति महि पाइआ ॥१॥ (४६५-१५, गूजरी, मः ५)
माई खाटि आइओ घरि पूता ॥ (४६५-१५, गूजरी, मः ५)
हरि धनु चलते हरि धनु बैसे हरि धनु जागत सूता ॥१॥ रहाउ ॥ (४६५-१६, गूजरी, मः ५)
हरि धनु इसनानु हरि धनु गिआनु हरि संगि लाइ धिआना ॥ (४६५-१६, गूजरी, मः ५)
हरि धनु तुलहा हरि धनु बेड़ी हरि हरि तारि पराना ॥२॥ (४६५-१७, गूजरी, मः ५)

पन्ना ४६६

हरि धन मेरी चिंत विसारी हरि धनि लाहिआ धोखा ॥ (४६६-१, गूजरी, मः ५)
हरि धन ते मै नव निधि पाई हाथि चरिओ हरि थोका ॥३॥ (४६६-१, गूजरी, मः ५)
खावहु खरचहु तोटि न आवै हलत पलत कै संगे ॥ (४६६-२, गूजरी, मः ५)
लादि खजाना गुरि नानक कउ दीआ इहु मनु हरि रंगि रंगे ॥४॥२॥३॥ (४६६-२, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६६-३)
जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥ (४६६-३, गूजरी, मः ५)
सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥१॥ (४६६-४, गूजरी, मः ५)
पूता माता की आसीस ॥ (४६६-४, गूजरी, मः ५)
निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥ (४६६-५, गूजरी, मः ५)
सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥ (४६६-५, गूजरी, मः ५)
कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥२॥ (४६६-६, गूजरी, मः ५)
अमृतु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥ (४६६-७, गूजरी, मः ५)
रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥ (४६६-७, गूजरी, मः ५)
भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥ (४६६-८, गूजरी, मः ५)
नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चातृकु मउला ॥४॥३॥४॥ (४६६-८, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६६-९)

मता करै पछम कै ताई पूरब ही लै जात ॥ (४६६-९, गूजरी, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारा आपन हाथि मतात ॥१॥ (४६६-१०, गूजरी, मः ५)
सिआनप काहू कामि न आत ॥ (४६६-१०, गूजरी, मः ५)
जो अनरूपिओ ठाकुरि मेरै होइ रही उह बात ॥१॥ रहाउ ॥ (४६६-११, गूजरी, मः ५)
देसु कमावन धन जोरन की मनसा बीचे निकसे सास ॥ (४६६-११, गूजरी, मः ५)
लसकर नेब खवास सभ तिआगे जम पुरि ऊठि सिधास ॥२॥ (४६६-१२, गूजरी, मः ५)
होइ अनंनि मनहठ की दृड़ता आपस कउ जानात ॥ (४६६-१२, गूजरी, मः ५)
जो अनिंदु निंदु करि छोडिओ सोई फिरि फिरि खात ॥३॥ (४६६-१३, गूजरी, मः ५)
सहज सुभाइ भए किरपाला तिसु जन की काटी फास ॥ (४६६-१४, गूजरी, मः ५)
कहु नानक गुरु पूरा भेटिआ परवाणु गिरसत उदास ॥४॥४॥५॥ (४६६-१४, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६६-१५)
नामु निधानु जिनि जनि जपिओ तिन के बंधन काटे ॥ (४६६-१५, गूजरी, मः ५)
काम क्रोध माइआ बिखु ममता इह बिआधि ते हाटे ॥१॥ (४६६-१५, गूजरी, मः ५)
हरि जसु साधसंगि मिलि गाइओ ॥ (४६६-१६, गूजरी, मः ५)
गुर परसादि भइओ मनु निरमलु सर्ब सुखा सुख पाइअउ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६६-१६, गूजरी, मः ५)
जो किछु कीओ सोई भल मानै ऐसी भगति कमानी ॥ (४६६-१७, गूजरी, मः ५)
मित्र सत्रु सभ एक समाने जोग जुगति नीसानी ॥२॥ (४६६-१८, गूजरी, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ स्रब थाई आन न कतहूं जाता ॥ (४६६-१८, गूजरी, मः ५)
घट घट अंतरि सर्ब निरंतरि रंगि रविओ रंगि राता ॥३॥ (४६६-१९, गूजरी, मः ५)
भए कृपाल दइआल गुपाला ता निरभै कै घरि आइआ ॥ (४६६-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ४६७

कलि कलेस मिटे खिन भीतरि नानक सहजि समाइआ ॥४॥५॥६॥ (४६७-१, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६७-२)
जिसु मानुख पहि करउ बेनती सो अपनै दुखि भरिआ ॥ (४६७-२, गूजरी, मः ५)
पारब्रह्मु जिनि रिदै अराधिआ तिनि भउ सागरु तरिआ ॥१॥ (४६७-२, गूजरी, मः ५)
गुर हरि बिनु को न बृथा दुखु काटै ॥ (४६७-३, गूजरी, मः ५)
प्रभु तजि अवर सेवकु जे होई है तितु मानु महतु जसु घाटै ॥१॥ रहाउ ॥ (४६७-३, गूजरी, मः ५)
माइआ के सनबंध सैन साक कित ही कामि न आइआ ॥ (४६७-४, गूजरी, मः ५)
हरि का दासु नीच कुलु ऊचा तिसु संगि मन बाँछत फल पाइआ ॥२॥ (४६७-५, गूजरी, मः ५)
लाख कोटि बिखिआ के बिंजन ता महि तृसन न बूझी ॥ (४६७-५, गूजरी, मः ५)
सिमरत नामु कोटि उजीआरा बसतु अगोचर सूझी ॥३॥ (४६७-६, गूजरी, मः ५)
फिरत फिरत तुम्रै दुआरि आइआ भै भंजन हरि राइआ ॥ (४६७-७, गूजरी, मः ५)
साध के चरन धूरि जनु बाछै सुखु नानक इहु पाइआ ॥४॥६॥७॥ (४६७-७, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ पंचपदा घरु २ (४६७-९)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६७-९)
प्रथमे गरभ माता कै वासा ऊहा छोडि धरनि महि आइआ ॥ (४६७-१०, गूजरी, मः ५)
चित्र साल सुंदर बाग मंदर संगि न कछहू जाइआ ॥१॥ (४६७-१०, गूजरी, मः ५)
अवर सभ मिथिआ लोभ लबी ॥ (४६७-११, गूजरी, मः ५)
गुरि पूरै दीओ हरि नामा जीअ कउ एहा वसतु फबी ॥१॥ रहाउ ॥ (४६७-११, गूजरी, मः ५)
इसट मीत बंधप सुत भाई संगि बनिता रचि हसिआ ॥ (४६७-१२, गूजरी, मः ५)
जब अंती अउसरु आइ बनिओ है उन्ह पेखत ही कालि ग्रसिआ ॥२॥ (४६७-१२, गूजरी, मः ५)
करि करि अनरथ बिहाझी सम्पै सुइना रूपा दामा ॥ (४६७-१३, गूजरी, मः ५)
भाड़ी कउ ओहु भाड़ा मिलिआ होरु सगल भइओ बिराना ॥३॥ (४६७-१३, गूजरी, मः ५)
हैवर गैवर रथ सम्बाहे गहु करि कीने मेरे ॥ (४६७-१४, गूजरी, मः ५)
जब ते होई लाँमी धाई चलहि नाही इक पैरे ॥४॥ (४६७-१५, गूजरी, मः ५)
नामु धनु नामु सुख राजा नामु कुटम्ब सहाई ॥ (४६७-१५, गूजरी, मः ५)
नामु सम्पति गुरि नानक कउ दीई ओह मरै न आवै जाई ॥५॥१॥८॥ (४६७-१६, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ तिपदे घरु २ (४६७-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६७-१७)
दुख बिनसे सुख कीआ निवासा तृसना जलनि बुझाई ॥ (४६७-१८, गूजरी, मः ५)
नामु निधानु सतिगुरू दृड़ाइआ बिनसि न आवै जाई ॥१॥ (४६७-१८, गूजरी, मः ५)
हरि जपि माइआ बंधन तूटे ॥ (४६७-१९, गूजरी, मः ५)
भए कृपाल दइआल प्रभ मेरे साधसंगति मिलि छूटे ॥१॥ रहाउ ॥ (४६७-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ४६८

आठ पहर हरि के गुन गावै भगति प्रेम रसि माता ॥ (४६८-१, गूजरी, मः ५)
हरख सोग दुहु माहि निराला करणैहारु पछाता ॥२॥ (४६८-१, गूजरी, मः ५)
जिस का सा तिन ही रखि लीआ सगल जुगति बणि आई ॥ (४६८-२, गूजरी, मः ५)
कहु नानक प्रभ पुरख दइआला कीमति कहणु न जाई ॥३॥१॥९॥ (४६८-२, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ दुपदे घरु २ (४६८-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (४६८-४)
पतित पवित्र लीए करि अपुने सगल करत नमसकारो ॥ (४६८-५, गूजरी, मः ५)
बरनु जाति कोऊ पूछै नाही बाछहि चरन रवारो ॥१॥ (४६८-५, गूजरी, मः ५)
ठाकुर ऐसो नामु तुम्हारो ॥ (४६८-६, गूजरी, मः ५)
सगल सृसटि को धणी कहीजै जन को अंगु निरारो ॥१॥ रहाउ ॥ (४६८-६, गूजरी, मः ५)
साधसंगि नानक बुधि पाई हरि कीरतनु आधारो ॥ (४६८-७, गूजरी, मः ५)
नामदेउ तृलोचनु कबीर दासरो मुकति भइओ चंमिआरो ॥२॥१॥१०॥ (४६८-७, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६८-८)
है नाही कोऊ बूझनहारो जानै कवनु भता ॥ (४६८-८, गूजरी, मः ५)

सिव बिरंचि अरु सगल मोनि जन गहि न सकाहि गता ॥१॥ (४६८-८, गूजरी, मः ५)
प्रभ की अगम अगाधि कथा ॥ (४६८-६, गूजरी, मः ५)
सुनीऐ अवर अवर बिधि बुझीऐ बकन कथन रहता ॥१॥ रहाउ ॥ (४६८-६, गूजरी, मः ५)
आपे भगता आपि सुआमी आपन संगि रता ॥ (४६८-१०, गूजरी, मः ५)
नानक को प्रभु पूरि रहिओ है पेखिओ जत्र कता ॥२॥२॥११॥ (४६८-१०, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६८-११)
मता मसूरति अवर सिआनप जन कउ कछू न आइओ ॥ (४६८-११, गूजरी, मः ५)
जह जह अउसरु आइ बनिओ है तहा तहा हरि धिआइओ ॥१॥ (४६८-१२, गूजरी, मः ५)
प्रभ को भगति वछलु बिरदाइओ ॥ (४६८-१२, गूजरी, मः ५)
करे प्रतिपाल बारिक की निआई जन कउ लाड लडाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (४६८-१३, गूजरी, मः ५)
जप तप संजम कर्म धर्म हरि कीरतनु जनि गाइओ ॥ (४६८-१३, गूजरी, मः ५)
सरनि परिओ नानक ठाकुर की अभै दानु सुखु पाइओ ॥२॥३॥१२॥ (४६८-१४, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६८-१५)
दिनु राती आराधहु पिआरो निमख न कीजै ढीला ॥ (४६८-१५, गूजरी, मः ५)
संत सेवा करि भावनी लाईऐ तिआगि मानु हाठीला ॥१॥ (४६८-१५, गूजरी, मः ५)
मोहनु प्रान मान रागीला ॥ (४६८-१६, गूजरी, मः ५)
बासि रहिओ हीअरे कै संगे पेखि मोहिओ मनु लीला ॥१॥ रहाउ ॥ (४६८-१६, गूजरी, मः ५)
जिसु सिमरत मनि होत अनंदा उतरै मनहु जंगीला ॥ (४६८-१७, गूजरी, मः ५)
मिलबे की महिमा बरनि न साकउ नानक परै परीला ॥२॥४॥१३॥ (४६८-१८, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६८-१८)
मुनि जोगी सासत्रगि कहावत सभ कीन्हे बसि अपनही ॥ (४६८-१६, गूजरी, मः ५)
तीनि देव अरु कोड़ि तेतीसा तिन की हैरति कछु न रही ॥१॥ (४६८-१६, गूजरी, मः ५)

पन्ना ४६६

बलवंति बिआपि रही सभ मही ॥ (४६६-१, गूजरी, मः ५)
अवरु न जानसि कोऊ मरमा गुर किरपा ते लही ॥१॥ रहाउ ॥ (४६६-१, गूजरी, मः ५)
जीति जीति जीते सभि थाना सगल भवन लपटही ॥ (४६६-२, गूजरी, मः ५)
कहु नानक साध ते भागी होइ चेरी चरन गही ॥२॥५॥१४॥ (४६६-२, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४६६-३)
दुइ कर जोड़ि करी बेनंती ठाकुरु अपना धिआइआ ॥ (४६६-३, गूजरी, मः ५)
हाथ देइ राखे परमेसरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ (४६६-४, गूजरी, मः ५)
ठाकुर होए आपि दइआल ॥ (४६६-४, गूजरी, मः ५)
भई कलिआण आनंद रूप हुई है उबरे बाल गुपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (४६६-४, गूजरी, मः ५)
मिलि वर नारी मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ (४६६-५, गूजरी, मः ५)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिनि सभ का कीआ उधारु ॥२॥६॥१५॥ (४६६-६, गूजरी, मः ५)

गूजरी महला ५ ॥ (४९९-६)
मात पिता भाई सुत बंधप तिन का बलु है थोरा ॥ (४९९-६, गूजरी, मः ५)
अनिक रंग माइआ के पेखे किछु साथि न चालै भोरा ॥१॥ (४९९-७, गूजरी, मः ५)
ठाकुर तुझ बिनु आहि न मोरा ॥ (४९९-८, गूजरी, मः ५)
मोहि अनाथ निरगुन गुणु नाही मै आहिओ तुम्‍रा धोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (४९९-८, गूजरी, मः ५)
बलि बलि बलि बलि चरण तुम्‍रारे ईहा ऊहा तुम्‍रारा जोरा ॥ (४९९-९, गूजरी, मः ५)
साधसंगि नानक दरसु पाइओ बिनसिओ सगल निहोरा ॥२॥७॥१६॥ (४९९-९, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४९९-१०)
आल जाल भ्रम मोह तजावै प्रभ सेती रंगु लाई ॥ (४९९-१०, गूजरी, मः ५)
मन कउ इह उपदेसु दृड़ावै सहजि सहजि गुण गाई ॥१॥ (४९९-१०, गूजरी, मः ५)
साजन ऐसो संतु सहाई ॥ (४९९-११, गूजरी, मः ५)
जिसु भेटे तूटहि माइआ बंध बिसरि न कबहूं जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (४९९-११, गूजरी, मः ५)
करत करत अनिक बहु भाती नीकी इह ठहराई ॥ (४९९-१२, गूजरी, मः ५)
मिलि साधू हरि जसु गावै नानक भवजलु पारि पराई ॥२॥८॥१७॥ (४९९-१३, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४९९-१३)
खिन महि थापि उथापनहारा कीमति जाइ न करी ॥ (४९९-१३, गूजरी, मः ५)
राजा रंकु करै खिन भीतरि नीचह जोति धरी ॥१॥ (४९९-१४, गूजरी, मः ५)
धिआईऐ अपनो सदा हरी ॥ (४९९-१४, गूजरी, मः ५)
सोच अंदेसा ता का कहा करीऐ जा महि एक घरी ॥१॥ रहाउ ॥ (४९९-१५, गूजरी, मः ५)
तुम्‍री टेक पूरे मेरे सतिगुर मन सरनि तुम्‍रै परी ॥ (४९९-१५, गूजरी, मः ५)
अचेत इआने बारिक नानक हम तुम राखहु धारि करी ॥२॥९॥१८॥ (४९९-१६, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (४९९-१७)
तूं दाता जीआ सभना का बसहु मेरे मन माही ॥ (४९९-१७, गूजरी, मः ५)
चरण कमल रिद माहि समाए तह भरमु अंधेरा नाही ॥१॥ (४९९-१७, गूजरी, मः ५)
ठाकुर जा सिमरा तूं ताही ॥ (४९९-१८, गूजरी, मः ५)
करि किरपा सर्ब प्रतिपालक प्रभ कउ सदा सलाही ॥१॥ रहाउ ॥ (४९९-१८, गूजरी, मः ५)
सासि सासि तेरा नामु समारउ तुम ही कउ प्रभ आही ॥ (४९९-१९, गूजरी, मः ५)
नानक टेक भई करते की होर आस बिडाणी लाही ॥२॥१०॥१९॥ (४९९-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५००

गूजरी महला ५ ॥ (५००-१)
करि किरपा अपना दरसु दीजै जसु गावउ निसि अरु भोर ॥ (५००-१, गूजरी, मः ५)
केस संगि दास पग झारउ इहै मनोरथ मोर ॥१॥ (५००-२, गूजरी, मः ५)
ठाकुर तुझ बिनु बीआ न होर ॥ (५००-२, गूजरी, मः ५)
चिति चितवउ हरि रसन अराधउ निरखउ तुमरी ओर ॥१॥ रहाउ ॥ (५००-३, गूजरी, मः ५)

दइआल पुरख सर्ब के ठाकुर बिनउ करउ कर जोरि ॥ (५००-३, गूजरी, मः ५)
नामु जपै नानकु दासु तुमरो उधरसि आखी फोर ॥२॥११॥२०॥ (५००-४, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५००-५)
ब्रह्म लोक अरु रुद्र लोक आई इंद्र लोक ते धाइ ॥ (५००-५, गूजरी, मः ५)
साधसंगति कउ जोहि न साकै मलि मलि धोवै पाइ ॥१॥ (५००-५, गूजरी, मः ५)
अब मोहि आइ परिओ सरनाइ ॥ (५००-६, गूजरी, मः ५)
गुहज पावको बहुतु प्रजारै मो कउ सतिगुरि दीओ है बताइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५००-६, गूजरी, मः ५)
सिध साधिक अरु जख्य किन्नर नर रही कंठि उरझाइ ॥ (५००-७, गूजरी, मः ५)
जन नानक अंगु कीआ प्रभि करतै जा कै कोटि ऐसी दासाइ ॥२॥१२॥२१॥ (५००-७, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५००-८)
अपजसु मिटै होवै जगि कीरति दरगह बैसणु पाईऐ ॥ (५००-८, गूजरी, मः ५)
जम की त्रास नास होइ खिन महि सुख अनद सेती घरि जाईऐ ॥१॥ (५००-९, गूजरी, मः ५)
जा ते घाल न बिरथी जाईऐ ॥ (५००-१०, गूजरी, मः ५)
आठ पहर सिमरहु प्रभु अपना मनि तनि सदा धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (५००-१०, गूजरी, मः ५)
मोहि सरनि दीन दुख भंजन तूं देहि सोई प्रभ पाईऐ ॥ (५००-११, गूजरी, मः ५)
चरण कमल नानक रंगि राते हरि दासह पैज रखाईऐ ॥२॥१३॥२२॥ (५००-११, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५००-१२)
बिस्वम्भर जीअन को दाता भगति भरे भंडार ॥ (५००-१२, गूजरी, मः ५)
जा की सेवा निफल न होवत खिन महि करे उधार ॥१॥ (५००-१३, गूजरी, मः ५)
मन मेरे चरन कमल संगि राचु ॥ (५००-१३, गूजरी, मः ५)
सगल जीअ जा कउ आराधहि ताहू कउ तूं जाचु ॥१॥ रहाउ ॥ (५००-१४, गूजरी, मः ५)
नानक सरणि तुम्हारी करते तूं प्रभ प्रान अधार ॥ (५००-१४, गूजरी, मः ५)
होइ सहाई जिसु तूं राखहि तिसु कहा करे संसारु ॥२॥१४॥२३॥ (५००-१५, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५००-१६)
जन की पैज सवारी आप ॥ (५००-१६, गूजरी, मः ५)
हरि हरि नामु दीओ गुरि अवखधु उतरि गइओ सभु ताप ॥१॥ रहाउ ॥ (५००-१६, गूजरी, मः ५)
हरिगोबिंदु रखिओ परमेसरि अपुनी किरपा धारि ॥ (५००-१७, गूजरी, मः ५)
मिटी बिआधि सर्ब सुख होए हरि गुण सदा बीचारि ॥१॥ (५००-१७, गूजरी, मः ५)
अंगीकारु कीओ मेरै करतै गुर पूरे की वडिआई ॥ (५००-१८, गूजरी, मः ५)
अबिचल नीव धरी गुर नानक नित नित चड़ै सवाई ॥२॥१५॥२४॥ (५००-१८, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५००-१९)
कबहू हरि सिउ चीतु न लाइओ ॥ (५००-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५०१

धंधा करत बिहानी अउधहि गुण निधि नामु न गाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (५०१-१, गूजरी, मः ५)

कउडी कउडी जोरत कपटे अनिक जुगति करि धाइओ ॥ (५०१-१, गूजरी, मः ५)
बिसरत प्रभ केते दुख गनीअहि महा मोहनी खाइओ ॥१॥ (५०१-२, गूजरी, मः ५)
करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे गनहु न मोहि कमाइओ ॥ (५०१-३, गूजरी, मः ५)
गोबिंद दइआल कृपाल सुख सागर नानक हरि सरणाइओ ॥२॥१६॥२५॥ (५०१-३, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५०१-४)
रसना राम राम रवंत ॥ (५०१-४, गूजरी, मः ५)
छोडि आन बिउहार मिथिआ भजु सदा भगवंत ॥१॥ रहाउ ॥ (५०१-४, गूजरी, मः ५)
नामु एकु अधारु भगता ईत आगै टेक ॥ (५०१-५, गूजरी, मः ५)
करि कृपा गोबिंद दीआ गुर गिआनु बुधि बिबेक ॥१॥ (५०१-५, गूजरी, मः ५)
करण कारण सम्म्रथ स्रीधर सरणि ता की गही ॥ (५०१-६, गूजरी, मः ५)
मुकति जुगति रवाल साधू नानक हरि निधि लही ॥२॥१७॥२६॥ (५०१-६, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ घरु ४ चउपदे (५०१-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०१-८)
छाडि सगल सिआणपा साध सरणी आउ ॥ (५०१-९, गूजरी, मः ५)
पारब्रह्म परमेसरो प्रभू के गुण गाउ ॥१॥ (५०१-९, गूजरी, मः ५)
रे चित चरण कमल अराधि ॥ (५०१-९, गूजरी, मः ५)
सर्ब सूख कलिआण पावहि मिटै सगल उपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ (५०१-१०, गूजरी, मः ५)
मात पिता सुत मीत भाई तिसु बिना नही कोइ ॥ (५०१-१०, गूजरी, मः ५)
ईत ऊत जीअ नालि संगी सर्ब रविआ सोइ ॥२॥ (५०१-११, गूजरी, मः ५)
कोटि जतन उपाव मिथिआ कछु न आवै कामि ॥ (५०१-११, गूजरी, मः ५)
सरणि साधू निरमला गति होइ प्रभ कै नामि ॥३॥ (५०१-१२, गूजरी, मः ५)
अगम दइआल प्रभू ऊचा सरणि साधू जोगु ॥ (५०१-१३, गूजरी, मः ५)
तिसु परापति नानका जिसु लिखिआ धुरि संजोगु ॥४॥१॥२७॥ (५०१-१३, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५०१-१४)
आपना गुरु सेवि सद ही रमहु गुण गोबिंद ॥ (५०१-१४, गूजरी, मः ५)
सासि सासि अराधि हरि हरि लहि जाइ मन की चिंद ॥१॥ (५०१-१४, गूजरी, मः ५)
मेरे मन जापि प्रभ का नाउ ॥ (५०१-१५, गूजरी, मः ५)
सूख सहज अनंद पावहि मिली निर्मल थाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (५०१-१५, गूजरी, मः ५)
साधसंगि उधारि इहु मनु आठ पहर आराधि ॥ (५०१-१६, गूजरी, मः ५)
कामु क्रोधु अहंकारु बिनसै मिटै सगल उपाधि ॥२॥ (५०१-१६, गूजरी, मः ५)
अटल अछेद अभेद सुआमी सरणि ता की आउ ॥ (५०१-१७, गूजरी, मः ५)
चरण कमल अराधि हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥३॥ (५०१-१७, गूजरी, मः ५)
पारब्रहमि प्रभि दइआ धारी बखसि लीन्हे आपि ॥ (५०१-१८, गूजरी, मः ५)
सर्ब सुख हरि नामु दीआ नानक सो प्रभु जापि ॥४॥२॥२८॥ (५०१-१८, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५०१-१९)

गुर प्रसादी प्रभु धिआइआ गई संका तूटि ॥ (५०१-१६, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५०२

दुख अनेरा भै बिनासे पाप गए निखूटि ॥१॥ (५०२-१, गूजरी, मः ५)
हरि हरि नाम की मनि प्रीति ॥ (५०२-१, गूजरी, मः ५)
मिलि साध बचन गोबिंद धिआए महा निर्मल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (५०२-२, गूजरी, मः ५)
जाप ताप अनेक करणी सफल सिमरत नाम ॥ (५०२-२, गूजरी, मः ५)
करि अनुग्रहु आपि राखे भए पूरन काम ॥२॥ (५०२-३, गूजरी, मः ५)
सासि सासि न बिसरु कबहूं ब्रह्म प्रभ समरथ ॥ (५०२-३, गूजरी, मः ५)
गुण अनिक रसना किआ बखानै अगनत सदा अकथ ॥३॥ (५०२-४, गूजरी, मः ५)
दीन दरद निवारि तारण दइआल किरपा करण ॥ (५०२-४, गूजरी, मः ५)
अटल पदवी नाम सिमरण दृड़ु नानक हरि हरि सरण ॥४॥३॥२९॥ (५०२-५, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५०२-६)
अहम्बुधि बहु सघन माइआ महा दीरघ रोगु ॥ (५०२-६, गूजरी, मः ५)
हरि नामु अउखधु गुरि नामु दीनो करण कारण जोगु ॥१॥ (५०२-६, गूजरी, मः ५)
मनि तनि बाछीऐ जन धूरि ॥ (५०२-७, गूजरी, मः ५)
कोटि जनम के लहहि पातिक गोबिंद लोचा पूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (५०२-७, गूजरी, मः ५)
आदि अंते मधि आसा कूकरी बिकराल ॥ (५०२-८, गूजरी, मः ५)
गुर गिआन कीर्तन गोबिंद रमणं काटीऐ जम जाल ॥२॥ (५०२-८, गूजरी, मः ५)
काम क्रोध लोभ मोह मूठे सदा आवा गवण ॥ (५०२-९, गूजरी, मः ५)
प्रभ प्रेम भगति गुपाल सिमरण मिटत जोनी भवण ॥३॥ (५०२-९, गूजरी, मः ५)
मित्र पुत्र कलत्र सुर रिद तीनि ताप जलंत ॥ (५०२-१०, गूजरी, मः ५)
जपि राम रामा दुख निवारे मिलै हरि जन संत ॥४॥ (५०२-१०, गूजरी, मः ५)
सर्ब बिधि भ्रमते पुकारहि कतहि नाही छोटि ॥ (५०२-११, गूजरी, मः ५)
हरि चरण सरण अपार प्रभ के दृड़ु गही नानक ओट ॥५॥४॥३०॥ (५०२-११, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ घरु ४ दुपदे (५०२-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०२-१३)
आराधि स्रीधर सफल मूरति करण कारण जोगु ॥ (५०२-१४, गूजरी, मः ५)
गुण रमण स्रवण अपार महिमा फिरि न होत बिओगु ॥१॥ (५०२-१४, गूजरी, मः ५)
मन चरणारबिंद उपास ॥ (५०२-१५, गूजरी, मः ५)
कलि कलेस मिटंत सिमरणि काटि जमदूत फास ॥१॥ रहाउ ॥ (५०२-१५, गूजरी, मः ५)
सत्रु दहन हरि नाम कहन अवर कछु न उपाउ ॥ (५०२-१६, गूजरी, मः ५)
करि अनुग्रहु प्रभू मेरे नानक नाम सुआउ ॥२॥१॥३१॥ (५०२-१७, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ ॥ (५०२-१७)
तूं समरथु सरनि को दाता दुख भंजनु सुख राइ ॥ (५०२-१७, गूजरी, मः ५)

जाहि कलेस मिटे भै भरमा निर्मल गुण प्रभ गाइ ॥१॥ (५०२-१८, गूजरी, मः ५)
गोविंद तुझ बिनु अवरु न ठाउ ॥ (५०२-१८, गूजरी, मः ५)
करि किरपा पारब्रह्म सुआमी जपी तुमारा नाउ ॥ रहाउ ॥ (५०२-१९, गूजरी, मः ५)
सतिगुर सेवि लगे हरि चरनी वडै भागि लिव लागी ॥ (५०२-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५०३

कवल प्रगास भए साधसंगे दुरमति बुधि तिआगी ॥२॥ (५०३-१, गूजरी, मः ५)
आठ पहर हरि के गुण गावै सिमरै दीन दैआला ॥ (५०३-२, गूजरी, मः ५)
आपि तरै संगति सभ उधरै बिनसे सगल जंजाला ॥३॥ (५०३-२, गूजरी, मः ५)
चरण अधारु तेरा प्रभ सुआमी ओति पोति प्रभु साथि ॥ (५०३-३, गूजरी, मः ५)
सरनि परिओ नानक प्रभ तुमरी दे राखिओ हरि हाथ ॥४॥२॥३२॥ (५०३-३, गूजरी, मः ५)
गूजरी असटपदीआ महला १ घरु १ (५०३-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०३-५)
एक नगरी पंच चोर बसीअले बरजत चोरी धावै ॥ (५०३-६, गूजरी, मः १)
तृहदस माल रखै जो नानक मोख मुकति सो पावै ॥१॥ (५०३-६, गूजरी, मः १)
चेतहु बासुदेउ बनवाली ॥ (५०३-७, गूजरी, मः १)
रामु रिदै जपमाली ॥१॥ रहाउ ॥ (५०३-७, गूजरी, मः १)
उरध मूल जिसु साख तलाहा चारि बेद जितु लागे ॥ (५०३-७, गूजरी, मः १)
सहज भाइ जाइ ते नानक पारब्रह्म लिव जागे ॥२॥ (५०३-८, गूजरी, मः १)
पारजातु घरि आगनि मेरै पुहप पत्र ततु डाला ॥ (५०३-८, गूजरी, मः १)
सर्ब जोति निरंजन सम्भू छोडहु बहुतु जंजाला ॥३॥ (५०३-९, गूजरी, मः १)
सुणि सिखवंते नानकु बिनवै छोडहु माइआ जाला ॥ (५०३-९, गूजरी, मः १)
मनि बीचारि एक लिव लागी पुनरपि जनमु न काला ॥४॥ (५०३-१०, गूजरी, मः १)
सो गुरू सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ॥ (५०३-११, गूजरी, मः १)
तिसु कारणि कम्मु न धंधा नाही धंधै गिरही जोगी ॥५॥ (५०३-११, गूजरी, मः १)
कामु क्रोधु अहंकारु तजीअले लोभु मोहु तिस माइआ ॥ (५०३-१२, गूजरी, मः १)
मनि ततु अविगतु धिआइआ गुर परसादी पाइआ ॥६॥ (५०३-१२, गूजरी, मः १)
गिआनु धिआनु सभ दाति कथीअले सेत बरन सभि दूता ॥ (५०३-१३, गूजरी, मः १)
ब्रह्म कमल मधु तासु रसादं जागत नाही सूता ॥७॥ (५०३-१३, गूजरी, मः १)
महा गम्भीर पत्र पाताला नानक सर्ब जुआइआ ॥ (५०३-१४, गूजरी, मः १)
उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं बिखु तजि अमृतु पीआइआ ॥८॥१॥ (५०३-१४, गूजरी, मः १)
गूजरी महला १ ॥ (५०३-१५)
कवन कवन जाचहि प्रभ दाते ता के अंत न परहि सुमार ॥ (५०३-१५, गूजरी, मः १)
जैसी भूख होइ अभ अंतरि तूं समरथु सचु देवणहार ॥१॥ (५०३-१६, गूजरी, मः १)
ऐ जी जपु तपु संजमु सचु अधार ॥ (५०३-१६, गूजरी, मः १)

हरि हरि नामु देहि सुखु पाईऐ तेरी भगति भरे भंडार ॥१॥ रहाउ ॥ (५०३-१७, गूजरी, मः १)
सुन्न समाधि रहहि लिव लागे एका एकी सबदु बीचार ॥ (५०३-१८, गूजरी, मः १)
जलु थलु धरणि गगनु तह नाही आपे आपु कीआ करतार ॥२॥ (५०३-१८, गूजरी, मः १)
ना तदि माइआ मगनु न छाइआ ना सूरज चंद न जोति अपार ॥ (५०३-१९, गूजरी, मः १)
सर्ब दृसटि लोचन अभ अंतरि एका नदरि सु तृभवण सार ॥३॥ (५०३-१९, गूजरी, मः १)

पन्ना ५०४

पवणु पाणी अगनि तिनि कीआ ब्रह्मा बिसनु महेस अकार ॥ (५०४-१, गूजरी, मः १)
सरबे जाचिक तूं प्रभु दाता दाति करे अपुनै बीचार ॥४॥ (५०४-२, गूजरी, मः १)
कोटि तेतीस जाचहि प्रभ नाइक देदे तोटि नाही भंडार ॥ (५०४-२, गूजरी, मः १)
ऊंधै भाँडै कछु न समावै सीधै अमृतु परै निहार ॥५॥ (५०४-३, गूजरी, मः १)
सिध समाधी अंतरि जाचहि रिधि सिधि जाचि करहि जैकार ॥ (५०४-३, गूजरी, मः १)
जैसी पिआस होइ मन अंतरि तैसो जलु देवहि परकार ॥६॥ (५०४-४, गूजरी, मः १)
बडे भाग गुरु सेवहि अपुना भेदु नाही गुरदेव मुरार ॥ (५०४-५, गूजरी, मः १)
ता कउ कालु नाही जमु जोहै बूझहि अंतरि सबदु बीचार ॥७॥ (५०४-५, गूजरी, मः १)
अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नामु निरंजन दीजै पिआरि ॥ (५०४-६, गूजरी, मः १)
नानक चातृकु अमृत जलु मागै हरि जसु दीजै किरपा धारि ॥८॥२॥ (५०४-७, गूजरी, मः १)
गूजरी महला १ ॥ (५०४-७)
ऐ जी जनमि मरै आवै फुनि जावै बिनु गुर गति नही काई ॥ (५०४-७, गूजरी, मः १)
गुरमुखि प्राणी नामे राते नामे गति पति पाई ॥१॥ (५०४-८, गूजरी, मः १)
भाई रे राम नामि चितु लाई ॥ (५०४-९, गूजरी, मः १)
गुर परसादी हरि प्रभ जाचे ऐसी नाम बडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (५०४-९, गूजरी, मः १)
ऐ जी बहुते भेख करहि भिखिआ कउ केते उदरु भरन कै ताई ॥ (५०४-९, गूजरी, मः १)
बिनु हरि भगति नाही सुखु प्रानी बिनु गुर गरबु न जाई ॥२॥ (५०४-१०, गूजरी, मः १)
ऐ जी कालु सदा सिर ऊपरि ठाढे जनमि जनमि वैराई ॥ (५०४-११, गूजरी, मः १)
साचै सबदि रते से बाचे सतिगुर बूझ बुझाई ॥३॥ (५०४-११, गूजरी, मः १)
गुर सरणाई जोहि न साकै दूतु न सकै संताई ॥ (५०४-१२, गूजरी, मः १)
अविगत नाथ निरंजनि राते निरभउ सिउ लिव लाई ॥४॥ (५०४-१२, गूजरी, मः १)
ऐ जीउ नामु दिड़हु नामे लिव लावहु सतिगुर टेक टिकाई ॥ (५०४-१३, गूजरी, मः १)
जो तिसु भावै सोई करसी किरतु न मेटिआ जाई ॥५॥ (५०४-१४, गूजरी, मः १)
ऐ जी भागि परे गुर सरणि तुम्हारी मै अवर न दूजी भाई ॥ (५०४-१४, गूजरी, मः १)
अब तब एको एकु पुकारउ आदि जुगादि सखाई ॥६॥ (५०४-१५, गूजरी, मः १)
ऐ जी राखहु पैज नाम अपुने की तुझ ही सिउ बनि आई ॥ (५०४-१५, गूजरी, मः १)
करि किरपा गुर दरसु दिखावहु हउमै सबदि जलाई ॥७॥ (५०४-१६, गूजरी, मः १)
ऐ जी किआ मागउ किछु रहै न दीसै इसु जग महि आइआ जाई ॥ (५०४-१७, गूजरी, मः १)

नानक नामु पदारथु दीजै हिरदै कंठि बणाई ॥८॥३॥ (५०४-१७, गूजरी, मः १)
गूजरी महला १ ॥ (५०४-१८)
ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम हरि सरणागति हरि के लोग ॥ (५०४-१८, गूजरी, मः १)
नाम रते केवल बैरागी सोग बिजोग बिसरजित रोग ॥१॥ (५०४-१९, गूजरी, मः १)
भाई रे गुर किरपा ते भगति ठाकुर की ॥ (५०४-१९, गूजरी, मः १)

पन्ना ५०५

सतिगुर वाकि हिरदै हरि निरमलु ना जम काणि न जम की बाकी ॥१॥ रहाउ ॥ (५०५-१, गूजरी, मः १)
हरि गुण रसन रवहि प्रभ संगे जो तिसु भावै सहजि हरी ॥ (५०५-२, गूजरी, मः १)
बिनु हरि नाम बृथा जगि जीवनु हरि बिनु निहफल मेक घरी ॥२॥ (५०५-२, गूजरी, मः १)
ऐ जी खोटे ठउर नाही घरि बाहरि निंदक गति नही काई ॥ (५०५-३, गूजरी, मः १)
रोसु करै प्रभु बखस न मेटै नित नित चड़ै सवाई ॥३॥ (५०५-४, गूजरी, मः १)
ऐ जी गुर की दाति न मेटै कोई मेरै ठाकुरि आपि दिवाई ॥ (५०५-४, गूजरी, मः १)
निंदक नर काले मुख निंदा जिन्ह गुर की दाति न भाई ॥४॥ (५०५-५, गूजरी, मः १)
ऐ जी सरणि परे प्रभु बखसि मिलावै बिलम न अधूआ राई ॥ (५०५-५, गूजरी, मः १)
आनद मूलु नाथु सिरि नाथा सतिगुरु मेलि मिलाई ॥५॥ (५०५-६, गूजरी, मः १)
ऐ जी सदा दइआलु दइआ करि रविआ गुरमति भ्रमनि चुकाई ॥ (५०५-७, गूजरी, मः १)
पारसु भेटि कंचनु धातु होई सतसंगति की वडिआई ॥६॥ (५०५-७, गूजरी, मः १)
हरि जलु निरमलु मनु इसनानी मजनु सतिगुरु भाई ॥ (५०५-८, गूजरी, मः १)
पुनरपि जनमु नाही जन संगति जोती जोति मिलाई ॥७॥ (५०५-८, गूजरी, मः १)
तूं वड पुरखु अगम्म तरोवरु हम पंखी तुझ माही ॥ (५०५-९, गूजरी, मः १)
नानक नामु निरंजन दीजै जुगि जुगि सबदि सलाही ॥८॥४॥ (५०५-१०, गूजरी, मः १)
गूजरी महला १ घरु ४ (५०५-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०५-११)
भगति प्रेम आराधितं सचु पिआस परम हितं ॥ (५०५-१२, गूजरी, मः १)
बिललाप बिल्ल बिनंतीआ सुख भाइ चित हितं ॥१॥ (५०५-१२, गूजरी, मः १)
जपि मन नामु हरि सरणी ॥ (५०५-१३, गूजरी, मः १)
संसार सागर तारि तारण रम नाम करि करणी ॥१॥ रहाउ ॥ (५०५-१३, गूजरी, मः १)
ए मन मिरत सुभ चिंतं गुर सबदि हरि रमणं ॥ (५०५-१३, गूजरी, मः १)
मति ततु गिआनं कलिआण निधानं हरि नाम मनि रमणं ॥२॥ (५०५-१४, गूजरी, मः १)
चल चित वित भ्रमा भ्रमं जगु मोह मगन हितं ॥ (५०५-१५, गूजरी, मः १)
थिरु नामु भगति दिड़ं मती गुर वाकि सबद रतं ॥३॥ (५०५-१५, गूजरी, मः १)
भरमाति भरमु न चूकई जगु जनमि बिआधि खपं ॥ (५०५-१६, गूजरी, मः १)
असथानु हरि निहकेवलं सति मती नाम तपं ॥४॥ (५०५-१६, गूजरी, मः १)
इहु जगु मोह हेत बिआपितं दुखु अधिक जनम मरणं ॥ (५०५-१७, गूजरी, मः १)

भजु सरणि सतिगुर ऊबरहि हरि नामु रिद रमणं ॥५॥ (५०५-१७, गूजरी, मः १)
गुरमति निहचल मनि मनु मनं सहज बीचारं ॥ (५०५-१८, गूजरी, मः १)
सो मनु निरमलु जितु साचु अंतरि गिआन रतनु सारं ॥६॥ (५०५-१८, गूजरी, मः १)
भै भाइ भगति तरु भवजलु मना चितु लाइ हरि चरणी ॥ (५०५-१९, गूजरी, मः १)

पन्ना ५०६

हरि नामु हिरदै पवित्रु पावनु इहु सरीरु तउ सरणी ॥७॥ (५०६-१, गूजरी, मः १)
लब लोभ लहरि निवारणं हरि नाम रासि मनं ॥ (५०६-१, गूजरी, मः १)
मनु मारि तुही निरंजना कहु नानका सरनं ॥८॥१॥५॥ (५०६-२, गूजरी, मः १)
गूजरी महला ३ घरु १ (५०६-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०६-३)
निरति करी इहु मनु नचाई ॥ (५०६-४, गूजरी, मः ३)
गुर परसादी आपु गवाई ॥ (५०६-४, गूजरी, मः ३)
चितु थिरु राखै सो मुकति होवै जो इछी सोई फलु पाई ॥१॥ (५०६-४, गूजरी, मः ३)
नाचु रे मन गुर कै आगै ॥ (५०६-५, गूजरी, मः ३)
गुर कै भाणै नाचहि ता सुखु पावहि अंते जम भउ भागै ॥ रहाउ ॥ (५०६-५, गूजरी, मः ३)
आपि नचाए सो भगतु कहीऐ आपणा पिआरु आपि लाए ॥ (५०६-६, गूजरी, मः ३)
आपे गावै आपि सुणावै इसु मन अंधे कउ मारगि पाए ॥२॥ (५०६-६, गूजरी, मः ३)
अनदिनु नाचै सकति निवारै सिव घरि नीद न होई ॥ (५०६-७, गूजरी, मः ३)
सकती घरि जगतु सूता नाचै टापै अवरो गावै मनमुखि भगति न होई ॥३॥ (५०६-७, गूजरी, मः ३)
सुरि नर विरति पखि करमी नाचे मुनि जन गिआन बीचारी ॥ (५०६-८, गूजरी, मः ३)
सिध साधिक लिव लागी नाचे जिन गुरमुखि बुधि वीचारी ॥४॥ (५०६-९, गूजरी, मः ३)
खंड ब्रहमंड त्रै गुण नाचे जिन लागी हरि लिव तुमारी ॥ (५०६-१०, गूजरी, मः ३)
जीअ जंत सभे ही नाचे नाचहि खाणी चारी ॥५॥ (५०६-१०, गूजरी, मः ३)
जो तुधु भावहि सेई नाचहि जिन गुरमुखि सबदि लिव लाए ॥ (५०६-११, गूजरी, मः ३)
से भगत से ततु गिआनी जिन कउ हुकमु मनाए ॥६॥ (५०६-११, गूजरी, मः ३)
एहा भगति सचे सिउ लिव लागै बिनु सेवा भगति न होई ॥ (५०६-१२, गूजरी, मः ३)
जीवतु मरै ता सबदु बीचारै ता सचु पावै कोई ॥७॥ (५०६-१२, गूजरी, मः ३)
माइआ कै अरथि बहुतु लोक नाचे को विरला ततु बीचारी ॥ (५०६-१३, गूजरी, मः ३)
गुर परसादी सोई जनु पाए जिन कउ कृपा तुमारी ॥८॥ (५०६-१४, गूजरी, मः ३)
इकु दमु साचा वीसरै सा वेला बिरथा जाइ ॥ (५०६-१४, गूजरी, मः ३)
साहि साहि सदा समालीऐ आपे बखसे करे रजाइ ॥९॥ (५०६-१५, गूजरी, मः ३)
सेई नाचहि जो तुधु भावहि जि गुरमुखि सबदु वीचारी ॥ (५०६-१५, गूजरी, मः ३)
कहु नानक से सहज सुखु पावहि जिन कउ नदरि तुमारी ॥१०॥१॥६॥ (५०६-१५, गूजरी, मः ३)
गूजरी महला ४ घरु २ (५०६-१६)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०६-१६)
हरि बिनु जीअरा रहि न सकै जिउ बालकु खीर अधारी ॥ (५०६-१७, गूजरी, मः ४)
अगम अगोचर प्रभु गुरमुखि पाईऐ अपुने सतिगुर कै बलिहारी ॥१॥ (५०६-१७, गूजरी, मः ४)
मन रे हरि कीरति तरु तारी ॥ (५०६-१८, गूजरी, मः ४)
गुरमुखि नामु अमृत जलु पाईऐ जिन कउ कृपा तुमारी ॥ रहाउ ॥ (५०६-१८, गूजरी, मः ४)

पन्ना ५०७

सनक सनंदन नारद मुनि सेवहि अनदिनु जपत रहहि बनवारी ॥ (५०७-१, गूजरी, मः ४)
सरणागति प्रहलाद जन आए तिन की पैज सवारी ॥२॥ (५०७-२, गूजरी, मः ४)
अलख निरंजनु एको वरतै एका जोति मुरारी ॥ (५०७-२, गूजरी, मः ४)
सभि जाचिक तू एको दाता मागहि हाथ पसारी ॥३॥ (५०७-३, गूजरी, मः ४)
भगत जना की ऊतम बाणी गावहि अकथ कथा नित निआरी ॥ (५०७-३, गूजरी, मः ४)
सफल जनमु भइआ तिन केरा आपि तरे कुल तारी ॥४॥ (५०७-४, गूजरी, मः ४)
मनमुख दुबिधा दुरमति बिआपे जिन अंतरि मोह गुबारी ॥ (५०७-४, गूजरी, मः ४)
संत जना की कथा न भावै ओइ डूबे सणु परवारी ॥५॥ (५०७-५, गूजरी, मः ४)
निंदकु निंदा करि मलु धोवै ओहु मलभखु माइआधारी ॥ (५०७-६, गूजरी, मः ४)
संत जना की निंदा विआपे ना उरवारि न पारी ॥६॥ (५०७-६, गूजरी, मः ४)
एहु परपंचु खेलु कीआ सभु करतै हरि करतै सभ कल धारी ॥ (५०७-७, गूजरी, मः ४)
हरि एको सूतु वरतै जुग अंतरि सूतु खिंचै एकंकारी ॥७॥ (५०७-७, गूजरी, मः ४)
रसनि रसनि रसि गावहि हरि गुण रसना हरि रसु धारी ॥ (५०७-८, गूजरी, मः ४)
नानक हरि बिनु अवरु न मागउ हरि रस प्रीति पिआरी ॥८॥१॥७॥ (५०७-८, गूजरी, मः ४)
गूजरी महला ५ घरु २ (५०७-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०७-१०)
राजन महि तूं राजा कहीअहि भूमन महि भूमा ॥ (५०७-११, गूजरी, मः ५)
ठाकुर महि ठकुराई तेरी कोमन सिरि कोमा ॥१॥ (५०७-११, गूजरी, मः ५)
पिता मेरो बडो धनी अगमा ॥ (५०७-१२, गूजरी, मः ५)
उसतति कवन करीजै करते पेखि रहे बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥ (५०७-१२, गूजरी, मः ५)
सुखीअन महि सुखीआ तूं कहीअहि दातन सिरि दाता ॥ (५०७-१३, गूजरी, मः ५)
तेजन महि तेजवंसी कहीअहि रसीअन महि राता ॥२॥ (५०७-१३, गूजरी, मः ५)
सूरन महि सूरा तूं कहीअहि भोगन महि भोगी ॥ (५०७-१४, गूजरी, मः ५)
ग्रसतन महि तूं बडो गृहसती जोगन महि जोगी ॥३॥ (५०७-१४, गूजरी, मः ५)
करतन महि तूं करता कहीअहि आचारन महि आचारी ॥ (५०७-१५, गूजरी, मः ५)
साहन महि तूं साचा साहा वापारन महि वापारी ॥४॥ (५०७-१५, गूजरी, मः ५)
दरबारन महि तेरो दरबारा सरन पालन टीका ॥ (५०७-१६, गूजरी, मः ५)
लखिमी केतक गनी न जाईऐ गनि न सकउ सीका ॥५॥ (५०७-१७, गूजरी, मः ५)

नामन महि तेरो प्रभ नामा गिआनन महि गिआनी ॥ (५०७-१७, गूजरी, मः ५)
जुगतन महि तेरी प्रभ जुगता इसनानन महि इसनानी ॥६॥ (५०७-१८, गूजरी, मः ५)
सिधन महि तेरी प्रभ सिधा करमन सिरि करमा ॥ (५०७-१८, गूजरी, मः ५)
आगिआ महि तेरी प्रभ आगिआ हुकमन सिरि हुकमा ॥७॥ (५०७-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५०८

जिउ बोलावहि तिउ बोलह सुआमी कुदरति कवन हमारी ॥ (५०८-१, गूजरी, मः ५)
साधसंगि नानक जसु गाइओ जो प्रभ की अति पिआरी ॥८॥१॥८॥ (५०८-१, गूजरी, मः ५)
गूजरी महला ५ घरु ४ (५०८-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०८-३)
नाथ नरहर दीन बंधव पतित पावन देव ॥ (५०८-४, गूजरी, मः ५)
भै त्रास नास कृपाल गुण निधि सफल सुआमी सेव ॥१॥ (५०८-४, गूजरी, मः ५)
हरि गोपाल गुर गोबिंद ॥ (५०८-५, गूजरी, मः ५)
चरण सरण दइआल केसव तारि जग भव सिंध ॥१॥ रहाउ ॥ (५०८-५, गूजरी, मः ५)
काम क्रोध हरन मद मोह दहन मुरारि मन मकरंद ॥ (५०८-६, गूजरी, मः ५)
जनम मरण निवारि धरणीधर पति राखु परमानंद ॥२॥ (५०८-६, गूजरी, मः ५)
जलत अनिक तरंग माइआ गुर गिआन हरि रिद मंत ॥ (५०८-७, गूजरी, मः ५)
छेदि अहम्बुधि करुणा मै चिंत मेटि पुरख अनंत ॥३॥ (५०८-७, गूजरी, मः ५)
सिमरि समरथ पल महूरत प्रभ धिआनु सहज समाधि ॥ (५०८-८, गूजरी, मः ५)
दीन दइआल प्रसन्न पूरन जाचीऐ रज साध ॥४॥ (५०८-८, गूजरी, मः ५)
मोह मिथन दुरंत आसा बासना बिकार ॥ (५०८-९, गूजरी, मः ५)
रखु धर्म भर्म बिदारि मन ते उधरु हरि निरंकार ॥५॥ (५०८-९, गूजरी, मः ५)
धनाढि आढि भंडार हरि निधि होत जिना न चीर ॥ (५०८-१०, गूजरी, मः ५)
खल मुगध मूड़ कटाख्य स्रीधर भए गुण मति धीर ॥६॥ (५०८-१०, गूजरी, मः ५)
जीवन मुकत जगदीस जपि मन धारि रिद परतीति ॥ (५०८-११, गूजरी, मः ५)
जीअ दइआ मइआ सरबत्र रमणं पर्म हंसह रीति ॥७॥ (५०८-१२, गूजरी, मः ५)
देत दरसनु स्रवन हरि जसु रसन नाम उचार ॥ (५०८-१२, गूजरी, मः ५)
अंग संग भगवान परसन प्रभ नानक पतित उधार ॥८॥१॥२॥५॥१॥१॥२॥५७॥ (५०८-१३, गूजरी, मः ५)
गूजरी की वार महला ३ सिकंदर बिराहिम की वार की धुनी गाउणी (५०८-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५०८-१४)
सलोकु मः ३ ॥ (५०८-१५)
इहु जगतु ममता मुआ जीवण की बिधि नाहि ॥ (५०८-१५, गूजरी की वार, मः ३)
गुर कै भाणै जो चलै ताँ जीवण पदवी पाहि ॥ (५०८-१५, गूजरी की वार, मः ३)
ओइ सदा सदा जन जीवते जो हरि चरणी चितु लाहि ॥ (५०८-१६, गूजरी की वार, मः ३)
नानक नदरी मनि वसै गुरमुखि सहजि समाहि ॥१॥ (५०८-१६, गूजरी की वार, मः ३)

मः ३ ॥ (५०८-१७)
अंदरि सहसा दुखु है आपै सिरि धंधै मार ॥ (५०८-१७, गूजरी की वार, मः ३)
दूजै भाइ सुते कबहि न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ (५०८-१८, गूजरी की वार, मः ३)
नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का आचारु ॥ (५०८-१८, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५०९

हरि नामु न पाइआ जनमु बिरथा गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥२॥ (५०९-१, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५०९-२)
आपणा आपु उपाइओनु तदहु होरु न कोई ॥ (५०९-२, गूजरी की वार, मः ३)
मता मसूरति आपि करे जो करे सु होई ॥ (५०९-२, गूजरी की वार, मः ३)
तदहु आकासु न पातालु है ना त्रै लोई ॥ (५०९-२, गूजरी की वार, मः ३)
तदहु आपे आपि निरंकारु है ना ओपति होई ॥ (५०९-३, गूजरी की वार, मः ३)
जिउ तिसु भावै तिवै करे तिसु बिनु अवरु न कोई ॥१॥ (५०९-३, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५०९-४)
साहिबु मेरा सदा है दिसै सबदु कमाइ ॥ (५०९-४, गूजरी की वार, मः ३)
ओहु अउहाणी कदे नाहि ना आवै ना जाइ ॥ (५०९-४, गूजरी की वार, मः ३)
सदा सदा सो सेवीऐ जो सभ महि रहै समाइ ॥ (५०९-५, गूजरी की वार, मः ३)
अवरु दूजा किउ सेवीऐ जम्मै तै मरि जाइ ॥ (५०९-५, गूजरी की वार, मः ३)
निहफलु तिन का जीविआ जि खसमु न जाणहि आपणा अवरी कउ चितु लाइ ॥ (५०९-६, गूजरी की वार, मः ३)
नानक एव न जापई करता केती देइ सजाइ ॥१॥ (५०९-७, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५०९-७)
सचा नामु धिआईऐ सभो वरतै सचु ॥ (५०९-७, गूजरी की वार, मः ३)
नानक हुकमु बुझि परवाणु होइ ता फलु पावै सचु ॥ (५०९-८, गूजरी की वार, मः ३)
कथनी बदनी करता फिरै हुकमै मूलि न बुझई अंधा कचु निकचु ॥२॥ (५०९-८, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५०९-९)
संजोगु विजोगु उपाइओनु सृसटी का मूलु रचाइआ ॥ (५०९-९, गूजरी की वार, मः ३)
हुकमी सृसटि साजीअनु जोती जोति मिलाइआ ॥ (५०९-९, गूजरी की वार, मः ३)
जोती हूं सभु चानणा सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ (५०९-१०, गूजरी की वार, मः ३)
ब्रह्मा बिसनु महेसु त्रै गुण सिरि धंधै लाइआ ॥ (५०९-१०, गूजरी की वार, मः ३)
माइआ का मूलु रचाइओनु तुरीआ सुखु पाइआ ॥२॥ (५०९-११, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५०९-१२)
सो जपु सो तपु जि सतिगुर भावै ॥ (५०९-१२, गूजरी की वार, मः ३)
सतिगुर कै भाणै वडिआई पावै ॥ (५०९-१२, गूजरी की वार, मः ३)
नानक आपु छोडि गुर माहि समावै ॥१॥ (५०९-१२, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५०९-१३)

गुर की सिख को विरला लेवै ॥ (५०६-१३, गूजरी की वार, मः ३)
नानक जिसु आपि वडिआई देवै ॥२॥ (५०६-१३, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५०६-१४)
माइआ मोहु अगिआनु है बिखमु अति भारी ॥ (५०६-१४, गूजरी की वार, मः ३)
पथर पाप बहु लदिआ किउ तरीऐ तारी ॥ (५०६-१४, गूजरी की वार, मः ३)
अनदिनु भगती रतिआ हरि पारि उतारी ॥ (५०६-१५, गूजरी की वार, मः ३)
गुर सबदी मनु निरमला हउमै छडि विकारी ॥ (५०६-१५, गूजरी की वार, मः ३)
हरि हरि नामु धिआईऐ हरि हरि निसतारी ॥३॥ (५०६-१६, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु ॥ (५०६-१६)
कबीर मुकति दुआरा संकुड़ा राई दसवै भाइ ॥ (५०६-१६, गूजरी की वार, मः ३)
मनु तउ मैगलु होइ रहा निकसिआ किउ करि जाइ ॥ (५०६-१७, गूजरी की वार, मः ३)
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ (५०६-१७, गूजरी की वार, मः ३)
मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥१॥ (५०६-१८, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५०६-१८)
नानक मुकति दुआरा अति नीका नान्हा होइ सु जाइ ॥ (५०६-१८, गूजरी की वार, मः ३)
हउमै मनु असथूलु है किउ करि विचु दे जाइ ॥ (५०६-१९, गूजरी की वार, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ हउमै गई जोति रही सभ आइ ॥ (५०६-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५१०

इहु जीउ सदा मुकतु है सहजे रहिआ समाइ ॥२॥ (५१०-१, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१०-१)
प्रभि संसारु उपाइ कै वसि आपणै कीता ॥ (५१०-१, गूजरी की वार, मः ३)
गणतै प्रभू न पाईऐ दूजै भरमीता ॥ (५१०-२, गूजरी की वार, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ जीवतु मरै बुझि सचि समीता ॥ (५१०-२, गूजरी की वार, मः ३)
सबदे हउमै खोईऐ हरि मेलि मिलीता ॥ (५१०-३, गूजरी की वार, मः ३)
सभ किछु जाणै करे आपि आपे विगसीता ॥४॥ (५१०-३, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१०-४)
सतिगुर सिउ चितु न लाइओ नामु न वसिओ मनि आइ ॥ (५१०-४, गूजरी की वार, मः ३)
ध्रिगु इवेहा जीविआ किआ जुग महि पाइआ आइ ॥ (५१०-४, गूजरी की वार, मः ३)
माइआ खोटी रासि है एक चसे महि पाजु लहि जाइ ॥ (५१०-५, गूजरी की वार, मः ३)
हथहु छुड़की तनु सिआहु होइ बदनु जाइ कुमलाइ ॥ (५१०-५, गूजरी की वार, मः ३)
जिन सतिगुर सिउ चितु लाइआ तिन्ह सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (५१०-६, गूजरी की वार, मः ३)
हरि नामु धिआवहि रंग सिउ हरि नामि रहे लिव लाइ ॥ (५१०-७, गूजरी की वार, मः ३)
नानक सतिगुर सो धनु सउपिआ जि जीअ महि रहिआ समाइ ॥ (५१०-७, गूजरी की वार, मः ३)
रंगु तिसै कउ अगला वन्नी चड़ै चड़ाइ ॥१॥ (५१०-८, गूजरी की वार, मः ३)

मः ३ ॥ (५१०-८)
माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥ (५१०-९, गूजरी की वार, मः ३)
इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥ (५१०-९, गूजरी की वार, मः ३)
गुरमुखि कोई गारड़ू तिनि मलि दलि लाई पाइ ॥ (५१०-९, गूजरी की वार, मः ३)
नानक सेई उबरे जि सचि रहे लिव लाइ ॥२॥ (५१०-१०, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१०-११)
ढाढी करे पुकार प्रभू सुणाइसी ॥ (५१०-११, गूजरी की वार, मः ३)
अंदरि धीरक होइ पूरा पाइसी ॥ (५१०-११, गूजरी की वार, मः ३)
जो धुरि लिखिआ लेखु से कर्म कमाइसी ॥ (५१०-११, गूजरी की वार, मः ३)
जा होवै खसमु दइआलु ता महलु घरु पाइसी ॥ (५१०-१२, गूजरी की वार, मः ३)
सो प्रभु मेरा अति वडा गुरमुखि मेलाइसी ॥५॥ (५१०-१२, गूजरी की वार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५१०-१३)
सभना का सहु एकु है सद ही रहै हजूरि ॥ (५१०-१३, गूजरी की वार, मः ३)
नानक हुकमु न मन्नई ता घर ही अंदरि दूरि ॥ (५१०-१३, गूजरी की वार, मः ३)
हुकमु भी तिन्हा मनाइसी जिन्ह कउ नदरि करेइ ॥ (५१०-१४, गूजरी की वार, मः ३)
हुकमु मंनि सुखु पाइआ प्रेम सुहागणि होइ ॥१॥ (५१०-१४, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१०-१५)
रैणि सबाई जलि मुई कंत न लाइओ भाउ ॥ (५१०-१५, गूजरी की वार, मः ३)
नानक सुखि वसनि सोहागणी जिन्ह पिआरा पुरखु हरि राउ ॥२॥ (५१०-१५, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१०-१६)
सभु जगु फिरि मै देखिआ हरि इको दाता ॥ (५१०-१६, गूजरी की वार, मः ३)
उपाइ कितै न पाईऐ हरि कर्म बिधाता ॥ (५१०-१७, गूजरी की वार, मः ३)
गुर सबदी हरि मनि वसै हरि सहजे जाता ॥ (५१०-१७, गूजरी की वार, मः ३)
अंदरहु तृसना अगनि बुझी हरि अमृत सरि नाता ॥ (५१०-१८, गूजरी की वार, मः ३)
वडी वडिआई वडे की गुरमुखि बोलाता ॥६॥ (५१०-१८, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१०-१९)
काइआ हंस किआ प्रीति है जि पइआ ही छडि जाइ ॥ (५१०-१९, गूजरी की वार, मः ३)
एस नो कूड़ु बोलि कि खवालीऐ जि चलदिआ नालि न जाइ ॥ (५१०-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५११

काइआ मिटी अंधु है पउणै पुछहु जाइ ॥ (५११-१, गूजरी की वार, मः ३)
हउ ता माइआ मोहिआ फिरि फिरि आवा जाइ ॥ (५११-१, गूजरी की वार, मः ३)
नानक हुकमु न जातो खसम का जि रहा सचि समाइ ॥१॥ (५११-२, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५११-३)
एको निहचल नाम धनु होरु धनु आवै जाइ ॥ (५११-३, गूजरी की वार, मः ३)

इसु धन कउ तसकरु जोहि न सकई ना ओचका लै जाइ ॥ (५११-३, गूजरी की वार, मः ३)
इहु हरि धनु जीऐ सेती रवि रहिआ जीऐ नाले जाइ ॥ (५११-४, गूजरी की वार, मः ३)
पूरे गुर ते पाईऐ मनमुखि पलै न पाइ ॥ (५११-४, गूजरी की वार, मः ३)
धनु वापारी नानका जिन्हा नाम धनु खटिआ आइ ॥२॥ (५११-५, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५११-५)
मेरा साहिबु अति वडा सचु गहिर गम्भीरा ॥ (५११-५, गूजरी की वार, मः ३)
सभु जगु तिस कै वसि है सभु तिस का चीरा ॥ (५११-६, गूजरी की वार, मः ३)
गुर परसादी पाईऐ निहचलु धनु धीरा ॥ (५११-६, गूजरी की वार, मः ३)
किरपा ते हरि मनि वसै भेटै गुरु सूरा ॥ (५११-७, गूजरी की वार, मः ३)
गुणवंती सालाहिआ सदा थिरु निहचलु हरि पूरा ॥७॥ (५११-७, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५११-८)
ध्रिगु तिन्हा दा जीविआ जो हरि सुखु परहरि तिआगदे दुखु हउमै पाप कमाइ ॥ (५११-८, गूजरी की वार, मः ३)
मनमुख अगिआनी माइआ मोहि विआपे तिन्ह बूझ न काई पाइ ॥ (५११-९, गूजरी की वार, मः ३)
हलति पलति ओइ सुखु न पावहि अंति गए पछुताइ ॥ (५११-९, गूजरी की वार, मः ३)
गुर परसादी को नामु धिआए तिसु हउमै विचहु जाइ ॥ (५११-१०, गूजरी की वार, मः ३)
नानक जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो गुर चरणी आइ पाइ ॥१॥ (५११-१०, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५११-११)
मनमुखु ऊधा कउलु है ना तिसु भगति न नाउ ॥ (५११-११, गूजरी की वार, मः ३)
सकती अंदरि वरतदा कूड़ु तिस का है उपाउ ॥ (५११-१२, गूजरी की वार, मः ३)
तिस का अंदरु चितु न भिजई मुखि फीका आलाउ ॥ (५११-१२, गूजरी की वार, मः ३)
ओइ धरमि रलाए ना रलन्हि ओना अंदरि कूड़ु सुआउ ॥ (५११-१३, गूजरी की वार, मः ३)
नानक करतै बणत बणाई मनमुख कूड़ु बोलि बोलि डुबे गुरमुखि तरे जपि हरि नाउ ॥२॥ (५११-१३, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५११-१४)
बिनु बूझे वडा फेरु पइआ फिरि आवै जाई ॥ (५११-१४, गूजरी की वार, मः ३)
सतिगुर की सेवा न कीतीआ अंति गइआ पछुताई ॥ (५११-१५, गूजरी की वार, मः ३)
आपणी किरपा करे गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाई ॥ (५११-१५, गूजरी की वार, मः ३)
तृसना भुख विचहु उतरै सुखु वसै मनि आई ॥ (५११-१६, गूजरी की वार, मः ३)
सदा सदा सालाहीऐ हिरदै लिव लाई ॥८॥ (५११-१६, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५११-१७)
जि सतिगुरु सेवे आपणा तिस नो पूजे सभु कोइ ॥ (५११-१७, गूजरी की वार, मः ३)
सभना उपावा सिरि उपाउ है हरि नामु परापति होइ ॥ (५११-१७, गूजरी की वार, मः ३)
अंतरि सीतल साति वसै जपि हिरदै सदा सुखु होइ ॥ (५११-१८, गूजरी की वार, मः ३)
अमृतु खाणा अमृतु पैनणा नानक नामु वडाई होइ ॥१॥ (५११-१९, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५११-१९)

ए मन गुर की सिख सुणि हरि पावहि गुणी निधानु ॥ (५११-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५१२

हरि सुखदाता मनि वसै हउमै जाइ गुमानु ॥ (५१२-१, गूजरी की वार, मः ३)
नानक नदरी पाईऐ ता अनदिनु लागै धिआनु ॥२॥ (५१२-१, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१२-२)
सतु संतोखु सभु सचु है गुरमुखि पविता ॥ (५१२-२, गूजरी की वार, मः ३)
अंदरहु कपटु विकारु गइआ मनु सहजे जिता ॥ (५१२-२, गूजरी की वार, मः ३)
तह जोति प्रगासु अनंद रसु अगिआनु गविता ॥ (५१२-३, गूजरी की वार, मः ३)
अनदिनु हरि के गुण रवै गुण परगटु किता ॥ (५१२-३, गूजरी की वार, मः ३)
सभना दाता एकु है इको हरि मिता ॥९॥ (५१२-४, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१२-४)
ब्रह्मु बिंदे सो ब्राहमणु कहीऐ जि अनदिनु हरि लिव लाए ॥ (५१२-४, गूजरी की वार, मः ३)
सतिगुर पुछै सचु संजमु कमावै हउमै रोगु तिसु जाए ॥ (५१२-५, गूजरी की वार, मः ३)
हरि गुण गावै गुण संग्रहै जोती जोति मिलाए ॥ (५१२-५, गूजरी की वार, मः ३)
इसु जुग महि को विरला ब्रह्म गिआनी जि हउमै मेटि समाए ॥ (५१२-६, गूजरी की वार, मः ३)
नानक तिस नो मिलिआ सदा सुखु पाईऐ जि अनदिनु हरि नामु धिआए ॥१॥ (५१२-७, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१२-७)
अंतरि कपटु मनमुख अगिआनी रसना झूठु बोलाइ ॥ (५१२-७, गूजरी की वार, मः ३)
कपटि कीतै हरि पुरखु न भीजै नित वेखै सुणै सुभाइ ॥ (५१२-८, गूजरी की वार, मः ३)
दूजै भाइ जाइ जगु परबोधै बिखु माइआ मोह सुआइ ॥ (५१२-८, गूजरी की वार, मः ३)
इतु कमाणै सदा दुखु पावै जम्मै मरै फिरि आवै जाइ ॥ (५१२-९, गूजरी की वार, मः ३)
सहसा मूलि न चुकई विचि विसटा पचै पचाइ ॥ (५१२-१०, गूजरी की वार, मः ३)
जिस नो कृपा करे मेरा सुआमी तिसु गुर की सिख सुणाइ ॥ (५१२-१०, गूजरी की वार, मः ३)
हरि नामु धिआवै हरि नामो गावै हरि नामो अंति छडाइ ॥२॥ (५१२-११, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१२-११)
जिना हुकमु मनाइओनु ते पूरे संसारि ॥ (५१२-११, गूजरी की वार, मः ३)
साहिबु सेवन्हि आपणा पूरै सबदि वीचारि ॥ (५१२-१२, गूजरी की वार, मः ३)
हरि की सेवा चाकरी सचै सबदि पिआरि ॥ (५१२-१२, गूजरी की वार, मः ३)
हरि का महलु तिन्ही पाइआ जिन्ह हउमै विचहु मारि ॥ (५१२-१३, गूजरी की वार, मः ३)
नानक गुरमुखि मिलि रहे जपि हरि नामा उर धारि ॥१०॥ (५१२-१३, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१२-१४)
गुरमुखि धिआन सहज धुनि उपजै सचि नामि चितु लाइआ ॥ (५१२-१४, गूजरी की वार, मः ३)
गुरमुखि अनदिनु रहै रंगि राता हरि का नामु मनि भाइआ ॥ (५१२-१५, गूजरी की वार, मः ३)
गुरमुखि हरि वेखहि गुरमुखि हरि बोलहि गुरमुखि हरि सहजि रंगु लाइआ ॥ (५१२-१५, गूजरी की वार, मः ३)

नानक गुरमुखि गिआनु परापति होवै तिमर अगिआनु अधेरु चुकाइआ ॥ (५१२-१६, गूजरी की वार, मः ३)
जिस नो करमु होवै धुरि पूरा तिनि गुरमुखि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ (५१२-१७, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१२-१८)
सतिगुरु जिना न सेविओ सबदि न लगो पिआरु ॥ (५१२-१८, गूजरी की वार, मः ३)
सहजे नामु न धिआइआ कितु आइआ संसारि ॥ (५१२-१८, गूजरी की वार, मः ३)
फिरि फिरि जूनी पाईऐ विसटा सदा खुआरु ॥ (५१२-१९, गूजरी की वार, मः ३)
कूड़ै लालचि लगिआ ना उरवारु न पारु ॥ (५१२-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५१३

नानक गुरमुखि उबरे जि आपि मेले करतारि ॥२॥ (५१३-१, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१३-१)
भगत सचै दरि सोहदे सचै सबदि रहाए ॥ (५१३-१, गूजरी की वार, मः ३)
हरि की प्रीति तिन ऊपजी हरि प्रेम कसाए ॥ (५१३-२, गूजरी की वार, मः ३)
हरि रंगि रहहि सदा रंगि राते रसना हरि रसु पिआए ॥ (५१३-२, गूजरी की वार, मः ३)
सफलु जनमु जिन्ी गुरमुखि जाता हरि जीउ रिदै वसाए ॥ (५१३-३, गूजरी की वार, मः ३)
बाझु गुरू फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआए ॥११॥ (५१३-३, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१३-४)
कलिजुग महि नामु निधानु भगती खटिआ हरि उतम पदु पाइआ ॥ (५१३-४, गूजरी की वार, मः ३)
सतिगुर सेवि हरि नामु मनि वसाइआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ (५१३-५, गूजरी की वार, मः ३)
विचे गृह गुर बचनि उदासी हउमै मोहु जलाइआ ॥ (५१३-५, गूजरी की वार, मः ३)
आपि तरिआ कुल जगतु तराइआ धन्नु जणेदी माइआ ॥ (५१३-६, गूजरी की वार, मः ३)
ऐसा सतिगुरु सोई पाए जिसु धुरि मसतकि हरि लिखि पाइआ ॥ (५१३-६, गूजरी की वार, मः ३)
जन नानक बलिहारी गुर आपणे विटहु जिनि भ्रमि भुला मारगि पाइआ ॥१॥ (५१३-७, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१३-८)
त्रै गुण माइआ वेखि भुले जिउ देखि दीपकि पतंग पचाइआ ॥ (५१३-८, गूजरी की वार, मः ३)
पंडित भुलि भुलि माइआ वेखहि दिखा किनै किहु आणि चड़ाइआ ॥ (५१३-९, गूजरी की वार, मः ३)
दूजै भाइ पड़हि नित बिखिआ नावहु दयि खुआइआ ॥ (५१३-९, गूजरी की वार, मः ३)
जोगी जंगम संनिआसी भुले ओन्हा अहंकारु बहु गरबु वधाइआ ॥ (५१३-१०, गूजरी की वार, मः ३)
छादनु भोजनु न लैही सत भिखिआ मनहठि जनमु गवाइआ ॥ (५१३-११, गूजरी की वार, मः ३)
एतड़िआ विचहु सो जनु समधा जिनि गुरमुखि नामु धिआइआ ॥ (५१३-११, गूजरी की वार, मः ३)
जन नानक किस नो आखि सुणाईऐ जा करदे सभि कराइआ ॥२॥ (५१३-१२, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१३-१३)
माइआ मोहु परेतु है कामु क्रोधु अहंकारा ॥ (५१३-१३, गूजरी की वार, मः ३)
एह जम की सिरकार है एन्हा उपरि जम का डंडु करारा ॥ (५१३-१३, गूजरी की वार, मः ३)
मनमुख जम मगि पाईअनि् जिन् दूजा भाउ पिआरा ॥ (५१३-१४, गूजरी की वार, मः ३)

जम पुरि बधे मारीअनि को सुणै न पूकारा ॥ (५१३-१४, गूजरी की वार, मः ३)
जिस नो कृपा करे तिसु गुरु मिलै गुरमुखि निसतारा ॥१२॥ (५१३-१५, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१३-१५)
हउमै ममता मोहणी मनमुखा नो गई खाइ ॥ (५१३-१५, गूजरी की वार, मः ३)
जो मोहि दूजै चितु लाइदे तिना विआपि रही लपटाइ ॥ (५१३-१६, गूजरी की वार, मः ३)
गुर कै सबदि परजालीऐ ता एह विचहु जाइ ॥ (५१३-१६, गूजरी की वार, मः ३)
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ (५१३-१७, गूजरी की वार, मः ३)
नानक माइआ का मारणु हरि नामु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥१॥ (५१३-१७, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१३-१८)
इहु मनु केतड़िआ जुग भरमिआ थिरु रहै न आवै जाइ ॥ (५१३-१८, गूजरी की वार, मः ३)
हरि भाणा ता भरमाइअनु करि परपंचु खेलु उपाइ ॥ (५१३-१९, गूजरी की वार, मः ३)
जा हरि बखसे ता गुर मिलै असथिरु रहै समाइ ॥ (५१३-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५१४

नानक मन ही ते मनु मानिआ ना किछु मरै न जाइ ॥२॥ (५१४-१, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१४-१)
काइआ कोटु अपारु है मिलणा संजोगी ॥ (५१४-२, गूजरी की वार, मः ३)
काइआ अंदरि आपि वसि रहिआ आपे रस भोगी ॥ (५१४-२, गूजरी की वार, मः ३)
आपि अतीतु अलिपतु है निरजोगु हरि जोगी ॥ (५१४-२, गूजरी की वार, मः ३)
जो तिसु भावै सो करे हरि करे सु होगी ॥ (५१४-३, गूजरी की वार, मः ३)
हरि गुरमुखि नामु धिआईऐ लहि जाहि विजोगी ॥१३॥ (५१४-३, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१४-४)
वाहु वाहु आपि अखाइदा गुर सबदी सचु सोइ ॥ (५१४-४, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु सिफति सलाह है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ (५१४-५, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु बाणी सचु है सचि मिलावा होइ ॥ (५१४-५, गूजरी की वार, मः ३)
नानक वाहु वाहु करतिआ प्रभु पाइआ करमि परापति होइ ॥१॥ (५१४-५, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१४-६)
वाहु वाहु करती रसना सबदि सुहाई ॥ (५१४-६, गूजरी की वार, मः ३)
पूरै सबदि प्रभु मिलिआ आई ॥ (५१४-७, गूजरी की वार, मः ३)
वडभागीआ वाहु वाहु मुहहु कढाई ॥ (५१४-७, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करहि सेई जन सोहणे तिन्ह कउ परजा पूजण आई ॥ (५१४-७, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करमि परापति होवै नानक दरि सचै सोभा पाई ॥२॥ (५१४-८, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१४-९)
बजर कपाट काइआ गड़्ह भीतरि कूड़ु कुसतु अभिमानी ॥ (५१४-९, गूजरी की वार, मः ३)
भरमि भूले नदरि न आवनी मनमुख अंध अगिआनी ॥ (५१४-९, गूजरी की वार, मः ३)

उपाइ कितै न लभनी करि भेख थके भेखवानी ॥ (५१४-१०, गूजरी की वार, मः ३)
गुर सबदी खोलाईअनि् हरि नामु जपानी ॥ (५१४-११, गूजरी की वार, मः ३)
हरि जीउ अमृत बिरखु है जिन पीआ ते तृपतानी ॥१४॥ (५१४-११, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१४-१२)
वाहु वाहु करतिआ रैणि सुखि विहाइ ॥ (५१४-१२, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करतिआ सदा अनंदु होवै मेरी माइ ॥ (५१४-१२, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करतिआ हरि सिउ लिव लाइ ॥ (५१४-१३, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करमी बोलै बोलाइ ॥ (५१४-१३, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करतिआ सोभा पाइ ॥ (५१४-१३, गूजरी की वार, मः ३)
नानक वाहु वाहु सति रजाइ ॥१॥ (५१४-१४, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१४-१४)
वाहु वाहु बाणी सचु है गुरमुखि लधी भालि ॥ (५१४-१४, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु सबदे उचरै वाहु वाहु हिरदै नालि ॥ (५१४-१५, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करतिआ हरि पाइआ सहजे गुरमुखि भालि ॥ (५१४-१५, गूजरी की वार, मः ३)
से वडभागी नानका हरि हरि रिदै समालि ॥२॥ (५१४-१६, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१४-१६)
ए मना अति लोभीआ नित लोभे राता ॥ (५१४-१६, गूजरी की वार, मः ३)
माइआ मनसा मोहणी दह दिस फिराता ॥ (५१४-१७, गूजरी की वार, मः ३)
अगै नाउ जाति न जाइसी मनमुखि दुखु खाता ॥ (५१४-१७, गूजरी की वार, मः ३)
रसना हरि रसु न चखिओ फीका बोलाता ॥ (५१४-१८, गूजरी की वार, मः ३)
जिना गुरमुखि अमृतु चाखिआ से जन तृपताता ॥१५॥ (५१४-१८, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१४-१९)
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सचा गहिर गम्भीरु ॥ (५१४-१९, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि गुणदाता मति धीरु ॥ (५१४-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५१५

वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि सभ महि रहिआ समाइ ॥ (५१५-१, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु तिस नो आखीऐ जि देदा रिजकु सबाहि ॥ (५१५-१, गूजरी की वार, मः ३)
नानक वाहु वाहु इको करि सालाहीऐ जि सतिगुर दीआ दिखाइ ॥१॥ (५१५-२, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१५-३)
वाहु वाहु गुरमुख सदा करहि मनमुख मरहि बिखु खाइ ॥ (५१५-३, गूजरी की वार, मः ३)
ओना वाहु वाहु न भावई दुखे दुखि विहाइ ॥ (५१५-३, गूजरी की वार, मः ३)
गुरमुखि अमृतु पीवणा वाहु वाहु करहि लिव लाइ ॥ (५१५-४, गूजरी की वार, मः ३)
नानक वाहु वाहु करहि से जन निरमले तृभवण सोझी पाइ ॥२॥ (५१५-४, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१५-५)

हरि कै भाणै गुरु मिलै सेवा भगति बनीजै ॥ (५१५-५, गूजरी की वार, मः ३)
हरि कै भाणै हरि मनि वसै सहजे रसु पीजै ॥ (५१५-५, गूजरी की वार, मः ३)
हरि कै भाणै सुखु पाईऐ हरि लाहा नित लीजै ॥ (५१५-६, गूजरी की वार, मः ३)
हरि कै तखति बहालीऐ निज घरि सदा वसीजै ॥ (५१५-६, गूजरी की वार, मः ३)
हरि का भाणा तिनी मंनिआ जिना गुरू मिलीजै ॥१६॥ (५१५-७, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१५-८)
वाहु वाहु से जन सदा करहि जिन्ह कउ आपे देइ बुझाइ ॥ (५१५-८, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करतिआ मनु निरमलु होवै हउमै विचहु जाइ ॥ (५१५-८, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु गुरसिखु जो नित करे सो मन चिंदिआ फलु पाइ ॥ (५१५-९, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करहि से जन सोहणे हरि तिन्ह कै संगि मिलाइ ॥ (५१५-९, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु हिरदै उचरा मुखहु भी वाहु वाहु करेउ ॥ (५१५-१०, गूजरी की वार, मः ३)
नानक वाहु वाहु जो करहि हउ तनु मनु तिन्ह कउ देउ ॥१॥ (५१५-११, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१५-११)
वाहु वाहु साहिबु सचु है अमृतु जा का नाउ ॥ (५१५-११, गूजरी की वार, मः ३)
जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (५१५-१२, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु गुणी निधानु है जिस नो देइ सु खाइ ॥ (५१५-१२, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु जलि थलि भरपूरु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (५१५-१३, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु गुरसिख नित सभ करहु गुर पूरे वाहु वाहु भावै ॥ (५१५-१३, गूजरी की वार, मः ३)
नानक वाहु वाहु जो मनि चिति करे तिसु जमकंकरु नेड़ि न आवै ॥२॥ (५१५-१४, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१५-१५)
हरि जीउ सचा सचु है सची गुरबाणी ॥ (५१५-१५, गूजरी की वार, मः ३)
सतिगुर ते सचु पछाणीऐ सचि सहजि समाणी ॥ (५१५-१५, गूजरी की वार, मः ३)
अनदिनु जागहि ना सवहि जागत रैणि विहाणी ॥ (५१५-१६, गूजरी की वार, मः ३)
गुरमती हरि रसु चाखिआ से पुन्न पराणी ॥ (५१५-१६, गूजरी की वार, मः ३)
बिनु गुर किनै न पाइओ पचि मुए अजाणी ॥१७॥ (५१५-१७, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१५-१७)
वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (५१५-१७, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु अगम अथाहु है वाहु वाहु सचा सोइ ॥ (५१५-१८, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु वेपरवाहु है वाहु वाहु करे सु होइ ॥ (५१५-१८, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु अमृत नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ (५१५-१९, गूजरी की वार, मः ३)
वाहु वाहु करमी पाईऐ आपि दइआ करि देइ ॥ (५१५-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५१६

नानक वाहु वाहु गुरमुखि पाईऐ अनदिनु नामु लएइ ॥१॥ (५१६-१, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१६-१)

बिनु सतिगुर सेवे साति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ (५१६-२, गूजरी की वार, मः ३)
जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमै न पाइआ जाइ ॥ (५१६-२, गूजरी की वार, मः ३)
जिना अंतरि लोभ विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ (५१६-३, गूजरी की वार, मः ३)
जम्मणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ (५१६-३, गूजरी की वार, मः ३)
जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ सु खाली कोई नाहि ॥ (५१६-४, गूजरी की वार, मः ३)
तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ (५१६-४, गूजरी की वार, मः ३)
नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥२॥ (५१६-५, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१६-५)
ढाढी तिस नो आखीऐ जि खसमै धरे पिआरु ॥ (५१६-५, गूजरी की वार, मः ३)
दरि खड़ा सेवा करे गुर सबदी वीचारु ॥ (५१६-६, गूजरी की वार, मः ३)
ढाढी दरु घरु पाइसी सचु रखै उर धारि ॥ (५१६-६, गूजरी की वार, मः ३)
ढाढी का महलु अगला हरि कै नाइ पिआरि ॥ (५१६-६, गूजरी की वार, मः ३)
ढाढी की सेवा चाकरी हरि जपि हरि निसतारि ॥१८॥ (५१६-७, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१६-८)
गूजरी जाति गवारि जा सहु पाए आपणा ॥ (५१६-८, गूजरी की वार, मः ३)
गुर कै सबदि वीचारि अनदिनु हरि जपु जापणा ॥ (५१६-८, गूजरी की वार, मः ३)
जिसु सतिगुरु मिलै तिसु भउ पवै सा कुलवंती नारि ॥ (५१६-९, गूजरी की वार, मः ३)
सा हुकमु पछाणै कंत का जिस नो कृपा कीती करतारि ॥ (५१६-९, गूजरी की वार, मः ३)
ओह कुचजी कुलखणी परहरि छोडी भतारि ॥ (५१६-१०, गूजरी की वार, मः ३)
भै पइऐ मलु कटीऐ निर्मल होवै सरीरु ॥ (५१६-१०, गूजरी की वार, मः ३)
अंतरि परगासु मति ऊतम होवै हरि जपि गुणी गहीरु ॥ (५१६-११, गूजरी की वार, मः ३)
भै विचि बैसै भै रहै भै विचि कमावै कार ॥ (५१६-११, गूजरी की वार, मः ३)
ऐथै सुखु वडिआईआ दरगह मोख दुआर ॥ (५१६-१२, गूजरी की वार, मः ३)
भै ते निरभउ पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ (५१६-१२, गूजरी की वार, मः ३)
नानक खसमै भावै सा भली जिस नो आपे बखसे करतारु ॥१॥ (५१६-१२, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१६-१३)
सदा सदा सालाहीऐ सचे कउ बलि जाउ ॥ (५१६-१३, गूजरी की वार, मः ३)
नानक एकु छोडि दूजै लगै सा जिहवा जलि जाउ ॥२॥ (५१६-१४, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१६-१४)
अंसा अउतारु उपाइओनु भाउ दूजा कीआ ॥ (५१६-१४, गूजरी की वार, मः ३)
जिउ राजे राजु कमावदे दुख सुख भिड़ीआ ॥ (५१६-१५, गूजरी की वार, मः ३)
ईसरु ब्रह्मा सेवदे अंतु तिनी न लहीआ ॥ (५१६-१५, गूजरी की वार, मः ३)
निरभउ निरंकारु अलखु है गुरमुखि प्रगटीआ ॥ (५१६-१६, गूजरी की वार, मः ३)
तिथै सोगु विजोगु न विआपई असथिरु जगि थीआ ॥१९॥ (५१६-१६, गूजरी की वार, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५१६-१७)

एहु सभु किछु आवण जाणु है जेता है आकारु ॥ (५१६-१७, गूजरी की वार, मः ३)
जिनि एहु लेखा लिखिआ सो होआ परवाणु ॥ (५१६-१७, गूजरी की वार, मः ३)
नानक जे को आपु गणाइदा सो मूरखु गावारु ॥१॥ (५१६-१८, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१६-१८)
मनु कुंचरु पीलकु गुरू गिआनु कुंडा जह खिंचे तह जाइ ॥ (५१६-१८, गूजरी की वार, मः ३)
नानक हसती कुंडे बाहरा फिरि फिरि उझड़ि पाइ ॥२॥ (५१६-१९, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१६-१९)
तिसु आगै अरदासि जिनि उपाइआ ॥ (५१६-१९, गूजरी की वार, मः ३)

पन्ना ५१७

सतिगुरु अपणा सेवि सभ फल पाइआ ॥ (५१७-१, गूजरी की वार, मः ३)
अमृत हरि का नाउ सदा धिआइआ ॥ (५१७-१, गूजरी की वार, मः ३)
संत जना कै संगि दुखु मिटाइआ ॥ (५१७-२, गूजरी की वार, मः ३)
नानक भए अचिंतु हरि धनु निहचलाइआ ॥२०॥ (५१७-२, गूजरी की वार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५१७-३)
खेति मिआला उचीआ घरु उचा निरणउ ॥ (५१७-३, गूजरी की वार, मः ३)
महल भगती घरि सरै सजण पाहुणिअउ ॥ (५१७-३, गूजरी की वार, मः ३)
बरसना त बरसु घना बहुड़ि बरसहि काहि ॥ (५१७-४, गूजरी की वार, मः ३)
नानक तिन्ह बलिहारणै जिन्ह गुरमुखि पाइआ मन माहि ॥१॥ (५१७-४, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१७-५)
मिठा सो जो भावदा सजणु सो जि रासि ॥ (५१७-५, गूजरी की वार, मः ३)
नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥२॥ (५१७-५, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१७-६)
प्रभ पासि जन की अरदासि तू सचा साँई ॥ (५१७-६, गूजरी की वार, मः ३)
तू रखवाला सदा सदा हउ तुधु धिआई ॥ (५१७-६, गूजरी की वार, मः ३)
जीअ जंत सभि तेरिआ तू रहिआ समाई ॥ (५१७-७, गूजरी की वार, मः ३)
जो दास तेरे की निंदा करे तिसु मारि पचाई ॥ (५१७-७, गूजरी की वार, मः ३)
चिंता छडि अचिंतु रहु नानक लगि पाई ॥२१॥ (५१७-८, गूजरी की वार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५१७-८)
आसा करता जगु मुआ आसा मरै न जाइ ॥ (५१७-८, गूजरी की वार, मः ३)
नानक आसा पूरीआ सचे सिउ चितु लाइ ॥१॥ (५१७-९, गूजरी की वार, मः ३)
मः ३ ॥ (५१७-९)
आसा मनसा मरि जाइसी जिनि कीती सो लै जाइ ॥ (५१७-९, गूजरी की वार, मः ३)
नानक निहचलु को नही बाझहु हरि कै नाइ ॥२॥ (५१७-१०, गूजरी की वार, मः ३)
पउड़ी ॥ (५१७-१०)

आपे जगतु उपाइओनु करि पूरा थाटु ॥ (५१७-१०, गूजरी की वार, मः ३)
आपे साहु आपे वणजारा आपे ही हरि हाटु ॥ (५१७-११, गूजरी की वार, मः ३)
आपे सागरु आपे बोहिथा आपे ही खेवाटु ॥ (५१७-११, गूजरी की वार, मः ३)
आपे गुरु चेला है आपे आपे दसे घाटु ॥ (५१७-१२, गूजरी की वार, मः ३)
जन नानक नामु धिआइ तू सभि किलविख काटु ॥२२॥१॥ सुधु (५१७-१२, गूजरी की वार, मः ३)
रागु गूजरी वार महला ५ (५१७-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५१७-१४)
सलोकु मः ५ ॥ (५१७-१५)
अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ (५१७-१५, गूजरी, मः ५)
नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ (५१७-१५, गूजरी, मः ५)
सतिगुर सेती रतिआ दरगह पाईऐ ठाउ ॥ (५१७-१६, गूजरी, मः ५)
कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥ (५१७-१६, गूजरी, मः ५)
जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥१॥ (५१७-१७, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५१७-१७)
रखे रखणहारि आपि उबारिअनु ॥ (५१७-१७, गूजरी, मः ५)
गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ (५१७-१७, गूजरी, मः ५)
होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ (५१७-१८, गूजरी, मः ५)
साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ (५१७-१८, गूजरी, मः ५)
साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ (५१७-१९, गूजरी, मः ५)
तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ (५१७-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५१८

जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥२॥ (५१८-१, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५१८-१)
अकुल निरंजन पुरखु अगमु अपारीऐ ॥ (५१८-१, गूजरी, मः ५)
सचो सचा सचु सचु निहारीऐ ॥ (५१८-१, गूजरी, मः ५)
कूड़ु न जापै किछु तेरी धारीऐ ॥ (५१८-२, गूजरी, मः ५)
सभसै दे दातारु जेत उपारीऐ ॥ (५१८-२, गूजरी, मः ५)
इकतु सूति परोइ जोति संजारीऐ ॥ (५१८-२, गूजरी, मः ५)
हुकमे भवजल मंझि हुकमे तारीऐ ॥ (५१८-३, गूजरी, मः ५)
प्रभ जीउ तुधु धिआए सोइ जिसु भागु मथारीऐ ॥ (५१८-३, गूजरी, मः ५)
तेरी गति मिति लखी न जाइ हउ तुधु बलिहारीऐ ॥१॥ (५१८-४, गूजरी, मः ५)
सलोकु मः ५ ॥ (५१८-४)
जा तूं तुसहि मिहरवान अचिंतु वसहि मन माहि ॥ (५१८-४, गूजरी, मः ५)
जा तूं तुसहि मिहरवान नउ निधि घर महि पाहि ॥ (५१८-५, गूजरी, मः ५)

जा तूं तुसहि मिहरवान ता गुर का मंत्रु कमाहि ॥ (५१८-५, गूजरी, मः ५)
जा तूं तुसहि मिहरवान ता नानक सचि समाहि ॥१॥ (५१८-६, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५१८-६)
किती बैहनि्ह बैहणे मुचु वजाइनि वज ॥ (५१८-७, गूजरी, मः ५)
नानक सचे नाम विणु किसै न रहीआ लज ॥२॥ (५१८-७, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५१८-७)
तुधु धिआइनि्ह बेद कतेबा सणु खड़े ॥ (५१८-७, गूजरी, मः ५)
गणती गणी न जाइ तेरै दरि पड़े ॥ (५१८-८, गूजरी, मः ५)
ब्रहमे तुधु धिआइनि्ह इंद्र इंद्रासणा ॥ (५१८-८, गूजरी, मः ५)
संकर बिसन अवतार हरि जसु मुखि भणा ॥ (५१८-९, गूजरी, मः ५)
पीर पिकाबर सेख मसाइक अउलीए ॥ (५१८-९, गूजरी, मः ५)
ओति पोति निरंकार घटि घटि मउलीए ॥ (५१८-९, गूजरी, मः ५)
कूड़हु करे विणासु धरमे तगीऐ ॥ (५१८-१०, गूजरी, मः ५)
जितु जितु लाइहि आपि तितु तितु लगीऐ ॥२॥ (५१८-१०, गूजरी, मः ५)
सलोकु मः ५ ॥ (५१८-११)
चंगिआईं आलकु करे बुरिआईं होइ सेरु ॥ (५१८-११, गूजरी, मः ५)
नानक अजु कलि आवसी गाफल फाही पेरु ॥१॥ (५१८-११, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५१८-१२)
कितीआ कुढंग गुझा थीऐ न हितु ॥ (५१८-१२, गूजरी, मः ५)
नानक तै सहि ढकिआ मन महि सचा मितु ॥२॥ (५१८-१२, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५१८-१३)
हउ मागउ तुझै दइआल करि दासा गोलिआ ॥ (५१८-१३, गूजरी, मः ५)
नउ निधि पाई राजु जीवा बोलिआ ॥ (५१८-१३, गूजरी, मः ५)
अमृत नामु निधानु दासा घरि घणा ॥ (५१८-१४, गूजरी, मः ५)
तिन कै संगि निहालु स्रवणी जसु सुणा ॥ (५१८-१४, गूजरी, मः ५)
कमावा तिन की कार सरीरु पवितु होइ ॥ (५१८-१४, गूजरी, मः ५)
पखा पाणी पीसि बिगसा पैर धोइ ॥ (५१८-१५, गूजरी, मः ५)
आपहु कछू न होइ प्रभ नदरि निहालीऐ ॥ (५१८-१५, गूजरी, मः ५)
मोहि निरगुण दिचै थाउ संत धर्म सालीऐ ॥३॥ (५१८-१६, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५१८-१६)
साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ (५१८-१६, गूजरी, मः ५)
नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥१॥ (५१८-१७, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५१८-१७)
पतित पुनीत असंख होहि हरि चरणी मनु लाग ॥ (५१८-१७, गूजरी, मः ५)
अठसठि तीर्थ नामु प्रभ जिसु नानक मसतकि भाग ॥२॥ (५१८-१८, गूजरी, मः ५)

पउड़ी ॥ (५१८-१८)
नित जपीऐ सासि गिरासि नाउ परवदिगार दा ॥ (५१८-१८, गूजरी, मः ५)
जिस नो करे रहम्म तिसु न विसारदा ॥ (५१८-१६, गूजरी, मः ५)
आपि उपावणहार आपे ही मारदा ॥ (५१८-१६, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५१६

सभु किछु जाणै जाणु बुझि वीचारदा ॥ (५१६-१, गूजरी, मः ५)
अनिक रूप खिन माहि कुदरति धारदा ॥ (५१६-१, गूजरी, मः ५)
जिस नो लाइ सचि तिसहि उधारदा ॥ (५१६-२, गूजरी, मः ५)
जिस दै होवै वलि सु कदे न हारदा ॥ (५१६-२, गूजरी, मः ५)
सदा अभगु दीबाणु है हउ तिसु नमसकारदा ॥४॥ (५१६-२, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५१६-३)
कामु क्रोधु लोभु छोडीऐ दीजै अगनि जलाइ ॥ (५१६-३, गूजरी, मः ५)
जीवदिआ नित जापीऐ नानक साचा नाउ ॥१॥ (५१६-३, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५१६-४)
सिमरत सिमरत प्रभु आपणा सभ फल पाए आहि ॥ (५१६-४, गूजरी, मः ५)
नानक नामु अराधिआ गुर पूरै दीआ मिलाइ ॥२॥ (५१६-४, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५१६-५)
सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥ (५१६-५, गूजरी, मः ५)
तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥ (५१६-५, गूजरी, मः ५)
तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥ (५१६-६, गूजरी, मः ५)
जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ ॥ (५१६-६, गूजरी, मः ५)
अमृतु साचा नाउ ओथै जापीऐ ॥ (५१६-७, गूजरी, मः ५)
मन कउ होइ संतोखु भुखा ध्रापीऐ ॥ (५१६-७, गूजरी, मः ५)
जिसु घटि वसिआ नाउ तिसु बंधन काटीऐ ॥ (५१६-७, गूजरी, मः ५)
गुर परसादि किनै विरलै हरि धनु खाटीऐ ॥५॥ (५१६-८, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५१६-८)
मन महि चितवउ चितवनी उदमु करउ उठि नीत ॥ (५१६-८, गूजरी, मः ५)
हरि कीर्तन का आहरो हरि देहु नानक के मीत ॥१॥ (५१६-६, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५१६-१०)
दृसटि धारि प्रभि राखिआ मनु तनु रता मूलि ॥ (५१६-१०, गूजरी, मः ५)
नानक जो प्रभ भाणीआ मरउ विचारी सूलि ॥२॥ (५१६-१०, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५१६-११)
जीअ की बिरथा होइ सु गुर पहि अरदासि करि ॥ (५१६-११, गूजरी, मः ५)
छोडि सिआणप सगल मनु तनु अरपि धरि ॥ (५१६-११, गूजरी, मः ५)

पूजहु गुर के पैर दुरमति जाइ जरि ॥ (५१९-१२, गूजरी, मः ५)
साध जना कै संगि भवजलु बिखमु तरि ॥ (५१९-१२, गूजरी, मः ५)
सेवहु सतिगुर देव अगै न मरहु डरि ॥ (५१९-१२, गूजरी, मः ५)
खिन महि करे निहालु ऊणे सुभर भरि ॥ (५१९-१३, गूजरी, मः ५)
मन कउ होइ संतोखु धिआईऐ सदा हरि ॥ (५१९-१३, गूजरी, मः ५)
सो लगा सतिगुर सेव जा कउ करमु धुरि ॥६॥ (५१९-१४, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५१९-१४)
लगड़ी सुथानि जोड़णहारै जोड़ीआ ॥ (५१९-१४, गूजरी, मः ५)
नानक लहरी लख सै आन डुबण देइ न मा पिरी ॥१॥ (५१९-१५, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५१९-१५)
बनि भीहावलै हिकु साथी लधमु दुख हरता हरि नामा ॥ (५१९-१५, गूजरी, मः ५)
बलि बलि जाई संत पिआरे नानक पूरन कामाँ ॥२॥ (५१९-१६, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५१९-१७)
पाईअनि सभि निधान तेरै रंगि रतिआ ॥ (५१९-१७, गूजरी, मः ५)
न होवी पछोताउ तुध नो जपतिआ ॥ (५१९-१७, गूजरी, मः ५)
पहुचि न सकै कोइ तेरी टेक जन ॥ (५१९-१७, गूजरी, मः ५)
गुर पूरे वाहु वाहु सुख लहा चितारि मन ॥ (५१९-१८, गूजरी, मः ५)
गुर पहि सिफति भंडारु करमी पाईऐ ॥ (५१९-१८, गूजरी, मः ५)
सतिगुर नदरि निहाल बहुड़ि न धाईऐ ॥ (५१९-१९, गूजरी, मः ५)
रखै आपि दइआलु करि दासा आपणे ॥ (५१९-१९, गूजरी, मः ५)
हरि हरि हरि हरि नामु जीवा सुणि सुणे ॥७॥ (५१९-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५२०

सलोक मः ५ ॥ (५२०-१)
प्रेम पटोला तै सहि दिता ढकण कू पति मेरी ॥ (५२०-१, गूजरी, मः ५)
दाना बीना साई मैडा नानक सार न जाणा तेरी ॥१॥ (५२०-२, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२०-२)
तैडै सिमरणि हभु किछु लधमु बिखमु न डिठमु कोई ॥ (५२०-२, गूजरी, मः ५)
जिसु पति रखै सचा साहिबु नानक मेटि न सकै कोई ॥२॥ (५२०-३, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२०-३)
होवै सुखु घणा दयि धिआइऐ ॥ (५२०-३, गूजरी, मः ५)
वंञै रोगा घाणि हरि गुण गाइऐ ॥ (५२०-४, गूजरी, मः ५)
अंदरि वरतै ठाढि प्रभि चिति आइऐ ॥ (५२०-४, गूजरी, मः ५)
पूरन होवै आस नाइ मंनि वसाइऐ ॥ (५२०-४, गूजरी, मः ५)
कोइ न लगै बिघनु आपु गवाइऐ ॥ (५२०-५, गूजरी, मः ५)

गिआन पदारथु मति गुर ते पाइऐ ॥ (५२०-५, गूजरी, मः ५)
तिनि पाए सभे थोक जिसु आपि दिवाइऐ ॥ (५२०-६, गूजरी, मः ५)
तूं सभना का खसमु सभ तेरी छाइऐ ॥८॥ (५२०-६, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२०-७)
नदी तरंदड़ी मैडा खोजु न खुम्भै मंझि मुहबति तेरी ॥ (५२०-७, गूजरी, मः ५)
तउ सह चरणी मैडा हीअड़ा सीतमु हरि नानक तुलहा बेड़ी ॥१॥ (५२०-७, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२०-८)
जिन्हा दिसंदड़िआ दुरमति वंञै मित्र असाडड़े सेई ॥ (५२०-८, गूजरी, मः ५)
हउ ढूढेदी जगु सबाइआ जन नानक विरले केई ॥२॥ (५२०-८, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२०-९)
आवै साहिबु चिति तेरिआ भगता डिठिआ ॥ (५२०-९, गूजरी, मः ५)
मन की कटीऐ मैलु साधसंगि वुठिआ ॥ (५२०-१०, गूजरी, मः ५)
जनम मरण भउ कटीऐ जन का सबदु जपि ॥ (५२०-१०, गूजरी, मः ५)
बंधन खोलन्हि संत दूत सभि जाहि छपि ॥ (५२०-१०, गूजरी, मः ५)
तिसु सिउ लाइन्हि रंगु जिस दी सभ धारीआ ॥ (५२०-११, गूजरी, मः ५)
ऊची हूं ऊचा थानु अगम अपारीआ ॥ (५२०-११, गूजरी, मः ५)
रैणि दिनसु कर जोड़ि सासि सासि धिआईऐ ॥ (५२०-१२, गूजरी, मः ५)
जा आपे होइ दइआलु ताँ भगत संगु पाईऐ ॥९॥ (५२०-१२, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२०-१३)
बारि विडानड़ै हुम्मस धुम्मस कूका पईआ राही ॥ (५२०-१३, गूजरी, मः ५)
तउ सह सेती लगड़ी डोरी नानक अनद सेती बनु गाही ॥१॥ (५२०-१३, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२०-१४)
सची बैसक तिन्हा संगि जिन संगि जपीऐ नाउ ॥ (५२०-१४, गूजरी, मः ५)
तिन्ह संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ ॥२॥ (५२०-१४, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२०-१५)
सा वेला परवाणु जितु सतिगुरु भेटिआ ॥ (५२०-१५, गूजरी, मः ५)
होआ साधू संगु फिरि दूख न तेटिआ ॥ (५२०-१६, गूजरी, मः ५)
पाइआ निहचलु थानु फिरि गरभि न लेटिआ ॥ (५२०-१६, गूजरी, मः ५)
नदरी आइआ इकु सगल ब्रहमेटिआ ॥ (५२०-१७, गूजरी, मः ५)
ततु गिआनु लाइ धिआनु दृसटि समेटिआ ॥ (५२०-१७, गूजरी, मः ५)
सभो जपीऐ जापु जि मुखहु बोलेटिआ ॥ (५२०-१७, गूजरी, मः ५)
हुकमे बुझि निहालु सुखि सुखेटिआ ॥ (५२०-१८, गूजरी, मः ५)
परखि खजानै पाए से बहुड़ि न खोटिआ ॥१०॥ (५२०-१८, गूजरी, मः ५)
सलोकु मः ५ ॥ (५२०-१९)
विछोहे जम्बूर खवे न वंञनि गाखड़े ॥ (५२०-१९, गूजरी, मः ५)

जे सो धणी मिलंनि नानक सुख सम्बूह सचु ॥१॥ (५२०-१६, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५२१

मः ५ ॥ (५२१-१)
जिमी वसंदी पाणीऐ ईधणु रखै भाहि ॥ (५२१-१, गूजरी, मः ५)
नानक सो सहु आहि जा कै आढलि हभु को ॥२॥ (५२१-१, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२१-२)
तेरे कीते कम्म तुधै ही गोचरे ॥ (५२१-२, गूजरी, मः ५)
सोई वरतै जगि जि कीआ तुधु धुरे ॥ (५२१-२, गूजरी, मः ५)
बिसमु भए बिसमाद देखि कुदरति तेरीआ ॥ (५२१-२, गूजरी, मः ५)
सरणि परे तेरी दास करि गति होइ मेरीआ ॥ (५२१-३, गूजरी, मः ५)
तेरै हथि निधानु भावै तिसु देहि ॥ (५२१-३, गूजरी, मः ५)
जिस नो होइ दइआलु हरि नामु सेइ लेहि ॥ (५२१-४, गूजरी, मः ५)
अगम अगोचर बेअंत अंतु न पाईऐ ॥ (५२१-४, गूजरी, मः ५)
जिस नो होहि कृपालु सु नामु धिआईऐ ॥११॥ (५२१-४, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२१-५)
कड़छीआ फिरंन्हि सुआउ न जाणन्हि सुञीआ ॥ (५२१-५, गूजरी, मः ५)
सेई मुख दिसंन्हि नानक रते प्रेम रसि ॥१॥ (५२१-५, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२१-६)
खोजी लधमु खोजु छडीआ उजाड़ि ॥ (५२१-६, गूजरी, मः ५)
तै सहि दिती वाड़ि नानक खेतु न छिजई ॥२॥ (५२१-६, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२१-७)
आराधिहु सचा सोइ सभु किछु जिसु पासि ॥ (५२१-७, गूजरी, मः ५)
दुहा सिरिआ खसमु आपि खिन महि करे रासि ॥ (५२१-७, गूजरी, मः ५)
तिआगहु सगल उपाव तिस की ओट गहु ॥ (५२१-८, गूजरी, मः ५)
पउ सरणाई भजि सुखी हूं सुख लहु ॥ (५२१-८, गूजरी, मः ५)
कर्म धर्म ततु गिआनु संता संगु होइ ॥ (५२१-९, गूजरी, मः ५)
जपीऐ अमृत नामु बिघनु न लगै कोइ ॥ (५२१-९, गूजरी, मः ५)
जिस नो आपि दइआलु तिसु मनि वुठिआ ॥ (५२१-९, गूजरी, मः ५)
पाईअन्हि सभि निधान साहिबि तुठिआ ॥१२॥ (५२१-१०, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२१-१०)
लधमु लभणहारु करमु करंदो मा पिरी ॥ (५२१-११, गूजरी, मः ५)
इको सिरजणहारु नानक बिआ न पसीऐ ॥१॥ (५२१-११, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२१-११)
पापड़िआ पछाड़ि बाणु सचावा संन्हि कै ॥ (५२१-१२, गूजरी, मः ५)

गुर मंत्रड़ा चितारि नानक दुखु न थीवई ॥२॥ (५२१-१२, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२१-१२)
वाहु वाहु सिरजणहार पाईअनु ठाढि आपि ॥ (५२१-१३, गूजरी, मः ५)
जीअ जंत मिहरवानु तिस नो सदा जापि ॥ (५२१-१३, गूजरी, मः ५)
दइआ धारी समरथि चुके बिल बिलाप ॥ (५२१-१३, गूजरी, मः ५)
नठे ताप दुख रोग पूरे गुर प्रतापि ॥ (५२१-१४, गूजरी, मः ५)
कीतीअनु आपणी रख गरीब निवाजि थापि ॥ (५२१-१४, गूजरी, मः ५)
आपे लइअनु छडाइ बंधन सगल कापि ॥ (५२१-१५, गूजरी, मः ५)
तिसन बुझी आस पुन्नी मन संतोखि ध्रापि ॥ (५२१-१५, गूजरी, मः ५)
वडी हूं वडा अपार खसमु जिसु लेपु न पुंनि पापि ॥१३॥ (५२१-१६, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२१-१६)
जा कउ भए कृपाल प्रभ हरि हरि सेई जपात ॥ (५२१-१६, गूजरी, मः ५)
नानक प्रीति लगी तिन राम सिउ भेटत साध संगात ॥१॥ (५२१-१७, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२१-१७)
रामु रमहु बडभागीहो जलि थलि महीअलि सोइ ॥ (५२१-१७, गूजरी, मः ५)
नानक नामि अराधिऐ बिघनु न लागै कोइ ॥२॥ (५२१-१८, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२१-१९)
भगता का बोलिआ परवाणु है दरगह पवै थाइ ॥ (५२१-१९, गूजरी, मः ५)
भगता तेरी टेक रते सचि नाइ ॥ (५२१-१९, गूजरी, मः ५)
जिस नो होइ कृपालु तिस का दूखु जाइ ॥ (५२१-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५२२

भगत तेरे दइआल ओन्हा मिहर पाइ ॥ (५२२-१, गूजरी, मः ५)
दूखु दरदु वड रोगु न पोहे तिसु माइ ॥ (५२२-१, गूजरी, मः ५)
भगता एहु अधारु गुण गोविंद गाइ ॥ (५२२-२, गूजरी, मः ५)
सदा सदा दिनु रैणि इको इकु धिआइ ॥ (५२२-२, गूजरी, मः ५)
पीवति अमृत नामु जन नामे रहे अघाइ ॥१४॥ (५२२-२, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२२-३)
कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ (५२२-३, गूजरी, मः ५)
नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥१॥ (५२२-४, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२२-४)
पिरी मिलावा जा थीऐ साई सुहावी रुति ॥ (५२२-४, गूजरी, मः ५)
घड़ी मुहतु नह वीसरै नानक रवीऐ नित ॥२॥ (५२२-५, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२२-५)
सूरबीर वरीआम किनै न होड़ीऐ ॥ (५२२-५, गूजरी, मः ५)

फउज सताणी हाठ पंचा जोड़ीऐ ॥ (५२२-६, गूजरी, मः ५)
दस नारी अउधूत देनि चमोड़ीऐ ॥ (५२२-६, गूजरी, मः ५)
जिणि जिणि लैनि् रलाइ एहो एना लोड़ीऐ ॥ (५२२-६, गूजरी, मः ५)
त्रै गुण इन कै वसि किनै न मोड़ीऐ ॥ (५२२-७, गूजरी, मः ५)
भरमु कोटु माइआ खाई कहु कितु बिधि तोड़ीऐ ॥ (५२२-७, गूजरी, मः ५)
गुरु पूरा आराधि बिखम दलु फोड़ीऐ ॥ (५२२-८, गूजरी, मः ५)
हउ तिसु अगै दिनु राति रहा कर जोड़ीऐ ॥१५॥ (५२२-८, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२२-९)
किलविख सभे उतरनि नीत नीत गुण गाउ ॥ (५२२-९, गूजरी, मः ५)
कोटि कलेसा ऊपजहि नानक बिसरै नाउ ॥१॥ (५२२-९, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२२-१०)
नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥ (५२२-१०, गूजरी, मः ५)
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥२॥ (५२२-१०, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२२-११)
सो सतिगुरु धनु धन्नु जिनि भरम गड़ु तोड़िआ ॥ (५२२-११, गूजरी, मः ५)
सो सतिगुरु वाहु वाहु जिनि हरि सिउ जोड़िआ ॥ (५२२-११, गूजरी, मः ५)
नामु निधानु अखुटु गुरु देइ दारूओ ॥ (५२२-१२, गूजरी, मः ५)
महा रोगु बिकराल तिनै बिदारूओ ॥ (५२२-१२, गूजरी, मः ५)
पाइआ नामु निधानु बहुतु खजानिआ ॥ (५२२-१३, गूजरी, मः ५)
जिता जनमु अपारु आपु पछानिआ ॥ (५२२-१३, गूजरी, मः ५)
महिमा कही न जाइ गुर समरथ देव ॥ (५२२-१३, गूजरी, मः ५)
गुर पारब्रह्म परमेसुर अपरम्पर अलख अभेव ॥१६॥ (५२२-१४, गूजरी, मः ५)
सलोकु मः ५ ॥ (५२२-१४)
उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥ (५२२-१५, गूजरी, मः ५)
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥१॥ (५२२-१५, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२२-१६)
सुभ चिंतन गोबिंद रमण निर्मल साधू संग ॥ (५२२-१६, गूजरी, मः ५)
नानक नामु न विसरउ इक घड़ी करि किरपा भगवंत ॥२॥ (५२२-१६, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२२-१७)
तेरा कीता होइ त काहे डरपीऐ ॥ (५२२-१७, गूजरी, मः ५)
जिसु मिलि जपीऐ नाउ तिसु जीउ अरपीऐ ॥ (५२२-१७, गूजरी, मः ५)
आइऐ चिति निहालु साहिब बेसुमार ॥ (५२२-१८, गूजरी, मः ५)
तिस नो पोहे कवणु जिसु वलि निरंकार ॥ (५२२-१८, गूजरी, मः ५)
सभु किछु तिस कै वसि न कोई बाहरा ॥ (५२२-१९, गूजरी, मः ५)
सो भगता मनि वुठा सचि समाहरा ॥ (५२२-१९, गूजरी, मः ५)

तेरे दास धिआइनि तुधु तूं रखण वालिआ ॥ (५२२-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५२३

सिरि सभना समरथु नदरि निहालिआ ॥१७॥ (५२३-१, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२३-१)
काम क्रोध मद लोभ मोह दुसट बासना निवारि ॥ (५२३-१, गूजरी, मः ५)
राखि लेहु प्रभ आपणे नानक सद बलिहारि ॥१॥ (५२३-२, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२३-२)
खाँदिआ खाँदिआ मुहु घठा पैनंदिआ सभु अंगु ॥ (५२३-३, गूजरी, मः ५)
नानक ध्रिगु तिना दा जीविआ जिन सचि न लगो रंगु ॥२॥ (५२३-३, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२३-४)
जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै तिउ होवणा ॥ (५२३-४, गूजरी, मः ५)
जह जह रखहि आपि तह जाइ खड़ोवणा ॥ (५२३-४, गूजरी, मः ५)
नाम तेरै कै रंगि दुरमति धोवणा ॥ (५२३-५, गूजरी, मः ५)
जपि जपि तुधु निरंकार भरमु भउ खोवणा ॥ (५२३-५, गूजरी, मः ५)
जो तेरै रंगि रते से जोनि न जोवणा ॥ (५२३-५, गूजरी, मः ५)
अंतरि बाहरि इकु नैण अलोवणा ॥ (५२३-६, गूजरी, मः ५)
जिन्ही पछाता हुकमु तिन् कदे न रोवणा ॥ (५२३-६, गूजरी, मः ५)
नाउ नानक बखसीस मन माहि परोवणा ॥१८॥ (५२३-६, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२३-७)
जीवदिआ न चेतिओ मुआ रलंदड़ो खाक ॥ (५२३-७, गूजरी, मः ५)
नानक दुनीआ संगि गुदारिआ साकत मूड़ नपाक ॥१॥ (५२३-८, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२३-८)
जीवंदिआ हरि चेतिआ मरंदिआ हरि रंगि ॥ (५२३-८, गूजरी, मः ५)
जनमु पदारथु तारिआ नानक साधू संगि ॥२॥ (५२३-९, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२३-९)
आदि जुगादी आपि रखण वालिआ ॥ (५२३-९, गूजरी, मः ५)
सचु नामु करतारु सचु पसारिआ ॥ (५२३-१०, गूजरी, मः ५)
ऊणा कही न होइ घटे घटि सारिआ ॥ (५२३-१०, गूजरी, मः ५)
मिहरवान समरथ आपे ही घालिआ ॥ (५२३-१०, गूजरी, मः ५)
जिन् मनि वुठा आपि से सदा सुखालिआ ॥ (५२३-११, गूजरी, मः ५)
आपे रचनु रचाइ आपे ही पालिआ ॥ (५२३-११, गूजरी, मः ५)
सभु किछु आपे आपि बेअंत अपारिआ ॥ (५२३-१२, गूजरी, मः ५)
गुर पूरे की टेक नानक सम्हालिआ ॥१९॥ (५२३-१२, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२३-१२)

आदि मधि अरु अंति परमेसरि रखिआ ॥ (५२३-१३, गूजरी, मः ५)
सतिगुरि दिता हरि नामु अमृतु चखिआ ॥ (५२३-१३, गूजरी, मः ५)
साधा संगु अपारु अनदिनु हरि गुण रवै ॥ (५२३-१३, गूजरी, मः ५)
पाए मनोरथ सभि जोनी नह भवै ॥ (५२३-१४, गूजरी, मः ५)
सभु किछु करते हथि कारणु जो करै ॥ (५२३-१४, गूजरी, मः ५)
नानकु मंगै दानु संता धूरि तरै ॥१॥ (५२३-१५, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२३-१५)
तिस नो मंनि वसाइ जिनि उपाइआ ॥ (५२३-१५, गूजरी, मः ५)
जिनि जनि धिआइआ खसमु तिनि सुखु पाइआ ॥ (५२३-१५, गूजरी, मः ५)
सफलु जनमु परवानु गुरमुखि आइआ ॥ (५२३-१६, गूजरी, मः ५)
हुकमै बुझि निहालु खसमि फुरमाइआ ॥ (५२३-१६, गूजरी, मः ५)
जिसु होआ आपि कृपालु सु नह भरमाइआ ॥ (५२३-१७, गूजरी, मः ५)
जो जो दिता खसमि सोई सुखु पाइआ ॥ (५२३-१७, गूजरी, मः ५)
नानक जिसहि दइआलु बुझाए हुकमु मित ॥ (५२३-१८, गूजरी, मः ५)
जिसहि भुलाए आपि मरि मरि जमहि नित ॥२॥ (५२३-१८, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२३-१९)
निंदक मारे ततकालि खिनु टिकण न दिते ॥ (५२३-१९, गूजरी, मः ५)
प्रभ दास का दुखु न खवि सकहि फड़ि जोनी जुते ॥ (५२३-१९, गूजरी, मः ५)

पन्ना ५२४

मथे वालि पछाड़िअनु जम मारगि मुते ॥ (५२४-१, गूजरी, मः ५)
दुखि लगै बिललाणिआ नरकि घोरि सुते ॥ (५२४-१, गूजरी, मः ५)
कंठि लाइ दास रखिअनु नानक हरि सते ॥२०॥ (५२४-१, गूजरी, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (५२४-२)
रामु जपहु वडभागीहो जलि थलि पूरनु सोइ ॥ (५२४-२, गूजरी, मः ५)
नानक नामि धिआइऐ बिघनु न लागै कोइ ॥१॥ (५२४-३, गूजरी, मः ५)
मः ५ ॥ (५२४-३)
कोटि बिघन तिसु लागते जिस नो विसरै नाउ ॥ (५२४-३, गूजरी, मः ५)
नानक अनदिनु बिलपते जिउ सुंञै घरि काउ ॥२॥ (५२४-४, गूजरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (५२४-४)
सिमरि सिमरि दातारु मनोरथ पूरिआ ॥ (५२४-४, गूजरी, मः ५)
इछ पुन्नी मनि आस गए विसूरिआ ॥ (५२४-५, गूजरी, मः ५)
पाइआ नामु निधानु जिस नो भालदा ॥ (५२४-५, गूजरी, मः ५)
जोति मिली संगि जोति रहिआ घालदा ॥ (५२४-५, गूजरी, मः ५)
सूख सहज आनंद वुठे तितु घरि ॥ (५२४-६, गूजरी, मः ५)

आवण जाण रहे जनमु न तहा मरि ॥ (५२४-६, गूजरी, मः ५)
साहिबु सेवकु इकु इकु द्रिसटाइआ ॥ (५२४-७, गूजरी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक सचि समाइआ ॥२१॥१॥२॥ सुधु (५२४-७, गूजरी, मः ५)
रागु गूजरी भगता की बाणी (५२४-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५२४-७)
स्री कबीर जीउ का चउपदा घरु २ दूजा ॥ (५२४-८)
चारि पाव दुइ सिंग गुंग मुख तब कैसे गुन गईहै ॥ (५२४-८, गूजरी, भगत कबीर जी)
ऊठत बैठत ठेगा परिहै तब कत मूड लुकईहै ॥१॥ (५२४-९, गूजरी, भगत कबीर जी)
हरि बिनु बैल बिराने हुईहै ॥ (५२४-९, गूजरी, भगत कबीर जी)
फाटे नाकन टूटे काधन कोदउ को भुसु खईहै ॥१॥ रहाउ ॥ (५२४-९, गूजरी, भगत कबीर जी)
सारो दिनु डोलत बन महीआ अजहु न पेट अघईहै ॥ (५२४-१०, गूजरी, भगत कबीर जी)
जन भगतन को कहो न मानो कीओ अपनो पईहै ॥२॥ (५२४-११, गूजरी, भगत कबीर जी)
दुख सुख करत महा भ्रमि बूडो अनिक जोनि भरमईहै ॥ (५२४-११, गूजरी, भगत कबीर जी)
रतन जनमु खोइओ प्रभु बिसरिओ इहु अउसरु कत पईहै ॥३॥ (५२४-१२, गूजरी, भगत कबीर जी)
भ्रमत फिरत तेलक के कपि जिउ गति बिनु रैनि बिहईहै ॥ (५२४-१२, गूजरी, भगत कबीर जी)
कहत कबीर राम नाम बिनु मूंड धुने पछुतईहै ॥४॥१॥ (५२४-१३, गूजरी, भगत कबीर जी)
गूजरी घरु ३ ॥ (५२४-१४)
मुसि मुसि रोवै कबीर की माई ॥ (५२४-१४, गूजरी, भगत कबीर जी)
ए बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥१॥ (५२४-१४, गूजरी, भगत कबीर जी)
तनना बुनना सभु तजिओ है कबीर ॥ (५२४-१४, गूजरी, भगत कबीर जी)
हरि का नामु लिखि लीओ सरीर ॥१॥ रहाउ ॥ (५२४-१५, गूजरी, भगत कबीर जी)
जब लगु तागा बाहउ बेही ॥ (५२४-१५, गूजरी, भगत कबीर जी)
तब लगु बिसरै रामु सनेही ॥२॥ (५२४-१६, गूजरी, भगत कबीर जी)
ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ (५२४-१६, गूजरी, भगत कबीर जी)
हरि का नामु लहिओ मै लाहा ॥३॥ (५२४-१६, गूजरी, भगत कबीर जी)
कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ (५२४-१७, गूजरी, भगत कबीर जी)
हमरा इन का दाता एकु रघुराई ॥४॥२॥ (५२४-१७, गूजरी, भगत कबीर जी)

पन्ना ५२५

गूजरी स्री नामदेव जी के पदे घरु १ (५२५-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५२५-१)
जौ राजु देहि त कवन बडाई ॥ (५२५-२, गूजरी, भगत नामदेव जी)
जौ भीख मंगावहि त किआ घटि जाई ॥१॥ (५२५-२, गूजरी, भगत नामदेव जी)
तूं हरि भजु मन मेरे पदु निरबानु ॥ (५२५-२, गूजरी, भगत नामदेव जी)
बहुरि न होइ तेरा आवन जानु ॥१॥ रहाउ ॥ (५२५-३, गूजरी, भगत नामदेव जी)

सभ तै उपाई भर्म भुलाई ॥ (५२५-३, गूजरी, भगत नामदेव जी)
जिस तूं देवहि तिसहि बुझाई ॥२॥ (५२५-३, गूजरी, भगत नामदेव जी)
सतिगुरु मिलै त सहसा जाई ॥ (५२५-४, गूजरी, भगत नामदेव जी)
किसु हउ पूजउ दूजा नदरि न आई ॥३॥ (५२५-४, गूजरी, भगत नामदेव जी)
एकै पाथर कीजै भाउ ॥ (५२५-५, गूजरी, भगत नामदेव जी)
दूजै पाथर धरीऐ पाउ ॥ (५२५-५, गूजरी, भगत नामदेव जी)
जे ओहु देउ त ओहु भी देवा ॥ (५२५-५, गूजरी, भगत नामदेव जी)
कहि नामदेउ हम हरि की सेवा ॥४॥१॥ (५२५-५, गूजरी, भगत नामदेव जी)
गूजरी घरु १ ॥ (५२५-६)
मलै न लाछै पार मलो परमलीओ बैठो री आई ॥ (५२५-६, गूजरी, भगत नामदेव जी)
आवत किनै न पेखिओ कवनै जाणै री बाई ॥१॥ (५२५-६, गूजरी, भगत नामदेव जी)
कउणु कहै किणि बूझीऐ रमईआ आकुलु री बाई ॥१॥ रहाउ ॥ (५२५-७, गूजरी, भगत नामदेव जी)
जिउ आकासै पंखीअलो खोजु निरखिओ न जाई ॥ (५२५-८, गूजरी, भगत नामदेव जी)
जिउ जल माझै माछलो मारगु पेखणो न जाई ॥२॥ (५२५-८, गूजरी, भगत नामदेव जी)
जिउ आकासै घड़ूअलो मृग तृसना भरिआ ॥ (५२५-९, गूजरी, भगत नामदेव जी)
नामे चे सुआमी बीठलो जिनि तीनै जरिआ ॥३॥२॥ (५२५-९, गूजरी, भगत नामदेव जी)
गूजरी स्री रविदास जी के पदे घरु ३ (५२५-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५२५-१०)
दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥ (५२५-११, गूजरी, भगत रविदास जी)
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥१॥ (५२५-११, गूजरी, भगत रविदास जी)
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ ॥ (५२५-११, गूजरी, भगत रविदास जी)
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (५२५-१२, गूजरी, भगत रविदास जी)
मैलागर बेरहे है भुइअंगा ॥ (५२५-१२, गूजरी, भगत रविदास जी)
बिखु अमृतु बसहि इक संगा ॥२॥ (५२५-१२, गूजरी, भगत रविदास जी)
धूप दीप नईबेदहि बासा ॥ (५२५-१३, गूजरी, भगत रविदास जी)
कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥३॥ (५२५-१३, गूजरी, भगत रविदास जी)
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ ॥ (५२५-१४, गूजरी, भगत रविदास जी)
गुर परसादि निरंजनु पावउ ॥४॥ (५२५-१४, गूजरी, भगत रविदास जी)
पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ (५२५-१४, गूजरी, भगत रविदास जी)
कहि रविदास कवन गति मोरी ॥५॥१॥ (५२५-१५, गूजरी, भगत रविदास जी)
गूजरी स्री तृलोचन जीउ के पदे घरु १ (५२५-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५२५-१६)
अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥ (५२५-१७, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
हिरदै कमलु घटि ब्रह्मु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥१॥ (५२५-१७, गूजरी, भगत तृलोचन जी)

पन्ना ५२६

भरमे भूली रे जै चंदा ॥ (५२६-१, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
नही नही चीन्हिआ परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥ (५२६-१, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥ (५२६-२, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥२॥ (५२६-२, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥ (५२६-३, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥३॥ (५२६-३, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥ (५२६-४, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
बदति तृलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥४॥१॥ (५२६-४, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
गूजरी ॥ (५२६-५)
अंति कालि जो लछमी सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (५२६-५, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
सरप जोनि वलि वलि अउतरै ॥१॥ (५२६-६, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
अरी बाई गोबिद नामु मति बीसरै ॥ रहाउ ॥ (५२६-६, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
अंति कालि जो इसत्री सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (५२६-७, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै ॥२॥ (५२६-७, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
अंति कालि जो लड़िके सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (५२६-८, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै ॥३॥ (५२६-८, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
अंति कालि जो मंदर सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (५२६-९, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै ॥४॥ (५२६-९, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
अंति कालि नाराइणु सिमरै ऐसी चिंता महि जे मरै ॥ (५२६-१०, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
बदति तिलोचनु ते नर मुकता पीतम्बरु वा के रिदै बसै ॥५॥२॥ (५२६-१०, गूजरी, भगत तृलोचन जी)
गूजरी स्री जैदेव जीउ का पदा घरु ४ (५२६-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५२६-१२)
परमादि पुरखमनोपिमं सति आदि भाव रतं ॥ (५२६-१३, गूजरी, भगत जैदेव जी)
परमदभुतं परक्रिति परं जदिचिंति सरब गतं ॥१॥ (५२६-१३, गूजरी, भगत जैदेव जी)
केवल राम नाम मनोरमं ॥ (५२६-१४, गूजरी, भगत जैदेव जी)
बदि अम्रित तत मइअं ॥ (५२६-१४, गूजरी, भगत जैदेव जी)
न दनोति जसमरणेन जनम जराधि मरण भइअं ॥१॥ रहाउ ॥ (५२६-१४, गूजरी, भगत जैदेव जी)
इछसि जमादि पराभयं जसु स्वसति सुक्रित क्रितं ॥ (५२६-१५, गूजरी, भगत जैदेव जी)
भव भूत भाव समब्यिअं परमं प्रसंनमिदं ॥२॥ (५२६-१६, गूजरी, भगत जैदेव जी)
लोभादि द्रिसटि पर ग्रिहं जदिबिधि आचरणं ॥ (५२६-१६, गूजरी, भगत जैदेव जी)
तजि सकल दुहक्रित दुरमती भजु चक्रधर सरणं ॥३॥ (५२६-१७, गूजरी, भगत जैदेव जी)
हरि भगत निज निहकेवला रिद करमणा बचसा ॥ (५२६-१७, गूजरी, भगत जैदेव जी)
जोगेन किं जगेन किं दानेन किं तपसा ॥४॥ (५२६-१८, गूजरी, भगत जैदेव जी)

गोबिंद गोबिंदेति जपि नर सकल सिधि पदं ॥ (५२६-१८, गूजरी, भगत जैदेव जी)
जैदेव आइउ तस सफुटं भव भूत सर्ब गतं ॥५॥१॥ (५२६-१९, गूजरी, भगत जैदेव जी)

पन्ना ५२७

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (५२७-१)
रागु देवगंधारी महला ४ घरु १ ॥ (५२७-३)
सेवक जन बने ठाकुर लिव लागे ॥ (५२७-४, देवगंधारी, मः ४)
जो तुमरा जसु कहते गुरमति तिन मुख भाग सभागे ॥१॥ रहाउ ॥ (५२७-४, देवगंधारी, मः ४)
टूटे माइआ के बंधन फाहे हरि राम नाम लिव लागे ॥ (५२७-५, देवगंधारी, मः ४)
हमरा मनु मोहिओ गुर मोहनि हम बिसम भई मुखि लागे ॥१॥ (५२७-५, देवगंधारी, मः ४)
सगली रैणि सोई अंधिआरी गुर किंचत किरपा जागे ॥ (५२७-६, देवगंधारी, मः ४)
जन नानक के प्रभ सुंदर सुआमी मोहि तुम सरि अवरु न लागे ॥२॥१॥ (५२७-६, देवगंधारी, मः ४)
देवगंधारी ॥ (५२७-७)
मेरो सुंदरु कहहु मिलै कितु गली ॥ (५२७-७, देवगंधारी, मः ४)
हरि के संत बतावहु मारगु हम पीछै लागि चली ॥१॥ रहाउ ॥ (५२७-८, देवगंधारी, मः ४)
पृअ के बचन सुखाने हीअरै इह चाल बनी है भली ॥ (५२७-८, देवगंधारी, मः ४)
लटुरी मधुरी ठाकुर भाई ओह सुंदरि हरि ढुलि मिली ॥१॥ (५२७-९, देवगंधारी, मः ४)
एको पृउ सखीआ सभ पृअ की जो भावै पिर सा भली ॥ (५२७-१०, देवगंधारी, मः ४)
नानकु गरीबु किआ करै बिचारा हरि भावै तितु राहि चली ॥२॥२॥ (५२७-१०, देवगंधारी, मः ४)
देवगंधारी ॥ (५२७-११)
मेरे मन मुखि हरि हरि हरि बोलीऐ ॥ (५२७-११, देवगंधारी, मः ४)
गुरमुखि रंगि चलूलै राती हरि प्रेम भीनी चोलीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (५२७-११, देवगंधारी, मः ४)
हउ फिरउ दिवानी आवल बावल तिसु कारणि हरि ढोलीऐ ॥ (५२७-१२, देवगंधारी, मः ४)
कोई मेलै मेरा प्रीतमु पिआरा हम तिस की गुल गोलीऐ ॥१॥ (५२७-१३, देवगंधारी, मः ४)
सतिगुरु पुरखु मनावहु अपुना हरि अमृतु पी झोलीऐ ॥ (५२७-१३, देवगंधारी, मः ४)
गुर प्रसादि जन नानक पाइआ हरि लाधा देह टोलीऐ ॥२॥३॥ (५२७-१४, देवगंधारी, मः ४)
देवगंधारी ॥ (५२७-१५)
अब हम चली ठाकुर पहि हारि ॥ (५२७-१५, देवगंधारी, मः ४)
जब हम सरणि प्रभू की आई राखु प्रभू भावै मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (५२७-१५, देवगंधारी, मः ४)

पन्ना ५२८

लोकन की चतुराई उपमा ते बैसंतरि जारि ॥ (५२८-१, देवगंधारी, मः ४)
कोई भला कहउ भावै बुरा कहउ हम तनु दीओ है ढारि ॥१॥ (५२८-१, देवगंधारी, मः ४)
जो आवत सरणि ठाकुर प्रभु तुमरी तिसु राखहु किरपा धारि ॥ (५२८-२, देवगंधारी, मः ४)
जन नानक सरणि तुमारी हरि जीउ राखहु लाज मुरारि ॥२॥४॥ (५२८-२, देवगंधारी, मः ४)

देवगंधारी ॥ (५२८-३)
हरि गुण गावै हउ तिसु बलिहारी ॥ (५२८-३, देवगंधारी, मः ४)
देखि देखि जीवा साध गुर दरसनु जिसु हिरदै नामु मुरारी ॥१॥ रहाउ ॥ (५२८-४, देवगंधारी, मः ४)
तुम पवित्र पावन पुरख प्रभ सुआमी हम किउ करि मिलह जूठारी ॥ (५२८-४, देवगंधारी, मः ४)
हमरै जीइ होरु मुखि होरु होत है हम करमहीण कूड़िआरी ॥१॥ (५२८-५, देवगंधारी, मः ४)
हमरी मुद्र नामु हरि सुआमी रिद अंतरि दुसट दुसटारी ॥ (५२८-६, देवगंधारी, मः ४)
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरणि तुम्हारी ॥२॥५॥ (५२८-६, देवगंधारी, मः ४)
देवगंधारी ॥ (५२८-७)
हरि के नाम बिना सुंदरि है नकटी ॥ (५२८-७, देवगंधारी, मः ४)
जिउ बेसुआ के घरि पूतु जमतु है तिसु नामु परिओ है ध्रकटी ॥१॥ रहाउ ॥ (५२८-८, देवगंधारी, मः ४)
जिन कै हिरदै नाहि हरि सुआमी ते बिगड़ रूप बेरकटी ॥ (५२८-८, देवगंधारी, मः ४)
जिउ निगुरा बहु बाता जाणै ओहु हरि दरगह है भ्रसटी ॥१॥ (५२८-९, देवगंधारी, मः ४)
जिन कउ दइआलु होआ मेरा सुआमी तिना साध जना पग चकटी ॥ (५२८-१०, देवगंधारी, मः ४)
नानक पतित पवित मिलि संगति गुर सतिगुर पाछै छुकटी ॥२॥६॥ छका १ (५२८-१०, देवगंधारी, मः ४)
देवगंधारी महला ५ घरु २ (५२८-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५२८-१२)
माई गुर चरणी चितु लाईऐ ॥ (५२८-१३, देवगंधारी, मः ५)
प्रभु होइ क्रिपालु कमलु परगासे सदा सदा हरि धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (५२८-१३, देवगंधारी, मः ५)
अंतरि एको बाहरि एको सभ महि एकु समाईऐ ॥ (५२८-१४, देवगंधारी, मः ५)
घटि अवघटि रविआ सभ ठाई हरि पूरन ब्रह्मु दिखाईऐ ॥१॥ (५२८-१४, देवगंधारी, मः ५)
उसतति करहि सेवक मुनि केते तेरा अंतु न कतहू पाईऐ ॥ (५२८-१५, देवगंधारी, मः ५)
सुखदाते दुख भंजन सुआमी जन नानक सद बलि जाईऐ ॥२॥१॥ (५२८-१५, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ॥ (५२८-१६)
माई होनहार सो होईऐ ॥ (५२८-१६, देवगंधारी, मः ५)
राचि रहिओ रचना प्रभु अपनी कहा लाभु कहा खोईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (५२८-१७, देवगंधारी, मः ५)
कह फूलहि आनंद बिखै सोग कब हसनो कब रोईऐ ॥ (५२८-१७, देवगंधारी, मः ५)
कबहू मैलु भरे अभिमानी कब साधू संगि धोईऐ ॥१॥ (५२८-१८, देवगंधारी, मः ५)
कोइ न मेटै प्रभ का कीआ दूसर नाही अलोईऐ ॥ (५२८-१८, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी जिह प्रसादि सुखि सोईऐ ॥२॥२॥ (५२८-१९, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५२९

देवगंधारी ॥ (५२९-१)
माई सुनत सोच भै डरत ॥ (५२९-१, देवगंधारी, मः ५)
मेर तेर तजउ अभिमाना सरनि सुआमी की परत ॥१॥ रहाउ ॥ (५२९-१, देवगंधारी, मः ५)
जो जो कहै सोई भल मानउ नाहि न का बोल करत ॥ (५२९-२, देवगंधारी, मः ५)

निमख न बिसरउ हीए मोरे ते बिसरत जाई हउ मरत ॥१॥ (५२६-२, देवगंधारी, मः ५)
सुखदाई पूरन प्रभु करता मेरी बहुतु इआनप जरत ॥ (५२६-३, देवगंधारी, मः ५)
निरगुनि करूपि कुलहीण नानक हउ अनद रूप सुआमी भरत ॥२॥३॥ (५२६-३, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ॥ (५२६-४)
मन हरि कीरति करि सदहूं ॥ (५२६-४, देवगंधारी, मः ५)
गावत सुनत जपत उधारै बरन अबरना सभहूं ॥१॥ रहाउ ॥ (५२६-५, देवगंधारी, मः ५)
जह ते उपजिओ तही समाइओ इह बिधि जानी तबहूं ॥ (५२६-५, देवगंधारी, मः ५)
जहा जहा इह देही धारी रहनु न पाइओ कबहूं ॥१॥ (५२६-६, देवगंधारी, मः ५)
सुखु आइओ भै भर्म बिनासे कृपाल हूए प्रभ जबहू ॥ (५२६-६, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ साधसंगि तजि लबहूं ॥२॥४॥ (५२६-७, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ॥ (५२६-८)
मन जिउ अपुने प्रभ भावउ ॥ (५२६-८, देवगंधारी, मः ५)
नीचहु नीचु नीचु अति नान्हा होइ गरीबु बुलावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (५२६-८, देवगंधारी, मः ५)
अनिक अडम्बर माइआ के बिरथे ता सिउ प्रीति घटावउ ॥ (५२६-९, देवगंधारी, मः ५)
जिउ अपुनो सुआमी सुखु मानै ता महि सोभा पावउ ॥१॥ (५२६-९, देवगंधारी, मः ५)
दासन दास रेणु दासन की जन की टहल कमावउ ॥ (५२६-१०, देवगंधारी, मः ५)
सर्ब सूख बडिआई नानक जीवउ मुखहु बुलावउ ॥२॥५॥ (५२६-११, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ॥ (५२६-११)
प्रभ जी तउ प्रसादि भ्रमु डारिओ ॥ (५२६-११, देवगंधारी, मः ५)
तुमरी कृपा ते सभु को अपना मन महि इहै बीचारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (५२६-१२, देवगंधारी, मः ५)
कोटि पराध मिटे तेरी सेवा दरसनि दूखु उतारिओ ॥ (५२६-१२, देवगंधारी, मः ५)
नामु जपत महा सुखु पाइओ चिंता रोगु बिदारिओ ॥१॥ (५२६-१३, देवगंधारी, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिसारिओ ॥ (५२६-१३, देवगंधारी, मः ५)
माइआ बंध काटे किरपा निधि नानक आपि उधारिओ ॥२॥६॥ (५२६-१४, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ॥ (५२६-१५)
मन सगल सिआनप रही ॥ (५२६-१५, देवगंधारी, मः ५)
करन करावनहार सुआमी नानक ओट गही ॥१॥ रहाउ ॥ (५२६-१५, देवगंधारी, मः ५)
आपु मेटि पए सरणाई इह मति साधू कही ॥ (५२६-१६, देवगंधारी, मः ५)
प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ भरमु अधेरा लही ॥१॥ (५२६-१६, देवगंधारी, मः ५)
जान प्रबीन सुआमी प्रभ मेरे सरणि तुमारी अही ॥ (५२६-१७, देवगंधारी, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारे कुदरति कीम न पही ॥२॥७॥ (५२६-१७, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५२६-१८)
हरि प्रान प्रभू सुखदाते ॥ (५२६-१८, देवगंधारी, मः ५)
गुर प्रसादि काहू जाते ॥१॥ रहाउ ॥ (५२६-१९, देवगंधारी, मः ५)
संत तुमारे तुमरे प्रीतम तिन कउ काल न खाते ॥ (५२६-१९, देवगंधारी, मः ५)

रंगि तुमारै लाल भए है राम नाम रसि माते ॥१॥ (५२९-१९, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५३०

महा किलबिख कोटि दोख रोगा प्रभ द्रिसटि तुहारी हाते ॥ (५३०-१, देवगंधारी, मः ५)
सोवत जागि हरि हरि हरि गाइआ नानक गुर चरन पराते ॥२॥८॥ (५३०-१, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३०-२)
सो प्रभु जत कत पेखिओ नैणी ॥ (५३०-२, देवगंधारी, मः ५)
सुखदाई जीअन को दाता अमृतु जा की बैणी ॥१॥ रहाउ ॥ (५३०-३, देवगंधारी, मः ५)
अगिआनु अधेरा संती काटिआ जीअ दानु गुर दैणी ॥ (५३०-३, देवगंधारी, मः ५)
करि किरपा करि लीनो अपुना जलते सीतल होणी ॥१॥ (५३०-४, देवगंधारी, मः ५)
करमु धरमु किछु उपजि न आइओ नह उपजी निर्मल करणी ॥ (५३०-४, देवगंधारी, मः ५)
छाडि सिआनप संजम नानक लागो गुर की चरणी ॥२॥९॥ (५३०-५, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३०-६)
हरि राम नामु जपि लाहा ॥ (५३०-६, देवगंधारी, मः ५)
गति पावहि सुख सहज अनंदा काटे जम के फाहा ॥१॥ रहाउ ॥ (५३०-६, देवगंधारी, मः ५)
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ हरि संत जना पहि आहा ॥ (५३०-७, देवगंधारी, मः ५)
तिन्हा परापति एहु निधाना जिन्ह कै करमि लिखाहा ॥१॥ (५३०-७, देवगंधारी, मः ५)
से बडभागी से पतिवंते सेई पूरे साहा ॥ (५३०-८, देवगंधारी, मः ५)
सुंदर सुघड़ सरूप ते नानक जिन्ह हरि हरि नामु विसाहा ॥२॥१०॥ (५३०-८, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३०-९)
मन कह अहंकारि अफारा ॥ (५३०-९, देवगंधारी, मः ५)
दुरगंध अपवित्र अपावन भीतरि जो दीसै सो छारा ॥१॥ रहाउ ॥ (५३०-१०, देवगंधारी, मः ५)
जिनि कीआ तिसु सिमरि परानी जीउ प्रान जिनि धारा ॥ (५३०-१०, देवगंधारी, मः ५)
तिसहि तिआगि अवर लपटावहि मरि जनमहि मुगध गवारा ॥१॥ (५३०-११, देवगंधारी, मः ५)
अंध गुंग पिंगुल मति हीना प्रभ राखहु राखनहारा ॥ (५३०-११, देवगंधारी, मः ५)
करन करावनहार समरथा किआ नानक जंत बिचारा ॥२॥११॥ (५३०-१२, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३०-१३)
सो प्रभु नेरै हू ते नेरै ॥ (५३०-१३, देवगंधारी, मः ५)
सिमरि धिआइ गाइ गुन गोबिंद दिनु रैनि साझ सवेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (५३०-१३, देवगंधारी, मः ५)
उधरु देह दुलभ साधू संगि हरि हरि नामु जपेरै ॥ (५३०-१४, देवगंधारी, मः ५)
घरी न मुहतु न चसा बिलम्बहु कालु नितहि नित हेरै ॥१॥ (५३०-१४, देवगंधारी, मः ५)
अंध बिला ते काढहु करते किआ नाही घरि तेरै ॥ (५३०-१५, देवगंधारी, मः ५)
नामु अधारु दीजै नानक कउ आनद सूख घनेरै ॥२॥१२॥ (५३०-१६, देवगंधारी, मः ५)
छके २ ॥ (५३०-१६)
देवगंधारी ५ ॥ (५३०-१६)

मन गुर मिलि नामु अराधिओ ॥ (५३०-१६, देवगंधारी, मः ५)
सूख सहज आनंद मंगल रस जीवन का मूलु बाधिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३०-१७, देवगंधारी, मः ५)
करि किरपा अपुना दासु कीनो काटे माइआ फाधिओ ॥ (५३०-१८, देवगंधारी, मः ५)
भाउ भगति गाइ गुण गोबिद जम का मारगु साधिओ ॥१॥ (५३०-१८, देवगंधारी, मः ५)
भइओ अनुग्रहु मिटिओ मोरचा अमोल पदारथु लाधिओ ॥ (५३०-१९, देवगंधारी, मः ५)
बलिहारै नानक लख बेरा मेरे ठाकुर अगम अगाधिओ ॥२॥१३॥ (५३०-१९, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५३१

देवगंधारी ५ ॥ (५३१-१)
माई जो प्रभ के गुन गावै ॥ (५३१-१, देवगंधारी, मः ५)
सफल आइआ जीवन फलु ता को पारब्रह्म लिव लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (५३१-२, देवगंधारी, मः ५)
सुंदरु सुघड़ु सूरु सो बेता जो साधू संगु पावै ॥ (५३१-२, देवगंधारी, मः ५)
नामु उचारु करे हरि रसना बहुड़ि न जोनी धावै ॥१॥ (५३१-३, देवगंधारी, मः ५)
पूरन ब्रह्मु रविआ मन तन महि आन न द्रिसटी आवै ॥ (५३१-३, देवगंधारी, मः ५)
नरक रोग नही होवत जन संगि नानक जिसु लड़ि लावै ॥२॥१४॥ (५३१-४, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३१-५)
चंचलु सुपनै ही उरझाइओ ॥ (५३१-५, देवगंधारी, मः ५)
इतनी न बूझै कबहू चलना बिकल भइओ संगि माइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३१-५, देवगंधारी, मः ५)
कुसम रंग संग रसि रचिआ बिखिआ एक उपाइओ ॥ (५३१-६, देवगंधारी, मः ५)
लोभ सुनै मनि सुखु करि मानै बेगि तहा उठि धाइओ ॥१॥ (५३१-६, देवगंधारी, मः ५)
फिरत फिरत बहुतु स्रमु पाइओ संत दुआरै आइओ ॥ (५३१-७, देवगंधारी, मः ५)
करी क्रिपा पारब्रहमि सुआमी नानक लीओ समाइओ ॥२॥१५॥ (५३१-७, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३१-८)
सर्ब सुखा गुर चरना ॥ (५३१-८, देवगंधारी, मः ५)
कलिमल डारन मनहि सधारन इह आसर मोहि तरना ॥१॥ रहाउ ॥ (५३१-९, देवगंधारी, मः ५)
पूजा अरचा सेवा बंदन इहै टहल मोहि करना ॥ (५३१-९, देवगंधारी, मः ५)
बिगसै मनु होवै परगासा बहुरि न गरभै परना ॥१॥ (५३१-१०, देवगंधारी, मः ५)
सफल मूरति परसउ संतन की इहै धिआना धरना ॥ (५३१-१०, देवगंधारी, मः ५)
भइओ क्रिपालु ठाकुरु नानक कउ परिओ साध की सरना ॥२॥१६॥ (५३१-११, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३१-१२)
अपुने हरि पहि बिनती कहीऐ ॥ (५३१-१२, देवगंधारी, मः ५)
चारि पदार्थ अनद मंगल निधि सूख सहज सिधि लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३१-१२, देवगंधारी, मः ५)
मानु तिआगि हरि चरनी लागउ तिसु प्रभ अंचलु गहीऐ ॥ (५३१-१३, देवगंधारी, मः ५)
आँच न लागै अगनि सागर ते सरनि सुआमी की अहीऐ ॥१॥ (५३१-१३, देवगंधारी, मः ५)
कोटि पराध महा अक्रितघन बहुरि बहुरि प्रभ सहीऐ ॥ (५३१-१४, देवगंधारी, मः ५)

करुणा मै पूरन परमेसुर नानक तिसु सरनहीऐ ॥२॥१७॥ (५३१-१५, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३१-१५)
गुर के चरन रिदै परवेसा ॥ (५३१-१६, देवगंधारी, मः ५)
रोग सोग सभि दूख बिनासे उतरे सगल कलेसा ॥१॥ रहाउ ॥ (५३१-१६, देवगंधारी, मः ५)
जनम जनम के किलबिख नासहि कोटि मजन इसनाना ॥ (५३१-१६, देवगंधारी, मः ५)
नामु निधानु गावत गुण गोबिंद लागो सहजि धिआना ॥१॥ (५३१-१७, देवगंधारी, मः ५)
करि किरपा अपुना दासु कीनो बंधन तोरि निरारे ॥ (५३१-१८, देवगंधारी, मः ५)
जपि जपि नामु जीवा तेरी बाणी नानक दास बलिहारे ॥२॥१८॥ (५३१-१८, देवगंधारी, मः ५)
छके ३ ॥ (५३१-१९)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३१-१९)
माई प्रभ के चरन निहारउ ॥ (५३१-१९, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५३२

करहु अनुग्रहु सुआमी मेरे मन ते कबहु न डारउ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३२-१, देवगंधारी, मः ५)
साधू धूरि लाई मुखि मसतकि काम क्रोध बिखु जारउ ॥ (५३२-१, देवगंधारी, मः ५)
सभ ते नीचु आतम करि मानउ मन महि इहु सुखु धारउ ॥१॥ (५३२-२, देवगंधारी, मः ५)
गुन गावह ठाकुर अबिनासी कलमल सगले झारउ ॥ (५३२-३, देवगंधारी, मः ५)
नाम निधानु नानक दानु पावउ कंठि लाइ उरि धारउ ॥२॥१९॥ (५३२-३, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३२-४)
प्रभ जीउ पेखउ दरसु तुमारा ॥ (५३२-४, देवगंधारी, मः ५)
सुंदर धिआनु धारु दिनु रैनी जीअ प्रान ते पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (५३२-४, देवगंधारी, मः ५)
सासत्र बेद पुरान अविलोके सिमृति ततु बीचारा ॥ (५३२-५, देवगंधारी, मः ५)
दीना नाथ प्रानपति पूरन भवजल उधरनहारा ॥१॥ (५३२-६, देवगंधारी, मः ५)
आदि जुगादि भगत जन सेवक ता की बिखै अधारा ॥ (५३२-६, देवगंधारी, मः ५)
तिन जन की धूरि बाछै नित नानकु परमेसरु देवनहारा ॥२॥२०॥ (५३२-७, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३२-८)
तेरा जनु राम रसाइणि माता ॥ (५३२-८, देवगंधारी, मः ५)
प्रेम रसा निधि जा कउ उपजी छोडि न कतहू जाता ॥१॥ रहाउ ॥ (५३२-८, देवगंधारी, मः ५)
बैठत हरि हरि सोवत हरि हरि हरि रसु भोजनु खाता ॥ (५३२-९, देवगंधारी, मः ५)
अठसठि तीर्थ मजनु कीनो साधू धूरी नाता ॥१॥ (५३२-९, देवगंधारी, मः ५)
सफलु जनमु हरि जन का उपजिआ जिनि कीनो सउतु बिधाता ॥ (५३२-१०, देवगंधारी, मः ५)
सगल समूह लै उधरे नानक पूरन ब्रह्मु पछाता ॥२॥२१॥ (५३२-११, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३२-११)
माई गुर बिनु गिआनु न पाईऐ ॥ (५३२-११, देवगंधारी, मः ५)
अनिक प्रकार फिरत बिललाते मिलत नही गोसाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३२-१२, देवगंधारी, मः ५)

मोह रोग सोग तनु बाधिओ बहु जोनी भरमाईऐ ॥ (५३२-१३, देवगंधारी, मः ५)
टिकनु न पावै बिनु सतसंगति किसु आगै जाइ रूआईऐ ॥१॥ (५३२-१३, देवगंधारी, मः ५)
करै अनुग्रहु सुआमी मेरा साध चरन चितु लाईऐ ॥ (५३२-१४, देवगंधारी, मः ५)
संकट घोर कटे खिन भीतरि नानक हरि दरसि समाईऐ ॥२॥२२॥ (५३२-१५, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३२-१५)
ठाकुर होए आपि दइआल ॥ (५३२-१६, देवगंधारी, मः ५)
भई कलिआण अनंद रूप होई है उबरे बाल गुपाल ॥ रहाउ ॥ (५३२-१६, देवगंधारी, मः ५)
दुइ कर जोड़ि करी बेनंती पारब्रह्मु मनि धिआइआ ॥ (५३२-१७, देवगंधारी, मः ५)
हाथु देइ राखे परमेसुरि सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ (५३२-१७, देवगंधारी, मः ५)
वर नारी मिलि मंगलु गाइआ ठाकुर का जैकारु ॥ (५३२-१८, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक जन कउ बलि जाईऐ जो सभना करे उधारु ॥२॥२३॥ (५३२-१८, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५३३

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३३-१)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३३-२)
अपुने सतिगुर पहि बिनउ कहिआ ॥ (५३३-२, देवगंधारी, मः ५)
भए कृपाल दइआल दुख भंजन मेरा सगल अंदेसरा गइआ ॥ रहाउ ॥ (५३३-२, देवगंधारी, मः ५)
हम पापी पाखंडी लोभी हमरा गुनु अवगुनु सभु सहिआ ॥ (५३३-३, देवगंधारी, मः ५)
करु मसतकि धारि साजि निवाजे मुए दुसट जो खइआ ॥१॥ (५३३-३, देवगंधारी, मः ५)
परउपकारी सर्ब सधारी सफल दरसन सहजइआ ॥ (५३३-४, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक निरगुण कउ दाता चरण कमल उर धरिआ ॥२॥२४॥ (५३३-५, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३३-५)
अनाथ नाथ प्रभ हमारे ॥ (५३३-६, देवगंधारी, मः ५)
सरनि आइओ राखनहारे ॥ रहाउ ॥ (५३३-६, देवगंधारी, मः ५)
सर्ब पाख राखु मुरारे ॥ (५३३-६, देवगंधारी, मः ५)
आगै पाछै अंती वारे ॥१॥ (५३३-६, देवगंधारी, मः ५)
जब चितवउ तब तुहारे ॥ (५३३-७, देवगंधारी, मः ५)
उन समारि मेरा मनु सधारे ॥२॥ (५३३-७, देवगंधारी, मः ५)
सुनि गावउ गुर बचनारे ॥ (५३३-७, देवगंधारी, मः ५)
बलि बलि जाउ साध दरसारे ॥३॥ (५३३-८, देवगंधारी, मः ५)
मन महि राखउ एक असारे ॥ (५३३-८, देवगंधारी, मः ५)
नानक प्रभ मेरे करनैहारे ॥४॥२५॥ (५३३-८, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३३-९)
प्रभ इहै मनोरथु मेरा ॥ (५३३-९, देवगंधारी, मः ५)
कृपा निधान दइआल मोहि दीजै करि संतन का चेरा ॥ रहाउ ॥ (५३३-९, देवगंधारी, मः ५)

प्रातहकाल लागउ जन चरनी निस बासुर दरसु पावउ ॥ (५३३-१०, देवगंधारी, मः ५)
तनु मनु अरपि करउ जन सेवा रसना हरि गुन गावउ ॥१॥ (५३३-१०, देवगंधारी, मः ५)
सासि सासि सिमरउ प्रभु अपुना संतसंगि नित रहीऐ ॥ (५३३-११, देवगंधारी, मः ५)
एकु अधारु नामु धनु मोरा अनदु नानक इहु लहीऐ ॥२॥२६॥ (५३३-१२, देवगंधारी, मः ५)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ३ (५३३-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३३-१३)
मीता ऐसे हरि जीउ पाए ॥ (५३३-१४, देवगंधारी, मः ५)
छोडि न जाई सद ही संगे अनदिनु गुर मिलि गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (५३३-१४, देवगंधारी, मः ५)
मिलिओ मनोहरु सर्ब सुखैना तिआगि न कतहू जाए ॥ (५३३-१५, देवगंधारी, मः ५)
अनिक अनिक भाति बहु पेखे प्रिअ रोम न समसरि लाए ॥१॥ (५३३-१५, देवगंधारी, मः ५)
मंदरि भागु सोभ दुआरै अनहत रुणु झुणु लाए ॥ (५३३-१६, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक सदा रंगु माणे ग्रिह प्रिअ थीते सद थाए ॥२॥१॥२७॥ (५३३-१६, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३३-१७)
दरसन नाम कउ मनु आछै ॥ (५३३-१७, देवगंधारी, मः ५)
भ्रमि आइओ है सगल थान रे आहि परिओ संत पाछै ॥१॥ रहाउ ॥ (५३३-१७, देवगंधारी, मः ५)
किसु हउ सेवी किसु आराधी जो दिसटै सो गाछै ॥ (५३३-१८, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५३४

साधसंगति की सरनी परीऐ चरण रेनु मनु बाछै ॥१॥ (५३४-१, देवगंधारी, मः ५)
जुगति न जाना गुनु नही कोई महा दुतरु माइ आछै ॥ (५३४-१, देवगंधारी, मः ५)
आइ पइओ नानक गुर चरनी तउ उतरी सगल दुराछै ॥२॥२॥२८॥ (५३४-२, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३४-३)
अम्रिता प्रिअ बचन तुहारे ॥ (५३४-३, देवगंधारी, मः ५)
अति सुंदर मनमोहन पिआरे सभहू मधि निरारे ॥१॥ रहाउ ॥ (५३४-३, देवगंधारी, मः ५)
राजु न चाहउ मुकति न चाहउ मनि प्रीति चरन कमलारे ॥ (५३४-४, देवगंधारी, मः ५)
ब्रहम महेस सिध मुनि इंद्रा मोहि ठाकुर ही दरसारे ॥१॥ (५३४-४, देवगंधारी, मः ५)
दीनु दुआरै आइओ ठाकुर सरनि परिओ संत हारे ॥ (५३४-५, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक प्रभ मिले मनोहर मनु सीतल बिगसारे ॥२॥३॥२९॥ (५३४-५, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३४-६)
हरि जपि सेवकु पारि उतारिओ ॥ (५३४-६, देवगंधारी, मः ५)
दीन दइआल भए प्रभ अपने बहुड़ि जनमि नही मारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३४-७, देवगंधारी, मः ५)
साधसंगमि गुण गावह हरि के रतन जनमु नही हारिओ ॥ (५३४-७, देवगंधारी, मः ५)
प्रभ गुन गाइ बिखै बनु तरिआ कुलह समूह उधारिओ ॥१॥ (५३४-८, देवगंधारी, मः ५)
चरन कमल बसिआ रिद भीतरि सासि गिरासि उचारिओ ॥ (५३४-९, देवगंधारी, मः ५)
नानक ओट गही जगदीसुर पुनह पुनह बलिहारिओ ॥२॥४॥३०॥ (५३४-९, देवगंधारी, मः ५)

रागु देवगंधारी महला ५ घरु ४ (५३४-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३४-११)
करत फिरे बन भेख मोहन रहत निरार ॥१॥ रहाउ ॥ (५३४-१२, देवगंधारी, मः ५)
कथन सुनावन गीत नीके गावन मन महि धरते गार ॥१॥ (५३४-१२, देवगंधारी, मः ५)
अति सुंदर बहु चतुर सिआने बिदिआ रसना चार ॥२॥ (५३४-१३, देवगंधारी, मः ५)
मान मोह मेर तेर बिबरजित एहु मारगु खंडे धार ॥३॥ (५३४-१३, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक तिनि भवजलु तरीअले प्रभ किरपा संत संगार ॥४॥१॥३१॥ (५३४-१४, देवगंधारी, मः ५)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ५ (५३४-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३४-१५)
मै पेखिओ री ऊचा मोहनु सभ ते ऊचा ॥ (५३४-१६, देवगंधारी, मः ५)
आन न समसरि कोऊ लागै ढूढि रहे हम मूचा ॥१॥ रहाउ ॥ (५३४-१६, देवगंधारी, मः ५)
बहु बेअंतु अति बडो गाहरो थाह नही अगहूचा ॥ (५३४-१७, देवगंधारी, मः ५)
तोलि न तुलीऐ मोलि न मुलीऐ कत पाईऐ मन रूचा ॥१॥ (५३४-१७, देवगंधारी, मः ५)
खोज असंखा अनिक तपंथा बिनु गुर नही पहूचा ॥ (५३४-१८, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक किरपा करी ठाकुर मिलि साधू रस भूंचा ॥२॥१॥३२॥ (५३४-१८, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५३५

देवगंधारी महला ५ ॥ (५३५-१)
मै बहु बिधि पेखिओ दूजा नाही री कोऊ ॥ (५३५-१, देवगंधारी, मः ५)
खंड दीप सभ भीतरि रविआ पूरि रहिओ सभ लोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३५-१, देवगंधारी, मः ५)
अगम अगम्मा कवन महिंमा मनु जीवै सुनि सोऊ ॥ (५३५-२, देवगंधारी, मः ५)
चारि आसरम चारि बरन्ना मुकति भए सेवतोऊ ॥१॥ (५३५-३, देवगंधारी, मः ५)
गुरि सबदु दृड़ाइआ पर्म पदु पाइआ दुतीअ गए सुख होऊ ॥ (५३५-३, देवगंधारी, मः ५)
कहु नानक भव सागरु तरिआ हरि निधि पाई सहजोऊ ॥२॥२॥३३॥ (५३५-४, देवगंधारी, मः ५)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ६ (५३५-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३५-५)
एकै रे हरि एकै जान ॥ (५३५-६, देवगंधारी, मः ५)
एकै रे गुरमुखि जान ॥१॥ रहाउ ॥ (५३५-६, देवगंधारी, मः ५)
काहे भ्रमत हउ तुम भ्रमहु न भाई रविआ रे रविआ स्रब थान ॥१॥ (५३५-६, देवगंधारी, मः ५)
जिउ बैसंतरु कासट मझारि बिनु संजम नही कारज सारि ॥ (५३५-७, देवगंधारी, मः ५)
बिनु गुर न पावैगो हरि जी को दुआर ॥ (५३५-७, देवगंधारी, मः ५)
मिलि संगति तजि अभिमान कहु नानक पाए है पर्म निधान ॥२॥१॥३४॥ (५३५-८, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी ५ ॥ (५३५-९)
जानी न जाई ता की गाति ॥१॥ रहाउ ॥ (५३५-९, देवगंधारी, मः ५)
कह पेखारउ हउ करि चतुराई बिसमन बिसमे कहन कहाति ॥१॥ (५३५-९, देवगंधारी, मः ५)

गण गंधरब सिध अरु साधिक ॥ (५३५-१०, देवगंधारी, मः ५)
सुरि नर देव ब्रहम ब्रहमादिक ॥ (५३५-१०, देवगंधारी, मः ५)
चतुर बेद उचरत दिनु राति ॥ (५३५-११, देवगंधारी, मः ५)
अगम अगम ठाकुरु आगाधि ॥ (५३५-११, देवगंधारी, मः ५)
गुन बेअंत बेअंत भनु नानक कहनु न जाई परै पराति ॥२॥२॥३५॥ (५३५-११, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३५-१२)
धिआए गाए करनैहार ॥ (५३५-१२, देवगंधारी, मः ५)
भउ नाही सुख सहज अनंदा अनिक ओही रे एक समार ॥१॥ रहाउ ॥ (५३५-१२, देवगंधारी, मः ५)
सफल मूरति गुरु मेरै माथै ॥ (५३५-१३, देवगंधारी, मः ५)
जत कत पेखउ तत तत साथै ॥ (५३५-१३, देवगंधारी, मः ५)
चरन कमल मेरे प्रान अधार ॥१॥ (५३५-१४, देवगंधारी, मः ५)
समरथ अथाह बडा प्रभु मेरा ॥ (५३५-१४, देवगंधारी, मः ५)
घट घट अंतरि साहिबु नेरा ॥ (५३५-१४, देवगंधारी, मः ५)
ताकी सरनि आसर प्रभ नानक जा का अंतु न पारावार ॥२॥३॥३६॥ (५३५-१५, देवगंधारी, मः ५)
देवगंधारी महला ५ ॥ (५३५-१५)
उलटी रे मन उलटी रे ॥ (५३५-१६, देवगंधारी, मः ५)
साकत सिउ करि उलटी रे ॥ (५३५-१६, देवगंधारी, मः ५)
झूठै की रे झूठु परीति छुटकी रे मन छुटकी रे साकत संगि न छुटकी रे ॥१॥ रहाउ ॥ (५३५-१६, देवगंधारी, मः ५)
जिउ काजर भरि मंदरु राखिओ जो पैसै कालूखी रे ॥ (५३५-१७, देवगंधारी, मः ५)
दूरहु ही ते भागि गइओ है जिसु गुर मिलि छुटकी तृकुटी रे ॥१॥ (५३५-१७, देवगंधारी, मः ५)
मागउ दानु कृपाल कृपा निधि मेरा मुखु साकत संगि न जुटसी रे ॥ (५३५-१८, देवगंधारी, मः ५)

पन्ना ५३६

जन नानक दास दास को करीअहु मेरा मूंडु साध पगा हेठि रुलसी रे ॥२॥४॥३७॥ (५३६-१, देवगंधारी, मः ५)
रागु देवगंधारी महला ५ घरु ७ (५३६-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३६-३)
सभ दिन के समरथ पंथ बिठुले हउ बलि बलि जाउ ॥ (५३६-४, देवगंधारी, मः ५)
गावन भावन संतन तोरै चरन उवा कै पाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३६-४, देवगंधारी, मः ५)
जासन बासन सहज केल करुणा मै एक अनंत अनूपै ठाउ ॥१॥ (५३६-५, देवगंधारी, मः ५)
रिधि सिधि निधि कर तल जगजीवन स्रब नाथ अनेकै नाउ ॥ (५३६-५, देवगंधारी, मः ५)
दइआ मइआ किरपा नानक कउ सुनि सुनि जसु जीवाउ ॥२॥१॥३८॥६॥४४॥ (५३६-६, देवगंधारी, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३६-८)
रागु देवगंधारी महला ९ ॥ (५३६-८)
यह मनु नैक न कहिओ करै ॥ (५३६-८, देवगंधारी, मः ९)

सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥ (५३६-८, देवगंधारी, मः ९)
मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥ (५३६-९, देवगंधारी, मः ९)
करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥ (५३६-१०, देवगंधारी, मः ९)
सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥ (५३६-१०, देवगंधारी, मः ९)
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥२॥१॥ (५३६-११, देवगंधारी, मः ९)
देवगंधारी महला ९ ॥ (५३६-११)
सभ किछु जीवत को बिवहार ॥ (५३६-११, देवगंधारी, मः ९)
मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि गृह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥ (५३६-१२, देवगंधारी, मः ९)
तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥ (५३६-१२, देवगंधारी, मः ९)
आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥ (५३६-१३, देवगंधारी, मः ९)
मृग तृसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥ (५३६-१३, देवगंधारी, मः ९)
कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥२॥ (५३६-१४, देवगंधारी, मः ९)
देवगंधारी महला ९ ॥ (५३६-१५)
जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥ (५३६-१५, देवगंधारी, मः ९)
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (५३६-१५, देवगंधारी, मः ९)
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥ (५३६-१६, देवगंधारी, मः ९)
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥ (५३६-१६, देवगंधारी, मः ९)
मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥ (५३६-१७, देवगंधारी, मः ९)
नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥ (५३६-१७, देवगंधारी, मः ९)

पन्ना ५३७

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (५३७-१)
रागु बिहागड़ा चउपदे महला ५ घरु २ ॥ (५३७-३)
दूतन संगरीआ ॥ (५३७-४, बिहागड़ा, मः ५)
भुइअंगनि बसरीआ ॥ (५३७-४, बिहागड़ा, मः ५)
अनिक उपरीआ ॥१॥ (५३७-४, बिहागड़ा, मः ५)
तउ मै हरि हरि करीआ ॥ (५३७-४, बिहागड़ा, मः ५)
तउ सुख सहजरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (५३७-४, बिहागड़ा, मः ५)
मिथन मोहरीआ ॥ (५३७-५, बिहागड़ा, मः ५)
अन कउ मेरीआ ॥ (५३७-५, बिहागड़ा, मः ५)
विचि घूमन घिरीआ ॥२॥ (५३७-५, बिहागड़ा, मः ५)
सगल बटरीआ ॥ (५३७-६, बिहागड़ा, मः ५)
बिरख इक तरीआ ॥ (५३७-६, बिहागड़ा, मः ५)
बहु बंधहि परीआ ॥३॥ (५३७-६, बिहागड़ा, मः ५)
थिरु साध सफरीआ ॥ (५३७-६, बिहागड़ा, मः ५)

जह कीरतनु हरीआ ॥ (५३७-६, बिहागड़ा, मः ५)
नानक सरनरीआ ॥४॥१॥ (५३७-७, बिहागड़ा, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३७-८)
रागु बिहागड़ा महला ६ ॥ (५३७-८)
हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥ (५३७-८, बिहागड़ा, मः ६)
जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ ॥ (५३७-८, बिहागड़ा, मः ६)
छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥ (५३७-६, बिहागड़ा, मः ६)
रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥ (५३७-६, बिहागड़ा, मः ६)
अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥ (५३७-१०, बिहागड़ा, मः ६)
नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥ (५३७-१०, बिहागड़ा, मः ६)
अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥ (५३७-११, बिहागड़ा, मः ६)
सगल भर्म तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥ (५३७-१२, बिहागड़ा, मः ६)
रागु बिहागड़ा छंत महला ४ घरु १ (५३७-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५३७-१३)
हरि हरि नामु धिआईऐ मेरी जिंदुड़ीए गुरमुखि नामु अमोले राम ॥ (५३७-१४, बिहागड़ा, मः ४)
हरि रसि बीधा हरि मनु पिआरा मनु हरि रसि नामि झकोले राम ॥ (५३७-१४, बिहागड़ा, मः ४)

पन्ना ५३८

गुरमति मनु ठहराईऐ मेरी जिंदुड़ीए अनत न काहू डोले राम ॥ (५३८-१, बिहागड़ा, मः ४)
मन चिंदिअड़ा फलु पाइआ हरि प्रभु गुण नानक बाणी बोले राम ॥१॥ (५३८-२, बिहागड़ा, मः ४)
गुरमति मनि अमृतु वुठड़ा मेरी जिंदुड़ीए मुखि अमृत बैण अलाए राम ॥ (५३८-२, बिहागड़ा, मः ४)
अमृत बाणी भगत जना की मेरी जिंदुड़ीए मनि सुणीऐ हरि लिव लाए राम ॥ (५३८-३, बिहागड़ा, मः ४)
चिरी विछुन्ना हरि प्रभु पाइआ गलि मिलिआ सहजि सुभाए राम ॥ (५३८-४, बिहागड़ा, मः ४)
जन नानक मनि अनदु भइआ है मेरी जिंदुड़ीए अनहत सबद वजाए राम ॥२॥ (५३८-४, बिहागड़ा, मः ४)
सखी सहेली मेरीआ मेरी जिंदुड़ीए कोई हरि प्रभु आणि मिलावै राम ॥ (५३८-५, बिहागड़ा, मः ४)
हउ मनु देवउ तिसु आपणा मेरी जिंदुड़ीए हरि प्रभ की हरि कथा सुणावै राम ॥ (५३८-६, बिहागड़ा, मः ४)
गुरमुखि सदा अराधि हरि मेरी जिंदुड़ीए मन चिंदिअड़ा फलु पावै राम ॥ (५३८-७, बिहागड़ा, मः ४)
नानक भजु हरि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए वडभागी नामु धिआवै राम ॥३॥ (५३८-७, बिहागड़ा, मः ४)
करि किरपा प्रभ आइ मिलु मेरी जिंदुड़ीए गुरमति नामु परगासे राम ॥ (५३८-८, बिहागड़ा, मः ४)
हउ हरि बाझु उडीणीआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ जल बिनु कमल उदासे राम ॥ (५३८-६, बिहागड़ा, मः ४)
गुरि पूरै मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सजणु हरि प्रभु पासे राम ॥ (५३८-१०, बिहागड़ा, मः ४)
धनु धनु गुरू हरि दसिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि बिगासे राम ॥४॥१॥ (५३८-१०, बिहागड़ा, मः ४)
रागु बिहागड़ा महला ४ ॥ (५३८-११)
अमृतु हरि हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए अमृतु गुरमति पाए राम ॥ (५३८-११, बिहागड़ा, मः ४)
हउमै माइआ बिखु है मेरी जिंदुड़ीए हरि अमृति बिखु लहि जाए राम ॥ (५३८-१२, बिहागड़ा, मः ४)

मनु सुका हरिआ होइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हरि नामु धिआए राम ॥ (५३८-१३, बिहागड़ा, मः ४)
हरि भाग वडे लिखि पाइआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक नामि समाए राम ॥१॥ (५३८-१४, बिहागड़ा, मः ४)
हरि सेती मनु बेधिआ मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक लगि दुध खीरे राम ॥ (५३८-१४, बिहागड़ा, मः ४)
हरि बिनु साँति न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए जिउ चातृकु जल बिनु टेरे राम ॥ (५३८-१५, बिहागड़ा, मः ४)
सतिगुर सरणी जाइ पउ मेरी जिंदुड़ीए गुण दसे हरि प्रभ केरे राम ॥ (५३८-१६, बिहागड़ा, मः ४)
जन नानक हरि मेलाइआ मेरी जिंदुड़ीए घरि वाजे सबद घणेरे राम ॥२॥ (५३८-१७, बिहागड़ा, मः ४)
मनमुखि हउमै विछुड़े मेरी जिंदुड़ीए बिखु बाधे हउमै जाले राम ॥ (५३८-१७, बिहागड़ा, मः ४)
जिउ पंखी कपोति आपु बन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए तिउ मनमुख सभि वसि काले राम ॥ (५३८-१८, बिहागड़ा, मः ४)
जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से मनमुख मूड़ बिताले राम ॥ (५३८-१९, बिहागड़ा, मः ४)

पन्ना ५३९

जन त्राहि त्राहि सरणागती मेरी जिंदुड़ीए गुर नानक हरि रखवाले राम ॥३॥ (५३९-१, बिहागड़ा, मः ४)
हरि जन हरि लिव उबरे मेरी जिंदुड़ीए धुरि भाग वडे हरि पाइआ राम ॥ (५३९-२, बिहागड़ा, मः ४)
हरि हरि नामु पोतु है मेरी जिंदुड़ीए गुर खेवट सबदि तराइआ राम ॥ (५३९-२, बिहागड़ा, मः ४)
हरि हरि पुरखु दइआलु है मेरी जिंदुड़ीए गुर सतिगुर मीठ लगाइआ राम ॥ (५३९-३, बिहागड़ा, मः ४)
करि किरपा सुणि बेनती हरि हरि जन नानक नामु धिआइआ राम ॥४॥२॥ (५३९-४, बिहागड़ा, मः ४)
बिहागड़ा महला ४ ॥ (५३९-५)
जगि सुकृतु कीरति नामु है मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरति हरि मनि धारे राम ॥ (५३९-५, बिहागड़ा, मः ४)
हरि हरि नामु पवितु है मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि नामु उधारे राम ॥ (५३९-६, बिहागड़ा, मः ४)
सभ किलविख पाप दुख कटिआ मेरी जिंदुड़ीए मलु गुरमुखि नामि उतारे राम ॥ (५३९-६, बिहागड़ा, मः ४)
वड पुन्नी हरि धिआइआ जन नानक हम मूरख मुगध निसतारे राम ॥१॥ (५३९-७, बिहागड़ा, मः ४)
जो हरि नामु धिआइदे मेरी जिंदुड़ीए तिना पंचे वसगति आए राम ॥ (५३९-८, बिहागड़ा, मः ४)
अंतरि नव निधि नामु है मेरी जिंदुड़ीए गुरु सतिगुरु अलखु लखाए राम ॥ (५३९-९, बिहागड़ा, मः ४)
गुरि आसा मनसा पूरीआ मेरी जिंदुड़ीए हरि मिलिआ भुख सभ जाए राम ॥ (५३९-९, बिहागड़ा, मः ४)
धुरि मसतकि हरि प्रभि लिखिआ मेरी जिंदुड़ीए जन नानक हरि गुण गाए राम ॥२॥ (५३९-१०, बिहागड़ा, मः ४)
हम पापी बलवंचीआ मेरी जिंदुड़ीए परद्रोही ठग माइआ राम ॥ (५३९-११, बिहागड़ा, मः ४)
वडभागी गुरु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए गुरि पूरै गति मिति पाइआ राम ॥ (५३९-१२, बिहागड़ा, मः ४)
गुरि अमृतु हरि मुखि चोइआ मेरी जिंदुड़ीए फिरि मरदा बहुड़ि जीवाइआ राम ॥ (५३९-१२, बिहागड़ा, मः ४)
जन नानक सतिगुर जो मिले मेरी जिंदुड़ीए तिन के सभ दुख गवाइआ राम ॥३॥ (५३९-१३, बिहागड़ा, मः ४)
अति ऊतमु हरि नामु है मेरी जिंदुड़ीए जितु जपिऐ पाप गवाते राम ॥ (५३९-१४, बिहागड़ा, मः ४)
पतित पवित्र गुरि हरि कीए मेरी जिंदुड़ीए चहु कुंडी चहु जुगि जाते राम ॥ (५३९-१५, बिहागड़ा, मः ४)
हउमै मैलु सभ उतरी मेरी जिंदुड़ीए हरि अमृति हरि सरि नाते राम ॥ (५३९-१५, बिहागड़ा, मः ४)
अपराधी पापी उधरे मेरी जिंदुड़ीए जन नानक खिनु हरि राते राम ॥४॥३॥ (५३९-१६, बिहागड़ा, मः ४)

बिहागड़ा महला ४ ॥ (५३६-१७)
हउ बलिहारी तिन् कउ मेरी जिंदुड़ीए जिन् हरि हरि नामु अधारो राम ॥ (५३६-१७, बिहागड़ा, मः ४)
गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ मेरी जिंदुड़ीए बिखु भउजलु तारणहारो राम ॥ (५३६-१८, बिहागड़ा, मः ४)
जिन इक मनि हरि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए तिन संत जना जैकारो राम ॥ (५३६-१६, बिहागड़ा, मः ४)

पन्ना ५४०

नानक हरि जपि सुखु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए सभि दूख निवारणहारो राम ॥१॥ (५४०-१, बिहागड़ा, मः ४)
सा रसना धनु धन्नु है मेरी जिंदुड़ीए गुण गावै हरि प्रभ केरे राम ॥ (५४०-१, बिहागड़ा, मः ४)
ते स्रवन भले सोभनीक हहि मेरी जिंदुड़ीए हरि कीरतनु सुणहि हरि तेरे राम ॥ (५४०-२, बिहागड़ा, मः ४)
सो सीसु भला पवित्र पावनु है मेरी जिंदुड़ीए जो जाइ लगै गुर पैरे राम ॥ (५४०-३, बिहागड़ा, मः ४)
गुर विटहु नानकु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि हरि हरि नामु चितेरे राम ॥२॥ (५४०-४, बिहागड़ा, मः ४)
ते नेत्र भले परवाणु हहि मेरी जिंदुड़ीए जो साधू सतिगुरु देखहि राम ॥ (५४०-४, बिहागड़ा, मः ४)
ते हसत पुनीत पवित्र हहि मेरी जिंदुड़ीए जो हरि जसु हरि हरि लेखहि राम ॥ (५४०-५, बिहागड़ा, मः ४)
तिसु जन के पग नित पूजीअहि मेरी जिंदुड़ीए जो मारगि धर्म चलेसहि राम ॥ (५४०-६, बिहागड़ा, मः ४)
नानकु तिन विटहु वारिआ मेरी जिंदुड़ीए हरि सुणि हरि नामु मनेसहि राम ॥३॥ (५४०-७, बिहागड़ा, मः ४)
धरति पातालु आकासु है मेरी जिंदुड़ीए सभ हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ (५४०-८, बिहागड़ा, मः ४)
पउणु पाणी बैसंतरो मेरी जिंदुड़ीए नित हरि हरि हरि जसु गावै राम ॥ (५४०-८, बिहागड़ा, मः ४)
वणु तृणु सभु आकारु है मेरी जिंदुड़ीए मुखि हरि हरि नामु धिआवै राम ॥ (५४०-६, बिहागड़ा, मः ४)
नानक ते हरि दरि पैन्हाइआ मेरी जिंदुड़ीए जो गुरमुखि भगति मनु लावै राम ॥४॥४॥ (५४०-१०, बिहागड़ा, मः ४)
बिहागड़ा महला ४ ॥ (५४०-११)
जिन हरि हरि नामु न चेतिओ मेरी जिंदुड़ीए ते मनमुख मूड़ इआणे राम ॥ (५४०-११, बिहागड़ा, मः ४)
जो मोहि माइआ चितु लाइदे मेरी जिंदुड़ीए से अंति गए पछुताणे राम ॥ (५४०-१२, बिहागड़ा, मः ४)
हरि दरगह ढोई ना लहन्हि मेरी जिंदुड़ीए जो मनमुख पापि लुभाणे राम ॥ (५४०-१३, बिहागड़ा, मः ४)
जन नानक गुर मिलि उबरे मेरी जिंदुड़ीए हरि जपि हरि नामि समाणे राम ॥१॥ (५४०-१३, बिहागड़ा, मः ४)
सभि जाइ मिलहु सतिगुरू कउ मेरी जिंदुड़ीए जो हरि हरि नामु दृड़ावै राम ॥ (५४०-१४, बिहागड़ा, मः ४)
हरि जपदिआ खिनु ढिल न कीजई मेरी जिंदुड़ीए मतु कि जापै साहु आवै कि न आवै राम ॥ (५४०-१५, बिहागड़ा, मः ४)
सा वेला सो मूरतु सा घड़ी सो मुहतु सफलु है मेरी जिंदुड़ीए जितु हरि मेरा चिति आवै राम ॥ (५४०-१६, बिहागड़ा, मः ४)
जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए जमकंकरु नेड़ि न आवै राम ॥२॥ (५४०-१७, बिहागड़ा, मः ४)
हरि वेखै सुणै नित सभु किछु मेरी जिंदुड़ीए सो डरै जिनि पाप कमते राम ॥ (५४०-१८, बिहागड़ा, मः ४)
जिसु अंतरु हिरदा सुधु है मेरी जिंदुड़ीए तिनि जनि सभि डर सुटि घते राम ॥ (५४०-१६, बिहागड़ा, मः ४)
हरि निरभउ नामि पतीजिआ मेरी जिंदुड़ीए सभि झख मारनु दुसट कुपते राम ॥ (५४०-१६, बिहागड़ा, मः ४)

पन्ना ५४१

गुरु पूरा नानकि सेविआ मेरी जिंदुड़ीए जिनि पैरी आणि सभि घते राम ॥३॥ (५४१-१, बिहागड़ा, मः ४)
सो ऐसा हरि नित सेवीऐ मेरी जिंदुड़ीए जो सभ दू साहिबु वडा राम ॥ (५४१-२, बिहागड़ा, मः ४)
जिन्ही इक मनि इकु अराधिआ मेरी जिंदुड़ीए तिना नाही किसै दी किछु चडा राम ॥ (५४१-३, बिहागड़ा, मः ४)
गुर सेविऐ हरि महलु पाइआ मेरी जिंदुड़ीए झख मारनु सभि निंदक घंडा राम ॥ (५४१-४, बिहागड़ा, मः ४)
जन नानक नामु धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए धुरि मसतकि हरि लिखि छडा राम ॥४॥५॥ (५४१-४, बिहागड़ा, मः ४)
बिहागड़ा महला ४ ॥ (५४१-५)
सभि जीअ तेरे तूं वरतदा मेरे हरि प्रभ तूं जाणहि जो जीइ कमाईऐ राम ॥ (५४१-६, बिहागड़ा, मः ४)
हरि अंतरि बाहरि नालि है मेरी जिंदुड़ीए सभ वेखै मनि मुकराईऐ राम ॥ (५४१-६, बिहागड़ा, मः ४)
मनमुखा नो हरि दूरि है मेरी जिंदुड़ीए सभ बिरथी घाल गवाईऐ राम ॥ (५४१-७, बिहागड़ा, मः ४)
जन नानक गुरमुखि धिआइआ मेरी जिंदुड़ीए हरि हाजरु नदरी आईऐ राम ॥१॥ (५४१-८, बिहागड़ा, मः ४)
से भगत से सेवक मेरी जिंदुड़ीए जो प्रभ मेरे मनि भाणे राम ॥ (५४१-९, बिहागड़ा, मः ४)
से हरि दरगह पैनाइआ मेरी जिंदुड़ीए अहिनिसि साचि समाणे राम ॥ (५४१-९, बिहागड़ा, मः ४)
तिन कै संगि मलु उतरै मेरी जिंदुड़ीए रंगि राते नदरि नीसाणे राम ॥ (५४१-१०, बिहागड़ा, मः ४)
नानक की प्रभ बेनती मेरी जिंदुड़ीए मिलि साधू संगि अघाणे राम ॥२॥ (५४१-११, बिहागड़ा, मः ४)
हे रसना जपि गोबिंदो मेरी जिंदुड़ीए जपि हरि हरि तृसना जाए राम ॥ (५४१-११, बिहागड़ा, मः ४)
जिसु दइआ करे मेरा पारब्रह्मु मेरी जिंदुड़ीए तिसु मनि नामु वसाए राम ॥ (५४१-१२, बिहागड़ा, मः ४)
जिसु भेटे पूरा सतिगुरू मेरी जिंदुड़ीए सो हरि धनु निधि पाए राम ॥ (५४१-१३, बिहागड़ा, मः ४)
वडभागी संगति मिलै मेरी जिंदुड़ीए नानक हरि गुण गाए राम ॥३॥ (५४१-१४, बिहागड़ा, मः ४)
थान थनंतरि रवि रहिआ मेरी जिंदुड़ीए पारब्रह्मु प्रभु दाता राम ॥ (५४१-१४, बिहागड़ा, मः ४)
ता का अंतु न पाईऐ मेरी जिंदुड़ीए पूरन पुरखु बिधाता राम ॥ (५४१-१५, बिहागड़ा, मः ४)
सर्ब जीआ प्रतिपालदा मेरी जिंदुड़ीए जिउ बालक पित माता राम ॥ (५४१-१६, बिहागड़ा, मः ४)
सहस सिआणप नह मिलै मेरी जिंदुड़ीए जन नानक गुरमुखि जाता राम ॥४॥६॥ (५४१-१६, बिहागड़ा, मः ४)
छका १ ॥ (५४१-१७)
बिहागड़ा महला ५ छंत घरु १ (५४१-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५४१-१८)
हरि का एकु अचम्भउ देखिआ मेरे लाल जीउ जो करे सु धर्म निआए राम ॥ (५४१-१९, बिहागड़ा, मः ५)
हरि रंगु अखाड़ा पाइओनु मेरे लाल जीउ आवणु जाणु सबाए राम ॥ (५४१-१९, बिहागड़ा, मः ५)

पन्ना ५४२

आवणु त जाणा तिनहि कीआ जिनि मेदनि सिरजीआ ॥ (५४२-१, बिहागड़ा, मः ५)
इकना मेलि सतिगुरु महलि बुलाए इकि भरमि भूले फिरदिआ ॥ (५४२-२, बिहागड़ा, मः ५)
अंतु तेरा तूंहै जाणहि तूं सभ महि रहिआ समाए ॥ (५४२-२, बिहागड़ा, मः ५)

सचु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि वरतै धर्म निआए ॥१॥ (५४२-३, बिहागड़ा, मः ५)
आवहु मिलहु सहेलीहो मेरे लाल जीउ हरि हरि नामु अराधे राम ॥ (५४२-३, बिहागड़ा, मः ५)
करि सेवहु पूरा सतिगुरू मेरे लाल जीउ जम का मारगु साधे राम ॥ (५४२-४, बिहागड़ा, मः ५)
मारगु बिखड़ा साधि गुरमुखि हरि दरगह सोभा पाईऐ ॥ (५४२-५, बिहागड़ा, मः ५)
जिन कउ बिधातै धुरहु लिखिआ तिन्ा रैणि दिनु लिव लाईऐ ॥ (५४२-५, बिहागड़ा, मः ५)
हउमै ममता मोहु छुटा जा संगि मिलिआ साधे ॥ (५४२-६, बिहागड़ा, मः ५)
जनु कहै नानकु मुकतु होआ हरि हरि नामु अराधे ॥२॥ (५४२-६, बिहागड़ा, मः ५)
कर जोड़िहु संत इकत्र होइ मेरे लाल जीउ अबिनासी पुरखु पूजेहा राम ॥ (५४२-७, बिहागड़ा, मः ५)
बहु बिधि पूजा खोजीआ मेरे लाल जीउ इहु मनु तनु सभु अरपेहा राम ॥ (५४२-८, बिहागड़ा, मः ५)
मनु तनु धनु सभु प्रभू केरा किआ को पूज चड़ावए ॥ (५४२-८, बिहागड़ा, मः ५)
जिसु होइ कृपालु दइआलु सुआमी सो प्रभ अंकि समावए ॥ (५४२-९, बिहागड़ा, मः ५)
भागु मसतकि होइ जिस कै तिसु गुर नालि सनेहा ॥ (५४२-१०, बिहागड़ा, मः ५)
जनु कहै नानकु मिलि साधसंगति हरि हरि नामु पूजेहा ॥३॥ (५४२-१०, बिहागड़ा, मः ५)
दह दिस खोजत हम फिरे मेरे लाल जीउ हरि पाइअड़ा घरि आए राम ॥ (५४२-११, बिहागड़ा, मः ५)
हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ मेरे लाल जीउ हरि तिसु महि रहिआ समाए राम ॥ (५४२-११, बिहागड़ा, मः ५)
सरबे समाणा आपि सुआमी गुरमुखि परगटु होइआ ॥ (५४२-१२, बिहागड़ा, मः ५)
मिटिआ अधेरा दूखु नाठा अमिउ हरि रसु चोइआ ॥ (५४२-१३, बिहागड़ा, मः ५)
जहा देखा तहा सुआमी पारब्रह्मु सभ ठाए ॥ (५४२-१३, बिहागड़ा, मः ५)
जनु कहै नानकु सतिगुरि मिलाइआ हरि पाइअड़ा घरि आए ॥४॥१॥ (५४२-१४, बिहागड़ा, मः ५)
रागु बिहागड़ा महला ५ ॥ (५४२-१५)
अति प्रीतम मन मोहना घट सोहना प्रान अधारा राम ॥ (५४२-१५, बिहागड़ा, मः ५)
सुंदर सोभा लाल गोपाल दइआल की अपर अपारा राम ॥ (५४२-१५, बिहागड़ा, मः ५)
गोपाल दइआल गोबिंद लालन मिलहु कंत निमाणीआ ॥ (५४२-१६, बिहागड़ा, मः ५)
नैन तरसन दरस परसन नह नीद रैणि विहाणीआ ॥ (५४२-१७, बिहागड़ा, मः ५)
गिआन अंजन नाम बिंजन भए सगल सीगारा ॥ (५४२-१७, बिहागड़ा, मः ५)
नानकु पइअम्पै संत जम्पै मेलि कंतु हमारा ॥१॥ (५४२-१८, बिहागड़ा, मः ५)
लाख उलाहने मोहि हरि जब लगु नह मिलै राम ॥ (५४२-१८, बिहागड़ा, मः ५)
मिलन कउ करउ उपाव किछु हमारा नह चलै राम ॥ (५४२-१९, बिहागड़ा, मः ५)
चल चित बित अनित पृअ बिनु कवन बिधी न धीजीऐ ॥ (५४२-१९, बिहागड़ा, मः ५)

पन्ना ५४३

खान पान सीगार बिरथे हरि कंत बिनु किउ जीजीऐ ॥ (५४३-१, बिहागड़ा, मः ५)
आसा पिआसी रैनि दिनीअरु रहि न सकीऐ इकु तिलै ॥ (५४३-१, बिहागड़ा, मः ५)
नानकु पइअम्पै संत दासी तउ प्रसादि मेरा पिरु मिलै ॥२॥ (५४३-२, बिहागड़ा, मः ५)
सेज एक पृउ संगि दरसु न पाईऐ राम ॥ (५४३-२, बिहागड़ा, मः ५)

अवगन मोहि अनेक कत महलि बुलाईऐ राम ॥ (५४३-३, बिहागड़ा, मः ५)
निरगुनि निमाणी अनाथि बिनवै मिलहु प्रभ किरपा निधे ॥ (५४३-३, बिहागड़ा, मः ५)
भ्रम भीति खोईऐ सहजि सोईऐ प्रभ पलक पेखत नव निधे ॥ (५४३-४, बिहागड़ा, मः ५)
गृहि लालु आवै महलु पावै मिलि संगि मंगलु गाईऐ ॥ (५४३-५, बिहागड़ा, मः ५)
नानकु पइअम्पै संत सरणी मोहि दरसु दिखाईऐ ॥३॥ (५४३-५, बिहागड़ा, मः ५)
संतन कै परसादि हरि हरि पाइआ राम ॥ (५४३-६, बिहागड़ा, मः ५)
इछ पुन्नी मनि सांँति तपति बुझाइआ राम ॥ (५४३-६, बिहागड़ा, मः ५)
सफला सु दिनस रैणे सुहावी अनद मंगल रसु घना ॥ (५४३-७, बिहागड़ा, मः ५)
प्रगटे गुपाल गोबिंद लालन कवन रसना गुण भना ॥ (५४३-७, बिहागड़ा, मः ५)
भ्रम लोभ मोह बिकार थाके मिलि सखी मंगलु गाइआ ॥ (५४३-८, बिहागड़ा, मः ५)
नानकु पइअम्पै संत जम्पै जिनि हरि हरि संजोगि मिलाइआ ॥४॥२॥ (५४३-८, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़ा महला ५ ॥ (५४३-९)
करि किरपा गुर पारब्रह्म पूरे अनदिनु नामु वखाणा राम ॥ (५४३-९, बिहागड़ा, मः ५)
अमृत बाणी उचरा हरि जसु मिठा लागै तेरा भाणा राम ॥ (५४३-१०, बिहागड़ा, मः ५)
करि दइआ मइआ गोपाल गोबिंद कोइ नाही तुझ बिना ॥ (५४३-१०, बिहागड़ा, मः ५)
समरथ अगथ अपार पूरन जीउ तनु धनु तुम् मना ॥ (५४३-११, बिहागड़ा, मः ५)
मूरख मुगध अनाथ चंचल बलहीन नीच अजाणा ॥ (५४३-१२, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि तेरी रखि लेहु आवण जाणा ॥१॥ (५४३-१२, बिहागड़ा, मः ५)
साधह सरणी पाईऐ हरि जीउ गुण गावह हरि नीता राम ॥ (५४३-१३, बिहागड़ा, मः ५)
धूरि भगतन की मनि तनि लगउ हरि जीउ सभ पतित पुनीता राम ॥ (५४३-१३, बिहागड़ा, मः ५)
पतिता पुनीता होहि तिन् संगि जिन् बिधाता पाइआ ॥ (५४३-१४, बिहागड़ा, मः ५)
नाम राते जीअ दाते नित देहि चड़हि सवाइआ ॥ (५४३-१५, बिहागड़ा, मः ५)
रिधि सिधि नव निधि हरि जपि जिनी आतमु जीता ॥ (५४३-१५, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानकु वडभागि पाईअहि साध साजन मीता ॥२॥ (५४३-१६, बिहागड़ा, मः ५)
जिनी सचु वणंजिआ हरि जीउ से पूरे साहा राम ॥ (५४३-१६, बिहागड़ा, मः ५)
बहुतु खजाना तिन्न पहि हरि जीउ हरि कीरतनु लाहा राम ॥ (५४३-१७, बिहागड़ा, मः ५)
कामु क्रोधु न लोभु बिआपै जो जन प्रभ सिउ रातिआ ॥ (५४३-१७, बिहागड़ा, मः ५)
एकु जानहि एकु मानहि राम कै रंगि मातिआ ॥ (५४३-१८, बिहागड़ा, मः ५)
लगि संत चरणी पड़े सरणी मनि तिना ओमाहा ॥ (५४३-१८, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानकु जिन नामु पलै सेई सचे साहा ॥३॥ (५४३-१९, बिहागड़ा, मः ५)
नानक सोई सिमरीऐ हरि जीउ जा की कल धारी राम ॥ (५४३-१९, बिहागड़ा, मः ५)

पन्ना ५४४

गुरमुखि मनहु न वीसरै हरि जीउ करता पुरखु मुरारी राम ॥ (५४४-१, बिहागड़ा, मः ५)
दूखु रोगु न भउ बिआपै जिन्ी हरि हरि धिआइआ ॥ (५४४-२, बिहागड़ा, मः ५)

संत प्रसादि तरे भवजलु पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ (५४४-२, बिहागड़ा, मः ५)
वजी वधाई मनि साँति आई मिलिआ पुरखु अपारी ॥ (५४४-३, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानकु सिमरि हरि हरि इछ पुन्नी हमारी ॥४॥३॥ (५४४-३, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़ा महला ५ घरु २ (५४४-५)
ੴ सति नामु गुर प्रसादि ॥ (५४४-५)
वधु सुखु रैनड़ीए पृअ प्रेमु लगा ॥ (५४४-६, बिहागड़ा, मः ५)
घटु दुख नीदड़ीए परसउ सदा पगा ॥ (५४४-६, बिहागड़ा, मः ५)
पग धूरि बाँछउ सदा जाचउ नाम रसि बैरागनी ॥ (५४४-६, बिहागड़ा, मः ५)
पृअ रंगि राती सहज माती महा दुरमति तिआगनी ॥ (५४४-७, बिहागड़ा, मः ५)
गहि भुजा लीन्ी प्रेम भीनी मिलनु प्रीतम सच मगा ॥ (५४४-७, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक धारि किरपा रहउ चरणह संगि लगा ॥१॥ (५४४-८, बिहागड़ा, मः ५)
मेरी सखी सहेलड़ीहो प्रभ कै चरणि लगह ॥ (५४४-९, बिहागड़ा, मः ५)
मनि पृअ प्रेमु घणा हरि की भगति मंगह ॥ (५४४-९, बिहागड़ा, मः ५)
हरि भगति पाईऐ प्रभु धिआईऐ जाइ मिलीऐ हरि जना ॥ (५४४-९, बिहागड़ा, मः ५)
मानु मोहु बिकारु तजीऐ अरपि तनु धनु इहु मना ॥ (५४४-१०, बिहागड़ा, मः ५)
बड पुरख पूरन गुण सम्पूरन भ्रम भीति हरि हरि मिलि भगह ॥ (५४४-११, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक सुणि मंत्रु सखीए हरि नामु नित नित नित जपह ॥२॥ (५४४-११, बिहागड़ा, मः ५)
हरि नारि सुहागणे सभि रंग माणे ॥ (५४४-१२, बिहागड़ा, मः ५)
रॉंड न बैसई प्रभ पुरख चिराणे ॥ (५४४-१२, बिहागड़ा, मः ५)
नह दूख पावै प्रभ धिआवै धंनि ते बडभागीआ ॥ (५४४-१३, बिहागड़ा, मः ५)
सुख सहजि सोवहि किलबिख खोवहि नाम रसि रंगि जागीआ ॥ (५४४-१३, बिहागड़ा, मः ५)
मिलि प्रेम रहणा हरि नामु गहणा पृअ बचन मीठे भाणे ॥ (५४४-१४, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक मन इछ पाई हरि मिले पुरख चिराणे ॥३॥ (५४४-१५, बिहागड़ा, मः ५)
तितु गृहि सोहिलड़े कोड अनंदा ॥ (५४४-१५, बिहागड़ा, मः ५)
मनि तनि रवि रहिआ प्रभ परमानंदा ॥ (५४४-१६, बिहागड़ा, मः ५)
हरि कंत अनंत दइआल स्रीधर गोबिंद पतित उधारणो ॥ (५४४-१६, बिहागड़ा, मः ५)
प्रभि कृपा धारी हरि मुरारी भै सिंधु सागर तारणो ॥ (५४४-१७, बिहागड़ा, मः ५)
जो सरणि आवै तिसु कंठि लावै इहु बिरदु सुआमी संदा ॥ (५४४-१७, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक हरि कंतु मिलिआ सदा केल करंदा ॥४॥१॥४॥ (५४४-१८, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़ा महला ५ ॥ (५४४-१९)
हरि चरण सरोवर तह करहु निवासु मना ॥ (५४४-१९, बिहागड़ा, मः ५)

पन्ना ५४५

करि मजनु हरि सरे सभि किलबिख नासु मना ॥ (५४५-१, बिहागड़ा, मः ५)
करि सदा मजनु गोबिंद सजनु दुख अंधेरा नासे ॥ (५४५-१, बिहागड़ा, मः ५)

जनम मरणु न होइ तिस कउ कटै जम के फासे ॥ (५४५-२, बिहागड़ा, मः ५)
मिलु साधसंगे नाम रंगे तहा पूरन आसो ॥ (५४५-२, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक धारि किरपा हरि चरण कमल निवासो ॥१॥ (५४५-२, बिहागड़ा, मः ५)
तह अनद बिनोद सदा अनहद झुणकारो राम ॥ (५४५-३, बिहागड़ा, मः ५)
मिलि गावहि संत जना प्रभ का जैकारो राम ॥ (५४५-४, बिहागड़ा, मः ५)
मिलि संत गावहि खसम भावहि हरि प्रेम रस रंगि भिन्नीआ ॥ (५४५-४, बिहागड़ा, मः ५)
हरि लाभु पाइआ आपु मिटाइआ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (५४५-५, बिहागड़ा, मः ५)
गहि भुजा लीने दइआ कीन्हे प्रभ एक अगम अपारो ॥ (५४५-५, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक सदा निर्मल सचु सबदु रुण झुणकारो ॥२॥ (५४५-६, बिहागड़ा, मः ५)
सुणि वडभागीआ हरि अमृत बाणी राम ॥ (५४५-६, बिहागड़ा, मः ५)
जिन कउ करमि लिखी तिसु रिदै समाणी राम ॥ (५४५-७, बिहागड़ा, मः ५)
अकथ कहाणी तिनी जाणी जिसु आपि प्रभु किरपा करे ॥ (५४५-७, बिहागड़ा, मः ५)
अमरु थीआ फिरि न मूआ कलि कलेसा दुख हरे ॥ (५४५-८, बिहागड़ा, मः ५)
हरि सरणि पाई तजि न जाई प्रभ प्रीति मनि तनि भाणी ॥ (५४५-८, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक सदा गाईऐ पवित्र अमृत बाणी ॥३॥ (५४५-९, बिहागड़ा, मः ५)
मन तन गलतु भए किछु कहणु न जाई राम ॥ (५४५-१०, बिहागड़ा, मः ५)
जिस ते उपजिअड़ा तिनि लीआ समाई राम ॥ (५४५-१०, बिहागड़ा, मः ५)
मिलि ब्रह्म जोती ओति पोती उदकु उदकि समाइआ ॥ (५४५-११, बिहागड़ा, मः ५)
जलि थलि महीअलि एकु रविआ नह दूजा दृसटाइआ ॥ (५४५-११, बिहागड़ा, मः ५)
बणि तृणि तृभवणि पूरि पूरन कीमति कहणु न जाई ॥ (५४५-१२, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक आपि जाणै जिनि एह बणत बणाई ॥४॥२॥५॥ (५४५-१२, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़ा महला ५ ॥ (५४५-१३)
खोजत संत फिरहि प्रभ प्राण अधारे राम ॥ (५४५-१३, बिहागड़ा, मः ५)
ताणु तनु खीन भइआ बिनु मिलत पिआरे राम ॥ (५४५-१४, बिहागड़ा, मः ५)
प्रभ मिलहु पिआरे मइआ धारे करि दइआ लड़ि लाइ लीजीऐ ॥ (५४५-१४, बिहागड़ा, मः ५)
देहि नामु अपना जपउ सुआमी हरि दरस पेखे जीजीऐ ॥ (५४५-१५, बिहागड़ा, मः ५)
समरथ पूरन सदा निहचल ऊच अगम अपारे ॥ (५४५-१६, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक धारि किरपा मिलहु प्रान पिआरे ॥१॥ (५४५-१६, बिहागड़ा, मः ५)
जप तप बरत कीने पेखन कउ चरणा राम ॥ (५४५-१७, बिहागड़ा, मः ५)
तपति न कतहि बुझै बिनु सुआमी सरणा राम ॥ (५४५-१७, बिहागड़ा, मः ५)
प्रभ सरणि तेरी काटि बेरी संसारु सागरु तारीऐ ॥ (५४५-१८, बिहागड़ा, मः ५)
अनाथ निरगुनि कछु न जाना मेरा गुणु अउगणु न बीचारीऐ ॥ (५४५-१८, बिहागड़ा, मः ५)
दीन दइआल गोपाल प्रीतम समरथ कारण करणा ॥ (५४५-१९, बिहागड़ा, मः ५)
नानक चातृक हरि बूंद मागै जपि जीवा हरि हरि चरणा ॥२॥ (५४५-१९, बिहागड़ा, मः ५)

अमिअ सरोवरो पीउ हरि हरि नामा राम ॥ (५४६-१, बिहागड़ा, मः ५)
संतह संगि मिलै जपि पूरन कामा राम ॥ (५४६-१, बिहागड़ा, मः ५)
सभ काम पूरन दुख बिदीरन हरि निमख मनहु न बीसरै ॥ (५४६-२, बिहागड़ा, मः ५)
आनंद अनदिनु सदा साचा सर्ब गुण जगदीसरै ॥ (५४६-२, बिहागड़ा, मः ५)
अगणत ऊच अपार ठाकुर अगम जा को धामा ॥ (५४६-३, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक मेरी इछ पूरन मिले स्रीरंग रामा ॥३॥ (५४६-४, बिहागड़ा, मः ५)
कई कोटिक जग फला सुणि गावनहारे राम ॥ (५४६-४, बिहागड़ा, मः ५)
हरि हरि नामु जपत कुल सगले तारे राम ॥ (५४६-५, बिहागड़ा, मः ५)
हरि नामु जपत सोहंत प्राणी ता की महिमा कित गना ॥ (५४६-५, बिहागड़ा, मः ५)
हरि बिसरु नाही प्रान पिआरे चितवंति दरसनु सद मना ॥ (५४६-६, बिहागड़ा, मः ५)
सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए प्रभ ऊच अगम अपारे ॥ (५४६-६, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक सफलु सभु किछु प्रभ मिले अति पिआरे ॥४॥३॥६॥ (५४६-७, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ (५४६-८)
अन काए रातड़िआ वाट दुहेली राम ॥ (५४६-८, बिहागड़ा, मः ५)
पाप कमावदिआ तेरा कोइ न बेली राम ॥ (५४६-८, बिहागड़ा, मः ५)
कोए न बेली होइ तेरा सदा पछोतावहे ॥ (५४६-९, बिहागड़ा, मः ५)
गुन गुपाल न जपहि रसना फिरि कदहु से दिह आवहे ॥ (५४६-९, बिहागड़ा, मः ५)
तरवर विछुन्ने नह पात जुड़ते जम मगि गउनु इकेली ॥ (५४६-१०, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंत नानक बिनु नाम हरि के सदा फिरत दुहेली ॥१॥ (५४६-१०, बिहागड़ा, मः ५)
तूं वलवंच लूकि करहि सभ जाणै जाणी राम ॥ (५४६-११, बिहागड़ा, मः ५)
लेखा धर्म भइआ तिल पीड़े घाणी राम ॥ (५४६-११, बिहागड़ा, मः ५)
किरत कमाणे दुख सहु पराणी अनिक जोनि भ्रमाइआ ॥ (५४६-१२, बिहागड़ा, मः ५)
महा मोहनी संगि राता रतन जनमु गवाइआ ॥ (५४६-१२, बिहागड़ा, मः ५)
इकसु हरि के नाम बाझहु आन काज सिआणी ॥ (५४६-१३, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंत नानक लेखु लिखिआ भरमि मोहि लुभाणी ॥२॥ (५४६-१३, बिहागड़ा, मः ५)
बीचु न कोइ करे अकृतघणु विछुड़ि पइआ ॥ (५४६-१४, बिहागड़ा, मः ५)
आए खरे कठिन जमकंकरि पकड़ि लइआ ॥ (५४६-१४, बिहागड़ा, मः ५)
पकड़े चलाइआ अपणा कमाइआ महा मोहनी रातिआ ॥ (५४६-१५, बिहागड़ा, मः ५)
गुन गोविंद गुरमुखि न जपिआ तपत थम्म्ह गलि लातिआ ॥ (५४६-१५, बिहागड़ा, मः ५)
काम क्रोधि अहंकारि मूठा खोइ गिआनु पछुतापिआ ॥ (५४६-१६, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंत नानक संजोगि भूला हरि जापु रसन न जापिआ ॥३॥ (५४६-१७, बिहागड़ा, मः ५)
तुझ बिनु को नाही प्रभ राखनहारा राम ॥ (५४६-१७, बिहागड़ा, मः ५)
पतित उधारण हरि बिरदु तुमारा राम ॥ (५४६-१८, बिहागड़ा, मः ५)

पतित उधारन सरनि सुआमी क्रिपा निधि दइआला ॥ (५४६-१८, बिहागड़ा, मः ५)
अंध कूप ते उधरु करते सगल घट प्रतिपाला ॥ (५४६-१९, बिहागड़ा, मः ५)
सरनि तेरी कटि महा बेड़ी इकु नामु देहि अधारा ॥ (५४६-१९, बिहागड़ा, मः ५)

पन्ना ५४७

बिनवंत नानक कर देइ राखहु गोबिंद दीन दइआरा ॥४॥ (५४७-१, बिहागड़ा, मः ५)
सो दिनु सफलु गणिआ हरि प्रभू मिलाइआ राम ॥ (५४७-१, बिहागड़ा, मः ५)
सभि सुख परगटिआ दुख दूरि पराइआ राम ॥ (५४७-२, बिहागड़ा, मः ५)
सुख सहज अनद बिनोद सद ही गुन गुपाल नित गाईऐ ॥ (५४७-२, बिहागड़ा, मः ५)
भजु साधसंगे मिले रंगे बहुड़ि जोनि न धाईऐ ॥ (५४७-३, बिहागड़ा, मः ५)
गहि कंठि लाए सहजि सुभाए आदि अंकुरु आइआ ॥ (५४७-३, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंत नानक आपि मिलिआ बहुड़ि कतहू न जाइआ ॥५॥४॥७॥ (५४७-४, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ (५४७-५)
सुनहु बेनंतीआ सुआमी मेरे राम ॥ (५४७-५, बिहागड़ा, मः ५)
कोटि अप्राध भरे भी तेरे चेरे राम ॥ (५४७-५, बिहागड़ा, मः ५)
दुख हरन किरपा करन मोहन कलि कलेसह भंजना ॥ (५४७-६, बिहागड़ा, मः ५)
सरनि तेरी रखि लेहु मेरी सरब मै निरंजना ॥ (५४७-६, बिहागड़ा, मः ५)
सुनत पेखत संगि सभ कै प्रभ नेरहू ते नेरे ॥ (५४७-७, बिहागड़ा, मः ५)
अरदासि नानक सुनि सुआमी रखि लेहु घर के चेरे ॥१॥ (५४७-७, बिहागड़ा, मः ५)
तू समरथु सदा हम दीन भेखारी राम ॥ (५४७-८, बिहागड़ा, मः ५)
माइआ मोहि मगनु कढि लेहु मुरारी राम ॥ (५४७-८, बिहागड़ा, मः ५)
लोभि मोहि बिकारि बाधिओ अनिक दोख कमावने ॥ (५४७-८, बिहागड़ा, मः ५)
अलिपत बंधन रहत करता कीआ अपना पावने ॥ (५४७-९, बिहागड़ा, मः ५)
करि अनुग्रहु पतित पावन बहु जोनि भ्रमते हारी ॥ (५४७-९, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक दासु हरि का प्रभ जीअ प्रान अधारी ॥२॥ (५४७-१०, बिहागड़ा, मः ५)
तू समरथु वडा मेरी मति थोरी राम ॥ (५४७-१०, बिहागड़ा, मः ५)
पालहि अकिरतघना पूरन द्रिसटि तेरी राम ॥ (५४७-११, बिहागड़ा, मः ५)
अगाधि बोधि अपार करते मोहि नीचु कछू न जाना ॥ (५४७-११, बिहागड़ा, मः ५)
रतनु तिआगि संग्रहन कउडी पसू नीचु इआना ॥ (५४७-१२, बिहागड़ा, मः ५)
तिआगि चलती महा चंचलि दोख करि करि जोरी ॥ (५४७-१२, बिहागड़ा, मः ५)
नानक सरनि समरथ सुआमी पैज राखहु मोरी ॥३॥ (५४७-१३, बिहागड़ा, मः ५)
जा ते वीछुड़िआ तिनि आपि मिलाइआ राम ॥ (५४७-१३, बिहागड़ा, मः ५)
साधू संगमे हरि गुण गाइआ राम ॥ (५४७-१४, बिहागड़ा, मः ५)
गुण गाइ गोविद सदा नीके कलिआण मै परगट भए ॥ (५४७-१४, बिहागड़ा, मः ५)
सेजा सुहावी संगि प्रभ कै आपणे प्रभ करि लए ॥ (५४७-१५, बिहागड़ा, मः ५)

छोडि चिंत अचिंत होए बहुड़ि दूखु न पाइआ ॥ (५४७-१५, बिहागड़ा, मः ५)
नानक दरसनु पेखि जीवे गोविंद गुण निधि गाइआ ॥४॥५॥८॥ (५४७-१६, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़ा महला ५ छंत ॥ (५४७-१७)
बोलि सुधरमीड़िआ मोनि कत धारी राम ॥ (५४७-१७, बिहागड़ा, मः ५)
तू नेत्री देखि चलिआ माइआ बिउहारी राम ॥ (५४७-१७, बिहागड़ा, मः ५)
संगि तेरै कछु न चालै बिना गोबिंद नामा ॥ (५४७-१८, बिहागड़ा, मः ५)
देस वेस सुवरन रूपा सगल ऊणे कामा ॥ (५४७-१८, बिहागड़ा, मः ५)
पुत्र कलत्र न संगि सोभा हसत घोरि विकारी ॥ (५४७-१९, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंत नानक बिनु साधसंगम सभ मिथिआ संसारी ॥१॥ (५४७-१९, बिहागड़ा, मः ५)

पन्ना ५४८

राजन किउ सोइआ तू नीद भरे जागत कत नाही राम ॥ (५४८-१, बिहागड़ा, मः ५)
माइआ झूठु रुदनु केते बिललाही राम ॥ (५४८-१, बिहागड़ा, मः ५)
बिललाहि केते महा मोहन बिनु नाम हरि के सुखु नही ॥ (५४८-२, बिहागड़ा, मः ५)
सहस सिआणप उपाव थाके जह भावत तह जाही ॥ (५४८-२, बिहागड़ा, मः ५)
आदि अंते मधि पूरन सरबत्र घटि घटि आही ॥ (५४८-३, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंत नानक जिन साधसंगमु से पति सेती घरि जाही ॥२॥ (५४८-३, बिहागड़ा, मः ५)
नरपति जाणि ग्रहिओ सेवक सिआणे राम ॥ (५४८-४, बिहागड़ा, मः ५)
सरपर वीछुड़णा मोहे पछुताणे राम ॥ (५४८-४, बिहागड़ा, मः ५)
हरिचंदउरी देखि भूला कहा असथिति पाईऐ ॥ (५४८-५, बिहागड़ा, मः ५)
बिनु नाम हरि के आन रचना अहिला जनमु गवाईऐ ॥ (५४८-५, बिहागड़ा, मः ५)
हउ हउ करत न तृसन बूझै नह काँम पूरन गिआने ॥ (५४८-६, बिहागड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक बिनु नाम हरि के केतिआ पछुताने ॥३॥ (५४८-७, बिहागड़ा, मः ५)
धारि अनुग्रहो अपना करि लीना राम ॥ (५४८-७, बिहागड़ा, मः ५)
भुजा गहि काढि लीओ साधू संगु दीना राम ॥ (५४८-८, बिहागड़ा, मः ५)
साधसंगमि हरि अराधे सगल कलमल दुख जले ॥ (५४८-८, बिहागड़ा, मः ५)
महा धर्म सुदान किरिआ संगि तेरै से चले ॥ (५४८-९, बिहागड़ा, मः ५)
रसना अराधै एकु सुआमी हरि नामि मनु तनु भीना ॥ (५४८-९, बिहागड़ा, मः ५)
नानक जिस नो हरि मिलाए सो सर्ब गुण परबीना ॥४॥६॥९॥ (५४८-१०, बिहागड़ा, मः ५)
बिहागड़े की वार महला ४ (५४८-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५४८-११)
सलोक मः ३ ॥ (५४८-१२)
गुर सेवा ते सुखु पाईऐ होर थै सुखु न भालि ॥ (५४८-१२, बिहागड़ा, मः ३)
गुर कै सबदि मनु भेदीऐ सदा वसै हरि नालि ॥ (५४८-१२, बिहागड़ा, मः ३)
नानक नामु तिना कउ मिलै जिन हरि वेखै नदरि निहालि ॥१॥ (५४८-१३, बिहागड़ा, मः ३)

मः ३ ॥ (५४८-१३)
सिफति खजाना बखस है जिसु बखसै सो खरचै खाइ ॥ (५४८-१३, बिहागड़ा, मः ३)
सतिगुर बिनु हथि न आवई सभ थके कर्म कमाइ ॥ (५४८-१४, बिहागड़ा, मः ३)
नानक मनमुखु जगतु धनहीणु है अगै भुखा कि खाइ ॥२॥ (५४८-१५, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५४८-१५)
सभ तेरी तू सभस दा सभ तुधु उपाइआ ॥ (५४८-१५, बिहागड़ा, मः ३)
सभना विचि तू वरतदा तू सभनी धिआइआ ॥ (५४८-१६, बिहागड़ा, मः ३)
तिस दी तू भगति थाइ पाइहि जो तुधु मनि भाइआ ॥ (५४८-१६, बिहागड़ा, मः ३)
जो हरि प्रभ भावै सो थीऐ सभि करनि तेरा कराइआ ॥ (५४८-१७, बिहागड़ा, मः ३)
सलाहिहु हरि सभना ते वडा जो संत जनाँ की पैज रखदा आइआ ॥१॥ (५४८-१७, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५४८-१८)
नानक गिआनी जगु जीता जगि जीता सभु कोइ ॥ (५४८-१८, बिहागड़ा, मः ३)
नामे कारज सिधि है सहजे होइ सु होइ ॥ (५४८-१९, बिहागड़ा, मः ३)
गुरमति मति अचलु है चलाइ न सकै कोइ ॥ (५४८-१९, बिहागड़ा, मः ३)
भगता का हरि अंगीकारु करे कारजु सुहावा होइ ॥ (५४८-१९, बिहागड़ा, मः ३)

पन्ना ५४९

मनमुख मूलहु भुलाइअनु विचि लबु लोभु अहंकारु ॥ (५४९-१, बिहागड़ा, मः ३)
झगड़ा करदिआ अनदिनु गुदरै सबदि न करै वीचारु ॥ (५४९-२, बिहागड़ा, मः ३)
सुधि मति करतै हिरि लई बोलनि सभु विकारु ॥ (५४९-२, बिहागड़ा, मः ३)
दितै कितै न संतोखीअनि अंतरि तृसना बहुतु अग्यानु अंधारु ॥ (५४९-३, बिहागड़ा, मः ३)
नानक मनमुखा नालहु तुटीआ भली जिना माइआ मोहि पिआरु ॥१॥ (५४९-३, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५४९-४)
तिन्ह भउ संसा किआ करे जिन सतिगुरु सिरि करतारु ॥ (५४९-४, बिहागड़ा, मः ३)
धुरि तिन की पैज रखदा आपे रखणहारु ॥ (५४९-५, बिहागड़ा, मः ३)
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ (५४९-५, बिहागड़ा, मः ३)
नानक सुखदाता सेविआ आपे परखणहारु ॥२॥ (५४९-६, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५४९-६)
जीअ जंत सभि तेरिआ तू सभना रासि ॥ (५४९-६, बिहागड़ा, मः ३)
जिस नो तू देहि तिसु सभु किछु मिलै कोई होरु सरीकु नाही तुधु पासि ॥ (५४९-७, बिहागड़ा, मः ३)
तू इको दाता सभस दा हरि पहि अरदासि ॥ (५४९-७, बिहागड़ा, मः ३)
जिस दी तुधु भावै तिस दी तू मंनि लैहि सो जनु साबासि ॥ (५४९-८, बिहागड़ा, मः ३)
सभु तेरा चोजु वरतदा दुखु सुखु तुधु पासि ॥२॥ (५४९-८, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५४९-९)
गुरमुखि सचै भावदे दरि सचै सचिआर ॥ (५४९-९, बिहागड़ा, मः ३)

साजन मनि आनंदु है गुर का सबदु वीचार ॥ (५४९-९, बिहागड़ा, मः ३)
अंतरि सबदु वसाइआ दुखु कटिआ चानणु कीआ करतारि ॥ (५४९-१०, बिहागड़ा, मः ३)
नानक रखणहारा रखसी आपणी किरपा धारि ॥१॥ (५४९-१०, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५४९-११)
गुर की सेवा चाकरी भै रचि कार कमाइ ॥ (५४९-११, बिहागड़ा, मः ३)
जेहा सेवै तेहो होवै जे चलै तिसै रजाइ ॥ (५४९-११, बिहागड़ा, मः ३)
नानक सभु किछु आपि है अवरु न दूजी जाइ ॥२॥ (५४९-१२, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५४९-१२)
तेरी वडिआई तूहै जाणदा तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (५४९-१२, बिहागड़ा, मः ३)
तुधु जेवडु होरु सरीकु होवै ता आखीऐ तुधु जेवडु तूहै होई ॥ (५४९-१३, बिहागड़ा, मः ३)
जिनि तू सेविआ तिनि सुखु पाइआ होरु तिस दी रीस करे किआ कोई ॥ (५४९-१४, बिहागड़ा, मः ३)
तू भन्नण घड़ण समरथु दातारु हहि तुधु अगै मंगण नो हथ जोड़ि खली सभ होई ॥ (५४९-१४, बिहागड़ा, मः ३)
तुधु जेवडु दातारु मै कोई नदरि न आवई तुधु सभसै नो दानु दिता खंडी वरभंडी पाताली पुरई सभ लोई ॥३॥ (५४९-१५, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५४९-१६)
मनि परतीति न आईआ सहजि न लगो भाउ ॥ (५४९-१६, बिहागड़ा, मः ३)
सबदै सादु न पाइओ मनहठि किआ गुण गाइ ॥ (५४९-१७, बिहागड़ा, मः ३)
नानक आइआ सो परवाणु है जि गुरमुखि सचि समाइ ॥१॥ (५४९-१७, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५४९-१८)
आपणा आपु न पछाणै मूड़ा अवरा आखि दुखाए ॥ (५४९-१८, बिहागड़ा, मः ३)
मुंढै दी खसलति न गईआ अंधे विछुड़ि चोटा खाए ॥ (५४९-१९, बिहागड़ा, मः ३)
सतिगुर कै भै भंनि न घड़िओ रहै अंकि समाए ॥ (५४९-१९, बिहागड़ा, मः ३)

पन्ना ५५०

अनदिनु सहसा कदे न चूकै बिनु सबदै दुखु पाए ॥ (५५०-१, बिहागड़ा, मः ३)
कामु क्रोधु लोभु अंतरि सबला नित धंधा करत विहाए ॥ (५५०-१, बिहागड़ा, मः ३)
चरण कर देखत सुणि थके दिह मुके नेड़ै आए ॥ (५५०-२, बिहागड़ा, मः ३)
सचा नामु न लगो मीठा जितु नामि नव निधि पाए ॥ (५५०-२, बिहागड़ा, मः ३)
जीवतु मरै मरै फुनि जीवै ताँ मोखंतरु पाए ॥ (५५०-३, बिहागड़ा, मः ३)
धुरि करमु न पाइओ पराणी विणु करमा किआ पाए ॥ (५५०-३, बिहागड़ा, मः ३)
गुर का सबदु समालि तू मूड़े गति मति सबदे पाए ॥ (५५०-४, बिहागड़ा, मः ३)
नानक सतिगुरु तद ही पाए जाँ विचहु आपु गवाए ॥२॥ (५५०-४, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५०-५)
जिस दै चिति वसिआ मेरा सुआमी तिस नो किउ अंदेसा किसै गलै दा लोड़ीऐ ॥ (५५०-५, बिहागड़ा, मः ३)

हरि सुखदाता सभना गला का तिस नो धिआइदिआ किव निमख घड़ी मुहु मोड़ीऐ ॥ (५५०-६, बिहागड़ा, मः ३)
जिनि हरि धिआइआ तिस नो सर्ब कलिआण होए नित संत जना की संगति जाइ बहीऐ मुहु जोड़ीऐ ॥ (५५०-६, बिहागड़ा, मः ३)
सभि दुख भुख रोग गए हरि सेवक के सभि जन के बंधन तोड़ीऐ ॥ (५५०-७, बिहागड़ा, मः ३)
हरि किरपा ते होआ हरि भगतु हरि भगत जना कै मुहि डिठै जगतु तरिआ सभु लोड़ीऐ ॥४॥ (५५०-८, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५५०-९)
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का सुआउ न पाइआ ॥ (५५०-९, बिहागड़ा, मः ३)
नानक रसना सबदि रसाइ जिनि हरि हरि मंनि वसाइआ ॥१॥ (५५०-१०, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५०-१०)
सा रसना जलि जाउ जिनि हरि का नाउ विसारिआ ॥ (५५०-११, बिहागड़ा, मः ३)
नानक गुरमुखि रसना हरि जपै हरि कै नाइ पिआरिआ ॥२॥ (५५०-११, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५०-१२)
हरि आपे ठाकुरु सेवकु भगतु हरि आपे करे कराए ॥ (५५०-१२, बिहागड़ा, मः ३)
हरि आपे वेखै विगसै आपे जितु भावै तितु लाए ॥ (५५०-१२, बिहागड़ा, मः ३)
हरि इकना मारगि पाए आपे हरि इकना उझड़ि पाए ॥ (५५०-१३, बिहागड़ा, मः ३)
हरि सचा साहिबु सचु तपावसु करि वेखै चलत सबाए ॥ (५५०-१३, बिहागड़ा, मः ३)
गुर परसादि कहै जनु नानकु हरि सचे के गुण गाए ॥५॥ (५५०-१४, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५५०-१५)
दरवेसी को जाणसी विरला को दरवेसु ॥ (५५०-१५, बिहागड़ा, मः ३)
जे घरि घरि हंढै मंगदा धिगु जीवणु धिगु वेसु ॥ (५५०-१५, बिहागड़ा, मः ३)
जे आसा अंदेसा तजि रहै गुरमुखि भिखिआ नाउ ॥ (५५०-१६, बिहागड़ा, मः ३)
तिस के चरन पखालीअहि नानक हउ बलिहारै जाउ ॥१॥ (५५०-१६, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५०-१७)
नानक तरवरु एकु फलु दुइ पंखेरू आहि ॥ (५५०-१७, बिहागड़ा, मः ३)
आवत जात न दीसही ना पर पंखी ताहि ॥ (५५०-१७, बिहागड़ा, मः ३)
बहु रंगी रस भोगिआ सबदि रहै निरबाणु ॥ (५५०-१८, बिहागड़ा, मः ३)
हरि रसि फलि राते नानका करमि सचा नीसाणु ॥२॥ (५५०-१८, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५०-१९)
आपे धरती आपे है राहकु आपि जम्माइ पीसावै ॥ (५५०-१९, बिहागड़ा, मः ३)
आपि पकावै आपि भाँडे देइ परोसै आपे ही बहि खावै ॥ (५५०-१९, बिहागड़ा, मः ३)

पन्ना ५५१

आपे जलु आपे दे छिंगा आपे चुली भरावै ॥ (५५१-१, बिहागड़ा, मः ३)

आपे संगति सदि बहालै आपे विदा करावै ॥ (५५१-१, बिहागड़ा, मः ३)
जिस नो किरपालु होवै हरि आपे तिस नो हुकमु मनावै ॥६॥ (५५१-२, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५५१-२)
कर्म धर्म सभि बंधना पाप पुन्न सनबंधु ॥ (५५१-३, बिहागड़ा, मः ३)
ममता मोहु सु बंधना पुत्र कलत्र सु धंधु ॥ (५५१-३, बिहागड़ा, मः ३)
जह देखा तह जेवरी माइआ का सनबंधु ॥ (५५१-३, बिहागड़ा, मः ३)
नानक सचे नाम बिनु वरतणि वरतै अंधु ॥१॥ (५५१-४, बिहागड़ा, मः ३)
मः ४ ॥ (५५१-४)
अंधे चानणु ता थीऐ जा सतिगुरु मिलै रजाइ ॥ (५५१-४, बिहागड़ा, मः ४)
बंधन तोड़ै सचि वसै अगिआनु अधेरा जाइ ॥ (५५१-५, बिहागड़ा, मः ४)
सभु किछु देखै तिसै का जिनि कीआ तनु साजि ॥ (५५१-५, बिहागड़ा, मः ४)
नानक सरणि करतार की करता राखै लाज ॥२॥ (५५१-६, बिहागड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (५५१-६)
जदहु आपे थाटु कीआ बहि करतै तदहु पुछि न सेवकु बीआ ॥ (५५१-६, बिहागड़ा, मः ४)
तदहु किआ को लेवै किआ को देवै जाँ अवरु न दूजा कीआ ॥ (५५१-७, बिहागड़ा, मः ४)
फिरि आपे जगतु उपाइआ करतै दानु सभना कउ दीआ ॥ (५५१-८, बिहागड़ा, मः ४)
आपे सेव बणाईअनु गुरमुखि आपे अमृतु पीआ ॥ (५५१-८, बिहागड़ा, मः ४)
आपि निरंकार आकारु है आपे आपे करै सु थीआ ॥७॥ (५५१-९, बिहागड़ा, मः ४)
सलोक मः ३ ॥ (५५१-९)
गुरमुखि प्रभु सेवहि सद साचा अनदिनु सहजि पिआरि ॥ (५५१-९, बिहागड़ा, मः ३)
सदा अनंदि गावहि गुण साचे अरधि उरधि उरि धारि ॥ (५५१-१०, बिहागड़ा, मः ३)
अंतरि प्रीतमु वसिआ धुरि करमु लिखिआ करतारि ॥ (५५१-११, बिहागड़ा, मः ३)
नानक आपि मिलाइअनु आपे किरपा धारि ॥१॥ (५५१-११, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५१-१२)
कहिऐ कथिऐ न पाईऐ अनदिनु रहै सदा गुण गाइ ॥ (५५१-१२, बिहागड़ा, मः ३)
विणु करमै किनै न पाइओ भउकि मुए बिललाइ ॥ (५५१-१२, बिहागड़ा, मः ३)
गुर कै सबदि मनु तनु भिजै आपि वसै मनि आइ ॥ (५५१-१३, बिहागड़ा, मः ३)
नानक नदरी पाईऐ आपे लए मिलाइ ॥२॥ (५५१-१३, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५१-१४)
आपे वेद पुराण सभि सासत आपि कथै आपि भीजै ॥ (५५१-१४, बिहागड़ा, मः ३)
आपे ही बहि पूजे करता आपि परपंचु करीजै ॥ (५५१-१५, बिहागड़ा, मः ३)
आपि परविरति आपि निरविरती आपे अकथु कथीजै ॥ (५५१-१५, बिहागड़ा, मः ३)
आपे पुन्नु सभु आपि कराए आपि अलिपतु वरतीजै ॥ (५५१-१६, बिहागड़ा, मः ३)
आपे सुखु दुखु देवै करता आपे बखस करीजै ॥८॥ (५५१-१६, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५५१-१७)

सेखा अंदरहु जोरु छडि तू भउ करि झलु गवाइ ॥ (५५१-१७, बिहागड़ा, मः ३)
गुर कै भै केते निसतरे भै विचि निरभउ पाइ ॥ (५५१-१७, बिहागड़ा, मः ३)
मनु कठोरु सबदि भेदि तूं साँति वसै मनि आइ ॥ (५५१-१८, बिहागड़ा, मः ३)
साँती विचि कार कमावणी सा खसमु पाए थाइ ॥ (५५१-१८, बिहागड़ा, मः ३)
नानक कामि क्रोधि किनै न पाइओ पुछहु गिआनी जाइ ॥१॥ (५५१-१९, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५१-१९)

पन्ना ५५२

मनमुख माइआ मोहु है नामि न लगो पिआरु ॥ (५५२-१, बिहागड़ा, मः ३)
कूड़ु कमावै कूड़ु संग्रहै कूड़ु करे आहारु ॥ (५५२-१, बिहागड़ा, मः ३)
बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंते होइ सभु छारु ॥ (५५२-१, बिहागड़ा, मः ३)
कर्म धर्म सुच संजम करहि अंतरि लोभु विकारु ॥ (५५२-२, बिहागड़ा, मः ३)
नानक जि मनमुखु कमावै सु थाइ ना पवै दरगहि होइ खुआरु ॥२॥ (५५२-३, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५२-३)
आपे खाणी आपे बाणी आपे खंड वरभंड करे ॥ (५५२-३, बिहागड़ा, मः ३)
आपि समुंदु आपि है सागरु आपे ही विचि रतन धरे ॥ (५५२-४, बिहागड़ा, मः ३)
आपि लहाए करे जिसु किरपा जिस नो गुरमुखि करे हरे ॥ (५५२-४, बिहागड़ा, मः ३)
आपे भउजलु आपि है बोहिथा आपे खेवटु आपि तरे ॥ (५५२-५, बिहागड़ा, मः ३)
आपे करे कराए करता अवरु न दूजा तुझै सरे ॥६॥ (५५२-६, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५५२-६)
सतिगुर की सेवा सफल है जे को करे चितु लाइ ॥ (५५२-६, बिहागड़ा, मः ३)
नामु पदारथु पाईऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥ (५५२-७, बिहागड़ा, मः ३)
जनम मरन दुखु कटीऐ हउमै ममता जाइ ॥ (५५२-७, बिहागड़ा, मः ३)
उतम पदवी पाईऐ सचे रहै समाइ ॥ (५५२-८, बिहागड़ा, मः ३)
नानक पूरबि जिन कउ लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥१॥ (५५२-८, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५२-९)
नामि रता सतिगुरू है कलिजुग बोहिथु होइ ॥ (५५२-९, बिहागड़ा, मः ३)
गुरमुखि होवै सु पारि पवै जिना अंदरि सचा सोइ ॥ (५५२-९, बिहागड़ा, मः ३)
नामु सम्हाले नामु संग्रहै नामे ही पति होइ ॥ (५५२-१०, बिहागड़ा, मः ३)
नानक सतिगुरु पाइआ करमि परापति होइ ॥२॥ (५५२-१०, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५२-११)
आपे पारसु आपि धातु है आपि कीतोनु कंचनु ॥ (५५२-११, बिहागड़ा, मः ३)
आपे ठाकुरु सेवकु आपे आपे ही पाप खंडनु ॥ (५५२-११, बिहागड़ा, मः ३)
आपे सभि घट भोगवै सुआमी आपे ही सभु अंजनु ॥ (५५२-१२, बिहागड़ा, मः ३)
आपि बिबेकु आपि सभु बेता आपे गुरमुखि भंजनु ॥ (५५२-१२, बिहागड़ा, मः ३)

जनु नानकु सालाहि न रजै तुधु करते तू हरि सुखदाता वडनु ॥१०॥ (५५२-१३, बिहागड़ा, मः ३)
सलोकु मः ४ ॥ (५५२-१४)
बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना जेते कर्म कमाहि ॥ (५५२-१४, बिहागड़ा, मः ४)
बिनु सतिगुर सेवे ठवर न पावही मरि जम्महि आवहि जाहि ॥ (५५२-१४, बिहागड़ा, मः ४)
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मनि आइ ॥ (५५२-१५, बिहागड़ा, मः ४)
नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअहि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥ (५५२-१६, बिहागड़ा, मः ४)
मः ३ ॥ (५५२-१६)
इकि सतिगुर की सेवा करहि चाकरी हरि नामे लगै पिआरु ॥ (५५२-१६, बिहागड़ा, मः ३)
नानक जनमु सवारनि आपणा कुल का करनि उधारु ॥२॥ (५५२-१७, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५२-१८)
आपे चाटसाल आपि है पाधा आपे चाटड़े पड़ण कउ आणे ॥ (५५२-१८, बिहागड़ा, मः ३)
आपे पिता माता है आपे आपे बालक करे सिआणे ॥ (५५२-१८, बिहागड़ा, मः ३)
इक थै पड़ि बुझै सभु आपे इक थै आपे करे इआणे ॥ (५५२-१९, बिहागड़ा, मः ३)
इकना अंदरि महलि बुलाए जा आपि तेरै मनि सचे भाणे ॥ (५५२-१९, बिहागड़ा, मः ३)

पन्ना ५५३

जिना आपे गुरमुखि दे वडिआई से जन सची दरगहि जाणे ॥११॥ (५५३-१, बिहागड़ा, मः ३)
सलोकु मरदाना १ ॥ (५५३-२)
कलि कलवाली कामु मदु मनूआ पीवणहारु ॥ (५५३-२, बिहागड़ा, मरदाना)
क्रोध कटोरी मोहि भरी पीलावा अहंकारु ॥ (५५३-२, बिहागड़ा, मरदाना)
मजलस कूड़े लब की पी पी होइ खुआरु ॥ (५५३-३, बिहागड़ा, मरदाना)
करणी लाहणि सतु गुड़ु सचु सरा करि सारु ॥ (५५३-३, बिहागड़ा, मरदाना)
गुण मंडे करि सीलु घिउ सरमु मासु आहारु ॥ (५५३-४, बिहागड़ा, मरदाना)
गुरमुखि पाईऐ नानका खाधै जाहि बिकार ॥१॥ (५५३-४, बिहागड़ा, मरदाना)
मरदाना १ ॥ (५५३-५)
काइआ लाहणि आपु मदु मजलस तृसना धातु ॥ (५५३-५, बिहागड़ा, मरदाना)
मनसा कटोरी कूड़ि भरी पीलाए जमकालु ॥ (५५३-५, बिहागड़ा, मरदाना)
इतु मदि पीतै नानका बहुते खटीअहि बिकार ॥ (५५३-६, बिहागड़ा, मरदाना)
गिआनु गुड़ु सालाह मंडे भउ मासु आहारु ॥ (५५३-६, बिहागड़ा, मरदाना)
नानक इहु भोजनु सचु है सचु नामु आधारु ॥२॥ (५५३-७, बिहागड़ा, मरदाना)
काँयाँ लाहणि आपु मदु अमृत तिस की धार ॥ (५५३-७, बिहागड़ा, मरदाना)
सतसंगति सिउ मेलापु होइ लिव कटोरी अमृत भरी पी पी कटहि बिकार ॥३॥ (५५३-८, बिहागड़ा, मरदाना)
पउड़ी ॥ (५५३-९)
आपे सुरि नर गण गंधरबा आपे खट दरसन की बाणी ॥ (५५३-९, बिहागड़ा, मरदाना)
आपे सिव संकर महेसा आपे गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ (५५३-९, बिहागड़ा, मरदाना)

आपे जोगी आपे भोगी आपे संनिआसी फिरै बिबाणी ॥ (५५३-१०, बिहागड़ा, मरदाना)
आपै नालि गोसटि आपि उपदेसै आपे सुघड़ु सरूपु सिआणी ॥ (५५३-१०, बिहागड़ा, मरदाना)
आपणा चोजु करि वेखै आपे आपे सभना जीआ का है जाणी ॥१२॥ (५५३-११, बिहागड़ा, मरदाना)
सलोकु मः ३ ॥ (५५३-१२)
एहा संधिआ परवाणु है जितु हरि प्रभु मेरा चिति आवै ॥ (५५३-१२, बिहागड़ा, मः ३)
हरि सिउ प्रीति ऊपजै माइआ मोहु जलावै ॥ (५५३-१२, बिहागड़ा, मः ३)
गुर परसादी दुबिधा मरै मनूआ असथिरु संधिआ करे वीचारु ॥ (५५३-१३, बिहागड़ा, मः ३)
नानक संधिआ करै मनमुखी जीउ न टिकै मरि जम्मै होइ खुआरु ॥१॥ (५५३-१३, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५३-१४)
पृउ पृउ करती सभु जगु फिरी मेरी पिआस न जाइ ॥ (५५३-१४, बिहागड़ा, मः ३)
नानक सतिगुरि मिलिऐ मेरी पिआस गई पिरु पाइआ घरि आइ ॥२॥ (५५३-१५, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५३-१६)
आपे तंतु पर्म तंतु सभु आपे आपे ठाकुरु दासु भइआ ॥ (५५३-१६, बिहागड़ा, मः ३)
आपे दस अठ वरन उपाइअनु आपि ब्रह्मु आपि राजु लइआ ॥ (५५३-१६, बिहागड़ा, मः ३)
आपे मारे आपे छोडै आपे बखसे करे दइआ ॥ (५५३-१७, बिहागड़ा, मः ३)
आपि अभुलु न भुलै कब ही सभु सचु तपावसु सचु थिआ ॥ (५५३-१७, बिहागड़ा, मः ३)
आपे जिना बुझाए गुरमुखि तिन अंदरहु दूजा भरमु गइआ ॥१३॥ (५५३-१८, बिहागड़ा, मः ३)
सलोकु मः ५ ॥ (५५३-१९)
हरि नामु न सिमरहि साधसंगि तै तनि उडै खेह ॥ (५५३-१९, बिहागड़ा, मः ५)
जिनि कीती तिसै न जाणई नानक फिटु अलूणी देह ॥१॥ (५५३-१९, बिहागड़ा, मः ५)

पन्ना ५५४

मः ५ ॥ (५५४-१)
घटि वसहि चरणारबिंद रसना जपै गुपाल ॥ (५५४-१, बिहागड़ा, मः ५)
नानक सो प्रभु सिमरीऐ तिसु देही कउ पालि ॥२॥ (५५४-१, बिहागड़ा, मः ५)
पउड़ी ॥ (५५४-२)
आपे अठसठि तीर्थ करता आपि करे इसनानु ॥ (५५४-२, बिहागड़ा, मः ५)
आपे संजमि वरतै स्वामी आपि जपाइहि नामु ॥ (५५४-२, बिहागड़ा, मः ५)
आपि दइआलु होइ भउ खंडनु आपि करै सभु दानु ॥ (५५४-३, बिहागड़ा, मः ५)
जिस नो गुरमुखि आपि बुझाए सो सद ही दरगहि पाए मानु ॥ (५५४-४, बिहागड़ा, मः ५)
जिस दी पैज रखै हरि सुआमी सो सचा हरि जानु ॥१४॥ (५५४-४, बिहागड़ा, मः ५)
सलोकु मः ३ ॥ (५५४-५)
नानक बिनु सतिगुर भेटे जगु अंधु है अंधे कर्म कमाइ ॥ (५५४-५, बिहागड़ा, मः ३)
सबदै सिउ चितु न लावई जितु सुखु वसै मनि आइ ॥ (५५४-५, बिहागड़ा, मः ३)
तामसि लगा सदा फिरै अहिनिसि जलतु बिहाइ ॥ (५५४-६, बिहागड़ा, मः ३)

जो तिसु भावै सो थीऐ कहणा किछू न जाइ ॥१॥ (५५४-७, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५४-७)
सतिगुरू फुरमाइआ कारी एह करेहु ॥ (५५४-७, बिहागड़ा, मः ३)
गुरू दुआरै होइ कै साहिबु सम्मालेहु ॥ (५५४-७, बिहागड़ा, मः ३)
साहिबु सदा हजूरि है भरमै के छउड़ कटि कै अंतरि जोति धरेहु ॥ (५५४-८, बिहागड़ा, मः ३)
हरि का नामु अमृतु है दारू एहु लाएहु ॥ (५५४-९, बिहागड़ा, मः ३)
सतिगुर का भाणा चिति रखहु संजमु सचा नेहु ॥ (५५४-९, बिहागड़ा, मः ३)
नानक ऐथै सुखै अंदरि रखसी अगै हरि सिउ केल करेहु ॥२॥ (५५४-९, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५४-१०)
आपे भार अठारह बणसपति आपे ही फल लाए ॥ (५५४-१०, बिहागड़ा, मः ३)
आपे माली आपि सभु सिंचै आपे ही मुहि पाए ॥ (५५४-११, बिहागड़ा, मः ३)
आपे करता आपे भुगता आपे देइ दिवाए ॥ (५५४-११, बिहागड़ा, मः ३)
आपे साहिबु आपे है राखा आपे रहिआ समाए ॥ (५५४-१२, बिहागड़ा, मः ३)
जनु नानक वडिआई आखै हरि करते की जिस नो तिलु न तमाए ॥१५॥ (५५४-१२, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५५४-१३)
माणसु भरिआ आणिआ माणसु भरिआ आइ ॥ (५५४-१३, बिहागड़ा, मः ३)
जितु पीतै मति दूरि होइ बरलु पवै विचि आइ ॥ (५५४-१४, बिहागड़ा, मः ३)
आपणा पराइआ न पछाणई खसमहु धके खाइ ॥ (५५४-१४, बिहागड़ा, मः ३)
जितु पीतै खसमु विसरै दरगह मिलै सजाइ ॥ (५५४-१५, बिहागड़ा, मः ३)
झूठा मदु मूलि न पीचई जे का पारि वसाइ ॥ (५५४-१५, बिहागड़ा, मः ३)
नानक नदरी सचु मदु पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ (५५४-१६, बिहागड़ा, मः ३)
सदा साहिब कै रंगि रहै महली पावै थाउ ॥१॥ (५५४-१६, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५४-१७)
इहु जगतु जीवतु मरै जा इस नो सोझी होइ ॥ (५५४-१७, बिहागड़ा, मः ३)
जा तिनि् सवालिआ ताँ सवि रहिआ जगाए ताँ सुधि होइ ॥ (५५४-१७, बिहागड़ा, मः ३)
नानक नदरि करे जे आपणी सतिगुरु मेलै सोइ ॥ (५५४-१८, बिहागड़ा, मः ३)
गुर प्रसादि जीवतु मरै ता फिरि मरणु न होइ ॥२॥ (५५४-१८, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५४-१९)
जिस दा कीता सभु किछु होवै तिस नो परवाह नाही किसै केरी ॥ (५५४-१९, बिहागड़ा, मः ३)
हरि जीउ तेरा दिता सभु को खावै सभ मुहताजी कढै तेरी ॥ (५५४-१९, बिहागड़ा, मः ३)

पन्ना ५५५

जि तुध नो सालाहे सु सभु किछु पावै जिस नो किरपा निरंजन केरी ॥ (५५५-१, बिहागड़ा, मः ३)
सोई साहु सचा वणजारा जिनि वखरु लदिआ हरि नामु धनु तेरी ॥ (५५५-२, बिहागड़ा, मः ३)
सभि तिसै नो सालाहिहु संतहु जिनि दूजे भाव की मारि विडारी ढेरी ॥१६॥ (५५५-२, बिहागड़ा, मः ३)

सलोक ॥ (५५५-३)
कबीरा मरता मरता जगु मुआ मरि भि न जानै कोइ ॥ (५५५-३, बिहागड़ा, भगत कबीर जी)
ऐसी मरनी जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥१॥ (५५५-४, बिहागड़ा, भगत कबीर जी)
मः ३ ॥ (५५५-४)
किआ जाणा किव मरहगे कैसा मरणा होइ ॥ (५५५-४, बिहागड़ा, मः ३)
जे करि साहिबु मनहु न वीसरै ता सहिला मरणा होइ ॥ (५५५-५, बिहागड़ा, मः ३)
मरणै ते जगतु डरै जीविआ लोड़ै सभु कोइ ॥ (५५५-५, बिहागड़ा, मः ३)
गुर परसादी जीवतु मरै हुकमै बूझै सोइ ॥ (५५५-६, बिहागड़ा, मः ३)
नानक ऐसी मरनी जो मरै ता सद जीवणु होइ ॥२॥ (५५५-६, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५५-७)
जा आपि कृपालु होवै हरि सुआमी ता आपणाँ नाउ हरि आपि जपावै ॥ (५५५-७, बिहागड़ा, मः ३)
आपे सतिगुरु मेलि सुखु देवै आपणाँ सेवकु आपि हरि भावै ॥ (५५५-८, बिहागड़ा, मः ३)
आपणिआ सेवका की आपि पैज रखै आपणिआ भगता की पैरी पावै ॥ (५५५-८, बिहागड़ा, मः ३)
धर्म राइ है हरि का कीआ हरि जन सेवक नेड़ि न आवै ॥ (५५५-९, बिहागड़ा, मः ३)
जो हरि का पिआरा सो सभना का पिआरा होर केती झखि झखि आवै जावै ॥१७॥ (५५५-१०, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५५५-१०)
रामु रामु करता सभु जगु फिरै रामु न पाइआ जाइ ॥ (५५५-१०, बिहागड़ा, मः ३)
अगमु अगोचरु अति वडा अतुलु न तुलिआ जाइ ॥ (५५५-११, बिहागड़ा, मः ३)
कीमति किनै न पाईआ कितै न लइआ जाइ ॥ (५५५-१२, बिहागड़ा, मः ३)
गुर कै सबदि भेदिआ इन बिधि वसिआ मनि आइ ॥ (५५५-१२, बिहागड़ा, मः ३)
नानक आपि अमेउ है गुर किरपा ते रहिआ समाइ ॥ (५५५-१३, बिहागड़ा, मः ३)
आपे मिलिआ मिलि रहिआ आपे मिलिआ आइ ॥१॥ (५५५-१३, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५५-१४)
ए मन इहु धनु नामु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ (५५५-१४, बिहागड़ा, मः ३)
तोटा मूलि न आवई लाहा सद ही होइ ॥ (५५५-१४, बिहागड़ा, मः ३)
खाधै खरचिऐ तोटि न आवई सदा सदा ओहु देइ ॥ (५५५-१५, बिहागड़ा, मः ३)
सहसा मूलि न होवई हाणत कदे न होइ ॥ (५५५-१५, बिहागड़ा, मः ३)
नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥२॥ (५५५-१६, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५५-१६)
आपे सभ घट अंदरे आपे ही बाहरि ॥ (५५५-१६, बिहागड़ा, मः ३)
आपे गुपतु वरतदा आपे ही जाहरि ॥ (५५५-१७, बिहागड़ा, मः ३)
जुग छतीह गुबारु करि वरतिआ सुन्नाहरि ॥ (५५५-१७, बिहागड़ा, मः ३)
ओथै वेद पुरान न सासता आपे हरि नरहरि ॥ (५५५-१८, बिहागड़ा, मः ३)
बैठा ताड़ी लाइ आपि सभ दू ही बाहरि ॥ (५५५-१८, बिहागड़ा, मः ३)
आपणी मिति आपि जाणदा आपे ही गउहरु ॥१८॥ (५५५-१९, बिहागड़ा, मः ३)

सलोक मः ३ ॥ (५५५-१९)
हउमै विचि जगतु मुआ मरदो मरदा जाइ ॥ (५५५-१९, बिहागड़ा, मः ३)

पन्ना ५५६

जिचरु विचि दम्मु है तिचरु न चेतई कि करेगु अगै जाइ ॥ (५५६-१, बिहागड़ा, मः ३)
गिआनी होइ सु चेतन्नु होइ अगिआनी अंधु कमाइ ॥ (५५६-१, बिहागड़ा, मः ३)
नानक एथै कमावै सो मिलै अगै पाए जाइ ॥१॥ (५५६-२, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५६-२)
धुरि खसमै का हुकमु पइआ विणु सतिगुर चेतिआ न जाइ ॥ (५५६-३, बिहागड़ा, मः ३)
सतिगुरि मिलिऐ अंतरि रवि रहिआ सदा रहिआ लिव लाइ ॥ (५५६-३, बिहागड़ा, मः ३)
दमि दमि सदा समालदा दम्मु न बिरथा जाइ ॥ (५५६-४, बिहागड़ा, मः ३)
जनम मरन का भउ गइआ जीवन पदवी पाइ ॥ (५५६-४, बिहागड़ा, मः ३)
नानक इहु मरतबा तिस नो देइ जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ (५५६-५, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५६-६)
आपे दानाँ बीनिआ आपे परधानाँ ॥ (५५६-६, बिहागड़ा, मः ३)
आपे रूप दिखालदा आपे लाइ धिआनाँ ॥ (५५६-६, बिहागड़ा, मः ३)
आपे मोनी वरतदा आपे कथै गिआनाँ ॥ (५५६-६, बिहागड़ा, मः ३)
कउड़ा किसै न लगई सभना ही भाना ॥ (५५६-७, बिहागड़ा, मः ३)
उसतति बरनि न सकीऐ सद सद कुरबाना ॥१९॥ (५५६-७, बिहागड़ा, मः ३)
सलोक मः १ ॥ (५५६-८)
कली अंदरि नानका जिन्नाँ दा अउतारु ॥ (५५६-८, बिहागड़ा, मः १)
पुतु जिनूरा धीअ जिन्नूरी जोरू जिन्ना दा सिकदारु ॥१॥ (५५६-८, बिहागड़ा, मः १)
मः १ ॥ (५५६-९)
हिंदू मूले भूले अखुटी जाँही ॥ (५५६-९, बिहागड़ा, मः १)
नारदि कहिआ सि पूज कराँही ॥ (५५६-९, बिहागड़ा, मः १)
अंधे गुंगे अंध अंधारु ॥ (५५६-९, बिहागड़ा, मः १)
पाथरु ले पूजहि मुगध गवार ॥ (५५६-१०, बिहागड़ा, मः १)
ओहि जा आपि डुबे तुम कहा तरणहारु ॥२॥ (५५६-१०, बिहागड़ा, मः १)
पउड़ी ॥ (५५६-११)
सभु किहु तेरै वसि है तू सचा साहु ॥ (५५६-११, बिहागड़ा, मः १)
भगत रते रंगि एक कै पूरा वेसाहु ॥ (५५६-११, बिहागड़ा, मः १)
अमृतु भोजनु नामु हरि रजि रजि जन खाहु ॥ (५५६-१२, बिहागड़ा, मः १)
सभि पदार्थ पाईअनि सिमरणु सचु लाहु ॥ (५५६-१२, बिहागड़ा, मः १)
संत पिआरे पारब्रह्म नानक हरि अगम अगाहु ॥२०॥ (५५६-१३, बिहागड़ा, मः १)
सलोक मः ३ ॥ (५५६-१३)

सभु किछु हुकमे आवदा सभु किछु हुकमे जाइ ॥ (५५६-१३, बिहागड़ा, मः ३)
जे को मूरखु आपहु जाणै अंधा अंधु कमाइ ॥ (५५६-१४, बिहागड़ा, मः ३)
नानक हुकमु को गुरमुखि बुझै जिस नो किरपा करे रजाइ ॥१॥ (५५६-१४, बिहागड़ा, मः ३)
मः ३ ॥ (५५६-१५)
सो जोगी जुगति सो पाए जिस नो गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ (५५६-१५, बिहागड़ा, मः ३)
तिसु जोगी की नगरी सभु को वसै भेखी जोगु न होइ ॥ (५५६-१६, बिहागड़ा, मः ३)
नानक ऐसा विरला को जोगी जिसु घटि परगटु होइ ॥२॥ (५५६-१६, बिहागड़ा, मः ३)
पउड़ी ॥ (५५६-१७)
आपे जंत उपाइअनु आपे आधारु ॥ (५५६-१७, बिहागड़ा, मः ३)
आपे सूखमु भालीऐ आपे पासारु ॥ (५५६-१७, बिहागड़ा, मः ३)
आपि इकाती होइ रहै आपे वड परवारु ॥ (५५६-१८, बिहागड़ा, मः ३)
नानकु मंगै दानु हरि संता रेनारु ॥ (५५६-१८, बिहागड़ा, मः ३)
होरु दातारु न सुझई तू देवणहारु ॥२१॥१॥ सुधु ॥ (५५६-१८, बिहागड़ा, मः ३)

पन्ना ५५७

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (५५७-१)
रागु वडहंसु महला १ घरु १ ॥ (५५७-३)
अमली अमलु न अम्बड़ै मछी नीरु न होइ ॥ (५५७-४, वडहंसु, मः १)
जो रते सहि आपणै तिन भावै सभु कोइ ॥१॥ (५५७-४, वडहंसु, मः १)
हउ वारी वंञा खन्नीऐ वंञा तउ साहिब के नावै ॥१॥ रहाउ ॥ (५५७-४, वडहंसु, मः १)
साहिबु सफलिओ रुखड़ा अमृतु जा का नाउ ॥ (५५७-५, वडहंसु, मः १)
जिन पीआ ते तृपत भए हउ तिन बलिहारै जाउ ॥२॥ (५५७-६, वडहंसु, मः १)
मै की नदरि न आवही वसहि हभीआँ नालि ॥ (५५७-६, वडहंसु, मः १)
तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ॥३॥ (५५७-७, वडहंसु, मः १)
नानकु तेरा बाणीआ तू साहिबु मै रासि ॥ (५५७-७, वडहंसु, मः १)
मन ते धोखा ता लहै जा सिफति करी अरदासि ॥४॥१॥ (५५७-८, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला १ ॥ (५५७-८)
गुणवंती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ॥ (५५७-८, वडहंसु, मः १)
जे गुणवंती थी रहै ता भी सहु रावण जाइ ॥१॥ (५५७-९, वडहंसु, मः १)
मेरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी ॥१॥ रहाउ ॥ (५५७-९, वडहंसु, मः १)
करणी कामण जे थीऐ जे मनु धागा होइ ॥ (५५७-१०, वडहंसु, मः १)
माणकु मुलि न पाईऐ लीजै चिति परोइ ॥२॥ (५५७-१०, वडहंसु, मः १)
राहु दसाई न जुलाँ आखाँ अम्मड़ीआसु ॥ (५५७-११, वडहंसु, मः १)
तै सह नालि अकूअणा किउ थीवै घर वासु ॥३॥ (५५७-११, वडहंसु, मः १)
नानक एकी बाहरा दूजा नाही कोइ ॥ (५५७-१२, वडहंसु, मः १)

तै सह लगी जे रहै भी सहु रावै सोइ ॥४॥२॥ (५५७-१२, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला १ घरु २ ॥ (५५७-१३)
मोरी रुण झुण लाइआ भैणे सावणु आइआ ॥ (५५७-१३, वडहंसु, मः १)
तेरे मुंध कटारे जेवडा तिनि लोभी लोभ लुभाइआ ॥ (५५७-१३, वडहंसु, मः १)
तेरे दरसन विटहु खन्नीऐ वंञा तेरे नाम विटहु कुरबाणो ॥ (५५७-१४, वडहंसु, मः १)
जा तू ता मै माणु कीआ है तुधु बिनु केहा मेरा माणो ॥ (५५७-१४, वडहंसु, मः १)
चूड़ा भन्नु पलंघ सिउ मुंधे सणु बाही सणु बाहा ॥ (५५७-१५, वडहंसु, मः १)
एते वेस करेदीए मुंधे सहु रातो अवराहा ॥ (५५७-१५, वडहंसु, मः १)

पन्ना ५५८

ना मनीआरु न चूड़ीआ ना से वंगुड़ीआहा ॥ (५५८-१, वडहंसु, मः १)
जो सह कंठि न लगीआ जलनु सि बाहड़ीआहा ॥ (५५८-१, वडहंसु, मः १)
सभि सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा ॥ (५५८-२, वडहंसु, मः १)
अम्माली हउ खरी सुचजी तै सह एकि न भावा ॥ (५५८-२, वडहंसु, मः १)
माठि गुंदाईं पटीआ भरीऐ माग संधूरे ॥ (५५८-३, वडहंसु, मः १)
अगै गई न मन्नीआ मरउ विसूरि विसूरे ॥ (५५८-३, वडहंसु, मः १)
मै रोवंदी सभु जगु रुना रुन्नड़े वणहु पंखेरू ॥ (५५८-४, वडहंसु, मः १)
इकु न रुना मेरे तन का बिरहा जिनि हउ पिरहु विछोड़ी ॥ (५५८-४, वडहंसु, मः १)
सुपनै आइआ भी गइआ मै जलु भरिआ रोइ ॥ (५५८-५, वडहंसु, मः १)
आइ न सका तुझ कनि पिआरे भेजि न सका कोइ ॥ (५५८-५, वडहंसु, मः १)
आउ सभागी नीदड़ीए मतु सहु देखा सोइ ॥ (५५८-६, वडहंसु, मः १)
तै साहिब की बात जि आखै कहु नानक किआ दीजै ॥ (५५८-६, वडहंसु, मः १)
सीसु वढे करि बैसणु दीजै विणु सिर सेव करीजै ॥ (५५८-७, वडहंसु, मः १)
किउ न मरीजै जीअड़ा न दीजै जा सहु भइआ विडाणा ॥१॥३॥ (५५८-७, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला ३ घरु १ (५५८-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५५८-९)
मनि मैलै सभु किछु मैला तनि धोतै मनु हछा न होइ ॥ (५५८-१०, वडहंसु, मः ३)
इह जगतु भरमि भुलाइआ विरला बूझै कोइ ॥१॥ (५५८-१०, वडहंसु, मः ३)
जपि मन मेरे तू एको नामु ॥ (५५८-११, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरि दीआ मो कउ एहु निधानु ॥१॥ रहाउ ॥ (५५८-११, वडहंसु, मः ३)
सिधा के आसण जे सिखै इंद्री वसि करि कमाइ ॥ (५५८-११, वडहंसु, मः ३)
मन की मैलु न उतरै हउमै मैलु न जाइ ॥२॥ (५५८-१२, वडहंसु, मः ३)
इसु मन कउ होरु संजमु को नाही विणु सतिगुर की सरणाइ ॥ (५५८-१२, वडहंसु, मः ३)
सतगुरि मिलिऐ उलटी भई कहणा किछू न जाइ ॥३॥ (५५८-१३, वडहंसु, मः ३)
भणति नानकु सतिगुर कउ मिलदो मरै गुर कै सबदि फिरि जीवै कोइ ॥ (५५८-१४, वडहंसु, मः ३)

ममता की मलु उतरै इहु मनु हछा होइ ॥४॥१॥ (५५८-१४, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५५८-१५)
नदरी सतगुरु सेवीऐ नदरी सेवा होइ ॥ (५५८-१५, वडहंसु, मः ३)
नदरी इहु मनु वसि आवै नदरी मनु निरमलु होइ ॥१॥ (५५८-१५, वडहंसु, मः ३)
मेरे मन चेति सचा सोइ ॥ (५५८-१६, वडहंसु, मः ३)
एको चेतहि ता सुखु पावहि फिरि दूखु न मूले होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५५८-१६, वडहंसु, मः ३)
नदरी मरि कै जीवीऐ नदरी सबदु वसै मनि आइ ॥ (५५८-१७, वडहंसु, मः ३)
नदरी हुकमु बुझीऐ हुकमे रहै समाइ ॥२॥ (५५८-१७, वडहंसु, मः ३)
जिनि जिहवा हरि रसु न चखिओ सा जिहवा जलि जाउ ॥ (५५८-१८, वडहंसु, मः ३)
अन रस सादे लगि रही दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥३॥ (५५८-१८, वडहंसु, मः ३)
सभना नदरि एक है आपे फरकु करेइ ॥ (५५८-१९, वडहंसु, मः ३)
नानक सतगुरि मिलिऐ फलु पाइआ नामु वडाई देइ ॥४॥२॥ (५५८-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५५९

वडहंसु महला ३ ॥ (५५९-१)
माइआ मोहु गुबारु है गुर बिनु गिआनु न होई ॥ (५५९-१, वडहंसु, मः ३)
सबदि लगे तिन बुझिआ दूजै परज विगोई ॥१॥ (५५९-२, वडहंसु, मः ३)
मन मेरे गुरमति करणी सारु ॥ (५५९-२, वडहंसु, मः ३)
सदा सदा हरि प्रभु रवहि ता पावहि मोख दुआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (५५९-३, वडहंसु, मः ३)
गुणा का निधानु एकु है आपे देइ ता को पाए ॥ (५५९-३, वडहंसु, मः ३)
बिनु नावै सभ विछुड़ी गुर कै सबदि मिलाए ॥२॥ (५५९-४, वडहंसु, मः ३)
मेरी मेरी करदे घटि गए तिना हथि किहु न आइआ ॥ (५५९-४, वडहंसु, मः ३)
सतगुरि मिलिऐ सचि मिले सचि नामि समाइआ ॥३॥ (५५९-५, वडहंसु, मः ३)
आसा मनसा एहु सरीरु है अंतरि जोति जगाए ॥ (५५९-५, वडहंसु, मः ३)
नानक मनमुखि बंधु है गुरमुखि मुकति कराए ॥४॥३॥ (५५९-६, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५५९-७)
सोहागणी सदा मुखु उजला गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (५५९-७, वडहंसु, मः ३)
सदा पिरु रावहि आपणा विचहु आपु गवाइ ॥१॥ (५५९-७, वडहंसु, मः ३)
मेरे मन तू हरि हरि नामु धिआइ ॥ (५५९-८, वडहंसु, मः ३)
सतगुरि मो कउ हरि दीआ बुझाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५५९-८, वडहंसु, मः ३)
दोहागणी खरीआ बिललादीआ तिना महलु न पाइ ॥ (५५९-९, वडहंसु, मः ३)
दूजै भाइ करूपी दूखु पावहि आगै जाइ ॥२॥ (५५९-९, वडहंसु, मः ३)
गुणवंती नित गुण रवै हिरदै नामु वसाइ ॥ (५५९-१०, वडहंसु, मः ३)
अउगणवंती कामणी दुखु लागै बिललाइ ॥३॥ (५५९-१०, वडहंसु, मः ३)
सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥ (५५९-११, वडहंसु, मः ३)

नानक आपे वेक कीतिअनु नामे लइअनु लाइ ॥४॥४॥ (५५९-११, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५५९-१२)
अमृत नामु सद मीठा लागा गुर सबदी सादु आइआ ॥ (५५९-१२, वडहंसु, मः ३)
सची बाणी सहजि समाणी हरि जीउ मनि वसाइआ ॥१॥ (५५९-१३, वडहंसु, मः ३)
हरि करि किरपा सतगुरू मिलाइआ ॥ (५५९-१३, वडहंसु, मः ३)
पूरै सतगुरि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (५५९-१४, वडहंसु, मः ३)
ब्रह्मै बेद बाणी परगासी माइआ मोह पसारा ॥ (५५९-१४, वडहंसु, मः ३)
महादेउ गिआनी वरतै घरि आपणै तामसु बहुतु अहंकारा ॥२॥ (५५९-१५, वडहंसु, मः ३)
किसनु सदा अवतारी रूधा कितु लगि तरै संसारा ॥ (५५९-१५, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि गिआनि रते जुग अंतरि चूकै मोह गुबारा ॥३॥ (५५९-१६, वडहंसु, मः ३)
सतगुर सेवा ते निसतारा गुरमुखि तरै संसारा ॥ (५५९-१६, वडहंसु, मः ३)
साचै नाइ रते बैरागी पाइनि मोख दुआरा ॥४॥ (५५९-१७, वडहंसु, मः ३)
एको सचु वरतै सभ अंतरि सभना करे प्रतिपाला ॥ (५५९-१७, वडहंसु, मः ३)
नानक इकसु बिनु मै अवरु न जाणा सभना दीवानु दइआला ॥५॥५॥ (५५९-१८, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५५९-१९)
गुरमुखि सचु संजमु ततु गिआनु ॥ (५५९-१९, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि साचे लगै धिआनु ॥१॥ (५५९-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६०

गुरमुखि मन मेरे नामु समालि ॥ (५६०-१, वडहंसु, मः ३)
सदा निबहै चलै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ (५६०-१, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि जाति पति सचु सोइ ॥ (५६०-१, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि अंतरि सखाई प्रभु होइ ॥२॥ (५६०-२, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि जिस नो आपि करे सो होइ ॥ (५६०-२, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि आपि वडाई देवै सोइ ॥३॥ (५६०-२, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि सबदु सचु करणी सारु ॥ (५६०-३, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि नानक परवारै साधारु ॥४॥६॥ (५६०-३, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५६०-४)
रसना हरि सादि लगी सहजि सुभाइ ॥ (५६०-४, वडहंसु, मः ३)
मनु तृपतिआ हरि नामु धिआइ ॥१॥ (५६०-४, वडहंसु, मः ३)
सदा सुखु साचै सबदि वीचारी ॥ (५६०-५, वडहंसु, मः ३)
आपणे सतगुर विटहु सदा बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (५६०-५, वडहंसु, मः ३)
अखी संतोखीआ एक लिव लाइ ॥ (५६०-५, वडहंसु, मः ३)
मनु संतोखिआ दूजा भाउ गवाइ ॥२॥ (५६०-६, वडहंसु, मः ३)
देह सरीरि सुखु होवै सबदि हरि नाइ ॥ (५६०-६, वडहंसु, मः ३)

नामु परमलु हिरदै रहिआ समाइ ॥३॥ (५६०-७, वडहंसु, मः ३)
नानक मसतकि जिसु वडभागु ॥ (५६०-७, वडहंसु, मः ३)
गुर की बाणी सहज बैरागु ॥४॥७॥ (५६०-७, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५६०-८)
पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ (५६०-८, वडहंसु, मः ३)
सचै सबदि सचि समाइ ॥१॥ (५६०-८, वडहंसु, मः ३)
ए मन नामु निधानु तू पाइ ॥ (५६०-८, वडहंसु, मः ३)
आपणे गुर की मंनि लै रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (५६०-९, वडहंसु, मः ३)
गुर कै सबदि विचहु मैलु गवाइ ॥ (५६०-९, वडहंसु, मः ३)
निरमलु नामु वसै मनि आइ ॥२॥ (५६०-१०, वडहंसु, मः ३)
भरमे भूला फिरै संसारु ॥ (५६०-१०, वडहंसु, मः ३)
मरि जनमै जमु करे खुआरु ॥३॥ (५६०-१०, वडहंसु, मः ३)
नानक से वडभागी जिन हरि नामु धिआइआ ॥ (५६०-११, वडहंसु, मः ३)
गुर परसादी मंनि वसाइआ ॥४॥८॥ (५६०-११, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५६०-१२)
हउमै नावै नालि विरोधु है दुइ न वसहि इक ठाइ ॥ (५६०-१२, वडहंसु, मः ३)
हउमै विचि सेवा न होवई ता मनु बिरथा जाइ ॥१॥ (५६०-१२, वडहंसु, मः ३)
हरि चेति मन मेरे तू गुर का सबदु कमाइ ॥ (५६०-१३, वडहंसु, मः ३)
हुकमु मन्नहि ता हरि मिलै ता विचहु हउमै जाइ ॥ रहाउ ॥ (५६०-१३, वडहंसु, मः ३)
हउमै सभु सरीरु है हउमै ओपति होइ ॥ (५६०-१४, वडहंसु, मः ३)
हउमै वडा गुबारु है हउमै विचि बुझि न सकै कोइ ॥२॥ (५६०-१४, वडहंसु, मः ३)
हउमै विचि भगति न होवई हुकमु न बुझिआ जाइ ॥ (५६०-१५, वडहंसु, मः ३)
हउमै विचि जीउ बंधु है नामु न वसै मनि आइ ॥३॥ (५६०-१५, वडहंसु, मः ३)
नानक सतगुरि मिलिऐ हउमै गई ता सचु वसिआ मनि आइ ॥ (५६०-१६, वडहंसु, मः ३)
सचु कमावै सचि रहै सचे सेवि समाइ ॥४॥९॥१२॥ (५६०-१७, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ४ घरु १ (५६०-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५६०-१८)
सेज एक एको प्रभु ठाकुरु ॥ (५६०-१९, वडहंसु, मः ४)
गुरमुखि हरि रावे सुख सागरु ॥१॥ (५६०-१९, वडहंसु, मः ४)
मै प्रभ मिलण प्रेम मनि आसा ॥ (५६०-१९, वडहंसु, मः ४)

पन्ना ५६१

गुरु पूरा मेलावै मेरा प्रीतमु हउ वारि वारि आपणे गुरू कउ जासा ॥१॥ रहाउ ॥ (५६१-१, वडहंसु, मः ४)
मै अवगण भरपूरि सरीरे ॥ (५६१-१, वडहंसु, मः ४)
हउ किउ करि मिला अपणे प्रीतम पूरे ॥२॥ (५६१-२, वडहंसु, मः ४)

जिनि गुणवंती मेरा प्रीतमु पाइआ ॥ (५६१-२, वडहंसु, मः ४)
से मै गुण नाही हउ किउ मिला मेरी माइआ ॥३॥ (५६१-३, वडहंसु, मः ४)
हउ करि करि थाका उपाव बहुतेरे ॥ (५६१-३, वडहंसु, मः ४)
नानक गरीब राखहु हरि मेरे ॥४॥१॥ (५६१-३, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ४ ॥ (५६१-४)
मेरा हरि प्रभु सुंदरु मै सार न जाणी ॥ (५६१-४, वडहंसु, मः ४)
हउ हरि प्रभ छोडि दूजै लोभाणी ॥१॥ (५६१-४, वडहंसु, मः ४)
हउ किउ करि पिर कउ मिलउ इआणी ॥ (५६१-५, वडहंसु, मः ४)
जो पिर भावै सा सोहागणि साई पिर कउ मिलै सिआणी ॥१॥ रहाउ ॥ (५६१-५, वडहंसु, मः ४)
मै विचि दोस हउ किउ करि पिरु पावा ॥ (५६१-६, वडहंसु, मः ४)
तेरे अनेक पिआरे हउ पिर चिति न आवा ॥२॥ (५६१-६, वडहंसु, मः ४)
जिनि पिरु राविआ सा भली सुहागणि ॥ (५६१-७, वडहंसु, मः ४)
से मै गुण नाही हउ किआ करी दुहागणि ॥३॥ (५६१-७, वडहंसु, मः ४)
नित सुहागणि सदा पिरु रावै ॥ (५६१-८, वडहंसु, मः ४)
मै करमहीण कब ही गलि लावै ॥४॥ (५६१-८, वडहंसु, मः ४)
तू पिरु गुणवंता हउ अउगुणिआरा ॥ (५६१-८, वडहंसु, मः ४)
मै निरगुण बखसि नानकु वेचारा ॥५॥२॥ (५६१-९, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ४ घरु २ (५६१-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५६१-१०)
मै मनि वडी आस हरे किउ करि हरि दरसनु पावा ॥ (५६१-११, वडहंसु, मः ४)
हउ जाइ पुछा अपने सतगुरै गुर पुछि मनु मुगधु समझावा ॥ (५६१-११, वडहंसु, मः ४)
भूला मनु समझै गुर सबदी हरि हरि सदा धिआए ॥ (५६१-१२, वडहंसु, मः ४)
नानक जिसु नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि चरणी चितु लाए ॥१॥ (५६१-१२, वडहंसु, मः ४)
हउ सभि वेस करी पिर कारणि जे हरि प्रभ साचे भावा ॥ (५६१-१३, वडहंसु, मः ४)
सो पिरु पिआरा मै नदरि न देखै हउ किउ करि धीरजु पावा ॥ (५६१-१४, वडहंसु, मः ४)
जिसु कारणि हउ सीगारु सीगारी सो पिरु रता मेरा अवरा ॥ (५६१-१४, वडहंसु, मः ४)
नानक धनु धंनु धंनु सोहागणि जिनि पिरु राविअड़ा सचु सवरा ॥२॥ (५६१-१५, वडहंसु, मः ४)
हउ जाइ पुछा सोहाग सुहागणि तुसी किउ पिरु पाइअड़ा प्रभु मेरा ॥ (५६१-१६, वडहंसु, मः ४)
मै ऊपरि नदरि करी पिरि साचै मै छोडिअड़ा मेरा तेरा ॥ (५६१-१६, वडहंसु, मः ४)
सभु मनु तनु जीउ करहु हरि प्रभ का इतु मारगि भैणे मिलीऐ ॥ (५६१-१७, वडहंसु, मः ४)
आपनड़ा प्रभु नदरि करि देखै नानक जोति जोती रलीऐ ॥३॥ (५६१-१८, वडहंसु, मः ४)
जो हरि प्रभ का मै देइ सनेहा तिसु मनु तनु अपणा देवा ॥ (५६१-१८, वडहंसु, मः ४)
नित पखा फेरी सेव कमावा तिसु आगै पाणी ढोवाँ ॥ (५६१-१९, वडहंसु, मः ४)
नित नित सेव करी हरि जन की जो हरि हरि कथा सुणाए ॥ (५६१-१९, वडहंसु, मः ४)

पन्ना ५६२

धनु धन्नु गुरू गुर सतिगुरु पूरा नानक मनि आस पुजाए ॥४॥ (५६२-१, वडहंसु, मः ४)
गुरु सजणु मेरा मेलि हरे जितु मिलि हरि नामु धिआवा ॥ (५६२-२, वडहंसु, मः ४)
गुर सतिगुर पासहु हरि गोसटि पूछाँ करि साँझी हरि गुण गावाँ ॥ (५६२-२, वडहंसु, मः ४)
गुण गावा नित नित सद हरि के मनु जीवै नामु सुणि तेरा ॥ (५६२-३, वडहंसु, मः ४)
नानक जितु वेला विसरै मेरा सुआमी तितु वेलै मरि जाइ जीउ मेरा ॥५॥ (५६२-४, वडहंसु, मः ४)
हरि वेखण कउ सभु कोई लोचै सो वेखै जिसु आपि विखाले ॥ (५६२-४, वडहंसु, मः ४)
जिस नो नदरि करे मेरा पिआरा सो हरि हरि सदा समाले ॥ (५६२-५, वडहंसु, मः ४)
सो हरि हरि नामु सदा सदा समाले जिसु सतगुरु पूरा मेरा मिलिआ ॥ (५६२-५, वडहंसु, मः ४)
नानक हरि जन हरि इके होए हरि जपि हरि सेती रलिआ ॥६॥१॥३॥ (५६२-६, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ५ घरु १ (५६२-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५६२-८)
अति ऊचा ता का दरबारा ॥ (५६२-९, वडहंसु, मः ५)
अंतु नाही किछु पारावारा ॥ (५६२-९, वडहंसु, मः ५)
कोटि कोटि कोटि लख धावै ॥ (५६२-९, वडहंसु, मः ५)
इकु तिलु ता का महलु न पावै ॥१॥ (५६२-९, वडहंसु, मः ५)
सुहावी कउणु सु वेला जितु प्रभ मेला ॥१॥ रहाउ ॥ (५६२-१०, वडहंसु, मः ५)
लाख भगत जा कउ आराधहि ॥ (५६२-१०, वडहंसु, मः ५)
लाख तपीसर तपु ही साधहि ॥ (५६२-११, वडहंसु, मः ५)
लाख जोगीसर करते जोगा ॥ (५६२-११, वडहंसु, मः ५)
लाख भोगीसर भोगहि भोगा ॥२॥ (५६२-११, वडहंसु, मः ५)
घटि घटि वसहि जाणहि थोरा ॥ (५६२-१२, वडहंसु, मः ५)
है कोई साजणु परदा तोरा ॥ (५६२-१२, वडहंसु, मः ५)
करउ जतन जे होइ मिहरवाना ॥ (५६२-१२, वडहंसु, मः ५)
ता कउ देई जीउ कुरबाना ॥३॥ (५६२-१३, वडहंसु, मः ५)
फिरत फिरत संतन पहि आइआ ॥ (५६२-१३, वडहंसु, मः ५)
दूख भ्रमु हमारा सगल मिटाइआ ॥ (५६२-१३, वडहंसु, मः ५)
महलि बुलाइआ प्रभ अमृतु भूंचा ॥ (५६२-१४, वडहंसु, मः ५)
कहु नानक प्रभु मेरा ऊचा ॥४॥१॥ (५६२-१४, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ५ ॥ (५६२-१५)
धनु सु वेला जितु दरसनु करणा ॥ (५६२-१५, वडहंसु, मः ५)
हउ बलिहारी सतिगुर चरणा ॥१॥ (५६२-१५, वडहंसु, मः ५)
जीअ के दाते प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (५६२-१५, वडहंसु, मः ५)
मनु जीवै प्रभ नामु चितेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (५६२-१६, वडहंसु, मः ५)

सचु मंत्रु तुमारा अमृत बाणी ॥ (५६२-१६, वडहंसु, मः ५)
सीतल पुरख दृसटि सुजाणी ॥२॥ (५६२-१७, वडहंसु, मः ५)
सचु हुकमु तुमारा तखति निवासी ॥ (५६२-१७, वडहंसु, मः ५)
आइ न जावै मेरा प्रभु अबिनासी ॥३॥ (५६२-१७, वडहंसु, मः ५)
तुम मिहरवान दास हम दीना ॥ (५६२-१८, वडहंसु, मः ५)
नानक साहिबु भरपुरि लीणा ॥४॥२॥ (५६२-१८, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ५ ॥ (५६२-१९)
तू बेअंतु को विरला जाणै ॥ (५६२-१९, वडहंसु, मः ५)
गुर प्रसादि को सबदि पछाणै ॥१॥ (५६२-१९, वडहंसु, मः ५)
सेवक की अरदासि पिआरे ॥ (५६२-१९, वडहंसु, मः ५)

पन्ना ५६३

जपि जीवा प्रभ चरण तुमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (५६३-१, वडहंसु, मः ५)
दइआल पुरख मेरे प्रभ दाते ॥ (५६३-१, वडहंसु, मः ५)
जिसहि जनावहु तिनहि तुम जाते ॥२॥ (५६३-१, वडहंसु, मः ५)
सदा सदा जाई बलिहारी ॥ (५६३-२, वडहंसु, मः ५)
इत उत देखउ ओट तुमारी ॥३॥ (५६३-२, वडहंसु, मः ५)
मोहि निरगुण गुणु किछू न जाता ॥ (५६३-२, वडहंसु, मः ५)
नानक साधू देखि मनु राता ॥४॥३॥ (५६३-३, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु मः ५ ॥ (५६३-३)
अंतरजामी सो प्रभु पूरा ॥ (५६३-३, वडहंसु, मः ५)
दानु देइ साधू की धूरा ॥१॥ (५६३-४, वडहंसु, मः ५)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (५६३-४, वडहंसु, मः ५)
तेरी ओट पूरन गोपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (५६३-४, वडहंसु, मः ५)
जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरे ॥ (५६३-५, वडहंसु, मः ५)
निकटि वसै नाही प्रभु दूरे ॥२॥ (५६३-५, वडहंसु, मः ५)
जिस नो नदरि करे सो धिआए ॥ (५६३-५, वडहंसु, मः ५)
आठ पहर हरि के गुण गाए ॥३॥ (५६३-६, वडहंसु, मः ५)
जीअ जंत सगले प्रतिपारे ॥ (५६३-६, वडहंसु, मः ५)
सरनि परिओ नानक हरि दुआरे ॥४॥४॥ (५६३-६, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ५ ॥ (५६३-७)
तू वड दाता अंतरजामी ॥ (५६३-७, वडहंसु, मः ५)
सभ महि रविआ पूरन प्रभ सुआमी ॥१॥ (५६३-७, वडहंसु, मः ५)
मेरे प्रभ प्रीतम नामु अधारा ॥ (५६३-८, वडहंसु, मः ५)
हउ सुणि सुणि जीवा नामु तुमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (५६३-८, वडहंसु, मः ५)

तेरी सरणि सतिगुर मेरे पूरे ॥ (५६३-८, वडहंसु, मः ५)
मनु निरमलु होइ संता धूरे ॥२॥ (५६३-९, वडहंसु, मः ५)
चरन कमल हिरदै उरि धारे ॥ (५६३-९, वडहंसु, मः ५)
तेरे दरसन कउ जाई बलिहारे ॥३॥ (५६३-९, वडहंसु, मः ५)
करि किरपा तेरे गुण गावा ॥ (५६३-१०, वडहंसु, मः ५)
नानक नामु जपत सुखु पावा ॥४॥५॥ (५६३-१०, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ५ ॥ (५६३-११)
साधसंग हरि अमृतु पीजै ॥ (५६३-११, वडहंसु, मः ५)
ना जीउ मरै न कबहू छीजै ॥१॥ (५६३-११, वडहंसु, मः ५)
वडभागी गुरु पूरा पाईऐ ॥ (५६३-११, वडहंसु, मः ५)
गुर किरपा ते प्रभू धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (५६३-१२, वडहंसु, मः ५)
रतन जवाहर हरि माणक लाला ॥ (५६३-१२, वडहंसु, मः ५)
सिमरि सिमरि प्रभ भए निहाला ॥२॥ (५६३-१३, वडहंसु, मः ५)
जत कत पेखउ साधू सरणा ॥ (५६३-१३, वडहंसु, मः ५)
हरि गुण गाइ निर्मल मनु करणा ॥३॥ (५६३-१३, वडहंसु, मः ५)
घट घट अंतरि मेरा सुआमी वूठा ॥ (५६३-१४, वडहंसु, मः ५)
नानक नामु पाइआ प्रभु तूठा ॥४॥६॥ (५६३-१४, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ५ ॥ (५६३-१४)
विसरु नाही प्रभ दीन दइआला ॥ (५६३-१५, वडहंसु, मः ५)
तेरी सरणि पूरन किरपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (५६३-१५, वडहंसु, मः ५)
जह चिति आवहि सो थानु सुहावा ॥ (५६३-१५, वडहंसु, मः ५)
जितु वेला विसरहि ता लागै हावा ॥१॥ (५६३-१६, वडहंसु, मः ५)
तेरे जीअ तू सद ही साथी ॥ (५६३-१६, वडहंसु, मः ५)
संसार सागर ते कढु दे हाथी ॥२॥ (५६३-१७, वडहंसु, मः ५)
आवणु जाणा तुम ही कीआ ॥ (५६३-१७, वडहंसु, मः ५)
जिसु तू राखहि तिसु दूखु न थीआ ॥३॥ (५६३-१७, वडहंसु, मः ५)
तू एको साहिबु अवरु न होरि ॥ (५६३-१८, वडहंसु, मः ५)
बिनउ करै नानकु कर जोरि ॥४॥७॥ (५६३-१८, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु मः ५ ॥ (५६३-१९)
तू जाणाइहि ता कोई जाणै ॥ (५६३-१९, वडहंसु, मः ५)
तेरा दीआ नामु वखाणै ॥१॥ (५६३-१९, वडहंसु, मः ५)
तू अचरजु कुदरति तेरी बिसमा ॥१॥ रहाउ ॥ (५६३-१९, वडहंसु, मः ५)

पन्ना ५६४

तुधु आपे कारणु आपे करणा ॥ (५६४-१, वडहंसु, मः ५)

हुकमे जम्मणु हुकमे मरणा ॥२॥ (५६४-१, वडहंसु, मः ५)
नामु तेरा मन तन आधारी ॥ (५६४-१, वडहंसु, मः ५)
नानक दासु बखसीस तुमारी ॥३॥८॥ (५६४-२, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ५ घरु २ (५६४-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५६४-३)
मेरै अंतरि लोचा मिलण की पिआरे हउ किउ पाई गुर पूरे ॥ (५६४-४, वडहंसु, मः ५)
जे सउ खेल खेलाईऐ बालकु रहि न सकै बिनु खीरे ॥ (५६४-४, वडहंसु, मः ५)
मेरै अंतरि भुख न उतरै अम्माली जे सउ भोजन मै नीरे ॥ (५६४-५, वडहंसु, मः ५)
मेरै मनि तनि प्रेमु पिरम्म का बिनु दरसन किउ मनु धीरे ॥१॥ (५६४-५, वडहंसु, मः ५)
सुणि सजण मेरे प्रीतम भाई मै मेलिहु मित्रु सुखदाता ॥ (५६४-६, वडहंसु, मः ५)
ओहु जीअ की मेरी सभ बेदन जाणै नित सुणावै हरि कीआ बाता ॥ (५६४-७, वडहंसु, मः ५)
हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सका जिउ चातृकु जल कउ बिललाता ॥ (५६४-७, वडहंसु, मः ५)
हउ किआ गुण तेरे सारि समाली मै निरगुण कउ रखि लेता ॥२॥ (५६४-८, वडहंसु, मः ५)
हउ भई उडीणी कंत कउ अम्माली सो पिरु कदि नैणी देखा ॥ (५६४-६, वडहंसु, मः ५)
सभि रस भोगण विसरे बिनु पिर कितै न लेखा ॥ (५६४-६, वडहंसु, मः ५)
इहु कापड़ु तनि न सुखावई करि न सकउ हउ वेसा ॥ (५६४-१०, वडहंसु, मः ५)
जिनी सखी लालु राविआ पिआरा तिन आगै हम आदेसा ॥३॥ (५६४-१०, वडहंसु, मः ५)
मै सभि सीगार बणाइआ अम्माली बिनु पिर कामि न आए ॥ (५६४-११, वडहंसु, मः ५)
जा सहि बात न पुछीआ अम्माली ता बिरथा जोबनु सभु जाए ॥ (५६४-१२, वडहंसु, मः ५)
धनु धनु ते सोहागणी अम्माली जिन सहु रहिआ समाए ॥ (५६४-१२, वडहंसु, मः ५)
हउ वारिआ तिन सोहागणी अम्माली तिन के धोवा सद पाए ॥४॥ (५६४-१३, वडहंसु, मः ५)
जिचरु दूजा भरमु सा अम्माली तिचरु मै जाणिआ प्रभु दूरे ॥ (५६४-१३, वडहंसु, मः ५)
जा मिलिआ पूरा सतिगुरू अम्माली ता आसा मनसा सभ पूरे ॥ (५६४-१४, वडहंसु, मः ५)
मै सर्ब सुखा सुख पाइआ अम्माली पिरु सर्ब रहिआ भरपूरे ॥ (५६४-१५, वडहंसु, मः ५)
जन नानक हरि रंगु माणिआ अम्माली गुर सतिगुर कै लगि पैरे ॥५॥१॥६॥ (५६४-१५, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ३ असटपदीआ (५६४-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५६४-१७)
सची बाणी सचु धुनि सचु सबदु वीचारा ॥ (५६४-१८, वडहंसु, मः ३)
अनदिनु सचु सलाहणा धनु धनु वडभाग हमारा ॥१॥ (५६४-१८, वडहंसु, मः ३)
मन मेरे साचे नाम विटहु बलि जाउ ॥ (५६४-१६, वडहंसु, मः ३)
दासनि दासा होइ रहहि ता पावहि सचा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (५६४-१६, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६५

जिहवा सची सचि रती तनु मनु सचा होइ ॥ (५६५-१, वडहंसु, मः ३)
बिनु साचे होरु सालाहणा जासहि जनमु सभु खोइ ॥२॥ (५६५-१, वडहंसु, मः ३)

सचु खेती सचु बीजणा साचा वापारा ॥ (५६५-२, वडहंसु, मः ३)
अनदिनु लाहा सचु नामु धनु भगति भरे भंडारा ॥३॥ (५६५-२, वडहंसु, मः ३)
सचु खाणा सचु पैनणा सचु टेक हरि नाउ ॥ (५६५-३, वडहंसु, मः ३)
जिस नो बखसे तिसु मिलै महली पाए थाउ ॥४॥ (५६५-३, वडहंसु, मः ३)
आवहि सचे जावहि सचे फिरि जूनी मूलि न पाहि ॥ (५६५-४, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि दरि साचै सचिआर हहि साचे माहि समाहि ॥५॥ (५६५-४, वडहंसु, मः ३)
अंतरु सचा मनु सचा सची सिफति सनाइ ॥ (५६५-५, वडहंसु, मः ३)
सचै थानि सचु सालाहणा सतिगुर बलिहारै जाउ ॥६॥ (५६५-५, वडहंसु, मः ३)
सचु वेला मूरतु सचु जितु सचे नालि पिआरु ॥ (५६५-६, वडहंसु, मः ३)
सचु वेखणा सचु बोलणा सचा सभु आकारु ॥७॥ (५६५-६, वडहंसु, मः ३)
नानक सचै मेले ता मिले आपे लए मिलाइ ॥ (५६५-७, वडहंसु, मः ३)
जिउ भावै तिउ रखसी आपे करे रजाइ ॥८॥१॥ (५६५-७, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५६५-८)
मनूआ दह दिस धावदा ओहु कैसे हरि गुण गावै ॥ (५६५-८, वडहंसु, मः ३)
इंद्री विआपि रही अधिकाई कामु क्रोधु नित संतावै ॥१॥ (५६५-८, वडहंसु, मः ३)
वाहु वाहु सहजे गुण रवीजै ॥ (५६५-९, वडहंसु, मः ३)
राम नामु इसु जुग महि दुलभु है गुरमति हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (५६५-९, वडहंसु, मः ३)
सबदु चीनि मनु निरमलु होवै ता हरि के गुण गावै ॥ (५६५-१०, वडहंसु, मः ३)
गुरमती आपै आपु पछाणै ता निज घरि वासा पावै ॥२॥ (५६५-१०, वडहंसु, मः ३)
ए मन मेरे सदा रंगि राते सदा हरि के गुण गाउ ॥ (५६५-११, वडहंसु, मः ३)
हरि निरमलु सदा सुखदाता मनि चिंदिआ फलु पाउ ॥३॥ (५६५-११, वडहंसु, मः ३)
हम नीच से ऊतम भए हरि की सरणाई ॥ (५६५-१२, वडहंसु, मः ३)
पाथरु डुबदा काढि लीआ साची वडिआई ॥४॥ (५६५-१३, वडहंसु, मः ३)
बिखु से अमृत भए गुरमति बुधि पाई ॥ (५६५-१३, वडहंसु, मः ३)
अकहु परमल भए अंतरि वासना वसाई ॥५॥ (५६५-१३, वडहंसु, मः ३)
माणस जनमु दुलम्भु है जग महि खटिआ आइ ॥ (५६५-१४, वडहंसु, मः ३)
पूरै भागि सतिगुरु मिलै हरि नामु धिआइ ॥६॥ (५६५-१४, वडहंसु, मः ३)
मनमुख भूले बिखु लगे अहिला जनमु गवाइआ ॥ (५६५-१५, वडहंसु, मः ३)
हरि का नामु सदा सुख सागरु साचा सबदु न भाइआ ॥७॥ (५६५-१५, वडहंसु, मः ३)
मुखहु हरि हरि सभु को करै विरलै हिरदै वसाइआ ॥ (५६५-१६, वडहंसु, मः ३)
नानक जिन कै हिरदै वसिआ मोख मुकति तिन्ह पाइआ ॥८॥२॥ (५६५-१७, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला १ छंत (५६५-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५६५-१८)
काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥ (५६५-१९, वडहंसु, मः १)
नाता सो परवाणु सचु कमाईऐ ॥ (५६५-१९, वडहंसु, मः १)

जब साच अंदरि होइ साचा तामि साचा पाईऐ ॥ (५६५-१९, वडहंसु, मः १)

पन्ना ५६६

लिखे बाझहु सुरति नाही बोलि बोलि गवाईऐ ॥ (५६६-१, वडहंसु, मः १)
जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ सुरति सबदु लिखाईऐ ॥ (५६६-१, वडहंसु, मः १)
काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ ॥१॥ (५६६-२, वडहंसु, मः १)
ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥ (५६६-२, वडहंसु, मः १)
अमृतु हरि का नामु मेरै मनि भाइआ ॥ (५६६-३, वडहंसु, मः १)
नामु मीठा मनहि लागा दूखि डेरा ढाहिआ ॥ (५६६-३, वडहंसु, मः १)
सूखु मन महि आइ वसिआ जामि तै फुरमाइआ ॥ (५६६-४, वडहंसु, मः १)
नदरि तुधु अरदासि मेरी जिंनि आपु उपाइआ ॥ (५६६-४, वडहंसु, मः १)
ता मै कहिआ कहणु जा तुझै कहाइआ ॥२॥ (५६६-५, वडहंसु, मः १)
वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥ (५६६-५, वडहंसु, मः १)
मंदा किसै न आखि झगड़ा पावणा ॥ (५६६-५, वडहंसु, मः १)
नह पाइ झगड़ा सुआमि सेती आपि आपु वञावणा ॥ (५६६-६, वडहंसु, मः १)
जिसु नालि संगति करि सरीकी जाइ किआ रूआवणा ॥ (५६६-६, वडहंसु, मः १)
जो देइ सहणा मनहि कहणा आखि नाही वावणा ॥ (५६६-७, वडहंसु, मः १)
वारी खसमु कढाए किरतु कमावणा ॥३॥ (५६६-७, वडहंसु, मः १)
सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥ (५६६-८, वडहंसु, मः १)
कउड़ा कोइ न मागै मीठा सभ मागै ॥ (५६६-८, वडहंसु, मः १)
सभु कोइ मीठा मंगि देखै खसम भावै सो करे ॥ (५६६-८, वडहंसु, मः १)
किछु पुंन दान अनेक करणी नाम तुलि न समसरे ॥ (५६६-९, वडहंसु, मः १)
नानका जिन नामु मिलिआ करमु होआ धुरि कदे ॥ (५६६-१०, वडहंसु, मः १)
सभ उपाईअनु आपि आपे नदरि करे ॥४॥१॥ (५६६-१०, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला १ ॥ (५६६-११)
करहु दइआ तेरा नामु वखाणा ॥ (५६६-११, वडहंसु, मः १)
सभ उपाईऐ आपि आपे सरब समाणा ॥ (५६६-११, वडहंसु, मः १)
सरबे समाणा आपि तूहै उपाइ धंधै लाईआ ॥ (५६६-११, वडहंसु, मः १)
इकि तुझ ही कीए राजे इकना भिख भवाईआ ॥ (५६६-१२, वडहंसु, मः १)
लोभु मोहु तुझु कीआ मीठा एतु भरमि भुलाणा ॥ (५६६-१२, वडहंसु, मः १)
सदा दइआ करहु अपणी तामि नामु वखाणा ॥१॥ (५६६-१३, वडहंसु, मः १)
नामु तेरा है साचा सदा मै मनि भाणा ॥ (५६६-१३, वडहंसु, मः १)
दूखु गइआ सुखु आइ समाणा ॥ (५६६-१४, वडहंसु, मः १)
गावनि सुरि नर सुघड़ सुजाणा ॥ (५६६-१४, वडहंसु, मः १)
सुरि नर सुघड़ सुजाण गावहि जो तेरै मनि भावहे ॥ (५६६-१५, वडहंसु, मः १)

माइआ मोहे चेतहि नाही अहिला जनमु गवावहे ॥ (५६६-१५, वडहंसु, मः १)
इकि मूड़ मुगध न चेतहि मूले जो आइआ तिसु जाणा ॥ (५६६-१६, वडहंसु, मः १)
नामु तेरा सदा साचा सोइ मै मनि भाणा ॥२॥ (५६६-१६, वडहंसु, मः १)
तेरा वखतु सुहावा अमृतु तेरी बाणी ॥ (५६६-१७, वडहंसु, मः १)
सेवक सेवहि भाउ करि लागा साउ पराणी ॥ (५६६-१७, वडहंसु, मः १)
साउ प्राणी तिना लागा जिनी अमृतु पाइआ ॥ (५६६-१७, वडहंसु, मः १)
नामि तेरै जोइ राते नित चड़हि सवाइआ ॥ (५६६-१८, वडहंसु, मः १)
इकु करमु धरमु न होइ संजमु जामि न एकु पछाणी ॥ (५६६-१८, वडहंसु, मः १)
वखतु सुहावा सदा तेरा अमृत तेरी बाणी ॥३॥ (५६६-१९, वडहंसु, मः १)
हउ बलिहारी साचे नावै ॥ (५६६-१९, वडहंसु, मः १)

पन्ना ५६७

राजु तेरा कबहु न जावै ॥ (५६७-१, वडहंसु, मः १)
राजो त तेरा सदा निहचलु एहु कबहु न जावए ॥ (५६७-१, वडहंसु, मः १)
चाकरु त तेरा सोइ होवै जोइ सहजि समावए ॥ (५६७-२, वडहंसु, मः १)
दुसमनु त दूखु न लगै मूले पापु नेड़ि न आवए ॥ (५६७-२, वडहंसु, मः १)
हउ बलिहारी सदा होवा एक तेरे नावए ॥४॥ (५६७-२, वडहंसु, मः १)
जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥ (५६७-३, वडहंसु, मः १)
कीरति करहि सुआमी तेरै दुआरे ॥ (५६७-३, वडहंसु, मः १)
जपहि त साचा एकु मुरारे ॥ (५६७-४, वडहंसु, मः १)
साचा मुरारे तामि जापहि जामि मंनि वसावहे ॥ (५६७-४, वडहंसु, मः १)
भरमो भुलावा तुझहि कीआ जामि एहु चुकावहे ॥ (५६७-४, वडहंसु, मः १)
गुर परसादी करहु किरपा लेहु जमहु उबारे ॥ (५६७-५, वडहंसु, मः १)
जुगह जुगंतरि भगत तुमारे ॥५॥ (५६७-५, वडहंसु, मः १)
वडे मेरे साहिबा अलख अपारा ॥ (५६७-६, वडहंसु, मः १)
किउ करि करउ बेनंती हउ आखि न जाणा ॥ (५६७-६, वडहंसु, मः १)
नदरि करहि ता साचु पछाणा ॥ (५६७-६, वडहंसु, मः १)
साचो पछाणा तामि तेरा जामि आपि बुझावहे ॥ (५६७-७, वडहंसु, मः १)
दूख भूख संसारि कीए सहसा एहु चुकावहे ॥ (५६७-७, वडहंसु, मः १)
बिनवंति नानकु जाइ सहसा बुझै गुर बीचारा ॥ (५६७-८, वडहंसु, मः १)
वडा साहिबु है आपि अलख अपारा ॥६॥ (५६७-८, वडहंसु, मः १)
तेरे बंके लोइण दंत रीसाला ॥ (५६७-९, वडहंसु, मः १)
सोहणे नक जिन लम्मड़े वाला ॥ (५६७-९, वडहंसु, मः १)
कंचन काइआ सुइने की ढाला ॥ (५६७-९, वडहंसु, मः १)
सोवन्न ढाला कृसन माला जपहु तुसी सहेलीहो ॥ (५६७-१०, वडहंसु, मः १)

जम दुआरि न होहु खड़ीआ सिख सुणहु महेलीहो ॥ (५६७-१०, वडहंसु, मः १)
हंस हंसा बग बगा लहै मन की जाला ॥ (५६७-११, वडहंसु, मः १)
बंके लोइण दंत रीसाला ॥७॥ (५६७-११, वडहंसु, मः १)
तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥ (५६७-११, वडहंसु, मः १)
कुहकनि कोकिला तरल जुआणी ॥ (५६७-१२, वडहंसु, मः १)
तरला जुआणी आपि भाणी इछ मन की पूरीए ॥ (५६७-१२, वडहंसु, मः १)
सारंग जिउ पगु धरै ठिमि ठिमि आपि आपु संधूरए ॥ (५६७-१२, वडहंसु, मः १)
स्रीरंग राती फिरै माती उदकु गंगा वाणी ॥ (५६७-१३, वडहंसु, मः १)
बिनवंति नानकु दासु हरि का तेरी चाल सुहावी मधुराड़ी बाणी ॥८॥२॥ (५६७-१३, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला ३ छंत (५६७-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५६७-१५)
आपणे पिर कै रंगि रती मुईए सोभावंती नारे ॥ (५६७-१६, वडहंसु, मः ३)
सचै सबदि मिलि रही मुईए पिरु रावे भाइ पिआरे ॥ (५६७-१६, वडहंसु, मः ३)
सचै भाइ पिआरी कंति सवारी हरि हरि सिउ नेहु रचाइआ ॥ (५६७-१७, वडहंसु, मः ३)
आपु गवाइआ ता पिरु पाइआ गुर कै सबदि समाइआ ॥ (५६७-१७, वडहंसु, मः ३)
सा धन सबदि सुहाई प्रेम कसाई अंतरि प्रीति पिआरी ॥ (५६७-१८, वडहंसु, मः ३)
नानक सा धन मेलि लई पिरि आपे साचै साहि सवारी ॥१॥ (५६७-१८, वडहंसु, मः ३)
निरगुणवंतड़ीए पिरु देखि हदूरे राम ॥ (५६७-१९, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि जिनी राविआ मुईए पिरु रवि रहिआ भरपूरे राम ॥ (५६७-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६८

पिरु रवि रहिआ भरपूरे वेखु हजूरे जुगि जुगि एको जाता ॥ (५६८-१, वडहंसु, मः ३)
धन बाली भोली पिरु सहजि रावै मिलिआ करम बिधाता ॥ (५६८-२, वडहंसु, मः ३)
जिनि हरि रसु चाखिआ सबदि सुभाखिआ हरि सरि रही भरपूरे ॥ (५६८-२, वडहंसु, मः ३)
नानक कामणि सा पिर भावै सबदे रहै हदूरे ॥२॥ (५६८-३, वडहंसु, मः ३)
सोहागणी जाइ पूछहु मुईए जिनी विचहु आपु गवाइआ ॥ (५६८-३, वडहंसु, मः ३)
पिर का हुकमु न पाइओ मुईए जिनी विचहु आपु न गवाइआ ॥ (५६८-४, वडहंसु, मः ३)
जिनी आपु गवाइआ तिनी पिरु पाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ (५६८-५, वडहंसु, मः ३)
सदा रंगि राती सहजे माती अनदिनु नामु वखाणै ॥ (५६८-५, वडहंसु, मः ३)
कामणि वडभागी अंतरि लिव लागी हरि का प्रेमु सुभाइआ ॥ (५६८-६, वडहंसु, मः ३)
नानक कामणि सहजे राती जिनि सचु सीगारु बणाइआ ॥३॥ (५६८-६, वडहंसु, मः ३)
हउमै मारि मुईए तू चलु गुर कै भाए ॥ (५६८-७, वडहंसु, मः ३)
हरि वरु रावहि सदा मुईए निज घरि वासा पाए ॥ (५६८-७, वडहंसु, मः ३)
निज घरि वासा पाए सबदु वजाए सदा सुहागणि नारी ॥ (५६८-८, वडहंसु, मः ३)
पिरु रलीआला जोबनु बाला अनदिनु कंति सवारी ॥ (५६८-९, वडहंसु, मः ३)

हरि वरु सोहागो मसतकि भागो सचै सबदि सुहाए ॥ (५६८-९, वडहंसु, मः ३)
नानक कामणि हरि रंगि राती जा चलै सतिगुर भाए ॥४॥१॥ (५६८-१०, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५६८-१०)
गुरमुखि सभु वापारु भला जे सहजे कीजै राम ॥ (५६८-१०, वडहंसु, मः ३)
अनदिनु नामु वखाणीऐ लाहा हरि रसु पीजै राम ॥ (५६८-११, वडहंसु, मः ३)
लाहा हरि रसु लीजै हरि रावीजै अनदिनु नामु वखाणै ॥ (५६८-११, वडहंसु, मः ३)
गुण संग्रहि अवगण विकणहि आपै आपु पछाणै ॥ (५६८-१२, वडहंसु, मः ३)
गुरमति पाई वडी वडिआई सचै सबदि रसु पीजै ॥ (५६८-१३, वडहंसु, मः ३)
नानक हरि की भगति निराली गुरमुखि विरलै कीजै ॥१॥ (५६८-१३, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि खेती हरि अंतरि बीजीऐ हरि लीजै सरीरि जमाए राम ॥ (५६८-१४, वडहंसु, मः ३)
आपणे घर अंदरि रसु भुंचु तू लाहा लै परथाए राम ॥ (५६८-१४, वडहंसु, मः ३)
लाहा परथाए हरि मंनि वसाए धनु खेती वापारा ॥ (५६८-१५, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु धिआए मंनि वसाए बूझै गुर बीचारा ॥ (५६८-१५, वडहंसु, मः ३)
मनमुख खेती वणजु करि थाके तृसना भुख न जाए ॥ (५६८-१६, वडहंसु, मः ३)
नानक नामु बीजि मन अंदरि सचै सबदि सुभाए ॥२॥ (५६८-१६, वडहंसु, मः ३)
हरि वापारि से जन लागे जिना मसतकि मणी वडभागो राम ॥ (५६८-१७, वडहंसु, मः ३)
गुरमती मनु निज घरि वसिआ सचै सबदि बैरागो राम ॥ (५६८-१८, वडहंसु, मः ३)
मुखि मसतकि भागो सचि बैरागो साचि रते वीचारी ॥ (५६८-१८, वडहंसु, मः ३)
नाम बिना सभु जगु बउराना सबदे हउमै मारी ॥ (५६८-१९, वडहंसु, मः ३)
साचै सबदि लागि मति उपजै गुरमुखि नामु सोहागो ॥ (५६८-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६९

नानक सबदि मिलै भउ भंजनु हरि रावै मसतकि भागो ॥३॥ (५६९-१, वडहंसु, मः ३)
खेती वणजु सभु हुकमु है हुकमे मंनि वडिआई राम ॥ (५६९-१, वडहंसु, मः ३)
गुरमती हुकमु बूझीऐ हुकमे मेलि मिलाई राम ॥ (५६९-२, वडहंसु, मः ३)
हुकमि मिलाई सहजि समाई गुर का सबदु अपारा ॥ (५६९-२, वडहंसु, मः ३)
सची वडिआई गुर ते पाई सचु सवारणहारा ॥ (५६९-३, वडहंसु, मः ३)
भउ भंजनु पाइआ आपु गवाइआ गुरमुखि मेलि मिलाई ॥ (५६९-३, वडहंसु, मः ३)
कहु नानक नामु निरंजनु अगमु अगोचरु हुकमे रहिआ समाई ॥४॥२॥ (५६९-४, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५६९-५)
मन मेरिआ तू सदा सचु समालि जीउ ॥ (५६९-५, वडहंसु, मः ३)
आपणै घरि तू सुखि वसहि पोहि न सकै जमकालु जीउ ॥ (५६९-५, वडहंसु, मः ३)
कालु जालु जमु जोहि न साकै साचै सबदि लिव लाए ॥ (५६९-६, वडहंसु, मः ३)
सदा सचि रता मनु निरमलु आवणु जाणु रहाए ॥ (५६९-६, वडहंसु, मः ३)
दूजै भाइ भरमि विगुती मनमुखि मोही जमकालि ॥ (५६९-७, वडहंसु, मः ३)

कहै नानकु सुणि मन मेरे तू सदा सचु समालि ॥१॥ (५६९-७, वडहंसु, मः ३)
मन मेरिआ अंतरि तेरै निधानु है बाहरि वसतु न भालि ॥ (५६९-८, वडहंसु, मः ३)
जो भावै सो भुंचि तू गुरमुखि नदरि निहालि ॥ (५६९-९, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि नदरि निहालि मन मेरे अंतरि हरि नामु सखाई ॥ (५६९-९, वडहंसु, मः ३)
मनमुख अंधुले गिआन विहूणे दूजै भाइ खुआई ॥ (५६९-१०, वडहंसु, मः ३)
बिनु नावै को छूटै नाही सभ बाधी जमकालि ॥ (५६९-१०, वडहंसु, मः ३)
नानक अंतरि तेरै निधानु है तू बाहरि वसतु न भालि ॥२॥ (५६९-११, वडहंसु, मः ३)
मन मेरिआ जनमु पदारथु पाइ कै इकि सचि लगे वापारा ॥ (५६९-११, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरु सेवनि आपणा अंतरि सबदु अपारा ॥ (५६९-१२, वडहंसु, मः ३)
अंतरि सबदु अपारा हरि नामु पिआरा नामे नउ निधि पाई ॥ (५६९-१२, वडहंसु, मः ३)
मनमुख माइआ मोह विआपे दूखि संतापे दूजै पति गवाई ॥ (५६९-१३, वडहंसु, मः ३)
हउमै मारि सचि सबदि समाणे सचि रते अधिकाई ॥ (५६९-१३, वडहंसु, मः ३)
नानक माणस जनमु दुलम्भु है सतिगुरि बूझ बुझाई ॥३॥ (५६९-१४, वडहंसु, मः ३)
मन मेरे सतिगुरु सेवनि आपणा से जन वडभागी राम ॥ (५६९-१५, वडहंसु, मः ३)
जो मनु मारहि आपणा से पुरख बैरागी राम ॥ (५६९-१५, वडहंसु, मः ३)
से जन बैरागी सचि लिव लागी आपणा आपु पछाणिआ ॥ (५६९-१६, वडहंसु, मः ३)
मति निहचल अति गूड़ी गुरमुखि सहजे नामु वखाणिआ ॥ (५६९-१६, वडहंसु, मः ३)
इक कामणि हितकारी माइआ मोहि पिआरी मनमुख सोइ रहे अभागे ॥ (५६९-१७, वडहंसु, मः ३)
नानक सहजे सेवहि गुरु अपणा से पूरे वडभागे ॥४॥३॥ (५६९-१८, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५६९-१८)
रतन पदार्थ वणजीअहि सतिगुरि दीआ बुझाई राम ॥ (५६९-१८, वडहंसु, मः ३)
लाहा लाभु हरि भगति है गुण महि गुणी समाई राम ॥ (५६९-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५७०

गुण महि गुणी समाए जिसु आपि बुझाए लाहा भगति सैसारे ॥ (५७०-१, वडहंसु, मः ३)
बिनु भगती सुखु न होई दूजै पति खोई गुरमति नामु अधारे ॥ (५७०-१, वडहंसु, मः ३)
वखरु नामु सदा लाभु है जिस नो एतु वापारि लाए ॥ (५७०-२, वडहंसु, मः ३)
रतन पदार्थ वणजीअहि जाँ सतिगुरु देइ बुझाए ॥१॥ (५७०-२, वडहंसु, मः ३)
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा राम ॥ (५७०-३, वडहंसु, मः ३)
कूड़ु बोलि बिखु खावणी बहु वधहि विकारा राम ॥ (५७०-३, वडहंसु, मः ३)
बहु वधहि विकारा सहसा इहु संसारा बिनु नावै पति खोई ॥ (५७०-४, वडहंसु, मः ३)
पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणहि बिनु बूझे सुखु न होई ॥ (५७०-४, वडहंसु, मः ३)
आवण जाणा कदे न चूकै माइआ मोह पिआरा ॥ (५७०-५, वडहंसु, मः ३)
माइआ मोहु सभु दुखु है खोटा इहु वापारा ॥२॥ (५७०-६, वडहंसु, मः ३)
खोटे खरे सभि परखीअनि तितु सचे कै दरबारा राम ॥ (५७०-६, वडहंसु, मः ३)

खोटे दरगह सुटीअनि ऊभे करनि पुकारा राम ॥ (५७०-७, वडहंसु, मः ३)
ऊभे करनि पुकारा मुगध गवारा मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ (५७०-७, वडहंसु, मः ३)
बिखिआ माइआ जिनि जगतु भुलाइआ साचा नामु न भाइआ ॥ (५७०-८, वडहंसु, मः ३)
मनमुख संता नालि वैरु करि दुखु खटे संसारा ॥ (५७०-८, वडहंसु, मः ३)
खोटे खरे परखीअनि तितु सचै दरवारा राम ॥३॥ (५७०-९, वडहंसु, मः ३)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई राम ॥ (५७०-९, वडहंसु, मः ३)
जितु भावै तितु लाइसी जिउ तिस दी वडिआई राम ॥ (५७०-१०, वडहंसु, मः ३)
जिउ तिस दी वडिआई आपि कराई वरीआमु न फुसी कोई ॥ (५७०-१०, वडहंसु, मः ३)
जगजीवनु दाता करमि बिधाता आपे बखसे सोई ॥ (५७०-११, वडहंसु, मः ३)
गुर परसादी आपु गवाईऐ नानक नामि पति पाई ॥ (५७०-१२, वडहंसु, मः ३)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करणा किछू न जाई ॥४॥४॥ (५७०-१२, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५७०-१३)
सचा सउदा हरि नामु है सचा वापारा राम ॥ (५७०-१३, वडहंसु, मः ३)
गुरमती हरि नामु वणजीऐ अति मोलु अफारा राम ॥ (५७०-१३, वडहंसु, मः ३)
अति मोलु अफारा सच वापारा सचि वापारि लगे वडभागी ॥ (५७०-१४, वडहंसु, मः ३)
अंतरि बाहरि भगती राते सचि नामि लिव लागी ॥ (५७०-१४, वडहंसु, मः ३)
नदरि करे सोई सचु पाए गुर कै सबदि वीचारा ॥ (५७०-१५, वडहंसु, मः ३)
नानक नामि रते तिन ही सुखु पाइआ साचै के वापारा ॥१॥ (५७०-१५, वडहंसु, मः ३)
हंउमै माइआ मैलु है माइआ मैलु भरीजै राम ॥ (५७०-१६, वडहंसु, मः ३)
गुरमती मनु निरमला रसना हरि रसु पीजै राम ॥ (५७०-१७, वडहंसु, मः ३)
रसना हरि रसु पीजै अंतरु भीजै साच सबदि बीचारी ॥ (५७०-१७, वडहंसु, मः ३)
अंतरि खूहटा अमृति भरिआ सबदे काढि पीऐ पनिहारी ॥ (५७०-१८, वडहंसु, मः ३)
जिसु नदरि करे सोई सचि लागै रसना रामु रवीजै ॥ (५७०-१८, वडहंसु, मः ३)
नानक नामि रते से निर्मल होर हउमै मैलु भरीजै ॥२॥ (५७०-१९, वडहंसु, मः ३)
पंडित जोतकी सभि पड़ि पड़ि कूकदे किसु पहि करहि पुकारा राम ॥ (५७०-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५७१

माइआ मोहु अंतरि मलु लागै माइआ के वापारा राम ॥ (५७१-१, वडहंसु, मः ३)
माइआ के वापारा जगति पिआरा आवणि जाणि दुखु पाई ॥ (५७१-२, वडहंसु, मः ३)
बिखु का कीड़ा बिखु सिउ लागा बिष्टा माहि समाई ॥ (५७१-२, वडहंसु, मः ३)
जो धुरि लिखिआ सोइ कमावै कोइ न मेटणहारा ॥ (५७१-३, वडहंसु, मः ३)
नानक नामि रते तिन सदा सुखु पाइआ होरि मूरख कूकि मुए गावारा ॥३॥ (५७१-३, वडहंसु, मः ३)
माइआ मोहि मनु रंगिआ मोहि सुधि न काई राम ॥ (५७१-४, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि इहु मनु रंगीऐ दूजा रंगु जाई राम ॥ (५७१-५, वडहंसु, मः ३)
दूजा रंगु जाई साचि समाई सचि भरे भंडारा ॥ (५७१-५, वडहंसु, मः ३)

गुरमुखि होवै सोई बूझै सचि सवारणहारा ॥ (५७१-६, वडहंसु, मः ३)
आपे मेले सो हरि मिलै होरु कहणा किछू न जाए ॥ (५७१-६, वडहंसु, मः ३)
नानक विणु नावै भरमि भुलाइआ इकि नामि रते रंगु लाए ॥४॥५॥ (५७१-६, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५७१-७)
ए मन मेरिआ आवा गउणु संसारु है अंति सचि निबेड़ा राम ॥ (५७१-७, वडहंसु, मः ३)
आपे सचा बखसि लए फिरि होइ न फेरा राम ॥ (५७१-८, वडहंसु, मः ३)
फिरि होइ न फेरा अंति सचि निबेड़ा गुरमुखि मिलै वडिआई ॥ (५७१-८, वडहंसु, मः ३)
साचै रंगि राते सहजे माते सहजे रहे समाई ॥ (५७१-९, वडहंसु, मः ३)
सचा मनि भाइआ सचु वसाइआ सबदि रते अंति निबेरा ॥ (५७१-१०, वडहंसु, मः ३)
नानक नामि रते से सचि समाणे बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥ (५७१-१०, वडहंसु, मः ३)
माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥ (५७१-११, वडहंसु, मः ३)
माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥ (५७१-११, वडहंसु, मः ३)
हेते पलचाई पुरबि कमाई मेटि न सकै कोई ॥ (५७१-१२, वडहंसु, मः ३)
जिनि सृसटि साजी सो करि वेखै तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ (५७१-१२, वडहंसु, मः ३)
मनमुखि अंधा तपि तपि खपै बिनु सबदै सांति न आई ॥ (५७१-१३, वडहंसु, मः ३)
नानक बिनु नावै सभु कोई भुला माइआ मोहि खुआई ॥२॥ (५७१-१४, वडहंसु, मः ३)
एहु जगु जलता देखि कै भजि पए हरि सरणाई राम ॥ (५७१-१४, वडहंसु, मः ३)
अरदासि करी गुर पूरे आगै रखि लेवहु देहु वडाई राम ॥ (५७१-१५, वडहंसु, मः ३)
रखि लेवहु सरणाई हरि नामु वडाई तुधु जेवडु अवरु न दाता ॥ (५७१-१५, वडहंसु, मः ३)
सेवा लागे से वडभागे जुगि जुगि एको जाता ॥ (५७१-१६, वडहंसु, मः ३)
जतु सतु संजमु कर्म कमावै बिनु गुर गति नही पाई ॥ (५७१-१६, वडहंसु, मः ३)
नानक तिस नो सबदु बुझाए जो जाइ पवै हरि सरणाई ॥३॥ (५७१-१७, वडहंसु, मः ३)
जो हरि मति देइ सा ऊपजै होर मति न काई राम ॥ (५७१-१८, वडहंसु, मः ३)
अंतरि बाहरि एकु तू आपे देहि बुझाई राम ॥ (५७१-१८, वडहंसु, मः ३)
आपे देहि बुझाई अवर न भाई गुरमुखि हरि रसु चाखिआ ॥ (५७१-१९, वडहंसु, मः ३)
दरि साचै सदा है साचा साचै सबदि सुभाखिआ ॥ (५७१-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५७२

घर महि निज घरु पाइआ सतिगुरु देइ वडाई ॥ (५७२-१, वडहंसु, मः ३)
नानक जो नामि रते सेई महलु पाइनि मति परवाणु सचु साई ॥४॥६॥ (५७२-१, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ४ छंत (५७२-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५७२-३)
मेरै मनि मेरै मनि सतिगुरि प्रीति लगाई राम ॥ (५७२-४, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई राम ॥ (५७२-४, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि नामु मेरै मंनि वसाई सभि दूख विसारणहारा ॥ (५७२-५, वडहंसु, मः ४)

वडभागी गुर दरसनु पाइआ धनु धनु सतिगुरू हमारा ॥ (५७२-५, वडहंसु, मः ४)
ऊठत बैठत सतिगुरु सेवह जितु सेविऐ सांति पाई ॥ (५७२-६, वडहंसु, मः ४)
मेरै मनि मेरै मनि सतिगुर प्रीति लगाई ॥१॥ (५७२-६, वडहंसु, मः ४)
हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे राम ॥ (५७२-७, वडहंसु, मः ४)
हरि नामो हरि नामु दृड़ाए जपि हरि हरि नामु विगसे राम ॥ (५७२-७, वडहंसु, मः ४)
जपि हरि हरि नामु कमल परगासे हरि नामु नवं निधि पाई ॥ (५७२-८, वडहंसु, मः ४)
हउमै रोगु गइआ दुखु लाथा हरि सहजि समाधि लगाई ॥ (५७२-८, वडहंसु, मः ४)
हरि नामु वडाई सतिगुर ते पाई सुखु सतिगुर देव मनु परसे ॥ (५७२-९, वडहंसु, मः ४)
हउ जीवा हउ जीवा सतिगुर देखि सरसे ॥२॥ (५७२-१०, वडहंसु, मः ४)
कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा राम ॥ (५७२-१०, वडहंसु, मः ४)
हउ मनु तनु हउ मनु तनु देवा तिसु काटि सरीरा राम ॥ (५७२-११, वडहंसु, मः ४)
हउ मनु तनु काटि काटि तिसु देई जो सतिगुर बचन सुणाए ॥ (५७२-११, वडहंसु, मः ४)
मेरै मनि बैरागु भइआ बैरागी मिलि गुर दरसनि सुखु पाए ॥ (५७२-१२, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि कृपा करहु सुखदाते देहु सतिगुर चरन हम धूरा ॥ (५७२-१३, वडहंसु, मः ४)
कोई आणि कोई आणि मिलावै मेरा सतिगुरु पूरा ॥३॥ (५७२-१३, वडहंसु, मः ४)
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई राम ॥ (५७२-१४, वडहंसु, मः ४)
हरि दानो हरि दानु देवै हरि पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ (५७२-१४, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन का दुखु भरमु भउ भागा ॥ (५७२-१५, वडहंसु, मः ४)
सेवक भाइ मिले वडभागी जिन गुर चरनी मनु लागा ॥ (५७२-१५, वडहंसु, मः ४)
कहु नानक हरि आपि मिलाए मिलि सतिगुर पुरख सुखु होई ॥ (५७२-१६, वडहंसु, मः ४)
गुर जेवडु गुर जेवडु दाता मै अवरु न कोई ॥४॥१॥ (५७२-१७, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ४ ॥ (५७२-१७)
हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी राम ॥ (५७२-१७, वडहंसु, मः ४)
जगजीवनु जगजीवनु दाता गुर मेलि समाणी राम ॥ (५७२-१८, वडहंसु, मः ४)
सतिगुरु मेलि हरि नामि समाणी जपि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ (५७२-१८, वडहंसु, मः ४)
जिसु कारणि हंउ ढूंढि ढूढेदी सो सजणु हरि घरि पाइआ ॥ (५७२-१९, वडहंसु, मः ४)

पन्ना ५७३

एक दृष्टि हरि एको जाता हरि आतम रामु पछाणी ॥ (५७३-१, वडहंसु, मः ४)
हंउ गुर बिनु हंउ गुर बिनु खरी निमाणी ॥१॥ (५७३-१, वडहंसु, मः ४)
जिना सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए राम ॥ (५७३-२, वडहंसु, मः ४)
तिन चरण तिन चरण सरेवह हम लागह तिन कै पाए राम ॥ (५७३-२, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि चरण सरेवह तिन के जिन सतिगुरु पुरखु प्रभु ध्याइआ ॥ (५७३-३, वडहंसु, मः ४)
तू वडदाता अंतरजामी मेरी सरधा पूरि हरि राइआ ॥ (५७३-४, वडहंसु, मः ४)
गुरसिख मेलि मेरी सरधा पूरी अनदिनु राम गुण गाए ॥ (५७३-४, वडहंसु, मः ४)

जिन सतिगुरु जिन सतिगुरु पाइआ तिन हरि प्रभु मेलि मिलाए ॥२॥ (५७३-५, वडहंसु, मः ४)
हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे राम ॥ (५७३-६, वडहंसु, मः ४)
हरि नामो हरि नामु सुणाए मेरा प्रीतमु नामु अधारे राम ॥ (५७३-६, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि नामु मेरा प्रान सखाई तिसु बिनु घड़ी निमख नही जीवाँ ॥ (५७३-७, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि कृपा करे सुखदाता गुरमुखि अमृतु पीवाँ ॥ (५७३-७, वडहंसु, मः ४)
हरि आपे सरधा लाइ मिलाए हरि आपे आपि सवारे ॥ (५७३-८, वडहंसु, मः ४)
हंउ वारी हंउ वारी गुरसिख मीत पिआरे ॥३॥ (५७३-८, वडहंसु, मः ४)
हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई राम ॥ (५७३-९, वडहंसु, मः ४)
हरि आपे हरि आपे मेलै करै सो होई राम ॥ (५७३-९, वडहंसु, मः ४)
जो हरि प्रभ भावै सोई होवै अवरु न करणा जाई ॥ (५७३-१०, वडहंसु, मः ४)
बहुतु सिआणप लइआ न जाई करि थाके सभि चतुराई ॥ (५७३-१०, वडहंसु, मः ४)
गुर प्रसादि जन नानक देखिआ मै हरि बिनु अवरु न कोई ॥ (५७३-११, वडहंसु, मः ४)
हरि आपे हरि आपे पुरखु निरंजनु सोई ॥४॥२॥ (५७३-११, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ४ ॥ (५७३-१२)
हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ राम ॥ (५७३-१२, वडहंसु, मः ४)
तिमर अगिआनु गवाइआ गुर गिआनु अंजनु गुरि पाइआ राम ॥ (५७३-१३, वडहंसु, मः ४)
गुर गिआन अंजनु सतिगुरू पाइआ अगिआन अंधेर बिनासे ॥ (५७३-१४, वडहंसु, मः ४)
सतिगुर सेवि पर्म पदु पाइआ हरि जपिआ सास गिरासे ॥ (५७३-१४, वडहंसु, मः ४)
जिन कंउ हरि प्रभि किरपा धारी ते सतिगुर सेवा लाइआ ॥ (५७३-१५, वडहंसु, मः ४)
हरि सतिगुर हरि सतिगुर मेलि हरि सतिगुर चरण हम भाइआ ॥१॥ (५७३-१५, वडहंसु, मः ४)
मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई राम ॥ (५७३-१६, वडहंसु, मः ४)
हरि नामो हरि नामु देवै मेरा अंति सखाई राम ॥ (५७३-१७, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि नामु मेरा अंति सखाई गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ ॥ (५७३-१७, वडहंसु, मः ४)
जिथै पुतु कलत्रु कोई बेली नाही तिथै हरि हरि नामि छडाइआ ॥ (५७३-१८, वडहंसु, मः ४)
धनु धनु सतिगुरु पुरखु निरंजनु जितु मिलि हरि नामु धिआई ॥ (५७३-१९, वडहंसु, मः ४)
मेरा सतिगुरु मेरा सतिगुरु पिआरा मै गुर बिनु रहणु न जाई ॥२॥ (५७३-१९, वडहंसु, मः ४)

पन्ना ५७४

जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ राम ॥ (५७४-१, वडहंसु, मः ४)
तिन निहफलु तिन निहफलु जनमु सभु बृथा गवाइआ राम ॥ (५७४-२, वडहंसु, मः ४)
निहफलु जनमु तिन बृथा गवाइआ ते साकत मुए मरि झूरे ॥ (५७४-२, वडहंसु, मः ४)
घरि होदै रतनि पदारथि भूखे भागहीण हरि दूरे ॥ (५७४-३, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि तिन का दरसु न करीअहु जिनी हरि हरि नामु न धिआइआ ॥ (५७४-३, वडहंसु, मः ४)
जिनी दरसनु जिनी दरसनु सतिगुर पुरख न पाइआ ॥३॥ (५७४-४, वडहंसु, मः ४)
हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेनंती राम ॥ (५७४-५, वडहंसु, मः ४)

गुर मिलि गुर मेलि मेरा पिआरा हम सतिगुर करह भगती राम ॥ (५७४-५, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि सतिगुर करह भगती जाँ हरि प्रभु किरपा धारे ॥ (५७४-६, वडहंसु, मः ४)
मै गुर बिनु अवरु न कोई बेली गुरु सतिगुरु प्राण हम्हारे ॥ (५७४-७, वडहंसु, मः ४)
कहु नानक गुरि नामु दृड़्हाइआ हरि हरि नामु हरि सती ॥ (५७४-७, वडहंसु, मः ४)
हम चातृक हम चातृक दीन हरि पासि बेनंती ॥४॥३॥ (५७४-८, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ४ ॥ (५७४-९)
हरि किरपा हरि किरपा करि सतिगुरु मेलि सुखदाता राम ॥ (५७४-९, वडहंसु, मः ४)
हम पूछह हम पूछह सतिगुर पासि हरि बाता राम ॥ (५७४-९, वडहंसु, मः ४)
सतिगुर पासि हरि बात पूछह जिनि नामु पदारथु पाइआ ॥ (५७४-१०, वडहंसु, मः ४)
पाइ लगह नित करह बिनंती गुरि सतिगुरि पंथु बताइआ ॥ (५७४-१०, वडहंसु, मः ४)
सोई भगतु दुखु सुखु समतु करि जाणै हरि हरि नामि हरि राता ॥ (५७४-११, वडहंसु, मः ४)
हरि किरपा हरि किरपा करि गुरु सतिगुरु मेलि सुखदाता ॥१॥ (५७४-१२, वडहंसु, मः ४)
सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामि सभि बिनसे हंउमै पापा राम ॥ (५७४-१२, वडहंसु, मः ४)
जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु लथिअड़े जगि तापा राम ॥ (५७४-१३, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि नामु जिनी आराधिआ तिन के दुख पाप निवारे ॥ (५७४-१४, वडहंसु, मः ४)
सतिगुरि गिआन खड़गु हथि दीना जमकंकर मारि बिदारे ॥ (५७४-१४, वडहंसु, मः ४)
हरि प्रभि कृपा धारी सुखदाते दुख लाथे पाप संतापा ॥ (५७४-१५, वडहंसु, मः ४)
सुणि गुरमुखि सुणि गुरमुखि नामु सभि बिनसे हंउमै पापा ॥२॥ (५७४-१५, वडहंसु, मः ४)
जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ राम ॥ (५७४-१६, वडहंसु, मः ४)
मुखि गुरमुखि मुखि गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ राम ॥ (५७४-१७, वडहंसु, मः ४)
गुरमुखि जपि सभि रोग गवाइआ अरोगत भए सरीरा ॥ (५७४-१७, वडहंसु, मः ४)
अनदिनु सहज समाधि हरि लागी हरि जपिआ गहिर गम्भीरा ॥ (५७४-१८, वडहंसु, मः ४)
जाति अजाति नामु जिन धिआइआ तिन पर्म पदारथु पाइआ ॥ (५७४-१८, वडहंसु, मः ४)
जपि हरि हरि जपि हरि हरि नामु मेरै मनि भाइआ ॥३॥ (५७४-१९, वडहंसु, मः ४)

पन्ना ५७५

हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥ (५७५-१, वडहंसु, मः ४)
हम पापी हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे राम ॥ (५७५-१, वडहंसु, मः ४)
हम पापी निरगुण दीन तुम्हारे हरि दैआल सरणाइआ ॥ (५७५-२, वडहंसु, मः ४)
तू दुख भंजनु सर्ब सुखदाता हम पाथर तरे तराइआ ॥ (५७५-२, वडहंसु, मः ४)
सतिगुर भेटि राम रसु पाइआ जन नानक नामि उधारे ॥ (५७५-३, वडहंसु, मः ४)
हरि धारहु हरि धारहु किरपा करि किरपा लेहु उबारे राम ॥४॥४॥ (५७५-४, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ४ घोड़ीआ (५७५-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५७५-५)
देह तेजणि जी रामि उपाईआ राम ॥ (५७५-६, वडहंसु, मः ४)

धन्नु माणस जनमु पुंनि पाईआ राम ॥ (५७५-६, वडहंसु, मः ४)
माणस जनमु वड पुन्ने पाइआ देह सु कंचन चंगड़ीआ ॥ (५७५-६, वडहंसु, मः ४)
गुरमुखि रंगु चलूला पावै हरि हरि हरि नव रंगड़ीआ ॥ (५७५-७, वडहंसु, मः ४)
एह देह सु बाँकी जितु हरि जापी हरि हरि नामि सुहावीआ ॥ (५७५-७, वडहंसु, मः ४)
वडभागी पाई नामु सखाई जन नानक रामि उपाईआ ॥१॥ (५७५-८, वडहंसु, मः ४)
देह पावउ जीनु बुझि चंगा राम ॥ (५७५-९, वडहंसु, मः ४)
चड़ि लंघा जी बिखमु भुइअंगा राम ॥ (५७५-९, वडहंसु, मः ४)
बिखमु भुइअंगा अनत तरंगा गुरमुखि पारि लंघाए ॥ (५७५-९, वडहंसु, मः ४)
हरि बोहिथि चड़ि वडभागी लंघै गुरु खेवटु सबदि तराए ॥ (५७५-१०, वडहंसु, मः ४)
अनदिनु हरि रंगि हरि गुण गावै हरि रंगी हरि रंगा ॥ (५७५-११, वडहंसु, मः ४)
जन नानक निरबाण पदु पाइआ हरि उतमु हरि पदु चंगा ॥२॥ (५७५-११, वडहंसु, मः ४)
कड़ीआलु मुखे गुरि गिआनु दृड़ाइआ राम ॥ (५७५-१२, वडहंसु, मः ४)
तनि प्रेमु हरि चाबकु लाइआ राम ॥ (५७५-१२, वडहंसु, मः ४)
तनि प्रेमु हरि हरि लाइ चाबकु मनु जिणै गुरमुखि जीतिआ ॥ (५७५-१३, वडहंसु, मः ४)
अघड़ो घड़ावै सबदु पावै अपिउ हरि रसु पीतिआ ॥ (५७५-१३, वडहंसु, मः ४)
सुणि स्रवण बाणी गुरि वखाणी हरि रंगु तुरी चड़ाइआ ॥ (५७५-१४, वडहंसु, मः ४)
महा मारगु पंथु बिखड़ा जन नानक पारि लंघाइआ ॥३॥ (५७५-१४, वडहंसु, मः ४)
घोड़ी तेजणि देह रामि उपाईआ राम ॥ (५७५-१५, वडहंसु, मः ४)
जितु हरि प्रभु जापै सा धनु धन्नु तुखाईआ राम ॥ (५७५-१५, वडहंसु, मः ४)
जितु हरि प्रभु जापै सा धन्नु साबासै धुरि पाइआ किरतु जुड़ंदा ॥ (५७५-१६, वडहंसु, मः ४)
चड़ि देहड़ि घोड़ी बिखमु लघाए मिलु गुरमुखि परमानंदा ॥ (५७५-१७, वडहंसु, मः ४)
हरि हरि काजु रचाइआ पूरै मिलि संत जना जंञ आई ॥ (५७५-१७, वडहंसु, मः ४)
जन नानक हरि वरु पाइआ मंगलु मिलि संत जना वाधाई ॥४॥१॥५॥ (५७५-१८, वडहंसु, मः ४)
वडहंसु महला ४ ॥ (५७५-१९)
देह तेजनड़ी हरि नव रंगीआ राम ॥ (५७५-१९, वडहंसु, मः ४)
गुर गिआनु गुरू हरि मंगीआ राम ॥ (५७५-१९, वडहंसु, मः ४)

पन्ना ५७६

गिआन मंगी हरि कथा चंगी हरि नामु गति मिति जाणीआ ॥ (५७६-१, वडहंसु, मः ४)
सभु जनमु सफलिउ कीआ करतै हरि राम नामि वखाणीआ ॥ (५७६-१, वडहंसु, मः ४)
हरि राम नामु सलाहि हरि प्रभ हरि भगति हरि जन मंगीआ ॥ (५७६-२, वडहंसु, मः ४)
जनु कहै नानकु सुणहु संतहु हरि भगति गोविंद चंगीआ ॥१॥ (५७६-२, वडहंसु, मः ४)
देह कंचन जीनु सुविना राम ॥ (५७६-३, वडहंसु, मः ४)
जड़ि हरि हरि नामु रतन्ना राम ॥ (५७६-३, वडहंसु, मः ४)
जड़ि नाम रतनु गोविंद पाइआ हरि मिले हरि गुण सुख घणे ॥ (५७६-४, वडहंसु, मः ४)

गुर सबदु पाइआ हरि नामु धिआइआ वडभागी हरि रंग हरि बणे ॥ (५७६-४, वडहंसु, मः ४)
हरि मिले सुआमी अंतरजामी हरि नवतन हरि नव रंगीआ ॥ (५७६-५, वडहंसु, मः ४)
नानकु वखाणै नामु जाणै हरि नामु हरि प्रभ मंगीआ ॥२॥ (५७६-६, वडहंसु, मः ४)
कड़ीआलु मुखे गुरि अंकसु पाइआ राम ॥ (५७६-६, वडहंसु, मः ४)
मनु मैगलु गुर सबदि वसि आइआ राम ॥ (५७६-७, वडहंसु, मः ४)
मनु वसगति आइआ परम पदु पाइआ सा धन कंति पिआरी ॥ (५७६-७, वडहंसु, मः ४)
अंतरि प्रेमु लगा हरि सेती घरि सोहै हरि प्रभ नारी ॥ (५७६-८, वडहंसु, मः ४)
हरि रंगि राती सहजे माती हरि प्रभु हरि हरि पाइआ ॥ (५७६-८, वडहंसु, मः ४)
नानक जनु हरि दासु कहतु है वडभागी हरि हरि धिआइआ ॥३॥ (५७६-९, वडहंसु, मः ४)
देह घोड़ी जी जितु हरि पाइआ राम ॥ (५७६-१०, वडहंसु, मः ४)
मिलि सतिगुर जी मंगलु गाइआ राम ॥ (५७६-१०, वडहंसु, मः ४)
हरि गाइ मंगलु राम नामा हरि सेव सेवक सेवकी ॥ (५७६-१०, वडहंसु, मः ४)
प्रभ जाइ पावै रंग महली हरि रंगु माणै रंग की ॥ (५७६-११, वडहंसु, मः ४)
गुण राम गाए मनि सुभाए हरि गुरमती मनि धिआइआ ॥ (५७६-११, वडहंसु, मः ४)
जन नानक हरि किरपा धारी देह घोड़ी चड़ि हरि पाइआ ॥४॥२॥६॥ (५७६-१२, वडहंसु, मः ४)
रागु वडहंसु महला ५ छंत घरु ४ (५७६-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५७६-१४)
गुर मिलि लधा जी रामु पिआरा राम ॥ (५७६-१५, वडहंसु, मः ५)
इहु तनु मनु दितड़ा वारो वारा राम ॥ (५७६-१५, वडहंसु, मः ५)
तनु मनु दिता भवजलु जिता चूकी काँणि जमाणी ॥ (५७६-१५, वडहंसु, मः ५)
असथिरु थीआ अमृतु पीआ रहिआ आवण जाणी ॥ (५७६-१६, वडहंसु, मः ५)
सो घरु लधा सहजि समधा हरि का नामु अधारा ॥ (५७६-१६, वडहंसु, मः ५)
कहु नानक सुखि माणे रलीआँ गुर पूरे कंउ नमसकारा ॥१॥ (५७६-१७, वडहंसु, मः ५)
सुणि सजण जी मैडड़े मीता राम ॥ (५७६-१७, वडहंसु, मः ५)
गुरि मंत्रु सबदु सचु दीता राम ॥ (५७६-१८, वडहंसु, मः ५)
सचु सबदु धिआइआ मंगलु गाइआ चूके मनहु अदेसा ॥ (५७६-१८, वडहंसु, मः ५)
सो प्रभु पाइआ कतहि न जाइआ सदा सदा संगि बैसा ॥ (५७६-१९, वडहंसु, मः ५)
प्रभ जी भाणा सचा माणा प्रभि हरि धनु सहजे दीता ॥ (५७६-१९, वडहंसु, मः ५)

पन्ना ५७७

कहु नानक तिसु जन बलिहारी तेरा दानु सभनी है लीता ॥२॥ (५७७-१, वडहंसु, मः ५)
तउ भाणा ताँ तृपति अघाए राम ॥ (५७७-२, वडहंसु, मः ५)
मनु थीआ ठंढा सभ तृसन बुझाए राम ॥ (५७७-२, वडहंसु, मः ५)
मनु थीआ ठंढा चूकी डंझा पाइआ बहुतु खजाना ॥ (५७७-२, वडहंसु, मः ५)
सिख सेवक सभि भुंचण लगे हंउ सतगुर कै कुरबाना ॥ (५७७-३, वडहंसु, मः ५)

निरभउ भए खसम रंगि राते जम की त्रास बुझाए ॥ (५७७-३, वडहंसु, मः ५)
नानक दासु सदा संगि सेवकु तेरी भगति करंउ लिव लाए ॥३॥ (५७७-४, वडहंसु, मः ५)
पूरी आसा जी मनसा मेरे राम ॥ (५७७-५, वडहंसु, मः ५)
मोहि निरगुण जीउ सभि गुण तेरे राम ॥ (५७७-५, वडहंसु, मः ५)
सभि गुण तेरे ठाकुर मेरे कितु मुखि तुधु सालाही ॥ (५७७-५, वडहंसु, मः ५)
गुणु अवगुणु मेरा किछु न बीचारिआ बखसि लीआ खिन माही ॥ (५७७-६, वडहंसु, मः ५)
नउ निधि पाई वजी वाधाई वाजे अनहद तूरे ॥ (५७७-६, वडहंसु, मः ५)
कहु नानक मै वरु घरि पाइआ मेरे लाथे जी सगल विसूरे ॥४॥१॥ (५७७-७, वडहंसु, मः ५)
सलोकु ॥ (५७७-८)
किआ सुणेदो कूड़ु वंञनि पवण झुलारिआ ॥ (५७७-८, वडहंसु, मः ५)
नानक सुणीअर ते परवाणु जो सुणेदे सचु धणी ॥१॥ (५७७-८, वडहंसु, मः ५)
छंतु ॥ (५७७-९)
तिन घोलि घुमाई जिन प्रभु स्रवणी सुणिआ राम ॥ (५७७-९, वडहंसु, मः ५)
से सहजि सुहेले जिन हरि हरि रसना भणिआ राम ॥ (५७७-९, वडहंसु, मः ५)
से सहजि सुहेले गुणह अमोले जगत उधारण आए ॥ (५७७-१०, वडहंसु, मः ५)
भै बोहिथ सागर प्रभ चरणा केते पारि लघाए ॥ (५७७-१०, वडहंसु, मः ५)
जिन कंउ कृपा करी मेरै ठाकुरि तिन का लेखा न गणिआ ॥ (५७७-११, वडहंसु, मः ५)
कहु नानक तिसु घोलि घुमाई जिनि प्रभु स्रवणी सुणिआ ॥१॥ (५७७-११, वडहंसु, मः ५)
सलोकु ॥ (५७७-१२)
लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ (५७७-१२, वडहंसु, मः ५)
नानक से अखड़ीआँ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥१॥ (५७७-१३, वडहंसु, मः ५)
छंतु ॥ (५७७-१३)
जिनी हरि प्रभु डिठा तिन कुरबाणे राम ॥ (५७७-१३, वडहंसु, मः ५)
से साची दरगह भाणे राम ॥ (५७७-१४, वडहंसु, मः ५)
ठाकुरि माने से परधाने हरि सेती रंगि राते ॥ (५७७-१४, वडहंसु, मः ५)
हरि रसहि अघाए सहजि समाए घटि घटि रमईआ जाते ॥ (५७७-१४, वडहंसु, मः ५)
सेई सजण संत से सुखीए ठाकुर अपणे भाणे ॥ (५७७-१५, वडहंसु, मः ५)
कहु नानक जिन हरि प्रभु डिठा तिन कै सद कुरबाणे ॥२॥ (५७७-१६, वडहंसु, मः ५)
सलोकु ॥ (५७७-१६)
देह अंधारी अंध सुंञी नाम विहूणीआ ॥ (५७७-१६, वडहंसु, मः ५)
नानक सफल जनम्मु जै घटि वुठा सचु धणी ॥१॥ (५७७-१७, वडहंसु, मः ५)
छंतु ॥ (५७७-१७)
तिन खन्नीऐ वंञाँ जिन मेरा हरि प्रभु डीठा राम ॥ (५७७-१७, वडहंसु, मः ५)
जन चाखि अघाणे हरि हरि अमृतु मीठा राम ॥ (५७७-१८, वडहंसु, मः ५)
हरि मनहि मीठा प्रभू तूठा अमिउ वूठा सुख भए ॥ (५७७-१८, वडहंसु, मः ५)

दुख नास भर्म बिनास तन ते जपि जगदीस ईसह जै जए ॥ (५७७-१६, वडहंसु, मः ५)
मोह रहत बिकार थाके पंच ते संगु तूटा ॥ (५७७-१६, वडहंसु, मः ५)

पन्ना ५७८

कहु नानक तिन खन्नीऐ वंञा जिन घटि मेरा हरि प्रभु वूठा ॥३॥ (५७८-१, वडहंसु, मः ५)
सलोकु ॥ (५७८-१)
जो लोड़ीदे राम सेवक सेई काँढिआ ॥ (५७८-१, वडहंसु, मः ५)
नानक जाणे सति साँई संत न बाहरा ॥१॥ (५७८-२, वडहंसु, मः ५)
छंतु ॥ (५७८-२)
मिलि जलु जलहि खटाना राम ॥ (५७८-२, वडहंसु, मः ५)
संगि जोती जोति मिलाना राम ॥ (५७८-३, वडहंसु, मः ५)
सम्माइ पूरन पुरख करते आपि आपहि जाणीऐ ॥ (५७८-३, वडहंसु, मः ५)
तह सुंनि सहजि समाधि लागी एकु एकु वखाणीऐ ॥ (५७८-४, वडहंसु, मः ५)
आपि गुपता आपि मुकता आपि आपु वखाना ॥ (५७८-४, वडहंसु, मः ५)
नानक भ्रम भै गुण बिनासे मिलि जलु जलहि खटाना ॥४॥२॥ (५७८-५, वडहंसु, मः ५)
वडहंसु महला ५ ॥ (५७८-५)
प्रभ करण कारण समरथा राम ॥ (५७८-५, वडहंसु, मः ५)
रखु जगतु सगल दे हथा राम ॥ (५७८-६, वडहंसु, मः ५)
समरथ सरणा जोगु सुआमी कृपा निधि सुखदाता ॥ (५७८-६, वडहंसु, मः ५)
हंउ कुरबाणी दास तेरे जिनी एकु पछाता ॥ (५७८-७, वडहंसु, मः ५)
वरनु चिहनु न जाइ लखिआ कथन ते अकथा ॥ (५७८-७, वडहंसु, मः ५)
बिनवंति नानक सुणहु बिनती प्रभ करण कारण समरथा ॥१॥ (५७८-७, वडहंसु, मः ५)
एहि जीअ तेरे तू करता राम ॥ (५७८-८, वडहंसु, मः ५)
प्रभ दूख दरद भ्रम हरता राम ॥ (५७८-८, वडहंसु, मः ५)
भ्रम दूख दरद निवारि खिन महि रखि लेहु दीन दैआला ॥ (५७८-९, वडहंसु, मः ५)
मात पिता सुआमि सजणु सभु जगतु बाल गोपाला ॥ (५७८-९, वडहंसु, मः ५)
जो सरणि आवै गुण निधान पावै सो बहुड़ि जनमि न मरता ॥ (५७८-१०, वडहंसु, मः ५)
बिनवंति नानक दासु तेरा सभि जीअ तेरे तू करता ॥२॥ (५७८-१०, वडहंसु, मः ५)
आठ पहर हरि धिआईऐ राम ॥ (५७८-११, वडहंसु, मः ५)
मन इछिअड़ा फलु पाईऐ राम ॥ (५७८-११, वडहंसु, मः ५)
मन इछ पाईऐ प्रभु धिआईऐ मिटहि जम के त्रासा ॥ (५७८-१२, वडहंसु, मः ५)
गोबिदु गाइआ साध संगाइआ भई पूरन आसा ॥ (५७८-१२, वडहंसु, मः ५)
तजि मानु मोहु विकार सगले प्रभू कै मनि भाईऐ ॥ (५७८-१३, वडहंसु, मः ५)
बिनवंति नानक दिनसु रैणी सदा हरि हरि धिआईऐ ॥३॥ (५७८-१३, वडहंसु, मः ५)
दरि वाजहि अनहत वाजे राम ॥ (५७८-१४, वडहंसु, मः ५)

घटि घटि हरि गोबिंदु गाजे राम ॥ (५७८-१४, वडहंसु, मः ५)
गोविद गाजे सदा बिराजे अगम अगोचरु ऊचा ॥ (५७८-१५, वडहंसु, मः ५)
गुण बेअंत किछु कहणु न जाई कोइ न सकै पहूचा ॥ (५७८-१५, वडहंसु, मः ५)
आपि उपाए आपि प्रतिपाले जीअ जंत सभि साजे ॥ (५७८-१६, वडहंसु, मः ५)
बिनवंति नानक सुखु नामि भगती दरि वजहि अनहद वाजे ॥४॥३॥ (५७८-१६, वडहंसु, मः ५)
रागु वडहंसु महला १ घरु ५ अलाहणीआ (५७८-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५७८-१८)
धन्नु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥ (५७८-१९, वडहंसु, मः १)
मुहलति पुनी पाई भरी जानीअड़ा घति चलाइआ ॥ (५७८-१९, वडहंसु, मः १)

पन्ना ५७९

जानी घति चलाइआ लिखिआ आइआ रुन्ने वीर सबाए ॥ (५७९-१, वडहंसु, मः १)
काँइआ हंस थीआ वेछोड़ा जाँ दिन पुन्ने मेरी माए ॥ (५७९-१, वडहंसु, मः १)
जेहा लिखिआ तेहा पाइआ जेहा पुरबि कमाइआ ॥ (५७९-२, वडहंसु, मः १)
धन्नु सिरंदा सचा पातिसाहु जिनि जगु धंधै लाइआ ॥१॥ (५७९-२, वडहंसु, मः १)
साहिबु सिमरहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥ (५७९-३, वडहंसु, मः १)
एथै धंधा कूड़ा चारि दिहा आगै सरपर जाणा ॥ (५७९-३, वडहंसु, मः १)
आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गारबु कीजै ॥ (५७९-४, वडहंसु, मः १)
जितु सेविऐ दरगह सुखु पाईऐ नामु तिसै का लीजै ॥ (५७९-४, वडहंसु, मः १)
आगै हुकमु न चलै मूले सिरि सिरि किआ विहाणा ॥ (५७९-५, वडहंसु, मः १)
साहिबु सिमरिहु मेरे भाईहो सभना एहु पइआणा ॥२॥ (५७९-६, वडहंसु, मः १)
जो तिसु भावै सम्म्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥ (५७९-६, वडहंसु, मः १)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ साचड़ा सिरजणहारो ॥ (५७९-७, वडहंसु, मः १)
साचा सिरजणहारो अलख अपारो ता का अंतु न पाइआ ॥ (५७९-७, वडहंसु, मः १)
आइआ तिन का सफलु भइआ है इक मनि जिनी धिआइआ ॥ (५७९-८, वडहंसु, मः १)
ढाहे ढाहि उसारे आपे हुकमि सवारणहारो ॥ (५७९-८, वडहंसु, मः १)
जो तिसु भावै सम्म्रथ सो थीऐ हीलड़ा एहु संसारो ॥३॥ (५७९-९, वडहंसु, मः १)
नानक रुन्ना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥ (५७९-९, वडहंसु, मः १)
वालेवे कारणि बाबा रोईऐ रोवणु सगल बिकारो ॥ (५७९-१०, वडहंसु, मः १)
रोवणु सगल बिकारो गाफलु संसारो माइआ कारणि रोवै ॥ (५७९-१०, वडहंसु, मः १)
चंगा मंदा किछु सूझै नाही इहु तनु एवै खोवै ॥ (५७९-११, वडहंसु, मः १)
ऐथै आइआ सभु को जासी कूड़ि करहु अहंकारो ॥ (५७९-११, वडहंसु, मः १)
नानक रुन्ना बाबा जाणीऐ जे रोवै लाइ पिआरो ॥४॥१॥ (५७९-१२, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला १ ॥ (५७९-१३)
आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहाँ ॥ (५७९-१३, वडहंसु, मः १)

रोवह बिरहा तन का आपणा साहिबु सम्मालेहाँ ॥ (५७९-१३, वडहंसु, मः १)
साहिबु सम्मालिह पंथु निहालिह असा भि ओथै जाणा ॥ (५७९-१४, वडहंसु, मः १)
जिस का कीआ तिन ही लीआ होआ तिसै का भाणा ॥ (५७९-१४, वडहंसु, मः १)
जो तिनि करि पाइआ सु आगै आइआ असी कि हुकमु करेहा ॥ (५७९-१५, वडहंसु, मः १)
आवहु मिलहु सहेलीहो सचड़ा नामु लएहा ॥१॥ (५७९-१५, वडहंसु, मः १)
मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे मरि जाणै ऐसा कोइ ॥ (५७९-१६, वडहंसु, मः १)
सेविहु साहिबु सम्म्रथु आपणा पंथु सुहेला आगै होइ ॥ (५७९-१६, वडहंसु, मः १)
पंथि सुहेलै जावहु ताँ फलु पावहु आगै मिलै वडाई ॥ (५७९-१७, वडहंसु, मः १)
भेटै सिउ जावहु सचि समावहु ताँ पति लेखै पाई ॥ (५७९-१७, वडहंसु, मः १)
महली जाइ पावहु खसमै भावहु रंग सिउ रलीआ माणै ॥ (५७९-१८, वडहंसु, मः १)
मरणु न मंदा लोका आखीऐ जे कोई मरि जाणै ॥२॥ (५७९-१९, वडहंसु, मः १)
मरणु मुणसा सूरिआ हकु है जो होइ मरनि परवाणो ॥ (५७९-१९, वडहंसु, मः १)

पन्ना ५८०

सूरे सेई आगै आखीअहि दरगह पावहि साची माणो ॥ (५८०-१, वडहंसु, मः १)
दरगह माणु पावहि पति सिउ जावहि आगै दूखु न लागै ॥ (५८०-१, वडहंसु, मः १)
करि एकु धिआवहि ताँ फलु पावहि जितु सेविऐ भउ भागै ॥ (५८०-२, वडहंसु, मः १)
ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै जाणो ॥ (५८०-२, वडहंसु, मः १)
मरणु मुणसाँ सूरिआ हकु है जो होइ मरहि परवाणो ॥३॥ (५८०-३, वडहंसु, मः १)
नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥ (५८०-४, वडहंसु, मः १)
कीता वेखै साहिबु आपणा कुदरति करे बीचारो ॥ (५८०-४, वडहंसु, मः १)
कुदरति बीचारे धारण धारे जिनि कीआ सो जाणै ॥ (५८०-५, वडहंसु, मः १)
आपे वेखै आपे बूझै आपे हुकमु पछाणै ॥ (५८०-५, वडहंसु, मः १)
जिनि किछु कीआ सोई जाणै ता का रूपु अपारो ॥ (५८०-५, वडहंसु, मः १)
नानक किस नो बाबा रोईऐ बाजी है इहु संसारो ॥४॥२॥ (५८०-६, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला १ दखणी ॥ (५८०-७)
सचु सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो ॥ (५८०-७, वडहंसु दखणी, मः १)
जिनि आपीनै आपु साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥ (५८०-७, वडहंसु दखणी, मः १)
दुइ पुड़ जोड़ि विछोड़िअनु गुर बिनु घोरु अंधारो ॥ (५८०-८, वडहंसु दखणी, मः १)
सूरजु चंदु सिरजिअनु अहिनिसि चलतु वीचारो ॥१॥ (५८०-८, वडहंसु दखणी, मः १)
सचड़ा साहिबु सचु तू सचड़ा देहि पिआरो ॥ रहाउ ॥ (५८०-९, वडहंसु दखणी, मः १)
तुधु सिरजी मेदनी दुखु सुखु देवणहारो ॥ (५८०-९, वडहंसु दखणी, मः १)
नारी पुरख सिरजिऐ बिखु माइआ मोहु पिआरो ॥ (५८०-१०, वडहंसु दखणी, मः १)
खाणी बाणी तेरीआ देहि जीआ आधारो ॥ (५८०-१०, वडहंसु दखणी, मः १)
कुदरति तखतु रचाइआ सचि निबेड़णहारो ॥२॥ (५८०-११, वडहंसु दखणी, मः १)

आवा गवणु सिरजिआ तू थिरु करणैहारो ॥ (५८०-११, वडहंसु दखणी, मः १)
जम्मणु मरणा आइ गइआ बधिकु जीउ बिकारो ॥ (५८०-१२, वडहंसु दखणी, मः १)
भूडड़ै नामु विसारिआ बूडड़ै किआ तिसु चारो ॥ (५८०-१२, वडहंसु दखणी, मः १)
गुण छोडि बिखु लदिआ अवगुण का वणजारो ॥३॥ (५८०-१३, वडहंसु दखणी, मः १)
सदड़े आए तिना जानीआ हुकमि सचे करतारो ॥ (५८०-१३, वडहंसु दखणी, मः १)
नारी पुरख विछुंनिआ विछुड़िआ मेलणहारो ॥ (५८०-१४, वडहंसु दखणी, मः १)
रूपु न जाणै सोहणीऐ हुकमि बधी सिरि कारो ॥ (५८०-१४, वडहंसु दखणी, मः १)
बालक बिरधि न जाणनी तोड़नि हेतु पिआरो ॥४॥ (५८०-१५, वडहंसु दखणी, मः १)
नउ दर ठाके हुकमि सचै हंसु गइआ गैणारे ॥ (५८०-१५, वडहंसु दखणी, मः १)
सा धन छुटी मुठी झूठि विधणीआ मिरतकड़ा अंङनड़े बारे ॥ (५८०-१६, वडहंसु दखणी, मः १)
सुरति मुई मरु माईए महल रुन्नी दर बारे ॥ (५८०-१६, वडहंसु दखणी, मः १)
रोवहु कंत महेलीहो सचे के गुण सारे ॥५॥ (५८०-१७, वडहंसु दखणी, मः १)
जलि मलि जानी नावालिआ कपड़ि पटि अम्बारे ॥ (५८०-१७, वडहंसु दखणी, मः १)
वाजे वजे सची बाणीआ पंच मुए मनु मारे ॥ (५८०-१८, वडहंसु दखणी, मः १)
जानी विछुन्नड़े मेरा मरणु भइआ ध्रिगु जीवणु संसारे ॥ (५८०-१८, वडहंसु दखणी, मः १)
जीवतु मरै सु जाणीऐ पिर सचड़ै हेति पिआरे ॥६॥ (५८०-१९, वडहंसु दखणी, मः १)
तुसी रोवहु रोवण आईहो झूठि मुठी संसारे ॥ (५८०-१९, वडहंसु दखणी, मः १)

पन्ना ५८१

हउ मुठड़ी धंधै धावणीआ पिरि छोडिअड़ी विधणकारे ॥ (५८१-१, वडहंसु दखणी, मः १)
घरि घरि कंतु महेलीआ रूड़ै हेति पिआरे ॥ (५८१-१, वडहंसु दखणी, मः १)
मै पिरु सचु सालाहणा हउ रहसिअड़ी नामि भतारे ॥७॥ (५८१-२, वडहंसु दखणी, मः १)
गुरि मिलिऐ वेसु पलटिआ सा धन सचु सीगारो ॥ (५८१-२, वडहंसु दखणी, मः १)
आवहु मिलहु सहेलीहो सिमरहु सिरजणहारो ॥ (५८१-३, वडहंसु दखणी, मः १)
बईअरि नामि सोहागणी सचु सवारणहारो ॥ (५८१-३, वडहंसु दखणी, मः १)
गावहु गीतु न बिरहड़ा नानक ब्रह्म बीचारो ॥८॥३॥ (५८१-४, वडहंसु दखणी, मः १)
वडहंसु महला १ ॥ (५८१-४)
जिनि जगु सिरजि समाइआ सो साहिबु कुदरति जाणोवा ॥ (५८१-४, वडहंसु, मः १)
सचड़ा दूरि न भालीऐ घटि घटि सबदु पछाणोवा ॥ (५८१-५, वडहंसु, मः १)
सचु सबदु पछाणहु दूरि न जाणहु जिनि एह रचना राची ॥ (५८१-६, वडहंसु, मः १)
नामु धिआए ता सुखु पाए बिनु नावै पिड़ काची ॥ (५८१-६, वडहंसु, मः १)
जिनि थापी बिधि जाणै सोई किआ को कहै वखाणो ॥ (५८१-७, वडहंसु, मः १)
जिनि जगु थापि वताइआ जालो सो साहिबु परवाणो ॥१॥ (५८१-७, वडहंसु, मः १)
बाबा आइआ है उठि चलणा अध पंधै है संसारोवा ॥ (५८१-८, वडहंसु, मः १)
सिरि सिरि सचड़ै लिखिआ दुखु सुखु पुरबि वीचारोवा ॥ (५८१-८, वडहंसु, मः १)

दुखु सुखु दीआ जेहा कीआ सो निबहै जीअ नाले ॥ (५८१-९, वडहंसु, मः १)
जेहे कर्म कराए करता दूजी कार न भाले ॥ (५८१-९, वडहंसु, मः १)
आपि निरालमु धंधै बाधी करि हुकमु छडावणहारो ॥ (५८१-१०, वडहंसु, मः १)
अजु कलि करदिआ कालु बिआपै दूजै भाइ विकारो ॥२॥ (५८१-१०, वडहंसु, मः १)
जम मारग पंथु न सुझई उझड़ु अंध गुबारोवा ॥ (५८१-११, वडहंसु, मः १)
ना जलु लेफ तुलाईआ ना भोजन परकारोवा ॥ (५८१-११, वडहंसु, मः १)
भोजन भाउ न ठंढा पाणी ना कापड़ु सीगारो ॥ (५८१-१२, वडहंसु, मः १)
गलि संगलु सिरि मारे ऊभौ ना दीसै घर बारो ॥ (५८१-१२, वडहंसु, मः १)
इब के राहे जम्मनि नाही पछुताणे सिरि भारो ॥ (५८१-१३, वडहंसु, मः १)
बिनु साचे को बेली नाही साचा एहु बीचारो ॥३॥ (५८१-१३, वडहंसु, मः १)
बाबा रोवहि रवहि सु जाणीअहि मिलि रोवै गुण सारेवा ॥ (५८१-१४, वडहंसु, मः १)
रोवै माइआ मुठड़ी धंधड़ा रोवणहारेवा ॥ (५८१-१४, वडहंसु, मः १)
धंधा रोवै मैलु न धोवै सुपनंतरु संसारो ॥ (५८१-१५, वडहंसु, मः १)
जिउ बाजीगरु भरमै भूलै झूठि मुठी अहंकारो ॥ (५८१-१५, वडहंसु, मः १)
आपे मारगि पावणहारा आपे कर्म कमाए ॥ (५८१-१५, वडहंसु, मः १)
नामि रते गुरि पूरै राखे नानक सहजि सुभाए ॥४॥४॥ (५८१-१६, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला १ ॥ (५८१-१७)
बाबा आइआ है उठि चलणा इहु जगु झूठु पसारोवा ॥ (५८१-१७, वडहंसु, मः १)
सचा घरु सचड़ै सेवीऐ सचु खरा सचिआरोवा ॥ (५८१-१७, वडहंसु, मः १)
कूड़ि लबि जाँ थाइ न पासी अगै लहै न ठाओ ॥ (५८१-१८, वडहंसु, मः १)
अंतरि आउ न बैसहु कहीऐ जिउ सुंञै घरि काओ ॥ (५८१-१८, वडहंसु, मः १)
जम्मणु मरणु वडा वेछोड़ा बिनसै जगु सबाए ॥ (५८१-१९, वडहंसु, मः १)
लबि धंधै माइआ जगतु भुलाइआ कालु खड़ा रूआए ॥१॥ (५८१-१९, वडहंसु, मः १)

पन्ना ५८२

बाबा आवहु भाईहो गलि मिलह मिलि मिलि देह आसीसा हे ॥ (५८२-१, वडहंसु, मः १)
बाबा सचड़ा मेलु न चुकई प्रीतम कीआ देह असीसा हे ॥ (५८२-२, वडहंसु, मः १)
आसीसा देवहो भगति करेवहो मिलिआ का किआ मेलो ॥ (५८२-२, वडहंसु, मः १)
इकि भूले नावहु थेहहु थावहु गुर सबदी सचु खेलो ॥ (५८२-३, वडहंसु, मः १)
जम मारगि नही जाणा सबदि समाणा जुगि जुगि साचै वेसे ॥ (५८२-३, वडहंसु, मः १)
साजन सैण मिलहु संजोगी गुर मिलि खोले फासे ॥२॥ (५८२-४, वडहंसु, मः १)
बाबा नाँगड़ा आइआ जग महि दुखु सुखु लेखु लिखाइआ ॥ (५८२-४, वडहंसु, मः १)
लिखिअड़ा साहा ना टलै जेहड़ा पुरबि कमाइआ ॥ (५८२-५, वडहंसु, मः १)
बहि साचै लिखिआ अमृतु बिखिआ जितु लाइआ तितु लागा ॥ (५८२-५, वडहंसु, मः १)
कामणिआरी कामण पाए बहु रंगी गलि तागा ॥ (५८२-६, वडहंसु, मः १)

होछी मति भइआ मनु होछा गुड़ सा मखी खाइआ ॥ (५८२-७, वडहंसु, मः १)
ना मरजादु आइआ कलि भीतरि नाँगो बंधि चलाइआ ॥३॥ (५८२-७, वडहंसु, मः १)
बाबा रोवहु जे किसै रोवणा जानीअड़ा बंधि पठाइआ है ॥ (५८२-८, वडहंसु, मः १)
लिखिअड़ा लेखु न मेटीऐ दरि हाकारड़ा आइआ है ॥ (५८२-८, वडहंसु, मः १)
हाकारा आइआ जा तिसु भाइआ रुन्ने रोवणहारे ॥ (५८२-९, वडहंसु, मः १)
पुत भाई भातीजे रोवहि प्रीतम अति पिआरे ॥ (५८२-९, वडहंसु, मः १)
भै रोवै गुण सारि समाले को मरै न मुइआ नाले ॥ (५८२-१०, वडहंसु, मः १)
नानक जुगि जुगि जाण सिजाणा रोवहि सचु समाले ॥४॥५॥ (५८२-१०, वडहंसु, मः १)
वडहंसु महला ३ महला तीजा (५८२-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५८२-१२)
प्रभु सचड़ा हरि सालाहीऐ कारजु सभु किछु करणै जोगु ॥ (५८२-१३, वडहंसु, मः ३)
सा धन रंड न कबहू बैसई ना कदे होवै सोगु ॥ (५८२-१३, वडहंसु, मः ३)
ना कदे होवै सोगु अनदिनु रस भोग सा धन महलि समाणी ॥ (५८२-१४, वडहंसु, मः ३)
जिनि प्रिउ जाता करम बिधाता बोले अमृत बाणी ॥ (५८२-१४, वडहंसु, मः ३)
गुणवंतीआ गुण सारहि अपणे कंत समालहि ना कदे लगै विजोगो ॥ (५८२-१५, वडहंसु, मः ३)
सचड़ा पिरु सालाहीऐ सभु किछु करणै जोगो ॥१॥ (५८२-१५, वडहंसु, मः ३)
सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥ (५८२-१६, वडहंसु, मः ३)
सा धन प्रिअ कै रंगि रती विचहु आपु गवाए ॥ (५८२-१६, वडहंसु, मः ३)
विचहु आपु गवाए फिरि कालु न खाए गुरमुखि एको जाता ॥ (५८२-१७, वडहंसु, मः ३)
कामणि इछ पुन्नी अंतरि भिन्नी मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ (५८२-१८, वडहंसु, मः ३)
सबद रंगि राती जोबनि माती पिर कै अंकि समाए ॥ (५८२-१८, वडहंसु, मः ३)
सचड़ा साहिबु सबदि पछाणीऐ आपे लए मिलाए ॥२॥ (५८२-१९, वडहंसु, मः ३)
जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥ (५८२-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५८३

आपु छोडि सेवा करी पिरु सचड़ा मिलै सहजि सुभाए ॥ (५८३-१, वडहंसु, मः ३)
पिरु सचा मिलै आए साचु कमाए साचि सबदि धन राती ॥ (५८३-१, वडहंसु, मः ३)
कदे न राँड सदा सोहागणि अंतरि सहज समाधी ॥ (५८३-२, वडहंसु, मः ३)
पिरु रहिआ भरपूरे वेखु हदूरे रंगु माणे सहजि सुभाए ॥ (५८३-२, वडहंसु, मः ३)
जिनी आपणा कंतु पछाणिआ हउ तिन पूछउ संता जाए ॥३॥ (५८३-३, वडहंसु, मः ३)
पिरहु विछुन्नीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥ (५८३-४, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरु सदा दइआलु है अवगुण सबदि जलाए ॥ (५८३-४, वडहंसु, मः ३)
अउगुण सबदि जलाए दूजा भाउ गवाए सचे ही सचि राती ॥ (५८३-५, वडहंसु, मः ३)
सचै सबदि सदा सुखु पाइआ हउमै गई भराती ॥ (५८३-५, वडहंसु, मः ३)
पिरु निरमाइलु सदा सुखदाता नानक सबदि मिलाए ॥ (५८३-६, वडहंसु, मः ३)

पिरहु विछुन्नीआ भी मिलह जे सतिगुर लागह साचे पाए ॥४॥१॥ (५८३-७, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५८३-७)
सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारि ॥ (५८३-७, वडहंसु, मः ३)
अवगणवंती पिरु न जाणई मुठी रोवै कंत विसारि ॥ (५८३-८, वडहंसु, मः ३)
रोवै कंत सम्मालि सदा गुण सारि ना पिरु मरै न जाए ॥ (५८३-८, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि जाता सबदि पछाता साचै प्रेमि समाए ॥ (५८३-९, वडहंसु, मः ३)
जिनि अपणा पिरु नही जाता करम बिधाता कूड़ि मुठी कूड़िआरे ॥ (५८३-९, वडहंसु, मः ३)
सुणिअहु कंत महेलीहो पिरु सेविहु सबदि वीचारे ॥१॥ (५८३-१०, वडहंसु, मः ३)
सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारा ॥ (५८३-११, वडहंसु, मः ३)
माइआ मोहु खुआइअनु मरि जम्मै वारो वारा ॥ (५८३-११, वडहंसु, मः ३)
मरि जम्मै वारो वारा वधहि बिकारा गिआन विहूणी मूठी ॥ (५८३-१२, वडहंसु, मः ३)
बिनु सबदै पिरु न पाइओ जनमु गवाइओ रोवै अवगुणिआरी झूठी ॥ (५८३-१२, वडहंसु, मः ३)
पिरु जगजीवनु किस नो रोईऐ रोवै कंतु विसारे ॥ (५८३-१३, वडहंसु, मः ३)
सभु जगु आपि उपाइओनु आवणु जाणु संसारे ॥२॥ (५८३-१४, वडहंसु, मः ३)
सो पिरु सचा सद ही साचा है ना ओहु मरै न जाए ॥ (५८३-१४, वडहंसु, मः ३)
भूली फिरै धन इआणीआ रंड बैठी दूजै भाए ॥ (५८३-१५, वडहंसु, मः ३)
रंड बैठी दूजै भाए माइआ मोहि दुखु पाए आव घटै तनु छीजै ॥ (५८३-१५, वडहंसु, मः ३)
जो किछु आइआ सभु किछु जासी दुखु लागा भाइ दूजै ॥ (५८३-१६, वडहंसु, मः ३)
जमकालु न सूझै माइआ जगु लूझै लबि लोभि चितु लाए ॥ (५८३-१६, वडहंसु, मः ३)
सो पिरु साचा सद ही साचा ना ओहु मरै न जाए ॥३॥ (५८३-१७, वडहंसु, मः ३)
इकि रोवहि पिरहि विछुन्नीआ अंधी ना जाणै पिरु नाले ॥ (५८३-१७, वडहंसु, मः ३)
गुर परसादी साचा पिरु मिलै अंतरि सदा समाले ॥ (५८३-१८, वडहंसु, मः ३)
पिरु अंतरि समाले सदा है नाले मनमुखि जाता दूरे ॥ (५८३-१८, वडहंसु, मः ३)
इहु तनु रुलै रुलाइआ कामि न आइआ जिनि खसमु न जाता हदूरे ॥ (५८३-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५८४

नानक सा धन मिलै मिलाई पिरु अंतरि सदा समाले ॥ (५८४-१, वडहंसु, मः ३)
इकि रोवहि पिरहि विछुन्नीआ अंधी न जाणै पिरु है नाले ॥४॥२॥ (५८४-१, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु मः ३ ॥ (५८४-२)
रोवहि पिरहि विछुन्नीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥ (५८४-२, वडहंसु, मः ३)
जिनी चलणु सही जाणिआ सतिगुरु सेवहि नामु समाले ॥ (५८४-३, वडहंसु, मः ३)
सदा नामु समाले सतिगुरु है नाले सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ ॥ (५८४-३, वडहंसु, मः ३)
सबदे कालु मारि सचु उरि धारि फिरि आवण जाणु न होइआ ॥ (५८४-४, वडहंसु, मः ३)
सचा साहिबु सची नाई वेखै नदरि निहाले ॥ (५८४-४, वडहंसु, मः ३)
रोवहि पिरहु विछुन्नीआ मै पिरु सचड़ा है सदा नाले ॥१॥ (५८४-५, वडहंसु, मः ३)

प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किव मिलाँ प्रीतम पिआरे ॥ (५८४-६, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरि मेली ताँ सहजि मिली पिरु राखिआ उर धारे ॥ (५८४-६, वडहंसु, मः ३)
सदा उर धारे नेहु नालि पिआरे सतिगुर ते पिरु दिसै ॥ (५८४-७, वडहंसु, मः ३)
माइआ मोह का कचा चोला तितु पैधै पगु खिसै ॥ (५८४-७, वडहंसु, मः ३)
पिर रंगि राता सो सचा चोला तितु पैधै तिखा निवारे ॥ (५८४-८, वडहंसु, मः ३)
प्रभु मेरा साहिबु सभ दू ऊचा है किउ मिला प्रीतम पिआरे ॥२॥ (५८४-८, वडहंसु, मः ३)
मै प्रभु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥ (५८४-९, वडहंसु, मः ३)
मै सदा रावे पिरु आपणा सचड़ै सबदि वीचारे ॥ (५८४-९, वडहंसु, मः ३)
सचै सबदि वीचारे रंगि राती नारे मिलि सतिगुर प्रीतमु पाइआ ॥ (५८४-१०, वडहंसु, मः ३)
अंतरि रंगि राती सहजे माती गइआ दुसमनु दूखु सबाइआ ॥ (५८४-११, वडहंसु, मः ३)
अपने गुर कंउ तनु मनु दीजै ताँ मनु भीजै तृसना दूख निवारे ॥ (५८४-११, वडहंसु, मः ३)
मै पिरु सचु पछाणिआ होर भूली अवगणिआरे ॥३॥ (५८४-१२, वडहंसु, मः ३)
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥ (५८४-१३, वडहंसु, मः ३)
आपि मिलाए आपि मिलै आपे देइ पिआरो ॥ (५८४-१३, वडहंसु, मः ३)
आपे देइ पिआरो सहजि वापारो गुरमुखि जनमु सवारे ॥ (५८४-१४, वडहंसु, मः ३)
धनु जग महि आइआ आपु गवाइआ दरि साचै सचिआरो ॥ (५८४-१४, वडहंसु, मः ३)
गिआनि रतनि घटि चानणु होआ नानक नाम पिआरो ॥ (५८४-१५, वडहंसु, मः ३)
सचड़ै आपि जगतु उपाइआ गुर बिनु घोर अंधारो ॥४॥३॥ (५८४-१५, वडहंसु, मः ३)
वडहंसु महला ३ ॥ (५८४-१६)
इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आए ॥ (५८४-१६, वडहंसु, मः ३)
गुरि राखे से उबरे होरु मरि जम्मै आवै जाए ॥ (५८४-१७, वडहंसु, मः ३)
होरि मरि जम्महि आवहि जावहि अंति गए पछुतावहि बिनु नावै सुखु न होई ॥ (५८४-१७, वडहंसु, मः ३)
ऐथै कमावै सो फलु पावै मनमुखि है पति खोई ॥ (५८४-१८, वडहंसु, मः ३)
जम पुरि घोर अंधारु महा गुबारु ना तिथै भैण न भाई ॥ (५८४-१८, वडहंसु, मः ३)
इहु सरीरु जजरी है इस नो जरु पहुचै आई ॥१॥ (५८४-१९, वडहंसु, मः ३)
काइआ कंचनु ताँ थीऐ जाँ सतिगुरु लए मिलाए ॥ (५८४-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५८५

भ्रमु माइआ विचहु कटीऐ सचड़ै नामि समाए ॥ (५८५-१, वडहंसु, मः ३)
सचै नामि समाए हरि गुण गाए मिलि प्रीतम सुखु पाए ॥ (५८५-१, वडहंसु, मः ३)
सदा अनंदि रहै दिनु राती विचहु हंउमै जाए ॥ (५८५-२, वडहंसु, मः ३)
जिनी पुरखी हरि नामि चितु लाइआ तिन कै हंउ लागउ पाए ॥ (५८५-२, वडहंसु, मः ३)
काँइआ कंचनु ताँ थीऐ जा सतिगुरु लए मिलाए ॥२॥ (५८५-३, वडहंसु, मः ३)
सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥ (५८५-४, वडहंसु, मः ३)
बिनु सतिगुर भरमि भुलाणीआ किआ मुहु देसनि आगै जाए ॥ (५८५-४, वडहंसु, मः ३)

किआ देनि मुहु जाए अवगुणि पछुताए दुखो दुखु कमाए ॥ (५८५-५, वडहंसु, मः ३)
नामि रतीआ से रंगि चलूला पिर कै अंकि समाए ॥ (५८५-५, वडहंसु, मः ३)
तिसु जेवडु अवरु न सूझई किसु आगै कहीऐ जाए ॥ (५८५-६, वडहंसु, मः ३)
सो सचा सचु सलाहीऐ जे सतिगुरु देइ बुझाए ॥३॥ (५८५-६, वडहंसु, मः ३)
जिनी सचड़ा सचु सलाहिआ हंउ तिन लागउ पाए ॥ (५८५-७, वडहंसु, मः ३)
से जन सचे निरमले तिन मिलिआ मलु सभ जाए ॥ (५८५-७, वडहंसु, मः ३)
तिन मिलिआ मलु सभ जाए सचै सरि नाए सचै सहजि सुभाए ॥ (५८५-८, वडहंसु, मः ३)
नामु निरंजनु अगमु अगोचरु सतिगुरि दीआ बुझाए ॥ (५८५-९, वडहंसु, मः ३)
अनदिनु भगति करहि रंगि राते नानक सचि समाए ॥ (५८५-९, वडहंसु, मः ३)
जिनी सचड़ा सचु धिआइआ हंउ तिन कै लागउ पाए ॥४॥४॥ (५८५-१०, वडहंसु, मः ३)
वडहंस की वार महला ४ ललाँ बहलीमा की धुनि गावणी (५८५-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५८५-१२)
सलोक मः ३ ॥ (५८५-१२)
सबदि रते वड हंस है सचु नामु उरि धारि ॥ (५८५-१२, वडहंसु, मः ३)
सचु संग्रहहि सद सचि रहहि सचै नामि पिआरि ॥ (५८५-१२, वडहंसु, मः ३)
सदा निर्मल मैलु न लगई नदरि कीती करतारि ॥ (५८५-१३, वडहंसु, मः ३)
नानक हउ तिन कै बलिहारणै जो अनदिनु जपहि मुरारि ॥१॥ (५८५-१३, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८५-१४)
मै जानिआ वड हंसु है ता मै कीआ संगु ॥ (५८५-१४, वडहंसु, मः ३)
जे जाणा बगु बपुड़ा त जनमि न देदी अंगु ॥२॥ (५८५-१५, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८५-१५)
हंसा वेखि तरंदिआ बगाँ भि आया चाउ ॥ (५८५-१५, वडहंसु, मः ३)
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥३॥ (५८५-१६, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८५-१६)
तू आपे ही आपि आपि है आपि कारणु कीआ ॥ (५८५-१६, वडहंसु, मः ३)
तू आपे आपि निरंकारु है को अवरु न बीआ ॥ (५८५-१७, वडहंसु, मः ३)
तू करण कारण समरथु है तू करहि सु थीआ ॥ (५८५-१७, वडहंसु, मः ३)
तू अणमंगिआ दानु देवणा सभनाहा जीआ ॥ (५८५-१७, वडहंसु, मः ३)
सभि आखहु सतिगुरु वाहु वाहु जिनि दानु हरि नामु मुखि दीआ ॥१॥ (५८५-१८, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५८६

सलोकु मः ३ ॥ (५८६-१)
भै विचि सभु आकारु है निरभउ हरि जीउ सोइ ॥ (५८६-१, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरि सेविऐ हरि मनि वसै तिथै भउ कदे न होइ ॥ (५८६-१, वडहंसु, मः ३)
दुसमनु दुखु तिस नो नेड़ि न आवै पोहि न सकै कोइ ॥ (५८६-२, वडहंसु, मः ३)

गुरमुखि मनि वीचारिआ जो तिसु भावै सु होइ ॥ (५८६-२, वडहंसु, मः ३)
नानक आपे ही पति रखसी कारज सवारे सोइ ॥१॥ (५८६-३, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८६-३)
इकि सजण चले इकि चलि गए रहदे भी फुनि जाहि ॥ (५८६-३, वडहंसु, मः ३)
जिनी सतिगुरु न सेविओ से आइ गए पछुताहि ॥ (५८६-४, वडहंसु, मः ३)
नानक सचि रते से न विछुड़हि सतिगुरु सेवि समाहि ॥२॥ (५८६-४, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८६-५)
तिसु मिलीऐ सतिगुर सजणै जिसु अंतरि हरि गुणकारी ॥ (५८६-५, वडहंसु, मः ३)
तिसु मिलीऐ सतिगुर प्रीतमै जिनि हंउमै विचहु मारी ॥ (५८६-६, वडहंसु, मः ३)
सो सतिगुरु पूरा धनु धन्नु है जिनि हरि उपदेसु दे सभ सृष्टि सवारी ॥ (५८६-६, वडहंसु, मः ३)
नित जपिअहु संतहु राम नामु भउजल बिखु तारी ॥ (५८६-७, वडहंसु, मः ३)
गुरि पूरै हरि उपदेसिआ गुर विटड़िअहु हंउ सद वारी ॥२॥ (५८६-७, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५८६-८)
सतिगुर की सेवा चाकरी सुखी हूं सुख सारु ॥ (५८६-८, वडहंसु, मः ३)
ऐथै मिलनि वडिआईआ दरगह मोख दुआरु ॥ (५८६-९, वडहंसु, मः ३)
सची कार कमावणी सचु पैनणु सचु नामु अधारु ॥ (५८६-९, वडहंसु, मः ३)
सची संगति सचि मिलै सचै नाइ पिआरु ॥ (५८६-१०, वडहंसु, मः ३)
सचै सबदि हरखु सदा दरि सचै सचिआरु ॥ (५८६-१०, वडहंसु, मः ३)
नानक सतिगुर की सेवा सो करै जिस नो नदरि करै करतारु ॥१॥ (५८६-११, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८६-११)
होर विडाणी चाकरी ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ (५८६-११, वडहंसु, मः ३)
अमृतु छोडि बिखु लगे बिखु खटणा बिखु रासि ॥ (५८६-१२, वडहंसु, मः ३)
बिखु खाणा बिखु पैनणा बिखु के मुखि गिरास ॥ (५८६-१२, वडहंसु, मः ३)
ऐथै दुखो दुखु कमावणा मुइआ नरकि निवासु ॥ (५८६-१३, वडहंसु, मः ३)
मनमुख मुहि मैलै सबदु न जाणनी काम करोधि विणासु ॥ (५८६-१३, वडहंसु, मः ३)
सतिगुर का भउ छोडिआ मनहठि कम्मु न आवै रासि ॥ (५८६-१४, वडहंसु, मः ३)
जम पुरि बधे मारीअहि को न सुणे अरदासि ॥ (५८६-१४, वडहंसु, मः ३)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा गुरमुखि नामि निवासु ॥२॥ (५८६-१५, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८६-१५)
सो सतिगुरु सेविहु साध जनु जिनि हरि हरि नामु दृड़ाइआ ॥ (५८६-१६, वडहंसु, मः ३)
सो सतिगुरु पूजहु दिनसु राति जिनि जगन्नाथु जगदीसु जपाइआ ॥ (५८६-१६, वडहंसु, मः ३)
सो सतिगुरु देखहु इक निमख निमख जिनि हरि का हरि पंथु बताइआ ॥ (५८६-१७, वडहंसु, मः ३)
तिसु सतिगुर की सभ पगी पवहु जिनि मोह अंधेरु चुकाइआ ॥ (५८६-१८, वडहंसु, मः ३)
सो सतगुरु कहहु सभि धन्नु धन्नु जिनि हरि भगति भंडार लहाइआ ॥३॥ (५८६-१८, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५८६-१९)

सतिगुरि मिलिऐ भुख गई भेखी भुख न जाइ ॥ (५८६-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५८७

दुखि लगै घरि घरि फिरै अगै दूणी मिलै सजाइ ॥ (५८७-१, वडहंसु, मः ३)
अंदरि सहजु न आइओ सहजे ही लै खाइ ॥ (५८७-१, वडहंसु, मः ३)
मनहठि जिस ते मंगणा लैणा दुखु मनाइ ॥ (५८७-२, वडहंसु, मः ३)
इसु भेखै थावहु गिरहो भला जिथहु को वरसाइ ॥ (५८७-२, वडहंसु, मः ३)
सबदि रते तिना सोझी पई दूजै भरमि भुलाइ ॥ (५८७-३, वडहंसु, मः ३)
पइऐ किरति कमावणा कहणा कछू न जाइ ॥ (५८७-३, वडहंसु, मः ३)
नानक जो तिसु भावहि से भले जिन की पति पावहि थाइ ॥१॥ (५८७-४, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८७-४)
सतिगुरि सेविऐ सदा सुखु जनम मरण दुखु जाइ ॥ (५८७-४, वडहंसु, मः ३)
चिंता मूलि न होवई अचिंतु वसै मनि आइ ॥ (५८७-५, वडहंसु, मः ३)
अंतरि तीरथु गिआनु है सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥ (५८७-५, वडहंसु, मः ३)
मैलु गई मनु निरमलु होआ अमृत सरि तीरथि नाइ ॥ (५८७-६, वडहंसु, मः ३)
सजण मिले सजणा सचै सबदि सुभाइ ॥ (५८७-६, वडहंसु, मः ३)
घर ही परचा पाइआ जोती जोति मिलाइ ॥ (५८७-७, वडहंसु, मः ३)
पाखंडि जमकालु न छोडई लै जासी पति गवाइ ॥ (५८७-७, वडहंसु, मः ३)
नानक नामि रते से उबरे सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥ (५८७-८, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८७-८)
तितु जाइ बहहु सतसंगती जिथै हरि का हरि नामु बिलोईऐ ॥ (५८७-८, वडहंसु, मः ३)
सहजे ही हरि नामु लेहु हरि ततु न खोईऐ ॥ (५८७-९, वडहंसु, मः ३)
नित जपिअहु हरि हरि दिनसु राति हरि दरगह ढोईऐ ॥ (५८७-९, वडहंसु, मः ३)
सो पाए पूरा सतगुरू जिसु धुरि मसतकि लिलाटि लिखोईऐ ॥ (५८७-१०, वडहंसु, मः ३)
तिसु गुर कंउ सभि नमसकारु करहु जिनि हरि की हरि गाल गलोईऐ ॥४॥ (५८७-१०, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५८७-११)
सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआरु ॥ (५८७-११, वडहंसु, मः ३)
मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआरु ॥ (५८७-१२, वडहंसु, मः ३)
मन ही ते मनु मानिआ गुर कै सबदि अपारि ॥ (५८७-१२, वडहंसु, मः ३)
एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतारि ॥ (५८७-१३, वडहंसु, मः ३)
इकना दरसन की परतीति न आईआ सबदि न करहि वीचारु ॥ (५८७-१३, वडहंसु, मः ३)
विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाइ पिआरु ॥ (५८७-१४, वडहंसु, मः ३)
मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि ॥ (५८७-१५, वडहंसु, मः ३)
इसु परीती तुटदी विलमु न होवई इतु दोसती चलनि विकार ॥ (५८७-१५, वडहंसु, मः ३)
जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआरु ॥ (५८७-१६, वडहंसु, मः ३)

नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ॥१॥ (५८७-१६, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८७-१७)
इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ ॥ (५८७-१७, वडहंसु, मः ३)
तनु मनु धनु अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाइ ॥ (५८७-१८, वडहंसु, मः ३)
तिन मिलिआ मनु संतोखीऐ तृसना भुख सभ जाइ ॥ (५८७-१८, वडहंसु, मः ३)
नानक नामि रते सुखीए सदा सचे सिउ लिव लाइ ॥२॥ (५८७-१९, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८७-१९)
तिसु गुर कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई ॥ (५८७-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५८८

तिसु गुर कउ सद बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बणाई ॥ (५८८-१, वडहंसु, मः ३)
सो सतिगुरु पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मैनो लए छडाई ॥ (५८८-२, वडहंसु, मः ३)
तिसु गुर कउ साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ॥ (५८८-२, वडहंसु, मः ३)
नानकु गुर विटहु वारिआ जिनि हरि नामु दीआ मेरे मन की आस पुराई ॥५॥ (५८८-३, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५८८-४)
तृसना दाधी जलि मुई जलि जलि करे पुकार ॥ (५८८-४, वडहंसु, मः ३)
सतिगुर सीतल जे मिलै फिरि जलै न दूजी वार ॥ (५८८-४, वडहंसु, मः ३)
नानक विणु नावै निरभउ को नही जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥१॥ (५८८-५, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८८-५)
भेखी अगनि न बुझई चिंता है मन माहि ॥ (५८८-५, वडहंसु, मः ३)
वरमी मारी सापु न मरै तिउ निगुरे करम कमाहि ॥ (५८८-६, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरु दाता सेवीऐ सबदु वसै मनि आइ ॥ (५८८-६, वडहंसु, मः ३)
मनु तनु सीतलु साँति होइ तृसना अगनि बुझाइ ॥ (५८८-७, वडहंसु, मः ३)
सुखा सिरि सदा सुखु होइ जा विचहु आपु गवाइ ॥ (५८८-७, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि उदासी सो करे जि सचि रहै लिव लाइ ॥ (५८८-८, वडहंसु, मः ३)
चिंता मूलि न होवई हरि नामि रजा आघाइ ॥ (५८८-८, वडहंसु, मः ३)
नानक नाम बिना नह छूटीऐ हउमै पचहि पचाइ ॥२॥ (५८८-९, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८८-९)
जिनी हरि हरि नामु धिआइआ तिनी पाइअड़े सरब सुखा ॥ (५८८-१०, वडहंसु, मः ३)
सभु जनमु तिना का सफलु है जिन हरि के नाम की मनि लागी भुखा ॥ (५८८-१०, वडहंसु, मः ३)
जिनी गुर कै बचनि आराधिआ तिन विसरि गए सभि दुखा ॥ (५८८-११, वडहंसु, मः ३)
ते संत भले गुरसिख है जिन नाही चिंत पराई चुखा ॥ (५८८-११, वडहंसु, मः ३)
धनु धन्नु तिना का गुरू है जिसु अमृत फल हरि लागे मुखा ॥६॥ (५८८-१२, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५८८-१३)
कलि महि जमु जंदारु है हुकमे कार कमाइ ॥ (५८८-१३, वडहंसु, मः ३)

गुरि राखे से उबरे मनमुखा देइ सजाइ ॥ (५८८-१३, वडहंसु, मः ३)
जमकालै वसि जगु बाँधिआ तिस दा फरू न कोइ ॥ (५८८-१४, वडहंसु, मः ३)
जिनि जमु कीता सो सेवीऐ गुरमुखि दुखु न होइ ॥ (५८८-१४, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमुखि जमु सेवा करे जिन मनि सचा होइ ॥१॥ (५८८-१५, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८८-१५)
एहा काइआ रोगि भरी बिनु सबदै दुखु हउमै रोगु न जाइ ॥ (५८८-१५, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरु मिलै ता निर्मल होवै हरि नामो मंनि वसाइ ॥ (५८८-१६, वडहंसु, मः ३)
नानक नामु धिआइआ सुखदाता दुखु विसरिआ सहजि सुभाइ ॥२॥ (५८८-१७, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८८-१७)
जिनि जगजीवनु उपदेसिआ तिसु गुर कउ हउ सदा घुमाइआ ॥ (५८८-१७, वडहंसु, मः ३)
तिसु गुर कउ हउ खन्नीऐ जिनि मधुसूदनु हरि नामु सुणाइआ ॥ (५८८-१८, वडहंसु, मः ३)
तिसु गुर कउ हउ वारणै जिनि हउमै बिखु सभु रोगु गवाइआ ॥ (५८८-१९, वडहंसु, मः ३)
तिसु सतिगुर कउ वड पुन्नु है जिनि अवगण कटि गुणी समझाइआ ॥ (५८८-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५८९

सो सतिगुरु तिन कउ भेटिआ जिन कै मुखि मसतकि भागु लिखि पाइआ ॥७॥ (५८९-१, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५८९-२)
भगति करहि मरजीवड़े गुरमुखि भगति सदा होइ ॥ (५८९-२, वडहंसु, मः ३)
ओना कउ धुरि भगति खजाना बखसिआ मेटि न सकै कोइ ॥ (५८९-२, वडहंसु, मः ३)
गुण निधानु मनि पाइआ एको सचा सोइ ॥ (५८९-३, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमुखि मिलि रहे फिरि विछोड़ा कदे न होइ ॥१॥ (५८९-३, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८९-४)
सतिगुर की सेव न कीनीआ किआ ओहु करे वीचारु ॥ (५८९-४, वडहंसु, मः ३)
सबदै सार न जाणई बिखु भूला गावारु ॥ (५८९-५, वडहंसु, मः ३)
अगिआनी अंधु बहु कर्म कमावै दूजै भाइ पिआरु ॥ (५८९-५, वडहंसु, मः ३)
अणहोदा आपु गणाइदे जमु मारि करे तिन खुआरु ॥ (५८९-६, वडहंसु, मः ३)
नानक किस नो आखीऐ जा आपे बखसणहारु ॥२॥ (५८९-६, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८९-७)
तू करता सभु किछु जाणदा सभि जीअ तुमारे ॥ (५८९-७, वडहंसु, मः ३)
जिसु तू भावै तिसु तू मेलि लैहि किआ जंत विचारे ॥ (५८९-७, वडहंसु, मः ३)
तू करण कारण समरथु है सचु सिरजणहारे ॥ (५८९-८, वडहंसु, मः ३)
जिसु तू मेलहि पिआरिआ सो तुधु मिलै गुरमुखि वीचारे ॥ (५८९-८, वडहंसु, मः ३)
हउ बलिहारी सतिगुर आपणे जिनि मेरा हरि अलखु लखारे ॥८॥ (५८९-९, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५८९-१०)
रतना पारखु जो होवै सु रतना करे वीचारु ॥ (५८९-१०, वडहंसु, मः ३)

रतना सार न जाणई अगिआनी अंधु अंधारु ॥ (५८९-१०, वडहंसु, मः ३)
रतनु गुरू का सबदु है बूझै बूझणहारु ॥ (५८९-११, वडहंसु, मः ३)
मूरख आपु गणाइदे मरि जम्महि होइ खुआरु ॥ (५८९-११, वडहंसु, मः ३)
नानक रतना सो लहै जिसु गुरमुखि लगै पिआरु ॥ (५८९-१२, वडहंसु, मः ३)
सदा सदा नामु उचरै हरि नामो नित बिउहारु ॥ (५८९-१२, वडहंसु, मः ३)
कृपा करे जे आपणी ता हरि रखा उर धारि ॥१॥ (५८९-१३, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५८९-१३)
सतिगुर की सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ (५८९-१३, वडहंसु, मः ३)
मत तुम जाणहु ओइ जीवदे ओइ आपि मारे करतारि ॥ (५८९-१४, वडहंसु, मः ३)
हउमै वडा रोगु है भाइ दूजै कर्म कमाइ ॥ (५८९-१४, वडहंसु, मः ३)
नानक मनमुखि जीवदिआ मुए हरि विसरिआ दुखु पाइ ॥२॥ (५८९-१५, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५८९-१५)
जिसु अंतरु हिरदा सुधु है तिसु जन कउ सभि नमसकारी ॥ (५८९-१५, वडहंसु, मः ३)
जिसु अंदरि नामु निधानु है तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥ (५८९-१६, वडहंसु, मः ३)
जिसु अंदरि बुधि बिबेकु है हरि नामु मुरारी ॥ (५८९-१७, वडहंसु, मः ३)
सो सतिगुरु सभना का मितु है सभ तिसहि पिआरी ॥ (५८९-१७, वडहंसु, मः ३)
सभु आतम रामु पसारिआ गुर बुधि बीचारी ॥९॥ (५८९-१८, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५८९-१८)
बिनु सतिगुर सेवे जीअ के बंधना विचि हउमै कर्म कमाहि ॥ (५८९-१८, वडहंसु, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे ठउर न पावही मरि जम्महि आवहि जाहि ॥ (५८९-१९, वडहंसु, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे फिका बोलणा नामु न वसै मन माहि ॥ (५८९-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५९०

नानक बिनु सतिगुर सेवे जम पुरि बधे मारीअनि मुहि कालै उठि जाहि ॥१॥ (५९०-१, वडहंसु, मः ३)
महला १ ॥ (५९०-२)
जालउ ऐसी रीति जितु मै पिआरा वीसरै ॥ (५९०-२, वडहंसु, मः १)
नानक साई भली परीति जितु साहिब सेती पति रहै ॥२॥ (५९०-२, वडहंसु, मः १)
पउड़ी ॥ (५९०-३)
हरि इको दाता सेवीऐ हरि इकु धिआईऐ ॥ (५९०-३, वडहंसु, मः १)
हरि इको दाता मंगीऐ मन चिंदिआ पाईऐ ॥ (५९०-४, वडहंसु, मः १)
जे दूजे पासहु मंगीऐ ता लाज मराईऐ ॥ (५९०-४, वडहंसु, मः १)
जिनि सेविआ तिनि फलु पाइआ तिसु जन की सभ भुख गवाईऐ ॥ (५९०-४, वडहंसु, मः १)
नानकु तिन विटहु वारिआ जिन अनदिनु हिरदै हरि नामु धिआईऐ ॥१०॥ (५९०-५, वडहंसु, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (५९०-६)
भगत जना कंउ आपि तुठा मेरा पिआरा आपे लइअनु जन लाइ ॥ (५९०-६, वडहंसु, मः ३)

पातिसाही भगत जना कउ दितीअनु सिरि छतु सचा हरि बणाइ ॥ (५६०-७, वडहंसु, मः ३)
सदा सुखीए निरमले सतिगुर की कार कमाइ ॥ (५६०-७, वडहंसु, मः ३)
राजे ओइ न आखीअहि भिड़ि मरहि फिरि जूनी पाहि ॥ (५६०-८, वडहंसु, मः ३)
नानक विणु नावै नकीं वढीं फिरहि सोभा मूलि न पाहि ॥१॥ (५६०-६, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६०-६)
सुणि सिखिऐ सादु न आइओ जिचरु गुरमुखि सबदि न लागै ॥ (५६०-६, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरि सेविऐ नामु मनि वसै विचहु भ्रमु भउ भागै ॥ (५६०-१०, वडहंसु, मः ३)
जेहा सतिगुर नो जाणै तेहो होवै ता सचि नामि लिव लागै ॥ (५६०-१०, वडहंसु, मः ३)
नानक नामि मिलै वडिआई हरि दरि सोहनि आगै ॥२॥ (५६०-११, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६०-१२)
गुरसिखाँ मनि हरि प्रीति है गुरु पूजण आवहि ॥ (५६०-१२, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु वणंजहि रंग सिउ लाहा हरि नामु लै जावहि ॥ (५६०-१२, वडहंसु, मः ३)
गुरसिखा के मुख उजले हरि दरगह भावहि ॥ (५६०-१३, वडहंसु, मः ३)
गुरु सतिगुरु बोहलु हरि नाम का वडभागी सिख गुण साँझ करावहि ॥ (५६०-१३, वडहंसु, मः ३)
तिना गुरसिखा कंउ हउ वारिआ जो बहदिआ उठदिआ हरि नामु धिआवहि ॥११॥ (५६०-१४, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५६०-१५)
नानक नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (५६०-१५, वडहंसु, मः ३)
मनमुख घरि होदी वथु न जाणनी अंधे भउकि मुए बिललाइ ॥१॥ (५६०-१५, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६०-१६)
कंचन काइआ निरमली जो सचि नामि सचि लागी ॥ (५६०-१६, वडहंसु, मः ३)
निर्मल जोति निरंजनु पाइआ गुरमुखि भ्रमु भउ भागी ॥ (५६०-१७, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमुखि सदा सुखु पावहि अनदिनु हरि बैरागी ॥२॥ (५६०-१७, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६०-१८)
से गुरसिख धनु धन्नु है जिनी गुर उपदेसु सुणिआ हरि कन्नी ॥ (५६०-१८, वडहंसु, मः ३)
गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ तिनि हंउमै दुबिधा भन्नी ॥ (५६०-१६, वडहंसु, मः ३)
बिनु हरि नावै को मित्रु नाही वीचारि डिठा हरि जन्नी ॥ (५६०-१६, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६१

जिना गुरसिखा कउ हरि संतुसटु है तिनी सतिगुर की गल मन्नी ॥ (५६१-१, वडहंसु, मः ३)
जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिनी चड़ी चवगणि वन्नी ॥१२॥ (५६१-१, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५६१-२)
मनमुखु काइरु करूपु है बिनु नावै नकु नाहि ॥ (५६१-२, वडहंसु, मः ३)
अनदिनु धंधै विआपिआ सुपनै भी सुखु नाहि ॥ (५६१-३, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमुखि होवहि ता उबरहि नाहि त बधे दुख सहाहि ॥१॥ (५६१-३, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६१-४)

गुरमुखि सदा दरि सोहणे गुर का सबदु कमाहि ॥ (५६१-४, वडहंसु, मः ३)
अंतरि साँति सदा सुखु दरि सचै सोभा पाहि ॥ (५६१-४, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमुखि हरि नामु पाइआ सहजे सचि समाहि ॥२॥ (५६१-५, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६१-६)
गुरमुखि प्रहिलादि जपि हरि गति पाई ॥ (५६१-६, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि जनकि हरि नामि लिव लाई ॥ (५६१-६, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि बसिसटि हरि उपदेसु सुणाई ॥ (५६१-६, वडहंसु, मः ३)
बिनु गुर हरि नामु न किनै पाइआ मेरे भाई ॥ (५६१-७, वडहंसु, मः ३)
गुरमुखि हरि भगति हरि आपि लहाई ॥१३॥ (५६१-७, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५६१-८)
सतिगुर की परतीति न आईआ सबदि न लागो भाउ ॥ (५६१-८, वडहंसु, मः ३)
ओस नो सुखु न उपजै भावै सउ गेड़ा आवउ जाउ ॥ (५६१-९, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमुखि सहजि मिलै सचे सिउ लिव लाउ ॥१॥ (५६१-९, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६१-१०)
ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥ (५६१-१०, वडहंसु, मः ३)
सहसा मूलि न होवई हउमै सबदि जलाइ ॥ (५६१-१०, वडहंसु, मः ३)
कूड़ै की पालि विचहु निकलै सचु वसै मनि आइ ॥ (५६१-११, वडहंसु, मः ३)
अंतरि साँति मनि सुखु होइ सच संजमि कार कमाइ ॥ (५६१-११, वडहंसु, मः ३)
नानक पूरै करमि सतिगुरु मिलै हरि जीउ किरपा करे रजाइ ॥२॥ (५६१-१२, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६१-१२)
जिस कै घरि दीबानु हरि होवै तिस की मुठी विचि जगतु सभु आइआ ॥ (५६१-१३, वडहंसु, मः ३)
तिस कउ तलकी किसै दी नाही हरि दीबानि सभि आणि पैरी पाइआ ॥ (५६१-१३, वडहंसु, मः ३)
माणसा किअहु दीबाणहु कोई नसि भजि निकलै हरि दीबाणहु कोई किथै जाइआ ॥ (५६१-१४, वडहंसु, मः ३)
सो ऐसा हरि दीबानु वसिआ भगता कै हिरदै तिनि रहदे खुहदे आणि सभि भगता अगै खलवाइआ ॥ (५६१-१५, वडहंसु, मः ३)
हरि नावै की वडिआई करमि परापति होवै गुरमुखि विरलै किनै धिआइआ ॥१४॥ (५६१-१६, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५६१-१७)
बिनु सतिगुर सेवे जगतु मुआ बिरथा जनमु गवाइ ॥ (५६१-१७, वडहंसु, मः ३)
दूजै भाइ अति दुखु लगा मरि जम्मै आवै जाइ ॥ (५६१-१७, वडहंसु, मः ३)
विसटा अंदरि वासु है फिरि फिरि जूनी पाइ ॥ (५६१-१८, वडहंसु, मः ३)
नानक बिनु नावै जमु मारसी अंति गइआ पछुताइ ॥१॥ (५६१-१८, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६१-१९)
इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि सबाई ॥ (५६१-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६२

सभि घट भोगवै अलिपतु रहै अलखु न लखणा जाई ॥ (५६२-१, वडहंसु, मः ३)
पूरै गुरि वेखालिआ सबदे सोझी पाई ॥ (५६२-१, वडहंसु, मः ३)
पुरखै सेवहि से पुरख होवहि जिनी हउमै सबदि जलाई ॥ (५६२-२, वडहंसु, मः ३)
तिस का सरीकु को नही ना को कंटकु वैराई ॥ (५६२-२, वडहंसु, मः ३)
निहचल राजु है सदा तिसु केरा ना आवै ना जाई ॥ (५६२-३, वडहंसु, मः ३)
अनदिनु सेवकु सेवा करे हरि सचे के गुण गाई ॥ (५६२-३, वडहंसु, मः ३)
नानकु वेखि विगसिआ हरि सचे की वडिआई ॥२॥ (५६२-४, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६२-४)
जिन कै हरि नामु वसिआ सद हिरदै हरि नामो तिन कंउ रखणहारा ॥ (५६२-४, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु पिता हरि नामो माता हरि नामु सखाई मित्रु हमारा ॥ (५६२-५, वडहंसु, मः ३)
हरि नावै नालि गला हरि नावै नालि मसलति हरि नामु हमारी करदा नित सारा ॥ (५६२-५, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु हमारी संगति अति पिआरी हरि नामु कुलु हरि नामु परवारा ॥ (५६२-६, वडहंसु, मः ३)
जन नानक कंउ हरि नामु हरि गुरि दीआ हरि हलति पलति सदा करे निसतारा ॥१५॥ (५६२-७, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५६२-८)
जिन कंउ सतिगुरु भेटिआ से हरि कीरति सदा कमाहि ॥ (५६२-८, वडहंसु, मः ३)
अचिंतु हरि नामु तिन कै मनि वसिआ सचै सबदि समाहि ॥ (५६२-९, वडहंसु, मः ३)
कुलु उधारहि आपणा मोख पदवी आपे पाहि ॥ (५६२-९, वडहंसु, मः ३)
पारब्रह्मु तिन कंउ संतुसटु भइआ जो गुर चरनी जन पाहि ॥ (५६२-१०, वडहंसु, मः ३)
जनु नानकु हरि का दासु है करि किरपा हरि लाज रखाहि ॥१॥ (५६२-१०, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६२-११)
हंउमै अंदरि खड़कु है खड़के खड़कि विहाइ ॥ (५६२-११, वडहंसु, मः ३)
हंउमै वडा रोगु है मरि जम्मै आवै जाइ ॥ (५६२-१२, वडहंसु, मः ३)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिना सतगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ (५६२-१२, वडहंसु, मः ३)
नानक गुर परसादी उबरे हउमै सबदि जलाइ ॥२॥ (५६२-१३, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६२-१३)
हरि नामु हमारा प्रभु अबिगतु अगोचरु अबिनासी पुरखु बिधाता ॥ (५६२-१३, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु हम स्रेवह हरि नामु हम पूजह हरि नामे ही मनु राता ॥ (५६२-१४, वडहंसु, मः ३)
हरि नामै जेवडु कोई अवरु न सूझै हरि नामो अंति छडाता ॥ (५६२-१५, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु दीआ गुरि परउपकारी धनु धन्नु गुरू का पिता माता ॥ (५६२-१५, वडहंसु, मः ३)
हंउ सतिगुर अपुणे कंउ सदा नमसकारी जितु मिलिऐ हरि नामु मै जाता ॥१६॥ (५६२-१६, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५६२-१७)
गुरमुखि सेव न कीनीआ हरि नामि न लगो पिआरु ॥ (५६२-१७, वडहंसु, मः ३)
सबदै सादु न आइओ मरि जनमै वारो वार ॥ (५६२-१७, वडहंसु, मः ३)

मनमुखि अंधु न चेतई कितु आइआ सैसारि ॥ (५६२-१८, वडहंसु, मः ३)
नानक जिन कउ नदरि करे से गुरमुखि लंघे पारि ॥१॥ (५६२-१८, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६२-१९)
इको सतिगुरु जागता होरु जगु सूता मोहि पिआसि ॥ (५६२-१९, वडहंसु, मः ३)
सतिगुरु सेवनि जागंनि से जो रते सचि नामि गुणतासि ॥ (५६२-१९, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६३

मनमुखि अंध न चेतनी जनमि मरि होहि बिनासि ॥ (५६३-१, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमुखि तिनी नामु धिआइआ जिन कंउ धुरि पूरबि लिखिआसि ॥२॥ (५६३-१, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६३-२)
हरि नामु हमारा भोजनु छतीह परकार जितु खाइऐ हम कउ तृपति भई ॥ (५६३-२, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु हमारा पैनणु जितु फिरि नंगे न होवह होर पैनण की हमारी सरध गई ॥ (५६३-३, वडहंसु, मः ३)
हरि नामु हमारा वणजु हरि नामु वापारु हरि नामै की हम कंउ सतिगुरि कारकुनी दीई ॥ (५६३-४, वडहंसु, मः ३)
हरि नामै का हम लेखा लिखिआ सभ जम की अगली काणि गई ॥ (५६३-५, वडहंसु, मः ३)
हरि का नामु गुरमुखि किनै विरलै धिआइआ जिन कंउ धुरि करमि परापति लिखतु पई ॥१७॥ (५६३-५, वडहंसु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (५६३-६)
जगतु अगिआनी अंधु है दूजै भाइ कर्म कमाइ ॥ (५६३-७, वडहंसु, मः ३)
दूजै भाइ जेते कर्म करे दुखु लगै तनि धाइ ॥ (५६३-७, वडहंसु, मः ३)
गुर परसादी सुखु ऊपजै जा गुर का सबदु कमाइ ॥ (५६३-८, वडहंसु, मः ३)
सची बाणी कर्म करे अनदिनु नामु धिआइ ॥ (५६३-८, वडहंसु, मः ३)
नानक जितु आपे लाए तितु लगे कहणा किछू न जाइ ॥१॥ (५६३-९, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६३-९)
हम घरि नामु खजाना सदा है भगति भरे भंडारा ॥ (५६३-९, वडहंसु, मः ३)
सतगुरु दाता जीअ का सद जीवै देवणहारा ॥ (५६३-१०, वडहंसु, मः ३)
अनदिनु कीरतनु सदा करहि गुर कै सबदि अपारा ॥ (५६३-१०, वडहंसु, मः ३)
सबदु गुरू का सद उचरहि जुगु जुगु वरतावणहारा ॥ (५६३-११, वडहंसु, मः ३)
इहु मनूआ सदा सुखि वसै सहजे करे वापारा ॥ (५६३-११, वडहंसु, मः ३)
अंतरि गुर गिआनु हरि रतनु है मुकति करावणहारा ॥ (५६३-१२, वडहंसु, मः ३)
नानक जिस नो नदरि करे सो पाए सो होवै दरि सचिआरा ॥२॥ (५६३-१२, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६३-१३)
धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जो सतिगुर चरणी जाइ पइआ ॥ (५६३-१३, वडहंसु, मः ३)
धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि हरि नामा मुखि रामु कहिआ ॥ (५६३-१४, वडहंसु, मः ३)
धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जिसु हरि नामि सुणिऐ मनि अनदु भइआ ॥ (५६३-१४, वडहंसु, मः ३)

धन्नु धन्नु सो गुरसिखु कहीऐ जिनि सतिगुर सेवा करि हरि नामु लइआ ॥ (५६३-१५, वडहंसु, मः ३)
तिसु गुरसिख कंउ हंउ सदा नमसकारी जो गुर कै भाणै गुरसिखु चलिआ ॥१८॥ (५६३-१६, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (५६३-१७)
मनहठि किनै न पाइओ सभ थके कर्म कमाइ ॥ (५६३-१७, वडहंसु, मः ३)
मनहठि भेख करि भरमदे दुखु पाइआ दूजै भाइ ॥ (५६३-१७, वडहंसु, मः ३)
रिधि सिधि सभु मोहु है नामु न वसै मनि आइ ॥ (५६३-१८, वडहंसु, मः ३)
गुर सेवा ते मनु निरमलु होवै अगिआनु अंधेरा जाइ ॥ (५६३-१८, वडहंसु, मः ३)
नामु रतनु घरि परगटु होआ नानक सहजि समाइ ॥१॥ (५६३-१९, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६३-१९)

पन्ना ५६४

सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ (५६४-१, वडहंसु, मः ३)
रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ (५६४-१, वडहंसु, मः ३)
नानक किरति पइऐ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ (५६४-१, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६४-२)
धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम कउ साँति आई ॥ (५६४-२, वडहंसु, मः ३)
धनु धनु सत पुरखु सतिगुरू हमारा जितु मिलिऐ हम हरि भगति पाई ॥ (५६४-३, वडहंसु, मः ३)
धनु धनु हरि भगतु सतिगुरू हमारा जिस की सेवा ते हम हरि नामि लिव लाई ॥ (५६४-४, वडहंसु, मः ३)
धनु धनु हरि गिआनी सतिगुरू हमारा जिनि वैरी मित्रु हम कउ सभ सम दृसटि दिखाई ॥ (५६४-४, वडहंसु, मः ३)
धनु धनु सतिगुरू मित्रु हमारा जिनि हरि नाम सिउ हमारी प्रीति बणाई ॥१९॥ (५६४-५, वडहंसु, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (५६४-६)
घर ही मुंधि विदेसि पिरु नित झूरे सम्हाले ॥ (५६४-६, वडहंसु, मः १)
मिलदिआ ढिल न होवई जे नीअति रासि करे ॥१॥ (५६४-७, वडहंसु, मः १)
मः १ ॥ (५६४-७)
नानक गाली कूड़ीआ बाझु परीति करेइ ॥ (५६४-७, वडहंसु, मः १)
तिचरु जाणै भला करि जिचरु लेवै देइ ॥२॥ (५६४-८, वडहंसु, मः १)
पउड़ी ॥ (५६४-८)
जिनि उपाए जीअ तिनि हरि राखिआ ॥ (५६४-८, वडहंसु, मः १)
अमृतु सचा नाउ भोजनु चाखिआ ॥ (५६४-९, वडहंसु, मः १)
तिपति रहे आघाइ मिटी भभाखिआ ॥ (५६४-९, वडहंसु, मः १)
सभ अंदरि इकु वरतै किनै विरलै लाखिआ ॥ (५६४-९, वडहंसु, मः १)
जन नानक भए निहालु प्रभ की पाखिआ ॥२०॥ (५६४-१०, वडहंसु, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (५६४-१०)
सतिगुर नो सभु को वेखदा जेता जगतु संसारु ॥ (५६४-११, वडहंसु, मः ३)

डिठै मुकति न होवई जिचरु सबदि न करे वीचारु ॥ (५६४-११, वडहंसु, मः ३)
हउमै मैलु न चुकई नामि न लगै पिआरु ॥ (५६४-१२, वडहंसु, मः ३)
इकि आपे बखसि मिलाइअनु दुबिधा तजि विकार ॥ (५६४-१२, वडहंसु, मः ३)
नानक इकि दरसनु देखि मरि मिले सतिगुर हेति पिआरि ॥१॥ (५६४-१३, वडहंसु, मः ३)
मः ३ ॥ (५६४-१३)
सतिगुरू न सेविओ मूरख अंध गवारि ॥ (५६४-१३, वडहंसु, मः ३)
दूजै भाइ बहुतु दुखु लागा जलता करे पुकार ॥ (५६४-१४, वडहंसु, मः ३)
जिन कारणि गुरू विसारिआ से न उपकरे अंती वार ॥ (५६४-१४, वडहंसु, मः ३)
नानक गुरमती सुखु पाइआ बखसे बखसणहार ॥२॥ (५६४-१५, वडहंसु, मः ३)
पउड़ी ॥ (५६४-१५)
तू आपे आपि आपि सभु करता कोई दूजा होइ सु अवरो कहीऐ ॥ (५६४-१५, वडहंसु, मः ३)
हरि आपे बोलै आपि बुलावै हरि आपे जलि थलि रवि रहीऐ ॥ (५६४-१६, वडहंसु, मः ३)
हरि आपे मारै हरि आपे छोडै मन हरि सरणी पड़ि रहीऐ ॥ (५६४-१७, वडहंसु, मः ३)
हरि बिनु कोई मारि जीवालि न सकै मन होइ निचिंद निसलु होइ रहीऐ ॥ (५६४-१७, वडहंसु, मः ३)
उठदिआ बहदिआ सुतिआ सदा सदा हरि नामु धिआईऐ जन नानक गुरमुखि हरि लहीऐ ॥२१॥१॥ सुधु (५६४-१८, वडहंसु, मः ३)

पन्ना ५६५

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (५६५-१)
सोरठि महला १ घरु १ चउपदे ॥ (५६५-३)
सभना मरणा आइआ वेछोड़ा सभनाह ॥ (५६५-४, सोरठि, मः १)
पुछहु जाइ सिआणिआ आगै मिलणु किनाह ॥ (५६५-४, सोरठि, मः १)
जिन मेरा साहिबु वीसरै वडड़ी वेदन तिनाह ॥१॥ (५६५-४, सोरठि, मः १)
भी सालाहिहु साचा सोइ ॥ (५६५-५, सोरठि, मः १)
जा की नदरि सदा सुखु होइ ॥ रहाउ ॥ (५६५-५, सोरठि, मः १)
वडा करि सालाहणा है भी होसी सोइ ॥ (५६५-६, सोरठि, मः १)
सभना दाता एकु तू माणस दाति न होइ ॥ (५६५-६, सोरठि, मः १)
जो तिसु भावै सो थीऐ रन्न कि रुन्नै होइ ॥२॥ (५६५-६, सोरठि, मः १)
धरती उपरि कोट गड़ केती गई वजाइ ॥ (५६५-७, सोरठि, मः १)
जो असमानि न मावनी तिन नकि नथा पाइ ॥ (५६५-७, सोरठि, मः १)
जे मन जाणहि सूलीआ काहे मिठा खाहि ॥३॥ (५६५-८, सोरठि, मः १)
नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥ (५६५-८, सोरठि, मः १)
जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥ (५६५-९, सोरठि, मः १)
अगै गए न मन्नीअनि मारि कढहु वेपीर ॥४॥१॥ (५६५-९, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ घरु १ ॥ (५६५-१०)

मनु हाली किरसाणी करणी सरमु पाणी तनु खेतु ॥ (५६५-१०, सोरठि, मः १)
नामु बीजु संतोखु सुहागा रखु गरीबी वेसु ॥ (५६५-१०, सोरठि, मः १)
भाउ कर्म करि जम्मसी से घर भागठ देखु ॥१॥ (५६५-११, सोरठि, मः १)
बाबा माइआ साथि न होइ ॥ (५६५-११, सोरठि, मः १)
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला बूझै कोइ ॥ रहाउ ॥ (५६५-१२, सोरठि, मः १)
हाणु हटु करि आरजा सचु नामु करि वथु ॥ (५६५-१२, सोरठि, मः १)
सुरति सोच करि भाँडसाल तिसु विचि तिस नो रखु ॥ (५६५-१३, सोरठि, मः १)
वणजारिआ सिउ वणजु करि लै लाहा मन हसु ॥२॥ (५६५-१३, सोरठि, मः १)
सुणि सासत सउदागरी सतु घोड़े लै चलु ॥ (५६५-१४, सोरठि, मः १)
खरचु बन्नु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कलु ॥ (५६५-१४, सोरठि, मः १)
निरंकार कै देसि जाहि ता सुखि लहहि महलु ॥३॥ (५६५-१५, सोरठि, मः १)
लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कम्मु ॥ (५६५-१५, सोरठि, मः १)

पन्ना ५६६

बन्नु बदीआ करि धावणी ता को आखै धन्नु ॥ (५६६-१, सोरठि, मः १)
नानक वेखै नदरि करि चड़ै चवगण वन्नु ॥४॥२॥ (५६६-१, सोरठि, मः १)
सोरठि मः १ चउतुके ॥ (५६६-२)
माइ बाप को बेटा नीका ससुरै चतुरु जवाई ॥ (५६६-२, सोरठि, मः १)
बाल कंनिआ कौ बापु पिआरा भाई कौ अति भाई ॥ (५६६-२, सोरठि, मः १)
हुकमु भइआ बाहरु घरु छोडिआ खिन महि भई पराई ॥ (५६६-३, सोरठि, मः १)
नामु दानु इसनानु न मनमुखि तितु तनि धूड़ि धुमाई ॥१॥ (५६६-३, सोरठि, मः १)
मनु मानिआ नामु सखाई ॥ (५६६-४, सोरठि, मः १)
पाइ परउ गुर कै बलिहारै जिनि साची बूझ बुझाई ॥ रहाउ ॥ (५६६-४, सोरठि, मः १)
जग सिउ झूठ प्रीति मनु बेधिआ जन सिउ वादु रचाई ॥ (५६६-५, सोरठि, मः १)
माइआ मगनु अहिनिसि मगु जोहै नामु न लेवै मरै बिखु खाई ॥ (५६६-५, सोरठि, मः १)
गंधण वैणि रता हितकारी सबदै सुरति न आई ॥ (५६६-६, सोरठि, मः १)
रंगि न राता रसि नही बेधिआ मनमुखि पति गवाई ॥२॥ (५६६-७, सोरठि, मः १)
साध सभा महि सहजु न चाखिआ जिहबा रसु नही राई ॥ (५६६-७, सोरठि, मः १)
मनु तनु धनु अपुना करि जानिआ दर की खबरि न पाई ॥ (५६६-८, सोरठि, मः १)
अखी मीटि चलिआ अंधिआरा घरु दरु दिसै न भाई ॥ (५६६-८, सोरठि, मः १)
जम दरि बाधा ठउर न पावै अपुना कीआ कमाई ॥३॥ (५६६-९, सोरठि, मः १)
नदरि करे ता अखी वेखा कहणा कथनु न जाई ॥ (५६६-१०, सोरठि, मः १)
कन्नी सुणि सुणि सबदि सलाही अमृतु रिदै वसाई ॥ (५६६-१०, सोरठि, मः १)
निरभउ निरंकारु निरवैरु पूरन जोति समाई ॥ (५६६-११, सोरठि, मः १)
नानक गुर विणु भरमु न भागै सचि नामि वडिआई ॥४॥३॥ (५६६-११, सोरठि, मः १)

सोरठि महला १ दुतुके ॥ (५९६-१२)
पुड़ धरती पुड़ पाणी आसणु चारि कुंट चउबारा ॥ (५९६-१२, सोरठि, मः १)
सगल भवण की मूरति एका मुखि तेरै टकसाला ॥१॥ (५९६-१३, सोरठि, मः १)
मेरे साहिबा तेरे चोज विडाणा ॥ (५९६-१३, सोरठि, मः १)
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा आपे सर्ब समाणा ॥ रहाउ ॥ (५९६-१३, सोरठि, मः १)
जह जह देखा तह जोति तुमारी तेरा रूपु किनेहा ॥ (५९६-१४, सोरठि, मः १)
इकतु रूपि फिरहि परछन्ना कोइ न किस ही जेहा ॥२॥ (५९६-१५, सोरठि, मः १)
अंडज जेरज उतभुज सेतज तेरे कीते जंता ॥ (५९६-१५, सोरठि, मः १)
एकु पुरबु मै तेरा देखिआ तू सभना माहि रवंता ॥३॥ (५९६-१६, सोरठि, मः १)
तेरे गुण बहुते मै एकु न जाणिआ मै मूरख किछु दीजै ॥ (५९६-१६, सोरठि, मः १)
प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै ॥४॥४॥ (५९६-१७, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ ॥ (५९६-१७)
हउ पापी पतितु पर्म पाखंडी तू निरमलु निरंकारी ॥ (५९६-१७, सोरठि, मः १)
अमृतु चाखि पर्म रसि राते ठाकुर सरणि तुमारी ॥१॥ (५९६-१८, सोरठि, मः १)
करता तू मै माणु निमाणे ॥ (५९६-१९, सोरठि, मः १)
माणु महतु नामु धनु पलै साचै सबदि समाणे ॥ रहाउ ॥ (५९६-१९, सोरठि, मः १)
तू पूरा हम ऊरे होछे तू गउरा हम हउरे ॥ (५९६-१९, सोरठि, मः १)

पन्ना ५९७

तुझ ही मन राते अहिनिसि परभाते हरि रसना जपि मन रे ॥२॥ (५९७-१, सोरठि, मः १)
तुम साचे हम तुम ही राचे सबदि भेदि फुनि साचे ॥ (५९७-२, सोरठि, मः १)
अहिनिसि नामि रते से सूचे मरि जनमे से काचे ॥३॥ (५९७-२, सोरठि, मः १)
अवरु न दीसै किसु सालाही तिसहि सरीकु न कोई ॥ (५९७-३, सोरठि, मः १)
प्रणवति नानकु दासनि दासा गुरमति जानिआ सोई ॥४॥५॥ (५९७-३, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ ॥ (५९७-४)
अलख अपार अगम्म अगोचर ना तिसु कालु न करमा ॥ (५९७-४, सोरठि, मः १)
जाति अजाति अजोनी सम्भउ ना तिसु भाउ न भरमा ॥१॥ (५९७-५, सोरठि, मः १)
साचे सचिआर विटहु कुरबाणु ॥ (५९७-५, सोरठि, मः १)
ना तिसु रूप वरनु नही रेखिआ साचै सबदि नीसाणु ॥ रहाउ ॥ (५९७-५, सोरठि, मः १)
ना तिसु मात पिता सुत बंधप ना तिसु कामु न नारी ॥ (५९७-६, सोरठि, मः १)
अकुल निरंजन अपर परम्परु सगली जोति तुमारी ॥२॥ (५९७-७, सोरठि, मः १)
घट घट अंतरि ब्रह्मु लुकाइआ घटि घटि जोति सबाई ॥ (५९७-७, सोरठि, मः १)
बजर कपाट मुकते गुरमती निरभै ताड़ी लाई ॥३॥ (५९७-८, सोरठि, मः १)
जंत उपाइ कालु सिरि जंता वसगति जुगति सबाई ॥ (५९७-८, सोरठि, मः १)
सतिगुरु सेवि पदारथु पावहि छूटहि सबदु कमाई ॥४॥ (५९७-९, सोरठि, मः १)

सूचै भाडै साचु समावै विरले सूचाचारी ॥ (५६७-६, सोरठि, मः १)
तंतै कउ परम तंतु मिलाइआ नानक सरणि तुमारी ॥५॥६॥ (५६७-१०, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ ॥ (५६७-११)
जिउ मीना बिनु पाणीऐ तिउ साकतु मरै पिआस ॥ (५६७-११, सोरठि, मः १)
तिउ हरि बिनु मरीऐ रे मना जो बिरथा जावै सासु ॥१॥ (५६७-११, सोरठि, मः १)
मन रे राम नाम जसु लेइ ॥ (५६७-१२, सोरठि, मः १)
बिनु गुर इहु रसु किउ लहउ गुरु मेलै हरि देइ ॥ रहाउ ॥ (५६७-१२, सोरठि, मः १)
संत जना मिलु संगती गुरमुखि तीरथु होइ ॥ (५६७-१३, सोरठि, मः १)
अठसठि तीरथ मजना गुर दरसु परापति होइ ॥२॥ (५६७-१३, सोरठि, मः १)
जिउ जोगी जत बाहरा तपु नाही सतु संतोखु ॥ (५६७-१४, सोरठि, मः १)
तिउ नामै बिनु देहुरी जमु मारै अंतरि दोखु ॥३॥ (५६७-१४, सोरठि, मः १)
साकत प्रेमु न पाईऐ हरि पाईऐ सतिगुर भाइ ॥ (५६७-१५, सोरठि, मः १)
सुख दुख दाता गुरु मिलै कहु नानक सिफति समाइ ॥४॥७॥ (५६७-१५, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ ॥ (५६७-१६)
तू प्रभ दाता दानि मति पूरा हम थारे भेखारी जीउ ॥ (५६७-१६, सोरठि, मः १)
मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥१॥ (५६७-१७, सोरठि, मः १)
घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ (५६७-१७, सोरठि, मः १)
जलि थलि महीअलि गुपतो वरतै गुर सबदी देखि निहारी जीउ ॥ रहाउ ॥ (५६७-१८, सोरठि, मः १)
मरत पइआल अकासु दिखाइओ गुरि सतिगुरि किरपा धारी जीउ ॥ (५६७-१८, सोरठि, मः १)
सो ब्रह्मु अजोनी है भी होनी घट भीतरि देखु मुरारी जीउ ॥२॥ (५६७-१९, सोरठि, मः १)

पन्ना ५६८

जनम मरन कउ इहु जगु बपुड़ो इनि दूजै भगति विसारी जीउ ॥ (५६८-१, सोरठि, मः १)
सतिगुरु मिलै त गुरमति पाईऐ साकत बाजी हारी जीउ ॥३॥ (५६८-१, सोरठि, मः १)
सतिगुर बंधन तोड़ि निरारे बहुड़ि न गरभ मझारी जीउ ॥ (५६८-२, सोरठि, मः १)
नानक गिआन रतनु परगासिआ हरि मनि वसिआ निरंकारी जीउ ॥४॥८॥ (५६८-३, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ ॥ (५६८-४)
जिसु जल निधि कारणि तुम जगि आए सो अमृतु गुर पाही जीउ ॥ (५६८-४, सोरठि, मः १)
छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ ॥१॥ (५६८-४, सोरठि, मः १)
मन रे थिरु रहु मतु कत जाही जीउ ॥ (५६८-५, सोरठि, मः १)
बाहरि ढूढत बहुतु दुखु पावहि घरि अमृतु घट माही जीउ ॥ रहाउ ॥ (५६८-५, सोरठि, मः १)
अवगुण छोडि गुणा कउ धावहु करि अवगुण पछुताही जीउ ॥ (५६८-६, सोरठि, मः १)
सर अपसर की सार न जाणहि फिरि फिरि कीच बुडाही जीउ ॥२॥ (५६८-७, सोरठि, मः १)
अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ॥ (५६८-७, सोरठि, मः १)
निर्मल नामु जपहु सद गुरमुखि अंतर की गति ताही जीउ ॥३॥ (५६८-८, सोरठि, मः १)

परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुर बचनी फलु पाही जीउ ॥ (५९८-९, सोरठि, मः १)
जिउ भावै तिउ राखहु हरि जीउ जन नानक सबदि सलाही जीउ ॥४॥६॥ (५९८-९, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ पंचपदे ॥ (५९८-१०)
अपना घरु मूसत राखि न साकहि की पर घरु जोहन लागा ॥ (५९८-१०, सोरठि, मः १)
घरु दरु राखहि जे रसु चाखहि जो गुरमुखि सेवकु लागा ॥१॥ (५९८-११, सोरठि, मः १)
मन रे समझु कवन मति लागा ॥ (५९८-१२, सोरठि, मः १)
नामु विसारि अन रस लोभाने फिरि पछुताहि अभागा ॥ रहाउ ॥ (५९८-१२, सोरठि, मः १)
आवत कउ हरख जात कउ रोवहि इहु दुखु सुखु नाले लागा ॥ (५९८-१३, सोरठि, मः १)
आपे दुख सुख भोगि भोगावै गुरमुखि सो अनरागा ॥२॥ (५९८-१३, सोरठि, मः १)
हरि रस ऊपरि अवरु किआ कहीऐ जिनि पीआ सो तृपतागा ॥ (५९८-१४, सोरठि, मः १)
माइआ मोहित जिनि इहु रसु खोइआ जा साकत दुरमति लागा ॥३॥ (५९८-१४, सोरठि, मः १)
मन का जीउ पवनपति देही देही महि देउ समागा ॥ (५९८-१५, सोरठि, मः १)
जे तू देहि त हरि रसु गाई मनु तृपतै हरि लिव लागा ॥४॥ (५९८-१६, सोरठि, मः १)
साधसंगति महि हरि रसु पाईऐ गुरि मिलिऐ जम भउ भागा ॥ (५९८-१६, सोरठि, मः १)
नानक राम नामु जपि गुरमुखि हरि पाए मसतकि भागा ॥५॥१०॥ (५९८-१७, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ ॥ (५९८-१८)
सर्ब जीआ सिरि लेखु धुराहू बिनु लेखै नही कोई जीउ ॥ (५९८-१८, सोरठि, मः १)
आपि अलेखु कुदरति करि देखै हुकमि चलाए सोई जीउ ॥१॥ (५९८-१८, सोरठि, मः १)
मन रे राम जपहु सुखु होई ॥ (५९८-१९, सोरठि, मः १)
अहिनिसि गुर के चरन सरेवहु हरि दाता भुगता सोई ॥ रहाउ ॥ (५९८-१९, सोरठि, मः १)

पन्ना ५९९

जो अंतरि सो बाहरि देखहु अवरु न दूजा कोई जीउ ॥ (५९९-१, सोरठि, मः १)
गुरमुखि एक दृसटि करि देखहु घटि घटि जोति समोई जीउ ॥२॥ (५९९-२, सोरठि, मः १)
चलतौ ठाकि रखहु घरि अपनै गुर मिलिऐ इह मति होई जीउ ॥ (५९९-२, सोरठि, मः १)
देखि अदृसटु रहउ बिसमादी दुखु बिसरै सुखु होई जीउ ॥३॥ (५९९-३, सोरठि, मः १)
पीवहु अपिउ पर्म सुखु पाईऐ निज घरि वासा होई जीउ ॥ (५९९-४, सोरठि, मः १)
जनम मरण भव भंजनु गाईऐ पुनरपि जनमु न होई जीउ ॥४॥ (५९९-४, सोरठि, मः १)
ततु निरंजनु जोति सबाई सोहं भेदु न कोई जीउ ॥ (५९९-५, सोरठि, मः १)
अपरम्पर पारब्रह्मु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥५॥११॥ (५९९-५, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ घरु ३ (५९९-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५९९-७)
जा तिसु भावा तद ही गावा ॥ (५९९-८, सोरठि, मः १)
ता गावे का फलु पावा ॥ (५९९-८, सोरठि, मः १)
गावे का फलु होई ॥ (५९९-८, सोरठि, मः १)

जा आपे देवै सोई ॥१॥ (५९९-८, सोरठि, मः १)
मन मेरे गुर बचनी निधि पाई ॥ (५९९-९, सोरठि, मः १)
ता ते सच महि रहिआ समाई ॥ रहाउ ॥ (५९९-९, सोरठि, मः १)
गुर साखी अंतरि जागी ॥ (५९९-९, सोरठि, मः १)
ता चंचल मति तिआगी ॥ (५९९-१०, सोरठि, मः १)
गुर साखी का उजीआरा ॥ (५९९-१०, सोरठि, मः १)
ता मिटिआ सगल अंध्यारा ॥२॥ (५९९-१०, सोरठि, मः १)
गुर चरनी मनु लागा ॥ (५९९-१०, सोरठि, मः १)
ता जम का मारगु भागा ॥ (५९९-११, सोरठि, मः १)
भै विचि निरभउ पाइआ ॥ (५९९-११, सोरठि, मः १)
ता सहजै कै घरि आइआ ॥३॥ (५९९-११, सोरठि, मः १)
भणति नानकु बूझै को बीचारी ॥ (५९९-१२, सोरठि, मः १)
इसु जग महि करणी सारी ॥ (५९९-१२, सोरठि, मः १)
करणी कीरति होई ॥ (५९९-१२, सोरठि, मः १)
जा आपे मिलिआ सोई ॥४॥१॥१२॥ (५९९-१२, सोरठि, मः १)
सोरठि महला ३ घरु १ (५९९-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (५९९-१४)
सेवक सेव करहि सभि तेरी जिन सबदै सादु आइआ ॥ (५९९-१५, सोरठि, मः ३)
गुर किरपा ते निरमलु होआ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥ (५९९-१५, सोरठि, मः ३)
अनदिनु गुण गावहि नित साचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥१॥ (५९९-१६, सोरठि, मः ३)
मेरे ठाकुर हम बारिक सरणि तुमारी ॥ (५९९-१६, सोरठि, मः ३)
एको सचा सचु तू केवलु आपि मुरारी ॥ रहाउ ॥ (५९९-१७, सोरठि, मः ३)
जागत रहे तिनी प्रभु पाइआ सबदे हउमै मारी ॥ (५९९-१७, सोरठि, मः ३)
गिरही महि सदा हरि जन उदासी गिआन तत बीचारी ॥ (५९९-१८, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि राखिआ उर धारी ॥२॥ (५९९-१८, सोरठि, मः ३)
इहु मनूआ दह दिसि धावदा दूजै भाइ खुआइआ ॥ (५९९-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६००

मनमुख मुगधु हरि नामु न चेतै बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (६००-१, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु भेटे ता नाउ पाए हउमै मोहु चुकाइआ ॥३॥ (६००-१, सोरठि, मः ३)
हरि जन साचे साचु कमावहि गुर कै सबदि वीचारी ॥ (६००-२, सोरठि, मः ३)
आपे मेलि लए प्रभि साचै साचु रखिआ उर धारी ॥ (६००-२, सोरठि, मः ३)
नानक नावहु गति मति पाई एहा रासि हमारी ॥४॥१॥ (६००-३, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ ॥ (६००-३)
भगति खजाना भगतन कउ दीआ नाउ हरि धनु सचु सोइ ॥ (६००-४, सोरठि, मः ३)

अखुटु नाम धनु कदे निखुटै नाही किनै न कीमति होइ ॥ (६००-४, सोरठि, मः ३)
नाम धनि मुख उजले होए हरि पाइआ सचु सोइ ॥१॥ (६००-५, सोरठि, मः ३)
मन मेरे गुर सबदी हरि पाइआ जाइ ॥ (६००-५, सोरठि, मः ३)
बिनु सबदै जगु भुलदा फिरदा दरगह मिलै सजाइ ॥ रहाउ ॥ (६००-६, सोरठि, मः ३)
इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥ (६००-६, सोरठि, मः ३)
अमृतु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ (६००-७, सोरठि, मः ३)
अंधा जगतु अंधु वरतारा बाझु गुरू गुबारा ॥२॥ (६००-८, सोरठि, मः ३)
हउमै मेरा करि करि विगुते किहु चलै न चलदिआ नालि ॥ (६००-८, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि होवै सु नामु धिआवै सदा हरि नामु समालि ॥ (६००-९, सोरठि, मः ३)
सची बाणी हरि गुण गावै नदरी नदरि निहालि ॥३॥ (६००-९, सोरठि, मः ३)
सतिगुर गिआनु सदा घटि चानणु अमरु सिरि बादिसाहा ॥ (६००-१०, सोरठि, मः ३)
अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु सचु लाहा ॥ (६००-१०, सोरठि, मः ३)
नानक राम नामि निसतारा सबदि रते हरि पाहा ॥४॥२॥ (६००-११, सोरठि, मः ३)
सोरठि मः ३ ॥ (६००-१२)
दासनि दासु होवै ता हरि पाए विचहु आपु गवाई ॥ (६००-१२, सोरठि, मः ३)
भगता का कारजु हरि अनंदु है अनदिनु हरि गुण गाई ॥ (६००-१२, सोरठि, मः ३)
सबदि रते सदा इक रंगी हरि सिउ रहे समाई ॥१॥ (६००-१३, सोरठि, मः ३)
हरि जीउ साची नदरि तुमारी ॥ (६००-१३, सोरठि, मः ३)
आपणिआ दासा नो कृपा करि पिआरे राखहु पैज हमारी ॥ रहाउ ॥ (६००-१४, सोरठि, मः ३)
सबदि सलाही सदा हउ जीवा गुरमती भउ भागा ॥ (६००-१५, सोरठि, मः ३)
मेरा प्रभु साचा अति सुआलिउ गुरु सेविआ चितु लागा ॥ (६००-१५, सोरठि, मः ३)
साचा सबदु सची सचु बाणी सो जनु अनदिनु जागा ॥२॥ (६००-१६, सोरठि, मः ३)
महा गम्भीरु सदा सुखदाता तिस का अंतु न पाइआ ॥ (६००-१६, सोरठि, मः ३)
पूरे गुर की सेवा कीनी अचिंतु हरि मंनि वसाइआ ॥ (६००-१७, सोरठि, मः ३)
मनु तनु निरमलु सदा सुखु अंतरि विचहु भरमु चुकाइआ ॥३॥ (६००-१७, सोरठि, मः ३)
हरि का मारगु सदा पंथु विखड़ा को पाए गुर वीचारा ॥ (६००-१८, सोरठि, मः ३)
हरि कै रंगि राता सबदे माता हउमै तजे विकारा ॥ (६००-१९, सोरठि, मः ३)
नानक नामि रता इक रंगी सबदि सवारणहारा ॥४॥३॥ (६००-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६०१

सोरठि महला ३ ॥ (६०१-१)
हरि जीउ तुधु नो सदा सालाही पिआरे जिचरु घट अंतरि है सासा ॥ (६०१-१, सोरठि, मः ३)
इकु पलु खिनु विसरहि तू सुआमी जाणउ बरस पचासा ॥ (६०१-१, सोरठि, मः ३)
हम मूड़ मुगध सदा से भाई गुर कै सबदि प्रगासा ॥१॥ (६०१-२, सोरठि, मः ३)
हरि जीउ तुम आपे देहु बुझाई ॥ (६०१-३, सोरठि, मः ३)

हरि जीउ तुधु विटहु वारिआ सद ही तेरे नाम विटहु बलि जाई ॥ रहाउ ॥ (६०१-३, सोरठि, मः ३)
हम सबदि मुए सबदि मारि जीवाले भाई सबदे ही मुकति पाई ॥ (६०१-४, सोरठि, मः ३)
सबदे मनु तनु निरमलु होआ हरि वसिआ मनि आई ॥ (६०१-४, सोरठि, मः ३)
सबदु गुर दाता जितु मनु राता हरि सिउ रहिआ समाई ॥२॥ (६०१-५, सोरठि, मः ३)
सबदु न जाणहि से अन्ने बोले से कितु आए संसारा ॥ (६०१-६, सोरठि, मः ३)
हरि रसु न पाइआ बिरथा जनमु गवाइआ जम्महि वारो वारा ॥ (६०१-६, सोरठि, मः ३)
बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥३॥ (६०१-७, सोरठि, मः ३)
आपे करि वेखै मारगि लाए भाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (६०१-८, सोरठि, मः ३)
जो धुरि लिखिआ सु कोइ न मेटै भाई करता करे सु होई ॥ (६०१-८, सोरठि, मः ३)
नानक नामु वसिआ मन अंतरि भाई अवरु न दूजा कोई ॥४॥४॥ (६०१-९, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ ॥ (६०१-१०)
गुरमुखि भगति करहि प्रभ भावहि अनदिनु नामु वखाणे ॥ (६०१-१०, सोरठि, मः ३)
भगता की सार करहि आपि राखहि जो तेरै मनि भाणे ॥ (६०१-१०, सोरठि, मः ३)
तू गुणदाता सबदि पछाता गुण कहि गुणी समाणे ॥१॥ (६०१-११, सोरठि, मः ३)
मन मेरे हरि जीउ सदा समालि ॥ (६०१-११, सोरठि, मः ३)
अंत कालि तेरा बेली होवै सदा निबहै तेरै नालि ॥ रहाउ ॥ (६०१-१२, सोरठि, मः ३)
दुसट चउकड़ी सदा कूड़ु कमावहि ना बूझहि वीचारे ॥ (६०१-१२, सोरठि, मः ३)
निंदा दुसटी ते किनि फलु पाइआ हरणाखस नखहि बिदारे ॥ (६०१-१३, सोरठि, मः ३)
प्रहिलादु जनु सद हरि गुण गावै हरि जीउ लए उबारे ॥२॥ (६०१-१४, सोरठि, मः ३)
आपस कउ बहु भला करि जाणहि मनमुखि मति न काई ॥ (६०१-१४, सोरठि, मः ३)
साधू जन की निंदा विआपे जासनि जनमु गवाई ॥ (६०१-१५, सोरठि, मः ३)
राम नामु कदे चेतहि नाही अंति गए पछुताई ॥३॥ (६०१-१५, सोरठि, मः ३)
सफलु जनमु भगता का कीता गुर सेवा आपि लाए ॥ (६०१-१६, सोरठि, मः ३)
सबदे राते सहजे माते अनदिनु हरि गुण गाए ॥ (६०१-१६, सोरठि, मः ३)
नानक दासु कहै बेनंती हउ लागा तिन कै पाए ॥४॥५॥ (६०१-१७, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ ॥ (६०१-१८)
सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥ (६०१-१८, सोरठि, मः ३)
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥ (६०१-१८, सोरठि, मः ३)
बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥१॥ (६०१-१९, सोरठि, मः ३)
हरि के दास सुहेले भाई ॥ (६०१-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६०२

जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥ (६०२-१, सोरठि, मः ३)
इहु कुटम्बु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥ (६०२-१, सोरठि, मः ३)
बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥ (६०२-२, सोरठि, मः ३)

कर्म करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥२॥ (६०२-२, सोरठि, मः ३)
हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किस ही केरा ॥ (६०२-३, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥ (६०२-४, सोरठि, मः ३)
ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥३॥ (६०२-४, सोरठि, मः ३)
सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥ (६०२-५, सोरठि, मः ३)
एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥ (६०२-६, सोरठि, मः ३)
नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥४॥६॥ (६०२-६, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ चौतुके ॥ (६०२-७)
सची भगति सतिगुर ते होवै सची हिरदै बाणी ॥ (६०२-७, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए हउमै सबदि समाणी ॥ (६०२-८, सोरठि, मः ३)
बिनु गुर साचे भगति न होवी होर भूली फिरै इआणी ॥ (६०२-८, सोरठि, मः ३)
मनमुखि फिरहि सदा दुखु पावहि डूबि मुए विणु पाणी ॥१॥ (६०२-९, सोरठि, मः ३)
भाई रे सदा रहहु सरणाई ॥ (६०२-९, सोरठि, मः ३)
आपणी नदरि करे पति राखै हरि नामो दे वडिआई ॥ रहाउ ॥ (६०२-१०, सोरठि, मः ३)
पूरे गुर ते आपु पछाता सबदि सचै वीचारा ॥ (६०२-१०, सोरठि, मः ३)
हिरदै जगजीवनु सद वसिआ तजि कामु क्रोधु अहंकारा ॥ (६०२-११, सोरठि, मः ३)
सदा हजूरि रविआ सभ ठाई हिरदै नामु अपारा ॥ (६०२-११, सोरठि, मः ३)
जुगि जुगि बाणी सबदि पछाणी नाउ मीठा मनहि पिआरा ॥२॥ (६०२-१२, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु सेवि जिनि नामु पछाता सफल जनमु जगि आइआ ॥ (६०२-१२, सोरठि, मः ३)
हरि रसु चाखि सदा मनु तृपतिआ गुण गावै गुणी अघाइआ ॥ (६०२-१३, सोरठि, मः ३)
कमलु प्रगासि सदा रंगि राता अनहद सबदु वजाइआ ॥ (६०२-१४, सोरठि, मः ३)
तनु मनु निरमलु निर्मल बाणी सचे सचि समाइआ ॥३॥ (६०२-१४, सोरठि, मः ३)
राम नाम की गति कोइ न बूझै गुरमति रिदै समाई ॥ (६०२-१५, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि होवै सु मगु पछाणै हरि रसि रसन रसाई ॥ (६०२-१५, सोरठि, मः ३)
जपु तपु संजमु सभु गुर ते होवै हिरदै नामु वसाई ॥ (६०२-१६, सोरठि, मः ३)
नानक नामु समालहि से जन सोहनि दरि साचै पति पाई ॥४॥७॥ (६०२-१६, सोरठि, मः ३)
सोरठि मः ३ दुतुके ॥ (६०२-१७)
सतिगुर मिलिऐ उलटी भई भाई जीवत मरै ता बूझ पाइ ॥ (६०२-१७, सोरठि, मः ३)
सो गुरू सो सिखु है भाई जिसु जोती जोति मिलाइ ॥१॥ (६०२-१८, सोरठि, मः ३)
मन रे हरि हरि सेती लिव लाइ ॥ (६०२-१९, सोरठि, मः ३)
मन हरि जपि मीठा लागै भाई गुरमुखि पाए हरि थाइ ॥ रहाउ ॥ (६०२-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६०३

बिनु गुर प्रीति न ऊपजै भाई मनमुखि दूजै भाइ ॥ (६०३-१, सोरठि, मः ३)
तुह कुटहि मनमुख कर्म करहि भाई पलै किछू न पाइ ॥२॥ (६०३-१, सोरठि, मः ३)

गुर मिलिऐ नामु मनि रविआ भाई साची प्रीति पिआरि ॥ (६०३-२, सोरठि, मः ३)
सदा हरि के गुण रवै भाई गुर कै हेति अपारि ॥३॥ (६०३-२, सोरठि, मः ३)
आइआ सो परवाणु है भाई जि गुर सेवा चितु लाइ ॥ (६०३-३, सोरठि, मः ३)
नानक नामु हरि पाईऐ भाई गुर सबदी मेलाइ ॥४॥८॥ (६०३-३, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ घरु १ ॥ (६०३-४)
तिही गुणी तृभवणु विआपिआ भाई गुरमुखि बूझ बुझाइ ॥ (६०३-४, सोरठि, मः ३)
राम नामि लगि छूटीऐ भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥१॥ (६०३-५, सोरठि, मः ३)
मन रे त्रै गुण छोडि चउथै चितु लाइ ॥ (६०३-५, सोरठि, मः ३)
हरि जीउ तेरै मनि वसै भाई सदा हरि के गुण गाइ ॥ रहाउ ॥ (६०३-६, सोरठि, मः ३)
नामै ते सभि ऊपजे भाई नाइ विसरिऐ मरि जाइ ॥ (६०३-६, सोरठि, मः ३)
अगिआनी जगतु अंधु है भाई सूते गए मुहाइ ॥२॥ (६०३-७, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि जागे से उबरे भाई भवजलु पारि उतारि ॥ (६०३-८, सोरठि, मः ३)
जग महि लाहा हरि नामु है भाई हिरदै रखिआ उर धारि ॥३॥ (६०३-८, सोरठि, मः ३)
गुर सरणाई उबरे भाई राम नामि लिव लाइ ॥ (६०३-९, सोरठि, मः ३)
नानक नाउ बेड़ा नाउ तुलहड़ा भाई जितु लगि पारि जन पाइ ॥४॥९॥ (६०३-९, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ घरु १ ॥ (६०३-१०)
सतिगुरु सुख सागरु जग अंतरि होर थै सुखु नाही ॥ (६०३-१०, सोरठि, मः ३)
हउमै जगतु दुखि रोगि विआपिआ मरि जनमै रोवै धाही ॥१॥ (६०३-११, सोरठि, मः ३)
प्राणी सतिगुरु सेवि सुखु पाइ ॥ (६०३-११, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु सेवहि ता सुखु पावहि नाहि त जाहिगा जनमु गवाइ ॥ रहाउ ॥ (६०३-१२, सोरठि, मः ३)
त्रै गुण धातु बहु कर्म कमावहि हरि रस सादु न आइआ ॥ (६०३-१२, सोरठि, मः ३)
संधिआ तरपणु करहि गाइत्री बिनु बूझे दुखु पाइआ ॥२॥ (६०३-१३, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु सेवे सो वडभागी जिस नो आपि मिलाए ॥ (६०३-१४, सोरठि, मः ३)
हरि रसु पी जन सदा तृपतासे विचहु आपु गवाए ॥३॥ (६०३-१४, सोरठि, मः ३)
इहु जगु अंधा सभु अंधु कमावै बिनु गुर मगु न पाए ॥ (६०३-१५, सोरठि, मः ३)
नानक सतिगुरु मिलै त अखी वेखै घरै अंदरि सचु पाए ॥४॥१०॥ (६०३-१५, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ ॥ (६०३-१६)
बिनु सतिगुर सेवे बहुता दुखु लागा जुग चारे भरमाई ॥ (६०३-१६, सोरठि, मः ३)
हम दीन तुम जुगु जुगु दाते सबदे देहि बुझाई ॥१॥ (६०३-१७, सोरठि, मः ३)
हरि जीउ कृपा करहु तुम पिआरे ॥ (६०३-१७, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु दाता मेलि मिलावहु हरि नामु देवहु आधारे ॥ रहाउ ॥ (६०३-१८, सोरठि, मः ३)
मनसा मारि दुबिधा सहजि समाणी पाइआ नामु अपारा ॥ (६०३-१८, सोरठि, मः ३)
हरि रसु चाखि मनु निरमलु होआ किलबिख काटणहारा ॥२॥ (६०३-१९, सोरठि, मः ३)

सबदि मरहु फिरि जीवहु सद ही ता फिरि मरणु न होई ॥ (६०४-१, सोरठि, मः ३)
अमृतु नामु सदा मनि मीठा सबदे पावै कोई ॥३॥ (६०४-१, सोरठि, मः ३)
दातै दाति रखी हथि अपणै जिसु भावै तिसु देई ॥ (६०४-२, सोरठि, मः ३)
नानक नामि रते सुखु पाइआ दरगह जापहि सेई ॥४॥११॥ (६०४-२, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ ॥ (६०४-३)
सतिगुर सेवे ता सहज धुनि उपजै गति मति तद ही पाए ॥ (६०४-३, सोरठि, मः ३)
हरि का नामु सचा मनि वसिआ नामे नामि समाए ॥१॥ (६०४-४, सोरठि, मः ३)
बिनु सतिगुर सभु जगु बउराना ॥ (६०४-४, सोरठि, मः ३)
मनमुखि अंधा सबदु न जाणै झूठै भरमि भुलाना ॥ रहाउ ॥ (६०४-५, सोरठि, मः ३)
त्रै गुण माइआ भरमि भुलाइआ हउमै बंधन कमाए ॥ (६०४-५, सोरठि, मः ३)
जम्मणु मरणु सिर ऊपरि ऊभउ गरभ जोनि दुखु पाए ॥२॥ (६०४-६, सोरठि, मः ३)
त्रै गुण वरतहि सगल संसारा हउमै विचि पति खोई ॥ (६०४-६, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि होवै चउथा पदु चीनै राम नामि सुखु होई ॥३॥ (६०४-७, सोरठि, मः ३)
त्रै गुण सभि तेरे तू आपे करता जो तू करहि सु होई ॥ (६०४-८, सोरठि, मः ३)
नानक राम नामि निसतारा सबदे हउमै खोई ॥४॥१२॥ (६०४-८, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ४ घरु १ (६०४-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६०४-१०)
आपे आपि वरतदा पिआरा आपे आपि अपाहु ॥ (६०४-११, सोरठि, मः ४)
वणजारा जगु आपि है पिआरा आपे साचा साहु ॥ (६०४-११, सोरठि, मः ४)
आपे वणजु वापारीआ पिआरा आपे सचु वेसाहु ॥१॥ (६०४-१२, सोरठि, मः ४)
जपि मन हरि हरि नामु सलाह ॥ (६०४-१२, सोरठि, मः ४)
गुर किरपा ते पाईऐ पिआरा अमृतु अगम अथाह ॥ रहाउ ॥ (६०४-१२, सोरठि, मः ४)
आपे सुणि सभ वेखदा पिआरा मुखि बोले आपि मुहाहु ॥ (६०४-१३, सोरठि, मः ४)
आपे उझड़ि पाइदा पिआरा आपि विखाले राहु ॥ (६०४-१४, सोरठि, मः ४)
आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे वेपरवाहु ॥२॥ (६०४-१४, सोरठि, मः ४)
आपे आपि उपाइदा पिआरा सिरि आपे धंधड़ै लाहु ॥ (६०४-१५, सोरठि, मः ४)
आपि कराए साखती पिआरा आपि मारे मरि जाहु ॥ (६०४-१५, सोरठि, मः ४)
आपे पतणु पातणी पिआरा आपे पारि लंघाहु ॥३॥ (६०४-१६, सोरठि, मः ४)
आपे सागरु बोहिथा पिआरा गुरु खेवटु आपि चलाहु ॥ (६०४-१६, सोरठि, मः ४)
आपे ही चड़ि लंघदा पिआरा करि चोज वेखै पातिसाहु ॥ (६०४-१७, सोरठि, मः ४)
आपे आपि दइआलु है पिआरा जन नानक बखसि मिलाहु ॥४॥१॥ (६०४-१७, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ४ चउथा ॥ (६०४-१८)
आपे अंडज जेरज सेतज उतभुज आपे खंड आपे सभ लोइ ॥ (६०४-१८, सोरठि, मः ४)

आपे सूतु आपे बहु मणीआ करि सकती जगतु परोइ ॥ (६०४-१६, सोरठि, मः ४)

पन्ना ६०५

आपे ही सूतधारु है पिआरा सूतु खिंचे ढहि ढेरी होइ ॥१॥ (६०५-१, सोरठि, मः ४)
मेरे मन मै हरि बिनु अवरु न कोइ ॥ (६०५-१, सोरठि, मः ४)
सतिगुर विचि नामु निधानु है पिआरा करि दइआ अमृतु मुखि चोइ ॥ रहाउ ॥ (६०५-२, सोरठि, मः ४)
आपे जल थलि सभतु है पिआरा प्रभु आपे करे सु होइ ॥ (६०५-२, सोरठि, मः ४)
सभना रिजकु समाहदा पिआरा दूजा अवरु न कोइ ॥ (६०५-३, सोरठि, मः ४)
आपे खेल खेलाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥२॥ (६०५-३, सोरठि, मः ४)
आपे ही आपि निरमला पिआरा आपे निर्मल सोइ ॥ (६०५-४, सोरठि, मः ४)
आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे करे सु होइ ॥ (६०५-५, सोरठि, मः ४)
आपे अलखु न लखीऐ पिआरा आपि लखावै सोइ ॥३॥ (६०५-५, सोरठि, मः ४)
आपे गहिर गम्भीरु है पिआरा तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (६०५-६, सोरठि, मः ४)
सभि घट आपे भोगवै पिआरा विचि नारी पुरख सभु सोइ ॥ (६०५-६, सोरठि, मः ४)
नानक गुपतु वरतदा पिआरा गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥ (६०५-७, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ४ ॥ (६०५-७)
आपे ही सभु आपि है पिआरा आपे थापि उथापै ॥ (६०५-८, सोरठि, मः ४)
आपे वेखि विगसदा पिआरा करि चोज वेखै प्रभु आपै ॥ (६०५-८, सोरठि, मः ४)
आपे वणि तिणि सभतु है पिआरा आपे गुरमुखि जापै ॥१॥ (६०५-९, सोरठि, मः ४)
जपि मन हरि हरि नाम रसि ध्रापै ॥ (६०५-९, सोरठि, मः ४)
अमृत नामु महा रसु मीठा गुर सबदी चखि जापै ॥ रहाउ ॥ (६०५-१०, सोरठि, मः ४)
आपे तीरथु तुलहड़ा पिआरा आपि तरै प्रभु आपै ॥ (६०५-१०, सोरठि, मः ४)
आपे जालु वताइदा पिआरा सभु जगु मछुली हरि आपै ॥ (६०५-११, सोरठि, मः ४)
आपि अभुलु न भुलई पिआरा अवरु न दूजा जापै ॥२॥ (६०५-११, सोरठि, मः ४)
आपे सिंङी नादु है पिआरा धुनि आपि वजाए आपै ॥ (६०५-१२, सोरठि, मः ४)
आपे जोगी पुरखु है पिआरा आपे ही तपु तापै ॥ (६०५-१२, सोरठि, मः ४)
आपे सतिगुरु आपि है चेला उपदेसु करै प्रभु आपै ॥३॥ (६०५-१३, सोरठि, मः ४)
आपे नाउ जपाइदा पिआरा आपे ही जपु जापै ॥ (६०५-१४, सोरठि, मः ४)
आपे अमृतु आपि है पिआरा आपे ही रसु आपै ॥ (६०५-१४, सोरठि, मः ४)
आपे आपि सलाहदा पिआरा जन नानक हरि रसि ध्रापै ॥४॥३॥ (६०५-१५, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ४ ॥ (६०५-१५)
आपे कंडा आपि तराजी प्रभि आपे तोलि तोलाइआ ॥ (६०५-१५, सोरठि, मः ४)
आपे साहु आपे वणजारा आपे वणजु कराइआ ॥ (६०५-१६, सोरठि, मः ४)
आपे धरती साजीअनु पिआरै पिछै टंकु चड़ाइआ ॥१॥ (६०५-१६, सोरठि, मः ४)
मेरे मन हरि हरि धिआइ सुखु पाइआ ॥ (६०५-१७, सोरठि, मः ४)

हरि हरि नामु निधानु है पिआरा गुरि पूरै मीठा लाइआ ॥ रहाउ ॥ (६०५-१७, सोरठि, मः ४)
आपे धरती आपि जलु पिआरा आपे करे कराइआ ॥ (६०५-१८, सोरठि, मः ४)
आपे हुकमि वरतदा पिआरा जलु माटी बंधि रखाइआ ॥ (६०५-१९, सोरठि, मः ४)
आपे ही भउ पाइदा पिआरा बंनि बकरी सीहु हढाइआ ॥२॥ (६०५-१९, सोरठि, मः ४)

पन्ना ६०६

आपे कासट आपि हरि पिआरा विचि कासट अगनि रखाइआ ॥ (६०६-१, सोरठि, मः ४)
आपे ही आपि वरतदा पिआरा भै अगनि न सकै जलाइआ ॥ (६०६-२, सोरठि, मः ४)
आपे मारि जीवाइदा पिआरा साह लैदे सभि लवाइआ ॥३॥ (६०६-२, सोरठि, मः ४)
आपे ताणु दीबाणु है पिआरा आपे कारै लाइआ ॥ (६०६-३, सोरठि, मः ४)
जिउ आपि चलाए तिउ चलीऐ पिआरे जिउ हरि प्रभ मेरे भाइआ ॥ (६०६-४, सोरठि, मः ४)
आपे जंती जंतु है पिआरा जन नानक वजहि वजाइआ ॥४॥४॥ (६०६-४, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ४ ॥ (६०६-५)
आपे सृसटि उपाइदा पिआरा करि सूरजु चंदु चानाणु ॥ (६०६-५, सोरठि, मः ४)
आपि निताणिआ ताणु है पिआरा आपि निमाणिआ माणु ॥ (६०६-६, सोरठि, मः ४)
आपि दइआ करि रखदा पिआरा आपे सुघड़ु सुजाणु ॥१॥ (६०६-६, सोरठि, मः ४)
मेरे मन जपि राम नामु नीसाणु ॥ (६०६-७, सोरठि, मः ४)
सतसंगति मिलि धिआइ तू हरि हरि बहुड़ि न आवण जाणु ॥ रहाउ ॥ (६०६-७, सोरठि, मः ४)
आपे ही गुण वरतदा पिआरा आपे ही परवाणु ॥ (६०६-८, सोरठि, मः ४)
आपे बखस कराइदा पिआरा आपे सचु नीसाणु ॥ (६०६-९, सोरठि, मः ४)
आपे हुकमि वरतदा पिआरा आपे ही फुरमाणु ॥२॥ (६०६-९, सोरठि, मः ४)
आपे भगति भंडार है पिआरा आपे देवै दाणु ॥ (६०६-१०, सोरठि, मः ४)
आपे सेव कराइदा पिआरा आपि दिवावै माणु ॥ (६०६-१०, सोरठि, मः ४)
आपे ताड़ी लाइदा पिआरा आपे गुणी निधानु ॥३॥ (६०६-११, सोरठि, मः ४)
आपे वडा आपि है पिआरा आपे ही परधाणु ॥ (६०६-११, सोरठि, मः ४)
आपे कीमति पाइदा पिआरा आपे तुलु परवाणु ॥ (६०६-१२, सोरठि, मः ४)
आपे अतुलु तुलाइदा पिआरा जन नानक सद कुरबाणु ॥४॥५॥ (६०६-१२, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ४ ॥ (६०६-१३)
आपे सेवा लाइदा पिआरा आपे भगति उमाहा ॥ (६०६-१३, सोरठि, मः ४)
आपे गुण गावाइदा पिआरा आपे सबदि समाहा ॥ (६०६-१४, सोरठि, मः ४)
आपे लेखणि आपि लिखारी आपे लेखु लिखाहा ॥१॥ (६०६-१४, सोरठि, मः ४)
मेरे मन जपि राम नामु ओमाहा ॥ (६०६-१५, सोरठि, मः ४)
अनदिनु अनदु होवै वडभागी लै गुरि पूरै हरि लाहा ॥ रहाउ ॥ (६०६-१५, सोरठि, मः ४)
आपे गोपी कानु है पिआरा बनि आपे गऊ चराहा ॥ (६०६-१६, सोरठि, मः ४)
आपे सावल सुंदरा पिआरा आपे वंसु वजाहा ॥ (६०६-१६, सोरठि, मः ४)

कुवलीआ पीड़ु आपि मराइदा पिआरा करि बालक रूपि पचाहा ॥२॥ (६०६-१७, सोरठि, मः ४)
आपि अखाड़ा पाइदा पिआरा करि वेखै आपि चोजाहा ॥ (६०६-१७, सोरठि, मः ४)
करि बालक रूप उपाइदा पिआरा चंडूरु कंसु केसु माराहा ॥ (६०६-१८, सोरठि, मः ४)
आपे ही बलु आपि है पिआरा बलु भन्नै मूरख मुगधाहा ॥३॥ (६०६-१८, सोरठि, मः ४)
सभु आपे जगतु उपाइदा पिआरा वसि आपे जुगति हथाहा ॥ (६०६-१९, सोरठि, मः ४)

पन्ना ६०७

गलि जेवड़ी आपे पाइदा पिआरा जिउ प्रभु खिंचै तिउ जाहा ॥ (६०७-१, सोरठि, मः ४)
जो गरबै सो पचसी पिआरे जपि नानक भगति समाहा ॥४॥६॥ (६०७-१, सोरठि, मः ४)
सोरठि मः ४ दुतुके ॥ (६०७-२)
अनिक जनम विछुड़े दुखु पाइआ मनमुखि कर्म करै अहंकारी ॥ (६०७-२, सोरठि, मः ४)
साधू परसत ही प्रभु पाइआ गोबिद सरणि तुमारी ॥१॥ (६०७-३, सोरठि, मः ४)
गोबिद प्रीति लगी अति पिआरी ॥ (६०७-४, सोरठि, मः ४)
जब सतसंग भए साधू जन हिरदै मिलिआ साँति मुरारी ॥ रहाउ ॥ (६०७-४, सोरठि, मः ४)
तू हिरदै गुपतु वसहि दिनु राती तेरा भाउ न बुझहि गवारी ॥ (६०७-५, सोरठि, मः ४)
सतिगुरु पुरखु मिलिआ प्रभु प्रगटिआ गुण गावै गुण वीचारी ॥२॥ (६०७-५, सोरठि, मः ४)
गुरमुखि प्रगासु भइआ साति आई दुरमति बुधि निवारी ॥ (६०७-६, सोरठि, मः ४)
आतम ब्रह्मु चीनि सुखु पाइआ सतसंगति पुरख तुमारी ॥३॥ (६०७-६, सोरठि, मः ४)
पुरखै पुरखु मिलिआ गुरु पाइआ जिन कउ किरपा भई तुमारी ॥ (६०७-७, सोरठि, मः ४)
नानक अतुलु सहज सुखु पाइआ अनदिनु जागतु रहै बनवारी ॥४॥७॥ (६०७-८, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ४ ॥ (६०७-९)
हरि सिउ प्रीति अंतरु मनु बेधिआ हरि बिनु रहणु न जाई ॥ (६०७-९, सोरठि, मः ४)
जिउ मछुली बिनु नीरै बिनसै तिउ नामै बिनु मरि जाई ॥१॥ (६०७-९, सोरठि, मः ४)
मेरे प्रभ किरपा जलु देवहु हरि नाई ॥ (६०७-१०, सोरठि, मः ४)
हउ अंतरि नामु मंगा दिनु राती नामे ही साँति पाई ॥ रहाउ ॥ (६०७-१०, सोरठि, मः ४)
जिउ चातृकु जल बिनु बिललावै बिनु जल पिआस न जाई ॥ (६०७-११, सोरठि, मः ४)
गुरमुखि जलु पावै सुख सहजे हरिआ भाइ सुभाई ॥२॥ (६०७-१२, सोरठि, मः ४)
मनमुख भूखे दह दिस डोलहि बिनु नावै दुखु पाई ॥ (६०७-१२, सोरठि, मः ४)
जनमि मरै फिरि जोनी आवै दरगहि मिलै सजाई ॥३॥ (६०७-१३, सोरठि, मः ४)
कृपा करहि ता हरि गुण गावह हरि रसु अंतरि पाई ॥ (६०७-१३, सोरठि, मः ४)
नानक दीन दइआल भए है तृसना सबदि बुझाई ॥४॥८॥ (६०७-१४, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ४ पंचपदा ॥ (६०७-१५)
अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥ (६०७-१५, सोरठि, मः ४)
प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥१॥ (६०७-१५, सोरठि, मः ४)
मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥ (६०७-१६, सोरठि, मः ४)

गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥ रहाउ ॥ (६०७-१६, सोरठि, मः ४)
इहु संसारु सभु आवण जाणा मन मूरख चेति अजाणा ॥ (६०७-१७, सोरठि, मः ४)
हरि जीउ कृपा करहु गुरु मेलहु ता हरि नामि समाणा ॥२॥ (६०७-१८, सोरठि, मः ४)
जिस की वथु सोई प्रभु जाणै जिस नो देइ सु पाए ॥ (६०७-१८, सोरठि, मः ४)
वसतु अनूप अति अगम अगोचर गुरु पूरा अलखु लखाए ॥३॥ (६०७-१९, सोरठि, मः ४)
जिनि इह चाखी सोई जाणै गूंगे की मिठिआई ॥ (६०७-१९, सोरठि, मः ४)

पन्ना ६०८

रतनु लुकाइआ लूकै नाही जे को रखै लुकाई ॥४॥ (६०८-१, सोरठि, मः ४)
सभु किछु तेरा तू अंतरजामी तू सभना का प्रभु सोई ॥ (६०८-१, सोरठि, मः ४)
जिस नो दाति करहि सो पाए जन नानक अवरु न कोई ॥५॥९॥ (६०८-२, सोरठि, मः ४)
सोरठि महला ५ घरु १ तितुके (६०८-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६०८-३)
किस हउ जाची किस आराधी जा सभु को कीता होसी ॥ (६०८-४, सोरठि, मः ५)
जो जो दीसै वडा वडेरा सो सो खाकू रलसी ॥ (६०८-४, सोरठि, मः ५)
निरभउ निरंकारु भव खंडनु सभि सुख नव निधि देसी ॥१॥ (६०८-४, सोरठि, मः ५)
हरि जीउ तेरी दाती राजा ॥ (६०८-५, सोरठि, मः ५)
माणसु बपुड़ा किआ सालाही किआ तिस का मुहताजा ॥ रहाउ ॥ (६०८-५, सोरठि, मः ५)
जिनि हरि धिआइआ सभु किछु तिस का तिस की भूख गवाई ॥ (६०८-६, सोरठि, मः ५)
ऐसा धनु दीआ सुखदातै निखुटि न कब ही जाई ॥ (६०८-७, सोरठि, मः ५)
अनदु भइआ सुख सहजि समाणे सतिगुरि मेलि मिलाई ॥२॥ (६०८-७, सोरठि, मः ५)
मन नामु जपि नामु आराधि अनदिनु नामु वखाणी ॥ (६०८-८, सोरठि, मः ५)
उपदेसु सुणि साध संतन का सभ चूकी काणि जमाणी ॥ (६०८-८, सोरठि, मः ५)
जिन कउ कृपालु होआ प्रभु मेरा से लागे गुर की बाणी ॥३॥ (६०८-९, सोरठि, मः ५)
कीमति कउणु करै प्रभ तेरी तू सर्ब जीआ दइआला ॥ (६०८-१०, सोरठि, मः ५)
सभु किछु कीता तेरा वरतै किआ हम बाल गुपाला ॥ (६०८-१०, सोरठि, मः ५)
राखि लेहु नानकु जनु तुमरा जिउ पिता पूत किरपाला ॥४॥१॥ (६०८-११, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ घरु १ चौतुके ॥ (६०८-११)
गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई मनि तनि हिरदै धार ॥ (६०८-१२, सोरठि, मः ५)
साचा साहिबु मनि वसै भाई एहा करणी सार ॥ (६०८-१२, सोरठि, मः ५)
जितु तनि नामु न ऊपजै भाई से तन होए छार ॥ (६०८-१३, सोरठि, मः ५)
साधसंगति कउ वारिआ भाई जिन एकंकार अधार ॥१॥ (६०८-१३, सोरठि, मः ५)
सोई सचु अराधणा भाई जिस ते सभु किछु होइ ॥ (६०८-१४, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै जाणाइआ भाई तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ रहाउ ॥ (६०८-१४, सोरठि, मः ५)
नाम विहूणे पचि मुए भाई गणत न जाइ गणी ॥ (६०८-१५, सोरठि, मः ५)

विणु सच सोच न पाईऐ भाई साचा अगम धणी ॥ (६०८-१५, सोरठि, मः ५)
आवण जाणु न चुकई भाई झूठी दुनी मणी ॥ (६०८-१६, सोरठि, मः ५)
गुरमुखि कोटि उधारदा भाई दे नावै एक कणी ॥२॥ (६०८-१६, सोरठि, मः ५)
सिम्मृति सासत सोधिआ भाई विणु सतिगुर भरमु न जाइ ॥ (६०८-१७, सोरठि, मः ५)
अनिक कर्म करि थाकिआ भाई फिरि फिरि बंधन पाइ ॥ (६०८-१८, सोरठि, मः ५)
चारे कुंडा सोधीआ भाई विणु सतिगुर नाही जाइ ॥ (६०८-१८, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६०९

वडभागी गुरु पाइआ भाई हरि हरि नामु धिआइ ॥३॥ (६०९-१, सोरठि, मः ५)
सचु सदा है निरमला भाई निर्मल साचे सोइ ॥ (६०९-१, सोरठि, मः ५)
नदरि करे जिसु आपणी भाई तिसु परापति होइ ॥ (६०९-२, सोरठि, मः ५)
कोटि मधे जनु पाईऐ भाई विरला कोई कोइ ॥ (६०९-२, सोरठि, मः ५)
नानक रता सचि नामि भाई सुणि मनु तनु निरमलु होइ ॥४॥२॥ (६०९-३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ दुतुके ॥ (६०९-३)
जउ लउ भाउ अभाउ इहु मानै तउ लउ मिलणु दूराई ॥ (६०९-४, सोरठि, मः ५)
आन आपना करत बीचारा तउ लउ बीचु बिखाई ॥१॥ (६०९-४, सोरठि, मः ५)
माधवे ऐसी देहु बुझाई ॥ (६०९-५, सोरठि, मः ५)
सेवउ साध गहउ ओट चरना नह बिसरै मुहतु चसाई ॥ रहाउ ॥ (६०९-५, सोरठि, मः ५)
रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी रिदै न आई ॥ (६०९-६, सोरठि, मः ५)
प्रानपति तिआगि आन तू रचिआ उरझिओ संगि बैराई ॥२॥ (६०९-६, सोरठि, मः ५)
सोगु न बिआपै आपु न थापै साधसंगति बुधि पाई ॥ (६०९-७, सोरठि, मः ५)
साकत का बकना इउ जानउ जैसे पवनु झुलाई ॥३॥ (६०९-७, सोरठि, मः ५)
कोटि पराध अछादिओ इहु मनु कहणा कछू न जाई ॥ (६०९-८, सोरठि, मः ५)
जन नानक दीन सरनि आइओ प्रभ सभु लेखा रखहु उठाई ॥४॥३॥ (६०९-९, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६०९-९)
पुत्र कलत्र लोक गृह बनिता माइआ सनबंधेही ॥ (६०९-९, सोरठि, मः ५)
अंत की बार को खरा न होसी सभ मिथिआ असनेही ॥१॥ (६०९-१०, सोरठि, मः ५)
रे नर काहे पपोरहु देही ॥ (६०९-१०, सोरठि, मः ५)
ऊडि जाइगो धूमु बादरो इकु भाजहु रामु सनेही ॥ रहाउ ॥ (६०९-११, सोरठि, मः ५)
तीनि संङिआ करि देही कीनी जल कूकर भसमेही ॥ (६०९-११, सोरठि, मः ५)
होइ आमरो गृह महि बैठा करण कारण बिसरोही ॥२॥ (६०९-१२, सोरठि, मः ५)
अनिक भाति करि मणीए साजे काचै तागि परोही ॥ (६०९-१२, सोरठि, मः ५)
तूटि जाइगो सूतु बापुरे फिरि पाछै पछुतोही ॥३॥ (६०९-१३, सोरठि, मः ५)
जिनि तुम सिरजे सिरजि सवारे तिसु धिआवहु दिनु रैनेही ॥ (६०९-१३, सोरठि, मः ५)
जन नानक प्रभ किरपा धारी मै सतिगुर ओट गहेही ॥४॥४॥ (६०९-१४, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ ॥ (६०६-१५)
गुरु पूरा भेटिओ वडभागी मनहि भइआ परगासा ॥ (६०६-१५, सोरठि, मः ५)
कोइ न पहुचनहारा दूजा अपुने साहिब का भरवासा ॥१॥ (६०६-१५, सोरठि, मः ५)
अपुने सतिगुर कै बलिहारै ॥ (६०६-१६, सोरठि, मः ५)
आगै सुखु पाछै सुख सहजा घरि आनंदु हमारै ॥ रहाउ ॥ (६०६-१६, सोरठि, मः ५)
अंतरजामी करणैहारा सोई खसमु हमारा ॥ (६०६-१७, सोरठि, मः ५)
निरभउ भए गुर चरणी लागे इक राम नाम आधारा ॥२॥ (६०६-१७, सोरठि, मः ५)
सफल दरसनु अकाल मूरति प्रभु है भी होवनहारा ॥ (६०६-१८, सोरठि, मः ५)
कंठि लगाइ अपुने जन राखे अपुनी प्रीति पिआरा ॥३॥ (६०६-१६, सोरठि, मः ५)
वडी वडिआई अचरज सोभा कारजु आइआ रासे ॥ (६०६-१६, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१०

नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सगले दूख बिनासे ॥४॥५॥ (६१०-१, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१०-१)
सुखीए कउ पेखै सभ सुखीआ रोगी कै भाणै सभ रोगी ॥ (६१०-१, सोरठि, मः ५)
करण करावनहार सुआमी आपन हाथि संजोगी ॥१॥ (६१०-२, सोरठि, मः ५)
मन मेरे जिनि अपुना भरमु गवाता ॥ (६१०-२, सोरठि, मः ५)
तिस कै भाणै कोइ न भूला जिनि सगलो ब्रह्मु पछाता ॥ रहाउ ॥ (६१०-३, सोरठि, मः ५)
संत संगि जा का मनु सीतलु ओहु जाणै सगली ठाँढी ॥ (६१०-३, सोरठि, मः ५)
हउमै रोगि जा का मनु बिआपित ओहु जनमि मरै बिललाती ॥२॥ (६१०-४, सोरठि, मः ५)
गिआन अंजनु जा की नेत्री पड़िआ ता कउ सर्ब प्रगासा ॥ (६१०-५, सोरठि, मः ५)
अगिआनि अंधेरै सूझसि नाही बहुड़ि बहुड़ि भरमाता ॥३॥ (६१०-५, सोरठि, मः ५)
सुणि बेनंती सुआमी अपुने नानकु इहु सुखु मागै ॥ (६१०-६, सोरठि, मः ५)
जह कीरतनु तेरा साधू गावहि तह मेरा मनु लागै ॥४॥६॥ (६१०-६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१०-७)
तनु संतन का धनु संतन का मनु संतन का कीआ ॥ (६१०-७, सोरठि, मः ५)
संत प्रसादि हरि नामु धिआइआ सर्ब कुसल तब थीआ ॥१॥ (६१०-८, सोरठि, मः ५)
संतन बिनु अवरु न दाता बीआ ॥ (६१०-८, सोरठि, मः ५)
जो जो सरणि परै साधू की सो पारगरामी कीआ ॥ रहाउ ॥ (६१०-६, सोरठि, मः ५)
कोटि पराध मिटहि जन सेवा हरि कीरतनु रसि गाईऐ ॥ (६१०-६, सोरठि, मः ५)
ईहा सुखु आगै मुख ऊजल जन का संगु वडभागी पाईऐ ॥२॥ (६१०-१०, सोरठि, मः ५)
रसना एक अनेक गुण पूरन जन की केतक उपमा कहीऐ ॥ (६१०-११, सोरठि, मः ५)
अगम अगोचर सद अबिनासी सरणि संतन की लहीऐ ॥३॥ (६१०-११, सोरठि, मः ५)
निरगुन नीच अनाथ अपराधी ओट संतन की आही ॥ (६१०-१२, सोरठि, मः ५)
बूडत मोह गृह अंध कूप महि नानक लेहु निबाही ॥४॥७॥ (६१०-१२, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ घरु १ ॥ (६१०-१३)
जा कै हिरदै वसिआ तू करते ता की तैं आस पुजाई ॥ (६१०-१३, सोरठि, मः ५)
दास अपुने कउ तू विसरहि नाही चरण धूरि मनि भाई ॥१॥ (६१०-१४, सोरठि, मः ५)
तेरी अकथ कथा कथनु न जाई ॥ (६१०-१४, सोरठि, मः ५)
गुण निधान सुखदाते सुआमी सभ ते ऊच बडाई ॥ रहाउ ॥ (६१०-१५, सोरठि, मः ५)
सो सो कर्म करत है प्राणी जैसी तुम लिखि पाई ॥ (६१०-१५, सोरठि, मः ५)
सेवक कउ तुम सेवा दीनी दरसनु देखि अघाई ॥२॥ (६१०-१६, सोरठि, मः ५)
सर्ब निरंतरि तुमहि समाने जा कउ तुधु आपि बुझाई ॥ (६१०-१६, सोरठि, मः ५)
गुर परसादि मिटिओ अगिआना प्रगट भए सभ ठाई ॥३॥ (६१०-१७, सोरठि, मः ५)
सोई गिआनी सोई धिआनी सोई पुरखु सुभाई ॥ (६१०-१७, सोरठि, मः ५)
कहु नानक जिसु भए दइआला ता कउ मन ते बिसरि न जाई ॥४॥८॥ (६१०-१८, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१०-१९)
सगल समग्री मोहि विआपी कब ऊचे कब नीचे ॥ (६१०-१९, सोरठि, मः ५)
सुधु न होईऐ काहू जतना ओड़कि को न पहूचे ॥१॥ (६१०-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६११

मेरे मन साध सरणि छुटकारा ॥ (६११-१, सोरठि, मः ५)
बिनु गुर पूरे जनम मरणु न रहई फिरि आवत बारो बारा ॥ रहाउ ॥ (६११-१, सोरठि, मः ५)
ओहु जु भरमु भुलावा कहीअत तिन महि उरझिओ सगल संसारा ॥ (६११-२, सोरठि, मः ५)
पूरन भगतु पुरख सुआमी का सर्ब थोक ते निआरा ॥२॥ (६११-३, सोरठि, मः ५)
निंदउ नाही काहू बातै एहु खसम का कीआ ॥ (६११-३, सोरठि, मः ५)
जा कउ कृपा करी प्रभि मेरै मिलि साधसंगति नाउ लीआ ॥३॥ (६११-४, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्म परमेसुर सतिगुर सभना करत उधारा ॥ (६११-४, सोरठि, मः ५)
कहु नानक गुर बिनु नही तरीऐ इहु पूरन ततु बीचारा ॥४॥९॥ (६११-५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६११-६)
खोजत खोजत खोजि बीचारिओ राम नामु ततु सारा ॥ (६११-६, सोरठि, मः ५)
किलबिख काटे निमख अराधिआ गुरमुखि पारि उतारा ॥१॥ (६११-६, सोरठि, मः ५)
हरि रसु पीवहु पुरख गिआनी ॥ (६११-७, सोरठि, मः ५)
सुणि सुणि महा तृपति मनु पावै साधू अमृत बानी ॥ रहाउ ॥ (६११-७, सोरठि, मः ५)
मुकति भुगति जुगति सचु पाईऐ सर्ब सुखा का दाता ॥ (६११-८, सोरठि, मः ५)
अपुने दास कउ भगति दानु देवै पूरन पुरखु बिधाता ॥२॥ (६११-८, सोरठि, मः ५)
स्रवणी सुणीऐ रसना गाईऐ हिरदै धिआईऐ सोई ॥ (६११-९, सोरठि, मः ५)
करण कारण समरथ सुआमी जा ते बृथा न कोई ॥३॥ (६११-१०, सोरठि, मः ५)
वडै भागि रतन जनमु पाइआ करहु कृपा किरपाला ॥ (६११-१०, सोरठि, मः ५)
साधसंगि नानकु गुण गावै सिमरै सदा गोपाला ॥४॥१०॥ (६११-११, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ ॥ (६११-११)
करि इसनानु सिमरि प्रभु अपना मन तन भए अरोगा ॥ (६११-११, सोरठि, मः ५)
कोटि बिघन लाथे प्रभ सरणा प्रगटे भले संजोगा ॥१॥ (६११-१२, सोरठि, मः ५)
प्रभ बाणी सबदु सुभाखिआ ॥ (६११-१३, सोरठि, मः ५)
गावहु सुणहु पड़हु नित भाई गुर पूरै तू राखिआ ॥ रहाउ ॥ (६११-१३, सोरठि, मः ५)
साचा साहिबु अमिति वडाई भगति वछल दइआला ॥ (६११-१४, सोरठि, मः ५)
संता की पैज रखदा आइआ आदि बिरदु प्रतिपाला ॥२॥ (६११-१४, सोरठि, मः ५)
हरि अमृत नामु भोजनु नित भुंचहु सर्ब वेला मुखि पावहु ॥ (६११-१५, सोरठि, मः ५)
जरा मरा तापु सभु नाठा गुण गोबिंद नित गावहु ॥३॥ (६११-१५, सोरठि, मः ५)
सुणी अरदासि सुआमी मेरै सर्ब कला बणि आई ॥ (६११-१६, सोरठि, मः ५)
प्रगट भई सगले जुग अंतरि गुर नानक की वडिआई ॥४॥११॥ (६११-१६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ घरु २ चउपदे (६११-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६११-१८)
एकु पिता एकस के हम बारिक तू मेरा गुर हाई ॥ (६११-१९, सोरठि, मः ५)
सुणि मीता जीउ हमारा बलि बलि जासी हरि दरसनु देहु दिखाई ॥१॥ (६११-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१२

सुणि मीता धूरी कउ बलि जाई ॥ (६१२-१, सोरठि, मः ५)
इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ (६१२-१, सोरठि, मः ५)
पाव मलोवा मलि मलि धोवा इहु मनु तै कू देसा ॥ (६१२-१, सोरठि, मः ५)
सुणि मीता हउ तेरी सरणाई आइआ प्रभ मिलउ देहु उपदेसा ॥२॥ (६१२-२, सोरठि, मः ५)
मानु न कीजै सरणि परीजै करै सु भला मनाईऐ ॥ (६१२-३, सोरठि, मः ५)
सुणि मीता जीउ पिंडु सभु तनु अरपीजै इउ दरसनु हरि जीउ पाईऐ ॥३॥ (६१२-३, सोरठि, मः ५)
भइओ अनुग्रहु प्रसादि संतन कै हरि नामा है मीठा ॥ (६१२-४, सोरठि, मः ५)
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी सभु अकुल निरंजनु डीठा ॥४॥१॥१२॥ (६१२-५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१२-५)
कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी सर्ब जीआ का दाता रे ॥ (६१२-५, सोरठि, मः ५)
प्रतिपालै नित सारि समालै इकु गुनु नही मूरखि जाता रे ॥१॥ (६१२-६, सोरठि, मः ५)
हरि आराधि न जाना रे ॥ (६१२-७, सोरठि, मः ५)
हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥ (६१२-७, सोरठि, मः ५)
हरि जीउ नामु परिओ रामदासु ॥ रहाउ ॥ (६१२-७, सोरठि, मः ५)
दीन दइआल कृपाल सुख सागर सर्ब घटा भरपूरी रे ॥ (६१२-८, सोरठि, मः ५)
पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख जानिआ दूरी रे ॥२॥ (६१२-८, सोरठि, मः ५)
हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ किआ जाना होइ कैसो रे ॥ (६१२-९, सोरठि, मः ५)
करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख देहु उपदेसो रे ॥३॥ (६१२-९, सोरठि, मः ५)

मै मूरख की केतक बात है कोटि पराधी तरिआ रे ॥ (६१२-१०, सोरठि, मः ५)
गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ से फिरि गरभासि न परिआ रे ॥४॥२॥१३॥ (६१२-१०, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१२-११)
जिना बात को बहुतु अंदेसरो ते मिटे सभि गइआ ॥ (६१२-११, सोरठि, मः ५)
सहज सैन अरु सुखमन नारी ऊध कमल बिगसइआ ॥१॥ (६१२-१२, सोरठि, मः ५)
देखहु अचरजु भइआ ॥ (६१२-१३, सोरठि, मः ५)
जिह ठाकुर कउ सुनत अगाधि बोधि सो रिदै गुरि दइआ ॥ रहाउ ॥ (६१२-१३, सोरठि, मः ५)
जोइ दूत मोहि बहुतु संतावत ते भइआनक भइआ ॥ (६१२-१३, सोरठि, मः ५)
करहि बेनती राखु ठाकुर ते हम तेरी सरनइआ ॥२॥ (६१२-१४, सोरठि, मः ५)
जह भंडारु गोबिंद का खुलिआ जिह प्रापति तिह लइआ ॥ (६१२-१५, सोरठि, मः ५)
एकु रतनु मो कउ गुरि दीना मेरा मनु तनु सीतलु थिआ ॥३॥ (६१२-१५, सोरठि, मः ५)
एक बूंद गुरि अमृतु दीनो ता अटलु अमरु न मुआ ॥ (६१२-१६, सोरठि, मः ५)
भगति भंडार गुरि नानक कउ सउपे फिरि लेखा मूलि न लइआ ॥४॥३॥१४॥ (६१२-१६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१२-१७)
चरन कमल सिउ जा का मनु लीना से जन तृपति अघाई ॥ (६१२-१७, सोरठि, मः ५)
गुण अमोल जिसु रिदै न वसिआ ते नर तृसन तृखाई ॥१॥ (६१२-१८, सोरठि, मः ५)
हरि आराधे अरोग अनदाई ॥ (६१२-१९, सोरठि, मः ५)
जिस नो विसरै मेरा राम सनेही तिसु लाख बेदन जणु आई ॥ रहाउ ॥ (६१२-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१३

जिह जन ओट गही प्रभ तेरी से सुखीए प्रभ सरणे ॥ (६१३-१, सोरठि, मः ५)
जिह नर बिसरिआ पुरखु बिधाता ते दुखीआ महि गनणे ॥२॥ (६१३-१, सोरठि, मः ५)
जिह गुर मानि प्रभू लिव लाई तिह महा अनंद रसु करिआ ॥ (६१३-२, सोरठि, मः ५)
जिह प्रभू बिसारि गुर ते बेमुखाई ते नरक घोर महि परिआ ॥३॥ (६१३-२, सोरठि, मः ५)
जितु को लाइआ तित ही लागा तैसो ही वरतारा ॥ (६१३-३, सोरठि, मः ५)
नानक सह पकरी संतन की रिदै भए मगन चरनारा ॥४॥४॥१५॥ (६१३-४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१३-४)
राजन महि राजा उरझाइओ मानन महि अभिमानी ॥ (६१३-५, सोरठि, मः ५)
लोभन महि लोभी लोभाइओ तिउ हरि रंगि रचे गिआनी ॥१॥ (६१३-५, सोरठि, मः ५)
हरि जन कउ इही सुहावै ॥ (६१३-६, सोरठि, मः ५)
पेखि निकटि करि सेवा सतिगुर हरि कीरतनि ही तृपतावै ॥ रहाउ ॥ (६१३-६, सोरठि, मः ५)
अमलन सिउ अमली लपटाइओ भूमन भूमि पिआरी ॥ (६१३-७, सोरठि, मः ५)
खीर संगि बारिकु है लीना प्रभ संत ऐसे हितकारी ॥२॥ (६१३-७, सोरठि, मः ५)
बिदिआ महि बिदुअंसी रचिआ नैन देखि सुखु पावहि ॥ (६१३-८, सोरठि, मः ५)
जैसे रसना सादि लुभानी तिउ हरि जन हरि गुण गावहि ॥३॥ (६१३-८, सोरठि, मः ५)

जैसी भूख तैसी का पूरकु सगल घटा का सुआमी ॥ (६१३-६, सोरठि, मः ५)
नानक पिआस लगी दरसन की प्रभु मिलिआ अंतरजामी ॥४॥५॥१६॥ (६१३-१०, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१३-१०)
हम मैले तुम ऊजल करते हम निरगुन तू दाता ॥ (६१३-१०, सोरठि, मः ५)
हम मूरख तुम चतुर सिआणे तू सरब कला का गिआता ॥१॥ (६१३-११, सोरठि, मः ५)
माधो हम ऐसे तू ऐसा ॥ (६१३-१२, सोरठि, मः ५)
हम पापी तुम पाप खंडन नीको ठाकुर देसा ॥ रहाउ ॥ (६१३-१२, सोरठि, मः ५)
तुम सभ साजे साजि निवाजे जीउ पिंडु दे प्राना ॥ (६१३-१२, सोरठि, मः ५)
निरगुनीआरे गुनु नही कोई तुम दानु देहु मिहरवाना ॥२॥ (६१३-१३, सोरठि, मः ५)
तुम करहु भला हम भलो न जानह तुम सदा सदा दइआला ॥ (६१३-१३, सोरठि, मः ५)
तुम सुखदाई पुरख बिधाते तुम राखहु अपुने बाला ॥३॥ (६१३-१४, सोरठि, मः ५)
तुम निधान अटल सुलितान जीअ जंत सभि जाचै ॥ (६१३-१५, सोरठि, मः ५)
कहु नानक हम इहै हवाला राखु संतन कै पाछै ॥४॥६॥१७॥ (६१३-१५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ घरु २ ॥ (६१३-१६)
मात गरभ महि आपन सिमरनु दे तह तुम राखनहारे ॥ (६१३-१६, सोरठि, मः ५)
पावक सागर अथाह लहरि महि तारहु तारनहारे ॥१॥ (६१३-१७, सोरठि, मः ५)
माधौ तू ठाकुरु सिरि मोरा ॥ (६१३-१७, सोरठि, मः ५)
ईहा ऊहा तुहारो धोरा ॥ रहाउ ॥ (६१३-१८, सोरठि, मः ५)
कीते कउ मेरै सम्मानै करणहारु तृणु जानै ॥ (६१३-१८, सोरठि, मः ५)
तू दाता मागन कउ सगली दानु देहि प्रभ भानै ॥२॥ (६१३-१८, सोरठि, मः ५)
खिन महि अवरु खिनै महि अवरा अचरज चलत तुमारे ॥ (६१३-१९, सोरठि, मः ५)
रूड़ो गूड़ो गहिर गम्भीरो ऊचौ अगम अपारे ॥३॥ (६१३-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१४

साधसंगि जउ तुमहि मिलाइओ तउ सुनी तुमारी बाणी ॥ (६१४-१, सोरठि, मः ५)
अनदु भइआ पेखत ही नानक प्रताप पुरख निरबाणी ॥४॥७॥१८॥ (६१४-२, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१४-२)
हम संतन की रेनु पिआरे हम संतन की सरणा ॥ (६१४-२, सोरठि, मः ५)
संत हमारी ओट सताणी संत हमारा गहणा ॥१॥ (६१४-३, सोरठि, मः ५)
हम संतन सिउ बणि आई ॥ (६१४-३, सोरठि, मः ५)
पूरबि लिखिआ पाई ॥ (६१४-४, सोरठि, मः ५)
इहु मनु तेरा भाई ॥ रहाउ ॥ (६१४-४, सोरठि, मः ५)
संतन सिउ मेरी लेवा देवी संतन सिउ बिउहारा ॥ (६१४-४, सोरठि, मः ५)
संतन सिउ हम लाहा खाटिआ हरि भगति भरे भंडारा ॥२॥ (६१४-५, सोरठि, मः ५)
संतन मो कउ पूंजी सउपी तउ उतरिआ मन का धोखा ॥ (६१४-५, सोरठि, मः ५)

धर्म राइ अब कहा करैगो जउ फाटिओ सगलो लेखा ॥३॥ (६१४-६, सोरठि, मः ५)
महा अनंद भए सुखु पाइआ संतन कै परसादे ॥ (६१४-६, सोरठि, मः ५)
कहु नानक हरि सिउ मनु मानिआ रंगि रते बिसमादे ॥४॥८॥१९॥ (६१४-७, सोरठि, मः ५)
सोरठि मः ५ ॥ (६१४-८)
जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छडि जानी ॥ (६१४-८, सोरठि, मः ५)
राम नाम संगि करि बिउहारा पावहि पदु निरबानी ॥१॥ (६१४-८, सोरठि, मः ५)
पिआरे तू मेरो सुखदाता ॥ (६१४-९, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै दीआ उपदेसा तुम ही संगि पराता ॥ रहाउ ॥ (६१४-९, सोरठि, मः ५)
काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना ता महि सुखु नही पाईऐ ॥ (६१४-१०, सोरठि, मः ५)
होहु रेन तू सगल की मेरे मन तउ अनद मंगल सुखु पाईऐ ॥२॥ (६१४-१०, सोरठि, मः ५)
घाल न भानै अंतर बिधि जानै ता की करि मन सेवा ॥ (६१४-११, सोरठि, मः ५)
करि पूजा होमि इहु मनूआ अकाल मूरति गुरदेवा ॥३॥ (६१४-११, सोरठि, मः ५)
गोबिद दामोदर दइआल माधवे पारब्रह्म निरंकारा ॥ (६१४-१२, सोरठि, मः ५)
नामु वरतणि नामो वालेवा नामु नानक प्रान अधारा ॥४॥९॥२०॥ (६१४-१३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१४-१३)
मिरतक कउ पाइओ तनि सासा बिछुरत आनि मिलाइआ ॥ (६१४-१४, सोरठि, मः ५)
पसू परेत मुगध भए स्रोते हरि नामा मुखि गाइआ ॥१॥ (६१४-१४, सोरठि, मः ५)
पूरे गुर की देखु वडाई ॥ (६१४-१५, सोरठि, मः ५)
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ रहाउ ॥ (६१४-१५, सोरठि, मः ५)
दूख सोग का ढाहिओ डेरा अनद मंगल बिसरामा ॥ (६१४-१५, सोरठि, मः ५)
मन बाँछत फल मिले अचिंता पूरन होए कामा ॥२॥ (६१४-१६, सोरठि, मः ५)
ईहा सुखु आगै मुख ऊजल मिटि गए आवण जाणे ॥ (६१४-१६, सोरठि, मः ५)
निरभउ भए हिरदै नामु वसिआ अपुने सतिगुर कै मनि भाणे ॥३॥ (६१४-१७, सोरठि, मः ५)
ऊठत बैठत हरि गुण गावै दूखु दरदु भ्रमु भागा ॥ (६१४-१८, सोरठि, मः ५)
कहु नानक ता के पूर करम्मा जा का गुर चरनी मनु लागा ॥४॥१०॥२१॥ (६१४-१८, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१४-१९)
रतनु छाडि कउडी संगि लागे जा ते कछू न पाईऐ ॥ (६१४-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१५

पूरन पारब्रह्म परमेसुर मेरे मन सदा धिआईऐ ॥१॥ (६१५-१, सोरठि, मः ५)
सिमरहु हरि हरि नामु परानी ॥ (६१५-१, सोरठि, मः ५)
बिनसै काची देह अगिआनी ॥ रहाउ ॥ (६१५-२, सोरठि, मः ५)
मृग तृसना अरु सुपन मनोरथ ता की कछु न वडाई ॥ (६१५-२, सोरठि, मः ५)
राम भजन बिनु कामि न आवसि संगि न काहू जाई ॥२॥ (६१५-३, सोरठि, मः ५)
हउ हउ करत बिहाइ अवरदा जीअ को कामु न कीना ॥ (६१५-३, सोरठि, मः ५)

धावत धावत नह तृपतासिआ राम नामु नही चीना ॥३॥ (६१५-४, सोरठि, मः ५)
साद बिकार बिखै रस मातो असंख खते करि फेरे ॥ (६१५-४, सोरठि, मः ५)
नानक की प्रभ पाहि बिनंती काटहु अवगुण मेरे ॥४॥११॥२२॥ (६१५-५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१५-६)
गुण गावहु पूरन अबिनासी काम क्रोध बिखु जारे ॥ (६१५-६, सोरठि, मः ५)
महा बिखमु अगनि को सागरु साधू संगि उधारे ॥१॥ (६१५-६, सोरठि, मः ५)
पूरै गुरि मेटिओ भरमु अंधेरा ॥ (६१५-७, सोरठि, मः ५)
भजु प्रेम भगति प्रभु नेरा ॥ रहाउ ॥ (६१५-७, सोरठि, मः ५)
हरि हरि नामु निधान रसु पीआ मन तन रहे अघाई ॥ (६१५-७, सोरठि, मः ५)
जत कत पूरि रहिओ परमेसरु कत आवै कत जाई ॥२॥ (६१५-८, सोरठि, मः ५)
जप तप संजम गिआन तत बेता जिसु मनि वसै गोपाला ॥ (६१५-९, सोरठि, मः ५)
नामु रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ता की पूरन घाला ॥३॥ (६१५-९, सोरठि, मः ५)
कलि कलेस मिटे दुख सगले काटी जम की फासा ॥ (६१५-१०, सोरठि, मः ५)
कहु नानक प्रभि किरपा धारी मन तन भए बिगासा ॥४॥१२॥२३॥ (६१५-१०, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१५-११)
करण करावणहार प्रभु दाता पारब्रह्म प्रभु सुआमी ॥ (६१५-११, सोरठि, मः ५)
सगले जीअ कीए दइआला सो प्रभु अंतरजामी ॥१॥ (६१५-१२, सोरठि, मः ५)
मेरा गुरु होआ आपि सहाई ॥ (६१५-१२, सोरठि, मः ५)
सूख सहज आनंद मंगल रस अचरज भई बडाई ॥ रहाउ ॥ (६१५-१३, सोरठि, मः ५)
गुर की सरणि पए भै नासे साची दरगह माने ॥ (६१५-१३, सोरठि, मः ५)
गुण गावत आराधि नामु हरि आए अपुनै थाने ॥२॥ (६१५-१४, सोरठि, मः ५)
जै जै कारु करै सभ उसतति संगति साध पिआरी ॥ (६१५-१४, सोरठि, मः ५)
सद बलिहारि जाउ प्रभ अपुने जिनि पूरन पैज सवारी ॥३॥ (६१५-१५, सोरठि, मः ५)
गोसटि गिआनु नामु सुणि उधरे जिनि जिनि दरसनु पाइआ ॥ (६१५-१५, सोरठि, मः ५)
भइओ कृपालु नानक प्रभु अपुना अनद सेती घरि आइआ ॥४॥१३॥२४॥ (६१५-१६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१५-१७)
प्रभ की सरणि सगल भै लाथे दुख बिनसे सुखु पाइआ ॥ (६१५-१७, सोरठि, मः ५)
दइआलु होआ पारब्रह्मु सुआमी पूरा सतिगुरु धिआइआ ॥१॥ (६१५-१८, सोरठि, मः ५)
प्रभ जीउ तू मेरो साहिबु दाता ॥ (६१५-१८, सोरठि, मः ५)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला गुण गावउ रंगि राता ॥ रहाउ ॥ (६१५-१९, सोरठि, मः ५)
सतिगुरि नामु निधानु दृड़ाइआ चिंता सगल बिनासी ॥ (६१५-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१६

करि किरपा अपुनो करि लीना मनि वसिआ अबिनासी ॥२॥ (६१६-१, सोरठि, मः ५)
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जो सतिगुरि अपुनै राखे ॥ (६१६-१, सोरठि, मः ५)

चरन कमल बसे रिद अंतरि अमृत हरि रसु चाखे ॥३॥ (६१६-२, सोरठि, मः ५)
करि सेवा सेवक प्रभ अपुने जिनि मन की इछ पुजाई ॥ (६१६-२, सोरठि, मः ५)
नानक दास ता कै बलिहारै जिनि पूरन पैज रखाई ॥४॥१४॥२५॥ (६१६-३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१६-४)
माइआ मोह मगनु अंधिआरै देवनहारु न जानै ॥ (६१६-४, सोरठि, मः ५)
जीउ पिंडु साजि जिनि रचिआ बलु अपुनो करि मानै ॥१॥ (६१६-४, सोरठि, मः ५)
मन मूड़े देखि रहिओ प्रभ सुआमी ॥ (६१६-५, सोरठि, मः ५)
जो किछु करहि सोई सोई जाणै रहै न कछूऐ छानी ॥ रहाउ ॥ (६१६-५, सोरठि, मः ५)
जिहवा सुआद लोभ मदि मातो उपजे अनिक बिकारा ॥ (६१६-६, सोरठि, मः ५)
बहुतु जोनि भरमत दुखु पाइआ हउमै बंधन के भारा ॥२॥ (६१६-७, सोरठि, मः ५)
देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि पर दारा संगि फाकै ॥ (६१६-७, सोरठि, मः ५)
चित्र गुपतु जब लेखा मागहि तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥३॥ (६१६-८, सोरठि, मः ५)
दीन दइआल पूरन दुख भंजन तुम बिनु ओट न काई ॥ (६१६-८, सोरठि, मः ५)
काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभ सरणाई ॥४॥१५॥२६॥ (६१६-९, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१६-१०)
पारब्रह्मु होआ सहाई कथा कीरतनु सुखदाई ॥ (६१६-१०, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे की बाणी जपि अनदु करहु नित प्राणी ॥१॥ (६१६-१०, सोरठि, मः ५)
हरि साचा सिमरहु भाई ॥ (६१६-११, सोरठि, मः ५)
साधसंगि सदा सुखु पाईऐ हरि बिसरि न कबहू जाई ॥ रहाउ ॥ (६१६-११, सोरठि, मः ५)
अमृत नामु परमेसरु तेरा जो सिमरै सो जीवै ॥ (६१६-१२, सोरठि, मः ५)
जिस नो करमि परापति होवै सो जनु निरमलु थीवै ॥२॥ (६१६-१२, सोरठि, मः ५)
बिघन बिनासन सभि दुख नासन गुर चरणी मनु लागा ॥ (६१६-१३, सोरठि, मः ५)
गुण गावत अचुत अबिनासी अनदिनु हरि रंगि जागा ॥३॥ (६१६-१४, सोरठि, मः ५)
मन इछे सेई फल पाए हरि की कथा सुहेली ॥ (६१६-१४, सोरठि, मः ५)
आदि अंति मधि नानक कउ सो प्रभु होआ बेली ॥४॥१६॥२७॥ (६१६-१५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ पंचपदा ॥ (६१६-१५)
बिनसै मोहु मेरा अरु तेरा बिनसै अपनी धारी ॥१॥ (६१६-१६, सोरठि, मः ५)
संतहु इहा बतावहु कारी ॥ (६१६-१६, सोरठि, मः ५)
जितु हउमै गरबु निवारी ॥१॥ रहाउ ॥ (६१६-१६, सोरठि, मः ५)
सर्ब भूत पारब्रह्मु करि मानिआ होवाँ सगल रेनारी ॥२॥ (६१६-१७, सोरठि, मः ५)
पेखिओ प्रभ जीउ अपुनै संगे चूकै भीति भ्रमारी ॥३॥ (६१६-१७, सोरठि, मः ५)
अउखधु नामु निर्मल जलु अमृतु पाईऐ गुरू दुआरी ॥४॥ (६१६-१८, सोरठि, मः ५)
कहु नानक जिसु मसतकि लिखिआ तिसु गुर मिलि रोग बिदारी ॥५॥१७॥२८॥ (६१६-१९, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ घरु २ दुपदे (६१७-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६१७-१)
सगल बनसपति महि बैसंतरु सगल दूध महि घीआ ॥ (६१७-२, सोरठि, मः ५)
ऊच नीच महि जोति समाणी घटि घटि माधउ जीआ ॥१॥ (६१७-२, सोरठि, मः ५)
संतहु घटि घटि रहिआ समाहिओ ॥ (६१७-३, सोरठि, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ सर्ब महि जलि थलि रमईआ आहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (६१७-३, सोरठि, मः ५)
गुण निधान नानकु जसु गावै सतिगुरि भरमु चुकाइओ ॥ (६१७-४, सोरठि, मः ५)
सर्ब निवासी सदा अलेपा सभ महि रहिआ समाइओ ॥२॥१॥२९॥ (६१७-४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१७-५)
जा कै सिमरणि होइ अनंदा बिनसै जनम मरण भै दुखी ॥ (६१७-५, सोरठि, मः ५)
चारि पदार्थ नव निधि पावहि बहुरि न तृसना भुखी ॥१॥ (६१७-६, सोरठि, मः ५)
जा को नामु लैत तू सुखी ॥ (६१७-६, सोरठि, मः ५)
सासि सासि धिआवहु ठाकुर कउ मन तन जीअरे मुखी ॥१॥ रहाउ ॥ (६१७-७, सोरठि, मः ५)
साँति पावहि होवहि मन सीतल अगनि न अंतरि धुखी ॥ (६१७-७, सोरठि, मः ५)
गुर नानक कउ प्रभू दिखाइआ जलि थलि तृभवणि रुखी ॥२॥२॥३०॥ (६१७-८, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१७-९)
काम क्रोध लोभ झूठ निंदा इन ते आपि छडावहु ॥ (६१७-९, सोरठि, मः ५)
इह भीतर ते इन कउ डारहु आपन निकटि बुलावहु ॥१॥ (६१७-९, सोरठि, मः ५)
अपुनी बिधि आपि जनावहु ॥ (६१७-१०, सोरठि, मः ५)
हरि जन मंगल गावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (६१७-१०, सोरठि, मः ५)
बिसरु नाही कबहू हीए ते इह बिधि मन महि पावहु ॥ (६१७-११, सोरठि, मः ५)
गुरु पूरा भेटिओ वडभागी जन नानक कतहि न धावहु ॥२॥३॥३१॥ (६१७-११, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१७-१२)
जा कै सिमरणि सभु कछु पाईऐ बिरथी घाल न जाई ॥ (६१७-१२, सोरठि, मः ५)
तिसु प्रभ तिआगि अवर कत राचहु जो सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ (६१७-१३, सोरठि, मः ५)
हरि हरि सिमरहु संत गोपाला ॥ (६१७-१३, सोरठि, मः ५)
साधसंगि मिलि नामु धिआवहु पूरन होवै घाला ॥१॥ रहाउ ॥ (६१७-१४, सोरठि, मः ५)
सारि समालै निति प्रतिपालै प्रेम सहित गलि लावै ॥ (६१७-१४, सोरठि, मः ५)
कहु नानक प्रभ तुमरे बिसरत जगत जीवनु कैसे पावै ॥२॥४॥३२॥ (६१७-१५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१७-१६)
अबिनासी जीअन को दाता सिमरत सभ मलु खोई ॥ (६१७-१६, सोरठि, मः ५)
गुण निधान भगतन कउ बरतनि बिरला पावै कोई ॥१॥ (६१७-१६, सोरठि, मः ५)
मेरे मन जपि गुर गोपाल प्रभु सोई ॥ (६१७-१७, सोरठि, मः ५)

जा की सरणि पइआँ सुखु पाईऐ बाहुड़ि दूखु न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (६१७-१७, सोरठि, मः ५)
वडभागी साधसंगु परापति तिन भेटत दुरमति खोई ॥ (६१७-१८, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१८

तिन की धूरि नानकु दासु बाछै जिन हरि नामु रिदै परोई ॥२॥५॥३३॥ (६१८-१, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१८-२)
जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥ (६१८-२, सोरठि, मः ५)
दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥१॥ (६१८-२, सोरठि, मः ५)
मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥ (६१८-३, सोरठि, मः ५)
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥१॥ रहाउ ॥ (६१८-३, सोरठि, मः ५)
समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥ (६१८-४, सोरठि, मः ५)
अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥२॥६॥३४॥ (६१८-४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१८-५)
अंतर की गति तुम ही जानी तुझ ही पाहि निबेरो ॥ (६१८-५, सोरठि, मः ५)
बखसि लैहु साहिब प्रभ अपने लाख खते करि फेरो ॥१॥ (६१८-५, सोरठि, मः ५)
प्रभ जी तू मेरो ठाकुरु नेरो ॥ (६१८-६, सोरठि, मः ५)
हरि चरण सरण मोहि चेरो ॥१॥ रहाउ ॥ (६१८-६, सोरठि, मः ५)
बेसुमार बेअंत सुआमी ऊचो गुनी गहेरो ॥ (६१८-७, सोरठि, मः ५)
काटि सिलक कीनो अपुनो दासरो तउ नानक कहा निहोरो ॥२॥७॥३५॥ (६१८-७, सोरठि, मः ५)
सोरठि मः ५ ॥ (६१८-८)
भए कृपाल गुरू गोविंदा सगल मनोरथ पाए ॥ (६१८-८, सोरठि, मः ५)
असथिर भए लागि हरि चरणी गोविंद के गुण गाए ॥१॥ (६१८-९, सोरठि, मः ५)
भलो समूरतु पूरा ॥ (६१८-९, सोरठि, मः ५)
साँति सहज आनंद नामु जपि वाजे अनहद तूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६१८-९, सोरठि, मः ५)
मिले सुआमी प्रीतम अपुने घर मंदर सुखदाई ॥ (६१८-१०, सोरठि, मः ५)
हरि नामु निधानु नानक जन पाइआ सगली इछ पुजाई ॥२॥८॥३६॥ (६१८-१०, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१८-११)
गुर के चरन बसे रिद भीतरि सुभ लखण प्रभि कीने ॥ (६१८-११, सोरठि, मः ५)
भए कृपाल पूरन परमेसर नाम निधान मनि चीने ॥१॥ (६१८-१२, सोरठि, मः ५)
मेरो गुरु रखवारो मीत ॥ (६१८-१२, सोरठि, मः ५)
दूण चऊणी दे वडिआई सोभा नीता नीत ॥१॥ रहाउ ॥ (६१८-१३, सोरठि, मः ५)
जीअ जंत प्रभि सगल उधारे दरसनु देखणहारे ॥ (६१८-१३, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे की अचरज वडिआई नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥३७॥ (६१८-१४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१८-१५)
संचनि करउ नाम धनु निर्मल थाती अगम अपार ॥ (६१८-१५, सोरठि, मः ५)

बिलछि बिनोद आनंद सुख माणहु खाइ जीवहु सिख परवार ॥१॥ (੬੧੮-੧੫, सोरठि, मः ५)
हरि के चरन कमल आधार ॥ (੬੧੮-੧੬, सोरठि, मः ५)
संत प्रसादि पाइओ सच बोहिथु चड़ि लंघउ बिखु संसार ॥१॥ रहाउ ॥ (੬੧੮-੧੬, सोरठि, मः ५)
भए कृपाल पूरन अबिनासी आपहि कीनी सार ॥ (੬੧੮-੧੭, सोरठि, मः ५)
पेखि पेखि नानक बिगसानो नानक नाही सुमार ॥२॥१०॥३८॥ (੬੧੮-੧੭, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (੬੧੮-੧੮)
गुरि पूरै अपनी कल धारी सभ घट उपजी दइआ ॥ (੬੧੮-੧੮, सोरठि, मः ५)
आपे मेलि वडाई कीनी कुसल खेम सभ भइआ ॥१॥ (੬੧੮-੧੯, सोरठि, मः ५)
सतिगुरु पूरा मेरै नालि ॥ (੬੧੮-੧੯, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६१९

पारब्रह्मु जपि सदा निहाल ॥ रहाउ ॥ (६१९-१, सोरठि, मः ५)
अंतरि बाहरि थान थनंतरि जत कत पेखउ सोई ॥ (६१९-१, सोरठि, मः ५)
नानक गुरु पाइओ वडभागी तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥२॥११॥३९॥ (६१९-२, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१९-२)
सूख मंगल कलिआण सहज धुनि प्रभ के चरण निहारिआ ॥ (६१९-२, सोरठि, मः ५)
राखनहारै राखिओ बारिकु सतिगुरि तापु उतारिआ ॥१॥ (६१९-३, सोरठि, मः ५)
उबरे सतिगुर की सरणाई ॥ (६१९-४, सोरठि, मः ५)
जा की सेव न बिरथी जाई ॥ रहाउ ॥ (६१९-४, सोरठि, मः ५)
घर महि सूख बाहरि फुनि सूखा प्रभ अपुने भए दइआला ॥ (६१९-४, सोरठि, मः ५)
नानक बिघनु न लागै कोऊ मेरा प्रभु होआ किरपाला ॥२॥१२॥४०॥ (६१९-५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१९-६)
साधू संगि भइआ मनि उदमु नामु रतनु जसु गाई ॥ (६१९-६, सोरठि, मः ५)
मिटि गई चिंता सिमरि अनंता सागरु तरिआ भाई ॥१॥ (६१९-६, सोरठि, मः ५)
हिरदै हरि के चरण वसाई ॥ (६१९-७, सोरठि, मः ५)
सुखु पाइआ सहज धुनि उपजी रोगा घाणि मिटाई ॥ रहाउ ॥ (६१९-७, सोरठि, मः ५)
किआ गुण तेरे आखि वखाणा कीमति कहणु न जाई ॥ (६१९-८, सोरठि, मः ५)
नानक भगत भए अबिनासी अपुना प्रभु भइआ सहाई ॥२॥१३॥४१॥ (६१९-९, सोरठि, मः ५)
सोरठि मः ५ ॥ (६१९-९)
गए कलेस रोग सभि नासे प्रभि अपुनै किरपा धारी ॥ (६१९-९, सोरठि, मः ५)
आठ पहर आराधहु सुआमी पूरन घाल हमारी ॥१॥ (६१९-१०, सोरठि, मः ५)
हरि जीउ तू सुख सम्पति रासि ॥ (६१९-११, सोरठि, मः ५)
राखि लैहु भाई मेरे कउ प्रभ आगै अरदासि ॥ रहाउ ॥ (६१९-११, सोरठि, मः ५)
जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥ (६१९-११, सोरठि, मः ५)
कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ मिटिओ सगल अंदेसा ॥२॥१४॥४२॥ (६१९-१२, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ ॥ (६१९-१३)
सिमरि सिमरि गुरु सतिगुरु अपना सगला दूखु मिटाइआ ॥ (६१९-१३, सोरठि, मः ५)
ताप रोग गए गुर बचनी मन इछे फल पाइआ ॥१॥ (६१९-१३, सोरठि, मः ५)
मेरा गुरु पूरा सुखदाता ॥ (६१९-१४, सोरठि, मः ५)
करण कारण समरथ सुआमी पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ (६१९-१४, सोरठि, मः ५)
अनंद बिनोद मंगल गुण गावहु गुर नानक भए दइआला ॥ (६१९-१५, सोरठि, मः ५)
जै जै कार भए जग भीतरि होआ पारब्रह्मु रखवाला ॥२॥१५॥४३॥ (६१९-१६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६१९-१६)
हमरी गणत न गणीआ काई अपणा बिरदु पछाणि ॥ (६१९-१६, सोरठि, मः ५)
हाथ देइ राखे करि अपुने सदा सदा रंगु माणि ॥१॥ (६१९-१७, सोरठि, मः ५)
साचा साहिबु सद मिहरवाण ॥ (६१९-१८, सोरठि, मः ५)
बंधु पाइआ मेरै सतिगुरि पूरै होई सर्ब कलिआण ॥ रहाउ ॥ (६१९-१८, सोरठि, मः ५)
जीउ पाइ पिंडु जिनि साजिआ दिता पैनणु खाणु ॥ (६१९-१९, सोरठि, मः ५)
अपणे दास की आपि पैज राखी नानक सद कुरबाणु ॥२॥१६॥४४॥ (६१९-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२०

सोरठि महला ५ ॥ (६२०-१)
दुरतु गवाइआ हरि प्रभि आपे सभु संसारु उबारिआ ॥ (६२०-१, सोरठि, मः ५)
पारब्रहमि प्रभि किरपा धारी अपणा बिरदु समारिआ ॥१॥ (६२०-२, सोरठि, मः ५)
होई राजे राम की रखवाली ॥ (६२०-२, सोरठि, मः ५)
सूख सहज आनद गुण गावहु मनु तनु देह सुखाली ॥ रहाउ ॥ (६२०-३, सोरठि, मः ५)
पतित उधारणु सतिगुरु मेरा मोहि तिस का भरवासा ॥ (६२०-३, सोरठि, मः ५)
बखसि लए सभि सचै साहिबि सुणि नानक की अरदासा ॥२॥१७॥४५॥ (६२०-४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२०-५)
बखसिआ पारब्रह्म परमेसरि सगले रोग बिदारे ॥ (६२०-५, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे की सरणी उबरे कारज सगल सवारे ॥१॥ (६२०-५, सोरठि, मः ५)
हरि जनि सिमरिआ नाम अधारि ॥ (६२०-६, सोरठि, मः ५)
तापु उतारिआ सतिगुरि पूरै अपणी किरपा धारि ॥ रहाउ ॥ (६२०-६, सोरठि, मः ५)
सदा अनंद करह मेरे पिआरे हरि गोविदु गुरि राखिआ ॥ (६२०-७, सोरठि, मः ५)
वडी वडिआई नानक करते की साचु सबदु सति भाखिआ ॥२॥१८॥४६॥ (६२०-७, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२०-८)
भए कृपाल सुआमी मेरे तितु साचै दरबारि ॥ (६२०-८, सोरठि, मः ५)
सतिगुरि तापु गवाइआ भाई ठाँढि पई संसारि ॥ (६२०-९, सोरठि, मः ५)
अपणे जीअ जंत आपे राखे जमहि कीओ हटतारि ॥१॥ (६२०-९, सोरठि, मः ५)
हरि के चरण रिदै उरि धारि ॥ (६२०-१०, सोरठि, मः ५)

सदा सदा प्रभु सिमरीऐ भाई दुख किलबिख काटणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (६२०-१०, सोरठि, मः ५)
तिस की सरणी ऊबरै भाई जिनि रचिआ सभु कोइ ॥ (६२०-११, सोरठि, मः ५)
करण कारण समरथु सो भाई सचै सची सोइ ॥ (६२०-१२, सोरठि, मः ५)
नानक प्रभू धिआईऐ भाई मनु तनु सीतलु होइ ॥२॥१९॥४७॥ (६२०-१२, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२०-१३)
संतहु हरि हरि नामु धिआई ॥ (६२०-१३, सोरठि, मः ५)
सुख सागर प्रभु विसरउ नाही मन चिंदिअड़ा फलु पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६२०-१३, सोरठि, मः ५)
सतिगुरि पूरै तापु गवाइआ अपणी किरपा धारी ॥ (६२०-१४, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ भए दइआला दुखु मिटिआ सभ परवारी ॥१॥ (६२०-१५, सोरठि, मः ५)
सर्ब निधान मंगल रस रूपा हरि का नामु अधारो ॥ (६२०-१५, सोरठि, मः ५)
नानक पति राखी परमेसरि उधरिआ सभु संसारो ॥२॥२०॥४८॥ (६२०-१६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२०-१७)
मेरा सतिगुरु रखवाला होआ ॥ (६२०-१७, सोरठि, मः ५)
धारि कृपा प्रभ हाथ दे राखिआ हरि गोविदु नवा निरोआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२०-१७, सोरठि, मः ५)
तापु गइआ प्रभि आपि मिटाइआ जन की लाज रखाई ॥ (६२०-१८, सोरठि, मः ५)
साधसंगति ते सभ फल पाए सतिगुर कै बलि जाँई ॥१॥ (६२०-१८, सोरठि, मः ५)
हलतु पलतु प्रभ दोवै सवारे हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ (६२०-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२१

अटल बचनु नानक गुर तेरा सफल करु मसतकि धारिआ ॥२॥२१॥४९॥ (६२१-१, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२१-२)
जीअ जंत्र सभि तिस के कीए सोई संत सहाई ॥ (६२१-२, सोरठि, मः ५)
अपुने सेवक की आपे राखै पूरन भई बडाई ॥१॥ (६२१-२, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्मु पूरा मेरै नालि ॥ (६२१-३, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै पूरी सभ राखी होए सर्ब दइआल ॥१॥ रहाउ ॥ (६२१-३, सोरठि, मः ५)
अनदिनु नानकु नामु धिआए जीअ प्रान का दाता ॥ (६२१-४, सोरठि, मः ५)
अपुने दास कउ कंठि लाइ राखै जिउ बारिक पित माता ॥२॥२२॥५०॥ (६२१-४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ घरु ३ चउपदे (६२१-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६२१-६)
मिलि पंचहु नही सहसा चुकाइआ ॥ (६२१-७, सोरठि, मः ५)
सिकदारहु नह पतीआइआ ॥ (६२१-७, सोरठि, मः ५)
उमरावहु आगै झेरा ॥ (६२१-७, सोरठि, मः ५)
मिलि राजन राम निबेरा ॥१॥ (६२१-७, सोरठि, मः ५)
अब ढूढन कतहु न जाई ॥ (६२१-८, सोरठि, मः ५)
गोबिद भेटे गुर गोसाई ॥ रहाउ ॥ (६२१-८, सोरठि, मः ५)

आइआ प्रभ दरबारा ॥ (६२१-८, सोरठि, मः ५)
ता सगली मिटी पूकारा ॥ (६२१-६, सोरठि, मः ५)
लबधि आपणी पाई ॥ (६२१-६, सोरठि, मः ५)
ता कत आवै कत जाई ॥२॥ (६२१-६, सोरठि, मः ५)
तह साच निआइ निबेरा ॥ (६२१-६, सोरठि, मः ५)
ऊहा सम ठाकुरु सम चेरा ॥ (६२१-१०, सोरठि, मः ५)
अंतरजामी जानै ॥ (६२१-१०, सोरठि, मः ५)
बिनु बोलत आपि पछानै ॥३॥ (६२१-१०, सोरठि, मः ५)
सर्ब थान को राजा ॥ (६२१-११, सोरठि, मः ५)
तह अनहद सबद अगाजा ॥ (६२१-११, सोरठि, मः ५)
तिसु पहि किआ चतुराई ॥ (६२१-११, सोरठि, मः ५)
मिलु नानक आपु गवाई ॥४॥१॥५१॥ (६२१-११, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२१-१२)
हिरदै नामु वसाइहु ॥ (६२१-१२, सोरठि, मः ५)
घरि बैठे गुरू धिआइहु ॥ (६२१-१२, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै सचु कहिआ ॥ (६२१-१३, सोरठि, मः ५)
सो सुखु साचा लहिआ ॥१॥ (६२१-१३, सोरठि, मः ५)
अपुना होइओ गुरु मिहरवाना ॥ (६२१-१३, सोरठि, मः ५)
अनद सूख कलिआण मंगल सिउ घरि आए करि इसनाना ॥ रहाउ ॥ (६२१-१३, सोरठि, मः ५)
साची गुर वडिआई ॥ (६२१-१४, सोरठि, मः ५)
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ (६२१-१४, सोरठि, मः ५)
सिरि साहा पातिसाहा ॥ (६२१-१५, सोरठि, मः ५)
गुर भेटत मनि ओमाहा ॥२॥ (६२१-१५, सोरठि, मः ५)
सगल पराछत लाथे ॥ (६२१-१५, सोरठि, मः ५)
मिलि साधसंगति कै साथे ॥ (६२१-१५, सोरठि, मः ५)
गुण निधान हरि नामा ॥ (६२१-१६, सोरठि, मः ५)
जपि पूरन होए कामा ॥३॥ (६२१-१६, सोरठि, मः ५)
गुरि कीनो मुकति दुआरा ॥ (६२१-१६, सोरठि, मः ५)
सभ सृसटि करै जैकारा ॥ (६२१-१७, सोरठि, मः ५)
नानक प्रभु मेरै साथे ॥ (६२१-१७, सोरठि, मः ५)
जनम मरण भै लाथे ॥४॥२॥५२॥ (६२१-१७, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२१-१८)
गुरि पूरै किरपा धारी ॥ (६२१-१८, सोरठि, मः ५)
प्रभि पूरी लोच हमारी ॥ (६२१-१८, सोरठि, मः ५)
करि इसनानु गृहि आए ॥ (६२१-१८, सोरठि, मः ५)

अनद मंगल सुख पाए ॥१॥ (६२१-१६, सोरठि, मः ५)
संतहु राम नामि निसतरीऐ ॥ (६२१-१६, सोरठि, मः ५)
ऊठत बैठत हरि हरि धिआईऐ अनदिनु सुकृतु करीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२१-१६, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२२

संत का मारगु धर्म की पउड़ी को वडभागी पाए ॥ (६२२-१, सोरठि, मः ५)
कोटि जनम के किलबिख नासे हरि चरणी चितु लाए ॥२॥ (६२२-१, सोरठि, मः ५)
उसतति करहु सदा प्रभ अपने जिनि पूरी कल राखी ॥ (६२२-२, सोरठि, मः ५)
जीअ जंत सभि भए पवित्रा सतिगुर की सचु साखी ॥३॥ (६२२-३, सोरठि, मः ५)
बिघन बिनासन सभि दुख नासन सतिगुरि नामु दृड़ाइआ ॥ (६२२-३, सोरठि, मः ५)
खोए पाप भए सभि पावन जन नानक सुखि घरि आइआ ॥४॥३॥५३॥ (६२२-४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२२-५)
साहिबु गुनी गहेरा ॥ (६२२-५, सोरठि, मः ५)
घरु लसकरु सभु तेरा ॥ (६२२-५, सोरठि, मः ५)
रखवाले गुर गोपाला ॥ (६२२-५, सोरठि, मः ५)
सभि जीअ भए दइआला ॥१॥ (६२२-५, सोरठि, मः ५)
जपि अनदि रहउ गुर चरणा ॥ (६२२-६, सोरठि, मः ५)
भउ कतहि नही प्रभ सरणा ॥ रहाउ ॥ (६२२-६, सोरठि, मः ५)
तेरिआ दासा रिदै मुरारी ॥ (६२२-६, सोरठि, मः ५)
प्रभि अबिचल नीव उसारी ॥ (६२२-७, सोरठि, मः ५)
बलु धनु तकीआ तेरा ॥ (६२२-७, सोरठि, मः ५)
तू भारो ठाकुरु मेरा ॥२॥ (६२२-७, सोरठि, मः ५)
जिनि जिनि साधसंगु पाइआ ॥ (६२२-८, सोरठि, मः ५)
सो प्रभि आपि तराइआ ॥ (६२२-८, सोरठि, मः ५)
करि किरपा नाम रसु दीआ ॥ (६२२-८, सोरठि, मः ५)
कुसल खेम सभ थीआ ॥३॥ (६२२-८, सोरठि, मः ५)
होए प्रभू सहाई ॥ (६२२-९, सोरठि, मः ५)
सभ उठि लागी पाई ॥ (६२२-९, सोरठि, मः ५)
सासि सासि प्रभु धिआईऐ ॥ (६२२-९, सोरठि, मः ५)
हरि मंगलु नानक गाईऐ ॥४॥४॥५४॥ (६२२-९, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२२-१०)
सूख सहज आनंदा ॥ (६२२-१०, सोरठि, मः ५)
प्रभु मिलिओ मनि भावंदा ॥ (६२२-१०, सोरठि, मः ५)
पूरै गुरि किरपा धारी ॥ (६२२-११, सोरठि, मः ५)
ता गति भई हमारी ॥१॥ (६२२-११, सोरठि, मः ५)

हरि की प्रेम भगति मनु लीना ॥ (६२२-११, सोरठि, मः ५)
नित बाजे अनहत बीना ॥ रहाउ ॥ (६२२-११, सोरठि, मः ५)
हरि चरण की ओट सताणी ॥ (६२२-१२, सोरठि, मः ५)
सभ चूकी काणि लोकाणी ॥ (६२२-१२, सोरठि, मः ५)
जगजीवनु दाता पाइआ ॥ (६२२-१२, सोरठि, मः ५)
हरि रसकि रसकि गुण गाइआ ॥२॥ (६२२-१३, सोरठि, मः ५)
प्रभ काटिआ जम का फासा ॥ (६२२-१३, सोरठि, मः ५)
मन पूरन होई आसा ॥ (६२२-१३, सोरठि, मः ५)
जह पेखा तह सोई ॥ (६२२-१४, सोरठि, मः ५)
हरि प्रभ बिनु अवरु न कोई ॥३॥ (६२२-१४, सोरठि, मः ५)
करि किरपा प्रभि राखे ॥ (६२२-१४, सोरठि, मः ५)
सभि जनम जनम दुख लाथे ॥ (६२२-१४, सोरठि, मः ५)
निरभउ नामु धिआइआ ॥ (६२२-१५, सोरठि, मः ५)
अटल सुखु नानक पाइआ ॥४॥५॥५५॥ (६२२-१५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२२-१५)
ठाढि पाई करतारे ॥ (६२२-१६, सोरठि, मः ५)
तापु छोडि गइआ परवारे ॥ (६२२-१६, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै है राखी ॥ (६२२-१६, सोरठि, मः ५)
सरणि सचे की ताकी ॥१॥ (६२२-१६, सोरठि, मः ५)
परमेसरु आपि होआ रखवाला ॥ (६२२-१७, सोरठि, मः ५)
साँति सहज सुख खिन महि उपजे मनु होआ सदा सुखाला ॥ रहाउ ॥ (६२२-१७, सोरठि, मः ५)
हरि हरि नामु दीओ दारू ॥ (६२२-१८, सोरठि, मः ५)
तिनि सगला रोगु बिदारू ॥ (६२२-१८, सोरठि, मः ५)
अपणी किरपा धारी ॥ (६२२-१८, सोरठि, मः ५)
तिनि सगली बात सवारी ॥२॥ (६२२-१८, सोरठि, मः ५)
प्रभि अपना बिरदु समारिआ ॥ (६२२-१९, सोरठि, मः ५)
हमरा गुणु अवगुणु न बीचारिआ ॥ (६२२-१९, सोरठि, मः ५)
गुर का सबदु भइओ साखी ॥ (६२२-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२३

तिनि सगली लाज राखी ॥३॥ (६२३-१, सोरठि, मः ५)
बोलाइआ बोली तेरा ॥ (६२३-१, सोरठि, मः ५)
तू साहिबु गुणी गहेरा ॥ (६२३-१, सोरठि, मः ५)
जपि नानक नामु सचु साखी ॥ (६२३-१, सोरठि, मः ५)
अपुने दास की पैज राखी ॥४॥६॥५६॥ (६२३-२, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ ॥ (६२३-२)
विचि करता पुरखु खलोआ ॥ (६२३-२, सोरठि, मः ५)
वालु न विंगा होआ ॥ (६२३-३, सोरठि, मः ५)
मजनु गुर आँदा रासे ॥ (६२३-३, सोरठि, मः ५)
जपि हरि हरि किलविख नासे ॥१॥ (६२३-३, सोरठि, मः ५)
संतहु रामदास सरोवरु नीका ॥ (६२३-४, सोरठि, मः ५)
जो नावै सो कुलु तरावै उधारु होआ है जी का ॥१॥ रहाउ ॥ (६२३-४, सोरठि, मः ५)
जै जै कारु जगु गावै ॥ (६२३-५, सोरठि, मः ५)
मन चिंदिअड़े फल पावै ॥ (६२३-५, सोरठि, मः ५)
सही सलामति नाइ आए ॥ (६२३-५, सोरठि, मः ५)
अपणा प्रभू धिआए ॥२॥ (६२३-५, सोरठि, मः ५)
संत सरोवर नावै ॥ (६२३-६, सोरठि, मः ५)
सो जनु पर्म गति पावै ॥ (६२३-६, सोरठि, मः ५)
मरै न आवै जाई ॥ (६२३-६, सोरठि, मः ५)
हरि हरि नामु धिआई ॥३॥ (६२३-६, सोरठि, मः ५)
इहु ब्रह्म बिचारु सु जानै ॥ (६२३-७, सोरठि, मः ५)
जिसु दइआलु होइ भगवानै ॥ (६२३-७, सोरठि, मः ५)
बाबा नानक प्रभ सरणाई ॥ (६२३-७, सोरठि, मः ५)
सभ चिंता गणत मिटाई ॥४॥७॥५७॥ (६२३-७, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२३-८)
पारब्रहमि निबाही पूरी ॥ (६२३-८, सोरठि, मः ५)
काई बात न रहीआ ऊरी ॥ (६२३-८, सोरठि, मः ५)
गुरि चरन लाइ निसतारे ॥ (६२३-९, सोरठि, मः ५)
हरि हरि नामु समारे ॥१॥ (६२३-९, सोरठि, मः ५)
अपने दास का सदा रखवाला ॥ (६२३-९, सोरठि, मः ५)
करि किरपा अपुने करि राखे मात पिता जिउ पाला ॥१॥ रहाउ ॥ (६२३-१०, सोरठि, मः ५)
वडभागी सतिगुरु पाइआ ॥ (६२३-१०, सोरठि, मः ५)
जिनि जम का पंथु मिटाइआ ॥ (६२३-११, सोरठि, मः ५)
हरि भगति भाइ चितु लागा ॥ (६२३-११, सोरठि, मः ५)
जपि जीवहि से वडभागा ॥२॥ (६२३-११, सोरठि, मः ५)
हरि अमृत बाणी गावै ॥ (६२३-११, सोरठि, मः ५)
साधा की धूरी नावै ॥ (६२३-१२, सोरठि, मः ५)
अपुना नामु आपे दीआ ॥ (६२३-१२, सोरठि, मः ५)
प्रभ करणहार रखि लीआ ॥३॥ (६२३-१२, सोरठि, मः ५)
हरि दरसन प्रान अधारा ॥ (६२३-१३, सोरठि, मः ५)

इहु पूरन बिमल बीचारा ॥ (६२३-१३, सोरठि, मः ५)
करि किरपा अंतरजामी ॥ (६२३-१३, सोरठि, मः ५)
दास नानक सरणि सुआमी ॥४॥८॥५८॥ (६२३-१३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२३-१४)
गुरि पूरै चरनी लाइआ ॥ (६२३-१४, सोरठि, मः ५)
हरि संगि सहाई पाइआ ॥ (६२३-१४, सोरठि, मः ५)
जह जाईऐ तहा सुहेले ॥ (६२३-१५, सोरठि, मः ५)
करि किरपा प्रभि मेले ॥१॥ (६२३-१५, सोरठि, मः ५)
हरि गुण गावहु सदा सुभाई ॥ (६२३-१५, सोरठि, मः ५)
मन चिंदे सगले फल पावहु जीअ कै संगि सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६२३-१६, सोरठि, मः ५)
नाराइण प्राण अधारा ॥ (६२३-१६, सोरठि, मः ५)
हम संत जनाँ रेनारा ॥ (६२३-१६, सोरठि, मः ५)
पतित पुनीत करि लीने ॥ (६२३-१७, सोरठि, मः ५)
करि किरपा हरि जसु दीने ॥२॥ (६२३-१७, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्मु करे प्रतिपाला ॥ (६२३-१७, सोरठि, मः ५)
सद जीअ संगि रखवाला ॥ (६२३-१८, सोरठि, मः ५)
हरि दिनु रैनि कीरतनु गाईऐ ॥ (६२३-१८, सोरठि, मः ५)
बहुड़ि न जोनी पाईऐ ॥३॥ (६२३-१८, सोरठि, मः ५)
जिसु देवै पुरखु बिधाता ॥ (६२३-१९, सोरठि, मः ५)
हरि रसु तिन ही जाता ॥ (६२३-१९, सोरठि, मः ५)
जमकंकरु नेड़ि न आइआ ॥ (६२३-१९, सोरठि, मः ५)
सुखु नानक सरणी पाइआ ॥४॥९॥५९॥ (६२३-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२४

सोरठि महला ५ ॥ (६२४-१)
गुरि पूरै कीती पूरी ॥ (६२४-१, सोरठि, मः ५)
प्रभु रवि रहिआ भरपूरी ॥ (६२४-१, सोरठि, मः ५)
खेम कुसल भइआ इसनाना ॥ (६२४-२, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्म विटहु कुरबाना ॥१॥ (६२४-२, सोरठि, मः ५)
गुर के चरन कवल रिद धारे ॥ (६२४-२, सोरठि, मः ५)
बिघनु न लागै तिल का कोई कारज सगल सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (६२४-३, सोरठि, मः ५)
मिलि साधू दुरमति खोए ॥ (६२४-३, सोरठि, मः ५)
पतित पुनीत सभ होए ॥ (६२४-३, सोरठि, मः ५)
रामदासि सरोवर नाते ॥ (६२४-४, सोरठि, मः ५)
सभ लाथे पाप कमाते ॥२॥ (६२४-४, सोरठि, मः ५)

गुन गोबिंद नित गाईऐ ॥ (६२४-४, सोरठि, मः ५)
साधसंगि मिलि धिआईऐ ॥ (६२४-५, सोरठि, मः ५)
मन बाँछत फल पाए ॥ (६२४-५, सोरठि, मः ५)
गुरु पूरा रिदै धिआए ॥३॥ (६२४-५, सोरठि, मः ५)
गुर गोपाल आनंदा ॥ (६२४-५, सोरठि, मः ५)
जपि जपि जीवै परमानंदा ॥ (६२४-६, सोरठि, मः ५)
जन नानक नामु धिआइआ ॥ (६२४-६, सोरठि, मः ५)
प्रभ अपना बिरदु रखाइआ ॥४॥१०॥६०॥ (६२४-६, सोरठि, मः ५)
रागु सोरठि महला ५ ॥ (६२४-७)
दह दिस छत्र मेघ घटा घट दामनि चमकि डराइओ ॥ (६२४-७, सोरठि, मः ५)
सेज इकेली नीद नहु नैनह पिरु परदेसि सिधाइओ ॥१॥ (६२४-७, सोरठि, मः ५)
हुणि नही संदेसरो माइओ ॥ (६२४-८, सोरठि, मः ५)
एक कोसरो सिधि करत लालु तब चतुर पातरो आइओ ॥ रहाउ ॥ (६२४-८, सोरठि, मः ५)
किउ बिसरै इहु लालु पिआरो सरब गुणा सुखदाइओ ॥ (६२४-९, सोरठि, मः ५)
मंदरि चरि कै पंथु निहारउ नैन नीरि भरि आइओ ॥२॥ (६२४-१०, सोरठि, मः ५)
हउ हउ भीति भइओ है बीचो सुनत देसि निकटाइओ ॥ (६२४-१०, सोरठि, मः ५)
भाँभीरी के पात परदो बिनु पेखे दूराइओ ॥३॥ (६२४-११, सोरठि, मः ५)
भइओ किरपालु सरब को ठाकुरु सगरो दूखु मिटाइओ ॥ (६२४-११, सोरठि, मः ५)
कहु नानक हउमै भीति गुरि खोई तउ दइआरु बीठलो पाइओ ॥४॥ (६२४-१२, सोरठि, मः ५)
सभु रहिओ अंदेसरो माइओ ॥ (६२४-१२, सोरठि, मः ५)
जो चाहत सो गुरू मिलाइओ ॥ (६२४-१३, सोरठि, मः ५)
सरब गुना निधि राइओ ॥ रहाउ दूजा ॥११॥६१॥ (६२४-१३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२४-१४)
गई बहोड़ु बंदी छोड़ु निरंकारु दुखदारी ॥ (६२४-१४, सोरठि, मः ५)
करमु न जाणा धरमु न जाणा लोभी माइआधारी ॥ (६२४-१४, सोरठि, मः ५)
नामु परिओ भगतु गोविंद का इह राखहु पैज तुमारी ॥१॥ (६२४-१५, सोरठि, मः ५)
हरि जीउ निमाणिआ तू माणु ॥ (६२४-१५, सोरठि, मः ५)
निचीजिआ चीज करे मेरा गोविंदु तेरी कुदरति कउ कुरबाणु ॥ रहाउ ॥ (६२४-१६, सोरठि, मः ५)
जैसा बालकु भाइ सुभाई लख अपराध कमावै ॥ (६२४-१६, सोरठि, मः ५)
करि उपदेसु झिड़के बहु भाती बहुड़ि पिता गलि लावै ॥ (६२४-१७, सोरठि, मः ५)
पिछले अउगुण बखसि लए प्रभु आगै मारगि पावै ॥२॥ (६२४-१७, सोरठि, मः ५)
हरि अंतरजामी सभ बिधि जाणै ता किसु पहि आखि सुणाईऐ ॥ (६२४-१८, सोरठि, मः ५)
कहणै कथनि न भीजै गोबिंदु हरि भावै पैज रखाईऐ ॥ (६२४-१९, सोरठि, मः ५)
अवर ओट मै सगली देखी इक तेरी ओट रहाईऐ ॥३॥ (६२४-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२५

होइ दइआलु किरपालु प्रभु ठाकुरु आपे सुणै बेनंती ॥ (६२५-१, सोरठि, मः ५)
पूरा सतगुरु मेलि मिलावै सभ चूकै मन की चिंती ॥ (६२५-१, सोरठि, मः ५)
हरि हरि नामु अवखदु मुखि पाइआ जन नानक सुखि वसंती ॥४॥१२॥६२॥ (६२५-२, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२५-३)
सिमरि सिमरि प्रभ भए अनंदा दुख कलेस सभि नाठे ॥ (६२५-३, सोरठि, मः ५)
गुन गावत धिआवत प्रभु अपना कारज सगले साँठे ॥१॥ (६२५-३, सोरठि, मः ५)
जगजीवन नामु तुमारा ॥ (६२५-४, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे दीओ उपदेसा जपि भउजलु पारि उतारा ॥ रहाउ ॥ (६२५-४, सोरठि, मः ५)
तूहे मंत्री सुनहि प्रभ तूहै सभु किछु करणैहारा ॥ (६२५-५, सोरठि, मः ५)
तू आपे दाता आपे भुगता किआ इहु जंतु विचारा ॥२॥ (६२५-६, सोरठि, मः ५)
किआ गुण तेरे आखि वखाणी कीमति कहणु न जाई ॥ (६२५-६, सोरठि, मः ५)
पेखि पेखि जीवै प्रभु अपना अचरजु तुमहि वडाई ॥३॥ (६२५-७, सोरठि, मः ५)
धारि अनुग्रहु आपि प्रभ स्वामी पति मति कीनी पूरी ॥ (६२५-७, सोरठि, मः ५)
सदा सदा नानक बलिहारी बाछउ संता धूरी ॥४॥१३॥६३॥ (६२५-८, सोरठि, मः ५)
सोरठि मः ५ ॥ (६२५-९)
गुरु पूरा नमसकारे ॥ (६२५-९, सोरठि, मः ५)
प्रभि सभे काज सवारे ॥ (६२५-९, सोरठि, मः ५)
हरि अपणी किरपा धारी ॥ (६२५-९, सोरठि, मः ५)
प्रभ पूरन पैज सवारी ॥१॥ (६२५-९, सोरठि, मः ५)
अपने दास को भइओ सहाई ॥ (६२५-१०, सोरठि, मः ५)
सगल मनोरथ कीने करतै ऊणी बात न काई ॥ रहाउ ॥ (६२५-१०, सोरठि, मः ५)
करतै पुरखि तालु दिवाइआ ॥ (६२५-११, सोरठि, मः ५)
पिछै लगि चली माइआ ॥ (६२५-११, सोरठि, मः ५)
तोटि न कतहू आवै ॥ (६२५-११, सोरठि, मः ५)
मेरे पूरे सतगुर भावै ॥२॥ (६२५-११, सोरठि, मः ५)
सिमरि सिमरि दइआला ॥ (६२५-१२, सोरठि, मः ५)
सभि जीअ भए किरपाला ॥ (६२५-१२, सोरठि, मः ५)
जै जै कारु गुसाई ॥ (६२५-१२, सोरठि, मः ५)
जिनि पूरी बणत बणाई ॥३॥ (६२५-१२, सोरठि, मः ५)
तू भारो सुआमी मोरा ॥ (६२५-१३, सोरठि, मः ५)
इहु पुन्नु पदारथु तेरा ॥ (६२५-१३, सोरठि, मः ५)
जन नानक एकु धिआइआ ॥ (६२५-१३, सोरठि, मः ५)
सर्ब फला पुन्नु पाइआ ॥४॥१४॥६४॥ (६२५-१४, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ घरु ३ दुपदे (६२५-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६२५-१५)
रामदास सरोवरि नाते ॥ (६२५-१६, सोरठि, मः ५)
सभि उतरे पाप कमाते ॥ (६२५-१६, सोरठि, मः ५)
निर्मल होए करि इसनाना ॥ (६२५-१६, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै कीने दाना ॥१॥ (६२५-१६, सोरठि, मः ५)
सभि कुसल खेम प्रभि धारे ॥ (६२५-१७, सोरठि, मः ५)
सही सलामति सभि थोक उबारे गुर का सबदु वीचारे ॥ रहाउ ॥ (६२५-१७, सोरठि, मः ५)
साधसंगि मलु लाथी ॥ (६२५-१८, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्मु भइओ साथी ॥ (६२५-१८, सोरठि, मः ५)
नानक नामु धिआइआ ॥ (६२५-१८, सोरठि, मः ५)
आदि पुरख प्रभु पाइआ ॥२॥१॥६५॥ (६२५-१८, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२५-१९)
जितु पारब्रह्मु चिति आइआ ॥ (६२५-१९, सोरठि, मः ५)
सो घरु दयि वसाइआ ॥ (६२५-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२६

सुख सागरु गुरु पाइआ ॥ (६२६-१, सोरठि, मः ५)
ता सहसा सगल मिटाइआ ॥१॥ (६२६-१, सोरठि, मः ५)
हरि के नाम की वडिआई ॥ (६२६-१, सोरठि, मः ५)
आठ पहर गुण गाई ॥ (६२६-१, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे ते पाई ॥ रहाउ ॥ (६२६-२, सोरठि, मः ५)
प्रभ की अकथ कहाणी ॥ (६२६-२, सोरठि, मः ५)
जन बोलहि अमृत बाणी ॥ (६२६-२, सोरठि, मः ५)
नानक दास वखाणी ॥ (६२६-३, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे ते जाणी ॥२॥२॥६६॥ (६२६-३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-३)
आगै सुखु गुरि दीआ ॥ (६२६-३, सोरठि, मः ५)
पाछै कुसल खेम गुरि कीआ ॥ (६२६-४, सोरठि, मः ५)
सर्ब निधान सुख पाइआ ॥ (६२६-४, सोरठि, मः ५)
गुरु अपुना रिदै धिआइआ ॥१॥ (६२६-४, सोरठि, मः ५)
अपने सतिगुर की वडिआई ॥ (६२६-४, सोरठि, मः ५)
मन इछे फल पाई ॥ (६२६-५, सोरठि, मः ५)
संतहु दिनु दिनु चड़ै सवाई ॥ रहाउ ॥ (६२६-५, सोरठि, मः ५)
जीअ जंत सभि भए दइआला प्रभि अपने करि दीने ॥ (६२६-५, सोरठि, मः ५)

सहज सुभाइ मिले गोपाला नानक साचि पतीने ॥२॥३॥६७॥ (६२६-६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-७)
गुर का सबदु रखवारे ॥ (६२६-७, सोरठि, मः ५)
चउकी चउगिरद हमारे ॥ (६२६-७, सोरठि, मः ५)
राम नामि मनु लागा ॥ (६२६-७, सोरठि, मः ५)
जमु लजाइ करि भागा ॥१॥ (६२६-८, सोरठि, मः ५)
प्रभ जी तू मेरो सुखदाता ॥ (६२६-८, सोरठि, मः ५)
बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु बिधाता ॥ रहाउ ॥ (६२६-८, सोरठि, मः ५)
नानक प्रभु अबिनासी ॥ (६२६-९, सोरठि, मः ५)
ता की सेव न बिरथी जासी ॥ (६२६-९, सोरठि, मः ५)
अनद करहि तेरे दासा ॥ (६२६-९, सोरठि, मः ५)
जपि पूरन होई आसा ॥२॥४॥६८॥ (६२६-१०, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-१०)
गुर अपुने बलिहारी ॥ (६२६-१०, सोरठि, मः ५)
जिनि पूरन पैज सवारी ॥ (६२६-१०, सोरठि, मः ५)
मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ (६२६-११, सोरठि, मः ५)
प्रभु अपुना सदा धिआइआ ॥१॥ (६२६-११, सोरठि, मः ५)
संतहु तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (६२६-११, सोरठि, मः ५)
करण कारण प्रभु सोई ॥ रहाउ ॥ (६२६-१२, सोरठि, मः ५)
प्रभि अपनै वर दीने ॥ (६२६-१२, सोरठि, मः ५)
सगल जीअ वसि कीने ॥ (६२६-१२, सोरठि, मः ५)
जन नानक नामु धिआइआ ॥ (६२६-१३, सोरठि, मः ५)
ता सगले दूख मिटाइआ ॥२॥५॥६९॥ (६२६-१३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-१३)
तापु गवाइआ गुरि पूरे ॥ (६२६-१३, सोरठि, मः ५)
वाजे अनहद तूरे ॥ (६२६-१४, सोरठि, मः ५)
सर्ब कलिआण प्रभि कीने ॥ (६२६-१४, सोरठि, मः ५)
करि किरपा आपि दीने ॥१॥ (६२६-१४, सोरठि, मः ५)
बेदन सतिगुरि आपि गवाई ॥ (६२६-१५, सोरठि, मः ५)
सिख संत सभि सरसे होए हरि हरि नामु धिआई ॥ रहाउ ॥ (६२६-१५, सोरठि, मः ५)
जो मंगहि सो लेवहि ॥ (६२६-१५, सोरठि, मः ५)
प्रभ अपणिआ संता देवहि ॥ (६२६-१६, सोरठि, मः ५)
हरि गोविदु प्रभि राखिआ ॥ (६२६-१६, सोरठि, मः ५)
जन नानक साचु सुभाखिआ ॥२॥६॥७०॥ (६२६-१६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-१७)

सोई कराइ जो तुधु भावै ॥ (६२६-१७, सोरठि, मः ५)
मोहि सिआणप कछू न आवै ॥ (६२६-१७, सोरठि, मः ५)
हम बारिक तउ सरणाई ॥ (६२६-१७, सोरठि, मः ५)
प्रभि आपे पैज रखाई ॥१॥ (६२६-१८, सोरठि, मः ५)
मेरा मात पिता हरि राइआ ॥ (६२६-१८, सोरठि, मः ५)
करि किरपा प्रतिपालण लागा करीं तेरा कराइआ ॥ रहाउ ॥ (६२६-१८, सोरठि, मः ५)
जीअ जंत तेरे धारे ॥ (६२६-१९, सोरठि, मः ५)
प्रभ डोरी हाथि तुमारे ॥ (६२६-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२७

जि करावै सो करणा ॥ (६२७-१, सोरठि, मः ५)
नानक दास तेरी सरणा ॥२॥७॥७१॥ (६२७-१, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२७-१)
हरि नामु रिदै परोइआ ॥ (६२७-१, सोरठि, मः ५)
सभु काजु हमारा होइआ ॥ (६२७-२, सोरठि, मः ५)
प्रभ चरणी मनु लागा ॥ (६२७-२, सोरठि, मः ५)
पूरन जा के भागा ॥१॥ (६२७-२, सोरठि, मः ५)
मिलि साधसंगि हरि धिआइआ ॥ (६२७-२, सोरठि, मः ५)
आठ पहर अराधिओ हरि हरि मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥ रहाउ ॥ (६२७-३, सोरठि, मः ५)
परा पूरबला अंकुरु जागिआ ॥ (६२७-४, सोरठि, मः ५)
राम नामि मनु लागिआ ॥ (६२७-४, सोरठि, मः ५)
मनि तनि हरि दरसि समावै ॥ (६२७-४, सोरठि, मः ५)
नानक दास सचे गुण गावै ॥२॥८॥७२॥ (६२७-४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२७-५)
गुर मिलि प्रभू चितारिआ ॥ (६२७-५, सोरठि, मः ५)
कारज सभि सवारिआ ॥ (६२७-५, सोरठि, मः ५)
मंदा को न अलाए ॥ (६२७-६, सोरठि, मः ५)
सभ जै जै कारु सुणाए ॥१॥ (६२७-६, सोरठि, मः ५)
संतहु साची सरणि सुआमी ॥ (६२७-६, सोरठि, मः ५)
जीअ जंत सभि हाथि तिसै कै सो प्रभु अंतरजामी ॥ रहाउ ॥ (६२७-६, सोरठि, मः ५)
करतब सभि सवारे ॥ (६२७-७, सोरठि, मः ५)
प्रभि अपुना बिरदु समारे ॥ (६२७-७, सोरठि, मः ५)
पतित पावन प्रभ नामा ॥ (६२७-७, सोरठि, मः ५)
जन नानक सद कुरबाना ॥२॥९॥७३॥ (६२७-८, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२७-८)

पारब्रहमि साजि सवारिआ ॥ (६२७-८, सोरठि, मः ५)
इहु लहुड़ा गुरू उबारिआ ॥ (६२७-९, सोरठि, मः ५)
अनद करहु पित माता ॥ (६२७-९, सोरठि, मः ५)
परमेसरु जीअ का दाता ॥१॥ (६२७-९, सोरठि, मः ५)
सुभ चितवनि दास तुमारे ॥ (६२७-९, सोरठि, मः ५)
राखहि पैज दास अपुने की कारज आपि सवारे ॥ रहाउ ॥ (६२७-१०, सोरठि, मः ५)
मेरा प्रभु परउपकारी ॥ (६२७-१०, सोरठि, मः ५)
पूरन कल जिनि धारी ॥ (६२७-१०, सोरठि, मः ५)
नानक सरणी आइआ ॥ (६२७-११, सोरठि, मः ५)
मन चिंदिआ फलु पाइआ ॥२॥१०॥७४॥ (६२७-११, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२७-११)
सदा सदा हरि जापे ॥ (६२७-१२, सोरठि, मः ५)
प्रभ बालक राखे आपे ॥ (६२७-१२, सोरठि, मः ५)
सीतला ठाकि रहाई ॥ (६२७-१२, सोरठि, मः ५)
बिघन गए हरि नाई ॥१॥ (६२७-१२, सोरठि, मः ५)
मेरा प्रभु होआ सदा दइआला ॥ (६२७-१३, सोरठि, मः ५)
अरदासि सुणी भगत अपुने की सभ जीअ भइआ किरपाला ॥ रहाउ ॥ (६२७-१३, सोरठि, मः ५)
प्रभ करण कारण समराथा ॥ (६२७-१४, सोरठि, मः ५)
हरि सिमरत सभु दुखु लाथा ॥ (६२७-१४, सोरठि, मः ५)
अपणे दास की सुणी बेनंती ॥ (६२७-१४, सोरठि, मः ५)
सभ नानक सुखि सवंती ॥२॥११॥७५॥ (६२७-१५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२७-१५)
अपना गुरू धिआए ॥ (६२७-१५, सोरठि, मः ५)
मिलि कुसल सेती घरि आए ॥ (६२७-१५, सोरठि, मः ५)
नामै की वडिआई ॥ (६२७-१६, सोरठि, मः ५)
तिसु कीमति कहणु न जाई ॥१॥ (६२७-१६, सोरठि, मः ५)
संतहु हरि हरि हरि आराधहु ॥ (६२७-१६, सोरठि, मः ५)
हरि आराधि सभो किछु पाईऐ कारज सगले साधहु ॥ रहाउ ॥ (६२७-१७, सोरठि, मः ५)
प्रेम भगति प्रभ लागी ॥ (६२७-१७, सोरठि, मः ५)
सो पाए जिसु वडभागी ॥ (६२७-१८, सोरठि, मः ५)
जन नानक नामु धिआइआ ॥ (६२७-१८, सोरठि, मः ५)
तिनि सरब सुखा फल पाइआ ॥२॥१२॥७६॥ (६२७-१८, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२७-१९)
परमेसरि दिता बन्ना ॥ (६२७-१९, सोरठि, मः ५)
दुख रोग का डेरा भन्ना ॥ (६२७-१९, सोरठि, मः ५)

अनद करहि नर नारी ॥ (६२७-१६, सोरठि, मः ५)
हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ (६२७-१६, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६२८

संतहु सुखु होआ सभ थाई ॥ (६२८-१, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्मु पूरन परमेसरु रवि रहिआ सभनी जाई ॥ रहाउ ॥ (६२८-१, सोरठि, मः ५)
धुर की बाणी आई ॥ (६२८-२, सोरठि, मः ५)
तिनि सगली चिंत मिटाई ॥ (६२८-२, सोरठि, मः ५)
दइआल पुरख मिहरवाना ॥ (६२८-२, सोरठि, मः ५)
हरि नानक साचु वखाना ॥२॥१३॥७७॥ (६२८-३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२८-३)
ऐथै ओथै रखवाला ॥ (६२८-३, सोरठि, मः ५)
प्रभ सतिगुर दीन दइआला ॥ (६२८-३, सोरठि, मः ५)
दास अपने आपि राखे ॥ (६२८-४, सोरठि, मः ५)
घटि घटि सबदु सुभाखे ॥१॥ (६२८-४, सोरठि, मः ५)
गुर के चरण ऊपरि बलि जाई ॥ (६२८-४, सोरठि, मः ५)
दिनसु रैनि सासि सासि समाली पूरनु सभनी थाई ॥ रहाउ ॥ (६२८-५, सोरठि, मः ५)
आपि सहाई होआ ॥ (६२८-५, सोरठि, मः ५)
सचे दा सचा ढोआ ॥ (६२८-६, सोरठि, मः ५)
तेरी भगति वडिआई ॥ (६२८-६, सोरठि, मः ५)
पाई नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१४॥७८॥ (६२८-६, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२८-७)
सतिगुर पूरे भाणा ॥ (६२८-७, सोरठि, मः ५)
ता जपिआ नामु रमाणा ॥ (६२८-७, सोरठि, मः ५)
गोबिंद किरपा धारी ॥ (६२८-७, सोरठि, मः ५)
प्रभि राखी पैज हमारी ॥१॥ (६२८-७, सोरठि, मः ५)
हरि के चरन सदा सुखदाई ॥ (६२८-८, सोरठि, मः ५)
जो इछहि सोई फलु पावहि बिरथी आस न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६२८-८, सोरठि, मः ५)
कृपा करे जिसु प्रानपति दाता सोई संतु गुण गावै ॥ (६२८-९, सोरठि, मः ५)
प्रेम भगति ता का मनु लीणा पारब्रह्म मनि भावै ॥२॥ (६२८-९, सोरठि, मः ५)
आठ पहर हरि का जसु रवणा बिखै ठगउरी लाथी ॥ (६२८-१०, सोरठि, मः ५)
संगि मिलाइ लीआ मेरै करतै संत साध भए साथी ॥३॥ (६२८-१०, सोरठि, मः ५)
करु गहि लीने सरबसु दीने आपहि आपु मिलाइआ ॥ (६२८-११, सोरठि, मः ५)
कहु नानक सर्ब थोक पूरन पूरा सतिगुरु पाइआ ॥४॥१५॥७९॥ (६२८-११, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२८-१२)

गरीबी गदा हमारी ॥ (६२८-१२, सोरठि, मः ५)
खन्ना सगल रेनु छारी ॥ (६२८-१३, सोरठि, मः ५)
इसु आगै को न टिकै वेकारी ॥ (६२८-१३, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे एह गल सारी ॥१॥ (६२८-१३, सोरठि, मः ५)
हरि हरि नामु संतन की ओटा ॥ (६२८-१३, सोरठि, मः ५)
जो सिमरै तिस की गति होवै उधरहि सगले कोटा ॥१॥ रहाउ ॥ (६२८-१४, सोरठि, मः ५)
संत संगि जसु गाइआ ॥ (६२८-१४, सोरठि, मः ५)
इहु पूरन हरि धनु पाइआ ॥ (६२८-१५, सोरठि, मः ५)
कहु नानक आपु मिटाइआ ॥ (६२८-१५, सोरठि, मः ५)
सभु पारब्रह्मु नदरी आइआ ॥२॥१६॥८०॥ (६२८-१५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२८-१६)
गुरि पूरै पूरी कीनी ॥ (६२८-१६, सोरठि, मः ५)
बखस अपुनी करि दीनी ॥ (६२८-१६, सोरठि, मः ५)
नित अनंद सुख पाइआ ॥ (६२८-१७, सोरठि, मः ५)
थाव सगले सुखी वसाइआ ॥१॥ (६२८-१७, सोरठि, मः ५)
हरि की भगति फल दाती ॥ (६२८-१७, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै किरपा करि दीनी विरलै किन ही जाती ॥ रहाउ ॥ (६२८-१७, सोरठि, मः ५)
गुरबाणी गावह भाई ॥ (६२८-१८, सोरठि, मः ५)
ओह सफल सदा सुखदाई ॥ (६२८-१८, सोरठि, मः ५)
नानक नामु धिआइआ ॥ (६२८-१९, सोरठि, मः ५)
पूरबि लिखिआ पाइआ ॥२॥१७॥८१॥ (६२८-१९, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२८-१९)

पन्ना ६२९

गुरु पूरा आराधे ॥ (६२९-१, सोरठि, मः ५)
कारज सगले साधे ॥ (६२९-१, सोरठि, मः ५)
सगल मनोरथ पूरे ॥ (६२९-१, सोरठि, मः ५)
बाजे अनहद तूरे ॥१॥ (६२९-१, सोरठि, मः ५)
संतहु रामु जपत सुखु पाइआ ॥ (६२९-१, सोरठि, मः ५)
संत असथानि बसे सुख सहजे सगले दूख मिटाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२९-२, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे की बाणी ॥ (६२९-२, सोरठि, मः ५)
पारब्रह्म मनि भाणी ॥ (६२९-३, सोरठि, मः ५)
नानक दासि वखाणी ॥ (६२९-३, सोरठि, मः ५)
निर्मल अकथ कहाणी ॥२॥१८॥८२॥ (६२९-३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२९-४)

भूखे खावत लाज न आवै ॥ (६२६-४, सोरठि, मः ५)
तिउ हरि जनु हरि गुण गावै ॥१॥ (६२६-४, सोरठि, मः ५)
अपने काज कउ किउ अलकाईऐ ॥ (६२६-४, सोरठि, मः ५)
जितु सिमरनि दरगह मुखु ऊजल सदा सदा सुखु पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२६-५, सोरठि, मः ५)
जिउ कामी कामि लुभावै ॥ (६२६-५, सोरठि, मः ५)
तिउ हरि दास हरि जसु भावै ॥२॥ (६२६-६, सोरठि, मः ५)
जिउ माता बालि लपटावै ॥ (६२६-६, सोरठि, मः ५)
तिउ गिआनी नामु कमावै ॥३॥ (६२६-६, सोरठि, मः ५)
गुर पूरे ते पावै ॥ (६२६-७, सोरठि, मः ५)
जन नानक नामु धिआवै ॥४॥१६॥८३॥ (६२६-७, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-७)
सुख साँदि घरि आइआ ॥ (६२६-८, सोरठि, मः ५)
निंदक कै मुखि छाइआ ॥ (६२६-८, सोरठि, मः ५)
पूरै गुरि पहिराइआ ॥ (६२६-८, सोरठि, मः ५)
बिनसे दुख सबाइआ ॥१॥ (६२६-८, सोरठि, मः ५)
संतहु साचे की वडिआई ॥ (६२६-९, सोरठि, मः ५)
जिनि अचरज सोभ बणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६२६-९, सोरठि, मः ५)
बोले साहिब कै भाणै ॥ (६२६-९, सोरठि, मः ५)
दासु बाणी ब्रह्मु वखाणै ॥ (६२६-१०, सोरठि, मः ५)
नानक प्रभ सुखदाई ॥ (६२६-१०, सोरठि, मः ५)
जिनि पूरी बणत बणाई ॥२॥२०॥८४॥ (६२६-१०, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-११)
प्रभु अपुना रिदै धिआए ॥ (६२६-११, सोरठि, मः ५)
घरि सही सलामति आए ॥ (६२६-११, सोरठि, मः ५)
संतोखु भइआ संसारे ॥ (६२६-११, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै लै तारे ॥१॥ (६२६-१२, सोरठि, मः ५)
संतहु प्रभु मेरा सदा दइआला ॥ (६२६-१२, सोरठि, मः ५)
अपने भगत की गणत न गणई राखै बाल गुपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (६२६-१२, सोरठि, मः ५)
हरि नामु रिदै उरि धारे ॥ (६२६-१३, सोरठि, मः ५)
तिनि सभे थोक सवारे ॥ (६२६-१३, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै तुसि दीआ ॥ (६२६-१३, सोरठि, मः ५)
फिरि नानक दूखु न थीआ ॥२॥२१॥८५॥ (६२६-१४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-१४)
हरि मनि तनि वसिआ सोई ॥ (६२६-१४, सोरठि, मः ५)
जै जै कारु करे सभु कोई ॥ (६२६-१५, सोरठि, मः ५)

गुर पूरे की वडिआई ॥ (६२६-१५, सोरठि, मः ५)
ता की कीमति कही न जाई ॥१॥ (६२६-१५, सोरठि, मः ५)
हउ कुरबानु जाई तेरे नावै ॥ (६२६-१५, सोरठि, मः ५)
जिस नो बखसि लैहि मेरे पिआरे सो जसु तेरा गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (६२६-१६, सोरठि, मः ५)
तूं भारो सुआमी मेरा ॥ (६२६-१६, सोरठि, मः ५)
संताँ भरवासा तेरा ॥ (६२६-१७, सोरठि, मः ५)
नानक प्रभ सरणाई ॥ (६२६-१७, सोरठि, मः ५)
मुखि निंदक कै छाई ॥२॥२२॥८६॥ (६२६-१७, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६२६-१८)
आगै सुखु मेरे मीता ॥ (६२६-१८, सोरठि, मः ५)
पाछे आनदु प्रभि कीता ॥ (६२६-१८, सोरठि, मः ५)
परमेसुरि बणत बणाई ॥ (६२६-१८, सोरठि, मः ५)
फिरि डोलत कतहू नाही ॥१॥ (६२६-१८, सोरठि, मः ५)
साचे साहिब सिउ मनु मानिआ ॥ (६२६-१६, सोरठि, मः ५)
हरि सर्ब निरंतरि जानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६२६-१६, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६३०

सभ जीअ तेरे दइआला ॥ (६३०-१, सोरठि, मः ५)
अपने भगत करहि प्रतिपाला ॥ (६३०-१, सोरठि, मः ५)
अचरजु तेरी वडिआई ॥ (६३०-१, सोरठि, मः ५)
नित नानक नामु धिआई ॥२॥२३॥८७॥ (६३०-१, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६३०-२)
नालि नराइणु मेरै ॥ (६३०-२, सोरठि, मः ५)
जमदूतु न आवै नेरै ॥ (६३०-२, सोरठि, मः ५)
कंठि लाइ प्रभ राखै ॥ (६३०-३, सोरठि, मः ५)
सतिगुर की सचु साखै ॥१॥ (६३०-३, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै पूरी कीती ॥ (६३०-३, सोरठि, मः ५)
दुसमन मारि विडारे सगले दास कउ सुमति दीती ॥१॥ रहाउ ॥ (६३०-३, सोरठि, मः ५)
प्रभि सगले थान वसाए ॥ (६३०-४, सोरठि, मः ५)
सुखि साँदि फिरि आए ॥ (६३०-४, सोरठि, मः ५)
नानक प्रभ सरणाए ॥ (६३०-५, सोरठि, मः ५)
जिनि सगले रोग मिटाए ॥२॥२४॥८८॥ (६३०-५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६३०-५)
सर्ब सुखा का दाता सतिगुरु ता की सरनी पाईऐ ॥ (६३०-५, सोरठि, मः ५)
दरसनु भेटत होत अनंदा दूखु गइआ हरि गाईऐ ॥१॥ (६३०-६, सोरठि, मः ५)

हरि रसु पीवहु भाई ॥ (६३०-७, सोरठि, मः ५)
नामु जपहु नामो आराधहु गुर पूरे की सरनाई ॥ रहाउ ॥ (६३०-७, सोरठि, मः ५)
तिसहि परापति जिसु धुरि लिखिआ सोई पूरनु भाई ॥ (६३०-७, सोरठि, मः ५)
नानक की बेनंती प्रभ जी नामि रहा लिव लाई ॥२॥२५॥८९॥ (६३०-८, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६३०-९)
करन करावन हरि अंतरजामी जन अपुने की राखै ॥ (६३०-९, सोरठि, मः ५)
जै जै कारु होतु जग भीतरि सबदु गुरू रसु चाखै ॥१॥ (६३०-९, सोरठि, मः ५)
प्रभ जी तेरी ओट गुसाई ॥ (६३०-१०, सोरठि, मः ५)
तू समरथु सरनि का दाता आठ पहर तुम्ह धिआई ॥ रहाउ ॥ (६३०-१०, सोरठि, मः ५)
जो जनु भजनु करे प्रभ तेरा तिसै अंदेसा नाही ॥ (६३०-११, सोरठि, मः ५)
सतिगुर चरन लगे भउ मिटिआ हरि गुन गाए मन माही ॥२॥ (६३०-११, सोरठि, मः ५)
सूख सहज आनंद घनेरे सतिगुर दीआ दिलासा ॥ (६३०-१२, सोरठि, मः ५)
जिणि घरि आए सोभा सेती पूरन होई आसा ॥३॥ (६३०-१२, सोरठि, मः ५)
पूरा गुरु पूरी मति जा की पूरन प्रभ के कामा ॥ (६३०-१३, सोरठि, मः ५)
गुर चरनी लागि तरिओ भव सागरु जपि नानक हरि हरि नामा ॥४॥२६॥९०॥ (६३०-१४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६३०-१४)
भइओ किरपालु दीन दुख भंजनु आपे सभ बिधि थाटी ॥ (६३०-१५, सोरठि, मः ५)
खिन महि राखि लीओ जनु अपुना गुर पूरै बेड़ी काटी ॥१॥ (६३०-१५, सोरठि, मः ५)
मेरे मन गुर गोविंदु सद धिआईऐ ॥ (६३०-१६, सोरठि, मः ५)
सगल कलेस मिटहि इसु तन ते मन चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ रहाउ ॥ (६३०-१६, सोरठि, मः ५)
जीअ जंत जा के सभि कीने प्रभु ऊचा अगम अपारा ॥ (६३०-१७, सोरठि, मः ५)
साधसंगि नानक नामु धिआइआ मुख ऊजल भए दरबारा ॥२॥२७॥९१॥ (६३०-१७, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६३०-१८)
सिमरउ अपुना साँई ॥ (६३०-१८, सोरठि, मः ५)
दिनसु रैनि सद धिआई ॥ (६३०-१९, सोरठि, मः ५)
हाथ देइ जिनि राखे ॥ (६३०-१९, सोरठि, मः ५)
हरि नाम महा रस चाखे ॥१॥ (६३०-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६३१

अपने गुर ऊपरि कुरबानु ॥ (६३१-१, सोरठि, मः ५)
भए किरपाल पूरन प्रभ दाते जीअ होए मिहरवान ॥ रहाउ ॥ (६३१-१, सोरठि, मः ५)
नानक जन सरनाई ॥ (६३१-१, सोरठि, मः ५)
जिनि पूरन पैज रखाई ॥ (६३१-२, सोरठि, मः ५)
सगले दूख मिटाई ॥ (६३१-२, सोरठि, मः ५)
सुखु भुंचहु मेरे भाई ॥२॥२८॥९२॥ (६३१-२, सोरठि, मः ५)

सोरठि महला ५ ॥ (६३१-३)
सुनहु बिनंती ठाकुर मेरे जीअ जंत तेरे धारे ॥ (६३१-३, सोरठि, मः ५)
राखु पैज नाम अपुने की करन करावनहारे ॥१॥ (६३१-३, सोरठि, मः ५)
प्रभ जीउ खसमाना करि पिआरे ॥ (६३१-४, सोरठि, मः ५)
बुरे भले हम थारे ॥ रहाउ ॥ (६३१-४, सोरठि, मः ५)
सुणी पुकार समरथ सुआमी बंधन काटि सवारे ॥ (६३१-४, सोरठि, मः ५)
पहिरि सिरपाउ सेवक जन मेले नानक प्रगट पहारे ॥२॥२९॥९३॥ (६३१-५, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६३१-६)
जीअ जंत सभि वसि करि दीने सेवक सभि दरबारे ॥ (६३१-६, सोरठि, मः ५)
अंगीकारु कीओ प्रभ अपुने भव निधि पारि उतारे ॥१॥ (६३१-६, सोरठि, मः ५)
संतन के कारज सगल सवारे ॥ (६३१-७, सोरठि, मः ५)
दीन दइआल कृपाल कृपा निधि पूरन खसम हमारे ॥ रहाउ ॥ (६३१-७, सोरठि, मः ५)
आउ बैठु आदरु सभ थाई ऊन न कतहूं बाता ॥ (६३१-८, सोरठि, मः ५)
भगति सिरपाउ दीओ जन अपुने प्रतापु नानक प्रभ जाता ॥२॥३०॥९४॥ (६३१-९, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ९ (६३१-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६३१-१०)
रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥ (६३१-११, सोरठि, मः ९)
स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥ (६३१-११, सोरठि, मः ९)
करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥ (६३१-११, सोरठि, मः ९)
कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥ (६३१-१२, सोरठि, मः ९)
आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥ (६३१-१३, सोरठि, मः ९)
कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥ (६३१-१३, सोरठि, मः ९)
सोरठि महला ९ ॥ (६३१-१४)
मन की मन ही माहि रही ॥ (६३१-१४, सोरठि, मः ९)
ना हरि भजे न तीर्थ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥ (६३१-१४, सोरठि, मः ९)
दारा मीत पूत रथ सम्पति धन पूरन सभ मही ॥ (६३१-१५, सोरठि, मः ९)
अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥ (६३१-१५, सोरठि, मः ९)
फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥ (६३१-१६, सोरठि, मः ९)
नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥ (६३१-१६, सोरठि, मः ९)
सोरठि महला ९ ॥ (६३१-१७)
मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥ (६३१-१७, सोरठि, मः ९)
पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ ॥ (६३१-१७, सोरठि, मः ९)
मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥ (६३१-१८, सोरठि, मः ९)

अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥१॥ (६३२-१, सोरठि, मः ९)
ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥ (६३२-१, सोरठि, मः ९)
घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥२॥ (६३२-२, सोरठि, मः ९)
बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥ (६३२-२, सोरठि, मः ९)
मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥३॥ (६३२-३, सोरठि, मः ९)
सोरठि महला ९ ॥ (६३२-४)
मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥ (६३२-४, सोरठि, मः ९)
जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥ (६३२-४, सोरठि, मः ९)
अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥ (६३२-५, सोरठि, मः ९)
दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥१॥ (६३२-५, सोरठि, मः ९)
जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥ (६३२-६, सोरठि, मः ९)
महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥ (६३२-७, सोरठि, मः ९)
अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥ (६३२-७, सोरठि, मः ९)
नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥ (६३२-८, सोरठि, मः ९)
सोरठि महला ९ ॥ (६३२-८)
प्रानी कउनु उपाउ करै ॥ (६३२-९, सोरठि, मः ९)
जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥ (६३२-९, सोरठि, मः ९)
कउनु कर्म बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥ (६३२-९, सोरठि, मः ९)
कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥१॥ (६३२-१०, सोरठि, मः ९)
कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥ (६३२-११, सोरठि, मः ९)
अउर धर्म ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥२॥ (६३२-११, सोरठि, मः ९)
सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥ (६३२-१२, सोरठि, मः ९)
सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥ (६३२-१२, सोरठि, मः ९)
सोरठि महला ९ ॥ (६३२-१३)
माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥ (६३२-१३, सोरठि, मः ९)
महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६३२-१३, सोरठि, मः ९)
सगल जनम भर्म ही भर्म खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥ (६३२-१४, सोरठि, मः ९)
बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥ (६३२-१५, सोरठि, मः ९)
साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥ (६३२-१५, सोरठि, मः ९)
जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥६॥ (६३२-१६, सोरठि, मः ९)
सोरठि महला ९ ॥ (६३२-१७)
माई मनु मेरो बसि नाहि ॥ (६३२-१७, सोरठि, मः ९)
निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ रहाउ ॥ (६३२-१७, सोरठि, मः ९)

बेद पुरान सिमृति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥ (६३२-१८, सोरठि, मः ६)
पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥१॥ (६३२-१८, सोरठि, मः ६)
मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥ (६३२-१६, सोरठि, मः ६)
घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥२॥ (६३२-१६, सोरठि, मः ६)

पन्ना ६३३

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥ (६३३-१, सोरठि, मः ६)
तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥३॥७॥ (६३३-२, सोरठि, मः ६)
सोरठि महला ६ ॥ (६३३-२)
रे नर इह साची जीअ धारि ॥ (६३३-२, सोरठि, मः ६)
सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥ (६३३-३, सोरठि, मः ६)
बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥ (६३३-३, सोरठि, मः ६)
तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥१॥ (६३३-४, सोरठि, मः ६)
अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥ (६३३-५, सोरठि, मः ६)
कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥ (६३३-५, सोरठि, मः ६)
सोरठि महला ६ ॥ (६३३-६)
इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥ (६३३-६, सोरठि, मः ६)
सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (६३३-६, सोरठि, मः ६)
दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥ (६३३-७, सोरठि, मः ६)
जब ही निर्धन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥ (६३३-७, सोरठि, मः ६)
कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥ (६३३-८, सोरठि, मः ६)
दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥२॥ (६३३-६, सोरठि, मः ६)
सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥ (६३३-६, सोरठि, मः ६)
नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥६॥ (६३३-१०, सोरठि, मः ६)
सोरठि महला ६ ॥ (६३३-११)
मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥ (६३३-११, सोरठि, मः ६)
कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ ॥ (६३३-११, सोरठि, मः ६)
साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥ (६३३-१२, सोरठि, मः ६)
करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥१॥ (६३३-१२, सोरठि, मः ६)
राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥ (६३३-१३, सोरठि, मः ६)
उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥२॥ (६३३-१३, सोरठि, मः ६)
रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥ (६३३-१४, सोरठि, मः ६)
कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥१०॥ (६३३-१५, सोरठि, मः ६)
सोरठि महला ६ ॥ (६३३-१५)
जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥ (६३३-१५, सोरठि, मः ६)

सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥ (६३३-१६, सोरठि, मः ६)
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥ (६३३-१६, सोरठि, मः ६)
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥ (६३३-१७, सोरठि, मः ६)
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥ (६३३-१७, सोरठि, मः ६)
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रह्मु निवासा ॥२॥ (६३३-१८, सोरठि, मः ६)
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥ (६३३-१९, सोरठि, मः ६)
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥ (६३३-१९, सोरठि, मः ६)

पन्ना ६३४

सोरठि महला ९ ॥ (६३४-१)
प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥ (६३४-१, सोरठि, मः ९)
अपने सुख सिउ ही जगु फाँधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (६३४-१, सोरठि, मः ९)
सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥ (६३४-२, सोरठि, मः ९)
बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥ (६३४-३, सोरठि, मः ९)
घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥ (६३४-३, सोरठि, मः ९)
जब ही हंस तजी इह काँइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥ (६३४-४, सोरठि, मः ९)
इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥ (६३४-४, सोरठि, मः ९)
अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥ (६३४-५, सोरठि, मः ९)
सोरठि महला १ घरु १ असटपदीआ चउतुकी (६३४-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६३४-७)
दुबिधा न पड़उ हरि बिनु होरु न पूजउ मड़ै मसाणि न जाई ॥ (६३४-८, सोरठि, मः १)
तृसना राचि न पर घरि जावा तृसना नामि बुझाई ॥ (६३४-८, सोरठि, मः १)
घर भीतरि घरु गुरू दिखाइआ सहजि रते मन भाई ॥ (६३४-९, सोरठि, मः १)
तू आपे दाना आपे बीना तू देवहि मति साई ॥१॥ (६३४-९, सोरठि, मः १)
मनु बैरागि रतउ बैरागी सबदि मनु बेधिआ मेरी माई ॥ (६३४-१०, सोरठि, मः १)
अंतरि जोति निरंतरि बाणी साचे साहिब सिउ लिव लाई ॥ रहाउ ॥ (६३४-१०, सोरठि, मः १)
असंख बैरागी कहहि बैराग सो बैरागी जि खसमै भावै ॥ (६३४-११, सोरठि, मः १)
हिरदै सबदि सदा भै रचिआ गुर की कार कमावै ॥ (६३४-१२, सोरठि, मः १)
एको चेतै मनूआ न डोलै धावतु वरजि रहावै ॥ (६३४-१२, सोरठि, मः १)
सहजे माता सदा रंगि राता साचे के गुण गावै ॥२॥ (६३४-१३, सोरठि, मः १)
मनूआ पउणु बिंदु सुखवासी नामि वसै सुख भाई ॥ (६३४-१३, सोरठि, मः १)
जिहबा नेत्र सोत्र सचि राते जलि बूझी तुझहि बुझाई ॥ (६३४-१४, सोरठि, मः १)
आस निरास रहै बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥ (६३४-१४, सोरठि, मः १)
भिखिआ नामि रजे संतोखी अमृतु सहजि पीआई ॥३॥ (६३४-१५, सोरठि, मः १)
दुबिधा विचि बैरागु न होवी जब लगु दूजी राई ॥ (६३४-१५, सोरठि, मः १)

सभु जगु तेरा तू एको दाता अवरु न दूजा भाई ॥ (६३४-१६, सोरठि, मः १)
मनमुखि जंत दुखि सदा निवासी गुरमुखि दे वडिआई ॥ (६३४-१६, सोरठि, मः १)
अपर अपार अगम्म अगोचर कहणै कीम न पाई ॥४॥ (६३४-१७, सोरठि, मः १)
सुन्न समाधि महा परमारथु तीनि भवण पति नामं ॥ (६३४-१७, सोरठि, मः १)
मसतकि लेखु जीआ जगि जोनी सिरि सिरि लेखु सहामं ॥ (६३४-१८, सोरठि, मः १)
कर्म सुकर्म कराए आपे आपे भगति दृड़ामं ॥ (६३४-१८, सोरठि, मः १)
मनि मुखि जूठि लहै भै मानं आपे गिआनु अगामं ॥५॥ (६३४-१९, सोरठि, मः १)

पन्ना ६३५

जिन चाखिआ सेई सादु जाणनि जिउ गुंगे मिठिआई ॥ (६३५-१, सोरठि, मः १)
अकथै का किआ कथीऐ भाई चालउ सदा रजाई ॥ (६३५-१, सोरठि, मः १)
गुरु दाता मेले ता मति होवै निगुरे मति न काई ॥ (६३५-२, सोरठि, मः १)
जिउ चलाए तिउ चालह भाई होर किआ को करे चतुराई ॥६॥ (६३५-२, सोरठि, मः १)
इकि भरमि भुलाए इकि भगती राते तेरा खेलु अपारा ॥ (६३५-३, सोरठि, मः १)
जितु तुधु लाए तेहा फलु पाइआ तू हुकमि चलावणहारा ॥ (६३५-३, सोरठि, मः १)
सेवा करी जे किछु होवै अपणा जीउ पिंडु तुमारा ॥ (६३५-४, सोरठि, मः १)
सतिगुरि मिलिऐ किरपा कीनी अमृत नामु अधारा ॥७॥ (६३५-४, सोरठि, मः १)
गगनंतरि वासिआ गुण परगासिआ गुण महि गिआन धिआनं ॥ (६३५-५, सोरठि, मः १)
नामु मनि भावै कहै कहावै ततो ततु वखानं ॥ (६३५-६, सोरठि, मः १)
सबदु गुर पीरा गहिर गम्भीरा बिनु सबदै जगु बउरानं ॥ (६३५-६, सोरठि, मः १)
पूरा बैरागी सहजि सुभागी सचु नानक मनु मानं ॥८॥१॥ (६३५-७, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ तितुकी ॥ (६३५-७)
आसा मनसा बंधनी भाई कर्म धर्म बंधकारी ॥ (६३५-८, सोरठि, मः १)
पापि पुंनि जगु जाइआ भाई बिनसै नामु विसारी ॥ (६३५-८, सोरठि, मः १)
इह माइआ जगि मोहणी भाई कर्म सभे वेकारी ॥१॥ (६३५-९, सोरठि, मः १)
सुणि पंडित करमा कारी ॥ (६३५-९, सोरठि, मः १)
जितु करमि सुखु ऊपजै भाई सु आतम ततु बीचारी ॥ रहाउ ॥ (६३५-१०, सोरठि, मः १)
सासतु बेदु बकै खड़ो भाई कर्म करहु संसारी ॥ (६३५-१०, सोरठि, मः १)
पाखंडि मैलु न चूकई भाई अंतरि मैलु विकारी ॥ (६३५-११, सोरठि, मः १)
इन बिधि डूबी माकुरी भाई ऊंडी सिर कै भारी ॥२॥ (६३५-११, सोरठि, मः १)
दुरमति घणी विगूती भाई दूजै भाइ खुआई ॥ (६३५-१२, सोरठि, मः १)
बिनु सतिगुर नामु न पाईऐ भाई बिनु नामै भरमु न जाई ॥ (६३५-१२, सोरठि, मः १)
सतिगुरु सेवे ता सुखु पाए भाई आवणु जाणु रहाई ॥३॥ (६३५-१३, सोरठि, मः १)
साचु सहजु गुर ते ऊपजै भाई मनु निरमलु साचि समाई ॥ (६३५-१३, सोरठि, मः १)
गुरु सेवे सो बूझै भाई गुर बिनु मगु न पाई ॥ (६३५-१४, सोरठि, मः १)

जिसु अंतरि लोभु कि कर्म कमावै भाई कूड़ु बोलि बिखु खाई ॥४॥ (६३५-१४, सोरठि, मः १)
पंडित दही विलोईऐ भाई विचहु निकलै तथु ॥ (६३५-१५, सोरठि, मः १)
जलु मथीऐ जलु देखीऐ भाई इहु जगु एहा वथु ॥ (६३५-१६, सोरठि, मः १)
गुर बिनु भरमि विगूचीऐ भाई घटि घटि देउ अलखु ॥५॥ (६३५-१६, सोरठि, मः १)
इहु जगु तागो सूत को भाई दह दिस बाधो माइ ॥ (६३५-१७, सोरठि, मः १)
बिनु गुर गाठि न छूटई भाई थाके कर्म कमाइ ॥ (६३५-१७, सोरठि, मः १)
इहु जगु भरमि भुलाइआ भाई कहणा किछू न जाइ ॥६॥ (६३५-१८, सोरठि, मः १)
गुर मिलिऐ भउ मनि वसै भाई भै मरणा सचु लेखु ॥ (६३५-१८, सोरठि, मः १)
मजनु दानु चंगिआईआ भाई दरगह नामु विसेखु ॥ (६३५-१९, सोरठि, मः १)

पन्ना ६३६

गुरु अंकसु जिनि नामु दृड़ाइआ भाई मनि वसिआ चूका भेखु ॥७॥ (६३६-१, सोरठि, मः १)
इहु तनु हाटु सराफ को भाई वखरु नामु अपारु ॥ (६३६-१, सोरठि, मः १)
इहु वखरु वापारी सो दृड़ै भाई गुर सबदि करे वीचारु ॥ (६३६-२, सोरठि, मः १)
धनु वापारी नानका भाई मेलि करे वापारु ॥८॥२॥ (६३६-२, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ ॥ (६३६-३)
जिन्ही सतिगुरु सेविआ पिआरे तिन् के साथ तरे ॥ (६३६-३, सोरठि, मः १)
तिन्हा ठाक न पाईऐ पिआरे अमृत रसन हरे ॥ (६३६-४, सोरठि, मः १)
बूडे भारे भै बिना पिआरे तारे नदरि करे ॥१॥ (६३६-४, सोरठि, मः १)
भी तूहै सालाहणा पिआरे भी तेरी सालाह ॥ (६३६-५, सोरठि, मः १)
विणु बोहिथ भै डुबीऐ पिआरे कंधी पाइ कहाह ॥१॥ रहाउ ॥ (६३६-५, सोरठि, मः १)
सालाही सालाहणा पिआरे दूजा अवरु न कोइ ॥ (६३६-६, सोरठि, मः १)
मेरे प्रभ सालाहनि से भले पिआरे सबदि रते रंगु होइ ॥ (६३६-६, सोरठि, मः १)
तिस की संगति जे मिलै पिआरे रसु लै ततु विलोइ ॥२॥ (६३६-७, सोरठि, मः १)
पति परवाना साच का पिआरे नामु सचा नीसाणु ॥ (६३६-७, सोरठि, मः १)
आइआ लिखि लै जावणा पिआरे हुकमी हुकमु पछाणु ॥ (६३६-८, सोरठि, मः १)
गुर बिनु हुकमु न बूझीऐ पिआरे साचे साचा ताणु ॥३॥ (६३६-८, सोरठि, मः १)
हुकमै अंदरि निंमिआ पिआरे हुकमै उदर मझारि ॥ (६३६-९, सोरठि, मः १)
हुकमै अंदरि जंमिआ पिआरे ऊधउ सिर कै भारि ॥ (६३६-९, सोरठि, मः १)
गुरमुखि दरगह जाणीऐ पिआरे चलै कारज सारि ॥४॥ (६३६-१०, सोरठि, मः १)
हुकमै अंदरि आइआ पिआरे हुकमे जादो जाइ ॥ (६३६-११, सोरठि, मः १)
हुकमे बंन्हि चलाईऐ पिआरे मनमुखि लहै सजाइ ॥ (६३६-११, सोरठि, मः १)
हुकमे सबदि पछाणीऐ पिआरे दरगह पैधा जाइ ॥५॥ (६३६-१२, सोरठि, मः १)
हुकमे गणत गणाईऐ पिआरे हुकमे हउमै दोइ ॥ (६३६-१२, सोरठि, मः १)
हुकमे भवै भवाईऐ पिआरे अवगणि मुठी रोइ ॥ (६३६-१३, सोरठि, मः १)

हुकमु सिञापै साह का पिआरे सचु मिलै वडिआई होइ ॥६॥ (६३६-१३, सोरठि, मः १)
आखणि अउखा आखीऐ पिआरे किउ सुणीऐ सचु नाउ ॥ (६३६-१४, सोरठि, मः १)
जिन्ही सो सालाहिआ पिआरे हउ तिन्ह बलिहारै जाउ ॥ (६३६-१४, सोरठि, मः १)
नाउ मिलै संतोखीआँ पिआरे नदरी मेलि मिलाउ ॥७॥ (६३६-१५, सोरठि, मः १)
काइआ कागदु जे थीऐ पिआरे मनु मसवाणी धारि ॥ (६३६-१६, सोरठि, मः १)
ललता लेखणि सच की पिआरे हरि गुण लिखहु वीचारि ॥ (६३६-१६, सोरठि, मः १)
धनु लेखारी नानका पिआरे साचु लिखै उरि धारि ॥८॥३॥ (६३६-१७, सोरठि, मः १)
सोरठि महला १ पहिला दुतुकी ॥ (६३६-१७)
तू गुणदातौ निरमलो भाई निरमलु ना मनु होइ ॥ (६३६-१८, सोरठि, मः १)
हम अपराधी निरगुणे भाई तुझ ही ते गुणु सोइ ॥१॥ (६३६-१८, सोरठि, मः १)
मेरे प्रीतमा तू करता करि वेखु ॥ (६३६-१९, सोरठि, मः १)
हउ पापी पाखंडीआ भाई मनि तनि नाम विसेखु ॥ रहाउ ॥ (६३६-१९, सोरठि, मः १)

पन्ना ६३७

बिखु माइआ चितु मोहिआ भाई चतुराई पति खोइ ॥ (६३७-१, सोरठि, मः १)
चित महि ठाकुरु सचि वसै भाई जे गुर गिआनु समोइ ॥२॥ (६३७-१, सोरठि, मः १)
रूड़ौ रूड़ौ आखीऐ भाई रूड़ौ लाल चलूलु ॥ (६३७-२, सोरठि, मः १)
जे मनु हरि सिउ बैरागीऐ भाई दरि घरि साचु अभूलु ॥३॥ (६३७-२, सोरठि, मः १)
पाताली आकासि तू भाई घरि घरि तू गुण गिआनु ॥ (६३७-३, सोरठि, मः १)
गुर मिलिऐ सुखु पाइआ भाई चूका मनहु गुमानु ॥४॥ (६३७-३, सोरठि, मः १)
जलि मलि काइआ माजीऐ भाई भी मैला तनु होइ ॥ (६३७-४, सोरठि, मः १)
गिआनि महा रसि नाईऐ भाई मनु तनु निरमलु होइ ॥५॥ (६३७-५, सोरठि, मः १)
देवी देवा पूजीऐ भाई किआ मागउ किआ देहि ॥ (६३७-५, सोरठि, मः १)
पाहणु नीरि पखालीऐ भाई जल महि बूडहि तेहि ॥६॥ (६३७-६, सोरठि, मः १)
गुर बिनु अलखु न लखीऐ भाई जगु बूडै पति खोइ ॥ (६३७-६, सोरठि, मः १)
मेरे ठाकुर हाथि वडाईआ भाई जै भावै तै देइ ॥७॥ (६३७-७, सोरठि, मः १)
बईअरि बोलै मीठुली भाई साचु कहै पिर भाइ ॥ (६३७-७, सोरठि, मः १)
बिरहै बेधी सचि वसी भाई अधिक रही हरि नाइ ॥८॥ (६३७-८, सोरठि, मः १)
सभु को आखै आपणा भाई गुर ते बुझै सुजानु ॥ (६३७-९, सोरठि, मः १)
जो बीधे से ऊबरे भाई सबदु सचा नीसानु ॥९॥ (६३७-९, सोरठि, मः १)
ईधनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रंचक पाइ ॥ (६३७-१०, सोरठि, मः १)
खिनु पलु नामु रिदै वसै भाई नानक मिलणु सुभाइ ॥१०॥४॥ (६३७-१०, सोरठि, मः १)
सोरठि महला ३ घरु १ तितुकी (६३७-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६३७-१२)
भगता दी सदा तू रखदा हरि जीउ धुरि तू रखदा आइआ ॥ (६३७-१३, सोरठि, मः ३)

प्रहिलाद जन तुधु राखि लए हरि जीउ हरणाखसु मारि पचाइआ ॥ (६३७-१३, सोरठि, मः ३)
गुरमुखा नो परतीति है हरि जीउ मनमुख भरमि भुलाइआ ॥१॥ (६३७-१४, सोरठि, मः ३)
हरि जी एह तेरी वडिआई ॥ (६३७-१५, सोरठि, मः ३)
भगता की पैज रखु तू सुआमी भगत तेरी सरणाई ॥ रहाउ ॥ (६३७-१५, सोरठि, मः ३)
भगता नो जमु जोहि न साकै कालु न नेड़ै जाई ॥ (६३७-१५, सोरठि, मः ३)
केवल राम नामु मनि वसिआ नामे ही मुकति पाई ॥ (६३७-१६, सोरठि, मः ३)
रिधि सिधि सभ भगता चरणी लागी गुर कै सहजि सुभाई ॥२॥ (६३७-१६, सोरठि, मः ३)
मनमुखा नो परतीति न आवी अंतरि लोभ सुआउ ॥ (६३७-१७, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि हिरदै सबदु न भेदिओ हरि नामि न लागा भाउ ॥ (६३७-१८, सोरठि, मः ३)
कूड़ कपट पाजु लहि जासी मनमुख फीका अलाउ ॥३॥ (६३७-१८, सोरठि, मः ३)
भगता विचि आपि वरतदा प्रभ जी भगती हू तू जाता ॥ (६३७-१९, सोरठि, मः ३)
माइआ मोह सभ लोक है तेरी तू एको पुरखु बिधाता ॥ (६३७-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६३८

हउमै मारि मनसा मनहि समाणी गुर कै सबदि पछाता ॥४॥ (६३८-१, सोरठि, मः ३)
अचिंत कम्म करहि प्रभ तिन के जिन हरि का नामु पिआरा ॥ (६३८-२, सोरठि, मः ३)
गुर परसादि सदा मनि वसिआ सभि काज सवारणहारा ॥ (६३८-२, सोरठि, मः ३)
ओना की रीस करे सु विगुचै जिन हरि प्रभु है रखवारा ॥५॥ (६३८-३, सोरठि, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे किनै न पाइआ मनमुखि भउकि मुए बिललाई ॥ (६३८-३, सोरठि, मः ३)
आवहि जावहि ठउर न पावहि दुख महि दुखि समाई ॥ (६३८-४, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि होवै सु अमृतु पीवै सहजे साचि समाई ॥६॥ (६३८-५, सोरठि, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे जनमु न छोडै जे अनेक कर्म करै अधिकाई ॥ (६३८-५, सोरठि, मः ३)
वेद पड़हि तै वाद वखाणहि बिनु हरि पति गवाई ॥ (६३८-६, सोरठि, मः ३)
सचा सतिगुरु साची जिसु बाणी भजि छूटहि गुर सरणाई ॥७॥ (६३८-६, सोरठि, मः ३)
जिन हरि मनि वसिआ से दरि साचे दरि साचै सचिआरा ॥ (६३८-७, सोरठि, मः ३)
ओना दी सोभा जुगि जुगि होई कोइ न मेटणहारा ॥ (६३८-८, सोरठि, मः ३)
नानक तिन कै सद बलिहारै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥८॥१॥ (६३८-८, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ३ दुतुकी ॥ (६३८-९)
निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ ॥ (६३८-९, सोरठि, मः ३)
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई राम नामि चितु लाइ ॥१॥ (६३८-१०, सोरठि, मः ३)
हरि जीउ आपे बखसि मिलाइ ॥ (६३८-१०, सोरठि, मः ३)
गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाइ ॥ रहाउ ॥ (६३८-११, सोरठि, मः ३)
कउण कउण अपराधी बखसिअनु पिआरे साचै सबदि वीचारि ॥ (६३८-११, सोरठि, मः ३)
भउजलु पारि उतारिअनु भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ॥२॥ (६३८-१२, सोरठि, मः ३)
मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारसु मेलि मिलाइ ॥ (६३८-१३, सोरठि, मः ३)

आपु छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाइ ॥३॥ (६३८-१३, सोरठि, मः ३)
हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ॥ (६३८-१४, सोरठि, मः ३)
नामु निधानु जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ॥४॥ (६३८-१४, सोरठि, मः ३)
गुर बिनु सहजु न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाइ ॥ (६३८-१५, सोरठि, मः ३)
सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आपु गवाइ ॥५॥ (६३८-१६, सोरठि, मः ३)
गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सचु सारु ॥ (६३८-१६, सोरठि, मः ३)
प्रेम पदारथु पाईऐ भाई सचु नामु आधारु ॥६॥ (६३८-१७, सोरठि, मः ३)
जो सतिगुरु सेवहि आपणा भाई तिन कै हउ लागउ पाइ ॥ (६३८-१७, सोरठि, मः ३)
जनमु सवारी आपणा भाई कुलु भी लई बखसाइ ॥७॥ (६३८-१८, सोरठि, मः ३)
सचु बाणी सचु सबदु है भाई गुर किरपा ते होइ ॥ (६३८-१८, सोरठि, मः ३)
नानक नामु हरि मनि वसै भाई तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥८॥२॥ (६३८-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६३९

सोरठि महला ३ ॥ (६३९-१)
हरि जीउ सबदे जापदा भाई पूरै भागि मिलाइ ॥ (६३९-१, सोरठि, मः ३)
सदा सुखु सोहागणी भाई अनदिनु रतीआ रंगु लाइ ॥१॥ (६३९-१, सोरठि, मः ३)
हरि जी तू आपे रंगु चड़ाइ ॥ (६३९-२, सोरठि, मः ३)
गावहु गावहु रंगि रातिहो भाई हरि सेती रंगु लाइ ॥ रहाउ ॥ (६३९-२, सोरठि, मः ३)
गुर की कार कमावणी भाई आपु छोडि चितु लाइ ॥ (६३९-३, सोरठि, मः ३)
सदा सहजु फिरि दुखु न लगई भाई हरि आपि वसै मनि आइ ॥२॥ (६३९-४, सोरठि, मः ३)
पिर का हुकमु न जाणई भाई सा कुलखणी कुनारि ॥ (६३९-४, सोरठि, मः ३)
मनहठि कार कमावणी भाई विणु नावै कूड़िआरि ॥३॥ (६३९-५, सोरठि, मः ३)
से गावहि जिन मसतकि भागु है भाई भाइ सचै बैरागु ॥ (६३९-५, सोरठि, मः ३)
अनदिनु राते गुण रवहि भाई निरभउ गुर लिव लागु ॥४॥ (६३९-६, सोरठि, मः ३)
सभना मारि जीवालदा भाई सो सेवहु दिनु राति ॥ (६३९-७, सोरठि, मः ३)
सो किउ मनहु विसारीऐ भाई जिस दी वडी है दाति ॥५॥ (६३९-७, सोरठि, मः ३)
मनमुखि मैली डुम्मणी भाई दरगह नाही थाउ ॥ (६३९-८, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि होवै त गुण रवै भाई मिलि प्रीतम साचि समाउ ॥६॥ (६३९-८, सोरठि, मः ३)
एतु जनमि हरि न चेतिओ भाई किआ मुहु देसी जाइ ॥ (६३९-९, सोरठि, मः ३)
किड़ी पवंदी मुहाइओनु भाई बिखिआ नो लोभाइ ॥७॥ (६३९-९, सोरठि, मः ३)
नामु समालहि सुखि वसहि भाई सदा सुखु साँति सरीर ॥ (६३९-१०, सोरठि, मः ३)
नानक नामु समालि तू भाई अपरम्पर गुणी गहीर ॥८॥३॥ (६३९-११, सोरठि, मः ३)
सोरठि महला ५ घरु १ असटपदीआ (६३९-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६३९-१२)
सभु जगु जिनहि उपाइआ भाई करण कारण समरथु ॥ (६३९-१३, सोरठि, मः ५)

जीउ पिंडु जिनि साजिआ भाई दे करि अपणी वथु ॥ (६३९-१३, सोरठि, मः ५)
किनि कहीऐ किउ देखीऐ भाई करता एकु अकथु ॥ (६३९-१४, सोरठि, मः ५)
गुरु गोविंदु सलाहीऐ भाई जिस ते जापै तथु ॥१॥ (६३९-१४, सोरठि, मः ५)
मेरे मन जपीऐ हरि भगवंता ॥ (६३९-१५, सोरठि, मः ५)
नाम दानु देइ जन अपने दूख दरद का हंता ॥ रहाउ ॥ (६३९-१५, सोरठि, मः ५)
जा कै घरि सभु किछु है भाई नउ निधि भरे भंडार ॥ (६३९-१६, सोरठि, मः ५)
तिस की कीमति ना पवै भाई ऊचा अगम अपार ॥ (६३९-१६, सोरठि, मः ५)
जीअ जंत प्रतिपालदा भाई नित नित करदा सार ॥ (६३९-१७, सोरठि, मः ५)
सतिगुरु पूरा भेटीऐ भाई सबदि मिलावणहार ॥२॥ (६३९-१७, सोरठि, मः ५)
सचे चरण सरेवीअहि भाई भ्रमु भउ होवै नासु ॥ (६३९-१८, सोरठि, मः ५)
मिलि संत सभा मनु माँजीऐ भाई हरि कै नामि निवासु ॥ (६३९-१८, सोरठि, मः ५)
मिटै अंधेरा अगिआनता भाई कमल होवै परगासु ॥ (६३९-१९, सोरठि, मः ५)
गुर बचनी सुखु ऊपजै भाई सभि फल सतिगुर पासि ॥३॥ (६३९-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६४०

मेरा तेरा छोडीऐ भाई होईऐ सभ की धूरि ॥ (६४०-१, सोरठि, मः ५)
घटि घटि ब्रह्मु पसारिआ भाई पेखै सुणै हजूरि ॥ (६४०-१, सोरठि, मः ५)
जितु दिनि विसरै पारब्रह्मु भाई तितु दिनि मरीऐ झूरि ॥ (६४०-२, सोरठि, मः ५)
करन करावन समरथो भाई सर्ब कला भरपूरि ॥४॥ (६४०-३, सोरठि, मः ५)
प्रेम पदारथु नामु है भाई माइआ मोह बिनासु ॥ (६४०-३, सोरठि, मः ५)
तिसु भावै ता मेलि लए भाई हिरदै नाम निवासु ॥ (६४०-४, सोरठि, मः ५)
गुरमुखि कमलु प्रगासीऐ भाई रिदै होवै परगासु ॥ (६४०-४, सोरठि, मः ५)
प्रगटु भइआ परतापु प्रभ भाई मउलिआ धरति अकासु ॥५॥ (६४०-५, सोरठि, मः ५)
गुरि पूरै संतोखिआ भाई अहिनिसि लागा भाउ ॥ (६४०-५, सोरठि, मः ५)
रसना रामु रवै सदा भाई साचा सादु सुआउ ॥ (६४०-६, सोरठि, मः ५)
करनी सुणि सुणि जीविआ भाई निहचलु पाइआ थाउ ॥ (६४०-६, सोरठि, मः ५)
जिसु परतीति न आवई भाई सो जीअड़ा जलि जाउ ॥६॥ (६४०-७, सोरठि, मः ५)
बहु गुण मेरे साहिबै भाई हउ तिस कै बलि जाउ ॥ (६४०-७, सोरठि, मः ५)
ओहु निरगुणीआरे पालदा भाई देइ निथावे थाउ ॥ (६४०-८, सोरठि, मः ५)
रिजकु सम्बाहे सासि सासि भाई गूड़ा जा का नाउ ॥ (६४०-९, सोरठि, मः ५)
जिसु गुरु साचा भेटीऐ भाई पूरा तिसु करमाउ ॥७॥ (६४०-९, सोरठि, मः ५)
तिसु बिनु घड़ी न जीवीऐ भाई सर्ब कला भरपूरि ॥ (६४०-१०, सोरठि, मः ५)
सासि गिरासि न विसरै भाई पेखउ सदा हजूरि ॥ (६४०-१०, सोरठि, मः ५)
साधू संगि मिलाइआ भाई सर्ब रहिआ भरपूरि ॥ (६४०-११, सोरठि, मः ५)
जिना प्रीति न लगीआ भाई से नित नित मरदे झूरि ॥८॥ (६४०-११, सोरठि, मः ५)

अंचलि लाइ तराइआ भाई भउजलु दुखु संसारु ॥ (६४०-१२, सोरठि, मः ५)
करि किरपा नदरि निहालिआ भाई कीतोनु अंगु अपारु ॥ (६४०-१२, सोरठि, मः ५)
मनु तनु सीतलु होइआ भाई भोजनु नाम अधारु ॥ (६४०-१३, सोरठि, मः ५)
नानक तिसु सरणागती भाई जि किलबिख काटणहारु ॥६॥१॥ (६४०-१३, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ ॥ (६४०-१४)
मात गरभ दुख सागरो पिआरे तह अपणा नामु जपाइआ ॥ (६४०-१४, सोरठि, मः ५)
बाहरि काढि बिखु पसरीआ पिआरे माइआ मोहु वधाइआ ॥ (६४०-१५, सोरठि, मः ५)
जिस नो कीतो करमु आपि पिआरे तिसु पूरा गुरू मिलाइआ ॥ (६४०-१६, सोरठि, मः ५)
सो आराधे सासि सासि पिआरे राम नाम लिव लाइआ ॥१॥ (६४०-१६, सोरठि, मः ५)
मनि तनि तेरी टेक है पिआरे मनि तनि तेरी टेक ॥ (६४०-१७, सोरठि, मः ५)
तुधु बिनु अवरु न करनहारु पिआरे अंतरजामी एक ॥ रहाउ ॥ (६४०-१७, सोरठि, मः ५)
कोटि जनम भ्रमि आइआ पिआरे अनिक जोनि दुखु पाइ ॥ (६४०-१८, सोरठि, मः ५)
साचा साहिबु विसरिआ पिआरे बहुती मिलै सजाइ ॥ (६४०-१९, सोरठि, मः ५)
जिन भेटै पूरा सतिगुरू पिआरे से लागे साचै नाइ ॥ (६४०-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६४१

तिना पिछै छुटीऐ पिआरे जो साची सरणाइ ॥२॥ (६४१-१, सोरठि, मः ५)
मिठा करि कै खाइआ पिआरे तिनि तनि कीता रोगु ॥ (६४१-१, सोरठि, मः ५)
कउड़ा होइ पतिसटिआ पिआरे तिस ते उपजिआ सोगु ॥ (६४१-२, सोरठि, मः ५)
भोग भुंचाइ भुलाइअनु पिआरे उतरै नही विजोगु ॥ (६४१-२, सोरठि, मः ५)
जो गुर मेलि उधारिआ पिआरे तिन धुरे पइआ संजोगु ॥३॥ (६४१-३, सोरठि, मः ५)
माइआ लालचि अटिआ पिआरे चिति न आवहि मूलि ॥ (६४१-३, सोरठि, मः ५)
जिन तू विसरहि पारब्रह्म सुआमी से तन होए धूड़ि ॥ (६४१-४, सोरठि, मः ५)
बिललाट करहि बहुतेरिआ पिआरे उतरै नाही सूलु ॥ (६४१-५, सोरठि, मः ५)
जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिन का रहिआ मूलु ॥४॥ (६४१-५, सोरठि, मः ५)
साकत संगु न कीजई पिआरे जे का पारि वसाइ ॥ (६४१-६, सोरठि, मः ५)
जिसु मिलिऐ हरि विसरै पिआरे सो मुहि कालै उठि जाइ ॥ (६४१-६, सोरठि, मः ५)
मनमुखि ढोई नह मिलै पिआरे दरगह मिलै सजाइ ॥ (६४१-७, सोरठि, मः ५)
जो गुर मेलि सवारिआ पिआरे तिना पूरी पाइ ॥५॥ (६४१-७, सोरठि, मः ५)
संजम सहस सिआणपा पिआरे इक न चली नालि ॥ (६४१-८, सोरठि, मः ५)
जो बेमुख गोबिंद ते पिआरे तिन कुलि लागै गालि ॥ (६४१-९, सोरठि, मः ५)
होदी वसतु न जातीआ पिआरे कूड़ु न चली नालि ॥ (६४१-९, सोरठि, मः ५)
सतिगुरु जिना मिलाइओनु पिआरे साचा नामु समालि ॥६॥ (६४१-१०, सोरठि, मः ५)
सतु संतोखु गिआनु धिआनु पिआरे जिस नो नदरि करे ॥ (६४१-१०, सोरठि, मः ५)
अनदिनु कीरतनु गुण रवै पिआरे अमृति पूर भरे ॥ (६४१-११, सोरठि, मः ५)

दुख सागरु तिन लंघिआ पिआरे भवजलु पारि परे ॥ (६४१-११, सोरठि, मः ५)
जिसु भावै तिसु मेलि लैहि पिआरे सेई सदा खरे ॥७॥ (६४१-१२, सोरठि, मः ५)
सम्म्रथ पुरखु दइआल देउ पिआरे भगता तिस का ताणु ॥ (६४१-१२, सोरठि, मः ५)
तिसु सरणाई ढहि पए पिआरे जि अंतरजामी जाणु ॥ (६४१-१३, सोरठि, मः ५)
हलतु पलतु सवारिआ पिआरे मसतकि सचु नीसाणु ॥ (६४१-१४, सोरठि, मः ५)
सो प्रभु कदे न वीसरै पिआरे नानक सद कुरबाणु ॥८॥२॥ (६४१-१४, सोरठि, मः ५)
सोरठि महला ५ घरु २ असटपदीआ (६४१-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६४१-१६)
पाठु पड़िओ अरु बेदु बीचारिओ निवलि भुअंगम साधे ॥ (६४१-१७, सोरठि, मः ५)
पंच जना सिउ संगु न छुटकिओ अधिक अहम्बुधि बाधे ॥१॥ (६४१-१७, सोरठि, मः ५)
पिआरे इन बिधि मिलणु न जाई मै कीए कर्म अनेका ॥ (६४१-१८, सोरठि, मः ५)
हारि परिओ सुआमी कै दुआरै दीजै बुधि बिबेका ॥ रहाउ ॥ (६४१-१८, सोरठि, मः ५)
मोनि भइओ करपाती रहिओ नगन फिरिओ बन माही ॥ (६४१-१९, सोरठि, मः ५)
तट तीर्थ सभ धरती भ्रमिओ दुबिधा छुटकै नाही ॥२॥ (६४१-१९, सोरठि, मः ५)

पन्ना ६४२

मन कामना तीर्थ जाइ बसिओ सिरि करवत धराए ॥ (६४२-१, सोरठि, मः ५)
मन की मैलु न उतरै इह बिधि जे लख जतन कराए ॥३॥ (६४२-२, सोरठि, मः ५)
कनिक कामिनी हैवर गैवर बहु बिधि दानु दातारा ॥ (६४२-२, सोरठि, मः ५)
अन्न बसत्र भूमि बहु अरपे नह मिलीऐ हरि दुआरा ॥४॥ (६४२-३, सोरठि, मः ५)
पूजा अरचा बंदन डंडउत खटु करमा रतु रहता ॥ (६४२-३, सोरठि, मः ५)
हउ हउ करत बंधन महि परिआ नह मिलीऐ इह जुगता ॥५॥ (६४२-४, सोरठि, मः ५)
जोग सिध आसण चउरासीह ए भी करि करि रहिआ ॥ (६४२-४, सोरठि, मः ५)
वडी आरजा फिरि फिरि जनमै हरि सिउ संगु न गहिआ ॥६॥ (६४२-५, सोरठि, मः ५)
राज लीला राजन की रचना करिआ हुकमु अफारा ॥ (६४२-६, सोरठि, मः ५)
सेज सोहनी चंदनु चोआ नरक घोर का दुआरा ॥७॥ (६४२-६, सोरठि, मः ५)
हरि कीरति साधसंगति है सिरि करमन कै करमा ॥ (६४२-७, सोरठि, मः ५)
कहु नानक तिसु भइओ परापति जिसु पुरब लिखे का लहना ॥८॥ (६४२-७, सोरठि, मः ५)
तेरो सेवकु इह रंगि माता ॥ (६४२-८, सोरठि, मः ५)
भइओ कृपालु दीन दुख भंजनु हरि हरि कीरतनि इहु मनु राता ॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥ (६४२-८)
रागु सोरठि वार महले ४ की (६४२-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६४२-१०)
सलोकु मः १ ॥ (६४२-११)
सोरठि सदा सुहावणी जे सचा मनि होइ ॥ (६४२-११, सोरठि, मः १)
दंदी मैलु न कतु मनि जीभै सचा सोइ ॥ (६४२-११, सोरठि, मः १)

ससुरै पेईऐ भै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ॥ (६४२-१२, सोरठि, मः १)
परहरि कपड़ु जे पिर मिलै खुसी रावै पिरु संगि ॥ (६४२-१२, सोरठि, मः १)
सदा सीगारी नाउ मनि कदे न मैलु पतंगु ॥ (६४२-१२, सोरठि, मः १)
देवर जेठ मुए दुखि ससू का डरु किसु ॥ (६४२-१३, सोरठि, मः १)
जे पिर भावै नानका करम मणी सभु सचु ॥१॥ (६४२-१३, सोरठि, मः १)
मः ४ ॥ (६४२-१४)
सोरठि तामि सुहावणी जा हरि नामु ढंढोले ॥ (६४२-१४, सोरठि, मः ४)
गुर पुरखु मनावै आपणा गुरमती हरि हरि बोले ॥ (६४२-१४, सोरठि, मः ४)
हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ (६४२-१५, सोरठि, मः ४)
हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ (६४२-१५, सोरठि, मः ४)
गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ (६४२-१६, सोरठि, मः ४)
जनु नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गोल गोले ॥२॥ (६४२-१७, सोरठि, मः ४)
पउड़ी ॥ (६४२-१७)
तू आपे सिसटि करता सिरजणहारिआ ॥ (६४२-१७, सोरठि, मः ४)
तुधु आपे खेलु रचाइ तुधु आपि सवारिआ ॥ (६४२-१८, सोरठि, मः ४)
दाता करता आपि आपि भोगणहारिआ ॥ (६४२-१८, सोरठि, मः ४)
सभु तेरा सबदु वरतै उपावणहारिआ ॥ (६४२-१९, सोरठि, मः ४)
हउ गुरमुखि सदा सलाही गुर कउ वारिआ ॥१॥ (६४२-१९, सोरठि, मः ४)

पन्ना ६४३

सलोकु मः ३ ॥ (६४३-१)
हउमै जलते जलि मुए भ्रमि आए दूजै भाइ ॥ (६४३-१, सोरठि, मः ३)
पूरै सतिगुरि राखि लीए आपणै पन्नै पाइ ॥ (६४३-१, सोरठि, मः ३)
इहु जगु जलता नदरी आइआ गुर कै सबदि सुभाइ ॥ (६४३-२, सोरठि, मः ३)
सबदि रते से सीतल भए नानक सचु कमाइ ॥१॥ (६४३-२, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४३-३)
सफलिओ सतिगुरु सेविआ धन्नु जनमु परवाणु ॥ (६४३-३, सोरठि, मः ३)
जिना सतिगुरु जीवदिआ मुइआ न विसरै सेई पुरख सुजाण ॥ (६४३-३, सोरठि, मः ३)
कुलु उधारे आपणा सो जनु होवै परवाणु ॥ (६४३-४, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि मुए जीवदे परवाणु हहि मनमुख जनमि मराहि ॥ (६४३-४, सोरठि, मः ३)
नानक मुए न आखीअहि जि गुर कै सबदि समाहि ॥२॥ (६४३-५, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४३-५)
हरि पुरखु निरंजनु सेवि हरि नामु धिआईऐ ॥ (६४३-६, सोरठि, मः ३)
सतसंगति साधू लगि हरि नामि समाईऐ ॥ (६४३-६, सोरठि, मः ३)
हरि तेरी वडी कार मै मूरख लाईऐ ॥ (६४३-६, सोरठि, मः ३)

हउ गोला लाला तुधु मै हुकमु फुरमाईऐ ॥ (६४३-७, सोरठि, मः ३)
हउ गुरमुखि कार कमावा जि गुरि समझाईऐ ॥२॥ (६४३-७, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४३-८)
पूरबि लिखिआ कमावणा जि करतै आपि लिखिआसु ॥ (६४३-८, सोरठि, मः ३)
मोह ठगउली पाईअनु विसरिआ गुणतासु ॥ (६४३-९, सोरठि, मः ३)
मतु जाणहु जगु जीवदा दूजै भाइ मुइआसु ॥ (६४३-९, सोरठि, मः ३)
जिनी गुरमुखि नामु न चेतिओ से बहणि न मिलनी पासि ॥ (६४३-९, सोरठि, मः ३)
दुखु लागा बहु अति घणा पुतु कलतु न साथि कोई जासि ॥ (६४३-१०, सोरठि, मः ३)
लोका विचि मुहु काला होआ अंदरि उभे सास ॥ (६४३-११, सोरठि, मः ३)
मनमुखा नो को न विसही चुकि गइआ वेसासु ॥ (६४३-११, सोरठि, मः ३)
नानक गुरमुखा नो सुखु अगला जिना अंतरि नाम निवासु ॥१॥ (६४३-१२, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४३-१२)
से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ ॥ (६४३-१२, सोरठि, मः ३)
सतिगुर का भाणा अनदिनु करहि से सचि रहे समाइ ॥ (६४३-१३, सोरठि, मः ३)
दूजै भाइ लगे सजण न आखीअहि जि अभिमानु करहि वेकार ॥ (६४३-१३, सोरठि, मः ३)
मनमुख आप सुआरथी कारजु न सकहि सवारि ॥ (६४३-१४, सोरठि, मः ३)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ (६४३-१५, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४३-१५)
तुधु आपे जगतु उपाइ कै आपि खेलु रचाइआ ॥ (६४३-१५, सोरठि, मः ३)
त्रै गुण आपि सिरजिआ माइआ मोहु वधाइआ ॥ (६४३-१६, सोरठि, मः ३)
विचि हउमै लेखा मंगीऐ फिरि आवै जाइआ ॥ (६४३-१६, सोरठि, मः ३)
जिना हरि आपि कृपा करे से गुरि समझाइआ ॥ (६४३-१७, सोरठि, मः ३)
बलिहारी गुर आपणे सदा सदा घुमाइआ ॥३॥ (६४३-१७, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४३-१८)
माइआ ममता मोहणी जिनि विणु दंता जगु खाइआ ॥ (६४३-१८, सोरठि, मः ३)
मनमुख खाधे गुरमुखि उबरे जिनी सचि नामि चितु लाइआ ॥ (६४३-१८, सोरठि, मः ३)
बिनु नावै जगु कमला फिरै गुरमुखि नदरी आइआ ॥ (६४३-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६४४

धंधा करतिआ निहफलु जनमु गवाइआ सुखदाता मनि न वसाइआ ॥ (६४४-१, सोरठि, मः ३)
नानक नामु तिना कउ मिलिआ जिन कउ धुरि लिखि पाइआ ॥१॥ (६४४-१, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४४-२)
घर ही महि अमृतु भरपूरु है मनमुखा सादु न पाइआ ॥ (६४४-२, सोरठि, मः ३)
जिउ कसतूरी मिरगु न जाणै भ्रमदा भरमि भुलाइआ ॥ (६४४-३, सोरठि, मः ३)
अमृतु तजि बिखु संग्रहै करतै आपि खुआइआ ॥ (६४४-३, सोरठि, मः ३)

गुरमुखि विरले सोझी पई तिना अंदरि ब्रह्मु दिखाइआ ॥ (६४४-४, सोरठि, मः ३)
तनु मनु सीतलु होइआ रसना हरि सादु आइआ ॥ (६४४-४, सोरठि, मः ३)
सबदे ही नाउ ऊपजै सबदे मेलि मिलाइआ ॥ (६४४-५, सोरठि, मः ३)
बिनु सबदै सभु जगु बउराना बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (६४४-५, सोरठि, मः ३)
अमृतु एको सबदु है नानक गुरमुखि पाइआ ॥२॥ (६४४-६, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४४-६)
सो हरि पुरखु अगम्मु है कहु कितु बिधि पाईऐ ॥ (६४४-७, सोरठि, मः ३)
तिसु रूपु न रेख अदृसटु कहु जन किउ धिआईऐ ॥ (६४४-७, सोरठि, मः ३)
निरंकारु निरंजनु हरि अगमु किआ कहि गुण गाईऐ ॥ (६४४-८, सोरठि, मः ३)
जिसु आपि बुझाए आपि सु हरि मारगि पाईऐ ॥ (६४४-८, सोरठि, मः ३)
गुरि पूरै वेखालिआ गुर सेवा पाईऐ ॥४॥ (६४४-९, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४४-९)
जिउ तनु कोलू पीड़ीऐ रतु न भोरी डेहि ॥ (६४४-९, सोरठि, मः ३)
जीउ वंञै चउ खन्नीऐ सचे संदड़ै नेहि ॥ (६४४-१०, सोरठि, मः ३)
नानक मेलु न चुकई राती अतै डेह ॥१॥ (६४४-१०, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४४-११)
सजणु मैडा रंगुला रंगु लाए मनु लेइ ॥ (६४४-११, सोरठि, मः ३)
जिउ माजीठै कपड़े रंगे भी पाहेहि ॥ (६४४-११, सोरठि, मः ३)
नानक रंगु न उतरै बिआ न लगै केह ॥२॥ (६४४-११, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४४-१२)
हरि आपि वरतै आपि हरि आपि बुलाइदा ॥ (६४४-१२, सोरठि, मः ३)
हरि आपे सृसटि सवारि सिरि धंधै लाइदा ॥ (६४४-१२, सोरठि, मः ३)
इकना भगती लाइ इकि आपि खुआइदा ॥ (६४४-१३, सोरठि, मः ३)
इकना मारगि पाइ इकि उझड़ि पाइदा ॥ (६४४-१३, सोरठि, मः ३)
जनु नानकु नामु धिआए गुरमुखि गुण गाइदा ॥५॥ (६४४-१४, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४४-१४)
सतिगुर की सेवा सफलु है जे को करे चितु लाइ ॥ (६४४-१५, सोरठि, मः ३)
मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥ (६४४-१५, सोरठि, मः ३)
बंधन तोड़ै मुकति होइ सचे रहै समाइ ॥ (६४४-१६, सोरठि, मः ३)
इसु जग महि नामु अलभु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ (६४४-१६, सोरठि, मः ३)
नानक जो गुरु सेवहि आपणा हउ तिन बलिहारै जाउ ॥१॥ (६४४-१७, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४४-१७)
मनमुख मन्नु अजितु है दूजै लगै जाइ ॥ (६४४-१७, सोरठि, मः ३)
तिस नो सुखु सुपनै नही दुखे दुखि विहाइ ॥ (६४४-१८, सोरठि, मः ३)
घरि घरि पड़ि पड़ि पंडित थके सिध समाधि लगाइ ॥ (६४४-१८, सोरठि, मः ३)

इहु मनु वसि न आवई थके कर्म कमाइ ॥ (६४४-१६, सोरठि, मः ३)
भेखधारी भेख करि थके अठिसठि तीर्थ नाइ ॥ (६४४-१६, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६४५

मन की सार न जाणनी हउमै भरमि भुलाइ ॥ (६४५-१, सोरठि, मः ३)
गुर परसादी भउ पइआ वडभागि वसिआ मनि आइ ॥ (६४५-१, सोरठि, मः ३)
भै पइऐ मनु वसि होआ हउमै सबदि जलाइ ॥ (६४५-२, सोरठि, मः ३)
सचि रते से निरमले जोती जोति मिलाइ ॥ (६४५-२, सोरठि, मः ३)
सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाइआ नानक सुखि समाइ ॥२॥ (६४५-३, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४५-३)
एह भूपति राणे रंग दिन चारि सुहावणा ॥ (६४५-३, सोरठि, मः ३)
एहु माइआ रंगु कसुम्भ खिन महि लहि जावणा ॥ (६४५-४, सोरठि, मः ३)
चलदिआ नालि न चलै सिरि पाप लै जावणा ॥ (६४५-४, सोरठि, मः ३)
जाँ पकड़ि चलाइआ कालि ताँ खरा डरावणा ॥ (६४५-५, सोरठि, मः ३)
ओह वेला हथि न आवै फिरि पछुतावणा ॥६॥ (६४५-५, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४५-६)
सतिगुर ते जो मुह फिरे से बधे दुख सहाहि ॥ (६४५-६, सोरठि, मः ३)
फिरि फिरि मिलणु न पाइनी जम्महि तै मरि जाहि ॥ (६४५-६, सोरठि, मः ३)
सहसा रोगु न छोडई दुख ही महि दुख पाहि ॥ (६४५-७, सोरठि, मः ३)
नानक नदरी बखसि लेहि सबदे मेलि मिलाहि ॥१॥ (६४५-७, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४५-८)
जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥ (६४५-८, सोरठि, मः ३)
जिउ छुटड़ि घरि घरि फिरै दुहचारणि बदनाउ ॥ (६४५-८, सोरठि, मः ३)
नानक गुरमुखि बखसीअहि से सतिगुर मेलि मिलाउ ॥२॥ (६४५-९, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४५-९)
जो सेवहि सति मुरारि से भवजल तरि गइआ ॥ (६४५-९, सोरठि, मः ३)
जो बोलहि हरि हरि नाउ तिन जमु छडि गइआ ॥ (६४५-१०, सोरठि, मः ३)
से दरगह पैधे जाहि जिना हरि जपि लइआ ॥ (६४५-१०, सोरठि, मः ३)
हरि सेवहि सेई पुरख जिना हरि तुधु मइआ ॥ (६४५-११, सोरठि, मः ३)
गुण गावा पिआरे नित गुरमुखि भ्रम भउ गइआ ॥७॥ (६४५-११, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४५-१२)
थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अमृतु सारु ॥ (६४५-१२, सोरठि, मः ३)
जितु खाधै मनु तृपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥ (६४५-१३, सोरठि, मः ३)
इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥ (६४५-१३, सोरठि, मः ३)
एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥ (६४५-१४, सोरठि, मः ३)

एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥ (६४५-१४, सोरठि, मः ३)
नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥१॥ (६४५-१५, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४५-१५)
जो धुरि मेले से मिलि रहे सतिगुर सिउ चितु लाइ ॥ (६४५-१५, सोरठि, मः ३)
आपि विछोड़ेनु से विछुड़े दूजै भाइ खुआइ ॥ (६४५-१६, सोरठि, मः ३)
नानक विणु करमा किआ पाईऐ पूरबि लिखिआ कमाइ ॥२॥ (६४५-१६, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४५-१७)
बहि सखीआ जसु गावहि गावणहारीआ ॥ (६४५-१७, सोरठि, मः ३)
हरि नामु सलाहिहु नित हरि कउ बलिहारीआ ॥ (६४५-१८, सोरठि, मः ३)
जिनी सुणि मंनिआ हरि नाउ तिना हउ वारीआ ॥ (६४५-१८, सोरठि, मः ३)
गुरमुखीआ हरि मेलु मिलावणहारीआ ॥ (६४५-१९, सोरठि, मः ३)
हउ बलि जावा दिनु राति गुर देखणहारीआ ॥८॥ (६४५-१९, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४५-१९)

पन्ना ६४६

विणु नावै सभि भरमदे नित जगि तोटा सैसारि ॥ (६४६-१, सोरठि, मः ३)
मनमुखि कर्म कमावणे हउमै अंधु गुबारु ॥ (६४६-१, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि अमृतु पीवणा नानक सबदु वीचारि ॥१॥ (६४६-२, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४६-२)
सहजे जागै सहजे सोवै ॥ (६४६-२, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि अनदिनु उसतति होवै ॥ (६४६-२, सोरठि, मः ३)
मनमुख भरमै सहसा होवै ॥ (६४६-३, सोरठि, मः ३)
अंतरि चिंता नीद न सोवै ॥ (६४६-३, सोरठि, मः ३)
गिआनी जागहि सवहि सुभाइ ॥ (६४६-३, सोरठि, मः ३)
नानक नामि रतिआ बलि जाउ ॥२॥ (६४६-४, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४६-४)
से हरि नामु धिआवहि जो हरि रतिआ ॥ (६४६-४, सोरठि, मः ३)
हरि इकु धिआवहि इकु इको हरि सतिआ ॥ (६४६-४, सोरठि, मः ३)
हरि इको वरतै इकु इको उतपतिआ ॥ (६४६-५, सोरठि, मः ३)
जो हरि नामु धिआवहि तिन डरु सटि घतिआ ॥ (६४६-५, सोरठि, मः ३)
गुरमती देवै आपि गुरमुखि हरि जपिआ ॥९॥ (६४६-६, सोरठि, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (६४६-६)
अंतरि गिआनु न आइओ जितु किछु सोझी पाइ ॥ (६४६-६, सोरठि, मः ३)
विणु डिठा किआ सालाहीऐ अंधा अंधु कमाइ ॥ (६४६-७, सोरठि, मः ३)
नानक सबदु पछाणीऐ नामु वसै मनि आइ ॥१॥ (६४६-७, सोरठि, मः ३)

मः ३ ॥ (६४६-८)
इका बाणी इकु गुरु इको सबदु वीचारि ॥ (६४६-८, सोरठि, मः ३)
सचा सउदा हटु सचु रतनी भरे भंडार ॥ (६४६-८, सोरठि, मः ३)
गुर किरपा ते पाईअनि जे देवै देवणहारु ॥ (६४६-९, सोरठि, मः ३)
सचा सउदा लाभु सदा खटिआ नामु अपारु ॥ (६४६-९, सोरठि, मः ३)
विखु विचि अमृतु प्रगटिआ करमि पीआवणहारु ॥ (६४६-१०, सोरठि, मः ३)
नानक सचु सलाहीऐ धन्नु सवारणहारु ॥२॥ (६४६-१०, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४६-११)
जिना अंदरि कूड़ु वरतै सचु न भावई ॥ (६४६-११, सोरठि, मः ३)
जे को बोलै सचु कूड़ा जलि जावई ॥ (६४६-११, सोरठि, मः ३)
कूड़िआरी रजै कूड़ि जिउ विसटा कागु खावई ॥ (६४६-१२, सोरठि, मः ३)
जिसु हरि होइ कृपालु सो नामु धिआवई ॥ (६४६-१२, सोरठि, मः ३)
हरि गुरमुखि नामु अराधि कूड़ु पापु लहि जावई ॥१०॥ (६४६-१३, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४६-१३)
सेखा चउचकिआ चउवाइआ एहु मनु इकतु घरि आणि ॥ (६४६-१३, सोरठि, मः ३)
एहड़ तेहड़ छडि तू गुर का सबदु पछाणु ॥ (६४६-१४, सोरठि, मः ३)
सतिगुर अगै ढहि पउ सभु किछु जाणै जाणु ॥ (६४६-१४, सोरठि, मः ३)
आसा मनसा जलाइ तू होइ रहु मिहमाणु ॥ (६४६-१५, सोरठि, मः ३)
सतिगुर कै भाणै भी चलहि ता दरगह पावहि माणु ॥ (६४६-१५, सोरठि, मः ३)
नानक जि नामु न चेतनी तिन धिगु पैनणु धिगु खाणु ॥१॥ (६४६-१६, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४६-१६)
हरि गुण तोटि न आवई कीमति कहणु न जाइ ॥ (६४६-१६, सोरठि, मः ३)
नानक गुरमुखि हरि गुण रवहि गुण महि रहै समाइ ॥२॥ (६४६-१७, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४६-१७)
हरि चोली देह सवारी कढि पैधी भगति करि ॥ (६४६-१८, सोरठि, मः ३)
हरि पाटु लगा अधिकाई बहु बहु बिधि भाति करि ॥ (६४६-१८, सोरठि, मः ३)
कोई बूझै बूझणहारा अंतरि बिबेकु करि ॥ (६४६-१९, सोरठि, मः ३)
सो बूझै एहु बिबेकु जिसु बुझाए आपि हरि ॥ (६४६-१९, सोरठि, मः ३)
जनु नानकु कहै विचारा गुरमुखि हरि सति हरि ॥११॥ (६४६-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६४७

सलोकु मः ३ ॥ (६४७-१)
परथाइ साखी महा पुरख बोलदे साझी सगल जहानै ॥ (६४७-१, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि होइ सु भउ करे आपणा आपु पछाणै ॥ (६४७-२, सोरठि, मः ३)
गुर परसादी जीवतु मरै ता मन ही ते मनु मानै ॥ (६४७-२, सोरठि, मः ३)

जिन कउ मन की परतीति नाही नानक से किआ कथहि गिआनै ॥१॥ (६४७-३, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४७-३)
गुरमुखि चितु न लाइओ अंति दुखु पहुता आइ ॥ (६४७-३, सोरठि, मः ३)
अंदरहु बाहरहु अंधिआँ सुधि न काई पाइ ॥ (६४७-४, सोरठि, मः ३)
पंडित तिन की बरकती सभु जगतु खाइ जो रते हरि नाइ ॥ (६४७-४, सोरठि, मः ३)
जिन गुर कै सबदि सलाहिआ हरि सिउ रहे समाइ ॥ (६४७-५, सोरठि, मः ३)
पंडित दूजै भाइ बरकति न होवई ना धनु पलै पाइ ॥ (६४७-६, सोरठि, मः ३)
पड़ि थके संतोखु न आइओ अनदिनु जलत विहाइ ॥ (६४७-६, सोरठि, मः ३)
कूक पूकार न चुकई ना संसा विचहु जाइ ॥ (६४७-७, सोरठि, मः ३)
नानक नाम विहूणिआ मुहि कालै उठि जाइ ॥२॥ (६४७-७, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४७-८)
हरि सजण मेलि पिआरे मिलि पंथु दसाई ॥ (६४७-८, सोरठि, मः ३)
जो हरि दसे मितु तिसु हउ बलि जाई ॥ (६४७-८, सोरठि, मः ३)
गुण साझी तिन सिउ करी हरि नामु धिआई ॥ (६४७-९, सोरठि, मः ३)
हरि सेवी पिआरा नित सेवि हरि सुखु पाई ॥ (६४७-९, सोरठि, मः ३)
बलिहारी सतिगुर तिसु जिनि सोझी पाई ॥१२॥ (६४७-९, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४७-१०)
पंडित मैलु न चुकई जे वेद पड़ै जुग चारि ॥ (६४७-१०, सोरठि, मः ३)
त्रै गुण माइआ मूलु है विचि हउमै नामु विसारि ॥ (६४७-११, सोरठि, मः ३)
पंडित भूले दूजै लागे माइआ कै वापारि ॥ (६४७-११, सोरठि, मः ३)
अंतरि तृसना भुख है मूरख भुखिआ मुए गवार ॥ (६४७-११, सोरठि, मः ३)
सतिगुरि सेविऐ सुखु पाइआ सचै सबदि वीचारि ॥ (६४७-१२, सोरठि, मः ३)
अंदरहु तृसना भुख गई सचै नाइ पिआरि ॥ (६४७-१२, सोरठि, मः ३)
नानक नामि रते सहजे रजे जिना हरि रखिआ उरि धारि ॥१॥ (६४७-१३, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४७-१४)
मनमुख हरि नामु न सेविआ दुखु लगा बहुता आइ ॥ (६४७-१४, सोरठि, मः ३)
अंतरि अगिआनु अंधेरु है सुधि न काई पाइ ॥ (६४७-१४, सोरठि, मः ३)
मनहठि सहजि न बीजिओ भुखा कि अगै खाइ ॥ (६४७-१५, सोरठि, मः ३)
नामु निधानु विसारिआ दूजै लगा जाइ ॥ (६४७-१५, सोरठि, मः ३)
नानक गुरमुखि मिलहि वडिआईआ जे आपे मेलि मिलाइ ॥२॥ (६४७-१६, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४७-१६)
हरि रसना हरि जसु गावै खरी सुहावणी ॥ (६४७-१६, सोरठि, मः ३)
जो मनि तनि मुखि हरि बोलै सा हरि भावणी ॥ (६४७-१७, सोरठि, मः ३)
जो गुरमुखि चखै सादु सा तृपतावणी ॥ (६४७-१७, सोरठि, मः ३)
गुण गावै पिआरे नित गुण गाइ गुणी समझावणी ॥ (६४७-१८, सोरठि, मः ३)

जिसु होवै आपि दइआलु सा सतिगुरू गुरू बुलावणी ॥१३॥ (६४७-१८, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४७-१९)
हसती सिरि जिउ अंकसु है अहरणि जिउ सिरु देइ ॥ (६४७-१९, सोरठि, मः ३)
मनु तनु आगै राखि कै ऊभी सेव करेइ ॥ (६४७-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६४८

इउ गुरमुखि आपु निवारीऐ सभु राजु सृसटि का लेइ ॥ (६४८-१, सोरठि, मः ३)
नानक गुरमुखि बुझीऐ जा आपे नदरि करेइ ॥१॥ (६४८-१, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४८-२)
जिन गुरमुखि नामु धिआइआ आए ते परवाणु ॥ (६४८-२, सोरठि, मः ३)
नानक कुल उधारहि आपणा दरगह पावहि माणु ॥२॥ (६४८-३, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४८-३)
गुरमुखि सखीआ सिख गुरू मेलाईआ ॥ (६४८-३, सोरठि, मः ३)
इकि सेवक गुर पासि इकि गुरि कारै लाईआ ॥ (६४८-४, सोरठि, मः ३)
जिना गुरु पिआरा मनि चिति तिना भाउ गुरू देवाईआ ॥ (६४८-४, सोरठि, मः ३)
गुर सिखा इको पिआरु गुर मिता पुता भाईआ ॥ (६४८-५, सोरठि, मः ३)
गुरु सतिगुरु बोलहु सभि गुरु आखि गुरू जीवाईआ ॥१४॥ (६४८-५, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४८-६)
नानक नामु न चेतनी अगिआनी अंधुले अवरे करम कमाहि ॥ (६४८-६, सोरठि, मः ३)
जम दरि बधे मारीअहि फिरि विसटा माहि पचाहि ॥१॥ (६४८-७, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४८-७)
नानक सतिगुरु सेवहि आपणा से जन सचे परवाणु ॥ (६४८-७, सोरठि, मः ३)
हरि कै नाइ समाइ रहे चूका आवणु जाणु ॥२॥ (६४८-८, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४८-८)
धनु सम्पै माइआ संचीऐ अंते दुखदाई ॥ (६४८-८, सोरठि, मः ३)
घर मंदर महल सवारीअहि किछु साथि न जाई ॥ (६४८-९, सोरठि, मः ३)
हर रंगी तुरे नित पालीअहि कितै कामि न आई ॥ (६४८-९, सोरठि, मः ३)
जन लावहु चितु हरि नाम सिउ अंति होइ सखाई ॥ (६४८-१०, सोरठि, मः ३)
जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि सुखु पाई ॥१५॥ (६४८-१०, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४८-११)
बिनु करमै नाउ न पाईऐ पूरै करमि पाइआ जाइ ॥ (६४८-११, सोरठि, मः ३)
नानक नदरि करे जे आपणी ता गुरमति मेलि मिलाइ ॥१॥ (६४८-१२, सोरठि, मः ३)
मः १ ॥ (६४८-१२)
इक दझहि इक दबीअहि इकना कुते खाहि ॥ (६४८-१२, सोरठि, मः १)
इकि पाणी विचि उसटीअहि इकि भी फिरि हसणि पाहि ॥ (६४८-१३, सोरठि, मः १)

नानक एव न जापई किथै जाइ समाहि ॥२॥ (६४८-१४, सोरठि, मः १)
पउड़ी ॥ (६४८-१४)
तिन का खाधा पैधा माइआ सभु पवितु है जो नामि हरि राते ॥ (६४८-१४, सोरठि, मः १)
तिन के घर मंदर महल सराई सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सेवक सिख अभिआगत जाइ वरसाते ॥ (६४८-१५, सोरठि, मः १)
तिन के तुरे जीन खुरगीर सभि पवितु हहि जिनी गुरमुखि सिख साध संत चड़ि जाते ॥ (६४८-१६, सोरठि, मः १)
तिन के कर्म धर्म कारज सभि पवितु हहि जो बोलहि हरि हरि राम नामु हरि साते ॥ (६४८-१७, सोरठि, मः १)
जिन कै पोतै पुन्नु है से गुरमुखि सिख गुरू पहि जाते ॥१६॥ (६४८-१८, सोरठि, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (६४८-१८)
नानक नावहु घुथिआ हलतु पलतु सभु जाइ ॥ (६४८-१८, सोरठि, मः ३)
जपु तपु संजमु सभु हिरि लइआ मुठी दूजै भाइ ॥ (६४८-१९, सोरठि, मः ३)
जम दरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥१॥ (६४८-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६४९

मः ३ ॥ (६४९-१)
संता नालि वैरु कमावदे दुसटा नालि मोहु पिआरु ॥ (६४९-१, सोरठि, मः ३)
अगै पिछै सुखु नही मरि जम्महि वारो वार ॥ (६४९-१, सोरठि, मः ३)
तृसना कदे न बुझई दुबिधा होइ खुआरु ॥ (६४९-२, सोरठि, मः ३)
मुह काले तिना निंदका तितु सचै दरबारि ॥ (६४९-२, सोरठि, मः ३)
नानक नाम विहूणिआ ना उरवारि न पारि ॥२॥ (६४९-३, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४९-३)
जो हरि नामु धिआइदे से हरि हरि नामि रते मन माही ॥ (६४९-३, सोरठि, मः ३)
जिना मनि चिति इकु अराधिआ तिना इकस बिनु दूजा को नाही ॥ (६४९-४, सोरठि, मः ३)
सेई पुरख हरि सेवदे जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाही ॥ (६४९-५, सोरठि, मः ३)
हरि के गुण नित गावदे हरि गुण गाइ गुणी समझाही ॥ (६४९-५, सोरठि, मः ३)
वडिआई वडी गुरमुखा गुर पूरै हरि नामि समाही ॥१७॥ (६४९-६, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४९-६)
सतिगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ (६४९-६, सोरठि, मः ३)
सबदि मरहि फिरि ना मरहि ता सेवा पवै सभ थाइ ॥ (६४९-७, सोरठि, मः ३)
पारस परसिऐ पारसु होवै सचि रहै लिव लाइ ॥ (६४९-८, सोरठि, मः ३)
जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै प्रभु आइ ॥ (६४९-८, सोरठि, मः ३)
नानक गणतै सेवकु ना मिलै जिसु बखसे सो पवै थाइ ॥१॥ (६४९-९, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४९-९)
महलु कुमहलु न जाणनी मूरख अपणै सुआइ ॥ (६४९-९, सोरठि, मः ३)

सबदु चीनहि ता महलु लहहि जोती जोति समाइ ॥ (६४६-१०, सोरठि, मः ३)
सदा सचे का भउ मनि वसै ता सभा सोझी पाइ ॥ (६४६-१०, सोरठि, मः ३)
सतिगुरु अपणै घरि वरतदा आपे लए मिलाइ ॥ (६४६-११, सोरठि, मः ३)
नानक सतिगुरि मिलिऐ सभ पूरी पई जिस नो किरपा करे रजाइ ॥२॥ (६४६-११, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४६-१२)
धन्नु धनु भाग तिना भगत जना जो हरि नामा हरि मुखि कहतिआ ॥ (६४६-१२, सोरठि, मः ३)
धनु धनु भाग तिना संत जना जो हरि जसु स्रवणी सुणतिआ ॥ (६४६-१३, सोरठि, मः ३)
धनु धनु भाग तिना साध जना हरि कीरतनु गाइ गुणी जन बणतिआ ॥ (६४६-१३, सोरठि, मः ३)
धनु धनु भाग तिना गुरमुखा जो गुरसिख लै मनु जिणतिआ ॥ (६४६-१४, सोरठि, मः ३)
सभ दू वडे भाग गुरसिखा के जो गुर चरणी सिख पड़तिआ ॥१८॥ (६४६-१५, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४६-१५)
ब्रह्मु बिंदै तिस दा ब्रहमतु रहै एक सबदि लिव लाइ ॥ (६४६-१५, सोरठि, मः ३)
नव निधी अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरहि जो हरि हिरदै सदा वसाइ ॥ (६४६-१६, सोरठि, मः ३)
बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ बुझहु करि वीचारु ॥ (६४६-१७, सोरठि, मः ३)
नानक पूरै भागि सतिगुरु मिलै सुखु पाए जुग चारि ॥१॥ (६४६-१७, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६४६-१८)
किआ गभरू किआ बिरधि है मनमुख तृसना भुख न जाइ ॥ (६४६-१८, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि सबदे रतिआ सीतलु होए आपु गवाइ ॥ (६४६-१९, सोरठि, मः ३)
अंदरु तृपति संतोखिआ फिरि भुख न लगै आइ ॥ (६४६-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६५०

नानक जि गुरमुखि करहि सो परवाणु है जो नामि रहे लिव लाइ ॥२॥ (६५०-१, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५०-१)
हउ बलिहारी तिन्न कंउ जो गुरमुखि सिखा ॥ (६५०-१, सोरठि, मः ३)
जो हरि नामु धिआइदे तिन दरसनु पिखा ॥ (६५०-२, सोरठि, मः ३)
सुणि कीरतनु हरि गुण रवा हरि जसु मनि लिखा ॥ (६५०-२, सोरठि, मः ३)
हरि नामु सलाही रंग सिउ सभि किलविख कृखा ॥ (६५०-३, सोरठि, मः ३)
धनु धन्नु सुहावा सो सरीरु थानु है जिथै मेरा गुरु धरे विखा ॥१९॥ (६५०-३, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६५०-४)
गुर बिनु गिआनु न होवई ना सुखु वसै मनि आइ ॥ (६५०-४, सोरठि, मः ३)
नानक नाम विहूणे मनमुखी जासनि जनमु गवाइ ॥१॥ (६५०-५, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६५०-५)
सिध साधिक नावै नो सभि खोजदे थकि रहे लिव लाइ ॥ (६५०-५, सोरठि, मः ३)
बिनु सतिगुर किनै न पाइओ गुरमुखि मिलै मिलाइ ॥ (६५०-६, सोरठि, मः ३)
बिनु नावै पैनणु खाणु सभु बादि है धिगु सिधी धिगु करमाति ॥ (६५०-६, सोरठि, मः ३)

सा सिधि सा करमाति है अचिंतु करे जिसु दाति ॥ (६५०-७, सोरठि, मः ३)
नानक गुरमुखि हरि नामु मनि वसै एहा सिधि एहा करमाति ॥२॥ (६५०-७, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५०-८)
हम ढाढी हरि प्रभ खसम के नित गावह हरि गुण छंता ॥ (६५०-८, सोरठि, मः ३)
हरि कीरतनु करह हरि जसु सुणह तिसु कवला कंता ॥ (६५०-९, सोरठि, मः ३)
हरि दाता सभु जगतु भिखारीआ मंगत जन जंता ॥ (६५०-९, सोरठि, मः ३)
हरि देवहु दानु दइआल होइ विचि पाथर क्रम जंता ॥ (६५०-१०, सोरठि, मः ३)
जन नानक नामु धिआइआ गुरमुखि धनवंता ॥२०॥ (६५०-१०, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६५०-११)
पड़णा गुड़णा संसार की कार है अंदरि त्रिसना विकारु ॥ (६५०-११, सोरठि, मः ३)
हउमै विचि सभि पड़ि थके दूजै भाइ खुआरु ॥ (६५०-१२, सोरठि, मः ३)
सो पड़िआ सो पंडितु बीना गुर सबदि करे वीचारु ॥ (६५०-१२, सोरठि, मः ३)
अंदरु खोजै ततु लहै पाए मोख दुआरु ॥ (६५०-१३, सोरठि, मः ३)
गुण निधानु हरि पाइआ सहजि करे वीचारु ॥ (६५०-१३, सोरठि, मः ३)
धन्नु वापारी नानका जिसु गुरमुखि नामु अधारु ॥१॥ (६५०-१४, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६५०-१४)
विणु मनु मारे कोइ न सिझई वेखहु को लिव लाइ ॥ (६५०-१४, सोरठि, मः ३)
भेखधारी तीरथी भवि थके ना एहु मनु मारिआ जाइ ॥ (६५०-१५, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि एहु मनु जीवतु मरै सचि रहै लिव लाइ ॥ (६५०-१५, सोरठि, मः ३)
नानक इसु मन की मलु इउ उतरै हउमै सबदि जलाइ ॥२॥ (६५०-१६, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५०-१६)
हरि हरि संत मिलहु मेरे भाई हरि नामु द्रिड़ावहु इक किनका ॥ (६५०-१७, सोरठि, मः ३)
हरि हरि सीगारु बनावहु हरि जन हरि कापड़ु पहिरहु खिम का ॥ (६५०-१७, सोरठि, मः ३)
ऐसा सीगारु मेरे प्रभ भावै हरि लागै पिआरा प्रिम का ॥ (६५०-१८, सोरठि, मः ३)
हरि हरि नामु बोलहु दिनु राती सभि किलबिख काटै इक पलका ॥ (६५०-१८, सोरठि, मः ३)
हरि हरि दइआलु होवै जिसु उपरि सो गुरमुखि हरि जपि जिणका ॥२१॥ (६५०-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६५१

सलोकु मः ३ ॥ (६५१-१)
जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ (६५१-१, सोरठि, मः ३)
खन्नली धोती उजली न होवई जे सउ धोवणि पाहु ॥ (६५१-२, सोरठि, मः ३)
गुर परसादी जीवतु मरै उलटी होवै मति बदलाहु ॥ (६५१-२, सोरठि, मः ३)
नानक मैलु न लगई ना फिरि जोनी पाहु ॥१॥ (६५१-३, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६५१-३)
चहु जुगी कलि काली काँढी इक उतम पदवी इसु जुग माहि ॥ (६५१-३, सोरठि, मः ३)

गुरमुखि हरि कीरति फलु पाईऐ जिन कउ हरि लिखि पाहि ॥ (६५१-४, सोरठि, मः ३)
नानक गुर परसादी अनदिनु भगति हरि उचरहि हरि भगती माहि समाहि ॥२॥ (६५१-४, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५१-५)
हरि हरि मेलि साध जन संगति मुखि बोली हरि हरि भली बाणि ॥ (६५१-५, सोरठि, मः ३)
हरि गुण गावा हरि नित चवा गुरमती हरि रंगु सदा माणि ॥ (६५१-६, सोरठि, मः ३)
हरि जपि जपि अउखध खाधिआ सभि रोग गवाते दुखा घाणि ॥ (६५१-७, सोरठि, मः ३)
जिना सासि गिरासि न विसरै से हरि जन पूरे सही जाणि ॥ (६५१-७, सोरठि, मः ३)
जो गुरमुखि हरि आराधदे तिन चूकी जम की जगत काणि ॥२२॥ (६५१-८, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६५१-९)
रे जन उथारै दबिओहु सुतिआ गई विहाइ ॥ (६५१-९, सोरठि, मः ३)
सतिगुर का सबदु सुणि न जागिओ अंतरि न उपजिओ चाउ ॥ (६५१-९, सोरठि, मः ३)
सरीरु जलउ गुण बाहरा जो गुर कार न कमाइ ॥ (६५१-१०, सोरठि, मः ३)
जगतु जलंदा डिठु मै हउमै दूजै भाइ ॥ (६५१-१०, सोरठि, मः ३)
नानक गुर सरणाई उबरे सचु मनि सबदि धिआइ ॥१॥ (६५१-११, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६५१-११)
सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥ (६५१-११, सोरठि, मः ३)
पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ (६५१-१२, सोरठि, मः ३)
सेज सुहावी सदा पिरु रावै हरि वरु पाइआ नारि ॥ (६५१-१२, सोरठि, मः ३)
ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ (६५१-१३, सोरठि, मः ३)
नानक हरि प्रभ मेलि लई गुर कै हेति पिआरि ॥२॥ (६५१-१३, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५१-१४)
जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥ (६५१-१४, सोरठि, मः ३)
हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ (६५१-१४, सोरठि, मः ३)
ओहि घरि घरि फिरहि कुसुध मनि जिउ धरकट नारी ॥ (६५१-१५, सोरठि, मः ३)
वडभागी संगति मिले गुरमुखि सवारी ॥ (६५१-१६, सोरठि, मः ३)
हरि मेलहु सतिगुर दइआ करि गुर कउ बलिहारी ॥२३॥ (६५१-१६, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६५१-१७)
गुर सेवा ते सुखु ऊपजै फिरि दुखु न लगै आइ ॥ (६५१-१७, सोरठि, मः ३)
जम्मणु मरणा मिटि गइआ कालै का किछु न बसाइ ॥ (६५१-१७, सोरठि, मः ३)
हरि सेती मनु रवि रहिआ सचे रहिआ समाइ ॥ (६५१-१८, सोरठि, मः ३)
नानक हउ बलिहारी तिन्न कउ जो चलनि सतिगुर भाइ ॥१॥ (६५१-१८, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६५१-१९)
बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥ (६५१-१९, सोरठि, मः ३)

पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥ (६५२-१, सोरठि, मः ३)
सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥२॥ (६५२-१, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५२-२)
हरि हरि अपणी दइआ करि हरि बोली बैणी ॥ (६५२-२, सोरठि, मः ३)
हरि नामु धिआई हरि उचरा हरि लाहा लैणी ॥ (६५२-२, सोरठि, मः ३)
जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन हउ कुरबैणी ॥ (६५२-३, सोरठि, मः ३)
जिना सतिगुरु मेरा पिआरा अराधिआ तिन जन देखा नैणी ॥ (६५२-३, सोरठि, मः ३)
हउ वारिआ अपणे गुरू कउ जिनि मेरा हरि सजणु मेलिआ सैणी ॥२४॥ (६५२-४, सोरठि, मः ३)
सलोकु मः ४ ॥ (६५२-५)
हरि दासन सिउ प्रीति है हरि दासन को मितु ॥ (६५२-५, सोरठि, मः ४)
हरि दासन कै वसि है जिउ जंती कै वसि जंतु ॥ (६५२-५, सोरठि, मः ४)
हरि के दास हरि धिआइदे करि प्रीतम सिउ नेहु ॥ (६५२-६, सोरठि, मः ४)
किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ (६५२-६, सोरठि, मः ४)
जो हरि दासन की उसतति है सा हरि की वडिआई ॥ (६५२-७, सोरठि, मः ४)
हरि आपणी वडिआई भावदी जन का जैकारु कराई ॥ (६५२-७, सोरठि, मः ४)
सो हरि जनु नामु धिआइदा हरि हरि जनु इक समानि ॥ (६५२-८, सोरठि, मः ४)
जनु नानकु हरि का दासु है हरि पैज रखहु भगवान ॥१॥ (६५२-८, सोरठि, मः ४)
मः ४ ॥ (६५२-९)
नानक प्रीति लाई तिनि साचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ (६५२-९, सोरठि, मः ४)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥२॥ (६५२-१०, सोरठि, मः ४)
पउड़ी ॥ (६५२-१०)
रैणि दिनसु परभाति तूहै ही गावणा ॥ (६५२-१०, सोरठि, मः ४)
जीअ जंत सरबत नाउ तेरा धिआवणा ॥ (६५२-११, सोरठि, मः ४)
तू दाता दातारु तेरा दिता खावणा ॥ (६५२-११, सोरठि, मः ४)
भगत जना कै संगि पाप गवावणा ॥ (६५२-११, सोरठि, मः ४)
जन नानक सद बलिहारै बलि बलि जावणा ॥२५॥ (६५२-१२, सोरठि, मः ४)
सलोकु मः ४ ॥ (६५२-१२)
अंतरि अगिआनु भई मति मधिम सतिगुर की परतीति नाही ॥ (६५२-१२, सोरठि, मः ४)
अंदरि कपटु सभु कपटो करि जाणै कपटे खपहि खपाही ॥ (६५२-१३, सोरठि, मः ४)
सतिगुर का भाणा चिति न आवै आपणै सुआइ फिराही ॥ (६५२-१४, सोरठि, मः ४)
किरपा करे जे आपणी ता नानक सबदि समाही ॥१॥ (६५२-१४, सोरठि, मः ४)
मः ४ ॥ (६५२-१५)
मनमुख माइआ मोहि विआपे दूजै भाइ मनूआ थिरु नाहि ॥ (६५२-१५, सोरठि, मः ४)

अनदिनु जलत रहहि दिनु राती हउमै खपहि खपाहि ॥ (६५२-१६, सोरठि, मः ४)
अंतरि लोभु महा गुबारा तिन कै निकटि न कोई जाहि ॥ (६५२-१६, सोरठि, मः ४)
ओइ आपि दुखी सुखु कबहू न पावहि जनमि मरहि मरि जाहि ॥ (६५२-१७, सोरठि, मः ४)
नानक बखसि लए प्रभु साचा जि गुर चरनी चितु लाहि ॥२॥ (६५२-१७, सोरठि, मः ४)
पउड़ी ॥ (६५२-१८)
संत भगत परवाणु जो प्रभि भाइआ ॥ (६५२-१८, सोरठि, मः ४)
सेई बिचखण जंत जिनी हरि धिआइआ ॥ (६५२-१८, सोरठि, मः ४)
अमृतु नामु निधानु भोजनु खाइआ ॥ (६५२-१९, सोरठि, मः ४)
संत जना की धूरि मसतकि लाइआ ॥ (६५२-१९, सोरठि, मः ४)

पन्ना ६५३

नानक भए पुनीत हरि तीरथि नाइआ ॥२६॥ (६५३-१, सोरठि, मः ४)
सलोकु मः ४ ॥ (६५३-१)
गुरमुखि अंतरि सांति है मनि तनि नामि समाइ ॥ (६५३-१, सोरठि, मः ४)
नामो चितवै नामु पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ (६५३-२, सोरठि, मः ४)
नामु पदारथु पाइआ चिंता गई बिलाइ ॥ (६५३-२, सोरठि, मः ४)
सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तिसना भुख सभ जाइ ॥ (६५३-३, सोरठि, मः ४)
नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥१॥ (६५३-३, सोरठि, मः ४)
मः ४ ॥ (६५३-४)
सतिगुर पुरखि जि मारिआ भ्रमि भ्रमिआ घरु छोडि गइआ ॥ (६५३-४, सोरठि, मः ४)
ओसु पिछै वजै फकड़ी मुहु काला आगै भइआ ॥ (६५३-४, सोरठि, मः ४)
ओसु अरलु बरलु मुहहु निकलै नित झगू सुटदा मुआ ॥ (६५३-५, सोरठि, मः ४)
किआ होवै किसै ही दै कीतै जाँ धुरि किरतु ओस दा एहो जेहा पइआ ॥ (६५३-५, सोरठि, मः ४)
जिथै ओहु जाइ तिथै ओहु झूठा कूड़ु बोले किसै न भावै ॥ (६५३-६, सोरठि, मः ४)
वेखहु भाई वडिआई हरि संतहु सुआमी अपुने की जैसा कोई करै तैसा कोई पावै ॥ (६५३-७, सोरठि, मः ४)
एहु ब्रह्म बीचारु होवै दरि साचै अगो दे जनु नानकु आखि सुणावै ॥२॥ (६५३-७, सोरठि, मः ४)
पउड़ी ॥ (६५३-८)
गुरि सचै बधा थेहु रखवाले गुरि दिते ॥ (६५३-८, सोरठि, मः ४)
पूरन होई आस गुर चरणी मन रते ॥ (६५३-९, सोरठि, मः ४)
गुरि कृपालि बेअंति अवगुण सभि हते ॥ (६५३-९, सोरठि, मः ४)
गुरि अपणी किरपा धारि अपणे करि लिते ॥ (६५३-९, सोरठि, मः ४)
नानक सद बलिहार जिसु गुर के गुण इते ॥२७॥ (६५३-१०, सोरठि, मः ४)
सलोक मः १ ॥ (६५३-११)
ता की रजाइ लेखिआ पाइ अब किआ कीजै पाँडे ॥ (६५३-११, सोरठि, मः १)
हुकमु होआ हासलु तदे होइ निबड़िआ हंढहि जीअ कमाँदे ॥१॥ (६५३-११, सोरठि, मः १)

मः २ ॥ (६५३-१२)
नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥ (६५३-१२, सोरठि, मः २)
जहा दाणे तहाँ खाणे नानका सचु हे ॥२॥ (६५३-१२, सोरठि, मः २)
पउड़ी ॥ (६५३-१३)
सभे गला आपि थाटि बहालीओनु ॥ (६५३-१३, सोरठि, मः २)
आपे रचनु रचाइ आपे ही घालिओनु ॥ (६५३-१३, सोरठि, मः २)
आपे जंत उपाइ आपि प्रतिपालिओनु ॥ (६५३-१४, सोरठि, मः २)
दास रखे कंठि लाइ नदरि निहालिओनु ॥ (६५३-१४, सोरठि, मः २)
नानक भगता सदा अनंदु भाउ दूजा जालिओनु ॥२८॥ (६५३-१५, सोरठि, मः २)
सलोकु मः ३ ॥ (६५३-१५)
ए मन हरि जी धिआइ तू इक मनि इक चिति भाइ ॥ (६५३-१५, सोरठि, मः ३)
हरि कीआ सदा सदा वडिआईआ देइ न पछोताइ ॥ (६५३-१६, सोरठि, मः ३)
हउ हरि कै सद बलिहारणै जितु सेविऐ सुखु पाइ ॥ (६५३-१६, सोरठि, मः ३)
नानक गुरमुखि मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥१॥ (६५३-१७, सोरठि, मः ३)
मः ३ ॥ (६५३-१७)
आपे सेवा लाइअनु आपे बखस करेइ ॥ (६५३-१८, सोरठि, मः ३)
सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥ (६५३-१८, सोरठि, मः ३)
नानक नामु धिआइनि तिन निज घरि वासु है जुगु जुगु सोभा होइ ॥२॥ (६५३-१८, सोरठि, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५३-१९)
तू करण कारण समरथु हहि करते मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥ (६५३-१९, सोरठि, मः ३)

पन्ना ६५४

तुधु आपे सिसटि सिरजीआ आपे फुनि गोई ॥ (६५४-१, सोरठि, मः ३)
सभु इको सबदु वरतदा जो करे सु होई ॥ (६५४-१, सोरठि, मः ३)
वडिआई गुरमुखि देइ प्रभु हरि पावै सोई ॥ (६५४-२, सोरठि, मः ३)
गुरमुखि नानक आराधिआ सभि आखहु धन्नु धन्नु धन्नु गुरु सोई ॥२९॥१॥ सुधु (६५४-२, सोरठि, मः ३)
रागु सोरठि बाणी भगत कबीर जी की घरु १ (६५४-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६५४-४)
बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥ (६५४-५, सोरठि, भगत कबीर जी)
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥१॥ (६५४-५, सोरठि, भगत कबीर जी)
मन रे संसारु अंध गहेरा ॥ (६५४-६, सोरठि, भगत कबीर जी)
चहु दिस पसरिओ है जम जेवरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५४-६, सोरठि, भगत कबीर जी)
कबित पड़े पड़ि कबिता मूए कपड़ केदारै जाई ॥ (६५४-६, सोरठि, भगत कबीर जी)
जटा धारि धारि जोगी मूए तेरी गति इनहि न पाई ॥२॥ (६५४-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
दरबु संचि संचि राजे मूए गडि ले कंचन भारी ॥ (६५४-७, सोरठि, भगत कबीर जी)

बेद पड़े पड़ि पंडित मूए रूपु देखि देखि नारी ॥३॥ (६५४-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
राम नाम बिनु सभै बिगूते देखहु निरखि सरीरा ॥ (६५४-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
हरि के नाम बिनु किनि गति पाई कहि उपदेसु कबीरा ॥४॥१॥ (६५४-९, सोरठि, भगत कबीर जी)
जब जरीऐ तब होइ भसम तनु रहै किरम दल खाई ॥ (६५४-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
काची गागरि नीरु परतु है इआ तन की इहै बडाई ॥१॥ (६५४-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
काहे भईआ फिरतौ फूलिआ फूलिआ ॥ (६५४-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
जब दस मास उरध मुख रहता सो दिनु कैसे भूलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६५४-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
जिउ मधु माखी तिउ सठोरि रसु जोरि जोरि धनु कीआ ॥ (६५४-१२, सोरठि, भगत कबीर जी)
मरती बार लेहु लेहु करीऐ भूतु रहन किउ दीआ ॥२॥ (६५४-१२, सोरठि, भगत कबीर जी)
देहुरी लउ बरी नारि संगि भई आगै सजन सुहेला ॥ (६५४-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
मरघट लउ सभु लोगु कुटम्बु भइओ आगै हंसु अकेला ॥३॥ (६५४-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)
कहतु कबीर सुनहु रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ (६५४-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)
झूठी माइआ आपु बंधाइआ जिउ नलनी भ्रमि सूआ ॥४॥२॥ (६५४-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
बेद पुरान सभै मत सुनि कै करी करम की आसा ॥ (६५४-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
काल ग्रसत सभ लोग सिआने उठि पंडित पै चले निरासा ॥१॥ (६५४-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
मन रे सरिओ न एकै काजा ॥ (६५४-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
भजिओ न रघुपति राजा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५४-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
बन खंड जाइ जोगु तपु कीनो कंद मूलु चुनि खाइआ ॥ (६५४-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
नादी बेदी सबदी मोनी जम के पटै लिखाइआ ॥२॥ (६५४-१८, सोरठि, भगत कबीर जी)
भगति नारदी रिदै न आई काछि कूछि तनु दीना ॥ (६५४-१८, सोरठि, भगत कबीर जी)
राग रागनी डिम्भ होइ बैठा उनि हरि पहि किआ लीना ॥३॥ (६५४-१९, सोरठि, भगत कबीर जी)
परिओ कालु सभै जग ऊपर माहि लिखे भ्रम गिआनी ॥ (६५४-१९, सोरठि, भगत कबीर जी)

पन्ना ६५५

कहु कबीर जन भए खालसे प्रेम भगति जिह जानी ॥४॥३॥ (६५५-१, सोरठि, भगत कबीर जी)
घरु २ ॥ (६५५-२)
दुइ दुइ लोचन पेखा ॥ (६५५-२, सोरठि, भगत कबीर जी)
हउ हरि बिनु अउरु न देखा ॥ (६५५-२, सोरठि, भगत कबीर जी)
नैन रहे रंगु लाई ॥ (६५५-२, सोरठि, भगत कबीर जी)
अब बे गल कहनु न जाई ॥१॥ (६५५-२, सोरठि, भगत कबीर जी)
हमरा भरमु गइआ भउ भागा ॥ (६५५-३, सोरठि, भगत कबीर जी)
जब राम नाम चितु लागा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५५-३, सोरठि, भगत कबीर जी)
बाजीगर डंक बजाई ॥ (६५५-३, सोरठि, भगत कबीर जी)
सभ खलक तमासे आई ॥ (६५५-४, सोरठि, भगत कबीर जी)
बाजीगर स्वाँगु सकेला ॥ (६५५-४, सोरठि, भगत कबीर जी)

अपने रंग रवै अकेला ॥२॥ (६५५-४, सोरठि, भगत कबीर जी)
कथनी कहि भरमु न जाई ॥ (६५५-४, सोरठि, भगत कबीर जी)
सभ कथि कथि रही लुकाई ॥ (६५५-५, सोरठि, भगत कबीर जी)
जा कउ गुरमुखि आपि बुझाई ॥ (६५५-५, सोरठि, भगत कबीर जी)
ता के हिरदै रहिआ समाई ॥३॥ (६५५-५, सोरठि, भगत कबीर जी)
गुर किंचत किरपा कीनी ॥ (६५५-६, सोरठि, भगत कबीर जी)
सभु तनु मनु देह हरि लीनी ॥ (६५५-६, सोरठि, भगत कबीर जी)
कहि कबीर रंगि राता ॥ (६५५-६, सोरठि, भगत कबीर जी)
मिलिओ जगजीवन दाता ॥४॥४॥ (६५५-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
जा के निगम दूध के ठाटा ॥ (६५५-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
समुंदु बिलोवन कउ माटा ॥ (६५५-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
ता की होहु बिलोवनहारी ॥ (६५५-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
किउ मेटै गो छाछि तुहारी ॥१॥ (६५५-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
चेरी तू रामु न करसि भतारा ॥ (६५५-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
जगजीवन प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५५-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
तेरे गलहि तउकु पग बेरी ॥ (६५५-९, सोरठि, भगत कबीर जी)
तू घर घर रमईऐ फेरी ॥ (६५५-९, सोरठि, भगत कबीर जी)
तू अजहु न चेतसि चेरी ॥ (६५५-९, सोरठि, भगत कबीर जी)
तू जमि बपुरी है हेरी ॥२॥ (६५५-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
प्रभ करन करावनहारी ॥ (६५५-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
किआ चेरी हाथ बिचारी ॥ (६५५-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
सोई सोई जागी ॥ (६५५-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
जितु लाई तितु लागी ॥३॥ (६५५-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
चेरी तै सुमति कहाँ ते पाई ॥ (६५५-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
जा ते भ्रम की लीक मिटाई ॥ (६५५-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
सु रसु कबीरै जानिआ ॥ (६५५-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
मेरो गुर प्रसादि मनु मानिआ ॥४॥५॥ (६५५-१२, सोरठि, भगत कबीर जी)
जिह बाझु न जीआ जाई ॥ (६५५-१२, सोरठि, भगत कबीर जी)
जउ मिलै त घाल अघाई ॥ (६५५-१२, सोरठि, भगत कबीर जी)
सद जीवनु भलो कहाँही ॥ (६५५-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
मूए बिनु जीवनु नाही ॥१॥ (६५५-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
अब किआ कथीऐ गिआनु बीचारा ॥ (६५५-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
निज निरखत गत बिउहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५५-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)
घसि कुंकम चंदनु गारिआ ॥ (६५५-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)
बिनु नैनहु जगतु निहारिआ ॥ (६५५-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)

पूति पिता इकु जाइआ ॥ (६५५-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
बिनु ठाहर नगरु बसाइआ ॥२॥ (६५५-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
जाचक जन दाता पाइआ ॥ (६५५-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
सो दीआ न जाई खाइआ ॥ (६५५-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
छोडिआ जाइ न मूका ॥ (६५५-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
अउरन पहि जाना चूका ॥३॥ (६५५-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
जो जीवन मरना जानै ॥ (६५५-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
सो पंच सैल सुख मानै ॥ (६५५-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
कबीरै सो धनु पाइआ ॥ (६५५-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
हरि भेटत आपु मिटाइआ ॥४॥६॥ (६५५-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ ॥ (६५५-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
किआ बेद पुरानाँ सुनीऐ ॥ (६५५-१८, सोरठि, भगत कबीर जी)
पड़े सुने किआ होई ॥ (६५५-१८, सोरठि, भगत कबीर जी)
जउ सहज न मिलिओ सोई ॥१॥ (६५५-१८, सोरठि, भगत कबीर जी)
हरि का नामु न जपसि गवारा ॥ (६५५-१९, सोरठि, भगत कबीर जी)
किआ सोचहि बारं बारा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५५-१९, सोरठि, भगत कबीर जी)
अंधिआरे दीपकु चहीऐ ॥ (६५५-१९, सोरठि, भगत कबीर जी)

पन्ना ६५६

इक बसतु अगोचर लहीऐ ॥ (६५६-१, सोरठि, भगत कबीर जी)
बसतु अगोचर पाई ॥ (६५६-१, सोरठि, भगत कबीर जी)
घटि दीपकु रहिआ समाई ॥२॥ (६५६-१, सोरठि, भगत कबीर जी)
कहि कबीर अब जानिआ ॥ (६५६-१, सोरठि, भगत कबीर जी)
जब जानिआ तउ मनु मानिआ ॥ (६५६-२, सोरठि, भगत कबीर जी)
मन माने लोगु न पतीजै ॥ (६५६-२, सोरठि, भगत कबीर जी)
न पतीजै तउ किआ कीजै ॥३॥७॥ (६५६-२, सोरठि, भगत कबीर जी)
हृदै कपटु मुख गिआनी ॥ (६५६-३, सोरठि, भगत कबीर जी)
झूठे कहा बिलोवसि पानी ॥१॥ (६५६-३, सोरठि, भगत कबीर जी)
काँइआ माँजसि कउन गुनाँ ॥ (६५६-३, सोरठि, भगत कबीर जी)
जउ घट भीतरि है मलनाँ ॥१॥ रहाउ ॥ (६५६-४, सोरठि, भगत कबीर जी)
लउकी अठसठि तीर्थ न्हाई ॥ (६५६-४, सोरठि, भगत कबीर जी)
कउरापनु तऊ न जाई ॥२॥ (६५६-४, सोरठि, भगत कबीर जी)
कहि कबीर बीचारी ॥ (६५६-५, सोरठि, भगत कबीर जी)
भव सागरु तारि मुरारी ॥३॥८॥ (६५६-५, सोरठि, भगत कबीर जी)
सोरठि (६५६-६)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६५६-६)
बहु परपंच करि पर धनु लिआवै ॥ (६५६-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
सुत दारा पहि आनि लुटावै ॥१॥ (६५६-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
मन मेरे भूले कपटु न कीजै ॥ (६५६-७, सोरठि, भगत कबीर जी)
अंति निबेरा तेरे जीअ पहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (६५६-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
छिनु छिनु तनु छीजै जरा जनावै ॥ (६५६-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
तब तेरी ओक कोई पानीओ न पावै ॥२॥ (६५६-८, सोरठि, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु कोई नही तेरा ॥ (६५६-९, सोरठि, भगत कबीर जी)
हिरदै रामु की न जपहि सवेरा ॥३॥९॥ (६५६-९, सोरठि, भगत कबीर जी)
संतहु मन पवनै सुखु बनिआ ॥ (६५६-९, सोरठि, भगत कबीर जी)
किछु जोगु परापति गनिआ ॥ रहाउ ॥ (६५६-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
गुरि दिखलाई मोरी ॥ (६५६-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
जितु मिरग पड़त है चोरी ॥ (६५६-१०, सोरठि, भगत कबीर जी)
मूंदि लीए दरवाजे ॥ (६५६-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
बाजीअले अनहद बाजे ॥१॥ (६५६-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
कुम्भ कमलु जलि भरिआ ॥ (६५६-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
जलु मेटिआ ऊभा करिआ ॥ (६५६-११, सोरठि, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जन जानिआ ॥ (६५६-१२, सोरठि, भगत कबीर जी)
जउ जानिआ तउ मनु मानिआ ॥२॥१०॥ (६५६-१२, सोरठि, भगत कबीर जी)
रागु सोरठि ॥ (६५६-१३)
भूखे भगति न कीजै ॥ (६५६-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
यह माला अपनी लीजै ॥ (६५६-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
हउ माँगउ संतन रेना ॥ (६५६-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
मै नाही किसी का देना ॥१॥ (६५६-१३, सोरठि, भगत कबीर जी)
माधो कैसी बनै तुम संगे ॥ (६५६-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)
आपि न देहु त लेवउ मंगे ॥ रहाउ ॥ (६५६-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)
दुइ सेर माँगउ चूना ॥ (६५६-१४, सोरठि, भगत कबीर जी)
पाउ घीउ संगि लूना ॥ (६५६-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
अध सेरु माँगउ दाले ॥ (६५६-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
मो कउ दोनउ वखत जिवाले ॥२॥ (६५६-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
खाट माँगउ चउपाई ॥ (६५६-१५, सोरठि, भगत कबीर जी)
सिरहाना अवर तुलाई ॥ (६५६-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
ऊपर कउ माँगउ खींधा ॥ (६५६-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
तेरी भगति करै जनु थींधा ॥३॥ (६५६-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)
मै नाही कीता लबो ॥ (६५६-१६, सोरठि, भगत कबीर जी)

इकु नाउ तेरा मै फबो ॥ (६५६-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
कहि कबीर मनु मानिआ ॥ (६५६-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
मनु मानिआ तउ हरि जानिआ ॥४॥११॥ (६५६-१७, सोरठि, भगत कबीर जी)
रागु सोरठि बाणी भगत नामदे जी की घरु २ (६५६-१९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६५६-१९)
जब देखा तब गावा ॥ (६५६-१९, सोरठि, भगत नामदेव जी)
तउ जन धीरजु पावा ॥१॥ (६५६-१९, सोरठि, भगत नामदेव जी)

पन्ना ६५७

नादि समाइलो रे सतिगुरु भेटिले देवा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५७-१, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जह झिलि मिलि कारु दिसंता ॥ (६५७-१, सोरठि, भगत नामदेव जी)
तह अनहद सबद बजंता ॥ (६५७-२, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जोती जोति समानी ॥ (६५७-२, सोरठि, भगत नामदेव जी)
मै गुर परसादी जानी ॥२॥ (६५७-२, सोरठि, भगत नामदेव जी)
रतन कमल कोठरी ॥ (६५७-२, सोरठि, भगत नामदेव जी)
चमकार बीजुल तही ॥ (६५७-३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
नेरै नाही दूरि ॥ (६५७-३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
निज आतमै रहिआ भरपूरि ॥३॥ (६५७-३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जह अनहत सूर उज्यारा ॥ (६५७-३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
तह दीपक जलै छंछारा ॥ (६५७-४, सोरठि, भगत नामदेव जी)
गुर परसादी जानिआ ॥ (६५७-४, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जनु नामा सहज समानिआ ॥४॥१॥ (६५७-४, सोरठि, भगत नामदेव जी)
घरु ४ सोरठि ॥ (६५७-५)
पाड़ पड़ोसणि पूछि ले नामा का पहि छानि छवाई हो ॥ (६५७-५, सोरठि, भगत नामदेव जी)
तो पहि दुगणी मजूरी दैहउ मो कउ बेढी देहु बताई हो ॥१॥ (६५७-५, सोरठि, भगत नामदेव जी)
री बाई बेढी देनु न जाई ॥ (६५७-६, सोरठि, भगत नामदेव जी)
देखु बेढी रहिओ समाई ॥ (६५७-६, सोरठि, भगत नामदेव जी)
हमारै बेढी प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५७-६, सोरठि, भगत नामदेव जी)
बेढी प्रीति मजूरी माँगै जउ कोऊ छानि छवावै हो ॥ (६५७-७, सोरठि, भगत नामदेव जी)
लोग कुटम्ब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥२॥ (६५७-७, सोरठि, भगत नामदेव जी)
ऐसो बेढी बरनि न साकउ सभ अंतर सभ ठाँई हो ॥ (६५७-८, सोरठि, भगत नामदेव जी)
गूंगै महा अमृत रसु चाखिआ पूछे कहनु न जाई हो ॥३॥ (६५७-८, सोरठि, भगत नामदेव जी)
बेढी के गुण सुनि री बाई जलधि बाँधि ध्रू थापिओ हो ॥ (६५७-९, सोरठि, भगत नामदेव जी)
नामे के सुआमी सीअ बहोरी लंक भभीखण आपिओ हो ॥४॥२॥ (६५७-१०, सोरठि, भगत नामदेव जी)
सोरठि घरु ३ ॥ (६५७-१०)

अणमड़िआ मंदलु बाजै ॥ (६५७-१०, सोरठि, भगत नामदेव जी)
बिनु सावण घनहरु गाजै ॥ (६५७-११, सोरठि, भगत नामदेव जी)
बादल बिनु बरखा होई ॥ (६५७-११, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जउ ततु बिचारै कोई ॥१॥ (६५७-११, सोरठि, भगत नामदेव जी)
मो कउ मिलिओ रामु सनेही ॥ (६५७-१२, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जिह मिलिऐ देह सुदेही ॥१॥ रहाउ ॥ (६५७-१२, सोरठि, भगत नामदेव जी)
मिलि पारस कंचनु होइआ ॥ (६५७-१२, सोरठि, भगत नामदेव जी)
मुख मनसा रतनु परोइआ ॥ (६५७-१३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
निज भाउ भइआ भ्रमु भागा ॥ (६५७-१३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
गुर पूछे मनु पतीआगा ॥२॥ (६५७-१३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जल भीतरि कुम्भ समानिआ ॥ (६५७-१३, सोरठि, भगत नामदेव जी)
सभ रामु एकु करि जानिआ ॥ (६५७-१४, सोरठि, भगत नामदेव जी)
गुर चेले है मनु मानिआ ॥ (६५७-१४, सोरठि, भगत नामदेव जी)
जन नामै ततु पछानिआ ॥३॥३॥ (६५७-१४, सोरठि, भगत नामदेव जी)
रागु सोरठि बाणी भगत रविदास जी की (६५७-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६५७-१६)
जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही ॥ (६५७-१७, सोरठि, भगत रविदास जी)
अनल अगम जैसे लहरि मइ ओदधि जल केवल जल माँही ॥१॥ (६५७-१७, सोरठि, भगत रविदास जी)
माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा ॥ (६५७-१८, सोरठि, भगत रविदास जी)
जैसा मानीऐ होइ न तैसा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५७-१८, सोरठि, भगत रविदास जी)
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी ॥ (६५७-१९, सोरठि, भगत रविदास जी)
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी ॥२॥ (६५७-१९, सोरठि, भगत रविदास जी)

पन्ना ६५८

राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ ॥ (६५८-१, सोरठि, भगत रविदास जी)
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ ॥३॥ (६५८-१, सोरठि, भगत रविदास जी)
सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भोगवै सोई ॥ (६५८-२, सोरठि, भगत रविदास जी)
कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई ॥४॥१॥ (६५८-२, सोरठि, भगत रविदास जी)
जउ हम बाँधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥ (६५८-३, सोरठि, भगत रविदास जी)
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥१॥ (६५८-३, सोरठि, भगत रविदास जी)
माधवे जानत हहु जैसी तैसी ॥ (६५८-४, सोरठि, भगत रविदास जी)
अब कहा करहुगे ऐसी ॥१॥ रहाउ ॥ (६५८-४, सोरठि, भगत रविदास जी)
मीनु पकरि फाँकिओ अरु काटिओ राँधि कीओ बहु बानी ॥ (६५८-५, सोरठि, भगत रविदास जी)
खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी ॥२॥ (६५८-५, सोरठि, भगत रविदास जी)
आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा ॥ (६५८-६, सोरठि, भगत रविदास जी)

मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा ॥३॥ (६५८-६, सोरठि, भगत रविदास जी)
कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ ॥ (६५८-७, सोरठि, भगत रविदास जी)
जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहू सहीऐ ॥४॥२॥ (६५८-८, सोरठि, भगत रविदास जी)
दुलभ जनमु पुन्न फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै ॥ (६५८-८, सोरठि, भगत रविदास जी)
राजे इंद्र समसरि गृह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै ॥१॥ (६५८-९, सोरठि, भगत रविदास जी)
न बीचारिओ राजा राम को रसु ॥ (६५८-९, सोरठि, भगत रविदास जी)
जिह रस अन रस बीसरि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (६५८-१०, सोरठि, भगत रविदास जी)
जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥ (६५८-१०, सोरठि, भगत रविदास जी)
इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥२॥ (६५८-११, सोरठि, भगत रविदास जी)
कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥ (६५८-१२, सोरठि, भगत रविदास जी)
कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥३॥३॥ (६५८-१२, सोरठि, भगत रविदास जी)
सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के ॥ (६५८-१३, सोरठि, भगत रविदास जी)
चारि पदार्थ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के ॥१॥ (६५८-१३, सोरठि, भगत रविदास जी)
हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ (६५८-१४, सोरठि, भगत रविदास जी)
अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ (६५८-१४, सोरठि, भगत रविदास जी)
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर माँही ॥ (६५८-१५, सोरठि, भगत रविदास जी)
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ (६५८-१५, सोरठि, भगत रविदास जी)
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥ (६५८-१६, सोरठि, भगत रविदास जी)
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥३॥४॥ (६५८-१७, सोरठि, भगत रविदास जी)
जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥ (६५८-१७, सोरठि, भगत रविदास जी)
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥१॥ (६५८-१८, सोरठि, भगत रविदास जी)
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥ (६५८-१८, सोरठि, भगत रविदास जी)
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥१॥ रहाउ ॥ (६५८-१९, सोरठि, भगत रविदास जी)
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥ (६५८-१९, सोरठि, भगत रविदास जी)
जउ तुम तीर्थ तउ हम जाती ॥२॥ (६५८-१९, सोरठि, भगत रविदास जी)

पन्ना ६५९

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥ (६५९-१, सोरठि, भगत रविदास जी)
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥३॥ (६५९-१, सोरठि, भगत रविदास जी)
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥ (६५९-२, सोरठि, भगत रविदास जी)
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥४॥ (६५९-२, सोरठि, भगत रविदास जी)
तुमरे भजन कटहि जम फाँसा ॥ (६५९-२, सोरठि, भगत रविदास जी)
भगति हेत गावै रविदासा ॥५॥५॥ (६५९-३, सोरठि, भगत रविदास जी)
जल की भीति पवन का थम्भा रक्त बुंद का गारा ॥ (६५९-३, सोरठि, भगत रविदास जी)
हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा ॥१॥ (६५९-३, सोरठि, भगत रविदास जी)

प्रानी किआ मेरा किआ तेरा ॥ (६५६-४, सोरठि, भगत रविदास जी)
जैसे तरवर पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६५६-४, सोरठि, भगत रविदास जी)
राखहु कंध उसारहु नीवाँ ॥ (६५६-५, सोरठि, भगत रविदास जी)
साढे तीनि हाथ तेरी सीवाँ ॥२॥ (६५६-५, सोरठि, भगत रविदास जी)
बंके बाल पाग सिरि डेरी ॥ (६५६-५, सोरठि, भगत रविदास जी)
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥३॥ (६५६-६, सोरठि, भगत रविदास जी)
ऊचे मंदर सुंदर नारी ॥ (६५६-६, सोरठि, भगत रविदास जी)
राम नाम बिनु बाजी हारी ॥४॥ (६५६-६, सोरठि, भगत रविदास जी)
मेरी जाति कमीनी पाँति कमीनी ओछा जनमु हमारा ॥ (६५६-६, सोरठि, भगत रविदास जी)
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥५॥६॥ (६५६-७, सोरठि, भगत रविदास जी)
चमरटा गाँठि न जनई ॥ (६५६-८, सोरठि, भगत रविदास जी)
लोगु गठावै पनही ॥१॥ रहाउ ॥ (६५६-८, सोरठि, भगत रविदास जी)
आर नही जिह तोपउ ॥ (६५६-८, सोरठि, भगत रविदास जी)
नही राँबी ठाउ रोपउ ॥१॥ (६५६-८, सोरठि, भगत रविदास जी)
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा ॥ (६५६-९, सोरठि, भगत रविदास जी)
हउ बिनु गाँठे जाइ पहूचा ॥२॥ (६५६-९, सोरठि, भगत रविदास जी)
रविदासु जपै राम नामा ॥ (६५६-९, सोरठि, भगत रविदास जी)
मोहि जम सिउ नाही कामा ॥३॥७॥ (६५६-१०, सोरठि, भगत रविदास जी)
रागु सोरठि बाणी भगत भीखन की (६५६-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६५६-११)
नैनहु नीरु बहै तनु खीना भए केस दुध वानी ॥ (६५६-१२, सोरठि, भगत भीखन जी)
रूधा कंठु सबदु नही उचरै अब किआ करहि परानी ॥१॥ (६५६-१२, सोरठि, भगत भीखन जी)
राम राइ होहि बैद बनवारी ॥ (६५६-१३, सोरठि, भगत भीखन जी)
अपने संतह लेहु उबारी ॥१॥ रहाउ ॥ (६५६-१३, सोरठि, भगत भीखन जी)
माथे पीर सरीरि जलनि है करक करेजे माही ॥ (६५६-१३, सोरठि, भगत भीखन जी)
ऐसी बेदन उपजि खरी भई वा का अउखधु नाही ॥२॥ (६५६-१४, सोरठि, भगत भीखन जी)
हरि का नामु अमृत जलु निरमलु इहु अउखधु जगि सारा ॥ (६५६-१४, सोरठि, भगत भीखन जी)
गुर परसादि कहै जनु भीखनु पावउ मोख दुआरा ॥३॥१॥ (६५६-१५, सोरठि, भगत भीखन जी)
ऐसा नामु रतनु निरमोलकु पुंनि पदारथु पाइआ ॥ (६५६-१६, सोरठि, भगत भीखन जी)
अनिक जतन करि हिरदै राखिआ रतनु न छपै छपाइआ ॥१॥ (६५६-१६, सोरठि, भगत भीखन जी)
हरि गुन कहते कहनु न जाई ॥ (६५६-१७, सोरठि, भगत भीखन जी)
जैसे गूंगे की मिठिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (६५६-१७, सोरठि, भगत भीखन जी)
रसना रमत सुनत सुखु स्रवना चित चेते सुखु होई ॥ (६५६-१८, सोरठि, भगत भीखन जी)
कहु भीखन दुइ नैन संतोखे जह देखाँ तह सोई ॥२॥२॥ (६५६-१८, सोरठि, भगत भीखन जी)

पन्ना ६६०

धनासरी महला १ घरु १ चउपदे (६६०-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (६६०-२)
जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ (६६०-४, धनासरी, मः १)
दूख विसारणु सेविआ सदा सदा दातारु ॥१॥ (६६०-४, धनासरी, मः १)
साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥ रहाउ ॥ (६६०-४, धनासरी, मः १)
अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ (६६०-५, धनासरी, मः १)
सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥२॥ (६६०-५, धनासरी, मः १)
दइआल तेरै नामि तरा ॥ (६६०-६, धनासरी, मः १)
सद कुरबाणै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६०-६, धनासरी, मः १)
सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ (६६०-७, धनासरी, मः १)
ता की सेवा सो करे जा कउ नदरि करे ॥३॥ (६६०-७, धनासरी, मः १)
तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ (६६०-७, धनासरी, मः १)
सा वडिआई देहि जितु नामि तेरे लागि रहाँ ॥ (६६०-८, धनासरी, मः १)
दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥१॥ रहाउ ॥ (६६०-८, धनासरी, मः १)
सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥ (६६०-९, धनासरी, मः १)
नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥४॥ (६६०-९, धनासरी, मः १)
साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥१॥ रहाउ ॥४॥१॥ (६६०-१०, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ ॥ (६६०-११)
हम आदमी हाँ इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा ॥ (६६०-११, धनासरी, मः १)
नानकु बिनवै तिसै सरेवहु जा के जीअ पराणा ॥१॥ (६६०-११, धनासरी, मः १)
अंधे जीवना वीचारि देखि केते के दिना ॥१॥ रहाउ ॥ (६६०-१२, धनासरी, मः १)
सासु मासु सभु जीउ तुमारा तू मै खरा पिआरा ॥ (६६०-१२, धनासरी, मः १)
नानकु साइरु एव कहतु है सचे परवदगारा ॥२॥ (६६०-१३, धनासरी, मः १)
जे तू किसै न देही मेरे साहिबा किआ को कढै गहणा ॥ (६६०-१३, धनासरी, मः १)
नानकु बिनवै सो किछु पाईऐ पुरबि लिखे का लहणा ॥३॥ (६६०-१४, धनासरी, मः १)
नामु खसम का चिति न कीआ कपटी कपटु कमाणा ॥ (६६०-१५, धनासरी, मः १)
जम दुआरि जा पकड़ि चलाइआ ता चलदा पछुताणा ॥४॥ (६६०-१५, धनासरी, मः १)

पन्ना ६६१

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानक किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ (६६१-१, धनासरी, मः १)
भालि रहे हम रहणु न पाइआ जीवतिआ मरि रहीऐ ॥५॥२॥ (६६१-१, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ घरु दूजा (६६१-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६१-३)

किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ ॥ (६६१-४, धनासरी, मः १)
तपै हिआउ जीअड़ा बिललाइ ॥ (६६१-४, धनासरी, मः १)
सिरजि सवारे साचा सोइ ॥ (६६१-४, धनासरी, मः १)
तिसु विसरिऐ चंगा किउ होइ ॥१॥ (६६१-५, धनासरी, मः १)
हिकमति हुकमि न पाइआ जाइ ॥ (६६१-५, धनासरी, मः १)
किउ करि साचि मिलउ मेरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६१-५, धनासरी, मः १)
वखरु नामु देखण कोई जाइ ॥ (६६१-६, धनासरी, मः १)
ना को चाखै ना को खाइ ॥ (६६१-६, धनासरी, मः १)
लोकि पतीणै ना पति होइ ॥ (६६१-६, धनासरी, मः १)
ता पति रहै राखै जा सोइ ॥२॥ (६६१-७, धनासरी, मः १)
जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ (६६१-७, धनासरी, मः १)
तुधु बिनु दूजी नाही जाइ ॥ (६६१-७, धनासरी, मः १)
जे को करे कीतै किआ होइ ॥ (६६१-८, धनासरी, मः १)
जिस नो बखसे साचा सोइ ॥३॥ (६६१-८, धनासरी, मः १)
हुणि उठि चलणा मुहति कि तालि ॥ (६६१-८, धनासरी, मः १)
किआ मुहु देसा गुण नही नालि ॥ (६६१-९, धनासरी, मः १)
जैसी नदरि करे तैसा होइ ॥ (६६१-९, धनासरी, मः १)
विणु नदरी नानक नही कोइ ॥४॥१॥३॥ (६६१-९, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ ॥ (६६१-१०)
नदरि करे ता सिमरिआ जाइ ॥ (६६१-१०, धनासरी, मः १)
आतमा द्रवै रहै लिव लाइ ॥ (६६१-१०, धनासरी, मः १)
आतमा परातमा एको करै ॥ (६६१-११, धनासरी, मः १)
अंतर की दुबिधा अंतरि मरै ॥१॥ (६६१-११, धनासरी, मः १)
गुर परसादी पाइआ जाइ ॥ (६६१-११, धनासरी, मः १)
हरि सिउ चितु लागै फिरि कालु न खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६१-११, धनासरी, मः १)
सचि सिमरिऐ होवै परगासु ॥ (६६१-१२, धनासरी, मः १)
ता ते बिखिआ महि रहै उदासु ॥ (६६१-१२, धनासरी, मः १)
सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥ (६६१-१३, धनासरी, मः १)
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥२॥ (६६१-१३, धनासरी, मः १)
ऐसी सेवकु सेवा करै ॥ (६६१-१३, धनासरी, मः १)
जिस का जीउ तिसु आगै धरै ॥ (६६१-१४, धनासरी, मः १)
साहिब भावै सो परवाणु ॥ (६६१-१४, धनासरी, मः १)
सो सेवकु दरगह पावै माणु ॥३॥ (६६१-१४, धनासरी, मः १)
सतिगुर की मूरति हिरदै वसाए ॥ (६६१-१४, धनासरी, मः १)
जो इछै सोई फलु पाए ॥ (६६१-१५, धनासरी, मः १)

साचा साहिबु किरपा करै ॥ (६६१-१५, धनासरी, मः १)
सो सेवकु जम ते कैसा डरै ॥४॥ (६६१-१५, धनासरी, मः १)
भनति नानकु करे वीचारु ॥ (६६१-१६, धनासरी, मः १)
साची बाणी सिउ धरे पिआरु ॥ (६६१-१६, धनासरी, मः १)
ता को पावै मोख दुआरु ॥ (६६१-१६, धनासरी, मः १)
जपु तपु सभु इहु सबदु है सारु ॥५॥२॥४॥ (६६१-१६, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ ॥ (६६१-१७)
जीउ तपतु है बारो बार ॥ (६६१-१७, धनासरी, मः १)
तपि तपि खपै बहुतु बेकार ॥ (६६१-१७, धनासरी, मः १)
जै तनि बाणी विसरि जाइ ॥ (६६१-१८, धनासरी, मः १)
जिउ पका रोगी विललाइ ॥१॥ (६६१-१८, धनासरी, मः १)
बहुता बोलणु झखणु होइ ॥ (६६१-१८, धनासरी, मः १)
विणु बोले जाणै सभु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६१-१९, धनासरी, मः १)
जिनि कन कीते अखी नाकु ॥ (६६१-१९, धनासरी, मः १)
जिनि जिहवा दिती बोले तातु ॥ (६६१-१९, धनासरी, मः १)

पन्ना ६६२

जिनि मनु राखिआ अगनी पाइ ॥ (६६२-१, धनासरी, मः १)
वाजै पवणु आखै सभ जाइ ॥२॥ (६६२-१, धनासरी, मः १)
जेता मोहु परीति सुआद ॥ (६६२-१, धनासरी, मः १)
सभा कालख दागा दाग ॥ (६६२-२, धनासरी, मः १)
दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥ (६६२-२, धनासरी, मः १)
दरगह बैसण नाही जाइ ॥३॥ (६६२-२, धनासरी, मः १)
करमि मिलै आखणु तेरा नाउ ॥ (६६२-३, धनासरी, मः १)
जितु लगि तरणा होरु नही थाउ ॥ (६६२-३, धनासरी, मः १)
जे को डूबै फिरि होवै सार ॥ (६६२-३, धनासरी, मः १)
नानक साचा सरब दातार ॥४॥३॥५॥ (६६२-३, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ ॥ (६६२-४)
चोरु सलाहे चीतु न भीजै ॥ (६६२-४, धनासरी, मः १)
जे बदी करे ता तसू न छीजै ॥ (६६२-४, धनासरी, मः १)
चोर की हामा भरे न कोइ ॥ (६६२-५, धनासरी, मः १)
चोरु कीआ चंगा किउ होइ ॥१॥ (६६२-५, धनासरी, मः १)
सुणि मन अंधे कुते कूड़िआर ॥ (६६२-५, धनासरी, मः १)
बिनु बोले बूझीऐ सचिआर ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-६, धनासरी, मः १)
चोरु सुआलिउ चोरु सिआणा ॥ (६६२-६, धनासरी, मः १)

खोटे का मुलु एकु दुगाणा ॥ (६६२-६, धनासरी, मः १)
जे साथि रखीऐ दीजै रलाइ ॥ (६६२-७, धनासरी, मः १)
जा परखीऐ खोटा होइ जाइ ॥२॥ (६६२-७, धनासरी, मः १)
जैसा करे सु तैसा पावै ॥ (६६२-७, धनासरी, मः १)
आपि बीजि आपे ही खावै ॥ (६६२-७, धनासरी, मः १)
जे वडिआईआ आपे खाइ ॥ (६६२-८, धनासरी, मः १)
जेही सुरति तेहै राहि जाइ ॥३॥ (६६२-८, धनासरी, मः १)
जे सउ कूड़ीआ कूड़ु कबाड़ु ॥ (६६२-८, धनासरी, मः १)
भावै सभु आखउ संसारु ॥ (६६२-९, धनासरी, मः १)
तुधु भावै अधी परवाणु ॥ (६६२-९, धनासरी, मः १)
नानक जाणै जाणु सुजाणु ॥४॥४॥६॥ (६६२-९, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ ॥ (६६२-१०)
काइआ कागदु मनु परवाणा ॥ (६६२-१०, धनासरी, मः १)
सिर के लेख न पड़ै इआणा ॥ (६६२-१०, धनासरी, मः १)
दरगह घड़ीअहि तीने लेख ॥ (६६२-११, धनासरी, मः १)
खोटा कामि न आवै वेखु ॥१॥ (६६२-११, धनासरी, मः १)
नानक जे विचि रुपा होइ ॥ (६६२-११, धनासरी, मः १)
खरा खरा आखै सभु कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-११, धनासरी, मः १)
कादी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥ (६६२-१२, धनासरी, मः १)
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥ (६६२-१२, धनासरी, मः १)
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥ (६६२-१२, धनासरी, मः १)
तीने ओजाड़े का बंधु ॥२॥ (६६२-१३, धनासरी, मः १)
सो जोगी जो जुगति पछाणै ॥ (६६२-१३, धनासरी, मः १)
गुर परसादी एको जाणै ॥ (६६२-१३, धनासरी, मः १)
काजी सो जो उलटी करै ॥ (६६२-१३, धनासरी, मः १)
गुर परसादी जीवतु मरै ॥ (६६२-१४, धनासरी, मः १)
सो ब्राहमणु जो ब्रह्मु बीचारै ॥ (६६२-१४, धनासरी, मः १)
आपि तरै सगले कुल तारै ॥३॥ (६६२-१४, धनासरी, मः १)
दानसबंदु सोई दिलि धोवै ॥ (६६२-१५, धनासरी, मः १)
मुसलमाणु सोई मलु खोवै ॥ (६६२-१५, धनासरी, मः १)
पड़िआ बूझै सो परवाणु ॥ (६६२-१५, धनासरी, मः १)
जिसु सिरि दरगह का नीसाणु ॥४॥५॥७॥ (६६२-१५, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ घरु ३ (६६२-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६२-१७)
कालु नाही जोगु नाही नाही सत का ढबु ॥ (६६२-१८, धनासरी, मः १)

थानसट जग भरिसट होए डूबता इव जगु ॥१॥ (६६२-१८, धनासरी, मः १)
कल महि राम नामु सारु ॥ (६६२-१८, धनासरी, मः १)
अखी त मीटहि नाक पकड़हि ठगण कउ संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-१९, धनासरी, मः १)
आँट सेती नाकु पकड़हि सूझते तिनि लोअ ॥ (६६२-१९, धनासरी, मः १)

पन्ना ६६३

मगर पाछै कछु न सूझै एहु पदमु अलोअ ॥२॥ (६६३-१, धनासरी, मः १)
खत्रीआ त धरमु छोडिआ मलेछ भाखिआ गही ॥ (६६३-१, धनासरी, मः १)
सृसटि सभ इक वरन होई धर्म की गति रही ॥३॥ (६६३-२, धनासरी, मः १)
असट साज साजि पुराण सोधहि करहि बेद अभिआसु ॥ (६६३-२, धनासरी, मः १)
बिनु नाम हरि के मुकति नाही कहै नानकु दासु ॥४॥१॥६॥८॥ (६६३-३, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ आरती (६६३-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६३-४)
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ (६६३-५, धनासरी, मः १)
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ (६६३-५, धनासरी, मः १)
कैसी आरती होइ भव खंडना तेरी आरती ॥ (६६३-६, धनासरी, मः १)
अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (६६३-६, धनासरी, मः १)
सहस तव नैन नन नैन है तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ (६६३-७, धनासरी, मः १)
सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥ (६६३-७, धनासरी, मः १)
सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ (६६३-८, धनासरी, मः १)
तिस कै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ (६६३-९, धनासरी, मः १)
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ (६६३-९, धनासरी, मः १)
जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ (६६३-९, धनासरी, मः १)
हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ (६६३-१०, धनासरी, मः १)
कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नामि वासा ॥४॥१॥७॥९॥ (६६३-१०, धनासरी, मः १)
धनासरी महला ३ घरु २ चउपदे (६६३-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६३-१२)
इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ ॥ (६६३-१३, धनासरी, मः ३)
पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (६६३-१३, धनासरी, मः ३)
अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ (६६३-१३, धनासरी, मः ३)
गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥१॥ (६६३-१४, धनासरी, मः ३)
से धनवंत हरि नामि लिव लाइ ॥ (६६३-१४, धनासरी, मः ३)
गुरि पूरै हरि धनु परगासिआ हरि किरपा ते वसै मनि आइ ॥ रहाउ ॥ (६६३-१४, धनासरी, मः ३)
अवगुण काटि गुण रिदै समाइ ॥ (६६३-१५, धनासरी, मः ३)
पूरे गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (६६३-१५, धनासरी, मः ३)

ਪੂਰੇ गुर की साची बाणी ॥ (६६३-१६, धनासरी, मः ३)
सुख मन अंतरि सहजि समाणी ॥२॥ (६६३-१६, धनासरी, मः ३)
एकु अचरजु जन देखहु भाई ॥ (६६३-१६, धनासरी, मः ३)
दुबिधा मारि हरि मंनि वसाई ॥ (६६३-१७, धनासरी, मः ३)
नामु अमोलकु न पाइआ जाइ ॥ (६६३-१७, धनासरी, मः ३)
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥३॥ (६६३-१७, धनासरी, मः ३)
सभ महि वसै प्रभु एको सोइ ॥ (६६३-१८, धनासरी, मः ३)
गुरमती घटि परगटु होइ ॥ (६६३-१८, धनासरी, मः ३)
सहजे जिनि प्रभु जाणि पछाणिआ ॥ (६६३-१८, धनासरी, मः ३)

पन्ना ६६४

नानक नामु मिलै मनु मानिआ ॥४॥१॥ (६६४-१, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ३ ॥ (६६४-१)
हरि नामु धनु निरमलु अति अपारा ॥ (६६४-१, धनासरी, मः ३)
गुर कै सबदि भरे भंडारा ॥ (६६४-२, धनासरी, मः ३)
नाम धन बिनु होर सभ बिखु जाणु ॥ (६६४-२, धनासरी, मः ३)
माइआ मोहि जलै अभिमानु ॥१॥ (६६४-२, धनासरी, मः ३)
गुरमुखि हरि रसु चाखै कोइ ॥ (६६४-३, धनासरी, मः ३)
तिसु सदा अनंदु होवै दिनु राती पूरै भागि परापति होइ ॥ रहाउ ॥ (६६४-३, धनासरी, मः ३)
सबदु दीपकु वरतै तिहु लोइ ॥ (६६४-४, धनासरी, मः ३)
जो चाखै सो निरमलु होइ ॥ (६६४-४, धनासरी, मः ३)
निर्मल नामि हउमै मलु धोइ ॥ (६६४-४, धनासरी, मः ३)
साची भगति सदा सुखु होइ ॥२॥ (६६४-५, धनासरी, मः ३)
जिनि हरि रसु चाखिआ सो हरि जनु लोगु ॥ (६६४-५, धनासरी, मः ३)
तिसु सदा हरखु नाही कदे सोगु ॥ (६६४-५, धनासरी, मः ३)
आपि मुकतु अवरा मुकतु करावै ॥ (६६४-६, धनासरी, मः ३)
हरि नामु जपै हरि ते सुखु पावै ॥३॥ (६६४-६, धनासरी, मः ३)
बिनु सतिगुर सभ मुई बिललाइ ॥ (६६४-६, धनासरी, मः ३)
अनदिनु दाझहि साति न पाइ ॥ (६६४-७, धनासरी, मः ३)
सतिगुरु मिलै सभु तृसन बुझाए ॥ (६६४-७, धनासरी, मः ३)
नानक नामि साँति सुखु पाए ॥४॥२॥ (६६४-८, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ३ ॥ (६६४-८)
सदा धनु अंतरि नामु समाले ॥ (६६४-८, धनासरी, मः ३)
जीअ जंत जिनहि प्रतिपाले ॥ (६६४-८, धनासरी, मः ३)
मुकति पदारथु तिन कउ पाए ॥ (६६४-९, धनासरी, मः ३)

हरि कै नामि रते लिव लाए ॥१॥ (६६४-९, धनासरी, मः ३)
गुर सेवा ते हरि नामु धनु पावै ॥ (६६४-९, धनासरी, मः ३)
अंतरि परगासु हरि नामु धिआवै ॥ रहाउ ॥ (६६४-१०, धनासरी, मः ३)
इहु हरि रंगु गूड़ा धन पिर होइ ॥ (६६४-१०, धनासरी, मः ३)
साँति सीगारु रावे प्रभु सोइ ॥ (६६४-११, धनासरी, मः ३)
हउमै विचि प्रभु कोइ न पाए ॥ (६६४-११, धनासरी, मः ३)
मूलहु भुला जनमु गवाए ॥२॥ (६६४-११, धनासरी, मः ३)
गुर ते साति सहज सुखु बाणी ॥ (६६४-११, धनासरी, मः ३)
सेवा साची नामि समाणी ॥ (६६४-१२, धनासरी, मः ३)
सबदि मिलै प्रीतमु सदा धिआए ॥ (६६४-१२, धनासरी, मः ३)
साच नामि वडिआई पाए ॥३॥ (६६४-१२, धनासरी, मः ३)
आपे करता जुगि जुगि सोइ ॥ (६६४-१३, धनासरी, मः ३)
नदरि करे मेलावा होइ ॥ (६६४-१३, धनासरी, मः ३)
गुरबाणी ते हरि मंनि वसाए ॥ (६६४-१३, धनासरी, मः ३)
नानक साचि रते प्रभि आपि मिलाए ॥४॥३॥ (६६४-१४, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ३ तीजा ॥ (६६४-१४)
जगु मैला मैलो होइ जाइ ॥ (६६४-१४, धनासरी, मः ३)
आवै जाइ दूजै लोभाइ ॥ (६६४-१५, धनासरी, मः ३)
दूजै भाइ सभ परज विगोई ॥ (६६४-१५, धनासरी, मः ३)
मनमुखि चोटा खाइ अपुनी पति खोई ॥१॥ (६६४-१५, धनासरी, मः ३)
गुर सेवा ते जनु निरमलु होइ ॥ (६६४-१६, धनासरी, मः ३)
अंतरि नामु वसै पति ऊतम होइ ॥ रहाउ ॥ (६६४-१६, धनासरी, मः ३)
गुरमुखि उबरे हरि सरणाई ॥ (६६४-१६, धनासरी, मः ३)
राम नामि राते भगति दृड़ाई ॥ (६६४-१७, धनासरी, मः ३)
भगति करे जनु वडिआई पाए ॥ (६६४-१७, धनासरी, मः ३)
साचि रते सुख सहजि समाए ॥२॥ (६६४-१७, धनासरी, मः ३)
साचे का गाहकु विरला को जाणु ॥ (६६४-१८, धनासरी, मः ३)
गुर कै सबदि आपु पछाणु ॥ (६६४-१८, धनासरी, मः ३)
साची रासि साचा वापारु ॥ (६६४-१८, धनासरी, मः ३)
सो धन्नु पुरखु जिसु नामि पिआरु ॥३॥ (६६४-१९, धनासरी, मः ३)
तिनि प्रभि साचै इकि सचि लाए ॥ (६६४-१९, धनासरी, मः ३)
ऊतम बाणी सबदु सुणाए ॥ (६६४-१९, धनासरी, मः ३)

पन्ना ६६५

प्रभ साचे की साची कार ॥ (६६५-१, धनासरी, मः ३)

नानक नामि सवारणहार ॥४॥४॥ (६६५-१, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ३ ॥ (६६५-१)
जो हरि सेवहि तिन बलि जाउ ॥ (६६५-१, धनासरी, मः ३)
तिन हिरदै साचु सचा मुखि नाउ ॥ (६६५-२, धनासरी, मः ३)
साचो साचु समालिहु दुखु जाइ ॥ (६६५-२, धनासरी, मः ३)
साचै सबदि वसै मनि आइ ॥१॥ (६६५-२, धनासरी, मः ३)
गुरबाणी सुणि मैलु गवाए ॥ (६६५-३, धनासरी, मः ३)
सहजे हरि नामु मंनि वसाए ॥१॥ रहाउ ॥ (६६५-३, धनासरी, मः ३)
कूड़ु कुसतु तृसना अगनि बुझाए ॥ (६६५-४, धनासरी, मः ३)
अंतरि साँति सहजि सुखु पाए ॥ (६६५-४, धनासरी, मः ३)
गुर कै भाणै चलै ता आपु जाइ ॥ (६६५-४, धनासरी, मः ३)
साचु महलु पाए हरि गुण गाइ ॥२॥ (६६५-५, धनासरी, मः ३)
न सबदु बूझै न जाणै बाणी ॥ (६६५-५, धनासरी, मः ३)
मनमुखि अंधे दुखि विहाणी ॥ (६६५-५, धनासरी, मः ३)
सतिगुरु भेटे ता सुखु पाए ॥ (६६५-६, धनासरी, मः ३)
हउमै विचहु ठाकि रहाए ॥३॥ (६६५-६, धनासरी, मः ३)
किस नो कहीऐ दाता इकु सोइ ॥ (६६५-६, धनासरी, मः ३)
किरपा करे सबदि मिलावा होइ ॥ (६६५-७, धनासरी, मः ३)
मिलि प्रीतम साचे गुण गावा ॥ (६६५-७, धनासरी, मः ३)
नानक साचे साचा भावा ॥४॥५॥ (६६५-७, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ३ ॥ (६६५-८)
मनु मरै धातु मरि जाइ ॥ (६६५-८, धनासरी, मः ३)
बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥ (६६५-८, धनासरी, मः ३)
इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥ (६६५-८, धनासरी, मः ३)
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥१॥ (६६५-९, धनासरी, मः ३)
जिस नो बखसे हरि दे वडिआई ॥ (६६५-९, धनासरी, मः ३)
गुर परसादि वसै मनि आई ॥ रहाउ ॥ (६६५-९, धनासरी, मः ३)
गुरमुखि करणी कार कमावै ॥ (६६५-१०, धनासरी, मः ३)
ता इसु मन की सोझी पावै ॥ (६६५-१०, धनासरी, मः ३)
मनु मै मतु मैगल मिकदारा ॥ (६६५-१०, धनासरी, मः ३)
गुरु अंकसु मारि जीवालणहारा ॥२॥ (६६५-११, धनासरी, मः ३)
मनु असाधु साधै जनु कोई ॥ (६६५-११, धनासरी, मः ३)
अचरु चरै ता निरमलु होई ॥ (६६५-११, धनासरी, मः ३)
गुरमुखि इहु मनु लइआ सवारि ॥ (६६५-१२, धनासरी, मः ३)
हउमै विचहु तजै विकार ॥३॥ (६६५-१२, धनासरी, मः ३)

जो धुरि रखिअनु मेलि मिलाइ ॥ (६६५-१२, धनासरी, मः ३)
कदे न विछुड़हि सबदि समाइ ॥ (६६५-१३, धनासरी, मः ३)
आपणी कला आपे प्रभु जाणै ॥ (६६५-१३, धनासरी, मः ३)
नानक गुरमुखि नामु पछाणै ॥४॥६॥ (६६५-१३, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ३ ॥ (६६५-१४)
काचा धनु संचहि मूरख गावार ॥ (६६५-१४, धनासरी, मः ३)
मनमुख भूले अंध गावार ॥ (६६५-१४, धनासरी, मः ३)
बिखिआ कै धनि सदा दुखु होइ ॥ (६६५-१५, धनासरी, मः ३)
ना साथि जाइ न परापति होइ ॥१॥ (६६५-१५, धनासरी, मः ३)
साचा धनु गुरमती पाए ॥ (६६५-१५, धनासरी, मः ३)
काचा धनु फुनि आवै जाए ॥ रहाउ ॥ (६६५-१६, धनासरी, मः ३)
मनमुखि भूले सभि मरहि गवार ॥ (६६५-१६, धनासरी, मः ३)
भवजलि डूबे न उरवारि न पारि ॥ (६६५-१६, धनासरी, मः ३)
सतिगुरु भेटे पूरै भागि ॥ (६६५-१७, धनासरी, मः ३)
साचि रते अहिनिसि बैरागि ॥२॥ (६६५-१७, धनासरी, मः ३)
चहु जुग महि अमृतु साची बाणी ॥ (६६५-१७, धनासरी, मः ३)
पूरै भागि हरि नामि समाणी ॥ (६६५-१८, धनासरी, मः ३)
सिध साधिक तरसहि सभि लोइ ॥ (६६५-१८, धनासरी, मः ३)
पूरै भागि परापति होइ ॥३॥ (६६५-१८, धनासरी, मः ३)
सभु किछु साचा साचा है सोइ ॥ (६६५-१९, धनासरी, मः ३)
ऊतम ब्रह्मु पछाणै कोइ ॥ (६६५-१९, धनासरी, मः ३)
सचु साचा सचु आपि दृड़ाए ॥ (६६५-१९, धनासरी, मः ३)

पन्ना ६६६

नानक आपे वेखै आपे सचि लाए ॥४॥७॥ (६६६-१, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ३ ॥ (६६६-१)
नावै की कीमति मिति कही न जाइ ॥ (६६६-१, धनासरी, मः ३)
से जन धन्नु जिन इक नामि लिव लाइ ॥ (६६६-२, धनासरी, मः ३)
गुरमति साची साचा वीचारु ॥ (६६६-२, धनासरी, मः ३)
आपे बखसे दे वीचारु ॥१॥ (६६६-२, धनासरी, मः ३)
हरि नामु अचरजु प्रभु आपि सुणाए ॥ (६६६-३, धनासरी, मः ३)
कली काल विचि गुरमुखि पाए ॥१॥ रहाउ ॥ (६६६-३, धनासरी, मः ३)
हम मूरख मूरख मन माहि ॥ (६६६-३, धनासरी, मः ३)
हउमै विचि सभ कार कमाहि ॥ (६६६-४, धनासरी, मः ३)
गुर परसादी हंउमै जाइ ॥ (६६६-४, धनासरी, मः ३)

आपे बखसे लए मिलाइ ॥२॥ (६६६-४, धनासरी, मः ३)
बिखिआ का धनु बहुतु अभिमानु ॥ (६६६-५, धनासरी, मः ३)
अहंकारि डूबै न पावै मानु ॥ (६६६-५, धनासरी, मः ३)
आपु छोडि सदा सुखु होई ॥ (६६६-५, धनासरी, मः ३)
गुरमति सालाही सचु सोई ॥३॥ (६६६-६, धनासरी, मः ३)
आपे साजे करता सोइ ॥ (६६६-६, धनासरी, मः ३)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (६६६-६, धनासरी, मः ३)
जिसु सचि लाए सोई लागै ॥ (६६६-६, धनासरी, मः ३)
नानक नामि सदा सुखु आगै ॥४॥८॥ (६६६-७, धनासरी, मः ३)
रागु धनासिरी महला ३ घरु ४ (६६६-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६६-८)
हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥ (६६६-९, धनासरी, मः ३)
होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥१॥ (६६६-९, धनासरी, मः ३)
हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥ (६६६-१०, धनासरी, मः ३)
करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (६६६-१०, धनासरी, मः ३)
बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥ (६६६-११, धनासरी, मः ३)
होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥२॥ (६६६-११, धनासरी, मः ३)
भनति नानक भर्म पट खूले गुर परसादी जानिआ ॥ (६६६-१२, धनासरी, मः ३)
साची लिव लागी है भीतरि सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥३॥१॥९॥ (६६६-१२, धनासरी, मः ३)
धनासरी महला ४ घरु १ चउपदे (६६६-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६६-१४)
जो हरि सेवहि संत भगत तिन के सभि पाप निवारी ॥ (६६६-१५, धनासरी, मः ४)
हम ऊपरि किरपा करि सुआमी रखु संगति तुम जु पिआरी ॥१॥ (६६६-१५, धनासरी, मः ४)
हरि गुण कहि न सकउ बनवारी ॥ (६६६-१६, धनासरी, मः ४)
हम पापी पाथर नीरि डुबत करि किरपा पाखण हम तारी ॥ रहाउ ॥ (६६६-१६, धनासरी, मः ४)
जनम जनम के लागे बिखु मोरचा लगि संगति साध सवारी ॥ (६६६-१७, धनासरी, मः ४)
जिउ कंचनु बैसंतरि ताइओ मलु काटी कटित उतारी ॥२॥ (६६६-१७, धनासरी, मः ४)
हरि हरि जपनु जपउ दिनु राती जपि हरि हरि हरि उरि धारी ॥ (६६६-१८, धनासरी, मः ४)
हरि हरि हरि अउखधु जगि पूरा जपि हरि हरि हउमै मारी ॥३॥ (६६६-१९, धनासरी, मः ४)

पन्ना ६६७

हरि हरि अगम अगाधि बोधि अपरम्पर पुरख अपारी ॥ (६६७-१, धनासरी, मः ४)
जन कउ कृपा करहु जगजीवन जन नानक पैज सवारी ॥४॥१॥ (६६७-१, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६७-२)
हरि के संत जना हरि जपिओ तिन का दूखु भरमु भउ भागी ॥ (६६७-२, धनासरी, मः ४)

अपनी सेवा आपि कराई गुरमति अंतरि जागी ॥१॥ (६६७-३, धनासरी, मः ४)
हरि कै नामि रता बैरागी ॥ (६६७-३, धनासरी, मः ४)
हरि हरि कथा सुणी मनि भाई गुरमति हरि लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (६६७-३, धनासरी, मः ४)
संत जना की जाति हरि सुआमी तुम् ठाकुर हम साँगी ॥ (६६७-४, धनासरी, मः ४)
जैसी मति देवहु हरि सुआमी हम तैसे बुलग बुलागी ॥२॥ (६६७-५, धनासरी, मः ४)
किआ हम किर्म नान् निक कीरे तुम् वड पुरख वडागी ॥ (६६७-५, धनासरी, मः ४)
तुम्री गति मिति कहि न सकह प्रभ हम किउ करि मिलह अभागी ॥३॥ (६६७-६, धनासरी, मः ४)
हरि प्रभ सुआमी किरपा धारहु हम हरि हरि सेवा लागी ॥ (६६७-७, धनासरी, मः ४)
नानक दासनि दासु करहु प्रभ हम हरि कथा कथागी ॥४॥२॥ (६६७-७, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६७-८)
हरि का संतु सतगुरु सत पुरखा जो बोलै हरि हरि बानी ॥ (६६७-८, धनासरी, मः ४)
जो जो कहै सुणै सो मुकता हम तिस कै सद कुरबानी ॥१॥ (६६७-९, धनासरी, मः ४)
हरि के संत सुनहु जसु कानी ॥ (६६७-९, धनासरी, मः ४)
हरि हरि कथा सुनहु इक निमख पल सभि किलविख पाप लहि जानी ॥१॥ रहाउ ॥ (६६७-९, धनासरी, मः ४)
ऐसा संतु साधु जिन पाइआ ते वड पुरख वडानी ॥ (६६७-१०, धनासरी, मः ४)
तिन की धूरि मंगह प्रभ सुआमी हम हरि लोच लुचानी ॥२॥ (६६७-११, धनासरी, मः ४)
हरि हरि सफलिओ बिरखु प्रभ सुआमी जिन जपिओ से तृपतानी ॥ (६६७-११, धनासरी, मः ४)
हरि हरि अमृतु पी तृपतासे सभ लाथी भूख भुखानी ॥३॥ (६६७-१२, धनासरी, मः ४)
जिन के वडे भाग वड ऊचे तिन हरि जपिओ जपानी ॥ (६६७-१३, धनासरी, मः ४)
तिन हरि संगति मेलि प्रभ सुआमी जन नानक दास दसानी ॥४॥३॥ (६६७-१३, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६७-१४)
हम अंधुले अंध बिखै बिखु राते किउ चालह गुर चाली ॥ (६६७-१४, धनासरी, मः ४)
सतगुरु दइआ करे सुखदाता हम लावै आपन पाली ॥१॥ (६६७-१५, धनासरी, मः ४)
गुरसिख मीत चलहु गुर चाली ॥ (६६७-१५, धनासरी, मः ४)
जो गुरु कहै सोई भल मानहु हरि हरि कथा निराली ॥१॥ रहाउ ॥ (६६७-१६, धनासरी, मः ४)
हरि के संत सुणहु जन भाई गुरु सेविहु बेगि बेगाली ॥ (६६७-१६, धनासरी, मः ४)
सतगुरु सेवि खरचु हरि बाधहु मत जाणहु आजु कि काल्ही ॥२॥ (६६७-१७, धनासरी, मः ४)
हरि के संत जपहु हरि जपणा हरि संतु चलै हरि नाली ॥ (६६७-१८, धनासरी, मः ४)
जिन हरि जपिआ से हरि होए हरि मिलिआ केल केलाली ॥३॥ (६६७-१८, धनासरी, मः ४)
हरि हरि जपनु जपि लोच लोचानी हरि किरपा करि बनवाली ॥ (६६७-१९, धनासरी, मः ४)
जन नानक संगति साध हरि मेलहु हम साध जना पग राली ॥४॥४॥ (६६७-१९, धनासरी, मः ४)

पन्ना ६६८

धनासरी महला ४ ॥ (६६८-१)
हरि हरि बूंद भए हरि सुआमी हम चातृक बिलल बिललाती ॥ (६६८-१, धनासरी, मः ४)

हरि हरि कृपा करहु प्रभ अपनी मुखि देवहु हरि निमखाती ॥१॥ (६६८-२, धनासरी, मः ४)
हरि बिनु रहि न सकउ इक राती ॥ (६६८-३, धनासरी, मः ४)
जिउ बिनु अमलै अमली मरि जाई है तिउ हरि बिनु हम मरि जाती ॥ रहाउ ॥ (६६८-३, धनासरी, मः ४)
तुम हरि सरवर अति अगाह हम लहि न सकहि अंतु माती ॥ (६६८-४, धनासरी, मः ४)
तू परै परै अपरम्परु सुआमी मिति जानहु आपन गाती ॥२॥ (६६८-५, धनासरी, मः ४)
हरि के संत जना हरि जपिओ गुर रंगि चलूलै राती ॥ (६६८-५, धनासरी, मः ४)
हरि हरि भगति बनी अति सोभा हरि जपिओ ऊतम पाती ॥३॥ (६६८-६, धनासरी, मः ४)
आपे ठाकुरु आपे सेवकु आपि बनावै भाती ॥ (६६८-६, धनासरी, मः ४)
नानकु जनु तुमरी सरणाई हरि राखहु लाज भगाती ॥४॥५॥ (६६८-७, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६८-७)
कलिजुग का धरमु कहहु तुम भाई किव छूटह हम छुटकाकी ॥ (६६८-८, धनासरी, मः ४)
हरि हरि जपु बेड़ी हरि तुलहा हरि जपिओ तरै तराकी ॥१॥ (६६८-८, धनासरी, मः ४)
हरि जी लाज रखहु हरि जन की ॥ (६६८-९, धनासरी, मः ४)
हरि हरि जपनु जपावहु अपना हम मागी भगति इकाकी ॥ रहाउ ॥ (६६८-९, धनासरी, मः ४)
हरि के सेवक से हरि पिआरे जिन जपिओ हरि बचनाकी ॥ (६६८-१०, धनासरी, मः ४)
लेखा चित्र गुपति जो लिखिआ सभ छूटी जम की बाकी ॥२॥ (६६८-११, धनासरी, मः ४)
हरि के संत जपिओ मनि हरि हरि लगि संगति साध जना की ॥ (६६८-११, धनासरी, मः ४)
दिनीअरु सूरु तृसना अगनि बुझानी सिव चरिओ चंदु चंदाकी ॥३॥ (६६८-१२, धनासरी, मः ४)
तुम वड पुरख वड अगम अगोचर तुम आपे आपि अपाकी ॥ (६६८-१२, धनासरी, मः ४)
जन नानक कउ प्रभ किरपा कीजै करि दासनि दास दसाकी ॥४॥६॥ (६६८-१३, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ घरु ५ दुपदे (६६८-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६८-१५)
उर धारि बीचारि मुरारि रमो रमु मनमोहन नामु जपीने ॥ (६६८-१६, धनासरी, मः ४)
अदृसटु अगोचरु अपरम्पर सुआमी गुरि पूरै प्रगट करि दीने ॥१॥ (६६८-१६, धनासरी, मः ४)
राम पारस चंदन हम कासट लोसट ॥ (६६८-१७, धनासरी, मः ४)
हरि संगि हरी सतसंगु भए हरि कंचनु चंदनु कीने ॥१॥ रहाउ ॥ (६६८-१७, धनासरी, मः ४)
नव छिअ खटु बोलहि मुख आगर मेरा हरि प्रभु इव न पतीने ॥ (६६८-१८, धनासरी, मः ४)
जन नानक हरि हिरदै सद धिआवहु इउ हरि प्रभु मेरा भीने ॥२॥१॥७॥ (६६८-१९, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६८-१९)

पन्ना ६६९

गुन कहु हरि लहु करि सेवा सतिगुर इव हरि हरि नामु धिआई ॥ (६६९-१, धनासरी, मः ४)
हरि दरगह भावहि फिरि जनमि न आवहि हरि हरि हरि जोति समाई ॥१॥ (६६९-१, धनासरी, मः ४)
जपि मन नामु हरी होहि सर्ब सुखी ॥ (६६९-२, धनासरी, मः ४)
हरि जसु ऊच सभना ते ऊपरि हरि हरि हरि सेवि छडाई ॥ रहाउ ॥ (६६९-२, धनासरी, मः ४)

हरि कृपा निधि कीनी गुरि भगति हरि दीनी तब हरि सिउ प्रीति बनि आई ॥ (६६९-३, धनासरी, मः ४)
बहु चिंत विसारी हरि नामु उरि धारी नानक हरि भए है सखाई ॥२॥२॥८॥ (६६९-४, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६९-५)
हरि पड़ु हरि लिखु हरि जपि हरि गाउ हरि भउजलु पारि उतारी ॥ (६६९-५, धनासरी, मः ४)
मनि बचनि रिदै धिआइ हरि होइ संतुसटु इव भणु हरि नामु मुरारी ॥१॥ (६६९-६, धनासरी, मः ४)
मनि जपीऐ हरि जगदीस ॥ (६६९-६, धनासरी, मः ४)
मिलि संगति साधू मीत ॥ (६६९-७, धनासरी, मः ४)
सदा अनंदु होवै दिनु राती हरि कीरति करि बनवारी ॥ रहाउ ॥ (६६९-७, धनासरी, मः ४)
हरि हरि करी द्रिसटि तब भइओ मनि उदमु हरि हरि नामु जपिओ गति भई हमारी ॥ (६६९-८, धनासरी, मः ४)
जन नानक की पति राखु मेरे सुआमी हरि आइ परिओ है सरणि तुमारी ॥२॥३॥९॥ (६६९-८, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६९-९)
चउरासीह सिध बुध तेतीस कोटि मुनि जन सभि चाहहि हरि जीउ तेरो नाउ ॥ (६६९-१०, धनासरी, मः ४)
गुर प्रसादि को विरला पावै जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि भाउ ॥१॥ (६६९-१०, धनासरी, मः ४)
जपि मन रामै नामु हरि जसु ऊतम काम ॥ (६६९-११, धनासरी, मः ४)
जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी हउ तिन कै सद बलिहारै जाउ ॥ रहाउ ॥ (६६९-११, धनासरी, मः ४)
सरणागति प्रतिपालक हरि सुआमी जो तुम देहु सोई हउ पाउ ॥ (६६९-१२, धनासरी, मः ४)
दीन दइआल क्रिपा करि दीजै नानक हरि सिमरण का है चाउ ॥२॥४॥१०॥ (६६९-१३, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६९-१४)
सेवक सिख पूजण सभि आवहि सभि गावहि हरि हरि ऊतम बानी ॥ (६६९-१४, धनासरी, मः ४)
गाविआ सुणिआ तिन का हरि थाइ पावै जिन सतिगुर की आगिआ सति सति करि मानी ॥१॥ (६६९-१५, धनासरी, मः ४)
बोलहु भाई हरि कीरति हरि भवजल तीरथि ॥ (६६९-१६, धनासरी, मः ४)
हरि दरि तिन की ऊतम बात है संतहु हरि कथा जिन जनहु जानी ॥ रहाउ ॥ (६६९-१६, धनासरी, मः ४)
आपे गुरु चेला है आपे आपे हरि प्रभु चोज विडानी ॥ (६६९-१७, धनासरी, मः ४)
जन नानक आपि मिलाए सोई हरि मिलसी अवर सभ तिआगि ओहा हरि भानी ॥२॥५॥११॥ (६६९-१७, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ४ ॥ (६६९-१८)
इछा पूरकु सरब सुखदाता हरि जा कै वसि है कामधेना ॥ (६६९-१९, धनासरी, मः ४)
सो ऐसा हरि धिआईऐ मेरे जीअड़े ता सरब सुख पावहि मेरे मना ॥१॥ (६६९-१९, धनासरी, मः ४)

पन्ना ६७०

जपि मन सति नामु सदा सति नामु ॥ (६७०-१, धनासरी, मः ४)
हलति पलति मुख ऊजल होई है नित धिआईऐ हरि पुरखु निरंजना ॥ रहाउ ॥ (६७०-१, धनासरी, मः ४)
जह हरि सिमरनु भइआ तह उपाधि गतु कीनी वडभागी हरि जपना ॥ (६७०-२, धनासरी, मः ४)
जन नानक कउ गुरि इह मति दीनी जपि हरि भवजलु तरना ॥२॥६॥१२॥ (६७०-३, धनासरी, मः ४)

धनासरी महला ४ ॥ (६७०-४)
मेरे साहा मै हरि दरसन सुखु होइ ॥ (६७०-४, धनासरी, मः ४)
हमरी बेदनि तू जानता साहा अवरु किआ जानै कोइ ॥ रहाउ ॥ (६७०-४, धनासरी, मः ४)
साचा साहिबु सचु तू मेरे साहा तेरा कीआ सचु सभु होइ ॥ (६७०-५, धनासरी, मः ४)
झूठा किस कउ आखीऐ साहा दूजा नाही कोइ ॥१॥ (६७०-६, धनासरी, मः ४)
सभना विचि तू वरतदा साहा सभि तुझहि धिआवहि दिनु राति ॥ (६७०-६, धनासरी, मः ४)
सभि तुझ ही थावहु मंगदे मेरे साहा तू सभना करहि इक दाति ॥२॥ (६७०-७, धनासरी, मः ४)
सभु को तुझ ही विचि है मेरे साहा तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥ (६७०-७, धनासरी, मः ४)
सभि जीअ तेरे तू सभस दा मेरे साहा सभि तुझ ही माहि समाहि ॥३॥ (६७०-८, धनासरी, मः ४)
सभना की तू आस है मेरे पिआरे सभि तुझहि धिआवहि मेरे साह ॥ (६७०-९, धनासरी, मः ४)
जिउ भावै तिउ रखु तू मेरे पिआरे सचु नानक के पातिसाह ॥४॥७॥१३॥ (६७०-९, धनासरी, मः ४)
धनासरी महला ५ घरु १ चउपदे (६७०-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७०-११)
भव खंडन दुख भंजन स्वामी भगति वछल निरंकारे ॥ (६७०-१२, धनासरी, मः ५)
कोटि पराध मिटे खिन भीतरि जाँ गुरमुखि नामु समारे ॥१॥ (६७०-१२, धनासरी, मः ५)
मेरा मनु लागा है राम पिआरे ॥ (६७०-१३, धनासरी, मः ५)
दीन दइआलि करी प्रभि किरपा वसि कीने पंच दूतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (६७०-१३, धनासरी, मः ५)
तेरा थानु सुहावा रूपु सुहावा तेरे भगत सोहहि दरबारे ॥ (६७०-१४, धनासरी, मः ५)
सर्ब जीआ के दाते सुआमी करि किरपा लेहु उबारे ॥२॥ (६७०-१४, धनासरी, मः ५)
तेरा वरनु न जापै रूपु न लखीऐ तेरी कुदरति कउनु बीचारे ॥ (६७०-१५, धनासरी, मः ५)
जलि थलि महीअलि रविआ स्रब ठाई अगम रूप गिरधारे ॥३॥ (६७०-१५, धनासरी, मः ५)
कीरति करहि सगल जन तेरी तू अबिनासी पुरखु मुरारे ॥ (६७०-१६, धनासरी, मः ५)
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी जन नानक सरनि दुआरे ॥४॥१॥ (६७०-१७, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७०-१७)
बिनु जल प्रान तजे है मीना जिनि जल सिउ हेतु बढाइओ ॥ (६७०-१८, धनासरी, मः ५)
कमल हेति बिनसिओ है भवरा उनि मारगु निकसि न पाइओ ॥१॥ (६७०-१८, धनासरी, मः ५)
अब मन एकस सिउ मोहु कीना ॥ (६७०-१९, धनासरी, मः ५)
मरै न जावै सद ही संगे सतिगुर सबदी चीना ॥१॥ रहाउ ॥ (६७०-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७१

काम हेति कुंचरु लै फाँकिओ ओहु पर वसि भइओ बिचारा ॥ (६७१-१, धनासरी, मः ५)
नाद हेति सिरु डारिओ कुरंका उस ही हेत बिदारा ॥२॥ (६७१-१, धनासरी, मः ५)
देखि कुटम्बु लोभि मोहिओ प्रानी माइआ कउ लपटाना ॥ (६७१-२, धनासरी, मः ५)
अति रचिओ करि लीनो अपुना उनि छोडि सरापर जाना ॥३॥ (६७१-३, धनासरी, मः ५)
बिनु गोबिंद अवर संगि नेहा ओहु जाणहु सदा दुहेला ॥ (६७१-३, धनासरी, मः ५)

कहु नानक गुर इहै बुझाइओ प्रीति प्रभू सद केला ॥४॥२॥ (६७१-४, धनासरी, मः ५)
धनासरी मः ५ ॥ (६७१-४)
करि किरपा दीओ मोहि नामा बंधन ते छुटकाए ॥ (६७१-५, धनासरी, मः ५)
मन ते बिसरिओ सगलो धंधा गुर की चरणी लाए ॥१॥ (६७१-५, धनासरी, मः ५)
साधसंगि चिंत बिरानी छाडी ॥ (६७१-६, धनासरी, मः ५)
अहम्बुधि मोह मन बासन दे करि गडहा गाडी ॥१॥ रहाउ ॥ (६७१-६, धनासरी, मः ५)
ना को मेरा दुसमनु रहिआ ना हम किस के बैराई ॥ (६७१-७, धनासरी, मः ५)
ब्रह्मु पसारु पसारिओ भीतरि सतिगुर ते सोझी पाई ॥२॥ (६७१-७, धनासरी, मः ५)
सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥ (६७१-८, धनासरी, मः ५)
दूरि पराइओ मन का बिरहा ता मेलु कीओ मेरै राजन ॥३॥ (६७१-८, धनासरी, मः ५)
बिनसिओ ढीठा अमृतु वूठा सबदु लगो गुर मीठा ॥ (६७१-९, धनासरी, मः ५)
जलि थलि महीअलि सर्ब निवासी नानक रमईआ डीठा ॥४॥३॥ (६७१-९, धनासरी, मः ५)
धनासरी मः ५ ॥ (६७१-१०)
जब ते दरसन भेटे साधू भले दिनस ओइ आए ॥ (६७१-१०, धनासरी, मः ५)
महा अनंदु सदा करि कीरतनु पुरख बिधाता पाए ॥१॥ (६७१-११, धनासरी, मः ५)
अब मोहि राम जसो मनि गाइओ ॥ (६७१-११, धनासरी, मः ५)
भइओ प्रगासु सदा सुखु मन महि सतिगुरु पूरा पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७१-१२, धनासरी, मः ५)
गुण निधानु रिद भीतरि वसिआ ता दूखु भर्म भउ भागा ॥ (६७१-१२, धनासरी, मः ५)
भई परापति वसतु अगोचर राम नामि रंगु लागा ॥२॥ (६७१-१३, धनासरी, मः ५)
चिंत अचिंता सोच असोचा सोगु लोभु मोहु थाका ॥ (६७१-१४, धनासरी, मः ५)
हउमै रोग मिटे किरपा ते जम ते भए बिबाका ॥३॥ (६७१-१४, धनासरी, मः ५)
गुर की टहल गुरू की सेवा गुर की आगिआ भाणी ॥ (६७१-१५, धनासरी, मः ५)
कहु नानक जिनि जम ते काढे तिसु गुर कै कुरबाणी ॥४॥४॥ (६७१-१५, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७१-१६)
जिस का तनु मनु धनु सभु तिस का सोई सुघड़ु सुजानी ॥ (६७१-१६, धनासरी, मः ५)
तिन ही सुणिआ दुखु सुखु मेरा तउ बिधि नीकी खटानी ॥१॥ (६७१-१७, धनासरी, मः ५)
जीअ की एकै ही पहि मानी ॥ (६७१-१७, धनासरी, मः ५)
अवरि जतन करि रहे बहुतेरे तिन तिलु नही कीमति जानी ॥ रहाउ ॥ (६७१-१७, धनासरी, मः ५)
अमृत नामु निरमोलकु हीरा गुरि दीनो मंतानी ॥ (६७१-१८, धनासरी, मः ५)
डिगै न डोलै दृड़ु करि रहिओ पूरन होइ तृपतानी ॥२॥ (६७१-१९, धनासरी, मः ५)
ओइ जु बीच हम तुम कछु होते तिन की बात बिलानी ॥ (६७१-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७२

अलंकार मिलि थैली होई है ता ते कनिक वखानी ॥३॥ (६७२-१, धनासरी, मः ५)
प्रगटिओ जोति सहज सुख सोभा बाजे अनहत बानी ॥ (६७२-१, धनासरी, मः ५)

कहु नानक निहचल घरु बाधिओ गुरि कीओ बंधानी ॥४॥५॥ (६७२-२, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७२-३)
वडे वडे राजन अरु भूमन ता की तृसन न बूझी ॥ (६७२-३, धनासरी, मः ५)
लपटि रहे माइआ रंग माते लोचन कछू न सूझी ॥१॥ (६७२-३, धनासरी, मः ५)
बिखिआ महि किन ही तृपति न पाई ॥ (६७२-४, धनासरी, मः ५)
जिउ पावकु ईधनि नही ध्रापै बिनु हरि कहा अघाई ॥ रहाउ ॥ (६७२-४, धनासरी, मः ५)
दिनु दिनु करत भोजन बहु बिंजन ता की मिटै न भूखा ॥ (६७२-५, धनासरी, मः ५)
उदमु करै सुआन की निआई चारे कुंटा घोखा ॥२॥ (६७२-५, धनासरी, मः ५)
कामवंत कामी बहु नारी पर गृह जोह न चूकै ॥ (६७२-६, धनासरी, मः ५)
दिन प्रति करै करै पछुतापै सोग लोभ महि सूकै ॥३॥ (६७२-६, धनासरी, मः ५)
हरि हरि नामु अपार अमोला अमृतु एकु निधाना ॥ (६७२-७, धनासरी, मः ५)
सूखु सहजु आनंदु संतन कै नानक गुर ते जाना ॥४॥६॥ (६७२-७, धनासरी, मः ५)
धनासरी मः ५ ॥ (६७२-८)
लवै न लागन कउ है कछूऐ जा कउ फिरि इहु धावै ॥ (६७२-८, धनासरी, मः ५)
जा कउ गुरि दीनो इहु अमृतु तिस ही कउ बनि आवै ॥१॥ (६७२-९, धनासरी, मः ५)
जा कउ आइओ एकु रसा ॥ (६७२-९, धनासरी, मः ५)
खान पान आन नही खुधिआ ता कै चिति न बसा ॥ रहाउ ॥ (६७२-१०, धनासरी, मः ५)
मउलिओ मनु तनु होइओ हरिआ एक बूंद जिनि पाई ॥ (६७२-१०, धनासरी, मः ५)
बरनि न साकउ उसतति ता की कीमति कहणु न जाई ॥२॥ (६७२-११, धनासरी, मः ५)
घाल न मिलिओ सेव न मिलिओ मिलिओ आइ अचिंता ॥ (६७२-१२, धनासरी, मः ५)
जा कउ दइआ करी मेरै ठाकुरि तिनि गुरहि कमानो मंता ॥३॥ (६७२-१२, धनासरी, मः ५)
दीन दैआल सदा किरपाला सर्ब जीआ प्रतिपाला ॥ (६७२-१३, धनासरी, मः ५)
ओति पोति नानक संगि रविआ जिउ माता बाल गोपाला ॥४॥७॥ (६७२-१३, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७२-१४)
बारि जाउ गुर अपुने ऊपरि जिनि हरि हरि नामु दृड़ाया ॥ (६७२-१४, धनासरी, मः ५)
महा उदिआन अंधकार महि जिनि सीधा मारगु दिखाया ॥१॥ (६७२-१५, धनासरी, मः ५)
हमरे प्रान गुपाल गोबिंद ॥ (६७२-१५, धनासरी, मः ५)
ईहा ऊहा सर्ब थोक की जिसहि हमारी चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (६७२-१६, धनासरी, मः ५)
जा कै सिमरनि सर्ब निधाना मानु महतु पति पूरी ॥ (६७२-१६, धनासरी, मः ५)
नामु लैत कोटि अघ नासे भगत बाछहि सभि धूरी ॥२॥ (६७२-१७, धनासरी, मः ५)
सर्ब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥ (६७२-१७, धनासरी, मः ५)
पारब्रह्म अपरम्पर सुआमी सिमरत पारि पराना ॥३॥ (६७२-१८, धनासरी, मः ५)
सीतल साँति महा सुखु पाइआ संतसंगि रहिओ ओल्हा ॥ (६७२-१८, धनासरी, मः ५)
हरि धनु संचनु हरि नामु भोजनु इहु नानक कीनो चोल्हा ॥४॥८॥ (६७२-१९, धनासरी, मः ५)

धनासरी महला ५ ॥ (६७३-१)
जिह करणी होवहि सरमिंदा इहा कमानी रीति ॥ (६७३-१, धनासरी, मः ५)
संत की निंदा साकत की पूजा ऐसी द्रिड़ी बिपरीति ॥१॥ (६७३-१, धनासरी, मः ५)
माइआ मोह भूलो अवरै हीत ॥ (६७३-२, धनासरी, मः ५)
हरिचंदउरी बन हर पात रे इहै तुहारो बीत ॥१॥ रहाउ ॥ (६७३-२, धनासरी, मः ५)
चंदन लेप होत देह कउ सुखु गरधभ भसम संगीति ॥ (६७३-३, धनासरी, मः ५)
अमृत संगि नाहि रुच आवत बिखै ठगउरी प्रीति ॥२॥ (६७३-३, धनासरी, मः ५)
उतम संत भले संजोगी इसु जुग महि पवित पुनीत ॥ (६७३-४, धनासरी, मः ५)
जात अकारथ जनमु पदार्थ काच बादरै जीत ॥३॥ (६७३-५, धनासरी, मः ५)
जनम जनम के किलविख दुख भागे गुरि गिआन अंजनु नेत्र दीत ॥ (६७३-५, धनासरी, मः ५)
साधसंगि इन दुख ते निकसिओ नानक एक परीत ॥४॥६॥ (६७३-६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७३-६)
पानी पखा पीसउ संत आगै गुण गोविंद जसु गाई ॥ (६७३-७, धनासरी, मः ५)
सासि सासि मनु नामु सम्हारै इहु बिस्राम निधि पाई ॥१॥ (६७३-७, धनासरी, मः ५)
तुम्ह करहु दइआ मेरे साई ॥ (६७३-८, धनासरी, मः ५)
ऐसी मति दीजै मेरे ठाकुर सदा सदा तुधु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (६७३-८, धनासरी, मः ५)
तुम्हरी कृपा ते मोहु मानु छूटै बिनसि जाइ भरमाई ॥ (६७३-९, धनासरी, मः ५)
अनद रूपु रविओ सभ मधे जत कत पेखउ जाई ॥२॥ (६७३-९, धनासरी, मः ५)
तुम्ह दइआल किरपाल कृपा निधि पतित पावन गोसाई ॥ (६७३-१०, धनासरी, मः ५)
कोटि सूख आनंद राज पाए मुख ते निमख बुलाई ॥३॥ (६७३-१०, धनासरी, मः ५)
जाप ताप भगति सा पूरी जो प्रभ कै मनि भाई ॥ (६७३-११, धनासरी, मः ५)
नामु जपत तृसना सभ बुझी है नानक तृपति अघाई ॥४॥१०॥ (६७३-११, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७३-१२)
जिनि कीने वसि अपुनै त्रै गुण भवण चतुर संसारा ॥ (६७३-१२, धनासरी, मः ५)
जग इसनान ताप थान खंडे किआ इहु जंतु विचारा ॥१॥ (६७३-१३, धनासरी, मः ५)
प्रभ की ओट गही तउ छूटो ॥ (६७३-१३, धनासरी, मः ५)
साध प्रसादि हरि हरि हरि गाए बिखै बिआधि तब हूटो ॥१॥ रहाउ ॥ (६७३-१४, धनासरी, मः ५)
नह सुणीऐ नह मुख ते बकीऐ नह मोहै उह डीठी ॥ (६७३-१४, धनासरी, मः ५)
ऐसी ठगउरी पाइ भुलावै मनि सभ कै लागै मीठी ॥२॥ (६७३-१५, धनासरी, मः ५)
माइ बाप पूत हित भ्राता उनि घरि घरि मेलिओ दूआ ॥ (६७३-१५, धनासरी, मः ५)
किस ही वाधि घाटि किस ही पहि सगले लरि लरि मूआ ॥३॥ (६७३-१६, धनासरी, मः ५)
हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि इहु चलतु दिखाइआ ॥ (६७३-१७, धनासरी, मः ५)
गूझी भाहि जलै संसारा भगत न बिआपै माइआ ॥४॥ (६७३-१७, धनासरी, मः ५)

संत प्रसादि महा सुखु पाइआ सगले बंधन काटे ॥ (६७३-१८, धनासरी, मः ५)
हरि हरि नामु नानक धनु पाइआ अपुनै घरि लै आइआ खाटे ॥५॥११॥ (६७३-१८, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७३-१९)
तुम दाते ठाकुर प्रतिपालक नाइक खसम हमारे ॥ (६७३-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७४

निमख निमख तुम ही प्रतिपालहु हम बारिक तुमरे धारे ॥१॥ (६७४-१, धनासरी, मः ५)
जिहवा एक कवन गुन कहीऐ ॥ (६७४-२, धनासरी, मः ५)
बेसुमार बेअंत सुआमी तेरो अंतु न किन ही लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७४-२, धनासरी, मः ५)
कोटि पराध हमारे खंडहु अनिक बिधी समझावहु ॥ (६७४-३, धनासरी, मः ५)
हम अगिआन अलप मति थोरी तुम आपन बिरदु रखावहु ॥२॥ (६७४-३, धनासरी, मः ५)
तुमरी सरणि तुमारी आसा तुम ही सजन सुहेले ॥ (६७४-४, धनासरी, मः ५)
राखहु राखनहार दइआला नानक घर के गोले ॥३॥१२॥ (६७४-४, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७४-५)
पूजा वरत तिलक इसनाना पुन्न दान बहु दैन ॥ (६७४-५, धनासरी, मः ५)
कहूं न भीजै संजम सुआमी बोलहि मीठे बैन ॥१॥ (६७४-५, धनासरी, मः ५)
प्रभ जी को नामु जपत मन चैन ॥ (६७४-६, धनासरी, मः ५)
बहु प्रकार खोजहि सभि ता कउ बिखमु न जाई लैन ॥१॥ रहाउ ॥ (६७४-६, धनासरी, मः ५)
जाप ताप भ्रमन बसुधा करि उरध ताप लै गैन ॥ (६७४-७, धनासरी, मः ५)
इह बिधि नह पतीआनो ठाकुर जोग जुगति करि जैन ॥२॥ (६७४-७, धनासरी, मः ५)
अमृत नामु निरमोलकु हरि जसु तिनि पाइओ जिसु किरपैन ॥ (६७४-८, धनासरी, मः ५)
साधसंगि रंगि प्रभ भेटे नानक सुखि जन रैन ॥३॥१३॥ (६७४-९, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७४-९)
बंधन ते छुटकावै प्रभू मिलावै हरि हरि नामु सुनावै ॥ (६७४-१०, धनासरी, मः ५)
असथिरु करे निहचलु इहु मनूआ बहुरि न कतहू धावै ॥१॥ (६७४-१०, धनासरी, मः ५)
है कोऊ ऐसो हमरा मीतु ॥ (६७४-११, धनासरी, मः ५)
सगल समग्री जीउ हीउ देउ अरपउ अपनो चीतु ॥१॥ रहाउ ॥ (६७४-११, धनासरी, मः ५)
पर धन पर तन पर की निंदा इन सिउ प्रीति न लागै ॥ (६७४-१२, धनासरी, मः ५)
संतह संगु संत सम्भाखनु हरि कीरतनि मनु जागै ॥२॥ (६७४-१२, धनासरी, मः ५)
गुण निधान दइआल पुरख प्रभ सर्ब सूख दइआला ॥ (६७४-१३, धनासरी, मः ५)
मागै दानु नामु तेरो नानकु जिउ माता बाल गुपाला ॥३॥१४॥ (६७४-१३, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७४-१४)
हरि हरि लीने संत उबारि ॥ (६७४-१४, धनासरी, मः ५)
हरि के दास की चितवै बुरिआई तिस ही कउ फिरि मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (६७४-१४, धनासरी, मः ५)
जन का आपि सहाई होआ निंदक भागे हारि ॥ (६७४-१५, धनासरी, मः ५)

भ्रमत भ्रमत ऊहाँ ही मूए बाहुड़ि गृहि न मंझारि ॥१॥ (६७४-१६, धनासरी, मः ५)
नानक सरणि परिओ दुख भंजन गुन गावै सदा अपारि ॥ (६७४-१६, धनासरी, मः ५)
निंदक का मुखु काला होआ दीन दुनीआ कै दरबारि ॥२॥१५॥ (६७४-१७, धनासरी, मः ५)
धनासिरी महला ५ ॥ (६७४-१८)
अब हरि राखनहारु चितारिआ ॥ (६७४-१८, धनासरी, मः ५)
पतित पुनीत कीए खिन भीतरि सगला रोगु बिदारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७४-१८, धनासरी, मः ५)
गोसटि भई साध कै संगमि काम क्रोधु लोभु मारिआ ॥ (६७४-१९, धनासरी, मः ५)
सिमरि सिमरि पूरन नाराइन संगी सगले तारिआ ॥१॥ (६७४-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७५

अउखध मंत्र मूल मन एकै मनि बिस्वासु प्रभ धारिआ ॥ (६७५-१, धनासरी, मः ५)
चरन रेन बाँछै नित नानकु पुनह पुनह बलिहारिआ ॥२॥१६॥ (६७५-१, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७५-२)
मेरा लागो राम सिउ हेतु ॥ (६७५-२, धनासरी, मः ५)
सतिगुरु मेरा सदा सहाई जिनि दुख का काटिआ केतु ॥१॥ रहाउ ॥ (६७५-३, धनासरी, मः ५)
हाथ देइ राखिओ अपुना करि बिरथा सगल मिटाई ॥ (६७५-३, धनासरी, मः ५)
निंदक के मुख काले कीने जन का आपि सहाई ॥१॥ (६७५-४, धनासरी, मः ५)
साचा साहिबु होआ रखवाला राखि लीए कंठि लाइ ॥ (६७५-४, धनासरी, मः ५)
निरभउ भए सदा सुख माणे नानक हरि गुण गाइ ॥२॥१७॥ (६७५-५, धनासरी, मः ५)
धनासिरी महला ५ ॥ (६७५-६)
अउखधु तेरो नामु दइआल ॥ (६७५-६, धनासरी, मः ५)
मोहि आतुर तेरी गति नही जानी तूं आपि करहि प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (६७५-६, धनासरी, मः ५)
धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे दुतीआ भाउ निवारि ॥ (६७५-७, धनासरी, मः ५)
बंधन काटि लेहु अपुने करि कबहू न आवह हारि ॥१॥ (६७५-७, धनासरी, मः ५)
तेरी सरनि पइआ हउ जीवाँ तूं सम्म्रथु पुरखु मिहरवानु ॥ (६७५-८, धनासरी, मः ५)
आठ पहर प्रभ कउ आराधी नानक सद कुरबानु ॥२॥१८॥ (६७५-९, धनासरी, मः ५)
रागु धनासरी महला ५ (६७५-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७५-१०)
हा हा प्रभ राखि लेहु ॥ (६७५-११, धनासरी, मः ५)
हम ते किछू न होइ मेरे स्वामी करि किरपा अपुना नामु देहु ॥१॥ रहाउ ॥ (६७५-११, धनासरी, मः ५)
अगनि कुटम्ब सागर संसार ॥ (६७५-१२, धनासरी, मः ५)
भर्म मोह अगिआन अंधार ॥१॥ (६७५-१२, धनासरी, मः ५)
ऊच नीच सूख दूख ॥ (६७५-१२, धनासरी, मः ५)
ध्रापसि नाही तृसना भूख ॥२॥ (६७५-१२, धनासरी, मः ५)
मनि बासना रचि बिखै बिआधि ॥ (६७५-१३, धनासरी, मः ५)

पंच दूत संगि महा असाध ॥३॥ (६७५-१३, धनासरी, मः ५)
जीअ जहानु प्रान धनु तेरा ॥ (६७५-१३, धनासरी, मः ५)
नानक जानु सदा हरि नेरा ॥४॥१॥१९॥ (६७५-१४, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७५-१४)
दीन दरद निवारि ठाकुर राखै जन की आपि ॥ (६७५-१४, धनासरी, मः ५)
तरण तारण हरि निधि दूखु न सकै बिआपि ॥१॥ (६७५-१५, धनासरी, मः ५)
साधू संगि भजहु गुपाल ॥ (६७५-१५, धनासरी, मः ५)
आन संजम किछु न सूझै इह जतन काटि कलि काल ॥ रहाउ ॥ (६७५-१६, धनासरी, मः ५)
आदि अंति दइआल पूरन तिसु बिना नही कोइ ॥ (६७५-१६, धनासरी, मः ५)
जनम मरण निवारि हरि जपि सिमरि सुआमी सोइ ॥२॥ (६७५-१७, धनासरी, मः ५)
बेद सिम्मृति कथै सासत भगत करहि बीचारु ॥ (६७५-१७, धनासरी, मः ५)
मुकति पाईऐ साधसंगति बिनसि जाइ अंधारु ॥३॥ (६७५-१८, धनासरी, मः ५)
चरन कमल अधारु जन का रासि पूंजी एक ॥ (६७५-१८, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७६

ताणु माणु दीबाणु साचा नानक की प्रभ टेक ॥४॥२॥२०॥ (६७६-१, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७६-१)
फिरत फिरत भेटे जन साधू पूरै गुरि समझाइआ ॥ (६७६-२, धनासरी, मः ५)
आन सगल बिधि कांमि न आवै हरि हरि नामु धिआइआ ॥१॥ (६७६-२, धनासरी, मः ५)
ता ते मोहि धारी ओट गोपाल ॥ (६७६-३, धनासरी, मः ५)
सरनि परिओ पूरन परमेसुर बिनसे सगल जंजाल ॥ रहाउ ॥ (६७६-३, धनासरी, मः ५)
सुरग मिरत पइआल भू मंडल सगल बिआपे माइ ॥ (६७६-४, धनासरी, मः ५)
जीअ उधारन सभ कुल तारन हरि हरि नामु धिआइ ॥२॥ (६७६-४, धनासरी, मः ५)
नानक नामु निरंजनु गाईऐ पाईऐ सरब निधाना ॥ (६७६-५, धनासरी, मः ५)
करि किरपा जिसु देइ सुआमी बिरले काहू जाना ॥३॥३॥२१॥ (६७६-५, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ घरु २ चउपदे (६७६-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७६-७)
छोडि जाहि से करहि पराल ॥ (६७६-८, धनासरी, मः ५)
कामि न आवहि से जंजाल ॥ (६७६-८, धनासरी, मः ५)
संगि न चालहि तिन सिउ हीत ॥ (६७६-८, धनासरी, मः ५)
जो बैराई सेई मीत ॥१॥ (६७६-८, धनासरी, मः ५)
ऐसे भरमि भुले संसारा ॥ (६७६-९, धनासरी, मः ५)
जनमु पदारथु खोइ गवारा ॥ रहाउ ॥ (६७६-९, धनासरी, मः ५)
साचु धरमु नही भावै डीठा ॥ (६७६-९, धनासरी, मः ५)
झूठ धोह सिउ रचिओ मीठा ॥ (६७६-१०, धनासरी, मः ५)

दाति पिआरी विसरिआ दातारा ॥ (६७६-१०, धनासरी, मः ५)
जाणै नाही मरणु विचारा ॥२॥ (६७६-१०, धनासरी, मः ५)
वसतु पराई कउ उठि रोवै ॥ (६७६-११, धनासरी, मः ५)
कर्म धर्म सगला ई खोवै ॥ (६७६-११, धनासरी, मः ५)
हुकमु न बूझै आवण जाणे ॥ (६७६-११, धनासरी, मः ५)
पाप करै ता पछोताणे ॥३॥ (६७६-१२, धनासरी, मः ५)
जो तुधु भावै सो परवाणु ॥ (६७६-१२, धनासरी, मः ५)
तेरे भाणे नो कुरबाणु ॥ (६७६-१२, धनासरी, मः ५)
नानकु गरीबु बंदा जनु तेरा ॥ (६७६-१२, धनासरी, मः ५)
राखि लेइ साहिबु प्रभु मेरा ॥४॥१॥२२॥ (६७६-१३, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७६-१३)
मोहि मसकीन प्रभु नामु अधारु ॥ (६७६-१३, धनासरी, मः ५)
खाटण कउ हरि हरि रोजगारु ॥ (६७६-१४, धनासरी, मः ५)
संचण कउ हरि एको नामु ॥ (६७६-१४, धनासरी, मः ५)
हलति पलति ता कै आवै काम ॥१॥ (६७६-१४, धनासरी, मः ५)
नामि रते प्रभ रंगि अपार ॥ (६७६-१५, धनासरी, मः ५)
साध गावहि गुण एक निरंकार ॥ रहाउ ॥ (६७६-१५, धनासरी, मः ५)
साध की सोभा अति मसकीनी ॥ (६७६-१५, धनासरी, मः ५)
संत वडाई हरि जसु चीनी ॥ (६७६-१६, धनासरी, मः ५)
अनदु संतन कै भगति गोविंद ॥ (६७६-१६, धनासरी, मः ५)
सूखु संतन कै बिनसी चिंद ॥२॥ (६७६-१६, धनासरी, मः ५)
जह साध संतन होवहि इकत्र ॥ (६७६-१७, धनासरी, मः ५)
तह हरि जसु गावहि नाद कवित ॥ (६७६-१७, धनासरी, मः ५)
साध सभा महि अनद बिस्राम ॥ (६७६-१७, धनासरी, मः ५)
उन संगु सो पाए जिसु मसतकि कराम ॥३॥ (६७६-१८, धनासरी, मः ५)
दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ (६७६-१८, धनासरी, मः ५)
चरन पखारि कहाँ गुणतास ॥ (६७६-१९, धनासरी, मः ५)
प्रभ दइआल किरपाल हजूरि ॥ (६७६-१९, धनासरी, मः ५)
नानकु जीवै संता धूरि ॥४॥२॥२३॥ (६७६-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७७

धनासरी मः ५ ॥ (६७७-१)
सो कत डरै जि खसमु समारै ॥ (६७७-१, धनासरी, मः ५)
डरि डरि पचे मनमुख वेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ (६७७-१, धनासरी, मः ५)
सिर ऊपरि मात पिता गुरदेव ॥ (६७७-२, धनासरी, मः ५)

सफल मूरति जा की निर्मल सेव ॥ (६७७-२, धनासरी, मः ५)
एकु निरंजनु जा की रासि ॥ (६७७-२, धनासरी, मः ५)
मिलि साधसंगति होवत परगास ॥१॥ (६७७-३, धनासरी, मः ५)
जीअन का दाता पूरन सभ ठाइ ॥ (६७७-३, धनासरी, मः ५)
कोटि कलेस मिटहि हरि नाइ ॥ (६७७-३, धनासरी, मः ५)
जनम मरन सगला दुखु नासै ॥ (६७७-४, धनासरी, मः ५)
गुरमुखि जा कै मनि तनि बासै ॥२॥ (६७७-४, धनासरी, मः ५)
जिस नो आपि लए लड़ि लाइ ॥ (६७७-४, धनासरी, मः ५)
दरगह मिलै तिसै ही जाइ ॥ (६७७-५, धनासरी, मः ५)
सेई भगत जि साचे भाणे ॥ (६७७-५, धनासरी, मः ५)
जमकाल ते भए निकाणे ॥३॥ (६७७-५, धनासरी, मः ५)
साचा साहिबु सचु दरबारु ॥ (६७७-६, धनासरी, मः ५)
कीमति कउणु कहै बीचारु ॥ (६७७-६, धनासरी, मः ५)
घटि घटि अंतरि सगल अधारु ॥ (६७७-६, धनासरी, मः ५)
नानकु जाचै संत रेणारु ॥४॥३॥२४॥ (६७७-६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ (६७७-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७७-८)
घरि बाहरि तेरा भरवासा तू जन कै है संगि ॥ (६७७-९, धनासरी, मः ५)
करि किरपा प्रीतम प्रभ अपुने नामु जपउ हरि रंगि ॥१॥ (६७७-९, धनासरी, मः ५)
जन कउ प्रभ अपने का ताणु ॥ (६७७-१०, धनासरी, मः ५)
जो तू करहि करावहि सुआमी सा मसलति परवाणु ॥ रहाउ ॥ (६७७-१०, धनासरी, मः ५)
पति परमेसरु गति नाराइणु धनु गुपाल गुण साखी ॥ (६७७-११, धनासरी, मः ५)
चरन सरन नानक दास हरि हरि संती इह बिधि जाती ॥२॥१॥२५॥ (६७७-११, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७७-१२)
सगल मनोरथ प्रभ ते पाए कंठि लाइ गुरि राखे ॥ (६७७-१२, धनासरी, मः ५)
संसार सागर महि जलनि न दीने किनै न दुतरु भाखे ॥१॥ (६७७-१३, धनासरी, मः ५)
जिन कै मनि साचा बिस्वासु ॥ (६७७-१३, धनासरी, मः ५)
पेखि पेखि सुआमी की सोभा आनदु सदा उलासु ॥ रहाउ ॥ (६७७-१३, धनासरी, मः ५)
चरन सरनि पूरन परमेसुर अंतरजामी साखिओ ॥ (६७७-१४, धनासरी, मः ५)
जानि बूझि अपना कीओ नानक भगतन का अंकुरु राखिओ ॥२॥२॥२६॥ (६७७-१५, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७७-१५)
जह जह पेखउ तह हजूरि दूरि कतहु न जाई ॥ (६७७-१५, धनासरी, मः ५)
रवि रहिआ सरबत्र मै मन सदा धिआई ॥१॥ (६७७-१६, धनासरी, मः ५)
ईत ऊत नही बीछुड़ै सो संगी गनीऐ ॥ (६७७-१६, धनासरी, मः ५)
बिनसि जाइ जो निमख महि सो अलप सुखु भनीऐ ॥ रहाउ ॥ (६७७-१७, धनासरी, मः ५)

प्रतिपालै अपिआउ देइ कछु ऊन न होई ॥ (६७७-१८, धनासरी, मः ५)
सासि सासि सम्मालता मेरा प्रभु सोई ॥२॥ (६७७-१८, धनासरी, मः ५)
अछल अछेद अपार प्रभ ऊचा जा का रूपु ॥ (६७७-१८, धनासरी, मः ५)
जपि जपि करहि अनंदु जन अचरज आनूपु ॥३॥ (६७७-१९, धनासरी, मः ५)
सा मति देहु दइआल प्रभ जितु तुमहि अराधा ॥ (६७७-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७८

नानकु मंगै दानु प्रभ रेन पग साधा ॥४॥३॥२७॥ (६७८-१, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७८-१)
जिनि तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घरि आउ ॥ (६७८-२, धनासरी, मः ५)
अनद मंगल गुन गाउ सहज धुनि निहचल राजु कमाउ ॥१॥ (६७८-२, धनासरी, मः ५)
तुम घरि आवहु मेरे मीत ॥ (६७८-३, धनासरी, मः ५)
तुमरे दोखी हरि आपि निवारे अपदा भई बितीत ॥ रहाउ ॥ (६७८-३, धनासरी, मः ५)
प्रगट कीने प्रभ करनेहारे नासन भाजन थाके ॥ (६७८-४, धनासरी, मः ५)
घरि मंगल वाजहि नित वाजे अपुनै खसमि निवाजे ॥२॥ (६७८-४, धनासरी, मः ५)
असथिर रहहु डोलहु मत कबहू गुर कै बचनि अधारि ॥ (६७८-५, धनासरी, मः ५)
जै जै कारु सगल भू मंडल मुख ऊजल दरबार ॥३॥ (६७८-५, धनासरी, मः ५)
जिन के जीअ तिनै ही फेरे आपे भइआ सहाई ॥ (६७८-६, धनासरी, मः ५)
अचरजु कीआ करनैहारै नानक सचु वडिआई ॥४॥४॥२८॥ (६७८-६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ घरु ६ (६७८-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७८-८)
सुनहु संत पिआरे बिनउ हमारे जीउ ॥ (६७८-९, धनासरी, मः ५)
हरि बिनु मुकति न काहू जीउ ॥ रहाउ ॥ (६७८-९, धनासरी, मः ५)
मन निर्मल कर्म करि तारन तरन हरि अवरि जंजाल तेरै काहू न काम जीउ ॥ (६७८-९, धनासरी, मः ५)
जीवन देवा पारब्रह्म सेवा इहु उपदेसु मो कउ गुरि दीना जीउ ॥१॥ (६७८-१०, धनासरी, मः ५)
तिसु सिउ न लाईऐ हीतु जा को किछु नाही बीतु अंत की बार ओहु संगि न चालै ॥ (६७८-११, धनासरी, मः ५)
मनि तनि तू आराध हरि के प्रीतम साध जा कै संगि तेरे बंधन छूटै ॥२॥ (६७८-१२, धनासरी, मः ५)
गहु पारब्रह्म सरन हिरदै कमल चरन अवर आस कछु पटलु न कीजै ॥ (६७८-१२, धनासरी, मः ५)
सोई भगतु गिआनी धिआनी तपा सोई नानक जा कउ किरपा कीजै ॥३॥१॥२९॥ (६७८-१३, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७८-१४)
मेरे लाल भलो रे भलो रे भलो हरि मंगना ॥ (६७८-१४, धनासरी, मः ५)
देखहु पसारि नैन सुनहु साधू के बैन प्रानपति चिति राखु सगल है मरना ॥ रहाउ ॥ (६७८-१५, धनासरी, मः ५)

चंदन चोआ रस भोग करत अनेकै बिखिआ बिकार देखु सगल है फीके एकै गोबिद को नामु नीको कहत है साध जन ॥ (६७८-१६, धनासरी, मः ५)

तनु धनु आपन थापिओ हरि जपु न निमख जापिओ अर्थु द्रबु देखु कछु संगि नाही चलना ॥१॥ (६७८-१७, धनासरी, मः ५)

जा को रे करमु भला तिनि ओट गही संत पला तिन नाही रे जमु संतावै साधू की संगना ॥ (६७८-१८, धनासरी, मः ५)

पाइओ रे पर्म निधानु मिटिओ है अभिमानु एकै निरंकार नानक मनु लगना ॥२॥२॥३०॥ (६७८-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६७९

धनासरी महला ५ घरु ७ (६७९-१)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७९-१)

हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे ॥ (६७९-२, धनासरी, मः ५)

कलि कलेस लोभ मोह महा भउजलु तारे ॥ रहाउ ॥ (६७९-२, धनासरी, मः ५)

सासि सासि निमख निमख दिनसु रैनि चितारे ॥ (६७९-३, धनासरी, मः ५)

साधसंग जपि निसंग मनि निधानु धारे ॥१॥ (६७९-३, धनासरी, मः ५)

चरन कमल नमस्कार गुन गोबिद बीचारे ॥ (६७९-३, धनासरी, मः ५)

साध जना की रेन नानक मंगल सूख सधारे ॥२॥१॥३१॥ (६७९-४, धनासरी, मः ५)

धनासरी महला ५ घरु ८ दुपदे (६७९-५)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७९-५)

सिमरउ सिमरि सिमरि सुख पावउ सासि सासि समाले ॥ (६७९-६, धनासरी, मः ५)

इह लोकि परलोकि संगि सहाई जत कत मोहि रखवाले ॥१॥ (६७९-६, धनासरी, मः ५)

गुर का बचनु बसै जीअ नाले ॥ (६७९-७, धनासरी, मः ५)

जलि नही डूबै तसकरु नही लेवै भाहि न साकै जाले ॥१॥ रहाउ ॥ (६७९-७, धनासरी, मः ५)

निर्धन कउ धनु अंधुले कउ टिक मात दूधु जैसे बाले ॥ (६७९-८, धनासरी, मः ५)

सागर महि बोहिथु पाइओ हरि नानक करी कृपा किरपाले ॥२॥१॥३२॥ (६७९-८, धनासरी, मः ५)

धनासरी महला ५ ॥ (६७९-९)

भए कृपाल दइआल गोबिंदा अमृतु रिदै सिंचाई ॥ (६७९-९, धनासरी, मः ५)

नव निधि रिधि सिधि हरि लागि रही जन पाई ॥१॥ (६७९-१०, धनासरी, मः ५)

संतन कउ अनदु सगल ही जाई ॥ (६७९-१०, धनासरी, मः ५)

गृहि बाहरि ठाकुरु भगतन का रवि रहिआ स्रब ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६७९-११, धनासरी, मः ५)

ता कउ कोइ न पहुचनहारा जा कै अंगि गुसाई ॥ (६७९-१२, धनासरी, मः ५)

जम की त्रास मिटै जिसु सिमरत नानक नामु धिआई ॥२॥२॥३३॥ (६७९-१२, धनासरी, मः ५)

धनासरी महला ५ ॥ (६७९-१३)

दरबवंतु दरबु देखि गरबै भूमवंतु अभिमानी ॥ (६७९-१३, धनासरी, मः ५)

राजा जानै सगल राजु हमरा तिउ हरि जन टेक सुआमी ॥१॥ (६७९-१३, धनासरी, मः ५)
जे कोऊ अपुनी ओट समारै ॥ (६७९-१४, धनासरी, मः ५)
जैसा बितु तैसा होइ वरतै अपुना बलु नही हारै ॥१॥ रहाउ ॥ (६७९-१४, धनासरी, मः ५)
आन तिआगि भए इक आसर सरणि सरणि करि आए ॥ (६७९-१५, धनासरी, मः ५)
संत अनुग्रह भए मन निर्मल नानक हरि गुन गाए ॥२॥३॥३४॥ (६७९-१६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६७९-१६)
जा कउ हरि रंगु लागो इसु जुग महि सो कहीअत है सूरा ॥ (६७९-१७, धनासरी, मः ५)
आतम जिणै सगल वसि ता कै जा का सतिगुरु पूरा ॥१॥ (६७९-१७, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६८०

ठाकुरु गाईऐ आतम रंगि ॥ (६८०-१, धनासरी, मः ५)
सरणी पावन नाम धिआवन सहजि समावन संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (६८०-१, धनासरी, मः ५)
जन के चरन वसहि मेरै हीअरै संगि पुनीता देही ॥ (६८०-२, धनासरी, मः ५)
जन की धूरि देहु किरपा निधि नानक कै सुखु एही ॥२॥४॥३५॥ (६८०-२, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८०-३)
जतन करै मानुख डहकावै ओहु अंतरजामी जानै ॥ (६८०-३, धनासरी, मः ५)
पाप करे करि मूकरि पावै भेख करै निरबानै ॥१॥ (६८०-४, धनासरी, मः ५)
जानत दूरि तुमहि प्रभ नेरि ॥ (६८०-४, धनासरी, मः ५)
उत ताकै उत ते उत पेखै आवै लोभी फेरि ॥ रहाउ ॥ (६८०-५, धनासरी, मः ५)
जब लगु तुटै नाही मन भरमा तब लगु मुकतु न कोई ॥ (६८०-५, धनासरी, मः ५)
कहु नानक दइआल सुआमी संतु भगतु जनु सोई ॥२॥५॥३६॥ (६८०-६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८०-७)
नामु गुरि दीओ है अपुनै जा कै मसतकि करमा ॥ (६८०-७, धनासरी, मः ५)
नामु दृड़ावै नामु जपावै ता का जुग महि धरमा ॥१॥ (६८०-७, धनासरी, मः ५)
जन कउ नामु वडाई सोभ ॥ (६८०-८, धनासरी, मः ५)
नामो गति नामो पति जन की मानै जो जो होग ॥१॥ रहाउ ॥ (६८०-८, धनासरी, मः ५)
नाम धनु जिसु जन कै पालै सोई पूरा साहा ॥ (६८०-९, धनासरी, मः ५)
नामु बिउहारा नानक आधारा नामु परापति लाहा ॥२॥६॥३७॥ (६८०-९, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८०-१०)
नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे माथै परउ रवाल ॥ (६८०-१०, धनासरी, मः ५)
रसि रसि गुण गावउ ठाकुर के मोरै हिरदै बसहु गोपाल ॥१॥ (६८०-११, धनासरी, मः ५)
तुम तउ राखनहार दइआल ॥ (६८०-११, धनासरी, मः ५)
सुंदर सुघर बेअंत पिता प्रभ होहु प्रभू किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (६८०-१२, धनासरी, मः ५)
महा अनंद मंगल रूप तुमरे बचन अनूप रसाल ॥ (६८०-१२, धनासरी, मः ५)
हिरदै चरण सबदु सतिगुर को नानक बाँधिओ पाल ॥२॥७॥३८॥ (६८०-१३, धनासरी, मः ५)

धनासरी महला ५ ॥ (६८०-१३)
अपनी उकति खलावै भोजन अपनी उकति खेलावै ॥ (६८०-१४, धनासरी, मः ५)
सर्ब सूख भोग रस देवै मन ही नालि समावै ॥१॥ (६८०-१४, धनासरी, मः ५)
हमरे पिता गोपाल दइआल ॥ (६८०-१५, धनासरी, मः ५)
जिउ राखै महतारी बारिक कउ तैसे ही प्रभ पाल ॥१॥ रहाउ ॥ (६८०-१५, धनासरी, मः ५)
मीत साजन सर्ब गुण नाइक सदा सलामति देवा ॥ (६८०-१६, धनासरी, मः ५)
ईत ऊत जत कत तत तुम ही मिलै नानक संत सेवा ॥२॥८॥३९॥ (६८०-१६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८०-१७)
संत कृपाल दइआल दमोदर काम क्रोध बिखु जारे ॥ (६८०-१७, धनासरी, मः ५)
राजु मालु जोबनु तनु जीअरा इन ऊपरि लै बारे ॥१॥ (६८०-१८, धनासरी, मः ५)
मनि तनि राम नाम हितकारे ॥ (६८०-१८, धनासरी, मः ५)
सूख सहज आनंद मंगल सहित भव निधि पारि उतारे ॥ रहाउ ॥ (६८०-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६८१

धंनि सु थानु धंनि ओइ भवना जा महि संत बसारे ॥ (६८१-१, धनासरी, मः ५)
जन नानक की सरधा पूरहु ठाकुर भगत तेरे नमसकारे ॥२॥९॥४०॥ (६८१-१, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८१-२)
छडाइ लीओ महा बली ते अपने चरन पराति ॥ (६८१-२, धनासरी, मः ५)
एकु नामु दीओ मन मंता बिनसि न कतहू जाति ॥१॥ (६८१-३, धनासरी, मः ५)
सतिगुरि पूरै कीनी दाति ॥ (६८१-३, धनासरी, मः ५)
हरि हरि नामु दीओ कीर्तन कउ भई हमारी गाति ॥ रहाउ ॥ (६८१-३, धनासरी, मः ५)
अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै भगतन की राखी पाति ॥ (६८१-४, धनासरी, मः ५)
नानक चरन गहे प्रभ अपने सुखु पाइओ दिन राति ॥२॥१०॥४१॥ (६८१-५, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८१-५)
पर हरना लोभु झूठ निंद इव ही करत गुदारी ॥ (६८१-६, धनासरी, मः ५)
मृग तृसना आस मिथिआ मीठी इह टेक मनहि साधारी ॥१॥ (६८१-६, धनासरी, मः ५)
साकत की आवरदा जाइ बृथारी ॥ (६८१-७, धनासरी, मः ५)
जैसे कागद के भार मूसा टूकि गवावत कामि नही गावारी ॥ रहाउ ॥ (६८१-७, धनासरी, मः ५)
करि किरपा पारब्रह्म सुआमी इह बंधन छुटकारी ॥ (६८१-८, धनासरी, मः ५)
बूडत अंध नानक प्रभ काढत साध जना संगारी ॥२॥११॥४२॥ (६८१-८, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८१-९)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सीतल तनु मनु छाती ॥ (६८१-९, धनासरी, मः ५)
रूप रंग सूख धनु जीअ का पारब्रह्म मोरै जाती ॥१॥ (६८१-१०, धनासरी, मः ५)
रसना राम रसाइनि माती ॥ (६८१-११, धनासरी, मः ५)
रंग रंगी राम अपने कै चरन कमल निधि थाती ॥ रहाउ ॥ (६८१-११, धनासरी, मः ५)

जिस का सा तिन ही रखि लीआ पूरन प्रभ की भाती ॥ (६८१-११, धनासरी, मः ५)
मेलि लीओ आपे सुखदातै नानक हरि राखी पाती ॥२॥१२॥४३॥ (६८१-१२, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८१-१३)
दूत दुसमन सभि तुझ ते निवरहि प्रगट प्रतापु तुमारा ॥ (६८१-१३, धनासरी, मः ५)
जो जो तेरे भगत दुखाए ओहु ततकाल तुम मारा ॥१॥ (६८१-१४, धनासरी, मः ५)
निरखउ तुमरी ओरि हरि नीत ॥ (६८१-१४, धनासरी, मः ५)
मुरारि सहाइ होहु दास कउ करु गहि उधरहु मीत ॥ रहाउ ॥ (६८१-१४, धनासरी, मः ५)
सुणी बेनती ठाकुरि मेरै खसमाना करि आपि ॥ (६८१-१५, धनासरी, मः ५)
नानक अनद भए दुख भागे सदा सदा हरि जापि ॥२॥१३॥४४॥ (६८१-१६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८१-१६)
चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ ॥ (६८१-१६, धनासरी, मः ५)
कृपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥१॥ (६८१-१७, धनासरी, मः ५)
हरि जन राखे गुर गोविंद ॥ (६८१-१८, धनासरी, मः ५)
कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ ॥ (६८१-१८, धनासरी, मः ५)
जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई सोई देवै ॥ (६८१-१८, धनासरी, मः ५)
नानक दासु मुख ते जो बोलै ईहा ऊहा सचु होवै ॥२॥१४॥४५॥ (६८१-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६८२

धनासरी महला ५ ॥ (६८२-१)
अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले ॥ (६८२-१, धनासरी, मः ५)
हाथ देइ राखै अपने कउ सासि सासि प्रतिपाले ॥१॥ (६८२-१, धनासरी, मः ५)
प्रभ सिउ लागि रहिओ मेरा चीतु ॥ (६८२-२, धनासरी, मः ५)
आदि अंति प्रभु सदा सहाई धन्नु हमारा मीतु ॥ रहाउ ॥ (६८२-२, धनासरी, मः ५)
मनि बिलास भए साहिब के अचरज देखि बडाई ॥ (६८२-३, धनासरी, मः ५)
हरि सिमरि सिमरि आनद करि नानक प्रभि पूरन पैज रखाई ॥२॥१५॥४६॥ (६८२-३, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८२-४)
जिस कउ बिसरै प्रानपति दाता सोई गनहु अभागा ॥ (६८२-४, धनासरी, मः ५)
चरन कमल जा का मनु रागिओ अमिअ सरोवर पागा ॥१॥ (६८२-५, धनासरी, मः ५)
तेरा जनु राम नाम रंगि जागा ॥ (६८२-५, धनासरी, मः ५)
आलसु छीजि गइआ सभु तन ते प्रीतम सिउ मनु लागा ॥ रहाउ ॥ (६८२-६, धनासरी, मः ५)
जह जह पेखउ तह नाराइण सगल घटा महि तागा ॥ (६८२-६, धनासरी, मः ५)
नाम उदकु पीवत जन नानक तिआगे सभि अनुरागा ॥२॥१६॥४७॥ (६८२-७, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८२-८)
जन के पूरन होए काम ॥ (६८२-८, धनासरी, मः ५)
कली काल महा बिखिआ महि लजा राखी राम ॥१॥ रहाउ ॥ (६८२-८, धनासरी, मः ५)

सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना निकटि न आवै जाम ॥ (६८२-६, धनासरी, मः ५)
मुकति बैकुंठ साध की संगति जन पाइओ हरि का धाम ॥१॥ (६८२-१०, धनासरी, मः ५)
चरन कमल हरि जन की थाती कोटि सूख बिस्राम ॥ (६८२-१०, धनासरी, मः ५)
गोबिंदु दमोदर सिमरउ दिन रैनि नानक सद कुरबान ॥२॥१७॥४८॥ (६८२-११, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८२-१२)
माँगउ राम ते इकु दानु ॥ (६८२-१२, धनासरी, मः ५)
सगल मनोरथ पूरन होवहि सिमरउ तुमरा नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (६८२-१२, धनासरी, मः ५)
चरन तुम्हारे हिरदै वासहि संतन का संगु पावउ ॥ (६८२-१३, धनासरी, मः ५)
सोग अगनि महि मनु न विआपै आठ पहर गुण गावउ ॥१॥ (६८२-१३, धनासरी, मः ५)
स्वसति बिवसथा हरि की सेवा मध्यंत प्रभ जापण ॥ (६८२-१४, धनासरी, मः ५)
नानक रंगु लगा परमेसर बाहुड़ि जनम न छापण ॥२॥१८॥४९॥ (६८२-१४, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८२-१५)
माँगउ राम ते सभि थोक ॥ (६८२-१५, धनासरी, मः ५)
मानुख कउ जाचत स्रमु पाईऐ प्रभ कै सिमरनि मोख ॥१॥ रहाउ ॥ (६८२-१६, धनासरी, मः ५)
घोखे मुनि जन सिम्मृति पुरानाँ बेद पुकारहि घोख ॥ (६८२-१६, धनासरी, मः ५)
कृपा सिंधु सेवि सचु पाईऐ दोवै सुहेले लोक ॥१॥ (६८२-१७, धनासरी, मः ५)
आन अचार बिउहार है जेते बिनु हरि सिमरन फोक ॥ (६८२-१७, धनासरी, मः ५)
नानक जनम मरण भै काटे मिलि साधू बिनसे सोक ॥२॥१९॥५०॥ (६८२-१८, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८२-१९)
तृसना बुझै हरि कै नामि ॥ (६८२-१९, धनासरी, मः ५)
महा संतोखु होवै गुर बचनी प्रभ सिउ लागै पूरन धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (६८२-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६८३

महा कलोल बुझहि माइआ के करि किरपा मेरे दीन दइआल ॥ (६८३-१, धनासरी, मः ५)
अपणा नामु देहि जपि जीवा पूरन होइ दास की घाल ॥१॥ (६८३-१, धनासरी, मः ५)
सर्ब मनोरथ राज सूख रस सद खुसीआ कीरतनु जपि नाम ॥ (६८३-२, धनासरी, मः ५)
जिस कै करमि लिखिआ धुरि करतै नानक जन के पूरन काम ॥२॥२०॥५१॥ (६८३-३, धनासरी, मः ५)
धनासरी मः ५ ॥ (६८३-४)
जन की कीनी पारब्रहमि सार ॥ (६८३-४, धनासरी, मः ५)
निंदक टिकनु न पावनि मूले ऊडि गए बेकार ॥१॥ रहाउ ॥ (६८३-४, धनासरी, मः ५)
जह जह देखउ तह तह सुआमी कोइ न पहुचनहार ॥ (६८३-५, धनासरी, मः ५)
जो जो करै अवगिआ जन की होइ गइआ तत छार ॥१॥ (६८३-५, धनासरी, मः ५)
करनहारु रखवाला होआ जा का अंतु न पारावार ॥ (६८३-६, धनासरी, मः ५)
नानक दास रखे प्रभि अपुनै निंदक काढे मारि ॥२॥२१॥५२॥ (६८३-६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ घरु ९ पड़ताल (६८३-८)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६८३-८)
हरि चरन सरन गोबिंद दुख भंजना दास अपुने कउ नामु देवहु ॥ (६८३-९, धनासरी, मः ५)
दृसटि प्रभ धारहु कृपा करि तारहु भुजा गहि कूप ते काढि लेवहु ॥ रहाउ ॥ (६८३-९, धनासरी, मः ५)
काम क्रोध करि अंध माइआ के बंध अनिक दोखा तनि छादि पूरे ॥ (६८३-१०, धनासरी, मः ५)
प्रभ बिना आन न राखनहारा नामु सिमरावहु सरनि सूरे ॥१॥ (६८३-११, धनासरी, मः ५)
पतित उधारणा जीअ जंत तारणा बेद उचार नही अंतु पाइओ ॥ (६८३-११, धनासरी, मः ५)
गुणह सुख सागरा ब्रह्म रतनागरा भगति वछलु नानक गाइओ ॥२॥१॥५३॥ (६८३-१२, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८३-१३)
हलति सुखु पलति सुखु नित सुखु सिमरनो नामु गोबिंद का सदा लीजै ॥ (६८३-१३, धनासरी, मः ५)
मिटहि कमाणे पाप चिराणे साधसंगति मिलि मुआ जीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (६८३-१४, धनासरी, मः ५)
राज जोबन बिसरंत हरि माइआ महा दुखु एहु महाँत कहै ॥ (६८३-१४, धनासरी, मः ५)
आस पिआस रमण हरि कीर्तन एहु पदारथु भागवंतु लहै ॥१॥ (६८३-१५, धनासरी, मः ५)
सरणि समरथ अकथ अगोचरा पतित उधारण नामु तेरा ॥ (६८३-१६, धनासरी, मः ५)
अंतरजामी नानक के सुआमी सरबत पूरन ठाकुरु मेरा ॥२॥२॥५४॥ (६८३-१६, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ घरु १२ (६८३-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६८३-१८)
बंदना हरि बंदना गुण गावहु गोपाल राइ ॥ रहाउ ॥ (६८३-१९, धनासरी, मः ५)
वडै भागि भेटे गुरदेवा ॥ (६८३-१९, धनासरी, मः ५)
कोटि पराध मिटे हरि सेवा ॥१॥ (६८३-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६८४

चरन कमल जा का मनु रापै ॥ (६८४-१, धनासरी, मः ५)
सोग अगनि तिसु जन न बिआपै ॥२॥ (६८४-१, धनासरी, मः ५)
सागरु तरिआ साधू संगे ॥ (६८४-१, धनासरी, मः ५)
निरभउ नामु जपहु हरि रंगे ॥३॥ (६८४-२, धनासरी, मः ५)
पर धन दोख किछु पाप न फेड़े ॥ (६८४-२, धनासरी, मः ५)
जम जंदारु न आवै नेड़े ॥४॥ (६८४-२, धनासरी, मः ५)
तृसना अगनि प्रभि आपि बुझाई ॥ (६८४-३, धनासरी, मः ५)
नानक उधरे प्रभ सरणाई ॥५॥१॥५५॥ (६८४-३, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८४-३)
तृपति भई सचु भोजनु खाइआ ॥ (६८४-४, धनासरी, मः ५)
मनि तनि रसना नामु धिआइआ ॥१॥ (६८४-४, धनासरी, मः ५)
जीवना हरि जीवना ॥ (६८४-४, धनासरी, मः ५)
जीवनु हरि जपि साधसंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (६८४-५, धनासरी, मः ५)
अनिक प्रकारी बसत्र ओढाए ॥ (६८४-५, धनासरी, मः ५)

अनदिनु कीरतनु हरि गुन गाए ॥२॥ (६८४-५, धनासरी, मः ५)
हसती रथ असु असवारी ॥ (६८४-६, धनासरी, मः ५)
हरि का मारगु रिदै निहारी ॥३॥ (६८४-६, धनासरी, मः ५)
मन तन अंतरि चरन धिआइआ ॥ (६८४-६, धनासरी, मः ५)
हरि सुख निधान नानक दासि पाइआ ॥४॥२॥५६॥ (६८४-७, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८४-७)
गुर के चरन जीअ का निसतारा ॥ (६८४-८, धनासरी, मः ५)
समुंदु सागरु जिनि खिन महि तारा ॥१॥ रहाउ ॥ (६८४-८, धनासरी, मः ५)
कोई होआ क्रम रतु कोई तीर्थ नाइआ ॥ (६८४-८, धनासरी, मः ५)
दासंी हरि का नामु धिआइआ ॥१॥ (६८४-९, धनासरी, मः ५)
बंधन काटनहारु सुआमी ॥ (६८४-९, धनासरी, मः ५)
जन नानकु सिमरै अंतरजामी ॥२॥३॥५७॥ (६८४-९, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला ५ ॥ (६८४-१०)
कितै प्रकारि न तूटउ प्रीति ॥ (६८४-१०, धनासरी, मः ५)
दास तेरे की निर्मल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (६८४-१०, धनासरी, मः ५)
जीअ प्रान मन धन ते पिआरा ॥ (६८४-११, धनासरी, मः ५)
हउमै बंधु हरि देवणहारा ॥१॥ (६८४-११, धनासरी, मः ५)
चरन कमल सिउ लागउ नेहु ॥ (६८४-१२, धनासरी, मः ५)
नानक की बेनंती एह ॥२॥४॥५८॥ (६८४-१२, धनासरी, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६८४-१३)
धनासरी महला ९ ॥ (६८४-१४)
काहे रे बन खोजन जाई ॥ (६८४-१४, धनासरी, मः ९)
सर्ब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६८४-१४, धनासरी, मः ९)
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥ (६८४-१५, धनासरी, मः ९)
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥ (६८४-१५, धनासरी, मः ९)
बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥ (६८४-१६, धनासरी, मः ९)
जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥ (६८४-१६, धनासरी, मः ९)
धनासरी महला ९ ॥ (६८४-१७)
साधो इहु जगु भर्म भुलाना ॥ (६८४-१७, धनासरी, मः ९)
राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥१॥ रहाउ ॥ (६८४-१७, धनासरी, मः ९)
मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥ (६८४-१८, धनासरी, मः ९)

पन्ना ६८५

जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥ (६८५-१, धनासरी, मः ९)
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥ (६८५-१, धनासरी, मः ९)

जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥ (६८५-२, धनासरी, मः ९)
धनासरी महला ९ ॥ (६८५-३)
तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥ (६८५-३, धनासरी, मः ९)
लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ ॥ (६८५-३, धनासरी, मः ९)
पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥ (६८५-४, धनासरी, मः ९)
हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥१॥ (६८५-४, धनासरी, मः ९)
चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ (६८५-५, धनासरी, मः ९)
कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥ (६८५-५, धनासरी, मः ९)
धनासरी महला ९ ॥ (६८५-६)
अब मै कउनु उपाउ करउ ॥ (६८५-६, धनासरी, मः ९)
जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥ (६८५-७, धनासरी, मः ९)
जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥ (६८५-७, धनासरी, मः ९)
मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥१॥ (६८५-८, धनासरी, मः ९)
गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥ (६८५-८, धनासरी, मः ९)
कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥ (६८५-९, धनासरी, मः ९)
धनासरी महला १ घरु २ असटपदीआ (६८५-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६८५-११)
गुरु सागरु रतनी भरपूरे ॥ (६८५-१२, धनासरी, मः १)
अमृतु संत चुगहि नही दूरे ॥ (६८५-१२, धनासरी, मः १)
हरि रसु चोग चुगहि प्रभ भावै ॥ (६८५-१२, धनासरी, मः १)
सरवर महि हंसु प्रानपति पावै ॥१॥ (६८५-१२, धनासरी, मः १)
किआ बगु बपुड़ा छपड़ी नाइ ॥ (६८५-१३, धनासरी, मः १)
कीचड़ि डूबै मैलु न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६८५-१३, धनासरी, मः १)
रखि रखि चरन धरे वीचारी ॥ (६८५-१४, धनासरी, मः १)
दुबिधा छोडि भए निरंकारी ॥ (६८५-१४, धनासरी, मः १)
मुकति पदारथु हरि रस चाखे ॥ (६८५-१४, धनासरी, मः १)
आवण जाण रहे गुरि राखे ॥२॥ (६८५-१५, धनासरी, मः १)
सरवर हंसा छोडि न जाइ ॥ (६८५-१५, धनासरी, मः १)
प्रेम भगति करि सहजि समाइ ॥ (६८५-१५, धनासरी, मः १)
सरवर महि हंसु हंस महि सागरु ॥ (६८५-१६, धनासरी, मः १)
अकथ कथा गुर बचनी आदरु ॥३॥ (६८५-१६, धनासरी, मः १)
सुन्न मंडल इकु जोगी बैसे ॥ (६८५-१६, धनासरी, मः १)
नारि न पुरखु कहहु कोऊ कैसे ॥ (६८५-१७, धनासरी, मः १)
तृभवण जोति रहे लिव लाई ॥ (६८५-१७, धनासरी, मः १)
सुरि नर नाथ सचे सरणाई ॥४॥ (६८५-१७, धनासरी, मः १)

आनंद मूलु अनाथ अधारी ॥ (६८५-१८, धनासरी, मः १)
गुरमुखि भगति सहजि बीचारी ॥ (६८५-१८, धनासरी, मः १)
भगति वछल भै काटणहारे ॥ (६८५-१८, धनासरी, मः १)
हउमै मारि मिले पगु धारे ॥५॥ (६८५-१८, धनासरी, मः १)
अनिक जतन करि कालु संताए ॥ (६८५-१९, धनासरी, मः १)
मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ (६८५-१९, धनासरी, मः १)

पन्ना ६८६

जनमु पदारथु दुबिधा खोवै ॥ (६८६-१, धनासरी, मः १)
आपु न चीनसि भ्रमि भ्रमि रोवै ॥६॥ (६८६-१, धनासरी, मः १)
कहतउ पड़तउ सुणतउ एक ॥ (६८६-१, धनासरी, मः १)
धीरज धरमु धरणीधर टेक ॥ (६८६-२, धनासरी, मः १)
जतु सतु संजमु रिदै समाए ॥ (६८६-२, धनासरी, मः १)
चउथे पद कउ जे मनु पतीआए ॥७॥ (६८६-२, धनासरी, मः १)
साचे निर्मल मैलु न लागै ॥ (६८६-३, धनासरी, मः १)
गुर कै सबदि भर्म भउ भागै ॥ (६८६-३, धनासरी, मः १)
सूरति मूरति आदि अनूपु ॥ (६८६-३, धनासरी, मः १)
नानकु जाचै साचु सरूपु ॥८॥१॥ (६८६-३, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ ॥ (६८६-४)
सहजि मिलै मिलिआ परवाणु ॥ (६८६-४, धनासरी, मः १)
ना तिसु मरणु न आवणु जाणु ॥ (६८६-४, धनासरी, मः १)
ठाकुर महि दासु दास महि सोइ ॥ (६८६-५, धनासरी, मः १)
जह देखा तह अवरु न कोइ ॥१॥ (६८६-५, धनासरी, मः १)
गुरमुखि भगति सहज घरु पाईऐ ॥ (६८६-५, धनासरी, मः १)
बिनु गुर भेटे मरि आईऐ जाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (६८६-६, धनासरी, मः १)
सो गुरु करउ जि साचु दृड़ावै ॥ (६८६-६, धनासरी, मः १)
अकथु कथावै सबदि मिलावै ॥ (६८६-७, धनासरी, मः १)
हरि के लोग अवर नही कारा ॥ (६८६-७, धनासरी, मः १)
साचउ ठाकुरु साचु पिआरा ॥२॥ (६८६-७, धनासरी, मः १)
तन महि मनूआ मन महि साचा ॥ (६८६-८, धनासरी, मः १)
सो साचा मिलि साचे राचा ॥ (६८६-८, धनासरी, मः १)
सेवकु प्रभ कै लागै पाइ ॥ (६८६-८, धनासरी, मः १)
सतिगुरु पूरा मिलै मिलाइ ॥३॥ (६८६-८, धनासरी, मः १)
आपि दिखावै आपे देखै ॥ (६८६-९, धनासरी, मः १)
हठि न पतीजै ना बहु भेखै ॥ (६८६-९, धनासरी, मः १)

घड़ि भाडे जिनि अमृतु पाइआ ॥ (६८६-९, धनासरी, मः १)
प्रेम भगति प्रभि मनु पतीआइआ ॥४॥ (६८६-१०, धनासरी, मः १)
पड़ि पड़ि भूलहि चोटा खाहि ॥ (६८६-१०, धनासरी, मः १)
बहुतु सिआणप आवहि जाहि ॥ (६८६-१०, धनासरी, मः १)
नामु जपै भउ भोजनु खाइ ॥ (६८६-११, धनासरी, मः १)
गुरमुखि सेवक रहे समाइ ॥५॥ (६८६-११, धनासरी, मः १)
पूजि सिला तीर्थ बन वासा ॥ (६८६-११, धनासरी, मः १)
भरमत डोलत भए उदासा ॥ (६८६-१२, धनासरी, मः १)
मनि मैलै सूचा किउ होइ ॥ (६८६-१२, धनासरी, मः १)
साचि मिलै पावै पति सोइ ॥६॥ (६८६-१२, धनासरी, मः १)
आचारा वीचारु सरीरि ॥ (६८६-१३, धनासरी, मः १)
आदि जुगादि सहजि मनु धीरि ॥ (६८६-१३, धनासरी, मः १)
पल पंकज महि कोटि उधारे ॥ (६८६-१३, धनासरी, मः १)
करि किरपा गुरु मेलि पिआरे ॥७॥ (६८६-१४, धनासरी, मः १)
किसु आगै प्रभ तुधु सालाही ॥ (६८६-१४, धनासरी, मः १)
तुधु बिनु दूजा मै को नाही ॥ (६८६-१४, धनासरी, मः १)
जिउ तुधु भावै तिउ राखु रजाइ ॥ (६८६-१४, धनासरी, मः १)
नानक सहजि भाइ गुण गाइ ॥८॥२॥ (६८६-१५, धनासरी, मः १)
धनासरी मः ५ घरु ६ असटपदी (६८६-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६८६-१६)
जो जो जूनी आइओ तिह तिह उरझाइओ माणस जनमु संजोगि पाइआ ॥ (६८६-१७, धनासरी, मः ५)
ताकी है ओट साध राखहु दे करि हाथ करि किरपा मेलहु हरि राइआ ॥१॥ (६८६-१७, धनासरी, मः ५)
अनिक जनम भ्रमि थिति नही पाई ॥ (६८६-१८, धनासरी, मः ५)
करउ सेवा गुर लागउ चरन गोविंद जी का मारगु देहु जी बताई ॥१॥ रहाउ ॥ (६८६-१८, धनासरी, मः ५)
अनिक उपाव करउ माइआ कउ बचिति धरउ मेरी मेरी करत सद ही विहावै ॥ (६८६-१९, धनासरी, मः ५)

पन्ना ६८७

कोई ऐसो रे भेटै संतु मेरी लाहै सगल चिंत ठाकुर सिउ मेरा रंगु लावै ॥२॥ (६८७-१, धनासरी, मः ५)
पड़े रे सगल बेद नह चूकै मन भेद इकु खिनु न धीरहि मेरे घर के पंचा ॥ (६८७-२, धनासरी, मः ५)
कोई ऐसो रे भगतु जु माइआ ते रहतु इकु अमृत नामु मेरै रिदै सिंचा ॥३॥ (६८७-३, धनासरी, मः ५)
जेते रे तीर्थ नाए अहम्बुधि मैलु लाए घर को ठाकुरु इकु तिलु न मानै ॥ (६८७-३, धनासरी, मः ५)
कदि पावउ साधसंगु हरि हरि सदा आनंदु गिआन अंजनि मेरा मनु इसनानै ॥४॥ (६८७-४, धनासरी, मः ५)
सगल अस्रम कीने मनूआ नह पतीने बिबेकहीन देही धोए ॥ (६८७-५, धनासरी, मः ५)
कोई पाईऐ रे पुरखु बिधाता पारब्रह्म कै रंगि राता मेरे मन की दुरमति मलु खोए ॥५॥ (६८७-६, धनासरी, मः ५)

कर्म धर्म जुगता निमख न हेतु करता गरबि गरबि पड़ै कही न लेखै ॥ (६८७-७, धनासरी, मः ५)
जिसु भेटीऐ सफल मूरति करै सदा कीरति गुर परसादि कोऊ नेत्रहु पेखै ॥६॥ (६८७-७, धनासरी, मः ५)
मनहठि जो कमावै तिलु न लेखै पावै बगुल जिउ धिआनु लावै माइआ रे धारी ॥ (६८७-८, धनासरी, मः ५)
कोई ऐसो रे सुखह दाई प्रभ की कथा सुनाई तिसु भेटे गति होइ हमारी ॥७॥ (६८७-९, धनासरी, मः ५)
सुप्रसन्न गोपाल राइ काटै रे बंधन माइ गुर कै सबदि मेरा मनु राता ॥ (६८७-१०, धनासरी, मः ५)
सदा सदा आनंदु भेटिओ निरभै गोबिंदु सुख नानक लाधे हरि चरन पराता ॥८॥ (६८७-१०, धनासरी, मः ५)
सफल सफल भई सफल जात्रा ॥ (६८७-११, धनासरी, मः ५)
आवण जाण रहे मिले साधा ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥३॥॥ (६८७-१२, धनासरी, मः ५)
धनासरी महला १ छंत (६८७-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६८७-१३)
तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है ॥ (६८७-१४, धनासरी, मः १)
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु है ॥ (६८७-१४, धनासरी, मः १)
गुर गिआनु साचा थानु तीरथु दस पुरब सदा दसाहरा ॥ (६८७-१४, धनासरी, मः १)
हउ नामु हरि का सदा जाचउ देहु प्रभ धरणीधरा ॥ (६८७-१५, धनासरी, मः १)
संसारु रोगी नामु दारू मैलु लागै सच बिना ॥ (६८७-१५, धनासरी, मः १)
गुर वाकु निरमलु सदा चानणु नित साचु तीरथु मजना ॥१॥ (६८७-१६, धनासरी, मः १)
साचि न लागै मैलु किआ मलु धोईऐ ॥ (६८७-१६, धनासरी, मः १)
गुणहि हारु परोइ किस कउ रोईऐ ॥ (६८७-१७, धनासरी, मः १)
वीचारि मारै तरै तारै उलटि जोनि न आवए ॥ (६८७-१७, धनासरी, मः १)
आपि पारसु पर्म धिआनी साचु साचे भावए ॥ (६८७-१८, धनासरी, मः १)
आनंदु अनदिनु हरखु साचा दूख किलविख परहरे ॥ (६८७-१८, धनासरी, मः १)
सचु नामु पाइआ गुरि दिखाइआ मैलु नाही सच मने ॥२॥ (६८७-१९, धनासरी, मः १)
संगति मीत मिलापु पूरा नावणो ॥ (६८७-१९, धनासरी, मः १)

पन्ना ६८८

गावै गावणहारु सबदि सुहावणो ॥ (६८८-१, धनासरी, मः १)
सालाहि साचे मंनि सतिगुरु पुन्न दान दइआ मते ॥ (६८८-१, धनासरी, मः १)
पिर संगि भावै सहजि नावै बेणी त संगमु सत सते ॥ (६८८-२, धनासरी, मः १)
आराधि एकंकारु साचा नित देइ चड़ै सवाइआ ॥ (६८८-२, धनासरी, मः १)
गति संगि मीता संतसंगति करि नदरि मेलि मिलाइआ ॥३॥ (६८८-३, धनासरी, मः १)
कहणु कहै सभु कोइ केवडु आखीऐ ॥ (६८८-३, धनासरी, मः १)
हउ मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐ ॥ (६८८-४, धनासरी, मः १)
सचु गुर की साखी अमृत भाखी तितु मनु मानिआ मेरा ॥ (६८८-४, धनासरी, मः १)
कूचु करहि आवहि बिखु लादे सबदि सचै गुरु मेरा ॥ (६८८-५, धनासरी, मः १)
आखणि तोटि न भगति भंडारी भरिपुरि रहिआ सोई ॥ (६८८-५, धनासरी, मः १)

नानक साचु कहै बेनंती मनु माँजै सचु सोई ॥४॥१॥ (६८८-६, धनासरी, मः १)
धनासरी महला १ ॥ (६८८-६)
जीवा तेरै नाइ मनि आनंदु है जीउ ॥ (६८८-७, धनासरी, मः १)
साचो साचा नाउ गुण गोविंदु है जीउ ॥ (६८८-७, धनासरी, मः १)
गुर गिआनु अपारा सिरजणहारा जिनि सिरजी तिनि गोई ॥ (६८८-७, धनासरी, मः १)
परवाणा आइआ हुकमि पठाइआ फेरि न सकै कोई ॥ (६८८-८, धनासरी, मः १)
आपे करि वेखै सिरि सिरि लेखै आपे सुरति बुझाई ॥ (६८८-९, धनासरी, मः १)
नानक साहिबु अगम अगोचरु जीवा सची नाई ॥१॥ (६८८-९, धनासरी, मः १)
तुम सरि अवरु न कोइ आइआ जाइसी जीउ ॥ (६८८-१०, धनासरी, मः १)
हुकमी होइ निबेड़ु भरमु चुकाइसी जीउ ॥ (६८८-१०, धनासरी, मः १)
गुरु भरमु चुकाए अकथु कहाए सच महि साचु समाणा ॥ (६८८-११, धनासरी, मः १)
आपि उपाए आपि समाए हुकमी हुकमु पछाणा ॥ (६८८-११, धनासरी, मः १)
सची वडिआई गुर ते पाई तू मनि अंति सखाई ॥ (६८८-१२, धनासरी, मः १)
नानक साहिबु अवरु न दूजा नामि तेरै वडिआई ॥२॥ (६८८-१२, धनासरी, मः १)
तू सचा सिरजणहारु अलख सिरंदिआ जीउ ॥ (६८८-१३, धनासरी, मः १)
एकु साहिबु दुइ राह वाद वधंदिआ जीउ ॥ (६८८-१३, धनासरी, मः १)
दुइ राह चलाए हुकमि सबाए जनमि मुआ संसारा ॥ (६८८-१४, धनासरी, मः १)
नाम बिना नाही को बेली बिखु लादी सिरि भारा ॥ (६८८-१४, धनासरी, मः १)
हुकमी आइआ हुकमु न बूझै हुकमि सवारणहारा ॥ (६८८-१५, धनासरी, मः १)
नानक साहिबु सबदि सिञापै साचा सिरजणहारा ॥३॥ (६८८-१५, धनासरी, मः १)
भगत सोहहि दरवारि सबदि सुहाइआ जीउ ॥ (६८८-१६, धनासरी, मः १)
बोलहि अमृत बाणि रसन रसाइआ जीउ ॥ (६८८-१६, धनासरी, मः १)
रसन रसाए नामि तिसाए गुर कै सबदि विकाणे ॥ (६८८-१७, धनासरी, मः १)
पारसि परसिऐ पारसु होए जा तेरै मनि भाणे ॥ (६८८-१७, धनासरी, मः १)
अमरा पदु पाइआ आपु गवाइआ विरला गिआन वीचारी ॥ (६८८-१८, धनासरी, मः १)
नानक भगत सोहनि दरि साचै साचे के वापारी ॥४॥ (६८८-१९, धनासरी, मः १)
भूख पिआसो आथि किउ दरि जाइसा जीउ ॥ (६८८-१९, धनासरी, मः १)

पन्ना ६८९

सतिगुर पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ ॥ (६८९-१, धनासरी, मः १)
सचु नामु धिआई साचु चवाई गुरमुखि साचु पछाणा ॥ (६८९-१, धनासरी, मः १)
दीना नाथु दइआलु निरंजनु अनदिनु नामु वखाणा ॥ (६८९-२, धनासरी, मः १)
करणी कार धुरहु फुरमाई आपि मुआ मनु मारी ॥ (६८९-२, धनासरी, मः १)
नानक नामु महा रसु मीठा तृसना नामि निवारी ॥५॥२॥ (६८९-३, धनासरी, मः १)
धनासरी छंत महला १ ॥ (६८९-३)

पिर संगि मूठड़ीए खबरि न पाईआ जीउ ॥ (६८९-४, धनासरी, मः १)
मसतकि लिखिअड़ा लेखु पुरबि कमाइआ जीउ ॥ (६८९-४, धनासरी, मः १)
लेखु न मिटई पुरबि कमाइआ किआ जाणा किआ होसी ॥ (६८९-४, धनासरी, मः १)
गुणी अचारि नही रंगि राती अवगुण बहि बहि रोसी ॥ (६८९-५, धनासरी, मः १)
धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥ (६८९-६, धनासरी, मः १)
नानक नाम बिना दोहागणि छूटी झूठि विछुंनिआ ॥१॥ (६८९-६, धनासरी, मः १)
बूडी घरु घालिओ गुर कै भाइ चलो ॥ (६८९-७, धनासरी, मः १)
साचा नामु धिआइ पावहि सुखि महलो ॥ (६८९-७, धनासरी, मः १)
हरि नामु धिआए ता सुखु पाए पेईअड़ै दिन चारे ॥ (६८९-८, धनासरी, मः १)
निज घरि जाइ बहै सचु पाए अनदिनु नालि पिआरे ॥ (६८९-८, धनासरी, मः १)
विणु भगती घरि वासु न होवी सुणिअहु लोक सबाए ॥ (६८९-९, धनासरी, मः १)
नानक सरसी ता पिरु पाए राती साचै नाए ॥२॥ (६८९-९, धनासरी, मः १)
पिरु धन भावै ता पिर भावै नारी जीउ ॥ (६८९-१०, धनासरी, मः १)
रंगि प्रीतम राती गुर कै सबदि वीचारी जीउ ॥ (६८९-१०, धनासरी, मः १)
गुर सबदि वीचारी नाह पिआरी निवि निवि भगति करेई ॥ (६८९-११, धनासरी, मः १)
माइआ मोहु जलाए प्रीतमु रस महि रंगु करेई ॥ (६८९-११, धनासरी, मः १)
प्रभ साचे सेती रंगि रंगेती लाल भई मनु मारी ॥ (६८९-१२, धनासरी, मः १)
नानक साचि वसी सोहागणि पिर सिउ प्रीति पिआरी ॥३॥ (६८९-१२, धनासरी, मः १)
पिर घरि सोहै नारि जे पिर भावए जीउ ॥ (६८९-१३, धनासरी, मः १)
झूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ ॥ (६८९-१३, धनासरी, मः १)
झूठु अलावै कामि न आवै ना पिरु देखै नैणी ॥ (६८९-१४, धनासरी, मः १)
अवगुणिआरी कंति विसारी छूटी विधण रैणी ॥ (६८९-१४, धनासरी, मः १)
गुर सबदु न मानै फाही फाथी सा धन महलु न पाए ॥ (६८९-१५, धनासरी, मः १)
नानक आपे आपु पछाणै गुरमुखि सहजि समाए ॥४॥ (६८९-१५, धनासरी, मः १)
धन सोहागणि नारि जिनि पिरु जाणिआ जीउ ॥ (६८९-१६, धनासरी, मः १)
नाम बिना कूड़िआरि कूड़ु कमाणिआ जीउ ॥ (६८९-१६, धनासरी, मः १)
हरि भगति सुहावी साचे भावी भाइ भगति प्रभ राती ॥ (६८९-१७, धनासरी, मः १)
पिरु रलीआला जोबनि बाला तिसु रावे रंगि राती ॥ (६८९-१७, धनासरी, मः १)
गुर सबदि विगासी सहु रावासी फलु पाइआ गुणकारी ॥ (६८९-१८, धनासरी, मः १)
नानक साचु मिलै वडिआई पिर घरि सोहै नारी ॥५॥३॥ (६८९-१८, धनासरी, मः १)

पन्ना ६९०

धनासरी छंत महला ४ घरु १ (६९०-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६९०-१)
हरि जीउ क्रिपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥ (६९०-२, धनासरी, मः ४)

सतिगुरु मिलै सुभाइ सहजि गुण गाईऐ जीउ ॥ (६६०-२, धनासरी, मः ४)
गुण गाइ विगसै सदा अनदिनु जा आपि साचे भावए ॥ (६६०-३, धनासरी, मः ४)
अहंकारु हउमै तजै माइआ सहजि नामि समावए ॥ (६६०-३, धनासरी, मः ४)
आपि करता करे सोई आपि देइ त पाईऐ ॥ (६६०-४, धनासरी, मः ४)
हरि जीउ कृपा करे ता नामु धिआईऐ जीउ ॥१॥ (६६०-४, धनासरी, मः ४)
अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै जीउ ॥ (६६०-५, धनासरी, मः ४)
हउ तिसु सेवी दिनु राति मै कदे न वीसरै जीउ ॥ (६६०-५, धनासरी, मः ४)
कदे न विसारी अनदिनु सम्हारी जा नामु लई ता जीवा ॥ (६६०-६, धनासरी, मः ४)
स्रवणी सुणी त इहु मनु तृपतै गुरमुखि अमृतु पीवा ॥ (६६०-६, धनासरी, मः ४)
नदरि करे ता सतिगुरु मेले अनदिनु बिबेक बुधि बिचरै ॥ (६६०-७, धनासरी, मः ४)
अंदरि साचा नेहु पूरे सतिगुरै ॥२॥ (६६०-७, धनासरी, मः ४)
सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥ (६६०-८, धनासरी, मः ४)
अनदिनु रहै लिव लाइ त सहजि समावए जीउ ॥ (६६०-८, धनासरी, मः ४)
सहजि समावै ता हरि मनि भावै सदा अतीतु बैरागी ॥ (६६०-९, धनासरी, मः ४)
हलति पलति सोभा जग अंतरि राम नामि लिव लागी ॥ (६६०-९, धनासरी, मः ४)
हरख सोग दुहा ते मुकता जो प्रभु करे सु भावए ॥ (६६०-१०, धनासरी, मः ४)
सतसंगति मिलै वडभागि ता हरि रसु आवए जीउ ॥३॥ (६६०-१०, धनासरी, मः ४)
दूजै भाइ दुखु होइ मनमुख जमि जोहिआ जीउ ॥ (६६०-११, धनासरी, मः ४)
हाइ हाइ करे दिनु राति माइआ दुखि मोहिआ जीउ ॥ (६६०-११, धनासरी, मः ४)
माइआ दुखि मोहिआ हउमै रोहिआ मेरी मेरी करत विहावए ॥ (६६०-१२, धनासरी, मः ४)
जो प्रभु देइ तिसु चेतै नाही अंति गइआ पछुतावए ॥ (६६०-१३, धनासरी, मः ४)
बिनु नावै को साथि न चालै पुत्र कलत्र माइआ धोहिआ ॥ (६६०-१३, धनासरी, मः ४)
दूजै भाइ दुखु होइ मनमुखि जमि जोहिआ जीउ ॥४॥ (६६०-१४, धनासरी, मः ४)
करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पाइआ जीउ ॥ (६६०-१४, धनासरी, मः ४)
सदा रहै कर जोड़ि प्रभु मनि भाइआ जीउ ॥ (६६०-१५, धनासरी, मः ४)
प्रभु मनि भावै ता हुकमि समावै हुकमु मंनि सुखु पाइआ ॥ (६६०-१५, धनासरी, मः ४)
अनदिनु जपत रहै दिनु राती सहजे नामु धिआइआ ॥ (६६०-१६, धनासरी, मः ४)
नामो नामु मिली वडिआई नानक नामु मनि भावए ॥ (६६०-१७, धनासरी, मः ४)
करि किरपा लेहु मिलाइ महलु हरि पावए जीउ ॥५॥१॥ (६६०-१७, धनासरी, मः ४)

पन्ना ६६१

धनासरी महला ५ छंत (६६१-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६१-१)
सतिगुर दीन दइआल जिसु संगि हरि गावीऐ जीउ ॥ (६६१-२, धनासरी, मः ५)
अमृतु हरि का नामु साधसंगि रावीऐ जीउ ॥ (६६१-२, धनासरी, मः ५)

भजु संगि साधू इकु अराधू जनम मरन दुख नासए ॥ (६६१-३, धनासरी, मः ५)
धुरि करमु लिखिआ साचु सिखिआ कटी जम की फासए ॥ (६६१-३, धनासरी, मः ५)
भै भर्म नाठे छुटी गाठे जम पंथि मूलि न आवीऐ ॥ (६६१-४, धनासरी, मः ५)
बिनवंति नानक धारि किरपा सदा हरि गुण गावीऐ ॥१॥ (६६१-५, धनासरी, मः ५)
निधरिआ धर एकु नामु निरंजनो जीउ ॥ (६६१-५, धनासरी, मः ५)
तू दाता दातारु सर्ब दुख भंजनो जीउ ॥ (६६१-६, धनासरी, मः ५)
दुख हरत करता सुखह सुआमी सरणि साधू आइआ ॥ (६६१-६, धनासरी, मः ५)
संसारु सागरु महा बिखड़ा पल एक माहि तराइआ ॥ (६६१-६, धनासरी, मः ५)
पूरि रहिआ सर्ब थाई गुर गिआनु नेत्री अंजनो ॥ (६६१-७, धनासरी, मः ५)
बिनवंति नानक सदा सिमरी सर्ब दुख भै भंजनो ॥२॥ (६६१-८, धनासरी, मः ५)
आपि लीए लड़ि लाइ किरपा धारीआ जीउ ॥ (६६१-८, धनासरी, मः ५)
मोहि निरगुणु नीचु अनाथु प्रभ अगम अपारीआ जीउ ॥ (६६१-९, धनासरी, मः ५)
दइआल सदा कृपाल सुआमी नीच थापणहारिआ ॥ (६६१-९, धनासरी, मः ५)
जीअ जंत सभि वसि तेरै सगल तेरी सारिआ ॥ (६६१-१०, धनासरी, मः ५)
आपि करता आपि भुगता आपि सगल बीचारीआ ॥ (६६१-१०, धनासरी, मः ५)
बिनवंत नानक गुण गाइ जीवा हरि जपु जपउ बनवारीआ ॥३॥ (६६१-११, धनासरी, मः ५)
तेरा दरसु अपारु नामु अमोलई जीउ ॥ (६६१-११, धनासरी, मः ५)
निति जपहि तेरे दास पुरख अतोलई जीउ ॥ (६६१-१२, धनासरी, मः ५)
संत रसन वूठा आपि तूठा हरि रसहि सेई मातिआ ॥ (६६१-१२, धनासरी, मः ५)
गुर चरन लागे महा भागे सदा अनदिनु जागिआ ॥ (६६१-१३, धनासरी, मः ५)
सद सदा सिम्म्रतब्य सुआमी सासि सासि गुण बोलई ॥ (६६१-१३, धनासरी, मः ५)
बिनवंति नानक धूरि साधू नामु प्रभू अमोलई ॥४॥१॥ (६६१-१४, धनासरी, मः ५)
रागु धनासरी बाणी भगत कबीर जी की (६६१-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६१-१५)
सनक सनंद महेस समानाँ ॥ (६६१-१६, धनासरी, भगत कबीर जी)
सेखनागि तेरो मरमु न जानाँ ॥१॥ (६६१-१६, धनासरी, भगत कबीर जी)
संतसंगति रामु रिदै बसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६६१-१६, धनासरी, भगत कबीर जी)
हनूमान सरि गरुड़ समानाँ ॥ (६६१-१७, धनासरी, भगत कबीर जी)
सुरपति नरपति नही गुन जानाँ ॥२॥ (६६१-१७, धनासरी, भगत कबीर जी)
चारि बेद अरु सिम्मृति पुरानाँ ॥ (६६१-१७, धनासरी, भगत कबीर जी)
कमलापति कवला नही जानाँ ॥३॥ (६६१-१८, धनासरी, भगत कबीर जी)
कहि कबीर सो भरमै नाही ॥ (६६१-१८, धनासरी, भगत कबीर जी)
पग लगि राम रहै सरनाँही ॥४॥१॥ (६६१-१८, धनासरी, भगत कबीर जी)

दिन ते पहर पहर ते घरीआँ आव घटै तनु छीजै ॥ (६६२-१, धनासरी, भगत कबीर जी)
कालु अहेरी फिरै बधिक जिउ कहहु कवन बिधि कीजै ॥१॥ (६६२-१, धनासरी, भगत कबीर जी)
सो दिनु आवन लागा ॥ (६६२-२, धनासरी, भगत कबीर जी)
मात पिता भाई सुत बनिता कहहु कोऊ है का का ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-२, धनासरी, भगत कबीर जी)
जब लगु जोति काइआ महि बरतै आपा पसू न बूझै ॥ (६६२-३, धनासरी, भगत कबीर जी)
लालच करै जीवन पद कारन लोचन कछू न सूझै ॥२॥ (६६२-३, धनासरी, भगत कबीर जी)
कहत कबीर सुनहु रे प्रानी छोडहु मन के भरमा ॥ (६६२-४, धनासरी, भगत कबीर जी)
केवल नामु जपहु रे प्रानी परहु एक की सरनाँ ॥३॥२॥ (६६२-४, धनासरी, भगत कबीर जी)
जो जनु भाउ भगति कछु जानै ता कउ अचरजु काहो ॥ (६६२-५, धनासरी, भगत कबीर जी)
जिउ जलु जल महि पैसि न निकसै तिउ ढुरि मिलिओ जुलाहो ॥१॥ (६६२-५, धनासरी, भगत कबीर जी)
हरि के लोगा मै तउ मति का भोरा ॥ (६६२-६, धनासरी, भगत कबीर जी)
जउ तनु कासी तजहि कबीरा रमईऐ कहा निहोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-६, धनासरी, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु सुनहु रे लोई भरमि न भूलहु कोई ॥ (६६२-७, धनासरी, भगत कबीर जी)
किआ कासी किआ ऊखरु मगहरु रामु रिदै जउ होई ॥२॥३॥ (६६२-८, धनासरी, भगत कबीर जी)
इंद्र लोक सिव लोकहि जैबो ॥ (६६२-८, धनासरी, भगत कबीर जी)
ओछे तप करि बाहुरि ऐबो ॥१॥ (६६२-८, धनासरी, भगत कबीर जी)
किआ माँगउ किछु थिरु नाही ॥ (६६२-९, धनासरी, भगत कबीर जी)
राम नाम रखु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-९, धनासरी, भगत कबीर जी)
सोभा राज बिभै बडिआई ॥ (६६२-९, धनासरी, भगत कबीर जी)
अंति न काहू संग सहाई ॥२॥ (६६२-१०, धनासरी, भगत कबीर जी)
पुत्र कलत्र लछमी माइआ ॥ (६६२-१०, धनासरी, भगत कबीर जी)
इन ते कहु कवनै सुखु पाइआ ॥३॥ (६६२-१०, धनासरी, भगत कबीर जी)
कहत कबीर अवर नही कामा ॥ (६६२-११, धनासरी, भगत कबीर जी)
हमरै मन धन राम को नामा ॥४॥४॥ (६६२-११, धनासरी, भगत कबीर जी)
राम सिमरि राम सिमरि राम सिमरि भाई ॥ (६६२-१२, धनासरी, भगत कबीर जी)
राम नाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-१२, धनासरी, भगत कबीर जी)
बनिता सुत देह ग्रेह सम्पति सुखदाई ॥ (६६२-१३, धनासरी, भगत कबीर जी)
इन् मै कछु नाहि तेरो काल अवध आई ॥१॥ (६६२-१३, धनासरी, भगत कबीर जी)
अजामल गज गनिका पतित कर्म कीने ॥ (६६२-१३, धनासरी, भगत कबीर जी)
तेऊ उतरि पारि परे राम नाम लीने ॥२॥ (६६२-१४, धनासरी, भगत कबीर जी)
सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊ लाज न आई ॥ (६६२-१४, धनासरी, भगत कबीर जी)
राम नाम छाडि अमृत काहे बिखु खाई ॥३॥ (६६२-१५, धनासरी, भगत कबीर जी)
तजि भर्म कर्म बिधि निखेध राम नामु लेही ॥ (६६२-१५, धनासरी, भगत कबीर जी)

गुर प्रसादि जन कबीर रामु करि सनेही ॥४॥५॥ (६६२-१६, धनासरी, भगत कबीर जी)
धनासरी बाणी भगत नामदेव जी की (६६२-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६२-१७)
गहरी करि कै नीव खुदाई ऊपरि मंडप छाए ॥ (६६२-१८, धनासरी, भगत नामदेव जी)
मारकंडे ते को अधिकाई जिनि तृण धरि मूंड बलाए ॥१॥ (६६२-१८, धनासरी, भगत नामदेव जी)
हमरो करता रामु सनेही ॥ (६६२-१६, धनासरी, भगत नामदेव जी)
काहे रे नर गरबु करत हहु बिनसि जाइ झूठी देही ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-१६, धनासरी, भगत नामदेव जी)

पन्ना ६६३

मेरी मेरी कैरउ करते दुरजोधन से भाई ॥ (६६३-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
बारह जोजन छत्रु चलै था देही गिरझन खाई ॥२॥ (६६३-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
सर्ब सुोइन की लंका होती रावन से अधिकाई ॥ (६६३-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
कहा भइओ दरि बाँधे हाथी खिन महि भई पराई ॥३॥ (६६३-२, धनासरी, भगत नामदेव जी)
दुरबासा सिउ करत ठगउरी जादव ए फल पाए ॥ (६६३-३, धनासरी, भगत नामदेव जी)
कृपा करी जन अपुने ऊपर नामदेउ हरि गुन गाए ॥४॥१॥ (६६३-३, धनासरी, भगत नामदेव जी)
दस बैरागनि मोहि बसि कीन्ी पंचहु का मिट नावउ ॥ (६६३-४, धनासरी, भगत नामदेव जी)
सतरि दोइ भरे अमृत सरि बिखु कउ मारि कढावउ ॥१॥ (६६३-४, धनासरी, भगत नामदेव जी)
पाछै बहुरि न आवनु पावउ ॥ (६६३-५, धनासरी, भगत नामदेव जी)
अमृत बाणी घट ते उचरउ आतम कउ समझावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६३-५, धनासरी, भगत नामदेव जी)
बजर कुठारु मोहि है छीनाँ करि मिन्नति लगि पावउ ॥ (६६३-६, धनासरी, भगत नामदेव जी)
संतन के हम उलटे सेवक भगतन ते डरपावउ ॥२॥ (६६३-६, धनासरी, भगत नामदेव जी)
इह संसार ते तब ही छूटउ जउ माइआ नह लपटावउ ॥ (६६३-७, धनासरी, भगत नामदेव जी)
माइआ नामु गरभ जोनि का तिह तजि दरसनु पावउ ॥३॥ (६६३-८, धनासरी, भगत नामदेव जी)
इतु करि भगति करहि जो जन तिन भउ सगल चुकाईऐ ॥ (६६३-८, धनासरी, भगत नामदेव जी)
कहत नामदेउ बाहरि किआ भरमहु इह संजम हरि पाईऐ ॥४॥२॥ (६६३-६, धनासरी, भगत नामदेव जी)
मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥ (६६३-६, धनासरी, भगत नामदेव जी)
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥ (६६३-१०, धनासरी, भगत नामदेव जी)
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६३-११, धनासरी, भगत नामदेव जी)
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥ (६६३-११, धनासरी, भगत नामदेव जी)
जिउ कोकिल कउ अम्बु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥ (६६३-१२, धनासरी, भगत नामदेव जी)
चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥ (६६३-१३, धनासरी, भगत नामदेव जी)
जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥३॥ (६६३-१३, धनासरी, भगत नामदेव जी)
बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चातृक मुख जैसे जलधरा ॥ (६६३-१४, धनासरी, भगत नामदेव जी)
मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥४॥ (६६३-१४, धनासरी, भगत नामदेव जी)
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥ (६६३-१५, धनासरी, भगत नामदेव जी)

सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥५॥३॥ (६६३-१५, धनासरी, भगत नामदेव जी)
पहिल पुरीए पुंडरक वना ॥ (६६३-१६, धनासरी, भगत नामदेव जी)
ता चे हंसा सगले जनाँ ॥ (६६३-१६, धनासरी, भगत नामदेव जी)
कृस्ना ते जानऊ हरि हरि नाचंती नाचना ॥१॥ (६६३-१७, धनासरी, भगत नामदेव जी)
पहिल पुरसाबिरा ॥ (६६३-१७, धनासरी, भगत नामदेव जी)
अथोन पुरसादमरा ॥ (६६३-१७, धनासरी, भगत नामदेव जी)
असगा अस उसगा ॥ (६६३-१८, धनासरी, भगत नामदेव जी)
हरि का बागरा नाचै पिंधी महि सागरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६६३-१८, धनासरी, भगत नामदेव जी)
नाचंती गोपी जन्ना ॥ (६६३-१८, धनासरी, भगत नामदेव जी)
नईआ ते बैरे कन्ना ॥ (६६३-१९, धनासरी, भगत नामदेव जी)
तरकु न चा ॥ (६६३-१९, धनासरी, भगत नामदेव जी)
भ्रमीआ चा ॥ (६६३-१९, धनासरी, भगत नामदेव जी)
केसवा बचउनी अईए मईए एक आन जीउ ॥२॥ (६६३-१९, धनासरी, भगत नामदेव जी)

पन्ना ६६४

पिंधी उभकले संसारा ॥ (६६४-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
भ्रमि भ्रमि आए तुम चे दुआरा ॥ (६६४-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
तू कुनु रे ॥ (६६४-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
मै जी ॥ (६६४-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
नामा ॥ (६६४-१, धनासरी, भगत नामदेव जी)
हो जी ॥ (६६४-२, धनासरी, भगत नामदेव जी)
आला ते निवारणा जम कारणा ॥३॥४॥ (६६४-२, धनासरी, भगत नामदेव जी)
पतित पावन माधउ बिरदु तेरा ॥ (६६४-२, धनासरी, भगत नामदेव जी)
धंनि ते वै मुनि जन जिन धिआइओ हरि प्रभु मेरा ॥१॥ (६६४-२, धनासरी, भगत नामदेव जी)
मेरै माथै लागी ले धूरि गोबिंद चरनन की ॥ (६६४-३, धनासरी, भगत नामदेव जी)
सुरि नर मुनि जन तिनहू ते दूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (६६४-३, धनासरी, भगत नामदेव जी)
दीन का दइआलु माधौ गरब परहारी ॥ (६६४-४, धनासरी, भगत नामदेव जी)
चरन सरन नामा बलि तिहारी ॥२॥५॥ (६६४-४, धनासरी, भगत नामदेव जी)
धनासरी भगत रविदास जी की (६६४-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६४-६)
हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥ (६६४-७, धनासरी, भगत रविदास जी)
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै ॥१॥ (६६४-७, धनासरी, भगत रविदास जी)
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥ (६६४-८, धनासरी, भगत रविदास जी)
कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥ (६६४-८, धनासरी, भगत रविदास जी)
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुमारे लेखे ॥ (६६४-८, धनासरी, भगत रविदास जी)

कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे ॥२॥१॥ (६६४-६, धनासरी, भगत रविदास जी)
चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ ॥ (६६४-१०, धनासरी, भगत रविदास जी)
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ रसन अमृत राम नाम भाखउ ॥१॥ (६६४-१०, धनासरी, भगत रविदास जी)
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै ॥ (६६४-११, धनासरी, भगत रविदास जी)
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै ॥१॥ रहाउ ॥ (६६४-१२, धनासरी, भगत रविदास जी)
साधसंगति बिना भाउ नही ऊपजै भाव बिनु भगति नही होइ तेरी ॥ (६६४-१२, धनासरी, भगत रविदास जी)
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥२॥२॥ (६६४-१३, धनासरी, भगत रविदास जी)
नामु तेरो आरती मजनु मुरारे ॥ (६६४-१३, धनासरी, भगत रविदास जी)
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे ॥१॥ रहाउ ॥ (६६४-१४, धनासरी, भगत रविदास जी)
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे ॥ (६६४-१४, धनासरी, भगत रविदास जी)
नामु तेरा अम्भुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे ॥१॥ (६६४-१५, धनासरी, भगत रविदास जी)
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे ॥ (६६४-१६, धनासरी, भगत रविदास जी)
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे ॥२॥ (६६४-१६, धनासरी, भगत रविदास जी)
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे ॥ (६६४-१७, धनासरी, भगत रविदास जी)
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे ॥३॥ (६६४-१८, धनासरी, भगत रविदास जी)
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे ॥ (६६४-१८, धनासरी, भगत रविदास जी)
कहै रविदासु नामु तेरो आरती सति नामु है हरि भोग तुहारे ॥४॥३॥ (६६४-१९, धनासरी, भगत रविदास जी)

पन्ना ६६५

धनासरी बाणी भगताँ की तृलोचन (६६५-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६५-२)
नाराइण निंदसि काइ भूली गवारी ॥ (६६५-२, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
दुकृतु सुकृतु थारो करमु री ॥१॥ रहाउ ॥ (६६५-२, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
संकरा मसतकि बसता सुरसरी इसनान रे ॥ (६६५-३, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
कुल जन मधे मिल्यिो सारग पान रे ॥ (६६५-३, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
करम करि कलंकु मफीटसि री ॥१॥ (६६५-३, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
बिस्व का दीपकु स्वामी ता चे रे सुआरथी पंखी राइ गरुड़ ता चे बाधवा ॥ (६६५-४, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
करम करि अरुण पिंगुला री ॥२॥ (६६५-५, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
अनिक पातिक हरता तृभवण नाथु री तीरथि तीरथि भ्रमता लहै न पारु री ॥ (६६५-५, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
करम करि कपालु मफीटसि री ॥३॥ (६६५-६, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
अमृत ससीअ धेन लछिमी कलपतर सिखरि सुनागर नदी चे नाथं ॥ (६६५-६, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
करम करि खारु मफीटसि री ॥४॥ (६६५-७, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
दाधीले लंका गड़ु उपाड़ीले रावण बणु सलि बिसलि आणि तोखीले हरी ॥ (६६५-७, धनासरी, भगत तृलोचन जी)

कर्म करि कछउटी मफीटसि री ॥५॥ (६६५-८, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
पूरबलो कृत करमु न मिटै री घर गेहणि ता चे मोहि जापीअले राम चे नामं ॥ (६६५-८, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
बदति तृलोचन राम जी ॥६॥१॥ (६६५-९, धनासरी, भगत तृलोचन जी)
स्री सैणु ॥ (६६५-९)
धूप दीप घ्रित साजि आरती ॥ (६६५-१०, धनासरी, भगत सैण जी)
वारने जाउ कमला पती ॥१॥ (६६५-१०, धनासरी, भगत सैण जी)
मंगला हरि मंगला ॥ (६६५-१०, धनासरी, भगत सैण जी)
नित मंगलु राजा राम राइ को ॥१॥ रहाउ ॥ (६६५-१०, धनासरी, भगत सैण जी)
ऊतमु दीअरा निर्मल बाती ॥ (६६५-११, धनासरी, भगत सैण जी)
तुहीं निरंजनु कमला पाती ॥२॥ (६६५-११, धनासरी, भगत सैण जी)
रामा भगति रामानंदु जानै ॥ (६६५-१२, धनासरी, भगत सैण जी)
पूरन परमानंदु बखानै ॥३॥ (६६५-१२, धनासरी, भगत सैण जी)
मदन मूरति भै तारि गोबिंदे ॥ (६६५-१२, धनासरी, भगत सैण जी)
सैनु भणै भजु परमानंदे ॥४॥२॥ (६६५-१२, धनासरी, भगत सैण जी)
पीपा ॥ (६६५-१३)
कायउ देवा काइअउ देवल काइअउ जंगम जाती ॥ (६६५-१३, धनासरी, भगत पीपा जी)
काइअउ धूप दीप नईबेदा काइअउ पूजउ पाती ॥१॥ (६६५-१३, धनासरी, भगत पीपा जी)
काइआ बहु खंड खोजते नव निधि पाई ॥ (६६५-१४, धनासरी, भगत पीपा जी)
ना कछु आइबो ना कछु जाइबो राम की दुहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६६५-१४, धनासरी, भगत पीपा जी)
जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै ॥ (६६५-१५, धनासरी, भगत पीपा जी)
पीपा प्रणवै पर्म ततु है सतिगुरु होइ लखावै ॥२॥३॥ (६६५-१५, धनासरी, भगत पीपा जी)
धन्ना ॥ (६६५-१६)
गोपाल तेरा आरता ॥ (६६५-१६, धनासरी, भगत धन्ना जी)
जो जन तुमरी भगति करंते तिन के काज सवारता ॥१॥ रहाउ ॥ (६६५-१६, धनासरी, भगत धन्ना जी)
दालि सीधा मागउ घीउ ॥ (६६५-१७, धनासरी, भगत धन्ना जी)
हमरा खुसी करै नित जीउ ॥ (६६५-१७, धनासरी, भगत धन्ना जी)
पन्हीआ छादनु नीका ॥ (६६५-१८, धनासरी, भगत धन्ना जी)
अनाजु मगउ सत सी का ॥१॥ (६६५-१८, धनासरी, भगत धन्ना जी)
गऊ भैस मगउ लावेरी ॥ (६६५-१८, धनासरी, भगत धन्ना जी)
इक ताजनि तुरी चंगेरी ॥ (६६५-१८, धनासरी, भगत धन्ना जी)
घर की गीहनि चंगी ॥ (६६५-१९, धनासरी, भगत धन्ना जी)
जनु धन्ना लेवै मंगी ॥२॥४॥ (६६५-१९, धनासरी, भगत धन्ना जी)

पन्ना ६६६

जैतसरी महला ४ घरु १ चउपदे (६६६-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६६-२)
मेरै हीअरै रतनु नामु हरि बसिआ गुरि हाथु धरिओ मेरै माथा ॥ (६६६-३, जैतसरी, मः ४)
जनम जनम के किलबिख दुख उतरे गुरि नामु दीओ रिनु लाथा ॥१॥ (६६६-३, जैतसरी, मः ४)
मेरे मन भजु राम नामु सभि अर्था ॥ (६६६-४, जैतसरी, मः ४)
गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइआ बिनु नावै जीवनु बिरथा ॥ रहाउ ॥ (६६६-४, जैतसरी, मः ४)
बिनु गुर मूड़ भए है मनमुख ते मोह माइआ नित फाथा ॥ (६६६-५, जैतसरी, मः ४)
तिन साधू चरण न सेवे कबहू तिन सभु जनमु अकाथा ॥२॥ (६६६-५, जैतसरी, मः ४)
जिन साधू चरण साध पग सेवे तिन सफलिओ जनमु सनाथा ॥ (६६६-६, जैतसरी, मः ४)
मो कउ कीजै दासु दास दासन को हरि दइआ धारि जगन्नाथा ॥३॥ (६६६-७, जैतसरी, मः ४)
हम अंधुले गिआनहीन अगिआनी किउ चालह मारगि पंथा ॥ (६६६-७, जैतसरी, मः ४)
हम अंधुले कउ गुर अंचलु दीजै जन नानक चलह मिलंथा ॥४॥१॥ (६६६-८, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी महला ४ ॥ (६६६-९)
हीरा लालु अमोलकु है भारी बिनु गाहक मीका काखा ॥ (६६६-९, जैतसरी, मः ४)
रतन गाहकु गुरु साधू देखिओ तब रतनु बिकानो लाखा ॥१॥ (६६६-९, जैतसरी, मः ४)
मेरै मनि गुप्त हीरु हरि राखा ॥ (६६६-१०, जैतसरी, मः ४)
दीन दइआलि मिलाइओ गुरु साधू गुरि मिलिऐ हीरु पराखा ॥ रहाउ ॥ (६६६-१०, जैतसरी, मः ४)
मनमुख कोठी अगिआनु अंधेरा तिन घरि रतनु न लाखा ॥ (६६६-११, जैतसरी, मः ४)
ते ऊझड़ि भरमि मुए गावारी माइआ भुअंग बिखु चाखा ॥२॥ (६६६-१२, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि साध मेलहु जन नीके हरि साधू सरणि हम राखा ॥ (६६६-१२, जैतसरी, मः ४)
हरि अंगीकारु करहु प्रभ सुआमी हम परे भागि तुम पाखा ॥३॥ (६६६-१३, जैतसरी, मः ४)
जिहवा किआ गुण आखि वखाणह तुम वड अगम वड पुरखा ॥ (६६६-१४, जैतसरी, मः ४)
जन नानक हरि किरपा धारी पाखाणु डुबत हरि राखा ॥४॥२॥ (६६६-१४, जैतसरी, मः ४)

पन्ना ६६७

जैतसरी मः ४ ॥ (६६७-१)
हम बारिक कछूअ न जानह गति मिति तेरे मूरख मुगध इआना ॥ (६६७-१, जैतसरी, मः ४)
हरि किरपा धारि दीजै मति ऊतम करि लीजै मुगधु सिआना ॥१॥ (६६७-२, जैतसरी, मः ४)
मेरा मनु आलसीआ उघलाना ॥ (६६७-२, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि आनि मिलाइओ गुरु साधू मिलि साधू कपट खुलाना ॥ रहाउ ॥ (६६७-३, जैतसरी, मः ४)
गुर खिनु खिनु प्रीति लगावहु मेरै हीअरै मेरे प्रीतम नामु पराना ॥ (६६७-४, जैतसरी, मः ४)
बिनु नावै मरि जाईऐ मेरे ठाकुर जिउ अमली अमलि लुभाना ॥२॥ (६६७-४, जैतसरी, मः ४)
जिन मनि प्रीति लगी हरि केरी तिन धुरि भाग पुराना ॥ (६६७-५, जैतसरी, मः ४)

तिन हम चरण सरेवह खिनु खिनु जिन हरि मीठ लगाना ॥३॥ (६९७-५, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि कृपा धारी मेरै ठाकुरि जनु बिछुरिआ चिरी मिलाना ॥ (६९७-६, जैतसरी, मः ४)
धनु धनु सतिगुरु जिनि नामु दृड़ाइआ जनु नानकु तिसु कुरबाना ॥४॥३॥ (६९७-७, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी महला ४ ॥ (६९७-८)
सतिगुरु साजनु पुरखु वड पाइआ हरि रसकि रसकि फल लागिबा ॥ (६९७-८, जैतसरी, मः ४)
माइआ भुइअंग ग्रसिओ है प्राणी गुर बचनी बिसु हरि काढिबा ॥१॥ (६९७-९, जैतसरी, मः ४)
मेरा मनु राम नाम रसि लागिबा ॥ (६९७-९, जैतसरी, मः ४)
हरि कीए पतित पवित्र मिलि साध गुर हरि नामै हरि रसु चाखिबा ॥ रहाउ ॥ (६९७-१०, जैतसरी, मः ४)
धनु धनु वडभाग मिलिओ गुरु साधू मिलि साधू लिव उनमनि लागिबा ॥ (६९७-१०, जैतसरी, मः ४)
तृसना अगनि बुझी साँति पाई हरि निर्मल निर्मल गुन गाइबा ॥२॥ (६९७-११, जैतसरी, मः ४)
तिन के भाग खीन धुरि पाए जिन सतिगुर दरसु न पाइबा ॥ (६९७-१२, जैतसरी, मः ४)
ते दूजै भाइ पवहि ग्रभ जोनी सभु बिरथा जनमु तिन जाइबा ॥३॥ (६९७-१३, जैतसरी, मः ४)
हरि देहु बिमल मति गुर साध पग सेवह हम हरि मीठ लगाइबा ॥ (६९७-१३, जैतसरी, मः ४)
जनु नानकु रेण साध पग मागै हरि होइ दइआलु दिवाइबा ॥४॥४॥ (६९७-१४, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी महला ४ ॥ (६९७-१५)
जिन हरि हिरदै नामु न बसिओ तिन मात कीजै हरि बाँझा ॥ (६९७-१५, जैतसरी, मः ४)
तिन सुंञी देह फिरहि बिनु नावै ओइ खपि खपि मुए कराँझा ॥१॥ (६९७-१५, जैतसरी, मः ४)
मेरे मन जपि राम नामु हरि माझा ॥ (६९७-१६, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि कृपालि कृपा प्रभि धारी गुरि गिआनु दीओ मनु समझा ॥ रहाउ ॥ (६९७-१६, जैतसरी, मः ४)
हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥ (६९७-१७, जैतसरी, मः ४)
हउ बलिहारी सतिगुर अपुने जिनि गुपतु नामु परगाझा ॥२॥ (६९७-१८, जैतसरी, मः ४)
दरसनु साध मिलिओ वडभागी सभि किलबिख गए गवाझा ॥ (६९७-१९, जैतसरी, मः ४)
सतिगुरु साहु पाइआ वड दाणा हरि कीए बहु गुण साझा ॥३॥ (६९७-१९, जैतसरी, मः ४)

पन्ना ६९८

जिन कउ कृपा करी जगजीवनि हरि उरि धारिओ मन माझा ॥ (६९८-१, जैतसरी, मः ४)
धर्म राइ दरि कागद फारे जन नानक लेखा समझा ॥४॥५॥ (६९८-१, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी महला ४ ॥ (६९८-२)
सतसंगति साध पाई वडभागी मनु चलतौ भइओ अरूड़ा ॥ (६९८-२, जैतसरी, मः ४)
अनहत धुनि वाजहि नित वाजे हरि अमृत धार रसि लीड़ा ॥१॥ (६९८-३, जैतसरी, मः ४)
मेरे मन जपि राम नामु हरि रूड़ा ॥ (६९८-४, जैतसरी, मः ४)
मेरै मनि तनि प्रीति लगाई सतिगुरि हरि मिलिओ लाइ झपीड़ा ॥ रहाउ ॥ (६९८-४, जैतसरी, मः ४)
साकत बंध भए है माइआ बिखु संचहि लाइ जकीड़ा ॥ (६९८-५, जैतसरी, मः ४)
हरि कै अरथि खरचि नह साकहि जमकालु सहहि सिरि पीड़ा ॥२॥ (६९८-५, जैतसरी, मः ४)
जिन हरि अरथि सरीरु लगाइआ गुर साधू बहु सरधा लाइ मुखि धूड़ा ॥ (६९८-६, जैतसरी, मः ४)

हलति पलति हरि सोभा पावहि हरि रंगु लगा मनि गूड़ा ॥३॥ (६६८-७, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि मेलि मेलि जन साधू हम साध जना का कीड़ा ॥ (६६८-७, जैतसरी, मः ४)
जन नानक प्रीति लगी पग साध गुर मिलि साधू पाखाणु हरिओ मनु मूड़ा ॥४॥६॥ (६६८-८, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी महला ४ घरु २ (६६८-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६८-१०)
हरि हरि सिमरहु अगम अपारा ॥ (६६८-११, जैतसरी, मः ४)
जिसु सिमरत दुखु मिटै हमारा ॥ (६६८-११, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि सतिगुरु पुरखु मिलावहु गुरि मिलिऐ सुखु होई राम ॥१॥ (६६८-११, जैतसरी, मः ४)
हरि गुण गावहु मीत हमारे ॥ (६६८-१२, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि नामु रखहु उर धारे ॥ (६६८-१२, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि अमृत बचन सुणावहु गुर मिलिऐ परगटु होई राम ॥२॥ (६६८-१३, जैतसरी, मः ४)
मधुसूदन हरि माधो प्राना ॥ (६६८-१३, जैतसरी, मः ४)
मेरै मनि तनि अमृत मीठ लगाना ॥ (६६८-१४, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि दइआ करहु गुरु मेलहु पुरखु निरंजनु सोई राम ॥३॥ (६६८-१४, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि नामु सदा सुखदाता ॥ (६६८-१५, जैतसरी, मः ४)
हरि कै रंगि मेरा मनु राता ॥ (६६८-१५, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि महा पुरखु गुरु मेलहु गुर नानक नामि सुखु होई राम ॥४॥१॥७॥ (६६८-१५, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी मः ४ ॥ (६६८-१६)
हरि हरि हरि हरि नामु जपाहा ॥ (६६८-१६, जैतसरी, मः ४)
गुरमुखि नामु सदा लै लाहा ॥ (६६८-१७, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि हरि हरि भगति दृड़ावहु हरि हरि नामु ओुमाहा राम ॥१॥ (६६८-१७, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि नामु दइआलु धिआहा ॥ (६६८-१८, जैतसरी, मः ४)
हरि कै रंगि सदा गुण गाहा ॥ (६६८-१८, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि हरि जसु घूमरि पावहु मिलि सतसंगि ओुमाहा राम ॥२॥ (६६८-१८, जैतसरी, मः ४)
आउ सखी हरि मेलि मिलाहा ॥ (६६८-१९, जैतसरी, मः ४)
सुणि हरि कथा नामु लै लाहा ॥ (६६८-१९, जैतसरी, मः ४)

पन्ना ६६९

हरि हरि कृपा धारि गुर मेलहु गुरि मिलिऐ हरि ओुमाहा राम ॥३॥ (६६९-१, जैतसरी, मः ४)
करि कीरति जसु अगम अथाहा ॥ (६६९-१, जैतसरी, मः ४)
खिनु खिनु राम नामु गावाहा ॥ (६६९-२, जैतसरी, मः ४)
मो कउ धारि कृपा मिलीऐ गुर दाते हरि नानक भगति ओुमाहा राम ॥४॥२॥८॥ (६६९-२, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी मः ४ ॥ (६६९-३)
रसि रसि रामु रसालु सलाहा ॥ (६६९-३, जैतसरी, मः ४)
मनु राम नामि भीना लै लाहा ॥ (६६९-३, जैतसरी, मः ४)

खिनु खिनु भगति करह दिनु राती गुरमति भगति ओुमाहा राम ॥१॥ (६९९-४, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि गुण गोविंद जपाहा ॥ (६९९-४, जैतसरी, मः ४)
मनु तनु जीति सबदु लै लाहा ॥ (६९९-५, जैतसरी, मः ४)
गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥२॥ (६९९-५, जैतसरी, मः ४)
नामु रतनु हरि नामु जपाहा ॥ (६९९-६, जैतसरी, मः ४)
हरि गुण गाइ सदा लै लाहा ॥ (६९९-६, जैतसरी, मः ४)
दीन दइआल कृपा करि माधो हरि हरि नामु ओुमाहा राम ॥३॥ (६९९-६, जैतसरी, मः ४)
जपि जगदीसु जपउ मन माहा ॥ (६९९-७, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि जगन्नाथु जगि लाहा ॥ (६९९-७, जैतसरी, मः ४)
धनु धनु वडे ठाकुर प्रभ मेरे जपि नानक भगति ओमाहा राम ॥४॥३॥९॥ (६९९-७, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी महला ४ ॥ (६९९-८)
आपे जोगी जुगति जुगाहा ॥ (६९९-८, जैतसरी, मः ४)
आपे निरभउ ताड़ी लाहा ॥ (६९९-९, जैतसरी, मः ४)
आपे ही आपि आपि वरतै आपे नामि ओुमाहा राम ॥१॥ (६९९-९, जैतसरी, मः ४)
आपे दीप लोअ दीपाहा ॥ (६९९-१०, जैतसरी, मः ४)
आपे सतिगुरु समुंदु मथाहा ॥ (६९९-१०, जैतसरी, मः ४)
आपे मथि मथि ततु कढाए जपि नामु रतनु ओुमाहा राम ॥२॥ (६९९-१०, जैतसरी, मः ४)
सखी मिलहु मिलि गुण गावाहा ॥ (६९९-११, जैतसरी, मः ४)
गुरमुखि नामु जपहु हरि लाहा ॥ (६९९-११, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि भगति दृड़ी मनि भाई हरि हरि नामु ओुमाहा राम ॥३॥ (६९९-१२, जैतसरी, मः ४)
आपे वड दाणा वड साहा ॥ (६९९-१२, जैतसरी, मः ४)
गुरमुखि पूंजी नामु विसाहा ॥ (६९९-१३, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि दाति करहु प्रभ भावै गुण नानक नामु ओुमाहा राम ॥४॥४॥१०॥ (६९९-१३, जैतसरी, मः ४)
जैतसरी महला ४ ॥ (६९९-१४)
मिलि सतसंगति संगि गुराहा ॥ (६९९-१४, जैतसरी, मः ४)
पूंजी नामु गुरमुखि वेसाहा ॥ (६९९-१४, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि कृपा धारि मधुसूदन मिलि सतसंगि ओुमाहा राम ॥१॥ (६९९-१५, जैतसरी, मः ४)
हरि गुण बाणी स्रवणि सुणाहा ॥ (६९९-१५, जैतसरी, मः ४)
करि किरपा सतिगुरू मिलाहा ॥ (६९९-१६, जैतसरी, मः ४)
गुण गावह गुण बोलह बाणी हरि गुण जपि ओुमाहा राम ॥२॥ (६९९-१६, जैतसरी, मः ४)
सभि तीर्थ वरत जग पुन्न तोुलाहा ॥ (६९९-१७, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि नाम न पुजहि पुजाहा ॥ (६९९-१७, जैतसरी, मः ४)
हरि हरि अतुलु तोलु अति भारी गुरमति जपि ओुमाहा राम ॥३॥ (६९९-१७, जैतसरी, मः ४)
सभि कर्म धर्म हरि नामु जपाहा ॥ (६९९-१८, जैतसरी, मः ४)
किलविख मैलु पाप धोवाहा ॥ (६९९-१८, जैतसरी, मः ४)

दीन दइआल होहु जन ऊपरि देहु नानक नामु ओमाहा राम ॥४॥५॥११॥ (६९९-१९, जैतसरी, मः ४)

पन्ना ७००

जैतसरी महला ५ घरु ३ (७००-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७००-१)
कोई जानै कवनु ईहा जगि मीतु ॥ (७००-२, जैतसरी, मः ५)
जिसु होइ कृपालु सोई बिधि बूझै ता की निर्मल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (७००-२, जैतसरी, मः ५)
मात पिता बनिता सुत बंधप इसट मीत अरु भाई ॥ (७००-३, जैतसरी, मः ५)
पूरब जनम के मिले संजोगी अंतहि को न सहाई ॥१॥ (७००-३, जैतसरी, मः ५)
मुकति माल कनिक लाल हीरा मन रंजन की माइआ ॥ (७००-४, जैतसरी, मः ५)
हा हा करत बिहानी अवधहि ता महि संतोखु न पाइआ ॥२॥ (७००-४, जैतसरी, मः ५)
हसति रथ अस्व पवन तेज धणी भूमन चतुराँगा ॥ (७००-५, जैतसरी, मः ५)
संगि न चालिओ इन महि कछूऐ ऊठि सिधाइओ नाँगा ॥३॥ (७००-५, जैतसरी, मः ५)
हरि के संत प्रिअ प्रीतम प्रभ के ता कै हरि हरि गाईऐ ॥ (७००-६, जैतसरी, मः ५)
नानक ईहा सुखु आगै मुख ऊजल संगि संतन कै पाईऐ ॥४॥१॥ (७००-७, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ घरु ३ दुपदे (७००-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७००-८)
देहु संदेसरो कहीअउ प्रिअ कहीअउ ॥ (७००-९, जैतसरी, मः ५)
बिसमु भई मै बहु बिधि सुनते कहहु सुहागनि सहीअउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७००-९, जैतसरी, मः ५)
को कहतो सभ बाहरि बाहरि को कहतो सभ महीअउ ॥ (७००-१०, जैतसरी, मः ५)
बरनु न दीसै चिहनु न लखीऐ सुहागनि साति बुझहीअउ ॥१॥ (७००-१०, जैतसरी, मः ५)
सर्ब निवासी घटि घटि वासी लेपु नही अलपहीअउ ॥ (७००-११, जैतसरी, मः ५)
नानकु कहत सुनहु रे लोगा संत रसन को बसहीअउ ॥२॥१॥२॥ (७००-११, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी मः ५ ॥ (७००-१२)
धीरउ सुनि धीरउ प्रभ कउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७००-१२, जैतसरी, मः ५)
जीअ प्रान मनु तनु सभु अरपउ नीरउ पेखि प्रभ कउ नीरउ ॥१॥ (७००-१३, जैतसरी, मः ५)
बेसुमार बेअंतु बड दाता मनहि गहीरउ पेखि प्रभ कउ ॥२॥ (७००-१३, जैतसरी, मः ५)
जो चाहउ सोई सोई पावउ आसा मनसा पूरउ जपि प्रभ कउ ॥३॥ (७००-१४, जैतसरी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक मनि वसिआ दूखि न कबहू झूरउ बुझि प्रभ कउ ॥४॥२॥३॥ (७००-१५, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७००-१५)
लोड़ीदड़ा साजनु मेरा ॥ (७००-१६, जैतसरी, मः ५)
घरि घरि मंगल गावहु नीके घटि घटि तिसहि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (७००-१६, जैतसरी, मः ५)
सूखि अराधनु दूखि अराधनु बिसरै न काहू बेरा ॥ (७००-१६, जैतसरी, मः ५)
नामु जपत कोटि सूर उजारा बिनसै भरमु अंधेरा ॥१॥ (७००-१७, जैतसरी, मः ५)
थानि थनंतरि सभनी जाई जो दीसै सो तेरा ॥ (७००-१७, जैतसरी, मः ५)

संतसंगि पावै जो नानक तिसु बहुरि न होई है फेरा ॥२॥३॥४॥ (७००-१८, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०१

जैतसरी महला ५ घरु ४ दुपदे (७०१-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७०१-१)
अब मै सुखु पाइओ गुर आग्यि ॥ (७०१-२, जैतसरी, मः ५)
तजी सिआनप चिंत विसारी अहं छोडिओ है तिआग्यि ॥१॥ रहाउ ॥ (७०१-२, जैतसरी, मः ५)
जउ देखउ तउ सगल मोहि मोहीअउ तउ सरनि परिओ गुर भागि ॥ (७०१-३, जैतसरी, मः ५)
करि किरपा टहल हरि लाइओ तउ जमि छोडी मोरी लागि ॥१॥ (७०१-३, जैतसरी, मः ५)
तरिओ सागरु पावक को जउ संत भेटे वड भागि ॥ (७०१-४, जैतसरी, मः ५)
जन नानक सर्ब सुख पाए मोरो हरि चरनी चितु लागि ॥२॥१॥५॥ (७०१-४, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०१-५)
मन महि सतिगुर धिआनु धरा ॥ (७०१-५, जैतसरी, मः ५)
दृड़िओ गिआनु मंत्रु हरि नामा प्रभ जीउ मइआ करा ॥१॥ रहाउ ॥ (७०१-६, जैतसरी, मः ५)
काल जाल अरु महा जंजाला छुटके जमहि डरा ॥ (७०१-६, जैतसरी, मः ५)
आइओ दुख हरण सरण करुणापति गहिओ चरण आसरा ॥१॥ (७०१-७, जैतसरी, मः ५)
नाव रूप भइओ साधसंगु भव निधि पारि परा ॥ (७०१-७, जैतसरी, मः ५)
अपिउ पीओ गतु थीओ भरमा कहु नानक अजरु जरा ॥२॥२॥६॥ (७०१-८, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०१-९)
जा कउ भए गोविंद सहाई ॥ (७०१-९, जैतसरी, मः ५)
सूख सहज आनंद सगल सिउ वा कउ बिआधि न काई ॥१॥ रहाउ ॥ (७०१-९, जैतसरी, मः ५)
दीसहि सभ संगि रहहि अलेपा नह विआपै उन माई ॥ (७०१-१०, जैतसरी, मः ५)
एकै रंगि तत के बेते सतिगुर ते बुधि पाई ॥१॥ (७०१-१०, जैतसरी, मः ५)
दइआ मइआ किरपा ठाकुर की सेई संत सुभाई ॥ (७०१-११, जैतसरी, मः ५)
तिन कै संगि नानक निसतरीऐ जिन रसि रसि हरि गुन गाई ॥२॥३॥७॥ (७०१-११, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०१-१२)
गोबिंद जीवन प्रान धन रूप ॥ (७०१-१३, जैतसरी, मः ५)
अगिआन मोह मगन महा प्रानी अंधिआरे महि दीप ॥१॥ रहाउ ॥ (७०१-१३, जैतसरी, मः ५)
सफल दरसनु तुमरा प्रभ प्रीतम चरन कमल आनूप ॥ (७०१-१४, जैतसरी, मः ५)
अनिक बार करउ तिह बंदन मनहि चरहावउ धूप ॥१॥ (७०१-१४, जैतसरी, मः ५)
हारि परिओ तुम्रै प्रभ दुआरै दृड़ु करि गही तुमारी लूक ॥ (७०१-१५, जैतसरी, मः ५)
काढि लेहु नानक अपुने कउ संसार पावक के कूप ॥२॥४॥८॥ (७०१-१५, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०१-१६)
कोई जनु हरि सिउ देवै जोरि ॥ (७०१-१६, जैतसरी, मः ५)
चरन गहउ बकउ सुभ रसना दीजहि प्रान अकोरि ॥१॥ रहाउ ॥ (७०१-१६, जैतसरी, मः ५)

मनु तनु निर्मल करत किआरो हरि सिंचै सुधा संजोरि ॥ (७०१-१७, जैतसरी, मः ५)
इआ रस महि मगनु होत किरपा ते महा बिखिआ ते तोरि ॥१॥ (७०१-१८, जैतसरी, मः ५)
आइओ सरणि दीन दुख भंजन चितवउ तुम्री ओरि ॥ (७०१-१८, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०२

अभै पदु दानु सिमरनु सुआमी को प्रभ नानक बंधन छोरि ॥२॥५॥९॥ (७०२-१, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०२-२)
चातृक चितवत बरसत मेंह ॥ (७०२-२, जैतसरी, मः ५)
कृपा सिंधु करुणा प्रभ धारहु हरि प्रेम भगति को नेंह ॥१॥ रहाउ ॥ (७०२-२, जैतसरी, मः ५)
अनिक सूख चकवी नही चाहत अनद पूरन पेखि देंह ॥ (७०२-३, जैतसरी, मः ५)
आन उपाव न जीवत मीना बिनु जल मरना तेंह ॥१॥ (७०२-३, जैतसरी, मः ५)
हम अनाथ नाथ हरि सरणी अपुनी कृपा करेंह ॥ (७०२-४, जैतसरी, मः ५)
चरण कमल नानकु आराधै तिसु बिनु आन न केंह ॥२॥६॥१०॥ (७०२-५, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०२-५)
मनि तनि बसि रहे मेरे प्रान ॥ (७०२-५, जैतसरी, मः ५)
करि किरपा साधू संगि भेटे पूरन पुरख सुजान ॥१॥ रहाउ ॥ (७०२-६, जैतसरी, मः ५)
प्रेम ठगउरी जिन कउ पाई तिन रसु पीअउ भारी ॥ (७०२-६, जैतसरी, मः ५)
ता की कीमति कहणु न जाई कुदरति कवन हम्ारी ॥१॥ (७०२-७, जैतसरी, मः ५)
लाइ लए लड़ि दास जन अपुने उधरे उधरनहारे ॥ (७०२-८, जैतसरी, मः ५)
प्रभु सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइओ नानक सरणि दुआरे ॥२॥७॥११॥ (७०२-८, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०२-९)
आए अनिक जनम भ्रमि सरणी ॥ (७०२-९, जैतसरी, मः ५)
उधरु देह अंध कूप ते लावहु अपुनी चरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (७०२-९, जैतसरी, मः ५)
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाना नाहिन निर्मल करणी ॥ (७०२-१०, जैतसरी, मः ५)
साधसंगति कै अंचलि लावहु बिखम नदी जाइ तरणी ॥१॥ (७०२-११, जैतसरी, मः ५)
सुख सम्पति माइआ रस मीठे इह नही मन महि धरणी ॥ (७०२-११, जैतसरी, मः ५)
हरि दरसन तृपति नानक दास पावत हरि नाम रंग आभरणी ॥२॥८॥१२॥ (७०२-१२, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ ॥ (७०२-१३)
हरि जन सिमरहु हिरदै राम ॥ (७०२-१३, जैतसरी, मः ५)
हरि जन कउ अपदा निकटि न आवै पूरन दास के काम ॥१॥ रहाउ ॥ (७०२-१३, जैतसरी, मः ५)
कोटि बिघन बिनसहि हरि सेवा निहचलु गोविद धाम ॥ (७०२-१४, जैतसरी, मः ५)
भगवंत भगत कउ भउ किछु नाही आदरु देवत जाम ॥१॥ (७०२-१४, जैतसरी, मः ५)
तजि गोपाल आन जो करणी सोई सोई बिनसत खाम ॥ (७०२-१५, जैतसरी, मः ५)
चरन कमल हिरदै गहु नानक सुख समूह बिसराम ॥२॥९॥१३॥ (७०२-१६, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ९ (७०२-१७)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७०२-१७)
भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥ (७०२-१८, जैतसरी, मः ९)
जो जो कर्म कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (७०२-१८, जैतसरी, मः ९)
समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥ (७०२-१९, जैतसरी, मः ९)
संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥१॥ (७०२-१९, जैतसरी, मः ९)

पन्ना ७०३

रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥ (७०३-१, जैतसरी, मः ९)
जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥२॥१॥ (७०३-१, जैतसरी, मः ९)
जैतसरी महला ९ ॥ (७०३-२)
हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥ (७०३-२, जैतसरी, मः ९)
जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (७०३-२, जैतसरी, मः ९)
महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥ (७०३-३, जैतसरी, मः ९)
भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥ (७०३-४, जैतसरी, मः ९)
कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥ (७०३-४, जैतसरी, मः ९)
घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥ (७०३-५, जैतसरी, मः ९)
नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥ (७०३-५, जैतसरी, मः ९)
नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥ (७०३-६, जैतसरी, मः ९)
जैतसरी महला ९ ॥ (७०३-७)
मन रे साचा गहो बिचारा ॥ (७०३-७, जैतसरी, मः ९)
राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७०३-७, जैतसरी, मः ९)
जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥ (७०३-८, जैतसरी, मः ९)
सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥ (७०३-८, जैतसरी, मः ९)
पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि सम्भारा ॥ (७०३-९, जैतसरी, मः ९)
नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥३॥ (७०३-९, जैतसरी, मः ९)
जैतसरी महला ५ छंत घरु १ (७०३-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७०३-११)
सलोक ॥ (७०३-१२)
दरसन पिआसी दिनसु राति चितवउ अनदिनु नीत ॥ (७०३-१२, जैतसरी, मः ५)
खोलि्् कपट गुरि मेलीआ नानक हरि संगि मीत ॥१॥ (७०३-१२, जैतसरी, मः ५)
छंत ॥ (७०३-१३)
सुणि यार हमारे सजण इक करउ बेनंतीआ ॥ (७०३-१३, जैतसरी, मः ५)
तिसु मोहन लाल पिआरे हउ फिरउ खोजंतीआ ॥ (७०३-१३, जैतसरी, मः ५)
तिसु दसि पिआरे सिरु धरी उतारे इक भोरी दरसनु दीजै ॥ (७०३-१४, जैतसरी, मः ५)
नैन हमारे प्रिअ रंग रंगारे इकु तिलु भी ना धीरीजै ॥ (७०३-१४, जैतसरी, मः ५)

प्रभ सिउ मनु लीना जिउ जल मीना चातृक जिवै तिसंतीआ ॥ (७०३-१५, जैतसरी, मः ५)
जन नानक गुरु पूरा पाइआ सगली तिखा बुझंतीआ ॥१॥ (७०३-१५, जैतसरी, मः ५)
यार वे पृअ हभे सखीआ मू कही न जेहीआ ॥ (७०३-१६, जैतसरी, मः ५)
यार वे हिक डूं हिक चाड़ै हउ किसु चितेहीआ ॥ (७०३-१७, जैतसरी, मः ५)
हिक दूं हिकि चाड़े अनिक पिआरे नित करदे भोग बिलासा ॥ (७०३-१७, जैतसरी, मः ५)
तिना देखि मनि चाउ उठंदा हउ कदि पाई गुणतासा ॥ (७०३-१८, जैतसरी, मः ५)
जिनी मैडा लालु रीझाइआ हउ तिसु आगै मनु डेंहीआ ॥ (७०३-१८, जैतसरी, मः ५)
नानकु कहै सुणि बिनउ सुहागणि मू दसि डिखा पिरु केहीआ ॥२॥ (७०३-१९, जैतसरी, मः ५)
यार वे पिरु आपण भाणा किछु नीसी छंदा ॥ (७०३-१९, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०४

यार वे तै राविआ लालनु मू दसि दसंदा ॥ (७०४-१, जैतसरी, मः ५)
लालनु तै पाइआ आपु गवाइआ जै धन भाग मथाणे ॥ (७०४-१, जैतसरी, मः ५)
बाँह पकड़ि ठाकुरि हउ घिधी गुण अवगण न पछाणे ॥ (७०४-२, जैतसरी, मः ५)
गुण हारु तै पाइआ रंगु लालु बणाइआ तिसु हभो किछु सुहंदा ॥ (७०४-२, जैतसरी, मः ५)
जन नानक धंनि सुहागणि साई जिसु संगि भतारु वसंदा ॥३॥ (७०४-३, जैतसरी, मः ५)
यार वे नित सुख सुखेदी सा मै पाई ॥ (७०४-४, जैतसरी, मः ५)
वरु लोड़ीदा आइआ वजी वाधाई ॥ (७०४-४, जैतसरी, मः ५)
महा मंगलु रहसु थीआ पिरु दइआलु सद नव रंगीआ ॥ (७०४-५, जैतसरी, मः ५)
वड भागि पाइआ गुरि मिलाइआ साध कै सतसंगीआ ॥ (७०४-५, जैतसरी, मः ५)
आसा मनसा सगल पूरी पृअ अंकि अंकु मिलाई ॥ (७०४-६, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानकु सुख सुखेदी सा मै गुर मिलि पाई ॥४॥१॥ (७०४-६, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ घरु २ छंत (७०४-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७०४-८)
सलोकु ॥ (७०४-८)
ऊचा अगम अपार प्रभु कथनु न जाइ अकथु ॥ (७०४-८, जैतसरी, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती राखन कउ समरथु ॥१॥ (७०४-८, जैतसरी, मः ५)
छंतु ॥ (७०४-९)
जिउ जानहु तिउ राखु हरि प्रभ तेरिआ ॥ (७०४-९, जैतसरी, मः ५)
केते गनउ असंख अवगण मेरिआ ॥ (७०४-९, जैतसरी, मः ५)
असंख अवगण खते फेरे नितप्रति सद भूलीऐ ॥ (७०४-१०, जैतसरी, मः ५)
मोह मगन बिकराल माइआ तउ प्रसादी घूलीऐ ॥ (७०४-१०, जैतसरी, मः ५)
लूक करत बिकार बिखड़े प्रभ नेर हू ते नेरिआ ॥ (७०४-११, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानक दइआ धारहु काढि भवजल फेरिआ ॥१॥ (७०४-११, जैतसरी, मः ५)
सलोकु ॥ (७०४-१२)

निरति न पवै असंख गुण ऊचा प्रभ का नाउ ॥ (७०४-१२, जैतसरी, मः ५)
नानक की बेनंतीआ मिलै निथावे थाउ ॥२॥ (७०४-१२, जैतसरी, मः ५)
छंतु ॥ (७०४-१३)
दूसर नाही ठाउ का पहि जाईऐ ॥ (७०४-१३, जैतसरी, मः ५)
आठ पहर कर जोड़ि सो प्रभु धिआईऐ ॥ (७०४-१३, जैतसरी, मः ५)
धिआइ सो प्रभु सदा अपुना मनहि चिंदिआ पाईऐ ॥ (७०४-१४, जैतसरी, मः ५)
तजि मान मोहु विकारु दूजा एक सिउ लिव लाईऐ ॥ (७०४-१४, जैतसरी, मः ५)
अरपि मनु तनु प्रभू आगै आपु सगल मिटाईऐ ॥ (७०४-१५, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानकु धारि किरपा साचि नामि समाईऐ ॥२॥ (७०४-१५, जैतसरी, मः ५)
सलोकु ॥ (७०४-१६)
रे मन ता कउ धिआईऐ सभ बिधि जा कै हाथि ॥ (७०४-१६, जैतसरी, मः ५)
राम नाम धनु संचीऐ नानक निबहै साथि ॥३॥ (७०४-१६, जैतसरी, मः ५)
छंतु ॥ (७०४-१७)
साथीअड़ा प्रभु एकु दूसर नाहि कोइ ॥ (७०४-१७, जैतसरी, मः ५)
थान थनंतरि आपि जलि थलि पूर सोइ ॥ (७०४-१७, जैतसरी, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ सर्ब दाता प्रभु धनी ॥ (७०४-१८, जैतसरी, मः ५)
गोपाल गोबिंद अंतु नाही बेअंत गुण ता के किआ गनी ॥ (७०४-१८, जैतसरी, मः ५)
भजु सरणि सुआमी सुखह गामी तिसु बिना अन नाहि कोइ ॥ (७०४-१९, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानक दइआ धारहु तिसु परापति नामु होइ ॥३॥ (७०४-१९, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०५

सलोकु ॥ (७०५-१)
चिति जि चितविआ सो मै पाइआ ॥ (७०५-१, जैतसरी, मः ५)
नानक नामु धिआइ सुख सबाइआ ॥४॥ (७०५-१, जैतसरी, मः ५)
छंतु ॥ (७०५-२)
अब मनु छूटि गइआ साधू संगि मिले ॥ (७०५-२, जैतसरी, मः ५)
गुरमुखि नामु लइआ जोती जोति रले ॥ (७०५-२, जैतसरी, मः ५)
हरि नामु सिमरत मिटे किलबिख बुझी तपति अघानिआ ॥ (७०५-३, जैतसरी, मः ५)
गहि भुजा लीने दइआ कीने आपने करि मानिआ ॥ (७०५-३, जैतसरी, मः ५)
लै अंकि लाए हरि मिलाए जनम मरणा दुख जले ॥ (७०५-४, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानक दइआ धारी मेलि लीने इक पले ॥४॥२॥ (७०५-४, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी छंत मः ५ ॥ (७०५-५)
पाधाणू संसारु गारबि अटिआ ॥ (७०५-५, जैतसरी, मः ५)
करते पाप अनेक माइआ रंग रटिआ ॥ (७०५-५, जैतसरी, मः ५)
लोभि मोहि अभिमानि बूडे मरणु चीति न आवए ॥ (७०५-६, जैतसरी, मः ५)

पुत्र मित्र बिउहार बनिता एह करत बिहावए ॥ (७०५-६, जैतसरी, मः ५)
पुजि दिवस आए लिखे माए दुखु धर्म दूतह डिठिआ ॥ (७०५-७, जैतसरी, मः ५)
किरत कर्म न मिटै नानक हरि नाम धनु नही खटिआ ॥१॥ (७०५-७, जैतसरी, मः ५)
उदम करहि अनेक हरि नामु न गावही ॥ (७०५-८, जैतसरी, मः ५)
भरमहि जोनि असंख मरि जनमहि आवही ॥ (७०५-८, जैतसरी, मः ५)
पसू पंखी सैल तरवर गणत कछू न आवए ॥ (७०५-६, जैतसरी, मः ५)
बीजु बोवसि भोग भोगहि कीआ अपणा पावए ॥ (७०५-६, जैतसरी, मः ५)
रतन जनमु हारंत जूऐ प्रभू आपि न भावही ॥ (७०५-१०, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानक भरमहि भ्रमाए खिनु एकु टिकणु न पावही ॥२॥ (७०५-१०, जैतसरी, मः ५)
जोबनु गइआ बितीति जरु मलि बैठीआ ॥ (७०५-११, जैतसरी, मः ५)
कर कम्पहि सिरु डोल नैण न डीठिआ ॥ (७०५-११, जैतसरी, मः ५)
नह नैण दीसै बिनु भजन ईसै छोडि माइआ चालिआ ॥ (७०५-१२, जैतसरी, मः ५)
कहिआ न मानहि सिरि खाकु छानहि जिन संगि मनु तनु जालिआ ॥ (७०५-१२, जैतसरी, मः ५)
स्रीराम रंग अपार पूरन नह निमख मन महि वूठिआ ॥ (७०५-१३, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानक कोटि कागर बिनस बार न झूठिआ ॥३॥ (७०५-१४, जैतसरी, मः ५)
चरन कमल सरणाइ नानकु आइआ ॥ (७०५-१४, जैतसरी, मः ५)
दुतरु भै संसारु प्रभि आपि तराइआ ॥ (७०५-१५, जैतसरी, मः ५)
मिलि साधसंगे भजे स्रीधर करि अंगु प्रभ जी तारिआ ॥ (७०५-१५, जैतसरी, मः ५)
हरि मानि लीए नाम दीए अवरु कछु न बीचारिआ ॥ (७०५-१५, जैतसरी, मः ५)
गुण निधान अपार ठाकुर मनि लोड़ीदा पाइआ ॥ (७०५-१६, जैतसरी, मः ५)
बिनवंति नानकु सदा तृपते हरि नामु भोजनु खाइआ ॥४॥२॥३॥ (७०५-१७, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी महला ५ वार सलोका नालि (७०५-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७०५-१८)
सलोक ॥ (७०५-१६)
आदि पूरन मधि पूरन अंति पूरन परमेसुरह ॥ (७०५-१६, जैतसरी, मः ५)
सिमरंति संत सरबत्र रमणं नानक अघनासन जगदीसुरह ॥१॥ (७०५-१६, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०६

पेखन सुनन सुनावनो मन महि दृड़ीऐ साचु ॥ (७०६-१, जैतसरी, मः ५)
पूरि रहिओ सरबत्र मै नानक हरि रंगि राचु ॥२॥ (७०६-१, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-२)
हरि एकु निरंजनु गाईऐ सभ अंतरि सोई ॥ (७०६-२, जैतसरी, मः ५)
करण कारण समरथ प्रभु जो करे सु होई ॥ (७०६-२, जैतसरी, मः ५)
खिन महि थापि उथापदा तिसु बिनु नही कोई ॥ (७०६-३, जैतसरी, मः ५)
खंड ब्रहमंड पाताल दीप रविआ सभ लोई ॥ (७०६-३, जैतसरी, मः ५)

जिसु आपि बुझाए सो बुझसी निर्मल जनु सोई ॥१॥ (७०६-४, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०६-४)
रचंति जीअ रचना मात गरभ असथापनं ॥ (७०६-४, जैतसरी, मः ५)
सासि सासि सिमरंति नानक महा अगनि न बिनासनं ॥१॥ (७०६-५, जैतसरी, मः ५)
मुखु तलै पैर उपरे वसंदो कुहथड़ै थाइ ॥ (७०६-५, जैतसरी, मः ५)
नानक सो धणी किउ विसारिओ उधरहि जिस दै नाइ ॥२॥ (७०६-६, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-६)
रक्तु बिंदु करि निंमिआ अगनि उदर मझारि ॥ (७०६-६, जैतसरी, मः ५)
उरध मुखु कुचील बिकलु नरकि घोरि गुबारि ॥ (७०६-७, जैतसरी, मः ५)
हरि सिमरत तू ना जलहि मनि तनि उर धारि ॥ (७०६-७, जैतसरी, मः ५)
बिखम थानहु जिनि रखिआ तिसु तिलु न विसारि ॥ (७०६-८, जैतसरी, मः ५)
प्रभ बिसरत सुखु कदे नाहि जासहि जनमु हारि ॥२॥ (७०६-८, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०६-९)
मन इछा दान करणं सरबत्र आसा पूरनह ॥ (७०६-९, जैतसरी, मः ५)
खंडणं कलि कलेसह प्रभ सिमरि नानक नह दूरणह ॥१॥ (७०६-९, जैतसरी, मः ५)
हभि रंग माणहि जिसु संगि तै सिउ लाईऐ नेहु ॥ (७०६-१०, जैतसरी, मः ५)
सो सहु बिंद न विसरउ नानक जिनि सुंदरु रचिआ देहु ॥२॥ (७०६-११, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-११)
जीउ प्रान तनु धनु दीआ दीने रस भोग ॥ (७०६-११, जैतसरी, मः ५)
गृह मंदर रथ असु दीए रचि भले संजोग ॥ (७०६-१२, जैतसरी, मः ५)
सुत बनिता साजन सेवक दीए प्रभ देवन जोग ॥ (७०६-१२, जैतसरी, मः ५)
हरि सिमरत तनु मनु हरिआ लहि जाहि विजोग ॥ (७०६-१३, जैतसरी, मः ५)
साधसंगि हरि गुण रमहु बिनसे सभि रोग ॥३॥ (७०६-१३, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०६-१४)
कुटम्ब जतन करणं माइआ अनेक उदमह ॥ (७०६-१४, जैतसरी, मः ५)
हरि भगति भाव हीणं नानक प्रभ बिसरत ते प्रेततह ॥१॥ (७०६-१४, जैतसरी, मः ५)
तुटड़ीआ सा प्रीति जो लाई बिअन्न सिउ ॥ (७०६-१५, जैतसरी, मः ५)
नानक सची रीति साँई सेती रतिआ ॥२॥ (७०६-१५, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-१६)
जिसु बिसरत तनु भसम होइ कहते सभि प्रेतु ॥ (७०६-१६, जैतसरी, मः ५)
खिनु गृह महि बसन न देवही जिन सिउ सोई हेतु ॥ (७०६-१६, जैतसरी, मः ५)
करि अनरथ दरबु संचिआ सो कारजि केतु ॥ (७०६-१७, जैतसरी, मः ५)
जैसा बीजै सो लुणै कर्म इहु खेतु ॥ (७०६-१७, जैतसरी, मः ५)
अकिरतघणा हरि विसरिआ जोनी भरमेतु ॥४॥ (७०६-१८, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०६-१८)

कोटि दान इसनानं अनिक सोधन पवित्रतह ॥ (७०६-१८, जैतसरी, मः ५)
उचरंति नानक हरि हरि रसना सर्ब पाप बिमुचते ॥१॥ (७०६-१९, जैतसरी, मः ५)
ईधणु कीतोमू घणा भोरी दितीमु भाहि ॥ (७०६-१९, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०७

मनि वसंदड़ो सचु सहु नानक हभे डुखड़े उलाहि ॥२॥ (७०७-१, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०७-१)
कोटि अघा सभि नास होहि सिमरत हरि नाउ ॥ (७०७-१, जैतसरी, मः ५)
मन चिंदे फल पाईअहि हरि के गुण गाउ ॥ (७०७-२, जैतसरी, मः ५)
जनम मरण भै कटीअहि निहचल सचु थाउ ॥ (७०७-२, जैतसरी, मः ५)
पूरबि होवै लिखिआ हरि चरण समाउ ॥ (७०७-३, जैतसरी, मः ५)
करि किरपा प्रभ राखि लेहु नानक बलि जाउ ॥५॥ (७०७-३, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०७-४)
गृह रचना अपारं मनि बिलास सुआदं रसह ॥ (७०७-४, जैतसरी, मः ५)
कदाँच नह सिमरंति नानक ते जंत बिसटा कृमह ॥१॥ (७०७-४, जैतसरी, मः ५)
मुचु अडम्बरु हभु किहु मंझि मुहबति नेह ॥ (७०७-५, जैतसरी, मः ५)
सो साँई जैं विसरै नानक सो तनु खेह ॥२॥ (७०७-५, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०७-६)
सुंदर सेज अनेक सुख रस भोगण पूरे ॥ (७०७-६, जैतसरी, मः ५)
गृह सोइन चंदन सुगंध लाइ मोती हीरे ॥ (७०७-६, जैतसरी, मः ५)
मन इछे सुख माणदा किछु नाहि विसूरे ॥ (७०७-६, जैतसरी, मः ५)
सो प्रभु चिति न आवई विसटा के कीरे ॥ (७०७-७, जैतसरी, मः ५)
बिनु हरि नाम न साँति होइ कितु बिधि मनु धीरे ॥६॥ (७०७-७, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०७-८)
चरन कमल बिरहं खोजंत बैरागी दह दिसह ॥ (७०७-८, जैतसरी, मः ५)
तिआगंत कपट रूप माइआ नानक आनंद रूप साध संगमह ॥१॥ (७०७-८, जैतसरी, मः ५)
मनि साँई मुखि उचरा वता हभे लोअ ॥ (७०७-९, जैतसरी, मः ५)
नानक हभि अडम्बर कूड़िआ सुणि जीवा सची सोइ ॥२॥ (७०७-१०, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०७-१०)
बसता तूटी झुम्पड़ी चीर सभि छिन्ना ॥ (७०७-१०, जैतसरी, मः ५)
जाति न पति न आदरो उदिआन भ्रमिन्ना ॥ (७०७-११, जैतसरी, मः ५)
मित्र न इठ धन रूपहीण किछु साकु न सिन्ना ॥ (७०७-११, जैतसरी, मः ५)
राजा सगली सृसटि का हरि नामि मनु भिन्ना ॥ (७०७-११, जैतसरी, मः ५)
तिस की धूड़ि मनु उधरै प्रभु होइ सुप्रसन्ना ॥७॥ (७०७-१२, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०७-१२)

अनिक लीला राज रस रूपं छत्र चमर तखत आसनं ॥ (७०७-१३, जैतसरी, मः ५)
रचंति मूड़ अगिआन अंधह नानक सुपन मनोरथ माइआ ॥१॥ (७०७-१३, जैतसरी, मः ५)
सुपनै हभि रंग माणिआ मिठा लगड़ा मोहु ॥ (७०७-१४, जैतसरी, मः ५)
नानक नाम विहूणीआ सुंदरि माइआ ध्रोहु ॥२॥ (७०७-१४, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०७-१५)
सुपने सेती चितु मूरखि लाइआ ॥ (७०७-१५, जैतसरी, मः ५)
बिसरे राज रस भोग जागत भखलाइआ ॥ (७०७-१५, जैतसरी, मः ५)
आरजा गई विहाइ धंधै धाइआ ॥ (७०७-१६, जैतसरी, मः ५)
पूरन भए न काम मोहिआ माइआ ॥ (७०७-१६, जैतसरी, मः ५)
किआ वेचारा जंतु जा आपि भुलाइआ ॥८॥ (७०७-१६, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०७-१७)
बसंति स्वर्ग लोकह जितते पृथवी नव खंडणह ॥ (७०७-१७, जैतसरी, मः ५)
बिसरंत हरि गोपालह नानक ते प्राणी उदिआन भरमणह ॥१॥ (७०७-१७, जैतसरी, मः ५)
कउतक कोड तमासिआ चिति न आवसु नाउ ॥ (७०७-१८, जैतसरी, मः ५)
नानक कोड़ी नरक बराबरे उजड़ु सोई थाउ ॥२॥ (७०७-१८, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०७-१९)
महा भइआन उदिआन नगर करि मानिआ ॥ (७०७-१९, जैतसरी, मः ५)
झूठ समग्री पेखि सचु करि जानिआ ॥ (७०७-१९, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०८

काम क्रोधि अहंकारि फिरहि देवानिआ ॥ (७०८-१, जैतसरी, मः ५)
सिरि लगा जम डंडु ता पछुतानिआ ॥ (७०८-१, जैतसरी, मः ५)
बिनु पूरे गुरदेव फिरै सैतानिआ ॥९॥ (७०८-२, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०८-२)
राज कपटं रूप कपटं धन कपटं कुल गरबतह ॥ (७०८-२, जैतसरी, मः ५)
संचंति बिखिआ छलं छिद्रं नानक बिनु हरि संगि न चालते ॥१॥ (७०८-३, जैतसरी, मः ५)
पेखंदड़ो की भुलु तुम्मा दिसमु सोहणा ॥ (७०८-३, जैतसरी, मः ५)
अढु न लहंदड़ो मुलु नानक साथि न जुलई माइआ ॥२॥ (७०८-४, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०८-४)
चलदिआ नालि न चलै सो किउ संजीऐ ॥ (७०८-४, जैतसरी, मः ५)
तिस का कहु किआ जतनु जिस ते वंजीऐ ॥ (७०८-५, जैतसरी, मः ५)
हरि बिसरिऐ किउ तृपतावै ना मनु रंजीऐ ॥ (७०८-५, जैतसरी, मः ५)
प्रभू छोडि अन लागै नरकि समंजीऐ ॥ (७०८-६, जैतसरी, मः ५)
होहु कृपाल दइआल नानक भउ भंजीऐ ॥१०॥ (७०८-६, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०८-७)

नच राज सुख मिसटं नच भोग रस मिसटं नच मिसटं सुख माइआ ॥ (७०८-७, जैतसरी, मः ५)
मिसटं साधसंगि हरि नानक दास मिसटं प्रभ दरसनं ॥१॥ (७०८-७, जैतसरी, मः ५)
लगड़ा सो नेहु मन्न मझाहू रतिआ ॥ (७०८-८, जैतसरी, मः ५)
विधड़ो सच थोकि नानक मिठड़ा सो धणी ॥२॥ (७०८-८, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०८-९)
हरि बिनु कछू न लागई भगतन कउ मीठा ॥ (७०८-९, जैतसरी, मः ५)
आन सुआद सभि फीकिआ करि निरनउ डीठा ॥ (७०८-९, जैतसरी, मः ५)
अगिआनु भरमु दुखु कटिआ गुर भए बसीठा ॥ (७०८-१०, जैतसरी, मः ५)
चरन कमल मनु बेधिआ जिउ रंगु मजीठा ॥ (७०८-१०, जैतसरी, मः ५)
जीउ प्राण तनु मनु प्रभू बिनसे सभि झूठा ॥११॥ (७०८-११, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०८-११)
तिअकत जलं नह जीव मीनं नह तिआगि चातृक मेघ मंडलह ॥ (७०८-११, जैतसरी, मः ५)
बाण बेधंच कुरंक नादं अलि बंधन कुसम बासनह ॥ (७०८-१२, जैतसरी, मः ५)
चरन कमल रचंति संतह नानक आन न रुचते ॥१॥ (७०८-१२, जैतसरी, मः ५)
मुखु डेखाऊ पलक छडि आन न डेऊ चितु ॥ (७०८-१३, जैतसरी, मः ५)
जीवण संगमु तिसु धणी हरि नानक संताँ मितु ॥२॥ (७०८-१३, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०८-१४)
जिउ मछुली बिनु पाणीऐ किउ जीवणु पावै ॥ (७०८-१४, जैतसरी, मः ५)
बूंद विहूणा चातृको किउ करि तृपतावै ॥ (७०८-१५, जैतसरी, मः ५)
नाद कुरंकहि बेधिआ सनमुख उठि धावै ॥ (७०८-१५, जैतसरी, मः ५)
भवरु लोभी कुसम बासु का मिलि आपु बंधावै ॥ (७०८-१५, जैतसरी, मः ५)
तिउ संत जना हरि प्रीति है देखि दरसु अघावै ॥१२॥ (७०८-१६, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०८-१६)
चितवंति चरन कमलं सासि सासि अराधनह ॥ (७०८-१६, जैतसरी, मः ५)
नह बिसरंति नाम अचुत नानक आस पूरन परमेसुरह ॥१॥ (७०८-१७, जैतसरी, मः ५)
सीतड़ा मन्न मंझाहि पलक न थीवै बाहरा ॥ (७०८-१८, जैतसरी, मः ५)
नानक आसड़ी निबाहि सदा पेखंदो सचु धणी ॥२॥ (७०८-१८, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०८-१८)
आसावंती आस गुसाई पूरीऐ ॥ (७०८-१९, जैतसरी, मः ५)
मिलि गोपाल गोबिंद न कबहू झूरीऐ ॥ (७०८-१९, जैतसरी, मः ५)
देहु दरसु मनि चाउ लहि जाहि विसूरीऐ ॥ (७०८-१९, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७०९

होइ पवित्र सरीरु चरना धूरीऐ ॥ (७०९-१, जैतसरी, मः ५)
पारब्रह्म गुरदेव सदा हजूरीऐ ॥१३॥ (७०९-१, जैतसरी, मः ५)

सलोक ॥ (७०६-१)
रसना उचरंति नामं स्रवणं सुनंति सबद अमृतह ॥ (७०६-२, जैतसरी, मः ५)
नानक तिन सद बलिहारं जिना धिआनु पारब्रहमणह ॥१॥ (७०६-२, जैतसरी, मः ५)
हभि कूड़ावे कम्म इकसु साई बाहरे ॥ (७०६-३, जैतसरी, मः ५)
नानक सेई धन्नु जिना पिरहड़ी सच सिउ ॥२॥ (७०६-३, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-४)
सद बलिहारी तिना जि सुनते हरि कथा ॥ (७०६-४, जैतसरी, मः ५)
पूरे ते प्रधान निवावहि प्रभ मथा ॥ (७०६-४, जैतसरी, मः ५)
हरि जसु लिखहि बेअंत सोहहि से हथा ॥ (७०६-४, जैतसरी, मः ५)
चरन पुनीत पवित्र चालहि प्रभ पथा ॥ (७०६-५, जैतसरी, मः ५)
संताँ संगि उधारु सगला दुखु लथा ॥१४॥ (७०६-५, जैतसरी, मः ५)
सलोकु ॥ (७०६-६)
भावी उदोत करणं हरि रमणं संजोग पूरनह ॥ (७०६-६, जैतसरी, मः ५)
गोपाल दरस भेटं सफल नानक सो महूरतह ॥१॥ (७०६-६, जैतसरी, मः ५)
कीम न सका पाइ सुख मिती हू बाहरे ॥ (७०६-७, जैतसरी, मः ५)
नानक सा वेलड़ी परवाणु जितु मिलंदड़ो मा पिरी ॥२॥ (७०६-७, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-८)
सा वेला कहु कउणु है जितु प्रभ कउ पाई ॥ (७०६-८, जैतसरी, मः ५)
सो मूरतु भला संजोगु है जितु मिलै गुसाई ॥ (७०६-८, जैतसरी, मः ५)
आठ पहर हरि धिआइ कै मन इछ पुजाई ॥ (७०६-९, जैतसरी, मः ५)
वडै भागि सतसंगु होइ निवि लागा पाई ॥ (७०६-९, जैतसरी, मः ५)
मनि दरसन की पिआस है नानक बलि जाई ॥१५॥ (७०६-१०, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०६-१०)
पतित पुनीत गोबिंदह सर्ब दोख निवारणह ॥ (७०६-१०, जैतसरी, मः ५)
सरणि सूर भगवानह जपंति नानक हरि हरि हरे ॥१॥ (७०६-११, जैतसरी, मः ५)
छडिओ हभु आपु लगड़ो चरणा पासि ॥ (७०६-११, जैतसरी, मः ५)
नठड़ो दुख तापु नानक प्रभु पेखंदिआ ॥२॥ (७०६-१२, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-१२)
मेलि लैहु दइआल ढहि पए दुआरिआ ॥ (७०६-१२, जैतसरी, मः ५)
रखि लेवहु दीन दइआल भ्रमत बहु हारिआ ॥ (७०६-१३, जैतसरी, मः ५)
भगति वछलु तेरा बिरदु हरि पतित उधारिआ ॥ (७०६-१३, जैतसरी, मः ५)
तुझ बिनु नाही कोइ बिनउ मोहि सारिआ ॥ (७०६-१४, जैतसरी, मः ५)
करु गहि लेहु दइआल सागर संसारिआ ॥१६॥ (७०६-१४, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०६-१५)
संत उधरण दइआलं आसरं गोपाल कीरतनह ॥ (७०६-१५, जैतसरी, मः ५)

निरमलं संत संगेण ओट नानक परमेसुरह ॥१॥ (७०६-१५, जैतसरी, मः ५)
चंदन चंदु न सरद रुति मूलि न मिटई घाँम ॥ (७०६-१६, जैतसरी, मः ५)
सीतलु थीवै नानका जपंदड़ो हरि नामु ॥२॥ (७०६-१६, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७०६-१७)
चरन कमल की ओट उधरे सगल जन ॥ (७०६-१७, जैतसरी, मः ५)
सुणि परतापु गोविंद निरभउ भए मन ॥ (७०६-१७, जैतसरी, मः ५)
तोटि न आवै मूलि संचिआ नामु धन ॥ (७०६-१८, जैतसरी, मः ५)
संत जना सिउ संगु पाईऐ वडै पुन ॥ (७०६-१८, जैतसरी, मः ५)
आठ पहर हरि धिआइ हरि जसु नित सुन ॥१७॥ (७०६-१८, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७०६-१९)
दइआ करणं दुख हरणं उचरणं नाम कीरतनह ॥ (७०६-१९, जैतसरी, मः ५)
दइआल पुरख भगवानह नानक लिपत न माइआ ॥१॥ (७०६-१९, जैतसरी, मः ५)

पन्ना ७१०

भाहि बलंदड़ी बुझि गई रखंदड़ो प्रभु आपि ॥ (७१०-१, जैतसरी, मः ५)
जिनि उपाई मेदनी नानक सो प्रभु जापि ॥२॥ (७१०-१, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७१०-२)
जा प्रभ भए दइआल न बिआपै माइआ ॥ (७१०-२, जैतसरी, मः ५)
कोटि अघा गए नास हरि इकु धिआइआ ॥ (७१०-२, जैतसरी, मः ५)
निर्मल भए सरीर जन धूरी नाइआ ॥ (७१०-३, जैतसरी, मः ५)
मन तन भए संतोख पूरन प्रभु पाइआ ॥ (७१०-३, जैतसरी, मः ५)
तरे कुटम्ब संगि लोग कुल सबाइआ ॥१८॥ (७१०-४, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७१०-४)
गुर गोबिंद गोपाल गुर गुर पूरन नाराइणह ॥ (७१०-४, जैतसरी, मः ५)
गुर दइआल समरथ गुर गुर नानक पतित उधारणह ॥१॥ (७१०-५, जैतसरी, मः ५)
भउजलु बिखमु असगाहु गुरि बोहिथै तारिअमु ॥ (७१०-५, जैतसरी, मः ५)
नानक पूर करम्म सतिगुर चरणी लगिआ ॥२॥ (७१०-६, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७१०-६)
धन्नु धन्नु गुरदेव जिसु संगि हरि जपे ॥ (७१०-६, जैतसरी, मः ५)
गुर कृपाल जब भए त अवगुण सभि छपे ॥ (७१०-७, जैतसरी, मः ५)
पारब्रह्म गुरदेव नीचहु उच थपे ॥ (७१०-७, जैतसरी, मः ५)
काटि सिलक दुख माइआ करि लीने अप दसे ॥ (७१०-८, जैतसरी, मः ५)
गुण गाए बेअंत रसना हरि जसे ॥१९॥ (७१०-८, जैतसरी, मः ५)
सलोक ॥ (७१०-९)
दृसटंत एको सुनीअंत एको वरतंत एको नरहरह ॥ (७१०-९, जैतसरी, मः ५)

नाम दानु जाचंति नानक दइआल पुरख क्रिपा करह ॥१॥ (७१०-९, जैतसरी, मः ५)
हिकु सेवी हिकु सम्मला हरि इकसु पहि अरदासि ॥ (७१०-१०, जैतसरी, मः ५)
नाम वखरु धनु संचिआ नानक सची रासि ॥२॥ (७१०-१०, जैतसरी, मः ५)
पउड़ी ॥ (७१०-११)
प्रभ दइआल बेअंत पूरन इकु एहु ॥ (७१०-११, जैतसरी, मः ५)
सभु किछु आपे आपि दूजा कहा केहु ॥ (७१०-११, जैतसरी, मः ५)
आपि करहु प्रभ दानु आपे आपि लेहु ॥ (७१०-१२, जैतसरी, मः ५)
आवण जाणा हुकमु सभु निहचलु तुधु थेहु ॥ (७१०-१२, जैतसरी, मः ५)
नानकु मंगै दानु करि किरपा नामु देहु ॥२०॥१॥ (७१०-१३, जैतसरी, मः ५)
जैतसरी बाणी भगता की (७१०-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१०-१४)
नाथ कछूअ न जानउ ॥ (७१०-१५, जैतसरी, भगत रविदास जी)
मनु माइआ कै हाथि बिकानउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७१०-१५, जैतसरी, भगत रविदास जी)
तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी ॥ (७१०-१५, जैतसरी, भगत रविदास जी)
हम कहीअत कलिजुग के कामी ॥१॥ (७१०-१६, जैतसरी, भगत रविदास जी)
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ ॥ (७१०-१६, जैतसरी, भगत रविदास जी)
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ ॥२॥ (७१०-१६, जैतसरी, भगत रविदास जी)
जत देखउ तत दुख की रासी ॥ (७१०-१७, जैतसरी, भगत रविदास जी)
अजौं न पत्याइ निगम भए साखी ॥३॥ (७१०-१७, जैतसरी, भगत रविदास जी)
गोतम नारि उमापति स्वामी ॥ (७१०-१७, जैतसरी, भगत रविदास जी)
सीसु धरनि सहस भग गांमी ॥४॥ (७१०-१८, जैतसरी, भगत रविदास जी)
इन दूतन खलु बधु करि मारिओ ॥ (७१०-१८, जैतसरी, भगत रविदास जी)
बडो निलाजु अजहू नही हारिओ ॥५॥ (७१०-१८, जैतसरी, भगत रविदास जी)
कहि रविदास कहा कैसे कीजै ॥ (७१०-१९, जैतसरी, भगत रविदास जी)
बिनु रघुनाथ सरनि का की लीजै ॥६॥१॥ (७१०-१९, जैतसरी, भगत रविदास जी)

पन्ना ७११

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (७११-१)
रागु टोडी महला ४ घरु १ ॥ (७११-३)
हरि बिनु रहि न सकै मनु मेरा ॥ (७११-४, टोडी, मः ४)
मेरे प्रीतम प्रान हरि प्रभु गुरु मेले बहुरि न भवजलि फेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (७११-४, टोडी, मः ४)
मेरै हीअरै लोच लगी प्रभ केरी हरि नैनहु हरि प्रभ हेरा ॥ (७११-५, टोडी, मः ४)
सतिगुरि दइआलि हरि नामु द्रिड़ाइआ हरि पाधरु हरि प्रभ केरा ॥१॥ (७११-५, टोडी, मः ४)
हरि रंगी हरि नामु प्रभ पाइआ हरि गोविंद हरि प्रभ केरा ॥ (७११-६, टोडी, मः ४)
हरि हिरदै मनि तनि मीठा लागा मुखि मसतकि भागु चंगेरा ॥२॥ (७११-७, टोडी, मः ४)

लोभ विकार जिना मनु लागा हरि विसरिआ पुरखु चंगेरा ॥ (७११-७, टोडी, मः ४)
ओइ मनमुख मूड़ अगिआनी कहीअहि तिन मसतकि भागु मंदेरा ॥३॥ (७११-८, टोडी, मः ४)
बिबेक बुधि सतिगुर ते पाई गुर गिआनु गुरू प्रभ केरा ॥ (७११-६, टोडी, मः ४)
जन नानक नामु गुरू ते पाइआ धुरि मसतकि भागु लिखेरा ॥४॥१॥ (७११-६, टोडी, मः ४)
टोडी महला ५ घरु १ दुपदे (७११-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७११-११)
संतन अवर न काहू जानी ॥ (७११-१२, टोडी, मः ५)
बेपरवाह सदा रंगि हरि कै जा को पाखु सुआमी ॥ रहाउ ॥ (७११-१२, टोडी, मः ५)
ऊच समाना ठाकुर तेरो अवर न काहू तानी ॥ (७११-१२, टोडी, मः ५)
ऐसो अमरु मिलिओ भगतन कउ राचि रहे रंगि गिआनी ॥१॥ (७११-१३, टोडी, मः ५)
रोग सोग दुख जरा मरा हरि जनहि नही निकटानी ॥ (७११-१४, टोडी, मः ५)
निरभउ होइ रहे लिव एकै नानक हरि मनु मानी ॥२॥१॥ (७११-१४, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७११-१५)
हरि बिसरत सदा खुआरी ॥ (७११-१५, टोडी, मः ५)
ता कउ धोखा कहा बिआपै जा कउ ओट तुहारी ॥ रहाउ ॥ (७११-१५, टोडी, मः ५)

पन्ना ७१२

बिनु सिमरन जो जीवनु बलना सर्प जैसे अरजारी ॥ (७१२-१, टोडी, मः ५)
नव खंडन को राजु कमावै अंति चलैगो हारी ॥१॥ (७१२-१, टोडी, मः ५)
गुण निधान गुण तिन ही गाए जा कउ किरपा धारी ॥ (७१२-२, टोडी, मः ५)
सो सुखीआ धन्नु उसु जनमा नानक तिसु बलिहारी ॥२॥२॥ (७१२-२, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ घरु २ चउपदे (७१२-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१२-४)
धाइओ रे मन दह दिस धाइओ ॥ (७१२-५, टोडी, मः ५)
माइआ मगन सुआदि लोभि मोहिओ तिनि प्रभि आपि भुलाइओ ॥ रहाउ ॥ (७१२-५, टोडी, मः ५)
हरि कथा हरि जस साधसंगति सिउ इकु मुहतु न इहु मनु लाइओ ॥ (७१२-६, टोडी, मः ५)
बिगसिओ पेखि रंगु कसुम्भ को पर गृह जोहनि जाइओ ॥१॥ (७१२-६, टोडी, मः ५)
चरन कमल सिउ भाउ न कीनो नह सत पुरखु मनाइओ ॥ (७१२-७, टोडी, मः ५)
धावत कउ धावहि बहु भाती जिउ तेली बलदु भ्रमाइओ ॥२॥ (७१२-७, टोडी, मः ५)
नाम दानु इसनानु न कीओ इक निमख न कीरति गाइओ ॥ (७१२-८, टोडी, मः ५)
नाना झूठि लाइ मनु तोखिओ नह बूझिओ अपनाइओ ॥३॥ (७१२-६, टोडी, मः ५)
परउपकार न कबहू कीए नही सतिगुरु सेवि धिआइओ ॥ (७१२-६, टोडी, मः ५)
पंच दूत रचि संगति गोसटि मतवारो मद माइओ ॥४॥ (७१२-१०, टोडी, मः ५)
करउ बेनती साधसंगति हरि भगति वछल सुणि आइओ ॥ (७१२-१०, टोडी, मः ५)
नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु लाज अपुनाइओ ॥५॥१॥३॥ (७१२-११, टोडी, मः ५)

टोडी महला ५ ॥ (७१२-१२)
मानुखु बिनु बूझे बिरथा आइआ ॥ (७१२-१२, टोडी, मः ५)
अनिक साज सीगार बहु करता जिउ मिरतकु ओढाइआ ॥ रहाउ ॥ (७१२-१२, टोडी, मः ५)
धाइ धाइ कृपन स्रमु कीनो इकत्र करी है माइआ ॥ (७१२-१३, टोडी, मः ५)
दानु पुन्नु नही संतन सेवा कित ही काजि न आइआ ॥१॥ (७१२-१४, टोडी, मः ५)
करि आभरण सवारी सेजा कामनि थाटु बनाइआ ॥ (७१२-१४, टोडी, मः ५)
संगु न पाइओ अपुने भरते पेखि पेखि दुखु पाइआ ॥२॥ (७१२-१५, टोडी, मः ५)
सारो दिनसु मजूरी करता तुहु मूसलहि छराइआ ॥ (७१२-१५, टोडी, मः ५)
खेदु भइओ बेगारी निआई घर कै कामि न आइआ ॥३॥ (७१२-१६, टोडी, मः ५)
भइओ अनुग्रहु जा कउ प्रभ को तिसु हिरदै नामु वसाइआ ॥ (७१२-१६, टोडी, मः ५)
साधसंगति कै पाछै परिअउ जन नानक हरि रसु पाइआ ॥४॥२॥४॥ (७१२-१७, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१२-१८)
कृपा निधि बसहु रिदै हरि नीत ॥ (७१२-१८, टोडी, मः ५)
तैसी बुधि करहु परगासा लागै प्रभ संगि प्रीति ॥ रहाउ ॥ (७१२-१८, टोडी, मः ५)
दास तुमारे की पावउ धूरा मसतकि ले ले लावउ ॥ (७१२-१९, टोडी, मः ५)
महा पतित ते होत पुनीता हरि कीर्तन गुन गावउ ॥१॥ (७१२-१९, टोडी, मः ५)

पन्ना ७१३

आगिआ तुमरी मीठी लागउ कीओ तुहारो भावउ ॥ (७१३-१, टोडी, मः ५)
जो तू देहि तही इहु तृपतै आन न कतहू धावउ ॥२॥ (७१३-१, टोडी, मः ५)
सद ही निकटि जानउ प्रभ सुआमी सगल रेण होइ रहीऐ ॥ (७१३-२, टोडी, मः ५)
साधू संगति होइ परापति ता प्रभु अपुना लहीऐ ॥३॥ (७१३-३, टोडी, मः ५)
सदा सदा हम छोहरे तुमरे तू प्रभ हमरो मीरा ॥ (७१३-३, टोडी, मः ५)
नानक बारिक तुम मात पिता मुखि नामु तुमारो खीरा ॥४॥३॥५॥ (७१३-४, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ घरु २ दुपदे (७१३-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१३-५)
मागउ दानु ठाकुर नाम ॥ (७१३-६, टोडी, मः ५)
अवरु कछू मेरै संगि न चालै मिलै कृपा गुण गाम ॥१॥ रहाउ ॥ (७१३-६, टोडी, मः ५)
राजु मालु अनेक भोग रस सगल तरवर की छाम ॥ (७१३-६, टोडी, मः ५)
धाइ धाइ बहु बिधि कउ धावै सगल निरारथ काम ॥१॥ (७१३-७, टोडी, मः ५)
बिनु गोविंद अवरु जे चाहउ दीसै सगल बात है खाम ॥ (७१३-८, टोडी, मः ५)
कहु नानक संत रेन मागउ मेरो मनु पावै बिस्राम ॥२॥१॥६॥ (७१३-८, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१३-९)
प्रभ जी को नामु मनहि साधारै ॥ (७१३-९, टोडी, मः ५)
जीअ प्रान सूख इसु मन कउ बरतनि एह हमारै ॥१॥ रहाउ ॥ (७१३-९, टोडी, मः ५)

नामु जाति नामु मेरी पति है नामु मेरै परवारै ॥ (७१३-१०, टोडी, मः ५)
नामु सखाई सदा मेरै संगि हरि नामु मो कउ निसतारै ॥१॥ (७१३-१०, टोडी, मः ५)
बिखै बिलास कहीअत बहुतेरे चलत न कछू संगारै ॥ (७१३-११, टोडी, मः ५)
इसटु मीतु नामु नानक को हरि नामु मेरै भंडारै ॥२॥२॥७॥ (७१३-१२, टोडी, मः ५)
टोडी मः ५ ॥ (७१३-१२)
नीके गुण गाउ मिटही रोग ॥ (७१३-१२, टोडी, मः ५)
मुख ऊजल मनु निर्मल होई है तेरो रहै ईहा ऊहा लोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (७१३-१३, टोडी, मः ५)
चरन पखारि करउ गुर सेवा मनहि चरावउ भोग ॥ (७१३-१३, टोडी, मः ५)
छोडि आपतु बादु अहंकारा मानु सोई जो होगु ॥१॥ (७१३-१४, टोडी, मः ५)
संत टहल सोई है लागा जिसु मसतकि लिखिआ लिखोगु ॥ (७१३-१४, टोडी, मः ५)
कहु नानक एक बिनु दूजा अवरु न करणै जोगु ॥२॥३॥८॥ (७१३-१५, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१३-१६)
सतिगुर आइओ सरणि तुहारी ॥ (७१३-१६, टोडी, मः ५)
मिलै सूखु नामु हरि सोभा चिंता लाहि हमारी ॥१॥ रहाउ ॥ (७१३-१६, टोडी, मः ५)
अवर न सूझै दूजी ठाहर हारि परिओ तउ दुआरी ॥ (७१३-१७, टोडी, मः ५)
लेखा छोडि अलेखै छूटह हम निरगुन लेहु उबारी ॥१॥ (७१३-१७, टोडी, मः ५)
सद बखसिंदु सदा मिहरवाना सभना देइ अधारी ॥ (७१३-१८, टोडी, मः ५)
नानक दास संत पाछै परिओ राखि लेहु इह बारी ॥२॥४॥९॥ (७१३-१८, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१३-१९)
रसना गुण गोपाल निधि गाइण ॥ (७१३-१९, टोडी, मः ५)
साँति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (७१३-१९, टोडी, मः ५)

पन्ना ७१४

जो मागहि सोई सोई पावहि सेवि हरि के चरण रसाइण ॥ (७१४-१, टोडी, मः ५)
जनम मरण दुहहू ते छूटहि भवजलु जगतु तराइण ॥१॥ (७१४-२, टोडी, मः ५)
खोजत खोजत ततु बीचारिओ दास गोविंद पराइण ॥ (७१४-२, टोडी, मः ५)
अबिनासी खेम चाहहि जे नानक सदा सिमरि नाराइण ॥२॥५॥१०॥ (७१४-३, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१४-४)
निंदकु गुर किरपा ते हाटिओ ॥ (७१४-४, टोडी, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ भए दइआला सिव कै बाणि सिरु काटिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (७१४-४, टोडी, मः ५)
कालु जालु जमु जोहि न साकै सच का पंथा थाटिओ ॥ (७१४-५, टोडी, मः ५)
खात खरचत किछु निखुटत नाही राम रतनु धनु खाटिओ ॥१॥ (७१४-५, टोडी, मः ५)
भसमा भूत होआ खिन भीतरि अपना कीआ पाइआ ॥ (७१४-६, टोडी, मः ५)
आगम निगमु कहै जनु नानकु सभु देखै लोकु सबाइआ ॥२॥६॥११॥ (७१४-६, टोडी, मः ५)
टोडी मः ५ ॥ (७१४-७)

किरपन तन मन किलविख भरे ॥ (७१४-७, टोडी, मः ५)
साधसंगि भजनु करि सुआमी ढाकन कउ इकु हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (७१४-८, टोडी, मः ५)
अनिक छिद्र बोहिथ के छुटकत थाम न जाही करे ॥ (७१४-८, टोडी, मः ५)
जिस का बोहिथु तिसु आराधे खोटे संगि खरे ॥१॥ (७१४-९, टोडी, मः ५)
गली सैल उठावत चाहै ओइ ऊहा ही है धरे ॥ (७१४-९, टोडी, मः ५)
जोरु सकति नानक किछु नाही प्रभ राखहु सरणि परे ॥२॥७॥१२॥ (७१४-१०, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१४-११)
हरि के चरन कमल मनि धिआउ ॥ (७१४-११, टोडी, मः ५)
काढि कुठारु पित बात हंता अउखधु हरि को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७१४-११, टोडी, मः ५)
तीने ताप निवारणहारा दुख हंता सुख रासि ॥ (७१४-१२, टोडी, मः ५)
ता कउ बिघनु न कोऊ लागै जा की प्रभ आगै अरदासि ॥१॥ (७१४-१२, टोडी, मः ५)
संत प्रसादि बैद नाराइण करण कारण प्रभ एक ॥ (७१४-१३, टोडी, मः ५)
बाल बुधि पूरन सुखदाता नानक हरि हरि टेक ॥२॥८॥१३॥ (७१४-१३, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१४-१४)
हरि हरि नामु सदा सद जापि ॥ (७१४-१४, टोडी, मः ५)
धारि अनुग्रहु पारब्रह्म सुआमी वसदी कीनी आपि ॥१॥ रहाउ ॥ (७१४-१४, टोडी, मः ५)
जिस के से फिरि तिन ही सम्हाले बिनसे सोग संताप ॥ (७१४-१५, टोडी, मः ५)
हाथ देइ राखे जन अपने हरि होए माई बाप ॥१॥ (७१४-१६, टोडी, मः ५)
जीअ जंत होए मिहरवाना दया धारी हरि नाथ ॥ (७१४-१६, टोडी, मः ५)
नानक सरनि परे दुख भंजन जा का बड परताप ॥२॥९॥१४॥ (७१४-१७, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१४-१७)
स्वामी सरनि परिओ दरबारे ॥ (७१४-१८, टोडी, मः ५)
कोटि अपराध खंडन के दाते तुझ बिनु कउनु उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ (७१४-१८, टोडी, मः ५)
खोजत खोजत बहु परकारे सर्ब अर्थ बीचारे ॥ (७१४-१९, टोडी, मः ५)
साधसंगि पर्म गति पाईऐ माइआ रचि बंधि हारे ॥१॥ (७१४-१९, टोडी, मः ५)

पन्ना ७१५

चरन कमल संगि प्रीति मनि लागी सुरि जन मिले पिआरे ॥ (७१५-१, टोडी, मः ५)
नानक अनद करे हरि जपि जपि सगले रोग निवारे ॥२॥१०॥१५॥ (७१५-१, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ घरु ३ चउपदे (७१५-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१५-३)
हाँ हाँ लपटिओ रे मूड़्हे कछू न थोरी ॥ (७१५-४, टोडी, मः ५)
तेरो नही सु जानी मोरी ॥ रहाउ ॥ (७१५-४, टोडी, मः ५)
आपन रामु न चीनो खिनूआ ॥ (७१५-४, टोडी, मः ५)
जो पराई सु अपनी मनूआ ॥१॥ (७१५-५, टोडी, मः ५)

नामु संगी सो मनि न बसाइओ ॥ (७१५-५, टोडी, मः ५)
छोडि जाहि वाहू चितु लाइओ ॥२॥ (७१५-५, टोडी, मः ५)
सो संचिओ जितु भूख तिसाइओ ॥ (७१५-६, टोडी, मः ५)
अमृत नामु तोसा नही पाइओ ॥३॥ (७१५-६, टोडी, मः ५)
काम क्रोधि मोह कूपि परिआ ॥ (७१५-६, टोडी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक को तरिआ ॥४॥१॥१६॥ (७१५-७, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१५-७)
हमारै एकै हरी हरी ॥ (७१५-७, टोडी, मः ५)
आन अवर सिञाणि न करी ॥ रहाउ ॥ (७१५-७, टोडी, मः ५)
वडै भागि गुरु अपुना पाइओ ॥ (७१५-८, टोडी, मः ५)
गुरि मो कउ हरि नामु दृड़ाइओ ॥१॥ (७१५-८, टोडी, मः ५)
हरि हरि जाप ताप ब्रत नेमा ॥ (७१५-९, टोडी, मः ५)
हरि हरि धिआइ कुसल सभि खेमा ॥२॥ (७१५-९, टोडी, मः ५)
आचार बिउहार जाति हरि गुनीआ ॥ (७१५-९, टोडी, मः ५)
महा अनंद कीर्तन हरि सुनीआ ॥३॥ (७१५-१०, टोडी, मः ५)
कहु नानक जिनि ठाकुरु पाइआ ॥ (७१५-१०, टोडी, मः ५)
सभु किछु तिस के गृह महि आइआ ॥४॥२॥१७॥ (७१५-१०, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ घरु ४ दुपदे (७१५-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१५-१२)
रूड़ो मनु हरि रंगो लोड़ै ॥ (७१५-१३, टोडी, मः ५)
गाली हरि नीहु न होइ ॥ रहाउ ॥ (७१५-१३, टोडी, मः ५)
हउ ढूढेदी दरसन कारणि बीथी बीथी पेखा ॥ (७१५-१३, टोडी, मः ५)
गुर मिलि भरमु गवाइआ हे ॥१॥ (७१५-१४, टोडी, मः ५)
इह बुधि पाई मै साधू कन्नहु लेखु लिखिओ धुरि माथै ॥ (७१५-१४, टोडी, मः ५)
इह बिधि नानक हरि नैण अलोइ ॥२॥१॥१८॥ (७१५-१५, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१५-१५)
गरबि गहिलड़ो मूड़ड़ो हीओ रे ॥ (७१५-१५, टोडी, मः ५)
हीओ महराज री माइओ ॥ (७१५-१६, टोडी, मः ५)
डीहर निआई मोहि फाकिओ रे ॥ रहाउ ॥ (७१५-१६, टोडी, मः ५)
घणो घणो घणो सद लोड़ै बिनु लहणे कैठै पाइओ रे ॥ (७१५-१६, टोडी, मः ५)
महराज रो गाथु वाहू सिउ लुभड़िओ निहभागड़ो भाहि संजोइओ रे ॥१॥ (७१५-१७, टोडी, मः ५)
सुणि मन सीख साधू जन सगलो थारे सगले प्राछत मिटिओ रे ॥ (७१५-१७, टोडी, मः ५)
जा को लहणो महराज री गाठड़ीओ जन नानक गरभासि न पउड़िओ रे ॥२॥२॥१९॥ (७१५-१८, टोडी, मः ५)

टोडी महला ५ घरु ५ दुपदे (७१६-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१६-२)
ऐसो गुनु मेरो प्रभ जी कीन ॥ (७१६-२, टोडी, मः ५)
पंच दोख अरु अहं रोग इह तन ते सगल दूरि कीन ॥ रहाउ ॥ (७१६-२, टोडी, मः ५)
बंधन तोरि छोरि बिखिआ ते गुर को सबदु मेरै हीअरै दीन ॥ (७१६-३, टोडी, मः ५)
रूपु अनरूपु मोरो कछु न बीचारिओ प्रेम गहिओ मोहि हरि रंग भीन ॥१॥ (७१६-३, टोडी, मः ५)
पेखिओ लालनु पाट बीच खोए अनद चिता हरखे पतीन ॥ (७१६-४, टोडी, मः ५)
तिस ही को ग्रिहु सोई प्रभु नानक सो ठाकुरु तिस ही को धीन ॥२॥१॥२०॥ (७१६-५, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१६-५)
माई मेरे मन की प्रीति ॥ (७१६-६, टोडी, मः ५)
एही कर्म धर्म जप एही राम नाम निर्मल है रीति ॥ रहाउ ॥ (७१६-६, टोडी, मः ५)
प्रान अधार जीवन धन मोरै देखन कउ दरसन प्रभ नीति ॥ (७१६-६, टोडी, मः ५)
बाट घाट तोसा संगि मोरै मन अपुने कउ मै हरि सखा कीत ॥१॥ (७१६-७, टोडी, मः ५)
संत प्रसादि भए मन निर्मल करि किरपा अपुने करि लीत ॥ (७१६-८, टोडी, मः ५)
सिमरि सिमरि नानक सुखु पाइआ आदि जुगादि भगतन के मीत ॥२॥२॥२१॥ (७१६-८, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१६-९)
प्रभ जी मिलु मेरे प्रान ॥ (७१६-९, टोडी, मः ५)
बिसरु नही निमख हीअरे ते अपने भगत कउ पूरन दान ॥ रहाउ ॥ (७१६-१०, टोडी, मः ५)
खोवहु भरमु राखु मेरे प्रीतम अंतरजामी सुघड़ सुजान ॥ (७१६-१०, टोडी, मः ५)
कोटि राज नाम धनु मेरै अमृत द्रिसटि धारहु प्रभ मान ॥१॥ (७१६-११, टोडी, मः ५)
आठ पहर रसना गुन गावै जसु पूरि अघावहि समरथ कान ॥ (७१६-११, टोडी, मः ५)
तेरी सरणि जीअन के दाते सदा सदा नानक कुरबान ॥२॥३॥२२॥ (७१६-१२, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१६-१३)
प्रभ तेरे पग की धूरि ॥ (७१६-१३, टोडी, मः ५)
दीन दइआल प्रीतम मनमोहन करि किरपा मेरी लोचा पूरि ॥ रहाउ ॥ (७१६-१३, टोडी, मः ५)
दह दिस रवि रहिआ जसु तुमरा अंतरजामी सदा हजूरि ॥ (७१६-१४, टोडी, मः ५)
जो तुमरा जसु गावहि करते से जन कबहु न मरते झूरि ॥१॥ (७१६-१४, टोडी, मः ५)
धंध बंध बिनसे माइआ के साधू संगति मिटे बिसूर ॥ (७१६-१५, टोडी, मः ५)
सुख सम्पति भोग इसु जीअ के बिनु हरि नानक जाने कूर ॥२॥४॥२३॥ (७१६-१६, टोडी, मः ५)
टोडी मः ५ ॥ (७१६-१६)
माई मेरे मन की पिआस ॥ (७१६-१७, टोडी, मः ५)
इकु खिनु रहि न सकउ बिनु प्रीतम दरसन देखन कउ धारी मनि आस ॥ रहाउ ॥ (७१६-१७, टोडी, मः ५)
सिमरउ नामु निरंजन करते मन तन ते सभि किलविख नास ॥ (७१६-१८, टोडी, मः ५)

पूरन पारब्रह्म सुखदाते अबिनासी बिमल जा को जास ॥१॥ (७१६-१८, टोडी, मः ५)
संत प्रसादि मेरे पूर मनोरथ करि किरपा भेटे गुणतास ॥ (७१६-१९, टोडी, मः ५)

पन्ना ७१७

साँति सहज सूख मनि उपजिओ कोटि सूर नानक परगास ॥२॥५॥२४॥ (७१७-१, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१७-१)
हरि हरि पतित पावन ॥ (७१७-१, टोडी, मः ५)
जीअ प्रान मान सुखदाता अंतरजामी मन को भावन ॥ रहाउ ॥ (७१७-२, टोडी, मः ५)
सुंदरु सुघड़ु चतुरु सभ बेता रिद दास निवास भगत गुन गावन ॥ (७१७-२, टोडी, मः ५)
निर्मल रूप अनूप सुआमी कर्म भूमि बीजन सो खावन ॥१॥ (७१७-३, टोडी, मः ५)
बिसमन बिसम भए बिसमादा आन न बीओ दूसर लावन ॥ (७१७-४, टोडी, मः ५)
रसना सिमरि सिमरि जसु जीवा नानक दास सदा बलि जावन ॥२॥६॥२५॥ (७१७-४, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१७-५)
माई माइआ छलु ॥ (७१७-५, टोडी, मः ५)
तृण की अगनि मेघ की छाइआ गोबिद भजन बिनु हड़ का जलु ॥ रहाउ ॥ (७१७-५, टोडी, मः ५)
छोडि सिआनप बहु चतुराई दुइ कर जोड़ि साध मगि चलु ॥ (७१७-६, टोडी, मः ५)
सिमरि सुआमी अंतरजामी मानुख देह का इहु ऊतम फलु ॥१॥ (७१७-७, टोडी, मः ५)
बेद बखिआन करत साधू जन भागहीन समझत नही खलु ॥ (७१७-७, टोडी, मः ५)
प्रेम भगति राचे जन नानक हरि सिमरनि दहन भए मल ॥२॥७॥२६॥ (७१७-८, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१७-९)
माई चरन गुर मीठे ॥ (७१७-९, टोडी, मः ५)
वडै भागि देवै परमेसरु कोटि फला दरसन गुर डीठे ॥ रहाउ ॥ (७१७-९, टोडी, मः ५)
गुन गावत अचुत अबिनासी काम क्रोध बिनसे मद ढीठे ॥ (७१७-१०, टोडी, मः ५)
असथिर भए साच रंगि राते जनम मरन बाहुरि नही पीठे ॥१॥ (७१७-१०, टोडी, मः ५)
बिनु हरि भजन रंग रस जेते संत दइआल जाने सभि झूठे ॥ (७१७-११, टोडी, मः ५)
नाम रतनु पाइओ जन नानक नाम बिहून चले सभि मूठे ॥२॥८॥२७॥ (७१७-१२, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१७-१२)
साधसंगि हरि हरि नामु चितारा ॥ (७१७-१३, टोडी, मः ५)
सहजि अनंदु होवै दिनु राती अंकुरु भलो हमारा ॥ रहाउ ॥ (७१७-१३, टोडी, मः ५)
गुरु पूरा भेटिओ बडभागी जा को अंतु न पारावारा ॥ (७१७-१३, टोडी, मः ५)
करु गहि काढि लीओ जनु अपुना बिखु सागर संसारा ॥१॥ (७१७-१४, टोडी, मः ५)
जनम मरन काटे गुर बचनी बहुड़ि न संकट दुआरा ॥ (७१७-१५, टोडी, मः ५)
नानक सरनि गही सुआमी की पुनह पुनह नमसकारा ॥२॥९॥२८॥ (७१७-१५, टोडी, मः ५)
टोडी महला ५ ॥ (७१७-१६)
माई मेरे मन को सुखु ॥ (७१७-१६, टोडी, मः ५)

कोटि अनंद राज सुखु भुगवै हरि सिमरत बिनसै सभ दुखु ॥१॥ रहाउ ॥ (७१७-१६, टोडी, मः ५)
कोटि जनम के किलबिख नासहि सिमरत पावन तन मन सुख ॥ (७१७-१७, टोडी, मः ५)
देखि सरूपु पूरनु भई आसा दरसनु भेटत उतरी भुख ॥१॥ (७१७-१८, टोडी, मः ५)
चारि पदार्थ असट महा सिधि कामधेनु पारजात हरि हरि रुखु ॥ (७१७-१८, टोडी, मः ५)
नानक सरनि गही सुख सागर जनम मरन फिरि गरभ न धुखु ॥२॥१०॥२९॥ (७१७-१९, टोडी, मः ५)

पन्ना ७१८

टोडी महला ५ ॥ (७१८-१)
हरि हरि चरन रिदै उर धारे ॥ (७१८-१, टोडी, मः ५)
सिमरि सुआमी सतिगुरु अपुना कारज सफल हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (७१८-१, टोडी, मः ५)
पुन्न दान पूजा परमेसुर हरि कीरति ततु बीचारे ॥ (७१८-२, टोडी, मः ५)
गुन गावत अतुल सुखु पाइआ ठाकुर अगम अपारे ॥१॥ (७१८-२, टोडी, मः ५)
जो जन पारब्रहमि अपने कीने तिन का बाहुरि कछु न बीचारे ॥ (७१८-३, टोडी, मः ५)
नाम रतनु सुनि जपि जपि जीवा हरि नानक कंठ मझारे ॥२॥११॥३०॥ (७१८-४, टोडी, मः ५)
टोडी महला ९ (७१८-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१८-६)
कहउ कहा अपनी अधमाई ॥ (७१८-६, टोडी, मः ९)
उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७१८-६, टोडी, मः ९)
जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥ (७१८-७, टोडी, मः ९)
दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥१॥ (७१८-७, टोडी, मः ९)
मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥ (७१८-८, टोडी, मः ९)
कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥२॥१॥३१॥ (७१८-८, टोडी, मः ९)
टोडी बाणी भगताँ की (७१८-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१८-१०)
कोई बोलै निरवा कोई बोलै दूरि ॥ (७१८-११, टोडी, भगत नामदेव जी)
जल की माछुली चरै खजूरि ॥१॥ (७१८-११, टोडी, भगत नामदेव जी)
काँइ रे बकबादु लाइओ ॥ (७१८-११, टोडी, भगत नामदेव जी)
जिनि हरि पाइओ तिनहि छपाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (७१८-११, टोडी, भगत नामदेव जी)
पंडितु होइ कै बेदु बखानै ॥ (७१८-१२, टोडी, भगत नामदेव जी)
मूरखु नामदेउ रामहि जानै ॥२॥१॥ (७१८-१२, टोडी, भगत नामदेव जी)
कउन को कलंकु रहिओ राम नामु लेत ही ॥ (७१८-१३, टोडी, भगत नामदेव जी)
पतित पवित भए रामु कहत ही ॥१॥ रहाउ ॥ (७१८-१३, टोडी, भगत नामदेव जी)
राम संगि नामदेव जन कउ प्रतगिआ आई ॥ (७१८-१४, टोडी, भगत नामदेव जी)
एकादसी ब्रतु रहै काहे कउ तीर्थ जाईं ॥१॥ (७१८-१४, टोडी, भगत नामदेव जी)
भनति नामदेउ सुकृत सुमति भए ॥ (७१८-१४, टोडी, भगत नामदेव जी)

गुरमति रामु कहि को को न बैकुंठि गए ॥२॥२॥ (७१८-१५, टोडी, भगत नामदेव जी)
तीनि छंदे खेलु आछै ॥१॥ रहाउ ॥ (७१८-१५, टोडी, भगत नामदेव जी)
कुम्भार के घर हाँडी आछै राजा के घर साँडी गो ॥ (७१८-१६, टोडी, भगत नामदेव जी)
बामन के घर राँडी आछै राँडी साँडी हाँडी गो ॥१॥ (७१८-१६, टोडी, भगत नामदेव जी)
बाणीए के घर हींगु आछै भैसर माथै सींगु गो ॥ (७१८-१७, टोडी, भगत नामदेव जी)
देवल मधे लीगु आछै लीगु सीगु हीगु गो ॥२॥ (७१८-१७, टोडी, भगत नामदेव जी)
तेली कै घर तेलु आछै जंगल मधे बेल गो ॥ (७१८-१८, टोडी, भगत नामदेव जी)
माली के घर केल आछै केल बेल तेल गो ॥३॥ (७१८-१८, टोडी, भगत नामदेव जी)
संताँ मधे गोबिंदु आछै गोकल मधे सिआम गो ॥ (७१८-१९, टोडी, भगत नामदेव जी)
नामे मधे रामु आछै राम सिआम गोबिंद गो ॥४॥३॥ (७१८-१९, टोडी, भगत नामदेव जी)

पन्ना ७१९

रागु बैराड़ी महला ४ घरु १ दुपदे (७१९-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७१९-२)
सुनि मन अकथ कथा हरि नाम ॥ (७१९-३, बैराड़ी, मः ४)
रिधि बुधि सिधि सुख पावहि भजु गुरमति हरि राम राम ॥१॥ रहाउ ॥ (७१९-३, बैराड़ी, मः ४)
नाना खिआन पुरान जसु ऊतम खट दरसन गावहि राम ॥ (७१९-४, बैराड़ी, मः ४)
संकर क्रोड़ि तेतीस धिआइओ नही जानिओ हरि मरमाम ॥१॥ (७१९-४, बैराड़ी, मः ४)
सुरि नर गण गंध्रब जसु गावहि सभ गावत जेत उपाम ॥ (७१९-५, बैराड़ी, मः ४)
नानक कृपा करी हरि जिन कउ ते संत भले हरि राम ॥२॥१॥ (७१९-५, बैराड़ी, मः ४)
बैराड़ी महला ४ ॥ (७१९-६)
मन मिलि संत जना जसु गाइओ ॥ (७१९-६, बैराड़ी, मः ४)
हरि हरि रतनु रतनु हरि नीको गुरि सतिगुरि दानु दिवाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (७१९-७, बैराड़ी, मः ४)
तिसु जन कउ मनु तनु सभु देवउ जिनि हरि हरि नामु सुनाइओ ॥ (७१९-८, बैराड़ी, मः ४)
धनु माइआ सम्पै तिसु देवउ जिनि हरि मीतु मिलाइओ ॥१॥ (७१९-८, बैराड़ी, मः ४)
खिनु किंचित कृपा करी जगदीसरि तब हरि हरि हरि जसु धिआइओ ॥ (७१९-९, बैराड़ी, मः ४)
जन नानक कउ हरि भेटे सुआमी दुखु हउमै रोगु गवाइओ ॥२॥२॥ (७१९-१०, बैराड़ी, मः ४)
बैराड़ी महला ४ ॥ (७१९-१०)
हरि जनु राम नाम गुन गावै ॥ (७१९-११, बैराड़ी, मः ४)
जे कोई निंद करे हरि जन की अपुना गुनु न गवावै ॥१॥ रहाउ ॥ (७१९-११, बैराड़ी, मः ४)
जो किछु करे सु आपे सुआमी हरि आपे कार कमावै ॥ (७१९-१२, बैराड़ी, मः ४)
हरि आपे ही मति देवै सुआमी हरि आपे बोलि बुलावै ॥१॥ (७१९-१२, बैराड़ी, मः ४)

पन्ना ७२०

हरि आपे पंच ततु बिसथारा विचि धातू पंच आपि पावै ॥ (७२०-१, बैराड़ी, मः ४)

जन नानक सतिगुरु मेले आपे हरि आपे झगरु चुकावै ॥२॥३॥ (७२०-२, बैराड़ी, मः ४)
बैराड़ी महला ४ ॥ (७२०-२)
जपि मन राम नामु निसतारा ॥ (७२०-२, बैराड़ी, मः ४)
कोट कोटंतर के पाप सभि खोवै हरि भवजलु पारि उतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७२०-३, बैराड़ी, मः ४)
काइआ नगरि बसत हरि सुआमी हरि निरभउ निरवैरु निरंकारा ॥ (७२०-४, बैराड़ी, मः ४)
हरि निकटि बसत कछु नदरि न आवै हरि लाधा गुर वीचारा ॥१॥ (७२०-४, बैराड़ी, मः ४)
हरि आपे साहु सराफु रतनु हीरा हरि आपि कीआ पासारा ॥ (७२०-५, बैराड़ी, मः ४)
नानक जिसु कृपा करे सु हरि नामु विहाझे सो साहु सचा वणजारा ॥२॥४॥ (७२०-६, बैराड़ी, मः ४)
बैराड़ी महला ४ ॥ (७२०-६)
जपि मन हरि निरंजनु निरंकारा ॥ (७२०-७, बैराड़ी, मः ४)
सदा सदा हरि धिआईऐ सुखदाता जा का अंतु न पारावारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७२०-७, बैराड़ी, मः ४)
अगनि कुंट महि उरध लिव लागा हरि राखै उदर मंझारा ॥ (७२०-८, बैराड़ी, मः ४)
सो ऐसा हरि सेवहु मेरे मन हरि अंति छडावणहारा ॥१॥ (७२०-८, बैराड़ी, मः ४)
जा कै हिरदै बसिआ मेरा हरि हरि तिसु जन कउ करहु नमसकारा ॥ (७२०-९, बैराड़ी, मः ४)
हरि किरपा ते पाईऐ हरि जपु नानक नामु अधारा ॥२॥५॥ (७२०-१०, बैराड़ी, मः ४)
बैराड़ी महला ४ ॥ (७२०-१०)
जपि मन हरि हरि नामु नित धिआइ ॥ (७२०-११, बैराड़ी, मः ४)
जो इछहि सोई फलु पावहि फिरि दूखु न लागै आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (७२०-११, बैराड़ी, मः ४)
सो जपु सो तपु सा ब्रत पूजा जितु हरि सिउ प्रीति लगाइ ॥ (७२०-१२, बैराड़ी, मः ४)
बिनु हरि प्रीति होर प्रीति सभ झूठी इक खिन महि बिसरि सभ जाइ ॥१॥ (७२०-१२, बैराड़ी, मः ४)
तू बेअंतु सर्ब कल पूरा किछु कीमति कही न जाइ ॥ (७२०-१३, बैराड़ी, मः ४)
नानक सरणि तुम्हारी हरि जीउ भावै तिवै छडाइ ॥२॥६॥ (७२०-१४, बैराड़ी, मः ४)
रागु बैराड़ी महला ५ घरु १ (७२०-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२०-१५)
संत जना मिलि हरि जसु गाइओ ॥ (७२०-१६, बैराड़ी, मः ५)
कोटि जनम के दूख गवाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (७२०-१६, बैराड़ी, मः ५)
जो चाहत सोई मनि पाइओ ॥ (७२०-१६, बैराड़ी, मः ५)
करि किरपा हरि नामु दिवाइओ ॥१॥ (७२०-१७, बैराड़ी, मः ५)
सर्ब सूख हरि नामि वडाई ॥ (७२०-१७, बैराड़ी, मः ५)
गुर प्रसादि नानक मति पाई ॥२॥१॥७॥ (७२०-१७, बैराड़ी, मः ५)

पन्ना ७२१

रागु तिलंग महला १ घरु १ (७२१-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (७२१-२)
यक अरज गुफतम पेसि तो दर गोस कुन करतार ॥ (७२१-४, तिलंग, मः १)

हका कबीर करीम तू बेऐब परवदगार ॥१॥ (७२१-४, तिलंग, मः १)
दुनीआ मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ (७२१-५, तिलंग, मः १)
मम सर मूइ अजराईल गिरफतह दिल हेचि न दानी ॥१॥ रहाउ ॥ (७२१-५, तिलंग, मः १)
जन पिसर पदर बिरादराँ कस नेस दसतंगीर ॥ (७२१-६, तिलंग, मः १)
आखिर बिअफतम कस न दारद चूं सवद तकबीर ॥२॥ (७२१-६, तिलंग, मः १)
सब रोज गसतम दर हवा करदेम बदी खिआल ॥ (७२१-७, तिलंग, मः १)
गाहे न नेकी कार करदम मम ईं चिनी अहवाल ॥३॥ (७२१-७, तिलंग, मः १)
बदबखत हम चु बखील गाफिल बेनजर बेबाक ॥ (७२१-८, तिलंग, मः १)
नानक बुगोयद जनु तुरा तेरे चाकराँ पा खाक ॥४॥१॥ (७२१-८, तिलंग, मः १)
तिलंग महला १ घरु २ (७२१-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२१-१०)
भउ तेरा भाँग खलड़ी मेरा चीतु ॥ (७२१-१०, तिलंग, मः १)
मै देवाना भइआ अतीतु ॥ (७२१-१०, तिलंग, मः १)
कर कासा दरसन की भूख ॥ (७२१-११, तिलंग, मः १)
मै दरि मागउ नीता नीत ॥१॥ (७२१-११, तिलंग, मः १)
तउ दरसन की करउ समाइ ॥ (७२१-११, तिलंग, मः १)
मै दरि मागतु भीखिआ पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (७२१-१२, तिलंग, मः १)
केसरि कुसम मिरगमै हरणा सर्ब सरीरी चड़्हणा ॥ (७२१-१२, तिलंग, मः १)
चंदन भगता जोति इनेही सरबे परमलु करणा ॥२॥ (७२१-१३, तिलंग, मः १)
घिअ पट भाँडा कहै न कोइ ॥ (७२१-१३, तिलंग, मः १)
ऐसा भगतु वरन महि होइ ॥ (७२१-१४, तिलंग, मः १)
तेरै नामि निवे रहे लिव लाइ ॥ (७२१-१४, तिलंग, मः १)
नानक तिन दरि भीखिआ पाइ ॥३॥१॥२॥ (७२१-१४, तिलंग, मः १)
तिलंग महला १ घरु ३ (७२१-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२१-१६)
इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥ (७२१-१६, तिलंग, मः १)

पन्ना ७२२

मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥१॥ (७२२-१, तिलंग, मः १)
हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥ (७२२-१, तिलंग, मः १)
हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ (७२२-२, तिलंग, मः १)
लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७२२-२, तिलंग, मः १)
काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ (७२२-३, तिलंग, मः १)
रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥२॥ (७२२-३, तिलंग, मः १)
जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ (७२२-४, तिलंग, मः १)

धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥३॥ (७२२-४, तिलंग, मः १)
आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥ (७२२-५, तिलंग, मः १)
नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥४॥१॥३॥ (७२२-५, तिलंग, मः १)
तिलंग मः १ ॥ (७२२-६)
इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ (७२२-६, तिलंग, मः १)
आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ (७२२-६, तिलंग, मः १)
सहु नेड़ै धन कम्मलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ (७२२-७, तिलंग, मः १)
भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ (७२२-७, तिलंग, मः १)
ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ (७२२-८, तिलंग, मः १)
इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ (७२२-८, तिलंग, मः १)
करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ (७२२-९, तिलंग, मः १)
विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ (७२२-९, तिलंग, मः १)
लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ (७२२-९, तिलंग, मः १)
इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥२॥ (७२२-१०, तिलंग, मः १)
जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥ (७२२-११, तिलंग, मः १)
जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ (७२२-११, तिलंग, मः १)
जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ (७२२-१२, तिलंग, मः १)
सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ (७२२-१२, तिलंग, मः १)
एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥३॥ (७२२-१३, तिलंग, मः १)
आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ (७२२-१३, तिलंग, मः १)
सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ (७२२-१४, तिलंग, मः १)
आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ (७२२-१४, तिलंग, मः १)
ऐसे रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ (७२२-१५, तिलंग, मः १)
सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥ (७२२-१५, तिलंग, मः १)
तिलंग महला १ ॥ (७२२-१६)
जैसी मै आवै खसम की बाणी तैसड़ा करी गिआनु वे लालो ॥ (७२२-१६, तिलंग, मः १)
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ जोरी मंगै दानु वे लालो ॥ (७२२-१७, तिलंग, मः १)
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै प्रधानु वे लालो ॥ (७२२-१७, तिलंग, मः १)
काजीआ बामणा की गल थकी अगदु पड़ै सैतानु वे लालो ॥ (७२२-१८, तिलंग, मः १)
मुसलमानीआ पड़हि कतेबा कसट महि करहि खुदाइ वे लालो ॥ (७२२-१९, तिलंग, मः १)
जाति सनाती होरि हिदवाणीआ एहि भी लेखै लाइ वे लालो ॥ (७२२-१९, तिलंग, मः १)

पन्ना ७२३

खून के सोहिले गावीअहि नानक रतु का कुंगू पाइ वे लालो ॥१॥ (७२३-१, तिलंग, मः १)
साहिब के गुण नानकु गावै मास पुरी विचि आखु मसोला ॥ (७२३-१, तिलंग, मः १)

जिनि उपाई रंगि रवाई बैठा वेखै वखि इकेला ॥ (७२३-२, तिलंग, मः १)
सचा सो साहिबु सचु तपावसु सचड़ा निआउ करेगु मसोला ॥ (७२३-२, तिलंग, मः १)
काइआ कपड़ु टुकु टुकु होसी हिदुसतानु समालसी बोला ॥ (७२३-३, तिलंग, मः १)
आवनि अठतरै जानि सतानवै होरु भी उठसी मरद का चेला ॥ (७२३-४, तिलंग, मः १)
सच की बाणी नानकु आखै सचु सुणाइसी सच की बेला ॥२॥३॥५॥ (७२३-४, तिलंग, मः १)
तिलंग महला ४ घरु २ (७२३-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२३-६)
सभि आए हुकमि खसमाहु हुकमि सभ वरतनी ॥ (७२३-६, तिलंग, मः ४)
सचु साहिबु साचा खेलु सभु हरि धनी ॥१॥ (७२३-७, तिलंग, मः ४)
सालाहिहु सचु सभ ऊपरि हरि धनी ॥ (७२३-७, तिलंग, मः ४)
जिसु नाही कोइ सरीकु किसु लेखै हउ गनी ॥ रहाउ ॥ (७२३-७, तिलंग, मः ४)
पउण पाणी धरती आकासु घर मंदर हरि बनी ॥ (७२३-८, तिलंग, मः ४)
विचि वरतै नानक आपि झूठु कहु किआ गनी ॥२॥१॥ (७२३-८, तिलंग, मः ४)
तिलंग महला ४ ॥ (७२३-९)
नित निहफल कर्म कमाइ बफावै दुरमतीआ ॥ (७२३-९, तिलंग, मः ४)
जब आणै वलवंच करि झूठु तब जाणै जगु जितीआ ॥१॥ (७२३-१०, तिलंग, मः ४)
ऐसा बाजी सैसारु न चेतै हरि नामा ॥ (७२३-१०, तिलंग, मः ४)
खिन महि बिनसै सभु झूठु मेरे मन धिआइ रामा ॥ रहाउ ॥ (७२३-१०, तिलंग, मः ४)
सा वेला चिति न आवै जितु आइ कंटकु कालु ग्रसै ॥ (७२३-११, तिलंग, मः ४)
तिसु नानक लए छडाइ जिसु किरपा करि हिरदै वसै ॥२॥२॥ (७२३-१२, तिलंग, मः ४)
तिलंग महला ५ घरु १ (७२३-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२३-१३)
खाक नूर करदं आलम दुनीआइ ॥ (७२३-१३, तिलंग, मः ५)
असमान जिमी दरखत आब पैदाइसि खुदाइ ॥१॥ (७२३-१४, तिलंग, मः ५)
बंदे चसम दीदं फनाइ ॥ (७२३-१४, तिलंग, मः ५)
दुनंीआ मुरदार खुरदनी गाफल हवाइ ॥ रहाउ ॥ (७२३-१४, तिलंग, मः ५)
गैबान हैवान हराम कुसतनी मुरदार बखोराइ ॥ (७२३-१५, तिलंग, मः ५)
दिल कबज कबजा कादरो दोजक सजाइ ॥२॥ (७२३-१५, तिलंग, मः ५)
वली निआमति बिरादरा दरबार मिलक खानाइ ॥ (७२३-१६, तिलंग, मः ५)
जब अजराईलु बसतनी तब चि कारे बिदाइ ॥३॥ (७२३-१६, तिलंग, मः ५)
हवाल मालूमु करदं पाक अलाह ॥ (७२३-१७, तिलंग, मः ५)
बुगो नानक अरदासि पेसि दरवेस बंदाह ॥४॥१॥ (७२३-१७, तिलंग, मः ५)
तिलंग घरु २ महला ५ ॥ (७२३-१८)
तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (७२३-१८, तिलंग, मः ५)
तू करतारु करहि सो होइ ॥ (७२३-१८, तिलंग, मः ५)

तेरा जोरु तेरी मनि टेक ॥ (७२३-१८, तिलंग, मः ५)
सदा सदा जपि नानक एक ॥१॥ (७२३-१९, तिलंग, मः ५)
सभ ऊपरि पारब्रह्मु दातारु ॥ (७२३-१९, तिलंग, मः ५)
तेरी टेक तेरा आधारु ॥ रहाउ ॥ (७२३-१९, तिलंग, मः ५)

पन्ना ७२४

है तूहै तू होवनहार ॥ (७२४-१, तिलंग, मः ५)
अगम अगाधि ऊच आपार ॥ (७२४-१, तिलंग, मः ५)
जो तुधु सेवहि तिन भउ दुखु नाहि ॥ (७२४-१, तिलंग, मः ५)
गुर परसादि नानक गुण गाहि ॥२॥ (७२४-२, तिलंग, मः ५)
जो दीसै सो तेरा रूपु ॥ (७२४-२, तिलंग, मः ५)
गुण निधान गोविंद अनूप ॥ (७२४-२, तिलंग, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि जन सोइ ॥ (७२४-३, तिलंग, मः ५)
नानक करमि परापति होइ ॥३॥ (७२४-३, तिलंग, मः ५)
जिनि जपिआ तिस कउ बलिहार ॥ (७२४-३, तिलंग, मः ५)
तिस कै संगि तरै संसार ॥ (७२४-४, तिलंग, मः ५)
कहु नानक प्रभ लोचा पूरि ॥ (७२४-४, तिलंग, मः ५)
संत जना की बाछउ धूरि ॥४॥२॥ (७२४-४, तिलंग, मः ५)
तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ (७२४-४)
मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥ (७२४-५, तिलंग, मः ५)
साहिबु मेरा मिहरवानु ॥ (७२४-५, तिलंग, मः ५)
जीअ सगल कउ देइ दानु ॥ रहाउ ॥ (७२४-५, तिलंग, मः ५)
तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥ (७२४-६, तिलंग, मः ५)
जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥१॥ (७२४-६, तिलंग, मः ५)
जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥ (७२४-७, तिलंग, मः ५)
घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥२॥ (७२४-७, तिलंग, मः ५)
कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥ (७२४-८, तिलंग, मः ५)
करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥३॥ (७२४-८, तिलंग, मः ५)
तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ (७२४-८, तिलंग, मः ५)
रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥४॥३॥ (७२४-९, तिलंग, मः ५)
तिलंग महला ५ घरु ३ ॥ (७२४-१०)
करते कुदरती मुसताकु ॥ (७२४-१०, तिलंग, मः ५)
दीन दुनीआ एक तूही सभ खलक ही ते पाकु ॥ रहाउ ॥ (७२४-१०, तिलंग, मः ५)
खिन माहि थापि उथापदा आचरज तेरे रूप ॥ (७२४-११, तिलंग, मः ५)
कउणु जाणै चलत तेरे अंधिआरे महि दीप ॥१॥ (७२४-११, तिलंग, मः ५)

खुदि खसम खलक जहान अलह मिहरवान खुदाइ ॥ (७२४-१२, तिलंग, मः ५)
दिनसु रैणि जि तुधु अराधे सो किउ दोजकि जाइ ॥२॥ (७२४-१२, तिलंग, मः ५)
अजराईलु यारु बंदे जिसु तेरा आधारु ॥ (७२४-१३, तिलंग, मः ५)
गुनह उस के सगल आफू तेरे जन देखहि दीदारु ॥३॥ (७२४-१३, तिलंग, मः ५)
दुनीआ चीज फिलहाल सगले सचु सुखु तेरा नाउ ॥ (७२४-१४, तिलंग, मः ५)
गुर मिलि नानक बूझिआ सदा एकसु गाउ ॥४॥४॥ (७२४-१४, तिलंग, मः ५)
तिलंग महला ५ ॥ (७२४-१५)
मीराँ दानाँ दिल सोच ॥ (७२४-१५, तिलंग, मः ५)
मुहबते मनि तनि बसै सचु साह बंदी मोच ॥१॥ रहाउ ॥ (७२४-१५, तिलंग, मः ५)
दीदने दीदार साहिब कछु नही इस का मोलु ॥ (७२४-१६, तिलंग, मः ५)
पाक परवदगार तू खुदि खसमु वडा अतोलु ॥१॥ (७२४-१६, तिलंग, मः ५)
दस्तगीरी देहि दिलावर तूही तूही एक ॥ (७२४-१७, तिलंग, मः ५)
करतार कुदरति करण खालक नानक तेरी टेक ॥२॥५॥ (७२४-१७, तिलंग, मः ५)
तिलंग महला १ घरु २ (७२४-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२४-१६)
जिनि कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई ॥ (७२४-१६, तिलंग, मः १)

पन्ना ७२५

आपे जाणै करे आपि जिनि वाड़ी है लाई ॥१॥ (७२५-१, तिलंग, मः १)
राइसा पिआरे का राइसा जितु सदा सुखु होई ॥ रहाउ ॥ (७२५-१, तिलंग, मः १)
जिनि रंगि कंतु न राविआ सा पछो रे ताणी ॥ (७२५-२, तिलंग, मः १)
हाथ पछोड़ै सिरु धुणै जब रैणि विहाणी ॥२॥ (७२५-२, तिलंग, मः १)
पछोतावा ना मिलै जब चूकैगी सारी ॥ (७२५-३, तिलंग, मः १)
ता फिरि पिआरा रावीऐ जब आवैगी वारी ॥३॥ (७२५-३, तिलंग, मः १)
कंतु लीआ सोहागणी मै ते वधवी एह ॥ (७२५-३, तिलंग, मः १)
से गुण मुझै न आवनी कै जी दोसु धरेह ॥४॥ (७२५-४, तिलंग, मः १)
जिनी सखी सहु राविआ तिन पूछउगी जाए ॥ (७२५-४, तिलंग, मः १)
पाइ लगउ बेनती करउ लेउगी पंथु बताए ॥५॥ (७२५-५, तिलंग, मः १)
हुकमु पछाणै नानका भउ चंदनु लावै ॥ (७२५-५, तिलंग, मः १)
गुण कामण कामणि करै तउ पिआरे कउ पावै ॥६॥ (७२५-६, तिलंग, मः १)
जो दिलि मिलिआ सु मिलि रहिआ मिलिआ कहीऐ रे सोई ॥ (७२५-६, तिलंग, मः १)
जे बहुतेरा लोचीऐ बाती मेलु न होई ॥७॥ (७२५-७, तिलंग, मः १)
धातु मिलै फुनि धातु कउ लिव लिवै कउ धावै ॥ (७२५-७, तिलंग, मः १)
गुर परसादी जाणीऐ तउ अनभउ पावै ॥८॥ (७२५-८, तिलंग, मः १)
पाना वाड़ी होइ घरि खरु सार न जाणै ॥ (७२५-८, तिलंग, मः १)

रसीआ होवै मुसक का तब फूलु पछाणै ॥९॥ (७२५-८, तिलंग, मः १)
अपिउ पीवै जो नानका भ्रमु भ्रमि समावै ॥ (७२५-९, तिलंग, मः १)
सहजे सहजे मिलि रहै अमरा पदु पावै ॥१०॥१॥ (७२५-९, तिलंग, मः १)
तिलंग महला ४ ॥ (७२५-१०)
हरि कीआ कथा कहाणीआ गुरि मीति सुणाईआ ॥ (७२५-१०, तिलंग, मः ४)
बलिहारी गुर आपणे गुर कउ बलि जाईआ ॥१॥ (७२५-११, तिलंग, मः ४)
आइ मिलु गुरसिख आइ मिलु तू मेरे गुरू के पिआरे ॥ रहाउ ॥ (७२५-११, तिलंग, मः ४)
हरि के गुण हरि भावदे से गुरू ते पाए ॥ (७२५-१२, तिलंग, मः ४)
जिन गुर का भाणा मंनिआ तिन घुमि घुमि जाए ॥२॥ (७२५-१२, तिलंग, मः ४)
जिन सतिगुरु पिआरा देखिआ तिन कउ हउ वारी ॥ (७२५-१३, तिलंग, मः ४)
जिन गुर की कीती चाकरी तिन सद बलिहारी ॥३॥ (७२५-१३, तिलंग, मः ४)
हरि हरि तेरा नामु है दुख मेटणहारा ॥ (७२५-१४, तिलंग, मः ४)
गुर सेवा ते पाईऐ गुरमुखि निसतारा ॥४॥ (७२५-१४, तिलंग, मः ४)
जो हरि नामु धिआइदे ते जन परवाना ॥ (७२५-१५, तिलंग, मः ४)
तिन विटहु नानकु वारिआ सदा सदा कुरबाना ॥५॥ (७२५-१५, तिलंग, मः ४)
सा हरि तेरी उसतति है जो हरि प्रभ भावै ॥ (७२५-१५, तिलंग, मः ४)
जो गुरमुखि पिआरा सेवदे तिन हरि फलु पावै ॥६॥ (७२५-१६, तिलंग, मः ४)
जिना हरि सेती पिरहड़ी तिना जीअ प्रभ नाले ॥ (७२५-१६, तिलंग, मः ४)
ओइ जपि जपि पिआरा जीवदे हरि नामु समाले ॥७॥ (७२५-१७, तिलंग, मः ४)
जिन गुरमुखि पिआरा सेविआ तिन कउ घुमि जाइआ ॥ (७२५-१७, तिलंग, मः ४)
ओइ आपि छुटे परवार सिउ सभु जगतु छडाइआ ॥८॥ (७२५-१८, तिलंग, मः ४)
गुरि पिआरै हरि सेविआ गुरु धन्नु गुरु धन्नो ॥ (७२५-१९, तिलंग, मः ४)
गुरि हरि मारगु दसिआ गुर पुन्नु वड पुन्नो ॥९॥ (७२५-१९, तिलंग, मः ४)

पन्ना ७२६

जो गुरसिख गुरु सेवदे से पुन्न पराणी ॥ (७२६-१, तिलंग, मः ४)
जनु नानकु तिन कउ वारिआ सदा सदा कुरबाणी ॥१०॥ (७२६-१, तिलंग, मः ४)
गुरमुखि सखी सहेलीआ से आपि हरि भाईआ ॥ (७२६-२, तिलंग, मः ४)
हरि दरगह पैनाईआ हरि आपि गलि लाईआ ॥११॥ (७२६-२, तिलंग, मः ४)
जो गुरमुखि नामु धिआइदे तिन दरसनु दीजै ॥ (७२६-३, तिलंग, मः ४)
हम तिन के चरण पखालदे धूड़ि घोलि घोलि पीजै ॥१२॥ (७२६-३, तिलंग, मः ४)
पान सुपारी खातीआ मुखि बीड़ीआ लाईआ ॥ (७२६-४, तिलंग, मः ४)
हरि हरि कदे न चेतिओ जमि पकड़ि चलाईआ ॥१३॥ (७२६-४, तिलंग, मः ४)
जिन हरि नामा हरि चेतिआ हिरदै उरि धारे ॥ (७२६-५, तिलंग, मः ४)
तिन जमु नेड़ि न आवई गुरसिख गुर पिआरे ॥१४॥ (७२६-५, तिलंग, मः ४)

हरि का नामु निधानु है कोई गुरमुखि जाणै ॥ (७२६-६, तिलंग, मः ४)
नानक जिन सतिगुरु भेटिआ रंगि रलीआ माणै ॥१५॥ (७२६-६, तिलंग, मः ४)
सतिगुरु दाता आखीऐ तुसि करे पसाओ ॥ (७२६-७, तिलंग, मः ४)
हउ गुर विटहु सद वारिआ जिनि दितड़ा नाओ ॥१६॥ (७२६-७, तिलंग, मः ४)
सो धन्नु गुरू साबासि है हरि देइ सनेहा ॥ (७२६-८, तिलंग, मः ४)
हउ वेखि वेखि गुरू विगसिआ गुर सतिगुर देहा ॥१७॥ (७२६-८, तिलंग, मः ४)
गुर रसना अमृतु बोलदी हरि नामि सुहावी ॥ (७२६-९, तिलंग, मः ४)
जिन सुणि सिखा गुरु मंनिआ तिना भुख सभ जावी ॥१८॥ (७२६-९, तिलंग, मः ४)
हरि का मारगु आखीऐ कहु कितु बिधि जाईऐ ॥ (७२६-१०, तिलंग, मः ४)
हरि हरि तेरा नामु है हरि खरचु लै जाईऐ ॥१९॥ (७२६-१०, तिलंग, मः ४)
जिन गुरमुखि हरि आराधिआ से साह वड दाणे ॥ (७२६-११, तिलंग, मः ४)
हउ सतिगुर कउ सद वारिआ गुर बचनि समाणे ॥२०॥ (७२६-११, तिलंग, मः ४)
तू ठाकुरु तू साहिबो तूहै मेरा मीरा ॥ (७२६-१२, तिलंग, मः ४)
तुधु भावै तेरी बंदगी तू गुणी गहीरा ॥२१॥ (७२६-१२, तिलंग, मः ४)
आपे हरि इक रंगु है आपे बहु रंगी ॥ (७२६-१३, तिलंग, मः ४)
जो तिसु भावै नानका साई गल चंगी ॥२२॥२॥ (७२६-१३, तिलंग, मः ४)
तिलंग महला ९ काफी (७२६-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२६-१५)
चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥ (७२६-१५, तिलंग, मः ९)
छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥ (७२६-१५, तिलंग, मः ९)
हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥ (७२६-१६, तिलंग, मः ९)
झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥ (७२६-१६, तिलंग, मः ९)
अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥ (७२६-१७, तिलंग, मः ९)
कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥ (७२६-१७, तिलंग, मः ९)
तिलंग महला ९ ॥ (७२६-१८)
जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥ (७२६-१८, तिलंग, मः ९)
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (७२६-१८, तिलंग, मः ९)
मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥ (७२६-१९, तिलंग, मः ९)
जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥ (७२६-१९, तिलंग, मः ९)

पन्ना ७२७

जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥ (७२७-१, तिलंग, मः ९)
नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥ (७२७-१, तिलंग, मः ९)
तिलंग महला ९ ॥ (७२७-२)
हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥ (७२७-२, तिलंग, मः ९)

अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥१॥ रहाउ ॥ (७२७-२, तिलंग, मः ९)
सम्पति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥ (७२७-३, तिलंग, मः ९)
काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥१॥ (७२७-४, तिलंग, मः ९)
जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥ (७२७-४, तिलंग, मः ९)
पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥२॥ (७२७-४, तिलंग, मः ९)
जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥ (७२७-५, तिलंग, मः ९)
नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥३॥ (७२७-५, तिलंग, मः ९)
तिलंग बाणी भगता की कबीर जी (७२७-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२७-७)
बेद कतेब इफतरा भाई दिल का फिकरु न जाइ ॥ (७२७-७, तिलंग, भगत कबीर जी)
टुकु दमु करारी जउ करहु हाजिर हजूरि खुदाइ ॥१॥ (७२७-८, तिलंग, भगत कबीर जी)
बंदे खोजु दिल हर रोज ना फिरु परेसानी माहि ॥ (७२७-८, तिलंग, भगत कबीर जी)
इह जु दुनीआ सिहरु मेला दसतगीरी नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (७२७-९, तिलंग, भगत कबीर जी)
दरोगु पड़ि पड़ि खुसी होइ बेखबर बादु बकाहि ॥ (७२७-९, तिलंग, भगत कबीर जी)
हकु सचु खालकु खलक मिआने सिआम मूरति नाहि ॥२॥ (७२७-१०, तिलंग, भगत कबीर जी)
असमान म्याने लहंग दरीआ गुसल करदन बूद ॥ (७२७-१०, तिलंग, भगत कबीर जी)
करि फकरु दाइम लाइ चसमे जह तहा मउजूदु ॥३॥ (७२७-११, तिलंग, भगत कबीर जी)
अलाह पाकं पाक है सक करउ जे दूसर होइ ॥ (७२७-११, तिलंग, भगत कबीर जी)
कबीर करमु करीम का उहु करै जानै सोइ ॥४॥१॥ (७२७-१२, तिलंग, भगत कबीर जी)
नामदेव जी ॥ (७२७-१२)
मै अंधुले की टेक तेरा नामु खुंदकारा ॥ (७२७-१२, तिलंग, भगत नामदेव जी)
मै गरीब मै मसकीन तेरा नामु है अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७२७-१३, तिलंग, भगत नामदेव जी)
करीमाँ रहीमाँ अलाह तू गनंी ॥ (७२७-१३, तिलंग, भगत नामदेव जी)
हाजरा हजूरि दरि पेसि तूं मनंी ॥१॥ (७२७-१४, तिलंग, भगत नामदेव जी)
दरीआउ तू दिहंद तू बिसीआर तू धनी ॥ (७२७-१४, तिलंग, भगत नामदेव जी)
देहि लेहि एकु तूं दिगर को नही ॥२॥ (७२७-१४, तिलंग, भगत नामदेव जी)
तूं दानाँ तूं बीनाँ मै बीचारु किआ करी ॥ (७२७-१५, तिलंग, भगत नामदेव जी)
नामे चे सुआमी बखसंद तूं हरी ॥३॥१॥२॥ (७२७-१५, तिलंग, भगत नामदेव जी)
हले याराँ हले याराँ खुसिखबरी ॥ (७२७-१६, तिलंग, भगत नामदेव जी)
बलि बलि जाँउ हउ बलि बलि जाँउ ॥ (७२७-१६, तिलंग, भगत नामदेव जी)
नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७२७-१६, तिलंग, भगत नामदेव जी)
कुजा आमद कुजा रफती कुजा मे रवी ॥ (७२७-१७, तिलंग, भगत नामदेव जी)
द्वारिका नगरी रासि बुगोई ॥१॥ (७२७-१७, तिलंग, भगत नामदेव जी)
खूबु तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ (७२७-१७, तिलंग, भगत नामदेव जी)
द्वारिका नगरी काहे के मगोल ॥२॥ (७२७-१८, तिलंग, भगत नामदेव जी)

चंदी हजार आलम एकल खानाँ ॥ (७२७-१८, तिलंग, भगत नामदेव जी)
हम चिनी पातिसाह साँवले बरनाँ ॥३॥ (७२७-१८, तिलंग, भगत नामदेव जी)
असपति गजपति नरह नरिंद ॥ (७२७-१९, तिलंग, भगत नामदेव जी)
नामे के स्वामी मीर मुकंद ॥४॥२॥३॥ (७२७-१९, तिलंग, भगत नामदेव जी)

पन्ना ७२८

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (७२८-१)
रागु सूही महला १ चउपदे घरु १ (७२८-३)
भाँडा धोइ बैसि धूपु देवहु तउ दूधै कउ जावहु ॥ (७२८-४, सूही, मः १)
दूधु कर्म फुनि सुरति समाइणु होइ निरास जमावहु ॥१॥ (७२८-४, सूही, मः १)
जपहु त एको नामा ॥ (७२८-५, सूही, मः १)
अवरि निराफल कामा ॥१॥ रहाउ ॥ (७२८-५, सूही, मः १)
इहु मनु ईटी हाथि करहु फुनि नेत्रउ नीद न आवै ॥ (७२८-५, सूही, मः १)
रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अमृतु पावहु ॥२॥ (७२८-६, सूही, मः १)
मनु सम्पटु जितु सत सरि नावणु भावन पाती तृपति करे ॥ (७२८-७, सूही, मः १)
पूजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्ह बिधि साहिबु रवतु रहै ॥३॥ (७२८-७, सूही, मः १)
कहदे कहहि कहे कहि जावहि तुम सरि अवरु न कोई ॥ (७२८-८, सूही, मः १)
भगति हीणु नानकु जनु जम्पै हउ सालाही सचा सोई ॥४॥१॥ (७२८-८, सूही, मः १)
सूही महला १ घरु २ (७२८-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२८-१०)
अंतरि वसै न बाहरि जाइ ॥ (७२८-११, सूही, मः १)
अमृतु छोडि काहे बिखु खाइ ॥१॥ (७२८-११, सूही, मः १)
ऐसा गिआनु जपहु मन मेरे ॥ (७२८-११, सूही, मः १)
होवहु चाकर साचे केरे ॥१॥ रहाउ ॥ (७२८-१२, सूही, मः १)
गिआनु धिआनु सभु कोई रवै ॥ (७२८-१२, सूही, मः १)
बाँधनि बाँधिआ सभु जगु भवै ॥२॥ (७२८-१२, सूही, मः १)
सेवा करे सु चाकरु होइ ॥ (७२८-१३, सूही, मः १)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ सोइ ॥३॥ (७२८-१३, सूही, मः १)
हम नही चंगे बुरा नही कोइ ॥ (७२८-१३, सूही, मः १)
प्रणवति नानकु तारे सोइ ॥४॥१॥२॥ (७२८-१४, सूही, मः १)

पन्ना ७२९

सूही महला १ घरु ६ (७२९-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७२९-१)
उजलु कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मसु ॥ (७२९-२, सूही, मः १)

धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिसु ॥१॥ (७२६-२, सूही, मः १)
सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलंन्हि ॥ (७२६-२, सूही, मः १)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसंनि ॥१॥ रहाउ ॥ (७२६-३, सूही, मः १)
कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा ॥ (७२६-३, सूही, मः १)
ढठीआ कंमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ॥२॥ (७२६-४, सूही, मः १)
बगा बगे कपड़े तीर्थ मंझि वसंन्हि ॥ (७२६-४, सूही, मः १)
घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि ॥३॥ (७२६-५, सूही, मः १)
सिम्मल रुखु सरीरु मै मैजन देखि भुलंन्हि ॥ (७२६-५, सूही, मः १)
से फल कंमि न आवन्ही ते गुण मै तनि हंन्हि ॥४॥ (७२६-६, सूही, मः १)
अंधुलै भारु उठाइआ डूगर वाट बहुतु ॥ (७२६-६, सूही, मः १)
अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कितु ॥५॥ (७२६-७, सूही, मः १)
चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु ॥ (७२६-७, सूही, मः १)
नानक नामु समालि तूं बधा छुटहि जितु ॥६॥१॥३॥ (७२६-८, सूही, मः १)
सूही महला १ ॥ (७२६-८)
जप तप का बंधु बेड़ुला जितु लंघहि वहेला ॥ (७२६-८, सूही, मः १)
ना सरवरु ना ऊछलै ऐसा पंथु सुहेला ॥१॥ (७२६-९, सूही, मः १)
तेरा एको नामु मंजीठड़ा रता मेरा चोला सद रंग ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ (७२६-९, सूही, मः १)
साजन चले पिआरिआ किउ मेला होई ॥ (७२६-१०, सूही, मः १)
जे गुण होवहि गंठड़ीऐ मेलेगा सोई ॥२॥ (७२६-१०, सूही, मः १)
मिलिआ होइ न वीछुड़ै जे मिलिआ होई ॥ (७२६-११, सूही, मः १)
आवा गउणु निवारिआ है साचा सोई ॥३॥ (७२६-११, सूही, मः १)
हउमै मारि निवारिआ सीता है चोला ॥ (७२६-१२, सूही, मः १)
गुर बचनी फलु पाइआ सह के अमृत बोला ॥४॥ (७२६-१२, सूही, मः १)
नानकु कहै सहेलीहो सहु खरा पिआरा ॥ (७२६-१२, सूही, मः १)
हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा ॥५॥२॥४॥ (७२६-१३, सूही, मः १)
सूही महला १ ॥ (७२६-१४)
जिन कउ भाँडै भाउ तिना सवारसी ॥ (७२६-१४, सूही, मः १)
सूखी करै पसाउ दूख विसारसी ॥ (७२६-१४, सूही, मः १)
सहसा मूले नाहि सरपर तारसी ॥१॥ (७२६-१४, सूही, मः १)
तिन्हा मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ ॥ (७२६-१५, सूही, मः १)
अमृतु हरि का नाउ देवै दीखिआ ॥ (७२६-१५, सूही, मः १)
चालहि सतिगुर भाइ भवहि न भीखिआ ॥२॥ (७२६-१६, सूही, मः १)
जा कउ महलु हजूरि दूजे निवै किसु ॥ (७२६-१६, सूही, मः १)
दरि दरवाणी नाहि मूले पुछ तिसु ॥ (७२६-१६, सूही, मः १)
छुटै ता कै बोलि साहिब नदरि जिसु ॥३॥ (७२६-१७, सूही, मः १)

घले आणे आपि जिसु नाही दूजा मतै कोइ ॥ (७२९-१७, सूही, मः १)
ढाहि उसारे साजि जाणै सभ सोइ ॥ (७२९-१८, सूही, मः १)
नाउ नानक बखसीस नदरी करमु होइ ॥४॥३॥५॥ (७२९-१८, सूही, मः १)

पन्ना ७३०

सूही महला १ ॥ (७३०-१)
भाँडा हछा सोइ जो तिसु भावसी ॥ (७३०-१, सूही, मः १)
भाँडा अति मलीणु धोता हछा न होइसी ॥ (७३०-१, सूही, मः १)
गुरू दुआरै होइ सोझी पाइसी ॥ (७३०-२, सूही, मः १)
एतु दुआरै धोइ हछा होइसी ॥ (७३०-२, सूही, मः १)
मैले हछे का वीचारु आपि वरताइसी ॥ (७३०-२, सूही, मः १)
मतु को जाणै जाइ अगै पाइसी ॥ (७३०-३, सूही, मः १)
जेहे कर्म कमाइ तेहा होइसी ॥ (७३०-३, सूही, मः १)
अमृतु हरि का नाउ आपि वरताइसी ॥ (७३०-३, सूही, मः १)
चलिआ पति सिउ जनमु सवारि वाजा वाइसी ॥ (७३०-४, सूही, मः १)
माणसु किआ वेचारा तिहु लोक सुणाइसी ॥ (७३०-४, सूही, मः १)
नानक आपि निहाल सभि कुल तारसी ॥१॥४॥६॥ (७३०-५, सूही, मः १)
सूही महला १ ॥ (७३०-५)
जोगी होवै जोगवै भोगी होवै खाइ ॥ (७३०-५, सूही, मः १)
तपीआ होवै तपु करे तीरथि मलि मलि नाइ ॥१॥ (७३०-६, सूही, मः १)
तेरा सदड़ा सुणीजै भाई जे को बहै अलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (७३०-६, सूही, मः १)
जैसा बीजै सो लुणे जो खटे सुो खाइ ॥ (७३०-७, सूही, मः १)
अगै पुछ न होवई जे सणु नीसाणै जाइ ॥२॥ (७३०-७, सूही, मः १)
तैसो जैसा काढीऐ जैसी कार कमाइ ॥ (७३०-८, सूही, मः १)
जो दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाइ ॥३॥ (७३०-८, सूही, मः १)
इहु तनु वेची बै करी जे को लए विकाइ ॥ (७३०-८, सूही, मः १)
नानक कंमि न आवई जितु तनि नाही सचा नाउ ॥४॥५॥७॥ (७३०-९, सूही, मः १)
सूही महला १ घरु ७ (७३०-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७३०-११)
जोगु न खिंथा जोगु न डंडै जोगु न भसम चड़ाईऐ ॥ (७३०-११, सूही, मः १)
जोगु न मुंदी मूंडि मुडाइऐ जोगु न सिंङी वाईऐ ॥ (७३०-११, सूही, मः १)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥१॥ (७३०-१२, सूही, मः १)
गली जोगु न होई ॥ (७३०-१२, सूही, मः १)
एक दृसटि करि समसरि जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (७३०-१३, सूही, मः १)
जोगु न बाहरि मड़ी मसाणी जोगु न ताड़ी लाईऐ ॥ (७३०-१३, सूही, मः १)

जोगु न देसि दिसंतरि भविऐ जोगु न तीरथि नाईऐ ॥ (७३०-१४, सूही, मः १)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥२॥ (७३०-१४, सूही, मः १)
सतिगुरु भेटै ता सहसा तूटै धावतु वरजि रहाईऐ ॥ (७३०-१५, सूही, मः १)
निझरु झरै सहज धुनि लागै घर ही परचा पाईऐ ॥ (७३०-१५, सूही, मः १)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥३॥ (७३०-१६, सूही, मः १)
नानक जीवतिआ मरि रहीऐ ऐसा जोगु कमाईऐ ॥ (७३०-१७, सूही, मः १)
वाजे बाझहु सिंङी वाजै तउ निरभउ पदु पाईऐ ॥ (७३०-१७, सूही, मः १)
अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति तउ पाईऐ ॥४॥१॥८॥ (७३०-१८, सूही, मः १)
सूही महला १ ॥ (७३०-१८)
कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ (७३०-१८, सूही, मः १)
कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥ (७३०-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७३१

मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ (७३१-१, सूही, मः १)
तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (७३१-१, सूही, मः १)
मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ (७३१-२, सूही, मः १)
घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥२॥ (७३१-२, सूही, मः १)
आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ (७३१-३, सूही, मः १)
आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ (७३१-३, सूही, मः १)
अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ (७३१-४, सूही, मः १)
ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥९॥ (७३१-४, सूही, मः १)
रागु सूही महला ४ घरु १ (७३१-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७३१-६)
मनि राम नामु आराधिआ गुर सबदि गुरू गुर के ॥ (७३१-७, सूही, मः ४)
सभि इछा मनि तनि पूरीआ सभु चूका डरु जम के ॥१॥ (७३१-७, सूही, मः ४)
मेरे मन गुण गावहु राम नाम हरि के ॥ (७३१-८, सूही, मः ४)
गुरि तुठै मनु परबोधिआ हरि पीआ रसु गटके ॥१॥ रहाउ ॥ (७३१-८, सूही, मः ४)
सतसंगति ऊतम सतिगुर केरी गुन गावै हरि प्रभ के ॥ (७३१-९, सूही, मः ४)
हरि किरपा धारि मेलहु सतसंगति हम धोवह पग जन के ॥२॥ (७३१-९, सूही, मः ४)
राम नामु सभु है राम नामा रसु गुरमति रसु रसके ॥ (७३१-१०, सूही, मः ४)
हरि अमृतु हरि जलु पाइआ सभ लाथी तिस तिस के ॥३॥ (७३१-१०, सूही, मः ४)
हमरी जाति पाति गुरु सतिगुरु हम वेचिओ सिरु गुर के ॥ (७३१-११, सूही, मः ४)
जन नानक नामु परिओ गुर चेला गुर राखहु लाज जन के ॥४॥१॥ (७३१-१२, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३१-१२)
हरि हरि नामु भजिओ पुरखोतमु सभि बिनसे दालद दलघा ॥ (७३१-१२, सूही, मः ४)

भउ जनम मरणा मेटिओ गुर सबदी हरि असथिरु सेवि सुखि समघा ॥१॥ (७३१-१३, सूही, मः ४)
मेरे मन भजु राम नाम अति पिरघा ॥ (७३१-१४, सूही, मः ४)
मै मनु तनु अरपि धरिओ गुर आगै सिरु वेचि लीओ मुलि महघा ॥१॥ रहाउ ॥ (७३१-१४, सूही, मः ४)
नरपति राजे रंग रस माणहि बिनु नावै पकड़ि खड़े सभि कलघा ॥ (७३१-१५, सूही, मः ४)
धर्म राइ सिरि डंडु लगाना फिरि पछुताने हथ फलघा ॥२॥ (७३१-१६, सूही, मः ४)
हरि राखु राखु जन किर्म तुमारे सरणागति पुरख प्रतिपलघा ॥ (७३१-१६, सूही, मः ४)
दरसनु संत देहु सुखु पावै प्रभ लोच पूरि जनु तुमघा ॥३॥ (७३१-१७, सूही, मः ४)
तुम समरथ पुरख वडे प्रभ सुआमी मो कउ कीजै दानु हरि निमघा ॥ (७३१-१७, सूही, मः ४)
जन नानक नामु मिलै सुखु पावै हम नाम विटहु सद घुमघा ॥४॥२॥ (७३१-१८, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३१-१९)
हरि नामा हरि रंङु है हरि रंङु मजीठै रंङु ॥ (७३१-१९, सूही, मः ४)
गुरि तुठै हरि रंगु चाड़िआ फिरि बहुड़ि न होवी भंङु ॥१॥ (७३१-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७३२

मेरे मन हरि राम नामि करि रंङु ॥ (७३२-१, सूही, मः ४)
गुरि तुठै हरि उपदेसिआ हरि भेटिआ राउ निसंङु ॥१॥ रहाउ ॥ (७३२-१, सूही, मः ४)
मुंध इआणी मनमुखी फिरि आवण जाणा अंङु ॥ (७३२-२, सूही, मः ४)
हरि प्रभु चिति न आइओ मनि दूजा भाउ सहलंङु ॥२॥ (७३२-२, सूही, मः ४)
हम मैलु भरे दुहचारीआ हरि राखहु अंगी अंङु ॥ (७३२-३, सूही, मः ४)
गुरि अमृत सरि नवलाइआ सभि लाथे किलविख पंङु ॥३॥ (७३२-३, सूही, मः ४)
हरि दीना दीन दइआल प्रभु सतसंगति मेलहु संङु ॥ (७३२-४, सूही, मः ४)
मिलि संगति हरि रंगु पाइआ जन नानक मनि तनि रंङु ॥४॥३॥ (७३२-५, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३२-५)
हरि हरि करहि नित कपटु कमावहि हिरदा सुधु न होई ॥ (७३२-६, सूही, मः ४)
अनदिनु कर्म करहि बहुतेरे सुपनै सुखु न होई ॥१॥ (७३२-६, सूही, मः ४)
गिआनी गुर बिनु भगति न होई ॥ (७३२-७, सूही, मः ४)
कोरै रंगु कदे न चड़ै जे लोचै सभु कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (७३२-७, सूही, मः ४)
जपु तप संजम वरत करे पूजा मनमुख रोगु न जाई ॥ (७३२-८, सूही, मः ४)
अंतरि रोगु महा अभिमाना दूजै भाइ खुआई ॥२॥ (७३२-८, सूही, मः ४)
बाहरि भेख बहुतु चतुराई मनूआ दह दिसि धावै ॥ (७३२-९, सूही, मः ४)
हउमै बिआपिआ सबदु न चीन्है फिरि फिरि जूनी आवै ॥३॥ (७३२-९, सूही, मः ४)
नानक नदरि करे सो बूझै सो जनु नामु धिआए ॥ (७३२-१०, सूही, मः ४)
गुर परसादी एको बूझै एकसु माहि समाए ॥४॥४॥ (७३२-१०, सूही, मः ४)
सूही महला ४ घरु २ (७३२-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७३२-१२)

गुरमति नगरी खोजि खोजाई ॥ (७३२-१३, सूही, मः ४)
हरि हरि नामु पदारथु पाई ॥१॥ (७३२-१३, सूही, मः ४)
मेरै मनि हरि हरि सांति वसाई ॥ (७३२-१३, सूही, मः ४)
तिसना अगनि बुझी खिन अंतरि गुरि मिलिऐ सभ भुख गवाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७३२-१४, सूही, मः ४)
हरि गुण गावा जीवा मेरी माई ॥ (७३२-१४, सूही, मः ४)
सतिगुरि दइआलि गुण नामु दृड़ाई ॥२॥ (७३२-१५, सूही, मः ४)
हउ हरि प्रभु पिआरा ढूढि ढूढाई ॥ (७३२-१५, सूही, मः ४)
सतसंगति मिलि हरि रसु पाई ॥३॥ (७३२-१६, सूही, मः ४)
धुरि मसतकि लेख लिखे हरि पाई ॥ (७३२-१६, सूही, मः ४)
गुरु नानकु तुठा मेलै हरि भाई ॥४॥१॥५॥ (७३२-१६, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३२-१७)
हरि कृपा करे मनि हरि रंगु लाए ॥ (७३२-१७, सूही, मः ४)
गुरमुखि हरि हरि नामि समाए ॥१॥ (७३२-१७, सूही, मः ४)
हरि रंगि राता मनु रंग माणे ॥ (७३२-१८, सूही, मः ४)
सदा अनंदि रहै दिन राती पूरे गुर कै सबदि समाणे ॥१॥ रहाउ ॥ (७३२-१८, सूही, मः ४)
हरि रंग कउ लोचै सभु कोई ॥ (७३२-१९, सूही, मः ४)
गुरमुखि रंगु चलूला होई ॥२॥ (७३२-१९, सूही, मः ४)
मनमुखि मुगधु नरु कोरा होइ ॥ (७३२-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७३३

जे सउ लोचै रंगु न होवै कोइ ॥३॥ (७३३-१, सूही, मः ४)
नदरि करे ता सतिगुरु पावै ॥ (७३३-१, सूही, मः ४)
नानक हरि रसि हरि रंगि समावै ॥४॥२॥६॥ (७३३-१, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३३-२)
जिहवा हरि रसि रही अघाइ ॥ (७३३-२, सूही, मः ४)
गुरमुखि पीवै सहजि समाइ ॥१॥ (७३३-२, सूही, मः ४)
हरि रसु जन चाखहु जे भाई ॥ (७३३-२, सूही, मः ४)
तउ कत अनत सादि लोभाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७३३-३, सूही, मः ४)
गुरमति रसु राखहु उर धारि ॥ (७३३-३, सूही, मः ४)
हरि रसि राते रंगि मुरारि ॥२॥ (७३३-४, सूही, मः ४)
मनमुखि हरि रसु चाखिआ न जाइ ॥ (७३३-४, सूही, मः ४)
हउमै करै बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ (७३३-४, सूही, मः ४)
नदरि करे ता हरि रसु पावै ॥ (७३३-५, सूही, मः ४)
नानक हरि रसि हरि गुण गावै ॥४॥३॥७॥ (७३३-५, सूही, मः ४)
सूही महला ४ घरु ६ (७३३-६)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७३३-६)
नीच जाति हरि जपतिआ उतम पदवी पाइ ॥ (७३३-७, सूही, मः ४)
पूछहु बिदर दासी सुतै किसनु उतरिआ घरि जिसु जाइ ॥१॥ (७३३-७, सूही, मः ४)
हरि की अकथ कथा सुनहु जन भाई जितु सहसा दूख भूख सभ लहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (७३३-८, सूही, मः ४)
रविदासु चमारु उसतति करे हरि कीरति निमख इक गाइ ॥ (७३३-९, सूही, मः ४)
पतित जाति उतमु भइआ चारि वरन पए पगि आइ ॥२॥ (७३३-९, सूही, मः ४)
नामदेअ प्रीति लगी हरि सेती लोकु छीपा कहै बुलाइ ॥ (७३३-१०, सूही, मः ४)
खत्री ब्राहमण पिठि दे छोडे हरि नामदेउ लीआ मुखि लाइ ॥३॥ (७३३-१०, सूही, मः ४)
जितने भगत हरि सेवका मुखि अठसठि तीर्थ तिन तिलकु कढाइ ॥ (७३३-११, सूही, मः ४)
जनु नानकु तिन कउ अनदिनु परसे जे कृपा करे हरि राइ ॥४॥१॥८॥ (७३३-१२, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३३-१२)
तिन्ही अंतरि हरि आराधिआ जिन कउ धुरि लिखिआ लिखतु लिलारा ॥ (७३३-१३, सूही, मः ४)
तिन की बखीली कोई किआ करे जिन का अंगु करे मेरा हरि करतारा ॥१॥ (७३३-१३, सूही, मः ४)
हरि हरि धिआइ मन मेरे मन धिआइ हरि जनम जनम के सभि दूख निवारणहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७३३-१४, सूही, मः ४)
धुरि भगत जना कउ बखसिआ हरि अमृत भगति भंडारा ॥ (७३३-१५, सूही, मः ४)
मूरखु होवै सु उन की रीस करे तिसु हलति पलति मुहु कारा ॥२॥ (७३३-१६, सूही, मः ४)
से भगत से सेवका जिना हरि नामु पिआरा ॥ (७३३-१६, सूही, मः ४)
तिन की सेवा ते हरि पाईऐ सिरि निंदक कै पवै छारा ॥३॥ (७३३-१७, सूही, मः ४)
जिसु घरि विरती सोई जाणै जगत गुर नानक पूछि करहु बीचारा ॥ (७३३-१७, सूही, मः ४)
चहु पीड़ी आदि जुगादि बखीली किनै न पाइओ हरि सेवक भाइ निसतारा ॥४॥२॥९॥ (७३३-१८, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३३-१९)
जिथै हरि आराधीऐ तिथै हरि मितु सहाई ॥ (७३३-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७३४

गुर किरपा ते हरि मनि वसै होरतु बिधि लइआ न जाई ॥१॥ (७३४-१, सूही, मः ४)
हरि धनु संचीऐ भाई ॥ (७३४-१, सूही, मः ४)
जि हलति पलति हरि होइ सखाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७३४-२, सूही, मः ४)
सतसंगती संगि हरि धनु खटीऐ होर थै होरतु उपाइ हरि धनु कितै न पाई ॥ (७३४-२, सूही, मः ४)
हरि रतनै का वापारीआ हरि रतन धनु विहाझे कचै के वापारीए वाकि हरि धनु लइआ न जाई ॥२॥ (७३४-३, सूही, मः ४)
हरि धनु रतनु जवेहरु माणकु हरि धनै नालि अमृत वेलै वतै हरि भगती हरि लिव लाई ॥ (७३४-४, सूही, मः ४)
हरि धनु अमृत वेलै वतै का बीजिआ भगत खाइ खरचि रहे निखुटै नाही ॥ (७३४-५, सूही, मः ४)

हलति पलति हरि धनै की भगता कउ मिली वडिआई ॥३॥ (७३४-६, सूही, मः ४)
हरि धनु निरभउ सदा सदा असथिरु है साचा इहु हरि धनु अगनी तसकरै पाणीऐ जमदूतै किसै का गवाइआ न जाई ॥ (७३४-६, सूही, मः ४)
हरि धन कउ उचका नेड़ि न आवई जमु जागाती डंडु न लगाई ॥४॥ (७३४-७, सूही, मः ४)
साकती पाप करि कै बिखिआ धनु संचिआ तिना इक विख नालि न जाई ॥ (७३४-७, सूही, मः ४)
हलतै विचि साकत दुहेले भए हथहु छुड़कि गइआ अगै पलति साकतु हरि दरगह ढोई न पाई ॥५॥ (७३४-८, सूही, मः ४)
इसु हरि धन का साहु हरि आपि है संतहु जिस नो देइ सु हरि धनु लदि चलाई ॥ (७३४-९, सूही, मः ४)
इसु हरि धनै का तोटा कदे न आवई जन नानक कउ गुरि सोझी पाई ॥६॥३॥१०॥ (७३४-१०, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३४-११)
जिस नो हरि सुप्रसन्नु होइ सो हरि गुणा रवै सो भगतु सो परवानु ॥ (७३४-११, सूही, मः ४)
तिस की महिमा किआ वरनीऐ जिस कै हिरदै वसिआ हरि पुरखु भगवानु ॥१॥ (७३४-१२, सूही, मः ४)
गोविंद गुण गाईऐ जीउ लाइ सतिगुरू नालि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (७३४-१३, सूही, मः ४)
सो सतिगुरू सा सेवा सतिगुर की सफल है जिस ते पाईऐ पर्म निधानु ॥ (७३४-१३, सूही, मः ४)
जो दूजै भाइ साकत कामना अरथि दुरगंध सरेवदे सो निहफल सभु अगिआनु ॥२॥ (७३४-१४, सूही, मः ४)
जिस नो परतीति होवै तिस का गाविआ थाइ पवै सो पावै दरगह मानु ॥ (७३४-१५, सूही, मः ४)
जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे उन का उतरि जाइगा झूठु गुमानु ॥३॥ (७३४-१६, सूही, मः ४)
जेता जीउ पिंडु सभु तेरा तूं अंतरजामी पुरखु भगवानु ॥ (७३४-१७, सूही, मः ४)
दासनि दासु कहै जनु नानकु जेहा तूं कराइहि तेहा हउ करी वखिआनु ॥४॥४॥११॥ (७३४-१७, सूही, मः ४)

सूही महला ४ घरु ७ (७३५-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७३५-१)
तेरे कवन कवन गुण कहि कहि गावा तू साहिब गुणी निधाना ॥ (७३५-२, सूही, मः ४)
तुमरी महिमा बरनि न साकउ तूं ठाकुर ऊच भगवाना ॥१॥ (७३५-२, सूही, मः ४)
मै हरि हरि नामु धर सोई ॥ (७३५-३, सूही, मः ४)
जिउ भावै तिउ राखु मेरे साहिब मै तुझ बिनु अवरु न कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (७३५-३, सूही, मः ४)
मै ताणु दीबाणु तूहै मेरे सुआमी मै तुधु आगै अरदासि ॥ (७३५-४, सूही, मः ४)
मै होरु थाउ नाही जिसु पहि करउ बेनंती मेरा दुखु सुखु तुझ ही पासि ॥२॥ (७३५-४, सूही, मः ४)
विचे धरती विचे पाणी विचि कासट अगनि धरीजै ॥ (७३५-५, सूही, मः ४)
बकरी सिंघु इकतै थाइ राखे मन हरि जपि भ्रमु भउ दूरि कीजै ॥३॥ (७३५-६, सूही, मः ४)
हरि की वडिआई देखहु संतहु हरि निमाणिआ माणु देवाए ॥ (७३५-६, सूही, मः ४)
जिउ धरती चरण तले ते ऊपरि आवै तिउ नानक साध जना जगतु आणि सभु पैरी पाए ॥४॥१॥१२॥ (७३५-७, सूही, मः ४)

सूही महला ४ ॥ (७३५-८)
तूं करता सभु किछु आपे जाणहि किआ तुधु पहि आखि सुणाईऐ ॥ (७३५-८, सूही, मः ४)
बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै जेहा को करे तेहा को पाईऐ ॥१॥ (७३५-९, सूही, मः ४)
मेरे साहिब तूं अंतर की बिधि जाणहि ॥ (७३५-९, सूही, मः ४)
बुरा भला तुधु सभु किछु सूझै तुधु भावै तिवै बुलावहि ॥१॥ रहाउ ॥ (७३५-१०, सूही, मः ४)
सभु मोहु माइआ सरीरु हरि कीआ विचि देही मानुख भगति कराई ॥ (७३५-१०, सूही, मः ४)
इकना सतिगुरु मेलि सुखु देवहि इकि मनमुखि धंधु पिटाई ॥२॥ (७३५-११, सूही, मः ४)
सभु को तेरा तूं सभना का मेरे करते तुधु सभना सिरि लिखिआ लेखु ॥ (७३५-१२, सूही, मः ४)
जेही तूं नदरि करहि तेहा को होवै बिनु नदरी नाही को भेखु ॥३॥ (७३५-१२, सूही, मः ४)
तेरी वडिआई तूंहै जाणहि सभ तुधनो नित धिआए ॥ (७३५-१३, सूही, मः ४)
जिस नो तुधु भावै तिस नो तूं मेलहि जन नानक सो थाइ पाए ॥४॥२॥१३॥ (७३५-१४, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३५-१४)
जिन कै अंतरि वसिआ मेरा हरि हरि तिन के सभि रोग गवाए ॥ (७३५-१५, सूही, मः ४)
ते मुकत भए जिन हरि नामु धिआइआ तिन पवितु परम पदु पाए ॥१॥ (७३५-१५, सूही, मः ४)
मेरे राम हरि जन आरोग भए ॥ (७३५-१६, सूही, मः ४)
गुर बचनी जिना जपिआ मेरा हरि हरि तिन के हउमै रोग गए ॥१॥ रहाउ ॥ (७३५-१६, सूही, मः ४)
ब्रह्मा बिसनु महादेउ त्रै गुण रोगी विचि हउमै कार कमाई ॥ (७३५-१७, सूही, मः ४)
जिनि कीए तिसहि न चेतहि बपुड़े हरि गुरमुखि सोझी पाई ॥२॥ (७३५-१८, सूही, मः ४)
हउमै रोगि सभु जगतु बिआपिआ तिन कउ जनम मरण दुखु भारी ॥ (७३५-१८, सूही, मः ४)

पन्ना ७३६

गुर परसादी को विरला छूटै तिसु जन कउ हउ बलिहारी ॥३॥ (७३६-१, सूही, मः ४)
जिनि सिसटि साजी सोई हरि जाणै ता का रूपु अपारो ॥ (७३६-२, सूही, मः ४)
नानक आपे वेखि हरि बिगसै गुरमुखि ब्रह्म बीचारो ॥४॥३॥१४॥ (७३६-२, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७३६-३)
कीता करणा सरब रजाई किछु कीचै जे करि सकीऐ ॥ (७३६-३, सूही, मः ४)
आपणा कीता किछू न होवै जिउ हरि भावै तिउ रखीऐ ॥१॥ (७३६-३, सूही, मः ४)
मेरे हरि जीउ सभु को तेरै वसि ॥ (७३६-४, सूही, मः ४)
असा जोरु नाही जे किछु करि हम साकह जिउ भावै तिवै बखसि ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-४, सूही, मः ४)
सभु जीउ पिंडु दीआ तुधु आपे तुधु आपे कारै लाइआ ॥ (७३६-५, सूही, मः ४)
जेहा तूं हुकमु करहि तेहे को करम कमावै जेहा तुधु धुरि लिखि पाइआ ॥२॥ (७३६-६, सूही, मः ४)
पंच ततु करि तुधु स्रिसटि सभ साजी कोई छेवा करिउ जे किछु कीता होवै ॥ (७३६-६, सूही, मः ४)
इकना सतिगुरु मेलि तूं बुझावहि इकि मनमुखि करहि सि रोवै ॥३॥ (७३६-७, सूही, मः ४)
हरि की वडिआई हउ आखि न साका हउ मूरखु मुगधु नीचाणु ॥ (७३६-८, सूही, मः ४)
जन नानक कउ हरि बखसि लै मेरे सुआमी सरणागति पइआ अजाणु ॥४॥४॥१५॥२४॥ (७३६-८, सूही, मः ४)

रागु सूही महला ५ घरु १ (७३६-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७३६-१०)
बाजीगरि जैसे बाजी पाई ॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
नाना रूप भेख दिखलाई ॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
साँगु उतारि थंम्हिओ पासारा ॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
तब एको एकंकारा ॥१॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
कवन रूप दृसटिओ बिनसाइओ ॥ (७३६-१२, सूही, मः ५)
कतहि गइओ उहु कत ते आइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-१२, सूही, मः ५)
जल ते ऊठहि अनिक तरंगा ॥ (७३६-१३, सूही, मः ५)
कनिक भूखन कीने बहु रंगा ॥ (७३६-१३, सूही, मः ५)
बीजु बीजि देखिओ बहु परकारा ॥ (७३६-१३, सूही, मः ५)
फल पाके ते एकंकारा ॥२॥ (७३६-१३, सूही, मः ५)
सहस घटा महि एकु आकासु ॥ (७३६-१४, सूही, मः ५)
घट फूटे ते ओही प्रगासु ॥ (७३६-१४, सूही, मः ५)
भर्म लोभ मोह माइआ विकार ॥ (७३६-१४, सूही, मः ५)
भ्रम छूटे ते एकंकार ॥३॥ (७३६-१५, सूही, मः ५)
ओहु अबिनासी बिनसत नाही ॥ (७३६-१५, सूही, मः ५)
ना को आवै ना को जाही ॥ (७३६-१५, सूही, मः ५)
गुरि पूरै हउमै मलु धोई ॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)
कहु नानक मेरी पर्म गति होई ॥४॥१॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३६-१६)
कीता लोड़हि सो प्रभ होइ ॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)
तुझ बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (७३६-१७, सूही, मः ५)
जो जनु सेवे तिसु पूरन काज ॥ (७३६-१७, सूही, मः ५)
दास अपुने की राखहु लाज ॥१॥ (७३६-१७, सूही, मः ५)
तेरी सरणि पूरन दइआला ॥ (७३६-१८, सूही, मः ५)
तुझ बिनु कवनु करे प्रतिपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-१८, सूही, मः ५)
जलि थलि महीअलि रहिआ भरपूरि ॥ (७३६-१८, सूही, मः ५)
निकटि वसै नाही प्रभु दूरि ॥ (७३६-१९, सूही, मः ५)
लोक पतीआरै कछू न पाईऐ ॥ (७३६-१९, सूही, मः ५)
साचि लगै ता हउमै जाईऐ ॥२॥ (७३६-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७३७

जिस नो लाइ लए सो लागै ॥ (७३७-१, सूही, मः ५)
गिआन रतनु अंतरि तिसु जागै ॥ (७३७-१, सूही, मः ५)

दुरमति जाइ पर्म पदु पाए ॥ (७३७-१, सूही, मः ५)
गुर परसादी नामु धिआए ॥३॥ (७३७-२, सूही, मः ५)
दुइ कर जोड़ि करउ अरदासि ॥ (७३७-२, सूही, मः ५)
तुधु भावै ता आणहि रासि ॥ (७३७-२, सूही, मः ५)
करि किरपा अपनी भगती लाइ ॥ (७३७-३, सूही, मः ५)
जन नानक प्रभु सदा धिआइ ॥४॥२॥ (७३७-३, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३७-४)
धनु सोहागनि जो प्रभू पछानै ॥ (७३७-४, सूही, मः ५)
मानै हुकमु तजै अभिमानै ॥ (७३७-४, सूही, मः ५)
पृअ सिउ राती रलीआ मानै ॥१॥ (७३७-४, सूही, मः ५)
सुनि सखीए प्रभ मिलण नीसानी ॥ (७३७-५, सूही, मः ५)
मनु तनु अरपि तजि लाज लोकानी ॥१॥ रहाउ ॥ (७३७-५, सूही, मः ५)
सखी सहेली कउ समझावै ॥ (७३७-६, सूही, मः ५)
सोई कमावै जो प्रभ भावै ॥ (७३७-६, सूही, मः ५)
सा सोहागणि अंकि समावै ॥२॥ (७३७-६, सूही, मः ५)
गरबि गहेली महलु न पावै ॥ (७३७-६, सूही, मः ५)
फिरि पछुतावै जब रैणि बिहावै ॥ (७३७-७, सूही, मः ५)
करमहीणि मनमुखि दुखु पावै ॥३॥ (७३७-७, सूही, मः ५)
बिनउ करी जे जाणा दूरि ॥ (७३७-८, सूही, मः ५)
प्रभु अबिनासी रहिआ भरपूरि ॥ (७३७-८, सूही, मः ५)
जनु नानकु गावै देखि हदूरि ॥४॥३॥ (७३७-८, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३७-९)
गृहु वसि गुरि कीना हउ घर की नारि ॥ (७३७-९, सूही, मः ५)
दस दासी करि दीनी भतारि ॥ (७३७-९, सूही, मः ५)
सगल समग्री मै घर की जोड़ी ॥ (७३७-९, सूही, मः ५)
आस पिआसी पिर कउ लोड़ी ॥१॥ (७३७-१०, सूही, मः ५)
कवन कहा गुन कंत पिआरे ॥ (७३७-१०, सूही, मः ५)
सुघड़ सरूप दइआल मुरारे ॥१॥ रहाउ ॥ (७३७-१०, सूही, मः ५)
सतु सीगारु भउ अंजनु पाइआ ॥ (७३७-११, सूही, मः ५)
अमृत नामु तम्बोलु मुखि खाइआ ॥ (७३७-११, सूही, मः ५)
कंगन बसत्र गहने बने सुहावे ॥ (७३७-१२, सूही, मः ५)
धन सभ सुख पावै जाँ पिरु घरि आवै ॥२॥ (७३७-१२, सूही, मः ५)
गुण कामण करि कंतु रीझाइआ ॥ (७३७-१२, सूही, मः ५)
वसि करि लीना गुरि भरमु चुकाइआ ॥ (७३७-१३, सूही, मः ५)
सभ ते ऊचा मंदरु मेरा ॥ (७३७-१३, सूही, मः ५)

सभ कामणि तिआगी पृउ प्रीतमु मेरा ॥३॥ (७३७-१३, सूही, मः ५)
प्रगटिआ सूरु जोति उजीआरा ॥ (७३७-१४, सूही, मः ५)
सेज विछाई सरध अपारा ॥ (७३७-१४, सूही, मः ५)
नव रंग लालु सेज रावण आइआ ॥ (७३७-१५, सूही, मः ५)
जन नानक पिर धन मिलि सुखु पाइआ ॥४॥४॥ (७३७-१५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३७-१५)
उमकिओ हीउ मिलन प्रभ ताई ॥ (७३७-१६, सूही, मः ५)
खोजत चरिओ देखउ पृअ जाई ॥ (७३७-१६, सूही, मः ५)
सुनत सदेसरो पृअ गृहि सेज विछाई ॥ (७३७-१६, सूही, मः ५)
भ्रमि भ्रमि आइओ तउ नदरि न पाई ॥१॥ (७३७-१७, सूही, मः ५)
किन बिधि हीअरो धीरै निमानो ॥ (७३७-१७, सूही, मः ५)
मिलु साजन हउ तुझु कुरबानो ॥१॥ रहाउ ॥ (७३७-१७, सूही, मः ५)
एका सेज विछी धन कंता ॥ (७३७-१८, सूही, मः ५)
धन सूती पिरु सद जागंता ॥ (७३७-१८, सूही, मः ५)
पीओ मदरो धन मतवंता ॥ (७३७-१८, सूही, मः ५)
धन जागै जे पिरु बोलंता ॥२॥ (७३७-१९, सूही, मः ५)
भई निरासी बहुतु दिन लागे ॥ (७३७-१९, सूही, मः ५)
देस दिसंतर मै सगले झागे ॥ (७३७-१९, सूही, मः ५)

खिनु रहनु न पावउ बिनु पग पागे ॥ (७३८-१, सूही, मः ५)
होइ कृपालु प्रभ मिलह सभागे ॥३॥ (७३८-१, सूही, मः ५)
भइओ कृपालु सतसंगि मिलाइआ ॥ (७३८-१, सूही, मः ५)
बूझी तपति घरहि पिरु पाइआ ॥ (७३८-२, सूही, मः ५)
सगल सीगार हुणि मुझहि सुहाइआ ॥ (७३८-२, सूही, मः ५)
कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥४॥ (७३८-२, सूही, मः ५)
जह देखा तह पिरु है भाई ॥ (७३८-३, सूही, मः ५)
खोल्हिओ कपाटु ता मनु ठहराई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥५॥ (७३८-३, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३८-४)
किआ गुण तेरे सारि सम्हाली मोहि निरगुन के दातारे ॥ (७३८-४, सूही, मः ५)
बै खरीदु किआ करे चतुराई इहु जीउ पिंडु सभु थारे ॥१॥ (७३८-४, सूही, मः ५)
लाल रंगीले प्रीतम मनमोहन तेरे दरसन कउ हम बारे ॥१॥ रहाउ ॥ (७३८-५, सूही, मः ५)
प्रभु दाता मोहि दीनु भेखारी तुम्ह सदा सदा उपकारे ॥ (७३८-६, सूही, मः ५)
सो किछु नाही जि मै ते होवै मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥२॥ (७३८-६, सूही, मः ५)
किआ सेव कमावउ किआ कहि रीझावउ बिधि कितु पावउ दरसारे ॥ (७३८-७, सूही, मः ५)

मिति नही पाईऐ अंतु न लहीऐ मनु तरसै चरनारे ॥३॥ (७३८-७, सूही, मः ५)
पावउ दानु ढीठु होइ मागउ मुखि लागै संत रेनारे ॥ (७३८-८, सूही, मः ५)
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी प्रभि हाथ देइ निसतारे ॥४॥६॥ (७३८-९, सूही, मः ५)
सूही महला ५ घरु ३ (७३८-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७३८-१०)
सेवा थोरी मागनु बहुता ॥ (७३८-११, सूही, मः ५)
महलु न पावै कहतो पहुता ॥१॥ (७३८-११, सूही, मः ५)
जो प्रिअ माने तिन की रीसा ॥ (७३८-११, सूही, मः ५)
कूड़े मूरख की हाठीसा ॥१॥ रहाउ ॥ (७३८-११, सूही, मः ५)
भेख दिखावै सचु न कमावै ॥ (७३८-१२, सूही, मः ५)
कहतो महली निकटि न आवै ॥२॥ (७३८-१२, सूही, मः ५)
अतीतु सदाए माइआ का माता ॥ (७३८-१२, सूही, मः ५)
मनि नही प्रीति कहै मुखि राता ॥३॥ (७३८-१३, सूही, मः ५)
कहु नानक प्रभ बिनउ सुनीजै ॥ (७३८-१३, सूही, मः ५)
कुचलु कठोरु कामी मुकतु कीजै ॥४॥ (७३८-१३, सूही, मः ५)
दरसन देखे की वडिआई ॥ (७३८-१४, सूही, मः ५)
तुम्ह सुखदाते पुरख सुभाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥७॥ (७३८-१४, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३८-१५)
बुरे काम कउ ऊठि खलोइआ ॥ (७३८-१५, सूही, मः ५)
नाम की बेला पै पै सोइआ ॥१॥ (७३८-१५, सूही, मः ५)
अउसरु अपना बूझै न इआना ॥ (७३८-१६, सूही, मः ५)
माइआ मोह रंगि लपटाना ॥१॥ रहाउ ॥ (७३८-१६, सूही, मः ५)
लोभ लहरि कउ बिगसि फूलि बैठा ॥ (७३८-१६, सूही, मः ५)
साध जना का दरसु न डीठा ॥२॥ (७३८-१७, सूही, मः ५)
कबहू न समझै अगिआनु गवारा ॥ (७३८-१७, सूही, मः ५)
बहुरि बहुरि लपटिओ जंजारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७३८-१७, सूही, मः ५)
बिखै नाद करन सुणि भीना ॥ (७३८-१८, सूही, मः ५)
हरि जसु सुनत आलसु मनि कीना ॥३॥ (७३८-१८, सूही, मः ५)
दृसटि नाही रे पेखत अंधे ॥ (७३८-१९, सूही, मः ५)
छोडि जाहि झूठे सभि धंधे ॥१॥ रहाउ ॥ (७३८-१९, सूही, मः ५)
कहु नानक प्रभ बखस करीजै ॥ (७३८-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७३९

करि किरपा मोहि साधसंगु दीजै ॥४॥ (७३९-१, सूही, मः ५)
तउ किछु पाईऐ जउ होईऐ रेना ॥ (७३९-१, सूही, मः ५)

जिसहि बुझाए तिसु नामु लैना ॥१॥ रहाउ ॥२॥८॥ (७३६-१, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३६-२)
घर महि ठाकुरु नदरि न आवै ॥ (७३६-२, सूही, मः ५)
गल महि पाहणु लै लटकावै ॥१॥ (७३६-२, सूही, मः ५)
भरमे भूला साकतु फिरता ॥ (७३६-३, सूही, मः ५)
नीरु बिरोलै खपि खपि मरता ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-३, सूही, मः ५)
जिसु पाहण कउ ठाकुरु कहता ॥ (७३६-३, सूही, मः ५)
ओहु पाहणु लै उस कउ डुबता ॥२॥ (७३६-४, सूही, मः ५)
गुनहगार लूण हरामी ॥ (७३६-४, सूही, मः ५)
पाहण नाव न पारगिरामी ॥३॥ (७३६-४, सूही, मः ५)
गुर मिलि नानक ठाकुरु जाता ॥ (७३६-५, सूही, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरन बिधाता ॥४॥३॥६॥ (७३६-५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३६-६)
लालनु राविआ कवन गती री ॥ (७३६-६, सूही, मः ५)
सखी बतावहु मुझहि मती री ॥१॥ (७३६-६, सूही, मः ५)
सूहब सूहब सूहवी ॥ (७३६-६, सूही, मः ५)
अपने प्रीतम कै रंगि रती ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-७, सूही, मः ५)
पाव मलोवउ संगि नैन भतीरी ॥ (७३६-७, सूही, मः ५)
जहा पठावहु जाँउ तती री ॥२॥ (७३६-७, सूही, मः ५)
जप तप संजम देउ जती री ॥ (७३६-८, सूही, मः ५)
इक निमख मिलावहु मोहि प्रानपती री ॥३॥ (७३६-८, सूही, मः ५)
माणु ताणु अहम्बुधि हती री ॥ (७३६-८, सूही, मः ५)
सा नानक सोहागवती री ॥४॥४॥१०॥ (७३६-९, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३६-९)
तूं जीवनु तूं प्रान अधारा ॥ (७३६-९, सूही, मः ५)
तुझ ही पेखि पेखि मनु साधारा ॥१॥ (७३६-१०, सूही, मः ५)
तूं साजनु तूं प्रीतमु मेरा ॥ (७३६-१०, सूही, मः ५)
चितहि न बिसरहि काहू बेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-१०, सूही, मः ५)
बै खरीदु हउ दासरो तेरा ॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
तूं भारो ठाकुरु गुणी गहेरा ॥२॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
कोटि दास जा कै दरबारे ॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
निमख निमख वसै तिन्ह नाले ॥३॥ (७३६-११, सूही, मः ५)
हउ किछु नाही सभु किछु तेरा ॥ (७३६-१२, सूही, मः ५)
ओति पोति नानक संगि बसेरा ॥४॥५॥११॥ (७३६-१२, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३६-१३)

सूख महल जा के ऊच दुआरे ॥ (७३६-१३, सूही, मः ५)
ता महि वासहि भगत पिआरे ॥१॥ (७३६-१३, सूही, मः ५)
सहज कथा प्रभ की अति मीठी ॥ (७३६-१३, सूही, मः ५)
विरलै काहू नेत्रहु डीठी ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-१४, सूही, मः ५)
तह गीत नाद अखारे संगा ॥ (७३६-१४, सूही, मः ५)
ऊहा संत करहि हरि रंगा ॥२॥ (७३६-१४, सूही, मः ५)
तह मरणु न जीवणु सोगु न हरखा ॥ (७३६-१५, सूही, मः ५)
साच नाम की अमृत वरखा ॥३॥ (७३६-१५, सूही, मः ५)
गुहज कथा इह गुर ते जाणी ॥ (७३६-१५, सूही, मः ५)
नानकु बोलै हरि हरि बाणी ॥४॥६॥१२॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७३६-१६)
जा कै दरसि पाप कोटि उतारे ॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)
भेटत संगि इहु भवजलु तारे ॥१॥ (७३६-१७, सूही, मः ५)
ओइ साजन ओइ मीत पिआरे ॥ (७३६-१७, सूही, मः ५)
जो हम कउ हरि नामु चितारे ॥१॥ रहाउ ॥ (७३६-१७, सूही, मः ५)
जा का सबदु सुनत सुख सारे ॥ (७३६-१८, सूही, मः ५)
जा की टहल जमदूत बिदारे ॥२॥ (७३६-१८, सूही, मः ५)
जा की धीरक इसु मनहि सधारे ॥ (७३६-१८, सूही, मः ५)
जा कै सिमरणि मुख उजलारे ॥३॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)
प्रभ के सेवक प्रभि आपि सवारे ॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)
सरणि नानक तिन्ह सद बलिहारे ॥४॥७॥१३॥ (७३६-१६, सूही, मः ५)

पन्ना ७४०

सूही महला ५ ॥ (७४०-१)
रहणु न पावहि सुरि नर देवा ॥ (७४०-१, सूही, मः ५)
ऊठि सिधारे करि मुनि जन सेवा ॥१॥ (७४०-१, सूही, मः ५)
जीवत पेखे जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥ (७४०-२, सूही, मः ५)
साधसंगि तिन्ही दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४०-२, सूही, मः ५)
बादिसाह साह वापारी मरना ॥ (७४०-३, सूही, मः ५)
जो दीसै सो कालहि खरना ॥२॥ (७४०-३, सूही, मः ५)
कूड़ै मोहि लपटि लपटाना ॥ (७४०-३, सूही, मः ५)
छोडि चलिआ ता फिरि पछुताना ॥३॥ (७४०-४, सूही, मः ५)
कृपा निधान नानक कउ करहु दाति ॥ (७४०-४, सूही, मः ५)
नामु तेरा जपी दिनु राति ॥४॥८॥१४॥ (७४०-५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४०-५)

घट घट अंतरि तुमहि बसारे ॥ (७४०-५, सूही, मः ५)
सगल समग्री सूति तुमारे ॥१॥ (७४०-५, सूही, मः ५)
तूं प्रीतम तूं प्रान अधारे ॥ (७४०-६, सूही, मः ५)
तुम ही पेखि पेखि मनु बिगसारे ॥१॥ रहाउ ॥ (७४०-६, सूही, मः ५)
अनिक जोनि भ्रमि भ्रमि भ्रमि हारे ॥ (७४०-७, सूही, मः ५)
ओट गही अब साध संगारे ॥२॥ (७४०-७, सूही, मः ५)
अगम अगोचरु अलख अपारे ॥ (७४०-७, सूही, मः ५)
नानकु सिमरै दिनु रैनारे ॥३॥६॥१५॥ (७४०-८, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४०-८)
कवन काज माइआ वडिआई ॥ (७४०-८, सूही, मः ५)
जा कउ बिनसत बार न काई ॥१॥ (७४०-८, सूही, मः ५)
इहु सुपना सोवत नही जानै ॥ (७४०-९, सूही, मः ५)
अचेत बिवसथा महि लपटानै ॥१॥ रहाउ ॥ (७४०-९, सूही, मः ५)
महा मोहि मोहिओ गावारा ॥ (७४०-१०, सूही, मः ५)
पेखत पेखत ऊठि सिधारा ॥२॥ (७४०-१०, सूही, मः ५)
ऊच ते ऊच ता का दरबारा ॥ (७४०-१०, सूही, मः ५)
कई जंत बिनाहि उपारा ॥३॥ (७४०-१०, सूही, मः ५)
दूसर होआ ना को होई ॥ (७४०-११, सूही, मः ५)
जपि नानक प्रभ एको सोई ॥४॥१०॥१६॥ (७४०-११, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४०-११)
सिमरि सिमरि ता कउ हउ जीवा ॥ (७४०-१२, सूही, मः ५)
चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा ॥१॥ (७४०-१२, सूही, मः ५)
सो हरि मेरा अंतरजामी ॥ (७४०-१२, सूही, मः ५)
भगत जना कै संगि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४०-१३, सूही, मः ५)
सुणि सुणि अमृत नामु धिआवा ॥ (७४०-१३, सूही, मः ५)
आठ पहर तेरे गुण गावा ॥२॥ (७४०-१३, सूही, मः ५)
पेखि पेखि लीला मनि आनंदा ॥ (७४०-१४, सूही, मः ५)
गुण अपार प्रभ परमानंदा ॥३॥ (७४०-१४, सूही, मः ५)
जा कै सिमरनि कछु भउ न बिआपै ॥ (७४०-१४, सूही, मः ५)
सदा सदा नानक हरि जापै ॥४॥११॥१७॥ (७४०-१५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४०-१५)
गुर कै बचनि रिदै धिआनु धारी ॥ (७४०-१५, सूही, मः ५)
रसना जापु जपउ बनवारी ॥१॥ (७४०-१६, सूही, मः ५)
सफल मूरति दरसन बलिहारी ॥ (७४०-१६, सूही, मः ५)
चरण कमल मन प्राण अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४०-१७, सूही, मः ५)

साधसंगि जनम मरण निवारी ॥ (७४०-१७, सूही, मः ५)
अमृत कथा सुणि करन अधारी ॥२॥ (७४०-१७, सूही, मः ५)
काम क्रोध लोभ मोह तजारी ॥ (७४०-१८, सूही, मः ५)
दृड़ु नाम दानु इसनानु सुचारी ॥३॥ (७४०-१८, सूही, मः ५)
कहु नानक इहु ततु बीचारी ॥ (७४०-१८, सूही, मः ५)
राम नाम जपि पारि उतारी ॥४॥१२॥१८॥ (७४०-१९, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४०-१९)
लोभि मोहि मगन अपराधी ॥ (७४०-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७४१

करणहार की सेव न साधी ॥१॥ (७४१-१, सूही, मः ५)
पतित पावन प्रभ नाम तुमारे ॥ (७४१-१, सूही, मः ५)
राखि लेहु मोहि निरगुनीआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (७४१-१, सूही, मः ५)
तूं दाता प्रभ अंतरजामी ॥ (७४१-२, सूही, मः ५)
काची देह मानुख अभिमानी ॥२॥ (७४१-२, सूही, मः ५)
सुआद बाद ईरख मद माइआ ॥ (७४१-२, सूही, मः ५)
इन संगि लागि रतन जनमु गवाइआ ॥३॥ (७४१-३, सूही, मः ५)
दुख भंजन जगजीवन हरि राइआ ॥ (७४१-३, सूही, मः ५)
सगल तिआगि नानकु सरणाइआ ॥४॥१३॥१९॥ (७४१-३, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४१-४)
पेखत चाखत कहीअत अंधा सुनीअत सुनीऐ नाही ॥ (७४१-४, सूही, मः ५)
निकटि वसतु कउ जाणै दूरे पापी पाप कमाही ॥१॥ (७४१-५, सूही, मः ५)
सो किछु करि जितु छुटहि परानी ॥ (७४१-५, सूही, मः ५)
हरि हरि नामु जपि अमृत बानी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४१-५, सूही, मः ५)
घोर महल सदा रंगि राता ॥ (७४१-६, सूही, मः ५)
संगि तुम्हारै कछू न जाता ॥२॥ (७४१-६, सूही, मः ५)
रखहि पोचारि माटी का भाँडा ॥ (७४१-७, सूही, मः ५)
अति कुचील मिलै जम डाँडा ॥३॥ (७४१-७, सूही, मः ५)
काम क्रोधि लोभि मोहि बाधा ॥ (७४१-७, सूही, मः ५)
महा गरत महि निघरत जाता ॥४॥ (७४१-८, सूही, मः ५)
नानक की अरदासि सुणीजै ॥ (७४१-८, सूही, मः ५)
डूबत पाहन प्रभ मेरे लीजै ॥५॥१४॥२०॥ (७४१-८, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४१-९)
जीवत मरै बुझै प्रभु सोइ ॥ (७४१-९, सूही, मः ५)
तिसु जन करमि परापति होइ ॥१॥ (७४१-९, सूही, मः ५)

सुणि साजन इउ दुतरु तरीऐ ॥ (७४१-९, सूही, मः ५)
मिलि साधू हरि नामु उचरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४१-१०, सूही, मः ५)
एक बिना दूजा नही जानै ॥ (७४१-१०, सूही, मः ५)
घट घट अंतरि पारब्रह्मु पछानै ॥२॥ (७४१-११, सूही, मः ५)
जो किछु करै सोई भल मानै ॥ (७४१-११, सूही, मः ५)
आदि अंत की कीमति जानै ॥३॥ (७४१-११, सूही, मः ५)
कहु नानक तिसु जन बलिहारी ॥ (७४१-१२, सूही, मः ५)
जा कै हिरदै वसहि मुरारी ॥४॥१५॥२१॥ (७४१-१२, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४१-१२)
गुरु परमेसरु करणैहारु ॥ (७४१-१२, सूही, मः ५)
सगल सृसटि कउ दे आधारु ॥१॥ (७४१-१३, सूही, मः ५)
गुर के चरण कमल मन धिआइ ॥ (७४१-१३, सूही, मः ५)
दूखु दरदु इसु तन ते जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४१-१३, सूही, मः ५)
भवजलि डूबत सतिगुरु काढै ॥ (७४१-१४, सूही, मः ५)
जनम जनम का टूटा गाढै ॥२॥ (७४१-१४, सूही, मः ५)
गुर की सेवा करहु दिनु राति ॥ (७४१-१५, सूही, मः ५)
सूख सहज मनि आवै साँति ॥३॥ (७४१-१५, सूही, मः ५)
सतिगुर की रेणु वडभागी पावै ॥ (७४१-१५, सूही, मः ५)
नानक गुर कउ सद बलि जावै ॥४॥१६॥२२॥ (७४१-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४१-१६)
गुर अपुने ऊपरि बलि जाईऐ ॥ (७४१-१६, सूही, मः ५)
आठ पहर हरि हरि जसु गाईऐ ॥१॥ (७४१-१७, सूही, मः ५)
सिमरउ सो प्रभु अपना सुआमी ॥ (७४१-१७, सूही, मः ५)
सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४१-१७, सूही, मः ५)
चरण कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (७४१-१८, सूही, मः ५)
साची पूरन निर्मल रीति ॥२॥ (७४१-१८, सूही, मः ५)
संत प्रसादि वसै मन माही ॥ (७४१-१८, सूही, मः ५)
जनम जनम के किलविख जाही ॥३॥ (७४१-१९, सूही, मः ५)
करि किरपा प्रभ दीन दइआला ॥ (७४१-१९, सूही, मः ५)
नानकु मागै संत रवाला ॥४॥१७॥२३॥ (७४१-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७४२

सूही महला ५ ॥ (७४२-१)
दरसनु देखि जीवा गुर तेरा ॥ (७४२-१, सूही, मः ५)
पूरन करमु होइ प्रभ मेरा ॥१॥ (७४२-१, सूही, मः ५)

इह बेनंती सुणि प्रभ मेरे ॥ (७४२-२, सूही, मः ५)
देहि नामु करि अपणे चेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (७४२-२, सूही, मः ५)
अपणी सरणि राखु प्रभ दाते ॥ (७४२-२, सूही, मः ५)
गुर प्रसादि किनै विरलै जाते ॥२॥ (७४२-३, सूही, मः ५)
सुनहु बिनउ प्रभ मेरे मीता ॥ (७४२-३, सूही, मः ५)
चरण कमल वसहि मेरै चीता ॥३॥ (७४२-३, सूही, मः ५)
नानकु एक करै अरदासि ॥ (७४२-४, सूही, मः ५)
विसरु नाही पूरन गुणतासि ॥४॥१८॥२४॥ (७४२-४, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४२-४)
मीतु साजनु सुत बंधप भाई ॥ (७४२-५, सूही, मः ५)
जत कत पेखउ हरि संगि सहाई ॥१॥ (७४२-५, सूही, मः ५)
जति मेरी पति मेरी धनु हरि नामु ॥ (७४२-५, सूही, मः ५)
सूख सहज आनंद बिसराम ॥१॥ रहाउ ॥ (७४२-६, सूही, मः ५)
पारब्रह्मु जपि पहिरि सनाह ॥ (७४२-६, सूही, मः ५)
कोटि आवध तिसु बेधत नाहि ॥२॥ (७४२-६, सूही, मः ५)
हरि चरन सरण गड़ कोट हमारै ॥ (७४२-७, सूही, मः ५)
कालु कंटकु जमु तिसु न बिदारै ॥३॥ (७४२-७, सूही, मः ५)
नानक दास सदा बलिहारी ॥ (७४२-७, सूही, मः ५)
सेवक संत राजा राम मुरारी ॥४॥१९॥२५॥ (७४२-८, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४२-८)
गुण गोपाल प्रभ के नित गाहा ॥ (७४२-८, सूही, मः ५)
अनद बिनोद मंगल सुख ताहा ॥१॥ (७४२-९, सूही, मः ५)
चलु सखीए प्रभु रावण जाहा ॥ (७४२-९, सूही, मः ५)
साध जना की चरणी पाहा ॥१॥ रहाउ ॥ (७४२-९, सूही, मः ५)
करि बेनती जन धूरि बाछाहा ॥ (७४२-१०, सूही, मः ५)
जनम जनम के किलविख लाहाँ ॥२॥ (७४२-१०, सूही, मः ५)
मनु तनु प्राण जीउ अरपाहा ॥ (७४२-११, सूही, मः ५)
हरि सिमरि सिमरि मानु मोहु कटाहाँ ॥३॥ (७४२-११, सूही, मः ५)
दीन दइआल करहु उतसाहा ॥ (७४२-११, सूही, मः ५)
नानक दास हरि सरणि समाहा ॥४॥२०॥२६॥ (७४२-१२, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४२-१२)
बैकुंठ नगरु जहा संत वासा ॥ (७४२-१२, सूही, मः ५)
प्रभ चरण कमल रिद माहि निवासा ॥१॥ (७४२-१३, सूही, मः ५)
सुणि मन तन तुझु सुखु दिखलावउ ॥ (७४२-१३, सूही, मः ५)
हरि अनिक बिंजन तुझु भोग भुंचावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४२-१३, सूही, मः ५)

अमृत नामु भुंचु मन माही ॥ (७४२-१४, सूही, मः ५)
अचरज साद ता के बरने न जाही ॥२॥ (७४२-१४, सूही, मः ५)
लोभु मूआ तृसना बुझि थाकी ॥ (७४२-१५, सूही, मः ५)
पारब्रह्म की सरणि जन ताकी ॥३॥ (७४२-१५, सूही, मः ५)
जनम जनम के भै मोह निवारे ॥ (७४२-१५, सूही, मः ५)
नानक दास प्रभ किरपा धारे ॥४॥२१॥२७॥ (७४२-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४२-१६)
अनिक बींग दास के परहरिआ ॥ (७४२-१६, सूही, मः ५)
करि किरपा प्रभि अपना करिआ ॥१॥ (७४२-१७, सूही, मः ५)
तुमहि छडाइ लीओ जनु अपना ॥ (७४२-१७, सूही, मः ५)
उरझि परिओ जालु जगु सुपना ॥१॥ रहाउ ॥ (७४२-१८, सूही, मः ५)
पर्बत दोख महा बिकराला ॥ (७४२-१८, सूही, मः ५)
खिन महि दूरि कीए दइआला ॥२॥ (७४२-१८, सूही, मः ५)
सोग रोग बिपति अति भारी ॥ (७४२-१९, सूही, मः ५)
दूरि भई जपि नामु मुरारी ॥३॥ (७४२-१९, सूही, मः ५)
दृसटि धारि लीनो लड़ि लाइ ॥ (७४२-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७४३

हरि चरण गहे नानक सरणाइ ॥४॥२२॥२८॥ (७४३-१, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४३-१)
दीनु छडाइ दुनी जो लाए ॥ (७४३-१, सूही, मः ५)
दुही सराई खुनामी कहाए ॥१॥ (७४३-२, सूही, मः ५)
जो तिसु भावै सो परवाणु ॥ (७४३-२, सूही, मः ५)
आपणी कुदरति आपे जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (७४३-२, सूही, मः ५)
सचा धरमु पुन्नु भला कराए ॥ (७४३-३, सूही, मः ५)
दीन कै तोसै दुनी न जाए ॥२॥ (७४३-३, सूही, मः ५)
सर्ब निरंतरि एको जागै ॥ (७४३-३, सूही, मः ५)
जितु जितु लाइआ तितु तितु को लागै ॥३॥ (७४३-४, सूही, मः ५)
अगम अगोचरु सचु साहिबु मेरा ॥ (७४३-४, सूही, मः ५)
नानकु बोलै बोलाइआ तेरा ॥४॥२३॥२९॥ (७४३-४, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४३-५)
प्रातहकालि हरि नामु उचारी ॥ (७४३-५, सूही, मः ५)
ईत ऊत की ओट सवारी ॥१॥ (७४३-५, सूही, मः ५)
सदा सदा जपीऐ हरि नाम ॥ (७४३-६, सूही, मः ५)
पूरन होवहि मन के काम ॥१॥ रहाउ ॥ (७४३-६, सूही, मः ५)

प्रभु अबिनासी रैणि दिनु गाउ ॥ (७४३-६, सूही, मः ५)
जीवत मरत निहचलु पावहि थाउ ॥२॥ (७४३-७, सूही, मः ५)
सो साहु सेवि जितु तोटि न आवै ॥ (७४३-७, सूही, मः ५)
खात खरचत सुखि अनदि विहावै ॥३॥ (७४३-७, सूही, मः ५)
जगजीवन पुरखु साधसंगि पाइआ ॥ (७४३-८, सूही, मः ५)
गुर प्रसादि नानक नामु धिआइआ ॥४॥२४॥३०॥ (७४३-८, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४३-९)
गुर पूरे जब भए दइआल ॥ (७४३-९, सूही, मः ५)
दुख बिनसे पूरन भई घाल ॥१॥ (७४३-९, सूही, मः ५)
पेखि पेखि जीवा दरसु तुम्हारा ॥ (७४३-१०, सूही, मः ५)
चरण कमल जाई बलिहारा ॥ (७४३-१०, सूही, मः ५)
तुझ बिनु ठाकुर कवनु हमारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७४३-१०, सूही, मः ५)
साधसंगति सिउ प्रीति बणि आई ॥ (७४३-११, सूही, मः ५)
पूरब करमि लिखत धुरि पाई ॥२॥ (७४३-११, सूही, मः ५)
जपि हरि हरि नामु अचरजु परताप ॥ (७४३-११, सूही, मः ५)
जालि न साकहि तीने ताप ॥३॥ (७४३-१२, सूही, मः ५)
निमख न बिसरहि हरि चरण तुम्हारे ॥ (७४३-१२, सूही, मः ५)
नानकु मागै दानु पिआरे ॥४॥२५॥३१॥ (७४३-१३, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४३-१३)
से संजोग करहु मेरे पिआरे ॥ (७४३-१३, सूही, मः ५)
जितु रसना हरि नामु उचारे ॥१॥ (७४३-१४, सूही, मः ५)
सुणि बेनती प्रभ दीन दइआला ॥ (७४३-१४, सूही, मः ५)
साध गावहि गुण सदा रसाला ॥१॥ रहाउ ॥ (७४३-१४, सूही, मः ५)
जीवन रूपु सिमरणु प्रभ तेरा ॥ (७४३-१५, सूही, मः ५)
जिसु कृपा करहि बसहि तिसु नेरा ॥२॥ (७४३-१५, सूही, मः ५)
जन की भूख तेरा नामु अहारु ॥ (७४३-१५, सूही, मः ५)
तूं दाता प्रभ देवणहारु ॥३॥ (७४३-१६, सूही, मः ५)
राम रमत संतन सुखु माना ॥ (७४३-१६, सूही, मः ५)
नानक देवनहार सुजाना ॥४॥२६॥३२॥ (७४३-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४३-१७)
बहती जात कदे दृसटि न धारत ॥ (७४३-१७, सूही, मः ५)
मिथिआ मोह बंधहि नित पारच ॥१॥ (७४३-१७, सूही, मः ५)
माधवे भजु दिन नित रैणी ॥ (७४३-१८, सूही, मः ५)
जनमु पदारथु जीति हरि सरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४३-१८, सूही, मः ५)
करत बिकार दोऊ कर झारत ॥ (७४३-१८, सूही, मः ५)

राम रतनु रिद तिलु नही धारत ॥२॥ (७४३-१९, सूही, मः ५)
भरण पोखण संगि अउध बिहाणी ॥ (७४३-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७४४

जै जगदीस की गति नही जाणी ॥३॥ (७४४-१, सूही, मः ५)
सरणि समरथ अगोचर सुआमी ॥ (७४४-१, सूही, मः ५)
उधरु नानक प्रभ अंतरजामी ॥४॥२७॥३३॥ (७४४-१, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४४-२)
साधसंगि तरै भै सागरु ॥ (७४४-२, सूही, मः ५)
हरि हरि नामु सिमरि रतनागरु ॥१॥ (७४४-२, सूही, मः ५)
सिमरि सिमरि जीवा नाराइण ॥ (७४४-३, सूही, मः ५)
दूख रोग सोग सभि बिनसे गुर पूरे मिलि पाप तजाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (७४४-३, सूही, मः ५)
जीवन पदवी हरि का नाउ ॥ (७४४-४, सूही, मः ५)
मनु तनु निरमलु साचु सुआउ ॥२॥ (७४४-४, सूही, मः ५)
आठ पहर पारब्रह्मु धिआईऐ ॥ (७४४-४, सूही, मः ५)
पूरबि लिखतु होइ ता पाईऐ ॥३॥ (७४४-५, सूही, मः ५)
सरणि पए जपि दीन दइआला ॥ (७४४-५, सूही, मः ५)
नानकु जाचै संत रवाला ॥४॥२८॥३४॥ (७४४-५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४४-६)
घर का काजु न जाणी रूड़ा ॥ (७४४-६, सूही, मः ५)
झूठै धंधै रचिओ मूड़ा ॥१॥ (७४४-६, सूही, मः ५)
जितु तूं लावहि तितु तितु लगना ॥ (७४४-६, सूही, मः ५)
जा तूं देहि तेरा नाउ जपना ॥१॥ रहाउ ॥ (७४४-७, सूही, मः ५)
हरि के दास हरि सेती राते ॥ (७४४-७, सूही, मः ५)
राम रसाइणि अनदिनु माते ॥२॥ (७४४-८, सूही, मः ५)
बाह पकरि प्रभि आपे काढे ॥ (७४४-८, सूही, मः ५)
जनम जनम के टूटे गाढे ॥३॥ (७४४-८, सूही, मः ५)
उधरु सुआमी प्रभ किरपा धारे ॥ (७४४-९, सूही, मः ५)
नानक दास हरि सरणि दुआरे ॥४॥२९॥३५॥ (७४४-९, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४४-९)
संत प्रसादि निहचलु घरु पाइआ ॥ (७४४-१०, सूही, मः ५)
सर्ब सूख फिरि नही डोलाइआ ॥१॥ (७४४-१०, सूही, मः ५)
गुरू धिआइ हरि चरन मनि चीन्े ॥ (७४४-१०, सूही, मः ५)
ता ते करतै असथिरु कीन्े ॥१॥ रहाउ ॥ (७४४-११, सूही, मः ५)
गुण गावत अचुत अबिनासी ॥ (७४४-११, सूही, मः ५)

ता ते काटी जम की फासी ॥२॥ (७४४-११, सूही, मः ५)
करि किरपा लीने लड़ि लाए ॥ (७४४-१२, सूही, मः ५)
सदा अनदु नानक गुण गाए ॥३॥३०॥३६॥ (७४४-१२, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४४-१३)
अमृत बचन साध की बाणी ॥ (७४४-१३, सूही, मः ५)
जो जो जपै तिस की गति होवै हरि हरि नामु नित रसन बखानी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४४-१३, सूही, मः ५)
कली काल के मिटे कलेसा ॥ (७४४-१४, सूही, मः ५)
एको नामु मन महि परवेसा ॥१॥ (७४४-१४, सूही, मः ५)
साधू धूरि मुखि मसतकि लाई ॥ (७४४-१४, सूही, मः ५)
नानक उधरे हरि गुर सरणाई ॥२॥३१॥३७॥ (७४४-१५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ घरु ३ ॥ (७४४-१५)
गोबिंदा गुण गाउ दइआला ॥ (७४४-१५, सूही, मः ५)
दरसनु देहु पूरन किरपाला ॥ रहाउ ॥ (७४४-१६, सूही, मः ५)
करि किरपा तुम ही प्रतिपाला ॥ (७४४-१६, सूही, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तुमरा माला ॥१॥ (७४४-१६, सूही, मः ५)
अमृत नामु चलै जपि नाला ॥ (७४४-१७, सूही, मः ५)
नानकु जाचै संत रवाला ॥२॥३२॥३८॥ (७४४-१७, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४४-१८)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (७४४-१८, सूही, मः ५)
आपे थम्मै सचा सोई ॥१॥ (७४४-१८, सूही, मः ५)
हरि हरि नामु मेरा आधारु ॥ (७४४-१८, सूही, मः ५)
करण कारण समरथु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ (७४४-१९, सूही, मः ५)
सभ रोग मिटावे नवा निरोआ ॥ (७४४-१९, सूही, मः ५)
नानक रखा आपे होआ ॥२॥३३॥३९॥ (७४४-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७४५

सूही महला ५ ॥ (७४५-१)
दरसन कउ लोचै सभु कोई ॥ (७४५-१, सूही, मः ५)
पूरै भागि परापति होई ॥ रहाउ ॥ (७४५-१, सूही, मः ५)
सिआम सुंदर तजि नीद किउ आई ॥ (७४५-२, सूही, मः ५)
महा मोहनी दूता लाई ॥१॥ (७४५-२, सूही, मः ५)
प्रेम बिछोहा करत कसाई ॥ (७४५-२, सूही, मः ५)
निरदै जंतु तिसु दइआ न पाई ॥२॥ (७४५-३, सूही, मः ५)
अनिक जनम बीतीअन भरमाई ॥ (७४५-३, सूही, मः ५)
घरि वासु न देवै दुतर माई ॥३॥ (७४५-३, सूही, मः ५)

दिनु रैनि अपना कीआ पाई ॥ (७४५-४, सूही, मः ५)
किसु दोसु न दीजै किरतु भवाई ॥४॥ (७४५-४, सूही, मः ५)
सुणि साजन संत जन भाई ॥ (७४५-४, सूही, मः ५)
चरण सरण नानक गति पाई ॥५॥३४॥४०॥ (७४५-५, सूही, मः ५)
रागु सूही महला ५ घरु ४ (७४५-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७४५-६)
भली सुहावी छापरी जा महि गुन गाए ॥ (७४५-७, सूही, मः ५)
कित ही कामि न धउलहर जितु हरि बिसराए ॥१॥ रहाउ ॥ (७४५-७, सूही, मः ५)
अनदु गरीबी साधसंगि जितु प्रभ चिति आए ॥ (७४५-८, सूही, मः ५)
जलि जाउ एहु बडपना माइआ लपटाए ॥१॥ (७४५-८, सूही, मः ५)
पीसनु पीसि ओढि कामरी सुखु मनु संतोखाए ॥ (७४५-९, सूही, मः ५)
ऐसो राजु न कितै काजि जितु नह त्रिपताए ॥२॥ (७४५-९, सूही, मः ५)
नगन फिरत रंगि एक कै ओहु सोभा पाए ॥ (७४५-९, सूही, मः ५)
पाट पटम्बर बिरथिआ जिह रचि लोभाए ॥३॥ (७४५-१०, सूही, मः ५)
सभु किछु तुम्रै हाथि प्रभ आपि करे कराए ॥ (७४५-१०, सूही, मः ५)
सासि सासि सिमरत रहा नानक दानु पाए ॥४॥१॥४१॥ (७४५-११, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४५-११)
हरि का संतु परान धन तिस का पनिहारा ॥ (७४५-१२, सूही, मः ५)
भाई मीत सुत सगल ते जीअ हूं ते पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (७४५-१२, सूही, मः ५)
केसा का करि बीजना संत चउरु ढुलावउ ॥ (७४५-१३, सूही, मः ५)
सीसु निहारउ चरण तलि धूरि मुखि लावउ ॥१॥ (७४५-१३, सूही, मः ५)
मिसट बचन बेनती करउ दीन की निआई ॥ (७४५-१४, सूही, मः ५)
तजि अभिमानु सरणी परउ हरि गुण निधि पाई ॥२॥ (७४५-१४, सूही, मः ५)
अवलोकन पुनह पुनह करउ जन का दरसारु ॥ (७४५-१५, सूही, मः ५)
अमृत बचन मन महि सिंचउ बंदउ बार बार ॥३॥ (७४५-१५, सूही, मः ५)
चितवउ मनि आसा करउ जन का संगु मागउ ॥ (७४५-१६, सूही, मः ५)
नानक कउ प्रभ दइआ करि दास चरणी लागउ ॥४॥२॥४२॥ (७४५-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४५-१७)
जिनि मोहे ब्रहमंड खंड ताहू महि पाउ ॥ (७४५-१७, सूही, मः ५)
राखि लेहु इहु बिखई जीउ देहु अपुना नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४५-१७, सूही, मः ५)
जा ते नाही को सुखी ता कै पाछै जाउ ॥ (७४५-१८, सूही, मः ५)
छोडि जाहि जो सगल कउ फिरि फिरि लपटाउ ॥१॥ (७४५-१८, सूही, मः ५)
करहु क्रिपा करुणापते तेरे हरि गुण गाउ ॥ (७४५-१९, सूही, मः ५)
नानक की प्रभ बेनती साधसंगि समाउ ॥२॥३॥४३॥ (७४५-१९, सूही, मः ५)

रागु सूही महला ५ घरु ५ पड़ताल (७४६-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७४६-२)
प्रीति प्रीति गुरीआ मोहन लालना ॥ (७४६-३, सूही, मः ५)
जपि मन गोबिंद एकै अवरु नही को लेखै संत लागु मनहि छाडु दुबिधा की कुरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४६-३, सूही, मः ५)
निरगुन हरीआ सरगुन धरीआ अनिक कोठरीआ भिन्न भिन्न भिन्न भिन करीआ ॥ (७४६-४, सूही, मः ५)
विचि मन कोटवरीआ ॥ (७४६-५, सूही, मः ५)
निज मंदरि पिरीआ ॥ (७४६-५, सूही, मः ५)
तहा आनद करीआ ॥ (७४६-५, सूही, मः ५)
नह मरीआ नह जरीआ ॥१॥ (७४६-६, सूही, मः ५)
किरतनि जुरीआ बहु बिधि फिरीआ पर कउ हिरीआ ॥ (७४६-६, सूही, मः ५)
बिखना घिरीआ ॥ (७४६-६, सूही, मः ५)
अब साधू संगि परीआ ॥ (७४६-७, सूही, मः ५)
हरि दुआरै खरीआ ॥ (७४६-७, सूही, मः ५)
दरसनु करीआ ॥ (७४६-७, सूही, मः ५)
नानक गुर मिरीआ ॥ (७४६-७, सूही, मः ५)
बहुरि न फिरीआ ॥२॥१॥४४॥ (७४६-८, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४६-८)
रासि मंडलु कीनो आखारा ॥ (७४६-८, सूही, मः ५)
सगलो साजि रखिओ पासारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७४६-८, सूही, मः ५)
बहु बिधि रूप रंग आपारा ॥ (७४६-९, सूही, मः ५)
पेखै खुसी भोग नही हारा ॥ (७४६-९, सूही, मः ५)
सभि रस लैत बसत निरारा ॥१॥ (७४६-९, सूही, मः ५)
बरनु चिहनु नाही मुखु न मासारा ॥ (७४६-१०, सूही, मः ५)
कहनु न जाई खेलु तुहारा ॥ (७४६-१०, सूही, मः ५)
नानक रेण संत चरनारा ॥२॥२॥४५॥ (७४६-१०, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४६-११)
तउ मै आइआ सरनी आइआ ॥ (७४६-११, सूही, मः ५)
भरोसै आइआ किरपा आइआ ॥ (७४६-११, सूही, मः ५)
जिउ भावै तिउ राखहु सुआमी मारगु गुरहि पठाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४६-१२, सूही, मः ५)
महा दुतरु माइआ ॥ (७४६-१२, सूही, मः ५)
जैसे पवनु झुलाइआ ॥१॥ (७४६-१३, सूही, मः ५)
सुनि सुनि ही डराइआ ॥ (७४६-१३, सूही, मः ५)

करते धरमराइआ ॥२॥ (७४६-१३, सूही, मः ५)
गृह अंध कूपाइआ ॥ (७४६-१४, सूही, मः ५)
पावकु सगराइआ ॥३॥ (७४६-१४, सूही, मः ५)
गही ओट साधाइआ ॥ (७४६-१४, सूही, मः ५)
नानक हरि धिआइआ ॥ (७४६-१४, सूही, मः ५)
अब मै पूरा पाइआ ॥४॥३॥४६॥ (७४६-१५, सूही, मः ५)
रागु सूही महला ५ घरु ६ (७४६-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७४६-१६)
सतिगुर पासि बेनंतीआ मिलै नामु आधारा ॥ (७४६-१७, सूही, मः ५)
तुठा सचा पातिसाहु तापु गइआ संसारा ॥१॥ (७४६-१७, सूही, मः ५)
भगता की टेक तूं संता की ओट तूं सचा सिरजनहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (७४६-१७, सूही, मः ५)
सचु तेरी सामगरी सचु तेरा दरबारा ॥ (७४६-१८, सूही, मः ५)
सचु तेरे खाजीनिआ सचु तेरा पासारा ॥२॥ (७४६-१९, सूही, मः ५)
तेरा रूपु अगम्मु है अनूपु तेरा दरसारा ॥ (७४६-१९, सूही, मः ५)
हउ कुरबाणी तेरिआ सेवका जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥३॥ (७४६-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७४७

सभे इछा पूरीआ जा पाइआ अगम अपारा ॥ (७४७-१, सूही, मः ५)
गुरु नानकु मिलिआ पारब्रह्मु तेरिआ चरणा कउ बलिहारा ॥४॥१॥४७॥ (७४७-२, सूही, मः ५)
रागु सूही महला ५ घरु ७ (७४७-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७४७-३)
तेरा भाणा तूहै मनाइहि जिस नो होहि दइआला ॥ (७४७-४, सूही, मः ५)
साई भगति जो तुधु भावै तूं सरब जीआ प्रतिपाला ॥१॥ (७४७-४, सूही, मः ५)
मेरे राम राइ संता टेक तुम्हारी ॥ (७४७-५, सूही, मः ५)
जो तुधु भावै सो परवाणु मनि तनि तूहै अधारी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४७-५, सूही, मः ५)
तूं दइआलु कृपालु कृपा निधि मनसा पूरणहारा ॥ (७४७-६, सूही, मः ५)
भगत तेरे सभि प्राणपति प्रीतम तूं भगतन का पिआरा ॥२॥ (७४७-६, सूही, मः ५)
तू अथाहु अपारु अति ऊचा कोई अवरु न तेरी भाते ॥ (७४७-७, सूही, मः ५)
इह अरदासि हमारी सुआमी विसरु नाही सुखदाते ॥३॥ (७४७-७, सूही, मः ५)
दिनु रैणि सासि सासि गुण गावा जे सुआमी तुधु भावा ॥ (७४७-८, सूही, मः ५)
नामु तेरा सुखु नानकु मागै साहिब तुठै पावा ॥४॥१॥४८॥ (७४७-८, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४७-९)
विसरहि नाही जितु तू कबहू सो थानु तेरा केहा ॥ (७४७-९, सूही, मः ५)
आठ पहर जितु तुधु धिआई निर्मल होवै देहा ॥१॥ (७४७-१०, सूही, मः ५)
मेरे राम हउ सो थानु भालण आइआ ॥ (७४७-१०, सूही, मः ५)

खोजत खोजत भइआ साधसंगु तिन्ह सरणाई पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४७-११, सूही, मः ५)
बेद पड़े पड़ि ब्रहमे हारे इकु तिलु नही कीमति पाई ॥ (७४७-११, सूही, मः ५)
साधिक सिध फिरहि बिललाते ते भी मोहे माई ॥२॥ (७४७-१२, सूही, मः ५)
दस अउतार राजे होइ वरते महादेव अउधूता ॥ (७४७-१२, सूही, मः ५)
तिन्ह भी अंतु न पाइओ तेरा लाइ थके बिभूता ॥३॥ (७४७-१३, सूही, मः ५)
सहज सूख आनंद नाम रस हरि संती मंगलु गाइआ ॥ (७४७-१३, सूही, मः ५)
सफल दरसनु भेटिओ गुर नानक ता मनि तनि हरि हरि धिआइआ ॥४॥२॥४९॥ (७४७-१४, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४७-१५)
कर्म धर्म पाखंड जो दीसहि तिन जमु जागाती लूटै ॥ (७४७-१५, सूही, मः ५)
निरबाण कीरतनु गावहु करते का निमख सिमरत जितु छूटै ॥१॥ (७४७-१६, सूही, मः ५)
संतहु सागरु पारि उतरीऐ ॥ (७४७-१६, सूही, मः ५)
जे को बचनु कमावै संतन का सो गुर परसादी तरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४७-१६, सूही, मः ५)
कोटि तीर्थ मजन इसनाना इसु कलि महि मैलु भरीजै ॥ (७४७-१७, सूही, मः ५)
साधसंगि जो हरि गुण गावै सो निरमलु करि लीजै ॥२॥ (७४७-१८, सूही, मः ५)
बेद कतेब सिमृति सभि सासत इन्ह पड़िआ मुकति न होई ॥ (७४७-१८, सूही, मः ५)
एकु अखरु जो गुरमुखि जापै तिस की निर्मल सोई ॥३॥ (७४७-१९, सूही, मः ५)
खत्री ब्राहमण सूद वैस उपदेसु चहु वरना कउ साझा ॥ (७४७-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७४८

गुरमुखि नामु जपै उधरै सो कलि महि घटि घटि नानक माझा ॥४॥३॥५०॥ (७४८-१, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४८-२)
जो किछु करै सोई प्रभ मानहि ओइ राम नाम रंगि राते ॥ (७४८-२, सूही, मः ५)
तिन्ह की सोभा सभनी थाई जिन्ह प्रभ के चरण पराते ॥१॥ (७४८-३, सूही, मः ५)
मेरे राम हरि संता जेवडु न कोई ॥ (७४८-३, सूही, मः ५)
भगता बणि आई प्रभ अपने सिउ जलि थलि महीअलि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (७४८-३, सूही, मः ५)
कोटि अप्राधी संतसंगि उधरै जमु ता कै नेड़ि न आवै ॥ (७४८-४, सूही, मः ५)
जनम जनम का बिछुड़िआ होवै तिन्ह हरि सिउ आणि मिलावै ॥२॥ (७४८-५, सूही, मः ५)
माइआ मोह भरमु भउ काटै संत सरणि जो आवै ॥ (७४८-५, सूही, मः ५)
जेहा मनोरथु करि आराधे सो संतन ते पावै ॥३॥ (७४८-६, सूही, मः ५)
जन की महिमा केतक बरनउ जो प्रभ अपने भाणे ॥ (७४८-६, सूही, मः ५)
कहु नानक जिन सतिगुरु भेटिआ से सभ ते भए निकाणे ॥४॥४॥५१॥ (७४८-७, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४८-८)
महा अगनि ते तुधु हाथ दे राखे पए तेरी सरणाई ॥ (७४८-८, सूही, मः ५)
तेरा माणु ताणु रिद अंतरि होर दूजी आस चुकाई ॥१॥ (७४८-८, सूही, मः ५)
मेरे राम राइ तुधु चिति आइऐ उबरे ॥ (७४८-९, सूही, मः ५)

तेरी टेक भरवासा तुम्हरा जपि नामु तुम्हारा उधरे ॥१॥ रहाउ ॥ (७४८-९, सूही, मः ५)
अंध कूप ते काढि लीए तुम्ह आपि भए किरपाला ॥ (७४८-१०, सूही, मः ५)
सारि सम्हालि सर्ब सुख दीए आपि करे प्रतिपाला ॥२॥ (७४८-११, सूही, मः ५)
आपणी नदरि करे परमेसरु बंधन काटि छडाए ॥ (७४८-११, सूही, मः ५)
आपणी भगति प्रभि आपि कराई आपे सेवा लाए ॥३॥ (७४८-१२, सूही, मः ५)
भरमु गइआ भै मोह बिनासे मिटिआ सगल विसूरा ॥ (७४८-१२, सूही, मः ५)
नानक दइआ करी सुखदातै भेटिआ सतिगुरु पूरा ॥४॥५॥५२॥ (७४८-१३, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४८-१४)
जब कछु न सीओ तब किआ करता कवन कर्म करि आइआ ॥ (७४८-१४, सूही, मः ५)
अपना खेलु आपि करि देखै ठाकुरि रचनु रचाइआ ॥१॥ (७४८-१४, सूही, मः ५)
मेरे राम राइ मुझ ते कछू न होई ॥ (७४८-१५, सूही, मः ५)
आपे करता आपि कराए सर्ब निरंतरि सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (७४८-१५, सूही, मः ५)
गणती गणी न छूटै कतहू काची देह इआणी ॥ (७४८-१६, सूही, मः ५)
कृपा करहु प्रभ करणैहारे तेरी बखस निराली ॥२॥ (७४८-१६, सूही, मः ५)
जीअ जंत सभ तेरे कीते घटि घटि तुही धिआईऐ ॥ (७४८-१७, सूही, मः ५)
तेरी गति मिति तूहै जाणहि कुदरति कीम न पाईऐ ॥३॥ (७४८-१७, सूही, मः ५)
निरगुणु मुगधु अजाणु अगिआनी कर्म धर्म नही जाणा ॥ (७४८-१८, सूही, मः ५)
दइआ करहु नानकु गुण गावै मिठा लगै तेरा भाणा ॥४॥६॥५३॥ (७४८-१९, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४८-१९)

पन्ना ७४९

भागठड़े हरि संत तुम्हारे जिन्ह घरि धनु हरि नामा ॥ (७४९-१, सूही, मः ५)
परवाणु गणी सेई इह आए सफल तिना के कामा ॥१॥ (७४९-१, सूही, मः ५)
मेरे राम हरि जन कै हउ बलि जाई ॥ (७४९-२, सूही, मः ५)
केसा का करि चवरु ढुलावा चरण धूड़ि मुखि लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७४९-२, सूही, मः ५)
जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ (७४९-३, सूही, मः ५)
जीअ दानु दे भगती लाइनि हरि सिउ लैनि मिलाए ॥२॥ (७४९-३, सूही, मः ५)
सचा अमरु सची पातिसाही सचे सेती राते ॥ (७४९-४, सूही, मः ५)
सचा सुखु सची वडिआई जिस के से तिनि जाते ॥३॥ (७४९-४, सूही, मः ५)
पखा फेरी पाणी ढोवा हरि जन कै पीसणु पीसि कमावा ॥ (७४९-५, सूही, मः ५)
नानक की प्रभ पासि बेनंती तेरे जन देखणु पावा ॥४॥७॥५४॥ (७४९-५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४९-६)
पारब्रह्म परमेसर सतिगुर आपे करणैहारा ॥ (७४९-६, सूही, मः ५)
चरण धूड़ि तेरी सेवकु मागै तेरे दरसन कउ बलिहारा ॥१॥ (७४९-७, सूही, मः ५)
मेरे राम राइ जिउ राखहि तिउ रहीऐ ॥ (७४९-७, सूही, मः ५)

तुधु भावै ता नामु जपावहि सुखु तेरा दिता लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (७४६-८, सूही, मः ५)
मुकति भुगति जुगति तेरी सेवा जिसु तूं आपि कराइहि ॥ (७४६-८, सूही, मः ५)
तहा बैकुंठु जह कीरतनु तेरा तूं आपे सरधा लाइहि ॥२॥ (७४६-६, सूही, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि नामु जीवा तनु मनु होइ निहाला ॥ (७४६-६, सूही, मः ५)
चरण कमल तेरे धोइ धोइ पीवा मेरे सतिगुर दीन दइआला ॥३॥ (७४६-१०, सूही, मः ५)
कुरबाणु जाई उसु वेला सुहावी जितु तुमरै दुआरै आइआ ॥ (७४६-११, सूही, मः ५)
नानक कउ प्रभ भए कृपाला सतिगुरु पूरा पाइआ ॥४॥८॥५५॥ (७४६-११, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४६-१२)
तुधु चिति आए महा अनंदा जिसु विसरहि सो मरि जाए ॥ (७४६-१२, सूही, मः ५)
दइआलु होवहि जिसु ऊपरि करते सो तुधु सदा धिआए ॥१॥ (७४६-१३, सूही, मः ५)
मेरे साहिब तूं मै माणु निमाणी ॥ (७४६-१३, सूही, मः ५)
अरदासि करी प्रभ अपने आगै सुणि सुणि जीवा तेरी बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (७४६-१४, सूही, मः ५)
चरण धूड़ि तेरे जन की होवा तेरे दरसन कउ बलि जाई ॥ (७४६-१४, सूही, मः ५)
अमृत बचन रिदै उरि धारी तउ किरपा ते संगु पाई ॥२॥ (७४६-१५, सूही, मः ५)
अंतर की गति तुधु पहि सारी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ (७४६-१६, सूही, मः ५)
जिस नो लाइ लैहि सो लागै भगतु तुहारा सोई ॥३॥ (७४६-१६, सूही, मः ५)
दुइ कर जोड़ि मागउ इकु दाना साहिबि तुठै पावा ॥ (७४६-१७, सूही, मः ५)
सासि सासि नानकु आराधे आठ पहर गुण गावा ॥४॥६॥५६॥ (७४६-१७, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७४६-१८)
जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ (७४६-१८, सूही, मः ५)
बोलि न जाणै माइआ मदि माता मरणा चीति न आवै ॥१॥ (७४६-१६, सूही, मः ५)
मेरे राम राइ तूं संता का संत तेरे ॥ (७४६-१६, सूही, मः ५)

पन्ना ७५०

तेरे सेवक कउ भउ किछु नाही जमु नही आवै नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (७५०-१, सूही, मः ५)
जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन् का जनम मरण दुखु नासा ॥ (७५०-१, सूही, मः ५)
तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर का दिलासा ॥२॥ (७५०-२, सूही, मः ५)
नामु धिआइनि सुख फल पाइनि आठ पहर आराधहि ॥ (७५०-२, सूही, मः ५)
तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट लै साधहि ॥३॥ (७५०-३, सूही, मः ५)
गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥ (७५०-३, सूही, मः ५)
सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥४॥१०॥५७॥ (७५०-४, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७५०-५)
सगल तिआगि गुर सरणी आइआ राखहु राखनहारे ॥ (७५०-५, सूही, मः ५)
जितु तू लावहि तितु हम लागह किआ एहि जंत विचारे ॥१॥ (७५०-५, सूही, मः ५)
मेरे राम जी तूं प्रभ अंतरजामी ॥ (७५०-६, सूही, मः ५)

करि किरपा गुरदेव दइआला गुण गावा नित सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (७५०-६, सूही, मः ५)
आठ पहर प्रभु अपना धिआईऐ गुर प्रसादि भउ तरीऐ ॥ (७५०-७, सूही, मः ५)
आपु तिआगि होईऐ सभ रेणा जीवतिआ इउ मरीऐ ॥२॥ (७५०-८, सूही, मः ५)
सफल जनमु तिस का जग भीतरि साधसंगि नाउ जापे ॥ (७५०-८, सूही, मः ५)
सगल मनोरथ तिस के पूरन जिसु दइआ करे प्रभु आपे ॥३॥ (७५०-९, सूही, मः ५)
दीन दइआल कृपाल प्रभ सुआमी तेरी सरणि दइआला ॥ (७५०-१०, सूही, मः ५)
करि किरपा अपना नामु दीजै नानक साध रवाला ॥४॥११॥५८॥ (७५०-१०, सूही, मः ५)
रागु सूही असटपदीआ महला १ घरु १ (७५०-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५०-१२)
सभि अवगण मै गुणु नही कोई ॥ (७५०-१३, सूही, मः १)
किउ करि कंत मिलावा होई ॥१॥ (७५०-१३, सूही, मः १)
ना मै रूपु न बंके नैणा ॥ (७५०-१३, सूही, मः १)
ना कुल ढंगु न मीठे बैणा ॥१॥ रहाउ ॥ (७५०-१३, सूही, मः १)
सहजि सीगार कामणि करि आवै ॥ (७५०-१४, सूही, मः १)
ता सोहागणि जा कंतै भावै ॥२॥ (७५०-१४, सूही, मः १)
ना तिसु रूपु न रेखिआ काई ॥ (७५०-१५, सूही, मः १)
अंति न साहिबु सिमरिआ जाई ॥३॥ (७५०-१५, सूही, मः १)
सुरति मति नाही चतुराई ॥ (७५०-१५, सूही, मः १)
करि किरपा प्रभ लावहु पाई ॥४॥ (७५०-१६, सूही, मः १)
खरी सिआणी कंत न भाणी ॥ (७५०-१६, सूही, मः १)
माइआ लागी भरमि भुलाणी ॥५॥ (७५०-१६, सूही, मः १)
हउमै जाई ता कंत समाई ॥ (७५०-१७, सूही, मः १)
तउ कामणि पिआरे नव निधि पाई ॥६॥ (७५०-१७, सूही, मः १)
अनिक जनम बिछुरत दुखु पाइआ ॥ (७५०-१७, सूही, मः १)
करु गहि लेहु प्रीतम प्रभ राइआ ॥७॥ (७५०-१८, सूही, मः १)
भणति नानकु सहु है भी होसी ॥ (७५०-१८, सूही, मः १)
जै भावै पिआरा तै रावेसी ॥८॥१॥ (७५०-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७५१

सूही महला १ घरु ९ (७५१-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५१-१)
कचा रंगु कसुम्भ का थोड़ड़िआ दिन चारि जीउ ॥ (७५१-२, सूही, मः १)
विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि जीउ ॥ (७५१-२, सूही, मः १)
सचे सेती रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ ॥१॥ (७५१-३, सूही, मः १)
रंगे का किआ रंगीऐ जो रते रंगु लाइ जीउ ॥ (७५१-३, सूही, मः १)

रंगण वाला सेवीऐ सचे सिउ चितु लाइ जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७५१-३, सूही, मः १)
चारे कुंडा जे भवहि बिनु भागा धनु नाहि जीउ ॥ (७५१-४, सूही, मः १)
अवगणि मुठी जे फिरहि बधिक थाइ न पाहि जीउ ॥ (७५१-५, सूही, मः १)
गुरि राखे से उबरे सबदि रते मन माहि जीउ ॥२॥ (७५१-५, सूही, मः १)
चिटे जिन के कपड़े मैले चित कठोर जीउ ॥ (७५१-६, सूही, मः १)
तिन मुखि नामु न ऊपजै दूजै विआपे चोर जीउ ॥ (७५१-६, सूही, मः १)
मूलु न बूझहि आपणा से पसूआ से ढोर जीउ ॥३॥ (७५१-७, सूही, मः १)
नित नित खुसीआ मनु करे नित नित मंगै सुख जीउ ॥ (७५१-७, सूही, मः १)
करता चिति न आवई फिरि फिरि लगहि दुख जीउ ॥ (७५१-८, सूही, मः १)
सुख दुख दाता मनि वसै तितु तनि कैसी भुख जीउ ॥४॥ (७५१-८, सूही, मः १)
बाकी वाला तलबीऐ सिरि मारे जंदारु जीउ ॥ (७५१-६, सूही, मः १)
लेखा मंगै देवणा पुछै करि बीचारु जीउ ॥ (७५१-६, सूही, मः १)
सचे की लिव उबरै बखसे बखसणहारु जीउ ॥५॥ (७५१-१०, सूही, मः १)
अन को कीजै मितड़ा खाकु रलै मरि जाइ जीउ ॥ (७५१-१०, सूही, मः १)
बहु रंग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ ॥ (७५१-११, सूही, मः १)
नदरि प्रभू ते छुटीऐ नदरी मेलि मिलाइ जीउ ॥६॥ (७५१-११, सूही, मः १)
गाफल गिआन विहूणिआ गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ ॥ (७५१-१२, सूही, मः १)
खिंचोताणि विगुचीऐ बुरा भला दुइ नालि जीउ ॥ (७५१-१२, सूही, मः १)
बिनु सबदै भै रतिआ सभ जोही जमकालि जीउ ॥७॥ (७५१-१३, सूही, मः १)
जिनि करि कारणु धारिआ सभसै देइ आधारु जीउ ॥ (७५१-१३, सूही, मः १)
सो किउ मनहु विसारीऐ सदा सदा दातारु जीउ ॥ (७५१-१४, सूही, मः १)
नानक नामु न वीसरै निधारा आधारु जीउ ॥८॥१॥२॥ (७५१-१४, सूही, मः १)
सूही महला १ काफी घरु १० (७५१-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५१-१६)
माणस जनमु दुलम्भु गुरमुखि पाइआ ॥ (७५१-१७, सूही काफी, मः १)
मनु तनु होइ चुलम्भु जे सतिगुर भाइआ ॥१॥ (७५१-१७, सूही काफी, मः १)
चलै जनमु सवारि वखरु सचु लै ॥ (७५१-१७, सूही काफी, मः १)
पति पाए दरबारि सतिगुर सबदि भै ॥१॥ रहाउ ॥ (७५१-१८, सूही काफी, मः १)
मनि तनि सचु सलाहि साचे मनि भाइआ ॥ (७५१-१८, सूही काफी, मः १)

पन्ना ७५२

लालि रता मनु मानिआ गुरु पूरा पाइआ ॥२॥ (७५२-१, सूही काफी, मः १)
हउ जीवा गुण सारि अंतरि तू वसै ॥ (७५२-१, सूही काफी, मः १)
तूं वसहि मन माहि सहजे रसि रसै ॥३॥ (७५२-२, सूही काफी, मः १)
मूरख मन समझाइ आखउ केतड़ा ॥ (७५२-२, सूही काफी, मः १)

गुरमुखि हरि गुण गाइ रंगि रंगेतड़ा ॥४॥ (७५२-२, सूही काफी, मः १)
नित नित रिदै समालि प्रीतमु आपणा ॥ (७५२-३, सूही काफी, मः १)
जे चलहि गुण नालि नाही दुखु संतापणा ॥५॥ (७५२-३, सूही काफी, मः १)
मनमुख भरमि भुलाणा ना तिसु रंगु है ॥ (७५२-४, सूही काफी, मः १)
मरसी होइ विडाणा मनि तनि भंगु है ॥६॥ (७५२-४, सूही काफी, मः १)
गुर की कार कमाइ लाहा घरि आणिआ ॥ (७५२-५, सूही काफी, मः १)
गुरबाणी निरबाणु सबदि पछाणिआ ॥७॥ (७५२-५, सूही काफी, मः १)
इक नानक की अरदासि जे तुधु भावसी ॥ (७५२-६, सूही काफी, मः १)
मै दीजै नाम निवासु हरि गुण गावसी ॥८॥१॥३॥ (७५२-६, सूही काफी, मः १)
सूही महला १ ॥ (७५२-७)
जिउ आरणि लोहा पाइ भंनि घड़ाईऐ ॥ (७५२-७, सूही, मः १)
तिउ साकतु जोनी पाइ भवै भवाईऐ ॥१॥ (७५२-७, सूही, मः १)
बिनु बूझे सभु दुखु दुखु कमावणा ॥ (७५२-८, सूही, मः १)
हउमै आवै जाइ भरमि भुलावणा ॥१॥ रहाउ ॥ (७५२-८, सूही, मः १)
तूं गुरमुखि रखणहारु हरि नामु धिआईऐ ॥ (७५२-८, सूही, मः १)
मेलहि तुझहि रजाइ सबदु कमाईऐ ॥२॥ (७५२-९, सूही, मः १)
तूं करि करि वेखहि आपि देहि सु पाईऐ ॥ (७५२-९, सूही, मः १)
तू देखहि थापि उथापि दरि बीनाईऐ ॥३॥ (७५२-१०, सूही, मः १)
देही होवगि खाकु पवणु उडाईऐ ॥ (७५२-१०, सूही, मः १)
इहु किथै घरु अउताकु महलु न पाईऐ ॥४॥ (७५२-११, सूही, मः १)
दिहु दीवी अंध घोरु घबु मुहाईऐ ॥ (७५२-११, सूही, मः १)
गरबि मुसै घरु चोरु किसु रूआईऐ ॥५॥ (७५२-१२, सूही, मः १)
गुरमुखि चोरु न लागि हरि नामि जगाईऐ ॥ (७५२-१२, सूही, मः १)
सबदि निवारी आगि जोति दीपाईऐ ॥६॥ (७५२-१२, सूही, मः १)
लालु रतनु हरि नामु गुरि सुरति बुझाईऐ ॥ (७५२-१३, सूही, मः १)
सदा रहै निहकामु जे गुरमति पाईऐ ॥७॥ (७५२-१३, सूही, मः १)
राति दिहै हरि नाउ मंनि वसाईऐ ॥ (७५२-१४, सूही, मः १)
नानक मेलि मिलाइ जे तुधु भाईऐ ॥८॥२॥४॥ (७५२-१४, सूही, मः १)
सूही महला १ ॥ (७५२-१५)
मनहु न नामु विसारि अहिनिसि धिआईऐ ॥ (७५२-१५, सूही, मः १)
जिउ राखहि किरपा धारि तिवै सुखु पाईऐ ॥१॥ (७५२-१५, सूही, मः १)
मै अंधुले हरि नामु लकुटी टोहणी ॥ (७५२-१६, सूही, मः १)
रहउ साहिब की टेक न मोहै मोहणी ॥१॥ रहाउ ॥ (७५२-१६, सूही, मः १)
जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ ॥ (७५२-१७, सूही, मः १)
अंतरि बाहरि भालि सबदि निहालिआ ॥२॥ (७५२-१७, सूही, मः १)

सेवी सतिगुर भाइ नामु निरंजना ॥ (७५२-१७, सूही, मः १)
तुधु भावै तिवै रजाइ भरमु भउ भंजना ॥३॥ (७५२-१८, सूही, मः १)
जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ कै ॥ (७५२-१८, सूही, मः १)
जनमु मरणु परवाणु हरि गुण गाइ कै ॥४॥ (७५२-१९, सूही, मः १)
हउ नाही तू होवहि तुध ही साजिआ ॥ (७५२-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७५३

आपे थापि उथापि सबदि निवाजिआ ॥५॥ (७५३-१, सूही, मः १)
देही भसम रुलाइ न जापी कह गइआ ॥ (७५३-१, सूही, मः १)
आपे रहिआ समाइ सो विसमादु भइआ ॥६॥ (७५३-२, सूही, मः १)
तूं नाही प्रभ दूरि जाणहि सभ तू है ॥ (७५३-२, सूही, मः १)
गुरमुखि वेखि हदूरि अंतरि भी तू है ॥७॥ (७५३-२, सूही, मः १)
मै दीजै नाम निवासु अंतरि साँति होइ ॥ (७५३-३, सूही, मः १)
गुण गावै नानक दासु सतिगुरु मति देइ ॥८॥३॥५॥ (७५३-३, सूही, मः १)
रागु सूही महला ३ घरु १ असटपदीआ (७५३-५)
१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५३-५)
नामै ही ते सभु किछु होआ बिनु सतिगुर नामु न जापै ॥ (७५३-६, सूही, मः ३)
गुर का सबदु महा रसु मीठा बिनु चाखे सादु न जापै ॥ (७५३-६, सूही, मः ३)
कउडी बदलै जनमु गवाइआ चीनसि नाही आपै ॥ (७५३-७, सूही, मः ३)
गुरमुखि होवै ता एको जाणै हउमै दुखु न संतापै ॥१॥ (७५३-७, सूही, मः ३)
बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि साचे सिउ लिव लाई ॥ (७५३-८, सूही, मः ३)
सबदु चीन्हि आतमु परगासिआ सहजे रहिआ समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७५३-८, सूही, मः ३)
गुरमुखि गावै गुरमुखि बूझै गुरमुखि सबदु बीचारे ॥ (७५३-९, सूही, मः ३)
जीउ पिंडु सभु गुर ते उपजै गुरमुखि कारज सवारे ॥ (७५३-१०, सूही, मः ३)
मनमुखि अंधा अंधु कमावै बिखु खटे संसारे ॥ (७५३-१०, सूही, मः ३)
माइआ मोहि सदा दुखु पाए बिनु गुर अति पिआरे ॥२॥ (७५३-११, सूही, मः ३)
सोई सेवकु जे सतिगुर सेवे चालै सतिगुर भाए ॥ (७५३-११, सूही, मः ३)
साचा सबदु सिफति है साची साचा मंनि वसाए ॥ (७५३-१२, सूही, मः ३)
सची बाणी गुरमुखि आखै हउमै विचहु जाए ॥ (७५३-१२, सूही, मः ३)
आपे दाता करमु है साचा साचा सबदु सुणाए ॥३॥ (७५३-१३, सूही, मः ३)
गुरमुखि घाले गुरमुखि खटे गुरमुखि नामु जपाए ॥ (७५३-१३, सूही, मः ३)
सदा अलिपतु साचै रंगि राता गुर कै सहजि सुभाए ॥ (७५३-१४, सूही, मः ३)
मनमुखु सद ही कूड़ो बोलै बिखु बीजै बिखु खाए ॥ (७५३-१४, सूही, मः ३)
जमकालि बाधा तृसना दाधा बिनु गुर कवणु छडाए ॥४॥ (७५३-१५, सूही, मः ३)
सचा तीरथु जितु सत सरि नावणु गुरमुखि आपि बुझाए ॥ (७५३-१५, सूही, मः ३)

अठसठि तीर्थ गुर सबदि दिखाए तितु नातै मलु जाए ॥ (७५३-१६, सूही, मः ३)
सचा सबदु सचा है निरमलु ना मलु लगै न लाए ॥ (७५३-१६, सूही, मः ३)
सची सिफति सची सालाह पूरे गुर ते पाए ॥५॥ (७५३-१७, सूही, मः ३)
तनु मनु सभु किछु हरि तिसु केरा दुरमति कहणु न जाए ॥ (७५३-१७, सूही, मः ३)
हुकमु होवै ता निरमलु होवै हउमै विचहु जाए ॥ (७५३-१८, सूही, मः ३)
गुर की साखी सहजे चाखी तृसना अगनि बुझाए ॥ (७५३-१८, सूही, मः ३)
गुर कै सबदि राता सहजे माता सहजे रहिआ समाए ॥६॥ (७५३-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७५४

हरि का नामु सति करि जाणै गुर कै भाइ पिआरे ॥ (७५४-१, सूही, मः ३)
सची वडिआई गुर ते पाई सचै नाइ पिआरे ॥ (७५४-१, सूही, मः ३)
एको सचा सभ महि वरतै विरला को वीचारे ॥ (७५४-२, सूही, मः ३)
आपे मेलि लए ता बखसे सची भगति सवारे ॥७॥ (७५४-२, सूही, मः ३)
सभो सचु सचु सचु वरतै गुरमुखि कोई जाणै ॥ (७५४-३, सूही, मः ३)
जम्मण मरणा हुकमो वरतै गुरमुखि आपु पछाणै ॥ (७५४-३, सूही, मः ३)
नामु धिआए ता सतिगुरु भाए जो इछै सो फलु पाए ॥ (७५४-४, सूही, मः ३)
नानक तिस दा सभु किछु होवै जि विचहु आपु गवाए ॥८॥१॥ (७५४-४, सूही, मः ३)
सूही महला ३ ॥ (७५४-५)
काइआ कामणि अति सुआल्उि पिरु वसै जिसु नाले ॥ (७५४-५, सूही, मः ३)
पिर सचे ते सदा सुहागणि गुर का सबदु सम्हाले ॥ (७५४-५, सूही, मः ३)
हरि की भगति सदा रंगि राता हउमै विचहु जाले ॥१॥ (७५४-६, सूही, मः ३)
वाहु वाहु पूरे गुर की बाणी ॥ (७५४-७, सूही, मः ३)
पूरे गुर ते उपजी साचि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (७५४-७, सूही, मः ३)
काइआ अंदरि सभु किछु वसै खंड मंडल पाताला ॥ (७५४-७, सूही, मः ३)
काइआ अंदरि जगजीवन दाता वसै सभना करे प्रतिपाला ॥ (७५४-८, सूही, मः ३)
काइआ कामणि सदा सुहेली गुरमुखि नामु सम्हाला ॥२॥ (७५४-९, सूही, मः ३)
काइआ अंदरि आपे वसै अलखु न लखिआ जाई ॥ (७५४-९, सूही, मः ३)
मनमुखु मुगधु बूझै नाही बाहरि भालणि जाई ॥ (७५४-१०, सूही, मः ३)
सतिगुरु सेवे सदा सुखु पाए सतिगुरि अलखु दिता लखाई ॥३॥ (७५४-१०, सूही, मः ३)
काइआ अंदरि रतन पदार्थ भगति भरे भंडारा ॥ (७५४-११, सूही, मः ३)
इसु काइआ अंदरि नउखंड पृथमी हाट पटण बाजारा ॥ (७५४-११, सूही, मः ३)
इसु काइआ अंदरि नामु नउ निधि पाईऐ गुर कै सबदि वीचारा ॥४॥ (७५४-१२, सूही, मः ३)
काइआ अंदरि तोलि तुलावै आपे तोलणहारा ॥ (७५४-१३, सूही, मः ३)
इहु मनु रतनु जवाहर माणकु तिस का मोलु अफारा ॥ (७५४-१३, सूही, मः ३)
मोलि कित ही नामु पाईऐ नाही नामु पाईऐ गुर बीचारा ॥५॥ (७५४-१४, सूही, मः ३)

गुरमुखि होवै सु काइआ खोजै होर सभ भरमि भुलाई ॥ (७५४-१४, सूही, मः ३)
जिस नो देइ सोई जनु पावै होर किआ को करे चतुराई ॥ (७५४-१५, सूही, मः ३)
काइआ अंदरि भउ भाउ वसै गुर परसादी पाई ॥६॥ (७५४-१५, सूही, मः ३)
काइआ अंदरि ब्रह्मा बिसनु महेसा सभ ओपति जितु संसारा ॥ (७५४-१६, सूही, मः ३)
सचै आपणा खेलु रचाइआ आवा गउणु पासारा ॥ (७५४-१७, सूही, मः ३)
पूरै सतिगुरि आपि दिखाइआ सचि नामि निसतारा ॥७॥ (७५४-१७, सूही, मः ३)
सा काइआ जो सतिगुरु सेवै सचै आपि सवारी ॥ (७५४-१८, सूही, मः ३)
विणु नावै दरि ढोई नाही ता जमु करे खुआरी ॥ (७५४-१८, सूही, मः ३)
नानक सचु वडिआई पाए जिस नो हरि किरपा धारी ॥८॥२॥ (७५४-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७५५

रागु सूही महला ३ घरु १०   (७५५-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५५-१)
दुनीआ न सालाहि जो मरि वंञसी ॥ (७५५-२, सूही, मः ३)
लोका न सालाहि जो मरि खाकु थीई ॥१॥ (७५५-२, सूही, मः ३)
वाहु मेरे साहिबा वाहु ॥ (७५५-२, सूही, मः ३)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचा वेपरवाहु ॥१॥ रहाउ ॥ (७५५-३, सूही, मः ३)
दुनीआ केरी दोसती मनमुख दझि मरंनि ॥ (७५५-३, सूही, मः ३)
जम पुरि बधे मारीअहि वेला न लाहंनि ॥२॥ (७५५-४, सूही, मः ३)
गुरमुखि जनमु सकारथा सचै सबदि लगंनि ॥ (७५५-४, सूही, मः ३)
आतम रामु प्रगासिआ सहजे सुखि रहंनि ॥३॥ (७५५-४, सूही, मः ३)
गुर का सबदु विसारिआ दूजै भाइ रचंनि ॥ (७५५-५, सूही, मः ३)
तिसना भुख न उतरै अनदिनु जलत फिरंनि ॥४॥ (७५५-५, सूही, मः ३)
दुसटा नालि दोसती नालि संता वैरु करंनि ॥ (७५५-६, सूही, मः ३)
आपि डुबे कुटम्ब सिउ सगले कुल डोबंनि ॥५॥ (७५५-६, सूही, मः ३)
निंदा भली किसै की नाही मनमुख मुगध करंनि ॥ (७५५-७, सूही, मः ३)
मुह काले तिन निंदका नरके घोरि पवंनि ॥६॥ (७५५-७, सूही, मः ३)
ए मन जैसा सेवहि तैसा होवहि तेहे कर्म कमाइ ॥ (७५५-८, सूही, मः ३)
आपि बीजि आपे ही खावणा कहणा किछू न जाइ ॥७॥ (७५५-८, सूही, मः ३)
महा पुरखा का बोलणा होवै कितै परथाइ ॥ (७५५-९, सूही, मः ३)
ओइ अमृत भरे भरपूर हहि ओना तिलु न तमाइ ॥८॥ (७५५-९, सूही, मः ३)
गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥ (७५५-१०, सूही, मः ३)
से वडभागी जि ओना मिलि रहे अनदिनु नामु लएनि ॥९॥ (७५५-१०, सूही, मः ३)
देसी रिजकु सम्बाहि जिनि उपाई मेदनी ॥ (७५५-११, सूही, मः ३)
एको है दातारु सचा आपि धणी ॥१०॥ (७५५-११, सूही, मः ३)

सो सचु तेरै नालि है गुरमुखि नदरि निहालि ॥ (७५५-१२, सूही, मः ३)
आपे बखसे मेलि लए सो प्रभु सदा समालि ॥११॥ (७५५-१२, सूही, मः ३)
मनु मैला सचु निरमला किउ करि मिलिआ जाइ ॥ (७५५-१३, सूही, मः ३)
प्रभु मेले ता मिलि रहै हउमै सबदि जलाइ ॥१२॥ (७५५-१३, सूही, मः ३)
सो सहु सचा वीसरै ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ (७५५-१४, सूही, मः ३)
नदरि करे ना वीसरै गुरमती वीचारि ॥१३॥ (७५५-१४, सूही, मः ३)
सतिगुरु मेले ता मिलि रहा साचु रखा उर धारि ॥ (७५५-१५, सूही, मः ३)
मिलिआ होइ न वीछुड़ै गुर कै हेति पिआरि ॥१४॥ (७५५-१५, सूही, मः ३)
पिरु सालाही आपणा गुर कै सबदि वीचारि ॥ (७५५-१६, सूही, मः ३)
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सोभावंती नारि ॥१५॥ (७५५-१६, सूही, मः ३)
मनमुख मनु न भिजई अति मैले चिति कठोर ॥ (७५५-१७, सूही, मः ३)
सपै दुधु पीआईऐ अंदरि विसु निकोर ॥१६॥ (७५५-१७, सूही, मः ३)
आपि करे किसु आखीऐ आपे बखसणहारु ॥ (७५५-१८, सूही, मः ३)
गुर सबदी मैलु उतरै ता सचु बणिआ सीगारु ॥१७॥ (७५५-१८, सूही, मः ३)

पन्ना ७५६

सचा साहु सचे वणजारे ओथै कूड़े न टिकंनि ॥ (७५६-१, सूही, मः ३)
ओना सचु न भावई दुख ही माहि पचंनि ॥१८॥ (७५६-१, सूही, मः ३)
हउमै मैला जगु फिरै मरि जम्मै वारो वार ॥ (७५६-२, सूही, मः ३)
पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहार ॥१९॥ (७५६-२, सूही, मः ३)
संता संगति मिलि रहै ता सचि लगै पिआरु ॥ (७५६-२, सूही, मः ३)
सचु सलाही सचु मनि दरि सचै सचिआरु ॥२०॥ (७५६-३, सूही, मः ३)
गुर पूरे पूरी मति है अहिनिसि नामु धिआइ ॥ (७५६-३, सूही, मः ३)
हउमै मेरा वड रोगु है विचहु ठाकि रहाइ ॥२१॥ (७५६-४, सूही, मः ३)
गुरु सालाही आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥ (७५६-४, सूही, मः ३)
तनु मनु सउपी आगै धरी विचहु आपु गवाइ ॥२२॥ (७५६-५, सूही, मः ३)
खिंचोताणि विगुचीऐ एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (७५६-६, सूही, मः ३)
हउमै मेरा छडि तू ता सचि रहै समाइ ॥२३॥ (७५६-६, सूही, मः ३)
सतिगुर नो मिले सि भाइरा सचै सबदि लगंनि ॥ (७५६-६, सूही, मः ३)
सचि मिले से न विछुड़हि दरि सचै दिसंनि ॥२४॥ (७५६-७, सूही, मः ३)
से भाई से सजणा जो सचा सेवंनि ॥ (७५६-७, सूही, मः ३)
अवगण विकणि पलरनि गुण की साझ करंन्हि ॥२५॥ (७५६-८, सूही, मः ३)
गुण की साझ सुखु ऊपजै सची भगति करेनि ॥ (७५६-८, सूही, मः ३)
सचु वणंजहि गुर सबद सिउ लाहा नामु लएनि ॥२६॥ (७५६-९, सूही, मः ३)
सुइना रुपा पाप करि करि संचीऐ चलै न चलदिआ नालि ॥ (७५६-९, सूही, मः ३)

विणु नावै नालि न चलसी सभ मुठी जमकालि ॥२७॥ (७५६-१०, सूही, मः ३)
मन का तोसा हरि नामु है हिरदै रखहु सम्हालि ॥ (७५६-११, सूही, मः ३)
एहु खरचु अखुटु है गुरमुखि निबहै नालि ॥२८॥ (७५६-११, सूही, मः ३)
ए मन मूलहु भुलिआ जासहि पति गवाइ ॥ (७५६-११, सूही, मः ३)
इहु जगतु मोहि दूजै विआपिआ गुरमती सचु धिआइ ॥२९॥ (७५६-१२, सूही, मः ३)
हरि की कीमति न पवै हरि जसु लिखणु न जाइ ॥ (७५६-१३, सूही, मः ३)
गुर कै सबदि मनु तनु रपै हरि सिउ रहै समाइ ॥३०॥ (७५६-१३, सूही, मः ३)
सो सहु मेरा रंगुला रंगे सहजि सुभाइ ॥ (७५६-१४, सूही, मः ३)
कामणि रंगु ता चड़ै जा पिर कै अंकि समाइ ॥३१॥ (७५६-१४, सूही, मः ३)
चिरी विछुन्ने भी मिलनि जो सतिगुरु सेवंनि ॥ (७५६-१५, सूही, मः ३)
अंतरि नव निधि नामु है खानि खरचनि न निखुटई हरि गुण सहजि रवंनि ॥३२॥ (७५६-१५, सूही, मः ३)
ना ओइ जनमहि ना मरहि ना ओइ दुख सहंनि ॥ (७५६-१६, सूही, मः ३)
गुरि राखे से उबरे हरि सिउ केल करंनि ॥३३॥ (७५६-१६, सूही, मः ३)
सजण मिले न विछुड़हि जि अनदिनु मिले रहंनि ॥ (७५६-१७, सूही, मः ३)
इसु जग महि विरले जाणीअहि नानक सचु लहंनि ॥३४॥१॥३॥ (७५६-१७, सूही, मः ३)
सूही महला ३ ॥ (७५६-१८)
हरि जी सूखमु अगमु है कितु बिधि मिलिआ जाइ ॥ (७५६-१८, सूही, मः ३)
गुर कै सबदि भ्रमु कटीऐ अचिंतु वसै मनि आइ ॥१॥ (७५६-१९, सूही, मः ३)
गुरमुखि हरि हरि नामु जपंनि ॥ (७५६-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७५७

हउ तिन कै बलिहारणै मनि हरि गुण सदा रवंनि ॥१॥ रहाउ ॥ (७५७-१, सूही, मः ३)
गुरु सरवरु मान सरोवरु है वडभागी पुरख लहंन्हि ॥ (७५७-१, सूही, मः ३)
सेवक गुरमुखि खोजिआ से हंसुले नामु लहंनि ॥२॥ (७५७-२, सूही, मः ३)
नामु धिआइन्हि रंग सिउ गुरमुखि नामि लगंन्हि ॥ (७५७-२, सूही, मः ३)
धुरि पूरबि होवै लिखिआ गुर भाणा मंनि लएन्हि ॥३॥ (७५७-३, सूही, मः ३)
वडभागी घरु खोजिआ पाइआ नामु निधानु ॥ (७५७-३, सूही, मः ३)
गुरि पूरै वेखालिआ प्रभु आतम रामु पछानु ॥४॥ (७५७-४, सूही, मः ३)
सभना का प्रभु एकु है दूजा अवरु न कोइ ॥ (७५७-४, सूही, मः ३)
गुर परसादी मनि वसै तितु घटि परगटु होइ ॥५॥ (७५७-५, सूही, मः ३)
सभु अंतरजामी ब्रह्मु है ब्रह्मु वसै सभ थाइ ॥ (७५७-५, सूही, मः ३)
मंदा किस नो आखीऐ सबदि वेखहु लिव लाइ ॥६॥ (७५७-६, सूही, मः ३)
बुरा भला तिचरु आखदा जिचरु है दुहु माहि ॥ (७५७-६, सूही, मः ३)
गुरमुखि एको बुझिआ एकसु माहि समाइ ॥७॥ (७५७-७, सूही, मः ३)
सेवा सा प्रभ भावसी जो प्रभु पाए थाइ ॥ (७५७-७, सूही, मः ३)

जन नानक हरि आराधिआ गुर चरणी चितु लाइ ॥८॥२॥४॥६॥ (७५७-८, सूही, मः ३)
रागु सूही असटपदीआ महला ४ घरु २ (७५७-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५७-९)
कोई आणि मिलावै मेरा प्रीतमु पिआरा हउ तिसु पहि आपु वेचाई ॥१॥ (७५७-१०, सूही, मः ४)
दरसनु हरि देखण कै ताई ॥ (७५७-१०, सूही, मः ४)
कृपा करहि ता सतिगुरु मेलहि हरि हरि नामु धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (७५७-११, सूही, मः ४)
जे सुखु देहि त तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई ॥२॥ (७५७-११, सूही, मः ४)
जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई ॥३॥ (७५७-१२, सूही, मः ४)
तनु मनु काटि काटि सभु अरपी विचि अगनी आपु जलाई ॥४॥ (७५७-१२, सूही, मः ४)
पखा फेरी पाणी ढोवा जो देवहि सो खाई ॥५॥ (७५७-१३, सूही, मः ४)
नानकु गरीबु ढहि पइआ दुआरै हरि मेलि लैहु वडिआई ॥६॥ (७५७-१४, सूही, मः ४)
अखी काढि धरी चरणा तलि सभ धरती फिरि मत पाई ॥७॥ (७५७-१४, सूही, मः ४)
जे पासि बहालहि ता तुझहि अराधी जे मारि कढहि भी धिआई ॥८॥ (७५७-१५, सूही, मः ४)
जे लोकु सलाहे ता तेरी उपमा जे निंदै त छोडि न जाई ॥९॥ (७५७-१६, सूही, मः ४)
जे तुधु वलि रहै ता कोई किहु आखउ तुधु विसरिऐ मरि जाई ॥१०॥ (७५७-१६, सूही, मः ४)
वारि वारि जाई गुर ऊपरि पै पैरी संत मनाई ॥११॥ (७५७-१७, सूही, मः ४)
नानकु विचारा भइआ दिवाना हरि तउ दरसन कै ताई ॥१२॥ (७५७-१८, सूही, मः ४)
झखड़ु झागी मीहु वरसै भी गुरु देखण जाई ॥१३॥ (७५७-१८, सूही, मः ४)
समुंदु सागरु होवै बहु खारा गुरसिखु लंघि गुर पहि जाई ॥१४॥ (७५७-१९, सूही, मः ४)
जिउ प्राणी जल बिनु है मरता तिउ सिखु गुर बिनु मरि जाई ॥१५॥ (७५७-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७५८

जिउ धरती सोभ करे जलु बरसै तिउ सिखु गुर मिलि बिगसाई ॥१६॥ (७५८-१, सूही, मः ४)
सेवक का होइ सेवकु वरता करि करि बिनउ बुलाई ॥१७॥ (७५८-२, सूही, मः ४)
नानक की बेनंती हरि पहि गुर मिलि गुर सुखु पाई ॥१८॥ (७५८-२, सूही, मः ४)
तू आपे गुरु चेला है आपे गुर विचु दे तुझहि धिआई ॥१९॥ (७५८-३, सूही, मः ४)
जो तुधु सेवहि सो तूहै होवहि तुधु सेवक पैज रखाई ॥२०॥ (७५८-४, सूही, मः ४)
भंडार भरे भगती हरि तेरे जिसु भावै तिसु देवाई ॥२१॥ (७५८-४, सूही, मः ४)
जिसु तूं देहि सोई जनु पाए होर निहफल सभ चतुराई ॥२२॥ (७५८-५, सूही, मः ४)
सिमरि सिमरि सिमरि गुरु अपुना सोइआ मनु जागाई ॥२३॥ (७५८-६, सूही, मः ४)
इकु दानु मंगै नानकु वेचारा हरि दासनि दासु कराई ॥२४॥ (७५८-६, सूही, मः ४)
जे गुरु झिड़के त मीठा लागै जे बखसे त गुर वडिआई ॥२५॥ (७५८-७, सूही, मः ४)
गुरमुखि बोलहि सो थाइ पाए मनमुखि किछु थाइ न पाई ॥२६॥ (७५८-७, सूही, मः ४)
पाला ककरु वरफ वरसै गुरसिखु गुर देखण जाई ॥२७॥ (७५८-८, सूही, मः ४)
सभु दिनसु रैणि देखउ गुरु अपुना विचि अखी गुर पैर धराई ॥२८॥ (७५८-९, सूही, मः ४)

अनेक उपाव करी गुर कारणि गुर भावै सो थाइ पाई ॥२९॥ (७५८-९, सूही, मः ४)
रैणि दिनसु गुर चरण अराधी दइआ करहु मेरे साई ॥३०॥ (७५८-१०, सूही, मः ४)
नानक का जीउ पिंडु गुरू है गुर मिलि तृपति अघाई ॥३१॥ (७५८-११, सूही, मः ४)
नानक का प्रभु पूरि रहिओ है जत कत तत गोसाई ॥३२॥१॥ (७५८-११, सूही, मः ४)
रागु सूही महला ४ असटपदीआ घरु १० (७५८-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५८-१३)
अंदरि सचा नेहु लाइआ प्रीतम आपणै ॥ (७५८-१४, सूही, मः ४)
तनु मनु होइ निहालु जा गुरु देखा साम्हणे ॥१॥ (७५८-१४, सूही, मः ४)
मै हरि हरि नामु विसाहु ॥ (७५८-१४, सूही, मः ४)
गुर पूरे ते पाइआ अमृतु अगम अथाहु ॥१॥ रहाउ ॥ (७५८-१५, सूही, मः ४)
हउ सतिगुरु वेखि विगसीआ हरि नामे लगा पिआरु ॥ (७५८-१५, सूही, मः ४)
किरपा करि कै मेलिअनु पाइआ मोख दुआरु ॥२॥ (७५८-१६, सूही, मः ४)
सतिगुरु बिरही नाम का जे मिलै त तनु मनु देउ ॥ (७५८-१६, सूही, मः ४)
जे पूरबि होवै लिखिआ ता अमृतु सहजि पीएउ ॥३॥ (७५८-१७, सूही, मः ४)
सुतिआ गुरु सालाहीऐ उठदिआ भी गुरु आलाउ ॥ (७५८-१८, सूही, मः ४)
कोई ऐसा गुरमुखि जे मिलै हउ ता के धोवा पाउ ॥४॥ (७५८-१८, सूही, मः ४)
कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु मै प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ (७५८-१९, सूही, मः ४)
सतिगुरि मिलिऐ हरि पाइआ मिलिआ सहजि सुभाइ ॥५॥ (७५८-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७५९

सतिगुरु सागरु गुण नाम का मै तिसु देखण का चाउ ॥ (७५९-१, सूही, मः ४)
हउ तिसु बिनु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मरि जाउ ॥६॥ (७५९-१, सूही, मः ४)
जिउ मछुली विणु पाणीऐ रहै न कितै उपाइ ॥ (७५९-२, सूही, मः ४)
तिउ हरि बिनु संतु न जीवई बिनु हरि नामै मरि जाइ ॥७॥ (७५९-२, सूही, मः ४)
मै सतिगुर सेती पिरहड़ी किउ गुर बिनु जीवा माउ ॥ (७५९-३, सूही, मः ४)
मै गुरबाणी आधारु है गुरबाणी लागि रहाउ ॥८॥ (७५९-४, सूही, मः ४)
हरि हरि नामु रतन्नु है गुरु तुठा देवै माइ ॥ (७५९-४, सूही, मः ४)
मै धर सचे नाम की हरि नामि रहा लिव लाइ ॥९॥ (७५९-५, सूही, मः ४)
गुर गिआनु पदारथु नामु है हरि नामो देइ दृड़ाइ ॥ (७५९-५, सूही, मः ४)
जिसु परापति सो लहै गुर चरणी लागै आइ ॥१०॥ (७५९-६, सूही, मः ४)
अकथ कहाणी प्रेम की को प्रीतमु आखै आइ ॥ (७५९-६, सूही, मः ४)
तिसु देवा मनु आपणा निवि निवि लागा पाइ ॥११॥ (७५९-७, सूही, मः ४)
सजणु मेरा एकु तूं करता पुरखु सुजाणु ॥ (७५९-७, सूही, मः ४)
सतिगुरि मीति मिलाइआ मै सदा सदा तेरा ताणु ॥१२॥ (७५९-८, सूही, मः ४)
सतिगुरु मेरा सदा सदा ना आवै न जाइ ॥ (७५९-८, सूही, मः ४)

ओहु अबिनासी पुरखु है सभ महि रहिआ समाइ ॥१३॥ (७५६-६, सूही, मः ४)
राम नाम धनु संचिआ साबतु पूंजी रासि ॥ (७५६-६, सूही, मः ४)
नानक दरगह मंनिआ गुर पूरे साबासि ॥१४॥१॥२॥११॥ (७५६-१०, सूही, मः ४)
रागु सूही असटपदीआ महला ५ घरु १ (७५६-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७५६-११)
उरझि रहिओ बिखिआ कै संगा ॥ (७५६-१२, सूही, मः ५)
मनहि बिआपत अनिक तरंगा ॥१॥ (७५६-१२, सूही, मः ५)
मेरे मन अगम अगोचर ॥ (७५६-१२, सूही, मः ५)
कत पाईऐ पूरन परमेसर ॥१॥ रहाउ ॥ (७५६-१३, सूही, मः ५)
मोह मगन महि रहिआ बिआपे ॥ (७५६-१३, सूही, मः ५)
अति तृसना कबहू नही ध्रापे ॥२॥ (७५६-१३, सूही, मः ५)
बसइ करोधु सरीरि चंडारा ॥ (७५६-१४, सूही, मः ५)
अगिआनि न सूझै महा गुबारा ॥३॥ (७५६-१४, सूही, मः ५)
भ्रमत बिआपत जरे किवारा ॥ (७५६-१४, सूही, मः ५)
जाणु न पाईऐ प्रभ दरबारा ॥४॥ (७५६-१५, सूही, मः ५)
आसा अंदेसा बंधि पराना ॥ (७५६-१५, सूही, मः ५)
महलु न पावै फिरत बिगाना ॥५॥ (७५६-१५, सूही, मः ५)
सगल बिआधि कै वसि करि दीना ॥ (७५६-१६, सूही, मः ५)
फिरत पिआस जिउ जल बिनु मीना ॥६॥ (७५६-१६, सूही, मः ५)
कछू सिआनप उकति न मोरी ॥ (७५६-१७, सूही, मः ५)
एक आस ठाकुर प्रभ तोरी ॥७॥ (७५६-१७, सूही, मः ५)
करउ बेनती संतन पासे ॥ (७५६-१७, सूही, मः ५)
मेलि लैहु नानक अरदासे ॥८॥ (७५६-१८, सूही, मः ५)
भइओ कृपालु साधसंगु पाइआ ॥ (७५६-१८, सूही, मः ५)
नानक तृपते पूरा पाइआ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥ (७५६-१८, सूही, मः ५)

पन्ना ७६०

रागु सूही महला ५ घरु ३ (७६०-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६०-१)
मिथन मोह अगनि सोक सागर ॥ (७६०-२, सूही, मः ५)
करि किरपा उधरु हरि नागर ॥१॥ (७६०-२, सूही, मः ५)
चरण कमल सरणाइ नराइण ॥ (७६०-२, सूही, मः ५)
दीना नाथ भगत पराइण ॥१॥ रहाउ ॥ (७६०-३, सूही, मः ५)
अनाथा नाथ भगत भै मेटन ॥ (७६०-३, सूही, मः ५)
साधसंगि जमदूत न भेटन ॥२॥ (७६०-३, सूही, मः ५)

जीवन रूप अनूप दइआला ॥ (७६०-४, सूही, मः ५)
रवण गुणा कटीऐ जम जाला ॥३॥ (७६०-४, सूही, मः ५)
अमृत नामु रसन नित जापै ॥ (७६०-४, सूही, मः ५)
रोग रूप माइआ न बिआपै ॥४॥ (७६०-५, सूही, मः ५)
जपि गोबिंद संगी सभि तारे ॥ (७६०-५, सूही, मः ५)
पोहत नाही पंच बटवारे ॥५॥ (७६०-५, सूही, मः ५)
मन बच क्रम प्रभु एकु धिआए ॥ (७६०-६, सूही, मः ५)
सर्ब फला सोई जनु पाए ॥६॥ (७६०-६, सूही, मः ५)
धारि अनुग्रहु अपना प्रभि कीना ॥ (७६०-६, सूही, मः ५)
केवल नामु भगति रसु दीना ॥७॥ (७६०-७, सूही, मः ५)
आदि मधि अंति प्रभु सोई ॥ (७६०-७, सूही, मः ५)
नानक तिसु बिनु अवरु न कोई ॥८॥१॥२॥ (७६०-८, सूही, मः ५)
रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु ६ (७६०-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६०-९)
जिन डिठिआ मनु रहसीऐ किउ पाईऐ तिन्ह संगु जीउ ॥ (७६०-१०, सूही, मः ५)
संत सजन मन मित्र से लाइनि प्रभ सिउ रंगु जीउ ॥ (७६०-१०, सूही, मः ५)
तिन्ह सिउ प्रीति न तुटई कबहु न होवै भंगु जीउ ॥१॥ (७६०-११, सूही, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ करि दइआ गुण गावा तेरे नित जीउ ॥ (७६०-११, सूही, मः ५)
आइ मिलहु संत सजणा नामु जपह मन मित जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७६०-१२, सूही, मः ५)
देखै सुणे न जाणई माइआ मोहिआ अंधु जीउ ॥ (७६०-१२, सूही, मः ५)
काची देहा विणसणी कूड़ु कमावै धंधु जीउ ॥ (७६०-१३, सूही, मः ५)
नामु धिआवहि से जिणि चले गुर पूरे सनबंधु जीउ ॥२॥ (७६०-१३, सूही, मः ५)
हुकमे जुग महि आइआ चलणु हुकमि संजोगि जीउ ॥ (७६०-१४, सूही, मः ५)
हुकमे परपंचु पसरिआ हुकमि करे रस भोग जीउ ॥ (७६०-१४, सूही, मः ५)
जिस नो करता विसरै तिसहि विछोड़ा सोगु जीउ ॥३॥ (७६०-१५, सूही, मः ५)
आपनड़े प्रभ भाणिआ दरगह पैधा जाइ जीउ ॥ (७६०-१६, सूही, मः ५)
ऐथै सुखु मुखु उजला इको नामु धिआइ जीउ ॥ (७६०-१६, सूही, मः ५)
आदरु दिता पारब्रहमि गुरु सेविआ सत भाइ जीउ ॥४॥ (७६०-१७, सूही, मः ५)
थान थनंतरि रवि रहिआ सर्ब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥ (७६०-१७, सूही, मः ५)
सचु खजाना संचिआ एकु नामु धनु माल जीउ ॥ (७६०-१८, सूही, मः ५)
मन ते कबहु न वीसरै जा आपे होइ दइआल जीउ ॥५॥ (७६०-१८, सूही, मः ५)

पन्ना ७६१

आवणु जाणा रहि गए मनि वुठा निरंकारु जीउ ॥ (७६१-१, सूही, मः ५)
ता का अंतु न पाईऐ ऊचा अगम अपारु जीउ ॥ (७६१-१, सूही, मः ५)

जिसु प्रभु अपणा विसरै सो मरि जम्मै लख वार जीउ ॥६॥ (७६१-२, सूही, मः ५)
साचु नेहु तिन प्रीतमा जिन मनि वुठा आपि जीउ ॥ (७६१-२, सूही, मः ५)
गुण साझी तिन संगि बसे आठ पहर प्रभ जापि जीउ ॥ (७६१-३, सूही, मः ५)
रंगि रते परमेसरै बिनसे सगल संताप जीउ ॥७॥ (७६१-३, सूही, मः ५)
तूं करता तूं करणहारु तूहै एकु अनेक जीउ ॥ (७६१-४, सूही, मः ५)
तू समरथु तू सर्ब मै तूहै बुधि बिबेक जीउ ॥ (७६१-४, सूही, मः ५)
नानक नामु सदा जपी भगत जना की टेक जीउ ॥८॥१॥३॥ (७६१-५, सूही, मः ५)
रागु सूही महला ५ असटपदीआ घरु १० काफी (७६१-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६१-६)
जे भुली जे चुकी साईं भी तहिंजी काढीआ ॥ (७६१-७, सूही काफी, मः ५)
जिन्हा नेहु दूजाणे लगा झूरि मरहु से वाढीआ ॥१॥ (७६१-७, सूही काफी, मः ५)
हउ ना छोडउ कंत पासरा ॥ (७६१-७, सूही काफी, मः ५)
सदा रंगीला लालु पिआरा एहु महिंजा आसरा ॥१॥ रहाउ ॥ (७६१-८, सूही काफी, मः ५)
सजणु तूहै सैणु तू मै तुझ उपरि बहु माणीआ ॥ (७६१-८, सूही काफी, मः ५)
जा तू अंदरि ता सुखे तूं निमाणी माणीआ ॥२॥ (७६१-९, सूही काफी, मः ५)
जे तू तुठा कृपा निधान ना दूजा वेखालि ॥ (७६१-९, सूही काफी, मः ५)
एहा पाई मू दातड़ी नित हिरदै रखा समालि ॥३॥ (७६१-१०, सूही काफी, मः ५)
पाव जुलाई पंध तउ नैणी दरसु दिखालि ॥ (७६१-१०, सूही काफी, मः ५)
स्रवणी सुणी कहाणीआ जे गुरु थीवै किरपालि ॥४॥ (७६१-११, सूही काफी, मः ५)
किती लख करोड़ि पिरीए रोम न पुजनि तेरिआ ॥ (७६१-११, सूही काफी, मः ५)
तू साही हू साहु हउ कहि न सका गुण तेरिआ ॥५॥ (७६१-१२, सूही काफी, मः ५)
सहीआ तऊ असंख मंञहु हभि वधाणीआ ॥ (७६१-१२, सूही काफी, मः ५)
हिक भोरी नदरि निहालि देहि दरसु रंगु माणीआ ॥६॥ (७६१-१३, सूही काफी, मः ५)
जै डिठे मनु धीरीऐ किलविख वंञन्हि दूरे ॥ (७६१-१३, सूही काफी, मः ५)
सो किउ विसरै माउ मै जो रहिआ भरपूरे ॥७॥ (७६१-१४, सूही काफी, मः ५)
होइ निमाणी ढहि पई मिलिआ सहजि सुभाइ ॥ (७६१-१४, सूही काफी, मः ५)
पूरबि लिखिआ पाइआ नानक संत सहाइ ॥८॥१॥४॥ (७६१-१५, सूही काफी, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७६१-१५)
सिमृति बेद पुराण पुकारनि पोथीआ ॥ (७६१-१६, सूही, मः ५)
नाम बिना सभि कूड़ु गाल्ही होछीआ ॥१॥ (७६१-१६, सूही, मः ५)
नामु निधानु अपारु भगता मनि वसै ॥ (७६१-१६, सूही, मः ५)
जनम मरण मोहु दुखु साधू संगि नसै ॥१॥ रहाउ ॥ (७६१-१७, सूही, मः ५)
मोहि बादि अहंकारि सरपर रुंनिआ ॥ (७६१-१७, सूही, मः ५)
सुखु न पाइन्हि मूलि नाम विछुंनिआ ॥२॥ (७६१-१८, सूही, मः ५)
मेरी मेरी धारि बंधनि बंधिआ ॥ (७६१-१८, सूही, मः ५)

नरकि सुरगि अवतार माइआ धंधिआ ॥३॥ (७६१-१८, सूही, मः ५)
सोधत सोधत सोधि ततु बीचारिआ ॥ (७६१-१९, सूही, मः ५)
नाम बिना सुखु नाहि सरपर हारिआ ॥४॥ (७६१-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७६२

आवहि जाहि अनेक मरि मरि जनमते ॥ (७६२-१, सूही, मः ५)
बिनु बूझे सभु वादि जोनी भरमते ॥५॥ (७६२-१, सूही, मः ५)
जिन्ह कउ भए दइआल तिन्ह साधू संगु भइआ ॥ (७६२-१, सूही, मः ५)
अमृतु हरि का नामु तिन्ही जनी जपि लइआ ॥६॥ (७६२-२, सूही, मः ५)
खोजहि कोटि असंख बहुतु अनंत के ॥ (७६२-३, सूही, मः ५)
जिसु बुझाए आपि नेड़ा तिसु हे ॥७॥ (७६२-३, सूही, मः ५)
विसरु नाही दातार आपणा नामु देहु ॥ (७६२-३, सूही, मः ५)
गुण गावा दिनु राति नानक चाउ एहु ॥८॥२॥५॥१६॥ (७६२-४, सूही, मः ५)
रागु सूही महला १ कुचजी (७६२-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६२-५)
मंञु कुचजी अम्मावणि डोसड़े हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ ॥ (७६२-६, सूही, मः १)
इक दू इकि चड़ंदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ ॥ (७६२-६, सूही, मः १)
जिन्ही सखी सहु राविआ से अम्बी छावड़ीएहि जीउ ॥ (७६२-७, सूही, मः १)
से गुण मंञु न आवनी हउ कै जी दोस धरेउ जीउ ॥ (७६२-७, सूही, मः १)
किआ गुण तेरे विथरा हउ किआ किआ घिना तेरा नाउ जीउ ॥ (७६२-८, सूही, मः १)
इकतु टोलि न अम्बड़ा हउ सद कुरबाणै तेरै जाउ जीउ ॥ (७६२-८, सूही, मः १)
सुइना रुपा रंगुला मोती तै माणिकु जीउ ॥ (७६२-९, सूही, मः १)
से वसतू सहि दितीआ मै तिन्ह सिउ लाइआ चितु जीउ ॥ (७६२-९, सूही, मः १)
मंदर मिटी संदड़े पथर कीते रासि जीउ ॥ (७६२-१०, सूही, मः १)
हउ एनी टोली भुलीअसु तिसु कंत न बैठी पासि जीउ ॥ (७६२-१०, सूही, मः १)
अम्बरि कूंजा कुरलीआ बग बहिठे आइ जीउ ॥ (७६२-११, सूही, मः १)
सा धन चली साहुरै किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ ॥ (७६२-११, सूही, मः १)
सुती सुती झालु थीआ भुली वाटड़ीआसु जीउ ॥ (७६२-१२, सूही, मः १)
तै सह नालहु मुतीअसु दुखा कूं धरीआसु जीउ ॥ (७६२-१२, सूही, मः १)
तुधु गुण मै सभि अवगणा इक नानक की अरदासि जीउ ॥ (७६२-१३, सूही, मः १)
सभि राती सोहागणी मै डोहागणि काई राति जीउ ॥१॥ (७६२-१३, सूही, मः १)
सूही महला १ सुचजी ॥ (७६२-१४)
जा तू ता मै सभु को तू साहिबु मेरी रासि जीउ ॥ (७६२-१४, सूही, मः १)
तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तूं अंतरि साबासि जीउ ॥ (७६२-१५, सूही, मः १)
भाणै तखति वडाईआ भाणै भीख उदासि जीउ ॥ (७६२-१५, सूही, मः १)

भाणै थल सिरि सरु वहै कमलु फुलै आकासि जीउ ॥ (७६२-१६, सूही, मः १)
भाणै भवजलु लंघीऐ भाणै मंझि भरीआसि जीउ ॥ (७६२-१६, सूही, मः १)
भाणै सो सहु रंगुला सिफति रता गुणतासि जीउ ॥ (७६२-१७, सूही, मः १)
भाणै सहु भीहावला हउ आवणि जाणि मुईआसि जीउ ॥ (७६२-१७, सूही, मः १)
तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ ॥ (७६२-१८, सूही, मः १)
किआ मागउ किआ कहि सुणी मै दरसन भूख पिआसि जीउ ॥ (७६२-१९, सूही, मः १)
गुर सबदी सहु पाइआ सचु नानक की अरदासि जीउ ॥२॥ (७६२-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७६३

सूही महला ५ गुणवंती ॥ (७६३-१)
जो दीसै गुरसिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥ (७६३-१, सूही, मः ५)
आखा बिरथा जीअ की गुरु सजणु देहि मिलाइ जीउ ॥ (७६३-२, सूही, मः ५)
सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ ॥ (७६३-२, सूही, मः ५)
इहु मनु तै कूं डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ ॥ (७६३-३, सूही, मः ५)
हउ आइआ दूरहु चलि कै मै तकी तउ सरणाइ जीउ ॥ (७६३-३, सूही, मः ५)
मै आसा रखी चिति महि मेरा सभो दुखु गवाइ जीउ ॥ (७६३-४, सूही, मः ५)
इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ ॥ (७६३-४, सूही, मः ५)
तिआगें मन की मतड़ी विसारें दूजा भाउ जीउ ॥ (७६३-५, सूही, मः ५)
इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ ॥ (७६३-५, सूही, मः ५)
हउ आपहु बोलि न जाणदा मै कहिआ सभु हुकमाउ जीउ ॥ (७६३-६, सूही, मः ५)
हरि भगति खजाना बखसिआ गुरि नानकि कीआ पसाउ जीउ ॥ (७६३-७, सूही, मः ५)
मै बहुड़ि न तृसना भुखड़ी हउ रजा तृपति अघाइ जीउ ॥ (७६३-७, सूही, मः ५)
जो गुर दीसै सिखड़ा तिसु निवि निवि लागउ पाइ जीउ ॥३॥ (७६३-८, सूही, मः ५)
रागु सूही छंत महला १ घरु १ (७६३-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६३-९)
भरि जोबनि मै मत पेईअड़ै घरि पाहुणी बलि राम जीउ ॥ (७६३-९, सूही, मः १)
मैली अवगणि चिति बिनु गुर गुण न समावनी बलि राम जीउ ॥ (७६३-१०, सूही, मः १)
गुण सार न जाणी भरमि भुलाणी जोबनु बादि गवाइआ ॥ (७६३-१०, सूही, मः १)
वरु घरु दरु दरसनु नही जाता पिर का सहजु न भाइआ ॥ (७६३-११, सूही, मः १)
सतिगुर पूछि न मारगि चाली सूती रैणि विहाणी ॥ (७६३-१२, सूही, मः १)
नानक बालतणि राडेपा बिनु पिर धन कुमलाणी ॥१॥ (७६३-१२, सूही, मः १)
बाबा मै वरु देहि मै हरि वरु भावै तिस की बलि राम जीउ ॥ (७६३-१३, सूही, मः १)
रवि रहिआ जुग चारि तृभवण बाणी जिस की बलि राम जीउ ॥ (७६३-१३, सूही, मः १)
तृभवण कंतु रवै सोहागणि अवगणवंती दूरे ॥ (७६३-१४, सूही, मः १)
जैसी आसा तैसी मनसा पूरि रहिआ भरपूरे ॥ (७६३-१४, सूही, मः १)

हरि की नारि सु सर्ब सुहागणि राँड न मैलै वेसे ॥ (७६३-१५, सूही, मः १)
नानक मै वरु साचा भावै जुगि जुगि प्रीतम तैसे ॥२॥ (७६३-१५, सूही, मः १)
बाबा लगनु गणाइ हं भी वंञा साहुरै बलि राम जीउ ॥ (७६३-१६, सूही, मः १)
साहा हुकमु रजाइ सो न टलै जो प्रभु करै बलि राम जीउ ॥ (७६३-१६, सूही, मः १)
किरतु पइआ करतै करि पाइआ मेटि न सकै कोई ॥ (७६३-१७, सूही, मः १)
जाञी नाउ नरह निहकेवलु रवि रहिआ तिहु लोई ॥ (७६३-१७, सूही, मः १)
माइ निरासी रोइ विछुन्नी बाली बालै हेते ॥ (७६३-१८, सूही, मः १)
नानक साच सबदि सुख महली गुर चरणी प्रभु चेते ॥३॥ (७६३-१८, सूही, मः १)

पन्ना ७६४

बाबुलि दितड़ी दूरि ना आवै घरि पेईऐ बलि राम जीउ ॥ (७६४-१, सूही, मः १)
रहसी वेखि हदूरि पिरि रावी घरि सोहीऐ बलि राम जीउ ॥ (७६४-२, सूही, मः १)
साचे पिर लोड़ी प्रीतम जोड़ी मति पूरी परधाने ॥ (७६४-२, सूही, मः १)
संजोगी मेला थानि सुहेला गुणवंती गुर गिआने ॥ (७६४-३, सूही, मः १)
सतु संतोखु सदा सचु पलै सचु बोलै पिर भाए ॥ (७६४-३, सूही, मः १)
नानक विछुड़ि ना दुखु पाए गुरमति अंकि समाए ॥४॥१॥ (७६४-४, सूही, मः १)
रागु सूही महला १ छंतु घरु २ (७६४-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६४-५)
हम घरि साजन आए ॥ (७६४-६, सूही, मः १)
साचै मेलि मिलाए ॥ (७६४-६, सूही, मः १)
सहजि मिलाए हरि मनि भाए पंच मिले सुखु पाइआ ॥ (७६४-६, सूही, मः १)
साई वसतु परापति होई जिसु सेती मनु लाइआ ॥ (७६४-७, सूही, मः १)
अनदिनु मेलु भइआ मनु मानिआ घर मंदर सोहाए ॥ (७६४-७, सूही, मः १)
पंच सबद धुनि अनहद वाजे हम घरि साजन आए ॥१॥ (७६४-८, सूही, मः १)
आवहु मीत पिआरे ॥ (७६४-८, सूही, मः १)
मंगल गावहु नारे ॥ (७६४-८, सूही, मः १)
सचु मंगलु गावहु ता प्रभ भावहु सोहिलड़ा जुग चारे ॥ (७६४-९, सूही, मः १)
अपनै घरि आइआ थानि सुहाइआ कारज सबदि सवारे ॥ (७६४-९, सूही, मः १)
गिआन महा रसु नेत्री अंजनु तृभवण रूपु दिखाइआ ॥ (७६४-१०, सूही, मः १)
सखी मिलहु रसि मंगलु गावहु हम घरि साजनु आइआ ॥२॥ (७६४-१०, सूही, मः १)
मनु तनु अमृति भिन्ना ॥ (७६४-११, सूही, मः १)
अंतरि प्रेमु रतन्ना ॥ (७६४-११, सूही, मः १)
अंतरि रतनु पदारथु मेरै परम ततु वीचारो ॥ (७६४-११, सूही, मः १)
जंत भेख तू सफलिओ दाता सिरि सिरि देवणहारो ॥ (७६४-१२, सूही, मः १)
तू जानु गिआनी अंतरजामी आपे कारणु कीना ॥ (७६४-१२, सूही, मः १)

सुनहु सखी मनु मोहनि मोहिआ तनु मनु अमृति भीना ॥३॥ (७६४-१३, सूही, मः १)
आतम रामु संसारा ॥ (७६४-१४, सूही, मः १)
साचा खेलु तुमारा ॥ (७६४-१४, सूही, मः १)
सचु खेलु तुमारा अगम अपारा तुधु बिनु कउणु बुझाए ॥ (७६४-१४, सूही, मः १)
सिध साधिक सिआणे केते तुझ बिनु कवणु कहाए ॥ (७६४-१५, सूही, मः १)
कालु बिकालु भए देवाने मनु राखिआ गुरि ठाए ॥ (७६४-१५, सूही, मः १)
नानक अवगण सबदि जलाए गुण संगमि प्रभु पाए ॥४॥१॥२॥ (७६४-१६, सूही, मः १)
रागु सूही महला १ घरु ३ (७६४-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६४-१७)
आवहु सजणा हउ देखा दरसनु तेरा राम ॥ (७६४-१८, सूही, मः १)
घरि आपनड़ै खड़ी तका मै मनि चाउ घनेरा राम ॥ (७६४-१८, सूही, मः १)
मनि चाउ घनेरा सुणि प्रभ मेरा मै तेरा भरवासा ॥ (७६४-१८, सूही, मः १)
दरसनु देखि भई निहकेवल जनम मरण दुखु नासा ॥ (७६४-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७६५

सगली जोति जाता तू सोई मिलिआ भाइ सुभाए ॥ (७६५-१, सूही, मः १)
नानक साजन कउ बलि जाईऐ साचि मिले घरि आए ॥१॥ (७६५-१, सूही, मः १)
घरि आइअड़े साजना ता धन खरी सरसी राम ॥ (७६५-२, सूही, मः १)
हरि मोहिअड़ी साच सबदि ठाकुर देखि रहंसी राम ॥ (७६५-२, सूही, मः १)
गुण संगि रहंसी खरी सरसी जा रावी रंगि रातै ॥ (७६५-३, सूही, मः १)
अवगण मारि गुणी घरु छाइआ पूरै पुरखि बिधातै ॥ (७६५-३, सूही, मः १)
तसकर मारि वसी पंचाइणि अदलु करे वीचारे ॥ (७६५-४, सूही, मः १)
नानक राम नामि निसतारा गुरमति मिलहि पिआरे ॥२॥ (७६५-४, सूही, मः १)
वरु पाइअड़ा बालड़ीए आसा मनसा पूरी राम ॥ (७६५-५, सूही, मः १)
पिरि राविअड़ी सबदि रली रवि रहिआ नह दूरी राम ॥ (७६५-५, सूही, मः १)
प्रभु दूरि न होई घटि घटि सोई तिस की नारि सबाई ॥ (७६५-६, सूही, मः १)
आपे रसीआ आपे रावे जिउ तिस दी वडिआई ॥ (७६५-७, सूही, मः १)
अमर अडोलु अमोलु अपारा गुरि पूरै सचु पाईऐ ॥ (७६५-७, सूही, मः १)
नानक आपे जोग सजोगी नदरि करे लिव लाईऐ ॥३॥ (७६५-८, सूही, मः १)
पिरु उचड़ीऐ माड़ड़ीऐ तिहु लोआ सिरताजा राम ॥ (७६५-८, सूही, मः १)
हउ बिसम भई देखि गुणा अनहद सबद अगाजा राम ॥ (७६५-९, सूही, मः १)
सबदु वीचारी करणी सारी राम नामु नीसाणो ॥ (७६५-९, सूही, मः १)
नाम बिना खोटे नही ठाहर नामु रतनु परवाणो ॥ (७६५-१०, सूही, मः १)
पति मति पूरी पूरा परवाना ना आवै ना जासी ॥ (७६५-१०, सूही, मः १)
नानक गुरमुखि आपु पछाणै प्रभ जैसे अविनासी ॥४॥१॥३॥ (७६५-११, सूही, मः १)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६५-१२)
रागु सूही छंत महला १ घरु ४ ॥ (७६५-१२)
जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥ (७६५-१२, सूही, मः १)
दानि तेरै घटि चानणा तनि चंदु दीपाइआ ॥ (७६५-१३, सूही, मः १)
चंदो दीपाइआ दानि हरि कै दुखु अंधेरा उठि गइआ ॥ (७६५-१३, सूही, मः १)
गुण जंञ लाड़े नालि सोहै परखि मोहणीऐ लइआ ॥ (७६५-१४, सूही, मः १)
वीवाहु होआ सोभ सेती पंच सबदी आइआ ॥ (७६५-१४, सूही, मः १)
जिनि कीआ तिनि देखिआ जगु धंधड़ै लाइआ ॥१॥ (७६५-१५, सूही, मः १)
हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥ (७६५-१५, सूही, मः १)
इहु तनु जिन सिउ गाडिआ मनु लीअड़ा दीता ॥ (७६५-१६, सूही, मः १)
लीआ त दीआ मानु जिन्ह सिउ से सजन किउ वीसरहि ॥ (७६५-१६, सूही, मः १)
जिन्ह दिसि आइआ होहि रलीआ जीअ सेती गहि रहहि ॥ (७६५-१७, सूही, मः १)
सगल गुण अवगणु न कोई होहि नीता नीता ॥ (७६५-१७, सूही, मः १)
हउ बलिहारी साजना मीता अवरीता ॥२॥ (७६५-१८, सूही, मः १)
गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥ (७६५-१८, सूही, मः १)
जे गुण होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै ॥ (७६५-१८, सूही, मः १)

पन्ना ७६६

साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥ (७६६-१, सूही, मः १)
पहिरे पटम्बर करि अडम्बर आपणा पिड़ु मलीऐ ॥ (७६६-१, सूही, मः १)
जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ झोलि अमृतु पीजै ॥ (७६६-२, सूही, मः १)
गुणा का होवै वासुला कढि वासु लईजै ॥३॥ (७६६-२, सूही, मः १)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥ (७६६-३, सूही, मः १)
आखण ता कउ जाईऐ जे भूलड़ा होई ॥ (७६६-३, सूही, मः १)
जे होइ भूला जाइ कहीऐ आपि करता किउ भुलै ॥ (७६६-४, सूही, मः १)
सुणे देखे बाझु कहिऐ दानु अणमंगिआ दिवै ॥ (७६६-४, सूही, मः १)
दानु देइ दाता जगि बिधाता नानका सचु सोई ॥ (७६६-५, सूही, मः १)
आपि करे किसु आखीऐ होरु करे न कोई ॥४॥१॥४॥ (७६६-५, सूही, मः १)
सूही महला १ ॥ (७६६-६)
मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥ (७६६-६, सूही, मः १)
गुर की पउड़ी साच की साचा सुखु होई ॥ (७६६-६, सूही, मः १)
सुखि सहजि आवै साच भावै साच की मति किउ टलै ॥ (७६६-७, सूही, मः १)
इसनानु दानु सुगिआनु मजनु आपि अछलिओ किउ छलै ॥ (७६६-७, सूही, मः १)
परपंच मोह बिकार थाके कूड़ु कपटु न दोई ॥ (७६६-८, सूही, मः १)
मेरा मनु राता गुण रवै मनि भावै सोई ॥१॥ (७६६-८, सूही, मः १)

साहिबु सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥ (७६६-९, सूही, मः १)
मैलु लागी मनि मैलिऐ किनै अमृतु पीआ ॥ (७६६-९, सूही, मः १)
मथि अमृतु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ ॥ (७६६-१०, सूही, मः १)
आपनड़ा प्रभु सहजि पछाता जा मनु साचै लाइआ ॥ (७६६-१०, सूही, मः १)
तिसु नालि गुण गावा जे तिसु भावा किउ मिलै होइ पराइआ ॥ (७६६-११, सूही, मः १)
साहिबु सो सालाहीऐ जिनि जगतु उपाइआ ॥२॥ (७६६-१२, सूही, मः १)
आइ गइआ की न आइओ किउ आवै जाता ॥ (७६६-१२, सूही, मः १)
प्रीतम सिउ मनु मानिआ हरि सेती राता ॥ (७६६-१३, सूही, मः १)
साहिब रंगि राता सच की बाता जिनि बिम्ब का कोटु उसारिआ ॥ (७६६-१३, सूही, मः १)
पंच भू नाइको आपि सिरंदा जिनि सच का पिंडु सवारिआ ॥ (७६६-१४, सूही, मः १)
हम अवगणिआरे तू सुणि पिआरे तुधु भावै सचु सोई ॥ (७६६-१४, सूही, मः १)
आवण जाणा ना थीऐ साची मति होई ॥३॥ (७६६-१५, सूही, मः १)
अंजनु तैसा अंजीऐ जैसा पिर भावै ॥ (७६६-१५, सूही, मः १)
समझै सूझै जाणीऐ जे आपि जाणावै ॥ (७६६-१६, सूही, मः १)
आपि जाणावै मारगि पावै आपे मनूआ लेवए ॥ (७६६-१६, सूही, मः १)
कर्म सुकर्म कराए आपे कीमति कउण अभेवए ॥ (७६६-१७, सूही, मः १)
तंतु मंतु पाखंडु न जाणा रामु रिदै मनु मानिआ ॥ (७६६-१७, सूही, मः १)
अंजनु नामु तिसै ते सूझै गुर सबदी सचु जानिआ ॥४॥ (७६६-१८, सूही, मः १)
साजन होवनि आपणे किउ पर घर जाही ॥ (७६६-१८, सूही, मः १)
साजन राते सच के संगे मन माही ॥ (७६६-१९, सूही, मः १)
मन माहि साजन करहि रलीआ कर्म धर्म सबाइआ ॥ (७६६-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७६७

अठसठि तीर्थ पुन्न पूजा नामु साचा भाइआ ॥ (७६७-१, सूही, मः १)
आपि साजे थापि वेखै तिसै भाणा भाइआ ॥ (७६७-१, सूही, मः १)
साजन राँगि रंगीलड़े रंगु लालु बणाइआ ॥५॥ (७६७-१, सूही, मः १)
अंधा आगू जे थीऐ किउ पाधरु जाणै ॥ (७६७-२, सूही, मः १)
आपि मुसै मति होछीऐ किउ राहु पछाणै ॥ (७६७-२, सूही, मः १)
किउ राहि जावै महलु पावै अंध की मति अंधली ॥ (७६७-३, सूही, मः १)
विणु नाम हरि के कछु न सूझै अंधु बूडौ धंधली ॥ (७६७-३, सूही, मः १)
दिनु राति चानणु चाउ उपजै सबदु गुर का मनि वसै ॥ (७६७-४, सूही, मः १)
कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती राहु पाधरु गुरु दसै ॥६॥ (७६७-४, सूही, मः १)
मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥ (७६७-५, सूही, मः १)
किसु पहि खोलउ गंठड़ी दूखी भरि आइआ ॥ (७६७-५, सूही, मः १)
दूखी भरि आइआ जगतु सबाइआ कउणु जाणै बिधि मेरीआ ॥ (७६७-६, सूही, मः १)

आवणे जावणे खरे डरावणे तोटि न आवै फेरीआ ॥ (७६७-६, सूही, मः १)
नाम विहूणे ऊणे झूणे ना गुरि सबदु सुणाइआ ॥ (७६७-७, सूही, मः १)
मनु परदेसी जे थीऐ सभु देसु पराइआ ॥७॥ (७६७-७, सूही, मः १)
गुर महली घरि आपणै सो भरपुरि लीणा ॥ (७६७-८, सूही, मः १)
सेवकु सेवा ताँ करे सच सबदि पतीणा ॥ (७६७-८, सूही, मः १)
सबदे पतीजै अंकु भीजै सु महलु महला अंतरे ॥ (७६७-९, सूही, मः १)
आपि करता करे सोई प्रभु आपि अंति निरंतरे ॥ (७६७-९, सूही, मः १)
गुर सबदि मेला ताँ सुहेला बाजंत अनहद बीणा ॥ (७६७-१०, सूही, मः १)
गुर महली घरि आपणै सो भरिपुरि लीणा ॥८॥ (७६७-१०, सूही, मः १)
कीता किआ सालाहीऐ करि वेखै सोई ॥ (७६७-११, सूही, मः १)
ता की कीमति न पवै जे लोचै कोई ॥ (७६७-११, सूही, मः १)
कीमति सो पावै आपि जाणावै आपि अभुलु न भुलए ॥ (७६७-१२, सूही, मः १)
जै जै कारु करहि तुधु भावहि गुर कै सबदि अमुलए ॥ (७६७-१२, सूही, मः १)
हीणउ नीचु करउ बेनंती साचु न छोडउ भाई ॥ (७६७-१३, सूही, मः १)
नानक जिनि करि देखिआ देवै मति साई ॥९॥२॥५॥ (७६७-१३, सूही, मः १)
रागु सूही छंत महला ३ घरु २ (७६७-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६७-१५)
सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥ (७६७-१६, सूही, मः ३)
गुरमुखि हरि फलु पावहु ॥ (७६७-१६, सूही, मः ३)
गुरमुखि फलु पावहु हरि नामु धिआवहु जनम जनम के दूख निवारे ॥ (७६७-१६, सूही, मः ३)
बलिहारी गुर अपणे विटहु जिनि कारज सभि सवारे ॥ (७६७-१७, सूही, मः ३)
हरि प्रभु कृपा करे हरि जापहु सुख फल हरि जन पावहु ॥ (७६७-१७, सूही, मः ३)
नानकु कहै सुणहु जन भाई सुख सोहिलड़ा हरि धिआवहु ॥१॥ (७६७-१८, सूही, मः ३)
सुणि हरि गुण भीने सहजि सुभाए ॥ (७६७-१९, सूही, मः ३)
गुरमति सहजे नामु धिआए ॥ (७६७-१९, सूही, मः ३)
जिन कउ धुरि लिखिआ तिन गुरु मिलिआ तिन जनम मरण भउ भागा ॥ (७६७-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७६८

अंदरहु दुरमति दूजी खोई सो जनु हरि लिव लागा ॥ (७६८-१, सूही, मः ३)
जिन कउ कृपा कीनी मेरै सुआमी तिन अनदिनु हरि गुण गाए ॥ (७६८-२, सूही, मः ३)
सुणि मन भीने सहजि सुभाए ॥२॥ (७६८-२, सूही, मः ३)
जुग महि राम नामु निसतारा ॥ (७६८-३, सूही, मः ३)
गुर ते उपजै सबदु वीचारा ॥ (७६८-३, सूही, मः ३)
गुर सबदु वीचारा राम नामु पिआरा जिसु किरपा करे सु पाए ॥ (७६८-३, सूही, मः ३)
सहजे गुण गावै दिनु राती किलविख सभि गवाए ॥ (७६८-४, सूही, मः ३)

सभु को तेरा तू सभना का हउ तेरा तू हमारा ॥ (७६८-४, सूही, मः ३)
जुग महि राम नामु निसतारा ॥३॥ (७६८-५, सूही, मः ३)
साजन आइ वुठे घर माही ॥ (७६८-५, सूही, मः ३)
हरि गुण गावहि तृपति अघाही ॥ (७६८-५, सूही, मः ३)
हरि गुण गाइ सदा तृपतासी फिरि भूख न लागै आए ॥ (७६८-६, सूही, मः ३)
दह दिसि पूज होवै हरि जन की जो हरि हरि नामु धिआए ॥ (७६८-६, सूही, मः ३)
नानक हरि आपे जोड़ि विछोड़े हरि बिनु को दूजा नाही ॥ (७६८-७, सूही, मः ३)
साजन आइ वुठे घर माही ॥४॥१॥ (७६८-८, सूही, मः ३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६८-९)
रागु सूही महला ३ घरु ३ ॥ (७६८-९)
भगत जना की हरि जीउ राखै जुगि जुगि रखदा आइआ राम ॥ (७६८-९, सूही, मः ३)
सो भगतु जो गुरमुखि होवै हउमै सबदि जलाइआ राम ॥ (७६८-१०, सूही, मः ३)
हउमै सबदि जलाइआ मेरे हरि भाइआ जिस दी साची बाणी ॥ (७६८-११, सूही, मः ३)
सची भगति करहि दिनु राती गुरमुखि आखि वखाणी ॥ (७६८-११, सूही, मः ३)
भगता की चाल सची अति निर्मल नामु सचा मनि भाइआ ॥ (७६८-१२, सूही, मः ३)
नानक भगत सोहहि दरि साचै जिनी सचो सचु कमाइआ ॥१॥ (७६८-१३, सूही, मः ३)
हरि भगता की जाति पति है भगत हरि कै नामि समाणे राम ॥ (७६८-१३, सूही, मः ३)
हरि भगति करहि विचहु आपु गवावहि जिन गुण अवगण पछाणे राम ॥ (७६८-१४, सूही, मः ३)
गुण अउगण पछाणै हरि नामु वखाणै भै भगति मीठी लागी ॥ (७६८-१५, सूही, मः ३)
अनदिनु भगति करहि दिनु राती घर ही महि बैरागी ॥ (७६८-१५, सूही, मः ३)
भगती राते सदा मनु निरमलु हरि जीउ वेखहि सदा नाले ॥ (७६८-१६, सूही, मः ३)
नानक से भगत हरि कै दरि साचे अनदिनु नामु सम्हाले ॥२॥ (७६८-१६, सूही, मः ३)
मनमुख भगति करहि बिनु सतिगुर विणु सतिगुर भगति न होई राम ॥ (७६८-१७, सूही, मः ३)
हउमै माइआ रोगि विआपे मरि जनमहि दुखु होई राम ॥ (७६८-१८, सूही, मः ३)
मरि जनमहि दुखु होई दूजै भाइ परज विगोई विणु गुर ततु न जानिआ ॥ (७६८-१९, सूही, मः ३)
भगति विहूणा सभु जगु भरमिआ अंति गइआ पछुतानिआ ॥ (७६८-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७६९

कोटि मधे किनै पछाणिआ हरि नामा सचु सोई ॥ (७६९-१, सूही, मः ३)
नानक नामि मिलै वडिआई दूजै भाइ पति खोई ॥३॥ (७६९-१, सूही, मः ३)
भगता कै घरि कारजु साचा हरि गुण सदा वखाणे राम ॥ (७६९-२, सूही, मः ३)
भगति खजाना आपे दीआ कालु कंटकु मारि समाणे राम ॥ (७६९-३, सूही, मः ३)
कालु कंटकु मारि समाणे हरि मनि भाणे नामु निधानु सचु पाइआ ॥ (७६९-३, सूही, मः ३)
सदा अखुटु कदे न निखुटै हरि दीआ सहजि सुभाइआ ॥ (७६९-४, सूही, मः ३)
हरि जन ऊचे सद ही ऊचे गुर कै सबदि सुहाइआ ॥ (७६९-४, सूही, मः ३)

नानक आपे बखसि मिलाए जुगि जुगि सोभा पाइआ ॥४॥१॥२॥ (७६९-५, सूही, मः ३)
सूही महला ३ ॥ (७६९-६)
सबदि सचै सचु सोहिला जिथै सचे का होइ वीचारो राम ॥ (७६९-६, सूही, मः ३)
हउमै सभि किलविख काटे साचु रखिआ उरि धारे राम ॥ (७६९-६, सूही, मः ३)
सचु रखिआ उर धारे दुतरु तारे फिरि भवजलु तरणु न होई ॥ (७६९-७, सूही, मः ३)
सचा सतिगुरु सची बाणी जिनि सचु विखालिआ सोई ॥ (७६९-८, सूही, मः ३)
साचे गुण गावै सचि समावै सचु वेखै सभु सोई ॥ (७६९-८, सूही, मः ३)
नानक साचा साहिबु साची नाई सचु निसतारा होई ॥१॥ (७६९-९, सूही, मः ३)
साचै सतिगुरि साचु बुझाइआ पति राखै सचु सोई राम ॥ (७६९-९, सूही, मः ३)
सचा भोजनु भाउ सचा है सचै नामि सुखु होई राम ॥ (७६९-१०, सूही, मः ३)
साचै नामि सुखु होई मरै न कोई गरभि न जूनी वासा ॥ (७६९-१०, सूही, मः ३)
जोती जोति मिलाई सचि समाई सचि नाइ परगासा ॥ (७६९-११, सूही, मः ३)
जिनी सचु जाता से सचे होए अनदिनु सचु धिआइनि ॥ (७६९-११, सूही, मः ३)
नानक सचु नामु जिन हिरदै वसिआ ना वीछुड़ि दुखु पाइनि ॥२॥ (७६९-१२, सूही, मः ३)
सची बाणी सचे गुण गावहि तितु घरि सोहिला होई राम ॥ (७६९-१३, सूही, मः ३)
निर्मल गुण साचे तनु मनु साचा विचि साचा पुरखु प्रभु सोई राम ॥ (७६९-१३, सूही, मः ३)
सभु सचु वरतै सचो बोलै जो सचु करै सु होई ॥ (७६९-१४, सूही, मः ३)
जह देखा तह सचु पसरिआ अवरु न दूजा कोई ॥ (७६९-१४, सूही, मः ३)
सचे उपजै सचि समावै मरि जनमै दूजा होई ॥ (७६९-१५, सूही, मः ३)
नानक सभु किछु आपे करता आपि करावै सोई ॥३॥ (७६९-१५, सूही, मः ३)
सचे भगत सोहहि दरवारे सचो सचु वखाणे राम ॥ (७६९-१६, सूही, मः ३)
घट अंतरे साची बाणी साचो आपि पछाणे राम ॥ (७६९-१६, सूही, मः ३)
आपु पछाणहि ता सचु जाणहि साचे सोझी होई ॥ (७६९-१७, सूही, मः ३)
सचा सबदु सची है सोभा साचे ही सुखु होई ॥ (७६९-१७, सूही, मः ३)
साचि रते भगत इक रंगी दूजा रंगु न कोई ॥ (७६९-१८, सूही, मः ३)
नानक जिस कउ मसतकि लिखिआ तिसु सचु परापति होई ॥४॥२॥३॥ (७६९-१८, सूही, मः ३)
सूही महला ३ ॥ (७६९-१९)
जुग चारे धन जे भवै बिनु सतिगुर सोहागु न होई राम ॥ (७६९-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७७०

निहचलु राजु सदा हरि केरा तिसु बिनु अवरु न कोई राम ॥ (७७०-१, सूही, मः ३)
तिसु बिनु अवरु न कोई सदा सचु सोई गुरमुखि एको जाणिआ ॥ (७७०-१, सूही, मः ३)
धन पिर मेलावा होआ गुरमती मनु मानिआ ॥ (७७०-२, सूही, मः ३)
सतिगुरु मिलिआ ता हरि पाइआ बिनु हरि नावै मुकति न होई ॥ (७७०-२, सूही, मः ३)
नानक कामणि कंतै रावे मनि मानिऐ सुखु होई ॥१॥ (७७०-३, सूही, मः ३)

सतिगुरु सेवि धन बालड़ीए हरि वरु पावहि सोई राम ॥ (७७०-४, सूही, मः ३)
सदा होवहि सोहागणी फिरि मैला वेसु न होई राम ॥ (७७०-४, सूही, मः ३)
फिरि मैला वेसु न होई गुरमुखि बूझै कोई हउमै मारि पछाणिआ ॥ (७७०-५, सूही, मः ३)
करणी कार कमावै सबदि समावै अंतरि एको जाणिआ ॥ (७७०-५, सूही, मः ३)
गुरमुखि प्रभु रावे दिनु राती आपणा साची सोभा होई ॥ (७७०-६, सूही, मः ३)
नानक कामणि पिरु रावे आपणा रवि रहिआ प्रभु सोई ॥२॥ (७७०-६, सूही, मः ३)
गुर की कार करे धन बालड़ीए हरि वरु देइ मिलाए राम ॥ (७७०-७, सूही, मः ३)
हरि कै रंगि रती है कामणि मिलि प्रीतम सुखु पाए राम ॥ (७७०-८, सूही, मः ३)
मिलि प्रीतम सुखु पाए सचि समाए सचु वरतै सभ थाई ॥ (७७०-८, सूही, मः ३)
सचा सीगारु करे दिनु राती कामणि सचि समाई ॥ (७७०-९, सूही, मः ३)
हरि सुखदाता सबदि पछाता कामणि लइआ कंठि लाए ॥ (७७०-९, सूही, मः ३)
नानक महली महलु पछाणै गुरमती हरि पाए ॥३॥ (७७०-१०, सूही, मः ३)
सा धन बाली धुरि मेली मेरै प्रभि आपि मिलाई राम ॥ (७७०-१०, सूही, मः ३)
गुरमती घटि चानणु होआ प्रभु रवि रहिआ सभ थाई राम ॥ (७७०-११, सूही, मः ३)
प्रभु रवि रहिआ सभ थाई मंनि वसाई पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ (७७०-१२, सूही, मः ३)
सेज सुखाली मेरे प्रभ भाणी सचु सीगारु बणाइआ ॥ (७७०-१२, सूही, मः ३)
कामणि निर्मल हउमै मलु खोई गुरमति सचि समाई ॥ (७७०-१३, सूही, मः ३)
नानक आपि मिलाई करतै नामु नवै निधि पाई ॥४॥३॥४॥ (७७०-१३, सूही, मः ३)
सूही महला ३ ॥ (७७०-१४)
हरि हरे हरि गुण गावहु हरि गुरमुखे पाए राम ॥ (७७०-१४, सूही, मः ३)
अनदिनो सबदि रवहु अनहद सबद वजाए राम ॥ (७७०-१५, सूही, मः ३)
अनहद सबद वजाए हरि जीउ घरि आए हरि गुण गावहु नारी ॥ (७७०-१५, सूही, मः ३)
अनदिनु भगति करहि गुर आगै सा धन कंत पिआरी ॥ (७७०-१६, सूही, मः ३)
गुर का सबदु वसिआ घट अंतरि से जन सबदि सुहाए ॥ (७७०-१६, सूही, मः ३)
नानक तिन घरि सद ही सोहिला हरि करि किरपा घरि आए ॥१॥ (७७०-१७, सूही, मः ३)
भगता मनि आनंदु भइआ हरि नामि रहे लिव लाए राम ॥ (७७०-१७, सूही, मः ३)
गुरमुखे मनु निरमलु होआ निर्मल हरि गुण गाए राम ॥ (७७०-१८, सूही, मः ३)
निर्मल गुण गाए नामु मंनि वसाए हरि की अमृत बाणी ॥ (७७०-१९, सूही, मः ३)
जिन् मनि वसिआ सेई जन निसतरे घटि घटि सबदि समाणी ॥ (७७०-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७७१

तेरे गुण गावहि सहजि समावहि सबदे मेलि मिलाए ॥ (७७१-१, सूही, मः ३)
नानक सफल जनमु तिन केरा जि सतिगुरि हरि मारगि पाए ॥२॥ (७७१-१, सूही, मः ३)
संतसंगति सिउ मेलु भइआ हरि हरि नामि समाए राम ॥ (७७१-२, सूही, मः ३)
गुर कै सबदि सद जीवन मुकत भए हरि कै नामि लिव लाए राम ॥ (७७१-३, सूही, मः ३)

हरि नामि चितु लाए गुरि मेलि मिलाए मनूआ रता हरि नाले ॥ (७७१-३, सूही, मः ३)
सुखदाता पाइआ मोहु चुकाइआ अनदिनु नामु सम्हाले ॥ (७७१-४, सूही, मः ३)
गुर सबदे राता सहजे माता नामु मनि वसाए ॥ (७७१-५, सूही, मः ३)
नानक तिन घरि सद ही सोहिला जि सतिगुर सेवि समाए ॥३॥ (७७१-५, सूही, मः ३)
बिनु सतिगुर जगु भरमि भुलाइआ हरि का महलु न पाइआ राम ॥ (७७१-६, सूही, मः ३)
गुरमुखे इकि मेलि मिलाइआ तिन के दूख गवाइआ राम ॥ (७७१-६, सूही, मः ३)
तिन के दूख गवाइआ जा हरि मनि भाइआ सदा गावहि रंगि राते ॥ (७७१-७, सूही, मः ३)
हरि के भगत सदा जन निर्मल जुगि जुगि सद ही जाते ॥ (७७१-८, सूही, मः ३)
साची भगति करहि दरि जापहि घरि दरि सचा सोई ॥ (७७१-८, सूही, मः ३)
नानक सचा सोहिला सची सचु बाणी सबदे ही सुखु होई ॥४॥४॥५॥ (७७१-९, सूही, मः ३)
सूही महला ३ ॥ (७७१-१०)
जे लोड़हि वरु बालड़ीए ता गुर चरणी चितु लाए राम ॥ (७७१-१०, सूही, मः ३)
सदा होवहि सोहागणी हरि जीउ मरै न जाए राम ॥ (७७१-१०, सूही, मः ३)
हरि जीउ मरै न जाए गुर कै सहजि सुभाए सा धन कंत पिआरी ॥ (७७१-११, सूही, मः ३)
सचि संजमि सदा है निर्मल गुर कै सबदि सीगारी ॥ (७७१-११, सूही, मः ३)
मेरा प्रभु साचा सद ही साचा जिनि आपे आपु उपाइआ ॥ (७७१-१२, सूही, मः ३)
नानक सदा पिरु रावे आपणा जिनि गुर चरणी चितु लाइआ ॥१॥ (७७१-१३, सूही, मः ३)
पिरु पाइअड़ा बालड़ीए अनदिनु सहजे माती राम ॥ (७७१-१३, सूही, मः ३)
गुरमती मनि अनदु भइआ तितु तनि मैलु न राती राम ॥ (७७१-१४, सूही, मः ३)
तितु तनि मैलु न राती हरि प्रभि राती मेरा प्रभु मेलि मिलाए ॥ (७७१-१४, सूही, मः ३)
अनदिनु रावे हरि प्रभु अपणा विचहु आपु गवाए ॥ (७७१-१५, सूही, मः ३)
गुरमति पाइआ सहजि मिलाइआ अपणे प्रीतम राती ॥ (७७१-१५, सूही, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई प्रभु रावे रंगि राती ॥२॥ (७७१-१६, सूही, मः ३)
पिरु रावे रंगि रातड़ीए पिर का महलु तिन पाइआ राम ॥ (७७१-१७, सूही, मः ३)
सो सहो अति निरमलु दाता जिनि विचहु आपु गवाइआ राम ॥ (७७१-१७, सूही, मः ३)
विचहु मोहु चुकाइआ जा हरि भाइआ हरि कामणि मनि भाणी ॥ (७७१-१८, सूही, मः ३)
अनदिनु गुण गावै नित साचे कथे अकथ कहाणी ॥ (७७१-१९, सूही, मः ३)
जुग चारे साचा एको वरतै बिनु गुर किनै न पाइआ ॥ (७७१-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७७२

नानक रंगि रवै रंगि राती जिनि हरि सेती चितु लाइआ ॥३॥ (७७२-१, सूही, मः ३)
कामणि मनि सोहिलड़ा साजन मिले पिआरे राम ॥ (७७२-१, सूही, मः ३)
गुरमती मनु निरमलु होआ हरि राखिआ उरि धारे राम ॥ (७७२-२, सूही, मः ३)
हरि राखिआ उरि धारे अपना कारजु सवारे गुरमती हरि जाता ॥ (७७२-२, सूही, मः ३)
प्रीतमि मोहि लइआ मनु मेरा पाइआ कर्म बिधाता ॥ (७७२-३, सूही, मः ३)

सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ हरि वसिआ मंनि मुरारे ॥ (७७२-४, सूही, मः ३)
नानक मेलि लई गुरि अपुनै गुर कै सबदि सवारे ॥४॥५॥६॥ (७७२-४, सूही, मः ३)
सूही महला ३ ॥ (७७२-५)
सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे राम ॥ (७७२-५, सूही, मः ३)
हरि मनु तनो गुरमुखि भीजै राम नामु पिआरे राम ॥ (७७२-६, सूही, मः ३)
राम नामु पिआरे सभि कुल उधारे राम नामु मुखि बाणी ॥ (७७२-६, सूही, मः ३)
आवण जाण रहे सुखु पाइआ घरि अनहद सुरति समाणी ॥ (७७२-७, सूही, मः ३)
हरि हरि एको पाइआ हरि प्रभु नानक किरपा धारे ॥ (७७२-७, सूही, मः ३)
सोहिलड़ा हरि राम नामु गुर सबदी वीचारे ॥१॥ (७७२-८, सूही, मः ३)
हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥ (७७२-८, सूही, मः ३)
गुरि मेली बहु किरपा धारी हरि कै सबदि सुभाए राम ॥ (७७२-९, सूही, मः ३)
मिलु सबदि सुभाए आपु गवाए रंग सिउ रलीआ माणे ॥ (७७२-९, सूही, मः ३)
सेज सुखाली जा प्रभु भाइआ हरि हरि नामि समाणे ॥ (७७२-१०, सूही, मः ३)
नानक सोहागणि सा वडभागी जे चलै सतिगुर भाए ॥ (७७२-११, सूही, मः ३)
हम नीवी प्रभु अति ऊचा किउ करि मिलिआ जाए राम ॥२॥ (७७२-११, सूही, मः ३)
घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥ (७७२-१२, सूही, मः ३)
इकना प्रभु दूरि वसै इकना मनि आधारो राम ॥ (७७२-१२, सूही, मः ३)
इकना मन आधारो सिरजणहारो वडभागी गुरु पाइआ ॥ (७७२-१३, सूही, मः ३)
घटि घटि हरि प्रभु एको सुआमी गुरमुखि अलखु लखाइआ ॥ (७७२-१३, सूही, मः ३)
सहजे अनदु होआ मनु मानिआ नानक ब्रह्म बीचारो ॥ (७७२-१४, सूही, मः ३)
घटि घटे सभना विचि एको एको राम भतारो राम ॥३॥ (७७२-१४, सूही, मः ३)
गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाइआ राम ॥ (७७२-१५, सूही, मः ३)
हरि धूड़ि देवहु मै पूरे गुर की हम पापी मुकतु कराइआ राम ॥ (७७२-१६, सूही, मः ३)
पापी मुकतु कराए आपु गवाए निज घरि पाइआ वासा ॥ (७७२-१६, सूही, मः ३)
बिबेक बुधी सुखि रैणि विहाणी गुरमति नामि प्रगासा ॥ (७७२-१७, सूही, मः ३)
हरि हरि अनदु भइआ दिनु राती नानक हरि मीठ लगाए ॥ (७७२-१७, सूही, मः ३)
गुरु सेवनि सतिगुरु दाता हरि हरि नामि समाए ॥४॥६॥७॥५॥७॥१२॥ (७७२-१८, सूही, मः ३)

पन्ना ७७३

रागु सूही महला ४ छंत घरु १ (७७३-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७७३-१)
सतिगुरु पुरखु मिलाइ अवगण विकणा गुण रवा बलि राम जीउ ॥ (७७३-२, सूही, मः ४)
हरि हरि नामु धिआइ गुरबाणी नित नित चवा बलि राम जीउ ॥ (७७३-२, सूही, मः ४)
गुरबाणी सद मीठी लागी पाप विकार गवाइआ ॥ (७७३-३, सूही, मः ४)
हउमै रोगु गइआ भउ भागा सहजे सहजि मिलाइआ ॥ (७७३-३, सूही, मः ४)

काइआ सेज गुर सबदि सुखाली गिआन तति करि भोगो ॥ (७७३-४, सूही, मः ४)
अनदिनु सुखि माणे नित रलीआ नानक धुरि संजोगो ॥१॥ (७७३-५, सूही, मः ४)
सतु संतोखु करि भाउ कुड़मु कुड़माई आइआ बलि राम जीउ ॥ (७७३-५, सूही, मः ४)
संत जना करि मेलु गुरबाणी गावाईआ बलि राम जीउ ॥ (७७३-६, सूही, मः ४)
बाणी गुर गाई परम गति पाई पंच मिले सोहाइआ ॥ (७७३-६, सूही, मः ४)
गइआ करोधु ममता तनि नाठी पाखंडु भरमु गवाइआ ॥ (७७३-७, सूही, मः ४)
हउमै पीर गई सुखु पाइआ आरोगत भए सरीरा ॥ (७७३-८, सूही, मः ४)
गुर परसादी ब्रह्मु पछाता नानक गुणी गहीरा ॥२॥ (७७३-८, सूही, मः ४)
मनमुखि विछुड़ी दूरि महलु न पाए बलि गई बलि राम जीउ ॥ (७७३-९, सूही, मः ४)
अंतरि ममता कूरि कूड़ु विहाझे कूड़ि लई बलि राम जीउ ॥ (७७३-९, सूही, मः ४)
कूड़ु कपटु कमावै महा दुखु पावै विणु सतिगुर मगु न पाइआ ॥ (७७३-१०, सूही, मः ४)
उझड़ पंथि भ्रमै गावारी खिनु खिनु धके खाइआ ॥ (७७३-१०, सूही, मः ४)
आपे दइआ करे प्रभु दाता सतिगुरु पुरखु मिलाए ॥ (७७३-११, सूही, मः ४)
जनम जनम के विछुड़े जन मेले नानक सहजि सुभाए ॥३॥ (७७३-१२, सूही, मः ४)
आइआ लगनु गणाइ हिरदै धन ओमाहीआ बलि राम जीउ ॥ (७७३-१२, सूही, मः ४)
पंडित पाधे आणि पती बहि वाचाईआ बलि राम जीउ ॥ (७७३-१३, सूही, मः ४)
पती वाचाई मनि वजी वधाई जब साजन सुणे घरि आए ॥ (७७३-१३, सूही, मः ४)
गुणी गिआनी बहि मता पकाइआ फेरे ततु दिवाए ॥ (७७३-१४, सूही, मः ४)
वरु पाइआ पुरखु अगम्मु अगोचरु सद नवतनु बाल सखाई ॥ (७७३-१५, सूही, मः ४)
नानक किरपा करि कै मेले विछुड़ि कदे न जाई ॥४॥१॥ (७७३-१५, सूही, मः ४)
सूही महला ४ ॥ (७७३-१६)
हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७३-१६, सूही, मः ४)
बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७३-१७, सूही, मः ४)
धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥ (७७३-१७, सूही, मः ४)
सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ (७७३-१८, सूही, मः ४)
सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ (७७३-१८, सूही, मः ४)

पन्ना ७७४

जनु कहै नानकु लाव पहिली आरम्भु काजु रचाइआ ॥१॥ (७७४-१, सूही, मः ४)
हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७४-२, सूही, मः ४)
निरभउ भै मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७४-२, सूही, मः ४)
निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ (७७४-३, सूही, मः ४)
हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ (७७४-३, सूही, मः ४)
अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ (७७४-४, सूही, मः ४)
जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥२॥ (७७४-५, सूही, मः ४)

हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ (७७४-५, सूही, मः ४)
संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ (७७४-६, सूही, मः ४)
निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ (७७४-७, सूही, मः ४)
संत जना वडभागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ (७७४-७, सूही, मः ४)
हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ (७७४-८, सूही, मः ४)
जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥ (७७४-८, सूही, मः ४)
हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७४-९, सूही, मः ४)
गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७४-१०, सूही, मः ४)
हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ (७७४-१०, सूही, मः ४)
मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ (७७४-११, सूही, मः ४)
हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ (७७४-१२, सूही, मः ४)
जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥ (७७४-१२, सूही, मः ४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७७४-१४)
रागु सूही छंत महला ४ घरु २ ॥ (७७४-१५)
गुरमुखि हरि गुण गाए ॥ (७७४-१५, सूही, मः ४)
हिरदै रसन रसाए ॥ (७७४-१५, सूही, मः ४)
हरि रसन रसाए मेरे प्रभ भाए मिलिआ सहजि सुभाए ॥ (७७४-१५, सूही, मः ४)
अनदिनु भोग भोगे सुखि सोवै सबदि रहै लिव लाए ॥ (७७४-१६, सूही, मः ४)
वडै भागि गुरु पूरा पाईऐ अनदिनु नामु धिआए ॥ (७७४-१६, सूही, मः ४)
सहजे सहजि मिलिआ जगजीवनु नानक सुंनि समाए ॥१॥ (७७४-१७, सूही, मः ४)
संगति संत मिलाए ॥ (७७४-१८, सूही, मः ४)
हरि सरि निरमलि नाए ॥ (७७४-१८, सूही, मः ४)
निरमलि जलि नाए मैलु गवाए भए पवितु सरीरा ॥ (७७४-१८, सूही, मः ४)
दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा हउमै बिनठी पीरा ॥ (७७४-१९, सूही, मः ४)
नदरि प्रभू सतसंगति पाई निज घरि होआ वासा ॥ (७७४-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७७५

हरि मंगल रसि रसन रसाए नानक नामु प्रगासा ॥२॥ (७७५-१, सूही, मः ४)
अंतरि रतनु बीचारे ॥ (७७५-१, सूही, मः ४)
गुरमुखि नामु पिआरे ॥ (७७५-१, सूही, मः ४)
हरि नामु पिआरे सबदि निसतारे अगिआनु अधेरु गवाइआ ॥ (७७५-२, सूही, मः ४)
गिआनु प्रचंडु बलिआ घटि चानणु घर मंदर सोहाइआ ॥ (७७५-२, सूही, मः ४)
तनु मनु अरपि सीगार बणाए हरि प्रभ साचे भाइआ ॥ (७७५-३, सूही, मः ४)
जो प्रभु कहै सोई परु कीजै नानक अंकि समाइआ ॥३॥ (७७५-४, सूही, मः ४)
हरि प्रभि काजु रचाइआ ॥ (७७५-४, सूही, मः ४)

गुरमुखि वीआहणि आइआ ॥ (७७५-४, सूही, मः ४)
वीआहणि आइआ गुरमुखि हरि पाइआ सा धन कंत पिआरी ॥ (७७५-५, सूही, मः ४)
संत जना मिलि मंगल गाए हरि जीउ आपि सवारी ॥ (७७५-५, सूही, मः ४)
सुरि नर गण गंधरब मिलि आए अपूरब जंञ बणाई ॥ (७७५-६, सूही, मः ४)
नानक प्रभु पाइआ मै साचा ना कदे मरै न जाई ॥४॥१॥३॥ (७७५-६, सूही, मः ४)
रागु सूही छंत महला ४ घरु ३ (७७५-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७७५-८)
आवहो संत जनहु गुण गावह गोविंद केरे राम ॥ (७७५-९, सूही, मः ४)
गुरमुखि मिलि रहीऐ घरि वाजहि सबद घनेरे राम ॥ (७७५-९, सूही, मः ४)
सबद घनेरे हरि प्रभ तेरे तू करता सभ थाई ॥ (७७५-१०, सूही, मः ४)
अहिनिसि जपी सदा सालाही साच सबदि लिव लाई ॥ (७७५-१०, सूही, मः ४)
अनदिनु सहजि रहै रंगि राता राम नामु रिद पूजा ॥ (७७५-११, सूही, मः ४)
नानक गुरमुखि एकु पछाणै अवरु न जाणै दूजा ॥१॥ (७७५-११, सूही, मः ४)
सभ महि रवि रहिआ सो प्रभु अंतरजामी राम ॥ (७७५-१२, सूही, मः ४)
गुर सबदि रवै रवि रहिआ सो प्रभु मेरा सुआमी राम ॥ (७७५-१२, सूही, मः ४)
प्रभु मेरा सुआमी अंतरजामी घटि घटि रविआ सोई ॥ (७७५-१३, सूही, मः ४)
गुरमति सचु पाईऐ सहजि समाईऐ तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (७७५-१३, सूही, मः ४)
सहजे गुण गावा जे प्रभ भावा आपे लए मिलाए ॥ (७७५-१४, सूही, मः ४)
नानक सो प्रभु सबदे जापै अहिनिसि नामु धिआए ॥२॥ (७७५-१४, सूही, मः ४)
इहु जगो दुतरु मनमुखु पारि न पाई राम ॥ (७७५-१५, सूही, मः ४)
अंतरे हउमै ममता कामु क्रोधु चतुराई राम ॥ (७७५-१५, सूही, मः ४)
अंतरि चतुराई थाइ न पाई बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (७७५-१६, सूही, मः ४)
जम मगि दुखु पावै चोटा खावै अंति गइआ पछुताइआ ॥ (७७५-१७, सूही, मः ४)
बिनु नावै को बेली नाही पुतु कुटम्बु सुतु भाई ॥ (७७५-१७, सूही, मः ४)
नानक माइआ मोहु पसारा आगै साथि न जाई ॥३॥ (७७५-१८, सूही, मः ४)
हउ पूछउ अपना सतिगुरु दाता किन बिधि दुतरु तरीऐ राम ॥ (७७५-१८, सूही, मः ४)
सतिगुर भाइ चलहु जीवतिआ इव मरीऐ राम ॥ (७७५-१९, सूही, मः ४)
जीवतिआ मरीऐ भउजलु तरीऐ गुरमुखि नामि समावै ॥ (७७५-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७७६

पूरा पुरखु पाइआ वडभागी सचि नामि लिव लावै ॥ (७७६-१, सूही, मः ४)
मति परगासु भई मनु मानिआ राम नामि वडिआई ॥ (७७६-१, सूही, मः ४)
नानक प्रभु पाइआ सबदि मिलाइआ जोती जोति मिलाई ॥४॥१॥४॥ (७७६-२, सूही, मः ४)
सूही महला ४ घरु ५ (७७६-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७७६-४)

गुरु संत जनो पिआरा मै मिलिआ मेरी तृसना बुझि गईआसे ॥ (७७६-५, सूही, मः ४)
हउ मनु तनु देवा सतिगुरै मै मेले प्रभ गुणतासे ॥ (७७६-५, सूही, मः ४)
धनु धन्नु गुरू वड पुरखु है मै दसे हरि साबासे ॥ (७७६-६, सूही, मः ४)
वडभागी हरि पाइआ जन नानक नामि विगासे ॥१॥ (७७६-६, सूही, मः ४)
गुरु सजणु पिआरा मै मिलिआ हरि मारगु पंथु दसाहा ॥ (७७६-७, सूही, मः ४)
घरि आवहु चिरी विछुंनिआ मिलु सबदि गुरू प्रभ नाहा ॥ (७७६-७, सूही, मः ४)
हउ तुझु बाझहु खरी उडीणीआ जिउ जल बिनु मीनु मराहा ॥ (७७६-८, सूही, मः ४)
वडभागी हरि धिआइआ जन नानक नामि समाहा ॥२॥ (७७६-९, सूही, मः ४)
मनु दह दिसि चलि चलि भरमिआ मनमुखु भरमि भुलाइआ ॥ (७७६-९, सूही, मः ४)
नित आसा मनि चितवै मन तृसना भुख लगाइआ ॥ (७७६-१०, सूही, मः ४)
अनता धनु धरि दबिआ फिरि बिखु भालण गइआ ॥ (७७६-१०, सूही, मः ४)
जन नानक नामु सलाहि तू बिनु नावै पचि पचि मुइआ ॥३॥ (७७६-११, सूही, मः ४)
गुरु सुंदरु मोहनु पाइ करे हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ ॥ (७७६-११, सूही, मः ४)
मेरै हिरदै सुधि बुधि विसरि गई मन आसा चिंत विसारिआ ॥ (७७६-१२, सूही, मः ४)
मै अंतरि वेदन प्रेम की गुर देखत मनु साधारिआ ॥ (७७६-१३, सूही, मः ४)
वडभागी प्रभ आइ मिलु जनु नानकु खिनु खिनु वारिआ ॥४॥१॥५॥ (७७६-१३, सूही, मः ४)
सूही छंत महला ४ ॥ (७७६-१४)
मारेहिसु वे जन हउमै बिखिआ जिनि हरि प्रभ मिलण न दितीआ ॥ (७७६-१४, सूही, मः ४)
देह कंचन वे वन्नीआ इनि हउमै मारि विगुतीआ ॥ (७७६-१५, सूही, मः ४)
मोहु माइआ वे सभ कालखा इनि मनमुखि मूड़ि सजुतीआ ॥ (७७६-१५, सूही, मः ४)
जन नानक गुरमुखि उबरे गुर सबदी हउमै छुटीआ ॥१॥ (७७६-१६, सूही, मः ४)
वसि आणिहु वे जन इसु मन कउ मनु बासे जिउ नित भउदिआ ॥ (७७६-१६, सूही, मः ४)
दुखि रैणि वे विहाणीआ नित आसा आस करेदिआ ॥ (७७६-१७, सूही, मः ४)
गुरु पाइआ वे संत जनो मनि आस पूरी हरि चउदिआ ॥ (७७६-१८, सूही, मः ४)
जन नानक प्रभ देहु मती छडि आसा नित सुखि सउदिआ ॥२॥ (७७६-१८, सूही, मः ४)
सा धन आसा चिति करे राम राजिआ हरि प्रभ सेजड़ीऐ आई ॥ (७७६-१९, सूही, मः ४)
मेरा ठाकुरु अगम दइआलु है राम राजिआ करि किरपा लेहु मिलाई ॥ (७७६-१९, सूही, मः ४)

पन्ना ७७७

मेरै मनि तनि लोचा गुरमुखे राम राजिआ हरि सरधा सेज विछाई ॥ (७७७-१, सूही, मः ४)
जन नानक हरि प्रभ भाणीआ राम राजिआ मिलिआ सहजि सुभाई ॥३॥ (७७७-२, सूही, मः ४)
इकतु सेजै हरि प्रभो राम राजिआ गुरु दसे हरि मेलेई ॥ (७७७-३, सूही, मः ४)
मै मनि तनि प्रेम बैरागु है राम राजिआ गुरु मेले किरपा करेई ॥ (७७७-३, सूही, मः ४)
हउ गुर विटहु घोलि घुमाइआ राम राजिआ जीउ सतिगुर आगै देई ॥ (७७७-४, सूही, मः ४)
गुरु तुठा जीउ राम राजिआ जन नानक हरि मेलेई ॥४॥२॥६॥५॥७॥६॥१८॥ (७७७-४, सूही, मः ४)

रागु सूही छंत महला ५ घरु १ (७७७-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७७७-६)
सुणि बावरे तू काए देखि भुलाना ॥ (७७७-७, सूही, मः ५)
सुणि बावरे नेहु कूड़ा लाइओ कुसम्भ रंगाना ॥ (७७७-७, सूही, मः ५)
कूड़ी डेखि भुलो अढु लहै न मुलो गोविद नामु मजीठा ॥ (७७७-७, सूही, मः ५)
थीवहि लाला अति गुलाला सबदु चीनि गुर मीठा ॥ (७७७-८, सूही, मः ५)
मिथिआ मोहि मगनु थी रहिआ झूठ संगि लपटाना ॥ (७७७-८, सूही, मः ५)
नानक दीन सरणि किरपा निधि राखु लाज भगताना ॥१॥ (७७७-६, सूही, मः ५)
सुणि बावरे सेवि ठाकुरु नाथु पराणा ॥ (७७७-१०, सूही, मः ५)
सुणि बावरे जो आइआ तिसु जाणा ॥ (७७७-१०, सूही, मः ५)
निहचलु हभ वैसी सुणि परदेसी संतसंगि मिलि रहीऐ ॥ (७७७-१०, सूही, मः ५)
हरि पाईऐ भागी सुणि बैरागी चरण प्रभू गहि रहीऐ ॥ (७७७-११, सूही, मः ५)
एहु मनु दीजै संक न कीजै गुरमुखि तजि बहु माणा ॥ (७७७-११, सूही, मः ५)
नानक दीन भगत भव तारण तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥२॥ (७७७-१२, सूही, मः ५)
सुणि बावरे किआ कीचै कूड़ा मानो ॥ (७७७-१३, सूही, मः ५)
सुणि बावरे हभु वैसी गरबु गुमानो ॥ (७७७-१३, सूही, मः ५)
निहचलु हभ जाणा मिथिआ माणा संत प्रभू होइ दासा ॥ (७७७-१३, सूही, मः ५)
जीवत मरीऐ भउजलु तरीऐ जे थीवै करमि लिखिआसा ॥ (७७७-१४, सूही, मः ५)
गुरु सेवीजै अमृतु पीजै जिसु लावहि सहजि धिआनो ॥ (७७७-१४, सूही, मः ५)
नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हउ बलि बलि सद कुरबानो ॥३॥ (७७७-१५, सूही, मः ५)
सुणि बावरे मतु जाणहि प्रभु मै पाइआ ॥ (७७७-१६, सूही, मः ५)
सुणि बावरे थीउ रेणु जिनी प्रभु धिआइआ ॥ (७७७-१६, सूही, मः ५)
जिनि प्रभु धिआइआ तिनि सुखु पाइआ वडभागी दरसनु पाईऐ ॥ (७७७-१७, सूही, मः ५)
थीउ निमाणा सद कुरबाणा सगला आपु मिटाईऐ ॥ (७७७-१७, सूही, मः ५)
ओहु धनु भाग सुधा जिनि प्रभु लधा हम तिसु पहि आपु वेचाइआ ॥ (७७७-१८, सूही, मः ५)
नानक दीन सरणि सुख सागर राखु लाज अपनाइआ ॥४॥१॥ (७७७-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७७७-१६)
हरि चरण कमल की टेक सतिगुरि दिती तुसि कै बलि राम जीउ ॥ (७७७-१६, सूही, मः ५)

पन्ना ७७८

हरि अमृति भरे भंडार सभु किछु है घरि तिस कै बलि राम जीउ ॥ (७७८-१, सूही, मः ५)
बाबुलु मेरा वड समरथा करण कारण प्रभु हारा ॥ (७७८-२, सूही, मः ५)
जिसु सिमरत दुखु कोई न लागै भउजलु पारि उतारा ॥ (७७८-२, सूही, मः ५)
आदि जुगादि भगतन का राखा उसतति करि करि जीवा ॥ (७७८-३, सूही, मः ५)
नानक नामु महा रसु मीठा अनदिनु मनि तनि पीवा ॥१॥ (७७८-३, सूही, मः ५)

हरि आपे लए मिलाइ किउ वेछोड़ा थीवई बलि राम जीउ ॥ (७७८-४, सूही, मः ५)
जिस नो तेरी टेक सो सदा सद जीवई बलि राम जीउ ॥ (७७८-५, सूही, मः ५)
तेरी टेक तुझै ते पाई साचे सिरजणहारा ॥ (७७८-५, सूही, मः ५)
जिस ते खाली कोई नाही ऐसा प्रभू हमारा ॥ (७७८-६, सूही, मः ५)
संत जना मिलि मंगलु गाइआ दिनु रैनि आस तुमारी ॥ (७७८-६, सूही, मः ५)
सफलु दरसु भेटिआ गुरु पूरा नानक सद बलिहारी ॥२॥ (७७८-७, सूही, मः ५)
सम्मलिआ सचु थानु मानु महतु सचु पाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७८-७, सूही, मः ५)
सतिगुरु मिलिआ दइआलु गुण अबिनासी गाइआ बलि राम जीउ ॥ (७७८-८, सूही, मः ५)
गुण गोविंद गाउ नित नित प्राण प्रीतम सुआमीआ ॥ (७७८-८, सूही, मः ५)
सुभ दिवस आए गहि कंठि लाए मिले अंतरजामीआ ॥ (७७८-९, सूही, मः ५)
सतु संतोखु वजहि वाजे अनहदा झुणकारे ॥ (७७८-९, सूही, मः ५)
सुणि भै बिनासे सगल नानक प्रभ पुरख करणैहारे ॥३॥ (७७८-१०, सूही, मः ५)
उपजिआ ततु गिआनु साहुरै पेईऐ इकु हरि बलि राम जीउ ॥ (७७८-१०, सूही, मः ५)
ब्रह्मै ब्रह्मु मिलिआ कोइ न साकै भिन्न करि बलि राम जीउ ॥ (७७८-११, सूही, मः ५)
बिसमु पेखै बिसमु सुणीऐ बिसमादु नदरी आइआ ॥ (७७८-१२, सूही, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी घटि घटि रहिआ समाइआ ॥ (७७८-१२, सूही, मः ५)
जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाइआ कीमति कहणु न जाए ॥ (७७८-१३, सूही, मः ५)
जिस के चलत न जाही लखणे नानक तिसहि धिआए ॥४॥२॥ (७७८-१४, सूही, मः ५)
रागु सूही छंत महला ५ घरु २ (७७८-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७७८-१५)
गोबिंद गुण गावण लागे ॥ (७७८-१६, सूही, मः ५)
हरि रंगि अनदिनु जागे ॥ (७७८-१६, सूही, मः ५)
हरि रंगि जागे पाप भागे मिले संत पिआरिआ ॥ (७७८-१६, सूही, मः ५)
गुर चरण लागे भर्म भागे काज सगल सवारिआ ॥ (७७८-१७, सूही, मः ५)
सुणि स्रवण बाणी सहजि जाणी हरि नामु जपि वडभागै ॥ (७७८-१७, सूही, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी जीउ पिंडु प्रभ आगै ॥१॥ (७७८-१८, सूही, मः ५)
अनहत सबदु सुहावा ॥ (७७८-१८, सूही, मः ५)
सचु मंगलु हरि जसु गावा ॥ (७७८-१८, सूही, मः ५)
गुण गाइ हरि हरि दूख नासे रहसु उपजै मनि घणा ॥ (७७८-१९, सूही, मः ५)
मनु तन्नु निरमलु देखि दरसनु नामु प्रभ का मुखि भणा ॥ (७७८-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७७९

होइ रेण साधू प्रभ अराधू आपणे प्रभ भावा ॥ (७७९-१, सूही, मः ५)
बिनवंति नानक दइआ धारहु सदा हरि गुण गावा ॥२॥ (७७९-१, सूही, मः ५)
गुर मिलि सागरु तरिआ ॥ (७७९-२, सूही, मः ५)

हरि चरण जपत निसतरिआ ॥ (७७६-२, सूही, मः ५)
हरि चरण धिआए सभि फल पाए मिटे आवण जाणा ॥ (७७६-३, सूही, मः ५)
भाइ भगति सुभाइ हरि जपि आपणे प्रभ भावा ॥ (७७६-३, सूही, मः ५)
जपि एकु अलख अपार पूरन तिसु बिना नही कोई ॥ (७७६-४, सूही, मः ५)
बिनवंति नानक गुरि भरमु खोइआ जत देखा तत सोई ॥३॥ (७७६-४, सूही, मः ५)
पतित पावन हरि नामा ॥ (७७६-५, सूही, मः ५)
पूरन संत जना के कामा ॥ (७७६-५, सूही, मः ५)
गुरु संतु पाइआ प्रभु धिआइआ सगल इछा पुंनीआ ॥ (७७६-५, सूही, मः ५)
हउ ताप बिनसे सदा सरसे प्रभ मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (७७६-६, सूही, मः ५)
मनि साति आई वजी वधाई मनहु कदे न वीसरै ॥ (७७६-७, सूही, मः ५)
बिनवंति नानक सतिगुरि दृड़ाइआ सदा भजु जगदीसरै ॥४॥१॥३॥ (७७६-७, सूही, मः ५)
रागु सूही छंत महला ५ घरु ३ (७७६-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७७६-९)
तू ठाकुरो बैरागरो मै जेही घण चेरी राम ॥ (७७६-१०, सूही, मः ५)
तूं सागरो रतनागरो हउ सार न जाणा तेरी राम ॥ (७७६-१०, सूही, मः ५)
सार न जाणा तू वड दाणा करि मिहरम्मति साँई ॥ (७७६-१०, सूही, मः ५)
किरपा कीजै सा मति दीजै आठ पहर तुधु धिआई ॥ (७७६-११, सूही, मः ५)
गरबु न कीजै रेण होवीजै ता गति जीअरे तेरी ॥ (७७६-११, सूही, मः ५)
सभ ऊपरि नानक का ठाकुरु मै जेही घण चेरी राम ॥१॥ (७७६-१२, सूही, मः ५)
तुम्ह गउहर अति गहिर गम्भीरा तुम पिर हम बहुरीआ राम ॥ (७७६-१२, सूही, मः ५)
तुम वडे वडे वड ऊचे हउ इतनीक लहुरीआ राम ॥ (७७६-१३, सूही, मः ५)
हउ किछु नाही एको तूहै आपे आपि सुजाना ॥ (७७६-१४, सूही, मः ५)
अमृत दृसटि निमख प्रभ जीवा सर्ब रंग रस माना ॥ (७७६-१४, सूही, मः ५)
चरणह सरनी दासह दासी मनि मउलै तनु हरीआ ॥ (७७६-१५, सूही, मः ५)
नानक ठाकुरु सर्ब समाणा आपन भावन करीआ ॥२॥ (७७६-१५, सूही, मः ५)
तुझु ऊपरि मेरा है माणा तूहै मेरा ताणा राम ॥ (७७६-१६, सूही, मः ५)
सुरति मति चतुराई तेरी तू जाणाइहि जाणा राम ॥ (७७६-१६, सूही, मः ५)
सोई जाणै सोई पछाणै जा कउ नदरि सिरंदे ॥ (७७६-१७, सूही, मः ५)
मनमुखि भूली बहुती राही फाथी माइआ फंदे ॥ (७७६-१७, सूही, मः ५)
ठाकुर भाणी सा गुणवंती तिन ही सभ रंग माणा ॥ (७७६-१८, सूही, मः ५)
नानक की धर तूहै ठाकुर तू नानक का माणा ॥३॥ (७७६-१८, सूही, मः ५)
हउ वारी वंञा घोली वंञा तू परबतु मेरा ओल्हा राम ॥ (७७६-१९, सूही, मः ५)
हउ बलि जाई लख लख लख बरीआ जिनि भ्रमु परदा खोल्हा राम ॥ (७७६-१९, सूही, मः ५)

मिटे अंधारे तजे बिकारे ठाकुर सिउ मनु माना ॥ (७८०-१, सूही, मः ५)
प्रभ जी भाणी भई निकाणी सफल जनमु परवाना ॥ (७८०-१, सूही, मः ५)
भई अमोली भारा तोली मुकति जुगति दरु खोल्हा ॥ (७८०-२, सूही, मः ५)
कहु नानक हउ निरभउ होई सो प्रभु मेरा ओल्हा ॥४॥१॥४॥ (७८०-२, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७८०-३)
साजनु पुरखु सतिगुरु मेरा पूरा तिसु बिनु अवरु न जाणा राम ॥ (७८०-३, सूही, मः ५)
मात पिता भाई सुत बंधप जीअ प्राण मनि भाणा राम ॥ (७८०-४, सूही, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तिस का दीआ सर्ब गुणा भरपूरे ॥ (७८०-४, सूही, मः ५)
अंतरजामी सो प्रभु मेरा सर्ब रहिआ भरपूरे ॥ (७८०-५, सूही, मः ५)
ता की सरणि सर्ब सुख पाए होए सर्ब कलिआणा ॥ (७८०-५, सूही, मः ५)
सदा सदा प्रभ कउ बलिहारै नानक सद कुरबाणा ॥१॥ (७८०-६, सूही, मः ५)
ऐसा गुरु वडभागी पाईऐ जितु मिलिऐ प्रभु जापै राम ॥ (७८०-६, सूही, मः ५)
जनम जनम के किलविख उतरहि हरि संत धूड़ी नित नापै राम ॥ (७८०-७, सूही, मः ५)
हरि धूड़ी नाईऐ प्रभू धिआईऐ बाहुड़ि जोनि न आईऐ ॥ (७८०-८, सूही, मः ५)
गुर चरणी लागे भ्रम भउ भागे मनि चिंदिआ फलु पाईऐ ॥ (७८०-८, सूही, मः ५)
हरि गुण नित गाए नामु धिआए फिरि सोगु नाही संतापै ॥ (७८०-९, सूही, मः ५)
नानक सो प्रभु जीअ का दाता पूरा जिसु परतापै ॥२॥ (७८०-१०, सूही, मः ५)
हरि हरे हरि गुण निधे हरि संतन कै वसि आए राम ॥ (७८०-१०, सूही, मः ५)
संत चरण गुर सेवा लागे तिनी पर्म पद पाए राम ॥ (७८०-११, सूही, मः ५)
पर्म पदु पाइआ आपु मिटाइआ हरि पूरन किरपा धारी ॥ (७८०-११, सूही, मः ५)
सफल जनमु होआ भउ भागा हरि भेटिआ एकु मुरारी ॥ (७८०-१२, सूही, मः ५)
जिस का सा तिन ही मेलि लीआ जोती जोति समाइआ ॥ (७८०-१२, सूही, मः ५)
नानक नामु निरंजन जपीऐ मिलि सतिगुर सुखु पाइआ ॥३॥ (७८०-१३, सूही, मः ५)
गाउ मंगलो नित हरि जनहु पुंन्नी इछ सबाई राम ॥ (७८०-१३, सूही, मः ५)
रंगि रते अपुने सुआमी सेती मरै न आवै जाई राम ॥ (७८०-१४, सूही, मः ५)
अबिनासी पाइआ नामु धिआइआ सगल मनोरथ पाए ॥ (७८०-१५, सूही, मः ५)
साँति सहज आनंद घनेरे गुर चरणी मनु लाए ॥ (७८०-१५, सूही, मः ५)
पूरि रहिआ घटि घटि अबिनासी थान थनंतरि साई ॥ (७८०-१६, सूही, मः ५)
कहु नानक कारज सगले पूरे गुर चरणी मनु लाई ॥४॥२॥५॥ (७८०-१६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७८०-१७)
करि किरपा मेरे प्रीतम सुआमी नेत्र देखहि दरसु तेरा राम ॥ (७८०-१७, सूही, मः ५)
लाख जिहवा देहु मेरे पिआरे मुखु हरि आराधे मेरा राम ॥ (७८०-१८, सूही, मः ५)
हरि आराधे जम पंथु साधे दूखु न विआपै कोई ॥ (७८०-१८, सूही, मः ५)

जलि थलि महीअलि पूरन सुआमी जत देखा तत सोई ॥ (७८०-१६, सूही, मः ५)
भर्म मोह बिकार नाठे प्रभु नेर हू ते नेरा ॥ (७८०-१६, सूही, मः ५)

पन्ना ७८१

नानक कउ प्रभ किरपा कीजै नेत्र देखहि दरसु तेरा ॥१॥ (७८१-१, सूही, मः ५)
कोटि करन दीजहि प्रभ प्रीतम हरि गुण सुणीअहि अबिनासी राम ॥ (७८१-१, सूही, मः ५)
सुणि सुणि इहु मनु निरमलु होवै कटीऐ काल की फासी राम ॥ (७८१-२, सूही, मः ५)
कटीऐ जम फासी सिमरि अबिनासी सगल मंगल सुगिआना ॥ (७८१-३, सूही, मः ५)
हरि हरि जपु जपीऐ दिनु राती लागै सहजि धिआना ॥ (७८१-३, सूही, मः ५)
कलमल दुख जारे प्रभू चितारे मन की दुरमति नासी ॥ (७८१-४, सूही, मः ५)
कहु नानक प्रभ किरपा कीजै हरि गुण सुणीअहि अविनासी ॥२॥ (७८१-४, सूही, मः ५)
करोड़ि हसत तेरी टहल कमावहि चरण चलहि प्रभ मारगि राम ॥ (७८१-५, सूही, मः ५)
भव सागर नाव हरि सेवा जो चड़ै तिसु तारगि राम ॥ (७८१-६, सूही, मः ५)
भवजलु तरिआ हरि हरि सिमरिआ सगल मनोरथ पूरे ॥ (७८१-६, सूही, मः ५)
महा बिकार गए सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥ (७८१-७, सूही, मः ५)
मन बाँछत फल पाए सगले कुदरति कीम अपारगि ॥ (७८१-७, सूही, मः ५)
कहु नानक प्रभ किरपा कीजै मनु सदा चलै तेरै मारगि ॥३॥ (७८१-८, सूही, मः ५)
एहो वरु एहा वडिआई इहु धनु होइ वडभागा राम ॥ (७८१-८, सूही, मः ५)
एहो रंगु एहो रस भोगा हरि चरणी मनु लागा राम ॥ (७८१-९, सूही, मः ५)
मनु लागा चरणे प्रभ की सरणे करण कारण गोपाला ॥ (७८१-९, सूही, मः ५)
सभु किछु तेरा तू प्रभु मेरा मेरे ठाकुर दीन दइआला ॥ (७८१-१०, सूही, मः ५)
मोहि निरगुण प्रीतम सुख सागर संतसंगि मनु जागा ॥ (७८१-१०, सूही, मः ५)
कहु नानक प्रभि किरपा कीन्ही चरण कमल मनु लागा ॥४॥३॥६॥ (७८१-११, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७८१-१२)
हरि जपे हरि मंदरु साजिआ संत भगत गुण गावहि राम ॥ (७८१-१२, सूही, मः ५)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना सगले पाप तजावहि राम ॥ (७८१-१२, सूही, मः ५)
हरि गुण गाइ पर्म पदु पाइआ प्रभ की ऊतम बाणी ॥ (७८१-१३, सूही, मः ५)
सहज कथा प्रभ की अति मीठी कथी अकथ कहाणी ॥ (७८१-१४, सूही, मः ५)
भला संजोगु मूरतु पलु साचा अबिचल नीव रखाई ॥ (७८१-१४, सूही, मः ५)
जन नानक प्रभ भए दइआला सर्ब कला बणि आई ॥१॥ (७८१-१५, सूही, मः ५)
आनंदा वजहि नित वाजे पारब्रह्मु मनि वूठा राम ॥ (७८१-१५, सूही, मः ५)
गुरमुखे सचु करणी सारी बिनसे भ्रम भै झूठा राम ॥ (७८१-१६, सूही, मः ५)
अनहद बाणी गुरमुखि वखाणी जसु सुणि सुणि मनु तनु हरिआ ॥ (७८१-१६, सूही, मः ५)
सर्ब सुखा तिस ही बणि आए जो प्रभि अपना करिआ ॥ (७८१-१७, सूही, मः ५)
घर महि नव निधि भरे भंडारा राम नामि रंगु लागा ॥ (७८१-१७, सूही, मः ५)

नानक जन प्रभु कदे न विसरै पूरन जा के भागा ॥२॥ (७८१-१८, सूही, मः ५)
छाइआ प्रभि छत्रपति कीन्ी सगली तपति बिनासी राम ॥ (७८१-१८, सूही, मः ५)
दूख पाप का डेरा ढाठा कारजु आइआ रासी राम ॥ (७८१-१९, सूही, मः ५)
हरि प्रभि फुरमाइआ मिटी बलाइआ साचु धरमु पुन्नु फलिआ ॥ (७८१-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७८२

सो प्रभु अपुना सदा धिआईऐ सोवत बैसत खलिआ ॥ (७८२-१, सूही, मः ५)
गुण निधान सुख सागर सुआमी जलि थलि महीअलि सोई ॥ (७८२-२, सूही, मः ५)
जन नानक प्रभ की सरणाई तिसु बिनु अवरु न कोई ॥३॥ (७८२-२, सूही, मः ५)
मेरा घरु बनिआ बनु तालु बनिआ प्रभ परसे हरि राइआ राम ॥ (७८२-३, सूही, मः ५)
मेरा मनु सोहिआ मीत साजन सरसे गुण मंगल हरि गाइआ राम ॥ (७८२-३, सूही, मः ५)
गुण गाइ प्रभू धिआइ साचा सगल इछा पाईआ ॥ (७८२-४, सूही, मः ५)
गुर चरण लागे सदा जागे मनि वजीआ वाधाईआ ॥ (७८२-५, सूही, मः ५)
करी नदरि सुआमी सुखह गामी हलतु पलतु सवारिआ ॥ (७८२-५, सूही, मः ५)
बिनवंति नानक नित नामु जपीऐ जीउ पिंडु जिनि धारिआ ॥४॥४॥७॥ (७८२-६, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७८२-७)
भै सागरो भै सागरु तरिआ हरि हरि नामु धिआए राम ॥ (७८२-७, सूही, मः ५)
बोहिथड़ा हरि चरण अराधे मिलि सतिगुर पारि लघाए राम ॥ (७८२-७, सूही, मः ५)
गुर सबदी तरीऐ बहुड़ि न मरीऐ चूकै आवण जाणा ॥ (७८२-८, सूही, मः ५)
जो किछु करै सोई भल मानउ ता मनु सहजि समाणा ॥ (७८२-८, सूही, मः ५)
दूख न भूख न रोगु न बिआपै सुख सागर सरणी पाए ॥ (७८२-९, सूही, मः ५)
हरि सिमरि सिमरि नानक रंगि राता मन की चिंत मिटाए ॥१॥ (७८२-१०, सूही, मः ५)
संत जना हरि मंत्रु दृड़ाइआ हरि साजन वसगति कीने राम ॥ (७८२-१०, सूही, मः ५)
आपनड़ा मनु आगै धरिआ सरबसु ठाकुरि दीने राम ॥ (७८२-११, सूही, मः ५)
करि अपुनी दासी मिटी उदासी हरि मंदरि थिति पाई ॥ (७८२-११, सूही, मः ५)
अनद बिनोद सिमरहु प्रभु साचा विछुड़ि कबहू न जाई ॥ (७८२-१२, सूही, मः ५)
सा वडभागणि सदा सोहागणि राम नाम गुण चीन्े ॥ (७८२-१२, सूही, मः ५)
कहु नानक रवहि रंगि राते प्रेम महा रसि भीने ॥२॥ (७८२-१३, सूही, मः ५)
अनद बिनोद भए नित सखीए मंगल सदा हमारै राम ॥ (७८२-१४, सूही, मः ५)
आपनड़ै प्रभि आपि सीगारी सोभावंती नारे राम ॥ (७८२-१४, सूही, मः ५)
सहज सुभाइ भए किरपाला गुण अवगण न बीचारिआ ॥ (७८२-१५, सूही, मः ५)
कंठि लगाइ लीए जन अपुने राम नाम उरि धारिआ ॥ (७८२-१५, सूही, मः ५)
मान मोह मद सगल बिआपी करि किरपा आपि निवारे ॥ (७८२-१६, सूही, मः ५)
कहु नानक भै सागरु तरिआ पूरन काज हमारे ॥३॥ (७८२-१६, सूही, मः ५)
गुण गोपाल गावहु नित सखीहो सगल मनोरथ पाए राम ॥ (७८२-१७, सूही, मः ५)

सफल जनमु होआ मिलि साधू एकंकारु धिआए राम ॥ (७८२-१७, सूही, मः ५)
जपि एक प्रभू अनेक रविआ सर्ब मंडलि छाइआ ॥ (७८२-१८, सूही, मः ५)
ब्रह्मो पसारा ब्रह्मु पसरिआ सभु ब्रह्मु द्रिसटी आइआ ॥ (७८२-१८, सूही, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरि पूरन तिसु बिना नही जाए ॥ (७८२-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७८३

पेखि दरसनु नानक बिगसे आपि लए मिलाए ॥४॥५॥८॥ (७८३-१, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७८३-१)
अबिचल नगरु गोबिंद गुरू का नामु जपत सुखु पाइआ राम ॥ (७८३-१, सूही, मः ५)
मन इछे सेई फल पाए करतै आपि वसाइआ राम ॥ (७८३-२, सूही, मः ५)
करतै आपि वसाइआ सर्ब सुख पाइआ पुत भाई सिख बिगासे ॥ (७८३-३, सूही, मः ५)
गुण गावहि पूरन परमेसुर कारजु आइआ रासे ॥ (७८३-३, सूही, मः ५)
प्रभु आपि सुआमी आपे रखा आपि पिता आपि माइआ ॥ (७८३-४, सूही, मः ५)
कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि एहु थानु सुहाइआ ॥१॥ (७८३-४, सूही, मः ५)
घर मंदर हटनाले सोहे जिसु विचि नामु निवासी राम ॥ (७८३-५, सूही, मः ५)
संत भगत हरि नामु अराधहि कटीऐ जम की फासी राम ॥ (७८३-५, सूही, मः ५)
काटी जम फासी प्रभि अबिनासी हरि हरि नामु धिआए ॥ (७८३-६, सूही, मः ५)
सगल समग्री पूरन होई मन इछे फल पाए ॥ (७८३-७, सूही, मः ५)
संत सजन सुखि माणहि रलीआ दूख दरद भ्रम नासी ॥ (७८३-७, सूही, मः ५)
सबदि सवारे सतिगुरि पूरै नानक सद बलि जासी ॥२॥ (७८३-८, सूही, मः ५)
दाति खसम की पूरी होई नित नित चड़ै सवाई राम ॥ (७८३-८, सूही, मः ५)
पारब्रहमि खसमाना कीआ जिस दी वडी वडिआई राम ॥ (७८३-९, सूही, मः ५)
आदि जुगादि भगतन का राखा सो प्रभु भइआ दइआला ॥ (७८३-९, सूही, मः ५)
जीअ जंत सभि सुखी वसाए प्रभि आपे करि प्रतिपाला ॥ (७८३-१०, सूही, मः ५)
दह दिस पूरि रहिआ जसु सुआमी कीमति कहणु न जाई ॥ (७८३-११, सूही, मः ५)
कहु नानक सतिगुर बलिहारी जिनि अबिचल नीव रखाई ॥३॥ (७८३-११, सूही, मः ५)
गिआन धिआन पूरन परमेसुर हरि हरि कथा नित सुणीऐ राम ॥ (७८३-१२, सूही, मः ५)
अनहद चोज भगत भव भंजन अनहद वाजे धुनीऐ राम ॥ (७८३-१२, सूही, मः ५)
अनहद झुणकारे ततु बीचारे संत गोसटि नित होवै ॥ (७८३-१३, सूही, मः ५)
हरि नामु अराधहि मैलु सभ काटहि किलविख सगले खोवै ॥ (७८३-१४, सूही, मः ५)
तह जनम न मरणा आवण जाणा बहुड़ि न पाईऐ जोनीऐ ॥ (७८३-१४, सूही, मः ५)
नानक गुरु परमेसरु पाइआ जिसु प्रसादि इछ पुनीऐ ॥४॥६॥९॥ (७८३-१५, सूही, मः ५)
सूही महला ५ ॥ (७८३-१५)
संता के कारजि आपि खलोइआ हरि कम्मु करावणि आइआ राम ॥ (७८३-१६, सूही, मः ५)
धरति सुहावी तालु सुहावा विचि अमृत जलु छाइआ राम ॥ (७८३-१६, सूही, मः ५)

अमृत जलु छाइआ पूरन साजु कराइआ सगल मनोरथ पूरे ॥ (७८३-१७, सूही, मः ५)
जै जै कारु भइआ जग अंतरि लाथे सगल विसूरे ॥ (७८३-१७, सूही, मः ५)
पूरन पुरख अचुत अबिनासी जसु वेद पुराणी गाइआ ॥ (७८३-१८, सूही, मः ५)
अपना बिरदु रखिआ परमेसरि नानक नामु धिआइआ ॥१॥ (७८३-१९, सूही, मः ५)
नव निधि सिधि रिधि दीने करते तोटि न आवै काई राम ॥ (७८३-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७८४

खात खरचत बिलछत सुखु पाइआ करते की दाति सवाई राम ॥ (७८४-१, सूही, मः ५)
दाति सवाई निखुटि न जाई अंतरजामी पाइआ ॥ (७८४-१, सूही, मः ५)
कोटि बिघन सगले उठि नाठे दूखु न नेड़ै आइआ ॥ (७८४-२, सूही, मः ५)
साँति सहज आनंद घनेरे बिनसी भूख सबाई ॥ (७८४-२, सूही, मः ५)
नानक गुण गावहि सुआमी के अचरजु जिसु वडिआई राम ॥२॥ (७८४-३, सूही, मः ५)
जिस का कारजु तिन ही कीआ माणसु किआ वेचारा राम ॥ (७८४-४, सूही, मः ५)
भगत सोहनि हरि के गुण गावहि सदा करहि जैकारा राम ॥ (७८४-४, सूही, मः ५)
गुण गाइ गोबिंद अनद उपजे साधसंगति संगि बनी ॥ (७८४-५, सूही, मः ५)
जिनि उदमु कीआ ताल केरा तिस की उपमा किआ गनी ॥ (७८४-५, सूही, मः ५)
अठसठि तीर्थ पुन्न किरिआ महा निर्मल चारा ॥ (७८४-६, सूही, मः ५)
पतित पावनु बिरदु सुआमी नानक सबद अधारा ॥३॥ (७८४-६, सूही, मः ५)
गुण निधान मेरा प्रभु करता उसतति कउनु करीजै राम ॥ (७८४-७, सूही, मः ५)
संता की बेनंती सुआमी नामु महा रसु दीजै राम ॥ (७८४-८, सूही, मः ५)
नामु दीजै दानु कीजै बिसरु नाही इक खिनो ॥ (७८४-८, सूही, मः ५)
गुण गोपाल उचरु रसना सदा गाईऐ अनदिनो ॥ (७८४-९, सूही, मः ५)
जिसु प्रीति लागी नाम सेती मनु तनु अमृत भीजै ॥ (७८४-९, सूही, मः ५)
बिनवंति नानक इछ पुन्नी पेखि दरसनु जीजै ॥४॥७॥१०॥ (७८४-१०, सूही, मः ५)
रागु सूही महला ५ छंत (७८४-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७८४-११)
मिठ बोलड़ा जी हरि सजणु सुआमी मोरा ॥ (७८४-१२, सूही, मः ५)
हउ सम्मलि थकी जी ओहु कदे न बोलै कउरा ॥ (७८४-१२, सूही, मः ५)
कउड़ा बोलि न जानै पूरन भगवानै अउगणु को न चितारे ॥ (७८४-१२, सूही, मः ५)
पतित पावनु हरि बिरदु सदाए इकु तिलु नही भन्नै घाले ॥ (७८४-१३, सूही, मः ५)
घट घट वासी सर्ब निवासी नेरै ही ते नेरा ॥ (७८४-१४, सूही, मः ५)
नानक दासु सदा सरणागति हरि अमृत सजणु मेरा ॥१॥ (७८४-१४, सूही, मः ५)
हउ बिसमु भई जी हरि दरसनु देखि अपारा ॥ (७८४-१५, सूही, मः ५)
मेरा सुंदरु सुआमी जी हउ चरन कमल पग छारा ॥ (७८४-१५, सूही, मः ५)
प्रभ पेखत जीवा ठंढी थीवा तिसु जेवडु अवरु न कोई ॥ (७८४-१६, सूही, मः ५)

आदि अंति मधि प्रभु रविआ जलि थलि महीअलि सोई ॥ (७८४-१६, सूही, मः ५)
चरन कमल जपि सागरु तरिआ भवजल उतरे पारा ॥ (७८४-१७, सूही, मः ५)
नानक सरणि पूरन परमेसुर तेरा अंतु न पारावारा ॥२॥ (७८४-१७, सूही, मः ५)
हउ निमख न छोडा जी हरि प्रीतम प्रान अधारो ॥ (७८४-१८, सूही, मः ५)
गुरि सतिगुर कहिआ जी साचा अगम बीचारो ॥ (७८४-१८, सूही, मः ५)
मिलि साधू दीना ता नामु लीना जनम मरण दुख नाठे ॥ (७८४-१९, सूही, मः ५)
सहज सूख आनंद घनेरे हउमै बिनठी गाठे ॥ (७८४-१९, सूही, मः ५)

पन्ना ७८५

सभ कै मधि सभ हू ते बाहरि राग दोख ते निआरो ॥ (७८५-१, सूही, मः ५)
नानक दास गोबिंद सरणाई हरि प्रीतमु मनहि सधारो ॥३॥ (७८५-१, सूही, मः ५)
मै खोजत खोजत जी हरि निहचलु सु घरु पाइआ ॥ (७८५-२, सूही, मः ५)
सभि अध्रुव डिठे जीउ ता चरन कमल चितु लाइआ ॥ (७८५-२, सूही, मः ५)
प्रभु अबिनासी हउ तिस की दासी मरै न आवै जाए ॥ (७८५-३, सूही, मः ५)
धर्म अर्थ काम सभि पूरन मनि चिंदी इछ पुजाए ॥ (७८५-४, सूही, मः ५)
स्रुति सिमृति गुन गावहि करते सिध साधिक मुनि जन धिआइआ ॥ (७८५-४, सूही, मः ५)
नानक सरनि कृपा निधि सुआमी वडभागी हरि हरि गाइआ ॥४॥१॥११॥ (७८५-५, सूही, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७८५-६)
वार सूही की सलोका नालि महला ३ ॥ (७८५-६)
सलोकु मः ३ ॥ (७८५-६)
सूहै वेसि दोहागणी पर पिरु रावण जाइ ॥ (७८५-६, सूही, मः ३)
पिरु छोडिआ घरि आपणै मोही दूजै भाइ ॥ (७८५-७, सूही, मः ३)
मिठा करि कै खाइआ बहु सादहु वधिआ रोगु ॥ (७८५-७, सूही, मः ३)
सुधु भतारु हरि छोडिआ फिरि लगा जाइ विजोगु ॥ (७८५-८, सूही, मः ३)
गुरमुखि होवै सु पलटिआ हरि राती साजि सीगारि ॥ (७८५-८, सूही, मः ३)
सहजि सचु पिरु राविआ हरि नामा उर धारि ॥ (७८५-९, सूही, मः ३)
आगिआकारी सदा सोहागणि आपि मेली करतारि ॥ (७८५-९, सूही, मः ३)
नानक पिरु पाइआ हरि साचा सदा सोहागणि नारि ॥१॥ (७८५-१०, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८५-१०)
सूहवीए निमाणीए सो सहु सदा सम्हालि ॥ (७८५-१०, सूही, मः ३)
नानक जनमु सवारहि आपणा कुलु भी छुटी नालि ॥२॥ (७८५-११, सूही, मः ३)
पउड़ी ॥ (७८५-११)
आपे तखतु रचाइओनु आकास पताला ॥ (७८५-१२, सूही, मः ३)
हुकमे धरती साजीअनु सची धर्म साला ॥ (७८५-१२, सूही, मः ३)
आपि उपाइ खपाइदा सचे दीन दइआला ॥ (७८५-१२, सूही, मः ३)

सभना रिजकु सम्बाहिदा तेरा हुकमु निराला ॥ (७८५-१३, सूही, मः ३)
आपे आपि वरतदा आपे प्रतिपाला ॥१॥ (७८५-१३, सूही, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (७८५-१४)
सूहब ता सोहागणी जा मंनि लैहि सचु नाउ ॥ (७८५-१४, सूही, मः ३)
सतिगुरु अपणा मनाइ लै रूपु चड़ी ता अगला दूजा नाही थाउ ॥ (७८५-१४, सूही, मः ३)
ऐसा सीगारु बणाइ तू मैला कदे न होवई अहिनिसि लागै भाउ ॥ (७८५-१५, सूही, मः ३)
नानक सोहागणि का किआ चिहनु है अंदरि सचु मुखु उजला खसमै माहि समाइ ॥१॥ (७८५-१६, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८५-१७)
लोका वे हउ सूहवी सूहा वेसु करी ॥ (७८५-१७, सूही, मः ३)
वेसी सहु न पाईऐ करि करि वेस रही ॥ (७८५-१७, सूही, मः ३)
नानक तिनी सहु पाइआ जिनी गुर की सिख सुणी ॥ (७८५-१८, सूही, मः ३)
जो तिसु भावै सो थीऐ इन बिधि कंत मिली ॥२॥ (७८५-१८, सूही, मः ३)

पन्ना ७८६

पउड़ी ॥ (७८६-१)
हुकमी सृसटि साजीअनु बहु भिति संसारा ॥ (७८६-१, सूही, मः ३)
तेरा हुकमु न जापी केतड़ा सचे अलख अपारा ॥ (७८६-१, सूही, मः ३)
इकना नो तू मेलि लैहि गुर सबदि बीचारा ॥ (७८६-२, सूही, मः ३)
सचि रते से निरमले हउमै तजि विकारा ॥ (७८६-२, सूही, मः ३)
जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलै सोई सचिआरा ॥२॥ (७८६-२, सूही, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (७८६-३)
सूहवीए सूहा सभु संसारु है जिन दुरमति दूजा भाउ ॥ (७८६-३, सूही, मः ३)
खिन महि झूठु सभु बिनसि जाइ जिउ टिकै न बिरख की छाउ ॥ (७८६-४, सूही, मः ३)
गुरमुखि लालो लालु है जिउ रंगि मजीठ सचड़ाउ ॥ (७८६-४, सूही, मः ३)
उलटी सकति सिवै घरि आई मनि वसिआ हरि अमृत नाउ ॥ (७८६-५, सूही, मः ३)
नानक बलिहारी गुर आपणे जितु मिलिऐ हरि गुण गाउ ॥१॥ (७८६-६, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८६-६)
सूहा रंगु विकारु है कंतु न पाइआ जाइ ॥ (७८६-६, सूही, मः ३)
इसु लहदे बिलम न होवई रंड बैठी दूजै भाइ ॥ (७८६-७, सूही, मः ३)
मुंध इआणी दुम्मणी सूहै वेसि लोभाइ ॥ (७८६-७, सूही, मः ३)
सबदि सचै रंगु लालु करि भै भाइ सीगारु बणाइ ॥ (७८६-८, सूही, मः ३)
नानक सदा सोहागणी जि चलनि सतिगुर भाइ ॥२॥ (७८६-८, सूही, मः ३)
पउड़ी ॥ (७८६-९)
आपे आपि उपाइअनु आपि कीमति पाई ॥ (७८६-९, सूही, मः ३)

तिस दा अंतु न जापई गुर सबदि बुझाई ॥ (७८६-९, सूही, मः ३)
माइआ मोहु गुबारु है दूजै भरमाई ॥ (७८६-१०, सूही, मः ३)
मनमुख ठउर न पाइन्ही फिरि आवै जाई ॥ (७८६-१०, सूही, मः ३)
जो तिसु भावै सो थीऐ सभ चलै रजाई ॥३॥ (७८६-११, सूही, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (७८६-११)
सूहै वेसि कामणि कुलखणी जो प्रभ छोडि पर पुरख धरे पिआरु ॥ (७८६-११, सूही, मः ३)
ओसु सीलु न संजमु सदा झूठु बोलै मनमुखि करम खुआरु ॥ (७८६-१२, सूही, मः ३)
जिसु पूरबि होवै लिखिआ तिसु सतिगुरु मिलै भतारु ॥ (७८६-१२, सूही, मः ३)
सूहा वेसु सभु उतारि धरे गलि पहिरै खिमा सीगारु ॥ (७८६-१३, सूही, मः ३)
पेईऐ साहुरै बहु सोभा पाए तिसु पूज करे सभु सैसारु ॥ (७८६-१४, सूही, मः ३)
ओह रलाई किसै दी ना रलै जिसु रावे सिरजनहारु ॥ (७८६-१४, सूही, मः ३)
नानक गुरमुखि सदा सुहागणी जिसु अविनासी पुरखु भरतारु ॥१॥ (७८६-१५, सूही, मः ३)
मः १ ॥ (७८६-१५)
सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु ॥ (७८६-१५, सूही, मः १)
सचा रंगु मजीठ का गुरमुखि ब्रह्म बीचारु ॥ (७८६-१६, सूही, मः १)
नानक प्रेम महा रसी सभि बुरिआईआ छारु ॥२॥ (७८६-१६, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७८६-१७)
इहु जगु आपि उपाइओनु करि चोज विडानु ॥ (७८६-१७, सूही, मः १)
पंच धातु विचि पाईअनु मोहु झूठु गुमानु ॥ (७८६-१७, सूही, मः १)
आवै जाइ भवाईऐ मनमुखु अगिआनु ॥ (७८६-१८, सूही, मः १)
इकना आपि बुझाइओनु गुरमुखि हरि गिआनु ॥ (७८६-१८, सूही, मः १)
भगति खजाना बखसिओनु हरि नामु निधानु ॥४॥ (७८६-१९, सूही, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (७८६-१९)
सूहवीए सूहा वेसु छडि तू ता पिर लगी पिआरु ॥ (७८६-१९, सूही, मः ३)

पन्ना ७८७

सूहै वेसि पिरु किनै न पाइओ मनमुखि दझि मुई गावारि ॥ (७८७-१, सूही, मः ३)
सतिगुरि मिलिऐ सूहा वेसु गइआ हउमै विचहु मारि ॥ (७८७-२, सूही, मः ३)
मनु तनु रता लालु होआ रसना रती गुण सारि ॥ (७८७-२, सूही, मः ३)
सदा सोहागणि सबदु मनि भै भाइ करे सीगारु ॥ (७८७-३, सूही, मः ३)
नानक करमी महलु पाइआ पिरु राखिआ उर धारि ॥१॥ (७८७-३, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८७-४)
मुंधे सूहा परहरहु लालु करहु सीगारु ॥ (७८७-४, सूही, मः ३)
आवण जाणा वीसरै गुर सबदी वीचारु ॥ (७८७-४, सूही, मः ३)
मुंध सुहावी सोहणी जिसु घरि सहजि भतारु ॥ (७८७-५, सूही, मः ३)

नानक सा धन रावीऐ रावे रावणहारु ॥२॥ (७८७-५, सूही, मः ३)
पउड़ी ॥ (७८७-६)
मोहु कूड़ु कुटम्बु है मनमुखु मुगधु रता ॥ (७८७-६, सूही, मः ३)
हउमै मेरा करि मुए किछु साथि न लिता ॥ (७८७-६, सूही, मः ३)
सिर उपरि जमकालु न सुझई दूजै भरमिता ॥ (७८७-६, सूही, मः ३)
फिरि वेला हथि न आवई जमकालि वसि किता ॥ (७८७-७, सूही, मः ३)
जेहा धुरि लिखि पाइओनु से कर्म कमिता ॥५॥ (७८७-७, सूही, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (७८७-८)
सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥ (७८७-८, सूही, मः ३)
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥१॥ (७८७-९, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८७-९)
भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥ (७८७-९, सूही, मः ३)
सेवनि साई आपणा नित उठि सम्म्हालंन्हि ॥२॥ (७८७-१०, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८७-१०)
कंता नालि महेलीआ सेती अगि जलाहि ॥ (७८७-१०, सूही, मः ३)
जे जाणहि पिरु आपणा ता तनि दुख सहाहि ॥ (७८७-११, सूही, मः ३)
नानक कंत न जाणनी से किउ अगि जलाहि ॥ (७८७-११, सूही, मः ३)
भावै जीवउ कै मरउ दूरहु ही भजि जाहि ॥३॥ (७८७-१२, सूही, मः ३)
पउड़ी ॥ (७८७-१२)
तुधु दुखु सुखु नालि उपाइआ लेखु करतै लिखिआ ॥ (७८७-१२, सूही, मः ३)
नावै जेवड होर दाति नाही तिसु रूपु न रिखिआ ॥ (७८७-१३, सूही, मः ३)
नामु अखुटु निधानु है गुरमुखि मनि वसिआ ॥ (७८७-१३, सूही, मः ३)
करि किरपा नामु देवसी फिरि लेखु न लिखिआ ॥ (७८७-१४, सूही, मः ३)
सेवक भाइ से जन मिले जिन हरि जपु जपिआ ॥६॥ (७८७-१४, सूही, मः ३)
सलोकु मः २ ॥ (७८७-१५)
जिनी चलणु जाणिआ से किउ करहि विथार ॥ (७८७-१५, सूही, मः २)
चलण सार न जाणनी काज सवारणहार ॥१॥ (७८७-१५, सूही, मः २)
मः २ ॥ (७८७-१६)
राति कारणि धनु संचीऐ भलके चलणु होइ ॥ (७८७-१६, सूही, मः २)
नानक नालि न चलई फिरि पछुतावा होइ ॥२॥ (७८७-१६, सूही, मः २)
मः २ ॥ (७८७-१७)
बधा चटी जो भरे ना गुणु ना उपकारु ॥ (७८७-१७, सूही, मः २)
सेती खुसी सवारीऐ नानक कारजु सारु ॥३॥ (७८७-१७, सूही, मः २)
मः २ ॥ (७८७-१८)
मनहठि तरफ न जिपई जे बहुता घाले ॥ (७८७-१८, सूही, मः २)

तरफ जिणै सत भाउ दे जन नानक सबदु वीचारे ॥४॥ (७८७-१८, सूही, मः २)
पउड़ी ॥ (७८७-१९)
करते कारणु जिनि कीआ सो जाणै सोई ॥ (७८७-१९, सूही, मः २)
आपे सृसटि उपाईअनु आपे फुनि गोई ॥ (७८७-१९, सूही, मः २)

पन्ना ७८८

जुग चारे सभ भवि थकी किनि कीमति होई ॥ (७८८-१, सूही, मः २)
सतिगुरि एकु विखालिआ मनि तनि सुखु होई ॥ (७८८-१, सूही, मः २)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ करता करे सु होई ॥७॥ (७८८-२, सूही, मः २)
सलोक महला २ ॥ (७८८-२)
जिना भउ तिन्ह नाहि भउ मुचु भउ निभविआह ॥ (७८८-२, सूही, मः २)
नानक एहु पटंतरा तितु दीबाणि गइआह ॥१॥ (७८८-३, सूही, मः २)
मः २ ॥ (७८८-३)
तुरदे कउ तुरदा मिलै उडते कउ उडता ॥ (७८८-३, सूही, मः २)
जीवते कउ जीवता मिलै मूए कउ मूआ ॥ (७८८-४, सूही, मः २)
नानक सो सालाहीऐ जिनि कारणु कीआ ॥२॥ (७८८-४, सूही, मः २)
पउड़ी ॥ (७८८-५)
सचु धिआइनि से सचे गुर सबदि वीचारी ॥ (७८८-५, सूही, मः २)
हउमै मारि मनु निरमला हरि नामु उरि धारी ॥ (७८८-५, सूही, मः २)
कोठे मंडप माड़ीआ लगि पए गावारी ॥ (७८८-६, सूही, मः २)
जिन्हि कीए तिसहि न जाणनी मनमुखि गुबारी ॥ (७८८-६, सूही, मः २)
जिसु बुझाइहि सो बुझसी सचिआ किआ जंत विचारी ॥८॥ (७८८-७, सूही, मः २)
सलोक मः ३ ॥ (७८८-७)
कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलाँ कंतु मनाइ ॥ (७८८-७, सूही, मः ३)
मतु सेजै कंतु न आवई एवै बिरथा जाइ ॥ (७८८-८, सूही, मः ३)
कामणि पिर मनु मानिआ तउ बणिआ सीगारु ॥ (७८८-८, सूही, मः ३)
कीआ तउ परवाणु है जा सहु धरे पिआरु ॥ (७८८-९, सूही, मः ३)
भउ सीगारु तबोल रसु भोजनु भाउ करेइ ॥ (७८८-९, सूही, मः ३)
तनु मनु सउपे कंत कउ तउ नानक भोगु करेइ ॥१॥ (७८८-१०, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८८-१०)
काजल फूल तम्बोल रसु ले धन कीआ सीगारु ॥ (७८८-१०, सूही, मः ३)
सेजै कंतु न आइओ एवै भइआ विकारु ॥२॥ (७८८-११, सूही, मः ३)
मः ३ ॥ (७८८-११)
धन पिरु एहि न आखीअनि बहनि इकठे होइ ॥ (७८८-११, सूही, मः ३)
एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोइ ॥३॥ (७८८-१२, सूही, मः ३)

पउड़ी ॥ (७८८-१२)
भै बिनु भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ (७८८-१३, सूही, मः ३)
सतिगुरि मिलिऐ भउ ऊपजै भै भाइ रंगु सवारि ॥ (७८८-१३, सूही, मः ३)
तनु मनु रता रंग सिउ हउमै तृसना मारि ॥ (७८८-१४, सूही, मः ३)
मनु तनु निरमलु अति सोहणा भेटिआ कृसन मुरारि ॥ (७८८-१४, सूही, मः ३)
भउ भाउ सभु तिस दा सो सचु वरतै संसारि ॥९॥ (७८८-१५, सूही, मः ३)
सलोक मः १ ॥ (७८८-१५)
वाहु खसम तू वाहु जिनि रचि रचना हम कीए ॥ (७८८-१५, सूही, मः १)
सागर लहरि समुंद सर वेलि वरस वराहु ॥ (७८८-१६, सूही, मः १)
आपि खड़ोवहि आपि करि आपीणै आपाहु ॥ (७८८-१६, सूही, मः १)
गुरमुखि सेवा थाइ पवै उनमनि ततु कमाहु ॥ (७८८-१७, सूही, मः १)
मसकति लहहु मजूरीआ मंगि मंगि खसम दराहु ॥ (७८८-१७, सूही, मः १)
नानक पुर दर वेपरवाह तउ दरि ऊणा नाहि को सचा वेपरवाहु ॥१॥ (७८८-१८, सूही, मः १)
महला १ ॥ (७८८-१९)
उजल मोती सोहणे रतना नालि जुड़ंनि ॥ (७८८-१९, सूही, मः १)
तिन जरु वैरी नानका जि बुढे थीइ मरंनि ॥२॥ (७८८-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७८९

पउड़ी ॥ (७८९-१)
हरि सालाही सदा सदा तनु मनु सउपि सरीरु ॥ (७८९-१, सूही, मः १)
गुर सबदी सचु पाइआ सचा गहिर गम्भीरु ॥ (७८९-१, सूही, मः १)
मनि तनि हिरदै रवि रहिआ हरि हीरा हीरु ॥ (७८९-२, सूही, मः १)
जनम मरण का दुखु गइआ फिरि पवै न फीरु ॥ (७८९-२, सूही, मः १)
नानक नामु सलाहि तू हरि गुणी गहीरु ॥१०॥ (७८९-३, सूही, मः १)
सलोक मः १ ॥ (७८९-३)
नानक इहु तनु जालि जिनि जलिऐ नामु विसारिआ ॥ (७८९-३, सूही, मः १)
पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अम्बड़ै तितु निवंधै तालि ॥१॥ (७८९-४, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७८९-४)
नानक मन के कम्म फिटिआ गणत न आवही ॥ (७८९-५, सूही, मः १)
किती लहा सहम्म जा बखसे ता धका नही ॥२॥ (७८९-५, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७८९-५)
सचा अमरु चलाइओनु करि सचु फुरमाणु ॥ (७८९-६, सूही, मः १)
सदा निहचलु रवि रहिआ सो पुरखु सुजाणु ॥ (७८९-६, सूही, मः १)
गुर परसादी सेवीऐ सचु सबदि नीसाणु ॥ (७८९-६, सूही, मः १)
पूरा थाटु बणाइआ रंगु गुरमति माणु ॥ (७८९-७, सूही, मः १)

अगम अगोचरु अलखु है गुरमुखि हरि जाणु ॥११॥ (७८६-७, सूही, मः १)
सलोक मः १ ॥ (७८६-८)
नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि ॥ (७८६-८, सूही, मः १)
खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीबाणि ॥१॥ (७८६-८, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७८६-९)
नावण चले तीरथी मनि खोटै तनि चोर ॥ (७८६-९, सूही, मः १)
इकु भाउ लथी नातिआ दुइ भा चड़ीअसु होर ॥ (७८६-९, सूही, मः १)
बाहरि धोती तूमड़ी अंदरि विसु निकोर ॥ (७८६-१०, सूही, मः १)
साध भले अणनातिआ चोर सि चोरा चोर ॥२॥ (७८६-१०, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७८६-११)
आपे हुकमु चलाइदा जगु धंधै लाइआ ॥ (७८६-११, सूही, मः १)
इकि आपे ही आपि लाइअनु गुर ते सुखु पाइआ ॥ (७८६-११, सूही, मः १)
दह दिस इहु मनु धावदा गुरि ठाकि रहाइआ ॥ (७८६-१२, सूही, मः १)
नावै नो सभ लोचदी गुरमती पाइआ ॥ (७८६-१२, सूही, मः १)
धुरि लिखिआ मेटि न सकीऐ जो हरि लिखि पाइआ ॥१२॥ (७८६-१३, सूही, मः १)
सलोक मः १ ॥ (७८६-१३)
दुइ दीवे चउदह हटनाले ॥ (७८६-१३, सूही, मः १)
जेते जीअ तेते वणजारे ॥ (७८६-१४, सूही, मः १)
खुले हट होआ वापारु ॥ (७८६-१४, सूही, मः १)
जो पहुचै सो चलणहारु ॥ (७८६-१४, सूही, मः १)
धरमु दलालु पाए नीसाणु ॥ (७८६-१४, सूही, मः १)
नानक नामु लाहा परवाणु ॥ (७८६-१५, सूही, मः १)
घरि आए वजी वाधाई ॥ (७८६-१५, सूही, मः १)
सच नाम की मिली वडिआई ॥१॥ (७८६-१५, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७८६-१६)
राती होवनि कालीआ सुपेदा से वन्न ॥ (७८६-१६, सूही, मः १)
दिहु बगा तपै घणा कालिआ काले वन्न ॥ (७८६-१६, सूही, मः १)
अंधे अकली बाहरे मूरख अंध गिआनु ॥ (७८६-१६, सूही, मः १)
नानक नदरी बाहरे कबहि न पावहि मानु ॥२॥ (७८६-१७, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७८६-१७)
काइआ कोटु रचाइआ हरि सचै आपे ॥ (७८६-१७, सूही, मः १)
इकि दूजै भाइ खुआइअनु हउमै विचि विआपे ॥ (७८६-१८, सूही, मः १)
इहु मानस जनमु दुलम्भु सा मनमुख संतापे ॥ (७८६-१८, सूही, मः १)
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी जिसु सतिगुरु थापे ॥ (७८६-१९, सूही, मः १)
सभु जगु खेलु रचाइओनु सभ वरतै आपे ॥१३॥ (७८६-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७६०

सलोक मः १ ॥ (७६०-१)
चोरा जारा रंडीआ कुटणीआ दीबाणु ॥ (७६०-१, सूही, मः १)
वेदीना की दोसती वेदीना का खाणु ॥ (७६०-१, सूही, मः १)
सिफती सार न जाणनी सदा वसै सैतानु ॥ (७६०-२, सूही, मः १)
गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु ॥ (७६०-२, सूही, मः १)
नानक कूड़ै कतिऐ कूड़ा तणीऐ ताणु ॥ (७६०-३, सूही, मः १)
कूड़ा कपड़ु कछीऐ कूड़ा पैनणु माणु ॥१॥ (७६०-३, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७६०-४)
बाँगा बुरगू सिंङीआ नाले मिली कलाण ॥ (७६०-४, सूही, मः १)
इकि दाते इकि मंगते नामु तेरा परवाणु ॥ (७६०-४, सूही, मः १)
नानक जिन्ही सुणि कै मंनिआ हउ तिना विटहु कुरबाणु ॥२॥ (७६०-५, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७६०-५)
माइआ मोहु सभु कूड़ु है कूड़ो होइ गइआ ॥ (७६०-५, सूही, मः १)
हउमै झगड़ा पाइओनु झगड़ै जगु मुइआ ॥ (७६०-६, सूही, मः १)
गुरमुखि झगड़ु चुकाइओनु इको रवि रहिआ ॥ (७६०-६, सूही, मः १)
सभु आतम रामु पछाणिआ भउजलु तरि गइआ ॥ (७६०-७, सूही, मः १)
जोति समाणी जोति विचि हरि नामि समइआ ॥१४॥ (७६०-७, सूही, मः १)
सलोक मः १ ॥ (७६०-८)
सतिगुर भीखिआ देहि मै तूं सम्म्रथु दातारु ॥ (७६०-८, सूही, मः १)
हउमै गरबु निवारीऐ कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (७६०-८, सूही, मः १)
लबु लोभु परजालीऐ नामु मिलै आधारु ॥ (७६०-९, सूही, मः १)
अहिनिसि नवतन निरमला मैला कबहूं न होइ ॥ (७६०-९, सूही, मः १)
नानक इह बिधि छुटीऐ नदरि तेरी सुखु होइ ॥१॥ (७६०-१०, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७६०-१०)
इको कंतु सबाईआ जिती दरि खड़ीआह ॥ (७६०-१०, सूही, मः १)
नानक कंतै रतीआ पुछहि बातड़ीआह ॥२॥ (७६०-११, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७६०-११)
सभे कंतै रतीआ मै दोहागणि कितु ॥ (७६०-११, सूही, मः १)
मै तनि अवगण एतड़े खसमु न फेरे चितु ॥३॥ (७६०-१२, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७६०-१२)
हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिना दै वाति ॥ (७६०-१२, सूही, मः १)
सभि राती सोहागणी इक मै दोहागणि राति ॥४॥ (७६०-१३, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७६०-१३)

दरि मंगतु जाचै दानु हरि दीजै कृपा करि ॥ (७६०-१३, सूही, मः १)
गुरमुखि लेहु मिलाइ जनु पावै नामु हरि ॥ (७६०-१४, सूही, मः १)
अनहद सबदु वजाइ जोती जोति धरि ॥ (७६०-१४, सूही, मः १)
हिरदै हरि गुण गाइ जै जै सबदु हरि ॥ (७६०-१५, सूही, मः १)
जग महि वरतै आपि हरि सेती प्रीति करि ॥१५॥ (७६०-१५, सूही, मः १)
सलोक मः १ ॥ (७६०-१६)
जिनी न पाइओ प्रेम रसु कंत न पाइओ साउ ॥ (७६०-१६, सूही, मः १)
सुंञे घर का पाहुणा जिउ आइआ तिउ जाउ ॥१॥ (७६०-१६, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७६०-१७)
सउ ओलाम्हे दिनै के राती मिलन्हि सहंस ॥ (७६०-१७, सूही, मः १)
सिफति सलाहणु छडि कै करंगी लगा हंसु ॥ (७६०-१७, सूही, मः १)
फिटु इवेहा जीविआ जितु खाइ वधाइआ पेटु ॥ (७६०-१८, सूही, मः १)
नानक सचे नाम विणु सभो दुसमनु हेतु ॥२॥ (७६०-१८, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७६०-१९)
ढाढी गुण गावै नित जनमु सवारिआ ॥ (७६०-१९, सूही, मः १)
गुरमुखि सेवि सलाहि सचा उर धारिआ ॥ (७६०-१९, सूही, मः १)

पन्ना ७६१

घरु दरु पावै महलु नामु पिआरिआ ॥ (७६१-१, सूही, मः १)
गुरमुखि पाइआ नामु हउ गुर कउ वारिआ ॥ (७६१-१, सूही, मः १)
तू आपि सवारहि आपि सिरजनहारिआ ॥१६॥ (७६१-२, सूही, मः १)
सलोक मः १ ॥ (७६१-२)
दीवा बलै अंधेरा जाइ ॥ (७६१-२, सूही, मः १)
बेद पाठ मति पापा खाइ ॥ (७६१-३, सूही, मः १)
उगवै सूरु न जापै चंदु ॥ (७६१-३, सूही, मः १)
जह गिआन प्रगासु अगिआनु मिटंतु ॥ (७६१-३, सूही, मः १)
बेद पाठ संसार की कार ॥ (७६१-३, सूही, मः १)
पड़्हि पड़्हि पंडित करहि बीचार ॥ (७६१-४, सूही, मः १)
बिनु बूझे सभ होइ खुआर ॥ (७६१-४, सूही, मः १)
नानक गुरमुखि उतरसि पारि ॥१॥ (७६१-४, सूही, मः १)
मः १ ॥ (७६१-५)
सबदै सादु न आइओ नामि न लगो पिआरु ॥ (७६१-५, सूही, मः १)
रसना फिका बोलणा नित नित होइ खुआरु ॥ (७६१-५, सूही, मः १)
नानक पइऐ किरति कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥२॥ (७६१-६, सूही, मः १)
पउड़ी ॥ (७६१-६)

जि प्रभु सालाहे आपणा सो सोभा पाए ॥ (७६१-६, सूही, मः १)
हउमै विचहु दूरि करि सचु मंनि वसाए ॥ (७६१-७, सूही, मः १)
सचु बाणी गुण उचरै सचा सुखु पाए ॥ (७६१-७, सूही, मः १)
मेलु भइआ चिरी विछुंनिआ गुर पुरखि मिलाए ॥ (७६१-८, सूही, मः १)
मनु मैला इव सुधु है हरि नामु धिआए ॥१७॥ (७६१-८, सूही, मः १)
सलोक मः १ ॥ (७६१-६)
काइआ कूमल फुल गुण नानक गुपसि माल ॥ (७६१-६, सूही, मः १)
एनी फुली रउ करे अवर कि चुणीअहि डाल ॥१॥ (७६१-६, सूही, मः १)
महला २ ॥ (७६१-१०)
नानक तिना बसंतु है जिन्ह घरि वसिआ कंतु ॥ (७६१-१०, सूही, मः २)
जिन के कंत दिसापुरी से अहिनिसि फिरहि जलंत ॥२॥ (७६१-१०, सूही, मः २)
पउड़ी ॥ (७६१-११)
आपे बखसे दइआ करि गुर सतिगुर बचनी ॥ (७६१-११, सूही, मः २)
अनदिनु सेवी गुण रवा मनु सचै रचनी ॥ (७६१-११, सूही, मः २)
प्रभु मेरा बेअंतु है अंतु किनै न लखनी ॥ (७६१-१२, सूही, मः २)
सतिगुर चरणी लगिआ हरि नामु नित जपनी ॥ (७६१-१२, सूही, मः २)
जो इछै सो फलु पाइसी सभि घरै विचि जचनी ॥१८॥ (७६१-१३, सूही, मः २)
सलोक मः १ ॥ (७६१-१३)
पहिल बसंतै आगमनि पहिला मउलिओ सोइ ॥ (७६१-१३, सूही, मः १)
जितु मउलिऐ सभ मउलीऐ तिसहि न मउलिहु कोइ ॥१॥ (७६१-१४, सूही, मः १)
मः २ ॥ (७६१-१५)
पहिल बसंतै आगमनि तिस का करहु बीचारु ॥ (७६१-१५, सूही, मः २)
नानक सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥२॥ (७६१-१५, सूही, मः २)
मः २ ॥ (७६१-१६)
मिलिऐ मिलिआ ना मिलै मिलै मिलिआ जे होइ ॥ (७६१-१६, सूही, मः २)
अंतर आतमै जो मिलै मिलिआ कहीऐ सोइ ॥३॥ (७६१-१६, सूही, मः २)
पउड़ी ॥ (७६१-१७)
हरि हरि नामु सलाहीऐ सचु कार कमावै ॥ (७६१-१७, सूही, मः २)
दूजी कारै लगिआ फिरि जोनी पावै ॥ (७६१-१७, सूही, मः २)
नामि रतिआ नामु पाईऐ नामे गुण गावै ॥ (७६१-१८, सूही, मः २)
गुर कै सबदि सलाहीऐ हरि नामि समावै ॥ (७६१-१८, सूही, मः २)
सतिगुर सेवा सफल है सेविऐ फल पावै ॥१६॥ (७६१-१६, सूही, मः २)
सलोक मः २ ॥ (७६१-१६)
किस ही कोई कोइ मंञु निमाणी इकु तू ॥ (७६१-१६, सूही, मः २)

किउ न मरीजै रोइ जा लगु चिति न आवही ॥१॥ (७६२-१, सूही, मः २)
मः २ ॥ (७६२-१)
जाँ सुखु ता सहु राविओ दुखि भी सम्म्हालिओइ ॥ (७६२-१, सूही, मः २)
नानकु कहै सिआणीए इउ कंत मिलावा होइ ॥२॥ (७६२-२, सूही, मः २)
पउड़ी ॥ (७६२-२)
हउ किआ सालाही किर्म जंतु वडी तेरी वडिआई ॥ (७६२-२, सूही, मः २)
तू अगम दइआलु अगम्मु है आपि लैहि मिलाई ॥ (७६२-३, सूही, मः २)
मै तुझ बिनु बेली को नही तू अंति सखाई ॥ (७६२-३, सूही, मः २)
जो तेरी सरणागती तिन लैहि छडाई ॥ (७६२-४, सूही, मः २)
नानक वेपरवाहु है तिसु तिलु न तमाई ॥२०॥१॥ (७६२-४, सूही, मः २)
रागु सूही बाणी स्री कबीर जीउ तथा सभना भगता की ॥ (७६२-६)
कबीर के (७६२-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६२-६)
अवतरि आइ कहा तुम कीना ॥ (७६२-७, सूही, भगत कबीर जी)
राम को नामु न कबहू लीना ॥१॥ (७६२-७, सूही, भगत कबीर जी)
राम न जपहु कवन मति लागे ॥ (७६२-७, सूही, भगत कबीर जी)
मरि जइबे कउ किआ करहु अभागे ॥१॥ रहाउ ॥ (७६२-८, सूही, भगत कबीर जी)
दुख सुख करि कै कुटम्बु जीवाइआ ॥ (७६२-८, सूही, भगत कबीर जी)
मरती बार इकसर दुखु पाइआ ॥२॥ (७६२-८, सूही, भगत कबीर जी)
कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ (७६२-९, सूही, भगत कबीर जी)
कहि कबीर आगे ते न सम्म्हारा ॥३॥१॥ (७६२-९, सूही, भगत कबीर जी)
सूही कबीर जी ॥ (७६२-१०)
थरहर कम्पै बाला जीउ ॥ (७६२-१०, सूही, भगत कबीर जी)
ना जानउ किआ करसी पीउ ॥१॥ (७६२-१०, सूही, भगत कबीर जी)
रैनि गई मत दिनु भी जाइ ॥ (७६२-१०, सूही, भगत कबीर जी)
भवर गए बग बैठे आइ ॥१॥ रहाउ ॥ (७६२-११, सूही, भगत कबीर जी)
काचै करवै रहै न पानी ॥ (७६२-११, सूही, भगत कबीर जी)
हंसु चलिआ काइआ कुमलानी ॥२॥ (७६२-११, सूही, भगत कबीर जी)
कुआर कंनिआ जैसे करत सीगारा ॥ (७६२-१२, सूही, भगत कबीर जी)
किउ रलीआ मानै बाझु भतारा ॥३॥ (७६२-१२, सूही, भगत कबीर जी)
काग उडावत भुजा पिरानी ॥ (७६२-१२, सूही, भगत कबीर जी)
कहि कबीर इह कथा सिरानी ॥४॥२॥ (७६२-१३, सूही, भगत कबीर जी)
सूही कबीर जीउ ॥ (७६२-१३)

अमलु सिरानो लेखा देना ॥ (७९२-१३, सूही, भगत कबीर जी)
आए कठिन दूत जम लेना ॥ (७९२-१४, सूही, भगत कबीर जी)
किआ तै खटिआ कहा गवाइआ ॥ (७९२-१४, सूही, भगत कबीर जी)
चलहु सिताब दीबानि बुलाइआ ॥१॥ (७९२-१४, सूही, भगत कबीर जी)
चलु दरहालु दीवानि बुलाइआ ॥ (७९२-१५, सूही, भगत कबीर जी)
हरि फुरमानु दरगह का आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (७९२-१५, सूही, भगत कबीर जी)
करउ अरदासि गाव किछु बाकी ॥ (७९२-१६, सूही, भगत कबीर जी)
लेउ निबेरि आजु की राती ॥ (७९२-१६, सूही, भगत कबीर जी)
किछु भी खरचु तुमारा सारउ ॥ (७९२-१६, सूही, भगत कबीर जी)
सुबह निवाज सराइ गुजारउ ॥२॥ (७९२-१७, सूही, भगत कबीर जी)
साधसंगि जा कउ हरि रंगु लागा ॥ (७९२-१७, सूही, भगत कबीर जी)
धनु धनु सो जनु पुरखु सभागा ॥ (७९२-१७, सूही, भगत कबीर जी)
ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ (७९२-१८, सूही, भगत कबीर जी)
जनमु पदारथु जीति अमोले ॥३॥ (७९२-१८, सूही, भगत कबीर जी)
जागतु सोइआ जनमु गवाइआ ॥ (७९२-१८, सूही, भगत कबीर जी)
मालु धनु जोरिआ भइआ पराइआ ॥ (७९२-१९, सूही, भगत कबीर जी)
कहु कबीर तेई नर भूले ॥ (७९२-१९, सूही, भगत कबीर जी)
खसमु बिसारि माटी संगि रूले ॥४॥३॥ (७९२-१९, सूही, भगत कबीर जी)

पन्ना ७९३

सूही कबीर जीउ ललित ॥ (७९३-१)
थाके नैन स्रवन सुनि थाके थाकी सुंदरि काइआ ॥ (७९३-१, सूही, भगत कबीर जी)
जरा हाक दी सभ मति थाकी एक न थाकसि माइआ ॥१॥ (७९३-१, सूही, भगत कबीर जी)
बावरे तै गिआन बीचारु न पाइआ ॥ (७९३-२, सूही, भगत कबीर जी)
बिरथा जनमु गवाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (७९३-२, सूही, भगत कबीर जी)
तब लगु प्रानी तिसै सरेवहु जब लगु घट महि सासा ॥ (७९३-३, सूही, भगत कबीर जी)
जे घटु जाइ त भाउ न जासी हरि के चरन निवासा ॥२॥ (७९३-३, सूही, भगत कबीर जी)
जिस कउ सबदु बसावै अंतरि चूकै तिसहि पिआसा ॥ (७९३-४, सूही, भगत कबीर जी)
हुकमै बूझै चउपड़ि खेलै मनु जिणि ढाले पासा ॥३॥ (७९३-४, सूही, भगत कबीर जी)
जो जन जानि भजहि अबिगत कउ तिन का कछू न नासा ॥ (७९३-५, सूही, भगत कबीर जी)
कहु कबीर ते जन कबहु न हारहि ढालि जु जानहि पासा ॥४॥४॥ (७९३-६, सूही, भगत कबीर जी)
सूही ललित कबीर जीउ ॥ (७९३-६)
एकु कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहि हाला ॥ (७९३-६, सूही ललित, भगत कबीर जी)
जिमी नाही मै किसी की बोई ऐसा देनु दुखाला ॥१॥ (७९३-७, सूही ललित, भगत कबीर जी)
हरि के लोगा मो कउ नीति डसै पटवारी ॥ (७९३-८, सूही ललित, भगत कबीर जी)

ऊपरि भुजा करि मै गुर पहि पुकारिआ तिनि हउ लीआ उबारी ॥१॥ रहाउ ॥ (७६३-८, सूही ललित, भगत कबीर जी)
नउ डाडी दस मुंसफ धावहि रईअति बसन न देही ॥ (७६३-९, सूही ललित, भगत कबीर जी)
डोरी पूरी मापहि नाही बहु बिसटाला लेही ॥२॥ (७६३-९, सूही ललित, भगत कबीर जी)
बहतरि घर इकु पुरखु समाइआ उनि दीआ नामु लिखाई ॥ (७६३-१०, सूही ललित, भगत कबीर जी)
धर्म राइ का दफतरु सोधिआ बाकी रिजम न काई ॥३॥ (७६३-१०, सूही ललित, भगत कबीर जी)
संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है एको ॥ (७६३-११, सूही ललित, भगत कबीर जी)
कहु कबीर मै सो गुरु पाइआ जा का नाउ बिबेको ॥४॥५॥ (७६३-११, सूही ललित, भगत कबीर जी)
रागु सूही बाणी स्री रविदास जीउ की (७६३-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६३-१३)
सह की सार सुहागनि जानै ॥ (७६३-१४, सूही, भगत रविदास जी)
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै ॥ (७६३-१४, सूही, भगत रविदास जी)
तनु मनु देइ न अंतरु राखै ॥ (७६३-१४, सूही, भगत रविदास जी)
अवरा देखि न सुनै अभाखै ॥१॥ (७६३-१४, सूही, भगत रविदास जी)
सो कत जानै पीर पराई ॥ (७६३-१५, सूही, भगत रविदास जी)
जा कै अंतरि दरदु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७६३-१५, सूही, भगत रविदास जी)
दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी ॥ (७६३-१५, सूही, भगत रविदास जी)
जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी ॥ (७६३-१६, सूही, भगत रविदास जी)
पुर सलात का पंथु दुहेला ॥ (७६३-१६, सूही, भगत रविदास जी)
संगि न साथी गवनु इकेला ॥२॥ (७६३-१६, सूही, भगत रविदास जी)
दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ ॥ (७६३-१७, सूही, भगत रविदास जी)
बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥ (७६३-१७, सूही, भगत रविदास जी)
कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥ (७६३-१८, सूही, भगत रविदास जी)
जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥३॥१॥ (७६३-१८, सूही, भगत रविदास जी)
सूही ॥ (७६३-१८)
जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥ (७६३-१८, सूही, भगत रविदास जी)
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥ (७६३-१९, सूही, भगत रविदास जी)
संगु चलत है हम भी चलना ॥ (७६३-१९, सूही, भगत रविदास जी)
दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥१॥ (७६३-१९, सूही, भगत रविदास जी)

पन्ना ७६४

किआ तू सोइआ जागु इआना ॥ (७६४-१, सूही, भगत रविदास जी)
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥१॥ रहाउ ॥ (७६४-१, सूही, भगत रविदास जी)
जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अम्बरावै ॥ (७६४-१, सूही, भगत रविदास जी)
सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥ (७६४-२, सूही, भगत रविदास जी)

करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥ (७६४-२, सूही, भगत रविदास जी)
हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥२॥ (७६४-२, सूही, भगत रविदास जी)
जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥ (७६४-३, सूही, भगत रविदास जी)
साँझ परी दह दिस अंधिआरा ॥ (७६४-३, सूही, भगत रविदास जी)
कहि रविदास निदानि दिवाने ॥ (७६४-३, सूही, भगत रविदास जी)
चेतसि नाही दुनीआ फन खाने ॥३॥२॥ (७६४-४, सूही, भगत रविदास जी)
सूही ॥ (७६४-४)
ऊचे मंदर साल रसोई ॥ (७६४-४, सूही, भगत रविदास जी)
एक घरी फुनि रहनु न होई ॥१॥ (७६४-५, सूही, भगत रविदास जी)
इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी ॥ (७६४-५, सूही, भगत रविदास जी)
जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी ॥१॥ रहाउ ॥ (७६४-५, सूही, भगत रविदास जी)
भाई बंध कुटम्ब सहेरा ॥ (७६४-६, सूही, भगत रविदास जी)
ओइ भी लागे काढु सवेरा ॥२॥ (७६४-६, सूही, भगत रविदास जी)
घर की नारि उरहि तन लागी ॥ (७६४-६, सूही, भगत रविदास जी)
उह तउ भूतु भूतु करि भागी ॥३॥ (७६४-७, सूही, भगत रविदास जी)
कहि रविदास सभै जगु लूटिआ ॥ (७६४-७, सूही, भगत रविदास जी)
हम तउ एक रामु कहि छूटिआ ॥४॥३॥ (७६४-७, सूही, भगत रविदास जी)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७६४-९)
रागु सूही बाणी सेख फरीद जी की ॥ (७६४-१०)
तपि तपि लुहि लुहि हाथ मरोरउ ॥ (७६४-१०, सूही, सेख फरीद जी)
बावलि होई सो सहु लोरउ ॥ (७६४-१०, सूही, सेख फरीद जी)
तै सहि मन महि कीआ रोसु ॥ (७६४-११, सूही, सेख फरीद जी)
मुझु अवगन सह नाही दोसु ॥१॥ (७६४-११, सूही, सेख फरीद जी)
तै साहिब की मै सार न जानी ॥ (७६४-११, सूही, सेख फरीद जी)
जोबनु खोइ पाछै पछुतानी ॥१॥ रहाउ ॥ (७६४-११, सूही, सेख फरीद जी)
काली कोइल तू कित गुन काली ॥ (७६४-१२, सूही, सेख फरीद जी)
अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली ॥ (७६४-१२, सूही, सेख फरीद जी)
पिरहि बिहून कतहि सुखु पाए ॥ (७६४-१३, सूही, सेख फरीद जी)
जा होइ कृपालु ता प्रभू मिलाए ॥२॥ (७६४-१३, सूही, सेख फरीद जी)
विधण खूही मुंध इकेली ॥ (७६४-१३, सूही, सेख फरीद जी)
ना को साथी ना को बेली ॥ (७६४-१४, सूही, सेख फरीद जी)
करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली ॥ (७६४-१४, सूही, सेख फरीद जी)
जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली ॥३॥ (७६४-१४, सूही, सेख फरीद जी)
वाट हमारी खरी उडीणी ॥ (७६४-१५, सूही, सेख फरीद जी)
खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी ॥ (७६४-१५, सूही, सेख फरीद जी)

उसु ऊपरि है मारगु मेरा ॥ (७६४-१५, सूही, सेख फरीद जी)
सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा ॥४॥१॥ (७६४-१६, सूही, सेख फरीद जी)
सूही ललित ॥ (७६४-१६)
बेड़ा बंधि न सकिओ बंधन की वेला ॥ (७६४-१६, सूही ललित, सेख फरीद जी)
भरि सरवरु जब ऊछलै तब तरणु दुहेला ॥१॥ (७६४-१७, सूही ललित, सेख फरीद जी)
हथु न लाइ कसुम्भड़ै जलि जासी ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ (७६४-१७, सूही ललित, सेख फरीद जी)
इक आपीनै पतली सह केरे बोला ॥ (७६४-१८, सूही ललित, सेख फरीद जी)
दुधा थणी न आवई फिरि होइ न मेला ॥२॥ (७६४-१८, सूही ललित, सेख फरीद जी)
कहै फरीदु सहेलीहो सहु अलाएसी ॥ (७६४-१९, सूही ललित, सेख फरीद जी)
हंसु चलसी डुम्मणा अहि तनु ढेरी थीसी ॥३॥२॥ (७६४-१९, सूही ललित, सेख फरीद जी)

पन्ना ७६५

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (७६५-१)
रागु बिलावलु महला १ चउपदे घरु १ ॥ (७६५-३)
तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी कवन वडाई ॥ (७६५-४, बिलावलु, मः १)
जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥ (७६५-४, बिलावलु, मः १)
तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ (७६५-५, बिलावलु, मः १)
जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७६५-५, बिलावलु, मः १)
जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ (७६५-५, बिलावलु, मः १)
तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥२॥ (७६५-६, बिलावलु, मः १)
किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ (७६५-६, बिलावलु, मः १)
जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥ (७६५-७, बिलावलु, मः १)
एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ (७६५-७, बिलावलु, मः १)
भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥ (७६५-८, बिलावलु, मः १)
बिलावलु महला १ ॥ (७६५-९)
मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ (७६५-९, बिलावलु, मः १)
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥ (७६५-९, बिलावलु, मः १)
मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ (७६५-१०, बिलावलु, मः १)
कउणु जाणै पीर पराई ॥ (७६५-१०, बिलावलु, मः १)
हम नाही चिंत पराई ॥१॥ रहाउ ॥ (७६५-११, बिलावलु, मः १)
अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ (७६५-११, बिलावलु, मः १)
जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥ (७६५-१२, बिलावलु, मः १)
सिख मति सभ बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ (७६५-१२, बिलावलु, मः १)
तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥ (७६५-१३, बिलावलु, मः १)
जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ (७६५-१३, बिलावलु, मः १)

जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥ (७६५-१४, बिलावलु, मः १)
बिलावलु महला १ ॥ (७६५-१४)
आपे सबदु आपे नीसानु ॥ (७६५-१५, बिलावलु, मः १)
आपे सुरता आपे जानु ॥ (७६५-१५, बिलावलु, मः १)
आपे करि करि वेखै ताणु ॥ (७६५-१५, बिलावलु, मः १)
तू दाता नामु परवाणु ॥१॥ (७६५-१५, बिलावलु, मः १)

पन्ना ७६६

ऐसा नामु निरंजन देउ ॥ (७६६-१, बिलावलु, मः १)
हउ जाचिकु तू अलख अभेउ ॥१॥ रहाउ ॥ (७६६-१, बिलावलु, मः १)
माइआ मोहु धरकटी नारि ॥ (७६६-१, बिलावलु, मः १)
भूंडी कामणि कामणिआरि ॥ (७६६-२, बिलावलु, मः १)
राजु रूपु झूठा दिन चारि ॥ (७६६-२, बिलावलु, मः १)
नामु मिलै चानणु अंधिआरि ॥२॥ (७६६-२, बिलावलु, मः १)
चखि छोडी सहसा नही कोइ ॥ (७६६-३, बिलावलु, मः १)
बापु दिसै वेजाति न होइ ॥ (७६६-३, बिलावलु, मः १)
एके कउ नाही भउ कोइ ॥ (७६६-३, बिलावलु, मः १)
करता करे करावै सोइ ॥३॥ (७६६-३, बिलावलु, मः १)
सबदि मुए मनु मन ते मारिआ ॥ (७६६-४, बिलावलु, मः १)
ठाकि रहे मनु साचै धारिआ ॥ (७६६-४, बिलावलु, मः १)
अवरु न सूझै गुर कउ वारिआ ॥ (७६६-४, बिलावलु, मः १)
नानक नामि रते निसतारिआ ॥४॥३॥ (७६६-५, बिलावलु, मः १)
बिलावलु महला १ ॥ (७६६-५)
गुर बचनी मनु सहज धिआने ॥ (७६६-५, बिलावलु, मः १)
हरि कै रंगि रता मनु माने ॥ (७६६-६, बिलावलु, मः १)
मनमुख भरमि भुले बउराने ॥ (७६६-६, बिलावलु, मः १)
हरि बिनु किउ रहीऐ गुर सबदि पछाने ॥१॥ (७६६-६, बिलावलु, मः १)
बिनु दरसन कैसे जीवउ मेरी माई ॥ (७६६-७, बिलावलु, मः १)
हरि बिनु जीअरा रहि न सकै खिनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (७६६-७, बिलावलु, मः १)
मेरा प्रभु बिसरै हउ मरउ दुखाली ॥ (७६६-८, बिलावलु, मः १)
सासि गिरासि जपउ अपुने हरि भाली ॥ (७६६-८, बिलावलु, मः १)
सद बैरागनि हरि नामु निहाली ॥ (७६६-९, बिलावलु, मः १)
अब जाने गुरमुखि हरि नाली ॥२॥ (७६६-९, बिलावलु, मः १)
अकथ कथा कहीऐ गुर भाइ ॥ (७६६-९, बिलावलु, मः १)
प्रभु अगम अगोचरु देइ दिखाइ ॥ (७६६-१०, बिलावलु, मः १)

बिनु गुर करणी किआ कार कमाइ ॥ (७९६-१०, बिलावलु, मः १)
हउमै मेटि चलै गुर सबदि समाइ ॥३॥ (७९६-१०, बिलावलु, मः १)
मनमुखु विछुड़ै खोटी रासि ॥ (७९६-११, बिलावलु, मः १)
गुरमुखि नामि मिलै साबासि ॥ (७९६-११, बिलावलु, मः १)
हरि किरपा धारी दासनि दास ॥ (७९६-११, बिलावलु, मः १)
जन नानक हरि नाम धनु रासि ॥४॥४॥ (७९६-१२, बिलावलु, मः १)
बिलावलु महला ३ घरु १ (७९६-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७९६-१३)
ध्रिगु ध्रिगु खाइआ ध्रिगु ध्रिगु सोइआ ध्रिगु ध्रिगु कापड़ु अंगि चड़ाइआ ॥ (७९६-१४, बिलावलु, मः ३)
ध्रिगु सरीरु कुटम्ब सहित सिउ जितु हुणि खसमु न पाइआ ॥ (७९६-१४, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी छुड़की फिरि हाथि न आवै अहिला जनमु गवाइआ ॥१॥ (७९६-१५, बिलावलु, मः ३)
दूजा भाउ न देई लिव लागणि जिनि हरि के चरण विसारे ॥ (७९६-१६, बिलावलु, मः ३)
जगजीवन दाता जन सेवक तेरे तिन के तै दूख निवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (७९६-१६, बिलावलु, मः ३)
तू दइआलु दइआपति दाता किआ एहि जंत विचारे ॥ (७९६-१७, बिलावलु, मः ३)
मुकत बंध सभि तुझ ते होए ऐसा आखि वखाणे ॥ (७९६-१७, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि होवै सो मुकतु कहीऐ मनमुख बंध विचारे ॥२॥ (७९६-१८, बिलावलु, मः ३)
सो जनु मुकतु जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ (७९६-१९, बिलावलु, मः ३)
तिन की गहण गति कही न जाई सचै आपि सवारे ॥ (७९६-१९, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ७९७

भरमि भुलाणे सि मनमुख कहीअहि ना उरवारि न पारे ॥३॥ (७९७-१, बिलावलु, मः ३)
जिस नो नदरि करे सोई जनु पाए गुर का सबदु सम्हाले ॥ (७९७-१, बिलावलु, मः ३)
हरि जन माइआ माहि निसतारे ॥ (७९७-२, बिलावलु, मः ३)
नानक भागु होवै जिसु मसतकि कालहि मारि बिदारे ॥४॥१॥ (७९७-२, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला ३ ॥ (७९७-३)
अतुलु किउ तोलिआ जाइ ॥ (७९७-३, बिलावलु, मः ३)
दूजा होइ त सोझी पाइ ॥ (७९७-३, बिलावलु, मः ३)
तिस ते दूजा नाही कोइ ॥ (७९७-४, बिलावलु, मः ३)
तिस दी कीमति किकू होइ ॥१॥ (७९७-४, बिलावलु, मः ३)
गुर परसादि वसै मनि आइ ॥ (७९७-४, बिलावलु, मः ३)
ता को जाणै दुबिधा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (७९७-५, बिलावलु, मः ३)
आपि सराफु कसवटी लाए ॥ (७९७-५, बिलावलु, मः ३)
आपे परखे आपि चलाए ॥ (७९७-५, बिलावलु, मः ३)
आपे तोले पूरा होइ ॥ (७९७-५, बिलावलु, मः ३)
आपे जाणै एको सोइ ॥२॥ (७९७-६, बिलावलु, मः ३)

माइआ का रूपु सभु तिस ते होइ ॥ (७६७-६, बिलावलु, मः ३)
जिस नो मेले सु निरमलु होइ ॥ (७६७-६, बिलावलु, मः ३)
जिस नो लाए लगै तिसु आइ ॥ (७६७-७, बिलावलु, मः ३)
सभु सचु दिखाले ता सचि समाइ ॥३॥ (७६७-७, बिलावलु, मः ३)
आपे लिव धातु है आपे ॥ (७६७-७, बिलावलु, मः ३)
आपि बुझाए आपे जापे ॥ (७६७-८, बिलावलु, मः ३)
आपे सतिगुरु सबदु है आपे ॥ (७६७-८, बिलावलु, मः ३)
नानक आखि सुणाए आपे ॥४॥२॥ (७६७-८, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला ३ ॥ (७६७-९)
साहिब ते सेवकु सेव साहिब ते किआ को कहै बहाना ॥ (७६७-९, बिलावलु, मः ३)
ऐसा इकु तेरा खेलु बनिआ है सभ महि एकु समाना ॥१॥ (७६७-९, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरि परचै हरि नामि समाना ॥ (७६७-१०, बिलावलु, मः ३)
जिसु करमु होवै सो सतिगुरु पाए अनदिनु लागै सहज धिआना ॥१॥ रहाउ ॥ (७६७-१०, बिलावलु, मः ३)
किआ कोई तेरी सेवा करे किआ को करे अभिमाना ॥ (७६७-११, बिलावलु, मः ३)
जब अपुनी जोति खिंचहि तू सुआमी तब कोई करउ दिखा वखिआना ॥२॥ (७६७-१२, बिलावलु, मः ३)
आपे गुरु चेला है आपे आपे गुणी निधाना ॥ (७६७-१२, बिलावलु, मः ३)
जिउ आपि चलाए तिवै कोई चालै जिउ हरि भावै भगवाना ॥३॥ (७६७-१३, बिलावलु, मः ३)
कहत नानकु तू साचा साहिबु कउणु जाणै तेरे कामाँ ॥ (७६७-१३, बिलावलु, मः ३)
इकना घर महि दे वडिआई इकि भरमि भवहि अभिमाना ॥४॥३॥ (७६७-१४, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला ३ ॥ (७६७-१५)
पूरा थाटु बणाइआ पूरै वेखहु एक समाना ॥ (७६७-१५, बिलावलु, मः ३)
इसु परपंच महि साचे नाम की वडिआई मतु को धरहु गुमाना ॥१॥ (७६७-१५, बिलावलु, मः ३)
सतिगुर की जिस नो मति आवै सो सतिगुर माहि समाना ॥ (७६७-१६, बिलावलु, मः ३)
इह बाणी जो जीअहु जाणै तिसु अंतरि रवै हरि नामा ॥१॥ रहाउ ॥ (७६७-१७, बिलावलु, मः ३)
चहु जुगा का हुणि निबेड़ा नर मनुखा नो एकु निधाना ॥ (७६७-१७, बिलावलु, मः ३)
जतु संजम तीर्थ ओना जुगा का धरमु है कलि महि कीरति हरि नामा ॥२॥ (७६७-१८, बिलावलु, मः ३)
जुगि जुगि आपो आपणा धरमु है सोधि देखहु बेद पुराना ॥ (७६७-१९, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि जिनी धिआइआ हरि हरि जगि ते पूरे परवाना ॥३॥ (७६७-१९, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ७६८

कहत नानकु सचे सिउ प्रीति लाए चूकै मनि अभिमाना ॥ (७६८-१, बिलावलु, मः ३)
कहत सुणत सभे सुख पावहि मानत पाहि निधाना ॥४॥४॥ (७६८-१, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला ३ ॥ (७६८-२)
गुरमुखि प्रीति जिस नो आपे लाए ॥ (७६८-२, बिलावलु, मः ३)
तितु घरि बिलावलु गुर सबदि सुहाए ॥ (७६८-३, बिलावलु, मः ३)

मंगलु नारी गावहि आए ॥ (७६८-३, बिलावलु, मः ३)
मिलि प्रीतम सदा सुखु पाए ॥१॥ (७६८-३, बिलावलु, मः ३)
हउ तिन बलिहारै जिन्‍ हरि मंनि वसाए ॥ (७६८-४, बिलावलु, मः ३)
हरि जन कउ मिलिआ सुखु पाईऐ हरि गुण गावै सहजि सुभाए ॥१॥ रहाउ ॥ (७६८-४, बिलावलु, मः ३)
सदा रंगि राते तेरै चाए ॥ (७६८-५, बिलावलु, मः ३)
हरि जीउ आपि वसै मनि आए ॥ (७६८-५, बिलावलु, मः ३)
आपे सोभा सद ही पाए ॥ (७६८-५, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि मेलै मेलि मिलाए ॥२॥ (७६८-६, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि राते सबदि रंगाए ॥ (७६८-६, बिलावलु, मः ३)
निज घरि वासा हरि गुण गाए ॥ (७६८-६, बिलावलु, मः ३)
रंगि चलूलै हरि रसि भाए ॥ (७६८-७, बिलावलु, मः ३)
इहु रंगु कदे न उतरै साचि समाए ॥३॥ (७६८-७, बिलावलु, मः ३)
अंतरि सबदु मिटिआ अगिआनु अंधेरा ॥ (७६८-७, बिलावलु, मः ३)
सतिगुर गिआनु मिलिआ प्रीतमु मेरा ॥ (७६८-८, बिलावलु, मः ३)
जो सचि राते तिन बहुड़ि न फेरा ॥ (७६८-८, बिलावलु, मः ३)
नानक नामु दृड़ाए पूरा गुरु मेरा ॥४॥५॥ (७६८-८, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला ३ ॥ (७६८-९)
पूरे गुर ते वडिआई पाई ॥ (७६८-९, बिलावलु, मः ३)
अचिंत नामु वसिआ मनि आई ॥ (७६८-९, बिलावलु, मः ३)
हउमै माइआ सबदि जलाई ॥ (७६८-१०, बिलावलु, मः ३)
दरि साचै गुर ते सोभा पाई ॥१॥ (७६८-१०, बिलावलु, मः ३)
जगदीस सेवउ मै अवरु न काजा ॥ (७६८-१०, बिलावलु, मः ३)
अनदिनु अनदु होवै मनि मेरै गुरमुखि मागउ तेरा नामु निवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ (७६८-११, बिलावलु, मः ३)
मन की परतीति मन ते पाई ॥ (७६८-१२, बिलावलु, मः ३)
पूरे गुर ते सबदि बुझाई ॥ (७६८-१२, बिलावलु, मः ३)
जीवण मरणु को समसरि वेखै ॥ (७६८-१२, बिलावलु, मः ३)
बहुड़ि न मरै ना जमु पेखै ॥२॥ (७६८-१३, बिलावलु, मः ३)
घर ही महि सभि कोट निधान ॥ (७६८-१३, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरि दिखाए गइआ अभिमानु ॥ (७६८-१३, बिलावलु, मः ३)
सद ही लागा सहजि धिआन ॥ (७६८-१४, बिलावलु, मः ३)
अनदिनु गावै एको नाम ॥३॥ (७६८-१४, बिलावलु, मः ३)
इसु जुग महि वडिआई पाई ॥ (७६८-१४, बिलावलु, मः ३)
पूरे गुर ते नामु धिआई ॥ (७६८-१५, बिलावलु, मः ३)
जह देखा तह रहिआ समाई ॥ (७६८-१५, बिलावलु, मः ३)
सदा सुखदाता कीमति नही पाई ॥४॥ (७६८-१५, बिलावलु, मः ३)

पूरै भागि गुरु पूरा पाइआ ॥ (७९८-१६, बिलावलु, मः ३)
अंतरि नामु निधानु दिखाइआ ॥ (७९८-१६, बिलावलु, मः ३)
गुर का सबदु अति मीठा लाइआ ॥ (७९८-१६, बिलावलु, मः ३)
नानक तृसन बुझी मनि तनि सुखु पाइआ ॥५॥६॥४॥६॥१०॥ (७९८-१७, बिलावलु, मः ३)
रागु बिलावलु महला ४ घरु ३ (७९८-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (७९८-१८)
उदम मति प्रभ अंतरजामी जिउ प्रेरे तिउ करना ॥ (७९८-१९, बिलावलु, मः ४)
जिउ नटूआ तंतु वजाए तंती तिउ वाजहि जंत जना ॥१॥ (७९८-१९, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ७९९

जपि मन राम नामु रसना ॥ (७९९-१, बिलावलु, मः ४)
मसतकि लिखत लिखे गुरु पाइआ हरि हिरदै हरि बसना ॥१॥ रहाउ ॥ (७९९-१, बिलावलु, मः ४)
माइआ गिरसति भ्रमतु है प्रानी रखि लेवहु जनु अपना ॥ (७९९-२, बिलावलु, मः ४)
जिउ प्रहिलादु हरणाखसि ग्रसिओ हरि राखिओ हरि सरना ॥२॥ (७९९-२, बिलावलु, मः ४)
कवन कवन की गति मिति कहीऐ हरि कीए पतित पवंन्ना ॥ (७९९-३, बिलावलु, मः ४)
ओहु ढोवै ढोर हाथि चमु चमरे हरि उधरिओ परिओ सरना ॥३॥ (७९९-४, बिलावलु, मः ४)
प्रभ दीन दइआल भगत भव तारन हम पापी राखु पपना ॥ (७९९-४, बिलावलु, मः ४)
हरि दासन दास दास हम करीअहु जन नानक दास दासंन्ना ॥४॥१॥ (७९९-५, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (७९९-५)
हम मूरख मुगध अगिआन मती सरणागति पुरख अजनमा ॥ (७९९-६, बिलावलु, मः ४)
करि किरपा रखि लेवहु मेरे ठाकुर हम पाथर हीन अकरमा ॥१॥ (७९९-६, बिलावलु, मः ४)
मेरे मन भजु राम नामै रामा ॥ (७९९-७, बिलावलु, मः ४)
गुरमति हरि रसु पाईऐ होरि तिआगहु निहफल कामा ॥१॥ रहाउ ॥ (७९९-७, बिलावलु, मः ४)
हरि जन सेवक से हरि तारे हम निरगुन राखु उपमा ॥ (७९९-८, बिलावलु, मः ४)
तुझ बिनु अवरु न कोई मेरे ठाकुर हरि जपीऐ वडे करम्मा ॥२॥ (७९९-८, बिलावलु, मः ४)
नामहीन ध्रिगु जीवते तिन वड दूख सहम्मा ॥ (७९९-९, बिलावलु, मः ४)
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मंदभागी मूड़ अकरमा ॥३॥ (७९९-१०, बिलावलु, मः ४)
हरि जन नामु अधारु है धुरि पूरबि लिखे वड करमा ॥ (७९९-१०, बिलावलु, मः ४)
गुरि सतिगुरि नामु दृड़ाइआ जन नानक सफलु जनम्मा ॥४॥२॥ (७९९-११, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (७९९-११)
हमरा चितु लुभत मोहि बिखिआ बहु दुरमति मैलु भरा ॥ (७९९-१२, बिलावलु, मः ४)
तुम्हरी सेवा करि न सकह प्रभ हम किउ करि मुगध तरा ॥१॥ (७९९-१२, बिलावलु, मः ४)
मेरे मन जपि नरहर नामु नरहरा ॥ (७९९-१३, बिलावलु, मः ४)
जन ऊपरि किरपा प्रभि धारी मिलि सतिगुर पारि परा ॥१॥ रहाउ ॥ (७९९-१३, बिलावलु, मः ४)
हमरे पिता ठाकुर प्रभ सुआमी हरि देहु मती जसु करा ॥ (७९९-१४, बिलावलु, मः ४)

तुम्रै संगि लगे से उधरे जिउ संगि कासट लोह तरा ॥२॥ (७६६-१४, बिलावलु, मः ४)
साकत नर होछी मति मधिम जिन् हरि हरि सेव न करा ॥ (७६६-१५, बिलावलु, मः ४)
ते नर भागहीन दुहचारी ओइ जनमि मुए फिरि मरा ॥३॥ (७६६-१६, बिलावलु, मः ४)
जिन कउ तुम् हरि मेलहु सुआमी ते न्गए संतोख गुर सरा ॥ (७६६-१६, बिलावलु, मः ४)
दुरमति मैलु गई हरि भजिआ जन नानक पारि परा ॥४॥३॥ (७६६-१७, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (७६६-१७)
आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि कथा करहु ॥ (७६६-१८, बिलावलु, मः ४)
हरि हरि नामु बोहिथु है कलजुगि खेवटु गुर सबदि तरहु ॥१॥ (७६६-१८, बिलावलु, मः ४)
मेरे मन हरि गुण हरि उचरहु ॥ (७६६-१६, बिलावलु, मः ४)
मसतकि लिखत लिखे गुन गाए मिलि संगति पारि परहु ॥१॥ रहाउ ॥ (७६६-१६, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ८००

काइआ नगर महि राम रसु ऊतमु किउ पाईऐ उपदेसु जन करहु ॥ (८००-१, बिलावलु, मः ४)
सतिगुरु सेवि सफल हरि दरसनु मिलि अमृतु हरि रसु पीअहु ॥२॥ (८००-२, बिलावलु, मः ४)
हरि हरि नामु अमृतु हरि मीठा हरि संतहु चाखि दिखहु ॥ (८००-२, बिलावलु, मः ४)
गुरमति हरि रसु मीठा लागा तिन बिसरे सभि बिख रसहु ॥३॥ (८००-३, बिलावलु, मः ४)
राम नामु रसु राम रसाइणु हरि सेवहु संत जनहु ॥ (८००-४, बिलावलु, मः ४)
चारि पदार्थ चारे पाए गुरमति नानक हरि भजहु ॥४॥४॥ (८००-४, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (८००-५)
खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु को जापै हरि मंत्रु जपैनी ॥ (८००-५, बिलावलु, मः ४)
गुरु सतिगुरु पारब्रह्मु करि पूजहु नित सेवहु दिनसु सभ रैनी ॥१॥ (८००-५, बिलावलु, मः ४)
हरि जन देखहु सतिगुरु नैनी ॥ (८००-६, बिलावलु, मः ४)
जो इछहु सोई फलु पावहु हरि बोलहु गुरमति बैनी ॥१॥ रहाउ ॥ (८००-६, बिलावलु, मः ४)
अनिक उपाव चितवीअहि बहुतेरे सा होवै जि बात होवैनी ॥ (८००-७, बिलावलु, मः ४)
अपना भला सभु कोई बाछै सो करे जि मेरै चिति न चितैनी ॥२॥ (८००-८, बिलावलु, मः ४)
मन की मति तिआगहु हरि जन एहा बात कठैनी ॥ (८००-८, बिलावलु, मः ४)
अनदिनु हरि हरि नामु धिआवहु गुर सतिगुर की मति लैनी ॥३॥ (८००-६, बिलावलु, मः ४)
मति सुमति तेरै वसि सुआमी हम जंत तू पुरखु जंतैनी ॥ (८००-१०, बिलावलु, मः ४)
जन नानक के प्रभ करते सुआमी जिउ भावै तिवै बुलैनी ॥४॥५॥ (८००-१०, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (८००-११)
अनद मूलु धिआइओ पुरखोतमु अनदिनु अनद अनंदे ॥ (८००-११, बिलावलु, मः ४)
धर्म राइ की काणि चुकाई सभि चूके जम के छंदे ॥१॥ (८००-१२, बिलावलु, मः ४)
जपि मन हरि हरि नामु गोबिंदे ॥ (८००-१२, बिलावलु, मः ४)
वडभागी गुरु सतिगुरु पाइआ गुण गाए परमानंदे ॥१॥ रहाउ ॥ (८००-१३, बिलावलु, मः ४)
साकत मूड़ माइआ के बधिक विचि माइआ फिरहि फिरंदे ॥ (८००-१३, बिलावलु, मः ४)

तृसना जलत किरत के बाधे जिउ तेली बलद भवंदे ॥२॥ (८००-१४, बिलावलु, मः ४)
गुरमुखि सेव लगे से उधरे वडभागी सेव करंदे ॥ (८००-१५, बिलावलु, मः ४)
जिन हरि जपिआ तिन फलु पाइआ सभि तूटे माइआ फंदे ॥३॥ (८००-१५, बिलावलु, मः ४)
आपे ठाकुरु आपे सेवकु सभु आपे आपि गोविंदे ॥ (८००-१६, बिलावलु, मः ४)
जन नानक आपे आपि सभु वरतै जिउ राखै तिवै रहंदे ॥४॥६॥ (८००-१६, बिलावलु, मः ४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८००-१८)
रागु बिलावलु महला ४ पड़ताल घरु १३ ॥ (८००-१९)
बोलहु भईआ राम नामु पतित पावनो ॥ (८००-१९, बिलावलु, मः ४)
हरि संत भगत तारनो ॥ (८००-१९, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ८०१

हरि भरिपुरे रहिआ ॥ (८०१-१, बिलावलु, मः ४)
जलि थले राम नामु ॥ (८०१-१, बिलावलु, मः ४)
नित गाईऐ हरि दूख बिसारनो ॥१॥ रहाउ ॥ (८०१-१, बिलावलु, मः ४)
हरि कीआ है सफल जनमु हमारा ॥ (८०१-२, बिलावलु, मः ४)
हरि जपिआ हरि दूख बिसारनहारा ॥ (८०१-२, बिलावलु, मः ४)
गुरु भेटिआ है मुकति दाता ॥ (८०१-२, बिलावलु, मः ४)
हरि कीई हमारी सफल जाता ॥ (८०१-३, बिलावलु, मः ४)
मिलि संगती गुन गावनो ॥१॥ (८०१-३, बिलावलु, मः ४)
मन राम नाम करि आसा ॥ (८०१-३, बिलावलु, मः ४)
भाउ दूजा बिनसि बिनासा ॥ (८०१-३, बिलावलु, मः ४)
विचि आसा होइ निरासी ॥ (८०१-४, बिलावलु, मः ४)
सो जनु मिलिआ हरि पासी ॥ (८०१-४, बिलावलु, मः ४)
कोई राम नाम गुन गावनो ॥ (८०१-४, बिलावलु, मः ४)
जनु नानकु तिसु पगि लावनो ॥२॥१॥७॥४॥६॥७॥१७॥ (८०१-५, बिलावलु, मः ४)
रागु बिलावलु महला ५ चउपदे घरु १ (८०१-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८०१-६)
नदरी आवै तिसु सिउ मोहु ॥ (८०१-७, बिलावलु, मः ५)
किउ मिलीऐ प्रभ अबिनासी तोहि ॥ (८०१-७, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा मोहि मारगि पावहु ॥ (८०१-७, बिलावलु, मः ५)
साधसंगति कै अंचलि लावहु ॥१॥ (८०१-८, बिलावलु, मः ५)
किउ तरीऐ बिखिआ संसारु ॥ (८०१-८, बिलावलु, मः ५)
सतिगुरु बोहिथु पावै पारि ॥१॥ रहाउ ॥ (८०१-८, बिलावलु, मः ५)
पवन झुलारे माइआ देइ ॥ (८०१-९, बिलावलु, मः ५)
हरि के भगत सदा थिरु सेइ ॥ (८०१-९, बिलावलु, मः ५)

हरख सोग ते रहहि निरारा ॥ (८०१-९, बिलावलु, मः ५)
सिर ऊपरि आपि गुरू रखवारा ॥२॥ (८०१-९, बिलावलु, मः ५)
पाइआ वेड़ु माइआ सर्ब भुइअंगा ॥ (८०१-१०, बिलावलु, मः ५)
हउमै पचे दीपक देखि पतंगा ॥ (८०१-१०, बिलावलु, मः ५)
सगल सीगार करे नही पावै ॥ (८०१-११, बिलावलु, मः ५)
जा होइ कृपालु ता गुरू मिलावै ॥३॥ (८०१-११, बिलावलु, मः ५)
हउ फिरउ उदासी मै इकु रतनु दसाइआ ॥ (८०१-११, बिलावलु, मः ५)
निरमोलकु हीरा मिलै न उपाइआ ॥ (८०१-१२, बिलावलु, मः ५)
हरि का मंदरु तिसु महि लालु ॥ (८०१-१२, बिलावलु, मः ५)
गुरि खोलिआ पड़दा देखि भई निहालु ॥४॥ (८०१-१२, बिलावलु, मः ५)
जिनि चाखिआ तिसु आइआ सादु ॥ (८०१-१३, बिलावलु, मः ५)
जिउ गूंगा मन महि बिसमादु ॥ (८०१-१३, बिलावलु, मः ५)
आनद रूपु सभु नदरी आइआ ॥ (८०१-१४, बिलावलु, मः ५)
जन नानक हरि गुण आखि समाइआ ॥५॥१॥ (८०१-१४, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०१-१४)
सर्ब कलिआण कीए गुरदेव ॥ (८०१-१५, बिलावलु, मः ५)
सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥ (८०१-१५, बिलावलु, मः ५)
बिघनु न लागै जपि अलख अभेव ॥१॥ (८०१-१५, बिलावलु, मः ५)
धरति पुनीत भई गुन गाए ॥ (८०१-१६, बिलावलु, मः ५)
दुरतु गइआ हरि नामु धिआए ॥१॥ रहाउ ॥ (८०१-१६, बिलावलु, मः ५)
सभनी थाँई रविआ आपि ॥ (८०१-१६, बिलावलु, मः ५)
आदि जुगादि जा का वड परतापु ॥ (८०१-१७, बिलावलु, मः ५)
गुर परसादि न होइ संतापु ॥२॥ (८०१-१७, बिलावलु, मः ५)
गुर के चरन लगे मनि मीठे ॥ (८०१-१७, बिलावलु, मः ५)
निरबिघन होइ सभ थाँई वूठे ॥ (८०१-१८, बिलावलु, मः ५)
सभि सुख पाए सतिगुर तूठे ॥३॥ (८०१-१८, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ भए रखवाले ॥ (८०१-१८, बिलावलु, मः ५)
जिथै किथै दीसहि नाले ॥ (८०१-१९, बिलावलु, मः ५)
नानक दास खसमि प्रतिपाले ॥४॥२॥ (८०१-१९, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०१-१९)
सुख निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (८०१-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०२

अगनत गुण ठाकुर प्रभ तेरे ॥ (८०२-१, बिलावलु, मः ५)
मोहि अनाथ तुमरी सरणाई ॥ (८०२-१, बिलावलु, मः ५)

करि किरपा हरि चरन धिआई ॥१॥ (८०२-१, बिलावलु, मः ५)
दइआ करहु बसहु मनि आइ ॥ (८०२-२, बिलावलु, मः ५)
मोहि निरगुन लीजै लड़ि लाइ ॥ रहाउ ॥ (८०२-२, बिलावलु, मः ५)
प्रभु चिति आवै ता कैसी भीड़ ॥ (८०२-२, बिलावलु, मः ५)
हरि सेवक नाही जम पीड़ ॥ (८०२-३, बिलावलु, मः ५)
सर्ब दूख हरि सिमरत नसे ॥ (८०२-३, बिलावलु, मः ५)
जा कै संगि सदा प्रभु बसै ॥२॥ (८०२-३, बिलावलु, मः ५)
प्रभ का नामु मनि तनि आधारु ॥ (८०२-४, बिलावलु, मः ५)
बिसरत नामु होवत तनु छारु ॥ (८०२-४, बिलावलु, मः ५)
प्रभ चिति आए पूरन सभ काज ॥ (८०२-४, बिलावलु, मः ५)
हरि बिसरत सभ का मुहताज ॥३॥ (८०२-५, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल संगि लागी प्रीति ॥ (८०२-५, बिलावलु, मः ५)
बिसरि गई सभ दुरमति रीति ॥ (८०२-५, बिलावलु, मः ५)
मन तन अंतरि हरि हरि मंत ॥ (८०२-६, बिलावलु, मः ५)
नानक भगतन कै घरि सदा अनंद ॥४॥३॥ (८०२-६, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ घरु २ यानड़ीए कै घरि गावणा (८०२-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८०२-७)
मै मनि तेरी टेक मेरे पिआरे मै मनि तेरी टेक ॥ (८०२-८, बिलावलु, मः ५)
अवर सिआणपा बिरथीआ पिआरे राखन कउ तुम एक ॥१॥ रहाउ ॥ (८०२-८, बिलावलु, मः ५)
सतिगुरु पूरा जे मिलै पिआरे सो जनु होत निहाला ॥ (८०२-९, बिलावलु, मः ५)
गुर की सेवा सो करे पिआरे जिस नो होइ दइआला ॥ (८०२-९, बिलावलु, मः ५)
सफल मूरति गुरदेउ सुआमी सर्ब कला भरपूरे ॥ (८०२-१०, बिलावलु, मः ५)
नानक गुरु पारब्रह्मु परमेसरु सदा सदा हजूरे ॥१॥ (८०२-१०, बिलावलु, मः ५)
सुणि सुणि जीवा सोइ तिना की जिन्ह अपुना प्रभु जाता ॥ (८०२-११, बिलावलु, मः ५)
हरि नामु अराधहि नामु वखाणहि हरि नामे ही मनु राता ॥ (८०२-११, बिलावलु, मः ५)
सेवकु जन की सेवा मागै पूरै करमि कमावा ॥ (८०२-१२, बिलावलु, मः ५)
नानक की बेनंती सुआमी तेरे जन देखणु पावा ॥२॥ (८०२-१३, बिलावलु, मः ५)
वडभागी से काढीअहि पिआरे संतसंगति जिना वासो ॥ (८०२-१३, बिलावलु, मः ५)
अमृत नामु अराधीऐ निरमलु मनै होवै परगासो ॥ (८०२-१४, बिलावलु, मः ५)
जनम मरण दुखु काटीऐ पिआरे चूकै जम की काणे ॥ (८०२-१४, बिलावलु, मः ५)
तिना परापति दरसनु नानक जो प्रभ अपणे भाणे ॥३॥ (८०२-१५, बिलावलु, मः ५)
ऊच अपार बेअंत सुआमी कउणु जाणै गुण तेरे ॥ (८०२-१६, बिलावलु, मः ५)
गावते उधरहि सुणते उधरहि बिनसहि पाप घनेरे ॥ (८०२-१६, बिलावलु, मः ५)
पसू परेत मुगध कउ तारे पाहन पारि उतारै ॥ (८०२-१७, बिलावलु, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाई सदा सदा बलिहारै ॥४॥१॥४॥ (८०२-१७, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८०२-१८)
बिखै बनु फीका तिआगि री सखीए नामु महा रसु पीओ ॥ (८०२-१८, बिलावलु, मः ५)
बिनु रस चाखे बुडि गई सगली सुखी न होवत जीओ ॥ (८०२-१९, बिलावलु, मः ५)
मानु महतु न सकति ही काई साधा दासी थीओ ॥ (८०२-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०३

नानक से दरि सोभावंते जो प्रभि अपुनै कीओ ॥१॥ (८०३-१, बिलावलु, मः ५)
हरिचंदउरी चित भ्रमु सखीए मृग तृसना द्रुम छाइआ ॥ (८०३-१, बिलावलु, मः ५)
चंचलि संगि न चालती सखीए अंति तजि जावत माइआ ॥ (८०३-२, बिलावलु, मः ५)
रसि भोगण अति रूप रस माते इन संगि सूखु न पाइआ ॥ (८०३-३, बिलावलु, मः ५)
धंनि धंनि हरि साध जन सखीए नानक जिनी नामु धिआइआ ॥२॥ (८०३-३, बिलावलु, मः ५)
जाइ बसहु वडभागणी सखीए संता संगि समाईऐ ॥ (८०३-४, बिलावलु, मः ५)
तह दूख न भूख न रोगु बिआपै चरन कमल लिव लाईऐ ॥ (८०३-५, बिलावलु, मः ५)
तह जनम न मरणु न आवण जाणा निहचलु सरणी पाईऐ ॥ (८०३-५, बिलावलु, मः ५)
प्रेम बिछोहु न मोहु बिआपै नानक हरि एकु धिआईऐ ॥३॥ (८०३-६, बिलावलु, मः ५)
दृसटि धारि मनु बेधिआ पिआरे रतड़े सहजि सुभाए ॥ (८०३-६, बिलावलु, मः ५)
सेज सुहावी संगि मिलि प्रीतम अनद मंगल गुण गाए ॥ (८०३-७, बिलावलु, मः ५)
सखी सहेली राम रंगि राती मन तन इछ पुजाए ॥ (८०३-८, बिलावलु, मः ५)
नानक अचरजु अचरज सिउ मिलिआ कहणा कछू न जाए ॥४॥२॥५॥ (८०३-८, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ (८०३-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८०३-१०)
एक रूप सगलो पासारा ॥ (८०३-११, बिलावलु, मः ५)
आपे बनजु आपि बिउहारा ॥१॥ (८०३-११, बिलावलु, मः ५)
ऐसो गिआनु बिरलो ई पाए ॥ (८०३-११, बिलावलु, मः ५)
जत जत जाईऐ तत दृसटाए ॥१॥ रहाउ ॥ (८०३-११, बिलावलु, मः ५)
अनिक रंग निरगुन इक रंगा ॥ (८०३-१२, बिलावलु, मः ५)
आपे जलु आप ही तरंगा ॥२॥ (८०३-१२, बिलावलु, मः ५)
आप ही मंदरु आपहि सेवा ॥ (८०३-१३, बिलावलु, मः ५)
आप ही पूजारी आप ही देवा ॥३॥ (८०३-१३, बिलावलु, मः ५)
आपहि जोग आप ही जुगता ॥ (८०३-१३, बिलावलु, मः ५)
नानक के प्रभ सद ही मुकता ॥४॥१॥६॥ (८०३-१४, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०३-१४)
आपि उपावन आपि सधरना ॥ (८०३-१४, बिलावलु, मः ५)
आपि करावन दोसु न लैना ॥१॥ (८०३-१५, बिलावलु, मः ५)
आपन बचनु आप ही करना ॥ (८०३-१५, बिलावलु, मः ५)

आपन बिभउ आप ही जरना ॥१॥ रहाउ ॥ (८०३-१५, बिलावलु, मः ५)
आप ही मसटि आप ही बुलना ॥ (८०३-१६, बिलावलु, मः ५)
आप ही अछलु न जाई छलना ॥२॥ (८०३-१६, बिलावलु, मः ५)
आप ही गुप्त आपि परगटना ॥ (८०३-१६, बिलावलु, मः ५)
आप ही घटि घटि आपि अलिपना ॥३॥ (८०३-१७, बिलावलु, मः ५)
आपे अविगतु आप संगि रचना ॥ (८०३-१७, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक प्रभ के सभि जचना ॥४॥२॥७॥ (८०३-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०३-१८)
भूले मारगु जिनहि बताइआ ॥ (८०३-१८, बिलावलु, मः ५)
ऐसा गुरु वडभागी पाइआ ॥१॥ (८०३-१९, बिलावलु, मः ५)
सिमरि मना राम नामु चितारे ॥ (८०३-१९, बिलावलु, मः ५)
बसि रहे हिरदै गुर चरन पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०३-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०४

कामि क्रोधि लोभि मोहि मनु लीना ॥ (८०४-१, बिलावलु, मः ५)
बंधन काटि मुकति गुरि कीना ॥२॥ (८०४-१, बिलावलु, मः ५)
दुख सुख करत जनमि फुनि मूआ ॥ (८०४-२, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल गुरि आस्रमु दीआ ॥३॥ (८०४-२, बिलावलु, मः ५)
अगनि सागर बूडत संसारा ॥ (८०४-२, बिलावलु, मः ५)
नानक बाह पकरि सतिगुरि निसतारा ॥४॥३॥८॥ (८०४-३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०४-३)
तनु मनु धनु अरपउ सभु अपना ॥ (८०४-३, बिलावलु, मः ५)
कवन सु मति जितु हरि हरि जपना ॥१॥ (८०४-४, बिलावलु, मः ५)
करि आसा आइओ प्रभ मागनि ॥ (८०४-४, बिलावलु, मः ५)
तुम् पेखत सोभा मेरै आगनि ॥१॥ रहाउ ॥ (८०४-५, बिलावलु, मः ५)
अनिक जुगति करि बहुतु बीचारउ ॥ (८०४-५, बिलावलु, मः ५)
साधसंगि इसु मनहि उधारउ ॥२॥ (८०४-५, बिलावलु, मः ५)
मति बुधि सुरति नाही चतुराई ॥ (८०४-६, बिलावलु, मः ५)
ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥३॥ (८०४-६, बिलावलु, मः ५)
नैन संतोखे प्रभ दरसनु पाइआ ॥ (८०४-६, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक सफलु सो आइआ ॥४॥४॥९॥ (८०४-७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०४-७)
मात पिता सुत साथि न माइआ ॥ (८०४-७, बिलावलु, मः ५)
साधसंगि सभु दूखु मिटाइआ ॥१॥ (८०४-८, बिलावलु, मः ५)
रवि रहिआ प्रभु सभ महि आपे ॥ (८०४-८, बिलावलु, मः ५)

हरि जपु रसना दुखु न विआपे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०४-८, बिलावलु, मः ५)
तिखा भूख बहु तपति विआपिआ ॥ (८०४-६, बिलावलु, मः ५)
सीतल भए हरि हरि जसु जापिआ ॥२॥ (८०४-६, बिलावलु, मः ५)
कोटि जतन संतोखु न पाइआ ॥ (८०४-१०, बिलावलु, मः ५)
मनु तृपताना हरि गुण गाइआ ॥३॥ (८०४-१०, बिलावलु, मः ५)
देहु भगति प्रभ अंतरजामी ॥ (८०४-१०, बिलावलु, मः ५)
नानक की बेनंती सुआमी ॥४॥५॥१०॥ (८०४-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०४-११)
गुरु पूरा वडभागी पाईऐ ॥ (८०४-११, बिलावलु, मः ५)
मिलि साधू हरि नामु धिआईऐ ॥१॥ (८०४-१२, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ तेरी सरना ॥ (८०४-१२, बिलावलु, मः ५)
किलबिख काटै भजु गुर के चरना ॥१॥ रहाउ ॥ (८०४-१२, बिलावलु, मः ५)
अवरि कर्म सभि लोकाचार ॥ (८०४-१३, बिलावलु, मः ५)
मिलि साधू संगि होइ उधार ॥२॥ (८०४-१३, बिलावलु, मः ५)
सिम्मृति सासत बेद बीचारे ॥ (८०४-१४, बिलावलु, मः ५)
जपीऐ नामु जितु पारि उतारे ॥३॥ (८०४-१४, बिलावलु, मः ५)
जन नानक कउ प्रभ किरपा करीऐ ॥ (८०४-१४, बिलावलु, मः ५)
साधू धूरि मिलै निसतरीऐ ॥४॥६॥११॥ (८०४-१५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०४-१५)
गुर का सबदु रिदे महि चीना ॥ (८०४-१५, बिलावलु, मः ५)
सगल मनोरथ पूरन आसीना ॥१॥ (८०४-१६, बिलावलु, मः ५)
संत जना का मुखु ऊजलु कीना ॥ (८०४-१६, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा अपुना नामु दीना ॥१॥ रहाउ ॥ (८०४-१६, बिलावलु, मः ५)
अंध कूप ते करु गहि लीना ॥ (८०४-१७, बिलावलु, मः ५)
जै जै कारु जगति प्रगटीना ॥२॥ (८०४-१७, बिलावलु, मः ५)
नीचा ते ऊच ऊन पूरीना ॥ (८०४-१७, बिलावलु, मः ५)
अमृत नामु महा रसु लीना ॥३॥ (८०४-१८, बिलावलु, मः ५)
मन तन निर्मल पाप जलि खीना ॥ (८०४-१८, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक प्रभ भए प्रसीना ॥४॥७॥१२॥ (८०४-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०४-१६)
सगल मनोरथ पाईअहि मीता ॥ (८०४-१६, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०५

चरन कमल सिउ लाईऐ चीता ॥१॥ (८०५-१, बिलावलु, मः ५)
हउ बलिहारी जो प्रभू धिआवत ॥ (८०५-१, बिलावलु, मः ५)

जलनि बुझै हरि हरि गुन गावत ॥१॥ रहाउ ॥ (८०५-१, बिलावलु, मः ५)
सफल जनमु होवत वडभागी ॥ (८०५-२, बिलावलु, मः ५)
साधसंगि रामहि लिव लागी ॥२॥ (८०५-२, बिलावलु, मः ५)
मति पति धनु सुख सहज अनंदा ॥ (८०५-२, बिलावलु, मः ५)
इक निमख न विसरहु परमानंदा ॥३॥ (८०५-३, बिलावलु, मः ५)
हरि दरसन की मनि पिआस घनेरी ॥ (८०५-३, बिलावलु, मः ५)
भनति नानक सरणि प्रभ तेरी ॥४॥८॥१३॥ (८०५-४, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०५-४)
मोहि निरगुन सभ गुणह बिहूना ॥ (८०५-४, बिलावलु, मः ५)
दइआ धारि अपुना करि लीना ॥१॥ (८०५-५, बिलावलु, मः ५)
मेरा मनु तनु हरि गोपालि सुहाइआ ॥ (८०५-५, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा प्रभु घर महि आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८०५-६, बिलावलु, मः ५)
भगति वछल भै काटनहारे ॥ (८०५-६, बिलावलु, मः ५)
संसार सागर अब उतरे पारे ॥२॥ (८०५-६, बिलावलु, मः ५)
पतित पावन प्रभ बिरदु बेदि लेखिआ ॥ (८०५-७, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्मु सो नैनहु पेखिआ ॥३॥ (८०५-७, बिलावलु, मः ५)
साधसंगि प्रगटे नाराइण ॥ (८०५-७, बिलावलु, मः ५)
नानक दास सभि दूख पलाइण ॥४॥९॥१४॥ (८०५-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०५-८)
कवनु जानै प्रभ तुम्ह्री सेवा ॥ (८०५-८, बिलावलु, मः ५)
प्रभ अविनासी अलख अभेवा ॥१॥ (८०५-९, बिलावलु, मः ५)
गुण बेअंत प्रभ गहिर गम्भीरे ॥ (८०५-९, बिलावलु, मः ५)
ऊच महल सुआमी प्रभ मेरे ॥ (८०५-९, बिलावलु, मः ५)
तू अपरम्पर ठाकुर मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०५-१०, बिलावलु, मः ५)
एकस बिनु नाही को दूजा ॥ (८०५-१०, बिलावलु, मः ५)
तुम्ह ही जानहु अपनी पूजा ॥२॥ (८०५-१०, बिलावलु, मः ५)
आपहु कछू न होवत भाई ॥ (८०५-११, बिलावलु, मः ५)
जिसु प्रभु देवै सो नामु पाई ॥३॥ (८०५-११, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक जो जनु प्रभ भाइआ ॥ (८०५-११, बिलावलु, मः ५)
गुण निधान प्रभु तिन ही पाइआ ॥४॥१०॥१५॥ (८०५-१२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०५-१२)
मात गरभ महि हाथ दे राखिआ ॥ (८०५-१२, बिलावलु, मः ५)
हरि रसु छोडि बिखिआ फलु चाखिआ ॥१॥ (८०५-१३, बिलावलु, मः ५)
भजु गोबिद सभ छोडि जंजाल ॥ (८०५-१३, बिलावलु, मः ५)
जब जमु आइ संघारै मूड़े तब तनु बिनसि जाइ बेहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८०५-१४, बिलावलु, मः ५)

तनु मनु धनु अपना करि थापिआ ॥ (८०५-१४, बिलावलु, मः ५)
करनहारु इक निमख न जापिआ ॥२॥ (८०५-१५, बिलावलु, मः ५)
महा मोह अंध कूप परिआ ॥ (८०५-१५, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्मु माइआ पटलि बिसरिआ ॥३॥ (८०५-१५, बिलावलु, मः ५)
वडै भागि प्रभ कीरतनु गाइआ ॥ (८०५-१६, बिलावलु, मः ५)
संतसंगि नानक प्रभु पाइआ ॥४॥११॥१६॥ (८०५-१६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०५-१७)
मात पिता सुत बंधप भाई ॥ (८०५-१७, बिलावलु, मः ५)
नानक होआ पारब्रह्मु सहाई ॥१॥ (८०५-१७, बिलावलु, मः ५)
सूख सहज आनंद घणे ॥ (८०५-१८, बिलावलु, मः ५)
गुरु पूरा पूरी जा की बाणी अनिक गुणा जा के जाहि न गणे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०५-१८, बिलावलु, मः ५)
सगल सरंजाम करे प्रभु आपे ॥ (८०५-१९, बिलावलु, मः ५)
भए मनोरथ सो प्रभु जापे ॥२॥ (८०५-१९, बिलावलु, मः ५)
अर्थ धर्म काम मोख का दाता ॥ (८०५-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०६

पूरी भई सिमरि सिमरि बिधाता ॥३॥ (८०६-१, बिलावलु, मः ५)
साधसंगि नानकि रंगु माणिआ ॥ (८०६-१, बिलावलु, मः ५)
घरि आइआ पूरै गुरि आणिआ ॥४॥१२॥१७॥ (८०६-१, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०६-२)
स्रब निधान पूरन गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (८०६-२, बिलावलु, मः ५)
हरि हरि नामु जपत नर जीवे ॥ (८०६-२, बिलावलु, मः ५)
मरि खुआरु साकत नर थीवे ॥१॥ (८०६-३, बिलावलु, मः ५)
राम नामु होआ रखवारा ॥ (८०६-३, बिलावलु, मः ५)
झख मारउ साकतु वेचारा ॥२॥ (८०६-३, बिलावलु, मः ५)
निंदा करि करि पचहि घनेरे ॥ (८०६-४, बिलावलु, मः ५)
मिरतक फास गलै सिरि पैरे ॥३॥ (८०६-४, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक जपहि जन नाम ॥ (८०६-४, बिलावलु, मः ५)
ता के निकटि न आवै जाम ॥४॥१३॥१८॥ (८०६-५, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ घरु ४ दुपदे (८०६-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८०६-६)
कवन संजोग मिलउ प्रभ अपने ॥ (८०६-७, बिलावलु, मः ५)
पलु पलु निमख सदा हरि जपने ॥१॥ (८०६-७, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ ॥ (८०६-७, बिलावलु, मः ५)
कवन सु मति जितु प्रीतमु पावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८०६-८, बिलावलु, मः ५)

ऐसी कृपा करहु प्रभ मेरे ॥ (८०६-८, बिलावलु, मः ५)
हरि नानक बिसरु न काहू बेरे ॥२॥१॥१६॥ (८०६-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०६-६)
चरन कमल प्रभ हिरदै धिआए ॥ (८०६-६, बिलावलु, मः ५)
रोग गए सगले सुख पाए ॥१॥ (८०६-६, बिलावलु, मः ५)
गुरि दुखु काटिआ दीनो दानु ॥ (८०६-१०, बिलावलु, मः ५)
सफल जनमु जीवन परवानु ॥१॥ रहाउ ॥ (८०६-१०, बिलावलु, मः ५)
अकथ कथा अमृत प्रभ बानी ॥ (८०६-११, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक जपि जीवे गिआनी ॥२॥२॥२०॥ (८०६-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०६-११)
साँति पाई गुरि सतिगुरि पूरे ॥ (८०६-१२, बिलावलु, मः ५)
सुख उपजे बाजे अनहद तूरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०६-१२, बिलावलु, मः ५)
ताप पाप संताप बिनासे ॥ (८०६-१२, बिलावलु, मः ५)
हरि सिमरत किलविख सभि नासे ॥१॥ (८०६-१३, बिलावलु, मः ५)
अनदु करहु मिलि सुंदर नारी ॥ (८०६-१३, बिलावलु, मः ५)
गुरि नानकि मेरी पैज सवारी ॥२॥३॥२१॥ (८०६-१३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०६-१४)
ममता मोह ध्रोह मदि माता बंधनि बाधिआ अति बिकराल ॥ (८०६-१४, बिलावलु, मः ५)
दिनु दिनु छिजत बिकार करत अउध फाही फाथा जम कै जाल ॥१॥ (८०६-१५, बिलावलु, मः ५)
तेरी सरणि प्रभ दीन दइआला ॥ (८०६-१५, बिलावलु, मः ५)
महा बिखम सागरु अति भारी उधरहु साधू संगि रवाला ॥१॥ रहाउ ॥ (८०६-१६, बिलावलु, मः ५)
प्रभ सुखदाते समरथ सुआमी जीउ पिंडु सभु तुमरा माल ॥ (८०६-१६, बिलावलु, मः ५)
भ्रम के बंधन काटहु परमेसर नानक के प्रभ सदा कृपाल ॥२॥४॥२२॥ (८०६-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०६-१८)
सगल अनंदु कीआ परमेसरि अपणा बिरदु सम्हारिआ ॥ (८०६-१८, बिलावलु, मः ५)
साध जना होए किरपाला बिगसे सभि परवारिआ ॥१॥ (८०६-१६, बिलावलु, मः ५)
कारजु सतिगुरि आपि सवारिआ ॥ (८०६-१६, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०७

वडी आरजा हरि गोबिंद की सूख मंगल कलिआण बीचारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८०७-१, बिलावलु, मः ५)
वण तृण तृभवण हरिआ होए सगले जीअ साधारिआ ॥ (८०७-१, बिलावलु, मः ५)
मन इछे नानक फल पाए पूरन इछ पुजारिआ ॥२॥५॥२३॥ (८०७-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०७-३)
जिसु ऊपरि होवत दइआलु ॥ (८०७-३, बिलावलु, मः ५)
हरि सिमरत काटै सो कालु ॥१॥ रहाउ ॥ (८०७-३, बिलावलु, मः ५)

साधसंगि भजीऐ गोपालु ॥ (८०७-४, बिलावलु, मः ५)
गुन गावत तूटै जम जालु ॥१॥ (८०७-४, बिलावलु, मः ५)
आपे सतिगुरु आपे प्रतिपाल ॥ (८०७-४, बिलावलु, मः ५)
नानकु जाचै साध रवाल ॥२॥६॥२४॥ (८०७-४, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०७-५)
मन महि सिंचहु हरि हरि नाम ॥ (८०७-५, बिलावलु, मः ५)
अनदिनु कीरतनु हरि गुण गाम ॥१॥ (८०७-५, बिलावलु, मः ५)
ऐसी प्रीति करहु मन मेरे ॥ (८०७-६, बिलावलु, मः ५)
आठ पहर प्रभ जानहु नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०७-६, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक जा के निर्मल भाग ॥ (८०७-७, बिलावलु, मः ५)
हरि चरनी ता का मनु लाग ॥२॥७॥२५॥ (८०७-७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०७-७)
रोगु गइआ प्रभि आपि गवाइआ ॥ (८०७-८, बिलावलु, मः ५)
नीद पई सुख सहज घरु आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८०७-८, बिलावलु, मः ५)
रजि रजि भोजनु खावहु मेरे भाई ॥ (८०७-८, बिलावलु, मः ५)
अमृत नामु रिद माहि धिआई ॥१॥ (८०७-९, बिलावलु, मः ५)
नानक गुर पूरे सरनाई ॥ (८०७-९, बिलावलु, मः ५)
जिनि अपने नाम की पैज रखाई ॥२॥८॥२६॥ (८०७-९, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०७-१०)
सतिगुर करि दीने असथिर घर बार ॥ रहाउ ॥ (८०७-१०, बिलावलु, मः ५)
जो जो निंद करै इन गृहन की तिसु आगै ही मारै करतार ॥१॥ (८०७-११, बिलावलु, मः ५)
नानक दास ता की सरनाई जा को सबदु अखंड अपार ॥२॥९॥२७॥ (८०७-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०७-१२)
ताप संताप सगले गए बिनसे ते रोग ॥ (८०७-१२, बिलावलु, मः ५)
पारब्रहमि तू बखसिआ संतन रस भोग ॥ रहाउ ॥ (८०७-१३, बिलावलु, मः ५)
सर्ब सुखा तेरी मंडली तेरा मनु तनु आरोग ॥ (८०७-१३, बिलावलु, मः ५)
गुन गावहु नित राम के इह अवखद जोग ॥१॥ (८०७-१४, बिलावलु, मः ५)
आइ बसहु घर देस महि इह भले संजोग ॥ (८०७-१४, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सुप्रसन्न भए लहि गए बिओग ॥२॥१०॥२८॥ (८०७-१५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०७-१५)
काहू संगि न चालही माइआ जंजाल ॥ (८०७-१५, बिलावलु, मः ५)
ऊठि सिधारे छत्रपति संतन कै खिआल ॥ रहाउ ॥ (८०७-१६, बिलावलु, मः ५)
अहम्बुधि कउ बिनसना इह धुर की ढाल ॥ (८०७-१६, बिलावलु, मः ५)
बहु जोनी जनमहि मरहि बिखिआ बिकराल ॥१॥ (८०७-१७, बिलावलु, मः ५)
सति बचन साधू कहहि नित जपहि गुपाल ॥ (८०७-१७, बिलावलु, मः ५)

सिमरि सिमरि नानक तरे हरि के रंग लाल ॥२॥११॥२६॥ (८०७-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०७-१८)
सहज समाधि अनंद सूख पूरे गुरि दीन ॥ (८०७-१६, बिलावलु, मः ५)
सदा सहाई संगि प्रभ अमृत गुण चीन ॥ रहाउ ॥ (८०७-१६, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०८

जै जै कारु जगत्र महि लोचहि सभि जीआ ॥ (८०८-१, बिलावलु, मः ५)
सुप्रसन्न भए सतिगुर प्रभू कछु बिघनु न थीआ ॥१॥ (८०८-१, बिलावलु, मः ५)
जा का अंगु दइआल प्रभ ता के सभ दास ॥ (८०८-१, बिलावलु, मः ५)
सदा सदा वडिआईआ नानक गुर पासि ॥२॥१२॥३०॥ (८०८-२, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ घरु ५ चउपदे (८०८-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८०८-३)
मृत मंडल जगु साजिआ जिउ बालू घर बार ॥ (८०८-४, बिलावलु, मः ५)
बिनसत बार न लागई जिउ कागद बूंदार ॥१॥ (८०८-४, बिलावलु, मः ५)
सुनि मेरी मनसा मनै माहि सति देखु बीचारि ॥ (८०८-५, बिलावलु, मः ५)
सिध साधिक गिरही जोगी तजि गए घर बार ॥१॥ रहाउ ॥ (८०८-५, बिलावलु, मः ५)
जैसा सुपना रैनि का तैसा संसार ॥ (८०८-६, बिलावलु, मः ५)
दृसटिमान सभु बिनसीऐ किआ लगहि गवार ॥२॥ (८०८-६, बिलावलु, मः ५)
कहा सु भाई मीत है देखु नैन पसारि ॥ (८०८-७, बिलावलु, मः ५)
इकि चाले इकि चालसहि सभि अपनी वार ॥३॥ (८०८-७, बिलावलु, मः ५)
जिन पूरा सतिगुरु सेविआ से असथिरु हरि दुआरि ॥ (८०८-७, बिलावलु, मः ५)
जनु नानकु हरि का दासु है राखु पैज मुरारि ॥४॥१॥३१॥ (८०८-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०८-६)
लोकन कीआ वडिआईआ बैसंतरि पागउ ॥ (८०८-६, बिलावलु, मः ५)
जिउ मिलै पिआरा आपना ते बोल करागउ ॥१॥ (८०८-६, बिलावलु, मः ५)
जउ प्रभ जीउ दइआल होइ तउ भगती लागउ ॥ (८०८-१०, बिलावलु, मः ५)
लपटि रहिओ मनु बासना गुर मिलि इह तिआगउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८०८-१०, बिलावलु, मः ५)
करउ बेनती अति घनी इहु जीउ होमागउ ॥ (८०८-११, बिलावलु, मः ५)
अर्थ आन सभि वारिआ पृअ निमख सोहागउ ॥२॥ (८०८-११, बिलावलु, मः ५)
पंच संगु गुर ते छुटे दोख अरु रागउ ॥ (८०८-१२, बिलावलु, मः ५)
रिदै प्रगासु प्रगट भइआ निसि बासुर जागउ ॥३॥ (८०८-१२, बिलावलु, मः ५)
सरणि सोहागनि आइआ जिसु मसतकि भागउ ॥ (८०८-१३, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक तिनि पाइआ तनु मनु सीतलागउ ॥४॥२॥३२॥ (८०८-१३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०८-१४)
लाल रंगु तिस कउ लगा जिस के वडभागा ॥ (८०८-१४, बिलावलु, मः ५)

मैला कदे न होवई नह लागै दागा ॥१॥ (८०८-१५, बिलावलु, मः ५)
प्रभु पाइआ सुखदाईआ मिलिआ सुख भाइ ॥ (८०८-१५, बिलावलु, मः ५)
सहजि समाना भीतरे छोडिआ नह जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८०८-१६, बिलावलु, मः ५)
जरा मरा नह विआपई फिरि दूखु न पाइआ ॥ (८०८-१६, बिलावलु, मः ५)
पी अमृतु आघानिआ गुरि अमरु कराइआ ॥२॥ (८०८-१७, बिलावलु, मः ५)
सो जानै जिनि चाखिआ हरि नामु अमोला ॥ (८०८-१७, बिलावलु, मः ५)
कीमति कही न जाईऐ किआ कहि मुखि बोला ॥३॥ (८०८-१८, बिलावलु, मः ५)
सफल दरसु तेरा पारब्रह्म गुण निधि तेरी बाणी ॥ (८०८-१८, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८०९

पावउ धूरि तेरे दास की नानक कुरबाणी ॥४॥३॥३३॥ (८०९-१, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०९-१)
राखहु अपनी सरणि प्रभ मोहि किरपा धारे ॥ (८०९-२, बिलावलु, मः ५)
सेवा कछू न जानऊ नीचु मूरखारे ॥१॥ (८०९-२, बिलावलु, मः ५)
मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥ (८०९-२, बिलावलु, मः ५)
हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०९-३, बिलावलु, मः ५)
हम अवगन करह असंख नीति तुम्ह निरगुन दातारे ॥ (८०९-३, बिलावलु, मः ५)
दासी संगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे ॥२॥ (८०९-४, बिलावलु, मः ५)
तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥ (८०९-४, बिलावलु, मः ५)
लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥३॥ (८०९-५, बिलावलु, मः ५)
तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥ (८०९-५, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे ॥४॥४॥३४॥ (८०९-६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०९-७)
दोसु न काहू दीजीऐ प्रभु अपना धिआईऐ ॥ (८०९-७, बिलावलु, मः ५)
जितु सेविऐ सुखु होइ घना मन सोई गाईऐ ॥१॥ (८०९-७, बिलावलु, मः ५)
कहीऐ काइ पिआरे तुझु बिना ॥ (८०९-८, बिलावलु, मः ५)
तुम्ह दइआल सुआमी सभ अवगन हमा ॥१॥ रहाउ ॥ (८०९-८, बिलावलु, मः ५)
जिउ तुम्ह राखहु तिउ रहा अवरु नही चारा ॥ (८०९-९, बिलावलु, मः ५)
नीधरिआ धर तेरीआ इक नाम अधारा ॥२॥ (८०९-९, बिलावलु, मः ५)
जो तुम्ह करहु सोई भला मनि लेता मुकता ॥ (८०९-१०, बिलावलु, मः ५)
सगल समग्री तेरीआ सभ तेरी जुगता ॥३॥ (८०९-१०, बिलावलु, मः ५)
चरन पखारउ करि सेवा जे ठाकुर भावै ॥ (८०९-१०, बिलावलु, मः ५)
होहु कृपाल दइआल प्रभ नानकु गुण गावै ॥४॥५॥३५॥ (८०९-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०९-११)
मिरतु हसै सिर ऊपरे पसूआ नही बूझै ॥ (८०९-१२, बिलावलु, मः ५)

बाद साद अहंकार महि मरणा नही सूझै ॥१॥ (८०६-१२, बिलावलु, मः ५)
सतिगुरु सेवहु आपना काहे फिरहु अभागे ॥ (८०६-१३, बिलावलु, मः ५)
देखि कसुम्भा रंगुला काहे भूलि लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (८०६-१३, बिलावलु, मः ५)
करि करि पाप दरबु कीआ वरतण कै ताई ॥ (८०६-१४, बिलावलु, मः ५)
माटी सिउ माटी रली नागा उठि जाई ॥२॥ (८०६-१४, बिलावलु, मः ५)
जा कै कीऐ स्रमु करै ते बैर बिरोधी ॥ (८०६-१४, बिलावलु, मः ५)
अंत कालि भजि जाहिगे काहे जलहु करोधी ॥३॥ (८०६-१५, बिलावलु, मः ५)
दास रेणु सोई होआ जिसु मसतकि करमा ॥ (८०६-१५, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक बंधन छुटे सतिगुर की सरना ॥४॥६॥३६॥ (८०६-१६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८०६-१६)
पिंगुल पर्बत पारि परे खल चतुर बकीता ॥ (८०६-१७, बिलावलु, मः ५)
अंधुले त्रिभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता ॥१॥ (८०६-१७, बिलावलु, मः ५)
महिमा साधू संग की सुनहु मेरे मीता ॥ (८०६-१७, बिलावलु, मः ५)
मैलु खोई कोटि अघ हरे निर्मल भए चीता ॥१॥ रहाउ ॥ (८०६-१८, बिलावलु, मः ५)
ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता ॥ (८०६-१८, बिलावलु, मः ५)
जो जो कीनो आपनो तिसु अभै दानु दीता ॥२॥ (८०६-१९, बिलावलु, मः ५)
सिंघु बिलाई होइ गइओ तृणु मेरु दिखीता ॥ (८०६-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१०

स्रमु करते दम आढ कउ ते गनी धनीता ॥३॥ (८१०-१, बिलावलु, मः ५)
कवन वडाई कहि सकउ बेअंत गुनीता ॥ (८१०-१, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा मोहि नामु देहु नानक दर सरीता ॥४॥७॥३७॥ (८१०-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१०-२)
अहम्बुधि परबाद नीत लोभ रसना सादि ॥ (८१०-३, बिलावलु, मः ५)
लपटि कपटि गृहि बेधिआ मिथिआ बिखिआदि ॥१॥ (८१०-३, बिलावलु, मः ५)
ऐसी पेखी नेत्र महि पूरे गुर परसादि ॥ (८१०-४, बिलावलु, मः ५)
राज मिलख धन जोबना नामै बिनु बादि ॥१॥ रहाउ ॥ (८१०-४, बिलावलु, मः ५)
रूप धूप सोगंधता कापर भोगादि ॥ (८१०-५, बिलावलु, मः ५)
मिलत संगि पापिसट तन होए दुरगादि ॥२॥ (८१०-५, बिलावलु, मः ५)
फिरत फिरत मानुखु भइआ खिन भंगन देहादि ॥ (८१०-६, बिलावलु, मः ५)
इह अउसर ते चूकिआ बहु जोनि भ्रमादि ॥३॥ (८१०-६, बिलावलु, मः ५)
प्रभ किरपा ते गुर मिले हरि हरि बिसमाद ॥ (८१०-६, बिलावलु, मः ५)
सूख सहज नानक अनंद ता कै पूरन नाद ॥४॥८॥३८॥ (८१०-७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१०-८)
चरन भए संत बोहिथा तरे सागरु जेत ॥ (८१०-८, बिलावलु, मः ५)

मारग पाए उदिआन महि गुरि दसे भेत ॥१॥ (८१०-८, बिलावलु, मः ५)
हरि हरि हरि हरि हरि हरे हरि हरि हरि हेत ॥ (८१०-९, बिलावलु, मः ५)
ऊठत बैठत सोवते हरि हरि हरि चेत ॥१॥ रहाउ ॥ (८१०-९, बिलावलु, मः ५)
पंच चोर आगै भगे जब साधसंगेत ॥ (८१०-१०, बिलावलु, मः ५)
पूंजी साबतु घणो लाभु गृहि सोभा सेत ॥२॥ (८१०-१०, बिलावलु, मः ५)
निहचल आसणु मिटी चिंत नाही डोलेत ॥ (८१०-१०, बिलावलु, मः ५)
भरमु भुलावा मिटि गइआ प्रभ पेखत नेत ॥३॥ (८१०-११, बिलावलु, मः ५)
गुण गभीर गुन नाइका गुण कहीअहि केत ॥ (८१०-११, बिलावलु, मः ५)
नानक पाइआ साधसंगि हरि हरि अम्रेत ॥४॥९॥३९॥ (८१०-१२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१०-१२)
बिनु साधू जो जीवना तेतो बिरथारी ॥ (८१०-१३, बिलावलु, मः ५)
मिलत संगि सभि भ्रम मिटे गति भई हमारी ॥१॥ (८१०-१३, बिलावलु, मः ५)
जा दिन भेटे साध मोहि उआ दिन बलिहारी ॥ (८१०-१४, बिलावलु, मः ५)
तनु मनु अपनो जीअरा फिरि फिरि हउ वारी ॥१॥ रहाउ ॥ (८१०-१४, बिलावलु, मः ५)
एत छडाई मोहि ते इतनी दृड़तारी ॥ (८१०-१५, बिलावलु, मः ५)
सगल रेन इहु मनु भइआ बिनसी अपधारी ॥२॥ (८१०-१५, बिलावलु, मः ५)
निंद चिंद पर दूखना ए खिन महि जारी ॥ (८१०-१६, बिलावलु, मः ५)
दइआ मइआ अरु निकटि पेखु नाही दूरारी ॥३॥ (८१०-१६, बिलावलु, मः ५)
तन मन सीतल भए अब मुकते संसारी ॥ (८१०-१७, बिलावलु, मः ५)
हीत चीत सभ प्रान धन नानक दरसारी ॥४॥१०॥४०॥ (८१०-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१०-१८)
टहल करउ तेरे दास की पग झारउ बाल ॥ (८१०-१८, बिलावलु, मः ५)
मसतकु अपना भेट देउ गुन सुनउ रसाल ॥१॥ (८१०-१८, बिलावलु, मः ५)
तुम् मिलते मेरा मनु जीओ तुम् मिलहु दइआल ॥ (८१०-१९, बिलावलु, मः ५)
निसि बासुर मनि अनदु होत चितवत किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८१०-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८११

जगत उधारन साध प्रभ तिन् लागहु पाल ॥ (८११-१, बिलावलु, मः ५)
मो कउ दीजै दानु प्रभ संतन पग राल ॥२॥ (८११-१, बिलावलु, मः ५)
उकति सिआनप कछु नही नाही कछु घाल ॥ (८११-२, बिलावलु, मः ५)
भ्रम भै राखहु मोह ते काटहु जम जाल ॥३॥ (८११-२, बिलावलु, मः ५)
बिनउ करउ करुणापते पिता प्रतिपाल ॥ (८११-३, बिलावलु, मः ५)
गुण गावउ तेरे साधसंगि नानक सुख साल ॥४॥११॥४१॥ (८११-३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८११-४)
कीता लोड़हि सो करहि तुझ बिनु कछु नाहि ॥ (८११-४, बिलावलु, मः ५)

परतापु तुमारा देखि कै जमदूत छडि जाहि ॥१॥ (८११-४, बिलावलु, मः ५)
तुम्री कृपा ते छूटीऐ बिनसै अहम्मेव ॥ (८११-५, बिलावलु, मः ५)
सर्ब कला समरथ प्रभ पूरे गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (८११-५, बिलावलु, मः ५)
खोजत खोजत खोजिआ नामै बिनु कूरु ॥ (८११-६, बिलावलु, मः ५)
जीवन सुखु सभु साधसंगि प्रभ मनसा पूरु ॥२॥ (८११-६, बिलावलु, मः ५)
जितु जितु लावहु तितु तितु लगहि सिआनप सभ जाली ॥ (८११-७, बिलावलु, मः ५)
जत कत तुम् भरपूर हहु मेरे दीन दइआली ॥३॥ (८११-७, बिलावलु, मः ५)
सभु किछु तुम ते मागना वडभागी पाए ॥ (८११-८, बिलावलु, मः ५)
नानक की अरदासि प्रभ जीवा गुन गाए ॥४॥१२॥४२॥ (८११-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८११-९)
साधसंगति कै बासबै कलमल सभि नसना ॥ (८११-९, बिलावलु, मः ५)
प्रभ सेती रंगि रातिआ ता ते गरभि न ग्रसना ॥१॥ (८११-९, बिलावलु, मः ५)
नामु कहत गोविंद का सूची भई रसना ॥ (८११-१०, बिलावलु, मः ५)
मन तन निर्मल होई है गुर का जपु जपना ॥१॥ रहाउ ॥ (८११-१०, बिलावलु, मः ५)
हरि रसु चाखत ध्रापिआ मनि रसु लै हसना ॥ (८११-११, बिलावलु, मः ५)
बुधि प्रगास प्रगट भई उलटि कमलु बिगसना ॥२॥ (८११-११, बिलावलु, मः ५)
सीतल साँति संतोखु होइ सभ बूझी तृसना ॥ (८११-१२, बिलावलु, मः ५)
दह दिस धावत मिटि गए निर्मल थानि बसना ॥३॥ (८११-१२, बिलावलु, मः ५)
राखनहारै राखिआ भए भ्रम भसना ॥ (८११-१३, बिलावलु, मः ५)
नामु निधान नानक सुखी पेखि साध दरसना ॥४॥१३॥४३॥ (८११-१३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८११-१४)
पाणी पखा पीसु दास कै तब होहि निहालु ॥ (८११-१४, बिलावलु, मः ५)
राज मिलख सिकदारीआ अगनी महि जालु ॥१॥ (८११-१५, बिलावलु, मः ५)
संत जना का छोहरा तिसु चरणी लागि ॥ (८११-१५, बिलावलु, मः ५)
माइआधारी छत्रपति तिन् छोडउ तिआगि ॥१॥ रहाउ ॥ (८११-१५, बिलावलु, मः ५)
संतन का दाना रूखा सो सर्ब निधान ॥ (८११-१६, बिलावलु, मः ५)
गृहि साकत छतीह प्रकार ते बिखू समान ॥२॥ (८११-१६, बिलावलु, मः ५)
भगत जना का लूगरा ओढि नगन न होई ॥ (८११-१७, बिलावलु, मः ५)
साकत सिरपाउ रेसमी पहिरत पति खोई ॥३॥ (८११-१७, बिलावलु, मः ५)
साकत सिउ मुखि जोरिऐ अध वीचहु टूटै ॥ (८११-१८, बिलावलु, मः ५)
हरि जन की सेवा जो करे इत ऊतहि छूटै ॥४॥ (८११-१८, बिलावलु, मः ५)
सभ किछु तुम् ही ते होआ आपि बणत बणाई ॥ (८११-१९, बिलावलु, मः ५)
दरसनु भेटत साध का नानक गुण गाई ॥५॥१४॥४४॥ (८११-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१२

बिलावलु महला ५ ॥ (८१२-१)
स्रवनी सुनउ हरि हरि हरे ठाकुर जसु गावउ ॥ (८१२-१, बिलावलु, मः ५)
संत चरण कर सीसु धरि हरि नामु धिआवउ ॥१॥ (८१२-२, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा दइआल प्रभ इह निधि सिधि पावउ ॥ (८१२-२, बिलावलु, मः ५)
संत जना की रेणुका लै माथै लावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८१२-३, बिलावलु, मः ५)
नीच ते नीचु अति नीचु होइ करि बिनउ बुलावउ ॥ (८१२-३, बिलावलु, मः ५)
पाव मलोवा आपु तिआगि संतसंगि समावउ ॥२॥ (८१२-४, बिलावलु, मः ५)
सासि सासि नह वीसरै अन कतहि न धावउ ॥ (८१२-४, बिलावलु, मः ५)
सफल दरसन गुरु भेटीऐ मानु मोहु मिटावउ ॥३॥ (८१२-५, बिलावलु, मः ५)
सतु संतोखु दइआ धरमु सीगारु बनावउ ॥ (८१२-५, बिलावलु, मः ५)
सफल सुहागणि नानका अपुने प्रभ भावउ ॥४॥१५॥४५॥ (८१२-६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१२-६)
अटल बचन साधू जना सभ महि प्रगटाइआ ॥ (८१२-७, बिलावलु, मः ५)
जिसु जन होआ साधसंगु तिसु भेटै हरि राइआ ॥१॥ (८१२-७, बिलावलु, मः ५)
इह परतीति गोविंद की जपि हरि सुखु पाइआ ॥ (८१२-८, बिलावलु, मः ५)
अनिक बाता सभि करि रहे गुरु घरि लै आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८१२-८, बिलावलु, मः ५)
सरणि परे की राखता नाही सहसाइआ ॥ (८१२-९, बिलावलु, मः ५)
कर्म भूमि हरि नामु बोइ अउसरु दुलभाइआ ॥२॥ (८१२-९, बिलावलु, मः ५)
अंतरजामी आपि प्रभु सभ करे कराइआ ॥ (८१२-१०, बिलावलु, मः ५)
पतित पुनीत घणे करे ठाकुर बिरदाइआ ॥३॥ (८१२-१०, बिलावलु, मः ५)
मत भूलहु मानुख जन माइआ भरमाइआ ॥ (८१२-११, बिलावलु, मः ५)
नानक तिसु पति राखसी जो प्रभि पहिराइआ ॥४॥१६॥४६॥ (८१२-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१२-१२)
माटी ते जिनि साजिआ करि दुरलभ देह ॥ (८१२-१२, बिलावलु, मः ५)
अनिक छिद्र मन महि ढके निर्मल द्रिसटेह ॥१॥ (८१२-१३, बिलावलु, मः ५)
किउ बिसरै प्रभु मनै ते जिस के गुण एह ॥ (८१२-१३, बिलावलु, मः ५)
प्रभ तजि रचे जि आन सिउ सो रलीऐ खेह ॥१॥ रहाउ ॥ (८१२-१४, बिलावलु, मः ५)
सिमरहु सिमरहु सासि सासि मत बिलम करेह ॥ (८१२-१४, बिलावलु, मः ५)
छोडि प्रपंचु प्रभ सिउ रचहु तजि कूड़े नेह ॥२॥ (८१२-१५, बिलावलु, मः ५)
जिनि अनिक एक बहु रंग कीए है होसी एह ॥ (८१२-१५, बिलावलु, मः ५)
करि सेवा तिसु पारब्रह्म गुर ते मति लेह ॥३॥ (८१२-१६, बिलावलु, मः ५)
ऊचे ते ऊचा वडा सभ संगि बरनेह ॥ (८१२-१६, बिलावलु, मः ५)
दास दास को दासरा नानक करि लेह ॥४॥१७॥४७॥ (८१२-१७, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८१२-१७)
एक टेक गोविंद की तिआगी अन आस ॥ (८१२-१७, बिलावलु, मः ५)
सभ ऊपरि समरथ प्रभ पूरन गुणतास ॥१॥ (८१२-१८, बिलावलु, मः ५)
जन का नामु अधारु है प्रभ सरणी पाहि ॥ (८१२-१८, बिलावलु, मः ५)
परमेसर का आसरा संतन मन माहि ॥१॥ रहाउ ॥ (८१२-१९, बिलावलु, मः ५)
आपि रखै आपि देवसी आपे प्रतिपारै ॥ (८१२-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१३

दीन दइआल कृपा निधे सासि सासि समारै ॥२॥ (८१३-१, बिलावलु, मः ५)
करणहारु जो करि रहिआ साई वडिआई ॥ (८१३-१, बिलावलु, मः ५)
गुरि पूरै उपदेसिआ सुखु खसम रजाई ॥३॥ (८१३-२, बिलावलु, मः ५)
चिंत अंदेसा गणत तजि जनि हुकमु पछाता ॥ (८१३-२, बिलावलु, मः ५)
नह बिनसै नह छोडि जाइ नानक रंगि राता ॥४॥१८॥४८॥ (८१३-३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१३-३)
महा तपति ते भई साँति परसत पाप नाठे ॥ (८१३-३, बिलावलु, मः ५)
अंध कूप महि गलत थे काढे दे हाथे ॥१॥ (८१३-४, बिलावलु, मः ५)
ओइ हमारे साजना हम उन की रेन ॥ (८१३-४, बिलावलु, मः ५)
जिन भेटत होवत सुखी जीअ दानु देन ॥१॥ रहाउ ॥ (८१३-५, बिलावलु, मः ५)
परा पूरबला लीखिआ मिलिआ अब आइ ॥ (८१३-५, बिलावलु, मः ५)
बसत संगि हरि साध कै पूरन आसाइ ॥२॥ (८१३-६, बिलावलु, मः ५)
भै बिनसे तिहु लोक के पाए सुख थान ॥ (८१३-६, बिलावलु, मः ५)
दइआ करी समरथ गुरि बसिआ मनि नाम ॥३॥ (८१३-७, बिलावलु, मः ५)
नानक की तू टेक प्रभ तेरा आधार ॥ (८१३-७, बिलावलु, मः ५)
करण कारण समरथ प्रभ हरि अगम अपार ॥४॥१९॥४९॥ (८१३-७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१३-८)
सोई मलीनु दीनु हीनु जिसु प्रभु बिसराना ॥ (८१३-८, बिलावलु, मः ५)
करनैहारु न बूझई आपु गनै बिगाना ॥१॥ (८१३-९, बिलावलु, मः ५)
दूखु तदे जदि वीसरै सुखु प्रभ चिति आए ॥ (८१३-९, बिलावलु, मः ५)
संतन कै आनंदु एहु नित हरि गुण गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (८१३-१०, बिलावलु, मः ५)
ऊचे ते नीचा करै नीच खिन महि थापै ॥ (८१३-१०, बिलावलु, मः ५)
कीमति कही न जाईऐ ठाकुर परतापै ॥२॥ (८१३-११, बिलावलु, मः ५)
पेखत लीला रंग रूप चलनै दिनु आइआ ॥ (८१३-११, बिलावलु, मः ५)
सुपने का सुपना भइआ संगि चलिआ कमाइआ ॥३॥ (८१३-१२, बिलावलु, मः ५)
करण कारण समरथ प्रभ तेरी सरणाई ॥ (८१३-१२, बिलावलु, मः ५)
हरि दिनसु रैणि नानकु जपै सद सद बलि जाई ॥४॥२०॥५०॥ (८१३-१३, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८१३-१३)
जलु ढोवउ इह सीस करि कर पग पखलावउ ॥ (८१३-१३, बिलावलु, मः ५)
बारि जाउ लख बेरीआ दरसु पेखि जीवावउ ॥१॥ (८१३-१४, बिलावलु, मः ५)
करउ मनोरथ मनै माहि अपने प्रभ ते पावउ ॥ (८१३-१४, बिलावलु, मः ५)
देउ सूहनी साध कै बीजनु ढोलावउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८१३-१५, बिलावलु, मः ५)
अमृत गुण संत बोलते सुणि मनहि पीलावउ ॥ (८१३-१५, बिलावलु, मः ५)
उआ रस महि साँति तृपति होइ बिखै जलनि बुझावउ ॥२॥ (८१३-१६, बिलावलु, मः ५)
जब भगति करहि संत मंडली तिन् मिलि हरि गावउ ॥ (८१३-१७, बिलावलु, मः ५)
करउ नमस्कार भगत जन धूरि मुखि लावउ ॥३॥ (८१३-१७, बिलावलु, मः ५)
ऊठत बैठत जपउ नामु इहु करमु कमावउ ॥ (८१३-१८, बिलावलु, मः ५)
नानक की प्रभ बेनती हरि सरनि समावउ ॥४॥२१॥५१॥ (८१३-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१३-१९)
इहु सागरु सोई तरै जो हरि गुण गाए ॥ (८१३-१९, बिलावलु, मः ५)
साधसंगति कै संगि वसै वडभागी पाए ॥१॥ (८१३-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१४

सुणि सुणि जीवै दासु तुम् बाणी जन आखी ॥ (८१४-१, बिलावलु, मः ५)
प्रगट भई सभ लोअ महि सेवक की राखी ॥१॥ रहाउ ॥ (८१४-१, बिलावलु, मः ५)
अगनि सागर ते काढिआ प्रभि जलनि बुझाई ॥ (८१४-२, बिलावलु, मः ५)
अमृत नामु जलु संचिआ गुर भए सहाई ॥२॥ (८१४-२, बिलावलु, मः ५)
जनम मरण दुख काटिआ सुख का थानु पाइआ ॥ (८१४-३, बिलावलु, मः ५)
काटी सिलक भ्रम मोह की अपने प्रभ भाइआ ॥३॥ (८१४-३, बिलावलु, मः ५)
मत कोई जाणहु अवरु कछु सभ प्रभ कै हाथि ॥ (८१४-४, बिलावलु, मः ५)
सर्ब सूख नानक पाए संगि संतन साथि ॥४॥२२॥५२॥ (८१४-४, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१४-५)
बंधन काटे आपि प्रभि होआ किरपाल ॥ (८१४-५, बिलावलु, मः ५)
दीन दइआल प्रभ पारब्रह्म ता की नदरि निहाल ॥१॥ (८१४-५, बिलावलु, मः ५)
गुरि पूरै किरपा करी काटिआ दुखु रोगु ॥ (८१४-६, बिलावलु, मः ५)
मनु तनु सीतलु सुखी भइआ प्रभ धिआवन जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (८१४-६, बिलावलु, मः ५)
अउखधु हरि का नामु है जितु रोगु न विआपै ॥ (८१४-७, बिलावलु, मः ५)
साधसंगि मनि तनि हितै फिरि दूखु न जापै ॥२॥ (८१४-८, बिलावलु, मः ५)
हरि हरि हरि हरि जापीऐ अंतरि लिव लाई ॥ (८१४-८, बिलावलु, मः ५)
किलविख उतरहि सुधु होइ साधू सरणाई ॥३॥ (८१४-९, बिलावलु, मः ५)
सुनत जपत हरि नाम जसु ता की दूरि बलाई ॥ (८१४-९, बिलावलु, मः ५)
महा मंत्रु नानकु कथै हरि के गुण गाई ॥४॥२३॥५३॥ (८१४-१०, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८१४-१०)
भै ते उपजै भगति प्रभ अंतरि होइ साँति ॥ (८१४-१०, बिलावलु, मः ५)
नामु जपत गोविंद का बिनसै भ्रम भ्राँति ॥१॥ (८१४-११, बिलावलु, मः ५)
गुरु पूरा जिसु भेटिआ ता कै सुखि परवेसु ॥ (८१४-११, बिलावलु, मः ५)
मन की मति तिआगीऐ सुणीऐ उपदेसु ॥१॥ रहाउ ॥ (८१४-१२, बिलावलु, मः ५)
सिमरत सिमरत सिमरीऐ सो पुरखु दातारु ॥ (८१४-१२, बिलावलु, मः ५)
मन ते कबहु न वीसरै सो पुरखु अपारु ॥२॥ (८१४-१३, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल सिउ रंगु लगा अचरज गुरदेव ॥ (८१४-१३, बिलावलु, मः ५)
जा कउ किरपा करहु प्रभ ता कउ लावहु सेव ॥३॥ (८१४-१४, बिलावलु, मः ५)
निधि निधान अमृतु पीआ मनि तनि आनंद ॥ (८१४-१४, बिलावलु, मः ५)
नानक कबहु न वीसरै प्रभ परमानंद ॥४॥२४॥५४॥ (८१४-१५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१४-१५)
तृसन बुझी ममता गई नाठे भै भरमा ॥ (८१४-१५, बिलावलु, मः ५)
थिति पाई आनदु भइआ गुरि कीने धरमा ॥१॥ (८१४-१६, बिलावलु, मः ५)
गुरु पूरा आराधिआ बिनसी मेरी पीर ॥ (८१४-१६, बिलावलु, मः ५)
तनु मनु सभु सीतलु भइआ पाइआ सुखु बीर ॥१॥ रहाउ ॥ (८१४-१७, बिलावलु, मः ५)
सोवत हरि जपि जागिआ पेखिआ बिसमादु ॥ (८१४-१७, बिलावलु, मः ५)
पी अमृतु तृपतासिआ ता का अचरज सुआदु ॥२॥ (८१४-१८, बिलावलु, मः ५)
आपि मुकतु संगी तरे कुल कुटम्ब उधारे ॥ (८१४-१८, बिलावलु, मः ५)
सफल सेवा गुरदेव की निर्मल दरबारे ॥३॥ (८१४-१९, बिलावलु, मः ५)
नीचु अनाथु अजानु मै निरगुनु गुणहीनु ॥ (८१४-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१५

नानक कउ किरपा भई दासु अपना कीनु ॥४॥२५॥५५॥ (८१५-१, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१५-१)
हरि भगता का आसरा अन नाही ठाउ ॥ (८१५-१, बिलावलु, मः ५)
ताणु दीबाणु परवार धनु प्रभ तेरा नाउ ॥१॥ (८१५-२, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा प्रभि आपणी अपने दास रखि लीए ॥ (८१५-२, बिलावलु, मः ५)
निंदक निंदा करि पचे जमकालि ग्रसीए ॥१॥ रहाउ ॥ (८१५-३, बिलावलु, मः ५)
संता एकु धिआवना दूसर को नाहि ॥ (८१५-३, बिलावलु, मः ५)
एकसु आगै बेनती रविआ स्रब थाइ ॥२॥ (८१५-४, बिलावलु, मः ५)
कथा पुरातन इउ सुणी भगतन की बानी ॥ (८१५-४, बिलावलु, मः ५)
सगल दुसट खंड खंड कीए जन लीए मानी ॥३॥ (८१५-५, बिलावलु, मः ५)
सति बचन नानकु कहै परगट सभ माहि ॥ (८१५-५, बिलावलु, मः ५)
प्रभ के सेवक सरणि प्रभ तिन कउ भउ नाहि ॥४॥२६॥५६॥ (८१५-६, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८१५-६)
बंधन काटै सो प्रभू जा कै कल हाथ ॥ (८१५-७, बिलावलु, मः ५)
अवर कर्म नही छूटीऐ राखहु हरि नाथ ॥१॥ (८१५-७, बिलावलु, मः ५)
तउ सरणागति माधवे पूरन दइआल ॥ (८१५-७, बिलावलु, मः ५)
छूटि जाइ संसार ते राखै गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८१५-८, बिलावलु, मः ५)
आसा भर्म बिकार मोह इन महि लोभाना ॥ (८१५-८, बिलावलु, मः ५)
झूठु समग्री मनि वसी पारब्रह्मु न जाना ॥२॥ (८१५-९, बिलावलु, मः ५)
पर्म जोति पूरन पुरख सभि जीअ तुम्हारे ॥ (८१५-९, बिलावलु, मः ५)
जिउ तू राखहि तिउ रहा प्रभ अगम अपारे ॥३॥ (८१५-१०, बिलावलु, मः ५)
करण कारण समरथ प्रभ देहि अपना नाउ ॥ (८१५-१०, बिलावलु, मः ५)
नानक तरीऐ साधसंगि हरि हरि गुण गाउ ॥४॥२७॥५७॥ (८१५-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१५-११)
कवनु कवनु नही पतरिआ तुम्हरी परतीति ॥ (८१५-११, बिलावलु, मः ५)
महा मोहनी मोहिआ नरक की रीति ॥१॥ (८१५-१२, बिलावलु, मः ५)
मन खुटहर तेरा नही बिसासु तू महा उदमादा ॥ (८१५-१२, बिलावलु, मः ५)
खर का पैखरु तउ छुटै जउ ऊपरि लादा ॥१॥ रहाउ ॥ (८१५-१३, बिलावलु, मः ५)
जप तप संजम तुम्ह खंडे जम के दुख डाँड ॥ (८१५-१३, बिलावलु, मः ५)
सिमरहि नाही जोनि दुख निरलजे भाँड ॥२॥ (८१५-१४, बिलावलु, मः ५)
हरि संगि सहाई महा मीतु तिस सिउ तेरा भेदु ॥ (८१५-१४, बिलावलु, मः ५)
बीधा पंच बटवारई उपजिओ महा खेदु ॥३॥ (८१५-१५, बिलावलु, मः ५)
नानक तिन संतन सरणागती जिन मनु वसि कीना ॥ (८१५-१५, बिलावलु, मः ५)
तनु धनु सरबसु आपणा प्रभि जन कउ दीन्हा ॥४॥२८॥५८॥ (८१५-१६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१५-१६)
उदमु करत आनदु भइआ सिमरत सुख सारु ॥ (८१५-१७, बिलावलु, मः ५)
जपि जपि नामु गोबिंद का पूरन बीचारु ॥१॥ (८१५-१७, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल गुर के जपत हरि जपि हउ जीवा ॥ (८१५-१८, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्मु आराधते मुखि अमृतु पीवा ॥१॥ रहाउ ॥ (८१५-१८, बिलावलु, मः ५)
जीअ जंत सभि सुखि बसे सभ कै मनि लोच ॥ (८१५-१९, बिलावलु, मः ५)
परउपकारु नित चितवते नाही कछु पोच ॥२॥ (८१५-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१६

धन्नु सु थानु बसंत धन्नु जह जपीऐ नामु ॥ (८१६-१, बिलावलु, मः ५)
कथा कीरतनु हरि अति घना सुख सहज बिस्रामु ॥३॥ (८१६-१, बिलावलु, मः ५)
मन ते कदे न वीसरै अनाथ को नाथ ॥ (८१६-२, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती जा कै सभु किछु हाथ ॥४॥२९॥५९॥ (८१६-२, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८१६-३)
जिनि तू बंधि करि छोडिआ फुनि सुख महि पाइआ ॥ (८१६-३, बिलावलु, मः ५)
सदा सिमरि चरणारबिंद सीतल होताइआ ॥१॥ (८१६-३, बिलावलु, मः ५)
जीवतिआ अथवा मुइआ किछु कामि न आवै ॥ (८१६-४, बिलावलु, मः ५)
जिनि एहु रचनु रचाइआ कोऊ तिस सिउ रंगु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (८१६-४, बिलावलु, मः ५)
रे प्राणी उसन सीत करता करै घाम ते काढै ॥ (८१६-५, बिलावलु, मः ५)
कीरी ते हसती करै टूटा ले गाढै ॥२॥ (८१६-५, बिलावलु, मः ५)
अंडज जेरज सेतज उतभुजा प्रभ की इह किरति ॥ (८१६-६, बिलावलु, मः ५)
किरत कमावन सर्ब फल रवीऐ हरि निरति ॥३॥ (८१६-६, बिलावलु, मः ५)
हम ते कछू न होवना सरणि प्रभ साध ॥ (८१६-७, बिलावलु, मः ५)
मोह मगन कूप अंध ते नानक गुर काढ ॥४॥३०॥६०॥ (८१६-७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१६-८)
खोजत खोजत मै फिरा खोजउ बन थान ॥ (८१६-८, बिलावलु, मः ५)
अछल अछेद अभेद प्रभ ऐसे भगवान ॥१॥ (८१६-८, बिलावलु, मः ५)
कब देखउ प्रभु आपना आतम कै रंगि ॥ (८१६-९, बिलावलु, मः ५)
जागन ते सुपना भला बसीऐ प्रभ संगि ॥१॥ रहाउ ॥ (८१६-९, बिलावलु, मः ५)
बरन आस्रम सासत्र सुनउ दरसन की पिआस ॥ (८१६-१०, बिलावलु, मः ५)
रूपु न रेख न पंच तत ठाकुर अबिनास ॥२॥ (८१६-१०, बिलावलु, मः ५)
ओहु सरूपु संतन कहहि विरले जोगीसुर ॥ (८१६-११, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा जा कउ मिले धनि धनि ते ईसुर ॥३॥ (८१६-११, बिलावलु, मः ५)
सो अंतरि सो बाहरे बिनसे तह भरमा ॥ (८१६-१२, बिलावलु, मः ५)
नानक तिसु प्रभु भेटिआ जा के पूरन करमा ॥४॥३१॥६१॥ (८१६-१२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१६-१३)
जीअ जंत सुप्रसन्न भए देखि प्रभ परताप ॥ (८१६-१३, बिलावलु, मः ५)
करजु उतारिआ सतिगुरू करि आहरु आप ॥१॥ (८१६-१३, बिलावलु, मः ५)
खात खरचत निबहत रहै गुर सबदु अखूट ॥ (८१६-१४, बिलावलु, मः ५)
पूरन भई समगरी कबहू नही तूट ॥१॥ रहाउ ॥ (८१६-१४, बिलावलु, मः ५)
साधसंगि आराधना हरि निधि आपार ॥ (८१६-१५, बिलावलु, मः ५)
धर्म अर्थ अरु काम मोख देते नही बार ॥२॥ (८१६-१५, बिलावलु, मः ५)
भगत अराधहि एक रंगि गोबिंद गुपाल ॥ (८१६-१६, बिलावलु, मः ५)
राम नाम धनु संचिआ जा का नही सुमारु ॥३॥ (८१६-१६, बिलावलु, मः ५)
सरनि परे प्रभ तेरीआ प्रभ की वडिआई ॥ (८१६-१७, बिलावलु, मः ५)
नानक अंतु न पाईऐ बेअंत गुसाई ॥४॥३२॥६२॥ (८१६-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१६-१८)
सिमरि सिमरि पूरन प्रभू कारज भए रासि ॥ (८१६-१८, बिलावलु, मः ५)

करतार पुरि करता वसै संतन कै पासि ॥१॥ रहाउ ॥ (८१६-१८, बिलावलु, मः ५)
बिघनु न कोऊ लागता गुर पहि अरदासि ॥ (८१६-१९, बिलावलु, मः ५)
रखवाला गोबिंद राइ भगतन की रासि ॥१॥ (८१६-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१७

तोटि न आवै कदे मूलि पूरन भंडार ॥ (८१७-१, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल मनि तनि बसे प्रभ अगम अपार ॥२॥ (८१७-१, बिलावलु, मः ५)
बसत कमावत सभि सुखी किछु ऊन न दीसै ॥ (८१७-२, बिलावलु, मः ५)
संत प्रसादि भेटे प्रभू पूरन जगदीसै ॥३॥ (८१७-२, बिलावलु, मः ५)
जै जै कारु सभै करहि सचु थानु सुहाइआ ॥ (८१७-३, बिलावलु, मः ५)
जपि नानक नामु निधान सुख पूरा गुरु पाइआ ॥४॥३३॥६३॥ (८१७-३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१७-४)
हरि हरि हरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥ (८१७-४, बिलावलु, मः ५)
रामचंद की लसटिका जिनि मारिआ रोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (८१७-४, बिलावलु, मः ५)
गुरु पूरा हरि जापीऐ नित कीचै भोगु ॥ (८१७-५, बिलावलु, मः ५)
साधसंगति कै वारणै मिलिआ संजोगु ॥१॥ (८१७-५, बिलावलु, मः ५)
जिसु सिमरत सुखु पाईऐ बिनसै बिओगु ॥ (८१७-६, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती करण कारण जोगु ॥२॥३४॥६४॥ (८१७-६, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ५ (८१७-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८१७-८)
अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ ॥ (८१७-९, बिलावलु, मः ५)
ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ ॥१॥ (८१७-९, बिलावलु, मः ५)
गुरु पूरा आराधिआ सगला दुखु गइआ ॥ (८१७-१०, बिलावलु, मः ५)
राखनहारै राखिआ अपनी करि मइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८१७-१०, बिलावलु, मः ५)
बाह पकड़ि प्रभि काढिआ कीना अपनइआ ॥ (८१७-११, बिलावलु, मः ५)
सिमरि सिमरि मन तन सुखी नानक निरभइआ ॥२॥१॥६५॥ (८१७-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१७-१२)
करु धरि मसतकि थापिआ नामु दीनो दानि ॥ (८१७-१२, बिलावलु, मः ५)
सफल सेवा पारब्रह्म की ता की नही हानि ॥१॥ (८१७-१३, बिलावलु, मः ५)
आपे ही प्रभु राखता भगतन की आनि ॥ (८१७-१३, बिलावलु, मः ५)
जो जो चितवहि साध जन सो लेता मानि ॥१॥ रहाउ ॥ (८१७-१३, बिलावलु, मः ५)
सरणि परे चरणारबिंद जन प्रभ के प्रान ॥ (८१७-१४, बिलावलु, मः ५)
सहजि सुभाइ नानक मिले जोती जोति समान ॥२॥२॥६६॥ (८१७-१४, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१७-१५)
चरण कमल का आसरा दीनो प्रभि आपि ॥ (८१७-१५, बिलावलु, मः ५)

प्रभ सरणागति जन परे ता का सद परतापु ॥१॥ (८१७-१६, बिलावलु, मः ५)
राखनहार अपार प्रभ ता की निर्मल सेव ॥ (८१७-१६, बिलावलु, मः ५)
राम राज रामदास पुरि कीन्हे गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (८१७-१७, बिलावलु, मः ५)
सदा सदा हरि धिआईऐ किछु बिघनु न लागै ॥ (८१७-१७, बिलावलु, मः ५)
नानक नामु सलाहीऐ भइ दुसमन भागै ॥२॥३॥६७॥ (८१७-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१७-१८)
मनि तनि प्रभु आराधीऐ मिलि साध समागै ॥ (८१७-१९, बिलावलु, मः ५)
उचरत गुन गोपाल जसु दूर ते जमु भागै ॥१॥ (८१७-१९, बिलावलु, मः ५)
राम नामु जो जनु जपै अनदिनु सद जागै ॥ (८१७-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१८

तंतु मंतु नह जोहई तितु चाखु न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८-१, बिलावलु, मः ५)
काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥ (८१८-१, बिलावलु, मः ५)
आनंद मगन रसि राम रंगि नानक सरनागै ॥२॥४॥६८॥ (८१८-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१८-३)
जीअ जुगति वसि प्रभू कै जो कहै सु करना ॥ (८१८-३, बिलावलु, मः ५)
भए प्रसन्न गोपाल राइ भउ किछु नही करना ॥१॥ (८१८-३, बिलावलु, मः ५)
दूखु न लागै कदे तुधु पारब्रह्मु चितारे ॥ (८१८-४, बिलावलु, मः ५)
जमकंकरु नेड़ि न आवई गुरसिख पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८-४, बिलावलु, मः ५)
करण कारण समरथु है तिसु बिनु नही होरु ॥ (८१८-५, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती साचा मनि जोरु ॥२॥५॥६९॥ (८१८-५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१८-६)
सिमरि सिमरि प्रभु आपना नाठा दुख ठाउ ॥ (८१८-६, बिलावलु, मः ५)
बिस्राम पाए मिलि साधसंगि ता ते बहुड़ि न धाउ ॥१॥ (८१८-६, बिलावलु, मः ५)
बलिहारी गुर आपने चरनन्हि बलि जाउ ॥ (८१८-७, बिलावलु, मः ५)
अनद सूख मंगल बने पेखत गुन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८-७, बिलावलु, मः ५)
कथा कीरतनु राग नाद धुनि इहु बनिओ सुआउ ॥ (८१८-८, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सुप्रसन्न भए बाँछत फल पाउ ॥२॥६॥७०॥ (८१८-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१८-९)
दास तेरे की बेनती रिद करि परगासु ॥ (८१८-९, बिलावलु, मः ५)
तुम्हरी कृपा ते पारब्रह्म दोखन को नासु ॥१॥ (८१८-१०, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल का आसरा प्रभ पुरख गुणतासु ॥ (८१८-१०, बिलावलु, मः ५)
कीर्तन नामु सिमरत रहउ जब लगु घटि सासु ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८-१०, बिलावलु, मः ५)
मात पिता बंधप तूहै तू सर्ब निवासु ॥ (८१८-११, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती जा को निर्मल जासु ॥२॥७॥७१॥ (८१८-११, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८१८-१२)
सर्ब सिधि हरि गाईऐ सभि भला मनावहि ॥ (८१८-१२, बिलावलु, मः ५)
साधु साधु मुख ते कहहि सुणि दास मिलावहि ॥१॥ (८१८-१३, बिलावलु, मः ५)
सूख सहज कलिआण रस पूरै गुरि कीन्ह ॥ (८१८-१३, बिलावलु, मः ५)
जीअ सगल दइआल भए हरि हरि नामु चीन्ह ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८-१४, बिलावलु, मः ५)
पूरि रहिओ सरबत्र महि प्रभ गुणी गहीर ॥ (८१८-१४, बिलावलु, मः ५)
नानक भगत आनंद मै पेखि प्रभ की धीर ॥२॥८॥७२॥ (८१८-१५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१८-१५)
अरदासि सुणी दातारि प्रभि होए किरपाल ॥ (८१८-१६, बिलावलु, मः ५)
राखि लीआ अपना सेवको मुखि निंदक छारु ॥१॥ (८१८-१६, बिलावलु, मः ५)
तुझहि न जोहै को मीत जन तूं गुर का दास ॥ (८१८-१६, बिलावलु, मः ५)
पारब्रहमि तू राखिआ दे अपने हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८-१७, बिलावलु, मः ५)
जीअन का दाता एकु है बीआ नही होरु ॥ (८१८-१७, बिलावलु, मः ५)
नानक की बेनंतीआ मै तेरा जोरु ॥२॥९॥७३॥ (८१८-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१८-१८)
मीत हमारे साजना राखे गोविंद ॥ (८१८-१९, बिलावलु, मः ५)
निंदक मिरतक होइ गए तुम्ह होहु निचिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (८१८-१९, बिलावलु, मः ५)
सगल मनोरथ प्रभि कीए भेटे गुरदेव ॥ (८१८-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८१९

जै जै कारु जगत महि सफल जा की सेव ॥१॥ (८१९-१, बिलावलु, मः ५)
ऊच अपार अगनत हरि सभि जीअ जिसु हाथि ॥ (८१९-१, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती जत कत मेरै साथि ॥२॥१०॥७४॥ (८१९-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१९-२)
गुरु पूरा आराधिआ होए किरपाल ॥ (८१९-३, बिलावलु, मः ५)
मारगु संति बताइआ तूटे जम जाल ॥१॥ (८१९-३, बिलावलु, मः ५)
दूख भूख संसा मिटिआ गावत प्रभ नाम ॥ (८१९-३, बिलावलु, मः ५)
सहज सूख आनंद रस पूरन सभि काम ॥१॥ रहाउ ॥ (८१९-४, बिलावलु, मः ५)
जलनि बुझी सीतल भए राखे प्रभि आप ॥ (८१९-४, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती जा का वड परताप ॥२॥११॥७५॥ (८१९-५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१९-६)
धरति सुहावी सफल थानु पूरन भए काम ॥ (८१९-६, बिलावलु, मः ५)
भउ नाठा भ्रमु मिटि गइआ रविआ नित राम ॥१॥ (८१९-६, बिलावलु, मः ५)
साध जना कै संगि बसत सुख सहज बिस्राम ॥ (८१९-७, बिलावलु, मः ५)
साई घड़ी सुलखणी सिमरत हरि नाम ॥१॥ रहाउ ॥ (८१९-७, बिलावलु, मः ५)

प्रगट भए संसार महि फिरते पहनाम ॥ (८१९-८, बिलावलु, मः ५)
नानक तिसु सरणागती घट घट सभ जान ॥२॥१२॥७६॥ (८१९-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१९-९)
रोगु मिटाइआ आपि प्रभि उपजिआ सुखु साँति ॥ (८१९-९, बिलावलु, मः ५)
वड परतापु अचरज रूपु हरि कीन्ही दाति ॥१॥ (८१९-१०, बिलावलु, मः ५)
गुरि गोविंदि कृपा करी राखिआ मेरा भाई ॥ (८१९-१०, बिलावलु, मः ५)
हम तिस की सरणागती जो सदा सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८१९-१०, बिलावलु, मः ५)
बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥ (८१९-११, बिलावलु, मः ५)
नानक जोरु गोविंद का पूरन गुणतासि ॥२॥१३॥७७॥ (८१९-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१९-१२)
मरि मरि जनमे जिन बिसरिआ जीवन का दाता ॥ (८१९-१२, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्मु जनि सेविआ अनदिनु रंगि राता ॥१॥ (८१९-१३, बिलावलु, मः ५)
साँति सहजु आनदु घना पूरन भई आस ॥ (८१९-१३, बिलावलु, मः ५)
सुखु पाइआ हरि साधसंगि सिमरत गुणतास ॥१॥ रहाउ ॥ (८१९-१४, बिलावलु, मः ५)
सुणि सुआमी अरदासि जन तुम्ह अंतरजामी ॥ (८१९-१४, बिलावलु, मः ५)
थान थनंतरि रवि रहे नानक के सुआमी ॥२॥१४॥७८॥ (८१९-१५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१९-१५)
ताती वाउ न लगई पारब्रह्म सरणाई ॥ (८१९-१६, बिलावलु, मः ५)
चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥१॥ (८१९-१६, बिलावलु, मः ५)
सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ (८१९-१७, बिलावलु, मः ५)
राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८१९-१७, बिलावलु, मः ५)
राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥ (८१९-१८, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥२॥१५॥७९॥ (८१९-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८१९-१९)
अपणे बालक आपि रखिअनु पारब्रह्म गुरदेव ॥ (८१९-१९, बिलावलु, मः ५)
सुख साँति सहज आनद भए पूरन भई सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (८१९-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२०

भगत जना की बेनती सुणी प्रभि आपि ॥ (८२०-१, बिलावलु, मः ५)
रोग मिटाइ जीवालिअनु जा का वड परतापु ॥१॥ (८२०-१, बिलावलु, मः ५)
दोख हमारे बखसिअनु अपणी कल धारी ॥ (८२०-२, बिलावलु, मः ५)
मन बाँछत फल दितिअनु नानक बलिहारी ॥२॥१६॥८०॥ (८२०-२, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ६ (८२०-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८२०-४)
मेरे मोहन स्रवनी इह न सुनाए ॥ (८२०-५, बिलावलु, मः ५)

साकत गीत नाद धुनि गावत बोलत बोल अजाए ॥१॥ रहाउ ॥ (८२०-५, बिलावलु, मः ५)
सेवत सेवि सेवि साध सेवउ सदा करउ किरताए ॥ (८२०-६, बिलावलु, मः ५)
अभै दानु पावउ पुरख दाते मिलि संगति हरि गुण गाए ॥१॥ (८२०-६, बिलावलु, मः ५)
रसना अगह अगह गुन राती नैन दरस रंगु लाए ॥ (८२०-७, बिलावलु, मः ५)
होहु कृपाल दीन दुख भंजन मोहि चरण रिदै वसाए ॥२॥ (८२०-७, बिलावलु, मः ५)
सभहू तलै तलै सभ ऊपरि एह दृसटि दृसटाए ॥ (८२०-८, बिलावलु, मः ५)
अभिमानु खोइ खोइ खोइ खोई हउ मो कउ सतिगुर मंत्रु दृड़ाए ॥३॥ (८२०-८, बिलावलु, मः ५)
अतुलु अतुलु अतुलु नह तुलीऐ भगति वछलु किरपाए ॥ (८२०-९, बिलावलु, मः ५)
जो जो सरणि परिओ गुर नानक अभै दानु सुख पाए ॥४॥१॥८१॥ (८२०-१०, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२०-१०)
प्रभ जी तू मेरे प्रान अधारै ॥ (८२०-१०, बिलावलु, मः ५)
नमस्कार डंडउति बंदना अनिक बार जाउ बारै ॥१॥ रहाउ ॥ (८२०-११, बिलावलु, मः ५)
ऊठत बैठत सोवत जागत इहु मनु तुझहि चितारै ॥ (८२०-११, बिलावलु, मः ५)
सूख दूख इसु मन की बिरथा तुझ ही आगै सारै ॥१॥ (८२०-१२, बिलावलु, मः ५)
तू मेरी ओट बल बुधि धनु तुम ही तुमहि मेरै परवारै ॥ (८२०-१२, बिलावलु, मः ५)
जो तुम करहु सोई भल हमरै पेखि नानक सुख चरनारै ॥२॥२॥८२॥ (८२०-१३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२०-१४)
सुनीअत प्रभ तउ सगल उधारन ॥ (८२०-१४, बिलावलु, मः ५)
मोह मगन पतित संगि प्रानी ऐसे मनहि बिसारन ॥१॥ रहाउ ॥ (८२०-१४, बिलावलु, मः ५)
संचि बिखिआ ले ग्राहजु कीनी अमृतु मन ते डारन ॥ (८२०-१५, बिलावलु, मः ५)
काम क्रोध लोभ रतु निंदा सतु संतोखु बिदारन ॥१॥ (८२०-१६, बिलावलु, मः ५)
इन ते काढि लेहु मेरे सुआमी हारि परे तुम्ह सारन ॥ (८२०-१६, बिलावलु, मः ५)
नानक की बेनंती प्रभ पहि साधसंगि रंक तारन ॥२॥३॥८३॥ (८२०-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२०-१७)
संतन कै सुनीअत प्रभ की बात ॥ (८२०-१७, बिलावलु, मः ५)
कथा कीरतनु आनंद मंगल धुनि पूरि रही दिनसु अरु राति ॥१॥ रहाउ ॥ (८२०-१८, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा अपने प्रभि कीने नाम अपुने की कीनी दाति ॥ (८२०-१९, बिलावलु, मः ५)
आठ पहर गुन गावत प्रभ के काम क्रोध इसु तन ते जात ॥१॥ (८२०-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२१

तृपति अघाए पेखि प्रभ दरसनु अमृत हरि रसु भोजनु खात ॥ (८२१-१, बिलावलु, मः ५)
चरन सरन नानक प्रभ तेरी करि किरपा संतसंगि मिलात ॥२॥४॥८४॥ (८२१-१, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२१-२)
राखि लीए अपने जन आप ॥ (८२१-२, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा हरि हरि नामु दीनो बिनसि गए सभ सोग संताप ॥१॥ रहाउ ॥ (८२१-३, बिलावलु, मः ५)

गुण गोविंद गावहु सभि हरि जन राग रतन रसना आलाप ॥ (८२१-३, बिलावलु, मः ५)
कोटि जनम की तृसना निवरी राम रसाइणि आतम ध्राप ॥१॥ (८२१-४, बिलावलु, मः ५)
चरण गहे सरणि सुखदाते गुर कै बचनि जपे हरि जाप ॥ (८२१-५, बिलावलु, मः ५)
सागर तरे भर्म भै बिनसे कहु नानक ठाकुर परताप ॥२॥५॥८५॥ (८२१-५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२१-६)
तापु लाहिआ गुर सिरजनहारि ॥ (८२१-६, बिलावलु, मः ५)
सतिगुर अपने कउ बलि जाई जिनि पैज रखी सारै संसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (८२१-७, बिलावलु, मः ५)
करु मसतकि धारि बालिकु रखि लीनो ॥ (८२१-७, बिलावलु, मः ५)
प्रभि अमृत नामु महा रसु दीनो ॥१॥ (८२१-८, बिलावलु, मः ५)
दास की लाज रखै मिहरवानु ॥ (८२१-८, बिलावलु, मः ५)
गुरु नानकु बोलै दरगह परवानु ॥२॥६॥८६॥ (८२१-८, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ चउपदे दुपदे घरु ७ (८२१-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८२१-१०)
सतिगुर सबदि उजारो दीपा ॥ (८२१-११, बिलावलु, मः ५)
बिनसिओ अंधकार तिह मंदरि रतन कोठड़ी खुल्ही अनूपा ॥१॥ रहाउ ॥ (८२१-११, बिलावलु, मः ५)
बिसमन बिसम भए जउ पेखिओ कहनु न जाइ वडिआई ॥ (८२१-१२, बिलावलु, मः ५)
मगन भए ऊहा संगि माते ओति पोति लपटाई ॥१॥ (८२१-१२, बिलावलु, मः ५)
आल जाल नही कछू जंजारा अहम्बुधि नही भोरा ॥ (८२१-१३, बिलावलु, मः ५)
ऊचन ऊचा बीचु न खीचा हउ तेरा तूं मोरा ॥२॥ (८२१-१३, बिलावलु, मः ५)
एकंकारु एकु पासारा एकै अपर अपारा ॥ (८२१-१४, बिलावलु, मः ५)
एकु बिसथीरनु एकु सम्पूरनु एकै प्रान अधारा ॥३॥ (८२१-१४, बिलावलु, मः ५)
निर्मल निर्मल सूचा सूचो सूचा सूचो सूचा ॥ (८२१-१५, बिलावलु, मः ५)
अंत न अंता सदा बेअंता कहु नानक ऊचो ऊचा ॥४॥१॥८७॥ (८२१-१५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२१-१६)
बिनु हरि कामि न आवत हे ॥ (८२१-१६, बिलावलु, मः ५)
जा सिउ राचि माचि तुम्ह लागे ओह मोहनी मोहावत हे ॥१॥ रहाउ ॥ (८२१-१६, बिलावलु, मः ५)
कनिक कामिनी सेज सोहनी छोडि खिनै महि जावत हे ॥ (८२१-१७, बिलावलु, मः ५)
उरझि रहिओ इंद्री रस प्रेरिओ बिखै ठगउरी खावत हे ॥१॥ (८२१-१८, बिलावलु, मः ५)
तृण को मंदरु साजि सवारिओ पावकु तलै जरावत हे ॥ (८२१-१८, बिलावलु, मः ५)
ऐसे गड़ महि ऐठि हठीलो फूलि फूलि किआ पावत हे ॥२॥ (८२१-१९, बिलावलु, मः ५)
पंच दूत मूड परि ठाढे केस गहे फेरावत हे ॥ (८२१-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२२

दृसटि न आवहि अंध अगिआनी सोइ रहिओ मद मावत हे ॥३॥ (८२२-१, बिलावलु, मः ५)
जालु पसारि चोग बिसथारी पंखी जिउ फाहावत हे ॥ (८२२-१, बिलावलु, मः ५)

कहु नानक बंधन काटन कउ मै सतिगुरु पुरखु धिआवत हे ॥४॥२॥८८॥ (८२२-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२२-३)
हरि हरि नामु अपार अमोली ॥ (८२२-३, बिलावलु, मः ५)
प्रान पिआरो मनहि अधारो चीति चितवउ जैसे पान तम्बोली ॥१॥ रहाउ ॥ (८२२-३, बिलावलु, मः ५)
सहजि समाइओ गुरहि बताइओ रंगि रंगी मेरे तन की चोली ॥ (८२२-४, बिलावलु, मः ५)
पृअ मुखि लागो जउ वडभागो सुहागु हमारो कतहु न डोली ॥१॥ (८२२-५, बिलावलु, मः ५)
रूप न धूप न गंध न दीपा ओति पोति अंग अंग संगि मउली ॥ (८२२-५, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक पृअ रवी सुहागनि अति नीकी मेरी बनी खटोली ॥२॥३॥८९॥ (८२२-६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२२-७)
गोबिंद गोबिंद गोबिंद मई ॥ (८२२-७, बिलावलु, मः ५)
जब ते भेटे साध दइआरा तब ते दुरमति दूरि भई ॥१॥ रहाउ ॥ (८२२-७, बिलावलु, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ सम्पूरन सीतल साँति दइआल दई ॥ (८२२-८, बिलावलु, मः ५)
काम क्रोध तृसना अहंकारा तन ते होए सगल खई ॥१॥ (८२२-८, बिलावलु, मः ५)
सतु संतोखु दइआ धरमु सुचि संतन ते इहु मंतु लई ॥ (८२२-९, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक जिनि मनहु पछानिआ तिन कउ सगली सोझ पई ॥२॥४॥९०॥ (८२२-१०, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२२-१०)
किआ हम जीअ जंत बेचारे बरनि न साकह एक रोमाई ॥ (८२२-११, बिलावलु, मः ५)
ब्रह्म महेस सिध मुनि इंद्रा बेअंत ठाकुर तेरी गति नही पाई ॥१॥ (८२२-११, बिलावलु, मः ५)
किआ कथीऐ किछु कथनु न जाई ॥ (८२२-१२, बिलावलु, मः ५)
जह जह देखा तह रहिआ समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८२२-१२, बिलावलु, मः ५)
जह महा भइआन दूख जम सुनीऐ तह मेरे प्रभ तूहै सहाई ॥ (८२२-१३, बिलावलु, मः ५)
सरनि परिओ हरि चरन गहे प्रभ गुरि नानक कउ बूझ बुझाई ॥२॥५॥९१॥ (८२२-१३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२२-१४)
अगम रूप अबिनासी करता पतित पवित इक निमख जपाईऐ ॥ (८२२-१४, बिलावलु, मः ५)
अचरजु सुनिओ परापति भेटुले संत चरन चरन मनु लाईऐ ॥१॥ (८२२-१५, बिलावलु, मः ५)
कितु बिधीऐ कितु संजमि पाईऐ ॥ (८२२-१६, बिलावलु, मः ५)
कहु सुरजन कितु जुगती धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (८२२-१६, बिलावलु, मः ५)
जो मानुखु मानुख की सेवा ओहु तिस की लई लई फुनि जाईऐ ॥ (८२२-१७, बिलावलु, मः ५)
नानक सरनि सरणि सुख सागर मोहि टेक तेरो इक नाईऐ ॥२॥६॥९२॥ (८२२-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२२-१८)
संत सरणि संत टहल करी ॥ (८२२-१८, बिलावलु, मः ५)
धंधु बंधु अरु सगल जंजारो अवर काज ते छूटि परी ॥१॥ रहाउ ॥ (८२२-१८, बिलावलु, मः ५)
सूख सहज अरु घनो अनंदा गुर ते पाइओ नामु हरी ॥ (८२२-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२३

ऐसो हरि रसु बरनि न साकउ गुरि पूरै मेरी उलटि धरी ॥१॥ (८२३-१, बिलावलु, मः ५)
पेखिओ मोहनु सभ कै संगे ऊन न काहू सगल भरी ॥ (८२३-१, बिलावलु, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ किरपा निधि कहु नानक मेरी पूरी परी ॥२॥७॥९३॥ (८२३-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२३-३)
मन किआ कहता हउ किआ कहता ॥ (८२३-३, बिलावलु, मः ५)
जान प्रबीन ठाकुर प्रभ मेरे तिसु आगै किआ कहता ॥१॥ रहाउ ॥ (८२३-३, बिलावलु, मः ५)
अनबोले कउ तुही पछानहि जो जीअन महि होता ॥ (८२३-४, बिलावलु, मः ५)
रे मन काइ कहा लउ डहकहि जउ पेखत ही संगि सुनता ॥१॥ (८२३-४, बिलावलु, मः ५)
ऐसो जानि भए मनि आनद आन न बीओ करता ॥ (८२३-५, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक गुर भए दइआरा हरि रंगु न कबहू लहता ॥२॥८॥९४॥ (८२३-५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२३-६)
निंदकु ऐसे ही झरि परीऐ ॥ (८२३-६, बिलावलु, मः ५)
इह नीसानी सुनहु तुम भाई जिउ कालर भीति गिरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (८२३-७, बिलावलु, मः ५)
जउ देखै छिद्रु तउ निंदकु उमाहै भलो देखि दुख भरीऐ ॥ (८२३-७, बिलावलु, मः ५)
आठ पहर चितवै नही पहुचै बुरा चितवत चितवत मरीऐ ॥१॥ (८२३-८, बिलावलु, मः ५)
निंदकु प्रभू भुलाइआ कालु नेरै आइआ हरि जन सिउ बादु उठरीऐ ॥ (८२३-९, बिलावलु, मः ५)
नानक का राखा आपि प्रभु सुआमी किआ मानस बपुरे करीऐ ॥२॥९॥९५॥ (८२३-१०, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२३-१०)
ऐसे काहे भूलि परे ॥ (८२३-११, बिलावलु, मः ५)
करहि करावहि मूकरि पावहि पेखत सुनत सदा संगि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८२३-११, बिलावलु, मः ५)
काच बिहाझन कंचन छाडन बैरी संगि हेतु साजन तिआगि खरे ॥ (८२३-११, बिलावलु, मः ५)
होवनु कउरा अनहोवनु मीठा बिखिआ महि लपटाइ जरे ॥१॥ (८२३-१२, बिलावलु, मः ५)
अंध कूप महि परिओ परानी भरम गुबार मोह बंधि परे ॥ (८२३-१३, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक प्रभ होत दइआरा गुरु भेटै काढै बाह फरे ॥२॥१०॥९६॥ (८२३-१३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२३-१४)
मन तन रसना हरि चीन्हा ॥ (८२३-१४, बिलावलु, मः ५)
भए अनंदा मिटे अंदेसे सरब सूख मो कउ गुरि दीन्हा ॥१॥ रहाउ ॥ (८२३-१५, बिलावलु, मः ५)
इआनप ते सभ भई सिआनप प्रभु मेरा दाना बीना ॥ (८२३-१५, बिलावलु, मः ५)
हाथ देइ राखै अपने कउ काहू न करते कछु खीना ॥१॥ (८२३-१६, बिलावलु, मः ५)
बलि जावउ दरसन साधू कै जिह प्रसादि हरि नामु लीना ॥ (८२३-१७, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक ठाकुर भारोसै कहू न मानिओ मनि छीना ॥२॥११॥९७॥ (८२३-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२३-१८)
गुरि पूरै मेरी राखि लई ॥ (८२३-१८, बिलावलु, मः ५)

अमृत नामु रिदे महि दीनो जनम जनम की मैलु गई ॥१॥ रहाउ ॥ (८२३-१८, बिलावलु, मः ५)
निवरे दूत दुसट बैराई गुर पूरे का जपिआ जापु ॥ (८२३-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२४

कहा करै कोई बेचारा प्रभ मेरे का बड परतापु ॥१॥ (८२४-१, बिलावलु, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि सुखु पाइआ चरन कमल रखु मन माही ॥ (८२४-१, बिलावलु, मः ५)
ता की सरनि परिओ नानक दासु जा ते ऊपरि को नाही ॥२॥१२॥९८॥ (८२४-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२४-३)
सदा सदा जपीऐ प्रभ नाम ॥ (८२४-३, बिलावलु, मः ५)
जरा मरा कछु दूखु न बिआपै आगै दरगह पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (८२४-३, बिलावलु, मः ५)
आपु तिआगि परीऐ नित सरनी गुर ते पाईऐ एहु निधानु ॥ (८२४-४, बिलावलु, मः ५)
जनम मरण की कटीऐ फासी साची दरगह का नीसानु ॥१॥ (८२४-४, बिलावलु, मः ५)
जो तुम्ह करहु सोई भल मानउ मन ते छूटै सगल गुमानु ॥ (८२४-५, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक ता की सरणाई जा का कीआ सगल जहानु ॥२॥१३॥९९॥ (८२४-६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२४-६)
मन तन अंतरि प्रभु आही ॥ (८२४-७, बिलावलु, मः ५)
हरि गुन गावत परउपकार नित तिसु रसना का मोलु किछु नाही ॥१॥ रहाउ ॥ (८२४-७, बिलावलु, मः ५)
कुल समूह उधरे खिन भीतरि जनम जनम की मलु लाही ॥ (८२४-८, बिलावलु, मः ५)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपना अनद सेती बिखिआ बनु गाही ॥१॥ (८२४-८, बिलावलु, मः ५)
चरन प्रभू के बोहिथु पाए भव सागरु पारि पराही ॥ (८२४-९, बिलावलु, मः ५)
संत सेवक भगत हरि ता के नानक मनु लागा है ताही ॥२॥१४॥१००॥ (८२४-१०, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२४-१०)
धीरउ देखि तुम्हारे रंगा ॥ (८२४-११, बिलावलु, मः ५)
तुही सुआमी अंतरजामी तूही वसहि साध कै संगा ॥१॥ रहाउ ॥ (८२४-११, बिलावलु, मः ५)
खिन महि थापि निवाजे ठाकुर नीच कीट ते करहि राजंगा ॥१॥ (८२४-११, बिलावलु, मः ५)
कबहू न बिसरै हीए मोरे ते नानक दास इही दानु मंगा ॥२॥१५॥१०१॥ (८२४-१२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२४-१३)
अचुत पूजा जोग गोपाल ॥ (८२४-१३, बिलावलु, मः ५)
मनु तनु अरपि रखउ हरि आगै सरब जीआ का है प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८२४-१३, बिलावलु, मः ५)
सरनि सम्रथ अकथ सुखदाता किरपा सिंधु बडो दइआल ॥ (८२४-१४, बिलावलु, मः ५)
कंठि लाइ राखै अपने कउ तिस नो लगै न ताती बाल ॥१॥ (८२४-१५, बिलावलु, मः ५)
दामोदर दइआल सुआमी सरबसु संत जना धन माल ॥ (८२४-१५, बिलावलु, मः ५)
नानक जाचिक दरसु प्रभ मागै संत जना की मिलै रवाल ॥२॥१६॥१०२॥ (८२४-१६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२४-१७)
सिमरत नामु कोटि जतन भए ॥ (८२४-१७, बिलावलु, मः ५)

साधसंगि मिलि हरि गुन गाए जमदूतन कउ त्रास अहे ॥१॥ रहाउ ॥ (८२४-१७, बिलावलु, मः ५)
जेते पुनहचरन से कीन्हे मनि तनि प्रभ के चरण गहे ॥ (८२४-१८, बिलावलु, मः ५)
आवण जाणु भरमु भउ नाठा जनम जनम के किलविख दहे ॥१॥ (८२४-१८, बिलावलु, मः ५)
निरभउ होइ भजहु जगदीसै एहु पदारथु वडभागि लहे ॥ (८२४-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२५

करि किरपा पूरन प्रभ दाते निर्मल जसु नानक दास कहे ॥२॥१७॥१०३॥ (८२५-१, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२५-१)
सुलही ते नाराइण राखु ॥ (८२५-२, बिलावलु, मः ५)
सुलही का हाथु कही न पहुचै सुलही होइ मूआ नापाकु ॥१॥ रहाउ ॥ (८२५-२, बिलावलु, मः ५)
काढि कुठारु खसमि सिरु काटिआ खिन महि होइ गइआ है खाकु ॥ (८२५-३, बिलावलु, मः ५)
मंदा चितवत चितवत पचिआ जिनि रचिआ तिनि दीना धाकु ॥१॥ (८२५-३, बिलावलु, मः ५)
पुत्र मीत धनु किछू न रहिओ सु छोडि गइआ सभ भाई साकु ॥ (८२५-४, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक तिसु प्रभ बलिहारी जिनि जन का कीनो पूरन वाकु ॥२॥१८॥१०४॥ (८२५-५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२५-५)
पूरे गुर की पूरी सेव ॥ (८२५-६, बिलावलु, मः ५)
आपे आपि वरतै सुआमी कारजु रासि कीआ गुरदेव ॥१॥ रहाउ ॥ (८२५-६, बिलावलु, मः ५)
आदि मधि प्रभु अंति सुआमी अपना थाटु बनाइओ आपि ॥ (८२५-६, बिलावलु, मः ५)
अपने सेवक की आपे राखै प्रभ मेरे को वड परतापु ॥१॥ (८२५-७, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्म परमेसुर सतिगुर वसि कीन्हे जिनि सगले जंत ॥ (८२५-८, बिलावलु, मः ५)
चरन कमल नानक सरणाई राम नाम जपि निर्मल मंत ॥२॥१९॥१०५॥ (८२५-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२५-९)
ताप पाप ते राखे आप ॥ (८२५-९, बिलावलु, मः ५)
सीतल भए गुर चरनी लागे राम नाम हिरदे महि जाप ॥१॥ रहाउ ॥ (८२५-१०, बिलावलु, मः ५)
करि किरपा हसत प्रभि दीने जगत उधार नव खंड प्रताप ॥ (८२५-१०, बिलावलु, मः ५)
दुख बिनसे सुख अनद प्रवेसा तृसन बुझी मन तन सचु ध्राप ॥१॥ (८२५-११, बिलावलु, मः ५)
अनाथ को नाथु सरणि समरथा सगल सृसटि को माई बापु ॥ (८२५-१२, बिलावलु, मः ५)
भगति वछल भै भंजन सुआमी गुण गावत नानक आलाप ॥२॥२०॥१०६॥ (८२५-१२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२५-१३)
जिस ते उपजिआ तिसहि पछानु ॥ (८२५-१३, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्मु परमेसरु धिआइआ कुसल खेम होए कलिआन ॥१॥ रहाउ ॥ (८२५-१४, बिलावलु, मः ५)
गुरु पूरा भेटिओ बड भागी अंतरजामी सुघड़ु सुजानु ॥ (८२५-१४, बिलावलु, मः ५)
हाथ देइ राखे करि अपने बड समरथु निमाणिआ को मानु ॥१॥ (८२५-१५, बिलावलु, मः ५)
भ्रम भै बिनसि गए खिन भीतरि अंधकार प्रगटे चानाणु ॥ (८२५-१५, बिलावलु, मः ५)
सासि सासि आराधै नानकु सदा सदा जाईऐ कुरबाणु ॥२॥२१॥१०७॥ (८२५-१६, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८२५-१७)
दोवै थाव रखे गुर सूरे ॥ (८२५-१७, बिलावलु, मः ५)
हलत पलत पारब्रहमि सवारे कारज होए सगले पूरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८२५-१७, बिलावलु, मः ५)
हरि हरि नामु जपत सुख सहजे मजनु होवत साधू धूरे ॥ (८२५-१८, बिलावलु, मः ५)
आवण जाण रहे थिति पाई जनम मरण के मिटे बिसूरे ॥१॥ (८२५-१९, बिलावलु, मः ५)
भ्रम भै तरे छुटे भै जम के घटि घटि एकु रहिआ भरपूरे ॥ (८२५-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२६

नानक सरणि परिओ दुख भंजन अंतरि बाहरि पेखि हजूरे ॥२॥२२॥१०८॥ (८२६-१, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२६-२)
दरसनु देखत दोख नसे ॥ (८२६-२, बिलावलु, मः ५)
कबहु न होवहु दृसटि अगोचर जीअ कै संगि बसे ॥१॥ रहाउ ॥ (८२६-२, बिलावलु, मः ५)
प्रीतम प्रान अधार सुआमी ॥ (८२६-३, बिलावलु, मः ५)
पूरि रहे प्रभ अंतरजामी ॥१॥ (८२६-३, बिलावलु, मः ५)
किआ गुण तेरे सारि सम्हारी ॥ (८२६-३, बिलावलु, मः ५)
सासि सासि प्रभ तुझहि चितारी ॥२॥ (८२६-४, बिलावलु, मः ५)
किरपा निधि प्रभ दीन दइआला ॥ (८२६-४, बिलावलु, मः ५)
जीअ जंत की करहु प्रतिपाला ॥३॥ (८२६-४, बिलावलु, मः ५)
आठ पहर तेरा नामु जनु जापे ॥ (८२६-५, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रीति लाई प्रभि आपे ॥४॥२३॥१०९॥ (८२६-५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२६-६)
तनु धनु जोबनु चलत गइआ ॥ (८२६-६, बिलावलु, मः ५)
राम नाम का भजनु न कीनो करत बिकार निसि भोरु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८२६-६, बिलावलु, मः ५)
अनिक प्रकार भोजन नित खाते मुख दंता घसि खीन खइआ ॥ (८२६-७, बिलावलु, मः ५)
मेरी मेरी करि करि मूठउ पाप करत नह परी दइआ ॥१॥ (८२६-८, बिलावलु, मः ५)
महा बिकार घोर दुख सागर तिसु महि प्राणी गलतु पइआ ॥ (८२६-८, बिलावलु, मः ५)
सरनि परे नानक सुआमी की बाह पकरि प्रभि काढि लइआ ॥२॥२४॥११०॥ (८२६-९, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२६-१०)
आपना प्रभु आइआ चीति ॥ (८२६-१०, बिलावलु, मः ५)
दुसमन दुसट रहे झख मारत कुसलु भइआ मेरे भाई मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (८२६-१०, बिलावलु, मः ५)
गई बिआधि उपाधि सभ नासी अंगीकारु कीओ करतारि ॥ (८२६-११, बिलावलु, मः ५)
साँति सूख अरु अनद घनेरे प्रीतम नामु रिदै उर हारि ॥१॥ (८२६-१२, बिलावलु, मः ५)
जीउ पिंडु धनु रासि प्रभ तेरी तूं समरथु सुआमी मेरा ॥ (८२६-१२, बिलावलु, मः ५)
दास अपुने कउ राखनहारा नानक दास सदा है चेरा ॥२॥२५॥१११॥ (८२६-१३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२६-१४)

गोबिदु सिमरि होआ कलिआणु ॥ (८२६-१४, बिलावलु, मः ५)
मिटी उपाधि भइआ सुखु साचा अंतरजामी सिमरिआ जाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (८२६-१४, बिलावलु, मः ५)
जिस के जीअ तिनि कीए सुखाले भगत जना कउ साचा ताणु ॥ (८२६-१५, बिलावलु, मः ५)
दास अपुने की आपे राखी भै भंजन ऊपरि करते माणु ॥१॥ (८२६-१५, बिलावलु, मः ५)
भई मित्राई मिटी बुराई द्रुसट दूत हरि काढे छाणि ॥ (८२६-१६, बिलावलु, मः ५)
सूख सहज आनंद घनेरे नानक जीवै हरि गुणह वखाणि ॥२॥२६॥११२॥ (८२६-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२६-१८)
पारब्रह्म प्रभ भए कृपाल ॥ (८२६-१८, बिलावलु, मः ५)
कारज सगल सवारे सतिगुर जपि जपि साधू भए निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८२६-१८, बिलावलु, मः ५)
अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै दोखी सगले भए रवाल ॥ (८२६-१९, बिलावलु, मः ५)
कंठि लाइ राखे जन अपने उधरि लीए लाइ अपनै पाल ॥१॥ (८२६-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२७

सही सलामति मिलि घरि आए निंदक के मुख होए काल ॥ (८२७-१, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक मेरा सतिगुरु पूरा गुर प्रसादि प्रभ भए निहाल ॥२॥२७॥११३॥ (८२७-२, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२७-३)
मू लालन सिउ प्रीति बनी ॥ रहाउ ॥ (८२७-३, बिलावलु, मः ५)
तोरी न तूटै छोरी न छूटै ऐसी माधो खिंच तनी ॥१॥ (८२७-३, बिलावलु, मः ५)
दिनसु रैनि मन माहि बसतु है तू करि किरपा प्रभ अपनी ॥२॥ (८२७-४, बिलावलु, मः ५)
बलि बलि जाउ सिआम सुंदर कउ अकथ कथा जा की बात सुनी ॥३॥ (८२७-४, बिलावलु, मः ५)
जन नानक दासनि दासु कहीअत है मोहि करहु कृपा ठाकुर अपुनी ॥४॥२८॥११४॥ (८२७-५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२७-६)
हरि के चरन जपि जाँउ कुरबानु ॥ (८२७-६, बिलावलु, मः ५)
गुरु मेरा पारब्रह्म परमेसुरु ता का हिरदै धरि मन धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (८२७-६, बिलावलु, मः ५)
सिमरि सिमरि सिमरि सुखदाता जा का कीआ सगल जहानु ॥ (८२७-७, बिलावलु, मः ५)
रसना रवहु एकु नाराइणु साची दरगह पावहु मानु ॥१॥ (८२७-८, बिलावलु, मः ५)
साधू संगु परापति जा कउ तिन ही पाइआ एहु निधानु ॥ (८२७-८, बिलावलु, मः ५)
गावउ गुण कीरतनु नित सुआमी करि किरपा नानक दीजै दानु ॥२॥२९॥११५॥ (८२७-९, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२७-१०)
राखि लीए सतिगुर की सरण ॥ (८२७-१०, बिलावलु, मः ५)
जै जै कारु होआ जग अंतरि पारब्रह्मु मेरो तारण तरण ॥१॥ रहाउ ॥ (८२७-१०, बिलावलु, मः ५)
बिस्वम्भर पूरन सुखदाता सगल समग्री पोखण भरण ॥ (८२७-११, बिलावलु, मः ५)
थान थनंतरि सर्ब निरंतरि बलि बलि जाँई हरि के चरण ॥१॥ (८२७-१२, बिलावलु, मः ५)
जीअ जुगति वसि मेरे सुआमी सर्ब सिधि तुम कारण करण ॥ (८२७-१२, बिलावलु, मः ५)
आदि जुगादि प्रभु रखदा आइआ हरि सिमरत नानक नही डरण ॥२॥३०॥११६॥ (८२७-१३, बिलावलु, मः ५)

रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ८ (८२७-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८२७-१५)
मै नाही प्रभ सभु किछु तेरा ॥ (८२७-१६, बिलावलु, मः ५)
ईघै निरगुन ऊघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (८२७-१६, बिलावलु, मः ५)
नगर महि आपि बाहरि फुनि आपन प्रभ मेरे को सगल बसेरा ॥ (८२७-१७, बिलावलु, मः ५)
आपे ही राजनु आपे ही राइआ कह कह ठाकुरु कह कह चेरा ॥१॥ (८२७-१७, बिलावलु, मः ५)
का कउ दुराउ का सिउ बलबंचा जह जह पेखउ तह तह नेरा ॥ (८२७-१८, बिलावलु, मः ५)
साध मूरति गुरु भेटिओ नानक मिलि सागर बूंद नही अन हेरा ॥२॥१॥११७॥ (८२७-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२७-१९)

पन्ना ८२८

तुम्ह समरथा कारन करन ॥ (८२८-१, बिलावलु, मः ५)
ढाकन ढाकि गोबिद गुर मेरे मोहि अपराधी सरन चरन ॥१॥ रहाउ ॥ (८२८-१, बिलावलु, मः ५)
जो जो कीनो सो तुम्ह जानिओ पेखिओ ठउर नाही कछु ढीठ मुकरन ॥ (८२८-२, बिलावलु, मः ५)
बड परतापु सुनिओ प्रभ तुम्हरो कोटि अघा तेरो नाम हरन ॥१॥ (८२८-२, बिलावलु, मः ५)
हमरो सहाउ सदा सद भूलन तुम्हरो बिरदु पतित उधरन ॥ (८२८-३, बिलावलु, मः ५)
करुणा मै किरपाल कृपा निधि जीवन पद नानक हरि दरसन ॥२॥२॥११८॥ (८२८-३, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२८-४)
ऐसी किरपा मोहि करहु ॥ (८२८-४, बिलावलु, मः ५)
संतह चरण हमारो माथा नैन दरसु तनि धूरि परहु ॥१॥ रहाउ ॥ (८२८-५, बिलावलु, मः ५)
गुर को सबदु मेरै हीअरै बासै हरि नामा मन संगि धरहु ॥ (८२८-५, बिलावलु, मः ५)
तस्कर पंच निवारहु ठाकुर सगलो भरमा होमि जरहु ॥१॥ (८२८-६, बिलावलु, मः ५)
जो तुम्ह करहु सोई भल मानै भावनु दुबिधा दूरि टरहु ॥ (८२८-७, बिलावलु, मः ५)
नानक के प्रभ तुम ही दाते संतसंगि ले मोहि उधरहु ॥२॥३॥११९॥ (८२८-७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२८-८)
ऐसी दीखिआ जन सिउ मंगा ॥ (८२८-८, बिलावलु, मः ५)
तुम्हरो धिआनु तुम्हारो रंगा ॥ (८२८-८, बिलावलु, मः ५)
तुम्हरी सेवा तुम्हारे अंगा ॥१॥ रहाउ ॥ (८२८-९, बिलावलु, मः ५)
जन की टहल सम्भाखनु जन सिउ ऊठनु बैठनु जन कै संगा ॥ (८२८-९, बिलावलु, मः ५)
जन चर रज मुखि माथै लागी आसा पूरन अनंत तरंगा ॥१॥ (८२८-१०, बिलावलु, मः ५)
जन पारब्रह्म जा की निर्मल महिमा जन के चरन तीर्थ कोटि गंगा ॥ (८२८-१०, बिलावलु, मः ५)
जन की धूरि कीओ मजनु नानक जनम जनम के हरे कलंगा ॥२॥४॥१२०॥ (८२८-११, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२८-१२)
जिउ भावै तिउ मोहि प्रतिपाल ॥ (८२८-१२, बिलावलु, मः ५)
पारब्रह्म परमेसर सतिगुर हम बारिक तुम्ह पिता किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८२८-१२, बिलावलु, मः ५)

मोहि निरगुण गुणु नाही कोई पहुचि न साकउ तुम्री घाल ॥ (८२८-१३, बिलावलु, मः ५)
तुमरी गति मिति तुम ही जानहु जीउ पिंडु सभु तुमरो माल ॥१॥ (८२८-१४, बिलावलु, मः ५)
अंतरजामी पुरख सुआमी अनबोलत ही जानहु हाल ॥ (८२८-१४, बिलावलु, मः ५)
तनु मनु सीतलु होइ हमारो नानक प्रभ जीउ नदरि निहाल ॥२॥५॥१२१॥ (८२८-१५, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२८-१६)
राखु सदा प्रभ अपनै साथ ॥ (८२८-१६, बिलावलु, मः ५)
तू हमरो प्रीतमु मनमोहनु तुझ बिनु जीवनु सगल अकाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (८२८-१६, बिलावलु, मः ५)
रंक ते राउ करत खिन भीतरि प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ (८२८-१७, बिलावलु, मः ५)
जलत अगनि महि जन आपि उधारे करि अपुने दे राखे हाथ ॥१॥ (८२८-१७, बिलावलु, मः ५)
सीतल सुखु पाइओ मन तृपते हरि सिमरत स्रम सगले लाथ ॥ (८२८-१८, बिलावलु, मः ५)
निधि निधान नानक हरि सेवा अवर सिआनप सगल अकाथ ॥ (८२८-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८२९

बिलावलु महला ५ ॥ (८२९-१)
अपने सेवक कउ कबहु न बिसारहु ॥ (८२९-१, बिलावलु, मः ५)
उरि लागहु सुआमी प्रभ मेरे पूरब प्रीति गोबिंद बीचारहु ॥१॥ रहाउ ॥ (८२९-१, बिलावलु, मः ५)
पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारो हमरे दोख रिदै मत धारहु ॥ (८२९-२, बिलावलु, मः ५)
जीवन प्रान हरि धनु सुखु तुम ही हउमै पटलु कृपा करि जारहु ॥१॥ (८२९-३, बिलावलु, मः ५)
जल बिहून मीन कत जीवन दूध बिना रहनु कत बारो ॥ (८२९-३, बिलावलु, मः ५)
जन नानक पिआस चरन कमलन्ह की पेखि दरसु सुआमी सुख सारो ॥२॥७॥१२३॥ (८२९-४, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२९-५)
आगै पाछै कुसलु भइआ ॥ (८२९-५, बिलावलु, मः ५)
गुरि पूरै पूरी सभ राखी पारब्रहमि प्रभि कीनी मइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८२९-५, बिलावलु, मः ५)
मनि तनि रवि रहिआ हरि प्रीतमु दूख दरद सगला मिटि गइआ ॥ (८२९-६, बिलावलु, मः ५)
साँति सहज आनद गुण गाए दूत दुसट सभि होए खइआ ॥१॥ (८२९-७, बिलावलु, मः ५)
गुनु अवगुनु प्रभि कछु न बीचारिओ करि किरपा अपुना करि लइआ ॥ (८२९-७, बिलावलु, मः ५)
अतुल बडाई अचुत अबिनासी नानकु उचरै हरि की जइआ ॥२॥८॥१२४॥ (८२९-८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२९-९)
बिनु भै भगती तरनु कैसे ॥ (८२९-९, बिलावलु, मः ५)
करहु अनुग्रहु पतित उधारन राखु सुआमी आप भरोसे ॥१॥ रहाउ ॥ (८२९-९, बिलावलु, मः ५)
सिमरनु नही आवत फिरत मद मावत बिखिआ राता सुआन जैसे ॥ (८२९-१०, बिलावलु, मः ५)
अउध बिहावत अधिक मोहावत पाप कमावत बुडे ऐसे ॥१॥ (८२९-११, बिलावलु, मः ५)
सरनि दुख भंजन पुरख निरंजन साधू संगति रवणु जैसे ॥ (८२९-११, बिलावलु, मः ५)
केसव कलेस नास अघ खंडन नानक जीवत दरस दिसे ॥२॥९॥१२५॥ (८२९-१२, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ दुपदे घरु ९ (८२९-१४)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८२६-१४)
आपहि मेलि लए ॥ (८२६-१५, बिलावलु, मः ५)
जब ते सरनि तुमारी आए तब ते दोख गए ॥१॥ रहाउ ॥ (८२६-१५, बिलावलु, मः ५)
तजि अभिमानु अरु चिंत बिरानी साधह सरन पए ॥ (८२६-१५, बिलावलु, मः ५)
जपि जपि नामु तुमारो प्रीतम तन ते रोग खए ॥१॥ (८२६-१६, बिलावलु, मः ५)
महा मुगध अजान अगिआनी राखे धारि दए ॥ (८२६-१६, बिलावलु, मः ५)
कहु नानक गुरु पूरा भेटिओ आवन जान रहे ॥२॥१॥१२६॥ (८२६-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८२६-१८)
जीवउ नामु सुनी ॥ (८२६-१८, बिलावलु, मः ५)
जउ सुप्रसन्न भए गुर पूरे तब मेरी आस पुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (८२६-१८, बिलावलु, मः ५)
पीर गई बाधी मनि धीरा मोहिओ अनद धुनी ॥ (८२६-१६, बिलावलु, मः ५)
उपजिओ चाउ मिलन प्रभ प्रीतम रहनु न जाइ खिनी ॥१॥ (८२६-१६, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८३०

अनिक भगत अनिक जन तारे सिमरहि अनिक मुनी ॥ (८३०-१, बिलावलु, मः ५)
अंधुले टिक निर्धन धनु पाइओ प्रभ नानक अनिक गुनी ॥२॥२॥१२७॥ (८३०-१, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ५ घरु १३ पड़ताल (८३०-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३०-३)
मोहन नीद न आवै हावै हार कजर बसत्र अभरन कीने ॥ (८३०-४, बिलावलु, मः ५)
उडीनी उडीनी उडीनी ॥ (८३०-४, बिलावलु, मः ५)
कब घरि आवै री ॥१॥ रहाउ ॥ (८३०-४, बिलावलु, मः ५)
सरनि सुहागनि चरन सीसु धरि ॥ (८३०-५, बिलावलु, मः ५)
लालनु मोहि मिलावहु ॥ (८३०-५, बिलावलु, मः ५)
कब घरि आवै री ॥१॥ (८३०-५, बिलावलु, मः ५)
सुनहु सहेरी मिलन बात कहउ सगरो अहं मिटावहु तउ घर ही लालनु पावहु ॥ (८३०-५, बिलावलु, मः ५)
तब रस मंगल गुन गावहु ॥ (८३०-६, बिलावलु, मः ५)
आनद रूप धिआवहु ॥ (८३०-७, बिलावलु, मः ५)
नानकु दुआरै आइओ ॥ (८३०-७, बिलावलु, मः ५)
तउ मै लालनु पाइओ री ॥२॥ (८३०-७, बिलावलु, मः ५)
मोहन रूपु दिखावै ॥ (८३०-७, बिलावलु, मः ५)
अब मोहि नीद सुहावै ॥ (८३०-८, बिलावलु, मः ५)
सभ मेरी तिखा बुझानी ॥ (८३०-८, बिलावलु, मः ५)
अब मै सहजि समानी ॥ (८३०-८, बिलावलु, मः ५)
मीठी पिरहि कहानी ॥ (८३०-८, बिलावलु, मः ५)
मोहनु लालनु पाइओ री ॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२८॥ (८३०-६, बिलावलु, मः ५)

बिलावलु महला ५ ॥ (८३०-९)
मोरी अहं जाइ दरसन पावत हे ॥ (८३०-९, बिलावलु, मः ५)
राचहु नाथ ही सहाई संतना ॥ (८३०-१०, बिलावलु, मः ५)
अब चरन गहे ॥१॥ रहाउ ॥ (८३०-१०, बिलावलु, मः ५)
आहे मन अवरु न भावै चरनावै चरनावै उलझिओ अलि मकरंद कमल जिउ ॥ (८३०-१०, बिलावलु, मः ५)
अन रस नही चाहै एकै हरि लाहै ॥१॥ (८३०-११, बिलावलु, मः ५)
अन ते टूटीऐ रिख ते छूटीऐ ॥ (८३०-१२, बिलावलु, मः ५)
मन हरि रस घूटीऐ संगि साधू उलटीऐ ॥ (८३०-१२, बिलावलु, मः ५)
अन नाही नाही रे ॥ (८३०-१२, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रीति चरन चरन हे ॥२॥२॥१२९॥ (८३०-१३, बिलावलु, मः ५)
रागु बिलावलु महला ९ दुपदे (८३०-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३०-१४)
दुख हरता हरि नामु पछानो ॥ (८३०-१५, बिलावलु, मः ९)
अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥१॥ रहाउ ॥ (८३०-१५, बिलावलु, मः ९)
गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥ (८३०-१६, बिलावलु, मः ९)
नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥१॥ (८३०-१६, बिलावलु, मः ९)
अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥ (८३०-१७, बिलावलु, मः ९)
नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥२॥१॥ (८३०-१७, बिलावलु, मः ९)
बिलावलु महला ९ ॥ (८३०-१८)
हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥ (८३०-१८, बिलावलु, मः ९)
भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥१॥ रहाउ ॥ (८३०-१८, बिलावलु, मः ९)
कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥ (८३०-१९, बिलावलु, मः ९)

पन्ना ८३१

जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥ (८३१-१, बिलावलु, मः ९)
मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥ (८३१-१, बिलावलु, मः ९)
कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥२॥२॥ (८३१-२, बिलावलु, मः ९)
बिलावलु महला ९ ॥ (८३१-२)
जा मै भजनु राम को नाही ॥ (८३१-२, बिलावलु, मः ९)
तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (८३१-३, बिलावलु, मः ९)
तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥ (८३१-३, बिलावलु, मः ९)
निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥१॥ (८३१-४, बिलावलु, मः ९)
जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥ (८३१-५, बिलावलु, मः ९)
तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥ (८३१-५, बिलावलु, मः ९)
कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥ (८३१-६, बिलावलु, मः ९)

कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥३॥३॥ (८३१-६, बिलावलु, मः ६)
बिलावलु असटपदीआ महला १ घरु १० (८३१-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३१-८)
निकटि वसै देखै सभु सोई ॥ (८३१-६, बिलावलु, मः १)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (८३१-६, बिलावलु, मः १)
विणु भै पइऐ भगति न होई ॥ (८३१-६, बिलावलु, मः १)
सबदि रते सदा सुखु होई ॥१॥ (८३१-६, बिलावलु, मः १)
ऐसा गिआनु पदारथु नामु ॥ (८३१-१०, बिलावलु, मः १)
गुरमुखि पावसि रसि रसि मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (८३१-१०, बिलावलु, मः १)
गिआनु गिआनु कथै सभु कोई ॥ (८३१-११, बिलावलु, मः १)
कथि कथि बादु करे दुखु होई ॥ (८३१-११, बिलावलु, मः १)
कथि कहणै ते रहै न कोई ॥ (८३१-११, बिलावलु, मः १)
बिनु रस राते मुकति न होई ॥२॥ (८३१-११, बिलावलु, मः १)
गिआनु धिआनु सभु गुर ते होई ॥ (८३१-१२, बिलावलु, मः १)
साची रहत साचा मनि सोई ॥ (८३१-१२, बिलावलु, मः १)
मनमुख कथनी है परु रहत न होई ॥ (८३१-१२, बिलावलु, मः १)
नावहु भूले थाउ न कोई ॥३॥ (८३१-१३, बिलावलु, मः १)
मनु माइआ बंधिओ सर जालि ॥ (८३१-१३, बिलावलु, मः १)
घटि घटि बिआपि रहिओ बिखु नालि ॥ (८३१-१३, बिलावलु, मः १)
जो आँजै सो दीसै कालि ॥ (८३१-१४, बिलावलु, मः १)
कारजु सीधो रिदै सम्हालि ॥४॥ (८३१-१४, बिलावलु, मः १)
सो गिआनी जिनि सबदि लिव लाई ॥ (८३१-१५, बिलावलु, मः १)
मनमुखि हउमै पति गवाई ॥ (८३१-१५, बिलावलु, मः १)
आपे करतै भगति कराई ॥ (८३१-१५, बिलावलु, मः १)
गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥५॥ (८३१-१६, बिलावलु, मः १)
रैणि अंधारी निर्मल जोति ॥ (८३१-१६, बिलावलु, मः १)
नाम बिना झूठे कुचल कछोति ॥ (८३१-१६, बिलावलु, मः १)
बेदु पुकारै भगति सरोति ॥ (८३१-१७, बिलावलु, मः १)
सुणि सुणि मानै वेखै जोति ॥६॥ (८३१-१७, बिलावलु, मः १)
सासत्र सिमृति नामु दृड़ामं ॥ (८३१-१७, बिलावलु, मः १)
गुरमुखि साँति ऊतम करामं ॥ (८३१-१८, बिलावलु, मः १)
मनमुखि जोनी दूख सहामं ॥ (८३१-१८, बिलावलु, मः १)
बंधन तूटे इकु नामु वसामं ॥७॥ (८३१-१८, बिलावलु, मः १)
मन्ने नामु सची पति पूजा ॥ (८३१-१६, बिलावलु, मः १)
किसु वेखा नाही को दूजा ॥ (८३१-१६, बिलावलु, मः १)

देखि कहउ भावै मनि सोइ ॥ (८३१-१६, बिलावलु, मः १)
नानकु कहै अवरु नही कोइ ॥८॥१॥ (८३१-१६, बिलावलु, मः १)

पन्ना ८३२

बिलावलु महला १ ॥ (८३२-१)
मन का कहिआ मनसा करै ॥ (८३२-१, बिलावलु, मः १)
इहु मनु पुन्नु पापु उचरै ॥ (८३२-१, बिलावलु, मः १)
माइआ मदि माते तृपति न आवै ॥ (८३२-२, बिलावलु, मः १)
तृपति मुकति मनि साचा भावै ॥१॥ (८३२-२, बिलावलु, मः १)
तनु धनु कलतु सभु देखु अभिमाना ॥ (८३२-२, बिलावलु, मः १)
बिनु नावै किछु संगि न जाना ॥१॥ रहाउ ॥ (८३२-३, बिलावलु, मः १)
कीचहि रस भोग खुसीआ मन केरी ॥ (८३२-३, बिलावलु, मः १)
धनु लोकाँ तनु भसमै ढेरी ॥ (८३२-४, बिलावलु, मः १)
खाकू खाकु रलै सभु फैलु ॥ (८३२-४, बिलावलु, मः १)
बिनु सबदै नही उतरै मैलु ॥२॥ (८३२-४, बिलावलु, मः १)
गीत राग घन ताल सि कूरे ॥ (८३२-५, बिलावलु, मः १)
तृहु गुण उपजै बिनसै दूरे ॥ (८३२-५, बिलावलु, मः १)
दूजी दुरमति दरदु न जाइ ॥ (८३२-५, बिलावलु, मः १)
छूटै गुरमुखि दारू गुण गाइ ॥३॥ (८३२-५, बिलावलु, मः १)
धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥ (८३२-६, बिलावलु, मः १)
अंतरि क्रोधु पड़हि नाट साला ॥ (८३२-६, बिलावलु, मः १)
नामु विसारि माइआ मदु पीआ ॥ (८३२-७, बिलावलु, मः १)
बिनु गुर भगति नाही सुखु थीआ ॥४॥ (८३२-७, बिलावलु, मः १)
सूकर सुआन गरधभ मंजारा ॥ (८३२-७, बिलावलु, मः १)
पसू मलेछ नीच चंडाला ॥ (८३२-८, बिलावलु, मः १)
गुर ते मुहु फेरे तिन्ह जोनि भवाईऐ ॥ (८३२-८, बिलावलु, मः १)
बंधनि बाधिआ आईऐ जाईऐ ॥५॥ (८३२-८, बिलावलु, मः १)
गुर सेवा ते लहै पदारथु ॥ (८३२-९, बिलावलु, मः १)
हिरदै नामु सदा किरतारथु ॥ (८३२-९, बिलावलु, मः १)
साची दरगह पूछ न होइ ॥ (८३२-९, बिलावलु, मः १)
माने हुकमु सीझै दरि सोइ ॥६॥ (८३२-१०, बिलावलु, मः १)
सतिगुरु मिलै त तिस कउ जाणै ॥ (८३२-१०, बिलावलु, मः १)
रहै रजाई हुकमु पछाणै ॥ (८३२-१०, बिलावलु, मः १)
हुकमु पछाणि सचै दरि वासु ॥ (८३२-१०, बिलावलु, मः १)
काल बिकाल सबदि भए नासु ॥७॥ (८३२-११, बिलावलु, मः १)

रहै अतीतु जाणै सभु तिस का ॥ (८३२-११, बिलावलु, मः १)
तनु मनु अरपै है इहु जिस का ॥ (८३२-११, बिलावलु, मः १)
ना ओहु आवै ना ओहु जाइ ॥ (८३२-१२, बिलावलु, मः १)
नानक साचे साचि समाइ ॥८॥२॥ (८३२-१२, बिलावलु, मः १)
बिलावलु महला ३ असटपदी घरु १० (८३२-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३२-१३)
जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥ (८३२-१४, बिलावलु, मः ३)
अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥ (८३२-१४, बिलावलु, मः ३)
बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥१॥ (८३२-१४, बिलावलु, मः ३)
सतिगुर सेवि नामु वसै मनि चीति ॥ (८३२-१५, बिलावलु, मः ३)
गुरु भेटे हरि नामु चेतावै बिनु नावै होर झूठु परीति ॥१॥ रहाउ ॥ (८३२-१५, बिलावलु, मः ३)
गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ (८३२-१६, बिलावलु, मः ३)
सबदु चीन्हि सहज घरि आवहु ॥ (८३२-१६, बिलावलु, मः ३)
साचै नाइ वडाई पावहु ॥२॥ (८३२-१६, बिलावलु, मः ३)
आपि न बूझै लोक बुझावै ॥ (८३२-१७, बिलावलु, मः ३)
मन का अंधा अंधु कमावै ॥ (८३२-१७, बिलावलु, मः ३)
दरु घरु महलु ठउरु कैसे पावै ॥३॥ (८३२-१७, बिलावलु, मः ३)
हरि जीउ सेवीऐ अंतरजामी ॥ (८३२-१८, बिलावलु, मः ३)
घट घट अंतरि जिस की जोति समानी ॥ (८३२-१८, बिलावलु, मः ३)
तिसु नालि किआ चलै पहनामी ॥४॥ (८३२-१८, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८३३

साचा नामु साचै सबदि जानै ॥ (८३३-१, बिलावलु, मः ३)
आपै आपु मिलै चूकै अभिमानै ॥ (८३३-१, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि नामु सदा सदा वखानै ॥५॥ (८३३-१, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरि सेविऐ दूजी दुरमति जाई ॥ (८३३-२, बिलावलु, मः ३)
अउगण काटि पापा मति खाई ॥ (८३३-२, बिलावलु, मः ३)
कंचन काइआ जोती जोति समाई ॥६॥ (८३३-२, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरि मिलिऐ वडी वडिआई ॥ (८३३-३, बिलावलु, मः ३)
दुखु काटै हिरदै नामु वसाई ॥ (८३३-३, बिलावलु, मः ३)
नामि रते सदा सुखु पाई ॥७॥ (८३३-४, बिलावलु, मः ३)
गुरमति मानिआ करणी सारु ॥ (८३३-४, बिलावलु, मः ३)
गुरमति मानिआ मोख दुआरु ॥ (८३३-४, बिलावलु, मः ३)
नानक गुरमति मानिआ परवारै साधारु ॥८॥१॥३॥ (८३३-५, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला ४ असटपदीआ घरु ११ (८३३-६)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३३-६)
आपै आपु खाइ हउ मेटै अनदिनु हरि रस गीत गवईआ ॥ (८३३-७, बिलावलु, मः ४)
गुरमुखि परचै कंचन काइआ निरभउ जोती जोति मिलईआ ॥१॥ (८३३-७, बिलावलु, मः ४)
मै हरि हरि नामु अधारु रमईआ ॥ (८३३-८, बिलावलु, मः ४)
खिनु पलु रहि न सकउ बिनु नावै गुरमुखि हरि हरि पाठ पड़ईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८३३-८, बिलावलु, मः ४)
एकु गिरहु दस दुआर है जा के अहिनिसि तस्कर पंच चोर लगईआ ॥ (८३३-९, बिलावलु, मः ४)
धरमु अर्थु सभु हिरि ले जावहि मनमुख अंधुले खबरि न पईआ ॥२॥ (८३३-१०, बिलावलु, मः ४)
कंचन कोटु बहु माणकि भरिआ जागे गिआन तति लिव लईआ ॥ (८३३-१०, बिलावलु, मः ४)
तस्कर हेरू आइ लुकाने गुर कै सबदि पकड़ि बंधि पईआ ॥३॥ (८३३-११, बिलावलु, मः ४)
हरि हरि नामु पोतु बोहिथा खेवटु सबदु गुरु पारि लंघईआ ॥ (८३३-१२, बिलावलु, मः ४)
जमु जागाती नेड़ि न आवै ना को तसकरु चोरु लगईआ ॥४॥ (८३३-१२, बिलावलु, मः ४)
हरि गुण गावै सदा दिनु राती मै हरि जसु कहते अंतु न लहीआ ॥ (८३३-१३, बिलावलु, मः ४)
गुरमुखि मनूआ इकतु घरि आवै मिलउ गोपाल नीसानु बजईआ ॥५॥ (८३३-१४, बिलावलु, मः ४)
नैनी देखि दरसु मनु तृपतै स्रवन बाणी गुर सबदु सुणईआ ॥ (८३३-१४, बिलावलु, मः ४)
सुनि सुनि आतम देव है भीने रसि रसि राम गोपाल रवईआ ॥६॥ (८३३-१५, बिलावलु, मः ४)
त्रै गुण माइआ मोहि विआपे तुरीआ गुणु है गुरमुखि लहीआ ॥ (८३३-१६, बिलावलु, मः ४)
एक दृसटि सभ सम करि जाणै नदरी आवै सभु ब्रह्मु पसरईआ ॥७॥ (८३३-१६, बिलावलु, मः ४)
राम नामु है जोति सबाई गुरमुखि आपे अलखु लखईआ ॥ (८३३-१७, बिलावलु, मः ४)
नानक दीन दइआल भए है भगति भाइ हरि नामि समईआ ॥८॥१॥४॥ (८३३-१८, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (८३३-१९)
हरि हरि नामु सीतल जलु धिआवहु हरि चंदन वासु सुगंध गंधईआ ॥ (८३३-१९, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ८३४

मिलि सतसंगति पर्म पदु पाइआ मै हिरड पलास संगि हरि बुहीआ ॥१॥ (८३४-१, बिलावलु, मः ४)
जपि जगन्नाथ जगदीस गुसईआ ॥ (८३४-१, बिलावलु, मः ४)
सरणि परे सेई जन उबरे जिउ प्रहिलाद उधारि समईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८३४-२, बिलावलु, मः ४)
भार अठारह महि चंदनु ऊतम चंदन निकटि सभ चंदनु हुईआ ॥ (८३४-२, बिलावलु, मः ४)
साकत कूड़े ऊभ सुक हूए मनि अभिमानु विछुड़ि दूरि गईआ ॥२॥ (८३४-३, बिलावलु, मः ४)
हरि गति मिति करता आपे जाणै सभ बिधि हरि हरि आपि बनईआ ॥ (८३४-४, बिलावलु, मः ४)
जिसु सतिगुरु भेटे सु कंचनु होवै जो धुरि लिखिआ सु मिटै न मिटईआ ॥३॥ (८३४-४, बिलावलु, मः ४)
रतन पदार्थ गुरमति पावै सागर भगति भंडार खुल्हईआ ॥ (८३४-५, बिलावलु, मः ४)
गुर चरणी इक सरधा उपजी मै हरि गुण कहते तृपति न भईआ ॥४॥ (८३४-६, बिलावलु, मः ४)
पर्म बैरागु नित नित हरि धिआए मै हरि गुण कहते भावनी कहीआ ॥ (८३४-७, बिलावलु, मः ४)
बार बार खिनु खिनु पलु कहीऐ हरि पारु न पावै परै परईआ ॥५॥ (८३४-७, बिलावलु, मः ४)
सासत बेद पुराण पुकारहि धरमु करहु खटु कर्म दृड़ईआ ॥ (८३४-८, बिलावलु, मः ४)

मनमुख पाखंडि भरमि विगूते लोभ लहरि नाव भारि बुडईआ ॥६॥ (८३४-९, बिलावलु, मः ४)
नामु जपहु नामे गति पावहु सिमृति सासत्र नामु दृड़ईआ ॥ (८३४-९, बिलावलु, मः ४)
हउमै जाइ त निरमलु होवै गुरमुखि परचै पर्म पदु पईआ ॥७॥ (८३४-१०, बिलावलु, मः ४)
इहु जगु वरनु रूपु सभु तेरा जितु लावहि से कर्म कमईआ ॥ (८३४-११, बिलावलु, मः ४)
नानक जंत वजाए वाजहि जितु भावै तितु राहि चलईआ ॥८॥२॥५॥ (८३४-११, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (८३४-१२)
गुरमुखि अगम अगोचरु धिआइआ हउ बलि बलि सतिगुर सति पुरखईआ ॥ (८३४-१२, बिलावलु, मः ४)
राम नामु मेरै प्राणि वसाए सतिगुर परसि हरि नामि समईआ ॥१॥ (८३४-१३, बिलावलु, मः ४)
जन की टेक हरि नामु टिकईआ ॥ (८३४-१४, बिलावलु, मः ४)
सतिगुर की धर लागा जावा गुर किरपा ते हरि दरु लहीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८३४-१४, बिलावलु, मः ४)
इहु सरीरु कर्म की धरती गुरमुखि मथि मथि ततु कढईआ ॥ (८३४-१५, बिलावलु, मः ४)
लालु जवेहर नामु प्रगासिआ भाँडै भाउ पवै तितु अईआ ॥२॥ (८३४-१६, बिलावलु, मः ४)
दासनि दास दास होइ रहीऐ जो जन राम भगत निज भईआ ॥ (८३४-१६, बिलावलु, मः ४)
मनु बुधि अरपि धरउ गुर आगै गुर परसादी मै अकथु कथईआ ॥३॥ (८३४-१७, बिलावलु, मः ४)
मनमुख माइआ मोहि विआपे इहु मनु तृसना जलत तिखईआ ॥ (८३४-१८, बिलावलु, मः ४)
गुरमति नामु अमृत जलु पाइआ अगनि बुझी गुर सबदि बुझईआ ॥४॥ (८३४-१८, बिलावलु, मः ४)
इहु मनु नाचै सतिगुर आगै अनहद सबद धुनि तूर वजईआ ॥ (८३४-१९, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ८३५

हरि हरि उसतति करै दिनु राती रखि रखि चरण हरि ताल पूरईआ ॥५॥ (८३५-१, बिलावलु, मः ४)
हरि कै रंगि रता मनु गावै रसि रसाल रसि सबदु रवईआ ॥ (८३५-२, बिलावलु, मः ४)
निज घरि धार चुऐ अति निर्मल जिनि पीआ तिन ही सुखु लहीआ ॥६॥ (८३५-२, बिलावलु, मः ४)
मनहठि कर्म करै अभिमानी जिउ बालक बालू घर उसरईआ ॥ (८३५-३, बिलावलु, मः ४)
आवै लहरि समुंद सागर की खिन महि भिन्न भिन्न ढहि पईआ ॥७॥ (८३५-४, बिलावलु, मः ४)
हरि सरु सागरु हरि है आपे इहु जगु है सभु खेलु खेलईआ ॥ (८३५-४, बिलावलु, मः ४)
जिउ जल तरंग जलु जलहि समावहि नानक आपे आपि रमईआ ॥८॥३॥६॥ (८३५-५, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (८३५-६)
सतिगुरु परचै मनि मुंद्रा पाई गुर का सबदु तनि भसम दृड़ईआ ॥ (८३५-६, बिलावलु, मः ४)
अमर पिंड भए साधू संगि जनम मरण दोऊ मिटि गईआ ॥१॥ (८३५-७, बिलावलु, मः ४)
मेरे मन साधसंगति मिलि रहीआ ॥ (८३५-७, बिलावलु, मः ४)
कृपा करहु मधसूदन माधउ मै खिनु खिनु साधू चरण पखईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८३५-८, बिलावलु, मः ४)
तजै गिरसतु भइआ बन वासी इकु खिनु मनूआ टिकै न टिकईआ ॥ (८३५-९, बिलावलु, मः ४)
धावतु धाइ तदे घरि आवै हरि हरि साधू सरणि पवईआ ॥२॥ (८३५-९, बिलावलु, मः ४)
धीआ पूत छोडि संनिआसी आसा आस मनि बहुतु करईआ ॥ (८३५-१०, बिलावलु, मः ४)
आसा आस करै नही बूझै गुर कै सबदि निरास सुखु लहीआ ॥३॥ (८३५-११, बिलावलु, मः ४)

उपजी तरक दिगम्बरु होआ मनु दह दिस चलि चलि गवनु करईआ ॥ (८३५-११, बिलावलु, मः ४)
प्रभवनु करै बूझै नही तृसना मिलि संगि साध दइआ घरु लहीआ ॥४॥ (८३५-१२, बिलावलु, मः ४)
आसण सिध सिखहि बहुतेरे मनि मागहि रिधि सिधि चेटक चेटकईआ ॥ (८३५-१३, बिलावलु, मः ४)
तृपति संतोखु मनि साँति न आवै मिलि साधू तृपति हरि नामि सिधि पईआ ॥५॥ (८३५-१४, बिलावलु, मः ४)
अंडज जेरज सेतज उतभुज सभि वरन रूप जीअ जंत उपईआ ॥ (८३५-१४, बिलावलु, मः ४)
साधू सरणि परै सो उबरै खत्री ब्राहमणु सूदु वैसु चंडालु चंडईआ ॥६॥ (८३५-१५, बिलावलु, मः ४)
नामा जैदेउ कम्बीरु तृलोचनु अउजाति रविदासु चमिआरु चमईआ ॥ (८३५-१६, बिलावलु, मः ४)
जो जो मिलै साधू जन संगति धनु धन्ना जटु सैणु मिलिआ हरि दईआ ॥७॥ (८३५-१६, बिलावलु, मः ४)
संत जना की हरि पैज रखाई भगति वछलु अंगीकारु करईआ ॥ (८३५-१७, बिलावलु, मः ४)
नानक सरणि परे जगजीवन हरि हरि किरपा धारि रखईआ ॥८॥४॥७॥ (८३५-१८, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (८३५-१९)
अंतरि पिआस उठी प्रभ केरी सुणि गुर बचन मनि तीर लगईआ ॥ (८३५-१९, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ८३६

मन की बिरथा मन ही जाणै अवरु कि जाणै को पीर परईआ ॥१॥ (८३६-१, बिलावलु, मः ४)
राम गुरि मोहनि मोहि मनु लईआ ॥ (८३६-१, बिलावलु, मः ४)
हउ आकल बिकल भई गुर देखे हउ लोट पोट होइ पईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८३६-२, बिलावलु, मः ४)
हउ निरखत फिरउ सभि देस दिसंतर मै प्रभ देखन को बहुतु मनि चईआ ॥ (८३६-२, बिलावलु, मः ४)
मनु तनु काटि देउ गुर आगै जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखईआ ॥२॥ (८३६-३, बिलावलु, मः ४)
कोई आणि सदेसा देइ प्रभ केरा रिद अंतरि मनि तनि मीठ लगईआ ॥ (८३६-४, बिलावलु, मः ४)
मसतकु काटि देउ चरणा तलि जो हरि प्रभु मेले मेलि मिलईआ ॥३॥ (८३६-५, बिलावलु, मः ४)
चलु चलु सखी हम प्रभु परबोधह गुण कामण करि हरि प्रभु लहीआ ॥ (८३६-५, बिलावलु, मः ४)
भगति वछलु उआ को नामु कहीअतु है सरणि प्रभू तिसु पाछै पईआ ॥४॥ (८३६-६, बिलावलु, मः ४)
खिमा सीगार करे प्रभ खुसीआ मनि दीपक गुर गिआनु बलईआ ॥ (८३६-७, बिलावलु, मः ४)
रसि रसि भोग करे प्रभु मेरा हम तिसु आगै जीउ कटि कटि पईआ ॥५॥ (८३६-८, बिलावलु, मः ४)
हरि हरि हारु कंठि है बनिआ मनु मोतीचूरु वड गहन गहनईआ ॥ (८३६-८, बिलावलु, मः ४)
हरि हरि सरधा सेज विछाई प्रभु छोडि न सकै बहुतु मनि भईआ ॥६॥ (८३६-९, बिलावलु, मः ४)
कहै प्रभु अवरु अवरु किछु कीजै सभु बादि सीगारु फोकट फोकटईआ ॥ (८३६-१०, बिलावलु, मः ४)
कीओ सीगारु मिलण कै ताई प्रभु लीओ सुहागनि थूक मुखि पईआ ॥७॥ (८३६-१०, बिलावलु, मः ४)
हम चेरी तू अगम गुसाई किआ हम करह तेरै वसि पईआ ॥ (८३६-११, बिलावलु, मः ४)
दइआ दीन करहु रखि लेवहु नानक हरि गुर सरणि समईआ ॥८॥५॥८॥ (८३६-१२, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ४ ॥ (८३६-१३)
मै मनि तनि प्रेमु अगम ठाकुर का खिनु खिनु सरधा मनि बहुतु उठईआ ॥ (८३६-१३, बिलावलु, मः ४)
गुर देखे सरधा मन पूरी जिउ चातृक पृउ पृउ बूंद मुखि पईआ ॥१॥ (८३६-१४, बिलावलु, मः ४)
मिलु मिलु सखी हरि कथा सुनईआ ॥ (८३६-१४, बिलावलु, मः ४)

सतिगुरु दइआ करे प्रभु मेले मै तिसु आगै सिरु कटि कटि पईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८३६-१५, बिलावलु, मः ४)
रोमि रोमि मनि तनि इक बेदन मै प्रभ देखे बिनु नीद न पईआ ॥ (८३६-१६, बिलावलु, मः ४)
बैदक नाटिक देखि भुलाने मै हिरदै मनि तनि प्रेम पीर लगईआ ॥२॥ (८३६-१६, बिलावलु, मः ४)
हउ खिनु पलु रहि न सकउ बिनु प्रीतम जिउ बिनु अमलै अमली मरि गईआ ॥ (८३६-१७, बिलावलु, मः ४)
जिन कउ पिआस होइ प्रभ केरी तिन्ह अवरु न भावै बिनु हरि को दुईआ ॥३॥ (८३६-१८, बिलावलु, मः ४)
कोई आनि आनि मेरा प्रभू मिलावै हउ तिसु विटहु बलि बलि घुमि गईआ ॥ (८३६-१९, बिलावलु, मः ४)
अनेक जनम के विछुड़े जन मेले जा सति सति सतिगुर सरणि पवईआ ॥४॥ (८३६-१९, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ८३७

सेज एक एको प्रभु ठाकुरु महलु न पावै मनमुख भरमईआ ॥ (८३७-१, बिलावलु, मः ४)
गुरु गुरु करत सरणि जे आवै प्रभु आइ मिलै खिनु ढील न पईआ ॥५॥ (८३७-२, बिलावलु, मः ४)
करि करि किरिआचार वधाए मनि पाखंड करमु कपट लोभईआ ॥ (८३७-३, बिलावलु, मः ४)
बेसुआ कै घरि बेटा जनमिआ पिता ताहि किआ नामु सदईआ ॥६॥ (८३७-३, बिलावलु, मः ४)
पूरब जनमि भगति करि आए गुरि हरि हरि हरि हरि भगति जमईआ ॥ (८३७-४, बिलावलु, मः ४)
भगति भगति करते हरि पाइआ जा हरि हरि हरि हरि नामि समईआ ॥७॥ (८३७-५, बिलावलु, मः ४)
प्रभि आणि आणि महिंदी पीसाई आपे घोलि घोलि अंगि लईआ ॥ (८३७-६, बिलावलु, मः ४)
जिन कउ ठाकुरि किरपा धारी बाह पकरि नानक कढि लईआ ॥८॥६॥२॥१॥६॥९॥ (८३७-६, बिलावलु, मः ४)
रागु बिलावलु महला ५ असटपदी घरु १२ (८३७-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३७-८)
उपमा जात न कही मेरे प्रभ की उपमा जात न कही ॥ (८३७-९, बिलावलु, मः ५)
तजि आन सरणि गही ॥१॥ रहाउ ॥ (८३७-९, बिलावलु, मः ५)
प्रभ चरन कमल अपार ॥ (८३७-९, बिलावलु, मः ५)
हउ जाउ सद बलिहार ॥ (८३७-१०, बिलावलु, मः ५)
मनि प्रीति लागी ताहि ॥ (८३७-१०, बिलावलु, मः ५)
तजि आन कतहि न जाहि ॥१॥ (८३७-१०, बिलावलु, मः ५)
हरि नाम रसना कहन ॥ (८३७-११, बिलावलु, मः ५)
मल पाप कलमल दहन ॥ (८३७-११, बिलावलु, मः ५)
चड़ि नाव संत उधारि ॥ (८३७-११, बिलावलु, मः ५)
भै तरे सागर पारि ॥२॥ (८३७-११, बिलावलु, मः ५)
मनि डोरि प्रेम परीति ॥ (८३७-१२, बिलावलु, मः ५)
इह संत निर्मल रीति ॥ (८३७-१२, बिलावलु, मः ५)
तजि गए पाप बिकार ॥ (८३७-१२, बिलावलु, मः ५)
हरि मिले प्रभ निरंकार ॥३॥ (८३७-१२, बिलावलु, मः ५)
प्रभ पेखीऐ बिसमाद ॥ (८३७-१३, बिलावलु, मः ५)
चखि अनद पूरन साद ॥ (८३७-१३, बिलावलु, मः ५)

नह डोलीऐ इत ऊत ॥ (८३७-१३, बिलावलु, मः ५)
प्रभ बसे हरि हरि चीत ॥४॥ (८३७-१३, बिलावलु, मः ५)
तिन् नाहि नरक निवासु ॥ (८३७-१४, बिलावलु, मः ५)
नित सिमरि प्रभ गुणतासु ॥ (८३७-१४, बिलावलु, मः ५)
ते जमु न पेखहि नैन ॥ (८३७-१४, बिलावलु, मः ५)
सुनि मोहे अनहत बैन ॥५॥ (८३७-१५, बिलावलु, मः ५)
हरि सरणि सूर गुपाल ॥ (८३७-१५, बिलावलु, मः ५)
प्रभ भगत वसि दइआल ॥ (८३७-१५, बिलावलु, मः ५)
हरि निगम लहहि न भेव ॥ (८३७-१५, बिलावलु, मः ५)
नित करहि मुनि जन सेव ॥६॥ (८३७-१६, बिलावलु, मः ५)
दुख दीन दरद निवार ॥ (८३७-१६, बिलावलु, मः ५)
जा की महा बिखड़ी कार ॥ (८३७-१६, बिलावलु, मः ५)
ता की मिति न जानै कोइ ॥ (८३७-१७, बिलावलु, मः ५)
जलि थलि महीअलि सोइ ॥७॥ (८३७-१७, बिलावलु, मः ५)
करि बंदना लख बार ॥ (८३७-१७, बिलावलु, मः ५)
थकि परिओ प्रभ दरबार ॥ (८३७-१७, बिलावलु, मः ५)
प्रभ करहु साधू धूरि ॥ (८३७-१८, बिलावलु, मः ५)
नानक मनसा पूरि ॥८॥१॥ (८३७-१८, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८३७-१८)
प्रभ जनम मरन निवारि ॥ (८३७-१९, बिलावलु, मः ५)
हारि परिओ दुआरि ॥ (८३७-१९, बिलावलु, मः ५)
गहि चरन साधू संग ॥ (८३७-१९, बिलावलु, मः ५)
मन मिसट हरि हरि रंग ॥ (८३७-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८३८

करि दइआ लेहु लड़ि लाइ ॥ (८३८-१, बिलावलु, मः ५)
नानका नामु धिआइ ॥१॥ (८३८-१, बिलावलु, मः ५)
दीना नाथ दइआल मेरे सुआमी दीना नाथ दइआल ॥ (८३८-१, बिलावलु, मः ५)
जाचउ संत रवाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८३८-२, बिलावलु, मः ५)
संसारु बिखिआ कूप ॥ (८३८-२, बिलावलु, मः ५)
तम अगिआन मोहत घूप ॥ (८३८-२, बिलावलु, मः ५)
गहि भुजा प्रभ जी लेहु ॥ (८३८-३, बिलावलु, मः ५)
हरि नामु अपुना देहु ॥ (८३८-३, बिलावलु, मः ५)
प्रभ तुझ बिना नही ठाउ ॥ (८३८-३, बिलावलु, मः ५)
नानका बलि बलि जाउ ॥२॥ (८३८-३, बिलावलु, मः ५)

लोभि मोहि बाधी देह ॥ (८३८-४, बिलावलु, मः ५)
बिनु भजन होवत खेह ॥ (८३८-४, बिलावलु, मः ५)
जमदूत महा भइआन ॥ (८३८-४, बिलावलु, मः ५)
चित गुप्त करमहि जान ॥ (८३८-४, बिलावलु, मः ५)
दिनु रैनि साखि सुनाइ ॥ (८३८-५, बिलावलु, मः ५)
नानका हरि सरनाइ ॥३॥ (८३८-५, बिलावलु, मः ५)
भै भंजना मुरारि ॥ (८३८-५, बिलावलु, मः ५)
करि दइआ पतित उधारि ॥ (८३८-५, बिलावलु, मः ५)
मेरे दोख गने न जाहि ॥ (८३८-६, बिलावलु, मः ५)
हरि बिना कतहि समाहि ॥ (८३८-६, बिलावलु, मः ५)
गहि ओट चितवी नाथ ॥ (८३८-६, बिलावलु, मः ५)
नानका दे रखु हाथ ॥४॥ (८३८-७, बिलावलु, मः ५)
हरि गुण निधे गोपाल ॥ (८३८-७, बिलावलु, मः ५)
सर्ब घट प्रतिपाल ॥ (८३८-७, बिलावलु, मः ५)
मनि प्रीति दरसन पिआस ॥ (८३८-७, बिलावलु, मः ५)
गोबिंद पूरन आस ॥ (८३८-८, बिलावलु, मः ५)
इक निमख रहनु न जाइ ॥ (८३८-८, बिलावलु, मः ५)
वड भागि नानक पाइ ॥५॥ (८३८-८, बिलावलु, मः ५)
प्रभ तुझ बिना नही होर ॥ (८३८-८, बिलावलु, मः ५)
मनि प्रीति चंद चकोर ॥ (८३८-९, बिलावलु, मः ५)
जिउ मीन जल सिउ हेतु ॥ (८३८-९, बिलावलु, मः ५)
अलि कमल भिन्नु न भेतु ॥ (८३८-९, बिलावलु, मः ५)
जिउ चकवी सूरज आस ॥ (८३८-९, बिलावलु, मः ५)
नानक चरन पिआस ॥६॥ (८३८-१०, बिलावलु, मः ५)
जिउ तरुनि भरत परान ॥ (८३८-१०, बिलावलु, मः ५)
जिउ लोभीऐ धनु दानु ॥ (८३८-१०, बिलावलु, मः ५)
जिउ दूध जलहि संजोगु ॥ (८३८-११, बिलावलु, मः ५)
जिउ महा खुधिआरथ भोगु ॥ (८३८-११, बिलावलु, मः ५)
जिउ मात पूतहि हेतु ॥ (८३८-११, बिलावलु, मः ५)
हरि सिमरि नानक नेत ॥७॥ (८३८-११, बिलावलु, मः ५)
जिउ दीप पतन पतंग ॥ (८३८-१२, बिलावलु, मः ५)
जिउ चोरु हिरत निसंग ॥ (८३८-१२, बिलावलु, मः ५)
मैगलहि कामै बंधु ॥ (८३८-१२, बिलावलु, मः ५)
जिउ ग्रसत बिखई धंधु ॥ (८३८-१२, बिलावलु, मः ५)
जिउ जूआर बिसनु न जाइ ॥ (८३८-१३, बिलावलु, मः ५)

हरि नानक इहु मनु लाइ ॥८॥ (८३८-१३, बिलावलु, मः ५)
कुरंक नादै नेहु ॥ (८३८-१३, बिलावलु, मः ५)
चातृकु चाहत मेहु ॥ (८३८-१४, बिलावलु, मः ५)
जन जीवना सतसंगि ॥ (८३८-१४, बिलावलु, मः ५)
गोबिदु भजना रंगि ॥ (८३८-१४, बिलावलु, मः ५)
रसना बखानै नामु ॥ (८३८-१४, बिलावलु, मः ५)
नानक दरसन दानु ॥९॥ (८३८-१४, बिलावलु, मः ५)
गुन गाइ सुनि लिखि देइ ॥ (८३८-१५, बिलावलु, मः ५)
सो सर्ब फल हरि लेइ ॥ (८३८-१५, बिलावलु, मः ५)
कुल समूह करत उधारु ॥ (८३८-१५, बिलावलु, मः ५)
संसारु उतरसि पारि ॥ (८३८-१६, बिलावलु, मः ५)
हरि चरन बोहिथ ताहि ॥ (८३८-१६, बिलावलु, मः ५)
मिलि साधसंगि जसु गाहि ॥ (८३८-१६, बिलावलु, मः ५)
हरि पैज रखै मुरारि ॥ (८३८-१६, बिलावलु, मः ५)
हरि नानक सरनि दुआरि ॥१०॥२॥ (८३८-१७, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला १ थिती घरु १० जति (८३८-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८३८-१८)
एकम एकंकारु निराला ॥ (८३८-१९, बिलावलु, मः १)
अमरु अजोनी जाति न जाला ॥ (८३८-१९, बिलावलु, मः १)
अगम अगोचरु रूपु न रेखिआ ॥ (८३८-१९, बिलावलु, मः १)
खोजत खोजत घटि घटि देखिआ ॥ (८३८-१९, बिलावलु, मः १)

पन्ना ८३९

जो देखि दिखावै तिस कउ बलि जाई ॥ (८३९-१, बिलावलु, मः १)
गुर परसादि परम पदु पाई ॥१॥ (८३९-१, बिलावलु, मः १)
किआ जपु जापउ बिनु जगदीसै ॥ (८३९-२, बिलावलु, मः १)
गुर कै सबदि महलु घरु दीसै ॥१॥ रहाउ ॥ (८३९-२, बिलावलु, मः १)
दूजै भाइ लगे पछुताणे ॥ (८३९-२, बिलावलु, मः १)
जम दरि बाधे आवण जाणे ॥ (८३९-३, बिलावलु, मः १)
किआ लै आवहि किआ ले जाहि ॥ (८३९-३, बिलावलु, मः १)
सिरि जमकालु सि चोटा खाहि ॥ (८३९-३, बिलावलु, मः १)
बिनु गुर सबद न छूटसि कोइ ॥ (८३९-४, बिलावलु, मः १)
पाखंडि कीनै मुकति न होइ ॥२॥ (८३९-४, बिलावलु, मः १)
आपे सचु कीआ कर जोड़ि ॥ (८३९-४, बिलावलु, मः १)
अंडज फोड़ि जोड़ि विछोड़ि ॥ (८३९-५, बिलावलु, मः १)

धरति अकासु कीए बैसण कउ थाउ ॥ (८३६-५, बिलावलु, मः १)
राति दिनंतु कीए भउ भाउ ॥ (८३६-५, बिलावलु, मः १)
जिनि कीए करि वेखणहारा ॥ (८३६-५, बिलावलु, मः १)
अवरु न दूजा सिरजणहारा ॥३॥ (८३६-६, बिलावलु, मः १)
तृतीआ ब्रह्मा बिसनु महेसा ॥ (८३६-६, बिलावलु, मः १)
देवी देव उपाए वेसा ॥ (८३६-६, बिलावलु, मः १)
जोती जाती गणत न आवै ॥ (८३६-७, बिलावलु, मः १)
जिनि साजी सो कीमति पावै ॥ (८३६-७, बिलावलु, मः १)
कीमति पाइ रहिआ भरपूरि ॥ (८३६-७, बिलावलु, मः १)
किसु नेड़ै किसु आखा दूरि ॥४॥ (८३६-८, बिलावलु, मः १)
चउथि उपाए चारे बेदा ॥ (८३६-८, बिलावलु, मः १)
खाणी चारे बाणी भेदा ॥ (८३६-८, बिलावलु, मः १)
असट दसा खटु तीनि उपाए ॥ (८३६-८, बिलावलु, मः १)
सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ (८३६-९, बिलावलु, मः १)
तीनि समावै चउथै वासा ॥ (८३६-९, बिलावलु, मः १)
प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥५॥ (८३६-९, बिलावलु, मः १)
पंचमी पंच भूत बेताला ॥ (८३६-१०, बिलावलु, मः १)
आपि अगोचरु पुरखु निराला ॥ (८३६-१०, बिलावलु, मः १)
इकि भ्रमि भूखे मोह पिआसे ॥ (८३६-१०, बिलावलु, मः १)
इकि रसु चाखि सबदि तृपतासे ॥ (८३६-१०, बिलावलु, मः १)
इकि रंगि राते इकि मरि धूरि ॥ (८३६-११, बिलावलु, मः १)
इकि दरि घरि साचै देखि हदूरि ॥६॥ (८३६-११, बिलावलु, मः १)
झूठे कउ नाही पति नाउ ॥ (८३६-११, बिलावलु, मः १)
कबहु न सूचा काला काउ ॥ (८३६-१२, बिलावलु, मः १)
पिंजरि पंखी बंधिआ कोइ ॥ (८३६-१२, बिलावलु, मः १)
छेरीं भरमै मुकति न होइ ॥ (८३६-१२, बिलावलु, मः १)
तउ छूटै जा खसमु छडाए ॥ (८३६-१३, बिलावलु, मः १)
गुरमति मेले भगति दृड़ाए ॥७॥ (८३६-१३, बिलावलु, मः १)
खसटी खटु दरसन प्रभ साजे ॥ (८३६-१३, बिलावलु, मः १)
अनहद सबदु निराला वाजे ॥ (८३६-१४, बिलावलु, मः १)
जे प्रभ भावै ता महलि बुलावै ॥ (८३६-१४, बिलावलु, मः १)
सबदे भेदे तउ पति पावै ॥ (८३६-१४, बिलावलु, मः १)
करि करि वेस खपहि जलि जावहि ॥ (८३६-१४, बिलावलु, मः १)
साचै साचे साचि समावहि ॥८॥ (८३६-१५, बिलावलु, मः १)
सपतमी सतु संतोखु सरीरि ॥ (८३६-१५, बिलावलु, मः १)

सात समुंद भरे निर्मल नीरि ॥ (८३९-१५, बिलावलु, मः १)
मजनु सीलु सचु रिदै वीचारि ॥ (८३९-१६, बिलावलु, मः १)
गुर कै सबदि पावै सभि पारि ॥ (८३९-१६, बिलावलु, मः १)
मनि साचा मुखि साचउ भाइ ॥ (८३९-१६, बिलावलु, मः १)
सचु नीसाणै ठाक न पाइ ॥९॥ (८३९-१७, बिलावलु, मः १)
असटमी असट सिधि बुधि साधै ॥ (८३९-१७, बिलावलु, मः १)
सचु निहकेवलु करमि अराधै ॥ (८३९-१७, बिलावलु, मः १)
पउण पाणी अगनी बिसराउ ॥ (८३९-१८, बिलावलु, मः १)
तही निरंजनु साचो नाउ ॥ (८३९-१८, बिलावलु, मः १)
तिसु महि मनूआ रहिआ लिव लाइ ॥ (८३९-१८, बिलावलु, मः १)
प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥१०॥ (८३९-१९, बिलावलु, मः १)
नाउ नउमी नवे नाथ नव खंडा ॥ (८३९-१९, बिलावलु, मः १)
घटि घटि नाथु महा बलवंडा ॥ (८३९-१९, बिलावलु, मः १)

पन्ना ८४०

आई पूता इहु जगु सारा ॥ (८४०-१, बिलावलु, मः १)
प्रभ आदेसु आदि रखवारा ॥ (८४०-१, बिलावलु, मः १)
आदि जुगादी है भी होगु ॥ (८४०-१, बिलावलु, मः १)
ओहु अपरम्परु करणै जोगु ॥११॥ (८४०-२, बिलावलु, मः १)
दसमी नामु दानु इसनानु ॥ (८४०-२, बिलावलु, मः १)
अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु ॥ (८४०-२, बिलावलु, मः १)
सचि मैलु न लागै भ्रमु भउ भागै ॥ (८४०-३, बिलावलु, मः १)
बिलमु न तूटसि काचै तागै ॥ (८४०-३, बिलावलु, मः १)
जिउ तागा जगु एवै जाणहु ॥ (८४०-३, बिलावलु, मः १)
असथिरु चीतु साचि रंगु माणहु ॥१२॥ (८४०-३, बिलावलु, मः १)
एकादसी इकु रिदै वसावै ॥ (८४०-४, बिलावलु, मः १)
हिंसा ममता मोहु चुकावै ॥ (८४०-४, बिलावलु, मः १)
फलु पावै ब्रतु आतम चीनै ॥ (८४०-४, बिलावलु, मः १)
पाखंडि राचि ततु नही बीनै ॥ (८४०-५, बिलावलु, मः १)
निरमलु निराहारु निहकेवलु ॥ (८४०-५, बिलावलु, मः १)
सूचै साचे ना लागै मलु ॥१३॥ (८४०-५, बिलावलु, मः १)
जह देखउ तह एको एका ॥ (८४०-६, बिलावलु, मः १)
होरि जीअ उपाए वेको वेका ॥ (८४०-६, बिलावलु, मः १)
फलोहार कीए फलु जाइ ॥ (८४०-६, बिलावलु, मः १)
रस कस खाए सादु गवाइ ॥ (८४०-६, बिलावलु, मः १)

कूड़ै लालचि लपटै लपटाइ ॥ (८४०-७, बिलावलु, मः १)
छूटै गुरमुखि साचु कमाइ ॥१४॥ (८४०-७, बिलावलु, मः १)
दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता ॥ (८४०-७, बिलावलु, मः १)
अहिनिसि जागहि कबहि न सूता ॥ (८४०-८, बिलावलु, मः १)
जागतु जागि रहै लिव लाइ ॥ (८४०-८, बिलावलु, मः १)
गुर परचै तिसु कालु न खाइ ॥ (८४०-८, बिलावलु, मः १)
अतीत भए मारे बैराई ॥ (८४०-९, बिलावलु, मः १)
प्रणवति नानक तह लिव लाई ॥१५॥ (८४०-९, बिलावलु, मः १)
दुआदसी दइआ दानु करि जाणै ॥ (८४०-९, बिलावलु, मः १)
बाहरि जातो भीतरि आणै ॥ (८४०-१०, बिलावलु, मः १)
बरती बरत रहै निहकाम ॥ (८४०-१०, बिलावलु, मः १)
अजपा जापु जपै मुखि नाम ॥ (८४०-१०, बिलावलु, मः १)
तीनि भवण महि एको जाणै ॥ (८४०-१०, बिलावलु, मः १)
सभि सुचि संजम साचु पछाणै ॥१६॥ (८४०-११, बिलावलु, मः १)
तेरसि तरवर समुद कनारै ॥ (८४०-११, बिलावलु, मः १)
अमृतु मूलु सिखरि लिव तारै ॥ (८४०-११, बिलावलु, मः १)
डर डरि मरै न बूडै कोइ ॥ (८४०-१२, बिलावलु, मः १)
निडरु बूडि मरै पति खोइ ॥ (८४०-१२, बिलावलु, मः १)
डर महि घरु घर महि डरु जाणै ॥ (८४०-१२, बिलावलु, मः १)
तखति निवासु सचु मनि भाणै ॥१७॥ (८४०-१३, बिलावलु, मः १)
चउदसि चउथे थावहि लहि पावै ॥ (८४०-१३, बिलावलु, मः १)
राजस तामस सत काल समावै ॥ (८४०-१३, बिलावलु, मः १)
ससीअर कै घरि सूरु समावै ॥ (८४०-१४, बिलावलु, मः १)
जोग जुगति की कीमति पावै ॥ (८४०-१४, बिलावलु, मः १)
चउदसि भवन पाताल समाए ॥ (८४०-१४, बिलावलु, मः १)
खंड ब्रहमंड रहिआ लिव लाए ॥१८॥ (८४०-१५, बिलावलु, मः १)
अमावसिआ चंदु गुपतु गैणारि ॥ (८४०-१५, बिलावलु, मः १)
बूझहु गिआनी सबदु बीचारि ॥ (८४०-१५, बिलावलु, मः १)
ससीअरु गगनि जोति तिहु लोई ॥ (८४०-१६, बिलावलु, मः १)
करि करि वेखै करता सोई ॥ (८४०-१६, बिलावलु, मः १)
गुर ते दीसै सो तिस ही माहि ॥ (८४०-१६, बिलावलु, मः १)
मनमुखि भूले आवहि जाहि ॥१९॥ (८४०-१७, बिलावलु, मः १)
घरु दरु थापि थिरु थानि सुहावै ॥ (८४०-१७, बिलावलु, मः १)
आपु पछाणै जा सतिगुरु पावै ॥ (८४०-१७, बिलावलु, मः १)
जह आसा तह बिनसि बिनासा ॥ (८४०-१८, बिलावलु, मः १)

फूटै खपरु दुबिधा मनसा ॥ (८४०-१८, बिलावलु, मः १)
ममता जाल ते रहै उदासा ॥ (८४०-१८, बिलावलु, मः १)
प्रणवति नानक हम ता के दासा ॥२०॥१॥ (८४०-१९, बिलावलु, मः १)

पन्ना ८४१

बिलावलु महला ३ वार सत घरु १० (८४१-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८४१-१)
आदित वारि आदि पुरखु है सोई ॥ (८४१-२, बिलावलु, मः ३)
आपे वरतै अवरु न कोई ॥ (८४१-२, बिलावलु, मः ३)
ओति पोति जगु रहिआ परोई ॥ (८४१-२, बिलावलु, मः ३)
आपे करता करै सु होई ॥ (८४१-२, बिलावलु, मः ३)
नामि रते सदा सुखु होई ॥ (८४१-३, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥१॥ (८४१-३, बिलावलु, मः ३)
हिरदै जपनी जपउ गुणतासा ॥ (८४१-३, बिलावलु, मः ३)
हरि अगम अगोचरु अपरम्पर सुआमी जन पगि लगि धिआवउ होइ दासनि दासा ॥१॥ रहाउ ॥ (८४१-४, बिलावलु, मः ३)
सोमवारि सचि रहिआ समाइ ॥ (८४१-५, बिलावलु, मः ३)
तिस की कीमति कही न जाइ ॥ (८४१-५, बिलावलु, मः ३)
आखि आखि रहे सभि लिव लाइ ॥ (८४१-५, बिलावलु, मः ३)
जिसु देवै तिसु पलै पाइ ॥ (८४१-६, बिलावलु, मः ३)
अगम अगोचरु लखिआ न जाइ ॥ (८४१-६, बिलावलु, मः ३)
गुर कै सबदि हरि रहिआ समाइ ॥२॥ (८४१-६, बिलावलु, मः ३)
मंगलि माइआ मोहु उपाइआ ॥ (८४१-७, बिलावलु, मः ३)
आपे सिरि सिरि धंधै लाइआ ॥ (८४१-७, बिलावलु, मः ३)
आपि बुझाए सोई बूझै ॥ (८४१-७, बिलावलु, मः ३)
गुर कै सबदि दरु घरु सूझै ॥ (८४१-८, बिलावलु, मः ३)
प्रेम भगति करे लिव लाइ ॥ (८४१-८, बिलावलु, मः ३)
हउमै ममता सबदि जलाइ ॥३॥ (८४१-८, बिलावलु, मः ३)
बुधवारि आपे बुधि सारु ॥ (८४१-९, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि करणी सबदु वीचारु ॥ (८४१-९, बिलावलु, मः ३)
नामि रते मनु निरमलु होइ ॥ (८४१-९, बिलावलु, मः ३)
हरि गुण गावै हउमै मलु खोइ ॥ (८४१-९, बिलावलु, मः ३)
दरि सचै सद सोभा पाए ॥ (८४१-१०, बिलावलु, मः ३)
नामि रते गुर सबदि सुहाए ॥४॥ (८४१-१०, बिलावलु, मः ३)
लाहा नामु पाए गुर दुआरि ॥ (८४१-१०, बिलावलु, मः ३)

आपे देवै देवणहारु ॥ (८४१-११, बिलावलु, मः ३)
जो देवै तिस कउ बलि जाईऐ ॥ (८४१-११, बिलावलु, मः ३)
गुर परसादी आपु गवाईऐ ॥ (८४१-११, बिलावलु, मः ३)
नानक नामु रखहु उर धारि ॥ (८४१-१२, बिलावलु, मः ३)
देवणहारे कउ जैकारु ॥५॥ (८४१-१२, बिलावलु, मः ३)
वीरवारि वीर भरमि भुलाए ॥ (८४१-१२, बिलावलु, मः ३)
प्रेत भूत सभि दूजै लाए ॥ (८४१-१२, बिलावलु, मः ३)
आपि उपाए करि वेखै वेका ॥ (८४१-१३, बिलावलु, मः ३)
सभना करते तेरी टेका ॥ (८४१-१३, बिलावलु, मः ३)
जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ (८४१-१३, बिलावलु, मः ३)
सो मिलै जिसु लैहि मिलाई ॥६॥ (८४१-१३, बिलावलु, मः ३)
सुक्रवारि प्रभु रहिआ समाई ॥ (८४१-१४, बिलावलु, मः ३)
आपि उपाइ सभ कीमति पाई ॥ (८४१-१४, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि होवै सु करै बीचारु ॥ (८४१-१५, बिलावलु, मः ३)
सचु संजमु करणी है कार ॥ (८४१-१५, बिलावलु, मः ३)
वरतु नेमु निताप्रति पूजा ॥ (८४१-१५, बिलावलु, मः ३)
बिनु बूझे सभु भाउ है दूजा ॥७॥ (८४१-१५, बिलावलु, मः ३)
छनिछरवारि सउण सासत बीचारु ॥ (८४१-१६, बिलावलु, मः ३)
हउमै मेरा भरमै संसारु ॥ (८४१-१६, बिलावलु, मः ३)
मनमुखु अंधा दूजै भाइ ॥ (८४१-१६, बिलावलु, मः ३)
जम दरि बाधा चोटा खाइ ॥ (८४१-१७, बिलावलु, मः ३)
गुर परसादी सदा सुखु पाए ॥ (८४१-१७, बिलावलु, मः ३)
सचु करणी साचि लिव लाए ॥८॥ (८४१-१७, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ (८४१-१८, बिलावलु, मः ३)
हउमै मारि सचि लिव लागी ॥ (८४१-१८, बिलावलु, मः ३)
तेरै रंगि राते सहजि सुभाइ ॥ (८४१-१८, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८४२

तू सुखदाता लैहि मिलाइ ॥ (८४२-१, बिलावलु, मः ३)
एकस ते दूजा नाही कोइ ॥ (८४२-१, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि बूझै सोझी होइ ॥९॥ (८४२-१, बिलावलु, मः ३)
पंद्रह थितंी तै सत वार ॥ (८४२-१, बिलावलु, मः ३)
माहा रुती आवहि वार वार ॥ (८४२-२, बिलावलु, मः ३)
दिनसु रैणि तिवै संसारु ॥ (८४२-२, बिलावलु, मः ३)
आवा गउणु कीआ करतारि ॥ (८४२-२, बिलावलु, मः ३)

निहचलु साचु रहिआ कल धारि ॥ (८४२-३, बिलावलु, मः ३)
नानक गुरमुखि बूझै को सबदु वीचारि ॥१०॥१॥ (८४२-३, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला ३ ॥ (८४२-३)
आदि पुरखु आपे सृसटि साजे ॥ (८४२-४, बिलावलु, मः ३)
जीअ जंत माइआ मोहि पाजे ॥ (८४२-४, बिलावलु, मः ३)
दूजै भाइ परपंचि लागे ॥ (८४२-४, बिलावलु, मः ३)
आवहि जावहि मरहि अभागे ॥ (८४२-५, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरि भेटिऐ सोझी पाइ ॥ (८४२-५, बिलावलु, मः ३)
परपंचु चूकै सचि समाइ ॥१॥ (८४२-५, बिलावलु, मः ३)
जा कै मसतकि लिखिआ लेखु ॥ (८४२-५, बिलावलु, मः ३)
ता कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥१॥ रहाउ ॥ (८४२-६, बिलावलु, मः ३)
सृसटि उपाइ आपे सभु वेखै ॥ (८४२-६, बिलावलु, मः ३)
कोइ न मेटै तेरै लेखै ॥ (८४२-७, बिलावलु, मः ३)
सिध साधिक जे को कहै कहाए ॥ (८४२-७, बिलावलु, मः ३)
भरमे भूला आवै जाए ॥ (८४२-७, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरु सेवै सो जनु बूझै ॥ (८४२-७, बिलावलु, मः ३)
हउमै मारे ता दरु सूझै ॥२॥ (८४२-८, बिलावलु, मः ३)
एकसु ते सभु दूजा हूआ ॥ (८४२-८, बिलावलु, मः ३)
एको वरतै अवरु न बीआ ॥ (८४२-८, बिलावलु, मः ३)
दूजे ते जे एको जाणै ॥ (८४२-८, बिलावलु, मः ३)
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ (८४२-९, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरु भेटे ता एको पाए ॥ (८४२-९, बिलावलु, मः ३)
विचहु दूजा ठाकि रहाए ॥३॥ (८४२-९, बिलावलु, मः ३)
जिस दा साहिबु डाढा होइ ॥ (८४२-१०, बिलावलु, मः ३)
तिस नो मारि न साकै कोइ ॥ (८४२-१०, बिलावलु, मः ३)
साहिब की सेवकु रहै सरणाई ॥ (८४२-१०, बिलावलु, मः ३)
आपे बखसे दे वडिआई ॥ (८४२-१०, बिलावलु, मः ३)
तिस ते ऊपरि नाही कोइ ॥ (८४२-११, बिलावलु, मः ३)
कउणु डरै डरु किस का होइ ॥४॥ (८४२-११, बिलावलु, मः ३)
गुरमती साँति वसै सरीर ॥ (८४२-११, बिलावलु, मः ३)
सबदु चीन्हि फिरि लगै न पीर ॥ (८४२-१२, बिलावलु, मः ३)
आवै न जाइ ना दुखु पाए ॥ (८४२-१२, बिलावलु, मः ३)
नामे राते सहजि समाए ॥ (८४२-१२, बिलावलु, मः ३)
नानक गुरमुखि वेखै हदूरि ॥ (८४२-१३, बिलावलु, मः ३)
मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥५॥ (८४२-१३, बिलावलु, मः ३)

इकि सेवक इकि भरमि भुलाए ॥ (८४२-१३, बिलावलु, मः ३)
आपे करे हरि आपि कराए ॥ (८४२-१४, बिलावलु, मः ३)
एको वरतै अवरु न कोइ ॥ (८४२-१४, बिलावलु, मः ३)
मनि रोसु कीजै जे दूजा होइ ॥ (८४२-१४, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरु सेवे करणी सारी ॥ (८४२-१४, बिलावलु, मः ३)
दरि साचै साचे वीचारी ॥६॥ (८४२-१५, बिलावलु, मः ३)
थिती वार सभि सबदि सुहाए ॥ (८४२-१५, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरु सेवे ता फलु पाए ॥ (८४२-१५, बिलावलु, मः ३)
थिती वार सभि आवहि जाहि ॥ (८४२-१६, बिलावलु, मः ३)
गुर सबदु निहचलु सदा सचि समाहि ॥ (८४२-१६, बिलावलु, मः ३)
थिती वार ता जा सचि राते ॥ (८४२-१६, बिलावलु, मः ३)
बिनु नावै सभि भरमहि काचे ॥७॥ (८४२-१७, बिलावलु, मः ३)
मनमुख मरहि मरि बिगती जाहि ॥ (८४२-१७, बिलावलु, मः ३)
एकु न चेतहि दूजै लोभाहि ॥ (८४२-१७, बिलावलु, मः ३)
अचेत पिंडी अगिआन अंधारु ॥ (८४२-१८, बिलावलु, मः ३)
बिनु सबदै किउ पाए पारु ॥ (८४२-१८, बिलावलु, मः ३)
आपि उपाए उपावणहारु ॥ (८४२-१८, बिलावलु, मः ३)
आपे कीतोनु गुर वीचारु ॥८॥ (८४२-१९, बिलावलु, मः ३)
बहुते भेख करहि भेखधारी ॥ (८४२-१९, बिलावलु, मः ३)
भवि भवि भरमहि काची सारी ॥ (८४२-१९, बिलावलु, मः ३)
ऐथै सुखु न आगै होइ ॥ (८४२-१९, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८४३

मनमुख मुए अपणा जनमु खोइ ॥ (८४३-१, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ (८४३-१, बिलावलु, मः ३)
घर ही अंदरि सचु महलु पाए ॥९॥ (८४३-१, बिलावलु, मः ३)
आपे पूरा करे सु होइ ॥ (८४३-२, बिलावलु, मः ३)
एहि थिती वार दूजा दोइ ॥ (८४३-२, बिलावलु, मः ३)
सतिगुर बाझहु अंधु गुबारु ॥ (८४३-२, बिलावलु, मः ३)
थिती वार सेवहि मुगध गवार ॥ (८४३-३, बिलावलु, मः ३)
नानक गुरमुखि बूझै सोझी पाइ ॥ (८४३-३, बिलावलु, मः ३)
इकतु नामि सदा रहिआ समाइ ॥१०॥२॥ (८४३-३, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु महला १ छंत दखणी (८४३-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८४३-५)
मुंध नवेलड़ीआ गोइलि आई राम ॥ (८४३-६, बिलावलु दखणी, मः १)

मटुकी डारि धरी हरि लिव लाई राम ॥ (८४३-६, बिलावलु दखणी, मः १)
लिव लाइ हरि सिउ रही गोइलि सहजि सबदि सीगारीआ ॥ (८४३-६, बिलावलु दखणी, मः १)
कर जोड़ि गुर पहि करि बिनंती मिलहु साचि पिआरीआ ॥ (८४३-७, बिलावलु दखणी, मः १)
धन भाइ भगती देखि प्रीतम काम क्रोधु निवारिआ ॥ (८४३-८, बिलावलु दखणी, मः १)
नानक मुंध नवेल सुंदरि देखि पिरु साधारिआ ॥१॥ (८४३-८, बिलावलु दखणी, मः १)
सचि नवेलड़ीए जोबनि बाली राम ॥ (८४३-६, बिलावलु दखणी, मः १)
आउ न जाउ कही अपने सह नाली राम ॥ (८४३-६, बिलावलु दखणी, मः १)
नाह अपने संगि दासी मै भगति हरि की भावए ॥ (८४३-६, बिलावलु दखणी, मः १)
अगाधि बोधि अकथु कथीऐ सहजि प्रभ गुण गावए ॥ (८४३-१०, बिलावलु दखणी, मः १)
राम नाम रसाल रसीआ रवै साचि पिआरीआ ॥ (८४३-१०, बिलावलु दखणी, मः १)
गुरि सबदु दीआ दानु कीआ नानका वीचारीआ ॥२॥ (८४३-११, बिलावलु दखणी, मः १)
स्रीधर मोहिअड़ी पिर संगि सूती राम ॥ (८४३-११, बिलावलु दखणी, मः १)
गुर कै भाइ चलो साचि संगूती राम ॥ (८४३-१२, बिलावलु दखणी, मः १)
धन साचि संगूती हरि संगि सूती संगि सखी सहेलीआ ॥ (८४३-१२, बिलावलु दखणी, मः १)
इक भाइ इक मनि नामु वसिआ सतिगुरू हम मेलीआ ॥ (८४३-१३, बिलावलु दखणी, मः १)
दिनु रैणि घड़ी न चसा विसरै सासि सासि निरंजनो ॥ (८४३-१३, बिलावलु दखणी, मः १)
सबदि जोति जगाइ दीपकु नानका भउ भंजनो ॥३॥ (८४३-१४, बिलावलु दखणी, मः १)
जोति सबाइड़ीए तृभवण सारे राम ॥ (८४३-१५, बिलावलु दखणी, मः १)
घटि घटि रवि रहिआ अलख अपारे राम ॥ (८४३-१५, बिलावलु दखणी, मः १)
अलख अपार अपारु साचा आपु मारि मिलाईऐ ॥ (८४३-१५, बिलावलु दखणी, मः १)
हउमै ममता लोभु जालहु सबदि मैलु चुकाईऐ ॥ (८४३-१६, बिलावलु दखणी, मः १)
दरि जाइ दरसनु करी भाणै तारि तारणहारिआ ॥ (८४३-१६, बिलावलु दखणी, मः १)
हरि नामु अमृतु चाखि तृपती नानका उर धारिआ ॥४॥१॥ (८४३-१७, बिलावलु दखणी, मः १)
बिलावलु महला १ ॥ (८४३-१८)
मै मनि चाउ घणा साचि विगासी राम ॥ (८४३-१८, बिलावलु, मः १)
मोही प्रेम पिरे प्रभि अबिनासी राम ॥ (८४३-१८, बिलावलु, मः १)
अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ ॥ (८४३-१६, बिलावलु, मः १)
किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ ॥ (८४३-१६, बिलावलु, मः १)

पन्ना ८४४

मै अवरु गिआनु न धिआनु पूजा हरि नामु अंतरि वसि रहे ॥ (८४४-१, बिलावलु, मः १)
भेखु भवनी हठु न जाना नानका सचु गहि रहे ॥१॥ (८४४-१, बिलावलु, मः १)
भिन्नड़ी रैणि भली दिनस सुहाए राम ॥ (८४४-२, बिलावलु, मः १)
निज घरि सूतड़ीए पिरमु जगाए राम ॥ (८४४-२, बिलावलु, मः १)
नव हाणि नव धन सबदि जागी आपणे पिर भाणीआ ॥ (८४४-३, बिलावलु, मः १)

तजि कूड़ु कपटु सुभाउ दूजा चाकरी लोकाणीआ ॥ (८४४-३, बिलावलु, मः १)
मै नामु हरि का हारु कंठे साच सबदु नीसाणिआ ॥ (८४४-४, बिलावलु, मः १)
कर जोड़ि नानकु साचु मागै नदरि करि तुधु भाणिआ ॥२॥ (८४४-४, बिलावलु, मः १)
जागु सलोनड़ीए बोलै गुरबाणी राम ॥ (८४४-५, बिलावलु, मः १)
जिनि सुणि मंनिअड़ी अकथ कहाणी राम ॥ (८४४-५, बिलावलु, मः १)
अकथ कहाणी पदु निरबाणी को विरला गुरमुखि बूझए ॥ (८४४-६, बिलावलु, मः १)
ओहु सबदि समाए आपु गवाए त्रिभवण सोझी सूझए ॥ (८४४-६, बिलावलु, मः १)
रहै अतीतु अपरम्परि राता साचु मनि गुण सारिआ ॥ (८४४-७, बिलावलु, मः १)
ओहु पूरि रहिआ सर्ब ठाई नानका उरि धारिआ ॥३॥ (८४४-७, बिलावलु, मः १)
महलि बुलाइड़ीए भगति सनेही राम ॥ (८४४-८, बिलावलु, मः १)
गुरमति मनि रहसी सीझसि देही राम ॥ (८४४-८, बिलावलु, मः १)
मनु मारि रीझै सबदि सीझै त्रै लोक नाथु पछाणए ॥ (८४४-९, बिलावलु, मः १)
मनु डीगि डोलि न जाइ कत ही आपणा पिरु जाणए ॥ (८४४-९, बिलावलु, मः १)
मै आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ ॥ (८४४-१०, बिलावलु, मः १)
साचि सूचा सदा नानक गुर सबदि झगरु निबेरओ ॥४॥२॥ (८४४-१०, बिलावलु, मः १)
छंत बिलावलु महला ४ मंगल (८४४-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८४४-१२)
मेरा हरि प्रभु सेजै आइआ मनु सुखि समाणा राम ॥ (८४४-१३, बिलावलु, मः ४)
गुरि तुठै हरि प्रभु पाइआ रंगि रलीआ माणा राम ॥ (८४४-१३, बिलावलु, मः ४)
वडभागीआ सोहागणी हरि मसतकि माणा राम ॥ (८४४-१४, बिलावलु, मः ४)
हरि प्रभु हरि सोहागु है नानक मनि भाणा राम ॥१॥ (८४४-१४, बिलावलु, मः ४)
निम्माणिआ हरि माणु है हरि प्रभु हरि आपै राम ॥ (८४४-१५, बिलावलु, मः ४)
गुरमुखि आपु गवाइआ नित हरि हरि जापै राम ॥ (८४४-१५, बिलावलु, मः ४)
मेरे हरि प्रभ भावै सो करै हरि रंगि हरि रापै राम ॥ (८४४-१६, बिलावलु, मः ४)
जनु नानकु सहजि मिलाइआ हरि रसि हरि ध्रापै राम ॥२॥ (८४४-१६, बिलावलु, मः ४)
माणस जनमि हरि पाईऐ हरि रावण वेरा राम ॥ (८४४-१७, बिलावलु, मः ४)
गुरमुखि मिलु सोहागणी रंगु होइ घणेरा राम ॥ (८४४-१७, बिलावलु, मः ४)
जिन माणस जनमि न पाइआ तिन्ह भागु मंदेरा राम ॥ (८४४-१८, बिलावलु, मः ४)
हरि हरि हरि हरि राखु प्रभ नानकु जनु तेरा राम ॥३॥ (८४४-१८, बिलावलु, मः ४)
गुरि हरि प्रभु अगमु दृड़ाइआ मनु तनु रंगि भीना राम ॥ (८४४-१९, बिलावलु, मः ४)

पन्ना ८४५

भगति वछलु हरि नामु है गुरमुखि हरि लीना राम ॥ (८४५-१, बिलावलु, मः ४)
बिनु हरि नाम न जीवदे जिउ जल बिनु मीना राम ॥ (८४५-१, बिलावलु, मः ४)
सफल जनमु हरि पाइआ नानक प्रभि कीना राम ॥४॥१॥३॥ (८४५-२, बिलावलु, मः ४)

बिलावलु महला ४ सलोकु ॥ (८४५-२)
हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु मनि वसै वडभागु ॥ (८४५-३, बिलावलु, मः ४)
गुरि पूरै वेखालिआ नानक हरि लिव लागु ॥१॥ (८४५-३, बिलावलु, मः ४)
छंत ॥ (८४५-३)
मेरा हरि प्रभु रावणि आईआ हउमै बिखु झागे राम ॥ (८४५-४, बिलावलु, मः ४)
गुरमति आपु मिटाइआ हरि हरि लिव लागे राम ॥ (८४५-४, बिलावलु, मः ४)
अंतरि कमलु परगासिआ गुर गिआनी जागे राम ॥ (८४५-५, बिलावलु, मः ४)
जन नानक हरि प्रभु पाइआ पूरै वडभागे राम ॥१॥ (८४५-५, बिलावलु, मः ४)
हरि प्रभु हरि मनि भाइआ हरि नामि वधाई राम ॥ (८४५-६, बिलावलु, मः ४)
गुरि पूरै प्रभु पाइआ हरि हरि लिव लाई राम ॥ (८४५-६, बिलावलु, मः ४)
अगिआनु अंधेरा कटिआ जोति परगटिआई राम ॥ (८४५-७, बिलावलु, मः ४)
जन नानक नामु अधारु है हरि नामि समाई राम ॥२॥ (८४५-७, बिलावलु, मः ४)
धन हरि प्रभि पिआरै रावीआ जाँ हरि प्रभ भाई राम ॥ (८४५-८, बिलावलु, मः ४)
अखी प्रेम कसाईआ जिउ बिलक मसाई राम ॥ (८४५-८, बिलावलु, मः ४)
गुरि पूरै हरि मेलिआ हरि रसि आघाई राम ॥ (८४५-९, बिलावलु, मः ४)
जन नानक नामि विगसिआ हरि हरि लिव लाई राम ॥३॥ (८४५-९, बिलावलु, मः ४)
हम मूरख मुगध मिलाइआ हरि किरपा धारी राम ॥ (८४५-१०, बिलावलु, मः ४)
धनु धन्नु गुरू साबासि है जिनि हउमै मारी राम ॥ (८४५-१०, बिलावलु, मः ४)
जिन्‍ वडभागीआ वडभागु है हरि हरि उर धारी राम ॥ (८४५-११, बिलावलु, मः ४)
जन नानक नामु सलाहि तू नामे बलिहारी राम ॥४॥२॥४॥ (८४५-१२, बिलावलु, मः ४)
बिलावलु महला ५ छंत (८४५-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८४५-१३)
मंगल साजु भइआ प्रभु अपना गाइआ राम ॥ (८४५-१४, बिलावलु, मः ५)
अबिनासी वरु सुणिआ मनि उपजिआ चाइआ राम ॥ (८४५-१४, बिलावलु, मः ५)
मनि प्रीति लागै वडै भागै कब मिलीऐ पूरन पते ॥ (८४५-१५, बिलावलु, मः ५)
सहजे समाईऐ गोविंदु पाईऐ देहु सखीए मोहि मते ॥ (८४५-१५, बिलावलु, मः ५)
दिनु रैणि ठाढी करउ सेवा प्रभु कवन जुगती पाइआ ॥ (८४५-१६, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक करहु किरपा लैहु मोहि लड़ि लाइआ ॥१॥ (८४५-१६, बिलावलु, मः ५)
भइआ समाहड़ा हरि रतनु विसाहा राम ॥ (८४५-१७, बिलावलु, मः ५)
खोजी खोजि लधा हरि संतन पाहा राम ॥ (८४५-१७, बिलावलु, मः ५)
मिले संत पिआरे दइआ धारे कथहि अकथ बीचारो ॥ (८४५-१८, बिलावलु, मः ५)
इक चिति इक मनि धिआइ सुआमी लाइ प्रीति पिआरो ॥ (८४५-१८, बिलावलु, मः ५)
कर जोड़ि प्रभ पहि करि बिनंती मिलै हरि जसु लाहा ॥ (८४५-१९, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक दासु तेरा मेरा प्रभु अगम अथाहा ॥२॥ (८४५-१९, बिलावलु, मः ५)

साहा अटलु गणिआ पूरन संजोगो राम ॥ (८४६-१, बिलावलु, मः ५)
सुखह समूह भइआ गइआ विजोगो राम ॥ (८४६-१, बिलावलु, मः ५)
मिलि संत आए प्रभ धिआए बणे अचरज जाञीआँ ॥ (८४६-२, बिलावलु, मः ५)
मिलि इकत्र होए सहजि ढोए मनि प्रीति उपजी माञीआ ॥ (८४६-२, बिलावलु, मः ५)
मिलि जोति जोती ओति पोती हरि नामु सभि रस भोगो ॥ (८४६-३, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक सभ संति मेली प्रभु करण कारण जोगो ॥३॥ (८४६-३, बिलावलु, मः ५)
भवनु सुहावड़ा धरति सभागी राम ॥ (८४६-४, बिलावलु, मः ५)
प्रभु घरि आइअड़ा गुर चरणी लागी राम ॥ (८४६-४, बिलावलु, मः ५)
गुर चरण लागी सहजि जागी सगल इछा पुन्नीआ ॥ (८४६-५, बिलावलु, मः ५)
मेरी आस पूरी संत धूरी हरि मिले कंत विछुंनिआ ॥ (८४६-५, बिलावलु, मः ५)
आनंद अनदिनु वजहि वाजे अहं मति मन की तिआगी ॥ (८४६-६, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी संतसंगि लिव लागी ॥४॥१॥ (८४६-६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८४६-७)
भाग सुलखणा हरि कंतु हमारा राम ॥ (८४६-७, बिलावलु, मः ५)
अनहद बाजित्रा तिसु धुनि दरबारा राम ॥ (८४६-८, बिलावलु, मः ५)
आनंद अनदिनु वजहि वाजे दिनसु रैणि उमाहा ॥ (८४६-८, बिलावलु, मः ५)
तह रोग सोग न दूखु बिआपै जनम मरणु न ताहा ॥ (८४६-८, बिलावलु, मः ५)
रिधि सिधि सुधा रसु अमृतु भगति भरे भंडारा ॥ (८४६-९, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक बलिहारि वंञा पारब्रह्म प्रान अधारा ॥१॥ (८४६-१०, बिलावलु, मः ५)
सुणि सखीअ सहेलड़ीहो मिलि मंगलु गावह राम ॥ (८४६-१०, बिलावलु, मः ५)
मनि तनि प्रेमु करे तिसु प्रभ कउ रावह राम ॥ (८४६-११, बिलावलु, मः ५)
करि प्रेमु रावह तिसै भावह इक निमख पलक न तिआगीऐ ॥ (८४६-११, बिलावलु, मः ५)
गहि कंठि लाईऐ नह लजाईऐ चरन रज मनु पागीऐ ॥ (८४६-१२, बिलावलु, मः ५)
भगति ठगउरी पाइ मोहह अनत कतहू न धावह ॥ (८४६-१२, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक मिलि संगि साजन अमर पदवी पावह ॥२॥ (८४६-१३, बिलावलु, मः ५)
बिसमन बिसम भई पेखि गुण अबिनासी राम ॥ (८४६-१३, बिलावलु, मः ५)
करु गहि भुजा गही कटि जम की फासी राम ॥ (८४६-१४, बिलावलु, मः ५)
गहि भुजा लीन्ही दासि कीन्ही अंकुरि उदोतु जणाइआ ॥ (८४६-१४, बिलावलु, मः ५)
मलन मोह बिकार नाठे दिवस निर्मल आइआ ॥ (८४६-१५, बिलावलु, मः ५)
दृसटि धारी मनि पिआरी महा दुरमति नासी ॥ (८४६-१६, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक भई निर्मल प्रभ मिले अबिनासी ॥३॥ (८४६-१६, बिलावलु, मः ५)
सूरज किरणि मिले जल का जलु हूआ राम ॥ (८४६-१७, बिलावलु, मः ५)
जोती जोति रली सम्पूरनु थीआ राम ॥ (८४६-१७, बिलावलु, मः ५)

ब्रहमु दीसै ब्रहमु सुणीऐ एकु एकु वखाणीऐ ॥ (८४६-१७, बिलावलु, मः ५)
आतम पसारा करणहारा प्रभ बिना नही जाणीऐ ॥ (८४६-१८, बिलावलु, मः ५)
आपि करता आपि भुगता आपि कारणु कीआ ॥ (८४६-१८, बिलावलु, मः ५)
बिनवंति नानक सेई जाणहि जिन्ही हरि रसु पीआ ॥४॥२॥ (८४६-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८४७

बिलावलु महला ५ छंत (८४७-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८४७-१)
सखी आउ सखी वसि आउ सखी असी पिर का मंगलु गावह ॥ (८४७-२, बिलावलु, मः ५)
तजि मानु सखी तजि मानु सखी मतु आपणे प्रीतम भावह ॥ (८४७-२, बिलावलु, मः ५)
तजि मानु मोहु बिकारु दूजा सेवि एकु निरंजनो ॥ (८४७-३, बिलावलु, मः ५)
लगु चरण सरण दइआल प्रीतम सगल दुरत बिखंडनो ॥ (८४७-३, बिलावलु, मः ५)
होइ दास दासी तजि उदासी बहुड़ि बिधी न धावा ॥ (८४७-४, बिलावलु, मः ५)
नानकु पइअम्पै करहु किरपा तामि मंगलु गावा ॥१॥ (८४७-४, बिलावलु, मः ५)
अमृतु प्रिअ का नामु मै अंधुले टोहनी ॥ (८४७-५, बिलावलु, मः ५)
ओह जोहै बहु परकार सुंदरि मोहनी ॥ (८४७-५, बिलावलु, मः ५)
मोहनी महा बचित्र चंचलि अनिक भाव दिखावए ॥ (८४७-६, बिलावलु, मः ५)
होइ ढीठ मीठी मनहि लागै नामु लैण न आवए ॥ (८४७-६, बिलावलु, मः ५)
गृह बनहि तीरै बरत पूजा बाट घाटै जोहनी ॥ (८४७-७, बिलावलु, मः ५)
नानकु पइअम्पै दइआ धारहु मै नामु अंधुले टोहनी ॥२॥ (८४७-७, बिलावलु, मः ५)
मोहि अनाथ प्रिअ नाथ जिउ जानहु तिउ रखहु ॥ (८४७-८, बिलावलु, मः ५)
चतुराई मोहि नाहि रीझावउ कहि मुखहु ॥ (८४७-८, बिलावलु, मः ५)
नह चतुरि सुघरि सुजान बेती मोहि निरगुनि गुनु नही ॥ (८४७-९, बिलावलु, मः ५)
नह रूप धूप न नैण बंके जह भावै तह रखु तुही ॥ (८४७-९, बिलावलु, मः ५)
जै जै जइअम्पहि सगल जा कउ करुणापति गति किनि लखहु ॥ (८४७-१०, बिलावलु, मः ५)
नानकु पइअम्पै सेव सेवकु जिउ जानहु तिउ मोहि रखहु ॥३॥ (८४७-१०, बिलावलु, मः ५)
मोहि मछुली तुम नीर तुझ बिनु किउ सरै ॥ (८४७-११, बिलावलु, मः ५)
मोहि चातृक तुम्ह बूंद तृपतउ मुखि परै ॥ (८४७-११, बिलावलु, मः ५)
मुखि परै हरै पिआस मेरी जीअ हीआ प्रानपते ॥ (८४७-१२, बिलावलु, मः ५)
लाडिले लाड लडाइ सभ महि मिलु हमारी होइ गते ॥ (८४७-१२, बिलावलु, मः ५)
चीति चितवउ मिटु अंधारे जिउ आस चकवी दिनु चरै ॥ (८४७-१३, बिलावलु, मः ५)
नानकु पइअम्पै प्रिअ संगि मेली मछुली नीरु न वीसरै ॥४॥ (८४७-१३, बिलावलु, मः ५)
धनि धंनि हमारे भाग घरि आइआ पिरु मेरा ॥ (८४७-१४, बिलावलु, मः ५)
सोहे बंक दुआर सगला बनु हरा ॥ (८४७-१५, बिलावलु, मः ५)
हर हरा सुआमी सुखह गामी अनद मंगल रसु घणा ॥ (८४७-१५, बिलावलु, मः ५)

नवल नवतन नाहु बाला कवन रसना गुन भणा ॥ (८४७-१५, बिलावलु, मः ५)
मेरी सेज सोही देखि मोही सगल सहसा दुखु हरा ॥ (८४७-१६, बिलावलु, मः ५)
नानकु पइअम्पै मेरी आस पूरी मिले सुआमी अपरम्परा ॥५॥१॥३॥ (८४७-१६, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ छंत मंगल (८४७-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८४७-१८)
सलोकु ॥ (८४७-१८)
सुंदर साँति दइआल प्रभ सर्ब सुखा निधि पीउ ॥ (८४७-१८, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८४८

सुख सागर प्रभ भेटिऐ नानक सुखी होत इहु जीउ ॥१॥ (८४८-१, बिलावलु, मः ५)
छंत ॥ (८४८-१)
सुख सागर प्रभु पाईऐ जब होवै भागो राम ॥ (८४८-२, बिलावलु, मः ५)
माननि मानु वञाईऐ हरि चरणी लागो राम ॥ (८४८-२, बिलावलु, मः ५)
छोडि सिआनप चातुरी दुरमति बुधि तिआगो राम ॥ (८४८-२, बिलावलु, मः ५)
नानक पउ सरणाई राम राइ थिरु होइ सुहागो राम ॥१॥ (८४८-३, बिलावलु, मः ५)
सो प्रभु तजि कत लागीऐ जिसु बिनु मरि जाईऐ राम ॥ (८४८-४, बिलावलु, मः ५)
लाज न आवै अगिआन मती दुरजन बिरमाईऐ राम ॥ (८४८-४, बिलावलु, मः ५)
पतित पावन प्रभु तिआगि करे कहु कत ठहराईऐ राम ॥ (८४८-५, बिलावलु, मः ५)
नानक भगति भाउ करि दइआल की जीवन पदु पाईऐ राम ॥२॥ (८४८-५, बिलावलु, मः ५)
स्री गोपालु न उचरहि बलि गईए दुहचारणि रसना राम ॥ (८४८-६, बिलावलु, मः ५)
प्रभु भगति वछलु नह सेवही काइआ काक ग्रसना राम ॥ (८४८-७, बिलावलु, मः ५)
भ्रमि मोही दूख न जाणही कोटि जोनी बसना राम ॥ (८४८-७, बिलावलु, मः ५)
नानक बिनु हरि अवरु जि चाहना बिसटा क्रिम भसमा राम ॥३॥ (८४८-८, बिलावलु, मः ५)
लाइ बिरहु भगवंत संगे होइ मिलु बैरागनि राम ॥ (८४८-८, बिलावलु, मः ५)
चंदन चीर सुगंध रसा हउमै बिखु तिआगनि राम ॥ (८४८-९, बिलावलु, मः ५)
ईत ऊत नह डोलीऐ हरि सेवा जागनि राम ॥ (८४८-१०, बिलावलु, मः ५)
नानक जिनि प्रभु पाइआ आपणा सा अटल सुहागनि राम ॥४॥१॥४॥ (८४८-१०, बिलावलु, मः ५)
बिलावलु महला ५ ॥ (८४८-११)
हरि खोजहु वडभागीहो मिलि साधू संगे राम ॥ (८४८-११, बिलावलु, मः ५)
गुन गोविद सद गाईअहि पारब्रह्म कै रंगे राम ॥ (८४८-११, बिलावलु, मः ५)
सो प्रभु सद ही सेवीऐ पाईअहि फल मंगे राम ॥ (८४८-१२, बिलावलु, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती जपि अनत तरंगे राम ॥१॥ (८४८-१२, बिलावलु, मः ५)
इकु तिलु प्रभू न वीसरै जिनि सभु किछु दीना राम ॥ (८४८-१३, बिलावलु, मः ५)
वडभागी मेलावड़ा गुरमुखि पिरु चीन्हा राम ॥ (८४८-१४, बिलावलु, मः ५)
बाह पकड़ि तम ते काढिआ करि अपुना लीना राम ॥ (८४८-१४, बिलावलु, मः ५)

नामु जपत नानक जीवै सीतलु मनु सीना राम ॥२॥ (८४८-१५, बिलावलु, मः ५)
किआ गुण तेरे कहि सकउ प्रभ अंतरजामी राम ॥ (८४८-१५, बिलावलु, मः ५)
सिमरि सिमरि नाराइणै भए पारगरामी राम ॥ (८४८-१६, बिलावलु, मः ५)
गुन गावत गोविंद के सभ इछ पुजामी राम ॥ (८४८-१६, बिलावलु, मः ५)
नानक उधरे जपि हरे सभहू का सुआमी राम ॥३॥ (८४८-१७, बिलावलु, मः ५)
रस भिंनिअड़े अपुने राम संगे से लोइण नीके राम ॥ (८४८-१७, बिलावलु, मः ५)
प्रभ पेखत इछा पुन्नीआ मिलि साजन जी के राम ॥ (८४८-१८, बिलावलु, मः ५)
अमृत रसु हरि पाइआ बिखिआ रस फीके राम ॥ (८४८-१८, बिलावलु, मः ५)
नानक जलु जलहि समाइआ जोती जोति मीके राम ॥४॥२॥५॥९॥ (८४८-१९, बिलावलु, मः ५)

पन्ना ८४९

बिलावलु की वार महला ४ (८४९-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८४९-१)
सलोक मः ४ ॥ (८४९-२)
हरि उतमु हरि प्रभु गाविआ करि नादु बिलावलु रागु ॥ (८४९-२, बिलावलु, मः ४)
उपदेसु गुरू सुणि मंनिआ धुरि मसतकि पूरा भागु ॥ (८४९-२, बिलावलु, मः ४)
सभ दिनसु रैणि गुण उचरै हरि हरि हरि उरि लिव लागु ॥ (८४९-३, बिलावलु, मः ४)
सभु तनु मनु हरिआ होइआ मनु खिड़िआ हरिआ बागु ॥ (८४९-३, बिलावलु, मः ४)
अगिआनु अंधेरा मिटि गइआ गुर चानणु गिआनु चरागु ॥ (८४९-४, बिलावलु, मः ४)
जनु नानकु जीवै देखि हरि इक निमख घड़ी मुखि लागु ॥१॥ (८४९-५, बिलावलु, मः ४)
मः ३ ॥ (८४९-५)
बिलावलु तब ही कीजीऐ जब मुखि होवै नामु ॥ (८४९-५, बिलावलु, मः ३)
राग नाद सबदि सोहणे जा लागै सहजि धिआनु ॥ (८४९-६, बिलावलु, मः ३)
राग नाद छोडि हरि सेवीऐ ता दरगह पाईऐ मानु ॥ (८४९-६, बिलावलु, मः ३)
नानक गुरमुखि ब्रह्मु बीचारीऐ चूकै मनि अभिमानु ॥२॥ (८४९-७, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८४९-७)
तू हरि प्रभु आपि अगम्मु है सभि तुधु उपाइआ ॥ (८४९-८, बिलावलु, मः ३)
तू आपे आपि वरतदा सभु जगतु सबाइआ ॥ (८४९-८, बिलावलु, मः ३)
तुधु आपे ताड़ी लाईऐ आपे गुण गाइआ ॥ (८४९-८, बिलावलु, मः ३)
हरि धिआवहु भगतहु दिनसु राति अंति लए छडाइआ ॥ (८४९-९, बिलावलु, मः ३)
जिनि सेविआ तिनि सुखु पाइआ हरि नामि समाइआ ॥१॥ (८४९-१०, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८४९-१०)
दूजै भाइ बिलावलु न होवई मनमुखि थाइ न पाइ ॥ (८४९-१०, बिलावलु, मः ३)
पाखंडि भगति न होवई पारब्रह्मु न पाइआ जाइ ॥ (८४९-११, बिलावलु, मः ३)
मनहठि कर्म कमावणे थाइ न कोई पाइ ॥ (८४९-११, बिलावलु, मः ३)

नानक गुरमुखि आपु बीचारीऐ विचहु आपु गवाइ ॥ (८४६-१२, बिलावलु, मः ३)
आपे आपि पारब्रह्मु है पारब्रह्मु वसिआ मनि आइ ॥ (८४६-१२, बिलावलु, मः ३)
जम्मणु मरणा कटिआ जोती जोति मिलाइ ॥१॥ (८४६-१३, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८४६-१३)
बिलावलु करिहु तुम् पिआरिहो एकसु सिउ लिव लाइ ॥ (८४६-१४, बिलावलु, मः ३)
जनम मरण दुखु कटीऐ सचे रहै समाइ ॥ (८४६-१४, बिलावलु, मः ३)
सदा बिलावलु अनंदु है जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (८४६-१५, बिलावलु, मः ३)
सतसंगती बहि भाउ करि सदा हरि के गुण गाइ ॥ (८४६-१५, बिलावलु, मः ३)
नानक से जन सोहणे जि गुरमुखि मेलि मिलाइ ॥२॥ (८४६-१६, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८४६-१६)
सभना जीआ विचि हरि आपि सो भगता का मितु हरि ॥ (८४६-१६, बिलावलु, मः ३)
सभु कोई हरि कै वसि भगता कै अनंदु घरि ॥ (८४६-१७, बिलावलु, मः ३)
हरि भगता का मेली सरबत सउ निसुल जन टंग धरि ॥ (८४६-१७, बिलावलु, मः ३)
हरि सभना का है खसमु सो भगत जन चिति करि ॥ (८४६-१८, बिलावलु, मः ३)
तुधु अपड़ि कोइ न सकै सभ झखि झखि पवै झड़ि ॥२॥ (८४६-१८, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८५०

सलोक मः ३ ॥ (८५०-१)
ब्रह्मु बिंदहि ते ब्राहमणा जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (८५०-१, बिलावलु, मः ३)
जिन कै हिरदै हरि वसै हउमै रोगु गवाइ ॥ (८५०-१, बिलावलु, मः ३)
गुण रवहि गुण संग्रहहि जोती जोति मिलाइ ॥ (८५०-२, बिलावलु, मः ३)
इसु जुग महि विरले ब्राहमण ब्रह्मु बिंदहि चितु लाइ ॥ (८५०-२, बिलावलु, मः ३)
नानक जिन् कउ नदरि करे हरि सचा से नामि रहे लिव लाइ ॥१॥ (८५०-३, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५०-४)
सतिगुर की सेव न कीतीआ सबदि न लगो भाउ ॥ (८५०-४, बिलावलु, मः ३)
हउमै रोगु कमावणा अति दीरघु बहु सुआउ ॥ (८५०-४, बिलावलु, मः ३)
मनहठि कर्म कमावणे फिरि फिरि जोनी पाइ ॥ (८५०-५, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि जनमु सफलु है जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ (८५०-५, बिलावलु, मः ३)
नानक नदरी नदरि करे ता नाम धनु पलै पाइ ॥२॥ (८५०-६, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५०-६)
सभ वडिआईआ हरि नाम विचि हरि गुरमुखि धिआईऐ ॥ (८५०-६, बिलावलु, मः ३)
जि वसतु मंगीऐ साई पाईऐ जे नामि चितु लाईऐ ॥ (८५०-७, बिलावलु, मः ३)
गुहज गल जीअ की कीचै सतिगुरू पासि ता सर्ब सुखु पाईऐ ॥ (८५०-८, बिलावलु, मः ३)
गुरु पूरा हरि उपदेसु देइ सभ भुख लहि जाईऐ ॥ (८५०-८, बिलावलु, मः ३)
जिसु पूरबि होवै लिखिआ सो हरि गुण गाईऐ ॥३॥ (८५०-९, बिलावलु, मः ३)

सलोक मः ३ ॥ (८५०-९)
सतिगुर ते खाली को नही मेरै प्रभि मेलि मिलाए ॥ (८५०-९, बिलावलु, मः ३)
सतिगुर का दरसनु सफलु है जेहा को इछे तेहा फलु पाए ॥ (८५०-१०, बिलावलु, मः ३)
गुर का सबदु अमृतु है सभ तृसना भुख गवाए ॥ (८५०-१०, बिलावलु, मः ३)
हरि रसु पी संतोखु होआ सचु वसिआ मनि आए ॥ (८५०-११, बिलावलु, मः ३)
सचु धिआइ अमरा पदु पाइआ अनहद सबद वजाए ॥ (८५०-११, बिलावलु, मः ३)
सचो दह दिसि पसरिआ गुर कै सहजि सुभाए ॥ (८५०-१२, बिलावलु, मः ३)
नानक जिन अंदरि सचु है से जन छपहि न किसै दे छपाए ॥१॥ (८५०-१३, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५०-१३)
गुर सेवा ते हरि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥ (८५०-१३, बिलावलु, मः ३)
मानस ते देवते भए सची भगति जिसु देइ ॥ (८५०-१४, बिलावलु, मः ३)
हउमै मारि मिलाइअनु गुर कै सबदि सुचेइ ॥ (८५०-१४, बिलावलु, मः ३)
नानक सहजे मिलि रहे नामु वडिआई देइ ॥२॥ (८५०-१५, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५०-१५)
गुर सतिगुर विचि नावै की वडी वडिआई हरि करतै आपि वधाई ॥ (८५०-१५, बिलावलु, मः ३)
सेवक सिख सभि वेखि वेखि जीवन्हि ओन्हा अंदरि हिरदै भाई ॥ (८५०-१६, बिलावलु, मः ३)
निंदक दुसट वडिआई वेखि न सकनि ओन्हा पराइआ भला न सुखाई ॥ (८५०-१७, बिलावलु, मः ३)
किआ होवै किस ही की झख मारी जा सचे सिउ बणि आई ॥ (८५०-१७, बिलावलु, मः ३)
जि गल करते भावै सा नित नित चड़ै सवाई सभ झखि झखि मरै लोकाई ॥४॥ (८५०-१८, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५०-१९)
ध्रिगु एह आसा दूजे भाव की जो मोहि माइआ चितु लाए ॥ (८५०-१९, बिलावलु, मः ३)
हरि सुखु पल्हरि तिआगिआ नामु विसारि दुखु पाए ॥ (८५०-१९, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८५१

मनमुख अगिआनी अंधुले जनमि मरहि फिरि आवै जाए ॥ (८५१-१, बिलावलु, मः ३)
कारज सिधि न होवनी अंति गइआ पछुताए ॥ (८५१-२, बिलावलु, मः ३)
जिसु करमु होवै तिसु सतिगुरु मिलै सो हरि हरि नामु धिआए ॥ (८५१-२, बिलावलु, मः ३)
नामि रते जन सदा सुखु पाइन्हि जन नानक तिन बलि जाए ॥१॥ (८५१-३, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५१-३)
आसा मनसा जगि मोहणी जिनि मोहिआ संसारु ॥ (८५१-३, बिलावलु, मः ३)
सभु को जम के चीरे विचि है जेता सभु आकारु ॥ (८५१-४, बिलावलु, मः ३)
हुकमी ही जमु लगदा सो उबरै जिसु बखसै करतारु ॥ (८५१-४, बिलावलु, मः ३)
नानक गुर परसादी एहु मनु ताँ तरै जा छोडै अहंकारु ॥ (८५१-५, बिलावलु, मः ३)
आसा मनसा मारे निरासु होइ गुर सबदी वीचारु ॥२॥ (८५१-५, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५१-६)

जिथै जाईऐ जगत महि तिथै हरि साई ॥ (८५१-६, बिलावलु, मः ३)
अगै सभु आपे वरतदा हरि सचा निआई ॥ (८५१-७, बिलावलु, मः ३)
कूड़िआरा के मुह फिटकीअहि सचु भगति वडिआई ॥ (८५१-७, बिलावलु, मः ३)
सचु साहिबु सचा निआउ है सिरि निंदक छाई ॥ (८५१-७, बिलावलु, मः ३)
जन नानक सचु अराधिआ गुरमुखि सुखु पाई ॥५॥ (८५१-८, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५१-९)
पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ (८५१-९, बिलावलु, मः ३)
ओपावा सिरि ओपाउ है नाउ परापति होइ ॥ (८५१-९, बिलावलु, मः ३)
अंदरु सीतलु साँति है हिरदै सदा सुखु होइ ॥ (८५१-१०, बिलावलु, मः ३)
अमृतु खाणा पैन्णा नानक नाइ वडिआई होइ ॥१॥ (८५१-१०, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५१-११)
ए मन गुर की सिख सुणि पाइहि गुणी निधानु ॥ (८५१-११, बिलावलु, मः ३)
सुखदाता तेरै मनि वसै हउमै जाइ अभिमानु ॥ (८५१-११, बिलावलु, मः ३)
नानक नदरी पाईऐ अमृतु गुणी निधानु ॥२॥ (८५१-१२, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५१-१२)
जितने पातिसाह साह राजे खान उमराव सिकदार हहि तितने सभि हरि के कीए ॥ (८५१-१२, बिलावलु, मः ३)
जो किछु हरि करावै सु ओइ करहि सभि हरि के अरथीए ॥ (८५१-१३, बिलावलु, मः ३)
सो ऐसा हरि सभना का प्रभु सतिगुर कै वलि है तिनि सभि वरन चारे खाणी सभ सृसटि गोले करि सतिगुर अगै कार कमावण कउ दीए ॥ (८५१-१४, बिलावलु, मः ३)
हरि सेवे की ऐसी वडिआई देखहु हरि संतहु जिनि विचहु काइआ नगरी दुसमन दूत सभि मारि कढीए ॥ (८५१-१५, बिलावलु, मः ३)
हरि हरि किरपालु होआ भगत जना उपरि हरि आपणी किरपा करि हरि आपि रखि लीए ॥६॥ (८५१-१६, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५१-१७)
अंदरि कपटु सदा दुखु है मनमुख धिआनु न लागै ॥ (८५१-१७, बिलावलु, मः ३)
दुख विचि कार कमावणी दुखु वरतै दुखु आगै ॥ (८५१-१८, बिलावलु, मः ३)
करमी सतिगुरु भेटीऐ ता सचि नामि लिव लागै ॥ (८५१-१८, बिलावलु, मः ३)
नानक सहजे सुखु होइ अंदरहु भ्रमु भउ भागै ॥१॥ (८५१-१९, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५१-१९)
गुरमुखि सदा हरि रंगु है हरि का नाउ मनि भाइआ ॥ (८५१-१९, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८५२

गुरमुखि वेखणु बोलणा नामु जपत सुखु पाइआ ॥ (८५२-१, बिलावलु, मः ३)
नानक गुरमुखि गिआनु प्रगासिआ तिमर अगिआनु अंधेरु चुकाइआ ॥२॥ (८५२-१, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५२-२)

मनमुख मैले मरहि गवार ॥ (८५२-२, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि निर्मल हरि राखिआ उर धारि ॥ (८५२-३, बिलावलु, मः ३)
भनति नानकु सुणहु जन भाई ॥ (८५२-३, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरु सेविहु हउमै मलु जाई ॥ (८५२-३, बिलावलु, मः ३)
अंदरि संसा दूखु विआपे सिरि धंधा नित मार ॥ (८५२-४, बिलावलु, मः ३)
दूजै भाइ सूते कबहु न जागहि माइआ मोह पिआर ॥ (८५२-४, बिलावलु, मः ३)
नामु न चेतहि सबदु न वीचारहि इहु मनमुख का बीचार ॥ (८५२-५, बिलावलु, मः ३)
हरि नामु न भाइआ बिरथा जनमु गवाइआ नानक जमु मारि करे खुआर ॥३॥ (८५२-५, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५२-६)
जिस नो हरि भगति सचु बखसीअनु सो सचा साहु ॥ (८५२-६, बिलावलु, मः ३)
तिस की मुहताजी लोकु कढदा होरतु हटि न वथु न वेसाहु ॥ (८५२-७, बिलावलु, मः ३)
भगत जना कउ सनमुखु होवै सु हरि रासि लए वेमुख भसु पाहु ॥ (८५२-७, बिलावलु, मः ३)
हरि के नाम के वापारी हरि भगत हहि जमु जागाती तिना नेड़ि न जाहु ॥ (८५२-८, बिलावलु, मः ३)
जन नानकि हरि नाम धनु लदिआ सदा वेपरवाहु ॥७॥ (८५२-९, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५२-९)
इसु जुग महि भगती हरि धनु खटिआ होरु सभु जगतु भरमि भुलाइआ ॥ (८५२-९, बिलावलु, मः ३)
गुर परसादी नामु मनि वसिआ अनदिनु नामु धिआइआ ॥ (८५२-१०, बिलावलु, मः ३)
बिखिआ माहि उदास है हउमै सबदि जलाइआ ॥ (८५२-११, बिलावलु, मः ३)
आपि तरिआ कुल उधरे धन्नु जणेदी माइआ ॥ (८५२-११, बिलावलु, मः ३)
सदा सहजु सुखु मनि वसिआ सचे सिउ लिव लाइआ ॥ (८५२-१२, बिलावलु, मः ३)
ब्रह्मा बिसनु महादेउ त्रै गुण भुले हउमै मोहु वधाइआ ॥ (८५२-१२, बिलावलु, मः ३)
पंडित पड़ि पड़ि मोनी भुले दूजै भाइ चितु लाइआ ॥ (८५२-१३, बिलावलु, मः ३)
जोगी जंगम संनिआसी भुले विणु गुर ततु न पाइआ ॥ (८५२-१४, बिलावलु, मः ३)
मनमुख दुखीए सदा भ्रमि भुले तिन्ही बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (८५२-१४, बिलावलु, मः ३)
नानक नामि रते सेई जन समधे जि आपे बखसि मिलाइआ ॥१॥ (८५२-१५, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५२-१५)
नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ (८५२-१५, बिलावलु, मः ३)
तिसहि सरेवहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (८५२-१६, बिलावलु, मः ३)
गुरमुखि अंतरि मनि वसै सदा सदा सुखु होइ ॥२॥ (८५२-१६, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५२-१७)
जिनी गुरमुखि हरि नाम धनु न खटिओ से देवालीए जुग माहि ॥ (८५२-१७, बिलावलु, मः ३)
ओइ मंगदे फिरहि सभ जगत महि कोई मुहि थुक न तिन कउ पाहि ॥ (८५२-१८, बिलावलु, मः ३)
पराई बखीली करहि आपणी परतीति खोवनि सगवा भी आपु लखाहि ॥ (८५२-१८, बिलावलु, मः ३)
जिसु धन कारणि चुगली करहि सो धनु चुगली हथि न आवै ओइ भावै तिथै जाहि ॥ (८५२-१९, बिलावलु, मः ३)

गुरमुखि सेवक भाइ हरि धनु मिलै तिथहु करमहीण लै न सकहि होर थै देस दिसंतरि हरि धनु नाहि ॥८॥ (८५३-१, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५३-२)
गुरमुखि संसा मूलि न होवई चिंता विचहु जाइ ॥ (८५३-२, बिलावलु, मः ३)
जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ (८५३-३, बिलावलु, मः ३)
नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पन्नै पाइ ॥१॥ (८५३-३, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५३-४)
कालु मारि मनसा मनहि समाणी अंतरि निरमलु नाउ ॥ (८५३-४, बिलावलु, मः ३)
अनदिनु जागै कदे न सोवै सहजे अमृतु पिआउ ॥ (८५३-५, बिलावलु, मः ३)
मीठा बोले अमृत बाणी अनदिनु हरि गुण गाउ ॥ (८५३-५, बिलावलु, मः ३)
निज घरि वासा सदा सोहदे नानक तिन मिलिआ सुखु पाउ ॥२॥ (८५३-६, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५३-६)
हरि धनु रतन जवेहरी सो गुरि हरि धनु हरि पासहु देवाइआ ॥ (८५३-६, बिलावलु, मः ३)
जे किसै किहु दिसि आवै ता कोई किहु मंगि लए अकै कोई किहु देवाए एहु हरि धनु जोरि कीतै किसै नालि न जाइ वंडाइआ ॥ (८५३-७, बिलावलु, मः ३)
जिस नो सतिगुर नालि हरि सरधा लाए तिसु हरि धन की वंड हथि आवै जिस नो करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ (८५३-८, बिलावलु, मः ३)
इसु हरि धन का कोई सरीकु नाही किसै का खतु नाही किसै कै सीव बन्नै रोलु नाही जे को हरि धन की बखीली करे तिस का मुहु हरि चहु कुंडा विचि काला कराइआ ॥ (८५३-९, बिलावलु, मः ३)
हरि के दिते नालि किसै जोरु बखीली न चलई दिहु दिहु नित नित चड़ै सवाइआ ॥६॥ (८५३-१०, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५३-११)
जगतु जलंदा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥ (८५३-११, बिलावलु, मः ३)
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (८५३-११, बिलावलु, मः ३)
सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥ (८५३-१२, बिलावलु, मः ३)
नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥१॥ (८५३-१२, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५३-१३)
हउमै माइआ मोहणी दूजै लगै जाइ ॥ (८५३-१३, बिलावलु, मः ३)
ना इह मारी न मरै ना इह हटि विकाइ ॥ (८५३-१३, बिलावलु, मः ३)
गुर कै सबदि परजालीऐ ता इह विचहु जाइ ॥ (८५३-१४, बिलावलु, मः ३)
तनु मनु होवै उजला नामु वसै मनि आइ ॥ (८५३-१४, बिलावलु, मः ३)
नानक माइआ का मारणु सबदु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥२॥ (८५३-१५, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५३-१५)
सतिगुर की वडिआई सतिगुरि दिती धुरहु हुकमु बुझि नीसाणु ॥ (८५३-१६, बिलावलु, मः ३)

पुती भातीई जावाई सकी अगहु पिछहु टोलि डिठा लाहिओनु सभना का अभिमानु ॥ (८५३-१६, बिलावलु, मः ३)
जिथै को वेखै तिथै मेरा सतिगुरू हरि बखसिओसु सभु जहानु ॥ (८५३-१७, बिलावलु, मः ३)
जि सतिगुर नो मिलि मन्ने सु हलति पलति सिझै जि वेमुखु होवै सु फिरै भरिसट थानु ॥ (८५३-१८, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८५४

जन नानक कै वलि होआ मेरा सुआमी हरि सजण पुरखु सुजानु ॥ (८५४-१, बिलावलु, मः ३)
पउदी भिति देखि कै सभि आइ पए सतिगुर की पैरी लाहिओनु सभना किअहु मनहु गुमानु ॥१०॥ (८५४-१, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः १ ॥ (८५४-२)
कोई वाहे को लुणै को पाए खलिहानि ॥ (८५४-२, बिलावलु, मः १)
नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि ॥१॥ (८५४-३, बिलावलु, मः १)
मः १ ॥ (८५४-३)
जिसु मनि वसिआ तरिआ सोइ ॥ (८५४-३, बिलावलु, मः १)
नानक जो भावै सो होइ ॥२॥ (८५४-४, बिलावलु, मः १)
पउड़ी ॥ (८५४-४)
पारब्रहमि दइआलि सागरु तारिआ ॥ (८५४-४, बिलावलु, मः १)
गुरि पूरै मिहरवानि भरमु भउ मारिआ ॥ (८५४-४, बिलावलु, मः १)
काम क्रोधु बिकरालु दूत सभि हारिआ ॥ (८५४-५, बिलावलु, मः १)
अमृत नामु निधानु कंठि उरि धारिआ ॥ (८५४-५, बिलावलु, मः १)
नानक साधू संगि जनमु मरणु सवारिआ ॥११॥ (८५४-६, बिलावलु, मः १)
सलोक मः ३ ॥ (८५४-६)
जिन्ी नामु विसारिआ कूड़े कहण कहंन्ि ॥ (८५४-६, बिलावलु, मः ३)
पंच चोर तिना घरु मुहन्ि हउमै अंदरि संन्ि ॥ (८५४-७, बिलावलु, मः ३)
साकत मुठे दुरमती हरि रसु न जाणंन्ि ॥ (८५४-७, बिलावलु, मः ३)
जिन्ी अमृतु भरमि लुटाइआ बिखु सिउ रचहि रचंन्ि ॥ (८५४-८, बिलावलु, मः ३)
दुसटा सेती पिरहड़ी जन सिउ वादु करंन्ि ॥ (८५४-८, बिलावलु, मः ३)
नानक साकत नरक महि जमि बधे दुख सहंन्ि ॥ (८५४-९, बिलावलु, मः ३)
पइऐ किरति कमावदे जिव राखहि तिवै रहंन्ि ॥१॥ (८५४-९, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५४-१०)
जिन्ी सतिगुरु सेविआ ताणु निताणे तिसु ॥ (८५४-१०, बिलावलु, मः ३)
सासि गिरासि सदा मनि वसै जमु जोहि न सकै तिसु ॥ (८५४-१०, बिलावलु, मः ३)
हिरदै हरि हरि नाम रसु कवला सेवकि तिसु ॥ (८५४-११, बिलावलु, मः ३)
हरि दासा का दासु होइ पर्म पदारथु तिसु ॥ (८५४-११, बिलावलु, मः ३)

नानक मनि तनि जिसु प्रभु वसै हउ सद कुरबाणै तिसु ॥ (८५४-१२, बिलावलु, मः ३)
जिन्ह कउ पूरबि लिखिआ रसु संत जना सिउ तिसु ॥२॥ (८५४-१२, बिलावलु, मः ३)
पउड़ी ॥ (८५४-१३)
जो बोले पूरा सतिगुरू सो परमेसरि सुणिआ ॥ (८५४-१३, बिलावलु, मः ३)
सोई वरतिआ जगत महि घटि घटि मुखि भणिआ ॥ (८५४-१३, बिलावलु, मः ३)
बहुतु वडिआईआ साहिबै नह जाही गणीआ ॥ (८५४-१४, बिलावलु, मः ३)
सचु सहजु अनदु सतिगुरू पासि सची गुर मणीआ ॥ (८५४-१४, बिलावलु, मः ३)
नानक संत सवारे पारब्रहमि सचे जिउ बणिआ ॥१२॥ (८५४-१५, बिलावलु, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (८५४-१५)
अपणा आपु न पछाणई हरि प्रभु जाता दूरि ॥ (८५४-१६, बिलावलु, मः ३)
गुर की सेवा विसरी किउ मनु रहै हजूरि ॥ (८५४-१६, बिलावलु, मः ३)
मनमुखि जनमु गवाइआ झूठै लालचि कूरि ॥ (८५४-१६, बिलावलु, मः ३)
नानक बखसि मिलाइअनु सचै सबदि हदूरि ॥१॥ (८५४-१७, बिलावलु, मः ३)
मः ३ ॥ (८५४-१७)
हरि प्रभु सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ (८५४-१७, बिलावलु, मः ३)
अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ (८५४-१८, बिलावलु, मः ३)
वडभागी हरि पाइआ पूरनु परमानंदु ॥ (८५४-१९, बिलावलु, मः ३)
जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥२॥ (८५४-१९, बिलावलु, मः ३)

पन्ना ८५५

पउड़ी ॥ (८५५-१)
कोई निंदकु होवै सतिगुरू का फिरि सरणि गुर आवै ॥ (८५५-१, बिलावलु, मः ३)
पिछले गुनह सतिगुरु बखसि लए सतसंगति नालि रलावै ॥ (८५५-१, बिलावलु, मः ३)
जिउ मीहि वुठै गलीआ नालिआ टोभिआ का जलु जाइ पवै विचि सुरसरी सुरसरी मिलत पवित्रु पावनु होइ जावै ॥ (८५५-२, बिलावलु, मः ३)
एह वडिआई सतिगुर निरवैर विचि जितु मिलिऐ तिसना भुख उतरै हरि साँति तड़ आवै ॥ (८५५-३, बिलावलु, मः ३)
नानक इहु अचरजु देखहु मेरे हरि सचे साह का जि सतिगुरू नो मन्नै सु सभनाँ भावै ॥१३॥१॥ सुधु ॥ (८५५-४, बिलावलु, मः ३)
बिलावलु बाणी भगता की ॥ (८५५-६)
कबीर जीउ की (८५५-६)
ੴ सति नामु करता पुरखु गुर प्रसादि ॥ (८५५-६)
ऐसो इहु संसारु पेखना रहनु न कोऊ पईहै रे ॥ (८५५-७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
सूधे सूधे रेगि चलहु तुम नतर कुधका दिवईहै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (८५५-७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बारे बूढे तरुने भईआ सभहू जमु लै जईहै रे ॥ (८५५-८, बिलावलु, भगत कबीर जी)

मानसु बपुरा मूसा कीनो मीचु बिलईआ खईहै रे ॥१॥ (८५५-८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
धनवंता अरु निर्धन मनई ता की कछू न कानी रे ॥ (८५५-९, बिलावलु, भगत कबीर जी)
राजा परजा सम करि मारै ऐसो कालु बडानी रे ॥२॥ (८५५-९, बिलावलु, भगत कबीर जी)
हरि के सेवक जो हरि भाए तिन्ह की कथा निरारी रे ॥ (८५५-१०, बिलावलु, भगत कबीर जी)
आवहि न जाहि न कबहू मरते पारब्रह्म संगारी रे ॥३॥ (८५५-१०, बिलावलु, भगत कबीर जी)
पुत्र कलत्र लछिमी माइआ इहै तजहु जीअ जानी रे ॥ (८५५-११, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहत कबीरु सुनहु रे संतहु मिलिहै सारिगपानी रे ॥४॥१॥ (८५५-१२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५५-१२)
बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥ (८५५-१२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
हरि गुन कथत सुनत बउरानो ॥१॥ (८५५-१३, बिलावलु, भगत कबीर जी)
मेरे बाबा मै बउरा सभ खलक सैआनी मै बउरा ॥ (८५५-१३, बिलावलु, भगत कबीर जी)
मै बिगरिओ बिगरै मति अउरा ॥१॥ रहाउ ॥ (८५५-१४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
आपि न बउरा राम कीओ बउरा ॥ (८५५-१४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
सतिगुरु जारि गइओ भ्रमु मोरा ॥२॥ (८५५-१४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
मै बिगरे अपनी मति खोई ॥ (८५५-१५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
मेरे भरमि भूलउ मति कोई ॥३॥ (८५५-१५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
सो बउरा जो आपु न पछानै ॥ (८५५-१५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
आपु पछानै त एकै जानै ॥४॥ (८५५-१६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
अबहि न माता सु कबहु न माता ॥ (८५५-१६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर रामै रंगि राता ॥५॥२॥ (८५५-१६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५५-१७)
गृहु तजि बन खंड जाईऐ चुनि खाईऐ कंदा ॥ (८५५-१७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
अजहु बिकार न छोडई पापी मनु मंदा ॥१॥ (८५५-१७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
किउ छूटउ कैसे तरउ भवजल निधि भारी ॥ (८५५-१८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
राखु राखु मेरे बीठुला जनु सरनि तुम्हारी ॥१॥ रहाउ ॥ (८५५-१८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिखै बिखै की बासना तजीअ नह जाई ॥ (८५५-१९, बिलावलु, भगत कबीर जी)
अनिक जतन करि राखीऐ फिरि फिरि लपटाई ॥२॥ (८५५-१९, बिलावलु, भगत कबीर जी)

पन्ना ८५६

जरा जीवन जोबनु गइआ किछु कीआ न नीका ॥ (८५६-१, बिलावलु, भगत कबीर जी)
इहु जीअरा निरमोलको कउडी लगि मीका ॥३॥ (८५६-१, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहु कबीर मेरे माधवा तू सर्ब बिआपी ॥ (८५६-२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
तुम समसरि नाही दइआलु मोहि समसरि पापी ॥४॥३॥ (८५६-२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५६-३)
नित उठि कोरी गागरि आनै लीपत जीउ गइओ ॥ (८५६-३, बिलावलु, भगत कबीर जी)

ताना बाना कछू न सूझै हरि हरि रसि लपटिओ ॥१॥ (८५६-४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
हमारे कुल कउने रामु कहिओ ॥ (८५६-४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
जब की माला लई निपूते तब ते सुखु न भइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (८५६-५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरजु एकु भइओ ॥ (८५६-५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
सात सूत इनि मुडींए खोए इहु मुडीआ किउ न मुइओ ॥२॥ (८५६-६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
सर्ब सुखा का एकु हरि सुआमी सो गुरि नामु दइओ ॥ (८५६-६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
संत प्रहलाद की पैज जिनि राखी हरनाखसु नख बिदरिओ ॥३॥ (८५६-७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
घर के देव पितर की छोडी गुर को सबदु लइओ ॥ (८५६-७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहत कबीरु सगल पाप खंडनु संतह लै उधरिओ ॥४॥४॥ (८५६-८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५६-९)
कोऊ हरि समानि नही राजा ॥ (८५६-९, बिलावलु, भगत कबीर जी)
ए भूपति सभ दिवस चारि के झूठे करत दिवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ (८५६-९, बिलावलु, भगत कबीर जी)
तेरो जनु होइ सोइ कत डोलै तीनि भवन पर छाजा ॥ (८५६-१०, बिलावलु, भगत कबीर जी)
हाथु पसारि सकै को जन कउ बोलि सकै न अंदाजा ॥१॥ (८५६-१०, बिलावलु, भगत कबीर जी)
चेति अचेत मूड़ मन मेरे बाजे अनहद बाजा ॥ (८५६-११, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर संसा भ्रमु चूको ध्रू प्रहिलाद निवाजा ॥२॥५॥ (८५६-११, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५६-१२)
राखि लेहु हम ते बिगरी ॥ (८५६-१२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
सीलु धरमु जपु भगति न कीनी हउ अभिमान टेढ पगरी ॥१॥ रहाउ ॥ (८५६-१२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
अमर जानि संची इह काइआ इह मिथिआ काची गगरी ॥ (८५६-१३, बिलावलु, भगत कबीर जी)
जिनहि निवाजि साजि हम कीए तिसहि बिसारि अवर लगरी ॥१॥ (८५६-१४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
संधिक तोहि साध नही कहीअउ सरनि परे तुमरी पगरी ॥ (८५६-१४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर इह बिनती सुनीअहु मत घालहु जम की खबरी ॥२॥६॥ (८५६-१५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५६-१६)
दरमादे ठाढे दरबारि ॥ (८५६-१६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
तुझ बिनु सुरति करै को मेरी दरसनु दीजै खोल्हि किवार ॥१॥ रहाउ ॥ (८५६-१६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
तुम धन धनी उदार तिआगी स्रवनन्ह सुनीअतु सुजसु तुम्हार ॥ (८५६-१७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
मागउ काहि रंक सभ देखउ तुम्ह ही ते मेरो निसतारु ॥१॥ (८५६-१७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
जैदेउ नामा बिप सुदामा तिन कउ क्रिपा भई है अपार ॥ (८५६-१८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर तुम सम्रथ दाते चारि पदारथ देत न बार ॥२॥७॥ (८५६-१८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५६-१९)
डंडा मुंद्रा खिंथा आधारी ॥ (८५६-१९, बिलावलु, भगत कबीर जी)
भ्रम कै भाइ भवै भेखधारी ॥१॥ (८५६-१९, बिलावलु, भगत कबीर जी)

आसनु पवन दूरि करि बवरे ॥ (८५७-१, बिलावलु, भगत कबीर जी)
छोडि कपटु नित हरि भजु बवरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८५७-१, बिलावलु, भगत कबीर जी)
जिह तू जाचहि सो तृभवन भोगी ॥ (८५७-२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर केसौ जगि जोगी ॥२॥८॥ (८५७-२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५७-२)
इनि् माइआ जगदीस गुसाई तुम्हरे चरन बिसारे ॥ (८५७-३, बिलावलु, भगत कबीर जी)
किंचत प्रीति न उपजै जन कउ जन कहा करहि बेचारे ॥१॥ रहाउ ॥ (८५७-३, बिलावलु, भगत कबीर जी)
ध्रिगु तनु ध्रिगु धनु ध्रिगु इह माइआ ध्रिगु ध्रिगु मति बुधि फन्नी ॥ (८५७-४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
इस माइआ कउ दृड़ु करि राखहु बाँधे आप बचन्नी ॥१॥ (८५७-५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
किआ खेती किआ लेवा देई परपंच झूठु गुमाना ॥ (८५७-५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर ते अंति बिगूते आइआ कालु निदाना ॥२॥६॥ (८५७-६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५७-६)
सरीर सरोवर भीतरे आछै कमल अनूप ॥ (८५७-६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
पर्म जोति पुरखोतमो जा कै रेख न रूप ॥१॥ (८५७-७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
रे मन हरि भजु भ्रमु तजहु जगजीवन राम ॥१॥ रहाउ ॥ (८५७-७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
आवत कछू न दीसई नह दीसै जात ॥ (८५७-८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
जह उपजै बिनसै तही जैसे पुरिवन पात ॥२॥ (८५७-८, बिलावलु, भगत कबीर जी)
मिथिआ करि माइआ तजी सुख सहज बीचारि ॥ (८५७-६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर सेवा करहु मन मंझि मुरारि ॥३॥१०॥ (८५७-६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५७-१०)
जनम मरन का भ्रमु गइआ गोबिद लिव लागी ॥ (८५७-१०, बिलावलु, भगत कबीर जी)
जीवत सुंनि समानिआ गुर साखी जागी ॥१॥ रहाउ ॥ (८५७-११, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कासी ते धुनि ऊपजै धुनि कासी जाई ॥ (८५७-११, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कासी फूटी पंडिता धुनि कहाँ समाई ॥१॥ (८५७-११, बिलावलु, भगत कबीर जी)
तृकुटी संधि मै पेखिआ घट हू घट जागी ॥ (८५७-१२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
ऐसी बुधि समाचरी घट माहि तिआगी ॥२॥ (८५७-१२, बिलावलु, भगत कबीर जी)
आपु आप ते जानिआ तेज तेजु समाना ॥ (८५७-१३, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहु कबीर अब जानिआ गोबिद मनु माना ॥३॥११॥ (८५७-१३, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु ॥ (८५७-१४)
चरन कमल जा कै रिदै बसहि सो जनु किउ डोलै देव ॥ (८५७-१४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
मानौ सभ सुख नउ निधि ता कै सहजि सहजि जसु बोलै देव ॥ रहाउ ॥ (८५७-१४, बिलावलु, भगत कबीर जी)
तब इह मति जउ सभ महि पेखै कुटिल गाँठि जब खोलै देव ॥ (८५७-१५, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बारं बार माइआ ते अटकै लै नरजा मनु तोलै देव ॥१॥ (८५७-१६, बिलावलु, भगत कबीर जी)

जह उहु जाइ तही सुखु पावै माइआ तासु न झोलै देव ॥ (८५७-१६, बिलावलु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर मेरा मनु मानिआ राम प्रीति कीओ लै देव ॥२॥१२॥ (८५७-१७, बिलावलु, भगत कबीर जी)
बिलावलु बाणी भगत नामदेव जी की (८५७-१९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८५७-१९)
सफल जनमु मो कउ गुर कीना ॥ (८५७-१९, बिलावलु, भगत नामदेव जी)

पन्ना ८५८

दुख बिसारि सुख अंतरि लीना ॥१॥ (८५८-१, बिलावलु, भगत नामदेव जी)
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ॥ (८५८-१, बिलावलु, भगत नामदेव जी)
राम नाम बिनु जीवनु मन हीना ॥१॥ रहाउ ॥ (८५८-१, बिलावलु, भगत नामदेव जी)
नामदेइ सिमरनु करि जानाँ ॥ (८५८-२, बिलावलु, भगत नामदेव जी)
जगजीवन सिउ जीउ समानाँ ॥२॥१॥ (८५८-२, बिलावलु, भगत नामदेव जी)
बिलावलु बाणी रविदास भगत की (८५८-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८५८-३)
दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥ (८५८-४, बिलावलु, भगत रविदास जी)
असट दसा सिधि कर तलै सभ कृपा तुमारी ॥१॥ (८५८-४, बिलावलु, भगत रविदास जी)
तू जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥ (८५८-४, बिलावलु, भगत रविदास जी)
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (८५८-५, बिलावलु, भगत रविदास जी)
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥ (८५८-५, बिलावलु, भगत रविदास जी)
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥२॥ (८५८-६, बिलावलु, भगत रविदास जी)
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥ (८५८-६, बिलावलु, भगत रविदास जी)
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥३॥१॥ (८५८-७, बिलावलु, भगत रविदास जी)
बिलावलु ॥ (८५८-७)
जिह कुल साधु बैसनौ होइ ॥ (८५८-७, बिलावलु, भगत रविदास जी)
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८५८-८, बिलावलु, भगत रविदास जी)
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥ (८५८-८, बिलावलु, भगत रविदास जी)
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥१॥ (८५८-९, बिलावलु, भगत रविदास जी)
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटम्ब सभ लोइ ॥ (८५८-९, बिलावलु, भगत रविदास जी)
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥२॥ (८५८-१०, बिलावलु, भगत रविदास जी)
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ ॥ (८५८-११, बिलावलु, भगत रविदास जी)
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥३॥२॥ (८५८-११, बिलावलु, भगत रविदास जी)
बाणी सधने की रागु बिलावलु (८५८-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८५८-१३)
नृप कंनिआ के कारनै इकु भइआ भेखधारी ॥ (८५८-१४, बिलावलु, भगत साधना जी)
कामारथी सुआरथी वा की पैज सवारी ॥१॥ (८५८-१४, बिलावलु, भगत साधना जी)

तव गुन कहा जगत गुरा जउ करमु न नासै ॥ (८५८-१४, बिलावलु, भगत साधना जी)
सिंघ सरन कत जाईऐ जउ जम्बुकु ग्रासै ॥१॥ रहाउ ॥ (८५८-१५, बिलावलु, भगत साधना जी)
एक बूंद जल कारने चातृकु दुखु पावै ॥ (८५८-१५, बिलावलु, भगत साधना जी)
प्रान गए सागरु मिलै फुनि कामि न आवै ॥२॥ (८५८-१६, बिलावलु, भगत साधना जी)
प्रान जु थाके थिरु नही कैसे बिरमावउ ॥ (८५८-१६, बिलावलु, भगत साधना जी)
बूडि मूए नउका मिलै कहु काहि चढावउ ॥३॥ (८५८-१७, बिलावलु, भगत साधना जी)
मै नाही कछु हउ नही किछु आहि न मोरा ॥ (८५८-१७, बिलावलु, भगत साधना जी)
अउसर लजा राखि लेहु सधना जनु तोरा ॥४॥१॥ (८५८-१८, बिलावलु, भगत साधना जी)

पन्ना ८५६

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (८५६-१)
रागु गोंड चउपदे महला ४ घरु १ ॥ (८५६-३)
जे मनि चिति आस रखहि हरि ऊपरि ता मन चिंदे अनेक अनेक फल पाई ॥ (८५६-४, गोंड, मः ४)
हरि जाणै सभु किछु जो जीइ वरतै प्रभु घालिआ किसै का इकु तिलु न गवाई ॥ (८५६-४, गोंड, मः ४)
हरि तिस की आस कीजै मन मेरे जो सभ महि सुआमी रहिआ समाई ॥१॥ (८५६-५, गोंड, मः ४)
मेरे मन आसा करि जगदीस गुसाई ॥ (८५६-६, गोंड, मः ४)
जो बिनु हरि आस अवर काहू की कीजै सा निहफल आस सभ बिरथी जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८५६-६, गोंड, मः ४)
जो दीसै माइआ मोह कुटम्बु सभु मत तिस की आस लगि जनमु गवाई ॥ (८५६-७, गोंड, मः ४)
इन्ह कै किछु हाथि नही कहा करहि इहि बपुड़े इन्ह का वाहिआ कछु न वसाई ॥ (८५६-८, गोंड, मः ४)
मेरे मन आस करि हरि प्रीतम अपुने की जो तुझु तारै तेरा कुटम्बु सभु छडाई ॥२॥ (८५६-६, गोंड, मः ४)
जे किछु आस अवर करहि परमित्री मत तूं जाणहि तेरै कितै कंमि आई ॥ (८५६-१०, गोंड, मः ४)
इह आस परमित्री भाउ दूजा है खिन महि झूठु बिनसि सभ जाई ॥ (८५६-११, गोंड, मः ४)
मेरे मन आसा करि हरि प्रीतम साचे की जो तेरा घालिआ सभु थाइ पाई ॥३॥ (८५६-११, गोंड, मः ४)
आसा मनसा सभ तेरी मेरे सुआमी जैसी तू आस करावहि तैसी को आस कराई ॥ (८५६-१२, गोंड, मः ४)

पन्ना ८६०

किछु किसी कै हथि नाही मेरे सुआमी ऐसी मेरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (८६०-१, गोंड, मः ४)
जन नानक की आस तू जाणहि हरि दरसनु देखि हरि दरसनि तृपताई ॥४॥१॥ (८६०-२, गोंड, मः ४)
गोंड महला ४ ॥ (८६०-३)
ऐसा हरि सेवीऐ नित धिआईऐ जो खिन महि किलविख सभि करे बिनासा ॥ (८६०-३, गोंड, मः ४)
जे हरि तिआगि अवर की आस कीजै ता हरि निहफल सभ घाल गवासा ॥ (८६०-४, गोंड, मः ४)
मेरे मन हरि सेविहु सुखदाता सुआमी जिसु सेविऐ सभ भुख लहासा ॥१॥ (८६०-४, गोंड, मः ४)
मेरे मन हरि ऊपरि कीजै भरवासा ॥ (८६०-५, गोंड, मः ४)
जह जाईऐ तह नालि मेरा सुआमी हरि अपनी पैज रखै जन दासा ॥१॥ रहाउ ॥ (८६०-६, गोंड, मः ४)

जे अपनी बिरथा कहहु अवरा पहि ता आगै अपनी बिरथा बहु बहुतु कढासा ॥ (८६०-६, गोंड, मः ४)
अपनी बिरथा कहहु हरि अपुने सुआमी पहि जो तुम्रे दूख ततकाल कटासा ॥ (८६०-७, गोंड, मः ४)
सो ऐसा प्रभु छोडि अपनी बिरथा अवरा पहि कहीऐ अवरा पहि कहि मन लाज मरासा ॥२॥ (८६०-८, गोंड, मः ४)
जो संसारै के कुटम्ब मित्र भाई दीसहि मन मेरे ते सभि अपनै सुआइ मिलासा ॥ (८६०-६, गोंड, मः ४)
जितु दिनि उन् का सुआउ होइ न आवै तितु दिनि नेड़ै को न ढुकासा ॥ (८६०-१०, गोंड, मः ४)
मन मेरे अपना हरि सेवि दिनु राती जो तुधु उपकरै दूखि सुखासा ॥३॥ (८६०-११, गोंड, मः ४)
तिस का भरवासा किउ कीजै मन मेरे जो अंती अउसरि रखि न सकासा ॥ (८६०-११, गोंड, मः ४)
हरि जपु मंतु गुर उपदेसु लै जापहु तिन् अंति छडाए जिन् हरि प्रीति चितासा ॥ (८६०-१२, गोंड, मः ४)
जन नानक अनदिनु नामु जपहु हरि संतहु इहु छूटण का साचा भरवासा ॥४॥२॥ (८६०-१३, गोंड, मः ४)
गोंड महला ४ ॥ (८६०-१४)
हरि सिमरत सदा होइ अनंदु सुखु अंतरि साँति सीतल मनु अपना ॥ (८६०-१४, गोंड, मः ४)
जैसे सकति सूरु बहु जलता गुर ससि देखे लहि जाइ सभ तपना ॥१॥ (८६०-१५, गोंड, मः ४)
मेरे मन अनदिनु धिआइ नामु हरि जपना ॥ (८६०-१५, गोंड, मः ४)
जहा कहा तुझु राखै सभ ठाई सो ऐसा प्रभु सेवि सदा तू अपना ॥१॥ रहाउ ॥ (८६०-१६, गोंड, मः ४)
जा महि सभि निधान सो हरि जपि मन मेरे गुरमुखि खोजि लहहु हरि रतना ॥ (८६०-१७, गोंड, मः ४)
जिन हरि धिआइआ तिन हरि पाइआ मेरा सुआमी तिन के चरण मलहु हरि दसना ॥२॥ (८६०-१७, गोंड, मः ४)
सबदु पछाणि राम रसु पावहु ओहु ऊतमु संतु भइओ बड बडना ॥ (८६०-१८, गोंड, मः ४)
तिसु जन की वडिआई हरि आपि वधाई ओहु घटै न किसै की घटाई इकु तिलु तिलु तिलना ॥३॥ (८६०-१६, गोंड, मः ४)

पन्ना ८६१

जिस ते सुख पावहि मन मेरे सो सदा धिआइ नित कर जुरना ॥ (८६१-१, गोंड, मः ४)
जन नानक कउ हरि दानु इकु दीजै नित बसहि रिदै हरी मोहि चरना ॥४॥३॥ (८६१-२, गोंड, मः ४)
गोंड महला ४ ॥ (८६१-३)
जितने साह पातिसाह उमराव सिकदार चउधरी सभि मिथिआ झूठु भाउ दूजा जाणु ॥ (८६१-३, गोंड, मः ४)
हरि अबिनासी सदा थिरु निहचलु तिसु मेरे मन भजु परवाणु ॥१॥ (८६१-४, गोंड, मः ४)
मेरे मन नामु हरी भजु सदा दीबाणु ॥ (८६१-४, गोंड, मः ४)
जो हरि महलु पावै गुर बचनी तिसु जेवडु अवरु नाही किसै दा ताणु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६१-५, गोंड, मः ४)
जितने धनवंत कुलवंत मिलखवंत दीसहि मन मेरे सभि बिनसि जाहि जिउ रंगु कसुम्भ कचाणु ॥ (८६१-६, गोंड, मः ४)
हरि सति निरंजनु सदा सेवि मन मेरे जितु हरि दरगह पावहि तू माणु ॥२॥ (८६१-७, गोंड, मः ४)
ब्राहमणु खत्री सूद वैस चारि वरन चारि आस्रम हहि जो हरि धिआवै सो प्रधानु ॥ (८६१-७, गोंड, मः ४)
जिउ चंदन निकटि वसै हिरडु बपुड़ा तिउ सतसंगति मिलि पतित परवाणु ॥३॥ (८६१-८, गोंड, मः ४)
ओहु सभ ते ऊचा सभ ते सूचा जा कै हिरदै वसिआ भगवानु ॥ (८६१-६, गोंड, मः ४)

जन नानकु तिस के चरन पखालै जो हरि जनु नीचु जाति सेवकाणु ॥४॥४॥ (८६१-१०, गोंड, मः ४)
गोंड महला ४ ॥ (८६१-११)
हरि अंतरजामी सभतै वरतै जेहा हरि कराए तेहा को करईऐ ॥ (८६१-११, गोंड, मः ४)
सो ऐसा हरि सेवि सदा मन मेरे जो तुधनो सभ दू रखि लईऐ ॥१॥ (८६१-११, गोंड, मः ४)
मेरे मन हरि जपि हरि नित पड़ईऐ ॥ (८६१-१२, गोंड, मः ४)
हरि बिनु को मारि जीवालि न साकै ता मेरे मन काइतु कड़ईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (८६१-१२, गोंड, मः ४)
हरि परपंचु कीआ सभु करतै विचि आपे आपणी जोति धरईऐ ॥ (८६१-१३, गोंड, मः ४)
हरि एको बोलै हरि एकु बुलाए गुरि पूरै हरि एकु दिखईऐ ॥२॥ (८६१-१४, गोंड, मः ४)
हरि अंतरि नाले बाहरि नाले कहु तिसु पासहु मन किआ चोरईऐ ॥ (८६१-१५, गोंड, मः ४)
निहकपट सेवा कीजै हरि केरी ताँ मेरे मन सर्ब सुख पईऐ ॥३॥ (८६१-१५, गोंड, मः ४)
जिस दै वसि सभु किछु सो सभ दू वडा सो मेरे मन सदा धिअईऐ ॥ (८६१-१६, गोंड, मः ४)
जन नानक सो हरि नालि है तेरै हरि सदा धिआइ तू तुधु लए छडईऐ ॥४॥५॥ (८६१-१७, गोंड, मः ४)
गोंड महला ४ ॥ (८६१-१८)
हरि दरसन कउ मेरा मनु बहु तपतै जिउ तृखावंतु बिनु नीर ॥१॥ (८६१-१८, गोंड, मः ४)
मेरै मनि प्रेमु लगो हरि तीर ॥ (८६१-१८, गोंड, मः ४)
हमरी बेदन हरि प्रभु जानै मेरे मन अंतर की पीर ॥१॥ रहाउ ॥ (८६१-१९, गोंड, मः ४)
मेरे हरि प्रीतम की कोई बात सुनावै सो भाई सो मेरा बीर ॥२॥ (८६१-१९, गोंड, मः ४)

पन्ना ८६२

मिलु मिलु सखी गुण कहु मेरे प्रभ के ले सतिगुर की मति धीर ॥३॥ (८६२-१, गोंड, मः ४)
जन नानक की हरि आस पुजावहु हरि दरसनि साँति सरीर ॥४॥६॥ (८६२-२, गोंड, मः ४)
छका १॥ (८६२-२)
रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु १ (८६२-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८६२-३)
सभु करता सभु भुगता ॥१॥ रहाउ ॥ (८६२-४, गोंड, मः ५)
सुनतो करता पेखत करता ॥ (८६२-४, गोंड, मः ५)
अदृसटो करता दृसटो करता ॥ (८६२-४, गोंड, मः ५)
ओपति करता परलउ करता ॥ (८६२-५, गोंड, मः ५)
बिआपत करता अलिपतो करता ॥१॥ (८६२-५, गोंड, मः ५)
बकतो करता बूझत करता ॥ (८६२-५, गोंड, मः ५)
आवतु करता जातु भी करता ॥ (८६२-६, गोंड, मः ५)
निरगुन करता सरगुन करता ॥ (८६२-६, गोंड, मः ५)
गुर प्रसादि नानक समदृसटा ॥२॥१॥ (८६२-६, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६२-७)
फाकिओ मीन कपिक की निआई तू उरझि रहिओ कसुम्भाइले ॥ (८६२-७, गोंड, मः ५)

पग धारहि सासु लेखै लै तउ उधरहि हरि गुण गाइले ॥१॥ (८६२-७, गोंड, मः ५)
मन समझु छोडि आवाइले ॥ (८६२-८, गोंड, मः ५)
अपने रहन कउ ठउरु न पावहि काए पर कै जाइले ॥१॥ रहाउ ॥ (८६२-८, गोंड, मः ५)
जिउ मैगलु इंद्री रसि प्रेरिओ तू लागि परिओ कुटम्बाइले ॥ (८६२-९, गोंड, मः ५)
जिउ पंखी इकत्र होइ फिरि बिछुरै थिरु संगति हरि हरि धिआइले ॥२॥ (८६२-१०, गोंड, मः ५)
जैसे मीनु रसन सादि बिनसिओ ओहु मूठौ मूड़ लोभाइले ॥ (८६२-११, गोंड, मः ५)
तू होआ पंच वासि वैरी कै छूटहि परु सरनाइले ॥३॥ (८६२-११, गोंड, मः ५)
होहु कृपाल दीन दुख भंजन सभि तुम्रे जीअ जंताइले ॥ (८६२-१२, गोंड, मः ५)
पावउ दानु सदा दरसु पेखा मिलु नानक दास दसाइले ॥४॥२॥ (८६२-१२, गोंड, मः ५)
रागु गोंड महला ५ चउपदे घरु २ (८६२-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८६२-१४)
जीअ प्रान कीए जिनि साजि ॥ (८६२-१५, गोंड, मः ५)
माटी महि जोति रखी निवाजि ॥ (८६२-१५, गोंड, मः ५)
बरतन कउ सभु किछु भोजन भोगाइ ॥ (८६२-१५, गोंड, मः ५)
सो प्रभु तजि मूड़े कत जाइ ॥१॥ (८६२-१६, गोंड, मः ५)
पारब्रह्म की लागउ सेव ॥ (८६२-१६, गोंड, मः ५)
गुर ते सुझै निरंजन देव ॥१॥ रहाउ ॥ (८६२-१६, गोंड, मः ५)
जिनि कीए रंग अनिक परकार ॥ (८६२-१७, गोंड, मः ५)
ओपति परलउ निमख मझार ॥ (८६२-१७, गोंड, मः ५)
जा की गति मिति कही न जाइ ॥ (८६२-१७, गोंड, मः ५)
सो प्रभु मन मेरे सदा धिआइ ॥२॥ (८६२-१८, गोंड, मः ५)
आइ न जावै निहचलु धनी ॥ (८६२-१८, गोंड, मः ५)
बेअंत गुना ता के केतक गनी ॥ (८६२-१८, गोंड, मः ५)

पन्ना ८६३

लाल नाम जा कै भरे भंडार ॥ (८६३-१, गोंड, मः ५)
सगल घटा देवै आधार ॥३॥ (८६३-१, गोंड, मः ५)
सति पुरखु जा को है नाउ ॥ (८६३-१, गोंड, मः ५)
मिटहि कोटि अघ निमख जसु गाउ ॥ (८६३-१, गोंड, मः ५)
बाल सखाई भगतन को मीत ॥ (८६३-२, गोंड, मः ५)
प्रान अधार नानक हित चीत ॥४॥१॥३॥ (८६३-२, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६३-३)
नाम संगि कीनो बिउहारु ॥ (८६३-३, गोंड, मः ५)
नामो ही इसु मन का अधारु ॥ (८६३-३, गोंड, मः ५)
नामो ही चिति कीनी ओट ॥ (८६३-३, गोंड, मः ५)

नामु जपत मिटहि पाप कोटि ॥१॥ (८६३-४, गोंड, मः ५)
रासि दीई हरि एको नामु ॥ (८६३-४, गोंड, मः ५)
मन का इसटु गुर संगि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६३-४, गोंड, मः ५)
नामु हमारे जीअ की रासि ॥ (८६३-५, गोंड, मः ५)
नामो संगी जत कत जात ॥ (८६३-५, गोंड, मः ५)
नामो ही मनि लागा मीठा ॥ (८६३-५, गोंड, मः ५)
जलि थलि सभ महि नामो डीठा ॥२॥ (८६३-६, गोंड, मः ५)
नामे दरगह मुख उजले ॥ (८६३-६, गोंड, मः ५)
नामे सगले कुल उधरे ॥ (८६३-६, गोंड, मः ५)
नामि हमारे कारज सीध ॥ (८६३-६, गोंड, मः ५)
नाम संगि इहु मनूआ गीध ॥३॥ (८६३-७, गोंड, मः ५)
नामे ही हम निरभउ भए ॥ (८६३-७, गोंड, मः ५)
नामे आवन जावन रहे ॥ (८६३-७, गोंड, मः ५)
गुरि पूरै मेले गुणतास ॥ (८६३-८, गोंड, मः ५)
कहु नानक सुखि सहजि निवासु ॥४॥२॥४॥ (८६३-८, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६३-८)
निमाने कउ जो देतो मानु ॥ (८६३-९, गोंड, मः ५)
सगल भूखे कउ करता दानु ॥ (८६३-९, गोंड, मः ५)
गरभ घोर महि राखनहारु ॥ (८६३-९, गोंड, मः ५)
तिसु ठाकुर कउ सदा नमसकारु ॥१॥ (८६३-९, गोंड, मः ५)
ऐसो प्रभु मन माहि धिआइ ॥ (८६३-१०, गोंड, मः ५)
घटि अवघटि जत कतहि सहाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८६३-१०, गोंड, मः ५)
रंकु राउ जा कै एक समानि ॥ (८६३-११, गोंड, मः ५)
कीट हसति सगल पूरान ॥ (८६३-११, गोंड, मः ५)
बीओ पूछि न मसलति धरै ॥ (८६३-११, गोंड, मः ५)
जो किछु करै सु आपहि करै ॥२॥ (८६३-११, गोंड, मः ५)
जा का अंतु न जानसि कोइ ॥ (८६३-१२, गोंड, मः ५)
आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ (८६३-१२, गोंड, मः ५)
आपि अकारु आपि निरंकारु ॥ (८६३-१२, गोंड, मः ५)
घट घट घटि सभ घट आधारु ॥३॥ (८६३-१३, गोंड, मः ५)
नाम रंगि भगत भए लाल ॥ (८६३-१३, गोंड, मः ५)
जसु करते संत सदा निहाल ॥ (८६३-१३, गोंड, मः ५)
नाम रंगि जन रहे अघाइ ॥ (८६३-१४, गोंड, मः ५)
नानक तिन जन लागै पाइ ॥४॥३॥५॥ (८६३-१४, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६३-१४)

जा कै संगि इहु मनु निरमलु ॥ (८६३-१५, गोंड, मः ५)
जा कै संगि हरि हरि सिमरनु ॥ (८६३-१५, गोंड, मः ५)
जा कै संगि किलबिख होहि नास ॥ (८६३-१५, गोंड, मः ५)
जा कै संगि रिदै परगास ॥१॥ (८६३-१५, गोंड, मः ५)
से संतन हरि के मेरे मीत ॥ (८६३-१६, गोंड, मः ५)
केवल नामु गाईऐ जा कै नीत ॥१॥ रहाउ ॥ (८६३-१६, गोंड, मः ५)
जा कै मंतृ हरि हरि मनि वसै ॥ (८६३-१७, गोंड, मः ५)
जा कै उपदेसि भरमु भउ नसै ॥ (८६३-१७, गोंड, मः ५)
जा कै कीरति निर्मल सार ॥ (८६३-१७, गोंड, मः ५)
जा की रेनु बाँछै संसार ॥२॥ (८६३-१८, गोंड, मः ५)
कोटि पतित जा कै संगि उधार ॥ (८६३-१८, गोंड, मः ५)
एकु निरंकारु जा कै नाम अधार ॥ (८६३-१८, गोंड, मः ५)
सर्ब जीआँ का जानै भेउ ॥ (८६३-१९, गोंड, मः ५)
कृपा निधान निरंजन देउ ॥३॥ (८६३-१९, गोंड, मः ५)
पारब्रह्म जब भए कृपाल ॥ (८६३-१९, गोंड, मः ५)
तब भेटे गुर साध दइआल ॥ (८६३-१९, गोंड, मः ५)

पन्ना ८६४

दिनु रैणि नानकु नामु धिआए ॥ (८६४-१, गोंड, मः ५)
सूख सहज आनंद हरि नाए ॥४॥४॥६॥ (८६४-१, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६४-१)
गुर की मूरति मन महि धिआनु ॥ (८६४-२, गोंड, मः ५)
गुर कै सबदि मंत्रु मनु मान ॥ (८६४-२, गोंड, मः ५)
गुर के चरन रिदै लै धारउ ॥ (८६४-२, गोंड, मः ५)
गुरु पारब्रह्मु सदा नमसकारउ ॥१॥ (८६४-३, गोंड, मः ५)
मत को भरमि भुलै संसारि ॥ (८६४-३, गोंड, मः ५)
गुर बिनु कोइ न उतरसि पारि ॥१॥ रहाउ ॥ (८६४-३, गोंड, मः ५)
भूले कउ गुरि मारगि पाइआ ॥ (८६४-४, गोंड, मः ५)
अवर तिआगि हरि भगती लाइआ ॥ (८६४-४, गोंड, मः ५)
जनम मरन की त्रास मिटाई ॥ (८६४-४, गोंड, मः ५)
गुर पूरे की बेअंत वडाई ॥२॥ (८६४-५, गोंड, मः ५)
गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥ (८६४-५, गोंड, मः ५)
अंधकार महि भइआ प्रगास ॥ (८६४-५, गोंड, मः ५)
जिनि कीआ सो गुर ते जानिआ ॥ (८६४-६, गोंड, मः ५)
गुर किरपा ते मुगध मनु मानिआ ॥३॥ (८६४-६, गोंड, मः ५)

गुरु करता गुरु करणै जोगु ॥ (८६४-६, गोंड, मः ५)
गुरु परमेसरु है भी होगु ॥ (८६४-७, गोंड, मः ५)
कहु नानक प्रभि इहै जनाई ॥ (८६४-७, गोंड, मः ५)
बिनु गुर मुकति न पाईऐ भाई ॥४॥५॥७॥ (८६४-७, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६४-८)
गुरू गुरू गुरु करि मन मोर ॥ (८६४-८, गोंड, मः ५)
गुरू बिना मै नाही होर ॥ (८६४-८, गोंड, मः ५)
गुर की टेक रहहु दिनु राति ॥ (८६४-९, गोंड, मः ५)
जा की कोइ न मेटै दाति ॥१॥ (८६४-९, गोंड, मः ५)
गुरु परमेसरु एको जाणु ॥ (८६४-९, गोंड, मः ५)
जो तिसु भावै सो परवाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६४-९, गोंड, मः ५)
गुर चरणी जा का मनु लागै ॥ (८६४-१०, गोंड, मः ५)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ (८६४-१०, गोंड, मः ५)
गुर की सेवा पाए मानु ॥ (८६४-१०, गोंड, मः ५)
गुर ऊपरि सदा कुरबानु ॥२॥ (८६४-११, गोंड, मः ५)
गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ (८६४-११, गोंड, मः ५)
गुर के सेवक की पूरन घाल ॥ (८६४-११, गोंड, मः ५)
गुर के सेवक कउ दुखु न बिआपै ॥ (८६४-१२, गोंड, मः ५)
गुर का सेवकु दह दिसि जापै ॥३॥ (८६४-१२, गोंड, मः ५)
गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ (८६४-१२, गोंड, मः ५)
पारब्रह्मु गुरु रहिआ समाइ ॥ (८६४-१३, गोंड, मः ५)
कहु नानक जा के पूरे भाग ॥ (८६४-१३, गोंड, मः ५)
गुर चरणी ता का मनु लाग ॥४॥६॥८॥ (८६४-१३, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६४-१४)
गुरु मेरी पूजा गुरु गोबिंदु ॥ (८६४-१४, गोंड, मः ५)
गुरु मेरा पारब्रह्मु गुरु भगवंतु ॥ (८६४-१४, गोंड, मः ५)
गुरु मेरा देउ अलख अभेउ ॥ (८६४-१४, गोंड, मः ५)
सर्ब पूज चरन गुर सेउ ॥१॥ (८६४-१५, गोंड, मः ५)
गुर बिनु अवरु नाही मै थाउ ॥ (८६४-१५, गोंड, मः ५)
अनदिनु जपउ गुरू गुर नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८६४-१५, गोंड, मः ५)
गुरु मेरा गिआनु गुरु रिदै धिआनु ॥ (८६४-१६, गोंड, मः ५)
गुरु गोपालु पुरखु भगवानु ॥ (८६४-१६, गोंड, मः ५)
गुर की सरणि रहउ कर जोरि ॥ (८६४-१७, गोंड, मः ५)
गुरू बिना मै नाही होरु ॥२॥ (८६४-१७, गोंड, मः ५)
गुरु बोहिथु तारे भव पारि ॥ (८६४-१७, गोंड, मः ५)

गुर सेवा जम ते छुटकारि ॥ (८६४-१८, गोंड, मः ५)
अंधकार महि गुर मंत्रु उजारा ॥ (८६४-१८, गोंड, मः ५)
गुर कै संगि सगल निसतारा ॥३॥ (८६४-१८, गोंड, मः ५)
गुरु पूरा पाईऐ वडभागी ॥ (८६४-१९, गोंड, मः ५)
गुर की सेवा दूखु न लागी ॥ (८६४-१९, गोंड, मः ५)
गुर का सबदु न मेटै कोइ ॥ (८६४-१९, गोंड, मः ५)
गुरु नानकु नानकु हरि सोइ ॥४॥७॥९॥ (८६४-१९, गोंड, मः ५)

पन्ना ८६५

गोंड महला ५ ॥ (८६५-१)
राम राम संगि करि बिउहार ॥ (८६५-१, गोंड, मः ५)
राम राम राम प्रान अधार ॥ (८६५-१, गोंड, मः ५)
राम राम राम कीरतनु गाइ ॥ (८६५-२, गोंड, मः ५)
रमत रामु सभ रहिओ समाइ ॥१॥ (८६५-२, गोंड, मः ५)
संत जना मिलि बोलहु राम ॥ (८६५-२, गोंड, मः ५)
सभ ते निर्मल पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (८६५-३, गोंड, मः ५)
राम राम धनु संचि भंडार ॥ (८६५-३, गोंड, मः ५)
राम राम राम करि आहार ॥ (८६५-३, गोंड, मः ५)
राम राम वीसरि नही जाइ ॥ (८६५-४, गोंड, मः ५)
करि किरपा गुरि दीआ बताइ ॥२॥ (८६५-४, गोंड, मः ५)
राम राम राम सदा सहाइ ॥ (८६५-४, गोंड, मः ५)
राम राम राम लिव लाइ ॥ (८६५-५, गोंड, मः ५)
राम राम जपि निर्मल भए ॥ (८६५-५, गोंड, मः ५)
जनम जनम के किलबिख गए ॥३॥ (८६५-५, गोंड, मः ५)
रमत राम जनम मरणु निवारै ॥ (८६५-६, गोंड, मः ५)
उचरत राम भै पारि उतारै ॥ (८६५-६, गोंड, मः ५)
सभ ते ऊच राम परगास ॥ (८६५-६, गोंड, मः ५)
निसि बासुर जपि नानक दास ॥४॥८॥१०॥ (८६५-७, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६५-७)
उन कउ खसमि कीनी ठाकहारे ॥ (८६५-७, गोंड, मः ५)
दास संग ते मारि बिदारे ॥ (८६५-७, गोंड, मः ५)
गोबिंद भगत का महलु न पाइआ ॥ (८६५-८, गोंड, मः ५)
राम जना मिलि मंगलु गाइआ ॥१॥ (८६५-८, गोंड, मः ५)
सगल सृसटि के पंच सिकदार ॥ (८६५-९, गोंड, मः ५)
राम भगत के पानीहार ॥१॥ रहाउ ॥ (८६५-९, गोंड, मः ५)

जगत पास ते लेते दानु ॥ (८६५-९, गोंड, मः ५)
गोबिंद भगत कउ करहि सलामु ॥ (८६५-१०, गोंड, मः ५)
लूटि लेहि साकत पति खोवहि ॥ (८६५-१०, गोंड, मः ५)
साध जना पग मलि मलि धोवहि ॥२॥ (८६५-१०, गोंड, मः ५)
पंच पूत जणे इक माइ ॥ (८६५-११, गोंड, मः ५)
उतभुज खेलु करि जगत विआइ ॥ (८६५-११, गोंड, मः ५)
तीनि गुणा कै संगि रचि रसे ॥ (८६५-११, गोंड, मः ५)
इन कउ छोडि ऊपरि जन बसे ॥३॥ (८६५-१२, गोंड, मः ५)
करि किरपा जन लीए छडाइ ॥ (८६५-१२, गोंड, मः ५)
जिस के से तिनि रखे हटाइ ॥ (८६५-१२, गोंड, मः ५)
कहु नानक भगति प्रभ सारु ॥ (८६५-१३, गोंड, मः ५)
बिनु भगती सभ होइ खुआरु ॥४॥६॥११॥ (८६५-१३, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६५-१३)
कलि कलेस मिटे हरि नाइ ॥ (८६५-१३, गोंड, मः ५)
दुख बिनसे सुख कीनो ठाउ ॥ (८६५-१४, गोंड, मः ५)
जपि जपि अमृत नामु अघाए ॥ (८६५-१४, गोंड, मः ५)
संत प्रसादि सगल फल पाए ॥१॥ (८६५-१४, गोंड, मः ५)
राम जपत जन पारि परे ॥ (८६५-१५, गोंड, मः ५)
जनम जनम के पाप हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८६५-१५, गोंड, मः ५)
गुर के चरन रिदै उरि धारे ॥ (८६५-१५, गोंड, मः ५)
अगनि सागर ते उतरे पारे ॥ (८६५-१६, गोंड, मः ५)
जनम मरण सभ मिटी उपाधि ॥ (८६५-१६, गोंड, मः ५)
प्रभ सिउ लागी सहजि समाधि ॥२॥ (८६५-१६, गोंड, मः ५)
थान थनंतरि एको सुआमी ॥ (८६५-१७, गोंड, मः ५)
सगल घटा का अंतरजामी ॥ (८६५-१७, गोंड, मः ५)
करि किरपा जा कउ मति देइ ॥ (८६५-१७, गोंड, मः ५)
आठ पहर प्रभ का नाउ लेइ ॥३॥ (८६५-१८, गोंड, मः ५)
जा कै अंतरि वसै प्रभु आपि ॥ (८६५-१८, गोंड, मः ५)
ता कै हिरदै होइ प्रगासु ॥ (८६५-१८, गोंड, मः ५)
भगति भाइ हरि कीरतनु करीऐ ॥ (८६५-१९, गोंड, मः ५)
जपि पारब्रह्मु नानक निसतरीऐ ॥४॥१०॥१२॥ (८६५-१९, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६५-१९)

पन्ना ८६६

गुर के चरन कमल नमसकारि ॥ (८६६-१, गोंड, मः ५)

कामु क्रोधु इसु तन ते मारि ॥ (८६६-१, गोंड, मः ५)
होइ रहीऐ सगल की रीना ॥ (८६६-१, गोंड, मः ५)
घटि घटि रमईआ सभ महि चीना ॥१॥ (८६६-२, गोंड, मः ५)
इन बिधि रमहु गोपाल गोुबिंदु ॥ (८६६-२, गोंड, मः ५)
तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६६-२, गोंड, मः ५)
आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ (८६६-३, गोंड, मः ५)
जीअ प्रान को इहै सुआउ ॥ (८६६-३, गोंड, मः ५)
तजि अभिमानु जानु प्रभु संगि ॥ (८६६-३, गोंड, मः ५)
साध प्रसादि हरि सिउ मनु रंगि ॥२॥ (८६६-४, गोंड, मः ५)
जिनि तूं कीआ तिस कउ जानु ॥ (८६६-४, गोंड, मः ५)
आगै दरगह पावै मानु ॥ (८६६-४, गोंड, मः ५)
मनु तनु निर्मल होइ निहालु ॥ (८६६-५, गोंड, मः ५)
रसना नामु जपत गोपाल ॥३॥ (८६६-५, गोंड, मः ५)
करि किरपा मेरे दीन दइआला ॥ (८६६-५, गोंड, मः ५)
साधू की मनु मंगै रवाला ॥ (८६६-६, गोंड, मः ५)
होहु दइआल देहु प्रभ दानु ॥ (८६६-६, गोंड, मः ५)
नानकु जपि जीवै प्रभ नामु ॥४॥११॥१३॥ (८६६-६, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६६-७)
धूप दीप सेवा गोपाल ॥ (८६६-७, गोंड, मः ५)
अनिक बार बंदन करतार ॥ (८६६-७, गोंड, मः ५)
प्रभ की सरणि गही सभ तिआगि ॥ (८६६-७, गोंड, मः ५)
गुर सुप्रसन्न भए वड भागि ॥१॥ (८६६-८, गोंड, मः ५)
आठ पहर गाईऐ गोबिंदु ॥ (८६६-८, गोंड, मः ५)
तनु धनु प्रभ का प्रभ की जिंदु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६६-८, गोंड, मः ५)
हरि गुण रमत भए आनंद ॥ (८६६-९, गोंड, मः ५)
पारब्रह्म पूरन बखसंद ॥ (८६६-९, गोंड, मः ५)
करि किरपा जन सेवा लाए ॥ (८६६-९, गोंड, मः ५)
जनम मरण दुख मेटि मिलाए ॥२॥ (८६६-१०, गोंड, मः ५)
कर्म धर्म इहु ततु गिआनु ॥ (८६६-१०, गोंड, मः ५)
साधसंगि जपीऐ हरि नामु ॥ (८६६-१०, गोंड, मः ५)
सागर तरि बोहिथ प्रभ चरण ॥ (८६६-११, गोंड, मः ५)
अंतरजामी प्रभ कारण करण ॥३॥ (८६६-११, गोंड, मः ५)
राखि लीए अपनी किरपा धारि ॥ (८६६-११, गोंड, मः ५)
पंच दूत भागे बिकराल ॥ (८६६-१२, गोंड, मः ५)
जूऐ जनमु न कबहू हारि ॥ (८६६-१२, गोंड, मः ५)

नानक का अंगु कीआ करतारि ॥४॥१२॥१४॥ (८६६-१२, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६६-१३)
करि किरपा सुख अनद करेइ ॥ (८६६-१३, गोंड, मः ५)
बालक राखि लीए गुरदेवि ॥ (८६६-१३, गोंड, मः ५)
प्रभ किरपाल दइआल गोबिंद ॥ (८६६-१३, गोंड, मः ५)
जीअ जंत सगले बखसिंद ॥१॥ (८६६-१४, गोंड, मः ५)
तेरी सरणि प्रभ दीन दइआल ॥ (८६६-१४, गोंड, मः ५)
पारब्रह्म जपि सदा निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (८६६-१५, गोंड, मः ५)
प्रभ दइआल दूसर कोई नाही ॥ (८६६-१५, गोंड, मः ५)
घट घट अंतरि सर्ब समाही ॥ (८६६-१५, गोंड, मः ५)
अपने दास का हलतु पलतु सवारै ॥ (८६६-१६, गोंड, मः ५)
पतित पावन प्रभ बिरदु तुम्हारै ॥२॥ (८६६-१६, गोंड, मः ५)
अउखध कोटि सिमरि गोबिंद ॥ (८६६-१६, गोंड, मः ५)
तंतु मंतु भजीऐ भगवंत ॥ (८६६-१७, गोंड, मः ५)
रोग सोग मिटे प्रभ धिआए ॥ (८६६-१७, गोंड, मः ५)
मन बाँछत पूरन फल पाए ॥३॥ (८६६-१७, गोंड, मः ५)
करन कारन समरथ दइआर ॥ (८६६-१८, गोंड, मः ५)
सर्ब निधान महा बीचार ॥ (८६६-१८, गोंड, मः ५)
नानक बखसि लीए प्रभि आपि ॥ (८६६-१८, गोंड, मः ५)
सदा सदा एको हरि जापि ॥४॥१३॥१५॥ (८६६-१९, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६६-१९)
हरि हरि नामु जपहु मेरे मीत ॥ (८६६-१९, गोंड, मः ५)

पन्ना ८६७

निर्मल होइ तुम्हारा चीत ॥ (८६७-१, गोंड, मः ५)
मन तन की सभ मिटै बलाइ ॥ (८६७-१, गोंड, मः ५)
दूखु अंधेरा सगला जाइ ॥१॥ (८६७-१, गोंड, मः ५)
हरि गुण गावत तरीऐ संसारु ॥ (८६७-२, गोंड, मः ५)
वड भागी पाईऐ पुरखु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६७-२, गोंड, मः ५)
जो जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ (८६७-२, गोंड, मः ५)
तिस कउ पोहि न सकै जमकालु ॥ (८६७-३, गोंड, मः ५)
जग महि आइआ सो परवाणु ॥ (८६७-३, गोंड, मः ५)
गुरमुखि अपना खसमु पछाणु ॥२॥ (८६७-३, गोंड, मः ५)
हरि गुण गावै संत प्रसादि ॥ (८६७-४, गोंड, मः ५)
काम क्रोध मिटहि उनमाद ॥ (८६७-४, गोंड, मः ५)

सदा हजूरि जाणु भगवंत ॥ (८६७-४, गोंड, मः ५)
पूरे गुर का पूरन मंत ॥३॥ (८६७-५, गोंड, मः ५)
हरि धनु खाटि कीए भंडार ॥ (८६७-५, गोंड, मः ५)
मिलि सतिगुर सभि काज सवार ॥ (८६७-५, गोंड, मः ५)
हरि के नाम रंग संगि जागा ॥ (८६७-५, गोंड, मः ५)
हरि चरणी नानक मनु लागा ॥४॥१४॥१६॥ (८६७-६, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६७-६)
भव सागर बोहिथ हरि चरण ॥ (८६७-६, गोंड, मः ५)
सिमरत नामु नाही फिरि मरण ॥ (८६७-७, गोंड, मः ५)
हरि गुण रमत नाही जम पंथ ॥ (८६७-७, गोंड, मः ५)
महा बीचार पंच दूतह मंथ ॥१॥ (८६७-७, गोंड, मः ५)
तउ सरणाई पूरन नाथ ॥ (८६७-८, गोंड, मः ५)
जंत अपने कउ दीजहि हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (८६७-८, गोंड, मः ५)
सिमृति सासत्र बेद पुराण ॥ (८६७-८, गोंड, मः ५)
पारब्रह्म का करहि वखिआण ॥ (८६७-९, गोंड, मः ५)
जोगी जती बैसनो रामदास ॥ (८६७-९, गोंड, मः ५)
मिति नाही ब्रह्म अबिनास ॥२॥ (८६७-९, गोंड, मः ५)
करण पलाह करहि सिव देव ॥ (८६७-१०, गोंड, मः ५)
तिलु नही बूझहि अलख अभेव ॥ (८६७-१०, गोंड, मः ५)
प्रेम भगति जिसु आपे देइ ॥ (८६७-१०, गोंड, मः ५)
जग महि विरले केई केइ ॥३॥ (८६७-११, गोंड, मः ५)
मोहि निरगुण गुणु किछहू नाहि ॥ (८६७-११, गोंड, मः ५)
सर्ब निधान तेरी दृसटी माहि ॥ (८६७-११, गोंड, मः ५)
नानकु दीनु जाचै तेरी सेव ॥ (८६७-१२, गोंड, मः ५)
करि किरपा दीजै गुरदेव ॥४॥१५॥१७॥ (८६७-१२, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६७-१३)
संत का लीआ धरति बिदारउ ॥ (८६७-१३, गोंड, मः ५)
संत का निंदकु अकास ते टारउ ॥ (८६७-१३, गोंड, मः ५)
संत कउ राखउ अपने जीअ नालि ॥ (८६७-१३, गोंड, मः ५)
संत उधारउ ततखिण तालि ॥१॥ (८६७-१४, गोंड, मः ५)
सोई संतु जि भावै राम ॥ (८६७-१४, गोंड, मः ५)
संत गोबिंद कै एकै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (८६७-१४, गोंड, मः ५)
संत कै ऊपरि देइ प्रभु हाथ ॥ (८६७-१५, गोंड, मः ५)
संत कै संगि बसै दिनु राति ॥ (८६७-१५, गोंड, मः ५)
सासि सासि संतह प्रतिपालि ॥ (८६७-१५, गोंड, मः ५)

संत का दोखी राज ते टालि ॥२॥ (८६७-१६, गोंड, मः ५)
संत की निंदा करहु न कोइ ॥ (८६७-१६, गोंड, मः ५)
जो निंदै तिस का पतनु होइ ॥ (८६७-१६, गोंड, मः ५)
जिस कउ राखै सिरजनहारु ॥ (८६७-१७, गोंड, मः ५)
झख मारउ सगल संसारु ॥३॥ (८६७-१७, गोंड, मः ५)
प्रभ अपने का भइआ बिसासु ॥ (८६७-१७, गोंड, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तिस की रासि ॥ (८६७-१८, गोंड, मः ५)
नानक कउ उपजी परतीति ॥ (८६७-१८, गोंड, मः ५)
मनमुख हार गुरमुख सद जीति ॥४॥१६॥१८॥ (८६७-१८, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६७-१९)
नामु निरंजनु नीरि नराइण ॥ (८६७-१९, गोंड, मः ५)
रसना सिमरत पाप बिलाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (८६७-१९, गोंड, मः ५)

पन्ना ८६८

नाराइण सभ माहि निवास ॥ (८६८-१, गोंड, मः ५)
नाराइण घटि घटि परगास ॥ (८६८-१, गोंड, मः ५)
नाराइण कहते नरकि न जाहि ॥ (८६८-१, गोंड, मः ५)
नाराइण सेवि सगल फल पाहि ॥१॥ (८६८-२, गोंड, मः ५)
नाराइण मन माहि अधार ॥ (८६८-२, गोंड, मः ५)
नाराइण बोहिथ संसार ॥ (८६८-२, गोंड, मः ५)
नाराइण कहत जमु भागि पलाइण ॥ (८६८-३, गोंड, मः ५)
नाराइण दंत भाने डाइण ॥२॥ (८६८-३, गोंड, मः ५)
नाराइण सद सद बखसिंद ॥ (८६८-४, गोंड, मः ५)
नाराइण कीने सूख अनंद ॥ (८६८-४, गोंड, मः ५)
नाराइण प्रगट कीनो परताप ॥ (८६८-४, गोंड, मः ५)
नाराइण संत को माई बाप ॥३॥ (८६८-४, गोंड, मः ५)
नाराइण साधसंगि नराइण ॥ (८६८-५, गोंड, मः ५)
बारं बार नराइण गाइण ॥ (८६८-५, गोंड, मः ५)
बसतु अगोचर गुर मिलि लही ॥ (८६८-५, गोंड, मः ५)
नाराइण ओट नानक दास गही ॥४॥१७॥१९॥ (८६८-६, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६८-६)
जा कउ राखै राखणहारु ॥ (८६८-६, गोंड, मः ५)
तिस का अंगु करे निरंकारु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६८-७, गोंड, मः ५)
मात गरभ महि अगनि न जोहै ॥ (८६८-७, गोंड, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु मोहु न पोहै ॥ (८६८-७, गोंड, मः ५)

साधसंगि जपै निरंकारु ॥ (८६८-८, गोंड, मः ५)
निंदक कै मुहि लागै छारु ॥१॥ (८६८-८, गोंड, मः ५)
राम कवचु दास का सन्नाहु ॥ (८६८-८, गोंड, मः ५)
दूत दुसट तिसु पोहत नाहि ॥ (८६८-९, गोंड, मः ५)
जो जो गरबु करे सो जाइ ॥ (८६८-९, गोंड, मः ५)
गरीब दास की प्रभु सरणाइ ॥२॥ (८६८-९, गोंड, मः ५)
जो जो सरणि पइआ हरि राइ ॥ (८६८-१०, गोंड, मः ५)
सो दासु रखिआ अपणै कंठि लाइ ॥ (८६८-१०, गोंड, मः ५)
जे को बहुतु करे अहंकारु ॥ (८६८-१०, गोंड, मः ५)
ओहु खिन महि रुलता खाकू नालि ॥३॥ (८६८-११, गोंड, मः ५)
है भी साचा होवणहारु ॥ (८६८-११, गोंड, मः ५)
सदा सदा जाईं बलिहार ॥ (८६८-११, गोंड, मः ५)
अपणे दास रखे किरपा धारि ॥ (८६८-१२, गोंड, मः ५)
नानक के प्रभ प्राण अधार ॥४॥१८॥२०॥ (८६८-१२, गोंड, मः ५)
गोंड महला ५ ॥ (८६८-१२)
अचरज कथा महा अनूप ॥ (८६८-१३, गोंड, मः ५)
प्रातमा पारब्रह्म का रूपु ॥ रहाउ ॥ (८६८-१३, गोंड, मः ५)
ना इहु बूढा ना इहु बाला ॥ (८६८-१३, गोंड, मः ५)
ना इसु दूखु नही जम जाला ॥ (८६८-१३, गोंड, मः ५)
ना इहु बिनसै ना इहु जाइ ॥ (८६८-१४, गोंड, मः ५)
आदि जुगादी रहिआ समाइ ॥१॥ (८६८-१४, गोंड, मः ५)
ना इसु उसनु नही इसु सीतु ॥ (८६८-१५, गोंड, मः ५)
ना इसु दुसमनु ना इसु मीतु ॥ (८६८-१५, गोंड, मः ५)
ना इसु हरखु नही इसु सोगु ॥ (८६८-१५, गोंड, मः ५)
सभु किछु इस का इहु करनै जोगु ॥२॥ (८६८-१६, गोंड, मः ५)
ना इसु बापु नही इसु माइआ ॥ (८६८-१६, गोंड, मः ५)
इहु अपरम्परु होता आइआ ॥ (८६८-१६, गोंड, मः ५)
पाप पुन्न का इसु लेपु न लागै ॥ (८६८-१७, गोंड, मः ५)
घट घट अंतरि सद ही जागै ॥३॥ (८६८-१७, गोंड, मः ५)
तीनि गुणा इक सकति उपाइआ ॥ (८६८-१७, गोंड, मः ५)
महा माइआ ता की है छाइआ ॥ (८६८-१८, गोंड, मः ५)
अछल अछेद अभेद दइआल ॥ (८६८-१८, गोंड, मः ५)
दीन दइआल सदा किरपाल ॥ (८६८-१८, गोंड, मः ५)
ता की गति मिति कछू न पाइ ॥ (८६८-१९, गोंड, मः ५)
नानक ता कै बलि बलि जाइ ॥४॥१९॥२१॥ (८६८-१९, गोंड, मः ५)

गोंड महला ५ ॥ (८६६-१)
संतन कै बलिहारै जाउ ॥ (८६६-१, गोंड, मः ५)
संतन कै संगि राम गुन गाउ ॥ (८६६-१, गोंड, मः ५)
संत प्रसादि किलविख सभि गए ॥ (८६६-१, गोंड, मः ५)
संत सरणि वडभागी पए ॥१॥ (८६६-२, गोंड, मः ५)
रामु जपत कछु बिघनु न विआपै ॥ (८६६-२, गोंड, मः ५)
गुर प्रसादि अपुना प्रभु जापै ॥१॥ रहाउ ॥ (८६६-२, गोंड, मः ५)
पारब्रह्मु जब होइ दइआल ॥ (८६६-३, गोंड, मः ५)
साधू जन की करै रवाल ॥ (८६६-३, गोंड, मः ५)
कामु क्रोधु इसु तन ते जाइ ॥ (८६६-३, गोंड, मः ५)
राम रतनु वसै मनि आइ ॥२॥ (८६६-४, गोंड, मः ५)
सफलु जनमु ताँ का परवाणु ॥ (८६६-४, गोंड, मः ५)
पारब्रह्मु निकटि करि जाणु ॥ (८६६-४, गोंड, मः ५)
भाइ भगति प्रभ कीरतनि लागै ॥ (८६६-५, गोंड, मः ५)
जनम जनम का सोइआ जागै ॥३॥ (८६६-५, गोंड, मः ५)
चरन कमल जन का आधारु ॥ (८६६-५, गोंड, मः ५)
गुण गोविंद रउं सचु वापारु ॥ (८६६-६, गोंड, मः ५)
दास जना की मनसा पूरि ॥ (८६६-६, गोंड, मः ५)
नानक सुखु पावै जन धूरि ॥४॥२०॥२२॥६॥२८॥ (८६६-६, गोंड, मः ५)
रागु गोंड असटपदीआ महला ५ घरु २ (८६६-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८६६-८)
करि नमस्कार पूरे गुरदेव ॥ (८६६-९, गोंड, मः ५)
सफल मूरति सफल जा की सेव ॥ (८६६-९, गोंड, मः ५)
अंतरजामी पुरखु बिधाता ॥ (८६६-९, गोंड, मः ५)
आठ पहर नाम रंगि राता ॥१॥ (८६६-९, गोंड, मः ५)
गुरु गोबिंद गुरू गोपाल ॥ (८६६-१०, गोंड, मः ५)
अपने दास कउ राखनहार ॥१॥ रहाउ ॥ (८६६-१०, गोंड, मः ५)
पातिसाह साह उमराउ पतीआए ॥ (८६६-११, गोंड, मः ५)
दुसट अहंकारी मारि पचाए ॥ (८६६-११, गोंड, मः ५)
निंदक कै मुखि कीनो रोगु ॥ (८६६-११, गोंड, मः ५)
जै जै कारु करै सभु लोगु ॥२॥ (८६६-११, गोंड, मः ५)
संतन कै मनि महा अनंदु ॥ (८६६-१२, गोंड, मः ५)
संत जपहि गुरदेउ भगवंतु ॥ (८६६-१२, गोंड, मः ५)

संगति के मुख ऊजल भए ॥ (८६९-१२, गोंड, मः ५)
सगल थान निंदक के गए ॥३॥ (८६९-१३, गोंड, मः ५)
सासि सासि जनु सदा सलाहे ॥ (८६९-१३, गोंड, मः ५)
पारब्रह्म गुर बेपरवाहे ॥ (८६९-१३, गोंड, मः ५)
सगल भै मिटे जा की सरनि ॥ (८६९-१३, गोंड, मः ५)
निंदक मारि पाए सभि धरनि ॥४॥ (८६९-१४, गोंड, मः ५)
जन की निंदा करै न कोइ ॥ (८६९-१४, गोंड, मः ५)
जो करै सो दुखीआ होइ ॥ (८६९-१४, गोंड, मः ५)
आठ पहर जनु एकु धिआए ॥ (८६९-१५, गोंड, मः ५)
जमूआ ता कै निकटि न जाए ॥५॥ (८६९-१५, गोंड, मः ५)
जन निरवैर निंदक अहंकारी ॥ (८६९-१५, गोंड, मः ५)
जन भल मानहि निंदक वेकारी ॥ (८६९-१६, गोंड, मः ५)
गुर कै सिखि सतिगुरू धिआइआ ॥ (८६९-१६, गोंड, मः ५)
जन उबरे निंदक नरकि पाइआ ॥६॥ (८६९-१६, गोंड, मः ५)
सुणि साजन मेरे मीत पिआरे ॥ (८६९-१७, गोंड, मः ५)
सति बचन वरतहि हरि दुआरे ॥ (८६९-१७, गोंड, मः ५)
जैसा करे सु तैसा पाए ॥ (८६९-१७, गोंड, मः ५)
अभिमानी की जड़ सरपर जाए ॥७॥ (८६९-१८, गोंड, मः ५)
नीधरिआ सतिगुर धर तेरी ॥ (८६९-१८, गोंड, मः ५)
करि किरपा राखहु जन केरी ॥ (८६९-१८, गोंड, मः ५)
कहु नानक तिसु गुर बलिहारी ॥ (८६९-१९, गोंड, मः ५)
जा कै सिमरनि पैज सवारी ॥८॥१॥२९॥ (८६९-१९, गोंड, मः ५)

पन्ना ८७०

रागु गोंड बाणी भगता की ॥ (८७०-१)
कबीर जी घरु १ (८७०-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८७०-१)
संतु मिलै किछु सुनीऐ कहीऐ ॥ (८७०-२, गोंड, भगत कबीर जी)
मिलै असंतु मसटि करि रहीऐ ॥१॥ (८७०-२, गोंड, भगत कबीर जी)
बाबा बोलना किआ कहीऐ ॥ (८७०-२, गोंड, भगत कबीर जी)
जैसे राम नाम रवि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७०-३, गोंड, भगत कबीर जी)
संतन सिउ बोले उपकारी ॥ (८७०-३, गोंड, भगत कबीर जी)
मूरख सिउ बोले झख मारी ॥२॥ (८७०-३, गोंड, भगत कबीर जी)
बोलत बोलत बढहि बिकारा ॥ (८७०-४, गोंड, भगत कबीर जी)
बिनु बोले किआ करहि बीचारा ॥३॥ (८७०-४, गोंड, भगत कबीर जी)

कहु कबीर छूछा घटु बोलै ॥ (८७०-४, गोंड, भगत कबीर जी)
भरिआ होइ सु कबहु न डोलै ॥४॥१॥ (८७०-५, गोंड, भगत कबीर जी)
गोंड ॥ (८७०-५)
नरू मरै नरु कामि न आवै ॥ (८७०-५, गोंड, भगत कबीर जी)
पसू मरै दस काज सवारै ॥१॥ (८७०-५, गोंड, भगत कबीर जी)
अपने करम की गति मै किआ जानउ ॥ (८७०-६, गोंड, भगत कबीर जी)
मै किआ जानउ बाबा रे ॥१॥ रहाउ ॥ (८७०-६, गोंड, भगत कबीर जी)
हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ (८७०-६, गोंड, भगत कबीर जी)
केस जले जैसे घास का पूला ॥२॥ (८७०-७, गोंड, भगत कबीर जी)
कहु कबीर तब ही नरु जागै ॥ (८७०-७, गोंड, भगत कबीर जी)
जम का डंडु मूंड महि लागै ॥३॥२॥ (८७०-७, गोंड, भगत कबीर जी)
गोंड ॥ (८७०-८)
आकासि गगनु पातालि गगनु है चहु दिसि गगनु रहाइले ॥ (८७०-८, गोंड, भगत कबीर जी)
आनद मूलु सदा पुरखोतमु घटु बिनसै गगनु न जाइले ॥१॥ (८७०-८, गोंड, भगत कबीर जी)
मोहि बैरागु भइओ ॥ (८७०-९, गोंड, भगत कबीर जी)
इहु जीउ आइ कहा गइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७०-९, गोंड, भगत कबीर जी)
पंच ततु मिलि काइआ कीन्ही ततु कहा ते कीनु रे ॥ (८७०-१०, गोंड, भगत कबीर जी)
करम बध तुम जीउ कहत हौ करमहि किनि जीउ दीनु रे ॥२॥ (८७०-१०, गोंड, भगत कबीर जी)
हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे ॥ (८७०-११, गोंड, भगत कबीर जी)
कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे ॥३॥३॥ (८७०-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
रागु गोंड बाणी कबीर जीउ की घरु २ (८७०-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८७०-१३)
भुजा बाँधि भिला करि डारिओ ॥ (८७०-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
हसती क्रोपि मूंड महि मारिओ ॥ (८७०-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
हसति भागि कै चीसा मारै ॥ (८७०-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
इआ मूरति कै हउ बलिहारै ॥१॥ (८७०-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोरु ॥ (८७०-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
काजी बकिबो हसती तोरु ॥१॥ रहाउ ॥ (८७०-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
रे महावत तुझु डारउ काटि ॥ (८७०-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
इसहि तुरावहु घालहु साटि ॥ (८७०-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
हसति न तोरै धरै धिआनु ॥ (८७०-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
वा कै रिदै बसै भगवानु ॥२॥ (८७०-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
किआ अपराधु संत है कीन्हा ॥ (८७०-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
बाँधि पोट कुंचर कउ दीन्हा ॥ (८७०-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
कुंचरु पोट लै लै नमसकारै ॥ (८७०-१८, गोंड, भगत कबीर जी)

बूझी नही काजी अंधिआरै ॥३॥ (८७०-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
तीनि बार पतीआ भरि लीना ॥ (८७०-१८, गोंड, भगत कबीर जी)

पन्ना ८७१

मन कठोरु अजहू न पतीना ॥ (८७१-१, गोंड, भगत कबीर जी)
कहि कबीर हमरा गोबिंदु ॥ (८७१-१, गोंड, भगत कबीर जी)
चउथे पद महि जन की जिंदु ॥४॥१॥४॥ (८७१-१, गोंड, भगत कबीर जी)
गोंड ॥ (८७१-२)
ना इहु मानसु ना इहु देउ ॥ (८७१-२, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इहु जती कहावै सेउ ॥ (८७१-२, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इहु जोगी ना अवधूता ॥ (८७१-२, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इसु माइ न काहू पूता ॥१॥ (८७१-३, गोंड, भगत कबीर जी)
इआ मंदर महि कौन बसाई ॥ (८७१-३, गोंड, भगत कबीर जी)
ता का अंतु न कोऊ पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८७१-३, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इहु गिरही ना ओदासी ॥ (८७१-४, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इहु राज न भीख मंगासी ॥ (८७१-४, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इसु पिंडु न रकू राती ॥ (८७१-४, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इहु ब्रहमनु ना इहु खाती ॥२॥ (८७१-५, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इहु तपा कहावै सेखु ॥ (८७१-५, गोंड, भगत कबीर जी)
ना इहु जीवै न मरता देखु ॥ (८७१-५, गोंड, भगत कबीर जी)
इसु मरते कउ जे कोऊ रोवै ॥ (८७१-५, गोंड, भगत कबीर जी)
जो रोवै सोई पति खोवै ॥३॥ (८७१-६, गोंड, भगत कबीर जी)
गुर प्रसादि मै डगरो पाइआ ॥ (८७१-६, गोंड, भगत कबीर जी)
जीवन मरनु दोऊ मिटवाइआ ॥ (८७१-६, गोंड, भगत कबीर जी)
कहु कबीर इहु राम की अंसु ॥ (८७१-७, गोंड, भगत कबीर जी)
जस कागद पर मिटै न मंसु ॥४॥२॥५॥ (८७१-७, गोंड, भगत कबीर जी)
गोंड ॥ (८७१-८)
तूटे तागे निखुटी पानि ॥ (८७१-८, गोंड, भगत कबीर जी)
दुआर ऊपरि झिलकावहि कान ॥ (८७१-८, गोंड, भगत कबीर जी)
कूच बिचारे फूए फाल ॥ (८७१-८, गोंड, भगत कबीर जी)
इआ मुंडीआ सिरि चढिबो काल ॥१॥ (८७१-८, गोंड, भगत कबीर जी)
इहु मुंडीआ सगलो द्रबु खोई ॥ (८७१-९, गोंड, भगत कबीर जी)
आवत जात नाक सर होई ॥१॥ रहाउ ॥ (८७१-९, गोंड, भगत कबीर जी)
तुरी नारि की छोडी बाता ॥ (८७१-१०, गोंड, भगत कबीर जी)
राम नाम वा का मनु राता ॥ (८७१-१०, गोंड, भगत कबीर जी)

लरिकी लरिकन खैबो नाहि ॥ (८७१-१०, गोंड, भगत कबीर जी)
मुंडीआ अनदिनु धापे जाहि ॥२॥ (८७१-११, गोंड, भगत कबीर जी)
इक दुइ मंदरि इक दुइ बाट ॥ (८७१-११, गोंड, भगत कबीर जी)
हम कउ साथरु उन कउ खाट ॥ (८७१-११, गोंड, भगत कबीर जी)
मूड पलोसि कमर बधि पोथी ॥ (८७१-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
हम कउ चाबनु उन कउ रोटी ॥३॥ (८७१-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
मुंडीआ मुंडीआ हूए एक ॥ (८७१-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
ए मुंडीआ बूडत की टेक ॥ (८७१-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
सुनि अंधली लोई बेपीरि ॥ (८७१-१३, गोंड, भगत कबीर जी)
इन् मुंडीअन भजि सरनि कबीर ॥४॥३॥६॥ (८७१-१३, गोंड, भगत कबीर जी)
गोंड ॥ (८७१-१४)
खसमु मरै तउ नारि न रोवै ॥ (८७१-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
उसु रखवारा अउरो होवै ॥ (८७१-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
रखवारे का होइ बिनास ॥ (८७१-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
आगै नरकु ईहा भोग बिलास ॥१॥ (८७१-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
एक सुहागनि जगत पिआरी ॥ (८७१-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
सगले जीअ जंत की नारी ॥१॥ रहाउ ॥ (८७१-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
सोहागनि गलि सोहै हारु ॥ (८७१-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
संत कउ बिखु बिगसै संसारु ॥ (८७१-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
करि सीगारु बहै पखिआरी ॥ (८७१-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
संत की ठिठकी फिरै बिचारी ॥२॥ (८७१-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
संत भागि ओह पाछै परै ॥ (८७१-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
गुर परसादी मारहु डरै ॥ (८७१-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
साकत की ओह पिंड पराइणि ॥ (८७१-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
हम कउ द्रिसटि परै त्रखि डाइणि ॥३॥ (८७१-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
हम तिस का बहु जानिआ भेउ ॥ (८७१-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
जब हूए क्रिपाल मिले गुरदेउ ॥ (८७१-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
कहु कबीर अब बाहरि परी ॥ (८७१-१९, गोंड, भगत कबीर जी)
संसारै कै अंचलि लरी ॥४॥४॥७॥ (८७१-१९, गोंड, भगत कबीर जी)

पन्ना ८७२

गोंड ॥ (८७२-१)
ग्रिहि सोभा जा कै रे नाहि ॥ (८७२-१, गोंड, भगत कबीर जी)
आवत पहीआ खूधे जाहि ॥ (८७२-१, गोंड, भगत कबीर जी)
वा कै अंतरि नही संतोखु ॥ (८७२-१, गोंड, भगत कबीर जी)

बिनु सोहागनि लागै दोखु ॥१॥ (८७२-१, गोंड, भगत कबीर जी)
धनु सोहागनि महा पवीत ॥ (८७२-२, गोंड, भगत कबीर जी)
तपे तपीसर डोलै चीत ॥१॥ रहाउ ॥ (८७२-२, गोंड, भगत कबीर जी)
सोहागनि किरपन की पूती ॥ (८७२-३, गोंड, भगत कबीर जी)
सेवक तजि जगत सिउ सूती ॥ (८७२-३, गोंड, भगत कबीर जी)
साधू कै ठाढी दरबारि ॥ (८७२-३, गोंड, भगत कबीर जी)
सरनि तेरी मो कउ निसतारि ॥२॥ (८७२-३, गोंड, भगत कबीर जी)
सोहागनि है अति सुंदरी ॥ (८७२-४, गोंड, भगत कबीर जी)
पग नेवर छनक छनहरी ॥ (८७२-४, गोंड, भगत कबीर जी)
जउ लगु प्रान तऊ लगु संगे ॥ (८७२-४, गोंड, भगत कबीर जी)
नाहि त चली बेगि उठि नंगे ॥३॥ (८७२-५, गोंड, भगत कबीर जी)
सोहागनि भवन त्रै लीआ ॥ (८७२-५, गोंड, भगत कबीर जी)
दस अठ पुराण तीर्थ रस कीआ ॥ (८७२-५, गोंड, भगत कबीर जी)
ब्रह्मा बिसनु महेसर बेधे ॥ (८७२-६, गोंड, भगत कबीर जी)
बडे भूपति राजे है छेधे ॥४॥ (८७२-६, गोंड, भगत कबीर जी)
सोहागनि उरवारि न पारि ॥ (८७२-६, गोंड, भगत कबीर जी)
पाँच नारद कै संगि बिधवारि ॥ (८७२-७, गोंड, भगत कबीर जी)
पाँच नारद के मिटवे फूटे ॥ (८७२-७, गोंड, भगत कबीर जी)
कहु कबीर गुर किरपा छूटे ॥५॥५॥८॥ (८७२-७, गोंड, भगत कबीर जी)
गोंड ॥ (८७२-८)
जैसे मंदर महि बलहर ना ठाहरै ॥ (८७२-८, गोंड, भगत कबीर जी)
नाम बिना कैसे पारि उतरै ॥ (८७२-८, गोंड, भगत कबीर जी)
कुम्भ बिना जलु ना टीकावै ॥ (८७२-८, गोंड, भगत कबीर जी)
साधू बिनु ऐसे अबगतु जावै ॥१॥ (८७२-९, गोंड, भगत कबीर जी)
जारउ तिसै जु रामु न चेतै ॥ (८७२-९, गोंड, भगत कबीर जी)
तन मन रमत रहै महि खेतै ॥१॥ रहाउ ॥ (८७२-९, गोंड, भगत कबीर जी)
जैसे हलहर बिना जिमी नही बोईऐ ॥ (८७२-१०, गोंड, भगत कबीर जी)
सूत बिना कैसे मणी परोईऐ ॥ (८७२-१०, गोंड, भगत कबीर जी)
घुंडी बिनु किआ गंठि चड़्हाईऐ ॥ (८७२-११, गोंड, भगत कबीर जी)
साधू बिनु तैसे अबगतु जाईऐ ॥२॥ (८७२-११, गोंड, भगत कबीर जी)
जैसे मात पिता बिनु बालु न होई ॥ (८७२-११, गोंड, भगत कबीर जी)
बिम्ब बिना कैसे कपरे धोई ॥ (८७२-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
घोर बिना कैसे असवार ॥ (८७२-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
साधू बिनु नाही दरवार ॥३॥ (८७२-१२, गोंड, भगत कबीर जी)
जैसे बाजे बिनु नही लीजै फेरी ॥ (८७२-१३, गोंड, भगत कबीर जी)

खसमि दुहागनि तजि अउहेरी ॥ (८७२-१३, गोंड, भगत कबीर जी)
कहै कबीरु एकै करि करना ॥ (८७२-१३, गोंड, भगत कबीर जी)
गुरमुखि होइ बहुरि नही मरना ॥४॥६॥६॥ (८७२-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
गोंड ॥ (८७२-१४)
कूटनु सोइ जु मन कउ कूटै ॥ (८७२-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
मन कूटै तउ जम ते छूटै ॥ (८७२-१४, गोंड, भगत कबीर जी)
कुटि कुटि मनु कसवटी लावै ॥ (८७२-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
सो कूटनु मुकति बहु पावै ॥१॥ (८७२-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
कूटनु किसै कहहु संसार ॥ (८७२-१५, गोंड, भगत कबीर जी)
सगल बोलन के माहि बीचार ॥१॥ रहाउ ॥ (८७२-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
नाचनु सोइ जु मन सिउ नाचै ॥ (८७२-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
झूठि न पतीऐ परचै साचै ॥ (८७२-१६, गोंड, भगत कबीर जी)
इसु मन आगे पूरै ताल ॥ (८७२-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
इसु नाचन के मन रखवाल ॥२॥ (८७२-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
बजारी सो जु बजारहि सोधै ॥ (८७२-१७, गोंड, भगत कबीर जी)
पाँच पलीतह कउ परबोधै ॥ (८७२-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
नउ नाइक की भगति पछानै ॥ (८७२-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
सो बाजारी हम गुर माने ॥३॥ (८७२-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
तसकरु सोइ जि ताति न करै ॥ (८७२-१८, गोंड, भगत कबीर जी)
इंद्री कै जतनि नामु उचरै ॥ (८७२-१९, गोंड, भगत कबीर जी)
कहु कबीर हम ऐसे लखन ॥ (८७२-१९, गोंड, भगत कबीर जी)
धन्नु गुरदेव अति रूप बिचखन ॥४॥७॥१०॥ (८७२-१९, गोंड, भगत कबीर जी)

पन्ना ८७३

गोंड ॥ (८७३-१)
धन्नु गुपाल धन्नु गुरदेव ॥ (८७३-१, गोंड, भगत कबीर जी)
धन्नु अनादि भूखे कवलु टहकेव ॥ (८७३-१, गोंड, भगत कबीर जी)
धनु ओइ संत जिन ऐसी जानी ॥ (८७३-२, गोंड, भगत कबीर जी)
तिन कउ मिलिबो सारिंगपानी ॥१॥ (८७३-२, गोंड, भगत कबीर जी)
आदि पुरख ते होइ अनादि ॥ (८७३-२, गोंड, भगत कबीर जी)
जपीऐ नामु अन्न कै सादि ॥१॥ रहाउ ॥ (८७३-३, गोंड, भगत कबीर जी)
जपीऐ नामु जपीऐ अन्नु ॥ (८७३-३, गोंड, भगत कबीर जी)
अम्भै कै संगि नीका वन्नु ॥ (८७३-३, गोंड, भगत कबीर जी)
अन्नै बाहरि जो नर होवहि ॥ (८७३-४, गोंड, भगत कबीर जी)
तीनि भवन महि अपनी खोवहि ॥२॥ (८७३-४, गोंड, भगत कबीर जी)

छोडहि अन्नु करहि पाखंड ॥ (८७३-४, गोंड, भगत कबीर जी)
ना सोहागनि ना ओहि रंड ॥ (८७३-४, गोंड, भगत कबीर जी)
जग महि बकते दूधाधारी ॥ (८७३-५, गोंड, भगत कबीर जी)
गुपती खावहि वटिका सारी ॥३॥ (८७३-५, गोंड, भगत कबीर जी)
अन्नै बिना न होइ सुकालु ॥ (८७३-५, गोंड, भगत कबीर जी)
तजिऐ अंनि न मिलै गुपालु ॥ (८७३-६, गोंड, भगत कबीर जी)
कहु कबीर हम ऐसे जानिआ ॥ (८७३-६, गोंड, भगत कबीर जी)
धन्नु अनादि ठाकुर मनु मानिआ ॥४॥८॥११॥ (८७३-६, गोंड, भगत कबीर जी)
रागु गोंड बाणी नामदेउ जी की घरु १ (८७३-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८७३-८)
असुमेध जगने ॥ (८७३-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
तुला पुरख दाने ॥ (८७३-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
प्राग इसनाने ॥१॥ (८७३-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
तउ न पुजहि हरि कीरति नामा ॥ (८७३-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
अपुने रामहि भजु रे मन आलसीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७३-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
गइआ पिंडु भरता ॥ (८७३-१०, गोंड, भगत नामदेव जी)
बनारसि असि बसता ॥ (८७३-१०, गोंड, भगत नामदेव जी)
मुखि बेद चतुर पड़ता ॥२॥ (८७३-१०, गोंड, भगत नामदेव जी)
सगल धर्म अछिता ॥ (८७३-११, गोंड, भगत नामदेव जी)
गुर गिआन इंद्री दृड़ता ॥ (८७३-११, गोंड, भगत नामदेव जी)
खटु कर्म सहित रहता ॥३॥ (८७३-११, गोंड, भगत नामदेव जी)
सिवा सकति सम्बादं ॥ (८७३-१२, गोंड, भगत नामदेव जी)
मन छोडि छोडि सगल भेदं ॥ (८७३-१२, गोंड, भगत नामदेव जी)
सिमरि सिमरि गोबिंदं ॥ (८७३-१२, गोंड, भगत नामदेव जी)
भजु नामा तरसि भव सिंधं ॥४॥१॥ (८७३-१२, गोंड, भगत नामदेव जी)
गोंड ॥ (८७३-१३)
नाद भ्रमे जैसे मिरगाए ॥ (८७३-१३, गोंड, भगत नामदेव जी)
प्रान तजे वा को धिआनु न जाए ॥१॥ (८७३-१३, गोंड, भगत नामदेव जी)
ऐसे रामा ऐसे हेरउ ॥ (८७३-१३, गोंड, भगत नामदेव जी)
रामु छोडि चितु अनत न फेरउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७३-१४, गोंड, भगत नामदेव जी)
जिउ मीना हेरै पसूआरा ॥ (८७३-१४, गोंड, भगत नामदेव जी)
सोना गढते हिरै सुनारा ॥२॥ (८७३-१४, गोंड, भगत नामदेव जी)
जिउ बिखई हेरै पर नारी ॥ (८७३-१५, गोंड, भगत नामदेव जी)
कउडा डारत हिरै जुआरी ॥३॥ (८७३-१५, गोंड, भगत नामदेव जी)
जह जह देखउ तह तह रामा ॥ (८७३-१५, गोंड, भगत नामदेव जी)

हरि के चरन नित धिआवै नामा ॥४॥२॥ (८७३-१६, गोंड, भगत नामदेव जी)
गोंड ॥ (८७३-१६)
मो कउ तारि ले रामा तारि ले ॥ (८७३-१६, गोंड, भगत नामदेव जी)
मै अजानु जनु तरिबे न जानउ बाप बीठुला बाह दे ॥१॥ रहाउ ॥ (८७३-१७, गोंड, भगत नामदेव जी)
नर ते सुर होइ जात निमख मै सतिगुर बुधि सिखलाई ॥ (८७३-१७, गोंड, भगत नामदेव जी)
नर ते उपजि सुरग कउ जीतिओ सो अवखध मै पाई ॥१॥ (८७३-१८, गोंड, भगत नामदेव जी)
जहा जहा धूअ नारदु टेके नैकु टिकावहु मोहि ॥ (८७३-१९, गोंड, भगत नामदेव जी)
तेरे नाम अविलंबि बहुतु जन उधरे नामे की निज मति एह ॥२॥३॥ (८७३-१९, गोंड, भगत नामदेव जी)

पन्ना ८७४

गोंड ॥ (८७४-१)
मोहि लागती तालाबेली ॥ (८७४-१, गोंड, भगत नामदेव जी)
बछरे बिनु गाइ अकेली ॥१॥ (८७४-१, गोंड, भगत नामदेव जी)
पानीआ बिनु मीनु तलफै ॥ (८७४-१, गोंड, भगत नामदेव जी)
ऐसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥१॥ रहाउ ॥ (८७४-२, गोंड, भगत नामदेव जी)
जैसे गाइ का बाछा छूटला ॥ (८७४-२, गोंड, भगत नामदेव जी)
थन चोखता माखनु घूटला ॥२॥ (८७४-३, गोंड, भगत नामदेव जी)
नामदेउ नाराइनु पाइआ ॥ (८७४-३, गोंड, भगत नामदेव जी)
गुरु भेटत अलखु लखाइआ ॥३॥ (८७४-३, गोंड, भगत नामदेव जी)
जैसे बिखै हेत पर नारी ॥ (८७४-४, गोंड, भगत नामदेव जी)
ऐसे नामे प्रीति मुरारी ॥४॥ (८७४-४, गोंड, भगत नामदेव जी)
जैसे तापते निर्मल घामा ॥ (८७४-४, गोंड, भगत नामदेव जी)
तैसे राम नामा बिनु बापुरो नामा ॥५॥४॥ (८७४-४, गोंड, भगत नामदेव जी)
रागु गोंड बाणी नामदेउ जीउ की घरु २ (८७४-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८७४-६)
हरि हरि करत मिटे सभि भरमा ॥ (८७४-७, गोंड, भगत नामदेव जी)
हरि को नामु लै ऊतम धरमा ॥ (८७४-७, गोंड, भगत नामदेव जी)
हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ (८७४-७, गोंड, भगत नामदेव जी)
सो हरि अंधुले की लाकरी ॥१॥ (८७४-८, गोंड, भगत नामदेव जी)
हरए नमसते हरए नमह ॥ (८७४-८, गोंड, भगत नामदेव जी)
हरि हरि करत नही दुखु जमह ॥१॥ रहाउ ॥ (८७४-८, गोंड, भगत नामदेव जी)
हरि हरनाखस हरे परान ॥ (८७४-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
अजैमल कीओ बैकुंठहि थान ॥ (८७४-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
सूआ पड़ावत गनिका तरी ॥ (८७४-९, गोंड, भगत नामदेव जी)
सो हरि नैनहु की पूतरी ॥२॥ (८७४-१०, गोंड, भगत नामदेव जी)

हरि हरि करत पूतना तरी ॥ (८७४-१०, गोंड, भगत नामदेव जी)
बाल घातनी कपटहि भरी ॥ (८७४-१०, गोंड, भगत नामदेव जी)
सिमरन द्रोपद सुत उधरी ॥ (८७४-११, गोंड, भगत नामदेव जी)
गऊतम सती सिला निसतरी ॥३॥ (८७४-११, गोंड, भगत नामदेव जी)
केसी कंस मथनु जिनि कीआ ॥ (८७४-११, गोंड, भगत नामदेव जी)
जीअ दानु काली कउ दीआ ॥ (८७४-१२, गोंड, भगत नामदेव जी)
प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ (८७४-१२, गोंड, भगत नामदेव जी)
जासु जपत भै अपदा टरी ॥४॥१॥५॥ (८७४-१२, गोंड, भगत नामदेव जी)
गोंड ॥ (८७४-१३)
भैरउ भूत सीतला धावै ॥ (८७४-१३, गोंड, भगत नामदेव जी)
खर बाहनु उहु छारु उडावै ॥१॥ (८७४-१३, गोंड, भगत नामदेव जी)
हउ तउ एकु रमईआ लैहउ ॥ (८७४-१३, गोंड, भगत नामदेव जी)
आन देव बदलावनि दैहउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७४-१४, गोंड, भगत नामदेव जी)
सिव सिव करते जो नरु धिआवै ॥ (८७४-१४, गोंड, भगत नामदेव जी)
बरद चढे डउरू ढमकावै ॥२॥ (८७४-१४, गोंड, भगत नामदेव जी)
महा माई की पूजा करै ॥ (८७४-१५, गोंड, भगत नामदेव जी)
नर सै नारि होइ अउतरै ॥३॥ (८७४-१५, गोंड, भगत नामदेव जी)
तू कहीअत ही आदि भवानी ॥ (८७४-१५, गोंड, भगत नामदेव जी)
मुकति की बरीआ कहा छपानी ॥४॥ (८७४-१६, गोंड, भगत नामदेव जी)
गुरमति राम नाम गहु मीता ॥ (८७४-१६, गोंड, भगत नामदेव जी)
प्रणवै नामा इउ कहै गीता ॥५॥२॥६॥ (८७४-१७, गोंड, भगत नामदेव जी)
बिलावलु गोंड ॥ (८७४-१७)
आजु नामे बीठलु देखिआ मूरख को समझाऊ रे ॥ रहाउ ॥ (८७४-१७, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
पाँडे तुमरी गाइत्री लोधे का खेतु खाती थी ॥ (८७४-१८, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
लै करि ठेगा टगरी तोरी लाँगत लाँगत जाती थी ॥१॥ (८७४-१८, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
पाँडे तुमरा महादेउ धउले बलद चड़िआ आवतु देखिआ था ॥ (८७४-१९, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
मोदी के घर खाणा पाका वा का लड़का मारिआ था ॥२॥ (८७४-१९, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)

पन्ना ८७५

पाँडे तुमरा रामचंदु सो भी आवतु देखिआ था ॥ (८७५-१, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
रावन सेती सरबर होई घर की जोइ गवाई थी ॥३॥ (८७५-१, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
हिंदू अन्ना तुरकू काणा ॥ (८७५-२, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
दुहाँ ते गिआनी सिआणा ॥ (८७५-२, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
हिंदू पूजै देहुरा मुसलमाणु मसीति ॥ (८७५-३, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)
नामे सोई सेविआ जह देहुरा न मसीति ॥४॥३॥७॥ (८७५-३, बिलावलु गोंड, भगत नामदेव जी)

रागु गोंड बाणी रविदास जीउ की घरु २ (८७५-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८७५-४)
मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ (८७५-५, गोंड, भगत रविदास जी)
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार ॥ (८७५-५, गोंड, भगत रविदास जी)
सोई मुकंदु मुकति का दाता ॥ (८७५-५, गोंड, भगत रविदास जी)
सोई मुकंदु हमरा पित माता ॥१॥ (८७५-५, गोंड, भगत रविदास जी)
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे ॥ (८७५-६, गोंड, भगत रविदास जी)
ता के सेवक कउ सदा अनंदे ॥१॥ रहाउ ॥ (८७५-६, गोंड, भगत रविदास जी)
मुकंद मुकंद हमारे प्रानं ॥ (८७५-७, गोंड, भगत रविदास जी)
जपि मुकंद मसतकि नीसानं ॥ (८७५-७, गोंड, भगत रविदास जी)
सेव मुकंद करै बैरागी ॥ (८७५-७, गोंड, भगत रविदास जी)
सोई मुकंदु दुर्बल धनु लाधी ॥२॥ (८७५-७, गोंड, भगत रविदास जी)
एकु मुकंदु करै उपकारु ॥ (८७५-८, गोंड, भगत रविदास जी)
हमरा कहा करै संसारु ॥ (८७५-८, गोंड, भगत रविदास जी)
मेटी जाति हूए दरबारि ॥ (८७५-८, गोंड, भगत रविदास जी)
तुही मुकंद जोग जुग तारि ॥३॥ (८७५-९, गोंड, भगत रविदास जी)
उपजिओ गिआनु हूआ परगास ॥ (८७५-९, गोंड, भगत रविदास जी)
करि किरपा लीने कीट दास ॥ (८७५-९, गोंड, भगत रविदास जी)
कहु रविदास अब तृसना चूकी ॥ (८७५-१०, गोंड, भगत रविदास जी)
जपि मुकंद सेवा ताहू की ॥४॥१॥ (८७५-१०, गोंड, भगत रविदास जी)
गोंड ॥ (८७५-१०)
जे ओहु अठसठि तीर्थ न्हावै ॥ (८७५-११, गोंड, भगत रविदास जी)
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥ (८७५-११, गोंड, भगत रविदास जी)
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥ (८७५-११, गोंड, भगत रविदास जी)
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥१॥ (८७५-११, गोंड, भगत रविदास जी)
साध का निंदकु कैसे तरै ॥ (८७५-१२, गोंड, भगत रविदास जी)
सरपर जानहु नरक ही परै ॥१॥ रहाउ ॥ (८७५-१२, गोंड, भगत रविदास जी)
जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥ (८७५-१३, गोंड, भगत रविदास जी)
अरपै नारि सीगार समेति ॥ (८७५-१३, गोंड, भगत रविदास जी)
सगली सिम्मृति स्रवनी सुनै ॥ (८७५-१३, गोंड, भगत रविदास जी)
करै निंद कवनै नही गुनै ॥२॥ (८७५-१४, गोंड, भगत रविदास जी)
जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥ (८७५-१४, गोंड, भगत रविदास जी)
भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥ (८७५-१४, गोंड, भगत रविदास जी)
अपना बिगारि बिराँना साँढै ॥ (८७५-१५, गोंड, भगत रविदास जी)
करै निंद बहु जोनी हाँढै ॥३॥ (८७५-१५, गोंड, भगत रविदास जी)

निंदा कहा करहु संसारा ॥ (८७५-१५, गोंड, भगत रविदास जी)
निंदक का परगटि पाहारा ॥ (८७५-१५, गोंड, भगत रविदास जी)
निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥ (८७५-१६, गोंड, भगत रविदास जी)
कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥४॥२॥११॥७॥२॥४९॥ जोड़ु ॥ (८७५-१६, गोंड, भगत रविदास जी)

पन्ना ८७६

रामकली महला १ घरु १ चउपदे (८७६-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (८७६-२)
कोई पड़ता सहसाकिरता कोई पड़ै पुराना ॥ (८७६-४, रामकली, मः १)
कोई नामु जपै जपमाली लागै तिसै धिआना ॥ (८७६-४, रामकली, मः १)
अब ही कब ही किछू न जाना तेरा एको नामु पछाना ॥१॥ (८७६-४, रामकली, मः १)
न जाणा हरे मेरी कवन गते ॥ (८७६-५, रामकली, मः १)
हम मूरख अगिआन सरनि प्रभ तेरी करि किरपा राखहु मेरी लाज पते ॥१॥ रहाउ ॥ (८७६-५, रामकली, मः १)
कबहू जीअड़ा ऊभि चड़तु है कबहू जाइ पइआले ॥ (८७६-६, रामकली, मः १)
लोभी जीअड़ा थिरु न रहतु है चारे कुंडा भाले ॥२॥ (८७६-७, रामकली, मः १)
मरणु लिखाइ मंडल महि आए जीवणु साजहि माई ॥ (८७६-७, रामकली, मः १)
एकि चले हम देखह सुआमी भाहि बलंती आई ॥३॥ (८७६-८, रामकली, मः १)
न किसी का मीतु न किसी का भाई ना किसै बापु न माई ॥ (८७६-८, रामकली, मः १)
प्रणवति नानक जे तू देवहि अंते होइ सखाई ॥४॥१॥ (८७६-९, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७६-१०)
सर्ब जोति तेरी पसरि रही ॥ (८७६-१०, रामकली, मः १)
जह जह देखा तह नरहरी ॥१॥ (८७६-१०, रामकली, मः १)
जीवन तलब निवारि सुआमी ॥ (८७६-११, रामकली, मः १)
अंध कूपि माइआ मनु गाडिआ किउ करि उतरउ पारि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (८७६-११, रामकली, मः १)
जह भीतरि घट भीतरि बसिआ बाहरि काहे नाही ॥ (८७६-१२, रामकली, मः १)
तिन की सार करे नित साहिबु सदा चिंत मन माही ॥२॥ (८७६-१२, रामकली, मः १)
आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ (८७६-१३, रामकली, मः १)
आपे सर्ब रहिआ भरपूरि ॥ (८७६-१३, रामकली, मः १)
सतगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ (८७६-१३, रामकली, मः १)

पन्ना ८७७

जह देखा तह रहिआ समाइ ॥३॥ (८७७-१, रामकली, मः १)
अंतरि सहसा बाहरि माइआ नैणी लागसि बाणी ॥ (८७७-१, रामकली, मः १)
प्रणवति नानकु दासनि दासा परतापहिगा प्राणी ॥४॥२॥ (८७७-२, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७७-२)

जितु दरि वसहि कवनु दरु कहीऐ दरा भीतरि दरु कवनु लहै ॥ (८७७-२, रामकली, मः १)
जिसु दर कारणि फिरा उदासी सो दरु कोई आइ कहै ॥१॥ (८७७-३, रामकली, मः १)
किन बिधि सागरु तरीऐ ॥ (८७७-४, रामकली, मः १)
जीवतिआ नह मरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७७-४, रामकली, मः १)
दुखु दरवाजा रोहु रखवाला आसा अंदेसा दुइ पट जड़े ॥ (८७७-४, रामकली, मः १)
माइआ जलु खाई पाणी घरु बाधिआ सत कै आसणि पुरखु रहै ॥२॥ (८७७-५, रामकली, मः १)
किंते नामा अंतु न जाणिआ तुम सरि नाही अवरु हरे ॥ (८७७-६, रामकली, मः १)
ऊचा नही कहणा मन महि रहणा आपे जाणै आपि करे ॥३॥ (८७७-६, रामकली, मः १)
जब आसा अंदेसा तब ही किउ करि एकु कहै ॥ (८७७-७, रामकली, मः १)
आसा भीतरि रहै निरासा तउ नानक एकु मिलै ॥४॥ (८७७-७, रामकली, मः १)
इन बिधि सागरु तरीऐ ॥ (८७७-८, रामकली, मः १)
जीवतिआ इउ मरीऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥३॥ (८७७-८, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७७-९)
सुरति सबदु साखी मेरी सिंङी बाजै लोकु सुणे ॥ (८७७-९, रामकली, मः १)
पतु झोली मंगण कै ताई भीखिआ नामु पड़े ॥१॥ (८७७-९, रामकली, मः १)
बाबा गोरखु जागै ॥ (८७७-१०, रामकली, मः १)
गोरखु सो जिनि गोइ उठाली करते बार न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (८७७-१०, रामकली, मः १)
पाणी प्राण पवणि बंधि राखे चंदु सूरजु मुखि दीए ॥ (८७७-११, रामकली, मः १)
मरण जीवण कउ धरती दीनी एते गुण विसरे ॥२॥ (८७७-११, रामकली, मः १)
सिध साधिक अरु जोगी जंगम पीर पुरस बहुतेरे ॥ (८७७-१२, रामकली, मः १)
जे तिन मिला त कीरति आखा ता मनु सेव करे ॥३॥ (८७७-१२, रामकली, मः १)
कागदु लूणु रहै घ्रित संगे पाणी कमलु रहै ॥ (८७७-१३, रामकली, मः १)
ऐसे भगत मिलहि जन नानक तिन जमु किआ करै ॥४॥४॥ (८७७-१३, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७७-१४)
सुणि माछिंद्रा नानकु बोलै ॥ (८७७-१४, रामकली, मः १)
वसगति पंच करे नह डोलै ॥ (८७७-१५, रामकली, मः १)
ऐसी जुगति जोग कउ पाले ॥ (८७७-१५, रामकली, मः १)
आपि तरै सगले कुल तारे ॥१॥ (८७७-१५, रामकली, मः १)
सो अउधूतु ऐसी मति पावै ॥ (८७७-१५, रामकली, मः १)
अहिनिसि सुंनि समाधि समावै ॥१॥ रहाउ ॥ (८७७-१६, रामकली, मः १)
भिखिआ भाइ भगति भै चलै ॥ (८७७-१६, रामकली, मः १)
होवै सु तृपति संतोखि अमुलै ॥ (८७७-१७, रामकली, मः १)
धिआन रूपि होइ आसणु पावै ॥ (८७७-१७, रामकली, मः १)
सचि नामि ताड़ी चितु लावै ॥२॥ (८७७-१७, रामकली, मः १)
नानकु बोलै अमृत बाणी ॥ (८७७-१८, रामकली, मः १)

सुणि माछिंद्रा अउधू नीसाणी ॥ (८७७-१८, रामकली, मः १)
आसा माहि निरासु वलाए ॥ (८७७-१८, रामकली, मः १)
निहचउ नानक करते पाए ॥३॥ (८७७-१८, रामकली, मः १)
प्रणवति नानकु अगमु सुणाए ॥ (८७७-१९, रामकली, मः १)
गुर चेले की संधि मिलाए ॥ (८७७-१९, रामकली, मः १)
दीखिआ दारू भोजनु खाइ ॥ (८७७-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ८७८

छिअ दरसन की सोझी पाइ ॥४॥५॥ (८७८-१, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७८-१)
हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवणु लगै मतु जाई ॥ (८७८-१, रामकली, मः १)
सनमुख सिध भेटण कउ आए निहचउ देहि वडिआई ॥१॥ (८७८-२, रामकली, मः १)
गुर तारि तारणहारिआ ॥ (८७८-२, रामकली, मः १)
देहि भगति पूरन अविनासी हउ तुझ कउ बलिहारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७८-३, रामकली, मः १)
सिध साधिक जोगी अरु जंगम एकु सिधु जिनी धिआइआ ॥ (८७८-३, रामकली, मः १)
परसत पैर सिझत ते सुआमी अखरु जिन कउ आइआ ॥२॥ (८७८-४, रामकली, मः १)
जप तप संजम कर्म न जाना नामु जपी प्रभ तेरा ॥ (८७८-५, रामकली, मः १)
गुरु परमेसरु नानक भेटिओ साचै सबदि निबेरा ॥३॥६॥ (८७८-५, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७८-६)
सुरती सुरति रलाईऐ एतु ॥ (८७८-६, रामकली, मः १)
तनु करि तुलहा लंघहि जेतु ॥ (८७८-६, रामकली, मः १)
अंतरि भाहि तिसै तू रखु ॥ (८७८-७, रामकली, मः १)
अहिनिसि दीवा बलै अथकु ॥१॥ (८७८-७, रामकली, मः १)
ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥ (८७८-७, रामकली, मः १)
जितु दीवै सभ सोझी पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७८-७, रामकली, मः १)
हछी मिटी सोझी होइ ॥ (८७८-८, रामकली, मः १)
ता का कीआ मानै सोइ ॥ (८७८-८, रामकली, मः १)
करणी ते करि चकहु ढालि ॥ (८७८-८, रामकली, मः १)
ऐथै ओथै निबही नालि ॥२॥ (८७८-९, रामकली, मः १)
आपे नदरि करे जा सोइ ॥ (८७८-९, रामकली, मः १)
गुरमुखि विरला बूझै कोइ ॥ (८७८-९, रामकली, मः १)
तितु घटि दीवा निहचलु होइ ॥ (८७८-९, रामकली, मः १)
पाणी मरै न बुझाइआ जाइ ॥ (८७८-१०, रामकली, मः १)
ऐसा दीवा नीरि तराइ ॥३॥ (८७८-१०, रामकली, मः १)
डोलै वाउ न वडा होइ ॥ (८७८-१०, रामकली, मः १)

जापै जिउ सिंघासणि लोइ ॥ (८७८-११, रामकली, मः १)
खत्री ब्राहमणु सूदु कि वैसु ॥ (८७८-११, रामकली, मः १)
निरति न पाईआ गणी सहंस ॥ (८७८-११, रामकली, मः १)
ऐसा दीवा बाले कोइ ॥ (८७८-१२, रामकली, मः १)
नानक सो पारंगति होइ ॥४॥७॥ (८७८-१२, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७८-१२)
तुधनो निवणु मन्नणु तेरा नाउ ॥ (८७८-१२, रामकली, मः १)
साचु भेट बैसण कउ थाउ ॥ (८७८-१३, रामकली, मः १)
सतु संतोखु होवै अरदासि ॥ (८७८-१३, रामकली, मः १)
ता सुणि सदि बहाले पासि ॥१॥ (८७८-१३, रामकली, मः १)
नानक बिरथा कोइ न होइ ॥ (८७८-१४, रामकली, मः १)
ऐसी दरगह साचा सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८७८-१४, रामकली, मः १)
प्रापति पोता करमु पसाउ ॥ (८७८-१४, रामकली, मः १)
तू देवहि मंगत जन चाउ ॥ (८७८-१५, रामकली, मः १)
भाडै भाउ पवै तितु आइ ॥ (८७८-१५, रामकली, मः १)
धुरि तै छोडी कीमति पाइ ॥२॥ (८७८-१५, रामकली, मः १)
जिनि किछु कीआ सो किछु करै ॥ (८७८-१६, रामकली, मः १)
अपनी कीमति आपे धरै ॥ (८७८-१६, रामकली, मः १)
गुरमुखि परगटु होआ हरि राइ ॥ (८७८-१६, रामकली, मः १)
ना को आवै ना को जाइ ॥३॥ (८७८-१७, रामकली, मः १)
लोकु धिकारु कहै मंगत जन मागत मानु न पाइआ ॥ (८७८-१७, रामकली, मः १)
सह कीआ गला दर कीआ बाता तै ता कहणु कहाइआ ॥४॥८॥ (८७८-१८, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७८-१८)
सागर महि बूंद बूंद महि सागरु कवणु बुझै बिधि जाणै ॥ (८७८-१८, रामकली, मः १)
उतभुज चलत आपि करि चीनै आपे ततु पछाणै ॥१॥ (८७८-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ८७९

ऐसा गिआनु बीचारै कोई ॥ (८७९-१, रामकली, मः १)
तिस ते मुकति पर्म गति होई ॥१॥ रहाउ ॥ (८७९-१, रामकली, मः १)
दिन महि रैणि रैणि महि दिनीअरु उसन सीत बिधि सोई ॥ (८७९-१, रामकली, मः १)
ता की गति मिति अवरु न जाणै गुर बिनु समझ न होई ॥२॥ (८७९-२, रामकली, मः १)
पुरख महि नारि नारि महि पुरखा बूझहु ब्रह्म गिआनी ॥ (८७९-३, रामकली, मः १)
धुनि महि धिआनु धिआन महि जानिआ गुरमुखि अकथ कहानी ॥३॥ (८७९-३, रामकली, मः १)
मन महि जोति जोति महि मनूआ पंच मिले गुर भाई ॥ (८७९-४, रामकली, मः १)
नानक तिन कै सद बलिहारी जिन एक सबदि लिव लाई ॥४॥९॥ (८७९-५, रामकली, मः १)

रामकली महला १ ॥ (८७६-५)
जा हरि प्रभि किरपा धारी ॥ (८७६-५, रामकली, मः १)
ता हउमै विचहु मारी ॥ (८७६-६, रामकली, मः १)
सो सेवकि राम पिआरी ॥ (८७६-६, रामकली, मः १)
जो गुर सबदी बीचारी ॥१॥ (८७६-६, रामकली, मः १)
सो हरि जनु हरि प्रभ भावै ॥ (८७६-७, रामकली, मः १)
अहिनिसि भगति करे दिनु राती लाज छोडि हरि के गुण गावै ॥१॥ रहाउ ॥ (८७६-७, रामकली, मः १)
धुनि वाजे अनहद घोरा ॥ (८७६-८, रामकली, मः १)
मनु मानिआ हरि रसि मोरा ॥ (८७६-८, रामकली, मः १)
गुर पूरै सचु समाइआ ॥ (८७६-८, रामकली, मः १)
गुरु आदि पुरखु हरि पाइआ ॥२॥ (८७६-९, रामकली, मः १)
सभि नाद बेद गुरबाणी ॥ (८७६-९, रामकली, मः १)
मनु राता सारिगपाणी ॥ (८७६-९, रामकली, मः १)
तह तीर्थ वरत तप सारे ॥ (८७६-१०, रामकली, मः १)
गुर मिलिआ हरि निसतारे ॥३॥ (८७६-१०, रामकली, मः १)
जह आपु गइआ भउ भागा ॥ (८७६-१०, रामकली, मः १)
गुर चरणी सेवकु लागा ॥ (८७६-११, रामकली, मः १)
गुरि सतिगुरि भरमु चुकाइआ ॥ (८७६-११, रामकली, मः १)
कहु नानक सबदि मिलाइआ ॥४॥१०॥ (८७६-११, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (८७६-१२)
छादनु भोजनु मागतु भागै ॥ (८७६-१२, रामकली, मः १)
खुधिआ दुसट जलै दुखु आगै ॥ (८७६-१२, रामकली, मः १)
गुरमति नही लीनी दुरमति पति खोई ॥ (८७६-१३, रामकली, मः १)
गुरमति भगति पावै जनु कोई ॥१॥ (८७६-१३, रामकली, मः १)
जोगी जुगति सहज घरि वासै ॥ (८७६-१३, रामकली, मः १)
एक दृसटि एको करि देखिआ भीखिआ भाइ सबदि तृपतासै ॥१॥ रहाउ ॥ (८७६-१४, रामकली, मः १)
पंच बैल गडीआ देह धारी ॥ (८७६-१५, रामकली, मः १)
राम कला निबहै पति सारी ॥ (८७६-१५, रामकली, मः १)
धर तूटी गाडो सिर भारि ॥ (८७६-१५, रामकली, मः १)
लकरी बिखरि जरी मंझ भारि ॥२॥ (८७६-१६, रामकली, मः १)
गुर का सबदु वीचारि जोगी ॥ (८७६-१६, रामकली, मः १)
दुखु सुखु सम करणा सोग बिओगी ॥ (८७६-१६, रामकली, मः १)
भुगति नामु गुर सबदि बीचारी ॥ (८७६-१७, रामकली, मः १)
असथिरु कंधु जपै निरंकारी ॥३॥ (८७६-१७, रामकली, मः १)
सहज जगोटा बंधन ते छूटा ॥ (८७६-१७, रामकली, मः १)

कामु क्रोधु गुर सबदी लूटा ॥ (८७९-१८, रामकली, मः १)
मन महि मुंद्रा हरि गुर सरणा ॥ (८७९-१८, रामकली, मः १)
नानक राम भगति जन तरणा ॥४॥११॥ (८७९-१८, रामकली, मः १)

पन्ना ८८०

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८८०-१)
रामकली महला ३ घरु १ ॥ (८८०-१)
सतजुगि सचु कहै सभु कोई ॥ (८८०-१, रामकली, मः ३)
घरि घरि भगति गुरमुखि होई ॥ (८८०-१, रामकली, मः ३)
सतजुगि धरमु पैर है चारि ॥ (८८०-२, रामकली, मः ३)
गुरमुखि बूझै को बीचारि ॥१॥ (८८०-२, रामकली, मः ३)
जुग चारे नामि वडिआई होई ॥ (८८०-२, रामकली, मः ३)
जि नामि लागै सो मुकति होवै गुर बिनु नामु न पावै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (८८०-३, रामकली, मः ३)
त्रेतै इक कल कीनी दूरि ॥ (८८०-३, रामकली, मः ३)
पाखंडु वरतिआ हरि जाणनि दूरि ॥ (८८०-४, रामकली, मः ३)
गुरमुखि बूझै सोझी होई ॥ (८८०-४, रामकली, मः ३)
अंतरि नामु वसै सुखु होई ॥२॥ (८८०-४, रामकली, मः ३)
दुआपुरि दूजै दुबिधा होइ ॥ (८८०-५, रामकली, मः ३)
भरमि भुलाने जाणहि दोइ ॥ (८८०-५, रामकली, मः ३)
दुआपुरि धरमि दुइ पैर रखाए ॥ (८८०-५, रामकली, मः ३)
गुरमुखि होवै त नामु दृड़ाए ॥३॥ (८८०-६, रामकली, मः ३)
कलजुगि धर्म कला इक रहाए ॥ (८८०-६, रामकली, मः ३)
इक पैरि चलै माइआ मोहु वधाए ॥ (८८०-६, रामकली, मः ३)
माइआ मोहु अति गुबारु ॥ (८८०-७, रामकली, मः ३)
सतगुरु भेटै नामि उधारु ॥४॥ (८८०-७, रामकली, मः ३)
सभ जुग महि साचा एको सोई ॥ (८८०-७, रामकली, मः ३)
सभ महि सचु दूजा नही कोई ॥ (८८०-८, रामकली, मः ३)
साची कीरति सचु सुखु होई ॥ (८८०-८, रामकली, मः ३)
गुरमुखि नामु वखाणै कोई ॥५॥ (८८०-८, रामकली, मः ३)
सभ जुग महि नामु ऊतमु होई ॥ (८८०-९, रामकली, मः ३)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (८८०-९, रामकली, मः ३)
हरि नामु धिआए भगतु जनु सोई ॥ (८८०-९, रामकली, मः ३)
नानक जुगि जुगि नामि वडिआई होई ॥६॥१॥ (८८०-१०, रामकली, मः ३)
रामकली महला ४ घरु १ (८८०-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८८०-११)

जे वड भाग होवहि वडभागी ता हरि हरि नामु धिआवै ॥ (८८०-१२, रामकली, मः ४)
नामु जपत नामे सुखु पावै हरि नामे नामि समावै ॥१॥ (८८०-१२, रामकली, मः ४)
गुरमुखि भगति करहु सद प्राणी ॥ (८८०-१३, रामकली, मः ४)
हिरदै प्रगासु होवै लिव लागै गुरमति हरि हरि नामि समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (८८०-१३, रामकली, मः ४)
हीरा रतन जवेहर माणक बहु सागर भरपूरु कीआ ॥ (८८०-१४, रामकली, मः ४)
जिसु वड भागु होवै वड मसतकि तिनि गुरमति कढि कढि लीआ ॥२॥ (८८०-१४, रामकली, मः ४)
रतनु जवेहरु लालु हरि नामा गुरि काढि तली दिखलाइआ ॥ (८८०-१५, रामकली, मः ४)
भागहीण मनमुखि नही लीआ तृण ओलै लाखु छपाइआ ॥३॥ (८८०-१६, रामकली, मः ४)
मसतकि भागु होवै धुरि लिखिआ ता सतगुरु सेवा लाए ॥ (८८०-१६, रामकली, मः ४)
नानक रतन जवेहर पावै धनु धनु गुरमति हरि पाए ॥४॥१॥ (८८०-१७, रामकली, मः ४)
रामकली महला ४ ॥ (८८०-१८)
राम जना मिलि भइआ अनंदा हरि नीकी कथा सुनाइ ॥ (८८०-१८, रामकली, मः ४)
दुरमति मैलु गई सभ नीकलि सतसंगति मिलि बुधि पाइ ॥१॥ (८८०-१८, रामकली, मः ४)

राम जन गुरमति रामु बोलाइ ॥ (८८१-१, रामकली, मः ४)
जो जो सुणै कहै सो मुकता राम जपत सोहाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८८१-१, रामकली, मः ४)
जे वड भाग होवहि मुखि मसतकि हरि राम जना भेटाइ ॥ (८८१-२, रामकली, मः ४)
दरसनु संत देहु करि किरपा सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥२॥ (८८१-३, रामकली, मः ४)
हरि के लोग राम जन नीके भागहीण न सुखाइ ॥ (८८१-३, रामकली, मः ४)
जिउ जिउ राम कहहि जन ऊचे नर निंदक डंसु लगाइ ॥३॥ (८८१-४, रामकली, मः ४)
ध्रिगु ध्रिगु नर निंदक जिन जन नही भाए हरि के सखा सखाइ ॥ (८८१-४, रामकली, मः ४)
से हरि के चोर वेमुख मुख काले जिन गुर की पैज न भाइ ॥४॥ (८८१-५, रामकली, मः ४)
दइआ दइआ करि राखहु हरि जीउ हम दीन तेरी सरणाइ ॥ (८८१-६, रामकली, मः ४)
हम बारिक तुम पिता प्रभ मेरे जन नानक बखसि मिलाइ ॥५॥२॥ (८८१-६, रामकली, मः ४)
रामकली महला ४ ॥ (८८१-७)
हरि के सखा साध जन नीके तिन ऊपरि हाथु वतावै ॥ (८८१-७, रामकली, मः ४)
गुरमुखि साध सेई प्रभ भाए करि किरपा आपि मिलावै ॥१॥ (८८१-८, रामकली, मः ४)
राम मो कउ हरि जन मेलि मनि भावै ॥ (८८१-८, रामकली, मः ४)
अमिउ अमिउ हरि रसु है मीठा मिलि संत जना मुखि पावै ॥१॥ रहाउ ॥ (८८१-९, रामकली, मः ४)
हरि के लोग राम जन ऊतम मिलि ऊतम पदवी पावै ॥ (८८१-९, रामकली, मः ४)
हम होवत चेरी दास दासन की मेरा ठाकुरु खुसी करावै ॥२॥ (८८१-१०, रामकली, मः ४)
सेवक जन सेवहि से वडभागी रिद मनि तनि प्रीति लगावै ॥ (८८१-११, रामकली, मः ४)
बिनु प्रीती करहि बहु बाता कूड़ु बोलि कूड़ो फलु पावै ॥३॥ (८८१-११, रामकली, मः ४)
मो कउ धारि कृपा जगजीवन दाते हरि संत पगी ले पावै ॥ (८८१-१२, रामकली, मः ४)

हउ काटउ काटि बाढि सिरु राखउ जितु नानक संतु चड़ि आवै ॥४॥३॥ (८८१-१२, रामकली, मः ४)
रामकली महला ४ ॥ (८८१-१३)
जे वड भाग होवहि वड मेरे जन मिलदिआ ढिल न लाईऐ ॥ (८८१-१३, रामकली, मः ४)
हरि जन अमृत कुंट सर नीके वडभागी तितु नावाईऐ ॥१॥ (८८१-१४, रामकली, मः ४)
राम मो कउ हरि जन कारै लाईऐ ॥ (८८१-१५, रामकली, मः ४)
हउ पाणी पखा पीसउ संत आगै पग मलि मलि धूरि मुखि लाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (८८१-१५, रामकली, मः ४)
हरि जन वडे वडे वड ऊचे जो सतगुर मेलि मिलाईऐ ॥ (८८१-१६, रामकली, मः ४)
सतगुर जेवडु अवरु न कोई मिलि सतगुर पुरख धिआईऐ ॥२॥ (८८१-१६, रामकली, मः ४)
सतगुर सरणि परे तिन पाइआ मेरे ठाकुर लाज रखाईऐ ॥ (८८१-१७, रामकली, मः ४)
इकि अपणै सुआइ आइ बहहि गुर आगै जिउ बगुल समाधि लगाईऐ ॥३॥ (८८१-१८, रामकली, मः ४)
बगुला काग नीच की संगति जाइ करंग बिखू मुखि लाईऐ ॥ (८८१-१८, रामकली, मः ४)
नानक मेलि मेलि प्रभ संगति मिलि संगति हंसु कराईऐ ॥४॥४॥ (८८१-१९, रामकली, मः ४)

पन्ना ८८२

रामकली महला ४ ॥ (८८२-१)
सतगुर दइआ करहु हरि मेलहु मेरे प्रीतम प्राण हरि राइआ ॥ (८८२-१, रामकली, मः ४)
हम चेरी होइ लगह गुर चरणी जिनि हरि प्रभ मारगु पंथु दिखाइआ ॥१॥ (८८२-२, रामकली, मः ४)
राम मै हरि हरि नामु मनि भाइआ ॥ (८८२-२, रामकली, मः ४)
मै हरि बिनु अवरु न कोई बेली मेरा पिता माता हरि सखाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८८२-३, रामकली, मः ४)
मेरे इकु खिनु प्रान न रहहि बिनु प्रीतम बिनु देखे मरहि मेरी माइआ ॥ (८८२-३, रामकली, मः ४)
धनु धनु वड भाग गुर सरणी आए हरि गुर मिलि दरसनु पाइआ ॥२॥ (८८२-४, रामकली, मः ४)
मै अवरु न कोई सूझै बूझै मनि हरि जपु जपउ जपाइआ ॥ (८८२-५, रामकली, मः ४)
नामहीण फिरहि से नकटे तिन घसि घसि नक वढाइआ ॥३॥ (८८२-६, रामकली, मः ४)
मो कउ जगजीवन जीवालि लै सुआमी रिद अंतरि नामु वसाइआ ॥ (८८२-६, रामकली, मः ४)
नानक गुरू गुरू है पूरा मिलि सतिगुर नामु धिआइआ ॥४॥५॥ (८८२-७, रामकली, मः ४)
रामकली महला ४ ॥ (८८२-८)
सतगुरु दाता वडा वड पुरखु है जितु मिलिऐ हरि उर धारे ॥ (८८२-८, रामकली, मः ४)
जीअ दानु गुरि पूरै दीआ हरि अमृत नामु समारे ॥१॥ (८८२-८, रामकली, मः ४)
राम गुरि हरि हरि नामु कंठि धारे ॥ (८८२-९, रामकली, मः ४)
गुरमुखि कथा सुणी मनि भाई धनु धनु वड भाग हमारे ॥१॥ रहाउ ॥ (८८२-९, रामकली, मः ४)
कोटि कोटि तेतीस धिआवहि ता का अंतु न पावहि पारे ॥ (८८२-१०, रामकली, मः ४)
हिरदै काम कामनी मागहि रिधि मागहि हाथु पसारे ॥२॥ (८८२-११, रामकली, मः ४)
हरि जसु जपि जपु वडा वडेरा गुरमुखि रखउ उरि धारे ॥ (८८२-११, रामकली, मः ४)
जे वड भाग होवहि ता जपीऐ हरि भउजलु पारि उतारे ॥३॥ (८८२-१२, रामकली, मः ४)
हरि जन निकटि निकटि हरि जन है हरि राखै कंठि जन धारे ॥ (८८२-१३, रामकली, मः ४)

नानक पिता माता है हरि प्रभु हम बारिक हरि प्रतिपारे ॥४॥६॥१८॥ (८८२-१३, रामकली, मः ४)
रागु रामकली महला ५ घरु १ (८८२-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८८२-१५)
किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥ (८८२-१६, रामकली, मः ५)
माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥१॥ (८८२-१६, रामकली, मः ५)
मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥ (८८२-१७, रामकली, मः ५)
जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (८८२-१७, रामकली, मः ५)
काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥ (८८२-१८, रामकली, मः ५)
जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥२॥ (८८२-१८, रामकली, मः ५)
मनु तनु थापि कीआ सभु अपना एहो आवण जाणा ॥ (८८२-१९, रामकली, मः ५)
जिनि दीआ सो चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥३॥ (८८२-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८८३

जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥ (८८३-१, रामकली, मः ५)
भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥४॥१॥ (८८३-१, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८३-२)
पवहु चरणा तलि ऊपरि आवहु ऐसी सेव कमावहु ॥ (८८३-२, रामकली, मः ५)
आपस ते ऊपरि सभ जाणहु तउ दरगह सुखु पावहु ॥१॥ (८८३-३, रामकली, मः ५)
संतहु ऐसी कथहु कहाणी ॥ (८८३-३, रामकली, मः ५)
सुर पवित्र नर देव पवित्रा खिनु बोलहु गुरमुखि बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (८८३-४, रामकली, मः ५)
परपंचु छोडि सहज घरि बैसहु झूठा कहहु न कोई ॥ (८८३-४, रामकली, मः ५)
सतिगुर मिलहु नवै निधि पावहु इन बिधि ततु बिलोई ॥२॥ (८८३-५, रामकली, मः ५)
भरमु चुकावहु गुरमुखि लिव लावहु आतमु चीनहु भाई ॥ (८८३-६, रामकली, मः ५)
निकटि करि जाणहु सदा प्रभु हाजरु किसु सिउ करहु बुराई ॥३॥ (८८३-६, रामकली, मः ५)
सतिगुरि मिलिऐ मारगु मुकता सहजे मिले सुआमी ॥ (८८३-७, रामकली, मः ५)
धनु धनु से जन जिनी कलि महि हरि पाइआ जन नानक सद कुरबानी ॥४॥२॥ (८८३-७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८३-८)
आवत हरख न जावत दूखा नह बिआपै मन रोगनी ॥ (८८३-८, रामकली, मः ५)
सदा अनंदु गुरु पूरा पाइआ तउ उतरी सगल बिओगनी ॥१॥ (८८३-९, रामकली, मः ५)
इह बिधि है मनु जोगनी ॥ (८८३-१०, रामकली, मः ५)
मोहु सोगु रोगु लोगु न बिआपै तह हरि हरि हरि रस भोगनी ॥१॥ रहाउ ॥ (८८३-१०, रामकली, मः ५)
सुरग पवित्रा मिरत पवित्रा पइआल पवित्र अलोगनी ॥ (८८३-११, रामकली, मः ५)
आगिआकारी सदा सुखु भुंचै जत कत पेखउ हरि गुनी ॥२॥ (८८३-११, रामकली, मः ५)
नह सिव सकती जलु नही पवना तह अकारु नही मेदनी ॥ (८८३-१२, रामकली, मः ५)
सतिगुर जोग का तहा निवासा जह अविगत नाथु अगम धनी ॥३॥ (८८३-१२, रामकली, मः ५)

तनु मनु हरि का धनु सभु हरि का हरि के गुण हउ किआ गनी ॥ (८८३-१३, रामकली, मः ५)
कहु नानक हम तुम गुरि खोई है अम्भै अम्भु मिलोगनी ॥४॥३॥ (८८३-१४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८३-१५)
त्रै गुण रहत रहै निरारी साधिक सिध न जानै ॥ (८८३-१५, रामकली, मः ५)
रतन कोठड़ी अमृत सम्पूरन सतिगुर कै खजानै ॥१॥ (८८३-१५, रामकली, मः ५)
अचरजु किछु कहणु न जाई ॥ (८८३-१६, रामकली, मः ५)
बसतु अगोचर भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८८३-१६, रामकली, मः ५)
मोलु नाही कछु करणै जोगा किआ को कहै सुणावै ॥ (८८३-१६, रामकली, मः ५)
कथन कहण कउ सोझी नाही जो पेखै तिसु बणि आवै ॥२॥ (८८३-१७, रामकली, मः ५)
सोई जाणै करणैहारा कीता किआ बेचारा ॥ (८८३-१८, रामकली, मः ५)
आपणी गति मिति आपे जाणै हरि आपे पूर भंडारा ॥३॥ (८८३-१८, रामकली, मः ५)
ऐसा रसु अमृतु मनि चाखिआ तृपति रहे आघाई ॥ (८८३-१९, रामकली, मः ५)
कहु नानक मेरी आसा पूरी सतिगुर की सरणाई ॥४॥४॥ (८८३-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८८४

रामकली महला ५ ॥ (८८४-१)
अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै बैरी सगले साधे ॥ (८८४-१, रामकली, मः ५)
जिनि बैरी है इहु जगु लूटिआ ते बैरी लै बाधे ॥१॥ (८८४-२, रामकली, मः ५)
सतिगुरु परमेसरु मेरा ॥ (८८४-२, रामकली, मः ५)
अनिक राज भोग रस माणी नाउ जपी भरवासा तेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (८८४-२, रामकली, मः ५)
चीति न आवसि दूजी बाता सिर ऊपरि रखवारा ॥ (८८४-३, रामकली, मः ५)
बेपरवाहु रहत है सुआमी इक नाम कै आधारा ॥२॥ (८८४-४, रामकली, मः ५)
पूरन होइ मिलिओ सुखदाई ऊन न काई बाता ॥ (८८४-४, रामकली, मः ५)
ततु सारु पर्म पदु पाइआ छोडि न कतहू जाता ॥३॥ (८८४-५, रामकली, मः ५)
बरनि न साकउ जैसा तू है साचे अलख अपारा ॥ (८८४-५, रामकली, मः ५)
अतुल अथाह अडोल सुआमी नानक खसमु हमारा ॥४॥५॥ (८८४-६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८४-७)
तू दाना तू अबिचलु तूही तू जाति मेरी पाती ॥ (८८४-७, रामकली, मः ५)
तू अडोलु कदे डोलहि नाही ता हम कैसी ताती ॥१॥ (८८४-७, रामकली, मः ५)
एकै एकै एक तूही ॥ (८८४-८, रामकली, मः ५)
एकै एकै तू राइआ ॥ (८८४-८, रामकली, मः ५)
तउ किरपा ते सुखु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८८४-८, रामकली, मः ५)
तू सागरु हम हंस तुमारे तुम महि माणक लाला ॥ (८८४-९, रामकली, मः ५)
तुम देवहु तिलु संक न मानहु हम भुंचह सदा निहाला ॥२॥ (८८४-९, रामकली, मः ५)
हम बारिक तुम पिता हमारे तुम मुखि देवहु खीरा ॥ (८८४-१०, रामकली, मः ५)

हम खेलह सभि लाड लडावह तुम सद गुणी गहीरा ॥३॥ (८८४-१०, रामकली, मः ५)
तुम पूरन पूरि रहे सम्पूरन हम भी संगि अघाए ॥ (८८४-११, रामकली, मः ५)
मिलत मिलत मिलत मिलि रहिआ नानक कहणु न जाए ॥४॥६॥ (८८४-११, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८४-१२)
कर करि ताल पखावजु नैनहु माथै वजहि रबाबा ॥ (८८४-१२, रामकली, मः ५)
करनहु मधु बासुरी बाजै जिहवा धुनि आगाजा ॥ (८८४-१३, रामकली, मः ५)
निरति करे करि मनूआ नाचै आणे घूघर साजा ॥१॥ (८८४-१३, रामकली, मः ५)
राम को निरतिकारी ॥ (८८४-१४, रामकली, मः ५)
पेखै पेखनहारु दइआला जेता साजु सीगारी ॥१॥ रहाउ ॥ (८८४-१४, रामकली, मः ५)
आखार मंडली धरणि सबाई ऊपरि गगनु चंदोआ ॥ (८८४-१५, रामकली, मः ५)
पवनु विचोला करत इकेला जल ते ओपति होआ ॥ (८८४-१५, रामकली, मः ५)
पंच ततु करि पुतरा कीना किरत मिलावा होआ ॥२॥ (८८४-१६, रामकली, मः ५)
चंदु सूरजु दुइ जरे चरागा चहु कुंट भीतरि राखे ॥ (८८४-१६, रामकली, मः ५)
दस पातउ पंच संगीता एकै भीतरि साथे ॥ (८८४-१७, रामकली, मः ५)
भिन्न भिन्न होइ भाव दिखावहि सभहु निरारी भाखे ॥३॥ (८८४-१७, रामकली, मः ५)
घरि घरि निरति होवै दिनु राती घटि घटि वाजै तूरा ॥ (८८४-१८, रामकली, मः ५)
एकि नचावहि एकि भवावहि इकि आइ जाइ होइ धूरा ॥ (८८४-१९, रामकली, मः ५)
कहु नानक सो बहुरि न नाचै जिसु गुरु भेटै पूरा ॥४॥७॥ (८८४-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८८५

रामकली महला ५ ॥ (८८५-१)
ओअंकारि एक धुनि एकै एकै रागु अलापै ॥ (८८५-१, रामकली, मः ५)
एका देसी एकु दिखावै एको रहिआ बिआपै ॥ (८८५-१, रामकली, मः ५)
एका सुरति एका ही सेवा एको गुर ते जापै ॥१॥ (८८५-२, रामकली, मः ५)
भलो भलो रे कीरतनीआ ॥ (८८५-२, रामकली, मः ५)
राम रमा रामा गुन गाउ ॥ (८८५-३, रामकली, मः ५)
छोडि माइआ के धंध सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८८५-३, रामकली, मः ५)
पंच बजित्र करे संतोखा सात सुरा लै चालै ॥ (८८५-३, रामकली, मः ५)
बाजा माणु ताणु तजि ताना पाउ न बीगा घालै ॥ (८८५-४, रामकली, मः ५)
फेरी फेरु न होवै कब ही एकु सबदु बंधि पालै ॥२॥ (८८५-४, रामकली, मः ५)
नारदी नरहर जाणि हदूरे ॥ (८८५-५, रामकली, मः ५)
घूंघर खड़कु तिआगि विसूरे ॥ (८८५-५, रामकली, मः ५)
सहज अनंद दिखावै भावै ॥ (८८५-५, रामकली, मः ५)
एहु निरतिकारी जनमि न आवै ॥३॥ (८८५-६, रामकली, मः ५)
जे को अपने ठाकुर भावै ॥ (८८५-६, रामकली, मः ५)

कोटि मधि एहु कीरतनु गावै ॥ (८८५-६, रामकली, मः ५)
साधसंगति की जावउ टेक ॥ (८८५-७, रामकली, मः ५)
कहु नानक तिसु कीरतनु एक ॥४॥८॥ (८८५-७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८५-७)
कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥ (८८५-८, रामकली, मः ५)
कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥१॥ (८८५-८, रामकली, मः ५)
कारण करण करीम ॥ (८८५-८, रामकली, मः ५)
किरपा धारि रहीम ॥१॥ रहाउ ॥ (८८५-६, रामकली, मः ५)
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ (८८५-६, रामकली, मः ५)
कोई करै पूजा कोई सिरु निवाइ ॥२॥ (८८५-६, रामकली, मः ५)
कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ (८८५-१०, रामकली, मः ५)
कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥३॥ (८८५-१०, रामकली, मः ५)
कोई कहै तुरकु कोई कहै हिंदू ॥ (८८५-१०, रामकली, मः ५)
कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥४॥ (८८५-११, रामकली, मः ५)
कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ (८८५-११, रामकली, मः ५)
प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥५॥६॥ (८८५-११, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८५-१२)
पवनै महि पवनु समाइआ ॥ (८८५-१२, रामकली, मः ५)
जोती महि जोति रलि जाइआ ॥ (८८५-१२, रामकली, मः ५)
माटी माटी होई एक ॥ (८८५-१३, रामकली, मः ५)
रोवनहारे की कवन टेक ॥१॥ (८८५-१३, रामकली, मः ५)
कउनु मूआ रे कउनु मूआ ॥ (८८५-१३, रामकली, मः ५)
ब्रह्म गिआनी मिलि करहु बीचारा इहु तउ चलतु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८८५-१४, रामकली, मः ५)
अगली किछु खबरि न पाई ॥ (८८५-१४, रामकली, मः ५)
रोवनहारु भि ऊठि सिधाई ॥ (८८५-१५, रामकली, मः ५)
भर्म मोह के बाँधे बंध ॥ (८८५-१५, रामकली, मः ५)
सुपनु भइआ भखलाए अंध ॥२॥ (८८५-१५, रामकली, मः ५)
इहु तउ रचनु रचिआ करतारि ॥ (८८५-१५, रामकली, मः ५)
आवत जावत हुकमि अपारि ॥ (८८५-१६, रामकली, मः ५)
नह को मूआ न मरणै जोगु ॥ (८८५-१६, रामकली, मः ५)
नह बिनसै अबिनासी होगु ॥३॥ (८८५-१६, रामकली, मः ५)
जो इहु जाणहु सो इहु नाहि ॥ (८८५-१७, रामकली, मः ५)
जानणहारे कउ बलि जाउ ॥ (८८५-१७, रामकली, मः ५)
कहु नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥ (८८५-१७, रामकली, मः ५)
ना कोई मरै न आवै जाइआ ॥४॥१०॥ (८८५-१८, रामकली, मः ५)

रामकली महला ५ ॥ (८८५-१८)
जपि गोबिंदु गोपाल लालु ॥ (८८५-१८, रामकली, मः ५)
राम नाम सिमरि तू जीवहि फिरि न खाई महा कालु ॥१॥ रहाउ ॥ (८८५-१९, रामकली, मः ५)
कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भ्रमि आइओ ॥ (८८५-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८८६

बडै भागि साधसंगु पाइओ ॥१॥ (८८६-१, रामकली, मः ५)
बिनु गुर पूरे नाही उधारु ॥ (८८६-१, रामकली, मः ५)
बाबा नानकु आखै एहु बीचारु ॥२॥११॥ (८८६-१, रामकली, मः ५)
रागु रामकली महला ५ घरु २ (८८६-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (८८६-३)
चारि पुकारहि ना तू मानहि ॥ (८८६-४, रामकली, मः ५)
खटु भी एका बात वखानहि ॥ (८८६-४, रामकली, मः ५)
दस असटी मिलि एको कहिआ ॥ (८८६-४, रामकली, मः ५)
ता भी जोगी भेदु न लहिआ ॥१॥ (८८६-४, रामकली, मः ५)
किंकुरी अनूप वाजै ॥ (८८६-५, रामकली, मः ५)
जोगीआ मतवारो रे ॥१॥ रहाउ ॥ (८८६-५, रामकली, मः ५)
प्रथमे वसिआ सत का खेड़ा ॥ (८८६-५, रामकली, मः ५)
तृतीए महि किछु भइआ दुतेड़ा ॥ (८८६-६, रामकली, मः ५)
दुतीआ अरधो अरधि समाइआ ॥ (८८६-६, रामकली, मः ५)
एकु रहिआ ता एकु दिखाइआ ॥२॥ (८८६-६, रामकली, मः ५)
एकै सूति परोए मणीए ॥ (८८६-७, रामकली, मः ५)
गाठी भिनि भिनि भिनि भिनि तणीए ॥ (८८६-७, रामकली, मः ५)
फिरती माला बहु बिधि भाइ ॥ (८८६-७, रामकली, मः ५)
खिंचिआ सूतु त आई थाइ ॥३॥ (८८६-८, रामकली, मः ५)
चहु महि एकै मटु है कीआ ॥ (८८६-८, रामकली, मः ५)
तह बिखड़े थान अनिक खिड़कीआ ॥ (८८६-८, रामकली, मः ५)
खोजत खोजत दुआरे आइआ ॥ (८८६-९, रामकली, मः ५)
ता नानक जोगी महलु घरु पाइआ ॥४॥ (८८६-९, रामकली, मः ५)
इउ किंकुरी आनूप वाजै ॥ (८८६-९, रामकली, मः ५)
सुणि जोगी कै मनि मीठी लागै ॥१॥ रहाउ दूजा ॥१॥१२॥ (८८६-१०, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८६-१०)
तागा करि कै लाई थिगली ॥ (८८६-११, रामकली, मः ५)
लउ नाड़ी सूआ है असती ॥ (८८६-११, रामकली, मः ५)
अम्भै का करि डंडा धरिआ ॥ (८८६-११, रामकली, मः ५)

किआ तू जोगी गरबहि परिआ ॥१॥ (८८६-१२, रामकली, मः ५)
जपि नाथु दिनु रैनाई ॥ (८८६-१२, रामकली, मः ५)
तेरी खिंथा दो दिहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८८६-१२, रामकली, मः ५)
गहरी बिभूत लाइ बैठा ताड़ी ॥ (८८६-१३, रामकली, मः ५)
मेरी तेरी मुंद्रा धारी ॥ (८८६-१३, रामकली, मः ५)
मागहि टूका तृपति न पावै ॥ (८८६-१३, रामकली, मः ५)
नाथु छोडि जाचहि लाज न आवै ॥२॥ (८८६-१३, रामकली, मः ५)
चल चित जोगी आसणु तेरा ॥ (८८६-१४, रामकली, मः ५)
सिंङी वाजै नित उदासेरा ॥ (८८६-१४, रामकली, मः ५)
गुर गोरख की तै बूझ न पाई ॥ (८८६-१४, रामकली, मः ५)
फिरि फिरि जोगी आवै जाई ॥३॥ (८८६-१५, रामकली, मः ५)
जिस नो होआ नाथु कृपाला ॥ (८८६-१५, रामकली, मः ५)
रहरासि हमारी गुर गोपाला ॥ (८८६-१५, रामकली, मः ५)
नामै खिंथा नामै बसतरु ॥ (८८६-१६, रामकली, मः ५)
जन नानक जोगी होआ असथिरु ॥४॥ (८८६-१६, रामकली, मः ५)
इउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई ॥ (८८६-१६, रामकली, मः ५)
हुणि पाइआ गुरु गोसाई ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२॥१३॥ (८८६-१७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८६-१७)
करन करावन सोई ॥ (८८६-१७, रामकली, मः ५)
आन न दीसै कोई ॥ (८८६-१८, रामकली, मः ५)
ठाकुरु मेरा सुघड़ु सुजाना ॥ (८८६-१८, रामकली, मः ५)
गुरमुखि मिलिआ रंगु माना ॥१॥ (८८६-१८, रामकली, मः ५)
ऐसो रे हरि रसु मीठा ॥ (८८६-१९, रामकली, मः ५)
गुरमुखि किनै विरलै डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (८८६-१९, रामकली, मः ५)
निर्मल जोति अमृतु हरि नाम ॥ (८८६-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८८७

पीवत अमर भए निहकाम ॥ (८८७-१, रामकली, मः ५)
तनु मनु सीतलु अगनि निवारी ॥ (८८७-१, रामकली, मः ५)
अनद रूप प्रगटे संसारी ॥२॥ (८८७-१, रामकली, मः ५)
किआ देवउ जा सभु किछु तेरा ॥ (८८७-२, रामकली, मः ५)
सद बलिहारि जाउ लख बेरा ॥ (८८७-२, रामकली, मः ५)
तनु मनु जीउ पिंडु दे साजिआ ॥ (८८७-२, रामकली, मः ५)
गुर किरपा ते नीचु निवाजिआ ॥३॥ (८८७-३, रामकली, मः ५)
खोलि किवारा महलि बुलाइआ ॥ (८८७-३, रामकली, मः ५)

जैसा सा तैसा दिखलाइआ ॥ (८८७-३, रामकली, मः ५)
कहु नानक सभु पड़दा तूटा ॥ (८८७-४, रामकली, मः ५)
हउ तेरा तू मै मनि वूठा ॥४॥३॥१४॥ (८८७-४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८७-४)
सेवकु लाइओ अपुनी सेव ॥ (८८७-५, रामकली, मः ५)
अमृतु नामु दीओ मुखि देव ॥ (८८७-५, रामकली, मः ५)
सगली चिंता आपि निवारी ॥ (८८७-५, रामकली, मः ५)
तिसु गुर कउ हउ सद बलिहारी ॥१॥ (८८७-५, रामकली, मः ५)
काज हमारे पूरे सतगुर ॥ (८८७-६, रामकली, मः ५)
बाजे अनहद तूरे सतगुर ॥१॥ रहाउ ॥ (८८७-६, रामकली, मः ५)
महिमा जा की गहिर गम्भीर ॥ (८८७-७, रामकली, मः ५)
होइ निहालु देइ जिसु धीर ॥ (८८७-७, रामकली, मः ५)
जा के बंधन काटे राइ ॥ (८८७-७, रामकली, मः ५)
सो नरु बहुरि न जोनी पाइ ॥२॥ (८८७-७, रामकली, मः ५)
जा कै अंतरि प्रगटिओ आप ॥ (८८७-८, रामकली, मः ५)
ता कउ नाही दूख संताप ॥ (८८७-८, रामकली, मः ५)
लालु रतनु तिसु पालै परिआ ॥ (८८७-८, रामकली, मः ५)
सगल कुटम्ब ओहु जनु लै तरिआ ॥३॥ (८८७-९, रामकली, मः ५)
ना किछु भरमु न दुबिधा दूजा ॥ (८८७-९, रामकली, मः ५)
एको एकु निरंजन पूजा ॥ (८८७-९, रामकली, मः ५)
जत कत देखउ आपि दइआल ॥ (८८७-१०, रामकली, मः ५)
कहु नानक प्रभ मिले रसाल ॥४॥४॥१५॥ (८८७-१०, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८७-१०)
तन ते छुटकी अपनी धारी ॥ (८८७-११, रामकली, मः ५)
प्रभ की आगिआ लगी पिआरी ॥ (८८७-११, रामकली, मः ५)
जो किछु करै सु मनि मेरै मीठा ॥ (८८७-११, रामकली, मः ५)
ता इहु अचरजु नैनहु डीठा ॥१॥ (८८७-१२, रामकली, मः ५)
अब मोहि जानी रे मेरी गई बलाइ ॥ (८८७-१२, रामकली, मः ५)
बुझि गई तृसन निवारी ममता गुरि पूरै लीओ समझाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८८७-१२, रामकली, मः ५)
करि किरपा राखिओ गुरि सरना ॥ (८८७-१३, रामकली, मः ५)
गुरि पकराए हरि के चरना ॥ (८८७-१४, रामकली, मः ५)
बीस बिसुए जा मन ठहराने ॥ (८८७-१४, रामकली, मः ५)
गुर पारब्रह्म एकै ही जाने ॥२॥ (८८७-१४, रामकली, मः ५)
जो जो कीनो हम तिस के दास ॥ (८८७-१४, रामकली, मः ५)
प्रभ मेरे को सगल निवास ॥ (८८७-१५, रामकली, मः ५)

ना को दूतु नही बैराई ॥ (८८७-१५, रामकली, मः ५)
गलि मिलि चाले एकै भाई ॥३॥ (८८७-१५, रामकली, मः ५)
जा कउ गुरि हरि दीए सूखा ॥ (८८७-१६, रामकली, मः ५)
ता कउ बहुरि न लागहि दूखा ॥ (८८७-१६, रामकली, मः ५)
आपे आपि सर्ब प्रतिपाल ॥ (८८७-१६, रामकली, मः ५)
नानक रातउ रंगि गोपाल ॥४॥५॥१६॥ (८८७-१७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८७-१७)
मुख ते पड़ता टीका सहित ॥ (८८७-१७, रामकली, मः ५)
हिरदै रामु नही पूरन रहत ॥ (८८७-१८, रामकली, मः ५)
उपदेसु करे करि लोक दृड़ावै ॥ (८८७-१८, रामकली, मः ५)
अपना कहिआ आपि न कमावै ॥१॥ (८८७-१८, रामकली, मः ५)
पंडित बेदु बीचारि पंडित ॥ (८८७-१९, रामकली, मः ५)
मन का क्रोधु निवारि पंडित ॥१॥ रहाउ ॥ (८८७-१९, रामकली, मः ५)
आगै राखिओ साल गिरामु ॥ (८८७-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८८८

मनु कीनो दह दिस बिस्रामु ॥ (८८८-१, रामकली, मः ५)
तिलकु चरावै पाई पाइ ॥ (८८८-१, रामकली, मः ५)
लोक पचारा अंधु कमाइ ॥२॥ (८८८-१, रामकली, मः ५)
खटु करमा अरु आसणु धोती ॥ (८८८-२, रामकली, मः ५)
भागठि गृहि पड़ै नित पोथी ॥ (८८८-२, रामकली, मः ५)
माला फेरै मंगै बिभूत ॥ (८८८-२, रामकली, मः ५)
इह बिधि कोइ न तरिओ मीत ॥३॥ (८८८-३, रामकली, मः ५)
सो पंडितु गुर सबदु कमाइ ॥ (८८८-३, रामकली, मः ५)
त्रै गुण की ओसु उतरी माइ ॥ (८८८-३, रामकली, मः ५)
चतुर बेद पूरन हरि नाइ ॥ (८८८-३, रामकली, मः ५)
नानक तिस की सरणी पाइ ॥४॥६॥१७॥ (८८८-४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८८-४)
कोटि बिघन नही आवहि नेरि ॥ (८८८-४, रामकली, मः ५)
अनिक माइआ है ता की चेरि ॥ (८८८-५, रामकली, मः ५)
अनिक पाप ता के पानीहार ॥ (८८८-५, रामकली, मः ५)
जा कउ मइआ भई करतार ॥१॥ (८८८-५, रामकली, मः ५)
जिसहि सहाई होइ भगवान ॥ (८८८-६, रामकली, मः ५)
अनिक जतन उआ कै सरंजाम ॥१॥ रहाउ ॥ (८८८-६, रामकली, मः ५)
करता राखै कीता कउनु ॥ (८८८-६, रामकली, मः ५)

कीरी जीतो सगला भवनु ॥ (८८८-७, रामकली, मः ५)
बेअंत महिमा ता की केतक बरन ॥ (८८८-७, रामकली, मः ५)
बलि बलि जाईऐ ता के चरन ॥२॥ (८८८-७, रामकली, मः ५)
तिन ही कीआ जपु तपु धिआनु ॥ (८८८-८, रामकली, मः ५)
अनिक प्रकार कीआ तिनि दानु ॥ (८८८-८, रामकली, मः ५)
भगतु सोई कलि महि परवानु ॥ (८८८-८, रामकली, मः ५)
जा कउ ठाकुरि दीआ मानु ॥३॥ (८८८-९, रामकली, मः ५)
साधसंगि मिलि भए प्रगास ॥ (८८८-९, रामकली, मः ५)
सहज सूख आस निवास ॥ (८८८-९, रामकली, मः ५)
पूरै सतिगुरि दीआ बिसास ॥ (८८८-१०, रामकली, मः ५)
नानक होए दासनि दास ॥४॥७॥१८॥ (८८८-१०, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८८-१०)
दोसु न दीजै काहू लोग ॥ (८८८-१०, रामकली, मः ५)
जो कमावनु सोई भोग ॥ (८८८-११, रामकली, मः ५)
आपन कर्म आपे ही बंध ॥ (८८८-११, रामकली, मः ५)
आवनु जावनु माइआ धंध ॥१॥ (८८८-११, रामकली, मः ५)
ऐसी जानी संत जनी ॥ (८८८-१२, रामकली, मः ५)
परगासु भइआ पूरे गुर बचनी ॥१॥ रहाउ ॥ (८८८-१२, रामकली, मः ५)
तनु धनु कलतु मिथिआ बिसथार ॥ (८८८-१२, रामकली, मः ५)
हैवर गैवर चालनहार ॥ (८८८-१३, रामकली, मः ५)
राज रंग रूप सभि कूर ॥ (८८८-१३, रामकली, मः ५)
नाम बिना होइ जासी धूर ॥२॥ (८८८-१३, रामकली, मः ५)
भरमि भूले बादि अहंकारी ॥ (८८८-१३, रामकली, मः ५)
संगि नाही रे सगल पसारी ॥ (८८८-१४, रामकली, मः ५)
सोग हरख महि देह बिरधानी ॥ (८८८-१४, रामकली, मः ५)
साकत इव ही करत बिहानी ॥३॥ (८८८-१४, रामकली, मः ५)
हरि का नामु अमृतु कलि माहि ॥ (८८८-१५, रामकली, मः ५)
एहु निधाना साधू पाहि ॥ (८८८-१५, रामकली, मः ५)
नानक गुरु गोविदु जिसु तूठा ॥ (८८८-१५, रामकली, मः ५)
घटि घटि रमईआ तिन ही डीठा ॥४॥८॥१९॥ (८८८-१६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८८-१६)
पंच सबद तह पूरन नाद ॥ (८८८-१६, रामकली, मः ५)
अनहद बाजे अचरज बिसमाद ॥ (८८८-१७, रामकली, मः ५)
केल करहि संत हरि लोग ॥ (८८८-१७, रामकली, मः ५)
पारब्रह्म पूरन निरजोग ॥१॥ (८८८-१७, रामकली, मः ५)

सूख सहज आनंद भवन ॥ (८८८-१८, रामकली, मः ५)
साधसंगि बैसि गुण गावहि तह रोग सोग नही जनम मरन ॥१॥ रहाउ ॥ (८८८-१८, रामकली, मः ५)
ऊहा सिमरहि केवल नामु ॥ (८८८-१९, रामकली, मः ५)
बिरले पावहि ओहु बिस्रामु ॥ (८८८-१९, रामकली, मः ५)
भोजनु भाउ कीर्तन आधारु ॥ (८८८-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८८९

निहचल आसनु बेसुमारु ॥२॥ (८८९-१, रामकली, मः ५)
डिगि न डोलै कतहू न धावै ॥ (८८९-१, रामकली, मः ५)
गुर प्रसादि को इहु महलु पावै ॥ (८८९-१, रामकली, मः ५)
भ्रम भै मोह न माइआ जाल ॥ (८८९-२, रामकली, मः ५)
सुन्न समाधि प्रभू किरपाल ॥३॥ (८८९-२, रामकली, मः ५)
ता का अंतु न पारावारु ॥ (८८९-२, रामकली, मः ५)
आपे गुपतु आपे पासारु ॥ (८८९-३, रामकली, मः ५)
जा कै अंतरि हरि हरि सुआदु ॥ (८८९-३, रामकली, मः ५)
कहनु न जाई नानक बिसमादु ॥४॥९॥२०॥ (८८९-३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८९-४)
भेटत संगि पारब्रह्मु चिति आइआ ॥ (८८९-४, रामकली, मः ५)
संगति करत संतोखु मनि पाइआ ॥ (८८९-४, रामकली, मः ५)
संतह चरन माथा मेरो पउत ॥ (८८९-५, रामकली, मः ५)
अनिक बार संतह डंडउत ॥१॥ (८८९-५, रामकली, मः ५)
इहु मनु संतन कै बलिहारी ॥ (८८९-५, रामकली, मः ५)
जा की ओट गही सुखु पाइआ राखे किरपा धारी ॥१॥ रहाउ ॥ (८८९-६, रामकली, मः ५)
संतह चरण धोइ धोइ पीवा ॥ (८८९-६, रामकली, मः ५)
संतह दरसु पेखि पेखि जीवा ॥ (८८९-६, रामकली, मः ५)
संतह की मेरै मनि आस ॥ (८८९-७, रामकली, मः ५)
संत हमारी निर्मल रासि ॥२॥ (८८९-७, रामकली, मः ५)
संत हमारा राखिआ पड़दा ॥ (८८९-७, रामकली, मः ५)
संत प्रसादि मोहि कबहू न कड़दा ॥ (८८९-८, रामकली, मः ५)
संतह संगु दीआ किरपाल ॥ (८८९-८, रामकली, मः ५)
संत सहाई भए दइआल ॥३॥ (८८९-८, रामकली, मः ५)
सुरति मति बुधि परगासु ॥ (८८९-९, रामकली, मः ५)
गहिर गम्भीर अपार गुणतासु ॥ (८८९-९, रामकली, मः ५)
जीअ जंत सगले प्रतिपाल ॥ (८८९-९, रामकली, मः ५)
नानक संतह देखि निहाल ॥४॥१०॥२१॥ (८८९-१०, रामकली, मः ५)

रामकली महला ५ ॥ (८८६-१०)
तेरै काजि न ग्रिहु राजु मालु ॥ (८८६-१०, रामकली, मः ५)
तेरै काजि न बिखै जंजालु ॥ (८८६-१०, रामकली, मः ५)
इसट मीत जाणु सभ छलै ॥ (८८६-११, रामकली, मः ५)
हरि हरि नामु संगि तेरै चलै ॥१॥ (८८६-११, रामकली, मः ५)
राम नाम गुण गाइ ले मीता हरि सिमरत तेरी लाज रहै ॥ (८८६-११, रामकली, मः ५)
हरि सिमरत जमु कछु न कहै ॥१॥ रहाउ ॥ (८८६-१२, रामकली, मः ५)
बिनु हरि सगल निरारथ काम ॥ (८८६-१२, रामकली, मः ५)
सुइना रुपा माटी दाम ॥ (८८६-१३, रामकली, मः ५)
गुर का सबदु जापि मन सुखा ॥ (८८६-१३, रामकली, मः ५)
ईहा ऊहा तेरो ऊजल मुखा ॥२॥ (८८६-१३, रामकली, मः ५)
करि करि थाके वडे वडेरे ॥ (८८६-१४, रामकली, मः ५)
किन ही न कीए काज माइआ पूरे ॥ (८८६-१४, रामकली, मः ५)
हरि हरि नामु जपै जनु कोइ ॥ (८८६-१४, रामकली, मः ५)
ता की आसा पूरन होइ ॥३॥ (८८६-१५, रामकली, मः ५)
हरि भगतन को नामु अधारु ॥ (८८६-१५, रामकली, मः ५)
संती जीता जनमु अपारु ॥ (८८६-१५, रामकली, मः ५)
हरि संतु करे सोई परवाणु ॥ (८८६-१६, रामकली, मः ५)
नानक दासु ता कै कुरबाणु ॥४॥११॥२२॥ (८८६-१६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८८६-१६)
सिंचहि दरबु देहि दुखु लोग ॥ (८८६-१७, रामकली, मः ५)
तेरै काजि न अवरा जोग ॥ (८८६-१७, रामकली, मः ५)
करि अहंकारु होइ वरतहि अंध ॥ (८८६-१७, रामकली, मः ५)
जम की जेवड़ी तू आगै बंध ॥१॥ (८८६-१७, रामकली, मः ५)
छाडि विडाणी ताति मूड़े ॥ (८८६-१८, रामकली, मः ५)
ईहा बसना राति मूड़े ॥ (८८६-१८, रामकली, मः ५)
माइआ के माते तै उठि चलना ॥ (८८६-१८, रामकली, मः ५)
राचि रहिओ तू संगि सुपना ॥१॥ रहाउ ॥ (८८६-१९, रामकली, मः ५)
बाल बिवसथा बारिकु अंध ॥ (८८६-१९, रामकली, मः ५)
भरि जोबनि लागा दुरगंध ॥ (८८६-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९०

त्रितीअ बिवसथा सिंचे माइ ॥ (८९०-१, रामकली, मः ५)
बिरधि भइआ छोडि चलिओ पछुताइ ॥२॥ (८९०-१, रामकली, मः ५)
चिरंकाल पाई द्रुलभ देह ॥ (८९०-१, रामकली, मः ५)

नाम बिहूणी होई खेह ॥ (८९०-२, रामकली, मः ५)
पसू परेत मुगध ते बुरी ॥ (८९०-२, रामकली, मः ५)
तिसहि न बूझै जिनि एह सिरी ॥३॥ (८९०-२, रामकली, मः ५)
सुणि करतार गोविंद गोपाल ॥ (८९०-३, रामकली, मः ५)
दीन दइआल सदा किरपाल ॥ (८९०-३, रामकली, मः ५)
तुमहि छडावहु छुटकहि बंध ॥ (८९०-३, रामकली, मः ५)
बखसि मिलावहु नानक जग अंध ॥४॥१२॥२३॥ (८९०-४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९०-४)
करि संजोगु बनाई काछि ॥ (८९०-४, रामकली, मः ५)
तिसु संगि रहिओ इआना राचि ॥ (८९०-५, रामकली, मः ५)
प्रतिपारै नित सारि समारै ॥ (८९०-५, रामकली, मः ५)
अंत की बार ऊठि सिधारै ॥१॥ (८९०-५, रामकली, मः ५)
नाम बिना सभु झूठु परानी ॥ (८९०-६, रामकली, मः ५)
गोविद भजन बिनु अवर संगि राते ते सभि माइआ मूठु परानी ॥१॥ रहाउ ॥ (८९०-६, रामकली, मः ५)
तीर्थ नाइ न उतरसि मैलु ॥ (८९०-७, रामकली, मः ५)
कर्म धर्म सभि हउमै फैलु ॥ (८९०-७, रामकली, मः ५)
लोक पचारै गति नही होइ ॥ (८९०-७, रामकली, मः ५)
नाम बिहूणे चलसहि रोइ ॥२॥ (८९०-८, रामकली, मः ५)
बिनु हरि नाम न टूटसि पटल ॥ (८९०-८, रामकली, मः ५)
सोधे सासत्र सिमृति सगल ॥ (८९०-८, रामकली, मः ५)
सो नामु जपै जिसु आपि जपाए ॥ (८९०-८, रामकली, मः ५)
सगल फला से सूखि समाए ॥३॥ (८९०-९, रामकली, मः ५)
राखनहारे राखहु आपि ॥ (८९०-९, रामकली, मः ५)
सगल सुखा प्रभ तुमरै हाथि ॥ (८९०-९, रामकली, मः ५)
जितु लावहि तितु लागह सुआमी ॥ (८९०-१०, रामकली, मः ५)
नानक साहिबु अंतरजामी ॥४॥१३॥२४॥ (८९०-१०, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९०-११)
जो किछु करै सोई सुखु जाना ॥ (८९०-११, रामकली, मः ५)
मनु असमझु साधसंगि पतीआना ॥ (८९०-११, रामकली, मः ५)
डोलन ते चूका ठहराइआ ॥ (८९०-११, रामकली, मः ५)
सति माहि ले सति समाइआ ॥१॥ (८९०-१२, रामकली, मः ५)
दूखु गइआ सभु रोगु गइआ ॥ (८९०-१२, रामकली, मः ५)
प्रभ की आगिआ मन महि मानी महा पुरख का संगु भइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (८९०-१२, रामकली, मः ५)
सगल पवित्र सर्ब निरमला ॥ (८९०-१३, रामकली, मः ५)
जो वरताए सोई भला ॥ (८९०-१३, रामकली, मः ५)

जह राखै सोई मुकति थानु ॥ (८९०-१४, रामकली, मः ५)
जो जपाए सोई नामु ॥२॥ (८९०-१४, रामकली, मः ५)
अठसठि तीर्थ जह साध पग धरहि ॥ (८९०-१४, रामकली, मः ५)
तह बैकुंठु जह नामु उचरहि ॥ (८९०-१५, रामकली, मः ५)
सर्ब अनंद जब दरसनु पाईऐ ॥ (८९०-१५, रामकली, मः ५)
राम गुणा नित नित हरि गाईऐ ॥३॥ (८९०-१५, रामकली, मः ५)
आपे घटि घटि रहिआ बिआपि ॥ (८९०-१६, रामकली, मः ५)
दइआल पुरख परगट परताप ॥ (८९०-१६, रामकली, मः ५)
कपट खुलाने भ्रम नाठे दूरे ॥ (८९०-१६, रामकली, मः ५)
नानक कउ गुर भेटे पूरे ॥४॥१४॥२५॥ (८९०-१७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९०-१७)
कोटि जाप ताप बिस्राम ॥ (८९०-१७, रामकली, मः ५)
रिधि बुधि सिधि सुर गिआन ॥ (८९०-१८, रामकली, मः ५)
अनिक रूप रंग भोग रसै ॥ (८९०-१८, रामकली, मः ५)
गुरमुखि नामु निमख रिदै वसै ॥१॥ (८९०-१८, रामकली, मः ५)
हरि के नाम की वडिआई ॥ (८९०-१९, रामकली, मः ५)
कीमति कहणु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८९०-१९, रामकली, मः ५)
सूरबीर धीरज मति पूरा ॥ (८९०-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९१

सहज समाधि धुनि गहिर गम्भीरा ॥ (८९१-१, रामकली, मः ५)
सदा मुकतु ता के पूरे काम ॥ (८९१-१, रामकली, मः ५)
जा कै रिदै वसै हरि नाम ॥२॥ (८९१-१, रामकली, मः ५)
सगल सूख आनंद अरोग ॥ (८९१-२, रामकली, मः ५)
समदरसी पूरन निरजोग ॥ (८९१-२, रामकली, मः ५)
आइ न जाइ डोलै कत नाही ॥ (८९१-२, रामकली, मः ५)
जा कै नामु बसै मन माही ॥३॥ (८९१-२, रामकली, मः ५)
दीन दइआल गोपाल गोविंद ॥ (८९१-३, रामकली, मः ५)
गुरमुखि जपीऐ उतरै चिंद ॥ (८९१-३, रामकली, मः ५)
नानक कउ गुरि दीआ नामु ॥ (८९१-३, रामकली, मः ५)
संतन की टहल संत का कामु ॥४॥१५॥२६॥ (८९१-४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९१-४)
बीज मंत्रु हरि कीरतनु गाउ ॥ (८९१-४, रामकली, मः ५)
आगै मिली निथावे थाउ ॥ (८९१-५, रामकली, मः ५)
गुर पूरे की चरणी लागु ॥ (८९१-५, रामकली, मः ५)

जनम जनम का सोइआ जागु ॥१॥ (८९१-५, रामकली, मः ५)
हरि हरि जापु जपला ॥ (८९१-६, रामकली, मः ५)
गुर किरपा ते हिरदै वासै भउजलु पारि परला ॥१॥ रहाउ ॥ (८९१-६, रामकली, मः ५)
नामु निधानु धिआइ मन अटल ॥ (८९१-६, रामकली, मः ५)
ता छूटहि माइआ के पटल ॥ (८९१-७, रामकली, मः ५)
गुर का सबदु अमृत रसु पीउ ॥ (८९१-७, रामकली, मः ५)
ता तेरा होइ निर्मल जीउ ॥२॥ (८९१-७, रामकली, मः ५)
सोधत सोधत सोधि बीचारा ॥ (८९१-८, रामकली, मः ५)
बिनु हरि भगति नही छुटकारा ॥ (८९१-८, रामकली, मः ५)
सो हरि भजनु साध कै संगि ॥ (८९१-८, रामकली, मः ५)
मनु तनु रापै हरि कै रंगि ॥३॥ (८९१-९, रामकली, मः ५)
छोडि सिआणप बहु चतुराई ॥ (८९१-९, रामकली, मः ५)
मन बिनु हरि नावै जाइ न काई ॥ (८९१-९, रामकली, मः ५)
दइआ धारी गोविद गोसाई ॥ (८९१-१०, रामकली, मः ५)
हरि हरि नानक टेक टिकाई ॥४॥१६॥२७॥ (८९१-१०, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९१-११)
संत कै संगि राम रंग केल ॥ (८९१-११, रामकली, मः ५)
आगै जम सिउ होइ न मेल ॥ (८९१-११, रामकली, मः ५)
अहम्बुधि का भइआ बिनास ॥ (८९१-११, रामकली, मः ५)
दुरमति होई सगली नास ॥१॥ (८९१-१२, रामकली, मः ५)
राम नाम गुण गाइ पंडित ॥ (८९१-१२, रामकली, मः ५)
कर्म काँड अहंकारु न काजै कुसल सेती घरि जाहि पंडित ॥१॥ रहाउ ॥ (८९१-१२, रामकली, मः ५)
हरि का जसु निधि लीआ लाभ ॥ (८९१-१३, रामकली, मः ५)
पूरन भए मनोरथ साभ ॥ (८९१-१३, रामकली, मः ५)
दुखु नाठा सुखु घर महि आइआ ॥ (८९१-१४, रामकली, मः ५)
संत प्रसादि कमलु बिगसाइआ ॥२॥ (८९१-१४, रामकली, मः ५)
नाम रतनु जिनि पाइआ दानु ॥ (८९१-१४, रामकली, मः ५)
तिसु जन होए सगल निधान ॥ (८९१-१५, रामकली, मः ५)
संतोखु आइआ मनि पूरा पाइ ॥ (८९१-१५, रामकली, मः ५)
फिरि फिरि मागन काहे जाइ ॥३॥ (८९१-१५, रामकली, मः ५)
हरि की कथा सुनत पवित ॥ (८९१-१६, रामकली, मः ५)
जिहवा बकत पाई गति मति ॥ (८९१-१६, रामकली, मः ५)
सो परवाणु जिसु रिदै वसाई ॥ (८९१-१६, रामकली, मः ५)
नानक ते जन ऊतम भाई ॥४॥१७॥२८॥ (८९१-१७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९१-१७)

गहु करि पकरी न आई हाथि ॥ (८९१-१७, रामकली, मः ५)
प्रीति करी चाली नही साथि ॥ (८९१-१८, रामकली, मः ५)
कहु नानक जउ तिआगि दई ॥ (८९१-१८, रामकली, मः ५)
तब ओह चरणी आइ पई ॥१॥ (८९१-१८, रामकली, मः ५)
सुणि संतहु निर्मल बीचार ॥ (८९१-१९, रामकली, मः ५)
राम नाम बिनु गति नही काई गुरु पूरा भेटत उधार ॥१॥ रहाउ ॥ (८९१-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९२

जब उस कउ कोई देवै मानु ॥ (८९२-१, रामकली, मः ५)
तब आपस ऊपरि रखै गुमानु ॥ (८९२-१, रामकली, मः ५)
जब उस कउ कोई मनि परहरै ॥ (८९२-१, रामकली, मः ५)
तब ओह सेवकि सेवा करै ॥२॥ (८९२-२, रामकली, मः ५)
मुखि बेरावै अंति ठगावै ॥ (८९२-२, रामकली, मः ५)
इकतु ठउर ओह कही न समावै ॥ (८९२-२, रामकली, मः ५)
उनि मोहे बहुते ब्रहमंड ॥ (८९२-३, रामकली, मः ५)
राम जनी कीनी खंड खंड ॥३॥ (८९२-३, रामकली, मः ५)
जो मागै सो भूखा रहै ॥ (८९२-३, रामकली, मः ५)
इसु संगि राचै सु कछू न लहै ॥ (८९२-३, रामकली, मः ५)
इसहि तिआगि सतसंगति करै ॥ (८९२-४, रामकली, मः ५)
वडभागी नानक ओहु तरै ॥४॥१८॥२९॥ (८९२-४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९२-४)
आतम रामु सर्ब महि पेखु ॥ (८९२-५, रामकली, मः ५)
पूरन पूरि रहिआ प्रभ एकु ॥ (८९२-५, रामकली, मः ५)
रतनु अमोलु रिदे महि जानु ॥ (८९२-५, रामकली, मः ५)
अपनी वसतु तू आपि पछानु ॥१॥ (८९२-६, रामकली, मः ५)
पी अमृतु संतन परसादि ॥ (८९२-६, रामकली, मः ५)
वडे भाग होवहि तउ पाईऐ बिनु जिहवा किआ जाणै सुआदु ॥१॥ रहाउ ॥ (८९२-६, रामकली, मः ५)
अठ दस बेद सुने कह डोरा ॥ (८९२-७, रामकली, मः ५)
कोटि प्रगास न दिसै अंधेरा ॥ (८९२-७, रामकली, मः ५)
पसू परीति घास संगि रचै ॥ (८९२-८, रामकली, मः ५)
जिसु नही बुझावै सो कितु बिधि बुझै ॥२॥ (८९२-८, रामकली, मः ५)
जानणहारु रहिआ प्रभु जानि ॥ (८९२-८, रामकली, मः ५)
ओति पोति भगतन संगानि ॥ (८९२-९, रामकली, मः ५)
बिगसि बिगसि अपुना प्रभु गावहि ॥ (८९२-९, रामकली, मः ५)
नानक तिन जम नेड़ि न आवहि ॥३॥१९॥३०॥ (८९२-९, रामकली, मः ५)

रामकली महला ५ ॥ (८९२-१०)
दीनो नामु कीओ पवितु ॥ (८९२-१०, रामकली, मः ५)
हरि धनु रासि निरास इह बितु ॥ (८९२-१०, रामकली, मः ५)
काटी बंधि हरि सेवा लाए ॥ (८९२-११, रामकली, मः ५)
हरि हरि भगति राम गुण गाए ॥१॥ (८९२-११, रामकली, मः ५)
बाजे अनहद बाजा ॥ (८९२-११, रामकली, मः ५)
रसकि रसकि गुण गावहि हरि जन अपनै गुरदेवि निवाजा ॥१॥ रहाउ ॥ (८९२-१२, रामकली, मः ५)
आइ बनिओ पूरबला भागु ॥ (८९२-१२, रामकली, मः ५)
जनम जनम का सोइआ जागु ॥ (८९२-१३, रामकली, मः ५)
गई गिलानि साध कै संगि ॥ (८९२-१३, रामकली, मः ५)
मनु तनु रातो हरि कै रंगि ॥२॥ (८९२-१३, रामकली, मः ५)
राखे राखनहार दइआल ॥ (८९२-१४, रामकली, मः ५)
ना किछु सेवा ना किछु घाल ॥ (८९२-१४, रामकली, मः ५)
करि किरपा प्रभि कीनी दइआ ॥ (८९२-१४, रामकली, मः ५)
बूडत दुख महि काढि लइआ ॥३॥ (८९२-१४, रामकली, मः ५)
सुणि सुणि उपजिओ मन महि चाउ ॥ (८९२-१५, रामकली, मः ५)
आठ पहर हरि के गुण गाउ ॥ (८९२-१५, रामकली, मः ५)
गावत गावत परम गति पाई ॥ (८९२-१६, रामकली, मः ५)
गुर प्रसादि नानक लिव लाई ॥४॥२०॥३१॥ (८९२-१६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९२-१६)
कउडी बदलै तिआगै रतनु ॥ (८९२-१७, रामकली, मः ५)
छोडि जाइ ताहू का जतनु ॥ (८९२-१७, रामकली, मः ५)
सो संचै जो होछी बात ॥ (८९२-१७, रामकली, मः ५)
माइआ मोहिआ टेढउ जात ॥१॥ (८९२-१७, रामकली, मः ५)
अभागे तै लाज नाही ॥ (८९२-१८, रामकली, मः ५)
सुख सागर पूरन परमेसरु हरि न चेतिओ मन माही ॥१॥ रहाउ ॥ (८९२-१८, रामकली, मः ५)
अमृतु कउरा बिखिआ मीठी ॥ (८९२-१९, रामकली, मः ५)
साकत की बिधि नैनहु डीठी ॥ (८९२-१९, रामकली, मः ५)
कूड़ि कपटि अहंकारि रीझाना ॥ (८९२-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९३

नामु सुनत जनु बिछूअ डसाना ॥२॥ (८९३-१, रामकली, मः ५)
माइआ कारणि सद ही झूरै ॥ (८९३-१, रामकली, मः ५)
मनि मुखि कबहि न उसतति करै ॥ (८९३-१, रामकली, मः ५)
निरभउ निरंकार दातारु ॥ (८९३-२, रामकली, मः ५)

तिसु सिउ प्रीति न करै गवारु ॥३॥ (८९३-२, रामकली, मः ५)
सभ साहा सिरि साचा साहु ॥ (८९३-२, रामकली, मः ५)
वेमुहताजु पूरा पातिसाहु ॥ (८९३-३, रामकली, मः ५)
मोह मगन लपटिओ भ्रम गिरह ॥ (८९३-३, रामकली, मः ५)
नानक तरीऐ तेरी मिहर ॥४॥२१॥३२॥ (८९३-३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९३-४)
रैणि दिनसु जपउ हरि नाउ ॥ (८९३-४, रामकली, मः ५)
आगै दरगह पावउ थाउ ॥ (८९३-४, रामकली, मः ५)
सदा अनंदु न होवी सोगु ॥ (८९३-४, रामकली, मः ५)
कबहू न बिआपै हउमै रोगु ॥१॥ (८९३-५, रामकली, मः ५)
खोजहु संतहु हरि ब्रह्म गिआनी ॥ (८९३-५, रामकली, मः ५)
बिसमन बिसम भए बिसमादा परम गति पावहि हरि सिमरि परानी ॥१॥ रहाउ ॥ (८९३-५, रामकली, मः ५)
गनि मिनि देखहु सगल बीचारि ॥ (८९३-६, रामकली, मः ५)
नाम बिना को सकै न तारि ॥ (८९३-७, रामकली, मः ५)
सगल उपाव न चालहि संगि ॥ (८९३-७, रामकली, मः ५)
भवजलु तरीऐ प्रभ कै रंगि ॥२॥ (८९३-७, रामकली, मः ५)
देही धोइ न उतरै मैलु ॥ (८९३-८, रामकली, मः ५)
हउमै बिआपै दुबिधा फैलु ॥ (८९३-८, रामकली, मः ५)
हरि हरि अउखधु जो जनु खाइ ॥ (८९३-८, रामकली, मः ५)
ता का रोगु सगल मिटि जाइ ॥३॥ (८९३-८, रामकली, मः ५)
करि किरपा पारब्रह्म दइआल ॥ (८९३-९, रामकली, मः ५)
मन ते कबहु न बिसरु गोपाल ॥ (८९३-९, रामकली, मः ५)
तेरे दास की होवा धूरि ॥ (८९३-९, रामकली, मः ५)
नानक की प्रभ सरधा पूरि ॥४॥२२॥३३॥ (८९३-१०, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९३-१०)
तेरी सरणि पूरे गुरदेव ॥ (८९३-१०, रामकली, मः ५)
तुधु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (८९३-११, रामकली, मः ५)
तू समरथु पूरन पारब्रह्मु ॥ (८९३-११, रामकली, मः ५)
सो धिआए पूरा जिसु करमु ॥१॥ (८९३-११, रामकली, मः ५)
तरण तारण प्रभ तेरो नाउ ॥ (८९३-१२, रामकली, मः ५)
एका सरणि गही मन मेरै तुधु बिनु दूजा नाही ठाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८९३-१२, रामकली, मः ५)
जपि जपि जीवा तेरा नाउ ॥ (८९३-१२, रामकली, मः ५)
आगै दरगह पावउ ठाउ ॥ (८९३-१३, रामकली, मः ५)
दूखु अंधेरा मन ते जाइ ॥ (८९३-१३, रामकली, मः ५)
दुरमति बिनसै राचै हरि नाइ ॥२॥ (८९३-१३, रामकली, मः ५)

चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥ (८९३-१४, रामकली, मः ५)
गुर पूरे की निर्मल रीति ॥ (८९३-१४, रामकली, मः ५)
भउ भागा निरभउ मनि बसै ॥ (८९३-१४, रामकली, मः ५)
अमृत नामु रसना नित जपै ॥३॥ (८९३-१५, रामकली, मः ५)
कोटि जनम के काटे फाहे ॥ (८९३-१५, रामकली, मः ५)
पाइआ लाभु सचा धनु लाहे ॥ (८९३-१५, रामकली, मः ५)
तोटि न आवै अखुट भंडार ॥ (८९३-१६, रामकली, मः ५)
नानक भगत सोहहि हरि दुआर ॥४॥२३॥३४॥ (८९३-१६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९३-१६)
रतन जवेहर नाम ॥ (८९३-१७, रामकली, मः ५)
सतु संतोखु गिआन ॥ (८९३-१७, रामकली, मः ५)
सूख सहज दइआ का पोता ॥ (८९३-१७, रामकली, मः ५)
हरि भगता हवालै होता ॥१॥ (८९३-१७, रामकली, मः ५)
मेरे राम को भंडारु ॥ (८९३-१८, रामकली, मः ५)
खात खरचि कछु तोटि न आवै अंतु नही हरि पारावारु ॥१॥ रहाउ ॥ (८९३-१८, रामकली, मः ५)
कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ (८९३-१९, रामकली, मः ५)
आनंद गुणी गहीरा ॥ (८९३-१९, रामकली, मः ५)
अनहद बाणी पूंजी ॥ (८९३-१९, रामकली, मः ५)
संतन हथि राखी कूंजी ॥२॥ (८९३-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९४

सुन्न समाधि गुफा तह आसनु ॥ (८९४-१, रामकली, मः ५)
केवल ब्रह्म पूरन तह बासनु ॥ (८९४-१, रामकली, मः ५)
भगत संगि प्रभु गोसटि करत ॥ (८९४-१, रामकली, मः ५)
तह हरख न सोग न जनम न मरत ॥३॥ (८९४-२, रामकली, मः ५)
करि किरपा जिसु आपि दिवाइआ ॥ (८९४-२, रामकली, मः ५)
साधसंगि तिनि हरि धनु पाइआ ॥ (८९४-२, रामकली, मः ५)
दइआल पुरख नानक अरदासि ॥ (८९४-३, रामकली, मः ५)
हरि मेरी वरतणि हरि मेरी रासि ॥४॥२४॥३५॥ (८९४-३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९४-४)
महिमा न जानहि बेद ॥ (८९४-४, रामकली, मः ५)
ब्रह्मे नही जानहि भेद ॥ (८९४-४, रामकली, मः ५)
अवतार न जानहि अंतु ॥ (८९४-४, रामकली, मः ५)
परमेसरु पारब्रह्म बेअंतु ॥१॥ (८९४-५, रामकली, मः ५)
अपनी गति आपि जानै ॥ (८९४-५, रामकली, मः ५)

सुणि सुणि अवर वखानै ॥१॥ रहाउ ॥ (८६४-५, रामकली, मः ५)
संकरा नही जानहि भेव ॥ (८६४-६, रामकली, मः ५)
खोजत हारे देव ॥ (८६४-६, रामकली, मः ५)
देवीआ नही जानै मर्म ॥ (८६४-६, रामकली, मः ५)
सभ ऊपरि अलख पारब्रह्म ॥२॥ (८६४-६, रामकली, मः ५)
अपनै रंगि करता केल ॥ (८६४-७, रामकली, मः ५)
आपि बिछोरै आपे मेल ॥ (८६४-७, रामकली, मः ५)
इकि भरमे इकि भगती लाए ॥ (८६४-७, रामकली, मः ५)
अपणा कीआ आपि जणाए ॥३॥ (८६४-८, रामकली, मः ५)
संतन की सुणि साची साखी ॥ (८६४-८, रामकली, मः ५)
सो बोलहि जो पेखहि आखी ॥ (८६४-८, रामकली, मः ५)
नही लेपु तिसु पुंनि न पापि ॥ (८६४-८, रामकली, मः ५)
नानक का प्रभु आपे आपि ॥४॥२५॥३६॥ (८६४-९, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८६४-९)
किछहू काजु न कीओ जानि ॥ (८६४-९, रामकली, मः ५)
सुरति मति नाही किछु गिआनि ॥ (८६४-१०, रामकली, मः ५)
जाप ताप सील नही धर्म ॥ (८६४-१०, रामकली, मः ५)
किछू न जानउ कैसा कर्म ॥१॥ (८६४-१०, रामकली, मः ५)
ठाकुर प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (८६४-११, रामकली, मः ५)
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई भूलह चूकह प्रभ तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८६४-११, रामकली, मः ५)
रिधि न बुधि न सिधि प्रगासु ॥ (८६४-१२, रामकली, मः ५)
बिखै बिआधि के गाव महि बासु ॥ (८६४-१२, रामकली, मः ५)
करणहार मेरे प्रभ एक ॥ (८६४-१२, रामकली, मः ५)
नाम तेरे की मन महि टेक ॥२॥ (८६४-१२, रामकली, मः ५)
सुणि सुणि जीवउ मनि इहु बिस्रामु ॥ (८६४-१३, रामकली, मः ५)
पाप खंडन प्रभ तेरो नामु ॥ (८६४-१३, रामकली, मः ५)
तू अगनतु जीअ का दाता ॥ (८६४-१३, रामकली, मः ५)
जिसहि जणावहि तिनि तू जाता ॥३॥ (८६४-१४, रामकली, मः ५)
जो उपाइओ तिसु तेरी आस ॥ (८६४-१४, रामकली, मः ५)
सगल अराधहि प्रभ गुणतास ॥ (८६४-१५, रामकली, मः ५)
नानक दास तेरै कुरबाणु ॥ (८६४-१५, रामकली, मः ५)
बेअंत साहिबु मेरा मिहरवाणु ॥४॥२६॥३७॥ (८६४-१५, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८६४-१६)
राखनहार दइआल ॥ (८६४-१६, रामकली, मः ५)
कोटि भव खंडे निमख खिआल ॥ (८६४-१६, रामकली, मः ५)

सगल अराधहि जंत ॥ (८६४-१७, रामकली, मः ५)
मिलीऐ प्रभ गुर मिलि मंत ॥१॥ (८६४-१७, रामकली, मः ५)
जीअन को दाता मेरा प्रभु ॥ (८६४-१७, रामकली, मः ५)
पूरन परमेसुर सुआमी घटि घटि राता मेरा प्रभु ॥१॥ रहाउ ॥ (८६४-१७, रामकली, मः ५)
ता की गही मन ओट ॥ (८६४-१८, रामकली, मः ५)
बंधन ते होई छोट ॥ (८६४-१८, रामकली, मः ५)
हिरदै जपि परमानंद ॥ (८६४-१६, रामकली, मः ५)
मन माहि भए अनंद ॥२॥ (८६४-१६, रामकली, मः ५)
तारण तरण हरि सरण ॥ (८६४-१६, रामकली, मः ५)
जीवन रूप हरि चरण ॥ (८६४-१६, रामकली, मः ५)

पन्ना ८६५

संतन के प्राण अधार ॥ (८६५-१, रामकली, मः ५)
ऊचे ते ऊच अपार ॥३॥ (८६५-१, रामकली, मः ५)
सु मति सारु जितु हरि सिमरीजै ॥ (८६५-१, रामकली, मः ५)
करि किरपा जिसु आपे दीजै ॥ (८६५-२, रामकली, मः ५)
सूख सहज आनंद हरि नाउ ॥ (८६५-२, रामकली, मः ५)
नानक जपिआ गुर मिलि नाउ ॥४॥२७॥३८॥ (८६५-२, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८६५-३)
सगल सिआनप छाडि ॥ (८६५-३, रामकली, मः ५)
करि सेवा सेवक साजि ॥ (८६५-३, रामकली, मः ५)
अपना आपु सगल मिटाइ ॥ (८६५-३, रामकली, मः ५)
मन चिंदे सेई फल पाइ ॥१॥ (८६५-४, रामकली, मः ५)
होहु सावधान अपुने गुर सिउ ॥ (८६५-४, रामकली, मः ५)
आसा मनसा पूरन होवै पावहि सगल निधान गुर सिउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८६५-४, रामकली, मः ५)
दूजा नही जानै कोइ ॥ (८६५-५, रामकली, मः ५)
सतगुरु निरंजनु सोइ ॥ (८६५-५, रामकली, मः ५)
मानुख का करि रूपु न जानु ॥ (८६५-६, रामकली, मः ५)
मिली निमाने मानु ॥२॥ (८६५-६, रामकली, मः ५)
गुर की हरि टेक टिकाइ ॥ (८६५-६, रामकली, मः ५)
अवर आसा सभ लाहि ॥ (८६५-६, रामकली, मः ५)
हरि का नामु मागु निधानु ॥ (८६५-७, रामकली, मः ५)
ता दरगह पावहि मानु ॥३॥ (८६५-७, रामकली, मः ५)
गुर का बचनु जपि मंतु ॥ (८६५-७, रामकली, मः ५)
एहा भगति सार ततु ॥ (८६५-८, रामकली, मः ५)

सतिगुर भए दइआल ॥ (८९५-८, रामकली, मः ५)
नानक दास निहाल ॥४॥२८॥३९॥ (८९५-८, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९५-९)
होवै सोई भल मानु ॥ (८९५-९, रामकली, मः ५)
आपना तजि अभिमानु ॥ (८९५-९, रामकली, मः ५)
दिनु रैनि सदा गुन गाउ ॥ (८९५-९, रामकली, मः ५)
पूरन एही सुआउ ॥१॥ (८९५-१०, रामकली, मः ५)
आनंद करि संत हरि जपि ॥ (८९५-१०, रामकली, मः ५)
छाडि सिआनप बहु चतुराई गुर का जपि मंतु निर्मल ॥१॥ रहाउ ॥ (८९५-१०, रामकली, मः ५)
एक की करि आस भीतरि ॥ (८९५-११, रामकली, मः ५)
निर्मल जपि नामु हरि हरि ॥ (८९५-११, रामकली, मः ५)
गुर के चरन नमसकारि ॥ (८९५-११, रामकली, मः ५)
भवजलु उतरहि पारि ॥२॥ (८९५-१२, रामकली, मः ५)
देवनहार दातार ॥ (८९५-१२, रामकली, मः ५)
अंतु न पारावार ॥ (८९५-१२, रामकली, मः ५)
जा कै घरि सर्ब निधान ॥ (८९५-१२, रामकली, मः ५)
राखनहार निदान ॥३॥ (८९५-१३, रामकली, मः ५)
नानक पाइआ एहु निधान ॥ (८९५-१३, रामकली, मः ५)
हरे हरि निर्मल नाम ॥ (८९५-१३, रामकली, मः ५)
जो जपै तिस की गति होइ ॥ (८९५-१३, रामकली, मः ५)
नानक करमि परापति होइ ॥४॥२९॥४०॥ (८९५-१४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९५-१४)
दुलभ देह सवारि ॥ (८९५-१४, रामकली, मः ५)
जाहि न दरगह हारि ॥ (८९५-१५, रामकली, मः ५)
हलति पलति तुधु होइ वडिआई ॥ (८९५-१५, रामकली, मः ५)
अंत की बेला लए छडाई ॥१॥ (८९५-१५, रामकली, मः ५)
राम के गुन गाउ ॥ (८९५-१६, रामकली, मः ५)
हलतु पलतु होहि दोवै सुहेले अचरज पुरखु धिआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (८९५-१६, रामकली, मः ५)
ऊठत बैठत हरि जापु ॥ (८९५-१६, रामकली, मः ५)
बिनसै सगल संतापु ॥ (८९५-१७, रामकली, मः ५)
बैरी सभि होवहि मीत ॥ (८९५-१७, रामकली, मः ५)
निरमलु तेरा होवै चीत ॥२॥ (८९५-१७, रामकली, मः ५)
सभ ते ऊतम इहु करमु ॥ (८९५-१७, रामकली, मः ५)
सगल धर्म महि स्रेसट धरमु ॥ (८९५-१८, रामकली, मः ५)
हरि सिमरनि तेरा होइ उधारु ॥ (८९५-१८, रामकली, मः ५)

जनम जनम का उतरै भारु ॥३॥ (८९५-१८, रामकली, मः ५)
पूरन तेरी होवै आस ॥ (८९५-१९, रामकली, मः ५)
जम की कटीऐ तेरी फास ॥ (८९५-१९, रामकली, मः ५)
गुर का उपदेसु सुनीजै ॥ (८९५-१९, रामकली, मः ५)
नानक सुखि सहजि समीजै ॥४॥३०॥४१॥ (८९५-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९६

रामकली महला ५ ॥ (८९६-१)
जिस की तिस की करि मानु ॥ (८९६-१, रामकली, मः ५)
आपन लाहि गुमानु ॥ (८९६-१, रामकली, मः ५)
जिस का तू तिस का सभु कोइ ॥ (८९६-२, रामकली, मः ५)
तिसहि अराधि सदा सुखु होइ ॥१॥ (८९६-२, रामकली, मः ५)
काहे भ्रमि भ्रमहि बिगाने ॥ (८९६-२, रामकली, मः ५)
नाम बिना किछु कामि न आवै मेरा मेरा करि बहुतु पछुताने ॥१॥ रहाउ ॥ (८९६-३, रामकली, मः ५)
जो जो करै सोई मानि लेहु ॥ (८९६-३, रामकली, मः ५)
बिनु माने रलि होवहि खेह ॥ (८९६-४, रामकली, मः ५)
तिस का भाणा लागै मीठा ॥ (८९६-४, रामकली, मः ५)
गुर प्रसादि विरले मनि वूठा ॥२॥ (८९६-४, रामकली, मः ५)
वेपरवाहु अगोचरु आपि ॥ (८९६-५, रामकली, मः ५)
आठ पहर मन ता कउ जापि ॥ (८९६-५, रामकली, मः ५)
जिसु चिति आए बिनसहि दुखा ॥ (८९६-५, रामकली, मः ५)
हलति पलति तेरा ऊजल मुखा ॥३॥ (८९६-५, रामकली, मः ५)
कउन कउन उधरे गुन गाइ ॥ (८९६-६, रामकली, मः ५)
गनणु न जाई कीम न पाइ ॥ (८९६-६, रामकली, मः ५)
बूडत लोह साधसंगि तरै ॥ (८९६-६, रामकली, मः ५)
नानक जिसहि परापति करै ॥४॥३१॥४२॥ (८९६-७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९६-७)
मन माहि जापि भगवंतु ॥ (८९६-७, रामकली, मः ५)
गुरि पूरै इहु दीनो मंतु ॥ (८९६-८, रामकली, मः ५)
मिटे सगल भै त्रास ॥ (८९६-८, रामकली, मः ५)
पूरन होई आस ॥१॥ (८९६-८, रामकली, मः ५)
सफल सेवा गुरदेवा ॥ (८९६-८, रामकली, मः ५)
कीमति किछु कहणु न जाई साचे सचु अलख अभेवा ॥१॥ रहाउ ॥ (८९६-९, रामकली, मः ५)
करन करावन आपि ॥ (८९६-९, रामकली, मः ५)
तिस कउ सदा मन जापि ॥ (८९६-१०, रामकली, मः ५)

तिस की सेवा करि नीत ॥ (८९६-१०, रामकली, मः ५)
सचु सहजु सुखु पावहि मीत ॥२॥ (८९६-१०, रामकली, मः ५)
साहिबु मेरा अति भारा ॥ (८९६-१०, रामकली, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (८९६-११, रामकली, मः ५)
तिसु बिनु अवरु न कोई ॥ (८९६-११, रामकली, मः ५)
जन का राखा सोई ॥३॥ (८९६-११, रामकली, मः ५)
करि किरपा अरदासि सुणीजै ॥ (८९६-११, रामकली, मः ५)
अपणे सेवक कउ दरसनु दीजै ॥ (८९६-१२, रामकली, मः ५)
नानक जापी जपु जापु ॥ (८९६-१२, रामकली, मः ५)
सभ ते ऊच जा का परतापु ॥४॥३२॥४३॥ (८९६-१२, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९६-१३)
बिरथा भरवासा लोक ॥ (८९६-१३, रामकली, मः ५)
ठाकुर प्रभ तेरी टेक ॥ (८९६-१३, रामकली, मः ५)
अवर छूटी सभ आस ॥ (८९६-१३, रामकली, मः ५)
अचिंत ठाकुर भेटे गुणतास ॥१॥ (८९६-१४, रामकली, मः ५)
एको नामु धिआइ मन मेरे ॥ (८९६-१४, रामकली, मः ५)
कारजु तेरा होवै पूरा हरि हरि हरि गुण गाइ मन मेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८९६-१४, रामकली, मः ५)
तुम ही कारन करन ॥ (८९६-१५, रामकली, मः ५)
चरन कमल हरि सरन ॥ (८९६-१५, रामकली, मः ५)
मनि तनि हरि ओही धिआइआ ॥ (८९६-१६, रामकली, मः ५)
आनंद हरि रूप दिखाइआ ॥२॥ (८९६-१६, रामकली, मः ५)
तिस ही की ओट सदीव ॥ (८९६-१६, रामकली, मः ५)
जा के कीने है जीव ॥ (८९६-१७, रामकली, मः ५)
सिमरत हरि करत निधान ॥ (८९६-१७, रामकली, मः ५)
राखनहार निदान ॥३॥ (८९६-१७, रामकली, मः ५)
सर्ब की रेण होवीजै ॥ (८९६-१७, रामकली, मः ५)
आपु मिटाइ मिलीजै ॥ (८९६-१८, रामकली, मः ५)
अनदिनु धिआईऐ नामु ॥ (८९६-१८, रामकली, मः ५)
सफल नानक इहु कामु ॥४॥३३॥४४॥ (८९६-१८, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९६-१९)
कारन करन करीम ॥ (८९६-१९, रामकली, मः ५)
सर्ब प्रतिपाल रहीम ॥ (८९६-१९, रामकली, मः ५)
अलह अलख अपार ॥ (८९६-१९, रामकली, मः ५)
खुदि खुदाइ वड बेसुमार ॥१॥ (८९६-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९७

ओं नमो भगवंत गुसाई ॥ (८९७-१, रामकली, मः ५)
खालकु रवि रहिआ सर्ब ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८९७-१, रामकली, मः ५)
जगन्नाथ जगजीवन माधो ॥ (८९७-२, रामकली, मः ५)
भउ भंजन रिद माहि अराधो ॥ (८९७-२, रामकली, मः ५)
रिखीकेस गोपाल गोविंद ॥ (८९७-२, रामकली, मः ५)
पूरन सरबत्र मुकंद ॥२॥ (८९७-२, रामकली, मः ५)
मिहरवान मउला तूही एक ॥ (८९७-३, रामकली, मः ५)
पीर पैकाँबर सेख ॥ (८९७-३, रामकली, मः ५)
दिला का मालकु करे हाकु ॥ (८९७-३, रामकली, मः ५)
कुरान कतेब ते पाकु ॥३॥ (८९७-३, रामकली, मः ५)
नाराइण नरहर दइआल ॥ (८९७-४, रामकली, मः ५)
रमत राम घट घट आधार ॥ (८९७-४, रामकली, मः ५)
बासुदेव बसत सभ ठाइ ॥ (८९७-४, रामकली, मः ५)
लीला किछु लखी न जाइ ॥४॥ (८९७-५, रामकली, मः ५)
मिहर दइआ करि करनैहार ॥ (८९७-५, रामकली, मः ५)
भगति बंदगी देहि सिरजणहार ॥ (८९७-५, रामकली, मः ५)
कहु नानक गुरि खोए भर्म ॥ (८९७-६, रामकली, मः ५)
एको अलहु पारब्रह्म ॥५॥३४॥४५॥ (८९७-६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९७-६)
कोटि जनम के बिनसे पाप ॥ (८९७-७, रामकली, मः ५)
हरि हरि जपत नाही संताप ॥ (८९७-७, रामकली, मः ५)
गुर के चरन कमल मनि वसे ॥ (८९७-७, रामकली, मः ५)
महा बिकार तन ते सभि नसे ॥१॥ (८९७-७, रामकली, मः ५)
गोपाल को जसु गाउ प्राणी ॥ (८९७-८, रामकली, मः ५)
अकथ कथा साची प्रभ पूरन जोती जोति समाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (८९७-८, रामकली, मः ५)
तृसना भूख सभ नासी ॥ (८९७-९, रामकली, मः ५)
संत प्रसादि जपिआ अबिनासी ॥ (८९७-९, रामकली, मः ५)
रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ (८९७-९, रामकली, मः ५)
हरि मिलणै की एह नीसानी ॥२॥ (८९७-१०, रामकली, मः ५)
मिटे जंजाल होए प्रभ दइआल ॥ (८९७-१०, रामकली, मः ५)
गुर का दरसनु देखि निहाल ॥ (८९७-१०, रामकली, मः ५)
परा पूरबला करमु बणि आइआ ॥ (८९७-११, रामकली, मः ५)
हरि के गुण नित रसना गाइआ ॥३॥ (८९७-११, रामकली, मः ५)

हरि के संत सदा परवाणु ॥ (८९७-११, रामकली, मः ५)
संत जना मसतकि नीसाणु ॥ (८९७-१२, रामकली, मः ५)
दास की रेणु पाए जे कोइ ॥ (८९७-१२, रामकली, मः ५)
नानक तिस की पर्म गति होइ ॥४॥३५॥४६॥ (८९७-१२, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९७-१३)
दरसन कउ जाईऐ कुरबानु ॥ (८९७-१३, रामकली, मः ५)
चरन कमल हिरदै धरि धिआनु ॥ (८९७-१३, रामकली, मः ५)
धूरि संतन की मसतकि लाइ ॥ (८९७-१४, रामकली, मः ५)
जनम जनम की दुरमति मलु जाइ ॥१॥ (८९७-१४, रामकली, मः ५)
जिसु भेटत मिटै अभिमानु ॥ (८९७-१४, रामकली, मः ५)
पारब्रह्मु सभु नदरी आवै करि किरपा पूरन भगवान ॥१॥ रहाउ ॥ (८९७-१५, रामकली, मः ५)
गुर की कीरति जपीऐ हरि नाउ ॥ (८९७-१५, रामकली, मः ५)
गुर की भगति सदा गुण गाउ ॥ (८९७-१६, रामकली, मः ५)
गुर की सुरति निकटि करि जानु ॥ (८९७-१६, रामकली, मः ५)
गुर का सबदु सति करि मानु ॥२॥ (८९७-१७, रामकली, मः ५)
गुर बचनी समसरि सुख दूख ॥ (८९७-१७, रामकली, मः ५)
कदे न बिआपै तृसना भूख ॥ (८९७-१७, रामकली, मः ५)
मनि संतोखु सबदि गुर राजे ॥ (८९७-१७, रामकली, मः ५)
जपि गोबिंदु पड़दे सभि काजे ॥३॥ (८९७-१८, रामकली, मः ५)
गुरु परमेसरु गुरु गोविंदु ॥ (८९७-१८, रामकली, मः ५)
गुरु दाता दइआल बखसिंदु ॥ (८९७-१८, रामकली, मः ५)
गुर चरनी जा का मनु लागा ॥ (८९७-१९, रामकली, मः ५)
नानक दास तिसु पूरन भागा ॥४॥३६॥४७॥ (८९७-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ८९८

रामकली महला ५ ॥ (८९८-१)
किसु भरवासै बिचरहि भवन ॥ (८९८-१, रामकली, मः ५)
मूड़ मुगध तेरा संगी कवन ॥ (८९८-१, रामकली, मः ५)
रामु संगी तिसु गति नही जानहि ॥ (८९८-१, रामकली, मः ५)
पंच बटवारे से मीत करि मानहि ॥१॥ (८९८-२, रामकली, मः ५)
सो घरु सेवि जितु उधरहि मीत ॥ (८९८-२, रामकली, मः ५)
गुण गोविंद रवीअहि दिनु राती साधसंगि करि मन की प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (८९८-२, रामकली, मः ५)
जनमु बिहानो अहंकारि अरु वादि ॥ (८९८-३, रामकली, मः ५)
तृपति न आवै बिखिआ सादि ॥ (८९८-४, रामकली, मः ५)
भरमत भरमत महा दुखु पाइआ ॥ (८९८-४, रामकली, मः ५)

तरी न जाई दुतर माइआ ॥२॥ (८६८-४, रामकली, मः ५)
कामि न आवै सु कार कमावै ॥ (८६८-५, रामकली, मः ५)
आपि बीजि आपे ही खावै ॥ (८६८-५, रामकली, मः ५)
राखन कउ दूसर नही कोइ ॥ (८६८-५, रामकली, मः ५)
तउ निसतरै जउ किरपा होइ ॥३॥ (८६८-६, रामकली, मः ५)
पतित पुनीत प्रभ तेरो नामु ॥ (८६८-६, रामकली, मः ५)
अपने दास कउ कीजै दानु ॥ (८६८-६, रामकली, मः ५)
करि किरपा प्रभ गति करि मेरी ॥ (८६८-७, रामकली, मः ५)
सरणि गही नानक प्रभ तेरी ॥४॥३७॥४८॥ (८६८-७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८६८-७)
इह लोके सुखु पाइआ ॥ (८६८-८, रामकली, मः ५)
नही भेटत धर्म राइआ ॥ (८६८-८, रामकली, मः ५)
हरि दरगह सोभावंत ॥ (८६८-८, रामकली, मः ५)
फुनि गरभि नाही बसंत ॥१॥ (८६८-८, रामकली, मः ५)
जानी संत की मित्राई ॥ (८६८-९, रामकली, मः ५)
करि किरपा दीनो हरि नामा पूरबि संजोगि मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ (८६८-९, रामकली, मः ५)
गुर कै चरणि चितु लागा ॥ (८६८-१०, रामकली, मः ५)
धंनि धंनि संजोगु सभागा ॥ (८६८-१०, रामकली, मः ५)
संत की धूरि लागी मेरै माथे ॥ (८६८-१०, रामकली, मः ५)
किलविख दुख सगले मेरे लाथे ॥२॥ (८६८-१०, रामकली, मः ५)
साध की सचु टहल कमानी ॥ (८६८-११, रामकली, मः ५)
तब होए मन सुध परानी ॥ (८६८-११, रामकली, मः ५)
जन का सफल दरसु डीठा ॥ (८६८-११, रामकली, मः ५)
नामु प्रभू का घटि घटि वूठा ॥३॥ (८६८-१२, रामकली, मः ५)
मिटाने सभि कलि कलेस ॥ (८६८-१२, रामकली, मः ५)
जिस ते उपजे तिसु महि परवेस ॥ (८६८-१२, रामकली, मः ५)
प्रगटे आनूप गोविंद ॥ (८६८-१३, रामकली, मः ५)
प्रभ पूरे नानक बखसिंद ॥४॥३८॥४९॥ (८६८-१३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८६८-१३)
गऊ कउ चारे सारदूलु ॥ (८६८-१३, रामकली, मः ५)
कउडी का लख हूआ मूलु ॥ (८६८-१४, रामकली, मः ५)
बकरी कउ हसती प्रतिपाले ॥ (८६८-१४, रामकली, मः ५)
अपना प्रभु नदरि निहाले ॥१॥ (८६८-१४, रामकली, मः ५)
कृपा निधान प्रीतम प्रभ मेरे ॥ (८६८-१५, रामकली, मः ५)
बरनि न साकउ बहु गुन तेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (८६८-१५, रामकली, मः ५)

दीसत मासु न खाइ बिलाई ॥ (८९८-१५, रामकली, मः ५)
महा कसाबि छुरी सटि पाई ॥ (८९८-१६, रामकली, मः ५)
करणहार प्रभु हिरदै वूठा ॥ (८९८-१६, रामकली, मः ५)
फाथी मछुली का जाला तूटा ॥२॥ (८९८-१६, रामकली, मः ५)
सूके कासट हरे चलूल ॥ (८९८-१७, रामकली, मः ५)
ऊचै थलि फूले कमल अनूप ॥ (८९८-१७, रामकली, मः ५)
अगनि निवारी सतिगुर देव ॥ (८९८-१७, रामकली, मः ५)
सेवकु अपनी लाइओ सेव ॥३॥ (८९८-१८, रामकली, मः ५)
अकिरतघणा का करे उधारु ॥ (८९८-१८, रामकली, मः ५)
प्रभु मेरा है सदा दइआरु ॥ (८९८-१८, रामकली, मः ५)
संत जना का सदा सहाई ॥ (८९८-१९, रामकली, मः ५)
चरन कमल नानक सरणाई ॥४॥३९॥५०॥ (८९८-१९, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९८-१९)

पन्ना ८९९

पंच सिंघ राखे प्रभि मारि ॥ (८९९-१, रामकली, मः ५)
दस बिघिआड़ी लई निवारि ॥ (८९९-१, रामकली, मः ५)
तीनि आवरत की चूकी घेर ॥ (८९९-१, रामकली, मः ५)
साधसंगि चूके भै फेर ॥१॥ (८९९-१, रामकली, मः ५)
सिमरि सिमरि जीवा गोविंद ॥ (८९९-२, रामकली, मः ५)
करि किरपा राखिओ दासु अपना सदा सदा साचा बखसिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (८९९-२, रामकली, मः ५)
दाझि गए तृण पाप सुमेर ॥ (८९९-३, रामकली, मः ५)
जपि जपि नामु पूजे प्रभ पैर ॥ (८९९-३, रामकली, मः ५)
अनद रूप प्रगटिओ सभ थानि ॥ (८९९-३, रामकली, मः ५)
प्रेम भगति जोरी सुख मानि ॥२॥ (८९९-४, रामकली, मः ५)
सागरु तरिओ बाछर खोज ॥ (८९९-४, रामकली, मः ५)
खेदु न पाइओ नह फुनि रोज ॥ (८९९-४, रामकली, मः ५)
सिंधु समाइओ घटुके माहि ॥ (८९९-५, रामकली, मः ५)
करणहार कउ किछु अचरजु नाहि ॥३॥ (८९९-५, रामकली, मः ५)
जउ छूटउ तउ जाइ पइआल ॥ (८९९-५, रामकली, मः ५)
जउ काढिओ तउ नदरि निहाल ॥ (८९९-६, रामकली, मः ५)
पाप पुन्न हमरै वसि नाहि ॥ (८९९-६, रामकली, मः ५)
रसकि रसकि नानक गुण गाहि ॥४॥४०॥५१॥ (८९९-६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९९-७)
ना तनु तेरा ना मनु तोहि ॥ (८९९-७, रामकली, मः ५)

माइआ मोहि बिआपिआ धोहि ॥ (८९९-७, रामकली, मः ५)
कुदम करै गाडर जिउ छेल ॥ (८९९-८, रामकली, मः ५)
अचिंतु जालु कालु चक्रु पेल ॥१॥ (८९९-८, रामकली, मः ५)
हरि चरन कमल सरनाइ मना ॥ (८९९-८, रामकली, मः ५)
राम नामु जपि संगि सहाई गुरमुखि पावहि साचु धना ॥१॥ रहाउ ॥ (८९९-९, रामकली, मः ५)
ऊने काज न होवत पूरे ॥ (८९९-९, रामकली, मः ५)
कामि क्रोधि मदि सद ही झूरे ॥ (८९९-१०, रामकली, मः ५)
करै बिकार जीअरे कै ताई ॥ (८९९-१०, रामकली, मः ५)
गाफल संगि न तसूआ जाई ॥२॥ (८९९-१०, रामकली, मः ५)
धरत धोह अनिक छल जानै ॥ (८९९-११, रामकली, मः ५)
कउडी कउडी कउ खाकु सिरि छानै ॥ (८९९-११, रामकली, मः ५)
जिनि दीआ तिसै न चेतै मूलि ॥ (८९९-११, रामकली, मः ५)
मिथिआ लोभु न उतरै सूलु ॥३॥ (८९९-१२, रामकली, मः ५)
पारब्रह्म जब भए दइआल ॥ (८९९-१२, रामकली, मः ५)
इहु मनु होआ साध रवाल ॥ (८९९-१२, रामकली, मः ५)
हसत कमल लड़ि लीनो लाइ ॥ (८९९-१२, रामकली, मः ५)
नानक साचै साचि समाइ ॥४॥४१॥५२॥ (८९९-१३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (८९९-१३)
राजा राम की सरणाइ ॥ (८९९-१३, रामकली, मः ५)
निरभउ भए गोबिंद गुन गावत साधसंगि दुखु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (८९९-१४, रामकली, मः ५)
जा कै रामु बसै मन माही ॥ (८९९-१४, रामकली, मः ५)
सो जनु दुतरु पेखत नाही ॥ (८९९-१५, रामकली, मः ५)
सगले काज सवारे अपने ॥ (८९९-१५, रामकली, मः ५)
हरि हरि नामु रसन नित जपने ॥१॥ (८९९-१५, रामकली, मः ५)
जिस कै मसतकि हाथु गुरु धरै ॥ (८९९-१६, रामकली, मः ५)
सो दासु अदेसा काहे करै ॥ (८९९-१६, रामकली, मः ५)
जनम मरण की चूकी काणि ॥ (८९९-१६, रामकली, मः ५)
पूरे गुर ऊपरि कुरबाण ॥२॥ (८९९-१७, रामकली, मः ५)
गुरु परमेसरु भेटि निहाल ॥ (८९९-१७, रामकली, मः ५)
सो दरसनु पाए जिसु होइ दइआलु ॥ (८९९-१७, रामकली, मः ५)
पारब्रह्मु जिसु किरपा करै ॥ (८९९-१८, रामकली, मः ५)
साधसंगि सो भवजलु तरै ॥३॥ (८९९-१८, रामकली, मः ५)
अमृतु पीवहु साध पिआरे ॥ (८९९-१८, रामकली, मः ५)
मुख ऊजल साचै दरबारे ॥ (८९९-१८, रामकली, मः ५)
अनद करहु तजि सगल बिकार ॥ (८९९-१९, रामकली, मः ५)

नानक हरि जपि उतरहु पारि ॥४॥४२॥५३॥ (८९९-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ९००

रामकली महला ५ ॥ (९००-१)
इंधन ते बैसंतरु भागै ॥ (९००-१, रामकली, मः ५)
माटी कउ जलु दह दिस तिआगै ॥ (९००-१, रामकली, मः ५)
ऊपरि चरन तलै आकासु ॥ (९००-१, रामकली, मः ५)
घट महि सिंधु कीओ परगासु ॥१॥ (९००-२, रामकली, मः ५)
ऐसा सम्रथु हरि जीउ आपि ॥ (९००-२, रामकली, मः ५)
निमख न बिसरै जीअ भगतन कै आठ पहर मन ता कउ जापि ॥१॥ रहाउ ॥ (९००-२, रामकली, मः ५)
प्रथमे माखनु पाछै दूधु ॥ (९००-३, रामकली, मः ५)
मैलू कीनो साबुनु सूधु ॥ (९००-३, रामकली, मः ५)
भै ते निरभउ डरता फिरै ॥ (९००-४, रामकली, मः ५)
होंदी कउ अणहोंदी हिरै ॥२॥ (९००-४, रामकली, मः ५)
देही गुप्त बिदेही दीसै ॥ (९००-४, रामकली, मः ५)
सगले साजि करत जगदीसै ॥ (९००-४, रामकली, मः ५)
ठगणहार अणठगदा ठागै ॥ (९००-५, रामकली, मः ५)
बिनु वखर फिरि फिरि उठि लागै ॥३॥ (९००-५, रामकली, मः ५)
संत सभा मिलि करहु बखिआण ॥ (९००-५, रामकली, मः ५)
सिम्मृति सासत बेद पुराण ॥ (९००-६, रामकली, मः ५)
ब्रह्म बीचारु बीचारे कोइ ॥ (९००-६, रामकली, मः ५)
नानक ता की पर्म गति होइ ॥४॥४३॥५४॥ (९००-६, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (९००-७)
जो तिसु भावै सो थीआ ॥ (९००-७, रामकली, मः ५)
सदा सदा हरि की सरणाई प्रभ बिनु नाही आन बीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (९००-७, रामकली, मः ५)
पुतु कलत्रु लखिमी दीसै इन महि किछू न संगि लीआ ॥ (९००-८, रामकली, मः ५)
बिखै ठगउरी खाइ भुलाना माइआ मंदरु तिआगि गइआ ॥१॥ (९००-९, रामकली, मः ५)
निंदा करि करि बहुतु विगूता गरभ जोनि महि किरति पइआ ॥ (९००-९, रामकली, मः ५)
पुरब कमाणे छोडहि नाही जमदूति ग्रासिओ महा भइआ ॥२॥ (९००-१०, रामकली, मः ५)
बोलै झूठु कमावै अवरा तृसन न बूझै बहुतु हइआ ॥ (९००-११, रामकली, मः ५)
असाध रोगु उपजिआ संत दूखनि देह बिनासी महा खइआ ॥३॥ (९००-११, रामकली, मः ५)
जिनहि निवाजे तिन ही साजे आपे कीने संत जइआ ॥ (९००-१२, रामकली, मः ५)
नानक दास कंठि लाइ राखे करि किरपा पारब्रह्म मइआ ॥४॥४४॥५५॥ (९००-१३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (९००-१३)
ऐसा पूरा गुरदेउ सहाई ॥ (९००-१४, रामकली, मः ५)

जा का सिमरनु बिरथा न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६००-१४, रामकली, मः ५)
दरसनु पेखत होइ निहालु ॥ (६००-१४, रामकली, मः ५)
जा की धूरि काटै जम जालु ॥ (६००-१५, रामकली, मः ५)
चरन कमल बसे मेरे मन के ॥ (६००-१५, रामकली, मः ५)
कारज सवारे सगले तन के ॥१॥ (६००-१५, रामकली, मः ५)
जा कै मसतकि राखै हाथु ॥ (६००-१६, रामकली, मः ५)
प्रभु मेरो अनाथ को नाथु ॥ (६००-१६, रामकली, मः ५)
पतित उधारणु क्रिपा निधानु ॥ (६००-१६, रामकली, मः ५)
सदा सदा जाईऐ कुरबानु ॥२॥ (६००-१६, रामकली, मः ५)
निर्मल मंतु देइ जिसु दानु ॥ (६००-१७, रामकली, मः ५)
तजहि बिकार बिनसै अभिमानु ॥ (६००-१७, रामकली, मः ५)
एकु धिआईऐ साध कै संगि ॥ (६००-१७, रामकली, मः ५)
पाप बिनासे नाम कै रंगि ॥३॥ (६००-१८, रामकली, मः ५)
गुर परमेसुर सगल निवास ॥ (६००-१८, रामकली, मः ५)
घटि घटि रवि रहिआ गुणतास ॥ (६००-१८, रामकली, मः ५)
दरसु देहि धारउ प्रभ आस ॥ (६००-१९, रामकली, मः ५)
नित नानकु चितवै सचु अरदासि ॥४॥४५॥५६॥ (६००-१९, रामकली, मः ५)

रागु रामकली महला ५ घरु २ दुपदे (६०१-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६०१-१)
गावहु राम के गुण गीत ॥ (६०१-२, रामकली, मः ५)
नामु जपत पर्म सुखु पाईऐ आवा गउणु मिटै मेरे मीत ॥१॥ रहाउ ॥ (६०१-२, रामकली, मः ५)
गुण गावत होवत परगासु ॥ (६०१-३, रामकली, मः ५)
चरन कमल महि होइ निवासु ॥१॥ (६०१-३, रामकली, मः ५)
संतसंगति महि होइ उधारु ॥ (६०१-३, रामकली, मः ५)
नानक भवजलु उतरसि पारि ॥२॥१॥५७॥ (६०१-४, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (६०१-४)
गुरु पूरा मेरा गुरु पूरा ॥ (६०१-४, रामकली, मः ५)
राम नामु जपि सदा सुहेले सगल बिनासे रोग कूरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६०१-४, रामकली, मः ५)
एकु अराधहु साचा सोइ ॥ (६०१-५, रामकली, मः ५)
जा की सरनि सदा सुखु होइ ॥१॥ (६०१-५, रामकली, मः ५)
नीद सुहेली नाम की लागी भूख ॥ (६०१-६, रामकली, मः ५)
हरि सिमरत बिनसे सभ दूख ॥२॥ (६०१-६, रामकली, मः ५)
सहजि अनंद करहु मेरे भाई ॥ (६०१-७, रामकली, मः ५)

गुरि पूरै सभ चिंत मिटाई ॥३॥ (६०१-७, रामकली, मः ५)
आठ पहर प्रभ का जपु जापि ॥ (६०१-७, रामकली, मः ५)
नानक राखा होआ आपि ॥४॥२॥५८॥ (६०१-८, रामकली, मः ५)
रागु रामकली महला ५ पड़ताल घरु ३ (६०१-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६०१-६)
नरनरह नमसकारं ॥ (६०१-१०, रामकली, मः ५)
जलन थलन बसुध गगन एक एकंकारं ॥१॥ रहाउ ॥ (६०१-१०, रामकली, मः ५)
हरन धरन पुन पुनह करन ॥ (६०१-१०, रामकली, मः ५)
नह गिरह निरंहारं ॥१॥ (६०१-११, रामकली, मः ५)
गम्भीर धीर नाम हीर ऊच मूच अपारं ॥ (६०१-११, रामकली, मः ५)
करन केल गुण अमोल नानक बलिहारं ॥२॥१॥५६॥ (६०१-११, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (६०१-१२)
रूप रंग सुगंध भोग तिआगि चले माइआ छले कनिक कामिनी ॥१॥ रहाउ ॥ (६०१-१२, रामकली, मः ५)
भंडार दरब अरब खरब पेखि लीला मनु सधारै ॥ (६०१-१३, रामकली, मः ५)
नह संगि गामनी ॥१॥ (६०१-१३, रामकली, मः ५)
सुत कलत्र भ्रात मीत उरझि परिओ भरमि मोहिओ इह बिरख छामनी ॥ (६०१-१४, रामकली, मः ५)
चरन कमल सरन नानक सुखु संत भावनी ॥२॥२॥६०॥ (६०१-१४, रामकली, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६०१-१६)
रागु रामकली महला ६ तिपदे ॥ (६०१-१७)
रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥ (६०१-१७, रामकली, मः ६)
जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥१॥ रहाउ ॥ (६०१-१७, रामकली, मः ६)
बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥ (६०१-१८, रामकली, मः ६)
जनम जनम के पाप खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥१॥ (६०१-१८, रामकली, मः ६)

अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥ (६०२-१, रामकली, मः ६)
जाँ गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥२॥ (६०२-१, रामकली, मः ६)
नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥ (६०२-२, रामकली, मः ६)
नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥३॥१॥ (६०२-३, रामकली, मः ६)
रामकली महला ६ ॥ (६०२-३)
साधो कउन जुगति अब कीजै ॥ (६०२-३, रामकली, मः ६)
जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (६०२-४, रामकली, मः ६)
मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥ (६०२-४, रामकली, मः ६)
कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥ (६०२-५, रामकली, मः ६)
भए दइआल कृपाल संत जन तब इह बात बताई ॥ (६०२-६, रामकली, मः ६)

सर्ब धर्म मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥२॥ (६०२-६, रामकली, मः ९)
राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥ (६०२-७, रामकली, मः ९)
जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥३॥२॥ (६०२-७, रामकली, मः ९)
रामकली महला ९ ॥ (६०२-८)
प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥ (६०२-८, रामकली, मः ९)
छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर बृथा जातु है देह ॥१॥ रहाउ ॥ (६०२-८, रामकली, मः ९)
तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना ॥ (६०२-९, रामकली, मः ९)
बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥१॥ (६०२-१०, रामकली, मः ९)
मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥ (६०२-१०, रामकली, मः ९)
मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥२॥ (६०२-११, रामकली, मः ९)
माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥ (६०२-११, रामकली, मः ९)
नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥३॥३॥८१॥ (६०२-१२, रामकली, मः ९)
रामकली महला १ असटपदीआ (६०२-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६०२-१४)
सोई चंदु चड़हि से तारे सोई दिनीअरु तपत रहै ॥ (६०२-१५, रामकली, मः १)
सा धरती सो पउणु झुलारे जुग जीअ खेले थाव कैसे ॥१॥ (६०२-१५, रामकली, मः १)
जीवन तलब निवारि ॥ (६०२-१६, रामकली, मः १)
होवै परवाणा करहि धिङाणा कलि लखण वीचारि ॥१॥ रहाउ ॥ (६०२-१६, रामकली, मः १)
कितै देसि न आइआ सुणीऐ तीर्थ पासि न बैठा ॥ (६०२-१६, रामकली, मः १)
दाता दानु करे तह नाही महल उसारि न बैठा ॥२॥ (६०२-१७, रामकली, मः १)
जे को सतु करे सो छीजै तप घरि तपु न होई ॥ (६०२-१८, रामकली, मः १)
जे को नाउ लए बदनावी कलि के लखण एई ॥३॥ (६०२-१८, रामकली, मः १)
जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ॥ (६०२-१९, रामकली, मः १)
जा सिकदारै पवै जंजीरी ता चाकर हथहु मरणा ॥४॥ (६०२-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६०३

आखु गुणा कलि आईऐ ॥ (६०३-१, रामकली, मः १)
तिहु जुग केरा रहिआ तपावसु जे गुण देहि त पाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (६०३-१, रामकली, मः १)
कलि कलवाली सरा निबेड़ी काजी कृसना होआ ॥ (६०३-२, रामकली, मः १)
बाणी ब्रह्मा बेदु अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥५॥ (६०३-२, रामकली, मः १)
पति विणु पूजा सत विणु संजमु जत विणु काहे जनेऊ ॥ (६०३-३, रामकली, मः १)
नावहु धोवहु तिलकु चड़ावहु सुच विणु सोच न होई ॥६॥ (६०३-३, रामकली, मः १)
कलि परवाणु कतेब कुराणु ॥ (६०३-४, रामकली, मः १)
पोथी पंडित रहे पुराण ॥ (६०३-४, रामकली, मः १)
नानक नाउ भइआ रहमाणु ॥ (६०३-४, रामकली, मः १)

करि करता तू एको जाणु ॥७॥ (६०३-५, रामकली, मः १)
नानक नामु मिलै वडिआई एदू उपरि करमु नही ॥ (६०३-५, रामकली, मः १)
जे घरि होदै मंगणि जाईऐ फिरि ओलामा मिलै तही ॥८॥१॥ (६०३-५, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (६०३-६)
जगु परबोधहि मड़ी बधावहि ॥ (६०३-६, रामकली, मः १)
आसणु तिआगि काहे सचु पावहि ॥ (६०३-७, रामकली, मः १)
ममता मोहु कामणि हितकारी ॥ (६०३-७, रामकली, मः १)
ना अउधूती ना संसारी ॥१॥ (६०३-७, रामकली, मः १)
जोगी बैसि रहहु दुबिधा दुखु भागै ॥ (६०३-८, रामकली, मः १)
घरि घरि मागत लाज न लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (६०३-८, रामकली, मः १)
गावहि गीत न चीनहि आपु ॥ (६०३-९, रामकली, मः १)
किउ लागी निवरै परतापु ॥ (६०३-९, रामकली, मः १)
गुर कै सबदि रचै मन भाइ ॥ (६०३-९, रामकली, मः १)
भिखिआ सहज वीचारी खाइ ॥२॥ (६०३-९, रामकली, मः १)
भसम चड़ाइ करहि पाखंडु ॥ (६०३-१०, रामकली, मः १)
माइआ मोहि सहहि जम डंडु ॥ (६०३-१०, रामकली, मः १)
फूटै खापरु भीख न भाइ ॥ (६०३-१०, रामकली, मः १)
बंधनि बाधिआ आवै जाइ ॥३॥ (६०३-११, रामकली, मः १)
बिंदु न राखहि जती कहावहि ॥ (६०३-११, रामकली, मः १)
माई मागत त्रै लोभावहि ॥ (६०३-११, रामकली, मः १)
निरदइआ नही जोति उजाला ॥ (६०३-१२, रामकली, मः १)
बूडत बूडे सर्ब जंजाला ॥४॥ (६०३-१२, रामकली, मः १)
भेख करहि खिंथा बहु थटूआ ॥ (६०३-१२, रामकली, मः १)
झूठो खेलु खेलै बहु नटूआ ॥ (६०३-१३, रामकली, मः १)
अंतरि अगनि चिंता बहु जारे ॥ (६०३-१३, रामकली, मः १)
विणु करमा कैसे उतरसि पारे ॥५॥ (६०३-१३, रामकली, मः १)
मुंद्रा फटक बनाई कानि ॥ (६०३-१४, रामकली, मः १)
मुकति नही बिदिआ बिगिआनि ॥ (६०३-१४, रामकली, मः १)
जिहवा इंद्री सादि लुोभाना ॥ (६०३-१४, रामकली, मः १)
पसू भए नही मिटै नीसाना ॥६॥ (६०३-१५, रामकली, मः १)
तृबिधि लोगा तृबिधि जोगा ॥ (६०३-१५, रामकली, मः १)
सबदु वीचारै चूकसि सोगा ॥ (६०३-१५, रामकली, मः १)
ऊजलु साचु सु सबदु होइ ॥ (६०३-१५, रामकली, मः १)
जोगी जुगति वीचारे सोइ ॥७॥ (६०३-१६, रामकली, मः १)
तुझ पहि नउ निधि तू करणै जोगु ॥ (६०३-१६, रामकली, मः १)

थापि उथापे करे सु होगु ॥ (६०३-१६, रामकली, मः १)
जतु सतु संजमु सचु सुचीतु ॥ (६०३-१७, रामकली, मः १)
नानक जोगी तृभवण मीतु ॥८॥२॥ (६०३-१७, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (६०३-१७)
खटु मटु देही मनु बैरागी ॥ (६०३-१८, रामकली, मः १)
सुरति सबदु धुनि अंतरि जागी ॥ (६०३-१८, रामकली, मः १)
वाजै अनहदु मेरा मनु लीणा ॥ (६०३-१८, रामकली, मः १)
गुर बचनी सचि नामि पतीणा ॥१॥ (६०३-१६, रामकली, मः १)
प्राणी राम भगति सुखु पाईऐ ॥ (६०३-१६, रामकली, मः १)
गुरमुखि हरि हरि मीठा लागै हरि हरि नामि समाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (६०३-१६, रामकली, मः १)

पन्ना ६०४

माइआ मोहु बिवरजि समाए ॥ (६०४-१, रामकली, मः १)
सतिगुरु भेटै मेलि मिलाए ॥ (६०४-१, रामकली, मः १)
नामु रतनु निरमोलकु हीरा ॥ (६०४-२, रामकली, मः १)
तितु राता मेरा मनु धीरा ॥२॥ (६०४-२, रामकली, मः १)
हउमै ममता रोगु न लागै ॥ (६०४-२, रामकली, मः १)
राम भगति जम का भउ भागै ॥ (६०४-२, रामकली, मः १)
जमु जंदारु न लागै मोहि ॥ (६०४-३, रामकली, मः १)
निर्मल नामु रिदै हरि सोहि ॥३॥ (६०४-३, रामकली, मः १)
सबदु बीचारि भए निरंकारी ॥ (६०४-३, रामकली, मः १)
गुरमति जागे दुरमति परहारी ॥ (६०४-४, रामकली, मः १)
अनदिनु जागि रहे लिव लाई ॥ (६०४-४, रामकली, मः १)
जीवन मुकति गति अंतरि पाई ॥४॥ (६०४-४, रामकली, मः १)
अलिपत गुफा महि रहहि निरारे ॥ (६०४-५, रामकली, मः १)
तस्कर पंच सबदि संघारे ॥ (६०४-५, रामकली, मः १)
पर घर जाइ न मनु डोलाए ॥ (६०४-५, रामकली, मः १)
सहज निरंतरि रहउ समाए ॥५॥ (६०४-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि जागि रहे अउधूता ॥ (६०४-६, रामकली, मः १)
सद बैरागी ततु परोता ॥ (६०४-६, रामकली, मः १)
जगु सूता मरि आवै जाइ ॥ (६०४-७, रामकली, मः १)
बिनु गुर सबद न सोझी पाइ ॥६॥ (६०४-७, रामकली, मः १)
अनहद सबदु वजै दिनु राती ॥ (६०४-७, रामकली, मः १)
अविगत की गति गुरमुखि जाती ॥ (६०४-८, रामकली, मः १)
तउ जानी जा सबदि पछानी ॥ (६०४-८, रामकली, मः १)

एको रवि रहिआ निरबानी ॥७॥ (६०४-८, रामकली, मः १)
सुन्न समाधि सहजि मनु राता ॥ (६०४-६, रामकली, मः १)
तजि हउ लोभा एको जाता ॥ (६०४-६, रामकली, मः १)
गुर चेले अपना मनु मानिआ ॥ (६०४-६, रामकली, मः १)
नानक दूजा मेटि समानिआ ॥८॥३॥ (६०४-१०, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (६०४-१०)
साहा गणहि न करहि बीचारु ॥ (६०४-१०, रामकली, मः १)
साहे ऊपरि एकंकारु ॥ (६०४-१०, रामकली, मः १)
जिसु गुरु मिलै सोई बिधि जाणै ॥ (६०४-११, रामकली, मः १)
गुरमति होइ त हुकमु पछाणै ॥१॥ (६०४-११, रामकली, मः १)
झूठु न बोलि पाडे सचु कहीऐ ॥ (६०४-११, रामकली, मः १)
हउमै जाइ सबदि घरु लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (६०४-१२, रामकली, मः १)
गणि गणि जोतकु काँडी कीनी ॥ (६०४-१२, रामकली, मः १)
पड़ै सुणावै ततु न चीनी ॥ (६०४-१२, रामकली, मः १)
सभसै ऊपरि गुर सबदु बीचारु ॥ (६०४-१३, रामकली, मः १)
होर कथनी बदउ न सगली छारु ॥२॥ (६०४-१३, रामकली, मः १)
नावहि धोवहि पूजहि सैला ॥ (६०४-१४, रामकली, मः १)
बिनु हरि राते मैलो मैला ॥ (६०४-१४, रामकली, मः १)
गरबु निवारि मिलै प्रभु सारथि ॥ (६०४-१४, रामकली, मः १)
मुकति प्रान जपि हरि किरतारथि ॥३॥ (६०४-१४, रामकली, मः १)
वाचै वादु न बेदु बीचारै ॥ (६०४-१५, रामकली, मः १)
आपि डुबै किउ पितरा तारै ॥ (६०४-१५, रामकली, मः १)
घटि घटि ब्रह्मु चीनै जनु कोइ ॥ (६०४-१५, रामकली, मः १)
सतिगुरु मिलै त सोझी होइ ॥४॥ (६०४-१६, रामकली, मः १)
गणत गणीऐ सहसा दुखु जीऐ ॥ (६०४-१६, रामकली, मः १)
गुर की सरणि पवै सुखु थीऐ ॥ (६०४-१६, रामकली, मः १)
करि अपराध सरणि हम आइआ ॥ (६०४-१७, रामकली, मः १)
गुर हरि भेटे पुरबि कमाइआ ॥५॥ (६०४-१७, रामकली, मः १)
गुर सरणि न आईऐ ब्रह्मु न पाईऐ ॥ (६०४-१८, रामकली, मः १)
भरमि भुलाईऐ जनमि मरि आईऐ ॥ (६०४-१८, रामकली, मः १)
जम दरि बाधउ मरै बिकारु ॥ (६०४-१८, रामकली, मः १)
ना रिदै नामु न सबदु अचारु ॥६॥ (६०४-१६, रामकली, मः १)
इकि पाधे पंडित मिसर कहावहि ॥ (६०४-१६, रामकली, मः १)
दुबिधा राते महलु न पावहि ॥ (६०४-१६, रामकली, मः १)

पन्ना ६०५

जिसु गुर परसादी नामु अधारु ॥ (६०५-१, रामकली, मः १)
कोटि मधे को जनु आपारु ॥७॥ (६०५-१, रामकली, मः १)
एकु बुरा भला सचु एकै ॥ (६०५-१, रामकली, मः १)
बूझु गिआनी सतगुर की टेकै ॥ (६०५-२, रामकली, मः १)
गुरमुखि विरली एको जाणिआ ॥ (६०५-२, रामकली, मः १)
आवणु जाणा मेटि समाणिआ ॥८॥ (६०५-२, रामकली, मः १)
जिन कै हिरदै एकंकारु ॥ (६०५-३, रामकली, मः १)
सर्ब गुणी साचा बीचारु ॥ (६०५-३, रामकली, मः १)
गुर कै भाणै कर्म कमावै ॥ (६०५-३, रामकली, मः १)
नानक साचे साचि समावै ॥९॥४॥ (६०५-४, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (६०५-४)
हठु निग्रहु करि काइआ छीजै ॥ (६०५-४, रामकली, मः १)
वरतु तपनु करि मनु नही भीजै ॥ (६०५-४, रामकली, मः १)
राम नाम सरि अवरु न पूजै ॥१॥ (६०५-५, रामकली, मः १)
गुरु सेवि मना हरि जन संगु कीजै ॥ (६०५-५, रामकली, मः १)
जमु जंदारु जोहि नही साकै सरपनि डसि न सकै हरि का रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (६०५-६, रामकली, मः १)
वादु पड़ै रागी जगु भीजै ॥ (६०५-६, रामकली, मः १)
त्रै गुण बिखिआ जनमि मरीजै ॥ (६०५-७, रामकली, मः १)
राम नाम बिनु दूखु सहीजै ॥२॥ (६०५-७, रामकली, मः १)
चाड़सि पवनु सिंघासनु भीजै ॥ (६०५-७, रामकली, मः १)
निउली कर्म खटु कर्म करीजै ॥ (६०५-८, रामकली, मः १)
राम नाम बिनु बिरथा सासु लीजै ॥३॥ (६०५-८, रामकली, मः १)
अंतरि पंच अगनि किउ धीरजु धीजै ॥ (६०५-८, रामकली, मः १)
अंतरि चोरु किउ सादु लहीजै ॥ (६०५-९, रामकली, मः १)
गुरमुखि होइ काइआ गड़ु लीजै ॥४॥ (६०५-९, रामकली, मः १)
अंतरि मैलु तीर्थ भरमीजै ॥ (६०५-९, रामकली, मः १)
मनु नही सूचा किआ सोच करीजै ॥ (६०५-१०, रामकली, मः १)
किरतु पइआ दोसु का कउ दीजै ॥५॥ (६०५-१०, रामकली, मः १)
अन्नु न खाहि देही दुखु दीजै ॥ (६०५-१०, रामकली, मः १)
बिनु गुर गिआन तृपति नही थीजै ॥ (६०५-११, रामकली, मः १)
मनमुखि जनमै जनमि मरीजै ॥६॥ (६०५-११, रामकली, मः १)
सतिगुर पूछि संगति जन कीजै ॥ (६०५-१२, रामकली, मः १)
मनु हरि राचै नही जनमि मरीजै ॥ (६०५-१२, रामकली, मः १)

राम नाम बिनु किआ करमु कीजै ॥७॥ (६०५-१२, रामकली, मः १)
ऊंदर दूंदर पासि धरीजै ॥ (६०५-१३, रामकली, मः १)
धुर की सेवा रामु रवीजै ॥ (६०५-१३, रामकली, मः १)
नानक नामु मिलै किरपा प्रभ कीजै ॥८॥५॥ (६०५-१३, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (६०५-१४)
अंतरि उतभुजु अवरु न कोई ॥ (६०५-१४, रामकली, मः १)
जो कहीऐ सो प्रभ ते होई ॥ (६०५-१४, रामकली, मः १)
जुगह जुगंतरि साहिबु सचु सोई ॥ (६०५-१४, रामकली, मः १)
उतपति परलउ अवरु न कोई ॥१॥ (६०५-१५, रामकली, मः १)
ऐसा मेरा ठाकुरु गहिर गम्भीरु ॥ (६०५-१५, रामकली, मः १)
जिनि जपिआ तिन ही सुखु पाइआ हरि कै नामि न लगै जम तीरु ॥१॥ रहाउ ॥ (६०५-१६, रामकली, मः १)
नामु रतनु हीरा निरमोलु ॥ (६०५-१६, रामकली, मः १)
साचा साहिबु अमरु अतोलु ॥ (६०५-१७, रामकली, मः १)
जिहवा सूची साचा बोलु ॥ (६०५-१७, रामकली, मः १)
घरि दरि साचा नाही रोलु ॥२॥ (६०५-१७, रामकली, मः १)
इकि बन महि बैसहि डूगरि असथानु ॥ (६०५-१८, रामकली, मः १)
नामु बिसारि पचहि अभिमानु ॥ (६०५-१८, रामकली, मः १)
नाम बिना किआ गिआन धिआनु ॥ (६०५-१८, रामकली, मः १)
गुरमुखि पावहि दरगहि मानु ॥३॥ (६०५-१९, रामकली, मः १)
हठु अहंकारु करै नही पावै ॥ (६०५-१९, रामकली, मः १)
पाठ पड़ै ले लोक सुणावै ॥ (६०५-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६०६

तीरथि भरमसि बिआधि न जावै ॥ (६०६-१, रामकली, मः १)
नाम बिना कैसे सुखु पावै ॥४॥ (६०६-१, रामकली, मः १)
जतन करै बिंदु किवै न रहाई ॥ (६०६-१, रामकली, मः १)
मनूआ डोलै नरके पाई ॥ (६०६-२, रामकली, मः १)
जम पुरि बाधो लहै सजाई ॥ (६०६-२, रामकली, मः १)
बिनु नावै जीउ जलि बलि जाई ॥५॥ (६०६-२, रामकली, मः १)
सिध साधिक केते मुनि देवा ॥ (६०६-३, रामकली, मः १)
हठि निग्रहि न तृपतावहि भेवा ॥ (६०६-३, रामकली, मः १)
सबदु वीचारि गहहि गुर सेवा ॥ (६०६-३, रामकली, मः १)
मनि तनि निर्मल अभिमान अभेवा ॥६॥ (६०६-४, रामकली, मः १)
करमि मिलै पावै सचु नाउ ॥ (६०६-४, रामकली, मः १)
तुम सरणागति रहउ सुभाउ ॥ (६०६-४, रामकली, मः १)

तुम ते उपजिओ भगती भाउ ॥ (६०६-५, रामकली, मः १)
जपु जापउ गुरमुखि हरि नाउ ॥७॥ (६०६-५, रामकली, मः १)
हउमै गरबु जाइ मन भीनै ॥ (६०६-५, रामकली, मः १)
झूठि न पावसि पाखंडि कीनै ॥ (६०६-६, रामकली, मः १)
बिनु गुर सबद नही घरु बारु ॥ (६०६-६, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि ततु बीचारु ॥८॥६॥ (६०६-६, रामकली, मः १)
रामकली महला १ ॥ (६०६-७)
जिउ आइआ तिउ जावहि बउरे जिउ जनमे तिउ मरणु भइआ ॥ (६०६-७, रामकली, मः १)
जिउ रस भोग कीए तेता दुखु लागै नामु विसारि भवजलि पइआ ॥१॥ (६०६-८, रामकली, मः १)
तनु धनु देखत गरबि गइआ ॥ (६०६-८, रामकली, मः १)
कनिक कामनी सिउ हेतु वधाइहि की नामु विसारहि भरमि गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (६०६-९, रामकली, मः १)
जतु सतु संजमु सीलु न राखिआ प्रेत पिंजर महि कासटु भइआ ॥ (६०६-१०, रामकली, मः १)
पुन्नु दानु इसनानु न संजमु साधसंगति बिनु बादि जइआ ॥२॥ (६०६-१०, रामकली, मः १)
लालचि लागै नामु बिसारिओ आवत जावत जनमु गइआ ॥ (६०६-११, रामकली, मः १)
जा जमु धाइ केस गहि मारै सुरति नही मुखि काल गइआ ॥३॥ (६०६-१२, रामकली, मः १)
अहिनिसि निंदा ताति पराई हिरदै नामु न सर्ब दइआ ॥ (६०६-१२, रामकली, मः १)
बिनु गुर सबद न गति पति पावहि राम नाम बिनु नरकि गइआ ॥४॥ (६०६-१३, रामकली, मः १)
खिन महि वेस करहि नटूआ जिउ मोह पाप महि गलतु गइआ ॥ (६०६-१४, रामकली, मः १)
इत उत माइआ देखि पसारी मोह माइआ कै मगनु भइआ ॥५॥ (६०६-१४, रामकली, मः १)
करहि बिकार विथार घनेरे सुरति सबद बिनु भरमि पइआ ॥ (६०६-१५, रामकली, मः १)
हउमै रोगु महा दुखु लागा गुरमति लेवहु रोगु गइआ ॥६॥ (६०६-१६, रामकली, मः १)
सुख सम्पति कउ आवत देखै साकत मनि अभिमानु भइआ ॥ (६०६-१६, रामकली, मः १)
जिस का इहु तनु धनु सो फिरि लेवै अंतरि सहसा दूखु पइआ ॥७॥ (६०६-१७, रामकली, मः १)
अंति कालि किछु साथि न चालै जो दीसै सभु तिसहि मइआ ॥ (६०६-१८, रामकली, मः १)
आदि पुरखु अपरम्परु सो प्रभु हरि नामु रिदै लै पारि पइआ ॥८॥ (६०६-१८, रामकली, मः १)
मूए कउ रोवहि किसहि सुणावहि भै सागर असरालि पइआ ॥ (६०६-१९, रामकली, मः १)
देखि कुटम्बु माइआ गृह मंदरु साकतु जंजालि परालि पइआ ॥९॥ (६०६-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६०७

जा आए ता तिनहि पठाए चाले तिनै बुलाइ लइआ ॥ (६०७-१, रामकली, मः १)
जो किछु करणा सो करि रहिआ बखसणहारै बखसि लइआ ॥१०॥ (६०७-२, रामकली, मः १)
जिनि एहु चाखिआ राम रसाइणु तिन की संगति खोजु भइआ ॥ (६०७-२, रामकली, मः १)
रिधि सिधि बुधि गिआनु गुरू ते पाइआ मुकति पदारथु सरणि पइआ ॥११॥ (६०७-३, रामकली, मः १)
दुखु सुखु गुरमुखि सम करि जाणा हरख सोग ते बिरकतु भइआ ॥ (६०७-४, रामकली, मः १)
आपु मारि गुरमुखि हरि पाए नानक सहजि समाइ लइआ ॥१२॥७॥ (६०७-४, रामकली, मः १)

रामकली दखणी महला १ ॥ (६०७-५)
जतु सतु संजमु साचु दृड़ाइआ साच सबदि रसि लीणा ॥१॥ (६०७-५, रामकली दखणी, मः १)
मेरा गुरु दइआलु सदा रंगि लीणा ॥ (६०७-६, रामकली दखणी, मः १)
अहिनिसि रहै एक लिव लागी साचे देखि पतीणा ॥१॥ रहाउ ॥ (६०७-७, रामकली दखणी, मः १)
रहै गगन पुरि दृसटि समैसरि अनहत सबदि रंगीणा ॥२॥ (६०७-७, रामकली दखणी, मः १)
सतु बंधि कुपीन भरिपुरि लीणा जिहवा रंगि रसीणा ॥३॥ (६०७-८, रामकली दखणी, मः १)
मिलै गुर साचे जिनि रचु राचे किरतु वीचारि पतीणा ॥४॥ (६०७-८, रामकली दखणी, मः १)
एक महि सर्ब सर्ब महि एका एह सतिगुरि देखि दिखाई ॥५॥ (६०७-९, रामकली दखणी, मः १)
जिनि कीए खंड मंडल ब्रहमंडा सो प्रभु लखनु न जाई ॥६॥ (६०७-१०, रामकली दखणी, मः १)
दीपक ते दीपकु परगासिआ तृभवण जोति दिखाई ॥७॥ (६०७-१०, रामकली दखणी, मः १)
सचै तखति सच महली बैठे निरभउ ताड़ी लाई ॥८॥ (६०७-११, रामकली दखणी, मः १)
मोहि गइआ बैरागी जोगी घटि घटि किंगुरी वाई ॥९॥ (६०७-११, रामकली दखणी, मः १)
नानक सरणि प्रभू की छूटे सतिगुर सचु सखाई ॥१०॥८॥ (६०७-१२, रामकली दखणी, मः १)
रामकली महला १ ॥ (६०७-१३)
अउहठि हसत मड़ी घरु छाइआ धरणि गगन कल धारी ॥१॥ (६०७-१३, रामकली, मः १)
गुरमुखि केती सबदि उधारी संतहु ॥१॥ रहाउ ॥ (६०७-१३, रामकली, मः १)
ममता मारि हउमै सोखै तृभवणि जोति तुमारी ॥२॥ (६०७-१४, रामकली, मः १)
मनसा मारि मनै महि राखै सतिगुर सबदि वीचारी ॥३॥ (६०७-१४, रामकली, मः १)
सिंङी सुरति अनाहदि वाजै घटि घटि जोति तुमारी ॥४॥ (६०७-१५, रामकली, मः १)
परपंच बेणु तही मनु राखिआ ब्रह्म अगनि परजारी ॥५॥ (६०७-१६, रामकली, मः १)
पंच ततु मिलि अहिनिसि दीपकु निर्मल जोति अपारी ॥६॥ (६०७-१६, रामकली, मः १)
रवि ससि लउके इहु तनु किंगुरी वाजै सबदु निरारी ॥७॥ (६०७-१७, रामकली, मः १)
सिव नगरी महि आसणु अउधू अलखु अगम्मु अपारी ॥८॥ (६०७-१७, रामकली, मः १)
काइआ नगरी इहु मनु राजा पंच वसहि वीचारी ॥९॥ (६०७-१८, रामकली, मः १)
सबदि रवै आसणि घरि राजा अदलु करे गुणकारी ॥१०॥ (६०७-१९, रामकली, मः १)
कालु बिकालु कहे कहि बपुरे जीवत मूआ मनु मारी ॥११॥ (६०७-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६०८

ब्रह्मा बिसनु महेस इक मूरति आपे करता कारी ॥१२॥ (६०८-१, रामकली, मः १)
काइआ सोधि तरै भव सागरु आतम ततु वीचारी ॥१३॥ (६०८-१, रामकली, मः १)
गुर सेवा ते सदा सुखु पाइआ अंतरि सबदु रविआ गुणकारी ॥१४॥ (६०८-२, रामकली, मः १)
आपे मेलि लए गुणदाता हउमै तृसना मारी ॥१५॥ (६०८-३, रामकली, मः १)
त्रै गुण मेटे चउथै वरतै एहा भगति निरारी ॥१६॥ (६०८-३, रामकली, मः १)
गुरमुखि जोग सबदि आतमु चीनै हिरदै एकु मुरारी ॥१७॥ (६०८-४, रामकली, मः १)
मनूआ असथिरु सबदे राता एहा करणी सारी ॥१८॥ (६०८-४, रामकली, मः १)

बेदु बादु न पाखंडु अउधू गुरमुखि सबदि बीचारी ॥१९॥ (९०८-५, रामकली, मः १)
गुरमुखि जोगु कमावै अउधू जतु सतु सबदि वीचारी ॥२०॥ (९०८-५, रामकली, मः १)
सबदि मरै मनु मारे अउधू जोग जुगति वीचारी ॥२१॥ (९०८-६, रामकली, मः १)
माइआ मोहु भवजलु है अवधू सबदि तरै कुल तारी ॥२२॥ (९०८-७, रामकली, मः १)
सबदि सूर जुग चारे अउधू बाणी भगति वीचारी ॥२३॥ (९०८-७, रामकली, मः १)
एहु मनु माइआ मोहिआ अउधू निकसै सबदि वीचारी ॥२४॥ (९०८-८, रामकली, मः १)
आपे बखसे मेलि मिलाए नानक सरणि तुमारी ॥२५॥९॥ (९०८-८, रामकली, मः १)
रामकली महला ३ असटपदीआ (९०८-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९०८-१०)
सरमै दीआ मुंद्रा कन्नी पाइ जोगी खिंथा करि तू दइआ ॥ (९०८-११, रामकली, मः ३)
आवणु जाणु बिभूति लाइ जोगी ता तीनि भवण जिणि लइआ ॥१॥ (९०८-११, रामकली, मः ३)
ऐसी किंगुरी वजाइ जोगी ॥ (९०८-१२, रामकली, मः ३)
जितु किंगुरी अनहदु वाजै हरि सिउ रहै लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (९०८-१२, रामकली, मः ३)
सतु संतोखु पतु करि झोली जोगी अमृत नामु भुगति पाई ॥ (९०८-१३, रामकली, मः ३)
धिआन का करि डंडा जोगी सिंङी सुरति वजाई ॥२॥ (९०८-१३, रामकली, मः ३)
मनु दृड़ु करि आसणि बैसु जोगी ता तेरी कलपणा जाई ॥ (९०८-१४, रामकली, मः ३)
काइआ नगरी महि मंगणि चड़हि जोगी ता नामु पलै पाई ॥३॥ (९०८-१५, रामकली, मः ३)
इतु किंगुरी धिआनु न लागै जोगी ना सचु पलै पाइ ॥ (९०८-१५, रामकली, मः ३)
इतु किंगुरी साँति न आवै जोगी अभिमानु न विचहु जाइ ॥४॥ (९०८-१६, रामकली, मः ३)
भउ भाउ दुइ पत लाइ जोगी इहु सरीरु करि डंडी ॥ (९०८-१६, रामकली, मः ३)
गुरमुखि होवहि ता तंती वाजै इन बिधि तृसना खंडी ॥५॥ (९०८-१७, रामकली, मः ३)
हुकमु बुझै सो जोगी कहीऐ एकस सिउ चितु लाए ॥ (९०८-१८, रामकली, मः ३)
सहसा तूटै निरमलु होवै जोग जुगति इव पाए ॥६॥ (९०८-१८, रामकली, मः ३)
नदरी आवदा सभु किछु बिनसै हरि सेती चितु लाइ ॥ (९०८-१९, रामकली, मः ३)
सतिगुर नालि तेरी भावनी लागै ता इह सोझी पाइ ॥७॥ (९०८-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ९०९

एहु जोगु न होवै जोगी जि कुटम्बु छोडि परभवणु करहि ॥ (९०९-१, रामकली, मः ३)
गृह सरीर महि हरि हरि नामु गुर परसादी अपणा हरि प्रभु लहहि ॥८॥ (९०९-२, रामकली, मः ३)
इहु जगतु मिटी का पुतला जोगी इसु महि रोगु वडा तृसना माइआ ॥ (९०९-२, रामकली, मः ३)
अनेक जतन भेख करे जोगी रोगु न जाइ गवाइआ ॥९॥ (९०९-३, रामकली, मः ३)
हरि का नामु अउखधु है जोगी जिस नो मंनि वसाए ॥ (९०९-४, रामकली, मः ३)
गुरमुखि होवै सोई बूझै जोग जुगति सो पाए ॥१०॥ (९०९-४, रामकली, मः ३)
जोगै का मारगु बिखमु है जोगी जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ (९०९-५, रामकली, मः ३)
अंतरि बाहरि एको वेखै विचहु भरमु चुकाए ॥११॥ (९०९-५, रामकली, मः ३)

विणु वजाई किंगुरी वाजै जोगी सा किंगुरी वजाइ ॥ (९०९-६, रामकली, मः ३)
कहै नानकु मुकति होवहि जोगी साचे रहहि समाइ ॥१२॥१॥१०॥ (९०९-६, रामकली, मः ३)
रामकली महला ३ ॥ (९०९-७)
भगति खजाना गुरमुखि जाता सतिगुरि बूझि बुझाई ॥१॥ (९०९-७, रामकली, मः ३)
संतहु गुरमुखि देइ वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (९०९-८, रामकली, मः ३)
सचि रहहु सदा सहजु सुखु उपजै कामु क्रोधु विचहु जाई ॥२॥ (९०९-८, रामकली, मः ३)
आपु छोडि नाम लिव लागी ममता सबदि जलाई ॥३॥ (९०९-९, रामकली, मः ३)
जिस ते उपजै तिस ते बिनसै अंते नामु सखाई ॥४॥ (९०९-९, रामकली, मः ३)
सदा हजूरि दूरि नह देखहु रचना जिनि रचाई ॥५॥ (९०९-१०, रामकली, मः ३)
सचा सबदु रवै घट अंतरि सचे सिउ लिव लाई ॥६॥ (९०९-१०, रामकली, मः ३)
सतसंगति महि नामु निरमोलकु वडै भागि पाइआ जाई ॥७॥ (९०९-११, रामकली, मः ३)
भरमि न भूलहु सतिगुरु सेवहु मनु राखहु इक ठाई ॥८॥ (९०९-१२, रामकली, मः ३)
बिनु नावै सभ भूली फिरदी बिरथा जनमु गवाई ॥९॥ (९०९-१२, रामकली, मः ३)
जोगी जुगति गवाई हंढै पाखंडि जोगु न पाई ॥१०॥ (९०९-१३, रामकली, मः ३)
सिव नगरी महि आसणि बैसै गुर सबदी जोगु पाई ॥११॥ (९०९-१३, रामकली, मः ३)
धातुर बाजी सबदि निवारे नामु वसै मनि आई ॥१२॥ (९०९-१४, रामकली, मः ३)
एहु सरीरु सरवरु है संतहु इसनानु करे लिव लाई ॥१३॥ (९०९-१४, रामकली, मः ३)
नामि इसनानु करहि से जन निर्मल सबदे मैलु गवाई ॥१४॥ (९०९-१५, रामकली, मः ३)
त्रै गुण अचेत नामु चेतहि नाही बिनु नावै बिनसि जाई ॥१५॥ (९०९-१६, रामकली, मः ३)
ब्रह्मा बिसनु महेसु त्रै मूरति तृगुणि भरमि भुलाई ॥१६॥ (९०९-१६, रामकली, मः ३)
गुर परसादी तृकुटी छूटै चउथै पदि लिव लाई ॥१७॥ (९०९-१७, रामकली, मः ३)
पंडित पड़हि पड़ि वादु वखाणहि तिन्ना बूझ न पाई ॥१८॥ (९०९-१८, रामकली, मः ३)
बिखिआ माते भरमि भुलाए उपदेसु कहहि किसु भाई ॥१९॥ (९०९-१८, रामकली, मः ३)
भगत जना की ऊतम बाणी जुगि जुगि रही समाई ॥२०॥ (९०९-१९, रामकली, मः ३)
बाणी लागै सो गति पाए सबदे सचि समाई ॥२१॥ (९०९-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ९१०

काइआ नगरी सबदे खोजे नामु नवं निधि पाई ॥२२॥ (९१०-१, रामकली, मः ३)
मनसा मारि मनु सहजि समाणा बिनु रसना उसतति कराई ॥२३॥ (९१०-१, रामकली, मः ३)
लोइण देखि रहे बिसमादी चितु अदिसटि लगाई ॥२४॥ (९१०-२, रामकली, मः ३)
अदिसटु सदा रहै निरालमु जोती जोति मिलाई ॥२५॥ (९१०-३, रामकली, मः ३)
हउ गुरु सालाही सदा आपणा जिनि साची बूझ बुझाई ॥२६॥ (९१०-३, रामकली, मः ३)
नानकु एक कहै बेनंती नावहु गति पति पाई ॥२७॥२॥११॥ (९१०-४, रामकली, मः ३)
रामकली महला ३ ॥ (९१०-५)
हरि की पूजा दुलम्भ है संतहु कहणा कछू न जाई ॥१॥ (९१०-५, रामकली, मः ३)

संतहु गुरमुखि पूरा पाई ॥ (९१०-५, रामकली, मः ३)
नामो पूज कराई ॥१॥ रहाउ ॥ (९१०-६, रामकली, मः ३)
हरि बिनु सभु किछु मैला संतहु किआ हउ पूज चड़ाई ॥२॥ (९१०-६, रामकली, मः ३)
हरि साचे भावै सा पूजा होवै भाणा मनि वसाई ॥३॥ (९१०-७, रामकली, मः ३)
पूजा करै सभु लोकु संतहु मनमुखि थाइ न पाई ॥४॥ (९१०-७, रामकली, मः ३)
सबदि मरै मनु निरमलु संतहु एह पूजा थाइ पाई ॥५॥ (९१०-८, रामकली, मः ३)
पवित पावन से जन साचे एक सबदि लिव लाई ॥६॥ (९१०-८, रामकली, मः ३)
बिनु नावै होर पूज न होवी भरमि भुली लोकाई ॥७॥ (९१०-९, रामकली, मः ३)
गुरमुखि आपु पछाणै संतहु राम नामि लिव लाई ॥८॥ (९१०-९, रामकली, मः ३)
आपे निरमलु पूज कराए गुर सबदी थाइ पाई ॥९॥ (९१०-१०, रामकली, मः ३)
पूजा करहि परु बिधि नही जाणहि दूजै भाइ मलु लाई ॥१०॥ (९१०-१०, रामकली, मः ३)
गुरमुखि होवै सु पूजा जाणै भाणा मनि वसाई ॥११॥ (९१०-११, रामकली, मः ३)
भाणे ते सभि सुख पावै संतहु अंते नामु सखाई ॥१२॥ (९१०-१२, रामकली, मः ३)
अपणा आपु न पछाणहि संतहु कूड़ि करहि वडिआई ॥१३॥ (९१०-१२, रामकली, मः ३)
पाखंडि कीनै जमु नही छोडै लै जासी पति गवाई ॥१४॥ (९१०-१३, रामकली, मः ३)
जिन अंतरि सबदु आपु पछाणहि गति मिति तिन ही पाई ॥१५॥ (९१०-१३, रामकली, मः ३)
एहु मनूआ सुन्न समाधि लगावै जोती जोति मिलाई ॥१६॥ (९१०-१४, रामकली, मः ३)
सुणि सुणि गुरमुखि नामु वखाणहि सतसंगति मेलाई ॥१७॥ (९१०-१५, रामकली, मः ३)
गुरमुखि गावै आपु गवावै दरि साचै सोभा पाई ॥१८॥ (९१०-१५, रामकली, मः ३)
साची बाणी सचु वखाणै सचि नामि लिव लाई ॥१९॥ (९१०-१६, रामकली, मः ३)
भै भंजनु अति पाप निखंजनु मेरा प्रभु अंति सखाई ॥२०॥ (९१०-१६, रामकली, मः ३)
सभु किछु आपे आपि वरतै नानक नामि वडिआई ॥२१॥३॥१२॥ (९१०-१७, रामकली, मः ३)
रामकली महला ३ ॥ (९१०-१८)
हम कुचल कुचील अति अभिमानी मिलि सबदे मैलु उतारी ॥१॥ (९१०-१८, रामकली, मः ३)
संतहु गुरमुखि नामि निसतारी ॥ (९१०-१९, रामकली, मः ३)
सचा नामु वसिआ घट अंतरि करतै आपि सवारी ॥१॥ रहाउ ॥ (९१०-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ९११

पारस परसे फिरि पारसु होए हरि जीउ अपणी किरपा धारी ॥२॥ (९११-१, रामकली, मः ३)
इकि भेख करहि फिरहि अभिमानी तिन जूऐ बाजी हारी ॥३॥ (९११-१, रामकली, मः ३)
इकि अनदिनु भगति करहि दिनु राती राम नामु उरि धारी ॥४॥ (९११-२, रामकली, मः ३)
अनदिनु राते सहजे माते सहजे हउमै मारी ॥५॥ (९११-३, रामकली, मः ३)
भै बिनु भगति न होई कब ही भै भाइ भगति सवारी ॥६॥ (९११-३, रामकली, मः ३)
माइआ मोहु सबदि जलाइआ गिआनि तति बीचारी ॥७॥ (९११-४, रामकली, मः ३)
आपे आपि कराए करता आपे बखसि भंडारी ॥८॥ (९११-४, रामकली, मः ३)

तिस किआ गुणा का अंतु न पाइआ हउ गावा सबदि वीचारी ॥९॥ (९११-५, रामकली, मः ३)
हरि जीउ जपी हरि जीउ सालाही विचहु आपु निवारी ॥१०॥ (९११-६, रामकली, मः ३)
नामु पदारथु गुर ते पाइआ अखुट सचे भंडारी ॥११॥ (९११-६, रामकली, मः ३)
अपणिआ भगता नो आपे तुठा अपणी किरपा करि कल धारी ॥१२॥ (९११-७, रामकली, मः ३)
तिन साचे नाम की सदा भुख लागी गावनि सबदि वीचारी ॥१३॥ (९११-७, रामकली, मः ३)
जीउ पिंडु सभु किछु है तिस का आखणु बिखमु बीचारी ॥१४॥ (९११-८, रामकली, मः ३)
सबदि लगे सेई जन निसतरे भउजलु पारि उतारी ॥१५॥ (९११-९, रामकली, मः ३)
बिनु हरि साचे को पारि न पावै बूझै को वीचारी ॥१६॥ (९११-९, रामकली, मः ३)
जो धुरि लिखिआ सोई पाइआ मिलि हरि सबदि सवारी ॥१७॥ (९११-१०, रामकली, मः ३)
काइआ कंचनु सबदे राती साचै नाइ पिआरी ॥१८॥ (९११-१०, रामकली, मः ३)
काइआ अमृति रही भरपूरे पाईऐ सबदि वीचारी ॥१९॥ (९११-११, रामकली, मः ३)
जो प्रभु खोजहि सेई पावहि होरि फूटि मूए अहंकारी ॥२०॥ (९११-१२, रामकली, मः ३)
बादी बिनसहि सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥२१॥ (९११-१२, रामकली, मः ३)
सो जोगी ततु गिआनु बीचारे हउमै तृसना मारी ॥२२॥ (९११-१३, रामकली, मः ३)
सतिगुरु दाता तिनै पछाता जिस नो कृपा तुमारी ॥२३॥ (९११-१३, रामकली, मः ३)
सतिगुरु न सेवहि माइआ लागे डूबि मूए अहंकारी ॥२४॥ (९११-१४, रामकली, मः ३)
जिचरु अंदरि सासु तिचरु सेवा कीचै जाइ मिलीऐ राम मुरारी ॥२५॥ (९११-१५, रामकली, मः ३)
अनदिनु जागत रहै दिनु राती अपने पृअ प्रीति पिआरी ॥२६॥ (९११-१५, रामकली, मः ३)
तनु मनु वारी वारि घुमाई अपने गुर विटहु बलिहारी ॥२७॥ (९११-१६, रामकली, मः ३)
माइआ मोहु बिनसि जाइगा उबरे सबदि वीचारी ॥२८॥ (९११-१७, रामकली, मः ३)
आपि जगाए सेई जागे गुर कै सबदि वीचारी ॥२९॥ (९११-१७, रामकली, मः ३)
नानक सेई मूए जि नामु न चेतहि भगत जीवे वीचारी ॥३०॥४॥१३॥ (९११-१८, रामकली, मः ३)
रामकली महला ३ ॥ (९११-१९)
नामु खजाना गुर ते पाइआ तृपति रहे आघाई ॥१॥ (९११-१९, रामकली, मः ३)
संतहु गुरमुखि मुकति गति पाई ॥ (९११-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ९१२

एकु नामु वसिआ घट अंतरि पूरे की वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (९१२-१, रामकली, मः ३)
आपे करता आपे भुगता देदा रिजकु सबाई ॥२॥ (९१२-१, रामकली, मः ३)
जो किछु करणा सो करि रहिआ अवरु न करणा जाई ॥३॥ (९१२-२, रामकली, मः ३)
आपे साजे सृसटि उपाए सिरि सिरि धंधै लाई ॥४॥ (९१२-२, रामकली, मः ३)
तिसहि सरेवहु ता सुखु पावहु सतिगुरि मेलि मिलाई ॥५॥ (९१२-३, रामकली, मः ३)
आपणा आपु आपि उपाए अलखु न लखणा जाई ॥६॥ (९१२-४, रामकली, मः ३)
आपे मारि जीवाले आपे तिस नो तिलु न तमाई ॥७॥ (९१२-४, रामकली, मः ३)
इकि दाते इकि मंगते कीते आपे भगति कराई ॥८॥ (९१२-५, रामकली, मः ३)

से वडभागी जिनी एको जाता सचे रहे समाई ॥९॥ (९१२-५, रामकली, मः ३)
आपि सरूपु सिआणा आपे कीमति कहणु न जाई ॥१०॥ (९१२-६, रामकली, मः ३)
आपे दुखु सुखु पाए अंतरि आपे भरमि भुलाई ॥११॥ (९१२-६, रामकली, मः ३)
वडा दाता गुरमुखि जाता निगुरी अंध फिरै लोकाई ॥१२॥ (९१२-७, रामकली, मः ३)
जिनी चाखिआ तिना सादु आइआ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥१३॥ (९१२-७, रामकली, मः ३)
इकना नावहु आपि भुलाए इकना गुरमुखि देइ बुझाई ॥१४॥ (९१२-८, रामकली, मः ३)
सदा सदा सालाहिहु संतहु तिस दी वडी वडिआई ॥१५॥ (९१२-९, रामकली, मः ३)
तिसु बिनु अवरु न कोई राजा करि तपावसु बणत बणाई ॥१६॥ (९१२-९, रामकली, मः ३)
निआउ तिसै का है सद साचा विरले हुकमु मनाई ॥१७॥ (९१२-१०, रामकली, मः ३)
तिस नो प्राणी सदा धिआवहु जिनि गुरमुखि बणत बणाई ॥१८॥ (९१२-११, रामकली, मः ३)
सतिगुर भेटै सो जनु सीझै जिसु हिरदै नामु वसाई ॥१९॥ (९१२-११, रामकली, मः ३)
सचा आपि सदा है साचा बाणी सबदि सुणाई ॥२०॥ (९१२-१२, रामकली, मः ३)
नानक सुणि वेखि रहिआ विसमादु मेरा प्रभु रविआ स्रब थाई ॥२१॥५॥१४॥ (९१२-१२, रामकली, मः ३)
रामकली महला ५ असटपदीआ (९१२-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९१२-१४)
किनही कीआ परविरति पसारा ॥ (९१२-१५, रामकली, मः ५)
किनही कीआ पूजा बिसथारा ॥ (९१२-१५, रामकली, मः ५)
किनही निवल भुइअंगम साधे ॥ (९१२-१५, रामकली, मः ५)
मोहि दीन हरि हरि आराधे ॥१॥ (९१२-१६, रामकली, मः ५)
तेरा भरोसा पिआरे ॥ (९१२-१६, रामकली, मः ५)
आन न जाना वेसा ॥१॥ रहाउ ॥ (९१२-१६, रामकली, मः ५)
किनही गृहु तजि वण खंडि पाइआ ॥ (९१२-१६, रामकली, मः ५)
किनही मोनि अउधूतु सदाइआ ॥ (९१२-१७, रामकली, मः ५)
कोई कहतउ अनंनि भगउती ॥ (९१२-१७, रामकली, मः ५)
मोहि दीन हरि हरि ओट लीती ॥२॥ (९१२-१८, रामकली, मः ५)
किनही कहिआ हउ तीर्थ वासी ॥ (९१२-१८, रामकली, मः ५)
कोई अन्नु तजि भइआ उदासी ॥ (९१२-१८, रामकली, मः ५)
किनही भवनु सभ धरती करिआ ॥ (९१२-१९, रामकली, मः ५)
मोहि दीन हरि हरि दरि परिआ ॥३॥ (९१२-१९, रामकली, मः ५)
किनही कहिआ मै कुलहि वडिआई ॥ (९१२-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ९१३

किनही कहिआ बाह बहु भाई ॥ (९१३-१, रामकली, मः ५)
कोई कहै मै धनहि पसारा ॥ (९१३-१, रामकली, मः ५)
मोहि दीन हरि हरि आधारा ॥४॥ (९१३-१, रामकली, मः ५)

किनही घूघर निरति कराई ॥ (९१३-२, रामकली, मः ५)
किनहू वरत नेम माला पाई ॥ (९१३-२, रामकली, मः ५)
किनही तिलकु गोपी चंदन लाइआ ॥ (९१३-२, रामकली, मः ५)
मोहि दीन हरि हरि हरि धिआइआ ॥५॥ (९१३-३, रामकली, मः ५)
किनही सिध बहु चेटक लाए ॥ (९१३-३, रामकली, मः ५)
किनही भेख बहु थाट बनाए ॥ (९१३-४, रामकली, मः ५)
किनही तंत मंत बहु खेवा ॥ (९१३-४, रामकली, मः ५)
मोहि दीन हरि हरि हरि सेवा ॥६॥ (९१३-४, रामकली, मः ५)
कोई चतुरु कहावै पंडित ॥ (९१३-५, रामकली, मः ५)
को खटु कर्म सहित सिउ मंडित ॥ (९१३-५, रामकली, मः ५)
कोई करै आचार सुकरणी ॥ (९१३-५, रामकली, मः ५)
मोहि दीन हरि हरि हरि सरणी ॥७॥ (९१३-५, रामकली, मः ५)
सगले कर्म धर्म जुग सोधे ॥ (९१३-६, रामकली, मः ५)
बिनु नावै इहु मनु न प्रबोधे ॥ (९१३-६, रामकली, मः ५)
कहु नानक जउ साधसंगु पाइआ ॥ (९१३-६, रामकली, मः ५)
बूझी तृसना महा सीतलाइआ ॥८॥१॥ (९१३-७, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (९१३-७)
इसु पानी ते जिनि तू घरिआ ॥ (९१३-७, रामकली, मः ५)
माटी का ले देहुरा करिआ ॥ (९१३-८, रामकली, मः ५)
उकति जोति लै सुरति परीखिआ ॥ (९१३-८, रामकली, मः ५)
मात गरभ महि जिनि तू राखिआ ॥१॥ (९१३-८, रामकली, मः ५)
राखनहारु सम्हारि जना ॥ (९१३-९, रामकली, मः ५)
सगले छोडि बीचार मना ॥१॥ रहाउ ॥ (९१३-९, रामकली, मः ५)
जिनि दीए तुधु बाप महतारी ॥ (९१३-९, रामकली, मः ५)
जिनि दीए भ्रात पुत हारी ॥ (९१३-१०, रामकली, मः ५)
जिनि दीए तुधु बनिता अरु मीता ॥ (९१३-१०, रामकली, मः ५)
तिसु ठाकुर कउ रखि लेहु चीता ॥२॥ (९१३-१०, रामकली, मः ५)
जिनि दीआ तुधु पवनु अमोला ॥ (९१३-११, रामकली, मः ५)
जिनि दीआ तुधु नीरु निरमोला ॥ (९१३-११, रामकली, मः ५)
जिनि दीआ तुधु पावकु बलना ॥ (९१३-११, रामकली, मः ५)
तिसु ठाकुर की रहु मन सरना ॥३॥ (९१३-१२, रामकली, मः ५)
छतीह अमृत जिनि भोजन दीए ॥ (९१३-१२, रामकली, मः ५)
अंतरि थान ठहरावन कउ कीए ॥ (९१३-१३, रामकली, मः ५)
बसुधा दीओ बरतनि बलना ॥ (९१३-१३, रामकली, मः ५)
तिसु ठाकुर के चिति रखु चरना ॥४॥ (९१३-१३, रामकली, मः ५)

पेखन कउ नेत्र सुनन कउ करना ॥ (६१३-१४, रामकली, मः ५)
हसत कमावन बासन रसना ॥ (६१३-१४, रामकली, मः ५)
चरन चलन कउ सिरु कीनो मेरा ॥ (६१३-१४, रामकली, मः ५)
मन तिसु ठाकुर के पूजहु पैरा ॥५॥ (६१३-१५, रामकली, मः ५)
अपवित्र पवित्रु जिनि तू करिआ ॥ (६१३-१५, रामकली, मः ५)
सगल जोनि महि तू सिरि धरिआ ॥ (६१३-१५, रामकली, मः ५)
अब तू सीझु भावै नही सीझै ॥ (६१३-१६, रामकली, मः ५)
कारजु सवरै मन प्रभु धिआईजै ॥६॥ (६१३-१६, रामकली, मः ५)
ईहा ऊहा एकै ओही ॥ (६१३-१६, रामकली, मः ५)
जत कत देखीऐ तत तत तोही ॥ (६१३-१७, रामकली, मः ५)
तिसु सेवत मनि आलसु करै ॥ (६१३-१७, रामकली, मः ५)
जिसु विसरिऐ इक निमख न सरै ॥७॥ (६१३-१७, रामकली, मः ५)
हम अपराधी निरगुनीआरे ॥ (६१३-१८, रामकली, मः ५)
ना किछु सेवा ना करमारे ॥ (६१३-१८, रामकली, मः ५)
गुरु बोहिथु वडभागी मिलिआ ॥ (६१३-१८, रामकली, मः ५)
नानक दास संगि पाथर तरिआ ॥८॥२॥ (६१३-१९, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (६१३-१९)
काहू बिहावै रंग रस रूप ॥ (६१३-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६१४

काहू बिहावै माइ बाप पूत ॥ (६१४-१, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै राज मिलख वापारा ॥ (६१४-१, रामकली, मः ५)
संत बिहावै हरि नाम अधारा ॥१॥ (६१४-१, रामकली, मः ५)
रचना साचु बनी ॥ (६१४-२, रामकली, मः ५)
सभ का एकु धनी ॥१॥ रहाउ ॥ (६१४-२, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै बेद अरु बादि ॥ (६१४-२, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै रसना सादि ॥ (६१४-२, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै लपटि संगि नारी ॥ (६१४-३, रामकली, मः ५)
संत रचे केवल नाम मुरारी ॥२॥ (६१४-३, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै खेलत जूआ ॥ (६१४-३, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै अमली हूआ ॥ (६१४-४, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै पर दरब चोराए ॥ (६१४-४, रामकली, मः ५)
हरि जन बिहावै नाम धिआए ॥३॥ (६१४-४, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै जोग तप पूजा ॥ (६१४-५, रामकली, मः ५)
काहू रोग सोग भरमीजा ॥ (६१४-५, रामकली, मः ५)

काहू पवन धार जात बिहाए ॥ (६१४-५, रामकली, मः ५)
संत बिहावै कीरतनु गाए ॥४॥ (६१४-५, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै दिनु रैनि चालत ॥ (६१४-६, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै सो पिड़ु मालत ॥ (६१४-६, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै बाल पड़ावत ॥ (६१४-६, रामकली, मः ५)
संत बिहावै हरि जसु गावत ॥५॥ (६१४-७, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै नट नाटिक निरते ॥ (६१४-७, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै जीआइह हिरते ॥ (६१४-७, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै राज महि डरते ॥ (६१४-८, रामकली, मः ५)
संत बिहावै हरि जसु करते ॥६॥ (६१४-८, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै मता मसूरति ॥ (६१४-८, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै सेवा जरूरति ॥ (६१४-९, रामकली, मः ५)
काहू बिहावै सोधत जीवत ॥ (६१४-९, रामकली, मः ५)
संत बिहावै हरि रसु पीवत ॥७॥ (६१४-९, रामकली, मः ५)
जितु को लाइआ तित ही लगाना ॥ (६१४-१०, रामकली, मः ५)
ना को मूड़ु नही को सिआना ॥ (६१४-१०, रामकली, मः ५)
करि किरपा जिसु देवै नाउ ॥ (६१४-१०, रामकली, मः ५)
नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥८॥३॥ (६१४-११, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (६१४-११)
दावा अगनि रहे हरि बूट ॥ (६१४-११, रामकली, मः ५)
मात गरभ संकट ते छूट ॥ (६१४-११, रामकली, मः ५)
जा का नामु सिमरत भउ जाइ ॥ (६१४-१२, रामकली, मः ५)
तैसे संत जना राखै हरि राइ ॥१॥ (६१४-१२, रामकली, मः ५)
ऐसे राखनहार दइआल ॥ (६१४-१२, रामकली, मः ५)
जत कत देखउ तुम प्रतिपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (६१४-१३, रामकली, मः ५)
जलु पीवत जिउ तिखा मिटंत ॥ (६१४-१३, रामकली, मः ५)
धन बिगसै गृहि आवत कंत ॥ (६१४-१३, रामकली, मः ५)
लोभी का धनु प्राण अधारु ॥ (६१४-१४, रामकली, मः ५)
तिउ हरि जन हरि हरि नाम पिआरु ॥२॥ (६१४-१४, रामकली, मः ५)
किरसानी जिउ राखै रखवाला ॥ (६१४-१४, रामकली, मः ५)
मात पिता दइआ जिउ बाला ॥ (६१४-१५, रामकली, मः ५)
प्रीतमु देखि प्रीतमु मिलि जाइ ॥ (६१४-१५, रामकली, मः ५)
तिउ हरि जन राखै कंठि लाइ ॥३॥ (६१४-१५, रामकली, मः ५)
जिउ अंधुले पेखत होइ अनंद ॥ (६१४-१६, रामकली, मः ५)
गूंगा बकत गावै बहु छंद ॥ (६१४-१६, रामकली, मः ५)

पिंगुल पर्बत परते पारि ॥ (६१४-१६, रामकली, मः ५)
हरि कै नामि सगल उधारि ॥४॥ (६१४-१७, रामकली, मः ५)
जिउ पावक संगि सीत को नास ॥ (६१४-१७, रामकली, मः ५)
ऐसे प्राछत संतसंगि बिनास ॥ (६१४-१७, रामकली, मः ५)
जिउ साबुनि कापर ऊजल होत ॥ (६१४-१८, रामकली, मः ५)
नाम जपत सभु भ्रमु भउ खोत ॥५॥ (६१४-१८, रामकली, मः ५)
जिउ चकवी सूरज की आस ॥ (६१४-१८, रामकली, मः ५)
जिउ चातृक बूंद की पिआस ॥ (६१४-१९, रामकली, मः ५)
जिउ कुरंक नाद करन समाने ॥ (६१४-१९, रामकली, मः ५)
तिउ हरि नाम हरि जन मनहि सुखाने ॥६॥ (६१४-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६१५

तुमरी कृपा ते लागी प्रीति ॥ (६१५-१, रामकली, मः ५)
दइआल भए ता आए चीति ॥ (६१५-१, रामकली, मः ५)
दइआ धारी तिनि धारणहार ॥ (६१५-२, रामकली, मः ५)
बंधन ते होई छुटकार ॥७॥ (६१५-२, रामकली, मः ५)
सभि थान देखे नैण अलोइ ॥ (६१५-२, रामकली, मः ५)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ (६१५-२, रामकली, मः ५)
भ्रम भै छूटे गुर परसाद ॥ (६१५-३, रामकली, मः ५)
नानक पेखिओ सभु बिसमाद ॥८॥४॥ (६१५-३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (६१५-४)
जीअ जंत सभि पेखीअहि प्रभ सगल तुमारी धारना ॥१॥ (६१५-४, रामकली, मः ५)
इहु मनु हरि कै नामि उधारना ॥१॥ रहाउ ॥ (६१५-४, रामकली, मः ५)
खिन महि थापि उथापे कुदरति सभि करते के कारना ॥२॥ (६१५-५, रामकली, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु झूठु निंदा साधू संगि बिदारना ॥३॥ (६१५-५, रामकली, मः ५)
नामु जपत मनु निर्मल होवै सूखे सूखि गुदारना ॥४॥ (६१५-६, रामकली, मः ५)
भगत सरणि जो आवै प्राणी तिसु ईहा ऊहा न हारना ॥५॥ (६१५-७, रामकली, मः ५)
सूख दूख इसु मन की बिरथा तुम ही आगै सारना ॥६॥ (६१५-७, रामकली, मः ५)
तू दाता सभना जीआ का आपन कीआ पालना ॥७॥ (६१५-८, रामकली, मः ५)
अनिक बार कोटि जन ऊपरि नानकु वंञै वारना ॥८॥५॥ (६१५-८, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ असटपदी (६१५-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६१५-१०)
दरसनु भेटत पाप सभि नासहि हरि सिउ देइ मिलाई ॥१॥ (६१५-११, रामकली, मः ५)
मेरा गुरु परमेसरु सुखदाई ॥ (६१५-११, रामकली, मः ५)
पारब्रह्म का नामु दृड़ाए अंते होइ सखाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६१५-१२, रामकली, मः ५)

सगल दूख का डेरा भन्ना संत धूरि मुखि लाई ॥२॥ (९१५-१२, रामकली, मः ५)
पतित पुनीत कीए खिन भीतरि अगिआनु अंधेरु वंञाई ॥३॥ (९१५-१३, रामकली, मः ५)
करण कारण समरथु सुआमी नानक तिसु सरणाई ॥४॥ (९१५-१३, रामकली, मः ५)
बंधन तोड़ि चरन कमल दृड़ाए एक सबदि लिव लाई ॥५॥ (९१५-१४, रामकली, मः ५)
अंध कूप बिखिआ ते काढिओ साच सबदि बणि आई ॥६॥ (९१५-१५, रामकली, मः ५)
जनम मरण का सहसा चूका बाहुड़ि कतहु न धाई ॥७॥ (९१५-१५, रामकली, मः ५)
नाम रसाइणि इहु मनु राता अमृतु पी तृपताई ॥८॥ (९१५-१६, रामकली, मः ५)
संतसंगि मिलि कीरतनु गाइआ निहचल वसिआ जाई ॥९॥ (९१५-१६, रामकली, मः ५)
पूरै गुरि पूरी मति दीनी हरि बिनु आन न भाई ॥१०॥ (९१५-१७, रामकली, मः ५)
नामु निधानु पाइआ वडभागी नानक नरकि न जाई ॥११॥ (९१५-१८, रामकली, मः ५)
घाल सिआणप उकति न मेरी पूरै गुरू कमाई ॥१२॥ (९१५-१८, रामकली, मः ५)
जप तप संजम सुचि है सोई आपे करे कराई ॥१३॥ (९१५-१९, रामकली, मः ५)
पुत्र कलत्र महा बिखिआ महि गुरि साचै लाइ तराई ॥१४॥ (९१५-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ९१६

अपणे जीअ तै आपि सम्हाले आपि लीए लड़ि लाई ॥१५॥ (९१६-१, रामकली, मः ५)
साच धर्म का बेड़ा बाँधिआ भवजलु पारि पवाई ॥१६॥ (९१६-२, रामकली, मः ५)
बेसुमार बेअंत सुआमी नानक बलि बलि जाई ॥१७॥ (९१६-२, रामकली, मः ५)
अकाल मूरति अजूनी सम्भउ कलि अंधकार दीपाई ॥१८॥ (९१६-३, रामकली, मः ५)
अंतरजामी जीअन का दाता देखत तृपति अघाई ॥१९॥ (९१६-३, रामकली, मः ५)
एकंकारु निरंजनु निरभउ सभ जलि थलि रहिआ समाई ॥२०॥ (९१६-४, रामकली, मः ५)
भगति दानु भगता कउ दीना हरि नानकु जाचै माई ॥२१॥१॥६॥ (९१६-५, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (९१६-५)
सलोकु ॥ (९१६-६)
सिखहु सबदु पिआरिहो जनम मरन की टेक ॥ (९१६-६, रामकली, मः ५)
मुखु ऊजलु सदा सुखी नानक सिमरत एक ॥१॥ (९१६-६, रामकली, मः ५)
मनु तनु राता राम पिआरे हरि प्रेम भगति बणि आई संतहु ॥१॥ (९१६-७, रामकली, मः ५)
सतिगुरि खेप निबाही संतहु ॥ (९१६-७, रामकली, मः ५)
हरि नामु लाहा दास कउ दीआ सगली तृसन उलाही संतहु ॥१॥ रहाउ ॥ (९१६-८, रामकली, मः ५)
खोजत खोजत लालु इकु पाइआ हरि कीमति कहणु न जाई संतहु ॥२॥ (९१६-८, रामकली, मः ५)
चरन कमल सिउ लागो धिआना साचै दरसि समाई संतहु ॥३॥ (९१६-९, रामकली, मः ५)
गुण गावत गावत भए निहाला हरि सिमरत तृपति अघाई संतहु ॥४॥ (९१६-१०, रामकली, मः ५)
आतम रामु रविआ सभ अंतरि कत आवै कत जाई संतहु ॥५॥ (९१६-१०, रामकली, मः ५)
आदि जुगादी है भी होसी सभ जीआ का सुखदाई संतहु ॥६॥ (९१६-११, रामकली, मः ५)
आपि बेअंतु अंतु नही पाईऐ पूरि रहिआ सभ ठाई संतहु ॥७॥ (९१६-१२, रामकली, मः ५)

मीत साजन मालु जोबनु सुत हरि नानक बापु मेरी माई संतहु ॥८॥२॥७॥ (९१६-१२, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (९१६-१३)
मन बच क्रमि राम नामु चितारी ॥ (९१६-१३, रामकली, मः ५)
घूमन घेरि महा अति बिखड़ी गुरमुखि नानक पारि उतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (९१६-१४, रामकली, मः ५)
अंतरि सूखा बाहरि सूखा हरि जपि मलन भए दुसटारी ॥१॥ (९१६-१४, रामकली, मः ५)
जिस ते लागे तिनहि निवारे प्रभ जीउ अपणी किरपा धारी ॥२॥ (९१६-१५, रामकली, मः ५)
उधरे संत परे हरि सरनी पचि बिनसे महा अहंकारी ॥३॥ (९१६-१६, रामकली, मः ५)
साधू संगति इहु फलु पाइआ इकु केवल नामु अधारी ॥४॥ (९१६-१६, रामकली, मः ५)
न कोई सूरु न कोई हीणा सभ प्रगटी जोति तुम्हारी ॥५॥ (९१६-१७, रामकली, मः ५)
तुम्ह समरथ अकथ अगोचर रविआ एकु मुरारी ॥६॥ (९१६-१८, रामकली, मः ५)
कीमति कउणु करे तेरी करते प्रभ अंतु न पारावारी ॥७॥ (९१६-१८, रामकली, मः ५)
नाम दानु नानक वडिआई तेरिआ संत जना रेणारी ॥८॥३॥८॥२२॥ (९१६-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ९१७

रामकली महला ३ अनंदु (९१७-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९१७-१)
अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ (९१७-२, रामकली, मः ३)
सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ (९१७-२, रामकली, मः ३)
राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ (९१७-३, रामकली, मः ३)
सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ (९१७-३, रामकली, मः ३)
कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ (९१७-४, रामकली, मः ३)
ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ (९१७-४, रामकली, मः ३)
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ (९१७-५, रामकली, मः ३)
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ (९१७-५, रामकली, मः ३)
सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ (९१७-६, रामकली, मः ३)
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ (९१७-६, रामकली, मः ३)
साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ (९१७-७, रामकली, मः ३)
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ (९१७-७, रामकली, मः ३)
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ (९१७-७, रामकली, मः ३)
नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ (९१७-८, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥ (९१७-८, रामकली, मः ३)
साचा नामु मेरा आधारो ॥ (९१७-९, रामकली, मः ३)
साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ (९१७-९, रामकली, मः ३)
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ (९१७-१०, रामकली, मः ३)
सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ (९१७-१०, रामकली, मः ३)

कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ (९१७-११, रामकली, मः ३)
साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ (९१७-११, रामकली, मः ३)
वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ (९१७-१२, रामकली, मः ३)
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ (९१७-१२, रामकली, मः ३)
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ (९१७-१२, रामकली, मः ३)
धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ (९१७-१३, रामकली, मः ३)
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ (९१७-१३, रामकली, मः ३)
साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ (९१७-१४, रामकली, मः ३)
देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ (९१७-१४, रामकली, मः ३)
तुधु बाझु समरथ कोइ नाही कृपा करि बनवारीआ ॥ (९१७-१५, रामकली, मः ३)
एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ (९१७-१५, रामकली, मः ३)
कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥ (९१७-१६, रामकली, मः ३)
आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥ (९१७-१६, रामकली, मः ३)
जाणिआ आनंदु सदा गुर ते कृपा करे पिआरिआ ॥ (९१७-१७, रामकली, मः ३)
करि किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ (९१७-१७, रामकली, मः ३)
अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ (९१७-१८, रामकली, मः ३)
कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥ (९१७-१८, रामकली, मः ३)

पन्ना ९१८

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ (९१८-१, रामकली, मः ३)
पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ (९१८-१, रामकली, मः ३)
इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ (९१८-२, रामकली, मः ३)
गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ (९१८-३, रामकली, मः ३)
कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥ (९१८-३, रामकली, मः ३)
आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ (९१८-४, रामकली, मः ३)
करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ (९१८-४, रामकली, मः ३)
तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ पाईऐ ॥ (९१८-५, रामकली, मः ३)
हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ (९१८-५, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥ (९१८-६, रामकली, मः ३)
ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥ (९१८-६, रामकली, मः ३)
चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मन्न मेरिआ ॥ (९१८-७, रामकली, मः ३)
एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥ (९१८-७, रामकली, मः ३)
माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ (९१८-८, रामकली, मः ३)
कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ (९१८-८, रामकली, मः ३)
कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥ (९१८-९, रामकली, मः ३)

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ (९१८-९, रामकली, मः ३)
एहु कुटम्बु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ (९१८-१०, रामकली, मः ३)
साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ (९१८-१०, रामकली, मः ३)
ऐसा कम्मु मूले न कीचै जितु अंति पछोताईऐ ॥ (९१८-११, रामकली, मः ३)
सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ (९१८-११, रामकली, मः ३)
कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥ (९१८-१२, रामकली, मः ३)
अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥ (९१८-१२, रामकली, मः ३)
अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ (९१८-१३, रामकली, मः ३)
जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ (९१८-१३, रामकली, मः ३)
आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥ (९१८-१४, रामकली, मः ३)
कहै नानकु तू सदा अगम्मु है तेरा अंतु न पाइआ ॥१२॥ (९१८-१४, रामकली, मः ३)
सुरि नर मुनि जन अमृतु खोजदे सु अमृतु गुर ते पाइआ ॥ (९१८-१५, रामकली, मः ३)
पाइआ अमृतु गुरि कृपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ (९१८-१५, रामकली, मः ३)
जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ (९१८-१६, रामकली, मः ३)
लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ (९१८-१७, रामकली, मः ३)
कहै नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अमृतु गुर ते पाइआ ॥१३॥ (९१८-१७, रामकली, मः ३)
भगता की चाल निराली ॥ (९१८-१८, रामकली, मः ३)
चाला निराली भगताह केरी बिखम मारगि चलणा ॥ (९१८-१८, रामकली, मः ३)
लबु लोभु अहंकारु तजि तृसना बहुतु नाही बोलणा ॥ (९१८-१८, रामकली, मः ३)
खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ (९१८-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ९१९

गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ (९१९-१, रामकली, मः ३)
कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥ (९१९-१, रामकली, मः ३)
जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होरु किआ जाणा गुण तेरे ॥ (९१९-२, रामकली, मः ३)
जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ (९१९-२, रामकली, मः ३)
करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ (९१९-३, रामकली, मः ३)
जिस नो कथा सुणाइहि आपणी सि गुरदुआरै सुखु पावहे ॥ (९१९-३, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सचे साहिब जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥ (९१९-४, रामकली, मः ३)
एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ (९१९-५, रामकली, मः ३)
सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ (९१९-५, रामकली, मः ३)
एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ (९१९-५, रामकली, मः ३)
इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ ॥ (९१९-६, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥ (९१९-७, रामकली, मः ३)
पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ (९१९-७, रामकली, मः ३)

हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ (९१९-८, रामकली, मः ३)
पवितु माता पिता कुटम्ब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ (९१९-८, रामकली, मः ३)
कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ (९१९-९, रामकली, मः ३)
कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥ (९१९-९, रामकली, मः ३)
करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै सहसा न जाइ ॥ (९१९-१०, रामकली, मः ३)
नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे कर्म कमाए ॥ (९१९-१०, रामकली, मः ३)
सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ (९१९-११, रामकली, मः ३)
मन्नु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ (९१९-११, रामकली, मः ३)
कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इहु सहसा इव जाइ ॥१८॥ (९१९-१२, रामकली, मः ३)
जीअहु मैले बाहरहु निर्मल ॥ (९१९-१३, रामकली, मः ३)
बाहरहु निर्मल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ (९१९-१३, रामकली, मः ३)
एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ (९१९-१४, रामकली, मः ३)
वेदा महि नामु उतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ (९१९-१४, रामकली, मः ३)
कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१९॥ (९१९-१५, रामकली, मः ३)
जीअहु निर्मल बाहरहु निर्मल ॥ (९१९-१५, रामकली, मः ३)
बाहरहु त निर्मल जीअहु निर्मल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ (९१९-१६, रामकली, मः ३)
कूड़ की सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ (९१९-१६, रामकली, मः ३)
जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ (९१९-१७, रामकली, मः ३)
कहै नानकु जिन मन्नु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥ (९१९-१७, रामकली, मः ३)
जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ (९१९-१८, रामकली, मः ३)
होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ (९१९-१८, रामकली, मः ३)
गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ (९१९-१९, रामकली, मः ३)
आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ (९१९-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ९२०

कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥ (९२०-१, रामकली, मः ३)
जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ (९२०-१, रामकली, मः ३)
पावै मुकति न होर थै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ (९२०-२, रामकली, मः ३)
अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ (९२०-२, रामकली, मः ३)
फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ (९२०-३, रामकली, मः ३)
कहै नानकु वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥ (९२०-४, रामकली, मः ३)
आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ (९२०-४, रामकली, मः ३)
बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ (९२०-५, रामकली, मः ३)
जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ (९२०-५, रामकली, मः ३)
पीवहु अमृतु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ (९२०-६, रामकली, मः ३)

कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥ (६२०-६, रामकली, मः ३)
सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ (६२०-७, रामकली, मः ३)
बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ (६२०-७, रामकली, मः ३)
कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ (६२०-८, रामकली, मः ३)
हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ (६२०-८, रामकली, मः ३)
चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ (६२०-९, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥ (६२०-९, रामकली, मः ३)
गुर का सबदु रतन्नु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ (६२०-१०, रामकली, मः ३)
सबदु रतनु जितु मन्नु लागा एहु होआ समाउ ॥ (६२०-१०, रामकली, मः ३)
सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ (६२०-११, रामकली, मः ३)
आपे हीरा रतनु आपे जिस नो देइ बुझाइ ॥ (६२०-११, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥ (६२०-१२, रामकली, मः ३)
सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ (६२०-१२, रामकली, मः ३)
हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ (६२०-१३, रामकली, मः ३)
तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ (६२०-१३, रामकली, मः ३)
गुरमुखि जिस नो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिव लाए ॥ (६२०-१४, रामकली, मः ३)
कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥ (६२०-१४, रामकली, मः ३)
सिमृति सासत्र पुन्न पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ (६२०-१५, रामकली, मः ३)
ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ (६२०-१५, रामकली, मः ३)
तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि विहाणी ॥ (६२०-१६, रामकली, मः ३)
गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अमृत बाणी ॥ (६२०-१६, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सो ततु पाए जिस नो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥ (६२०-१७, रामकली, मः ३)
माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ (६२०-१८, रामकली, मः ३)
मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ (६२०-१८, रामकली, मः ३)
ओस नो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ (६२०-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ६२१

आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ (६२१-१, रामकली, मः ३)
कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥ (६२१-१, रामकली, मः ३)
जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ (६२१-२, रामकली, मः ३)
माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ (६२१-२, रामकली, मः ३)
जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ (६२१-३, रामकली, मः ३)
लिव छुड़की लगी तृसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ (६२१-३, रामकली, मः ३)
एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ (६२१-४, रामकली, मः ३)

कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२९॥ (६२१-५, रामकली, मः ३)
हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ (६२१-५, रामकली, मः ३)
मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥ (६२१-६, रामकली, मः ३)
ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिस नो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ (६२१-६, रामकली, मः ३)
जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ (६२१-७, रामकली, मः ३)
हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥३०॥ (६२१-८, रामकली, मः ३)
हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ (६२१-८, रामकली, मः ३)
हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ (६२१-९, रामकली, मः ३)
हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ (६२१-९, रामकली, मः ३)
एहु धनु तिना मिलिआ जिन हरि आपे भाणा ॥ (६२१-१०, रामकली, मः ३)
कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥ (६२१-१०, रामकली, मः ३)
ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ (६२१-११, रामकली, मः ३)
पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ (६२१-११, रामकली, मः ३)
हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न तृसना लागै आइ ॥ (६२१-१२, रामकली, मः ३)
एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ (६२१-१२, रामकली, मः ३)
कहै नानकु होरि अन रस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥३२॥ (६२१-१३, रामकली, मः ३)
ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ (६२१-१४, रामकली, मः ३)
हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ (६२१-१४, रामकली, मः ३)
हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ (६२१-१५, रामकली, मः ३)
गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु नदरी आइआ ॥ (६२१-१६, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सृसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥३३॥ (६२१-१६, रामकली, मः ३)
मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ (६२१-१७, रामकली, मः ३)
हरि मंगलु गाउ सखी गृहु मंदरु बणिआ ॥ (६२१-१८, रामकली, मः ३)
हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ (६२१-१८, रामकली, मः ३)
गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ (६२१-१९, रामकली, मः ३)
अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो ॥ (६२१-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ६२२

कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥ (६२२-१, रामकली, मः ३)
ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु कर्म कमाइआ ॥ (६२२-१, रामकली, मः ३)
कि कर्म कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ (६२२-२, रामकली, मः ३)
जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ (६२२-२, रामकली, मः ३)
गुर परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ (६२२-३, रामकली, मः ३)
कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥३५॥ (६२२-४, रामकली, मः ३)
ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ (६२२-४, रामकली, मः ३)

हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ (६२२-५, रामकली, मः ३)
एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ (६२२-६, रामकली, मः ३)
गुर परसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ (६२२-७, रामकली, मः ३)
कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब दृसटि होई ॥३६॥ (६२२-७, रामकली, मः ३)
ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ (६२२-८, रामकली, मः ३)
साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ (६२२-८, रामकली, मः ३)
जितु सुणी मनु तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ (६२२-९, रामकली, मः ३)
सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ (६२२-९, रामकली, मः ३)
कहै नानकु अमृत नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥ (६२२-१०, रामकली, मः ३)
हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ (६२२-११, रामकली, मः ३)
वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ (६२२-११, रामकली, मः ३)
गुरदुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ (६२२-१२, रामकली, मः ३)
तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ (६२२-१३, रामकली, मः ३)
कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥ (६२२-१३, रामकली, मः ३)
एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ (६२२-१४, रामकली, मः ३)
गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ (६२२-१५, रामकली, मः ३)
सचो धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ (६२२-१५, रामकली, मः ३)
इहु सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ (६२२-१६, रामकली, मः ३)
कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥ (६२२-१६, रामकली, मः ३)
अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ (६२२-१७, रामकली, मः ३)
पारब्रह्मु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ (६२२-१७, रामकली, मः ३)
दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ (६२२-१८, रामकली, मः ३)
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ (६२२-१८, रामकली, मः ३)
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ (६२२-१८, रामकली, मः ३)
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥१॥ (६२२-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ६२३

रामकली सदु (६२३-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६२३-१)
जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ (६२३-२, रामकली, बाबा सुंदर)
गुर सबदि समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ (६२३-२, रामकली, बाबा सुंदर)
अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ (६२३-२, रामकली, बाबा सुंदर)
परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे ॥ (६२३-३, रामकली, बाबा सुंदर)
आइआ हकारा चलणवारा हरि राम नामि समाइआ ॥ (६२३-४, रामकली, बाबा सुंदर)
जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ ॥१॥ (६२३-४, रामकली, बाबा सुंदर)

हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ (६२३-५, रामकली, बाबा सुंदर)
सतिगुरु करे हरि पहि बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ (६२३-५, रामकली, बाबा सुंदर)
पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ (६२३-६, रामकली, बाबा सुंदर)
अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ (६२३-६, रामकली, बाबा सुंदर)
सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ (६२३-७, रामकली, बाबा सुंदर)
हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥२॥ (६२३-८, रामकली, बाबा सुंदर)
मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ (६२३-८, रामकली, बाबा सुंदर)
हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ (६२३-९, रामकली, बाबा सुंदर)
भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ (६२३-९, रामकली, बाबा सुंदर)
आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ (६२३-१०, रामकली, बाबा सुंदर)
तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ (६२३-११, रामकली, बाबा सुंदर)
धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥३॥ (६२३-११, रामकली, बाबा सुंदर)
सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ (६२३-१२, रामकली, बाबा सुंदर)
मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ (६२३-१२, रामकली, बाबा सुंदर)
मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ (६२३-१३, रामकली, बाबा सुंदर)
तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ (६२३-१३, रामकली, बाबा सुंदर)
सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ ॥ (६२३-१४, रामकली, बाबा सुंदर)
सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥४॥ (६२३-१५, रामकली, बाबा सुंदर)
अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ (६२३-१५, रामकली, बाबा सुंदर)
केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ (६२३-१६, रामकली, बाबा सुंदर)
हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥ (६२३-१६, रामकली, बाबा सुंदर)
पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥ (६२३-१७, रामकली, बाबा सुंदर)
हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु जीउ ॥ (६२३-१८, रामकली, बाबा सुंदर)
रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबदु सचु नीसाणु जीउ ॥५॥ (६२३-१८, रामकली, बाबा सुंदर)

पन्ना ६२४

सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ ॥ (६२४-१, रामकली, बाबा सुंदर)
मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ ॥ (६२४-२, रामकली, बाबा सुंदर)
सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ (६२४-२, रामकली, बाबा सुंदर)
कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ (६२४-३, रामकली, बाबा सुंदर)
हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ ॥ (६२४-३, रामकली, बाबा सुंदर)
कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥६॥१॥ (६२४-४, रामकली, बाबा सुंदर)
रामकली महला ५ छंत (६२४-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६२४-६)
साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा ॥ (६२४-६, रामकली, मः ५)

जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा हरि जानीअड़ा ॥ (६२४-७, रामकली, मः ५)
नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अमृत प्रिअ गूड़ा ॥ (६२४-८, रामकली, मः ५)
नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा ॥ (६२४-८, रामकली, मः ५)
माइआ मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भर्म धड़ा ॥ (६२४-९, रामकली, मः ५)
कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा ॥१॥ (६२४-९, रामकली, मः ५)
गोबिंदा मेरे गोबिंदा प्राण अधारा मेरे गोबिंदा ॥ (६२४-१०, रामकली, मः ५)
किरपाला मेरे किरपाला दान दातारा मेरे किरपाला ॥ (६२४-११, रामकली, मः ५)
दान दातारा अपर अपारा घट घट अंतरि सोहनिआ ॥ (६२४-११, रामकली, मः ५)
इक दासी धारी सबल पसारी जीअ जंत लै मोहनिआ ॥ (६२४-१२, रामकली, मः ५)
जिस नो राखै सो सचु भाखै गुर का सबदु बीचारा ॥ (६२४-१२, रामकली, मः ५)
कहु नानक जो प्रभ कउ भाणा तिस ही कउ प्रभु पिआरा ॥२॥ (६२४-१३, रामकली, मः ५)
माणो प्रभ माणो मेरे प्रभ का माणो ॥ (६२४-१३, रामकली, मः ५)
जाणो प्रभु जाणो सुआमी सुघड़ु सुजाणो ॥ (६२४-१४, रामकली, मः ५)
सुघड़ सुजाना सद परधाना अमृतु हरि का नामा ॥ (६२४-१४, रामकली, मः ५)
चाखि अघाणे सारिगपाणे जिन कै भाग मथाना ॥ (६२४-१५, रामकली, मः ५)
तिन ही पाइआ तिनहि धिआइआ सगल तिसै का माणो ॥ (६२४-१५, रामकली, मः ५)
कहु नानक थिरु तखति निवासी सचु तिसै दीबाणो ॥३॥ (६२४-१६, रामकली, मः ५)
मंगला हरि मंगला मेरे प्रभ कै सुणीऐ मंगला ॥ (६२४-१६, रामकली, मः ५)
सोहिलड़ा प्रभ सोहिलड़ा अनहद धुनीऐ सोहिलड़ा ॥ (६२४-१७, रामकली, मः ५)
अनहद वाजे सबद अगाजे नित नित जिसहि वधाई ॥ (६२४-१७, रामकली, मः ५)
सो प्रभु धिआईऐ सभु किछु पाईऐ मरै न आवै जाई ॥ (६२४-१८, रामकली, मः ५)
चूकी पिआसा पूरन आसा गुरमुखि मिलु निरगुनीऐ ॥ (६२४-१८, रामकली, मः ५)
कहु नानक घरि प्रभ मेरे कै नित नित मंगलु सुनीऐ ॥४॥१॥ (६२४-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६२५

रामकली महला ५ ॥ (६२५-१)
हरि हरि धिआइ मना खिनु न विसारीऐ ॥ (६२५-१, रामकली, मः ५)
राम रामा राम रमा कंठि उर धारीऐ ॥ (६२५-२, रामकली, मः ५)
उर धारि हरि हरि पुरखु पूरनु पारब्रह्मु निरंजनो ॥ (६२५-२, रामकली, मः ५)
भै दूरि करता पाप हरता दुसह दुख भव खंडनो ॥ (६२५-३, रामकली, मः ५)
जगदीस ईस गुोपाल माधो गुण गोविंद वीचारीऐ ॥ (६२५-३, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक मिलि संगि साधू दिनसु रैणि चितारीऐ ॥१॥ (६२५-४, रामकली, मः ५)
चरन कमल आधारु जन का आसरा ॥ (६२५-४, रामकली, मः ५)
मालु मिलख भंडार नामु अनंत धरा ॥ (६२५-५, रामकली, मः ५)
नामु नरहर निधानु जिन कै रस भोग एक नराइणा ॥ (६२५-५, रामकली, मः ५)

रस रूप रंग अनंत बीठल सासि सासि धिआइणा ॥ (६२५-५, रामकली, मः ५)
किलविख हरणा नाम पुनहचरणा नामु जम की त्रास हरा ॥ (६२५-६, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक रासि जन की चरन कमलह आसरा ॥२॥ (६२५-७, रामकली, मः ५)
गुण बेअंत सुआमी तेरे कोइ न जानई ॥ (६२५-७, रामकली, मः ५)
देखि चलत दइआल सुणि भगत वखानई ॥ (६२५-८, रामकली, मः ५)
जीअ जंत सभि तुझु धिआवहि पुरखपति परमेसरा ॥ (६२५-८, रामकली, मः ५)
सर्ब जाचिक एकु दाता करुणा मै जगदीसरा ॥ (६२५-९, रामकली, मः ५)
साधू संतु सुजाणु सोई जिसहि प्रभ जी मानई ॥ (६२५-९, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक करहु किरपा सोइ तुझहि पछानई ॥३॥ (६२५-१०, रामकली, मः ५)
मोहि निरगुण अनाथु सरणी आइआ ॥ (६२५-१०, रामकली, मः ५)
बलि बलि बलि गुरदेव जिनि नामु दृड़ाइआ ॥ (६२५-११, रामकली, मः ५)
गुरि नामु दीआ कुसलु थीआ सर्ब इछा पुन्नीआ ॥ (६२५-११, रामकली, मः ५)
जलने बुझाई साँति आई मिले चिरी विछुंनिआ ॥ (६२५-१२, रामकली, मः ५)
आनंद हरख सहज साचे महा मंगल गुण गाइआ ॥ (६२५-१२, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक नामु प्रभ का गुर पूरे ते पाइआ ॥४॥२॥ (६२५-१३, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ ॥ (६२५-१३)
रुण झुणो सबदु अनाहदु नित उठि गाईऐ संतन कै ॥ (६२५-१४, रामकली, मः ५)
किलविख सभि दोख बिनासनु हरि नामु जपीऐ गुर मंतन कै ॥ (६२५-१४, रामकली, मः ५)
हरि नामु लीजै अमिउ पीजै रैणि दिनसु अराधीऐ ॥ (६२५-१५, रामकली, मः ५)
जोग दान अनेक किरिआ लगि चरण कमलह साधीऐ ॥ (६२५-१५, रामकली, मः ५)
भाउ भगति दइआल मोहन दूख सगले परहरै ॥ (६२५-१६, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक तरै सागरु धिआइ सुआमी नरहरै ॥१॥ (६२५-१६, रामकली, मः ५)
सुख सागर गोबिंद सिमरणु भगत गावहि गुण तेरे राम ॥ (६२५-१७, रामकली, मः ५)
अनद मंगल गुर चरणी लागे पाए सूख घनेरे राम ॥ (६२५-१८, रामकली, मः ५)
सुख निधानु मिलिआ दूख हरिआ कृपा करि प्रभि राखिआ ॥ (६२५-१८, रामकली, मः ५)
हरि चरण लागा भ्रमु भउ भागा हरि नामु रसना भाखिआ ॥ (६२५-१९, रामकली, मः ५)
हरि एकु चितवै प्रभु एकु गावै हरि एकु दृसटी आइआ ॥ (६२५-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६२६

बिनवंति नानक प्रभि करी किरपा पूरा सतिगुरु पाइआ ॥२॥ (६२६-१, रामकली, मः ५)
मिलि रहीऐ प्रभ साध जना मिलि हरि कीरतनु सुनीऐ राम ॥ (६२६-२, रामकली, मः ५)
दइआल प्रभू दामोदर माधो अंतु न पाईऐ गुनीऐ राम ॥ (६२६-२, रामकली, मः ५)
दइआल दुख हर सरणि दाता सगल दोख निवारणो ॥ (६२६-३, रामकली, मः ५)
मोह सोग विकार बिखड़े जपत नाम उधारणो ॥ (६२६-३, रामकली, मः ५)
सभि जीअ तेरे प्रभू मेरे करि किरपा सभ रेण थीवा ॥ (६२६-४, रामकली, मः ५)

बिनवंति नानक प्रभ मइआ कीजै नामु तेरा जपि जीवा ॥३॥ (९२६-४, रामकली, मः ५)
राखि लीए प्रभि भगत जना अपणी चरणी लाए राम ॥ (९२६-५, रामकली, मः ५)
आठ पहर अपना प्रभु सिमरह एको नामु धिआए राम ॥ (९२६-६, रामकली, मः ५)
धिआइ सो प्रभु तरे भवजल रहे आवण जाणा ॥ (९२६-६, रामकली, मः ५)
सदा सुखु कलिआण कीरतनु प्रभ लगा मीठा भाणा ॥ (९२६-७, रामकली, मः ५)
सभ इछ पुन्नी आस पूरी मिले सतिगुर पूरिआ ॥ (९२६-७, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक प्रभि आपि मेले फिरि नाही दूख विसूरिआ ॥४॥३॥ (९२६-८, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ छंत ॥ (९२६-८)
सलोकु ॥ (९२६-९)
चरन कमल सरणागती अनद मंगल गुण गाम ॥ (९२६-९, रामकली, मः ५)
नानक प्रभु आराधीऐ बिपति निवारण राम ॥१॥ (९२६-९, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (९२६-१०)
प्रभ बिपति निवारणो तिसु बिनु अवरु न कोइ जीउ ॥ (९२६-१०, रामकली, मः ५)
सदा सदा हरि सिमरीऐ जलि थलि महीअलि सोइ जीउ ॥ (९२६-१०, रामकली, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरि रहिआ इक निमख मनहु न वीसरै ॥ (९२६-११, रामकली, मः ५)
गुर चरन लागे दिन सभागे सर्ब गुण जगदीसरै ॥ (९२६-१२, रामकली, मः ५)
करि सेव सेवक दिनसु रैणी तिसु भावै सो होइ जीउ ॥ (९२६-१२, रामकली, मः ५)
बलि जाइ नानकु सुखह दाते परगासु मनि तनि होइ जीउ ॥१॥ (९२६-१३, रामकली, मः ५)
सलोकु ॥ (९२६-१३)
हरि सिमरत मनु तनु सुखी बिनसी दुतीआ सोच ॥ (९२६-१३, रामकली, मः ५)
नानक टेक गोपाल की गोविंद संकट मोच ॥१॥ (९२६-१४, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (९२६-१४)
भै संकट काटे नाराइण दइआल जीउ ॥ (९२६-१४, रामकली, मः ५)
हरि गुण आनंद गाए प्रभ दीना नाथ प्रतिपाल जीउ ॥ (९२६-१५, रामकली, मः ५)
प्रतिपाल अचुत पुरखु एको तिसहि सिउ रंगु लागा ॥ (९२६-१५, रामकली, मः ५)
कर चरन मसतकु मेलि लीने सदा अनदिनु जागा ॥ (९२६-१६, रामकली, मः ५)
जीउ पिंडु गृहु थानु तिस का तनु जोबनु धनु मालु जीउ ॥ (९२६-१६, रामकली, मः ५)
सद सदा बलि जाइ नानकु सर्ब जीआ प्रतिपाल जीउ ॥२॥ (९२६-१७, रामकली, मः ५)
सलोकु ॥ (९२६-१८)
रसना उचरै हरि हरे गुण गोविंद वखिआन ॥ (९२६-१८, रामकली, मः ५)
नानक पकड़ी टेक एक परमेसरु रखै निदान ॥१॥ (९२६-१८, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (९२६-१९)
सो सुआमी प्रभु रखको अंचलि ता कै लागु जीउ ॥ (९२६-१९, रामकली, मः ५)
भजु साधू संगि दइआल देव मन की मति तिआगु जीउ ॥ (९२६-१९, रामकली, मः ५)

इक ओट कीजै जीउ दीजै आस इक धरणीधरै ॥ (६२७-१, रामकली, मः ५)
साधसंगे हरि नाम रंगे संसारु सागरु सभु तरै ॥ (६२७-१, रामकली, मः ५)
जनम मरण बिकार छूटे फिरि न लागै दागु जीउ ॥ (६२७-२, रामकली, मः ५)
बलि जाइ नानकु पुरख पूरन थिरु जा का सोहागु जीउ ॥३॥ (६२७-२, रामकली, मः ५)
सलोकु ॥ (६२७-३)
धर्म अर्थ अरु काम मोख मुकति पदार्थ नाथ ॥ (६२७-३, रामकली, मः ५)
सगल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ ॥१॥ (६२७-४, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२७-४)
सगल इछ मेरी पुन्नीआ मिलिआ निरंजन राइ जीउ ॥ (६२७-४, रामकली, मः ५)
अनदु भइआ वडभागीहो गृहि प्रगटे प्रभ आइ जीउ ॥ (६२७-५, रामकली, मः ५)
गृहि लाल आए पुरबि कमाए ता की उपमा किआ गणा ॥ (६२७-५, रामकली, मः ५)
बेअंत पूरन सुख सहज दाता कवन रसना गुण भणा ॥ (६२७-६, रामकली, मः ५)
आपे मिलाए गहि कंठि लाए तिसु बिना नही जाइ जीउ ॥ (६२७-६, रामकली, मः ५)
बलि जाइ नानकु सदा करते सभ महि रहिआ समाइ जीउ ॥४॥४॥ (६२७-७, रामकली, मः ५)
रागु रामकली महला ५ ॥ (६२७-८)
रण झुंझनड़ा गाउ सखी हरि एकु धिआवहु ॥ (६२७-८, रामकली, मः ५)
सतिगुरु तुम सेवि सखी मनि चिंदिअड़ा फलु पावहु ॥ (६२७-९, रामकली, मः ५)
रामकली महला ५ रुती सलोकु (६२७-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६२७-१०)
करि बंदन प्रभ पारब्रह्म बाछउ साधह धूरि ॥ (६२७-११, रामकली, मः ५)
आपु निवारि हरि हरि भजउ नानक प्रभ भरपूरि ॥१॥ (६२७-११, रामकली, मः ५)
किलविख काटण भै हरण सुख सागर हरि राइ ॥ (६२७-१२, रामकली, मः ५)
दीन दइआल दुख भंजनो नानक नीत धिआइ ॥२॥ (६२७-१२, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२७-१३)
जसु गावहु वडभागीहो करि किरपा भगवंत जीउ ॥ (६२७-१३, रामकली, मः ५)
रुती माह मूरत घड़ी गुण उचरत सोभावंत जीउ ॥ (६२७-१३, रामकली, मः ५)
गुण रंगि राते धंनि ते जन जिनी इक मनि धिआइआ ॥ (६२७-१४, रामकली, मः ५)
सफल जनमु भइआ तिन का जिनी सो प्रभु पाइआ ॥ (६२७-१४, रामकली, मः ५)
पुन्न दान न तुलि किरिआ हरि सर्ब पापा हंत जीउ ॥ (६२७-१५, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक सिमरि जीवा जनम मरण रहंत जीउ ॥१॥ (६२७-१५, रामकली, मः ५)
सलोक ॥ (६२७-१६)
उदमु अगमु अगोचरो चरन कमल नमस्कार ॥ (६२७-१६, रामकली, मः ५)
कथनी सा तुधु भावसी नानक नाम अधार ॥१॥ (६२७-१७, रामकली, मः ५)

संत सरणि साजन परहु सुआमी सिमरि अनंत ॥ (६२७-१७, रामकली, मः ५)
सूके ते हरिआ थीआ नानक जपि भगवंत ॥२॥ (६२७-१८, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२७-१८)
रुति सरस बसंत माह चेतु वैसाख सुख मासु जीउ ॥ (६२७-१८, रामकली, मः ५)
हरि जीउ नाहु मिलिआ मउलिआ मनु तनु सासु जीउ ॥ (६२७-१९, रामकली, मः ५)
घरि नाहु निहचलु अनदु सखीए चरन कमल प्रफुलिआ ॥ (६२७-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६२८

सुंदरु सुघड़ु सुजाणु बेता गुण गोविंद अमुलिआ ॥ (६२८-१, रामकली, मः ५)
वडभागि पाइआ दुखु गवाइआ भई पूरन आस जीउ ॥ (६२८-१, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि तेरी मिटी जम की त्रास जीउ ॥२॥ (६२८-२, रामकली, मः ५)
सलोक ॥ (६२८-२)
साधसंगति बिनु भ्रमि मुई करती कर्म अनेक ॥ (६२८-३, रामकली, मः ५)
कोमल बंधन बाधीआ नानक करमहि लेख ॥१॥ (६२८-३, रामकली, मः ५)
जो भाणे से मेलिआ विछोड़े भी आपि ॥ (६२८-३, रामकली, मः ५)
नानक प्रभ सरणागती जा का वड परतापु ॥२॥ (६२८-४, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२८-४)
ग्रीखम रुति अति गाखड़ी जेठ अखाड़ै घाम जीउ ॥ (६२८-४, रामकली, मः ५)
प्रेम बिछोहु दुहागणी दृसटि न करी राम जीउ ॥ (६२८-५, रामकली, मः ५)
नह दृसटि आवै मरत हावै महा गारबि मुठीआ ॥ (६२८-५, रामकली, मः ५)
जल बाझु मछुली तड़फड़ावै संगि माइआ रुठीआ ॥ (६२८-६, रामकली, मः ५)
करि पाप जोनी भै भीत होई देइ सासन जाम जीउ ॥ (६२८-७, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक ओट तेरी राखु पूरन काम जीउ ॥३॥ (६२८-७, रामकली, मः ५)
सलोक ॥ (६२८-८)
सरधा लागी संगि प्रीतमै इकु तिलु रहणु न जाइ ॥ (६२८-८, रामकली, मः ५)
मन तन अंतरि रवि रहे नानक सहजि सुभाइ ॥१॥ (६२८-८, रामकली, मः ५)
करु गहि लीनी साजनहि जनम जनम के मीत ॥ (६२८-९, रामकली, मः ५)
चरनह दासी करि लई नानक प्रभ हित चीत ॥२॥ (६२८-९, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२८-१०)
रुति बरसु सुहेलीआ सावण भादवे आनंद जीउ ॥ (६२८-१०, रामकली, मः ५)
घण उनवि वुठे जल थल पूरिआ मकरंद जीउ ॥ (६२८-१०, रामकली, मः ५)
प्रभु पूरि रहिआ सर्ब ठाई हरि नाम नव निधि गृह भरे ॥ (६२८-११, रामकली, मः ५)
सिमरि सुआमी अंतरजामी कुल समूहा सभि तरे ॥ (६२८-११, रामकली, मः ५)
पृअ रंगि जागे नह छिद्र लागे कृपालु सद बखसिंदु जीउ ॥ (६२८-१२, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक हरि कंतु पाइआ सदा मनि भावंदु जीउ ॥४॥ (६२८-१३, रामकली, मः ५)

सलोक ॥ (६२८-१३)
आस पिआसी मै फिरउ कब पेखउ गोपाल ॥ (६२८-१३, रामकली, मः ५)
है कोई साजनु संत जनु नानक प्रभ मेलणहार ॥१॥ (६२८-१४, रामकली, मः ५)
बिनु मिलबे साँति न ऊपजै तिलु पलु रहणु न जाइ ॥ (६२८-१४, रामकली, मः ५)
हरि साधह सरणागती नानक आस पुजाइ ॥२॥ (६२८-१५, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२८-१५)
रुति सरद अडम्बरो असू कतके हरि पिआस जीउ ॥ (६२८-१५, रामकली, मः ५)
खोजंती दरसनु फिरत कब मिलीऐ गुणतास जीउ ॥ (६२८-१६, रामकली, मः ५)
बिनु कंत पिआरे नह सूख सारे हार कंङण ध्रिगु बना ॥ (६२८-१६, रामकली, मः ५)
सुंदरि सुजाणि चतुरि बेती सास बिनु जैसे तना ॥ (६२८-१७, रामकली, मः ५)
ईत उत दह दिस अलोकन मनि मिलन की प्रभ पिआस जीउ ॥ (६२८-१७, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक धारि किरपा मेलहु प्रभ गुणतास जीउ ॥५॥ (६२८-१८, रामकली, मः ५)
सलोक ॥ (६२८-१९)
जलणि बुझी सीतल भए मनि तनि उपजी साँति ॥ (६२८-१९, रामकली, मः ५)
नानक प्रभ पूरन मिले दुतीआ बिनसी भ्राँति ॥१॥ (६२८-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६२९

साध पठाए आपि हरि हम तुम ते नाही दूरि ॥ (६२९-१, रामकली, मः ५)
नानक भ्रम भै मिटि गए रमण राम भरपूरि ॥२॥ (६२९-१, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२९-२)
रुति सिसीअर सीतल हरि प्रगटे मंघर पोहि जीउ ॥ (६२९-२, रामकली, मः ५)
जलनि बुझी दरसु पाइआ बिनसे माइआ ध्रोह जीउ ॥ (६२९-३, रामकली, मः ५)
सभि काम पूरे मिलि हजूरे हरि चरण सेवकि सेविआ ॥ (६२९-३, रामकली, मः ५)
हार डोर सीगार सभि रस गुण गाउ अलख अभेविआ ॥ (६२९-४, रामकली, मः ५)
भाउ भगति गोविंद बाँछत जमु न साकै जोहि जीउ ॥ (६२९-४, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक प्रभि आपि मेली तह न प्रेम बिछोह जीउ ॥६॥ (६२९-५, रामकली, मः ५)
सलोक ॥ (६२९-५)
हरि धनु पाइआ सोहागणी डोलत नाही चीत ॥ (६२९-५, रामकली, मः ५)
संत संजोगी नानका गृहि प्रगटे प्रभ मीत ॥१॥ (६२९-६, रामकली, मः ५)
नाद बिनोद अनंद कोड पृअ प्रीतम संगि बने ॥ (६२९-६, रामकली, मः ५)
मन बाँछत फल पाइआ हरि नानक नाम भने ॥२॥ (६२९-७, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२९-७)
हिमकर रुति मनि भावती माघु फगणु गुणवंत जीउ ॥ (६२९-७, रामकली, मः ५)
सखी सहेली गाउ मंगलो गृहि आए हरि कंत जीउ ॥ (६२९-८, रामकली, मः ५)
गृहि लाल आए मनि धिआए सेज सुंदरि सोहीआ ॥ (६२९-९, रामकली, मः ५)

वणु तृणु तृभवण भए हरिआ देखि दरसन मोहीआ ॥ (६२६-६, रामकली, मः ५)
मिले सुआमी इछ पुन्नी मनि जपिआ निर्मल मंत जीउ ॥ (६२६-१०, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक नित करहु रलीआ हरि मिले स्रीधर कंत जीउ ॥७॥ (६२६-१०, रामकली, मः ५)
सलोक ॥ (६२६-११)
संत सहाई जीअ के भवजल तारणहार ॥ (६२६-११, रामकली, मः ५)
सभ ते ऊचे जाणीअहि नानक नाम पिआर ॥१॥ (६२६-११, रामकली, मः ५)
जिन जानिआ सेई तरे से सूरे से बीर ॥ (६२६-१२, रामकली, मः ५)
नानक तिन बलिहारणै हरि जपि उतरे तीर ॥२॥ (६२६-१२, रामकली, मः ५)
छंतु ॥ (६२६-१३)
चरण बिराजित सभ ऊपरे मिटिआ सगल कलेसु जीउ ॥ (६२६-१३, रामकली, मः ५)
आवण जावण दुख हरे हरि भगति कीआ परवेसु जीउ ॥ (६२६-१४, रामकली, मः ५)
हरि रंगि राते सहजि माते तिलु न मन ते बीसरै ॥ (६२६-१४, रामकली, मः ५)
तजि आपु सरणी परे चरनी सर्ब गुण जगदीसरै ॥ (६२६-१५, रामकली, मः ५)
गोविंद गुण निधि स्रीरंग सुआमी आदि कउ आदेसु जीउ ॥ (६२६-१५, रामकली, मः ५)
बिनवंति नानक मइआ धारहु जुगु जुगो इक वेसु जीउ ॥८॥१॥६॥८॥ (६२६-१६, रामकली, मः ५)
रामकली महला १ दखणी ओअंकारु (६२६-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६२६-१७)
ओअंकारि ब्रह्मा उतपति ॥ (६२६-१८, रामकली दखणी, मः १)
ओअंकारु कीआ जिनि चिति ॥ (६२६-१८, रामकली दखणी, मः १)
ओअंकारि सैल जुग भए ॥ (६२६-१८, रामकली दखणी, मः १)
ओअंकारि बेद निरमए ॥ (६२६-१८, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३०

ओअंकारि सबदि उधरे ॥ (६३०-१, रामकली दखणी, मः १)
ओअंकारि गुरमुखि तरे ॥ (६३०-१, रामकली दखणी, मः १)
ओनम अखर सुणहु बीचारु ॥ (६३०-१, रामकली दखणी, मः १)
ओनम अखरु तृभवण सारु ॥१॥ (६३०-१, रामकली दखणी, मः १)
सुणि पाडे किआ लिखहु जंजाला ॥ (६३०-२, रामकली दखणी, मः १)
लिखु राम नाम गुरमुखि गोपाला ॥१॥ रहाउ ॥ (६३०-२, रामकली दखणी, मः १)
ससै सभु जगु सहजि उपाइआ तीनि भवन इक जोती ॥ (६३०-३, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि वसतु परापति होवै चुणि लै माणक मोती ॥ (६३०-३, रामकली दखणी, मः १)
समझै सूझै पड़ि पड़ि बूझै अंति निरंतरि साचा ॥ (६३०-४, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि देखै साचु समाले बिनु साचे जगु काचा ॥२॥ (६३०-४, रामकली दखणी, मः १)
धधै धरमु धरे धरमा पुरि गुणकारी मनु धीरा ॥ (६३०-५, रामकली दखणी, मः १)
धधै धूलि पड़ै मुखि मसतकि कंचन भए मनूरा ॥ (६३०-५, रामकली दखणी, मः १)

धनु धरणीधरु आपि अजोनी तोलि बोलि सचु पूरा ॥ (६३०-६, रामकली दखणी, मः १)
करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सूरा ॥३॥ (६३०-६, रामकली दखणी, मः १)
ङिआनु गवाइआ दूजा भाइआ गरबि गले बिखु खाइआ ॥ (६३०-७, रामकली दखणी, मः १)
गुर रसु गीत बाद नही भावै सुणीऐ गहिर गम्भीरु गवाइआ ॥ (६३०-७, रामकली दखणी, मः १)
गुरि सचु कहिआ अमृतु लहिआ मनि तनि साचु सुखाइआ ॥ (६३०-८, रामकली दखणी, मः १)
आपे गुरमुखि आपे देवै आपे अमृतु पीआइआ ॥४॥ (६३०-९, रामकली दखणी, मः १)
एको एकु कहै सभु कोई हउमै गरबु विआपै ॥ (६३०-९, रामकली दखणी, मः १)
अंतरि बाहरि एकु पछाणै इउ घरु महलु सिञापै ॥ (६३०-१०, रामकली दखणी, मः १)
प्रभु नेड़ै हरि दूरि न जाणहु एको सृसटि सबाई ॥ (६३०-१०, रामकली दखणी, मः १)
एकंकारु अवरु नही दूजा नानक एकु समाई ॥५॥ (६३०-११, रामकली दखणी, मः १)
इसु करते कउ किउ गहि राखउ अफरिओ तुलिओ न जाई ॥ (६३०-११, रामकली दखणी, मः १)
माइआ के देवाने प्राणी झूठि ठगउरी पाई ॥ (६३०-१२, रामकली दखणी, मः १)
लबि लोभि मुहताजि विगूते इब तब फिरि पछुताई ॥ (६३०-१२, रामकली दखणी, मः १)
एकु सरेवै ता गति मिति पावै आवणु जाणु रहाई ॥६॥ (६३०-१३, रामकली दखणी, मः १)
एकु अचारु रंगु इकु रूपु ॥ (६३०-१३, रामकली दखणी, मः १)
पउण पाणी अगनी असरूपु ॥ (६३०-१४, रामकली दखणी, मः १)
एको भवरु भवै तिहु लोइ ॥ (६३०-१४, रामकली दखणी, मः १)
एको बूझै सूझै पति होइ ॥ (६३०-१४, रामकली दखणी, मः १)
गिआनु धिआनु ले समसरि रहै ॥ (६३०-१५, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि एकु विरला को लहै ॥ (६३०-१५, रामकली दखणी, मः १)
जिस नो देइ किरपा ते सुखु पाए ॥ (६३०-१५, रामकली दखणी, मः १)
गुरू दुआरै आखि सुणाए ॥७॥ (६३०-१६, रामकली दखणी, मः १)
ऊरम धूरम जोति उजाला ॥ (६३०-१६, रामकली दखणी, मः १)
तीनि भवण महि गुर गोपाला ॥ (६३०-१६, रामकली दखणी, मः १)
ऊगविआ असरूपु दिखावै ॥ (६३०-१७, रामकली दखणी, मः १)
करि किरपा अपुनै घरि आवै ॥ (६३०-१७, रामकली दखणी, मः १)
ऊनवि बरसै नीझर धारा ॥ (६३०-१७, रामकली दखणी, मः १)
ऊतम सबदि सवारणहारा ॥ (६३०-१८, रामकली दखणी, मः १)
इसु एके का जाणै भेउ ॥ (६३०-१८, रामकली दखणी, मः १)
आपे करता आपे देउ ॥८॥ (६३०-१८, रामकली दखणी, मः १)
उगवै सूरु असुर संघारै ॥ (६३०-१८, रामकली दखणी, मः १)
ऊचउ देखि सबदि बीचारै ॥ (६३०-१९, रामकली दखणी, मः १)
ऊपरि आदि अंति तिहु लोइ ॥ (६३०-१९, रामकली दखणी, मः १)
आपे करै कथै सुणै सोइ ॥ (६३०-१९, रामकली दखणी, मः १)

ओहु बिधाता मनु तनु देइ ॥ (६३१-१, रामकली दखणी, मः १)
ओहु बिधाता मनि मुखि सोइ ॥ (६३१-१, रामकली दखणी, मः १)
प्रभु जगजीवनु अवरु न कोइ ॥ (६३१-१, रामकली दखणी, मः १)
नानक नामि रते पति होइ ॥९॥ (६३१-२, रामकली दखणी, मः १)
राजन राम रवै हितकारि ॥ (६३१-२, रामकली दखणी, मः १)
रण महि लूझै मनूआ मारि ॥ (६३१-२, रामकली दखणी, मः १)
राति दिनंति रहै रंगि राता ॥ (६३१-२, रामकली दखणी, मः १)
तीनि भवन जुग चारे जाता ॥ (६३१-३, रामकली दखणी, मः १)
जिनि जाता सो तिस ही जेहा ॥ (६३१-३, रामकली दखणी, मः १)
अति निरमाइलु सीझसि देहा ॥ (६३१-३, रामकली दखणी, मः १)
रहसी रामु रिदै इक भाइ ॥ (६३१-४, रामकली दखणी, मः १)
अंतरि सबदु साचि लिव लाइ ॥१०॥ (६३१-४, रामकली दखणी, मः १)
रोसु न कीजै अमृतु पीजै रहणु नही संसारे ॥ (६३१-४, रामकली दखणी, मः १)
राजे राइ रंक नही रहणा आइ जाइ जुग चारे ॥ (६३१-५, रामकली दखणी, मः १)
रहण कहण ते रहै न कोई किसु पहि करउ बिनंती ॥ (६३१-५, रामकली दखणी, मः १)
एकु सबदु राम नाम निरोधरु गुरु देवै पति मती ॥११॥ (६३१-६, रामकली दखणी, मः १)
लाज मरंती मरि गई घूघटु खोलि चली ॥ (६३१-६, रामकली दखणी, मः १)
सासु दिवानी बावरी सिर ते संक टली ॥ (६३१-७, रामकली दखणी, मः १)
प्रेमि बुलाई रली सिउ मन महि सबदु अनंदु ॥ (६३१-७, रामकली दखणी, मः १)
लालि रती लाली भई गुरमुखि भई निचिंदु ॥१२॥ (६३१-८, रामकली दखणी, मः १)
लाहा नामु रतनु जपि सारु ॥ (६३१-८, रामकली दखणी, मः १)
लबु लोभु बुरा अहंकारु ॥ (६३१-९, रामकली दखणी, मः १)
लाड़ी चाड़ी लाइतबारु ॥ (६३१-९, रामकली दखणी, मः १)
मनमुखु अंधा मुगधु गवारु ॥ (६३१-९, रामकली दखणी, मः १)
लाहे कारणि आइआ जगि ॥ (६३१-९, रामकली दखणी, मः १)
होइ मजूरु गइआ ठगाइ ठगि ॥ (६३१-१०, रामकली दखणी, मः १)
लाहा नामु पूंजी वेसाहु ॥ (६३१-१०, रामकली दखणी, मः १)
नानक सची पति सचा पातिसाहु ॥१३॥ (६३१-१०, रामकली दखणी, मः १)
आइ विगूता जगु जम पंथु ॥ (६३१-११, रामकली दखणी, मः १)
आई न मेटण को समरथु ॥ (६३१-११, रामकली दखणी, मः १)
आथि सैल नीच घरि होइ ॥ (६३१-११, रामकली दखणी, मः १)
आथि देखि निवै जिसु दोइ ॥ (६३१-१२, रामकली दखणी, मः १)
आथि होइ ता मुगधु सिआना ॥ (६३१-१२, रामकली दखणी, मः १)

भगति बिहूना जगु बउराना ॥ (६३१-१२, रामकली दखणी, मः १)
सभ महि वरतै एको सोइ ॥ (६३१-१३, रामकली दखणी, मः १)
जिस नो किरपा करे तिसु परगटु होइ ॥१४॥ (६३१-१३, रामकली दखणी, मः १)
जुगि जुगि थापि सदा निरवैरु ॥ (६३१-१३, रामकली दखणी, मः १)
जनमि मरणि नही धंधा धैरु ॥ (६३१-१४, रामकली दखणी, मः १)
जो दीसै सो आपे आपि ॥ (६३१-१४, रामकली दखणी, मः १)
आपि उपाइ आपे घट थापि ॥ (६३१-१४, रामकली दखणी, मः १)
आपि अगोचरु धंधै लोई ॥ (६३१-१५, रामकली दखणी, मः १)
जोग जुगति जगजीवनु सोई ॥ (६३१-१५, रामकली दखणी, मः १)
करि आचारु सचु सुखु होई ॥ (६३१-१५, रामकली दखणी, मः १)
नाम विहूणा मुकति किव होई ॥१५॥ (६३१-१५, रामकली दखणी, मः १)
विणु नावै वेरोधु सरीर ॥ (६३१-१६, रामकली दखणी, मः १)
किउ न मिलहि काटहि मन पीर ॥ (६३१-१६, रामकली दखणी, मः १)
वाट वटाऊ आवै जाइ ॥ (६३१-१६, रामकली दखणी, मः १)
किआ ले आइआ किआ पलै पाइ ॥ (६३१-१७, रामकली दखणी, मः १)
विणु नावै तोटा सभ थाइ ॥ (६३१-१७, रामकली दखणी, मः १)
लाहा मिलै जा देइ बुझाइ ॥ (६३१-१७, रामकली दखणी, मः १)
वणजु वापारु वणजै वापारी ॥ (६३१-१८, रामकली दखणी, मः १)
विणु नावै कैसी पति सारी ॥१६॥ (६३१-१८, रामकली दखणी, मः १)
गुण वीचारे गिआनी सोइ ॥ (६३१-१८, रामकली दखणी, मः १)
गुण महि गिआनु परापति होइ ॥ (६३१-१९, रामकली दखणी, मः १)
गुणदाता विरला संसारि ॥ (६३१-१९, रामकली दखणी, मः १)
साची करणी गुर वीचारि ॥ (६३१-१९, रामकली दखणी, मः १)
अगम अगोचरु कीमति नही पाइ ॥ (६३१-१९, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३२

ता मिलीऐ जा लए मिलाइ ॥ (६३२-१, रामकली दखणी, मः १)
गुणवंती गुण सारे नीत ॥ (६३२-१, रामकली दखणी, मः १)
नानक गुरमति मिलीऐ मीत ॥१७॥ (६३२-१, रामकली दखणी, मः १)
कामु क्रोधु काइआ कउ गालै ॥ (६३२-२, रामकली दखणी, मः १)
जिउ कंचन सोहागा ढालै ॥ (६३२-२, रामकली दखणी, मः १)
कसि कसवटी सहै सु ताउ ॥ (६३२-२, रामकली दखणी, मः १)
नदरि सराफ वन्नी सचड़ाउ ॥ (६३२-३, रामकली दखणी, मः १)
जगतु पसू अहं कालु कसाई ॥ (६३२-३, रामकली दखणी, मः १)
करि करतै करणी करि पाई ॥ (६३२-३, रामकली दखणी, मः १)

जिनि कीती तिनि कीमति पाई ॥ (६३२-४, रामकली दखणी, मः १)
होर किआ कहीऐ किछु कहणु न जाई ॥१८॥ (६३२-४, रामकली दखणी, मः १)
खोजत खोजत अमृतु पीआ ॥ (६३२-४, रामकली दखणी, मः १)
खिमा गही मनु सतगुरि दीआ ॥ (६३२-५, रामकली दखणी, मः १)
खरा खरा आखै सभु कोइ ॥ (६३२-५, रामकली दखणी, मः १)
खरा रतनु जुग चारे होइ ॥ (६३२-५, रामकली दखणी, मः १)
खात पीअंत मूए नही जानिआ ॥ (६३२-६, रामकली दखणी, मः १)
खिन महि मूए जा सबदु पछानिआ ॥ (६३२-६, रामकली दखणी, मः १)
असथिरु चीतु मरनि मनु मानिआ ॥ (६३२-६, रामकली दखणी, मः १)
गुर किरपा ते नामु पछानिआ ॥१६॥ (६३२-७, रामकली दखणी, मः १)
गगन गम्भीरु गगनंतरि वासु ॥ (६३२-७, रामकली दखणी, मः १)
गुण गावै सुख सहजि निवासु ॥ (६३२-७, रामकली दखणी, मः १)
गइआ न आवै आइ न जाइ ॥ (६३२-८, रामकली दखणी, मः १)
गुर परसादि रहै लिव लाइ ॥ (६३२-८, रामकली दखणी, मः १)
गगनु अगम्मु अनाथु अजोनी ॥ (६३२-८, रामकली दखणी, मः १)
असथिरु चीतु समाधि सगोनी ॥ (६३२-६, रामकली दखणी, मः १)
हरि नामु चेति फिरि पवहि न जूनी ॥ (६३२-६, रामकली दखणी, मः १)
गुरमति सारु होर नाम बिहूनी ॥२०॥ (६३२-६, रामकली दखणी, मः १)
घर दर फिरि थाकी बहुतेरे ॥ (६३२-१०, रामकली दखणी, मः १)
जाति असंख अंत नही मेरे ॥ (६३२-१०, रामकली दखणी, मः १)
केते मात पिता सुत धीआ ॥ (६३२-१०, रामकली दखणी, मः १)
केते गुर चेले फुनि हूआ ॥ (६३२-११, रामकली दखणी, मः १)
काचे गुर ते मुकति न हूआ ॥ (६३२-११, रामकली दखणी, मः १)
केती नारि वरु एकु समालि ॥ (६३२-११, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि मरणु जीवणु प्रभ नालि ॥ (६३२-११, रामकली दखणी, मः १)
दह दिस ढूढि घरै महि पाइआ ॥ (६३२-१२, रामकली दखणी, मः १)
मेलु भइआ सतिगुरू मिलाइआ ॥२१॥ (६३२-१२, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि गावै गुरमुखि बोलै ॥ (६३२-१३, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि तोलि तुोलावै तोलै ॥ (६३२-१३, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि आवै जाइ निसंगु ॥ (६३२-१३, रामकली दखणी, मः १)
परहरि मैलु जलाइ कलंकु ॥ (६३२-१३, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ (६३२-१४, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि मजनु चजु अचारु ॥ (६३२-१४, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि सबदु अमृतु है सारु ॥ (६३२-१४, रामकली दखणी, मः १)
नानक गुरमुखि पावै पारु ॥२२॥ (६३२-१५, रामकली दखणी, मः १)

चंचलु चीतु न रहई ठाइ ॥ (६३२-१५, रामकली दखणी, मः १)
चोरी मिरगु अंगूरी खाइ ॥ (६३२-१५, रामकली दखणी, मः १)
चरन कमल उर धारे चीत ॥ (६३२-१६, रामकली दखणी, मः १)
चिरु जीवनु चेतनु नित नीत ॥ (६३२-१६, रामकली दखणी, मः १)
चिंतत ही दीसै सभु कोइ ॥ (६३२-१६, रामकली दखणी, मः १)
चेतहि एकु तही सुखु होइ ॥ (६३२-१६, रामकली दखणी, मः १)
चिति वसै राचै हरि नाइ ॥ (६३२-१७, रामकली दखणी, मः १)
मुकति भइआ पति सिउ घरि जाइ ॥२३॥ (६३२-१७, रामकली दखणी, मः १)
छीजै देह खुलै इक गंढि ॥ (६३२-१७, रामकली दखणी, मः १)
छेआ नित देखहु जगि हंढि ॥ (६३२-१८, रामकली दखणी, मः १)
धूप छाव जे सम करि जाणै ॥ (६३२-१८, रामकली दखणी, मः १)
बंधन काटि मुकति घरि आणै ॥ (६३२-१८, रामकली दखणी, मः १)
छाइआ छूछी जगतु भुलाना ॥ (६३२-१९, रामकली दखणी, मः १)
लिखिआ किरतु धुरे परवाना ॥ (६३२-१९, रामकली दखणी, मः १)
छीजै जोबनु जरूआ सिरि कालु ॥ (६३२-१९, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३३

काइआ छीजै भई सिबालु ॥२४॥ (६३३-१, रामकली दखणी, मः १)
जापै आपि प्रभू तिहु लोइ ॥ (६३३-१, रामकली दखणी, मः १)
जुगि जुगि दाता अवरु न कोइ ॥ (६३३-१, रामकली दखणी, मः १)
जिउ भावै तिउ राखहि राखु ॥ (६३३-२, रामकली दखणी, मः १)
जसु जाचउ देवै पति साखु ॥ (६३३-२, रामकली दखणी, मः १)
जागतु जागि रहा तुधु भावा ॥ (६३३-२, रामकली दखणी, मः १)
जा तू मेलहि ता तुझै समावा ॥ (६३३-३, रामकली दखणी, मः १)
जै जै कारु जपउ जगदीस ॥ (६३३-३, रामकली दखणी, मः १)
गुरमति मिलीऐ बीस इकीस ॥२५॥ (६३३-३, रामकली दखणी, मः १)
झखि बोलणु किआ जग सिउ वादु ॥ (६३३-३, रामकली दखणी, मः १)
झूरि मरै देखै परमादु ॥ (६३३-४, रामकली दखणी, मः १)
जनमि मूए नही जीवण आसा ॥ (६३३-४, रामकली दखणी, मः १)
आइ चले भए आस निरासा ॥ (६३३-४, रामकली दखणी, मः १)
झुरि झुरि झखि माटी रलि जाइ ॥ (६३३-५, रामकली दखणी, मः १)
कालु न चाँपै हरि गुण गाइ ॥ (६३३-५, रामकली दखणी, मः १)
पाई नव निधि हरि कै नाइ ॥ (६३३-५, रामकली दखणी, मः १)
आपे देवै सहजि सुभाइ ॥२६॥ (६३३-६, रामकली दखणी, मः १)
ञिआनो बोलै आपे बूझै ॥ (६३३-६, रामकली दखणी, मः १)

आपे समझै आपे सूझै ॥ (६३३-६, रामकली दखणी, मः १)
गुर का कहिआ अंकि समावै ॥ (६३३-६, रामकली दखणी, मः १)
निर्मल सूचे साचो भावै ॥ (६३३-७, रामकली दखणी, मः १)
गुरु सागरु रतनी नही तोट ॥ (६३३-७, रामकली दखणी, मः १)
लाल पदार्थ साचु अखोट ॥ (६३३-७, रामकली दखणी, मः १)
गुरि कहिआ सा कार कमावहु ॥ (६३३-८, रामकली दखणी, मः १)
गुर की करणी काहे धावहु ॥ (६३३-८, रामकली दखणी, मः १)
नानक गुरमति साचि समावहु ॥२७॥ (६३३-८, रामकली दखणी, मः १)
टूटै नेहु कि बोलहि सही ॥ (६३३-९, रामकली दखणी, मः १)
टूटै बाह दुहू दिस गही ॥ (६३३-९, रामकली दखणी, मः १)
टूटि परीति गई बुर बोलि ॥ (६३३-९, रामकली दखणी, मः १)
दुरमति परहरि छाडी ढोलि ॥ (६३३-९, रामकली दखणी, मः १)
टूटै गंठि पड़ै वीचारि ॥ (६३३-१०, रामकली दखणी, मः १)
गुर सबदी घरि कारजु सारि ॥ (६३३-१०, रामकली दखणी, मः १)
लाहा साचु न आवै तोटा ॥ (६३३-१०, रामकली दखणी, मः १)
तृभवण ठाकुरु प्रीतमु मोटा ॥२८॥ (६३३-११, रामकली दखणी, मः १)
ठाकहु मनूआ राखहु ठाइ ॥ (६३३-११, रामकली दखणी, मः १)
ठहकि मुई अवगुणि पछुताइ ॥ (६३३-११, रामकली दखणी, मः १)
ठाकुरु एकु सबाई नारि ॥ (६३३-१२, रामकली दखणी, मः १)
बहुते वेस करे कूड़िआरि ॥ (६३३-१२, रामकली दखणी, मः १)
पर घरि जाती ठाकि रहाई ॥ (६३३-१२, रामकली दखणी, मः १)
महलि बुलाई ठाक न पाई ॥ (६३३-१२, रामकली दखणी, मः १)
सबदि सवारी साचि पिआरी ॥ (६३३-१३, रामकली दखणी, मः १)
साई सोहागणि ठाकुरि धारी ॥२९॥ (६३३-१३, रामकली दखणी, मः १)
डोलत डोलत हे सखी फाटे चीर सीगार ॥ (६३३-१३, रामकली दखणी, मः १)
डाहपणि तनि सुखु नही बिनु डर बिणठी डार ॥ (६३३-१४, रामकली दखणी, मः १)
डरपि मुई घरि आपणै डीठी कंति सुजाणि ॥ (६३३-१४, रामकली दखणी, मः १)
डरु राखिआ गुरि आपणै निरभउ नामु वखाणि ॥ (६३३-१५, रामकली दखणी, मः १)
डूगरि वासु तिखा घणी जब देखा नही दूरि ॥ (६३३-१५, रामकली दखणी, मः १)
तिखा निवारी सबदु मंनि अमृतु पीआ भरपूरि ॥ (६३३-१६, रामकली दखणी, मः १)
देहि देहि आखै सभु कोई जै भावै तै देइ ॥ (६३३-१६, रामकली दखणी, मः १)
गुरू दुआरै देवसी तिखा निवारै सोइ ॥३०॥ (६३३-१७, रामकली दखणी, मः १)
ढंढोलत ढूढत हउ फिरी ढहि ढहि पवनि करारि ॥ (६३३-१७, रामकली दखणी, मः १)
भारे ढहते ढहि पए हउले निकसे पारि ॥ (६३३-१८, रामकली दखणी, मः १)
अमर अजाची हरि मिले तिन कै हउ बलि जाउ ॥ (६३३-१८, रामकली दखणी, मः १)

तिन की धूड़ि अघुलीऐ संगति मेलि मिलाउ ॥ (६३३-१९, रामकली दखणी, मः १)
मनु दीआ गुरि आपणै पाइआ निर्मल नाउ ॥ (६३३-१९, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३४

जिनि नामु दीआ तिसु सेवसा तिसु बलिहारै जाउ ॥ (६३४-१, रामकली दखणी, मः १)
जो उसारे सो ढाहसी तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (६३४-१, रामकली दखणी, मः १)
गुर परसादी तिसु सम्म्हला ता तनि दूखु न होइ ॥३१॥ (६३४-२, रामकली दखणी, मः १)
णा को मेरा किसु गही णा को होआ न होगु ॥ (६३४-२, रामकली दखणी, मः १)
आवणि जाणि विगुचीऐ दुबिधा विआपै रोगु ॥ (६३४-३, रामकली दखणी, मः १)
णाम विहूणे आदमी कलर कंध गिरंति ॥ (६३४-३, रामकली दखणी, मः १)
विणु नावै किउ छूटीऐ जाइ रसातलि अंति ॥ (६३४-३, रामकली दखणी, मः १)
गणत गणावै अखरी अगणतु साचा सोइ ॥ (६३४-४, रामकली दखणी, मः १)
अगिआनी मतिहीणु है गुर बिनु गिआनु न होइ ॥ (६३४-४, रामकली दखणी, मः १)
तूटी तंतु रबाब की वाजै नही विजोगि ॥ (६३४-५, रामकली दखणी, मः १)
विछुड़िआ मेलै प्रभू नानक करि संजोग ॥३२॥ (६३४-५, रामकली दखणी, मः १)
तरवरु काइआ पंखि मनु तरवरि पंखी पंच ॥ (६३४-६, रामकली दखणी, मः १)
ततु चुगहि मिलि एकसे तिन कउ फास न रंच ॥ (६३४-६, रामकली दखणी, मः १)
उडहि त बेगुल बेगुले ताकहि चोग घणी ॥ (६३४-७, रामकली दखणी, मः १)
पंख तुटे फाही पड़ी अवगुणि भीड़ बणी ॥ (६३४-७, रामकली दखणी, मः १)
बिनु साचे किउ छूटीऐ हरि गुण करमि मणी ॥ (६३४-८, रामकली दखणी, मः १)
आपि छडाए छूटीऐ वडा आपि धणी ॥ (६३४-८, रामकली दखणी, मः १)
गुर परसादी छूटीऐ किरपा आपि करेइ ॥ (६३४-८, रामकली दखणी, मः १)
अपणै हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥३३॥ (६३४-९, रामकली दखणी, मः १)
थर थर कम्पै जीअड़ा थान विहूणा होइ ॥ (६३४-९, रामकली दखणी, मः १)
थानि मानि सचु एकु है काजु न फीटै कोइ ॥ (६३४-१०, रामकली दखणी, मः १)
थिरु नाराइणु थिरु गुरू थिरु साचा बीचारु ॥ (६३४-१०, रामकली दखणी, मः १)
सुरि नर नाथह नाथु तू निधारा आधारु ॥ (६३४-११, रामकली दखणी, मः १)
सरबे थान थनंतरी तू दाता दातारु ॥ (६३४-११, रामकली दखणी, मः १)
जह देखा तह एकु तू अंतु न पारावारु ॥ (६३४-११, रामकली दखणी, मः १)
थान थनंतरि रवि रहिआ गुर सबदी वीचारि ॥ (६३४-१२, रामकली दखणी, मः १)
अणमंगिआ दानु देवसी वडा अगम अपारु ॥३४॥ (६३४-१२, रामकली दखणी, मः १)
दइआ दानु दइआलु तू करि करि देखणहारु ॥ (६३४-१३, रामकली दखणी, मः १)
दइआ करहि प्रभ मेलि लैहि खिन महि ढाहि उसारि ॥ (६३४-१३, रामकली दखणी, मः १)
दाना तू बीना तुही दाना कै सिरि दानु ॥ (६३४-१४, रामकली दखणी, मः १)
दालद भंजन दुख दलण गुरमुखि गिआनु धिआनु ॥३५॥ (६३४-१४, रामकली दखणी, मः १)

धनि गइऐ बहि झूरीऐ धन महि चीतु गवार ॥ (६३४-१५, रामकली दखणी, मः १)
धनु विरली सचु संचिआ निरमलु नामु पिआरि ॥ (६३४-१५, रामकली दखणी, मः १)
धनु गइआ ता जाण देहि जे राचहि रंगि एक ॥ (६३४-१६, रामकली दखणी, मः १)
मनु दीजै सिरु सउपीऐ भी करते की टेक ॥ (६३४-१६, रामकली दखणी, मः १)
धंधा धावत रहि गए मन महि सबदु अनंदु ॥ (६३४-१७, रामकली दखणी, मः १)
दुरजन ते साजन भए भेटे गुर गोविंद ॥ (६३४-१७, रामकली दखणी, मः १)
बनु बनु फिरती ढूढती बसतु रही घरि बारि ॥ (६३४-१८, रामकली दखणी, मः १)
सतिगुरि मेली मिलि रही जनम मरण दुखु निवारि ॥३६॥ (६३४-१८, रामकली दखणी, मः १)
नाना करत न छूटीऐ विणु गुण जम पुरि जाहि ॥ (६३४-१९, रामकली दखणी, मः १)
ना तिसु एहु न ओहु है अवगुणि फिरि पछुताहि ॥ (६३४-१९, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३५

ना तिसु गिआनु न धिआनु है ना तिसु धरमु धिआनु ॥ (६३५-१, रामकली दखणी, मः १)
विणु नावै निरभउ कहा किआ जाणा अभिमानु ॥ (६३५-१, रामकली दखणी, मः १)
थाकि रही किव अपड़ा हाथ नही ना पारु ॥ (६३५-२, रामकली दखणी, मः १)
ना साजन से रंगुले किसु पहि करी पुकार ॥ (६३५-२, रामकली दखणी, मः १)
नानक प्रिउ प्रिउ जे करी मेले मेलणहारु ॥ (६३५-३, रामकली दखणी, मः १)
जिनि विछोड़ी सो मेलसी गुर कै हेति अपारि ॥३७॥ (६३५-३, रामकली दखणी, मः १)
पापु बुरा पापी कउ पिआरा ॥ (६३५-४, रामकली दखणी, मः १)
पापि लदे पापे पासारा ॥ (६३५-४, रामकली दखणी, मः १)
परहरि पापु पछाणै आपु ॥ (६३५-४, रामकली दखणी, मः १)
ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ (६३५-५, रामकली दखणी, मः १)
नरकि पड़ंतउ किउ रहै किउ बंचै जमकालु ॥ (६३५-५, रामकली दखणी, मः १)
किउ आवण जाणा वीसरै झूठु बुरा खै कालु ॥ (६३५-५, रामकली दखणी, मः १)
मनु जंजाली वेड़िआ भी जंजाला माहि ॥ (६३५-६, रामकली दखणी, मः १)
विणु नावै किउ छूटीऐ पापे पचहि पचाहि ॥३८॥ (६३५-६, रामकली दखणी, मः १)
फिरि फिरि फाही फासै कऊआ ॥ (६३५-७, रामकली दखणी, मः १)
फिरि पछुताना अब किआ हूआ ॥ (६३५-७, रामकली दखणी, मः १)
फाथा चोग चुगै नही बूझै ॥ (६३५-७, रामकली दखणी, मः १)
सतगुरु मिलै त आखी सूझै ॥ (६३५-८, रामकली दखणी, मः १)
जिउ मछुली फाथी जम जालि ॥ (६३५-८, रामकली दखणी, मः १)
विणु गुर दाते मुकति न भालि ॥ (६३५-८, रामकली दखणी, मः १)
फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ ॥ (६३५-८, रामकली दखणी, मः १)
इक रंगि रचै रहै लिव लाइ ॥ (६३५-९, रामकली दखणी, मः १)
इव छूटै फिरि फास न पाइ ॥३९॥ (६३५-९, रामकली दखणी, मः १)

बीरा बीरा करि रही बीर भए बैराइ ॥ (६३५-१०, रामकली दखणी, मः १)
बीर चले घरि आपणै बहिण बिरहि जलि जाइ ॥ (६३५-१०, रामकली दखणी, मः १)
बाबुल कै घरि बेटड़ी बाली बालै नेहि ॥ (६३५-१०, रामकली दखणी, मः १)
जे लोड़हि वरु कामणी सतिगुरु सेवहि तेहि ॥ (६३५-११, रामकली दखणी, मः १)
बिरलो गिआनी बूझणउ सतिगुरु साचि मिलेइ ॥ (६३५-११, रामकली दखणी, मः १)
ठाकुर हाथि वडाईआ जै भावै तै देइ ॥ (६३५-१२, रामकली दखणी, मः १)
बाणी बिरलउ बीचारसी जे को गुरमुखि होइ ॥ (६३५-१२, रामकली दखणी, मः १)
इह बाणी महा पुरख की निज घरि वासा होइ ॥४०॥ (६३५-१३, रामकली दखणी, मः १)
भनि भनि घड़ीऐ घड़ि घड़ि भजै ढाहि उसारै उसरे ढाहै ॥ (६३५-१३, रामकली दखणी, मः १)
सर भरि सोखै भी भरि पोखै समरथ वेपरवाहै ॥ (६३५-१४, रामकली दखणी, मः १)
भरमि भुलाने भए दिवाने विणु भागा किआ पाईऐ ॥ (६३५-१४, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि गिआनु डोरी प्रभि पकड़ी जिन खिंचै तिन जाईऐ ॥ (६३५-१५, रामकली दखणी, मः १)
हरि गुण गाइ सदा रंगि राते बहुड़ि न पछोताईऐ ॥ (६३५-१६, रामकली दखणी, मः १)
भभै भालहि गुरमुखि बूझहि ता निज घरि वासा पाईऐ ॥ (६३५-१६, रामकली दखणी, मः १)
भभै भउजलु मारगु विखड़ा आस निरासा तरीऐ ॥ (६३५-१७, रामकली दखणी, मः १)
गुर परसादी आपो चीन्है जीवतिआ इव मरीऐ ॥४१॥ (६३५-१७, रामकली दखणी, मः १)
माइआ माइआ करि मुए माइआ किसै न साथि ॥ (६३५-१८, रामकली दखणी, मः १)
हंसु चलै उठि डुमणो माइआ भूली आथि ॥ (६३५-१८, रामकली दखणी, मः १)
मनु झूठा जमि जोहिआ अवगुण चलहि नालि ॥ (६३५-१९, रामकली दखणी, मः १)
मन महि मनु उलटो मरै जे गुण होवहि नालि ॥ (६३५-१९, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३६

मेरी मेरी करि मुए विणु नावै दुखु भालि ॥ (६३६-१, रामकली दखणी, मः १)
गड़ मंदर महला कहा जिउ बाजी दीबाणु ॥ (६३६-१, रामकली दखणी, मः १)
नानक सचे नाम विणु झूठा आवण जाणु ॥ (६३६-२, रामकली दखणी, मः १)
आपे चतुरु सरूपु है आपे जाणु सुजाणु ॥४२॥ (६३६-२, रामकली दखणी, मः १)
जो आवहि से जाहि फुनि आइ गए पछुताहि ॥ (६३६-३, रामकली दखणी, मः १)
लख चउरासीह मेदनी घटै न वधै उताहि ॥ (६३६-३, रामकली दखणी, मः १)
से जन उबरे जिन हरि भाइआ ॥ (६३६-३, रामकली दखणी, मः १)
धंधा मुआ विगूती माइआ ॥ (६३६-४, रामकली दखणी, मः १)
जो दीसै सो चालसी किस कउ मीतु करेउ ॥ (६३६-४, रामकली दखणी, मः १)
जीउ समपउ आपणा तनु मनु आगै देउ ॥ (६३६-५, रामकली दखणी, मः १)
असथिरु करता तू धणी तिस ही की मै ओट ॥ (६३६-५, रामकली दखणी, मः १)
गुण की मारी हउ मुई सबदि रती मनि चोट ॥४३॥ (६३६-५, रामकली दखणी, मः १)
राणा राउ न को रहै रंगु न तुंगु फकीरु ॥ (६३६-६, रामकली दखणी, मः १)

वारी आपो आपणी कोइ न बंधै धीर ॥ (६३६-६, रामकली दखणी, मः १)
राहु बुरा भीहावला सर डूगर असगाह ॥ (६३६-७, रामकली दखणी, मः १)
मै तनि अवगण झुरि मुई विणु गुण किउ घरि जाह ॥ (६३६-७, रामकली दखणी, मः १)
गुणीआ गुण ले प्रभ मिले किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ (६३६-८, रामकली दखणी, मः १)
तिन ही जैसी थी रहाँ जपि जपि रिदै मुरारि ॥ (६३६-८, रामकली दखणी, मः १)
अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥ (६३६-९, रामकली दखणी, मः १)
विणु सतगुर गुण न जापनी जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥४४॥ (६३६-९, रामकली दखणी, मः १)
लसकरीआ घर सम्मले आए वजहु लिखाइ ॥ (६३६-१०, रामकली दखणी, मः १)
कार कमावहि सिरि धणी लाहा पलै पाइ ॥ (६३६-१०, रामकली दखणी, मः १)
लबु लोभु बुरिआईआ छोडे मनहु विसारि ॥ (६३६-११, रामकली दखणी, मः १)
गड़ि दोही पातिसाह की कदे न आवै हारि ॥ (६३६-११, रामकली दखणी, मः १)
चाकरु कहीऐ खसम का सउहे उतर देइ ॥ (६३६-१२, रामकली दखणी, मः १)
वजहु गवाए आपणा तखति न बैसहि सेइ ॥ (६३६-१२, रामकली दखणी, मः १)
प्रीतम हथि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥ (६३६-१३, रामकली दखणी, मः १)
आपि करे किसु आखीऐ अवरु न कोइ करेइ ॥४५॥ (६३६-१३, रामकली दखणी, मः १)
बीजउ सूझै को नही बहै दुलीचा पाइ ॥ (६३६-१४, रामकली दखणी, मः १)
नरक निवारणु नरह नरु साचउ साचै नाइ ॥ (६३६-१४, रामकली दखणी, मः १)
वणु तृणु ढूढत फिरि रही मन महि करउ बीचारु ॥ (६३६-१४, रामकली दखणी, मः १)
लाल रतन बहु माणकी सतिगुर हाथि भंडारु ॥ (६३६-१५, रामकली दखणी, मः १)
ऊतमु होवा प्रभु मिलै इक मनि एकै भाइ ॥ (६३६-१५, रामकली दखणी, मः १)
नानक प्रीतम रसि मिले लाहा लै परथाइ ॥ (६३६-१६, रामकली दखणी, मः १)
रचना राचि जिनि रची जिनि सिरिआ आकारु ॥ (६३६-१६, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि बेअंतु धिआईऐ अंतु न पारावारु ॥४६॥ (६३६-१७, रामकली दखणी, मः १)
ड़ाड़ै रूड़ा हरि जीउ सोई ॥ (६३६-१७, रामकली दखणी, मः १)
तिसु बिनु राजा अवरु न कोई ॥ (६३६-१८, रामकली दखणी, मः १)
ड़ाड़ै गारुड़ु तुम सुणहु हरि वसै मन माहि ॥ (६३६-१८, रामकली दखणी, मः १)
गुर परसादी हरि पाईऐ मतु को भरमि भुलाहि ॥ (६३६-१८, रामकली दखणी, मः १)
सो साहु साचा जिसु हरि धनु रासि ॥ (६३६-१९, रामकली दखणी, मः १)
गुरमुखि पूरा तिसु साबासि ॥ (६३६-१९, रामकली दखणी, मः १)
रूड़ी बाणी हरि पाइआ गुर सबदी बीचारि ॥ (६३६-१९, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३७

आपु गइआ दुखु कटिआ हरि वरु पाइआ नारि ॥४७॥ (६३७-१, रामकली दखणी, मः १)
सुइना रुपा संचीऐ धनु काचा बिखु छारु ॥ (६३७-२, रामकली दखणी, मः १)
साहु सदाए संचि धनु दुबिधा होइ खुआरु ॥ (६३७-२, रामकली दखणी, मः १)

सचिआरी सचु संचिआ साचउ नामु अमोलु ॥ (६३७-२, रामकली दखणी, मः १)
हरि निरमाइलु ऊजलो पति साची सचु बोलु ॥ (६३७-३, रामकली दखणी, मः १)
साजनु मीतु सुजाणु तू तू सरवरु तू हंसु ॥ (६३७-३, रामकली दखणी, मः १)
साचउ ठाकुरु मनि वसै हउ बलिहारी तिसु ॥ (६३७-४, रामकली दखणी, मः १)
माइआ ममता मोहणी जिनि कीती सो जाणु ॥ (६३७-४, रामकली दखणी, मः १)
बिखिआ अमृतु एकु है बूझै पुरखु सुजाणु ॥४८॥ (६३७-५, रामकली दखणी, मः १)
खिमा विहूणे खपि गए खूहणि लख असंख ॥ (६३७-५, रामकली दखणी, मः १)
गणत न आवै किउ गणी खपि खपि मुए बिसंख ॥ (६३७-६, रामकली दखणी, मः १)
खसमु पछाणै आपणा खूलै बंधु न पाइ ॥ (६३७-६, रामकली दखणी, मः १)
सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख भाइ ॥ (६३७-६, रामकली दखणी, मः १)
खरचु खरा धनु धिआनु तू आपे वसहि सरीरि ॥ (६३७-७, रामकली दखणी, मः १)
मनि तनि मुखि जापै सदा गुण अंतरि मनि धीर ॥ (६३७-७, रामकली दखणी, मः १)
हउमै खपै खपाइसी बीजउ वथु विकारु ॥ (६३७-८, रामकली दखणी, मः १)
जंत उपाइ विचि पाइअनु करता अलगु अपारु ॥४९॥ (६३७-८, रामकली दखणी, मः १)
सृसटे भेउ न जाणै कोइ ॥ (६३७-९, रामकली दखणी, मः १)
सृसटा करै सु निहचउ होइ ॥ (६३७-९, रामकली दखणी, मः १)
सम्पै कउ ईसरु धिआईऐ ॥ (६३७-९, रामकली दखणी, मः १)
सम्पै पुरबि लिखे की पाईऐ ॥ (६३७-१०, रामकली दखणी, मः १)
सम्पै कारणि चाकर चोर ॥ (६३७-१०, रामकली दखणी, मः १)
सम्पै साथि न चालै होर ॥ (६३७-१०, रामकली दखणी, मः १)
बिनु साचे नही दरगह मानु ॥ (६३७-११, रामकली दखणी, मः १)
हरि रसु पीवै छुटै निदानि ॥५०॥ (६३७-११, रामकली दखणी, मः १)
हेरत हेरत हे सखी होइ रही हैरानु ॥ (६३७-११, रामकली दखणी, मः १)
हउ हउ करती मै मुई सबदि रवै मनि गिआनु ॥ (६३७-१२, रामकली दखणी, मः १)
हार डोर कंकन घणे करि थाकी सीगारु ॥ (६३७-१२, रामकली दखणी, मः १)
मिलि प्रीतम सुखु पाइआ सगल गुणा गलि हारु ॥ (६३७-१३, रामकली दखणी, मः १)
नानक गुरमुखि पाईऐ हरि सिउ प्रीति पिआरु ॥ (६३७-१३, रामकली दखणी, मः १)
हरि बिनु किनि सुखु पाइआ देखहु मनि बीचारि ॥ (६३७-१४, रामकली दखणी, मः १)
हरि पड़णा हरि बुझणा हरि सिउ रखहु पिआरु ॥ (६३७-१४, रामकली दखणी, मः १)
हरि जपीऐ हरि धिआईऐ हरि का नामु अधारु ॥५१॥ (६३७-१५, रामकली दखणी, मः १)
लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि ॥ (६३७-१५, रामकली दखणी, मः १)
आपे कारणु जिनि कीआ करि किरपा पगु धारि ॥ (६३७-१६, रामकली दखणी, मः १)
करते हथि वडिआईआ बूझहु गुर बीचारि ॥ (६३७-१६, रामकली दखणी, मः १)
लिखिआ फेरि न सकीऐ जिउ भावी तिउ सारि ॥ (६३७-१७, रामकली दखणी, मः १)
नदरि तेरी सुखु पाइआ नानक सबदु वीचारि ॥ (६३७-१७, रामकली दखणी, मः १)

मनमुख भूले पचि मुए उबरे गुर बीचारि ॥ (६३७-१८, रामकली दखणी, मः १)
जि पुरखु नदरि न आवई तिस का किआ करि कहिआ जाइ ॥ (६३७-१८, रामकली दखणी, मः १)
बलिहारी गुर आपणे जिनि हिरदै दिता दिखाइ ॥५२॥ (६३७-१९, रामकली दखणी, मः १)
पाधा पड़िआ आखीऐ बिदिआ बिचरै सहजि सुभाइ ॥ (६३७-१९, रामकली दखणी, मः १)

पन्ना ६३८

बिदिआ सोधै ततु लहै राम नाम लिव लाइ ॥ (६३८-१, रामकली दखणी, मः १)
मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ (६३८-१, रामकली दखणी, मः १)
मूरखु सबदु न चीनई सूझ बूझ नह काइ ॥५३॥ (६३८-२, रामकली दखणी, मः १)
पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥ (६३८-२, रामकली दखणी, मः १)
नामु समालहु नामु संगरहु लाहा जग महि लेइ ॥ (६३८-३, रामकली दखणी, मः १)
सची पटी सचु मनि पड़ीऐ सबदु सु सारु ॥ (६३८-३, रामकली दखणी, मः १)
नानक सो पड़िआ सो पंडितु बीना जिसु राम नामु गलि हारु ॥५४॥१॥ (६३८-४, रामकली दखणी, मः १)
रामकली महला १ सिध गोसटि (६३८-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६३८-५)
सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥ (६३८-६, रामकली, मः १)
तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥ (६३८-६, रामकली, मः १)
मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥ (६३८-७, रामकली, मः १)
नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥१॥ (६३८-७, रामकली, मः १)
किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥ (६३८-८, रामकली, मः १)
साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६३८-८, रामकली, मः १)
कवन तुमे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ ॥ (६३८-८, रामकली, मः १)
साचु कहउ अरदासि हमारी हउ संत जना बलि जाओ ॥ (६३८-९, रामकली, मः १)
कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो ॥ (६३८-९, रामकली, मः १)
नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥२॥ (६३८-१०, रामकली, मः १)
घटि घटि बैसि निरंतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाए ॥ (६३८-१०, रामकली, मः १)
सहजे आए हुकमि सिधाए नानक सदा रजाए ॥ (६३८-११, रामकली, मः १)
आसणि बैसणि थिरु नाराइणु ऐसी गुरमति पाए ॥ (६३८-१२, रामकली, मः १)
गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥३॥ (६३८-१२, रामकली, मः १)
दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥ (६३८-१३, रामकली, मः १)
चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥ (६३८-१३, रामकली, मः १)
आपे आखै आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥ (६३८-१४, रामकली, मः १)
साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै ॥४॥ (६३८-१४, रामकली, मः १)
जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥ (६३८-१५, रामकली, मः १)
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥ (६३८-१५, रामकली, मः १)

रहहि इकाँति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो ॥ (६३८-१६, रामकली, मः १)
अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥५॥ (६३८-१६, रामकली, मः १)
सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारो ॥ (६३८-१७, रामकली, मः १)
रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ॥ (६३८-१७, रामकली, मः १)
इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै नानक नामु अधारो ॥ (६३८-१८, रामकली, मः १)
आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥६॥ (६३८-१८, रामकली, मः १)
हाटी बाटी रहहि निराले रूखि बिरखि उदिआने ॥ (६३८-१९, रामकली, मः १)
कंद मूलु अहारो खाईऐ अउधू बोलै गिआने ॥ (६३८-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६३९

तीरथि नाईऐ सुखु फलु पाईऐ मैलु न लागै काई ॥ (६३९-१, रामकली, मः १)
गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साई ॥७॥ (६३९-१, रामकली, मः १)
हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डुोलाई ॥ (६३९-२, रामकली, मः १)
बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न जाई ॥ (६३९-३, रामकली, मः १)
हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥ (६३९-३, रामकली, मः १)
खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥८॥ (६३९-४, रामकली, मः १)
दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥ (६३९-४, रामकली, मः १)
बारह अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पंथा ॥ (६३९-५, रामकली, मः १)
इन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ ॥ (६३९-५, रामकली, मः १)
नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ ॥९॥ (६३९-६, रामकली, मः १)
अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥ (६३९-६, रामकली, मः १)
कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥ (६३९-७, रामकली, मः १)
खिंथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै एकु हरी ॥ (६३९-७, रामकली, मः १)
साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥१०॥ (६३९-८, रामकली, मः १)
ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥ (६३९-८, रामकली, मः १)
काँइआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥ (६३९-९, रामकली, मः १)
सतु संतोखु संजमु है नालि ॥ (६३९-९, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि नामु समालि ॥११॥ (६३९-९, रामकली, मः १)
कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥ (६३९-१०, रामकली, मः १)
कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥ (६३९-१०, रामकली, मः १)
कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥ (६३९-१०, रामकली, मः १)
कवनु सु तृभवणि रहिआ समाइ ॥१२॥ (६३९-११, रामकली, मः १)
घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥ (६३९-११, रामकली, मः १)
अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥ (६३९-११, रामकली, मः १)
मनमुखि बिनसै आवै जाइ ॥ (६३९-१२, रामकली, मः १)

नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥१३॥ (६३९-१२, रामकली, मः १)
किउ करि बाधा सरपनि खाधा ॥ (६३९-१२, रामकली, मः १)
किउ करि खोइआ किउ करि लाधा ॥ (६३९-१३, रामकली, मः १)
किउ करि निरमलु किउ करि अंधिआरा ॥ (६३९-१३, रामकली, मः १)
इहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥१४॥ (६३९-१३, रामकली, मः १)
दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥ (६३९-१४, रामकली, मः १)
मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥ (६३९-१४, रामकली, मः १)
सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥ (६३९-१५, रामकली, मः १)
नानक हउमै मेटि समाइ ॥१५॥ (६३९-१५, रामकली, मः १)
सुन्न निरंतरि दीजै बंधु ॥ (६३९-१५, रामकली, मः १)
उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥ (६३९-१५, रामकली, मः १)
सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥ (६३९-१६, रामकली, मः १)
नानक साचे भावै साचा ॥१६॥ (६३९-१६, रामकली, मः १)
किसु कारणि गृहु तजिओ उदासी ॥ (६३९-१६, रामकली, मः १)
किसु कारणि इहु भेखु निवासी ॥ (६३९-१७, रामकली, मः १)
किसु वखर के तुम वणजारे ॥ (६३९-१७, रामकली, मः १)
किउ करि साथु लंघावहु पारे ॥१७॥ (६३९-१७, रामकली, मः १)
गुरमुखि खोजत भए उदासी ॥ (६३९-१८, रामकली, मः १)
दरसन कै ताई भेख निवासी ॥ (६३९-१८, रामकली, मः १)
साच वखर के हम वणजारे ॥ (६३९-१८, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि उतरसि पारे ॥१८॥ (६३९-१९, रामकली, मः १)
कितु बिधि पुरखा जनमु वटाइआ ॥ (६३९-१९, रामकली, मः १)
काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ ॥ (६३९-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ९४०

कितु बिधि आसा मनसा खाई ॥ (९४०-१, रामकली, मः १)
कितु बिधि जोति निरंतरि पाई ॥ (९४०-१, रामकली, मः १)
बिनु दंता किउ खाईऐ सारु ॥ (९४०-१, रामकली, मः १)
नानक साचा करहु बीचारु ॥१९॥ (९४०-२, रामकली, मः १)
सतिगुर कै जनमे गवनु मिटाइआ ॥ (९४०-२, रामकली, मः १)
अनहति राते इहु मनु लाइआ ॥ (९४०-२, रामकली, मः १)
मनसा आसा सबदि जलाई ॥ (९४०-३, रामकली, मः १)
गुरमुखि जोति निरंतरि पाई ॥ (९४०-३, रामकली, मः १)
त्रै गुण मेटे खाईऐ सारु ॥ (९४०-३, रामकली, मः १)
नानक तारे तारणहारु ॥२०॥ (९४०-४, रामकली, मः १)

आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुन्न कहा घर वासो ॥ (६४०-४, रामकली, मः १)
गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन निवासो ॥ (६४०-५, रामकली, मः १)
काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥ (६४०-५, रामकली, मः १)
सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ ॥ (६४०-६, रामकली, मः १)
गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥ (६४०-६, रामकली, मः १)
जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥२१॥ (६४०-७, रामकली, मः १)
कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥ (६४०-७, रामकली, मः १)
एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाई ॥ (६४०-८, रामकली, मः १)
किउ ततै अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥ (६४०-९, रामकली, मः १)
आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥ (६४०-९, रामकली, मः १)
हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई ॥ (६४०-१०, रामकली, मः १)
पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥२२॥ (६४०-१०, रामकली, मः १)
आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुन्न निरंतरि वासु लीआ ॥ (६४०-११, रामकली, मः १)
अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सर्ब जीआ ॥ (६४०-११, रामकली, मः १)
गुर बचनी अविगति समाईऐ ततु निरंजनु सहजि लहै ॥ (६४०-१२, रामकली, मः १)
नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥ (६४०-१३, रामकली, मः १)
हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति सचु जाणै सोई ॥ (६४०-१३, रामकली, मः १)
आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥२३॥ (६४०-१४, रामकली, मः १)
अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणु थीआ ॥ (६४०-१४, रामकली, मः १)
सतिगुर परचै पर्म पदु पाईऐ साचै सबदि समाइ लीआ ॥ (६४०-१५, रामकली, मः १)
एके कउ सचु एका जाणै हउमै दूजा दूरि कीआ ॥ (६४०-१६, रामकली, मः १)
सो जोगी गुर सबदु पछाणै अंतरि कमलु प्रगासु थीआ ॥ (६४०-१६, रामकली, मः १)
जीवतु मरै ता सभु किछु सूझै अंतरि जाणै सर्ब दइआ ॥ (६४०-१७, रामकली, मः १)
नानक ता कउ मिलै वडाई आपु पछाणै सर्ब जीआ ॥२४॥ (६४०-१७, रामकली, मः १)
साचौ उपजै साचि समावै साचे सूचे एक मइआ ॥ (६४०-१८, रामकली, मः १)
झूठे आवहि ठवर न पावहि दूजै आवा गउणु भइआ ॥ (६४०-१८, रामकली, मः १)
आवा गउणु मिटै गुर सबदी आपे परखै बखसि लइआ ॥ (६४०-१९, रामकली, मः १)
एका बेदन दूजै बिआपी नामु रसाइणु वीसरिआ ॥ (६४०-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६४१

सो बूझै जिसु आपि बुझाए गुर कै सबदि सु मुकतु भइआ ॥ (६४१-१, रामकली, मः १)
नानक तारे तारणहारा हउमै दूजा परहरिआ ॥२५॥ (६४१-२, रामकली, मः १)
मनमुखि भूलै जम की काणि ॥ (६४१-२, रामकली, मः १)
पर घरु जोहै हाणे हाणि ॥ (६४१-२, रामकली, मः १)
मनमुखि भरमि भवै बेबाणि ॥ (६४१-३, रामकली, मः १)

वेमारगि मूसै मंतृ मसाणि ॥ (६४१-३, रामकली, मः १)
सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥ (६४१-३, रामकली, मः १)
नानक साचि रते सुखु जाणि ॥२६॥ (६४१-४, रामकली, मः १)
गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥ (६४१-४, रामकली, मः १)
गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥ (६४१-४, रामकली, मः १)
गुरमुखि निर्मल हरि गुण गावै ॥ (६४१-५, रामकली, मः १)
गुरमुखि पवित्रु पर्म पदु पावै ॥ (६४१-५, रामकली, मः १)
गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥ (६४१-५, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि साचि समावै ॥२७॥ (६४१-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि परचै बेद बीचारी ॥ (६४१-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि परचै तरीऐ तारी ॥ (६४१-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि परचै सु सबदि गिआनी ॥ (६४१-७, रामकली, मः १)
गुरमुखि परचै अंतर बिधि जानी ॥ (६४१-७, रामकली, मः १)
गुरमुखि पाईऐ अलख अपारु ॥ (६४१-७, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि मुकति दुआरु ॥२८॥ (६४१-८, रामकली, मः १)
गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥ (६४१-८, रामकली, मः १)
गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥ (६४१-८, रामकली, मः १)
गुरमुखि जपीऐ अंतरि पिआरि ॥ (६४१-९, रामकली, मः १)
गुरमुखि पाईऐ सबदि अचारि ॥ (६४१-९, रामकली, मः १)
सबदि भेदि जाणै जाणाई ॥ (६४१-९, रामकली, मः १)
नानक हउमै जालि समाई ॥२९॥ (६४१-१०, रामकली, मः १)
गुरमुखि धरती साचै साजी ॥ (६४१-१०, रामकली, मः १)
तिस महि ओपति खपति सु बाजी ॥ (६४१-१०, रामकली, मः १)
गुर कै सबदि रपै रंगु लाइ ॥ (६४१-११, रामकली, मः १)
साचि रतउ पति सिउ घरि जाइ ॥ (६४१-११, रामकली, मः १)
साच सबद बिनु पति नही पावै ॥ (६४१-११, रामकली, मः १)
नानक बिनु नावै किउ साचि समावै ॥३०॥ (६४१-१२, रामकली, मः १)
गुरमुखि असट सिधी सभि बुधी ॥ (६४१-१२, रामकली, मः १)
गुरमुखि भवजलु तरीऐ सच सुधी ॥ (६४१-१२, रामकली, मः १)
गुरमुखि सर अपसर बिधि जाणै ॥ (६४१-१३, रामकली, मः १)
गुरमुखि परविरति नरविरति पछाणै ॥ (६४१-१३, रामकली, मः १)
गुरमुखि तारे पारि उतारे ॥ (६४१-१४, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि सबदि निसतारे ॥३१॥ (६४१-१४, रामकली, मः १)
नामे राते हउमै जाइ ॥ (६४१-१४, रामकली, मः १)
नामि रते सचि रहे समाइ ॥ (६४१-१५, रामकली, मः १)

नामि रते जोग जुगति बीचारु ॥ (६४१-१५, रामकली, मः १)
नामि रते पावहि मोख दुआरु ॥ (६४१-१५, रामकली, मः १)
नामि रते तृभवण सोझी होइ ॥ (६४१-१५, रामकली, मः १)
नानक नामि रते सदा सुखु होइ ॥३२॥ (६४१-१६, रामकली, मः १)
नामि रते सिध गोसटि होइ ॥ (६४१-१६, रामकली, मः १)
नामि रते सदा तपु होइ ॥ (६४१-१७, रामकली, मः १)
नामि रते सचु करणी सारु ॥ (६४१-१७, रामकली, मः १)
नामि रते गुण गिआन बीचारु ॥ (६४१-१७, रामकली, मः १)
बिनु नावै बोलै सभु वेकारु ॥ (६४१-१७, रामकली, मः १)
नानक नामि रते तिन कउ जैकारु ॥३३॥ (६४१-१८, रामकली, मः १)
पूरे गुर ते नामु पाइआ जाइ ॥ (६४१-१८, रामकली, मः १)
जोग जुगति सचि रहै समाइ ॥ (६४१-१९, रामकली, मः १)
बारह महि जोगी भरमाए संनिआसी छिअ चारि ॥ (६४१-१९, रामकली, मः १)
गुर कै सबदि जो मरि जीवै सो पाए मोख दुआरु ॥ (६४१-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६४२

बिनु सबदै सभि दूजै लागे देखहु रिदै बीचारि ॥ (६४२-१, रामकली, मः १)
नानक वडे से वडभागी जिनी सचु रखिआ उर धारि ॥३४॥ (६४२-१, रामकली, मः १)
गुरमुखि रतनु लहै लिव लाइ ॥ (६४२-२, रामकली, मः १)
गुरमुखि परखै रतनु सुभाइ ॥ (६४२-२, रामकली, मः १)
गुरमुखि साची कार कमाइ ॥ (६४२-३, रामकली, मः १)
गुरमुखि साचे मनु पतीआइ ॥ (६४२-३, रामकली, मः १)
गुरमुखि अलखु लखाए तिसु भावै ॥ (६४२-३, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि चोट न खावै ॥३५॥ (६४२-४, रामकली, मः १)
गुरमुखि नामु दानु इसनानु ॥ (६४२-४, रामकली, मः १)
गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ (६४२-४, रामकली, मः १)
गुरमुखि पावै दरगह मानु ॥ (६४२-५, रामकली, मः १)
गुरमुखि भउ भंजनु प्रधानु ॥ (६४२-५, रामकली, मः १)
गुरमुखि करणी कार कराए ॥ (६४२-५, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि मेलि मिलाए ॥३६॥ (६४२-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि सासत्र सिमृति बेद ॥ (६४२-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि पावै घटि घटि भेद ॥ (६४२-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि वैर विरोध गवावै ॥ (६४२-७, रामकली, मः १)
गुरमुखि सगली गणत मिटावै ॥ (६४२-७, रामकली, मः १)
गुरमुखि राम नाम रंगि राता ॥ (६४२-७, रामकली, मः १)

नानक गुरमुखि खसमु पछाता ॥३७॥ (६४२-८, रामकली, मः १)
बिनु गुर भरमै आवै जाइ ॥ (६४२-८, रामकली, मः १)
बिनु गुर घाल न पवई थाइ ॥ (६४२-८, रामकली, मः १)
बिनु गुर मनूआ अति डोलाइ ॥ (६४२-६, रामकली, मः १)
बिनु गुर तृपति नही बिखु खाइ ॥ (६४२-६, रामकली, मः १)
बिनु गुर बिसीअरु डसै मरि वाट ॥ (६४२-६, रामकली, मः १)
नानक गुर बिनु घाटे घाट ॥३८॥ (६४२-१०, रामकली, मः १)
जिसु गुरु मिलै तिसु पारि उतारै ॥ (६४२-१०, रामकली, मः १)
अवगण मेटै गुणि निसतारै ॥ (६४२-१०, रामकली, मः १)
मुकति महा सुख गुर सबदु बीचारि ॥ (६४२-११, रामकली, मः १)
गुरमुखि कदे न आवै हारि ॥ (६४२-११, रामकली, मः १)
तनु हटड़ी इहु मनु वणजारा ॥ (६४२-११, रामकली, मः १)
नानक सहजे सचु वापारा ॥३६॥ (६४२-१२, रामकली, मः १)
गुरमुखि बाँधिओ सेतु बिधातै ॥ (६४२-१२, रामकली, मः १)
लंका लूटी दैत संतापै ॥ (६४२-१२, रामकली, मः १)
रामचंदि मारिओ अहि रावणु ॥ (६४२-१३, रामकली, मः १)
भेदु बभीखण गुरमुखि परचाइणु ॥ (६४२-१३, रामकली, मः १)
गुरमुखि साइरि पाहण तारे ॥ (६४२-१३, रामकली, मः १)
गुरमुखि कोटि तेतीस उधारे ॥४०॥ (६४२-१४, रामकली, मः १)
गुरमुखि चूकै आवण जाणु ॥ (६४२-१४, रामकली, मः १)
गुरमुखि दरगह पावै माणु ॥ (६४२-१४, रामकली, मः १)
गुरमुखि खोटे खरे पछाणु ॥ (६४२-१४, रामकली, मः १)
गुरमुखि लागै सहजि धिआनु ॥ (६४२-१५, रामकली, मः १)
गुरमुखि दरगह सिफति समाइ ॥ (६४२-१५, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि बंधु न पाइ ॥४१॥ (६४२-१५, रामकली, मः १)
गुरमुखि नामु निरंजन पाए ॥ (६४२-१६, रामकली, मः १)
गुरमुखि हउमै सबदि जलाए ॥ (६४२-१६, रामकली, मः १)
गुरमुखि साचे के गुण गाए ॥ (६४२-१६, रामकली, मः १)
गुरमुखि साचै रहै समाए ॥ (६४२-१७, रामकली, मः १)
गुरमुखि साचि नामि पति ऊतम होइ ॥ (६४२-१७, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि सगल भवण की सोझी होइ ॥४२॥ (६४२-१७, रामकली, मः १)
कवण मूलु कवण मति वेला ॥ (६४२-१८, रामकली, मः १)
तेरा कवणु गुरू जिस का तू चेला ॥ (६४२-१८, रामकली, मः १)
कवण कथा ले रहहु निराले ॥ (६४२-१६, रामकली, मः १)
बोलै नानकु सुणहु तुम बाले ॥ (६४२-१६, रामकली, मः १)

एसु कथा का देइ बीचारु ॥ (६४२-१६, रामकली, मः १)
भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥४३॥ (६४२-१६, रामकली, मः १)

पन्ना ६४३

पवन अरम्भु सतिगुर मति वेला ॥ (६४३-१, रामकली, मः १)
सबदु गुरू सुरति धुनि चेला ॥ (६४३-१, रामकली, मः १)
अकथ कथा ले रहउ निराला ॥ (६४३-१, रामकली, मः १)
नानक जुगि जुगि गुर गोपाला ॥ (६४३-२, रामकली, मः १)
एकु सबदु जितु कथा वीचारी ॥ (६४३-२, रामकली, मः १)
गुरमुखि हउमै अगनि निवारी ॥४४॥ (६४३-२, रामकली, मः १)
मैण के दंत किउ खाईऐ सारु ॥ (६४३-३, रामकली, मः १)
जितु गरबु जाइ सु कवणु आहारु ॥ (६४३-३, रामकली, मः १)
हिवै का घरु मंदरु अगनि पिराहनु ॥ (६४३-४, रामकली, मः १)
कवन गुफा जितु रहै अवाहनु ॥ (६४३-४, रामकली, मः १)
इत उत किस कउ जाणि समावै ॥ (६४३-४, रामकली, मः १)
कवन धिआनु मनु मनहि समावै ॥४५॥ (६४३-५, रामकली, मः १)
हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥ (६४३-५, रामकली, मः १)
दूजा मेटै एको होवै ॥ (६४३-५, रामकली, मः १)
जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥ (६४३-६, रामकली, मः १)
सबदु कमाईऐ खाईऐ सारु ॥ (६४३-६, रामकली, मः १)
अंतरि बाहरि एको जाणै ॥ (६४३-६, रामकली, मः १)
नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥४६॥ (६४३-६, रामकली, मः १)
सच भै राता गरबु निवारै ॥ (६४३-७, रामकली, मः १)
एको जाता सबदु वीचारै ॥ (६४३-७, रामकली, मः १)
सबदु वसै सचु अंतरि हीआ ॥ (६४३-७, रामकली, मः १)
तनु मनु सीतलु रंगि रंगीआ ॥ (६४३-८, रामकली, मः १)
कामु क्रोधु बिखु अगनि निवारे ॥ (६४३-८, रामकली, मः १)
नानक नदरी नदरि पिआरे ॥४७॥ (६४३-८, रामकली, मः १)
कवन मुखि चंदु हिवै घरु छाइआ ॥ (६४३-९, रामकली, मः १)
कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ॥ (६४३-९, रामकली, मः १)
कवन मुखि कालु जोहत नित रहै ॥ (६४३-९, रामकली, मः १)
कवन बुधि गुरमुखि पति रहै ॥ (६४३-१०, रामकली, मः १)
कवनु जोधु जो कालु संघारै ॥ (६४३-१०, रामकली, मः १)
बोलै बाणी नानकु बीचारै ॥४८॥ (६४३-१०, रामकली, मः १)
सबदु भाखत ससि जोति अपारा ॥ (६४३-११, रामकली, मः १)

ससि घरि सूरु वसै मिटै अंधिआरा ॥ (६४३-११, रामकली, मः १)
सुखु दुखु सम करि नामु अधारा ॥ (६४३-११, रामकली, मः १)
आपे पारि उतारणहारा ॥ (६४३-१२, रामकली, मः १)
गुर परचै मनु साचि समाइ ॥ (६४३-१२, रामकली, मः १)
प्रणवति नानकु कालु न खाइ ॥४६॥ (६४३-१२, रामकली, मः १)
नाम ततु सभ ही सिरि जापै ॥ (६४३-१३, रामकली, मः १)
बिनु नावै दुखु कालु संतापै ॥ (६४३-१३, रामकली, मः १)
ततो ततु मिलै मनु मानै ॥ (६४३-१३, रामकली, मः १)
दूजा जाइ इकतु घरि आनै ॥ (६४३-१४, रामकली, मः १)
बोलै पवना गगनु गरजै ॥ (६४३-१४, रामकली, मः १)
नानक निहचलु मिलणु सहजै ॥५०॥ (६४३-१४, रामकली, मः १)
अंतरि सुन्नं बाहरि सुन्नं तृभवण सुन्न मसुन्नं ॥ (६४३-१५, रामकली, मः १)
चउथे सुन्नै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुन्नं ॥ (६४३-१५, रामकली, मः १)
घटि घटि सुन्न का जाणै भेउ ॥ (६४३-१६, रामकली, मः १)
आदि पुरखु निरंजन देउ ॥ (६४३-१६, रामकली, मः १)
जो जनु नाम निरंजन राता ॥ (६४३-१६, रामकली, मः १)
नानक सोई पुरखु बिधाता ॥५१॥ (६४३-१६, रामकली, मः १)
सुन्नो सुन्नु कहै सभु कोई ॥ (६४३-१७, रामकली, मः १)
अनहत सुन्नु कहा ते होई ॥ (६४३-१७, रामकली, मः १)
अनहत सुंनि रते से कैसे ॥ (६४३-१७, रामकली, मः १)
जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥ (६४३-१८, रामकली, मः १)
ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥ (६४३-१८, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥५२॥ (६४३-१८, रामकली, मः १)
नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥ (६४३-१९, रामकली, मः १)
तह अनहत सुन्न वजावहि तूरे ॥ (६४३-१९, रामकली, मः १)
साचै राचे देखि हजूरे ॥ (६४३-१९, रामकली, मः १)
घटि घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥ (६४३-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६४४

गुपती बाणी परगटु होइ ॥ (६४४-१, रामकली, मः १)
नानक परखि लए सचु सोइ ॥५३॥ (६४४-१, रामकली, मः १)
सहज भाइ मिलीऐ सुखु होवै ॥ (६४४-१, रामकली, मः १)
गुरमुखि जागै नीद न सोवै ॥ (६४४-२, रामकली, मः १)
सुन्न सबदु अपरम्परि धारै ॥ (६४४-२, रामकली, मः १)
कहते मुकतु सबदि निसतारै ॥ (६४४-२, रामकली, मः १)

गुर की दीखिआ से सचि राते ॥ (६४४-३, रामकली, मः १)
नानक आपु गवाइ मिलण नही भ्राते ॥५४॥ (६४४-३, रामकली, मः १)
कुबुधि चवावै सो कितु ठाइ ॥ (६४४-३, रामकली, मः १)
किउ ततु न बूझै चोटा खाइ ॥ (६४४-४, रामकली, मः १)
जम दरि बाधे कोइ न राखै ॥ (६४४-४, रामकली, मः १)
बिनु सबदै नाही पति साखै ॥ (६४४-४, रामकली, मः १)
किउ करि बूझै पावै पारु ॥ (६४४-५, रामकली, मः १)
नानक मनमुखि न बुझै गवारु ॥५५॥ (६४४-५, रामकली, मः १)
कुबुधि मिटै गुर सबदु बीचारि ॥ (६४४-५, रामकली, मः १)
सतिगुरु भेटै मोख दुआर ॥ (६४४-६, रामकली, मः १)
ततु न चीनै मनमुखु जलि जाइ ॥ (६४४-६, रामकली, मः १)
दुरमति विछुड़ि चोटा खाइ ॥ (६४४-६, रामकली, मः १)
मानै हुकमु सभे गुण गिआन ॥ (६४४-७, रामकली, मः १)
नानक दरगह पावै मानु ॥५६॥ (६४४-७, रामकली, मः १)
साचु वखरु धनु पलै होइ ॥ (६४४-७, रामकली, मः १)
आपि तरै तारे भी सोइ ॥ (६४४-७, रामकली, मः १)
सहजि रता बूझै पति होइ ॥ (६४४-८, रामकली, मः १)
ता की कीमति करै न कोइ ॥ (६४४-८, रामकली, मः १)
जह देखा तह रहिआ समाइ ॥ (६४४-८, रामकली, मः १)
नानक पारि परै सच भाइ ॥५७॥ (६४४-९, रामकली, मः १)
सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥ (६४४-९, रामकली, मः १)
त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिसु कहु कवनु अधारो ॥ (६४४-१०, रामकली, मः १)
बोलै खेलै असथिरु होवै किउ करि अलखु लखाए ॥ (६४४-१०, रामकली, मः १)
सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपणे मन समझाए ॥ (६४४-११, रामकली, मः १)
गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै करि नदरी मेलि मिलाए ॥ (६४४-११, रामकली, मः १)
आपे दाना आपे बीना पूरै भागि समाए ॥५८॥ (६४४-१२, रामकली, मः १)
सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥ (६४४-१२, रामकली, मः १)
पवन का वासा सुन्न निवासा अकल कला धर सोई ॥ (६४४-१३, रामकली, मः १)
नदरि करे सबदु घट महि वसै विचहु भरमु गवाए ॥ (६४४-१३, रामकली, मः १)
तनु मनु निरमलु निर्मल बाणी नामो मंनि वसाए ॥ (६४४-१४, रामकली, मः १)
सबदि गुरू भवसागरु तरीऐ इत उत एको जाणै ॥ (६४४-१४, रामकली, मः १)
चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै ॥५९॥ (६४४-१५, रामकली, मः १)
त्रै सत अंगुल वाई अउधू सुन्न सचु आहारो ॥ (६४४-१६, रामकली, मः १)
गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै चीनै अलख अपारो ॥ (६४४-१६, रामकली, मः १)
त्रै गुण मेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो ॥ (६४४-१७, रामकली, मः १)

अंतरि बाहरि एको जाणै ता हरि नामि लगै पिआरो ॥ (६४४-१७, रामकली, मः १)
सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलखु लखाए ॥ (६४४-१८, रामकली, मः १)
नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतिगुर सबदि समाए ॥६०॥ (६४४-१८, रामकली, मः १)
मन का जीउ पवनु कथीअले पवनु कहा रसु खाई ॥ (६४४-१९, रामकली, मः १)
गिआन की मुद्रा कवन अउधू सिध की कवन कमाई ॥ (६४४-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६४५

बिनु सबदै रसु न आवै अउधू हउमै पिआस न जाई ॥ (६४५-१, रामकली, मः १)
सबदि रते अमृत रसु पाइआ साचे रहे अघाई ॥ (६४५-१, रामकली, मः १)
कवन बुधि जितु असथिरु रहीऐ कितु भोजनि तृपतासै ॥ (६४५-२, रामकली, मः १)
नानक दुखु सुखु सम करि जापै सतिगुर ते कालु न ग्रासै ॥६१॥ (६४५-२, रामकली, मः १)
रंगि न राता रसि नही माता ॥ (६४५-३, रामकली, मः १)
बिनु गुर सबदै जलि बलि ताता ॥ (६४५-३, रामकली, मः १)
बिंदु न राखिआ सबदु न भाखिआ ॥ (६४५-४, रामकली, मः १)
पवनु न साधिआ सचु न अराधिआ ॥ (६४५-४, रामकली, मः १)
अकथ कथा ले सम करि रहै ॥ (६४५-४, रामकली, मः १)
तउ नानक आतम राम कउ लहै ॥६२॥ (६४५-५, रामकली, मः १)
गुर परसादी रंगे राता ॥ (६४५-५, रामकली, मः १)
अमृतु पीआ साचे माता ॥ (६४५-५, रामकली, मः १)
गुर वीचारी अगनि निवारी ॥ (६४५-६, रामकली, मः १)
अपिउ पीओ आतम सुखु धारी ॥ (६४५-६, रामकली, मः १)
सचु अराधिआ गुरमुखि तरु तारी ॥ (६४५-६, रामकली, मः १)
नानक बूझै को वीचारी ॥६३॥ (६४५-७, रामकली, मः १)
इहु मनु मैगलु कहा बसीअले कहा बसै इहु पवना ॥ (६४५-७, रामकली, मः १)
कहा बसै सु सबदु अउधू ता कउ चूकै मन का भवना ॥ (६४५-८, रामकली, मः १)
नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि वासा इहु मनु पाए ॥ (६४५-८, रामकली, मः १)
आपै आपु खाइ ता निरमलु होवै धावतु वरजि रहाए ॥ (६४५-९, रामकली, मः १)
किउ मूलु पछाणै आतमु जाणै किउ ससि घरि सूरु समावै ॥ (६४५-९, रामकली, मः १)
गुरमुखि हउमै विचहु खोवै तउ नानक सहजि समावै ॥६४॥ (६४५-१०, रामकली, मः १)
इहु मनु निहचलु हिरदै वसीअले गुरमुखि मूलु पछाणि रहै ॥ (६४५-११, रामकली, मः १)
नाभि पवनु घरि आसणि बैसै गुरमुखि खोजत ततु लहै ॥ (६४५-११, रामकली, मः १)
सु सबदु निरंतरि निज घरि आछै तृभवण जोति सु सबदि लहै ॥ (६४५-१२, रामकली, मः १)
खावै दूख भूख साचे की साचे ही तृपतासि रहै ॥ (६४५-१२, रामकली, मः १)
अनहद बाणी गुरमुखि जाणी बिरलो को अरथावै ॥ (६४५-१३, रामकली, मः १)
नानकु आखै सचु सुभाखै सचि रपै रंगु कबहू न जावै ॥६५॥ (६४५-१३, रामकली, मः १)

जा इहु हिरदा देह न होती तउ मनु कैठै रहता ॥ (६४५-१४, रामकली, मः १)
नाभि कमल असथम्भु न होतो ता पवनु कवन घरि सहता ॥ (६४५-१५, रामकली, मः १)
रूपु न होतो रेख न काई ता सबदि कहा लिव लाई ॥ (६४५-१५, रामकली, मः १)
रक्तु बिंदु की मड़ी न होती मिति कीमति नही पाई ॥ (६४५-१६, रामकली, मः १)
वरनु भेखु असरूपु न जापी किउ करि जापसि साचा ॥ (६४५-१६, रामकली, मः १)
नानक नामि रते बैरागी इब तब साचो साचा ॥६६॥ (६४५-१७, रामकली, मः १)
हिरदा देह न होती अउधू तउ मनु सुंनि रहै बैरागी ॥ (६४५-१७, रामकली, मः १)
नाभि कमलु असथम्भु न होतो ता निज घरि बसतउ पवनु अनरागी ॥ (६४५-१८, रामकली, मः १)
रूपु न रेखिआ जाति न होती तउ अकुलीणि रहतउ सबदु सु सारु ॥ (६४५-१९, रामकली, मः १)
गउनु गगनु जब तबहि न होतउ तृभवण जोति आपे निरंकारु ॥ (६४५-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६४६

वरनु भेखु असरूपु सु एको एको सबदु विडाणी ॥ (६४६-१, रामकली, मः १)
साच बिना सूचा को नाही नानक अकथ कहाणी ॥६७॥ (६४६-१, रामकली, मः १)
कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ॥ (६४६-२, रामकली, मः १)
हउमै विचि जगु उपजै पुरखा नामि विसरिऐ दुखु पाई ॥ (६४६-३, रामकली, मः १)
गुरमुखि होवै सु गिआनु ततु बीचारै हउमै सबदि जलाए ॥ (६४६-३, रामकली, मः १)
तनु मनु निरमलु निर्मल बाणी साचै रहै समाए ॥ (६४६-४, रामकली, मः १)
नामे नामि रहै बैरागी साचु रखिआ उरि धारे ॥ (६४६-४, रामकली, मः १)
नानक बिनु नावै जोगु कदे न होवै देखहु रिदै बीचारे ॥६८॥ (६४६-५, रामकली, मः १)
गुरमुखि साचु सबदु बीचारै कोइ ॥ (६४६-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि सचु बाणी परगटु होइ ॥ (६४६-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि मनु भीजै विरला बूझै कोइ ॥ (६४६-६, रामकली, मः १)
गुरमुखि निज घरि वासा होइ ॥ (६४६-७, रामकली, मः १)
गुरमुखि जोगी जुगति पछाणै ॥ (६४६-७, रामकली, मः १)
गुरमुखि नानक एको जाणै ॥६९॥ (६४६-७, रामकली, मः १)
बिनु सतिगुर सेवे जोगु न होई ॥ (६४६-८, रामकली, मः १)
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न कोई ॥ (६४६-८, रामकली, मः १)
बिनु सतिगुर भेटे नामु पाइआ न जाइ ॥ (६४६-८, रामकली, मः १)
बिनु सतिगुर भेटे महा दुखु पाइ ॥ (६४६-९, रामकली, मः १)
बिनु सतिगुर भेटे महा गरबि गुबारि ॥ (६४६-९, रामकली, मः १)
नानक बिनु गुर मुआ जनमु हारि ॥७०॥ (६४६-१०, रामकली, मः १)
गुरमुखि मनु जीता हउमै मारि ॥ (६४६-१०, रामकली, मः १)
गुरमुखि साचु रखिआ उर धारि ॥ (६४६-१०, रामकली, मः १)
गुरमुखि जगु जीता जमकालु मारि बिदारि ॥ (६४६-११, रामकली, मः १)

गुरमुखि दरगह न आवै हारि ॥ (६४६-११, रामकली, मः १)
गुरमुखि मेलि मिलाए सुो जाणै ॥ (६४६-११, रामकली, मः १)
नानक गुरमुखि सबदि पछाणै ॥७१॥ (६४६-१२, रामकली, मः १)
सबदै का निबेड़ा सुणि तू अउधू बिनु नावै जोगु न होई ॥ (६४६-१२, रामकली, मः १)
नामे राते अनदिनु माते नामै ते सुखु होई ॥ (६४६-१३, रामकली, मः १)
नामै ही ते सभु परगटु होवै नामे सोझी पाई ॥ (६४६-१३, रामकली, मः १)
बिनु नावै भेख करहि बहुतेरे सचै आपि खुआई ॥ (६४६-१४, रामकली, मः १)
सतिगुर ते नामु पाईऐ अउधू जोग जुगति ता होई ॥ (६४६-१४, रामकली, मः १)
करि बीचारु मनि देखहु नानक बिनु नावै मुकति न होई ॥७२॥ (६४६-१५, रामकली, मः १)
तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥ (६४६-१६, रामकली, मः १)
तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै ॥ (६४६-१६, रामकली, मः १)
साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥ (६४६-१७, रामकली, मः १)
मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥ (६४६-१७, रामकली, मः १)
अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥ (६४६-१८, रामकली, मः १)
नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥७३॥१॥ (६४६-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६४७

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६४७-१)
रामकली की वार महला ३ ॥ (६४७-२)
जोधै वीरै पूरबाणी की धुनी ॥ (६४७-२)
सलोकु मः ३ ॥ (६४७-२)
सतिगुरु सहजै दा खेतु है जिस नो लाए भाउ ॥ (६४७-२, रामकली, मः ३)
नाउ बीजे नाउ उगवै नामे रहै समाइ ॥ (६४७-३, रामकली, मः ३)
हउमै एहो बीजु है सहसा गइआ विलाइ ॥ (६४७-३, रामकली, मः ३)
ना किछु बीजे न उगवै जो बखसे सो खाइ ॥ (६४७-४, रामकली, मः ३)
अम्भै सेती अम्भु रलिआ बहुड़ि न निकसिआ जाइ ॥ (६४७-४, रामकली, मः ३)
नानक गुरमुखि चलतु है वेखहु लोका आइ ॥ (६४७-५, रामकली, मः ३)
लोकु कि वेखै बपुड़ा जिस नो सोझी नाहि ॥ (६४७-५, रामकली, मः ३)
जिसु वेखाले सो वेखै जिसु वसिआ मन माहि ॥१॥ (६४७-५, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६४७-६)
मनमुखु दुख का खेतु है दुखु बीजे दुखु खाइ ॥ (६४७-६, रामकली, मः ३)
दुख विचि जम्मै दुखि मरै हउमै करत विहाइ ॥ (६४७-६, रामकली, मः ३)
आवणु जाणु न सुझई अंधा अंधु कमाइ ॥ (६४७-७, रामकली, मः ३)
जो देवै तिसै न जाणई दिते कउ लपटाइ ॥ (६४७-७, रामकली, मः ३)
नानक पूरबि लिखिआ कमावणा अवरु न करणा जाइ ॥२॥ (६४७-८, रामकली, मः ३)

मः ३ ॥ (६४७-८)
सतिगुरि मिलिऐ सदा सुखु जिस नो आपे मेले सोइ ॥ (६४७-८, रामकली, मः ३)
सुखै एहु बिबेकु है अंतरु निरमलु होइ ॥ (६४७-९, रामकली, मः ३)
अगिआन का भ्रमु कटीऐ गिआनु परापति होइ ॥ (६४७-९, रामकली, मः ३)
नानक एको नदरी आइआ जह देखा तह सोइ ॥३॥ (६४७-१०, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४७-१०)
सचै तखतु रचाइआ बैसण कउ जाँई ॥ (६४७-१०, रामकली, मः ३)
सभु किछु आपे आपि है गुर सबदि सुणाई ॥ (६४७-११, रामकली, मः ३)
आपे कुदरति साजीअनु करि महल सराई ॥ (६४७-११, रामकली, मः ३)
चंदु सूरजु दुइ चानणे पूरी बणत बणाई ॥ (६४७-१२, रामकली, मः ३)
आपे वेखै सुणे आपि गुर सबदि धिआई ॥१॥ (६४७-१२, रामकली, मः ३)
वाहु वाहु सचे पातिसाह तू सची नाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६४७-१३, रामकली, मः ३)
सलोकु ॥ (६४७-१३)
कबीर महिदी करि कै घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ (६४७-१३, रामकली, कबीर)
तै सह बात न पुछीआ कबहू न लाई पाइ ॥१॥ (६४७-१४, रामकली, कबीर)
मः ३ ॥ (६४७-१४)
नानक महिदी करि कै रखिआ सो सहु नदरि करेइ ॥ (६४७-१४, रामकली, मः ३)
आपे पीसै आपे घसै आपे ही लाइ लएइ ॥ (६४७-१५, रामकली, मः ३)
इहु पिर्म पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥२॥ (६४७-१५, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४७-१६)
वेकी सृसटि उपाईअनु सभ हुकमि आवै जाइ समाही ॥ (६४७-१६, रामकली, मः ३)
आपे वेखि विगसदा दूजा को नाही ॥ (६४७-१७, रामकली, मः ३)
जिउ भावै तिउ रखु तू गुर सबदि बुझाही ॥ (६४७-१७, रामकली, मः ३)
सभना तेरा जोरु है जिउ भावै तिवै चलाही ॥ (६४७-१७, रामकली, मः ३)
तुधु जेवड मै नाहि को किसु आखि सुणाई ॥२॥ (६४७-१८, रामकली, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४७-१८)
भरमि भुलाई सभु जगु फिरी फावी होई भालि ॥ (६४७-१८, रामकली, मः ३)

पन्ना ६४८

सो सहु साँति न देवई किआ चलै तिसु नालि ॥ (६४८-१, रामकली, मः ३)
गुर परसादी हरि धिआईऐ अंतरि रखीऐ उर धारि ॥ (६४८-१, रामकली, मः ३)
नानक घरि बैठिआ सहु पाइआ जा किरपा कीती करतारि ॥१॥ (६४८-२, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६४८-३)
धंधा धावत दिनु गइआ रैणि गवाई सोइ ॥ (६४८-३, रामकली, मः ३)
कूड़ु बोलि बिखु खाइआ मनमुखि चलिआ रोइ ॥ (६४८-३, रामकली, मः ३)

सिरै उपरि जम डंडु है दूजै भाइ पति खोइ ॥ (६४८-४, रामकली, मः ३)
हरि नामु कदे न चेतिओ फिरि आवण जाणा होइ ॥ (६४८-४, रामकली, मः ३)
गुर परसादी हरि मनि वसै जम डंडु न लागै कोइ ॥ (६४८-५, रामकली, मः ३)
नानक सहजे मिलि रहै करमि परापति होइ ॥२॥ (६४८-५, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४८-६)
इकि आपणी सिफती लाइअनु दे सतिगुर मती ॥ (६४८-६, रामकली, मः ३)
इकना नो नाउ बखसिओनु असथिरु हरि सती ॥ (६४८-६, रामकली, मः ३)
पउणु पाणी बैसंतरो हुकमि करहि भगती ॥ (६४८-७, रामकली, मः ३)
एना नो भउ अगला पूरी बणत बणती ॥ (६४८-७, रामकली, मः ३)
सभु इको हुकमु वरतदा मंनिऐ सुखु पाई ॥३॥ (६४८-७, रामकली, मः ३)
सलोकु ॥ (६४८-८)
कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ (६४८-८, रामकली, कबीर)
राम कसउटी सो सहै जो मरजीवा होइ ॥१॥ (६४८-८, रामकली, कबीर)
मः ३ ॥ (६४८-९)
किउ करि इहु मनु मारीऐ किउ करि मिरतकु होइ ॥ (६४८-९, रामकली, मः ३)
कहिआ सबदु न मानई हउमै छडै न कोइ ॥ (६४८-१०, रामकली, मः ३)
गुर परसादी हउमै छुटै जीवन मुकतु सो होइ ॥ (६४८-१०, रामकली, मः ३)
नानक जिस नो बखसे तिसु मिलै तिसु बिघनु न लागै कोइ ॥२॥ (६४८-१०, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६४८-११)
जीवत मरणा सभु को कहै जीवन मुकति किउ होइ ॥ (६४८-११, रामकली, मः ३)
भै का संजमु जे करे दारू भाउ लाएइ ॥ (६४८-१२, रामकली, मः ३)
अनदिनु गुण गावै सुख सहजे बिखु भवजलु नामि तरेइ ॥ (६४८-१२, रामकली, मः ३)
नानक गुरमुखि पाईऐ जा कउ नदरि करेइ ॥३॥ (६४८-१३, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४८-१३)
दूजा भाउ रचाइओनु त्रै गुण वरतारा ॥ (६४८-१३, रामकली, मः ३)
ब्रह्मा बिसनु महेसु उपाइअनु हुकमि कमावनि कारा ॥ (६४८-१४, रामकली, मः ३)
पंडित पड़दे जोतकी ना बूझहि बीचारा ॥ (६४८-१४, रामकली, मः ३)
सभु किछु तेरा खेलु है सचु सिरजणहारा ॥ (६४८-१५, रामकली, मः ३)
जिसु भावै तिसु बखसि लैहि सचि सबदि समाई ॥४॥ (६४८-१५, रामकली, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४८-१६)
मन का झूठा झूठु कमावै ॥ (६४८-१६, रामकली, मः ३)
माइआ नो फिरै तपा सदावै ॥ (६४८-१६, रामकली, मः ३)
भरमे भूला सभि तीर्थ गहै ॥ (६४८-१६, रामकली, मः ३)
ओहु तपा कैसे पर्म गति लहै ॥ (६४८-१७, रामकली, मः ३)
गुर परसादी को सचु कमावै ॥ (६४८-१७, रामकली, मः ३)

नानक सो तपा मोखंतरु पावै ॥१॥ (६४८-१७, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६४८-१८)
सो तपा जि इहु तपु घाले ॥ (६४८-१८, रामकली, मः ३)
सतिगुर नो मिलै सबदु समाले ॥ (६४८-१८, रामकली, मः ३)
सतिगुर की सेवा इहु तपु परवाणु ॥ (६४८-१८, रामकली, मः ३)
नानक सो तपा दरगहि पावै माणु ॥२॥ (६४८-१९, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४८-१९)
राति दिनसु उपाइअनु संसार की वरतणि ॥ (६४८-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ६४९

गुरमती घटि चानणा आनेरु बिनासणि ॥ (६४९-१, रामकली, मः ३)
हुकमे ही सभ साजीअनु रविआ सभ वणि तृणि ॥ (६४९-१, रामकली, मः ३)
सभु किछु आपे आपि है गुरमुखि सदा हरि भणि ॥ (६४९-२, रामकली, मः ३)
सबदे ही सोझी पई सचै आपि बुझाई ॥५॥ (६४९-२, रामकली, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (६४९-३)
अभिआगत एहि न आखीअनि जिन के चित महि भरमु ॥ (६४९-३, रामकली, मः ३)
तिस दै दितै नानका तेहो जेहा धरमु ॥ (६४९-३, रामकली, मः ३)
अभै निरंजनु पर्म पदु ता का भूखा होइ ॥ (६४९-४, रामकली, मः ३)
तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥१॥ (६४९-४, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६४९-५)
अभिआगत एहि न आखीअनि जि पर घरि भोजनु करेनि ॥ (६४९-५, रामकली, मः ३)
उदरै कारणि आपणे बहले भेखि करेनि ॥ (६४९-५, रामकली, मः ३)
अभिआगत सेई नानका जि आतम गउणु करेनि ॥ (६४९-६, रामकली, मः ३)
भालि लहनि सहु आपणा निज घरि रहणु करेनि ॥२॥ (६४९-६, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४९-७)
अम्बरु धरति विछोड़िअनु विचि सचा असराउ ॥ (६४९-७, रामकली, मः ३)
घरु दरु सभो सचु है जिसु विचि सचा नाउ ॥ (६४९-७, रामकली, मः ३)
सभु सचा हुकमु वरतदा गुरमुखि सचि समाउ ॥ (६४९-८, रामकली, मः ३)
सचा आपि तखतु सचा बहि सचा करे निआउ ॥ (६४९-८, रामकली, मः ३)
सभु सचो सचु वरतदा गुरमुखि अलखु लखाई ॥६॥ (६४९-९, रामकली, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (६४९-९)
रैणाइर माहि अनंतु है कूड़ी आवै जाइ ॥ (६४९-९, रामकली, मः ३)
भाणै चलै आपणै बहुती लहै सजाइ ॥ (६४९-१०, रामकली, मः ३)
रैणाइर महि सभु किछु है करमी पलै पाइ ॥ (६४९-१०, रामकली, मः ३)
नानक नउ निधि पाईऐ जे चलै तिसै रजाइ ॥१॥ (६४९-११, रामकली, मः ३)

मः ३ ॥ (६४६-११)
सहजे सतिगुरु न सेविओ विचि हउमै जनमि बिनासु ॥ (६४६-११, रामकली, मः ३)
रसना हरि रसु न चखिओ कमलु न होइओ परगासु ॥ (६४६-१२, रामकली, मः ३)
बिखु खाधी मनमुखु मुआ माइआ मोहि विणासु ॥ (६४६-१२, रामकली, मः ३)
इकसु हरि के नाम विणु ध्रिगु जीवणु ध्रिगु वासु ॥ (६४६-१३, रामकली, मः ३)
जा आपे नदरि करे प्रभु सचा ता होवै दासनि दासु ॥ (६४६-१३, रामकली, मः ३)
ता अनदिनु सेवा करे सतिगुरू की कबहि न छोडै पासु ॥ (६४६-१४, रामकली, मः ३)
जिउ जल महि कमलु अलिपतो वरतै तिउ विचे गिरह उदासु ॥ (६४६-१४, रामकली, मः ३)
जन नानक करे कराइआ सभु को जिउ भावै तिव हरि गुणतासु ॥२॥ (६४६-१५, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६४६-१६)
छतीह जुग गुबारु सा आपे गणत कीनी ॥ (६४६-१६, रामकली, मः ३)
आपे सृसटि सभ साजीअनु आपि मति दीनी ॥ (६४६-१६, रामकली, मः ३)
सिमृति सासत साजिअनु पाप पुन्न गणत गणीनी ॥ (६४६-१७, रामकली, मः ३)
जिसु बुझाए सो बुझसी सचै सबदि पतीनी ॥ (६४६-१७, रामकली, मः ३)
सभु आपे आपि वरतदा आपे बखसि मिलाई ॥७॥ (६४६-१८, रामकली, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (६४६-१८)
इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ (६४६-१८, रामकली, मः ३)
जो सहि रते आपणै तिन तनि लोभ रतु न होइ ॥ (६४६-१९, रामकली, मः ३)
भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभ रतु विचहु जाइ ॥ (६४६-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ६५०

जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ (६५०-१, रामकली, मः ३)
नानक ते जन सोहणे जो रते हरि रंगु लाइ ॥१॥ (६५०-२, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६५०-२)
रामकली रामु मनि वसिआ ता बनिआ सीगारु ॥ (६५०-२, रामकली, मः ३)
गुर कै सबदि कमलु बिगसिआ ता सउपिआ भगति भंडारु ॥ (६५०-३, रामकली, मः ३)
भरमु गइआ ता जागिआ चूका अगिआन अंधारु ॥ (६५०-३, रामकली, मः ३)
तिस नो रूपु अति अगला जिसु हरि नालि पिआरु ॥ (६५०-४, रामकली, मः ३)
सदा रवै पिरु आपणा सोभावंती नारि ॥ (६५०-४, रामकली, मः ३)
मनमुखि सीगारु न जाणनी जासनि जनमु सभु हारि ॥ (६५०-५, रामकली, मः ३)
बिनु हरि भगती सीगारु करहि नित जम्महि होइ खुआरु ॥ (६५०-५, रामकली, मः ३)
सैसारै विचि सोभ न पाइनी अगै जि करे सु जाणै करतारु ॥ (६५०-६, रामकली, मः ३)
नानक सचा एकु है दुहु विचि है संसारु ॥ (६५०-६, रामकली, मः ३)
चंगै मंदै आपि लाइअनु सो करनि जि आपि कराए करतारु ॥२॥ (६५०-७, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६५०-७)

बिनु सतिगुर सेवे साँति न आवई दूजी नाही जाइ ॥ (६५०-८, रामकली, मः ३)
जे बहुतेरा लोचीऐ विणु करमा पाइआ न जाइ ॥ (६५०-८, रामकली, मः ३)
अंतरि लोभु विकारु है दूजै भाइ खुआइ ॥ (६५०-९, रामकली, मः ३)
तिन जम्मणु मरणु न चुकई हउमै विचि दुखु पाइ ॥ (६५०-९, रामकली, मः ३)
जिनी सतिगुर सिउ चितु लाइआ सो खाली कोई नाहि ॥ (६५०-१०, रामकली, मः ३)
तिन जम की तलब न होवई ना ओइ दुख सहाहि ॥ (६५०-१०, रामकली, मः ३)
नानक गुरमुखि उबरे सचै सबदि समाहि ॥३॥ (६५०-११, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५०-११)
आपि अलिपतु सदा रहै होरि धंधै सभि धावहि ॥ (६५०-११, रामकली, मः ३)
आपि निहचलु अचलु है होरि आवहि जावहि ॥ (६५०-१२, रामकली, मः ३)
सदा सदा हरि धिआईऐ गुरमुखि सुखु पावहि ॥ (६५०-१२, रामकली, मः ३)
निज घरि वासा पाईऐ सचि सिफति समावहि ॥ (६५०-१३, रामकली, मः ३)
सचा गहिर गम्भीरु है गुर सबदि बुझाई ॥८॥ (६५०-१३, रामकली, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (६५०-१४)
सचा नामु धिआइ तू सभो वरतै सचु ॥ (६५०-१४, रामकली, मः ३)
नानक हुकमै जो बुझै सो फलु पाए सचु ॥ (६५०-१४, रामकली, मः ३)
कथनी बदनी करता फिरै हुकमु न बूझै सचु ॥ (६५०-१५, रामकली, मः ३)
नानक हरि का भाणा मन्ने सो भगतु होइ विणु मन्ने कचु निकचु ॥१॥ (६५०-१५, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (६५०-१६)
मनमुख बोलि न जाणनी ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (६५०-१६, रामकली, मः ३)
ओइ थाउ कुथाउ न जाणनी उन अंतरि लोभु विकारु ॥ (६५०-१६, रामकली, मः ३)
ओइ आपणै सुआइ आइ बहि गला करहि ओना मारे जमु जंदारु ॥ (६५०-१७, रामकली, मः ३)
अगै दरगह लेखै मंगिऐ मारि खुआरु कीचहि कूड़िआर ॥ (६५०-१८, रामकली, मः ३)
एह कूड़ै की मलु किउ उतरै कोई कढहु इहु वीचारु ॥ (६५०-१८, रामकली, मः ३)
सतिगुरु मिलै ता नामु दिड़ाए सभि किलविख कटणहारु ॥ (६५०-१९, रामकली, मः ३)
नामु जपे नामो आराधे तिसु जन कउ करहु सभि नमसकारु ॥ (६५०-१९, रामकली, मः ३)

पन्ना ६५१

मलु कूड़ी नामि उतारीअनु जपि नामु होआ सचिआरु ॥ (६५१-१, रामकली, मः ३)
जन नानक जिस दे एहि चलत हहि सो जीवउ देवणहारु ॥२॥ (६५१-१, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (६५१-२)
तुधु जेवडु दाता नाहि किसु आखि सुणाईऐ ॥ (६५१-२, रामकली, मः ३)
गुर परसादी पाइ जिथहु हउमै जाईऐ ॥ (६५१-३, रामकली, मः ३)
रस कस सादा बाहरा सची वडिआईऐ ॥ (६५१-३, रामकली, मः ३)
जिस नो बखसे तिसु देइ आपि लए मिलाईऐ ॥ (६५१-४, रामकली, मः ३)

घट अंतरि अमृतु रखिओनु गुरमुखि किसै पिआई ॥९॥ (९५१-४, रामकली, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (९५१-५)
बाबाणीआ कहाणीआ पुत सपुत करेनि ॥ (९५१-५, रामकली, मः ३)
जि सतिगुर भावै सु मंनि लैनि सेई करम करेनि ॥ (९५१-५, रामकली, मः ३)
जाइ पुछहु सिमृति सासत बिआस सुक नारद बचन सभ सृसटि करेनि ॥ (९५१-६, रामकली, मः ३)
सचै लाए सचि लगे सदा सचु समालेनि ॥ (९५१-६, रामकली, मः ३)
नानक आए से परवाणु भए जि सगले कुल तारेनि ॥१॥ (९५१-७, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (९५१-७)
गुरू जिना का अंधुला सिख भी अंधे करम करेनि ॥ (९५१-७, रामकली, मः ३)
ओइ भाणै चलनि आपणै नित झूठो झूठु बोलेनि ॥ (९५१-८, रामकली, मः ३)
कूड़ु कुसतु कमावदे पर निंदा सदा करेनि ॥ (९५१-८, रामकली, मः ३)
ओइ आपि डुबे पर निंदका सगले कुल डोबेनि ॥ (९५१-९, रामकली, मः ३)
नानक जितु ओइ लाए तितु लगे उइ बपुड़े किआ करेनि ॥२॥ (९५१-९, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (९५१-१०)
सभ नदरी अंदरि रखदा जेती सिसटि सभ कीती ॥ (९५१-१०, रामकली, मः ३)
इकि कूड़ि कुसति लाइअनु मनमुख विगूती ॥ (९५१-११, रामकली, मः ३)
गुरमुखि सदा धिआईऐ अंदरि हरि प्रीती ॥ (९५१-११, रामकली, मः ३)
जिन कउ पोतै पुंनु है तिन्ह वाति सिपीती ॥ (९५१-१२, रामकली, मः ३)
नानक नामु धिआईऐ सचु सिफति सनाई ॥१०॥ (९५१-१२, रामकली, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (९५१-१३)
सती पापु करि सतु कमाहि ॥ (९५१-१३, रामकली, मः १)
गुर दीखिआ घरि देवण जाहि ॥ (९५१-१३, रामकली, मः १)
इसतरी पुरखै खटिऐ भाउ ॥ (९५१-१३, रामकली, मः १)
भावै आवउ भावै जाउ ॥ (९५१-१४, रामकली, मः १)
सासतु बेदु न मानै कोइ ॥ (९५१-१४, रामकली, मः १)
आपो आपै पूजा होइ ॥ (९५१-१४, रामकली, मः १)
काजी होइ कै बहै निआइ ॥ (९५१-१४, रामकली, मः १)
फेरे तसबी करे खुदाइ ॥ (९५१-१५, रामकली, मः १)
वढी लै कै हकु गवाए ॥ (९५१-१५, रामकली, मः १)
जे को पुछै ता पड़ि सुणाए ॥ (९५१-१५, रामकली, मः १)
तुरक मंत्रु कनि रिदै समाहि ॥ (९५१-१५, रामकली, मः १)
लोक मुहावहि चाड़ी खाहि ॥ (९५१-१६, रामकली, मः १)
चउका दे कै सुचा होइ ॥ (९५१-१६, रामकली, मः १)
ऐसा हिंदू वेखहु कोइ ॥ (९५१-१६, रामकली, मः १)
जोगी गिरही जटा बिभूत ॥ (९५१-१६, रामकली, मः १)

आगै पाछै रोवहि पूत ॥ (६५१-१७, रामकली, मः १)
जोगु न पाइआ जुगति गवाई ॥ (६५१-१७, रामकली, मः १)
कितु कारणि सिरि छाई पाई ॥ (६५१-१७, रामकली, मः १)
नानक कलि का एहु परवाणु ॥ (६५१-१८, रामकली, मः १)
आपे आखणु आपे जाणु ॥१॥ (६५१-१८, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५१-१८)
हिंदू कै घरि हिंदू आवै ॥ (६५१-१८, रामकली, मः १)
सूतु जनेऊ पड़ि गलि पावै ॥ (६५१-१९, रामकली, मः १)
सूतु पाइ करे बुरिआई ॥ (६५१-१९, रामकली, मः १)
नाता धोता थाइ न पाई ॥ (६५१-१९, रामकली, मः १)
मुसलमानु करे वडिआई ॥ (६५१-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६५२

विणु गुर पीरै को थाइ न पाई ॥ (६५२-१, रामकली, मः १)
राहु दसाइ ओथै को जाइ ॥ (६५२-१, रामकली, मः १)
करणी बाझहु भिसति न पाइ ॥ (६५२-१, रामकली, मः १)
जोगी कै घरि जुगति दसाई ॥ (६५२-२, रामकली, मः १)
तितु कारणि कनि मुंद्रा पाई ॥ (६५२-२, रामकली, मः १)
मुंद्रा पाइ फिरै संसारि ॥ (६५२-२, रामकली, मः १)
जिथै किथै सिरजणहारु ॥ (६५२-३, रामकली, मः १)
जेते जीअ तेते वाटाऊ ॥ (६५२-३, रामकली, मः १)
चीरी आई ढिल न काऊ ॥ (६५२-३, रामकली, मः १)
एथै जाणै सु जाइ सिञाणै ॥ (६५२-३, रामकली, मः १)
होरु फकड़ु हिंदू मुसलमाणै ॥ (६५२-४, रामकली, मः १)
सभना का दरि लेखा होइ ॥ (६५२-४, रामकली, मः १)
करणी बाझहु तरै न कोइ ॥ (६५२-४, रामकली, मः १)
सचो सचु वखाणै कोइ ॥ (६५२-४, रामकली, मः १)
नानक अगै पुछ न होइ ॥२॥ (६५२-५, रामकली, मः १)
पउड़ी ॥ (६५२-५)
हरि का मंदरु आखीऐ काइआ कोटु गड़ु ॥ (६५२-५, रामकली, मः १)
अंदरि लाल जवेहरी गुरमुखि हरि नामु पड़ु ॥ (६५२-६, रामकली, मः १)
हरि का मंदरु सरीरु अति सोहणा हरि हरि नामु दिड़ु ॥ (६५२-६, रामकली, मः १)
मनमुख आपि खुआइअनु माइआ मोह नित कड़ु ॥ (६५२-७, रामकली, मः १)
सभना साहिबु एकु है पूरै भागि पाइआ जाई ॥११॥ (६५२-७, रामकली, मः १)
सलोक मः १ ॥ (६५२-८)

ना सति दुखीआ ना सति सुखीआ ना सति पाणी जंत फिरहि ॥ (६५२-८, रामकली, मः १)
ना सति मूंड मुडाई केसी ना सति पड़िआ देस फिरहि ॥ (६५२-८, रामकली, मः १)
ना सति रुखी बिरखी पथर आपु तछावहि दुख सहहि ॥ (६५२-६, रामकली, मः १)
ना सति हसती बधे संगल ना सति गाई घाहु चरहि ॥ (६५२-१०, रामकली, मः १)
जिसु हथि सिधि देवै जे सोई जिस नो देइ तिसु आइ मिलै ॥ (६५२-१०, रामकली, मः १)
नानक ता कउ मिलै वडाई जिसु घट भीतरि सबदु रवै ॥ (६५२-११, रामकली, मः १)
सभि घट मेरे हउ सभना अंदरि जिसहि खुआई तिसु कउणु कहै ॥ (६५२-११, रामकली, मः १)
जिसहि दिखाला वाटड़ी तिसहि भुलावै कउणु ॥ (६५२-१२, रामकली, मः १)
जिसहि भुलाई पंध सिरि तिसहि दिखावै कउणु ॥१॥ (६५२-१२, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५२-१३)
सो गिरही जो निग्रहु करै ॥ (६५२-१३, रामकली, मः १)
जपु तपु संजमु भीखिआ करै ॥ (६५२-१३, रामकली, मः १)
पुन्न दान का करे सरीरु ॥ (६५२-१४, रामकली, मः १)
सो गिरही गंगा का नीरु ॥ (६५२-१४, रामकली, मः १)
बोलै ईसरु सति सरूपु ॥ (६५२-१४, रामकली, मः १)
पर्म तंत महि रेख न रूपु ॥२॥ (६५२-१४, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५२-१५)
सो अउधूती जो धूपै आपु ॥ (६५२-१५, रामकली, मः १)
भिखिआ भोजनु करै संतापु ॥ (६५२-१५, रामकली, मः १)
अउहठ पटण महि भीखिआ करै ॥ (६५२-१५, रामकली, मः १)
सो अउधूती सिव पुरि चड़ै ॥ (६५२-१६, रामकली, मः १)
बोलै गोरखु सति सरूपु ॥ (६५२-१६, रामकली, मः १)
पर्म तंत महि रेख न रूपु ॥३॥ (६५२-१६, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५२-१७)
सो उदासी जि पाले उदासु ॥ (६५२-१७, रामकली, मः १)
अर्ध उरध करे निरंजन वासु ॥ (६५२-१७, रामकली, मः १)
चंद सूरज की पाए गंढि ॥ (६५२-१७, रामकली, मः १)
तिसु उदासी का पड़ै न कंधु ॥ (६५२-१८, रामकली, मः १)
बोलै गोपी चंदु सति सरूपु ॥ (६५२-१८, रामकली, मः १)
पर्म तंत महि रेख न रूपु ॥४॥ (६५२-१८, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५२-१६)
सो पाखंडी जि काइआ पखाले ॥ (६५२-१६, रामकली, मः १)
काइआ की अगनि ब्रह्मु परजाले ॥ (६५२-१६, रामकली, मः १)
सुपनै बिंदु न देई झरणा ॥ (६५२-१६, रामकली, मः १)

पन्ना ६५३

तिसु पाखंडी जरा न मरणा ॥ (६५३-१, रामकली, मः १)
बोलै चरपटु सति सरूपु ॥ (६५३-१, रामकली, मः १)
परम तंत महि रेख न रूपु ॥५॥ (६५३-१, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५३-२)
सो बैरागी जि उलटे ब्रहमु ॥ (६५३-२, रामकली, मः १)
गगन मंडल महि रोपै थमु ॥ (६५३-२, रामकली, मः १)
अहिनिसि अंतरि रहै धिआनि ॥ (६५३-२, रामकली, मः १)
ते बैरागी सत समानि ॥ (६५३-३, रामकली, मः १)
बोलै भरथरि सति सरूपु ॥ (६५३-३, रामकली, मः १)
परम तंत महि रेख न रूपु ॥६॥ (६५३-३, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५३-३)
किउ मरै मंदा किउ जीवै जुगति ॥ (६५३-३, रामकली, मः १)
कंन पड़ाइ किआ खाजै भुगति ॥ (६५३-४, रामकली, मः १)
आसति नासति एको नाउ ॥ (६५३-४, रामकली, मः १)
कउणु सु अखरु जितु रहै हिआउ ॥ (६५३-४, रामकली, मः १)
धूप छाव जे सम करि सहै ॥ (६५३-५, रामकली, मः १)
ता नानकु आखै गुरु को कहै ॥ (६५३-५, रामकली, मः १)
छिअ वरतारे वरतहि पूत ॥ (६५३-५, रामकली, मः १)
ना संसारी ना अउधूत ॥ (६५३-६, रामकली, मः १)
निरंकारि जो रहै समाइ ॥ (६५३-६, रामकली, मः १)
काहे भीखिआ मंगणि जाइ ॥७॥ (६५३-६, रामकली, मः १)
पउड़ी ॥ (६५३-६)
हरि मंदरु सोई आखीऐ जिथहु हरि जाता ॥ (६५३-७, रामकली, मः १)
मानस देह गुर बचनी पाइआ सभु आतम रामु पछाता ॥ (६५३-७, रामकली, मः १)
बाहरि मूलि न खोजीऐ घर माहि बिधाता ॥ (६५३-८, रामकली, मः १)
मनमुख हरि मंदर की सार न जाणनी तिनी जनमु गवाता ॥ (६५३-८, रामकली, मः १)
सभ महि इकु वरतदा गुर सबदी पाइआ जाई ॥१२॥ (६५३-९, रामकली, मः १)
सलोक मः ३ ॥ (६५३-९)
मूरखु होवै सो सुणै मूरख का कहणा ॥ (६५३-९, रामकली, मः ३)
मूरख के किआ लखण है किआ मूरख का करणा ॥ (६५३-१०, रामकली, मः ३)
मूरखु ओहु जि मुगधु है अहंकारे मरणा ॥ (६५३-१०, रामकली, मः ३)
एतु कमाणै सदा दुखु दुख ही महि रहणा ॥ (६५३-११, रामकली, मः ३)
अति पिआरा पवै खूहि किहु संजमु करणा ॥ (६५३-११, रामकली, मः ३)

गुरमुखि होइ सु करे वीचारु ओसु अलिपतो रहणा ॥ (९५३-११, रामकली, मः ३)
हरि नामु जपै आपि उधरै ओसु पिछै डुबदे भी तरणा ॥ (९५३-१२, रामकली, मः ३)
नानक जो तिसु भावै सो करे जो देइ सु सहणा ॥१॥ (९५३-१२, रामकली, मः ३)
मः १ ॥ (९५३-१३)
नानकु आखै रे मना सुणीऐ सिख सही ॥ (९५३-१३, रामकली, मः १)
लेखा रबु मंगेसीआ बैठा कढि वही ॥ (९५३-१३, रामकली, मः १)
तलबा पउसनि आकीआ बाकी जिना रही ॥ (९५३-१४, रामकली, मः १)
अजराईलु फरेसता होसी आइ तई ॥ (९५३-१४, रामकली, मः १)
आवणु जाणु न सुझई भीड़ी गली फही ॥ (९५३-१५, रामकली, मः १)
कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥२॥ (९५३-१५, रामकली, मः १)
पउड़ी ॥ (९५३-१६)
हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥ (९५३-१६, रामकली, मः १)
हरि की कीमति न पवै किछु कहणु न जापै ॥ (९५३-१६, रामकली, मः १)
गुर परसादी सालाहीऐ हरि भगती रापै ॥ (९५३-१७, रामकली, मः १)
सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहंकारु गवापै ॥ (९५३-१७, रामकली, मः १)
सभु किछु हरि का खेलु है गुरमुखि किसै बुझाई ॥१३॥ (९५३-१८, रामकली, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (९५३-१८)
सहंसर दान दे इंद्रु रोआइआ ॥ (९५३-१८, रामकली, मः १)
परस रामु रोवै घरि आइआ ॥ (९५३-१९, रामकली, मः १)
अजै सु रोवै भीखिआ खाइ ॥ (९५३-१९, रामकली, मः १)
ऐसी दरगह मिलै सजाइ ॥ (९५३-१९, रामकली, मः १)
रोवै रामु निकाला भइआ ॥ (९५३-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ९५४

सीता लखमणु विछुड़ि गइआ ॥ (९५४-१, रामकली, मः १)
रोवै दहसिरु लंक गवाइ ॥ (९५४-१, रामकली, मः १)
जिनि सीता आदी डउरू वाइ ॥ (९५४-१, रामकली, मः १)
रोवहि पाँडव भए मजूर ॥ (९५४-२, रामकली, मः १)
जिन कै सुआमी रहत हदूरि ॥ (९५४-२, रामकली, मः १)
रोवै जनमेजा खुइ गइआ ॥ (९५४-२, रामकली, मः १)
एकी कारणि पापी भइआ ॥ (९५४-३, रामकली, मः १)
रोवहि सेख मसाइक पीर ॥ (९५४-३, रामकली, मः १)
अंति कालि मतु लागै भीड़ ॥ (९५४-३, रामकली, मः १)
रोवहि राजे कंन्न पड़ाइ ॥ (९५४-३, रामकली, मः १)
घरि घरि मागहि भीखिआ जाइ ॥ (९५४-४, रामकली, मः १)

रोवहि किरपन संचहि धनु जाइ ॥ (९५४-४, रामकली, मः १)
पंडित रोवहि गिआनु गवाइ ॥ (९५४-४, रामकली, मः १)
बाली रोवै नाहि भतारु ॥ (९५४-५, रामकली, मः १)
नानक दुखीआ सभु संसारु ॥ (९५४-५, रामकली, मः १)
मन्ने नाउ सोई जिणि जाइ ॥ (९५४-५, रामकली, मः १)
अउरी कर्म न लेखै लाइ ॥१॥ (९५४-६, रामकली, मः १)
मः २ ॥ (९५४-६)
जपु तपु सभु किछु मंनिऐ अवरि कारा सभि बादि ॥ (९५४-६, रामकली, मः २)
नानक मंनिआ मन्नीऐ बुझीऐ गुर परसादि ॥२॥ (९५४-६, रामकली, मः २)
पउड़ी ॥ (९५४-७)
काइआ हंस धुरि मेलु करतै लिखि पाइआ ॥ (९५४-७, रामकली, मः २)
सभ महि गुपतु वरतदा गुरमुखि प्रगटाइआ ॥ (९५४-८, रामकली, मः २)
गुण गावै गुण उचरै गुण माहि समाइआ ॥ (९५४-८, रामकली, मः २)
सची बाणी सचु है सचु मेलि मिलाइआ ॥ (९५४-८, रामकली, मः २)
सभु किछु आपे आपि है आपे देइ वडिआई ॥१४॥ (९५४-९, रामकली, मः २)
सलोक मः २ ॥ (९५४-९)
नानक अंधा होइ कै रतना परखण जाइ ॥ (९५४-१०, रामकली, मः २)
रतना सार न जाणई आवै आपु लखाइ ॥१॥ (९५४-१०, रामकली, मः २)
मः २ ॥ (९५४-११)
रतना केरी गुथली रतनी खोली आइ ॥ (९५४-११, रामकली, मः २)
वखर तै वणजारिआ दुहा रही समाइ ॥ (९५४-११, रामकली, मः २)
जिन गुणु पलै नानका माणक वणजहि सेइ ॥ (९५४-११, रामकली, मः २)
रतना सार न जाणनी अंधे वतहि लोइ ॥२॥ (९५४-१२, रामकली, मः २)
पउड़ी ॥ (९५४-१२)
नउ दरवाजे काइआ कोटु है दसवै गुपतु रखीजै ॥ (९५४-१२, रामकली, मः २)
बजर कपाट न खुलनी गुर सबदि खुलीजै ॥ (९५४-१३, रामकली, मः २)
अनहद वाजे धुनि वजदे गुर सबदि सुणीजै ॥ (९५४-१३, रामकली, मः २)
तितु घट अंतरि चानणा करि भगति मिलीजै ॥ (९५४-१४, रामकली, मः २)
सभ महि एकु वरतदा जिनि आपे रचन रचाई ॥१५॥ (९५४-१४, रामकली, मः २)
सलोक मः २ ॥ (९५४-१५)
अंधे कै राहि दसिऐ अंधा होइ सु जाइ ॥ (९५४-१५, रामकली, मः २)
होइ सुजाखा नानका सो किउ उझड़ि पाइ ॥ (९५४-१६, रामकली, मः २)
अंधे एहि न आखीअनि जिन मुखि लोइण नाहि ॥ (९५४-१६, रामकली, मः २)
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि ॥१॥ (९५४-१६, रामकली, मः २)
मः २ ॥ (९५४-१७)

साहिबि अंधा जो कीआ करे सुजाखा होइ ॥ (६५४-१७, रामकली, मः २)
जेहा जाणै तेहो वरतै जे सउ आखै कोइ ॥ (६५४-१७, रामकली, मः २)
जिथै सु वसतु न जापई आपे वरतउ जाणि ॥ (६५४-१८, रामकली, मः २)
नानक गाहकु किउ लए सकै न वसतु पछाणि ॥२॥ (६५४-१८, रामकली, मः २)
मः २ ॥ (६५४-१९)
सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ ॥ (६५४-१९, रामकली, मः २)
नानक हुकमु न बुझई अंधा कहीऐ सोइ ॥३॥ (६५४-१९, रामकली, मः २)

पन्ना ६५५

पउड़ी ॥ (६५५-१)
काइआ अंदरि गड़ु कोटु है सभि दिसंतर देसा ॥ (६५५-१, रामकली, मः २)
आपे ताड़ी लाईअनु सभ महि परवेसा ॥ (६५५-१, रामकली, मः २)
आपे स्रिसटि साजीअनु आपि गुपतु रखेसा ॥ (६५५-२, रामकली, मः २)
गुर सेवा ते जाणिआ सचु परगटीएसा ॥ (६५५-२, रामकली, मः २)
सभु किछु सचो सचु है गुरि सोझी पाई ॥१६॥ (६५५-३, रामकली, मः २)
सलोक मः १ ॥ (६५५-३)
सावणु राति अहाड़ु दिहु कामु क्रोधु दुइ खेत ॥ (६५५-३, रामकली, मः १)
लबु वत्र दरोगु बीउ हाली राहकु हेत ॥ (६५५-४, रामकली, मः १)
हलु बीचारु विकार मण हुकमी खटे खाइ ॥ (६५५-४, रामकली, मः १)
नानक लेखै मंगिऐ अउतु जणेदा जाइ ॥१॥ (६५५-५, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (६५५-५)
भउ भुइ पवितु पाणी सतु संतोखु बलेद ॥ (६५५-५, रामकली, मः १)
हलु हलेमी हाली चितु चेता वत्र वखत संजोगु ॥ (६५५-६, रामकली, मः १)
नाउ बीजु बखसीस बोहल दुनीआ सगल दरोग ॥ (६५५-६, रामकली, मः १)
नानक नदरी करमु होइ जावहि सगल विजोग ॥२॥ (६५५-७, रामकली, मः १)
पउड़ी ॥ (६५५-७)
मनमुखि मोहु गुबारु है दूजै भाइ बोलै ॥ (६५५-७, रामकली, मः १)
दूजै भाइ सदा दुखु है नित नीरु विरोलै ॥ (६५५-८, रामकली, मः १)
गुरमुखि नामु धिआईऐ मथि ततु कढोलै ॥ (६५५-८, रामकली, मः १)
अंतरि परगासु घटि चानणा हरि लधा टोलै ॥ (६५५-८, रामकली, मः १)
आपे भरमि भुलाइदा किछु कहणु न जाई ॥१७॥ (६५५-९, रामकली, मः १)
सलोक मः २ ॥ (६५५-९)
नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥ (६५५-१०, रामकली, मः २)
जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥ (६५५-१०, रामकली, मः २)
ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥ (६५५-१०, रामकली, मः २)

सउदा मूलि न होवई ना को लए न देइ ॥ (६५५-११, रामकली, मः २)
जीआ का आहारु जीअ खाणा एहु करेइ ॥ (६५५-११, रामकली, मः २)
विचि उपाए साइरा तिना भि सार करेइ ॥ (६५५-१२, रामकली, मः २)
नानक चिंता मत करहु चिंता तिस ही हेइ ॥१॥ (६५५-१२, रामकली, मः २)
मः १ ॥ (६५५-१३)
नानक इहु जीउ मछुली झीवरु तृसना कालु ॥ (६५५-१३, रामकली, मः १)
मनूआ अंधु न चेतई पड़ै अचिंता जालु ॥ (६५५-१३, रामकली, मः १)
नानक चितु अचेतु है चिंता बधा जाइ ॥ (६५५-१४, रामकली, मः १)
नदरि करे जे आपणी ता आपे लए मिलाइ ॥२॥ (६५५-१४, रामकली, मः १)
पउड़ी ॥ (६५५-१५)
से जन साचे सदा सदा जिनी हरि रसु पीता ॥ (६५५-१५, रामकली, मः १)
गुरमुखि सचा मनि वसै सचु सउदा कीता ॥ (६५५-१५, रामकली, मः १)
सभु किछु घर ही माहि है वडभागी लीता ॥ (६५५-१६, रामकली, मः १)
अंतरि तृसना मरि गई हरि गुण गावीता ॥ (६५५-१६, रामकली, मः १)
आपे मेलि मिलाइअनु आपे देइ बुझाई ॥१८॥ (६५५-१६, रामकली, मः १)
सलोक मः १ ॥ (६५५-१७)
वेलि पिंञाइआ कति वुणाइआ ॥ (६५५-१७, रामकली, मः १)
कटि कुटि करि खुंबि चड़ाइआ ॥ (६५५-१७, रामकली, मः १)
लोहा वढे दरजी पाड़े सूई धागा सीवै ॥ (६५५-१८, रामकली, मः १)
इउ पति पाटी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै ॥ (६५५-१८, रामकली, मः १)
होइ पुराणा कपड़ु पाटै सूई धागा गंढै ॥ (६५५-१९, रामकली, मः १)
माहु पखु किहु चलै नाही घड़ी मुहतु किछु हंढै ॥ (६५५-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ९५६

सचु पुराणा होवै नाही सीता कदे न पाटै ॥ (९५६-१, रामकली, मः १)
नानक साहिबु सचो सचा तिचरु जापी जापै ॥१॥ (९५६-१, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (९५६-२)
सच की काती सचु सभु सारु ॥ (९५६-२, रामकली, मः १)
घाड़त तिस की अपर अपार ॥ (९५६-२, रामकली, मः १)
सबदे साण रखाई लाइ ॥ (९५६-२, रामकली, मः १)
गुण की थेकै विचि समाइ ॥ (९५६-३, रामकली, मः १)
तिस दा कुठा होवै सेखु ॥ (९५६-३, रामकली, मः १)
लोहू लबु निकथा वेखु ॥ (९५६-३, रामकली, मः १)
होइ हलालु लगै हकि जाइ ॥ (९५६-३, रामकली, मः १)
नानक दरि दीदारि समाइ ॥२॥ (९५६-४, रामकली, मः १)

मः १ ॥ (९५६-४)
कमरि कटारा बंकुड़ा बंके का असवारु ॥ (९५६-४, रामकली, मः १)
गरबु न कीजै नानका मतु सिरि आवै भारु ॥३॥ (९५६-४, रामकली, मः १)
पउड़ी ॥ (९५६-५)
सो सतसंगति सबदि मिलै जो गुरमुखि चलै ॥ (९५६-५, रामकली, मः १)
सचु धिआइनि से सचे जिन हरि खरचु धनु पलै ॥ (९५६-५, रामकली, मः १)
भगत सोहनि गुण गावदे गुरमति अचलै ॥ (९५६-६, रामकली, मः १)
रतन बीचारु मनि वसिआ गुर कै सबदि भलै ॥ (९५६-६, रामकली, मः १)
आपे मेलि मिलाइदा आपे देइ वडिआई ॥१९॥ (९५६-७, रामकली, मः १)
सलोक मः ३ ॥ (९५६-७)
आसा अंदरि सभु को कोइ निरासा होइ ॥ (९५६-८, रामकली, मः ३)
नानक जो मरि जीविआ सहिला आइआ सोइ ॥१॥ (९५६-८, रामकली, मः ३)
मः ३ ॥ (९५६-८)
ना किछु आसा हथि है केउ निरासा होइ ॥ (९५६-९, रामकली, मः ३)
किआ करे एह बपुड़ी जाँ भुोलाए सोइ ॥२॥ (९५६-९, रामकली, मः ३)
पउड़ी ॥ (९५६-९)
ध्रिगु जीवणु संसार सचे नाम बिनु ॥ (९५६-१०, रामकली, मः ३)
प्रभु दाता दातार निहचलु एहु धनु ॥ (९५६-१०, रामकली, मः ३)
सासि सासि आराधे निरमलु सोइ जनु ॥ (९५६-१०, रामकली, मः ३)
अंतरजामी अगमु रसना एकु भनु ॥ (९५६-११, रामकली, मः ३)
रवि रहिआ सरबति नानकु बलि जाई ॥२०॥ (९५६-११, रामकली, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (९५६-१२)
सरवर हंस धुरे ही मेला खसमै एवै भाणा ॥ (९५६-१२, रामकली, मः १)
सरवर अंदरि हीरा मोती सो हंसा का खाणा ॥ (९५६-१२, रामकली, मः १)
बगुला कागु न रहई सरवरि जे होवै अति सिआणा ॥ (९५६-१३, रामकली, मः १)
ओना रिजकु न पइओ ओथै ओन्हा होरो खाणा ॥ (९५६-१३, रामकली, मः १)
सचि कमाणै सचो पाईऐ कूड़ै कूड़ा माणा ॥ (९५६-१४, रामकली, मः १)
नानक तिन कौ सतिगुरु मिलिआ जिना धुरे पैया परवाणा ॥१॥ (९५६-१४, रामकली, मः १)
मः १ ॥ (९५६-१५)
साहिबु मेरा उजला जे को चिति करेइ ॥ (९५६-१५, रामकली, मः १)
नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो देइ ॥ (९५६-१५, रामकली, मः १)
नानक सोई सेवीऐ जितु सेविऐ दुखु जाइ ॥ (९५६-१६, रामकली, मः १)
अवगुण वंञनि गुण रवहि मनि सुखु वसै आइ ॥२॥ (९५६-१६, रामकली, मः १)
पउड़ी ॥ (९५६-१७)
आपे आपि वरतदा आपि ताड़ी लाईअनु ॥ (९५६-१७, रामकली, मः १)

आपे ही उपदेसदा गुरमुखि पतीआईअनु ॥ (६५६-१७, रामकली, मः १)
इकि आपे उझड़ि पाइअनु इकि भगती लाइअनु ॥ (६५६-१८, रामकली, मः १)
जिसु आपि बुझाए सो बुझसी आपे नाइ लाईअनु ॥ (६५६-१८, रामकली, मः १)
नानक नामु धिआईऐ सची वडिआई ॥२१॥१॥ सुधु ॥ (६५६-१९, रामकली, मः १)

पन्ना ६५७

रामकली की वार महला ५ (६५७-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६५७-१)
सलोक मः ५ ॥ (६५७-२)
जैसा सतिगुरु सुणीदा तैसो ही मै डीठु ॥ (६५७-२, रामकली, मः ५)
विछुड़िआ मेले प्रभू हरि दरगह का बसीठु ॥ (६५७-२, रामकली, मः ५)
हरि नामो मंत्रु दृड़ाइदा कटे हउमै रोगु ॥ (६५७-३, रामकली, मः ५)
नानक सतिगुरु तिना मिलाइआ जिना धुरे पइआ संजोगु ॥१॥ (६५७-३, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६५७-४)
इकु सजणु सभि सजणा इकु वैरी सभि वादि ॥ (६५७-४, रामकली, मः ५)
गुरि पूरै देखालिआ विणु नावै सभ बादि ॥ (६५७-४, रामकली, मः ५)
साकत दुरजन भरमिआ जो लगे दूजै सादि ॥ (६५७-५, रामकली, मः ५)
जन नानकि हरि प्रभु बुझिआ गुर सतिगुर कै परसादि ॥२॥ (६५७-५, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६५७-६)
थटणहारै थाटु आपे ही थटिआ ॥ (६५७-६, रामकली, मः ५)
आपे पूरा साहु आपे ही खटिआ ॥ (६५७-६, रामकली, मः ५)
आपे करि पासारु आपे रंग रटिआ ॥ (६५७-६, रामकली, मः ५)
कुदरति कीम न पाइ अलख ब्रहमटिआ ॥ (६५७-७, रामकली, मः ५)
अगम अथाह बेअंत परै परटिआ ॥ (६५७-७, रामकली, मः ५)
आपे वड पातिसाहु आपि वजीरटिआ ॥ (६५७-८, रामकली, मः ५)
कोइ न जाणै कीम केवडु मटिआ ॥ (६५७-८, रामकली, मः ५)
सचा साहिबु आपि गुरमुखि परगटिआ ॥१॥ (६५७-८, रामकली, मः ५)
सलोकु मः ५ ॥ (६५७-९)
सुणि सजण प्रीतम मेरिआ मै सतिगुरु देहु दिखालि ॥ (६५७-९, रामकली, मः ५)
हउ तिसु देवा मनु आपणा नित हिरदै रखा समालि ॥ (६५७-९, रामकली, मः ५)
इकसु सतिगुर बाहरा ध्रिगु जीवणु संसारि ॥ (६५७-१०, रामकली, मः ५)
जन नानक सतिगुरु तिना मिलाइओनु जिन सद ही वरतै नालि ॥१॥ (६५७-१०, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६५७-११)
मेरै अंतरि लोचा मिलण की किउ पावा प्रभ तोहि ॥ (६५७-११, रामकली, मः ५)
कोई ऐसा सजणु लोड़ि लहु जो मेले प्रीतमु मोहि ॥ (६५७-१२, रामकली, मः ५)

गुरि पूरै मेलाइआ जत देखा तत सोइ ॥ (६५७-१२, रामकली, मः ५)
जन नानक सो प्रभु सेविआ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥२॥ (६५७-१३, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६५७-१३)
देवणहारु दातारु कितु मुखि सालाहीऐ ॥ (६५७-१३, रामकली, मः ५)
जिसु रखै किरपा धारि रिजकु समाहीऐ ॥ (६५७-१४, रामकली, मः ५)
कोइ न किस ही वसि सभना इक धर ॥ (६५७-१४, रामकली, मः ५)
पाले बालक वागि दे कै आपि कर ॥ (६५७-१५, रामकली, मः ५)
करदा अनद बिनोद किछू न जाणीऐ ॥ (६५७-१५, रामकली, मः ५)
सर्ब धार समरथ हउ तिसु कुरबाणीऐ ॥ (६५७-१५, रामकली, मः ५)
गाईऐ राति दिनंतु गावण जोगिआ ॥ (६५७-१६, रामकली, मः ५)
जो गुर की पैरी पाहि तिनी हरि रसु भोगिआ ॥२॥ (६५७-१६, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६५७-१७)
भीड़हु मोकलाई कीतीअनु सभ रखे कुटम्बै नालि ॥ (६५७-१७, रामकली, मः ५)
कारज आपि सवारिअनु सो प्रभ सदा सभालि ॥ (६५७-१७, रामकली, मः ५)
प्रभु मात पिता कंठि लाइदा लहुड़े बालक पालि ॥ (६५७-१८, रामकली, मः ५)
दइआल होए सभ जीअ जंत्र हरि नानक नदरि निहाल ॥१॥ (६५७-१८, रामकली, मः ५)

पन्ना ६५८

मः ५ ॥ (६५८-१)
विणु तुधु होरु जि मंगणा सिरि दुखा कै दुख ॥ (६५८-१, रामकली, मः ५)
देहि नामु संतोखीआ उतरै मन की भुख ॥ (६५८-१, रामकली, मः ५)
गुरि वणु तिणु हरिआ कीतिआ नानक किआ मनुख ॥२॥ (६५८-२, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६५८-२)
सो ऐसा दातारु मनहु न वीसरै ॥ (६५८-२, रामकली, मः ५)
घड़ी न मुहतु चसा तिसु बिनु ना सरै ॥ (६५८-३, रामकली, मः ५)
अंतरि बाहरि संगि किआ को लुकि करै ॥ (६५८-३, रामकली, मः ५)
जिसु पति रखै आपि सो भवजलु तरै ॥ (६५८-४, रामकली, मः ५)
भगतु गिआनी तपा जिसु किरपा करै ॥ (६५८-४, रामकली, मः ५)
सो पूरा प्रधानु जिस नो बलु धरै ॥ (६५८-४, रामकली, मः ५)
जिसहि जराए आपि सोई अजरु जरै ॥ (६५८-५, रामकली, मः ५)
तिस ही मिलिआ सचु मंत्रु गुर मनि धरै ॥३॥ (६५८-५, रामकली, मः ५)
सलोकु मः ५ ॥ (६५८-६)
धन्नु सु राग सुरंगड़े आलापत सभ तिख जाइ ॥ (६५८-६, रामकली, मः ५)
धन्नु सु जंत सुहावड़े जो गुरमुखि जपदे नाउ ॥ (६५८-६, रामकली, मः ५)
जिनी इक मनि इकु अराधिआ तिन सद बलिहारै जाउ ॥ (६५८-७, रामकली, मः ५)

तिन की धूड़ि हम बाछदे करमी पलै पाइ ॥ (६५८-७, रामकली, मः ५)
जो रते रंगि गोविद कै हउ तिन बलिहारै जाउ ॥ (६५८-८, रामकली, मः ५)
आखा बिरथा जीअ की हरि सजणु मेलहु राइ ॥ (६५८-८, रामकली, मः ५)
गुरि पूरै मेलाइआ जनम मरण दुखु जाइ ॥ (६५८-९, रामकली, मः ५)
जन नानक पाइआ अगम रूपु अनत न काहू जाइ ॥१॥ (६५८-९, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६५८-१०)
धन्नु सु वेला घड़ी धन्नु धनु मूरतु पलु सारु ॥ (६५८-१०, रामकली, मः ५)
धन्नु सु दिनसु संजोगड़ा जितु डिठा गुर दरसारु ॥ (६५८-१०, रामकली, मः ५)
मन कीआ इछा पूरीआ हरि पाइआ अगम अपारु ॥ (६५८-११, रामकली, मः ५)
हउमै तुटा मोहड़ा इकु सचु नामु आधारु ॥ (६५८-११, रामकली, मः ५)
जनु नानकु लगा सेव हरि उधरिआ सगल संसारु ॥२॥ (६५८-१२, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६५८-१२)
सिफति सलाहणु भगति विरले दितीअनु ॥ (६५८-१२, रामकली, मः ५)
सउपे जिसु भंडार फिरि पुछ न लीतीअनु ॥ (६५८-१३, रामकली, मः ५)
जिस नो लगा रंगु से रंगि रतिआ ॥ (६५८-१३, रामकली, मः ५)
ओना इको नामु अधारु इका उन भतिआ ॥ (६५८-१४, रामकली, मः ५)
ओना पिछै जगु भुंचै भोगई ॥ (६५८-१४, रामकली, मः ५)
ओना पिआरा रबु ओनाहा जोगई ॥ (६५८-१४, रामकली, मः ५)
जिसु मिलिआ गुरु आइ तिनि प्रभु जाणिआ ॥ (६५८-१५, रामकली, मः ५)
हउ बलिहारी तिन जि खसमै भाणिआ ॥४॥ (६५८-१५, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६५८-१६)
हरि इकसै नालि मै दोसती हरि इकसै नालि मै रंगु ॥ (६५८-१६, रामकली, मः ५)
हरि इको मेरा सजणो हरि इकसै नालि मै संगु ॥ (६५८-१६, रामकली, मः ५)
हरि इकसै नालि मै गोसटे मुहु मैला करै न भंगु ॥ (६५८-१७, रामकली, मः ५)
जाणै बिरथा जीअ की कदे न मोड़ै रंगु ॥ (६५८-१७, रामकली, मः ५)
हरि इको मेरा मसलती भन्नण घड़न समरथु ॥ (६५८-१८, रामकली, मः ५)
हरि इको मेरा दातारु है सिरि दातिआ जग हथु ॥ (६५८-१८, रामकली, मः ५)
हरि इकसै दी मै टेक है जो सिरि सभना समरथु ॥ (६५८-१९, रामकली, मः ५)
सतिगुरि संतु मिलाइआ मसतकि धरि कै हथु ॥ (६५८-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६५९

वडा साहिबु गुरू मिलाइआ जिनि तारिआ सगल जगतु ॥ (६५९-१, रामकली, मः ५)
मन कीआ इछा पूरीआ पाइआ धुरि संजोग ॥ (६५९-१, रामकली, मः ५)
नानक पाइआ सचु नामु सद ही भोगे भोग ॥१॥ (६५९-२, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६५९-२)

मनमुखा केरी दोसती माइआ का सनबंधु ॥ (९५९-२, रामकली, मः ५)
वेखदिआ ही भजि जानि कदे न पाइनि बंधु ॥ (९५९-३, रामकली, मः ५)
जिचरु पैननि खावन्हे तिचरु रखनि गंढु ॥ (९५९-३, रामकली, मः ५)
जितु दिनि किछु न होवई तितु दिनि बोलनि गंधु ॥ (९५९-४, रामकली, मः ५)
जीअ की सार न जाणनी मनमुख अगिआनी अंधु ॥ (९५९-४, रामकली, मः ५)
कूड़ा गंढु न चलई चिकड़ि पथर बंधु ॥ (९५९-५, रामकली, मः ५)
अंधे आपु न जाणनी फकड़ु पिटनि धंधु ॥ (९५९-५, रामकली, मः ५)
झूठै मोहि लपटाइआ हउ हउ करत बिहंधु ॥ (९५९-६, रामकली, मः ५)
कृपा करे जिसु आपणी धुरि पूरा करमु करेइ ॥ (९५९-६, रामकली, मः ५)
जन नानक से जन उबरे जो सतिगुर सरणि परे ॥२॥ (९५९-७, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (९५९-७)
जो रते दीदार सेई सचु हाकु ॥ (९५९-७, रामकली, मः ५)
जिनी जाता खसमु किउ लभै तिना खाकु ॥ (९५९-७, रामकली, मः ५)
मनु मैला वेकारु होवै संगि पाकु ॥ (९५९-८, रामकली, मः ५)
दिसै सचा महलु खुलै भर्म ताकु ॥ (९५९-८, रामकली, मः ५)
जिसहि दिखाले महलु तिसु न मिलै धाकु ॥ (९५९-९, रामकली, मः ५)
मनु तनु होइ निहालु बिंदक नदरि झाकु ॥ (९५९-९, रामकली, मः ५)
नउ निधि नामु निधानु गुर कै सबदि लागु ॥ (९५९-९, रामकली, मः ५)
तिसै मिलै संत खाकु मसतकि जिसै भागु ॥५॥ (९५९-१०, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (९५९-१०)
हरणाखी कू सचु वैणु सुणाई जो तउ करे उधारणु ॥ (९५९-११, रामकली, मः ५)
सुंदर बचन तुम सुणहु छबीली पिरु तैडा मन साधारणु ॥ (९५९-११, रामकली, मः ५)
दुरजन सेती नेहु रचाइओ दसि विखा मै कारणु ॥ (९५९-१२, रामकली, मः ५)
ऊणी नाही झूणी नाही नाही किसै विहूणी ॥ (९५९-१२, रामकली, मः ५)
पिरु छैलु छबीला छडि गवाइओ दुरमति करमि विहूणी ॥ (९५९-१३, रामकली, मः ५)
ना हउ भुली ना हउ चुकी ना मै नाही दोसा ॥ (९५९-१३, रामकली, मः ५)
जितु हउ लाई तितु हउ लगी तू सुणि सचु संदेसा ॥ (९५९-१४, रामकली, मः ५)
साई सोहागणि साई भागणि जै पिरि किरपा धारी ॥ (९५९-१४, रामकली, मः ५)
पिरि अउगण तिस के सभि गवाए गल सेती लाइ सवारी ॥ (९५९-१५, रामकली, मः ५)
करमहीण धन करै बिनंती कदि नानक आवै वारी ॥ (९५९-१५, रामकली, मः ५)
सभि सुहागणि माणहि रलीआ इक देवहु राति मुरारी ॥१॥ (९५९-१६, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (९५९-१६)
काहे मन तू डोलता हरि मनसा पूरणहारु ॥ (९५९-१७, रामकली, मः ५)
सतिगुरु पुरखु धिआइ तू सभि दुख विसारणहारु ॥ (९५९-१७, रामकली, मः ५)
हरि नामा आराधि मन सभि किलविख जाहि विकार ॥ (९५९-१८, रामकली, मः ५)

जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन रंगु लगा निरंकार ॥ (६५९-१८, रामकली, मः ५)
ओनी छडिआ माइआ सुआवड़ा धनु संचिआ नामु अपारु ॥ (६५९-१९, रामकली, मः ५)
अठे पहर इकतै लिवै मन्नेनि हुकमु अपारु ॥ (६५९-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६६०

जनु नानकु मंगै दानु इकु देहु दरसु मनि पिआरु ॥२॥ (६६०-१, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६०-१)
जिसु तू आवहि चिति तिस नो सदा सुख ॥ (६६०-१, रामकली, मः ५)
जिसु तू आवहि चिति तिसु जम नाहि दुख ॥ (६६०-२, रामकली, मः ५)
जिसु तू आवहि चिति तिसु कि काड़िआ ॥ (६६०-२, रामकली, मः ५)
जिस दा करता मित्रु सभि काज सवारिआ ॥ (६६०-३, रामकली, मः ५)
जिसु तू आवहि चिति सो परवाणु जनु ॥ (६६०-३, रामकली, मः ५)
जिसु तू आवहि चिति बहुता तिसु धनु ॥ (६६०-३, रामकली, मः ५)
जिसु तू आवहि चिति सो वड परवारिआ ॥ (६६०-४, रामकली, मः ५)
जिसु तू आवहि चिति तिनि कुल उधारिआ ॥६॥ (६६०-४, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६०-५)
अंदरहु अन्ना बाहरहु अन्ना कूड़ी कूड़ी गावै ॥ (६६०-५, रामकली, मः ५)
देही धोवै चक्र बणाए माइआ नो बहु धावै ॥ (६६०-५, रामकली, मः ५)
अंदरि मैलु न उतरै हउमै फिरि फिरि आवै जावै ॥ (६६०-६, रामकली, मः ५)
नींद विआपिआ कामि संतापिआ मुखहु हरि हरि कहावै ॥ (६६०-६, रामकली, मः ५)
बैसनो नामु कर्म हउ जुगता तुह कुटे किआ फलु पावै ॥ (६६०-७, रामकली, मः ५)
हंसा विचि बैठा बगु न बणई नित बैठा मछी नो तार लावै ॥ (६६०-७, रामकली, मः ५)
जा हंस सभा वीचारु करि देखनि ता बगा नालि जोड़ु कदे न आवै ॥ (६६०-८, रामकली, मः ५)
हंसा हीरा मोती चुगणा बगु डडा भालण जावै ॥ (६६०-९, रामकली, मः ५)
उडरिआ वेचारा बगुला मतु होवै मंञु लखावै ॥ (६६०-९, रामकली, मः ५)
जितु को लाइआ तित ही लागा किसु दोसु दिचै जा हरि एवै भावै ॥ (६६०-१०, रामकली, मः ५)
सतिगुरु सरवरु रतनी भरपूरे जिसु प्रापति सो पावै ॥ (६६०-१०, रामकली, मः ५)
सिख हंस सरवरि इकठे होए सतिगुर कै हुकमावै ॥ (६६०-११, रामकली, मः ५)
रतन पदार्थ माणक सरवरि भरपूरे खाइ खरचि रहे तोटि न आवै ॥ (६६०-११, रामकली, मः ५)
सरवर हंसु दूरि न होई करते एवै भावै ॥ (६६०-१२, रामकली, मः ५)
जन नानक जिस दै मसतकि भागु धुरि लिखिआ सो सिखु गुरू पहि आवै ॥ (६६०-१२, रामकली, मः ५)
आपि तरिआ कुटम्ब सभि तारे सभा सृसटि छडावै ॥१॥ (६६०-१३, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६०-१४)
पंडितु आखाए बहुती राही कोरड़ मोठ जिनेहा ॥ (६६०-१४, रामकली, मः ५)
अंदरि मोहु नित भरमि विआपिआ तिसटसि नाही देहा ॥ (६६०-१४, रामकली, मः ५)

कूड़ी आवै कूड़ी जावै माइआ की नित जोहा ॥ (६६०-१५, रामकली, मः ५)
सचु कहै ता छोहो आवै अंतरि बहुता रोहा ॥ (६६०-१५, रामकली, मः ५)
विआपिआ दुरमति कुबुधि कुमूड़ा मनि लागा तिसु मोहा ॥ (६६०-१६, रामकली, मः ५)
ठगै सेती ठगु रलि आइआ साथु भि इको जेहा ॥ (६६०-१६, रामकली, मः ५)
सतिगुरु सराफु नदरी विचदो कढै ताँ उघड़ि आइआ लोहा ॥ (६६०-१७, रामकली, मः ५)
बहुतेरी थाई रलाइ रलाइ दिता उघड़िआ पड़दा अगै आइ खलोहा ॥ (६६०-१८, रामकली, मः ५)
सतिगुर की जे सरणी आवै फिरि मनूरहु कंचनु होहा ॥ (६६०-१८, रामकली, मः ५)
सतिगुरु निरवैरु पुत्र सत्र समाने अउगण कटे करे सुधु देहा ॥ (६६०-१९, रामकली, मः ५)
नानक जिसु धुरि मसतकि होवै लिखिआ तिसु सतिगुर नालि सनेहा ॥ (६६०-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६६१

अमृत बाणी सतिगुर पूरे की जिसु किरपालु होवै तिसु रिदै वसेहा ॥ (६६१-१, रामकली, मः ५)
आवण जाणा तिस का कटीऐ सदा सदा सुखु होहा ॥२॥ (६६१-२, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६१-२)
जो तुधु भाणा जंतु सो तुधु बुझई ॥ (६६१-२, रामकली, मः ५)
जो तुधु भाणा जंतु सु दरगह सिझई ॥ (६६१-३, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरी नदरि हउमै तिसु गई ॥ (६६१-३, रामकली, मः ५)
जिस नो तू संतुसटु कलमल तिसु खई ॥ (६६१-४, रामकली, मः ५)
जिस कै सुआमी वलि निरभउ सो भई ॥ (६६१-४, रामकली, मः ५)
जिस नो तू किरपालु सचा सो थिअई ॥ (६६१-४, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरी मइआ न पोहै अगनई ॥ (६६१-५, रामकली, मः ५)
तिस नो सदा दइआलु जिनि गुर ते मति लई ॥७॥ (६६१-५, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६१-६)
करि किरपा किरपाल आपे बखसि लै ॥ (६६१-६, रामकली, मः ५)
सदा सदा जपी तेरा नामु सतिगुर पाइ पै ॥ (६६१-६, रामकली, मः ५)
मन तन अंतरि वसु दूखा नासु होइ ॥ (६६१-७, रामकली, मः ५)
हथ देइ आपि रखु विआपै भउ न कोइ ॥ (६६१-७, रामकली, मः ५)
गुण गावा दिनु रैणि एतै कंमि लाइ ॥ (६६१-७, रामकली, मः ५)
संत जना कै संगि हउमै रोगु जाइ ॥ (६६१-८, रामकली, मः ५)
सर्ब निरंतरि खसमु एको रवि रहिआ ॥ (६६१-८, रामकली, मः ५)
गुर परसादी सचु सचो सचु लहिआ ॥ (६६१-९, रामकली, मः ५)
दइआ करहु दइआल अपणी सिफति देहु ॥ (६६१-९, रामकली, मः ५)
दरसनु देखि निहाल नानक प्रीति एह ॥१॥ (६६१-९, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६१-१०)
एको जपीऐ मनै माहि इकस की सरणाइ ॥ (६६१-१०, रामकली, मः ५)

इकसु सिउ करि पिरहड़ी दूजी नाही जाइ ॥ (६६१-१०, रामकली, मः ५)
इको दाता मंगीऐ सभु किछु पलै पाइ ॥ (६६१-११, रामकली, मः ५)
मनि तनि सासि गिरासि प्रभु इको इकु धिआइ ॥ (६६१-११, रामकली, मः ५)
अमृतु नामु निधानु सचु गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (६६१-१२, रामकली, मः ५)
वडभागी ते संत जन जिन मनि वुठा आइ ॥ (६६१-१२, रामकली, मः ५)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ दूजा कोई नाहि ॥ (६६१-१३, रामकली, मः ५)
नामु धिआई नामु उचरा नानक खसम रजाइ ॥२॥ (६६१-१३, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६१-१४)
जिस नो तू रखवाला मारे तिसु कउणु ॥ (६६१-१४, रामकली, मः ५)
जिस नो तू रखवाला जिता तिनै भैणु ॥ (६६१-१४, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरा अंगु तिसु मुखु उजला ॥ (६६१-१५, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरा अंगु सु निरमली हूं निरमला ॥ (६६१-१५, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरी नदरि न लेखा पुछीऐ ॥ (६६१-१५, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरी खुसी तिनि नउ निधि भुंचीऐ ॥ (६६१-१६, रामकली, मः ५)
जिस नो तू प्रभ वलि तिसु किआ मुहछंदगी ॥ (६६१-१६, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरी मिहर सु तेरी बंदिगी ॥८॥ (६६१-१७, रामकली, मः ५)
सलोक महला ५ ॥ (६६१-१७)
होहु कृपाल सुआमी मेरे संताँ संगि विहावे ॥ (६६१-१७, रामकली, मः ५)
तुधहु भुले सि जमि जमि मरदे तिन कदे न चुकनि हावे ॥१॥ (६६१-१८, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६१-१८)
सतिगुरु सिमरहु आपणा घटि अवघटि घट घाट ॥ (६६१-१८, रामकली, मः ५)
हरि हरि नामु जपंतिआ कोइ न बंधै वाट ॥२॥ (६६१-१९, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६१-१९)

पन्ना ६६२

तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ (६६२-१, रामकली, मः ५)
ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ (६६२-१, रामकली, मः ५)
सुणि कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ (६६२-१, रामकली, मः ५)
भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ (६६२-२, रामकली, मः ५)
जिन कउ लगी पिआस अमृतु सेइ खाहि ॥ (६६२-२, रामकली, मः ५)
कलि महि एहो पुन्नु गुण गोविंद गाहि ॥ (६६२-३, रामकली, मः ५)
सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि ॥ (६६२-३, रामकली, मः ५)
बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥९॥ (६६२-३, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६२-४)
दूजा तिसु न बुझाइहु पारब्रह्म नामु देहु आधारु ॥ (६६२-४, रामकली, मः ५)

अगमु अगोचरु साहिबो समरथु सचु दातारु ॥ (६६२-५, रामकली, मः ५)
तू निहचलु निरवैरु सचु सचा तुधु दरबारु ॥ (६६२-५, रामकली, मः ५)
कीमति कहणु न जाईऐ अंतु न पारावारु ॥ (६६२-५, रामकली, मः ५)
प्रभु छोडि होरु जि मंगणा सभु बिखिआ रस छारु ॥ (६६२-६, रामकली, मः ५)
से सुखीए सचु साह से जिन सचा बिउहारु ॥ (६६२-६, रामकली, मः ५)
जिना लगी प्रीति प्रभ नाम सहज सुख सारु ॥ (६६२-७, रामकली, मः ५)
नानक इकु आराधे संतन रेणारु ॥१॥ (६६२-७, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६२-८)
अनद सूख बिस्राम नित हरि का कीरतनु गाइ ॥ (६६२-८, रामकली, मः ५)
अवर सिआणप छाडि देहि नानक उधरसि नाइ ॥२॥ (६६२-८, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६२-९)
ना तू आवहि वसि बहुतु घिणावणे ॥ (६६२-९, रामकली, मः ५)
ना तू आवहि वसि बेद पड़ावणे ॥ (६६२-९, रामकली, मः ५)
ना तू आवहि वसि तीरथि नाईऐ ॥ (६६२-१०, रामकली, मः ५)
ना तू आवहि वसि धरती धाईऐ ॥ (६६२-१०, रामकली, मः ५)
ना तू आवहि वसि कितै सिआणपै ॥ (६६२-१०, रामकली, मः ५)
ना तू आवहि वसि बहुता दानु दे ॥ (६६२-११, रामकली, मः ५)
सभु को तेरै वसि अगम अगोचरा ॥ (६६२-११, रामकली, मः ५)
तू भगता कै वसि भगता ताणु तेरा ॥१०॥ (६६२-११, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६२-१२)
आपे वैदु आपि नाराइणु ॥ (६६२-१२, रामकली, मः ५)
एहि वैद जीअ का दुखु लाइण ॥ (६६२-१२, रामकली, मः ५)
गुर का सबदु अमृत रसु खाइण ॥ (६६२-१३, रामकली, मः ५)
नानक जिसु मनि वसै तिस के सभि दूख मिटाइण ॥१॥ (६६२-१३, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६२-१४)
हुकमि उछलै हुकमे रहै ॥ (६६२-१४, रामकली, मः ५)
हुकमे दुखु सुखु सम करि सहै ॥ (६६२-१४, रामकली, मः ५)
हुकमे नामु जपै दिनु राति ॥ (६६२-१४, रामकली, मः ५)
नानक जिस नो होवै दाति ॥ (६६२-१४, रामकली, मः ५)
हुकमि मरै हुकमे ही जीवै ॥ (६६२-१५, रामकली, मः ५)
हुकमे नान्हा वडा थीवै ॥ (६६२-१५, रामकली, मः ५)
हुकमे सोग हरख आनंद ॥ (६६२-१५, रामकली, मः ५)
हुकमे जपै निरोधर गुरमंत ॥ (६६२-१६, रामकली, मः ५)
हुकमे आवणु जाणु रहाए ॥ (६६२-१६, रामकली, मः ५)
नानक जा कउ भगती लाए ॥२॥ (६६२-१६, रामकली, मः ५)

पउड़ी ॥ (६६२-१६)
हउ तिसु ढाढी कुरबाणु जि तेरा सेवदारु ॥ (६६२-१७, रामकली, मः ५)
हउ तिसु ढाढी बलिहार जि गावै गुण अपार ॥ (६६२-१७, रामकली, मः ५)
सो ढाढी धनु धन्नु जिसु लोड़े निरंकारु ॥ (६६२-१७, रामकली, मः ५)
सो ढाढी भागठु जिसु सचा दुआर बारु ॥ (६६२-१८, रामकली, मः ५)
ओहु ढाढी तुधु धिआइ कलाणे दिनु रैणार ॥ (६६२-१८, रामकली, मः ५)
मंगै अमृत नामु न आवै कदे हारि ॥ (६६२-१९, रामकली, मः ५)
कपड़ु भोजनु सचु रहदा लिवै धार ॥ (६६२-१९, रामकली, मः ५)
सो ढाढी गुणवंतु जिस नो प्रभ पिआरु ॥११॥ (६६२-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६६३

सलोक मः ५ ॥ (६६३-१)
अमृत बाणी अमिउ रसु अमृतु हरि का नाउ ॥ (६६३-१, रामकली, मः ५)
मनि तनि हिरदै सिमरि हरि आठ पहर गुण गाउ ॥ (६६३-२, रामकली, मः ५)
उपदेसु सुणहु तुम गुरसिखहु सचा इहै सुआउ ॥ (६६३-२, रामकली, मः ५)
जनमु पदारथु सफलु होइ मन महि लाइहु भाउ ॥ (६६३-३, रामकली, मः ५)
सूख सहज आनदु घणा प्रभ जपतिआ दुखु जाइ ॥ (६६३-३, रामकली, मः ५)
नानक नामु जपत सुखु ऊपजै दरगह पाईऐ थाउ ॥१॥ (६६३-४, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६३-४)
नानक नामु धिआईऐ गुरु पूरा मति देइ ॥ (६६३-४, रामकली, मः ५)
भाणै जप तप संजमो भाणै ही कढि लेइ ॥ (६६३-५, रामकली, मः ५)
भाणै जोनि भवाईऐ भाणै बखस करेइ ॥ (६६३-५, रामकली, मः ५)
भाणै दुखु सुखु भोगीऐ भाणै कर्म करेइ ॥ (६६३-५, रामकली, मः ५)
भाणै मिटी साजि कै भाणै जोति धरेइ ॥ (६६३-६, रामकली, मः ५)
भाणै भोग भोगाइदा भाणै मनहि करेइ ॥ (६६३-६, रामकली, मः ५)
भाणै नरकि सुरगि अउतारे भाणै धरणि परेइ ॥ (६६३-७, रामकली, मः ५)
भाणै ही जिसु भगती लाए नानक विरले हे ॥२॥ (६६३-७, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६३-८)
वडिआई सचे नाम की हउ जीवा सुणि सुणे ॥ (६६३-८, रामकली, मः ५)
पसू परेत अगिआन उधारे इक खणे ॥ (६६३-८, रामकली, मः ५)
दिनसु रैणि तेरा नाउ सदा सद जापीऐ ॥ (६६३-९, रामकली, मः ५)
तृसना भुख विकराल नाइ तेरै ध्रापीऐ ॥ (६६३-९, रामकली, मः ५)
रोगु सोगु दुखु वंञै जिसु नाउ मनि वसै ॥ (६६३-९, रामकली, मः ५)
तिसहि परापति लालु जो गुर सबदी रसै ॥ (६६३-१०, रामकली, मः ५)
खंड ब्रहमंड बेअंत उधारणहारिआ ॥ (६६३-१०, रामकली, मः ५)

तेरी सोभा तुधु सचे मेरे पिआरिआ ॥१२॥ (६६३-११, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६३-११)
मित्रु पिआरा नानक जी मै छडि गवाइआ रंगि कसुम्भै भुली ॥ (६६३-११, रामकली, मः ५)
तउ सजण की मै कीम न पउदी हउ तुधु बिनु अढु न लहदी ॥१॥ (६६३-१२, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६३-१३)
ससु विराइणि नानक जीउ ससुरा वादी जेठो पउ पउ लूहै ॥ (६६३-१३, रामकली, मः ५)
हभे भसु पुणेदे वतनु जा मै सजणु तूहै ॥२॥ (६६३-१३, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६३-१४)
जिसु तू वुठा चिति तिसु दरदु निवारणो ॥ (६६३-१४, रामकली, मः ५)
जिसु तू वुठा चिति तिसु कदे न हारणो ॥ (६६३-१४, रामकली, मः ५)
जिसु मिलिआ पूरा गुरू सु सरपर तारणो ॥ (६६३-१५, रामकली, मः ५)
जिस नो लाए सचि तिसु सचु सम्हालणो ॥ (६६३-१५, रामकली, मः ५)
जिसु आइआ हथि निधानु सु रहिआ भालणो ॥ (६६३-१५, रामकली, मः ५)
जिस नो इको रंगु भगतु सो जानणो ॥ (६६३-१६, रामकली, मः ५)
ओहु सभना की रेणु बिरही चारणो ॥ (६६३-१६, रामकली, मः ५)
सभि तेरे चोज विडाण सभु तेरा कारणो ॥१३॥ (६६३-१७, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६३-१७)
उसतति निंदा नानक जी मै हभ वञाई छोड़िआ हभु किझु तिआगी ॥ (६६३-१७, रामकली, मः ५)
हभे साक कूड़ावे डिठे तउ पलै तैडै लागी ॥१॥ (६६३-१८, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६३-१८)
फिरदी फिरदी नानक जीउ हउ फावी थीई बहुतु दिसावर पंधा ॥ (६६३-१९, रामकली, मः ५)
ता हउ सुखि सुखाली सुती जा गुर मिलि सजणु मै लधा ॥२॥ (६६३-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६६४

पउड़ी ॥ (६६४-१)
सभे दुख संताप जाँ तुधहु भुलीऐ ॥ (६६४-१, रामकली, मः ५)
जे कीचनि लख उपाव ताँ कही न घुलीऐ ॥ (६६४-१, रामकली, मः ५)
जिस नो विसरै नाउ सु निरधनु काँढीऐ ॥ (६६४-२, रामकली, मः ५)
जिस नो विसरै नाउ सो जोनी हाँढीऐ ॥ (६६४-२, रामकली, मः ५)
जिसु खसमु न आवै चिति तिसु जमु डंडु दे ॥ (६६४-२, रामकली, मः ५)
जिसु खसमु न आवी चिति रोगी से गणे ॥ (६६४-३, रामकली, मः ५)
जिसु खसमु न आवी चिति सु खरो अहंकारीआ ॥ (६६४-३, रामकली, मः ५)
सोई दुहेला जगि जिनि नाउ विसारीआ ॥१४॥ (६६४-४, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६४-४)
तैडी बंदसि मै कोइ न डिठा तू नानक मनि भाणा ॥ (६६४-४, रामकली, मः ५)

घोलि घुमाई तिसु मित्र विचोले जै मिलि कंतु पछाणा ॥१॥ (६६४-५, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६४-६)
पाव सुहावे जाँ तउ धिरि जुलदे सीसु सुहावा चरणी ॥ (६६४-६, रामकली, मः ५)
मुखु सुहावा जाँ तउ जसु गावै जीउ पइआ तउ सरणी ॥२॥ (६६४-६, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६४-७)
मिलि नारी सतसंगि मंगलु गावीआ ॥ (६६४-७, रामकली, मः ५)
घर का होआ बंधानु बहुड़ि न धावीआ ॥ (६६४-७, रामकली, मः ५)
बिनठी दुरमति दुरतु सोइ कूड़ावीआ ॥ (६६४-८, रामकली, मः ५)
सीलवंति परधानि रिदै सचावीआ ॥ (६६४-८, रामकली, मः ५)
अंतरि बाहरि इकु इक रीतावीआ ॥ (६६४-८, रामकली, मः ५)
मनि दरसन की पिआस चरण दासावीआ ॥ (६६४-९, रामकली, मः ५)
सोभा बणी सीगारु खसमि जाँ रावीआ ॥ (६६४-९, रामकली, मः ५)
मिलीआ आइ संजोगि जाँ तिसु भावीआ ॥१५॥ (६६४-१०, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६४-१०)
हभि गुण तैडे नानक जीउ मै कू थीए मै निरगुण ते किआ होवै ॥ (६६४-१०, रामकली, मः ५)
तउ जेवडु दातारु न कोई जाचकु सदा जाचोवै ॥१॥ (६६४-११, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६४-११)
देह छिजंदड़ी ऊण मझूणा गुरि सजणि जीउ धराइआ ॥ (६६४-११, रामकली, मः ५)
हभे सुख सुहेलड़ा सुता जिता जगु सबाइआ ॥२॥ (६६४-१२, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६४-१३)
वडा तेरा दरबारु सचा तुधु तखतु ॥ (६६४-१३, रामकली, मः ५)
सिरि साहा पातिसाहु निहचलु चउरु छतु ॥ (६६४-१३, रामकली, मः ५)
जो भावै पारब्रह्म सोई सचु निआउ ॥ (६६४-१३, रामकली, मः ५)
जे भावै पारब्रह्म निथावे मिलै थाउ ॥ (६६४-१४, रामकली, मः ५)
जो कीन्ही करतारि साई भली गल ॥ (६६४-१४, रामकली, मः ५)
जिन्ही पछाता खसमु से दरगाह मल ॥ (६६४-१५, रामकली, मः ५)
सही तेरा फुरमानु किनै न फेरीऐ ॥ (६६४-१५, रामकली, मः ५)
कारण करण करीम कुदरति तेरीऐ ॥१६॥ (६६४-१५, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६४-१६)
सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपंदड़ी लाली ॥ (६६४-१६, रामकली, मः ५)
पंधि जुलंदड़ी मेरा अंदरु ठंढा गुर दरसनु देखि निहाली ॥१॥ (६६४-१६, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६४-१७)
हठ मंझाहू मै माणकु लधा ॥ (६६४-१७, रामकली, मः ५)
मुलि न घिधा मै कू सतिगुरि दिता ॥ (६६४-१७, रामकली, मः ५)
ढूंढ वञाई थीआ थिता ॥ (६६४-१८, रामकली, मः ५)

जनमु पदारथु नानक जिता ॥२॥ (६६४-१८, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६४-१८)
जिस कै मसतकि करमु होइ सो सेवा लागा ॥ (६६४-१८, रामकली, मः ५)
जिसु गुर मिलि कमलु प्रगासिआ सो अनदिनु जागा ॥ (६६४-१९, रामकली, मः ५)
लगा रंगु चरणारबिंद सभु भ्रमु भउ भागा ॥ (६६४-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६६५

आतमु जिता गुरमती आगंजत पागा ॥ (६६५-१, रामकली, मः ५)
जिसहि धिआइआ पारब्रह्मु सो कलि महि तागा ॥ (६६५-१, रामकली, मः ५)
साधू संगति निरमला अठसठि मजनागा ॥ (६६५-२, रामकली, मः ५)
जिसु प्रभु मिलिआ आपणा सो पुरखु सभागा ॥ (६६५-२, रामकली, मः ५)
नानक तिसु बलिहारणै जिसु एवड भागा ॥१७॥ (६६५-३, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६५-३)
जाँ पिरु अंदरि ताँ धन बाहरि ॥ (६६५-३, रामकली, मः ५)
जाँ पिरु बाहरि ताँ धन माहरि ॥ (६६५-४, रामकली, मः ५)
बिनु नावै बहु फेरु फिराहरि ॥ (६६५-४, रामकली, मः ५)
सतिगुरि संगि दिखाइआ जाहरि ॥ (६६५-४, रामकली, मः ५)
जन नानक सचे सचि समाहरि ॥१॥ (६६५-५, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६५-५)
आहर सभि करदा फिरै आहरु इकु न होइ ॥ (६६५-५, रामकली, मः ५)
नानक जितु आहरि जगु उधरै विरला बूझै कोइ ॥२॥ (६६५-६, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६५-६)
वडी हू वडा अपारु तेरा मरतबा ॥ (६६५-६, रामकली, मः ५)
रंग परंग अनेक न जापन्हि करतबा ॥ (६६५-७, रामकली, मः ५)
जीआ अंदरि जीउ सभु किछु जाणला ॥ (६६५-७, रामकली, मः ५)
सभु किछु तेरै वसि तेरा घरु भला ॥ (६६५-७, रामकली, मः ५)
तेरै घरि आनंदु वधाई तुधु घरि ॥ (६६५-८, रामकली, मः ५)
माणु महता तेजु आपणा आपि जरि ॥ (६६५-८, रामकली, मः ५)
सर्ब कला भरपूरु दिसै जत कता ॥ (६६५-९, रामकली, मः ५)
नानक दासनि दासु तुधु आगै बिनवता ॥१८॥ (६६५-९, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६५-९)
छतड़े बाजार सोहनि विचि वपारीए ॥ (६६५-१०, रामकली, मः ५)
वखरु हिकु अपारु नानक खटे सो धणी ॥१॥ (६६५-१०, रामकली, मः ५)
महला ५ ॥ (६६५-१०)
कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ (६६५-१०, रामकली, कबीर)

जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥२॥ (६६५-११, रामकली, कबीर)
पउड़ी ॥ (६६५-११)
सफलिउ बिरखु सुहावड़ा हरि सफल अमृता ॥ (६६५-१२, रामकली, मः ५)
मनु लोचै उन्ह मिलण कउ किउ वंञै घिता ॥ (६६५-१२, रामकली, मः ५)
वरना चिहना बाहरा ओहु अगमु अजिता ॥ (६६५-१२, रामकली, मः ५)
ओहु पिआरा जीअ का जो खोल्है भिता ॥ (६६५-१३, रामकली, मः ५)
सेवा करी तुसाड़ीआ मै दसिहु मिता ॥ (६६५-१३, रामकली, मः ५)
कुरबाणी वंञा वारणै बले बलि किता ॥ (६६५-१४, रामकली, मः ५)
दसनि संत पिआरिआ सुणहु लाइ चिता ॥ (६६५-१४, रामकली, मः ५)
जिसु लिखिआ नानक दास तिसु नाउ अमृतु सतिगुरि दिता ॥१९॥ (६६५-१५, रामकली, मः ५)
सलोक महला ५ ॥ (६६५-१५)
कबीर धरती साध की तस्कर बैसहि गाहि ॥ (६६५-१५, रामकली, मः ५)
धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥१॥ (६६५-१६, रामकली, मः ५)
महला ५ ॥ (६६५-१६)
कबीर चावल कारणे तुख कउ मुहली लाइ ॥ (६६५-१७, रामकली, मः ५)
संगि कुसंगी बैसते तब पूछे धर्म राइ ॥२॥ (६६५-१७, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६५-१७)
आपे ही वड परवारु आपि इकातीआ ॥ (६६५-१८, रामकली, मः ५)
आपणी कीमति आपि आपे ही जातीआ ॥ (६६५-१८, रामकली, मः ५)
सभु किछु आपे आपि आपि उपंनिआ ॥ (६६५-१८, रामकली, मः ५)
आपणा कीता आपि आपि वरंनिआ ॥ (६६५-१९, रामकली, मः ५)
धंनु सु तेरा थानु जिथै तू वुठा ॥ (६६५-१९, रामकली, मः ५)

पन्ना ६६६

धंनु सु तेरे भगत जिन्ही सचु तूं डिठा ॥ (६६६-१, रामकली, मः ५)
जिस नो तेरी दइआ सलाहे सोइ तुधु ॥ (६६६-१, रामकली, मः ५)
जिसु गुर भेटे नानक निर्मल सोई सुधु ॥२०॥ (६६६-१, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (६६६-२)
फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बागु ॥ (६६६-२, रामकली, मः ५)
जो नर पीरि निवाजिआ तिन्हा अंच न लाग ॥१॥ (६६६-२, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (६६६-३)
फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवन्नड़ी देह ॥ (६६६-३, रामकली, मः ५)
विरले केई पाईअनि जिन्हा पिआरे नेह ॥२॥ (६६६-३, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (६६६-४)
जपु तपु संजमु दइआ धरमु जिसु देहि सु पाए ॥ (६६६-४, रामकली, मः ५)

जिसु बुझाइहि अगनि आपि सो नामु धिआए ॥ (੬੬੬-੪, रामकली, मः ५)
अंतरजामी अगम पुरखु इक दृसटि दिखाए ॥ (੬੬੬-੫, रामकली, मः ५)
साधसंगति कै आसरै प्रभ सिउ रंगु लाए ॥ (੬੬੬-੫, रामकली, मः ५)
अउगण कटि मुखु उजला हरि नामि तराए ॥ (੬੬੬-੬, रामकली, मः ५)
जनम मरण भउ कटिओनु फिरि जोनि न पाए ॥ (੬੬੬-੬, रामकली, मः ५)
अंध कूप ते काढिअनु लड़ु आपि फड़ाए ॥ (੬੬੬-੭, रामकली, मः ५)
नानक बखसि मिलाइअनु रखे गलि लाए ॥२१॥ (੬੬੬-੭, रामकली, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (੬੬੬-੮)
मुहबति जिसु खुदाइ दी रता रंगि चलूलि ॥ (੬੬੬-੮, रामकली, मः ५)
नानक विरले पाईअहि तिसु जन कीम न मूलि ॥१॥ (੬੬੬-੮, रामकली, मः ५)
मः ५ ॥ (੬੬੬-੯)
अंदरु विधा सचि नाइ बाहरि भी सचु डिठोमि ॥ (੬੬੬-੯, रामकली, मः ५)
नानक रविआ हभ थाइ वणि तृणि तृभवणि रोमि ॥२॥ (੬੬੬-੯, रामकली, मः ५)
पउड़ी ॥ (੬੬੬-੧੦)
आपे कीतो रचनु आपे ही रतिआ ॥ (੬੬੬-੧੦, रामकली, मः ५)
आपे होइओ इकु आपे बहु भतिआ ॥ (੬੬੬-੧੦, रामकली, मः ५)
आपे सभना मंझि आपे बाहरा ॥ (੬੬੬-੧੧, रामकली, मः ५)
आपे जाणहि दूरि आपे ही जाहरा ॥ (੬੬੬-੧੧, रामकली, मः ५)
आपे होवहि गुपतु आपे परगटीऐ ॥ (੬੬੬-੧੧, रामकली, मः ५)
कीमति किसै न पाइ तेरी थटीऐ ॥ (੬੬੬-੧੨, रामकली, मः ५)
गहिर गम्भीरु अथाहु अपारु अगणतु तूं ॥ (੬੬੬-੧੨, रामकली, मः ५)
नानक वरतै इकु इको इकु तूं ॥२२॥१॥२॥ सुधु ॥ (੬੬੬-੧੩, रामकली, मः ५)
रामकली की वार राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी (੬੬੬-੧੪)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (੬੬੬-੧੪)
नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ (੬੬੬-੧੫, रामकली, बलवंडि ते सता)
दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दानु पड़ीवदै ॥ (੬੬੬-੧੫, रामकली, बलवंडि ते सता)
नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ (੬੬੬-੧੬, रामकली, बलवंडि ते सता)
लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अमृतु पीवदै ॥ (੬੬੬-੧੬, रामकली, बलवंडि ते सता)
मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥ (੬੬੬-੧੭, रामकली, बलवंडि ते सता)
गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ (੬੬੬-੧੭, रामकली, बलवंडि ते सता)
सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥ (੬੬੬-੧੮, रामकली, बलवंडि ते सता)
लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ (੬੬੬-੧੮, रामकली, बलवंडि ते सता)
जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ (੬੬੬-੧੮, रामकली, बलवंडि ते सता)
झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ (੬੬੬-੧੯, रामकली, बलवंडि ते सता)
करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ (੬੬੬-੧੯, रामकली, बलवंडि ते सता)

लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ (६६७-१, रामकली, बलवंडि ते सता)
खरचे दिति खसम्म दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ (६६७-२, रामकली, बलवंडि ते सता)
होवै सिफति खसम्म दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ (६६७-२, रामकली, बलवंडि ते सता)
तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ (६६७-३, रामकली, बलवंडि ते सता)
सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ (६६७-३, रामकली, बलवंडि ते सता)
पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कन्न् मुरटीऐ ॥ (६६७-४, रामकली, बलवंडि ते सता)
दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइन्हि छटीऐ ॥ (६६७-४, रामकली, बलवंडि ते सता)
जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ (६६७-५, रामकली, बलवंडि ते सता)
कउणु हारे किनि उवटीऐ ॥२॥ (६६७-५, रामकली, बलवंडि ते सता)
जिनि कीती सो मन्नणा को सालु जिवाहे साली ॥ (६६७-५, रामकली, बलवंडि ते सता)
धर्म राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ (६६७-६, रामकली, बलवंडि ते सता)
सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ (६६७-६, रामकली, बलवंडि ते सता)
गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ (६६७-७, रामकली, बलवंडि ते सता)
नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ (६६७-७, रामकली, बलवंडि ते सता)
दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥ (६६७-८, रामकली, बलवंडि ते सता)
दरि दरवेसु खसम्म दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ (६६७-८, रामकली, बलवंडि ते सता)
बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ (६६७-९, रामकली, बलवंडि ते सता)
लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अमृतु खीरि घिआली ॥ (६६७-९, रामकली, बलवंडि ते सता)
गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ (६६७-१०, रामकली, बलवंडि ते सता)
पए कबूलु खसम्म नालि जाँ घाल मरदी घाली ॥ (६६७-१०, रामकली, बलवंडि ते सता)
माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥३॥ (६६७-११, रामकली, बलवंडि ते सता)
होरिंओ गंग वहाईऐ दुनिआई आखै कि किओनु ॥ (६६७-११, रामकली, बलवंडि ते सता)
नानक ईसरि जगनाथि उचहदी वैणु विरिकिओनु ॥ (६६७-१२, रामकली, बलवंडि ते सता)
माधाणा परबतु करि नेतृ बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ (६६७-१२, रामकली, बलवंडि ते सता)
चउदह रतन निकालिअनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ (६६७-१३, रामकली, बलवंडि ते सता)
कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ (६६७-१४, रामकली, बलवंडि ते सता)
लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ (६६७-१४, रामकली, बलवंडि ते सता)
जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ (६६७-१५, रामकली, बलवंडि ते सता)
सिखाँ पुत्राँ घोखि कै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ (६६७-१५, रामकली, बलवंडि ते सता)
जाँ सुधोसु ताँ लहणा टिकिओनु ॥४॥ (६६७-१६, रामकली, बलवंडि ते सता)
फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ (६६७-१६, रामकली, बलवंडि ते सता)
जपु तपु संजमु नालि तुधु होरु मुचु गरूरु ॥ (६६७-१७, रामकली, बलवंडि ते सता)
लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ (६६७-१७, रामकली, बलवंडि ते सता)

वरिहऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ (९६७-१७, रामकली, बलवंडि ते सता)
जितु सु हाथ न लभई तूं ओहु ठरूरु ॥ (९६७-१८, रामकली, बलवंडि ते सता)
नउ निधि नामु निधानु है तुधु विचि भरपूरु ॥ (९६७-१८, रामकली, बलवंडि ते सता)
निंदा तेरी जो करे सो वंञै चूरु ॥ (९६७-१९, रामकली, बलवंडि ते सता)
नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ (९६७-१९, रामकली, बलवंडि ते सता)
फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥५॥ (९६७-१९, रामकली, बलवंडि ते सता)

पन्ना ९६८

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ (९६८-१, रामकली, बलवंडि ते सता)
पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ (९६८-१, रामकली, बलवंडि ते सता)
जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ (९६८-२, रामकली, बलवंडि ते सता)
जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ (९६८-२, रामकली, बलवंडि ते सता)
चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ (९६८-२, रामकली, बलवंडि ते सता)
घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ (९६८-३, रामकली, बलवंडि ते सता)
धणखु चड़ाइओ सत दा जस हंदा बाणु ॥ (९६८-३, रामकली, बलवंडि ते सता)
कलि विचि धू अंधारु सा चड़िआ रै भाणु ॥ (९६८-४, रामकली, बलवंडि ते सता)
सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ (९६८-४, रामकली, बलवंडि ते सता)
नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ (९६८-४, रामकली, बलवंडि ते सता)
चारे कुंडाँ सुझीओसु मन महि सबदु परवाणु ॥ (९६८-५, रामकली, बलवंडि ते सता)
आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ (९६८-५, रामकली, बलवंडि ते सता)
अउतरिआ अउतारु लै सो पुरखु सुजाणु ॥ (९६८-६, रामकली, बलवंडि ते सता)
झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ (९६८-६, रामकली, बलवंडि ते सता)
जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ (९६८-७, रामकली, बलवंडि ते सता)
किआ सालाही सचे पातिसाह जाँ तू सुघड़ु सुजाणु ॥ (९६८-७, रामकली, बलवंडि ते सता)
दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ (९६८-७, रामकली, बलवंडि ते सता)
नानक हंदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ (९६८-८, रामकली, बलवंडि ते सता)
सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ (९६८-८, रामकली, बलवंडि ते सता)
पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥ (९६८-९, रामकली, बलवंडि ते सता)
धन्नु धन्नु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ (९६८-९, रामकली, बलवंडि ते सता)
पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ (९६८-९, रामकली, बलवंडि ते सता)
सिखी अतै संगती पारब्रह्मु करि नमसकारिआ ॥ (९६८-१०, रामकली, बलवंडि ते सता)
अटलु अथाहु अतोलु तू तेरा अंतु न पारावारिआ ॥ (९६८-१०, रामकली, बलवंडि ते सता)
जिन्ही तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ (९६८-११, रामकली, बलवंडि ते सता)
लबु लोभु कामु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥ (९६८-११, रामकली, बलवंडि ते सता)
धन्नु सु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ (९६८-१२, रामकली, बलवंडि ते सता)

नानकु तू लहणा तूहै गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ (६६८-१२, रामकली, बलवंडि ते सता)
गुरु डिठा ताँ मनु साधारिआ ॥७॥ (६६८-१३, रामकली, बलवंडि ते सता)
चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ (६६८-१३, रामकली, बलवंडि ते सता)
आपीन्है आपु साजिओनु आपे ही थंमि्ह खलोआ ॥ (६६८-१४, रामकली, बलवंडि ते सता)
आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ (६६८-१४, रामकली, बलवंडि ते सता)
सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ (६६८-१५, रामकली, बलवंडि ते सता)
तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ ॥ (६६८-१५, रामकली, बलवंडि ते सता)
उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ (६६८-१६, रामकली, बलवंडि ते सता)
जिन्ही गुरू न सेविओ मनमुखा पइआ मोआ ॥ (६६८-१६, रामकली, बलवंडि ते सता)
दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ (६६८-१७, रामकली, बलवंडि ते सता)
चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥८॥१॥ (६६८-१७, रामकली, बलवंडि ते सता)
रामकली बाणी भगता की ॥ (६६८-१९)
कबीर जीउ (६६८-१९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६८-१९)
काइआ कलालनि लाहनि मेलउ गुर का सबदु गुड़ु कीनु रे ॥ (६६८-१९, रामकली, भगत कबीर जी)

पन्ना ६६९

तृसना कामु क्रोधु मद मतसर काटि काटि कसु दीनु रे ॥१॥ (६६९-१, रामकली, भगत कबीर जी)
कोई है रे संतु सहज सुख अंतरि जा कउ जपु तपु देउ दलाली रे ॥ (६६९-१, रामकली, भगत कबीर जी)
एक बूंद भरि तनु मनु देवउ जो मदु देइ कलाली रे ॥१॥ रहाउ ॥ (६६९-२, रामकली, भगत कबीर जी)
भवन चतुर दस भाठी कीन्ही ब्रह्म अगनि तनि जारी रे ॥ (६६९-३, रामकली, भगत कबीर जी)
मुद्रा मदक सहज धुनि लागी सुखमन पोचनहारी रे ॥२॥ (६६९-३, रामकली, भगत कबीर जी)
तीर्थ बरत नेम सुचि संजम रवि ससि गहनै देउ रे ॥ (६६९-४, रामकली, भगत कबीर जी)
सुरति पिआल सुधा रसु अमृतु एहु महा रसु पेउ रे ॥३॥ (६६९-५, रामकली, भगत कबीर जी)
निझर धार चुऐ अति निर्मल इह रस मनूआ रातो रे ॥ (६६९-५, रामकली, भगत कबीर जी)
कहि कबीर सगले मद छूछे इहै महा रसु साचो रे ॥४॥१॥ (६६९-६, रामकली, भगत कबीर जी)
गुड़ु करि गिआनु धिआनु करि महूआ भउ भाठी मन धारा ॥ (६६९-६, रामकली, भगत कबीर जी)
सुखमन नारी सहज समानी पीवै पीवनहारा ॥१॥ (६६९-७, रामकली, भगत कबीर जी)
अउधू मेरा मनु मतवारा ॥ (६६९-७, रामकली, भगत कबीर जी)
उनमद चढा मदन रसु चाखिआ तृभवन भइआ उजिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६६९-८, रामकली, भगत कबीर जी)
दुइ पुर जोरि रसाई भाठी पीउ महा रसु भारी ॥ (६६९-८, रामकली, भगत कबीर जी)
कामु क्रोधु दुइ कीए जलेता छूटि गई संसारी ॥२॥ (६६९-९, रामकली, भगत कबीर जी)
प्रगट प्रगास गिआन गुर गंमित सतिगुर ते सुधि पाई ॥ (६६९-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
दासु कबीरु तासु मद माता उचकि न कबहू जाई ॥३॥२॥ (६६९-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
तूं मेरो मेरु परबतु सुआमी ओट गही मै तेरी ॥ (६६९-११, रामकली, भगत कबीर जी)

ना तुम डोलहु ना हम गिरते रखि लीनी हरि मेरी ॥१॥ (६६९-११, रामकली, भगत कबीर जी)
अब तब जब कब तुही तुही ॥ (६६९-१२, रामकली, भगत कबीर जी)
हम तुअ परसादि सुखी सद ही ॥१॥ रहाउ ॥ (६६९-१२, रामकली, भगत कबीर जी)
तोरे भरोसे मगहर बसिओ मेरे तन की तपति बुझाई ॥ (६६९-१३, रामकली, भगत कबीर जी)
पहिले दरसनु मगहर पाइओ फुनि कासी बसे आई ॥२॥ (६६९-१३, रामकली, भगत कबीर जी)
जैसा मगहरु तैसी कासी हम एकै करि जानी ॥ (६६९-१४, रामकली, भगत कबीर जी)
हम निर्धन जिउ इहु धनु पाइआ मरते फूटि गुमानी ॥३॥ (६६९-१४, रामकली, भगत कबीर जी)
करै गुमानु चुभहि तिसु सूला को काढन कउ नाही ॥ (६६९-१५, रामकली, भगत कबीर जी)
अजै सु चोभ कउ बिल्ल बिलाते नरके घोर पचाही ॥४॥ (६६९-१५, रामकली, भगत कबीर जी)
कवनु नरकु किआ सुरगु बिचारा संतन दोऊ रादे ॥ (६६९-१६, रामकली, भगत कबीर जी)
हम काहू की काणि न कढते अपने गुर परसादे ॥५॥ (६६९-१६, रामकली, भगत कबीर जी)
अब तउ जाइ चढे सिंघासनि मिले है सारिंगपानी ॥ (६६९-१७, रामकली, भगत कबीर जी)
राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी ॥६॥३॥ (६६९-१८, रामकली, भगत कबीर जी)
संता मानउ दूता डानउ इह कुटवारी मेरी ॥ (६६९-१८, रामकली, भगत कबीर जी)
दिवस रैनि तेरे पाउ पलोसउ केस चवर करि फेरी ॥१॥ (६६९-१९, रामकली, भगत कबीर जी)
हम कूकर तेरे दरबारि ॥ (६६९-१९, रामकली, भगत कबीर जी)
भउकहि आगै बदनु पसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (६६९-१९, रामकली, भगत कबीर जी)

पन्ना ६७०

पूरब जनम हम तुम्रे सेवक अब तउ मिटिआ न जाई ॥ (६७०-१, रामकली, भगत कबीर जी)
तेरे दुआरै धुनि सहज की माथै मेरे दगाई ॥२॥ (६७०-१, रामकली, भगत कबीर जी)
दागे होहि सु रन महि जूझहि बिनु दागे भगि जाई ॥ (६७०-२, रामकली, भगत कबीर जी)
साधू होइ सु भगति पछानै हरि लए खजानै पाई ॥३॥ (६७०-२, रामकली, भगत कबीर जी)
कोठरे महि कोठरी पर्म कोठी बीचारि ॥ (६७०-३, रामकली, भगत कबीर जी)
गुरि दीनी बसतु कबीर कउ लेवहु बसतु सम्गरि ॥४॥ (६७०-३, रामकली, भगत कबीर जी)
कबीरि दीई संसार कउ लीनी जिसु मसतकि भागु ॥ (६७०-४, रामकली, भगत कबीर जी)
अमृत रसु जिनि पाइआ थिरु ता का सोहागु ॥५॥४॥ (६७०-५, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥ (६७०-५, रामकली, भगत कबीर जी)
जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ पंडितु हरि न कहै ॥१॥ (६७०-६, रामकली, भगत कबीर जी)
काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ॥ (६७०-६, रामकली, भगत कबीर जी)
रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥१॥ रहाउ ॥ (६७०-७, रामकली, भगत कबीर जी)
आपन ऊच नीच घरि भोजनु हठे कर्म करि उदरु भरहि ॥ (६७०-७, रामकली, भगत कबीर जी)
चउदस अमावस रचि रचि माँगहि कर दीपकु लै कूपि परहि ॥२॥ (६७०-८, रामकली, भगत कबीर जी)
तूं ब्रहमनु मै कासीक जुलहा मुहि तोहि बराबरी कैसे कै बनहि ॥ (६७०-८, रामकली, भगत कबीर जी)
हमरे राम नाम कहि उबरे बेद भरोसे पाँडे डूबि मरहि ॥३॥५॥ (६७०-९, रामकली, भगत कबीर जी)

तरवरु एकु अनंत डार साखा पुहप पत्र रस भरीआ ॥ (६७०-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
इह अमृत की बाड़ी है रे तिनि हरि पूरै करीआ ॥१॥ (६७०-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
जानी जानी रे राजा राम की कहानी ॥ (६७०-११, रामकली, भगत कबीर जी)
अंतरि जोति राम परगासा गुरमुखि बिरलै जानी ॥१॥ रहाउ ॥ (६७०-११, रामकली, भगत कबीर जी)
भवरु एकु पुहप रस बीधा बारह ले उर धरिआ ॥ (६७०-१२, रामकली, भगत कबीर जी)
सोरह मधे पवनु झकोरिआ आकासे फरु फरिआ ॥२॥ (६७०-१२, रामकली, भगत कबीर जी)
सहज सुंनि इकु बिरवा उपजिआ धरती जलहरु सोखिआ ॥ (६७०-१३, रामकली, भगत कबीर जी)
कहि कबीर हउ ता का सेवकु जिनि इहु बिरवा देखिआ ॥३॥६॥ (६७०-१४, रामकली, भगत कबीर जी)
मुंद्रा मोनि दइआ करि झोली पत्र का करहु बीचारु रे ॥ (६७०-१४, रामकली, भगत कबीर जी)
खिंथा इहु तनु सीअउ अपना नामु करउ आधारु रे ॥१॥ (६७०-१५, रामकली, भगत कबीर जी)
ऐसा जोगु कमावहु जोगी ॥ (६७०-१५, रामकली, भगत कबीर जी)
जप तप संजमु गुरमुखि भोगी ॥१॥ रहाउ ॥ (६७०-१६, रामकली, भगत कबीर जी)
बुधि बिभूति चढावउ अपुनी सिंगी सुरति मिलाई ॥ (६७०-१६, रामकली, भगत कबीर जी)
करि बैरागु फिरउ तनि नगरी मन की किंगुरी बजाई ॥२॥ (६७०-१७, रामकली, भगत कबीर जी)
पंच ततु लै हिरदै राखहु रहै निरालम ताड़ी ॥ (६७०-१७, रामकली, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ॥३॥७॥ (६७०-१८, रामकली, भगत कबीर जी)
कवन काज सिरजे जग भीतरि जनमि कवन फलु पाइआ ॥ (६७०-१९, रामकली, भगत कबीर जी)
भव निधि तरन तारन चिंतामनि इक निमख न इहु मनु लाइआ ॥१॥ (६७०-१९, रामकली, भगत कबीर जी)

पन्ना ६७१

गोबिंद हम ऐसे अपराधी ॥ (६७१-१, रामकली, भगत कबीर जी)
जिनि प्रभि जीउ पिंडु था दीआ तिस की भाउ भगति नही साधी ॥१॥ रहाउ ॥ (६७१-१, रामकली, भगत कबीर जी)
पर धन पर तन पर ती निंदा पर अपबादु न छूटै ॥ (६७१-२, रामकली, भगत कबीर जी)
आवा गवनु होतु है फुनि फुनि इहु परसंगु न तूटै ॥२॥ (६७१-३, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह घरि कथा होत हरि संतन इक निमख न कीन्हो मै फेरा ॥ (६७१-३, रामकली, भगत कबीर जी)
लम्पट चोर दूत मतवारे तिन संगि सदा बसेरा ॥३॥ (६७१-४, रामकली, भगत कबीर जी)
काम क्रोध माइआ मद मतसर ए सम्पै मो माही ॥ (६७१-४, रामकली, भगत कबीर जी)
दइआ धरमु अरु गुर की सेवा ए सुपनंतरि नाही ॥४॥ (६७१-५, रामकली, भगत कबीर जी)
दीन दइआल कृपाल दमोदर भगति बछल भै हारी ॥ (६७१-५, रामकली, भगत कबीर जी)
कहत कबीर भीर जन राखहु हरि सेवा करउ तुम्हारी ॥५॥८॥ (६७१-६, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि होइ मुकति दुआरु ॥ (६७१-७, रामकली, भगत कबीर जी)
जाहि बैकुंठि नही संसारि ॥ (६७१-७, रामकली, भगत कबीर जी)
निरभउ कै घरि बजावहि तूर ॥ (६७१-७, रामकली, भगत कबीर जी)
अनहद बजहि सदा भरपूर ॥१॥ (६७१-८, रामकली, भगत कबीर जी)

ऐसा सिमरनु करि मन माहि ॥ (६७१-८, रामकली, भगत कबीर जी)
बिनु सिमरन मुकति कत नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (६७१-८, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि नाही ननकारु ॥ (६७१-९, रामकली, भगत कबीर जी)
मुकति करै उतरै बहु भारु ॥ (६७१-९, रामकली, भगत कबीर जी)
नमसकारु करि हिरदै माहि ॥ (६७१-९, रामकली, भगत कबीर जी)
फिरि फिरि तेरा आवनु नाहि ॥२॥ (६७१-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि करहि तू केल ॥ (६७१-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
दीपकु बाँधि धरिओ बिनु तेल ॥ (६७१-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
सो दीपकु अमरकु संसारि ॥ (६७१-११, रामकली, भगत कबीर जी)
काम क्रोध बिखु काढीले मारि ॥३॥ (६७१-११, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि तेरी गति होइ ॥ (६७१-११, रामकली, भगत कबीर जी)
सो सिमरनु रखु कंठि परोइ ॥ (६७१-१२, रामकली, भगत कबीर जी)
सो सिमरनु करि नही राखु उतारि ॥ (६७१-१२, रामकली, भगत कबीर जी)
गुर परसादी उतरहि पारि ॥४॥ (६७१-१२, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि नाही तुहि कानि ॥ (६७१-१३, रामकली, भगत कबीर जी)
मंदरि सोवहि पटम्बर तानि ॥ (६७१-१३, रामकली, भगत कबीर जी)
सेज सुखाली बिगसै जीउ ॥ (६७१-१३, रामकली, भगत कबीर जी)
सो सिमरनु तू अनदिनु पीउ ॥५॥ (६७१-१३, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि तेरी जाइ बलाइ ॥ (६७१-१४, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि तुझु पोहै न माइ ॥ (६७१-१४, रामकली, भगत कबीर जी)
सिमरि सिमरि हरि हरि मनि गाईऐ ॥ (६७१-१४, रामकली, भगत कबीर जी)
इहु सिमरनु सतिगुर ते पाईऐ ॥६॥ (६७१-१५, रामकली, भगत कबीर जी)
सदा सदा सिमरि दिनु राति ॥ (६७१-१५, रामकली, भगत कबीर जी)
ऊठत बैठत सासि गिरासि ॥ (६७१-१६, रामकली, भगत कबीर जी)
जागु सोइ सिमरन रस भोग ॥ (६७१-१६, रामकली, भगत कबीर जी)
हरि सिमरनु पाईऐ संजोग ॥७॥ (६७१-१६, रामकली, भगत कबीर जी)
जिह सिमरनि नाही तुझु भार ॥ (६७१-१७, रामकली, भगत कबीर जी)
सो सिमरनु राम नाम अधारु ॥ (६७१-१७, रामकली, भगत कबीर जी)
कहि कबीर जा का नही अंतु ॥ (६७१-१७, रामकली, भगत कबीर जी)
तिस के आगे तंतु न मंतु ॥८॥९॥ (६७१-१७, रामकली, भगत कबीर जी)
रामकली घरु २ बाणी कबीर जी की (६७१-१९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७१-१९)
बंधचि बंधनु पाइआ ॥ (६७१-१९, रामकली, भगत कबीर जी)
मुकतै गुरि अनलु बुझाइआ ॥ (६७१-१९, रामकली, भगत कबीर जी)

जब नख सिख इहु मनु चीन्हा ॥ (६७२-१, रामकली, भगत कबीर जी)
तब अंतरि मजनु कीन्हा ॥१॥ (६७२-१, रामकली, भगत कबीर जी)
पवनपति उनमनि रहनु खरा ॥ (६७२-१, रामकली, भगत कबीर जी)
नही मिरतु न जनमु जरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६७२-२, रामकली, भगत कबीर जी)
उलटी ले सकति सहारं ॥ (६७२-२, रामकली, भगत कबीर जी)
पैसीले गगन मझारं ॥ (६७२-२, रामकली, भगत कबीर जी)
बेधीअले चक्र भुअंगा ॥ (६७२-३, रामकली, भगत कबीर जी)
भेटीअले राइ निसंगा ॥२॥ (६७२-३, रामकली, भगत कबीर जी)
चूकीअले मोह मइआसा ॥ (६७२-३, रामकली, भगत कबीर जी)
ससि कीनो सूर गिरासा ॥ (६७२-४, रामकली, भगत कबीर जी)
जब कुम्भकु भरिपुरि लीणा ॥ (६७२-४, रामकली, भगत कबीर जी)
तह बाजे अनहद बीणा ॥३॥ (६७२-४, रामकली, भगत कबीर जी)
बकतै बकि सबदु सुनाइआ ॥ (६७२-४, रामकली, भगत कबीर जी)
सुनतै सुनि मंनि बसाइआ ॥ (६७२-५, रामकली, भगत कबीर जी)
करि करता उतरसि पारं ॥ (६७२-५, रामकली, भगत कबीर जी)
कहै कबीरा सारं ॥४॥१॥१०॥ (६७२-५, रामकली, भगत कबीर जी)
चंदु सूरजु दुइ जोति सरूपु ॥ (६७२-६, रामकली, भगत कबीर जी)
जोती अंतरि ब्रह्मु अनूपु ॥१॥ (६७२-६, रामकली, भगत कबीर जी)
करु रे गिआनी ब्रह्म बीचारु ॥ (६७२-६, रामकली, भगत कबीर जी)
जोती अंतरि धरिआ पसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (६७२-६, रामकली, भगत कबीर जी)
हीरा देखि हीरे करउ आदेसु ॥ (६७२-७, रामकली, भगत कबीर जी)
कहै कबीरु निरंजन अलेखु ॥२॥२॥११॥ (६७२-७, रामकली, भगत कबीर जी)
दुनीआ हुसीआर बेदार जागत मुसीअत हउ रे भाई ॥ (६७२-८, रामकली, भगत कबीर जी)
निगम हुसीआर पहरूआ देखत जमु ले जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (६७२-८, रामकली, भगत कबीर जी)
नींबु भइओ आँबु आँबु भइओ नींबा केला पाका झारि ॥ (६७२-६, रामकली, भगत कबीर जी)
नालीएर फलु सेबरि पाका मूरख मुगध गवार ॥१॥ (६७२-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
हरि भइओ खाँडु रेतु महि बिखरिओ हसतंी चुनिओ न जाई ॥ (६७२-१०, रामकली, भगत कबीर जी)
कहि कमीर कुल जाति पाँति तजि चीटी होइ चुनि खाई ॥२॥३॥१२॥ (६७२-११, रामकली, भगत कबीर जी)
बाणी नामदेउ जीउ की रामकली घरु १ (६७२-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७२-१२)
आनीले कागदु काटीले गूडी आकास मधे भरमीअले ॥ (६७२-१३, रामकली, भगत नामदेव जी)
पंच जना सिउ बात बतऊआ चीतु सु डोरी राखीअले ॥१॥ (६७२-१३, रामकली, भगत नामदेव जी)
मनु राम नामा बेधीअले ॥ (६७२-१४, रामकली, भगत नामदेव जी)

जैसे कनिक कला चितु माँडीअले ॥१॥ रहाउ ॥ (६७२-१४, रामकली, भगत नामदेव जी)
आनीले कुम्भु भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरीए ॥ (६७२-१४, रामकली, भगत नामदेव जी)
हसत बिनोद बीचार करती है चीतु सु गागरि राखीअले ॥२॥ (६७२-१५, रामकली, भगत नामदेव जी)
मंदरु एकु दुआर दस जा के गऊ चरावन छाडीअले ॥ (६७२-१६, रामकली, भगत नामदेव जी)
पाँच कोस पर गऊ चरावत चीतु सु बछरा राखीअले ॥३॥ (६७२-१६, रामकली, भगत नामदेव जी)
कहत नामदेउ सुनहु तिलोचन बालकु पालन पउढीअले ॥ (६७२-१७, रामकली, भगत नामदेव जी)
अंतरि बाहरि काज बिरूधी चीतु सु बारिक राखीअले ॥४॥१॥ (६७२-१७, रामकली, भगत नामदेव जी)
बेद पुरान सासत्र आनंता गीत कबित न गावउगो ॥ (६७२-१८, रामकली, भगत नामदेव जी)

पन्ना ६७३

अखंड मंडल निरंकार महि अनहद बेनु बजावउगो ॥१॥ (६७३-१, रामकली, भगत नामदेव जी)
बैरागी रामहि गावउगो ॥ (६७३-१, रामकली, भगत नामदेव जी)
सबदि अतीत अनाहदि राता आकुल कै घरि जाउगो ॥१॥ रहाउ ॥ (६७३-१, रामकली, भगत नामदेव जी)
इड़ा पिंगुला अउरु सुखमना पउनै बंधि रहाउगो ॥ (६७३-२, रामकली, भगत नामदेव जी)
चंदु सूरजु दुइ सम करि राखउ ब्रह्म जोति मिलि जाउगो ॥२॥ (६७३-३, रामकली, भगत नामदेव जी)
तीर्थ देखि न जल महि पैसउ जीअ जंत न सतावउगो ॥ (६७३-३, रामकली, भगत नामदेव जी)
अठसठि तीर्थ गुरू दिखाए घट ही भीतरि न्ाउगो ॥३॥ (६७३-४, रामकली, भगत नामदेव जी)
पंच सहाई जन की सोभा भलो भलो न कहावउगो ॥ (६७३-४, रामकली, भगत नामदेव जी)
नामा कहै चितु हरि सिउ राता सुन्न समाधि समाउगो ॥४॥२॥ (६७३-५, रामकली, भगत नामदेव जी)
माइ न होती बापु न होता करमु न होती काइआ ॥ (६७३-६, रामकली, भगत नामदेव जी)
हम नही होते तुम नही होते कवनु कहाँ ते आइआ ॥१॥ (६७३-६, रामकली, भगत नामदेव जी)
राम कोइ न किस ही केरा ॥ (६७३-७, रामकली, भगत नामदेव जी)
जैसे तरवरि पंखि बसेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (६७३-७, रामकली, भगत नामदेव जी)
चंदु न होता सूरु न होता पानी पवनु मिलाइआ ॥ (६७३-७, रामकली, भगत नामदेव जी)
सासतु न होता बेदु न होता करमु कहाँ ते आइआ ॥२॥ (६७३-८, रामकली, भगत नामदेव जी)
खेचर भूचर तुलसी माला गुर परसादी पाइआ ॥ (६७३-८, रामकली, भगत नामदेव जी)
नामा प्रणवै पर्म ततु है सतिगुर होइ लखाइआ ॥३॥३॥ (६७३-९, रामकली, भगत नामदेव जी)
रामकली घरु २ ॥ (६७३-१०)
बानारसी तपु करै उलटि तीर्थ मरै अगनि दहै काइआ कलपु कीजै ॥ (६७३-१०, रामकली, भगत नामदेव जी)
असुमेध जगु कीजै सोना गरभ दानु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥१॥ (६७३-१०, रामकली, भगत नामदेव जी)
छोडि छोडि रे पाखंडी मन कपटु न कीजै ॥ (६७३-११, रामकली, भगत नामदेव जी)
हरि का नामु नित नितहि लीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (६७३-१२, रामकली, भगत नामदेव जी)
गंगा जउ गोदावरि जाईऐ कुंभि जउ केदार न्ाईऐ गोमती सहस गऊ दानु कीजै ॥ (६७३-१२, रामकली, भगत नामदेव जी)
कोटि जउ तीर्थ करै तनु जउ हिवाले गारै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥२॥ (६७३-१३, रामकली, भगत नामदेव जी)

असु दान गज दान सिहजा नारी भूमि दान ऐसो दानु नित नितहि कीजै ॥ (६७३-१४, रामकली, भगत नामदेव जी)
आतम जउ निरमाइलु कीजै आप बराबरि कंचनु दीजै राम नाम सरि तऊ न पूजै ॥३॥ (६७३-१४, रामकली, भगत नामदेव जी)
मनहि न कीजै रोसु जमहि न दीजै दोसु निर्मल निरबाण पदु चीन्हि लीजै ॥ (६७३-१५, रामकली, भगत नामदेव जी)
जसरथ राइ नंदु राजा मेरा राम चंदु प्रणवै नामा ततु रसु अमृतु पीजै ॥४॥४॥ (६७३-१६, रामकली, भगत नामदेव जी)
रामकली बाणी रविदास जी की (६७३-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७३-१८)
पड़ीऐ गुनीऐ नामु सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥ (६७३-१९, रामकली, भगत रविदास जी)
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥१॥ (६७३-१९, रामकली, भगत रविदास जी)

पन्ना ६७४

देव संसै गाँठि न छूटै ॥ (६७४-१, रामकली, भगत रविदास जी)
काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे ॥१॥ रहाउ ॥ (६७४-१, रामकली, भगत रविदास जी)
हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥ (६७४-२, रामकली, भगत रविदास जी)
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥२॥ (६७४-२, रामकली, भगत रविदास जी)
कहु रविदास सभै नही समझसि भूलि परे जैसे बउरे ॥ (६७४-३, रामकली, भगत रविदास जी)
मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥३॥१॥ (६७४-३, रामकली, भगत रविदास जी)
रामकली बाणी बेणी जीउ की (६७४-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७४-५)
इड़ा पिंगुला अउर सुखमना तीनि बसहि इक ठाई ॥ (६७४-६, रामकली, भगत बेणी जी)
बेणी संगमु तह पिरागु मनु मजनु करे तिथाई ॥१॥ (६७४-६, रामकली, भगत बेणी जी)
संतहु तहा निरंजन रामु है ॥ (६७४-७, रामकली, भगत बेणी जी)
गुर गमि चीनै बिरला कोइ ॥ (६७४-७, रामकली, भगत बेणी जी)
तहाँ निरंजनु रमईआ होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७४-७, रामकली, भगत बेणी जी)
देव सथानै किआ नीसाणी ॥ (६७४-८, रामकली, भगत बेणी जी)
तह बाजे सबद अनाहद बाणी ॥ (६७४-८, रामकली, भगत बेणी जी)
तह चंदु न सूरजु पउणु न पाणी ॥ (६७४-९, रामकली, भगत बेणी जी)
साखी जागी गुरमुखि जाणी ॥२॥ (६७४-९, रामकली, भगत बेणी जी)
उपजै गिआनु दुरमति छीजै ॥ (६७४-९, रामकली, भगत बेणी जी)
अमृत रसि गगनंतरि भीजै ॥ (६७४-१०, रामकली, भगत बेणी जी)
एसु कला जो जाणै भेउ ॥ (६७४-१०, रामकली, भगत बेणी जी)
भेटै तासु पर्म गुरदेउ ॥३॥ (६७४-१०, रामकली, भगत बेणी जी)
दसम दुआरा अगम अपारा पर्म पुरख की घाटी ॥ (६७४-११, रामकली, भगत बेणी जी)

ऊपरि हाटु हाट परि आला आले भीतरि थाती ॥४॥ (६७४-११, रामकली, भगत बेणी जी)
जागतु रहै सु कबहु न सोवै ॥ (६७४-१२, रामकली, भगत बेणी जी)
तीनि तिलोक समाधि पलोवै ॥ (६७४-१२, रामकली, भगत बेणी जी)
बीज मंत्रु लै हिरदै रहै ॥ (६७४-१२, रामकली, भगत बेणी जी)
मनूआ उलटि सुन्न महि गहै ॥५॥ (६७४-१३, रामकली, भगत बेणी जी)
जागतु रहै न अलीआ भाखै ॥ (६७४-१३, रामकली, भगत बेणी जी)
पाचउ इंद्री बसि करि राखै ॥ (६७४-१३, रामकली, भगत बेणी जी)
गुर की साखी राखै चीति ॥ (६७४-१४, रामकली, भगत बेणी जी)
मनु तनु अरपै क्रिसन परीति ॥६॥ (६७४-१४, रामकली, भगत बेणी जी)
कर पलव साखा बीचारे ॥ (६७४-१४, रामकली, भगत बेणी जी)
अपना जनमु न जूऐ हारे ॥ (६७४-१५, रामकली, भगत बेणी जी)
असुर नदी का बंधै मूलु ॥ (६७४-१५, रामकली, भगत बेणी जी)
पछिम फेरि चड़ावै सूरु ॥ (६७४-१५, रामकली, भगत बेणी जी)
अजरु जरै सु निझरु झरै ॥ (६७४-१५, रामकली, भगत बेणी जी)
जगन्नाथ सिउ गोसटि करै ॥७॥ (६७४-१६, रामकली, भगत बेणी जी)
चउमुख दीवा जोति दुआर ॥ (६७४-१६, रामकली, भगत बेणी जी)
पलू अनत मूलु बिचकारि ॥ (६७४-१६, रामकली, भगत बेणी जी)
सर्ब कला ले आपे रहै ॥ (६७४-१७, रामकली, भगत बेणी जी)
मनु माणकु रतना महि गुहै ॥८॥ (६७४-१७, रामकली, भगत बेणी जी)
मसतकि पदमु दुआलै मणी ॥ (६७४-१७, रामकली, भगत बेणी जी)
माहि निरंजनु त्रिभवण धणी ॥ (६७४-१८, रामकली, भगत बेणी जी)
पंच सबद निरमाइल बाजे ॥ (६७४-१८, रामकली, भगत बेणी जी)
ढुलके चवर संख घन गाजे ॥ (६७४-१८, रामकली, भगत बेणी जी)
दलि मलि दैतहु गुरमुखि गिआनु ॥ (६७४-१९, रामकली, भगत बेणी जी)
बेणी जाचै तेरा नामु ॥९॥१॥ (६७४-१९, रामकली, भगत बेणी जी)

पन्ना ६७५

रागु नट नाराइन महला ४ (६७५-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥(६७५-२)
मेरे मन जपि अहिनिसि नामु हरे ॥ (६७५-४, नट नाराइन, मः ४)
कोटि कोटि दोख बहु कीने सभ परहरि पासि धरे ॥१॥ रहाउ ॥ (६७५-४, नट नाराइन, मः ४)
हरि हरि नामु जपहि आराधहि सेवक भाइ खरे ॥ (६७५-५, नट नाराइन, मः ४)
किलबिख दोख गए सभ नीकरि जिउ पानी मैलु हरे ॥१॥ (६७५-५, नट नाराइन, मः ४)
खिनु खिनु नरु नाराइनु गावहि मुखि बोलहि नर नरहरे ॥ (६७५-६, नट नाराइन, मः ४)
पंच दोख असाध नगर महि इकु खिनु पलु दूरि करे ॥२॥ (६७५-६, नट नाराइन, मः ४)

वडभागी हरि नामु धिआवहि हरि के भगत हरे ॥ (६७५-७, नट नाराइन, मः ४)
तिन की संगति देहि प्रभ जाचउ मै मूड़ मुगध निसतरे ॥३॥ (६७५-७, नट नाराइन, मः ४)
कृपा कृपा धारि जगजीवन रखि लेवहु सरनि परे ॥ (६७५-८, नट नाराइन, मः ४)
नानकु जनु तुमरी सरनाई हरि राखहु लाज हरे ॥४॥१॥ (६७५-९, नट नाराइन, मः ४)
नट महला ४ ॥ (६७५-९)
राम जपि जन रामै नामि रले ॥ (६७५-९, नट, मः ४)
राम नामु जपिओ गुर बचनी हरि धारी हरि कृपले ॥१॥ रहाउ ॥ (६७५-१०, नट, मः ४)
हरि हरि अगम अगोचरु सुआमी जन जपि मिलि सलल सलले ॥ (६७५-१०, नट, मः ४)
हरि के संत मिलि राम रसु पाइआ हम जन कै बलि बल्ले ॥१॥ (६७५-११, नट, मः ४)
पुरखोतमु हरि नामु जनि गाइओ सभि दालद दुख दल्ले ॥ (६७५-१२, नट, मः ४)
विचि देही दोख असाध पंच धातू हरि कीए खिन परले ॥२॥ (६७५-१२, नट, मः ४)
हरि के संत मनि प्रीति लगाई जिउ देखै ससि कमले ॥ (६७५-१३, नट, मः ४)
उनवै घनु घन घनिहरु गरजै मनि बिगसै मोर मुरले ॥३॥ (६७५-१३, नट, मः ४)
हमरै सुआमी लोच हम लाई हम जीवहि देखि हरि मिले ॥ (६७५-१४, नट, मः ४)
जन नानक हरि अमल हरि लाए हरि मेलहु अनद भले ॥४॥२॥ (६७५-१५, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (६७५-१५)
मेरे मन जपि हरि हरि नामु सखे ॥ (६७५-१५, नट, मः ४)

पन्ना ६७६

गुर परसादी हरि नामु धिआइओ हम सतिगुर चरन पखे ॥१॥ रहाउ ॥ (६७६-१, नट, मः ४)
ऊतम जगन्नाथ जगदीसुर हम पापी सरनि रखे ॥ (६७६-२, नट, मः ४)
तुम वड पुरख दीन दुख भंजन हरि दीओ नामु मुखे ॥१॥ (६७६-२, नट, मः ४)
हरि गुन ऊच नीच हम गाए गुर सतिगुर संगि सखे ॥ (६७६-३, नट, मः ४)
जिउ चंदन संगि बसै निम्मु बिरखा गुन चंदन के बसखे ॥२॥ (६७६-३, नट, मः ४)
हमरे अवगन बिखिआ बिखै के बहु बार बार निमखे ॥ (६७६-४, नट, मः ४)
अवगनिआरे पाथर भारे हरि तारे संगि जनखे ॥३॥ (६७६-५, नट, मः ४)
जिन कउ तुम हरि राखहु सुआमी सभ तिन के पाप कृखे ॥ (६७६-५, नट, मः ४)
जन नानक के दइआल प्रभ सुआमी तुम दुसट तारे हरणखे ॥४॥३॥ (६७६-६, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (६७६-७)
मेरे मन जपि हरि हरि राम रंगे ॥ (६७६-७, नट, मः ४)
हरि हरि कृपा करी जगदीसुरि हरि धिआइओ जन पगि लगे ॥१॥ रहाउ ॥ (६७६-७, नट, मः ४)
जनम जनम के भूल चूक हम अब आए प्रभ सरनगे ॥ (६७६-८, नट, मः ४)
तुम सरणागति प्रतिपालक सुआमी हम राखहु वड पापगे ॥१॥ (६७६-८, नट, मः ४)
तुमरी संगति हरि को को न उधरिओ प्रभ कीए पतित पवगे ॥ (६७६-९, नट, मः ४)
गुन गावत छीपा दुसटारिओ प्रभि राखी पैज जनगे ॥२॥ (६७६-१०, नट, मः ४)

जो तुमरे गुन गावहि सुआमी हउ बलि बलि बलि तिनगे ॥ (६७६-१०, नट, मः ४)
भवन भवन पवित्र सभि कीए जह धूरि परी जन पगे ॥३॥ (६७६-११, नट, मः ४)
तुमरे गुन प्रभ कहि न सकहि हम तुम वड वड पुरख वडगे ॥ (६७६-१२, नट, मः ४)
जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु हम सेवह तुम जन पगे ॥४॥४॥ (६७६-१२, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (६७६-१३)
मेरे मन जपि हरि हरि नामु मने ॥ (६७६-१३, नट, मः ४)
जगन्नाथि किरपा प्रभि धारी मति गुरमति नाम बने ॥१॥ रहाउ ॥ (६७६-१३, नट, मः ४)
हरि जन हरि जसु हरि हरि गाइओ उपदेसि गुरू गुर सुने ॥ (६७६-१४, नट, मः ४)
किलबिख पाप नाम हरि काटे जिव खेत कृसानि लुने ॥१॥ (६७६-१५, नट, मः ४)
तुमरी उपमा तुम ही प्रभ जानहु हम कहि न सकहि हरि गुने ॥ (६७६-१५, नट, मः ४)
जैसे तुम तैसे प्रभ तुम ही गुन जानहु प्रभ अपुने ॥२॥ (६७६-१६, नट, मः ४)
माइआ फास बंध बहु बंधे हरि जपिओ खुल खुलने ॥ (६७६-१७, नट, मः ४)
जिउ जल कुंचरु तदूऐ बाँधिओ हरि चेतिओ मोख मुखने ॥३॥ (६७६-१७, नट, मः ४)
सुआमी पारब्रह्म परमेसरु तुम खोजहु जुग जुगने ॥ (६७६-१८, नट, मः ४)
तुमरी थाह पाई नही पावै जन नानक के प्रभ वडने ॥४॥५॥ (६७६-१८, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (६७६-१९)
मेरे मन कलि कीरति हरि प्रवणे ॥ (६७६-१९, नट, मः ४)
हरि हरि दइआलि दइआ प्रभ धारी लगि सतिगुर हरि जपणे ॥१॥ रहाउ ॥ (६७६-१९, नट, मः ४)

पन्ना ६७७

हरि तुम वड अगम अगोचर सुआमी सभि धिआवहि हरि रुड़णे ॥ (६७७-१, नट, मः ४)
जिन कउ तुम्रे वड कटाख है ते गुरमुखि हरि सिमरणे ॥१॥ (६७७-२, नट, मः ४)
इहु परपंचु कीआ प्रभ सुआमी सभु जगजीवनु जुगणे ॥ (६७७-३, नट, मः ४)
जिउ सललै सलल उठहि बहु लहरी मिलि सललै सलल समणे ॥२॥ (६७७-३, नट, मः ४)
जो प्रभ कीआ सु तुम ही जानहु हम नह जाणी हरि गहणे ॥ (६७७-४, नट, मः ४)
हम बारिक कउ रिद उसतति धारहु हम करह प्रभू सिमरणे ॥३॥ (६७७-४, नट, मः ४)
तुम जल निधि हरि मान सरोवर जो सेवै सभ फलणे ॥ (६७७-५, नट, मः ४)
जनु नानकु हरि हरि हरि हरि बाँछै हरि देवहु करि कृपणे ॥४॥६॥ (६७७-६, नट, मः ४)
नट नाराइन महला ४ पड़ताल (६७७-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७७-७)
मेरे मन सेव सफल हरि घाल ॥ (६७७-८, नट नाराइन, मः ४)
ले गुर पग रेन रवाल ॥ (६७७-८, नट नाराइन, मः ४)
सभि दलिद भंजि दुख दाल ॥ (६७७-८, नट नाराइन, मः ४)
हरि हो हो हो नदरि निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (६७७-८, नट नाराइन, मः ४)
हरि का गृहु हरि आपि सवारिओ हरि रंग रंग महल बेअंत लाल लाल हरि लाल ॥ (६७७-९, नट नाराइन, मः ४)

हरि आपनी कृपा करी आपि गृहि आइओ हम हरि की गुर कीई है बसीठी हम हरि देखे भई निहाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥ (६७७-१०, नट नाराइन, मः ४)
हरि आवते की खबरि गुरि पाई मनि तनि आनदो आनंद भए हरि आवते सुने मेरे लाल हरि लाल ॥ (६७७-११, नट नाराइन, मः ४)
जनु नानकु हरि हरि मिले भए गलतान हाल निहाल निहाल ॥२॥१॥७॥ (६७७-१२, नट नाराइन, मः ४)
नट महला ४ ॥ (६७७-१३)
मन मिलु संतसंगति सुभवंती ॥ (६७७-१३, नट, मः ४)
सुनि अकथ कथा सुखवंती ॥ (६७७-१३, नट, मः ४)
सभ किलविख पाप लहंती ॥ (६७७-१४, नट, मः ४)
हरि हो हो हो लिखतु लिखंती ॥१॥ रहाउ ॥ (६७७-१४, नट, मः ४)
हरि कीरति कलजुग विचि ऊतम मति गुरमति कथा भजंती ॥ (६७७-१४, नट, मः ४)
जिनि जनि सुणी मनी है जिनि जनि तिसु जन कै हउ कुरबानंती ॥१॥ (६७७-१५, नट, मः ४)
हरि अकथ कथा का जिनि रसु चाखिआ तिसु जन सभ भूख लहंती ॥ (६७७-१६, नट, मः ४)
नानक जन हरि कथा सुणि तृपते जपि हरि हरि हरि होवंती ॥२॥२॥८॥ (६७७-१७, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (६७७-१७)
कोई आनि सुनावै हरि की हरि गाल ॥ (६७७-१८, नट, मः ४)
तिस कउ हउ बलि बलि बाल ॥ (६७७-१८, नट, मः ४)
सो हरि जनु है भल भाल ॥ (६७७-१८, नट, मः ४)

पन्ना ६७८

हरि हो हो हो मेलि निहाल ॥१॥ रहाउ ॥ (६७८-१, नट, मः ४)
हरि का मारगु गुर संति बताइओ गुरि चाल दिखाई हरि चाल ॥ (६७८-१, नट, मः ४)
अंतरि कपटु चुकावहु मेरे गुरसिखहु निहकपट कमावहु हरि की हरि घाल निहाल निहाल निहाल ॥१॥ (६७८-२, नट, मः ४)
ते गुर के सिख मेरे हरि प्रभि भाए जिना हरि प्रभु जानिओ मेरा नालि ॥ (६७८-३, नट, मः ४)
जन नानक कउ मति हरि प्रभि दीनी हरि देखि निकटि हदूरि निहाल निहाल निहाल निहाल ॥२॥३॥९॥ (६७८-४, नट, मः ४)
रागु नट नाराइन महला ५ (६७८-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७८-६)
राम हउ किआ जाना किआ भावै ॥ (६७८-७, नट नाराइन, मः ५)
मनि पिआस बहुतु दरसावै ॥१॥ रहाउ ॥ (६७८-७, नट नाराइन, मः ५)
सोई गिआनी सोई जनु तेरा जिसु ऊपरि रुच आवै ॥ (६७८-७, नट नाराइन, मः ५)
कृपा करहु जिसु पुरख बिधाते सो सदा सदा तुधु धिआवै ॥१॥ (६७८-८, नट नाराइन, मः ५)
कवन जोग कवन गिआन धिआना कवन गुनी रीझावै ॥ (६७८-९, नट नाराइन, मः ५)
सोई जनु सोई निज भगता जिसु ऊपरि रंगु लावै ॥२॥ (६७८-९, नट नाराइन, मः ५)

साई मति साई बुधि सिआनप जितु निमख न प्रभु बिसरावै ॥ (६७८-१०, नट नाराइन, मः ५)
संतसंगि लगि एहु सुखु पाइओ हरि गुन सद ही गावै ॥३॥ (६७८-१०, नट नाराइन, मः ५)
देखिओ अचरजु महा मंगल रूप किछु आन नही दिसटावै ॥ (६७८-११, नट नाराइन, मः ५)
कहु नानक मोरचा गुरि लाहिओ तह गरभ जोनि कह आवै ॥४॥१॥ (६७८-१२, नट नाराइन, मः ५)
नट नाराइन महला ५ दुपदे (६७८-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६७८-१३)
उलाहनो मै काहू न दीओ ॥ (६७८-१४, नट नाराइन, मः ५)
मन मीठ तुहारो कीओ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७८-१४, नट नाराइन, मः ५)
आगिआ मानि जानि सुखु पाइआ सुनि सुनि नामु तुहारो जीओ ॥ (६७८-१४, नट नाराइन, मः ५)
ईहाँ ऊहा हरि तुम ही तुम ही इहु गुर ते मंत्रु दृड़ीओ ॥१॥ (६७८-१५, नट नाराइन, मः ५)
जब ते जानि पाई एह बाता तब कुसल खेम सभ थीओ ॥ (६७८-१५, नट नाराइन, मः ५)
साधसंगि नानक परगासिओ आन नाही रे बीओ ॥२॥१॥२॥ (६७८-१६, नट नाराइन, मः ५)
नट महला ५ ॥ (६७८-१७)
जा कउ भई तुमारी धीर ॥ (६७८-१७, नट, मः ५)
जम की त्रास मिटी सुखु पाइआ निकसी हउमै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ (६७८-१७, नट, मः ५)
तपति बुझानी अमृत बानी तृपते जिउ बारिक खीर ॥ (६७८-१८, नट, मः ५)
मात पिता साजन संत मेरे संत सहाई बीर ॥१॥ (६७८-१८, नट, मः ५)

पन्ना ६७९

खुले भ्रम भीति मिले गोपाला हीरै बेधे हीर ॥ (६७९-१, नट, मः ५)
बिसम भए नानक जसु गावत ठाकुर गुनी गहीर ॥२॥२॥३॥ (६७९-१, नट, मः ५)
नट महला ५ ॥ (६७९-२)
अपना जनु आपहि आपि उधारिओ ॥ (६७९-२, नट, मः ५)
आठ पहर जन कै संगि बसिओ मन ते नाहि बिसारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७९-२, नट, मः ५)
बरनु चिहनु नाही किछु पेखिओ दास का कुलु न बिचारिओ ॥ (६७९-३, नट, मः ५)
करि किरपा नामु हरि दीओ सहजि सुभाइ सवारिओ ॥१॥ (६७९-४, नट, मः ५)
महा बिखमु अगनि का सागरु तिस ते पारि उतारिओ ॥ (६७९-४, नट, मः ५)
पेखि पेखि नानक बिगसानो पुनह पुनह बलिहारिओ ॥२॥३॥४॥ (६७९-५, नट, मः ५)
नट महला ५ ॥ (६७९-६)
हरि हरि मन महि नामु कहिओ ॥ (६७९-६, नट, मः ५)
कोटि अप्राध मिटहि खिन भीतरि ता का दुखु न रहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (६७९-६, नट, मः ५)
खोजत खोजत भइओ बैरागी साधू संगि लहिओ ॥ (६७९-७, नट, मः ५)
सगल तिआगि एक लिव लागी हरि हरि चरन गहिओ ॥१॥ (६७९-७, नट, मः ५)
कहत मुकत सुनते निसतारे जो जो सरनि पइओ ॥ (६७९-८, नट, मः ५)
सिमरि सिमरि सुआमी प्रभु अपुना कहु नानक अनदु भइओ ॥२॥४॥५॥ (६७९-८, नट, मः ५)

नट महला ५ ॥ (९७९-९)
चरन कमल संगि लागी डोरी ॥ (९७९-९, नट, मः ५)
सुख सागर करि पर्म गति मोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (९७९-१०, नट, मः ५)
अंचला गहाइओ जन अपुने कउ मनु बीधो प्रेम की खोरी ॥ (९७९-१०, नट, मः ५)
जसु गावत भगति रसु उपजिओ माइआ की जाली तोरी ॥१॥ (९७९-११, नट, मः ५)
पूरन पूरि रहे किरपा निधि आन न पेखउ होरी ॥ (९७९-११, नट, मः ५)
नानक मेलि लीओ दासु अपुना प्रीति न कबहू थोरी ॥२॥५॥६॥ (९७९-१२, नट, मः ५)
नट महला ५ ॥ (९७९-१२)
मेरे मन जपु जपि हरि नाराइण ॥ (९७९-१३, नट, मः ५)
कबहू न बिसरहु मन मेरे ते आठ पहर गुन गाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (९७९-१३, नट, मः ५)
साधू धूरि करउ नित मजनु सभ किलबिख पाप गवाइण ॥ (९७९-१४, नट, मः ५)
पूरन पूरि रहे किरपा निधि घटि घटि दिसटि समाइणु ॥१॥ (९७९-१४, नट, मः ५)
जाप ताप कोटि लख पूजा हरि सिमरण तुलि न लाइण ॥ (९७९-१५, नट, मः ५)
दुइ कर जोड़ि नानकु दानु माँगै तेरे दासनि दास दसाइणु ॥२॥६॥७॥ (९७९-१५, नट, मः ५)
नट महला ५ ॥ (९७९-१६)
मेरै सरबसु नामु निधानु ॥ (९७९-१६, नट, मः ५)
करि किरपा साधू संगि मिलिओ सतिगुरि दीनो दानु ॥१॥ रहाउ ॥ (९७९-१७, नट, मः ५)
सुखदाता दुख भंजनहारा गाउ कीरतनु पूरन गिआनु ॥ (९७९-१७, नट, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु खंड खंड कीन्हे बिनसिओ मूड़ अभिमानु ॥१॥ (९७९-१८, नट, मः ५)
किआ गुण तेरे आखि वखाणा प्रभ अंतरजामी जानु ॥ (९७९-१८, नट, मः ५)
चरन कमल सरनि सुख सागर नानकु सद कुरबानु ॥२॥७॥८॥ (९७९-१९, नट, मः ५)

पन्ना ९८०

नट महला ५ ॥ (९८०-१)
हउ वारि वारि जाउ गुर गोपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (९८०-१, नट, मः ५)
मोहि निरगुन तुम पूरन दाते दीना नाथ दइआल ॥१॥ (९८०-१, नट, मः ५)
ऊठत बैठत सोवत जागत जीअ प्रान धन माल ॥२॥ (९८०-२, नट, मः ५)
दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै नानक दरस निहाल ॥३॥८॥९॥ (९८०-२, नट, मः ५)
नट पड़ताल महला ५ (९८०-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९८०-४)
कोऊ है मेरो साजनु मीतु ॥ (९८०-५, नट पड़ताल, मः ५)
हरि नामु सुनावै नीत ॥ (९८०-५, नट पड़ताल, मः ५)
बिनसै दुखु बिपरीति ॥ (९८०-५, नट पड़ताल, मः ५)
सभु अरपउ मनु तनु चीतु ॥१॥ रहाउ ॥ (९८०-५, नट पड़ताल, मः ५)
कोई विरला आपन कीत ॥ (९८०-६, नट पड़ताल, मः ५)

संगि चरन कमल मनु सीत ॥ (९८०-६, नट पड़ताल, मः ५)
करि किरपा हरि जसु दीत ॥१॥ (९८०-६, नट पड़ताल, मः ५)
हरि भजि जनमु पदारथु जीत ॥ (९८०-७, नट पड़ताल, मः ५)
कोटि पतित होहि पुनीत ॥ (९८०-७, नट पड़ताल, मः ५)
नानक दास बलि बलि कीत ॥२॥१॥१०॥१९॥ (९८०-७, नट पड़ताल, मः ५)
नट असटपदीआ महला ४ (९८०-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९८०-९)
राम मेरे मनि तनि नामु अधारे ॥ (९८०-१०, नट, मः ४)
खिनु पलु रहि न सकउ बिनु सेवा मै गुरमति नामु समारे ॥१॥ रहाउ ॥ (९८०-१०, नट, मः ४)
हरि हरि हरि हरि हरि मनि धिआवहु मै हरि हरि नामु पिआरे ॥ (९८०-११, नट, मः ४)
दीन दइआल भए प्रभ ठाकुर गुर कै सबदि सवारे ॥१॥ (९८०-११, नट, मः ४)
मधसूदन जगजीवन माधो मेरे ठाकुर अगम अपारे ॥ (९८०-१२, नट, मः ४)
इक बिनउ बेनती करउ गुर आगै मै साधू चरन पखारे ॥२॥ (९८०-१२, नट, मः ४)
सहस नेत्र नेत्र है प्रभ कउ प्रभ एको पुरखु निरारे ॥ (९८०-१३, नट, मः ४)
सहस मूरति एको प्रभु ठाकुरु प्रभु एको गुरमति तारे ॥३॥ (९८०-१४, नट, मः ४)
गुरमति नामु दमोदरु पाइआ हरि हरि नामु उरि धारे ॥ (९८०-१४, नट, मः ४)
हरि हरि कथा बनी अति मीठी जिउ गूंगा गटक समारे ॥४॥ (९८०-१५, नट, मः ४)
रसना साद चखै भाइ दूजै अति फीके लोभ बिकारे ॥ (९८०-१५, नट, मः ४)
जो गुरमुखि साद चखहि राम नामा सभ अन रस साद बिसारे ॥५॥ (९८०-१६, नट, मः ४)
गुरमति राम नामु धनु पाइआ सुणि कहतिआ पाप निवारे ॥ (९८०-१७, नट, मः ४)
धर्म राइ जमु नेड़ि न आवै मेरे ठाकुर के जन पिआरे ॥६॥ (९८०-१७, नट, मः ४)
सास सास सास है जेते मै गुरमति नामु समारे ॥ (९८०-१८, नट, मः ४)
सासु सासु जाइ नामै बिनु सो बिरथा सासु बिकारे ॥७॥ (९८०-१९, नट, मः ४)
कृपा कृपा करि दीन प्रभ सरनी मो कउ हरि जन मेलि पिआरे ॥ (९८०-१९, नट, मः ४)

पन्ना ९८१

नानक दासनि दासु कहतु है हम दासन के पनिहारे ॥८॥१॥ (९८१-१, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (९८१-१)
राम हम पाथर निरगुनीआरे ॥ (९८१-२, नट, मः ४)
कृपा कृपा करि गुरू मिलाए हम पाहन सबदि गुर तारे ॥१॥ रहाउ ॥ (९८१-२, नट, मः ४)
सतिगुर नामु दृड़ाए अति मीठा मैलागरु मलगारे ॥ (९८१-३, नट, मः ४)
नामै सुरति वजी है दह दिसि हरि मुसकी मुसक गंधारे ॥१॥ (९८१-३, नट, मः ४)
तेरी निरगुण कथा कथा है मीठी गुरि नीके बचन समारे ॥ (९८१-४, नट, मः ४)
गावत गावत हरि गुन गाए गुन गावत गुरि निसतारे ॥२॥ (९८१-४, नट, मः ४)
बिबेकु गुरू गुरू समदरसी तिसु मिलीऐ संक उतारे ॥ (९८१-५, नट, मः ४)

सतिगुर मिलिऐ पर्म पदु पाइआ हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ (९८१-६, नट, मः ४)
पाखंड पाखंड करि करि भरमे लोभु पाखंडु जगि बुरिआरे ॥ (९८१-६, नट, मः ४)
हलति पलति दुखदाई होवहि जमकालु खड़ा सिरि मारे ॥४॥ (९८१-७, नट, मः ४)
उगवै दिनसु आलु जालु सम्हालै बिखु माइआ के बिसथारे ॥ (९८१-७, नट, मः ४)
आई रैनि भइआ सुपनंतरु बिखु सुपनै भी दुख सारे ॥५॥ (९८१-८, नट, मः ४)
कलरु खेतु लै कूड़ु जमाइआ सभ कूड़ै के खलवारे ॥ (९८१-९, नट, मः ४)
साकत नर सभि भूख भुखाने दरि ठाढे जम जंदारे ॥६॥ (९८१-९, नट, मः ४)
मनमुख करजु चड़िआ बिखु भारी उतरै सबदु वीचारे ॥ (९८१-१०, नट, मः ४)
जितने करज करज के मंगीए करि सेवक पगि लगि वारे ॥७॥ (९८१-१०, नट, मः ४)
जगन्नाथ सभि जंत्र उपाए नकि खीनी सभ नथहारे ॥ (९८१-११, नट, मः ४)
नानक प्रभु खिंचै तिव चलीऐ जिउ भावै राम पिआरे ॥८॥२॥ (९८१-१२, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (९८१-१२)
राम हरि अमृत सरि नावारे ॥ (९८१-१२, नट, मः ४)
सतिगुरि गिआनु मजनु है नीको मिलि कलमल पाप उतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (९८१-१३, नट, मः ४)
संगति का गुनु बहुतु अधिकाई पड़ि सूआ गनक उधारे ॥ (९८१-१३, नट, मः ४)
परस नपरस भए कुबिजा कउ लै बैकुंठि सिधारे ॥१॥ (९८१-१४, नट, मः ४)
अजामल प्रीति पुत्र प्रति कीनी करि नाराइण बोलारे ॥ (९८१-१५, नट, मः ४)
मेरे ठाकुर कै मनि भाइ भावनी जमकंकर मारि बिदारे ॥२॥ (९८१-१५, नट, मः ४)
मानुखु कथै कथि लोक सुनावै जो बोलै सो न बीचारे ॥ (९८१-१६, नट, मः ४)
सतसंगति मिलै त दिड़ता आवै हरि राम नामि निसतारे ॥३॥ (९८१-१६, नट, मः ४)
जब लगु जीउ पिंडु है साबतु तब लगि किछु न समारे ॥ (९८१-१७, नट, मः ४)
जब घर मंदरि आगि लगानी कढि कूपु कढै पनिहारे ॥४॥ (९८१-१८, नट, मः ४)
साकत सिउ मन मेलु न करीअहु जिनि हरि हरि नामु बिसारे ॥ (९८१-१८, नट, मः ४)
साकत बचन बिछूआ जिउ डसीऐ तजि साकत परै परारे ॥५॥ (९८१-१९, नट, मः ४)

पन्ना ९८२

लगि लगि प्रीति बहु प्रीति लगाई लगि साधू संगि सवारे ॥ (९८२-१, नट, मः ४)
गुर के बचन सति सति करि माने मेरे ठाकुर बहुतु पिआरे ॥६॥ (९८२-१, नट, मः ४)
पूरबि जनमि परचून कमाए हरि हरि हरि नामि पिआरे ॥ (९८२-२, नट, मः ४)
गुर प्रसादि अमृत रसु पाइआ रसु गावै रसु वीचारे ॥७॥ (९८२-३, नट, मः ४)
हरि हरि रूप रंगि सभि तेरे मेरे लालन लाल गुलारे ॥ (९८२-३, नट, मः ४)
जैसा रंगु देहि सो होवै किआ नानक जंत विचारे ॥८॥३॥ (९८२-४, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (९८२-४)
राम गुर सरनि प्रभू रखवारे ॥ (९८२-४, नट, मः ४)
जिउ कुंचरु तदूऐ पकरि चलाइओ करि ऊपरु कढि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (९८२-५, नट, मः ४)

प्रभ के सेवक बहुतु अति नीके मनि सरधा करि हरि धारे ॥ (९८२-६, नट, मः ४)
मेरे प्रभि सरधा भगति मनि भावै जन की पैज सवारे ॥१॥ (९८२-६, नट, मः ४)
हरि हरि सेवकु सेवा लागै सभु देखै ब्रह्म पसारे ॥ (९८२-७, नट, मः ४)
एकु पुरखु इकु नदरी आवै सभ एका नदरि निहारे ॥२॥ (९८२-७, नट, मः ४)
हरि प्रभु ठाकुरु रविआ सभ ठाई सभु चेरी जगतु समारे ॥ (९८२-८, नट, मः ४)
आपि दइआलु दइआ दानु देवै विचि पाथर कीरे कारे ॥३॥ (९८२-८, नट, मः ४)
अंतरि वासु बहुतु मुसकाई भ्रमि भूला मिरगु सिंङ्हारे ॥ (९८२-९, नट, मः ४)
बनु बनु ढूढि ढूढि फिरि थाकी गुरि पूरै घरि निसतारे ॥४॥ (९८२-१०, नट, मः ४)
बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अमृतु सारे ॥ (९८२-१०, नट, मः ४)
गुरु बाणी कहै सेवकु जनु मानै परतखि गुरू निसतारे ॥५॥ (९८२-११, नट, मः ४)
सभु है ब्रह्मु ब्रह्मु है पसरिआ मनि बीजिआ खावारे ॥ (९८२-१२, नट, मः ४)
जिउ जन चंद्रहाँसु दुखिआ ध्रिसटबुधी अपुना घरु लूकी जारे ॥६॥ (९८२-१२, नट, मः ४)
प्रभ कउ जनु अंतरि रिद लोचै प्रभ जन के सास निहारे ॥ (९८२-१३, नट, मः ४)
कृपा कृपा करि भगति दृड़ाए जन पीछै जगु निसतारे ॥७॥ (९८२-१३, नट, मः ४)
आपन आपि आपि प्रभु ठाकुरु प्रभु आपे सृसटि सवारे ॥ (९८२-१४, नट, मः ४)
जन नानक आपे आपि सभु वरतै करि कृपा आपि निसतारे ॥८॥४॥ (९८२-१५, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (९८२-१५)
राम करि किरपा लेहु उबारे ॥ (९८२-१६, नट, मः ४)
जिउ पकरि द्रोपती दुसटाँ आनी हरि हरि लाज निवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (९८२-१६, नट, मः ४)
करि किरपा जाचिक जन तेरे इकु मागउ दानु पिआरे ॥ (९८२-१७, नट, मः ४)
सतिगुर की नित सरधा लागी मो कउ हरि गुरु मेलि सवारे ॥१॥ (९८२-१७, नट, मः ४)
साकत कर्म पाणी जिउ मथीऐ नित पाणी झोल झुलारे ॥ (९८२-१८, नट, मः ४)
मिलि सतसंगति पर्म पदु पाइआ कढि माखन के गटकारे ॥२॥ (९८२-१८, नट, मः ४)
नित नित काइआ मजनु कीआ नित मलि मलि देह सवारे ॥ (९८२-१९, नट, मः ४)

पन्ना ९८३

मेरे सतिगुर के मनि बचन न भाए सभ फोकट चार सीगारे ॥३॥ (९८३-१, नट, मः ४)
मटकि मटकि चलु सखी सहेली मेरे ठाकुर के गुन सारे ॥ (९८३-१, नट, मः ४)
गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भाई मै सतिगुर अलखु लखारे ॥४॥ (९८३-२, नट, मः ४)
नारी पुरखु पुरखु सभ नारी सभु एको पुरखु मुरारे ॥ (९८३-३, नट, मः ४)
संत जना की रेनु मनि भाई मिलि हरि जन हरि निसतारे ॥५॥ (९८३-३, नट, मः ४)
ग्राम ग्राम नगर सभ फिरिआ रिद अंतरि हरि जन भारे ॥ (९८३-४, नट, मः ४)
सरधा सरधा उपाइ मिलाए मो कउ हरि गुर गुरि निसतारे ॥६॥ (९८३-४, नट, मः ४)
पवन सूतु सभु नीका करिआ सतिगुरि सबदु वीचारे ॥ (९८३-५, नट, मः ४)
निज घरि जाइ अमृत रसु पीआ बिनु नैना जगतु निहारे ॥७॥ (९८३-६, नट, मः ४)

तउ गुन ईस बरनि नही साकउ तुम मंदर हम निक कीरे ॥ (९८३-६, नट, मः ४)
नानक कृपा करहु गुर मेलहु मै रामु जपत मनु धीरे ॥८॥५॥ (९८३-७, नट, मः ४)
नट महला ४ ॥ (९८३-८)
मेरे मन भजु ठाकुर अगम अपारे ॥ (९८३-८, नट, मः ४)
हम पापी बहु निरगुणीआरे करि किरपा गुरि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (९८३-८, नट, मः ४)
साधू पुरख साध जन पाए इक बिनउ करउ गुर पिआरे ॥ (९८३-९, नट, मः ४)
राम नामु धनु पूजी देवहु सभु तिसना भूख निवारे ॥१॥ (९८३-१०, नट, मः ४)
पचै पतंगु मृग भ्रिंग कुंचर मीन इक इंद्री पकरि सघारे ॥ (९८३-१०, नट, मः ४)
पंच भूत सबल है देही गुरु सतिगुरु पाप निवारे ॥२॥ (९८३-११, नट, मः ४)
सासत्र बेद सोधि सोधि देखे मुनि नारद बचन पुकारे ॥ (९८३-१२, नट, मः ४)
राम नामु पड़हु गति पावहु सतसंगति गुरि निसतारे ॥३॥ (९८३-१२, नट, मः ४)
प्रीतम प्रीति लगी प्रभ केरी जिव सूरजु कमलु निहारे ॥ (९८३-१३, नट, मः ४)
मेर सुमेर मोरु बहु नाचै जब उनवै घन घनहारे ॥४॥ (९८३-१४, नट, मः ४)
साकत कउ अमृत बहु सिंचहु सभ डाल फूल बिसुकारे ॥ (९८३-१४, नट, मः ४)
जिउ जिउ निवहि साकत नर सेती छेड़ि छेड़ि कढै बिखु खारे ॥५॥ (९८३-१५, नट, मः ४)
संतन संत साध मिलि रहीऐ गुण बोलहि परउपकारे ॥ (९८३-१६, नट, मः ४)
संतै संतु मिलै मनु बिगसै जिउ जल मिलि कमल सवारे ॥६॥ (९८३-१६, नट, मः ४)
लोभ लहरि सभु सुआनु हलकु है हलकिओ सभहि बिगारे ॥ (९८३-१७, नट, मः ४)
मेरे ठाकुर कै दीबानि खबरि होई गुरि गिआनु खड़गु लै मारे ॥७॥ (९८३-१७, नट, मः ४)
राखु राखु राखु प्रभ मेरे मै राखहु किरपा धारे ॥ (९८३-१८, नट, मः ४)
नानक मै धर अवर न काई मै सतिगुरु गुरु निसतारे ॥८॥६॥ (९८३-१९, नट, मः ४)
छका १ ॥ (९८३-१९)

पन्ना ९८४

रागु माली गउड़ा महला ४ (९८४-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (९८४-२)
अनिक जतन करि रहे हरि अंतु नाही पाइआ ॥ (९८४-४, माली गउड़ा, मः ४)
हरि अगम अगम अगाधि बोधि आदेसु हरि प्रभ राइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (९८४-४, माली गउड़ा, मः ४)
कामु क्रोधु लोभु मोहु नित झगरते झगराइआ ॥ (९८४-५, माली गउड़ा, मः ४)
हम राखु राखु दीन तेरे हरि सरनि हरि प्रभ आइआ ॥१॥ (९८४-५, माली गउड़ा, मः ४)
सरणागती प्रभ पालते हरि भगति वछलु नाइआ ॥ (९८४-६, माली गउड़ा, मः ४)
प्रहिलादु जनु हरनाखि पकरिआ हरि राखि लीओ तराइआ ॥२॥ (९८४-६, माली गउड़ा, मः ४)
हरि चेति रे मन महलु पावण सभ दूख भंजनु राइआ ॥ (९८४-७, माली गउड़ा, मः ४)
भउ जनम मरन निवारि ठाकुर हरि गुरमती प्रभु पाइआ ॥३॥ (९८४-८, माली गउड़ा, मः ४)
हरि पतित पावन नामु सुआमी भउ भगत भंजनु गाइआ ॥ (९८४-८, माली गउड़ा, मः ४)

हरि हारु हरि उरि धारिओ जन नानक नामि समाइआ ॥४॥१॥ (९८४-९, माली गउड़ा, मः ४)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (९८४-१०)
जपि मन राम नामु सुखदाता ॥ (९८४-१०, माली गउड़ा, मः ४)
सतसंगति मिलि हरि सादु आइआ गुरमुखि ब्रह्मु पछाता ॥१॥ रहाउ ॥ (९८४-१०, माली गउड़ा, मः ४)
वडभागी गुर दरसनु पाइआ गुरि मिलिऐ हरि प्रभु जाता ॥ (९८४-११, माली गउड़ा, मः ४)
दुरमति मैलु गई सभ नीकरि हरि अमृति हरि सरि नाता ॥१॥ (९८४-१२, माली गउड़ा, मः ४)
धनु धनु साधु जिन्ही हरि प्रभु पाइआ तिन् पूछउ हरि की बाता ॥ (९८४-१२, माली गउड़ा, मः ४)
पाइ लगउ नित करउ जुदरीआ हरि मेलहु करमि बिधाता ॥२॥ (९८४-१३, माली गउड़ा, मः ४)
लिलाट लिखे पाइआ गुरु साधू गुर बचनी मनु तनु राता ॥ (९८४-१४, माली गउड़ा, मः ४)
हरि प्रभ आइ मिले सुखु पाइआ सभ किलविख पाप गवाता ॥३॥ (९८४-१४, माली गउड़ा, मः ४)
राम रसाइणु जिन् गुरमति पाइआ तिन् की ऊतम बाता ॥ (९८४-१५, माली गउड़ा, मः ४)
तिन की पंक पाईऐ वडभागी जन नानकु चरनि पराता ॥४॥२॥ (९८४-१६, माली गउड़ा, मः ४)

पन्ना ९८५

माली गउड़ा महला ४ ॥ (९८५-१)
सभि सिध साधिक मुनि जना मनि भावनी हरि धिआइओ ॥ (९८५-१, माली गउड़ा, मः ४)
अपरम्परो पारब्रह्मु सुआमी हरि अलखु गुरू लखाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (९८५-१, माली गउड़ा, मः ४)
हम नीच मधिम कर्म कीए नही चेतिओ हरि राइओ ॥ (९८५-२, माली गउड़ा, मः ४)
हरि आनि मेलिओ सतिगुरू खिनु बंध मुकति कराइओ ॥१॥ (९८५-३, माली गउड़ा, मः ४)
प्रभि मसतके धुरि लीखिआ गुरमती हरि लिव लाइओ ॥ (९८५-३, माली गउड़ा, मः ४)
पंच सबद दरगह बाजिआ हरि मिलिओ मंगलु गाइओ ॥२॥ (९८५-४, माली गउड़ा, मः ४)
पतित पावनु नामु नरहरि मंदभागीआँ नही भाइओ ॥ (९८५-४, माली गउड़ा, मः ४)
ते गरभ जोनी गालीअहि जिउ लोनु जलहि गलाइओ ॥३॥ (९८५-५, माली गउड़ा, मः ४)
मति देहि हरि प्रभ अगम ठाकुर गुर चरन मनु मै लाइओ ॥ (९८५-५, माली गउड़ा, मः ४)
हरि राम नामै रहउ लागो जन नानक नामि समाइओ ॥४॥३॥ (९८५-६, माली गउड़ा, मः ४)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (९८५-७)
मेरा मनु राम नामि रसि लागा ॥ (९८५-७, माली गउड़ा, मः ४)
कमल प्रगासु भइआ गुरु पाइआ हरि जपिओ भ्रमु भउ भागा ॥१॥ रहाउ ॥ (९८५-७, माली गउड़ा, मः ४)
भै भाइ भगति लागो मेरा हीअरा मनु सोइओ गुरमति जागा ॥ (९८५-८, माली गउड़ा, मः ४)
किलबिख खीन भए साँति आई हरि उर धारिओ वडभागा ॥१॥ (९८५-९, माली गउड़ा, मः ४)
मनमुखु रंगु कसुम्भु है कचूआ जिउ कुसम चारि दिन चागा ॥ (९८५-९, माली गउड़ा, मः ४)
खिन महि बिनसि जाइ परतापै डंडु धर्म राइ का लागा ॥२॥ (९८५-१०, माली गउड़ा, मः ४)
सतसंगति प्रीति साध अति गूड़ी जिउ रंगु मजीठ बहु लागा ॥ (९८५-११, माली गउड़ा, मः ४)
काइआ कापरु चीर बहु फारे हरि रंगु न लहै सभागा ॥३॥ (९८५-११, माली गउड़ा, मः ४)
हरि चारिहओ रंगु मिलै गुरु सोभा हरि रंगि चलूलै राँगा ॥ (९८५-१२, माली गउड़ा, मः ४)

जन नानकु तिन के चरन पखारै जो हरि चरनी जनु लागा ॥४॥४॥ (९८५-१२, माली गउड़ा, मः ४)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (९८५-१३)
मेरे मन भजु हरि हरि नामु गुपाला ॥ (९८५-१३, माली गउड़ा, मः ४)
मेरा मनु तनु लीनु भइआ राम नामै मति गुरमति राम रसाला ॥१॥ रहाउ ॥ (९८५-१४, माली गउड़ा, मः ४)
गुरमति नामु धिआईऐ हरि हरि मनि जपीऐ हरि जपमाला ॥ (९८५-१५, माली गउड़ा, मः ४)
जिन्ह कै मसतकि लीखिआ हरि मिलिआ हरि बनमाला ॥१॥ (९८५-१५, माली गउड़ा, मः ४)
जिन्ह हरि नामु धिआइआ तिन्ह चूके सर्ब जंजाला ॥ (९८५-१६, माली गउड़ा, मः ४)
तिन्ह जमु नेड़ि न आवई गुरि राखे हरि रखवाला ॥२॥ (९८५-१६, माली गउड़ा, मः ४)
हम बारिक किछू न जाणहू हरि मात पिता प्रतिपाला ॥ (९८५-१७, माली गउड़ा, मः ४)
करु माइआ अगनि नित मेलते गुरि राखे दीन दइआला ॥३॥ (९८५-१७, माली गउड़ा, मः ४)
बहु मैले निर्मल होइआ सभ किलबिख हरि जसि जाला ॥ (९८५-१८, माली गउड़ा, मः ४)
मनि अनदु भइआ गुरु पाइआ जन नानक सबदि निहाला ॥४॥५॥ (९८५-१९, माली गउड़ा, मः ४)
माली गउड़ा महला ४ ॥ (९८५-१९)

पन्ना ९८६

मेरे मन हरि भजु सभ किलबिख काट ॥ (९८६-१, माली गउड़ा, मः ४)
हरि हरि उर धारिओ गुरि पूरै मेरा सीसु कीजै गुर वाट ॥१॥ रहाउ ॥ (९८६-१, माली गउड़ा, मः ४)
मेरे हरि प्रभ की मै बात सुनावै तिसु मनु देवउ कटि काट ॥ (९८६-२, माली गउड़ा, मः ४)
हरि साजनु मेलिओ गुरि पूरै गुर बचनि बिकानो हटि हाट ॥१॥ (९८६-२, माली गउड़ा, मः ४)
मकर प्रागि दानु बहु कीआ सरीरु दीओ अध काटि ॥ (९८६-३, माली गउड़ा, मः ४)
बिनु हरि नाम को मुकति न पावै बहु कंचनु दीजै कटि काट ॥२॥ (९८६-३, माली गउड़ा, मः ४)
हरि कीरति गुरमति जसु गाइओ मनि उघरे कपट कपाट ॥ (९८६-४, माली गउड़ा, मः ४)
तृकुटी फोरि भरमु भउ भागा लज भानी मटुकी माट ॥३॥ (९८६-५, माली गउड़ा, मः ४)
कलजुगि गुरु पूरा तिन पाइआ जिन धुरि मसतकि लिखे लिलाट ॥ (९८६-५, माली गउड़ा, मः ४)
जन नानक रसु अमृतु पीआ सभ लाथी भूख तिखाट ॥४॥६॥ (९८६-६, माली गउड़ा, मः ४)
छका १ ॥ (९८६-६)
माली गउड़ा महला ५ (९८६-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९८६-८)
रे मन टहल हरि सुख सार ॥ (९८६-८, माली गउड़ा, मः ५)
अवर टहला झूठीआ नित करै जमु सिरि मार ॥१॥ रहाउ ॥ (९८६-८, माली गउड़ा, मः ५)
जिना मसतकि लीखिआ ते मिले संगार ॥ (९८६-९, माली गउड़ा, मः ५)
संसारु भउजलु तारिआ हरि संत पुरख अपार ॥१॥ (९८६-९, माली गउड़ा, मः ५)
नित चरन सेवहु साध के तजि लोभ मोह बिकार ॥ (९८६-१०, माली गउड़ा, मः ५)
सभ तजहु दूजी आसड़ी रखु आस इक निरंकार ॥२॥ (९८६-१०, माली गउड़ा, मः ५)
इकि भरमि भूले साकता बिनु गुर अंध अंधार ॥ (९८६-११, माली गउड़ा, मः ५)

धुरि होवना सु होइआ को न मेटणहार ॥३॥ (६८६-११, माली गउड़ा, मः ५)
अगम रूपु गोबिंद का अनिक नाम अपार ॥ (६८६-१२, माली गउड़ा, मः ५)
धनु धन्नु ते जन नानका जिन हरि नामा उरि धार ॥४॥१॥ (६८६-१२, माली गउड़ा, मः ५)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (६८६-१३)
राम नाम कउ नमस्कार ॥ (६८६-१३, माली गउड़ा, मः ५)
जासु जपत होवत उधार ॥१॥ रहाउ ॥ (६८६-१३, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि मिटहि धंध ॥ (६८६-१४, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि छूटहि बंध ॥ (६८६-१४, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि मूरख चतुर ॥ (६८६-१४, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि कुलह उधर ॥१॥ (६८६-१४, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि भउ दुख हरै ॥ (६८६-१५, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि अपदा टरै ॥ (६८६-१५, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि मुचत पाप ॥ (६८६-१५, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि नही संताप ॥२॥ (६८६-१६, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि रिद बिगास ॥ (६८६-१६, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि कवला दासि ॥ (६८६-१६, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि निधि निधान ॥ (६८६-१७, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै सिमरनि तरे निदान ॥३॥ (६८६-१७, माली गउड़ा, मः ५)
पतित पावनु नामु हरी ॥ (६८६-१७, माली गउड़ा, मः ५)
कोटि भगत उधारु करी ॥ (६८६-१७, माली गउड़ा, मः ५)
हरि दास दासा दीनु सरन ॥ (६८६-१८, माली गउड़ा, मः ५)
नानक माथा संत चरन ॥४॥२॥ (६८६-१८, माली गउड़ा, मः ५)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (६८६-१८)
ऐसो सहाई हरि को नाम ॥ (६८६-१९, माली गउड़ा, मः ५)
साधसंगति भजु पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (६८६-१९, माली गउड़ा, मः ५)
बूडत कउ जैसे बेड़ी मिलत ॥ (६८६-१९, माली गउड़ा, मः ५)

पन्ना ६८७

बूझत दीपक मिलत तिलत ॥ (६८७-१, माली गउड़ा, मः ५)
जलत अगनी मिलत नीर ॥ (६८७-१, माली गउड़ा, मः ५)
जैसे बारिक मुखहि खीर ॥१॥ (६८७-१, माली गउड़ा, मः ५)
जैसे रण महि सखा भ्रात ॥ (६८७-१, माली गउड़ा, मः ५)
जैसे भूखे भोजन मात ॥ (६८७-२, माली गउड़ा, मः ५)
जैसे किरखहि बरस मेघ ॥ (६८७-२, माली गउड़ा, मः ५)
जैसे पालन सरनि सेंघ ॥२॥ (६८७-२, माली गउड़ा, मः ५)

गरुड़ मुखि नही सरप त्रास ॥ (९८७-३, माली गउड़ा, मः ५)
सूआ पिंजरि नही खाइ बिलासु ॥ (९८७-३, माली गउड़ा, मः ५)
जैसो आँडो हिरदे माहि ॥ (९८७-३, माली गउड़ा, मः ५)
जैसो दानो चकी दराहि ॥३॥ (९८७-३, माली गउड़ा, मः ५)
बहुतु ओपमा थोर कही ॥ (९८७-४, माली गउड़ा, मः ५)
हरि अगम अगम अगाधि तुही ॥ (९८७-४, माली गउड़ा, मः ५)
ऊच मूचौ बहु अपार ॥ (९८७-४, माली गउड़ा, मः ५)
सिमरत नानक तरे सार ॥४॥३॥ (९८७-५, माली गउड़ा, मः ५)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (९८७-५)
इही हमारै सफल काज ॥ (९८७-५, माली गउड़ा, मः ५)
अपुने दास कउ लेहु निवाजि ॥१॥ रहाउ ॥ (९८७-५, माली गउड़ा, मः ५)
चरन संतह माथ मोर ॥ (९८७-६, माली गउड़ा, मः ५)
नैनि दरसु पेखउ निसि भोर ॥ (९८७-६, माली गउड़ा, मः ५)
हसत हमरे संत टहल ॥ (९८७-६, माली गउड़ा, मः ५)
प्रान मनु धनु संत बहल ॥१॥ (९८७-७, माली गउड़ा, मः ५)
संतसंगि मेरे मन की प्रीति ॥ (९८७-७, माली गउड़ा, मः ५)
संत गुन बसहि मेरै चीति ॥ (९८७-७, माली गउड़ा, मः ५)
संत आगिआ मनहि मीठ ॥ (९८७-८, माली गउड़ा, मः ५)
मेरा कमलु बिगसै संत डीठ ॥२॥ (९८७-८, माली गउड़ा, मः ५)
संतसंगि मेरा होइ निवासु ॥ (९८७-८, माली गउड़ा, मः ५)
संतन की मोहि बहुतु पिआस ॥ (९८७-८, माली गउड़ा, मः ५)
संत बचन मेरे मनहि मंत ॥ (९८७-९, माली गउड़ा, मः ५)
संत प्रसादि मेरे बिखै हंत ॥३॥ (९८७-९, माली गउड़ा, मः ५)
मुकति जुगति एहा निधान ॥ (९८७-९, माली गउड़ा, मः ५)
प्रभ दइआल मोहि देवहु दान ॥ (९८७-१०, माली गउड़ा, मः ५)
नानक कउ प्रभ दइआ धारि ॥ (९८७-१०, माली गउड़ा, मः ५)
चरन संतन के मेरे रिदे मझारि ॥४॥४॥ (९८७-१०, माली गउड़ा, मः ५)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (९८७-११)
सभ कै संगी नाही दूरि ॥ (९८७-११, माली गउड़ा, मः ५)
करन करावन हाजरा हजूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (९८७-११, माली गउड़ा, मः ५)
सुनत जीओ जासु नामु ॥ (९८७-१२, माली गउड़ा, मः ५)
दुख बिनसे सुख कीओ बिस्रामु ॥ (९८७-१२, माली गउड़ा, मः ५)
सगल निधि हरि हरि हरे ॥ (९८७-१२, माली गउड़ा, मः ५)
मुनि जन ता की सेव करे ॥१॥ (९८७-१३, माली गउड़ा, मः ५)
जा कै घरि सगले समाहि ॥ (९८७-१३, माली गउड़ा, मः ५)

जिस ते बिरथा कोइ नाहि ॥ (९८७-१३, माली गउड़ा, मः ५)
जीअ जंत्र करे प्रतिपाल ॥ (९८७-१३, माली गउड़ा, मः ५)
सदा सदा सेवहु किरपाल ॥२॥ (९८७-१४, माली गउड़ा, मः ५)
सदा धरमु जा कै दीबाणि ॥ (९८७-१४, माली गउड़ा, मः ५)
बेमुहताज नही किछु काणि ॥ (९८७-१४, माली गउड़ा, मः ५)
सभ किछु करना आपन आपि ॥ (९८७-१५, माली गउड़ा, मः ५)
रे मन मेरे तू ता कउ जापि ॥३॥ (९८७-१५, माली गउड़ा, मः ५)
साधसंगति कउ हउ बलिहार ॥ (९८७-१५, माली गउड़ा, मः ५)
जासु मिलि होवै उधारु ॥ (९८७-१६, माली गउड़ा, मः ५)
नाम संगि मन तनहि रात ॥ (९८७-१६, माली गउड़ा, मः ५)
नानक कउ प्रभि करी दाति ॥४॥५॥ (९८७-१६, माली गउड़ा, मः ५)
माली गउड़ा महला ५ दुपदे (९८७-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९८७-१८)
हरि समरथ की सरना ॥ (९८७-१८, माली गउड़ा, मः ५)
जीउ पिंडु धनु रासि मेरी प्रभ एक कारन करना ॥१॥ रहाउ ॥ (९८७-१८, माली गउड़ा, मः ५)
सिमरि सिमरि सदा सुखु पाईऐ जीवणै का मूलु ॥ (९८७-१९, माली गउड़ा, मः ५)
रवि रहिआ सरबत ठाई सूखमो असथूल ॥१॥ (९८७-१९, माली गउड़ा, मः ५)

पन्ना ९८८

आल जाल बिकार तजि सभि हरि गुना निति गाउ ॥ (९८८-१, माली गउड़ा, मः ५)
कर जोड़ि नानकु दानु माँगै देहु अपना नाउ ॥२॥१॥६॥ (९८८-१, माली गउड़ा, मः ५)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (९८८-२)
प्रभ समरथ देव अपार ॥ (९८८-२, माली गउड़ा, मः ५)
कउनु जानै चलित तेरे किछु अंतु नाही पार ॥१॥ रहाउ ॥ (९८८-२, माली गउड़ा, मः ५)
इक खिनहि थापि उथापदा घड़ि भंनि करनैहारु ॥ (९८८-३, माली गउड़ा, मः ५)
जेत कीन उपारजना प्रभु दानु देइ दातार ॥१॥ (९८८-३, माली गउड़ा, मः ५)
हरि सरनि आइओ दासु तेरा प्रभ ऊच अगम मुरार ॥ (९८८-४, माली गउड़ा, मः ५)
कढि लेहु भउजल बिखम ते जनु नानकु सद बलिहार ॥२॥२॥७॥ (९८८-४, माली गउड़ा, मः ५)
माली गउड़ा महला ५ ॥ (९८८-५)
मनि तनि बसि रहे गोपाल ॥ (९८८-५, माली गउड़ा, मः ५)
दीन बाँधव भगति वछल सदा सदा कृपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (९८८-६, माली गउड़ा, मः ५)
आदि अंते मधि तूहै प्रभ बिना नाही कोइ ॥ (९८८-६, माली गउड़ा, मः ५)
पूरि रहिआ सगल मंडल एकु सुआमी सोइ ॥१॥ (९८८-७, माली गउड़ा, मः ५)
करनि हरि जसु नेत्र दरसनु रसनि हरि गुन गाउ ॥ (९८८-७, माली गउड़ा, मः ५)
बलिहारि जाए सदा नानकु देहु अपणा नाउ ॥२॥३॥८॥६॥१४॥ (९८८-८, माली गउड़ा, मः ५)

माली गउड़ा बाणी भगत नामदेव जी की (९८८-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९८८-९)
धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै ॥ (९८८-१०, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥१॥ रहाउ ॥ (९८८-१०, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
धनि धनि मेघा रोमावली ॥ (९८८-१०, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
धनि धनि क्रिसन ओढै काँबली ॥१॥ (९८८-११, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
धनि धनि तू माता देवकी ॥ (९८८-११, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
जिह ग्रिह रमईआ कवलापती ॥२॥ (९८८-११, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
धनि धनि बन खंड बिंद्राबना ॥ (९८८-१२, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
जह खेलै स्री नाराइना ॥३॥ (९८८-१२, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
बेनु बजावै गोधनु चरै ॥ (९८८-१२, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
नामे का सुआमी आनद करै ॥४॥१॥ (९८८-१३, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
मेरो बापु माधउ तू धनु केसौ साँवलीओ बीठुलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (९८८-१३, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
कर धरे चक्र बैकुंठ ते आए गज हसती के प्रान उधारीअले ॥ (९८८-१४, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
दुहसासन की सभा द्रोपती अम्बर लेत उबारीअले ॥१॥ (९८८-१४, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
गोतम नारि अहलिआ तारी पावन केतक तारीअले ॥ (९८८-१५, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
ऐसा अधमु अजाति नामदेउ तउ सरनागति आईअले ॥२॥२॥ (९८८-१५, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥ (९८८-१६, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
राम बिना को बोलै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (९८८-१६, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥ (९८८-१७, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥१॥ (९८८-१७, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
एकल चिंता राखु अनंता अउर तजहु सभ आसा रे ॥ (९८८-१८, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)
प्रणवै नामा भए निहकामा को ठाकुरु को दासा रे ॥२॥३॥ (९८८-१९, माली गउड़ा, भगत नामदेव जी)

पन्ना ९८९

रागु मारू महला १ घरु १ चउपदे (९८९-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (९८९-२)
सलोकु ॥ (९८९-४)
साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि ॥ (९८९-४, मारू, मः १)
नानक सरणि तुहारीआ पेखउ सदा हजूरि ॥१॥ (९८९-४, मारू, मः १)
सबद ॥ (९८९-५)
पिछहु राती सदड़ा नामु खसम का लेहि ॥ (९८९-५, मारू, मः १)
खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े ॥ (९८९-५, मारू, मः १)
जिनी तेरा नामु धिआइआ तिन कउ सदि मिले ॥१॥ (९८९-५, मारू, मः १)
बाबा मै करमहीण कूड़िआर ॥ (९८९-६, मारू, मः १)

नामु न पाइआ तेरा अंधा भरमि भूला मनु मेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (९८९-६, मारू, मः १)
साद कीते दुख परफुड़े पूरबि लिखे माइ ॥ (९८९-७, मारू, मः १)
सुख थोड़े दुख अगले दूखे दूखि विहाइ ॥२॥ (९८९-७, मारू, मः १)
विछुड़िआ का किआ वीछुड़ै मिलिआ का किआ मेलु ॥ (९८९-८, मारू, मः १)
साहिबु सो सालाहीऐ जिनि करि देखिआ खेलु ॥३॥ (९८९-८, मारू, मः १)
संजोगी मेलावड़ा इनि तनि कीते भोग ॥ (९८९-९, मारू, मः १)
विजोगी मिलि विछुड़े नानक भी संजोग ॥४॥१॥ (९८९-९, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (९८९-१०)
मिलि मात पिता पिंडु कमाइआ ॥ (९८९-१०, मारू, मः १)
तिनि करतै लेखु लिखाइआ ॥ (९८९-१०, मारू, मः १)
लिखु दाति जोति वडिआई ॥ (९८९-११, मारू, मः १)
मिलि माइआ सुरति गवाई ॥१॥ (९८९-११, मारू, मः १)
मूरख मन काहे करसहि माणा ॥ (९८९-११, मारू, मः १)
उठि चलणा खसमै भाणा ॥१॥ रहाउ ॥ (९८९-१२, मारू, मः १)
तजि साद सहज सुखु होई ॥ (९८९-१२, मारू, मः १)
घर छडणे रहै न कोई ॥ (९८९-१२, मारू, मः १)
किछु खाजै किछु धरि जाईऐ ॥ (९८९-१३, मारू, मः १)
जे बाहुड़ि दुनीआ आईऐ ॥२॥ (९८९-१३, मारू, मः १)
सजु काइआ पटु हढाए ॥ (९८९-१३, मारू, मः १)
फुरमाइसि बहुतु चलाए ॥ (९८९-१४, मारू, मः १)
करि सेज सुखाली सोवै ॥ (९८९-१४, मारू, मः १)
हथी पउदी काहे रोवै ॥३॥ (९८९-१४, मारू, मः १)
घर घुम्मणवाणी भाई ॥ (९८९-१४, मारू, मः १)

पन्ना ९९०

पाप पथर तरणु न जाई ॥ (९९०-१, मारू, मः १)
भउ बेड़ा जीउ चड़ाऊ ॥ (९९०-१, मारू, मः १)
कहु नानक देवै काहू ॥४॥२॥ (९९०-१, मारू, मः १)
मारू महला १ घरु १ ॥ (९९०-२)
करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥ (९९०-२, मारू, मः १)
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ तउ गुण नाही अंतु हरे ॥१॥ (९९०-२, मारू, मः १)
चित चेतसि की नही बावरिआ ॥ (९९०-३, मारू, मः १)
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (९९०-३, मारू, मः १)
जाली रैनि जालु दिनु हूआ जेती घड़ी फाही तेती ॥ (९९०-४, मारू, मः १)
रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥२॥ (९९०-४, मारू, मः १)

काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥ (९९०-५, मारू, मः १)
कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ सन्ही चिंत भई ॥३॥ (९९०-६, मारू, मः १)
भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥ (९९०-६, मारू, मः १)
एकु नामु अमृतु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥४॥३॥ (९९०-७, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (९९०-८)
बिमल मझारि बससि निर्मल जल पदमनि जावल रे ॥ (९९०-८, मारू, मः १)
पदमनि जावल जल रस संगति संगि दोख नही रे ॥१॥ (९९०-८, मारू, मः १)
दादर तू कबहि न जानसि रे ॥ (९९०-९, मारू, मः १)
भखसि सिबालु बससि निर्मल जल अमृतु न लखसि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (९९०-९, मारू, मः १)
बसु जल नित न वसत अलीअल मेर चचा गुन रे ॥ (९९०-१०, मारू, मः १)
चंद कुमुदनी दूरहु निवससि अनभउ कारनि रे ॥२॥ (९९०-१०, मारू, मः १)
अमृत खंडु दूधि मधु संचसि तू बन चातुर रे ॥ (९९०-११, मारू, मः १)
अपना आपु तू कबहु न छोडसि पिसन प्रीति जिउ रे ॥३॥ (९९०-१२, मारू, मः १)
पंडित संगि वसहि जन मूरख आगम सास सुने ॥ (९९०-१२, मारू, मः १)
अपना आपु तू कबहु न छोडसि सुआन पूछि जिउ रे ॥४॥ (९९०-१३, मारू, मः १)
इकि पाखंडी नामि न राचहि इक हरि हरि चरणी रे ॥ (९९०-१३, मारू, मः १)
पूरबि लिखिआ पावसि नानक रसना नामु जपि रे ॥५॥४॥ (९९०-१४, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (९९०-१५)
सलोकु ॥ (९९०-१५)
पतित पुनीत असंख होहि हरि चरनी मनु लाग ॥ (९९०-१५, मारू, मः १)
अठसठि तीर्थ नामु प्रभ नानक जिसु मसतकि भाग ॥१॥ (९९०-१५, मारू, मः १)
सबदु ॥ (९९०-१६)
सखी सहेली गरबि गहेली ॥ (९९०-१६, मारू, मः १)
सुणि सह की इक बात सुहेली ॥१॥ (९९०-१६, मारू, मः १)
जो मै बेदन सा किसु आखा माई ॥ (९९०-१७, मारू, मः १)
हरि बिनु जीउ न रहै कैसे राखा माई ॥१॥ रहाउ ॥ (९९०-१७, मारू, मः १)
हउ दोहागणि खरी रंञाणी ॥ (९९०-१७, मारू, मः १)
गइआ सु जोबनु धन पछुताणी ॥२॥ (९९०-१८, मारू, मः १)
तू दाना साहिबु सिरि मेरा ॥ (९९०-१८, मारू, मः १)
खिजमति करी जनु बंदा तेरा ॥३॥ (९९०-१८, मारू, मः १)
भणति नानकु अंदेसा एही ॥ (९९०-१९, मारू, मः १)
बिनु दरसन कैसे रवउ सनेही ॥४॥५॥ (९९०-१९, मारू, मः १)

पन्ना ९९१

मारू महला १ ॥ (९९१-१)

मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा ॥ (९९१-१, मारू, मः १)
गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा ॥१॥ (९९१-१, मारू, मः १)
तेरे लाले किआ चतुराई ॥ (९९१-२, मारू, मः १)
साहिब का हुकमु न करणा जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (९९१-२, मारू, मः १)
मा लाली पिउ लाला मेरा हउ लाले का जाइआ ॥ (९९१-३, मारू, मः १)
लाली नाचै लाला गावै भगति करउ तेरी राइआ ॥२॥ (९९१-३, मारू, मः १)
पीअहि त पाणी आणी मीरा खाहि त पीसण जाउ ॥ (९९१-४, मारू, मः १)
पखा फेरी पैर मलोवा जपत रहा तेरा नाउ ॥३॥ (९९१-४, मारू, मः १)
लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई ॥ (९९१-५, मारू, मः १)
आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु विणु मुकति न पाई ॥४॥६॥ (९९१-५, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (९९१-६)
कोई आखै भूतना को कहै बेताला ॥ (९९१-६, मारू, मः १)
कोई आखै आदमी नानकु वेचारा ॥१॥ (९९१-७, मारू, मः १)
भइआ दिवाना साह का नानकु बउराना ॥ (९९१-७, मारू, मः १)
हउ हरि बिनु अवरु न जाना ॥१॥ रहाउ ॥ (९९१-८, मारू, मः १)
तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ ॥ (९९१-८, मारू, मः १)
एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ ॥२॥ (९९१-८, मारू, मः १)
तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ ॥ (९९१-९, मारू, मः १)
हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ ॥३॥ (९९१-९, मारू, मः १)
तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु ॥ (९९१-१०, मारू, मः १)
मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु ॥४॥७॥ (९९१-११, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (९९१-११)
इहु धनु सर्ब रहिआ भरपूरि ॥ (९९१-११, मारू, मः १)
मनमुख फिरहि सि जाणहि दूरि ॥१॥ (९९१-१२, मारू, मः १)
सो धनु वखरु नामु रिदै हमारै ॥ (९९१-१२, मारू, मः १)
जिसु तू देहि तिसै निसतारै ॥१॥ रहाउ ॥ (९९१-१२, मारू, मः १)
न इहु धनु जलै न तसकरु लै जाइ ॥ (९९१-१३, मारू, मः १)
न इहु धनु डूबै न इसु धन कउ मिलै सजाइ ॥२॥ (९९१-१३, मारू, मः १)
इसु धन की देखहु वडिआई ॥ (९९१-१४, मारू, मः १)
सहजे माते अनदिनु जाई ॥३॥ (९९१-१४, मारू, मः १)
इक बात अनूप सुनहु नर भाई ॥ (९९१-१४, मारू, मः १)
इसु धन बिनु कहहु किनै पर्म गति पाई ॥४॥ (९९१-१५, मारू, मः १)
भणति नानकु अकथ की कथा सुणाए ॥ (९९१-१५, मारू, मः १)
सतिगुरु मिलै त इहु धनु पाए ॥५॥८॥ (९९१-१६, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (९९१-१६)

सूर सरु सोसि लै सोम सरु पोखि लै जुगति करि मरतु सु सनबंधु कीजै ॥ (६६१-१६, मारू, मः १)
मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥१॥ (६६१-१७, मारू, मः १)
मूड़े काइचे भरमि भुला ॥ (६६१-१८, मारू, मः १)
नह चीनिआ परमानंदु बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ (६६१-१८, मारू, मः १)
अजर गहु जारि लै अमर गहु मारि लै भ्राति तजि छोडि तउ अपिउ पीजै ॥ (६६१-१८, मारू, मः १)
मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥२॥ (६६१-१९, मारू, मः १)

पन्ना ६६२

भणति नानकु जनो रवै जे हरि मनो मन पवन सिउ अमृतु पीजै ॥ (६६२-१, मारू, मः १)
मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडै नह हंसु नह कंधु छीजै ॥३॥९॥ (६६२-२, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (६६२-३)
माइआ मुई न मनु मुआ सरु लहरी मै मतु ॥ (६६२-३, मारू, मः १)
बोहिथु जल सिरि तरि टिकै साचा वखरु जितु ॥ (६६२-३, मारू, मः १)
माणकु मन महि मनु मारसी सचि न लागै कतु ॥ (६६२-४, मारू, मः १)
राजा तखति टिकै गुणी भै पंचाइण रतु ॥१॥ (६६२-४, मारू, मः १)
बाबा साचा साहिबु दूरि न देखु ॥ (६६२-५, मारू, मः १)
सर्ब जोति जगजीवना सिरि सिरि साचा लेखु ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-५, मारू, मः १)
ब्रह्मा बिसनु रिखी मुनी संकरु इंदु तपै भेखारी ॥ (६६२-६, मारू, मः १)
मानै हुकमु सोहै दरि साचै आकी मरहि अफारी ॥ (६६२-६, मारू, मः १)
जंगम जोध जती संनिआसी गुरि पूरै वीचारी ॥ (६६२-७, मारू, मः १)
बिनु सेवा फलु कबहु न पावसि सेवा करणी सारी ॥२॥ (६६२-७, मारू, मः १)
निधनिआ धनु निगुरिआ गुरु निम्माणिआ तू माणु ॥ (६६२-८, मारू, मः १)
अंधुलै माणकु गुरु पकड़िआ निताणिआ तू ताणु ॥ (६६२-८, मारू, मः १)
होम जपा नही जाणिआ गुरमती साचु पछाणु ॥ (६६२-९, मारू, मः १)
नाम बिना नाही दरि ढोई झूठा आवण जाणु ॥३॥ (६६२-९, मारू, मः १)
साचा नामु सलाहीऐ साचे ते तृपति होइ ॥ (६६२-१०, मारू, मः १)
गिआन रतनि मनु माजीऐ बहुड़ि न मैला होइ ॥ (६६२-१०, मारू, मः १)
जब लगु साहिबु मनि वसै तब लगु बिघनु न होइ ॥ (६६२-११, मारू, मः १)
नानक सिरु दे छुटीऐ मनि तनि साचा सोइ ॥४॥१०॥ (६६२-११, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (६६२-१२)
जोगी जुगति नामु निरमाइलु ता कै मैलु न राती ॥ (६६२-१२, मारू, मः १)
प्रीतम नाथु सदा सचु संगे जनम मरण गति बीती ॥१॥ (६६२-१३, मारू, मः १)
गुसाई तेरा कहा नामु कैसे जाती ॥ (६६२-१३, मारू, मः १)
जा तउ भीतरि महलि बुलावहि पूछउ बात निरंती ॥१॥ रहाउ ॥ (६६२-१४, मारू, मः १)
बह्मणु ब्रह्म गिआन इसनानी हरि गुण पूजे पाती ॥ (६६२-१४, मारू, मः १)

एको नामु एकु नाराइणु तृभवण एका जोती ॥२॥ (९९२-१५, मारू, मः १)
जिहवा डंडी इहु घटु छाबा तोलउ नामु अजाची ॥ (९९२-१५, मारू, मः १)
एको हाटु साहु सभना सिरि वणजारे इक भाती ॥३॥ (९९२-१६, मारू, मः १)
दोवै सिरे सतिगुरू निबेड़े सो बूझै जिसु एक लिव लागी जीअहु रहै निभराती ॥ (९९२-१७, मारू, मः १)
सबदु वसाए भरमु चुकाए सदा सेवकु दिनु राती ॥४॥ (९९२-१७, मारू, मः १)
ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ॥ (९९२-१८, मारू, मः १)
गुर बचनी बाहरि घरि एको नानकु भइआ उदासी ॥५॥११॥ (९९२-१९, मारू, मः १)

पन्ना ९९३

रागु मारू महला १ घरु ५ (९९३-१)
੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९९३-१)
अहिनिसि जागै नीद न सोवै ॥ (९९३-२, मारू, मः १)
सो जाणै जिसु वेदन होवै ॥ (९९३-२, मारू, मः १)
प्रेम के कान लगे तन भीतरि वैदु कि जाणै कारी जीउ ॥१॥ (९९३-२, मारू, मः १)
जिस नो साचा सिफती लाए ॥ (९९३-३, मारू, मः १)
गुरमुखि विरले किसै बुझाए ॥ (९९३-३, मारू, मः १)
अमृत की सार सोई जाणै जि अमृत का वापारी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (९९३-३, मारू, मः १)
पिर सेती धन प्रेमु रचाए ॥ (९९३-४, मारू, मः १)
गुर कै सबदि तथा चितु लाए ॥ (९९३-४, मारू, मः १)
सहज सेती धन खरी सुहेली तृसना तिखा निवारी जीउ ॥२॥ (९९३-५, मारू, मः १)
सहसा तोड़े भरमु चुकाए ॥ (९९३-५, मारू, मः १)
सहजे सिफती धणखु चड़ाए ॥ (९९३-६, मारू, मः १)
गुर कै सबदि मरै मनु मारे सुंदरि जोगाधारी जीउ ॥३॥ (९९३-६, मारू, मः १)
हउमै जलिआ मनहु विसारे ॥ (९९३-६, मारू, मः १)
जम पुरि वजहि खड़ग करारे ॥ (९९३-७, मारू, मः १)
अब कै कहिऐ नामु न मिलई तू सहु जीअड़े भारी जीउ ॥४॥ (९९३-७, मारू, मः १)
माइआ ममता पवहि खिआली ॥ (९९३-८, मारू, मः १)
जम पुरि फासहिगा जम जाली ॥ (९९३-८, मारू, मः १)
हेत के बंधन तोड़ि न साकहि ता जमु करे खुआरी जीउ ॥५॥ (९९३-८, मारू, मः १)
ना हउ करता ना मै कीआ ॥ (९९३-९, मारू, मः १)
अमृतु नामु सतिगुरि दीआ ॥ (९९३-९, मारू, मः १)
जिसु तू देहि तिसै किआ चारा नानक सरणि तुमारी जीउ ॥६॥१॥१२॥ (९९३-१०, मारू, मः १)
मारू महला ३ घरु १ (९९३-११)
੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९९३-११)
जह बैसालहि तह बैसा सुआमी जह भेजहि तह जावा ॥ (९९३-१२, मारू, मः ३)

सभ नगरी महि एको राजा सभे पवितु हहि थावा ॥१॥ (६६३-१२, मारू, मः ३)
बाबा देहि वसा सच गावा ॥ (६६३-१३, मारू, मः ३)
जा ते सहजे सहजि समावा ॥१॥ रहाउ ॥ (६६३-१३, मारू, मः ३)
बुरा भला किछु आपस ते जानिआ एई सगल विकारा ॥ (६६३-१३, मारू, मः ३)
इहु फुरमाइआ खसम का होआ वरतै इहु संसारा ॥२॥ (६६३-१४, मारू, मः ३)
इंद्री धातु सबल कहीअत है इंद्री किस ते होई ॥ (६६३-१५, मारू, मः ३)
आपे खेल करै सभि करता ऐसा बूझै कोई ॥३॥ (६६३-१५, मारू, मः ३)
गुर परसादी एक लिव लागी दुबिधा तदे बिनासी ॥ (६६३-१६, मारू, मः ३)
जो तिसु भाणा सो सति करि मानिआ काटी जम की फासी ॥४॥ (६६३-१६, मारू, मः ३)
भणति नानकु लेखा मागै कवना जा चूका मनि अभिमाना ॥ (६६३-१७, मारू, मः ३)
तासु तासु धर्म राइ जपतु है पए सचे की सरना ॥५॥१॥ (६६३-१७, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (६६३-१८)
आवण जाणा ना थीऐ निज घरि वासा होइ ॥ (६६३-१८, मारू, मः ३)
सचु खजाना बखसिआ आपे जाणै सोइ ॥१॥ (६६३-१८, मारू, मः ३)

पन्ना ६६४

ए मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकार ॥ (६६४-१, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (६६४-१, मारू, मः ३)
ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥ (६६४-२, मारू, मः ३)
जोनी सभि भवाईअनि बिसटा माहि समाइ ॥२॥ (६६४-२, मारू, मः ३)
वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥ (६६४-३, मारू, मः ३)
अनदिनु सची भगति करि सचा लए मिलाइ ॥३॥ (६६४-३, मारू, मः ३)
आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ ॥ (६६४-४, मारू, मः ३)
नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥४॥२॥ (६६४-४, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (६६४-५)
पिछले गुनह बखसाइ जीउ अब तू मारगि पाइ ॥ (६६४-५, मारू, मः ३)
हरि की चरणी लागि रहा विचहु आपु गवाइ ॥१॥ (६६४-६, मारू, मः ३)
मेरे मन गुरमुखि नामु हरि धिआइ ॥ (६६४-६, मारू, मः ३)
सदा हरि चरणी लागि रहा इक मनि एकै भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६४-७, मारू, मः ३)
ना मै जाति न पति है ना मै थेहु न थाउ ॥ (६६४-७, मारू, मः ३)
सबदि भेदि भ्रमु कटिआ गुरि नामु दीआ समझाइ ॥२॥ (६६४-८, मारू, मः ३)
इहु मनु लालच करदा फिरै लालचि लागा जाइ ॥ (६६४-८, मारू, मः ३)
धंधै कूड़ि विआपिआ जम पुरि चोटा खाइ ॥३॥ (६६४-९, मारू, मः ३)
नानक सभु किछु आपे आपि है दूजा नाही कोइ ॥ (६६४-९, मारू, मः ३)
भगति खजाना बखसिओनु गुरमुखा सुखु होइ ॥४॥३॥ (६६४-१०, मारू, मः ३)

मारू महला ३ ॥ (९९४-१०)
सचि रते से टोलि लहु से विरले संसारि ॥ (९९४-१०, मारू, मः ३)
तिन मिलिआ मुखु उजला जपि नामु मुरारि ॥१॥ (९९४-११, मारू, मः ३)
बाबा साचा साहिबु रिदै समालि ॥ (९९४-११, मारू, मः ३)
सतिगुरु अपना पुछि देखु लेहु वखरु भालि ॥१॥ रहाउ ॥ (९९४-१२, मारू, मः ३)
इकु सचा सभ सेवदी धुरि भागि मिलावा होइ ॥ (९९४-१२, मारू, मः ३)
गुरमुखि मिले से न विछुड़हि पावहि सचु सोइ ॥२॥ (९९४-१३, मारू, मः ३)
इकि भगती सार न जाणनी मनमुख भरमि भुलाइ ॥ (९९४-१३, मारू, मः ३)
ओना विचि आपि वरतदा करणा किछू न जाइ ॥३॥ (९९४-१४, मारू, मः ३)
जिसु नालि जोरु न चलई खले कीचै अरदासि ॥ (९९४-१४, मारू, मः ३)
नानक गुरमुखि नामु मनि वसै ता सुणि करे साबासि ॥४॥४॥ (९९४-१५, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (९९४-१६)
मारू ते सीतलु करे मनूरहु कंचनु होइ ॥ (९९४-१६, मारू, मः ३)
सो साचा सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥१॥ (९९४-१६, मारू, मः ३)
मेरे मन अनदिनु धिआइ हरि नाउ ॥ (९९४-१७, मारू, मः ३)
सतिगुर कै बचनि अराधि तू अनदिनु गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (९९४-१७, मारू, मः ३)
गुरमुखि एको जाणीऐ जा सतिगुरु देइ बुझाइ ॥ (९९४-१८, मारू, मः ३)
सो सतिगुरु सालाहीऐ जिदू एह सोझी पाइ ॥२॥ (९९४-१८, मारू, मः ३)
सतिगुरु छोडि दूजै लगे किआ करनि अगै जाइ ॥ (९९४-१९, मारू, मः ३)
जम पुरि बधे मारीअहि बहुती मिलै सजाइ ॥३॥ (९९४-१९, मारू, मः ३)

पन्ना ९९५

मेरा प्रभु वेपरवाहु है ना तिसु तिलु न तमाइ ॥ (९९५-१, मारू, मः ३)
नानक तिसु सरणाई भजि पउ आपे बखसि मिलाइ ॥४॥५॥ (९९५-१, मारू, मः ३)
मारू महला ४ घरु २ (९९५-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९९५-३)
जपिओ नामु सुक जनक गुर बचनी हरि हरि सरणि परे ॥ (९९५-४, मारू, मः ४)
दालदु भंजि सुदामे मिलिओ भगती भाइ तरे ॥ (९९५-४, मारू, मः ४)
भगति वछलु हरि नामु कृतारथु गुरमुखि कृपा करे ॥१॥ (९९५-५, मारू, मः ४)
मेरे मन नामु जपत उधरे ॥ (९९५-५, मारू, मः ४)
ध्रू प्रहिलादु बिदरु दासी सुतु गुरमुखि नामि तरे ॥१॥ रहाउ ॥ (९९५-५, मारू, मः ४)
कलजुगि नामु प्रधानु पदारथु भगत जना उधरे ॥ (९९५-६, मारू, मः ४)
नामा जैदेउ कबीरु तृलोचनु सभि दोख गए चमरे ॥ (९९५-७, मारू, मः ४)
गुरमुखि नामि लगे से उधरे सभि किलबिख पाप टरे ॥२॥ (९९५-७, मारू, मः ४)
जो जो नामु जपै अपराधी सभि तिन के दोख परहरे ॥ (९९५-८, मारू, मः ४)

बेसुआ रवत अजामलु उधरिओ मुखि बोलै नाराइणु नरहरे ॥ (९९५-८, मारू, मः ४)
नामु जपत उग्रसैणि गति पाई तोड़ि बंधन मुकति करे ॥३॥ (९९५-९, मारू, मः ४)
जन कउ आपि अनुग्रहु कीआ हरि अंगीकारु करे ॥ (९९५-९, मारू, मः ४)
सेवक पैज रखै मेरा गोविदु सरणि परे उधरे ॥ (९९५-१०, मारू, मः ४)
जन नानक हरि किरपा धारी उर धरिओ नामु हरे ॥४॥१॥ (९९५-१०, मारू, मः ४)
मारू महला ४ ॥ (९९५-११)
सिध समाधि जपिओ लिव लाई साधिक मुनि जपिआ ॥ (९९५-११, मारू, मः ४)
जती सती संतोखी धिआइआ मुखि इंद्रादिक रविआ ॥ (९९५-१२, मारू, मः ४)
सरणि परे जपिओ ते भाए गुरमुखि पारि पइआ ॥१॥ (९९५-१२, मारू, मः ४)
मेरे मन नामु जपत तरिआ ॥ (९९५-१३, मारू, मः ४)
धन्ना जटु बालमीकु बटवारा गुरमुखि पारि पइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (९९५-१३, मारू, मः ४)
सुरि नर गण गंधरबे जपिओ रिखि बपुरै हरि गाइआ ॥ (९९५-१४, मारू, मः ४)
संकरि ब्रह्मै देवी जपिओ मुखि हरि हरि नामु जपिआ ॥ (९९५-१४, मारू, मः ४)
हरि हरि नामि जिना मनु भीना ते गुरमुखि पारि पइआ ॥२॥ (९९५-१५, मारू, मः ४)
कोटि कोटि तेतीस धिआइओ हरि जपतिआ अंतु न पाइआ ॥ (९९५-१६, मारू, मः ४)
बेद पुराण सिमृति हरि जपिआ मुखि पंडित हरि गाइआ ॥ (९९५-१६, मारू, मः ४)
नामु रसालु जिना मनि वसिआ ते गुरमुखि पारि पइआ ॥३॥ (९९५-१७, मारू, मः ४)
अनत तरंगी नामु जिन जपिआ मै गणत न करि सकिआ ॥ (९९५-१८, मारू, मः ४)
गोबिदु कृपा करे थाइ पाए जो हरि प्रभ मनि भाइआ ॥ (९९५-१८, मारू, मः ४)
गुरि धारि कृपा हरि नामु दृड़ाइओ जन नानक नामु लइआ ॥४॥२॥ (९९५-१९, मारू, मः ४)

पन्ना ९९६

मारू महला ४ घरु ३ (९९६-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९९६-१)
हरि हरि नामु निधानु लै गुरमति हरि पति पाइ ॥ (९९६-२, मारू, मः ४)
हलति पलति नालि चलदा हरि अंते लए छडाइ ॥ (९९६-२, मारू, मः ४)
जिथै अवघट गलीआ भीड़ीआ तिथै हरि हरि मुकति कराइ ॥१॥ (९९६-३, मारू, मः ४)
मेरे सतिगुरा मै हरि हरि नामु दृड़ाइ ॥ (९९६-३, मारू, मः ४)
मेरा मात पिता सुत बंधपो मै हरि बिनु अवरु न माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (९९६-४, मारू, मः ४)
मै हरि बिरही हरि नामु है कोई आणि मिलावै माइ ॥ (९९६-४, मारू, मः ४)
तिसु आगै मै जोदड़ी मेरा प्रीतमु देइ मिलाइ ॥ (९९६-५, मारू, मः ४)
सतिगुरु पुरखु दइआल प्रभु हरि मेले ढिल न पाइ ॥२॥ (९९६-५, मारू, मः ४)
जिन हरि हरि नामु न चेतिओ से भागहीण मरि जाइ ॥ (९९६-६, मारू, मः ४)
ओइ फिरि फिरि जोनि भवाईअहि मरि जम्महि आवै जाइ ॥ (९९६-७, मारू, मः ४)
ओइ जम दरि बधे मारीअहि हरि दरगह मिलै सजाइ ॥३॥ (९९६-७, मारू, मः ४)

तू प्रभु हम सरणागती मो कउ मेलि लैहु हरि राइ ॥ (९९६-८, मारू, मः ४)
हरि धारि कृपा जगजीवना गुर सतिगुर की सरणाइ ॥ (९९६-८, मारू, मः ४)
हरि जीउ आपि दइआलु होइ जन नानक हरि मेलाइ ॥४॥१॥३॥ (९९६-९, मारू, मः ४)
मारू महला ४ ॥ (९९६-१०)
हउ पूंजी नामु दसाइदा को दसे हरि धनु रासि ॥ (९९६-१०, मारू, मः ४)
हउ तिसु विटहु खन खन्नीऐ मै मेले हरि प्रभ पासि ॥ (९९६-१०, मारू, मः ४)
मै अंतरि प्रेमु पिरम्म का किउ सजणु मिलै मिलासि ॥१॥ (९९६-११, मारू, मः ४)
मन पिआरिआ मित्रा मै हरि हरि नामु धनु रासि ॥ (९९६-११, मारू, मः ४)
गुरि पूरै नामु दृड़ाइआ हरि धीरक हरि साबासि ॥१॥ रहाउ ॥ (९९६-१२, मारू, मः ४)
हरि हरि आपि मिलाइ गुरु मै दसे हरि धनु रासि ॥ (९९६-१२, मारू, मः ४)
बिनु गुर प्रेमु न लभई जन वेखहु मनि निरजासि ॥ (९९६-१३, मारू, मः ४)
हरि गुर विचि आपु रखिआ हरि मेले गुर साबासि ॥२॥ (९९६-१४, मारू, मः ४)
सागर भगति भंडार हरि पूरे सतिगुर पासि ॥ (९९६-१४, मारू, मः ४)
सतिगुरु तुठा खोलि देइ मुखि गुरमुखि हरि परगासि ॥ (९९६-१५, मारू, मः ४)
मनमुखि भाग विहूणिआ तिख मुईआ कंधी पासि ॥३॥ (९९६-१५, मारू, मः ४)
गुरु दाता दातारु है हउ मागउ दानु गुर पासि ॥ (९९६-१६, मारू, मः ४)
चिरी विछुन्ना मेलि प्रभ मै मनि तनि वडड़ी आस ॥ (९९६-१६, मारू, मः ४)
गुर भावै सुणि बेनती जन नानक की अरदासि ॥४॥२॥४॥ (९९६-१७, मारू, मः ४)
मारू महला ४ ॥ (९९६-१७)
हरि हरि कथा सुणाइ प्रभ गुरमति हरि रिदै समाणी ॥ (९९६-१७, मारू, मः ४)
जपि हरि हरि कथा वडभागीआ हरि उतम पदु निरबाणी ॥ (९९६-१८, मारू, मः ४)

पन्ना ९९७

गुरमुखा मनि परतीति है गुरि पूरै नामि समाणी ॥१॥ (९९७-१, मारू, मः ४)
मन मेरे मै हरि हरि कथा मनि भाणी ॥ (९९७-१, मारू, मः ४)
हरि हरि कथा नित सदा करि गुरमुखि अकथ कहाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (९९७-२, मारू, मः ४)
मै मनु तनु खोजि ढंढोलिआ किउ पाईऐ अकथ कहाणी ॥ (९९७-२, मारू, मः ४)
संत जना मिलि पाइआ सुणि अकथ कथा मनि भाणी ॥ (९९७-३, मारू, मः ४)
मेरै मनि तनि नामु अधारु हरि मै मेले पुरखु सुजाणी ॥२॥ (९९७-३, मारू, मः ४)
गुर पुरखै पुरखु मिलाइ प्रभ मिलि सुरती सुरति समाणी ॥ (९९७-४, मारू, मः ४)
वडभागी गुरु सेविआ हरि पाइआ सुघड़ सुजाणी ॥ (९९७-५, मारू, मः ४)
मनमुख भाग विहूणिआ तिन दुखी रैणि विहाणी ॥३॥ (९९७-५, मारू, मः ४)
हम जाचिक दीन प्रभ तेरिआ मुखि दीजै अमृत बाणी ॥ (९९७-६, मारू, मः ४)
सतिगुरु मेरा मित्रु प्रभ हरि मेलहु सुघड़ सुजाणी ॥ (९९७-६, मारू, मः ४)
जन नानक सरणागती करि किरपा नामि समाणी ॥४॥३॥५॥ (९९७-७, मारू, मः ४)

मारू महला ४ ॥ (९९७-८)
हरि भाउ लगा बैरागीआ वडभागी हरि मनि राखु ॥ (९९७-८, मारू, मः ४)
मिलि संगति सरधा ऊपजै गुर सबदी हरि रसु चाखु ॥ (९९७-८, मारू, मः ४)
सभु मनु तनु हरिआ होइआ गुरबाणी हरि गुण भाखु ॥१॥ (९९७-९, मारू, मः ४)
मन पिआरिआ मित्रा हरि हरि नाम रसु चाखु ॥ (९९७-९, मारू, मः ४)
गुरि पूरै हरि पाइआ हलति पलति पति राखु ॥१॥ रहाउ ॥ (९९७-१०, मारू, मः ४)
हरि हरि नामु धिआईऐ हरि कीरति गुरमुखि चाखु ॥ (९९७-११, मारू, मः ४)
तनु धरती हरि बीजीऐ विचि संगति हरि प्रभ राखु ॥ (९९७-११, मारू, मः ४)
अमृतु हरि हरि नामु है गुरि पूरै हरि रसु चाखु ॥२॥ (९९७-१२, मारू, मः ४)
मनमुख तृसना भरि रहे मनि आसा दह दिस बहु लाखु ॥ (९९७-१२, मारू, मः ४)
बिनु नावै ध्रिगु जीवदे विचि बिसटा मनमुख राखु ॥ (९९७-१३, मारू, मः ४)
ओइ आवहि जाहि भवाईअहि बहु जोनी दुरगंध भाखु ॥३॥ (९९७-१३, मारू, मः ४)
त्राहि त्राहि सरणागती हरि दइआ धारि प्रभ राखु ॥ (९९७-१४, मारू, मः ४)
संतसंगति मेलापु करि हरि नामु मिलै पति साखु ॥ (९९७-१५, मारू, मः ४)
हरि हरि नामु धनु पाइआ जन नानक गुरमति भाखु ॥४॥४॥६॥ (९९७-१५, मारू, मः ४)
मारू महला ४ घरु ५ (९९७-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (९९७-१७)
हरि हरि भगति भरे भंडारा ॥ (९९७-१८, मारू, मः ४)
गुरमुखि रामु करे निसतारा ॥ (९९७-१८, मारू, मः ४)
जिस नो कृपा करे मेरा सुआमी सो हरि के गुण गावै जीउ ॥१॥ (९९७-१८, मारू, मः ४)
हरि हरि कृपा करे बनवाली ॥ (९९७-१९, मारू, मः ४)
हरि हिरदै सदा सदा समाली ॥ (९९७-१९, मारू, मः ४)
हरि हरि नामु जपहु मेरे जीअड़े जपि हरि हरि नामु छडावै जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (९९७-१९, मारू, मः ४)

पन्ना ९९८

सुख सागरु अमृतु हरि नाउ ॥ (९९८-१, मारू, मः ४)
मंगत जनु जाचै हरि देहु पसाउ ॥ (९९८-२, मारू, मः ४)
हरि सति सति सदा हरि सति हरि सति मेरै मनि भावै जीउ ॥२॥ (९९८-२, मारू, मः ४)
नवे छिद्र स्रवहि अपवित्रा ॥ (९९८-३, मारू, मः ४)
बोलि हरि नाम पवित्र सभि किता ॥ (९९८-३, मारू, मः ४)
जे हरि सुप्रसन्नु होवै मेरा सुआमी हरि सिमरत मलु लहि जावै जीउ ॥३॥ (९९८-३, मारू, मः ४)
माइआ मोहु बिखमु है भारी ॥ (९९८-४, मारू, मः ४)
किउ तरीऐ दुतरु संसारी ॥ (९९८-४, मारू, मः ४)
सतिगुरु बोहिथु देइ प्रभु साचा जपि हरि हरि पारि लंघावै जीउ ॥४॥ (९९८-४, मारू, मः ४)
तू सरबत्र तेरा सभु कोई ॥ (९९८-५, मारू, मः ४)

जो तू करहि सोई प्रभ होई ॥ (६६८-५, मारू, मः ४)
जनु नानकु गुण गावै बेचारा हरि भावै हरि थाइ पावै जीउ ॥५॥१॥७॥ (६६८-६, मारू, मः ४)
मारू महला ४ ॥ (६६८-७)
हरि हरि नामु जपहु मन मेरे ॥ (६६८-७, मारू, मः ४)
सभि किलविख काटै हरि तेरे ॥ (६६८-७, मारू, मः ४)
हरि धनु राखहु हरि धनु संचहु हरि चलदिआ नालि सखाई जीउ ॥१॥ (६६८-७, मारू, मः ४)
जिस नो कृपा करे सो धिआवै ॥ (६६८-८, मारू, मः ४)
नित हरि जपु जापै जपि हरि सुखु पावै ॥ (६६८-८, मारू, मः ४)
गुर परसादी हरि रसु आवै जपि हरि हरि पारि लंघाई जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (६६८-६, मारू, मः ४)
निरभउ निरंकारु सति नामु ॥ (६६८-१०, मारू, मः ४)
जग महि स्रेसटु ऊतम कामु ॥ (६६८-१०, मारू, मः ४)
दुसमन दूत जमकालु ठेह मारउ हरि सेवक नेड़ि न जाई जीउ ॥२॥ (६६८-१०, मारू, मः ४)
जिसु उपरि हरि का मनु मानिआ ॥ (६६८-११, मारू, मः ४)
सो सेवकु चहु जुग चहु कुंट जानिआ ॥ (६६८-११, मारू, मः ४)
जे उस का बुरा कहै कोई पापी तिसु जमकंकरु खाई जीउ ॥३॥ (६६८-१२, मारू, मः ४)
सभ महि एकु निरंजन करता ॥ (६६८-१२, मारू, मः ४)
सभि करि करि वेखै अपणे चलता ॥ (६६८-१३, मारू, मः ४)
जिसु हरि राखै तिसु कउणु मारै जिसु करता आपि छडाई जीउ ॥४॥ (६६८-१३, मारू, मः ४)
हउ अनदिनु नामु लई करतारे ॥ (६६८-१४, मारू, मः ४)
जिनि सेवक भगत सभे निसतारे ॥ (६६८-१४, मारू, मः ४)
दस अठ चारि वेद सभि पूछहु जन नानक नामु छडाई जीउ ॥५॥२॥८॥ (६६८-१४, मारू, मः ४)
मारू महला ५ घरु २ (६६८-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (६६८-१६)
डरपै धरति अकासु नख्यत्ना सिर ऊपरि अमरु करारा ॥ (६६८-१७, मारू, मः ५)
पउणु पाणी बैसंतरु डरपै डरपै इंद्रु बिचारा ॥१॥ (६६८-१७, मारू, मः ५)
एका निरभउ बात सुनी ॥ (६६८-१८, मारू, मः ५)
सो सुखीआ सो सदा सुहेला जो गुर मिलि गाइ गुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (६६८-१८, मारू, मः ५)
देहधार अरु देवा डरपहि सिध साधिक डरि मुइआ ॥ (६६८-१६, मारू, मः ५)
लख चउरासीह मरि मरि जनमे फिरि फिरि जोनी जोइआ ॥२॥ (६६८-१६, मारू, मः ५)

पन्ना ६६६

राजसु सातकु तामसु डरपहि केते रूप उपाइआ ॥ (६६६-१, मारू, मः ५)
छल बपुरी इह कउला डरपै अति डरपै धर्म राइआ ॥३॥ (६६६-१, मारू, मः ५)
सगल समग्री डरहि बिआपी बिनु डर करणैहारा ॥ (६६६-२, मारू, मः ५)
कहु नानक भगतन का संगी भगत सोहहि दरबारा ॥४॥१॥ (६६६-२, मारू, मः ५)

मारू महला ५ ॥ (९९९-३)
पाँच बरख को अनाथु ध्रू बारिकु हरि सिमरत अमर अटारे ॥ (९९९-३, मारू, मः ५)
पुत्र हेति नाराइणु कहिओ जमकंकर मारि बिदारे ॥१॥ (९९९-४, मारू, मः ५)
मेरे ठाकुर केते अगनत उधारे ॥ (९९९-४, मारू, मः ५)
मोहि दीन अलप मति निरगुण परिओ सरणि दुआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (९९९-५, मारू, मः ५)
बालमीकु सुपचारो तरिओ बधिक तरे बिचारे ॥ (९९९-५, मारू, मः ५)
एक निमख मन माहि अराधिओ गजपति पारि उतारे ॥२॥ (९९९-६, मारू, मः ५)
कीनी रखिआ भगत प्रहिलादै हरनाखस नखहि बिदारे ॥ (९९९-६, मारू, मः ५)
बिदरु दासी सुतु भइओ पुनीता सगले कुल उजारे ॥३॥ (९९९-७, मारू, मः ५)
कवन पराध बतावउ अपुने मिथिआ मोह मगनारे ॥ (९९९-७, मारू, मः ५)
आइओ साम नानक ओट हरि की लीजै भुजा पसारे ॥४॥२॥ (९९९-८, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (९९९-९)
वित नवित भ्रमिओ बहु भाती अनिक जतन करि धाए ॥ (९९९-९, मारू, मः ५)
जो जो कर्म कीए हउ हउमै ते ते भए अजाए ॥१॥ (९९९-९, मारू, मः ५)
अवर दिन काहू काज न लाए ॥ (९९९-१०, मारू, मः ५)
सो दिनु मो कउ दीजै प्रभ जीउ जा दिन हरि जसु गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (९९९-१०, मारू, मः ५)
पुत्र कलत्र गृह देखि पसारा इस ही महि उरझाए ॥ (९९९-११, मारू, मः ५)
माइआ मद चाखि भए उदमाते हरि हरि कबहु न गाए ॥२॥ (९९९-११, मारू, मः ५)
इह बिधि खोजी बहु परकारा बिनु संतन नही पाए ॥ (९९९-१२, मारू, मः ५)
तुम दातार वडे प्रभ सम्म्रथ मागन कउ दानु आए ॥३॥ (९९९-१३, मारू, मः ५)
तिआगिओ सगला मानु महता दास रेण सरणाए ॥ (९९९-१३, मारू, मः ५)
कहु नानक हरि मिलि भए एकै महा अनंद सुख पाए ॥४॥३॥ (९९९-१४, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (९९९-१४)
कवन थान धीरिओ है नामा कवन बसतु अहंकारा ॥ (९९९-१४, मारू, मः ५)
कवन चिहन सुनि ऊपरि छोहिओ मुख ते सुनि करि गारा ॥१॥ (९९९-१५, मारू, मः ५)
सुनहु रे तू कउनु कहा ते आइओ ॥ (९९९-१६, मारू, मः ५)
एती न जानउ केतीक मुदति चलते खबरि न पाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (९९९-१६, मारू, मः ५)
सहन सील पवन अरु पाणी बसुधा खिमा निभराते ॥ (९९९-१७, मारू, मः ५)
पंच तत मिलि भइओ संजोगा इन महि कवन दुराते ॥२॥ (९९९-१७, मारू, मः ५)
जिनि रचि रचिआ पुरखि बिधातै नाले हउमै पाई ॥ (९९९-१८, मारू, मः ५)
जनम मरणु उस ही कउ है रे ओहा आवै जाई ॥३॥ (९९९-१८, मारू, मः ५)
बरनु चिहनु नाही किछु रचना मिथिआ सगल पसारा ॥ (९९९-१९, मारू, मः ५)
भणति नानकु जब खेलु उझारै तब एकै एकंकारा ॥४॥४॥ (९९९-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०००

मारू महला ५ ॥ (१०००-१)
मान मोह अरु लोभ विकारा बीओ चीति न घालिओ ॥ (१०००-१, मारू, मः ५)
नाम रतनु गुणा हरि बणजे लादि वखरु लै चालिओ ॥१॥ (१०००-२, मारू, मः ५)
सेवक की ओड़कि निबही प्रीति ॥ (१०००-२, मारू, मः ५)
जीवत साहिबु सेविओ अपना चलते राखिओ चीति ॥१॥ रहाउ ॥ (१०००-२, मारू, मः ५)
जैसी आगिआ कीनी ठाकुरि तिस ते मुखु नही मोरिओ ॥ (१०००-३, मारू, मः ५)
सहजु अनंदु रखिओ गृह भीतरि उठि उआहू कउ दउरिओ ॥२॥ (१०००-४, मारू, मः ५)
आगिआ महि भूख सोई करि सूखा सोग हरख नही जानिओ ॥ (१०००-४, मारू, मः ५)
जो जो हुकमु भइओ साहिब का सो माथै ले मानिओ ॥३॥ (१०००-५, मारू, मः ५)
भइओ कृपालु ठाकुरु सेवक कउ सवरे हलत पलाता ॥ (१०००-६, मारू, मः ५)
धन्नु सेवकु सफलु ओहु आइआ जिनि नानक खसमु पछाता ॥४॥५॥ (१०००-६, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०००-७)
खुलिआ करमु कृपा भई ठाकुर कीरतनु हरि हरि गाई ॥ (१०००-७, मारू, मः ५)
स्रमु थाका पाए बिस्रामा मिटि गई सगली धाई ॥१॥ (१०००-८, मारू, मः ५)
अब मोहि जीवन पदवी पाई ॥ (१०००-८, मारू, मः ५)
चीति आइओ मनि पुरखु बिधाता संतन की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१०००-८, मारू, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु मोहु निवारे निवरे सगल बैराई ॥ (१०००-९, मारू, मः ५)
सद हजूरि हाजरु है नाजरु कतहि न भइओ दूराई ॥२॥ (१०००-१०, मारू, मः ५)
सुख सीतल सरधा सभ पूरी होए संत सहाई ॥ (१०००-१०, मारू, मः ५)
पावन पतित कीए खिन भीतरि महिमा कथनु न जाई ॥३॥ (१०००-११, मारू, मः ५)
निरभउ भए सगल भै खोए गोबिद चरण ओटाई ॥ (१०००-११, मारू, मः ५)
नानकु जसु गावै ठाकुर का रैणि दिनसु लिव लाई ॥४॥६॥ (१०००-१२, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०००-१२)
जो समरथु सरब गुण नाइकु तिस कउ कबहु न गावसि रे ॥ (१०००-१३, मारू, मः ५)
छोडि जाइ खिन भीतरि ता कउ उआ कउ फिरि फिरि धावसि रे ॥१॥ (१०००-१३, मारू, मः ५)
अपुने प्रभ कउ किउ न समारसि रे ॥ (१०००-१४, मारू, मः ५)
बैरी संगि रंग रसि रचिआ तिसु सिउ जीअरा जारसि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (१०००-१४, मारू, मः ५)
जा कै नामि सुनिऐ जमु छोडै ता की सरणि न पावसि रे ॥ (१०००-१५, मारू, मः ५)
काढि देइ सिआल बपुरे कउ ता की ओट टिकावसि रे ॥२॥ (१०००-१५, मारू, मः ५)
जिस का जासु सुनत भव तरीऐ ता सिउ रंगु न लावसि रे ॥ (१०००-१६, मारू, मः ५)
थोरी बात अलप सुपने की बहुरि बहुरि अटकावसि रे ॥३॥ (१०००-१७, मारू, मः ५)
भइओ प्रसादु कृपा निधि ठाकुर संतसंगि पति पाई ॥ (१०००-१७, मारू, मः ५)
कहु नानक त्रै गुण भ्रमु छूटा जउ प्रभ भए सहाई ॥४॥७॥ (१०००-१८, मारू, मः ५)

मारू महला ५ ॥ (१०००-१६)
अंतरजामी सभ बिधि जानै तिस ते कहा दुलारिओ ॥ (१०००-१६, मारू, मः ५)
हसत पाव झरे खिन भीतरि अगनि संगि लै जारिओ ॥१॥ (१०००-१६, मारू, मः ५)

पन्ना १००१

मूड़े तै मन ते रामु बिसारिओ ॥ (१००१-१, मारू, मः ५)
लूणु खाइ करहि हरामखोरी पेखत नैन बिदारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००१-१, मारू, मः ५)
असाध रोगु उपजिओ तन भीतरि टरत न काहू टारिओ ॥ (१००१-२, मारू, मः ५)
प्रभ बिसरत महा दुखु पाइओ इहु नानक ततु बीचारिओ ॥२॥८॥ (१००१-२, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००१-३)
चरन कमल प्रभ राखे चीति ॥ (१००१-३, मारू, मः ५)
हरि गुण गावह नीता नीत ॥ (१००१-३, मारू, मः ५)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोऊ ॥ (१००१-४, मारू, मः ५)
आदि मधि अंति है सोऊ ॥१॥ (१००१-४, मारू, मः ५)
संतन की ओट आपे आपि ॥१॥ रहाउ ॥ (१००१-४, मारू, मः ५)
जा कै वसि है सगल संसारु ॥ (१००१-५, मारू, मः ५)
आपे आपि आपि निरंकारु ॥ (१००१-५, मारू, मः ५)
नानक गहिओ साचा सोइ ॥ (१००१-५, मारू, मः ५)
सुखु पाइआ फिरि दूखु न होइ ॥२॥६॥ (१००१-६, मारू, मः ५)
मारू महला ५ घरु ३ (१००१-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१००१-७)
प्रान सुखदाता जीअ सुखदाता तुम काहे बिसारिओ अगिआनथ ॥ (१००१-८, मारू, मः ५)
होछा मदु चाखि होए तुम बावर दुलभ जनमु अकारथ ॥१॥ (१००१-८, मारू, मः ५)
रे नर ऐसी करहि इआनथ ॥ (१००१-९, मारू, मः ५)
तजि सारंगधर भ्रमि तू भूला मोहि लपटिओ दासी संगि सानथ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००१-९, मारू, मः ५)
धरणीधरु तिआगि नीच कुल सेवहि हउ हउ करत बिहावथ ॥ (१००१-१०, मारू, मः ५)
फोकट कर्म करहि अगिआनी मनमुखि अंध कहावथ ॥२॥ (१००१-११, मारू, मः ५)
सति होता असति करि मानिआ जो बिनसत सो निहचलु जानथ ॥ (१००१-११, मारू, मः ५)
पर की कउ अपनी करि पकरी ऐसे भूल भुलानथ ॥३॥ (१००१-१२, मारू, मः ५)
खत्री ब्राहमण सूद वैस सभ एकै नामि तरानथ ॥ (१००१-१२, मारू, मः ५)
गुरु नानकु उपदेसु कहतु है जो सुनै सो पारि परानथ ॥४॥१॥१०॥ (१००१-१३, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००१-१४)
गुपतु करता संगि सो प्रभु डहकावए मनुखाइ ॥ (१००१-१४, मारू, मः ५)
बिसारि हरि जीउ बिखै भोगहि तपत थम्म गलि लाइ ॥१॥ (१००१-१४, मारू, मः ५)
रे नर काइ पर गृहि जाइ ॥ (१००१-१५, मारू, मः ५)

कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नही सुनिओ धर्म राइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००१-१५, मारू, मः ५)
बिकार पाथर गलहि बाधे निंद पोट सिराइ ॥ (१००१-१६, मारू, मः ५)
महा सागरु समुदु लंघना पारि न परना जाइ ॥२॥ (१००१-१६, मारू, मः ५)
कामि क्रोधि लोभि मोहि बिआपिओ नेत्र रखे फिराइ ॥ (१००१-१७, मारू, मः ५)
सीसु उठावन न कबहू मिलई महा दुतर माइ ॥३॥ (१००१-१७, मारू, मः ५)
सूरु मुकता ससी मुकता ब्रह्म गिआनी अलिपाइ ॥ (१००१-१८, मारू, मः ५)
सुभावत जैसे बैसंतर अलिपत सदा निरमलाइ ॥४॥ (१००१-१८, मारू, मः ५)
जिसु करमु खुलिआ तिसु लहिआ पड़दा जिनि गुर पहि मंनिआ सुभाइ ॥ (१००१-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १००२

गुरि मंत्रु अवखधु नामु दीना जन नानक संकट जोनि न पाइ ॥५॥२॥ (१००२-१, मारू, मः ५)
रे नर इन बिधि पारि पराइ ॥ (१००२-१, मारू, मः ५)
धिआइ हरि जीउ होइ मिरतकु तिआगि दूजा भाउ ॥ रहाउ दूजा ॥२॥११॥ (१००२-२, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००२-३)
बाहरि ढूढन ते छूटि परे गुरि घर ही माहि दिखाइआ था ॥ (१००२-३, मारू, मः ५)
अनभउ अचरज रूपु प्रभ पेखिआ मेरा मनु छोडि न कतहू जाइआ था ॥१॥ (१००२-३, मारू, मः ५)
मानकु पाइओ रे पाइओ हरि पूरा पाइआ था ॥ (१००२-४, मारू, मः ५)
मोलि अमोलु न पाइआ जाई करि किरपा गुरू दिवाइआ था ॥१॥ रहाउ ॥ (१००२-५, मारू, मः ५)
अदिसटु अगोचरु पारब्रह्मु मिलि साधू अकथु कथाइआ था ॥ (१००२-५, मारू, मः ५)
अनहद सबदु दसम दुआरि वजिओ तह अमृत नामु चुआइआ था ॥२॥ (१००२-६, मारू, मः ५)
तोटि नाही मनि तृसना बूझी अखुट भंडार समाइआ था ॥ (१००२-७, मारू, मः ५)
चरण चरण चरण गुर सेवे अघड़ु घड़िओ रसु पाइआ था ॥३॥ (१००२-७, मारू, मः ५)
सहजे आवा सहजे जावा सहजे मनु खेलाइआ था ॥ (१००२-८, मारू, मः ५)
कहु नानक भरमु गुरि खोइआ ता हरि महली महलु पाइआ था ॥४॥३॥१२॥ (१००२-९, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००२-९)
जिसहि साजि निवाजिआ तिसहि सिउ रुच नाहि ॥ (१००२-१०, मारू, मः ५)
आन रूती आन बोईऐ फलु न फूलै ताहि ॥१॥ (१००२-१०, मारू, मः ५)
रे मन वत्र बीजण नाउ ॥ (१००२-११, मारू, मः ५)
बोइ खेती लाइ मनूआ भलो समउ सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००२-११, मारू, मः ५)
खोइ खहड़ा भरमु मन का सतिगुर सरणी जाइ ॥ (१००२-११, मारू, मः ५)
करमु जिस कउ धुरहु लिखिआ सोई कार कमाइ ॥२॥ (१००२-१२, मारू, मः ५)
भाउ लागा गोबिद सिउ घाल पाई थाइ ॥ (१००२-१२, मारू, मः ५)
खेति मेरै जंमिआ निखुटि न कबहू जाइ ॥३॥ (१००२-१३, मारू, मः ५)
पाइआ अमोलु पदारथो छोडि न कतहू जाइ ॥ (१००२-१३, मारू, मः ५)
कहु नानक सुखु पाइआ तृपति रहे आघाइ ॥४॥४॥१३॥ (१००२-१४, मारू, मः ५)

मारू महला ५ ॥ (१००२-१५)
फूटो आँडा भर्म का मनहि भइओ परगासु ॥ (१००२-१५, मारू, मः ५)
काटी बेरी पगह ते गुरि कीनी बंदि खलासु ॥१॥ (१००२-१५, मारू, मः ५)
आवण जाणु रहिओ ॥ (१००२-१६, मारू, मः ५)
तपत कड़ाहा बुझि गइआ गुरि सीतल नामु दीओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००२-१६, मारू, मः ५)
जब ते साधू संगु भइआ तउ छोडि गए निगहार ॥ (१००२-१७, मारू, मः ५)
जिस की अटक तिस ते छुटी तउ कहा करै कोटवार ॥२॥ (१००२-१७, मारू, मः ५)
चूका भारा कर्म का होए निहकरमा ॥ (१००२-१८, मारू, मः ५)
सागर ते कंढै चड़े गुरि कीने धरमा ॥३॥ (१००२-१८, मारू, मः ५)
सचु थानु सचु बैठका सचु सुआउ बणाइआ ॥ (१००२-१८, मारू, मः ५)
सचु पूंजी सचु वखरो नानक घरि पाइआ ॥४॥५॥१४॥ (१००२-१९, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००२-१९)

पन्ना १००३

बेदु पुकारै मुख ते पंडत कामामन का माठा ॥ (१००३-१, मारू, मः ५)
मोनी होइ बैठा इकाँती हिरदै कलपन गाठा ॥ (१००३-१, मारू, मः ५)
होइ उदासी गृहु तजि चलिओ छुटकै नाही नाठा ॥१॥ (१००३-१, मारू, मः ५)
जीअ की कै पहि बात कहा ॥ (१००३-२, मारू, मः ५)
आपि मुकतु मो कउ प्रभु मेले ऐसो कहा लहा ॥१॥ रहाउ ॥ (१००३-२, मारू, मः ५)
तपसी करि कै देही साधी मनूआ दह दिस धाना ॥ (१००३-३, मारू, मः ५)
ब्रह्मचारि ब्रह्मचजु कीना हिरदै भइआ गुमाना ॥ (१००३-३, मारू, मः ५)
संनिआसी होइ कै तीरथि भ्रमिओ उसु महि क्रोधु बिगाना ॥२॥ (१००३-४, मारू, मः ५)
घूंघर बाधि भए रामदासा रोटीअन के ओपावा ॥ (१००३-५, मारू, मः ५)
बरत नेम कर्म खट कीने बाहरि भेख दिखावा ॥ (१००३-५, मारू, मः ५)
गीत नाद मुखि राग अलापे मनि नही हरि हरि गावा ॥३॥ (१००३-५, मारू, मः ५)
हरख सोग लोभ मोह रहत हहि निर्मल हरि के संता ॥ (१००३-६, मारू, मः ५)
तिन की धूड़ि पाए मनु मेरा जा दइआ करे भगवंता ॥ (१००३-७, मारू, मः ५)
कहु नानक गुरु पूरा मिलिआ ताँ उतरी मन की चिंता ॥४॥ (१००३-७, मारू, मः ५)
मेरा अंतरजामी हरि राइआ ॥ (१००३-८, मारू, मः ५)
सभु किछु जाणै मेरे जीअ का प्रीतमु बिसरि गए बकबाइआ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥६॥१५॥ (१००३-८, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००३-९)
कोटि लाख सर्ब को राजा जिसु हिरदै नामु तुमारा ॥ (१००३-९, मारू, मः ५)
जा कउ नामु न दीआ मेरै सतिगुरि से मरि जनमहि गावारा ॥१॥ (१००३-१०, मारू, मः ५)
मेरे सतिगुर ही पति राखु ॥ (१००३-१०, मारू, मः ५)

चीति आवहि तब ही पति पूरी बिसरत रलीऐ खाकु ॥१॥ रहाउ ॥ (१००३-११, मारू, मः ५)
रूप रंग खुसीआ मन भोगण ते ते छिद्र विकारा ॥ (१००३-११, मारू, मः ५)
हरि का नामु निधानु कलिआणा सूख सहजु इहु सारा ॥२॥ (१००३-१२, मारू, मः ५)
माइआ रंग बिरंग खिनै महि जिउ बादर की छाइआ ॥ (१००३-१३, मारू, मः ५)
से लाल भए गूड़ै रंगि राते जिन गुर मिलि हरि हरि गाइआ ॥३॥ (१००३-१३, मारू, मः ५)
ऊच मूच अपार सुआमी अगम दरबारा ॥ (१००३-१४, मारू, मः ५)
नामो वडिआई सोभा नानक खसमु पिआरा ॥४॥७॥१६॥ (१००३-१४, मारू, मः ५)
मारू महला ५ घरु ४ (१००३-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१००३-१६)
ओअंकारि उतपाती ॥ (१००३-१७, मारू, मः ५)
कीआ दिनसु सभ राती ॥ (१००३-१७, मारू, मः ५)
वणु तृणु तृभवण पाणी ॥ (१००३-१७, मारू, मः ५)
चारि बेद चारे खाणी ॥ (१००३-१७, मारू, मः ५)
खंड दीप सभि लोआ ॥ (१००३-१८, मारू, मः ५)
एक कवावै ते सभि होआ ॥१॥ (१००३-१८, मारू, मः ५)
करणैहारा बूझहु रे ॥ (१००३-१८, मारू, मः ५)
सतिगुरु मिलै त सूझै रे ॥१॥ रहाउ ॥ (१००३-१८, मारू, मः ५)
त्रै गुण कीआ पसारा ॥ (१००३-१९, मारू, मः ५)
नरक सुरग अवतारा ॥ (१००३-१९, मारू, मः ५)
हउमै आवै जाई ॥ (१००३-१९, मारू, मः ५)
मनु टिकणु न पावै राई ॥ (१००३-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १००४

बाझु गुरू गुबारा ॥ (१००४-१, मारू, मः ५)
मिलि सतिगुर निसतारा ॥२॥ (१००४-१, मारू, मः ५)
हउ हउ कर्म कमाणे ॥ (१००४-१, मारू, मः ५)
ते ते बंध गलाणे ॥ (१००४-१, मारू, मः ५)
मेरी मेरी धारी ॥ (१००४-२, मारू, मः ५)
ओहा पैरि लोहारी ॥ (१००४-२, मारू, मः ५)
सो गुर मिलि एकु पछाणै ॥ (१००४-२, मारू, मः ५)
जिसु होवै भागु मथाणै ॥३॥ (१००४-२, मारू, मः ५)
सो मिलिआ जि हरि मनि भाइआ ॥ (१००४-३, मारू, मः ५)
सो भूला जि प्रभू भुलाइआ ॥ (१००४-३, मारू, मः ५)
नह आपहु मूरखु गिआनी ॥ (१००४-३, मारू, मः ५)
जि करावै सु नामु वखानी ॥ (१००४-४, मारू, मः ५)

तेरा अंतु न पारावारा ॥ (१००४-४, मारू, मः ५)
जन नानक सद बलिहारा ॥४॥१॥१७॥ (१००४-४, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००४-५)
मोहनी मोहि लीए त्रै गुनीआ ॥ (१००४-५, मारू, मः ५)
लोभि विआपी झूठी दुनीआ ॥ (१००४-५, मारू, मः ५)
मेरी मेरी करि कै संची अंत की बार सगल ले छलीआ ॥१॥ (१००४-५, मारू, मः ५)
निरभउ निरंकारु दइअलीआ ॥ (१००४-६, मारू, मः ५)
जीअ जंत सगले प्रतिपलीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००४-६, मारू, मः ५)
एकै स्रमु करि गाडी गडहै ॥ (१००४-७, मारू, मः ५)
एकहि सुपनै दामु न छडहै ॥ (१००४-७, मारू, मः ५)
राजु कमाइ करी जिनि थैली ता कै संगि न चंचलि चलीआ ॥२॥ (१००४-७, मारू, मः ५)
एकहि प्राण पिंड ते पिआरी ॥ (१००४-८, मारू, मः ५)
एक संची तजि बाप महतारी ॥ (१००४-८, मारू, मः ५)
सुत मीत भ्रात ते गुहजी ता कै निकटि न होई खलीआ ॥३॥ (१००४-९, मारू, मः ५)
होइ अउधूत बैठे लाइ तारी ॥ (१००४-९, मारू, मः ५)
जोगी जती पंडित बीचारी ॥ (१००४-९, मारू, मः ५)
गृहि मड़ी मसाणी बन महि बसते ऊठि तिना कै लागी पलीआ ॥४॥ (१००४-१०, मारू, मः ५)
काटे बंधन ठाकुरि जा के ॥ (१००४-१०, मारू, मः ५)
हरि हरि नामु बसिओ जीअ ता कै ॥ (१००४-११, मारू, मः ५)
साधसंगि भए जन मुकते गति पाई नानक नदरि निहलीआ ॥५॥२॥१८॥ (१००४-११, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००४-१२)
सिमरहु एकु निरंजन सोऊ ॥ (१००४-१२, मारू, मः ५)
जा ते बिरथा जात न कोऊ ॥ (१००४-१२, मारू, मः ५)
मात गरभ महि जिनि प्रतिपारिआ ॥ (१००४-१३, मारू, मः ५)
जीउ पिंडु दे साजि सवारिआ ॥ (१००४-१३, मारू, मः ५)
सोई बिधाता खिनु खिनु जपीऐ ॥ (१००४-१३, मारू, मः ५)
जिसु सिमरत अवगुण सभि ढकीऐ ॥ (१००४-१४, मारू, मः ५)
चरण कमल उर अंतरि धारहु ॥ (१००४-१४, मारू, मः ५)
बिखिआ बन ते जीउ उधारहु ॥ (१००४-१४, मारू, मः ५)
करण पलाह मिटहि बिललाटा ॥ (१००४-१५, मारू, मः ५)
जपि गोविद भरमु भउ फाटा ॥ (१००४-१५, मारू, मः ५)
साधसंगि विरला को पाए ॥ (१००४-१५, मारू, मः ५)
नानकु ता कै बलि बलि जाए ॥१॥ (१००४-१६, मारू, मः ५)
राम नामु मनि तनि आधारा ॥ (१००४-१६, मारू, मः ५)
जो सिमरै तिस का निसतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१००४-१६, मारू, मः ५)

मिथिआ वसतु सति करि मानी ॥ (१००४-१७, मारू, मः ५)
हितु लाइओ सठ मूड़ अगिआनी ॥ (१००४-१७, मारू, मः ५)
काम क्रोध लोभ मद माता ॥ (१००४-१७, मारू, मः ५)
कउडी बदलै जनमु गवाता ॥ (१००४-१८, मारू, मः ५)
अपना छोडि पराइऐ राता ॥ (१००४-१८, मारू, मः ५)
माइआ मद मन तन संगि जाता ॥ (१००४-१८, मारू, मः ५)
तृसन न बूझै करत कलोला ॥ (१००४-१९, मारू, मः ५)
ऊणी आस मिथिआ सभि बोला ॥ (१००४-१९, मारू, मः ५)
आवत इकेला जात इकेला ॥ (१००४-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १००५

हम तुम संगि झूठे सभि बोला ॥ (१००५-१, मारू, मः ५)
पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ ॥ (१००५-१, मारू, मः ५)
नानक किरतु न जाइ मिटाइओ ॥२॥ (१००५-१, मारू, मः ५)
पसु पंखी भूत अरु प्रेता ॥ (१००५-२, मारू, मः ५)
बहु बिधि जोनी फिरत अनेता ॥ (१००५-२, मारू, मः ५)
जह जानो तह रहनु न पावै ॥ (१००५-२, मारू, मः ५)
थान बिहून उठि उठि फिरि धावै ॥ (१००५-२, मारू, मः ५)
मनि तनि बासना बहुतु बिसथारा ॥ (१००५-३, मारू, मः ५)
अहम्मेव मूठो बेचारा ॥ (१००५-३, मारू, मः ५)
अनिक दोख अरु बहुतु सजाई ॥ (१००५-३, मारू, मः ५)
ता की कीमति कहणु न जाई ॥ (१००५-४, मारू, मः ५)
प्रभ बिसरत नरक महि पाइआ ॥ (१००५-४, मारू, मः ५)
तह मात न बंधु न मीत न जाइआ ॥ (१००५-४, मारू, मः ५)
जिस कउ होत कृपाल सुआमी ॥ (१००५-५, मारू, मः ५)
सो जनु नानक पारगरामी ॥३॥ (१००५-५, मारू, मः ५)
भ्रमत भ्रमत प्रभ सरनी आइआ ॥ (१००५-५, मारू, मः ५)
दीना नाथ जगत पित माइआ ॥ (१००५-६, मारू, मः ५)
प्रभ दइआल दुख दरद बिदारण ॥ (१००५-६, मारू, मः ५)
जिसु भावै तिस ही निसतारण ॥ (१००५-७, मारू, मः ५)
अंध कूप ते काढनहारा ॥ (१००५-७, मारू, मः ५)
प्रेम भगति होवत निसतारा ॥ (१००५-७, मारू, मः ५)
साध रूप अपना तनु धारिआ ॥ (१००५-७, मारू, मः ५)
महा अगनि ते आपि उबारिआ ॥ (१००५-८, मारू, मः ५)
जप तप संजम इस ते किछु नाही ॥ (१००५-८, मारू, मः ५)

आदि अंति प्रभ अगम अगाही ॥ (१००५-८, मारू, मः ५)
नामु देहि मागै दासु तेरा ॥ (१००५-९, मारू, मः ५)
हरि जीवन पदु नानक प्रभु मेरा ॥४॥३॥१९॥ (१००५-९, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००५-१०)
कत कउ डहकावहु लोगा मोहन दीन किरपाई ॥१॥ (१००५-१०, मारू, मः ५)
ऐसी जानि पाई ॥ (१००५-१०, मारू, मः ५)
सरणि सूरो गुर दाता राखै आपि वडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१००५-१०, मारू, मः ५)
भगता का आगिआकारी सदा सदा सुखदाई ॥२॥ (१००५-११, मारू, मः ५)
अपने कउ किरपा करीअहु इकु नामु धिआई ॥३॥ (१००५-१२, मारू, मः ५)
नानकु दीनु नामु मागै दुतीआ भरमु चुकाई ॥४॥४॥२०॥ (१००५-१२, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००५-१३)
मेरा ठाकुरु अति भारा ॥ (१००५-१३, मारू, मः ५)
मोहि सेवकु बेचारा ॥१॥ (१००५-१३, मारू, मः ५)
मोहनु लालु मेरा प्रीतम मन प्राना ॥ (१००५-१३, मारू, मः ५)
मो कउ देहु दाना ॥१॥ रहाउ ॥ (१००५-१४, मारू, मः ५)
सगले मै देखे जोई ॥ (१००५-१४, मारू, मः ५)
बीजउ अवरु न कोई ॥२॥ (१००५-१४, मारू, मः ५)
जीअन प्रतिपालि समाहै ॥ (१००५-१५, मारू, मः ५)
है होसी आहे ॥३॥ (१००५-१५, मारू, मः ५)
दइआ मोहि कीजै देवा ॥ (१००५-१५, मारू, मः ५)
नानक लागो सेवा ॥४॥५॥२१॥ (१००५-१५, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००५-१६)
पतित उधारन तारन बलि बलि बले बलि जाईऐ ॥ (१००५-१६, मारू, मः ५)
ऐसा कोई भेटै संतु जितु हरि हरे हरि धिआईऐ ॥१॥ (१००५-१६, मारू, मः ५)
मो कउ कोइ न जानत कहीअत दासु तुमारा ॥ (१००५-१७, मारू, मः ५)
एहा ओट आधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१००५-१७, मारू, मः ५)
सर्ब धारन प्रतिपारन इक बिनउ दीना ॥ (१००५-१८, मारू, मः ५)
तुमरी बिधि तुम ही जानहु तुम जल हम मीना ॥२॥ (१००५-१८, मारू, मः ५)
पूरन बिसथीरन सुआमी आहि आइओ पाछै ॥ (१००५-१९, मारू, मः ५)
सगलो भू मंडल खंडल प्रभ तुम ही आछै ॥३॥ (१००५-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १००६

अटल अखइओ देवा मोहन अलख अपारा ॥ (१००६-१, मारू, मः ५)
दानु पावउ संता संगु नानक रेनु दासारा ॥४॥६॥२२॥ (१००६-१, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००६-२)

तृपति आघाए संता ॥ (१००६-२, मारू, मः ५)
गुर जाने जिन मंता ॥ (१००६-२, मारू, मः ५)
ता की किछु कहनु न जाई ॥ (१००६-२, मारू, मः ५)
जा कउ नाम बडाई ॥१॥ (१००६-३, मारू, मः ५)
लालु अमोला लालो ॥ (१००६-३, मारू, मः ५)
अगह अतोला नामो ॥१॥ रहाउ ॥ (१००६-३, मारू, मः ५)
अविगत सिउ मानिआ मानो ॥ (१००६-४, मारू, मः ५)
गुरमुखि ततु गिआनो ॥ (१००६-४, मारू, मः ५)
पेखत सगल धिआनो ॥ (१००६-४, मारू, मः ५)
तजिओ मन ते अभिमानो ॥२॥ (१००६-४, मारू, मः ५)
निहचलु तिन का ठाणा ॥ (१००६-५, मारू, मः ५)
गुर ते महलु पछाणा ॥ (१००६-५, मारू, मः ५)
अनदिनु गुर मिलि जागे ॥ (१००६-५, मारू, मः ५)
हरि की सेवा लागे ॥३॥ (१००६-६, मारू, मः ५)
पूरन तृपति अघाए ॥ (१००६-६, मारू, मः ५)
सहज समाधि सुभाए ॥ (१००६-६, मारू, मः ५)
हरि भंडारु हाथि आइआ ॥ (१००६-६, मारू, मः ५)
नानक गुर ते पाइआ ॥४॥७॥२३॥ (१००६-७, मारू, मः ५)
मारू महला ५ घरु ६ दुपदे (१००६-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१००६-८)
छोडि सगल सिआणपा मिलि साध तिआगि गुमानु ॥ (१००६-९, मारू, मः ५)
अवरु सभु किछु मिथिआ रसना राम राम वखानु ॥१॥ (१००६-९, मारू, मः ५)
मेरे मन करन सुणि हरि नामु ॥ (१००६-१०, मारू, मः ५)
मिटहि अघ तेरे जनम जनम के कवनु बपुरो जामु ॥१॥ रहाउ ॥ (१००६-१०, मारू, मः ५)
दूख दीन न भउ बिआपै मिलै सुख बिस्रामु ॥ (१००६-११, मारू, मः ५)
गुर प्रसादि नानकु बखानै हरि भजनु ततु गिआनु ॥२॥१॥२४॥ (१००६-११, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००६-१२)
जिनी नामु विसारिआ से होत देखे खेह ॥ (१००६-१२, मारू, मः ५)
पुत्र मित्र बिलास बनिता तूटते ए नेह ॥१॥ (१००६-१२, मारू, मः ५)
मेरे मन नामु नित नित लेह ॥ (१००६-१३, मारू, मः ५)
जलत नाही अगनि सागर सूखु मनि तनि देह ॥१॥ रहाउ ॥ (१००६-१३, मारू, मः ५)
बिरख छाइआ जैसे बिनसत पवन झूलत मेह ॥ (१००६-१४, मारू, मः ५)
हरि भगति दृड़ु मिलु साध नानक तेरै कामि आवत एह ॥२॥२॥२५॥ (१००६-१४, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००६-१५)
पुरखु पूरन सुखह दाता संगि बसतो नीत ॥ (१००६-१५, मारू, मः ५)

मरै न आवै न जाइ बिनसै बिआपत उसन न सीत ॥१॥ (१००६-१६, मारू, मः ५)
मेरे मन नाम सिउ करि प्रीति ॥ (१००६-१६, मारू, मः ५)
चेति मन महि हरि हरि निधाना एह निर्मल रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (१००६-१७, मारू, मः ५)
कृपाल दइआल गोपाल गोबिद जो जपै तिसु सीधि ॥ (१००६-१७, मारू, मः ५)
नवल नवतन चतुर सुंदर मनु नानक तिसु संगि बीधि ॥२॥३॥२६॥ (१००६-१८, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००६-१९)
चलत बैसत सोवत जागत गुर मंत्रु रिदै चितारि ॥ (१००६-१९, मारू, मः ५)
चरण सरण भजु संगि साधू भव सागर उतरहि पारि ॥१॥ (१००६-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १००७

मेरे मन नामु हिरदै धारि ॥ (१००७-१, मारू, मः ५)
करि प्रीति मनु तनु लाइ हरि सिउ अवर सगल विसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१००७-१, मारू, मः ५)
जीउ मनु तनु प्राण प्रभ के तू आपन आपु निवारि ॥ (१००७-२, मारू, मः ५)
गोविद भजु सभि सुआरथ पूरे नानक कबहु न हारि ॥२॥४॥२७॥ (१००७-३, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००७-३)
तजि आपु बिनसी तापु रेण साधू थीउ ॥ (१००७-३, मारू, मः ५)
तिसहि परापति नामु तेरा करि कृपा जिसु दीउ ॥१॥ (१००७-४, मारू, मः ५)
मेरे मन नामु अमृतु पीउ ॥ (१००७-४, मारू, मः ५)
आन साद बिसारि होछे अमरु जुगु जुगु जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००७-५, मारू, मः ५)
नामु इक रस रंग नामा नामि लागी लीउ ॥ (१००७-५, मारू, मः ५)
मीतु साजनु सखा बंधपु हरि एकु नानक कीउ ॥२॥५॥२८॥ (१००७-६, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००७-७)
प्रतिपालि माता उदरि राखै लगनि देत न सेक ॥ (१००७-७, मारू, मः ५)
सोई सुआमी ईहा राखै बूझु बुधि बिबेक ॥१॥ (१००७-७, मारू, मः ५)
मेरे मन नाम की करि टेक ॥ (१००७-८, मारू, मः ५)
तिसहि बूझु जिनि तू कीआ प्रभु करण कारण एक ॥१॥ रहाउ ॥ (१००७-८, मारू, मः ५)
चेति मन महि तजि सिआणप छोडि सगले भेख ॥ (१००७-९, मारू, मः ५)
सिमरि हरि हरि सदा नानक तरे कई अनेक ॥२॥६॥२९॥ (१००७-९, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१००७-१०)
पतित पावन नामु जा को अनाथ को है नाथु ॥ (१००७-१०, मारू, मः ५)
महा भउजल माहि तुलहो जा को लिखिओ माथ ॥१॥ (१००७-१०, मारू, मः ५)
डूबे नाम बिनु घन साथ ॥ (१००७-११, मारू, मः ५)
करण कारणु चिति न आवै दे करि राखै हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००७-११, मारू, मः ५)
साधसंगति गुण उचारण हरि नाम अमृत पाथ ॥ (१००७-१२, मारू, मः ५)
करहु कृपा मुरारि माधउ सुणि नानक जीवै गाथ ॥२॥७॥३०॥ (१००७-१२, मारू, मः ५)

मारू अंजुली महला ५ घरु ७ (१००७-१४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१००७-१४)
संजोगु विजोगु धुरहु ही हूआ ॥ (१००७-१५, मारू, मः ५)
पंच धातु करि पुतला कीआ ॥ (१००७-१५, मारू, मः ५)
साहै कै फुरमाइअड़ै जी देही विचि जीउ आइ पइआ ॥१॥ (१००७-१५, मारू, मः ५)
जिथै अगनि भखै भड़हारे ॥ (१००७-१६, मारू, मः ५)
ऊरध मुख महा गुबारे ॥ (१००७-१६, मारू, मः ५)
सासि सासि समाले सोई ओथै खसमि छडाइ लइआ ॥२॥ (१००७-१६, मारू, मः ५)
विचहु गरभै निकलि आइआ ॥ (१००७-१७, मारू, मः ५)
खसमु विसारि दुनी चितु लाइआ ॥ (१००७-१७, मारू, मः ५)
आवै जाइ भवाईऐ जोनी रहणु न कितही थाइ भइआ ॥३॥ (१००७-१८, मारू, मः ५)
मिहरवानि रखि लइअनु आपे ॥ (१००७-१८, मारू, मः ५)
जीअ जंत सभि तिस के थापे ॥ (१००७-१९, मारू, मः ५)
जनमु पदारथु जिणि चलिआ नानक आइआ सो परवाणु थिआ ॥४॥१॥३१॥ (१००७-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १००८

मारू महला ५ ॥ (१००८-१)
वैदो न वाई भैणो न भाई एको सहाई रामु हे ॥१॥ (१००८-१, मारू, मः ५)
कीता जिसो होवै पापाँ मलो धोवै सो सिमरहु प्रधानु हे ॥२॥ (१००८-२, मारू, मः ५)
घटि घटे वासी सर्ब निवासी असथिरु जा का थानु हे ॥३॥ (१००८-२, मारू, मः ५)
आवै न जावै संगे समावै पूरन जा का कामु हे ॥४॥ (१००८-३, मारू, मः ५)
भगत जना का राखणहारा ॥ (१००८-३, मारू, मः ५)
संत जीवहि जपि प्रान अधारा ॥ (१००८-४, मारू, मः ५)
करन कारन समरथु सुआमी नानकु तिसु कुरबानु हे ॥५॥२॥३२॥ (१००८-४, मारू, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१००८-५)
मारू महला ९ ॥ (१००८-५)
हरि को नामु सदा सुखदाई ॥ (१००८-५, मारू, मः ९)
जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१००८-५, मारू, मः ९)
पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥ (१००८-६, मारू, मः ९)
ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥१॥ (१००८-६, मारू, मः ९)
जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥ (१००८-७, मारू, मः ९)
कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥२॥१॥ (१००८-८, मारू, मः ९)
मारू महला ९ ॥ (१००८-८)
अब मै कहा करउ री माई ॥ (१००८-८, मारू, मः ९)
सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१००८-९, मारू, मः ९)

काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥ (१००८-६, मारू, मः ९)
राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥१॥ (१००८-१०, मारू, मः ९)
जो सम्पति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥ (१००८-१०, मारू, मः ९)
कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥२॥२॥ (१००८-११, मारू, मः ९)
मारू महला ९ ॥ (१००८-१२)
माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥ (१००८-१२, मारू, मः ९)
माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१००८-१२, मारू, मः ९)
जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥ (१००८-१३, मारू, मः ९)
कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥१॥ (१००८-१३, मारू, मः ९)
इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥ (१००८-१४, मारू, मः ९)
सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥२॥३॥ (१००८-१५, मारू, मः ९)
मारू असटपदीआ महला १ घरु १ (१००८-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१००८-१६)
बेद पुराण कथे सुणे हारे मुनी अनेका ॥ (१००८-१७, मारू, मः १)
अठसठि तीर्थ बहु घणा भ्रमि थाके भेखा ॥ (१००८-१७, मारू, मः १)
साचो साहिबु निरमलो मनि मानै एका ॥१॥ (१००८-१७, मारू, मः १)
तू अजरावरु अमरु तू सभ चालणहारी ॥ (१००८-१८, मारू, मः १)
नामु रसाइणु भाइ लै परहरि दुखु भारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१००८-१८, मारू, मः १)

पन्ना १००९

हरि पड़ीऐ हरि बुझीऐ गुरमती नामि उधारा ॥ (१००९-१, मारू, मः १)
गुरि पूरै पूरी मति है पूरै सबदि बीचारा ॥ (१००९-१, मारू, मः १)
अठसठि तीर्थ हरि नामु है किलविख काटणहारा ॥२॥ (१००९-२, मारू, मः १)
जलु बिलोवै जलु मथै ततु लोड़ै अंधु अगिआना ॥ (१००९-२, मारू, मः १)
गुरमती दधि मथीऐ अमृतु पाईऐ नामु निधाना ॥ (१००९-३, मारू, मः १)
मनमुख ततु न जाणनी पसू माहि समाना ॥३॥ (१००९-३, मारू, मः १)
हउमै मेरा मरी मरु मरि जम्मै वारो वार ॥ (१००९-४, मारू, मः १)
गुर कै सबदे जे मरै फिरि मरै न दूजी वार ॥ (१००९-४, मारू, मः १)
गुरमती जगजीवनु मनि वसै सभि कुल उधारणहार ॥४॥ (१००९-५, मारू, मः १)
सचा वखरु नामु है सचा वापारा ॥ (१००९-५, मारू, मः १)
लाहा नामु संसारि है गुरमती वीचारा ॥ (१००९-६, मारू, मः १)
दूजै भाइ कार कमावणी नित तोटा सैसारा ॥५॥ (१००९-६, मारू, मः १)
साची संगति थानु सचु सचे घर बारा ॥ (१००९-७, मारू, मः १)
सचा भोजनु भाउ सचु सचु नामु अधारा ॥ (१००९-७, मारू, मः १)
सची बाणी संतोखिआ सचा सबदु वीचारा ॥६॥ (१००९-७, मारू, मः १)

रस भोगण पातिसाहीआ दुख सुख संघारा ॥ (१००९-८, मारू, मः १)
मोटा नाउ धराईऐ गलि अउगण भारा ॥ (१००९-८, मारू, मः १)
माणस दाति न होवई तू दाता सारा ॥७॥ (१००९-९, मारू, मः १)
अगम अगोचरु तू धणी अविगतु अपारा ॥ (१००९-९, मारू, मः १)
गुर सबदी दरु जोईऐ मुकते भंडारा ॥ (१००९-१०, मारू, मः १)
नानक मेलु न चूकई साचे वापारा ॥८॥१॥ (१००९-१०, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१००९-११)
बिखु बोहिथा लादिआ दीआ समुंद मंझारि ॥ (१००९-११, मारू, मः १)
कंधी दिसि न आवई ना उरवारु न पारु ॥ (१००९-११, मारू, मः १)
वंझी हाथि न खेवटू जलु सागरु असरालु ॥१॥ (१००९-१२, मारू, मः १)
बाबा जगु फाथा महा जालि ॥ (१००९-१२, मारू, मः १)
गुर परसादी उबरे सचा नामु समालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१००९-१२, मारू, मः १)
सतिगुरू है बोहिथा सबदि लंघावणहारु ॥ (१००९-१३, मारू, मः १)
तिथै पवणु न पावको ना जलु ना आकारु ॥ (१००९-१३, मारू, मः १)
तिथै सचा सचि नाइ भवजल तारणहारु ॥२॥ (१००९-१४, मारू, मः १)
गुरमुखि लंघे से पारि पए सचे सिउ लिव लाइ ॥ (१००९-१४, मारू, मः १)
आवा गउणु निवारिआ जोती जोति मिलाइ ॥ (१००९-१५, मारू, मः १)
गुरमती सहजु ऊपजै सचे रहै समाइ ॥३॥ (१००९-१५, मारू, मः १)
सपु पिड़ाई पाईऐ बिखु अंतरि मनि रोसु ॥ (१००९-१६, मारू, मः १)
पूरबि लिखिआ पाईऐ किस नो दीजै दोसु ॥ (१००९-१६, मारू, मः १)
गुरमुखि गारड़ु जे सुणे मन्ने नाउ संतोसु ॥४॥ (१००९-१७, मारू, मः १)
मागरमछु फहाईऐ कुंडी जालु वताइ ॥ (१००९-१७, मारू, मः १)
दुरमति फाथा फाहीऐ फिरि फिरि पछोताइ ॥ (१००९-१७, मारू, मः १)
जम्मण मरणु न सुझई किरतु न मेटिआ जाइ ॥५॥ (१००९-१८, मारू, मः १)
हउमै बिखु पाइ जगतु उपाइआ सबदु वसै बिखु जाइ ॥ (१००९-१८, मारू, मः १)
जरा जोहि न सकई सचि रहै लिव लाइ ॥ (१००९-१९, मारू, मः १)
जीवन मुकतु सो आखीऐ जिसु विचहु हउमै जाइ ॥६॥ (१००९-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०१०

धंधै धावत जगु बाधिआ ना बूझै वीचारु ॥ (१०१०-१, मारू, मः १)
जम्मण मरणु विसारिआ मनमुख मुगधु गवारु ॥ (१०१०-१, मारू, मः १)
गुरि राखे से उबरे सचा सबदु वीचारि ॥७॥ (१०१०-२, मारू, मः १)
सूहटु पिंजरि प्रेम कै बोलै बोलणहारु ॥ (१०१०-२, मारू, मः १)
सचु चुगै अमृतु पीऐ उडै त एका वार ॥ (१०१०-३, मारू, मः १)
गुरि मिलिऐ खसमु पछाणीऐ कहु नानक मोख दुआरु ॥८॥२॥ (१०१०-३, मारू, मः १)

मारू महला १ ॥ (१०१०-४)
सबदि मरै ता मारि मरु भागो किसु पहि जाउ ॥ (१०१०-४, मारू, मः १)
जिस कै डरि भै भागीऐ अमृतु ता को नाउ ॥ (१०१०-४, मारू, मः १)
मारहि राखहि एकु तू बीजउ नाही थाउ ॥१॥ (१०१०-५, मारू, मः १)
बाबा मै कुचीलु काचउ मतिहीन ॥ (१०१०-५, मारू, मः १)
नाम बिना को कछु नही गुरि पूरै पूरी मति कीन ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१०-६, मारू, मः १)
अवगणि सुभर गुण नही बिनु गुण किउ घरि जाउ ॥ (१०१०-६, मारू, मः १)
सहजि सबदि सुखु ऊपजै बिनु भागा धनु नाहि ॥ (१०१०-७, मारू, मः १)
जिन कै नामु न मनि वसै से बाधे दूख सहाहि ॥२॥ (१०१०-७, मारू, मः १)
जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि ॥ (१०१०-८, मारू, मः १)
आगै पाछै सुखु नही गाडे लादे छारु ॥ (१०१०-८, मारू, मः १)
विछुड़िआ मेला नही दूखु घणो जम दुआरि ॥३॥ (१०१०-९, मारू, मः १)
अगै किआ जाणा नाहि मै भूले तू समझाइ ॥ (१०१०-९, मारू, मः १)
भूले मारगु जो दसे तिस कै लागउ पाइ ॥ (१०१०-१०, मारू, मः १)
गुर बिनु दाता को नही कीमति कहणु न जाइ ॥४॥ (१०१०-१०, मारू, मः १)
साजनु देखा ता गलि मिला साचु पठाइओ लेखु ॥ (१०१०-११, मारू, मः १)
मुखि धिमाणै धन खड़ी गुरमुखि आखी देखु ॥ (१०१०-११, मारू, मः १)
तुधु भावै तू मनि वसहि नदरी करमि विसेखु ॥५॥ (१०१०-१२, मारू, मः १)
भूख पिआसो जे भवै किआ तिसु मागउ देइ ॥ (१०१०-१२, मारू, मः १)
बीजउ सूझै को नही मनि तनि पूरनु देइ ॥ (१०१०-१३, मारू, मः १)
जिनि कीआ तिनि देखिआ आपि वडाई देइ ॥६॥ (१०१०-१३, मारू, मः १)
नगरी नाइकु नवतनो बालकु लील अनूपु ॥ (१०१०-१३, मारू, मः १)
नारि न पुरखु न पंखणू साचउ चतुरु सरूपु ॥ (१०१०-१४, मारू, मः १)
जो तिसु भावै सो थीऐ तू दीपकु तू धूपु ॥७॥ (१०१०-१४, मारू, मः १)
गीत साद चाखे सुणे बाद साद तनि रोगु ॥ (१०१०-१५, मारू, मः १)
सचु भावै साचउ चवै छूटै सोग विजोगु ॥ (१०१०-१५, मारू, मः १)
नानक नामु न वीसरै जो तिसु भावै सु होगु ॥८॥३॥ (१०१०-१६, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०१०-१६)
साची कार कमावणी होरि लालच बादि ॥ (१०१०-१६, मारू, मः १)
इहु मनु साचै मोहिआ जिहवा सचि सादि ॥ (१०१०-१७, मारू, मः १)
बिनु नावै को रसु नही होरि चलहि बिखु लादि ॥१॥ (१०१०-१७, मारू, मः १)
ऐसा लाला मेरे लाल को सुणि खसम हमारे ॥ (१०१०-१८, मारू, मः १)
जिउ फुरमावहि तिउ चला सचु लाल पिआरे ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१०-१८, मारू, मः १)
अनदिनु लाले चाकरी गोले सिरि मीरा ॥ (१०१०-१९, मारू, मः १)
गुर बचनी मनु वेचिआ सबदि मनु धीरा ॥ (१०१०-१९, मारू, मः १)

गुर पूरे साबासि है काटै मन पीरा ॥२॥ (१०११-१, मारू, मः १)
लाला गोला धणी को किआ कहउ वडिआईऐ ॥ (१०११-१, मारू, मः १)
भाणै बखसे पूरा धणी सचु कार कमाईऐ ॥ (१०११-२, मारू, मः १)
विछुड़िआ कउ मेलि लए गुर कउ बलि जाईऐ ॥३॥ (१०११-२, मारू, मः १)
लाले गोले मति खरी गुर की मति नीकी ॥ (१०११-३, मारू, मः १)
साची सुरति सुहावणी मनमुख मति फीकी ॥ (१०११-३, मारू, मः १)
मनु तनु तेरा तू प्रभू सचु धीरक धुर की ॥४॥ (१०११-३, मारू, मः १)
साचै बैसणु उठणा सचु भोजनु भाखिआ ॥ (१०११-४, मारू, मः १)
चिति सचै वितो सचा साचा रसु चाखिआ ॥ (१०११-४, मारू, मः १)
साचै घरि साचै रखे गुर बचनि सुभाखिआ ॥५॥ (१०११-५, मारू, मः १)
मनमुख कउ आलसु घणो फाथे ओजाड़ी ॥ (१०११-५, मारू, मः १)
फाथा चुगै नित चोगड़ी लगि बंधु विगाड़ी ॥ (१०११-६, मारू, मः १)
गुर परसादी मुकतु होइ साचे निज ताड़ी ॥६॥ (१०११-६, मारू, मः १)
अनहति लाला बेधिआ प्रभ हेति पिआरी ॥ (१०११-६, मारू, मः १)
बिनु साचे जीउ जलि बलउ झूठे वेकारी ॥ (१०११-७, मारू, मः १)
बादि कारा सभि छोडीआ साची तरु तारी ॥७॥ (१०११-७, मारू, मः १)
जिनी नामु विसारिआ तिना ठउर न ठाउ ॥ (१०११-८, मारू, मः १)
लालै लालचु तिआगिआ पाइआ हरि नाउ ॥ (१०११-८, मारू, मः १)
तू बखसहि ता मेलि लैहि नानक बलि जाउ ॥८॥४॥ (१०११-९, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०११-९)
लालै गारबु छोडिआ गुर कै भै सहजि सुभाई ॥ (१०११-९, मारू, मः १)
लालै खसमु पछाणिआ वडी वडिआई ॥ (१०११-१०, मारू, मः १)
खसमि मिलिऐ सुखु पाइआ कीमति कहणु न जाई ॥१॥ (१०११-१०, मारू, मः १)
लाला गोला खसम का खसमै वडिआई ॥ (१०११-११, मारू, मः १)
गुर परसादी उबरे हरि की सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१०११-११, मारू, मः १)
लाले नो सिरि कार है धुरि खसमि फुरमाई ॥ (१०११-१२, मारू, मः १)
लालै हुकमु पछाणिआ सदा रहै रजाई ॥ (१०११-१२, मारू, मः १)
आपे मीरा बखसि लए वडी वडिआई ॥२॥ (१०११-१३, मारू, मः १)
आपि सचा सभु सचु है गुर सबदि बुझाई ॥ (१०११-१३, मारू, मः १)
तेरी सेवा सो करे जिस नो लैहि तू लाई ॥ (१०११-१४, मारू, मः १)
बिनु सेवा किनै न पाइआ दूजै भरमि खुआई ॥३॥ (१०११-१४, मारू, मः १)
सो किउ मनहु विसारीऐ नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ (१०११-१५, मारू, मः १)
जीउ पिंडु सभु तिस दा साहु तिनै विचि पाइआ ॥ (१०११-१५, मारू, मः १)

जा कृपा करे ता सेवीऐ सेवि सचि समाइआ ॥४॥ (१०११-१६, मारू, मः १)
लाला सो जीवतु मरै मरि विचहु आपु गवाए ॥ (१०११-१६, मारू, मः १)
बंधन तूटहि मुकति होइ तृसना अगनि बुझाए ॥ (१०११-१७, मारू, मः १)
सभ महि नामु निधानु है गुरमुखि को पाए ॥५॥ (१०११-१७, मारू, मः १)
लाले विचि गुणु किछु नही लाला अवगणिआरु ॥ (१०११-१८, मारू, मः १)
तुधु जेवडु दाता को नही तू बखसणहारु ॥ (१०११-१८, मारू, मः १)
तेरा हुकमु लाला मन्ने एह करणी सारु ॥६॥ (१०११-१९, मारू, मः १)
गुरु सागरु अमृत सरु जो इछे सो फलु पाए ॥ (१०११-१९, मारू, मः १)
नामु पदारथु अमरु है हिरदै मंनि वसाए ॥ (१०११-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०१२

गुर सेवा सदा सुखु है जिस नो हुकमु मनाए ॥७॥ (१०१२-१, मारू, मः १)
सुइना रुपा सभ धातु है माटी रलि जाई ॥ (१०१२-१, मारू, मः १)
बिनु नावै नालि न चलई सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (१०१२-२, मारू, मः १)
नानक नामि रते से निरमले साचै रहे समाई ॥८॥५॥ (१०१२-२, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०१२-३)
हुकमु भइआ रहणा नही धुरि फाटे चीरै ॥ (१०१२-३, मारू, मः १)
एहु मनु अवगणि बाधिआ सहु देह सरीरै ॥ (१०१२-३, मारू, मः १)
पूरै गुरि बखसाईअहि सभि गुनह फकीरै ॥१॥ (१०१२-४, मारू, मः १)
किउ रहीऐ उठि चलणा बुझु सबद बीचारा ॥ (१०१२-४, मारू, मः १)
जिसु तू मेलहि सो मिलै धुरि हुकमु अपारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१२-५, मारू, मः १)
जिउ तू राखहि तिउ रहा जो देहि सु खाउ ॥ (१०१२-५, मारू, मः १)
जिउ तू चलावहि तिउ चला मुखि अमृत नाउ ॥ (१०१२-६, मारू, मः १)
मेरे ठाकुर हथि वडिआईआ मेलहि मनि चाउ ॥२॥ (१०१२-६, मारू, मः १)
कीता किआ सालाहीऐ करि देखै सोई ॥ (१०१२-७, मारू, मः १)
जिनि कीआ सो मनि वसै मै अवरु न कोई ॥ (१०१२-७, मारू, मः १)
सो साचा सालाहीऐ साची पति होई ॥३॥ (१०१२-८, मारू, मः १)
पंडितु पड़ि न पहुचई बहु आल जंजाला ॥ (१०१२-८, मारू, मः १)
पाप पुन्न दुइ संगमे खुधिआ जमकाला ॥ (१०१२-९, मारू, मः १)
विछोड़ा भउ वीसरै पूरा रखवाला ॥४॥ (१०१२-९, मारू, मः १)
जिन की लेखै पति पवै से पूरे भाई ॥ (१०१२-९, मारू, मः १)
पूरे पूरी मति है सची वडिआई ॥ (१०१२-१०, मारू, मः १)
देदे तोटि न आवई लै लै थकि पाई ॥५॥ (१०१२-१०, मारू, मः १)
खार समुद्रु ढंढोलीऐ इकु मणीआ पावै ॥ (१०१२-१०, मारू, मः १)
दुइ दिन चारि सुहावणा माटी तिसु खावै ॥ (१०१२-११, मारू, मः १)

गुरु सागरु सति सेवीऐ दे तोटि न आवै ॥६॥ (१०१२-११, मारू, मः १)
मेरे प्रभ भावनि से ऊजले सभ मैलु भरीजै ॥ (१०१२-१२, मारू, मः १)
मैला ऊजलु ता थीऐ पारस संगि भीजै ॥ (१०१२-१२, मारू, मः १)
वन्नी साचे लाल की किनि कीमति कीजै ॥७॥ (१०१२-१३, मारू, मः १)
भेखी हाथ न लभई तीरथि नही दाने ॥ (१०१२-१३, मारू, मः १)
पूछउ बेद पड़ंतिआ मूठी विणु माने ॥ (१०१२-१३, मारू, मः १)
नानक कीमति सो करे पूरा गुरु गिआने ॥८॥६॥ (१०१२-१४, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०१२-१४)
मनमुखु लहरि घरु तजि विगूचै अवरा के घर हेरै ॥ (१०१२-१५, मारू, मः १)
गृह धरमु गवाए सतिगुरु न भेटै दुरमति घूमन घेरै ॥ (१०१२-१५, मारू, मः १)
दिसंतरु भवै पाठ पड़ि थाका तृसना होइ वधेरै ॥ (१०१२-१६, मारू, मः १)
काची पिंडी सबदु न चीनै उदरु भरै जैसे ढोरै ॥१॥ (१०१२-१६, मारू, मः १)
बाबा ऐसी रवत रवै संनिआसी ॥ (१०१२-१७, मारू, मः १)
गुर कै सबदि एक लिव लागी तेरै नामि रते तृपतासी ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१२-१७, मारू, मः १)
घोली गेरू रंगु चड़ाइआ वसत्र भेख भेखारी ॥ (१०१२-१८, मारू, मः १)
कापड़ फारि बनाई खिंथा झोली माइआधारी ॥ (१०१२-१८, मारू, मः १)
घरि घरि मागै जगु परबोधै मनि अंधै पति हारी ॥ (१०१२-१९, मारू, मः १)
भरमि भुलाणा सबदु न चीनै जूऐ बाजी हारी ॥२॥ (१०१२-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०१३

अंतरि अगनि न गुर बिनु बूझै बाहरि पूअर तापै ॥ (१०१३-१, मारू, मः १)
गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ॥ (१०१३-१, मारू, मः १)
निंदा करि करि नरक निवासी अंतरि आतम जापै ॥ (१०१३-२, मारू, मः १)
अठसठि तीर्थ भरमि विगूचहि किउ मलु धोपै पापै ॥३॥ (१०१३-२, मारू, मः १)
छाणी खाकु बिभूत चड़ाई माइआ का मगु जोहै ॥ (१०१३-३, मारू, मः १)
अंतरि बाहरि एकु न जाणै साचु कहे ते छोहै ॥ (१०१३-३, मारू, मः १)
पाठु पड़ै मुखि झूठो बोलै निगुरे की मति ओहै ॥ (१०१३-४, मारू, मः १)
नामु न जपई किउ सुखु पावै बिनु नावै किउ सोहै ॥४॥ (१०१३-४, मारू, मः १)
मूंडु मुडाइ जटा सिख बाधी मोनि रहै अभिमाना ॥ (१०१३-५, मारू, मः १)
मनूआ डोलै दह दिस धावै बिनु रत आतम गिआना ॥ (१०१३-५, मारू, मः १)
अमृतु छोडि महा बिखु पीवै माइआ का देवाना ॥ (१०१३-६, मारू, मः १)
किरतु न मिटई हुकमु न बूझै पसूआ माहि समाना ॥५॥ (१०१३-७, मारू, मः १)
हाथ कमंडलु कापड़ीआ मनि तृसना उपजी भारी ॥ (१०१३-७, मारू, मः १)
इसत्री तजि करि कामि विआपिआ चितु लाइआ पर नारी ॥ (१०१३-८, मारू, मः १)
सिख करे करि सबदु न चीनै लम्पटु है बाजारी ॥ (१०१३-८, मारू, मः १)

अंतरि बिखु बाहरि निभराती ता जमु करे खुआरी ॥६॥ (१०१३-६, मारू, मः १)
सो संनिआसी जो सतिगुर सेवै विचहु आपु गवाए ॥ (१०१३-६, मारू, मः १)
छादन भोजन की आस न करई अचिंतु मिलै सो पाए ॥ (१०१३-१०, मारू, मः १)
बकै न बोलै खिमा धनु संग्रहै तामसु नामि जलाए ॥ (१०१३-१०, मारू, मः १)
धनु गिरही संनिआसी जोगी जि हरि चरणी चितु लाए ॥७॥ (१०१३-११, मारू, मः १)
आस निरास रहै संनिआसी एकसु सिउ लिव लाए ॥ (१०१३-११, मारू, मः १)
हरि रसु पीवै ता साति आवै निज घरि ताड़ी लाए ॥ (१०१३-१२, मारू, मः १)
मनूआ न डोलै गुरमुखि बूझै धावतु वरजि रहाए ॥ (१०१३-१३, मारू, मः १)
गृहु सरीरु गुरमती खोजे नामु पदारथु पाए ॥८॥ (१०१३-१३, मारू, मः १)
ब्रह्मा बिसनु महेसु सरेसट नामि रते वीचारी ॥ (१०१३-१४, मारू, मः १)
खाणी बाणी गगन पताली जंता जोति तुमारी ॥ (१०१३-१४, मारू, मः १)
सभि सुख मुकति नाम धुनि बाणी सचु नामु उर धारी ॥ (१०१३-१४, मारू, मः १)
नाम बिना नही छूटसि नानक साची तरु तू तारी ॥९॥७॥ (१०१३-१५, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०१३-१६)
मात पिता संजोगि उपाए रकतु बिंदु मिलि पिंडु करे ॥ (१०१३-१६, मारू, मः १)
अंतरि गरभ उरधि लिव लागी सो प्रभु सारे दाति करे ॥१॥ (१०१३-१६, मारू, मः १)
संसारु भवजलु किउ तरै ॥ (१०१३-१७, मारू, मः १)
गुरमुखि नामु निरंजनु पाईऐ अफरिओ भारु अफारु टरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१३-१७, मारू, मः १)
ते गुण विसरि गए अपराधी मै बउरा किआ करउ हरे ॥ (१०१३-१८, मारू, मः १)
तू दाता दइआलु सभै सिरि अहिनिसि दाति समारि करे ॥२॥ (१०१३-१९, मारू, मः १)
चारि पदार्थ लै जगि जनमिआ सिव सकती घरि वासु धरे ॥ (१०१३-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०१४

लागी भूख माइआ मगु जोहै मुकति पदारथु मोहि खरे ॥३॥ (१०१४-१, मारू, मः १)
करण पलाव करे नही पावै इत उत ढूढत थाकि परे ॥ (१०१४-१, मारू, मः १)
कामि क्रोधि अहंकारि विआपे कूड़ कुटम्ब सिउ प्रीति करे ॥४॥ (१०१४-२, मारू, मः १)
खावै भोगै सुणि सुणि देखै पहिरि दिखावै काल घरे ॥ (१०१४-३, मारू, मः १)
बिनु गुर सबद न आपु पछाणै बिनु हरि नाम न कालु टरे ॥५॥ (१०१४-३, मारू, मः १)
जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥ (१०१४-४, मारू, मः १)
तनु धनु बिनसै सहसै सहसा फिरि पछुतावै मुखि धूरि परे ॥६॥ (१०१४-४, मारू, मः १)
बिरधि भइआ जोबनु तनु खिसिआ कफु कंठु बिरूधो नैनहु नीरु ढरे ॥ (१०१४-५, मारू, मः १)
चरण रहे कर कम्पण लागे साकत रामु न रिदै हरे ॥७॥ (१०१४-६, मारू, मः १)
सुरति गई काली हू धउले किसै न भावै रखिओ घरे ॥ (१०१४-६, मारू, मः १)
बिसरत नाम ऐसे दोख लागहि जमु मारि समारे नरकि खरे ॥८॥ (१०१४-७, मारू, मः १)
पूरब जनम को लेखु न मिटई जनमि मरै का कउ दोसु धरे ॥ (१०१४-८, मारू, मः १)

बिनु गुर बादि जीवणु होरु मरणा बिनु गुर सबदै जनमु जरे ॥६॥ (१०१४-८, मारू, मः १)
खुसी खुआर भए रस भोगण फोकट कर्म विकार करे ॥ (१०१४-६, मारू, मः १)
नामु बिसारि लोभि मूलु खोइओ सिरि धर्म राइ का डंडु परे ॥१०॥ (१०१४-६, मारू, मः १)
गुरमुखि राम नाम गुण गावहि जा कउ हरि प्रभु नदरि करे ॥ (१०१४-१०, मारू, मः १)
ते निर्मल पुरख अपरम्पर पूरे ते जग महि गुर गोविंद हरे ॥११॥ (१०१४-११, मारू, मः १)
हरि सिमरहु गुर बचन समारहु संगति हरि जन भाउ करे ॥ (१०१४-११, मारू, मः १)
हरि जन गुरु प्रधानु दुआरै नानक तिन जन की रेणु हरे ॥१२॥८॥ (१०१४-१२, मारू, मः १)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०१४-१४)
मारू काफी महला १ घरु २ ॥ (१०१४-१५)
आवउ वंञउ डुम्मणी किती मित्र करेउ ॥ (१०१४-१५, मारू काफी, मः १)
सा धन ढोई न लहै वाढी किउ धीरेउ ॥१॥ (१०१४-१५, मारू काफी, मः १)
मैडा मनु रता आपनड़े पिर नालि ॥ (१०१४-१६, मारू काफी, मः १)
हउ घोलि घुमाई खन्नीऐ कीती हिक भोरी नदरि निहालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१४-१६, मारू काफी, मः १)
पेईअड़ै डोहागणी साहुरड़ै किउ जाउ ॥ (१०१४-१७, मारू काफी, मः १)
मै गलि अउगण मुठड़ी बिनु पिर झूरि मराउ ॥२॥ (१०१४-१७, मारू काफी, मः १)
पेईअड़ै पिरु सम्मला साहुरड़ै घरि वासु ॥ (१०१४-१८, मारू काफी, मः १)
सुखि सवंधि सोहागणी पिरु पाइआ गुणतासु ॥३॥ (१०१४-१८, मारू काफी, मः १)
लेफु निहाली पट की कापड़ु अंगि बणाइ ॥ (१०१४-१६, मारू काफी, मः १)
पिरु मुती डोहागणी तिन डुखी रैणि विहाइ ॥४॥ (१०१४-१६, मारू काफी, मः १)

पन्ना १०१५

किती चखउ साडड़े किती वेस करेउ ॥ (१०१५-१, मारू काफी, मः १)
पिर बिनु जोबनु बादि गइअमु वाढी झूरेदी झूरेउ ॥५॥ (१०१५-१, मारू काफी, मः १)
सचे संदा सदड़ा सुणीऐ गुर वीचारि ॥ (१०१५-२, मारू काफी, मः १)
सचे सचा बैहणा नदरी नदरि पिआरि ॥६॥ (१०१५-२, मारू काफी, मः १)
गिआनी अंजनु सच का डेखै डेखणहारु ॥ (१०१५-३, मारू काफी, मः १)
गुरमुखि बूझै जाणीऐ हउमै गरबु निवारि ॥७॥ (१०१५-३, मारू काफी, मः १)
तउ भावनि तउ जेहीआ मू जेहीआ कितीआह ॥ (१०१५-३, मारू काफी, मः १)
नानक नाहु न वीछुड़ै तिन सचै रतड़ीआह ॥८॥१॥६॥ (१०१५-४, मारू काफी, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०१५-५)
ना भैणा भरजाईआ ना से ससुड़ीआह ॥ (१०१५-५, मारू, मः १)
सचा साकु न तुटई गुरु मेले सहीआह ॥१॥ (१०१५-५, मारू, मः १)
बलिहारी गुर आपणे सद बलिहारै जाउ ॥ (१०१५-६, मारू, मः १)
गुर बिनु एता भवि थकी गुरि पिरु मेलिमु दितमु मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१५-६, मारू, मः १)
फुफी नानी मासीआ देर जेठानड़ीआह ॥ (१०१५-७, मारू, मः १)

आवनि वंञनि ना रहनि पूर भरे पहीआह ॥२॥ (१०१५-७, मारू, मः १)
मामे तै मामाणीआ भाइर बाप न माउ ॥ (१०१५-८, मारू, मः १)
साथ लडे तिन नाठीआ भीड़ घणी दरीआउ ॥३॥ (१०१५-८, मारू, मः १)
साचउ रंगि रंगावलो सखी हमारो कंतु ॥ (१०१५-९, मारू, मः १)
सचि विछोड़ा ना थीऐ सो सहु रंगि रवंतु ॥४॥ (१०१५-९, मारू, मः १)
सभे रुती चंगीआ जितु सचे सिउ नेहु ॥ (१०१५-१०, मारू, मः १)
सा धन कंतु पछाणिआ सुखि सुती निसि डेहु ॥५॥ (१०१५-१०, मारू, मः १)
पतणि कूके पातणी वंञहु ध्रुकि विलाड़ि ॥ (१०१५-११, मारू, मः १)
पारि पवंदड़े डिठु मै सतिगुर बोहिथि चाड़ि ॥६॥ (१०१५-११, मारू, मः १)
हिकनी लदिआ हिकि लदि गए हिकि भारे भर नालि ॥ (१०१५-११, मारू, मः १)
जिनी सचु वणंजिआ से सचे प्रभ नालि ॥७॥ (१०१५-१२, मारू, मः १)
ना हम चंगे आखीअह बुरा न दिसै कोइ ॥ (१०१५-१२, मारू, मः १)
नानक हउमै मारीऐ सचे जेहड़ा सोइ ॥८॥२॥१०॥ (१०१५-१३, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०१५-१४)
ना जाणा मूरखु है कोई ना जाणा सिआणा ॥ (१०१५-१४, मारू, मः १)
सदा साहिब कै रंगे राता अनदिनु नामु वखाणा ॥१॥ (१०१५-१४, मारू, मः १)
बाबा मूरखु हा नावै बलि जाउ ॥ (१०१५-१५, मारू, मः १)
तू करता तू दाना बीना तेरै नामि तराउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१५-१५, मारू, मः १)
मूरखु सिआणा एकु है एक जोति दुइ नाउ ॥ (१०१५-१६, मारू, मः १)
मूरखा सिरि मूरखु है जि मन्ने नाही नाउ ॥२॥ (१०१५-१६, मारू, मः १)
गुर दुआरै नाउ पाईऐ बिनु सतिगुर पलै न पाइ ॥ (१०१५-१७, मारू, मः १)
सतिगुर कै भाणै मनि वसै ता अहिनिसि रहै लिव लाइ ॥३॥ (१०१५-१७, मारू, मः १)
राजं रंगं रूपं मालं जोबनु ते जूआरी ॥ (१०१५-१८, मारू, मः १)
हुकमी बाधे पासै खेलहि चउपड़ि एका सारी ॥४॥ (१०१५-१८, मारू, मः १)
जगि चतुरु सिआणा भरमि भुलाणा नाउ पंडित पड़हि गावारी ॥ (१०१५-१९, मारू, मः १)
नाउ विसारहि बेदु समालहि बिखु भूले लेखारी ॥५॥ (१०१५-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०१६

कलर खेती तरवर कंठे बागा पहिरहि कजलु झरै ॥ (१०१६-१, मारू, मः १)
एहु संसारु तिसै की कोठी जो पैसै सो गरबि जरै ॥६॥ (१०१६-१, मारू, मः १)
रयति राजे कहा सबाए दुहु अंतरि सो जासी ॥ (१०१६-२, मारू, मः १)
कहत नानकु गुर सचे की पउड़ी रहसी अलखु निवासी ॥७॥३॥११॥ (१०१६-२, मारू, मः १)
मारू महला ३ घरु ५ असटपदी (१०१६-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०१६-४)
जिस नो प्रेमु मंनि वसाए ॥ (१०१६-५, मारू, मः ३)

साचै सबदि सहजि सुभाए ॥ (१०१६-५, मारू, मः ३)
एहा वेदन सोई जाणै अवरु कि जाणै कारी जीउ ॥१॥ (१०१६-५, मारू, मः ३)
आपे मेले आपि मिलाए ॥ (१०१६-६, मारू, मः ३)
आपणा पिआरु आपे लाए ॥ (१०१६-६, मारू, मः ३)
प्रेम की सार सोई जाणै जिस नो नदरि तुमारी जीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१६-६, मारू, मः ३)
दिब दृसटि जागै भरमु चुकाए ॥ (१०१६-७, मारू, मः ३)
गुर परसादि पर्म पदु पाए ॥ (१०१६-७, मारू, मः ३)
सो जोगी इह जुगति पछाणै गुर कै सबदि बीचारी जीउ ॥२॥ (१०१६-८, मारू, मः ३)
संजोगी धन पिर मेला होवै ॥ (१०१६-८, मारू, मः ३)
गुरमति विचहु दुरमति खोवै ॥ (१०१६-९, मारू, मः ३)
रंग सिउ नित रलीआ माणै अपणे कंत पिआरी जीउ ॥३॥ (१०१६-९, मारू, मः ३)
सतिगुर बाझहु वैदु न कोई ॥ (१०१६-१०, मारू, मः ३)
आपे आपि निरंजनु सोई ॥ (१०१६-१०, मारू, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ मरै मंदा होवै गिआन बीचारी जीउ ॥४॥ (१०१६-१०, मारू, मः ३)
एहु सबदु सारु जिस नो लाए ॥ (१०१६-११, मारू, मः ३)
गुरमुखि तृसना भुख गवाए ॥ (१०१६-११, मारू, मः ३)
आपण लीआ किछू न पाईऐ करि किरपा कल धारी जीउ ॥५॥ (१०१६-१२, मारू, मः ३)
अगम निगमु सतिगुरू दिखाइआ ॥ (१०१६-१२, मारू, मः ३)
करि किरपा अपनै घरि आइआ ॥ (१०१६-१३, मारू, मः ३)
अंजन माहि निरंजनु जाता जिन कउ नदरि तुमारी जीउ ॥६॥ (१०१६-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सो ततु पाए ॥ (१०१६-१४, मारू, मः ३)
आपणा आपु विचहु गवाए ॥ (१०१६-१४, मारू, मः ३)
सतिगुर बाझहु सभु धंधु कमावै वेखहु मनि वीचारी जीउ ॥७॥ (१०१६-१४, मारू, मः ३)
इकि भ्रमि भूले फिरहि अहंकारी ॥ (१०१६-१५, मारू, मः ३)
इकना गुरमुखि हउमै मारी ॥ (१०१६-१५, मारू, मः ३)
सचै सबदि रते बैरागी होरि भरमि भुले गावारी जीउ ॥८॥ (१०१६-१६, मारू, मः ३)
गुरमुखि जिनी नामु न पाइआ ॥ (१०१६-१६, मारू, मः ३)
मनमुखि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (१०१६-१७, मारू, मः ३)
अगै विणु नावै को बेली नाही बूझै गुर बीचारी जीउ ॥९॥ (१०१६-१७, मारू, मः ३)
अमृत नामु सदा सुखदाता ॥ (१०१६-१८, मारू, मः ३)
गुरि पूरै जुग चारे जाता ॥ (१०१६-१८, मारू, मः ३)
जिसु तू देवहि सोई पाए नानक ततु बीचारी जीउ ॥१०॥१॥ (१०१६-१८, मारू, मः ३)

मारू महला ५ घरु ३ असटपदीआ (१०१७-१)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०१७-१)
लख चउरासीह भ्रमते भ्रमते दुलभ जनमु अब पाइओ ॥१॥ (१०१७-२, मारू, मः ५)
रे मूड़े तू होछै रसि लपटाइओ ॥ (१०१७-२, मारू, मः ५)
अमृतु संगि बसतु है तेरै बिखिआ सिउ उरझाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१७-२, मारू, मः ५)
रतन जवेहर बनजनि आइओ कालरु लादि चलाइओ ॥२॥ (१०१७-३, मारू, मः ५)
जिह घर महि तुधु रहना बसना सो घरु चीति न आइओ ॥३॥ (१०१७-४, मारू, मः ५)
अटल अखंड प्राण सुखदाई इक निमख नही तुझु गाइओ ॥४॥ (१०१७-४, मारू, मः ५)
जहा जाणा सो थानु विसारिओ इक निमख नही मनु लाइओ ॥५॥ (१०१७-५, मारू, मः ५)
पुत्र कलत्र गृह देखि समग्री इस ही महि उरझाइओ ॥६॥ (१०१७-६, मारू, मः ५)
जितु को लाइओ तित ही लागा तैसे कर्म कमाइओ ॥७॥ (१०१७-६, मारू, मः ५)
जउ भइओ कृपालु ता साधसंगु पाइआ जन नानक ब्रह्मु धिआइओ ॥८॥१॥ (१०१७-७, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०१७-८)
करि अनुग्रहु राखि लीनो भइओ साधू संगु ॥ (१०१७-८, मारू, मः ५)
हरि नाम रसु रसना उचारै मिसट गूड़ा रंगु ॥१॥ (१०१७-८, मारू, मः ५)
मेरे मान को असथानु ॥ (१०१७-९, मारू, मः ५)
मीत साजन सखा बंधपु अंतरजामी जानु ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१७-९, मारू, मः ५)
संसार सागरु जिनि उपाइओ सरणि प्रभ की गही ॥ (१०१७-१०, मारू, मः ५)
गुर प्रसादी प्रभु अराधे जमकंकरु किछु न कही ॥२॥ (१०१७-१०, मारू, मः ५)
मोख मुकति दुआरि जा कै संत रिदा भंडारु ॥ (१०१७-११, मारू, मः ५)
जीअ जुगति सुजाणु सुआमी सदा राखणहारु ॥३॥ (१०१७-११, मारू, मः ५)
दूख दरद कलेस बिनसहि जिसु बसै मन माहि ॥ (१०१७-१२, मारू, मः ५)
मिरतु नरकु असथान बिखड़े बिखु न पोहै ताहि ॥४॥ (१०१७-१२, मारू, मः ५)
रिधि सिधि नव निधि जा कै अमृता परवाह ॥ (१०१७-१३, मारू, मः ५)
आदि अंते मधि पूरन ऊच अगम अगाह ॥५॥ (१०१७-१३, मारू, मः ५)
सिध साधिक देव मुनि जन बेद करहि उचारु ॥ (१०१७-१३, मारू, मः ५)
सिमरि सुआमी सुख सहजि भुंचहि नही अंतु पारावारु ॥६॥ (१०१७-१४, मारू, मः ५)
अनिक प्राछत मिटहि खिन महि रिदै जपि भगवान ॥ (१०१७-१५, मारू, मः ५)
पावना ते महा पावन कोटि दान इसनान ॥७॥ (१०१७-१५, मारू, मः ५)
बल बुधि सुधि पराण सरबसु संतना की रासि ॥ (१०१७-१६, मारू, मः ५)
बिसरु नाही निमख मन ते नानक की अरदासि ॥८॥२॥ (१०१७-१६, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०१७-१७)
ससतृ तीखणि काटि डारिओ मनि न कीनो रोसु ॥ (१०१७-१७, मारू, मः ५)
काजु उआ को ले सवारिओ तिलु न दीनो दोसु ॥१॥ (१०१७-१७, मारू, मः ५)
मन मेरे राम रउ नित नीति ॥ (१०१७-१८, मारू, मः ५)
दइआल देव कृपाल गोबिंद सुनि संतना की रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१७-१८, मारू, मः ५)

चरण तलै उगाहि बैसिओ स्रमु न रहिओ सरीरि ॥ (१०१८-१, मारू, मः ५)
महा सागरु नह विआपै खिनहि उतरिओ तीरि ॥२॥ (१०१८-१, मारू, मः ५)
चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥ (१०१८-२, मारू, मः ५)
बिसटा मूत्र खोदि तिलु तिलु मनि न मनी बिपरीति ॥३॥ (१०१८-२, मारू, मः ५)
ऊच नीच बिकार सुकृत संलगन सभ सुख छत्र ॥ (१०१८-३, मारू, मः ५)
मित्र सत्रु न कछू जानै सर्ब जीअ समत ॥४॥ (१०१८-३, मारू, मः ५)
करि प्रगासु प्रचंड प्रगटिओ अंधकार बिनास ॥ (१०१८-४, मारू, मः ५)
पवित्र अपवित्रह किरण लागे मनि न भइओ बिखादु ॥५॥ (१०१८-४, मारू, मः ५)
सीत मंद सुगंध चलिओ सर्ब थान समान ॥ (१०१८-५, मारू, मः ५)
जहा सा किछु तहा लागिओ तिलु न संका मान ॥६॥ (१०१८-५, मारू, मः ५)
सुभाइ अभाइ जु निकटि आवै सीतु ता का जाइ ॥ (१०१८-६, मारू, मः ५)
आप पर का कछु न जाणै सदा सहजि सुभाइ ॥७॥ (१०१८-६, मारू, मः ५)
चरण सरण सनाथ इहु मनु रंगि राते लाल ॥ (१०१८-७, मारू, मः ५)
गोपाल गुण नित गाउ नानक भए प्रभ किरपाल ॥८॥३॥ (१०१८-८, मारू, मः ५)
मारू महला ५ घरु ४ असटपदीआ (१०१८-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०१८-९)
चादना चादनु आँगनि प्रभ जीउ अंतरि चादना ॥१॥ (१०१८-१०, मारू, मः ५)
आराधना अराधनु नीका हरि हरि नामु अराधना ॥२॥ (१०१८-१०, मारू, मः ५)
तिआगना तिआगनु नीका कामु क्रोधु लोभु तिआगना ॥३॥ (१०१८-११, मारू, मः ५)
मागना मागनु नीका हरि जसु गुर ते मागना ॥४॥ (१०१८-११, मारू, मः ५)
जागना जागनु नीका हरि कीर्तन महि जागना ॥५॥ (१०१८-१२, मारू, मः ५)
लागना लागनु नीका गुर चरणी मनु लागना ॥६॥ (१०१८-१२, मारू, मः ५)
इह बिधि तिसहि परापते जा कै मसतकि भागना ॥७॥ (१०१८-१३, मारू, मः ५)
कहु नानक तिसु सभु किछु नीका जो प्रभ की सरनागना ॥८॥१॥४॥ (१०१८-१३, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०१८-१४)
आउ जी तू आउ हमारै हरि जसु स्रवन सुनावना ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१८-१४, मारू, मः ५)
तुधु आवत मेरा मनु तनु हरिआ हरि जसु तुम संगि गावना ॥१॥ (१०१८-१५, मारू, मः ५)
संत कृपा ते हिरदै वासै दूजा भाउ मिटावना ॥२॥ (१०१८-१५, मारू, मः ५)
भगत दइआ ते बुधि परगासै दुरमति दूख तजावना ॥३॥ (१०१८-१६, मारू, मः ५)
दरसनु भेटत होत पुनीता पुनरपि गरभि न पावना ॥४॥ (१०१८-१७, मारू, मः ५)
नउ निधि रिधि सिधि पाई जो तुमरै मनि भावना ॥५॥ (१०१८-१७, मारू, मः ५)
संत बिना मै थाउ न कोई अवर न सूझै जावना ॥६॥ (१०१८-१८, मारू, मः ५)
मोहि निरगुन कउ कोइ न राखै संता संगि समावना ॥७॥ (१०१८-१८, मारू, मः ५)

कहु नानक गुरि चलतु दिखाइआ मन मधे हरि हरि रावना ॥८॥२॥५॥ (१०१८-१६, मारू, मः ५)

पन्ना १०१९

मारू महला ५ ॥ (१०१९-१)
जीवना सफल जीवन सुनि हरि जपि जपि सद जीवना ॥१॥ रहाउ ॥ (१०१९-१, मारू, मः ५)
पीवना जितु मनु आघावै नामु अमृत रसु पीवना ॥१॥ (१०१९-१, मारू, मः ५)
खावना जितु भूख न लागै संतोखि सदा तृपतीवना ॥२॥ (१०१९-२, मारू, मः ५)
पैनणा रखु पति परमेसुर फिरि नागे नही थीवना ॥३॥ (१०१९-३, मारू, मः ५)
भोगना मन मधे हरि रसु संतसंगति महि लीवना ॥४॥ (१०१९-३, मारू, मः ५)
बिनु तागे बिनु सूई आनी मनु हरि भगती संगि सीवना ॥५॥ (१०१९-४, मारू, मः ५)
मातिआ हरि रस महि राते तिसु बहुड़ि न कबहू अउखीवना ॥६॥ (१०१९-४, मारू, मः ५)
मिलिओ तिसु सर्ब निधाना प्रभि कृपालि जिसु दीवना ॥७॥ (१०१९-५, मारू, मः ५)
सुखु नानक संतन की सेवा चरण संत धोइ पीवना ॥८॥३॥६॥ (१०१९-६, मारू, मः ५)
मारू महला ५ घरु ८ अंजुलीआ (१०१९-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०१९-७)
जिसु गृहि बहुतु तिसै गृहि चिंता ॥ (१०१९-८, मारू, मः ५)
जिसु गृहि थोरी सु फिरै भ्रमंता ॥ (१०१९-८, मारू, मः ५)
दुहू बिवसथा ते जो मुकता सोई सुहेला भालीऐ ॥१॥ (१०१९-८, मारू, मः ५)
गृह राज महि नरकु उदास करोधा ॥ (१०१९-९, मारू, मः ५)
बहु बिधि बेद पाठ सभि सोधा ॥ (१०१९-९, मारू, मः ५)
देही महि जो रहै अलिपता तिसु जन की पूरन घालीऐ ॥२॥ (१०१९-९, मारू, मः ५)
जागत सूता भरमि विगूता ॥ (१०१९-१०, मारू, मः ५)
बिनु गुर मुकति न होईऐ मीता ॥ (१०१९-१०, मारू, मः ५)
साधसंगि तुटहि हउ बंधन एको एकु निहालीऐ ॥३॥ (१०१९-११, मारू, मः ५)
कर्म करै त बंधा नह करै त निंदा ॥ (१०१९-११, मारू, मः ५)
मोह मगन मनु विआपिआ चिंदा ॥ (१०१९-१२, मारू, मः ५)
गुर प्रसादि सुखु दुखु सम जाणै घटि घटि रामु हिआलीऐ ॥४॥ (१०१९-१२, मारू, मः ५)
संसारै महि सहसा बिआपै ॥ (१०१९-१३, मारू, मः ५)
अकथ कथा अगोचर नही जापै ॥ (१०१९-१३, मारू, मः ५)
जिसहि बुझाए सोई बूझै ओहु बालक वागी पालीऐ ॥५॥ (१०१९-१३, मारू, मः ५)
छोडि बहै तउ छूटै नाही ॥ (१०१९-१४, मारू, मः ५)
जउ संचै तउ भउ मन माही ॥ (१०१९-१४, मारू, मः ५)
इस ही महि जिस की पति राखै तिसु साधू चउरु ढालीऐ ॥६॥ (१०१९-१४, मारू, मः ५)
जो सूरा तिस ही होइ मरणा ॥ (१०१९-१५, मारू, मः ५)
जो भागै तिसु जोनी फिरणा ॥ (१०१९-१५, मारू, मः ५)

जो वरताए सोई भल मानै बुझि हुकमै दुरमति जालीऐ ॥७॥ (१०१६-१६, मारू, मः ५)
जितु जितु लावहि तितु तितु लगना ॥ (१०१६-१६, मारू, मः ५)
करि करि वेखै अपणे जचना ॥ (१०१६-१७, मारू, मः ५)
नानक के पूरन सुखदाते तू देहि त नामु समालीऐ ॥८॥१॥७॥ (१०१६-१७, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०१६-१८)
बिरखै हेठि सभि जंत इकठे ॥ (१०१६-१८, मारू, मः ५)
इकि तते इकि बोलनि मिठे ॥ (१०१६-१८, मारू, मः ५)
असतु उदोतु भइआ उठि चले जिउ जिउ अउध विहाणीआ ॥१॥ (१०१६-१८, मारू, मः ५)
पाप करेदड़ सरपर मुठे ॥ (१०१६-१६, मारू, मः ५)
अजराईलि फड़े फड़ि कुठे ॥ (१०१६-१६, मारू, मः ५)

पन्ना १०२०

दोजकि पाए सिरजणहारै लेखा मंगै बाणीआ ॥२॥ (१०२०-१, मारू, मः ५)
संगि न कोई भईआ बेबा ॥ (१०२०-१, मारू, मः ५)
मालु जोबनु धनु छोडि वञेसा ॥ (१०२०-१, मारू, मः ५)
करण करीम न जातो करता तिल पीड़े जिउ घाणीआ ॥३॥ (१०२०-२, मारू, मः ५)
खुसि खुसि लैदा वसतु पराई ॥ (१०२०-२, मारू, मः ५)
वेखै सुणे तेरै नालि खुदाई ॥ (१०२०-३, मारू, मः ५)
दुनीआ लबि पइआ खात अंदरि अगली गल न जाणीआ ॥४॥ (१०२०-३, मारू, मः ५)
जमि जमि मरै मरै फिरि जम्मै ॥ (१०२०-४, मारू, मः ५)
बहुतु सजाइ पइआ देसि लम्मै ॥ (१०२०-४, मारू, मः ५)
जिनि कीता तिसै न जाणी अंधा ता दुखु सहै पराणीआ ॥५॥ (१०२०-४, मारू, मः ५)
खालक थावहु भुला मुठा ॥ (१०२०-५, मारू, मः ५)
दुनीआ खेलु बुरा रुठ तुठा ॥ (१०२०-५, मारू, मः ५)
सिदकु सबूरी संतु न मिलिओ वतै आपण भाणीआ ॥६॥ (१०२०-६, मारू, मः ५)
मउला खेल करे सभि आपे ॥ (१०२०-६, मारू, मः ५)
इकि कढे इकि लहरि विआपे ॥ (१०२०-७, मारू, मः ५)
जिउ नचाए तिउ तिउ नचनि सिरि सिरि किरत विहाणीआ ॥७॥ (१०२०-७, मारू, मः ५)
मिहर करे ता खसमु धिआई ॥ (१०२०-८, मारू, मः ५)
संता संगति नरकि न पाई ॥ (१०२०-८, मारू, मः ५)
अमृत नाम दानु नानक कउ गुण गीता नित वखाणीआ ॥८॥२॥८॥१२॥२०॥ (१०२०-८, मारू, मः ५)
मारू सोलहे महला १ (१०२०-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०२०-१०)
साचा सचु सोई अवरु न कोई ॥ (१०२०-११, मारू, मः १)
जिनि सिरजी तिन ही फुनि गोई ॥ (१०२०-११, मारू, मः १)

जिउ भावै तिउ राखहु रहणा तुम सिउ किआ मुकराई हे ॥१॥ (१०२०-११, मारू, मः १)
आपि उपाए आपि खपाए ॥ (१०२०-१२, मारू, मः १)
आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ (१०२०-१२, मारू, मः १)
आपे वीचारी गुणकारी आपे मारगि लाई हे ॥२॥ (१०२०-१२, मारू, मः १)
आपे दाना आपे बीना ॥ (१०२०-१३, मारू, मः १)
आपे आपु उपाइ पतीना ॥ (१०२०-१३, मारू, मः १)
आपे पउणु पाणी बैसंतरु आपे मेलि मिलाई हे ॥३॥ (१०२०-१४, मारू, मः १)
आपे ससि सूरा पूरो पूरा ॥ (१०२०-१४, मारू, मः १)
आपे गिआनि धिआनि गुरु सूरा ॥ (१०२०-१४, मारू, मः १)
कालु जालु जमु जोहि न साकै साचे सिउ लिव लाई हे ॥४॥ (१०२०-१५, मारू, मः १)
आपे पुरखु आपे ही नारी ॥ (१०२०-१५, मारू, मः १)
आपे पासा आपे सारी ॥ (१०२०-१६, मारू, मः १)
आपे पिड़ बाधी जगु खेलै आपे कीमति पाई हे ॥५॥ (१०२०-१६, मारू, मः १)
आपे भवरु फुलु फलु तरवरु ॥ (१०२०-१६, मारू, मः १)
आपे जलु थलु सागरु सरवरु ॥ (१०२०-१७, मारू, मः १)
आपे मछु कछु करणीकरु तेरा रूपु न लखणा जाई हे ॥६॥ (१०२०-१७, मारू, मः १)
आपे दिनसु आपे ही रैणी ॥ (१०२०-१८, मारू, मः १)
आपि पतीजै गुर की बैणी ॥ (१०२०-१८, मारू, मः १)
आदि जुगादि अनाहदि अनदिनु घटि घटि सबदु रजाई हे ॥७॥ (१०२०-१८, मारू, मः १)
आपे रतनु अनूपु अमोलो ॥ (१०२०-१९, मारू, मः १)
आपे परखे पूरा तोलो ॥ (१०२०-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०२१

आपे किस ही कसि बखसे आपे दे लै भाई हे ॥८॥ (१०२१-१, मारू, मः १)
आपे धनखु आपे सरबाणा ॥ (१०२१-१, मारू, मः १)
आपे सुघड़ु सरूपु सिआणा ॥ (१०२१-१, मारू, मः १)
कहता बकता सुणता सोई आपे बणत बणाई हे ॥९॥ (१०२१-२, मारू, मः १)
पउणु गुरू पाणी पित जाता ॥ (१०२१-२, मारू, मः १)
उदर संजोगी धरती माता ॥ (१०२१-२, मारू, मः १)
रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ जगु खेलै खेलाई हे ॥१०॥ (१०२१-३, मारू, मः १)
आपे मछुली आपे जाला ॥ (१०२१-३, मारू, मः १)
आपे गऊ आपे रखवाला ॥ (१०२१-४, मारू, मः १)
सरब जीआ जगि जोति तुमारी जैसी प्रभि फुरमाई हे ॥११॥ (१०२१-४, मारू, मः १)
आपे जोगी आपे भोगी ॥ (१०२१-४, मारू, मः १)
आपे रसीआ परम संजोगी ॥ (१०२१-५, मारू, मः १)

आपे वेबाणी निरंकारी निरभउ ताड़ी लाई हे ॥१२॥ (१०२१-५, मारू, मः १)
खाणी बाणी तुझहि समाणी ॥ (१०२१-६, मारू, मः १)
जो दीसै सभ आवण जाणी ॥ (१०२१-६, मारू, मः १)
सेई साह सचे वापारी सतिगुरि बूझ बुझाई हे ॥१३॥ (१०२१-६, मारू, मः १)
सबदु बुझाए सतिगुरु पूरा ॥ (१०२१-७, मारू, मः १)
सर्ब कला साचे भरपूरा ॥ (१०२१-७, मारू, मः १)
अफरिओ वेपरवाहु सदा तू ना तिसु तिलु न तमाई हे ॥१४॥ (१०२१-७, मारू, मः १)
कालु बिकालु भए देवाने ॥ (१०२१-८, मारू, मः १)
सबदु सहज रसु अंतरि माने ॥ (१०२१-८, मारू, मः १)
आपे मुकति तृपति वरदाता भगति भाइ मनि भाई हे ॥१५॥ (१०२१-८, मारू, मः १)
आपि निरालमु गुर गम गिआना ॥ (१०२१-९, मारू, मः १)
जो दीसै तुझ माहि समाना ॥ (१०२१-९, मारू, मः १)
नानकु नीचु भिखिआ दरि जाचै मै दीजै नामु वडाई हे ॥१६॥१॥ (१०२१-१०, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२१-१०)
आपे धरती धउलु अकासं ॥ (१०२१-११, मारू, मः १)
आपे साचे गुण परगासं ॥ (१०२१-११, मारू, मः १)
जती सती संतोखी आपे आपे कार कमाई हे ॥१॥ (१०२१-११, मारू, मः १)
जिसु करणा सो करि करि वेखै ॥ (१०२१-१२, मारू, मः १)
कोइ न मेटै साचे लेखै ॥ (१०२१-१२, मारू, मः १)
आपे करे कराए आपे आपे दे वडिआई हे ॥२॥ (१०२१-१२, मारू, मः १)
पंच चोर चंचल चितु चालहि ॥ (१०२१-१३, मारू, मः १)
पर घर जोहहि घरु नही भालहि ॥ (१०२१-१३, मारू, मः १)
काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी बिनु सबदै पति जाई हे ॥३॥ (१०२१-१३, मारू, मः १)
गुर ते बूझै तृभवणु सूझै ॥ (१०२१-१४, मारू, मः १)
मनसा मारि मनै सिउ लूझै ॥ (१०२१-१४, मारू, मः १)
जो तुधु सेवहि से तुध ही जेहे निरभउ बाल सखाई हे ॥४॥ (१०२१-१४, मारू, मः १)
आपे सुरगु मछु पइआला ॥ (१०२१-१५, मारू, मः १)
आपे जोति सरूपी बाला ॥ (१०२१-१५, मारू, मः १)
जटा बिकट बिकराल सरूपी रूपु न रेखिआ काई हे ॥५॥ (१०२१-१६, मारू, मः १)
बेद कतेबी भेदु न जाता ॥ (१०२१-१६, मारू, मः १)
ना तिसु मात पिता सुत भ्राता ॥ (१०२१-१६, मारू, मः १)
सगले सैल उपाइ समाए अलखु न लखणा जाई हे ॥६॥ (१०२१-१७, मारू, मः १)
करि करि थाकी मीत घनेरे ॥ (१०२१-१७, मारू, मः १)
कोइ न काटै अवगुण मेरे ॥ (१०२१-१८, मारू, मः १)
सुरि नर नाथु साहिबु सभना सिरि भाइ मिलै भउ जाई हे ॥७॥ (१०२१-१८, मारू, मः १)

भूले चूके मारगि पावहि ॥ (१०२१-१६, मारू, मः १)
आपि भुलाइ तूहै समझावहि ॥ (१०२१-१६, मारू, मः १)
बिनु नावै मै अवरु न दीसै नावहु गति मिति पाई हे ॥८॥ (१०२१-१६, मारू, मः १)

पन्ना १०२२

गंगा जमुना केल केदारा ॥ (१०२२-१, मारू, मः १)
कासी काँती पुरी दुआरा ॥ (१०२२-१, मारू, मः १)
गंगा सागरु बेणी संगमु अठसठि अंकि समाई हे ॥९॥ (१०२२-१, मारू, मः १)
आपे सिध साधिकु वीचारी ॥ (१०२२-२, मारू, मः १)
आपे राजनु पंचा कारी ॥ (१०२२-२, मारू, मः १)
तखति बहै अदली प्रभु आपे भरमु भेदु भउ जाई हे ॥१०॥ (१०२२-३, मारू, मः १)
आपे काजी आपे मुला ॥ (१०२२-३, मारू, मः १)
आपि अभुलु न कबहू भुला ॥ (१०२२-३, मारू, मः १)
आपे मिहर दइआपति दाता ना किसै को बैराई हे ॥११॥ (१०२२-४, मारू, मः १)
जिसु बखसे तिसु दे वडिआई ॥ (१०२२-४, मारू, मः १)
सभसै दाता तिलु न तमाई ॥ (१०२२-५, मारू, मः १)
भरपुरि धारि रहिआ निहकेवलु गुपतु प्रगटु सभ ठाई हे ॥१२॥ (१०२२-५, मारू, मः १)
किआ सालाही अगम अपारै ॥ (१०२२-६, मारू, मः १)
साचे सिरजणहार मुरारै ॥ (१०२२-६, मारू, मः १)
जिस नो नदरि करे तिसु मेले मेलि मिलै मेलाई हे ॥१३॥ (१०२२-६, मारू, मः १)
ब्रहमा बिसनु महेसु दुआरै ॥ (१०२२-७, मारू, मः १)
ऊभे सेवहि अलख अपारै ॥ (१०२२-७, मारू, मः १)
होर केती दरि दीसै बिललादी मै गणत न आवै काई हे ॥१४॥ (१०२२-७, मारू, मः १)
साची कीरति साची बाणी ॥ (१०२२-८, मारू, मः १)
होर न दीसै बेद पुराणी ॥ (१०२२-८, मारू, मः १)
पूंजी साचु सचे गुण गावा मै धर होर न काई हे ॥१५॥ (१०२२-९, मारू, मः १)
जुगु जुगु साचा है भी होसी ॥ (१०२२-९, मारू, मः १)
कउणु न मूआ कउणु न मरसी ॥ (१०२२-९, मारू, मः १)
नानकु नीचु कहै बेनंती दरि देखहु लिव लाई हे ॥१६॥२॥ (१०२२-१०, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२२-१०)
दूजी दुरमति अन्नी बोली ॥ (१०२२-११, मारू, मः १)
काम क्रोध की कची चोली ॥ (१०२२-११, मारू, मः १)
घरि वरु सहजु न जाणै छोहरि बिनु पिर नीद न पाई हे ॥१॥ (१०२२-११, मारू, मः १)
अंतरि अगनि जलै भड़कारे ॥ (१०२२-१२, मारू, मः १)
मनमुखु तके कुंडा चारे ॥ (१०२२-१२, मारू, मः १)

बिनु सतिगुर सेवे किउ सुखु पाईऐ साचे हाथि वडाई हे ॥२॥ (१०२२-१२, मारू, मः १)
कामु क्रोधु अहंकारु निवारे ॥ (१०२२-१३, मारू, मः १)
तस्कर पंच सबदि संघारे ॥ (१०२२-१३, मारू, मः १)
गिआन खड़गु लै मन सिउ लूझै मनसा मनहि समाई हे ॥३॥ (१०२२-१३, मारू, मः १)
मा की रक्तु पिता बिदु धारा ॥ (१०२२-१४, मारू, मः १)
मूरति सूरति करि आपारा ॥ (१०२२-१४, मारू, मः १)
जोति दाति जेती सभ तेरी तू करता सभ ठाई हे ॥४॥ (१०२२-१५, मारू, मः १)
तुझ ही कीआ जम्मण मरणा ॥ (१०२२-१५, मारू, मः १)
गुर ते समझ पड़ी किआ डरणा ॥ (१०२२-१६, मारू, मः १)
तू दइआलु दइआ करि देखहि दुखु दरदु सरीरहु जाई हे ॥५॥ (१०२२-१६, मारू, मः १)
निज घरि बैसि रहे भउ खाइआ ॥ (१०२२-१७, मारू, मः १)
धावत राखे ठाकि रहाइआ ॥ (१०२२-१७, मारू, मः १)
कमल बिगास हरे सर सुभर आतम रामु सखाई हे ॥६॥ (१०२२-१७, मारू, मः १)
मरणु लिखाइ मंडल महि आए ॥ (१०२२-१८, मारू, मः १)
किउ रहीऐ चलणा परथाए ॥ (१०२२-१८, मारू, मः १)
सचा अमरु सचे अमरा पुरि सो सचु मिलै वडाई हे ॥७॥ (१०२२-१८, मारू, मः १)
आपि उपाइआ जगतु सबाइआ ॥ (१०२२-१९, मारू, मः १)
जिनि सिरिआ तिनि धंधै लाइआ ॥ (१०२२-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०२३

सचै ऊपरि अवर न दीसै साचे कीमति पाई हे ॥८॥ (१०२३-१, मारू, मः १)
ऐथै गोइलड़ा दिन चारे ॥ (१०२३-१, मारू, मः १)
खेलु तमासा धुंधूकारे ॥ (१०२३-२, मारू, मः १)
बाजी खेलि गए बाजीगर जिउ निसि सुपनै भखलाई हे ॥९॥ (१०२३-२, मारू, मः १)
तिन कउ तखति मिली वडिआई ॥ (१०२३-२, मारू, मः १)
निरभउ मनि वसिआ लिव लाई ॥ (१०२३-३, मारू, मः १)
खंडी ब्रहमंडी पाताली पुरीई तृभवण ताड़ी लाई हे ॥१०॥ (१०२३-३, मारू, मः १)
साची नगरी तखतु सचावा ॥ (१०२३-४, मारू, मः १)
गुरमुखि साचु मिलै सुखु पावा ॥ (१०२३-४, मारू, मः १)
साचे साचै तखति वडाई हउमै गणत गवाई हे ॥११॥ (१०२३-४, मारू, मः १)
गणत गणीऐ सहसा जीऐ ॥ (१०२३-५, मारू, मः १)
किउ सुखु पावै दूऐ तीऐ ॥ (१०२३-५, मारू, मः १)
निरमलु एकु निरंजनु दाता गुर पूरे ते पति पाई हे ॥१२॥ (१०२३-६, मारू, मः १)
जुगि जुगि विरली गुरमुखि जाता ॥ (१०२३-६, मारू, मः १)
साचा रवि रहिआ मनु राता ॥ (१०२३-६, मारू, मः १)

तिस की ओट गही सुखु पाइआ मनि तनि मैलु न काई हे ॥१३॥ (१०२३-७, मारू, मः १)
जीभ रसाइणि साचै राती ॥ (१०२३-७, मारू, मः १)
हरि प्रभु संगी भउ न भराती ॥ (१०२३-८, मारू, मः १)
स्रवण स्रोत रजे गुरबाणी जोती जोति मिलाई हे ॥१४॥ (१०२३-८, मारू, मः १)
रखि रखि पैर धरे पउ धरणा ॥ (१०२३-९, मारू, मः १)
जत कत देखउ तेरी सरणा ॥ (१०२३-९, मारू, मः १)
दुखु सुखु देहि तूहै मनि भावहि तुझ ही सिउ बणि आई हे ॥१५॥ (१०२३-९, मारू, मः १)
अंत कालि को बेली नाही ॥ (१०२३-१०, मारू, मः १)
गुरमुखि जाता तुधु सालाही ॥ (१०२३-१०, मारू, मः १)
नानक नामि रते बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥१६॥३॥ (१०२३-१०, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२३-११)
आदि जुगादी अपर अपारे ॥ (१०२३-११, मारू, मः १)
आदि निरंजन खसम हमारे ॥ (१०२३-१२, मारू, मः १)
साचे जोग जुगति वीचारी साचे ताड़ी लाई हे ॥१॥ (१०२३-१२, मारू, मः १)
केतड़िआ जुग धुंधूकारै ॥ (१०२३-१२, मारू, मः १)
ताड़ी लाई सिरजणहारै ॥ (१०२३-१३, मारू, मः १)
सचु नामु सची वडिआई साचै तखति वडाई हे ॥२॥ (१०२३-१३, मारू, मः १)
सतजुगि सतु संतोखु सरीरा ॥ (१०२३-१३, मारू, मः १)
सति सति वरतै गहिर गम्भीरा ॥ (१०२३-१४, मारू, मः १)
सचा साहिबु सचु परखै साचै हुकमि चलाई हे ॥३॥ (१०२३-१४, मारू, मः १)
सत संतोखी सतिगुरु पूरा ॥ (१०२३-१५, मारू, मः १)
गुर का सबदु मने सो सूरा ॥ (१०२३-१५, मारू, मः १)
साची दरगह साचु निवासा मानै हुकमु रजाई हे ॥४॥ (१०२३-१५, मारू, मः १)
सतजुगि साचु कहै सभु कोई ॥ (१०२३-१६, मारू, मः १)
सचि वरतै साचा सोई ॥ (१०२३-१६, मारू, मः १)
मनि मुखि साचु भर्म भउ भंजनु गुरमुखि साचु सखाई हे ॥५॥ (१०२३-१६, मारू, मः १)
त्रेतै धर्म कला इक चूकी ॥ (१०२३-१७, मारू, मः १)
तीनि चरण इक दुबिधा सूकी ॥ (१०२३-१७, मारू, मः १)
गुरमुखि होवै सु साचु वखाणै मनमुखि पचै अवाई हे ॥६॥ (१०२३-१७, मारू, मः १)
मनमुखि कदे न दरगह सीझै ॥ (१०२३-१८, मारू, मः १)
बिनु सबदै किउ अंतरु रीझै ॥ (१०२३-१८, मारू, मः १)
बाधे आवहि बाधे जावहि सोझी बूझ न काई हे ॥७॥ (१०२३-१९, मारू, मः १)
दइआ दुआपुरि अधी होई ॥ (१०२३-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०२४

गुरमुखि विरला चीनै कोई ॥ (१०२४-१, मारू, मः १)
दुइ पग धरमु धरे धरणीधर गुरमुखि साचु तिथाई हे ॥८॥ (१०२४-१, मारू, मः १)
राजे धरमु करहि परथाए ॥ (१०२४-१, मारू, मः १)
आसा बंधे दानु कराए ॥ (१०२४-२, मारू, मः १)
राम नाम बिनु मुकति न होई थाके कर्म कमाई हे ॥६॥ (१०२४-२, मारू, मः १)
कर्म धर्म करि मुकति मंगाही ॥ (१०२४-३, मारू, मः १)
मुकति पदारथु सबदि सलाही ॥ (१०२४-३, मारू, मः १)
बिनु गुर सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥१०॥ (१०२४-३, मारू, मः १)
माइआ ममता छोडी न जाई ॥ (१०२४-४, मारू, मः १)
से छूटे सचु कार कमाई ॥ (१०२४-४, मारू, मः १)
अहिनिसि भगति रते वीचारी ठाकुर सिउ बणि आई हे ॥११॥ (१०२४-४, मारू, मः १)
इकि जप तप करि करि तीर्थ नावहि ॥ (१०२४-५, मारू, मः १)
जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि ॥ (१०२४-५, मारू, मः १)
हठि निग्रहि अपतीजु न भीजै बिनु हरि गुर किनि पति पाई हे ॥१२॥ (१०२४-६, मारू, मः १)
कली काल महि इक कल राखी ॥ (१०२४-७, मारू, मः १)
बिनु गुर पूरे किनै न भाखी ॥ (१०२४-७, मारू, मः १)
मनमुखि कूड़ु वरतै वरतारा बिनु सतिगुर भरमु न जाई हे ॥१३॥ (१०२४-७, मारू, मः १)
सतिगुरु वेपरवाहु सिरंदा ॥ (१०२४-८, मारू, मः १)
ना जम काणि न छंदा बंदा ॥ (१०२४-८, मारू, मः १)
जो तिसु सेवे सो अबिनासी ना तिसु कालु संताई हे ॥१४॥ (१०२४-८, मारू, मः १)
गुर महि आपु रखिआ करतारे ॥ (१०२४-६, मारू, मः १)
गुरमुखि कोटि असंख उधारे ॥ (१०२४-६, मारू, मः १)
सर्ब जीआ जगजीवनु दाता निरभउ मैलु न काई हे ॥१५॥ (१०२४-१०, मारू, मः १)
सगले जाचहि गुर भंडारी ॥ (१०२४-१०, मारू, मः १)
आपि निरंजनु अलख अपारी ॥ (१०२४-११, मारू, मः १)
नानकु साचु कहै प्रभ जाचै मै दीजै साचु रजाई हे ॥१६॥४॥ (१०२४-११, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२४-१२)
साचै मेले सबदि मिलाए ॥ (१०२४-१२, मारू, मः १)
जा तिसु भाणा सहजि समाए ॥ (१०२४-१२, मारू, मः १)
तृभवण जोति धरी परमेसरि अवरु न दूजा भाई हे ॥१॥ (१०२४-१२, मारू, मः १)
जिस के चाकर तिस की सेवा ॥ (१०२४-१३, मारू, मः १)
सबदि पतीजै अलख अभेवा ॥ (१०२४-१३, मारू, मः १)
भगता का गुणकारी करता बखसि लए वडिआई हे ॥२॥ (१०२४-१४, मारू, मः १)

देदे तोटि न आवै साचे ॥ (१०२४-१४, मारू, मः १)
लै लै मुकरि पउदे काचे ॥ (१०२४-१४, मारू, मः १)
मूलु न बूझहि साचि न रीझहि दूजै भरमि भुलाई हे ॥३॥ (१०२४-१५, मारू, मः १)
गुरमुखि जागि रहे दिन राती ॥ (१०२४-१५, मारू, मः १)
साचे की लिव गुरमति जाती ॥ (१०२४-१५, मारू, मः १)
मनमुख सोइ रहे से लूटे गुरमुखि साबतु भाई हे ॥४॥ (१०२४-१६, मारू, मः १)
कूड़े आवै कूड़े जावै ॥ (१०२४-१६, मारू, मः १)
कूड़े राती कूड़ु कमावै ॥ (१०२४-१७, मारू, मः १)
सबदि मिले से दरगह पैधे गुरमुखि सुरति समाई हे ॥५॥ (१०२४-१७, मारू, मः १)
कूड़ि मुठी ठगी ठगवाड़ी ॥ (१०२४-१७, मारू, मः १)
जिउ वाड़ी ओजाड़ि उजाड़ी ॥ (१०२४-१८, मारू, मः १)
नाम बिना किछु सादि न लागै हरि बिसरिऐ दुखु पाई हे ॥६॥ (१०२४-१८, मारू, मः १)
भोजनु साचु मिलै आघाई ॥ (१०२४-१९, मारू, मः १)
नाम रतनु साची वडिआई ॥ (१०२४-१९, मारू, मः १)
चीनै आपु पछाणै सोई जोती जोति मिलाई हे ॥७॥ (१०२४-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०२५

नावहु भुली चोटा खाए ॥ (१०२५-१, मारू, मः १)
बहुतु सिआणप भरमु न जाए ॥ (१०२५-१, मारू, मः १)
पचि पचि मुए अचेत न चेतहि अजगरि भारि लदाई हे ॥८॥ (१०२५-१, मारू, मः १)
बिनु बाद बिरोधहि कोई नाही ॥ (१०२५-२, मारू, मः १)
मै देखालिहु तिसु सालाही ॥ (१०२५-२, मारू, मः १)
मनु तनु अरपि मिलै जगजीवनु हरि सिउ बणत बणाई हे ॥९॥ (१०२५-३, मारू, मः १)
प्रभ की गति मिति कोइ न पावै ॥ (१०२५-३, मारू, मः १)
जे को वडा कहाइ वडाई खावै ॥ (१०२५-४, मारू, मः १)
साचे साहिब तोटि न दाती सगली तिनहि उपाई हे ॥१०॥ (१०२५-४, मारू, मः १)
वडी वडिआई वेपरवाहे ॥ (१०२५-४, मारू, मः १)
आपि उपाए दानु समाहे ॥ (१०२५-५, मारू, मः १)
आपि दइआलु दूरि नही दाता मिलिआ सहजि रजाई हे ॥११॥ (१०२५-५, मारू, मः १)
इकि सोगी इकि रोगि विआपे ॥ (१०२५-६, मारू, मः १)
जो किछु करे सु आपे आपे ॥ (१०२५-६, मारू, मः १)
भगति भाउ गुर की मति पूरी अनहदि सबदि लखाई हे ॥१२॥ (१०२५-६, मारू, मः १)
इकि नागे भूखे भवहि भवाए ॥ (१०२५-७, मारू, मः १)
इकि हठु करि मरहि न कीमति पाए ॥ (१०२५-७, मारू, मः १)
गति अविगत की सार न जाणै बूझै सबदु कमाई हे ॥१३॥ (१०२५-८, मारू, मः १)

इकि तीरथि नावहि अन्नु न खावहि ॥ (१०२५-८, मारू, मः १)
इकि अगनि जलावहि देह खपावहि ॥ (१०२५-९, मारू, मः १)
राम नाम बिनु मुकति न होई कितु बिधि पारि लंघाई हे ॥१४॥ (१०२५-९, मारू, मः १)
गुरमति छोडहि उझड़ि जाई ॥ (१०२५-१०, मारू, मः १)
मनमुखि रामु न जपै अवाई ॥ (१०२५-१०, मारू, मः १)
पचि पचि बूडहि कूड़ु कमावहि कूड़ि कालु बैराई हे ॥१५॥ (१०२५-१०, मारू, मः १)
हुकमे आवै हुकमे जावै ॥ (१०२५-११, मारू, मः १)
बूझै हुकमु सो साचि समावै ॥ (१०२५-११, मारू, मः १)
नानक साचु मिलै मनि भावै गुरमुखि कार कमाई हे ॥१६॥५॥ (१०२५-१२, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२५-१२)
आपे करता पुरखु बिधाता ॥ (१०२५-१२, मारू, मः १)
जिनि आपे आपि उपाइ पछाता ॥ (१०२५-१३, मारू, मः १)
आपे सतिगुरु आपे सेवकु आपे सृसटि उपाई हे ॥१॥ (१०२५-१३, मारू, मः १)
आपे नेड़ै नाही दूरे ॥ (१०२५-१४, मारू, मः १)
बूझहि गुरमुखि से जन पूरे ॥ (१०२५-१४, मारू, मः १)
तिन की संगति अहिनिसि लाहा गुर संगति एह वडाई हे ॥२॥ (१०२५-१४, मारू, मः १)
जुगि जुगि संत भले प्रभ तेरे ॥ (१०२५-१५, मारू, मः १)
हरि गुण गावहि रसन रसेरे ॥ (१०२५-१५, मारू, मः १)
उसतति करहि परहरि दुखु दालदु जिन नाही चिंत पराई हे ॥३॥ (१०२५-१५, मारू, मः १)
ओइ जागत रहहि न सूते दीसहि ॥ (१०२५-१६, मारू, मः १)
संगति कुल तारे साचु परीसहि ॥ (१०२५-१६, मारू, मः १)
कलिमल मैलु नाही ते निर्मल ओइ रहहि भगति लिव लाई हे ॥४॥ (१०२५-१७, मारू, मः १)
बूझहु हरि जन सतिगुर बाणी ॥ (१०२५-१७, मारू, मः १)
एहु जोबनु सासु है देह पुराणी ॥ (१०२५-१८, मारू, मः १)
आजु कालि मरि जाईऐ प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे ॥५॥ (१०२५-१८, मारू, मः १)
छोडहु प्राणी कूड़ कबाड़ा ॥ (१०२५-१९, मारू, मः १)
कूड़ु मारे कालु उछाहाड़ा ॥ (१०२५-१९, मारू, मः १)
साकत कूड़ि पचहि मनि हउमै दुहु मारगि पचै पचाई हे ॥६॥ (१०२५-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०२६

छोडिहु निंदा ताति पराई ॥ (१०२६-१, मारू, मः १)
पड़ि पड़ि दझहि साति न आई ॥ (१०२६-१, मारू, मः १)
मिलि सतसंगति नामु सलाहहु आतम रामु सखाई हे ॥७॥ (१०२६-१, मारू, मः १)
छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥ (१०२६-२, मारू, मः १)
हउमै धंधु छोडहु लम्पटाई ॥ (१०२६-२, मारू, मः १)

सतिगुर सरणि परहु ता उबरहु इउ तरीऐ भवजलु भाई हे ॥८॥ (१०२६-३, मारू, मः १)
आगै बिमल नदी अगनि बिखु झेला ॥ (१०२६-३, मारू, मः १)
तिथै अवरु न कोई जीउ इकेला ॥ (१०२६-४, मारू, मः १)
भड़ भड़ अगनि सागरु दे लहरी पड़ि दझहि मनमुख ताई हे ॥९॥ (१०२६-४, मारू, मः १)
गुर पहि मुकति दानु दे भाणै ॥ (१०२६-५, मारू, मः १)
जिनि पाइआ सोई बिधि जाणै ॥ (१०२६-५, मारू, मः १)
जिन पाइआ तिन पूछहु भाई सुखु सतिगुर सेव कमाई हे ॥१०॥ (१०२६-५, मारू, मः १)
गुर बिनु उरझि मरहि बेकारा ॥ (१०२६-६, मारू, मः १)
जमु सिरि मारे करे खुआरा ॥ (१०२६-६, मारू, मः १)
बाधे मुकति नाही नर निंदक डूबहि निंद पराई हे ॥११॥ (१०२६-७, मारू, मः १)
बोलहु साचु पछाणहु अंदरि ॥ (१०२६-७, मारू, मः १)
दूरि नाही देखहु करि नंदरि ॥ (१०२६-८, मारू, मः १)
बिघनु नाही गुरमुखि तरु तारी इउ भवजलु पारि लंघाई हे ॥१२॥ (१०२६-८, मारू, मः १)
देही अंदरि नामु निवासी ॥ (१०२६-९, मारू, मः १)
आपे करता है अबिनासी ॥ (१०२६-९, मारू, मः १)
ना जीउ मरै न मारिआ जाई करि देखै सबदि रजाई हे ॥१३॥ (१०२६-९, मारू, मः १)
ओहु निरमलु है नाही अंधिआरा ॥ (१०२६-१०, मारू, मः १)
ओहु आपे तखति बहै सचिआरा ॥ (१०२६-१०, मारू, मः १)
साकत कूड़े बंधि भवाईअहि मरि जनमहि आई जाई हे ॥१४॥ (१०२६-११, मारू, मः १)
गुर के सेवक सतिगुर पिआरे ॥ (१०२६-११, मारू, मः १)
ओइ बैसहि तखति सु सबदु वीचारे ॥ (१०२६-१२, मारू, मः १)
ततु लहहि अंतरगति जाणहि सतसंगति साचु वडाई हे ॥१५॥ (१०२६-१२, मारू, मः १)
आपि तरै जनु पितरा तारे ॥ (१०२६-१३, मारू, मः १)
संगति मुकति सु पारि उतारे ॥ (१०२६-१३, मारू, मः १)
नानकु तिस का लाला गोला जिनि गुरमुखि हरि लिव लाई हे ॥१६॥६॥ (१०२६-१३, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२६-१४)
केते जुग वरते गुबारै ॥ (१०२६-१४, मारू, मः १)
ताड़ी लाई अपर अपारै ॥ (१०२६-१४, मारू, मः १)
धुंधूकारि निरालमु बैठा ना तदि धंधु पसारा हे ॥१॥ (१०२६-१५, मारू, मः १)
जुग छतीह तिनै वरताए ॥ (१०२६-१५, मारू, मः १)
जिउ तिसु भाणा तिवै चलाए ॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)
तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे ॥२॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)
गुपते बूझहु जुग चतुआरे ॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)
घटि घटि वरतै उदर मझारे ॥ (१०२६-१७, मारू, मः १)
जुगु जुगु एका एकी वरतै कोई बूझै गुर वीचारा हे ॥३॥ (१०२६-१७, मारू, मः १)

बिंदु रकतु मिलि पिंडु सरीआ ॥ (१०२६-१८, मारू, मः १)
पउणु पाणी अगनी मिलि जीआ ॥ (१०२६-१८, मारू, मः १)
आपे चोज करे रंग महली होर माइआ मोह पसारा हे ॥४॥ (१०२६-१८, मारू, मः १)
गरभ कुंडल महि उरध धिआनी ॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)
आपे जाणै अंतरजामी ॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)
सासि सासि सचु नामु समाले अंतरि उदर मझारा हे ॥५॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)

पन्ना १०२७

चारि पदारथ लै जगि आइआ ॥ (१०२७-१, मारू, मः १)
सिव सकती घरि वासा पाइआ ॥ (१०२७-१, मारू, मः १)
एकु विसारे ता पिड़ हारे अंधुलै नामु विसारा हे ॥६॥ (१०२७-२, मारू, मः १)
बालकु मरै बालक की लीला ॥ (१०२७-२, मारू, मः १)
कहि कहि रोवहि बालु रंगीला ॥ (१०२७-३, मारू, मः १)
जिस का सा सो तिन ही लीआ भूला रोवणहारा हे ॥७॥ (१०२७-३, मारू, मः १)
भरि जोबनि मरि जाहि कि कीजै ॥ (१०२७-३, मारू, मः १)
मेरा मेरा करि रोवीजै ॥ (१०२७-४, मारू, मः १)
माइआ कारणि रोइ विगूचहि ध्रिगु जीवणु संसारा हे ॥८॥ (१०२७-४, मारू, मः १)
काली हू फुनि धउले आए ॥ (१०२७-५, मारू, मः १)
विणु नावै गथु गइआ गवाए ॥ (१०२७-५, मारू, मः १)
दुरमति अंधुला बिनसि बिनासै मूठे रोइ पूकारा हे ॥६॥ (१०२७-५, मारू, मः १)
आपु वीचारि न रोवै कोई ॥ (१०२७-६, मारू, मः १)
सतिगुरु मिलै त सोझी होई ॥ (१०२७-६, मारू, मः १)
बिनु गुर बजर कपाट न खूलहि सबदि मिलै निसतारा हे ॥१०॥ (१०२७-६, मारू, मः १)
बिरधि भइआ तनु छीजै देही ॥ (१०२७-७, मारू, मः १)
रामु न जपई अंति सनेही ॥ (१०२७-७, मारू, मः १)
नामु विसारि चलै मुहि कालै दरगह झूठु खुआरा हे ॥११॥ (१०२७-८, मारू, मः १)
नामु विसारि चलै कूड़िआरो ॥ (१०२७-८, मारू, मः १)
आवत जात पड़ै सिरि छारो ॥ (१०२७-६, मारू, मः १)
साहुरड़ै घरि वासु न पाए पेईअड़ै सिरि मारा हे ॥१२॥ (१०२७-६, मारू, मः १)
खाजै पैझै रली करीजै ॥ (१०२७-१०, मारू, मः १)
बिनु अभ भगती बादि मरीजै ॥ (१०२७-१०, मारू, मः १)
सर अपसर की सार न जाणै जमु मारे किआ चारा हे ॥१३॥ (१०२७-१०, मारू, मः १)
परविरती नरविरति पछाणै ॥ (१०२७-११, मारू, मः १)
गुर कै संगि सबदि घरु जाणै ॥ (१०२७-११, मारू, मः १)
किस ही मंदा आखि न चलै सचि खरा सचिआरा हे ॥१४॥ (१०२७-११, मारू, मः १)

साच बिना दरि सिझै न कोई ॥ (१०२७-१२, मारू, मः १)
साच सबदि पैझै पति होई ॥ (१०२७-१२, मारू, मः १)
आपे बखसि लए तिसु भावै हउमै गरबु निवारा हे ॥१५॥ (१०२७-१३, मारू, मः १)
गुर किरपा ते हुकमु पछाणै ॥ (१०२७-१३, मारू, मः १)
जुगह जुगंतर की बिधि जाणै ॥ (१०२७-१३, मारू, मः १)
नानक नामु जपहु तरु तारी सचु तारे तारणहारा हे ॥१६॥१॥७॥ (१०२७-१४, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२७-१५)
हरि सा मीतु नाही मै कोई ॥ (१०२७-१५, मारू, मः १)
जिनि तनु मनु दीआ सुरति समोई ॥ (१०२७-१५, मारू, मः १)
सर्ब जीआ प्रतिपालि समाले सो अंतरि दाना बीना हे ॥१॥ (१०२७-१५, मारू, मः १)
गुरु सरवरु हम हंस पिआरे ॥ (१०२७-१६, मारू, मः १)
सागर महि रतन लाल बहु सारे ॥ (१०२७-१६, मारू, मः १)
मोती माणक हीरा हरि जसु गावत मनु तनु भीना हे ॥२॥ (१०२७-१७, मारू, मः १)
हरि अगम अगाहु अगाधि निराला ॥ (१०२७-१७, मारू, मः १)
हरि अंतु न पाईऐ गुर गोपाला ॥ (१०२७-१८, मारू, मः १)
सतिगुर मति तारे तारणहारा मेलि लए रंगि लीना हे ॥३॥ (१०२७-१८, मारू, मः १)
सतिगुर बाझहु मुकति किनेही ॥ (१०२७-१९, मारू, मः १)
ओहु आदि जुगादी राम सनेही ॥ (१०२७-१९, मारू, मः १)
दरगह मुकति करे करि किरपा बखसे अवगुण कीना हे ॥४॥ (१०२७-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०२८

सतिगुरु दाता मुकति कराए ॥ (१०२८-१, मारू, मः १)
सभि रोग गवाए अमृत रसु पाए ॥ (१०२८-१, मारू, मः १)
जमु जागाति नाही करु लागै जिसु अगनि बुझी ठरु सीना हे ॥५॥ (१०२८-२, मारू, मः १)
काइआ हंस प्रीति बहु धारी ॥ (१०२८-२, मारू, मः १)
ओहु जोगी पुरखु ओह सुंदरि नारी ॥ (१०२८-३, मारू, मः १)
अहिनिसि भोगै चोज बिनोदी उठि चलतै मता न कीना हे ॥६॥ (१०२८-३, मारू, मः १)
सृसटि उपाइ रहे प्रभ छाजै ॥ (१०२८-४, मारू, मः १)
पउण पाणी बैसंतरु गाजै ॥ (१०२८-४, मारू, मः १)
मनूआ डोलै दूत संगति मिलि सो पाए जो किछु कीना हे ॥७॥ (१०२८-४, मारू, मः १)
नामु विसारि दोख दुख सहीऐ ॥ (१०२८-५, मारू, मः १)
हुकमु भइआ चलणा किउ रहीऐ ॥ (१०२८-५, मारू, मः १)
नरक कूप महि गोते खावै जिउ जल ते बाहरि मीना हे ॥८॥ (१०२८-५, मारू, मः १)
चउरासीह नरक साकतु भोगाईऐ ॥ (१०२८-६, मारू, मः १)
जैसा कीचै तैसो पाईऐ ॥ (१०२८-६, मारू, मः १)

सतिगुर बाझहु मुकति न होई किरति बाधा ग्रसि दीना हे ॥९॥ (१०२८-७, मारू, मः १)
खंडे धार गली अति भीड़ी ॥ (१०२८-७, मारू, मः १)
लेखा लीजै तिल जिउ पीड़ी ॥ (१०२८-८, मारू, मः १)
मात पिता कलत्र सुत बेली नाही बिनु हरि रस मुकति न कीना हे ॥१०॥ (१०२८-८, मारू, मः १)
मीत सखे केते जग माही ॥ (१०२८-९, मारू, मः १)
बिनु गुर परमेसर कोई नाही ॥ (१०२८-९, मारू, मः १)
गुर की सेवा मुकति पराइणि अनदिनु कीरतनु कीना हे ॥११॥ (१०२८-९, मारू, मः १)
कूड़ु छोडि साचे कउ धावहु ॥ (१०२८-१०, मारू, मः १)
जो इछहु सोई फलु पावहु ॥ (१०२८-१०, मारू, मः १)
साच वखर के वापारी विरले लै लाहा सउदा कीना हे ॥१२॥ (१०२८-१०, मारू, मः १)
हरि हरि नामु वखरु लै चलहु ॥ (१०२८-११, मारू, मः १)
दरसनु पावहु सहजि महलहु ॥ (१०२८-११, मारू, मः १)
गुरमुखि खोजि लहहि जन पूरे इउ समदरसी चीना हे ॥१३॥ (१०२८-१२, मारू, मः १)
प्रभ बेअंत गुरमति को पावहि ॥ (१०२८-१२, मारू, मः १)
गुर कै सबदि मन कउ समझावहि ॥ (१०२८-१३, मारू, मः १)
सतिगुर की बाणी सति सति करि मानहु इउ आतम रामै लीना हे ॥१४॥ (१०२८-१३, मारू, मः १)
नारद सारद सेवक तेरे ॥ (१०२८-१४, मारू, मः १)
तृभवणि सेवक वडहु वडेरे ॥ (१०२८-१४, मारू, मः १)
सभ तेरी कुदरति तू सिरि सिरि दाता सभु तेरो कारणु कीना हे ॥१५॥ (१०२८-१४, मारू, मः १)
इकि दरि सेवहि दरदु वञाए ॥ (१०२८-१५, मारू, मः १)
ओइ दरगह पैधे सतिगुरू छडाए ॥ (१०२८-१५, मारू, मः १)
हउमै बंधन सतिगुरि तोड़े चितु चंचलु चलणि न दीना हे ॥१६॥ (१०२८-१६, मारू, मः १)
सतिगुर मिलहु चीनहु बिधि साई ॥ (१०२८-१७, मारू, मः १)
जितु प्रभु पावहु गणत न काई ॥ (१०२८-१७, मारू, मः १)
हउमै मारि करहु गुर सेवा जन नानक हरि रंगि भीना हे ॥१७॥२॥८॥ (१०२८-१७, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०२८-१८)
असुर सघारण रामु हमारा ॥ (१०२८-१८, मारू, मः १)
घटि घटि रमईआ रामु पिआरा ॥ (१०२८-१८, मारू, मः १)
नाले अलखु न लखीऐ मूले गुरमुखि लिखु वीचारा हे ॥१॥ (१०२८-१९, मारू, मः १)
गुरमुखि साधू सरणि तुमारी ॥ (१०२८-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०२९

करि किरपा प्रभि पारि उतारी ॥ (१०२९-१, मारू, मः १)
अगनि पाणी सागरु अति गहरा गुरु सतिगुरु पारि उतारा हे ॥२॥ (१०२९-१, मारू, मः १)
मनमुख अंधुले सोझी नाही ॥ (१०२९-२, मारू, मः १)

आवहि जाहि मरहि मरि जाही ॥ (१०२६-२, मारू, मः १)
पूरबि लिखिआ लेखु न मिटई जम दरि अंधु खुआरा हे ॥३॥ (१०२६-२, मारू, मः १)
इकि आवहि जावहि घरि वासु न पावहि ॥ (१०२६-३, मारू, मः १)
किरत के बाधे पाप कमावहि ॥ (१०२६-३, मारू, मः १)
अंधुले सोझी बूझ न काई लोभु बुरा अहंकारा हे ॥४॥ (१०२६-४, मारू, मः १)
पिर बिनु किआ तिसु धन सीगारा ॥ (१०२६-४, मारू, मः १)
पर पिर राती खसमु विसारा ॥ (१०२६-५, मारू, मः १)
जिउ बेसुआ पूत बापु को कहीऐ तिउ फोकट कार विकारा हे ॥५॥ (१०२६-५, मारू, मः १)
प्रेत पिंजर महि दूख घनेरे ॥ (१०२६-६, मारू, मः १)
नरकि पचहि अगिआन अंधेरे ॥ (१०२६-६, मारू, मः १)
धर्म राइ की बाकी लीजै जिनि हरि का नामु विसारा हे ॥६॥ (१०२६-६, मारू, मः १)
सूरजु तपै अगनि बिखु झाला ॥ (१०२६-७, मारू, मः १)
अपतु पसू मनमुखु बेताला ॥ (१०२६-७, मारू, मः १)
आसा मनसा कूड़ु कमावहि रोगु बुरा बुरिआरा हे ॥७॥ (१०२६-८, मारू, मः १)
मसतकि भारु कलर सिरि भारा ॥ (१०२६-८, मारू, मः १)
किउ करि भवजलु लंघसि पारा ॥ (१०२६-८, मारू, मः १)
सतिगुरु बोहिथु आदि जुगादी राम नामि निसतारा हे ॥८॥ (१०२६-९, मारू, मः १)
पुत्र कलत्र जगि हेतु पिआरा ॥ (१०२६-९, मारू, मः १)
माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ (१०२६-१०, मारू, मः १)
जम के फाहे सतिगुरि तोड़े गुरमुखि ततु बीचारा हे ॥९॥ (१०२६-१०, मारू, मः १)
कूड़ि मुठी चालै बहु राही ॥ (१०२६-११, मारू, मः १)
मनमुखु दाझै पड़ि पड़ि भाही ॥ (१०२६-११, मारू, मः १)
अमृत नामु गुरू वड दाणा नामु जपहु सुख सारा हे ॥१०॥ (१०२६-११, मारू, मः १)
सतिगुरु तुठा सचु दृड़ाए ॥ (१०२६-१२, मारू, मः १)
सभि दुख मेटे मारगि पाए ॥ (१०२६-१२, मारू, मः १)
कंडा पाइ न गडई मूले जिसु सतिगुरु राखणहारा हे ॥११॥ (१०२६-१२, मारू, मः १)
खेहू खेह रलै तनु छीजै ॥ (१०२६-१३, मारू, मः १)
मनमुखु पाथरु सैलु न भीजै ॥ (१०२६-१३, मारू, मः १)
करण पलाव करे बहुतेरे नरकि सुरगि अवतारा हे ॥१२॥ (१०२६-१४, मारू, मः १)
माइआ बिखु भुइअंगम नाले ॥ (१०२६-१४, मारू, मः १)
इनि दुबिधा घर बहुते गाले ॥ (१०२६-१४, मारू, मः १)
सतिगुर बाझहु प्रीति न उपजै भगति रते पतीआरा हे ॥१३॥ (१०२६-१५, मारू, मः १)
साकत माइआ कउ बहु धावहि ॥ (१०२६-१५, मारू, मः १)
नामु विसारि कहा सुखु पावहि ॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)
तृहु गुण अंतरि खपहि खपावहि नाही पारि उतारा हे ॥१४॥ (१०२६-१६, मारू, मः १)

कूकर सूकर कहीअहि कूड़िआरा ॥ (१०२९-१७, मारू, मः १)
भउकि मरहि भउ भउ भउ हारा ॥ (१०२९-१७, मारू, मः १)
मनि तनि झूठे कूड़ु कमावहि दुरमति दरगह हारा हे ॥१५॥ (१०२९-१८, मारू, मः १)
सतिगुरु मिलै त मनूआ टेकै ॥ (१०२९-१८, मारू, मः १)
राम नामु दे सरणि परेकै ॥ (१०२९-१९, मारू, मः १)
हरि धनु नामु अमोलकु देवै हरि जसु दरगह पिआरा हे ॥१६॥ (१०२९-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३०

राम नामु साधू सरणाई ॥ (१०३०-१, मारू, मः १)
सतिगुर बचनी गति मिति पाई ॥ (१०३०-१, मारू, मः १)
नानक हरि जपि हरि मन मेरे हरि मेले मेलणहारा हे ॥१७॥३॥९॥ (१०३०-१, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३०-२)
घरि रहु रे मन मुगध इआने ॥ (१०३०-२, मारू, मः १)
रामु जपहु अंतरगति धिआने ॥ (१०३०-२, मारू, मः १)
लालच छोडि रचहु अपरम्परि इउ पावहु मुकति दुआरा हे ॥१॥ (१०३०-३, मारू, मः १)
जिसु बिसरिऐ जमु जोहणि लागै ॥ (१०३०-३, मारू, मः १)
सभि सुख जाहि दुखा फुनि आगै ॥ (१०३०-४, मारू, मः १)
राम नामु जपि गुरमुखि जीअड़े एहु परम ततु वीचारा हे ॥२॥ (१०३०-४, मारू, मः १)
हरि हरि नामु जपहु रसु मीठा ॥ (१०३०-५, मारू, मः १)
गुरमुखि हरि रसु अंतरि डीठा ॥ (१०३०-५, मारू, मः १)
अहिनिसि राम रहहु रंगि राते एहु जपु तपु संजमु सारा हे ॥३॥ (१०३०-५, मारू, मः १)
राम नामु गुर बचनी बोलहु ॥ (१०३०-६, मारू, मः १)
संत सभा महि इहु रसु टोलहु ॥ (१०३०-६, मारू, मः १)
गुरमति खोजि लहहु घरु अपना बहुड़ि न गरभ मझारा हे ॥४॥ (१०३०-७, मारू, मः १)
सचु तीरथि नावहु हरि गुण गावहु ॥ (१०३०-७, मारू, मः १)
ततु वीचारहु हरि लिव लावहु ॥ (१०३०-८, मारू, मः १)
अंत कालि जमु जोहि न साकै हरि बोलहु रामु पिआरा हे ॥५॥ (१०३०-८, मारू, मः १)
सतिगुरु पुरखु दाता वड दाणा ॥ (१०३०-८, मारू, मः १)
जिसु अंतरि साचु सु सबदि समाणा ॥ (१०३०-९, मारू, मः १)
जिस कउ सतिगुरु मेलि मिलाए तिसु चूका जम भै भारा हे ॥६॥ (१०३०-९, मारू, मः १)
पंच ततु मिलि काइआ कीनी ॥ (१०३०-१०, मारू, मः १)
तिस महि राम रतनु लै चीनी ॥ (१०३०-१०, मारू, मः १)
आतम रामु रामु है आतम हरि पाईऐ सबदि वीचारा हे ॥७॥ (१०३०-१०, मारू, मः १)
सत संतोखि रहहु जन भाई ॥ (१०३०-११, मारू, मः १)
खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥ (१०३०-११, मारू, मः १)

आतमु चीनि परातमु चीनहु गुर संगति इहु निसतारा हे ॥८॥ (१०३०-१२, मारू, मः १)
साकत कूड़ कपट महि टेका ॥ (१०३०-१२, मारू, मः १)
अहिनिसि निंदा करहि अनेका ॥ (१०३०-१३, मारू, मः १)
बिनु सिमरन आवहि फुनि जावहि ग्रभ जोनी नरक मझारा हे ॥६॥ (१०३०-१३, मारू, मः १)
साकत जम की काणि न चूकै ॥ (१०३०-१४, मारू, मः १)
जम का डंडु न कबहू मूकै ॥ (१०३०-१४, मारू, मः १)
बाकी धर्म राइ की लीजै सिरि अफरिओ भारु अफारा हे ॥१०॥ (१०३०-१४, मारू, मः १)
बिनु गुर साकतु कहहु को तरिआ ॥ (१०३०-१५, मारू, मः १)
हउमै करता भवजलि परिआ ॥ (१०३०-१५, मारू, मः १)
बिनु गुर पारु न पावै कोई हरि जपीऐ पारि उतारा हे ॥११॥ (१०३०-१५, मारू, मः १)
गुर की दाति न मेटै कोई ॥ (१०३०-१६, मारू, मः १)
जिसु बखसे तिसु तारे सोई ॥ (१०३०-१६, मारू, मः १)
जनम मरण दुखु नेड़ि न आवै मनि सो प्रभु अपर अपारा हे ॥१२॥ (१०३०-१७, मारू, मः १)
गुर ते भूले आवहु जावहु ॥ (१०३०-१७, मारू, मः १)
जनमि मरहु फुनि पाप कमावहु ॥ (१०३०-१८, मारू, मः १)
साकत मूड़ अचेत न चेतहि दुखु लागै ता रामु पुकारा हे ॥१३॥ (१०३०-१८, मारू, मः १)
सुखु दुखु पुरब जनम के कीए ॥ (१०३०-१६, मारू, मः १)
सो जाणै जिनि दातै दीए ॥ (१०३०-१६, मारू, मः १)
किस कउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा हे ॥१४॥ (१०३०-१६, मारू, मः १)

पन्ना १०३१

हउमै ममता करदा आइआ ॥ (१०३१-१, मारू, मः १)
आसा मनसा बंधि चलाइआ ॥ (१०३१-१, मारू, मः १)
मेरी मेरी करत किआ ले चाले बिखु लादे छार बिकारा हे ॥१५॥ (१०३१-२, मारू, मः १)
हरि की भगति करहु जन भाई ॥ (१०३१-२, मारू, मः १)
अकथु कथहु मनु मनहि समाई ॥ (१०३१-३, मारू, मः १)
उठि चलता ठाकि रखहु घरि अपुनै दुखु काटे काटणहारा हे ॥१६॥ (१०३१-३, मारू, मः १)
हरि गुर पूरे की ओट पराती ॥ (१०३१-४, मारू, मः १)
गुरमुखि हरि लिव गुरमुखि जाती ॥ (१०३१-४, मारू, मः १)
नानक राम नामि मति ऊतम हरि बखसे पारि उतारा हे ॥१७॥४॥१०॥ (१०३१-४, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३१-५)
सरणि परे गुरदेव तुमारी ॥ (१०३१-५, मारू, मः १)
तू समरथु दइआलु मुरारी ॥ (१०३१-६, मारू, मः १)
तेरे चोज न जाणै कोई तू पूरा पुरखु बिधाता हे ॥१॥ (१०३१-६, मारू, मः १)
तू आदि जुगादि करहि प्रतिपाला ॥ (१०३१-६, मारू, मः १)

घटि घटि रूपु अनूपु दइआला ॥ (१०३१-७, मारू, मः १)
जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि सभु तेरो कीआ कमाता हे ॥२॥ (१०३१-७, मारू, मः १)
अंतरि जोति भली जगजीवन ॥ (१०३१-८, मारू, मः १)
सभि घट भोगै हरि रसु पीवन ॥ (१०३१-८, मारू, मः १)
आपे लेवै आपे देवै तिहु लोई जगत पित दाता हे ॥३॥ (१०३१-८, मारू, मः १)
जगतु उपाइ खेलु रचाइआ ॥ (१०३१-९, मारू, मः १)
पवणै पाणी अगनी जीउ पाइआ ॥ (१०३१-९, मारू, मः १)
देही नगरी नउ दरवाजे सो दसवा गुपतु रहाता हे ॥४॥ (१०३१-१०, मारू, मः १)
चारि नदी अगनी असराला ॥ (१०३१-१०, मारू, मः १)
कोई गुरमुखि बूझै सबदि निराला ॥ (१०३१-१०, मारू, मः १)
साकत दुरमति डूबहि दाझहि गुरि राखे हरि लिव राता हे ॥५॥ (१०३१-११, मारू, मः १)
अपु तेजु वाइ पृथमी आकासा ॥ (१०३१-११, मारू, मः १)
तिन महि पंच ततु घरि वासा ॥ (१०३१-१२, मारू, मः १)
सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता तजि माइआ हउमै भ्राता हे ॥६॥ (१०३१-१२, मारू, मः १)
इहु मनु भीजै सबदि पतीजै ॥ (१०३१-१३, मारू, मः १)
बिनु नावै किआ टेक टिकीजै ॥ (१०३१-१३, मारू, मः १)
अंतरि चोरु मुहै घरु मंदरु इनि साकति दूतु न जाता हे ॥७॥ (१०३१-१३, मारू, मः १)
दुंदर दूत भूत भीहाले ॥ (१०३१-१४, मारू, मः १)
खिंचोताणि करहि बेताले ॥ (१०३१-१४, मारू, मः १)
सबद सुरति बिनु आवै जावै पति खोई आवत जाता हे ॥८॥ (१०३१-१५, मारू, मः १)
कूड़ु कलरु तनु भसमै ढेरी ॥ (१०३१-१५, मारू, मः १)
बिनु नावै कैसी पति तेरी ॥ (१०३१-१५, मारू, मः १)
बाधे मुकति नाही जुग चारे जमकंकरि कालि पराता हे ॥९॥ (१०३१-१६, मारू, मः १)
जम दरि बाधे मिलहि सजाई ॥ (१०३१-१६, मारू, मः १)
तिसु अपराधी गति नही काई ॥ (१०३१-१७, मारू, मः १)
करण पलाव करे बिललावै जिउ कुंडी मीनु पराता हे ॥१०॥ (१०३१-१७, मारू, मः १)
साकतु फासी पड़ै इकेला ॥ (१०३१-१८, मारू, मः १)
जम वसि कीआ अंधु दुहेला ॥ (१०३१-१८, मारू, मः १)
राम नाम बिनु मुकति न सूझै आजु कालि पचि जाता हे ॥११॥ (१०३१-१८, मारू, मः १)
सतिगुर बाझु न बेली कोई ॥ (१०३१-१९, मारू, मः १)
ऐथै ओथै राखा प्रभु सोई ॥ (१०३१-१९, मारू, मः १)
राम नामु देवै करि किरपा इउ सललै सलल मिलाता हे ॥१२॥ (१०३१-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३२

भूले सिख गुरू समझाए ॥ (१०३२-१, मारू, मः १)

उझड़ि जादे मारगि पाए ॥ (१०३२-१, मारू, मः १)
तिसु गुर सेवि सदा दिनु राती दुख भंजन संगि सखाता हे ॥१३॥ (१०३२-१, मारू, मः १)
गुर की भगति करहि किआ प्राणी ॥ (१०३२-२, मारू, मः १)
ब्रह्मै इंद्रु महेसि न जाणी ॥ (१०३२-२, मारू, मः १)
सतिगुरु अलखु कहहु किउ लखीऐ जिसु बखसे तिसहि पछाता हे ॥१४॥ (१०३२-३, मारू, मः १)
अंतरि प्रेमु परापति दरसनु ॥ (१०३२-४, मारू, मः १)
गुरबाणी सिउ प्रीति सु परसनु ॥ (१०३२-४, मारू, मः १)
अहिनिसि निर्मल जोति सबाई घटि दीपकु गुरमुखि जाता हे ॥१५॥ (१०३२-४, मारू, मः १)
भोजन गिआनु महा रसु मीठा ॥ (१०३२-५, मारू, मः १)
जिनि चाखिआ तिनि दरसनु डीठा ॥ (१०३२-५, मारू, मः १)
दरसनु देखि मिले बैरागी मनु मनसा मारि समाता हे ॥१६॥ (१०३२-६, मारू, मः १)
सतिगुरु सेवहि से परधाना ॥ (१०३२-६, मारू, मः १)
तिन घट घट अंतरि ब्रह्मु पछाना ॥ (१०३२-७, मारू, मः १)
नानक हरि जसु हरि जन की संगति दीजै जिन सतिगुरु हरि प्रभु जाता हे ॥१७॥५॥११॥ (१०३२-७, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३२-८)
साचे साहिब सिरजणहारे ॥ (१०३२-८, मारू, मः १)
जिनि धर चक्र धरे वीचारे ॥ (१०३२-८, मारू, मः १)
आपे करता करि करि वेखै साचा वेपरवाहा हे ॥१॥ (१०३२-९, मारू, मः १)
वेकी वेकी जंत उपाए ॥ (१०३२-९, मारू, मः १)
दुइ पंदी दुइ राह चलाए ॥ (१०३२-९, मारू, मः १)
गुर पूरे विणु मुकति न होई सचु नामु जपि लाहा हे ॥२॥ (१०३२-१०, मारू, मः १)
पड़हि मनमुख परु बिधि नही जाना ॥ (१०३२-१०, मारू, मः १)
नामु न बूझहि भरमि भुलाना ॥ (१०३२-११, मारू, मः १)
लै कै वढी देनि उगाही दुरमति का गलि फाहा हे ॥३॥ (१०३२-११, मारू, मः १)
सिमृति सासत्र पड़हि पुराणा ॥ (१०३२-१२, मारू, मः १)
वादु वखाणहि ततु न जाणा ॥ (१०३२-१२, मारू, मः १)
विणु गुर पूरे ततु न पाईऐ सच सूचे सचु राहा हे ॥४॥ (१०३२-१२, मारू, मः १)
सभ सालाहे सुणि सुणि आखै ॥ (१०३२-१३, मारू, मः १)
आपे दाना सचु पराखै ॥ (१०३२-१३, मारू, मः १)
जिन कउ नदरि करे प्रभु अपनी गुरमुखि सबदु सलाहा हे ॥५॥ (१०३२-१३, मारू, मः १)
सुणि सुणि आखै केती बाणी ॥ (१०३२-१४, मारू, मः १)
सुणि कहीऐ को अंतु न जाणी ॥ (१०३२-१४, मारू, मः १)
जा कउ अलखु लखाए आपे अकथ कथा बुधि ताहा हे ॥६॥ (१०३२-१५, मारू, मः १)
जनमे कउ वाजहि वाधाए ॥ (१०३२-१५, मारू, मः १)

सोहिलड़े अगिआनी गाए ॥ (१०३२-१५, मारू, मः १)
जो जनमै तिसु सरपर मरणा किरतु पइआ सिरि साहा हे ॥७॥ (१०३२-१६, मारू, मः १)
संजोगु विजोगु मेरै प्रभि कीए ॥ (१०३२-१६, मारू, मः १)
सृसटि उपाइ दुखा सुख दीए ॥ (१०३२-१७, मारू, मः १)
दुख सुख ही ते भए निराले गुरमुखि सीलु सनाहा हे ॥८॥ (१०३२-१७, मारू, मः १)
नीके साचे के वापारी ॥ (१०३२-१८, मारू, मः १)
सचु सउदा लै गुर वीचारी ॥ (१०३२-१८, मारू, मः १)
सचा वखरु जिसु धनु पलै सबदि सचै ओमाहा हे ॥९॥ (१०३२-१८, मारू, मः १)
काची सउदी तोटा आवै ॥ (१०३२-१९, मारू, मः १)
गुरमुखि वणजु करे प्रभ भावै ॥ (१०३२-१९, मारू, मः १)
पूंजी साबतु रासि सलामति चूका जम का फाहा हे ॥१०॥ (१०३२-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३३

सभु को बोलै आपण भाणै ॥ (१०३३-१, मारू, मः १)
मनमुखु दूजै बोलि न जाणै ॥ (१०३३-१, मारू, मः १)
अंधुले की मति अंधली बोली आइ गइआ दुखु ताहा हे ॥११॥ (१०३३-१, मारू, मः १)
दुख महि जनमै दुख महि मरणा ॥ (१०३३-२, मारू, मः १)
दूखु न मिटै बिनु गुर की सरणा ॥ (१०३३-२, मारू, मः १)
दूखी उपजै दूखी बिनसै किआ लै आइआ किआ लै जाहा हे ॥१२॥ (१०३३-३, मारू, मः १)
सची करणी गुर की सिरकारा ॥ (१०३३-३, मारू, मः १)
आवणु जाणु नही जम धारा ॥ (१०३३-४, मारू, मः १)
डाल छोडि ततु मूलु पराता मनि साचा ओमाहा हे ॥१३॥ (१०३३-४, मारू, मः १)
हरि के लोग नही जमु मारै ॥ (१०३३-५, मारू, मः १)
ना दुखु देखहि पंथि करारै ॥ (१०३३-५, मारू, मः १)
राम नामु घट अंतरि पूजा अवरु न दूजा काहा हे ॥१४॥ (१०३३-५, मारू, मः १)
ओड़ु न कथनै सिफति सजाई ॥ (१०३३-६, मारू, मः १)
जिउ तुधु भावहि रहहि रजाई ॥ (१०३३-६, मारू, मः १)
दरगह पैधे जानि सुहेले हुकमि सचे पातिसाहा हे ॥१५॥ (१०३३-६, मारू, मः १)
किआ कहीऐ गुण कथहि घनेरे ॥ (१०३३-७, मारू, मः १)
अंतु न पावहि वडे वडेरे ॥ (१०३३-७, मारू, मः १)
नानक साचु मिलै पति राखहु तू सिरि साहा पातिसाहा हे ॥१६॥६॥१२॥ (१०३३-८, मारू, मः १)
मारू महला १ दखणी ॥ (१०३३-८)
काइआ नगरु नगर गड़ अंदरि ॥ (१०३३-९, मारू दखणी, मः १)
साचा वासा पुरि गगनंदरि ॥ (१०३३-९, मारू दखणी, मः १)
असथिरु थानु सदा निरमाइलु आपे आपु उपाइदा ॥१॥ (१०३३-९, मारू दखणी, मः १)

अंदरि कोट छजे हटनाले ॥ (१०३३-१०, मारू दखणी, मः १)
आपे लेवै वसतु समाले ॥ (१०३३-१०, मारू दखणी, मः १)
बजर कपाट जड़े जड़ि जाणै गुर सबदी खोलाइदा ॥२॥ (१०३३-१०, मारू दखणी, मः १)
भीतरि कोट गुफा घर जाई ॥ (१०३३-११, मारू दखणी, मः १)
नउ घर थापे हुकमि रजाई ॥ (१०३३-११, मारू दखणी, मः १)
दसवै पुरखु अलेखु अपारी आपे अलखु लखाइदा ॥३॥ (१०३३-११, मारू दखणी, मः १)
पउण पाणी अगनी इक वासा ॥ (१०३३-१२, मारू दखणी, मः १)
आपे कीतो खेलु तमासा ॥ (१०३३-१२, मारू दखणी, मः १)
बलदी जलि निवरै किरपा ते आपे जल निधि पाइदा ॥४॥ (१०३३-१३, मारू दखणी, मः १)
धरति उपाइ धरी धर्म साला ॥ (१०३३-१३, मारू दखणी, मः १)
उतपति परलउ आपि निराला ॥ (१०३३-१४, मारू दखणी, मः १)
पवणै खेलु कीआ सभ थाई कला खिंचि ढाहाइदा ॥५॥ (१०३३-१४, मारू दखणी, मः १)
भार अठारह मालणि तेरी ॥ (१०३३-१४, मारू दखणी, मः १)
चउरु ढुलै पवणै लै फेरी ॥ (१०३३-१५, मारू दखणी, मः १)
चंदु सूरजु दुइ दीपक राखे ससि घरि सूरु समाइदा ॥६॥ (१०३३-१५, मारू दखणी, मः १)
पंखी पंच उडरि नही धावहि ॥ (१०३३-१६, मारू दखणी, मः १)
सफलिओ बिरखु अमृत फलु पावहि ॥ (१०३३-१६, मारू दखणी, मः १)
गुरमुखि सहजि रवै गुण गावै हरि रसु चोग चुगाइदा ॥७॥ (१०३३-१६, मारू दखणी, मः १)
झिलमिलि झिलकै चंदु न तारा ॥ (१०३३-१७, मारू दखणी, मः १)
सूरज किरणि न बिजुलि गैणारा ॥ (१०३३-१७, मारू दखणी, मः १)
अकथी कथउ चिहनु नही कोई पूरि रहिआ मनि भाइदा ॥८॥ (१०३३-१८, मारू दखणी, मः १)
पसरी किरणि जोति उजिआला ॥ (१०३३-१८, मारू दखणी, मः १)
करि करि देखै आपि दइआला ॥ (१०३३-१९, मारू दखणी, मः १)
अनहद रुण झुणकारु सदा धुनि निरभउ कै घरि वाइदा ॥९॥ (१०३३-१९, मारू दखणी, मः १)

पन्ना १०३४

अनहदु वाजै भ्रमु भउ भाजै ॥ (१०३४-१, मारू दखणी, मः १)
सगल बिआपि रहिआ प्रभु छाजै ॥ (१०३४-१, मारू दखणी, मः १)
सभ तेरी तू गुरमुखि जाता दरि सोहै गुण गाइदा ॥१०॥ (१०३४-१, मारू दखणी, मः १)
आदि निरंजनु निरमलु सोई ॥ (१०३४-२, मारू दखणी, मः १)
अवरु न जाणा दूजा कोई ॥ (१०३४-२, मारू दखणी, मः १)
एकंकारु वसै मनि भावै हउमै गरबु गवाइदा ॥११॥ (१०३४-३, मारू दखणी, मः १)
अमृतु पीआ सतिगुरि दीआ ॥ (१०३४-३, मारू दखणी, मः १)
अवरु न जाणा दूआ तीआ ॥ (१०३४-३, मारू दखणी, मः १)
एको एकु सु अपर परम्परु परखि खजानै पाइदा ॥१२॥ (१०३४-४, मारू दखणी, मः १)

गिआनु धिआनु सचु गहिर गम्भीरा ॥ (१०३४-४, मारू दखणी, मः १)
कोइ न जाणै तेरा चीरा ॥ (१०३४-५, मारू दखणी, मः १)
जेती है तेती तुधु जाचै करमि मिलै सो पाइदा ॥१३॥ (१०३४-५, मारू दखणी, मः १)
करमु धरमु सचु हाथि तुमारै ॥ (१०३४-५, मारू दखणी, मः १)
वेपरवाह अखुट भंडारै ॥ (१०३४-६, मारू दखणी, मः १)
तू दइआलु किरपालु सदा प्रभु आपे मेलि मिलाइदा ॥१४॥ (१०३४-६, मारू दखणी, मः १)
आपे देखि दिखावै आपे ॥ (१०३४-७, मारू दखणी, मः १)
आपे थापि उथापे आपे ॥ (१०३४-७, मारू दखणी, मः १)
आपे जोड़ि विछोड़े करता आपे मारि जीवाइदा ॥१५॥ (१०३४-७, मारू दखणी, मः १)
जेती है तेती तुधु अंदरि ॥ (१०३४-८, मारू दखणी, मः १)
देखहि आपि बैसि बिज मंदरि ॥ (१०३४-८, मारू दखणी, मः १)
नानकु साचु कहै बेनंती हरि दरसनि सुखु पाइदा ॥१६॥१॥१३॥ (१०३४-८, मारू दखणी, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३४-९)
दरसनु पावा जे तुधु भावा ॥ (१०३४-९, मारू, मः १)
भाइ भगति साचे गुण गावा ॥ (१०३४-९, मारू, मः १)
तुधु भाणे तू भावहि करते आपे रसन रसाइदा ॥१॥ (१०३४-१०, मारू, मः १)
सोहनि भगत प्रभू दरबारे ॥ (१०३४-१०, मारू, मः १)
मुकतु भए हरि दास तुमारे ॥ (१०३४-११, मारू, मः १)
आपु गवाइ तेरै रंगि राते अनदिनु नामु धिआइदा ॥२॥ (१०३४-११, मारू, मः १)
ईसरु ब्रह्मा देवी देवा ॥ (१०३४-११, मारू, मः १)
इंद्र तपे मुनि तेरी सेवा ॥ (१०३४-१२, मारू, मः १)
जती सती केते बनवासी अंतु न कोई पाइदा ॥३॥ (१०३४-१२, मारू, मः १)
विणु जाणाए कोइ न जाणै ॥ (१०३४-१३, मारू, मः १)
जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ (१०३४-१३, मारू, मः १)
लख चउरासीह जीअ उपाए भाणै साह लवाइदा ॥४॥ (१०३४-१३, मारू, मः १)
जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ॥ (१०३४-१४, मारू, मः १)
मनमुखु आपु गणाए रोवै ॥ (१०३४-१४, मारू, मः १)
नावहु भुला ठउर न पाए आइ जाइ दुखु पाइदा ॥५॥ (१०३४-१४, मारू, मः १)
निर्मल काइआ ऊजल हंसा ॥ (१०३४-१५, मारू, मः १)
तिसु विचि नामु निरंजन अंसा ॥ (१०३४-१५, मारू, मः १)
सगले दूख अमृतु करि पीवै बाहुड़ि दूखु न पाइदा ॥६॥ (१०३४-१६, मारू, मः १)
बहु सादहु दूखु परापति होवै ॥ (१०३४-१६, मारू, मः १)
भोगहु रोग सु अंति विगोवै ॥ (१०३४-१६, मारू, मः १)
हरखहु सोगु न मिटई कबहू विणु भाणे भरमाइदा ॥७॥ (१०३४-१७, मारू, मः १)
गिआन विहूणी भवै सबाई ॥ (१०३४-१७, मारू, मः १)

साचा रवि रहिआ लिव लाई ॥ (१०३४-१८, मारू, मः १)
निरभउ सबदु गुरू सचु जाता जोती जोति मिलाइदा ॥८॥ (१०३४-१८, मारू, मः १)
अटलु अडोलु अतोलु मुरारे ॥ (१०३४-१९, मारू, मः १)
खिन महि ढाहि फेरि उसारे ॥ (१०३४-१९, मारू, मः १)
रूपु न रेखिआ मिति नही कीमति सबदि भेदि पतीआइदा ॥९॥ (१०३४-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३५

हम दासन के दास पिआरे ॥ (१०३५-१, मारू, मः १)
साधिक साच भले वीचारे ॥ (१०३५-१, मारू, मः १)
मन्ने नाउ सोई जिणि जासी आपे साचु दृड़ाइदा ॥१०॥ (१०३५-१, मारू, मः १)
पलै साचु सचे सचिआरा ॥ (१०३५-२, मारू, मः १)
साचे भावै सबदु पिआरा ॥ (१०३५-२, मारू, मः १)
तृभवणि साचु कला धरि थापी साचे ही पतीआइदा ॥११॥ (१०३५-३, मारू, मः १)
वडा वडा आखै सभु कोई ॥ (१०३५-३, मारू, मः १)
गुर बिनु सोझी किनै न होई ॥ (१०३५-३, मारू, मः १)
साचि मिलै सो साचे भाए ना वीछुड़ि दुखु पाइदा ॥१२॥ (१०३५-४, मारू, मः १)
धुरहु विछुन्ने धाही रुन्ने ॥ (१०३५-४, मारू, मः १)
मरि मरि जनमहि मुहलति पुन्ने ॥ (१०३५-५, मारू, मः १)
जिसु बखसे तिसु दे वडिआई मेलि न पछोताइदा ॥१३॥ (१०३५-५, मारू, मः १)
आपे करता आपे भुगता ॥ (१०३५-५, मारू, मः १)
आपे तृपता आपे मुकता ॥ (१०३५-६, मारू, मः १)
आपे मुकति दानु मुकतीसरु ममता मोहु चुकाइदा ॥१४॥ (१०३५-६, मारू, मः १)
दाना कै सिरि दानु वीचारा ॥ (१०३५-७, मारू, मः १)
करण कारण समरथु अपारा ॥ (१०३५-७, मारू, मः १)
करि करि वेखै कीता अपणा करणी कार कराइदा ॥१५॥ (१०३५-७, मारू, मः १)
से गुण गावहि साचे भावहि ॥ (१०३५-८, मारू, मः १)
तुझ ते उपजहि तुझ माहि समावहि ॥ (१०३५-८, मारू, मः १)
नानकु साचु कहै बेनंती मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१६॥२॥१४॥ (१०३५-९, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३५-९)
अरबद नरबद धुंधूकारा ॥ (१०३५-९, मारू, मः १)
धरणि न गगना हुकमु अपारा ॥ (१०३५-१०, मारू, मः १)
ना दिनु रैनि न चंदु न सूरजु सुन्न समाधि लगाइदा ॥१॥ (१०३५-१०, मारू, मः १)
खाणी न बाणी पउण न पाणी ॥ (१०३५-११, मारू, मः १)
ओपति खपति न आवण जाणी ॥ (१०३५-११, मारू, मः १)
खंड पताल सपत नही सागर नदी न नीरु वहाइदा ॥२॥ (१०३५-११, मारू, मः १)

ना तदि सुरगु मछु पइआला ॥ (१०३५-१२, मारू, मः १)
दोजकु भिसतु नही खै काला ॥ (१०३५-१२, मारू, मः १)
नरकु सुरगु नही जम्मणु मरणा ना को आइ न जाइदा ॥३॥ (१०३५-१२, मारू, मः १)
ब्रह्मा बिसनु महेसु न कोई ॥ (१०३५-१३, मारू, मः १)
अवरु न दीसै एको सोई ॥ (१०३५-१३, मारू, मः १)
नारि पुरखु नही जाति न जनमा ना को दुखु सुखु पाइदा ॥४॥ (१०३५-१४, मारू, मः १)
ना तदि जती सती बनवासी ॥ (१०३५-१४, मारू, मः १)
ना तदि सिध साधिक सुखवासी ॥ (१०३५-१५, मारू, मः १)
जोगी जंगम भेखु न कोई ना को नाथु कहाइदा ॥५॥ (१०३५-१५, मारू, मः १)
जप तप संजम ना ब्रत पूजा ॥ (१०३५-१५, मारू, मः १)
ना को आखि वखाणै दूजा ॥ (१०३५-१६, मारू, मः १)
आपे आपि उपाइ विगसै आपे कीमति पाइदा ॥६॥ (१०३५-१६, मारू, मः १)
ना सुचि संजमु तुलसी माला ॥ (१०३५-१६, मारू, मः १)
गोपी कानु न गऊ गुोआला ॥ (१०३५-१७, मारू, मः १)
तंतु मंतु पाखंडु न कोई ना को वंसु वजाइदा ॥७॥ (१०३५-१७, मारू, मः १)
कर्म धर्म नही माइआ माखी ॥ (१०३५-१८, मारू, मः १)
जाति जनमु नही दीसै आखी ॥ (१०३५-१८, मारू, मः १)
ममता जालु कालु नही माथै ना को किसै धिआइदा ॥८॥ (१०३५-१८, मारू, मः १)
निंदु बिंदु नही जीउ न जिंदो ॥ (१०३५-१९, मारू, मः १)
ना तदि गोरखु ना माछिंदो ॥ (१०३५-१९, मारू, मः १)
ना तदि गिआनु धिआनु कुल ओपति ना को गणत गणाइदा ॥९॥ (१०३५-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३६

वरन भेख नही ब्रह्मण खत्री ॥ (१०३६-१, मारू, मः १)
देउ न देहुरा गऊ गाइत्री ॥ (१०३६-१, मारू, मः १)
होम जग नही तीरथि नावणु ना को पूजा लाइदा ॥१०॥ (१०३६-२, मारू, मः १)
ना को मुला ना को काजी ॥ (१०३६-२, मारू, मः १)
ना को सेखु मसाइकु हाजी ॥ (१०३६-३, मारू, मः १)
रईअति राउ न हउमै दुनीआ ना को कहणु कहाइदा ॥११॥ (१०३६-३, मारू, मः १)
भाउ न भगती ना सिव सकती ॥ (१०३६-४, मारू, मः १)
साजनु मीतु बिंदु नही रकती ॥ (१०३६-४, मारू, मः १)
आपे साहु आपे वणजारा साचे एहो भाइदा ॥१२॥ (१०३६-४, मारू, मः १)
बेद कतेब न सिम्मृति सासत ॥ (१०३६-५, मारू, मः १)
पाठ पुराण उदै नही आसत ॥ (१०३६-५, मारू, मः १)
कहता बकता आपि अगोचरु आपे अलखु लखाइदा ॥१३॥ (१०३६-५, मारू, मः १)

जा तिसु भाणा ता जगतु उपाइआ ॥ (१०३६-६, मारू, मः १)
बाझु कला आडाणु रहाइआ ॥ (१०३६-६, मारू, मः १)
ब्रह्मा बिसनु महेसु उपाए माइआ मोहु वधाइदा ॥१४॥ (१०३६-७, मारू, मः १)
विरले कउ गुरि सबदु सुणाइआ ॥ (१०३६-७, मारू, मः १)
करि करि देखै हुकमु सबाइआ ॥ (१०३६-८, मारू, मः १)
खंड ब्रहमंड पाताल अरम्भे गुपतहु परगटी आइदा ॥१५॥ (१०३६-८, मारू, मः १)
ता का अंतु न जाणै कोई ॥ (१०३६-९, मारू, मः १)
पूरे गुर ते सोझी होई ॥ (१०३६-९, मारू, मः १)
नानक साचि रते बिसमादी बिसम भए गुण गाइदा ॥१६॥३॥१५॥ (१०३६-९, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३६-१०)
आपे आपु उपाइ निराला ॥ (१०३६-१०, मारू, मः १)
साचा थानु कीओ दइआला ॥ (१०३६-१०, मारू, मः १)
पउण पाणी अगनी का बंधनु काइआ कोटु रचाइदा ॥१॥ (१०३६-११, मारू, मः १)
नउ घर थापे थापणहारै ॥ (१०३६-११, मारू, मः १)
दसवै वासा अलख अपारै ॥ (१०३६-११, मारू, मः १)
साइर सपत भरे जलि निरमलि गुरमुखि मैलु न लाइदा ॥२॥ (१०३६-१२, मारू, मः १)
रवि ससि दीपक जोति सबाई ॥ (१०३६-१२, मारू, मः १)
आपे करि वेखै वडिआई ॥ (१०३६-१३, मारू, मः १)
जोति सरूप सदा सुखदाता सचे सोभा पाइदा ॥३॥ (१०३६-१३, मारू, मः १)
गड़ महि हाट पटण वापारा ॥ (१०३६-१३, मारू, मः १)
पूरै तोलि तोलै वणजारा ॥ (१०३६-१४, मारू, मः १)
आपे रतनु विसाहे लेवै आपे कीमति पाइदा ॥४॥ (१०३६-१४, मारू, मः १)
कीमति पाई पावणहारै ॥ (१०३६-१५, मारू, मः १)
वेपरवाह पूरे भंडारै ॥ (१०३६-१५, मारू, मः १)
सर्ब कला ले आपे रहिआ गुरमुखि किसै बुझाइदा ॥५॥ (१०३६-१५, मारू, मः १)
नदरि करे पूरा गुरु भेटै ॥ (१०३६-१६, मारू, मः १)
जम जंदारु न मारै फेटै ॥ (१०३६-१६, मारू, मः १)
जिउ जल अंतरि कमलु बिगासी आपे बिगसि धिआइदा ॥६॥ (१०३६-१६, मारू, मः १)
आपे वरखै अमृत धारा ॥ (१०३६-१७, मारू, मः १)
रतन जवेहर लाल अपारा ॥ (१०३६-१७, मारू, मः १)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ प्रेम पदारथु पाइदा ॥७॥ (१०३६-१७, मारू, मः १)
प्रेम पदारथु लहै अमोलो ॥ (१०३६-१८, मारू, मः १)
कब ही न घाटसि पूरा तोलो ॥ (१०३६-१८, मारू, मः १)
सचे का वापारी होवै सचो सउदा पाइदा ॥८॥ (१०३६-१९, मारू, मः १)
सचा सउदा विरला को पाए ॥ (१०३६-१९, मारू, मः १)

पूरा सतिगुरु मिलै मिलाए ॥ (१०३६-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३७

गुरमुखि होइ सु हुकमु पछाणै मानै हुकमु समाइदा ॥९॥ (१०३७-१, मारू, मः १)
हुकमे आइआ हुकमि समाइआ ॥ (१०३७-१, मारू, मः १)
हुकमे दीसै जगतु उपाइआ ॥ (१०३७-२, मारू, मः १)
हुकमे सुरगु मछु पइआला हुकमे कला रहाइदा ॥१०॥ (१०३७-२, मारू, मः १)
हुकमे धरती धउल सिरि भारं ॥ (१०३७-३, मारू, मः १)
हुकमे पउण पाणी गैणारं ॥ (१०३७-३, मारू, मः १)
हुकमे सिव सकती घरि वासा हुकमे खेल खेलाइदा ॥११॥ (१०३७-३, मारू, मः १)
हुकमे आडाणे आगासी ॥ (१०३७-४, मारू, मः १)
हुकमे जल थल त्रिभवण वासी ॥ (१०३७-४, मारू, मः १)
हुकमे सास गिरास सदा फुनि हुकमे देखि दिखाइदा ॥१२॥ (१०३७-४, मारू, मः १)
हुकमि उपाए दस अउतारा ॥ (१०३७-५, मारू, मः १)
देव दानव अगणत अपारा ॥ (१०३७-५, मारू, मः १)
मानै हुकमु सु दरगह पैझै साचि मिलाइ समाइदा ॥१३॥ (१०३७-६, मारू, मः १)
हुकमे जुग छतीह गुदारे ॥ (१०३७-६, मारू, मः १)
हुकमे सिध साधिक वीचारे ॥ (१०३७-६, मारू, मः १)
आपि नाथु नथीं सभ जा की बखसे मुकति कराइदा ॥१४॥ (१०३७-७, मारू, मः १)
काइआ कोटु गड़ै महि राजा ॥ (१०३७-७, मारू, मः १)
नेब खवास भला दरवाजा ॥ (१०३७-८, मारू, मः १)
मिथिआ लोभु नाही घरि वासा लबि पापि पछुताइदा ॥१५॥ (१०३७-८, मारू, मः १)
सतु संतोखु नगर महि कारी ॥ (१०३७-९, मारू, मः १)
जतु सतु संजमु सरणि मुरारी ॥ (१०३७-९, मारू, मः १)
नानक सहजि मिलै जगजीवनु गुर सबदी पति पाइदा ॥१६॥४॥१६॥ (१०३७-९, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३७-१०)
सुन्न कला अपरम्परि धारी ॥ (१०३७-१०, मारू, मः १)
आपि निरालमु अपर अपारी ॥ (१०३७-१०, मारू, मः १)
आपे कुदरति करि करि देखै सुन्नहु सुन्नु उपाइदा ॥१॥ (१०३७-११, मारू, मः १)
पउणु पाणी सुन्नै ते साजे ॥ (१०३७-११, मारू, मः १)
स्रिसटि उपाइ काइआ गड़ राजे ॥ (१०३७-११, मारू, मः १)
अगनि पाणी जीउ जोति तुमारी सुन्ने कला रहाइदा ॥२॥ (१०३७-१२, मारू, मः १)
सुन्नहु ब्रह्मा बिसनु महेसु उपाए ॥ (१०३७-१२, मारू, मः १)
सुन्ने वरते जुग सबाए ॥ (१०३७-१३, मारू, मः १)
इसु पद वीचारे सो जनु पूरा तिसु मिलीऐ भरमु चुकाइदा ॥३॥ (१०३७-१३, मारू, मः १)

सुन्नहु सपत सरोवर थापे ॥ (१०३७-१४, मारू, मः १)
जिनि साजे वीचारे आपे ॥ (१०३७-१४, मारू, मः १)
तितु सत सरि मनूआ गुरमुखि नावै फिरि बाहुड़ि जोनि न पाइदा ॥४॥ (१०३७-१४, मारू, मः १)
सुन्नहु चंदु सूरजु गैणारे ॥ (१०३७-१५, मारू, मः १)
तिस की जोति तृभवण सारे ॥ (१०३७-१५, मारू, मः १)
सुन्ने अलख अपार निरालमु सुन्ने ताड़ी लाइदा ॥५॥ (१०३७-१६, मारू, मः १)
सुन्नहु धरति अकासु उपाए ॥ (१०३७-१६, मारू, मः १)
बिनु थम्मा राखे सचु कल पाए ॥ (१०३७-१६, मारू, मः १)
तृभवण साजि मेखुली माइआ आपि उपाइ खपाइदा ॥६॥ (१०३७-१७, मारू, मः १)
सुन्नहु खाणी सुन्नहु बाणी ॥ (१०३७-१७, मारू, मः १)
सुन्नहु उपजी सुंनि समाणी ॥ (१०३७-१८, मारू, मः १)
उतभुजु चलतु कीआ सिरि करतै बिसमादु सबदि देखाइदा ॥७॥ (१०३७-१८, मारू, मः १)
सुन्नहु राति दिनसु दुइ कीए ॥ (१०३७-१९, मारू, मः १)
ओपति खपति सुखा दुख दीए ॥ (१०३७-१९, मारू, मः १)
सुख दुख ही ते अमरु अतीता गुरमुखि निज घरु पाइदा ॥८॥ (१०३७-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३८

साम वेदु रिगु जुजरु अथरबणु ॥ (१०३८-१, मारू, मः १)
ब्रह्मे मुखि माइआ है त्रै गुण ॥ (१०३८-१, मारू, मः १)
ता की कीमति कहि न सकै को तिउ बोले जिउ बोलाइदा ॥९॥ (१०३८-१, मारू, मः १)
सुन्नहु सपत पाताल उपाए ॥ (१०३८-२, मारू, मः १)
सुन्नहु भवण रखे लिव लाए ॥ (१०३८-२, मारू, मः १)
आपे कारणु कीआ अपरम्परि सभु तेरो कीआ कमाइदा ॥१०॥ (१०३८-३, मारू, मः १)
रज तम सत कल तेरी छाइआ ॥ (१०३८-३, मारू, मः १)
जनम मरण हउमै दुखु पाइआ ॥ (१०३८-४, मारू, मः १)
जिस नो कृपा करे हरि गुरमुखि गुणि चउथै मुकति कराइदा ॥११॥ (१०३८-४, मारू, मः १)
सुन्नहु उपजे दस अवतारा ॥ (१०३८-५, मारू, मः १)
सृसटि उपाइ कीआ पासारा ॥ (१०३८-५, मारू, मः १)
देव दानव गण गंधरब साजे सभि लिखिआ कर्म कमाइदा ॥१२॥ (१०३८-५, मारू, मः १)
गुरमुखि समझै रोगु न होई ॥ (१०३८-६, मारू, मः १)
इह गुर की पउड़ी जाणै जनु कोई ॥ (१०३८-६, मारू, मः १)
जुगह जुगंतरि मुकति पराइण सो मुकति भइआ पति पाइदा ॥१३॥ (१०३८-७, मारू, मः १)
पंच ततु सुन्नहु परगासा ॥ (१०३८-७, मारू, मः १)
देह संजोगी कर्म अभिआसा ॥ (१०३८-८, मारू, मः १)
बुरा भला दुइ मसतकि लीखे पापु पुन्नु बीजाइदा ॥१४॥ (१०३८-८, मारू, मः १)

ऊतम सतिगुर पुरख निराले ॥ (१०३८-९, मारू, मः १)
सबदि रते हरि रसि मतवाले ॥ (१०३८-९, मारू, मः १)
रिधि बुधि सिधि गिआनु गुरू ते पाईऐ पूरै भागि मिलाइदा ॥१५॥ (१०३८-९, मारू, मः १)
इसु मन माइआ कउ नेहु घनेरा ॥ (१०३८-१०, मारू, मः १)
कोई बूझहु गिआनी करहु निबेरा ॥ (१०३८-१०, मारू, मः १)
आसा मनसा हउमै सहसा नरु लोभी कूड़ु कमाइदा ॥१६॥ (१०३८-११, मारू, मः १)
सतिगुर ते पाए वीचारा ॥ (१०३८-११, मारू, मः १)
सुन्न समाधि सचे घर बारा ॥ (१०३८-११, मारू, मः १)
नानक निर्मल नादु सबद धुनि सचु रामै नामि समाइदा ॥१७॥५॥१७॥ (१०३८-१२, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३८-१३)
जह देखा तह दीन दइआला ॥ (१०३८-१३, मारू, मः १)
आइ न जाई प्रभु किरपाला ॥ (१०३८-१३, मारू, मः १)
जीआ अंदरि जुगति समाई रहिओ निरालमु राइआ ॥१॥ (१०३८-१३, मारू, मः १)
जगु तिस की छाइआ जिसु बापु न माइआ ॥ (१०३८-१४, मारू, मः १)
ना तिसु भैण न भराउ कमाइआ ॥ (१०३८-१४, मारू, मः १)
ना तिसु ओपति खपति कुल जाती ओहु अजरावरु मनि भाइआ ॥२॥ (१०३८-१५, मारू, मः १)
तू अकाल पुरखु नाही सिरि काला ॥ (१०३८-१५, मारू, मः १)
तू पुरखु अलेख अगम्म निराला ॥ (१०३८-१६, मारू, मः १)
सत संतोखि सबदि अति सीतलु सहज भाइ लिव लाइआ ॥३॥ (१०३८-१६, मारू, मः १)
त्रै वरताइ चउथै घरि वासा ॥ (१०३८-१७, मारू, मः १)
काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥ (१०३८-१७, मारू, मः १)
निर्मल जोति सर्ब जगजीवनु गुरि अनहद सबदि दिखाइआ ॥४॥ (१०३८-१७, मारू, मः १)
ऊतम जन संत भले हरि पिआरे ॥ (१०३८-१८, मारू, मः १)
हरि रस माते पारि उतारे ॥ (१०३८-१९, मारू, मः १)
नानक रेण संत जन संगति हरि गुर परसादी पाइआ ॥५॥ (१०३८-१९, मारू, मः १)
तू अंतरजामी जीअ सभि तेरे ॥ (१०३८-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०३९

तू दाता हम सेवक तेरे ॥ (१०३९-१, मारू, मः १)
अमृत नामु कृपा करि दीजै गुरि गिआन रतनु दीपाइआ ॥६॥ (१०३९-१, मारू, मः १)
पंच ततु मिलि इहु तनु कीआ ॥ (१०३९-२, मारू, मः १)
आतम राम पाए सुखु थीआ ॥ (१०३९-२, मारू, मः १)
कर्म करतूति अमृत फलु लागा हरि नाम रतनु मनि पाइआ ॥७॥ (१०३९-२, मारू, मः १)
ना तिसु भूख पिआस मनु मानिआ ॥ (१०३९-३, मारू, मः १)
सर्ब निरंजनु घटि घटि जानिआ ॥ (१०३९-३, मारू, मः १)

अमृत रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइ सुभाइआ ॥८॥ (१०३६-४, मारू, मः १)
अधिआतम कर्म करे दिनु राती ॥ (१०३६-४, मारू, मः १)
निर्मल जोति निरंतरि जाती ॥ (१०३६-५, मारू, मः १)
सबदु रसालु रसन रसि रसना बेणु रसालु वजाइआ ॥९॥ (१०३६-५, मारू, मः १)
बेणु रसाल वजावै सोई ॥ (१०३६-६, मारू, मः १)
जा की तृभवण सोझी होई ॥ (१०३६-६, मारू, मः १)
नानक बूझहु इह बिधि गुरमति हरि राम नामि लिव लाइआ ॥१०॥ (१०३६-६, मारू, मः १)
ऐसे जन विरले संसारे ॥ (१०३६-७, मारू, मः १)
गुर सबदु वीचारहि रहहि निरारे ॥ (१०३६-७, मारू, मः १)
आपि तरहि संगति कुल तारहि तिन सफल जनमु जगि आइआ ॥११॥ (१०३६-८, मारू, मः १)
घरु दरु मंदरु जाणै सोई ॥ (१०३६-८, मारू, मः १)
जिसु पूरे गुर ते सोझी होई ॥ (१०३६-९, मारू, मः १)
काइआ गड़ महल महली प्रभु साचा सचु साचा तखतु रचाइआ ॥१२॥ (१०३६-९, मारू, मः १)
चतुर दस हाट दीवे दुइ साखी ॥ (१०३६-१०, मारू, मः १)
सेवक पंच नाही बिखु चाखी ॥ (१०३६-१०, मारू, मः १)
अंतरि वसतु अनूप निरमोलक गुरि मिलिऐ हरि धनु पाइआ ॥१३॥ (१०३६-१०, मारू, मः १)
तखति बहै तखतै की लाइक ॥ (१०३६-११, मारू, मः १)
पंच समाए गुरमति पाइक ॥ (१०३६-११, मारू, मः १)
आदि जुगादी है भी होसी सहसा भरमु चुकाइआ ॥१४॥ (१०३६-१२, मारू, मः १)
तखति सलामु होवै दिनु राती ॥ (१०३६-१२, मारू, मः १)
इहु साचु वडाई गुरमति लिव जाती ॥ (१०३६-१२, मारू, मः १)
नानक रामु जपहु तरु तारी हरि अंति सखाई पाइआ ॥१५॥१॥१८॥ (१०३६-१३, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०३६-१४)
हरि धनु संचहु रे जन भाई ॥ (१०३६-१४, मारू, मः १)
सतिगुर सेवि रहहु सरणाई ॥ (१०३६-१४, मारू, मः १)
तसकरु चोरु न लागै ता कउ धुनि उपजै सबदि जगाइआ ॥१॥ (१०३६-१४, मारू, मः १)
तू एकंकारु निरालमु राजा ॥ (१०३६-१५, मारू, मः १)
तू आपि सवारहि जन के काजा ॥ (१०३६-१५, मारू, मः १)
अमरु अडोलु अपारु अमोलकु हरि असथिर थानि सुहाइआ ॥२॥ (१०३६-१६, मारू, मः १)
देही नगरी ऊतम थाना ॥ (१०३६-१६, मारू, मः १)
पंच लोक वसहि परधाना ॥ (१०३६-१७, मारू, मः १)
ऊपरि एकंकारु निरालमु सुन्न समाधि लगाइआ ॥३॥ (१०३६-१७, मारू, मः १)
देही नगरी नउ दरवाजे ॥ (१०३६-१७, मारू, मः १)
सिरि सिरि करणैहारै साजे ॥ (१०३६-१८, मारू, मः १)
दसवै पुरखु अतीतु निराला आपे अलखु लखाइआ ॥४॥ (१०३६-१८, मारू, मः १)

पुरखु अलेखु सचे दीवाना ॥ (१०३९-१९, मारू, मः १)
हुकमि चलाए सचु नीसाना ॥ (१०३९-१९, मारू, मः १)
नानक खोजि लहहु घरु अपना हरि आतम राम नामु पाइआ ॥५॥ (१०३९-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०४०

सर्ब निरंजन पुरखु सुजाना ॥ (१०४०-१, मारू, मः १)
अदलु करे गुर गिआन समाना ॥ (१०४०-१, मारू, मः १)
कामु क्रोधु लै गरदनि मारे हउमै लोभु चुकाइआ ॥६॥ (१०४०-२, मारू, मः १)
सचै थानि वसै निरंकारा ॥ (१०४०-२, मारू, मः १)
आपि पछाणै सबदु वीचारा ॥ (१०४०-२, मारू, मः १)
सचै महलि निवासु निरंतरि आवण जाणु चुकाइआ ॥७॥ (१०४०-३, मारू, मः १)
ना मनु चलै न पउणु उडावै ॥ (१०४०-३, मारू, मः १)
जोगी सबदु अनाहदु वावै ॥ (१०४०-४, मारू, मः १)
पंच सबद झुणकारु निरालमु प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ॥८॥ (१०४०-४, मारू, मः १)
भउ बैरागा सहजि समाता ॥ (१०४०-४, मारू, मः १)
हउमै तिआगी अनहदि राता ॥ (१०४०-५, मारू, मः १)
अंजनु सारि निरंजनु जाणै सर्ब निरंजनु राइआ ॥९॥ (१०४०-५, मारू, मः १)
दुख भै भंजनु प्रभु अबिनासी ॥ (१०४०-६, मारू, मः १)
रोग कटे काटी जम फासी ॥ (१०४०-६, मारू, मः १)
नानक हरि प्रभु सो भउ भंजनु गुरि मिलिऐ हरि प्रभु पाइआ ॥१०॥ (१०४०-६, मारू, मः १)
कालै कवलु निरंजनु जाणै ॥ (१०४०-७, मारू, मः १)
बूझै करमु सु सबदु पछाणै ॥ (१०४०-७, मारू, मः १)
आपे जाणै आपि पछाणै सभु तिस का चोजु सबाइआ ॥११॥ (१०४०-७, मारू, मः १)
आपे साहु आपे वणजारा ॥ (१०४०-८, मारू, मः १)
आपे परखे परखणहारा ॥ (१०४०-८, मारू, मः १)
आपे कसि कसवटी लाए आपे कीमति पाइआ ॥१२॥ (१०४०-९, मारू, मः १)
आपि दइआलि दइआ प्रभि धारी ॥ (१०४०-९, मारू, मः १)
घटि घटि रवि रहिआ बनवारी ॥ (१०४०-१०, मारू, मः १)
पुरखु अतीतु वसै निहकेवलु गुर पुरखै पुरखु मिलाइआ ॥१३॥ (१०४०-१०, मारू, मः १)
प्रभु दाना बीना गरबु गवाए ॥ (१०४०-११, मारू, मः १)
दूजा मेटै एकु दिखाए ॥ (१०४०-११, मारू, मः १)
आसा माहि निरालमु जोनी अकुल निरंजनु गाइआ ॥१४॥ (१०४०-११, मारू, मः १)
हउमै मेटि सबदि सुखु होई ॥ (१०४०-१२, मारू, मः १)
आपु वीचारे गिआनी सोई ॥ (१०४०-१२, मारू, मः १)
नानक हरि जसु हरि गुण लाहा सतसंगति सचु फलु पाइआ ॥१५॥२॥१९॥ (१०४०-१२, मारू, मः १)

मारू महला १ ॥ (१०४०-१३)
सचु कहहु सचै घरि रहणा ॥ (१०४०-१३, मारू, मः १)
जीवत मरहु भवजलु जगु तरणा ॥ (१०४०-१४, मारू, मः १)
गुरु बोहिथु गुरु बेड़ी तुलहा मन हरि जपि पारि लंघाइआ ॥१॥ (१०४०-१४, मारू, मः १)
हउमै ममता लोभ बिनासनु ॥ (१०४०-१५, मारू, मः १)
नउ दर मुकते दसवै आसनु ॥ (१०४०-१५, मारू, मः १)
ऊपरि परै परै अपरम्परु जिनि आपे आपु उपाइआ ॥२॥ (१०४०-१५, मारू, मः १)
गुरमति लेवहु हरि लिव तरीऐ ॥ (१०४०-१६, मारू, मः १)
अकलु गाइ जम ते किआ डरीऐ ॥ (१०४०-१६, मारू, मः १)
जत जत देखउ तत तत तुम ही अवरु न दुतीआ गाइआ ॥३॥ (१०४०-१७, मारू, मः १)
सचु हरि नामु सचु है सरणा ॥ (१०४०-१७, मारू, मः १)
सचु गुर सबदु जितै लगि तरणा ॥ (१०४०-१७, मारू, मः १)
अकथु कथै देखै अपरम्परु फुनि गरभि न जोनी जाइआ ॥४॥ (१०४०-१८, मारू, मः १)
सच बिनु सतु संतोखु न पावै ॥ (१०४०-१८, मारू, मः १)
बिनु गुर मुकति न आवै जावै ॥ (१०४०-१९, मारू, मः १)
मूल मंत्रु हरि नामु रसाइणु कहु नानक पूरा पाइआ ॥५॥ (१०४०-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०४१

सच बिनु भवजलु जाइ न तरिआ ॥ (१०४१-१, मारू, मः १)
एहु समुंदु अथाहु महा बिखु भरिआ ॥ (१०४१-१, मारू, मः १)
रहै अतीतु गुरमति ले ऊपरि हरि निरभउ कै घरि पाइआ ॥६॥ (१०४१-१, मारू, मः १)
झूठी जग हित की चतुराई ॥ (१०४१-२, मारू, मः १)
बिलम न लागै आवै जाई ॥ (१०४१-२, मारू, मः १)
नामु विसारि चलहि अभिमानी उपजै बिनसि खपाइआ ॥७॥ (१०४१-३, मारू, मः १)
उपजहि बिनसहि बंधन बंधे ॥ (१०४१-३, मारू, मः १)
हउमै माइआ के गलि फंधे ॥ (१०४१-४, मारू, मः १)
जिसु राम नामु नाही मति गुरमति सो जम पुरि बंधि चलाइआ ॥८॥ (१०४१-४, मारू, मः १)
गुर बिनु मोख मुकति किउ पाईऐ ॥ (१०४१-५, मारू, मः १)
बिनु गुर राम नामु किउ धिआईऐ ॥ (१०४१-५, मारू, मः १)
गुरमति लेहु तरहु भव दुतरु मुकति भए सुखु पाइआ ॥९॥ (१०४१-५, मारू, मः १)
गुरमति कृसनि गोवरधन धारे ॥ (१०४१-६, मारू, मः १)
गुरमति साइरि पाहण तारे ॥ (१०४१-६, मारू, मः १)
गुरमति लेहु परम पदु पाईऐ नानक गुरि भरमु चुकाइआ ॥१०॥ (१०४१-७, मारू, मः १)
गुरमति लेहु तरहु सचु तारी ॥ (१०४१-७, मारू, मः १)
आतम चीनहु रिदै मुरारी ॥ (१०४१-८, मारू, मः १)

जम के फाहे काटहि हरि जपि अकुल निरंजनु पाइआ ॥११॥ (१०४१-८, मारू, मः १)
गुरमति पंच सखे गुर भाई ॥ (१०४१-९, मारू, मः १)
गुरमति अगनि निवारि समाई ॥ (१०४१-९, मारू, मः १)
मनि मुखि नामु जपहु जगजीवन रिद अंतरि अलखु लखाइआ ॥१२॥ (१०४१-९, मारू, मः १)
गुरमुखि बूझै सबदि पतीजै ॥ (१०४१-१०, मारू, मः १)
उसतति निंदा किस की कीजै ॥ (१०४१-१०, मारू, मः १)
चीनहु आपु जपहु जगदीसरु हरि जगन्नाथु मनि भाइआ ॥१३॥ (१०४१-११, मारू, मः १)
जो ब्रहमंडि खंडि सो जाणहु ॥ (१०४१-११, मारू, मः १)
गुरमुखि बूझहु सबदि पछाणहु ॥ (१०४१-१२, मारू, मः १)
घटि घटि भोगे भोगणहारा रहै अतीतु सबाइआ ॥१४॥ (१०४१-१२, मारू, मः १)
गुरमति बोलहु हरि जसु सूचा ॥ (१०४१-१२, मारू, मः १)
गुरमति आखी देखहु ऊचा ॥ (१०४१-१३, मारू, मः १)
स्रवणी नामु सुणै हरि बाणी नानक हरि रंगि रंगाइआ ॥१५॥३॥२०॥ (१०४१-१३, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०४१-१४)
कामु क्रोधु परहरु पर निंदा ॥ (१०४१-१४, मारू, मः १)
लबु लोभु तजि होहु निचिंदा ॥ (१०४१-१४, मारू, मः १)
भ्रम का संगलु तोड़ि निराला हरि अंतरि हरि रसु पाइआ ॥१॥ (१०४१-१५, मारू, मः १)
निसि दामनि जिउ चमकि चंदाइणु देखै ॥ (१०४१-१५, मारू, मः १)
अहिनिसि जोति निरंतरि पेखै ॥ (१०४१-१६, मारू, मः १)
आनंद रूपु अनूपु सरूपा गुरि पूरै देखाइआ ॥२॥ (१०४१-१६, मारू, मः १)
सतिगुर मिलहु आपे प्रभु तारे ॥ (१०४१-१७, मारू, मः १)
ससि घरि सूरु दीपकु गैणारे ॥ (१०४१-१७, मारू, मः १)
देखि अदिसटु रहहु लिव लागी सभु तृभवणि ब्रह्मु सबाइआ ॥३॥ (१०४१-१७, मारू, मः १)
अमृत रसु पाए तृसना भउ जाए ॥ (१०४१-१८, मारू, मः १)
अनभउ पदु पावै आपु गवाए ॥ (१०४१-१८, मारू, मः १)
ऊची पदवी ऊचो ऊचा निर्मल सबदु कमाइआ ॥४॥ (१०४१-१९, मारू, मः १)
अदृसट अगोचरु नामु अपारा ॥ (१०४१-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०४२

अति रसु मीठा नामु पिआरा ॥ (१०४२-१, मारू, मः १)
नानक कउ जुगि जुगि हरि जसु दीजै हरि जपीऐ अंतु न पाइआ ॥५॥ (१०४२-१, मारू, मः १)
अंतरि नामु परापति हीरा ॥ (१०४२-२, मारू, मः १)
हरि जपते मनु मन ते धीरा ॥ (१०४२-२, मारू, मः १)
दुघट घट भउ भंजनु पाईऐ बाहुड़ि जनमि न जाइआ ॥६॥ (१०४२-२, मारू, मः १)
भगति हेति गुर सबदि तरंगा ॥ (१०४२-३, मारू, मः १)

हरि जसु नामु पदारथु मंगा ॥ (१०४२-३, मारू, मः १)
हरि भावै गुर मेलि मिलाए हरि तारे जगतु सबाइआ ॥७॥ (१०४२-४, मारू, मः १)
जिनि जपु जपिओ सतिगुर मति वा के ॥ (१०४२-४, मारू, मः १)
जमकंकर कालु सेवक पग ता के ॥ (१०४२-५, मारू, मः १)
ऊतम संगति गति मिति ऊतम जगु भउजलु पारि तराइआ ॥८॥ (१०४२-५, मारू, मः १)
इहु भवजलु जगतु सबदि गुर तरीऐ ॥ (१०४२-६, मारू, मः १)
अंतर की दुबिधा अंतरि जरीऐ ॥ (१०४२-६, मारू, मः १)
पंच बाण ले जम कउ मारै गगनंतरि धणखु चड़ाइआ ॥९॥ (१०४२-६, मारू, मः १)
साकत नरि सबद सुरति किउ पाईऐ ॥ (१०४२-७, मारू, मः १)
सबदु सुरति बिनु आईऐ जाईऐ ॥ (१०४२-७, मारू, मः १)
नानक गुरमुखि मुकति पराइणु हरि पूरै भागि मिलाइआ ॥१०॥ (१०४२-८, मारू, मः १)
निरभउ सतिगुरु है रखवाला ॥ (१०४२-८, मारू, मः १)
भगति परापति गुर गोपाला ॥ (१०४२-९, मारू, मः १)
धुनि अनंद अनाहदु वाजै गुर सबदि निरंजनु पाइआ ॥११॥ (१०४२-९, मारू, मः १)
निरभउ सो सिरि नाही लेखा ॥ (१०४२-१०, मारू, मः १)
आपि अलेखु कुदरति है देखा ॥ (१०४२-१०, मारू, मः १)
आपि अतीतु अजोनी सम्भउ नानक गुरमति सो पाइआ ॥१२॥ (१०४२-१०, मारू, मः १)
अंतर की गति सतिगुरु जाणै ॥ (१०४२-११, मारू, मः १)
सो निरभउ गुर सबदि पछाणै ॥ (१०४२-११, मारू, मः १)
अंतरु देखि निरंतरि बूझै अनत न मनु डोलाइआ ॥१३॥ (१०४२-१२, मारू, मः १)
निरभउ सो अभ अंतरि वसिआ ॥ (१०४२-१२, मारू, मः १)
अहिनिसि नामि निरंजन रसिआ ॥ (१०४२-१३, मारू, मः १)
नानक हरि जसु संगति पाईऐ हरि सहजे सहजि मिलाइआ ॥१४॥ (१०४२-१३, मारू, मः १)
अंतरि बाहरि सो प्रभु जाणै ॥ (१०४२-१४, मारू, मः १)
रहै अलिपतु चलते घरि आणै ॥ (१०४२-१४, मारू, मः १)
ऊपरि आदि सरब तिहु लोई सचु नानक अमृत रसु पाइआ ॥१५॥४॥२१॥ (१०४२-१४, मारू, मः १)
मारू महला १ ॥ (१०४२-१५)
कुदरति करनैहार अपारा ॥ (१०४२-१५, मारू, मः १)
कीते का नाही किहु चारा ॥ (१०४२-१६, मारू, मः १)
जीअ उपाइ रिजकु दे आपे सिरि सिरि हुकमु चलाइआ ॥१॥ (१०४२-१६, मारू, मः १)
हुकमु चलाइ रहिआ भरपूरे ॥ (१०४२-१६, मारू, मः १)
किसु नेड़ै किसु आखाँ दूरे ॥ (१०४२-१७, मारू, मः १)
गुप्त प्रगट हरि घटि घटि देखहु वरतै ताकु सबाइआ ॥२॥ (१०४२-१७, मारू, मः १)
जिस कउ मेले सुरति समाए ॥ (१०४२-१८, मारू, मः १)
गुर सबदी हरि नामु धिआए ॥ (१०४२-१८, मारू, मः १)

आनद रूप अनूप अगोचर गुर मिलिऐ भरमु जाइआ ॥३॥ (१०४२-१८, मारू, मः १)
मन तन धन ते नामु पिआरा ॥ (१०४२-१६, मारू, मः १)
अंति सखाई चलणवारा ॥ (१०४२-१६, मारू, मः १)

पन्ना १०४३

मोह पसार नही संगि बेली बिनु हरि गुर किनि सुखु पाइआ ॥४॥ (१०४३-१, मारू, मः १)
जिस कउ नदरि करे गुरु पूरा ॥ (१०४३-१, मारू, मः १)
सबदि मिलाए गुरमति सूरा ॥ (१०४३-२, मारू, मः १)
नानक गुर के चरन सरेवहु जिनि भूला मारगि पाइआ ॥५॥ (१०४३-२, मारू, मः १)
संत जनाँ हरि धनु जसु पिआरा ॥ (१०४३-३, मारू, मः १)
गुरमति पाइआ नामु तुमारा ॥ (१०४३-३, मारू, मः १)
जाचिकु सेव करे दरि हरि कै हरि दरगह जसु गाइआ ॥६॥ (१०४३-३, मारू, मः १)
सतिगुरु मिलै त महलि बुलाए ॥ (१०४३-४, मारू, मः १)
साची दरगह गति पति पाए ॥ (१०४३-४, मारू, मः १)
साकत ठउर नाही हरि मंदर जनम मरै दुखु पाइआ ॥७॥ (१०४३-४, मारू, मः १)
सेवहु सतिगुर समुंदु अथाहा ॥ (१०४३-५, मारू, मः १)
पावहु नामु रतनु धनु लाहा ॥ (१०४३-५, मारू, मः १)
बिखिआ मलु जाइ अमृत सरि नावहु गुर सर संतोखु पाइआ ॥८॥ (१०४३-६, मारू, मः १)
सतिगुर सेवहु संक न कीजै ॥ (१०४३-६, मारू, मः १)
आसा माहि निरासु रहीजै ॥ (१०४३-७, मारू, मः १)
संसा दूख बिनासनु सेवहु फिरि बाहुड़ि रोगु न लाइआ ॥६॥ (१०४३-७, मारू, मः १)
साचे भावै तिसु वडीआए ॥ (१०४३-८, मारू, मः १)
कउनु सु दूजा तिसु समझाए ॥ (१०४३-८, मारू, मः १)
हरि गुर मूरति एका वरतै नानक हरि गुर भाइआ ॥१०॥ (१०४३-८, मारू, मः १)
वाचहि पुसतक वेद पुरानाँ ॥ (१०४३-६, मारू, मः १)
इक बहि सुनहि सुनावहि कानाँ ॥ (१०४३-६, मारू, मः १)
अजगर कपटु कहहु किउ खुलै बिनु सतिगुर ततु न पाइआ ॥११॥ (१०४३-६, मारू, मः १)
करहि बिभूति लगावहि भसमै ॥ (१०४३-१०, मारू, मः १)
अंतरि क्रोधु चंडालु सु हउमै ॥ (१०४३-१०, मारू, मः १)
पाखंड कीने जोगु न पाईऐ बिनु सतिगुर अलखु न पाइआ ॥१२॥ (१०४३-११, मारू, मः १)
तीर्थ वरत नेम करहि उदिआना ॥ (१०४३-११, मारू, मः १)
जतु सतु संजमु कथहि गिआना ॥ (१०४३-१२, मारू, मः १)
राम नाम बिनु किउ सुखु पाईऐ बिनु सतिगुर भरमु न जाइआ ॥१३॥ (१०४३-१२, मारू, मः १)
निउली कर्म भुइअंगम भाठी ॥ (१०४३-१३, मारू, मः १)
रेचक कुम्भक पूरक मन हाठी ॥ (१०४३-१३, मारू, मः १)

पाखंड धरमु प्रीति नही हरि सउ गुर सबद महा रसु पाइआ ॥१४॥ (१०४३-१४, मारू, मः १)
कुदरति देखि रहे मनु मानिआ ॥ (१०४३-१४, मारू, मः १)
गुर सबदी सभु ब्रह्मु पछानिआ ॥ (१०४३-१५, मारू, मः १)
नानक आतम रामु सबाइआ गुर सतिगुर अलखु लखाइआ ॥१५॥५॥२२॥ (१०४३-१५, मारू, मः १)
मारू सोलहे महला ३ (१०४३-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०४३-१७)
हुकमी सहजे सृसटि उपाई ॥ (१०४३-१८, मारू, मः ३)
करि करि वेखै अपणी वडिआई ॥ (१०४३-१८, मारू, मः ३)
आपे करे कराए आपे हुकमे रहिआ समाई हे ॥१॥ (१०४३-१८, मारू, मः ३)
माइआ मोहु जगतु गुबारा ॥ (१०४३-१९, मारू, मः ३)
गुरमुखि बूझै को वीचारा ॥ (१०४३-१९, मारू, मः ३)
आपे नदरि करे सो पाए आपे मेलि मिलाई हे ॥२॥ (१०४३-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०४४

आपे मेले दे वडिआई ॥ (१०४४-१, मारू, मः ३)
गुर परसादी कीमति पाई ॥ (१०४४-१, मारू, मः ३)
मनमुखि बहुतु फिरै बिललादी दूजै भाइ खुआई हे ॥३॥ (१०४४-१, मारू, मः ३)
हउमै माइआ विचे पाई ॥ (१०४४-२, मारू, मः ३)
मनमुख भूले पति गवाई ॥ (१०४४-२, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सो नाइ राचै साचै रहिआ समाई हे ॥४॥ (१०४४-३, मारू, मः ३)
गुर ते गिआनु नाम रतनु पाइआ ॥ (१०४४-३, मारू, मः ३)
मनसा मारि मन माहि समाइआ ॥ (१०४४-४, मारू, मः ३)
आपे खेल करे सभि करता आपे देइ बुझाई हे ॥५॥ (१०४४-४, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवे आपु गवाए ॥ (१०४४-५, मारू, मः ३)
मिलि प्रीतम सबदि सुखु पाए ॥ (१०४४-५, मारू, मः ३)
अंतरि पिआरु भगती राता सहजि मते बणि आई हे ॥६॥ (१०४४-५, मारू, मः ३)
दूख निवारणु गुर ते जाता ॥ (१०४४-६, मारू, मः ३)
आपि मिलिआ जगजीवनु दाता ॥ (१०४४-६, मारू, मः ३)
जिस नो लाए सोई बूझै भउ भरमु सरीरहु जाई हे ॥७॥ (१०४४-६, मारू, मः ३)
आपे गुरमुखि आपे देवै ॥ (१०४४-७, मारू, मः ३)
सचै सबदि सतिगुरु सेवै ॥ (१०४४-७, मारू, मः ३)
जरा जमु तिसु जोहि न साकै साचे सिउ बणि आई हे ॥८॥ (१०४४-७, मारू, मः ३)
तृसना अगनि जलै संसारा ॥ (१०४४-८, मारू, मः ३)
जलि जलि खपै बहुतु विकारा ॥ (१०४४-८, मारू, मः ३)
मनमुखु ठउर न पाए कबहू सतिगुर बूझ बुझाई हे ॥९॥ (१०४४-९, मारू, मः ३)

सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ (१०४४-६, मारू, मः ३)
साचै नामि सदा लिव लागी ॥ (१०४४-१०, मारू, मः ३)
अंतरि नामु रविआ निहकेवलु तृसना सबदि बुझाई हे ॥१०॥ (१०४४-१०, मारू, मः ३)
सचा सबदु सची है बाणी ॥ (१०४४-१०, मारू, मः ३)
गुरमुखि विरलै किनै पछाणी ॥ (१०४४-११, मारू, मः ३)
सचे सबदि रते बैरागी आवणु जाणु रहाई हे ॥११॥ (१०४४-११, मारू, मः ३)
सबदु बुझै सो मैलु चुकाए ॥ (१०४४-१२, मारू, मः ३)
निर्मल नामु वसै मनि आए ॥ (१०४४-१२, मारू, मः ३)
सतिगुरु अपणा सद ही सेवहि हउमै विचहु जाई हे ॥१२॥ (१०४४-१२, मारू, मः ३)
गुर ते बूझै ता दरु सूझै ॥ (१०४४-१३, मारू, मः ३)
नाम विहूणा कथि कथि लूझै ॥ (१०४४-१३, मारू, मः ३)
सतिगुर सेवे की वडिआई तृसना भूख गवाई हे ॥१३॥ (१०४४-१३, मारू, मः ३)
आपे आपि मिलै ता बूझै ॥ (१०४४-१४, मारू, मः ३)
गिआन विहूणा किछू न सूझै ॥ (१०४४-१४, मारू, मः ३)
गुर की दाति सदा मन अंतरि बाणी सबदि वजाई हे ॥१४॥ (१०४४-१५, मारू, मः ३)
जो धुरि लिखिआ सु कर्म कमाइआ ॥ (१०४४-१५, मारू, मः ३)
कोइ न मेटै धुरि फुरमाइआ ॥ (१०४४-१६, मारू, मः ३)
सतसंगति महि तिन ही वासा जिन कउ धुरि लिखि पाई हे ॥१५॥ (१०४४-१६, मारू, मः ३)
अपणी नदरि करे सो पाए ॥ (१०४४-१७, मारू, मः ३)
सचै सबदि ताड़ी चितु लाए ॥ (१०४४-१७, मारू, मः ३)
नानक दासु कहै बेनंती भीखिआ नामु दरि पाई हे ॥१६॥१॥ (१०४४-१७, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०४४-१८)
एको एकु वरतै सभु सोई ॥ (१०४४-१८, मारू, मः ३)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (१०४४-१८, मारू, मः ३)
एको रवि रहिआ सभ अंतरि तिसु बिनु अवरु न कोई हे ॥१॥ (१०४४-१६, मारू, मः ३)
लख चउरासीह जीअ उपाए ॥ (१०४४-१६, मारू, मः ३)

पन्ना १०४५

गिआनी धिआनी आखि सुणाए ॥ (१०४५-१, मारू, मः ३)
सभना रिजकु समाहे आपे कीमति होर न होई हे ॥२॥ (१०४५-१, मारू, मः ३)
माइआ मोहु अंधु अंधारा ॥ (१०४५-२, मारू, मः ३)
हउमै मेरा पसरिआ पासारा ॥ (१०४५-२, मारू, मः ३)
अनदिनु जलत रहै दिनु राती गुर बिनु साँति न होई हे ॥३॥ (१०४५-२, मारू, मः ३)
आपे जोड़ि विछोड़े आपे ॥ (१०४५-३, मारू, मः ३)
आपे थापि उथापे आपे ॥ (१०४५-३, मारू, मः ३)

सचा हुकमु सचा पासारा होरनि हुकमु न होई हे ॥४॥ (१०४५-३, मारू, मः ३)
आपे लाइ लए सो लागै ॥ (१०४५-४, मारू, मः ३)
गुर परसादी जम का भउ भागै ॥ (१०४५-४, मारू, मः ३)
अंतरि सबदु सदा सुखदाता गुरमुखि बूझै कोई हे ॥५॥ (१०४५-५, मारू, मः ३)
आपे मेले मेलि मिलाए ॥ (१०४५-५, मारू, मः ३)
पुरबि लिखिआ सो मेटणा न जाए ॥ (१०४५-५, मारू, मः ३)
अनदिनु भगति करे दिनु राती गुरमुखि सेवा होई हे ॥६॥ (१०४५-६, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु जाता ॥ (१०४५-६, मारू, मः ३)
आपे आइ मिलिआ सभना का दाता ॥ (१०४५-७, मारू, मः ३)
हउमै मारि तृसना अगनि निवारी सबदु चीनि सुखु होई हे ॥७॥ (१०४५-७, मारू, मः ३)
काइआ कुटम्बु मोहु न बूझै ॥ (१०४५-८, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै त आखी सूझै ॥ (१०४५-८, मारू, मः ३)
अनदिनु नामु रवै दिनु राती मिलि प्रीतम सुखु होई हे ॥८॥ (१०४५-८, मारू, मः ३)
मनमुख धातु दूजै है लागा ॥ (१०४५-९, मारू, मः ३)
जनमत की न मूओ आभागा ॥ (१०४५-९, मारू, मः ३)
आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ बिनु गुर मुकति न होई हे ॥९॥ (१०४५-१०, मारू, मः ३)
काइआ कुसुध हउमै मलु लाई ॥ (१०४५-१०, मारू, मः ३)
जे सउ धोवहि ता मैलु न जाई ॥ (१०४५-११, मारू, मः ३)
सबदि धोपै ता हछी होवै फिरि मैली मूलि न होई हे ॥१०॥ (१०४५-११, मारू, मः ३)
पंच दूत काइआ संघारहि ॥ (१०४५-१२, मारू, मः ३)
मरि मरि जम्महि सबदु न वीचारहि ॥ (१०४५-१२, मारू, मः ३)
अंतरि माइआ मोह गुबारा जिउ सुपनै सुधि न होई हे ॥११॥ (१०४५-१२, मारू, मः ३)
इकि पंचा मारि सबदि है लागे ॥ (१०४५-१३, मारू, मः ३)
सतिगुरु आइ मिलिआ वडभागे ॥ (१०४५-१३, मारू, मः ३)
अंतरि साचु रवहि रंगि राते सहजि समावै सोई हे ॥१२॥ (१०४५-१४, मारू, मः ३)
गुर की चाल गुरू ते जापै ॥ (१०४५-१४, मारू, मः ३)
पूरा सेवकु सबदि सिञापै ॥ (१०४५-१४, मारू, मः ३)
सदा सबदु रवै घट अंतरि रसना रसु चाखै सचु सोई हे ॥१३॥ (१०४५-१५, मारू, मः ३)
हउमै मारे सबदि निवारे ॥ (१०४५-१५, मारू, मः ३)
हरि का नामु रखै उरि धारे ॥ (१०४५-१६, मारू, मः ३)
एकसु बिनु हउ होरु न जाणा सहजे होइ सु होई हे ॥१४॥ (१०४५-१६, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर सहजु किनै नही पाइआ ॥ (१०४५-१७, मारू, मः ३)
गुरमुखि बूझै सचि समाइआ ॥ (१०४५-१७, मारू, मः ३)
सचा सेवि सबदि सच राते हउमै सबदे खोई हे ॥१५॥ (१०४५-१७, मारू, मः ३)
आपे गुणदाता बीचारी ॥ (१०४५-१८, मारू, मः ३)

गुरमुखि देवहि पकी सारी ॥ (१०४५-१८, मारू, मः ३)
नानक नामि समावहि साचै साचे ते पति होई हे ॥१६॥२॥ (१०४५-१८, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०४५-१९)
जगजीवनु साचा एको दाता ॥ (१०४५-१९, मारू, मः ३)
गुर सेवा ते सबदि पछाता ॥ (१०४५-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०४६

एको अमरु एका पतिसाही जुगु जुगु सिरि कार बणाई हे ॥१॥ (१०४६-१, मारू, मः ३)
सो जनु निरमलु जिनि आपु पछाता ॥ (१०४६-१, मारू, मः ३)
आपे आइ मिलिआ सुखदाता ॥ (१०४६-२, मारू, मः ३)
रसना सबदि रती गुण गावै दरि साचै पति पाई हे ॥२॥ (१०४६-२, मारू, मः ३)
गुरमुखि नामि मिलै वडिआई ॥ (१०४६-३, मारू, मः ३)
मनमुखि निंदकि पति गवाई ॥ (१०४६-३, मारू, मः ३)
नामि रते पर्म हंस बैरागी निज घरि ताड़ी लाई हे ॥३॥ (१०४६-३, मारू, मः ३)
सबदि मरै सोई जनु पूरा ॥ (१०४६-४, मारू, मः ३)
सतिगुरु आखि सुणाए सूरा ॥ (१०४६-४, मारू, मः ३)
काइआ अंदरि अमृत सरु साचा मनु पीवै भाइ सुभाई हे ॥४॥ (१०४६-५, मारू, मः ३)
पड़ि पंडितु अवरा समझाए ॥ (१०४६-५, मारू, मः ३)
घर जलते की खबरि न पाए ॥ (१०४६-५, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ पड़ि थाके साँति न आई हे ॥५॥ (१०४६-६, मारू, मः ३)
इकि भसम लगाइ फिरहि भेखधारी ॥ (१०४६-६, मारू, मः ३)
बिनु सबदै हउमै किनि मारी ॥ (१०४६-७, मारू, मः ३)
अनदिनु जलत रहहि दिनु राती भरमि भेखि भरमाई हे ॥६॥ (१०४६-७, मारू, मः ३)
इकि गृह कुटम्ब महि सदा उदासी ॥ (१०४६-८, मारू, मः ३)
सबदि मुए हरि नामि निवासी ॥ (१०४६-८, मारू, मः ३)
अनदिनु सदा रहहि रंगि राते भै भाइ भगति चितु लाई हे ॥७॥ (१०४६-९, मारू, मः ३)
मनमुखु निंदा करि करि विगुता ॥ (१०४६-९, मारू, मः ३)
अंतरि लोभु भउकै जिसु कुता ॥ (१०४६-१०, मारू, मः ३)
जमकालु तिसु कदे न छोडै अंति गइआ पछुताई हे ॥८॥ (१०४६-१०, मारू, मः ३)
सचै सबदि सची पति होई ॥ (१०४६-१०, मारू, मः ३)
बिनु नावै मुकति न पावै कोई ॥ (१०४६-११, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर को नाउ न पाए प्रभि ऐसी बणत बणाई हे ॥९॥ (१०४६-११, मारू, मः ३)
इकि सिध साधिक बहुतु वीचारी ॥ (१०४६-१२, मारू, मः ३)
इकि अहिनिसि नामि रते निरंकारी ॥ (१०४६-१२, मारू, मः ३)
जिस नो आपि मिलाए सो बूझै भगति भाइ भउ जाई हे ॥१०॥ (१०४६-१२, मारू, मः ३)

इसनानु दानु करहि नही बूझहि ॥ (१०४६-१३, मारू, मः ३)
इकि मनूआ मारि मनै सिउ लूझहि ॥ (१०४६-१३, मारू, मः ३)
साचै सबदि रते इक रंगी साचै सबदि मिलाई हे ॥११॥ (१०४६-१४, मारू, मः ३)
आपे सिरजे दे वडिआई ॥ (१०४६-१४, मारू, मः ३)
आपे भाणै देइ मिलाई ॥ (१०४६-१५, मारू, मः ३)
आपे नदरि करे मनि वसिआ मेरै प्रभि इउ फुरमाई हे ॥१२॥ (१०४६-१५, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ (१०४६-१६, मारू, मः ३)
मनमुख सेवि न जाणनि काचे ॥ (१०४६-१६, मारू, मः ३)
आपे करता करि करि वेखै जिउ भावै तिउ लाई हे ॥१३॥ (१०४६-१६, मारू, मः ३)
जुगि जुगि साचा एको दाता ॥ (१०४६-१७, मारू, मः ३)
पूरै भागि गुर सबदु पछाता ॥ (१०४६-१७, मारू, मः ३)
सबदि मिले से विछुड़े नाही नदरी सहजि मिलाई हे ॥१४॥ (१०४६-१८, मारू, मः ३)
हउमै माइआ मैलु कमाइआ ॥ (१०४६-१८, मारू, मः ३)
मरि मरि जम्महि दूजा भाइआ ॥ (१०४६-१९, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई मनि देखहु लिव लाई हे ॥१५॥ (१०४६-१९, मारू, मः ३)
जो तिसु भावै सोई करसी ॥ (१०४७-१, मारू, मः ३)

पन्ना १०४७

आपहु होआ ना किछु होसी ॥ (१०४७-१, मारू, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई दरि साचै पति पाई हे ॥१६॥३॥ (१०४७-१, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०४७-२)
जो आइआ सो सभु को जासी ॥ (१०४७-२, मारू, मः ३)
दूजै भाइ बाधा जम फासी ॥ (१०४७-२, मारू, मः ३)
सतिगुरि राखे से जन उबरे साचे साचि समाई हे ॥१॥ (१०४७-३, मारू, मः ३)
आपे करता करि करि वेखै ॥ (१०४७-३, मारू, मः ३)
जिस नो नदरि करे सोई जनु लेखै ॥ (१०४७-३, मारू, मः ३)
गुरमुखि गिआनु तिसु सभु किछु सूझै अगिआनी अंधु कमाई हे ॥२॥ (१०४७-४, मारू, मः ३)
मनमुख सहसा बूझ न पाई ॥ (१०४७-४, मारू, मः ३)
मरि मरि जम्मै जनमु गवाई ॥ (१०४७-५, मारू, मः ३)
गुरमुखि नामि रते सुखु पाइआ सहजे साचि समाई हे ॥३॥ (१०४७-५, मारू, मः ३)
धंधै धावत मनु भइआ मनूरा ॥ (१०४७-६, मारू, मः ३)
फिरि होवै कंचनु भेटै गुरु पूरा ॥ (१०४७-६, मारू, मः ३)
आपे बखसि लए सुखु पाए पूरै सबदि मिलाई हे ॥४॥ (१०४७-६, मारू, मः ३)
दुरमति झूठी बुरी बुरिआरि ॥ (१०४७-७, मारू, मः ३)
अउगणिआरी अउगणिआरि ॥ (१०४७-७, मारू, मः ३)

कची मति फीका मुखि बोलै दुरमति नामु न पाई हे ॥५॥ (१०४७-८, मारू, मः ३)
अउगणिआरी कंत न भावै ॥ (१०४७-८, मारू, मः ३)
मन की जूठी जूठु कमावै ॥ (१०४७-८, मारू, मः ३)
पिर का साउ न जाणै मूरखि बिनु गुर बूझ न पाई हे ॥६॥ (१०४७-९, मारू, मः ३)
दुरमति खोटी खोटु कमावै ॥ (१०४७-९, मारू, मः ३)
सीगारु करे पिर खसम न भावै ॥ (१०४७-१०, मारू, मः ३)
गुणवंती सदा पिरु रावै सतिगुरि मेलि मिलाई हे ॥७॥ (१०४७-१०, मारू, मः ३)
आपे हुकमु करे सभु वेखै ॥ (१०४७-१०, मारू, मः ३)
इकना बखसि लए धुरि लेखै ॥ (१०४७-११, मारू, मः ३)
अनदिनु नामि रते सचु पाइआ आपे मेलि मिलाई हे ॥८॥ (१०४७-११, मारू, मः ३)
हउमै धातु मोह रसि लाई ॥ (१०४७-१२, मारू, मः ३)
गुरमुखि लिव साची सहजि समाई ॥ (१०४७-१२, मारू, मः ३)
आपे मेलै आपे करि वेखै बिनु सतिगुर बूझ न पाई हे ॥९॥ (१०४७-१२, मारू, मः ३)
इकि सबदु वीचारि सदा जन जागे ॥ (१०४७-१३, मारू, मः ३)
इकि माइआ मोहि सोइ रहे अभागे ॥ (१०४७-१३, मारू, मः ३)
आपे करे कराए आपे होरु करणा किछू न जाई हे ॥१०॥ (१०४७-१४, मारू, मः ३)
कालु मारि गुर सबदि निवारे ॥ (१०४७-१४, मारू, मः ३)
हरि का नामु रखै उर धारे ॥ (१०४७-१५, मारू, मः ३)
सतिगुर सेवा ते सुखु पाइआ हरि कै नामि समाई हे ॥११॥ (१०४७-१५, मारू, मः ३)
दूजै भाइ फिरै देवानी ॥ (१०४७-१६, मारू, मः ३)
माइआ मोहि दुख माहि समानी ॥ (१०४७-१६, मारू, मः ३)
बहुते भेख करै नह पाए बिनु सतिगुर सुखु न पाई हे ॥१२॥ (१०४७-१६, मारू, मः ३)
किस नो कहीऐ जा आपि कराए ॥ (१०४७-१७, मारू, मः ३)
जितु भावै तितु राहि चलाए ॥ (१०४७-१७, मारू, मः ३)
आपे मिहरवानु सुखदाता जिउ भावै तिवै चलाई हे ॥१३॥ (१०४७-१७, मारू, मः ३)
आपे करता आपे भुगता ॥ (१०४७-१८, मारू, मः ३)
आपे संजमु आपे जुगता ॥ (१०४७-१८, मारू, मः ३)
आपे निरमलु मिहरवानु मधुसूदनु जिस दा हुकमु न मेटिआ जाई हे ॥१४॥ (१०४७-१८, मारू, मः ३)
से वडभागी जिनी एको जाता ॥ (१०४७-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०४८

घटि घटि वसि रहिआ जगजीवनु दाता ॥ (१०४८-१, मारू, मः ३)
इक थै गुपतु परगटु है आपे गुरमुखि भ्रमु भउ जाई हे ॥१५॥ (१०४८-१, मारू, मः ३)
गुरमुखि हरि जीउ एको जाता ॥ (१०४८-२, मारू, मः ३)
अंतरि नामु सबदि पछाता ॥ (१०४८-२, मारू, मः ३)

जिसु तू देहि सोई जनु पाए नानक नामि वडाई हे ॥१६॥४॥ (१०४८-२, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०४८-३)
सचु सालाही गहिर गम्भीरै ॥ (१०४८-३, मारू, मः ३)
सभु जगु है तिस ही कै चीरै ॥ (१०४८-३, मारू, मः ३)
सभि घट भोगवै सदा दिनु राती आपे सूख निवासी हे ॥१॥ (१०४८-४, मारू, मः ३)
सचा साहिबु सची नाई ॥ (१०४८-४, मारू, मः ३)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (१०४८-५, मारू, मः ३)
आपे आइ वसिआ घट अंतरि तूटी जम की फासी हे ॥२॥ (१०४८-५, मारू, मः ३)
किसु सेवी तै किसु सालाही ॥ (१०४८-५, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवी सबदि सालाही ॥ (१०४८-६, मारू, मः ३)
सचै सबदि सदा मति ऊतम अंतरि कमलु प्रगासी हे ॥३॥ (१०४८-६, मारू, मः ३)
देही काची कागद मिकदारा ॥ (१०४८-७, मारू, मः ३)
बूंद पवै बिनसै ढहत न लागै बारा ॥ (१०४८-७, मारू, मः ३)
कंचन काइआ गुरमुखि बूझै जिसु अंतरि नामु निवासी हे ॥४॥ (१०४८-७, मारू, मः ३)
सचा चउका सुरति की कारा ॥ (१०४८-८, मारू, मः ३)
हरि नामु भोजनु सचु आधारा ॥ (१०४८-८, मारू, मः ३)
सदा तृपति पवित्रु है पावनु जितु घटि हरि नामु निवासी हे ॥५॥ (१०४८-९, मारू, मः ३)
हउ तिन बलिहारी जो साचै लागे ॥ (१०४८-९, मारू, मः ३)
हरि गुण गावहि अनदिनु जागे ॥ (१०४८-१०, मारू, मः ३)
साचा सूखु सदा तिन अंतरि रसना हरि रसि रासी हे ॥६॥ (१०४८-१०, मारू, मः ३)
हरि नामु चेता अवरु न पूजा ॥ (१०४८-१०, मारू, मः ३)
एको सेवी अवरु न दूजा ॥ (१०४८-११, मारू, मः ३)
पूरै गुरि सभु सचु दिखाइआ सचै नामि निवासी हे ॥७॥ (१०४८-११, मारू, मः ३)
भ्रमि भ्रमि जोनी फिरि फिरि आइआ ॥ (१०४८-१२, मारू, मः ३)
आपि भूला जा खसमि भुलाइआ ॥ (१०४८-१२, मारू, मः ३)
हरि जीउ मिलै ता गुरमुखि बूझै चीनै सबदु अबिनासी हे ॥८॥ (१०४८-१२, मारू, मः ३)
कामि क्रोधि भरे हम अपराधी ॥ (१०४८-१३, मारू, मः ३)
किआ मुहु लै बोलह ना हम गुण न सेवा साधी ॥ (१०४८-१३, मारू, मः ३)
डुबदे पाथर मेलि लैहु तुम आपे साचु नामु अबिनासी हे ॥९॥ (१०४८-१४, मारू, मः ३)
ना कोई करे न करणै जोगा ॥ (१०४८-१४, मारू, मः ३)
आपे करहि करावहि सु होइगा ॥ (१०४८-१५, मारू, मः ३)
आपे बखसि लैहि सुखु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥१०॥ (१०४८-१५, मारू, मः ३)
इहु तनु धरती सबदु बीजि अपारा ॥ (१०४८-१६, मारू, मः ३)
हरि साचे सेती वणजु वापारा ॥ (१०४८-१६, मारू, मः ३)
सचु धनु जंमिआ तोटि न आवै अंतरि नामु निवासी हे ॥११॥ (१०४८-१६, मारू, मः ३)

हरि जीउ अवगणिआरे नो गुणु कीजै ॥ (१०४८-१७, मारू, मः ३)
आपे बखसि लैहि नामु दीजै ॥ (१०४८-१७, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सो पति पाए इकतु नामि निवासी हे ॥१२॥ (१०४८-१८, मारू, मः ३)
अंतरि हरि धनु समझ न होई ॥ (१०४८-१८, मारू, मः ३)
गुर परसादी बूझै कोई ॥ (१०४८-१८, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सो धनु पाए सद ही नामि निवासी हे ॥१३॥ (१०४८-१९, मारू, मः ३)
अनल वाउ भरमि भुलाई ॥ (१०४८-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०४९

माइआ मोहि सुधि न काई ॥ (१०४९-१, मारू, मः ३)
मनमुख अंधे किछू न सूझै गुरमति नामु प्रगासी हे ॥१४॥ (१०४९-१, मारू, मः ३)
मनमुख हउमै माइआ सूते ॥ (१०४९-२, मारू, मः ३)
अपणा घरु न समालहि अंति विगूते ॥ (१०४९-२, मारू, मः ३)
पर निंदा करहि बहु चिंता जालै दुखे दुखि निवासी हे ॥१५॥ (१०४९-२, मारू, मः ३)
आपे करतै कार कराई ॥ (१०४९-३, मारू, मः ३)
आपे गुरमुखि देइ बुझाई ॥ (१०४९-३, मारू, मः ३)
नानक नामि रते मनु निरमलु नामे नामि निवासी हे ॥१६॥५॥ (१०४९-३, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०४९-४)
एको सेवी सदा थिरु साचा ॥ (१०४९-४, मारू, मः ३)
दूजै लागा सभु जगु काचा ॥ (१०४९-५, मारू, मः ३)
गुरमती सदा सचु सालाही साचे ही साचि पतीजै हे ॥१॥ (१०४९-५, मारू, मः ३)
तेरे गुण बहुते मै एकु न जाता ॥ (१०४९-५, मारू, मः ३)
आपे लाइ लए जगजीवनु दाता ॥ (१०४९-६, मारू, मः ३)
आपे बखसे दे वडिआई गुरमति इहु मनु भीजै हे ॥२॥ (१०४९-६, मारू, मः ३)
माइआ लहरि सबदि निवारी ॥ (१०४९-७, मारू, मः ३)
इहु मनु निरमलु हउमै मारी ॥ (१०४९-७, मारू, मः ३)
सहजे गुण गावै रंगि राता रसना रामु रवीजै हे ॥३॥ (१०४९-७, मारू, मः ३)
मेरी मेरी करत विहाणी ॥ (१०४९-८, मारू, मः ३)
मनमुखि न बूझै फिरै इआणी ॥ (१०४९-८, मारू, मः ३)
जमकालु घड़ी मुहतु निहाले अनदिनु आरजा छीजै हे ॥४॥ (१०४९-८, मारू, मः ३)
अंतरि लोभु करै नही बूझै ॥ (१०४९-९, मारू, मः ३)
सिर ऊपरि जमकालु न सूझै ॥ (१०४९-९, मारू, मः ३)
ऐथै कमाणा सु अगै आइआ अंतकालि किआ कीजै हे ॥५॥ (१०४९-१०, मारू, मः ३)
जो सचि लागे तिन साची सोइ ॥ (१०४९-१०, मारू, मः ३)
दूजै लागे मनमुखि रोइ ॥ (१०४९-११, मारू, मः ३)

दुहा सिरिआ का खसमु है आपे आपे गुण महि भीजै हे ॥६॥ (१०४६-११, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि सदा जनु सोहै ॥ (१०४६-११, मारू, मः ३)
नाम रसाइणि इहु मनु मोहै ॥ (१०४६-१२, मारू, मः ३)
माइआ मोह मैलु पतंगु न लागै गुरमती हरि नामि भीजै हे ॥७॥ (१०४६-१२, मारू, मः ३)
सभना विचि वरतै इकु सोई ॥ (१०४६-१३, मारू, मः ३)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (१०४६-१३, मारू, मः ३)
हउमै मारि सदा सुखु पाइआ नाइ साचै अमृतु पीजै हे ॥८॥ (१०४६-१३, मारू, मः ३)
किलबिख दूख निवारणहारा ॥ (१०४६-१४, मारू, मः ३)
गुरमुखि सेविआ सबदि वीचारा ॥ (१०४६-१४, मारू, मः ३)
सभु किछु आपे आपि वरतै गुरमुखि तनु मनु भीजै हे ॥९॥ (१०४६-१५, मारू, मः ३)
माइआ अगनि जलै संसारे ॥ (१०४६-१५, मारू, मः ३)
गुरमुखि निवारै सबदि वीचारे ॥ (१०४६-१६, मारू, मः ३)
अंतरि साँति सदा सुखु पाइआ गुरमती नामु लीजै हे ॥१०॥ (१०४६-१६, मारू, मः ३)
इंद्र इंद्रासणि बैठे जम का भउ पावहि ॥ (१०४६-१६, मारू, मः ३)
जमु न छोडै बहु कर्म कमावहि ॥ (१०४६-१७, मारू, मः ३)
सतिगुरु भेटै ता मुकति पाईऐ हरि हरि रसना पीजै हे ॥११॥ (१०४६-१७, मारू, मः ३)
मनमुखि अंतरि भगति न होई ॥ (१०४६-१८, मारू, मः ३)
गुरमुखि भगति साँति सुखु होई ॥ (१०४६-१८, मारू, मः ३)
पवित्र पावन सदा है बाणी गुरमति अंतरु भीजै हे ॥१२॥ (१०४६-१९, मारू, मः ३)
ब्रह्मा बिसनु महेसु वीचारी ॥ (१०४६-१९, मारू, मः ३)
त्रै गुण बधक मुकति निरारी ॥ (१०४६-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५०

गुरमुखि गिआनु एको है जाता अनदिनु नामु रवीजै हे ॥१३॥ (१०५०-१, मारू, मः ३)
बेद पड़हि हरि नामु न बूझहि ॥ (१०५०-१, मारू, मः ३)
माइआ कारणि पड़ि पड़ि लूझहि ॥ (१०५०-२, मारू, मः ३)
अंतरि मैलु अगिआनी अंधा किउ करि दुतरु तरीजै हे ॥१४॥ (१०५०-२, मारू, मः ३)
बेद बाद सभि आखि वखाणहि ॥ (१०५०-३, मारू, मः ३)
न अंतरु भीजै न सबदु पछाणहि ॥ (१०५०-३, मारू, मः ३)
पुन्नु पापु सभु बेदि दृड़ाइआ गुरमुखि अमृतु पीजै हे ॥१५॥ (१०५०-३, मारू, मः ३)
आपे साचा एको सोई ॥ (१०५०-४, मारू, मः ३)
तिसु बिनु दूजा अवरु न कोई ॥ (१०५०-४, मारू, मः ३)
नानक नामि रते मनु साचा सचो सचु रवीजै हे ॥१६॥६॥ (१०५०-५, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५०-५)
सचै सचा तखतु रचाइआ ॥ (१०५०-५, मारू, मः ३)

निज घरि वसिआ तिथै मोहु न माइआ ॥ (१०५०-६, मारू, मः ३)
सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥१॥ (१०५०-६, मारू, मः ३)
सचा सउदा सचु वापारा ॥ (१०५०-७, मारू, मः ३)
न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥ (१०५०-७, मारू, मः ३)
सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥२॥ (१०५०-७, मारू, मः ३)
सचै लाए से जन लागे ॥ (१०५०-८, मारू, मः ३)
अंतरि सबदु मसतकि वडभागे ॥ (१०५०-८, मारू, मः ३)
सचै सबदि सदा गुण गावहि सबदि रते वीचारी हे ॥३॥ (१०५०-८, मारू, मः ३)
सचो सचा सचु सालाही ॥ (१०५०-९, मारू, मः ३)
एको वेखा दूजा नाही ॥ (१०५०-९, मारू, मः ३)
गुरमति ऊचो ऊची पउड़ी गिआनि रतनि हउमै मारी हे ॥४॥ (१०५०-१०, मारू, मः ३)
माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ (१०५०-१०, मारू, मः ३)
सचु मनि वसिआ जा तुधु भाइआ ॥ (१०५०-११, मारू, मः ३)
सचे की सभ सची करणी हउमै तिखा निवारी हे ॥५॥ (१०५०-११, मारू, मः ३)
माइआ मोहु सभु आपे कीना ॥ (१०५०-११, मारू, मः ३)
गुरमुखि विरलै किन ही चीना ॥ (१०५०-१२, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सु सचु कमावै साची करणी सारी हे ॥६॥ (१०५०-१२, मारू, मः ३)
कार कमाई जो मेरे प्रभ भाई ॥ (१०५०-१३, मारू, मः ३)
हउमै तृसना सबदि बुझाई ॥ (१०५०-१३, मारू, मः ३)
गुरमति सद ही अंतरु सीतलु हउमै मारि निवारी हे ॥७॥ (१०५०-१३, मारू, मः ३)
सचि लगे तिन सभु किछु भावै ॥ (१०५०-१४, मारू, मः ३)
सचै सबदे सचि सुहावै ॥ (१०५०-१४, मारू, मः ३)
ऐथै साचे से दरि साचे नदरी नदरि सवारी हे ॥८॥ (१०५०-१४, मारू, मः ३)
बिनु साचे जो दूजै लाइआ ॥ (१०५०-१५, मारू, मः ३)
माइआ मोह दुख सबाइआ ॥ (१०५०-१५, मारू, मः ३)
बिनु गुर दुखु सुखु जापै नाही माइआ मोह दुखु भारी हे ॥९॥ (१०५०-१६, मारू, मः ३)
साचा सबदु जिना मनि भाइआ ॥ (१०५०-१६, मारू, मः ३)
पूरबि लिखिआ तिनी कमाइआ ॥ (१०५०-१६, मारू, मः ३)
सचो सेवहि सचु धिआवहि सचि रते वीचारी हे ॥१०॥ (१०५०-१७, मारू, मः ३)
गुर की सेवा मीठी लागी ॥ (१०५०-१७, मारू, मः ३)
अनदिनु सूख सहज समाधी ॥ (१०५०-१८, मारू, मः ३)
हरि हरि करतिआ मनु निरमलु होआ गुर की सेव पिआरी हे ॥११॥ (१०५०-१८, मारू, मः ३)
से जन सुखीए सतिगुरि सचे लाए ॥ (१०५०-१९, मारू, मः ३)
आपे भाणे आपि मिलाए ॥ (१०५०-१९, मारू, मः ३)
सतिगुरि राखे से जन उबरे होर माइआ मोह खुआरी हे ॥१२॥ (१०५०-१९, मारू, मः ३)

गुरमुखि साचा सबदि पछाता ॥ (१०५१-१, मारू, मः ३)
ना तिसु कुटम्बु ना तिसु माता ॥ (१०५१-१, मारू, मः ३)
एको एकु रविआ सभ अंतरि सभना जीआ का आधारी हे ॥१३॥ (१०५१-१, मारू, मः ३)
हउमै मेरा दूजा भाइआ ॥ (१०५१-२, मारू, मः ३)
किछु न चलै धुरि खसमि लिखि पाइआ ॥ (१०५१-२, मारू, मः ३)
गुर साचे ते साचु कमावहि साचै दूख निवारी हे ॥१४॥ (१०५१-३, मारू, मः ३)
जा तू देहि सदा सुखु पाए ॥ (१०५१-३, मारू, मः ३)
साचै सबदे साचु कमाए ॥ (१०५१-४, मारू, मः ३)
अंदरु साचा मनु तनु साचा भगति भरे भंडारी हे ॥१५॥ (१०५१-४, मारू, मः ३)
आपे वेखै हुकमि चलाए ॥ (१०५१-४, मारू, मः ३)
अपणा भाणा आपि कराए ॥ (१०५१-५, मारू, मः ३)
नानक नामि रते बैरागी मनु तनु रसना नामि सवारी हे ॥१६॥७॥ (१०५१-५, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५१-६)
आपे आपु उपाइ उपन्ना ॥ (१०५१-६, मारू, मः ३)
सभ महि वरतै एकु परछन्ना ॥ (१०५१-६, मारू, मः ३)
सभना सार करे जगजीवनु जिनि अपणा आपु पछाता हे ॥१॥ (१०५१-६, मारू, मः ३)
जिनि ब्रह्मा बिसनु महेसु उपाए ॥ (१०५१-७, मारू, मः ३)
सिरि सिरि धंधै आपे लाए ॥ (१०५१-७, मारू, मः ३)
जिसु भावै तिसु आपे मेले जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥२॥ (१०५१-८, मारू, मः ३)
आवा गउणु है संसारा ॥ (१०५१-८, मारू, मः ३)
माइआ मोहु बहु चितै बिकारा ॥ (१०५१-९, मारू, मः ३)
थिरु साचा सालाही सद ही जिनि गुर का सबदु पछाता हे ॥३॥ (१०५१-९, मारू, मः ३)
इकि मूलि लगे ओनी सुखु पाइआ ॥ (१०५१-१०, मारू, मः ३)
डाली लागे तिनी जनमु गवाइआ ॥ (१०५१-१०, मारू, मः ३)
अमृत फल तिन जन कउ लागे जो बोलहि अमृत बाता हे ॥४॥ (१०५१-१०, मारू, मः ३)
हम गुण नाही किआ बोलह बोल ॥ (१०५१-११, मारू, मः ३)
तू सभना देखहि तोलहि तोल ॥ (१०५१-११, मारू, मः ३)
जिउ भावै तिउ राखहि रहणा गुरमुखि एको जाता हे ॥५॥ (१०५१-१२, मारू, मः ३)
जा तुधु भाणा ता सची कारै लाए ॥ (१०५१-१२, मारू, मः ३)
अवगण छोडि गुण माहि समाए ॥ (१०५१-१३, मारू, मः ३)
गुण महि एको निरमलु साचा गुर कै सबदि पछाता हे ॥६॥ (१०५१-१३, मारू, मः ३)
जह देखा तह एको सोई ॥ (१०५१-१४, मारू, मः ३)
दूजी दुरमति सबदे खोई ॥ (१०५१-१४, मारू, मः ३)

एकसु महि प्रभु एकु समाणा अपणै रंगि सद राता हे ॥७॥ (१०५१-१४, मारू, मः ३)
काइआ कमलु है कुमलाणा ॥ (१०५१-१५, मारू, मः ३)
मनमुखु सबदु न बुझै इआणा ॥ (१०५१-१५, मारू, मः ३)
गुर परसादी काइआ खोजे पाए जगजीवनु दाता हे ॥८॥ (१०५१-१५, मारू, मः ३)
कोट गही के पाप निवारे ॥ (१०५१-१६, मारू, मः ३)
सदा हरि जीउ राखै उर धारे ॥ (१०५१-१६, मारू, मः ३)
जो इछे सोई फलु पाए जिउ रंगु मजीठै राता हे ॥९॥ (१०५१-१६, मारू, मः ३)
मनमुखु गिआनु कथे न होई ॥ (१०५१-१७, मारू, मः ३)
फिरि फिरि आवै ठउर न कोई ॥ (१०५१-१७, मारू, मः ३)
गुरमुखि गिआनु सदा सालाहे जुगि जुगि एको जाता हे ॥१०॥ (१०५१-१८, मारू, मः ३)
मनमुखु कार करे सभि दुख सबाए ॥ (१०५१-१८, मारू, मः ३)
अंतरि सबदु नाही किउ दरि जाए ॥ (१०५१-१९, मारू, मः ३)
गुरमुखि सबदु वसै मनि साचा सद सेवे सुखदाता हे ॥११॥ (१०५१-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५२

जह देखा तू सभनी थाई ॥ (१०५२-१, मारू, मः ३)
पूरै गुरि सभ सोझी पाई ॥ (१०५२-१, मारू, मः ३)
नामो नामु धिआईऐ सदा सद इहु मनु नामे राता हे ॥१२॥ (१०५२-१, मारू, मः ३)
नामे राता पवितु सरीरा ॥ (१०५२-२, मारू, मः ३)
बिनु नावै डूबि मुए बिनु नीरा ॥ (१०५२-२, मारू, मः ३)
आवहि जावहि नामु नही बूझहि इकना गुरमुखि सबदु पछाता हे ॥१३॥ (१०५२-२, मारू, मः ३)
पूरै सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (१०५२-३, मारू, मः ३)
विणु नावै मुकति किनै न पाई ॥ (१०५२-३, मारू, मः ३)
नामे नामि मिलै वडिआई सहजि रहै रंगि राता हे ॥१४॥ (१०५२-४, मारू, मः ३)
काइआ नगरु ढहै ढहि ढेरी ॥ (१०५२-४, मारू, मः ३)
बिनु सबदै चूकै नही फेरी ॥ (१०५२-५, मारू, मः ३)
साचु सलाहे साचि समावै जिनि गुरमुखि एको जाता हे ॥१५॥ (१०५२-५, मारू, मः ३)
जिस नो नदरि करे सो पाए ॥ (१०५२-६, मारू, मः ३)
साचा सबदु वसै मनि आए ॥ (१०५२-६, मारू, मः ३)
नानक नामि रते निरंकारी दरि साचै साचु पछाता हे ॥१६॥८॥ (१०५२-६, मारू, मः ३)
मारू सोलहे ३ ॥ (१०५२-७)
आपे करता सभु जिसु करणा ॥ (१०५२-७, मारू, मः ३)
जीअ जंत सभि तेरी सरणा ॥ (१०५२-७, मारू, मः ३)
आपे गुपतु वरतै सभ अंतरि गुर कै सबदि पछाता हे ॥१॥ (१०५२-८, मारू, मः ३)
हरि के भगति भरे भंडारा ॥ (१०५२-८, मारू, मः ३)

आपे बखसे सबदि वीचारा ॥ (१०५२-८, मारू, मः ३)
जो तुधु भावै सोई करसहि सचे सिउ मनु राता हे ॥२॥ (१०५२-९, मारू, मः ३)
आपे हीरा रतनु अमोलो ॥ (१०५२-९, मारू, मः ३)
आपे नदरी तोले तोलो ॥ (१०५२-९, मारू, मः ३)
जीअ जंत सभि सरणि तुमारी करि किरपा आपि पछाता हे ॥३॥ (१०५२-१०, मारू, मः ३)
जिस नो नदरि होवै धुरि तेरी ॥ (१०५२-१०, मारू, मः ३)
मरै न जम्मै चूकै फेरी ॥ (१०५२-११, मारू, मः ३)
साचे गुण गावै दिनु राती जुगि जुगि एको जाता हे ॥४॥ (१०५२-११, मारू, मः ३)
माइआ मोहि सभु जगतु उपाइआ ॥ (१०५२-११, मारू, मः ३)
ब्रह्मा बिसनु देव सबाइआ ॥ (१०५२-१२, मारू, मः ३)
जो तुधु भाणे से नामि लागे गिआन मती पछाता हे ॥५॥ (१०५२-१२, मारू, मः ३)
पाप पुन्न वरतै संसारा ॥ (१०५२-१३, मारू, मः ३)
हरखु सोगु सभु दुखु है भारा ॥ (१०५२-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सो सुखु पाए जिनि गुरमुखि नामु पछाता हे ॥६॥ (१०५२-१३, मारू, मः ३)
किरतु न कोई मेटणहारा ॥ (१०५२-१४, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे मोख दुआरा ॥ (१०५२-१४, मारू, मः ३)
पूरबि लिखिआ सो फलु पाइआ जिनि आपु मारि पछाता हे ॥७॥ (१०५२-१४, मारू, मः ३)
माइआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै ॥ (१०५२-१५, मारू, मः ३)
दूजै भाइ घणा दुखु आगै ॥ (१०५२-१५, मारू, मः ३)
मनमुख भरमि भुले भेखधारी अंत कालि पछुताता हे ॥८॥ (१०५२-१६, मारू, मः ३)
हरि कै भाणै हरि गुण गाए ॥ (१०५२-१६, मारू, मः ३)
सभि किलबिख काटे दूख सबाए ॥ (१०५२-१७, मारू, मः ३)
हरि निरमलु निर्मल है बाणी हरि सेती मनु राता हे ॥९॥ (१०५२-१७, मारू, मः ३)
जिस नो नदरि करे सो गुण निधि पाए ॥ (१०५२-१८, मारू, मः ३)
हउमै मेरा ठाकि रहाए ॥ (१०५२-१८, मारू, मः ३)
गुण अवगण का एको दाता गुरमुखि विरली जाता हे ॥१०॥ (१०५२-१८, मारू, मः ३)
मेरा प्रभु निरमलु अति अपारा ॥ (१०५२-१९, मारू, मः ३)
आपे मेलै गुर सबदि वीचारा ॥ (१०५२-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५३

आपे बखसे सचु दृड़ाए मनु तनु साचै राता हे ॥११॥ (१०५३-१, मारू, मः ३)
मनु तनु मैला विचि जोति अपारा ॥ (१०५३-१, मारू, मः ३)
गुरमति बूझै करि वीचारा ॥ (१०५३-२, मारू, मः ३)
हउमै मारि सदा मनु निरमलु रसना सेवि सुखदाता हे ॥१२॥ (१०५३-२, मारू, मः ३)
गड़ काइआ अंदरि बहु हट बाजारा ॥ (१०५३-२, मारू, मः ३)

तिसु विचि नामु है अति अपारा ॥ (१०५३-३, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि सदा दरि सोहै हउमै मारि पछाता हे ॥१३॥ (१०५३-३, मारू, मः ३)
रतनु अमोलकु अगम अपारा ॥ (१०५३-४, मारू, मः ३)
कीमति कवणु करे वेचारा ॥ (१०५३-४, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे तोलि तोलाए अंतरि सबदि पछाता हे ॥१४॥ (१०५३-४, मारू, मः ३)
सिमृति सासत्र बहुतु बिसथारा ॥ (१०५३-५, मारू, मः ३)
माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ (१०५३-५, मारू, मः ३)
मूरख पड़हि सबदु न बूझहि गुरमुखि विरलै जाता हे ॥१५॥ (१०५३-६, मारू, मः ३)
आपे करता करे कराए ॥ (१०५३-६, मारू, मः ३)
सची बाणी सचु दृड़ाए ॥ (१०५३-७, मारू, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई जुगि जुगि एको जाता हे ॥१६॥६॥ (१०५३-७, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५३-८)
सो सचु सेविहु सिरजणहारा ॥ (१०५३-८, मारू, मः ३)
सबदे दूख निवारणहारा ॥ (१०५३-८, मारू, मः ३)
अगमु अगोचरु कीमति नही पाई आपे अगम अथाहा हे ॥१॥ (१०५३-८, मारू, मः ३)
आपे सचा सचु वरताए ॥ (१०५३-९, मारू, मः ३)
इकि जन साचै आपे लाए ॥ (१०५३-९, मारू, मः ३)
साचो सेवहि साचु कमावहि नामे सचि समाहा हे ॥२॥ (१०५३-९, मारू, मः ३)
धुरि भगता मेले आपि मिलाए ॥ (१०५३-१०, मारू, मः ३)
सची भगती आपे लाए ॥ (१०५३-१०, मारू, मः ३)
साची बाणी सदा गुण गावै इसु जनमै का लाहा हे ॥३॥ (१०५३-११, मारू, मः ३)
गुरमुखि वणजु करहि परु आपु पछाणहि ॥ (१०५३-११, मारू, मः ३)
एकस बिनु को अवरु न जाणहि ॥ (१०५३-१२, मारू, मः ३)
सचा साहु सचे वणजारे पूंजी नामु विसाहा हे ॥४॥ (१०५३-१२, मारू, मः ३)
आपे साजे सृसटि उपाए ॥ (१०५३-१२, मारू, मः ३)
विरले कउ गुर सबदु बुझाए ॥ (१०५३-१३, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवहि से जन साचे काटे जम का फाहा हे ॥५॥ (१०५३-१३, मारू, मः ३)
भन्नै घड़े सवारे साजे ॥ (१०५३-१४, मारू, मः ३)
माइआ मोहि दूजै जंत पाजे ॥ (१०५३-१४, मारू, मः ३)
मनमुख फिरहि सदा अंधु कमावहि जम का जेवड़ा गलि फाहा हे ॥६॥ (१०५३-१४, मारू, मः ३)
आपे बखसे गुर सेवा लाए ॥ (१०५३-१५, मारू, मः ३)
गुरमती नामु मंनि वसाए ॥ (१०५३-१५, मारू, मः ३)
अनदिनु नामु धिआए साचा इसु जग महि नामो लाहा हे ॥७॥ (१०५३-१५, मारू, मः ३)
आपे सचा सची नाई ॥ (१०५३-१६, मारू, मः ३)
गुरमुखि देवै मंनि वसाई ॥ (१०५३-१६, मारू, मः ३)

जिन मनि वसिआ से जन सोहहि तिन सिरि चूका काहा हे ॥८॥ (१०५३-१७, मारू, मः ३)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ (१०५३-१७, मारू, मः ३)
गुर परसादी मंनि वसाई ॥ (१०५३-१८, मारू, मः ३)
सदा सबदि सालाही गुणदाता लेखा कोइ न मंगै ताहा हे ॥९॥ (१०५३-१८, मारू, मः ३)
ब्रह्मा बिसनु रुद्रु तिस की सेवा ॥ (१०५३-१८, मारू, मः ३)
अंतु न पावहि अलख अभेवा ॥ (१०५३-१९, मारू, मः ३)
जिन कउ नदरि करहि तू अपणी गुरमुखि अलखु लखाहा हे ॥१०॥ (१०५३-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५४

पूरै सतिगुरि सोझी पाई ॥ (१०५४-१, मारू, मः ३)
एको नामु मंनि वसाई ॥ (१०५४-१, मारू, मः ३)
नामु जपी तै नामु धिआई महलु पाइ गुण गाहा हे ॥११॥ (१०५४-१, मारू, मः ३)
सेवक सेवहि मंनि हुकमु अपारा ॥ (१०५४-२, मारू, मः ३)
मनमुख हुकमु न जाणहि सारा ॥ (१०५४-२, मारू, मः ३)
हुकमे मन्ने हुकमे वडिआई हुकमे वेपरवाहा हे ॥१२॥ (१०५४-३, मारू, मः ३)
गुर परसादी हुकमु पछाणै ॥ (१०५४-३, मारू, मः ३)
धावतु राखै इकतु घरि आणै ॥ (१०५४-३, मारू, मः ३)
नामे राता सदा बैरागी नामु रतनु मनि ताहा हे ॥१३॥ (१०५४-४, मारू, मः ३)
सभ जग महि वरतै एको सोई ॥ (१०५४-४, मारू, मः ३)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (१०५४-५, मारू, मः ३)
सबदु सलाहहि से जन निर्मल निज घरि वासा ताहा हे ॥१४॥ (१०५४-५, मारू, मः ३)
सदा भगत तेरी सरणाई ॥ (१०५४-५, मारू, मः ३)
अगम अगोचर कीमति नही पाई ॥ (१०५४-६, मारू, मः ३)
जिउ तुधु भावहि तिउ तू राखहि गुरमुखि नामु धिआहा हे ॥१५॥ (१०५४-६, मारू, मः ३)
सदा सदा तेरे गुण गावा ॥ (१०५४-७, मारू, मः ३)
सचे साहिब तेरै मनि भावा ॥ (१०५४-७, मारू, मः ३)
नानकु साचु कहै बेनंती सचु देवहु सचि समाहा हे ॥१६॥१॥१०॥ (१०५४-७, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५४-८)
सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ (१०५४-८, मारू, मः ३)
अनदिनु साचि नामि लिव लागी ॥ (१०५४-९, मारू, मः ३)
सदा सुखदाता रविआ घट अंतरि सबदि सचै ओमाहा हे ॥१॥ (१०५४-९, मारू, मः ३)
नदरि करे ता गुरू मिलाए ॥ (१०५४-१०, मारू, मः ३)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (१०५४-१०, मारू, मः ३)
हरि मनि वसिआ सदा सुखदाता सबदे मनि ओमाहा हे ॥२॥ (१०५४-१०, मारू, मः ३)
कृपा करे ता मेलि मिलाए ॥ (१०५४-११, मारू, मः ३)

हउमै ममता सबदि जलाए ॥ (१०५४-११, मारू, मः ३)
सदा मुकतु रहै इक रंगी नाही किसै नालि काहा हे ॥३॥ (१०५४-११, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे घोर अंधारा ॥ (१०५४-१२, मारू, मः ३)
बिनु सबदै कोइ न पावै पारा ॥ (१०५४-१२, मारू, मः ३)
जो सबदि राते महा बैरागी सो सचु सबदे लाहा हे ॥४॥ (१०५४-१२, मारू, मः ३)
दुखु सुखु करतै धुरि लिखि पाइआ ॥ (१०५४-१३, मारू, मः ३)
दूजा भाउ आपि वरताइआ ॥ (१०५४-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सु अलिपतो वरतै मनमुख का किआ वेसाहा हे ॥५॥ (१०५४-१४, मारू, मः ३)
से मनमुख जो सबदु न पछाणहि ॥ (१०५४-१४, मारू, मः ३)
गुर के भै की सार न जाणहि ॥ (१०५४-१५, मारू, मः ३)
भै बिनु किउ निरभउ सचु पाईऐ जमु काढि लएगा साहा हे ॥६॥ (१०५४-१५, मारू, मः ३)
अफरिओ जमु मारिआ न जाई ॥ (१०५४-१६, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे नेड़ि न आई ॥ (१०५४-१६, मारू, मः ३)
सबदु सुणे ता दूरहु भागै मतु मारे हरि जीउ वेपरवाहा हे ॥७॥ (१०५४-१६, मारू, मः ३)
हरि जीउ की है सभ सिरकारा ॥ (१०५४-१७, मारू, मः ३)
एहु जमु किआ करे विचारा ॥ (१०५४-१७, मारू, मः ३)
हुकमी बंदा हुकमु कमावै हुकमे कढदा साहा हे ॥८॥ (१०५४-१८, मारू, मः ३)
गुरमुखि साचै कीआ अकारा ॥ (१०५४-१८, मारू, मः ३)
गुरमुखि पसरिआ सभु पासारा ॥ (१०५४-१९, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सो सचु बूझै सबदि सचै सुखु ताहा हे ॥९॥ (१०५४-१९, मारू, मः ३)
गुरमुखि जाता करमि बिधाता ॥ (१०५४-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५५

जुग चारे गुर सबदि पछाता ॥ (१०५५-१, मारू, मः ३)
गुरमुखि मरै न जनमै गुरमुखि गुरमुखि सबदि समाहा हे ॥१०॥ (१०५५-१, मारू, मः ३)
गुरमुखि नामि सबदि सालाहे ॥ (१०५५-२, मारू, मः ३)
अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ (१०५५-२, मारू, मः ३)
एक नामि जुग चारि उधारे सबदे नाम विसाहा हे ॥११॥ (१०५५-२, मारू, मः ३)
गुरमुखि साँति सदा सुखु पाए ॥ (१०५५-३, मारू, मः ३)
गुरमुखि हिरदै नामु वसाए ॥ (१०५५-३, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सो नामु बूझै काटे दुरमति फाहा हे ॥१२॥ (१०५५-४, मारू, मः ३)
गुरमुखि उपजै साचि समावै ॥ (१०५५-४, मारू, मः ३)
ना मरि जम्मै न जूनी पावै ॥ (१०५५-४, मारू, मः ३)
गुरमुखि सदा रहहि रंगि राते अनदिनु लैदे लाहा हे ॥१३॥ (१०५५-५, मारू, मः ३)
गुरमुखि भगत सोहहि दरबारे ॥ (१०५५-५, मारू, मः ३)

सची बाणी सबदि सवारे ॥ (१०५५-६, मारू, मः ३)
अनदिनु गुण गावै दिनु राती सहज सेती घरि जाहा हे ॥१४॥ (१०५५-६, मारू, मः ३)
सतिगुरु पूरा सबदु सुणाए ॥ (१०५५-७, मारू, मः ३)
अनदिनु भगति करहु लिव लाए ॥ (१०५५-७, मारू, मः ३)
हरि गुण गावहि सद ही निर्मल निर्मल गुण पातिसाहा हे ॥१५॥ (१०५५-७, मारू, मः ३)
गुण का दाता सचा सोई ॥ (१०५५-८, मारू, मः ३)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (१०५५-८, मारू, मः ३)
नानक जनु नामु सलाहे बिगसै सो नामु बेपरवाहा हे ॥१६॥२॥११॥ (१०५५-८, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५५-९)
हरि जीउ सेविहु अगम अपारा ॥ (१०५५-९, मारू, मः ३)
तिस दा अंतु न पाईऐ पारावारा ॥ (१०५५-१०, मारू, मः ३)
गुर परसादि रविआ घट अंतरि तितु घटि मति अगाहा हे ॥१॥ (१०५५-१०, मारू, मः ३)
सभ महि वरतै एको सोई ॥ (१०५५-११, मारू, मः ३)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (१०५५-११, मारू, मः ३)
सभना प्रतिपाल करे जगजीवनु देदा रिजकु सम्बाहा हे ॥२॥ (१०५५-११, मारू, मः ३)
पूरै सतिगुरि बूझि बुझाइआ ॥ (१०५५-१२, मारू, मः ३)
हुकमे ही सभु जगतु उपाइआ ॥ (१०५५-१२, मारू, मः ३)
हुकमु मन्ने सोई सुखु पाए हुकमु सिरि साहा पातिसाहा हे ॥३॥ (१०५५-१२, मारू, मः ३)
सचा सतिगुरु सबदु अपारा ॥ (१०५५-१३, मारू, मः ३)
तिस दै सबदि निसतरै संसारा ॥ (१०५५-१३, मारू, मः ३)
आपे करता करि करि वेखै देदा सास गिराहा हे ॥४॥ (१०५५-१४, मारू, मः ३)
कोटि मधे किसहि बुझाए ॥ (१०५५-१४, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि रते रंगु लाए ॥ (१०५५-१४, मारू, मः ३)
हरि सालाहहि सदा सुखदाता हरि बखसे भगति सलाहा हे ॥५॥ (१०५५-१५, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवहि से जन साचे ॥ (१०५५-१५, मारू, मः ३)
जो मरि जम्महि काचनि काचे ॥ (१०५५-१६, मारू, मः ३)
अगम अगोचरु वेपरवाहा भगति वछलु अथाहा हे ॥६॥ (१०५५-१६, मारू, मः ३)
सतिगुरु पूरा साचु दृड़ाए ॥ (१०५५-१७, मारू, मः ३)
सचै सबदि सदा गुण गाए ॥ (१०५५-१७, मारू, मः ३)
गुणदाता वरतै सभ अंतरि सिरि सिरि लिखदा साहा हे ॥७॥ (१०५५-१७, मारू, मः ३)
सदा हदूरि गुरमुखि जापै ॥ (१०५५-१८, मारू, मः ३)
सबदे सेवै सो जनु ध्रापै ॥ (१०५५-१८, मारू, मः ३)
अनदिनु सेवहि सची बाणी सबदि सचै ओमाहा हे ॥८॥ (१०५५-१८, मारू, मः ३)
अगिआनी अंधा बहु कर्म दृड़ाए ॥ (१०५५-१९, मारू, मः ३)
मनहठि कर्म फिरि जोनी पाए ॥ (१०५५-१९, मारू, मः ३)

बिखिआ कारणि लबु लोभु कमावहि दुरमति का दोराहा हे ॥९॥ (१०५६-१, मारू, मः ३)
पूरा सतिगुरु भगति दृड़ाए ॥ (१०५६-१, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि हरि नामि चितु लाए ॥ (१०५६-२, मारू, मः ३)
मनि तनि हरि रविआ घट अंतरि मनि भीनै भगति सलाहा हे ॥१०॥ (१०५६-२, मारू, मः ३)
मेरा प्रभु साचा असुर संघारणु ॥ (१०५६-३, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि भगति निसतारणु ॥ (१०५६-३, मारू, मः ३)
मेरा प्रभु साचा सद ही साचा सिरि साहा पातिसाहा हे ॥११॥ (१०५६-३, मारू, मः ३)
से भगत सचे तेरै मनि भाए ॥ (१०५६-४, मारू, मः ३)
दरि कीरतनु करहि गुर सबदि सुहाए ॥ (१०५६-४, मारू, मः ३)
साची बाणी अनदिनु गावहि निर्धन का नामु वेसाहा हे ॥१२॥ (१०५६-५, मारू, मः ३)
जिन आपे मेलि विछोड़हि नाही ॥ (१०५६-५, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि सदा सालाही ॥ (१०५६-६, मारू, मः ३)
सभना सिरि तू एको साहिबु सबदे नामु सलाहा हे ॥१३॥ (१०५६-६, मारू, मः ३)
बिनु सबदै तुधुनो कोई न जाणी ॥ (१०५६-६, मारू, मः ३)
तुधु आपे कथी अकथ कहाणी ॥ (१०५६-७, मारू, मः ३)
आपे सबदु सदा गुरु दाता हरि नामु जपि सम्बाहा हे ॥१४॥ (१०५६-७, मारू, मः ३)
तू आपे करता सिरजणहारा ॥ (१०५६-८, मारू, मः ३)
तेरा लिखिआ कोइ न मेटणहारा ॥ (१०५६-८, मारू, मः ३)
गुरमुखि नामु देवहि तू आपे सहसा गणत न ताहा हे ॥१५॥ (१०५६-८, मारू, मः ३)
भगत सचे तेरै दरवारे ॥ (१०५६-९, मारू, मः ३)
सबदे सेवनि भाइ पिआरे ॥ (१०५६-९, मारू, मः ३)
नानक नामि रते बैरागी नामे कारजु सोहा हे ॥१६॥३॥१२॥ (१०५६-१०, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५६-१०)
मेरै प्रभि साचै इकु खेलु रचाइआ ॥ (१०५६-१०, मारू, मः ३)
कोइ न किस ही जेहा उपाइआ ॥ (१०५६-११, मारू, मः ३)
आपे फरकु करे वेखि विगसै सभि रस देही माहा हे ॥१॥ (१०५६-११, मारू, मः ३)
वाजै पउणु तै आपि वजाए ॥ (१०५६-१२, मारू, मः ३)
सिव सकती देही महि पाए ॥ (१०५६-१२, मारू, मः ३)
गुर परसादी उलटी होवै गिआन रतनु सबदु ताहा हे ॥२॥ (१०५६-१२, मारू, मः ३)
अंधेरा चानणु आपे कीआ ॥ (१०५६-१३, मारू, मः ३)
एको वरतै अवरु न बीआ ॥ (१०५६-१३, मारू, मः ३)
गुर परसादी आपु पछाणै कमलु बिगसै बुधि ताहा हे ॥३॥ (१०५६-१४, मारू, मः ३)
अपणी गहण गति आपे जाणै ॥ (१०५६-१४, मारू, मः ३)

होरु लोकु सुणि सुणि आखि वखाणै ॥ (१०५६-१४, मारू, मः ३)
गिआनी होवै सु गुरमुखि बूझै साची सिफति सलाहा हे ॥४॥ (१०५६-१५, मारू, मः ३)
देही अंदरि वसतु अपारा ॥ (१०५६-१६, मारू, मः ३)
आपे कपट खुलावणहारा ॥ (१०५६-१६, मारू, मः ३)
गुरमुखि सहजे अमृतु पीवै तृसना अगनि बुझाहा हे ॥५॥ (१०५६-१६, मारू, मः ३)
सभि रस देही अंदरि पाए ॥ (१०५६-१७, मारू, मः ३)
विरले कउ गुरु सबदु बुझाए ॥ (१०५६-१७, मारू, मः ३)
अंदरु खोजे सबदु सालाहे बाहरि काहे जाहा हे ॥६॥ (१०५६-१७, मारू, मः ३)
विणु चाखे सादु किसै न आइआ ॥ (१०५६-१८, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि अमृतु पीआइआ ॥ (१०५६-१८, मारू, मः ३)
अमृतु पी अमरा पदु होए गुर कै सबदि रसु ताहा हे ॥७॥ (१०५६-१९, मारू, मः ३)
आपु पछाणै सो सभि गुण जाणै ॥ (१०५६-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५७

गुर कै सबदि हरि नामु वखाणै ॥ (१०५७-१, मारू, मः ३)
अनदिनु नामि रता दिनु राती माइआ मोहु चुकाहा हे ॥८॥ (१०५७-१, मारू, मः ३)
गुर सेवा ते सभु किछु पाए ॥ (१०५७-२, मारू, मः ३)
हउमै मेरा आपु गवाए ॥ (१०५७-२, मारू, मः ३)
आपे कृपा करे सुखदाता गुर कै सबदे सोहा हे ॥९॥ (१०५७-२, मारू, मः ३)
गुर का सबदु अमृत है बाणी ॥ (१०५७-३, मारू, मः ३)
अनदिनु हरि का नामु वखाणी ॥ (१०५७-३, मारू, मः ३)
हरि हरि सचा वसै घट अंतरि सो घटु निरमलु ताहा हे ॥१०॥ (१०५७-३, मारू, मः ३)
सेवक सेवहि सबदि सलाहहि ॥ (१०५७-४, मारू, मः ३)
सदा रंगि राते हरि गुण गावहि ॥ (१०५७-४, मारू, मः ३)
आपे बखसे सबदि मिलाए परमल वासु मनि ताहा हे ॥११॥ (१०५७-५, मारू, मः ३)
सबदे अकथु कथे सालाहे ॥ (१०५७-५, मारू, मः ३)
मेरे प्रभ साचे वेपरवाहे ॥ (१०५७-६, मारू, मः ३)
आपे गुणदाता सबदि मिलाए सबदै का रसु ताहा हे ॥१२॥ (१०५७-६, मारू, मः ३)
मनमुखु भूला ठउर न पाए ॥ (१०५७-६, मारू, मः ३)
जो धुरि लिखिआ सु कर्म कमाए ॥ (१०५७-७, मारू, मः ३)
बिखिआ राते बिखिआ खोजै मरि जनमै दुखु ताहा हे ॥१३॥ (१०५७-७, मारू, मः ३)
आपे आपि आपि सालाहे ॥ (१०५७-८, मारू, मः ३)
तेरे गुण प्रभ तुझ ही माहे ॥ (१०५७-८, मारू, मः ३)
तू आपि सचा तेरी बाणी सची आपे अलखु अथाहा हे ॥१४॥ (१०५७-८, मारू, मः ३)
बिनु गुर दाते कोइ न पाए ॥ (१०५७-९, मारू, मः ३)

लख कोटी जे कर्म कमाए ॥ (१०५७-९, मारू, मः ३)
गुर किरपा ते घट अंतरि वसिआ सबदे सचु सालाहा हे ॥१५॥ (१०५७-९, मारू, मः ३)
से जन मिले धुरि आपि मिलाए ॥ (१०५७-१०, मारू, मः ३)
साची बाणी सबदि सुहाए ॥ (१०५७-१०, मारू, मः ३)
नानक जनु गुण गावै नित साचे गुण गावह गुणी समाहा हे ॥१६॥४॥१३॥ (१०५७-११, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५७-११)
निहचलु एकु सदा सचु सोई ॥ (१०५७-१२, मारू, मः ३)
पूरे गुर ते सोझी होई ॥ (१०५७-१२, मारू, मः ३)
हरि रसि भीने सदा धिआइनि गुरमति सीलु सन्नाहा हे ॥१॥ (१०५७-१२, मारू, मः ३)
अंदरि रंगु सदा सचिआरा ॥ (१०५७-१३, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि हरि नामि पिआरा ॥ (१०५७-१३, मारू, मः ३)
नउ निधि नामु वसिआ घट अंतरि छोडिआ माइआ का लाहा हे ॥२॥ (१०५७-१३, मारू, मः ३)
रईअति राजे दुरमति दोई ॥ (१०५७-१४, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे एकु न होई ॥ (१०५७-१४, मारू, मः ३)
एकु धिआइनि सदा सुखु पाइनि निहचलु राजु तिनाहा हे ॥३॥ (१०५७-१५, मारू, मः ३)
आवणु जाणा रखै न कोई ॥ (१०५७-१५, मारू, मः ३)
जम्मणु मरणु तिसै ते होई ॥ (१०५७-१६, मारू, मः ३)
गुरमुखि साचा सदा धिआवहु गति मुकति तिसै ते पाहा हे ॥४॥ (१०५७-१६, मारू, मः ३)
सचु संजमु सतिगुरू दुआरै ॥ (१०५७-१७, मारू, मः ३)
हउमै क्रोधु सबदि निवारै ॥ (१०५७-१७, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ सीलु संतोखु सभु ताहा हे ॥५॥ (१०५७-१७, मारू, मः ३)
हउमै मोहु उपजै संसारा ॥ (१०५७-१८, मारू, मः ३)
सभु जगु बिनसै नामु विसारा ॥ (१०५७-१८, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे नामु न पाईऐ नामु सचा जगि लाहा हे ॥६॥ (१०५७-१८, मारू, मः ३)
सचा अमरु सबदि सुहाइआ ॥ (१०५७-१९, मारू, मः ३)
पंच सबद मिलि वाजा वाइआ ॥ (१०५७-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५८

सदा कारजु सचि नामि सुहेला बिनु सबदै कारजु केहा हे ॥७॥ (१०५८-१, मारू, मः ३)
खिन महि हसै खिन महि रोवै ॥ (१०५८-१, मारू, मः ३)
दूजी दुरमति कारजु न होवै ॥ (१०५८-२, मारू, मः ३)
संजोगु विजोगु करतै लिखि पाए किरतु न चलै चलाहा हे ॥८॥ (१०५८-२, मारू, मः ३)
जीवन मुकति गुर सबदु कमाए ॥ (१०५८-३, मारू, मः ३)
हरि सिउ सद ही रहै समाए ॥ (१०५८-३, मारू, मः ३)
गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥९॥ (१०५८-३, मारू, मः ३)

रस कस खाए पिंडु वधाए ॥ (१०५८-४, मारू, मः ३)
भेख करै गुर सबदु न कमाए ॥ (१०५८-४, मारू, मः ३)
अंतरि रोगु महा दुखु भारी बिसटा माहि समाहा हे ॥१०॥ (१०५८-४, मारू, मः ३)
बेद पड़हि पड़ि बादु वखाणहि ॥ (१०५८-५, मारू, मः ३)
घट महि ब्रह्मु तिसु सबदि न पछाणहि ॥ (१०५८-५, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सु ततु बिलोवै रसना हरि रसु ताहा हे ॥११॥ (१०५८-६, मारू, मः ३)
घरि वथु छोडहि बाहरि धावहि ॥ (१०५८-६, मारू, मः ३)
मनमुख अंधे सादु न पावहि ॥ (१०५८-७, मारू, मः ३)
अन रस राती रसना फीकी बोले हरि रसु मूलि न ताहा हे ॥१२॥ (१०५८-७, मारू, मः ३)
मनमुख देही भरमु भतारो ॥ (१०५८-८, मारू, मः ३)
दुरमति मरै नित होइ खुआरो ॥ (१०५८-८, मारू, मः ३)
कामि क्रोधि मनु दूजै लाइआ सुपनै सुखु न ताहा हे ॥१३॥ (१०५८-८, मारू, मः ३)
कंचन देही सबदु भतारो ॥ (१०५८-९, मारू, मः ३)
अनदिनु भोग भोगे हरि सिउ पिआरो ॥ (१०५८-९, मारू, मः ३)
महला अंदरि गैर महलु पाए भाणा बुझि समाहा हे ॥१४॥ (१०५८-१०, मारू, मः ३)
आपे देवै देवणहारा ॥ (१०५८-१०, मारू, मः ३)
तिसु आगै नही किसै का चारा ॥ (१०५८-१०, मारू, मः ३)
आपे बखसे सबदि मिलाए तिस दा सबदु अथाहा हे ॥१५॥ (१०५८-११, मारू, मः ३)
जीउ पिंडु सभु है तिसु केरा ॥ (१०५८-११, मारू, मः ३)
सचा साहिबु ठाकुरु मेरा ॥ (१०५८-१२, मारू, मः ३)
नानक गुरबाणी हरि पाइआ हरि जपु जापि समाहा हे ॥१६॥५॥१४॥ (१०५८-१२, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५८-१३)
गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ (१०५८-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि गिआनु धिआनु आपारु ॥ (१०५८-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि कार करे प्रभ भावै गुरमुखि पूरा पाइदा ॥१॥ (१०५८-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि मनूआ उलटि परावै ॥ (१०५८-१४, मारू, मः ३)
गुरमुखि बाणी नादु वजावै ॥ (१०५८-१४, मारू, मः ३)
गुरमुखि सचि रते बैरागी निज घरि वासा पाइदा ॥२॥ (१०५८-१५, मारू, मः ३)
गुर की साखी अमृत भाखी ॥ (१०५८-१५, मारू, मः ३)
सचै सबदे सचु सुभाखी ॥ (१०५८-१५, मारू, मः ३)
सदा सचि रंगि राता मनु मेरा सचे सचि समाइदा ॥३॥ (१०५८-१६, मारू, मः ३)
गुरमुखि मनु निरमलु सत सरि नावै ॥ (१०५८-१६, मारू, मः ३)
मैलु न लागै सचि समावै ॥ (१०५८-१७, मारू, मः ३)
सचो सचु कमावै सद ही सची भगति दृड़ाइदा ॥४॥ (१०५८-१७, मारू, मः ३)
गुरमुखि सचु बैणी गुरमुखि सचु नैणी ॥ (१०५८-१८, मारू, मः ३)

गुरमुखि सचु कमावै करणी ॥ (१०५८-१८, मारू, मः ३)
सद ही सचु कहै दिनु राती अवरा सचु कहाइदा ॥५॥ (१०५८-१८, मारू, मः ३)
गुरमुखि सची ऊतम बाणी ॥ (१०५८-१९, मारू, मः ३)
गुरमुखि सचो सचु वखाणी ॥ (१०५८-१९, मारू, मः ३)
गुरमुखि सद सेवहि सचो सचा गुरमुखि सबदु सुणाइदा ॥६॥ (१०५८-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०५९

गुरमुखि होवै सु सोझी पाए ॥ (१०५९-१, मारू, मः ३)
हउमै माइआ भरमु गवाए ॥ (१०५९-१, मारू, मः ३)
गुर की पउड़ी ऊतम ऊची दरि सचै हरि गुण गाइदा ॥७॥ (१०५९-२, मारू, मः ३)
गुरमुखि सचु संजमु करणी सारु ॥ (१०५९-२, मारू, मः ३)
गुरमुखि पाए मोख दुआरु ॥ (१०५९-२, मारू, मः ३)
भाइ भगति सदा रंगि राता आपु गवाइ समाइदा ॥८॥ (१०५९-३, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै मनु खोजि सुणाए ॥ (१०५९-३, मारू, मः ३)
सचै नामि सदा लिव लाए ॥ (१०५९-४, मारू, मः ३)
जो तिसु भावै सोई करसी जो सचे मनि भाइदा ॥९॥ (१०५९-४, मारू, मः ३)
जा तिसु भावै सतिगुरू मिलाए ॥ (१०५९-४, मारू, मः ३)
जा तिसु भावै ता मंनि वसाए ॥ (१०५९-५, मारू, मः ३)
आपणै भाणै सदा रंगि राता भाणै मंनि वसाइदा ॥१०॥ (१०५९-५, मारू, मः ३)
मनहठि कर्म करे सो छीजै ॥ (१०५९-६, मारू, मः ३)
बहुते भेख करे नही भीजै ॥ (१०५९-६, मारू, मः ३)
बिखिआ राते दुखु कमावहि दुखे दुखि समाइदा ॥११॥ (१०५९-६, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सु सुखु कमाए ॥ (१०५९-७, मारू, मः ३)
मरण जीवण की सोझी पाए ॥ (१०५९-७, मारू, मः ३)
मरणु जीवणु जो सम करि जाणै सो मेरे प्रभ भाइदा ॥१२॥ (१०५९-७, मारू, मः ३)
गुरमुखि मरहि सु हहि परवाणु ॥ (१०५९-८, मारू, मः ३)
आवण जाणा सबदु पछाणु ॥ (१०५९-८, मारू, मः ३)
मरै न जम्मै ना दुखु पाए मन ही मनहि समाइदा ॥१३॥ (१०५९-९, मारू, मः ३)
से वडभागी जिनी सतिगुरु पाइआ ॥ (१०५९-९, मारू, मः ३)
हउमै विचहु मोहु चुकाइआ ॥ (१०५९-१०, मारू, मः ३)
मनु निरमलु फिरि मैलु न लागै दरि सचै सोभा पाइदा ॥१४॥ (१०५९-१०, मारू, मः ३)
आपे करे कराए आपे ॥ (१०५९-१०, मारू, मः ३)
आपे वेखै थापि उथापे ॥ (१०५९-११, मारू, मः ३)
गुरमुखि सेवा मेरे प्रभ भावै सचु सुणि लेखै पाइदा ॥१५॥ (१०५९-११, मारू, मः ३)
गुरमुखि सचो सचु कमावै ॥ (१०५९-१२, मारू, मः ३)

ਗੁਰਮੁਖਿ
गुरमुखि निरमलु मैलु न लावै ॥ (१०५६-१२, मारू, मः ३)
नानक नामि रते वीचारी नामे नामि समाइदा ॥१६॥१॥१५॥ (१०५६-१२, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०५६-१३)
आपे सृसटि हुकमि सभ साजी ॥ (१०५६-१३, मारू, मः ३)
आपे थापि उथापि निवाजी ॥ (१०५६-१३, मारू, मः ३)
आपे निआउ करे सभु साचा साचे साचि मिलाइदा ॥१॥ (१०५६-१४, मारू, मः ३)
काइआ कोटु है आकारा ॥ (१०५६-१४, मारू, मः ३)
माइआ मोहु पसरिआ पासारा ॥ (१०५६-१५, मारू, मः ३)
बिनु सबदै भसमै की ढेरी खेहू खेह रलाइदा ॥२॥ (१०५६-१५, मारू, मः ३)
काइआ कंचन कोटु अपारा ॥ (१०५६-१५, मारू, मः ३)
जिसु विचि रविआ सबदु अपारा ॥ (१०५६-१६, मारू, मः ३)
गुरमुखि गावै सदा गुण साचे मिलि प्रीतम सुखु पाइदा ॥३॥ (१०५६-१६, मारू, मः ३)
काइआ हरि मंदरु हरि आपि सवारे ॥ (१०५६-१७, मारू, मः ३)
तिसु विचि हरि जीउ वसै मुरारे ॥ (१०५६-१७, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि वणजनि वापारी नदरी आपि मिलाइदा ॥४॥ (१०५६-१७, मारू, मः ३)
सो सूचा जि करोधु निवारे ॥ (१०५६-१८, मारू, मः ३)
सबदे बूझै आपु सवारे ॥ (१०५६-१८, मारू, मः ३)
आपे करे कराए करता आपे मंनि वसाइदा ॥५॥ (१०५६-१९, मारू, मः ३)
निर्मल भगति है निराली ॥ (१०५६-१९, मारू, मः ३)
मनु तनु धोवहि सबदि वीचारी ॥ (१०५६-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६०

अनदिनु सदा रहै रंगि राता करि किरपा भगति कराइदा ॥६॥ (१०६०-१, मारू, मः ३)
इसु मन मंदर महि मनूआ धावै ॥ (१०६०-१, मारू, मः ३)
सुखु पलरि तिआगि महा दुखु पावै ॥ (१०६०-२, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर भेटे ठउर न पावै आपे खेलु कराइदा ॥७॥ (१०६०-२, मारू, मः ३)
आपि अपरम्परु आपि वीचारी ॥ (१०६०-३, मारू, मः ३)
आपे मेले करणी सारी ॥ (१०६०-३, मारू, मः ३)
किआ को कार करे वेचारा आपे बखसि मिलाइदा ॥८॥ (१०६०-३, मारू, मः ३)
आपे सतिगुरु मेले पूरा ॥ (१०६०-४, मारू, मः ३)
सचै सबदि महाबल सूरा ॥ (१०६०-४, मारू, मः ३)
आपे मेले दे वडिआई सचे सिउ चितु लाइदा ॥९॥ (१०६०-४, मारू, मः ३)
घर ही अंदरि साचा सोई ॥ (१०६०-५, मारू, मः ३)
गुरमुखि विरला बूझै कोई ॥ (१०६०-५, मारू, मः ३)
नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना नामु धिआइदा ॥१०॥ (१०६०-६, मारू, मः ३)

दिसंतरु भवै अंतरु नही भाले ॥ (१०६०-६, मारू, मः ३)
माइआ मोहि बधा जमकाले ॥ (१०६०-७, मारू, मः ३)
जम की फासी कबहू न तूटै दूजै भाइ भरमाइदा ॥११॥ (१०६०-७, मारू, मः ३)
जपु तपु संजमु होरु कोई नाही ॥ (१०६०-८, मारू, मः ३)
जब लगु गुर का सबदु न कमाही ॥ (१०६०-८, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि मिलिआ सचु पाइआ सचे सचि समाइदा ॥१२॥ (१०६०-८, मारू, मः ३)
काम करोधु सबल संसारा ॥ (१०६०-९, मारू, मः ३)
बहु कर्म कमावहि सभु दुख का पसारा ॥ (१०६०-९, मारू, मः ३)
सतिगुर सेवहि से सुखु पावहि सचै सबदि मिलाइदा ॥१३॥ (१०६०-१०, मारू, मः ३)
पउणु पाणी है बैसंतरु ॥ (१०६०-१०, मारू, मः ३)
माइआ मोहु वरतै सभ अंतरि ॥ (१०६०-११, मारू, मः ३)
जिनि कीते जा तिसै पछाणहि माइआ मोहु चुकाइदा ॥१४॥ (१०६०-११, मारू, मः ३)
इकि माइआ मोहि गरबि विआपे ॥ (१०६०-१२, मारू, मः ३)
हउमै होइ रहे है आपे ॥ (१०६०-१२, मारू, मः ३)
जमकालै की खबरि न पाई अंति गइआ पछुताइदा ॥१५॥ (१०६०-१२, मारू, मः ३)
जिनि उपाए सो बिधि जाणै ॥ (१०६०-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि देवै सबदु पछाणै ॥ (१०६०-१३, मारू, मः ३)
नानक दासु कहै बेनंती सचि नामि चितु लाइदा ॥१६॥२॥१६॥ (१०६०-१३, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०६०-१४)
आदि जुगादि दइआपति दाता ॥ (१०६०-१४, मारू, मः ३)
पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ (१०६०-१५, मारू, मः ३)
तुधुनो सेवहि से तुझहि समावहि तू आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ (१०६०-१५, मारू, मः ३)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ (१०६०-१६, मारू, मः ३)
जीअ जंत तेरी सरणाई ॥ (१०६०-१६, मारू, मः ३)
जिउ तुधु भावै तिवै चलावहि तू आपे मारगि पाइदा ॥२॥ (१०६०-१६, मारू, मः ३)
है भी साचा होसी सोई ॥ (१०६०-१७, मारू, मः ३)
आपे साजे अवरु न कोई ॥ (१०६०-१७, मारू, मः ३)
सभना सार करे सुखदाता आपे रिजकु पहुचाइदा ॥३॥ (१०६०-१७, मारू, मः ३)
अगम अगोचरु अलख अपारा ॥ (१०६०-१८, मारू, मः ३)
कोइ न जाणै तेरा परवारा ॥ (१०६०-१८, मारू, मः ३)
आपणा आपु पछाणहि आपे गुरमती आपि बुझाइदा ॥४॥ (१०६०-१९, मारू, मः ३)
पाताल पुरीआ लोअ आकारा ॥ (१०६०-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६१

तिसु विचि वरतै हुकमु करारा ॥ (१०६१-१, मारू, मः ३)

हुकमे साजे हुकमे ढाहे हुकमे मेलि मिलाइदा ॥५॥ (१०६१-१, मारू, मः ३)
हुकमै बूझै सु हुकमु सलाहे ॥ (१०६१-२, मारू, मः ३)
अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ (१०६१-२, मारू, मः ३)
जेही मति देहि सो होवै तू आपे सबदि बुझाइदा ॥६॥ (१०६१-२, मारू, मः ३)
अनदिनु आरजा छिजदी जाए ॥ (१०६१-३, मारू, मः ३)
रैणि दिनसु दुइ साखी आए ॥ (१०६१-३, मारू, मः ३)
मनमुखु अंधु न चेतै मूड़ा सिर ऊपरि कालु रूआइदा ॥७॥ (१०६१-३, मारू, मः ३)
मनु तनु सीतलु गुर चरणी लागा ॥ (१०६१-४, मारू, मः ३)
अंतरि भरमु गइआ भउ भागा ॥ (१०६१-४, मारू, मः ३)
सदा अनंदु सचे गुण गावहि सचु बाणी बोलाइदा ॥८॥ (१०६१-५, मारू, मः ३)
जिनि तू जाता कर्म बिधाता ॥ (१०६१-५, मारू, मः ३)
पूरै भागि गुर सबदि पछाता ॥ (१०६१-५, मारू, मः ३)
जति पति सचु सचा सचु सोई हउमै मारि मिलाइदा ॥९॥ (१०६१-६, मारू, मः ३)
मनु कठोरु दूजै भाइ लागा ॥ (१०६१-६, मारू, मः ३)
भरमे भूला फिरै अभागा ॥ (१०६१-७, मारू, मः ३)
करमु होवै ता सतिगुरु सेवे सहजे ही सुखु पाइदा ॥१०॥ (१०६१-७, मारू, मः ३)
लख चउरासीह आपि उपाए ॥ (१०६१-७, मारू, मः ३)
मानस जनमि गुर भगति दृड़ाए ॥ (१०६१-८, मारू, मः ३)
बिनु भगती बिसटा विचि वासा बिसटा विचि फिरि पाइदा ॥११॥ (१०६१-८, मारू, मः ३)
करमु होवै गुरु भगति दृड़ाए ॥ (१०६१-९, मारू, मः ३)
विणु करमा किउ पाइआ जाए ॥ (१०६१-९, मारू, मः ३)
आपे करे कराए करता जिउ भावै तिवै चलाइदा ॥१२॥ (१०६१-९, मारू, मः ३)
सिमृति सासत अंतु न जाणै ॥ (१०६१-१०, मारू, मः ३)
मूरखु अंधा ततु न पछाणै ॥ (१०६१-१०, मारू, मः ३)
आपे करे कराए करता आपे भरमि भुलाइदा ॥१३॥ (१०६१-११, मारू, मः ३)
सभु किछु आपे आपि कराए ॥ (१०६१-११, मारू, मः ३)
आपे सिरि सिरि धंधै लाए ॥ (१०६१-१२, मारू, मः ३)
आपे थापि उथापे वेखै गुरमुखि आपि बुझाइदा ॥१४॥ (१०६१-१२, मारू, मः ३)
सचा साहिबु गहिर गम्भीरा ॥ (१०६१-१२, मारू, मः ३)
सदा सलाही ता मनु धीरा ॥ (१०६१-१३, मारू, मः ३)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई गुरमुखि मंनि वसाइदा ॥१५॥ (१०६१-१३, मारू, मः ३)
आपि निरालमु होर धंधै लोई ॥ (१०६१-१४, मारू, मः ३)
गुर परसादी बूझै कोई ॥ (१०६१-१४, मारू, मः ३)
नानक नामु वसै घट अंतरि गुरमती मेलि मिलाइदा ॥१६॥३॥१७॥ (१०६१-१४, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०६१-१५)

जुग छतीह कीओ गुबारा ॥ (१०६१-१५, मारू, मः ३)
तू आपे जाणहि सिरजणहारा ॥ (१०६१-१५, मारू, मः ३)
होर किआ को कहै कि आखि वखाणै तू आपे कीमति पाइदा ॥१॥ (१०६१-१६, मारू, मः ३)
ओअंकारि सभ सृसटि उपाई ॥ (१०६१-१६, मारू, मः ३)
सभु खेलु तमासा तेरी वडिआई ॥ (१०६१-१७, मारू, मः ३)
आपे वेक करे सभि साचा आपे भंनि घड़ाइदा ॥२॥ (१०६१-१७, मारू, मः ३)
बाजीगरि इक बाजी पाई ॥ (१०६१-१८, मारू, मः ३)
पूरे गुर ते नदरी आई ॥ (१०६१-१८, मारू, मः ३)
सदा अलिपतु रहै गुर सबदी साचे सिउ चितु लाइदा ॥३॥ (१०६१-१८, मारू, मः ३)
बाजहि बाजे धुनि आकारा ॥ (१०६१-१९, मारू, मः ३)
आपि वजाए वजावणहारा ॥ (१०६१-१९, मारू, मः ३)
घटि घटि पउणु वहै इक रंगी मिलि पवणै सभ वजाइदा ॥४॥ (१०६१-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६२

करता करे सु निहचउ होवै ॥ (१०६२-१, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे हउमै खोवै ॥ (१०६२-१, मारू, मः ३)
गुर परसादी किसै दे वडिआई नामो नामु धिआइदा ॥५॥ (१०६२-२, मारू, मः ३)
गुर सेवे जेवडु होरु लाहा नाही ॥ (१०६२-२, मारू, मः ३)
नामु मंनि वसै नामो सालाही ॥ (१०६२-२, मारू, मः ३)
नामो नामु सदा सुखदाता नामो लाहा पाइदा ॥६॥ (१०६२-३, मारू, मः ३)
बिनु नावै सभ दुखु संसारा ॥ (१०६२-३, मारू, मः ३)
बहु कर्म कमावहि वधहि विकारा ॥ (१०६२-४, मारू, मः ३)
नामु न सेवहि किउ सुखु पाईऐ बिनु नावै दुखु पाइदा ॥७॥ (१०६२-४, मारू, मः ३)
आपि करे तै आपि कराए ॥ (१०६२-५, मारू, मः ३)
गुर परसादी किसै बुझाए ॥ (१०६२-५, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवहि से बंधन तोड़हि मुकती कै घरि पाइदा ॥८॥ (१०६२-५, मारू, मः ३)
गणत गणै सो जलै संसारा ॥ (१०६२-६, मारू, मः ३)
सहसा मूलि न चुकै विकारा ॥ (१०६२-६, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सु गणत चुकाए सचे सचि समाइदा ॥९॥ (१०६२-६, मारू, मः ३)
जे सचु देइ त पाए कोई ॥ (१०६२-७, मारू, मः ३)
गुर परसादी परगटु होई ॥ (१०६२-७, मारू, मः ३)
सचु नामु सालाहे रंगि राता गुर किरपा ते सुखु पाइदा ॥१०॥ (१०६२-८, मारू, मः ३)
जपु तपु संजमु नामु पिआरा ॥ (१०६२-८, मारू, मः ३)
किलविख काटे काटणहारा ॥ (१०६२-९, मारू, मः ३)
हरि कै नामि तनु मनु सीतलु होआ सहजे सहजि समाइदा ॥११॥ (१०६२-९, मारू, मः ३)

अंतरि लोभु मनि मैलै मलु लाए ॥ (१०६२-१०, मारू, मः ३)
मैले कर्म करे दुखु पाए ॥ (१०६२-१०, मारू, मः ३)
कूड़ो कूड़ु करे वापारा कूड़ु बोलि दुखु पाइदा ॥१२॥ (१०६२-१०, मारू, मः ३)
निर्मल बाणी को मंनि वसाए ॥ (१०६२-११, मारू, मः ३)
गुर परसादी सहसा जाए ॥ (१०६२-११, मारू, मः ३)
गुर कै भाणै चलै दिनु राती नामु चेति सुखु पाइदा ॥१३॥ (१०६२-११, मारू, मः ३)
आपि सिरंदा सचा सोई ॥ (१०६२-१२, मारू, मः ३)
आपि उपाइ खपाए सोई ॥ (१०६२-१२, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सु सदा सलाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥१४॥ (१०६२-१२, मारू, मः ३)
अनेक जतन करे इंद्री वसि न होई ॥ (१०६२-१३, मारू, मः ३)
कामि करोधि जलै सभु कोई ॥ (१०६२-१३, मारू, मः ३)
सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि समाइदा ॥१५॥ (१०६२-१४, मारू, मः ३)
मेरा तेरा तुधु आपे कीआ ॥ (१०६२-१४, मारू, मः ३)
सभि तेरे जंत तेरे सभि जीआ ॥ (१०६२-१५, मारू, मः ३)
नानक नामु समालि सदा तू गुरमती मंनि वसाइदा ॥१६॥४॥१८॥ (१०६२-१५, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०६२-१६)
हरि जीउ दाता अगम अथाहा ॥ (१०६२-१६, मारू, मः ३)
ओसु तिलु न तमाइ वेपरवाहा ॥ (१०६२-१६, मारू, मः ३)
तिस नो अपड़ि न सकै कोई आपे मेलि मिलाइदा ॥१॥ (१०६२-१७, मारू, मः ३)
जो किछु करै सु निहचउ होई ॥ (१०६२-१७, मारू, मः ३)
तिसु बिनु दाता अवरु न कोई ॥ (१०६२-१७, मारू, मः ३)
जिस नो नाम दानु करे सो पाए गुर सबदी मेलाइदा ॥२॥ (१०६२-१८, मारू, मः ३)
चउदह भवण तेरे हटनाले ॥ (१०६२-१८, मारू, मः ३)
सतिगुरि दिखाए अंतरि नाले ॥ (१०६२-१९, मारू, मः ३)
नावै का वापारी होवै गुर सबदी को पाइदा ॥३॥ (१०६२-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६३

सतिगुरि सेविऐ सहज अनंदा ॥ (१०६३-१, मारू, मः ३)
हिरदै आइ वुठा गोविंदा ॥ (१०६३-१, मारू, मः ३)
सहजे भगति करे दिनु राती आपे भगति कराइदा ॥४॥ (१०६३-१, मारू, मः ३)
सतिगुर ते विछुड़े तिनी दुखु पाइआ ॥ (१०६३-२, मारू, मः ३)
अनदिनु मारीअहि दुखु सबाइआ ॥ (१०६३-२, मारू, मः ३)
मथे काले महलु न पावहि दुख ही विचि दुखु पाइदा ॥५॥ (१०६३-३, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवहि से वडभागी ॥ (१०६३-३, मारू, मः ३)
सहज भाइ सची लिव लागी ॥ (१०६३-४, मारू, मः ३)

सचो सचु कमावहि सद ही सचै मेलि मिलाइदा ॥६॥ (१०६३-४, मारू, मः ३)
जिस नो सचा देइ सु पाए ॥ (१०६३-४, मारू, मः ३)
अंतरि साचु भरमु चुकाए ॥ (१०६३-५, मारू, मः ३)
सचु सचै का आपे दाता जिसु देवै सो सचु पाइदा ॥७॥ (१०६३-५, मारू, मः ३)
आपे करता सभना का सोई ॥ (१०६३-६, मारू, मः ३)
जिस नो आपि बुझाए बूझै कोई ॥ (१०६३-६, मारू, मः ३)
आपे बखसे दे वडिआई आपे मेलि मिलाइदा ॥८॥ (१०६३-६, मारू, मः ३)
हउमै करदिआ जनमु गवाइआ ॥ (१०६३-७, मारू, मः ३)
आगै मोहु न चूकै माइआ ॥ (१०६३-७, मारू, मः ३)
अगै जमकालु लेखा लेवै जिउ तिल घाणी पीड़ाइदा ॥९॥ (१०६३-७, मारू, मः ३)
पूरै भागि गुर सेवा होई ॥ (१०६३-८, मारू, मः ३)
नदरि करे ता सेवे कोई ॥ (१०६३-८, मारू, मः ३)
जमकालु तिसु नेड़ि न आवै महलि सचै सुखु पाइदा ॥१०॥ (१०६३-८, मारू, मः ३)
तिन सुखु पाइआ जो तुधु भाए ॥ (१०६३-९, मारू, मः ३)
पूरै भागि गुर सेवा लाए ॥ (१०६३-९, मारू, मः ३)
तेरै हथि है सभ वडिआई जिसु देवहि सो पाइदा ॥११॥ (१०६३-१०, मारू, मः ३)
अंदरि परगासु गुरू ते पाए ॥ (१०६३-१०, मारू, मः ३)
नामु पदारथु मंनि वसाए ॥ (१०६३-१०, मारू, मः ३)
गिआन रतनु सदा घटि चानणु अगिआन अंधेरु गवाइदा ॥१२॥ (१०६३-११, मारू, मः ३)
अगिआनी अंधे दूजै लागे ॥ (१०६३-१२, मारू, मः ३)
बिनु पाणी डुबि मूए अभागे ॥ (१०६३-१२, मारू, मः ३)
चलदिआ घरु दरु नदरि न आवै जम दरि बाधा दुखु पाइदा ॥१३॥ (१०६३-१२, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे मुकति न होई ॥ (१०६३-१३, मारू, मः ३)
गिआनी धिआनी पूछहु कोई ॥ (१०६३-१३, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवे तिसु मिलै वडिआई दरि सचै सोभा पाइदा ॥१४॥ (१०६३-१४, मारू, मः ३)
सतिगुर नो सेवे तिसु आपि मिलाए ॥ (१०६३-१४, मारू, मः ३)
ममता काटि सचि लिव लाए ॥ (१०६३-१५, मारू, मः ३)
सदा सचु वणजहि वापारी नामो लाहा पाइदा ॥१५॥ (१०६३-१५, मारू, मः ३)
आपे करे कराए करता ॥ (१०६३-१५, मारू, मः ३)
सबदि मरै सोई जनु मुकता ॥ (१०६३-१६, मारू, मः ३)
नानक नामु वसै मन अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१६॥५॥१९॥ (१०६३-१६, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०६३-१७)
जो तुधु करणा सो करि पाइआ ॥ (१०६३-१७, मारू, मः ३)
भाणे विचि को विरला आइआ ॥ (१०६३-१७, मारू, मः ३)
भाणा मन्ने सो सुखु पाए भाणे विचि सुखु पाइदा ॥१॥ (१०६३-१८, मारू, मः ३)

गुरमुखि तेरा भाणा भावै ॥ (१०६३-१८, मारू, मः ३)
सहजे ही सुखु सचु कमावै ॥ (१०६३-१८, मारू, मः ३)
भाणे नो लोचै बहुतेरी आपणा भाणा आपि मनाइदा ॥२॥ (१०६३-१९, मारू, मः ३)
तेरा भाणा मन्ने सु मिलै तुधु आए ॥ (१०६३-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६४

जिसु भाणा भावै सो तुझहि समाए ॥ (१०६४-१, मारू, मः ३)
भाणे विचि वडी वडिआई भाणा किसहि कराइदा ॥३॥ (१०६४-१, मारू, मः ३)
जा तिसु भावै ता गुरू मिलाए ॥ (१०६४-२, मारू, मः ३)
गुरमुखि नामु पदारथु पाए ॥ (१०६४-२, मारू, मः ३)
तुधु आपणै भाणै सभ सृसटि उपाई जिस नो भाणा देहि तिसु भाइदा ॥४॥ (१०६४-२, मारू, मः ३)
मनमुखु अंधु करे चतुराई ॥ (१०६४-३, मारू, मः ३)
भाणा न मन्ने बहुतु दुखु पाई ॥ (१०६४-३, मारू, मः ३)
भरमे भूला आवै जाए घरु महलु न कबहू पाइदा ॥५॥ (१०६४-४, मारू, मः ३)
सतिगुरु मेले दे वडिआई ॥ (१०६४-४, मारू, मः ३)
सतिगुर की सेवा धुरि फुरमाई ॥ (१०६४-४, मारू, मः ३)
सतिगुर सेवे ता नामु पाए नामे ही सुखु पाइदा ॥६॥ (१०६४-५, मारू, मः ३)
सभ नावहु उपजै नावहु छीजै ॥ (१०६४-५, मारू, मः ३)
गुर किरपा ते मनु तनु भीजै ॥ (१०६४-६, मारू, मः ३)
रसना नामु धिआए रसि भीजै रस ही ते रसु पाइदा ॥७॥ (१०६४-६, मारू, मः ३)
महलै अंदरि महलु को पाए ॥ (१०६४-६, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि सचि चितु लाए ॥ (१०६४-७, मारू, मः ३)
जिस नो सचु देइ सोई सचु पाए सचे सचि मिलाइदा ॥८॥ (१०६४-७, मारू, मः ३)
नामु विसारि मनि तनि दुखु पाइआ ॥ (१०६४-८, मारू, मः ३)
माइआ मोहु सभु रोगु कमाइआ ॥ (१०६४-८, मारू, मः ३)
बिनु नावै मनु तनु है कुसटी नरके वासा पाइदा ॥९॥ (१०६४-८, मारू, मः ३)
नामि रते तिन निर्मल देहा ॥ (१०६४-९, मारू, मः ३)
निर्मल हंसा सदा सुखु नेहा ॥ (१०६४-९, मारू, मः ३)
नामु सलाहि सदा सुखु पाइआ निज घरि वासा पाइदा ॥१०॥ (१०६४-१०, मारू, मः ३)
सभु को वणजु करे वापारा ॥ (१०६४-१०, मारू, मः ३)
विणु नावै सभु तोटा संसारा ॥ (१०६४-११, मारू, मः ३)
नागो आइआ नागो जासी विणु नावै दुखु पाइदा ॥११॥ (१०६४-११, मारू, मः ३)
जिस नो नामु देइ सो पाए ॥ (१०६४-११, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि हरि मंनि वसाए ॥ (१०६४-१२, मारू, मः ३)
गुर किरपा ते नामु वसिआ घट अंतरि नामो नामु धिआइदा ॥१२॥ (१०६४-१२, मारू, मः ३)

नावै नो लोचै जेती सभ आई ॥ (१०६४-१३, मारू, मः ३)
नाउ तिना मिलै धुरि पुरबि कमाई ॥ (१०६४-१३, मारू, मः ३)
जिनी नाउ पाइआ से वडभागी गुर कै सबदि मिलाइदा ॥१३॥ (१०६४-१३, मारू, मः ३)
काइआ कोटु अति अपारा ॥ (१०६४-१४, मारू, मः ३)
तिसु विचि बहि प्रभु करे वीचारा ॥ (१०६४-१४, मारू, मः ३)
सचा निआउ सचो वापारा निहचलु वासा पाइदा ॥१४॥ (१०६४-१५, मारू, मः ३)
अंतर घर बंके थानु सुहाइआ ॥ (१०६४-१५, मारू, मः ३)
गुरमुखि विरलै किनै थानु पाइआ ॥ (१०६४-१६, मारू, मः ३)
इतु साथि निबहै सालाहे सचे हरि सचा मंनि वसाइदा ॥१५॥ (१०६४-१६, मारू, मः ३)
मेरै करतै इक बणत बणाई ॥ (१०६४-१७, मारू, मः ३)
इसु देही विचि सभ वथु पाई ॥ (१०६४-१७, मारू, मः ३)
नानक नामु वणजहि रंगि राते गुरमुखि को नामु पाइदा ॥१६॥६॥२०॥ (१०६४-१७, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०६४-१८)
काइआ कंचनु सबदु वीचारा ॥ (१०६४-१८, मारू, मः ३)
तिथै हरि वसै जिस दा अंतु न पारावारा ॥ (१०६४-१९, मारू, मः ३)
अनदिनु हरि सेविहु सची बाणी हरि जीउ सबदि मिलाइदा ॥१॥ (१०६४-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६५

हरि चेतहि तिन बलिहारै जाउ ॥ (१०६५-१, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि तिन मेलि मिलाउ ॥ (१०६५-१, मारू, मः ३)
तिन की धूरि लाई मुखि मसतकि सतसंगति बहि गुण गाइदा ॥२॥ (१०६५-२, मारू, मः ३)
हरि के गुण गावा जे हरि प्रभ भावा ॥ (१०६५-२, मारू, मः ३)
अंतरि हरि नामु सबदि सुहावा ॥ (१०६५-३, मारू, मः ३)
गुरबाणी चहु कुंडी सुणीऐ साचै नामि समाइदा ॥३॥ (१०६५-३, मारू, मः ३)
सो जनु साचा जि अंतरु भाले ॥ (१०६५-३, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि हरि नदरि निहाले ॥ (१०६५-४, मारू, मः ३)
गिआन अंजनु पाए गुर सबदी नदरी नदरि मिलाइदा ॥४॥ (१०६५-४, मारू, मः ३)
वडै भागि इहु सरीरु पाइआ ॥ (१०६५-५, मारू, मः ३)
माणस जनमि सबदि चितु लाइआ ॥ (१०६५-५, मारू, मः ३)
बिनु सबदै सभु अंध अंधेरा गुरमुखि किसहि बुझाइदा ॥५॥ (१०६५-५, मारू, मः ३)
इकि कितु आए जनमु गवाए ॥ (१०६५-६, मारू, मः ३)
मनमुख लागे दूजै भाए ॥ (१०६५-६, मारू, मः ३)
एह वेला फिरि हाथि न आवै पगि खिसिऐ पछुताइदा ॥६॥ (१०६५-७, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि पवित्रु सरीरा ॥ (१०६५-७, मारू, मः ३)
तिसु विचि वसै सचु गुणी गहीरा ॥ (१०६५-८, मारू, मः ३)

सचो सचु वेखै सभ थाई सचु सुणि मंनि वसाइदा ॥७॥ (१०६५-८, मारू, मः ३)
हउमै गणत गुर सबदि निवारे ॥ (१०६५-८, मारू, मः ३)
हरि जीउ हिरदै रखहु उर धारे ॥ (१०६५-९, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि सदा सालाहे मिलि साचे सुखु पाइदा ॥८॥ (१०६५-९, मारू, मः ३)
सो चेते जिसु आपि चेताए ॥ (१०६५-१०, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि वसै मनि आए ॥ (१०६५-१०, मारू, मः ३)
आपे वेखै आपे बूझै आपै आपु समाइदा ॥९॥ (१०६५-१०, मारू, मः ३)
जिनि मन विचि वथु पाई सोई जाणै ॥ (१०६५-११, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे आपु पछाणै ॥ (१०६५-११, मारू, मः ३)
आपु पछाणै सोई जनु निरमलु बाणी सबदु सुणाइदा ॥१०॥ (१०६५-११, मारू, मः ३)
एह काइआ पवितु है सरीरु ॥ (१०६५-१२, मारू, मः ३)
गुर सबदी चेतै गुणी गहीरु ॥ (१०६५-१२, मारू, मः ३)
अनदिनु गुण गावै रंगि राता गुण कहि गुणी समाइदा ॥११॥ (१०६५-१३, मारू, मः ३)
एहु सरीरु सभ मूलु है माइआ ॥ (१०६५-१३, मारू, मः ३)
दूजै भाइ भरमि भुलाइआ ॥ (१०६५-१४, मारू, मः ३)
हरि न चेतै सदा दुखु पाए बिनु हरि चेते दुखु पाइदा ॥१२॥ (१०६५-१४, मारू, मः ३)
जि सतिगुरु सेवे सो परवाणु ॥ (१०६५-१५, मारू, मः ३)
काइआ हंसु निरमलु दरि सचै जाणु ॥ (१०६५-१५, मारू, मः ३)
हरि सेवे हरि मंनि वसाए सोहै हरि गुण गाइदा ॥१३॥ (१०६५-१५, मारू, मः ३)
बिनु भागा गुरु सेविआ न जाइ ॥ (१०६५-१६, मारू, मः ३)
मनमुख भूले मुए बिललाइ ॥ (१०६५-१६, मारू, मः ३)
जिन कउ नदरि होवै गुर केरी हरि जीउ आपि मिलाइदा ॥१४॥ (१०६५-१७, मारू, मः ३)
काइआ कोटु पके हटनाले ॥ (१०६५-१७, मारू, मः ३)
गुरमुखि लेवै वसतु समाले ॥ (१०६५-१८, मारू, मः ३)
हरि का नामु धिआइ दिनु राती ऊतम पदवी पाइदा ॥१५॥ (१०६५-१८, मारू, मः ३)
आपे सचा है सुखदाता ॥ (१०६५-१८, मारू, मः ३)
पूरे गुर कै सबदि पछाता ॥ (१०६५-१९, मारू, मः ३)
नानक नामु सलाहे साचा पूरै भागि को पाइदा ॥१६॥७॥२१॥ (१०६५-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६६

मारू महला ३ ॥ (१०६६-१)
निरंकारि आकारु उपाइआ ॥ (१०६६-१, मारू, मः ३)
माइआ मोहु हुकमि बणाइआ ॥ (१०६६-१, मारू, मः ३)
आपे खेल करे सभि करता सुणि साचा मंनि वसाइदा ॥१॥ (१०६६-२, मारू, मः ३)
माइआ माई त्रै गुण परसूति जमाइआ ॥ (१०६६-२, मारू, मः ३)

चारे बेद ब्रह्मे नो फुरमाइआ ॥ (१०६६-३, मारू, मः ३)
वरहे माह वार थिती करि इसु जग महि सोझी पाइदा ॥२॥ (१०६६-३, मारू, मः ३)
गुर सेवा ते करणी सार ॥ (१०६६-३, मारू, मः ३)
राम नामु राखहु उरि धार ॥ (१०६६-४, मारू, मः ३)
गुरबाणी वरती जग अंतरि इसु बाणी ते हरि नामु पाइदा ॥३॥ (१०६६-४, मारू, मः ३)
वेदु पड़ै अनदिनु वाद समाले ॥ (१०६६-५, मारू, मः ३)
नामु न चेतै बधा जमकाले ॥ (१०६६-५, मारू, मः ३)
दूजै भाइ सदा दुखु पाए त्रै गुण भरमि भुलाइदा ॥४॥ (१०६६-५, मारू, मः ३)
गुरमुखि एकसु सिउ लिव लाए ॥ (१०६६-६, मारू, मः ३)
तृबिधि मनसा मनहि समाए ॥ (१०६६-६, मारू, मः ३)
साचै सबदि सदा है मुकता माइआ मोहु चुकाइदा ॥५॥ (१०६६-६, मारू, मः ३)
जो धुरि राते से हुणि राते ॥ (१०६६-७, मारू, मः ३)
गुर परसादी सहजे माते ॥ (१०६६-७, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा प्रभु पाइआ आपै आपु मिलाइदा ॥६॥ (१०६६-८, मारू, मः ३)
माइआ मोहि भरमि न पाए ॥ (१०६६-८, मारू, मः ३)
दूजै भाइ लगा दुखु पाए ॥ (१०६६-९, मारू, मः ३)
सूहा रंगु दिन थोड़े होवै इसु जादे बिलम न लाइदा ॥७॥ (१०६६-९, मारू, मः ३)
एहु मनु भै भाइ रंगाए ॥ (१०६६-९, मारू, मः ३)
इतु रंगि साचे माहि समाए ॥ (१०६६-१०, मारू, मः ३)
पूरै भागि को इहु रंगु पाए गुरमती रंगु चड़ाइदा ॥८॥ (१०६६-१०, मारू, मः ३)
मनमुखु बहुतु करे अभिमानु ॥ (१०६६-११, मारू, मः ३)
दरगह कब ही न पावै मानु ॥ (१०६६-११, मारू, मः ३)
दूजै लागे जनमु गवाइआ बिनु बूझे दुखु पाइदा ॥९॥ (१०६६-११, मारू, मः ३)
मेरै प्रभि अंदरि आपु लुकाइआ ॥ (१०६६-१२, मारू, मः ३)
गुर परसादी हरि मिलै मिलाइआ ॥ (१०६६-१२, मारू, मः ३)
सचा प्रभु सचा वापारा नामु अमोलकु पाइदा ॥१०॥ (१०६६-१२, मारू, मः ३)
इसु काइआ की कीमति किनै न पाई ॥ (१०६६-१३, मारू, मः ३)
मेरै ठाकुरि इह बणत बणाई ॥ (१०६६-१३, मारू, मः ३)
गुरमुखि होवै सु काइआ सोधै आपहि आपु मिलाइदा ॥११॥ (१०६६-१४, मारू, मः ३)
काइआ विचि तोटा काइआ विचि लाहा ॥ (१०६६-१४, मारू, मः ३)
गुरमुखि खोजे वेपरवाहा ॥ (१०६६-१५, मारू, मः ३)
गुरमुखि वणजि सदा सुखु पाए सहजे सहजि मिलाइदा ॥१२॥ (१०६६-१५, मारू, मः ३)
सचा महलु सचे भंडारा ॥ (१०६६-१६, मारू, मः ३)
आपे देवै देवणहारा ॥ (१०६६-१६, मारू, मः ३)
गुरमुखि सालाहे सुखदाते मनि मेले कीमति पाइदा ॥१३॥ (१०६६-१६, मारू, मः ३)

काइआ विचि वसतु कीमति नही पाई ॥ (१०६६-१७, मारू, मः ३)
गुरमुखि आपे दे वडिआई ॥ (१०६६-१७, मारू, मः ३)
जिस दा हटु सोई वथु जाणै गुरमुखि देइ न पछोताइदा ॥१४॥ (१०६६-१८, मारू, मः ३)
हरि जीउ सभ महि रहिआ समाई ॥ (१०६६-१८, मारू, मः ३)
गुर परसादी पाइआ जाई ॥ (१०६६-१९, मारू, मः ३)
आपे मेलि मिलाए आपे सबदे सहजि समाइदा ॥१५॥ (१०६६-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६७

आपे सचा सबदि मिलाए ॥ (१०६७-१, मारू, मः ३)
सबदे विचहु भरमु चुकाए ॥ (१०६७-१, मारू, मः ३)
नानक नामि मिलै वडिआई नामे ही सुखु पाइदा ॥१६॥८॥२२॥ (१०६७-१, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०६७-२)
अगम अगोचर वेपरवाहे ॥ (१०६७-२, मारू, मः ३)
आपे मिहरवान अगम अथाहे ॥ (१०६७-२, मारू, मः ३)
अपड़ि कोइ न सकै तिस नो गुर सबदी मेलाइआ ॥१॥ (१०६७-३, मारू, मः ३)
तुधुनो सेवहि जो तुधु भावहि ॥ (१०६७-३, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे सचि समावहि ॥ (१०६७-३, मारू, मः ३)
अनदिनु गुण रवहि दिनु राती रसना हरि रसु भाइआ ॥२॥ (१०६७-४, मारू, मः ३)
सबदि मरहि से मरणु सवारहि ॥ (१०६७-४, मारू, मः ३)
हरि के गुण हिरदै उर धारहि ॥ (१०६७-५, मारू, मः ३)
जनमु सफलु हरि चरणी लागे दूजा भाउ चुकाइआ ॥३॥ (१०६७-५, मारू, मः ३)
हरि जीउ मेले आपि मिलाए ॥ (१०६७-६, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे आपु गवाए ॥ (१०६७-६, मारू, मः ३)
अनदिनु सदा हरि भगती राते इसु जग महि लाहा पाइआ ॥४॥ (१०६७-६, मारू, मः ३)
तेरे गुण कहा मै कहणु न जाई ॥ (१०६७-७, मारू, मः ३)
अंतु न पारा कीमति नही पाई ॥ (१०६७-७, मारू, मः ३)
आपे दइआ करे सुखदाता गुण महि गुणी समाइआ ॥५॥ (१०६७-७, मारू, मः ३)
इसु जग महि मोहु है पासारा ॥ (१०६७-८, मारू, मः ३)
मनमुखु अगिआनी अंधु अंधारा ॥ (१०६७-८, मारू, मः ३)
धंधै धावतु जनमु गवाइआ बिनु नावै दुखु पाइआ ॥६॥ (१०६७-९, मारू, मः ३)
करमु होवै ता सतिगुरु पाए ॥ (१०६७-९, मारू, मः ३)
हउमै मैलु सबदि जलाए ॥ (१०६७-१०, मारू, मः ३)
मनु निरमलु गिआनु रतनु चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥७॥ (१०६७-१०, मारू, मः ३)
तेरे नाम अनेक कीमति नही पाई ॥ (१०६७-११, मारू, मः ३)
सचु नामु हरि हिरदै वसाई ॥ (१०६७-११, मारू, मः ३)

कीमति कउणु करे प्रभ तेरी तू आपे सहजि समाइआ ॥८॥ (१०६७-११, मारू, मः ३)
नामु अमोलकु अगम अपारा ॥ (१०६७-१२, मारू, मः ३)
ना को होआ तोलणहारा ॥ (१०६७-१२, मारू, मः ३)
आपे तोले तोलि तोलाए गुर सबदी मेलि तोलाइआ ॥९॥ (१०६७-१३, मारू, मः ३)
सेवक सेवहि करहि अरदासि ॥ (१०६७-१३, मारू, मः ३)
तू आपे मेलि बहालहि पासि ॥ (१०६७-१३, मारू, मः ३)
सभना जीआ का सुखदाता पूरै करमि धिआइआ ॥१०॥ (१०६७-१४, मारू, मः ३)
जतु सतु संजमु जि सचु कमावै ॥ (१०६७-१४, मारू, मः ३)
इहु मनु निरमलु जि हरि गुण गावै ॥ (१०६७-१५, मारू, मः ३)
इसु बिखु महि अमृतु परापति होवै हरि जीउ मेरे भाइआ ॥११॥ (१०६७-१५, मारू, मः ३)
जिस नो बुझाए सोई बूझै ॥ (१०६७-१६, मारू, मः ३)
हरि गुण गावै अंदरु सूझै ॥ (१०६७-१६, मारू, मः ३)
हउमै मेरा ठाकि रहाए सहजे ही सचु पाइआ ॥१२॥ (१०६७-१६, मारू, मः ३)
बिनु करमा होर फिरै घनेरी ॥ (१०६७-१७, मारू, मः ३)
मरि मरि जम्मै चुकै न फेरी ॥ (१०६७-१७, मारू, मः ३)
बिखु का राता बिखु कमावै सुखु न कबहू पाइआ ॥१३॥ (१०६७-१७, मारू, मः ३)
बहुते भेख करे भेखधारी ॥ (१०६७-१८, मारू, मः ३)
बिनु सबदै हउमै किनै न मारी ॥ (१०६७-१८, मारू, मः ३)
जीवतु मरै ता मुकति पाए सचै नाइ समाइआ ॥१४॥ (१०६७-१९, मारू, मः ३)
अगिआनु तृसना इसु तनहि जलाए ॥ (१०६७-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६८

तिस दी बूझै जि गुर सबदु कमाए ॥ (१०६८-१, मारू, मः ३)
तनु मनु सीतलु क्रोधु निवारे हउमै मारि समाइआ ॥१५॥ (१०६८-१, मारू, मः ३)
सचा साहिबु सची वडिआई ॥ (१०६८-१, मारू, मः ३)
गुर परसादी विरलै पाई ॥ (१०६८-२, मारू, मः ३)
नानकु एक कहै बेनंती नामे नामि समाइआ ॥१६॥१॥२३॥ (१०६८-२, मारू, मः ३)
मारू महला ३ ॥ (१०६८-३)
नदरी भगता लैहु मिलाए ॥ (१०६८-३, मारू, मः ३)
भगत सलाहनि सदा लिव लाए ॥ (१०६८-३, मारू, मः ३)
तउ सरणाई उबरहि करते आपे मेलि मिलाइआ ॥१॥ (१०६८-४, मारू, मः ३)
पूरै सबदि भगति सुहाई ॥ (१०६८-४, मारू, मः ३)
अंतरि सुखु तेरै मनि भाई ॥ (१०६८-४, मारू, मः ३)
मनु तनु सची भगती राता सचे सिउ चितु लाइआ ॥२॥ (१०६८-५, मारू, मः ३)
हउमै विचि सद जलै सरीरा ॥ (१०६८-५, मारू, मः ३)

करमु होवै भेटे गुरु पूरा ॥ (१०६८-६, मारू, मः ३)
अंतरि अगिआनु सबदि बुझाए सतिगुर ते सुखु पाइआ ॥३॥ (१०६८-६, मारू, मः ३)
मनमुखु अंधा अंधु कमाए ॥ (१०६८-७, मारू, मः ३)
बहु संकट जोनी भरमाए ॥ (१०६८-७, मारू, मः ३)
जम का जेवड़ा कदे न काटै अंते बहु दुखु पाइआ ॥४॥ (१०६८-७, मारू, मः ३)
आवण जाणा सबदि निवारे ॥ (१०६८-८, मारू, मः ३)
सचु नामु रखै उर धारे ॥ (१०६८-८, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि मरै मनु मारे हउमै जाइ समाइआ ॥५॥ (१०६८-८, मारू, मः ३)
आवण जाणै परज विगोई ॥ (१०६८-९, मारू, मः ३)
बिनु सतिगुर थिरु कोइ न होई ॥ (१०६८-९, मारू, मः ३)
अंतरि जोति सबदि सुखु वसिआ जोती जोति मिलाइआ ॥६॥ (१०६८-९, मारू, मः ३)
पंच दूत चितवहि विकारा ॥ (१०६८-१०, मारू, मः ३)
माइआ मोह का एहु पसारा ॥ (१०६८-१०, मारू, मः ३)
सतिगुरु सेवे ता मुकतु होवै पंच दूत वसि आइआ ॥७॥ (१०६८-११, मारू, मः ३)
बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥ (१०६८-११, मारू, मः ३)
फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ (१०६८-११, मारू, मः ३)
सतिगुर भेटे सचु दृड़ाए सचु नामु मनि भाइआ ॥८॥ (१०६८-१२, मारू, मः ३)
साचा दरु साचा दरवारा ॥ (१०६८-१२, मारू, मः ३)
सचे सेवहि सबदि पिआरा ॥ (१०६८-१३, मारू, मः ३)
सची धुनि सचे गुण गावा सचे माहि समाइआ ॥९॥ (१०६८-१३, मारू, मः ३)
घरै अंदरि को घरु पाए ॥ (१०६८-१३, मारू, मः ३)
गुर कै सबदे सहजि सुभाए ॥ (१०६८-१४, मारू, मः ३)
ओथै सोगु विजोगु न विआपै सहजे सहजि समाइआ ॥१०॥ (१०६८-१४, मारू, मः ३)
दूजै भाइ दुसटा का वासा ॥ (१०६८-१५, मारू, मः ३)
भउदे फिरहि बहु मोह पिआसा ॥ (१०६८-१५, मारू, मः ३)
कुसंगति बहहि सदा दुखु पावहि दुखो दुखु कमाइआ ॥११॥ (१०६८-१५, मारू, मः ३)
सतिगुर बाझहु संगति न होई ॥ (१०६८-१६, मारू, मः ३)
बिनु सबदे पारु न पाए कोई ॥ (१०६८-१६, मारू, मः ३)
सहजे गुण रवहि दिनु राती जोती जोति मिलाइआ ॥१२॥ (१०६८-१६, मारू, मः ३)
काइआ बिरखु पंखी विचि वासा ॥ (१०६८-१७, मारू, मः ३)
अमृतु चुगहि गुर सबदि निवासा ॥ (१०६८-१७, मारू, मः ३)
उडहि न मूले न आवहि न जाही निज घरि वासा पाइआ ॥१३॥ (१०६८-१८, मारू, मः ३)
काइआ सोधहि सबदु वीचारहि ॥ (१०६८-१८, मारू, मः ३)
मोह ठगउरी भरमु निवारहि ॥ (१०६८-१९, मारू, मः ३)
आपे कृपा करे सुखदाता आपे मेलि मिलाइआ ॥१४॥ (१०६८-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६६

सद ही नेड़ै दूरि न जाणहु ॥ (१०६६-१, मारू, मः ३)
गुर कै सबदि नजीकि पछाणहु ॥ (१०६६-१, मारू, मः ३)
बिगसै कमलु किरणि परगासै परगटु करि देखाइआ ॥१५॥ (१०६६-१, मारू, मः ३)
आपे करता सचा सोई ॥ (१०६६-२, मारू, मः ३)
आपे मारि जीवाले अवरु न कोई ॥ (१०६६-२, मारू, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई आपु गवाइ सुखु पाइआ ॥१६॥२॥२४॥ (१०६६-३, मारू, मः ३)
मारू सोलहे महला ४ (१०६६-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०६६-४)
सचा आपि सवारणहारा ॥ (१०६६-५, मारू, मः ४)
अवर न सूझसि बीजी कारा ॥ (१०६६-५, मारू, मः ४)
गुरमुखि सचु वसै घट अंतरि सहजे सचि समाई हे ॥१॥ (१०६६-५, मारू, मः ४)
सभना सचु वसै मन माही ॥ (१०६६-६, मारू, मः ४)
गुर परसादी सहजि समाही ॥ (१०६६-६, मारू, मः ४)
गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ गुर चरणी चितु लाई हे ॥२॥ (१०६६-६, मारू, मः ४)
सतिगुरु है गिआनु सतिगुरु है पूजा ॥ (१०६६-७, मारू, मः ४)
सतिगुरु सेवी अवरु न दूजा ॥ (१०६६-७, मारू, मः ४)
सतिगुर ते नामु रतन धनु पाइआ सतिगुर की सेवा भाई हे ॥३॥ (१०६६-८, मारू, मः ४)
बिनु सतिगुर जो दूजै लागे ॥ (१०६६-८, मारू, मः ४)
आवहि जाहि भ्रमि मरहि अभागे ॥ (१०६६-९, मारू, मः ४)
नानक तिन की फिरि गति होवै जि गुरमुखि रहहि सरणाई हे ॥४॥ (१०६६-९, मारू, मः ४)
गुरमुखि प्रीति सदा है साची ॥ (१०६६-१०, मारू, मः ४)
सतिगुर ते मागउ नामु अजाची ॥ (१०६६-१०, मारू, मः ४)
होहु दइआलु कृपा करि हरि जीउ रखि लेवहु गुर सरणाई हे ॥५॥ (१०६६-१०, मारू, मः ४)
अमृत रसु सतिगुरू चुआइआ ॥ (१०६६-११, मारू, मः ४)
दसवै दुआरि प्रगटु होइ आइआ ॥ (१०६६-११, मारू, मः ४)
तह अनहद सबद वजहि धुनि बाणी सहजे सहजि समाई हे ॥६॥ (१०६६-१२, मारू, मः ४)
जिन कउ करतै धुरि लिखि पाई ॥ (१०६६-१२, मारू, मः ४)
अनदिनु गुरु गुरु करत विहाई ॥ (१०६६-१३, मारू, मः ४)
बिनु सतिगुर को सीझै नाही गुर चरणी चितु लाई हे ॥७॥ (१०६६-१३, मारू, मः ४)
जिसु भावै तिसु आपे देइ ॥ (१०६६-१४, मारू, मः ४)
गुरमुखि नामु पदारथु लेइ ॥ (१०६६-१४, मारू, मः ४)
आपे कृपा करे नामु देवै नानक नामि समाई हे ॥८॥ (१०६६-१४, मारू, मः ४)
गिआन रतनु मनि परगटु भइआ ॥ (१०६६-१५, मारू, मः ४)

नामु पदारथु सहजे लइआ ॥ (१०६९-१५, मारू, मः ४)
एह वडिआई गुर ते पाई सतिगुर कउ सद बलि जाई हे ॥९॥ (१०६९-१६, मारू, मः ४)
प्रगटिआ सूरु निसि मिटिआ अंधिआरा ॥ (१०६९-१६, मारू, मः ४)
अगिआनु मिटिआ गुर रतनि अपारा ॥ (१०६९-१७, मारू, मः ४)
सतिगुर गिआनु रतनु अति भारी करमि मिलै सुखु पाई हे ॥१०॥ (१०६९-१७, मारू, मः ४)
गुरमुखि नामु प्रगटी है सोइ ॥ (१०६९-१८, मारू, मः ४)
चहु जुगि निरमलु हछा लोइ ॥ (१०६९-१८, मारू, मः ४)
नामे नामि रते सुखु पाइआ नामि रहिआ लिव लाई हे ॥११॥ (१०६९-१८, मारू, मः ४)
गुरमुखि नामु परापति होवै ॥ (१०६९-१९, मारू, मः ४)
सहजे जागै सहजे सोवै ॥ (१०६९-१९, मारू, मः ४)

पन्ना १०७०

गुरमुखि नामि समाइ समावै नानक नामु धिआई हे ॥१२॥ (१०७०-१, मारू, मः ४)
भगता मुखि अमृत है बाणी ॥ (१०७०-१, मारू, मः ४)
गुरमुखि हरि नामु आखि वखाणी ॥ (१०७०-२, मारू, मः ४)
हरि हरि करत सदा मनु बिगसै हरि चरणी मनु लाई हे ॥१३॥ (१०७०-२, मारू, मः ४)
हम मूरख अगिआन गिआनु किछु नाही ॥ (१०७०-३, मारू, मः ४)
सतिगुर ते समझ पड़ी मन माही ॥ (१०७०-३, मारू, मः ४)
होहु दइआलु कृपा करि हरि जीउ सतिगुर की सेवा लाई हे ॥१४॥ (१०७०-३, मारू, मः ४)
जिनि सतिगुरु जाता तिनि एकु पछाता ॥ (१०७०-४, मारू, मः ४)
सरबे रवि रहिआ सुखदाता ॥ (१०७०-४, मारू, मः ४)
आतमु चीनि पर्म पदु पाइआ सेवा सुरति समाई हे ॥१५॥ (१०७०-५, मारू, मः ४)
जिन कउ आदि मिली वडिआई ॥ (१०७०-५, मारू, मः ४)
सतिगुरु मनि वसिआ लिव लाई ॥ (१०७०-६, मारू, मः ४)
आपि मिलिआ जगजीवनु दाता नानक अंकि समाई हे ॥१६॥१॥ (१०७०-६, मारू, मः ४)
मारू महला ४ ॥ (१०७०-७)
हरि अगम अगोचरु सदा अबिनासी ॥ (१०७०-७, मारू, मः ४)
सरबे रवि रहिआ घट वासी ॥ (१०७०-७, मारू, मः ४)
तिसु बिनु अवरु न कोई दाता हरि तिसहि सरेवहु प्राणी हे ॥१॥ (१०७०-८, मारू, मः ४)
जा कउ राखै हरि राखणहारा ॥ (१०७०-८, मारू, मः ४)
ता कउ कोइ न साकसि मारा ॥ (१०७०-८, मारू, मः ४)
सो ऐसा हरि सेवहु संतहु जा की ऊतम बाणी हे ॥२॥ (१०७०-९, मारू, मः ४)
जा जापै किछु किथाऊ नाही ॥ (१०७०-९, मारू, मः ४)
ता करता भरपूरि समाही ॥ (१०७०-१०, मारू, मः ४)
सूके ते फुनि हरिआ कीतोनु हरि धिआवहु चोज विडाणी हे ॥३॥ (१०७०-१०, मारू, मः ४)

जो जीआ की वेदन जाणै ॥ (१०७०-११, मारू, मः ४)
तिसु साहिब कै हउ कुरबाणै ॥ (१०७०-११, मारू, मः ४)
तिसु आगै जन करि बेनंती जो सर्ब सुखा का दाणी हे ॥४॥ (१०७०-११, मारू, मः ४)
जो जीऐ की सार न जाणै ॥ (१०७०-१२, मारू, मः ४)
तिसु सिउ किछु न कहीऐ अजाणै ॥ (१०७०-१२, मारू, मः ४)
मूरख सिउ नह लूझु पराणी हरि जपीऐ पदु निरबाणी हे ॥५॥ (१०७०-१२, मारू, मः ४)
ना करि चिंत चिंता है करते ॥ (१०७०-१३, मारू, मः ४)
हरि देवै जलि थलि जंता सभतै ॥ (१०७०-१३, मारू, मः ४)
अचिंत दानु देइ प्रभु मेरा विचि पाथर कीट पखाणी हे ॥६॥ (१०७०-१४, मारू, मः ४)
ना करि आस मीत सुत भाई ॥ (१०७०-१४, मारू, मः ४)
ना करि आस किसै साह बिउहार की पराई ॥ (१०७०-१५, मारू, मः ४)
बिनु हरि नावै को बेली नाही हरि जपीऐ सारंगपाणी हे ॥७॥ (१०७०-१५, मारू, मः ४)
अनदिनु नामु जपहु बनवारी ॥ (१०७०-१६, मारू, मः ४)
सभ आसा मनसा पूरै थारी ॥ (१०७०-१६, मारू, मः ४)
जन नानक नामु जपहु भव खंडनु सुखि सहजे रैणि विहाणी हे ॥८॥ (१०७०-१६, मारू, मः ४)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ (१०७०-१७, मारू, मः ४)
सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥ (१०७०-१७, मारू, मः ४)
जो सरणि परै तिस की पति राखै जाइ पूछहु वेद पुराणी हे ॥९॥ (१०७०-१८, मारू, मः ४)
जिसु हरि सेवा लाए सोई जनु लागै ॥ (१०७०-१८, मारू, मः ४)
गुर कै सबदि भर्म भउ भागै ॥ (१०७०-१९, मारू, मः ४)
विचे गृह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे ॥१०॥ (१०७०-१९, मारू, मः ४)

पन्ना १०७१

विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ (१०७१-१, मारू, मः ४)
जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ (१०७१-१, मारू, मः ४)
सो तपु पूरा साई सेवा जो हरि मेरे मनि भाणी हे ॥११॥ (१०७१-१, मारू, मः ४)
हउ किआ गुण तेरे आखा सुआमी ॥ (१०७१-२, मारू, मः ४)
तू सर्ब जीआ का अंतरजामी ॥ (१०७१-२, मारू, मः ४)
हउ मागउ दानु तुझै पहि करते हरि अनदिनु नामु वखाणी हे ॥१२॥ (१०७१-३, मारू, मः ४)
किस ही जोरु अहंकार बोलण का ॥ (१०७१-३, मारू, मः ४)
किस ही जोरु दीबान माइआ का ॥ (१०७१-४, मारू, मः ४)
मै हरि बिनु टेक धर अवर न काई तू करते राखु मै निमाणी हे ॥१३॥ (१०७१-४, मारू, मः ४)
निमाणे माणु करहि तुधु भावै ॥ (१०७१-५, मारू, मः ४)
होर केती झखि झखि आवै जावै ॥ (१०७१-५, मारू, मः ४)
जिन का पखु करहि तू सुआमी तिन की ऊपरि गल तुधु आणी हे ॥१४॥ (१०७१-५, मारू, मः ४)

हरि हरि नामु जिनी सदा धिआइआ ॥ (१०७१-६, मारू, मः ४)
तिनी गुर परसादि पर्म पदु पाइआ ॥ (१०७१-६, मारू, मः ४)
जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ बिनु सेवा पछोताणी हे ॥१५॥ (१०७१-७, मारू, मः ४)
तू सभ महि वरतहि हरि जगन्नाथु ॥ (१०७१-८, मारू, मः ४)
सो हरि जपै जिसु गुर मसतकि हाथु ॥ (१०७१-८, मारू, मः ४)
हरि की सरणि पइआ हरि जापी जनु नानकु दासु दसाणी हे ॥१६॥२॥ (१०७१-८, मारू, मः ४)
मारू सोलहे महला ५ (१०७१-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०७१-१०)
कला उपाइ धरी जिनि धरणा ॥ (१०७१-११, मारू, मः ५)
गगनु रहाइआ हुकमे चरणा ॥ (१०७१-११, मारू, मः ५)
अगनि उपाइ ईधन महि बाधी सो प्रभु राखै भाई हे ॥१॥ (१०७१-११, मारू, मः ५)
जीअ जंत कउ रिजकु सम्बाहे ॥ (१०७१-१२, मारू, मः ५)
करण कारण समरथ आपाहे ॥ (१०७१-१२, मारू, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारा सोई तेरा सहाई हे ॥२॥ (१०७१-१२, मारू, मः ५)
मात गरभ महि जिनि प्रतिपालिआ ॥ (१०७१-१३, मारू, मः ५)
सासि ग्रासि होइ संगि समालिआ ॥ (१०७१-१३, मारू, मः ५)
सदा सदा जपीऐ सो प्रीतमु वडी जिसु वडिआई हे ॥३॥ (१०७१-१४, मारू, मः ५)
सुलतान खान करे खिन कीरे ॥ (१०७१-१४, मारू, मः ५)
गरीब निवाजि करे प्रभु मीरे ॥ (१०७१-१५, मारू, मः ५)
गरब निवारण सर्ब सधारण किछु कीमति कही न जाई हे ॥४॥ (१०७१-१५, मारू, मः ५)
सो पतिवंता सो धनवंता ॥ (१०७१-१६, मारू, मः ५)
जिसु मनि वसिआ हरि भगवंता ॥ (१०७१-१६, मारू, मः ५)
मात पिता सुत बंधप भाई जिनि इह सृसटि उपाई हे ॥५॥ (१०७१-१६, मारू, मः ५)
प्रभ आए सरणा भउ नही करणा ॥ (१०७१-१७, मारू, मः ५)
साधसंगति निहचउ है तरणा ॥ (१०७१-१७, मारू, मः ५)
मन बच कर्म अराधे करता तिसु नाही कदे सजाई हे ॥६॥ (१०७१-१७, मारू, मः ५)
गुण निधान मन तन महि रविआ ॥ (१०७१-१८, मारू, मः ५)
जनम मरण की जोनि न भविआ ॥ (१०७१-१८, मारू, मः ५)
दूख बिनास कीआ सुखि डेरा जा तृपति रहे आघाई हे ॥७॥ (१०७१-१९, मारू, मः ५)
मीतु हमारा सोई सुआमी ॥ (१०७१-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०७२

थान थनंतरि अंतरजामी ॥ (१०७२-१, मारू, मः ५)
सिमरि सिमरि पूरन परमेसुर चिंता गणत मिटाई हे ॥८॥ (१०७२-१, मारू, मः ५)
हरि का नामु कोटि लख बाहा ॥ (१०७२-२, मारू, मः ५)

हरि जसु कीरतनु संगि धनु ताहा ॥ (१०७२-२, मारू, मः ५)
गिआन खड़गु करि किरपा दीना दूत मारे करि धाई हे ॥९॥ (१०७२-२, मारू, मः ५)
हरि का जापु जपहु जपु जपने ॥ (१०७२-३, मारू, मः ५)
जीति आवहु वसहु घरि अपने ॥ (१०७२-३, मारू, मः ५)
लख चउरासीह नरक न देखहु रसकि रसकि गुण गाई हे ॥१०॥ (१०७२-३, मारू, मः ५)
खंड ब्रहमंड उधारणहारा ॥ (१०७२-४, मारू, मः ५)
ऊच अथाह अगम्म अपारा ॥ (१०७२-४, मारू, मः ५)
जिस नो कृपा करे प्रभु अपनी सो जनु तिसहि धिआई हे ॥११॥ (१०७२-५, मारू, मः ५)
बंधन तोड़ि लीए प्रभि मोले ॥ (१०७२-५, मारू, मः ५)
करि किरपा कीने घर गोले ॥ (१०७२-६, मारू, मः ५)
अनहद रुण झुणकारु सहज धुनि साची कार कमाई हे ॥१२॥ (१०७२-६, मारू, मः ५)
मनि परतीति बनी प्रभ तेरी ॥ (१०७२-७, मारू, मः ५)
बिनसि गई हउमै मति मेरी ॥ (१०७२-७, मारू, मः ५)
अंगीकारु कीआ प्रभि अपनै जग महि सोभ सुहाई हे ॥१३॥ (१०७२-७, मारू, मः ५)
जै जै कारु जपहु जगदीसै ॥ (१०७२-८, मारू, मः ५)
बलि बलि जाई प्रभ अपुने ईसै ॥ (१०७२-८, मारू, मः ५)
तिसु बिनु दूजा अवरु न दीसै एका जगति सबाई हे ॥१४॥ (१०७२-८, मारू, मः ५)
सति सति सति प्रभु जाता ॥ (१०७२-९, मारू, मः ५)
गुर परसादि सदा मनु राता ॥ (१०७२-९, मारू, मः ५)
सिमरि सिमरि जीवहि जन तेरे एकंकारि समाई हे ॥१५॥ (१०७२-१०, मारू, मः ५)
भगत जना का प्रीतमु पिआरा ॥ (१०७२-१०, मारू, मः ५)
सभै उधारणु खसमु हमारा ॥ (१०७२-११, मारू, मः ५)
सिमरि नामु पुन्नी सभ इछा जन नानक पैज रखाई हे ॥१६॥१॥ (१०७२-११, मारू, मः ५)
मारू सोलहे महला ५ (१०७२-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०७२-१२)
संगी जोगी नारि लपटाणी ॥ (१०७२-१३, मारू, मः ५)
उरझि रही रंग रस माणी ॥ (१०७२-१३, मारू, मः ५)
किरत संजोगी भए इकत्रा करते भोग बिलासा हे ॥१॥ (१०७२-१३, मारू, मः ५)
जो पिरु करै सु धन ततु मानै ॥ (१०७२-१४, मारू, मः ५)
पिरु धनहि सीगारि रखै संगानै ॥ (१०७२-१४, मारू, मः ५)
मिलि एकत्र वसहि दिनु राती प्रिउ दे धनहि दिलासा हे ॥२॥ (१०७२-१४, मारू, मः ५)
धन मागै प्रिउ बहु बिधि धावै ॥ (१०७२-१५, मारू, मः ५)
जो पावै सो आणि दिखावै ॥ (१०७२-१५, मारू, मः ५)
एक वसतु कउ पहुचि न साकै धन रहती भूख पिआसा हे ॥३॥ (१०७२-१६, मारू, मः ५)
धन करै बिनउ दोऊ कर जोरै ॥ (१०७२-१६, मारू, मः ५)

पृअ परदेसि न जाहु वसहु घरि मोरै ॥ (१०७२-१६, मारू, मः ५)
ऐसा बणजु करहु गृह भीतरि जितु उतरै भूख पिआसा हे ॥४॥ (१०७२-१७, मारू, मः ५)
सगले कर्म धर्म जुग साधा ॥ (१०७२-१८, मारू, मः ५)
बिनु हरि रस सुखु तिलु नही लाधा ॥ (१०७२-१८, मारू, मः ५)
भई कृपा नानक सतसंगे तउ धन पिर अनंद उलासा हे ॥५॥ (१०७२-१८, मारू, मः ५)

पन्ना १०७३

धन अंधी पिरु चपलु सिआना ॥ (१०७३-१, मारू, मः ५)
पंच ततु का रचनु रचाना ॥ (१०७३-१, मारू, मः ५)
जिसु वखर कउ तुम आए हहु सो पाइओ सतिगुर पासा हे ॥६॥ (१०७३-१, मारू, मः ५)
धन कहै तू वसु मै नाले ॥ (१०७३-२, मारू, मः ५)
पृअ सुखवासी बाल गुपाले ॥ (१०७३-२, मारू, मः ५)
तुझै बिना हउ कित ही न लेखै वचनु देहि छोडि न जासा हे ॥७॥ (१०७३-३, मारू, मः ५)
पिरि कहिआ हउ हुकमी बंदा ॥ (१०७३-३, मारू, मः ५)
ओहु भारो ठाकुरु जिसु काणि न छंदा ॥ (१०७३-४, मारू, मः ५)
जिचरु राखै तिचरु तुम संगि रहणा जा सदे त ऊठि सिधासा हे ॥८॥ (१०७३-४, मारू, मः ५)
जउ पृअ बचन कहे धन साचे ॥ (१०७३-५, मारू, मः ५)
धन कछू न समझै चंचलि काचे ॥ (१०७३-५, मारू, मः ५)
बहुरि बहुरि पिर ही संगु मागै ओहु बात जानै करि हासा हे ॥९॥ (१०७३-५, मारू, मः ५)
आई आगिआ पिरहु बुलाइआ ॥ (१०७३-६, मारू, मः ५)
ना धन पुछी न मता पकाइआ ॥ (१०७३-६, मारू, मः ५)
ऊठि सिधाइओ छूटरि माटी देखु नानक मिथन मोहासा हे ॥१०॥ (१०७३-७, मारू, मः ५)
रे मन लोभी सुणि मन मेरे ॥ (१०७३-७, मारू, मः ५)
सतिगुरु सेवि दिनु राति सदेरे ॥ (१०७३-८, मारू, मः ५)
बिनु सतिगुर पचि मूए साकत निगुरे गलि जम फासा हे ॥११॥ (१०७३-८, मारू, मः ५)
मनमुखि आवै मनमुखि जावै ॥ (१०७३-९, मारू, मः ५)
मनमुखि फिरि फिरि चोटा खावै ॥ (१०७३-९, मारू, मः ५)
जितने नरक से मनमुखि भोगै गुरमुखि लेपु न मासा हे ॥१२॥ (१०७३-९, मारू, मः ५)
गुरमुखि सोइ जि हरि जीउ भाइआ ॥ (१०७३-१०, मारू, मः ५)
तिसु कउणु मिटावै जि प्रभि पहिराइआ ॥ (१०७३-१०, मारू, मः ५)
सदा अनंदु करे आनंदी जिसु सिरपाउ पइआ गलि खासा हे ॥१३॥ (१०७३-११, मारू, मः ५)
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे ॥ (१०७३-१२, मारू, मः ५)
सरणि के दाते बचन के सूरे ॥ (१०७३-१२, मारू, मः ५)
ऐसा प्रभु मिलिआ सुखदाता विछुड़ि न कत ही जासा हे ॥१४॥ (१०७३-१२, मारू, मः ५)
गुण निधान किछु कीम न पाई ॥ (१०७३-१३, मारू, मः ५)

घटि घटि पूरि रहिओ सभ ठाई ॥ (१०७३-१३, मारू, मः ५)
नानक सरणि दीन दुख भंजन हउ रेण तेरे जो दासा हे ॥१५॥१॥२॥ (१०७३-१३, मारू, मः ५)
मारू सोलहे महला ५ (१०७३-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०७३-१५)
करै अनंदु अनंदी मेरा ॥ (१०७३-१६, मारू, मः ५)
घटि घटि पूरनु सिर सिरहि निबेरा ॥ (१०७३-१६, मारू, मः ५)
सिरि साहा कै सचा साहिबु अवरु नाही को दूजा हे ॥१॥ (१०७३-१६, मारू, मः ५)
हरखवंत आनंत दइआला ॥ (१०७३-१७, मारू, मः ५)
प्रगटि रहिओ प्रभु सर्ब उजाला ॥ (१०७३-१७, मारू, मः ५)
रूप करे करि वेखै विगसै आपे ही आपि पूजा हे ॥२॥ (१०७३-१७, मारू, मः ५)
आपे कुदरति करे वीचारा ॥ (१०७३-१८, मारू, मः ५)
आपे ही सचु करे पसारा ॥ (१०७३-१८, मारू, मः ५)
आपे खेल खिलावै दिनु राती आपे सुणि सुणि भीजा हे ॥३॥ (१०७३-१८, मारू, मः ५)
साचा तखतु सची पातिसाही ॥ (१०७३-१९, मारू, मः ५)
सचु खजीना साचा साही ॥ (१०७३-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०७४

आपे सचु धारिओ सभु साचा सचे सचि वरतीजा हे ॥४॥ (१०७४-१, मारू, मः ५)
सचु तपावसु सचे केरा ॥ (१०७४-१, मारू, मः ५)
साचा थानु सदा प्रभ तेरा ॥ (१०७४-१, मारू, मः ५)
सची कुदरति सची बाणी सचु साहिब सुखु कीजा हे ॥५॥ (१०७४-२, मारू, मः ५)
एको आपि तूहै वड राजा ॥ (१०७४-२, मारू, मः ५)
हुकमि सचे कै पूरे काजा ॥ (१०७४-३, मारू, मः ५)
अंतरि बाहरि सभु किछु जाणै आपे ही आपि पतीजा हे ॥६॥ (१०७४-३, मारू, मः ५)
तू वड रसीआ तू वड भोगी ॥ (१०७४-३, मारू, मः ५)
तू निरबाणु तूहै ही जोगी ॥ (१०७४-४, मारू, मः ५)
सर्ब सूख सहज घरि तेरै अमिउ तेरी द्रिसटीजा हे ॥७॥ (१०७४-४, मारू, मः ५)
तेरी दाति तुझै ते होवै ॥ (१०७४-५, मारू, मः ५)
देहि दानु सभसै जंत लोऐ ॥ (१०७४-५, मारू, मः ५)
तोटि न आवै पूर भंडारै त्रिपति रहे आघीजा हे ॥८॥ (१०७४-५, मारू, मः ५)
जाचहि सिध साधिक बनवासी ॥ (१०७४-६, मारू, मः ५)
जाचहि जती सती सुखवासी ॥ (१०७४-६, मारू, मः ५)
इकु दातारु सगल है जाचिक देहि दानु स्रिसटीजा हे ॥९॥ (१०७४-६, मारू, मः ५)
करहि भगति अरु रंग अपारा ॥ (१०७४-७, मारू, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ (१०७४-७, मारू, मः ५)

भारो तोलु बेअंत सुआमी हुकमु मंनि भगतीजा हे ॥१०॥ (१०७४-७, मारू, मः ५)
जिसु देहि दरसु सोई तुधु जाणै ॥ (१०७४-८, मारू, मः ५)
ओहु गुर कै सबदि सदा रंग माणै ॥ (१०७४-८, मारू, मः ५)
चतुरु सरूपु सिआणा सोई जो मनि तेरै भावीजा हे ॥११॥ (१०७४-९, मारू, मः ५)
जिसु चीति आवहि सो वेपरवाहा ॥ (१०७४-९, मारू, मः ५)
जिसु चीति आवहि सो साचा साहा ॥ (१०७४-१०, मारू, मः ५)
जिसु चीति आवहि तिसु भउ केहा अवरु कहा किछु कीजा हे ॥१२॥ (१०७४-१०, मारू, मः ५)
तृसना बूझी अंतरु ठंढा ॥ (१०७४-११, मारू, मः ५)
गुरि पूरै लै तूटा गंढा ॥ (१०७४-११, मारू, मः ५)
सुरति सबदु रिद अंतरि जागी अमिउ झोलि झोलि पीजा हे ॥१३॥ (१०७४-११, मारू, मः ५)
मरै नाही सद सद ही जीवै ॥ (१०७४-१२, मारू, मः ५)
अमरु भइआ अबिनासी थीवै ॥ (१०७४-१२, मारू, मः ५)
ना को आवै ना को जावै गुरि दूरि कीआ भरमीजा हे ॥१४॥ (१०७४-१२, मारू, मः ५)
पूरे गुर की पूरी बाणी ॥ (१०७४-१३, मारू, मः ५)
पूरै लागा पूरे माहि समाणी ॥ (१०७४-१३, मारू, मः ५)
चड़ै सवाइआ नित नित रंगा घटै नाही तोलीजा हे ॥१५॥ (१०७४-१४, मारू, मः ५)
बारहा कंचनु सुधु कराइआ ॥ (१०७४-१४, मारू, मः ५)
नदरि सराफ वंनी सचड़ाइआ ॥ (१०७४-१५, मारू, मः ५)
परखि खजानै पाइआ सराफी फिरि नाही ताईजा हे ॥१६॥ (१०७४-१५, मारू, मः ५)
अमृत नामु तुमारा सुआमी ॥ (१०७४-१६, मारू, मः ५)
नानक दास सदा कुरबानी ॥ (१०७४-१६, मारू, मः ५)
संतसंगि महा सुखु पाइआ देखि दरसनु इहु मनु भीजा हे ॥१७॥१॥३॥ (१०७४-१६, मारू, मः ५)
मारू महला ५ सोलहे (१०७४-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०७४-१८)
गुरु गोपालु गुरु गोविंदा ॥ (१०७४-१९, मारू, मः ५)
गुरु दइआलु सदा बखसिंदा ॥ (१०७४-१९, मारू, मः ५)
गुरु सासत सिमृति खटु करमा गुरु पवित्रु असथाना हे ॥१॥ (१०७४-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०७५

गुरु सिमरत सभि किलविख नासहि ॥ (१०७५-१, मारू, मः ५)
गुरु सिमरत जम संगि न फासहि ॥ (१०७५-१, मारू, मः ५)
गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे ॥२॥ (१०७५-१, मारू, मः ५)
गुर का सेवकु नरकि न जाए ॥ (१०७५-२, मारू, मः ५)
गुर का सेवकु पारब्रह्मु धिआए ॥ (१०७५-२, मारू, मः ५)
गुर का सेवकु साधसंगु पाए गुरु करदा नित जीअ दाना हे ॥३॥ (१०७५-३, मारू, मः ५)

गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ ॥ (१०७५-३, मारू, मः ५)
सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ ॥ (१०७५-४, मारू, मः ५)
कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै मानाँ हे ॥४॥ (१०७५-४, मारू, मः ५)
अगमु अगोचरु गुरू दिखाइआ ॥ (१०७५-५, मारू, मः ५)
भूला मारगि सतिगुरि पाइआ ॥ (१०७५-५, मारू, मः ५)
गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर दृड़्हाइआ गिआनाँ हे ॥५॥ (१०७५-५, मारू, मः ५)
गुरि दृसटाइआ सभनी ठाँई ॥ (१०७५-६, मारू, मः ५)
जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई ॥ (१०७५-६, मारू, मः ५)
ऊच ऊन सभ एक समानाँ मनि लागा सहजि धिआना हे ॥६॥ (१०७५-७, मारू, मः ५)
गुरि मिलिऐ सभ तृसन बुझाई ॥ (१०७५-७, मारू, मः ५)
गुरि मिलिऐ नह जोहै माई ॥ (१०७५-८, मारू, मः ५)
सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अमृतु पी पानाँ हे ॥७॥ (१०७५-८, मारू, मः ५)
गुर की बाणी सभ माहि समाणी ॥ (१०७५-९, मारू, मः ५)
आपि सुणी तै आपि वखाणी ॥ (१०७५-९, मारू, मः ५)
जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थानाँ हे ॥८॥ (१०७५-९, मारू, मः ५)
सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै ॥ (१०७५-१०, मारू, मः ५)
जो किछु करे सु आपण भाणै ॥ (१०७५-१०, मारू, मः ५)
साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानाँ हे ॥९॥१॥४॥ (१०७५-११, मारू, मः ५)
मारू सोलहे महला ५ (१०७५-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०७५-१२)
आदि निरंजनु प्रभु निरंकारा ॥ (१०७५-१३, मारू, मः ५)
सभ महि वरतै आपि निरारा ॥ (१०७५-१३, मारू, मः ५)
वरनु जाति चिहनु नही कोई सभ हुकमे सृसटि उपाइदा ॥१॥ (१०७५-१३, मारू, मः ५)
लख चउरासीह जोनि सबाई ॥ (१०७५-१४, मारू, मः ५)
माणस कउ प्रभि दीई वडिआई ॥ (१०७५-१४, मारू, मः ५)
इसु पउड़ी ते जो नरु चूकै सो आइ जाइ दुखु पाइदा ॥२॥ (१०७५-१५, मारू, मः ५)
कीता होवै तिसु किआ कहीऐ ॥ (१०७५-१५, मारू, मः ५)
गुरमुखि नामु पदारथु लहीऐ ॥ (१०७५-१५, मारू, मः ५)
जिसु आपि भुलाए सोई भूलै सो बूझै जिसहि बुझाइदा ॥३॥ (१०७५-१६, मारू, मः ५)
हरख सोग का नगरु इहु कीआ ॥ (१०७५-१६, मारू, मः ५)
से उबरे जो सतिगुर सरणीआ ॥ (१०७५-१७, मारू, मः ५)
तृहा गुणा ते रहै निरारा सो गुरमुखि सोभा पाइदा ॥४॥ (१०७५-१७, मारू, मः ५)
अनिक कर्म कीए बहुतेरे ॥ (१०७५-१८, मारू, मः ५)
जो कीजै सो बंधनु पैरे ॥ (१०७५-१८, मारू, मः ५)
कुरुता बीजु बीजे नही जम्मै सभु लाहा मूलु गवाइदा ॥५॥ (१०७५-१८, मारू, मः ५)

कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ (१०७५-१६, मारू, मः ५)
गुरमुखि जपीऐ लाइ धिआना ॥ (१०७५-१६, मारू, मः ५)

पन्ना १०७६

आपि तरै सगले कुल तारे हरि दरगह पति सिउ जाइदा ॥६॥ (१०७६-१, मारू, मः ५)
खंड पताल दीप सभि लोआ ॥ (१०७६-१, मारू, मः ५)
सभि कालै वसि आपि प्रभि कीआ ॥ (१०७६-१, मारू, मः ५)
निहचलु एकु आपि अबिनासी सो निहचलु जो तिसहि धिआइदा ॥७॥ (१०७६-२, मारू, मः ५)
हरि का सेवकु सो हरि जेहा ॥ (१०७६-३, मारू, मः ५)
भेदु न जाणहु माणस देहा ॥ (१०७६-३, मारू, मः ५)
जिउ जल तरंग उठहि बहु भाती फिरि सललै सलल समाइदा ॥८॥ (१०७६-३, मारू, मः ५)
इकु जाचिकु मंगै दानु दुआरै ॥ (१०७६-४, मारू, मः ५)
जा प्रभ भावै ता किरपा धारै ॥ (१०७६-४, मारू, मः ५)
देहु दरसु जितु मनु तृपतासै हरि कीरतनि मनु ठहराइदा ॥९॥ (१०७६-५, मारू, मः ५)
रूड़ो ठाकुरु कितै वसि न आवै ॥ (१०७६-५, मारू, मः ५)
हरि सो किछु करे जि हरि किआ संता भावै ॥ (१०७६-६, मारू, मः ५)
कीता लोड़नि सोई कराइनि दरि फेरु न कोई पाइदा ॥१०॥ (१०७६-६, मारू, मः ५)
जिथै अउघटु आइ बनतु है प्राणी ॥ (१०७६-७, मारू, मः ५)
तिथै हरि धिआईऐ सारिंगपाणी ॥ (१०७६-७, मारू, मः ५)
जिथै पुत्रु कलत्रु न बेली कोई तिथै हरि आपि छडाइदा ॥११॥ (१०७६-८, मारू, मः ५)
वडा साहिबु अगम अथाहा ॥ (१०७६-८, मारू, मः ५)
किउ मिलीऐ प्रभ वेपरवाहा ॥ (१०७६-९, मारू, मः ५)
काटि सिलक जिसु मारगि पाए सो विचि संगति वासा पाइदा ॥१२॥ (१०७६-९, मारू, मः ५)
हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥ (१०७६-१०, मारू, मः ५)
बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ॥ (१०७६-१०, मारू, मः ५)
हउमै जाइ त एको बूझै सो गुरमुखि सहजि समाइदा ॥१३॥ (१०७६-१०, मारू, मः ५)
हरि के भगत सदा सुखवासी ॥ (१०७६-११, मारू, मः ५)
बाल सुभाइ अतीत उदासी ॥ (१०७६-११, मारू, मः ५)
अनिक रंग करहि बहु भाती जिउ पिता पूतु लाडाइदा ॥१४॥ (१०७६-१२, मारू, मः ५)
अगम अगोचरु कीमति नही पाई ॥ (१०७६-१२, मारू, मः ५)
ता मिलीऐ जा लए मिलाई ॥ (१०७६-१३, मारू, मः ५)
गुरमुखि प्रगटु भइआ तिन जन कउ जिन धुरि मसतकि लेखु लिखाइदा ॥१५॥ (१०७६-१३, मारू, मः ५)
तू आपे करता कारण करणा ॥ (१०७६-१४, मारू, मः ५)
सृसटि उपाइ धरी सभ धरणा ॥ (१०७६-१४, मारू, मः ५)
जन नानकु सरणि पइआ हरि दुआरै हरि भावै लाज रखाइदा ॥१६॥१॥५॥ (१०७६-१४, मारू, मः ५)

मारू सोलहे महला ५ (१०७६-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०७६-१६)
जो दीसै सो एको तूहै ॥ (१०७६-१७, मारू, मः ५)
बाणी तेरी स्रवणि सुणीऐ ॥ (१०७६-१७, मारू, मः ५)
दूजी अवर न जापसि काई सगल तुमारी धारणा ॥१॥ (१०७६-१७, मारू, मः ५)
आपि चितारे अपणा कीआ ॥ (१०७६-१८, मारू, मः ५)
आपे आपि आपि प्रभु थीआ ॥ (१०७६-१८, मारू, मः ५)
आपि उपाइ रचिओनु पसारा आपे घटि घटि सारणा ॥२॥ (१०७६-१८, मारू, मः ५)
इकि उपाए वड दरवारी ॥ (१०७६-१९, मारू, मः ५)
इकि उदासी इकि घर बारी ॥ (१०७६-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०७७

इकि भूखे इकि तृपति अघाए सभसै तेरा पारणा ॥३॥ (१०७७-१, मारू, मः ५)
आपे सति सति सति साचा ॥ (१०७७-१, मारू, मः ५)
ओति पोति भगतन संगि राचा ॥ (१०७७-१, मारू, मः ५)
आपे गुपतु आपे है परगटु अपणा आपु पसारणा ॥४॥ (१०७७-२, मारू, मः ५)
सदा सदा सद होवणहारा ॥ (१०७७-२, मारू, मः ५)
ऊचा अगमु अथाहु अपारा ॥ (१०७७-३, मारू, मः ५)
ऊणे भरे भरे भरि ऊणे एहि चलत सुआमी के कारणा ॥५॥ (१०७७-३, मारू, मः ५)
मुखि सालाही सचे साहा ॥ (१०७७-३, मारू, मः ५)
नैणी पेखा अगम अथाहा ॥ (१०७७-४, मारू, मः ५)
करनी सुणि सुणि मनु तनु हरिआ मेरे साहिब सगल उधारणा ॥६॥ (१०७७-४, मारू, मः ५)
करि करि वेखहि कीता अपणा ॥ (१०७७-५, मारू, मः ५)
जीअ जंत सोई है जपणा ॥ (१०७७-५, मारू, मः ५)
अपणी कुदरति आपे जाणै नदरी नदरि निहालणा ॥७॥ (१०७७-५, मारू, मः ५)
संत सभा जह बैसहि प्रभ पासे ॥ (१०७७-६, मारू, मः ५)
अनंद मंगल हरि चलत तमासे ॥ (१०७७-६, मारू, मः ५)
गुण गावहि अनहद धुनि बाणी तह नानक दासु चितारणा ॥८॥ (१०७७-६, मारू, मः ५)
आवणु जाणा सभु चलतु तुमारा ॥ (१०७७-७, मारू, मः ५)
करि करि देखै खेलु अपारा ॥ (१०७७-७, मारू, मः ५)
आपि उपाए उपावणहारा अपणा कीआ पालणा ॥९॥ (१०७७-८, मारू, मः ५)
सुणि सुणि जीवा सोइ तुमारी ॥ (१०७७-८, मारू, मः ५)
सदा सदा जाई बलिहारी ॥ (१०७७-९, मारू, मः ५)
दुइ कर जोड़ि सिमरउ दिनु राती मेरे सुआमी अगम अपारणा ॥१०॥ (१०७७-९, मारू, मः ५)
तुधु बिनु दूजे किसु सालाही ॥ (१०७७-१०, मारू, मः ५)

एको एकु जपी मन माही ॥ (१०७७-१०, मारू, मः ५)
हुकमु बूझि जन भए निहाला इह भगता की घालणा ॥११॥ (१०७७-१०, मारू, मः ५)
गुर उपदेसि जपीऐ मनि साचा ॥ (१०७७-११, मारू, मः ५)
गुर उपदेसि राम रंगि राचा ॥ (१०७७-११, मारू, मः ५)
गुर उपदेसि तुटहि सभि बंधन इहु भरमु मोहु परजालणा ॥१२॥ (१०७७-११, मारू, मः ५)
जह राखै सोई सुख थाना ॥ (१०७७-१२, मारू, मः ५)
सहजे होइ सोई भल माना ॥ (१०७७-१२, मारू, मः ५)
बिनसे बैर नाही को बैरी सभु एको है भालणा ॥१३॥ (१०७७-१३, मारू, मः ५)
डर चूके बिनसे अंधिआरे ॥ (१०७७-१३, मारू, मः ५)
प्रगट भए प्रभ पुरख निरारे ॥ (१०७७-१४, मारू, मः ५)
आपु छोडि पए सरणाई जिस का सा तिसु घालणा ॥१४॥ (१०७७-१४, मारू, मः ५)
ऐसा को वडभागी आइआ ॥ (१०७७-१४, मारू, मः ५)
आठ पहर जिनि खसमु धिआइआ ॥ (१०७७-१५, मारू, मः ५)
तिसु जन कै संगि तरै सभु कोई सो परवार सधारणा ॥१५॥ (१०७७-१५, मारू, मः ५)
इह बखसीस खसम ते पावा ॥ (१०७७-१६, मारू, मः ५)
आठ पहर कर जोड़ि धिआवा ॥ (१०७७-१६, मारू, मः ५)
नामु जपी नामि सहजि समावा नामु नानक मिलै उचारणा ॥१६॥१॥६॥ (१०७७-१६, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०७७-१७)
सूरति देखि न भूलु गवारा ॥ (१०७७-१७, मारू, मः ५)
मिथन मोहारा झूठु पसारा ॥ (१०७७-१८, मारू, मः ५)
जग महि कोई रहणु न पाए निहचलु एकु नाराइणा ॥१॥ (१०७७-१८, मारू, मः ५)
गुर पूरे की पउ सरणाई ॥ (१०७७-१९, मारू, मः ५)
मोहु सोगु सभु भरमु मिटाई ॥ (१०७७-१९, मारू, मः ५)
एको मंत्रु दृड़ाए अउखधु सचु नामु रिद गाइणा ॥२॥ (१०७७-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०७८

जिसु नामै कउ तरसहि बहु देवा ॥ (१०७८-१, मारू, मः ५)
सगल भगत जा की करदे सेवा ॥ (१०७८-१, मारू, मः ५)
अनाथा नाथु दीन दुख भंजनु सो गुर पूरे ते पाइणा ॥३॥ (१०७८-१, मारू, मः ५)
होरु दुआरा कोइ न सूझै ॥ (१०७८-२, मारू, मः ५)
तृभवण धावै ता किछू न बूझै ॥ (१०७८-२, मारू, मः ५)
सतिगुरु साहु भंडारु नामु जिसु इहु रतनु तिसै ते पाइणा ॥४॥ (१०७८-३, मारू, मः ५)
जा की धूरि करे पुनीता ॥ (१०७८-३, मारू, मः ५)
सुरि नर देव न पावहि मीता ॥ (१०७८-३, मारू, मः ५)
सति पुरखु सतिगुरु परमेसरु जिसु भेटत पारि पराइणा ॥५॥ (१०७८-४, मारू, मः ५)

पारजातु लोड़हि मन पिआरे ॥ (१०७८-४, मारू, मः ५)
कामधेनु सोही दरबारे ॥ (१०७८-५, मारू, मः ५)
तृपति संतोखु सेवा गुर पूरे नामु कमाइ रसाइणा ॥६॥ (१०७८-५, मारू, मः ५)
गुर कै सबदि मरहि पंच धातू ॥ (१०७८-५, मारू, मः ५)
भै पारब्रह्म होवहि निरमला तू ॥ (१०७८-६, मारू, मः ५)
पारसु जब भेटै गुरु पूरा ता पारसु परसि दिखाइणा ॥७॥ (१०७८-६, मारू, मः ५)
कई बैकुंठ नाही लवै लागे ॥ (१०७८-७, मारू, मः ५)
मुकति बपुड़ी भी गिआनी तिआगे ॥ (१०७८-७, मारू, मः ५)
एकंकारु सतिगुर ते पाईऐ हउ बलि बलि गुर दरसाइणा ॥८॥ (१०७८-७, मारू, मः ५)
गुर की सेव न जाणै कोई ॥ (१०७८-८, मारू, मः ५)
गुरु पारब्रह्मु अगोचरु सोई ॥ (१०७८-८, मारू, मः ५)
जिस नो लाइ लए सो सेवकु जिसु वडभाग मथाइणा ॥९॥ (१०७८-९, मारू, मः ५)
गुर की महिमा बेद न जाणहि ॥ (१०७८-९, मारू, मः ५)
तुछ मात सुणि सुणि वखाणहि ॥ (१०७८-१०, मारू, मः ५)
पारब्रह्म अपरम्पर सतिगुर जिसु सिमरत मनु सीतलाइणा ॥१०॥ (१०७८-१०, मारू, मः ५)
जा की सोइ सुणी मनु जीवै ॥ (१०७८-११, मारू, मः ५)
रिदै वसै ता ठंढा थीवै ॥ (१०७८-११, मारू, मः ५)
गुरु मुखहु अलाए ता सोभा पाए तिसु जम कै पंथि न पाइणा ॥११॥ (१०७८-११, मारू, मः ५)
संतन की सरणाई पड़िआ ॥ (१०७८-१२, मारू, मः ५)
जीउ प्राण धनु आगै धरिआ ॥ (१०७८-१२, मारू, मः ५)
सेवा सुरति न जाणा काई तुम करहु दइआ किरमाइणा ॥१२॥ (१०७८-१२, मारू, मः ५)
निरगुण कउ संगि लेहु रलाए ॥ (१०७८-१३, मारू, मः ५)
करि किरपा मोहि टहलै लाए ॥ (१०७८-१३, मारू, मः ५)
पखा फेरउ पीसउ संत आगै चरण धोइ सुखु पाइणा ॥१३॥ (१०७८-१४, मारू, मः ५)
बहुतु दुआरे भ्रमि भ्रमि आइआ ॥ (१०७८-१४, मारू, मः ५)
तुमरी कृपा ते तुम सरणाइआ ॥ (१०७८-१५, मारू, मः ५)
सदा सदा संतह संगि राखहु एहु नाम दानु देवाइणा ॥१४॥ (१०७८-१५, मारू, मः ५)
भए कृपाल गुसाई मेरे ॥ (१०७८-१६, मारू, मः ५)
दरसनु पाइआ सतिगुर पूरे ॥ (१०७८-१६, मारू, मः ५)
सूख सहज सदा आनंदा नानक दास दसाइणा ॥१५॥२॥७॥ (१०७८-१६, मारू, मः ५)
मारू सोलहे महला ५ (१०७८-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०७८-१८)
सिमरै धरती अरु आकासा ॥ (१०७८-१९, मारू, मः ५)
सिमरहि चंद सूरज गुणतासा ॥ (१०७८-१९, मारू, मः ५)
पउण पाणी बैसंतर सिमरहि सिमरै सगल उपारजना ॥१॥ (१०७८-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०७६

सिमरहि खंड दीप सभि लोआ ॥ (१०७६-१, मारू, मः ५)
सिमरहि पाताल पुरीआ सचु सोआ ॥ (१०७६-१, मारू, मः ५)
सिमरहि खाणी सिमरहि बाणी सिमरहि सगले हरि जना ॥२॥ (१०७६-२, मारू, मः ५)
सिमरहि ब्रहमे बिसन महेसा ॥ (१०७६-२, मारू, मः ५)
सिमरहि देवते कोड़ि तेतीसा ॥ (१०७६-३, मारू, मः ५)
सिमरहि जख्यि दैत सभि सिमरहि अगनतु न जाई जसु गना ॥३॥ (१०७६-३, मारू, मः ५)
सिमरहि पसु पंखी सभि भूता ॥ (१०७६-४, मारू, मः ५)
सिमरहि बन पर्बत अउधूता ॥ (१०७६-४, मारू, मः ५)
लता बली साख सभ सिमरहि रवि रहिआ सुआमी सभ मना ॥४॥ (१०७६-४, मारू, मः ५)
सिमरहि थूल सूखम सभि जंता ॥ (१०७६-५, मारू, मः ५)
सिमरहि सिध साधिक हरि मंता ॥ (१०७६-५, मारू, मः ५)
गुप्त प्रगट सिमरहि प्रभ मेरे सगल भवन का प्रभ धना ॥५॥ (१०७६-६, मारू, मः ५)
सिमरहि नर नारी आसरमा ॥ (१०७६-६, मारू, मः ५)
सिमरहि जाति जोति सभि वरना ॥ (१०७६-६, मारू, मः ५)
सिमरहि गुणी चतुर सभि बेते सिमरहि रैणी अरु दिना ॥६॥ (१०७६-७, मारू, मः ५)
सिमरहि घड़ी मूरत पल निमखा ॥ (१०७६-७, मारू, मः ५)
सिमरै कालु अकालु सुचि सोचा ॥ (१०७६-८, मारू, मः ५)
सिमरहि सउण सासत्र संजोगा अलखु न लखीऐ इकु खिना ॥७॥ (१०७६-८, मारू, मः ५)
करन करावनहार सुआमी ॥ (१०७६-९, मारू, मः ५)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (१०७६-९, मारू, मः ५)
करि किरपा जिसु भगती लावहु जनमु पदारथु सो जिना ॥८॥ (१०७६-९, मारू, मः ५)
जा कै मनि वूठा प्रभु अपना ॥ (१०७६-१०, मारू, मः ५)
पूरै करमि गुर का जपु जपना ॥ (१०७६-१०, मारू, मः ५)
सर्ब निरंतरि सो प्रभु जाता बहुड़ि न जोनी भरमि रुना ॥९॥ (१०७६-११, मारू, मः ५)
गुर का सबदु वसै मनि जा कै ॥ (१०७६-११, मारू, मः ५)
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागै ॥ (१०७६-१२, मारू, मः ५)
सूख सहज आनंद नाम रसु अनहद बाणी सहज धुना ॥१०॥ (१०७६-१२, मारू, मः ५)
सो धनवंता जिनि प्रभु धिआइआ ॥ (१०७६-१३, मारू, मः ५)
सो पतिवंता जिनि साधसंगु पाइआ ॥ (१०७६-१३, मारू, मः ५)
पारब्रहमु जा कै मनि वूठा सो पूर करमा ना छिना ॥११॥ (१०७६-१३, मारू, मः ५)
जलि थलि महीअलि सुआमी सोई ॥ (१०७६-१४, मारू, मः ५)
अवरु न कहीऐ दूजा कोई ॥ (१०७६-१४, मारू, मः ५)
गुर गिआन अंजनि काटिओ भ्रमु सगला अवरु न दीसै एक बिना ॥१२॥ (१०७६-१५, मारू, मः ५)

ऊचे ते ऊचा दरबारा ॥ (१०७६-१५, मारू, मः ५)
कहणु न जाई अंतु न पारा ॥ (१०७६-१६, मारू, मः ५)
गहिर गम्भीर अथाह सुआमी अतुलु न जाई किआ मिना ॥१३॥ (१०७६-१६, मारू, मः ५)
तू करता तेरा सभु कीआ ॥ (१०७६-१६, मारू, मः ५)
तुझु बिनु अवरु न कोई बीआ ॥ (१०७६-१७, मारू, मः ५)
आदि मधि अंति प्रभु तूहै सगल पसारा तुम तना ॥१४॥ (१०७६-१७, मारू, मः ५)
जमदूतु तिसु निकटि न आवै ॥ (१०७६-१८, मारू, मः ५)
साधसंगि हरि कीरतनु गावै ॥ (१०७६-१८, मारू, मः ५)
सगल मनोरथ ता के पूरन जो स्रवणी प्रभ का जसु सुना ॥१५॥ (१०७६-१८, मारू, मः ५)
तू सभना का सभु को तेरा ॥ (१०७६-१९, मारू, मः ५)
साचे साहिब गहिर गम्भीरा ॥ (१०७६-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०८०

कहु नानक सेई जन ऊतम जो भावहि सुआमी तुम मना ॥१६॥१॥८॥ (१०८०-१, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०८०-१)
प्रभ समरथ सरब सुख दाना ॥ (१०८०-१, मारू, मः ५)
सिमरउ नामु होहु मिहरवाना ॥ (१०८०-२, मारू, मः ५)
हरि दाता जीअ जंत भेखारी जनु बाँछै जाचंगना ॥१॥ (१०८०-२, मारू, मः ५)
मागउ जन धूरि परम गति पावउ ॥ (१०८०-३, मारू, मः ५)
जनम जनम की मैलु मिटावउ ॥ (१०८०-३, मारू, मः ५)
दीरघ रोग मिटहि हरि अउखधि हरि निरमलि रापै मंगना ॥२॥ (१०८०-३, मारू, मः ५)
स्रवणी सुणउ बिमल जसु सुआमी ॥ (१०८०-४, मारू, मः ५)
एका ओट तजउ बिखु कामी ॥ (१०८०-४, मारू, मः ५)
निवि निवि पाइ लगउ दास तेरे करि सुकृतु नाही संगना ॥३॥ (१०८०-५, मारू, मः ५)
रसना गुण गावै हरि तेरे ॥ (१०८०-५, मारू, मः ५)
मिटहि कमाते अवगुण मेरे ॥ (१०८०-६, मारू, मः ५)
सिमरि सिमरि सुआमी मनु जीवै पंच दूत तजि तंगना ॥४॥ (१०८०-६, मारू, मः ५)
चरन कमल जपि बोहिथि चरीऐ ॥ (१०८०-७, मारू, मः ५)
संतसंगि मिलि सागरु तरीऐ ॥ (१०८०-७, मारू, मः ५)
अरचा बंदन हरि समत निवासी बाहुड़ि जोनि न नंगना ॥५॥ (१०८०-७, मारू, मः ५)
दास दासन को करि लेहु गोपाला ॥ (१०८०-८, मारू, मः ५)
कृपा निधान दीन दइआला ॥ (१०८०-८, मारू, मः ५)
सखा सहाई पूरन परमेसुर मिलु कदे न होवी भंगना ॥६॥ (१०८०-९, मारू, मः ५)
मनु तनु अरपि धरी हरि आगै ॥ (१०८०-९, मारू, मः ५)
जनम जनम का सोइआ जागै ॥ (१०८०-१०, मारू, मः ५)

जिस का सा सोई प्रतिपालकु हति तिआगी हउमै हंतना ॥७॥ (१०८०-१०, मारू, मः ५)
जलि थलि पूरन अंतरजामी ॥ (१०८०-११, मारू, मः ५)
घटि घटि रविआ अछल सुआमी ॥ (१०८०-११, मारू, मः ५)
भर्म भीति खोई गुरि पूरै एकु रविआ सरबंगना ॥८॥ (१०८०-११, मारू, मः ५)
जत कत पेखउ प्रभ सुख सागर ॥ (१०८०-१२, मारू, मः ५)
हरि तोटि भंडार नाही रतनागर ॥ (१०८०-१२, मारू, मः ५)
अगह अगाह किछु मिति नही पाईऐ सो बूझै जिसु किरपंगना ॥९॥ (१०८०-१३, मारू, मः ५)
छाती सीतल मनु तनु ठंढा ॥ (१०८०-१३, मारू, मः ५)
जनम मरण की मिटवी डंझा ॥ (१०८०-१४, मारू, मः ५)
करु गहि काढि लीए प्रभि अपुनै अमिओ धारि द्रिसटंगना ॥१०॥ (१०८०-१४, मारू, मः ५)
एको एकु रविआ सभ ठाई ॥ (१०८०-१५, मारू, मः ५)
तिसु बिनु दूजा कोई नाही ॥ (१०८०-१५, मारू, मः ५)
आदि मधि अंति प्रभु रविआ त्रिसन बुझी भरमंगना ॥११॥ (१०८०-१५, मारू, मः ५)
गुरु परमेसरु गुरु गोबिंदु ॥ (१०८०-१६, मारू, मः ५)
गुरु करता गुरु सद बखसंदु ॥ (१०८०-१६, मारू, मः ५)
गुर जपु जापि जपत फलु पाइआ गिआन दीपकु संत संगना ॥१२॥ (१०८०-१६, मारू, मः ५)
जो पेखा सो सभु किछु सुआमी ॥ (१०८०-१७, मारू, मः ५)
जो सुनणा सो प्रभ की बानी ॥ (१०८०-१७, मारू, मः ५)
जो कीनो सो तुमहि कराइओ सरणि सहाई संतह तना ॥१३॥ (१०८०-१८, मारू, मः ५)
जाचकु जाचै तुमहि अराधै ॥ (१०८०-१८, मारू, मः ५)
पतित पावन पूरन प्रभ साधै ॥ (१०८०-१९, मारू, मः ५)
एको दानु सर्ब सुख गुण निधि आन मंगन निहकिंचना ॥१४॥ (१०८०-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०८१

काइआ पात्रु प्रभु करणैहारा ॥ (१०८१-१, मारू, मः ५)
लगी लागि संत संगारा ॥ (१०८१-१, मारू, मः ५)
निर्मल सोइ बणी हरि बाणी मनु नामि मजीठै रंगना ॥१५॥ (१०८१-१, मारू, मः ५)
सोलह कला सम्पूरन फलिआ ॥ (१०८१-२, मारू, मः ५)
अनत कला होइ ठाकुरु चड़िआ ॥ (१०८१-२, मारू, मः ५)
अनद बिनोद हरि नामि सुख नानक अमृत रसु हरि भुंचना ॥१६॥२॥९॥ (१०८१-२, मारू, मः ५)
मारू सोलहे महला ५ (१०८१-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०८१-४)
तू साहिबु हउ सेवकु कीता ॥ (१०८१-५, मारू, मः ५)
जीउ पिंडु सभु तेरा दीता ॥ (१०८१-५, मारू, मः ५)
करन करावन सभु तूहै तूहै है नाही किछु असाड़ा ॥१॥ (१०८१-५, मारू, मः ५)

तुमहि पठाए ता जग महि आए ॥ (१०८१-६, मारू, मः ५)
जो तुधु भाणा से कर्म कमाए ॥ (१०८१-६, मारू, मः ५)
तुझ ते बाहरि किछू न होआ ता भी नाही किछु काड़ा ॥२॥ (१०८१-६, मारू, मः ५)
ऊहा हुकमु तुमारा सुणीऐ ॥ (१०८१-७, मारू, मः ५)
ईहा हरि जसु तेरा भणीऐ ॥ (१०८१-७, मारू, मः ५)
आपे लेख अलेखै आपे तुम सिउ नाही किछु झाड़ा ॥३॥ (१०८१-७, मारू, मः ५)
तू पिता सभि बारिक थारे ॥ (१०८१-८, मारू, मः ५)
जिउ खेलावहि तिउ खेलणहारे ॥ (१०८१-८, मारू, मः ५)
उझड़ मारगु सभु तुम ही कीना चलै नाही को वेपाड़ा ॥४॥ (१०८१-६, मारू, मः ५)
इकि बैसाइ रखे गृह अंतरि ॥ (१०८१-६, मारू, मः ५)
इकि पठाए देस दिसंतरि ॥ (१०८१-१०, मारू, मः ५)
इक ही कउ घासु इक ही कउ राजा इन महि कहीऐ किआ कूड़ा ॥५॥ (१०८१-१०, मारू, मः ५)
कवन सु मुकती कवन सु नरका ॥ (१०८१-११, मारू, मः ५)
कवनु सैसारी कवनु सु भगता ॥ (१०८१-११, मारू, मः ५)
कवन सु दाना कवनु सु होछा कवन सु सुरता कवनु जड़ा ॥६॥ (१०८१-११, मारू, मः ५)
हुकमे मुकती हुकमे नरका ॥ (१०८१-१२, मारू, मः ५)
हुकमि सैसारी हुकमे भगता ॥ (१०८१-१२, मारू, मः ५)
हुकमे होछा हुकमे दाना दूजा नाही अवरु धड़ा ॥७॥ (१०८१-१२, मारू, मः ५)
सागरु कीना अति तुम भारा ॥ (१०८१-१३, मारू, मः ५)
इकि खड़े रसातलि करि मनमुख गावारा ॥ (१०८१-१३, मारू, मः ५)
इकना पारि लंघावहि आपे सतिगुरु जिन का सचु बेड़ा ॥८॥ (१०८१-१४, मारू, मः ५)
कउतकु कालु इहु हुकमि पठाइआ ॥ (१०८१-१४, मारू, मः ५)
जीअ जंत ओपाइ समाइआ ॥ (१०८१-१५, मारू, मः ५)
वेखै विगसै सभि रंग माणे रचनु कीना इकु आखाड़ा ॥६॥ (१०८१-१५, मारू, मः ५)
वडा साहिबु वडी नाई ॥ (१०८१-१६, मारू, मः ५)
वड दातारु वडी जिसु जाई ॥ (१०८१-१६, मारू, मः ५)
अगम अगोचरु बेअंत अतोला है नाही किछु आहाड़ा ॥१०॥ (१०८१-१६, मारू, मः ५)
कीमति कोइ न जाणै दूजा ॥ (१०८१-१७, मारू, मः ५)
आपे आपि निरंजन पूजा ॥ (१०८१-१७, मारू, मः ५)
आपि सु गिआनी आपि धिआनी आपि सतवंता अति गाड़ा ॥११॥ (१०८१-१७, मारू, मः ५)
केतड़िआ दिन गुपतु कहाइआ ॥ (१०८१-१८, मारू, मः ५)
केतड़िआ दिन सुंनि समाइआ ॥ (१०८१-१८, मारू, मः ५)
केतड़िआ दिन धुंधूकारा आपे करता परगटड़ा ॥१२॥ (१०८१-१६, मारू, मः ५)
आपे सकती सबलु कहाइआ ॥ (१०८१-१६, मारू, मः ५)

आपे सूरा अमरु चलाइआ ॥ (१०८२-१, मारू, मः ५)
आपे सिव वरताईअनु अंतरि आपे सीतलु ठारु गड़ा ॥१३॥ (१०८२-१, मारू, मः ५)
जिसहि निवाजे गुरमुखि साजे ॥ (१०८२-२, मारू, मः ५)
नामु वसै तिसु अनहद वाजे ॥ (१०८२-२, मारू, मः ५)
तिस ही सुखु तिस ही ठकुराई तिसहि न आवै जमु नेड़ा ॥१४॥ (१०८२-२, मारू, मः ५)
कीमति कागद कही न जाई ॥ (१०८२-३, मारू, मः ५)
कहु नानक बेअंत गुसाई ॥ (१०८२-३, मारू, मः ५)
आदि मधि अंति प्रभु सोई हाथि तिसै कै नेबेड़ा ॥१५॥ (१०८२-३, मारू, मः ५)
तिसहि सरीकु नाही रे कोई ॥ (१०८२-४, मारू, मः ५)
किस ही बुतै जबाबु न होई ॥ (१०८२-४, मारू, मः ५)
नानक का प्रभु आपे आपे करि करि वेखै चोज खड़ा ॥१६॥१॥१०॥ (१०८२-५, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०८२-५)
अचुत पारब्रह्म परमेसुर अंतरजामी ॥ (१०८२-६, मारू, मः ५)
मधुसूदन दामोदर सुआमी ॥ (१०८२-६, मारू, मः ५)
रिखीकेस गोवरधन धारी मुरली मनोहर हरि रंगा ॥१॥ (१०८२-६, मारू, मः ५)
मोहन माधव कृस्न मुरारे ॥ (१०८२-७, मारू, मः ५)
जगदीसुर हरि जीउ असुर संघारे ॥ (१०८२-७, मारू, मः ५)
जगजीवन अबिनासी ठाकुर घट घट वासी है संगा ॥२॥ (१०८२-७, मारू, मः ५)
धरणीधर ईस नरसिंघ नाराइण ॥ (१०८२-८, मारू, मः ५)
दाड़ा अग्रे पृथमि धराइण ॥ (१०८२-८, मारू, मः ५)
बावन रूपु कीआ तुधु करते सभ ही सेती है चंगा ॥३॥ (१०८२-९, मारू, मः ५)
स्री रामचंद जिसु रूपु न रेखिआ ॥ (१०८२-९, मारू, मः ५)
बनवाली चक्रपाणि दरसि अनूपिआ ॥ (१०८२-१०, मारू, मः ५)
सहस नेत्र मूरति है सहसा इकु दाता सभ है मंगा ॥४॥ (१०८२-१०, मारू, मः ५)
भगति वछलु अनाथह नाथे ॥ (१०८२-११, मारू, मः ५)
गोपी नाथु सगल है साथे ॥ (१०८२-११, मारू, मः ५)
बासुदेव निरंजन दाते बरनि न साकउ गुण अंगा ॥५॥ (१०८२-११, मारू, मः ५)
मुकंद मनोहर लखमी नाराइण ॥ (१०८२-१२, मारू, मः ५)
द्रोपती लजा निवारि उधारण ॥ (१०८२-१२, मारू, मः ५)
कमलाकंत करहि कंतूहल अनद बिनोदी निहसंगा ॥६॥ (१०८२-१२, मारू, मः ५)
अमोघ दरसन आजूनी सम्भउ ॥ (१०८२-१३, मारू, मः ५)
अकाल मूरति जिसु कदे नाही खउ ॥ (१०८२-१३, मारू, मः ५)
अबिनासी अबिगत अगोचर सभु किछु तुझ ही है लगा ॥७॥ (१०८२-१४, मारू, मः ५)

स्रीरंग बैकुंठ के वासी ॥ (१०८२-१४, मारू, मः ५)
मछु कछु कूरमु आगिआ अउतरासी ॥ (१०८२-१५, मारू, मः ५)
केसव चलत करहि निराले कीता लोड़हि सो होइगा ॥८॥ (१०८२-१५, मारू, मः ५)
निराहारी निरवैरु समाइआ ॥ (१०८२-१६, मारू, मः ५)
धारि खेलु चतुरभुजु कहाइआ ॥ (१०८२-१६, मारू, मः ५)
सावल सुंदर रूप बणावहि बेणु सुनत सभ मोहैगा ॥९॥ (१०८२-१६, मारू, मः ५)
बनमाला बिभूखन कमल नैन ॥ (१०८२-१७, मारू, मः ५)
सुंदर कुंडल मुकट बैन ॥ (१०८२-१७, मारू, मः ५)
संख चक्र गदा है धारी महा सारथी सतसंगा ॥१०॥ (१०८२-१७, मारू, मः ५)
पीत पीतम्बर त्रिभवण धणी ॥ (१०८२-१८, मारू, मः ५)
जगन्नाथु गोपालु मुखि भणी ॥ (१०८२-१८, मारू, मः ५)
सारिंगधर भगवान बीठुला मै गणत न आवै सरबंगा ॥११॥ (१०८२-१८, मारू, मः ५)
निहकंटकु निहकेवलु कहीऐ ॥ (१०८२-१९, मारू, मः ५)
धनंजै जलि थलि है महीऐ ॥ (१०८२-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०८३

मिरत लोक पइआल समीपत असथिर थानु जिसु है अभगा ॥१२॥ (१०८३-१, मारू, मः ५)
पतित पावन दुख भै भंजनु ॥ (१०८३-१, मारू, मः ५)
अहंकार निवारणु है भव खंडनु ॥ (१०८३-२, मारू, मः ५)
भगती तोखित दीन क्रिपाला गुणे न कित ही है भिगा ॥१३॥ (१०८३-२, मारू, मः ५)
निरंकारु अछल अडोलो ॥ (१०८३-३, मारू, मः ५)
जोति सरूपी सभु जगु मउलो ॥ (१०८३-३, मारू, मः ५)
सो मिलै जिसु आपि मिलाए आपहु कोइ न पावैगा ॥१४॥ (१०८३-३, मारू, मः ५)
आपे गोपी आपे काना ॥ (१०८३-४, मारू, मः ५)
आपे गऊ चरावै बाना ॥ (१०८३-४, मारू, मः ५)
आपि उपावहि आपि खपावहि तुधु लेपु नही इकु तिलु रंगा ॥१५॥ (१०८३-४, मारू, मः ५)
एक जीह गुण कवन बखानै ॥ (१०८३-५, मारू, मः ५)
सहस फनी सेख अंतु न जानै ॥ (१०८३-५, मारू, मः ५)
नवतन नाम जपै दिनु राती इकु गुणु नाही प्रभ कहि संगा ॥१६॥ (१०८३-६, मारू, मः ५)
ओट गही जगत पित सरणाइआ ॥ (१०८३-६, मारू, मः ५)
भै भइआनक जमदूत दुतर है माइआ ॥ (१०८३-७, मारू, मः ५)
होहु क्रिपाल इछा करि राखहु साध संतन कै संगि संगा ॥१७॥ (१०८३-७, मारू, मः ५)
द्रिसटिमान है सगल मिथेना ॥ (१०८३-८, मारू, मः ५)
इकु मागउ दानु गोबिद संत रेना ॥ (१०८३-८, मारू, मः ५)
मसतकि लाइ परम पदु पावउ जिसु प्रापति सो पावैगा ॥१८॥ (१०८३-८, मारू, मः ५)

जिन कउ कृपा करी सुखदाते ॥ (१०८३-९, मारू, मः ५)
तिन साधू चरण लै रिदै पराते ॥ (१०८३-९, मारू, मः ५)
सगल नाम निधानु तिन पाइआ अनहद सबद मनि वाजंगा ॥१९॥ (१०८३-१०, मारू, मः ५)
किरतम नाम कथे तेरे जिहबा ॥ (१०८३-१०, मारू, मः ५)
सति नामु तेरा परा पूरबला ॥ (१०८३-११, मारू, मः ५)
कहु नानक भगत पए सरणाई देहु दरसु मनि रंगु लगा ॥२०॥ (१०८३-११, मारू, मः ५)
तेरी गति मिति तूहै जाणहि ॥ (१०८३-१२, मारू, मः ५)
तू आपे कथहि तै आपि वखाणहि ॥ (१०८३-१२, मारू, मः ५)
नानक दासु दासन को करीअहु हरि भावै दासा राखु संगा ॥२१॥२॥११॥ (१०८३-१२, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०८३-१३)
अलह अगम खुदाई बंदे ॥ (१०८३-१३, मारू, मः ५)
छोडि खिआल दुनीआ के धंधे ॥ (१०८३-१४, मारू, मः ५)
होइ पै खाक फकीर मुसाफरु इहु दरवेसु कबूलु दरा ॥१॥ (१०८३-१४, मारू, मः ५)
सचु निवाज यकीन मुसला ॥ (१०८३-१४, मारू, मः ५)
मनसा मारि निवारिहु आसा ॥ (१०८३-१५, मारू, मः ५)
देह मसीति मनु मउलाणा कलम खुदाई पाकु खरा ॥२॥ (१०८३-१५, मारू, मः ५)
सरा सरीअति ले कम्मावहु ॥ (१०८३-१६, मारू, मः ५)
तरीकति तरक खोजि टोलावहु ॥ (१०८३-१६, मारू, मः ५)
मारफति मनु मारहु अबदाला मिलहु हकीकति जितु फिरि न मरा ॥३॥ (१०८३-१६, मारू, मः ५)
कुराणु कतेब दिल माहि कमाही ॥ (१०८३-१७, मारू, मः ५)
दस अउरात रखहु बद राही ॥ (१०८३-१७, मारू, मः ५)
पंच मरद सिदकि ले बाधहु खैरि सबूरी कबूल परा ॥४॥ (१०८३-१८, मारू, मः ५)
मका मिहर रोजा पै खाका ॥ (१०८३-१८, मारू, मः ५)
भिसतु पीर लफज कमाइ अंदाजा ॥ (१०८३-१९, मारू, मः ५)
हूर नूर मुसकु खुदाइआ बंदगी अलह आला हुजरा ॥५॥ (१०८३-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०८४

सचु कमावै सोई काजी ॥ (१०८४-१, मारू, मः ५)
जो दिलु सोधै सोई हाजी ॥ (१०८४-१, मारू, मः ५)
सो मुला मलऊन निवारै सो दरवेसु जिसु सिफति धरा ॥६॥ (१०८४-१, मारू, मः ५)
सभे वखत सभे करि वेला ॥ (१०८४-२, मारू, मः ५)
खालकु यादि दिलै महि मउला ॥ (१०८४-२, मारू, मः ५)
तसबी यादि करहु दस मरदनु सुन्नति सीलु बंधानि बरा ॥७॥ (१०८४-२, मारू, मः ५)
दिल महि जानहु सभ फिलहाला ॥ (१०८४-३, मारू, मः ५)
खिलखाना बिरादर हमू जंजाला ॥ (१०८४-३, मारू, मः ५)

मीर मलक उमरे फानाइआ एक मुकाम खुदाइ दरा ॥८॥ (१०८४-४, मारू, मः ५)
अवलि सिफति दूजी साबूरी ॥ (१०८४-४, मारू, मः ५)
तीजै हलेमी चउथै खैरी ॥ (१०८४-५, मारू, मः ५)
पंजवै पंजे इकतु मुकामै एहि पंजि वखत तेरे अपरपरा ॥९॥ (१०८४-५, मारू, मः ५)
सगली जानि करहु मउदीफा ॥ (१०८४-६, मारू, मः ५)
बद अमल छोडि करहु हथि कूजा ॥ (१०८४-६, मारू, मः ५)
खुदाइ एकु बुझि देवहु बाँगाँ बुरगू बरखुरदार खरा ॥१०॥ (१०८४-६, मारू, मः ५)
हकु हलालु बखोरहु खाणा ॥ (१०८४-७, मारू, मः ५)
दिल दरीआउ धोवहु मैलाणा ॥ (१०८४-७, मारू, मः ५)
पीरु पछाणै भिसती सोई अजराईलु न दोज ठरा ॥११॥ (१०८४-७, मारू, मः ५)
काइआ किरदार अउरत यकीना ॥ (१०८४-८, मारू, मः ५)
रंग तमासे माणि हकीना ॥ (१०८४-८, मारू, मः ५)
नापाक पाकु करि हदूरि हदीसा साबत सूरति दसतार सिरा ॥१२॥ (१०८४-९, मारू, मः ५)
मुसलमाणु मोम दिलि होवै ॥ (१०८४-९, मारू, मः ५)
अंतर की मलु दिल ते धोवै ॥ (१०८४-१०, मारू, मः ५)
दुनीआ रंग न आवै नेड़ै जिउ कुसम पाटु घिउ पाकु हरा ॥१३॥ (१०८४-१०, मारू, मः ५)
जा कउ मिहर मिहर मिहरवाना ॥ (१०८४-११, मारू, मः ५)
सोई मरदु मरदु मरदाना ॥ (१०८४-११, मारू, मः ५)
सोई सेखु मसाइकु हाजी सो बंदा जिसु नजरि नरा ॥१४॥ (१०८४-११, मारू, मः ५)
कुदरति कादर करण करीमा ॥ (१०८४-१२, मारू, मः ५)
सिफति मुहबति अथाह रहीमा ॥ (१०८४-१२, मारू, मः ५)
हकु हुकमु सचु खुदाइआ बुझि नानक बंदि खलास तरा ॥१५॥३॥१२॥ (१०८४-१३, मारू, मः ५)
मारू महला ५ ॥ (१०८४-१३)
पारब्रह्म सभ ऊच बिराजे ॥ (१०८४-१४, मारू, मः ५)
आपे थापि उथापे साजे ॥ (१०८४-१४, मारू, मः ५)
प्रभ की सरणि गहत सुखु पाईऐ किछु भउ न विआपै बाल का ॥१॥ (१०८४-१४, मारू, मः ५)
गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ (१०८४-१५, मारू, मः ५)
रक्त किर्म महि नही संघारिआ ॥ (१०८४-१५, मारू, मः ५)
अपना सिमरनु दे प्रतिपालिआ ओहु सगल घटा का मालका ॥२॥ (१०८४-१६, मारू, मः ५)
चरण कमल सरणाई आइआ ॥ (१०८४-१६, मारू, मः ५)
साधसंगि है हरि जसु गाइआ ॥ (१०८४-१७, मारू, मः ५)
जनम मरण सभि दूख निवारे जपि हरि हरि भउ नही काल का ॥३॥ (१०८४-१७, मारू, मः ५)
समरथ अकथ अगोचर देवा ॥ (१०८४-१८, मारू, मः ५)
जीअ जंत सभि ता की सेवा ॥ (१०८४-१८, मारू, मः ५)
अंडज जेरज सेतज उतभुज बहु परकारी पालका ॥४॥ (१०८४-१८, मारू, मः ५)

तिसहि परापति होइ निधाना ॥ (१०८४-१९, मारू, मः ५)
राम नाम रसु अंतरि माना ॥ (१०८४-१९, मारू, मः ५)
करु गहि लीने अंध कूप ते विरले केई सालका ॥५॥ (१०८४-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०८५

आदि अंति मधि प्रभु सोई ॥ (१०८५-१, मारू, मः ५)
आपे करता करे सु होई ॥ (१०८५-१, मारू, मः ५)
भ्रमु भउ मिटिआ साधसंग ते दालिद न कोई घालका ॥६॥ (१०८५-१, मारू, मः ५)
ऊतम बाणी गाउ गोपाला ॥ (१०८५-२, मारू, मः ५)
साधसंगति की मंगहु रवाला ॥ (१०८५-२, मारू, मः ५)
बासन मेटि निबासन होईऐ कलमल सगले जालका ॥७॥ (१०८५-३, मारू, मः ५)
संता की इह रीति निराली ॥ (१०८५-३, मारू, मः ५)
पारब्रह्मु करि देखहि नाली ॥ (१०८५-४, मारू, मः ५)
सासि सासि आराधनि हरि हरि किउ सिमरत कीजै आलका ॥८॥ (१०८५-४, मारू, मः ५)
जह देखा तह अंतरजामी ॥ (१०८५-५, मारू, मः ५)
निमख न विसरहु प्रभ मेरे सुआमी ॥ (१०८५-५, मारू, मः ५)
सिमरि सिमरि जीवहि तेरे दासा बनि जलि पूरन थालका ॥९॥ (१०८५-५, मारू, मः ५)
तती वाउ न ता कउ लागै ॥ (१०८५-६, मारू, मः ५)
सिमरत नामु अनदिनु जागै ॥ (१०८५-६, मारू, मः ५)
अनद बिनोद करे हरि सिमरनु तिसु माइआ संगि न तालका ॥१०॥ (१०८५-७, मारू, मः ५)
रोग सोग दूख तिसु नाही ॥ (१०८५-७, मारू, मः ५)
साधसंगि हरि कीरतनु गाही ॥ (१०८५-८, मारू, मः ५)
आपणा नामु देहि प्रभ प्रीतम सुणि बेनंती खालका ॥११॥ (१०८५-८, मारू, मः ५)
नाम रतनु तेरा है पिआरे ॥ (१०८५-८, मारू, मः ५)
रंगि रते तेरै दास अपारे ॥ (१०८५-९, मारू, मः ५)
तेरै रंगि रते तुधु जेहे विरले केई भालका ॥१२॥ (१०८५-९, मारू, मः ५)
तिन की धूड़ि माँगै मनु मेरा ॥ (१०८५-१०, मारू, मः ५)
जिन विसरहि नाही काहू बेरा ॥ (१०८५-१०, मारू, मः ५)
तिन कै संगि पर्म पदु पाई सदा संगी हरि नालका ॥१३॥ (१०८५-१०, मारू, मः ५)
साजनु मीतु पिआरा सोई ॥ (१०८५-११, मारू, मः ५)
एकु दृड़ाए दुरमति खोई ॥ (१०८५-११, मारू, मः ५)
कामु क्रोधु अहंकारु तजाए तिसु जन कउ उपदेसु निरमालका ॥१४॥ (१०८५-१२, मारू, मः ५)
तुधु विणु नाही कोई मेरा ॥ (१०८५-१२, मारू, मः ५)
गुरि पकड़ाए प्रभ के पैरा ॥ (१०८५-१३, मारू, मः ५)
हउ बलिहारी सतिगुर पूरे जिनि खंडिआ भरमु अनालका ॥१५॥ (१०८५-१३, मारू, मः ५)

सासि सासि प्रभु बिसरै नाही ॥ (१०८५-१४, मारू, मः ५)
आठ पहर हरि हरि कउ धिआई ॥ (१०८५-१४, मारू, मः ५)
नानक संत तेरै रंगि राते तू समरथु वडालका ॥१६॥४॥१३॥ (१०८५-१४, मारू, मः ५)
मारू महला ५ (१०८५-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०८५-१६)
चरन कमल हिरदै नित धारी ॥ (१०८५-१७, मारू, मः ५)
गुरु पूरा खिनु खिनु नमसकारी ॥ (१०८५-१७, मारू, मः ५)
तनु मनु अरपि धरी सभु आगै जग महि नामु सुहावणा ॥१॥ (१०८५-१७, मारू, मः ५)
सो ठाकुरु किउ मनहु विसारे ॥ (१०८५-१८, मारू, मः ५)
जीउ पिंडु दे साजि सवारे ॥ (१०८५-१८, मारू, मः ५)
सासि गरासि समाले करता कीता अपणा पावणा ॥२॥ (१०८५-१८, मारू, मः ५)
जा ते बिरथा कोऊ नाही ॥ (१०८५-१९, मारू, मः ५)
आठ पहर हरि रखु मन माही ॥ (१०८५-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०८६

साधसंगि भजु अचुत सुआमी दरगह सोभा पावणा ॥३॥ (१०८६-१, मारू, मः ५)
चारि पदार्थ असट दसा सिधि ॥ (१०८६-१, मारू, मः ५)
नामु निधानु सहज सुख नउ निधि ॥ (१०८६-१, मारू, मः ५)
सर्ब कलिआण जे मन महि चाहहि मिलि साधू सुआमी रावणा ॥४॥ (१०८६-२, मारू, मः ५)
सासत सिम्रिति बेद वखाणी ॥ (१०८६-३, मारू, मः ५)
जनमु पदारथु जीतु पराणी ॥ (१०८६-३, मारू, मः ५)
कामु क्रोधु निंदा परहरीऐ हरि रसना नानक गावणा ॥५॥ (१०८६-३, मारू, मः ५)
जिसु रूपु न रेखिआ कुलु नही जाती ॥ (१०८६-४, मारू, मः ५)
पूरन पूरि रहिआ दिनु राती ॥ (१०८६-४, मारू, मः ५)
जो जो जपै सोई वडभागी बहुड़ि न जोनी पावणा ॥६॥ (१०८६-४, मारू, मः ५)
जिस नो बिसरै पुरखु बिधाता ॥ (१०८६-५, मारू, मः ५)
जलता फिरै रहै नित ताता ॥ (१०८६-५, मारू, मः ५)
अकिरतघणै कउ रखै न कोई नरक घोर महि पावणा ॥७॥ (१०८६-६, मारू, मः ५)
जीउ प्राण तनु धनु जिनि साजिआ ॥ (१०८६-६, मारू, मः ५)
मात गरभ महि राखि निवाजिआ ॥ (१०८६-७, मारू, मः ५)
तिस सिउ प्रीति छाडि अन राता काहू सिरै न लावणा ॥८॥ (१०८६-७, मारू, मः ५)
धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे ॥ (१०८६-८, मारू, मः ५)
घटि घटि वसहि सभन कै नेरे ॥ (१०८६-८, मारू, मः ५)
हाथि हमारै कछूऐ नाही जिसु जणाइहि तिसै जणावणा ॥९॥ (१०८६-८, मारू, मः ५)
जा कै मसतकि धुरि लिखि पाइआ ॥ (१०८६-९, मारू, मः ५)

तिस ही पुरख न विआपै माइआ ॥ (१०८६-९, मारू, मः ५)
नानक दास सदा सरणाई दूसर लवै न लावणा ॥१०॥ (१०८६-१०, मारू, मः ५)
आगिआ दूख सूख सभि कीने ॥ (१०८६-१०, मारू, मः ५)
अमृत नामु बिरलै ही चीने ॥ (१०८६-११, मारू, मः ५)
ता की कीमति कहणु न जाई जत कत ओही समावणा ॥११॥ (१०८६-११, मारू, मः ५)
सोई भगतु सोई वड दाता ॥ (१०८६-१२, मारू, मः ५)
सोई पूरन पुरखु बिधाता ॥ (१०८६-१२, मारू, मः ५)
बाल सहाई सोई तेरा जो तेरै मनि भावणा ॥१२॥ (१०८६-१२, मारू, मः ५)
मिरतु दूख सूख लिखि पाए ॥ (१०८६-१३, मारू, मः ५)
तिलु नही बधहि घटहि न घटाए ॥ (१०८६-१३, मारू, मः ५)
सोई होइ जि करते भावै कहि कै आपु वञावणा ॥१३॥ (१०८६-१३, मारू, मः ५)
अंध कूप ते सेई काढे ॥ (१०८६-१४, मारू, मः ५)
जनम जनम के टूटे गाँढे ॥ (१०८६-१४, मारू, मः ५)
किरपा धारि रखे करि अपुने मिलि साधू गोबिंदु धिआवणा ॥१४॥ (१०८६-१५, मारू, मः ५)
तेरी कीमति कहणु न जाई ॥ (१०८६-१५, मारू, मः ५)
अचरज रूपु वडी वडिआई ॥ (१०८६-१६, मारू, मः ५)
भगति दानु मंगै जनु तेरा नानक बलि बलि जावणा ॥१५॥१॥१४॥२२॥२४॥२॥१४॥६२॥ (१०८६-१६, मारू, मः ५)
मारू वार महला ३ (१०८६-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०८६-१८)
सलोकु मः १ ॥ (१०८६-१८)
विणु गाहक गुणु वेचीऐ तउ गुणु सहघो जाइ ॥ (१०८६-१९, मारू, मः १)
गुण का गाहकु जे मिलै तउ गुणु लाख विकाइ ॥ (१०८६-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०८७

गुण ते गुण मिलि पाईऐ जे सतिगुर माहि समाइ ॥ (१०८७-१, मारू, मः १)
मोलि अमोलु न पाईऐ वणजि न लीजै हाटि ॥ (१०८७-१, मारू, मः १)
नानक पूरा तोलु है कबहु न होवै घाटि ॥१॥ (१०८७-२, मारू, मः १)
मः ४ ॥ (१०८७-२)
नाम विहूणे भरमसहि आवहि जावहि नीत ॥ (१०८७-२, मारू, मः ४)
इकि बाँधे इकि ढीलिआ इकि सुखीए हरि प्रीति ॥ (१०८७-३, मारू, मः ४)
नानक सचा मंनि लै सचु करणी सचु रीति ॥२॥ (१०८७-३, मारू, मः ४)
पउड़ी ॥ (१०८७-४)
गुर ते गिआनु पाइआ अति खड़गु करारा ॥ (१०८७-४, मारू, मः ४)
दूजा भ्रमु गड़ु कटिआ मोहु लोभु अहंकारा ॥ (१०८७-४, मारू, मः ४)

हरि का नामु मनि वसिआ गुर सबदि वीचारा ॥ (१०८७-५, मारू, मः ४)
सच संजमि मति ऊतमा हरि लगा पिआरा ॥ (१०८७-५, मारू, मः ४)
सभु सचो सचु वरतदा सचु सिरजणहारा ॥१॥ (१०८७-५, मारू, मः ४)
सलोकु मः ३ ॥ (१०८७-६)
केदारा रागा विचि जाणीऐ भाई सबदे करे पिआरु ॥ (१०८७-६, मारू, मः ३)
सतसंगति सिउ मिलदो रहै सचे धरे पिआरु ॥ (१०८७-७, मारू, मः ३)
विचहु मलु कटे आपणी कुला का करे उधारु ॥ (१०८७-७, मारू, मः ३)
गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥ (१०८७-८, मारू, मः ३)
नानक मिलिआ सो जाणीऐ गुरू न छोडै आपणा दूजै न धरे पिआरु ॥१॥ (१०८७-८, मारू, मः ३)
मः ४ ॥ (१०८७-९)
सागरु देखउ डरि मरउ भै तेरै डरु नाहि ॥ (१०८७-९, मारू, मः ४)
गुर कै सबदि संतोखीआ नानक बिगसा नाइ ॥२॥ (१०८७-९, मारू, मः ४)
मः ४ ॥ (१०८७-१०)
चड़ि बोहिथै चालसउ सागरु लहरी देइ ॥ (१०८७-१०, मारू, मः ४)
ठाक न सचै बोहिथै जे गुरु धीरक देइ ॥ (१०८७-१०, मारू, मः ४)
तितु दरि जाइ उतारीआ गुरु दिसै सावधानु ॥ (१०८७-११, मारू, मः ४)
नानक नदरी पाईऐ दरगह चलै मानु ॥३॥ (१०८७-११, मारू, मः ४)
पउड़ी ॥ (१०८७-१२)
निहकंटक राजु भुंचि तू गुरमुखि सचु कमाई ॥ (१०८७-१२, मारू, मः ४)
सचै तखति बैठा निआउ करि सतसंगति मेलि मिलाई ॥ (१०८७-१२, मारू, मः ४)
सचा उपदेसु हरि जापणा हरि सिउ बणि आई ॥ (१०८७-१३, मारू, मः ४)
ऐथै सुखदाता मनि वसै अंति होइ सखाई ॥ (१०८७-१३, मारू, मः ४)
हरि सिउ प्रीति ऊपजी गुरि सोझी पाई ॥२॥ (१०८७-१४, मारू, मः ४)
सलोकु मः १ ॥ (१०८७-१४)
भूली भूली मै फिरी पाधरु कहै न कोइ ॥ (१०८७-१४, मारू, मः १)
पूछहु जाइ सिआणिआ दुखु काटै मेरा कोइ ॥ (१०८७-१५, मारू, मः १)
सतिगुरु साचा मनि वसै साजनु उत ही ठाइ ॥ (१०८७-१५, मारू, मः १)
नानक मनु तृपतासीऐ सिफती साचै नाइ ॥१॥ (१०८७-१६, मारू, मः १)
मः ३ ॥ (१०८७-१६)
आपे करणी कार आपि आपे करे रजाइ ॥ (१०८७-१६, मारू, मः ३)
आपे किस ही बखसि लए आपे कार कमाइ ॥ (१०८७-१७, मारू, मः ३)
नानक चानणु गुर मिले दुख बिखु जाली नाइ ॥२॥ (१०८७-१७, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०८७-१८)
माइआ वेखि न भुलु तू मनमुख मूरखा ॥ (१०८७-१८, मारू, मः ३)
चलदिआ नालि न चलई सभु झूठु दरबु लखा ॥ (१०८७-१८, मारू, मः ३)

अगिआनी अंधु न बूझई सिर ऊपरि जम खड़गु कलखा ॥ (१०८७-१६, मारू, मः ३)
गुर परसादी उबरे जिन हरि रसु चखा ॥ (१०८७-१६, मारू, मः ३)

पन्ना १०८८

आपि कराए करे आपि आपे हरि रखा ॥३॥ (१०८८-१, मारू, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (१०८८-१)
जिना गुरु नही भेटिआ भै की नाही बिंद ॥ (१०८८-१, मारू, मः ३)
आवणु जावणु दुखु घणा कदे न चूकै चिंद ॥ (१०८८-२, मारू, मः ३)
कापड़ जिवै पछोड़ीऐ घड़ी मुहत घड़ीआलु ॥ (१०८८-२, मारू, मः ३)
नानक सचे नाम बिनु सिरहु न चुकै जंजालु ॥१॥ (१०८८-३, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०८८-३)
तृभवण ढूढी सजणा हउमै बुरी जगति ॥ (१०८८-३, मारू, मः ३)
ना झुरु हीअड़े सचु चउ नानक सचो सचु ॥२॥ (१०८८-४, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०८८-४)
गुरमुखि आपे बखसिओनु हरि नामि समाणे ॥ (१०८८-४, मारू, मः ३)
आपे भगती लाइओनु गुर सबदि नीसाणे ॥ (१०८८-५, मारू, मः ३)
सनमुख सदा सोहणे सचै दरि जाणे ॥ (१०८८-५, मारू, मः ३)
ऐथै ओथै मुकति है जिन राम पछाणे ॥ (१०८८-६, मारू, मः ३)
धन्नु धन्नु से जन जिन हरि सेविआ तिन हउ कुरबाणे ॥४॥ (१०८८-६, मारू, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (१०८८-७)
महल कुचजी मड़वड़ी काली मनहु कसुध ॥ (१०८८-७, मारू, मः १)
जे गुण होवनि ता पिरु रवै नानक अवगुण मुंध ॥१॥ (१०८८-७, मारू, मः १)
मः १ ॥ (१०८८-८)
साचु सील सचु संजमी सा पूरी परवारि ॥ (१०८८-८, मारू, मः १)
नानक अहिनिसि सदा भली पिर कै हेति पिआरि ॥२॥ (१०८८-८, मारू, मः १)
पउड़ी ॥ (१०८८-९)
आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ ॥ (१०८८-९, मारू, मः १)
किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ ॥ (१०८८-१०, मारू, मः १)
गुर की बाणी निरमली हरि रसु पीआइआ ॥ (१०८८-१०, मारू, मः १)
हरि रसु जिनी चाखिआ अन रस ठाकि रहाइआ ॥ (१०८८-११, मारू, मः १)
हरि रसु पी सदा तृपति भए फिरि तृसना भुख गवाइआ ॥५॥ (१०८८-११, मारू, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (१०८८-१२)
पिर खुसीए धन रावीए धन उरि नामु सीगारु ॥ (१०८८-१२, मारू, मः ३)
नानक धन आगै खड़ी सोभावंती नारि ॥१॥ (१०८८-१२, मारू, मः ३)
मः १ ॥ (१०८८-१३)

ससुरै पेईऐ कंत की कंतु अगम्मु अथाहु ॥ (१०८८-१३, मारू, मः १)
नानक धन्नु सोहागणी जो भावहि वेपरवाह ॥२॥ (१०८८-१३, मारू, मः १)
पउड़ी ॥ (१०८८-१४)
तखति राजा सो बहै जि तखतै लाइक होई ॥ (१०८८-१४, मारू, मः १)
जिनी सचु पछाणिआ सचु राजे सेई ॥ (१०८८-१४, मारू, मः १)
एहि भूपति राजे न आखीअहि दूजै भाइ दुखु होई ॥ (१०८८-१५, मारू, मः १)
कीता किआ सालाहीऐ जिसु जादे बिलम न होई ॥ (१०८८-१५, मारू, मः १)
निहचलु सचा एकु है गुरमुखि बूझै सु निहचलु होई ॥६॥ (१०८८-१६, मारू, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (१०८८-१७)
सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ (१०८८-१७, मारू, मः ३)
नानक से सोहागणी जि सतिगुर माहि समाहि ॥१॥ (१०८८-१७, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०८८-१८)
मन के अधिक तरंग किउ दरि साहिब छुटीऐ ॥ (१०८८-१८, मारू, मः ३)
जे राचै सच रंगि गूड़ै रंगि अपार कै ॥ (१०८८-१८, मारू, मः ३)
नानक गुर परसादी छुटीऐ जे चितु लगै सचि ॥२॥ (१०८८-१९, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०८८-१९)
हरि का नामु अमोलु है किउ कीमति कीजै ॥ (१०८८-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०८९

आपे सृसटि सभ साजीअनु आपे वरतीजै ॥ (१०८९-१, मारू, मः ३)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सचु कीमति कीजै ॥ (१०८९-१, मारू, मः ३)
गुर सबदी कमलु बिगासिआ इव हरि रसु पीजै ॥ (१०८९-२, मारू, मः ३)
आवण जाणा ठाकिआ सुखि सहजि सवीजै ॥७॥ (१०८९-२, मारू, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (१०८९-३)
ना मैला ना धुंधला ना भगवा ना कचु ॥ (१०८९-३, मारू, मः १)
नानक लालो लालु है सचै रता सचु ॥१॥ (१०८९-३, मारू, मः १)
मः ३ ॥ (१०८९-४)
सहजि वणसपति फुलु फलु भवरु वसै भै खंडि ॥ (१०८९-४, मारू, मः ३)
नानक तरवरु एकु है एको फुलु भिरंगु ॥२॥ (१०८९-४, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०८९-५)
जो जन लूझहि मनै सिउ से सूरे परधाना ॥ (१०८९-५, मारू, मः ३)
हरि सेती सदा मिलि रहे जिनी आपु पछाना ॥ (१०८९-५, मारू, मः ३)
गिआनीआ का इहु महतु है मन माहि समाना ॥ (१०८९-६, मारू, मः ३)
हरि जीउ का महलु पाइआ सचु लाइ धिआना ॥ (१०८९-६, मारू, मः ३)
जिन गुर परसादी मनु जीतिआ जगु तिनहि जिताना ॥८॥ (१०८९-७, मारू, मः ३)

सलोकु मः ३ ॥ (१०८९-७)
जोगी होवा जगि भवा घरि घरि भीखिआ लेउ ॥ (१०८९-७, मारू, मः ३)
दरगह लेखा मंगीऐ किसु किसु उतरु देउ ॥ (१०८९-८, मारू, मः ३)
भिखिआ नामु संतोखु मड़ी सदा सचु है नालि ॥ (१०८९-८, मारू, मः ३)
भेखी हाथ न लधीआ सभ बधी जमकालि ॥ (१०८९-९, मारू, मः ३)
नानक गला झूठीआ सचा नामु समालि ॥१॥ (१०८९-९, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०८९-१०)
जितु दरि लेखा मंगीऐ सो दरु सेविहु न कोइ ॥ (१०८९-१०, मारू, मः ३)
ऐसा सतिगुरु लोड़ि लहु जिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (१०८९-१०, मारू, मः ३)
तिसु सरणाई छूटीऐ लेखा मंगै न कोइ ॥ (१०८९-११, मारू, मः ३)
सचु दृड़ाए सचु दृड़ु सचा ओहु सबदु देइ ॥ (१०८९-११, मारू, मः ३)
हिरदै जिस दै सचु है तनु मनु भी सचा होइ ॥ (१०८९-१२, मारू, मः ३)
नानक सचै हुकमि मंनिऐ सची वडिआई देइ ॥ (१०८९-१२, मारू, मः ३)
सचे माहि समावसी जिस नो नदरि करेइ ॥२॥ (१०८९-१३, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०८९-१३)
सूरे एहि न आखीअहि अहंकारि मरहि दुखु पावहि ॥ (१०८९-१३, मारू, मः ३)
अंधे आपु न पछाणनी दूजै पचि जावहि ॥ (१०८९-१४, मारू, मः ३)
अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥ (१०८९-१४, मारू, मः ३)
हरि जीउ अहंकारु न भावई वेद कूकि सुणावहि ॥ (१०८९-१५, मारू, मः ३)
अहंकारि मुए से विगती गए मरि जनमहि फिरि आवहि ॥९॥ (१०८९-१५, मारू, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (१०८९-१६)
कागउ होइ न ऊजला लोहे नाव न पारु ॥ (१०८९-१६, मारू, मः ३)
पिर्म पदारथु मंनि लै धन्नु सवारणहारु ॥ (१०८९-१६, मारू, मः ३)
हुकमु पछाणै ऊजला सिरि कासट लोहा पारि ॥ (१०८९-१७, मारू, मः ३)
तृसना छोडै भै वसै नानक करणी सारु ॥१॥ (१०८९-१७, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०८९-१८)
मारू मारण जो गए मारि न सकहि गवार ॥ (१०८९-१८, मारू, मः ३)
नानक जे इहु मारीऐ गुर सबदी वीचारि ॥ (१०८९-१८, मारू, मः ३)
एहु मनु मारिआ ना मरै जे लोचै सभु कोइ ॥ (१०८९-१९, मारू, मः ३)
नानक मन ही कउ मनु मारसी जे सतिगुरु भेटै सोइ ॥२॥ (१०८९-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०९०

पउड़ी ॥ (१०९०-१)
दोवै तरफा उपाईओनु विचि सकति सिव वासा ॥ (१०९०-१, मारू, मः ३)
सकती किनै न पाइओ फिरि जनमि बिनासा ॥ (१०९०-१, मारू, मः ३)

गुरि सेविऐ साति पाईऐ जपि सास गिरासा ॥ (१०६०-२, मारू, मः ३)
सिमृति सासत सोधि देखु ऊतम हरि दासा ॥ (१०६०-२, मारू, मः ३)
नानक नाम बिना को थिरु नही नामे बलि जासा ॥१०॥ (१०६०-३, मारू, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (१०६०-३)
होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ (१०६०-३, मारू, मः ३)
नव खंड मधे पूजीआ अपणै चजि वीचारि ॥ (१०६०-४, मारू, मः ३)
मतु सचा अखरु भुलि जाइ चउकै भिटै न कोइ ॥ (१०६०-४, मारू, मः ३)
झूठे चउके नानका सचा एको सोइ ॥१॥ (१०६०-५, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०६०-५)
आपि उपाए करे आपि आपे नदरि करेइ ॥ (१०६०-५, मारू, मः ३)
आपे दे वडिआईआ कहु नानक सचा सोइ ॥२॥ (१०६०-६, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०६०-६)
कंटकु कालु एकु है होरु कंटकु न सूझै ॥ (१०६०-६, मारू, मः ३)
अफरिओ जग महि वरतदा पापी सिउ लूझै ॥ (१०६०-७, मारू, मः ३)
गुर सबदी हरि भेदीऐ हरि जपि हरि बूझै ॥ (१०६०-७, मारू, मः ३)
सो हरि सरणाई छुटीऐ जो मन सिउ जूझै ॥ (१०६०-७, मारू, मः ३)
मनि वीचारि हरि जपु करे हरि दरगह सीझै ॥११॥ (१०६०-८, मारू, मः ३)
सलोकु मः १ ॥ (१०६०-६)
हुकमि रजाई साखती दरगह सचु कबूलु ॥ (१०६०-६, मारू, मः १)
साहिबु लेखा मंगसी दुनीआ देखि न भूलु ॥ (१०६०-६, मारू, मः १)
दिल दरवानी जो करे दरवेसी दिलु रासि ॥ (१०६०-१०, मारू, मः १)
इसक मुहबति नानका लेखा करते पासि ॥१॥ (१०६०-१०, मारू, मः १)
मः १ ॥ (१०६०-१०)
अलगउ जोइ मधूकड़उ सारंगपाणि सबाइ ॥ (१०६०-११, मारू, मः १)
हीरै हीरा बेधिआ नानक कंठि सुभाइ ॥२॥ (१०६०-११, मारू, मः १)
पउड़ी ॥ (१०६०-११)
मनमुख कालु विआपदा मोहि माइआ लागे ॥ (१०६०-१२, मारू, मः १)
खिन महि मारि पछाड़सी भाइ दूजै ठागे ॥ (१०६०-१२, मारू, मः १)
फिरि वेला हथि न आवई जम का डंडु लागे ॥ (१०६०-१२, मारू, मः १)
तिन जम डंडु न लगई जो हरि लिव जागे ॥ (१०६०-१३, मारू, मः १)
सभ तेरी तुधु छडावणी सभ तुधै लागे ॥१२॥ (१०६०-१३, मारू, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१०६०-१४)
सरबे जोइ अगछमी दूखु घनेरो आथि ॥ (१०६०-१४, मारू, मः १)
कालरु लादसि सरु लाघणउ लाभु न पूंजी साथि ॥१॥ (१०६०-१४, मारू, मः १)
मः १ ॥ (१०६०-१५)

पूंजी साचउ नामु तू अखुटउ दरबु अपारु ॥ (१०६०-१५, मारू, मः १)
नानक वखरु निरमलउ धन्नु साहु वापारु ॥२॥ (१०६०-१५, मारू, मः १)
मः १ ॥ (१०६०-१६)
पूरब प्रीति पिराणि लै मोटउ ठाकुरु माणि ॥ (१०६०-१६, मारू, मः १)
माथै ऊभै जमु मारसी नानक मेलणु नामि ॥३॥ (१०६०-१६, मारू, मः १)
पउड़ी ॥ (१०६०-१७)
आपे पिंडु सवारिओनु विचि नव निधि नामु ॥ (१०६०-१७, मारू, मः १)
इकि आपे भरमि भुलाइअनु तिन निहफल कामु ॥ (१०६०-१७, मारू, मः १)
इकनी गुरमुखि बुझिआ हरि आतम रामु ॥ (१०६०-१८, मारू, मः १)
इकनी सुणि कै मंनिआ हरि ऊतम कामु ॥ (१०६०-१८, मारू, मः १)
अंतरि हरि रंगु उपजिआ गाइआ हरि गुण नामु ॥१३॥ (१०६०-१९, मारू, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१०६०-१९)

पन्ना १०६१

भोलतणि भै मनि वसै हेकै पाधर हीडु ॥ (१०६१-१, मारू, मः १)
अति डाहपणि दुखु घणो तीने थाव भरीडु ॥१॥ (१०६१-१, मारू, मः १)
मः १ ॥ (१०६१-१)
माँदलु बेदि सि बाजणो घणो धड़ीऐ जोइ ॥ (१०६१-१, मारू, मः १)
नानक नामु समालि तू बीजउ अवरु न कोइ ॥२॥ (१०६१-२, मारू, मः १)
मः १ ॥ (१०६१-२)
सागरु गुणी अथाहु किनि हाथाला देखीऐ ॥ (१०६१-२, मारू, मः १)
वडा वेपरवाहु सतिगुरु मिलै त पारि पवा ॥ (१०६१-३, मारू, मः १)
मझ भरि दुख बदुख ॥ (१०६१-३, मारू, मः १)
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥३॥ (१०६१-४, मारू, मः १)
पउड़ी ॥ (१०६१-४)
जिनी अंदरु भालिआ गुर सबदि सुहावै ॥ (१०६१-४, मारू, मः १)
जो इछनि सो पाइदे हरि नामु धिआवै ॥ (१०६१-५, मारू, मः १)
जिस नो कृपा करे तिसु गुरु मिलै सो हरि गुण गावै ॥ (१०६१-५, मारू, मः १)
धर्म राइ तिन का मितु है जम मगि न पावै ॥ (१०६१-६, मारू, मः १)
हरि नामु धिआवहि दिनसु राति हरि नामि समावै ॥१४॥ (१०६१-६, मारू, मः १)
सलोकु मः १ ॥ (१०६१-७)
सुणीऐ एकु वखाणीऐ सुरगि मिरति पइआलि ॥ (१०६१-७, मारू, मः १)
हुकमु न जाई मेटिआ जो लिखिआ सो नालि ॥ (१०६१-७, मारू, मः १)
कउणु मूआ कउणु मारसी कउणु आवै कउणु जाइ ॥ (१०६१-८, मारू, मः १)
कउणु रहसी नानका किस की सुरति समाइ ॥१॥ (१०६१-८, मारू, मः १)

मः १ ॥ (१०६१-९)
हउ मुआ मै मारिआ पउणु वहै दरीआउ ॥ (१०६१-९, मारू, मः १)
तृसना थकी नानका जा मनु रता नाइ ॥ (१०६१-९, मारू, मः १)
लोइण रते लोइणी कन्नी सुरति समाइ ॥ (१०६१-१०, मारू, मः १)
जीभ रसाइणि चूनड़ी रती लाल लवाइ ॥ (१०६१-१०, मारू, मः १)
अंदरु मुसकि झकोलिआ कीमति कही न जाइ ॥२॥ (१०६१-११, मारू, मः १)
पउड़ी ॥ (१०६१-११)
इसु जुग महि नामु निधानु है नामो नालि चलै ॥ (१०६१-११, मारू, मः १)
एहु अखुटु कदे न निखुटई खाइ खरचिउ पलै ॥ (१०६१-१२, मारू, मः १)
हरि जन नेड़ि न आवई जमकंकर जमकलै ॥ (१०६१-१२, मारू, मः १)
से साह सचे वणजारिआ जिन हरि धनु पलै ॥ (१०६१-१३, मारू, मः १)
हरि किरपा ते हरि पाईऐ जा आपि हरि घलै ॥१५॥ (१०६१-१३, मारू, मः १)
सलोकु मः ३ ॥ (१०६१-१४)
मनमुख वापारै सार न जाणनी बिखु विहाझहि बिखु संग्रहहि बिख सिउ धरहि पिआरु ॥ (१०६१-१४, मारू, मः ३)
बाहरहु पंडित सदाइदे मनहु मूरख गावार ॥ (१०६१-१५, मारू, मः ३)
हरि सिउ चितु न लाइनी वादी धरनि पिआरु ॥ (१०६१-१५, मारू, मः ३)
वादा कीआ करनि कहाणीआ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ (१०६१-१६, मारू, मः ३)
जग महि राम नामु हरि निरमला होरु मैला सभु आकारु ॥ (१०६१-१६, मारू, मः ३)
नानक नामु न चेतनी होइ मैले मरहि गवार ॥१॥ (१०६१-१७, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०६१-१७)
दुखु लगा बिनु सेविऐ हुकमु मन्ने दुखु जाइ ॥ (१०६१-१७, मारू, मः ३)
आपे दाता सुखै दा आपे देइ सजाइ ॥ (१०६१-१८, मारू, मः ३)
नानक एवै जाणीऐ सभु किछु तिसै रजाइ ॥२॥ (१०६१-१८, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०६१-१९)
हरि नाम बिना जगतु है निरधनु बिनु नावै तृपति नाही ॥ (१०६१-१९, मारू, मः ३)
दूजै भरमि भुलाइआ हउमै दुखु पाही ॥ (१०६१-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६२

बिनु करमा किछू न पाईऐ जे बहुतु लोचाही ॥ (१०६२-१, मारू, मः ३)
आवै जाइ जम्मै मरै गुर सबदि छुटाही ॥ (१०६२-१, मारू, मः ३)
आपि करै किसु आखीऐ दूजा को नाही ॥१६॥ (१०६२-२, मारू, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (१०६२-२)
इसु जग महि संती धनु खटिआ जिना सतिगुरु मिलिआ प्रभु आइ ॥ (१०६२-२, मारू, मः ३)
सतिगुरि सचु दृड़ाइआ इसु धन की कीमति कही न जाइ ॥ (१०६२-३, मारू, मः ३)

इतु धनि पाइऐ भुख लथी सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (१०६२-४, मारू, मः ३)
जिन्‍ा कउ धुरि लिखिआ तिनी पाइआ आइ ॥ (१०६२-४, मारू, मः ३)
मनमुखु जगतु निरधनु है माइआ नो बिललाइ ॥ (१०६२-५, मारू, मः ३)
अनदिनु फिरदा सदा रहै भुख न कदे जाइ ॥ (१०६२-५, मारू, मः ३)
साँति न कदे आवई नह सुखु वसै मनि आइ ॥ (१०६२-५, मारू, मः ३)
सदा चिंत चितवदा रहै सहसा कदे न जाइ ॥ (१०६२-६, मारू, मः ३)
नानक विणु सतिगुर मति भवी सतिगुर नो मिलै ता सबदु कमाइ ॥ (१०६२-६, मारू, मः ३)
सदा सदा सुख महि रहै सचे माहि समाइ ॥१॥ (१०६२-७, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०६२-८)
जिनि उपाई मेदनी सोई सार करेइ ॥ (१०६२-८, मारू, मः ३)
एको सिमरहु भाइरहु तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (१०६२-८, मारू, मः ३)
खाणा सबदु चंगिआईआ जितु खाधै सदा तृपति होइ ॥ (१०६२-९, मारू, मः ३)
पैनणु सिफति सनाइ है सदा सदा ओहु ऊजला मैला कदे न होइ ॥ (१०६२-९, मारू, मः ३)
सहजे सचु धनु खटिआ थोड़ा कदे न होइ ॥ (१०६२-१०, मारू, मः ३)
देही नो सबदु सीगारु है जितु सदा सदा सुखु होइ ॥ (१०६२-१०, मारू, मः ३)
नानक गुरमुखि बुझीऐ जिस नो आपि विखाले सोइ ॥२॥ (१०६२-११, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०६२-११)
अंतरि जपु तपु संजमो गुर सबदी जापै ॥ (१०६२-११, मारू, मः ३)
हरि हरि नामु धिआईऐ हउमै अगिआनु गवापै ॥ (१०६२-१२, मारू, मः ३)
अंदरु अमृति भरपूरु है चाखिआ सादु जापै ॥ (१०६२-१२, मारू, मः ३)
जिन चाखिआ से निरभउ भए से हरि रसि ध्रापै ॥ (१०६२-१३, मारू, मः ३)
हरि किरपा धारि पीआइआ फिरि कालु न विआपै ॥१७॥ (१०६२-१३, मारू, मः ३)
सलोकु मः ३ ॥ (१०६२-१४)
लोकु अवगणा की बन्‍ै गंठड़ी गुण न विहाझै कोइ ॥ (१०६२-१४, मारू, मः ३)
गुण का गाहकु नानका विरला कोई होइ ॥ (१०६२-१५, मारू, मः ३)
गुर परसादी गुण पाईअन्‍ि जिस नो नदरि करेइ ॥१॥ (१०६२-१५, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०६२-१६)
गुण अवगुण समानि हहि जि आपि कीते करतारि ॥ (१०६२-१६, मारू, मः ३)
नानक हुकमि मंनिऐ सुखु पाईऐ गुर सबदी वीचारि ॥२॥ (१०६२-१६, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०६२-१७)
अंदरि राजा तखतु है आपे करे निआउ ॥ (१०६२-१७, मारू, मः ३)
गुर सबदी दरु जाणीऐ अंदरि महलु असराउ ॥ (१०६२-१७, मारू, मः ३)
खरे परखि खजानै पाईअनि खोटिआ नाही थाउ ॥ (१०६२-१८, मारू, मः ३)
सभु सचो सचु वरतदा सदा सचु निआउ ॥ (१०६२-१८, मारू, मः ३)
अमृत का रसु आइआ मनि वसिआ नाउ ॥१८॥ (१०६२-१९, मारू, मः ३)

सलोक मः १ ॥ (१०६२-१९)
हउ मै करी ताँ तू नाही तू होवहि हउ नाहि ॥ (१०६२-१९, मारू, मः १)

पन्ना १०६३

बूझहु गिआनी बूझणा एह अकथ कथा मन माहि ॥ (१०६३-१, मारू, मः १)
बिनु गुर ततु न पाईऐ अलखु वसै सभ माहि ॥ (१०६३-१, मारू, मः १)
सतिगुरु मिलै त जाणीऐ जाँ सबदु वसै मन माहि ॥ (१०६३-२, मारू, मः १)
आपु गइआ भ्रमु भउ गइआ जनम मरन दुख जाहि ॥ (१०६३-२, मारू, मः १)
गुरमति अलखु लखाईऐ ऊतम मति तराहि ॥ (१०६३-३, मारू, मः १)
नानक सोहं हंसा जपु जापहु तृभवण तिसै समाहि ॥१॥ (१०६३-३, मारू, मः १)
मः ३ ॥ (१०६३-४)
मनु माणकु जिनि परखिआ गुर सबदी वीचारि ॥ (१०६३-४, मारू, मः ३)
से जन विरले जाणीअहि कलजुग विचि संसारि ॥ (१०६३-५, मारू, मः ३)
आपै नो आपु मिलि रहिआ हउमै दुबिधा मारि ॥ (१०६३-५, मारू, मः ३)
नानक नामि रते दुतरु तरे भउजलु बिखमु संसारु ॥२॥ (१०६३-६, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०६३-६)
मनमुख अंदरु न भालनी मुठे अहम्मते ॥ (१०६३-६, मारू, मः ३)
चारे कुंडाँ भवि थके अंदरि तिख तते ॥ (१०६३-७, मारू, मः ३)
सिम्मृति सासत न सोधनी मनमुख विगुते ॥ (१०६३-७, मारू, मः ३)
बिनु गुर किनै न पाइओ हरि नामु हरि सते ॥ (१०६३-७, मारू, मः ३)
ततु गिआनु वीचारिआ हरि जपि हरि गते ॥१९॥ (१०६३-८, मारू, मः ३)
सलोक मः २ ॥ (१०६३-८)
आपे जाणै करे आपि आपे आणै रासि ॥ (१०६३-९, मारू, मः २)
तिसै अगै नानका खलिइ कीचै अरदासि ॥१॥ (१०६३-९, मारू, मः २)
मः १ ॥ (१०६३-९)
जिनि कीआ तिनि देखिआ आपे जाणै सोइ ॥ (१०६३-९, मारू, मः १)
किस नो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभु कोइ ॥२॥ (१०६३-१०, मारू, मः १)
पउड़ी ॥ (१०६३-१०)
सभे थोक विसारि इको मितु करि ॥ (१०६३-११, मारू, मः १)
मनु तनु होइ निहालु पापा दहै हरि ॥ (१०६३-११, मारू, मः १)
आवण जाणा चुकै जनमि न जाहि मरि ॥ (१०६३-११, मारू, मः १)
सचु नामु आधारु सोगि न मोहि जरि ॥ (१०६३-१२, मारू, मः १)
नानक नामु निधानु मन महि संजि धरि ॥२०॥ (१०६३-१२, मारू, मः १)
सलोक मः ५ ॥ (१०६३-१३)
माइआ मनहु न वीसरै माँगै दम्मा दम्म ॥ (१०६३-१३, मारू, मः ५)

सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करम्म ॥१॥ (१०६३-१३, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६३-१४)
माइआ साथि न चलई किआ लपटावहि अंध ॥ (१०६३-१४, मारू, मः ५)
गुर के चरण धिआइ तू तूटहि माइआ बंध ॥२॥ (१०६३-१४, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०६३-१५)
भाणै हुकमु मनाइओनु भाणै सुखु पाइआ ॥ (१०६३-१५, मारू, मः ५)
भाणै सतिगुरु मेलिओनु भाणै सचु धिआइआ ॥ (१०६३-१५, मारू, मः ५)
भाणे जेवड होर दाति नाही सचु आखि सुणाइआ ॥ (१०६३-१६, मारू, मः ५)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सचु कमाइआ ॥ (१०६३-१६, मारू, मः ५)
नानक तिसु सरणागती जिनि जगतु उपाइआ ॥२१॥ (१०६३-१७, मारू, मः ५)
सलोक मः ३ ॥ (१०६३-१७)
जिन कउ अंदरि गिआनु नही भै की नाही बिंद ॥ (१०६३-१७, मारू, मः ३)
नानक मुइआ का किआ मारणा जि आपि मारे गोविंद ॥१॥ (१०६३-१८, मारू, मः ३)
मः ३ ॥ (१०६३-१८)
मन की पत्री वाचणी सुखी हू सुखु सारु ॥ (१०६३-१९, मारू, मः ३)
सो ब्राहमणु भला आखीऐ जि बूझै ब्रह्मु बीचारु ॥ (१०६३-१९, मारू, मः ३)
हरि सालाहे हरि पड़ै गुर कै सबदि वीचारि ॥ (१०६३-१९, मारू, मः ३)

पन्ना १०६४

आइआ ओहु परवाणु है जि कुल का करे उधारु ॥ (१०६४-१, मारू, मः ३)
अगै जाति न पुछीऐ करणी सबदु है सारु ॥ (१०६४-१, मारू, मः ३)
होरु कूड़ु पड़णा कूड़ु कमावणा बिखिआ नालि पिआरु ॥ (१०६४-२, मारू, मः ३)
अंदरि सुखु न होवई मनमुख जनमु खुआरु ॥ (१०६४-२, मारू, मः ३)
नानक नामि रते से उबरे गुर कै हेति अपारि ॥२॥ (१०६४-३, मारू, मः ३)
पउड़ी ॥ (१०६४-३)
आपे करि करि वेखदा आपे सभु सचा ॥ (१०६४-३, मारू, मः ३)
जो हुकमु न बूझै खसम का सोई नरु कचा ॥ (१०६४-४, मारू, मः ३)
जितु भावै तितु लाइदा गुरमुखि हरि सचा ॥ (१०६४-४, मारू, मः ३)
सभना का साहिबु एकु है गुर सबदी रचा ॥ (१०६४-५, मारू, मः ३)
गुरमुखि सदा सलाहीऐ सभि तिस दे जचा ॥ (१०६४-५, मारू, मः ३)
जिउ नानक आपि नचाइदा तिव ही को नचा ॥२२॥१॥ सुधु ॥ (१०६४-५, मारू, मः ३)
मारू वार महला ५ डखणे मः ५ (१०६४-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१०६४-७)
तू चउ सजण मैडिआ डेई सिसु उतारि ॥ (१०६४-८, मारू, मः ५)
नैण महिंजे तरसदे कदि पसी दीदारु ॥१॥ (१०६४-८, मारू, मः ५)

मः ५ ॥ (१०६४-८)
नीहु महिंजा तऊ नालि बिआ नेह कूड़ावे डेखु ॥ (१०६४-८, मारू, मः ५)
कपड़ भोग डरावणे जिचरु पिरी न डेखु ॥२॥ (१०६४-९, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६४-९)
उठी झालू कंतड़े हउ पसी तउ दीदारु ॥ (१०६४-१०, मारू, मः ५)
काजलु हार तमोल रसु बिनु पसे हभि रस छारु ॥३॥ (१०६४-१०, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०६४-१०)
तू सचा साहिबु सचु सचु सभु धारिआ ॥ (१०६४-११, मारू, मः ५)
गुरमुखि कीतो थाटु सिरजि संसारिआ ॥ (१०६४-११, मारू, मः ५)
हरि आगिआ होए बेद पापु पुन्नु वीचारिआ ॥ (१०६४-११, मारू, मः ५)
ब्रहमा बिसनु महेसु त्रै गुण बिसथारिआ ॥ (१०६४-१२, मारू, मः ५)
नव खंड पृथमी साजि हरि रंग सवारिआ ॥ (१०६४-१२, मारू, मः ५)
वेकी जंत उपाइ अंतरि कल धारिआ ॥ (१०६४-१३, मारू, मः ५)
तेरा अंतु न जाणै कोइ सचु सिरजणहारिआ ॥ (१०६४-१३, मारू, मः ५)
तू जाणहि सभ बिधि आपि गुरमुखि निसतारिआ ॥१॥ (१०६४-१३, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०६४-१४)
जे तू मित्रु असाडड़ा हिक भोरी ना वेछोड़ि ॥ (१०६४-१४, मारू, मः ५)
जीउ महिंजा तउ मोहिआ कदि पसी जानी तोहि ॥१॥ (१०६४-१५, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६४-१५)
दुरजन तू जलु भाहड़ी विछोड़े मरि जाहि ॥ (१०६४-१५, मारू, मः ५)
कंता तू सउ सेजड़ी मैडा हभो दुखु उलाहि ॥२॥ (१०६४-१६, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६४-१६)
दुरजनु दूजा भाउ है वेछोड़ा हउमै रोगु ॥ (१०६४-१६, मारू, मः ५)
सजणु सचा पातिसाहु जिसु मिलि कीचै भोगु ॥३॥ (१०६४-१७, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०६४-१७)
तू अगम दइआलु बेअंतु तेरी कीमति कहै कउणु ॥ (१०६४-१७, मारू, मः ५)
तुधु सिरजिआ सभु संसारु तू नाइकु सगल भउण ॥ (१०६४-१८, मारू, मः ५)
तेरी कुदरति कोइ न जाणै मेरे ठाकुर सगल रउण ॥ (१०६४-१९, मारू, मः ५)
तुधु अपड़ि कोइ न सकै तू अबिनासी जग उधरण ॥ (१०६४-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०६५

तुधु थापे चारे जुग तू करता सगल धरण ॥ (१०६५-१, मारू, मः ५)
तुधु आवण जाणा कीआ तुधु लेपु न लगै तृण ॥ (१०६५-१, मारू, मः ५)
जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु लावहि सतिगुर चरण ॥ (१०६५-२, मारू, मः ५)
तू होरतु उपाइ न लभही अबिनासी सृसटि करण ॥२॥ (१०६५-२, मारू, मः ५)

डखणे मः ५ ॥ (१०९५-३)
जे तू वतहि अंङणे हभ धरति सुहावी होइ ॥ (१०९५-३, मारू, मः ५)
हिकसु कंतै बाहरी मैडी वात न पुछै कोइ ॥१॥ (१०९५-३, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९५-४)
हभे टोल सुहावणे सहु बैठा अंङणु मलि ॥ (१०९५-४, मारू, मः ५)
पही न वंञै बिरथड़ा जो घरि आवै चलि ॥२॥ (१०९५-४, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९५-५)
सेज विछाई कंत कू कीआ हभु सीगारु ॥ (१०९५-५, मारू, मः ५)
इती मंझि न समावई जे गलि पहिरा हारु ॥३॥ (१०९५-५, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९५-६)
तू पारब्रह्मु परमेसरु जोनि न आवही ॥ (१०९५-६, मारू, मः ५)
तू हुकमी साजहि सृसटि साजि समावही ॥ (१०९५-६, मारू, मः ५)
तेरा रूपु न जाई लखिआ किउ तुझहि धिआवही ॥ (१०९५-७, मारू, मः ५)
तू सभ महि वरतहि आपि कुदरति देखावही ॥ (१०९५-७, मारू, मः ५)
तेरी भगति भरे भंडार तोटि न आवही ॥ (१०९५-८, मारू, मः ५)
एहि रतन जवेहर लाल कीम न पावही ॥ (१०९५-८, मारू, मः ५)
जिसु होवहि आपि दइआलु तिसु सतिगुर सेवा लावही ॥ (१०९५-८, मारू, मः ५)
तिसु कदे न आवै तोटि जो हरि गुण गावही ॥३॥ (१०९५-९, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९५-१०)
जा मू पसी हठ मै पिरी महिजै नालि ॥ (१०९५-१०, मारू, मः ५)
हभे डुख उलाहिअमु नानक नदरि निहालि ॥१॥ (१०९५-१०, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९५-११)
नानक बैठा भखे वाउ लम्मे सेवहि दरु खड़ा ॥ (१०९५-११, मारू, मः ५)
पिरीए तू जाणु महिजा साउ जोई साई मुहु खड़ा ॥२॥ (१०९५-११, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९५-१२)
किआ गालाइओ भूछ पर वेलि न जोहे कंत तू ॥ (१०९५-१२, मारू, मः ५)
नानक फुला संदी वाड़ि खिड़िआ हभु संसारु जिउ ॥३॥ (१०९५-१२, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९५-१३)
सुघड़ु सुजाणु सरूपु तू सभ महि वरतंता ॥ (१०९५-१३, मारू, मः ५)
तू आपे ठाकुरु सेवको आपे पूजंता ॥ (१०९५-१३, मारू, मः ५)
दाना बीना आपि तू आपे सतवंता ॥ (१०९५-१४, मारू, मः ५)
जती सती प्रभु निरमला मेरे हरि भगवंता ॥ (१०९५-१४, मारू, मः ५)
सभु ब्रह्म पसारु पसारिओ आपे खेलंता ॥ (१०९५-१४, मारू, मः ५)
इहु आवा गवणु रचाइओ करि चोज देखंता ॥ (१०९५-१५, मारू, मः ५)
तिसु बाहुड़ि गरभि न पावही जिसु देवहि गुर मंता ॥ (१०९५-१५, मारू, मः ५)

जिउ आपि चलावहि तिउ चलदे किछु वसि न जंता ॥४॥ (१०६५-१६, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०६५-१६)
कुरीए कुरीए वैदिआ तलि गाड़ा महरेरु ॥ (१०६५-१७, मारू, मः ५)
वेखे छिटड़ि थीवदो जामि खिसंदो पेरु ॥१॥ (१०६५-१७, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६५-१८)
सचु जाणै कचु वैदिओ तू आघू आघे सलवे ॥ (१०६५-१८, मारू, मः ५)
नानक आतसड़ी मंझि नैणू बिआ ढलि पबणि जिउ जुंमिओ ॥२॥ (१०६५-१८, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६५-१९)
भोरे भोरे रूहड़े सेवेदे आलकु ॥ (१०६५-१९, मारू, मः ५)
मुदति पई चिराणीआ फिरि कडू आवै रुति ॥३॥ (१०६५-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०६६

पउड़ी ॥ (१०६६-१)
तुधु रूपु न रेखिआ जाति तू वरना बाहरा ॥ (१०६६-१, मारू, मः ५)
ए माणस जाणहि दूरि तू वरतहि जाहरा ॥ (१०६६-१, मारू, मः ५)
तू सभि घट भोगहि आपि तुधु लेपु न लाहरा ॥ (१०६६-२, मारू, मः ५)
तू पुरखु अनंदी अनंत सभ जोति समाहरा ॥ (१०६६-२, मारू, मः ५)
तू सभ देवा महि देव बिधाते नरहरा ॥ (१०६६-३, मारू, मः ५)
किआ आराधे जिहवा इक तू अबिनासी अपरपरा ॥ (१०६६-३, मारू, मः ५)
जिसु मेलहि सतिगुरु आपि तिस के सभि कुल तरा ॥ (१०६६-३, मारू, मः ५)
सेवक सभि करदे सेव दरि नानकु जनु तेरा ॥५॥ (१०६६-४, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०६६-५)
गहडड़ड़ा तृणि छाइआ गाफल जलिओहु भाहि ॥ (१०६६-५, मारू, मः ५)
जिना भाग मथाहड़ै तिन उसताद पनाहि ॥१॥ (१०६६-५, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६६-६)
नानक पीठा पका साजिआ धरिआ आणि मउजूदु ॥ (१०६६-६, मारू, मः ५)
बाझहु सतिगुर आपणे बैठा झाकु दरूद ॥२॥ (१०६६-६, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६६-७)
नानक भुसरीआ पकाईआ पाईआ थालै माहि ॥ (१०६६-७, मारू, मः ५)
जिनी गुरू मनाइआ रजि रजि सेई खाहि ॥३॥ (१०६६-७, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०६६-८)
तुधु जग महि खेलु रचाइआ विचि हउमै पाईआ ॥ (१०६६-८, मारू, मः ५)
एकु मंदरु पंच चोर हहि नित करहि बुरिआईआ ॥ (१०६६-८, मारू, मः ५)
दस नारी इकु पुरखु करि दसे सादि लुोभाईआ ॥ (१०६६-९, मारू, मः ५)
एनि माइआ मोहणी मोहीआ नित फिरहि भरमाईआ ॥ (१०६६-९, मारू, मः ५)

हाठा दोवै कीतीओ सिव सकति वरताईआ ॥ (१०६६-१०, मारू, मः ५)
सिव अगै सकती हारिआ एवै हरि भाईआ ॥ (१०६६-१०, मारू, मः ५)
इकि विचहु ही तुधु रखिआ जो सतसंगि मिलाईआ ॥ (१०६६-११, मारू, मः ५)
जल विचहु बिम्बु उठालिओ जल माहि समाईआ ॥६॥ (१०६६-११, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०६६-१२)
आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥ (१०६६-१२, मारू, मः ५)
नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥१॥ (१०६६-१३, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६६-१३)
सजणु मैडा चाईआ हभ कही दा मितु ॥ (१०६६-१३, मारू, मः ५)
हभे जाणनि आपणा कही न ठाहे चितु ॥२॥ (१०६६-१४, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६६-१४)
गुझड़ा लधमु लालु मथै ही परगटु थिआ ॥ (१०६६-१४, मारू, मः ५)
सोई सुहावा थानु जिथै पिरीए नानक जी तू वुठिआ ॥३॥ (१०६६-१५, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०६६-१५)
जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥ (१०६६-१५, मारू, मः ५)
तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥ (१०६६-१६, मारू, मः ५)
लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा ॥ (१०६६-१६, मारू, मः ५)
लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥ (१०६६-१७, मारू, मः ५)
एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥ (१०६६-१७, मारू, मः ५)
लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥ (१०६६-१७, मारू, मः ५)
अनंदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥ (१०६६-१८, मारू, मः ५)
सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावंदा ॥७॥ (१०६६-१८, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०६६-१९)
डेखण कू मुसताकु मुखु किजेहा तउ धणी ॥ (१०६६-१९, मारू, मः ५)
फिरदा कितै हालि जा डिठमु ता मनु ध्रापिआ ॥१॥ (१०६६-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०६७

मः ५ ॥ (१०६७-१)
दुखीआ दरद घणे वेदन जाणे तू धणी ॥ (१०६७-१, मारू, मः ५)
जाणा लख भवे पिरी डिखंदो ता जीवसा ॥२॥ (१०६७-१, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०६७-२)
ढहदी जाइ करारि वहणि वहंदे मै डिठिआ ॥ (१०६७-२, मारू, मः ५)
सेई रहे अमाण जिना सतिगुरु भेटिआ ॥३॥ (१०६७-२, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०६७-३)
जिसु जन तेरी भुख है तिसु दुखु न विआपै ॥ (१०६७-३, मारू, मः ५)

जिनि जनि गुरमुखि बुझिआ सु चहु कुंडी जापै ॥ (१०९७-३, मारू, मः ५)
जो नरु उस की सरणी परै तिसु कम्बहि पापै ॥ (१०९७-४, मारू, मः ५)
जनम जनम की मलु उतरै गुर धूड़ी नापै ॥ (१०९७-४, मारू, मः ५)
जिनि हरि भाणा मंनिआ तिसु सोगु न संतापै ॥ (१०९७-५, मारू, मः ५)
हरि जीउ तू सभना का मितु है सभि जाणहि आपै ॥ (१०९७-५, मारू, मः ५)
ऐसी सोभा जनै की जेवडु हरि परतापै ॥ (१०९७-६, मारू, मः ५)
सभ अंतरि जन वरताइआ हरि जन ते जापै ॥८॥ (१०९७-६, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९७-७)
जिना पिछै हउ गई से मै पिछै भी रविआसु ॥ (१०९७-७, मारू, मः ५)
जिना की मै आसड़ी तिना महिजी आस ॥१॥ (१०९७-७, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९७-८)
गिली गिली रोडड़ी भउदी भवि भवि आइ ॥ (१०९७-८, मारू, मः ५)
जो बैठे से फाथिआ उबरे भाग मथाइ ॥२॥ (१०९७-८, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९७-९)
डिठा हभ मझाहि खाली कोइ न जाणीऐ ॥ (१०९७-९, मारू, मः ५)
तै सखी भाग मथाहि जिनी मेरा सजणु राविआ ॥३॥ (१०९७-९, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९७-१०)
हउ ढाढी दरि गुण गावदा जे हरि प्रभ भावै ॥ (१०९७-१०, मारू, मः ५)
प्रभु मेरा थिर थावरी होर आवै जावै ॥ (१०९७-१०, मारू, मः ५)
सो मंगा दानु गोसाईआ जितु भुख लहि जावै ॥ (१०९७-११, मारू, मः ५)
प्रभ जीउ देवहु दरसनु आपणा जितु ढाढी तृपतावै ॥ (१०९७-११, मारू, मः ५)
अरदासि सुणी दातारि प्रभि ढाढी कउ महलि बुलावै ॥ (१०९७-१२, मारू, मः ५)
प्रभ देखदिआ दुख भुख गई ढाढी कउ मंगणु चिति न आवै ॥ (१०९७-१२, मारू, मः ५)
सभे इछा पूरीआ लगि प्रभ कै पावै ॥ (१०९७-१३, मारू, मः ५)
हउ निरगुणु ढाढी बखसिओनु प्रभि पुरखि वेदावै ॥९॥ (१०९७-१३, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९७-१४)
जा छुटे ता खाकु तू सुंञी कंतु न जाणही ॥ (१०९७-१४, मारू, मः ५)
दुरजन सेती नेहु तू कै गुणि हरि रंगु माणही ॥१॥ (१०९७-१४, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९७-१५)
नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ (१०९७-१५, मारू, मः ५)
तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ (१०९७-१५, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९७-१६)
रते रंगि पारब्रह्म कै मनु तनु अति गुलालु ॥ (१०९७-१६, मारू, मः ५)
नानक विणु नावै आलूदिआ जिती होरु खिआलु ॥३॥ (१०९७-१७, मारू, मः ५)
पवड़ी ॥ (१०९७-१७)

हरि जीउ जा तू मेरा मित्रु है ता किआ मै काड़ा ॥ (१०९७-१७, मारू, मः ५)
जिनी ठगी जगु ठगिआ से तुधु मारि निवाड़ा ॥ (१०९७-१८, मारू, मः ५)
गुरि भउजलु पारि लंघाइआ जिता पावाड़ा ॥ (१०९७-१८, मारू, मः ५)
गुरमती सभि रस भोगदा वडा आखाड़ा ॥ (१०९७-१९, मारू, मः ५)
सभि इंद्रीआ वसि करि दितीओ सतवंता साड़ा ॥ (१०९७-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०९८

जितु लाईअनि तितै लगदीआ नह खिंजोताड़ा ॥ (१०९८-१, मारू, मः ५)
जो इछी सो फलु पाइदा गुरि अंदरि वाड़ा ॥ (१०९८-१, मारू, मः ५)
गुरु नानकु तुठा भाइरहु हरि वसदा नेड़ा ॥१०॥ (१०९८-१, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९८-२)
जा मूं आवहि चिति तू ता हभे सुख लहाउ ॥ (१०९८-२, मारू, मः ५)
नानक मन ही मंझि रंगावला पिरी तहिजा नाउ ॥१॥ (१०९८-३, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९८-३)
कपड़ भोग विकार ए हभे ही छार ॥ (१०९८-३, मारू, मः ५)
खाकु लोड़ेदा तंनि खे जो रते दीदार ॥२॥ (१०९८-४, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९८-४)
किआ तकहि बिआ पास करि हीअड़े हिकु अधारु ॥ (१०९८-४, मारू, मः ५)
थीउ संतन की रेणु जितु लभी सुख दातारु ॥३॥ (१०९८-५, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९८-५)
विणु करमा हरि जीउ न पाईऐ बिनु सतिगुर मनूआ न लगै ॥ (१०९८-५, मारू, मः ५)
धरमु धीरा कलि अंदरे इहु पापी मूलि न तगै ॥ (१०९८-६, मारू, मः ५)
अहि करु करे सु अहि करु पाए इक घड़ी मुहतु न लगै ॥ (१०९८-६, मारू, मः ५)
चारे जुग मै सोधिआ विणु संगति अहंकारु न भगै ॥ (१०९८-७, मारू, मः ५)
हउमै मूलि न छुटई विणु साधू सतसंगै ॥ (१०९८-७, मारू, मः ५)
तिचरु थाह न पावई जिचरु साहिब सिउ मन भंगै ॥ (१०९८-८, मारू, मः ५)
जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिसु घरि दीबाणु अभगै ॥ (१०९८-८, मारू, मः ५)
हरि किरपा ते सुखु पाइआ गुर सतिगुर चरणी लगै ॥११॥ (१०९८-९, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९८-९)
लोड़ीदो हभ जाइ सो मीरा मीरन्न सिरि ॥ (१०९८-१०, मारू, मः ५)
हठ मंझाहू सो धणी चउदो मुखि अलाइ ॥१॥ (१०९८-१०, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९८-१०)
माणिकू मोहि माउ डिन्ना धणी अपाहि ॥ (१०९८-१०, मारू, मः ५)
हिआउ महिजा ठंढड़ा मुखहु सचु अलाइ ॥२॥ (१०९८-११, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९८-११)

मू थीआऊ सेज नैणा पिरी विछावणा ॥ (१०९८-११, मारू, मः ५)
जे डेखै हिक वार ता सुख कीमा हू बाहरे ॥३॥ (१०९८-१२, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९८-१२)
मनु लोचै हरि मिलण कउ किउ दरसनु पाईआ ॥ (१०९८-१२, मारू, मः ५)
मै लख विड़ते साहिबा जे बिंद बोलाईआ ॥ (१०९८-१३, मारू, मः ५)
मै चारे कुंडा भालीआ तुधु जेवडु न साईआ ॥ (१०९८-१३, मारू, मः ५)
मै दसिहु मारगु संतहो किउ प्रभू मिलाईआ ॥ (१०९८-१४, मारू, मः ५)
मनु अरपिहु हउमै तजहु इतु पंथि जुलाईआ ॥ (१०९८-१४, मारू, मः ५)
नित सेविहु साहिबु आपणा सतसंगि मिलाईआ ॥ (१०९८-१५, मारू, मः ५)
सभे आसा पूरीआ गुर महलि बुलाईआ ॥ (१०९८-१५, मारू, मः ५)
तुधु जेवडु होरु न सुझई मेरे मित्र गोसाईआ ॥१२॥ (१०९८-१६, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९८-१६)
मू थीआऊ तखतु पिरी महिंजे पातिसाह ॥ (१०९८-१६, मारू, मः ५)
पाव मिलावे कोलि कवल जिवै बिगसावदो ॥१॥ (१०९८-१७, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९८-१७)
पिरीआ संदड़ी भुख मू लावण थी विथरा ॥ (१०९८-१७, मारू, मः ५)
जाणु मिठाई इख बेई पीड़े ना हुटै ॥२॥ (१०९८-१८, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९८-१८)
ठगा नीहु मत्रोड़ि जाणु गंध्रबा नगरी ॥ (१०९८-१८, मारू, मः ५)
सुख घटाऊ डूइ इसु पंधाणू घर घणे ॥३॥ (१०९८-१९, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९८-१९)
अकल कला नह पाईऐ प्रभु अलख अलेखं ॥ (१०९८-१९, मारू, मः ५)

पन्ना १०९९

खटु दरसन भ्रमते फिरहि नह मिलीऐ भेखं ॥ (१०९९-१, मारू, मः ५)
वरत करहि चंद्राइणा से कितै न लेखं ॥ (१०९९-१, मारू, मः ५)
बेद पड़हि सम्पूरना ततु सार न पेखं ॥ (१०९९-१, मारू, मः ५)
तिलकु कढहि इसनानु करि अंतरि कालेखं ॥ (१०९९-२, मारू, मः ५)
भेखी प्रभू न लभई विणु सची सिखं ॥ (१०९९-२, मारू, मः ५)
भूला मारगि सो पवै जिसु धुरि मसतकि लेखं ॥ (१०९९-३, मारू, मः ५)
तिनि जनमु सवारिआ आपणा जिनि गुरु अखी देखं ॥१३॥ (१०९९-३, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९९-४)
सो निवाहू गडि जो चलाऊ न थीऐ ॥ (१०९९-४, मारू, मः ५)
कार कूड़ावी छडि सम्मलु सचु धणी ॥१॥ (१०९९-४, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९९-५)

हभ समाणी जोति जिउ जल घटाऊ चंद्रमा ॥ (१०९९-५, मारू, मः ५)
परगटु थीआ आपि नानक मसतकि लिखिआ ॥२॥ (१०९९-५, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९९-६)
मुख सुहावे नामु चउ आठ पहर गुण गाउ ॥ (१०९९-६, मारू, मः ५)
नानक दरगह मन्नीअहि मिली निथावे थाउ ॥३॥ (१०९९-६, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९९-७)
बाहर भेखि न पाईऐ प्रभु अंतरजामी ॥ (१०९९-७, मारू, मः ५)
इकसु हरि जीउ बाहरी सभ फिरै निकामी ॥ (१०९९-७, मारू, मः ५)
मनु रता कुटम्ब सिउ नित गरबि फिरामी ॥ (१०९९-८, मारू, मः ५)
फिरहि गुमानी जग महि किआ गरबहि दामी ॥ (१०९९-८, मारू, मः ५)
चलदिआ नालि न चलई खिन जाइ बिलामी ॥ (१०९९-९, मारू, मः ५)
बिचरदे फिरहि संसार महि हरि जी हुकामी ॥ (१०९९-९, मारू, मः ५)
करमु खुला गुरु पाइआ हरि मिलिआ सुआमी ॥ (१०९९-१०, मारू, मः ५)
जो जनु हरि का सेवको हरि तिस की कामी ॥१४॥ (१०९९-१०, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९९-११)
मुखहु अलाए हभ मरणु पछाणंदो कोइ ॥ (१०९९-११, मारू, मः ५)
नानक तिना खाकु जिना यकीना हिक सिउ ॥१॥ (१०९९-११, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९९-१२)
जाणु वसंदो मंझि पछाणू को हेकड़ो ॥ (१०९९-१२, मारू, मः ५)
तै तनि पड़दा नाहि नानक जै गुरु भेटिआ ॥२॥ (१०९९-१२, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९९-१३)
मतड़ी काँढकु आह पाव धोवंदो पीवसा ॥ (१०९९-१३, मारू, मः ५)
मू तनि प्रेमु अथाह पसण कू सचा धणी ॥३॥ (१०९९-१३, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (१०९९-१३)
निरभउ नामु विसारिआ नालि माइआ रचा ॥ (१०९९-१४, मारू, मः ५)
आवै जाइ भवाईऐ बहु जोनी नचा ॥ (१०९९-१४, मारू, मः ५)
बचनु करे तै खिसकि जाइ बोले सभु कचा ॥ (१०९९-१४, मारू, मः ५)
अंदरहु थोथा कूड़िआरु कूड़ी सभ खचा ॥ (१०९९-१५, मारू, मः ५)
वैरु करे निरवैर नालि झूठे लालचा ॥ (१०९९-१५, मारू, मः ५)
मारिआ सचै पातिसाहि वेखि धुरि करमचा ॥ (१०९९-१६, मारू, मः ५)
जमदूती है हेरिआ दुख ही महि पचा ॥ (१०९९-१६, मारू, मः ५)
होआ तपावसु धर्म का नानक दरि सचा ॥१५॥ (१०९९-१६, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (१०९९-१७)
परभाते प्रभ नामु जपि गुर के चरण धिआइ ॥ (१०९९-१७, मारू, मः ५)
जनम मरण मलु उतरै सचे के गुण गाइ ॥१॥ (१०९९-१८, मारू, मः ५)

मः ५ ॥ (१०९९-१८)
देह अंधारी अंधु सुंञी नाम विहूणीआ ॥ (१०९९-१८, मारू, मः ५)
नानक सफल जनम्मु जै घटि वुठा सचु धणी ॥२॥ (१०९९-१९, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (१०९९-१९)
लोइण लोई डिठ पिआस न बुझै मू घणी ॥ (१०९९-१९, मारू, मः ५)

पन्ना ११००

नानक से अखड़ीआ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी ॥३॥ (११००-१, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (११००-१)
जिनि जनि गुरमुखि सेविआ तिनि सभि सुख पाई ॥ (११००-१, मारू, मः ५)
ओहु आपि तरिआ कुटम्ब सिउ सभु जगतु तराई ॥ (११००-२, मारू, मः ५)
ओनि हरि नामा धनु संचिआ सभ तिखा बुझाई ॥ (११००-२, मारू, मः ५)
ओनि छडे लालच दुनी के अंतरि लिव लाई ॥ (११००-३, मारू, मः ५)
ओसु सदा सदा घरि अनंदु है हरि सखा सहाई ॥ (११००-३, मारू, मः ५)
ओनि वैरी मित्र सम कीतिआ सभ नालि सुभाई ॥ (११००-४, मारू, मः ५)
होआ ओही अलु जग महि गुर गिआनु जपाई ॥ (११००-४, मारू, मः ५)
पूरबि लिखिआ पाइआ हरि सिउ बणि आई ॥१६॥ (११००-५, मारू, मः ५)
डखणे मः ५ ॥ (११००-५)
सचु सुहावा काढीऐ कूड़ै कूड़ी सोइ ॥ (११००-५, मारू, मः ५)
नानक विरले जाणीअहि जिन सचु पलै होइ ॥१॥ (११००-६, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११००-६)
सजण मुखु अनूपु अठे पहर निहालसा ॥ (११००-६, मारू, मः ५)
सुतड़ी सो सहु डिठु तै सुपने हउ खन्नीऐ ॥२॥ (११००-७, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११००-७)
सजण सचु परखि मुखि अलावणु थोथरा ॥ (११००-७, मारू, मः ५)
मन्न मझाहू लखि तुधहु दूरि न सु पिरी ॥३॥ (११००-८, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (११००-८)
धरति आकासु पातालु है चंदु सूरु बिनासी ॥ (११००-८, मारू, मः ५)
बादिसाह साह उमराव खान ढाहि डेरे जासी ॥ (११००-९, मारू, मः ५)
रंग तुंग गरीब मसत सभु लोकु सिधासी ॥ (११००-९, मारू, मः ५)
काजी सेख मसाइका सभे उठि जासी ॥ (११००-१०, मारू, मः ५)
पीर पैकाबर अउलीए को थिरु न रहासी ॥ (११००-१०, मारू, मः ५)
रोजा बाग निवाज कतेब विणु बुझे सभ जासी ॥ (११००-१०, मारू, मः ५)
लख चउरासीह मेदनी सभ आवै जासी ॥ (११००-११, मारू, मः ५)
निहचलु सचु खुदाइ एकु खुदाइ बंदा अबिनासी ॥१७॥ (११००-११, मारू, मः ५)

डखणे मः ५ ॥ (११००-१२)
डिठी हभ ढंढोलि हिकसु बाझु न कोइ ॥ (११००-१२, मारू, मः ५)
आउ सजण तू मुखि लगु मेरा तनु मनु ठंढा होइ ॥१॥ (११००-१२, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११००-१३)
आसकु आसा बाहरा मू मनि वडी आस ॥ (११००-१३, मारू, मः ५)
आस निरासा हिकु तू हउ बलि बलि बलि गईआस ॥२॥ (११००-१३, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११००-१४)
विछोड़ा सुणे डुखु विणु डिठे मरिओदि ॥ (११००-१४, मारू, मः ५)
बाझु पिआरे आपणे बिरही ना धीरोदि ॥३॥ (११००-१४, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (११००-१५)
तट तीर्थ देव देवालिआ केदारु मथुरा कासी ॥ (११००-१५, मारू, मः ५)
कोटि तेतीसा देवते सणु इंद्रै जासी ॥ (११००-१५, मारू, मः ५)
सिमृति सासत्र बेद चारि खटु दरस समासी ॥ (११००-१६, मारू, मः ५)
पोथी पंडित गीत कवित कवते भी जासी ॥ (११००-१६, मारू, मः ५)
जती सती संनिआसीआ सभि कालै वासी ॥ (११००-१७, मारू, मः ५)
मुनि जोगी दिगम्बरा जमै सणु जासी ॥ (११००-१७, मारू, मः ५)
जो दीसै सो विणसणा सभ बिनसि बिनासी ॥ (११००-१८, मारू, मः ५)
थिरु पारब्रह्मु परमेसरो सेवकु थिरु होसी ॥१८॥ (११००-१८, मारू, मः ५)
सलोक डखणे मः ५ ॥ (११००-१८)
सै नंगे नह नंग भुखे लख न भुखिआ ॥ (११००-१९, मारू, मः ५)
डुखे कोड़ि न डुख नानक पिरी पिखंदो सुभ दिसटि ॥१॥ (११००-१९, मारू, मः ५)

पन्ना ११०१

मः ५ ॥ (११०१-१)
सुख समूहा भोग भूमि सबाई को धणी ॥ (११०१-१, मारू, मः ५)
नानक हभो रोगु मिरतक नाम विहूणिआ ॥२॥ (११०१-१, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०१-२)
हिकस कूं तू आहि पछाणू भी हिकु करि ॥ (११०१-२, मारू, मः ५)
नानक आसड़ी निबाहि मानुख परथाई लजीवदो ॥३॥ (११०१-२, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (११०१-३)
निहचलु एकु नराइणो हरि अगम अगाधा ॥ (११०१-३, मारू, मः ५)
निहचलु नामु निधानु है जिसु सिमरत हरि लाधा ॥ (११०१-३, मारू, मः ५)
निहचलु कीरतनु गुण गोबिंद गुरमुखि गावाधा ॥ (११०१-४, मारू, मः ५)
सचु धरमु तपु निहचलो दिनु रैनि अराधा ॥ (११०१-४, मारू, मः ५)
दइआ धरमु तपु निहचलो जिसु करमि लिखाधा ॥ (११०१-५, मारू, मः ५)

निहचलु मसतकि लेखु लिखिआ सो टलै न टलाधा ॥ (११०१-५, मारू, मः ५)
निहचल संगति साध जन बचन निहचलु गुर साधा ॥ (११०१-६, मारू, मः ५)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सदा सदा आराधा ॥१९॥ (११०१-६, मारू, मः ५)
सलोक डखणे मः ५ ॥ (११०१-७)
जो डुबंदो आपि सो तराए किन् खे ॥ (११०१-७, मारू, मः ५)
तारेदड़ो भी तारि नानक पिर सिउ रतिआ ॥१॥ (११०१-७, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०१-८)
जिथै कोइ कथंनि नाउ सुणंदो मा पिरी ॥ (११०१-८, मारू, मः ५)
मूं जुलाऊं तथि नानक पिरी पसंदो हरिओ थीओसि ॥२॥ (११०१-८, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०१-९)
मेरी मेरी किआ करहि पुत्र कलत्र सनेह ॥ (११०१-९, मारू, मः ५)
नानक नाम विहूणीआ निमुणीआदी देह ॥३॥ (११०१-९, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (११०१-१०)
नैनी देखउ गुर दरसनो गुर चरणी मथा ॥ (११०१-१०, मारू, मः ५)
पैरी मारगि गुर चलदा पखा फेरी हथा ॥ (११०१-१०, मारू, मः ५)
अकाल मूरति रिदै धिआइदा दिनु रैनि जपंथा ॥ (११०१-११, मारू, मः ५)
मै छडिआ सगल अपाइणो भरवासै गुर समरथा ॥ (११०१-११, मारू, मः ५)
गुरि बखसिआ नामु निधानु सभो दुखु लथा ॥ (११०१-१२, मारू, मः ५)
भोगहु भुंचहु भाईहो पलै नामु अगथा ॥ (११०१-१२, मारू, मः ५)
नामु दानु इसनानु दिड़ु सदा करहु गुर कथा ॥ (११०१-१३, मारू, मः ५)
सहजु भइआ प्रभु पाइआ जम का भउ लथा ॥२०॥ (११०१-१३, मारू, मः ५)
सलोक डखणे मः ५ ॥ (११०१-१४)
लगड़ीआ पिरीअंनि पेखंदीआ ना तिपीआ ॥ (११०१-१४, मारू, मः ५)
हभ मझाहू सो धणी बिआ न डिठो कोइ ॥१॥ (११०१-१४, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०१-१५)
कथड़ीआ संताह ते सुखाऊ पंधीआ ॥ (११०१-१५, मारू, मः ५)
नानक लधड़ीआ तिन्नाह जिना भागु मथाहड़ै ॥२॥ (११०१-१५, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०१-१६)
डूंगरि जला थला भूमि बना फल कंदरा ॥ (११०१-१६, मारू, मः ५)
पाताला आकास पूरनु हभ घटा ॥ (११०१-१६, मारू, मः ५)
नानक पेखि जीओ इकतु सूति परोतीआ ॥३॥ (११०१-१७, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (११०१-१७)
हरि जी माता हरि जी पिता हरि जीउ प्रतिपालक ॥ (११०१-१७, मारू, मः ५)
हरि जी मेरी सार करे हम हरि के बालक ॥ (११०१-१८, मारू, मः ५)
सहजे सहजि खिलाइदा नही करदा आलक ॥ (११०१-१८, मारू, मः ५)

अउगणु को न चितारदा गल सेती लाइक ॥ (११०१-१६, मारू, मः ५)
मुहि मंगाँ सोई देवदा हरि पिता सुखदाइक ॥ (११०१-१६, मारू, मः ५)

पन्ना ११०२

गिआनु रासि नामु धनु सउपिओनु इसु सउदे लाइक ॥ (११०२-१, मारू, मः ५)
साझी गुर नालि बहालिआ सर्ब सुख पाइक ॥ (११०२-१, मारू, मः ५)
मै नालहु कदे न विछुड़ै हरि पिता सभना गला लाइक ॥२१॥ (११०२-२, मारू, मः ५)
सलोक डखणे मः ५ ॥ (११०२-२)
नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि ढूढि सजण संत पकिआ ॥ (११०२-३, मारू, मः ५)
ओइ जीवंदे विछुड़हि ओइ मुइआ न जाही छोड़ि ॥१॥ (११०२-३, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०२-४)
नानक बिजुलीआ चमकंनि घुरन्हि घटा अति कालीआ ॥ (११०२-४, मारू, मः ५)
बरसनि मेघ अपार नानक संगमि पिरी सुहंदीआ ॥२॥ (११०२-४, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०२-५)
जल थल नीरि भरे सीतल पवण झुलारदे ॥ (११०२-५, मारू, मः ५)
सेजड़ीआ सोइन्न हीरे लाल जड़ंदीआ ॥ (११०२-५, मारू, मः ५)
सुभर कपड़ भोग नानक पिरी विहूणी ततीआ ॥३॥ (११०२-६, मारू, मः ५)
पउड़ी ॥ (११०२-६)
कारणु करतै जो कीआ सोई है करणा ॥ (११०२-६, मारू, मः ५)
जे सउ धावहि प्राणीआ पावहि धुरि लहणा ॥ (११०२-७, मारू, मः ५)
बिनु करमा किछू न लभई जे फिरहि सभ धरणा ॥ (११०२-७, मारू, मः ५)
गुर मिलि भउ गोविंद का भै डरु दूरि करणा ॥ (११०२-८, मारू, मः ५)
भै ते बैरागु ऊपजै हरि खोजत फिरणा ॥ (११०२-८, मारू, मः ५)
खोजत खोजत सहजु उपजिआ फिरि जनमि न मरणा ॥ (११०२-८, मारू, मः ५)
हिआइ कमाइ धिआइआ पाइआ साध सरणा ॥ (११०२-९, मारू, मः ५)
बोहिथु नानक देउ गुरु जिसु हरि चड़ाए तिसु भउजलु तरणा ॥२२॥ (११०२-१०, मारू, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (११०२-१०)
पहिला मरणु कबूलि जीवण की छडि आस ॥ (११०२-१०, मारू, मः ५)
होहु सभना की रेणुका तउ आउ हमारै पासि ॥१॥ (११०२-११, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०२-११)
मुआ जीवंदा पेखु जीवंदे मरि जानि ॥ (११०२-११, मारू, मः ५)
जिन्हा मुहबति इक सिउ ते माणस प्रधान ॥२॥ (११०२-१२, मारू, मः ५)
मः ५ ॥ (११०२-१२)
जिसु मनि वसै पारब्रह्मु निकटि न आवै पीर ॥ (११०२-१२, मारू, मः ५)
भुख तिख तिसु न विआपई जमु नही आवै नीर ॥३॥ (११०२-१३, मारू, मः ५)

पउड़ी ॥ (११०२-१३)
कीमति कहणु न जाईऐ सचु साह अडोलै ॥ (११०२-१३, मारू, मः ५)
सिध साधिक गिआनी धिआनीआ कउणु तुधुनो तोलै ॥ (११०२-१४, मारू, मः ५)
भन्नण घड़ण समरथु है ओपति सभ परलै ॥ (११०२-१४, मारू, मः ५)
करण कारण समरथु है घटि घटि सभ बोलै ॥ (११०२-१५, मारू, मः ५)
रिजकु समाहे सभसै किआ माणसु डोलै ॥ (११०२-१५, मारू, मः ५)
गहिर गभीरु अथाहु तू गुण गिआन अमोलै ॥ (११०२-१६, मारू, मः ५)
सोई कम्मु कमावणा कीआ धुरि मउलै ॥ (११०२-१६, मारू, मः ५)
तुधहु बाहरि किछु नही नानकु गुण बोलै ॥२३॥१॥२॥ (११०२-१७, मारू, मः ५)
रागु मारू बाणी कबीर जीउ की (११०२-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११०२-१८)
पडीआ कवन कुमति तुम लागे ॥ (११०२-१९, मारू, भगत कबीर जी)
बूडहुगे परवार सकल सिउ रामु न जपहु अभागे ॥१॥ रहाउ ॥ (११०२-१९, मारू, भगत कबीर जी)
बेद पुरान पड़े का किआ गुनु खर चंदन जस भारा ॥ (११०२-१९, मारू, भगत कबीर जी)

पन्ना ११०३

राम नाम की गति नही जानी कैसे उतरसि पारा ॥१॥ (११०३-१, मारू, भगत कबीर जी)
जीअ बधहु सु धरमु करि थापहु अधरमु कहहु कत भाई ॥ (११०३-२, मारू, भगत कबीर जी)
आपस कउ मुनिवर करि थापहु का कउ कहहु कसाई ॥२॥ (११०३-२, मारू, भगत कबीर जी)
मन के अंधे आपि न बूझहु काहि बुझावहु भाई ॥ (११०३-३, मारू, भगत कबीर जी)
माइआ कारन बिदिआ बेचहु जनमु अबिरथा जाई ॥३॥ (११०३-३, मारू, भगत कबीर जी)
नारद बचन बिआसु कहत है सुक कउ पूछहु जाई ॥ (११०३-४, मारू, भगत कबीर जी)
कहि कबीर रामै रमि छूटहु नाहि त बूडे भाई ॥४॥१॥ (११०३-४, मारू, भगत कबीर जी)
बनहि बसे किउ पाईऐ जउ लउ मनहु न तजहि बिकार ॥ (११०३-५, मारू, भगत कबीर जी)
जिह घरु बनु समसरि कीआ ते पूरे संसार ॥१॥ (११०३-६, मारू, भगत कबीर जी)
सार सुखु पाईऐ रामा ॥ (११०३-६, मारू, भगत कबीर जी)
रंगि रवहु आतमै राम ॥१॥ रहाउ ॥ (११०३-६, मारू, भगत कबीर जी)
जटा भसम लेपन कीआ कहा गुफा महि बासु ॥ (११०३-७, मारू, भगत कबीर जी)
मनु जीते जगु जीतिआ जाँ ते बिखिआ ते होइ उदासु ॥२॥ (११०३-७, मारू, भगत कबीर जी)
अंजनु देइ सभै कोई टुकु चाहन माहि बिडानु ॥ (११०३-८, मारू, भगत कबीर जी)
गिआन अंजनु जिह पाइआ ते लोइन परवानु ॥३॥ (११०३-८, मारू, भगत कबीर जी)
कहि कबीर अब जानिआ गुरि गिआनु दीआ समझाइ ॥ (११०३-९, मारू, भगत कबीर जी)
अंतरगति हरि भेटिआ अब मेरा मनु कतहू न जाइ ॥४॥२॥ (११०३-९, मारू, भगत कबीर जी)
रिधि सिधि जा कउ फुरी तब काहू सिउ किआ काज ॥ (११०३-१०, मारू, भगत कबीर जी)
तेरे कहने की गति किआ कहउ मै बोलत ही बड लाज ॥१॥ (११०३-१०, मारू, भगत कबीर जी)

रामु जिह पाइआ राम ॥ (११०३-११, मारू, भगत कबीर जी)
ते भवहि न बारै बार ॥१॥ रहाउ ॥ (११०३-११, मारू, भगत कबीर जी)
झूठा जगु डहकै घना दिन दुइ बरतन की आस ॥ (११०३-१२, मारू, भगत कबीर जी)
राम उदकु जिह जन पीआ तिहि बहुरि न भई पिआस ॥२॥ (११०३-१२, मारू, भगत कबीर जी)
गुर प्रसादि जिह बूझिआ आसा ते भइआ निरासु ॥ (११०३-१३, मारू, भगत कबीर जी)
सभु सचु नदरी आइआ जउ आतम भइआ उदासु ॥३॥ (११०३-१३, मारू, भगत कबीर जी)
राम नाम रसु चाखिआ हरि नामा हर तारि ॥ (११०३-१४, मारू, भगत कबीर जी)
कहु कबीर कंचनु भइआ भ्रमु गइआ समुद्रै पारि ॥४॥३॥ (११०३-१४, मारू, भगत कबीर जी)
उदक समुंद सलल की साखिआ नदी तरंग समावहिगे ॥ (११०३-१५, मारू, भगत कबीर जी)
सुन्नहि सुन्नु मिलिआ समदरसी पवन रूप होइ जावहिगे ॥१॥ (११०३-१५, मारू, भगत कबीर जी)
बहुरि हम काहे आवहिगे ॥ (११०३-१६, मारू, भगत कबीर जी)
आवन जाना हुकमु तिसै का हुकमै बुझि समावहिगे ॥१॥ रहाउ ॥ (११०३-१६, मारू, भगत कबीर जी)
जब चूकै पंच धातु की रचना ऐसे भरमु चुकावहिगे ॥ (११०३-१७, मारू, भगत कबीर जी)
दरसनु छोडि भए समदरसी एको नामु धिआवहिगे ॥२॥ (११०३-१८, मारू, भगत कबीर जी)
जित हम लाए तित ही लागे तैसे कर्म कमावहिगे ॥ (११०३-१८, मारू, भगत कबीर जी)
हरि जी कृपा करे जउ अपनी तौ गुर के सबदि समावहिगे ॥३॥ (११०३-१९, मारू, भगत कबीर जी)
जीवत मरहु मरहु फुनि जीवहु पुनरपि जनमु न होई ॥ (११०३-१९, मारू, भगत कबीर जी)

पन्ना ११०४

कहु कबीर जो नामि समाने सुन्न रहिआ लिव सोई ॥४॥४॥ (११०४-१, मारू, भगत कबीर जी)
जउ तुम्ह मो कउ दूरि करत हउ तउ तुम मुकति बतावहु ॥ (११०४-१, मारू, भगत कबीर जी)
एक अनेक होइ रहिओ सगल महि अब कैसे भरमावहु ॥१॥ (११०४-२, मारू, भगत कबीर जी)
राम मो कउ तारि कहाँ लै जई है ॥ (११०४-३, मारू, भगत कबीर जी)
सोधउ मुकति कहा देउ कैसी करि प्रसादु मोहि पाई है ॥१॥ रहाउ ॥ (११०४-३, मारू, भगत कबीर जी)
तारन तरनु तबै लगु कहीऐ जब लगु ततु न जानिआ ॥ (११०४-४, मारू, भगत कबीर जी)
अब तउ बिमल भए घट ही महि कहि कबीर मनु मानिआ ॥२॥५॥ (११०४-४, मारू, भगत कबीर जी)
जिनि गड़ कोट कीए कंचन के छोडि गइआ सो रावनु ॥१॥ (११०४-५, मारू, भगत कबीर जी)
काहे कीजतु है मनि भावनु ॥ (११०४-६, मारू, भगत कबीर जी)
जब जमु आइ केस ते पकरै तह हरि को नामु छडावन ॥१॥ रहाउ ॥ (११०४-६, मारू, भगत कबीर जी)
कालु अकालु खसम का कीन्हा इहु परपंचु बधावनु ॥ (११०४-७, मारू, भगत कबीर जी)
कहि कबीर ते अंते मुकते जिन्ह हिरदै राम रसाइनु ॥२॥६॥ (११०४-७, मारू, भगत कबीर जी)
देही गावा जीउ धर महतउ बसहि पंच किरसाना ॥ (११०४-८, मारू, भगत कबीर जी)
नैनू नकटू स्रवनू रसपति इंद्री कहिआ न माना ॥१॥ (११०४-८, मारू, भगत कबीर जी)
बाबा अब न बसउ इह गाउ ॥ (११०४-९, मारू, भगत कबीर जी)
घरी घरी का लेखा मागै काइथु चेतू नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११०४-९, मारू, भगत कबीर जी)

धर्म राइ जब लेखा मागै बाकी निकसी भारी ॥ (११०४-१०, मारू, भगत कबीर जी)
पंच कृसानवा भागि गए लै बाधिओ जीउ दरबारी ॥२॥ (११०४-१०, मारू, भगत कबीर जी)
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु खेत ही करहु निबेरा ॥ (११०४-११, मारू, भगत कबीर जी)
अब की बार बखसि बंदे कउ बहुरि न भउजलि फेरा ॥३॥७॥ (११०४-११, मारू, भगत कबीर जी)
रागु मारू बाणी कबीर जीउ की (११०४-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११०४-१३)
अनभउ किनै न देखिआ बैरागीअड़े ॥ (११०४-१४, मारू, भगत कबीर जी)
बिनु भै अनभउ होइ वणाहम्बै ॥१॥ (११०४-१४, मारू, भगत कबीर जी)
सहु हदूरि देखै ताँ भउ पवै बैरागीअड़े ॥ (११०४-१४, मारू, भगत कबीर जी)
हुकमै बूझै त निरभउ होइ वणाहम्बै ॥२॥ (११०४-१५, मारू, भगत कबीर जी)
हरि पाखंडु न कीजई बैरागीअड़े ॥ (११०४-१५, मारू, भगत कबीर जी)
पाखंडि रता सभु लोकु वणाहम्बै ॥३॥ (११०४-१५, मारू, भगत कबीर जी)
तृसना पासु न छोडई बैरागीअड़े ॥ (११०४-१६, मारू, भगत कबीर जी)
ममता जालिआ पिंडु वणाहम्बै ॥४॥ (११०४-१६, मारू, भगत कबीर जी)
चिंता जालि तनु जालिआ बैरागीअड़े ॥ (११०४-१७, मारू, भगत कबीर जी)
जे मनु मिरतकु होइ वणाहम्बै ॥५॥ (११०४-१७, मारू, भगत कबीर जी)
सतिगुर बिनु बैरागु न होवई बैरागीअड़े ॥ (११०४-१७, मारू, भगत कबीर जी)
जे लोचै सभु कोइ वणाहम्बै ॥६॥ (११०४-१८, मारू, भगत कबीर जी)
करमु होवै सतिगुरु मिलै बैरागीअड़े ॥ (११०४-१८, मारू, भगत कबीर जी)
सहजे पावै सोइ वणाहम्बै ॥७॥ (११०४-१९, मारू, भगत कबीर जी)
कहु कबीर इक बेनती बैरागीअड़े ॥ (११०४-१९, मारू, भगत कबीर जी)
मो कउ भउजलु पारि उतारि वणाहम्बै ॥८॥१॥८॥ (११०४-१९, मारू, भगत कबीर जी)

पन्ना ११०५

राजन कउनु तुमारै आवै ॥ (११०५-१, मारू, भगत कबीर जी)
ऐसो भाउ बिदर को देखिओ ओहु गरीबु मोहि भावै ॥१॥ रहाउ ॥ (११०५-१, मारू, भगत कबीर जी)
हसती देखि भर्म ते भूला स्री भगवानु न जानिआ ॥ (११०५-२, मारू, भगत कबीर जी)
तुमरो दूधु बिदर को पान्नो अमृतु करि मै मानिआ ॥१॥ (११०५-२, मारू, भगत कबीर जी)
खीर समानि सागु मै पाइआ गुन गावत रैनि बिहानी ॥ (११०५-३, मारू, भगत कबीर जी)
कबीर को ठाकुरु अनद बिनोदी जाति न काहू की मानी ॥२॥९॥ (११०५-३, मारू, भगत कबीर जी)
सलोक कबीर ॥ (११०५-४)
गगन दमामा बाजिओ परिओ नीसानै घाउ ॥ (११०५-४, मारू, भगत कबीर जी)
खेतु जु माँडिओ सूरमा अब जूझन को दाउ ॥१॥ (११०५-५, मारू, भगत कबीर जी)
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन के हेत ॥ (११०५-५, मारू, भगत कबीर जी)
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न छाडै खेतु ॥२॥२॥ (११०५-६, मारू, भगत कबीर जी)

कबीर का सबदु रागु मारू बाणी नामदेउ जी की (११०५-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११०५-७)
चारि मुकति चारै सिधि मिलि कै दूलह प्रभ की सरनि परिओ ॥ (११०५-८, मारू, भगत नामदेव जी)
मुकति भइओ चउहूं जुग जानिओ जसु कीरति माथै छत्रु धरिओ ॥१॥ (११०५-८, मारू, भगत नामदेव जी)
राजा राम जपत को को न तरिओ ॥ (११०५-९, मारू, भगत नामदेव जी)
गुर उपदेसि साध की संगति भगतु भगतु ता को नामु परिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (११०५-९, मारू, भगत नामदेव जी)
संख चक्र माला तिलकु बिराजित देखि प्रतापु जमु डरिओ ॥ (११०५-१०, मारू, भगत नामदेव जी)
निरभउ भए राम बल गरजित जनम मरन संताप हिरिओ ॥२॥ (११०५-११, मारू, भगत नामदेव जी)
अम्बरीक कउ दीओ अभै पदु राजु भभीखन अधिक करिओ ॥ (११०५-११, मारू, भगत नामदेव जी)
नउ निधि ठाकुरि दई सुदामै ध्रूअ अटलु अजहू न टरिओ ॥३॥ (११०५-१२, मारू, भगत नामदेव जी)
भगत हेति मारिओ हरनाखसु नरसिंघ रूप होइ देह धरिओ ॥ (११०५-१३, मारू, भगत नामदेव जी)
नामा कहै भगति बसि केसव अजहूं बलि के दुआर खरो ॥४॥१॥ (११०५-१३, मारू, भगत नामदेव जी)
मारू कबीर जीउ ॥ (११०५-१४)
दीनु बिसारिओ रे दिवाने दीनु बिसारिओ रे ॥ (११०५-१४, मारू, भगत कबीर जी)
पेटु भरिओ पसूआ जिउ सोइओ मनुखु जनमु है हारिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (११०५-१५, मारू, भगत कबीर जी)
साधसंगति कबहू नही कीनी रचिओ धंधै झूठ ॥ (११०५-१५, मारू, भगत कबीर जी)
सुआन सूकर बाइस जिवै भटकतु चालिओ ऊठि ॥१॥ (११०५-१६, मारू, भगत कबीर जी)
आपस कउ दीरघु करि जानै अउरन कउ लग मात ॥ (११०५-१६, मारू, भगत कबीर जी)
मनसा बाचा करमना मै देखे दोजक जात ॥२॥ (११०५-१७, मारू, भगत कबीर जी)
कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ (११०५-१८, मारू, भगत कबीर जी)
निंदा करते जनमु सिरानो कबहू न सिमरिओ रामु ॥३॥ (११०५-१८, मारू, भगत कबीर जी)
कहि कबीर चेतै नही मूरखु मुगधु गवारु ॥ (११०५-१९, मारू, भगत कबीर जी)
रामु नामु जानिओ नही कैसे उतरसि पारि ॥४॥१॥ (११०५-१९, मारू, भगत कबीर जी)

पन्ना ११०६

रागु मारू बाणी जैदेउ जीउ की (११०६-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११०६-२)
चंद सत भेदिआ नाद सत पूरिआ सूर सत खोड़सा दतु कीआ ॥ (११०६-२, मारू, भगत जैदेव जी)
अबल बलु तोड़िआ अचल चलु थपिआ अघड़ु घड़िआ तहा अपिउ पीआ ॥१॥ (११०६-२, मारू, भगत जैदेव जी)
मन आदि गुण आदि वखाणिआ ॥ (११०६-३, मारू, भगत जैदेव जी)
तेरी दुबिधा द्रसटि सम्मानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११०६-४, मारू, भगत जैदेव जी)
अरधि कउ अरधिआ सरधि कउ सरधिआ सलल कउ सललि सम्मानि आइआ ॥ (११०६-४, मारू, भगत जैदेव जी)
बदति जैदेउ जैदेव कउ रंमिआ ब्रह्मु निरबाणु लिव लीणु पाइआ ॥२॥१॥ (११०६-५, मारू, भगत जैदेव जी)
कबीरु ॥ मारू ॥ (११०६-६)

रामु सिमरु पछुताहिगा मन ॥ (११०६-६, मारू, भगत कबीर जी)
पापी जीअरा लोभु करतु है आजु कालि उठि जाहिगा ॥१॥ रहाउ ॥ (११०६-६, मारू, भगत कबीर जी)
लालच लागे जनमु गवाइआ माइआ भर्म भुलाहिगा ॥ (११०६-७, मारू, भगत कबीर जी)
धन जोबन का गरबु न कीजै कागद जिउ गलि जाहिगा ॥१॥ (११०६-७, मारू, भगत कबीर जी)
जउ जमु आइ केस गहि पटकै ता दिन किछु न बसाहिगा ॥ (११०६-८, मारू, भगत कबीर जी)
सिमरनु भजनु दइआ नही कीनी तउ मुखि चोटा खाहिगा ॥२॥ (११०६-८, मारू, भगत कबीर जी)
धर्म राइ जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिगा ॥ (११०६-९, मारू, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जाँहिगा ॥३॥१॥ (११०६-१०, मारू, भगत कबीर जी)
रागु मारू बाणी रविदास जीउ की (११०६-११)
੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११०६-११)
ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥ (११०६-१२, मारू, भगत रविदास जी)
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ (११०६-१२, मारू, भगत रविदास जी)
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥ (११०६-१३, मारू, भगत रविदास जी)
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥१॥ (११०६-१३, मारू, भगत रविदास जी)
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥ (११०६-१४, मारू, भगत रविदास जी)
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥२॥१॥ (११०६-१४, मारू, भगत रविदास जी)
मारू ॥ (११०६-१५)
सुख सागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जा के रे ॥ (११०६-१५, मारू, भगत रविदास जी)
चारि पदार्थ असट महा सिधि नव निधि कर तल ता कै ॥१॥ (११०६-१५, मारू, भगत रविदास जी)
हरि हरि हरि न जपसि रसना ॥ (११०६-१६, मारू, भगत रविदास जी)
अवर सभ छाडि बचन रचना ॥१॥ रहाउ ॥ (११०६-१६, मारू, भगत रविदास जी)
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर माही ॥ (११०६-१७, मारू, भगत रविदास जी)
बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥२॥ (११०६-१७, मारू, भगत रविदास जी)
सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी ॥ (११०६-१८, मारू, भगत रविदास जी)
कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी ॥३॥२॥१५॥ (११०६-१९, मारू, भगत रविदास जी)

पन्ना ११०७

तुखारी छंत महला १ बारह माहा (११०७-१)
੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११०७-२)
तू सुणि किरत करम्मा पुरबि कमाइआ ॥ (११०७-३, तुखारी, मः १)
सिरि सिरि सुख सहम्मा देहि सु तू भला ॥ (११०७-३, तुखारी, मः १)
हरि रचना तेरी किआ गति मेरी हरि बिनु घड़ी न जीवा ॥ (११०७-३, तुखारी, मः १)
पृअ बाझु दुहेली कोइ न बेली गुरमुखि अमृतु पीवाँ ॥ (११०७-४, तुखारी, मः १)
रचना राचि रहे निरंकारी प्रभ मनि कर्म सुकरमा ॥ (११०७-५, तुखारी, मः १)
नानक पंथु निहाले सा धन तू सुणि आतम रामा ॥१॥ (११०७-५, तुखारी, मः १)

बाबीहा प्रिउ बोले कोकिल बाणीआ ॥ (११०७-६, तुखारी, मः १)
सा धन सभि रस चोलै अंकि समाणीआ ॥ (११०७-६, तुखारी, मः १)
हरि अंकि समाणी जा प्रभ भाणी सा सोहागणि नारे ॥ (११०७-७, तुखारी, मः १)
नव घर थापि महल घरु ऊचउ निज घरि वासु मुरारे ॥ (११०७-७, तुखारी, मः १)
सभ तेरी तू मेरा प्रीतमु निसि बासुर रंगि रावै ॥ (११०७-८, तुखारी, मः १)
नानक प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा कोकिल सबदि सुहावै ॥२॥ (११०७-८, तुखारी, मः १)
तू सुणि हरि रस भिन्ने प्रीतम आपणे ॥ (११०७-९, तुखारी, मः १)
मनि तनि रवत रवन्ने घड़ी न बीसरै ॥ (११०७-९, तुखारी, मः १)
किउ घड़ी बिसारी हउ बलिहारी हउ जीवा गुण गाए ॥ (११०७-१०, तुखारी, मः १)
ना कोई मेरा हउ किसु केरा हरि बिनु रहणु न जाए ॥ (११०७-१०, तुखारी, मः १)
ओट गही हरि चरण निवासे भए पवित्र सरीरा ॥ (११०७-११, तुखारी, मः १)
नानक द्रिसटि दीरघ सुखु पावै गुर सबदी मनु धीरा ॥३॥ (११०७-११, तुखारी, मः १)
बरसै अमृत धार बूंद सुहावणी ॥ (११०७-१२, तुखारी, मः १)
साजन मिले सहजि सुभाइ हरि सिउ प्रीति बणी ॥ (११०७-१२, तुखारी, मः १)
हरि मंदरि आवै जा प्रभ भावै धन ऊभी गुण सारी ॥ (११०७-१३, तुखारी, मः १)
घरि घरि कंतु रवै सोहागणि हउ किउ कंति विसारी ॥ (११०७-१३, तुखारी, मः १)
उनवि घन छाए बरसु सुभाए मनि तनि प्रेमु सुखावै ॥ (११०७-१४, तुखारी, मः १)
नानक वरसै अमृत बाणी करि किरपा घरि आवै ॥४॥ (११०७-१५, तुखारी, मः १)
चेतु बसंतु भला भवर सुहावड़े ॥ (११०७-१५, तुखारी, मः १)

पन्ना ११०८

बन फूले मंझ बारि मै पिरु घरि बाहुड़ै ॥ (११०८-१, तुखारी, मः १)
पिरु घरि नही आवै धन किउ सुखु पावै बिरहि बिरोध तनु छीजै ॥ (११०८-१, तुखारी, मः १)
कोकिल अंबि सुहावी बोलै किउ दुखु अंकि सहीजै ॥ (११०८-२, तुखारी, मः १)
भवरु भवंता फूली डाली किउ जीवा मरु माए ॥ (११०८-२, तुखारी, मः १)
नानक चेति सहजि सुखु पावै जे हरि वरु घरि धन पाए ॥५॥ (११०८-३, तुखारी, मः १)
वैसाखु भला साखा वेस करे ॥ (११०८-३, तुखारी, मः १)
धन देखै हरि दुआरि आवहु दइआ करे ॥ (११०८-४, तुखारी, मः १)
घरि आउ पिआरे दुतर तारे तुधु बिनु अढु न मोलो ॥ (११०८-४, तुखारी, मः १)
कीमति कउण करे तुधु भावाँ देखि दिखावै ढोलो ॥ (११०८-५, तुखारी, मः १)
दूरि न जाना अंतरि माना हरि का महलु पछाना ॥ (११०८-५, तुखारी, मः १)
नानक वैसाखीं प्रभु पावै सुरति सबदि मनु माना ॥६॥ (११०८-६, तुखारी, मः १)
माहु जेठु भला प्रीतमु किउ बिसरै ॥ (११०८-६, तुखारी, मः १)
थल तापहि सर भार सा धन बिनउ करै ॥ (११०८-७, तुखारी, मः १)
धन बिनउ करेदी गुण सारेदी गुण सारी प्रभ भावा ॥ (११०८-७, तुखारी, मः १)

साचै महलि रहै बैरागी आवण देहि त आवा ॥ (११०८-८, तुखारी, मः १)
निमाणी निताणी हरि बिनु किउ पावै सुख महली ॥ (११०८-८, तुखारी, मः १)
नानक जेठि जाणै तिसु जैसी करमि मिलै गुण गहिली ॥७॥ (११०८-९, तुखारी, मः १)
आसाड़ु भला सूरजु गगनि तपै ॥ (११०८-९, तुखारी, मः १)
धरती दूख सहै सोखै अगनि भखै ॥ (११०८-१०, तुखारी, मः १)
अगनि रसु सोखै मरीऐ धोखै भी सो किरतु न हारे ॥ (११०८-१०, तुखारी, मः १)
रथु फिरै छाइआ धन ताकै टीडु लवै मंझि बारे ॥ (११०८-१०, तुखारी, मः १)
अवगण बाधि चली दुखु आगै सुखु तिसु साचु समाले ॥ (११०८-११, तुखारी, मः १)
नानक जिस नो इहु मनु दीआ मरणु जीवणु प्रभ नाले ॥८॥ (११०८-१२, तुखारी, मः १)
सावणि सरस मना घण वरसहि रुति आए ॥ (११०८-१२, तुखारी, मः १)
मै मनि तनि सहु भावै पिर परदेसि सिधाए ॥ (११०८-१३, तुखारी, मः १)
पिरु घरि नही आवै मरीऐ हावै दामनि चमकि डराए ॥ (११०८-१३, तुखारी, मः १)
सेज इकेली खरी दुहेली मरणु भइआ दुखु माए ॥ (११०८-१४, तुखारी, मः १)
हरि बिनु नीद भूख कहु कैसी कापड़ु तनि न सुखावए ॥ (११०८-१४, तुखारी, मः १)
नानक सा सोहागणि कंती पिर कै अंकि समावए ॥९॥ (११०८-१५, तुखारी, मः १)
भादउ भरमि भुली भरि जोबनि पछुताणी ॥ (११०८-१५, तुखारी, मः १)
जल थल नीरि भरे बरस रुते रंगु माणी ॥ (११०८-१६, तुखारी, मः १)
बरसै निसि काली किउ सुखु बाली दादर मोर लवंते ॥ (११०८-१६, तुखारी, मः १)
प्रिउ प्रिउ चवै बबीहा बोले भुइअंगम फिरहि डसंते ॥ (११०८-१७, तुखारी, मः १)
मछर डंग साइर भर सुभर बिनु हरि किउ सुखु पाईऐ ॥ (११०८-१७, तुखारी, मः १)
नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ॥१०॥ (११०८-१८, तुखारी, मः १)
असुनि आउ पिरा सा धन झूरि मुई ॥ (११०८-१९, तुखारी, मः १)
ता मिलीऐ प्रभ मेले दूजै भाइ खुई ॥ (११०८-१९, तुखारी, मः १)
झूठि विगुती ता पिर मुती कुकह काह सि फुले ॥ (११०८-१९, तुखारी, मः १)

पन्ना ११०९

आगै घाम पिछै रुति जाडा देखि चलत मनु डोले ॥ (११०९-१, तुखारी, मः १)
दह दिसि साख हरी हरीआवल सहजि पकै सो मीठा ॥ (११०९-१, तुखारी, मः १)
नानक असुनि मिलहु पिआरे सतिगुर भए बसीठा ॥११॥ (११०९-२, तुखारी, मः १)
कतकि किरतु पइआ जो प्रभ भाइआ ॥ (११०९-२, तुखारी, मः १)
दीपकु सहजि बलै तति जलाइआ ॥ (११०९-३, तुखारी, मः १)
दीपक रस तेलो धन पिर मेलो धन ओमाहै सरसी ॥ (११०९-३, तुखारी, मः १)
अवगण मारी मरै न सीझै गुणि मारी ता मरसी ॥ (११०९-४, तुखारी, मः १)
नामु भगति दे निज घरि बैठे अजहु तिनाड़ी आसा ॥ (११०९-४, तुखारी, मः १)
नानक मिलहु कपट दर खोलहु एक घड़ी खटु मासा ॥१२॥ (११०९-५, तुखारी, मः १)

मंघर माहु भला हरि गुण अंकि समावए ॥ (११०९-५, तुखारी, मः १)
गुणवंती गुण रवै मै पिरु निहचलु भावए ॥ (११०९-६, तुखारी, मः १)
निहचलु चतुरु सुजाणु बिधाता चंचलु जगतु सबाइआ ॥ (११०९-६, तुखारी, मः १)
गिआनु धिआनु गुण अंकि समाणे प्रभ भाणे ता भाइआ ॥ (११०९-७, तुखारी, मः १)
गीत नाद कवित कवे सुणि राम नामि दुखु भागै ॥ (११०९-७, तुखारी, मः १)
नानक सा धन नाह पिआरी अभ भगती पिर आगै ॥१३॥ (११०९-८, तुखारी, मः १)
पोखि तुखारु पड़ै वणु तृणु रसु सोखै ॥ (११०९-८, तुखारी, मः १)
आवत की नाही मनि तनि वसहि मुखे ॥ (११०९-९, तुखारी, मः १)
मनि तनि रवि रहिआ जगजीवनु गुर सबदी रंगु माणी ॥ (११०९-९, तुखारी, मः १)
अंडज जेरज सेतज उतभुज घटि घटि जोति समाणी ॥ (११०९-१०, तुखारी, मः १)
दरसनु देहु दइआपति दाते गति पावउ मति देहो ॥ (११०९-१०, तुखारी, मः १)
नानक रंगि रवै रसि रसीआ हरि सिउ प्रीति सनेहो ॥१४॥ (११०९-११, तुखारी, मः १)
माघि पुनीत भई तीरथु अंतरि जानिआ ॥ (११०९-११, तुखारी, मः १)
साजन सहजि मिले गुण गहि अंकि समानिआ ॥ (११०९-१२, तुखारी, मः १)
प्रीतम गुण अंके सुणि प्रभ बंके तुधु भावा सरि नावा ॥ (११०९-१२, तुखारी, मः १)
गंग जमुन तह बेणी संगम सात समुंद समावा ॥ (११०९-१३, तुखारी, मः १)
पुन्न दान पूजा परमेसुर जुगि जुगि एको जाता ॥ (११०९-१३, तुखारी, मः १)
नानक माघि महा रसु हरि जपि अठसठि तीर्थ नाता ॥१५॥ (११०९-१४, तुखारी, मः १)
फलगुनि मनि रहसी प्रेमु सुभाइआ ॥ (११०९-१४, तुखारी, मः १)
अनदिनु रहसु भइआ आपु गवाइआ ॥ (११०९-१५, तुखारी, मः १)
मन मोहु चुकाइआ जा तिसु भाइआ करि किरपा घरि आओ ॥ (११०९-१५, तुखारी, मः १)
बहुते वेस करी पिर बाझहु महली लहा न थाओ ॥ (११०९-१६, तुखारी, मः १)
हार डोर रस पाट पटम्बर पिरि लोड़ी सीगारी ॥ (११०९-१६, तुखारी, मः १)
नानक मेलि लई गुरि अपणै घरि वरु पाइआ नारी ॥१६॥ (११०९-१७, तुखारी, मः १)
बे दस माह रुती थिती वार भले ॥ ११०९-१७, तुखारी, मः १)
घड़ी मूरत पल साचे आए सहजि मिले ॥(११०९-१८, तुखारी, मः १)
प्रभ मिले पिआरे कारज सारे करता सभ बिधि जाणै ॥ (११०९-१८, तुखारी, मः १)
जिनि सीगारी तिसहि पिआरी मेलु भइआ रंगु माणै ॥ (११०९-१९, तुखारी, मः १)
घरि सेज सुहावी जा पिरि रावी गुरमुखि मसतकि भागो ॥ (११०९-१९, तुखारी, मः १)

पन्ना १११०

नानक अहिनिसि रावै प्रीतमु हरि वरु थिरु सोहागो ॥१७॥१॥ (१११०-१, तुखारी, मः १)
तुखारी महला १ ॥ (१११०-१)
पहिलै पहरै नैण सलोनड़ीए रैणि अंधिआरी राम ॥ (१११०-२, तुखारी, मः १)
वखरु राखु मुईए आवै वारी राम ॥ (१११०-२, तुखारी, मः १)

वारी आवै कवणु जगावै सूती जम रसु चूसए ॥ (१११०-३, तुखारी, मः १)
रैणि अंधेरी किआ पति तेरी चोरु पड़ै घरु मूसए ॥ (१११०-३, तुखारी, मः १)
राखणहारा अगम अपारा सुणि बेनंती मेरीआ ॥ (१११०-४, तुखारी, मः १)
नानक मूरखु कबहि न चेतै किआ सूझै रैणि अंधेरीआ ॥१॥ (१११०-४, तुखारी, मः १)
दूजा पहरु भइआ जागु अचेती राम ॥ (१११०-५, तुखारी, मः १)
वखरु राखु मुईए खाजै खेती राम ॥ (१११०-५, तुखारी, मः १)
राखहु खेती हरि गुर हेती जागत चोरु न लागै ॥ (१११०-५, तुखारी, मः १)
जम मगि न जावहु ना दुखु पावहु जम का डरु भउ भागै ॥ (१११०-६, तुखारी, मः १)
रवि ससि दीपक गुरमति दुआरै मनि साचा मुखि धिआवए ॥ (१११०-६, तुखारी, मः १)
नानक मूरखु अजहु न चेतै किव दूजै सुखु पावए ॥२॥ (१११०-७, तुखारी, मः १)
तीजा पहरु भइआ नीद विआपी राम ॥ (१११०-८, तुखारी, मः १)
माइआ सुत दारा दूखि संतापी राम ॥ (१११०-८, तुखारी, मः १)
माइआ सुत दारा जगत पिआरा चोग चुगै नित फासै ॥ (१११०-८, तुखारी, मः १)
नामु धिआवै ता सुखु पावै गुरमति कालु न ग्रासै ॥ (१११०-९, तुखारी, मः १)
जम्मणु मरणु कालु नही छोडै विणु नावै संतापी ॥ (१११०-९, तुखारी, मः १)
नानक तीजै त्रिबिधि लोका माइआ मोहि विआपी ॥३॥ (१११०-१०, तुखारी, मः १)
चउथा पहरु भइआ दउतु बिहागै राम ॥ (१११०-१०, तुखारी, मः १)
तिन घरु राखिअड़ा जुो अनदिनु जागै राम ॥ (१११०-११, तुखारी, मः १)
गुर पूछि जागे नामि लागे तिना रैणि सुहेलीआ ॥ (१११०-११, तुखारी, मः १)
गुर सबदु कमावहि जनमि न आवहि तिना हरि प्रभु बेलीआ ॥ (१११०-१२, तुखारी, मः १)
कर कंपि चरण सरीरु कम्पै नैण अंधुले तनु भसम से ॥ (१११०-१२, तुखारी, मः १)
नानक दुखीआ जुग चारे बिनु नाम हरि के मनि वसे ॥४॥ (१११०-१३, तुखारी, मः १)
खूली गंठि उठो लिखिआ आइआ राम ॥ (१११०-१४, तुखारी, मः १)
रस कस सुख ठाके बंधि चलाइआ राम ॥ (१११०-१४, तुखारी, मः १)
बंधि चलाइआ जा प्रभ भाइआ ना दीसै ना सुणीऐ ॥ (१११०-१४, तुखारी, मः १)
आपण वारी सभसै आवै पकी खेती लुणीऐ ॥ (१११०-१५, तुखारी, मः १)
घड़ी चसे का लेखा लीजै बुरा भला सहु जीआ ॥ (१११०-१५, तुखारी, मः १)
नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनि प्रभि कारणु कीआ ॥५॥२॥ (१११०-१६, तुखारी, मः १)
तुखारी महला १ ॥ (१११०-१७)
तारा चड़िआ लम्मा किउ नदरि निहालिआ राम ॥ (१११०-१७, तुखारी, मः १)
सेवक पूर करम्मा सतिगुरि सबदि दिखालिआ राम ॥ (१११०-१७, तुखारी, मः १)
गुर सबदि दिखालिआ सचु समालिआ अहिनिसि देखि बीचारिआ ॥ (१११०-१८, तुखारी, मः १)
धावत पंच रहे घरु जाणिआ कामु क्रोधु बिखु मारिआ ॥ (१११०-१९, तुखारी, मः १)
अंतरि जोति भई गुर साखी चीने राम करम्मा ॥ (१११०-१९, तुखारी, मः १)

नानक हउमै मारि पतीणे तारा चड़िआ लम्मा ॥१॥ (१११११-१, तुखारी, मः १)
गुरमुखि जागि रहे चूकी अभिमानी राम ॥ (१११११-१, तुखारी, मः १)
अनदिनु भोरु भइआ साचि समानी राम ॥ (१११११-१, तुखारी, मः १)
साचि समानी गुरमुखि मनि भानी गुरमुखि साबतु जागे ॥ (१११११-२, तुखारी, मः १)
साचु नामु अमृतु गुरि दीआ हरि चरनी लिव लागे ॥ (१११११-२, तुखारी, मः १)
प्रगटी जोति जोति महि जाता मनमुखि भरमि भुलाणी ॥ (१११११-३, तुखारी, मः १)
नानक भोरु भइआ मनु मानिआ जागत रैणि विहाणी ॥२॥ (१११११-४, तुखारी, मः १)
अउगण वीसरिआ गुणी घरु कीआ राम ॥ (१११११-४, तुखारी, मः १)
एको रवि रहिआ अवरु न बीआ राम ॥ (१११११-५, तुखारी, मः १)
रवि रहिआ सोई अवरु न कोई मन ही ते मनु मानिआ ॥ (१११११-५, तुखारी, मः १)
जिनि जल थल तृभवण घटु घटु थापिआ सो प्रभु गुरमुखि जानिआ ॥ (१११११-६, तुखारी, मः १)
करण कारण समरथ अपारा तृबिधि मेटि समाई ॥ (१११११-६, तुखारी, मः १)
नानक अवगण गुणह समाणे ऐसी गुरमति पाई ॥३॥ (१११११-७, तुखारी, मः १)
आवण जाण रहे चूका भोला राम ॥ (१११११-७, तुखारी, मः १)
हउमै मारि मिले साचा चोला राम ॥ (१११११-८, तुखारी, मः १)
हउमै गुरि खोई परगटु होई चूके सोग संतापै ॥ (१११११-८, तुखारी, मः १)
जोती अंदरि जोति समाणी आपु पछाता आपै ॥ (१११११-८, तुखारी, मः १)
पेईअड़ै घरि सबदि पतीणी साहुरड़ै पिर भाणी ॥ (१११११-९, तुखारी, मः १)
नानक सतिगुरि मेलि मिलाई चूकी काणि लोकाणी ॥४॥३॥ (१११११-९, तुखारी, मः १)
तुखारी महला १ ॥ (१११११-१०)
भोलावड़ै भुली भुलि भुलि पछोताणी ॥ (१११११-१०, तुखारी, मः १)
पिरि छोडिअड़ी सुती पिर की सार न जाणी ॥ (१११११-११, तुखारी, मः १)
पिरि छोडी सुती अवगणि मुती तिसु धन विधण राते ॥ (१११११-११, तुखारी, मः १)
कामि क्रोधि अहंकारि विगुती हउमै लगी ताते ॥ (१११११-१२, तुखारी, मः १)
उडरि हंसु चलिआ फुरमाइआ भसमै भसम समाणी ॥ (१११११-१२, तुखारी, मः १)
नानक सचे नाम विहूणी भुलि भुलि पछोताणी ॥१॥ (१११११-१३, तुखारी, मः १)
सुणि नाह पिआरे इक बेनंती मेरी ॥ (१११११-१३, तुखारी, मः १)
तू निज घरि वसिअड़ा हउ रुलि भसमै ढेरी ॥ (१११११-१४, तुखारी, मः १)
बिनु अपने नाहै कोइ न चाहै किआ कहीऐ किआ कीजै ॥ (१११११-१४, तुखारी, मः १)
अमृत नामु रसन रसु रसना गुर सबदी रसु पीजै ॥ (१११११-१५, तुखारी, मः १)
विणु नावै को संगि न साथी आवै जाइ घनेरी ॥ (१११११-१५, तुखारी, मः १)
नानक लाहा लै घरि जाईऐ साची सचु मति तेरी ॥२॥ (१११११-१६, तुखारी, मः १)
साजन देसि विदेसीअड़े सानेहड़े देदी ॥ (१११११-१६, तुखारी, मः १)

सारि समाले तिन सजणा मुंध नैण भरेदी ॥ (१११११-१७, तुखारी, मः १)
मुंध नैण भरेदी गुण सारेदी किउ प्रभ मिला पिआरे ॥ (११११-१७, तुखारी, मः १)
मारगु पंथु न जाणउ विखड़ा किउ पाईऐ पिरु पारे ॥ (११११-१८, तुखारी, मः १)
सतिगुर सबदी मिलै विछुन्नी तनु मनु आगै राखै ॥ (११११-१८, तुखारी, मः १)
नानक अमृत बिरखु महा रस फलिआ मिलि प्रीतम रसु चाखै ॥३॥ (११११-१९, तुखारी, मः १)
महलि बुलाइड़ीए बिलमु न कीजै ॥ (११११-१९, तुखारी, मः १)

पन्ना १११२

अनदिनु रतड़ीए सहजि मिलीजै ॥ (१११२-१, तुखारी, मः १)
सुखि सहजि मिलीजै रोसु न कीजै गरबु निवारि समाणी ॥ (१११२-१, तुखारी, मः १)
साचै राती मिलै मिलाई मनमुखि आवण जाणी ॥ (१११२-२, तुखारी, मः १)
जब नाची तब घूघटु कैसा मटुकी फोड़ि निरारी ॥ (१११२-२, तुखारी, मः १)
नानक आपै आपु पछाणै गुरमुखि ततु बीचारी ॥४॥४॥ (१११२-३, तुखारी, मः १)
तुखारी महला १ ॥ (१११२-३)
मेरे लाल रंगीले हम लालन के लाले ॥ (१११२-४, तुखारी, मः १)
गुरि अलखु लखाइआ अवरु न दूजा भाले ॥ (१११२-४, तुखारी, मः १)
गुरि अलखु लखाइआ जा तिसु भाइआ जा प्रभि किरपा धारी ॥ (१११२-४, तुखारी, मः १)
जगजीवनु दाता पुरखु बिधाता सहजि मिले बनवारी ॥ (१११२-५, तुखारी, मः १)
नदरि करहि तू तारहि तरीऐ सचु देवहु दीन दइआला ॥ (१११२-६, तुखारी, मः १)
प्रणवति नानक दासनि दासा तू सर्ब जीआ प्रतिपाला ॥१॥ (१११२-६, तुखारी, मः १)
भरिपुरि धारि रहे अति पिआरे ॥ (१११२-७, तुखारी, मः १)
सबदे रवि रहिआ गुर रूपि मुरारे ॥ (१११२-७, तुखारी, मः १)
गुर रूप मुरारे तृभवण धारे ता का अंतु न पाइआ ॥ (१११२-८, तुखारी, मः १)
रंगी जिनसी जंत उपाए नित देवै चड़ै सवाइआ ॥ (१११२-८, तुखारी, मः १)
अपरम्परु आपे थापि उथापे तिसु भावै सो होवै ॥ (१११२-९, तुखारी, मः १)
नानक हीरा हीरै बेधिआ गुण कै हारि परोवै ॥२॥ (१११२-९, तुखारी, मः १)
गुण गुणहि समाणे मसतकि नाम नीसाणो ॥ (१११२-१०, तुखारी, मः १)
सचु साचि समाइआ चूका आवण जाणो ॥ (१११२-१०, तुखारी, मः १)
सचु साचि पछाता साचै राता साचु मिलै मनि भावै ॥ (१११२-११, तुखारी, मः १)
साचे ऊपरि अवरु न दीसै साचे साचि समावै ॥ (१११२-११, तुखारी, मः १)
मोहनि मोहि लीआ मनु मेरा बंधन खोलि निरारे ॥ (१११२-१२, तुखारी, मः १)
नानक जोती जोति समाणी जा मिलिआ अति पिआरे ॥३॥ (१११२-१२, तुखारी, मः १)
सच घरु खोजि लहे साचा गुर थानो ॥ (१११२-१३, तुखारी, मः १)
मनमुखि नह पाईऐ गुरमुखि गिआनो ॥ (१११२-१३, तुखारी, मः १)
देवै सचु दानो सो परवानो सद दाता वड दाणा ॥ (१११२-१३, तुखारी, मः १)

अमरु अजोनी असथिरु जापै साचा महलु चिराणा ॥ (१११२-१४, तुखारी, मः १)
दोति उचापति लेखु न लिखीऐ प्रगटी जोति मुरारी ॥ (१११२-१४, तुखारी, मः १)
नानक साचा साचै राचा गुरमुखि तरीऐ तारी ॥४॥५॥ (१११२-१५, तुखारी, मः १)
तुखारी महला १ ॥ (१११२-१६)
ए मन मेरिआ तू समझु अचेत इआणिआ राम ॥ (१११२-१६, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ छडि अवगण गुणी समाणिआ राम ॥ (१११२-१६, तुखारी, मः १)
बहु साद लुभाणे किरत कमाणे विछुड़िआ नही मेला ॥ (१११२-१७, तुखारी, मः १)
किउ दुतरु तरीऐ जम डरि मरीऐ जम का पंथु दुहेला ॥ (१११२-१७, तुखारी, मः १)
मनि रामु नही जाता साझ प्रभाता अवघटि रुधा किआ करे ॥ (१११२-१८, तुखारी, मः १)
बंधनि बाधिआ इन बिधि छूटै गुरमुखि सेवै नरहरे ॥१॥ (१११२-१८, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ तू छोडि आल जंजाला राम ॥ (१११२-१९, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ हरि सेवहु पुरखु निराला राम ॥ (१११२-१९, तुखारी, मः १)

पन्ना १११३

हरि सिमरि एकंकारु साचा सभु जगतु जिंनि उपाइआ ॥ (१११३-१, तुखारी, मः १)
पउणु पाणी अगनि बाधे गुरि खेलु जगति दिखाइआ ॥ (१११३-२, तुखारी, मः १)
आचारि तू वीचारि आपे हरि नामु संजम जप तपो ॥ (१११३-२, तुखारी, मः १)
सखा सैनु पिआरु प्रीतमु नामु हरि का जपु जपो ॥२॥ (१११३-३, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ तू थिरु रहु चोट न खावही राम ॥ (१११३-३, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ गुण गावहि सहजि समावही राम ॥ (१११३-४, तुखारी, मः १)
गुण गाइ राम रसाइ रसीअहि गुर गिआन अंजनु सारहे ॥ (१११३-४, तुखारी, मः १)
त्रै लोक दीपकु सबदि चानणु पंच दूत संघारहे ॥ (१११३-५, तुखारी, मः १)
भै काटि निरभउ तरहि दुतरु गुरि मिलिऐ कारज सारए ॥ (१११३-५, तुखारी, मः १)
रूपु रंगु पिआरु हरि सिउ हरि आपि किरपा धारए ॥३॥ (१११३-६, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ तू किआ लै आइआ किआ लै जाइसी राम ॥ (१११३-६, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ ता छुटसी जा भरमु चुकाइसी राम ॥ (१११३-७, तुखारी, मः १)
धनु संचि हरि हरि नाम वखरु गुर सबदि भाउ पछाणहे ॥ (१११३-८, तुखारी, मः १)
मैलु परहरि सबदि निरमलु महलु घरु सचु जाणहे ॥ (१११३-८, तुखारी, मः १)
पति नामु पावहि घरि सिधावहि झोलि अमृत पी रसो ॥ (१११३-९, तुखारी, मः १)
हरि नामु धिआईऐ सबदि रसु पाईऐ वडभागि जपीऐ हरि जसो ॥४॥ (१११३-९, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ बिनु पउड़ीआ मंदरि किउ चड़ै राम ॥ (१११३-१०, तुखारी, मः १)
ए मन मेरिआ बिनु बेड़ी पारि न अम्बड़ै राम ॥ (१११३-११, तुखारी, मः १)
पारि साजनु अपारु प्रीतमु गुर सबद सुरति लंघावए ॥ (१११३-११, तुखारी, मः १)
मिलि साधसंगति करहि रलीआ फिरि न पछोतावए ॥ (१११३-१२, तुखारी, मः १)
करि दइआ दानु दइआल साचा हरि नाम संगति पावओ ॥ (१११३-१२, तुखारी, मः १)

नानकु पइअम्पै सुणहु प्रीतम गुर सबदि मनु समझावओ ॥५॥६॥ (१११३-१३, तुखारी, मः १)
तुखारी छंत महला ४ (१११३-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१११३-१५)
अंतरि पिरी पिआरु किउ पिर बिनु जीवीऐ राम ॥ (१११३-१६, तुखारी, मः ४)
जब लगु दरसु न होइ किउ अमृतु पीवीऐ राम ॥ (१११३-१६, तुखारी, मः ४)
किउ अमृतु पीवीऐ हरि बिनु जीवीऐ तिसु बिनु रहनु न जाए ॥ (१११३-१७, तुखारी, मः ४)
अनदिनु प्रिउ प्रिउ करे दिनु राती पिर बिनु पिआस न जाए ॥ (१११३-१७, तुखारी, मः ४)
अपणी कृपा करहु हरि पिआरे हरि हरि नामु सद सारिआ ॥ (१११३-१८, तुखारी, मः ४)
गुर कै सबदि मिलिआ मै प्रीतमु हउ सतिगुर विटहु वारिआ ॥१॥ (१११३-१९, तुखारी, मः ४)
जब देखाँ पिरु पिआरा हरि गुण रसि रवा राम ॥ (१११३-१९, तुखारी, मः ४)

पन्ना १११४

मेरै अंतरि होइ विगासु प्रिउ प्रिउ सचु नित चवा राम ॥ (१११४-१, तुखारी, मः ४)
प्रिउ चवा पिआरे सबदि निसतारे बिनु देखे तृपति न आवए ॥ (१११४-१, तुखारी, मः ४)
सबदि सीगारु होवै नित कामणि हरि हरि नामु धिआवए ॥ (१११४-२, तुखारी, मः ४)
दइआ दानु मंगत जन दीजै मै प्रीतमु देहु मिलाए ॥ (१११४-३, तुखारी, मः ४)
अनदिनु गुरु गोपालु धिआई हम सतिगुर विटहु घुमाए ॥२॥ (१११४-३, तुखारी, मः ४)
हम पाथर गुरु नाव बिखु भवजलु तारीऐ राम ॥ (१११४-४, तुखारी, मः ४)
गुर देवहु सबदु सुभाइ मै मूड़ निसतारीऐ राम ॥ (१११४-४, तुखारी, मः ४)
हम मूड़ मुगध किछु मिति नही पाई तू अगम्मु वड जाणिआ ॥ (१११४-५, तुखारी, मः ४)
तू आपि दइआलु दइआ करि मेलहि हम निरगुणी निमाणिआ ॥ (१११४-५, तुखारी, मः ४)
अनेक जनम पाप करि भरमे हुणि तउ सरणागति आए ॥ (१११४-६, तुखारी, मः ४)
दइआ करहु रखि लेवहु हरि जीउ हम लागह सतिगुर पाए ॥३॥ (१११४-७, तुखारी, मः ४)
गुर पारस हम लोह मिलि कंचनु होइआ राम ॥ (१११४-७, तुखारी, मः ४)
जोती जोति मिलाइ काइआ गड़ु सोहिआ राम ॥ (१११४-८, तुखारी, मः ४)
काइआ गड़ु सोहिआ मेरै प्रभि मोहिआ किउ सासि गिरासि विसारीऐ ॥ (१११४-८, तुखारी, मः ४)
अदृसटु अगोचरु पकड़िआ गुर सबदी हउ सतिगुर कै बलिहारीऐ ॥ (१११४-९, तुखारी, मः ४)
सतिगुर आगै सीसु भेट देउ जे सतिगुर साचे भावै ॥ (१११४-१०, तुखारी, मः ४)
आपे दइआ करहु प्रभ दाते नानक अंकि समावै ॥४॥१॥ (१११४-१०, तुखारी, मः ४)
तुखारी महला ४ ॥ (१११४-११)
हरि हरि अगम अगाधि अपरम्पर अपरपरा ॥ (१११४-११, तुखारी, मः ४)
जो तुम धिआवहि जगदीस ते जन भउ बिखमु तरा ॥ (१११४-११, तुखारी, मः ४)
बिखम भउ तिन तरिआ सुहेला जिन हरि हरि नामु धिआइआ ॥ (१११४-१२, तुखारी, मः ४)
गुर वाकि सतिगुर जो भाइ चले तिन हरि हरि आपि मिलाइआ ॥ (१११४-१३, तुखारी, मः ४)
जोती जोति मिलि जोति समाणी हरि कृपा करि धरणीधरा ॥ (१११४-१३, तुखारी, मः ४)

हरि हरि अगम अगाधि अपरम्पर अपरपरा ॥१॥ (१११४-१४, तुखारी, मः ४)
तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥ (१११४-१४, तुखारी, मः ४)
तू अलख अभेउ अगम्मु गुर सतिगुर बचनि लहिआ ॥ (१११४-१५, तुखारी, मः ४)
धनु धन्नु ते जन पुरख पूरे जिन गुर संतसंगति मिलि गुण रवे ॥ (१११४-१५, तुखारी, मः ४)
बिबेक बुधि बीचारि गुरमुखि गुर सबदि खिनु खिनु हरि नित चवे ॥ (१११४-१६, तुखारी, मः ४)
जा बहहि गुरमुखि हरि नामु बोलहि जा खड़े गुरमुखि हरि हरि कहिआ ॥ (१११४-१७, तुखारी, मः ४)
तुम सुआमी अगम अथाह तू घटि घटि पूरि रहिआ ॥२॥ (१११४-१८, तुखारी, मः ४)
सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥ (१११४-१८, तुखारी, मः ४)
तिन के कोटि सभि पाप खिनु परहरि हरि दूरि करे ॥ (१११४-१६, तुखारी, मः ४)
तिन के पाप दोख सभि बिनसे जिन मनि चिति इकु अराधिआ ॥ (१११४-१६, तुखारी, मः ४)

पन्ना १११५

तिन का जनमु सफलिओ सभु कीआ करतै जिन गुर बचनी सचु भाखिआ ॥ (१११५-१, तुखारी, मः ४)
ते धन्नु जन वड पुरख पूरे जो गुरमति हरि जपि भउ बिखमु तरे ॥ (१११५-२, तुखारी, मः ४)
सेवक जन सेवहि ते परवाणु जिन सेविआ गुरमति हरे ॥३॥ (१११५-२, तुखारी, मः ४)
तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥ (१११५-३, तुखारी, मः ४)
हमरै हाथि किछु नाहि जा तू मेलहि ता हउ आइ मिला ॥ (१११५-३, तुखारी, मः ४)
जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥ (१११५-४, तुखारी, मः ४)
तिन की गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ (१११५-५, तुखारी, मः ४)
नानक दइआलु होआ तिन ऊपरि जिन गुर का भाणा मंनिआ भला ॥ (१११५-५, तुखारी, मः ४)
तू अंतरजामी हरि आपि जिउ तू चलावहि पिआरे हउ तिवै चला ॥४॥२॥ (१११५-६, तुखारी, मः ४)
तुखारी महला ४ ॥ (१११५-७)
तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता सृसटि नाथु ॥ (१११५-७, तुखारी, मः ४)
तिन तू धिआइआ मेरा रामु जिन कै धुरि लेखु माथु ॥ (१११५-८, तुखारी, मः ४)
जिन कउ धुरि हरि लिखिआ सुआमी तिन हरि हरि नामु अराधिआ ॥ (१११५-८, तुखारी, मः ४)
तिन के पाप इक निमख सभि लाथे जिन गुर बचनी हरि जापिआ ॥ (१११५-६, तुखारी, मः ४)
धनु धन्नु ते जन जिन हरि नामु जपिआ तिन देखे हउ भइआ सनाथु ॥ (१११५-१०, तुखारी, मः ४)
तू जगजीवनु जगदीसु सभ करता सृसटि नाथु ॥१॥ (१११५-१०, तुखारी, मः ४)
तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥ (१११५-११, तुखारी, मः ४)
जिन जपिआ हरि मनि चीति हरि जपि जपि मुकतु घणी ॥ (१११५-११, तुखारी, मः ४)
जिन जपिआ हरि ते मुकत प्राणी तिन के ऊजल मुख हरि दुआरि ॥ (१११५-१२, तुखारी, मः ४)
ओइ हलति पलति जन भए सुहेले हरि राखि लीए रखनहारि ॥ (१११५-१३, तुखारी, मः ४)
हरि संतसंगति जन सुणहु भाई गुरमुखि हरि सेवा सफल बणी ॥ (१११५-१३, तुखारी, मः ४)
तू जलि थलि महीअलि भरपूरि सभ ऊपरि साचु धणी ॥२॥ (१११५-१४, तुखारी, मः ४)
तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥ (१११५-१५, तुखारी, मः ४)

वणि तृणि तृभवणि सभ सृसटि मुखि हरि हरि नामु चविआ ॥ (१११५-१५, तुखारी, मः ४)
सभि चवहि हरि हरि नामु करते असंख अगणत हरि धिआवए ॥ (१११५-१६, तुखारी, मः ४)
सो धन्नु धनु हरि संतु साधू जो हरि प्रभ करते भावए ॥ (१११५-१६, तुखारी, मः ४)
सो सफलु दरसनु देहु करते जिसु हरि हिरदै नामु सद चविआ ॥ (१११५-१७, तुखारी, मः ४)
तू थान थनंतरि हरि एकु हरि एको एकु रविआ ॥३॥ (१११५-१८, तुखारी, मः ४)
तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥ (१११५-१८, तुखारी, मः ४)
जिस कै मसतकि गुर हाथु तिसु हिरदै हरि गुण टिकहि ॥ (१११५-१६, तुखारी, मः ४)
हरि गुण हिरदै टिकहि तिस कै जिसु अंतरि भउ भावनी होई ॥ (१११५-१६, तुखारी, मः ४)

पन्ना १११६

बिनु भै किनै न प्रेमु पाइआ बिनु भै पारि न उतरिआ कोई ॥ (१११६-१, तुखारी, मः ४)
भउ भाउ प्रीति नानक तिसहि लागै जिसु तू आपणी किरपा करहि ॥ (१११६-२, तुखारी, मः ४)
तेरी भगति भंडार असंख जिसु तू देवहि मेरे सुआमी तिसु मिलहि ॥४॥३॥ (१११६-२, तुखारी, मः ४)
तुखारी महला ४ ॥ (१११६-३)
नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥ (१११६-३, तुखारी, मः ४)
दुरमति मैलु हरी अगिआनु अंधेरु गइआ ॥ (१११६-४, तुखारी, मः ४)
गुर दरसु पाइआ अगिआनु गवाइआ अंतरि जोति प्रगासी ॥ (१११६-४, तुखारी, मः ४)
जनम मरण दुख खिन महि बिनसे हरि पाइआ प्रभु अबिनासी ॥ (१११६-५, तुखारी, मः ४)
हरि आपि करतै पुरबु कीआ सतिगुरू कुलखेति नावणि गइआ ॥ (१११६-६, तुखारी, मः ४)
नावणु पुरबु अभीचु गुर सतिगुर दरसु भइआ ॥१॥ (१११६-६, तुखारी, मः ४)
मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥ (१११६-७, तुखारी, मः ४)
अनदिनु भगति बणी खिनु खिनु निमख विखा ॥ (१११६-७, तुखारी, मः ४)
हरि हरि भगति बणी प्रभ केरी सभु लोकु वेखणि आइआ ॥ (१११६-८, तुखारी, मः ४)
जिन दरसु सतिगुर गुरू कीआ तिन आपि हरि मेलाइआ ॥ (१११६-८, तुखारी, मः ४)
तीर्थ उदमु सतिगुरू कीआ सभ लोक उधरण अर्था ॥ (१११६-६, तुखारी, मः ४)
मारगि पंथि चले गुर सतिगुर संगि सिखा ॥२॥ (१११६-१०, तुखारी, मः ४)
प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥ (१११६-१०, तुखारी, मः ४)
खबरि भई संसारि आए त्रै लोआ ॥ (१११६-११, तुखारी, मः ४)
देखणि आए तीनि लोक सुरि नर मुनि जन सभि आइआ ॥ (१११६-११, तुखारी, मः ४)
जिन परसिआ गुरु सतिगुरू पूरा तिन के किलविख नास गवाइआ ॥ (१११६-११, तुखारी, मः ४)
जोगी दिगम्बर संनिआसी खटु दरसन करि गए गोसटि ढोआ ॥ (१११६-१२, तुखारी, मः ४)
प्रथम आए कुलखेति गुर सतिगुर पुरबु होआ ॥३॥ (१११६-१३, तुखारी, मः ४)
दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥ (१११६-१३, तुखारी, मः ४)
जागाती मिले दे भेट गुर पिछै लंघाइ दीआ ॥ (१११६-१४, तुखारी, मः ४)
सभ छुटी सतिगुरू पिछै जिनि हरि हरि नामु धिआइआ ॥ (१११६-१४, तुखारी, मः ४)

गुर बचनि मारगि जो पंथि चाले तिन जमु जागाती नेड़ि न आइआ ॥ (१११६-१५, तुखारी, मः ४)
सभ गुरू गुरू जगतु बोलै गुर कै नाइ लइऐ सभि छुटकि गइआ ॥ (१११६-१६, तुखारी, मः ४)
दुतीआ जमुन गए गुरि हरि हरि जपनु कीआ ॥४॥ (१११६-१७, तुखारी, मः ४)
तृतीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥ (१११६-१७, तुखारी, मः ४)
सभ मोही देखि दरसनु गुर संत किनै आढु न दामु लइआ ॥ (१११६-१८, तुखारी, मः ४)
आढु दामु किछु पइआ न बोलक जागातीआ मोहण मुंदणि पई ॥ (१११६-१८, तुखारी, मः ४)
भाई हम करह किआ किसु पासि माँगह सभ भागि सतिगुर पिछै पई ॥ (१११६-१९, तुखारी, मः ४)

पन्ना १११७

जागातीआ उपाव सिआणप करि वीचारु डिठा भंनि बोलका सभि उठि गइआ ॥ (१११७-१, तुखारी, मः ४)
तृतीआ आए सुरसरी तह कउतकु चलतु भइआ ॥५॥ (१११७-२, तुखारी, मः ४)
मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥ (१११७-२, तुखारी, मः ४)
गुरु सतिगुरु गुरु गोविदु पुछि सिमृति कीता सही ॥ (१११७-३, तुखारी, मः ४)
सिमृति सासत्र सभनी सही कीता सुकि प्रहिलादि स्रीरामि करि गुर गोविदु धिआइआ ॥ (१११७-३, तुखारी, मः ४)
देही नगरि कोटि पंच चोर वटवारे तिन का थाउ थेहु गवाइआ ॥ (१११७-४, तुखारी, मः ४)
कीर्तन पुराण नित पुन्न होवहि गुर बचनि नानकि हरि भगति लही ॥ (१११७-५, तुखारी, मः ४)
मिलि आए नगर महा जना गुर सतिगुर ओट गही ॥६॥४॥१०॥ (१११७-६, तुखारी, मः ४)
तुखारी छंत महला ५ (१११७-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१११७-७)
घोलि घुमाई लालना गुरि मनु दीना ॥ (१११७-८, तुखारी, मः ५)
सुणि सबदु तुमारा मेरा मनु भीना ॥ (१११७-८, तुखारी, मः ५)
इहु मनु भीना जिउ जल मीना लागा रंगु मुरारा ॥ (१११७-८, तुखारी, मः ५)
कीमति कही न जाई ठाकुर तेरा महलु अपारा ॥ (१११७-९, तुखारी, मः ५)
सगल गुणा के दाते सुआमी बिनउ सुनहु इक दीना ॥ (१११७-९, तुखारी, मः ५)
देहु दरसु नानक बलिहारी जीअड़ा बलि बलि कीना ॥१॥ (१११७-१०, तुखारी, मः ५)
इहु तनु मनु तेरा सभि गुण तेरे ॥ (१११७-१०, तुखारी, मः ५)
खन्नीऐ वंञा दरसन तेरे ॥ (१११७-११, तुखारी, मः ५)
दरसन तेरे सुणि प्रभ मेरे निमख दृसटि पेखि जीवा ॥ (१११७-११, तुखारी, मः ५)
अमृत नामु सुनीजै तेरा किरपा करहि त पीवा ॥ (१११७-१२, तुखारी, मः ५)
आस पिआसी पिर कै ताई जिउ चातृकु बूंदेरे ॥ (१११७-१२, तुखारी, मः ५)
कहु नानक जीअड़ा बलिहारी देहु दरसु प्रभ मेरे ॥२॥ (१११७-१३, तुखारी, मः ५)
तू साचा साहिबु साहु अमिता ॥ (१११७-१३, तुखारी, मः ५)
तू प्रीतमु पिआरा प्रान हित चिता ॥ (१११७-१४, तुखारी, मः ५)
प्रान सुखदाता गुरमुखि जाता सगल रंग बनि आए ॥ (१११७-१४, तुखारी, मः ५)

सोई करमु कमावै प्राणी जेहा तू फुरमाए ॥ (१११७-१५, तुखारी, मः ५)
जा कउ कृपा करी जगदीसुरि तिनि साधसंगि मनु जिता ॥ (१११७-१५, तुखारी, मः ५)
कहु नानक जीअड़ा बलिहारी जीउ पिंडु तउ दिता ॥३॥ (१११७-१६, तुखारी, मः ५)
निरगुणु राखि लीआ संतन का सदका ॥ (१११७-१६, तुखारी, मः ५)
सतिगुरि ढाकि लीआ मोहि पापी पड़दा ॥ (१११७-१७, तुखारी, मः ५)
ढाकनहारे प्रभू हमारे जीअ प्रान सुखदाते ॥ (१११७-१७, तुखारी, मः ५)
अबिनासी अबिगत सुआमी पूरन पुरख बिधाते ॥ (१११७-१८, तुखारी, मः ५)
उसतति कहनु न जाइ तुमारी कउणु कहै तू कद का ॥ (१११७-१८, तुखारी, मः ५)
नानक दासु ता कै बलिहारी मिलै नामु हरि निमका ॥४॥१॥११॥ (१११७-१९, तुखारी, मः ५)

पन्ना १११८

केदारा महला ४ घरु १ (१११८-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१११८-२)
मेरे मन राम नाम नित गावीऐ रे ॥ (१११८-३, केदारा, मः ४)
अगम अगोचरु न जाई हरि लखिआ गुरु पूरा मिलै लखावीऐ रे ॥ रहाउ ॥ (१११८-३, केदारा, मः ४)
जिसु आपे किरपा करे मेरा सुआमी तिसु जन कउ हरि लिव लावीऐ रे ॥ (१११८-४, केदारा, मः ४)
सभु को भगति करे हरि केरी हरि भावै सो थाइ पावीऐ रे ॥१॥ (१११८-४, केदारा, मः ४)
हरि हरि नामु अमोलकु हरि पहि हरि देवै ता नामु धिआवीऐ रे ॥ (१११८-५, केदारा, मः ४)
जिस नो नामु देइ मेरा सुआमी तिसु लेखा सभु छडावीऐ रे ॥२॥ (१११८-६, केदारा, मः ४)
हरि नामु अराधहि से धन्नु जन कहीअहि तिन मसतकि भागु धुरि लिखि पावीऐ रे ॥ (१११८-६, केदारा, मः ४)
तिन देखे मेरा मनु बिगसै जिउ सुतु मिलि मात गलि लावीऐ रे ॥३॥ (१११८-७, केदारा, मः ४)
हम बारिक हरि पिता प्रभ मेरे मो कउ देहु मती जितु हरि पावीऐ रे ॥ (१११८-८, केदारा, मः ४)
जिउ बछुरा देखि गऊ सुखु मानै तिउ नानक हरि गलि लावीऐ रे ॥४॥१॥ (१११८-९, केदारा, मः ४)
केदारा महला ४ घरु १ (१११८-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१११८-१०)
मेरे मन हरि हरि गुन कहु रे ॥ (१११८-११, केदारा, मः ४)
सतिगुरू के चरन धोइ धोइ पूजहु इन बिधि मेरा हरि प्रभु लहु रे ॥ रहाउ ॥ (१११८-११, केदारा, मः ४)
कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु बिखै रस इन संगति ते तू रहु रे ॥ (१११८-१२, केदारा, मः ४)
मिलि सतसंगति कीजै हरि गोसटि साधू सिउ गोसटि हरि प्रेम रसाइणु राम नामु रसाइणु हरि राम नाम राम रमहु रे ॥१॥ (१११८-१२, केदारा, मः ४)

पन्ना १११९

अंतर का अभिमानु जोरु तू किछु किछु किछु जानता इहु दूरि करहु आपन गहु रे ॥ (१११९-१, केदारा, मः ४)
जन नानक कउ हरि दइआल होहु सुआमी हरि संतन की धूरि करि हरे ॥२॥१॥२॥ (१११९-१, केदारा, मः ४)
केदारा महला ५ घरु २ (१११९-३)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१११६-३)
माई संतसंगि जागी ॥ (१११६-४, केदारा, मः ५)
प्रिअ रंग देखै जपती नामु निधानी ॥ रहाउ ॥ (१११६-४, केदारा, मः ५)
दरसन पिआस लोचन तार लागी ॥ (१११६-४, केदारा, मः ५)
बिसरी तिआस बिडानी ॥१॥ (१११६-५, केदारा, मः ५)
अब गुरु पाइओ है सहज सुखदाइक दरसनु पेखत मनु लपटानी ॥ (१११६-५, केदारा, मः ५)
देखि दमोदर रहसु मनि उपजिओ नानक प्रिअ अमृत बानी ॥२॥१॥ (१११६-६, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ घरु ३ (१११६-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१११६-७)
दीन बिनउ सुनु दइआल ॥ (१११६-८, केदारा, मः ५)
पंच दास तीनि दोखी एक मनु अनाथ नाथ ॥ (१११६-८, केदारा, मः ५)
राखु हो किरपाल ॥ रहाउ ॥ (१११६-८, केदारा, मः ५)
अनिक जतन गवनु करउ ॥ (१११६-९, केदारा, मः ५)
खटु कर्म जुगति धिआनु धरउ ॥ (१११६-९, केदारा, मः ५)
उपाव सगल करि हारिओ नह नह हुटहि बिकराल ॥१॥ (१११६-९, केदारा, मः ५)
सरणि बंदन करुणा पते ॥ (१११६-१०, केदारा, मः ५)
भव हरण हरि हरि हरि हरे ॥ (१११६-१०, केदारा, मः ५)
एक तूही दीन दइआल ॥ (१११६-११, केदारा, मः ५)
प्रभ चरन नानक आसरो ॥ (१११६-११, केदारा, मः ५)
उधरे भ्रम मोह सागर ॥ (१११६-११, केदारा, मः ५)
लगि संतना पग पाल ॥२॥१॥२॥ (१११६-११, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ घरु ४ (१११६-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१११६-१३)
सरनी आइओ नाथ निधान ॥ (१११६-१४, केदारा, मः ५)
नाम प्रीति लागी मन भीतरि मागन कउ हरि दान ॥१॥ रहाउ ॥ (१११६-१४, केदारा, मः ५)
सुखदाई पूरन परमेसुर करि किरपा राखहु मान ॥ (१११६-१५, केदारा, मः ५)
देहु प्रीति साधू संगि सुआमी हरि गुन रसन बखान ॥१॥ (१११६-१५, केदारा, मः ५)
गोपाल दइआल गोबिद दमोदर निर्मल कथा गिआन ॥ (१११६-१६, केदारा, मः ५)
नानक कउ हरि कै रंगि रागहु चरन कमल संगि धिआन ॥२॥१॥३॥ (१११६-१६, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (१११६-१७)
हरि के दरसन को मनि चाउ ॥ (१११६-१७, केदारा, मः ५)
करि किरपा सतसंगि मिलावहु तुम देवहु अपनो नाउ ॥ रहाउ ॥ (१११६-१८, केदारा, मः ५)
करउ सेवा सत पुरख पिआरे जत सुनीऐ तत मनि रहसाउ ॥ (१११६-१८, केदारा, मः ५)

वारी फेरी सदा घुमाई कवनु अनूपु तेरो ठाउ ॥१॥ (११२०-१, केदारा, मः ५)
सर्ब प्रतिपालहि सगल समालहि सगलिआ तेरी छाउ ॥ (११२०-१, केदारा, मः ५)
नानक के प्रभ पुरख बिधाते घटि घटि तुझहि दिखाउ ॥२॥२॥४॥ (११२०-२, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२०-३)
प्रिअ की प्रीति पिआरी ॥ (११२०-३, केदारा, मः ५)
मगन मनै महि चितवउ आसा नैनहु तार तुहारी ॥ रहाउ ॥ (११२०-३, केदारा, मः ५)
ओइ दिन पहर मूरत पल कैसे ओइ पल घरी किहारी ॥ (११२०-४, केदारा, मः ५)
खूले कपट धपट बुझि तृसना जीवउ पेखि दरसारी ॥१॥ (११२०-४, केदारा, मः ५)
कउनु सु जतनु उपाउ किनेहा सेवा कउन बीचारी ॥ (११२०-५, केदारा, मः ५)
मानु अभिमानु मोहु तजि नानक संतह संगि उधारी ॥२॥३॥५॥ (११२०-६, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२०-६)
हरि हरि हरि गुन गावहु ॥ (११२०-६, केदारा, मः ५)
करहु कृपा गोपाल गोबिदे अपना नामु जपावहु ॥ रहाउ ॥ (११२०-७, केदारा, मः ५)
काढि लीए प्रभ आन बिखै ते साधसंगि मनु लावहु ॥ (११२०-७, केदारा, मः ५)
भ्रमु भउ मोहु कटिओ गुर बचनी अपना दरसु दिखावहु ॥१॥ (११२०-८, केदारा, मः ५)
सभ की रेन होइ मनु मेरा अहम्बुधि तजावहु ॥ (११२०-८, केदारा, मः ५)
अपनी भगति देहि दइआला वडभागी नानक हरि पावहु ॥२॥४॥६॥ (११२०-९, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२०-१०)
हरि बिनु जनमु अकारथ जात ॥ (११२०-१०, केदारा, मः ५)
तजि गोपाल आन रंगि राचत मिथिआ पहिरत खात ॥ रहाउ ॥ (११२०-१०, केदारा, मः ५)
धनु जोबनु सम्पै सुख भुोगवै संगि न निबहत मात ॥ (११२०-११, केदारा, मः ५)
मृग तृसना देखि रचिओ बावर द्रुम छाइआ रंगि रात ॥१॥ (११२०-११, केदारा, मः ५)
मान मोह महा मद मोहत काम क्रोध कै खात ॥ (११२०-१२, केदारा, मः ५)
करु गहि लेहु दास नानक कउ प्रभ जीउ होइ सहात ॥२॥५॥७॥ (११२०-१२, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२०-१३)
हरि बिनु कोइ न चालसि साथ ॥ (११२०-१३, केदारा, मः ५)
दीना नाथ करुणापति सुआमी अनाथा के नाथ ॥ रहाउ ॥ (११२०-१४, केदारा, मः ५)
सुत सम्पति बिखिआ रस भुोगवत नह निबहत जम कै पाथ ॥ (११२०-१४, केदारा, मः ५)
नामु निधानु गाउ गुन गोबिंद उधरु सागर के खात ॥१॥ (११२०-१५, केदारा, मः ५)
सरनि समरथ अकथ अगोचर हरि सिमरत दुख लाथ ॥ (११२०-१६, केदारा, मः ५)
नानक दीन धूरि जन बाँछत मिलै लिखत धुरि माथ ॥२॥६॥८॥ (११२०-१६, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ घरु ५ (११२०-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११२०-१८)

बिसरत नाहि मन ते हरी ॥ (११२०-१६, केदारा, मः ५)
अब इह प्रीति महा प्रबल भई आन बिखै जरी ॥ रहाउ ॥ (११२०-१६, केदारा, मः ५)
बूंद कहा तिआगि चातृक मीन रहत न घरी ॥ (११२०-१६, केदारा, मः ५)

पन्ना ११२१

गुन गोपाल उचारु रसना टेव एह परी ॥१॥ (११२१-१, केदारा, मः ५)
महा नाद कुरंक मोहिओ बेधि तीखन सरी ॥ (११२१-१, केदारा, मः ५)
प्रभ चरन कमल रसाल नानक गाठि बाधि धरी ॥२॥१॥९॥ (११२१-२, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२१-३)
प्रीतम बसत रिद महि खोर ॥ (११२१-३, केदारा, मः ५)
भरम भीति निवारि ठाकुर गहि लेहु अपनी ओर ॥१॥ रहाउ ॥ (११२१-३, केदारा, मः ५)
अधिक गरत संसार सागर करि दइआ चारहु धोर ॥ (११२१-४, केदारा, मः ५)
संतसंगि हरि चरन बोहिथ उधरते लै मोर ॥१॥ (११२१-४, केदारा, मः ५)
गरभ कुंट महि जिनहि धारिओ नही बिखै बन महि होर ॥ (११२१-५, केदारा, मः ५)
हरि सकत सरन समरथ नानक आन नही निहोर ॥२॥२॥१०॥ (११२१-५, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२१-६)
रसना राम राम बखानु ॥ (११२१-६, केदारा, मः ५)
गुन गोपाल उचारु दिनु रैनि भए कलमल हान ॥ रहाउ ॥ (११२१-६, केदारा, मः ५)
तिआगि चलना सगल सम्पत कालु सिर परि जानु ॥ (११२१-७, केदारा, मः ५)
मिथन मोह दुरंत आसा झूठु सरपर मानु ॥१॥ (११२१-७, केदारा, मः ५)
सति पुरख अकाल मूरति रिदै धारहु धिआनु ॥ (११२१-८, केदारा, मः ५)
नामु निधानु लाभु नानक बसतु इह परवानु ॥२॥३॥११॥ (११२१-८, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२१-९)
हरि के नाम को आधारु ॥ (११२१-९, केदारा, मः ५)
कलि कलेस न कछु बिआपै संतसंगि बिउहारु ॥ रहाउ ॥ (११२१-९, केदारा, मः ५)
करि अनुग्रहु आपि राखिओ नह उपजतउ बेकारु ॥ (११२१-१०, केदारा, मः ५)
जिसु परापति होइ सिमरै तिसु दहत नह संसारु ॥१॥ (११२१-११, केदारा, मः ५)
सुख मंगल आनंद हरि हरि प्रभ चरन अमृत सारु ॥ (११२१-११, केदारा, मः ५)
नानक दास सरनागती तेरे संतना की छारु ॥२॥४॥१२॥ (११२१-१२, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२१-१२)
हरि के नाम बिनु ध्रिगु स्रोत ॥ (११२१-१३, केदारा, मः ५)
जीवन रूप बिसारि जीवहि तिह कत जीवन होत ॥ रहाउ ॥ (११२१-१३, केदारा, मः ५)
खात पीत अनेक बिंजन जैसे भार बाहक खोत ॥ (११२१-१३, केदारा, मः ५)
आठ पहर महा स्रमु पाइआ जैसे बिरख जंती जोत ॥१॥ (११२१-१४, केदारा, मः ५)
तजि गोपाल जि आन लागे से बहु प्रकारी रोत ॥ (११२१-१४, केदारा, मः ५)

कर जोरि नानक दानु मागै हरि रखउ कंठि परोत ॥२॥५॥१३॥ (११२१-१५, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२१-१६)
संतह धूरि ले मुखि मली ॥ (११२१-१६, केदारा, मः ५)
गुणा अचुत सदा पूरन नह दोख बिआपहि कली ॥ रहाउ ॥ (११२१-१६, केदारा, मः ५)
गुर बचनि कारज सर्ब पूरन ईत ऊत न हली ॥ (११२१-१७, केदारा, मः ५)
प्रभ एक अनिक सरबत पूरन बिखै अगनि न जली ॥१॥ (११२१-१७, केदारा, मः ५)
गहि भुजा लीनो दासु अपनो जोति जोती रली ॥ (११२१-१८, केदारा, मः ५)
प्रभ चरन सरन अनाथु आइओ नानक हरि संगि चली ॥२॥६॥१४॥ (११२१-१९, केदारा, मः ५)
केदारा महला ५ ॥ (११२१-१९)

पन्ना ११२२

हरि के नाम की मन रुचै ॥ (११२२-१, केदारा, मः ५)
कोटि साँति अनंद पूरन जलत छाती बुझै ॥ रहाउ ॥ (११२२-१, केदारा, मः ५)
संत मारगि चलत प्रानी पतित उधरे मुचै ॥ (११२२-१, केदारा, मः ५)
रेनु जन की लगी मसतकि अनिक तीर्थ सुचै ॥१॥ (११२२-२, केदारा, मः ५)
चरन कमल धिआन भीतरि घटि घटहि सुआमी सुझै ॥ (११२२-२, केदारा, मः ५)
सरनि देव अपार नानक बहुरि जमु नही लुझै ॥२॥७॥१५॥ (११२२-३, केदारा, मः ५)
केदारा छंत महला ५ (११२२-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११२२-४)
मिलु मेरे प्रीतम पिआरिआ ॥ रहाउ ॥ (११२२-५, केदारा, मः ५)
पूरि रहिआ सरबत्र मै सो पुरखु बिधाता ॥ (११२२-५, केदारा, मः ५)
मारगु प्रभ का हरि कीआ संतन संगि जाता ॥ (११२२-५, केदारा, मः ५)
संतन संगि जाता पुरखु बिधाता घटि घटि नदरि निहालिआ ॥ (११२२-६, केदारा, मः ५)
जो सरनी आवै सर्ब सुख पावै तिलु नही भन्नै घालिआ ॥ (११२२-६, केदारा, मः ५)
हरि गुण निधि गाए सहज सुभाए प्रेम महा रस माता ॥ (११२२-७, केदारा, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाई तू पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥ (११२२-८, केदारा, मः ५)
हरि प्रेम भगति जन बेधिआ से आन कत जाही ॥ (११२२-८, केदारा, मः ५)
मीनु बिछोहा ना सहै जल बिनु मरि पाही ॥ (११२२-९, केदारा, मः ५)
हरि बिनु किउ रहीऐ दूख किनि सहीऐ चातृक बूंद पिआसिआ ॥ (११२२-९, केदारा, मः ५)
कब रैनि बिहावै चकवी सुखु पावै सूरज किरणि प्रगासिआ ॥ (११२२-१०, केदारा, मः ५)
हरि दरसि मनु लागा दिनसु सभागा अनदिनु हरि गुण गाही ॥ (११२२-१०, केदारा, मः ५)
नानक दासु कहै बेनंती कत हरि बिनु प्राण टिकाही ॥२॥ (११२२-११, केदारा, मः ५)
सास बिना जिउ देहुरी कत सोभा पावै ॥ (११२२-१२, केदारा, मः ५)
दरस बिहूना साध जनु खिनु टिकणु न आवै ॥ (११२२-१२, केदारा, मः ५)
हरि बिनु जो रहणा नरकु सो सहणा चरन कमल मनु बेधिआ ॥ (११२२-१२, केदारा, मः ५)

हरि रसिक बैरागी नामि लिव लागी कतहु न जाइ निखेधिआ ॥ (११२२-१३, केदारा, मः ५)
हरि सिउ जाइ मिलणा साधसंगि रहणा सो सुखु अंकि न मावै ॥ (११२२-१४, केदारा, मः ५)
होहु कृपाल नानक के सुआमी हरि चरनह संगि समावै ॥३॥ (११२२-१४, केदारा, मः ५)
खोजत खोजत प्रभ मिले हरि करुणा धारे ॥ (११२२-१५, केदारा, मः ५)
निरगुणु नीचु अनाथु मै नही दोख बीचारे ॥ (११२२-१६, केदारा, मः ५)
नही दोख बीचारे पूरन सुख सारे पावन बिरदु बखानिआ ॥ (११२२-१६, केदारा, मः ५)
भगति वछलु सुनि अंचलुो गहिआ घटि घटि पूर समानिआ ॥ (११२२-१७, केदारा, मः ५)
सुख सागरुो पाइआ सहज सुभाइआ जनम मरन दुख हारे ॥ (११२२-१७, केदारा, मः ५)
करु गहि लीने नानक दास अपने राम नाम उरि हारे ॥४॥१॥ (११२२-१८, केदारा, मः ५)

पन्ना ११२३

रागु केदारा बाणी कबीर जीउ की (११२३-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११२३-१)
उसतति निंदा दोऊ बिबरजित तजहु मानु अभिमाना ॥ (११२३-२, केदारा, भगत कबीर जी)
लोहा कंचनु सम करि जानहि ते मूरति भगवाना ॥१॥ (११२३-२, केदारा, भगत कबीर जी)
तेरा जनु एकु आधु कोई ॥ (११२३-३, केदारा, भगत कबीर जी)
कामु क्रोधु लोभु मोहु बिबरजित हरि पदु चीन्है सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (११२३-३, केदारा, भगत कबीर जी)
रज गुण तम गुण सत गुण कहीऐ इह तेरी सभ माइआ ॥ (११२३-४, केदारा, भगत कबीर जी)
चउथे पद कउ जो नरु चीन्है तिन्ह ही परम पदु पाइआ ॥२॥ (११२३-४, केदारा, भगत कबीर जी)
तीरथ बरत नेम सुचि संजम सदा रहै निहकामा ॥ (११२३-५, केदारा, भगत कबीर जी)
तृसना अरु माइआ भ्रमु चूका चितवत आतम रामा ॥३॥ (११२३-५, केदारा, भगत कबीर जी)
जिह मंदरि दीपकु परगासिआ अंधकारु तह नासा ॥ (११२३-६, केदारा, भगत कबीर जी)
निरभउ पूरि रहे भ्रमु भागा कहि कबीर जन दासा ॥४॥१॥ (११२३-७, केदारा, भगत कबीर जी)
किनही बनजिआ काँसी ताँबा किनही लउग सुपारी ॥ (११२३-७, केदारा, भगत कबीर जी)
संतहु बनजिआ नामु गोबिद का ऐसी खेप हमारी ॥१॥ (११२३-८, केदारा, भगत कबीर जी)
हरि के नाम के बिआपारी ॥ (११२३-८, केदारा, भगत कबीर जी)
हीरा हाथि चड़िआ निरमोलकु छूटि गई संसारी ॥१॥ रहाउ ॥ (११२३-९, केदारा, भगत कबीर जी)
साचे लाए तउ सच लागे साचे के बिउहारी ॥ (११२३-९, केदारा, भगत कबीर जी)
साची बसतु के भार चलाए पहुचे जाइ भंडारी ॥२॥ (११२३-१०, केदारा, भगत कबीर जी)
आपहि रतन जवाहर मानिक आपै है पासारी ॥ (११२३-१०, केदारा, भगत कबीर जी)
आपै दह दिस आप चलावै निहचलु है बिआपारी ॥३॥ (११२३-११, केदारा, भगत कबीर जी)
मनु करि बैलु सुरति करि पैडा गिआन गोनि भरि डारी ॥ (११२३-११, केदारा, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु निबही खेप हमारी ॥४॥२॥ (११२३-१२, केदारा, भगत कबीर जी)
री कलवारि गवारि मूढ मति उलटो पवनु फिरावउ ॥ (११२३-१३, केदारा, भगत कबीर जी)
मनु मतवार मेर सर भाठी अमृत धार चुआवउ ॥१॥ (११२३-१३, केदारा, भगत कबीर जी)

बोलहु भईआ राम की दुहाई ॥ (११२३-१४, केदारा, भगत कबीर जी)
पीवहु संत सदा मति दुरलभ सहजे पिआस बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११२३-१४, केदारा, भगत कबीर जी)
भै बिचि भाउ भाइ कोऊ बूझहि हरि रसु पावै भाई ॥ (११२३-१५, केदारा, भगत कबीर जी)
जेते घट अमृतु सभ ही महि भावै तिसहि पीआई ॥२॥ (११२३-१५, केदारा, भगत कबीर जी)
नगरी एकै नउ दरवाजे धावतु बरजि रहाई ॥ (११२३-१६, केदारा, भगत कबीर जी)
तृकुटी छूटै दसवा दरु खूलै ता मनु खीवा भाई ॥३॥ (११२३-१६, केदारा, भगत कबीर जी)
अभै पद पूरि ताप तह नासे कहि कबीर बीचारी ॥ (११२३-१७, केदारा, भगत कबीर जी)
उबट चलंते इहु मदु पाइआ जैसे खोंद खुमारी ॥४॥३॥ (११२३-१७, केदारा, भगत कबीर जी)
काम क्रोध तृसना के लीने गति नही एकै जानी ॥ (११२३-१८, केदारा, भगत कबीर जी)
फूटी आखै कछू न सूझै बूडि मूए बिनु पानी ॥१॥ (११२३-१८, केदारा, भगत कबीर जी)

पन्ना ११२४

चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ (११२४-१, केदारा, भगत कबीर जी)
असति चर्म बिसटा के मूंदे दुरगंध ही के बेढे ॥१॥ रहाउ ॥ (११२४-१, केदारा, भगत कबीर जी)
राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम ते कालु न दूरे ॥ (११२४-२, केदारा, भगत कबीर जी)
अनिक जतन करि इहु तनु राखहु रहै अवसथा पूरे ॥२॥ (११२४-२, केदारा, भगत कबीर जी)
आपन कीआ कछू न होवै किआ को करै परानी ॥ (११२४-३, केदारा, भगत कबीर जी)
जा तिसु भावै सतिगुरु भेटै एको नामु बखानी ॥३॥ (११२४-४, केदारा, भगत कबीर जी)
बलूआ के घरूआ महि बसते फुलवत देह अइआने ॥ (११२४-४, केदारा, भगत कबीर जी)
कहु कबीर जिह रामु न चेतिओ बूडे बहुतु सिआने ॥४॥४॥ (११२४-५, केदारा, भगत कबीर जी)
टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ (११२४-५, केदारा, भगत कबीर जी)
भाउ भगति सिउ काजु न कछूऐ मेरो कामु दीवान ॥१॥ (११२४-६, केदारा, भगत कबीर जी)
रामु बिसारिओ है अभिमानि ॥ (११२४-७, केदारा, भगत कबीर जी)
कनिक कामनी महा सुंदरी पेखि पेखि सचु मानि ॥१॥ रहाउ ॥ (११२४-७, केदारा, भगत कबीर जी)
लालच झूठ बिकार महा मद इह बिधि अउध बिहानि ॥ (११२४-८, केदारा, भगत कबीर जी)
कहि कबीर अंत की बेर आइ लागो कालु निदानि ॥२॥५॥ (११२४-८, केदारा, भगत कबीर जी)
चारि दिन अपनी नउबति चले बजाइ ॥ (११२४-९, केदारा, भगत कबीर जी)
इतनकु खटीआ गठीआ मटीआ संगि न कछु लै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२४-९, केदारा, भगत कबीर जी)
दिहरी बैठी मिहरी रोवै दुआरै लउ संगि माइ ॥ (११२४-१०, केदारा, भगत कबीर जी)
मरहट लगि सभु लोगु कुटम्बु मिलि हंसु इकेला जाइ ॥१॥ (११२४-११, केदारा, भगत कबीर जी)
वै सुत वै बित वै पुर पाटन बहुरि न देखै आइ ॥ (११२४-११, केदारा, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु रामु की न सिमरहु जनमु अकारथु जाइ ॥२॥६॥ (११२४-१२, केदारा, भगत कबीर जी)
रागु केदारा बाणी रविदास जीउ की (११२४-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११२४-१३)
खटु कर्म कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि ॥ (११२४-१४, केदारा, भगत रविदास जी)

चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि ॥१॥ (११२४-१४, केदारा, भगत रविदास जी)
रे चित चेति चेत अचेत ॥ (११२४-१५, केदारा, भगत रविदास जी)
काहे न बालमीकहि देख ॥ (११२४-१५, केदारा, भगत रविदास जी)
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख ॥१॥ रहाउ ॥ (११२४-१५, केदारा, भगत रविदास जी)
सुआन सत्रु अजातु सभ ते कृस्न लावै हेतु ॥ (११२४-१६, केदारा, भगत रविदास जी)
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस ॥२॥ (११२४-१६, केदारा, भगत रविदास जी)
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पासि ॥ (११२४-१७, केदारा, भगत रविदास जी)
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास ॥३॥१॥ (११२४-१७, केदारा, भगत रविदास जी)

पन्ना ११२५

रागु भैरउ महला १ घरु १ चउपदे (११२५-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (११२५-२)
तुझ ते बाहरि किछू न होइ ॥ (११२५-४, भैरउ, मः १)
तू करि करि देखहि जाणहि सोइ ॥१॥ (११२५-४, भैरउ, मः १)
किआ कहीऐ किछु कही न जाइ ॥ (११२५-४, भैरउ, मः १)
जो किछु अहै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२५-५, भैरउ, मः १)
जो किछु करणा सु तेरै पासि ॥ (११२५-५, भैरउ, मः १)
किसु आगै कीचै अरदासि ॥२॥ (११२५-५, भैरउ, मः १)
आखणु सुनणा तेरी बाणी ॥ (११२५-६, भैरउ, मः १)
तू आपे जाणहि सरब विडाणी ॥३॥ (११२५-६, भैरउ, मः १)
करे कराए जाणै आपि ॥ (११२५-६, भैरउ, मः १)
नानक देखै थापि उथापि ॥४॥१॥ (११२५-७, भैरउ, मः १)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११२५-८)
रागु भैरउ महला १ घरु २ ॥ (११२५-६)
गुर कै सबदि तरे मुनि केते इंद्रादिक ब्रहमादि तरे ॥ (११२५-६, भैरउ, मः १)
सनक सनंदन तपसी जन केते गुर परसादी पारि परे ॥१॥ (११२५-६, भैरउ, मः १)
भवजलु बिनु सबदै किउ तरीऐ ॥ (११२५-१०, भैरउ, मः १)
नाम बिना जगु रोगि बिआपिआ दुबिधा डुबि डुबि मरीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२५-१०, भैरउ, मः १)
गुरु देवा गुरु अलख अभेवा तृभवण सोझी गुर की सेवा ॥ (११२५-११, भैरउ, मः १)
आपे दाति करी गुरि दातै पाइआ अलख अभेवा ॥२॥ (११२५-१२, भैरउ, मः १)
मनु राजा मनु मन ते मानिआ मनसा मनहि समाई ॥ (११२५-१२, भैरउ, मः १)
मनु जोगी मनु बिनसि बिओगी मनु समझै गुण गाई ॥३॥ (११२५-१३, भैरउ, मः १)
गुर ते मनु मारिआ सबदु वीचारिआ ते विरले संसारा ॥ (११२५-१४, भैरउ, मः १)
नानक साहिबु भरिपुरि लीणा साच सबदि निसतारा ॥४॥१॥२॥ (११२५-१४, भैरउ, मः १)
भैरउ महला १ ॥ (११२५-१५)

नैनी दृसटि नही तनु हीना जरि जीतिआ सिरि कालो ॥ (११२५-१५, भैरउ, मः १)
रूपु रंगु रहसु नही साचा किउ छोडै जम जालो ॥१॥ (११२५-१६, भैरउ, मः १)
प्राणी हरि जपि जनमु गइओ ॥ (११२५-१६, भैरउ, मः १)

पन्ना ११२६

साच सबद बिनु कबहु न छूटसि बिरथा जनमु भइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-१, भैरउ, मः १)
तन महि कामु क्रोधु हउ ममता कठिन पीर अति भारी ॥ (११२६-१, भैरउ, मः १)
गुरमुखि राम जपहु रसु रसना इन बिधि तरु तू तारी ॥२॥ (११२६-२, भैरउ, मः १)
बहरे करन अकलि भई होछी सबद सहजु नही बूझिआ ॥ (११२६-२, भैरउ, मः १)
जनमु पदारथु मनमुखि हारिआ बिनु गुर अंधु न सूझिआ ॥३॥ (११२६-३, भैरउ, मः १)
रहै उदासु आस निरासा सहज धिआनि बैरागी ॥ (११२६-४, भैरउ, मः १)
प्रणवति नानक गुरमुखि छूटसि राम नामि लिव लागी ॥४॥२॥३॥ (११२६-४, भैरउ, मः १)
भैरउ महला १ ॥ (११२६-५)
भूंडी चाल चरण कर खिसरे तुचा देह कुमलानी ॥ (११२६-५, भैरउ, मः १)
नेत्री धुंधि करन भए बहरे मनमुखि नामु न जानी ॥१॥ (११२६-५, भैरउ, मः १)
अंधुले किआ पाइआ जगि आइ ॥ (११२६-६, भैरउ, मः १)
रामु रिदै नही गुर की सेवा चाले मूलु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-६, भैरउ, मः १)
जिहवा रंगि नही हरि राती जब बोलै तब फीके ॥ (११२६-७, भैरउ, मः १)
संत जना की निंदा विआपसि पसू भए कदे होहि न नीके ॥२॥ (११२६-७, भैरउ, मः १)
अमृत का रसु विरली पाइआ सतिगुर मेलि मिलाए ॥ (११२६-८, भैरउ, मः १)
जब लगु सबद भेदु नही आइआ तब लगु कालु संताए ॥३॥ (११२६-९, भैरउ, मः १)
अन को दरु घरु कबहू न जानसि एको दरु सचिआरा ॥ (११२६-९, भैरउ, मः १)
गुर परसादि परम पदु पाइआ नानकु कहै विचारा ॥४॥३॥४॥ (११२६-१०, भैरउ, मः १)
भैरउ महला १ ॥ (११२६-११)
सगली रैणि सोवत गलि फाही दिनसु जंजालि गवाइआ ॥ (११२६-११, भैरउ, मः १)
खिनु पलु घड़ी नही प्रभु जानिआ जिनि इहु जगतु उपाइआ ॥१॥ (११२६-११, भैरउ, मः १)
मन रे किउ छूटसि दुखु भारी ॥ (११२६-१२, भैरउ, मः १)
किआ ले आवसि किआ ले जावसि राम जपहु गुणकारी ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-१२, भैरउ, मः १)
ऊंधउ कवलु मनमुख मति होछी मनि अंधै सिरि धंधा ॥ (११२६-१३, भैरउ, मः १)
कालु बिकालु सदा सिरि तेरै बिनु नावै गलि फंधा ॥२॥ (११२६-१४, भैरउ, मः १)
डगरी चाल नेत्र फुनि अंधुले सबद सुरति नही भाई ॥ (११२६-१४, भैरउ, मः १)
सासत्र बेद त्रै गुण है माइआ अंधुलउ धंधु कमाई ॥३॥ (११२६-१५, भैरउ, मः १)
खोइओ मूलु लाभु कह पावसि दुरमति गिआन विहूणे ॥ (११२६-१५, भैरउ, मः १)
सबदु बीचारि राम रसु चाखिआ नानक साचि पतीणे ॥४॥४॥५॥ (११२६-१६, भैरउ, मः १)
भैरउ महला १ ॥ (११२६-१७)

गुर कै संगि रहै दिनु राती रामु रसनि रंगि राता ॥ (११२६-१७, भैरउ, मः १)
अवरु न जाणसि सबदु पछाणसि अंतरि जाणि पछाता ॥१॥ (११२६-१७, भैरउ, मः १)
सो जनु ऐसा मै मनि भावै ॥ (११२६-१८, भैरउ, मः १)
आपु मारि अपरम्परि राता गुर की कार कमावै ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-१८, भैरउ, मः १)
अंतरि बाहरि पुरखु निरंजनु आदि पुरखु आदेसो ॥ (११२६-१९, भैरउ, मः १)
घट घट अंतरि सर्ब निरंतरि रवि रहिआ सचु वेसो ॥२॥ (११२६-१९, भैरउ, मः १)

पन्ना ११२७

साचि रते सचु अमृतु जिहवा मिथिआ मैलु न राई ॥ (११२७-१, भैरउ, मः १)
निर्मल नामु अमृत रसु चाखिआ सबदि रते पति पाई ॥३॥ (११२७-२, भैरउ, मः १)
गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि गुरमुखि नामि वडाई ॥ (११२७-२, भैरउ, मः १)
सगले दूख मिटहि गुर सेवा नानक नामु सखाई ॥४॥५॥६॥ (११२७-३, भैरउ, मः १)
भैरउ महला १ ॥ (११२७-३)
हिरदै नामु सर्ब धनु धारणु गुर परसादी पाईऐ ॥ (११२७-४, भैरउ, मः १)
अमर पदार्थ ते किरतारथ सहज धिआनि लिव लाईऐ ॥१॥ (११२७-४, भैरउ, मः १)
मन रे राम भगति चितु लाईऐ ॥ (११२७-५, भैरउ, मः १)
गुरमुखि राम नामु जपि हिरदै सहज सेती घरि जाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२७-५, भैरउ, मः १)
भरमु भेदु भउ कबहु न छूटसि आवत जात न जानी ॥ (११२७-६, भैरउ, मः १)
बिनु हरि नाम को मुकति न पावसि डूबि मुए बिनु पानी ॥२॥ (११२७-६, भैरउ, मः १)
धंधा करत सगली पति खोवसि भरमु न मिटसि गवारा ॥ (११२७-७, भैरउ, मः १)
बिनु गुर सबद मुकति नही कब ही अंधुले धंधु पसारा ॥३॥ (११२७-८, भैरउ, मः १)
अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ मन ही ते मनु मूआ ॥ (११२७-८, भैरउ, मः १)
अंतरि बाहरि एको जानिआ नानक अवरु न दूआ ॥४॥६॥७॥ (११२७-९, भैरउ, मः १)
भैरउ महला १ ॥ (११२७-१०)
जगन होम पुन्न तप पूजा देह दुखी नित दूख सहै ॥ (११२७-१०, भैरउ, मः १)
राम नाम बिनु मुकति न पावसि मुकति नामि गुरमुखि लहै ॥१॥ (११२७-१०, भैरउ, मः १)
राम नाम बिनु बिरथे जगि जनमा ॥ (११२७-११, भैरउ, मः १)
बिखु खावै बिखु बोली बोलै बिनु नावै निहफलु मरि भ्रमना ॥१॥ रहाउ ॥ (११२७-११, भैरउ, मः १)
पुसतक पाठ बिआकरण वखाणै संधिआ कर्म तिकाल करै ॥ (११२७-१२, भैरउ, मः १)
बिनु गुर सबद मुकति कहा प्राणी राम नाम बिनु उरझि मरै ॥२॥ (११२७-१३, भैरउ, मः १)
डंड कमंडल सिखा सूतु धोती तीरथि गवनु अति भ्रमनु करै ॥ (११२७-१३, भैरउ, मः १)
राम नाम बिनु साँति न आवै जपि हरि हरि नामु सु पारि परै ॥३॥ (११२७-१४, भैरउ, मः १)
जटा मुकटु तनि भसम लगाई बसत्र छोडि तनि नगनु भइआ ॥ (११२७-१५, भैरउ, मः १)
राम नाम बिनु तृपति न आवै किरत कै बाँधै भेखु भइआ ॥४॥ (११२७-१५, भैरउ, मः १)
जेते जीअ जंत जलि थलि महीअलि जत्र कत्र तू सर्ब जीआ ॥ (११२७-१६, भैरउ, मः १)

गुर परसादि राखि ले जन कउ हरि रसु नानक झोलि पीआ ॥५॥७॥८॥ (११२७-१६, भैरउ, मः १)
रागु भैरउ महला ३ चउपदे घरु १ (११२७-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११२७-१८)
जाति का गरबु न करीअहु कोई ॥ (११२७-१६, भैरउ, मः ३)
ब्रह्मु बिंदे सो ब्राहमणु होई ॥१॥ (११२७-१६, भैरउ, मः ३)
जाति का गरबु न करि मूरख गवारा ॥ (११२७-१६, भैरउ, मः ३)

पन्ना ११२८

इसु गरब ते चलहि बहुतु विकारा ॥१॥ रहाउ ॥ (११२८-१, भैरउ, मः ३)
चारे वरन आखै सभु कोई ॥ (११२८-१, भैरउ, मः ३)
ब्रह्मु बिंद ते सभ ओपति होई ॥२॥ (११२८-१, भैरउ, मः ३)
माटी एक सगल संसारा ॥ (११२८-२, भैरउ, मः ३)
बहु बिधि भाँडे घड़ै कुम्हारा ॥३॥ (११२८-२, भैरउ, मः ३)
पंच ततु मिलि देही का आकारा ॥ (११२८-२, भैरउ, मः ३)
घटि वधि को करै बीचारा ॥४॥ (११२८-३, भैरउ, मः ३)
कहतु नानक इहु जीउ कर्म बंधु होई ॥ (११२८-३, भैरउ, मः ३)
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥५॥१॥ (११२८-४, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२८-४)
जोगी गृही पंडित भेखधारी ॥ (११२८-४, भैरउ, मः ३)
ए सूते अपणै अहंकारी ॥१॥ (११२८-४, भैरउ, मः ३)
माइआ मदि माता रहिआ सोइ ॥ (११२८-५, भैरउ, मः ३)
जागतु रहै न मूसै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२८-५, भैरउ, मः ३)
सो जागै जिसु सतिगुरु मिलै ॥ (११२८-५, भैरउ, मः ३)
पंच दूत ओहु वसगति करै ॥२॥ (११२८-६, भैरउ, मः ३)
सो जागै जो ततु बीचारै ॥ (११२८-६, भैरउ, मः ३)
आपि मरै अवरा नह मारै ॥३॥ (११२८-६, भैरउ, मः ३)
सो जागै जो एको जाणै ॥ (११२८-७, भैरउ, मः ३)
परकिरति छोडै ततु पछाणै ॥४॥ (११२८-७, भैरउ, मः ३)
चहु वरना विचि जागै कोइ ॥ (११२८-७, भैरउ, मः ३)
जमै कालै ते छूटै सोइ ॥५॥ (११२८-८, भैरउ, मः ३)
कहत नानक जनु जागै सोइ ॥ (११२८-८, भैरउ, मः ३)
गिआन अंजनु जा की नेत्री होइ ॥६॥२॥ (११२८-८, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२८-६)
जा कउ राखै अपणी सरणाई ॥ (११२८-६, भैरउ, मः ३)
साचे लागै साचा फलु पाई ॥१॥ (११२८-६, भैरउ, मः ३)

रे जन कै सिउ करहु पुकारा ॥ (११२८-६, भैरउ, मः ३)
हुकमे होआ हुकमे वरतारा ॥१॥ रहाउ ॥ (११२८-१०, भैरउ, मः ३)
एहु आकारु तेरा है धारा ॥ (११२८-१०, भैरउ, मः ३)
खिन महि बिनसै करत न लागै बारा ॥२॥ (११२८-१०, भैरउ, मः ३)
करि प्रसादु इकु खेलु दिखाइआ ॥ (११२८-११, भैरउ, मः ३)
गुर किरपा ते पर्म पदु पाइआ ॥३॥ (११२८-११, भैरउ, मः ३)
कहत नानकु मारि जीवाले सोइ ॥ (११२८-१२, भैरउ, मः ३)
ऐसा बूझहु भरमि न भूलहु कोइ ॥४॥३॥ (११२८-१२, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२८-१२)
मै कामणि मेरा कंतु करतारु ॥ (११२८-१३, भैरउ, मः ३)
जेहा कराए तेहा करी सीगारु ॥१॥ (११२८-१३, भैरउ, मः ३)
जाँ तिसु भावै ताँ करे भोगु ॥ (११२८-१३, भैरउ, मः ३)
तनु मनु साचे साहिब जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (११२८-१४, भैरउ, मः ३)
उसतति निंदा करे किआ कोई ॥ (११२८-१४, भैरउ, मः ३)
जाँ आपे वरतै एको सोई ॥२॥ (११२८-१४, भैरउ, मः ३)
गुर परसादी पिर्म कसाई ॥ (११२८-१५, भैरउ, मः ३)
मिलउगी दइआल पंच सबद वजाई ॥३॥ (११२८-१५, भैरउ, मः ३)
भनति नानकु करे किआ कोइ ॥ (११२८-१६, भैरउ, मः ३)
जिस नो आपि मिलावै सोइ ॥४॥४॥ (११२८-१६, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२८-१६)
सो मुनि जि मन की दुबिधा मारे ॥ (११२८-१६, भैरउ, मः ३)
दुबिधा मारि ब्रहमु बीचारे ॥१॥ (११२८-१७, भैरउ, मः ३)
इसु मन कउ कोई खोजहु भाई ॥ (११२८-१७, भैरउ, मः ३)
मनु खोजत नामु नउ निधि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११२८-१७, भैरउ, मः ३)
मूलु मोहु करि करतै जगतु उपाइआ ॥ (११२८-१८, भैरउ, मः ३)
ममता लाइ भरमि भोुलाइआ ॥२॥ (११२८-१८, भैरउ, मः ३)
इसु मन ते सभ पिंड पराणा ॥ (११२८-१९, भैरउ, मः ३)
मन कै वीचारि हुकमु बुझि समाणा ॥३॥ (११२८-१९, भैरउ, मः ३)

पन्ना ११२९

करमु होवै गुरु किरपा करै ॥ (११२९-१, भैरउ, मः ३)
इहु मनु जागै इसु मन की दुबिधा मरै ॥४॥ (११२९-१, भैरउ, मः ३)
मन का सुभाउ सदा बैरागी ॥ (११२९-१, भैरउ, मः ३)
सभ महि वसै अतीतु अनरागी ॥५॥ (११२९-२, भैरउ, मः ३)
कहत नानकु जो जाणै भेउ ॥ (११२९-२, भैरउ, मः ३)

आदि पुरखु निरंजन देउ ॥६॥५॥ (११२६-२, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२६-३)
राम नामु जगत निसतारा ॥ (११२६-३, भैरउ, मः ३)
भवजलु पारि उतारणहारा ॥१॥ (११२६-३, भैरउ, मः ३)
गुर परसादी हरि नामु सम्हालि ॥ (११२६-४, भैरउ, मः ३)
सद ही निबहै तेरै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-४, भैरउ, मः ३)
नामु न चेतहि मनमुख गावारा ॥ (११२६-४, भैरउ, मः ३)
बिनु नावै कैसे पावहि पारा ॥२॥ (११२६-५, भैरउ, मः ३)
आपे दाति करे दातारु ॥ (११२६-५, भैरउ, मः ३)
देवणहारे कउ जैकारु ॥३॥ (११२६-५, भैरउ, मः ३)
नदरि करे सतिगुरू मिलाए ॥ (११२६-६, भैरउ, मः ३)
नानक हिरदै नामु वसाए ॥४॥६॥ (११२६-६, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२६-६)
नामे उधरे सभि जितने लोअ ॥ (११२६-६, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि जिना परापति होइ ॥१॥ (११२६-७, भैरउ, मः ३)
हरि जीउ अपणी कृपा करेइ ॥ (११२६-७, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि नामु वडिआई देइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-७, भैरउ, मः ३)
राम नामि जिन प्रीति पिआरु ॥ (११२६-८, भैरउ, मः ३)
आपि उधरे सभि कुल उधारणहारु ॥२॥ (११२६-८, भैरउ, मः ३)
बिनु नावै मनमुख जम पुरि जाहि ॥ (११२६-९, भैरउ, मः ३)
अउखे होवहि चोटा खाहि ॥३॥ (११२६-९, भैरउ, मः ३)
आपे करता देवै सोइ ॥ (११२६-९, भैरउ, मः ३)
नानक नामु परापति होइ ॥४॥७॥ (११२६-१०, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२६-१०)
गोविंद प्रीति सनकादिक उधारे ॥ (११२६-१०, भैरउ, मः ३)
राम नाम सबदि बीचारे ॥१॥ (११२६-१०, भैरउ, मः ३)
हरि जीउ अपणी किरपा धारु ॥ (११२६-११, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि नामे लगै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-११, भैरउ, मः ३)
अंतरि प्रीति भगति साची होइ ॥ (११२६-१२, भैरउ, मः ३)
पूरै गुरि मेलावा होइ ॥२॥ (११२६-१२, भैरउ, मः ३)
निज घरि वसै सहजि सुभाइ ॥ (११२६-१२, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि नामु वसै मनि आइ ॥३॥ (११२६-१३, भैरउ, मः ३)
आपे वेखै वेखणहारु ॥ (११२६-१३, भैरउ, मः ३)
नानक नामु रखहु उर धारि ॥४॥८॥ (११२६-१३, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२६-१४)

कलजुग महि राम नामु उर धारु ॥ (११२६-१४, भैरउ, मः ३)
बिनु नावै माथै पावै छारु ॥१॥ (११२६-१४, भैरउ, मः ३)
राम नामु दुलभु है भाई ॥ (११२६-१४, भैरउ, मः ३)
गुर परसादि वसै मनि आई ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-१५, भैरउ, मः ३)
राम नामु जन भालहि सोइ ॥ (११२६-१५, भैरउ, मः ३)
पूरे गुर ते प्रापति होइ ॥२॥ (११२६-१५, भैरउ, मः ३)
हरि का भाणा मन्नहि से जन परवाणु ॥ (११२६-१६, भैरउ, मः ३)
गुर कै सबदि नाम नीसाणु ॥३॥ (११२६-१६, भैरउ, मः ३)
सो सेवहु जो कल रहिआ धारि ॥ (११२६-१६, भैरउ, मः ३)
नानक गुरमुखि नामु पिआरि ॥४॥६॥ (११२६-१७, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११२६-१७)
कलजुग महि बहु करम कमाहि ॥ (११२६-१७, भैरउ, मः ३)
ना रुति न करम थाइ पाहि ॥१॥ (११२६-१८, भैरउ, मः ३)
कलजुग महि राम नामु है सारु ॥ (११२६-१८, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि साचा लगै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (११२६-१८, भैरउ, मः ३)
तनु मनु खोजि घरै महि पाइआ ॥ (११२६-१९, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि राम नामि चितु लाइआ ॥२॥ (११२६-१९, भैरउ, मः ३)

पन्ना ११३०

गिआन अंजनु सतिगुर ते होइ ॥ (११३०-१, भैरउ, मः ३)
राम नामु रवि रहिआ तिहु लोइ ॥३॥ (११३०-१, भैरउ, मः ३)
कलिजुग महि हरि जीउ एकु होर रुति न काई ॥ (११३०-१, भैरउ, मः ३)
नानक गुरमुखि हिरदै राम नामु लेहु जमाई ॥४॥१०॥ (११३०-२, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ घरु २ (११३०-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११३०-४)
दुबिधा मनमुख रोगि विआपे तृसना जलहि अधिकाई ॥ (११३०-४, भैरउ, मः ३)
मरि मरि जम्महि ठउर न पावहि बिरथा जनमु गवाई ॥१॥ (११३०-४, भैरउ, मः ३)
मेरे प्रीतम करि किरपा देहु बुझाई ॥ (११३०-५, भैरउ, मः ३)
हउमै रोगी जगतु उपाइआ बिनु सबदै रोगु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११३०-५, भैरउ, मः ३)
सिम्मृति सासत्र पड़हि मुनि केते बिनु सबदै सुरति न पाई ॥ (११३०-६, भैरउ, मः ३)
त्रै गुण सभे रोगि विआपे ममता सुरति गवाई ॥२॥ (११३०-७, भैरउ, मः ३)
इकि आपे काढि लए प्रभि आपे गुर सेवा प्रभि लाए ॥ (११३०-७, भैरउ, मः ३)
हरि का नामु निधानो पाइआ सुखु वसिआ मनि आइ ॥३॥ (११३०-८, भैरउ, मः ३)
चउथी पदवी गुरमुखि वरतहि तिन निज घरि वासा पाइआ ॥ (११३०-८, भैरउ, मः ३)
पूरै सतिगुरि किरपा कीनी विचहु आपु गवाइआ ॥४॥ (११३०-९, भैरउ, मः ३)

एकसु की सिरि कार एक जिनि ब्रह्मा बिसनु रुद्रु उपाइआ ॥ (११३०-१०, भैरउ, मः ३)
नानक निहचलु साचा एको ना ओहु मरै न जाइआ ॥५॥१॥११॥ (११३०-१०, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३०-११)
मनमुखि दुबिधा सदा है रोगी रोगी सगल संसारा ॥ (११३०-११, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि बूझहि रोगु गवावहि गुर सबदी वीचारा ॥१॥ (११३०-१२, भैरउ, मः ३)
हरि जीउ सतसंगति मेलाइ ॥ (११३०-१२, भैरउ, मः ३)
नानक तिस नो देइ वडिआई जो राम नामि चितु लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११३०-१२, भैरउ, मः ३)
ममता कालि सभि रोगि विआपे तिन जम की है सिरि कारा ॥ (११३०-१३, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि प्राणी जमु नेड़ि न आवै जिन हरि राखिआ उरि धारा ॥२॥ (११३०-१४, भैरउ, मः ३)
जिन हरि का नामु न गुरमुखि जाता से जग महि काहे आइआ ॥ (११३०-१४, भैरउ, मः ३)
गुर की सेवा कदे न कीनी बिरथा जनमु गवाइआ ॥३॥ (११३०-१५, भैरउ, मः ३)
नानक से पूरे वडभागी सतिगुर सेवा लाए ॥ (११३०-१६, भैरउ, मः ३)
जो इछहि सोई फलु पावहि गुरबाणी सुखु पाए ॥४॥२॥१२॥ (११३०-१६, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३०-१७)
दुख विचि जम्मै दुखि मरै दुख विचि कार कमाइ ॥ (११३०-१७, भैरउ, मः ३)
गरभ जोनी विचि कदे न निकलै बिसटा माहि समाइ ॥१॥ (११३०-१७, भैरउ, मः ३)
ध्रिगु ध्रिगु मनमुखि जनमु गवाइआ ॥ (११३०-१८, भैरउ, मः ३)
पूरे गुर की सेव न कीनी हरि का नामु न भाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११३०-१८, भैरउ, मः ३)
गुर का सबदु सभि रोग गवाए जिस नो हरि जीउ लाए ॥ (११३०-१९, भैरउ, मः ३)

पन्ना ११३१

नामे नामि मिलै वडिआई जिस नो मंनि वसाए ॥२॥ (११३१-१, भैरउ, मः ३)
सतिगुरु भेटै ता फलु पाए सचु करणी सुख सारु ॥ (११३१-१, भैरउ, मः ३)
से जन निर्मल जो हरि लागे हरि नामे धरहि पिआरु ॥३॥ (११३१-२, भैरउ, मः ३)
तिन की रेणु मिलै ताँ मसतकि लाई जिन सतिगुरु पूरा धिआइआ ॥ (११३१-२, भैरउ, मः ३)
नानक तिन की रेणु पूरै भागि पाईऐ जिनी राम नामि चितु लाइआ ॥४॥३॥१३॥ (११३१-३, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३१-४)
सबदु बीचारे सो जनु साचा जिन कै हिरदै साचा सोई ॥ (११३१-४, भैरउ, मः ३)
साची भगति करहि दिनु राती ताँ तनि दूखु न होई ॥१॥ (११३१-५, भैरउ, मः ३)
भगतु भगतु कहै सभु कोई ॥ (११३१-५, भैरउ, मः ३)
बिनु सतिगुर सेवे भगति न पाईऐ पूरै भागि मिलै प्रभु सोई ॥१॥ रहाउ ॥ (११३१-५, भैरउ, मः ३)
मनमुख मूलु गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥ (११३१-६, भैरउ, मः ३)
जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइ पति खोई ॥२॥ (११३१-७, भैरउ, मः ३)
बहले भेख भवहि दिनु राती हउमै रोगु न जाई ॥ (११३१-७, भैरउ, मः ३)
पड़ि पड़ि लूझहि बादु वखाणहि मिलि माइआ सुरति गवाई ॥३॥ (११३१-८, भैरउ, मः ३)

सतिगुरु सेवहि परम गति पावहि नामि मिलै वडिआई ॥ (११३१-९, भैरउ, मः ३)
नानक नामु जिना मनि वसिआ दरि साचै पति पाई ॥४॥४॥१४॥ (११३१-९, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३१-१०)
मनमुख आसा नही उतरै दूजै भाइ खुआए ॥ (११३१-१०, भैरउ, मः ३)
उदरु नै साणु न भरीऐ कबहू तृसना अगनि पचाए ॥१॥ (११३१-१०, भैरउ, मः ३)
सदा अनंदु राम रसि राते ॥ (११३१-११, भैरउ, मः ३)
हिरदै नामु दुबिधा मनि भागी हरि हरि अमृतु पी तृपताते ॥१॥ रहाउ ॥ (११३१-११, भैरउ, मः ३)
आपे पारब्रह्मु सृसटि जिनि साजी सिरि सिरि धंधै लाए ॥ (११३१-१२, भैरउ, मः ३)
माइआ मोहु कीआ जिनि आपे आपे दूजै लाए ॥२॥ (११३१-१३, भैरउ, मः ३)
तिस नो किहु कहीऐ जे दूजा होवै सभि तुधै माहि समाए ॥ (११३१-१३, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि गिआनु ततु बीचारा जोती जोति मिलाए ॥३॥ (११३१-१४, भैरउ, मः ३)
सो प्रभु साचा सद ही साचा साचा सभु आकारा ॥ (११३१-१४, भैरउ, मः ३)
नानक सतिगुरि सोझी पाई सचि नामि निसतारा ॥४॥५॥१५॥ (११३१-१५, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३१-१६)
कलि महि प्रेत जिन्ही रामु न पछाता सतजुगि परम हंस बीचारी ॥ (११३१-१६, भैरउ, मः ३)
दुआपुरि त्रेतै माणस वरतहि विरलै हउमै मारी ॥१॥ (११३१-१६, भैरउ, मः ३)
कलि महि राम नामि वडिआई ॥ (११३१-१७, भैरउ, मः ३)
जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११३१-१७, भैरउ, मः ३)
हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई ॥ (११३१-१८, भैरउ, मः ३)
आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई ॥२॥ (११३१-१९, भैरउ, मः ३)
मेरा प्रभु है गुण का दाता अवगण सबदि जलाए ॥ (११३१-१९, भैरउ, मः ३)

पन्ना ११३२

जिन मनि वसिआ से जन सोहे हिरदै नामु वसाए ॥३॥ (११३२-१, भैरउ, मः ३)
घरु दरु महलु सतिगुरू दिखाइआ रंग सिउ रलीआ माणै ॥ (११३२-१, भैरउ, मः ३)
जो किछु कहै सु भला करि मानै नानक नामु वखाणै ॥४॥६॥१६॥ (११३२-२, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३२-३)
मनसा मनहि समाइ लै गुर सबदी वीचार ॥ (११३२-३, भैरउ, मः ३)
गुर पूरे ते सोझी पवै फिरि मरै न वारो वार ॥१॥ (११३२-३, भैरउ, मः ३)
मन मेरे राम नामु आधारु ॥ (११३२-४, भैरउ, मः ३)
गुर परसादि परम पदु पाइआ सभ इछ पुजावणहारु ॥१॥ रहाउ ॥ (११३२-४, भैरउ, मः ३)
सभ महि एको रवि रहिआ गुर बिनु बूझ न पाइ ॥ (११३२-५, भैरउ, मः ३)
गुरमुखि प्रगटु होआ मेरा हरि प्रभु अनदिनु हरि गुण गाइ ॥२॥ (११३२-५, भैरउ, मः ३)
सुखदाता हरि एकु है होर थै सुखु न पाहि ॥ (११३२-६, भैरउ, मः ३)
सतिगुरु जिनी न सेविआ दाता से अंति गए पछुताहि ॥३॥ (११३२-७, भैरउ, मः ३)

सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाइआ फिरि दुखु न लागै धाइ ॥ (११३२-७, भैरउ, मः ३)
नानक हरि भगति परापति होई जोती जोति समाइ ॥४॥७॥१७॥ (११३२-८, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३२-८)
बाझु गुरू जगतु बउराना भूला चोटा खाई ॥ (११३२-६, भैरउ, मः ३)
मरि मरि जम्मै सदा दुखु पाए दर की खबरि न पाई ॥१॥ (११३२-६, भैरउ, मः ३)
मेरे मन सदा रहहु सतिगुर की सरणा ॥ (११३२-१०, भैरउ, मः ३)
हिरदै हरि नामु मीठा सद लागा गुर सबदे भवजलु तरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (११३२-१०, भैरउ, मः ३)
भेख करै बहुतु चितु डोलै अंतरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (११३२-११, भैरउ, मः ३)
अंतरि तिसा भूख अति बहुती भउकत फिरै दर बारु ॥२॥ (११३२-११, भैरउ, मः ३)
गुर कै सबदि मरहि फिरि जीवहि तिन कउ मुकति दुआरि ॥ (११३२-१२, भैरउ, मः ३)
अंतरि साँति सदा सुखु होवै हरि राखिआ उर धारि ॥३॥ (११३२-१३, भैरउ, मः ३)
जिउ तिसु भावै तिवै चलावै करणा किछू न जाई ॥ (११३२-१३, भैरउ, मः ३)
नानक गुरमुखि सबदु सम्हाले राम नामि वडिआई ॥४॥८॥१८॥ (११३२-१४, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३२-१५)
हउमै माइआ मोहि खुआइआ दुखु खटे दुख खाइ ॥ (११३२-१५, भैरउ, मः ३)
अंतरि लोभ हलकु दुखु भारी बिनु बिबेक भरमाइ ॥१॥ (११३२-१५, भैरउ, मः ३)
मनमुखि ध्रिगु जीवणु सैसारि ॥ (११३२-१६, भैरउ, मः ३)
राम नामु सुपनै नही चेतिआ हरि सिउ कदे न लागै पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥ (११३२-१६, भैरउ, मः ३)
पसूआ कर्म करै नही बूझै कूड़ु कमावै कूड़ो होइ ॥ (११३२-१७, भैरउ, मः ३)
सतिगुरु मिलै त उलटी होवै खोजि लहै जनु कोइ ॥२॥ (११३२-१७, भैरउ, मः ३)
हरि हरि नामु रिदै सद वसिआ पाइआ गुणी निधानु ॥ (११३२-१८, भैरउ, मः ३)
गुर परसादी पूरा पाइआ चूका मन अभिमानु ॥३॥ (११३२-१६, भैरउ, मः ३)
आपे करता करे कराए आपे मारगि पाए ॥ (११३२-१६, भैरउ, मः ३)

पन्ना ११३३

आपे गुरमुखि दे वडिआई नानक नामि समाए ॥४॥६॥१६॥ (११३३-१, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३३-१)
मेरी पटीआ लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ (११३३-१, भैरउ, मः ३)
दूजै भाइ फाथे जम जाला ॥ (११३३-२, भैरउ, मः ३)
सतिगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ (११३३-२, भैरउ, मः ३)
हरि सुखदाता मेरै नाला ॥१॥ (११३३-२, भैरउ, मः ३)
गुर उपदेसि प्रहिलादु हरि उचरै ॥ (११३३-३, भैरउ, मः ३)
सासना ते बालकु गमु न करै ॥१॥ रहाउ ॥ (११३३-३, भैरउ, मः ३)
माता उपदेसै प्रहिलाद पिआरे ॥ (११३३-४, भैरउ, मः ३)
पुत्र राम नामु छोडहु जीउ लेहु उबारे ॥ (११३३-४, भैरउ, मः ३)

प्रहिलादु कहै सुनहु मेरी माइ ॥ (११३३-४, भैरउ, मः ३)
राम नामु न छोडा गुरि दीआ बुझाइ ॥२॥ (११३३-५, भैरउ, मः ३)
संडा मरका सभि जाइ पुकारे ॥ (११३३-५, भैरउ, मः ३)
प्रहिलादु आपि विगड़िआ सभि चाटड़े विगाड़े ॥ (११३३-६, भैरउ, मः ३)
दुसट सभा महि मंत्रु पकाइआ ॥ (११३३-६, भैरउ, मः ३)
प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ ॥३॥ (११३३-६, भैरउ, मः ३)
हाथि खड़गु करि धाइआ अति अहंकारि ॥ (११३३-७, भैरउ, मः ३)
हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥ (११३३-७, भैरउ, मः ३)
खिन महि भैआन रूपु निकसिआ थम्म् उपाड़ि ॥ (११३३-८, भैरउ, मः ३)
हरणाखसु नखी बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥४॥ (११३३-८, भैरउ, मः ३)
संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥ (११३३-९, भैरउ, मः ३)
प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे ॥ (११३३-९, भैरउ, मः ३)
गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥ (११३३-९, भैरउ, मः ३)
नानक राम नामि संत निसतारे ॥५॥१०॥२०॥ (११३३-१०, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११३३-१०)
आपे दैत लाइ दिते संत जना कउ आपे राखा सोई ॥ (११३३-१०, भैरउ, मः ३)
जो तेरी सदा सरणाई तिन मनि दुखु न होई ॥१॥ (११३३-११, भैरउ, मः ३)
जुगि जुगि भगता की रखदा आइआ ॥ (११३३-११, भैरउ, मः ३)
दैत पुत्रु प्रहलादु गाइत्री तरपणु किछू न जाणै सबदे मेलि मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११३३-१२, भैरउ, मः ३)
अनदिनु भगति करहि दिन राती दुबिधा सबदे खोई ॥ (११३३-१३, भैरउ, मः ३)
सदा निर्मल है जो सचि राते सचु वसिआ मनि सोई ॥२॥ (११३३-१३, भैरउ, मः ३)
मूरख दुबिधा पड़हहि मूलु न पछाणहि बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (११३३-१४, भैरउ, मः ३)
संत जना की निंदा करहि दुसटु दैतु चिड़ाइआ ॥३॥ (११३३-१५, भैरउ, मः ३)
प्रहलादु दुबिधा न पड़ै हरि नामु न छोडै डरै न किसै दा डराइआ ॥ (११३३-१५, भैरउ, मः ३)
संत जना का हरि जीउ राखा दैतै कालु नेड़ा आइआ ॥४॥ (११३३-१६, भैरउ, मः ३)
आपणी पैज आपे राखै भगताँ देइ वडिआई ॥ (११३३-१६, भैरउ, मः ३)
नानक हरणाखसु नखी बिदारिआ अंधै दर की खबरि न पाई ॥५॥११॥२१॥ (११३३-१७, भैरउ, मः ३)
रागु भैरउ महला ४ चउपदे घरु १ (११३३-१९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११३३-१९)
हरि जन संत करि किरपा पगि लाइणु ॥ (११३३-१९, भैरउ, मः ४)

पन्ना ११३४

गुर सबदी हरि भजु सुरति समाइणु ॥१॥ (११३४-१, भैरउ, मः ४)
मेरे मन हरि भजु नामु नराइणु ॥ (११३४-१, भैरउ, मः ४)
हरि हरि कृपा करे सुखदाता गुरमुखि भवजलु हरि नामि तराइणु ॥१॥ रहाउ ॥ (११३४-१, भैरउ, मः ४)

संगति साध मेलि हरि गाइणु ॥ (११३४-२, भैरउ, मः ४)
गुरमती ले राम रसाइणु ॥२॥ (११३४-३, भैरउ, मः ४)
गुर साधू अमृत गिआन सरि नाइणु ॥ (११३४-३, भैरउ, मः ४)
सभि किलविख पाप गए गावाइणु ॥३॥ (११३४-३, भैरउ, मः ४)
तू आपे करता सृसटि धराइणु ॥ (११३४-४, भैरउ, मः ४)
जनु नानकु मेलि तेरा दास दसाइणु ॥४॥१॥ (११३४-४, भैरउ, मः ४)
भैरउ महला ४ ॥ (११३४-५)
बोलि हरि नामु सफल सा घरी ॥ (११३४-५, भैरउ, मः ४)
गुर उपदेसि सभि दुख परहरी ॥१॥ (११३४-५, भैरउ, मः ४)
मेरे मन हरि भजु नामु नरहरी ॥ (११३४-६, भैरउ, मः ४)
करि किरपा मेलहु गुरु पूरा सतसंगति संगि सिंधु भउ तरी ॥१॥ रहाउ ॥ (११३४-६, भैरउ, मः ४)
जगजीवनु धिआइ मनि हरि सिमरी ॥ (११३४-७, भैरउ, मः ४)
कोट कोटंतर तेरे पाप परहरी ॥२॥ (११३४-७, भैरउ, मः ४)
सतसंगति साध धूरि मुखि परी ॥ (११३४-७, भैरउ, मः ४)
इसनानु कीओ अठसठि सुरसरी ॥३॥ (११३४-८, भैरउ, मः ४)
हम मूरख कउ हरि किरपा करी ॥ (११३४-८, भैरउ, मः ४)
जनु नानकु तारिओ तारण हरी ॥४॥२॥ (११३४-८, भैरउ, मः ४)
भैरउ महला ४ ॥ (११३४-९)
सुकृतु करणी सारु जपमाली ॥ (११३४-९, भैरउ, मः ४)
हिरदै फेरि चलै तुधु नाली ॥१॥ (११३४-९, भैरउ, मः ४)
हरि हरि नामु जपहु बनवाली ॥ (११३४-१०, भैरउ, मः ४)
करि किरपा मेलहु सतसंगति तूटि गई माइआ जम जाली ॥१॥ रहाउ ॥ (११३४-१०, भैरउ, मः ४)
गुरमुखि सेवा घालि जिनि घाली ॥ (११३४-११, भैरउ, मः ४)
तिसु घड़ीऐ सबदु सची टकसाली ॥२॥ (११३४-११, भैरउ, मः ४)
हरि अगम अगोचरु गुरि अगम दिखाली ॥ (११३४-१२, भैरउ, मः ४)
विचि काइआ नगर लधा हरि भाली ॥३॥ (११३४-१२, भैरउ, मः ४)
हम बारिक हरि पिता प्रतिपाली ॥ (११३४-१२, भैरउ, मः ४)
जन नानक तारहु नदरि निहाली ॥४॥३॥ (११३४-१३, भैरउ, मः ४)
भैरउ महला ४ ॥ (११३४-१३)
सभि घट तेरे तू सभना माहि ॥ (११३४-१३, भैरउ, मः ४)
तुझ ते बाहरि कोई नाहि ॥१॥ (११३४-१४, भैरउ, मः ४)
हरि सुखदाता मेरे मन जापु ॥ (११३४-१४, भैरउ, मः ४)
हउ तुधु सालाही तू मेरा हरि प्रभु बापु ॥१॥ रहाउ ॥ (११३४-१४, भैरउ, मः ४)
जह जह देखा तह हरि प्रभु सोइ ॥ (११३४-१५, भैरउ, मः ४)
सभ तेरै वसि दूजा अवरु न कोइ ॥२॥ (११३४-१५, भैरउ, मः ४)

जिस कउ तुम हरि राखिआ भावै ॥ (११३४-१६, भैरउ, मः ४)
तिस कै नेड़ै कोइ न जावै ॥३॥ (११३४-१६, भैरउ, मः ४)
तू जलि थलि महीअलि सभ तै भरपूरि ॥ (११३४-१६, भैरउ, मः ४)
जन नानक हरि जपि हाजरा हजूरि ॥४॥४॥ (११३४-१७, भैरउ, मः ४)
भैरउ महला ४ घरु २ (११३४-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११३४-१८)
हरि का संतु हरि की हरि मूरति जिसु हिरदै हरि नामु मुरारि ॥ (११३४-१९, भैरउ, मः ४)
मसतकि भागु होवै जिसु लिखिआ सो गुरमति हिरदै हरि नामु समारि ॥१॥ (११३४-१९, भैरउ, मः ४)

पन्ना ११३५

मधुसूदनु जपीऐ उर धारि ॥ (११३५-१, भैरउ, मः ४)
देही नगरि तस्कर पंच धातू गुर सबदी हरि काढे मारि ॥१॥ रहाउ ॥ (११३५-१, भैरउ, मः ४)
जिन का हरि सेती मनु मानिआ तिन कारज हरि आपि सवारि ॥ (११३५-२, भैरउ, मः ४)
तिन चूकी मुहताजी लोकन की हरि अंगीकारु कीआ करतारि ॥२॥ (११३५-३, भैरउ, मः ४)
मता मसूरति ताँ किछु कीजै जे किछु होवै हरि बाहरि ॥ (११३५-३, भैरउ, मः ४)
जो किछु करै सोई भल होसी हरि धिआवहु अनदिनु नामु मुरारि ॥३॥ (११३५-४, भैरउ, मः ४)
हरि जो किछु करे सु आपे आपे ओहु पूछि न किसै करे बीचारि ॥ (११३५-५, भैरउ, मः ४)
नानक सो प्रभु सदा धिआईऐ जिनि मेलिआ सतिगुरु किरपा धारि ॥४॥१॥५॥ (११३५-५, भैरउ, मः ४)
भैरउ महला ४ ॥ (११३५-६)
ते साधू हरि मेलहु सुआमी जिन जपिआ गति होइ हमारी ॥ (११३५-६, भैरउ, मः ४)
तिन का दरसु देखि मनु बिगसै खिनु खिनु तिन कउ हउ बलिहारी ॥१॥ (११३५-७, भैरउ, मः ४)
हरि हिरदै जपि नामु मुरारी ॥ (११३५-८, भैरउ, मः ४)
कृपा कृपा करि जगत पित सुआमी हम दासनि दास कीजै पनिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (११३५-८, भैरउ, मः ४)
तिन मति ऊतम तिन पति ऊतम जिन हिरदै वसिआ बनवारी ॥ (११३५-९, भैरउ, मः ४)
तिन की सेवा लाइ हरि सुआमी तिन सिमरत गति होइ हमारी ॥२॥ (११३५-९, भैरउ, मः ४)
जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते हरि दरगह काढे मारी ॥ (११३५-१०, भैरउ, मः ४)
ते नर निंदक सोभ न पावहि तिन नक काटे सिरजनहारी ॥३॥ (११३५-११, भैरउ, मः ४)
हरि आपि बुलावै आपे बोलै हरि आपि निरंजनु निरंकारु निराहारी ॥ (११३५-११, भैरउ, मः ४)
हरि जिसु तू मेलहि सो तुधु मिलसी जन नानक किआ एहि जंत विचारी ॥४॥२॥६॥ (११३५-१२, भैरउ, मः ४)
भैरउ महला ४ ॥ (११३५-१३)
सतसंगति साई हरि तेरी जितु हरि कीरति हरि सुनणे ॥ (११३५-१३, भैरउ, मः ४)
जिन हरि नामु सुणिआ मनु भीना तिन हम स्रेवह नित चरणे ॥१॥ (११३५-१४, भैरउ, मः ४)
जगजीवनु हरि धिआइ तरणे ॥ (११३५-१४, भैरउ, मः ४)
अनेक असंख नाम हरि तेरे न जाही जिहवा इतु गनणे ॥१॥ रहाउ ॥ (११३५-१५, भैरउ, मः ४)
गुरसिख हरि बोलहु हरि गावहु ले गुरमति हरि जपणे ॥ (११३५-१५, भैरउ, मः ४)

जो उपदेसु सुणे गुर केरा सो जनु पावै हरि सुख घणे ॥२॥ (११३५-१६, भैरउ, मः ४)
धन्नु सु वंसु धन्नु सु पिता धन्नु सु माता जिनि जन जणे ॥ (११३५-१७, भैरउ, मः ४)
जिन सासि गिरासि धिआइआ मेरा हरि हरि से साची दरगह हरि जन बणे ॥३॥ (११३५-१७, भैरउ, मः ४)
हरि हरि अगम नाम हरि तेरे विचि भगता हरि धरणे ॥ (११३५-१८, भैरउ, मः ४)
नानक जनि पाइआ मति गुरमति जपि हरि हरि पारि पवणे ॥४॥३॥७॥ (११३५-१९, भैरउ, मः ४)

पन्ना ११३६

भैरउ महला ५ घरु १ (११३६-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११३६-१)
सगली थीति पासि डारि राखी ॥ (११३६-२, भैरउ, मः ५)
असटम थीति गोविंद जनमा सी ॥१॥ (११३६-२, भैरउ, मः ५)
भरमि भूले नर करत कचराइण ॥ (११३६-२, भैरउ, मः ५)
जनम मरण ते रहत नाराइण ॥१॥ रहाउ ॥ (११३६-३, भैरउ, मः ५)
करि पंजीरु खवाइओ चोर ॥ (११३६-३, भैरउ, मः ५)
ओहु जनमि न मरै रे साकत ढोर ॥२॥ (११३६-३, भैरउ, मः ५)
सगल पराध देहि लोरोनी ॥ (११३६-४, भैरउ, मः ५)
सो मुखु जलउ जितु कहहि ठाकुरु जोनी ॥३॥ (११३६-४, भैरउ, मः ५)
जनमि न मरै न आवै न जाइ ॥ (११३६-५, भैरउ, मः ५)
नानक का प्रभु रहिओ समाइ ॥४॥१॥ (११३६-५, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३६-५)
ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥ (११३६-६, भैरउ, मः ५)
भउ नही लागै जाँ ऐसे बुझीआ ॥१॥ (११३६-६, भैरउ, मः ५)
राखा एकु हमारा सुआमी ॥ (११३६-६, भैरउ, मः ५)
सगल घटा का अंतरजामी ॥१॥ रहाउ ॥ (११३६-७, भैरउ, मः ५)
सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥ (११३६-७, भैरउ, मः ५)
जहा कहाँ प्रभु तूं वरतंता ॥२॥ (११३६-७, भैरउ, मः ५)
घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥ (११३६-८, भैरउ, मः ५)
कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥३॥२॥ (११३६-८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३६-९)
वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ (११३६-९, भैरउ, मः ५)
तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥१॥ (११३६-९, भैरउ, मः ५)
एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ (११३६-९, भैरउ, मः ५)
हिंदू तुरक दुहाँ नेबेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (११३६-१०, भैरउ, मः ५)
हज काबै जाउ न तीर्थ पूजा ॥ (११३६-१०, भैरउ, मः ५)
एको सेवी अवरु न दूजा ॥२॥ (११३६-१०, भैरउ, मः ५)

पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ (११३६-११, भैरउ, मः ५)
एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥३॥ (११३६-११, भैरउ, मः ५)
ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ (११३६-११, भैरउ, मः ५)
अलह राम के पिंडु परान ॥४॥ (११३६-१२, भैरउ, मः ५)
कहु कबीर इहु कीआ वखाना ॥ (११३६-१२, भैरउ, मः ५)
गुर पीर मिलि खुदि खसमु पछाना ॥५॥३॥ (११३६-१२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३६-१३)
दस मिरगी सहजे बंधि आनी ॥ (११३६-१३, भैरउ, मः ५)
पाँच मिरग बेधे सिव की बानी ॥१॥ (११३६-१३, भैरउ, मः ५)
संतसंगि ले चड़िओ सिकार ॥ (११३६-१४, भैरउ, मः ५)
मृग पकरे बिनु घोर हथीआर ॥१॥ रहाउ ॥ (११३६-१४, भैरउ, मः ५)
आखेर बिरति बाहरि आइओ धाइ ॥ (११३६-१४, भैरउ, मः ५)
अहेरा पाइओ घर कै गाँइ ॥२॥ (११३६-१५, भैरउ, मः ५)
मृग पकरे घरि आणे हाटि ॥ (११३६-१५, भैरउ, मः ५)
चुख चुख ले गए बाँढे बाटि ॥३॥ (११३६-१६, भैरउ, मः ५)
एहु अहेरा कीनो दानु ॥ (११३६-१६, भैरउ, मः ५)
नानक कै घरि केवल नामु ॥४॥४॥ (११३६-१६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३६-१७)
जे सउ लोचि लोचि खावाइआ ॥ (११३६-१७, भैरउ, मः ५)
साकत हरि हरि चीति न आइआ ॥१॥ (११३६-१७, भैरउ, मः ५)
संत जना की लेहु मते ॥ (११३६-१७, भैरउ, मः ५)
साधसंगि पावहु पर्म गते ॥१॥ रहाउ ॥ (११३६-१८, भैरउ, मः ५)
पाथर कउ बहु नीरु पवाइआ ॥ (११३६-१८, भैरउ, मः ५)
नह भीगै अधिक सूकाइआ ॥२॥ (११३६-१८, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११३७

खटु सासत्र मूरखै सुनाइआ ॥ (११३७-१, भैरउ, मः ५)
जैसे दह दिस पवनु झुलाइआ ॥३॥ (११३७-१, भैरउ, मः ५)
बिनु कण खलहानु जैसे गाहन पाइआ ॥ (११३७-२, भैरउ, मः ५)
तिउ साकत ते को न बरासाइआ ॥४॥ (११३७-२, भैरउ, मः ५)
तित ही लागा जितु को लाइआ ॥ (११३७-२, भैरउ, मः ५)
कहु नानक प्रभि बणत बणाइआ ॥५॥५॥ (११३७-३, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३७-३)
जीउ प्राण जिनि रचिओ सरीर ॥ (११३७-३, भैरउ, मः ५)
जिनहि उपाए तिस कउ पीर ॥१॥ (११३७-४, भैरउ, मः ५)

गुरु गोबिंदु जीअ कै काम ॥ (११३७-४, भैरउ, मः ५)
हलति पलति जा की सद छाम ॥१॥ रहाउ ॥ (११३७-४, भैरउ, मः ५)
प्रभु आराधन निर्मल रीति ॥ (११३७-५, भैरउ, मः ५)
साधसंगि बिनसी बिपरीति ॥२॥ (११३७-५, भैरउ, मः ५)
मीत हीत धनु नह पारणा ॥ (११३७-५, भैरउ, मः ५)
धंनि धंनि मेरे नाराइणा ॥३॥ (११३७-६, भैरउ, मः ५)
नानकु बोलै अमृत बाणी ॥ (११३७-६, भैरउ, मः ५)
एक बिना दूजा नही जाणी ॥४॥६॥ (११३७-६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३७-७)
आगै दयु पाछै नाराइण ॥ (११३७-७, भैरउ, मः ५)
मधि भागि हरि प्रेम रसाइण ॥१॥ (११३७-७, भैरउ, मः ५)
प्रभू हमारै सासत्र सउण ॥ (११३७-८, भैरउ, मः ५)
सूख सहज आनंद गृह भउण ॥१॥ रहाउ ॥ (११३७-८, भैरउ, मः ५)
रसना नामु करन सुणि जीवे ॥ (११३७-८, भैरउ, मः ५)
प्रभु सिमरि सिमरि अमर थिरु थीवे ॥२॥ (११३७-९, भैरउ, मः ५)
जनम जनम के दूख निवारे ॥ (११३७-९, भैरउ, मः ५)
अनहद सबद वजे दरबारे ॥३॥ (११३७-९, भैरउ, मः ५)
करि किरपा प्रभि लीए मिलाए ॥ (११३७-१०, भैरउ, मः ५)
नानक प्रभ सरणागति आए ॥४॥७॥ (११३७-१०, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३७-१०)
कोटि मनोरथ आवहि हाथ ॥ (११३७-१०, भैरउ, मः ५)
जम मारग कै संगी पाँथ ॥१॥ (११३७-११, भैरउ, मः ५)
गंगा जलु गुर गोबिंद नाम ॥ (११३७-११, भैरउ, मः ५)
जो सिमरै तिस की गति होवै पीवत बहुड़ि न जोनि भ्रमाम ॥१॥ रहाउ ॥ (११३७-११, भैरउ, मः ५)
पूजा जाप ताप इसनान ॥ (११३७-१२, भैरउ, मः ५)
सिमरत नाम भए निहकाम ॥२॥ (११३७-१२, भैरउ, मः ५)
राज माल सादन दरबार ॥ (११३७-१३, भैरउ, मः ५)
सिमरत नाम पूरन आचार ॥३॥ (११३७-१३, भैरउ, मः ५)
नानक दास इहु कीआ बीचारु ॥ (११३७-१३, भैरउ, मः ५)
बिनु हरि नाम मिथिआ सभ छारु ॥४॥८॥ (११३७-१४, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३७-१४)
लेपु न लागो तिल का मूलि ॥ (११३७-१४, भैरउ, मः ५)
दुसटु ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल ॥१॥ (११३७-१५, भैरउ, मः ५)
हरि जन राखे पारब्रहमि आपि ॥ (११३७-१५, भैरउ, मः ५)
पापी मूआ गुर परतापि ॥१॥ रहाउ ॥ (११३७-१५, भैरउ, मः ५)

अपणा खसमु जनि आपि धिआइआ ॥ (११३७-१६, भैरउ, मः ५)
इआणा पापी ओहु आपि पचाइआ ॥२॥ (११३७-१६, भैरउ, मः ५)
प्रभ मात पिता अपणे दास का रखवाला ॥ (११३७-१७, भैरउ, मः ५)
निंदक का माथा ईहाँ ऊहा काला ॥३॥ (११३७-१७, भैरउ, मः ५)
जन नानक की परमेसरि सुणी अरदासि ॥ (११३७-१८, भैरउ, मः ५)
मलेछु पापी पचिआ भइआ निरासु ॥४॥६॥ (११३७-१८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३७-१९)
खूबु खूबु खूबु खूबु खूबु तेरो नामु ॥ (११३७-१९, भैरउ, मः ५)
झूठु झूठु झूठु झूठु दुनी गुमानु ॥१॥ रहाउ ॥ (११३७-१९, भैरउ, मः ५)
नगज तेरे बंदे दीदारु अपारु ॥ (११३७-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११३८

नाम बिना सभ दुनीआ छारु ॥१॥ (११३८-१, भैरउ, मः ५)
अचरजु तेरी कुदरति तेरे कदम सलाह ॥ (११३८-१, भैरउ, मः ५)
गनीव तेरी सिफति सचे पातिसाह ॥२॥ (११३८-२, भैरउ, मः ५)
नीधरिआ धर पनह खुदाइ ॥ (११३८-२, भैरउ, मः ५)
गरीब निवाजु दिनु रैणि धिआइ ॥३॥ (११३८-२, भैरउ, मः ५)
नानक कउ खुदि खसम मिहरवान ॥ (११३८-३, भैरउ, मः ५)
अलहु न विसरै दिल जीअ परान ॥४॥१०॥ (११३८-३, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३८-४)
साच पदारथु गुरमुखि लहहु ॥ (११३८-४, भैरउ, मः ५)
प्रभ का भाणा सति करि सहहु ॥१॥ (११३८-४, भैरउ, मः ५)
जीवत जीवत जीवत रहहु ॥ (११३८-४, भैरउ, मः ५)
राम रसाइणु नित उठि पीवहु ॥ (११३८-५, भैरउ, मः ५)
हरि हरि हरि हरि रसना कहहु ॥१॥ रहाउ ॥ (११३८-५, भैरउ, मः ५)
कलिजुग महि इक नामि उधारु ॥ (११३८-६, भैरउ, मः ५)
नानकु बोलै ब्रहम बीचारु ॥२॥११॥ (११३८-६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३८-६)
सतिगुरु सेवि सरब फल पाए ॥ (११३८-६, भैरउ, मः ५)
जनम जनम की मैलु मिटाए ॥१॥ (११३८-७, भैरउ, मः ५)
पतित पावन प्रभ तेरो नाउ ॥ (११३८-७, भैरउ, मः ५)
पूरबि करम लिखे गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११३८-७, भैरउ, मः ५)
साधू संगि होवै उधारु ॥ (११३८-८, भैरउ, मः ५)
सोभा पावै प्रभ कै दुआर ॥२॥ (११३८-८, भैरउ, मः ५)
सरब कलिआण चरण प्रभ सेवा ॥ (११३८-८, भैरउ, मः ५)

धूरि बाछहि सभि सुरि नर देवा ॥३॥ (११३८-९, भैरउ, मः ५)
नानक पाइआ नाम निधानु ॥ (११३८-९, भैरउ, मः ५)
हरि जपि जपि उधरिआ सगल जहानु ॥४॥१२॥ (११३८-१०, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३८-१०)
अपणे दास कउ कंठि लगावै ॥ (११३८-१०, भैरउ, मः ५)
निंदक कउ अगनि महि पावै ॥१॥ (११३८-११, भैरउ, मः ५)
पापी ते राखे नाराइण ॥ (११३८-११, भैरउ, मः ५)
पापी की गति कतहू नाही पापी पचिआ आप कमाइण ॥१॥ रहाउ ॥ (११३८-११, भैरउ, मः ५)
दास राम जीउ लागी प्रीति ॥ (११३८-१२, भैरउ, मः ५)
निंदक की होई बिपरीति ॥२॥ (११३८-१२, भैरउ, मः ५)
पारब्रहमि अपणा बिरदु प्रगटाइआ ॥ (११३८-१३, भैरउ, मः ५)
दोखी अपणा कीता पाइआ ॥३॥ (११३८-१३, भैरउ, मः ५)
आइ न जाई रहिआ समाई ॥ (११३८-१३, भैरउ, मः ५)
नानक दास हरि की सरणाई ॥४॥१३॥ (११३८-१४, भैरउ, मः ५)
रागु भैरउ महला ५ चउपदे घरु २ (११३८-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११३८-१५)
स्रीधर मोहन सगल उपावन निरंकार सुखदाता ॥ (११३८-१६, भैरउ, मः ५)
ऐसा प्रभु छोडि करहि अन सेवा कवन बिखिआ रस माता ॥१॥ (११३८-१६, भैरउ, मः ५)
रे मन मेरे तू गोविद भाजु ॥ (११३८-१७, भैरउ, मः ५)
अवर उपाव सगल मै देखे जो चितवीऐ तितु बिगरसि काजु ॥१॥ रहाउ ॥ (११३८-१७, भैरउ, मः ५)
ठाकुरु छोडि दासी कउ सिमरहि मनमुख अंध अगिआना ॥ (११३८-१८, भैरउ, मः ५)
हरि की भगति करहि तिन निंदहि निगुरे पसू समाना ॥२॥ (११३८-१८, भैरउ, मः ५)
जीउ पिंडु तनु धनु सभु प्रभ का साकत कहते मेरा ॥ (११३८-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११३९

अहम्बुधि दुरमति है मैली बिनु गुर भवजलि फेरा ॥३॥ (११३९-१, भैरउ, मः ५)
होम जग जप तप सभि संजम तटि तीरथि नही पाइआ ॥ (११३९-१, भैरउ, मः ५)
मिटिआ आपु पए सरणाई गुरमुखि नानक जगतु तराइआ ॥४॥१॥१४॥ (११३९-२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३९-२)
बन महि पेखिओ तृण महि पेखिओ गृहि पेखिओ उदासाए ॥ (११३९-३, भैरउ, मः ५)
दंडधार जटधारै पेखिओ वरत नेम तीरथाए ॥१॥ (११३९-३, भैरउ, मः ५)
संतसंगि पेखिओ मन माएं ॥ (११३९-४, भैरउ, मः ५)
ऊभ पइआल सर्ब महि पूरन रसि मंगल गुण गाए ॥१॥ रहाउ ॥ (११३९-४, भैरउ, मः ५)
जोग भेख संनिआसै पेखिओ जति जंगम कापड़ाए ॥ (११३९-५, भैरउ, मः ५)
तपी तपीसुर मुनि महि पेखिओ नट नाटिक निरताए ॥२॥ (११३९-५, भैरउ, मः ५)

चहु महि पेखिओ खट महि पेखिओ दस असटी सिम्रिताए ॥ (११३६-६, भैरउ, मः ५)
सभ मिलि एको एकु वखानहि तउ किस ते कहउ दुराए ॥३॥ (११३६-६, भैरउ, मः ५)
अगह अगह बेअंत सुआमी नह कीम कीम कीमाए ॥ (११३६-७, भैरउ, मः ५)
जन नानक तिन कै बलि बलि जाईऐ जिह घटि परगटीआए ॥४॥२॥१५॥ (११३६-८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३६-८)
निकटि बुझै सो बुरा किउ करै ॥ (११३६-९, भैरउ, मः ५)
बिखु संचै नित डरता फिरै ॥ (११३६-९, भैरउ, मः ५)
है निकटे अरु भेदु न पाइआ ॥ (११३६-९, भैरउ, मः ५)
बिनु सतिगुर सभ मोही माइआ ॥१॥ (११३६-१०, भैरउ, मः ५)
नेड़ै नेड़ै सभु को कहै ॥ (११३६-१०, भैरउ, मः ५)
गुरमुखि भेदु विरला को लहै ॥१॥ रहाउ ॥ (११३६-१०, भैरउ, मः ५)
निकटि न देखै पर गृहि जाइ ॥ (११३६-११, भैरउ, मः ५)
दरबु हिरै मिथिआ करि खाइ ॥ (११३६-११, भैरउ, मः ५)
पई ठगउरी हरि संगि न जानिआ ॥ (११३६-११, भैरउ, मः ५)
बाझु गुरू है भरमि भुलानिआ ॥२॥ (११३६-१२, भैरउ, मः ५)
निकटि न जानै बोलै कूड़ु ॥ (११३६-१२, भैरउ, मः ५)
माइआ मोहि मूठा है मूड़ु ॥ (११३६-१२, भैरउ, मः ५)
अंतरि वसतु दिसंतरि जाइ ॥ (११३६-१३, भैरउ, मः ५)
बाझु गुरू है भरमि भुलाइ ॥३॥ (११३६-१३, भैरउ, मः ५)
जिसु मसतकि करमु लिखिआ लिलाट ॥ (११३६-१३, भैरउ, मः ५)
सतिगुरु सेवे खुल्हे कपाट ॥ (११३६-१४, भैरउ, मः ५)
अंतरि बाहरि निकटे सोइ ॥ (११३६-१४, भैरउ, मः ५)
जन नानक आवै न जावै कोइ ॥४॥३॥१६॥ (११३६-१४, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११३६-१५)
जिसु तू राखहि तिसु कउनु मारै ॥ (११३६-१५, भैरउ, मः ५)
सभ तुझ ही अंतरि सगल संसारै ॥ (११३६-१५, भैरउ, मः ५)
कोटि उपाव चितवत है प्राणी ॥ (११३६-१६, भैरउ, मः ५)
सो होवै जि करै चोज विडाणी ॥१॥ (११३६-१६, भैरउ, मः ५)
राखहु राखहु किरपा धारि ॥ (११३६-१६, भैरउ, मः ५)
तेरी सरणि तेरै दरवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (११३६-१६, भैरउ, मः ५)
जिनि सेविआ निरभउ सुखदाता ॥ (११३६-१७, भैरउ, मः ५)
तिनि भउ दूरि कीआ एकु पराता ॥ (११३६-१७, भैरउ, मः ५)
जो तू करहि सोई फुनि होइ ॥ (११३६-१८, भैरउ, मः ५)
मारै न राखै दूजा कोइ ॥२॥ (११३६-१८, भैरउ, मः ५)
किआ तू सोचहि माणस बाणि ॥ (११३६-१८, भैरउ, मः ५)

अंतरजामी पुरखु सुजाणु ॥ (११३९-१९, भैरउ, मः ५)
एक टेक एको आधारु ॥ (११३९-१९, भैरउ, मः ५)
सभ किछु जाणै सिरजणहारु ॥३॥ (११३९-१९, भैरउ, मः ५)
जिसु ऊपरि नदरि करे करतारु ॥ (११३९-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४०

तिसु जन के सभि काज सवारि ॥ (११४०-१, भैरउ, मः ५)
तिस का राखा एको सोइ ॥ (११४०-१, भैरउ, मः ५)
जन नानक अपड़ि न साकै कोइ ॥४॥४॥१७॥ (११४०-१, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४०-२)
तउ कड़ीऐ जे होवै बाहरि ॥ (११४०-२, भैरउ, मः ५)
तउ कड़ीऐ जे विसरै नरहरि ॥ (११४०-२, भैरउ, मः ५)
तउ कड़ीऐ जे दूजा भाए ॥ (११४०-३, भैरउ, मः ५)
किआ कड़ीऐ जाँ रहिआ समाए ॥१॥ (११४०-३, भैरउ, मः ५)
माइआ मोहि कड़े कड़ि पचिआ ॥ (११४०-३, भैरउ, मः ५)
बिनु नावै भ्रमि भ्रमि भ्रमि खपिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४०-४, भैरउ, मः ५)
तउ कड़ीऐ जे दूजा करता ॥ (११४०-४, भैरउ, मः ५)
तउ कड़ीऐ जे अनिआइ को मरता ॥ (११४०-४, भैरउ, मः ५)
तउ कड़ीऐ जे किछु जाणै नाही ॥ (११४०-५, भैरउ, मः ५)
किआ कड़ीऐ जाँ भरपूरि समाही ॥२॥ (११४०-५, भैरउ, मः ५)
तउ कड़ीऐ जे किछु होइ धिङाणै ॥ (११४०-५, भैरउ, मः ५)
तउ कड़ीऐ जे भूलि रंञाणै ॥ (११४०-६, भैरउ, मः ५)
गुरि कहिआ जो होइ सभु प्रभ ते ॥ (११४०-६, भैरउ, मः ५)
तब काड़ा छोडि अचिंत हम सोते ॥३॥ (११४०-६, भैरउ, मः ५)
प्रभ तूहै ठाकुरु सभु को तेरा ॥ (११४०-७, भैरउ, मः ५)
जिउ भावै तिउ करहि निबेरा ॥ (११४०-७, भैरउ, मः ५)
दुतीआ नासति इकु रहिआ समाइ ॥ (११४०-८, भैरउ, मः ५)
राखहु पैज नानक सरणाइ ॥४॥५॥१८॥ (११४०-८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४०-८)
बिनु बाजे कैसो निरतिकारी ॥ (११४०-९, भैरउ, मः ५)
बिनु कंठै कैसे गावनहारी ॥ (११४०-९, भैरउ, मः ५)
जील बिना कैसे बजै रबाब ॥ (११४०-९, भैरउ, मः ५)
नाम बिना बिरथे सभि काज ॥१॥ (११४०-९, भैरउ, मः ५)
नाम बिना कहहु को तरिआ ॥ (११४०-१०, भैरउ, मः ५)
बिनु सतिगुर कैसे पारि परिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४०-१०, भैरउ, मः ५)

बिनु जिहवा कहा को बकता ॥ (११४०-११, भैरउ, मः ५)
बिनु स्रवना कहा को सुनता ॥ (११४०-११, भैरउ, मः ५)
बिनु नेत्रा कहा को पेखै ॥ (११४०-११, भैरउ, मः ५)
नाम बिना नरु कही न लेखै ॥२॥ (११४०-११, भैरउ, मः ५)
बिनु बिदिआ कहा कोई पंडित ॥ (११४०-१२, भैरउ, मः ५)
बिनु अमरै कैसे राज मंडित ॥ (११४०-१२, भैरउ, मः ५)
बिनु बूझे कहा मनु ठहराना ॥ (११४०-१२, भैरउ, मः ५)
नाम बिना सभु जगु बउराना ॥३॥ (११४०-१३, भैरउ, मः ५)
बिनु बैराग कहा बैरागी ॥ (११४०-१३, भैरउ, मः ५)
बिनु हउ तिआगि कहा कोऊ तिआगी ॥ (११४०-१३, भैरउ, मः ५)
बिनु बसि पंच कहा मन चूरे ॥ (११४०-१४, भैरउ, मः ५)
नाम बिना सद सद ही झूरे ॥४॥ (११४०-१४, भैरउ, मः ५)
बिनु गुर दीखिआ कैसे गिआनु ॥ (११४०-१४, भैरउ, मः ५)
बिनु पेखे कहु कैसो धिआनु ॥ (११४०-१५, भैरउ, मः ५)
बिनु भै कथनी सर्ब बिकार ॥ (११४०-१५, भैरउ, मः ५)
कहु नानक दर का बीचार ॥५॥६॥१९॥ (११४०-१५, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४०-१६)
हउमै रोगु मानुख कउ दीना ॥ (११४०-१६, भैरउ, मः ५)
काम रोगि मैगलु बसि लीना ॥ (११४०-१६, भैरउ, मः ५)
दृसटि रोगि पचि मुए पतंगा ॥ (११४०-१७, भैरउ, मः ५)
नाद रोगि खपि गए कुरंगा ॥१॥ (११४०-१७, भैरउ, मः ५)
जो जो दीसै सो सो रोगी ॥ (११४०-१७, भैरउ, मः ५)
रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी ॥१॥ रहाउ ॥ (११४०-१७, भैरउ, मः ५)
जिहवा रोगि मीनु ग्रसिआनो ॥ (११४०-१८, भैरउ, मः ५)
बासन रोगि भवरु बिनसानो ॥ (११४०-१८, भैरउ, मः ५)
हेत रोग का सगल संसारा ॥ (११४०-१९, भैरउ, मः ५)
तृबिधि रोग महि बधे बिकारा ॥२॥ (११४०-१९, भैरउ, मः ५)
रोगे मरता रोगे जनमै ॥ (११४०-१९, भैरउ, मः ५)
रोगे फिरि फिरि जोनी भरमै ॥ (११४०-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४१

रोग बंध रहनु रती न पावै ॥ (११४१-१, भैरउ, मः ५)
बिनु सतिगुर रोगु कतहि न जावै ॥३॥ (११४१-१, भैरउ, मः ५)
पारब्रहमि जिसु कीनी दइआ ॥ (११४१-२, भैरउ, मः ५)
बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ ॥ (११४१-२, भैरउ, मः ५)

तूटे बंधन साधसंगु पाइआ ॥ (११४१-२, भैरउ, मः ५)
कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ ॥४॥७॥२०॥ (११४१-२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४१-३)
चीति आवै ताँ महा अनंद ॥ (११४१-३, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सभि दुख भंज ॥ (११४१-३, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सरधा पूरी ॥ (११४१-४, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ कबहि न झूरी ॥१॥ (११४१-४, भैरउ, मः ५)
अंतरि राम राइ प्रगटे आइ ॥ (११४१-४, भैरउ, मः ५)
गुरि पूरै दीओ रंगु लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४१-५, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सर्ब को राजा ॥ (११४१-५, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ पूरे काजा ॥ (११४१-५, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ रंगि गुलाल ॥ (११४१-६, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सदा निहाल ॥२॥ (११४१-६, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सद धनवंता ॥ (११४१-६, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सद निभरंता ॥ (११४१-७, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सभि रंग माणे ॥ (११४१-७, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ चूकी काणे ॥३॥ (११४१-७, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सहज घरु पाइआ ॥ (११४१-८, भैरउ, मः ५)
चीति आवै ताँ सुंनि समाइआ ॥ (११४१-८, भैरउ, मः ५)
चीति आवै सद कीरतनु करता ॥ (११४१-८, भैरउ, मः ५)
मनु मानिआ नानक भगवंता ॥४॥८॥२१॥ (११४१-९, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४१-९)
बापु हमारा सद चरंजीवी ॥ (११४१-९, भैरउ, मः ५)
भाई हमारे सद ही जीवी ॥ (११४१-१०, भैरउ, मः ५)
मीत हमारे सदा अबिनासी ॥ (११४१-१०, भैरउ, मः ५)
कुटम्बु हमारा निज घरि वासी ॥१॥ (११४१-१०, भैरउ, मः ५)
हम सुखु पाइआ ताँ सभहि सुहेले ॥ (११४१-१०, भैरउ, मः ५)
गुरि पूरै पिता संगि मेले ॥१॥ रहाउ ॥ (११४१-११, भैरउ, मः ५)
मंदर मेरे सभ ते ऊचे ॥ (११४१-११, भैरउ, मः ५)
देस मेरे बेअंत अपूछे ॥ (११४१-११, भैरउ, मः ५)
राजु हमारा सद ही निहचलु ॥ (११४१-१२, भैरउ, मः ५)
मालु हमारा अखूटु अबेचलु ॥२॥ (११४१-१२, भैरउ, मः ५)
सोभा मेरी सभ जुग अंतरि ॥ (११४१-१२, भैरउ, मः ५)
बाज हमारी थान थनंतरि ॥ (११४१-१३, भैरउ, मः ५)
कीरति हमरी घरि घरि होई ॥ (११४१-१३, भैरउ, मः ५)

भगति हमारी सभनी लोई ॥३॥ (११४१-१३, भैरउ, मः ५)
पिता हमारे प्रगटे माझ ॥ (११४१-१४, भैरउ, मः ५)
पिता पूत रलि कीनी साँझ ॥ (११४१-१४, भैरउ, मः ५)
कहु नानक जउ पिता पतीने ॥ (११४१-१४, भैरउ, मः ५)
पिता पूत एकै रंगि लीने ॥४॥६॥२२॥ (११४१-१४, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४१-१५)
निरवैर पुरख सतिगुर प्रभ दाते ॥ (११४१-१५, भैरउ, मः ५)
हम अपराधी तुम्ह बखसाते ॥ (११४१-१५, भैरउ, मः ५)
जिसु पापी कउ मिलै न ढोई ॥ (११४१-१६, भैरउ, मः ५)
सरणि आवै ताँ निरमलु होई ॥१॥ (११४१-१६, भैरउ, मः ५)
सुखु पाइआ सतिगुरू मनाइ ॥ (११४१-१६, भैरउ, मः ५)
सभ फल पाए गुरू धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४१-१७, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म सतिगुर आदेसु ॥ (११४१-१७, भैरउ, मः ५)
मनु तनु तेरा सभु तेरा देसु ॥ (११४१-१७, भैरउ, मः ५)
चूका पड़दा ताँ नदरी आइआ ॥ (११४१-१८, भैरउ, मः ५)
खसमु तूहै सभना के राइआ ॥२॥ (११४१-१८, भैरउ, मः ५)
तिसु भाणा सूके कासट हरिआ ॥ (११४१-१८, भैरउ, मः ५)
तिसु भाणा ताँ थल सिरि सरिआ ॥ (११४१-१९, भैरउ, मः ५)
तिसु भाणा ताँ सभि फल पाए ॥ (११४१-१९, भैरउ, मः ५)
चिंत गई लगि सतिगुर पाए ॥३॥ (११४१-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४२

हरामखोर निरगुण कउ तूठा ॥ (११४२-१, भैरउ, मः ५)
मनु तनु सीतलु मनि अमृतु वूठा ॥ (११४२-१, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म गुर भए दइआला ॥ (११४२-२, भैरउ, मः ५)
नानक दास देखि भए निहाला ॥४॥१०॥२३॥ (११४२-२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४२-२)
सतिगुरु मेरा बेमुहताजु ॥ (११४२-३, भैरउ, मः ५)
सतिगुर मेरे सचा साजु ॥ (११४२-३, भैरउ, मः ५)
सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥ (११४२-३, भैरउ, मः ५)
सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता ॥१॥ (११४२-३, भैरउ, मः ५)
गुर जैसा नाही को देव ॥ (११४२-४, भैरउ, मः ५)
जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (११४२-४, भैरउ, मः ५)
सतिगुरु मेरा सर्ब प्रतिपालै ॥ (११४२-४, भैरउ, मः ५)
सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥ (११४२-५, भैरउ, मः ५)

सतिगुर मेरे की वडिआई ॥ (११४२-५, भैरउ, मः ५)
प्रगटु भई है सभनी थाई ॥२॥ (११४२-५, भैरउ, मः ५)
सतिगुरु मेरा ताणु निताणु ॥ (११४२-६, भैरउ, मः ५)
सतिगुरु मेरा घरि दीबाणु ॥ (११४२-६, भैरउ, मः ५)
सतिगुर कै हउ सद बलि जाइआ ॥ (११४२-६, भैरउ, मः ५)
प्रगटु मारगु जिनि करि दिखलाइआ ॥३॥ (११४२-७, भैरउ, मः ५)
जिनि गुरु सेविआ तिसु भउ न बिआपै ॥ (११४२-७, भैरउ, मः ५)
जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ (११४२-८, भैरउ, मः ५)
नानक सोधे सिम्मृति बेद ॥ (११४२-८, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म गुर नाही भेद ॥४॥११॥२४॥ (११४२-८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४२-९)
नामु लैत मनु परगटु भइआ ॥ (११४२-९, भैरउ, मः ५)
नामु लैत पापु तन ते गइआ ॥ (११४२-९, भैरउ, मः ५)
नामु लैत सगल पुरबाइआ ॥ (११४२-१०, भैरउ, मः ५)
नामु लैत अठसठि मजनाइआ ॥१॥ (११४२-१०, भैरउ, मः ५)
तीरथु हमरा हरि को नामु ॥ (११४२-१०, भैरउ, मः ५)
गुरि उपदेसिआ ततु गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४२-११, भैरउ, मः ५)
नामु लैत दुखु दूरि पराना ॥ (११४२-११, भैरउ, मः ५)
नामु लैत अति मूड़ सुगिआना ॥ (११४२-११, भैरउ, मः ५)
नामु लैत परगटि उजीआरा ॥ (११४२-१२, भैरउ, मः ५)
नामु लैत छुटे जंजारा ॥२॥ (११४२-१२, भैरउ, मः ५)
नामु लैत जमु नेड़ि न आवै ॥ (११४२-१२, भैरउ, मः ५)
नामु लैत दरगह सुखु पावै ॥ (११४२-१३, भैरउ, मः ५)
नामु लैत प्रभु कहै साबासि ॥ (११४२-१३, भैरउ, मः ५)
नामु हमारी साची रासि ॥३॥ (११४२-१३, भैरउ, मः ५)
गुरि उपदेसु कहिओ इहु सारु ॥ (११४२-१३, भैरउ, मः ५)
हरि कीरति मन नामु अधारु ॥ (११४२-१४, भैरउ, मः ५)
नानक उधरे नाम पुनहचार ॥ (११४२-१४, भैरउ, मः ५)
अवरि कर्म लोकह पतीआर ॥४॥१२॥२५॥ (११४२-१४, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४२-१५)
नमस्कार ता कउ लख बार ॥ (११४२-१५, भैरउ, मः ५)
इहु मनु दीजै ता कउ वारि ॥ (११४२-१५, भैरउ, मः ५)
सिमरनि ता कै मिटहि संताप ॥ (११४२-१६, भैरउ, मः ५)
होइ अनंदु न विआपहि ताप ॥१॥ (११४२-१६, भैरउ, मः ५)
ऐसो हीरा निर्मल नाम ॥ (११४२-१६, भैरउ, मः ५)

जासु जपत पूरन सभि काम ॥१॥ रहाउ ॥ (११४२-१७, भैरउ, मः ५)
जा की द्रिसटि दुख डेरा ढहै ॥ (११४२-१७, भैरउ, मः ५)
अमृत नामु सीतलु मनि गहै ॥ (११४२-१७, भैरउ, मः ५)
अनिक भगत जा के चरन पूजारी ॥ (११४२-१८, भैरउ, मः ५)
सगल मनोरथ पूरनहारी ॥२॥ (११४२-१८, भैरउ, मः ५)
खिन महि ऊणे सुभर भरिआ ॥ (११४२-१८, भैरउ, मः ५)
खिन महि सूके कीने हरिआ ॥ (११४२-१९, भैरउ, मः ५)
खिन महि निथावे कउ दीनो थानु ॥ (११४२-१९, भैरउ, मः ५)
खिन महि निमाणे कउ दीनो मानु ॥३॥ (११४२-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४३

सभ महि एकु रहिआ भरपूरा ॥ (११४३-१, भैरउ, मः ५)
सो जापै जिसु सतिगुरु पूरा ॥ (११४३-१, भैरउ, मः ५)
हरि कीरतनु ता को आधारु ॥ (११४३-२, भैरउ, मः ५)
कहु नानक जिसु आपि दइआरु ॥४॥१३॥२६॥ (११४३-२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४३-२)
मोहि दुहागनि आपि सीगारी ॥ (११४३-३, भैरउ, मः ५)
रूप रंग दे नामि सवारी ॥ (११४३-३, भैरउ, मः ५)
मिटिओ दुखु अरु सगल संताप ॥ (११४३-३, भैरउ, मः ५)
गुर होए मेरे माई बाप ॥१॥ (११४३-३, भैरउ, मः ५)
सखी सहेरी मेरै ग्रसति अनंद ॥ (११४३-४, भैरउ, मः ५)
करि किरपा भेटे मोहि कंत ॥१॥ रहाउ ॥ (११४३-४, भैरउ, मः ५)
तपति बुझी पूरन सभ आसा ॥ (११४३-५, भैरउ, मः ५)
मिटे अंधेर भए परगासा ॥ (११४३-५, भैरउ, मः ५)
अनहद सबद अचरज बिसमाद ॥ (११४३-५, भैरउ, मः ५)
गुरु पूरा पूरा परसाद ॥२॥ (११४३-५, भैरउ, मः ५)
जा कउ प्रगट भए गोपाल ॥ (११४३-६, भैरउ, मः ५)
ता कै दरसनि सदा निहाल ॥ (११४३-६, भैरउ, मः ५)
सर्ब गुणा ता कै बहुतु निधान ॥ (११४३-६, भैरउ, मः ५)
जा कउ सतिगुरि दीओ नामु ॥३॥ (११४३-७, भैरउ, मः ५)
जा कउ भेटिओ ठाकुरु अपना ॥ (११४३-७, भैरउ, मः ५)
मनु तनु सीतलु हरि हरि जपना ॥ (११४३-७, भैरउ, मः ५)
कहु नानक जो जन प्रभ भाए ॥ (११४३-८, भैरउ, मः ५)
ता की रेनु बिरला को पाए ॥४॥१४॥२७॥ (११४३-८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४३-८)

चितवत पाप न आलकु आवै ॥ (११४३-९, भैरउ, मः ५)
बेसुआ भजत किछु नह सरमावै ॥ (११४३-९, भैरउ, मः ५)
सारो दिनसु मजूरी करै ॥ (११४३-९, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरन की वेला बजर सिरि परै ॥१॥ (११४३-१०, भैरउ, मः ५)
माइआ लगि भूलो संसारु ॥ (११४३-१०, भैरउ, मः ५)
आपि भुलाइआ भुलावणहारै राचि रहिआ बिरथा बिउहार ॥१॥ रहाउ ॥ (११४३-१०, भैरउ, मः ५)
पेखत माइआ रंग बिहाइ ॥ (११४३-११, भैरउ, मः ५)
गड़बड़ करै कउडी रंगु लाइ ॥ (११४३-११, भैरउ, मः ५)
अंध बिउहार बंध मनु धावै ॥ (११४३-१२, भैरउ, मः ५)
करणैहारु न जीअ महि आवै ॥२॥ (११४३-१२, भैरउ, मः ५)
करत करत इव ही दुखु पाइआ ॥ (११४३-१२, भैरउ, मः ५)
पूरन होत न कारज माइआ ॥ (११४३-१३, भैरउ, मः ५)
कामि क्रोधि लोभि मनु लीना ॥ (११४३-१३, भैरउ, मः ५)
तड़फि मूआ जिउ जल बिनु मीना ॥३॥ (११४३-१३, भैरउ, मः ५)
जिस के राखे होइ हरि आपि ॥ (११४३-१४, भैरउ, मः ५)
हरि हरि नामु सदा जपु जापि ॥ (११४३-१४, भैरउ, मः ५)
साधसंगि हरि के गुण गाइआ ॥ (११४३-१४, भैरउ, मः ५)
नानक सतिगुरु पूरा पाइआ ॥४॥१५॥२८॥ (११४३-१५, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४३-१५)
अपणी दइआ करे सो पाए ॥ (११४३-१५, भैरउ, मः ५)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (११४३-१६, भैरउ, मः ५)
साच सबदु हिरदे मन माहि ॥ (११४३-१६, भैरउ, मः ५)
जनम जनम के किलविख जाहि ॥१॥ (११४३-१६, भैरउ, मः ५)
राम नामु जीअ को आधारु ॥ (११४३-१७, भैरउ, मः ५)
गुर परसादि जपहु नित भाई तारि लए सागर संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४३-१७, भैरउ, मः ५)
जिन कउ लिखिआ हरि एहु निधानु ॥ (११४३-१८, भैरउ, मः ५)
से जन दरगह पावहि मानु ॥ (११४३-१८, भैरउ, मः ५)
सूख सहज आनंद गुण गाउ ॥ (११४३-१८, भैरउ, मः ५)
आगै मिलै निथावे थाउ ॥२॥ (११४३-१९, भैरउ, मः ५)
जुगह जुगंतरि इहु ततु सारु ॥ (११४३-१९, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरणु साचा बीचारु ॥ (११४३-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४४

जिसु लड़ि लाइ लए सो लागै ॥ (११४४-१, भैरउ, मः ५)
जनम जनम का सोइआ जागै ॥३॥ (११४४-१, भैरउ, मः ५)

तेरे भगत भगतन का आपि ॥ (११४४-१, भैरउ, मः ५)
अपणी महिमा आपे जापि ॥ (११४४-२, भैरउ, मः ५)
जीअ जंत सभि तेरै हाथि ॥ (११४४-२, भैरउ, मः ५)
नानक के प्रभ सद ही साथि ॥४॥१६॥२६॥ (११४४-२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४४-३)
नामु हमारै अंतरजामी ॥ (११४४-३, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै आवै कामी ॥ (११४४-३, भैरउ, मः ५)
रोमि रोमि रविआ हरि नामु ॥ (११४४-३, भैरउ, मः ५)
सतिगुर पूरै कीनो दानु ॥१॥ (११४४-४, भैरउ, मः ५)
नामु रतनु मेरै भंडार ॥ (११४४-४, भैरउ, मः ५)
अगम अमोला अपर अपार ॥१॥ रहाउ ॥ (११४४-४, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै निहचल धनी ॥ (११४४-५, भैरउ, मः ५)
नाम की महिमा सभ महि बनी ॥ (११४४-५, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै पूरा साहु ॥ (११४४-५, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै बेपरवाहु ॥२॥ (११४४-६, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै भोजन भाउ ॥ (११४४-६, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै मन का सुआउ ॥ (११४४-६, भैरउ, मः ५)
नामु न विसरै संत प्रसादि ॥ (११४४-६, भैरउ, मः ५)
नामु लैत अनहद पूरे नाद ॥३॥ (११४४-७, भैरउ, मः ५)
प्रभ किरपा ते नामु नउ निधि पाई ॥ (११४४-७, भैरउ, मः ५)
गुर किरपा ते नाम सिउ बनि आई ॥ (११४४-७, भैरउ, मः ५)
धनवंते सेई प्रधान ॥ (११४४-८, भैरउ, मः ५)
नानक जा कै नामु निधान ॥४॥१७॥३०॥ (११४४-८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४४-९)
तू मेरा पिता तूहै मेरा माता ॥ (११४४-९, भैरउ, मः ५)
तू मेरे जीअ प्रान सुखदाता ॥ (११४४-९, भैरउ, मः ५)
तू मेरा ठाकुरु हउ दासु तेरा ॥ (११४४-९, भैरउ, मः ५)
तुझ बिनु अवरु नही को मेरा ॥१॥ (११४४-१०, भैरउ, मः ५)
करि किरपा करहु प्रभ दाति ॥ (११४४-१०, भैरउ, मः ५)
तुम्हरी उसतति करउ दिन राति ॥१॥ रहाउ ॥ (११४४-१०, भैरउ, मः ५)
हम तेरे जंत तू बजावनहारा ॥ (११४४-११, भैरउ, मः ५)
हम तेरे भिखारी दानु देहि दातारा ॥ (११४४-११, भैरउ, मः ५)
तउ परसादि रंग रस माणे ॥ (११४४-११, भैरउ, मः ५)
घट घट अंतरि तुमहि समाणे ॥२॥ (११४४-१२, भैरउ, मः ५)
तुम्हरी कृपा ते जपीऐ नाउ ॥ (११४४-१२, भैरउ, मः ५)

साधसंगि तुमरे गुण गाउ ॥ (११४४-१२, भैरउ, मः ५)
तुम्री दइआ ते होइ दरद बिनासु ॥ (११४४-१३, भैरउ, मः ५)
तुमरी मइआ ते कमल बिगासु ॥३॥ (११४४-१३, भैरउ, मः ५)
हउ बलिहारि जाउ गुरदेव ॥ (११४४-१३, भैरउ, मः ५)
सफल दरसनु जा की निर्मल सेव ॥ (११४४-१४, भैरउ, मः ५)
दइआ करहु ठाकुर प्रभ मेरे ॥ (११४४-१४, भैरउ, मः ५)
गुण गावै नानकु नित तेरे ॥४॥१८॥३१॥ (११४४-१४, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४४-१५)
सभ ते ऊच जा का दरबारु ॥ (११४४-१५, भैरउ, मः ५)
सदा सदा ता कउ जोहारु ॥ (११४४-१५, भैरउ, मः ५)
ऊचे ते ऊचा जा का थान ॥ (११४४-१६, भैरउ, मः ५)
कोटि अघा मिटहि हरि नाम ॥१॥ (११४४-१६, भैरउ, मः ५)
तिसु सरणाई सदा सुखु होइ ॥ (११४४-१६, भैरउ, मः ५)
करि किरपा जा कउ मेलै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४४-१७, भैरउ, मः ५)
जा के करतब लखे न जाहि ॥ (११४४-१७, भैरउ, मः ५)
जा का भरवासा सभ घट माहि ॥ (११४४-१७, भैरउ, मः ५)
प्रगट भइआ साधू कै संगि ॥ (११४४-१८, भैरउ, मः ५)
भगत अराधहि अनदिनु रंगि ॥२॥ (११४४-१८, भैरउ, मः ५)
देदे तोटि नही भंडार ॥ (११४४-१८, भैरउ, मः ५)
खिन महि थापि उथापनहार ॥ (११४४-१९, भैरउ, मः ५)
जा का हुकमु न मेटै कोइ ॥ (११४४-१९, भैरउ, मः ५)
सिरि पातिसाहा साचा सोइ ॥३॥ (११४४-१९, भैरउ, मः ५)
जिस की ओट तिसै की आसा ॥ (११४४-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४५

दुखु सुखु हमरा तिस ही पासा ॥ (११४५-१, भैरउ, मः ५)
राखि लीनो सभु जन का पड़दा ॥ (११४५-१, भैरउ, मः ५)
नानकु तिस की उसतति करदा ॥४॥१९॥३२॥ (११४५-१, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४५-२)
रोवनहारी रोजु बनाइआ ॥ (११४५-२, भैरउ, मः ५)
बलन बरतन कउ सनबंधु चिति आइआ ॥ (११४५-२, भैरउ, मः ५)
बूझि बैरागु करे जे कोइ ॥ (११४५-३, भैरउ, मः ५)
जनम मरण फिरि सोगु न होइ ॥१॥ (११४५-३, भैरउ, मः ५)
बिखिआ का सभु धंधु पसारु ॥ (११४५-३, भैरउ, मः ५)
विरलै कीनो नाम अधारु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४५-४, भैरउ, मः ५)

तृबिधि माइआ रही बिआपि ॥ (११४५-४, भैरउ, मः ५)
जो लपटानो तिसु दूख संताप ॥ (११४५-४, भैरउ, मः ५)
सुखु नाही बिनु नाम धिआए ॥ (११४५-५, भैरउ, मः ५)
नाम निधानु बडभागी पाए ॥२॥ (११४५-५, भैरउ, मः ५)
स्वाँगी सिउ जो मनु रीझावै ॥ (११४५-५, भैरउ, मः ५)
स्वागि उतारिऐ फिरि पछुतावै ॥ (११४५-६, भैरउ, मः ५)
मेघ की छाइआ जैसे बरतनहार ॥ (११४५-६, भैरउ, मः ५)
तैसो परपंचु मोह बिकार ॥३॥ (११४५-६, भैरउ, मः ५)
एक वसतु जे पावै कोइ ॥ (११४५-७, भैरउ, मः ५)
पूरन काजु ताही का होइ ॥ (११४५-७, भैरउ, मः ५)
गुर प्रसादि जिनि पाइआ नामु ॥ (११४५-७, भैरउ, मः ५)
नानक आइआ सो परवानु ॥४॥२०॥३३॥ (११४५-८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४५-८)
संत की निंदा जोनी भवना ॥ (११४५-८, भैरउ, मः ५)
संत की निंदा रोगी करना ॥ (११४५-८, भैरउ, मः ५)
संत की निंदा दूख सहाम ॥ (११४५-९, भैरउ, मः ५)
डानु दैत निंदक कउ जाम ॥१॥ (११४५-९, भैरउ, मः ५)
संतसंगि करहि जो बादु ॥ (११४५-९, भैरउ, मः ५)
तिन निंदक नाही किछु सादु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४५-१०, भैरउ, मः ५)
भगत की निंदा कंधु छेदावै ॥ (११४५-१०, भैरउ, मः ५)
भगत की निंदा नरकु भुंचावै ॥ (११४५-१०, भैरउ, मः ५)
भगत की निंदा गरभ महि गलै ॥ (११४५-११, भैरउ, मः ५)
भगत की निंदा राज ते टलै ॥२॥ (११४५-११, भैरउ, मः ५)
निंदक की गति कतहू नाहि ॥ (११४५-११, भैरउ, मः ५)
आपि बीजि आपे ही खाहि ॥ (११४५-१२, भैरउ, मः ५)
चोर जार जूआर ते बुरा ॥ (११४५-१२, भैरउ, मः ५)
अणहोदा भारु निंदकि सिरि धरा ॥३॥ (११४५-१२, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म के भगत निरवैर ॥ (११४५-१३, भैरउ, मः ५)
सो निसतरै जो पूजै पैर ॥ (११४५-१३, भैरउ, मः ५)
आदि पुरखि निंदकु भोलाइआ ॥ (११४५-१३, भैरउ, मः ५)
नानक किरतु न जाइ मिटाइआ ॥४॥२१॥३४॥ (११४५-१३, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४५-१४)
नामु हमारै बेद अरु नाद ॥ (११४५-१४, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै पूरे काज ॥ (११४५-१४, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै पूजा देव ॥ (११४५-१५, भैरउ, मः ५)

नामु हमारै गुर की सेव ॥१॥ (११४५-१५, भैरउ, मः ५)
गुरि पूरै दृड़िओ हरि नामु ॥ (११४५-१५, भैरउ, मः ५)
सभ ते ऊतमु हरि हरि कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४५-१६, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै मजन इसनानु ॥ (११४५-१६, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै पूरन दानु ॥ (११४५-१६, भैरउ, मः ५)
नामु लैत ते सगल पवीत ॥ (११४५-१७, भैरउ, मः ५)
नामु जपत मेरे भाई मीत ॥२॥ (११४५-१७, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै सउण संजोग ॥ (११४५-१७, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै तृपति सुभोग ॥ (११४५-१८, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै सगल आचार ॥ (११४५-१८, भैरउ, मः ५)
नामु हमारै निर्मल बिउहार ॥३॥ (११४५-१८, भैरउ, मः ५)
जा कै मनि वसिआ प्रभु एकु ॥ (११४५-१८, भैरउ, मः ५)
सगल जना की हरि हरि टेक ॥ (११४५-१९, भैरउ, मः ५)
मनि तनि नानक हरि गुण गाउ ॥ (११४५-१९, भैरउ, मः ५)
साधसंगि जिसु देवै नाउ ॥४॥२२॥३५॥ (११४५-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४६

भैरउ महला ५ ॥ (११४६-१)
निर्धन कउ तुम देवहु धना ॥ (११४६-१, भैरउ, मः ५)
अनिक पाप जाहि निर्मल मना ॥ (११४६-१, भैरउ, मः ५)
सगल मनोरथ पूरन काम ॥ (११४६-२, भैरउ, मः ५)
भगत अपुने कउ देवहु नाम ॥१॥ (११४६-२, भैरउ, मः ५)
सफल सेवा गोपाल राइ ॥ (११४६-२, भैरउ, मः ५)
करन करावनहार सुआमी ता ते बिरथा कोइ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४६-३, भैरउ, मः ५)
रोगी का प्रभ खंडहु रोगु ॥ (११४६-३, भैरउ, मः ५)
दुखीए का मिटावहु प्रभ सोगु ॥ (११४६-४, भैरउ, मः ५)
निथावे कउ तुम्ह थानि बैठावहु ॥ (११४६-४, भैरउ, मः ५)
दास अपने कउ भगती लावहु ॥२॥ (११४६-४, भैरउ, मः ५)
निमाणे कउ प्रभ देतो मानु ॥ (११४६-५, भैरउ, मः ५)
मूड़ मुगधु होइ चतुर सुगिआनु ॥ (११४६-५, भैरउ, मः ५)
सगल भइआन का भउ नसै ॥ (११४६-५, भैरउ, मः ५)
जन अपने कै हरि मनि बसै ॥३॥ (११४६-५, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म प्रभ सूख निधान ॥ (११४६-६, भैरउ, मः ५)
ततु गिआनु हरि अमृत नाम ॥ (११४६-६, भैरउ, मः ५)
करि किरपा संत टहलै लाए ॥ (११४६-६, भैरउ, मः ५)

नानक साधू संगि समाए ॥४॥२३॥३६॥ (११४६-७, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४६-७)
संत मंडल महि हरि मनि वसै ॥ (११४६-७, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि दुरतु सभु नसै ॥ (११४६-८, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि निर्मल रीति ॥ (११४६-८, भैरउ, मः ५)
संतसंगि होइ एक परीति ॥१॥ (११४६-८, भैरउ, मः ५)
संत मंडलु तहा का नाउ ॥ (११४६-९, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म केवल गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४६-९, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि जनम मरणु रहै ॥ (११४६-९, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि जमु किछू न कहै ॥ (११४६-१०, भैरउ, मः ५)
संतसंगि होइ निर्मल बाणी ॥ (११४६-१०, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि नामु वखाणी ॥२॥ (११४६-१०, भैरउ, मः ५)
संत मंडल का निहचल आसनु ॥ (११४६-११, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि पाप बिनासनु ॥ (११४६-११, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि निर्मल कथा ॥ (११४६-११, भैरउ, मः ५)
संतसंगि हउमै दुख नसा ॥३॥ (११४६-१२, भैरउ, मः ५)
संत मंडल का नही बिनासु ॥ (११४६-१२, भैरउ, मः ५)
संत मंडल महि हरि गुणतासु ॥ (११४६-१२, भैरउ, मः ५)
संत मंडल ठाकुर बिस्रामु ॥ (११४६-१३, भैरउ, मः ५)
नानक ओति पोति भगवानु ॥४॥२४॥३७॥ (११४६-१३, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४६-१३)
रोगु कवनु जाँ राखै आपि ॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
तिसु जन होइ न दूखु संतापु ॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
जिसु ऊपरि प्रभु किरपा करै ॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
तिसु ऊपर ते कालु परहरै ॥१॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
सदा सखाई हरि हरि नामु ॥ (११४६-१५, भैरउ, मः ५)
जिसु चीति आवै तिसु सदा सुखु होवै निकटि न आवै ता कै जामु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४६-१५, भैरउ, मः ५)
जब इहु न सो तब किनहि उपाइआ ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
कवन मूल ते किआ प्रगटाइआ ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
आपहि मारि आपि जीवालै ॥ (११४६-१७, भैरउ, मः ५)
अपने भगत कउ सदा प्रतिपालै ॥२॥ (११४६-१७, भैरउ, मः ५)
सभ किछु जाणहु तिस कै हाथ ॥ (११४६-१७, भैरउ, मः ५)
प्रभु मेरो अनाथ को नाथ ॥ (११४६-१८, भैरउ, मः ५)
दुख भंजनु ता का है नाउ ॥ (११४६-१८, भैरउ, मः ५)
सुख पावहि तिस के गुण गाउ ॥३॥ (११४६-१८, भैरउ, मः ५)

सुणि सुआमी संतन अरदासि ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
जीउ प्रान धनु तुम्रै पासि ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
इहु जगु तेरा सभ तुझहि धिआए ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४७

करि किरपा नानक सुखु पाए ॥४॥२५॥३८॥ (११४७-१, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४७-१)
तेरी टेक रहा कलि माहि ॥ (११४७-१, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक तेरे गुण गाहि ॥ (११४७-१, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक न पोहै कालु ॥ (११४७-२, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक बिनसै जंजालु ॥१॥ (११४७-२, भैरउ, मः ५)
दीन दुनीआ तेरी टेक ॥ (११४७-२, भैरउ, मः ५)
सभ महि रविआ साहिबु एक ॥१॥ रहाउ ॥ (११४७-३, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक करउ आनंद ॥ (११४७-३, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक जपउ गुर मंत ॥ (११४७-३, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक तरीऐ भउ सागरु ॥ (११४७-३, भैरउ, मः ५)
राखणहारु पूरा सुख सागरु ॥२॥ (११४७-४, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक नाही भउ कोइ ॥ (११४७-४, भैरउ, मः ५)
अंतरजामी साचा सोइ ॥ (११४७-४, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक तेरा मनि ताणु ॥ (११४७-५, भैरउ, मः ५)
ईहाँ ऊहाँ तू दीबाणु ॥३॥ (११४७-५, भैरउ, मः ५)
तेरी टेक तेरा भरवासा ॥ (११४७-५, भैरउ, मः ५)
सगल धिआवहि प्रभ गुणतासा ॥ (११४७-५, भैरउ, मः ५)
जपि जपि अनदु करहि तेरे दासा ॥ (११४७-६, भैरउ, मः ५)
सिमरि नानक साचे गुणतासा ॥४॥२६॥३९॥ (११४७-६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४७-७)
प्रथमे छोडी पराई निंदा ॥ (११४७-७, भैरउ, मः ५)
उतरि गई सभ मन की चिंदा ॥ (११४७-७, भैरउ, मः ५)
लोभु मोहु सभु कीनो दूरि ॥ (११४७-७, भैरउ, मः ५)
पर्म बैसनो प्रभ पेखि हजूरि ॥१॥ (११४७-८, भैरउ, मः ५)
ऐसो तिआगी विरला कोइ ॥ (११४७-८, भैरउ, मः ५)
हरि हरि नामु जपै जनु सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४७-८, भैरउ, मः ५)
अहम्बुधि का छोडिआ संगु ॥ (११४७-९, भैरउ, मः ५)
काम क्रोध का उतरिआ रंगु ॥ (११४७-९, भैरउ, मः ५)
नाम धिआए हरि हरि हरे ॥ (११४७-९, भैरउ, मः ५)

साध जना कै संगि निसतरे ॥२॥ (११४७-१०, भैरउ, मः ५)
बैरी मीत होए सम्मान ॥ (११४७-१०, भैरउ, मः ५)
सर्ब महि पूरन भगवान ॥ (११४७-१०, भैरउ, मः ५)
प्रभ की आगिआ मानि सुखु पाइआ ॥ (११४७-११, भैरउ, मः ५)
गुरि पूरै हरि नामु दृड़ाइआ ॥३॥ (११४७-११, भैरउ, मः ५)
करि किरपा जिसु राखै आपि ॥ (११४७-११, भैरउ, मः ५)
सोई भगतु जपै नाम जाप ॥ (११४७-१२, भैरउ, मः ५)
मनि प्रगासु गुर ते मति लई ॥ (११४७-१२, भैरउ, मः ५)
कहु नानक ता की पूरी पई ॥४॥२७॥४०॥ (११४७-१२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४७-१३)
सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ (११४७-१३, भैरउ, मः ५)
सुखु नाही पेखे निरति नाटे ॥ (११४७-१३, भैरउ, मः ५)
सुखु नाही बहु देस कमाए ॥ (११४७-१३, भैरउ, मः ५)
सर्ब सुखा हरि हरि गुण गाए ॥१॥ (११४७-१४, भैरउ, मः ५)
सूख सहज आनंद लहहु ॥ (११४७-१४, भैरउ, मः ५)
साधसंगति पाईऐ वडभागी गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु ॥१॥ रहाउ ॥ (११४७-१४, भैरउ, मः ५)
बंधन मात पिता सुत बनिता ॥ (११४७-१५, भैरउ, मः ५)
बंधन कर्म धर्म हउ करता ॥ (११४७-१५, भैरउ, मः ५)
बंधन काटनहारु मनि वसै ॥ (११४७-१६, भैरउ, मः ५)
तउ सुखु पावै निज घरि बसै ॥२॥ (११४७-१६, भैरउ, मः ५)
सभि जाचिक प्रभ देवनहार ॥ (११४७-१६, भैरउ, मः ५)
गुण निधान बेअंत अपार ॥ (११४७-१७, भैरउ, मः ५)
जिस नो करमु करे प्रभु अपना ॥ (११४७-१७, भैरउ, मः ५)
हरि हरि नामु तिनै जनि जपना ॥३॥ (११४७-१७, भैरउ, मः ५)
गुर अपने आगै अरदासि ॥ (११४७-१८, भैरउ, मः ५)
करि किरपा पुरख गुणतासि ॥ (११४७-१८, भैरउ, मः ५)
कहु नानक तुमरी सरणाई ॥ (११४७-१८, भैरउ, मः ५)
जिउ भावै तिउ रखहु गुसाई ॥४॥२८॥४१॥ (११४७-१९, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४७-१९)
गुर मिलि तिआगिओ दूजा भाउ ॥ (११४७-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४८

गुरमुखि जपिओ हरि का नाउ ॥ (११४८-१, भैरउ, मः ५)
बिसरी चिंत नामि रंगु लागा ॥ (११४८-१, भैरउ, मः ५)
जनम जनम का सोइआ जागा ॥१॥ (११४८-१, भैरउ, मः ५)

करि किरपा अपनी सेवा लाए ॥ (११४८-२, भैरउ, मः ५)
साधू संगि सर्ब सुख पाए ॥१॥ रहाउ ॥ (११४८-२, भैरउ, मः ५)
रोग दोख गुर सबदि निवारे ॥ (११४८-२, भैरउ, मः ५)
नाम अउखधु मन भीतरि सारे ॥ (११४८-३, भैरउ, मः ५)
गुर भेटत मनि भइआ अनंद ॥ (११४८-३, भैरउ, मः ५)
सर्ब निधान नाम भगवंत ॥२॥ (११४८-३, भैरउ, मः ५)
जनम मरण की मिटी जम त्रास ॥ (११४८-४, भैरउ, मः ५)
साधसंगति ऊंध कमल बिगास ॥ (११४८-४, भैरउ, मः ५)
गुण गावत निहचलु बिस्राम ॥ (११४८-४, भैरउ, मः ५)
पूरन होए सगले काम ॥३॥ (११४८-५, भैरउ, मः ५)
दुलभ देह आई परवानु ॥ (११४८-५, भैरउ, मः ५)
सफल होई जपि हरि हरि नामु ॥ (११४८-५, भैरउ, मः ५)
कहु नानक प्रभि किरपा करी ॥ (११४८-६, भैरउ, मः ५)
सासि गिरासि जपउ हरि हरी ॥४॥२६॥४२॥ (११४८-६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४८-६)
सभ ते ऊचा जा का नाउ ॥ (११४८-७, भैरउ, मः ५)
सदा सदा ता के गुण गाउ ॥ (११४८-७, भैरउ, मः ५)
जिसु सिमरत सगला दुखु जाइ ॥ (११४८-७, भैरउ, मः ५)
सर्ब सूख वसहि मनि आइ ॥१॥ (११४८-७, भैरउ, मः ५)
सिमरि मना तू साचा सोइ ॥ (११४८-८, भैरउ, मः ५)
हलति पलति तुमरी गति होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४८-८, भैरउ, मः ५)
पुरख निरंजन सिरजनहार ॥ (११४८-९, भैरउ, मः ५)
जीअ जंत देवै आहार ॥ (११४८-९, भैरउ, मः ५)
कोटि खते खिन बखसनहार ॥ (११४८-९, भैरउ, मः ५)
भगति भाइ सदा निसतार ॥२॥ (११४८-९, भैरउ, मः ५)
साचा धनु साची वडिआई ॥ (११४८-१०, भैरउ, मः ५)
गुर पूरे ते निहचल मति पाई ॥ (११४८-१०, भैरउ, मः ५)
करि किरपा जिसु राखनहारा ॥ (११४८-१०, भैरउ, मः ५)
ता का सगल मिटै अंधिआरा ॥३॥ (११४८-११, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म सिउ लागो धिआन ॥ (११४८-११, भैरउ, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ निरबान ॥ (११४८-११, भैरउ, मः ५)
भ्रम भउ मेटि मिले गोपाल ॥ (११४८-१२, भैरउ, मः ५)
नानक कउ गुर भए दइआल ॥४॥३०॥४३॥ (११४८-१२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४८-१३)
जिसु सिमरत मनि होइ प्रगासु ॥ (११४८-१३, भैरउ, मः ५)

मिटहि कलेस सुख सहजि निवासु ॥ (११४८-१३, भैरउ, मः ५)
तिसहि परापति जिसु प्रभु देइ ॥ (११४८-१३, भैरउ, मः ५)
पूरे गुर की पाए सेव ॥१॥ (११४८-१४, भैरउ, मः ५)
सर्ब सुखा प्रभ तेरो नाउ ॥ (११४८-१४, भैरउ, मः ५)
आठ पहर मेरे मन गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४८-१४, भैरउ, मः ५)
जो इछै सोई फलु पाए ॥ (११४८-१५, भैरउ, मः ५)
हरि का नामु मंनि वसाए ॥ (११४८-१५, भैरउ, मः ५)
आवण जाण रहे हरि धिआइ ॥ (११४८-१५, भैरउ, मः ५)
भगति भाइ प्रभ की लिव लाइ ॥२॥ (११४८-१६, भैरउ, मः ५)
बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ (११४८-१६, भैरउ, मः ५)
तूटे माइआ मोह पिआर ॥ (११४८-१६, भैरउ, मः ५)
प्रभ की टेक रहै दिनु राति ॥ (११४८-१७, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्मु करे जिसु दाति ॥३॥ (११४८-१७, भैरउ, मः ५)
करन करावनहार सुआमी ॥ (११४८-१७, भैरउ, मः ५)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (११४८-१८, भैरउ, मः ५)
करि किरपा अपनी सेवा लाइ ॥ (११४८-१८, भैरउ, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाइ ॥४॥३१॥४४॥ (११४८-१८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४८-१९)
लाज मरै जो नामु न लेवै ॥ (११४८-१९, भैरउ, मः ५)
नाम बिहून सुखी किउ सोवै ॥ (११४८-१९, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरनु छाडि पर्म गति चाहै ॥ (११४८-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११४९

मूल बिना साखा कत आहै ॥१॥ (११४९-१, भैरउ, मः ५)
गुरु गोविंदु मेरे मन धिआइ ॥ (११४९-१, भैरउ, मः ५)
जनम जनम की मैलु उतारै बंधन काटि हरि संगि मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११४९-२, भैरउ, मः ५)
तीरथि नाइ कहा सुचि सैलु ॥ (११४९-२, भैरउ, मः ५)
मन कउ विआपै हउमै मैलु ॥ (११४९-३, भैरउ, मः ५)
कोटि कर्म बंधन का मूलु ॥ (११४९-३, भैरउ, मः ५)
हरि के भजन बिनु बिरथा पूलु ॥२॥ (११४९-३, भैरउ, मः ५)
बिनु खाए बूझै नही भूख ॥ (११४९-४, भैरउ, मः ५)
रोगु जाइ ताँ उतरहि दूख ॥ (११४९-४, भैरउ, मः ५)
काम क्रोध लोभ मोहि बिआपिआ ॥ (११४९-४, भैरउ, मः ५)
जिनि प्रभि कीना सो प्रभु नही जापिआ ॥३॥ (११४९-४, भैरउ, मः ५)
धनु धनु साध धन्नु हरि नाउ ॥ (११४९-५, भैरउ, मः ५)

आठ पहर कीरतनु गुण गाउ ॥ (११४६-५, भैरउ, मः ५)
धनु हरि भगति धनु करणैहार ॥ (११४६-५, भैरउ, मः ५)
सरणि नानक प्रभ पुरख अपार ॥४॥३२॥४५॥ (११४६-६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४६-६)
गुर सुप्रसन्न होए भउ गए ॥ (११४६-६, भैरउ, मः ५)
नाम निरंजन मन महि लए ॥ (११४६-७, भैरउ, मः ५)
दीन दइआल सदा किरपाल ॥ (११४६-७, भैरउ, मः ५)
बिनसि गए सगले जंजाल ॥१॥ (११४६-७, भैरउ, मः ५)
सूख सहज आनंद घने ॥ (११४६-८, भैरउ, मः ५)
साधसंगि मिटे भै भरमा अमृतु हरि हरि रसन भने ॥१॥ रहाउ ॥ (११४६-८, भैरउ, मः ५)
चरन कमल सिउ लागो हेतु ॥ (११४६-९, भैरउ, मः ५)
खिन महि बिनसिओ महा परेतु ॥ (११४६-९, भैरउ, मः ५)
आठ पहर हरि हरि जपु जापि ॥ (११४६-९, भैरउ, मः ५)
राखनहार गोविद गुर आपि ॥२॥ (११४६-१०, भैरउ, मः ५)
अपने सेवक कउ सदा प्रतिपारै ॥ (११४६-१०, भैरउ, मः ५)
भगत जना के सास निहारै ॥ (११४६-१०, भैरउ, मः ५)
मानस की कहु केतक बात ॥ (११४६-११, भैरउ, मः ५)
जम ते राखै दे करि हाथ ॥३॥ (११४६-११, भैरउ, मः ५)
निर्मल सोभा निर्मल रीति ॥ (११४६-११, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्मु आइआ मनि चीति ॥ (११४६-१२, भैरउ, मः ५)
करि किरपा गुरि दीनो दानु ॥ (११४६-१२, भैरउ, मः ५)
नानक पाइआ नामु निधानु ॥४॥३३॥४६॥ (११४६-१२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४६-१३)
करण कारण समरथु गुरु मेरा ॥ (११४६-१३, भैरउ, मः ५)
जीअ प्राण सुखदाता नेरा ॥ (११४६-१३, भैरउ, मः ५)
भै भंजन अबिनासी राइ ॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
दरसनि देखिऐ सभु दुखु जाइ ॥१॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
जत कत पेखउ तेरी सरणा ॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
बलि बलि जाई सतिगुर चरणा ॥१॥ रहाउ ॥ (११४६-१४, भैरउ, मः ५)
पूरन काम मिले गुरदेव ॥ (११४६-१५, भैरउ, मः ५)
सभि फलदाता निर्मल सेव ॥ (११४६-१५, भैरउ, मः ५)
करु गहि लीने अपुने दास ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
राम नामु रिद दीओ निवास ॥२॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
सदा अनंदु नाही किछु सोगु ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
दूखु दरदु नह बिआपै रोगु ॥ (११४६-१७, भैरउ, मः ५)

सभु किछु तेरा तू करणैहारु ॥ (११४६-१७, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म गुर अगम अपार ॥३॥ (११४६-१७, भैरउ, मः ५)
निर्मल सोभा अचरज बाणी ॥ (११४६-१८, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म पूरन मनि भाणी ॥ (११४६-१८, भैरउ, मः ५)
जलि थलि महीअलि रविआ सोइ ॥ (११४६-१८, भैरउ, मः ५)
नानक सभु किछु प्रभ ते होइ ॥४॥३४॥४७॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११४६-१६)
मनु तनु राता राम रंगि चरणे ॥ (११४६-१६, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११५०

सर्ब मनोरथ पूरन करणे ॥ (११५०-१, भैरउ, मः ५)
आठ पहर गावत भगवंतु ॥ (११५०-१, भैरउ, मः ५)
सतिगुरि दीनो पूरा मंतु ॥१॥ (११५०-१, भैरउ, मः ५)
सो वडभागी जिसु नामि पिआरु ॥ (११५०-१, भैरउ, मः ५)
तिस कै संगि तरै संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५०-२, भैरउ, मः ५)
सोई गिआनी जि सिमरै एक ॥ (११५०-२, भैरउ, मः ५)
सो धनवंता जिसु बुधि बिबेक ॥ (११५०-२, भैरउ, मः ५)
सो कुलवंता जि सिमरै सुआमी ॥ (११५०-३, भैरउ, मः ५)
सो पतिवंता जि आपु पछानी ॥२॥ (११५०-३, भैरउ, मः ५)
गुर परसादि पर्म पदु पाइआ ॥ (११५०-३, भैरउ, मः ५)
गुण गोपाल दिनु रैनि धिआइआ ॥ (११५०-४, भैरउ, मः ५)
तूटे बंधन पूरन आसा ॥ (११५०-४, भैरउ, मः ५)
हरि के चरण रिद माहि निवासा ॥३॥ (११५०-४, भैरउ, मः ५)
कहु नानक जा के पूरन करमा ॥ (११५०-५, भैरउ, मः ५)
सो जनु आइआ प्रभ की सरना ॥ (११५०-५, भैरउ, मः ५)
आपि पवितु पावन सभि कीने ॥ (११५०-५, भैरउ, मः ५)
राम रसाइणु रसना चीन्हे ॥४॥३५॥४८॥ (११५०-६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५०-६)
नामु लैत किछु बिघनु न लागै ॥ (११५०-६, भैरउ, मः ५)
नामु सुणत जमु दूरहु भागै ॥ (११५०-७, भैरउ, मः ५)
नामु लैत सभ दूखह नासु ॥ (११५०-७, भैरउ, मः ५)
नामु जपत हरि चरण निवासु ॥१॥ (११५०-७, भैरउ, मः ५)
निरबिघन भगति भजु हरि हरि नाउ ॥ (११५०-८, भैरउ, मः ५)
रसकि रसकि हरि के गुण गाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११५०-८, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरत किछु चाखु न जोहै ॥ (११५०-६, भैरउ, मः ५)

हरि सिमरत दैत देउ न पोहै ॥ (११५०-९, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरत मोहु मानु न बधै ॥ (११५०-९, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरत गरभ जोनि न रुधै ॥२॥ (११५०-९, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरन की सगली बेला ॥ (११५०-१०, भैरउ, मः ५)
हरि सिमरनु बहु माहि इकेला ॥ (११५०-१०, भैरउ, मः ५)
जाति अजाति जपै जनु कोइ ॥ (११५०-११, भैरउ, मः ५)
जो जापै तिस की गति होइ ॥३॥ (११५०-११, भैरउ, मः ५)
हरि का नामु जपीऐ साधसंगि ॥ (११५०-११, भैरउ, मः ५)
हरि के नाम का पूरन रंगु ॥ (११५०-११, भैरउ, मः ५)
नानक कउ प्रभ किरपा धारि ॥ (११५०-१२, भैरउ, मः ५)
सासि सासि हरि देहु चितारि ॥४॥३६॥४९॥ (११५०-१२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५०-१३)
आपे सासतु आपे बेदु ॥ (११५०-१३, भैरउ, मः ५)
आपे घटि घटि जाणै भेदु ॥ (११५०-१३, भैरउ, मः ५)
जोति सरूप जा की सभ वथु ॥ (११५०-१३, भैरउ, मः ५)
करण कारण पूरन समरथु ॥१॥ (११५०-१४, भैरउ, मः ५)
प्रभ की ओट गहहु मन मेरे ॥ (११५०-१४, भैरउ, मः ५)
चरन कमल गुरमुखि आराधहु दुसमन दूखु न आवै नेरे ॥१॥ रहाउ ॥ (११५०-१४, भैरउ, मः ५)
आपे वणु तृणु तृभवण सारु ॥ (११५०-१५, भैरउ, मः ५)
जा कै सूति परोइआ संसारु ॥ (११५०-१५, भैरउ, मः ५)
आपे सिव सकती संजोगी ॥ (११५०-१५, भैरउ, मः ५)
आपि निरबाणी आपे भोगी ॥२॥ (११५०-१६, भैरउ, मः ५)
जत कत पेखउ तत तत सोइ ॥ (११५०-१६, भैरउ, मः ५)
तिसु बिनु दूजा नाही कोइ ॥ (११५०-१६, भैरउ, मः ५)
सागरु तरीऐ नाम कै रंगि ॥ (११५०-१७, भैरउ, मः ५)
गुण गावै नानकु साधसंगि ॥३॥ (११५०-१७, भैरउ, मः ५)
मुकति भुगति जुगति वसि जा कै ॥ (११५०-१७, भैरउ, मः ५)
ऊणा नाही किछु जन ता कै ॥ (११५०-१८, भैरउ, मः ५)
करि किरपा जिसु होइ सुप्रसन्न ॥ (११५०-१८, भैरउ, मः ५)
नानक दास सेई जन धन्न ॥४॥३७॥५०॥ (११५०-१८, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५०-१९)
भगता मनि आनंदु गोबिंद ॥ (११५०-१९, भैरउ, मः ५)
असथिति भए बिनसी सभ चिंद ॥ (११५०-१९, भैरउ, मः ५)

भै भ्रम बिनसि गए खिन माहि ॥ (११५१-१, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्मु वसिआ मनि आइ ॥१॥ (११५१-१, भैरउ, मः ५)
राम राम संत सदा सहाइ ॥ (११५१-१, भैरउ, मः ५)
घरि बाहरि नाले परमेसरु रवि रहिआ पूरन सभ ठाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११५१-२, भैरउ, मः ५)
धनु मालु जोबनु जुगति गोपाल ॥ (११५१-२, भैरउ, मः ५)
जीअ प्राण नित सुख प्रतिपाल ॥ (११५१-३, भैरउ, मः ५)
अपने दास कउ दे राखै हाथ ॥ (११५१-३, भैरउ, मः ५)
निमख न छोडै सद ही साथ ॥२॥ (११५१-३, भैरउ, मः ५)
हरि सा प्रीतमु अवरु न कोइ ॥ (११५१-४, भैरउ, मः ५)
सारि सम्हाले साचा सोइ ॥ (११५१-४, भैरउ, मः ५)
मात पिता सुत बंधु नराइणु ॥ (११५१-४, भैरउ, मः ५)
आदि जुगादि भगत गुण गाइणु ॥३॥ (११५१-५, भैरउ, मः ५)
तिस की धर प्रभ का मनि जोरु ॥ (११५१-५, भैरउ, मः ५)
एक बिना दूजा नही होरु ॥ (११५१-५, भैरउ, मः ५)
नानक कै मनि इहु पुरखारथु ॥ (११५१-६, भैरउ, मः ५)
प्रभू हमारा सारे सुआरथु ॥४॥३८॥५१॥ (११५१-६, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५१-७)
भै कउ भउ पड़िआ सिमरत हरि नाम ॥ (११५१-७, भैरउ, मः ५)
सगल बिआधि मिटी त्रिहु गुण की दास के होए पूरन काम ॥१॥ रहाउ ॥ (११५१-७, भैरउ, मः ५)
हरि के लोक सदा गुण गावहि तिन कउ मिलिआ पूरन धाम ॥ (११५१-८, भैरउ, मः ५)
जन का दरसु बाँछै दिन राती होइ पुनीत धर्म राइ जाम ॥१॥ (११५१-९, भैरउ, मः ५)
काम क्रोध लोभ मद निंदा साधसंगि मिटिआ अभिमान ॥ (११५१-९, भैरउ, मः ५)
ऐसे संत भेटहि वडभागी नानक तिन कै सद कुरबान ॥२॥३९॥५२॥ (११५१-१०, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५१-११)
पंच मजमी जो पंचन राखै ॥ (११५१-११, भैरउ, मः ५)
मिथिआ रसना नित उठि भाखै ॥ (११५१-११, भैरउ, मः ५)
चक्र बणाइ करै पाखंड ॥ (११५१-११, भैरउ, मः ५)
झुरि झुरि पचै जैसे त्रिअ रंड ॥१॥ (११५१-१२, भैरउ, मः ५)
हरि के नाम बिना सभ झूठु ॥ (११५१-१२, भैरउ, मः ५)
बिनु गुर पूरे मुकति न पाईऐ साची दरगहि साकत मूठु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५१-१२, भैरउ, मः ५)
सोई कुचीलु कुदरति नही जानै ॥ (११५१-१३, भैरउ, मः ५)
लीपिऐ थाइ न सुचि हरि मानै ॥ (११५१-१४, भैरउ, मः ५)
अंतरु मैला बाहरु नित धोवै ॥ (११५१-१४, भैरउ, मः ५)

साची दरगहि अपनी पति खोवै ॥२॥ (११५१-१४, भैरउ, मः ५)
माइआ कारणि करै उपाउ ॥ (११५१-१५, भैरउ, मः ५)
कबहि न घालै सीधा पाउ ॥ (११५१-१५, भैरउ, मः ५)
जिनि कीआ तिसु चीति न आणै ॥ (११५१-१५, भैरउ, मः ५)
कूड़ी कूड़ी मुखहु वखाणै ॥३॥ (११५१-१६, भैरउ, मः ५)
जिस नो करमु करे करतारु ॥ (११५१-१६, भैरउ, मः ५)
साधसंगि होइ तिसु बिउहारु ॥ (११५१-१६, भैरउ, मः ५)
हरि नाम भगति सिउ लागा रंगु ॥ (११५१-१७, भैरउ, मः ५)
कहु नानक तिसु जन नही भंगु ॥४॥४०॥५३॥ (११५१-१७, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५१-१८)
निंदक कउ फिटके संसारु ॥ (११५१-१८, भैरउ, मः ५)
निंदक का झूठा बिउहारु ॥ (११५१-१८, भैरउ, मः ५)
निंदक का मैला आचारु ॥ (११५१-१८, भैरउ, मः ५)
दास अपुने कउ राखनहारु ॥१॥ (११५१-१९, भैरउ, मः ५)
निंदकु मुआ निंदक कै नालि ॥ (११५१-१९, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्म परमेसरि जन राखे निंदक कै सिरि कड़किओ कालु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५१-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११५२

निंदक का कहिआ कोइ न मानै ॥ (११५२-१, भैरउ, मः ५)
निंदक झूठु बोलि पछुताने ॥ (११५२-१, भैरउ, मः ५)
हाथ पछोरहि सिरु धरनि लगाहि ॥ (११५२-२, भैरउ, मः ५)
निंदक कउ दई छोडै नाहि ॥२॥ (११५२-२, भैरउ, मः ५)
हरि का दासु किछु बुरा न मागै ॥ (११५२-२, भैरउ, मः ५)
निंदक कउ लागै दुख साँगै ॥ (११५२-३, भैरउ, मः ५)
बगुले जिउ रहिआ पंख पसारि ॥ (११५२-३, भैरउ, मः ५)
मुख ते बोलिआ ताँ कढिआ बीचारि ॥३॥ (११५२-४, भैरउ, मः ५)
अंतरजामी करता सोइ ॥ (११५२-४, भैरउ, मः ५)
हरि जनु करै सु निहचलु होइ ॥ (११५२-४, भैरउ, मः ५)
हरि का दासु साचा दरबारि ॥ (११५२-५, भैरउ, मः ५)
जन नानक कहिआ ततु बीचारि ॥४॥४१॥५४॥ (११५२-५, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५२-६)
दुइ कर जोरि करउ अरदासि ॥ (११५२-६, भैरउ, मः ५)
जीउ पिंडु धनु तिस की रासि ॥ (११५२-६, भैरउ, मः ५)
सोई मेरा सुआमी करनैहारु ॥ (११५२-६, भैरउ, मः ५)
कोटि बार जाई बलिहार ॥१॥ (११५२-७, भैरउ, मः ५)

साधू धूरि पुनीत करी ॥ (११५२-७, भैरउ, मः ५)
मन के बिकार मिटहि प्रभ सिमरत जनम जनम की मैलु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ (११५२-७, भैरउ, मः ५)
जा कै गृह महि सगल निधान ॥ (११५२-८, भैरउ, मः ५)
जा की सेवा पाईऐ मानु ॥ (११५२-६, भैरउ, मः ५)
सगल मनोरथ पूरनहार ॥ (११५२-६, भैरउ, मः ५)
जीअ प्रान भगतन आधार ॥२॥ (११५२-६, भैरउ, मः ५)
घट घट अंतरि सगल प्रगास ॥ (११५२-६, भैरउ, मः ५)
जपि जपि जीवहि भगत गुणतास ॥ (११५२-१०, भैरउ, मः ५)
जा की सेव न बिरथी जाइ ॥ (११५२-१०, भैरउ, मः ५)
मन तन अंतरि एकु धिआइ ॥३॥ (११५२-१०, भैरउ, मः ५)
गुर उपदेसि दइआ संतोखु ॥ (११५२-११, भैरउ, मः ५)
नामु निधानु निरमलु इहु थोकु ॥ (११५२-११, भैरउ, मः ५)
करि किरपा लीजै लड़ि लाइ ॥ (११५२-१२, भैरउ, मः ५)
चरन कमल नानक नित धिआइ ॥४॥४२॥५५॥ (११५२-१२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५२-१३)
सतिगुर अपुने सुनी अरदासि ॥ (११५२-१३, भैरउ, मः ५)
कारजु आइआ सगला रासि ॥ (११५२-१३, भैरउ, मः ५)
मन तन अंतरि प्रभू धिआइआ ॥ (११५२-१३, भैरउ, मः ५)
गुर पूरे डरु सगल चुकाइआ ॥१॥ (११५२-१४, भैरउ, मः ५)
सभ ते वड समरथ गुरदेव ॥ (११५२-१४, भैरउ, मः ५)
सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ रहाउ ॥ (११५२-१५, भैरउ, मः ५)
जा का कीआ सभु किछु होइ ॥ (११५२-१५, भैरउ, मः ५)
तिस का अमरु न मेटै कोइ ॥ (११५२-१५, भैरउ, मः ५)
पारब्रह्मु परमेसरु अनूपु ॥ (११५२-१६, भैरउ, मः ५)
सफल मूरति गुरु तिस का रूपु ॥२॥ (११५२-१६, भैरउ, मः ५)
जा कै अंतरि बसै हरि नामु ॥ (११५२-१६, भैरउ, मः ५)
जो जो पेखै सु ब्रह्म गिआनु ॥ (११५२-१७, भैरउ, मः ५)
बीस बिसुए जा कै मनि परगासु ॥ (११५२-१७, भैरउ, मः ५)
तिसु जन कै पारब्रह्म का निवासु ॥३॥ (११५२-१७, भैरउ, मः ५)
तिसु गुर कउ सद करी नमस्कार ॥ (११५२-१८, भैरउ, मः ५)
तिसु गुर कउ सद जाउ बलिहार ॥ (११५२-१८, भैरउ, मः ५)
सतिगुर के चरन धोइ धोइ पीवा ॥ (११५२-१८, भैरउ, मः ५)
गुर नानक जपि जपि सद जीवा ॥४॥४३॥५६॥ (११५२-१६, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११५३

रागु भैरउ महला ५ पड़ताल घरु ३ (११५३-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११५३-१)
परतिपाल प्रभ कृपाल कवन गुन गनी ॥ (११५३-२, भैरउ, मः ५)
अनिक रंग बहु तरंग सर्ब को धनी ॥१॥ रहाउ ॥ (११५३-२, भैरउ, मः ५)
अनिक गिआन अनिक धिआन अनिक जाप जाप ताप ॥ (११५३-३, भैरउ, मः ५)
अनिक गुनित धुनित ललित अनिक धार मुनी ॥१॥ (११५३-३, भैरउ, मः ५)
अनिक नाद अनिक बाज निमख निमख अनिक स्वाद अनिक दोख अनिक रोग मिटहि जस सुनी ॥ (११५३-४, भैरउ, मः ५)
नानक सेव अपार देव तटह खटह बरत पूजा गवन भवन जात्र करन सगल फल पुनी ॥२॥१॥५७॥८॥२१॥७॥५७॥९३॥ (११५३-५, भैरउ, मः ५)
भैरउ असटपदीआ महला १ घरु २ (११५३-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११५३-७)
आतम महि रामु राम महि आतमु चीनसि गुर बीचारा ॥ (११५३-८, भैरउ, मः १)
अमृत बाणी सबदि पछाणी दुख काटै हउ मारा ॥१॥ (११५३-८, भैरउ, मः १)
नानक हउमै रोग बुरे ॥ (११५३-९, भैरउ, मः १)
जह देखाँ तह एका बेदन आपे बखसै सबदि धुरे ॥१॥ रहाउ ॥ (११५३-९, भैरउ, मः १)
आपे परखे परखणहारै बहुरि सूलाकु न होई ॥ (११५३-१०, भैरउ, मः १)
जिन कउ नदरि भई गुरि मेले प्रभ भाणा सचु सोई ॥२॥ (११५३-१०, भैरउ, मः १)
पउणु पाणी बैसंतरु रोगी रोगी धरति सभोगी ॥ (११५३-११, भैरउ, मः १)
मात पिता माइआ देह सि रोगी रोगी कुटम्ब संजोगी ॥३॥ (११५३-११, भैरउ, मः १)
रोगी ब्रह्मा बिसनु सरुद्रा रोगी सगल संसारा ॥ (११५३-१२, भैरउ, मः १)
हरि पदु चीनि भए से मुकते गुर का सबदु वीचारा ॥४॥ (११५३-१२, भैरउ, मः १)
रोगी सात समुंद सनदीआ खंड पताल सि रोगि भरे ॥ (११५३-१३, भैरउ, मः १)
हरि के लोक सि साचि सुहेले सरबी थाई नदरि करे ॥५॥ (११५३-१३, भैरउ, मः १)
रोगी खट दरसन भेखधारी नाना हठी अनेका ॥ (११५३-१४, भैरउ, मः १)
बेद कतेब करहि कह बपुरे नह बूझहि इक एका ॥६॥ (११५३-१५, भैरउ, मः १)
मिठ रसु खाइ सु रोगि भरीजै कंद मूलि सुखु नाही ॥ (११५३-१५, भैरउ, मः १)
नामु विसारि चलहि अन मारगि अंत कालि पछुताही ॥७॥ (११५३-१६, भैरउ, मः १)
तीरथि भरमै रोगु न छूटसि पड़िआ बादु बिबादु भइआ ॥ (११५३-१६, भैरउ, मः १)
दुबिधा रोगु सु अधिक वडेरा माइआ का मुहताजु भइआ ॥८॥ (११५३-१७, भैरउ, मः १)
गुरमुखि साचा सबदि सलाहै मनि साचा तिसु रोगु गइआ ॥ (११५३-१८, भैरउ, मः १)
नानक हरि जन अनदिनु निर्मल जिन कउ करमि नीसाणु पइआ ॥९॥१॥ (११५३-१८, भैरउ, मः १)

पन्ना ११५४

भैरउ महला ३ घरु २ (११५४-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११५४-२)
तिनि करतै इकु चलतु उपाइआ ॥ (११५४-३, भैरउ, मः ३)
अनहद बाणी सबदु सुणाइआ ॥ (११५४-३, भैरउ, मः ३)
मनमुखि भूले गुरमुखि बुझाइआ ॥ (११५४-३, भैरउ, मः ३)
कारणु करता करदा आइआ ॥१॥ (११५४-४, भैरउ, मः ३)
गुर का सबदु मेरै अंतरि धिआनु ॥ (११५४-४, भैरउ, मः ३)
हउ कबहु न छोडउ हरि का नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५४-४, भैरउ, मः ३)
पिता प्रहलादु पड़ण पठाइआ ॥ (११५४-५, भैरउ, मः ३)
लै पाटी पाधे कै आइआ ॥ (११५४-५, भैरउ, मः ३)
नाम बिना नह पड़उ अचार ॥ (११५४-६, भैरउ, मः ३)
मेरी पटीआ लिखि देहु गोबिंद मुरारि ॥२॥ (११५४-६, भैरउ, मः ३)
पुत्र प्रहिलाद सिउ कहिआ माइ ॥ (११५४-६, भैरउ, मः ३)
परविरति न पड़हु रही समझाइ ॥ (११५४-७, भैरउ, मः ३)
निरभउ दाता हरि जीउ मेरै नालि ॥ (११५४-७, भैरउ, मः ३)
जे हरि छोडउ तउ कुलि लागै गालि ॥३॥ (११५४-७, भैरउ, मः ३)
प्रहलादि सभि चाटड़े विगारे ॥ (११५४-८, भैरउ, मः ३)
हमारा कहिआ न सुणै आपणे कारज सवारे ॥ (११५४-८, भैरउ, मः ३)
सभ नगरी महि भगति दृड़ाई ॥ (११५४-९, भैरउ, मः ३)
दुसट सभा का किछु न वसाई ॥४॥ (११५४-९, भैरउ, मः ३)
संडै मरकै कीई पूकार ॥ (११५४-९, भैरउ, मः ३)
सभे दैत रहे झख मारि ॥ (११५४-१०, भैरउ, मः ३)
भगत जना की पति राखै सोई ॥ (११५४-१०, भैरउ, मः ३)
कीते कै कहिऐ किआ होई ॥५॥ (११५४-१०, भैरउ, मः ३)
किरत संजोगी दैति राजु चलाइआ ॥ (११५४-११, भैरउ, मः ३)
हरि न बूझै तिनि आपि भुलाइआ ॥ (११५४-११, भैरउ, मः ३)
पुत्र प्रहलाद सिउ वादु रचाइआ ॥ (११५४-११, भैरउ, मः ३)
अंधा न बूझै कालु नेड़ै आइआ ॥६॥ (११५४-१२, भैरउ, मः ३)
प्रहलादु कोठे विचि राखिआ बारि दीआ ताला ॥ (११५४-१२, भैरउ, मः ३)
निरभउ बालकु मूलि न डरई मेरै अंतरि गुर गोपाला ॥ (११५४-१३, भैरउ, मः ३)
कीता होवै सरीकी करै अनहोदा नाउ धराइआ ॥ (११५४-१३, भैरउ, मः ३)
जो धुरि लिखिआ सुो आइ पहुता जन सिउ वादु रचाइआ ॥७॥ (११५४-१४, भैरउ, मः ३)
पिता प्रहलाद सिउ गुरज उठाई ॥ (११५४-१४, भैरउ, मः ३)

कहाँ तुमारा जगदीस गुसाई ॥ (११५४-१५, भैरउ, मः ३)
जगजीवनु दाता अंति सखाई ॥ (११५४-१५, भैरउ, मः ३)
जह देखा तह रहिआ समाई ॥८॥ (११५४-१५, भैरउ, मः ३)
थम्मु उपाड़ि हरि आपु दिखाइआ ॥ (११५४-१६, भैरउ, मः ३)
अहंकारी दैतु मारि पचाइआ ॥ (११५४-१६, भैरउ, मः ३)
भगता मनि आनंदु वजी वधाई ॥ (११५४-१६, भैरउ, मः ३)
अपने सेवक कउ दे वडिआई ॥९॥ (११५४-१७, भैरउ, मः ३)
जम्मणु मरणा मोहु उपाइआ ॥ (११५४-१७, भैरउ, मः ३)
आवणु जाणा करतै लिखि पाइआ ॥ (११५४-१७, भैरउ, मः ३)
प्रहलाद कै कारजि हरि आपु दिखाइआ ॥ (११५४-१८, भैरउ, मः ३)
भगता का बोलु आगै आइआ ॥१०॥ (११५४-१८, भैरउ, मः ३)
देव कुली लखिमी कउ करहि जैकारु ॥ (११५४-१९, भैरउ, मः ३)
माता नरसिंघ का रूपु निवारु ॥ (११५४-१९, भैरउ, मः ३)
लखिमी भउ करै न साकै जाइ ॥ (११५४-१९, भैरउ, मः ३)

पन्ना ११५५

प्रहलादु जनु चरणी लागा आइ ॥११॥ (११५५-१, भैरउ, मः ३)
सतिगुरि नामु निधानु दृड़ाइआ ॥ (११५५-१, भैरउ, मः ३)
राजु मालु झूठी सभ माइआ ॥ (११५५-२, भैरउ, मः ३)
लोभी नर रहे लपटाइ ॥ (११५५-२, भैरउ, मः ३)
हरि के नाम बिनु दरगह मिलै सजाइ ॥१२॥ (११५५-२, भैरउ, मः ३)
कहै नानकु सभु को करे कराइआ ॥ (११५५-३, भैरउ, मः ३)
से परवाणु जिनी हरि सिउ चितु लाइआ ॥ (११५५-३, भैरउ, मः ३)
भगता का अंगीकारु करदा आइआ ॥ (११५५-३, भैरउ, मः ३)
करतै अपणा रूपु दिखाइआ ॥१३॥१॥२॥ (११५५-४, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ३ ॥ (११५५-४)
गुर सेवा ते अमृत फलु पाइआ हउमै तृसन बुझाई ॥ (११५५-४, भैरउ, मः ३)
हरि का नामु हृदै मनि वसिआ मनसा मनहि समाई ॥१॥ (११५५-५, भैरउ, मः ३)
हरि जीउ कृपा करहु मेरे पिआरे ॥ (११५५-६, भैरउ, मः ३)
अनदिनु हरि गुण दीन जनु माँगै गुर कै सबदि उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ (११५५-६, भैरउ, मः ३)
संत जना कउ जमु जोहि न साकै रती अंच दूख न लाई ॥ (११५५-७, भैरउ, मः ३)
आपि तरहि सगले कुल तारहि जो तेरी सरणाई ॥२॥ (११५५-७, भैरउ, मः ३)
भगता की पैज रखहि तू आपे एह तेरी वडिआई ॥ (११५५-८, भैरउ, मः ३)
जनम जनम के किलविख दुख काटहि दुबिधा रती न राई ॥३॥ (११५५-८, भैरउ, मः ३)
हम मूड़ मुगध किछु बूझहि नाही तू आपे देहि बुझाई ॥ (११५५-९, भैरउ, मः ३)

जो तुधु भावै सोई करसी अवरु न करणा जाई ॥४॥ (११५५-९, भैरउ, मः ३)
जगतु उपाइ तुधु धंधै लाइआ भूंडी कार कमाई ॥ (११५५-१०, भैरउ, मः ३)
जनमु पदारथु जूऐ हारिआ सबदै सुरति न पाई ॥५॥ (११५५-११, भैरउ, मः ३)
मनमुखि मरहि तिन किछू न सूझै दुरमति अगिआन अंधारा ॥ (११५५-११, भैरउ, मः ३)
भवजलु पारि न पावहि कब ही डूबि मुए बिनु गुर सिरि भारा ॥६॥ (११५५-१२, भैरउ, मः ३)
साचै सबदि रते जन साचे हरि प्रभि आपि मिलाए ॥ (११५५-१२, भैरउ, मः ३)
गुर की बाणी सबदि पछाती साचि रहे लिव लाए ॥७॥ (११५५-१३, भैरउ, मः ३)
तूं आपि निरमलु तेरे जन है निर्मल गुर कै सबदि वीचारे ॥ (११५५-१३, भैरउ, मः ३)
नानकु तिन कै सद बलिहारै राम नामु उरि धारे ॥८॥२॥३॥ (११५५-१४, भैरउ, मः ३)
भैरउ महला ५ असटपदीआ घरु २ (११५५-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११५५-१६)
जिसु नामु रिदै सोई वड राजा ॥ (११५५-१७, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु पूरे काजा ॥ (११५५-१७, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिनि कोटि धन पाए ॥ (११५५-१७, भैरउ, मः ५)
नाम बिना जनमु बिरथा जाए ॥१॥ (११५५-१८, भैरउ, मः ५)
तिसु सालाही जिसु हरि धनु रासि ॥ (११५५-१८, भैरउ, मः ५)
सो वडभागी जिसु गुर मसतकि हाथु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५५-१८, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु कोट कई सैना ॥ (११५५-१९, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु सहज सुखैना ॥ (११५५-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११५६

जिसु नामु रिदै सो सीतलु हूआ ॥ (११५६-१, भैरउ, मः ५)
नाम बिना ध्रिगु जीवणु मूआ ॥२॥ (११५६-१, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै सो जीवन मुकता ॥ (११५६-१, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु सभ ही जुगता ॥ (११५६-२, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिनि नउ निधि पाई ॥ (११५६-२, भैरउ, मः ५)
नाम बिना भ्रमि आवै जाई ॥३॥ (११५६-२, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै सो वेपरवाहा ॥ (११५६-३, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु सद ही लाहा ॥ (११५६-३, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु वड परवारा ॥ (११५६-४, भैरउ, मः ५)
नाम बिना मनमुख गावारा ॥४॥ (११५६-४, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु निहचल आसनु ॥ (११५६-४, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु तखति निवासनु ॥ (११५६-५, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै सो साचा साहु ॥ (११५६-५, भैरउ, मः ५)
नामहीण नाही पति वेसाहु ॥५॥ (११५६-५, भैरउ, मः ५)

जिसु नामु रिदै सो सभ महि जाता ॥ (११५६-६, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै सो पुरखु बिधाता ॥ (११५६-६, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै सो सभ ते ऊचा ॥ (११५६-६, भैरउ, मः ५)
नाम बिना भ्रमि जोनी मूचा ॥६॥ (११५६-७, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु प्रगटि पहारा ॥ (११५६-७, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै तिसु मिटिआ अंधारा ॥ (११५६-७, भैरउ, मः ५)
जिसु नामु रिदै सो पुरखु परवाणु ॥ (११५६-८, भैरउ, मः ५)
नाम बिना फिरि आवण जाणु ॥७॥ (११५६-८, भैरउ, मः ५)
तिनि नामु पाइआ जिसु भइओ क्रिपाल ॥ (११५६-९, भैरउ, मः ५)
साधसंगति महि लखे गोपाल ॥ (११५६-९, भैरउ, मः ५)
आवण जाण रहे सुखु पाइआ ॥ (११५६-९, भैरउ, मः ५)
कहु नानक ततै ततु मिलाइआ ॥८॥१॥४॥ (११५६-१०, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५६-१०)
कोटि बिसन कीने अवतार ॥ (११५६-१०, भैरउ, मः ५)
कोटि ब्रहमंड जा के ध्रमसाल ॥ (११५६-११, भैरउ, मः ५)
कोटि महेस उपाइ समाए ॥ (११५६-११, भैरउ, मः ५)
कोटि ब्रहमे जगु साजण लाए ॥१॥ (११५६-११, भैरउ, मः ५)
ऐसो धणी गुविंदु हमारा ॥ (११५६-११, भैरउ, मः ५)
बरनि न साकउ गुण बिसथारा ॥१॥ रहाउ ॥ (११५६-१२, भैरउ, मः ५)
कोटि माइआ जा कै सेवकाइ ॥ (११५६-१२, भैरउ, मः ५)
कोटि जीअ जा की सिहजाइ ॥ (११५६-१३, भैरउ, मः ५)
कोटि उपारजना तेरै अंगि ॥ (११५६-१३, भैरउ, मः ५)
कोटि भगत बसत हरि संगि ॥२॥ (११५६-१३, भैरउ, मः ५)
कोटि छत्रपति करत नमसकार ॥ (११५६-१३, भैरउ, मः ५)
कोटि इंद्र ठाढे है दुआर ॥ (११५६-१४, भैरउ, मः ५)
कोटि बैकुंठ जा की द्रिसटी माहि ॥ (११५६-१४, भैरउ, मः ५)
कोटि नाम जा की कीमति नाहि ॥३॥ (११५६-१४, भैरउ, मः ५)
कोटि पूरीअत है जा कै नाद ॥ (११५६-१५, भैरउ, मः ५)
कोटि अखारे चलित बिसमाद ॥ (११५६-१५, भैरउ, मः ५)
कोटि सकति सिव आगिआकार ॥ (११५६-१५, भैरउ, मः ५)
कोटि जीअ देवै आधार ॥४॥ (११५६-१६, भैरउ, मः ५)
कोटि तीर्थ जा के चरन मझार ॥ (११५६-१६, भैरउ, मः ५)
कोटि पवित्र जपत नाम चार ॥ (११५६-१६, भैरउ, मः ५)
कोटि पूजारी करते पूजा ॥ (११५६-१७, भैरउ, मः ५)
कोटि बिसथारनु अवरु न दूजा ॥५॥ (११५६-१७, भैरउ, मः ५)

कोटि महिमा जा की निर्मल हंस ॥ (११५६-१७, भैरउ, मः ५)
कोटि उसतति जा की करत ब्रहमंस ॥ (११५६-१८, भैरउ, मः ५)
कोटि परलउ ओपति निमख माहि ॥ (११५६-१८, भैरउ, मः ५)
कोटि गुणा तेरे गणे न जाहि ॥६॥ (११५६-१८, भैरउ, मः ५)
कोटि गिआनी कथहि गिआनु ॥ (११५६-१६, भैरउ, मः ५)
कोटि धिआनी धरत धिआनु ॥ (११५६-१६, भैरउ, मः ५)
कोटि तपीसर तप ही करते ॥ (११५६-१६, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११५७

कोटि मुनीसर मोनि महि रहते ॥७॥ (११५७-१, भैरउ, मः ५)
अविगत नाथु अगोचर सुआमी ॥ (११५७-१, भैरउ, मः ५)
पूरि रहिआ घट अंतरजामी ॥ (११५७-१, भैरउ, मः ५)
जत कत देखउ तेरा वासा ॥ (११५७-२, भैरउ, मः ५)
नानक कउ गुरि कीओ प्रगासा ॥८॥२॥५॥ (११५७-२, भैरउ, मः ५)
भैरउ महला ५ ॥ (११५७-३)
सतिगुरि मो कउ कीनो दानु ॥ (११५७-३, भैरउ, मः ५)
अमोल रतनु हरि दीनो नामु ॥ (११५७-३, भैरउ, मः ५)
सहज बिनोद चोज आनंता ॥ (११५७-३, भैरउ, मः ५)
नानक कउ प्रभु मिलिओ अचिंता ॥१॥ (११५७-४, भैरउ, मः ५)
कहु नानक कीरति हरि साची ॥ (११५७-४, भैरउ, मः ५)
बहुरि बहुरि तिसु संगि मनु राची ॥१॥ रहाउ ॥ (११५७-४, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै भोजन भाउ ॥ (११५७-५, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै लीचै नाउ ॥ (११५७-५, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै सबदि उधार ॥ (११५७-५, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै भरे भंडार ॥२॥ (११५७-६, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै कारज पूरे ॥ (११५७-६, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै लथे विसूरे ॥ (११५७-६, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै बैरी मीता ॥ (११५७-७, भैरउ, मः ५)
अचिंतो ही इहु मनु वसि कीता ॥३॥ (११५७-७, भैरउ, मः ५)
अचिंत प्रभू हम कीआ दिलासा ॥ (११५७-७, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारी पूरन आसा ॥ (११५७-८, भैरउ, मः ५)
अचिंत हम्रा कउ सगल सिधांतु ॥ (११५७-८, भैरउ, मः ५)
अचिंतु हम कउ गुरि दीनो मंतु ॥४॥ (११५७-८, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारे बिनसे बैर ॥ (११५७-६, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारे मिटे अंधेर ॥ (११५७-६, भैरउ, मः ५)

अचिंतो ही मनि कीरतनु मीठा ॥ (११५७-९, भैरउ, मः ५)
अचिंतो ही प्रभु घटि घटि डीठा ॥५॥ (११५७-९, भैरउ, मः ५)
अचिंत मिटिओ है सगलो भरमा ॥ (११५७-१०, भैरउ, मः ५)
अचिंत वसिओ मनि सुख बिस्रामा ॥ (११५७-१०, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै अनहत वाजै ॥ (११५७-११, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै गोबिंदु गाजै ॥६॥ (११५७-११, भैरउ, मः ५)
अचिंत हमारै मनु पतीआना ॥ (११५७-११, भैरउ, मः ५)
निहचल धनी अचिंतु पछाना ॥ (११५७-११, भैरउ, मः ५)
अचिंतो उपजिओ सगल बिबेका ॥ (११५७-१२, भैरउ, मः ५)
अचिंत चरी हथि हरि हरि टेका ॥७॥ (११५७-१२, भैरउ, मः ५)
अचिंत प्रभू धुरि लिखिआ लेखु ॥ (११५७-१३, भैरउ, मः ५)
अचिंत मिलिओ प्रभु ठाकुरु एकु ॥ (११५७-१३, भैरउ, मः ५)
चिंत अचिंता सगली गई ॥ (११५७-१३, भैरउ, मः ५)
प्रभ नानक नानक नानक मई ॥८॥३॥६॥ (११५७-१३, भैरउ, मः ५)
भैरउ बाणी भगता की ॥ (११५७-१५)
कबीर जीउ घरु १ (११५७-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११५७-१५)
इहु धनु मेरे हरि को नाउ ॥ (११५७-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
गाँठि न बाधउ बेचि न खाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११५७-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
नाउ मेरे खेती नाउ मेरे बारी ॥ (११५७-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
भगति करउ जनु सरनि तुम्हारी ॥१॥ (११५७-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
नाउ मेरे माइआ नाउ मेरे पूंजी ॥ (११५७-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
तुमहि छोडि जानउ नही दूजी ॥२॥ (११५७-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
नाउ मेरे बंधिप नाउ मेरे भाई ॥ (११५७-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
नाउ मेरे संगि अंति होइ सखाई ॥३॥ (११५७-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
माइआ महि जिसु रखै उदासु ॥ (११५७-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहि कबीर हउ ता को दासु ॥४॥१॥ (११५७-१९, भैरउ, भगत कबीर जी)
नाँगे आवनु नाँगे जाना ॥ (११५७-१९, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोइ न रहिहै राजा राना ॥१॥ (११५७-१९, भैरउ, भगत कबीर जी)

पन्ना ११५८

रामु राजा नउ निधि मेरै ॥ (११५८-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
सम्पै हेतु कलतु धनु तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (११५८-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
आवत संग न जात संगाती ॥ (११५८-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहा भइओ दरि बाँधे हाथी ॥२॥ (११५८-२, भैरउ, भगत कबीर जी)

लंका गढु सोने का भइआ ॥ (११५८-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
मूरखु रावनु किआ ले गइआ ॥३॥ (११५८-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहि कबीर किछु गुनु बीचारि ॥ (११५८-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
चले जुआरी दुइ हथ झारि ॥४॥२॥ (११५८-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैला ब्रह्मा मैला इंदु ॥ (११५८-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
रवि मैला मैला है चंदु ॥१॥ (११५८-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैला मलता इहु संसारु ॥ (११५८-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
इकु हरि निरमलु जा का अंतु न पारु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५८-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैले ब्रहमंडाइ कै ईस ॥ (११५८-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैले निसि बासुर दिन तीस ॥२॥ (११५८-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैला मोती मैला हीरु ॥ (११५८-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैला पउनु पावकु अरु नीरु ॥३॥ (११५८-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैले सिव संकरा महेस ॥ (११५८-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैले सिध साधिक अरु भेख ॥४॥ (११५८-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैले जोगी जंगम जटा सहेति ॥ (११५८-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
मैली काइआ हंस समेति ॥५॥ (११५८-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहि कबीर ते जन परवान ॥ (११५८-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
निर्मल ते जो रामहि जान ॥६॥३॥ (११५८-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
मनु करि मका किबला करि देही ॥ (११५८-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
बोलनहारु पर्म गुरु एही ॥१॥ (११५८-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहु रे मुलाँ बाँग निवाज ॥ (११५८-९, भैरउ, भगत कबीर जी)
एक मसीति दसै दरवाज ॥१॥ रहाउ ॥ (११५८-९, भैरउ, भगत कबीर जी)
मिसिमिलि तामसु भरमु कदूरी ॥ (११५८-९, भैरउ, भगत कबीर जी)
भाखि ले पंचै होइ सबूरी ॥२॥ (११५८-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
हिंदू तुरक का साहिबु एक ॥ (११५८-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
कह करै मुलाँ कह करै सेख ॥३॥ (११५८-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहि कबीर हउ भइआ दिवाना ॥ (११५८-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
मुसि मुसि मनूआ सहजि समाना ॥४॥४॥ (११५८-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
गंगा कै संगि सलिता बिगरी ॥ (११५८-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो सलिता गंगा होइ निबरी ॥१॥ (११५८-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
बिगरिओ कबीरा राम दुहाई ॥ (११५८-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
साचु भइओ अन कतहि न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११५८-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
चंदन कै संगि तरवरु बिगरिओ ॥ (११५८-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो तरवरु चंदनु होइ निबरिओ ॥२॥ (११५८-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
पारस कै संगि ताँबा बिगरिओ ॥ (११५८-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)

सो ताँबा कंचनु होइ निबरिओ ॥३॥ (११५८-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
संतन संगि कबीरा बिगरिओ ॥ (११५८-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो कबीरु रामै होइ निबरिओ ॥४॥५॥ (११५८-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
माथे तिलकु हथि माला बानाँ ॥ (११५८-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
लोगन रामु खिलउना जानाँ ॥१॥ (११५८-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ॥ (११५८-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
लोगु मरमु कह जानै मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (११५८-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
तोरउ न पाती पूजउ न देवा ॥ (११५८-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
राम भगति बिनु निहफल सेवा ॥२॥ (११५८-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
सतिगुरु पूजउ सदा सदा मनावउ ॥ (११५८-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
ऐसी सेव दरगह सुखु पावउ ॥३॥ (११५८-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
लोगु कहै कबीरु बउराना ॥ (११५८-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
कबीर का मरमु राम पहिचानाँ ॥४॥६॥ (११५८-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
उलटि जाति कुल दोऊ बिसारी ॥ (११५८-१९, भैरउ, भगत कबीर जी)
सुन्न सहज महि बुनत हमारी ॥१॥ (११५८-१९, भैरउ, भगत कबीर जी)
हमरा झगरा रहा न कोऊ ॥ (११५८-१९, भैरउ, भगत कबीर जी)

पन्ना ११५९

पंडित मुलाँ छाडे दोऊ ॥१॥ रहाउ ॥ (११५९-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
बुनि बुनि आप आपु पहिरावउ ॥ (११५९-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
जह नही आपु तहा होइ गावउ ॥२॥ (११५९-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
पंडित मुलाँ जो लिखि दीआ ॥ (११५९-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
छाडि चले हम कछू न लीआ ॥३॥ (११५९-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
रिदै इखलासु निरखि ले मीरा ॥ (११५९-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
आपु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥४॥७॥ (११५९-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
निर्धन आदरु कोई न देइ ॥ (११५९-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
लाख जतन करै ओहु चिति न धरेइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११५९-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
जउ निरधनु सरधन कै जाइ ॥ (११५९-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
आगे बैठा पीठि फिराइ ॥१॥ (११५९-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
जउ सरधनु निर्धन कै जाइ ॥ (११५९-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
दीआ आदरु लीआ बुलाइ ॥२॥ (११५९-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
निरधनु सरधनु दोनउ भाई ॥ (११५९-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
प्रभ की कला न मेटी जाई ॥३॥ (११५९-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहि कबीर निरधनु है सोई ॥ (११५९-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
जा के हिरदै नामु न होई ॥४॥८॥ (११५९-६, भैरउ, भगत कबीर जी)

गुर सेवा ते भगति कमाई ॥ (११५६-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
तब इह मानस देही पाई ॥ (११५६-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
इस देही कउ सिमरहि देव ॥ (११५६-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो देही भजु हरि की सेव ॥१॥ (११५६-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
भजहु गुोबिंद भूलि मत जाहु ॥ (११५६-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
मानस जनम का एही लाहु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५६-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
जब लगु जरा रोगु नही आइआ ॥ (११५६-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
जब लगु कालि ग्रसी नही काइआ ॥ (११५६-९, भैरउ, भगत कबीर जी)
जब लगु बिकल भई नही बानी ॥ (११५६-९, भैरउ, भगत कबीर जी)
भजि लेहि रे मन सारिगपानी ॥२॥ (११५६-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
अब न भजसि भजसि कब भाई ॥ (११५६-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
आवै अंतु न भजिआ जाई ॥ (११५६-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
जो किछु करहि सोई अब सारु ॥ (११५६-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
फिरि पछुताहु न पावहु पारु ॥३॥ (११५६-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो सेवकु जो लाइआ सेव ॥ (११५६-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
तिन ही पाए निरंजन देव ॥ (११५६-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
गुर मिलि ता के खुल्हे कपाट ॥ (११५६-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
बहुरि न आवै जोनी बाट ॥४॥ (११५६-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
इही तेरा अउसरु इह तेरी बार ॥ (११५६-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
घट भीतरि तू देखु बिचारि ॥ (११५६-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहत कबीरु जीति कै हारि ॥ (११५६-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
बहु बिधि कहिओ पुकारि पुकारि ॥५॥१॥९॥ (११५६-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
सिव की पुरी बसै बुधि सारु ॥ (११५६-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
तह तुम्ह मिलि कै करहु बिचारु ॥ (११५६-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
ईत ऊत की सोझी परै ॥ (११५६-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
कउनु कर्म मेरा करि करि मरै ॥१॥ (११५६-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
निज पद ऊपरि लागो धिआनु ॥ (११५६-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
राजा राम नामु मोरा ब्रह्म गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (११५६-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
मूल दुआरै बंधिआ बंधु ॥ (११५६-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
रवि ऊपरि गहि राखिआ चंदु ॥ (११५६-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
पछम दुआरै सूरजु तपै ॥ (११५६-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
मेर डंड सिर ऊपरि बसै ॥२॥ (११५६-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
पसचम दुआरे की सिल ओड़ ॥ (११५६-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
तिह सिल ऊपरि खिड़की अउर ॥ (११५६-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
खिड़की ऊपरि दसवा दुआरु ॥ (११५६-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)

कहि कबीर ता का अंतु न पारु ॥३॥२॥१०॥ (११५६-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो मुलाँ जो मन सिउ लरै ॥ (११५६-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥ (११५६-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
काल पुरख का मरदै मानु ॥ (११५६-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥१॥ (११५६-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)

पन्ना ११६०

है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥ (११६०-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (११६०-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
काजी सो जु काइआ बीचारै ॥ (११६०-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
काइआ की अगनि ब्रह्मु परजारै ॥ (११६०-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ (११६०-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
तिसु काजी कउ जरा न मरना ॥२॥ (११६०-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो सुरतानु जु दुइ सर तानै ॥ (११६०-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
बाहरि जाता भीतरि आनै ॥ (११६०-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
गगन मंडल महि लसकरु करै ॥ (११६०-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो सुरतानु छत्रु सिरि धरै ॥३॥ (११६०-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
जोगी गोरखु गोरखु करै ॥ (११६०-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
हिंदू राम नामु उचरै ॥ (११६०-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
मुसलमान का एकु खुदाइ ॥ (११६०-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
कबीर का सुआमी रहिआ समाइ ॥४॥३॥११॥ (११६०-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
महला ५ ॥ (११६०-५)
जो पाथर कउ कहते देव ॥ (११६०-५, भैरउ, मः ५)
ता की बिरथा होवै सेव ॥ (११६०-६, भैरउ, मः ५)
जो पाथर की पाँई पाइ ॥ (११६०-६, भैरउ, मः ५)
तिस की घाल अजाँई जाइ ॥१॥ (११६०-६, भैरउ, मः ५)
ठाकुरु हमरा सद बोलंता ॥ (११६०-७, भैरउ, मः ५)
सर्ब जीआ कउ प्रभु दानु देता ॥१॥ रहाउ ॥ (११६०-७, भैरउ, मः ५)
अंतरि देउ न जानै अंधु ॥ (११६०-७, भैरउ, मः ५)
भ्रम का मोहिआ पावै फंधु ॥ (११६०-८, भैरउ, मः ५)
न पाथरु बोलै ना किछु देइ ॥ (११६०-८, भैरउ, मः ५)
फोकट कर्म निहफल है सेव ॥२॥ (११६०-८, भैरउ, मः ५)
जे मिरतक कउ चंदनु चड़ावै ॥ (११६०-६, भैरउ, मः ५)
उस ते कहहु कवन फल पावै ॥ (११६०-६, भैरउ, मः ५)
जे मिरतक कउ बिसटा माहि रुलाई ॥ (११६०-६, भैरउ, मः ५)

ताँ मिरतक का किआ घटि जाई ॥३॥ (११६०-१०, भैरउ, मः ५)
कहत कबीर हउ कहउ पुकारि ॥ (११६०-१०, भैरउ, मः ५)
समझि देखु साकत गावार ॥ (११६०-१०, भैरउ, मः ५)
दूजै भाइ बहुतु घर गाले ॥ (११६०-११, भैरउ, मः ५)
राम भगत है सदा सुखाले ॥४॥४॥१२॥ (११६०-११, भैरउ, मः ५)
जल महि मीन माइआ के बेधे ॥ (११६०-११, भैरउ, मः ५)
दीपक पतंग माइआ के छेदे ॥ (११६०-१२, भैरउ, मः ५)
काम माइआ कुंचर कउ बिआपै ॥ (११६०-१२, भैरउ, मः ५)
भुइअंगम भ्रिंग माइआ महि खापे ॥१॥ (११६०-१२, भैरउ, मः ५)
माइआ ऐसी मोहनी भाई ॥ (११६०-१३, भैरउ, मः ५)
जेते जीअ तेते डहकाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११६०-१३, भैरउ, मः ५)
पंखी मृग माइआ महि राते ॥ (११६०-१३, भैरउ, मः ५)
साकर माखी अधिक संतापे ॥ (११६०-१४, भैरउ, मः ५)
तुरे उसट माइआ महि भेला ॥ (११६०-१४, भैरउ, मः ५)
सिध चउरासीह माइआ महि खेला ॥२॥ (११६०-१४, भैरउ, मः ५)
छिअ जती माइआ के बंदा ॥ (११६०-१५, भैरउ, मः ५)
नवै नाथ सूरज अरु चंदा ॥ (११६०-१५, भैरउ, मः ५)
तपे रखीसर माइआ महि सूता ॥ (११६०-१५, भैरउ, मः ५)
माइआ महि कालु अरु पंच दूता ॥३॥ (११६०-१६, भैरउ, मः ५)
सुआन सिआल माइआ महि राता ॥ (११६०-१६, भैरउ, मः ५)
बंतर चीते अरु सिंघाता ॥ (११६०-१७, भैरउ, मः ५)
माँजार गाडर अरु लूबरा ॥ (११६०-१७, भैरउ, मः ५)
बिरख मूल माइआ महि परा ॥४॥ (११६०-१७, भैरउ, मः ५)
माइआ अंतरि भीने देव ॥ (११६०-१८, भैरउ, मः ५)
सागर इंद्रा अरु धरतेव ॥ (११६०-१८, भैरउ, मः ५)
कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ ॥ (११६०-१८, भैरउ, मः ५)
तब छूटे जब साधू पाइआ ॥५॥५॥१३॥ (११६०-१८, भैरउ, मः ५)
जब लगु मेरी मेरी करै ॥ (११६०-१९, भैरउ, मः ५)
तब लगु काजु एकु नही सरै ॥ (११६०-१९, भैरउ, मः ५)
जब मेरी मेरी मिटि जाइ ॥ (११६०-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११६१

तब प्रभ काजु सवारहि आइ ॥१॥ (११६१-१, भैरउ, मः ५)
ऐसा गिआनु बिचारु मना ॥ (११६१-१, भैरउ, मः ५)
हरि की न सिमरहु दुख भंजना ॥१॥ रहाउ ॥ (११६१-१, भैरउ, मः ५)

जब लगु सिंघु रहै बन माहि ॥ (११६१-२, भैरउ, मः ५)
तब लगु बनु फूलै ही नाहि ॥ (११६१-२, भैरउ, मः ५)
जब ही सिआरु सिंघ कउ खाइ ॥ (११६१-३, भैरउ, मः ५)
फूलि रही सगली बनराइ ॥२॥ (११६१-३, भैरउ, मः ५)
जीतो बूडै हारो तिरै ॥ (११६१-३, भैरउ, मः ५)
गुर परसादी पारि उतरै ॥ (११६१-३, भैरउ, मः ५)
दासु कबीरु कहै समझाइ ॥ (११६१-४, भैरउ, मः ५)
केवल राम रहहु लिव लाइ ॥३॥६॥१४॥ (११६१-४, भैरउ, मः ५)
सतरि सैइ सलार है जा के ॥ (११६१-४, भैरउ, मः ५)
सवा लाखु पैकाबर ता के ॥ (११६१-५, भैरउ, मः ५)
सेख जु कहीअहि कोटि अठासी ॥ (११६१-५, भैरउ, मः ५)
छपन कोटि जा के खेल खासी ॥१॥ (११६१-५, भैरउ, मः ५)
मो गरीब की को गुजरावै ॥ (११६१-६, भैरउ, मः ५)
मजलसि दूरि महलु को पावै ॥१॥ रहाउ ॥ (११६१-६, भैरउ, मः ५)
तेतीस करोड़ी है खेल खाना ॥ (११६१-६, भैरउ, मः ५)
चउरासी लख फिरै दिवानाँ ॥ (११६१-७, भैरउ, मः ५)
बाबा आदम कउ किछु नदरि दिखाई ॥ (११६१-७, भैरउ, मः ५)
उनि भी भिसति घनेरी पाई ॥२॥ (११६१-७, भैरउ, मः ५)
दिल खलहलु जा कै जरद रू बानी ॥ (११६१-८, भैरउ, मः ५)
छोडि कतेब करै सैतानी ॥ (११६१-८, भैरउ, मः ५)
दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥ (११६१-८, भैरउ, मः ५)
अपना कीआ पावै सोई ॥३॥ (११६१-९, भैरउ, मः ५)
तुम दाते हम सदा भिखारी ॥ (११६१-९, भैरउ, मः ५)
देउ जबाबु होइ बजगारी ॥ (११६१-९, भैरउ, मः ५)
दासु कबीरु तेरी पनह समानाँ ॥ (११६१-९, भैरउ, मः ५)
भिसतु नजीकि राखु रहमाना ॥४॥७॥१५॥ (११६१-१०, भैरउ, मः ५)
सभु कोई चलन कहत है ऊहाँ ॥ (११६१-१०, भैरउ, मः ५)
ना जानउ बैकुंठु है कहाँ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६१-११, भैरउ, मः ५)
आप आप का मरमु न जानाँ ॥ (११६१-११, भैरउ, मः ५)
बातन ही बैकुंठु बखानाँ ॥१॥ (११६१-११, भैरउ, मः ५)
जब लगु मन बैकुंठ की आस ॥ (११६१-१२, भैरउ, मः ५)
तब लगु नाही चरन निवास ॥२॥ (११६१-१२, भैरउ, मः ५)
खाई कोटु न परल पगारा ॥ (११६१-१२, भैरउ, मः ५)
ना जानउ बैकुंठ दुआरा ॥३॥ (११६१-१२, भैरउ, मः ५)
कहि कमीर अब कहीऐ काहि ॥ (११६१-१३, भैरउ, मः ५)

साधसंगति बैकुंठै आहि ॥४॥८॥१६॥ (११६१-१३, भैरउ, मः ५)
किउ लीजै गढु बंका भाई ॥ (११६१-१४, भैरउ, मः ५)
दोवर कोट अरु तेवर खाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११६१-१४, भैरउ, मः ५)
पाँच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ ॥ (११६१-१४, भैरउ, मः ५)
जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ ॥१॥ (११६१-१५, भैरउ, मः ५)
कामु किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुन्नु दरवाजा ॥ (११६१-१५, भैरउ, मः ५)
क्रोधु प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा ॥२॥ (११६१-१६, भैरउ, मः ५)
स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढाई ॥ (११६१-१६, भैरउ, मः ५)
तिसना तीर रहे घट भीतरि इउ गढु लीओ न जाई ॥३॥ (११६१-१७, भैरउ, मः ५)
प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ ॥ (११६१-१८, भैरउ, मः ५)
ब्रह्म अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ ॥४॥ (११६१-१८, भैरउ, मः ५)
सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा ॥ (११६१-१९, भैरउ, मः ५)
साधसंगति अरु गुर की कृपा ते पकरिओ गढ को राजा ॥५॥ (११६१-१९, भैरउ, मः ५)

पन्ना ११६२

भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी ॥ (११६२-१, भैरउ, मः ५)
दासु कमीरु चड़्हिओ गड़्ह ऊपरि राजु लीओ अबिनासी ॥६॥९॥१७॥ (११६२-१, भैरउ, मः ५)
गंग गुसाइनि गहिर गम्भीर ॥ (११६२-२, भैरउ, मः ५)
जंजीर बाँधि करि खरे कबीर ॥१॥ (११६२-२, भैरउ, मः ५)
मनु न डिगै तनु काहे कउ डराइ ॥ (११६२-३, भैरउ, मः ५)
चरन कमल चितु रहिओ समाइ ॥ रहाउ ॥ (११६२-३, भैरउ, मः ५)
गंगा की लहरि मेरी टुटी जंजीर ॥ (११६२-४, भैरउ, मः ५)
मृगछाला पर बैठे कबीर ॥२॥ (११६२-४, भैरउ, मः ५)
कहि कम्बीर कोऊ संग न साथ ॥ (११६२-४, भैरउ, मः ५)
जल थल राखन है रघुनाथ ॥३॥१०॥१८॥ (११६२-५, भैरउ, मः ५)
भैरउ कबीर जीउ असटपदी घरु २ (११६२-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६२-६)
अगम द्रुगम गड़ि रचिओ बास ॥ (११६२-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
जा महि जोति करे परगास ॥ (११६२-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
बिजुली चमकै होइ अनंदु ॥ (११६२-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
जिह पउड़े प्रभ बाल गोबिंद ॥१॥ (११६२-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
इहु जीउ राम नाम लिव लागै ॥ (११६२-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
जरा मरनु छूटै भ्रमु भागै ॥१॥ रहाउ ॥ (११६२-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
अबरन बरन सिउ मन ही प्रीति ॥ (११६२-९, भैरउ, भगत कबीर जी)
हउमै गावनि गावहि गीत ॥ (११६२-९, भैरउ, भगत कबीर जी)

अनहद सबद होत झुनकार ॥ (११६२-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
जिह पउड़े प्रभ स्री गोपाल ॥२॥ (११६२-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
खंडल मंडल मंडल मंडा ॥ (११६२-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
तृअ असथान तीनि तृअ खंडा ॥ (११६२-१०, भैरउ, भगत कबीर जी)
अगम अगोचरु रहिआ अभ अंत ॥ (११६२-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
पारु न पावै को धरनीधर मंत ॥३॥ (११६२-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
कदली पुहप धूप परगास ॥ (११६२-११, भैरउ, भगत कबीर जी)
रज पंकज महि लीओ निवास ॥ (११६२-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
दुआदस दल अभ अंतरि मंत ॥ (११६२-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
जह पउड़े स्री कमला कंत ॥४॥ (११६२-१२, भैरउ, भगत कबीर जी)
अर्ध उरध मुखि लागो कासु ॥ (११६२-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
सुन्न मंडल महि करि परगासु ॥ (११६२-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
ऊहाँ सूरज नाही चंद ॥ (११६२-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
आदि निरंजनु करै अनंद ॥५॥ (११६२-१३, भैरउ, भगत कबीर जी)
सो ब्रहमंडि पिंडि सो जानु ॥ (११६२-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
मान सरोवरि करि इसनानु ॥ (११६२-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
सोहं सो जा कउ है जाप ॥ (११६२-१४, भैरउ, भगत कबीर जी)
जा कउ लिपत न होइ पुन्न अरु पाप ॥६॥ (११६२-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
अबरन बरन घाम नही छाम ॥ (११६२-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
अवर न पाईऐ गुर की साम ॥ (११६२-१५, भैरउ, भगत कबीर जी)
टारी न टरै आवै न जाइ ॥ (११६२-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
सुन्न सहज महि रहिओ समाइ ॥७॥ (११६२-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
मन मधे जानै जे कोइ ॥ (११६२-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
जो बोलै सो आपै होइ ॥ (११६२-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
जोति मंतृ मनि असथिरु करै ॥ (११६२-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहि कबीर सो प्रानी तरै ॥८॥१॥ (११६२-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटि सूर जा कै परगास ॥ (११६२-१७, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटि महादेव अरु कबिलास ॥ (११६२-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
दुरगा कोटि जा कै मरदनु करै ॥ (११६२-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
ब्रह्मा कोटि बेद उचरै ॥१॥ (११६२-१८, भैरउ, भगत कबीर जी)
जउ जाचउ तउ केवल राम ॥ (११६२-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
आन देव सिउ नाही काम ॥१॥ रहाउ ॥ (११६२-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटि चंद्रमे करहि चराक ॥ (११६२-१६, भैरउ, भगत कबीर जी)

पन्ना ११६३

सुर तेतीसउ जेवहि पाक ॥ (११६३-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
नव ग्रह कोटि ठाढे दरबार ॥ (११६३-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
धर्म कोटि जा कै प्रतिहार ॥२॥ (११६३-१, भैरउ, भगत कबीर जी)
पवन कोटि चउबारे फिरहि ॥ (११६३-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
बासक कोटि सेज बिसथरहि ॥ (११६३-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
समुंद कोटि जा के पानीहार ॥ (११६३-२, भैरउ, भगत कबीर जी)
रोमावलि कोटि अठारह भार ॥३॥ (११६३-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटि कमेर भरहि भंडार ॥ (११६३-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटिक लखमी करै सीगार ॥ (११६३-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटिक पाप पुन्न बहु हिरहि ॥ (११६३-३, भैरउ, भगत कबीर जी)
इंद्र कोटि जा के सेवा करहि ॥४॥ (११६३-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
छपन कोटि जा कै प्रतिहार ॥ (११६३-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
नगरी नगरी खिअत अपार ॥ (११६३-४, भैरउ, भगत कबीर जी)
लट छूटी वरतै बिकराल ॥ (११६३-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटि कला खेलै गोपाल ॥५॥ (११६३-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
कोटि जग जा कै दरबार ॥ (११६३-५, भैरउ, भगत कबीर जी)
गंध्रब कोटि करहि जैकार ॥ (११६३-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
बिदिआ कोटि सभै गुन कहै ॥ (११६३-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
तऊ पारब्रह्म का अंतु न लहै ॥६॥ (११६३-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
बावन कोटि जा कै रोमावली ॥ (११६३-६, भैरउ, भगत कबीर जी)
रावन सैना जह ते छली ॥ (११६३-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
सहस कोटि बहु कहत पुरान ॥ (११६३-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
दुरजोधन का मथिआ मानु ॥७॥ (११६३-७, भैरउ, भगत कबीर जी)
कंद्रप कोटि जा कै लवै न धरहि ॥ (११६३-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
अंतर अंतरि मनसा हरहि ॥ (११६३-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
कहि कबीर सुनि सारिगपान ॥ (११६३-८, भैरउ, भगत कबीर जी)
देहि अभै पदु माँगउ दान ॥८॥२॥१८॥२०॥ (११६३-९, भैरउ, भगत कबीर जी)
भैरउ बाणी नामदेउ जीउ की घरु १ (११६३-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६३-१०)
रे जिहबा करउ सत खंड ॥ (११६३-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जामि न उचरसि स्री गोबिंद ॥१॥ (११६३-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
रंगी ले जिहबा हरि कै नाइ ॥ (११६३-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सुरंग रंगीले हरि हरि धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६३-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)

मिथिआ जिहबा अवरें काम ॥ (११६३-१२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
निरबाण पदु इकु हरि को नामु ॥२॥ (११६३-१२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
असंख कोटि अन पूजा करी ॥ (११६३-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
एक न पूजसि नामै हरी ॥३॥ (११६३-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
प्रणवै नामदेउ इहु करणा ॥ (११६३-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
अनंत रूप तेरे नाराइणा ॥४॥१॥ (११६३-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पर धन पर दारा परहरी ॥ (११६३-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
ता कै निकटि बसै नरहरी ॥१॥ (११६३-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जो न भजंते नाराइणा ॥ (११६३-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
तिन का मै न करउ दरसना ॥१॥ रहाउ ॥ (११६३-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जिन कै भीतरि है अंतरा ॥ (११६३-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जैसे पसु तैसे ओइ नरा ॥२॥ (११६३-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
प्रणवति नामदेउ नाकहि बिना ॥ (११६३-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
ना सोहै बतीस लखना ॥३॥२॥ (११६३-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
दूधु कटोरै गडवै पानी ॥ (११६३-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कपल गाइ नामै दुहि आनी ॥१॥ (११६३-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
दूधु पीउ गोबिंदे राइ ॥ (११६३-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ ॥ (११६३-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नाही त घर को बापु रिसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६३-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सोइन कटोरी अमृत भरी ॥ (११६३-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
लै नामै हरि आगै धरी ॥२॥ (११६३-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
एकु भगतु मेरे हिरदे बसै ॥ (११६३-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामे देखि नराइनु हसै ॥३॥ (११६३-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ ॥ (११६३-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)

पन्ना ११६४

नामे हरि का दरसनु भइआ ॥४॥३॥ (११६४-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
मै बउरी मेरा रामु भतारु ॥ (११६४-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
रचि रचि ता कउ करउ सिंगारु ॥१॥ (११६४-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भले निंदउ भले निंदउ भले निंदउ लोगु ॥ (११६४-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
तनु मनु राम पिआरे जोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (११६४-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बादु बिबादु काहू सिउ न कीजै ॥ (११६४-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
रसना राम रसाइनु पीजै ॥२॥ (११६४-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
अब जीअ जानि ऐसी बनि आई ॥ (११६४-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
मिलउ गुपाल नीसानु बजाई ॥३॥ (११६४-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)

उसतति निंदा करै नरु कोई ॥ (११६४-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामे स्रीरंगु भेटल सोई ॥४॥४॥ (११६४-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कबहू खीरि खाड घीउ न भावै ॥ (११६४-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कबहू घर घर टूक मगावै ॥ (११६४-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कबहू कूरनु चने बिनावै ॥१॥ (११६४-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जिउ रामु राखै तिउ रहीऐ रे भाई ॥ (११६४-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
हरि की महिमा किछु कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (११६४-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कबहू तुरे तुरंग नचावै ॥ (११६४-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कबहू पाइ पनहीओ न पावै ॥२॥ (११६४-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कबहू खाट सुपेदी सुवावै ॥ (११६४-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कबहू भूमि पैआरु न पावै ॥३॥ (११६४-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भनति नामदेउ इकु नामु निसतारै ॥ (११६४-८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जिह गुरु मिलै तिह पारि उतारै ॥४॥५॥ (११६४-८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
हसत खेलत तेरे देहुरे आइआ ॥ (११६४-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भगति करत नामा पकरि उठाइआ ॥१॥ (११६४-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
हीनड़ी जाति मेरी जादिम राइआ ॥ (११६४-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
छीपे के जनमि काहे कउ आइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६४-१०, भैरउ, भगत नामदेव जी)
लै कमली चलिओ पलटाइ ॥ (११६४-१०, भैरउ, भगत नामदेव जी)
देहुरै पाछै बैठा जाइ ॥२॥ (११६४-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जिउ जिउ नामा हरि गुण उचरै ॥ (११६४-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भगत जनाँ कउ देहुरा फिरै ॥३॥६॥ (११६४-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भैरउ नामदेउ जीउ घरु २ (११६४-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६४-१२)
जैसी भूखे प्रीति अनाज ॥ (११६४-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
तृखावंत जल सेती काज ॥ (११६४-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जैसी मूड़ कुटम्ब पराइण ॥ (११६४-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
ऐसी नामे प्रीति नराइण ॥१॥ (११६४-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामे प्रीति नाराइण लागी ॥ (११६४-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सहज सुभाइ भइओ बैरागी ॥१॥ रहाउ ॥ (११६४-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जैसी पर पुरखा रत नारी ॥ (११६४-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
लोभी नरु धन का हितकारी ॥ (११६४-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कामी पुरख कामनी पिआरी ॥ (११६४-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
ऐसी नामे प्रीति मुरारी ॥२॥ (११६४-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
साई प्रीति जि आपे लाए ॥ (११६४-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गुर परसादी दुबिधा जाए ॥ (११६४-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)

कबहु न तूटसि रहिआ समाइ ॥ (११६४-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामे चितु लाइआ सचि नाइ ॥३॥ (११६४-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जैसी प्रीति बारिक अरु माता ॥ (११६४-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
ऐसा हरि सेती मनु राता ॥ (११६४-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
प्रणवै नामदेउ लागी प्रीति ॥ (११६४-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गोबिदु बसै हमारै चीति ॥४॥१॥७॥ (११६४-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
घर की नारि तिआगै अंधा ॥ (११६४-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)

पन्ना ११६५

पर नारी सिउ घालै धंधा ॥ (११६५-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जैसे सिम्बलु देखि सूआ बिगसाना ॥ (११६५-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
अंत की बार मूआ लपटाना ॥१॥ (११६५-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पापी का घरु अगने माहि ॥ (११६५-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जलत रहै मिटवै कब नाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (११६५-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
हरि की भगति न देखै जाइ ॥ (११६५-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
मारगु छोडि अमारगि पाइ ॥ (११६५-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
मूलहु भूला आवै जाइ ॥ (११६५-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
अमृतु डारि लादि बिखु खाइ ॥२॥ (११६५-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जिउ बेस्वा के परै अखारा ॥ (११६५-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कापरु पहिरि करहि संीगारा ॥ (११६५-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पूरे ताल निहाले सास ॥ (११६५-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
वा के गले जम का है फास ॥३॥ (११६५-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जा के मसतकि लिखिओ करमा ॥ (११६५-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सो भजि परि है गुर की सरना ॥ (११६५-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कहत नामदेउ इहु बीचारु ॥ (११६५-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
इन बिधि संतहु उतरहु पारि ॥४॥२॥८॥ (११६५-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
संडा मरका जाइ पुकारे ॥ (११६५-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पड़ै नही हम ही पचि हारे ॥ (११६५-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
रामु कहै कर ताल बजावै चटीआ सभै बिगारे ॥१॥ (११६५-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
राम नामा जपिबो करै ॥ (११६५-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
हिरदै हरि जी को सिमरनु धरै ॥१॥ रहाउ ॥ (११६५-८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥ (११६५-८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥२॥ (११६५-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥ (११६५-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गिरि तर जलु जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥३॥ (११६५-१०, भैरउ, भगत नामदेव जी)

काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥ (११६५-१०, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पीत पीताँबर तृभवण धणी थम्भ माहि हरि भाखै ॥४॥ (११६५-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥ (११६५-१२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥५॥३॥९॥ (११६५-१२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥ (११६५-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
देखउ राम तुम्हारे कामा ॥१॥ (११६५-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामा सुलताने बाधिला ॥ (११६५-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
देखउ तेरा हरि बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ (११६५-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥ (११६५-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नातरु गरदनि मारउ ठाँइ ॥२॥ (११६५-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥ (११६५-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥३॥ (११६५-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
मेरा कीआ कछू न होइ ॥ (११६५-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
करि है रामु होइ है सोइ ॥४॥ (११६५-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बादिसाहु चड़िओ अहंकारि ॥ (११६५-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गज हसती दीनो चमकारि ॥५॥ (११६५-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
रुदनु करै नामे की माइ ॥ (११६५-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥६॥ (११६५-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥ (११६५-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥७॥ (११६५-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
करै गजिंदु सुंड की चोट ॥ (११६५-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामा उबरै हरि की ओट ॥८॥ (११६५-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
काजी मुलाँ करहि सलामु ॥ (११६५-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥९॥ (११६५-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बादिसाह बेनती सुनेहु ॥ (११६५-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)

पन्ना ११६६

नामे सर भरि सोना लेहु ॥१०॥ (११६६-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥ (११६६-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥११॥ (११६६-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥ (११६६-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामा गावै गुन गोपाल ॥१२॥ (११६६-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥ (११६६-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
तउ नामा हरि करता रहै ॥१३॥ (११६६-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सात घड़ी जब बीती सुणी ॥ (११६६-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)

अजहु न आइओ तृभवण धणी ॥१४॥ (११६६-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
पाखंतण बाज बजाइला ॥ (११६६-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गरुड़ चड़्हे गोबिंद आइला ॥१५॥ (११६६-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥ (११६६-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गरुड़ चड़्हे आए गोपाल ॥१६॥ (११६६-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥ (११६६-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥१७॥ (११६६-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥ (११६६-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सभु कोई देखै पतीआइ ॥१८॥ (११६६-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामा प्रणवै सेल मसेल ॥ (११६६-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥१९॥ (११६६-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥ (११६६-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
ले बादिसाह के आगे धरी ॥२०॥ (११६६-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बादिसाहु महल महि जाइ ॥ (११६६-७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
अउघट की घट लागी आइ ॥२१॥ (११६६-८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
काजी मुलाँ बिनती फुरमाइ ॥ (११६६-८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥२२॥ (११६६-८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥ (११६६-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥२३॥ (११६६-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
इस पतीआ का इहै परवानु ॥ (११६६-९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
साचि सीलि चालहु सुलितान ॥२४॥ (११६६-१०, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥ (११६६-१०, भैरउ, भगत नामदेव जी)
मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥२५॥ (११६६-१०, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥ (११६६-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
त नामदेव का पतीआ जाइ ॥२६॥ (११६६-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामे की कीरति रही संसारि ॥ (११६६-११, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भगत जनाँ ले उधरिआ पारि ॥२७॥ (११६६-१२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥ (११६६-१२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामे नाराइन नाही भेदु ॥२८॥१॥१०॥ (११६६-१२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
घरु २ ॥ (११६६-१३)
जउ गुरदेउ त मिलै मुरारि ॥ (११६६-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त उतरै पारि ॥ (११६६-१३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त बैकुंठ तरै ॥ (११६६-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त जीवत मरै ॥१॥ (११६६-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
सति सति सति सति सति गुरदेव ॥ (११६६-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)

झूठु झूठु झूठु झूठु आन सभ सेव ॥१॥ रहाउ ॥ (११६६-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त नामु दृड़ावै ॥ (११६६-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ न दह दिस धावै ॥ (११६६-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ पंच ते दूरि ॥ (११६६-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ न मरिबो झूरि ॥२॥ (११६६-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त अमृत बानी ॥ (११६६-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त अकथ कहानी ॥ (११६६-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त अमृत देह ॥ (११६६-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ नामु जपि लेहि ॥३॥ (११६६-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ भवन त्रै सूझै ॥ (११६६-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ ऊच पद बूझै ॥ (११६६-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त सीसु अकासि ॥ (११६६-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ सदा साबासि ॥४॥ (११६६-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ सदा बैरागी ॥ (११६६-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ पर निंदा तिआगी ॥ (११६६-१९, भैरउ, भगत नामदेव जी)

पन्ना ११६७

जउ गुरदेउ बुरा भला एक ॥ (११६७-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ लिलाटहि लेख ॥५॥ (११६७-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ कंधु नही हिरै ॥ (११६७-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ देहुरा फिरै ॥ (११६७-१, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त छापरि छाई ॥ (११६७-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ सिहज निकसाई ॥६॥ (११६७-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त अठसठि नाइआ ॥ (११६७-२, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ तनि चक्र लगाइआ ॥ (११६७-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त दुआदस सेवा ॥ (११६७-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ सभै बिखु मेवा ॥७॥ (११६७-३, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त संसा टूटै ॥ (११६७-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त जम ते छूटै ॥ (११६७-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त भउजल तरै ॥ (११६७-४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ त जनमि न मरै ॥८॥ (११६७-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ अठदस बिउहार ॥ (११६७-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जउ गुरदेउ अठारह भार ॥ (११६७-५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बिनु गुरदेउ अवर नही जाई ॥ (११६७-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामदेउ गुर की सरणाई ॥९॥१॥२॥११॥ (११६७-६, भैरउ, भगत नामदेव जी)

भैरउ बाणी रविदास जीउ की घरु २ (११६७-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६७-७)
बिनु देखे उपजै नही आसा ॥ (११६७-८, भैरउ, भगत रविदास जी)
जो दीसै सो होइ बिनासा ॥ (११६७-८, भैरउ, भगत रविदास जी)
बरन सहित जो जापै नामु ॥ (११६७-८, भैरउ, भगत रविदास जी)
सो जोगी केवल निहकामु ॥१॥ (११६७-८, भैरउ, भगत रविदास जी)
परचै रामु रवै जउ कोई ॥ (११६७-९, भैरउ, भगत रविदास जी)
पारसु परसै दुबिधा न होई ॥१॥ रहाउ ॥ (११६७-९, भैरउ, भगत रविदास जी)
सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥ (११६७-९, भैरउ, भगत रविदास जी)
बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥ (११६७-१०, भैरउ, भगत रविदास जी)
मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥ (११६७-१०, भैरउ, भगत रविदास जी)
करता होइ सु अनभै रहै ॥२॥ (११६७-१०, भैरउ, भगत रविदास जी)
फल कारन फूली बनराइ ॥ (११६७-११, भैरउ, भगत रविदास जी)
फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥ (११६७-११, भैरउ, भगत रविदास जी)
गिआनै कारन कर्म अभिआसु ॥ (११६७-११, भैरउ, भगत रविदास जी)
गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥३॥ (११६७-१२, भैरउ, भगत रविदास जी)
घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥ (११६७-१२, भैरउ, भगत रविदास जी)
जीवत मुकत सदा निरबान ॥ (११६७-१२, भैरउ, भगत रविदास जी)
कहि रविदास पर्म बैराग ॥ (११६७-१३, भैरउ, भगत रविदास जी)
रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥४॥१॥ (११६७-१३, भैरउ, भगत रविदास जी)
नामदेव ॥ (११६७-१३)
आउ कलंदर केसवा ॥ (११६७-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
करि अबदाली भेसवा ॥ रहाउ ॥ (११६७-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
जिनि आकास कुलह सिरि कीनी कउसै सपत प्याला ॥ (११६७-१४, भैरउ, भगत नामदेव जी)
चमर पोस का मंदरु तेरा इह बिधि बने गुपाला ॥१॥ (११६७-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
छपन कोटि का पेहनु तेरा सोलह सहस इजारा ॥ (११६७-१५, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भार अठारह मुदगरु तेरा सहनक सभ संसारा ॥२॥ (११६७-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
देही महजिदि मनु मउलाना सहज निवाज गुजारै ॥ (११६७-१६, भैरउ, भगत नामदेव जी)
बीबी कउला सउ काइनु तेरा निरंकार आकारै ॥३॥ (११६७-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
भगति करत मेरे ताल छिनाए किह पहि करउ पुकारा ॥ (११६७-१७, भैरउ, भगत नामदेव जी)
नामे का सुआमी अंतरजामी फिरे सगल बेदेसवा ॥४॥१॥ (११६७-१८, भैरउ, भगत नामदेव जी)

पन्ना ११६८

रागु बसंतु महला १ घरु १ चउपदे दुतुके (११६८-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (११६८-२)

माहा माह मुमारखी चड़िआ सदा बसंतु ॥ (११६८-४, बसंतु, मः १)
परफड़ु चित समालि सोइ सदा सदा गोबिंदु ॥१॥ (११६८-४, बसंतु, मः १)
भोलिआ हउमै सुरति विसारि ॥ (११६८-५, बसंतु, मः १)
हउमै मारि बीचारि मन गुण विचि गुणु लै सारि ॥१॥ रहाउ ॥ (११६८-५, बसंतु, मः १)
कर्म पेडु साखा हरी धरमु फुलु फलु गिआनु ॥ (११६८-६, बसंतु, मः १)
पत परापति छाव घणी चूका मन अभिमानु ॥२॥ (११६८-६, बसंतु, मः १)
अखी कुदरति कन्नी बाणी मुखि आखणु सचु नामु ॥ (११६८-७, बसंतु, मः १)
पति का धनु पूरा होआ लागा सहजि धिआनु ॥३॥ (११६८-७, बसंतु, मः १)
माहा रुती आवणा वेखहु कर्म कमाइ ॥ (११६८-८, बसंतु, मः १)
नानक हरे न सूकही जि गुरमुखि रहे समाइ ॥४॥१॥ (११६८-८, बसंतु, मः १)
महला १ बसंतु ॥ (११६८-९)
रुति आईले सरस बसंत माहि ॥ (११६८-९, बसंतु, मः १)
रंगि राते रवहि सि तेरै चाइ ॥ (११६८-९, बसंतु, मः १)
किसु पूज चड़ावउ लगउ पाइ ॥१॥ (११६८-१०, बसंतु, मः १)
तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥ (११६८-१०, बसंतु, मः १)
जगजीवन जुगति न मिलै काइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६८-१०, बसंतु, मः १)
तेरी मूरति एका बहुतु रूप ॥ (११६८-११, बसंतु, मः १)
किसु पूज चड़ावउ देउ धूप ॥ (११६८-११, बसंतु, मः १)
तेरा अंतु न पाइआ कहा पाइ ॥ (११६८-११, बसंतु, मः १)
तेरा दासनि दासा कहउ राइ ॥२॥ (११६८-१२, बसंतु, मः १)
तेरे सठि सम्बत सभि तीरथा ॥ (११६८-१२, बसंतु, मः १)
तेरा सचु नामु परमेसरा ॥ (११६८-१३, बसंतु, मः १)
तेरी गति अविगति नही जाणीऐ ॥ (११६८-१३, बसंतु, मः १)
अणजाणत नामु वखाणीऐ ॥३॥ (११६८-१३, बसंतु, मः १)
नानकु वेचारा किआ कहै ॥ (११६८-१४, बसंतु, मः १)
सभु लोकु सलाहे एकसै ॥ (११६८-१४, बसंतु, मः १)
सिरु नानक लोका पाव है ॥ (११६८-१४, बसंतु, मः १)
बलिहारी जाउ जेते तेरे नाव है ॥४॥२॥ (११६८-१४, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११६८-१५)
सुइने का चउका कंचन कुआर ॥ (११६८-१५, बसंतु, मः १)
रुपे कीआ कारा बहुतु बिसथारु ॥ (११६८-१५, बसंतु, मः १)
गंगा का उदकु करंते की आगि ॥ (११६८-१६, बसंतु, मः १)
गरुड़ा खाणा दुध सिउ गाडि ॥१॥ (११६८-१६, बसंतु, मः १)
रे मन लेखै कबहू न पाइ ॥ (११६८-१६, बसंतु, मः १)

जामि न भीजै साच नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६६-१, बसंतु, मः १)
दस अठ लीखे होवहि पासि ॥ (११६६-१, बसंतु, मः १)
चारे बेद मुखागर पाठि ॥ (११६६-१, बसंतु, मः १)
पुरबी नावै वरनाँ की दाति ॥ (११६६-२, बसंतु, मः १)
वरत नेम करे दिन राति ॥२॥ (११६६-२, बसंतु, मः १)
काजी मुलाँ होवहि सेख ॥ (११६६-२, बसंतु, मः १)
जोगी जंगम भगवे भेख ॥ (११६६-३, बसंतु, मः १)
को गिरही करमा की संधि ॥ (११६६-३, बसंतु, मः १)
बिनु बूझे सभ खड़ीअसि बंधि ॥३॥ (११६६-३, बसंतु, मः १)
जेते जीअ लिखी सिरि कार ॥ (११६६-३, बसंतु, मः १)
करणी उपरि होवगि सार ॥ (११६६-४, बसंतु, मः १)
हुकमु करहि मूरख गावार ॥ (११६६-४, बसंतु, मः १)
नानक साचे के सिफति भंडार ॥४॥३॥ (११६६-४, बसंतु, मः १)
बसंतु महला ३ तीजा ॥ (११६६-५)
बसत्र उतारि दिगम्बरु होगु ॥ (११६६-५, बसंतु, मः ३)
जटाधारि किआ कमावै जोगु ॥ (११६६-५, बसंतु, मः ३)
मनु निरमलु नही दसवै दुआर ॥ (११६६-६, बसंतु, मः ३)
भ्रमि भ्रमि आवै मूड़्हा वारो वार ॥१॥ (११६६-६, बसंतु, मः ३)
एकु धिआवहु मूड़्ह मना ॥ (११६६-६, बसंतु, मः ३)
पारि उतरि जाहि इक खिनाँ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६६-७, बसंतु, मः ३)
सिमृति सासत्र करहि वखिआण ॥ (११६६-७, बसंतु, मः ३)
नादी बेदी पड़्हहि पुराण ॥ (११६६-७, बसंतु, मः ३)
पाखंड दृसटि मनि कपटु कमाहि ॥ (११६६-८, बसंतु, मः ३)
तिन कै रमईआ नेड़ि नाहि ॥२॥ (११६६-८, बसंतु, मः ३)
जे को ऐसा संजमी होइ ॥ (११६६-८, बसंतु, मः ३)
कृआ विसेख पूजा करेइ ॥ (११६६-९, बसंतु, मः ३)
अंतरि लोभु मनु बिखिआ माहि ॥ (११६६-९, बसंतु, मः ३)
ओइ निरंजनु कैसे पाहि ॥३॥ (११६६-९, बसंतु, मः ३)
कीता होआ करे किआ होइ ॥ (११६६-९, बसंतु, मः ३)
जिस नो आपि चलाए सोइ ॥ (११६६-१०, बसंतु, मः ३)
नदरि करे ताँ भरमु चुकाए ॥ (११६६-१०, बसंतु, मः ३)
हुकमै बूझै ताँ साचा पाए ॥४॥ (११६६-१०, बसंतु, मः ३)
जिसु जीउ अंतरु मैला होइ ॥ (११६६-११, बसंतु, मः ३)

तीर्थ भवै दिसंतर लोइ ॥ (११६९-११, बसंतु, मः ३)
नानक मिलीऐ सतिगुर संग ॥ (११६९-११, बसंतु, मः ३)
तउ भवजल के तूटसि बंध ॥५॥४॥ (११६९-१२, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला १ ॥ (११६९-१२)
सगल भवन तेरी माइआ मोह ॥ (११६९-१२, बसंतु, मः १)
मै अवरु न दीसै सर्ब तोह ॥ (११६९-१२, बसंतु, मः १)
तू सुरि नाथा देवा देव ॥ (११६९-१३, बसंतु, मः १)
हरि नामु मिलै गुर चरन सेव ॥१॥ (११६९-१३, बसंतु, मः १)
मेरे सुंदर गहिर गम्भीर लाल ॥ (११६९-१३, बसंतु, मः १)
गुरमुखि राम नाम गुन गाए तू अपरम्परु सर्ब पाल ॥१॥ रहाउ ॥ (११६९-१४, बसंतु, मः १)
बिनु साध न पाईऐ हरि का संगु ॥ (११६९-१४, बसंतु, मः १)
बिनु गुर मैल मलीन अंगु ॥ (११६९-१५, बसंतु, मः १)
बिनु हरि नाम न सुधु होइ ॥ (११६९-१५, बसंतु, मः १)
गुर सबदि सलाहे साचु सोइ ॥२॥ (११६९-१५, बसंतु, मः १)
जा कउ तू राखहि रखनहार ॥ (११६९-१६, बसंतु, मः १)
सतिगुरू मिलावहि करहि सार ॥ (११६९-१६, बसंतु, मः १)
बिखु हउमै ममता परहराइ ॥ (११६९-१६, बसंतु, मः १)
सभि दूख बिनासे राम राइ ॥३॥ (११६९-१७, बसंतु, मः १)
ऊतम गति मिति हरि गुन सरीर ॥ (११६९-१७, बसंतु, मः १)
गुरमति प्रगटे राम नाम हीर ॥ (११६९-१७, बसंतु, मः १)
लिव लागी नामि तजि दूजा भाउ ॥ (११६९-१८, बसंतु, मः १)
जन नानक हरि गुरु गुर मिलाउ ॥४॥५॥ (११६९-१८, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११६९-१८)
मेरी सखी सहेली सुनहु भाइ ॥ (११६९-१९, बसंतु, मः १)
मेरा पिरु रीसालू संगि साइ ॥ (११६९-१९, बसंतु, मः १)
ओहु अलखु न लखीऐ कहहु काइ ॥ (११६९-१९, बसंतु, मः १)

पन्ना ११७०

गुरि संगि दिखाइओ राम राइ ॥१॥ (११७०-१, बसंतु, मः १)
मिलु सखी सहेली हरि गुन बने ॥ (११७०-१, बसंतु, मः १)
हरि प्रभ संगि खेलहि वर कामनि गुरमुखि खोजत मन मने ॥१॥ रहाउ ॥ (११७०-१, बसंतु, मः १)
मनमुखी दुहागणि नाहि भेउ ॥ (११७०-२, बसंतु, मः १)
ओहु घटि घटि रावै सर्ब प्रेउ ॥ (११७०-२, बसंतु, मः १)
गुरमुखि थिरु चीनै संगि देउ ॥ (११७०-३, बसंतु, मः १)
गुरि नामु दृड़ाइआ जपु जपेउ ॥२॥ (११७०-३, बसंतु, मः १)

बिनु गुर भगति न भाउ होइ ॥ (११७०-३, बसंतु, मः १)
बिनु गुर संत न संगु देइ ॥ (११७०-४, बसंतु, मः १)
बिनु गुर अंधुले धंधु रोइ ॥ (११७०-४, बसंतु, मः १)
मनु गुरमुखि निरमलु मलु सबदि खोइ ॥३॥ (११७०-४, बसंतु, मः १)
गुरि मनु मारिओ करि संजोगु ॥ (११७०-५, बसंतु, मः १)
अहिनिसि रावे भगति जोगु ॥ (११७०-५, बसंतु, मः १)
गुर संत सभा दुखु मिटै रोगु ॥ (११७०-५, बसंतु, मः १)
जन नानक हरि वरु सहज जोगु ॥४॥६॥ (११७०-६, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११७०-६)
आपे कुदरति करे साजि ॥ (११७०-६, बसंतु, मः १)
सचु आपि निबेड़े राजु राजि ॥ (११७०-६, बसंतु, मः १)
गुरमति ऊतम संगि साथि ॥ (११७०-७, बसंतु, मः १)
हरि नामु रसाइणु सहजि आथि ॥१॥ (११७०-७, बसंतु, मः १)
मत बिसरसि रे मन राम बोलि ॥ (११७०-७, बसंतु, मः १)
अपरम्परु अगम अगोचरु गुरमुखि हरि आपि तुलाए अतुलु तोलि ॥१॥ रहाउ ॥ (११७०-८, बसंतु, मः १)
गुर चरन सरेवहि गुरसिख तोर ॥ (११७०-९, बसंतु, मः १)
गुर सेव तरे तजि मेर तोर ॥ (११७०-९, बसंतु, मः १)
नर निंदक लोभी मनि कठोर ॥ (११७०-९, बसंतु, मः १)
गुर सेव न भाई सि चोर चोर ॥२॥ (११७०-१०, बसंतु, मः १)
गुरु तुठा बखसे भगति भाउ ॥ (११७०-१०, बसंतु, मः १)
गुरि तुठै पाईऐ हरि महलि ठाउ ॥ (११७०-१०, बसंतु, मः १)
परहरि निंदा हरि भगति जागु ॥ (११७०-११, बसंतु, मः १)
हरि भगति सुहावी करमि भागु ॥३॥ (११७०-११, बसंतु, मः १)
गुरु मेलि मिलावै करे दाति ॥ (११७०-११, बसंतु, मः १)
गुरसिख पिआरे दिनसु राति ॥ (११७०-१२, बसंतु, मः १)
फलु नामु परापति गुरु तुसि देइ ॥ (११७०-१२, बसंतु, मः १)
कहु नानक पावहि विरले केइ ॥४॥७॥ (११७०-१२, बसंतु, मः १)
बसंतु महला ३ इक तुका ॥ (११७०-१३)
साहिब भावै सेवकु सेवा करै ॥ (११७०-१३, बसंतु, मः ३)
जीवतु मरै सभि कुल उधरै ॥१॥ (११७०-१३, बसंतु, मः ३)
तेरी भगति न छोडउ किआ को हसै ॥ (११७०-१४, बसंतु, मः ३)
साचु नामु मेरै हिरदै वसै ॥१॥ रहाउ ॥ (११७०-१४, बसंतु, मः ३)
जैसे माइआ मोहि प्राणी गलतु रहै ॥ (११७०-१५, बसंतु, मः ३)
तैसे संत जन राम नाम रवत रहै ॥२॥ (११७०-१५, बसंतु, मः ३)
मै मूरख मुगध ऊपरि करहु दइआ ॥ (११७०-१५, बसंतु, मः ३)

तउ सरणागति रहउ पइआ ॥३॥ (११७०-१६, बसंतु, मः ३)
कहतु नानकु संसार के निहफल कामा ॥ (११७०-१६, बसंतु, मः ३)
गुर प्रसादि को पावै अमृत नामा ॥४॥८॥ (११७०-१७, बसंतु, मः ३)
महला १ बसंतु हिंडोल घरु २ (११७०-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११७०-१८)
साल ग्राम बिप पूजि मनावहु सुकृतु तुलसी माला ॥ (११७०-१९, बसंतु हिंडोल, मः १)
राम नामु जपि बेड़ा बाँधहु दइआ करहु दइआला ॥१॥ (११७०-१९, बसंतु हिंडोल, मः १)

पन्ना ११७१

काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥ (११७१-१, बसंतु हिंडोल, मः १)
काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (११७१-१, बसंतु हिंडोल, मः १)
कर हरिहट माल टिंड परोवहु तिसु भीतरि मनु जोवहु ॥ (११७१-२, बसंतु हिंडोल, मः १)
अमृतु सिंचहु भरहु किआरे तउ माली के होवहु ॥२॥ (११७१-२, बसंतु हिंडोल, मः १)
कामु क्रोधु दुइ करहु बसोले गोडहु धरती भाई ॥ (११७१-३, बसंतु हिंडोल, मः १)
जिउ गोडहु तिउ तुम्ह सुख पावहु किरतु न मेटिआ जाई ॥३॥ (११७१-३, बसंतु हिंडोल, मः १)
बगुले ते फुनि हंसुला होवै जे तू करहि दइआला ॥ (११७१-४, बसंतु हिंडोल, मः १)
प्रणवति नानकु दासनि दासा दइआ करहु दइआला ॥४॥१॥९॥ (११७१-४, बसंतु हिंडोल, मः १)
बसंतु महला १ हिंडोल ॥ (११७१-५)
साहुरड़ी वथु सभु किछु साझी पेवकड़ै धन वखे ॥ (११७१-५, बसंतु हिंडोल, मः १)
आपि कुचजी दोसु न देऊ जाणा नाही रखे ॥१॥ (११७१-६, बसंतु हिंडोल, मः १)
मेरे साहिबा हउ आपे भरमि भुलाणी ॥ (११७१-६, बसंतु हिंडोल, मः १)
अखर लिखे सेई गावा अवर न जाणा बाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (११७१-७, बसंतु हिंडोल, मः १)
कढि कसीदा पहिरहि चोली ताँ तुम्ह जाणहु नारी ॥ (११७१-७, बसंतु हिंडोल, मः १)
जे घरु राखहि बुरा न चाखहि होवहि कंत पिआरी ॥२॥ (११७१-८, बसंतु हिंडोल, मः १)
जे तूं पड़िआ पंडितु बीना दुइ अखर दुइ नावा ॥ (११७१-८, बसंतु हिंडोल, मः १)
प्रणवति नानकु एकु लंघाए जे करि सचि समावाँ ॥३॥२॥१०॥ (११७१-९, बसंतु हिंडोल, मः १)
बसंतु हिंडोल महला १ ॥ (११७१-९)
राजा बालकु नगरी काची दुसटा नालि पिआरो ॥ (११७१-१०, बसंतु हिंडोल, मः १)
दुइ माई दुइ बापा पड़ीअहि पंडित करहु बीचारो ॥१॥ (११७१-१०, बसंतु हिंडोल, मः १)
सुआमी पंडिता तुम्ह देहु मती ॥ (११७१-११, बसंतु हिंडोल, मः १)
किन बिधि पावउ प्रानपती ॥१॥ रहाउ ॥ (११७१-११, बसंतु हिंडोल, मः १)
भीतरि अगनि बनासपति मउली सागरु पंडै पाइआ ॥ (११७१-१२, बसंतु हिंडोल, मः १)
चंदु सूरजु दुइ घर ही भीतरि ऐसा गिआनु न पाइआ ॥२॥ (११७१-१२, बसंतु हिंडोल, मः १)
राम रवंता जाणीऐ इक माई भोगु करेइ ॥ (११७१-१३, बसंतु हिंडोल, मः १)
ता के लखण जाणीअहि खिमा धनु संग्रहेइ ॥३॥ (११७१-१३, बसंतु हिंडोल, मः १)

कहिआ सुणहि न खाइआ मानहि तिन्हा ही सेती वासा ॥ (११७१-१४, बसंतु हिंडोल, मः १)
प्रणवति नानकु दासनि दासा खिनु तोला खिनु मासा ॥४॥३॥११॥ (११७१-१४, बसंतु हिंडोल, मः १)
बसंतु हिंडोल महला १ ॥ (११७१-१५)
साचा साहु गुरू सुखदाता हरि मेले भुख गवाए ॥ (११७१-१५, बसंतु हिंडोल, मः १)
करि किरपा हरि भगति दृड़ाए अनदिनु हरि गुण गाए ॥१॥ (११७१-१६, बसंतु हिंडोल, मः १)
मत भूलहि रे मन चेति हरी ॥ (११७१-१६, बसंतु हिंडोल, मः १)
बिनु गुर मुकति नाही त्रै लोई गुरमुखि पाईऐ नामु हरी ॥१॥ रहाउ ॥ (११७१-१७, बसंतु हिंडोल, मः १)
बिनु भगती नही सतिगुरु पाईऐ बिनु भागा नही भगति हरी ॥ (११७१-१७, बसंतु हिंडोल, मः १)
बिनु भागा सतसंगु न पाईऐ करमि मिलै हरि नामु हरी ॥२॥ (११७१-१८, बसंतु हिंडोल, मः १)
घटि घटि गुपतु उपाए वेखै परगटु गुरमुखि संत जना ॥ (११७१-१९, बसंतु हिंडोल, मः १)
हरि हरि करहि सु हरि रंगि भीने हरि जलु अमृत नामु मना ॥३॥ (११७१-१९, बसंतु हिंडोल, मः १)

पन्ना ११७२

जिन कउ तखति मिलै वडिआई गुरमुखि से प्रधान कीए ॥ (११७२-१, बसंतु हिंडोल, मः १)
पारसु भेटि भए से पारस नानक हरि गुर संगि थीए ॥४॥४॥१२॥ (११७२-१, बसंतु हिंडोल, मः १)
बसंतु महला ३ घरु १ दुतुके (११७२-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११७२-३)
माहा रुती महि सद बसंतु ॥ (११७२-४, बसंतु, मः ३)
जितु हरिआ सभु जीअ जंतु ॥ (११७२-४, बसंतु, मः ३)
किआ हउ आखा किर्म जंतु ॥ (११७२-४, बसंतु, मः ३)
तेरा किनै न पाइआ आदि अंतु ॥१॥ (११७२-४, बसंतु, मः ३)
तै साहिब की करहि सेव ॥ (११७२-५, बसंतु, मः ३)
पर्म सुख पावहि आतम देव ॥१॥ रहाउ ॥ (११७२-५, बसंतु, मः ३)
करमु होवै ताँ सेवा करै ॥ (११७२-६, बसंतु, मः ३)
गुर परसादी जीवत मरै ॥ (११७२-६, बसंतु, मः ३)
अनदिनु साचु नामु उचरै ॥ (११७२-६, बसंतु, मः ३)
इन बिधि प्राणी दुतरु तरै ॥२॥ (११७२-६, बसंतु, मः ३)
बिखु अमृतु करतारि उपाए ॥ (११७२-७, बसंतु, मः ३)
संसार बिरख कउ दुइ फल लाए ॥ (११७२-७, बसंतु, मः ३)
आपे करता करे कराए ॥ (११७२-७, बसंतु, मः ३)
जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥३॥ (११७२-८, बसंतु, मः ३)
नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ (११७२-८, बसंतु, मः ३)
अमृत नामु आपे देइ ॥ (११७२-८, बसंतु, मः ३)
बिखिआ की बासना मनहि करेइ ॥ (११७२-९, बसंतु, मः ३)
अपणा भाणा आपि करेइ ॥४॥१॥ (११७२-९, बसंतु, मः ३)

बसंतु महला ३ ॥ (११७२-९)
राते साचि हरि नामि निहाला ॥ (११७२-९, बसंतु, मः ३)
दइआ करहु प्रभ दीन दइआला ॥ (११७२-१०, बसंतु, मः ३)
तिसु बिनु अवरु नही मै कोइ ॥ (११७२-१०, बसंतु, मः ३)
जिउ भावै तिउ राखै सोइ ॥१॥ (११७२-१०, बसंतु, मः ३)
गुर गोपाल मेरै मनि भाए ॥ (११७२-११, बसंतु, मः ३)
रहि न सकउ दरसन देखे बिनु सहजि मिलउ गुरु मेलि मिलाए ॥१॥ रहाउ ॥ (११७२-११, बसंतु, मः ३)
इहु मनु लोभी लोभि लुभाना ॥ (११७२-१२, बसंतु, मः ३)
राम बिसारि बहुरि पछुताना ॥ (११७२-१२, बसंतु, मः ३)
बिछुरत मिलाइ गुर सेव राँगे ॥ (११७२-१२, बसंतु, मः ३)
हरि नामु दीओ मसतकि वडभागे ॥२॥ (११७२-१३, बसंतु, मः ३)
पउण पाणी की इह देह सरीरा ॥ (११७२-१३, बसंतु, मः ३)
हउमै रोगु कठिन तनि पीरा ॥ (११७२-१४, बसंतु, मः ३)
गुरमुखि राम नाम दारू गुण गाइआ ॥ (११७२-१४, बसंतु, मः ३)
करि किरपा गुरि रोगु गवाइआ ॥३॥ (११७२-१४, बसंतु, मः ३)
चारि नदीआ अगनी तनि चारे ॥ (११७२-१५, बसंतु, मः ३)
तृसना जलत जले अहंकारे ॥ (११७२-१५, बसंतु, मः ३)
गुरि राखे वडभागी तारे ॥ (११७२-१५, बसंतु, मः ३)
जन नानक उरि हरि अमृतु धारे ॥४॥२॥ (११७२-१६, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७२-१६)
हरि सेवे सो हरि का लोगु ॥ (११७२-१६, बसंतु, मः ३)
साचु सहजु कदे न होवै सोगु ॥ (११७२-१६, बसंतु, मः ३)
मनमुख मुए नाही हरि मन माहि ॥ (११७२-१७, बसंतु, मः ३)
मरि मरि जम्महि भी मरि जाहि ॥१॥ (११७२-१७, बसंतु, मः ३)
से जन जीवे जिन हरि मन माहि ॥ (११७२-१८, बसंतु, मः ३)
साचु सम्हालहि साचि समाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (११७२-१८, बसंतु, मः ३)
हरि न सेवहि ते हरि ते दूरि ॥ (११७२-१८, बसंतु, मः ३)
दिसंतरु भवहि सिरि पावहि धूरि ॥ (११७२-१९, बसंतु, मः ३)
हरि आपे जन लीए लाइ ॥ (११७२-१९, बसंतु, मः ३)
तिन सदा सुखु है तिलु न तमाइ ॥२॥ (११७२-१९, बसंतु, मः ३)

पन्ना ११७३

नदरि करे चूकै अभिमानु ॥ (११७३-१, बसंतु, मः ३)
साची दरगह पावै मानु ॥ (११७३-१, बसंतु, मः ३)
हरि जीउ वेखै सद हजूरि ॥ (११७३-१, बसंतु, मः ३)

गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥३॥ (११७३-२, बसंतु, मः ३)
जीअ जंत की करे प्रतिपाल ॥ (११७३-२, बसंतु, मः ३)
गुर परसादी सद सम्हाल ॥ (११७३-२, बसंतु, मः ३)
दरि साचै पति सिउ घरि जाइ ॥ (११७३-२, बसंतु, मः ३)
नानक नामि वडाई पाइ ॥४॥३॥ (११७३-३, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७३-३)
अंतरि पूजा मन ते होइ ॥ (११७३-३, बसंतु, मः ३)
एको वेखै अउरु न कोइ ॥ (११७३-४, बसंतु, मः ३)
दूजै लोकी बहुतु दुखु पाइआ ॥ (११७३-४, बसंतु, मः ३)
सतिगुरि मैनो एकु दिखाइआ ॥१॥ (११७३-४, बसंतु, मः ३)
मेरा प्रभु मउलिआ सद बसंतु ॥ (११७३-५, बसंतु, मः ३)
इहु मनु मउलिआ गाइ गुण गोबिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (११७३-५, बसंतु, मः ३)
गुर पूछहु तुम्ह करहु बीचारु ॥ (११७३-५, बसंतु, मः ३)
ताँ प्रभ साचे लगै पिआरु ॥ (११७३-६, बसंतु, मः ३)
आपु छोडि होहि दासत भाइ ॥ (११७३-६, बसंतु, मः ३)
तउ जगजीवनु वसै मनि आइ ॥२॥ (११७३-६, बसंतु, मः ३)
भगति करे सद वेखै हजूरि ॥ (११७३-७, बसंतु, मः ३)
मेरा प्रभु सद रहिआ भरपूरि ॥ (११७३-७, बसंतु, मः ३)
इसु भगती का कोई जाणै भेउ ॥ (११७३-७, बसंतु, मः ३)
सभु मेरा प्रभु आतम देउ ॥३॥ (११७३-८, बसंतु, मः ३)
आपे सतिगुरु मेलि मिलाए ॥ (११७३-८, बसंतु, मः ३)
जगजीवन सिउ आपि चितु लाए ॥ (११७३-८, बसंतु, मः ३)
मनु तनु हरिआ सहजि सुभाए ॥ (११७३-९, बसंतु, मः ३)
नानक नामि रहे लिव लाए ॥४॥४॥ (११७३-९, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७३-९)
भगति वछलु हरि वसै मनि आइ ॥ (११७३-१०, बसंतु, मः ३)
गुर किरपा ते सहज सुभाइ ॥ (११७३-१०, बसंतु, मः ३)
भगति करे विचहु आपु खोइ ॥ (११७३-१०, बसंतु, मः ३)
तद ही साचि मिलावा होइ ॥१॥ (११७३-११, बसंतु, मः ३)
भगत सोहहि सदा हरि प्रभ दुआरि ॥ (११७३-११, बसंतु, मः ३)
गुर कै हेति साचै प्रेम पिआरि ॥१॥ रहाउ ॥ (११७३-११, बसंतु, मः ३)
भगति करे सो जनु निरमलु होइ ॥ (११७३-१२, बसंतु, मः ३)
गुर सबदी विचहु हउमै खोइ ॥ (११७३-१२, बसंतु, मः ३)
हरि जीउ आपि वसै मनि आइ ॥ (११७३-१२, बसंतु, मः ३)
सदा साँति सुखि सहजि समाइ ॥२॥ (११७३-१३, बसंतु, मः ३)

साचि रते तिन सद बसंत ॥ (११७३-१३, बसंतु, मः ३)
मनु तनु हरिआ रवि गुण गुविंद ॥ (११७३-१३, बसंतु, मः ३)
बिनु नावै सूका संसारु ॥ (११७३-१४, बसंतु, मः ३)
अगनि तृसना जलै वारो वार ॥३॥ (११७३-१४, बसंतु, मः ३)
सोई करे जि हरि जीउ भावै ॥ (११७३-१४, बसंतु, मः ३)
सदा सुखु सरीरि भाणै चितु लावै ॥ (११७३-१५, बसंतु, मः ३)
अपणा प्रभु सेवे सहजि सुभाइ ॥ (११७३-१५, बसंतु, मः ३)
नानक नामु वसै मनि आइ ॥४॥५॥ (११७३-१५, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७३-१६)
माइआ मोहु सबदि जलाए ॥ (११७३-१६, बसंतु, मः ३)
मनु तनु हरिआ सतिगुर भाए ॥ (११७३-१६, बसंतु, मः ३)
सफलिओु बिरखु हरि कै दुआरि ॥ (११७३-१६, बसंतु, मः ३)
साची बाणी नाम पिआरि ॥१॥ (११७३-१७, बसंतु, मः ३)
ए मन हरिआ सहज सुभाइ ॥ (११७३-१७, बसंतु, मः ३)
सच फलु लागै सतिगुर भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७३-१७, बसंतु, मः ३)
आपे नेड़ै आपे दूरि ॥ (११७३-१८, बसंतु, मः ३)
गुर कै सबदि वेखै सद हजूरि ॥ (११७३-१८, बसंतु, मः ३)
छाव घणी फूली बनराइ ॥ (११७३-१८, बसंतु, मः ३)
गुरमुखि बिगसै सहजि सुभाइ ॥२॥ (११७३-१९, बसंतु, मः ३)
अनदिनु कीरतनु करहि दिन राति ॥ (११७३-१९, बसंतु, मः ३)
सतिगुरि गवाई विचहु जूठि भराँति ॥ (११७३-१९, बसंतु, मः ३)

पन्ना ११७४

परपंच वेखि रहिआ विसमादु ॥ (११७४-१, बसंतु, मः ३)
गुरमुखि पाईऐ नाम प्रसादु ॥३॥ (११७४-१, बसंतु, मः ३)
आपे करता सभि रस भोग ॥ (११७४-२, बसंतु, मः ३)
जो किछु करे सोई परु होग ॥ (११७४-२, बसंतु, मः ३)
वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ (११७४-२, बसंतु, मः ३)
नानक मिलीऐ सबदु कमाइ ॥४॥६॥ (११७४-२, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७४-३)
पूरै भागि सचु कार कमावै ॥ (११७४-३, बसंतु, मः ३)
एको चेतै फिरि जोनि न आवै ॥ (११७४-३, बसंतु, मः ३)
सफल जनमु इसु जग महि आइआ ॥ (११७४-४, बसंतु, मः ३)
साचि नामि सहजि समाइआ ॥१॥ (११७४-४, बसंतु, मः ३)
गुरमुखि कार करहु लिव लाइ ॥ (११७४-४, बसंतु, मः ३)

हरि नामु सेवहु विचहु आपु गवाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७४-५, बसंतु, मः ३)
तिसु जन की है साची बाणी ॥ (११७४-५, बसंतु, मः ३)
गुर कै सबदि जग माहि समाणी ॥ (११७४-५, बसंतु, मः ३)
चहु जुग पसरी साची सोइ ॥ (११७४-६, बसंतु, मः ३)
नामि रता जनु परगटु होइ ॥२॥ (११७४-६, बसंतु, मः ३)
इकि साचै सबदि रहे लिव लाइ ॥ (११७४-६, बसंतु, मः ३)
से जन साचे साचै भाइ ॥ (११७४-७, बसंतु, मः ३)
साचु धिआइनि देखि हजूरि ॥ (११७४-७, बसंतु, मः ३)
संत जना की पग पंकज धूरि ॥३॥ (११७४-७, बसंतु, मः ३)
एको करता अवरु न कोइ ॥ (११७४-८, बसंतु, मः ३)
गुर सबदी मेलावा होइ ॥ (११७४-८, बसंतु, मः ३)
जिनि सचु सेविआ तिनि रसु पाइआ ॥ (११७४-८, बसंतु, मः ३)
नानक सहजे नामि समाइआ ॥४॥७॥ (११७४-९, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७४-९)
भगति करहि जन देखि हजूरि ॥ (११७४-९, बसंतु, मः ३)
संत जना की पग पंकज धूरि ॥ (११७४-१०, बसंतु, मः ३)
हरि सेती सद रहहि लिव लाइ ॥ (११७४-१०, बसंतु, मः ३)
पूरै सतिगुरि दीआ बुझाइ ॥१॥ (११७४-१०, बसंतु, मः ३)
दासा का दासु विरला कोई होइ ॥ (११७४-११, बसंतु, मः ३)
ऊतम पदवी पावै सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७४-११, बसंतु, मः ३)
एको सेवहु अवरु न कोइ ॥ (११७४-११, बसंतु, मः ३)
जितु सेविऐ सदा सुखु होइ ॥ (११७४-१२, बसंतु, मः ३)
ना ओहु मरै न आवै जाइ ॥ (११७४-१२, बसंतु, मः ३)
तिसु बिनु अवरु सेवी किउ माइ ॥२॥ (११७४-१२, बसंतु, मः ३)
से जन साचे जिनी साचु पछाणिआ ॥ (११७४-१३, बसंतु, मः ३)
आपु मारि सहजे नामि समाणिआ ॥ (११७४-१३, बसंतु, मः ३)
गुरमुखि नामु परापति होइ ॥ (११७४-१३, बसंतु, मः ३)
मनु निरमलु निर्मल सचु सोइ ॥३॥ (११७४-१४, बसंतु, मः ३)
जिनि गिआनु कीआ तिसु हरि तू जाणु ॥ (११७४-१४, बसंतु, मः ३)
साच सबदि प्रभु एकु सिञाणु ॥ (११७४-१५, बसंतु, मः ३)
हरि रसु चाखै ताँ सुधि होइ ॥ (११७४-१५, बसंतु, मः ३)
नानक नामि रते सचु सोइ ॥४॥८॥ (११७४-१५, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७४-१६)
नामि रते कुलाँ का करहि उधारु ॥ (११७४-१६, बसंतु, मः ३)
साची बाणी नाम पिआरु ॥ (११७४-१६, बसंतु, मः ३)

मनमुख भूले काहे आए ॥ (११७४-१६, बसंतु, मः ३)
नामहु भूले जनमु गवाए ॥१॥ (११७४-१७, बसंतु, मः ३)
जीवत मरै मरि मरणु सवारै ॥ (११७४-१७, बसंतु, मः ३)
गुर कै सबदि साचु उर धारै ॥१॥ रहाउ ॥ (११७४-१७, बसंतु, मः ३)
गुरमुखि सचु भोजनु पवितु सरीरा ॥ (११७४-१८, बसंतु, मः ३)
मनु निरमलु सद गुणी गहीरा ॥ (११७४-१८, बसंतु, मः ३)
जम्मै मरै न आवै जाइ ॥ (११७४-१९, बसंतु, मः ३)
गुर परसादी साचि समाइ ॥२॥ (११७४-१९, बसंतु, मः ३)
साचा सेवहु साचु पछाणै ॥ (११७४-१९, बसंतु, मः ३)
गुर कै सबदि हरि दरि नीसाणै ॥ (११७४-१९, बसंतु, मः ३)

पन्ना ११७५

दरि साचै सचु सोभा होइ ॥ (११७५-१, बसंतु, मः ३)
निज घरि वासा पावै सोइ ॥३॥ (११७५-१, बसंतु, मः ३)
आपि अभुलु सचा सचु सोइ ॥ (११७५-१, बसंतु, मः ३)
होरि सभि भूलहि दूजै पति खोइ ॥ (११७५-२, बसंतु, मः ३)
साचा सेवहु साची बाणी ॥ (११७५-२, बसंतु, मः ३)
नानक नामे साचि समाणी ॥४॥६॥ (११७५-२, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७५-३)
बिनु करमा सभ भरमि भुलाई ॥ (११७५-३, बसंतु, मः ३)
माइआ मोहि बहुतु दुखु पाई ॥ (११७५-३, बसंतु, मः ३)
मनमुख अंधे ठउर न पाई ॥ (११७५-४, बसंतु, मः ३)
बिसटा का कीड़ा बिसटा माहि समाई ॥१॥ (११७५-४, बसंतु, मः ३)
हुकमु मन्ने सो जनु परवाणु ॥ (११७५-४, बसंतु, मः ३)
गुर कै सबदि नामि नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (११७५-५, बसंतु, मः ३)
साचि रते जिन्हा धुरि लिखि पाइआ ॥ (११७५-५, बसंतु, मः ३)
हरि का नामु सदा मनि भाइआ ॥ (११७५-५, बसंतु, मः ३)
सतिगुर की बाणी सदा सुखु होइ ॥ (११७५-६, बसंतु, मः ३)
जोती जोति मिलाए सोइ ॥२॥ (११७५-६, बसंतु, मः ३)
एकु नामु तारे संसारु ॥ (११७५-६, बसंतु, मः ३)
गुर परसादी नाम पिआरु ॥ (११७५-७, बसंतु, मः ३)
बिनु नामै मुकति किनै न पाई ॥ (११७५-७, बसंतु, मः ३)
पूरे गुर ते नामु पलै पाई ॥३॥ (११७५-७, बसंतु, मः ३)
सो बूझै जिसु आपि बुझाए ॥ (११७५-८, बसंतु, मः ३)
सतिगुर सेवा नामु दृड़्हाए ॥ (११७५-८, बसंतु, मः ३)

जिन इकु जाता से जन परवाणु ॥ (११७५-८, बसंतु, मः ३)
नानक नामि रते दरि नीसाणु ॥४॥१०॥ (११७५-९, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७५-९)
कृपा करे सतिगुरू मिलाए ॥ (११७५-९, बसंतु, मः ३)
आपे आपि वसै मनि आए ॥ (११७५-१०, बसंतु, मः ३)
निहचल मति सदा मन धीर ॥ (११७५-१०, बसंतु, मः ३)
हरि गुण गावै गुणी गहीर ॥१॥ (११७५-१०, बसंतु, मः ३)
नामहु भूले मरहि बिखु खाइ ॥ (११७५-११, बसंतु, मः ३)
बृथा जनमु फिरि आवहि जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७५-११, बसंतु, मः ३)
बहु भेख करहि मनि साँति न होइ ॥ (११७५-११, बसंतु, मः ३)
बहु अभिमानि अपणी पति खोइ ॥ (११७५-१२, बसंतु, मः ३)
से वडभागी जिन सबदु पछाणिआ ॥ (११७५-१२, बसंतु, मः ३)
बाहरि जादा घर महि आणिआ ॥२॥ (११७५-१२, बसंतु, मः ३)
घर महि वसतु अगम अपारा ॥ (११७५-१३, बसंतु, मः ३)
गुरमति खोजहि सबदि बीचारा ॥ (११७५-१३, बसंतु, मः ३)
नामु नव निधि पाई घर ही माहि ॥ (११७५-१४, बसंतु, मः ३)
सदा रंगि राते सचि समाहि ॥३॥ (११७५-१४, बसंतु, मः ३)
आपि करे किछु करणु न जाइ ॥ (११७५-१४, बसंतु, मः ३)
आपे भावै लए मिलाइ ॥ (११७५-१५, बसंतु, मः ३)
तिस ते नेड़ै नाही को दूरि ॥ (११७५-१५, बसंतु, मः ३)
नानक नामि रहिआ भरपूरि ॥४॥११॥ (११७५-१५, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७५-१६)
गुर सबदी हरि चेति सुभाइ ॥ (११७५-१६, बसंतु, मः ३)
राम नाम रसि रहै अघाइ ॥ (११७५-१६, बसंतु, मः ३)
कोट कोटंतर के पाप जलि जाहि ॥ (११७५-१६, बसंतु, मः ३)
जीवत मरहि हरि नामि समाहि ॥१॥ (११७५-१७, बसंतु, मः ३)
हरि की दाति हरि जीउ जाणै ॥ (११७५-१७, बसंतु, मः ३)
गुर कै सबदि इहु मनु मउलिआ हरि गुणदाता नामु वखाणै ॥१॥ रहाउ ॥ (११७५-१७, बसंतु, मः ३)
भगवै वेसि भ्रमि मुकति न होइ ॥ (११७५-१८, बसंतु, मः ३)
बहु संजमि साँति न पावै कोइ ॥ (११७५-१८, बसंतु, मः ३)
गुरमति नामु परापति होइ ॥ (११७५-१९, बसंतु, मः ३)
वडभागी हरि पावै सोइ ॥२॥ (११७५-१९, बसंतु, मः ३)
कलि महि राम नामि वडिआई ॥ (११७५-१९, बसंतु, मः ३)

गुर पूरे ते पाइआ जाई ॥ (११७६-१, बसंतु, मः ३)
नामि रते सदा सुखु पाई ॥ (११७६-१, बसंतु, मः ३)
बिनु नामै हउमै जलि जाई ॥३॥ (११७६-१, बसंतु, मः ३)
वडभागी हरि नामु बीचारा ॥ (११७६-२, बसंतु, मः ३)
छूटै राम नामि दुखु सारा ॥ (११७६-२, बसंतु, मः ३)
हिरदै वसिआ सु बाहरि पासारा ॥ (११७६-२, बसंतु, मः ३)
नानक जाणै सभु उपावणहारा ॥४॥१२॥ (११७६-३, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ इक तुके ॥ (११७६-३)
तेरा कीआ किर्म जंतु ॥ (११७६-३, बसंतु, मः ३)
देहि त जापी आदि मंतु ॥१॥ (११७६-४, बसंतु, मः ३)
गुण आखि वीचारी मेरी माइ ॥ (११७६-४, बसंतु, मः ३)
हरि जपि हरि कै लगउ पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७६-४, बसंतु, मः ३)
गुर प्रसादि लागे नाम सुआदि ॥ (११७६-५, बसंतु, मः ३)
काहे जनमु गवावहु वैरि वादि ॥२॥ (११७६-५, बसंतु, मः ३)
गुरि किरपा कीन्ी चूका अभिमानु ॥ (११७६-५, बसंतु, मः ३)
सहज भाइ पाइआ हरि नामु ॥३॥ (११७६-६, बसंतु, मः ३)
ऊतमु ऊचा सबद कामु ॥ (११७६-६, बसंतु, मः ३)
नानकु वखाणै साचु नामु ॥४॥१॥१३॥ (११७६-६, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७६-७)
बनसपति मउली चड़िआ बसंतु ॥ (११७६-७, बसंतु, मः ३)
इहु मनु मउलिआ सतिगुरू संगि ॥१॥ (११७६-७, बसंतु, मः ३)
तुम् साचु धिआवहु मुगध मना ॥ (११७६-८, बसंतु, मः ३)
ताँ सुखु पावहु मेरे मना ॥१॥ रहाउ ॥ (११७६-८, बसंतु, मः ३)
इतु मनि मउलिऐ भइआ अनंदु ॥ (११७६-८, बसंतु, मः ३)
अमृत फलु पाइआ नामु गोबिंद ॥२॥ (११७६-९, बसंतु, मः ३)
एको एकु सभु आखि वखाणै ॥ (११७६-९, बसंतु, मः ३)
हुकमु बूझै ताँ एको जाणै ॥३॥ (११७६-१०, बसंतु, मः ३)
कहत नानकु हउमै कहै न कोइ ॥ (११७६-१०, बसंतु, मः ३)
आखणु वेखणु सभु साहिब ते होइ ॥४॥२॥१४॥ (११७६-१०, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७६-११)
सभि जुग तेरे कीते होए ॥ (११७६-११, बसंतु, मः ३)
सतिगुरु भेटै मति बुधि होए ॥१॥ (११७६-११, बसंतु, मः ३)
हरि जीउ आपे लैहु मिलाइ ॥ (११७६-११, बसंतु, मः ३)

गुर कै सबदि सच नामि समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७६-१२, बसंतु, मः ३)
मनि बसंतु हरे सभि लोइ ॥ (११७६-१२, बसंतु, मः ३)
फलहि फुलीअहि राम नामि सुखु होइ ॥२॥ (११७६-१३, बसंतु, मः ३)
सदा बसंतु गुर सबदु वीचारे ॥ (११७६-१३, बसंतु, मः ३)
राम नामु राखै उर धारे ॥३॥ (११७६-१३, बसंतु, मः ३)
मनि बसंतु तनु मनु हरिआ होइ ॥ (११७६-१४, बसंतु, मः ३)
नानक इहु तनु बिरखु राम नामु फलु पाए सोइ ॥४॥३॥१५॥ (११७६-१४, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७६-१५)
तिन्ह बसंतु जो हरि गुण गाइ ॥ (११७६-१५, बसंतु, मः ३)
पूरै भागि हरि भगति कराइ ॥१॥ (११७६-१५, बसंतु, मः ३)
इसु मन कउ बसंत की लगै न सोइ ॥ (११७६-१५, बसंतु, मः ३)
इहु मनु जलिआ दूजै दोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७६-१६, बसंतु, मः ३)
इहु मनु धंधै बाँधा कर्म कमाइ ॥ (११७६-१६, बसंतु, मः ३)
माइआ मूठा सदा बिललाइ ॥२॥ (११७६-१७, बसंतु, मः ३)
इहु मनु छूटै जाँ सतिगुरु भेटै ॥ (११७६-१७, बसंतु, मः ३)
जमकाल की फिरि आवै न फेटै ॥३॥ (११७६-१७, बसंतु, मः ३)
इहु मनु छूटा गुरि लीआ छडाइ ॥ (११७६-१८, बसंतु, मः ३)
नानक माइआ मोहु सबदि जलाइ ॥४॥४॥१६॥ (११७६-१८, बसंतु, मः ३)
बसंतु महला ३ ॥ (११७६-१९)
बसंतु चड़िआ फूली बनराइ ॥ (११७६-१९, बसंतु, मः ३)
एहि जीअ जंत फूलहि हरि चितु लाइ ॥१॥ (११७६-१९, बसंतु, मः ३)

पन्ना ११७७

इन बिधि इहु मनु हरिआ होइ ॥ (११७७-१, बसंतु, मः ३)
हरि हरि नामु जपै दिनु राती गुरमुखि हउमै कढै धोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७७-१, बसंतु, मः ३)
सतिगुर बाणी सबदु सुणाए ॥ (११७७-२, बसंतु, मः ३)
इहु जगु हरिआ सतिगुर भाए ॥२॥ (११७७-२, बसंतु, मः ३)
फल फूल लागे जाँ आपे लाए ॥ (११७७-२, बसंतु, मः ३)
मूलि लगै ताँ सतिगुरु पाए ॥३॥ (११७७-३, बसंतु, मः ३)
आपि बसंतु जगतु सभु वाड़ी ॥ (११७७-३, बसंतु, मः ३)
नानक पूरै भागि भगति निराली ॥४॥५॥१७॥ (११७७-३, बसंतु, मः ३)
बसंतु हिंडोल महला ३ घरु २ (११७७-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११७७-५)
गुर की बाणी विटहु वारिआ भाई गुर सबद विटहु बलि जाई ॥ (११७७-६, बसंतु हिंडोल, मः ३)
गुरु सालाही सद अपणा भाई गुर चरणी चितु लाई ॥१॥ (११७७-६, बसंतु हिंडोल, मः ३)

मेरे मन राम नामि चितु लाइ ॥ (११७७-७, बसंतु हिंडोल, मः ३)
मनु तनु तेरा हरिआ होवै इकु हरि नामा फलु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७७-७, बसंतु हिंडोल, मः ३)
गुरि राखे से उबरे भाई हरि रसु अमृतु पीआइ ॥ (११७७-८, बसंतु हिंडोल, मः ३)
विचहु हउमै दुखु उठि गइआ भाई सुखु वुठा मनि आइ ॥२॥ (११७७-८, बसंतु हिंडोल, मः ३)
धुरि आपे जिन्हा नो बखसिओनु भाई सबदे लइअनु मिलाइ ॥ (११७७-९, बसंतु हिंडोल, मः ३)
धूड़ि तिन्हा की अघुलीऐ भाई सतसंगति मेलि मिलाइ ॥३॥ (११७७-१०, बसंतु हिंडोल, मः ३)
आपि कराए करे आपि भाई जिनि हरिआ कीआ सभु कोइ ॥ (११७७-१०, बसंतु हिंडोल, मः ३)
नानक मनि तनि सुखु सद वसै भाई सबदि मिलावा होइ ॥४॥१॥१८॥१२॥१८॥३०॥ (११७७-११, बसंतु हिंडोल, मः ३)
रागु बसंतु महला ४ घरु १ इक तुके (११७७-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११७७-१३)
जिउ पसरी सूरज किरणि जोति ॥ (११७७-१४, बसंतु, मः ४)
तिउ घटि घटि रमईआ ओति पोति ॥१॥ (११७७-१४, बसंतु, मः ४)
एको हरि रविआ स्रब थाइ ॥ (११७७-१४, बसंतु, मः ४)
गुर सबदी मिलीऐ मेरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७७-१५, बसंतु, मः ४)
घटि घटि अंतरि एको हरि सोइ ॥ (११७७-१५, बसंतु, मः ४)
गुरि मिलिऐ इकु प्रगटु होइ ॥२॥ (११७७-१५, बसंतु, मः ४)
एको एकु रहिआ भरपूरि ॥ (११७७-१६, बसंतु, मः ४)
साकत नर लोभी जाणहि दूरि ॥३॥ (११७७-१६, बसंतु, मः ४)
एको एकु वरतै हरि लोइ ॥ (११७७-१६, बसंतु, मः ४)
नानक हरि एकुो करे सु होइ ॥४॥१॥ (११७७-१७, बसंतु, मः ४)
बसंतु महला ४ ॥ (११७७-१७)
रैणि दिनसु दुइ सदे पए ॥ (११७७-१७, बसंतु, मः ४)
मन हरि सिमरहु अंति सदा रखि लए ॥१॥ (११७७-१८, बसंतु, मः ४)
हरि हरि चेति सदा मन मेरे ॥ (११७७-१८, बसंतु, मः ४)
सभु आलसु दूख भंजि प्रभु पाइआ गुरमति गावहु गुण प्रभ केरे ॥१॥ रहाउ ॥ (११७७-१८, बसंतु, मः ४)
मनमुख फिरि फिरि हउमै मुए ॥ (११७७-१९, बसंतु, मः ४)

पन्ना ११७८

कालि दैति संघारे जम पुरि गए ॥२॥ (११७८-१, बसंतु, मः ४)
गुरमुखि हरि हरि हरि लिव लागे ॥ (११७८-१, बसंतु, मः ४)
जनम मरण दोऊ दुख भागे ॥३॥ (११७८-१, बसंतु, मः ४)
भगत जना कउ हरि किरपा धारी ॥ (११७८-२, बसंतु, मः ४)
गुरु नानकु तुठा मिलिआ बनवारी ॥४॥२॥ (११७८-२, बसंतु, मः ४)
बसंतु हिंडोल महला ४ घरु २ (११७८-३)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११७८-३)
राम नामु रतन कोठड़ी गड़ मंदरि एक लुकानी ॥ (११७८-४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
सतिगुरु मिलै त खोजीऐ मिलि जोती जोति समानी ॥१॥ (११७८-४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
माधो साधू जन देहु मिलाइ ॥ (११७८-५, बसंतु हिंडोल, मः ४)
देखत दरसु पाप सभि नासहि पवित्र पर्म पदु पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७८-५, बसंतु हिंडोल, मः ४)
पंच चोर मिलि लागे नगरीआ राम नाम धनु हिरिआ ॥ (११७८-६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
गुरमति खोज परे तब पकरे धनु साबतु रासि उबरिआ ॥२॥ (११७८-६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
पाखंड भर्म उपाव करि थाके रिद अंतरि माइआ माइआ ॥ (११७८-७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
साधू पुरखु पुरखपति पाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥३॥ (११७८-८, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जगन्नाथ जगदीस गुसाई करि किरपा साधु मिलावै ॥ (११७८-८, बसंतु हिंडोल, मः ४)
नानक सांति होवै मन अंतरि नित हिरदै हरि गुण गावै ॥४॥१॥३॥ (११७८-९, बसंतु हिंडोल, मः ४)
बसंतु महला ४ हिंडोल ॥ (११७८-१०)
तुम्ह वड पुरख वड अगम गुसाई हम कीरे किर्म तुमनछे ॥ (११७८-१०, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हरि दीन दइआल करहु प्रभ किरपा गुर सतिगुर चरण हम बनछे ॥१॥ (११७८-१०, बसंतु हिंडोल, मः ४)
गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि करि कृपछे ॥ (११७८-११, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जनम जनम के किलविख मलु भरिआ मिलि संगति करि प्रभ हनछे ॥१॥ रहाउ ॥ (११७८-१२, बसंतु हिंडोल, मः ४)
तुम्हरा जनु जाति अविजाता हरि जपिओ पतित पवीछे ॥ (११७८-१२, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हरि कीओ सगल भवन ते ऊपरि हरि सोभा हरि प्रभ दिनछे ॥२॥ (११७८-१३, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जाति अजाति कोई प्रभ धिआवै सभि पूरे मानस तिनछे ॥ (११७८-१४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
से धंनि वडे वड पूरे हरि जन जिन्ह हरि धारिओ हरि उरछे ॥३॥ (११७८-१४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हम ढींढे ढीम बहुतु अति भारी हरि धारि कृपा प्रभ मिलछे ॥ (११७८-१५, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जन नानक गुरु पाइआ हरि तूठे हम कीए पतित पवीछे ॥४॥२॥४॥ (११७८-१६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ (११७८-१६)
मेरा इकु खिनु मनूआ रहि न सकै नित हरि हरि नाम रसि गीधे ॥ (११७८-१७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जिउ बारिकु रसकि परिओ थनि माता थनि काढे बिलल बिलीधे ॥१॥ (११७८-१७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
गोबिंद जीउ मेरे मन तन नाम हरि बीधे ॥ (११७८-१८, बसंतु हिंडोल, मः ४)
वडै भागि गुरु सतिगुरु पाइआ विचि काइआ नगर हरि सीधे ॥१॥ रहाउ ॥ (११७८-१८, बसंतु हिंडोल, मः ४)

पन्ना ११७९

जन के सास सास है जेते हरि बिरहि प्रभू हरि बीधे ॥ (११७९-१, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जिउ जल कमल प्रीति अति भारी बिनु जल देखे सुकलीधे ॥२॥ (११७९-२, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जन जपिओ नामु निरंजनु नरहरि उपदेसि गुरू हरि प्रीधे ॥ (११७९-२, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जनम जनम की हउमै मलु निकसी हरि अमृति हरि जलि नीधे ॥३॥ (११७९-३, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हमरे कर्म न बिचरहु ठाकुर तुम्ह पैज रखहु अपनीधे ॥ (११७९-४, बसंतु हिंडोल, मः ४)

हरि भावै सुणि बिनउ बेनती जन नानक सरणि पवीधे ॥४॥३॥५॥ (११७६-४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ (११७६-५)
मनु खिनु खिनु भरमि भरमि बहु धावै तिलु घरि नही वासा पाईऐ ॥ (११७६-५, बसंतु हिंडोल, मः ४)
गुरि अंकसु सबदु दारू सिरि धारिओ घरि मंदरि आणि वसाईऐ ॥१॥ (११७६-६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
गोबिंद जीउ सतसंगति मेलि हरि धिआईऐ ॥ (११७६-७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हउमै रोगु गइआ सुखु पाइआ हरि सहजि समाधि लगाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (११७६-७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
घरि रतन लाल बहु माणक लादे मनु भ्रमिआ लहि न सकाईऐ ॥ (११७६-८, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जिउ ओडा कूपु गुहज खिन काढै तिउ सतिगुरि वसतु लहाईऐ ॥२॥ (११७६-६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जिन ऐसा सतिगुरु साधु न पाइआ ते ध्रिगु ध्रिगु नर जीवाईऐ ॥ (११७६-६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जनमु पदारथु पुंनि फलु पाइआ कउडी बदलै जाईऐ ॥३॥ (११७६-१०, बसंतु हिंडोल, मः ४)
मधुसूदन हरि धारि प्रभ किरपा करि किरपा गुरू मिलाईऐ ॥ (११७६-११, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जन नानक निरबाण पदु पाइआ मिलि साधू हरि गुण गाईऐ ॥४॥४॥६॥ (११७६-११, बसंतु हिंडोल, मः ४)
बसंतु हिंडोल महला ४ ॥ (११७६-१२)
आवण जाणु भइआ दुखु बिखिआ देह मनमुख सुंञी सुंञु ॥ (११७६-१२, बसंतु हिंडोल, मः ४)
राम नामु खिनु पलु नही चेतिआ जमि पकरे कालि सलुंञु ॥१॥ (११७६-१३, बसंतु हिंडोल, मः ४)
गोबिंद जीउ बिखु हउमै ममता मुंञु ॥ (११७६-१४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
सतसंगति गुर की हरि पिआरी मिलि संगति हरि रसु भुंञु ॥१॥ रहाउ ॥ (११७६-१४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
सतसंगति साध दइआ करि मेलहु सरणागति साधू पंञु ॥ (११७६-१५, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हम डुबदे पाथर काढि लेहु प्रभ तुम् दीन दइआल दुख भंञु ॥२॥ (११७६-१५, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हरि उसतति धारहु रिद अंतरि सुआमी सतसंगति मिलि बुधि लंञु ॥ (११७६-१६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
हरि नामै हम प्रीति लगानी हम हरि विटहु घुमि वंञु ॥३॥ (११७६-१७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जन के पूरि मनोरथ हरि प्रभ हरि नामु देवहु हरि लंञु ॥ (११७६-१८, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जन नानक मनि तनि अनदु भइआ है गुरि मंत्रु दीओ हरि भंञु ॥४॥५॥७॥१२॥१८॥७॥३७॥ (११७६-१८, बसंतु हिंडोल, मः ४)

पन्ना ११८०

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुके (११८०-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११८०-१)
गुरु सेवउ करि नमस्कार ॥ (११८०-२, बसंतु, मः ५)
आजु हमारै मंगलचार ॥ (११८०-२, बसंतु, मः ५)
आजु हमारै महा अनंद ॥ (११८०-२, बसंतु, मः ५)
चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥ (११८०-२, बसंतु, मः ५)
आजु हमारै गृहि बसंत ॥ (११८०-३, बसंतु, मः ५)
गुन गाए प्रभ तुम् बेअंत ॥१॥ रहाउ ॥ (११८०-३, बसंतु, मः ५)
आजु हमारै बने फाग ॥ (११८०-३, बसंतु, मः ५)

प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥ (११८०-४, बसंतु, मः ५)
होली कीनी संत सेव ॥ (११८०-४, बसंतु, मः ५)
रंगु लागा अति लाल देव ॥२॥ (११८०-४, बसंतु, मः ५)
मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ (११८०-४, बसंतु, मः ५)
सूकै नाही छाव धूप ॥ (११८०-५, बसंतु, मः ५)
सगली रूती हरिआ होइ ॥ (११८०-५, बसंतु, मः ५)
सद बसंत गुर मिले देव ॥३॥ (११८०-५, बसंतु, मः ५)
बिरखु जमिओ है पारजात ॥ (११८०-६, बसंतु, मः ५)
फूल लगे फल रतन भाँति ॥ (११८०-६, बसंतु, मः ५)
तृपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥ (११८०-६, बसंतु, मः ५)
जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥४॥१॥ (११८०-६, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८०-७)
हटवाणी धन माल हाटु कीतु ॥ (११८०-७, बसंतु, मः ५)
जूआरी जूए माहि चीतु ॥ (११८०-७, बसंतु, मः ५)
अमली जीवै अमलु खाइ ॥ (११८०-८, बसंतु, मः ५)
तिउ हरि जनु जीवै हरि धिआइ ॥१॥ (११८०-८, बसंतु, मः ५)
अपनै रंगि सभु को रचै ॥ (११८०-८, बसंतु, मः ५)
जितु प्रभि लाइआ तितु तितु लगै ॥१॥ रहाउ ॥ (११८०-९, बसंतु, मः ५)
मेघ समै मोर निरतिकार ॥ (११८०-९, बसंतु, मः ५)
चंद देखि बिगसहि कउलार ॥ (११८०-९, बसंतु, मः ५)
माता बारिक देखि अनंद ॥ (११८०-१०, बसंतु, मः ५)
तिउ हरि जन जीवहि जपि गोबिंद ॥२॥ (११८०-१०, बसंतु, मः ५)
सिंघ रुचै सद भोजनु मास ॥ (११८०-१०, बसंतु, मः ५)
रणु देखि सूरे चित उलास ॥ (११८०-११, बसंतु, मः ५)
किरपन कउ अति धन पिआरु ॥ (११८०-११, बसंतु, मः ५)
हरि जन कउ हरि हरि आधारु ॥३॥ (११८०-११, बसंतु, मः ५)
सर्ब रंग इक रंग माहि ॥ (११८०-१२, बसंतु, मः ५)
सर्ब सुखा सुख हरि कै नाइ ॥ (११८०-१२, बसंतु, मः ५)
तिसहि परापति इहु निधानु ॥ (११८०-१२, बसंतु, मः ५)
नानक गुरु जिसु करे दानु ॥४॥२॥ (११८०-१३, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८०-१३)
तिसु बसंतु जिसु प्रभु कृपालु ॥ (११८०-१३, बसंतु, मः ५)
तिसु बसंतु जिसु गुरु दइआलु ॥ (११८०-१३, बसंतु, मः ५)
मंगलु तिस कै जिसु एकु कामु ॥ (११८०-१४, बसंतु, मः ५)
तिसु सद बसंतु जिसु रिदै नामु ॥१॥ (११८०-१४, बसंतु, मः ५)

गृहि ता के बसंतु गनी ॥ (११८०-१४, बसंतु, मः ५)
जा कै कीरतनु हरि धुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (११८०-१५, बसंतु, मः ५)
प्रीति पारब्रह्म मउलि मना ॥ (११८०-१५, बसंतु, मः ५)
गिआनु कमाईऐ पूछि जनाँ ॥ (११८०-१५, बसंतु, मः ५)
सो तपसी जिसु साधसंगु ॥ (११८०-१६, बसंतु, मः ५)
सद धिआनी जिसु गुरहि रंगु ॥२॥ (११८०-१६, बसंतु, मः ५)
से निरभउ जिन् भउ पइआ ॥ (११८०-१६, बसंतु, मः ५)
सो सुखीआ जिसु भ्रमु गइआ ॥ (११८०-१७, बसंतु, मः ५)
सो इकाँती जिसु रिदा थाइ ॥ (११८०-१७, बसंतु, मः ५)
सोई निहचलु साच ठाइ ॥३॥ (११८०-१७, बसंतु, मः ५)
एका खोजै एक प्रीति ॥ (११८०-१८, बसंतु, मः ५)
दरसन परसन हीत चीति ॥ (११८०-१८, बसंतु, मः ५)
हरि रंग रंगा सहजि माणु ॥ (११८०-१८, बसंतु, मः ५)
नानक दास तिसु जन कुरबाणु ॥४॥३॥ (११८०-१८, बसंतु, मः ५)

पन्ना ११८१

बसंतु महला ५ ॥ (११८१-१)
जीअ प्राण तुम् पिंड दीन् ॥ (११८१-१, बसंतु, मः ५)
मुगध सुंदर धारि जोति कीन् ॥ (११८१-१, बसंतु, मः ५)
सभि जाचिक प्रभ तुम् दइआल ॥ (११८१-१, बसंतु, मः ५)
नामु जपत होवत निहाल ॥१॥ (११८१-२, बसंतु, मः ५)
मेरे प्रीतम कारण करण जोग ॥ (११८१-२, बसंतु, मः ५)
हउ पावउ तुम ते सगल थोक ॥१॥ रहाउ ॥ (११८१-२, बसंतु, मः ५)
नामु जपत होवत उधार ॥ (११८१-३, बसंतु, मः ५)
नामु जपत सुख सहज सार ॥ (११८१-३, बसंतु, मः ५)
नामु जपत पति सोभा होइ ॥ (११८१-३, बसंतु, मः ५)
नामु जपत बिघनु नाही कोइ ॥२॥ (११८१-४, बसंतु, मः ५)
जा कारणि इह दुलभ देह ॥ (११८१-४, बसंतु, मः ५)
सो बोलु मेरे प्रभू देहि ॥ (११८१-४, बसंतु, मः ५)
साधसंगति महि इहु बिस्रामु ॥ (११८१-५, बसंतु, मः ५)
सदा रिदै जपी प्रभ तेरो नामु ॥३॥ (११८१-५, बसंतु, मः ५)
तुझ बिनु दूजा कोइ नाहि ॥ (११८१-५, बसंतु, मः ५)
सभु तेरो खेलु तुझ महि समाहि ॥ (११८१-६, बसंतु, मः ५)
जिउ भावै तिउ राखि ले ॥ (११८१-६, बसंतु, मः ५)
सुखु नानक पूरा गुरु मिले ॥४॥४॥ (११८१-६, बसंतु, मः ५)

बसंतु महला ५ ॥ (११८१-७)
प्रभ प्रीतम मेरै संगि राइ ॥ (११८१-७, बसंतु, मः ५)
जिसहि देखि हउ जीवा माइ ॥ (११८१-७, बसंतु, मः ५)
जा कै सिमरनि दुखु न होइ ॥ (११८१-७, बसंतु, मः ५)
करि दइआ मिलावहु तिसहि मोहि ॥१॥ (११८१-८, बसंतु, मः ५)
मेरे प्रीतम प्रान अधार मन ॥ (११८१-८, बसंतु, मः ५)
जीउ प्रान सभु तेरो धन ॥१॥ रहाउ ॥ (११८१-८, बसंतु, मः ५)
जा कउ खोजहि सुरि नर देव ॥ (११८१-९, बसंतु, मः ५)
मुनि जन सेख न लहहि भेव ॥ (११८१-९, बसंतु, मः ५)
जा की गति मिति कही न जाइ ॥ (११८१-९, बसंतु, मः ५)
घटि घटि घटि घटि रहिआ समाइ ॥२॥ (११८१-१०, बसंतु, मः ५)
जा के भगत आनंद मै ॥ (११८१-१०, बसंतु, मः ५)
जा के भगत कउ नाही खै ॥ (११८१-१०, बसंतु, मः ५)
जा के भगत कउ नाही भै ॥ (११८१-११, बसंतु, मः ५)
जा के भगत कउ सदा जै ॥३॥ (११८१-११, बसंतु, मः ५)
कउन उपमा तेरी कही जाइ ॥ (११८१-११, बसंतु, मः ५)
सुखदाता प्रभु रहिओ समाइ ॥ (११८१-११, बसंतु, मः ५)
नानकु जाचै एकु दानु ॥ (११८१-१२, बसंतु, मः ५)
करि किरपा मोहि देहु नामु ॥४॥५॥ (११८१-१२, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८१-१२)
मिलि पाणी जिउ हरे बूट ॥ (११८१-१३, बसंतु, मः ५)
साधसंगति तिउ हउमै छूट ॥ (११८१-१३, बसंतु, मः ५)
जैसी दासे धीर मीर ॥ (११८१-१३, बसंतु, मः ५)
तैसे उधारन गुरह पीर ॥१॥ (११८१-१३, बसंतु, मः ५)
तुम दाते प्रभ देनहार ॥ (११८१-१४, बसंतु, मः ५)
निमख निमख तिसु नमस्कार ॥१॥ रहाउ ॥ (११८१-१४, बसंतु, मः ५)
जिसहि परापति साधसंगु ॥ (११८१-१४, बसंतु, मः ५)
तिसु जन लागा पारब्रह्म रंगु ॥ (११८१-१५, बसंतु, मः ५)
ते बंधन ते भए मुकति ॥ (११८१-१५, बसंतु, मः ५)
भगत अराधहि जोग जुगति ॥२॥ (११८१-१५, बसंतु, मः ५)
नेत्र संतोखे दरसु पेखि ॥ (११८१-१६, बसंतु, मः ५)
रसना गाए गुण अनेक ॥ (११८१-१६, बसंतु, मः ५)
तृसना बूझी गुर प्रसादि ॥ (११८१-१६, बसंतु, मः ५)
मनु आघाना हरि रसहि सुआदि ॥३॥ (११८१-१६, बसंतु, मः ५)
सेवकु लागो चरण सेव ॥ (११८१-१७, बसंतु, मः ५)

आदि पुरख अपरम्पर देव ॥ (११८१-१७, बसंतु, मः ५)
सगल उधारण तेरो नामु ॥ (११८१-१७, बसंतु, मः ५)
नानक पाइओ इहु निधानु ॥४॥६॥ (११८१-१८, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८१-१८)
तुम बड दाते दे रहे ॥ (११८१-१८, बसंतु, मः ५)
जीअ प्राण महि रवि रहे ॥ (११८१-१९, बसंतु, मः ५)
दीने सगले भोजन खान ॥ (११८१-१९, बसंतु, मः ५)
मोहि निरगुन इकु गुनु न जान ॥१॥ (११८१-१९, बसंतु, मः ५)
हउ कछू न जानउ तेरी सार ॥ (११८१-१९, बसंतु, मः ५)

पन्ना ११८२

तू करि गति मेरी प्रभ दइआर ॥१॥ रहाउ ॥ (११८२-१, बसंतु, मः ५)
जाप न ताप न करम कीति ॥ (११८२-१, बसंतु, मः ५)
आवै नाही कछू रीति ॥ (११८२-२, बसंतु, मः ५)
मन महि राखउ आस एक ॥ (११८२-२, बसंतु, मः ५)
नाम तेरे की तरउ टेक ॥२॥ (११८२-२, बसंतु, मः ५)
सरब कला प्रभ तुम्ह प्रबीन ॥ (११८२-२, बसंतु, मः ५)
अंतु न पावहि जलहि मीन ॥ (११८२-३, बसंतु, मः ५)
अगम अगम ऊचह ते ऊच ॥ (११८२-३, बसंतु, मः ५)
हम थोरे तुम बहुत मूच ॥३॥ (११८२-३, बसंतु, मः ५)
जिन तू धिआइआ से गनी ॥ (११८२-४, बसंतु, मः ५)
जिन तू पाइआ से धनी ॥ (११८२-४, बसंतु, मः ५)
जिनि तू सेविआ सुखी से ॥ (११८२-४, बसंतु, मः ५)
संत सरणि नानक परे ॥४॥७॥ (११८२-४, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८२-५)
तिसु तू सेवि जिनि तू कीआ ॥ (११८२-५, बसंतु, मः ५)
तिसु अराधि जिनि जीउ दीआ ॥ (११८२-५, बसंतु, मः ५)
तिस का चाकरु होहि फिरि डानु न लागै ॥ (११८२-६, बसंतु, मः ५)
तिस की करि पोतदारी फिरि दूखु न लागै ॥१॥ (११८२-६, बसंतु, मः ५)
एवड भाग होहि जिसु प्राणी ॥ (११८२-६, बसंतु, मः ५)
सो पाए इहु पदु निरबाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (११८२-७, बसंतु, मः ५)
दूजी सेवा जीवनु बिरथा ॥ (११८२-७, बसंतु, मः ५)
कछू न होई है पूरन अरथा ॥ (११८२-७, बसंतु, मः ५)
माणस सेवा खरी दुहेली ॥ (११८२-८, बसंतु, मः ५)
साध की सेवा सदा सुहेली ॥२॥ (११८२-८, बसंतु, मः ५)

जे लोड़हि सदा सुखु भाई ॥ (११८२-८, बसंतु, मः ५)
साधू संगति गुरहि बताई ॥ (११८२-९, बसंतु, मः ५)
ऊहा जपीऐ केवल नाम ॥ (११८२-९, बसंतु, मः ५)
साधू संगति पारगराम ॥३॥ (११८२-९, बसंतु, मः ५)
सगल तत महि ततु गिआनु ॥ (११८२-९, बसंतु, मः ५)
सर्ब धिआन महि एकु धिआनु ॥ (११८२-१०, बसंतु, मः ५)
हरि कीर्तन महि ऊतम धुना ॥ (११८२-१०, बसंतु, मः ५)
नानक गुर मिलि गाइ गुना ॥४॥८॥ (११८२-१०, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८२-११)
जिसु बोलत मुखु पवितु होइ ॥ (११८२-११, बसंतु, मः ५)
जिसु सिमरत निर्मल है सोइ ॥ (११८२-११, बसंतु, मः ५)
जिसु अराधे जमु किछु न कहै ॥ (११८२-१२, बसंतु, मः ५)
जिस की सेवा सभु किछु लहै ॥१॥ (११८२-१२, बसंतु, मः ५)
राम राम बोलि राम राम ॥ (११८२-१२, बसंतु, मः ५)
तिआगहु मन के सगल काम ॥१॥ रहाउ ॥ (११८२-१३, बसंतु, मः ५)
जिस के धारे धरणि अकासु ॥ (११८२-१३, बसंतु, मः ५)
घटि घटि जिस का है प्रगासु ॥ (११८२-१३, बसंतु, मः ५)
जिसु सिमरत पतित पुनीत होइ ॥ (११८२-१४, बसंतु, मः ५)
अंत कालि फिरि फिरि न रोइ ॥२॥ (११८२-१४, बसंतु, मः ५)
सगल धर्म महि ऊतम धर्म ॥ (११८२-१४, बसंतु, मः ५)
कर्म करतूति कै ऊपरि कर्म ॥ (११८२-१५, बसंतु, मः ५)
जिस कउ चाहहि सुरि नर देव ॥ (११८२-१५, बसंतु, मः ५)
संत सभा की लगहु सेव ॥३॥ (११८२-१५, बसंतु, मः ५)
आदि पुरखि जिसु कीआ दानु ॥ (११८२-१६, बसंतु, मः ५)
तिस कउ मिलिआ हरि निधानु ॥ (११८२-१६, बसंतु, मः ५)
तिस की गति मिति कही न जाइ ॥ (११८२-१६, बसंतु, मः ५)
नानक जन हरि हरि धिआइ ॥४॥९॥ (११८२-१७, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८२-१७)
मन तन भीतरि लागी पिआस ॥ (११८२-१७, बसंतु, मः ५)
गुरि दइआलि पूरी मेरी आस ॥ (११८२-१८, बसंतु, मः ५)
किलविख काटे साधसंगि ॥ (११८२-१८, बसंतु, मः ५)
नामु जपिओ हरि नाम रंगि ॥१॥ (११८२-१८, बसंतु, मः ५)
गुर परसादि बसंतु बना ॥ (११८२-१९, बसंतु, मः ५)
चरन कमल हिरदै उरि धारे सदा सदा हरि जसु सुना ॥१॥ रहाउ ॥ (११८२-१९, बसंतु, मः ५)

समरथ सुआमी कारण करण ॥ (११८३-१, बसंतु, मः ५)
मोहि अनाथ प्रभ तेरी सरण ॥ (११८३-१, बसंतु, मः ५)
जीअ जंत तेरे आधारि ॥ (११८३-१, बसंतु, मः ५)
करि किरपा प्रभ लेहि निसतारि ॥२॥ (११८३-१, बसंतु, मः ५)
भव खंडन दुख नास देव ॥ (११८३-२, बसंतु, मः ५)
सुरि नर मुनि जन ता की सेव ॥ (११८३-२, बसंतु, मः ५)
धरणि अकासु जा की कला माहि ॥ (११८३-२, बसंतु, मः ५)
तेरा दीआ सभि जंत खाहि ॥३॥ (११८३-३, बसंतु, मः ५)
अंतरजामी प्रभ दइआल ॥ (११८३-३, बसंतु, मः ५)
अपणे दास कउ नदरि निहालि ॥ (११८३-३, बसंतु, मः ५)
करि किरपा मोहि देहु दानु ॥ (११८३-४, बसंतु, मः ५)
जपि जीवै नानकु तेरो नामु ॥४॥१०॥ (११८३-४, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८३-४)
राम रंगि सभ गए पाप ॥ (११८३-५, बसंतु, मः ५)
राम जपत कछु नही संताप ॥ (११८३-५, बसंतु, मः ५)
गोबिंद जपत सभि मिटे अंधेर ॥ (११८३-५, बसंतु, मः ५)
हरि सिमरत कछु नाहि फेर ॥१॥ (११८३-५, बसंतु, मः ५)
बसंतु हमारै राम रंगु ॥ (११८३-६, बसंतु, मः ५)
संत जना सिउ सदा संगु ॥१॥ रहाउ ॥ (११८३-६, बसंतु, मः ५)
संत जनी कीआ उपदेसु ॥ (११८३-७, बसंतु, मः ५)
जह गोबिंद भगतु सो धंनि देसु ॥ (११८३-७, बसंतु, मः ५)
हरि भगतिहीन उदिआन थानु ॥ (११८३-७, बसंतु, मः ५)
गुर प्रसादि घटि घटि पछानु ॥२॥ (११८३-८, बसंतु, मः ५)
हरि कीर्तन रस भोग रंगु ॥ (११८३-८, बसंतु, मः ५)
मन पाप करत तू सदा संगु ॥ (११८३-८, बसंतु, मः ५)
निकटि पेखु प्रभु करणहार ॥ (११८३-९, बसंतु, मः ५)
ईत ऊत प्रभ कारज सार ॥३॥ (११८३-९, बसंतु, मः ५)
चरन कमल सिउ लगो धिआनु ॥ (११८३-९, बसंतु, मः ५)
करि किरपा प्रभि कीनो दानु ॥ (११८३-१०, बसंतु, मः ५)
तेरिआ संत जना की बाछउ धूरि ॥ (११८३-१०, बसंतु, मः ५)
जपि नानक सुआमी सद हजूरि ॥४॥११॥ (११८३-१०, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८३-११)
सचु परमेसरु नित नवा ॥ (११८३-११, बसंतु, मः ५)

गुर किरपा ते नित चवा ॥ (११८३-११, बसंतु, मः ५)
प्रभ रखवाले माई बाप ॥ (११८३-११, बसंतु, मः ५)
जा कै सिमरणि नही संताप ॥१॥ (११८३-१२, बसंतु, मः ५)
खसमु धिआई इक मनि इक भाइ ॥ (११८३-१२, बसंतु, मः ५)
गुर पूरे की सदा सरणाई साचै साहिबि रखिआ कंठि लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११८३-१२, बसंतु, मः ५)
अपणे जन प्रभि आपि रखे ॥ (११८३-१३, बसंतु, मः ५)
दुसट दूत सभि भ्रमि थके ॥ (११८३-१३, बसंतु, मः ५)
बिनु गुर साचे नही जाइ ॥ (११८३-१४, बसंतु, मः ५)
दुखु देस दिसंतरि रहे धाइ ॥२॥ (११८३-१४, बसंतु, मः ५)
किरतु ओना का मिटसि नाहि ॥ (११८३-१४, बसंतु, मः ५)
ओइ अपणा बीजिआ आपि खाहि ॥ (११८३-१५, बसंतु, मः ५)
जन का रखवाला आपि सोइ ॥ (११८३-१५, बसंतु, मः ५)
जन कउ पहुचि न सकसि कोइ ॥३॥ (११८३-१५, बसंतु, मः ५)
प्रभि दास रखे करि जतनु आपि ॥ (११८३-१६, बसंतु, मः ५)
अखंड पूरन जा को प्रतापु ॥ (११८३-१६, बसंतु, मः ५)
गुण गोबिंद नित रसन गाइ ॥ (११८३-१६, बसंतु, मः ५)
नानकु जीवै हरि चरण धिआइ ॥४॥१२॥ (११८३-१७, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८३-१७)
गुर चरण सरेवत दुखु गइआ ॥ (११८३-१७, बसंतु, मः ५)
पारब्रहमि प्रभि करी मइआ ॥ (११८३-१८, बसंतु, मः ५)
सर्ब मनोरथ पूरन काम ॥ (११८३-१८, बसंतु, मः ५)
जपि जीवै नानकु राम नाम ॥१॥ (११८३-१८, बसंतु, मः ५)
सा रुति सुहावी जितु हरि चिति आवै ॥ (११८३-१९, बसंतु, मः ५)
बिनु सतिगुर दीसै बिललाँती साकतु फिरि फिरि आवै जावै ॥१॥ रहाउ ॥ (११८३-१९, बसंतु, मः ५)

पन्ना ११८४

से धनवंत जिन हरि प्रभु रासि ॥ (११८४-१, बसंतु, मः ५)
काम क्रोध गुर सबदि नासि ॥ (११८४-१, बसंतु, मः ५)
भै बिनसे निरभै पदु पाइआ ॥ (११८४-१, बसंतु, मः ५)
गुर मिलि नानकि खसमु धिआइआ ॥२॥ (११८४-२, बसंतु, मः ५)
साधसंगति प्रभि कीओ निवास ॥ (११८४-२, बसंतु, मः ५)
हरि जपि जपि होई पूरन आस ॥ (११८४-२, बसंतु, मः ५)
जलि थलि महीअलि रवि रहिआ ॥ (११८४-३, बसंतु, मः ५)
गुर मिलि नानकि हरि हरि कहिआ ॥३॥ (११८४-३, बसंतु, मः ५)
असट सिधि नव निधि एह ॥ (११८४-४, बसंतु, मः ५)

करमि परापति जिसु नामु देह ॥ (११८४-४, बसंतु, मः ५)
प्रभ जपि जपि जीवहि तेरे दास ॥ (११८४-४, बसंतु, मः ५)
गुर मिलि नानक कमल प्रगास ॥४॥१३॥ (११८४-५, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ घरु १ इक तुके (११८४-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११८४-६)
सगल इछा जपि पुन्नीआ ॥ (११८४-७, बसंतु, मः ५)
प्रभि मेले चिरी विछुंनिआ ॥१॥ (११८४-७, बसंतु, मः ५)
तुम रवहु गोबिंदै रवण जोगु ॥ (११८४-७, बसंतु, मः ५)
जितु रविऐ सुख सहज भोगु ॥१॥ रहाउ ॥ (११८४-७, बसंतु, मः ५)
करि किरपा नदरि निहालिआ ॥ (११८४-८, बसंतु, मः ५)
अपणा दासु आपि सम्हालिआ ॥२॥ (११८४-८, बसंतु, मः ५)
सेज सुहावी रसि बनी ॥ (११८४-९, बसंतु, मः ५)
आइ मिले प्रभ सुख धनी ॥३॥ (११८४-९, बसंतु, मः ५)
मेरा गुणु अवगणु न बीचारिआ ॥ (११८४-९, बसंतु, मः ५)
प्रभ नानक चरण पूजारिआ ॥४॥१॥१४॥ (११८४-१०, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८४-१०)
किलबिख बिनसे गाइ गुना ॥ (११८४-१०, बसंतु, मः ५)
अनदिन उपजी सहज धुना ॥१॥ (११८४-१०, बसंतु, मः ५)
मनु मउलिओ हरि चरन संगि ॥ (११८४-११, बसंतु, मः ५)
करि किरपा साधू जन भेटे नित रातौ हरि नाम रंगि ॥१॥ रहाउ ॥ (११८४-११, बसंतु, मः ५)
करि किरपा प्रगटे गोपाल ॥ (११८४-१२, बसंतु, मः ५)
लड़ि लाइ उधारे दीन दइआल ॥२॥ (११८४-१२, बसंतु, मः ५)
इहु मनु होआ साध धूरि ॥ (११८४-१२, बसंतु, मः ५)
नित देखै सुआमी हजूरि ॥३॥ (११८४-१३, बसंतु, मः ५)
काम क्रोध तृसना गई ॥ (११८४-१३, बसंतु, मः ५)
नानक प्रभ किरपा भई ॥४॥२॥१५॥ (११८४-१३, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८४-१४)
रोग मिटाए प्रभू आपि ॥ (११८४-१४, बसंतु, मः ५)
बालक राखे अपने कर थापि ॥१॥ (११८४-१४, बसंतु, मः ५)
साँति सहज गृहि सद बसंतु ॥ (११८४-१५, बसंतु, मः ५)
गुर पूरे की सरणी आए कलिआण रूप जपि हरि हरि मंतु ॥१॥ रहाउ ॥ (११८४-१५, बसंतु, मः ५)
सोग संताप कटे प्रभि आपि ॥ (११८४-१६, बसंतु, मः ५)
गुर अपुने कउ नित नित जापि ॥२॥ (११८४-१६, बसंतु, मः ५)
जो जनु तेरा जपे नाउ ॥ (११८४-१६, बसंतु, मः ५)
सभि फल पाए निहचल गुण गाउ ॥३॥ (११८४-१७, बसंतु, मः ५)

नानक भगता भली रीति ॥ (११८४-१७, बसंतु, मः ५)
सुखदाता जपदे नीत नीति ॥४॥३॥१६॥ (११८४-१७, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११८४-१८)
हुकमु करि कीन्हे निहाल ॥ (११८४-१८, बसंतु, मः ५)
अपने सेवक कउ भइआ दइआलु ॥१॥ (११८४-१८, बसंतु, मः ५)
गुरि पूरै सभु पूरा कीआ ॥ (११८४-१६, बसंतु, मः ५)
अमृत नामु रिद महि दीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (११८४-१६, बसंतु, मः ५)
करमु धरमु मेरा कछु न बीचारिओ ॥ (११८४-१६, बसंतु, मः ५)

पन्ना ११८५

बाह पकरि भवजलु निसतारिओ ॥२॥ (११८५-१, बसंतु, मः ५)
प्रभि काटि मैलु निर्मल करे ॥ (११८५-१, बसंतु, मः ५)
गुर पूरे की सरणी परे ॥३॥ (११८५-१, बसंतु, मः ५)
आपि करहि आपि करणैहारे ॥ (११८५-२, बसंतु, मः ५)
करि किरपा नानक उधारे ॥४॥४॥१७॥ (११८५-२, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ (११८५-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११८५-३)
देखु फूल फूल फूले ॥ (११८५-४, बसंतु, मः ५)
अहं तिआगि तिआगे ॥ (११८५-४, बसंतु, मः ५)
चरन कमल पागे ॥ (११८५-४, बसंतु, मः ५)
तुम मिलहु प्रभ सभागे ॥ (११८५-४, बसंतु, मः ५)
हरि चेति मन मेरे ॥ रहाउ ॥ (११८५-४, बसंतु, मः ५)
सघन बासु कूले ॥ (११८५-५, बसंतु, मः ५)
इकि रहे सूकि कठूले ॥ (११८५-५, बसंतु, मः ५)
बसंत रुति आई ॥ (११८५-५, बसंतु, मः ५)
परफूलता रहे ॥१॥ (११८५-५, बसंतु, मः ५)
अब कलू आइओ रे ॥ (११८५-६, बसंतु, मः ५)
इकु नामु बोवहु बोवहु ॥ (११८५-६, बसंतु, मः ५)
अन रूति नाही नाही ॥ (११८५-६, बसंतु, मः ५)
मतु भरमि भूलहु भूलहु ॥ (११८५-६, बसंतु, मः ५)
गुर मिले हरि पाए ॥ (११८५-७, बसंतु, मः ५)
जिसु मसतकि है लेखा ॥ (११८५-७, बसंतु, मः ५)
मन रुति नाम रे ॥ (११८५-७, बसंतु, मः ५)
गुन कहे नानक हरि हरे हरि हरे ॥२॥१८॥ (११८५-७, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ घरु २ हिंडोल (११८५-६)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११८५-६)
होइ इकत्र मिलहु मेरे भाई दुबिधा दूरि करहु लिव लाइ ॥ (११८५-१०, बसंतु हिंडोल, मः ५)
हरि नामै के होवहु जोड़ी गुरमुखि बैसहु सफा विछाइ ॥१॥ (११८५-१०, बसंतु हिंडोल, मः ५)
इन् बिधि पासा ढालहु बीर ॥ (११८५-११, बसंतु हिंडोल, मः ५)
गुरमुखि नामु जपहु दिनु राती अंत कालि नह लागै पीर ॥१॥ रहाउ ॥ (११८५-११, बसंतु हिंडोल, मः ५)
कर्म धर्म तुम् चउपड़ि साजहु सतु करहु तुम् सारी ॥ (११८५-१२, बसंतु हिंडोल, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु मोहु जीतहु ऐसी खेल हरि पिआरी ॥२॥ (११८५-१२, बसंतु हिंडोल, मः ५)
उठि इसनानु करहु परभाते सोए हरि आराधे ॥ (११८५-१३, बसंतु हिंडोल, मः ५)
बिखड़े दाउ लंघावै मेरा सतिगुरु सुख सहज सेती घरि जाते ॥३॥ (११८५-१३, बसंतु हिंडोल, मः ५)
हरि आपे खेलै आपे देखै हरि आपे रचनु रचाइआ ॥ (११८५-१४, बसंतु हिंडोल, मः ५)
जन नानक गुरमुखि जो नरु खेलै सो जिणि बाजी घरि आइआ ॥४॥१॥१९॥ (११८५-१५, बसंतु हिंडोल, मः ५)
बसंतु महला ५ हिंडोल ॥ (११८५-१६)
तेरी कुदरति तूहै जाणहि अउरु न दूजा जाणै ॥ (११८५-१६, बसंतु हिंडोल, मः ५)
जिस नो कृपा करहि मेरे पिआरे सोई तुझै पछाणै ॥१॥ (११८५-१६, बसंतु हिंडोल, मः ५)
तेरिआ भगता कउ बलिहारा ॥ (११८५-१७, बसंतु हिंडोल, मः ५)
थानु सुहावा सदा प्रभ तेरा रंग तेरे आपारा ॥१॥ रहाउ ॥ (११८५-१७, बसंतु हिंडोल, मः ५)
तेरी सेवा तुझ ते होवै अउरु न दूजा करता ॥ (११८५-१८, बसंतु हिंडोल, मः ५)
भगतु तेरा सोई तुधु भावै जिस नो तू रंगु धरता ॥२॥ (११८५-१८, बसंतु हिंडोल, मः ५)

पन्ना ११८६

तू वड दाता तू वड दाना अउरु नही को दूजा ॥ (११८६-१, बसंतु हिंडोल, मः ५)
तू समरथु सुआमी मेरा हउ किआ जाणा तेरी पूजा ॥३॥ (११८६-१, बसंतु हिंडोल, मः ५)
तेरा महलु अगोचरु मेरे पिआरे बिखमु तेरा है भाणा ॥ (११८६-२, बसंतु हिंडोल, मः ५)
कहु नानक ढहि पइआ दुआरै रखि लेवहु मुगध अजाणा ॥४॥२॥२०॥ (११८६-२, बसंतु हिंडोल, मः ५)
बसंतु हिंडोल महला ५ ॥ (११८६-३)
मूलु न बूझै आपु न सूझै भरमि बिआपी अहं मनी ॥१॥ (११८६-३, बसंतु हिंडोल, मः ५)
पिता पारब्रह्म प्रभ धनी ॥ (११८६-४, बसंतु हिंडोल, मः ५)
मोहि निसतारहु निरगुनी ॥१॥ रहाउ ॥ (११८६-४, बसंतु हिंडोल, मः ५)
ओपति परलउ प्रभ ते होवै इह बीचारी हरि जनी ॥२॥ (११८६-५, बसंतु हिंडोल, मः ५)
नाम प्रभू के जो रंगि राते कलि महि सुखीए से गनी ॥३॥ (११८६-५, बसंतु हिंडोल, मः ५)
अवरु उपाउ न कोई सूझै नानक तरीऐ गुर बचनी ॥४॥३॥२१॥ (११८६-६, बसंतु हिंडोल, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११८६-७)
रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥ (११८६-७)
साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥ (११८६-७, बसंतु हिंडोल, मः ९)
या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥ रहाउ ॥ (११८६-७, बसंतु हिंडोल, मः ९)

इहु जगु है सम्पति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥ (११८६-८, बसंतु हिंडोल, मः ९)
संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥१॥ (११८६-९, बसंतु हिंडोल, मः ९)
उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥ (११८६-९, बसंतु हिंडोल, मः ९)
जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥२॥१॥ (११८६-१०, बसंतु हिंडोल, मः ९)
बसंतु महला ९ ॥ (११८६-१०)
पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥ (११८६-१०, बसंतु, मः ९)
मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११८६-११, बसंतु, मः ९)
जोगी जंगम अरु संनिआस ॥ (११८६-११, बसंतु, मः ९)
सभ ही परि डारी इह फास ॥१॥ (११८६-११, बसंतु, मः ९)
जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥ (११८६-१२, बसंतु, मः ९)
ते भव सागर उतरे पारि ॥२॥ (११८६-१२, बसंतु, मः ९)
जन नानक हरि की सरनाइ ॥ (११८६-१२, बसंतु, मः ९)
दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥३॥२॥ (११८६-१३, बसंतु, मः ९)
बसंतु महला ९ ॥ (११८६-१३)
माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥ (११८६-१३, बसंतु, मः ९)
मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥ रहाउ ॥ (११८६-१३, बसंतु, मः ९)
माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निर्मल गिआनु ॥ (११८६-१४, बसंतु, मः ९)
लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥ (११८६-१४, बसंतु, मः ९)
जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥ (११८६-१५, बसंतु, मः ९)
तृसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२॥ (११८६-१६, बसंतु, मः ९)
जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥ (११८६-१६, बसंतु, मः ९)
कहु नानक इह बिधि की सम्पै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥३॥ (११८६-१७, बसंतु, मः ९)
बसंतु महला ९ ॥ (११८६-१७)
मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥ (११८६-१७, बसंतु, मः ९)
तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (११८६-१८, बसंतु, मः ९)
इहु जगु धूए का पहार ॥ (११८६-१८, बसंतु, मः ९)

पन्ना ११८७

तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥ (११८७-१, बसंतु, मः ९)
धनु दारा सम्पति ग्रेह ॥ (११८७-१, बसंतु, मः ९)
कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥ (११८७-१, बसंतु, मः ९)
इक भगति नाराइन होइ संगि ॥ (११८७-२, बसंतु, मः ९)
कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥३॥४॥ (११८७-२, बसंतु, मः ९)
बसंतु महला ९ ॥ (११८७-२)
कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥ (११८७-२, बसंतु, मः ९)

कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥१॥ रहाउ ॥ (११८७-३, बसंतु, मः ६)
सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥ (११८७-३, बसंतु, मः ६)
बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥ (११८७-४, बसंतु, मः ६)
संगि तेरै हरि बसत नीत ॥ (११८७-४, बसंतु, मः ६)
निस बासुर भजु ताहि मीत ॥२॥ (११८७-४, बसंतु, मः ६)
बार अंत की होइ सहाइ ॥ (११८७-५, बसंतु, मः ६)
कहु नानक गुन ता के गाइ ॥३॥५॥ (११८७-५, बसंतु, मः ६)
बसंतु महला १ असटपदीआ घरु १ दुतुकीआ (११८७-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११८७-६)
जगु कऊआ नामु नही चीति ॥ (११८७-७, बसंतु, मः १)
नामु बिसारि गिरै देखु भीति ॥ (११८७-७, बसंतु, मः १)
मनूआ डोलै चीति अनीति ॥ (११८७-७, बसंतु, मः १)
जग सिउ तूटी झूठ परीति ॥१॥ (११८७-७, बसंतु, मः १)
कामु क्रोधु बिखु बजरु भारु ॥ (११८७-८, बसंतु, मः १)
नाम बिना कैसे गुन चारु ॥१॥ रहाउ ॥ (११८७-८, बसंतु, मः १)
घरु बालू का घूमन घेरि ॥ (११८७-८, बसंतु, मः १)
बरखसि बाणी बुदबुदा हेरि ॥ (११८७-९, बसंतु, मः १)
मात्र बूंद ते धरि चकु फेरि ॥ (११८७-९, बसंतु, मः १)
सर्ब जोति नामै की चेरि ॥२॥ (११८७-९, बसंतु, मः १)
सर्ब उपाइ गुरू सिरि मोरु ॥ (११८७-१०, बसंतु, मः १)
भगति करउ पग लागउ तोर ॥ (११८७-१०, बसंतु, मः १)
नामि रतो चाहउ तुझ ओरु ॥ (११८७-१०, बसंतु, मः १)
नामु दुराइ चलै सो चोरु ॥३॥ (११८७-११, बसंतु, मः १)
पति खोई बिखु अंचलि पाइ ॥ (११८७-११, बसंतु, मः १)
साच नामि रतो पति सिउ घरि जाइ ॥ (११८७-११, बसंतु, मः १)
जो किछु कीन्हसि प्रभु रजाइ ॥ (११८७-१२, बसंतु, मः १)
भै मानै निरभउ मेरी माइ ॥४॥ (११८७-१२, बसंतु, मः १)
कामनि चाहै सुंदरि भोगु ॥ (११८७-१२, बसंतु, मः १)
पान फूल मीठे रस रोग ॥ (११८७-१२, बसंतु, मः १)
खीलै बिगसै तेतो सोग ॥ (११८७-१३, बसंतु, मः १)
प्रभ सरणागति कीन्हसि होग ॥५॥ (११८७-१३, बसंतु, मः १)
कापड़ु पहिरसि अधिकु सीगारु ॥ (११८७-१३, बसंतु, मः १)
माटी फूली रूपु बिकारु ॥ (११८७-१४, बसंतु, मः १)
आसा मनसा बाँधो बारु ॥ (११८७-१४, बसंतु, मः १)
नाम बिना सूना घरु बारु ॥६॥ (११८७-१४, बसंतु, मः १)

गाछहु पुत्री राज कुआरि ॥ (११८७-१५, बसंतु, मः १)
नामु भणहु सचु दोतु सवारि ॥ (११८७-१५, बसंतु, मः १)
प्रिउ सेवहु प्रभ प्रेम अधारि ॥ (११८७-१५, बसंतु, मः १)
गुर सबदी बिखु तिआस निवारि ॥७॥ (११८७-१५, बसंतु, मः १)
मोहनि मोहि लीआ मनु मोहि ॥ (११८७-१६, बसंतु, मः १)
गुर कै सबदि पछाना तोहि ॥ (११८७-१६, बसंतु, मः १)
नानक ठाढे चाहहि प्रभू दुआरि ॥ (११८७-१६, बसंतु, मः १)
तेरे नामि संतोखे किरपा धारि ॥८॥१॥ (११८७-१७, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११८७-१७)
मनु भूलउ भरमसि आइ जाइ ॥ (११८७-१७, बसंतु, मः १)
अति लुबध लुभानउ बिखम माइ ॥ (११८७-१८, बसंतु, मः १)
नह असथिरु दीसै एक भाइ ॥ (११८७-१८, बसंतु, मः १)
जिउ मीन कुंडलीआ कंठि पाइ ॥१॥ (११८७-१८, बसंतु, मः १)
मनु भूलउ समझसि साचि नाइ ॥ (११८७-१९, बसंतु, मः १)
गुर सबदु बीचारे सहज भाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११८७-१९, बसंतु, मः १)

पन्ना ११८८

मनु भूलउ भरमसि भवर तार ॥ (११८८-१, बसंतु, मः १)
बिल बिरथे चाहै बहु बिकार ॥ (११८८-१, बसंतु, मः १)
मैगल जिउ फाससि कामहार ॥ (११८८-१, बसंतु, मः १)
कड़ि बंधनि बाधिओ सीस मार ॥२॥ (११८८-२, बसंतु, मः १)
मनु मुगधौ दादरु भगतिहीनु ॥ (११८८-२, बसंतु, मः १)
दरि भ्रसट सरापी नाम बीनु ॥ (११८८-२, बसंतु, मः १)
ता कै जाति न पाती नाम लीन ॥ (११८८-३, बसंतु, मः १)
सभि दूख सखाई गुणह बीन ॥३॥ (११८८-३, बसंतु, मः १)
मनु चलै न जाई ठाकि राखु ॥ (११८८-३, बसंतु, मः १)
बिनु हरि रस राते पति न साखु ॥ (११८८-४, बसंतु, मः १)
तू आपे सुरता आपि राखु ॥ (११८८-४, बसंतु, मः १)
धरि धारण देखै जाणै आपि ॥४॥ (११८८-४, बसंतु, मः १)
आपि भुलाए किसु कहउ जाइ ॥ (११८८-५, बसंतु, मः १)
गुरु मेले बिरथा कहउ माइ ॥ (११८८-५, बसंतु, मः १)
अवगण छोडउ गुण कमाइ ॥ (११८८-५, बसंतु, मः १)
गुर सबदी राता सचि समाइ ॥५॥ (११८८-६, बसंतु, मः १)
सतिगुर मिलिऐ मति ऊतम होइ ॥ (११८८-६, बसंतु, मः १)
मनु निरमलु हउमै कढै धोइ ॥ (११८८-६, बसंतु, मः १)

सदा मुकतु बंधि न सकै कोइ ॥ (११८८-७, बसंतु, मः १)
सदा नामु वखाणै अउरु न कोइ ॥६॥ (११८८-७, बसंतु, मः १)
मनु हरि कै भाणै आवै जाइ ॥ (११८८-७, बसंतु, मः १)
सभ महि एको किछु कहणु न जाइ ॥ (११८८-८, बसंतु, मः १)
सभु हुकमो वरतै हुकमि समाइ ॥ (११८८-८, बसंतु, मः १)
दूख सूख सभ तिसु रजाइ ॥७॥ (११८८-८, बसंतु, मः १)
तू अभुलु न भूलौ कदे नाहि ॥ (११८८-९, बसंतु, मः १)
गुर सबदु सुणाए मति अगाहि ॥ (११८८-९, बसंतु, मः १)
तू मोटउ ठाकुरु सबद माहि ॥ (११८८-९, बसंतु, मः १)
मनु नानक मानिआ सचु सलाहि ॥८॥२॥ (११८८-१०, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११८८-१०)
दरसन की पिआस जिसु नर होइ ॥ (११८८-१०, बसंतु, मः १)
एकतु राचै परहरि दोइ ॥ (११८८-११, बसंतु, मः १)
दूरि दरदु मथि अमृतु खाइ ॥ (११८८-११, बसंतु, मः १)
गुरमुखि बूझै एक समाइ ॥१॥ (११८८-११, बसंतु, मः १)
तेरे दरसन कउ केती बिललाइ ॥ (११८८-१२, बसंतु, मः १)
विरला को चीनसि गुर सबदि मिलाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११८८-१२, बसंतु, मः १)
बेद वखाणि कहहि इकु कहीऐ ॥ (११८८-१२, बसंतु, मः १)
ओहु बेअंतु अंतु किनि लहीऐ ॥ (११८८-१३, बसंतु, मः १)
एको करता जिनि जगु कीआ ॥ (११८८-१३, बसंतु, मः १)
बाझु कला धरि गगनु धरीआ ॥२॥ (११८८-१३, बसंतु, मः १)
एको गिआनु धिआनु धुनि बाणी ॥ (११८८-१४, बसंतु, मः १)
एकु निरालमु अकथ कहाणी ॥ (११८८-१४, बसंतु, मः १)
एको सबदु सचा नीसाणु ॥ (११८८-१४, बसंतु, मः १)
पूरे गुर ते जाणै जाणु ॥३॥ (११८८-१५, बसंतु, मः १)
एको धरमु दृड़ै सचु कोई ॥ (११८८-१५, बसंतु, मः १)
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ (११८८-१५, बसंतु, मः १)
अनहदि राता एक लिव तार ॥ (११८८-१६, बसंतु, मः १)
ओहु गुरमुखि पावै अलख अपार ॥४॥ (११८८-१६, बसंतु, मः १)
एको तखतु एको पातिसाहु ॥ (११८८-१६, बसंतु, मः १)
सरबी थाई वेपरवाहु ॥ (११८८-१७, बसंतु, मः १)
तिस का कीआ तृभवण सारु ॥ (११८८-१७, बसंतु, मः १)
ओहु अगमु अगोचरु एकंकारु ॥५॥ (११८८-१७, बसंतु, मः १)
एका मूरति साचा नाउ ॥ (११८८-१७, बसंतु, मः १)
तिथै निबड़ै साचु निआउ ॥ (११८८-१८, बसंतु, मः १)

साची करणी पति परवाणु ॥ (११८८-१८, बसंतु, मः १)
साची दरगह पावै माणु ॥६॥ (११८८-१८, बसंतु, मः १)
एका भगति एको है भाउ ॥ (११८८-१९, बसंतु, मः १)
बिनु भै भगती आवउ जाउ ॥ (११८८-१९, बसंतु, मः १)
गुर ते समझि रहै मिहमाणु ॥ (११८८-१९, बसंतु, मः १)

पन्ना ११८९

हरि रसि राता जनु परवाणु ॥७॥ (११८९-१, बसंतु, मः १)
इत उत देखउ सहजे रावउ ॥ (११८९-१, बसंतु, मः १)
तुझ बिनु ठाकुर किसै न भावउ ॥ (११८९-१, बसंतु, मः १)
नानक हउमै सबदि जलाइआ ॥ (११८९-२, बसंतु, मः १)
सतिगुरि साचा दरसु दिखाइआ ॥८॥३॥ (११८९-२, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११८९-२)
चंचलु चीतु न पावै पारा ॥ (११८९-२, बसंतु, मः १)
आवत जात न लागै बारा ॥ (११८९-३, बसंतु, मः १)
दूखु घणो मरीऐ करतारा ॥ (११८९-३, बसंतु, मः १)
बिनु प्रीतम को करै न सारा ॥१॥ (११८९-३, बसंतु, मः १)
सभ ऊतम किसु आखउ हीना ॥ (११८९-४, बसंतु, मः १)
हरि भगती सचि नामि पतीना ॥१॥ रहाउ ॥ (११८९-४, बसंतु, मः १)
अउखध करि थाकी बहुतेरे ॥ (११८९-४, बसंतु, मः १)
किउ दुखु चूकै बिनु गुर मेरे ॥ (११८९-५, बसंतु, मः १)
बिनु हरि भगती दूख घणेरे ॥ (११८९-५, बसंतु, मः १)
दुख सुख दाते ठाकुर मेरे ॥२॥ (११८९-५, बसंतु, मः १)
रोगु वडो किउ बाँधउ धीरा ॥ (११८९-६, बसंतु, मः १)
रोगु बुझै सो काटै पीरा ॥ (११८९-६, बसंतु, मः १)
मै अवगण मन माहि सरीरा ॥ (११८९-६, बसंतु, मः १)
ढूढत खोजत गुरि मेले बीरा ॥३॥ (११८९-७, बसंतु, मः १)
गुर का सबदु दारू हरि नाउ ॥ (११८९-७, बसंतु, मः १)
जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ॥ (११८९-७, बसंतु, मः १)
जगु रोगी कह देखि दिखाउ ॥ (११८९-७, बसंतु, मः १)
हरि निरमाइलु निरमलु नाउ ॥४॥ (११८९-८, बसंतु, मः १)
घर महि घरु जो देखि दिखावै ॥ (११८९-८, बसंतु, मः १)
गुर महली सो महलि बुलावै ॥ (११८९-८, बसंतु, मः १)
मन महि मनूआ चित महि चीता ॥ (११८९-९, बसंतु, मः १)
ऐसे हरि के लोग अतीता ॥५॥ (११८९-९, बसंतु, मः १)

हरख सोग ते रहहि निरासा ॥ (११८९-९, बसंतु, मः १)
अमृतु चाखि हरि नामि निवासा ॥ (११८९-१०, बसंतु, मः १)
आपु पछाणि रहै लिव लागा ॥ (११८९-१०, बसंतु, मः १)
जनमु जीति गुरमति दुखु भागा ॥६॥ (११८९-१०, बसंतु, मः १)
गुरि दीआ सचु अमृतु पीवउ ॥ (११८९-११, बसंतु, मः १)
सहजि मरउ जीवत ही जीवउ ॥ (११८९-११, बसंतु, मः १)
अपणो करि राखहु गुर भावै ॥ (११८९-१२, बसंतु, मः १)
तुमरो होइ सु तुझहि समावै ॥७॥ (११८९-१२, बसंतु, मः १)
भोगी कउ दुखु रोग विआपै ॥ (११८९-१२, बसंतु, मः १)
घटि घटि रवि रहिआ प्रभु जापै ॥ (११८९-१२, बसंतु, मः १)
सुख दुख ही ते गुर सबदि अतीता ॥ (११८९-१३, बसंतु, मः १)
नानक रामु रवै हित चीता ॥८॥४॥ (११८९-१३, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ इक तुकीआ ॥ (११८९-१४)
मतु भसम अंधूले गरबि जाहि ॥ (११८९-१४, बसंतु, मः १)
इन बिधि नागे जोगु नाहि ॥१॥ (११८९-१४, बसंतु, मः १)
मूड़्हे काहे बिसारिओ तै राम नाम ॥ (११८९-१५, बसंतु, मः १)
अंत कालि तेरै आवै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (११८९-१५, बसंतु, मः १)
गुर पूछि तुम करहु बीचारु ॥ (११८९-१५, बसंतु, मः १)
जह देखउ तह सारिगपाणि ॥२॥ (११८९-१६, बसंतु, मः १)
किआ हउ आखा जाँ कछू नाहि ॥ (११८९-१६, बसंतु, मः १)
जाति पति सभ तेरै नाइ ॥३॥ (११८९-१७, बसंतु, मः १)
काहे मालु दरबु देखि गरबि जाहि ॥ (११८९-१७, बसंतु, मः १)
चलती बार तेरो कछू नाहि ॥४॥ (११८९-१७, बसंतु, मः १)
पंच मारि चितु रखहु थाइ ॥ (११८९-१८, बसंतु, मः १)
जोग जुगति की इहै पाँइ ॥५॥ (११८९-१८, बसंतु, मः १)
हउमै पैखड़ु तेरे मनै माहि ॥ (११८९-१८, बसंतु, मः १)
हरि न चेतहि मूड़े मुकति जाहि ॥६॥ (११८९-१८, बसंतु, मः १)
मत हरि विसरिऐ जम वसि पाहि ॥ (११८९-१९, बसंतु, मः १)
अंत कालि मूड़े चोट खाहि ॥७॥ (११८९-१९, बसंतु, मः १)

पन्ना ११९०

गुर सबदु बीचारहि आपु जाइ ॥ (११९०-१, बसंतु, मः १)
साच जोगु मनि वसै आइ ॥८॥ (११९०-१, बसंतु, मः १)
जिनि जीउ पिंडु दिता तिसु चेतहि नाहि ॥ (११९०-१, बसंतु, मः १)
मड़ी मसाणी मूड़े जोगु नाहि ॥९॥ (११९०-२, बसंतु, मः १)

गुण नानकु बोलै भली बाणि ॥ (११६०-२, बसंतु, मः १)
तुम होहु सुजाखे लेहु पछाणि ॥१०॥५॥ (११६०-२, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११६०-३)
दुबिधा दुरमति अधुली कार ॥ (११६०-३, बसंतु, मः १)
मनमुखि भरमै मझि गुबार ॥१॥ (११६०-३, बसंतु, मः १)
मनु अंधुला अंधुली मति लागै ॥ (११६०-४, बसंतु, मः १)
गुर करणी बिनु भरमु न भागै ॥१॥ रहाउ ॥ (११६०-४, बसंतु, मः १)
मनमुखि अंधुले गुरमति न भाई ॥ (११६०-४, बसंतु, मः १)
पसू भए अभिमानु न जाई ॥२॥ (११६०-५, बसंतु, मः १)
लख चउरासीह जंत उपाए ॥ (११६०-५, बसंतु, मः १)
मेरे ठाकुर भाणे सिरजि समाए ॥३॥ (११६०-५, बसंतु, मः १)
सगली भूलै नही सबदु अचारु ॥ (११६०-६, बसंतु, मः १)
सो समझै जिसु गुरु करतारु ॥४॥ (११६०-६, बसंतु, मः १)
गुर के चाकर ठाकुर भाणे ॥ (११६०-७, बसंतु, मः १)
बखसि लीए नाही जम काणे ॥५॥ (११६०-७, बसंतु, मः १)
जिन कै हिरदै एको भाइआ ॥ (११६०-७, बसंतु, मः १)
आपे मेले भरमु चुकाइआ ॥६॥ (११६०-८, बसंतु, मः १)
बेमुहताजु बेअंतु अपारा ॥ (११६०-८, बसंतु, मः १)
सचि पतीजै करणैहारा ॥७॥ (११६०-८, बसंतु, मः १)
नानक भूले गुरु समझावै ॥ (११६०-८, बसंतु, मः १)
एकु दिखावै साचि टिकावै ॥८॥६॥ (११६०-९, बसंतु, मः १)
बसंतु महला १ ॥ (११६०-९)
आपे भवरा फूल बेलि ॥ (११६०-९, बसंतु, मः १)
आपे संगति मीत मेलि ॥१॥ (११६०-१०, बसंतु, मः १)
ऐसी भवरा बासु ले ॥ (११६०-१०, बसंतु, मः १)
तरवर फूले बन हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (११६०-१०, बसंतु, मः १)
आपे कवला कंतु आपि ॥ (११६०-१०, बसंतु, मः १)
आपे रावे सबदि थापि ॥२॥ (११६०-११, बसंतु, मः १)
आपे बछरू गऊ खीरु ॥ (११६०-११, बसंतु, मः १)
आपे मंदरु थम्मु सरीरु ॥३॥ (११६०-११, बसंतु, मः १)
आपे करणी करणहारु ॥ (११६०-१२, बसंतु, मः १)
आपे गुरमुखि करि बीचारु ॥४॥ (११६०-१२, बसंतु, मः १)
तू करि करि देखहि करणहारु ॥ (११६०-१२, बसंतु, मः १)
जोति जीअ असंख देइ अधारु ॥५॥ (११६०-१३, बसंतु, मः १)
तू सरु सागरु गुण गहीरु ॥ (११६०-१३, बसंतु, मः १)

तू अकुल निरंजनु पर्म हीरु ॥६॥ (११६०-१३, बसंतु, मः १)
तू आपे करता करण जोगु ॥ (११६०-१४, बसंतु, मः १)
निहकेवलु राजन सुखी लोगु ॥७॥ (११६०-१४, बसंतु, मः १)
नानक ध्रापे हरि नाम सुआदि ॥ (११६०-१४, बसंतु, मः १)
बिनु हरि गुर प्रीतम जनमु बादि ॥८॥७॥ (११६०-१५, बसंतु, मः १)
बसंतु हिंडोलु महला १ घरु २ (११६०-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६०-१६)
नउ सत चउदह तीनि चारि करि महलति चारि बहाली ॥ (११६०-१७, बसंतु हिंडोल, मः १)
चारे दीवे चहु हथि दीए एका एका वारी ॥१॥ (११६०-१७, बसंतु हिंडोल, मः १)
मिहरवान मधुसूदन माधौ ऐसी सकति तुम्हारी ॥१॥ रहाउ ॥ (११६०-१८, बसंतु हिंडोल, मः १)
घरि घरि लसकरु पावकु तेरा धरमु करे सिकदारी ॥ (११६०-१८, बसंतु हिंडोल, मः १)
धरती देग मिलै इक वेरा भागु तेरा भंडारी ॥२॥ (११६०-१६, बसंतु हिंडोल, मः १)
ना साबूरु होवै फिरि मंगै नारदु करे खुआरी ॥ (११६०-१६, बसंतु हिंडोल, मः १)

पन्ना ११६१

लबु अधेरा बंदीखाना अउगण पैरि लुहारी ॥३॥ (११६१-१, बसंतु हिंडोल, मः १)
पूंजी मार पवै नित मुदगर पापु करे कुोटवारी ॥ (११६१-१, बसंतु हिंडोल, मः १)
भावै चंगा भावै मंदा जैसी नदरि तुम्हारी ॥४॥ (११६१-२, बसंतु हिंडोल, मः १)
आदि पुरख कउ अलहु कहीऐ सेखाँ आई वारी ॥ (११६१-२, बसंतु हिंडोल, मः १)
देवल देवतिआ करु लागा ऐसी कीरति चाली ॥५॥ (११६१-३, बसंतु हिंडोल, मः १)
कूजा बाँग निवाज मुसला नील रूप बनवारी ॥ (११६१-३, बसंतु हिंडोल, मः १)
घरि घरि मीआ सभनाँ जीआँ बोली अवर तुमारी ॥६॥ (११६१-४, बसंतु हिंडोल, मः १)
जे तू मीर महीपति साहिबु कुदरति कउण हमारी ॥ (११६१-४, बसंतु हिंडोल, मः १)
चारे कुंट सलामु करहिगे घरि घरि सिफति तुम्हारी ॥७॥ (११६१-५, बसंतु हिंडोल, मः १)
तीर्थ सिम्मृति पुन्न दान किछु लाहा मिलै दिहाड़ी ॥ (११६१-६, बसंतु हिंडोल, मः १)
नानक नामु मिलै वडिआई मेका घड़ी सम्हाली ॥८॥१॥८॥ (११६१-६, बसंतु हिंडोल, मः १)
बसंतु हिंडोलु घरु २ महला ४ (११६१-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६१-८)
काँइआ नगरि इकु बालकु वसिआ खिनु पलु थिरु न रहाई ॥ (११६१-६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
अनिक उपाव जतन करि थाके बारं बार भरमाई ॥१॥ (११६१-६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
मेरे ठाकुर बालकु इकतु घरि आणु ॥ (११६१-१०, बसंतु हिंडोल, मः ४)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ भजु राम नामु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (११६१-१०, बसंतु हिंडोल, मः ४)
इहु मिरतकु मड़ा सरीरु है सभु जगु जितु राम नामु नही वसिआ ॥ (११६१-११, बसंतु हिंडोल, मः ४)
राम नामु गुरि उदकु चुआइआ फिरि हरिआ होआ रसिआ ॥२॥ (११६१-१२, बसंतु हिंडोल, मः ४)
मै निरखत निरखत सरीरु सभु खोजिआ इकु गुरमुखि चलतु दिखाइआ ॥ (११६१-१२, बसंतु हिंडोल, मः ४)

बाहरु खोजि मुए सभि साकत हरि गुरमती घरि पाइआ ॥३॥ (११६१-१३, बसंतु हिंडोल, मः ४)
दीना दीन दइआल भए है जिउ क्रिसनु बिदर घरि आइआ ॥ (११६१-१४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
मिलिओ सुदामा भावनी धारि सभु किछु आगै दालदु भंजि समाइआ ॥४॥ (११६१-१४, बसंतु हिंडोल, मः ४)
राम नाम की पैज वडेरी मेरे ठाकुरि आपि रखाई ॥ (११६१-१५, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जे सभि साकत करहि बखीली इक रती तिलु न घटाई ॥५॥ (११६१-१६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जन की उसतति है राम नामा दह दिसि सोभा पाई ॥ (११६१-१६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
निंदकु साकतु खवि न सकै तिलु अपणै घरि लूकी लाई ॥६॥ (११६१-१७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
जन कउ जनु मिलि सोभा पावै गुण महि गुण परगासा ॥ (११६१-१७, बसंतु हिंडोल, मः ४)
मेरे ठाकुर के जन प्रीतम पिआरे जो होवहि दासनि दासा ॥७॥ (११६१-१८, बसंतु हिंडोल, मः ४)
आपे जलु अपरम्परु करता आपे मेलि मिलावै ॥ (११६१-१६, बसंतु हिंडोल, मः ४)
नानक गुरमुखि सहजि मिलाए जिउ जलु जलहि समावै ॥८॥१॥६॥ (११६१-१६, बसंतु हिंडोल, मः ४)

पन्ना ११६२

बसंतु महला ५ घरु १ दुतुकीआ (११६२-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६२-२)
सुणि साखी मन जपि पिआर ॥ (११६२-३, बसंतु, मः ५)
अजामलु उधरिआ कहि एक बार ॥ (११६२-३, बसंतु, मः ५)
बालमीकै होआ साधसंगु ॥ (११६२-३, बसंतु, मः ५)
ध्रू कउ मिलिआ हरि निसंग ॥१॥ (११६२-३, बसंतु, मः ५)
तेरिआ संता जाचउ चरन रेन ॥ (११६२-४, बसंतु, मः ५)
ले मसतकि लावउ करि क्रिपा देन ॥१॥ रहाउ ॥ (११६२-४, बसंतु, मः ५)
गनिका उधरी हरि कहै तोत ॥ (११६२-५, बसंतु, मः ५)
गजइंद्र धिआइओ हरि कीओ मोख ॥ (११६२-५, बसंतु, मः ५)
बिप्र सुदामे दालदु भंज ॥ (११६२-५, बसंतु, मः ५)
रे मन तू भी भजु गोबिंद ॥२॥ (११६२-६, बसंतु, मः ५)
बधिकु उधारिओ खमि प्रहार ॥ (११६२-६, बसंतु, मः ५)
कुबिजा उधरी अंगुसट धार ॥ (११६२-६, बसंतु, मः ५)
बिदरु उधारिओ दासत भाइ ॥ (११६२-६, बसंतु, मः ५)
रे मन तू भी हरि धिआइ ॥३॥ (११६२-७, बसंतु, मः ५)
प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ (११६२-७, बसंतु, मः ५)
बसत्र छीनत द्रोपती रखी लाज ॥ (११६२-७, बसंतु, मः ५)
जिनि जिनि सेविआ अंत बार ॥ (११६२-८, बसंतु, मः ५)
रे मन सेवि तू परहि पार ॥४॥ (११६२-८, बसंतु, मः ५)
धन्नै सेविआ बाल बुधि ॥ (११६२-८, बसंतु, मः ५)
त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ॥ (११६२-६, बसंतु, मः ५)

बेणी कउ गुरि कीओ प्रगासु ॥ (११६२-९, बसंतु, मः ५)
रे मन तू भी होहि दासु ॥५॥ (११६२-९, बसंतु, मः ५)
जैदेव तिआगिओ अहम्मेव ॥ (११६२-१०, बसंतु, मः ५)
नाई उधरिओ सैनु सेव ॥ (११६२-१०, बसंतु, मः ५)
मनु डीगि न डोलै कहूं जाइ ॥ (११६२-१०, बसंतु, मः ५)
मन तू भी तरसहि सरणि पाइ ॥६॥ (११६२-१०, बसंतु, मः ५)
जिह अनुग्रहु ठाकुरि कीओ आपि ॥ (११६२-११, बसंतु, मः ५)
से तैं लीने भगत राखि ॥ (११६२-११, बसंतु, मः ५)
तिन का गुणु अवगणु न बीचारिओ कोइ ॥ (११६२-११, बसंतु, मः ५)
इह बिधि देखि मनु लगा सेव ॥७॥ (११६२-१२, बसंतु, मः ५)
कबीरि धिआइओ एक रंग ॥ (११६२-१२, बसंतु, मः ५)
नामदेव हरि जीउ बसहि संगि ॥ (११६२-१३, बसंतु, मः ५)
रविदास धिआए प्रभ अनूप ॥ (११६२-१३, बसंतु, मः ५)
गुर नानक देव गोविंद रूप ॥८॥१॥ (११६२-१३, बसंतु, मः ५)
बसंतु महला ५ ॥ (११६२-१४)
अनिक जनम भ्रमे जोनि माहि ॥ (११६२-१४, बसंतु, मः ५)
हरि सिमरन बिनु नरकि पाहि ॥ (११६२-१४, बसंतु, मः ५)
भगति बिहूना खंड खंड ॥ (११६२-१४, बसंतु, मः ५)
बिनु बूझे जमु देत डंड ॥१॥ (११६२-१५, बसंतु, मः ५)
गोबिंद भजहु मेरे सदा मीत ॥ (११६२-१५, बसंतु, मः ५)
साच सबद करि सदा प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (११६२-१५, बसंतु, मः ५)
संतोखु न आवत कहूं काज ॥ (११६२-१६, बसंतु, मः ५)
धूम्म बादर सभि माइआ साज ॥ (११६२-१६, बसंतु, मः ५)
पाप करंतौ नह संगाइ ॥ (११६२-१६, बसंतु, मः ५)
बिखु का माता आवै जाइ ॥२॥ (११६२-१७, बसंतु, मः ५)
हउ हउ करत बधे बिकार ॥ (११६२-१७, बसंतु, मः ५)
मोह लोभ डूबौ संसार ॥ (११६२-१७, बसंतु, मः ५)
कामि क्रोधि मनु वसि कीआ ॥ (११६२-१७, बसंतु, मः ५)
सुपनै नामु न हरि लीआ ॥३॥ (११६२-१८, बसंतु, मः ५)
कब ही राजा कब मंगनहारु ॥ (११६२-१८, बसंतु, मः ५)
दूख सूख बाधौ संसार ॥ (११६२-१८, बसंतु, मः ५)
मन उधरण का साजु नाहि ॥ (११६२-१९, बसंतु, मः ५)
पाप बंधन नित पउत जाहि ॥४॥ (११६२-१९, बसंतु, मः ५)
ईठ मीत कोऊ सखा नाहि ॥ (११६२-१९, बसंतु, मः ५)
आपि बीजि आपे ही खाँहि ॥ (११६२-१९, बसंतु, मः ५)

जा कै कीन्है होत बिकार ॥ (११६३-१, बसंतु, मः ५)
से छोडि चलिआ खिन महि गवार ॥५॥ (११६३-१, बसंतु, मः ५)
माइआ मोहि बहु भरमिआ ॥ (११६३-१, बसंतु, मः ५)
किरत रेख करि करमिआ ॥ (११६३-२, बसंतु, मः ५)
करणैहारु अलिपतु आपि ॥ (११६३-२, बसंतु, मः ५)
नही लेपु प्रभ पुन्न पापि ॥६॥ (११६३-२, बसंतु, मः ५)
राखि लेहु गोबिंद दइआल ॥ (११६३-३, बसंतु, मः ५)
तेरी सरणि पूरन कृपाल ॥ (११६३-३, बसंतु, मः ५)
तुझ बिनु दूजा नही ठाउ ॥ (११६३-३, बसंतु, मः ५)
करि किरपा प्रभ देहु नाउ ॥७॥ (११६३-३, बसंतु, मः ५)
तू करता तू करणहारु ॥ (११६३-४, बसंतु, मः ५)
तू ऊचा तू बहु अपारु ॥ (११६३-४, बसंतु, मः ५)
करि किरपा लड़ि लेहु लाइ ॥ (११६३-४, बसंतु, मः ५)
नानक दास प्रभ की सरणाइ ॥८॥२॥ (११६३-५, बसंतु, मः ५)
बसंत की वार महलु ५ (११६३-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६३-६)
हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ (११६३-७, बसंतु, मः ५)
करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ (११६३-७, बसंतु, मः ५)
वणु तृणु तृभवणु मउलिआ अमृत फलु पाई ॥ (११६३-७, बसंतु, मः ५)
मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ (११६३-८, बसंतु, मः ५)
नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥१॥ (११६३-८, बसंतु, मः ५)
पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ (११६३-९, बसंतु, मः ५)
आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ (११६३-९, बसंतु, मः ५)
रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ (११६३-१०, बसंतु, मः ५)
दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ (११६३-१०, बसंतु, मः ५)
जिस ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥२॥ (११६३-११, बसंतु, मः ५)
किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ (११६३-११, बसंतु, मः ५)
जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ (११६३-११, बसंतु, मः ५)
कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ (११६३-१२, बसंतु, मः ५)
अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ (११६३-१२, बसंतु, मः ५)
सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥३॥१॥ (११६३-१३, बसंतु, मः ५)
बसंतु बाणी भगताँ की ॥ (११६३-१४)
कबीर जी घरु १ (११६३-१४)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६३-१४)
मउली धरती मउलिआ अकासु ॥ (११६३-१५, बसंतु, भगत कबीर जी)
घटि घटि मउलिआ आतम प्रगासु ॥१॥ (११६३-१५, बसंतु, भगत कबीर जी)
राजा रामु मउलिआ अनत भाइ ॥ (११६३-१५, बसंतु, भगत कबीर जी)
जह देखउ तह रहिआ समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६३-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
दुतीआ मउले चारि बेद ॥ (११६३-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
सिम्रिति मउली सिउ कतेब ॥२॥ (११६३-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
संकरु मउलिओ जोग धिआन ॥ (११६३-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)
कबीर को सुआमी सभ समान ॥३॥१॥ (११६३-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)
पंडित जन माते पड़्हि पुरान ॥ (११६३-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)
जोगी माते जोग धिआन ॥ (११६३-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
संनिआसी माते अहम्मेव ॥ (११६३-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
तपसी माते तप कै भेव ॥१॥ (११६३-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ (११६३-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)
संग ही चोर घरु मुसन लाग ॥१॥ रहाउ ॥ (११६३-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)
जागै सुकदेउ अरु अकूरु ॥ (११६३-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)

पन्ना ११६४

हणवंतु जागै धरि लंकूरु ॥ (११६४-१, बसंतु, भगत कबीर जी)
संकरु जागै चरन सेव ॥ (११६४-१, बसंतु, भगत कबीर जी)
कलि जागे नामा जैदेव ॥२॥ (११६४-१, बसंतु, भगत कबीर जी)
जागत सोवत बहु प्रकार ॥ (११६४-१, बसंतु, भगत कबीर जी)
गुरमुखि जागै सोई सारु ॥ (११६४-२, बसंतु, भगत कबीर जी)
इसु देही के अधिक काम ॥ (११६४-२, बसंतु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर भजि राम नाम ॥३॥२॥ (११६४-२, बसंतु, भगत कबीर जी)
जोइ खसमु है जाइआ ॥ (११६४-३, बसंतु, भगत कबीर जी)
पूति बापु खेलाइआ ॥ (११६४-३, बसंतु, भगत कबीर जी)
बिनु स्रवणा खीरु पिलाइआ ॥१॥ (११६४-३, बसंतु, भगत कबीर जी)
देखहु लोगा कलि को भाउ ॥ (११६४-३, बसंतु, भगत कबीर जी)
सुति मुकलाई अपनी माउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६४-४, बसंतु, भगत कबीर जी)
पगा बिनु हुरीआ मारता ॥ (११६४-४, बसंतु, भगत कबीर जी)
बदनै बिनु खिर खिर हासता ॥ (११६४-४, बसंतु, भगत कबीर जी)
निद्रा बिनु नरु पै सोवै ॥ (११६४-५, बसंतु, भगत कबीर जी)
बिनु बासन खीरु बिलोवै ॥२॥ (११६४-५, बसंतु, भगत कबीर जी)
बिनु असथन गऊ लवेरी ॥ (११६४-५, बसंतु, भगत कबीर जी)

पैडे बिनु बाट घनेरी ॥ (११६४-५, बसंतु, भगत कबीर जी)
बिनु सतिगुर बाट न पाई ॥ (११६४-६, बसंतु, भगत कबीर जी)
कहु कबीर समझाई ॥३॥३॥ (११६४-६, बसंतु, भगत कबीर जी)
प्रहलाद पठाए पड़न साल ॥ (११६४-६, बसंतु, भगत कबीर जी)
संगि सखा बहु लीए बाल ॥ (११६४-७, बसंतु, भगत कबीर जी)
मो कउ कहा पड़्हावसि आल जाल ॥ (११६४-७, बसंतु, भगत कबीर जी)
मेरी पटीआ लिखि देहु स्री गोपाल ॥१॥ (११६४-७, बसंतु, भगत कबीर जी)
नही छोडउ रे बाबा राम नाम ॥ (११६४-८, बसंतु, भगत कबीर जी)
मेरो अउर पड़्हन सिउ नही कामु ॥१॥ रहाउ ॥ (११६४-८, बसंतु, भगत कबीर जी)
संडै मरकै कहिओ जाइ ॥ (११६४-८, बसंतु, भगत कबीर जी)
प्रहलाद बुलाए बेगि धाइ ॥ (११६४-९, बसंतु, भगत कबीर जी)
तू राम कहन की छोडु बानि ॥ (११६४-९, बसंतु, भगत कबीर जी)
तुझु तुरतु छडाऊ मेरो कहिओ मानि ॥२॥ (११६४-९, बसंतु, भगत कबीर जी)
मो कउ कहा सतावहु बार बार ॥ (११६४-१०, बसंतु, भगत कबीर जी)
प्रभि जल थल गिरि कीए पहार ॥ (११६४-१०, बसंतु, भगत कबीर जी)
इकु रामु न छोडउ गुरहि गारि ॥ (११६४-१०, बसंतु, भगत कबीर जी)
मो कउ घालि जारि भावै मारि डारि ॥३॥ (११६४-११, बसंतु, भगत कबीर जी)
काढि खड़गु कोपिओ रिसाइ ॥ (११६४-११, बसंतु, भगत कबीर जी)
तुझ राखनहारो मोहि बताइ ॥ (११६४-११, बसंतु, भगत कबीर जी)
प्रभ थम्भ ते निकसे कै बिसथार ॥ (११६४-१२, बसंतु, भगत कबीर जी)
हरनाखसु छेदिओ नख बिदार ॥४॥ (११६४-१२, बसंतु, भगत कबीर जी)
ओइ पर्म पुरख देवाधि देव ॥ (११६४-१२, बसंतु, भगत कबीर जी)
भगति हेति नरसिंघ भेव ॥ (११६४-१३, बसंतु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर को लखै न पार ॥ (११६४-१३, बसंतु, भगत कबीर जी)
प्रहलाद उधारे अनिक बार ॥५॥४॥ (११६४-१३, बसंतु, भगत कबीर जी)
इसु तन मन मधे मदन चोर ॥ (११६४-१४, बसंतु, भगत कबीर जी)
जिनि गिआन रतनु हिरि लीन मोर ॥ (११६४-१४, बसंतु, भगत कबीर जी)
मै अनाथु प्रभ कहउ काहि ॥ (११६४-१४, बसंतु, भगत कबीर जी)
को को न बिगूतो मै को आहि ॥१॥ (११६४-१५, बसंतु, भगत कबीर जी)
माधउ दारुन दुखु सहिओ न जाइ ॥ (११६४-१५, बसंतु, भगत कबीर जी)
मेरो चपल बुधि सिउ कहा बसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६४-१५, बसंतु, भगत कबीर जी)
सनक सनंदन सिव सुकादि ॥ (११६४-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
नाभि कमल जाने ब्रहमादि ॥ (११६४-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
कबि जन जोगी जटाधारि ॥ (११६४-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
सभ आपन अउसर चले सारि ॥२॥ (११६४-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)

तू अथाहु मोहि थाह नाहि ॥ (११६४-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)
प्रभ दीना नाथ दुखु कहउ काहि ॥ (११६४-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)
मोरो जनम मरन दुखु आथि धीर ॥ (११६४-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
सुख सागर गुन रउ कबीर ॥३॥५॥ (११६४-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
नाइकु एकु बनजारे पाच ॥ (११६४-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
बरध पचीसक संगु काच ॥ (११६४-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)
नउ बहीआँ दस गोनि आहि ॥ (११६४-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)
कसनि बहतरि लागी ताहि ॥१॥ (११६४-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)
मोहि ऐसे बनज सिउ नहीन काजु ॥ (११६४-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)

पन्ना ११६५

जिह घटै मूलु नित बढै बिआजु ॥ रहाउ ॥ (११६५-१, बसंतु, भगत कबीर जी)
सात सूत मिलि बनजु कीन ॥ (११६५-१, बसंतु, भगत कबीर जी)
कर्म भावनी संग लीन ॥ (११६५-२, बसंतु, भगत कबीर जी)
तीनि जगाती करत रारि ॥ (११६५-२, बसंतु, भगत कबीर जी)
चलो बनजारा हाथ झारि ॥२॥ (११६५-२, बसंतु, भगत कबीर जी)
पूंजी हिरानी बनजु टूट ॥ (११६५-२, बसंतु, भगत कबीर जी)
दह दिस टाँडो गइओ फूटि ॥ (११६५-३, बसंतु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर मन सरसी काज ॥ (११६५-३, बसंतु, भगत कबीर जी)
सहज समानो त भर्म भाज ॥३॥६॥ (११६५-३, बसंतु, भगत कबीर जी)
बसंतु हिंडोलु घरु २ (११६५-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६५-५)
माता जूठी पिता भी जूठा जूठे ही फल लागे ॥ (११६५-५, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
आवहि जूठे जाहि भी जूठे जूठे मरहि अभागे ॥१॥ (११६५-६, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
कहु पंडित सूचा कवनु ठाउ ॥ (११६५-६, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
जहाँ बैसि हउ भोजनु खाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६५-६, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
जिहबा जूठी बोलत जूठा करन नेत्र सभि जूठे ॥ (११६५-७, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
इंद्री की जूठि उतरसि नाही ब्रह्म अगनि के लूठे ॥२॥ (११६५-७, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
अगनि भी जूठी पानी जूठा जूठी बैसि पकाइआ ॥ (११६५-८, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
जूठी करछी परोसन लागा जूठे ही बैठि खाइआ ॥३॥ (११६५-८, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
गोबरु जूठा चउका जूठा जूठी दीनी कारा ॥ (११६५-९, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
कहि कबीर तेई नर सूचे साची परी बिचारा ॥४॥१॥७॥ (११६५-९, बसंतु हिंडोल, भगत कबीर जी)
रामानंद जी घरु १ (११६५-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६५-११)
कत जाईऐ रे घर लागो रंगु ॥ (११६५-११, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)

मेरा चितु न चलै मनु भइओ पंगु ॥१॥ रहाउ ॥ (११६५-११, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
एक दिवस मन भई उमंग ॥ (११६५-१२, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
घसि चंदन चोआ बहु सुगंध ॥ (११६५-१२, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
पूजन चाली ब्रह्म ठाइ ॥ (११६५-१३, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
सो ब्रह्मु बताइओ गुर मन ही माहि ॥१॥ (११६५-१३, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
जहा जाईऐ तह जल पखान ॥ (११६५-१३, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
तू पूरि रहिओ है सभ समान ॥ (११६५-१४, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
बेद पुरान सभ देखे जोइ ॥ (११६५-१४, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
ऊहाँ तउ जाईऐ जउ ईहाँ न होइ ॥२॥ (११६५-१४, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
सतिगुर मै बलिहारी तोर ॥ (११६५-१५, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
जिनि सकल बिकल भ्रम काटे मोर ॥ (११६५-१५, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
रामानंद सुआमी रमत ब्रह्म ॥ (११६५-१५, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
गुर का सबदु काटै कोटि कर्म ॥३॥१॥ (११६५-१५, बसंतु हिंडोल, भगत रामानंद जी)
बसंतु बाणी नामदेउ जी की (११६५-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११६५-१७)
साहिबु संकटवै सेवकु भजै ॥ (११६५-१७, बसंतु, भगत नामदेव जी)
चिरंकाल न जीवै दोऊ कुल लजै ॥१॥ (११६५-१७, बसंतु, भगत नामदेव जी)
तेरी भगति न छोडउ भावै लोगु हसै ॥ (११६५-१८, बसंतु, भगत नामदेव जी)
चरन कमल मेरे हीअरे बसैं ॥१॥ रहाउ ॥ (११६५-१८, बसंतु, भगत नामदेव जी)
जैसे अपने धनहि प्रानी मरनु माँडै ॥ (११६५-१९, बसंतु, भगत नामदेव जी)
तैसे संत जनाँ राम नामु न छाडैं ॥२॥ (११६५-१९, बसंतु, भगत नामदेव जी)
गंगा गइआ गोदावरी संसार के कामा ॥ (११६५-१९, बसंतु, भगत नामदेव जी)

पन्ना ११६६

नाराइणु सुप्रसन्न होइ त सेवकु नामा ॥३॥१॥ (११६६-१, बसंतु, भगत नामदेव जी)
लोभ लहरि अति नीझर बाजै ॥ (११६६-१, बसंतु, भगत नामदेव जी)
काइआ डूबै केसवा ॥१॥ (११६६-२, बसंतु, भगत नामदेव जी)
संसारु समुंदे तारि गोबिंदे ॥ (११६६-२, बसंतु, भगत नामदेव जी)
तारि लै बाप बीठुला ॥१॥ रहाउ ॥ (११६६-२, बसंतु, भगत नामदेव जी)
अनिल बेड़ा हउ खेवि न साकउ ॥ (११६६-२, बसंतु, भगत नामदेव जी)
तेरा पारु न पाइआ बीठुला ॥२॥ (११६६-३, बसंतु, भगत नामदेव जी)
होहु दइआलु सतिगुरु मेलि तू मो कउ ॥ (११६६-३, बसंतु, भगत नामदेव जी)
पारि उतारे केसवा ॥३॥ (११६६-४, बसंतु, भगत नामदेव जी)
नामा कहै हउ तरि भी न जानउ ॥ (११६६-४, बसंतु, भगत नामदेव जी)
मो कउ बाह देहि बाह देहि बीठुला ॥४॥२॥ (११६६-४, बसंतु, भगत नामदेव जी)

सहज अवलि धूड़ि मणी गाडी चालती ॥ (११९६-५, बसंतु, भगत नामदेव जी)
पीछै तिनका लै करि हाँकती ॥१॥ (११९६-५, बसंतु, भगत नामदेव जी)
जैसे पनकत थ्रूटिटि हाँकती ॥ (११९६-५, बसंतु, भगत नामदेव जी)
सरि धोवन चाली लाडुली ॥१॥ रहाउ ॥ (११९६-६, बसंतु, भगत नामदेव जी)
धोबी धोवै बिरह बिराता ॥ (११९६-६, बसंतु, भगत नामदेव जी)
हरि चरन मेरा मनु राता ॥२॥ (११९६-६, बसंतु, भगत नामदेव जी)
भणति नामदेउ रमि रहिआ ॥ (११९६-७, बसंतु, भगत नामदेव जी)
अपने भगत पर करि दइआ ॥३॥३॥ (११९६-७, बसंतु, भगत नामदेव जी)
बसंतु बाणी रविदास जी की (११९६-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११९६-८)
तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥ (११९६-९, बसंतु, भगत रविदास जी)
पहिरावा देखे ऊभि जाहि ॥ (११९६-९, बसंतु, भगत रविदास जी)
गरबवती का नाही ठाउ ॥ (११९६-९, बसंतु, भगत रविदास जी)
तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ ॥१॥ (११९६-९, बसंतु, भगत रविदास जी)
तू काँइ गरबहि बावली ॥ (११९६-१०, बसंतु, भगत रविदास जी)
जैसे भादउ खूम्बराजु तू तिस ते खरी उतावली ॥१॥ रहाउ ॥ (११९६-१०, बसंतु, भगत रविदास जी)
जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु ॥ (११९६-११, बसंतु, भगत रविदास जी)
तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु ॥ (११९६-११, बसंतु, भगत रविदास जी)
अप तन का जो करे बीचारु ॥ (११९६-११, बसंतु, भगत रविदास जी)
तिसु नही जमकंकरु करे खुआरु ॥२॥ (११९६-११, बसंतु, भगत रविदास जी)
पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥ (११९६-१२, बसंतु, भगत रविदास जी)
ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥ (११९६-१२, बसंतु, भगत रविदास जी)
फेड़े का दुखु सहै जीउ ॥ (११९६-१२, बसंतु, भगत रविदास जी)
पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ ॥३॥ (११९६-१३, बसंतु, भगत रविदास जी)
साधू की जउ लेहि ओट ॥ (११९६-१३, बसंतु, भगत रविदास जी)
तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥ (११९६-१३, बसंतु, भगत रविदास जी)
कहि रविदास जुो जपै नामु ॥ (११९६-१४, बसंतु, भगत रविदास जी)
तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु ॥४॥१॥ (११९६-१४, बसंतु, भगत रविदास जी)
बसंतु कबीर जीउ (११९६-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११९६-१५)
सुरह की जैसी तेरी चाल ॥ (११९६-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
तेरी पूंछट ऊपरि झमक बाल ॥१॥ (११९६-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
इस घर महि है सु तू ढूंढि खाहि ॥ (११९६-१६, बसंतु, भगत कबीर जी)
अउर किस ही के तू मति ही जाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (११९६-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)
चाकी चाटहि चूनु खाहि ॥ (११९६-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)

चाकी का चीथरा कहाँ लै जाहि ॥२॥ (११६६-१७, बसंतु, भगत कबीर जी)
छीके पर तेरी बहुतु डीठि ॥ (११६६-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
मतु लकरी सोटा तेरी परै पीठि ॥३॥ (११६६-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
कहि कबीर भोग भले कीन ॥ (११६६-१८, बसंतु, भगत कबीर जी)
मति कोऊ मारै ईंट ढेम ॥४॥१॥ (११६६-१९, बसंतु, भगत कबीर जी)

पन्ना ११६७

रागु सारग चउपदे महला १ घरु १ (११६७-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (११६७-२)
अपुने ठाकुर की हउ चेरी ॥ (११६७-४, सारंग, मः १)
चरन गहे जगजीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (११६७-४, सारंग, मः १)
पूरन पर्म जोति परमेसर प्रीतम प्रान हमारे ॥ (११६७-४, सारंग, मः १)
मोहन मोहि लीआ मनु मेरा समझसि सबदु बीचारे ॥१॥ (११६७-५, सारंग, मः १)
मनमुख हीन होछी मति झूठी मनि तनि पीर सरीरे ॥ (११६७-६, सारंग, मः १)
जब की राम रंगीलै राती राम जपत मन धीरे ॥२॥ (११६७-६, सारंग, मः १)
हउमै छोडि भई बैरागनि तब साची सुरति समानी ॥ (११६७-७, सारंग, मः १)
अकुल निरंजन सिउ मनु मानिआ बिसरी लाज लुोकानी ॥३॥ (११६७-७, सारंग, मः १)
भूर भविख नाही तुम जैसे मेरे प्रीतम प्रान अधारा ॥ (११६७-८, सारंग, मः १)
हरि कै नामि रती सोहागनि नानक राम भतारा ॥४॥१॥ (११६७-८, सारंग, मः १)
सारग महला १ ॥ (११६७-९)
हरि बिनु किउ रहीऐ दुखु बिआपै ॥ (११६७-९, सारंग, मः १)
जिहवा सादु न फीकी रस बिनु बिनु प्रभ कालु संतापै ॥१॥ रहाउ ॥ (११६७-१०, सारंग, मः १)
जब लगु दरसु न परसै प्रीतम तब लगु भूख पिआसी ॥ (११६७-१०, सारंग, मः १)
दरसनु देखत ही मनु मानिआ जल रसि कमल बिगासी ॥१॥ (११६७-११, सारंग, मः १)
ऊनवि घनहरु गरजै बरसै कोकिल मोर बैरागै ॥ (११६७-११, सारंग, मः १)
तरवर बिरख बिहंग भुइअंगम घरि पिरु धन सोहागै ॥२॥ (११६७-१२, सारंग, मः १)
कुचिल कुरूपि कुनारि कुलखनी पिर का सहजु न जानिआ ॥ (११६७-१३, सारंग, मः १)
हरि रस रंगि रसन नही तृपती दुरमति दूख समानिआ ॥३॥ (११६७-१३, सारंग, मः १)
आइ न जावै ना दुखु पावै ना दुख दरदु सरीरे ॥ (११६७-१४, सारंग, मः १)
नानक प्रभ ते सहज सुहेली प्रभ देखत ही मनु धीरे ॥४॥२॥ (११६७-१४, सारंग, मः १)
सारग महला १ ॥ (११६७-१५)
दूरि नाही मेरो प्रभु पिआरा ॥ (११६७-१५, सारंग, मः १)
सतिगुर बचनि मेरो मनु मानिआ हरि पाए प्रान अधारा ॥१॥ रहाउ ॥ (११६७-१५, सारंग, मः १)

इन बिधि हरि मिलीऐ वर कामनि धन सोहागु पिआरी ॥ (११९८-१, सारंग, मः १)
जाति बरन कुल सहसा चूका गुरमति सबदि बीचारी ॥१॥ (११९८-२, सारंग, मः १)
जिसु मनु मानै अभिमानु न ता कउ हिंसा लोभु विसारे ॥ (११९८-२, सारंग, मः १)
सहजि रवै वरु कामणि पिर की गुरमुखि रंगि सवारे ॥२॥ (११९८-३, सारंग, मः १)
जारउ ऐसी प्रीति कुटम्ब सनबंधी माइआ मोह पसारी ॥ (११९८-४, सारंग, मः १)
जिसु अंतरि प्रीति राम रसु नाही दुबिधा कर्म बिकारी ॥३॥ (११९८-४, सारंग, मः १)
अंतरि रतन पदार्थ हित कौ दुरै न लाल पिआरी ॥ (११९८-५, सारंग, मः १)
नानक गुरमुखि नामु अमोलकु जुगि जुगि अंतरि धारी ॥४॥३॥ (११९८-५, सारंग, मः १)
सारंग महला ४ घरु १ (११९८-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (११९८-७)
हरि के संत जना की हम धूरि ॥ (११९८-८, सारंग, मः ४)
मिलि सतसंगति पर्म पदु पाइआ आतम रामु रहिआ भरपूरि ॥१॥ रहाउ ॥ (११९८-८, सारंग, मः ४)
सतिगुरु संतु मिलै साँति पाईऐ किलविख दुख काटे सभि दूरि ॥ (११९८-९, सारंग, मः ४)
आतम जोति भई परफूलित पुरखु निरंजनु देखिआ हजूरि ॥१॥ (११९८-९, सारंग, मः ४)
वडै भागि सतसंगति पाई हरि हरि नामु रहिआ भरपूरि ॥ (११९८-१०, सारंग, मः ४)
अठसठि तीर्थ मजनु कीआ सतसंगति पग नाए धूरि ॥२॥ (११९८-११, सारंग, मः ४)
दुरमति बिकार मलीन मति होछी हिरदा कुसुधु लागा मोह कूरु ॥ (११९८-११, सारंग, मः ४)
बिनु करमा किउ संगति पाईऐ हउमै बिआपि रहिआ मनु झूरि ॥३॥ (११९८-१२, सारंग, मः ४)
होहु दइआल कृपा करि हरि जी मागउ सतसंगति पग धूरि ॥ (११९८-१३, सारंग, मः ४)
नानक संतु मिलै हरि पाईऐ जनु हरि भेटिआ रामु हजूरि ॥४॥१॥ (११९८-१३, सारंग, मः ४)
सारंग महला ४ ॥ (११९८-१४)
गोबिंद चरनन कउ बलिहारी ॥ (११९८-१४, सारंग, मः ४)
भवजलु जगतु न जाई तरणा जपि हरि हरि पारि उतारी ॥१॥ रहाउ ॥ (११९८-१४, सारंग, मः ४)
हिरदै प्रतीति बनी प्रभ केरी सेवा सुरति बीचारी ॥ (११९८-१५, सारंग, मः ४)
अनदिनु राम नामु जपि हिरदै सर्ब कला गुणकारी ॥१॥ (११९८-१६, सारंग, मः ४)
प्रभु अगम अगोचरु रविआ स्रब ठाई मनि तनि अलख अपारी ॥ (११९८-१६, सारंग, मः ४)
गुर किरपाल भए तब पाइआ हिरदै अलखु लखारी ॥२॥ (११९८-१७, सारंग, मः ४)
अंतरि हरि नामु सर्ब धरणीधर साकत कउ दूरि भइआ अहंकारी ॥ (११९८-१८, सारंग, मः ४)
तृसना जलत न कबहू बूझहि जूऐ बाजी हारी ॥३॥ (११९८-१८, सारंग, मः ४)
ऊठत बैठत हरि गुन गावहि गुरि किंचत किरपा धारी ॥ (११९८-१९, सारंग, मः ४)
नानक जिन कउ नदरि भई है तिन की पैज सवारी ॥४॥२॥ (११९८-१९, सारंग, मः ४)

पन्ना ११६६

सारग महला ४ ॥ (११६६-१)
हरि हरि अमृत नामु देहु पिआरे ॥ (११६६-१, सारंग, मः ४)
जिन ऊपरि गुरमुखि मनु मानिआ तिन के काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ (११६६-२, सारंग, मः ४)
जो जन दीन भए गुर आगै तिन के दूख निवारे ॥ (११६६-२, सारंग, मः ४)
अनदिनु भगति करहि गुर आगै गुर कै सबदि सवारे ॥१॥ (११६६-३, सारंग, मः ४)
हिरदै नामु अमृत रसु रसना रसु गावहि रसु बीचारे ॥ (११६६-३, सारंग, मः ४)
गुर परसादि अमृत रसु चीन्हिआ ओइ पावहि मोख दुआरे ॥२॥ (११६६-४, सारंग, मः ४)
सतिगुरु पुरखु अचलु अचला मति जिसु दृड़ता नामु अधारे ॥ (११६६-५, सारंग, मः ४)
तिसु आगै जीउ देवउ अपुना हउ सतिगुर कै बलिहारे ॥३॥ (११६६-५, सारंग, मः ४)
मनमुख भ्रमि दूजै भाइ लागे अंतरि अगिआन गुबारे ॥ (११६६-६, सारंग, मः ४)
सतिगुरु दाता नदरि न आवै ना उरवारि न पारे ॥४॥ (११६६-७, सारंग, मः ४)
सरबे घटि घटि रविआ सुआमी सर्ब कला कल धारे ॥ (११६६-७, सारंग, मः ४)
नानकु दासनि दासु कहत है करि किरपा लेहु उबारे ॥५॥३॥ (११६६-८, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ ॥ (११६६-८)
गोबिद की ऐसी कार कमाइ ॥ (११६६-८, सारंग, मः ४)
जो किछु करे सु सति करि मानहु गुरमुखि नामि रहहु लिव लाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (११६६-९, सारंग, मः ४)
गोबिद प्रीति लगी अति मीठी अवर विसरि सभ जाइ ॥ (११६६-१०, सारंग, मः ४)
अनदिनु रहसु भइआ मनु मानिआ जोती जोति मिलाइ ॥१॥ (११६६-१०, सारंग, मः ४)
जब गुण गाइ तब ही मनु तृपतै साँति वसै मनि आइ ॥ (११६६-११, सारंग, मः ४)
गुर किरपाल भए तब पाइआ हरि चरणी चितु लाइ ॥२॥ (११६६-११, सारंग, मः ४)
मति प्रगास भई हरि धिआइआ गिआनि तति लिव लाइ ॥ (११६६-१२, सारंग, मः ४)
अंतरि जोति प्रगटी मनु मानिआ हरि सहजि समाधि लगाइ ॥३॥ (११६६-१३, सारंग, मः ४)
हिरदै कपटु नित कपटु कमावहि मुखहु हरि हरि सुणाइ ॥ (११६६-१३, सारंग, मः ४)
अंतरि लोभु महा गुबारा तुह कूटै दुख खाइ ॥४॥ (११६६-१४, सारंग, मः ४)
जब सुप्रसन्न भए प्रभ मेरे गुरमुखि परचा लाइ ॥ (११६६-१४, सारंग, मः ४)
नानक नाम निरंजनु पाइआ नामु जपत सुखु पाइ ॥५॥४॥ (११६६-१५, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ ॥ (११६६-१५)
मेरा मनु राम नामि मनु मानी ॥ (११६६-१६, सारंग, मः ४)
मेरै हीअरै सतिगुरि प्रीति लगाई मनि हरि हरि कथा सुखानी ॥१॥ रहाउ ॥ (११६६-१६, सारंग, मः ४)
दीन दइआल होवहु जन ऊपरि जन देवहु अकथ कहानी ॥ (११६६-१७, सारंग, मः ४)
संत जना मिलि हरि रसु पाइआ हरि मनि तनि मीठ लगानी ॥१॥ (११६६-१७, सारंग, मः ४)
हरि कै रंगि रते बैरागी जिन्ह गुरमति नामु पछानी ॥ (११६६-१८, सारंग, मः ४)
पुरखै पुरखु मिलिआ सुखु पाइआ सभ चूकी आवण जानी ॥२॥ (११६६-१९, सारंग, मः ४)

नैणी बिरहु देखा प्रभ सुआमी रसना नामु वखानी ॥ (११९९-१९, सारंग, मः ४)

पन्ना १२००

स्रवणी कीरतनु सुनउ दिनु राती हिरदै हरि हरि भानी ॥३॥ (१२००-१, सारंग, मः ४)
पंच जना गुरि वसगति आणे तउ उनमनि नामि लगानी ॥ (१२००-२, सारंग, मः ४)
जन नानक हरि किरपा धारी हरि रामै नामि समानी ॥४॥५॥ (१२००-२, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ ॥ (१२००-३)
जपि मन राम नामु पड़्हु सारु ॥ (१२००-३, सारंग, मः ४)
राम नाम बिनु थिरु नही कोई होरु निहफल सभु बिसथारु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२००-३, सारंग, मः ४)
किआ लीजै किआ तजीऐ बउरे जो दीसै सो छारु ॥ (१२००-४, सारंग, मः ४)
जिसु बिखिआ कउ तुम्ह अपुनी करि जानहु सा छाडि जाहु सिरि भारु ॥१॥ (१२००-५, सारंग, मः ४)
तिलु तिलु पलु पलु अउध फुनि घाटै बूझि न सकै गवारु ॥ (१२००-५, सारंग, मः ४)
सो किछु करै जि साथि न चालै इहु साकत का आचारु ॥२॥ (१२००-६, सारंग, मः ४)
संत जना कै संगि मिलु बउरे तउ पावहि मोख दुआरु ॥ (१२००-७, सारंग, मः ४)
बिनु सतसंग सुखु किनै न पाइआ जाइ पूछहु बेद बीचारु ॥३॥ (१२००-७, सारंग, मः ४)
राणा राउ सभै कोऊ चालै झूठु छोडि जाइ पासारु ॥ (१२००-८, सारंग, मः ४)
नानक संत सदा थिरु निहचलु जिन राम नामु आधारु ॥४॥६॥ (१२००-८, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ घरु ३ दुपदा (१२००-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२००-१०)
काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥ (१२००-११, सारंग, मः ४)
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥१॥ रहाउ ॥ (१२००-११, सारंग, मः ४)
जिसु धन का तुम गरबु करत हउ सो धनु किसहि न आप ॥ (१२००-१२, सारंग, मः ४)
खिन महि छोडि जाइ बिखिआ रसु तउ लागै पछुताप ॥१॥ (१२००-१२, सारंग, मः ४)
जो तुमरे प्रभ होते सुआमी हरि तिन के जापहु जाप ॥ (१२००-१३, सारंग, मः ४)
उपदेसु करत नानक जन तुम कउ जउ सुनहु तउ जाइ संताप ॥२॥१॥७॥ (१२००-१३, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ घरु ५ दुपदे पड़ताल (१२००-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२००-१५)
जपि मन जगन्नाथ जगदीसरो जगजीवनो मनमोहन सिउ प्रीति लागी मै हरि हरि हरि टेक सभ दिनसु सभ राति ॥१॥ रहाउ ॥ (१२००-१६, सारंग, मः ४)
हरि की उपमा अनिक अनिक अनिक गुन गावत सुक नारद ब्रहमादिक तव गुन सुआमी गनिन न जाति ॥ (१२००-१७, सारंग, मः ४)
तू हरि बेअंतु तू हरि बेअंतु तू हरि सुआमी तू आपे ही जानहि आपनी भाँति ॥१॥ (१२००-१८, सारंग, मः ४)
हरि कै निकटि निकटि हरि निकट ही बसते ते हरि के जन साधू हरि भगात ॥ (१२००-१९, सारंग, मः ४)
ते हरि के जन हरि सिउ रलि मिले जैसे जन नानक सललै सलल मिलाति ॥२॥१॥८॥ (१२००-१९, सारंग, मः ४)

पन्ना १२०१

सारंग महला ४ ॥ (१२०१-१)
जपि मन नरहरे नरहर सुआमी हरि सगल देव देवा स्री राम राम नामा हरि प्रीतमु मोरा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०१-१, सारंग, मः ४)
जितु गृहि गुन गावते हरि के गुन गावते राम गुन गावते तितु गृहि वाजे पंच सबद वड भाग मथोरा ॥ (१२०१-३, सारंग, मः ४)
तिन् जन के सभि पाप गए सभि दोख गए सभि रोग गए कामु क्रोधु लोभु मोहु अभिमानु गए तिन् जन के हरि मारि कढे पंच चोरा ॥१॥ (१२०१-४, सारंग, मः ४)
हरि राम बोलहु हरि साधू हरि के जन साधू जगदीसु जपहु मनि बचनि करमि हरि हरि आराधू हरि के जन साधू ॥ (१२०१-५, सारंग, मः ४)
हरि राम बोलि हरि राम बोलि सभि पाप गवाधू ॥ (१२०१-६, सारंग, मः ४)
नित नित जागरणु करहु सदा सदा आनंदु जपि जगदीसुोरा ॥ (१२०१-७, सारंग, मः ४)
मन इछे फल पावहु सभै फल पावहु धरमु अर्थु काम मोखु जन नानक हरि सिउ मिले हरि भगत तोरा ॥२॥२॥६॥ (१२०१-७, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ ॥ (१२०१-९)
जपि मन माधो मधुसूदनो हरि स्रीरंगो परमेसरो सति परमेसरो प्रभु अंतरजामी ॥ (१२०१-९, सारंग, मः ४)
सभ दूखन को हंता सभ सूखन को दाता हरि प्रीतम गुन गाओु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०१-९, सारंग, मः ४)
हरि घटि घटे घटि बसता हरि जलि थले हरि बसता हरि थान थानंतरि बसता मै हरि देखन को चाओु ॥ (१२०१-१०, सारंग, मः ४)
कोई आवै संतो हरि का जनु संतो मेरा प्रीतम जनु संतो मोहि मारगु दिखलावै ॥ (१२०१-११, सारंग, मः ४)
तिसु जन के हउ मलि मलि धोवा पाओु ॥१॥ (१२०१-१२, सारंग, मः ४)
हरि जन कउ हरि मिलिआ हरि सरधा ते मिलिआ गुरमुखि हरि मिलिआ ॥ (१२०१-१२, सारंग, मः ४)
मेरै मनि तनि आनंद भए मै देखिआ हरि राओु ॥ (१२०१-१३, सारंग, मः ४)
जन नानक कउ किरपा भई हरि की किरपा भई जगदीसुर किरपा भई ॥ (१२०१-१४, सारंग, मः ४)
मै अनदिनो सद सद सदा हरि जपिआ हरि नाओु ॥२॥३॥१०॥ (१२०१-१४, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ ॥ (१२०१-१५)
जपि मन निरभउ ॥ (१२०१-१५, सारंग, मः ४)
सति सति सदा सति ॥ (१२०१-१६, सारंग, मः ४)
निरवैरु अकाल मूरति ॥ (१२०१-१६, सारंग, मः ४)
आजूनी सम्भउ ॥ (१२०१-१६, सारंग, मः ४)
मेरे मन अनदिनुो धिआइ निरंकारु निराहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०१-१६, सारंग, मः ४)
हरि दरसन कउ हरि दरसन कउ कोटि कोटि तेतीस सिध जती जोगी तट तीर्थ परभवन करत रहत निराहारी ॥ (१२०१-१७, सारंग, मः ४)
तिन जन की सेवा थाइ पई जिन् कउ किरपाल होवतु बनवारी ॥१॥ (१२०१-१८, सारंग, मः ४)
हरि के हो संत भले ते ऊतम भगत भले जो भावत हरि राम मुरारी ॥ (१२०१-१९, सारंग, मः ४)

जिन्‍ का अंगु करै मेरा सुआमी तिन्‍ की नानक हरि पैज सवारी ॥२॥४॥११॥ (१२०१-१९, सारंग, मः ४)

पन्ना १२०२

सारग महला ४ पड़ताल ॥ (१२०२-१)
जपि मन गोविंदु हरि गोविंदु गुणी निधानु सभ स्रिसटि का प्रभो मेरे मन हरि बोलि हरि पुरखु अबिनासी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०२-१, सारंग, मः ४)
हरि का नामु अमृतु हरि हरि हरे सो पीऐ जिसु रामु पिआसी ॥ (१२०२-३, सारंग, मः ४)
हरि आपि दइआलु दइआ करि मेलै जिसु सतिगुरू सो जनु हरि हरि अमृत नामु चखासी ॥१॥ (१२०२-३, सारंग, मः ४)
जो जन सेवहि सद सदा मेरा हरि हरे तिन का सभु दूखु भरमु भउ जासी ॥ (१२०२-४, सारंग, मः ४)
जनु नानकु नामु लए ताँ जीवै जिउ चातृकु जलि पीऐ तृपतासी ॥२॥५॥१२॥ (१२०२-५, सारंग, मः ४)
सारग महला ४ ॥ (१२०२-६)
जपि मन सिरी रामु ॥ (१२०२-६, सारंग, मः ४)
राम रमत रामु ॥ (१२०२-६, सारंग, मः ४)
सति सति रामु ॥ (१२०२-६, सारंग, मः ४)
बोलहु भईआ सद राम रामु रामु रवि रहिआ सरबगे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०२-६, सारंग, मः ४)
रामु आपे आपि आपे सभु करता रामु आपे आपि आपि सभतु जगे ॥ (१२०२-७, सारंग, मः ४)
जिसु आपि कृपा करे मेरा राम राम राम राइ सो जनु राम नाम लिव लागे ॥१॥ (१२०२-८, सारंग, मः ४)
राम नाम की उपमा देखहु हरि संतहु जो भगत जनाँ की पति राखै विचि कलिजुग अगे ॥ (१२०२-९, सारंग, मः ४)
जन नानक का अंगु कीआ मेरै राम राइ दुसमन दूख गए सभि भगे ॥२॥६॥१३॥ (१२०२-९, सारंग, मः ४)
सारंग महला ५ चउपदे घरु १ (१२०२-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२०२-११)
सतिगुर मूरति कउ बलि जाउ ॥ (१२०२-१२)
अंतरि पिआस चातृक जिउ जल की सफल दरसनु कदि पाँउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०२-१२, सारंग, मः ५)
अनाथा को नाथु सर्ब प्रतिपालकु भगति वछलु हरि नाउ ॥ (१२०२-१३, सारंग, मः ५)
जा कउ कोइ न राखै प्राणी तिसु तू देहि असराउ ॥१॥ (१२०२-१३, सारंग, मः ५)
निधरिआ धर निगतिआ गति निथाविआ तू थाउ ॥ (१२०२-१४, सारंग, मः ५)
दह दिस जाँउ तहाँ तू संगे तेरी कीरति कर्म कमाउ ॥२॥ (१२०२-१४, सारंग, मः ५)
एकसु ते लाख लाख ते एका तेरी गति मिति कहि न सकाउ ॥ (१२०२-१५, सारंग, मः ५)
तू बेअंतु तेरी मिति नही पाईऐ सभु तेरो खेलु दिखाउ ॥३॥ (१२०२-१६, सारंग, मः ५)
साधन का संगु साध सिउ गोसटि हरि साधन सिउ लिव लाउ ॥ (१२०२-१६, सारंग, मः ५)
जन नानक पाइआ है गुरमति हरि देहु दरसु मनि चाउ ॥४॥१॥ (१२०२-१७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०२-१८)
हरि जीउ अंतरजामी जान ॥ (१२०२-१८, सारंग, मः ५)

करत बुराई मानुख ते छपाई साखी भूत पवान ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०२-१८, सारंग, मः ५)
बैसनौ नामु करत खट करमा अंतरि लोभ जूठान ॥ (१२०२-१९, सारंग, मः ५)
संत सभा की निंदा करते डूबे सभ अगिआन ॥१॥ (१२०२-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२०३

करहि सोम पाकु हिरहि पर दरबा अंतरि झूठ गुमान ॥ (१२०३-१, सारंग, मः ५)
सासत्र बेद की बिधि नही जाणहि बिआपे मन कै मान ॥२॥ (१२०३-१, सारंग, मः ५)
संधिआ काल करहि सभि वरता जिउ सफरी दम्फान ॥ (१२०३-२, सारंग, मः ५)
प्रभू भुलाए ऊझड़ि पाए निहफल सभि करमान ॥३॥ (१२०३-२, सारंग, मः ५)
सो गिआनी सो बैसनौ पड़िआ जिसु करी कृपा भगवान ॥ (१२०३-३, सारंग, मः ५)
ओुनि सतिगुरु सेवि पर्म पदु पाइआ उधरिआ सगल बिस्वान ॥४॥ (१२०३-३, सारंग, मः ५)
किआ हम कथह किछु कथि नही जाणह प्रभ भावै तिवै बोलान ॥ (१२०३-४, सारंग, मः ५)
साधसंगति की धूरि इक माँगउ जन नानक पइओ सरान ॥५॥२॥ (१२०३-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०३-६)
अब मोरो नाचनो रहो ॥ (१२०३-६, सारंग, मः ५)
लालु रगीला सहजे पाइओ सतिगुर बचनि लहो ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०३-६, सारंग, मः ५)
कुआर कंनिआ जैसे संगि सहेरी प्रिअ बचन उपहास कहो ॥ (१२०३-७, सारंग, मः ५)
जउ सुरिजनु गृह भीतरि आइओ तब मुखु काजि लजो ॥१॥ (१२०३-७, सारंग, मः ५)
जिउ कनिको कोठारी चड़िओ कबरो होत फिरो ॥ (१२०३-८, सारंग, मः ५)
जब ते सुध भए है बारहि तब ते थान थिरो ॥२॥ (१२०३-८, सारंग, मः ५)
जउ दिनु रैनि तऊ लउ बजिओ मूरत घरी पलो ॥ (१२०३-९, सारंग, मः ५)
बजावनहारो ऊठि सिधारिओ तब फिरि बाजु न भइओ ॥३॥ (१२०३-९, सारंग, मः ५)
जैसे कुम्भ उदक पूरि आनिओ तब ओुहु भिन्न दृसटो ॥ (१२०३-१०, सारंग, मः ५)
कहु नानक कुम्भु जलै महि डारिओ अम्भै अम्भ मिलो ॥४॥३॥ (१२०३-१०, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०३-११)
अब पूछे किआ कहा ॥ (१२०३-११, सारंग, मः ५)
लैनो नामु अमृत रसु नीको बावर बिखु सिउ गहि रहा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०३-११, सारंग, मः ५)
दुलभ जनमु चिरंकाल पाइओ जातउ कउडी बदलहा ॥ (१२०३-१२, सारंग, मः ५)
काथूरी को गाहकु आइओ लादिओ कालर बिरख जिवहा ॥१॥ (१२०३-१३, सारंग, मः ५)
आइओ लाभु लाभन कै ताई मोहनि ठागउरी सिउ उलझि पहा ॥ (१२०३-१३, सारंग, मः ५)
काच बादरै लालु खोई है फिरि इहु अउसरु कदि लहा ॥२॥ (१२०३-१४, सारंग, मः ५)
सगल पराध एकु गुणु नाही ठाकुरु छोडह दासि भजहा ॥ (१२०३-१४, सारंग, मः ५)
आई मसटि जड़वत की निआई जिउ तसकरु दरि साँन्हिा ॥३॥ (१२०३-१५, सारंग, मः ५)
आन उपाउ न कोऊ सूझै हरि दासा सरणी परि रहा ॥ (१२०३-१६, सारंग, मः ५)
कहु नानक तब ही मन छुटीऐ जउ सगले अउगन मेटि धरहा ॥४॥४॥ (१२०३-१६, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२०३-१७)
माई धीरि रही प्रिअ बहुतु बिरागिओ ॥ (१२०३-१७, सारंग, मः ५)
अनिक भाँति आनूप रंग रे तिन्ह सिउ रुचै न लागिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०३-१८, सारंग, मः ५)
निसि बासुर प्रिअ प्रिअ मुखि टेरउ नींद पलक नही जागिओ ॥ (१२०३-१८, सारंग, मः ५)
हार कजर बसत्र अनिक सीगार रे बिनु पिर सभै बिखु लागिओ ॥१॥ (१२०३-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२०४

पूछउ पूछउ दीन भाँति करि कोऊ कहै प्रिअ देसाँगिओ ॥ (१२०४-१, सारंग, मः ५)
हींओु देंउ सभु मनु तनु अरपउ सीसु चरण परि राखिओ ॥२॥ (१२०४-१, सारंग, मः ५)
चरण बंदना अमोल दासरो देंउ साधसंगति अरदागिओ ॥ (१२०४-२, सारंग, मः ५)
करहु क्रिपा मोहि प्रभू मिलावहु निमख दरसु पेखागिओ ॥३॥ (१२०४-२, सारंग, मः ५)
द्रिसटि भई तब भीतरि आइओ मेरा मनु अनदिनु सीतलागिओ ॥ (१२०४-३, सारंग, मः ५)
कहु नानक रसि मंगल गाए सबदु अनाहदु बाजिओ ॥४॥५॥ (१२०४-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०४-४)
माई सति सति सति हरि सति सति सति साधा ॥ (१२०४-५, सारंग, मः ५)
बचनु गुरू जो पूरै कहिओ मै छीकि गाँठरी बाधा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०४-५, सारंग, मः ५)
निसि बासुर नखिअत्र बिनासी रवि ससीअर बेनाधा ॥ (१२०४-६, सारंग, मः ५)
गिरि बसुधा जल पवन जाइगो इकि साध बचन अटलाधा ॥१॥ (१२०४-६, सारंग, मः ५)
अंड बिनासी जेर बिनासी उतभुज सेत बिनाधा ॥ (१२०४-७, सारंग, मः ५)
चारि बिनासी खटहि बिनासी इकि साध बचन निहचलाधा ॥२॥ (१२०४-७, सारंग, मः ५)
राज बिनासी ताम बिनासी सातकु भी बेनाधा ॥ (१२०४-८, सारंग, मः ५)
द्रिसटिमान है सगल बिनासी इकि साध बचन आगाधा ॥३॥ (१२०४-९, सारंग, मः ५)
आपे आपि आप ही आपे सभु आपन खेलु दिखाधा ॥ (१२०४-९, सारंग, मः ५)
पाइओ न जाई कही भाँति रे प्रभु नानक गुर मिलि लाधा ॥४॥६॥ (१२०४-१०, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०४-११)
मेरै मनि बासिबो गुर गोबिंद ॥ (१२०४-११, सारंग, मः ५)
जहाँ सिमरनु भइओ है ठाकुर तहाँ नगर सुख आनंद ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०४-११, सारंग, मः ५)
जहाँ बीसरै ठाकुरु पिआरो तहाँ दूख सभ आपद ॥ (१२०४-१२, सारंग, मः ५)
जह गुन गाइ आनंद मंगल रूप तहाँ सदा सुख सम्पद ॥१॥ (१२०४-१२, सारंग, मः ५)
जहा स्रवन हरि कथा न सुनीऐ तह महा भइआन उदिआनद ॥ (१२०४-१३, सारंग, मः ५)
जहाँ कीरतनु साधसंगति रसु तह सघन बास फलाँनद ॥२॥ (१२०४-१४, सारंग, मः ५)
बिनु सिमरन कोटि बरख जीवै सगली अउध ब्रिथानद ॥ (१२०४-१४, सारंग, मः ५)
एक निमख गोबिंद भजनु करि तउ सदा सदा जीवानद ॥३॥ (१२०४-१५, सारंग, मः ५)
सरनि सरनि सरनि प्रभ पावउ दीजै साधसंगति किरपानद ॥ (१२०४-१५, सारंग, मः ५)
नानक पूरि रहिओ है सरब मै सगल गुणा बिधि जाँनद ॥४॥७॥ (१२०४-१६, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२०४-१७)
अब मोहि राम भरोसउ पाए ॥ (१२०४-१७, सारंग, मः ५)
जो जो सरणि परिओ करुणानिधि ते ते भवहि तराए ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०४-१७, सारंग, मः ५)
सुखि सोइओ अरु सहजि समाइओ सहसा गुरहि गवाए ॥ (१२०४-१८, सारंग, मः ५)
जो चाहत सोई हरि कीओ मन बाँछत फल पाए ॥१॥ (१२०४-१६, सारंग, मः ५)
हिरदै जपउ नेत्र धिआनु लावउ स्रवनी कथा सुनाए ॥ (१२०४-१६, सारंग, मः ५)

पन्ना १२०५

चरणी चलउ मारगि ठाकुर कै रसना हरि गुण गाए ॥२॥ (१२०५-१, सारंग, मः ५)
देखिओ दृसटि सर्ब मंगल रूप उलटी संत कराए ॥ (१२०५-१, सारंग, मः ५)
पाइओ लालु अमोलु नामु हरि छोडि न कतहू जाए ॥३॥ (१२०५-२, सारंग, मः ५)
कवन उपमा कउन बडाई किआ गुन कहउ रीझाए ॥ (१२०५-२, सारंग, मः ५)
होत कृपाल दीन दइआ प्रभ जन नानक दास दसाए ॥४॥८॥ (१२०५-३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०५-४)
ओुइ सुख का सिउ बरनि सुनावत ॥ (१२०५-४, सारंग, मः ५)
अनद बिनोद पेखि प्रभ दरसन मनि मंगल गुन गावत ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०५-४, सारंग, मः ५)
बिसम भई पेखि बिसमादी पूरि रहे किरपावत ॥ (१२०५-५, सारंग, मः ५)
पीओ अमृत नामु अमोलक जिउ चाखि गूंगा मुसकावत ॥१॥ (१२०५-५, सारंग, मः ५)
जैसे पवनु बंध करि राखिओ बूझ न आवत जावत ॥ (१२०५-६, सारंग, मः ५)
जा कउ रिदै प्रगासु भइओ हरि उआ की कही न जाइ कहावत ॥२॥ (१२०५-६, सारंग, मः ५)
आन उपाव जेते किछु कहीअहि तेते सीखे पावत ॥ (१२०५-७, सारंग, मः ५)
अचिंत लालु गृह भीतरि प्रगटिओ अगम जैसे परखावत ॥३॥ (१२०५-८, सारंग, मः ५)
निरगुण निरंकार अबिनासी अतुलो तुलिओ न जावत ॥ (१२०५-८, सारंग, मः ५)
कहु नानक अजरु जिनि जरिआ तिस ही कउ बनि आवत ॥४॥६॥ (१२०५-६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०५-१०)
बिखई दिनु रैनि इव ही गुदारै ॥ (१२०५-१०, सारंग, मः ५)
गोबिंदु न भजै अहम्बुधि माता जनमु जूऐ जिउ हारै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०५-१०, सारंग, मः ५)
नामु अमोला प्रीति न तिस सिउ पर निंदा हितकारै ॥ (१२०५-११, सारंग, मः ५)
छापरु बाँधि सवारै तृण को दुआरै पावकु जारै ॥१॥ (१२०५-११, सारंग, मः ५)
कालर पोट उठावै मूंडहि अमृतु मन ते डारै ॥ (१२०५-१२, सारंग, मः ५)
ओढै बसत्र काजर महि परिआ बहुरि बहुरि फिरि झारै ॥२॥ (१२०५-१२, सारंग, मः ५)
काटै पेडु डाल परि ठाढौ खाइ खाइ मुसकारै ॥ (१२०५-१३, सारंग, मः ५)
गिरिओ जाइ रसातलि परिओ छिटी छिटी सिर भारै ॥३॥ (१२०५-१४, सारंग, मः ५)
निरवैरै संगि वैरु रचाए पहुचि न सकै गवारै ॥ (१२०५-१४, सारंग, मः ५)
कहु नानक संतन का राखा पारब्रह्मु निरंकारै ॥४॥१०॥ (१२०५-१५, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२०५-१५)
अवरि सभि भूले भ्रमत न जानिआ ॥ (१२०५-१५, सारंग, मः ५)
एकु सुधाखरु जा कै हिरदै वसिआ तिनि बेदहि ततु पछानिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०५-१६, सारंग, मः ५)
परविरति मारगु जेता किछु होईऐ तेता लोग पचारा ॥ (१२०५-१७, सारंग, मः ५)
जउ लउ रिदै नही परगासा तउ लउ अंध अंधारा ॥१॥ (१२०५-१७, सारंग, मः ५)
जैसे धरती साधै बहु बिधि बिनु बीजै नही जाँमै ॥ (१२०५-१८, सारंग, मः ५)
राम नाम बिनु मुकति न होई है तुटै नाही अभिमानै ॥२॥ (१२०५-१८, सारंग, मः ५)
नीरु बिलोवै अति स्रमु पावै नैनू कैसे रीसै ॥ (१२०५-१९, सारंग, मः ५)
बिनु गुर भेटे मुकति न काहू मिलत नही जगदीसै ॥३॥ (१२०५-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२०६

खोजत खोजत इहै बीचारिओ सर्ब सुखा हरि नामा ॥ (१२०६-१, सारंग, मः ५)
कहु नानक तिसु भइओ परापति जा कै लेखु मथामा ॥४॥११॥ (१२०६-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०६-२)
अनदिनु राम के गुण कहीऐ ॥ (१२०६-२, सारंग, मः ५)
सगल पदार्थ सर्ब सूख सिधि मन बाँछत फल लहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०६-२, सारंग, मः ५)
आवहु संत प्रान सुखदाते सिमरह प्रभु अबिनासी ॥ (१२०६-३, सारंग, मः ५)
अनाथह नाथु दीन दुख भंजन पूरि रहिओ घट वासी ॥१॥ (१२०६-४, सारंग, मः ५)
गावत सुनत सुनावत सरधा हरि रसु पी वडभागे ॥ (१२०६-४, सारंग, मः ५)
कलि कलेस मिटे सभि तन ते राम नाम लिव जागे ॥२॥ (१२०६-५, सारंग, मः ५)
कामु क्रोधु झूठु तजि निंदा हरि सिमरनि बंधन तूटे ॥ (१२०६-५, सारंग, मः ५)
मोह मगन अहं अंध ममता गुर किरपा ते छूटे ॥३॥ (१२०६-६, सारंग, मः ५)
तू समरथु पारब्रह्म सुआमी करि किरपा जनु तेरा ॥ (१२०६-६, सारंग, मः ५)
पूरि रहिओ सर्ब महि ठाकुरु नानक सो प्रभु नेरा ॥४॥१२॥ (१२०६-७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०६-७)
बलिहारी गुरदेव चरन ॥ (१२०६-८, सारंग, मः ५)
जा कै संगि पारब्रह्मु धिआईऐ उपदेसु हमारी गति करन ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०६-८, सारंग, मः ५)
दूख रोग भै सगल बिनासे जो आवै हरि संत सरन ॥ (१२०६-९, सारंग, मः ५)
आपि जपै अवरह नामु जपावै वड समरथ तारन तरन ॥१॥ (१२०६-९, सारंग, मः ५)
जा को मंत्रु उतारै सहसा ऊणे कउ सुभर भरन ॥ (१२०६-१०, सारंग, मः ५)
हरि दासन की आगिआ मानत ते नाही फुनि गरभ परन ॥२॥ (१२०६-१०, सारंग, मः ५)
भगतन की टहल कमावत गावत दुख काटे ता के जनम मरन ॥ (१२०६-११, सारंग, मः ५)
जा कउ भइओ कृपालु बीठुला तिनि हरि हरि अजर जरन ॥३॥ (१२०६-११, सारंग, मः ५)
हरि रसहि अघाने सहजि समाने मुख ते नाही जात बरन ॥ (१२०६-१२, सारंग, मः ५)
गुर प्रसादि नानक संतोखे नामु प्रभू जपि जपि उधरन ॥४॥१३॥ (१२०६-१३, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२०६-१३)
गाइओ री मै गुण निधि मंगल गाइओ ॥ (१२०६-१३, सारंग, मः ५)
भले संजोग भले दिन अउसर जउ गोपालु रीझाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०६-१४, सारंग, मः ५)
संतह चरन मोरलो माथा ॥ (१२०६-१५, सारंग, मः ५)
हमरे मसतकि संत धरे हाथा ॥१॥ (१२०६-१५, सारंग, मः ५)
साधह मंत्रु मोरलो मनूआ ॥ (१२०६-१५, सारंग, मः ५)
ता ते गतु होए त्रै गुनीआ ॥२॥ (१२०६-१५, सारंग, मः ५)
भगतह दरसु देखि नैन रंगा ॥ (१२०६-१६, सारंग, मः ५)
लोभ मोह तूटे भ्रम संगा ॥३॥ (१२०६-१६, सारंग, मः ५)
कहु नानक सुख सहज अनंदा ॥ (१२०६-१६, सारंग, मः ५)
खोल्हि भीति मिले परमानंदा ॥४॥१४॥ (१२०६-१७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ घरु २ (१२०६-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२०६-१८)
कैसे कहउ मोहि जीअ बेदनाई ॥ (१२०६-१९, सारंग, मः ५)
दरसन पिआस प्रिअ प्रीति मनोहर मनु न रहै बहु बिधि उमकाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०६-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२०७

चितवनि चितवउ प्रिअ प्रीति बैरागी कदि पावउ हरि दरसाई ॥ (१२०७-१, सारंग, मः ५)
जतन करउ इहु मनु नही धीरै कोऊ है रे संतु मिलाई ॥१॥ (१२०७-१, सारंग, मः ५)
जप तप संजम पुन्न सभि होमउ तिसु अरपउ सभि सुख जाँई ॥ (१२०७-२, सारंग, मः ५)
एक निमख प्रिअ दरसु दिखावै तिसु संतन कै बलि जाँई ॥२॥ (१२०७-३, सारंग, मः ५)
करउ निहोरा बहुतु बेनती सेवउ दिनु रैनाई ॥ (१२०७-३, सारंग, मः ५)
मानु अभिमानु हउ सगल तिआगउ जो प्रिअ बात सुनाई ॥३॥ (१२०७-४, सारंग, मः ५)
देखि चरित्र भई हउ बिसमनि गुरि सतिगुरि पुरखि मिलाई ॥ (१२०७-४, सारंग, मः ५)
प्रभ रंग दइआल मोहि ग्रिह महि पाइआ जन नानक तपति बुझाई ॥४॥१॥१५॥ (१२०७-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०७-६)
रे मूड़्हे तू किउ सिमरत अब नाही ॥ (१२०७-६, सारंग, मः ५)
नरक घोर महि उरध तपु करता निमख निमख गुण गाँही ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०७-६, सारंग, मः ५)
अनिक जनम भ्रमतौ ही आइओ मानस जनमु दुलभाही ॥ (१२०७-७, सारंग, मः ५)
गरभ जोनि छोडि जउ निकसिओ तउ लागो अन ठाँही ॥१॥ (१२०७-८, सारंग, मः ५)
करहि बुराई ठगाई दिनु रैनि निहफल करम कमाही ॥ (१२०७-८, सारंग, मः ५)
कणु नाही तुह गाहण लागे धाइ धाइ दुख पाँही ॥२॥ (१२०७-९, सारंग, मः ५)
मिथिआ संगि कूड़ि लपटाइओ उरझि परिओ कुसमाँही ॥ (१२०७-१०, सारंग, मः ५)
धरम राइ जब पकरसि बवरे तउ काल मुखा उठि जाही ॥३॥ (१२०७-१०, सारंग, मः ५)
सो मिलिआ जो प्रभू मिलाइआ जिसु मसतकि लेखु लिखाँही ॥ (१२०७-११, सारंग, मः ५)

कहु नानक तिनु जन बलिहारी जो अलिप रहे मन माँही ॥४॥२॥१६॥ (१२०७-११, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०७-१२)
किउ जीवनु प्रीतम बिनु माई ॥ (१२०७-१२, सारंग, मः ५)
जा के बिछुरत होत मिरतका गृह महि रहनु न पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०७-१३, सारंग, मः ५)
जीअ हंीअ प्रान को दाता जा कै संगि सुहाई ॥ (१२०७-१३, सारंग, मः ५)
करहु कृपा संतहु मोहि अपुनी प्रभ मंगल गुण गाई ॥१॥ (१२०७-१४, सारंग, मः ५)
चरन संतन के माथे मेरे ऊपरि नैनहु धूरि बाँछाईं ॥ (१२०७-१४, सारंग, मः ५)
जिह प्रसादि मिलीऐ प्रभ नानक बलि बलि ता कै हउ जाई ॥२॥३॥१७॥ (१२०७-१५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०७-१६)
उआ अउसर कै हउ बलि जाई ॥ (१२०७-१६, सारंग, मः ५)
आठ पहर अपना प्रभु सिमरनु वडभागी हरि पाँई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०७-१६, सारंग, मः ५)
भलो कबीरु दासु दासन को ऊतमु सैनु जनु नाई ॥ (१२०७-१७, सारंग, मः ५)
ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई ॥१॥ (१२०७-१७, सारंग, मः ५)
जीउ पिंडु तनु धनु साधन का इहु मनु संत रेनाई ॥ (१२०७-१८, सारंग, मः ५)
संत प्रतापि भर्म सभि नासे नानक मिले गुसाई ॥२॥४॥१८॥ (१२०७-१९, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०७-१९)
मनोरथ पूरे सतिगुर आपि ॥ (१२०७-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२०८

सगल पदार्थ सिमरनि जा कै आठ पहर मेरे मन जापि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०८-१, सारंग, मः ५)
अमृत नामु सुआमी तेरा जो पीवै तिस ही तृपतास ॥ (१२०८-१, सारंग, मः ५)
जनम जनम के किलबिख नासहि आगै दरगह होइ खलास ॥१॥ (१२०८-२, सारंग, मः ५)
सरनि तुमारी आइओ करते पारब्रह्म पूरन अबिनास ॥ (१२०८-३, सारंग, मः ५)
करि किरपा तेरे चरन धिआवउ नानक मनि तनि दरस पिआस ॥२॥५॥१९॥ (१२०८-३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ घरु ३ (१२०८-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२०८-५)
मन कहा लुभाईऐ आन कउ ॥ (१२०८-६, सारंग, मः ५)
ईत ऊत प्रभु सदा सहाई जीअ संगि तेरे काम कउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०८-६, सारंग, मः ५)
अमृत नामु पृअ प्रीति मनोहर इहै अघावन पाँन कउ ॥ (१२०८-७, सारंग, मः ५)
अकाल मूरति है साध संतन की ठाहर नीकी धिआन कउ ॥१॥ (१२०८-७, सारंग, मः ५)
बाणी मंत्रु महा पुरखन की मनहि उतारन माँन कउ ॥ (१२०८-८, सारंग, मः ५)
खोजि लहिओ नानक सुख थानाँ हरि नामा बिस्राम कउ ॥२॥१॥२०॥ (१२०८-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०८-९)
मन सदा मंगल गोबिंद गाइ ॥ (१२०८-९, सारंग, मः ५)
रोग सोग तेरे मिटहि सगल अघ निमख हीऐ हरि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०८-९, सारंग, मः ५)

छोडि सिआनप बहु चतुराई साधू सरणी जाइ पाइ ॥ (१२०८-१०, सारंग, मः ५)
जउ होइ कृपालु दीन दुख भंजन जम ते होवै धर्म राइ ॥१॥ (१२०८-११, सारंग, मः ५)
एकस बिनु नाही को दूजा आन न बीओ लवै लाइ ॥ (१२०८-११, सारंग, मः ५)
मात पिता भाई नानक को सुखदाता हरि प्रान साइ ॥२॥२॥२१॥ (१२०८-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०८-१३)
हरि जन सगल उधारे संग के ॥ (१२०८-१३, सारंग, मः ५)
भए पुनीत पवित्र मन जनम जनम के दुख हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०८-१३, सारंग, मः ५)
मारगि चले तिन्ही सुखु पाइआ जिन्ह सिउ गोसटि से तरे ॥ (१२०८-१४, सारंग, मः ५)
बूडत घोर अंध कूप महि ते साधू संगि पारि परे ॥१॥ (१२०८-१४, सारंग, मः ५)
जिन्ह के भाग बडे है भाई तिन्ह साधू संगि मुख जुरे ॥ (१२०८-१५, सारंग, मः ५)
तिन्ह की धूरि बाँछै नित नानकु प्रभु मेरा किरपा करे ॥२॥३॥२२॥ (१२०८-१५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०८-१६)
हरि जन राम राम राम धिआँए ॥ (१२०८-१६, सारंग, मः ५)
एक पलक सुख साध समागम कोटि बैकुंठह पाँए ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०८-१७, सारंग, मः ५)
दुलभ देह जपि होत पुनीता जम की त्रास निवारै ॥ (१२०८-१७, सारंग, मः ५)
महा पतित के पातिक उतरहि हरि नामा उरि धारै ॥१॥ (१२०८-१८, सारंग, मः ५)
जो जो सुनै राम जसु निर्मल ता का जनम मरण दुखु नासा ॥ (१२०८-१८, सारंग, मः ५)
कहु नानक पाईऐ वडभागंी मन तन होइ बिगासा ॥२॥४॥२३॥ (१२०८-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२०९

सारग महला ५ दुपदे घरु ४ (१२०९-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२०९-२)
मोहन घरि आवहु करउ जोदरीआ ॥ (१२०९-३, सारंग, मः ५)
मानु करउ अभिमानै बोलउ भूल चूक तेरी प्रिअ चिरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०९-३, सारंग, मः ५)
निकटि सुनउ अरु पेखउ नाही भरमि भरमि दुख भरीआ ॥ (१२०९-४, सारंग, मः ५)
होइ कृपाल गुर लाहि पारदो मिलउ लाल मनु हरीआ ॥१॥ (१२०९-४, सारंग, मः ५)
एक निमख जे बिसरै सुआमी जानउ कोटि दिनस लख बरीआ ॥ (१२०९-५, सारंग, मः ५)
साधसंगति की भीर जउ पाई तउ नानक हरि संगि मिरीआ ॥२॥१॥२४॥ (१२०९-६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०९-६)
अब किआ सोचउ सोच बिसारी ॥ (१२०९-६, सारंग, मः ५)
करणा सा सोई करि रहिआ देहि नाउ बलिहारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०९-७, सारंग, मः ५)
चहु दिस फूलि रही बिखिआ बिखु गुर मंत्रु मूखि गरुड़ारी ॥ (१२०९-७, सारंग, मः ५)
हाथ देइ राखिओ करि अपुना जिउ जल कमला अलिपारी ॥१॥ (१२०९-८, सारंग, मः ५)
हउ नाही किछु मै किआ होसा सभ तुम ही कल धारी ॥ (१२०९-९, सारंग, मः ५)
नानक भागि परिओ हरि पाछै राखु संत सदकारी ॥२॥२॥२५॥ (१२०९-९, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२०६-१०)
अब मोहि सर्ब उपाव बिरकाते ॥ (१२०६-१०, सारंग, मः ५)
करण कारण समरथ सुआमी हरि एकसु ते मेरी गाते ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०६-१०, सारंग, मः ५)
देखे नाना रूप बहु रंगा अन नाही तुम भाँते ॥ (१२०६-११, सारंग, मः ५)
देंहि अधारु सर्ब कउ ठाकुर जीअ प्रान सुखदाते ॥१॥ (१२०६-१२, सारंग, मः ५)
भ्रमतौ भ्रमतौ हारि जउ परिओ तउ गुर मिलि चरन पराते ॥ (१२०६-१२, सारंग, मः ५)
कहु नानक मै सर्ब सुखु पाइआ इह सूखि बिहानी राते ॥२॥३॥२६॥ (१२०६-१३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०६-१४)
अब मोहि लबधिओ है हरि टेका ॥ (१२०६-१४, सारंग, मः ५)
गुर दइआल भए सुखदाई अंधुलै माणिकु देखा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०६-१४, सारंग, मः ५)
काटे अगिआन तिमर निरमलीआ बुधि बिगास बिबेका ॥ (१२०६-१५, सारंग, मः ५)
जिउ जल तरंग फेनु जल होई है सेवक ठाकुर भए एका ॥१॥ (१२०६-१५, सारंग, मः ५)
जह ते उठिओ तह ही आइओ सभ ही एकै एका ॥ (१२०६-१६, सारंग, मः ५)
नानक दृसटि आइओ स्रब ठाई प्राणपती हरि समका ॥२॥४॥२७॥ (१२०६-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२०६-१७)
मेरा मनु एकै ही प्रिअ माँगै ॥ (१२०६-१७, सारंग, मः ५)
पेखि आइओ सर्ब थान देस प्रिअ रोम न समसरि लागै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२०६-१८, सारंग, मः ५)
मै नीरे अनिक भोजन बहु बिंजन तिन सिउ दृसटि न करै रुचाँगै ॥ (१२०६-१८, सारंग, मः ५)
हरि रसु चाहै प्रिअ प्रिअ मुखि टेरै जिउ अलि कमला लोभाँगै ॥१॥ (१२०६-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१०

गुण निधान मनमोहन लालन सुखदाई सरबाँगै ॥ (१२१०-१, सारंग, मः ५)
गुरि नानक प्रभ पाहि पठाइओ मिलहु सखा गलि लागै ॥२॥५॥२८॥ (१२१०-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१०-२)
अब मोरो ठाकुर सिउ मनु मानाँ ॥ (१२१०-२, सारंग, मः ५)
साध कृपाल दइआल भए है इहु छेदिओ दुसटु बिगाना ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१०-२, सारंग, मः ५)
तुम ही सुंदर तुमहि सिआने तुम ही सुघर सुजाना ॥ (१२१०-३, सारंग, मः ५)
सगल जोग अरु गिआन धिआन इक निमख न कीमति जानाँ ॥१॥ (१२१०-४, सारंग, मः ५)
तुम ही नाइक तुम्हि छत्रपति तुम पूरि रहे भगवाना ॥ (१२१०-४, सारंग, मः ५)
पावउ दानु संत सेवा हरि नानक सद कुरबानाँ ॥२॥६॥२९॥ (१२१०-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१०-६)
मेरै मनि चीति आए प्रिअ रंगा ॥ (१२१०-६, सारंग, मः ५)
बिसरिओ धंधु बंधु माइआ को रजनि सबाई जंगा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१०-६, सारंग, मः ५)
हरि सेवउ हरि रिदै बसावउ हरि पाइआ सतसंगा ॥ (१२१०-७, सारंग, मः ५)
ऐसो मिलिओ मनोहरु प्रीतमु सुख पाए मुख मंगा ॥१॥ (१२१०-७, सारंग, मः ५)

पृउ अपना गुरि बसि करि दीना भोगउ भोग निसंगा ॥ (१२१०-८, सारंग, मः ५)
निरभउ भए नानक भउ मिटिआ हरि पाइओ पाठंगा ॥२॥७॥३०॥ (१२१०-९, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१०-९)
हरि जीउ के दरसन कउ कुरबानी ॥ (१२१०-१०, सारंग, मः ५)
बचन नाद मेरे स्रवनहु पूरे देहा पृअ अंकि समानी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१०-१०, सारंग, मः ५)
छूटरि ते गुरि कीई सोहागनि हरि पाइओ सुघड़ सुजानी ॥ (१२१०-११, सारंग, मः ५)
जिह घर महि बैसनु नही पावत सो थानु मिलिओ बासानी ॥१॥ (१२१०-११, सारंग, मः ५)
उन् कै बसि आइओ भगति बछलु जिनि राखी आन संतानी ॥ (१२१०-१२, सारंग, मः ५)
कहु नानक हरि संगि मनु मानिआ सभ चूकी काणि लोकानी ॥२॥८॥३१॥ (१२१०-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१०-१३)
अब मेरो पंचा ते संगु तूटा ॥ (१२१०-१३, सारंग, मः ५)
दरसनु देखि भए मनि आनद गुर किरपा ते छूटा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१०-१४, सारंग, मः ५)
बिखम थान बहुत बहु धरीआ अनिक राख सूरूटा ॥ (१२१०-१४, सारंग, मः ५)
बिखम गारह करु पहुचै नाही संत सानथ भए लूटा ॥१॥ (१२१०-१५, सारंग, मः ५)
बहुतु खजाने मेरै पालै परिआ अमोल लाल आखूटा ॥ (१२१०-१५, सारंग, मः ५)
जन नानक प्रभि किरपा धारी तउ मन महि हरि रसु घूटा ॥२॥९॥३२॥ (१२१०-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१०-१७)
अब मेरो ठाकुर सिउ मनु लीना ॥ (१२१०-१७, सारंग, मः ५)
प्रान दानु गुरि पूरै दीआ उरझाइओ जिउ जल मीना ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१०-१७, सारंग, मः ५)
काम क्रोध लोभ मद मतसर इह अरपि सगल दानु कीना ॥ (१२१०-१८, सारंग, मः ५)
मंत्र दृड़ाइ हरि अउखधु गुरि दीओ तउ मिलिओ सगल प्रबीना ॥१॥ (१२१०-१९, सारंग, मः ५)
गृहु तेरा तू ठाकुरु मेरा गुरि हउ खोई प्रभु दीना ॥ (१२१०-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२११

कहु नानक मै सहज घरु पाइआ हरि भगति भंडार खजीना ॥२॥१०॥३३॥ (१२११-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२११-२)
मोहन सभि जीअ तेरे तू तारहि ॥ (१२११-२, सारंग, मः ५)
छुटहि संघार निमख किरपा ते कोटि ब्रहमंड उधारहि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२११-२, सारंग, मः ५)
करहि अरदासि बहुतु बेनंती निमख निमख साम्हारहि ॥ (१२११-३, सारंग, मः ५)
होहु कृपाल दीन दुख भंजन हाथ देइ निसतारहि ॥१॥ (१२११-३, सारंग, मः ५)
किआ ए भूपति बपुरे कहीअहि कहु ए किस नो मारहि ॥ (१२११-४, सारंग, मः ५)
राखु राखु राखु सुखदाते सभु नानक जगतु तुम्हारहि ॥२॥११॥३४॥ (१२११-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२११-५)
अब मोहि धनु पाइओ हरि नामा ॥ (१२११-६, सारंग, मः ५)
भए अचिंत तृसन सभ बुझी है इहु लिखिओ लेखु मथामा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२११-६, सारंग, मः ५)

खोजत खोजत भइओ बैरागी फिरि आइओ देह गिरामा ॥ (१२११-७, सारंग, मः ५)
गुरि कृपालि सउदा इहु जोरिओ हथि चरिओ लालु अगामा ॥१॥ (१२११-७, सारंग, मः ५)
आन बापार बनज जो करीअहि तेते दूख सहामा ॥ (१२११-८, सारंग, मः ५)
गोबिद भजन के निरभै वापारी हरि रासि नानक राम नामा ॥२॥१२॥३५॥ (१२११-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२११-९)
मेरै मनि मिसट लगे प्रिअ बोला ॥ (१२११-९, सारंग, मः ५)
गुरि बाह पकरि प्रभ सेवा लाए सद दइआलु हरि ढोला ॥१॥ रहाउ ॥ (१२११-१०, सारंग, मः ५)
प्रभ तू ठाकुरु सर्ब प्रतिपालकु मोहि कलत्र सहित सभि गोला ॥ (१२११-१०, सारंग, मः ५)
माणु ताणु सभु तूहै तूहै इकु नामु तेरा मै ओल्हा ॥१॥ (१२११-११, सारंग, मः ५)
जे तखति बैसालहि तउ दास तुम्हरे घासु बढावहि केतक बोला ॥ (१२११-१२, सारंग, मः ५)
जन नानक के प्रभ पुरख बिधाते मेरे ठाकुर अगह अतोला ॥२॥१३॥३६॥ (१२११-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२११-१३)
रसना राम कहत गुण सोहं ॥ (१२११-१३, सारंग, मः ५)
एक निमख ओपाइ समावै देखि चरित मन मोहं ॥१॥ रहाउ ॥ (१२११-१४, सारंग, मः ५)
जिसु सुणिऐ मनि होइ रहसु अति रिदै मान दुख जोहं ॥ (१२११-१४, सारंग, मः ५)
सुखु पाइओ दुखु दूरि पराइओ बणि आई प्रभ तोहं ॥१॥ (१२११-१५, सारंग, मः ५)
किलविख गए मन निर्मल होई है गुरि काढे माइआ द्रोहं ॥ (१२११-१५, सारंग, मः ५)
कहु नानक मै सो प्रभु पाइआ करण कारण समरथोहं ॥२॥१४॥३७॥ (१२११-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२११-१७)
नैनहु देखिओ चलतु तमासा ॥ (१२११-१७, सारंग, मः ५)
सभ हू दूरि सभ हू ते नेरै अगम अगम घट वासा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२११-१७, सारंग, मः ५)
अभूलु न भूलै लिखिओ न चलावै मता न करै पचासा ॥ (१२११-१८, सारंग, मः ५)
खिन महि साजि सवारि बिनाहै भगति वछल गुणतासा ॥१॥ (१२११-१८, सारंग, मः ५)
अंध कूप महि दीपकु बलिओ गुरि रिदै कीओ परगासा ॥ (१२११-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१२

कहु नानक दरसु पेखि सुखु पाइआ सभ पूरन होई आसा ॥२॥१५॥३८॥ (१२१२-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१२-१)
चरनह गोबिंद मारगु सुहावा ॥ (१२१२-२, सारंग, मः ५)
आन मारग जेता किछु धाईऐ तेतो ही दुखु हावा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१२-२, सारंग, मः ५)
नेत्र पुनीत भए दरसु पेखे हसत पुनीत टहलावा ॥ (१२१२-३, सारंग, मः ५)
रिदा पुनीत रिदै हरि बसिओ मसत पुनीत संत धूरावा ॥१॥ (१२१२-३, सारंग, मः ५)
सर्ब निधान नामि हरि हरि कै जिसु करमि लिखिआ तिनि पावा ॥ (१२१२-४, सारंग, मः ५)
जन नानक कउ गुरु पूरा भेटिओ सुखि सहजे अनद बिहावा ॥२॥१६॥३९॥ (१२१२-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१२-५)

धिआइओ अंति बार नामु सखा ॥ (१२१२-५, सारंग, मः ५)
जह मात पिता सुत भाई न पहुचै तहा तहा तू रखा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१२-६, सारंग, मः ५)
अंध कूप गृह महि तिनि सिमरिओ जिसु मसतकि लेखु लिखा ॥ (१२१२-६, सारंग, मः ५)
खूले बंधन मुकति गुरि कीनी सभ तूहै तुही दिखा ॥१॥ (१२१२-७, सारंग, मः ५)
अमृत नामु पीआ मनु तृपतिआ आघाए रसन चखा ॥ (१२१२-८, सारंग, मः ५)
कहु नानक सुख सहजु मै पाइआ गुरि लाही सगल तिखा ॥२॥१७॥४०॥ (१२१२-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१२-९)
गुर मिलि ऐसे प्रभू धिआइआ ॥ (१२१२-९, सारंग, मः ५)
भइओ कृपालु दइआलु दुख भंजनु लगै न ताती बाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१२-१०, सारंग, मः ५)
जेते सास सास हम लेते तेते ही गुण गाइआ ॥ (१२१२-१०, सारंग, मः ५)
निमख न बिछुरै घरी न बिसरै सद संगे जत जाइआ ॥१॥ (१२१२-११, सारंग, मः ५)
हउ बलि बलि बलि बलि चरन कमल कउ बलि बलि गुर दरसाइआ ॥ (१२१२-११, सारंग, मः ५)
कहु नानक काहू परवाहा जउ सुख सागरु मै पाइआ ॥२॥१८॥४१॥ (१२१२-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१२-१३)
मेरै मनि सबदु लगो गुर मीठा ॥ (१२१२-१३, सारंग, मः ५)
खुलिओ करमु भइओ परगासा घटि घटि हरि हरि डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१२-१४, सारंग, मः ५)
पारब्रह्म आजोनी सम्भउ सर्ब थान घट बीठा ॥ (१२१२-१४, सारंग, मः ५)
भइओ परापति अमृत नामा बलि बलि प्रभ चरणीठा ॥१॥ (१२१२-१५, सारंग, मः ५)
सतसंगति की रेणु मुखि लागी कीए सगल तीर्थ मजनीठा ॥ (१२१२-१६, सारंग, मः ५)
कहु नानक रंगि चलूल भए है हरि रंगु न लहै मजीठा ॥२॥१९॥४२॥ (१२१२-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१२-१७)
हरि हरि नामु दीओ गुरि साथे ॥ (१२१२-१७, सारंग, मः ५)
निमख बचनु प्रभ हीअरै बसिओ सगल भूख मेरी लाथे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१२-१७, सारंग, मः ५)
कृपा निधान गुण नाइक ठाकुर सुख समूह सभ नाथे ॥ (१२१२-१८, सारंग, मः ५)
एक आस मोहि तेरी सुआमी अउर दुतीआ आस बिराथे ॥१॥ (१२१२-१९, सारंग, मः ५)
नैण तृपतासे देखि दरसावा गुरि कर धारे मेरै माथे ॥ (१२१२-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१३

कहु नानक मै अतुल सुखु पाइआ जनम मरण भै लाथे ॥२॥२०॥४३॥ (१२१३-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१३-२)
रे मूड़े आन काहे कत जाई ॥ (१२१३-२, सारंग, मः ५)
संगि मनोहरु अमृतु है रे भूलि भूलि बिखु खाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१३-२, सारंग, मः ५)
प्रभ सुंदर चतुर अनूप बिधाते तिस सिउ रुच नही राई ॥ (१२१३-३, सारंग, मः ५)
मोहनि सिउ बावर मनु मोहिओ झूठि ठगउरी पाई ॥१॥ (१२१३-३, सारंग, मः ५)
भइओ दइआलु कृपालु दुख हरता संतन सिउ बनि आई ॥ (१२१३-४, सारंग, मः ५)

सगल निधान घरै महि पाए कहु नानक जोति समाई ॥२॥२१॥४४॥ (१२१३-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१३-५)
ओअं प्रिअ प्रीति चीति पहिलरीआ ॥ (१२१३-६, सारंग, मः ५)
जो तउ बचनु दीओ मेरे सतिगुर तउ मै साज सीगरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१३-६, सारंग, मः ५)
हम भूलह तुम सदा अभूला हम पतित तुम पतित उधरीआ ॥ (१२१३-७, सारंग, मः ५)
हम नीच बिरख तुम मैलागर लाज संगि संगि बसरीआ ॥१॥ (१२१३-७, सारंग, मः ५)
तुम गम्भीर धीर उपकारी हम किआ बपुरे जंतरीआ ॥ (१२१३-८, सारंग, मः ५)
गुर कृपाल नानक हरि मेलिओ तउ मेरी सूखि सेजरीआ ॥२॥२२॥४५॥ (१२१३-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१३-९)
मन ओइ दिनस धंनि परवानाँ ॥ (१२१३-९, सारंग, मः ५)
सफल ते घरी संजोग सुहावे सतिगुर संगि गिआनाँ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१३-१०, सारंग, मः ५)
धंनि सुभाग धंनि सोहागा धंनि देत जिनि मानाँ ॥ (१२१३-१०, सारंग, मः ५)
इहु तनु तुम्हरा सभु गृहु धनु तुमरा हींउ कीओ कुरबानाँ ॥१॥ (१२१३-११, सारंग, मः ५)
कोटि लाख राज सुख पाए इक निमख पेखि दृसटानाँ ॥ (१२१३-१२, सारंग, मः ५)
जउ कहहु मुखहु सेवक इह बैसीऐ सुख नानक अंतु न जानाँ ॥२॥२३॥४६॥ (१२१३-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१३-१३)
अब मोरो सहसा दूखु गइआ ॥ (१२१३-१३, सारंग, मः ५)
अउर उपाव सगल तिआगि छोडे सतिगुर सरणि पइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१३-१३, सारंग, मः ५)
सर्ब सिधि कारज सभि सवरे अहं रोग सगल ही खइआ ॥ (१२१३-१४, सारंग, मः ५)
कोटि पराध खिन महि खउ भई है गुर मिलि हरि हरि कहिआ ॥१॥ (१२१३-१५, सारंग, मः ५)
पंच दास गुरि वसगति कीने मन निहचल निरभइआ ॥ (१२१३-१५, सारंग, मः ५)
आइ न जावै न कत ही डोलै थिरु नानक राजइआ ॥२॥२४॥४७॥ (१२१३-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१३-१७)
प्रभु मेरो इत उत सदा सहाई ॥ (१२१३-१७, सारंग, मः ५)
मनमोहनु मेरे जीअ को पिआरो कवन कहा गुन गाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१३-१७, सारंग, मः ५)
खेलि खिलाइ लाड लाडावै सदा सदा अनदाई ॥ (१२१३-१८, सारंग, मः ५)
प्रतिपालै बारिक की निआई जैसे मात पिताई ॥१॥ (१२१३-१८, सारंग, मः ५)
तिसु बिनु निमख नही रहि सकीऐ बिसरि न कबहू जाई ॥ (१२१३-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१४

कहु नानक मिलि संतसंगति ते मगन भए लिव लाई ॥२॥२५॥४८॥ (१२१४-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१४-१)
अपना मीतु सुआमी गाईऐ ॥ (१२१४-२, सारंग, मः ५)
आस न अवर काहू की कीजै सुखदाता प्रभु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१४-२, सारंग, मः ५)
सूख मंगल कलिआण जिसहि घरि तिस ही सरणी पाईऐ ॥ (१२१४-३, सारंग, मः ५)

तिसहि तिआगि मानुखु जे सेवहु तउ लाज लोनु होइ जाईऐ ॥१॥ (१२१४-३, सारंग, मः ५)
एक ओट पकरी ठाकुर की गुर मिलि मति बुधि पाईऐ ॥ (१२१४-४, सारंग, मः ५)
गुण निधान नानक प्रभु मिलिआ सगल चुकी मुहताईऐ ॥२॥२६॥४६॥ (१२१४-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१४-५)
ओट सताणी प्रभ जीउ मेरै ॥ (१२१४-५, सारंग, मः ५)
दृसटि न लिआवउ अवर काहू कउ माणि महति प्रभ तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१४-६, सारंग, मः ५)
अंगीकारु कीओ प्रभि अपुनै काढि लीआ बिखु घेरै ॥ (१२१४-६, सारंग, मः ५)
अमृत नामु अउखधु मुखि दीनो जाइ पइआ गुर पैरै ॥१॥ (१२१४-७, सारंग, मः ५)
कवन उपमा कहउ एक मुख निरगुण के दातेरै ॥ (१२१४-८, सारंग, मः ५)
काटि सिलक जउ अपुना कीनो नानक सूख घनेरै ॥२॥२७॥५०॥ (१२१४-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१४-९)
प्रभ सिमरत दूख बिनासी ॥ (१२१४-९, सारंग, मः ५)
भइओ कृपालु जीअ सुखदाता होई सगल खलासी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१४-९, सारंग, मः ५)
अवरु न कोऊ सूझै प्रभ बिनु कहु को किसु पहि जासी ॥ (१२१४-१०, सारंग, मः ५)
जिउ जाणहु तिउ राखहु ठाकुर सभु किछु तुम ही पासी ॥१॥ (१२१४-११, सारंग, मः ५)
हाथ देइ राखे प्रभि अपुने सद जीवन अबिनासी ॥ (१२१४-११, सारंग, मः ५)
कहु नानक मनि अनदु भइआ है काटी जम की फासी ॥२॥२८॥५१॥ (१२१४-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१४-१३)
मेरो मनु जत कत तुझहि सम्हारै ॥ (१२१४-१३, सारंग, मः ५)
हम बारिक दीन पिता प्रभ मेरे जिउ जानहि तिउ पारै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१४-१३, सारंग, मः ५)
जब भुखौ तब भोजनु माँगै अघाए सूख सघारै ॥ (१२१४-१४, सारंग, मः ५)
तब अरोग जब तुम संगि बसतौ छुटकत होइ रवारै ॥१॥ (१२१४-१४, सारंग, मः ५)
कवन बसेरो दास दासन को थापिउ थापनहारै ॥ (१२१४-१५, सारंग, मः ५)
नामु न बिसरै तब जीवनु पाईऐ बिनती नानक इह सारै ॥२॥२९॥५२॥ (१२१४-१५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१४-१६)
मन ते भै भउ दूरि पराइओ ॥ (१२१४-१६, सारंग, मः ५)
लाल दइआल गुलाल लाडिले सहजि सहजि गुन गाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१४-१७, सारंग, मः ५)
गुर बचनाति कमात कृपा ते बहुरि न कतहू धाइओ ॥ (१२१४-१७, सारंग, मः ५)
रहत उपाधि समाधि सुख आसन भगति वछलु गृहि पाइओ ॥१॥ (१२१४-१८, सारंग, मः ५)
नाद बिनोद कोड आनंदा सहजे सहजि समाइओ ॥ (१२१४-१९, सारंग, मः ५)
करना आपि करावन आपे कहु नानक आपि आपाइओ ॥२॥३०॥५३॥ (१२१४-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१५

सारग महला ५ ॥ (१२१५-१)
अमृत नामु मनहि आधारो ॥ (१२१५-१, सारंग, मः ५)

जिन दीआ तिस कै कुरबानै गुर पूरे नमसकारो ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१५-१, सारंग, मः ५)
बूझी तृसना सहजि सुहेला कामु क्रोधु बिखु जारो ॥ (१२१५-२, सारंग, मः ५)
आइ न जाइ बसै इह ठाहर जह आसनु निरंकारो ॥१॥ (१२१५-३, सारंग, मः ५)
एकै परगटु एकै गुपता एकै धुंधूकारो ॥ (१२१५-३, सारंग, मः ५)
आदि मधि अंति प्रभु सोई कहु नानक साचु बीचारो ॥२॥३१॥५४॥ (१२१५-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१५-४)
बिनु प्रभ रहनु न जाइ घरी ॥ (१२१५-५, सारंग, मः ५)
सर्ब सूख ताहू कै पूरन जा कै सुखु है हरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१५-५, सारंग, मः ५)
मंगल रूप प्रान जीवन धन सिमरत अनद घना ॥ (१२१५-५, सारंग, मः ५)
वड समरथु सदा सद संगे गुन रसना कवन भना ॥१॥ (१२१५-६, सारंग, मः ५)
थान पवित्रा मान पवित्रा पवित्र सुनन कहनहारे ॥ (१२१५-७, सारंग, मः ५)
कहु नानक ते भवन पवित्रा जा महि संत तुम्हारे ॥२॥३२॥५५॥ (१२१५-७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१५-८)
रसना जपती तूही तूही ॥ (१२१५-८, सारंग, मः ५)
मात गरभ तुम ही प्रतिपालक मृत मंडल इक तुही ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१५-८, सारंग, मः ५)
तुमहि पिता तुम ही फुनि माता तुमहि मीत हित भ्राता ॥ (१२१५-९, सारंग, मः ५)
तुम परवार तुमहि आधारा तुमहि जीअ प्रानदाता ॥१॥ (१२१५-९, सारंग, मः ५)
तुमहि खजीना तुमहि जरीना तुम ही माणिक लाला ॥ (१२१५-१०, सारंग, मः ५)
तुमहि पारजात गुर ते पाए तउ नानक भए निहाला ॥२॥३३॥५६॥ (१२१५-११, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१५-११)
जाहू काहू अपुनो ही चिति आवै ॥ (१२१५-११, सारंग, मः ५)
जो काहू को चेरो होवत ठाकुर ही पहि जावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१५-१२, सारंग, मः ५)
अपने पहि दूख अपुने पहि सूखा अपने ही पहि बिरथा ॥ (१२१५-१२, सारंग, मः ५)
अपुने पहि मानु अपुने पहि ताना अपने ही पहि अर्था ॥१॥ (१२१५-१३, सारंग, मः ५)
किन ही राज जोबनु धन मिलखा किन ही बाप महतारी ॥ (१२१५-१४, सारंग, मः ५)
सर्ब थोक नानक गुर पाए पूरन आस हमारी ॥२॥३४॥५७॥ (१२१५-१४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१५-१५)
झूठो माइआ को मद मानु ॥ (१२१५-१५, सारंग, मः ५)
ध्रोह मोह दूरि करि बपुरे संगि गोपालहि जानु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१५-१५, सारंग, मः ५)
मिथिआ राज जोबन अरु उमरे मीर मलक अरु खान ॥ (१२१५-१६, सारंग, मः ५)
मिथिआ कापर सुगंध चतुराई मिथिआ भोजन पान ॥१॥ (१२१५-१६, सारंग, मः ५)
दीन बंधरो दास दासरो संतह की सारान ॥ (१२१५-१७, सारंग, मः ५)
माँगनि माँगउ होइ अचिंता मिलु नानक के हरि प्रान ॥२॥३५॥५८॥ (१२१५-१७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१५-१८)
अपुनी इतनी कछू न सारी ॥ (१२१५-१८, सारंग, मः ५)

अनिक काज अनिक धावरता उरझिओ आन जंजारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१५-१९, सारंग, मः ५)
दिउस चारि के दीसहि संगी ऊहाँ नाही जह भारी ॥ (१२१५-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१६

तिन सिउ राचि माचि हितु लाइओ जो कामि नही गावारी ॥१॥ (१२१६-१, सारंग, मः ५)
हउ नाही नाही किछु मेरा ना हमरो बसु चारी ॥ (१२१६-२, सारंग, मः ५)
करन करावन नानक के प्रभ संतन संगि उधारी ॥२॥३६॥५९॥ (१२१६-२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१६-३)
मोहनी मोहत रहै न होरी ॥ (१२१६-३, सारंग, मः ५)
साधिक सिध सगल की पिआरी तुटै न काहू तोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१६-३, सारंग, मः ५)
खटु सासत्र उचरत रसनागर तीर्थ गवन न थोरी ॥ (१२१६-४, सारंग, मः ५)
पूजा चक्र बरत नेम तपीआ ऊहा गैलि न छोरी ॥१॥ (१२१६-४, सारंग, मः ५)
अंध कूप महि पतित होत जगु संतहु करहु पर्म गति मोरी ॥ (१२१६-५, सारंग, मः ५)
साधसंगति नानकु भइओ मुकता दरसनु पेखत भोरी ॥२॥३७॥६०॥ (१२१६-६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१६-६)
कहा करहि रे खाटि खाटुली ॥ (१२१६-६, सारंग, मः ५)
पवनि अफार तोर चामरो अति जजरी तेरी रे माटुली ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१६-७, सारंग, मः ५)
ऊही ते हरिओ ऊहा ले धरिओ जैसे बासा मास देत झाटुली ॥ (१२१६-७, सारंग, मः ५)
देवनहारु बिसारिओ अंधुले जिउ सफरी उदरु भरै बहि हाटुली ॥१॥ (१२१६-८, सारंग, मः ५)
साद बिकार बिकार झूठ रस जह जानो तह भीर बाटुली ॥ (१२१६-९, सारंग, मः ५)
कहु नानक समझु रे इआने आजु कालि खुलै तेरी गाँठुली ॥२॥३८॥६१॥ (१२१६-९, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१६-१०)
गुर जीउ संगि तुहारै जानिओ ॥ (१२१६-१०, सारंग, मः ५)
कोटि जोध उआ की बात न पुछीऐ ताँ दरगह भी मानिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१६-११, सारंग, मः ५)
कवन मूलु प्रानी का कहीऐ कवन रूपु दृसटानिओ ॥ (१२१६-१२, सारंग, मः ५)
जोति प्रगास भई माटी संगि दुलभ देह बखानिओ ॥१॥ (१२१६-१२, सारंग, मः ५)
तुम ते सेव तुम ते जप तापा तुम ते ततु पछानिओ ॥ (१२१६-१३, सारंग, मः ५)
करु मसतकि धरि कटी जेवरी नानक दास दसानिओ ॥२॥३९॥६२॥ (१२१६-१३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१६-१४)
हरि हरि दीओ सेवक कउ नाम ॥ (१२१६-१४, सारंग, मः ५)
मानसु का को बपुरो भाई जा को राखा राम ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१६-१४, सारंग, मः ५)
आपि महा जनु आपे पंचा आपि सेवक कै काम ॥ (१२१६-१५, सारंग, मः ५)
आपे सगले दूत बिदारे ठाकुर अंतरजाम ॥१॥ (१२१६-१६, सारंग, मः ५)
आपे पति राखी सेवक की आपि कीओ बंधान ॥ (१२१६-१६, सारंग, मः ५)
आदि जुगादि सेवक की राखै नानक को प्रभु जान ॥२॥४०॥६३॥ (१२१६-१७, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२१६-१७)
तू मेरे मीत सखा हरि प्रान ॥ (१२१६-१७, सारंग, मः ५)
मनु धनु जीउ पिंडु सभु तुमरा इहु तनु सीतो तुमरै धान ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१६-१८, सारंग, मः ५)
तुम ही दीए अनिक प्रकारा तुम ही दीए मान ॥ (१२१६-१९, सारंग, मः ५)
सदा सदा तुम ही पति राखहु अंतरजामी जान ॥१॥ (१२१६-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१७

जिन संतन जानिआ तू ठाकुर ते आए परवान ॥ (१२१७-१, सारंग, मः ५)
जन का संगु पाईऐ वडभागी नानक संतन कै कुरबान ॥२॥४१॥६४॥ (१२१७-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१७-२)
करहु गति दइआल संतहु मोरी ॥ (१२१७-२, सारंग, मः ५)
तुम समरथ कारन करना तूटी तुम ही जोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१७-२, सारंग, मः ५)
जनम जनम के बिखई तुम तारे सुमति संगि तुमारै पाई ॥ (१२१७-३, सारंग, मः ५)
अनिक जोनि भ्रमते प्रभ बिसरत सासि सासि हरि गाई ॥१॥ (१२१७-४, सारंग, मः ५)
जो जो संगि मिले साधू कै ते ते पतित पुनीता ॥ (१२१७-४, सारंग, मः ५)
कहु नानक जा के वडभागा तिनि जनमु पदारथु जीता ॥२॥४२॥६५॥ (१२१७-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१७-५)
ठाकुर बिनती करन जनु आइओ ॥ (१२१७-६, सारंग, मः ५)
सर्ब सूख आनंद सहज रस सुनत तुहारो नाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१७-६, सारंग, मः ५)
कृपा निधान सूख के सागर जसु सभ महि जा को छाइओ ॥ (१२१७-७, सारंग, मः ५)
संतसंगि रंग तुम कीए अपना आपु दृसटाइओ ॥१॥ (१२१७-७, सारंग, मः ५)
नैनहु संगि संतन की सेवा चरन झारी केसाइओ ॥ (१२१७-८, सारंग, मः ५)
आठ पहर दरसनु संतन का सुखु नानक इहु पाइओ ॥२॥४३॥६६॥ (१२१७-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१७-९)
जा की राम नाम लिव लागी ॥ (१२१७-९, सारंग, मः ५)
सजनु सुरिदा सुहेला सहजे सो कहीऐ बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१७-९, सारंग, मः ५)
रहित बिकार अलप माइआ ते अहम्बुधि बिखु तिआगी ॥ (१२१७-१०, सारंग, मः ५)
दरस पिआस आस एकहि की टेक हीऐं पृअ पागी ॥१॥ (१२१७-११, सारंग, मः ५)
अचिंत सोइ जागनु उठि बैसनु अचिंत हसत बैरागी ॥ (१२१७-११, सारंग, मः ५)
कहु नानक जिनि जगतु ठगाना सु माइआ हरि जन ठागी ॥२॥४४॥६७॥ (१२१७-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१७-१३)
अब जन ऊपरि को न पुकारै ॥ (१२१७-१३, सारंग, मः ५)
पूकारन कउ जो उदमु करता गुरु परमेसरु ता कउ मारै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१७-१३, सारंग, मः ५)
निरवैरै संगि वैरु रचावै हरि दरगह ओहु हारै ॥ (१२१७-१४, सारंग, मः ५)
आदि जुगादि प्रभ की वडिआई जन की पैज सवारै ॥१॥ (१२१७-१४, सारंग, मः ५)

निरभउ भए सगल भउ मिटिआ चरन कमल आधारै ॥ (१२१७-१५, सारंग, मः ५)
गुर कै बचनि जपिओ नाउ नानक प्रगट भइओ संसारै ॥२॥४५॥६८॥ (१२१७-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१७-१६)
हरि जन छोडिआ सगला आपु ॥ (१२१७-१७, सारंग, मः ५)
जिउ जानहु तिउ रखहु गुसाई पेखि जीवाँ परतापु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१७-१७, सारंग, मः ५)
गुर उपदेसि साध की संगति बिनसिओ सगल संतापु ॥ (१२१७-१८, सारंग, मः ५)
मित्र सत्र पेखि समतु बीचारिओ सगल सम्भाखन जापु ॥१॥ (१२१७-१८, सारंग, मः ५)
तपति बुझी सीतल आघाने सुनि अनहद बिसम भए बिसमाद ॥ (१२१७-१९, सारंग, मः ५)
अनदु भइआ नानक मनि साचा पूरन पूरे नाद ॥२॥४६॥६९॥ (१२१७-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१८

सारग महला ५ ॥ (१२१८-१)
मेरै गुरि मोरो सहसा उतारिआ ॥ (१२१८-१, सारंग, मः ५)
तिसु गुर कै जाईऐ बलिहारी सदा सदा हउ वारिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१८-२, सारंग, मः ५)
गुर का नामु जपिओ दिनु राती गुर के चरन मनि धारिआ ॥ (१२१८-२, सारंग, मः ५)
गुर की धूरि करउ नित मजनु किलविख मैलु उतारिआ ॥१॥ (१२१८-३, सारंग, मः ५)
गुर पूरे की करउ नित सेवा गुरु अपना नमसकारिआ ॥ (१२१८-४, सारंग, मः ५)
सर्ब फला दीन्हे गुरि पूरै नानक गुरि निसतारिआ ॥२॥४७॥७०॥ (१२१८-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१८-५)
सिमरत नामु प्रान गति पावै ॥ (१२१८-५, सारंग, मः ५)
मिटहि कलेस त्रास सभ नासै साधसंगि हितु लावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१८-५, सारंग, मः ५)
हरि हरि हरि हरि मनि आराधे रसना हरि जसु गावै ॥ (१२१८-६, सारंग, मः ५)
तजि अभिमानु काम क्रोधु निंदा बासुदेव रंगु लावै ॥१॥ (१२१८-७, सारंग, मः ५)
दामोदर दइआल आराधहु गोबिंद करत सोहावै ॥ (१२१८-७, सारंग, मः ५)
कहु नानक सभ की होइ रेना हरि हरि दरसि समावै ॥२॥४८॥७१॥ (१२१८-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१८-९)
अपुने गुर पूरे बलिहारै ॥ (१२१८-९, सारंग, मः ५)
प्रगट प्रतापु कीओ नाम को राखे राखनहारै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१८-९, सारंग, मः ५)
निरभउ कीए सेवक दास अपने सगले दूख बिदारै ॥ (१२१८-१०, सारंग, मः ५)
आन उपाव तिआगि जन सगले चरन कमल रिद धारै ॥१॥ (१२१८-१०, सारंग, मः ५)
प्रान अधार मीत साजन प्रभ एकै एकंकारै ॥ (१२१८-११, सारंग, मः ५)
सभ ते ऊच ठाकुरु नानक का बार बार नमसकारै ॥२॥४९॥७२॥ (१२१८-११, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१८-१२)
बिनु हरि है को कहा बतावहु ॥ (१२१८-१२, सारंग, मः ५)
सुख समूह करुणा मै करता तिसु प्रभ सदा धिआवहु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१८-१३, सारंग, मः ५)

जा कै सूति परोए जंता तिसु प्रभ का जसु गावहु ॥ (१२१८-१३, सारंग, मः ५)
सिमरि ठाकुरु जिनि सभु किछु दीना आन कहा पहि जावहु ॥१॥ (१२१८-१४, सारंग, मः ५)
सफल सेवा सुआमी मेरे की मन बाँछत फल पावहु ॥ (१२१८-१४, सारंग, मः ५)
कहु नानक लाभु लाहा लै चालहु सुख सेती घरि जावहु ॥२॥५०॥७३॥ (१२१८-१५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१८-१६)
ठाकुर तुम्ह सरणाई आइआ ॥ (१२१८-१६, सारंग, मः ५)
उतरि गइओ मेरे मन का संसा जब ते दरसनु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१८-१६, सारंग, मः ५)
अनबोलत मेरी बिरथा जानी अपना नामु जपाइआ ॥ (१२१८-१७, सारंग, मः ५)
दुख नाठे सुख सहजि समाए अनद अनद गुण गाइआ ॥१॥ (१२१८-१८, सारंग, मः ५)
बाह पकरि कढि लीने अपुने गृह अंध कूप ते माइआ ॥ (१२१८-१८, सारंग, मः ५)
कहु नानक गुरि बंधन काटे बिछुरत आनि मिलाइआ ॥२॥५१॥७४॥ (१२१८-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२१९

सारग महला ५ ॥ (१२१९-१)
हरि के नाम की गति ठाँढी ॥ (१२१९-१, सारंग, मः ५)
बेद पुरान सिमृति साधू जन खोजत खोजत काढी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१९-१, सारंग, मः ५)
सिव बिरंच अरु इंद्र लोक ता महि जलतौ फिरिआ ॥ (१२१९-२, सारंग, मः ५)
सिमरि सिमरि सुआमी भए सीतल दूखु दरदु भ्रमु हिरिआ ॥१॥ (१२१९-२, सारंग, मः ५)
जो जो तरिओ पुरातनु नवतनु भगति भाइ हरि देवा ॥ (१२१९-३, सारंग, मः ५)
नानक की बेनंती प्रभ जीउ मिलै संत जन सेवा ॥२॥५२॥७५॥ (१२१९-३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१९-४)
जिहवे अमृत गुण हरि गाउ ॥ (१२१९-४, सारंग, मः ५)
हरि हरि बोलि कथा सुनि हरि की उचरहु प्रभ को नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१९-५, सारंग, मः ५)
राम नामु रतन धनु संचहु मनि तनि लावहु भाउ ॥ (१२१९-५, सारंग, मः ५)
आन बिभूत मिथिआ करि मानहु साचा इहै सुआउ ॥१॥ (१२१९-६, सारंग, मः ५)
जीअ प्रान मुकति को दाता एकस सिउ लिव लाउ ॥ (१२१९-६, सारंग, मः ५)
कहु नानक ता की सरणाई देत सगल अपिआउ ॥२॥५३॥७६॥ (१२१९-७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१९-८)
होती नही कवन कछु करणी ॥ (१२१९-८, सारंग, मः ५)
इहै ओट पाई मिलि संतह गोपाल एक की सरणी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१९-८, सारंग, मः ५)
पंच दोख छिद्र इआ तन महि बिखै बिआधि की करणी ॥ (१२१९-९, सारंग, मः ५)
आस अपार दिनस गणि राखे ग्रसत जात बलु जरणी ॥१॥ (१२१९-९, सारंग, मः ५)
अनाथह नाथ दइआल सुख सागर सर्ब दोख भै हरणी ॥ (१२१९-१०, सारंग, मः ५)
मनि बाँछत चितवत नानक दास पेखि जीवा प्रभ चरणी ॥२॥५४॥७७॥ (१२१९-११, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१९-११)

फीके हरि के नाम बिनु साद ॥ (१२१९-१२, सारंग, मः ५)
अमृत रसु कीरतनु हरि गाईऐ अहिनिसि पूरन नाद ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१९-१२, सारंग, मः ५)
सिमरत साँति महा सुखु पाईऐ मिटि जाहि सगल बिखाद ॥ (१२१९-१३, सारंग, मः ५)
हरि हरि लाभु साधसंगि पाईऐ घरि लै आवहु लादि ॥१॥ (१२१९-१३, सारंग, मः ५)
सभ ते ऊच ऊच ते ऊचो अंतु नही मरजाद ॥ (१२१९-१४, सारंग, मः ५)
बरनि न साकउ नानक महिमा पेखि रहे बिसमाद ॥२॥५५॥७८॥ (१२१९-१४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१९-१५)
आइओ सुनन पड़न कउ बाणी ॥ (१२१९-१५, सारंग, मः ५)
नामु विसारि लगहि अन लालचि बिरथा जनमु पराणी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१९-१६, सारंग, मः ५)
समझु अचेत चेति मन मेरे कथी संतन अकथ कहाणी ॥ (१२१९-१६, सारंग, मः ५)
लाभु लैहु हरि रिदै अराधहु छुटकै आवण जाणी ॥१॥ (१२१९-१७, सारंग, मः ५)
उदमु सकति सिआणप तुमरी देहि त नामु वखाणी ॥ (१२१९-१७, सारंग, मः ५)
सेई भगत भगति से लागे नानक जो प्रभ भाणी ॥२॥५६॥७९॥ (१२१९-१८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२१९-१९)
धनवंत नाम के वणजारे ॥ (१२१९-१९, सारंग, मः ५)
साँझी करहु नाम धनु खाटहु गुर का सबदु वीचारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२१९-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२०

छोडहु कपटु होइ निरवैरा सो प्रभु संगि निहारे ॥ (१२२०-१, सारंग, मः ५)
सचु धनु वणजहु सचु धनु संचहु कबहू न आवहु हारे ॥१॥ (१२२०-१, सारंग, मः ५)
खात खरचत किछु निखुटत नाही अगनत भरे भंडारे ॥ (१२२०-२, सारंग, मः ५)
कहु नानक सोभा संगि जावहु पारब्रह्म कै दुआरे ॥२॥५७॥८०॥ (१२२०-२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२०-३)
प्रभ जी मोहि कवनु अनाथु बिचारा ॥ (१२२०-३, सारंग, मः ५)
कवन मूल ते मानुखु करिआ इहु परतापु तुहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२०-४, सारंग, मः ५)
जीअ प्राण सर्ब के दाते गुण कहे न जाहि अपारा ॥ (१२२०-४, सारंग, मः ५)
सभ के प्रीतम स्रब प्रतिपालक सर्ब घटाँ आधारा ॥१॥ (१२२०-५, सारंग, मः ५)
कोइ न जाणै तुमरी गति मिति आपहि एक पसारा ॥ (१२२०-५, सारंग, मः ५)
साध नाव बैठावहु नानक भव सागरु पारि उतारा ॥२॥५८॥८१॥ (१२२०-६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२०-७)
आवै राम सरणि वडभागी ॥ (१२२०-७, सारंग, मः ५)
एकस बिनु किछु होरु न जाणै अवरि उपाव तिआगी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२०-७, सारंग, मः ५)
मन बच क्रम आराधै हरि हरि साधसंगि सुखु पाइआ ॥ (१२२०-८, सारंग, मः ५)
अनद बिनोद अकथ कथा रसु साचै सहजि समाइआ ॥१॥ (१२२०-९, सारंग, मः ५)
करि किरपा जो अपुना कीनो ता की ऊतम बाणी ॥ (१२२०-९, सारंग, मः ५)

साधसंगि नानक निसतरीऐ जो राते प्रभ निरबाणी ॥२॥५६॥८२॥ (१२२०-१०, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२०-१०)
जा ते साधू सरणि गही ॥ (१२२०-१०, सारंग, मः ५)
साँति सहजु मनि भइओ प्रगासा बिरथा कछु न रही ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२०-११, सारंग, मः ५)
होहु कृपाल नामु देहु अपुना बिनती एह कही ॥ (१२२०-११, सारंग, मः ५)
आन बिउहार बिसरे प्रभ सिमरत पाइओ लाभु सही ॥१॥ (१२२०-१२, सारंग, मः ५)
जह ते उपजिओ तही समानो साई बसतु अही ॥ (१२२०-१३, सारंग, मः ५)
कहु नानक भरमु गुरि खोइओ जोती जोति समही ॥२॥६०॥८३॥ (१२२०-१३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२०-१४)
रसना राम को जसु गाउ ॥ (१२२०-१४, सारंग, मः ५)
आन सुआद बिसारि सगले भलो नाम सुआउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२०-१४, सारंग, मः ५)
चरन कमल बसाइ हिरदै एक सिउ लिव लाउ ॥ (१२२०-१५, सारंग, मः ५)
साधसंगति होहि निरमलु बहुड़ि जोनि न आउ ॥१॥ (१२२०-१५, सारंग, मः ५)
जीउ प्रान अधारु तेरा तू निथावे थाउ ॥ (१२२०-१६, सारंग, मः ५)
सासि सासि सम्हालि हरि हरि नानक सद बलि जाउ ॥२॥६१॥८४॥ (१२२०-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२०-१७)
बैकुंठ गोबिंद चरन नित धिआउ ॥ (१२२०-१७, सारंग, मः ५)
मुकति पदारथु साधू संगति अमृतु हरि का नाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२०-१८, सारंग, मः ५)
ऊतम कथा सुणीजै स्रवणी मइआ करहु भगवान ॥ (१२२०-१८, सारंग, मः ५)
आवत जात दोऊ पख पूरन पाईऐ सुख बिस्राम ॥१॥ (१२२०-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२१

सोधत सोधत ततु बीचारिओ भगति सरेसट पूरी ॥ (१२२१-१, सारंग, मः ५)
कहु नानक इक राम नाम बिनु अवर सगल बिधि ऊरी ॥२॥६२॥८५॥ (१२२१-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२१-२)
साचे सतिगुरू दातारा ॥ (१२२१-२, सारंग, मः ५)
दरसनु देखि सगल दुख नासहि चरन कमल बलिहारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२१-२, सारंग, मः ५)
सति परमेसरु सति साध जन निहचलु हरि का नाउ ॥ (१२२१-३, सारंग, मः ५)
भगति भावनी पारब्रह्म की अबिनासी गुण गाउ ॥१॥ (१२२१-३, सारंग, मः ५)
अगमु अगोचरु मिति नही पाईऐ सगल घटा आधारु ॥ (१२२१-४, सारंग, मः ५)
नानक वाहु वाहु कहु ता कउ जा का अंतु न पारु ॥२॥६३॥८६॥ (१२२१-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२१-५)
गुर के चरन बसे मन मेरै ॥ (१२२१-५, सारंग, मः ५)
पूरि रहिओ ठाकुरु सभ थाई निकटि बसै सभ नेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२१-६, सारंग, मः ५)
बंधन तोरि राम लिव लाई संतसंगि बनि आई ॥ (१२२१-६, सारंग, मः ५)

जनमु पदारथु भइओ पुनीता इछा सगल पुजाई ॥१॥ (१२२१-७, सारंग, मः ५)
जा कउ कृपा करहु प्रभ मेरे सो हरि का जसु गावै ॥ (१२२१-८, सारंग, मः ५)
आठ पहर गोबिंद गुन गावै जनु नानकु सद बलि जावै ॥२॥६४॥८७॥ (१२२१-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२१-९)
जीवनु तउ गनीऐ हरि पेखा ॥ (१२२१-९, सारंग, मः ५)
करहु कृपा प्रीतम मनमोहन फोरि भर्म की रेखा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२१-९, सारंग, मः ५)
कहत सुनत किछु साँति न उपजत बिनु बिसास किआ सेखाँ ॥ (१२२१-१०, सारंग, मः ५)
प्रभू तिआगि आन जो चाहत ता कै मुखि लागै कालेखा ॥१॥ (१२२१-१०, सारंग, मः ५)
जा कै रासि सर्ब सुख सुआमी आन न मानत भेखा ॥ (१२२१-११, सारंग, मः ५)
नानक दरस मगन मनु मोहिओ पूरन अर्थ बिसेखा ॥२॥६५॥८८॥ (१२२१-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२१-१२)
सिमरन राम को इकु नाम ॥ (१२२१-१३, सारंग, मः ५)
कलमल दगध होहि खिन अंतरि कोटि दान इसनान ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२१-१३, सारंग, मः ५)
आन जंजार बृथा स्रमु घालत बिनु हरि फोकट गिआन ॥ (१२२१-१४, सारंग, मः ५)
जनम मरन संकट ते छूटै जगदीस भजन सुख धिआन ॥१॥ (१२२१-१४, सारंग, मः ५)
तेरी सरनि पूरन सुख सागर करि किरपा देवहु दान ॥ (१२२१-१५, सारंग, मः ५)
सिमरि सिमरि नानक प्रभ जीवै बिनसि जाइ अभिमान ॥२॥६६॥८९॥ (१२२१-१५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२१-१६)
धूरतु सोई जि धुर कउ लागै ॥ (१२२१-१६, सारंग, मः ५)
सोई धुरंधरु सोई बसुंधरु हरि एक प्रेम रस पागै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२१-१६, सारंग, मः ५)
बलबंच करै न जानै लाभै सो धूरतु नही मूड़्हा ॥ (१२२१-१७, सारंग, मः ५)
सुआरथु तिआगि असारथि रचिओ नह सिमरै प्रभु रूड़ा ॥१॥ (१२२१-१८, सारंग, मः ५)
सोई चतुरु सिआणा पंडितु सो सूरा सो दानाँ ॥ (१२२१-१८, सारंग, मः ५)
साधसंगि जिनि हरि हरि जपिओ नानक सो परवाना ॥२॥६७॥९०॥ (१२२१-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२२

सारग महला ५ ॥ (१२२२-१)
हरि हरि संत जना की जीवनि ॥ (१२२२-१, सारंग, मः ५)
बिखै रस भोग अमृत सुख सागर राम नाम रसु पीवनि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२२-१, सारंग, मः ५)
संचनि राम नाम धनु रतना मन तन भीतरि सीवनि ॥ (१२२२-२, सारंग, मः ५)
हरि रंग राँग भए मन लाला राम नाम रस खीवनि ॥१॥ (१२२२-२, सारंग, मः ५)
जिउ मीना जल सिउ उरझानो राम नाम संगि लीवनि ॥ (१२२२-३, सारंग, मः ५)
नानक संत चातृक की निआई हरि बूंद पान सुख थीवनि ॥२॥६८॥९१॥ (१२२२-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२२-४)
हरि के नामहीन बेताल ॥ (१२२२-५, सारंग, मः ५)

जेता करन करावन तेता सभि बंधन जंजाल ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२२-५, सारंग, मः ५)
बिनु प्रभ सेव करत अन सेवा बिरथा काटै काल ॥ (१२२२-५, सारंग, मः ५)
जब जमु आइ संघारै प्रानी तब तुमरो कउनु हवाल ॥१॥ (१२२२-६, सारंग, मः ५)
राखि लेहु दास अपुने कउ सदा सदा किरपाल ॥ (१२२२-६, सारंग, मः ५)
सुख निधान नानक प्रभु मेरा साधसंगि धन माल ॥२॥६९॥९२॥ (१२२२-७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२२-८)
मनि तनि राम को बिउहारु ॥ (१२२२-८, सारंग, मः ५)
प्रेम भगति गुन गावन गीधे पोहत नह संसारु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२२-८, सारंग, मः ५)
स्रवणी कीरतनु सिमरनु सुआमी इहु साध को आचारु ॥ (१२२२-९, सारंग, मः ५)
चरन कमल असथिति रिद अंतरि पूजा प्रान को आधारु ॥१॥ (१२२२-९, सारंग, मः ५)
प्रभ दीन दइआल सुनहु बेनंती किरपा अपनी धारु ॥ (१२२२-१०, सारंग, मः ५)
नामु निधानु उचरउ नित रसना नानक सद बलिहारु ॥२॥७०॥९३॥ (१२२२-११, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२२-११)
हरि के नामहीन मति थोरी ॥ (१२२२-१२, सारंग, मः ५)
सिमरत नाहि सिरीधर ठाकुर मिलत अंध दुख घोरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२२-१२, सारंग, मः ५)
हरि के नाम सिउ प्रीति न लागी अनिक भेख बहु जोरी ॥ (१२२२-१३, सारंग, मः ५)
तूटत बार न लागै ता कउ जिउ गागरि जल फोरी ॥१॥ (१२२२-१३, सारंग, मः ५)
करि किरपा भगति रसु दीजै मनु खचित प्रेम रस खोरी ॥ (१२२२-१४, सारंग, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाई प्रभ बिनु आन न होरी ॥२॥७१॥९४॥ (१२२२-१४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२२-१५)
चितवउ वा अउसर मन माहि ॥ (१२२२-१५, सारंग, मः ५)
होइ इकत्र मिलहु संत साजन गुण गोबिंद नित गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२२-१६, सारंग, मः ५)
बिनु हरि भजन जेते काम करीअहि तेते बिरथे जाँहि ॥ (१२२२-१६, सारंग, मः ५)
पूरन परमानंद मनि मीठो तिसु बिनु दूसर नाहि ॥१॥ (१२२२-१७, सारंग, मः ५)
जप तप संजम कर्म सुख साधन तुलि न कछूऐ लाहि ॥ (१२२२-१७, सारंग, मः ५)
चरन कमल नानक मनु बेधिओ चरनह संगि समाहि ॥२॥७२॥९५॥ (१२२२-१८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२२-१९)
मेरा प्रभु संगे अंतरजामी ॥ (१२२२-१९, सारंग, मः ५)
आगै कुसल पाछै खेम सूखा सिमरत नामु सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२२-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२३

साजन मीत सखा हरि मेरै गुन गोपाल हरि राइआ ॥ (१२२३-१, सारंग, मः ५)
बिसरि न जाई निमख हिरदै ते पूरै गुरू मिलाइआ ॥१॥ (१२२३-२, सारंग, मः ५)
करि किरपा राखे दास अपने जीअ जंत वसि जा कै ॥ (१२२३-२, सारंग, मः ५)
एका लिव पूरन परमेसुर भउ नही नानक ता कै ॥२॥७३॥९६॥ (१२२३-३, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२२३-३)
जा कै राम को बलु होइ ॥ (१२२३-४, सारंग, मः ५)
सगल मनोरथ पूरन ताहू के दूखु न बिआपै कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२३-४, सारंग, मः ५)
जो जनु भगतु दासु निजु प्रभ का सुणि जीवाँ तिसु सोइ ॥ (१२२३-४, सारंग, मः ५)
उदमु करउ दरसनु पेखन कौ करमि परापति होइ ॥१॥ (१२२३-५, सारंग, मः ५)
गुर परसादी दृसटि निहारउ दूसर नाही कोइ ॥ (१२२३-६, सारंग, मः ५)
दानु देहि नानक अपने कउ चरन जीवाँ संत धोइ ॥२॥७४॥९७॥ (१२२३-६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२३-७)
जीवतु राम के गुण गाइ ॥ (१२२३-७, सारंग, मः ५)
करहु कृपा गोपाल बीठुले बिसरि न कब ही जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२३-७, सारंग, मः ५)
मनु तनु धनु सभु तुमरा सुआमी आन न दूजी जाइ ॥ (१२२३-८, सारंग, मः ५)
जिउ तू राखहि तिव ही रहणा तुमरा पैनै खाइ ॥१॥ (१२२३-८, सारंग, मः ५)
साधसंगति कै बलि बलि जाई बहुड़ि न जनमा धाइ ॥ (१२२३-९, सारंग, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाई जिउ भावै तिवै चलाइ ॥२॥७५॥९८॥ (१२२३-९, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२३-१०)
मन रे नाम को सुख सार ॥ (१२२३-१०, सारंग, मः ५)
आन काम बिकार माइआ सगल दीसहि छार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२३-११, सारंग, मः ५)
गृहि अंध कूप पतित प्राणी नरक घोर गुबार ॥ (१२२३-११, सारंग, मः ५)
अनिक जोनी भ्रमत हारिओ भ्रमत बारं बार ॥१॥ (१२२३-१२, सारंग, मः ५)
पतित पावन भगति बछल दीन किरपा धार ॥ (१२२३-१२, सारंग, मः ५)
कर जोड़ि नानकु दानु माँगै साधसंगि उधार ॥२॥७६॥९९॥ (१२२३-१३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२३-१३)
बिराजित राम को परताप ॥ (१२२३-१४, सारंग, मः ५)
आधि बिआधि उपाधि सभ नासी बिनसे तीनै ताप ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२३-१४, सारंग, मः ५)
तृसना बुझी पूरन सभ आसा चूके सोग संताप ॥ (१२२३-१५, सारंग, मः ५)
गुण गावत अचुत अबिनासी मन तन आतम ध्राप ॥१॥ (१२२३-१५, सारंग, मः ५)
काम क्रोध लोभ मद मतसर साधू कै संगि खाप ॥ (१२२३-१६, सारंग, मः ५)
भगति वछल भै काटनहारे नानक के माई बाप ॥२॥७७॥१००॥ (१२२३-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२३-१७)
आतुरु नाम बिनु संसार ॥ (१२२३-१७, सारंग, मः ५)
तृपति न होवत कूकरी आसा इतु लागो बिखिआ छार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२३-१७, सारंग, मः ५)
पाइ ठगउरी आपि भुलाइओ जनमत बारो बार ॥ (१२२३-१८, सारंग, मः ५)
हरि का सिमरनु निमख न सिमरिओ जमकंकर करत खुआर ॥१॥ (१२२३-१८, सारंग, मः ५)
होहु कृपाल दीन दुख भंजन तेरिआ संतह की रावार ॥ (१२२३-१९, सारंग, मः ५)

नानक दासु दरसु प्रभ जाचै मन तन को आधार ॥२॥७८॥१०१॥ (१२२४-१, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२४-१)
मैला हरि के नाम बिनु जीउ ॥ (१२२४-१, सारंग, मः ५)
तिनि प्रभि साचै आपि भुलाइआ बिखै ठगउरी पीउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२४-२, सारंग, मः ५)
कोटि जनम भ्रमतौ बहु भाँती थिति नही कतहू पाई ॥ (१२२४-२, सारंग, मः ५)
पूरा सतिगुरु सहजि न भेटिआ साकतु आवै जाई ॥१॥ (१२२४-३, सारंग, मः ५)
राखि लेहु प्रभ सम्मृथ दाते तुम प्रभ अगम अपार ॥ (१२२४-३, सारंग, मः ५)
नानक दास तेरी सरणाई भवजलु उतरिओ पार ॥२॥७९॥१०२॥ (१२२४-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२४-५)
रमण कउ राम के गुण बाद ॥ (१२२४-५, सारंग, मः ५)
साधसंगि धिआईऐ परमेसरु अमृत जा के सुआद ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२४-५, सारंग, मः ५)
सिमरत एकु अचुत अबिनासी बिनसे माइआ माद ॥ (१२२४-६, सारंग, मः ५)
सहज अनद अनहद धुनि बाणी बहुरि न भए बिखाद ॥१॥ (१२२४-६, सारंग, मः ५)
सनकादिक ब्रहमादिक गावत गावत सुक प्रहिलाद ॥ (१२२४-७, सारंग, मः ५)
पीवत अमिउ मनोहर हरि रसु जपि नानक हरि बिसमाद ॥२॥८०॥१०३॥ (१२२४-८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२४-९)
कीन्े पाप के बहु कोट ॥ (१२२४-९, सारंग, मः ५)
दिनसु रैनी थकत नाही कतहि नाही छोट ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२४-९, सारंग, मः ५)
महा बजर बिख बिआधी सिरि उठाई पोट ॥ (१२२४-१०, सारंग, मः ५)
उघरि गईआँ खिनहि भीतरि जमहि ग्रासे झोट ॥१॥ (१२२४-१०, सारंग, मः ५)
पसु परेत उसट गरधभ अनिक जोनी लेट ॥ (१२२४-११, सारंग, मः ५)
भजु साधसंगि गोबिंद नानक कछु न लागै फेट ॥२॥८१॥१०४॥ (१२२४-११, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२४-१२)
अंधे खावहि बिसू के गटाक ॥ (१२२४-१२, सारंग, मः ५)
नैन स्रवन सरीरु सभु हुटिओ सासु गइओ तत घाट ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२४-१२, सारंग, मः ५)
अनाथ रञाणि उदरु ले पोखहि माइआ गईआ हाटि ॥ (१२२४-१३, सारंग, मः ५)
किलबिख करत करत पछुतावहि कबहु न साकहि छाँटि ॥१॥ (१२२४-१३, सारंग, मः ५)
निंदकु जमदूती आइ संघारिओ देवहि मूंड उपरि मटाक ॥ (१२२४-१४, सारंग, मः ५)
नानक आपन कटारी आपस कउ लाई मनु अपना कीनो फाट ॥२॥८२॥१०५॥ (१२२४-१५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२४-१६)
टूटी निंदक की अध बीच ॥ (१२२४-१६, सारंग, मः ५)
जन का राखा आपि सुआमी बेमुख कउ आइ पहूची मीच ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२४-१६, सारंग, मः ५)
उस का कहिआ कोइ न सुणई कही न बैसणु पावै ॥ (१२२४-१७, सारंग, मः ५)

ईहाँ दुखु आगै नरकु भुंचै बहु जोनी भरमावै ॥१॥ (१२२४-१७, सारंग, मः ५)
प्रगटु भइआ खंडी ब्रहमंडी कीता अपणा पाइआ ॥ (१२२४-१८, सारंग, मः ५)
नानक सरणि निरभउ करते की अनद मंगल गुण गाइआ ॥२॥८३॥१०६॥ (१२२४-१८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२४-१९)
तृसना चलत बहु परकारि ॥ (१२२४-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२५

पूरन होत न कतहु बातहि अंति परती हारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२५-१, सारंग, मः ५)
साँति सूख न सहजु उपजै इहै इसु बिउहारि ॥ (१२२५-१, सारंग, मः ५)
आप पर का कछु न जानै काम क्रोधहि जारि ॥१॥ (१२२५-२, सारंग, मः ५)
संसार सागरु दुखि बिआपिओ दास लेवहु तारि ॥ (१२२५-२, सारंग, मः ५)
चरन कमल सरणाइ नानक सद सदा बलिहारि ॥२॥८४॥१०७॥ (१२२५-३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२५-४)
रे पापी तै कवन की मति लीन ॥ (१२२५-४, सारंग, मः ५)
निमख घरी न सिमरि सुआमी जीउ पिंडु जिनि दीन ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२५-४, सारंग, मः ५)
खात पीवत सवंत सुखीआ नामु सिमरत खीन ॥ (१२२५-५, सारंग, मः ५)
गरभ उदर बिललाट करता तहाँ होवत दीन ॥१॥ (१२२५-५, सारंग, मः ५)
महा माद बिकार बाधा अनिक जोनि भ्रमीन ॥ (१२२५-६, सारंग, मः ५)
गोबिंद बिसरे कवन दुख गनीअहि सुखु नानक हरि पद चीन्‍ ॥२॥८५॥१०८॥ (१२२५-६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२५-७)
माई री चरनह ओट गही ॥ (१२२५-७, सारंग, मः ५)
दरसनु पेखि मेरा मनु मोहिओ दुरमति जात बही ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२५-८, सारंग, मः ५)
अगह अगाधि ऊच अबिनासी कीमति जात न कही ॥ (१२२५-८, सारंग, मः ५)
जलि थलि पेखि पेखि मनु बिगसिओ पूरि रहिओ स्रब मही ॥१॥ (१२२५-९, सारंग, मः ५)
दीन दइआल प्रीतम मनमोहन मिलि साधह कीनो सही ॥ (१२२५-९, सारंग, मः ५)
सिमरि सिमरि जीवत हरि नानक जम की भीर न फही ॥२॥८६॥१०९॥ (१२२५-१०, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२५-११)
माई री मनु मेरो मतवारो ॥ (१२२५-११, सारंग, मः ५)
पेखि दइआल अनद सुख पूरन हरि रसि रपिओ खुमारो ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२५-११, सारंग, मः ५)
निर्मल भए ऊजल जसु गावत बहुरि न होवत कारो ॥ (१२२५-१२, सारंग, मः ५)
चरन कमल सिउ डोरी राची भेटिओ पुरखु अपारो ॥१॥ (१२२५-१२, सारंग, मः ५)
करु गहि लीने सरबसु दीने दीपक भइओ उजारो ॥ (१२२५-१३, सारंग, मः ५)
नानक नामि रसिक बैरागी कुलह समूहाँ तारो ॥२॥८७॥११०॥ (१२२५-१३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२५-१४)
माई री आन सिमरि मरि जाँहि ॥ (१२२५-१४, सारंग, मः ५)

तिआगि गोबिदु जीअन को दाता माइआ संगि लपटाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२५-१५, सारंग, मः ५)
नामु बिसारि चलहि अन मारगि नरक घोर महि पाहि ॥ (१२२५-१५, सारंग, मः ५)
अनिक सजाँई गणत न आवै गरभै गरभि भ्रमाहि ॥१॥ (१२२५-१६, सारंग, मः ५)
से धनवंते से पतिवंते हरि की सरणि समाहि ॥ (१२२५-१७, सारंग, मः ५)
गुर प्रसादि नानक जगु जीतिओ बहुरि न आवहि जाँहि ॥२॥८८॥१११॥ (१२२५-१७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२५-१८)
हरि काटी कुटिलता कुठारि ॥ (१२२५-१८, सारंग, मः ५)
भ्रम बन दहन भए खिन भीतरि राम नाम परहारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२५-१८, सारंग, मः ५)
काम क्रोध निंदा परहरीआ काढे साधू कै संगि मारि ॥ (१२२५-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२६

जनमु पदारथु गुरमुखि जीतिआ बहुरि न जूऐ हारि ॥१॥ (१२२६-१, सारंग, मः ५)
आठ पहर प्रभ के गुण गावह पूरन सबदि बीचारि ॥ (१२२६-१, सारंग, मः ५)
नानक दासनि दासु जनु तेरा पुनह पुनह नमसकारि ॥२॥८९॥११२॥ (१२२६-२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२६-३)
पोथी परमेसर का थानु ॥ (१२२६-३, सारंग, मः ५)
साधसंगि गावहि गुण गोबिंद पूरन ब्रह्म गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-३, सारंग, मः ५)
साधिक सिध सगल मुनि लोचहि बिरले लागै धिआनु ॥ (१२२६-४, सारंग, मः ५)
जिसहि कृपालु होइ मेरा सुआमी पूरन ता को कामु ॥१॥ (१२२६-४, सारंग, मः ५)
जा कै रिदै वसै भै भंजनु तिसु जानै सगल जहानु ॥ (१२२६-५, सारंग, मः ५)
खिनु पलु बिसरु नही मेरे करते इहु नानकु माँगै दानु ॥२॥९०॥११३॥ (१२२६-५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२६-६)
वूठा सर्ब थाई मेहु ॥ (१२२६-६, सारंग, मः ५)
अनद मंगल गाउ हरि जसु पूरन प्रगटिओ नेहु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-६, सारंग, मः ५)
चारि कुंट दह दिसि जल निधि ऊन थाउ न केहु ॥ (१२२६-७, सारंग, मः ५)
कृपा निधि गोबिंद पूरन जीअ दानु सभ देहु ॥१॥ (१२२६-८, सारंग, मः ५)
सति सति हरि सति सुआमी सति साधसंगेहु ॥ (१२२६-८, सारंग, मः ५)
सति ते जन जिन परतीति उपजी नानक नह भरमेहु ॥२॥९१॥११४॥ (१२२६-९, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२६-९)
गोबिद जीउ तू मेरे प्रान अधार ॥ (१२२६-१०, सारंग, मः ५)
साजन मीत सहाई तुम ही तू मेरो परवार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-१०, सारंग, मः ५)
करु मसतकि धारिओ मेरै माथै साधसंगि गुण गाए ॥ (१२२६-१०, सारंग, मः ५)
तुमरी कृपा ते सभ फल पाए रसकि राम नाम धिआए ॥१॥ (१२२६-११, सारंग, मः ५)
अबिचल नीव धराई सतिगुरि कबहू डोलत नाही ॥ (१२२६-१२, सारंग, मः ५)
गुर नानक जब भए दइआरा सर्ब सुखा निधि पाँही ॥२॥९२॥११५॥ (१२२६-१२, सारंग, मः ५)

सारग महला ५ ॥ (१२२६-१३)
निबही नाम की सचु खेप ॥ (१२२६-१३, सारंग, मः ५)
लाभु हरि गुण गाइ निधि धनु बिखै माहि अलेप ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-१३, सारंग, मः ५)
जीअ जंत सगल संतोखे आपना प्रभु धिआइ ॥ (१२२६-१४, सारंग, मः ५)
रतन जनमु अपार जीतिओ बहुड़ि जोनि न पाइ ॥१॥ (१२२६-१५, सारंग, मः ५)
भए कृपाल दइआल गोबिद भइआ साधू संगु ॥ (१२२६-१५, सारंग, मः ५)
हरि चरन रासि नानक पाई लगा प्रभ सिउ रंगु ॥२॥६३॥११६॥ (१२२६-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२६-१६)
माई री पेखि रही बिसमाद ॥ (१२२६-१७, सारंग, मः ५)
अनहद धुनी मेरा मनु मोहिओ अचरज ता के स्वाद ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-१७, सारंग, मः ५)
मात पिता बंधप है सोई मनि हरि को अहिलाद ॥ (१२२६-१७, सारंग, मः ५)
साधसंगि गाए गुन गोबिंद बिनसिओ सभु परमाद ॥१॥ (१२२६-१८, सारंग, मः ५)
डोरी लपटि रही चरनह संगि भ्रम भै सगले खाद ॥ (१२२६-१९, सारंग, मः ५)
एकु अधारु नानक जन कीआ बहुरि न जोनि भ्रमाद ॥२॥६४॥११७॥ (१२२६-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२७

सारग महला ५ ॥ (१२२७-१)
माई री माती चरण समूह ॥ (१२२७-१, सारंग, मः ५)
एकसु बिनु हउ आन न जानउ दुतीआ भाउ सभ लूह ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२७-१, सारंग, मः ५)
तिआगि गोपाल अवर जो करणा ते बिखिआ के खूह ॥ (१२२७-२, सारंग, मः ५)
दरस पिआस मेरा मनु मोहिओ काढी नरक ते धूह ॥१॥ (१२२७-३, सारंग, मः ५)
संत प्रसादि मिलिओ सुखदाता बिनसी हउमै हूह ॥ (१२२७-३, सारंग, मः ५)
राम रंगि राते दास नानक मउलिओ मनु तनु जूह ॥२॥६५॥११८॥ (१२२७-४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२७-४)
बिनसे काच के बिउहार ॥ (१२२७-५, सारंग, मः ५)
राम भजु मिलि साधसंगति इहै जग महि सार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२७-५, सारंग, मः ५)
ईत ऊत न डोलि कतहू नामु हिरदै धारि ॥ (१२२७-५, सारंग, मः ५)
गुर चरन बोहिथ मिलिओ भागी उतरिओ संसार ॥१॥ (१२२७-६, सारंग, मः ५)
जलि थलि महीअलि पूरि रहिओ सर्ब नाथ अपार ॥ (१२२७-६, सारंग, मः ५)
हरि नामु अमृतु पीउ नानक आन रस सभि खार ॥२॥६६॥११९॥ (१२२७-७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२७-८)
ता ते करण पलाह करे ॥ (१२२७-८, सारंग, मः ५)
महा बिकार मोह मद मातौ सिमरत नाहि हरे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२७-८, सारंग, मः ५)
साधसंगि जपते नाराइण तिन के दोख जरे ॥ (१२२७-९, सारंग, मः ५)
सफल देह धंनि ओइ जनमे प्रभ कै संगि रले ॥१॥ (१२२७-९, सारंग, मः ५)

चारि पदार्थ असट दसा सिधि सभ ऊपरि साध भले ॥ (१२२७-१०, सारंग, मः ५)
नानक दास धूरि जन बाँछै उधरहि लागि पले ॥२॥६७॥१२०॥ (१२२७-१०, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२७-११)
हरि के नाम के जन काँखी ॥ (१२२७-११, सारंग, मः ५)
मनि तनि बचनि एही सुखु चाहत प्रभ दरसु देखहि कब आखी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२७-१२, सारंग, मः ५)
तू बेअंतु पारब्रह्म सुआमी गति तेरी जाइ न लाखी ॥ (१२२७-१२, सारंग, मः ५)
चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरबसु अंतरि राखी ॥१॥ (१२२७-१३, सारंग, मः ५)
बेद पुरान सिमृति साधू जन इह बाणी रसना भाखी ॥ (१२२७-१४, सारंग, मः ५)
जपि राम नामु नानक निसतरीऐ होरु दुतीआ बिरथी साखी ॥२॥६८॥१२१॥ (१२२७-१४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२७-१५)
माखी राम की तू माखी ॥ (१२२७-१५, सारंग, मः ५)
जह दुरगंध तहा तू बैसहि महा बिखिआ मद चाखी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२७-१५, सारंग, मः ५)
कितहि असथानि तू टिकनु न पावहि इह बिधि देखी आखी ॥ (१२२७-१६, सारंग, मः ५)
संता बिनु तै कोइ न छाडिआ संत परे गोबिद की पाखी ॥१॥ (१२२७-१७, सारंग, मः ५)
जीअ जंत सगले तै मोहे बिनु संता किनै न लाखी ॥ (१२२७-१७, सारंग, मः ५)
नानक दासु हरि कीरतनि राता सबदु सुरति सचु साखी ॥२॥६९॥१२२॥ (१२२७-१८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२७-१९)
माई री काटी जम की फास ॥ (१२२७-१९, सारंग, मः ५)
हरि हरि जपत सर्ब सुख पाए बीचे ग्रसत उदास ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२७-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२८

करि किरपा लीने करि अपुने उपजी दरस पिआस ॥ (१२२८-१, सारंग, मः ५)
संतसंगि मिलि हरि गुण गाए बिनसी दुतीआ आस ॥१॥ (१२२८-१, सारंग, मः ५)
महा उदिआन अटवी ते काढे मारगु संत कहिओ ॥ (१२२८-२, सारंग, मः ५)
देखत दरसु पाप सभि नासे हरि नानक रतनु लहिओ ॥२॥१००॥१२३॥ (१२२८-२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२८-३)
माई री अरिओ प्रेम की खोरि ॥ (१२२८-३, सारंग, मः ५)
दरसन रुचित पिआस मनि सुंदर सकत न कोई तोरि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२८-४, सारंग, मः ५)
प्रान मान पति पित सुत बंधप हरि सरबसु धन मोर ॥ (१२२८-४, सारंग, मः ५)
ध्रिगु सरीरु असत बिसटा कृम बिनु हरि जानत होर ॥१॥ (१२२८-५, सारंग, मः ५)
भइओ कृपाल दीन दुख भंजनु परा पूरबला जोर ॥ (१२२८-५, सारंग, मः ५)
नानक सरणि कृपा निधि सागर बिनसिओ आन निहोर ॥२॥१०१॥१२४॥ (१२२८-६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२८-७)
नीकी राम की धुनि सोइ ॥ (१२२८-७, सारंग, मः ५)
चरन कमल अनूप सुआमी जपत साधू होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२८-७, सारंग, मः ५)

चितवता गोपाल दरसन कलमला कढु धोइ ॥ (१२२८-८, सारंग, मः ५)
जनम मरन बिकार अंकुर हरि काटि छाडे खोइ ॥१॥ (१२२८-८, सारंग, मः ५)
परा पूरबि जिसहि लिखिआ बिरला पाए कोइ ॥ (१२२८-९, सारंग, मः ५)
रवण गुण गोपाल करते नानका सचु जोइ ॥२॥१०२॥१२५॥ (१२२८-९, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२८-१०)
हरि के नाम की मति सार ॥ (१२२८-१०, सारंग, मः ५)
हरि बिसारि जु आन राचहि मिथन सभ बिसथार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२८-१०, सारंग, मः ५)
साधसंगमि भजु सुआमी पाप होवत खार ॥ (१२२८-११, सारंग, मः ५)
चरनारबिंद बसाइ हिरदै बहुरि जनम न मार ॥१॥ (१२२८-११, सारंग, मः ५)
करि अनुग्रह राखि लीने एक नाम अधार ॥ (१२२८-१२, सारंग, मः ५)
दिन रैनि सिमरत सदा नानक मुख ऊजल दरबारि ॥२॥१०३॥१२६॥ (१२२८-१२, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२८-१३)
मानी तूं राम कै दरि मानी ॥ (१२२८-१३, सारंग, मः ५)
साधसंगि मिलि हरि गुन गाए बिनसी सभ अभिमानी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२८-१४, सारंग, मः ५)
धारि अनुग्रहु अपनी करि लीनी गुरमुखि पूर गिआनी ॥ (१२२८-१४, सारंग, मः ५)
सर्ब सूख आनंद घनेरे ठाकुर दरस धिआनी ॥१॥ (१२२८-१५, सारंग, मः ५)
निकटि वरतनि सा सदा सुहागनि दह दिस साई जानी ॥ (१२२८-१५, सारंग, मः ५)
पृअ रंग रंगि रती नाराइन नानक तिसु कुरबानी ॥२॥१०४॥१२७॥ (१२२८-१५, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२८-१६)
तुअ चरन आसरो ईस ॥ (१२२८-१६, सारंग, मः ५)
तुमहि पछानू साकु तुमहि संगि राखनहार तुमै जगदीस ॥ रहाउ ॥ (१२२८-१६, सारंग, मः ५)
तू हमरो हम तुमरे कहीऐ इत उत तुम ही राखे ॥ (१२२८-१७, सारंग, मः ५)
तू बेअंतु अपरम्परु सुआमी गुर किरपा कोई लाखै ॥१॥ (१२२८-१७, सारंग, मः ५)
बिनु बकने बिनु कहन कहावन अंतरजामी जानै ॥ (१२२८-१८, सारंग, मः ५)
जा कउ मेलि लए प्रभु नानकु से जन दरगह माने ॥२॥१०५॥१२८॥ (१२२८-१८, सारंग, मः ५)

पन्ना १२२९

सारंग महला ५ चउपदे घरु ५ (१२२९-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२२९-२)
हरि भजि आन कर्म बिकार ॥ (१२२९-३, सारंग, मः ५)
मान मोहु न बुझत तृसना काल ग्रस संसार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२९-३, सारंग, मः ५)
खात पीवत हसत सोवत अउध बिती असार ॥ (१२२९-३, सारंग, मः ५)
नरक उदरि भ्रमंत जलतो जमहि कीनी सार ॥१॥ (१२२९-४, सारंग, मः ५)
पर द्रोह करत बिकार निंदा पाप रत कर झार ॥ (१२२९-४, सारंग, मः ५)
बिना सतिगुर बूझ नाही तम मोह महाँ अंधार ॥२॥ (१२२९-५, सारंग, मः ५)

बिखु ठगउरी खाइ मूठो चिति न सिरजनहार ॥ (१२२६-५, सारंग, मः ५)
गोबिंद गुप्त होइ रहिओ निआरो मातंग मति अहंकार ॥३॥ (१२२६-६, सारंग, मः ५)
करि कृपा प्रभ संत राखे चरन कमल अधार ॥ (१२२६-७, सारंग, मः ५)
कर जोरि नानकु सरनि आइओ गोपाल पुरख अपार ॥४॥१॥१२६॥ (१२२६-७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ घरु ६ पड़ताल (१२२६-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२२६-९)
सुभ बचन बोलि गुन अमोल ॥ (१२२६-१०, सारंग, मः ५)
किंकरी बिकार ॥ (१२२६-१०, सारंग, मः ५)
देखु री बीचार ॥ (१२२६-१०, सारंग, मः ५)
गुर सबदु धिआइ महलु पाइ ॥ (१२२६-१०, सारंग, मः ५)
हरि संगि रंग करती महा केल ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-११, सारंग, मः ५)
सुपन री संसारु ॥ (१२२६-११, सारंग, मः ५)
मिथनी बिसथारु ॥ (१२२६-११, सारंग, मः ५)
सखी काइ मोहि मोहिली पृअ प्रीति रिदै मेल ॥१॥ (१२२६-११, सारंग, मः ५)
सर्ब री प्रीति पिआरु ॥ (१२२६-१२, सारंग, मः ५)
प्रभु सदा री दइआरु ॥ (१२२६-१२, सारंग, मः ५)
काँएं आन आन रुचीऐ ॥ (१२२६-१२, सारंग, मः ५)
हरि संगि संगि खचीऐ ॥ (१२२६-१३, सारंग, मः ५)
जउ साधसंग पाए ॥ (१२२६-१३, सारंग, मः ५)
कहु नानक हरि धिआए ॥ (१२२६-१३, सारंग, मः ५)
अब रहे जमहि मेल ॥२॥१॥१३०॥ (१२२६-१३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२६-१४)
कंचना बहु दत करा ॥ (१२२६-१४, सारंग, मः ५)
भूमि दानु अरपि धरा ॥ (१२२६-१४, सारंग, मः ५)
मन अनिक सोच पवित्र करत ॥ (१२२६-१५, सारंग, मः ५)
नाही रे नाम तुलि मन चरन कमल लागे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-१५, सारंग, मः ५)
चारि बेद जिहव भने ॥ (१२२६-१५, सारंग, मः ५)
दस असट खसट स्रवन सुने ॥ (१२२६-१६, सारंग, मः ५)
नही तुलि गोबिद नाम धुने ॥ (१२२६-१६, सारंग, मः ५)
मन चरन कमल लागे ॥१॥ (१२२६-१६, सारंग, मः ५)
बरत संधि सोच चार ॥ (१२२६-१७, सारंग, मः ५)
कृआ कुंटि निराहार ॥ (१२२६-१७, सारंग, मः ५)
अपरस करत पाकसार ॥ (१२२६-१७, सारंग, मः ५)
निवली कर्म बहु बिसथार ॥ (१२२६-१७, सारंग, मः ५)
धूप दीप करते हरि नाम तुलि न लागे ॥ (१२२६-१८, सारंग, मः ५)

राम दइआर सुनि दीन बेनती ॥ (१२२६-१८, सारंग, मः ५)
देहु दरसु नैन पेखउ जन नानक नाम मिसट लागे ॥२॥२॥१३१॥ (१२२६-१८, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२२६-१६)
राम राम राम जापि रमत राम सहाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२२६-१६, सारंग, मः ५)

पन्ना १२३०

संतन कै चरन लागे काम क्रोध लोभ तिआगे गुर गोपाल भए कृपाल लबधि अपनी पाई ॥१॥ (१२३०-१, सारंग, मः ५)
बिनसे भ्रम मोह अंध टूटे माइआ के बंध पूरन सरबत्र ठाकुर नह कोऊ बैराई ॥ (१२३०-२, सारंग, मः ५)
सुआमी सुप्रसन्न भए जनम मरन दोख गए संतन कै चरन लागि नानक गुन गाई ॥२॥३॥१३२॥ (१२३०-३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२३०-४)
हरि हरे हरि मुखहु बोलि हरि हरे मनि धारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३०-४, सारंग, मः ५)
स्रवन सुनन भगति करन अनिक पातिक पुनहचरन ॥ (१२३०-४, सारंग, मः ५)
सरन परन साधू आन बानि बिसारे ॥१॥ (१२३०-५, सारंग, मः ५)
हरि चरन प्रीति नीत नीति पावना महि महा पुनीत ॥ (१२३०-५, सारंग, मः ५)
सेवक भै दूरि करन कलिमल दोख जारे ॥ (१२३०-६, सारंग, मः ५)
कहत मुकत सुनत मुकत रहत जनम रहते ॥ (१२३०-६, सारंग, मः ५)
राम राम सार भूत नानक ततु बीचारे ॥२॥४॥१३३॥ (१२३०-७, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२३०-८)
नाम भगति मागु संत तिआगि सगल कामी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३०-८, सारंग, मः ५)
प्रीति लाइ हरि धिआइ गुन गोबिंद सदा गाइ ॥ (१२३०-८, सारंग, मः ५)
हरि जन की रेन बाँछु दैनहार सुआमी ॥१॥ (१२३०-६, सारंग, मः ५)
सर्ब कुसल सुख बिस्राम आनदा आनंद नाम जम की कछु नाहि त्रास सिमरि अंतरजामी ॥ (१२३०-६, सारंग, मः ५)
एक सरन गोबिंद चरन संसार सगल ताप हरन ॥ (१२३०-१०, सारंग, मः ५)
नाव रूप साधसंग नानक पारगरामी ॥२॥५॥१३४॥ (१२३०-११, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२३०-११)
गुन लाल गावउ गुर देखे ॥ (१२३०-१२, सारंग, मः ५)
पंचा ते एकु छूटा जउ साधसंगि पग रउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३०-१२, सारंग, मः ५)
दृसटउ कछु संगि न जाइ मानु तिआगि मोहा ॥ (१२३०-१२, सारंग, मः ५)
एकै हरि प्रीति लाइ मिलि साधसंगि सोहा ॥१॥ (१२३०-१३, सारंग, मः ५)
पाइओ है गुण निधानु सगल आस पूरी ॥ (१२३०-१३, सारंग, मः ५)
नानक मनि अनंद भए गुरि बिखम गारह तोरी ॥२॥६॥१३५॥ (१२३०-१४, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२३०-१४)

मनि बिरागैगी ॥ (१२३०-१५, सारंग, मः ५)
खोजती दरसार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३०-१५, सारंग, मः ५)
साधू संतन सेवि कै प्रिउ हीअरै धिआइओ ॥ (१२३०-१५, सारंग, मः ५)
आनंद रूपी पेखि कै हउ महलु पावउगी ॥१॥ (१२३०-१५, सारंग, मः ५)
काम करी सभ तिआगि कै हउ सरणि परउगी ॥ (१२३०-१६, सारंग, मः ५)
नानक सुआमी गरि मिले हउ गुर मनावउगी ॥२॥७॥१३६॥ (१२३०-१६, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ ॥ (१२३०-१७)
ऐसी होइ परी ॥ (१२३०-१७, सारंग, मः ५)
जानते दइआर ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३०-१७, सारंग, मः ५)
मातर पितर तिआगि कै मनु संतन पाहि बेचाइओ ॥ (१२३०-१८, सारंग, मः ५)
जाति जनम कुल खोईऐ हउ गावउ हरि हरी ॥१॥ (१२३०-१८, सारंग, मः ५)
लोक कुटम्ब ते टूटीऐ प्रभ किरति किरति करी ॥ (१२३०-१९, सारंग, मः ५)
गुरि मो कउ उपदेसिआ नानक सेवि एक हरी ॥२॥८॥१३७॥ (१२३०-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२३१

सारग महला ५ ॥ (१२३१-१)
लाल लाल मोहन गोपाल तू ॥ (१२३१-१, सारंग, मः ५)
कीट हसति पाखाण जंत सर्ब मै प्रतिपाल तू ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३१-१, सारंग, मः ५)
नह दूरि पूरि हजूरि संगे ॥ (१२३१-२, सारंग, मः ५)
सुंदर रसाल तू ॥१॥ (१२३१-२, सारंग, मः ५)
नह बरन बरन नह कुलह कुल ॥ (१२३१-३, सारंग, मः ५)
नानक प्रभ किरपाल तू ॥२॥९॥१३८॥ (१२३१-३, सारंग, मः ५)
सारग मः ५ ॥ (१२३१-३)
करत केल बिखै मेल चंद्र सूर मोहे ॥ (१२३१-३, सारंग, मः ५)
उपजता बिकार दुंदर नउपरी झुनंतकार सुंदर अनिग भाउ करत फिरत बिनु गोपाल धोहे ॥ रहाउ ॥ (१२३१-४, सारंग, मः ५)
तीनि भउने लपटाइ रही काच करमि न जात सही उनमत अंध धंध रचित जैसे महा सागर होहे ॥१॥ (१२३१-५, सारंग, मः ५)
उधरे हरि संत दास काटि दीनी जम की फास पतित पावन नामु जा को सिमरि नानक ओहे ॥२॥१०॥१३९॥३॥१३॥१५५॥ (१२३१-६, सारंग, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२३१-८)
रागु सारंग महला ९ ॥ (१२३१-८)
हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥ (१२३१-८, सारंग, मः ९)
काँ की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३१-८, सारंग, मः ९)
धनु धरनी अरु सम्पति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥ (१२३१-९, सारंग, मः ९)

तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥ (१२३१-६, सारंग, मः ६)
दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥ (१२३१-१०, सारंग, मः ६)
नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥ (१२३१-११, सारंग, मः ६)
सारंग महला ६ ॥ (१२३१-११)
कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥ (१२३१-११, सारंग, मः ६)
या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३१-१२, सारंग, मः ६)
काँ को तनु धनु सम्पति काँ की का सिउ नेहु लगाही ॥ (१२३१-१२, सारंग, मः ६)
जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥ (१२३१-१३, सारंग, मः ६)
तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥ (१२३१-१४, सारंग, मः ६)
जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥२॥२॥ (१२३१-१४, सारंग, मः ६)
सारंग महला ६ ॥ (१२३१-१५)
कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥ (१२३१-१५, सारंग, मः ६)
माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३१-१५, सारंग, मः ६)
इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥ (१२३१-१६, सारंग, मः ६)
जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥१॥ (१२३१-१६, सारंग, मः ६)
मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥ (१२३१-१७, सारंग, मः ६)
जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥ (१२३१-१८, सारंग, मः ६)
सारंग महला ६ ॥ (१२३१-१८)
मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ ॥ (१२३१-१८, सारंग, मः ६)

पन्ना १२३२

बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३२-१, सारंग, मः ६)
गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइओ ॥ (१२३२-१, सारंग, मः ६)
पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥१॥ (१२३२-२, सारंग, मः ६)
कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥ (१२३२-३, सारंग, मः ६)
कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥२॥४॥३॥१३॥१३६॥४॥१५६॥ (१२३२-३, सारंग, मः ६)
रागु सारग असटपदीआ महला १ घरु १ (१२३२-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२३२-५)
हरि बिनु किउ जीवा मेरी माई ॥ (१२३२-६, सारंग, मः १)
जै जगदीस तेरा जसु जाचउ मै हरि बिनु रहनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३२-६, सारंग, मः १)
हरि की पिआस पिआसी कामनि देखउ रैनि सबाई ॥ (१२३२-७, सारंग, मः १)
स्रीधर नाथ मेरा मनु लीना प्रभु जानै पीर पराई ॥१॥ (१२३२-७, सारंग, मः १)
गणत सरीरि पीर है हरि बिनु गुर सबदी हरि पाँई ॥ (१२३२-८, सारंग, मः १)
होहु दइआल कृपा करि हरि जीउ हरि सिउ रहाँ समाई ॥२॥ (१२३२-८, सारंग, मः १)
ऐसी रवत रवहु मन मेरे हरि चरणी चितु लाई ॥ (१२३२-९, सारंग, मः १)

बिसम भए गुण गाइ मनोहर निरभउ सहजि समाई ॥३॥ (१२३२-९, सारंग, मः १)
हिरदै नामु सदा धुनि निहचल घटै न कीमति पाई ॥ (१२३२-१०, सारंग, मः १)
बिनु नावै सभु कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई ॥४॥ (१२३२-११, सारंग, मः १)
प्रीतम प्रान भए सुनि सजनी दूत मुए बिखु खाई ॥ (१२३२-११, सारंग, मः १)
जब की उपजी तब की तैसी रंगुल भई मनि भाई ॥५॥ (१२३२-१२, सारंग, मः १)
सहज समाधि सदा लिव हरि सिउ जीवाँ हरि गुन गाई ॥ (१२३२-१२, सारंग, मः १)
गुर कै सबदि रता बैरागी निज घरि ताड़ी लाई ॥६॥ (१२३२-१३, सारंग, मः १)
सुध रस नामु महा रसु मीठा निज घरि ततु गुसाँई ॥ (१२३२-१३, सारंग, मः १)
तह ही मनु जह ही तै राखिआ ऐसी गुरमति पाई ॥७॥ (१२३२-१४, सारंग, मः १)
सनक सनादि ब्रहमादि इंद्रादिक भगति रते बनि आई ॥ (१२३२-१४, सारंग, मः १)
नानक हरि बिनु घरी न जीवाँ हरि का नामु वडाई ॥८॥१॥ (१२३२-१५, सारंग, मः १)
सारग महला १ ॥ (१२३२-१६)
हरि बिनु किउ धीरै मनु मेरा ॥ (१२३२-१६, सारंग, मः १)
कोटि कलप के दूख बिनासन साचु दृड़ाइ निबेरा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३२-१६, सारंग, मः १)
क्रोधु निवारि जले हउ ममता प्रेमु सदा नउ रंगी ॥ (१२३२-१७, सारंग, मः १)
अनभउ बिसरि गए प्रभु जाचिआ हरि निरमाइलु संगी ॥१॥ (१२३२-१७, सारंग, मः १)
चंचल मति तिआगि भउ भंजनु पाइआ एक सबदि लिव लागी ॥ (१२३२-१८, सारंग, मः १)
हरि रसु चाखि तृखा निवारी हरि मेलि लए बडभागी ॥२॥ (१२३२-१९, सारंग, मः १)
अभरत सिंचि भए सुभर सर गुरमति साचु निहाला ॥ (१२३२-१९, सारंग, मः १)

पन्ना १२३३

मन रति नामि रते निहकेवल आदि जुगादि दइआला ॥३॥ (१२३३-१, सारंग, मः १)
मोहनि मोहि लीआ मनु मोरा बडै भाग लिव लागी ॥ (१२३३-२, सारंग, मः १)
साचु बीचारि किलविख दुख काटे मनु निरमलु अनरागी ॥४॥ (१२३३-२, सारंग, मः १)
गहिर गम्भीर सागर रतनागर अवर नही अन पूजा ॥ (१२३३-३, सारंग, मः १)
सबदु बीचारि भर्म भउ भंजनु अवरु न जानिआ दूजा ॥५॥ (१२३३-३, सारंग, मः १)
मनूआ मारि निर्मल पदु चीनिआ हरि रस रते अधिकाई ॥ (१२३३-४, सारंग, मः १)
एकस बिनु मै अवरु न जानाँ सतिगुरि बूझ बुझाई ॥६॥ (१२३३-५, सारंग, मः १)
अगम अगोचरु अनाथु अजोनी गुरमति एको जानिआ ॥ (१२३३-५, सारंग, मः १)
सुभर भरे नाही चितु डोलै मन ही ते मनु मानिआ ॥७॥ (१२३३-६, सारंग, मः १)
गुर परसादी अकथउ कथीऐ कहउ कहावै सोई ॥ (१२३३-६, सारंग, मः १)
नानक दीन दइआल हमारे अवरु न जानिआ कोई ॥८॥२॥ (१२३३-७, सारंग, मः १)
सारग महला ३ असटपदीआ घरु १ (१२३३-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२३३-८)
मन मेरे हरि कै नामि वडाई ॥ (१२३३-९, सारंग, मः ३)

हरि बिनु अवरु न जाणा कोई हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३३-९, सारंग, मः ३)
सबदि भउ भंजनु जमकाल निखंजनु हरि सेती लिव लाई ॥ (१२३३-१०, सारंग, मः ३)
हरि सुखदाता गुरमुखि जाता सहजे रहिआ समाई ॥१॥ (१२३३-१०, सारंग, मः ३)
भगताँ का भोजनु हरि नाम निरंजनु पैनॣणु भगति बडाई ॥ (१२३३-११, सारंग, मः ३)
निज घरि वासा सदा हरि सेवनि हरि दरि सोभा पाई ॥२॥ (१२३३-११, सारंग, मः ३)
मनमुख बुधि काची मनूआ डोलै अकथु न कथै कहानी ॥ (१२३३-१२, सारंग, मः ३)
गुरमति निहचलु हरि मनि वसिआ अमृत साची बानी ॥३॥ (१२३३-१३, सारंग, मः ३)
मन के तरंग सबदि निवारे रसना सहजि सुभाई ॥ (१२३३-१३, सारंग, मः ३)
सतिगुर मिलि रहीऐ सद अपुने जिनि हरि सेती लिव लाई ॥४॥ (१२३३-१४, सारंग, मः ३)
मनु सबदि मरै ता मुकतो होवै हरि चरणी चितु लाई ॥ (१२३३-१४, सारंग, मः ३)
हरि सरु सागरु सदा जलु निरमलु नावै सहजि सुभाई ॥५॥ (१२३३-१५, सारंग, मः ३)
सबदु वीचारि सदा रंगि राते हउमै तृसना मारी ॥ (१२३३-१६, सारंग, मः ३)
अंतरि निहकेवलु हरि रविआ सभु आतम रामु मुरारी ॥६॥ (१२३३-१६, सारंग, मः ३)
सेवक सेवि रहे सचि राते जो तेरै मनि भाणे ॥ (१२३३-१७, सारंग, मः ३)
दुबिधा महलु न पावै जगि झूठी गुण अवगण न पछाणे ॥७॥ (१२३३-१७, सारंग, मः ३)
आपे मेलि लए अकथु कथीऐ सचु सबदु सचु बाणी ॥ (१२३३-१८, सारंग, मः ३)
नानक साचे सचि समाणे हरि का नामु वखाणी ॥८॥१॥ (१२३३-१८, सारंग, मः ३)
सारग महला ३ ॥ (१२३३-१९)
मन मेरे हरि का नामु अति मीठा ॥ (१२३३-१९, सारंग, मः ३)

पन्ना १२३४

जनम जनम के किलविख भउ भंजन गुरमुखि एको डीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३४-१, सारंग, मः ३)
कोटि कोटंतर के पाप बिनासन हरि साचा मनि भाइआ ॥ (१२३४-१, सारंग, मः ३)
हरि बिनु अवरु न सूझै दूजा सतिगुरि एकु बुझाइआ ॥१॥ (१२३४-२, सारंग, मः ३)
प्रेम पदारथु जिन घटि वसिआ सहजे रहे समाई ॥ (१२३४-३, सारंग, मः ३)
सबदि रते से रंगि चलूले राते सहजि सुभाई ॥२॥ (१२३४-३, सारंग, मः ३)
रसना सबदु वीचारि रसि राती लाल भई रंगु लाई ॥ (१२३४-४, सारंग, मः ३)
राम नामु निहकेवलु जाणिआ मनु तृपतिआ साँति आई ॥३॥ (१२३४-४, सारंग, मः ३)
पंडित पड़ि पड़ि मोनी सभि थाके भ्रमि भेख थके भेखधारी ॥ (१२३४-५, सारंग, मः ३)
गुर परसादि निरंजनु पाइआ साचै सबदि वीचारी ॥४॥ (१२३४-५, सारंग, मः ३)
आवा गउणु निवारि सचि राते साच सबदु मनि भाइआ ॥ (१२३४-६, सारंग, मः ३)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु पाईऐ जिनि विचहु आपु गवाइआ ॥५॥ (१२३४-७, सारंग, मः ३)
साचै सबदि सहज धुनि उपजै मनि साचै लिव लाई ॥ (१२३४-७, सारंग, मः ३)
अगम अगोचरु नामु निरंजनु गुरमुखि मंनि वसाई ॥६॥ (१२३४-८, सारंग, मः ३)
एकस महि सभु जगतो वरतै विरला एकु पछाणै ॥ (१२३४-८, सारंग, मः ३)

सबदि मरै ता सभु किछु सूझै अनदिनु एको जाणै ॥७॥ (१२३४-६, सारंग, मः ३)
जिस नो नदरि करे सोई जनु बूझै होरु कहणा कथनु न जाई ॥ (१२३४-१०, सारंग, मः ३)
नानक नामि रते सदा बैरागी एक सबदि लिव लाई ॥८॥२॥ (१२३४-१०, सारंग, मः ३)
सारग महला ३ ॥ (१२३४-११)
मन मेरे हरि की अकथ कहाणी ॥ (१२३४-११, सारंग, मः ३)
हरि नदरि करे सोई जनु पाए गुरमुखि विरलै जाणी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३४-११, सारंग, मः ३)
हरि गहिर गम्भीरु गुणी गहीरु गुर कै सबदि पछानिआ ॥ (१२३४-१२, सारंग, मः ३)
बहु बिधि कर्म करहि भाइ दूजै बिनु सबदै बउरानिआ ॥१॥ (१२३४-१३, सारंग, मः ३)
हरि नामि नावै सोई जनु निरमलु फिरि मैला मूलि न होई ॥ (१२३४-१३, सारंग, मः ३)
नाम बिना सभु जगु है मैला दूजै भरमि पति खोई ॥२॥ (१२३४-१४, सारंग, मः ३)
किआ दृड़ाँ किआ संग्रहि तिआगी मै ता बूझ न पाई ॥ (१२३४-१५, सारंग, मः ३)
होहि दइआलु कृपा करि हरि जीउ नामो होइ सखाई ॥३॥ (१२३४-१५, सारंग, मः ३)
सचा सचु दाता कर्म बिधाता जिसु भावै तिसु नाइ लाए ॥ (१२३४-१६, सारंग, मः ३)
गुरू दुआरै सोई बूझै जिस नो आपि बुझाए ॥४॥ (१२३४-१६, सारंग, मः ३)
देखि बिसमादु इहु मनु नही चेते आवा गउणु संसारा ॥ (१२३४-१७, सारंग, मः ३)
सतिगुरु सेवे सोई बूझै पाए मोख दुआरा ॥५॥ (१२३४-१७, सारंग, मः ३)
जिन्ह दरु सूझै से कदे न विगाड़हि सतिगुरि बूझ बुझाई ॥ (१२३४-१८, सारंग, मः ३)
सचु संजमु करणी किरति कमावहि आवण जाणु रहाई ॥६॥ (१२३४-१८, सारंग, मः ३)
से दरि साचै साचु कमावहि जिन गुरमुखि साचु अधारा ॥ (१२३४-१६, सारंग, मः ३)

पन्ना १२३५

मनमुख दूजै भरमि भुलाए ना बूझहि वीचारा ॥७॥ (१२३५-१, सारंग, मः ३)
आपे गुरमुखि आपे देवै आपे करि करि वेखै ॥ (१२३५-१, सारंग, मः ३)
नानक से जन थाइ पए है जिन की पति पावै लेखै ॥८॥३॥ (१२३५-२, सारंग, मः ३)
सारग महला ५ असटपदीआ घरु १ (१२३५-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२३५-३)
गुसाईं परतापु तुहारो डीठा ॥ (१२३५-४, सारंग, मः ५)
करन करावन उपाइ समावन सगल छत्रपति बीठा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३५-४, सारंग, मः ५)
राणा राउ राज भए रंका उनि झूठे कहणु कहाइओ ॥ (१२३५-५, सारंग, मः ५)
हमरा राजनु सदा सलामति ता को सगल घटा जसु गाइओ ॥१॥ (१२३५-५, सारंग, मः ५)
उपमा सुनहु राजन की संतहु कहत जेत पाहूचा ॥ (१२३५-६, सारंग, मः ५)
बेसुमार वड साह दातारा ऊचे ही ते ऊचा ॥२॥ (१२३५-६, सारंग, मः ५)
पवनि परोइओ सगल अकारा पावक कासट संगे ॥ (१२३५-७, सारंग, मः ५)
नीरु धरणि करि राखे एकत कोइ न किस ही संगे ॥३॥ (१२३५-७, सारंग, मः ५)
घटि घटि कथा राजन की चालै घरि घरि तुझहि उमाहा ॥ (१२३५-८, सारंग, मः ५)

जीअ जंत सभि पाछै करिआ प्रथमे रिजकु समाहा ॥४॥ (१२३५-८, सारंग, मः ५)
जो किछु करणा सु आपे करणा मसलति काहू दीन्ही ॥ (१२३५-९, सारंग, मः ५)
अनिक जतन करि करह दिखाए साची साखी चीन्ही ॥५॥ (१२३५-१०, सारंग, मः ५)
हरि भगता करि राखे अपने दीनी नामु वडाई ॥ (१२३५-१०, सारंग, मः ५)
जिनि जिनि करी अवगिआ जन की ते तैं दीए रुड़ाई ॥६॥ (१२३५-११, सारंग, मः ५)
मुकति भए साधसंगति करि तिन के अवगन सभि परहरिआ ॥ (१२३५-११, सारंग, मः ५)
तिन कउ देखि भए किरपाला तिन भव सागरु तरिआ ॥७॥ (१२३५-१२, सारंग, मः ५)
हम नान्हे नीच तुम्हे बड साहिब कुदरति कउण बीचारा ॥ (१२३५-१२, सारंग, मः ५)
मनु तनु सीतलु गुर दरस देखे नानक नामु अधारा ॥८॥१॥ (१२३५-१३, सारंग, मः ५)
सारग महला ५ असटपदी घरु ६ (१२३५-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२३५-१५)
अगम अगाधि सुनहु जन कथा ॥ (१२३५-१६, सारंग, मः ५)
पारब्रह्म की अचरज सभा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२३५-१६, सारंग, मः ५)
सदा सदा सतिगुर नमस्कार ॥ (१२३५-१६, सारंग, मः ५)
गुर किरपा ते गुन गाइ अपार ॥ (१२३५-१७, सारंग, मः ५)
मन भीतरि होवै परगासु ॥ (१२३५-१७, सारंग, मः ५)
गिआन अंजनु अगिआन बिनासु ॥१॥ (१२३५-१७, सारंग, मः ५)
मिति नाही जा का बिसथारु ॥ (१२३५-१८, सारंग, मः ५)
सोभा ता की अपर अपार ॥ (१२३५-१८, सारंग, मः ५)
अनिक रंग जा के गने न जाहि ॥ (१२३५-१८, सारंग, मः ५)
सोग हरख दुहहू महि नाहि ॥२॥ (१२३५-१९, सारंग, मः ५)
अनिक ब्रह्मे जा के बेद धुनि करहि ॥ (१२३५-१९, सारंग, मः ५)
अनिक महेस बैसि धिआनु धरहि ॥ (१२३५-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२३६

अनिक पुरख अंसा अवतार ॥ (१२३६-१, सारंग, मः ५)
अनिक इंद्र ऊभे दरबार ॥३॥ (१२३६-१, सारंग, मः ५)
अनिक पवन पावक अरु नीर ॥ (१२३६-१, सारंग, मः ५)
अनिक रतन सागर दधि खीर ॥ (१२३६-२, सारंग, मः ५)
अनिक सूर ससीअर नखिआति ॥ (१२३६-२, सारंग, मः ५)
अनिक देवी देवा बहु भाँति ॥४॥ (१२३६-२, सारंग, मः ५)
अनिक बसुधा अनिक कामधेन ॥ (१२३६-३, सारंग, मः ५)
अनिक पारजात अनिक मुखि बेन ॥ (१२३६-३, सारंग, मः ५)
अनिक अकास अनिक पाताल ॥ (१२३६-३, सारंग, मः ५)
अनिक मुखी जपीऐ गोपाल ॥५॥ (१२३६-४, सारंग, मः ५)

अनिक सासत्र सिमृति पुरान ॥ (१२३६-४, सारंग, मः ५)
अनिक जुगति होवत बखिआन ॥ (१२३६-४, सारंग, मः ५)
अनिक सरोते सुनहि निधान ॥ (१२३६-५, सारंग, मः ५)
सर्ब जीअ पूरन भगवान ॥६॥ (१२३६-५, सारंग, मः ५)
अनिक धर्म अनिक कुमेर ॥ (१२३६-५, सारंग, मः ५)
अनिक बरन अनिक कनिक सुमेर ॥ (१२३६-६, सारंग, मः ५)
अनिक सेख नवतन नामु लेहि ॥ (१२३६-६, सारंग, मः ५)
पारब्रह्म का अंतु न तेहि ॥७॥ (१२३६-६, सारंग, मः ५)
अनिक पुरीआ अनिक तह खंड ॥ (१२३६-७, सारंग, मः ५)
अनिक रूप रंग ब्रहमंड ॥ (१२३६-७, सारंग, मः ५)
अनिक बना अनिक फल मूल ॥ (१२३६-७, सारंग, मः ५)
आपहि सूखम आपहि असथूल ॥८॥ (१२३६-८, सारंग, मः ५)
अनिक जुगादि दिनस अरु राति ॥ (१२३६-८, सारंग, मः ५)
अनिक परलउ अनिक उतपाति ॥ (१२३६-८, सारंग, मः ५)
अनिक जीअ जा के गृह माहि ॥ (१२३६-९, सारंग, मः ५)
रमत राम पूरन स्रब ठाँइ ॥९॥ (१२३६-९, सारंग, मः ५)
अनिक माइआ जा की लखी न जाइ ॥ (१२३६-९, सारंग, मः ५)
अनिक कला खेलै हरि राइ ॥ (१२३६-१०, सारंग, मः ५)
अनिक धुनित ललित संगीत ॥ (१२३६-१०, सारंग, मः ५)
अनिक गुप्त प्रगटे तह चीत ॥१०॥ (१२३६-१०, सारंग, मः ५)
सभ ते ऊच भगत जा कै संगि ॥ (१२३६-११, सारंग, मः ५)
आठ पहर गुन गावहि रंगि ॥ (१२३६-११, सारंग, मः ५)
अनिक अनाहद आनंद झुनकार ॥ (१२३६-११, सारंग, मः ५)
उआ रस का कछु अंतु न पार ॥११॥ (१२३६-१२, सारंग, मः ५)
सति पुरखु सति असथानु ॥ (१२३६-१२, सारंग, मः ५)
ऊच ते ऊच निर्मल निरबानु ॥ (१२३६-१२, सारंग, मः ५)
अपुना कीआ जानहि आपि ॥ (१२३६-१३, सारंग, मः ५)
आपे घटि घटि रहिओ बिआपि ॥ (१२३६-१३, सारंग, मः ५)
कृपा निधान नानक दइआल ॥ (१२३६-१३, सारंग, मः ५)
जिनि जपिआ नानक ते भए निहाल ॥१२॥१॥२॥२॥३॥७॥ (१२३६-१४, सारंग, मः ५)
सारग छंत महला ५ (१२३६-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२३६-१५)
सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः ५)
घटि घटि पूरन है अलिपाता ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः ५)
घटि घटि पूरनु करि बिसथीरनु जल तरंग जिउ रचनु कीआ ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः ५)

हभि रस माणे भोग घटाणे आन न बीआ को थीआ ॥ (१२३६-१७, सारंग, मः ५)
हरि रंगी इक रंगी ठाकुरु संतसंगि प्रभु जाता ॥ (१२३६-१७, सारंग, मः ५)
नानक दरसि लीना जिउ जल मीना सभ देखीऐ अनभै का दाता ॥१॥ (१२३६-१८, सारंग, मः ५)
कउन उपमा देउ कवन बडाई ॥ (१२३६-१९, सारंग, मः ५)
पूरन पूरि रहिओ स्रब ठाई ॥ (१२३६-१९, सारंग, मः ५)
पूरन मनमोहन घट घट सोहन जब खिंचै तब छाई ॥ (१२३६-१९, सारंग, मः ५)

पन्ना १२३७

किउ न अराधहु मिलि करि साधहु घरी मुहतक बेला आई ॥ (१२३७-१, सारंग, मः ५)
अर्थु दरबु सभु जो किछु दीसै संगि न कछहू जाई ॥ (१२३७-१, सारंग, मः ५)
कहु नानक हरि हरि आराधहु कवन उपमा देउ कवन बडाई ॥२॥ (१२३७-२, सारंग, मः ५)
पूछउ संत मेरो ठाकुरु कैसा ॥ (१२३७-३, सारंग, मः ५)
हीउ अरापउं देहु सदेसा ॥ (१२३७-३, सारंग, मः ५)
देहु सदेसा प्रभ जीउ कैसा कह मोहन परवेसा ॥ (१२३७-३, सारंग, मः ५)
अंग अंग सुखदाई पूरन ब्रहमाई थान थानंतर देसा ॥ (१२३७-४, सारंग, मः ५)
बंधन ते मुकता घटि घटि जुगता कहि न सकउ हरि जैसा ॥ (१२३७-४, सारंग, मः ५)
देखि चरित नानक मनु मोहिओ पूछै दीनु मेरो ठाकुरु कैसा ॥३॥ (१२३७-५, सारंग, मः ५)
करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥ (१२३७-६, सारंग, मः ५)
धंनि सु रिदा जिह चरन बसाइआ ॥ (१२३७-६, सारंग, मः ५)
चरन बसाइआ संत संगाइआ अगिआन अंधेरु गवाइआ ॥ (१२३७-६, सारंग, मः ५)
भइआ प्रगासु रिदै उलासु प्रभु लोड़ीदा पाइआ ॥ (१२३७-७, सारंग, मः ५)
दुखु नाठा सुखु घर महि वूठा महा अनंद सहजाइआ ॥ (१२३७-७, सारंग, मः ५)
कहु नानक मै पूरा पाइआ करि किरपा अपुने पहि आइआ ॥४॥१॥ (१२३७-८, सारंग, मः ५)
सारंग की वार महला ४ राइ महमे हसने की धुनि (१२३७-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२३७-१०)
सलोक महला २ ॥ (१२३७-११)
गुरु कुंजी पाहू निवलु मनु कोठा तनु छति ॥ (१२३७-११, सारंग, मः २)
नानक गुर बिनु मन का ताकु न उघड़ै अवर न कुंजी हथि ॥१॥ (१२३७-११, सारंग, मः २)
महला १ ॥ (१२३७-१२)
न भीजै रागी नादी बेदि ॥ (१२३७-१२, सारंग, मः १)
न भीजै सुरती गिआनी जोगि ॥ (१२३७-१२, सारंग, मः १)
न भीजै सोगी कीतै रोजि ॥ (१२३७-१३, सारंग, मः १)
न भीजै रूपीं मालीं रंगि ॥ (१२३७-१३, सारंग, मः १)
न भीजै तीरथि भविऐ नंगि ॥ (१२३७-१३, सारंग, मः १)
न भीजै दातीं कीतै पुंनि ॥ (१२३७-१३, सारंग, मः १)

न भीजै बाहरि बैठिआ सुंनि ॥ (१२३७-१४, सारंग, मः १)
न भीजै भेड़ि मरहि भिड़ि सूर ॥ (१२३७-१४, सारंग, मः १)
न भीजै केते होवहि धूड़ ॥ (१२३७-१४, सारंग, मः १)
लेखा लिखीऐ मन कै भाइ ॥ (१२३७-१५, सारंग, मः १)
नानक भीजै साचै नाइ ॥२॥ (१२३७-१५, सारंग, मः १)
महला १ ॥ (१२३७-१५)
नव छिअ खट का करे बीचारु ॥ (१२३७-१५, सारंग, मः १)
निसि दिन उचरै भार अठार ॥ (१२३७-१६, सारंग, मः १)
तिनि भी अंतु न पाइआ तोहि ॥ (१२३७-१६, सारंग, मः १)
नाम बिहूण मुकति किउ होइ ॥ (१२३७-१६, सारंग, मः १)
नाभि वसत ब्रह्मै अंतु न जाणिआ ॥ (१२३७-१७, सारंग, मः १)
गुरमुखि नानक नामु पछाणिआ ॥३॥ (१२३७-१७, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२३७-१७)
आपे आपि निरंजना जिनि आपु उपाइआ ॥ (१२३७-१७, सारंग, मः १)
आपे खेलु रचाइओनु सभु जगतु सबाइआ ॥ (१२३७-१८, सारंग, मः १)
त्रै गुण आपि सिरजिअनु माइआ मोहु वधाइआ ॥ (१२३७-१८, सारंग, मः १)
गुर परसादी उबरे जिन भाणा भाइआ ॥ (१२३७-१९, सारंग, मः १)
नानक सचु वरतदा सभ सचि समाइआ ॥१॥ (१२३७-१९, सारंग, मः १)

पन्ना १२३८

सलोक महला २ ॥ (१२३८-१)
आपि उपाए नानका आपे रखै वेक ॥ (१२३८-१, सारंग, मः २)
मंदा किस नो आखीऐ जाँ सभना साहिबु एकु ॥ (१२३८-१, सारंग, मः २)
सभना साहिबु एकु है वेखै धंधै लाइ ॥ (१२३८-२, सारंग, मः २)
किसै थोड़ा किसै अगला खाली कोई नाहि ॥ (१२३८-२, सारंग, मः २)
आवहि नंगे जाहि नंगे विचे करहि विथार ॥ (१२३८-३, सारंग, मः २)
नानक हुकमु न जाणीऐ अगै काई कार ॥१॥ (१२३८-३, सारंग, मः २)
महला १ ॥ (१२३८-४)
जिनसि थापि जीआँ कउ भेजै जिनसि थापि लै जावै ॥ (१२३८-४, सारंग, मः १)
आपे थापि उथापै आपे एते वेस करावै ॥ (१२३८-४, सारंग, मः १)
जेते जीअ फिरहि अउधूती आपे भिखिआ पावै ॥ (१२३८-५, सारंग, मः १)
लेखै बोलणु लेखै चलणु काइतु कीचहि दावे ॥ (१२३८-५, सारंग, मः १)
मूलु मति परवाणा एहो नानकु आखि सुणाए ॥ (१२३८-६, सारंग, मः १)
करणी उपरि होइ तपावसु जे को कहै कहाए ॥२॥ (१२३८-६, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२३८-७)

गुरमुखि चलतु रचाइओनु गुण परगटी आइआ ॥ (१२३८-७, सारंग, मः १)
गुरबाणी सद उचरै हरि मंनि वसाइआ ॥ (१२३८-७, सारंग, मः १)
सकति गई भ्रमु कटिआ सिव जोति जगाइआ ॥ (१२३८-८, सारंग, मः १)
जिन कै पोतै पुन्नु है गुरु पुरखु मिलाइआ ॥ (१२३८-८, सारंग, मः १)
नानक सहजे मिलि रहे हरि नामि समाइआ ॥२॥ (१२३८-९, सारंग, मः १)
सलोक महला २ ॥ (१२३८-९)
साह चले वणजारिआ लिखिआ देवै नालि ॥ (१२३८-९, सारंग, मः २)
लिखे उपरि हुकमु होइ लईऐ वसतु सम्हालि ॥ (१२३८-१०, सारंग, मः २)
वसतु लई वणजारई वखरु बधा पाइ ॥ (१२३८-१०, सारंग, मः २)
केई लाहा लै चले इकि चले मूलु गवाइ ॥ (१२३८-११, सारंग, मः २)
थोड़ा किनै न मंगिओ किसु कहीऐ साबासि ॥ (१२३८-११, सारंग, मः २)
नदरि तिना कउ नानका जि साबतु लाए रासि ॥१॥ (१२३८-१२, सारंग, मः २)
महला १ ॥ (१२३८-१२)
जुड़ि जुड़ि विछुड़े विछुड़ि जुड़े ॥ (१२३८-१२, सारंग, मः १)
जीवि जीवि मुए मुए जीवे ॥ (१२३८-१३, सारंग, मः १)
केतिआ के बाप केतिआ के बेटे केते गुर चेले हूए ॥ (१२३८-१३, सारंग, मः १)
आगै पाछै गणत न आवै किआ जाती किआ हुणि हूए ॥ (१२३८-१४, सारंग, मः १)
सभु करणा किरतु करि लिखीऐ करि करि करता करे करे ॥ (१२३८-१४, सारंग, मः १)
मनमुखि मरीऐ गुरमुखि तरीऐ नानक नदरी नदरि करे ॥२॥ (१२३८-१५, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२३८-१५)
मनमुखि दूजा भरमु है दूजै लोभाइआ ॥ (१२३८-१५, सारंग, मः १)
कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ो आलाइआ ॥ (१२३८-१६, सारंग, मः १)
पुत्र कलत्रु मोहु हेतु है सभु दुखु सबाइआ ॥ (१२३८-१६, सारंग, मः १)
जम दरि बधे मारीअहि भरमहि भरमाइआ ॥ (१२३८-१७, सारंग, मः १)
मनमुखि जनमु गवाइआ नानक हरि भाइआ ॥३॥ (१२३८-१७, सारंग, मः १)
सलोक महला २ ॥ (१२३८-१८)
जिन वडिआई तेरे नाम की ते रते मन माहि ॥ (१२३८-१८, सारंग, मः २)
नानक अमृतु एकु है दूजा अमृतु नाहि ॥ (१२३८-१८, सारंग, मः २)
नानक अमृतु मनै माहि पाईऐ गुर परसादि ॥ (१२३८-१९, सारंग, मः २)
तिन्ही पीता रंग सिउ जिन्ह कउ लिखिआ आदि ॥१॥ (१२३८-१९, सारंग, मः २)

पन्ना १२३९

महला २ ॥ (१२३९-१)
कीता किआ सालाहीऐ करे सोइ सालाहि ॥ (१२३९-१, सारंग, मः २)
नानक एकी बाहरा दूजा दाता नाहि ॥ (१२३९-१, सारंग, मः २)

करता सो सालाहीऐ जिनि कीता आकारु ॥ (१२३६-२, सारंग, मः २)
दाता सो सालाहीऐ जि सभसै दे आधारु ॥ (१२३६-२, सारंग, मः २)
नानक आपि सदीव है पूरा जिसु भंडारु ॥ (१२३६-३, सारंग, मः २)
वडा करि सालाहीऐ अंतु न पारावारु ॥२॥ (१२३६-३, सारंग, मः २)
पउड़ी ॥ (१२३६-४)
हरि का नामु निधानु है सेविऐ सुखु पाई ॥ (१२३६-४, सारंग, मः २)
नामु निरंजनु उचराँ पति सिउ घरि जाँई ॥ (१२३६-४, सारंग, मः २)
गुरमुखि बाणी नामु है नामु रिदै वसाई ॥ (१२३६-५, सारंग, मः २)
मति पंखेरू वसि होइ सतिगुरू धिआईं ॥ (१२३६-५, सारंग, मः २)
नानक आपि दइआलु होइ नामे लिव लाई ॥४॥ (१२३६-५, सारंग, मः २)
सलोक महला २ ॥ (१२३६-६)
तिसु सिउ कैसा बोलणा जि आपे जाणै जाणु ॥ (१२३६-६, सारंग, मः २)
चीरी जा की ना फिरै साहिबु सो परवाणु ॥ (१२३६-७, सारंग, मः २)
चीरी जिस की चलणा मीर मलक सलार ॥ (१२३६-७, सारंग, मः २)
जो तिसु भावै नानका साई भली कार ॥ (१२३६-७, सारंग, मः २)
जिन्हा चीरी चलणा हथि तिन्हा किछु नाहि ॥ (१२३६-८, सारंग, मः २)
साहिब का फुरमाणु होइ उठी करलै पाहि ॥ (१२३६-८, सारंग, मः २)
जेहा चीरी लिखिआ तेहा हुकमु कमाहि ॥ (१२३६-६, सारंग, मः २)
घले आवहि नानका सदे उठी जाहि ॥१॥ (१२३६-६, सारंग, मः २)
महला २ ॥ (१२३६-१०)
सिफति जिना कउ बखसीऐ सेई पोतेदार ॥ (१२३६-१०, सारंग, मः २)
कुंजी जिन कउ दितीआ तिन्हा मिले भंडार ॥ (१२३६-१०, सारंग, मः २)
जह भंडारी हू गुण निकलहि ते कीअहि परवाणु ॥ (१२३६-११, सारंग, मः २)
नदरि तिन्हा कउ नानका नामु जिन्हा नीसाणु ॥२॥ (१२३६-११, सारंग, मः २)
पउड़ी ॥ (१२३६-१२)
नामु निरंजनु निरमला सुणिऐ सुखु होई ॥ (१२३६-१२, सारंग, मः २)
सुणि सुणि मंनि वसाईऐ बूझै जनु कोई ॥ (१२३६-१२, सारंग, मः २)
बहदिआ उठदिआ न विसरै साचा सचु सोई ॥ (१२३६-१३, सारंग, मः २)
भगता कउ नाम अधारु है नामे सुखु होई ॥ (१२३६-१३, सारंग, मः २)
नानक मनि तनि रवि रहिआ गुरमुखि हरि सोई ॥५॥ (१२३६-१३, सारंग, मः २)
सलोक महला १ ॥ (१२३६-१४)
नानक तुलीअहि तोल जे जीउ पिछै पाईऐ ॥ (१२३६-१४, सारंग, मः १)
इकसु न पुजहि बोल जे पूरे पूरा करि मिलै ॥ (१२३६-१५, सारंग, मः १)
वडा आखणु भारा तोलु ॥ (१२३६-१५, सारंग, मः १)
होर हउली मती हउले बोल ॥ (१२३६-१५, सारंग, मः १)

धरती पाणी पर्बत भारु ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः १)
किउ कंडै तोलै सुनिआरु ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः १)
तोला मासा रतक पाइ ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः १)
नानक पुछिआ देइ पुजाइ ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः १)
मूरख अंधिआ अंधी धातु ॥ (१२३६-१७, सारंग, मः १)
कहि कहि कहणु कहाइनि आपु ॥१॥ (१२३६-१७, सारंग, मः १)
महला १ ॥ (१२३६-१७)
आखणि अउखा सुनणि अउखा आखि न जापी आखि ॥ (१२३६-१८, सारंग, मः १)
इकि आखि आखहि सबदु भाखहि अर्ध उरध दिनु राति ॥ (१२३६-१८, सारंग, मः १)
जे किहु होइ त किहु दिसै जापै रूपु न जाति ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः १)
सभि कारण करता करे घट अउघट घट थापि ॥ (१२३६-१६, सारंग, मः १)

पन्ना १२४०

आखणि अउखा नानका आखि न जापै आखि ॥२॥ (१२४०-१, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४०-१)
नाइ सुणिऐ मनु रहसीऐ नामे सांति आई ॥ (१२४०-१, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ मनु तृपतीऐ सभ दुख गवाई ॥ (१२४०-२, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ नाउ ऊपजै नामे वडिआई ॥ (१२४०-२, सारंग, मः १)
नामे ही सभ जाति पति नामे गति पाई ॥ (१२४०-३, सारंग, मः १)
गुरमुखि नामु धिआईऐ नानक लिव लाई ॥६॥ (१२४०-३, सारंग, मः १)
सलोक महला १ ॥ (१२४०-४)
जूठि न रागीं जूठि न वेदीं ॥ (१२४०-४, सारंग, मः १)
जूठि न चंद सूरज की भेदी ॥ (१२४०-४, सारंग, मः १)
जूठि न अन्नी जूठि न नाई ॥ (१२४०-४, सारंग, मः १)
जूठि न मीहु वरिहऐ सभ थाई ॥ (१२४०-५, सारंग, मः १)
जूठि न धरती जूठि न पाणी ॥ (१२४०-५, सारंग, मः १)
जूठि न पउणै माहि समाणी ॥ (१२४०-५, सारंग, मः १)
नानक निगुरिआ गुणु नाही कोइ ॥ (१२४०-६, सारंग, मः १)
मुहि फेरिऐ मुहु जूठा होइ ॥१॥ (१२४०-६, सारंग, मः १)
महला १ ॥ (१२४०-६)
नानक चुलीआ सुचीआ जे भरि जाणै कोइ ॥ (१२४०-६, सारंग, मः १)
सुरते चुली गिआन की जोगी का जतु होइ ॥ (१२४०-७, सारंग, मः १)
ब्रह्मण चुली संतोख की गिरही का सतु दानु ॥ (१२४०-७, सारंग, मः १)
राजे चुली निआव की पड़िआ सचु धिआनु ॥ (१२४०-८, सारंग, मः १)
पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ ॥ (१२४०-८, सारंग, मः १)

पाणी पिता जगत का फिरि पाणी सभु खाइ ॥२॥ (१२४०-९, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४०-९)
नाइ सुणिऐ सभ सिधि है रिधि पिछै आवै ॥ (१२४०-९, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ नउ निधि मिलै मन चिंदिआ पावै ॥ (१२४०-१०, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ संतोखु होइ कवला चरन धिआवै ॥ (१२४०-१०, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ सहजु ऊपजै सहजे सुखु पावै ॥ (१२४०-११, सारंग, मः १)
गुरमती नाउ पाईऐ नानक गुण गावै ॥७॥ (१२४०-११, सारंग, मः १)
सलोक महला १ ॥ (१२४०-१२)
दुख विचि जम्मणु दुखि मरणु दुखि वरतणु संसारि ॥ (१२४०-१२, सारंग, मः १)
दुखु दुखु अगै आखीऐ पड़ि पड़ि करहि पुकार ॥ (१२४०-१२, सारंग, मः १)
दुख कीआ पंडा खुल्हीआ सुखु न निकलिओ कोइ ॥ (१२४०-१३, सारंग, मः १)
दुख विचि जीउ जलाइआ दुखीआ चलिआ रोइ ॥ (१२४०-१३, सारंग, मः १)
नानक सिफती रतिआ मनु तनु हरिआ होइ ॥ (१२४०-१४, सारंग, मः १)
दुख कीआ अगी मारीअहि भी दुखु दारू होइ ॥१॥ (१२४०-१४, सारंग, मः १)
महला १ ॥ (१२४०-१५)
नानक दुनीआ भसु रंगु भसू हू भसु खेह ॥ (१२४०-१५, सारंग, मः १)
भसो भसु कमावणी भी भसु भरीऐ देह ॥ (१२४०-१५, सारंग, मः १)
जा जीउ विचहु कढीऐ भसू भरिआ जाइ ॥ (१२४०-१६, सारंग, मः १)
अगै लेखै मंगिऐ होर दसूणी पाइ ॥२॥ (१२४०-१६, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४०-१७)
नाइ सुणिऐ सुचि संजमो जमु नेड़ि न आवै ॥ (१२४०-१७, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ घटि चानणा आन्हेरु गवावै ॥ (१२४०-१७, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ आपु बुझीऐ लाहा नाउ पावै ॥ (१२४०-१८, सारंग, मः १)
नाइ सुणिऐ पाप कटीअहि निर्मल सचु पावै ॥ (१२४०-१८, सारंग, मः १)
नानक नाइ सुणिऐ मुख उजले नाउ गुरमुखि धिआवै ॥८॥ (१२४०-१८, सारंग, मः १)
सलोक महला १ ॥ (१२४०-१९)
घरि नाराइणु सभा नालि ॥ (१२४०-१९, सारंग, मः १)
पूज करे रखै नावालि ॥ (१२४१-१, सारंग, मः १)

पन्ना १२४१

कुंगू चन्नणु फुल चड़ाए ॥ (१२४१-१, सारंग, मः १)
पैरी पै पै बहुतु मनाए ॥ (१२४१-१, सारंग, मः १)
माणूआ मंगि मंगि पैन्है खाइ ॥ (१२४१-१, सारंग, मः १)
अंधी कम्मी अंध सजाइ ॥ (१२४१-२, सारंग, मः १)
भुखिआ देइ न मरदिआ रखै ॥ (१२४१-२, सारंग, मः १)

अंधा झगड़ा अंधी सथै ॥१॥ (१२४१-२, सारंग, मः १)
महला १ ॥ (१२४१-३)
सभे सुरती जोग सभि सभे बेद पुराण ॥ (१२४१-३, सारंग, मः १)
सभे करणे तप सभि सभे गीत गिआन ॥ (१२४१-३, सारंग, मः १)
सभे बुधी सुधि सभि सभि तीर्थ सभि थान ॥ (१२४१-३, सारंग, मः १)
सभि पातिसाहीआ अमर सभि सभि खुसीआ सभि खान ॥ (१२४१-४, सारंग, मः १)
सभे माणस देव सभि सभे जोग धिआन ॥ (१२४१-४, सारंग, मः १)
सभे पुरीआ खंड सभि सभे जीअ जहान ॥ (१२४१-५, सारंग, मः १)
हुकमि चलाए आपणै करमी वहै कलाम ॥ (१२४१-५, सारंग, मः १)
नानक सचा सचि नाइ सचु सभा दीबानु ॥२॥ (१२४१-६, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४१-६)
नाइ मंनिऐ सुखु ऊपजै नामे गति होई ॥ (१२४१-६, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ पति पाईऐ हिरदै हरि सोई ॥ (१२४१-७, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ भवजलु लंघीऐ फिरि बिघनु न होई ॥ (१२४१-७, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ पंथु परगटा नामे सभ लोई ॥ (१२४१-८, सारंग, मः १)
नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ मन्नीऐ जिन देवै सोई ॥९॥ (१२४१-८, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४१-९)
पुरीआ खंडा सिरि करे इक पैरि धिआए ॥ (१२४१-९, सारंग, मः १)
पउणु मारि मनि जपु करे सिरु मुंडी तलै देइ ॥ (१२४१-९, सारंग, मः १)
किसु उपरि ओहु टिक टिकै किस नो जोरु करेइ ॥ (१२४१-१०, सारंग, मः १)
किस नो कहीऐ नानका किस नो करता देइ ॥ (१२४१-१०, सारंग, मः १)
हुकमि रहाए आपणै मूरखु आपु गणेइ ॥१॥ (१२४१-११, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४१-११)
है है आखाँ कोटि कोटि कोटी हू कोटि कोटि ॥ (१२४१-११, सारंग, मः १)
आखूं आखाँ सदा सदा कहणि न आवै तोटि ॥ (१२४१-१२, सारंग, मः १)
ना हउ थकाँ न ठाकीआ एवड रखहि जोति ॥ (१२४१-१२, सारंग, मः १)
नानक चसिअहु चुख बिंद उपरि आखणु दोसु ॥२॥ (१२४१-१२, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४१-१३)
नाइ मंनिऐ कुलु उधरै सभु कुटम्बु सबाइआ ॥ (१२४१-१३, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ संगति उधरै जिन रिदै वसाइआ ॥ (१२४१-१४, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ सुणि उधरे जिन रसन रसाइआ ॥ (१२४१-१४, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ दुख भुख गई जिन नामि चितु लाइआ ॥ (१२४१-१५, सारंग, मः १)
नानक नामु तिनी सालाहिआ जिन गुरू मिलाइआ ॥१०॥ (१२४१-१५, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४१-१६)
सभे राती सभि दिह सभि थिती सभि वार ॥ (१२४१-१६, सारंग, मः १)

सभे रुती माह सभि सभि धरतंी सभि भार ॥ (१२४१-१६, सारंग, मः १)
सभे पाणी पउण सभि सभि अगनी पाताल ॥ (१२४१-१७, सारंग, मः १)
सभे पुरीआ खंड सभि सभि लोअ लोअ आकार ॥ (१२४१-१७, सारंग, मः १)
हुकमु न जापी केतड़ा कहि न सकीजै कार ॥ (१२४१-१८, सारंग, मः १)
आखहि थकहि आखि आखि करि सिफतंी वीचार ॥ (१२४१-१८, सारंग, मः १)
तृणु न पाइओ बपुड़ी नानकु कहै गवार ॥१॥ (१२४१-१६, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४१-१६)
अखंी परणै जे फिराँ देखाँ सभु आकारु ॥ (१२४१-१६, सारंग, मः १)
पुछा गिआनी पंडिताँ पुछा बेद बीचार ॥ (१२४१-१६, सारंग, मः १)

पन्ना १२४२

पुछा देवाँ माणसाँ जोध करहि अवतार ॥ (१२४२-१, सारंग, मः १)
सिध समाधी सभि सुणी जाइ देखाँ दरबारु ॥ (१२४२-१, सारंग, मः १)
अगै सचा सचि नाइ निरभउ भै विणु सारु ॥ (१२४२-२, सारंग, मः १)
होर कची मती कचु पिचु अंधिआ अंधु बीचारु ॥ (१२४२-२, सारंग, मः १)
नानक करमी बंदगी नदरि लंघाए पारि ॥२॥ (१२४२-३, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४२-३)
नाइ मंनिऐ दुरमति गई मति परगटी आइआ ॥ (१२४२-३, सारंग, मः १)
नाउ मंनिऐ हउमै गई सभि रोग गवाइआ ॥ (१२४२-४, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ नामु ऊपजै सहजे सुखु पाइआ ॥ (१२४२-४, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ साँति ऊपजै हरि मंनि वसाइआ ॥ (१२४२-५, सारंग, मः १)
नानक नामु रतन्नु है गुरमुखि हरि धिआइआ ॥११॥ (१२४२-५, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४२-६)
होरु सरीकु होवै कोई तेरा तिसु अगै तुधु आखाँ ॥ (१२४२-६, सारंग, मः १)
तुधु अगै तुधै सालाही मै अंधे नाउ सुजाखा ॥ (१२४२-६, सारंग, मः १)
जेता आखणु साही सबदी भाखिआ भाइ सुभाई ॥ (१२४२-७, सारंग, मः १)
नानक बहुता एहो आखणु सभ तेरी वडिआई ॥१॥ (१२४२-७, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४२-८)
जाँ न सिआ किआ चाकरी जाँ जम्मे किआ कार ॥ (१२४२-८, सारंग, मः १)
सभि कारण करता करे देखै वारो वार ॥ (१२४२-८, सारंग, मः १)
जे चुपै जे मंगिऐ दाति करे दातारु ॥ (१२४२-६, सारंग, मः १)
इकु दाता सभि मंगते फिरि देखहि आकारु ॥ (१२४२-६, सारंग, मः १)
नानक एवै जाणीऐ जीवै देवणहारु ॥२॥ (१२४२-१०, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४२-१०)
नाइ मंनिऐ सुरति ऊपजै नामे मति होई ॥ (१२४२-१०, सारंग, मः १)

नाइ मंनिऐ गुण उचरै नामे सुखि सोई ॥ (१२४२-११, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ भ्रमु कटीऐ फिरि दुखु न होई ॥ (१२४२-११, सारंग, मः १)
नाइ मंनिऐ सालाहीऐ पापाँ मति धोई ॥ (१२४२-११, सारंग, मः १)
नानक पूरे गुर ते नाउ मन्नीऐ जिन देवै सोई ॥१२॥ (१२४२-१२, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४२-१२)
सासत्र बेद पुराण पड़्हंता ॥ (१२४२-१३, सारंग, मः १)
पूकारंता अजाणंता ॥ (१२४२-१३, सारंग, मः १)
जाँ बूझै ताँ सूझै सोई ॥ (१२४२-१३, सारंग, मः १)
नानकु आखै कूक न होई ॥१॥ (१२४२-१३, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४२-१४)
जाँ हउ तेरा ताँ सभु किछु मेरा हउ नाही तू होवहि ॥ (१२४२-१४, सारंग, मः १)
आपे सकता आपे सुरता सकती जगतु परोवहि ॥ (१२४२-१४, सारंग, मः १)
आपे भेजे आपे सदे रचना रचि रचि वेखै ॥ (१२४२-१५, सारंग, मः १)
नानक सचा सची नाँई सचु पवै धुरि लेखै ॥२॥ (१२४२-१५, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४२-१६)
नामु निरंजन अलखु है किउ लखिआ जाई ॥ (१२४२-१६, सारंग, मः १)
नामु निरंजन नालि है किउ पाईऐ भाई ॥ (१२४२-१६, सारंग, मः १)
नामु निरंजन वरतदा रविआ सभ ठाँई ॥ (१२४२-१७, सारंग, मः १)
गुर पूरे ते पाईऐ हिरदै देइ दिखाई ॥ (१२४२-१७, सारंग, मः १)
नानक नदरी करमु होइ गुर मिलीऐ भाई ॥१३॥ (१२४२-१८, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४२-१८)
कलि होई कुते मुही खाजु होआ मुरदारु ॥ (१२४२-१८, सारंग, मः १)
कूड़ु बोलि बोलि भउकणा चूका धरमु बीचारु ॥ (१२४२-१९, सारंग, मः १)
जिन जीवंदिआ पति नही मुइआ मंदी सोइ ॥ (१२४२-१९, सारंग, मः १)

पन्ना १२४३

लिखिआ होवै नानका करता करे सु होइ ॥१॥ (१२४३-१, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४३-१)
रन्ना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥ (१२४३-१, सारंग, मः १)
सीलु संजमु सुच भन्नी खाणा खाजु अहाजु ॥ (१२४३-२, सारंग, मः १)
सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥ (१२४३-२, सारंग, मः १)
नानक सचा एकु है अउरु न सचा भालि ॥२॥ (१२४३-२, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४३-३)
बाहरि भसम लेपन करे अंतरि गुबारी ॥ (१२४३-३, सारंग, मः १)
खिंथा झोली बहु भेख करे दुरमति अहंकारी ॥ (१२४३-३, सारंग, मः १)

साहिब सबदु न ऊचरै माइआ मोह पसारी ॥ (१२४३-४, सारंग, मः १)
अंतरि लालचु भरमु है भरमै गावारी ॥ (१२४३-४, सारंग, मः १)
नानक नामु न चेतई जूऐ बाजी हारी ॥१४॥ (१२४३-५, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४३-५)
लख सिउ प्रीति होवै लख जीवणु किआ खुसीआ किआ चाउ ॥ (१२४३-५, सारंग, मः १)
विछुड़िआ विसु होइ विछोड़ा एक घड़ी महि जाइ ॥ (१२४३-६, सारंग, मः १)
जे सउ वरिहआ मिठा खाजै भी फिरि कउड़ा खाइ ॥ (१२४३-६, सारंग, मः १)
मिठा खाधा चिति न आवै कउड़तणु धाइ जाइ ॥ (१२४३-७, सारंग, मः १)
मिठा कउड़ा दोवै रोग ॥ (१२४३-७, सारंग, मः १)
नानक अंति विगुते भोग ॥ (१२४३-८, सारंग, मः १)
झखि झखि झखणा झगड़ा झाख ॥ (१२४३-८, सारंग, मः १)
झखि झखि जाहि झखहि तिन्ह पासि ॥१॥ (१२४३-८, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४३-९)
कापड़ु काठु रंगाइआ राँगि ॥ (१२४३-९, सारंग, मः १)
घर गच कीते बागे बाग ॥ (१२४३-९, सारंग, मः १)
साद सहज करि मनु खेलाइआ ॥ (१२४३-९, सारंग, मः १)
तै सह पासहु कहणु कहाइआ ॥ (१२४३-१०, सारंग, मः १)
मिठा करि कै कउड़ा खाइआ ॥ (१२४३-१०, सारंग, मः १)
तिनि कउड़ै तनि रोगु जमाइआ ॥ (१२४३-१०, सारंग, मः १)
जे फिरि मिठा पेड़ै पाइ ॥ (१२४३-११, सारंग, मः १)
तउ कउड़तणु चूकसि माइ ॥ (१२४३-११, सारंग, मः १)
नानक गुरमुखि पावै सोइ ॥ (१२४३-११, सारंग, मः १)
जिस नो प्रापति लिखिआ होइ ॥२॥ (१२४३-१२, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४३-१२)
जिन कै हिरदै मैलु कपटु है बाहरु धोवाइआ ॥ (१२४३-१२, सारंग, मः १)
कूड़ु कपटु कमावदे कूड़ु परगटी आइआ ॥ (१२४३-१२, सारंग, मः १)
अंदरि होइ सु निकलै नह छपै छपाइआ ॥ (१२४३-१३, सारंग, मः १)
कूड़ै लालचि लगिआ फिरि जूनी पाइआ ॥ (१२४३-१३, सारंग, मः १)
नानक जो बीजै सो खावणा करतै लिखि पाइआ ॥१५॥ (१२४३-१४, सारंग, मः १)
सलोक मः २ ॥ (१२४३-१४)
कथा कहाणी बेदीं आणी पापु पुन्नु बीचारु ॥ (१२४३-१५, सारंग, मः २)
दे दे लैणा लै लै देणा नरकि सुरगि अवतार ॥ (१२४३-१५, सारंग, मः २)
उतम मधिम जातीं जिनसी भरमि भवै संसारु ॥ (१२४३-१५, सारंग, मः २)
अमृत बाणी ततु वखाणी गिआन धिआन विचि आई ॥ (१२४३-१६, सारंग, मः २)
गुरमुखि आखी गुरमुखि जाती सुरतीं करमि धिआई ॥ (१२४३-१७, सारंग, मः २)

हुकमु साजि हुकमै विचि रखै हुकमै अंदरि वेखै ॥ (१२४३-१७, सारंग, मः २)
नानक अगहु हउमै तुटै ताँ को लिखीऐ लेखै ॥१॥ (१२४३-१८, सारंग, मः २)
मः १ ॥ (१२४३-१८)
बेदु पुकारे पुंनु पापु सुरग नरक का बीउ ॥ (१२४३-१८, सारंग, मः १)
जो बीजै सो उगवै खाँदा जाणै जीउ ॥ (१२४३-१९, सारंग, मः १)
गिआनु सलाहे वडा करि सचो सचा नाउ ॥ (१२४३-१९, सारंग, मः १)
सचु बीजै सचु उगवै दरगह पाईऐ थाउ ॥ (१२४३-१९, सारंग, मः १)

पन्ना १२४४

बेदु वपारी गिआनु रासि करमी पलै होइ ॥ (१२४४-१, सारंग, मः १)
नानक रासी बाहरा लदि न चलिआ कोइ ॥२॥ (१२४४-१, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४४-२)
निम्मु बिरखु बहु संचीऐ अमृत रसु पाइआ ॥ (१२४४-२, सारंग, मः १)
बिसीअरु मंतृ विसाहीऐ बहु दूधु पीआइआ ॥ (१२४४-२, सारंग, मः १)
मनमुखु अभिन्नु न भिजई पथरु नावाइआ ॥ (१२४४-३, सारंग, मः १)
बिखु महि अमृतु सिंचीऐ बिखु का फलु पाइआ ॥ (१२४४-३, सारंग, मः १)
नानक संगति मेलि हरि सभ बिखु लहि जाइआ ॥१६॥ (१२४४-४, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४४-४)
मरणि न मूरतु पुछिआ पुछी थिति न वारु ॥ (१२४४-४, सारंग, मः १)
इकन्ही लदिआ इकि लदि चले इकन्ही बधे भार ॥ (१२४४-५, सारंग, मः १)
इकन्हा होई साखती इकन्हा होई सार ॥ (१२४४-५, सारंग, मः १)
लसकर सणै दमामिआ छुटे बंक दुआर ॥ (१२४४-६, सारंग, मः १)
नानक ढेरी छारु की भी फिरि होई छार ॥१॥ (१२४४-६, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४४-७)
नानक ढेरी ढहि पई मिटी संदा कोटु ॥ (१२४४-७, सारंग, मः १)
भीतरि चोरु बहालिआ खोटु वे जीआ खोटु ॥२॥ (१२४४-७, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४४-८)
जिन अंदरि निंदा दुसटु है नक वढे नक वढाइआ ॥ (१२४४-८, सारंग, मः १)
महा करूप दुखीए सदा काले मुह माइआ ॥ (१२४४-८, सारंग, मः १)
भलके उठि नित पर दरबु हिरहि हरि नामु चुराइआ ॥ (१२४४-९, सारंग, मः १)
हरि जीउ तिन की संगति मत करहु रखि लेहु हरि राइआ ॥ (१२४४-९, सारंग, मः १)
नानक पइऐ किरति कमावदे मनमुखि दुखु पाइआ ॥१७॥ (१२४४-१०, सारंग, मः १)
सलोक मः ४ ॥ (१२४४-१०)
सभु कोई है खसम का खसमहु सभु को होइ ॥ (१२४४-११, सारंग, मः ४)
हुकमु पछाणै खसम का ता सचु पावै कोइ ॥ (१२४४-११, सारंग, मः ४)

गुरमुखि आपु पछाणीऐ बुरा न दीसै कोइ ॥ (१२४४-११, सारंग, मः ४)
नानक गुरमुखि नामु धिआईऐ सहिला आइआ सोइ ॥१॥ (१२४४-१२, सारंग, मः ४)
मः ४ ॥ (१२४४-१३)
सभना दाता आपि है आपे मेलणहारु ॥ (१२४४-१३, सारंग, मः ४)
नानक सबदि मिले न विछुड़हि जिना सेविआ हरि दातारु ॥२॥ (१२४४-१३, सारंग, मः ४)
पउड़ी ॥ (१२४४-१४)
गुरमुखि हिरदै साँति है नाउ उगवि आइआ ॥ (१२४४-१४, सारंग, मः ४)
जप तप तीर्थ संजम करे मेरे प्रभ भाइआ ॥ (१२४४-१४, सारंग, मः ४)
हिरदा सुधु हरि सेवदे सोहहि गुण गाइआ ॥ (१२४४-१५, सारंग, मः ४)
मेरे हरि जीउ एवै भावदा गुरमुखि तराइआ ॥ (१२४४-१५, सारंग, मः ४)
नानक गुरमुखि मेलिअनु हरि दरि सोहाइआ ॥१८॥ (१२४४-१६, सारंग, मः ४)
सलोक मः १ ॥ (१२४४-१६)
धनवंता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ ॥ (१२४४-१६, सारंग, मः १)
नानकु निरधनु तितु दिनि जितु दिनि विसरै नाउ ॥१॥ (१२४४-१७, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४४-१७)
सूरजु चड़ै विजोगि सभसै घटै आरजा ॥ (१२४४-१७, सारंग, मः १)
तनु मनु रता भोगि कोई हारै को जिणै ॥ (१२४४-१८, सारंग, मः १)
सभु को भरिआ फूकि आखणि कहणि न थम्मीऐ ॥ (१२४४-१८, सारंग, मः १)
नानक वेखै आपि फूक कढाए ढहि पवै ॥२॥ (१२४४-१९, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४४-१९)
सतसंगति नामु निधानु है जिथहु हरि पाइआ ॥ (१२४४-१९, सारंग, मः १)

पन्ना १२४५

गुर परसादी घटि चानणा आन्हेरु गवाइआ ॥ (१२४५-१, सारंग, मः १)
लोहा पारसि भेटीऐ कंचनु होइ आइआ ॥ (१२४५-१, सारंग, मः १)
नानक सतिगुरि मिलिऐ नाउ पाईऐ मिलि नामु धिआइआ ॥ (१२४५-२, सारंग, मः १)
जिन्ह कै पोतै पुंनु है तिन्ही दरसनु पाइआ ॥१९॥ (१२४५-२, सारंग, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२४५-३)
ध्रिगु तिना का जीविआ जि लिखि लिखि वेचहि नाउ ॥ (१२४५-३, सारंग, मः १)
खेती जिन की उजड़ै खलवाड़े किआ थाउ ॥ (१२४५-३, सारंग, मः १)
सचै सरमै बाहरे अगै लहहि न दादि ॥ (१२४५-४, सारंग, मः १)
अकलि एह न आखीऐ अकलि गवाईऐ बादि ॥ (१२४५-४, सारंग, मः १)
अकली साहिबु सेवीऐ अकली पाईऐ मानु ॥ (१२४५-५, सारंग, मः १)
अकली पड़्हि कै बुझीऐ अकली कीचै दानु ॥ (१२४५-५, सारंग, मः १)
नानकु आखै राहु एहु होरि गलाँ सैतानु ॥१॥ (१२४५-६, सारंग, मः १)

मः २ ॥ (१२४५-६)
जैसा करै कहावै तैसा ऐसी बनी जरूरति ॥ (१२४५-६, सारंग, मः २)
होवहि लिंङ झिंङ नह होवहि ऐसी कहीऐ सूरति ॥ (१२४५-७, सारंग, मः २)
जो ओसु इछे सो फलु पाए ताँ नानक कहीऐ मूरति ॥२॥ (१२४५-७, सारंग, मः २)
पउड़ी ॥ (१२४५-८)
सतिगुरु अमृत बिरखु है अमृत रसि फलिआ ॥ (१२४५-८, सारंग, मः २)
जिसु परापति सो लहै गुर सबदी मिलिआ ॥ (१२४५-८, सारंग, मः २)
सतिगुर कै भाणै जो चलै हरि सेती रलिआ ॥ (१२४५-९, सारंग, मः २)
जमकालु जोहि न सकई घटि चानणु बलिआ ॥ (१२४५-९, सारंग, मः २)
नानक बखसि मिलाइअनु फिरि गरभि न गलिआ ॥२०॥ (१२४५-१०, सारंग, मः २)
सलोक मः १ ॥ (१२४५-१०)
सचु वरतु संतोखु तीरथु गिआनु धिआनु इसनानु ॥ (१२४५-१०, सारंग, मः १)
दइआ देवता खिमा जपमाली ते माणस प्रधान ॥ (१२४५-११, सारंग, मः १)
जुगति धोती सुरति चउका तिलकु करणी होइ ॥ (१२४५-११, सारंग, मः १)
भाउ भोजनु नानका विरला त कोई कोइ ॥१॥ (१२४५-१२, सारंग, मः १)
महला ३ ॥ (१२४५-१२)
नउमी नेमु सचु जे करै ॥ (१२४५-१२, सारंग, मः ३)
काम क्रोधु तृसना उचरै ॥ (१२४५-१३, सारंग, मः ३)
दसमी दसे दुआर जे ठाकै एकादसी एकु करि जाणै ॥ (१२४५-१३, सारंग, मः ३)
दुआदसी पंच वसगति करि राखै तउ नानक मनु मानै ॥ (१२४५-१३, सारंग, मः ३)
ऐसा वरतु रहीजै पाडे होर बहुतु सिख किआ दीजै ॥२॥ (१२४५-१४, सारंग, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२४५-१५)
भूपति राजे रंग राइ संचहि बिखु माइआ ॥ (१२४५-१५, सारंग, मः ३)
करि करि हेतु वधाइदे पर दरबु चुराइआ ॥ (१२४५-१५, सारंग, मः ३)
पुत्र कलत्र न विसहहि बहु प्रीति लगाइआ ॥ (१२४५-१६, सारंग, मः ३)
वेखदिआ ही माइआ धुहि गई पछुतहि पछुताइआ ॥ (१२४५-१६, सारंग, मः ३)
जम दरि बधे मारीअहि नानक हरि भाइआ ॥२१॥ (१२४५-१७, सारंग, मः ३)
सलोक मः १ ॥ (१२४५-१७)
गिआन विहूणा गावै गीत ॥ (१२४५-१७, सारंग, मः १)
भुखे मुलाँ घरे मसीति ॥ (१२४५-१७, सारंग, मः १)
मखटू होइ कै कन्न पड़ाए ॥ (१२४५-१८, सारंग, मः १)
फकरु करे होरु जाति गवाए ॥ (१२४५-१८, सारंग, मः १)
गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥ (१२४५-१८, सारंग, मः १)
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ (१२४५-१९, सारंग, मः १)
घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥ (१२४५-१९, सारंग, मः १)

नानक राहु पछाणहि सेइ ॥१॥ (१२४५-१९, सारंग, मः १)
मः १ ॥ (१२४६-१)

पन्ना १२४६

मनहु जि अंधे कूप कहिआ बिरदु न जाणन्ी ॥ (१२४६-१, सारंग, मः १)
मनि अंधै ऊंधै कवलि दिसन्हि खरे करूप ॥ (१२४६-१, सारंग, मः १)
इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप ॥ (१२४६-२, सारंग, मः १)
इकना नाद न बेद न गीअ रसु रस कस न जाणंति ॥ (१२४६-२, सारंग, मः १)
इकना सुधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ (१२४६-३, सारंग, मः १)
नानक से नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंति ॥२॥ (१२४६-३, सारंग, मः १)
पउड़ी ॥ (१२४६-४)
गुरमुखि सभ पवितु है धनु सम्पै माइआ ॥ (१२४६-४, सारंग, मः १)
हरि अरथि जो खरचदे देंदे सुखु पाइआ ॥ (१२४६-४, सारंग, मः १)
जो हरि नामु धिआइदे तिन तोटि न आइआ ॥ (१२४६-५, सारंग, मः १)
गुरमुखाँ नदरी आवदा माइआ सुटि पाइआ ॥ (१२४६-५, सारंग, मः १)
नानक भगताँ होरु चिति न आवई हरि नामि समाइआ ॥२२॥ (१२४६-६, सारंग, मः १)
सलोक मः ४ ॥ (१२४६-६)
सतिगुरु सेवनि से वडभागी ॥ (१२४६-७, सारंग, मः ४)
सचै सबदि जिन्हा एक लिव लागी ॥ (१२४६-७, सारंग, मः ४)
गिरह कुटम्ब महि सहजि समाधी ॥ (१२४६-७, सारंग, मः ४)
नानक नामि रते से सचे बैरागी ॥१॥ (१२४६-८, सारंग, मः ४)
मः ४ ॥ (१२४६-८)
गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥ (१२४६-८, सारंग, मः ४)
सबदै सादु न आइओ सचि न लगो भाउ ॥ (१२४६-८, सारंग, मः ४)
सतिगुरु पिआरा न लगई मनहठि आवै जाइ ॥ (१२४६-९, सारंग, मः ४)
जे इक विख अगाहा भरे ताँ दस विखाँ पिछाहा जाइ ॥ (१२४६-९, सारंग, मः ४)
सतिगुर की सेवा चाकरी जे चलहि सतिगुर भाइ ॥ (१२४६-१०, सारंग, मः ४)
आपु गवाइ सतिगुरू नो मिलै सहजे रहै समाइ ॥ (१२४६-१०, सारंग, मः ४)
नानक तिन्हा नामु न वीसरै सचे मेलि मिलाइ ॥२॥ (१२४६-११, सारंग, मः ४)
पउड़ी ॥ (१२४६-११)
खान मलूक कहाइदे को रहणु न पाई ॥ (१२४६-१२, सारंग, मः ४)
गड़्ह मंदर गच गीरीआ किछु साथि न जाई ॥ (१२४६-१२, सारंग, मः ४)
सोइन साखति पउण वेग ध्रिगु ध्रिगु चतुराई ॥ (१२४६-१२, सारंग, मः ४)
छतीह अमृत परकार करहि बहु मैलु वधाई ॥ (१२४६-१३, सारंग, मः ४)
नानक जो देवै तिसहि न जाणन्ी मनमुखि दुखु पाई ॥२३॥ (१२४६-१३, सारंग, मः ४)

सलोक मः ३ ॥ (१२४६-१४)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके देसंतर भवि थके भेखधारी ॥ (१२४६-१४, सारंग, मः ३)
दूजै भाइ नाउ कदे न पाइनि दुखु लागा अति भारी ॥ (१२४६-१५, सारंग, मः ३)
मूरख अंधे त्रै गुण सेवहि माइआ कै बिउहारी ॥ (१२४६-१५, सारंग, मः ३)
अंदरि कपटु उदरु भरण कै ताई पाठ पड़हि गावारी ॥ (१२४६-१६, सारंग, मः ३)
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिन हउमै विचहु मारी ॥ (१२४६-१६, सारंग, मः ३)
नानक पड़णा गुनणा इकु नाउ है बूझै को बीचारी ॥१॥ (१२४६-१७, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२४६-१७)
नाँगे आवणा नाँगे जाणा हरि हुकमु पाइआ किआ कीजै ॥ (१२४६-१७, सारंग, मः ३)
जिस की वसतु सोई लै जाइगा रोसु किसै सिउ कीजै ॥ (१२४६-१८, सारंग, मः ३)
गुरमुखि होवै सु भाणा मन्ने सहजे हरि रसु पीजै ॥ (१२४६-१९, सारंग, मः ३)
नानक सुखदाता सदा सलाहिहु रसना रामु रवीजै ॥२॥ (१२४६-१९, सारंग, मः ३)

पन्ना १२४७

पउड़ी ॥ (१२४७-१)
गड़ि काइआ सीगार बहु भाँति बणाई ॥ (१२४७-१, सारंग, मः ३)
रंग परंग कतीफिआ पहिरहि धर माई ॥ (१२४७-१, सारंग, मः ३)
लाल सुपेद दुलीचिआ बहु सभा बणाई ॥ (१२४७-२, सारंग, मः ३)
दुखु खाणा दुखु भोगणा गरबै गरबाई ॥ (१२४७-२, सारंग, मः ३)
नानक नामु न चेतिओ अंति लए छडाई ॥२४॥ (१२४७-२, सारंग, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२४७-३)
सहजे सुखि सुती सबदि समाइ ॥ (१२४७-३, सारंग, मः ३)
आपे प्रभि मेलि लई गलि लाइ ॥ (१२४७-३, सारंग, मः ३)
दुबिधा चूकी सहजि सुभाइ ॥ (१२४७-४, सारंग, मः ३)
अंतरि नामु वसिआ मनि आइ ॥ (१२४७-४, सारंग, मः ३)
से कंठि लाए जि भंनि घड़ाइ ॥ (१२४७-४, सारंग, मः ३)
नानक जो धुरि मिले से हुणि आणि मिलाइ ॥१॥ (१२४७-५, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२४७-५)
जिन्ही नामु विसारिआ किआ जपु जापहि होरि ॥ (१२४७-५, सारंग, मः ३)
बिसटा अंदरि कीट से मुठे धंधै चोरि ॥ (१२४७-६, सारंग, मः ३)
नानक नामु न वीसरै झूठे लालच होरि ॥२॥ (१२४७-६, सारंग, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२४७-७)
नामु सलाहनि नामु मंनि असथिरु जगि सोई ॥ (१२४७-७, सारंग, मः ३)
हिरदै हरि हरि चितवै दूजा नही कोई ॥ (१२४७-७, सारंग, मः ३)
रोमि रोमि हरि उचरै खिनु खिनु हरि सोई ॥ (१२४७-८, सारंग, मः ३)

ਗੁਰਮੁਖਿ

मोह ठगउली पाईअनु बहु दूजै भाइ विकार ॥ (१२४८-३, सारंग, मः ३)
इकि गुर परसादी उबरे तिसु जन कउ करहि सभि नमस्कार ॥ (१२४८-३, सारंग, मः ३)
नानक अनदिनु नामु धिआइ तू अंतरि जितु पावहि मोख दुआर ॥१॥ (१२४८-४, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२४८-५)
माइआ मोहि विसारिआ सचु मरणा हरि नामु ॥ (१२४८-५, सारंग, मः ३)
धंधा करतिआ जनमु गइआ अंदरि दुखु सहामु ॥ (१२४८-५, सारंग, मः ३)
नानक सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ जिन् पूरबि लिखिआ करामु ॥२॥ (१२४८-६, सारंग, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२४८-६)
लेखा पड़ीऐ हरि नामु फिरि लेखु न होई ॥ (१२४८-६, सारंग, मः ३)
पुछि न सकै कोइ हरि दरि सद ढोई ॥ (१२४८-७, सारंग, मः ३)
जमकालु मिलै दे भेट सेवकु नित होई ॥ (१२४८-७, सारंग, मः ३)
पूरे गुर ते महलु पाइआ पति परगटु लोई ॥ (१२४८-८, सारंग, मः ३)
नानक अनहद धुनी दरि वजदे मिलिआ हरि सोई ॥२८॥ (१२४८-८, सारंग, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२४८-९)
गुर का कहिआ जे करे सुखी हू सुखु सारु ॥ (१२४८-९, सारंग, मः ३)
गुर की करणी भउ कटीऐ नानक पावहि पारु ॥१॥ (१२४८-९, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२४८-१०)
सचु पुराणा ना थीऐ नामु न मैला होइ ॥ (१२४८-१०, सारंग, मः ३)
गुर कै भाणै जे चलै बहुड़ि न आवणु होइ ॥ (१२४८-१०, सारंग, मः ३)
नानक नामि विसारिऐ आवण जाणा दोइ ॥२॥ (१२४८-११, सारंग, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२४८-११)
मंगत जनु जाचै दानु हरि देहु सुभाइ ॥ (१२४८-११, सारंग, मः ३)
हरि दरसन की पिआस है दरसनि तृपताइ ॥ (१२४८-१२, सारंग, मः ३)
खिनु पलु घड़ी न जीवऊ बिनु देखे मराँ माइ ॥ (१२४८-१२, सारंग, मः ३)
सतिगुरि नालि दिखालिआ रवि रहिआ सभ थाइ ॥ (१२४८-१३, सारंग, मः ३)
सुतिआ आपि उठालि देइ नानक लिव लाइ ॥२९॥ (१२४८-१३, सारंग, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२४८-१४)
मनमुख बोलि न जाणन्ी ओना अंदरि कामु क्रोधु अहंकारु ॥ (१२४८-१४, सारंग, मः ३)
थाउ कुथाउ न जाणनी सदा चितवहि बिकार ॥ (१२४८-१५, सारंग, मः ३)
दरगह लेखा मंगीऐ ओथै होहि कूड़िआर ॥ (१२४८-१५, सारंग, मः ३)
आपे सृसटि उपाईअनु आपि करे बीचारु ॥ (१२४८-१६, सारंग, मः ३)
नानक किस नो आखीऐ सभु वरतै आपि सचिआरु ॥१॥ (१२४८-१६, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२४८-१७)
हरि गुरमुखि तिन्ी अराधिआ जिन् करमि परापति होइ ॥ (१२४८-१७, सारंग, मः ३)
नानक हउ बलिहारी तिन् कउ जिन् हरि मनि वसिआ सोइ ॥२॥ (१२४८-१७, सारंग, मः ३)

पउड़ी ॥ (१२४८-१८)
आस करे सभु लोकु बहु जीवणु जाणिआ ॥ (१२४८-१८, सारंग, मः ३)
नित जीवण कउ चितु गड़्ह मंडप सवारिआ ॥ (१२४८-१८, सारंग, मः ३)
वलवंच करि उपाव माइआ हिरि आणिआ ॥ (१२४८-१९, सारंग, मः ३)
जमकालु निहाले सास आव घटै बेतालिआ ॥ (१२४८-१९, सारंग, मः ३)

पन्ना १२४९

नानक गुर सरणाई उबरे हरि गुर रखवालिआ ॥३०॥ (१२४९-१, सारंग, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२४९-१)
पड़ि पड़ि पंडित वादु वखाणदे माइआ मोह सुआइ ॥ (१२४९-२, सारंग, मः ३)
दूजै भाइ नामु विसारिआ मन मूरख मिलै सजाइ ॥ (१२४९-२, सारंग, मः ३)
जिन्हि कीते तिसै न सेवन्ही देदा रिजकु समाइ ॥ (१२४९-३, सारंग, मः ३)
जम का फाहा गलहु न कटीऐ फिरि फिरि आवहि जाइ ॥ (१२४९-३, सारंग, मः ३)
जिन कउ पूरबि लिखिआ सतिगुरु मिलिआ तिन आइ ॥ (१२४९-४, सारंग, मः ३)
अनदिनु नामु धिआइदे नानक सचि समाइ ॥१॥ (१२४९-४, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२४९-५)
सचु वणजहि सचु सेवदे जि गुरमुखि पैरी पाहि ॥ (१२४९-५, सारंग, मः ३)
नानक गुर कै भाणै जे चलहि सहजे सचि समाहि ॥२॥ (१२४९-५, सारंग, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२४९-६)
आसा विचि अति दुखु घणा मनमुखि चितु लाइआ ॥ (१२४९-६, सारंग, मः ३)
गुरमुखि भए निरास पर्म सुखु पाइआ ॥ (१२४९-७, सारंग, मः ३)
विचे गिरह उदास अलिपत लिव लाइआ ॥ (१२४९-७, सारंग, मः ३)
ओना सोगु विजोगु न विआपई हरि भाणा भाइआ ॥ (१२४९-७, सारंग, मः ३)
नानक हरि सेती सदा रवि रहे धुरि लए मिलाइआ ॥३१॥ (१२४९-८, सारंग, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२४९-९)
पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥ (१२४९-९, सारंग, मः ३)
गुर का सबदु गुर थै टिकै होर थै परगटु न होइ ॥ (१२४९-९, सारंग, मः ३)
अन्हे वसि माणकु पइआ घरि घरि वेचण जाइ ॥ (१२४९-१०, सारंग, मः ३)
ओना परख न आवई अढु न पलै पाइ ॥ (१२४९-१०, सारंग, मः ३)
जे आपि परख न आवई ताँ पारखीआ थावहु लइओु परखाइ ॥ (१२४९-११, सारंग, मः ३)
जे ओसु नालि चितु लाए ताँ वथु लहै नउ निधि पलै पाइ ॥ (१२४९-११, सारंग, मः ३)
घरि होदै धनि जगु भुखा मुआ बिनु सतिगुर सोझी न होइ ॥ (१२४९-१२, सारंग, मः ३)
सबदु सीतलु मनि तनि वसै तिथै सोगु विजोगु न कोइ ॥ (१२४९-१२, सारंग, मः ३)
वसतु पराई आपि गरबु करे मूरखु आपु गणाए ॥ (१२४९-१३, सारंग, मः ३)
नानक बिनु बूझे किनै न पाइओ फिरि फिरि आवै जाए ॥१॥ (१२४९-१३, सारंग, मः ३)

मः ३ ॥ (१२४६-१४)
मनि अनदु भइआ मिलिआ हरि प्रीतमु सरसे सजण संत पिआरे ॥ (१२४६-१४, सारंग, मः ३)
जो धुरि मिले न विछुड़हि कबहू जि आपि मेले करतारे ॥ (१२४६-१५, सारंग, मः ३)
अंतरि सबदु रविआ गुरु पाइआ सगले दूख निवारे ॥ (१२४६-१५, सारंग, मः ३)
हरि सुखदाता सदा सलाही अंतरि रखाँ उर धारे ॥ (१२४६-१६, सारंग, मः ३)
मनमुखु तिन की बखीली कि करे जि सचै सबदि सवारे ॥ (१२४६-१६, सारंग, मः ३)
ओना दी आपि पति रखसी मेरा पिआरा सरणागति पए गुर दुआरे ॥ (१२४६-१७, सारंग, मः ३)
नानक गुरमुखि से सुहेले भए मुख ऊजल दरबारे ॥२॥ (१२४६-१८, सारंग, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२४६-१८)
इसतरी पुरखै बहु प्रीति मिलि मोहु वधाइआ ॥ (१२४६-१८, सारंग, मः ३)
पुत्रु कलत्रु नित वेखै विगसै मोहि माइआ ॥ (१२४६-१९, सारंग, मः ३)
देसि परदेसि धनु चोराइ आणि मुहि पाइआ ॥ (१२४६-१९, सारंग, मः ३)

पन्ना १२५०

अंति होवै वैर विरोधु को सकै न छडाइआ ॥ (१२५०-१, सारंग, मः ३)
नानक विणु नावै ध्रिगु मोहु जितु लगि दुखु पाइआ ॥३२॥ (१२५०-१, सारंग, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२५०-२)
गुरमुखि अमृतु नामु है जितु खाधै सभ भुख जाइ ॥ (१२५०-२, सारंग, मः ३)
तृसना मूलि न होवई नामु वसै मनि आइ ॥ (१२५०-२, सारंग, मः ३)
बिनु नावै जि होरु खाणा तितु रोगु लगै तनि धाइ ॥ (१२५०-३, सारंग, मः ३)
नानक रस कस सबदु सलाहणा आपे लए मिलाइ ॥१॥ (१२५०-३, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२५०-४)
जीआ अंदरि जीउ सबदु है जितु सह मेलावा होइ ॥ (१२५०-४, सारंग, मः ३)
बिनु सबदै जगि आन्हेरु है सबदे परगटु होइ ॥ (१२५०-५, सारंग, मः ३)
पंडित मोनी पड़ि पड़ि थके भेख थके तनु धोइ ॥ (१२५०-५, सारंग, मः ३)
बिनु सबदै किनै न पाइओ दुखीए चले रोइ ॥ (१२५०-६, सारंग, मः ३)
नानक नदरी पाईऐ करमि परापति होइ ॥२॥ (१२५०-६, सारंग, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२५०-७)
इसत्री पुरखै अति नेहु बहि मंदु पकाइआ ॥ (१२५०-७, सारंग, मः ३)
दिसदा सभु किछु चलसी मेरे प्रभ भाइआ ॥ (१२५०-७, सारंग, मः ३)
किउ रहीऐ थिरु जगि को कढहु उपाइआ ॥ (१२५०-८, सारंग, मः ३)
गुर पूरे की चाकरी थिरु कंधु सबाइआ ॥ (१२५०-८, सारंग, मः ३)
नानक बखसि मिलाइअनु हरि नामि समाइआ ॥३३॥ (१२५०-८, सारंग, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२५०-९)
माइआ मोहि विसारिआ गुर का भउ हेतु अपारु ॥ (१२५०-९, सारंग, मः ३)

लोभि लहरि सुधि मति गई सचि न लगै पिआरु ॥ (१२५०-१०, सारंग, मः ३)
गुरमुखि जिना सबदु मनि वसै दरगह मोख दुआरु ॥ (१२५०-१०, सारंग, मः ३)
नानक आपे मेलि लए आपे बखसणहारु ॥१॥ (१२५०-११, सारंग, मः ३)
मः ४ ॥ (१२५०-११)
नानक जिसु बिनु घड़ी न जीवणा विसरे सरै न बिंद ॥ (१२५०-११, सारंग, मः ४)
तिसु सिउ किउ मन रूसीऐ जिसहि हमारी चिंद ॥२॥ (१२५०-१२, सारंग, मः ४)
मः ४ ॥ (१२५०-१२)
सावणु आइआ झिमझिमा हरि गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (१२५०-१२, सारंग, मः ४)
दुख भुख काड़ा सभु चुकाइसी मीहु वुठा छहबर लाइ ॥ (१२५०-१३, सारंग, मः ४)
सभ धरति भई हरीआवली अन्नु जंमिआ बोहल लाइ ॥ (१२५०-१४, सारंग, मः ४)
हरि अचिंतु बुलावै कृपा करि हरि आपे पावै थाइ ॥ (१२५०-१४, सारंग, मः ४)
हरि तिसहि धिआवहु संत जनहु जु अंते लए छडाइ ॥ (१२५०-१५, सारंग, मः ४)
हरि कीरति भगति अनंदु है सदा सुखु वसै मनि आइ ॥ (१२५०-१५, सारंग, मः ४)
जिन्ा गुरमुखि नामु अराधिआ तिना दुख भुख लहि जाइ ॥ (१२५०-१६, सारंग, मः ४)
जन नानकु तृपतै गाइ गुण हरि दरसनु देहु सुभाइ ॥३॥ (१२५०-१६, सारंग, मः ४)
पउड़ी ॥ (१२५०-१७)
गुर पूरे की दाति नित देवै चड़ै सवाईआ ॥ (१२५०-१७, सारंग, मः ४)
तुसि देवै आपि दइआलु न छपै छपाईआ ॥ (१२५०-१८, सारंग, मः ४)
हिरदै कवलु प्रगासु उनमनि लिव लाईआ ॥ (१२५०-१८, सारंग, मः ४)
जे को करे उस दी रीस सिरि छाई पाईआ ॥ (१२५०-१८, सारंग, मः ४)
नानक अपड़ि कोइ न सकई पूरे सतिगुर की वडिआईआ ॥३४॥ (१२५०-१९, सारंग, मः ४)

पन्ना १२५१

सलोक मः ३ ॥ (१२५१-१)
अमरु वेपरवाहु है तिसु नालि सिआणप न चलई न हुजति करणी जाइ ॥ (१२५१-१, सारंग, मः ३)
आपु छोडि सरणाइ पवै मंनि लए रजाइ ॥ (१२५१-२, सारंग, मः ३)
गुरमुखि जम डंडु न लगई हउमै विचहु जाइ ॥ (१२५१-२, सारंग, मः ३)
नानक सेवकु सोई आखीऐ जि सचि रहै लिव लाइ ॥१॥ (१२५१-२, सारंग, मः ३)
मः ३ ॥ (१२५१-३)
दाति जोति सभ सूरति तेरी ॥ (१२५१-३, सारंग, मः ३)
बहुतु सिआणप हउमै मेरी ॥ (१२५१-३, सारंग, मः ३)
बहु कर्म कमावहि लोभि मोहि विआपे हउमै कदे न चूकै फेरी ॥ (१२५१-४, सारंग, मः ३)
नानक आपि कराए करता जो तिसु भावै साई गल चंगेरी ॥२॥ (१२५१-४, सारंग, मः ३)
पउड़ी मः ५ ॥ (१२५१-५)
सचु खाणा सचु पैनणा सचु नामु अधारु ॥ (१२५१-५, सारंग, मः ५)

गुरि पूरै मेलाइआ प्रभु देवणहारु ॥ (१२५१-६, सारंग, मः ५)
भागु पूरा तिन जागिआ जपिआ निरंकारु ॥ (१२५१-६, सारंग, मः ५)
साधू संगति लगिआ तरिआ संसारु ॥ (१२५१-६, सारंग, मः ५)
नानक सिफति सलाह करि प्रभ का जैकारु ॥३५॥ (१२५१-७, सारंग, मः ५)
सलोक मः ५ ॥ (१२५१-७)
सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥ (१२५१-८, सारंग, मः ५)
अन्नु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥ (१२५१-८, सारंग, मः ५)
अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥ (१२५१-८, सारंग, मः ५)
लेवहु कंठि लगाइ अपदा सभ हरु ॥ (१२५१-९, सारंग, मः ५)
नानक नामु धिआइ प्रभ का सफलु घरु ॥१॥ (१२५१-९, सारंग, मः ५)
मः ५ ॥ (१२५१-१०)
वुठे मेघ सुहावणे हुकमु कीता करतारि ॥ (१२५१-१०, सारंग, मः ५)
रिजकु उपाइओनु अगला ठाँढि पई संसारि ॥ (१२५१-१०, सारंग, मः ५)
तनु मनु हरिआ होइआ सिमरत अगम अपार ॥ (१२५१-११, सारंग, मः ५)
करि किरपा प्रभ आपणी सचे सिरजणहार ॥ (१२५१-११, सारंग, मः ५)
कीता लोड़हि सो करहि नानक सद बलिहार ॥२॥ (१२५१-१२, सारंग, मः ५)
पउड़ी ॥ (१२५१-१२)
वडा आपि अगम्मु है वडी वडिआई ॥ (१२५१-१२, सारंग, मः ५)
गुर सबदी वेखि विगसिआ अंतरि साँति आई ॥ (१२५१-१३, सारंग, मः ५)
सभु आपे आपि वरतदा आपे है भाई ॥ (१२५१-१३, सारंग, मः ५)
आपि नाथु सभ नथीअनु सभ हुकमि चलाई ॥ (१२५१-१४, सारंग, मः ५)
नानक हरि भावै सो करे सभ चलै रजाई ॥३६॥१॥ सुधु ॥ (१२५१-१४, सारंग, मः ५)
रागु सारंग बाणी भगताँ की ॥ (१२५१-१६)
कबीर जी ॥ (१२५१-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२५१-१६)
कहा नर गरबसि थोरी बात ॥ (१२५१-१७, सारंग, भगत कबीर जी)
मन दस नाजु टका चारि गाँठी ऐंडौ टेढौ जातु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५१-१७, सारंग, भगत कबीर जी)
बहुतु प्रतापु गाँउ सउ पाए दुइ लख टका बरात ॥ (१२५१-१७, सारंग, भगत कबीर जी)
दिवस चारि की करहु साहिबी जैसे बन हर पात ॥१॥ (१२५१-१८, सारंग, भगत कबीर जी)
ना कोऊ लै आइओ इहु धनु ना कोऊ लै जातु ॥ (१२५१-१९, सारंग, भगत कबीर जी)
रावन हूं ते अधिक छत्रपति खिन महि गए बिलात ॥२॥ (१२५१-१९, सारंग, भगत कबीर जी)

पन्ना १२५२

हरि के संत सदा थिरु पूजहु जो हरि नामु जपात ॥ (१२५२-१, सारंग, भगत कबीर जी)
जिन कउ कृपा करत है गोबिदु ते सतसंगि मिलात ॥३॥ (१२५२-१, सारंग, भगत कबीर जी)

मात पिता बनिता सुत सम्पति अंति न चलत संगात ॥ (१२५२-२, सारंग, भगत कबीर जी)
कहत कबीरु राम भजु बउरे जनमु अकारथ जात ॥४॥१॥ (१२५२-२, सारंग, भगत कबीर जी)
राजास्रम मिति नही जानी तेरी ॥ (१२५२-३, सारंग, भगत कबीर जी)
तेरे संतन की हउ चेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५२-३, सारंग, भगत कबीर जी)
हसतो जाइ सु रोवतु आवै रोवतु जाइ सु हसै ॥ (१२५२-४, सारंग, भगत कबीर जी)
बसतो होइ होइ सुो ऊजरु ऊजरु होइ सु बसै ॥१॥ (१२५२-४, सारंग, भगत कबीर जी)
जल ते थल करि थल ते कूआ कूप ते मेरु करावै ॥ (१२५२-५, सारंग, भगत कबीर जी)
धरती ते आकासि चढावै चढे अकासि गिरावै ॥२॥ (१२५२-५, सारंग, भगत कबीर जी)
भेखारी ते राजु करावै राजा ते भेखारी ॥ (१२५२-६, सारंग, भगत कबीर जी)
खल मूरख ते पंडितु करिबो पंडित ते मुगधारी ॥३॥ (१२५२-६, सारंग, भगत कबीर जी)
नारी ते जो पुरखु करावै पुरखन ते जो नारी ॥ (१२५२-७, सारंग, भगत कबीर जी)
कहु कबीर साधू को प्रीतमु तिसु मूरति बलिहारी ॥४॥२॥ (१२५२-७, सारंग, भगत कबीर जी)
सारंग बाणी नामदेउ जी की ॥ (१२५२-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२५२-८)
काएं रे मन बिखिआ बन जाइ ॥ (१२५२-९, सारंग, भगत नामदेव जी)
भूलौ रे ठगमूरी खाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५२-९, सारंग, भगत नामदेव जी)
जैसे मीनु पानी महि रहै ॥ (१२५२-९, सारंग, भगत नामदेव जी)
काल जाल की सुधि नही लहै ॥ (१२५२-१०, सारंग, भगत नामदेव जी)
जिहबा सुआदी लीलित लोह ॥ (१२५२-१०, सारंग, भगत नामदेव जी)
ऐसे कनिक कामनी बाधिओ मोह ॥१॥ (१२५२-१०, सारंग, भगत नामदेव जी)
जिउ मधु माखी संचै अपार ॥ (१२५२-११, सारंग, भगत नामदेव जी)
मधु लीनो मुखि दीनी छारु ॥ (१२५२-११, सारंग, भगत नामदेव जी)
गऊ बाछ कउ संचै खीरु ॥ (१२५२-११, सारंग, भगत नामदेव जी)
गला बाँधि दुहि लेइ अहीरु ॥२॥ (१२५२-११, सारंग, भगत नामदेव जी)
माइआ कारनि स्रमु अति करै ॥ (१२५२-१२, सारंग, भगत नामदेव जी)
सो माइआ लै गाडै धरै ॥ (१२५२-१२, सारंग, भगत नामदेव जी)
अति संचै समझै नही मूड़्ह ॥ (१२५२-१२, सारंग, भगत नामदेव जी)
धनु धरती तनु होइ गइओ धूड़ि ॥३॥ (१२५२-१३, सारंग, भगत नामदेव जी)
काम क्रोध तृसना अति जरै ॥ (१२५२-१३, सारंग, भगत नामदेव जी)
साधसंगति कबहू नही करै ॥ (१२५२-१३, सारंग, भगत नामदेव जी)
कहत नामदेउ ता ची आणि ॥ (१२५२-१४, सारंग, भगत नामदेव जी)
निरभै होइ भजीऐ भगवान ॥४॥१॥ (१२५२-१४, सारंग, भगत नामदेव जी)
बदहु की न होड माधउ मो सिउ ॥ (१२५२-१४, सारंग, भगत नामदेव जी)
ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५२-१५, सारंग, भगत नामदेव जी)
आपन देउ देहुरा आपन आप लगावै पूजा ॥ (१२५२-१५, सारंग, भगत नामदेव जी)

जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कउ दूजा ॥१॥ (१२५२-१६, सारंग, भगत नामदेव जी)
आपहि गावै आपहि नाचै आपि बजावै तूरा ॥ (१२५२-१६, सारंग, भगत नामदेव जी)
कहत नामदेउ तूं मेरो ठाकुरु जनु ऊरा तू पूरा ॥२॥२॥ (१२५२-१७, सारंग, भगत नामदेव जी)
दास अनिन्न मेरो निज रूप ॥ (१२५२-१७, सारंग, भगत नामदेव जी)
दरसन निमख ताप त्रई मोचन परसत मुकति करत गृह कूप ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५२-१८, सारंग, भगत नामदेव जी)
मेरी बाँधी भगतु छडावै बाँधै भगतु न छूटै मोहि ॥ (१२५२-१८, सारंग, भगत नामदेव जी)

पन्ना १२५३

एक समै मो कउ गहि बाँधै तउ फुनि मो पै जबाबु न होइ ॥१॥ (१२५३-१, सारंग, भगत नामदेव जी)
मै गुन बंध सगल की जीवनि मेरी जीवनि मेरे दास ॥ (१२५३-२, सारंग, भगत नामदेव जी)
नामदेव जा के जीअ ऐसी तैसो ता कै प्रेम प्रगास ॥२॥३॥ (१२५३-२, सारंग, भगत नामदेव जी)
सारंग ॥ (१२५३-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२५३-४)
तै नर किआ पुरानु सुनि कीना ॥ (१२५३-५, सारंग, भगत परमानंद जी)
अनपावनी भगति नही उपजी भूखै दानु न दीना ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५३-५, सारंग, भगत परमानंद जी)
कामु न बिसरिओ क्रोधु न बिसरिओ लोभु न छूटिओ देवा ॥ (१२५३-६, सारंग, भगत परमानंद जी)
पर निंदा मुख ते नही छूटी निफल भई सभ सेवा ॥१॥ (१२५३-६, सारंग, भगत परमानंद जी)
बाट पारि घरु मूसि बिरानो पेटु भरै अप्राधी ॥ (१२५३-७, सारंग, भगत परमानंद जी)
जिहि परलोक जाइ अपकीरति सोई अबिदिआ साधी ॥२॥ (१२५३-७, सारंग, भगत परमानंद जी)
हिंसा तउ मन ते नही छूटी जीअ दइआ नही पाली ॥ (१२५३-८, सारंग, भगत परमानंद जी)
परमानंद साधसंगति मिलि कथा पुनीत न चाली ॥३॥१॥६॥ (१२५३-८, सारंग, भगत परमानंद जी)
छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥ (१२५३-१०, सारंग, भगत सूरदास जी)
सारंग महला ५ सूरदास ॥ (१२५३-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२५३-११)
हरि के संग बसे हरि लोक ॥ (१२५३-१२, सारंग, भगत सूरदास जी)
तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५३-१२, सारंग, भगत सूरदास जी)
दरसनु पेखि भए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥ (१२५३-१३, सारंग, भगत सूरदास जी)
आन बसतु सिउ काजु न कछूऐ सुंदर बदन अलोक ॥१॥ (१२५३-१३, सारंग, भगत सूरदास जी)
सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥ (१२५३-१४, सारंग, भगत सूरदास जी)
सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥२॥१॥८॥ (१२५३-१४, सारंग, भगत सूरदास जी)
सारंग कबीर जीउ ॥ (१२५३-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२५३-१६)
हरि बिनु कउनु सहाई मन का ॥ (१२५३-१६, सारंग, भगत कबीर जी)
मात पिता भाई सुत बनिता हितु लागो सभ फन का ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५३-१७, सारंग, भगत कबीर जी)
आगे कउ किछु तुलहा बाँधहु किआ भरवासा धन का ॥ (१२५३-१७, सारंग, भगत कबीर जी)

कहा बिसासा इस भाँडे का इतनकु लागै ठनका ॥१॥ (१२५३-१८, सारंग, भगत कबीर जी)
सगल धर्म पुन्न फल पावहु धूरि बाँछहु सभ जन का ॥ (१२५३-१८, सारंग, भगत कबीर जी)
कहै कबीरु सुनहु रे संतहु इहु मनु उडन पंखेरू बन का ॥२॥१॥६॥ (१२५३-१६, सारंग, भगत कबीर जी)

पन्ना १२५४

रागु मलार चउपदे महला १ घरु १ (१२५४-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१२५४-२)
खाणा पीणा हसणा सउणा विसरि गइआ है मरणा ॥ (१२५४-४, मलार, मः १)
खसमु विसारि खुआरी कीनी ध्रिगु जीवणु नही रहणा ॥१॥ (१२५४-४, मलार, मः १)
प्राणी एको नामु धिआवहु ॥ (१२५४-५, मलार, मः १)
अपनी पति सेती घरि जावहु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५४-५, मलार, मः १)
तुधनो सेवहि तुझु किआ देवहि माँगहि लेवहि रहहि नही ॥ (१२५४-५, मलार, मः १)
तू दाता जीआ सभना का जीआ अंदरि जीउ तुही ॥२॥ (१२५४-६, मलार, मः १)
गुरमुखि धिआवहि सि अमृतु पावहि सेई सूचे होही ॥ (१२५४-७, मलार, मः १)
अहिनिसि नामु जपहु रे प्राणी मैले हछे होही ॥३॥ (१२५४-७, मलार, मः १)
जेही रुति काइआ सुखु तेहा तेहो जेही देही ॥ (१२५४-८, मलार, मः १)
नानक रुति सुहावी साई बिनु नावै रुति केही ॥४॥१॥ (१२५४-८, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२५४-६)
करउ बिनउ गुर अपने प्रीतम हरि वरु आणि मिलावै ॥ (१२५४-६, मलार, मः १)
सुणि घन घोर सीतलु मनु मोरा लाल रती गुण गावै ॥१॥ (१२५४-६, मलार, मः १)
बरसु घना मेरा मनु भीना ॥ (१२५४-१०, मलार, मः १)
अमृत बूंद सुहानी हीअरै गुरि मोही मनु हरि रसि लीना ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५४-१०, मलार, मः १)
सहजि सुखी वर कामणि पिआरी जिसु गुर बचनी मनु मानिआ ॥ (१२५४-११, मलार, मः १)
हरि वरि नारि भई सोहागणि मनि तनि प्रेमु सुखानिआ ॥२॥ (१२५४-१२, मलार, मः १)
अवगण तिआगि भई बैरागनि असथिरु वरु सोहागु हरी ॥ (१२५४-१२, मलार, मः १)
सोगु विजोगु तिसु कदे न विआपै हरि प्रभि अपणी किरपा करी ॥३॥ (१२५४-१३, मलार, मः १)
आवण जाणु नही मनु निहचलु पूरे गुर की ओट गही ॥ (१२५४-१४, मलार, मः १)
नानक राम नामु जपि गुरमुखि धनु सोहागणि सचु सही ॥४॥२॥ (१२५४-१४, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२५४-१५)
साची सुरति नामि नही तृपते हउमै करत गवाइआ ॥ (१२५४-१५, मलार, मः १)

पन्ना १२५५

पर धन पर नारी रतु निंदा बिखु खाई दुखु पाइआ ॥ (१२५५-१, मलार, मः १)
सबदु चीनि भै कपट न छूटे मनि मुखि माइआ माइआ ॥ (१२५५-१, मलार, मः १)
अजगरि भारि लदे अति भारी मरि जनमे जनमु गवाइआ ॥१॥ (१२५५-२, मलार, मः १)

मनि भावै सबदु सुहाइआ ॥ (१२५५-२, मलार, मः १)
भ्रमि भ्रमि जोनि भेख बहु कीने गुरि राखे सचु पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५५-३, मलार, मः १)
तीरथि तेजु निवारि न न्हाते हरि का नामु न भाइआ ॥ (१२५५-३, मलार, मः १)
रतन पदारथु परहरि तिआगिआ जत को तत ही आइआ ॥ (१२५५-४, मलार, मः १)
बिसटा कीट भए उत ही ते उत ही माहि समाइआ ॥ (१२५५-५, मलार, मः १)
अधिक सुआद रोग अधिकाई बिनु गुर सहजु न पाइआ ॥२॥ (१२५५-५, मलार, मः १)
सेवा सुरति रहसि गुण गावा गुरमुखि गिआनु बीचारा ॥ (१२५५-६, मलार, मः १)
खोजी उपजै बादी बिनसै हउ बलि बलि गुर करतारा ॥ (१२५५-६, मलार, मः १)
हम नीच होते हीणमति झूठे तू सबदि सवारणहारा ॥ (१२५५-७, मलार, मः १)
आतम चीनि तहा तू तारण सचु तारे तारणहारा ॥३॥ (१२५५-७, मलार, मः १)
बैसि सुथानि कहाँ गुण तेरे किआ किआ कथउ अपारा ॥ (१२५५-८, मलार, मः १)
अलखु न लखीऐ अगमु अजोनी तूं नाथाँ नाथणहारा ॥ (१२५५-८, मलार, मः १)
किसु पहि देखि कहउ तू कैसा सभि जाचक तू दातारा ॥ (१२५५-९, मलार, मः १)
भगतिहीणु नानकु दरि देखहु इकु नामु मिलै उरि धारा ॥४॥३॥ (१२५५-१०, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२५५-१०)
जिनि धन पिर का सादु न जानिआ सा बिलख बदन कुमलानी ॥ (१२५५-१०, मलार, मः १)
भई निरासी कर्म की फासी बिनु गुर भरमि भुलानी ॥१॥ (१२५५-११, मलार, मः १)
बरसु घना मेरा पिरु घरि आइआ ॥ (१२५५-१२, मलार, मः १)
बलि जावाँ गुर अपने प्रीतम जिनि हरि प्रभु आणि मिलाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५५-१२, मलार, मः १)
नउतन प्रीति सदा ठाकुर सिउ अनदिनु भगति सुहावी ॥ (१२५५-१३, मलार, मः १)
मुकति भए गुरि दरसु दिखाइआ जुगि जुगि भगति सुभावी ॥२॥ (१२५५-१३, मलार, मः १)
हम थारे तृभवण जगु तुमरा तू मेरा हउ तेरा ॥ (१२५५-१४, मलार, मः १)
सतिगुरि मिलिऐ निरंजनु पाइआ बहुरि न भवजलि फेरा ॥३॥ (१२५५-१५, मलार, मः १)
अपुने पिर हरि देखि विगासी तउ धन साचु सीगारो ॥ (१२५५-१५, मलार, मः १)
अकुल निरंजन सिउ सचि साची गुरमति नामु अधारो ॥४॥ (१२५५-१६, मलार, मः १)
मुकति भई बंधन गुरि खोल्हे सबदि सुरति पति पाई ॥ (१२५५-१६, मलार, मः १)
नानक राम नामु रिद अंतरि गुरमुखि मेलि मिलाई ॥५॥४॥ (१२५५-१७, मलार, मः १)
महला १ मलार ॥ (१२५५-१८)
पर दारा पर धनु पर लोभा हउमै बिखै बिकार ॥ (१२५५-१८, मलार, मः १)
दुसट भाउ तजि निंद पराई कामु क्रोधु चंडार ॥१॥ (१२५५-१८, मलार, मः १)
महल महि बैठे अगम अपार ॥ (१२५५-१९, मलार, मः १)
भीतरि अमृतु सोई जनु पावै जिसु गुर का सबदु रतनु आचार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५५-१९, मलार, मः १)

पन्ना १२५६

दुख सुख दोऊ सम करि जानै बुरा भला संसार ॥ (१२५६-१, मलार, मः १)

सुधि बुधि सुरति नामि हरि पाईऐ सतसंगति गुर पिआर ॥२॥ (१२५६-१, मलार, मः १)
अहिनिसि लाहा हरि नामु परापति गुरु दाता देवणहारु ॥ (१२५६-२, मलार, मः १)
गुरमुखि सिख सोई जनु पाए जिस नो नदरि करे करतारु ॥३॥ (१२५६-३, मलार, मः १)
काइआ महलु मंदरु घरु हरि का तिसु महि राखी जोति अपार ॥ (१२५६-३, मलार, मः १)
नानक गुरमुखि महलि बुलाईऐ हरि मेले मेलणहार ॥४॥५॥ (१२५६-४, मलार, मः १)
मलार महला १ घरु २ (१२५६-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२५६-६)
पवणै पाणी जाणै जाति ॥ (१२५६-७, मलार, मः १)
काइआँ अगनि करे निभराँति ॥ (१२५६-७, मलार, मः १)
जम्महि जीअ जाणै जे थाउ ॥ (१२५६-७, मलार, मः १)
सुरता पंडितु ता का नाउ ॥१॥ (१२५६-७, मलार, मः १)
गुण गोबिंद न जाणीअहि माइ ॥ (१२५६-८, मलार, मः १)
अणडीठा किछु कहणु न जाइ ॥ (१२५६-८, मलार, मः १)
किआ करि आखि वखाणीऐ माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५६-८, मलार, मः १)
ऊपरि दरि असमानि पइआलि ॥ (१२५६-९, मलार, मः १)
किउ करि कहीऐ देहु वीचारि ॥ (१२५६-९, मलार, मः १)
बिनु जिहवा जो जपै हिआइ ॥ (१२५६-१०, मलार, मः १)
कोई जाणै कैसा नाउ ॥२॥ (१२५६-१०, मलार, मः १)
कथनी बदनी रहै निभराँति ॥ (१२५६-१०, मलार, मः १)
सो बूझै होवै जिसु दाति ॥ (१२५६-११, मलार, मः १)
अहिनिसि अंतरि रहै लिव लाइ ॥ (१२५६-११, मलार, मः १)
सोई पुरखु जि सचि समाइ ॥३॥ (१२५६-११, मलार, मः १)
जाति कुलीनु सेवकु जे होइ ॥ (१२५६-११, मलार, मः १)
ता का कहणा कहहु न कोइ ॥ (१२५६-१२, मलार, मः १)
विचि सनातंी सेवकु होइ ॥ (१२५६-१२, मलार, मः १)
नानक पण्हीआ पहिरै सोइ ॥४॥१॥६॥ (१२५६-१२, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२५६-१३)
दुखु वेछोड़ा इकु दुखु भूख ॥ (१२५६-१३, मलार, मः १)
इकु दुखु सकतवार जमदूत ॥ (१२५६-१३, मलार, मः १)
इकु दुखु रोगु लगै तनि धाइ ॥ (१२५६-१४, मलार, मः १)
वैद न भोले दारू लाइ ॥१॥ (१२५६-१४, मलार, मः १)
वैद न भोले दारू लाइ ॥ (१२५६-१४, मलार, मः १)
दरदु होवै दुखु रहै सरीर ॥ (१२५६-१४, मलार, मः १)
ऐसा दारू लगै न बीर ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५६-१५, मलार, मः १)
खसमु विसारि कीए रस भोग ॥ (१२५६-१५, मलार, मः १)

ताँ तनि उठि खलोए रोग ॥ (१२५६-१५, मलार, मः १)
मन अंधे कउ मिलै सजाइ ॥ (१२५६-१६, मलार, मः १)
वैद न भोले दारू लाइ ॥२॥ (१२५६-१६, मलार, मः १)
चंदन का फलु चंदन वासु ॥ (१२५६-१६, मलार, मः १)
माणस का फलु घट महि सासु ॥ (१२५६-१७, मलार, मः १)
सासि गइऐ काइआ ढलि पाइ ॥ (१२५६-१७, मलार, मः १)
ता कै पाछै कोइ न खाइ ॥३॥ (१२५६-१७, मलार, मः १)
कंचन काइआ निर्मल हंसु ॥ (१२५६-१८, मलार, मः १)
जिसु महि नामु निरंजन अंसु ॥ (१२५६-१८, मलार, मः १)
दूख रोग सभि गइआ गवाइ ॥ (१२५६-१८, मलार, मः १)
नानक छूटसि साचै नाइ ॥४॥२॥७॥ (१२५६-१९, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२५६-१९)
दुख महुरा मारण हरि नामु ॥ (१२५६-१९, मलार, मः १)
सिला संतोख पीसणु हथि दानु ॥ (१२५६-१९, मलार, मः १)

पन्ना १२५७

नित नित लेहु न छीजै देह ॥ (१२५७-१, मलार, मः १)
अंत कालि जमु मारै ठेह ॥१॥ (१२५७-१, मलार, मः १)
ऐसा दारू खाहि गवार ॥ (१२५७-१, मलार, मः १)
जितु खाधै तेरे जाहि विकार ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५७-२, मलार, मः १)
राजु मालु जोबनु सभु छाँव ॥ (१२५७-२, मलार, मः १)
रथि फिरंदै दीसहि थाव ॥ (१२५७-२, मलार, मः १)
देह न नाउ न होवै जाति ॥ (१२५७-३, मलार, मः १)
ओथै दिहु ऐथै सभ राति ॥२॥ (१२५७-३, मलार, मः १)
साद करि समधाँ तृसना घिउ तेलु ॥ (१२५७-३, मलार, मः १)
कामु क्रोधु अगनी सिउ मेलु ॥ (१२५७-४, मलार, मः १)
होम जग अरु पाठ पुराण ॥ (१२५७-४, मलार, मः १)
जो तिसु भावै सो परवाण ॥३॥ (१२५७-४, मलार, मः १)
तपु कागदु तेरा नामु नीसानु ॥ (१२५७-५, मलार, मः १)
जिन कउ लिखिआ एहु निधानु ॥ (१२५७-५, मलार, मः १)
से धनवंत दिसहि घरि जाइ ॥ (१२५७-५, मलार, मः १)
नानक जननी धन्नी माइ ॥४॥३॥८॥ (१२५७-६, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२५७-६)
बागे कापड़ बोलै बैण ॥ (१२५७-६, मलार, मः १)
लम्मा नकु काले तेरे नैण ॥ (१२५७-६, मलार, मः १)

कबहूं साहिबु देखिआ भैण ॥१॥ (१२५७-७, मलार, मः १)
ऊडाँ ऊडि चड़ाँ असमानि ॥ (१२५७-७, मलार, मः १)
साहिब सम्मृथ तेरै ताणि ॥ (१२५७-७, मलार, मः १)
जलि थलि डूंगरि देखाँ तीर ॥ (१२५७-८, मलार, मः १)
थान थनंतरि साहिबु बीर ॥२॥ (१२५७-८, मलार, मः १)
जिनि तनु साजि दीए नालि खम्भ ॥ (१२५७-८, मलार, मः १)
अति तृसना उडणै की डंझ ॥ (१२५७-९, मलार, मः १)
नदरि करे ताँ बंधाँ धीर ॥ (१२५७-९, मलार, मः १)
जिउ वेखाले तिउ वेखाँ बीर ॥३॥ (१२५७-९, मलार, मः १)
न इहु तनु जाइगा न जाहिगे खम्भ ॥ (१२५७-९, मलार, मः १)
पउणै पाणी अगनी का सनबंध ॥ (१२५७-१०, मलार, मः १)
नानक करमु होवै जपीऐ करि गुरु पीरु ॥ (१२५७-१०, मलार, मः १)
सचि समावै एहु सरीरु ॥४॥४॥६॥ (१२५७-११, मलार, मः १)
मलार महला ३ चउपदे घरु १ (१२५७-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२५७-१२)
निरंकारु आकारु है आपे आपे भरमि भुलाए ॥ (१२५७-१३, मलार, मः ३)
करि करि करता आपे वेखै जितु भावै तितु लाए ॥ (१२५७-१३, मलार, मः ३)
सेवक कउ एहा वडिआई जा कउ हुकमु मनाए ॥१॥ (१२५७-१४, मलार, मः ३)
आपणा भाणा आपे जाणै गुर किरपा ते लहीऐ ॥ (१२५७-१४, मलार, मः ३)
एहा सकति सिवै घरि आवै जीवदिआ मरि रहीऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५७-१५, मलार, मः ३)
वेद पड़ै पड़ि वादु वखाणै ब्रह्मा बिसनु महेसा ॥ (१२५७-१५, मलार, मः ३)
एह तृगुण माइआ जिनि जगतु भुलाइआ जनम मरण का सहसा ॥ (१२५७-१६, मलार, मः ३)
गुर परसादी एको जाणै चूकै मनहु अंदेसा ॥२॥ (१२५७-१७, मलार, मः ३)
हम दीन मूरख अवीचारी तुम चिंता करहु हमारी ॥ (१२५७-१७, मलार, मः ३)
होहु दइआल करि दासु दासा का सेवा करी तुमारी ॥ (१२५७-१८, मलार, मः ३)
एकु निधानु देहि तू अपणा अहिनिसि नामु वखाणी ॥३॥ (१२५७-१८, मलार, मः ३)
कहत नानकु गुर परसादी बूझहु कोई ऐसा करे वीचारा ॥ (१२५७-१९, मलार, मः ३)
जिउ जल ऊपरि फेनु बुदबुदा तैसा इहु संसारा ॥ (१२५७-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२५८

जिस ते होआ तिसहि समाणा चूकि गइआ पासारा ॥४॥१॥ (१२५८-१, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२५८-१)
जिनी हुकमु पछाणिआ से मेले हउमै सबदि जलाइ ॥ (१२५८-२, मलार, मः ३)
सची भगति करहि दिनु राती सचि रहे लिव लाइ ॥ (१२५८-२, मलार, मः ३)
सदा सचु हरि वेखदे गुर कै सबदि सुभाइ ॥१॥ (१२५८-३, मलार, मः ३)

मन रे हुकमु मंनि सुखु होइ ॥ (१२५८-३, मलार, मः ३)
प्रभ भाणा अपणा भावदा जिसु बखसे तिसु बिघनु न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५८-३, मलार, मः ३)
त्रै गुण सभा धातु है ना हरि भगति न भाइ ॥ (१२५८-४, मलार, मः ३)
गति मुकति कदे न होवई हउमै कर्म कमाहि ॥ (१२५८-५, मलार, मः ३)
साहिब भावै सो थीऐ पइऐ किरति फिराहि ॥२॥ (१२५८-५, मलार, मः ३)
सतिगुर भेटिऐ मनु मरि रहै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (१२५८-६, मलार, मः ३)
तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ (१२५८-६, मलार, मः ३)
चउथै पदि वासा होइआ सचै रहै समाइ ॥३॥ (१२५८-७, मलार, मः ३)
मेरा हरि प्रभु अगमु अगोचरु है कीमति कहणु न जाइ ॥ (१२५८-७, मलार, मः ३)
गुर परसादी बुझीऐ सबदे कार कमाइ ॥ (१२५८-८, मलार, मः ३)
नानक नामु सलाहि तू हरि हरि दरि सोभा पाइ ॥४॥२॥ (१२५८-८, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२५८-९)
गुरमुखि कोई विरला बूझै जिस नो नदरि करेइ ॥ (१२५८-९, मलार, मः ३)
गुर बिनु दाता कोई नाही बखसे नदरि करेइ ॥ (१२५८-९, मलार, मः ३)
गुर मिलिऐ साँति ऊपजै अनदिनु नामु लएइ ॥१॥ (१२५८-१०, मलार, मः ३)
मेरे मन हरि अमृत नामु धिआइ ॥ (१२५८-११, मलार, मः ३)
सतिगुरु पुरखु मिलै नाउ पाईऐ हरि नामे सदा समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५८-११, मलार, मः ३)
मनमुख सदा विछुड़े फिरहि कोइ न किस ही नालि ॥ (१२५८-१२, मलार, मः ३)
हउमै वडा रोगु है सिरि मारे जमकालि ॥ (१२५८-१२, मलार, मः ३)
गुरमति सतसंगति न विछुड़हि अनदिनु नामु सम्हालि ॥२॥ (१२५८-१३, मलार, मः ३)
सभना करता एकु तू नित करि देखहि वीचारु ॥ (१२५८-१३, मलार, मः ३)
इकि गुरमुखि आपि मिलाइआ बखसे भगति भंडार ॥ (१२५८-१४, मलार, मः ३)
तू आपे सभु किछु जाणदा किसु आगै करी पूकार ॥३॥ (१२५८-१४, मलार, मः ३)
हरि हरि नामु अमृतु है नदरी पाइआ जाइ ॥ (१२५८-१५, मलार, मः ३)
अनदिनु हरि हरि उचरै गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (१२५८-१५, मलार, मः ३)
नानक नामु निधानु है नामे ही चितु लाइ ॥४॥३॥ (१२५८-१६, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२५८-१६)
गुरु सालाही सदा सुखदाता प्रभु नाराइणु सोई ॥ (१२५८-१६, मलार, मः ३)
गुर परसादि पर्म पदु पाइआ वडी वडिआई होई ॥ (१२५८-१७, मलार, मः ३)
अनदिनु गुण गावै नित साचे सचि समावै सोई ॥१॥ (१२५८-१८, मलार, मः ३)
मन रे गुरमुखि रिदै वीचारि ॥ (१२५८-१८, मलार, मः ३)
तजि कूड़ु कुटम्बु हउमै बिखु तृसना चलणु रिदै सम्हालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५८-१८, मलार, मः ३)
सतिगुरु दाता राम नाम का होरु दाता कोई नाही ॥ (१२५८-१९, मलार, मः ३)

जीअ दानु देइ तृपतासे सचै नामि समाही ॥ (१२५६-१, मलार, मः ३)
अनदिनु हरि रविआ रिद अंतरि सहजि समाधि लगाही ॥२॥ (१२५६-१, मलार, मः ३)
सतिगुर सबदी इहु मनु भेदिआ हिरदै साची बाणी ॥ (१२५६-२, मलार, मः ३)
मेरा प्रभु अलखु न जाई लखिआ गुरमुखि अकथ कहाणी ॥ (१२५६-२, मलार, मः ३)
आपे दइआ करे सुखदाता जपीऐ सारिंगपाणी ॥३॥ (१२५६-३, मलार, मः ३)
आवण जाणा बहुड़ि न होवै गुरमुखि सहजि धिआइआ ॥ (१२५६-४, मलार, मः ३)
मन ही ते मनु मिलिआ सुआमी मन ही मन्नु समाइआ ॥ (१२५६-४, मलार, मः ३)
साचे ही सचु साचि पतीजै विचहु आपु गवाइआ ॥४॥ (१२५६-५, मलार, मः ३)
एको एकु वसै मनि सुआमी दूजा अवरु न कोई ॥ (१२५६-५, मलार, मः ३)
एको नामु अमृतु है मीठा जगि निर्मल सचु सोई ॥ (१२५६-६, मलार, मः ३)
नानक नामु प्रभू ते पाईऐ जिन कउ धुरि लिखिआ होई ॥५॥४॥ (१२५६-६, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२५६-७)
गण गंधरब नामे सभि उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ (१२५६-७, मलार, मः ३)
हउमै मारि सद मंनि वसाइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ (१२५६-८, मलार, मः ३)
जिसहि बुझाए सोई बूझै जिस नो आपे लए मिलाइ ॥ (१२५६-८, मलार, मः ३)
अनदिनु बाणी सबदे गाँवै साचि रहै लिव लाइ ॥१॥ (१२५६-९, मलार, मः ३)
मन मेरे खिनु खिनु नामु सम्हालि ॥ (१२५६-९, मलार, मः ३)
गुर की दाति सबद सुखु अंतरि सदा निबहै तेरै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५६-१०, मलार, मः ३)
मनमुख पाखंडु कदे न चूकै दूजै भाइ दुखु पाए ॥ (१२५६-१०, मलार, मः ३)
नामु विसारि बिखिआ मनि राते बिरथा जनमु गवाए ॥ (१२५६-११, मलार, मः ३)
इह वेला फिरि हथि न आवै अनदिनु सदा पछुताए ॥ (१२५६-११, मलार, मः ३)
मरि मरि जनमै कदे न बूझै विसटा माहि समाए ॥२॥ (१२५६-१२, मलार, मः ३)
गुरमुखि नामि रते से उधरे गुर का सबदु वीचारि ॥ (१२५६-१३, मलार, मः ३)
जीवन मुकति हरि नामु धिआइआ हरि राखिआ उरि धारि ॥ (१२५६-१३, मलार, मः ३)
मनु तनु निरमलु निर्मल मति ऊतम ऊतम बाणी होई ॥ (१२५६-१४, मलार, मः ३)
एको पुरखु एकु प्रभु जाता दूजा अवरु न कोई ॥३॥ (१२५६-१४, मलार, मः ३)
आपे करे कराए प्रभु आपे आपे नदरि करेइ ॥ (१२५६-१५, मलार, मः ३)
मनु तनु राता गुर की बाणी सेवा सुरति समेइ ॥ (१२५६-१५, मलार, मः ३)
अंतरि वसिआ अलख अभेवा गुरमुखि होइ लखाइ ॥ (१२५६-१६, मलार, मः ३)
नानक जिसु भावै तिसु आपे देवै भावै तिवै चलाइ ॥४॥५॥ (१२५६-१६, मलार, मः ३)
मलार महला ३ दुतुके ॥ (१२५६-१७)
सतिगुर ते पावै घरु दरु महलु सु थानु ॥ (१२५६-१७, मलार, मः ३)
गुर सबदी चूकै अभिमानु ॥१॥ (१२५६-१८, मलार, मः ३)

जिन कउ लिलाटि लिखिआ धुरि नामु ॥ (१२५६-१८, मलार, मः ३)
अनदिनु नामु सदा सदा धिआवहि साची दरगह पावहि मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२५६-१८, मलार, मः ३)
मन की बिधि सतिगुर ते जाणै अनदिनु लागै सद हरि सिउ धिआनु ॥ (१२५६-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२६०

गुर सबदि रते सदा बैरागी हरि दरगह साची पावहि मानु ॥२॥ (१२६०-१, मलार, मः ३)
इहु मनु खेलै हुकम का बाधा इक खिन महि दह दिस फिरि आवै ॥ (१२६०-२, मलार, मः ३)
जाँ आपे नदरि करे हरि प्रभु साचा ताँ इहु मनु गुरमुखि ततकाल वसि आवै ॥३॥ (१२६०-२, मलार, मः ३)
इसु मन की बिधि मन हू जाणै बूझै सबदि वीचारि ॥ (१२६०-३, मलार, मः ३)
नानक नामु धिआइ सदा तू भव सागरु जितु पावहि पारि ॥४॥६॥ (१२६०-४, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२६०-४)
जीउ पिंडु प्राण सभि तिस के घटि घटि रहिआ समाई ॥ (१२६०-५, मलार, मः ३)
एकसु बिनु मै अवरु न जाणा सतिगुरि दीआ बुझाई ॥१॥ (१२६०-५, मलार, मः ३)
मन मेरे नामि रहउ लिव लाई ॥ (१२६०-६, मलार, मः ३)
अदिसटु अगोचरु अपरम्परु करता गुर कै सबदि हरि धिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६०-६, मलार, मः ३)
मनु तनु भीजै एक लिव लागै सहजे रहे समाई ॥ (१२६०-७, मलार, मः ३)
गुर परसादी भ्रमु भउ भागै एक नामि लिव लाई ॥२॥ (१२६०-७, मलार, मः ३)
गुर बचनी सचु कार कमावै गति मति तब ही पाई ॥ (१२६०-८, मलार, मः ३)
कोटि मधे किसहि बुझाए तिनि राम नामि लिव लाई ॥३॥ (१२६०-८, मलार, मः ३)
जह जह देखा तह एको सोई इह गुरमति बुधि पाई ॥ (१२६०-९, मलार, मः ३)
मनु तनु प्रान धरीं तिसु आगै नानक आपु गवाई ॥४॥७॥ (१२६०-९, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२६०-१०)
मेरा प्रभु साचा दूख निवारणु सबदे पाइआ जाई ॥ (१२६०-१०, मलार, मः ३)
भगती राते सद बैरागी दरि साचै पति पाई ॥१॥ (१२६०-११, मलार, मः ३)
मन रे मन सिउ रहउ समाई ॥ (१२६०-११, मलार, मः ३)
गुरमुखि राम नामि मनु भीजै हरि सेती लिव लाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६०-१२, मलार, मः ३)
मेरा प्रभु अति अगम अगोचरु गुरमति देइ बुझाई ॥ (१२६०-१२, मलार, मः ३)
सचु संजमु करणी हरि कीरति हरि सेती लिव लाई ॥२॥ (१२६०-१३, मलार, मः ३)
आपे सबदु सचु साखी आपे जिनु जोती जोति मिलाई ॥ (१२६०-१४, मलार, मः ३)
देही काची पउणु वजाए गुरमुखि अमृतु पाई ॥३॥ (१२६०-१४, मलार, मः ३)
आपे साजे सभ कारै लाए सो सचु रहिआ समाई ॥ (१२६०-१५, मलार, मः ३)
नानक नाम बिना कोई किछु नाही नामे देइ वडाई ॥४॥८॥ (१२६०-१५, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२६०-१६)
हउमै बिखु मनु मोहिआ लदिआ अजगर भारी ॥ (१२६०-१६, मलार, मः ३)
गरुड़ु सबदु मुखि पाइआ हउमै बिखु हरि मारी ॥१॥ (१२६०-१६, मलार, मः ३)

मन रे हउमै मोहु दुखु भारी ॥ (१२६०-१७, मलार, मः ३)
इहु भवजलु जगतु न जाई तरणा गुरमुखि तरु हरि तारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६०-१७, मलार, मः ३)
त्रै गुण माइआ मोहु पसारा सभ वरतै आकारी ॥ (१२६०-१८, मलार, मः ३)
तुरीआ गुणु सतसंगति पाईऐ नदरी पारि उतारी ॥२॥ (१२६०-१९, मलार, मः ३)
चंदन गंध सुगंध है बहु बासना बहकारि ॥ (१२६०-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२६१

हरि जन करणी ऊतम है हरि कीरति जगि बिसथारि ॥३॥ (१२६१-१, मलार, मः ३)
कृपा कृपा करि ठाकुर मेरे हरि हरि हरि उर धारि ॥ (१२६१-१, मलार, मः ३)
नानक सतिगुरु पूरा पाइआ मनि जपिआ नामु मुरारि ॥४॥६॥ (१२६१-२, मलार, मः ३)
मलार महला ३ घरु २ (१२६१-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६१-३)
इहु मनु गिरही कि इहु मनु उदासी ॥ (१२६१-४, मलार, मः ३)
कि इहु मनु अवरनु सदा अविनासी ॥ (१२६१-४, मलार, मः ३)
कि इहु मनु चंचलु कि इहु मनु बैरागी ॥ (१२६१-४, मलार, मः ३)
इसु मन कउ ममता किथहु लागी ॥१॥ (१२६१-५, मलार, मः ३)
पंडित इसु मन का करहु बीचारु ॥ (१२६१-५, मलार, मः ३)
अवरु कि बहुता पड़हि उठावहि भारु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६१-६, मलार, मः ३)
माइआ ममता करतै लाई ॥ (१२६१-६, मलार, मः ३)
एहु हुकमु करि सृसटि उपाई ॥ (१२६१-६, मलार, मः ३)
गुर परसादी बूझहु भाई ॥ (१२६१-७, मलार, मः ३)
सदा रहहु हरि की सरणाई ॥२॥ (१२६१-७, मलार, मः ३)
सो पंडितु जो तिहाँ गुणा की पंड उतारै ॥ (१२६१-७, मलार, मः ३)
अनदिनु एको नामु वखाणै ॥ (१२६१-८, मलार, मः ३)
सतिगुर की ओहु दीखिआ लेइ ॥ (१२६१-८, मलार, मः ३)
सतिगुर आगै सीसु धरेइ ॥ (१२६१-८, मलार, मः ३)
सदा अलगु रहै निरबाणु ॥ (१२६१-९, मलार, मः ३)
सो पंडितु दरगह परवाणु ॥३॥ (१२६१-९, मलार, मः ३)
सभनाँ महि एको एकु वखाणै ॥ (१२६१-९, मलार, मः ३)
जाँ एको वेखै ताँ एको जाणै ॥ (१२६१-१०, मलार, मः ३)
जा कउ बखसे मेले सोइ ॥ (१२६१-१०, मलार, मः ३)
ऐथै ओथै सदा सुखु होइ ॥४॥ (१२६१-१०, मलार, मः ३)
कहत नानकु कवन बिधि करे किआ कोइ ॥ (१२६१-१०, मलार, मः ३)
सोई मुकति जा कउ किरपा होइ ॥ (१२६१-११, मलार, मः ३)
अनदिनु हरि गुण गावै सोइ ॥ (१२६१-११, मलार, मः ३)

सासत्र बेद की फिरि कूक न होइ ॥५॥१॥१०॥ (१२६१-१२, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२६१-१२)
भ्रमि भ्रमि जोनि मनमुख भरमाई ॥ (१२६१-१२, मलार, मः ३)
जमकालु मारे नित पति गवाई ॥ (१२६१-१३, मलार, मः ३)
सतिगुर सेवा जम की काणि चुकाई ॥ (१२६१-१३, मलार, मः ३)
हरि प्रभु मिलिआ महलु घरु पाई ॥१॥ (१२६१-१३, मलार, मः ३)
प्राणी गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (१२६१-१४, मलार, मः ३)
जनमु पदारथु दुबिधा खोइआ कउडी बदलै जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६१-१४, मलार, मः ३)
करि किरपा गुरमुखि लगै पिआरु ॥ (१२६१-१५, मलार, मः ३)
अंतरि भगति हरि हरि उरि धारु ॥ (१२६१-१५, मलार, मः ३)
भवजलु सबदि लंघावणहारु ॥ (१२६१-१५, मलार, मः ३)
दरि साचै दिसै सचिआरु ॥२॥ (१२६१-१६, मलार, मः ३)
बहु कर्म करे सतिगुरु नही पाइआ ॥ (१२६१-१६, मलार, मः ३)
बिनु गुर भरमि भूले बहु माइआ ॥ (१२६१-१६, मलार, मः ३)
हउमै ममता बहु मोहु वधाइआ ॥ (१२६१-१७, मलार, मः ३)
दूजै भाइ मनमुखि दुखु पाइआ ॥३॥ (१२६१-१७, मलार, मः ३)
आपे करता अगम अथाहा ॥ (१२६१-१८, मलार, मः ३)
गुर सबदी जपीऐ सचु लाहा ॥ (१२६१-१८, मलार, मः ३)
हाजरु हजूरि हरि वेपरवाहा ॥ (१२६१-१८, मलार, मः ३)

पन्ना १२६२

नानक गुरमुखि नामि समाहा ॥४॥२॥११॥ (१२६२-१, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२६२-१)
जीवत मुकत गुरमती लागे ॥ (१२६२-१, मलार, मः ३)
हरि की भगति अनदिनु सद जागे ॥ (१२६२-२, मलार, मः ३)
सतिगुरु सेवहि आपु गवाइ ॥ (१२६२-२, मलार, मः ३)
हउ तिन जन के सद लागउ पाइ ॥१॥ (१२६२-२, मलार, मः ३)
हउ जीवाँ सदा हरि के गुण गाई ॥ (१२६२-३, मलार, मः ३)
गुर का सबदु महा रसु मीठा हरि कै नामि मुकति गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६२-३, मलार, मः ३)
माइआ मोहु अगिआनु गुबारु ॥ (१२६२-४, मलार, मः ३)
मनमुख मोहे मुगध गवार ॥ (१२६२-४, मलार, मः ३)
अनदिनु धंधा करत विहाइ ॥ (१२६२-४, मलार, मः ३)
मरि मरि जम्महि मिलै सजाइ ॥२॥ (१२६२-५, मलार, मः ३)
गुरमुखि राम नामि लिव लाई ॥ (१२६२-५, मलार, मः ३)
कूड़ै लालचि ना लपटाई ॥ (१२६२-५, मलार, मः ३)

जो किछु होवै सहजि सुभाइ ॥ (१२६२-६, मलार, मः ३)
हरि रसु पीवै रसन रसाइ ॥३॥ (१२६२-६, मलार, मः ३)
कोटि मधे किसहि बुझाई ॥ (१२६२-६, मलार, मः ३)
आपे बखसे दे वडिआई ॥ (१२६२-७, मलार, मः ३)
जो धुरि मिलिआ सु विछुड़ि न जाई ॥ (१२६२-७, मलार, मः ३)
नानक हरि हरि नामि समाई ॥४॥३॥१२॥ (१२६२-७, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२६२-८)
रसना नामु सभु कोई कहै ॥ (१२६२-८, मलार, मः ३)
सतिगुरु सेवे ता नामु लहै ॥ (१२६२-८, मलार, मः ३)
बंधन तोड़े मुकति घरि रहै ॥ (१२६२-९, मलार, मः ३)
गुर सबदी असथिरु घरि बहै ॥१॥ (१२६२-९, मलार, मः ३)
मेरे मन काहे रोसु करीजै ॥ (१२६२-९, मलार, मः ३)
लाहा कलजुगि राम नामु है गुरमति अनदिनु हिरदै रवीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६२-९, मलार, मः ३)
बाबीहा खिनु खिनु बिललाइ ॥ (१२६२-१०, मलार, मः ३)
बिनु पिर देखे नींद न पाइ ॥ (१२६२-११, मलार, मः ३)
इहु वेछोड़ा सहिआ न जाइ ॥ (१२६२-११, मलार, मः ३)
सतिगुरु मिलै ताँ मिलै सुभाइ ॥२॥ (१२६२-११, मलार, मः ३)
नामहीणु बिनसै दुखु पाइ ॥ (१२६२-१२, मलार, मः ३)
तृसना जलिआ भूख न जाइ ॥ (१२६२-१२, मलार, मः ३)
विणु भागा नामु न पाइआ जाइ ॥ (१२६२-१२, मलार, मः ३)
बहु बिधि थाका कर्म कमाइ ॥३॥ (१२६२-१३, मलार, मः ३)
त्रै गुण बाणी बेद बीचारु ॥ (१२६२-१३, मलार, मः ३)
बिखिआ मैलु बिखिआ वापारु ॥ (१२६२-१३, मलार, मः ३)
मरि जनमहि फिरि होहि खुआरु ॥ (१२६२-१४, मलार, मः ३)
गुरमुखि तुरीआ गुणु उरि धारु ॥४॥ (१२६२-१४, मलार, मः ३)
गुरु मानै मानै सभु कोइ ॥ (१२६२-१४, मलार, मः ३)
गुर बचनी मनु सीतलु होइ ॥ (१२६२-१५, मलार, मः ३)
चहु जुगि सोभा निर्मल जनु सोइ ॥ (१२६२-१५, मलार, मः ३)
नानक गुरमुखि विरला कोइ ॥५॥४॥१३॥९॥१३॥२२॥ (१२६२-१५, मलार, मः ३)
रागु मलार महला ४ घरु १ चउपदे (१२६२-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६२-१७)
अनदिनु हरि हरि धिआइओ हिरदै मति गुरमति दूख विसारी ॥ (१२६२-१८, मलार, मः ४)
सभ आसा मनसा बंधन तूटे हरि हरि प्रभि किरपा धारी ॥१॥ (१२६२-१८, मलार, मः ४)
नैनी हरि हरि लागी तारी ॥ (१२६२-१९, मलार, मः ४)
सतिगुरु देखि मेरा मनु बिगसिओ जनु हरि भेटिओ बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६२-१९, मलार, मः ४)

जिनि ऐसा नामु विसारिआ मेरा हरि हरि तिस कै कुलि लागी गारी ॥ (१२६३-१, मलार, मः ४)
हरि तिस कै कुलि परसूति न करीअहु तिसु बिधवा करि महतारी ॥२॥ (१२६३-२, मलार, मः ४)
हरि हरि आनि मिलावहु गुरु साधू जिसु अहिनिसि हरि उरि धारी ॥ (१२६३-२, मलार, मः ४)
गुरि डीठै गुर का सिखु बिगसै जिउ बारिकु देखि महतारी ॥३॥ (१२६३-३, मलार, मः ४)
धन पिर का इक ही संगि वासा विचि हउमै भीति करारी ॥ (१२६३-४, मलार, मः ४)
गुरि पूरै हउमै भीति तोरी जन नानक मिले बनवारी ॥४॥१॥ (१२६३-४, मलार, मः ४)
मलार महला ४ ॥ (१२६३-५)
गंगा जमुना गोदावरी सरसुती ते करहि उदमु धूरि साधू की ताई ॥ (१२६३-५, मलार, मः ४)
किलविख मैलु भरे परे हमरै विचि हमरी मैलु साधू की धूरि गवाई ॥१॥ (१२६३-६, मलार, मः ४)
तीरथि अठसठि मजनु नाई ॥ (१२६३-७, मलार, मः ४)
सतसंगति की धूरि परी उडि नेत्री सभ दुरमति मैलु गवाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६३-७, मलार, मः ४)
जाहरनवी तपै भागीरथि आणी केदारु थापिओ महसाई ॥ (१२६३-८, मलार, मः ४)
काँसी कृसनु चरावत गाऊ मिलि हरि जन सोभा पाई ॥२॥ (१२६३-८, मलार, मः ४)
जितने तीर्थ देवी थापे सभि तितने लोचहि धूरि साधू की ताई ॥ (१२६३-९, मलार, मः ४)
हरि का संतु मिलै गुर साधू लै तिस की धूरि मुखि लाई ॥३॥ (१२६३-१०, मलार, मः ४)
जितनी सृसटि तुमरी मेरे सुआमी सभ तितनी लोचै धूरि साधू की ताई ॥ (१२६३-१०, मलार, मः ४)
नानक लिलाटि होवै जिसु लिखिआ तिसु साधू धूरि दे हरि पारि लंघाई ॥४॥२॥ (१२६३-११, मलार, मः ४)
मलार महला ४ ॥ (१२६३-१२)
तिसु जन कउ हरि मीठ लगाना जिसु हरि हरि कृपा करै ॥ (१२६३-१२, मलार, मः ४)
तिस की भूख दूख सभि उतरै जो हरि गुण हरि उचरै ॥१॥ (१२६३-१३, मलार, मः ४)
जपि मन हरि हरि हरि निसतरै ॥ (१२६३-१३, मलार, मः ४)
गुर के बचन करन सुनि धिआवै भव सागरु पारि परै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६३-१३, मलार, मः ४)
तिसु जन के हम हाटि बिहाझे जिसु हरि हरि कृपा करै ॥ (१२६३-१४, मलार, मः ४)
हरि जन कउ मिलिआँ सुखु पाईऐ सभ दुरमति मैलु हरै ॥२॥ (१२६३-१५, मलार, मः ४)
हरि जन कउ हरि भूख लगानी जनु तृपतै जा हरि गुन बिचरै ॥ (१२६३-१५, मलार, मः ४)
हरि का जनु हरि जल का मीना हरि बिसरत फूटि मरै ॥३॥ (१२६३-१६, मलार, मः ४)
जिनि एह प्रीति लाई सो जानै कै जानै जिसु मनि धरै ॥ (१२६३-१७, मलार, मः ४)
जनु नानकु हरि देखि सुखु पावै सभ तन की भूख टरै ॥४॥३॥ (१२६३-१७, मलार, मः ४)
मलार महला ४ ॥ (१२६३-१८)
जितने जीअ जंत प्रभि कीने तितने सिरि कार लिखावै ॥ (१२६३-१८, मलार, मः ४)
हरि जन कउ हरि दीन्ह वडाई हरि जनु हरि कारै लावै ॥१॥ (१२६३-१९, मलार, मः ४)
सतिगुरु हरि हरि नामु दृड़ावै ॥ (१२६३-१९, मलार, मः ४)

हरि बोलहु गुर के सिख मेरे भाई हरि भउजलु जगतु तरावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६४-१, मलार, मः ४)
जो गुर कउ जनु पूजे सेवे सो जनु मेरे हरि प्रभ भावै ॥ (१२६४-१, मलार, मः ४)
हरि की सेवा सतिगुरु पूजहु करि किरपा आपि तरावै ॥२॥ (१२६४-२, मलार, मः ४)
भरमि भूले अगिआनी अंधुले भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै ॥ (१२६४-२, मलार, मः ४)
निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि सभ बिरथी घाल गवावै ॥३॥ (१२६४-३, मलार, मः ४)
ब्रह्मु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ हरि हरि कथा सुणावै ॥ (१२६४-४, मलार, मः ४)
तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटम्बर बहु बिधि सति करि मुखि संचहु तिसु पुन्न की फिरि तोटि न आवै ॥४॥ (१२६४-४, मलार, मः ४)
सतिगुरु देउ परतखि हरि मूरति जो अमृत बचन सुणावै ॥ (१२६४-५, मलार, मः ४)
नानक भाग भले तिसु जन के जो हरि चरणी चितु लावै ॥५॥४॥ (१२६४-६, मलार, मः ४)
मलार महला ४ ॥ (१२६४-७)
जिन्ह कै हीअरै बसिओ मेरा सतिगुरु ते संत भले भल भाँति ॥ (१२६४-७, मलार, मः ४)
तिन्ह देखे मेरा मनु बिगसै हउ तिन कै सद बलि जाँत ॥१॥ (१२६४-७, मलार, मः ४)
गिआनी हरि बोलहु दिनु राति ॥ (१२६४-८, मलार, मः ४)
तिन्ह की तृसना भूख सभ उतरी जो गुरमति राम रसु खाँति ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६४-८, मलार, मः ४)
हरि के दास साध सखा जन जिन मिलिआ लहि जाइ भराँति ॥ (१२६४-९, मलार, मः ४)
जिउ जल दुध भिन्न भिन्न काढै चुणि हंसुला तिउ देही ते चुणि काढै साधू हउमै ताति ॥२॥ (१२६४-१०, मलार, मः ४)
जिन कै प्रीति नाही हरि हिरदै ते कपटी नर नित कपटु कमाँति ॥ (१२६४-११, मलार, मः ४)
तिन कउ किआ कोई देइ खवालै ओइ आपि बीजि आपे ही खाँति ॥३॥ (१२६४-११, मलार, मः ४)
हरि का चिहनु सोई हरि जन का हरि आपे जन महि आपु रखाँति ॥ (१२६४-१२, मलार, मः ४)
धनु धन्नु गुरू नानकु समदरसी जिनि निंदा उसतति तरी तराँति ॥४॥५॥ (१२६४-१३, मलार, मः ४)
मलार महला ४ ॥ (१२६४-१४)
अगमु अगोचरु नामु हरि ऊतमु हरि किरपा ते जपि लइआ ॥ (१२६४-१४, मलार, मः ४)
सतसंगति साध पाई वडभागी संगि साधू पारि पइआ ॥१॥ (१२६४-१४, मलार, मः ४)
मेरै मनि अनदिनु अनदु भइआ ॥ (१२६४-१५, मलार, मः ४)
गुर परसादि नामु हरि जपिआ मेरे मन का भ्रमु भउ गइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६४-१५, मलार, मः ४)
जिन हरि गाइआ जिन हरि जपिआ तिन संगति हरि मेलहु करि मइआ ॥ (१२६४-१६, मलार, मः ४)
तिन का दरसु देखि सुखु पाइआ दुखु हउमै रोगु गइआ ॥२॥ (१२६४-१७, मलार, मः ४)
जो अनदिनु हिरदै नामु धिआवहि सभु जनमु तिना का सफलु भइआ ॥ (१२६४-१८, मलार, मः ४)
ओइ आपि तरे सृसटि सभ तारी सभु कुलु भी पारि पइआ ॥३॥ (१२६४-१८, मलार, मः ४)
तुधु आपे आपि उपाइआ सभु जगु तुधु आपे वसि करि लइआ ॥ (१२६४-१९, मलार, मः ४)

जन नानक कउ प्रभि किरपा धारी बिखु डुबदा काढि लइआ ॥४॥६॥ (१२६५-१, मलार, मः ४)
मलार महला ४ ॥ (१२६५-२)
गुर परसादी अमृतु नही पीआ तृसना भूख न जाई ॥ (१२६५-२, मलार, मः ४)
मनमुख मूड़्ह जलत अहंकारी हउमै विचि दुखु पाई ॥ (१२६५-२, मलार, मः ४)
आवत जात बिरथा जनमु गवाइआ दुखि लागै पछुताई ॥ (१२६५-३, मलार, मः ४)
जिस ते उपजे तिसहि न चेतहि ध्रिगु जीवणु ध्रिगु खाई ॥१॥ (१२६५-४, मलार, मः ४)
प्राणी गुरमुखि नामु धिआई ॥ (१२६५-४, मलार, मः ४)
हरि हरि कृपा करे गुरु मेले हरि हरि नामि समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६५-५, मलार, मः ४)
मनमुख जनमु भइआ है बिरथा आवत जात लजाई ॥ (१२६५-५, मलार, मः ४)
कामि क्रोधि डूबे अभिमानी हउमै विचि जलि जाई ॥ (१२६५-६, मलार, मः ४)
तिन सिधि न बुधि भई मति मधिम लोभ लहरि दुखु पाई ॥ (१२६५-६, मलार, मः ४)
गुर बिहून महा दुखु पाइआ जम पकरे बिललाई ॥२॥ (१२६५-७, मलार, मः ४)
हरि का नामु अगोचरु पाइआ गुरमुखि सहजि सुभाई ॥ (१२६५-८, मलार, मः ४)
नामु निधानु वसिआ घट अंतरि रसना हरि गुण गाई ॥ (१२६५-८, मलार, मः ४)
सदा अनंदि रहै दिनु राती एक सबदि लिव लाई ॥ (१२६५-९, मलार, मः ४)
नामु पदारथु सहजे पाइआ इह सतिगुर की वडिआई ॥३॥ (१२६५-९, मलार, मः ४)
सतिगुर ते हरि हरि मनि वसिआ सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥ (१२६५-१०, मलार, मः ४)
मनु तनु अरपि रखउ सभु आगै गुर चरणी चितु लाई ॥ (१२६५-११, मलार, मः ४)
अपणी कृपा करहु गुर पूरे आपे लैहु मिलाई ॥ (१२६५-११, मलार, मः ४)
हम लोह गुर नाव बोहिथा नानक पारि लंघाई ॥४॥७॥ (१२६५-१२, मलार, मः ४)
मलार महला ४ पड़ताल घरु ३ (१२६५-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६५-१३)
हरि जन बोलत स्रीराम नामा मिलि साधसंगति हरि तोर ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६५-१४, मलार, मः ४)
हरि धनु बनजहु हरि धनु संचहु जिसु लागत है नही चोर ॥१॥ (१२६५-१४, मलार, मः ४)
चातृक मोर बोलत दिनु राती सुनि घनिहर की घोर ॥२॥ (१२६५-१५, मलार, मः ४)
जो बोलत है मृग मीन पंखेरू सु बिनु हरि जापत है नही होर ॥३॥ (१२६५-१६, मलार, मः ४)
नानक जन हरि कीरति गाई छूटि गइओ जम का सभ सोर ॥४॥१॥८॥ (१२६५-१६, मलार, मः ४)
मलार महला ४ ॥ (१२६५-१७)
राम राम बोलि बोलि खोजते बडभागी ॥ (१२६५-१७, मलार, मः ४)
हरि का पंथु कोऊ बतावै हउ ता कै पाइ लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६५-१८, मलार, मः ४)
हरि हमारो मीतु सखाई हम हरि सिउ प्रीति लागी ॥ (१२६५-१८, मलार, मः ४)

हरि हम गावहि हरि हम बोलहि अउरु दुतीआ प्रीति हम तिआगी ॥१॥ (१२६६-१, मलार, मः ४)
मनमोहन मोरो प्रीतम रामु हरि परमानंदु बैरागी ॥ (१२६६-१, मलार, मः ४)
हरि देखे जीवत है नानकु इक निमख पलो मुखि लागी ॥२॥२॥६॥६॥१३॥६॥३१॥ (१२६६-२, मलार, मः ४)
रागु मलार महला ५ चउपदे घरु १ (१२६६-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६६-४)
किआ तू सोचहि किआ तू चितवहि किआ तूं करहि उपाए ॥ (१२६६-५, मलार, मः ५)
ता कउ कहहु परवाह काहू की जिह गोपाल सहाए ॥१॥ (१२६६-५, मलार, मः ५)
बरसै मेघु सखी घरि पाहुन आए ॥ (१२६६-६, मलार, मः ५)
मोहि दीन कृपा निधि ठाकुर नव निधि नामि समाए ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-६, मलार, मः ५)
अनिक प्रकार भोजन बहु कीए बहु बिंजन मिसटाए ॥ (१२६६-७, मलार, मः ५)
करी पाकसाल सोच पवित्रा हुणि लावहु भोगु हरि राए ॥२॥ (१२६६-७, मलार, मः ५)
दुसट बिदारे साजन रहसे इहि मंदिर घर अपनाए ॥ (१२६६-८, मलार, मः ५)
जउ गृहि लालु रंगीओ आइआ तउ मै सभि सुख पाए ॥३॥ (१२६६-८, मलार, मः ५)
संत सभा ओट गुर पूरे धुरि मसतकि लेखु लिखाए ॥ (१२६६-६, मलार, मः ५)
जन नानक कंतु रंगीला पाइआ फिरि दूखु न लागै आए ॥४॥१॥ (१२६६-१०, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६६-१०)
खीर अधारि बारिकु जब होता बिनु खीरै रहनु न जाई ॥ (१२६६-१०, मलार, मः ५)
सारि सम्हालि माता मुखि नीरै तब ओहु तृपति अघाई ॥१॥ (१२६६-११, मलार, मः ५)
हम बारिक पिता प्रभु दाता ॥ (१२६६-१२, मलार, मः ५)
भूलहि बारिक अनिक लख बरीआ अन ठउर नाही जह जाता ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-१२, मलार, मः ५)
चंचल मति बारिक बपुरे की सर्प अगनि कर मेलै ॥ (१२६६-१३, मलार, मः ५)
माता पिता कंठि लाइ राखै अनद सहजि तब खेलै ॥२॥ (१२६६-१३, मलार, मः ५)
जिस का पिता तू है मेरे सुआमी तिसु बारिक भूख कैसी ॥ (१२६६-१४, मलार, मः ५)
नव निधि नामु निधानु गृहि तेरै मनि बाँछै सो लैसी ॥३॥ (१२६६-१४, मलार, मः ५)
पिता कृपालि आगिआ इह दीनी बारिकु मुखि माँगै सो देना ॥ (१२६६-१५, मलार, मः ५)
नानक बारिकु दरसु प्रभ चाहै मोहि हृदै बसहि नित चरना ॥४॥२॥ (१२६६-१६, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६६-१७)
सगल बिधी जुरि आहरु करिआ तजिओ सगल अंदेसा ॥ (१२६६-१७, मलार, मः ५)
कारजु सगल अरंभिओ घर का ठाकुर का भारोसा ॥१॥ (१२६६-१७, मलार, मः ५)
सुनीऐ बाजै बाज सुहावी ॥ (१२६६-१८, मलार, मः ५)
भोरु भइआ मै पृअ मुख पेखे गृहि मंगल सुहलावी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-१८, मलार, मः ५)
मनूआ लाइ सवारे थानाँ पूछउ संता जाए ॥ (१२६६-१६, मलार, मः ५)
खोजत खोजत मै पाहुन मिलिओ भगति करउ निवि पाए ॥२॥ (१२६६-१६, मलार, मः ५)

जब प्रिअ आइ बसे ग्रिहि आसनि तब हम मंगलु गाइआ ॥ (१२६७-१, मलार, मः ५)
मीत साजन मेरे भए सुहेले प्रभु पूरा गुरू मिलाइआ ॥३॥ (१२६७-२, मलार, मः ५)
सखी सहेली भए अनंदा गुरि कारज हमरे पूरे ॥ (१२६७-२, मलार, मः ५)
कहु नानक वरु मिलिआ सुखदाता छोडि न जाई दूरे ॥४॥३॥ (१२६७-३, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६७-४)
राज ते कीट कीट ते सुरपति करि दोख जठर कउ भरते ॥ (१२६७-४, मलार, मः ५)
क्रिपा निधि छोडि आन कउ पूजहि आतम घाती हरते ॥१॥ (१२६७-४, मलार, मः ५)
हरि बिसरत ते दुखि दुखि मरते ॥ (१२६७-५, मलार, मः ५)
अनिक बार भ्रमहि बहु जोनी टेक न काहू धरते ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-५, मलार, मः ५)
तिआगि सुआमी आन कउ चितवत मूड़ मुगध खल खर ते ॥ (१२६७-६, मलार, मः ५)
कागर नाव लंघहि कत सागरु ब्रिथा कथत हम तरते ॥२॥ (१२६७-७, मलार, मः ५)
सिव बिरंचि असुर सुर जेते काल अगनि महि जरते ॥ (१२६७-७, मलार, मः ५)
नानक सरनि चरन कमलन की तुम्ह न डारहु प्रभ करते ॥३॥४॥ (१२६७-८, मलार, मः ५)
रागु मलार महला ५ दुपदे घरु १ (१२६७-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६७-९)
प्रभ मेरे ओइ बैरागी तिआगी ॥ (१२६७-१०, मलार, मः ५)
हउ इकु खिनु तिसु बिनु रहि न सकउ प्रीति हमारी लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-१०, मलार, मः ५)
उन कै संगि मोहि प्रभु चिति आवै संत प्रसादि मोहि जागी ॥ (१२६७-११, मलार, मः ५)
सुनि उपदेसु भए मन निरमल गुन गाए रंगि राँगी ॥१॥ (१२६७-११, मलार, मः ५)
इहु मनु देइ कीए संत मीता क्रिपाल भए बडभागीं ॥ (१२६७-१२, मलार, मः ५)
महा सुखु पाइआ बरनि न साकउ रेनु नानक जन पागी ॥२॥१॥५॥ (१२६७-१२, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६७-१३)
माई मोहि प्रीतमु देहु मिलाई ॥ (१२६७-१३, मलार, मः ५)
सगल सहेली सुख भरि सूती जिह घरि लालु बसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-१४, मलार, मः ५)
मोहि अवगन प्रभु सदा दइआला मोहि निरगुनि किआ चतुराई ॥ (१२६७-१४, मलार, मः ५)
करउ बराबरि जो प्रिअ संगि रातीं इह हउमै की ढीठाई ॥१॥ (१२६७-१५, मलार, मः ५)
भई निमाणी सरनि इक ताकी गुर सतिगुर पुरख सुखदाई ॥ (१२६७-१६, मलार, मः ५)
एक निमख महि मेरा सभु दुखु काटिआ नानक सुखि रैनि बिहाई ॥२॥२॥६॥ (१२६७-१६, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६७-१७)
बरसु मेघ जी तिलु बिलमु न लाउ ॥ (१२६७-१७, मलार, मः ५)
बरसु पिआरे मनहि सधारे होइ अनदु सदा मनि चाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-१८, मलार, मः ५)
हम तेरी धर सुआमीआ मेरे तू किउ मनहु बिसारे ॥ (१२६७-१८, मलार, मः ५)

इसत्री रूप चेरी की निआई सोभ नही बिनु भरतारे ॥१॥ (१२६८-१, मलार, मः ५)
बिनउ सुनिओ जब ठाकुर मेरै बेगि आइओ किरपा धारे ॥ (१२६८-२, मलार, मः ५)
कहु नानक मेरो बनिओ सुहागो पति सोभा भले अचारे ॥२॥३॥७॥ (१२६८-२, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६८-३)
प्रीतम साचा नामु धिआइ ॥ (१२६८-३, मलार, मः ५)
दूख दरद बिनसै भव सागरु गुर की मूरति रिदै बसाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-३, मलार, मः ५)
दुसमन हते दोखी सभि विआपे हरि सरणाई आइआ ॥ (१२६८-४, मलार, मः ५)
राखनहारै हाथ दे राखिओ नामु पदारथु पाइआ ॥१॥ (१२६८-५, मलार, मः ५)
करि किरपा किलविख सभि काटे नामु निरमलु मनि दीआ ॥ (१२६८-५, मलार, मः ५)
गुण निधानु नानक मनि वसिआ बाहुड़ि दूख न थीआ ॥२॥४॥८॥ (१२६८-६, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६८-७)
प्रभ मेरे प्रीतम प्रान पिआरे ॥ (१२६८-७, मलार, मः ५)
प्रेम भगति अपनो नामु दीजै दइआल अनुग्रहु धारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-७, मलार, मः ५)
सिमरउ चरन तुहारे प्रीतम रिदै तुहारी आसा ॥ (१२६८-८, मलार, मः ५)
संत जना पहि करउ बेनती मनि दरसन की पिआसा ॥१॥ (१२६८-८, मलार, मः ५)
बिछुरत मरनु जीवनु हरि मिलते जन कउ दरसनु दीजै ॥ (१२६८-९, मलार, मः ५)
नाम अधारु जीवन धनु नानक प्रभ मेरे किरपा कीजै ॥२॥५॥९॥ (१२६८-९, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६८-१०)
अब अपने प्रीतम सिउ बनि आई ॥ (१२६८-१०, मलार, मः ५)
राजा रामु रमत सुखु पाइओ बरसु मेघ सुखदाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-११, मलार, मः ५)
इकु पलु बिसरत नही सुख सागरु नामु नवै निधि पाई ॥ (१२६८-११, मलार, मः ५)
उदौतु भइओ पूरन भावी को भेटे संत सहाई ॥१॥ (१२६८-१२, मलार, मः ५)
सुख उपजे दुख सगल बिनासे पारब्रह्म लिव लाई ॥ (१२६८-१२, मलार, मः ५)
तरिओ संसारु कठिन भै सागरु हरि नानक चरन धिआई ॥२॥६॥१०॥ (१२६८-१३, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६८-१४)
घनिहर बरसि सगल जगु छाइआ ॥ (१२६८-१४, मलार, मः ५)
भए कृपाल प्रीतम प्रभ मेरे अनद मंगल सुख पाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-१४, मलार, मः ५)
मिटे कलेस तृसन सभ बूझी पारब्रह्मु मनि धिआइआ ॥ (१२६८-१५, मलार, मः ५)
साधसंगि जनम मरन निवारे बहुरि न कतहू धाइआ ॥१॥ (१२६८-१६, मलार, मः ५)
मनु तनु नामि निरंजनि रातउ चरन कमल लिव लाइआ ॥ (१२६८-१६, मलार, मः ५)
अंगीकारु कीओ प्रभि अपनै नानक दास सरणाइआ ॥२॥७॥११॥ (१२६८-१७, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६८-१८)
बिछुरत किउ जीवे ओइ जीवन ॥ (१२६८-१८, मलार, मः ५)

चितहि उलास आस मिलबे की चरन कमल रस पीवन ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-१८, मलार, मः ५)
जिन कउ पिआस तुमारी प्रीतम तिन कउ अंतरु नाही ॥ (१२६८-१९, मलार, मः ५)
जिन कउ बिसरै मेरो रामु पिआरा से मूए मरि जाँहीं ॥१॥ (१२६८-१९, मलार, मः ५)

पन्ना १२६९

मनि तनि रवि रहिआ जगदीसुर पेखत सदा हजूरे ॥ (१२६९-१, मलार, मः ५)
नानक रवि रहिओ सभ अंतरि सर्ब रहिआ भरपूरे ॥२॥८॥१२॥ (१२६९-१, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६९-२)
हरि कै भजनि कउन कउन न तारे ॥ (१२६९-२, मलार, मः ५)
खग तन मीन तन मृग तन बराह तन साधू संगि उधारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६९-३, मलार, मः ५)
देव कुल दैत कुल जख्य किन्नर नर सागर उतरे पारे ॥ (१२६९-३, मलार, मः ५)
जो जो भजनु करै साधू संगि ता के दूख बिदारे ॥१॥ (१२६९-४, मलार, मः ५)
काम करोध महा बिखिआ रस इन ते भए निरारे ॥ (१२६९-४, मलार, मः ५)
दीन दइआल जपहि करुणा मै नानक सद बलिहारे ॥२॥९॥१३॥ (१२६९-५, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६९-६)
आजु मै बैसिओ हरि हाट ॥ (१२६९-६, मलार, मः ५)
नामु रासि साझी करि जन सिउ जाँउ न जम कै घाट ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६९-६, मलार, मः ५)
धारि अनुग्रहु पारब्रहमि राखे भ्रम के खुल्हे कपाट ॥ (१२६९-७, मलार, मः ५)
बेसुमार साहु प्रभु पाइआ लाहा चरन निधि खाट ॥१॥ (१२६९-७, मलार, मः ५)
सरनि गही अचुत अबिनासी किलबिख काढे है छाँटि ॥ (१२६९-८, मलार, मः ५)
कलि कलेस मिटे दास नानक बहुरि न जोनी माट ॥२॥१०॥१४॥ (१२६९-८, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६९-९)
बहु बिधि माइआ मोह हिरानो ॥ (१२६९-९, मलार, मः ५)
कोटि मधे कोऊ बिरला सेवकु पूरन भगतु चिरानो ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६९-१०, मलार, मः ५)
इत उत डोलि डोलि स्रमु पाइओ तनु धनु होत बिरानो ॥ (१२६९-१०, मलार, मः ५)
लोग दुराइ करत ठगिआई होतौ संगि न जानो ॥१॥ (१२६९-११, मलार, मः ५)
मृग पंखी मीन दीन नीच इह संकट फिरि आनो ॥ (१२६९-११, मलार, मः ५)
कहु नानक पाहन प्रभ तारहु साधसंगति सुख मानो ॥२॥११॥१५॥ (१२६९-१२, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२६९-१३)
दुसट मुए बिखु खाई री माई ॥ (१२६९-१३, मलार, मः ५)
जिस के जीअ तिन ही रखि लीने मेरे प्रभ कउ किरपा आई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६९-१३, मलार, मः ५)
अंतरजामी सभ महि वरतै ताँ भउ कैसा भाई ॥ (१२६९-१४, मलार, मः ५)
संगि सहाई छोडि न जाई प्रभु दीसै सभनी ठाईं ॥१॥ (१२६९-१४, मलार, मः ५)
अनाथा नाथु दीन दुख भंजन आपि लीए लड़ि लाई ॥ (१२६९-१५, मलार, मः ५)
हरि की ओट जीवहि दास तेरे नानक प्रभ सरणाई ॥२॥१२॥१६॥ (१२६९-१६, मलार, मः ५)

मलार महला ५ ॥ (१२६९-१६)
मन मेरे हरि के चरन रवीजै ॥ (१२६९-१७, मलार, मः ५)
दरस पिआस मेरो मनु मोहिओ हरि पंख लगाइ मिलीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६९-१७, मलार, मः ५)
खोजत खोजत मारगु पाइओ साधू सेव करीजै ॥ (१२६९-१८, मलार, मः ५)
धारि अनुग्रहु सुआमी मेरे नामु महा रसु पीजै ॥१॥ (१२६९-१८, मलार, मः ५)
त्राहि त्राहि करि सरनी आए जलतउ किरपा कीजै ॥ (१२६९-१९, मलार, मः ५)
करु गहि लेहु दास अपुने कउ नानक अपुनो कीजै ॥२॥१३॥१७॥ (१२६९-१९, मलार, मः ५)

मलार मः ५ ॥ (१२७०-१)
प्रभ को भगति बछलु बिरदाइओ ॥ (१२७०-१, मलार, मः ५)
निंदक मारि चरन तल दीने अपुनो जसु वरताइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७०-१, मलार, मः ५)
जै जै कारु कीनो सभ जग महि दइआ जीअन महि पाइओ ॥ (१२७०-२, मलार, मः ५)
कंठि लाइ अपुनो दासु राखिओ ताती वाउ न लाइओ ॥१॥ (१२७०-३, मलार, मः ५)
अंगीकारु कीओ मेरे सुआमी भ्रमु भउ मेटि सुखाइओ ॥ (१२७०-३, मलार, मः ५)
महा अनंद करहु दास हरि के नानक बिस्वासु मनि आइओ ॥२॥१४॥१८॥ (१२७०-४, मलार, मः ५)
रागु मलार महला ५ चउपदे घरु २ (१२७०-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७०-५)
गुरमुखि दीसै ब्रह्म पसारु ॥ (१२७०-६, मलार, मः ५)
गुरमुखि त्रै गुणीआँ बिसथारु ॥ (१२७०-६, मलार, मः ५)
गुरमुखि नाद बेद बीचारु ॥ (१२७०-६, मलार, मः ५)
बिनु गुर पूरे घोर अंधारु ॥१॥ (१२७०-६, मलार, मः ५)
मेरे मन गुरु गुरु करत सदा सुखु पाईऐ ॥ (१२७०-७, मलार, मः ५)
गुर उपदेसि हरि हिरदै वसिओ सासि गिरासि अपणा खसमु धिआईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७०-७, मलार, मः ५)
गुर के चरण विटहु बलि जाउ ॥ (१२७०-८, मलार, मः ५)
गुर के गुण अनदिनु नित गाउ ॥ (१२७०-८, मलार, मः ५)
गुर की धूड़ि करउ इसनानु ॥ (१२७०-९, मलार, मः ५)
साची दरगह पाईऐ मानु ॥२॥ (१२७०-९, मलार, मः ५)
गुरु बोहिथु भवजल तारणहारु ॥ (१२७०-९, मलार, मः ५)
गुरि भेटिऐ न होइ जोनि अउतारु ॥ (१२७०-१०, मलार, मः ५)
गुर की सेवा सो जनु पाए ॥ (१२७०-१०, मलार, मः ५)
जा कउ करमि लिखिआ धुरि आए ॥३॥ (१२७०-१०, मलार, मः ५)
गुरु मेरी जीवनि गुरु आधारु ॥ (१२७०-११, मलार, मः ५)
गुरु मेरी वरतणि गुरु परवारु ॥ (१२७०-११, मलार, मः ५)
गुरु मेरा खसमु सतिगुर सरणाई ॥ (१२७०-१२, मलार, मः ५)

नानक गुरु पारब्रह्मु जा की कीम न पाई ॥४॥१॥१६॥ (१२७०-१२, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७०-१३)
गुर के चरन हिरदै वसाए ॥ (१२७०-१३, मलार, मः ५)
करि किरपा प्रभि आपि मिलाए ॥ (१२७०-१३, मलार, मः ५)
अपने सेवक कउ लए प्रभु लाइ ॥ (१२७०-१३, मलार, मः ५)
ता की कीमति कही न जाइ ॥१॥ (१२७०-१४, मलार, मः ५)
करि किरपा पूरन सुखदाते ॥ (१२७०-१४, मलार, मः ५)
तुम्हरी कृपा ते तूं चिति आवहि आठ पहर तेरै रंगि राते ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७०-१४, मलार, मः ५)
गावणु सुनणु सभु तेरा भाणा ॥ (१२७०-१५, मलार, मः ५)
हुकमु बूझै सो साचि समाणा ॥ (१२७०-१५, मलार, मः ५)
जपि जपि जीवहि तेरा नाँउ ॥ (१२७०-१६, मलार, मः ५)
तुझ बिनु दूजा नाही थाउ ॥२॥ (१२७०-१६, मलार, मः ५)
दुख सुख करते हुकमु रजाइ ॥ (१२७०-१६, मलार, मः ५)
भाणै बखस भाणै देइ सजाइ ॥ (१२७०-१७, मलार, मः ५)
दुहाँ सिरिआँ का करता आपि ॥ (१२७०-१७, मलार, मः ५)
कुरबाणु जाँई तेरे परताप ॥३॥ (१२७०-१७, मलार, मः ५)
तेरी कीमति तूहै जाणहि ॥ (१२७०-१८, मलार, मः ५)
तू आपे बूझहि सुणि आपि वखाणहि ॥ (१२७०-१८, मलार, मः ५)
सेई भगत जो तुधु भाणे ॥ (१२७०-१८, मलार, मः ५)

पन्ना १२७१

नानक तिन कै सद कुरबाणे ॥४॥२॥२०॥ (१२७१-१, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७१-१)
परमेसरु होआ दइआलु ॥ (१२७१-१, मलार, मः ५)
मेघु वरसै अमृत धार ॥ (१२७१-२, मलार, मः ५)
सगले जीअ जंत तृपतासे ॥ (१२७१-२, मलार, मः ५)
कारज आए पूरे रासे ॥१॥ (१२७१-२, मलार, मः ५)
सदा सदा मन नामु सम्हालि ॥ (१२७१-२, मलार, मः ५)
गुर पूरे की सेवा पाइआ ऐथै ओथै निबहै नालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७१-३, मलार, मः ५)
दुखु भन्ना भै भंजनहार ॥ (१२७१-३, मलार, मः ५)
आपणिआ जीआ की कीती सार ॥ (१२७१-४, मलार, मः ५)
राखनहार सदा मिहरवान ॥ (१२७१-४, मलार, मः ५)
सदा सदा जाईऐ कुरबान ॥२॥ (१२७१-४, मलार, मः ५)
कालु गवाइआ करतै आपि ॥ (१२७१-५, मलार, मः ५)
सदा सदा मन तिस नो जापि ॥ (१२७१-५, मलार, मः ५)

दृसटि धारि राखे सभि जंत ॥ (१२७१-५, मलार, मः ५)
गुण गावहु नित नित भगवंत ॥३॥ (१२७१-५, मलार, मः ५)
एको करता आपे आप ॥ (१२७१-६, मलार, मः ५)
हरि के भगत जाणहि परताप ॥ (१२७१-६, मलार, मः ५)
नावै की पैज रखदा आइआ ॥ (१२७१-६, मलार, मः ५)
नानकु बोलै तिस का बोलाइआ ॥४॥३॥२१॥ (१२७१-७, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७१-७)
गुर सरणाई सगल निधान ॥ (१२७१-७, मलार, मः ५)
साची दरगहि पाईऐ मानु ॥ (१२७१-८, मलार, मः ५)
भ्रमु भउ दूखु दरदु सभु जाइ ॥ (१२७१-८, मलार, मः ५)
साधसंगि सद हरि गुण गाइ ॥१॥ (१२७१-८, मलार, मः ५)
मन मेरे गुरु पूरा सालाहि ॥ (१२७१-९, मलार, मः ५)
नामु निधानु जपहु दिनु राती मन चिंदे फल पाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७१-९, मलार, मः ५)
सतिगुर जेवडु अवरु न कोइ ॥ (१२७१-१०, मलार, मः ५)
गुरु पारब्रह्मु परमेसरु सोइ ॥ (१२७१-१०, मलार, मः ५)
जनम मरण दूख ते राखै ॥ (१२७१-१०, मलार, मः ५)
माइआ बिखु फिरि बहुड़ि न चाखै ॥२॥ (१२७१-११, मलार, मः ५)
गुर की महिमा कथनु न जाइ ॥ (१२७१-११, मलार, मः ५)
गुरु परमेसरु साचै नाइ ॥ (१२७१-११, मलार, मः ५)
सचु संजमु करणी सभु साची ॥ (१२७१-१२, मलार, मः ५)
सो मनु निरमलु जो गुर संगि राची ॥३॥ (१२७१-१२, मलार, मः ५)
गुरु पूरा पाईऐ वड भागि ॥ (१२७१-१२, मलार, मः ५)
कामु क्रोधु लोभु मन ते तिआगि ॥ (१२७१-१३, मलार, मः ५)
करि किरपा गुर चरण निवासि ॥ (१२७१-१३, मलार, मः ५)
नानक की प्रभ सचु अरदासि ॥४॥४॥२२॥ (१२७१-१३, मलार, मः ५)
रागु मलार महला ५ पड़ताल घरु ३ (१२७१-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७१-१५)
गुर मनारि प्रिअ दइआर सिउ रंगु कीआ ॥ (१२७१-१६, मलार, मः ५)
कीनो री सगल संीगार ॥ (१२७१-१६, मलार, मः ५)
तजिओ री सगल बिकार ॥ (१२७१-१६, मलार, मः ५)
धावतो असथिरु थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७१-१७, मलार, मः ५)
ऐसे रे मन पाइ कै आपु गवाइ कै करि साधन सिउ संगु ॥ (१२७१-१७, मलार, मः ५)
बाजे बजहि मृदंग अनाहद कोकिल री राम नामु बोलै मधुर बैन अति सुहीआ ॥१॥ (१२७१-१८, मलार, मः ५)
ऐसी तेरे दरसन की सोभ अति अपार प्रिअ अमोघ तैसे ही संगि संत बने ॥ (१२७१-१८, मलार, मः ५)
भव उतार नाम भने ॥ (१२७१-१९, मलार, मः ५)

रम राम राम माल ॥ (१२७१-१६, मलार, मः ५)

पन्ना १२७२

मनि फेरते हरि संगि संगीआ ॥ (१२७२-१, मलार, मः ५)
जन नानक प्रिउ प्रीतमु थीआ ॥२॥१॥२३॥ (१२७२-१, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७२-२)
मनु घनै भ्रमै बनै ॥ (१२७२-२, मलार, मः ५)
उमकि तरसि चालै ॥ (१२७२-२, मलार, मः ५)
प्रभ मिलबे की चाह ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७२-२, मलार, मः ५)
त्रै गुन माई मोहि आई कहंउ बेदन काहि ॥१॥ (१२७२-३, मलार, मः ५)
आन उपाव सगर कीए नहि दूख साकहि लाहि ॥ (१२७२-३, मलार, मः ५)
भजु सरनि साधू नानका मिलु गुन गोबिंदहि गाहि ॥२॥२॥२४॥ (१२७२-४, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७२-४)
प्रिअ की सोभ सुहावनी नीकी ॥ (१२७२-४, मलार, मः ५)
हाहा हूहू गंध्रब अपसरा अनंद मंगल रस गावनी नीकी ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७२-५, मलार, मः ५)
धुनित ललित गुनग्य अनिक भाँति बहु बिधि रूप दिखावनी नीकी ॥१॥ (१२७२-५, मलार, मः ५)
गिरि तर थल जल भवन भरपुरि घटि घटि लालन छावनी नीकी ॥ (१२७२-६, मलार, मः ५)
साधसंगि रामईआ रसु पाइओ नानक जा कै भावनी नीकी ॥२॥३॥२५॥ (१२७२-७, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७२-८)
गुर प्रीति पिआरे चरन कमल रिद अंतरि धारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७२-८, मलार, मः ५)
दरसु सफलिओ दरसु पेखिओ गए किलबिख गए ॥ (१२७२-९, मलार, मः ५)
मन निर्मल उजीआरे ॥१॥ (१२७२-९, मलार, मः ५)
बिसम बिसमै बिसम भई ॥ (१२७२-९, मलार, मः ५)
अघ कोटि हरते नाम लई ॥ (१२७२-१०, मलार, मः ५)
गुर चरन मसतकु डारि पही ॥ (१२७२-१०, मलार, मः ५)
प्रभ एक तूंही एक तुही ॥ (१२७२-१०, मलार, मः ५)
भगत टेक तुहारे ॥ (१२७२-११, मलार, मः ५)
जन नानक सरनि दुआरे ॥२॥४॥२६॥ (१२७२-११, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७२-११)
बरसु सरसु आगिआ ॥ (१२७२-११, मलार, मः ५)
होहि आनंद सगल भाग ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७२-१२, मलार, मः ५)
संत संगे मनु परफड़ै मिलि मेघ धर सुहाग ॥१॥ (१२७२-१२, मलार, मः ५)
घनघोर प्रीति मोर ॥ (१२७२-१३, मलार, मः ५)
चितु चातृक बूंद ओर ॥ (१२७२-१३, मलार, मः ५)
ऐसो हरि संगे मन मोह ॥ (१२७२-१३, मलार, मः ५)

तिआगि माइआ धोह ॥ (१२७२-१३, मलार, मः ५)
मिलि संत नानक जागिआ ॥२॥५॥२७॥ (१२७२-१३, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७२-१४)
गुन गोपाल गाउ नीत ॥ (१२७२-१४, मलार, मः ५)
राम नाम धारि चीत ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७२-१४, मलार, मः ५)
छोडि मानु तजि गुमानु मिलि साधूआ कै संगि ॥ (१२७२-१५, मलार, मः ५)
हरि सिमरि एक रंगि मिटि जाँहि दोख मीत ॥१॥ (१२७२-१५, मलार, मः ५)
पारब्रह्म भए दइआल ॥ (१२७२-१६, मलार, मः ५)
बिनसि गए बिखै जंजाल ॥ (१२७२-१६, मलार, मः ५)
साध जनाँ कै चरन लागि ॥ (१२७२-१६, मलार, मः ५)
नानक गावै गोबिंद नीत ॥२॥६॥२८॥ (१२७२-१७, मलार, मः ५)
मलार महला ५ ॥ (१२७२-१७)
घनु गरजत गोबिंद रूप ॥ (१२७२-१७, मलार, मः ५)
गुन गावत सुख चैन ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७२-१७, मलार, मः ५)
हरि चरन सरन तरन सागर धुनि अनहता रस बैन ॥१॥ (१२७२-१८, मलार, मः ५)
पथिक पिआस चित सरोवर आतम जलु लैन ॥ (१२७२-१८, मलार, मः ५)
हरि दरस प्रेम जन नानक करि किरपा प्रभ दैन ॥२॥७॥२९॥ (१२७२-१९, मलार, मः ५)

पन्ना १२७३

मलार महला ५ ॥ (१२७३-१)
हे गोबिंद हे गोपाल हे दइआल लाल ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७३-१, मलार, मः ५)
प्रान नाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥१॥ (१२७३-१, मलार, मः ५)
हे सम्रथ अगम पूरन मोहि मइआ धारि ॥२॥ (१२७३-२, मलार, मः ५)
अंध कूप महा भइआन नानक पारि उतार ॥३॥८॥३०॥ (१२७३-२, मलार, मः ५)
मलार महला १ असटपदीआ घरु १ (१२७३-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७३-४)
चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नींद न पाई ॥ (१२७३-५, मलार, मः १)
सूरु चरहै प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लागै पाँई ॥१॥ (१२७३-५, मलार, मः १)
पिर भावै प्रेमु सखाई ॥ (१२७३-६, मलार, मः १)
तिसु बिनु घड़ी नही जगि जीवा ऐसी पिआस तिसाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७३-६, मलार, मः १)
सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै सहजि सुभाई ॥ (१२७३-७, मलार, मः १)
प्रीतम प्रीति बनी अभ ऐसी जोती जोति मिलाई ॥२॥ (१२७३-७, मलार, मः १)
चातृकु जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई ॥ (१२७३-८, मलार, मः १)
घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई ॥३॥ (१२७३-८, मलार, मः १)
मीन निवास उपजै जल ही ते सुख दुख पुरबि कमाई ॥ (१२७३-९, मलार, मः १)

खिनु तिलु रहि न सकै पलु जल बिनु मरनु जीवनु तिसु ताँई ॥४॥ (१२७३-१०, मलार, मः १)
धन वाँढी पिरु देस निवासी सचे गुर पहि सबदु पठाईं ॥ (१२७३-१०, मलार, मः १)
गुण संग्रहि प्रभु रिदै निवासी भगति रती हरखाई ॥५॥ (१२७३-११, मलार, मः १)
पृउ पृउ करै सभै है जेती गुर भावै पृउ पाईं ॥ (१२७३-११, मलार, मः १)
पृउ नाले सद ही सचि संगे नदरी मेलि मिलाई ॥६॥ (१२७३-१२, मलार, मः १)
सभ महि जीउ जीउ है सोई घटि घटि रहिआ समाई ॥ (१२७३-१३, मलार, मः १)
गुर परसादि घर ही परगासिआ सहजे सहजि समाई ॥७॥ (१२७३-१३, मलार, मः १)
अपना काजु सवारहु आपे सुखदाते गोसाँईं ॥ (१२७३-१४, मलार, मः १)
गुर परसादि घर ही पिरु पाइआ तउ नानक तपति बुझाई ॥८॥१॥ (१२७३-१४, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२७३-१५)
जागतु जागि रहै गुर सेवा बिनु हरि मै को नाही ॥ (१२७३-१५, मलार, मः १)
अनिक जतन करि रहणु न पावै आचु काचु ढरि पाँही ॥१॥ (१२७३-१६, मलार, मः १)
इसु तन धन का कहहु गरबु कैसा ॥ (१२७३-१६, मलार, मः १)
बिनसत बार न लागै बवरे हउमै गरबि खपै जगु ऐसा ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७३-१७, मलार, मः १)
जै जगदीस प्रभू रखवारे राखै परखै सोई ॥ (१२७३-१८, मलार, मः १)
जेती है तेती तुझ ही ते तुम्ह सरि अवरु न कोई ॥२॥ (१२७३-१८, मलार, मः १)
जीअ उपाइ जुगति वसि कीनी आपे गुरमुखि अंजनु ॥ (१२७३-१९, मलार, मः १)
अमरु अनाथ सरब सिरि मोरा काल बिकाल भरम भै खंजनु ॥३॥ (१२७३-१९, मलार, मः १)

पन्ना १२७४

कागद कोटु इहु जगु है बपुरो रंगनि चिहन चतुराई ॥ (१२७४-१, मलार, मः १)
नान्ही सी बूंद पवनु पति खोवै जनमि मरै खिनु ताईं ॥४॥ (१२७४-१, मलार, मः १)
नदी उपकंठि जैसे घरु तरवरु सरपनि घरु घर माही ॥ (१२७४-२, मलार, मः १)
उलटी नदी कहाँ घरु तरवरु सरपनि डसै दूजा मन माँही ॥५॥ (१२७४-३, मलार, मः १)
गारुड़ गुर गिआनु धिआनु गुर बचनी बिखिआ गुरमति जारी ॥ (१२७४-३, मलार, मः १)
मन तन हेंव भए सचु पाइआ हरि की भगति निरारी ॥६॥ (१२७४-४, मलार, मः १)
जेती है तेती तुधु जाचै तू सरब जीआँ दइआला ॥ (१२७४-५, मलार, मः १)
तुम्री सरणि परे पति राखहु साचु मिलै गोपाला ॥७॥ (१२७४-५, मलार, मः १)
बाधी धंधि अंध नही सूझै बधिक करम कमावै ॥ (१२७४-६, मलार, मः १)
सतिगुर मिलै त सूझसि बूझसि सच मनि गिआनु समावै ॥८॥ (१२७४-६, मलार, मः १)
निरगुण देह साच बिनु काची मै पूछउ गुरु अपना ॥ (१२७४-७, मलार, मः १)
नानक सो प्रभु प्रभू दिखावै बिनु साचे जगु सुपना ॥९॥२॥ (१२७४-८, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२७४-८)
चातृक मीन जल ही ते सुखु पावहि सारिंग सबदि सुहाई ॥१॥ (१२७४-८, मलार, मः १)
रैनि बबीहा बोलिओ मेरी माई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७४-९, मलार, मः १)

पृअ सिउ प्रीति न उलटै कबहू जो तै भावै साई ॥२॥ (१२७४-१०, मलार, मः १)
नीद गई हउमै तनि थाकी सच मति रिदै समाई ॥३॥ (१२७४-१०, मलार, मः १)
रूखीं बिरखीं ऊडउ भूखा पीवा नामु सुभाई ॥४॥ (१२७४-११, मलार, मः १)
लोचन तार ललता बिललाती दरसन पिआस रजाई ॥५॥ (१२७४-११, मलार, मः १)
पृअ बिनु सीगारु करी तेता तनु तापै कापरु अंगि न सुहाई ॥६॥ (१२७४-१२, मलार, मः १)
अपने पिआरे बिनु इकु खिनु रहि न सकंउ बिन मिले नंीद न पाई ॥७॥ (१२७४-१३, मलार, मः १)
पिरु नजीकि न बूझै बपुड़ी सतिगुरि दीआ दिखाई ॥८॥ (१२७४-१४, मलार, मः १)
सहजि मिलिआ तब ही सुखु पाइआ तृसना सबदि बुझाई ॥९॥ (१२७४-१४, मलार, मः १)
कहु नानक तुझ ते मनु मानिआ कीमति कहनु न जाई ॥१०॥३॥ (१२७४-१५, मलार, मः १)
मलार महला १ असटपदीआ घरु २ (१२७४-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७४-१६)
अखली ऊंडी जलु भर नालि ॥ (१२७४-१७, मलार, मः १)
डूगरु ऊचउ गड़ु पातालि ॥ (१२७४-१७, मलार, मः १)
सागरु सीतलु गुर सबद वीचारि ॥ (१२७४-१७, मलार, मः १)
मारगु मुकता हउमै मारि ॥१॥ (१२७४-१८, मलार, मः १)
मै अंधुले नावै की जोति ॥ (१२७४-१८, मलार, मः १)
नाम अधारि चला गुर कै भै भेति ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७४-१८, मलार, मः १)

पन्ना १२७५

सतिगुर सबदी पाधरु जाणि ॥ (१२७५-१, मलार, मः १)
गुर कै तकीऐ साचै ताणि ॥ (१२७५-१, मलार, मः १)
नामु सम्हालसि रूड़्ही बाणि ॥ (१२७५-१, मलार, मः १)
थैं भावै दरु लहसि पिराणि ॥२॥ (१२७५-२, मलार, मः १)
ऊडाँ बैसा एक लिव तार ॥ (१२७५-२, मलार, मः १)
गुर कै सबदि नाम आधार ॥ (१२७५-२, मलार, मः १)
ना जलु डूंगरु न ऊची धार ॥ (१२७५-२, मलार, मः १)
निज घरि वासा तह मगु न चालणहार ॥३॥ (१२७५-३, मलार, मः १)
जितु घरि वसहि तूहै बिधि जाणहि बीजउ महलु न जापै ॥ (१२७५-३, मलार, मः १)
सतिगुर बाझहु समझ न होवी सभु जगु दबिआ छापै ॥ (१२७५-४, मलार, मः १)
करण पलाव करै बिललातउ बिनु गुर नामु न जापै ॥ (१२७५-४, मलार, मः १)
पल पंकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिञापै ॥४॥ (१२७५-५, मलार, मः १)
इकि मूरख अंधे मुगध गवार ॥ (१२७५-६, मलार, मः १)
इकि सतिगुर कै भै नाम अधार ॥ (१२७५-६, मलार, मः १)
साची बाणी मीठी अमृत धार ॥ (१२७५-६, मलार, मः १)
जिनि पीती तिसु मोख दुआर ॥५॥ (१२७५-७, मलार, मः १)

नामु भै भाइ रिदै वसाही गुर करणी सचु बाणी ॥ (१२७५-७, मलार, मः १)
इंदु वरसै धरति सुहावी घटि घटि जोति समाणी ॥ (१२७५-७, मलार, मः १)
कालरि बीजसि दुरमति ऐसी निगुरे की नीसाणी ॥ (१२७५-८, मलार, मः १)
सतिगुर बाझहु घोर अंधारा डूबि मुए बिनु पाणी ॥६॥ (१२७५-८, मलार, मः १)
जो किछु कीनो सु प्रभू रजाइ ॥ (१२७५-९, मलार, मः १)
जो धुरि लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ (१२७५-९, मलार, मः १)
हुकमे बाधा कार कमाइ ॥ (१२७५-१०, मलार, मः १)
एक सबदि राचै सचि समाइ ॥७॥ (१२७५-१०, मलार, मः १)
चहु दिसि हुकमु वरतै प्रभ तेरा चहु दिसि नाम पतालं ॥ (१२७५-१०, मलार, मः १)
सभ महि सबदु वरतै प्रभ साचा करमि मिलै बैआलं ॥ (१२७५-११, मलार, मः १)
जाँमणु मरणा दीसै सिरि ऊभौ खुधिआ निद्रा कालं ॥ (१२७५-११, मलार, मः १)
नानक नामु मिलै मनि भावै साची नदरि रसालं ॥८॥१॥४॥ (१२७५-१२, मलार, मः १)
मलार महला १ ॥ (१२७५-१३)
मरण मुकति गति सार न जानै ॥ (१२७५-१३, मलार, मः १)
कंठे बैठी गुर सबदि पछानै ॥१॥ (१२७५-१३, मलार, मः १)
तू कैसे आड़ि फाथी जालि ॥ (१२७५-१४, मलार, मः १)
अलखु न जाचहि रिदै समालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७५-१४, मलार, मः १)
एक जीअ कै जीआ खाही ॥ (१२७५-१४, मलार, मः १)
जलि तरती बूडी जल माही ॥२॥ (१२७५-१५, मलार, मः १)
सर्ब जीअ कीए प्रतपानी ॥ (१२७५-१५, मलार, मः १)
जब पकड़ी तब ही पछुतानी ॥३॥ (१२७५-१५, मलार, मः १)
जब गलि फास पड़ी अति भारी ॥ (१२७५-१६, मलार, मः १)
ऊडि न साकै पंख पसारी ॥४॥ (१२७५-१६, मलार, मः १)
रसि चूगहि मनमुखि गावारि ॥ (१२७५-१६, मलार, मः १)
फाथी छूटहि गुण गिआन बीचारि ॥५॥ (१२७५-१७, मलार, मः १)
सतिगुरु सेवि तूटै जमकालु ॥ (१२७५-१७, मलार, मः १)
हिरदै साचा सबदु समालु ॥६॥ (१२७५-१७, मलार, मः १)
गुरमति साची सबदु है सारु ॥ (१२७५-१८, मलार, मः १)
हरि का नामु रखै उरि धारि ॥७॥ (१२७५-१८, मलार, मः १)
से दुख आगै जि भोग बिलासे ॥ (१२७५-१८, मलार, मः १)
नानक मुकति नही बिनु नावै साचे ॥८॥२॥५॥ (१२७५-१९, मलार, मः १)
मलार महला ३ असटपदीआ घरु १ ॥ (१२७६-१)

पन्ना १२७६

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७६-१)

करमु होवै ता सतिगुरु पाईऐ विणु करमै पाइआ न जाइ ॥ (१२७६-२, मलार, मः ३)
सतिगुरु मिलिऐ कंचनु होईऐ जाँ हरि की होइ रजाइ ॥१॥ (१२७६-२, मलार, मः ३)
मन मेरे हरि हरि नामि चितु लाइ ॥ (१२७६-३, मलार, मः ३)
सतिगुर ते हरि पाईऐ साचा हरि सिउ रहै समाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७६-३, मलार, मः ३)
सतिगुर ते गिआनु ऊपजै ताँ इह संसा जाइ ॥ (१२७६-४, मलार, मः ३)
सतिगुर ते हरि बुझीऐ गरभ जोनी नह पाइ ॥२॥ (१२७६-४, मलार, मः ३)
गुर परसादी जीवत मरै मरि जीवै सबदु कमाइ ॥ (१२७६-५, मलार, मः ३)
मुकति दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ ॥३॥ (१२७६-५, मलार, मः ३)
गुर परसादी सिव घरि जम्मै विचहु सकति गवाइ ॥ (१२७६-६, मलार, मः ३)
अचरु चरै बिबेक बुधि पाए पुरखै पुरखु मिलाइ ॥४॥ (१२७६-६, मलार, मः ३)
धातुर बाजी संसारु अचेतु है चलै मूलु गवाइ ॥ (१२७६-७, मलार, मः ३)
लाहा हरि सतसंगति पाईऐ करमी पलै पाइ ॥५॥ (१२७६-८, मलार, मः ३)
सतिगुर विणु किनै न पाइआ मनि वेखहु रिदै बीचारि ॥ (१२७६-८, मलार, मः ३)
वडभागी गुरु पाइआ भवजलु उतरे पारि ॥६॥ (१२७६-९, मलार, मः ३)
हरि नामाँ हरि टेक है हरि हरि नामु अधारु ॥ (१२७६-९, मलार, मः ३)
कृपा करहु गुरु मेलहु हरि जीउ पावउ मोख दुआरु ॥७॥ (१२७६-१०, मलार, मः ३)
मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि मेटणा न जाइ ॥ (१२७६-१०, मलार, मः ३)
नानक से जन पूरन होए जिन हरि भाणा भाइ ॥८॥१॥ (१२७६-११, मलार, मः ३)
मलार महला ३ ॥ (१२७६-११)
बेद बाणी जगु वरतदा त्रै गुण करे बीचारु ॥ (१२७६-१२, मलार, मः ३)
बिनु नावै जम डंडु सहै मरि जनमै वारो वार ॥ (१२७६-१२, मलार, मः ३)
सतिगुर भेटे मुकति होइ पाए मोख दुआरु ॥१॥ (१२७६-१२, मलार, मः ३)
मन रे सतिगुरु सेवि समाइ ॥ (१२७६-१३, मलार, मः ३)
वडै भागि गुर पूरा पाइआ हरि हरि नामु धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७६-१३, मलार, मः ३)
हरि आपणै भाणै सृसटि उपाई हरि आपे देइ अधारु ॥ (१२७६-१४, मलार, मः ३)
हरि आपणै भाणै मनु निरमलु कीआ हरि सिउ लागा पिआरु ॥ (१२७६-१५, मलार, मः ३)
हरि कै भाणै सतिगुरु भेटिआ सभु जनमु सवारणहारु ॥२॥ (१२७६-१५, मलार, मः ३)
वाहु वाहु बाणी सति है गुरमुखि बूझै कोइ ॥ (१२७६-१६, मलार, मः ३)
वाहु वाहु करि प्रभु सालाहीऐ तिसु जेवडु अवरु न कोइ ॥ (१२७६-१६, मलार, मः ३)
आपे बखसे मेलि लए करमि परापति होइ ॥३॥ (१२७६-१७, मलार, मः ३)
साचा साहिबु माहरो सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (१२७६-१७, मलार, मः ३)
अमृतु वरसै मनु संतोखीऐ सचि रहै लिव लाइ ॥ (१२७६-१८, मलार, मः ३)
हरि कै नाइ सदा हरीआवली फिरि सुकै ना कुमलाइ ॥४॥ (१२७६-१८, मलार, मः ३)

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ मनि वेखहु को पतीआइ ॥ (१२७७-१, मलार, मः ३)
हरि किरपा ते सतिगुरु पाईऐ भेटै सहजि सुभाइ ॥ (१२७७-२, मलार, मः ३)
मनमुख भरमि भुलाइआ बिनु भागा हरि धनु न पाइ ॥५॥ (१२७७-२, मलार, मः ३)
त्रै गुण सभा धातु है पड़ि पड़ि करहि वीचारु ॥ (१२७७-३, मलार, मः ३)
मुकति कदे न होवई नहु पाइन्हि मोख दुआरु ॥ (१२७७-३, मलार, मः ३)
बिनु सतिगुर बंधन न तुटही नामि न लगै पिआरु ॥६॥ (१२७७-४, मलार, मः ३)
पड़ि पड़ि पंडित मोनी थके बेदाँ का अभिआसु ॥ (१२७७-४, मलार, मः ३)
हरि नामु चिति न आवई नह निज घरि होवै वासु ॥ (१२७७-५, मलार, मः ३)
जमकालु सिरहु न उतरै अंतरि कपट विणासु ॥७॥ (१२७७-५, मलार, मः ३)
हरि नावै नो सभु को परतापदा विणु भागाँ पाइआ न जाइ ॥ (१२७७-६, मलार, मः ३)
नदरि करे गुरु भेटीऐ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (१२७७-६, मलार, मः ३)
नानक नामे ही पति ऊपजै हरि सिउ रहाँ समाइ ॥८॥२॥ (१२७७-७, मलार, मः ३)
मलार महला ३ असटपदी घरु २ ॥ (१२७७-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७७-८)
हरि हरि कृपा करे गुर की कारै लाए ॥ (१२७७-९, मलार, मः ३)
दुखु पलरि हरि नामु वसाए ॥ (१२७७-९, मलार, मः ३)
साची गति साचै चितु लाए ॥ (१२७७-९, मलार, मः ३)
गुर की बाणी सबदि सुणाए ॥१॥ (१२७७-१०, मलार, मः ३)
मन मेरे हरि हरि सेवि निधानु ॥ (१२७७-१०, मलार, मः ३)
गुर किरपा ते हरि धनु पाईऐ अनदिनु लागै सहजि धिआनु ॥१॥ रहाउ ॥ (१२७७-१०, मलार, मः ३)
बिनु पिर कामणि करे संीगारु ॥ (१२७७-११, मलार, मः ३)
दुहचारणी कहीऐ नित होइ खुआरु ॥ (१२७७-११, मलार, मः ३)
मनमुख का इहु बादि आचारु ॥ (१२७७-१२, मलार, मः ३)
बहु कर्म दृड़ावहि नामु विसारि ॥२॥ (१२७७-१२, मलार, मः ३)
गुरमुखि कामणि बणिआ सीगारु ॥ (१२७७-१३, मलार, मः ३)
सबदे पिरु राखिआ उर धारि ॥ (१२७७-१३, मलार, मः ३)
एकु पछाणै हउमै मारि ॥ (१२७७-१३, मलार, मः ३)
सोभावंती कहीऐ नारि ॥३॥ (१२७७-१४, मलार, मः ३)
बिनु गुर दाते किनै न पाइआ ॥ (१२७७-१४, मलार, मः ३)
मनमुख लोभि दूजै लोभाइआ ॥ (१२७७-१४, मलार, मः ३)
ऐसे गिआनी बूझहु कोइ ॥ (१२७७-१४, मलार, मः ३)
बिनु गुर भेटे मुकति न होइ ॥४॥ (१२७७-१५, मलार, मः ३)
कहि कहि कहणु कहै सभु कोइ ॥ (१२७७-१५, मलार, मः ३)

बिनु मन मूए भगति न होइ ॥ (१२७७-१५, मलार, मः ३)
गिआन मती कमल परगासु ॥ (१२७७-१६, मलार, मः ३)
तितु घटि नामै नामि निवासु ॥५॥ (१२७७-१६, मलार, मः ३)
हउमै भगति करे सभु कोइ ॥ (१२७७-१६, मलार, मः ३)
ना मनु भीजै ना सुखु होइ ॥ (१२७७-१७, मलार, मः ३)
कहि कहि कहणु आपु जाणाए ॥ (१२७७-१७, मलार, मः ३)
बिरथी भगति सभु जनमु गवाए ॥६॥ (१२७७-१७, मलार, मः ३)
से भगत सतिगुर मनि भाए ॥ (१२७७-१८, मलार, मः ३)
अनदिनु नामि रहे लिव लाए ॥ (१२७७-१८, मलार, मः ३)
सद ही नामु वेखहि हजूरि ॥ (१२७७-१८, मलार, मः ३)

पन्ना १२७८

गुर कै सबदि रहिआ भरपूरि ॥७॥ (१२७८-१, मलार, मः ३)
आपे बखसे देइ पिआरु ॥ (१२७८-१, मलार, मः ३)
हउमै रोगु वडा संसारि ॥ (१२७८-१, मलार, मः ३)
गुर किरपा ते एहु रोगु जाइ ॥ (१२७८-२, मलार, मः ३)
नानक साचे साचि समाइ ॥८॥१॥३॥५॥८॥ (१२७८-२, मलार, मः ३)
रागु मलार छंत महला ५ ॥ (१२७८-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७८-३)
प्रीतम प्रेम भगति के दाते ॥ (१२७८-४, मलार, मः ५)
अपने जन संगि राते ॥ (१२७८-४, मलार, मः ५)
जन संगि राते दिनसु राते इक निमख मनहु न वीसरै ॥ (१२७८-४, मलार, मः ५)
गोपाल गुण निधि सदा संगे सर्ब गुण जगदीसरै ॥ (१२७८-५, मलार, मः ५)
मनु मोहि लीना चरन संगे नाम रसि जन माते ॥ (१२७८-५, मलार, मः ५)
नानक प्रीतम कृपाल सदहूं किनै कोटि मधे जाते ॥१॥ (१२७८-६, मलार, मः ५)
प्रीतम तेरी गति अगम अपारे ॥ (१२७८-६, मलार, मः ५)
महा पतित तुम्ह तारे ॥ (१२७८-७, मलार, मः ५)
पतित पावन भगति वछल कृपा सिंधु सुआमीआ ॥ (१२७८-७, मलार, मः ५)
संतसंगे भजु निसंगे रंउ सदा अंतरजामीआ ॥ (१२७८-७, मलार, मः ५)
कोटि जनम भ्रमंत जोनी ते नाम सिमरत तारे ॥ (१२७८-८, मलार, मः ५)
नानक दरस पिआस हरि जीउ आपि लेहु सम्हारे ॥२॥ (१२७८-८, मलार, मः ५)
हरि चरन कमल मनु लीना ॥ (१२७८-९, मलार, मः ५)
प्रभ जल जन तेरे मीना ॥ (१२७८-९, मलार, मः ५)
जल मीन प्रभ जीउ एक तूहै भिन्न आन न जानीऐ ॥ (१२७८-९, मलार, मः ५)
गहि भुजा लेवहु नामु देवहु तउ प्रसादी मानीऐ ॥ (१२७८-१०, मलार, मः ५)

भजु साधसंगे एक रंगे क्रिपाल गोबिद दीना ॥ (१२७८-१०, मलार, मः ५)
अनाथ नीच सरणाइ नानक करि मइआ अपुना कीना ॥३॥ (१२७८-११, मलार, मः ५)
आपस कउ आपु मिलाइआ ॥ (१२७८-१२, मलार, मः ५)
भ्रम भंजन हरि राइआ ॥ (१२७८-१२, मलार, मः ५)
आचरज सुआमी अंतरजामी मिले गुण निधि पिआरिआ ॥ (१२७८-१२, मलार, मः ५)
महा मंगल सूख उपजे गोबिंद गुण नित सारिआ ॥ (१२७८-१३, मलार, मः ५)
मिलि संगि सोहे देखि मोहे पुरबि लिखिआ पाइआ ॥ (१२७८-१३, मलार, मः ५)
बिनवंति नानक सरनि तिन की जिन्ही हरि हरि धिआइआ ॥४॥१॥ (१२७८-१४, मलार, मः ५)
वार मलार की महला १ राणे कैलास तथा मालदे की धुनि ॥ (१२७८-१५, मलार, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२७८-१५)
सलोक महला ३ ॥ (१२७८-१६)
गुरि मिलिऐ मनु रहसीऐ जिउ वुठै धरणि सीगारु ॥ (१२७८-१६, मलार, मः ३)
सभ दिसै हरीआवली सर भरे सुभर ताल ॥ (१२७८-१६, मलार, मः ३)
अंदरु रचै सच रंगि जिउ मंजीठै लालु ॥ (१२७८-१७, मलार, मः ३)
कमलु विगसै सचु मनि गुर कै सबदि निहालु ॥ (१२७८-१७, मलार, मः ३)

पन्ना १२७९

मनमुख दूजी तरफ है वेखहु नदरि निहालि ॥ (१२७९-१, मलार, मः ३)
फाही फाथे मिरग जिउ सिरि दीसै जमकालु ॥ (१२७९-१, मलार, मः ३)
खुधिआ त्रिसना निंदा बुरी कामु क्रोधु विकरालु ॥ (१२७९-२, मलार, मः ३)
एनी अखी नदरि न आवई जिचरु सबदि न करे बीचारु ॥ (१२७९-२, मलार, मः ३)
तुधु भावै संतोखीआँ चूकै आल जंजालु ॥ (१२७९-३, मलार, मः ३)
मूलु रहै गुरु सेविऐ गुर पउड़ी बोहिथु ॥ (१२७९-३, मलार, मः ३)
नानक लगी ततु लै तूं सचा मनि सचु ॥१॥ (१२७९-३, मलार, मः ३)
महला १ ॥ (१२७९-४)
हेको पाधरु हेकु दरु गुर पउड़ी निज थानु ॥ (१२७९-४, मलार, मः १)
रूड़उ ठाकुरु नानका सभि सुख साचउ नामु ॥२॥ (१२७९-४, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२७९-५)
आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ ॥ (१२७९-५, मलार, मः १)
अम्बरु धरति विछोड़ि चंदोआ ताणिआ ॥ (१२७९-५, मलार, मः १)
विणु थम्मा गगनु रहाइ सबदु नीसाणिआ ॥ (१२७९-६, मलार, मः १)
सूरजु चंदु उपाइ जोति समाणिआ ॥ (१२७९-६, मलार, मः १)
कीए राति दिनंतु चोज विडाणिआ ॥ (१२७९-७, मलार, मः १)
तीर्थ धर्म वीचार नावण पुरबाणिआ ॥ (१२७९-७, मलार, मः १)
तुधु सरि अवरु न कोइ कि आखि वखाणिआ ॥ (१२७९-८, मलार, मः १)

सचै तखति निवासु होर आवण जाणिआ ॥१॥ (१२७६-८, मलार, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२७६-६)
नानक सावणि जे वसै चहु ओमाहा होइ ॥ (१२७६-६, मलार, मः १)
नागाँ मिरगाँ मछीआँ रसीआँ घरि धनु होइ ॥१॥ (१२७६-६, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२७६-१०)
नानक सावणि जे वसै चहु वेछोड़ा होइ ॥ (१२७६-१०, मलार, मः १)
गाई पुता निरधना पंथी चाकरु होइ ॥२॥ (१२७६-१०, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२७६-११)
तू सचा सचिआरु जिनि सचु वरताइआ ॥ (१२७६-११, मलार, मः १)
बैठा ताड़ी लाइ कवलु छपाइआ ॥ (१२७६-११, मलार, मः १)
ब्रह्मै वडा कहाइ अंतु न पाइआ ॥ (१२७६-११, मलार, मः १)
ना तिसु बापु न माइ किनि तू जाइआ ॥ (१२७६-१२, मलार, मः १)
ना तिसु रूपु न रेख वरन सबाइआ ॥ (१२७६-१२, मलार, मः १)
ना तिसु भुख पिआस रजा धाइआ ॥ (१२७६-१३, मलार, मः १)
गुर महि आपु समोइ सबदु वरताइआ ॥ (१२७६-१३, मलार, मः १)
सचे ही पतीआइ सचि समाइआ ॥२॥ (१२७६-१३, मलार, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२७६-१४)
वैदु बुलाइआ वैदगी पकड़ि ढंढोले बाँह ॥ (१२७६-१४, मलार, मः १)
भोला वैदु न जाणई करक कलेजे माहि ॥१॥ (१२७६-१४, मलार, मः १)
मः २ ॥ (१२७६-१५)
वैदा वैदु सुवैदु तू पहिलाँ रोगु पछाणु ॥ (१२७६-१५, मलार, मः २)
ऐसा दारू लोड़ि लहु जितु वंञै रोगा घाणि ॥ (१२७६-१५, मलार, मः २)
जितु दारू रोग उठिअहि तनि सुखु वसै आइ ॥ (१२७६-१६, मलार, मः २)
रोगु गवाइहि आपणा त नानक वैदु सदाइ ॥२॥ (१२७६-१६, मलार, मः २)
पउड़ी ॥ (१२७६-१७)
ब्रह्मा बिसनु महेसु देव उपाइआ ॥ (१२७६-१७, मलार, मः २)
ब्रह्मे दिते बेद पूजा लाइआ ॥ (१२७६-१७, मलार, मः २)
दस अवतारी रामु राजा आइआ ॥ (१२७६-१८, मलार, मः २)
दैता मारे धाइ हुकमि सबाइआ ॥ (१२७६-१८, मलार, मः २)
ईस महेसुरु सेव तिन्ही अंतु न पाइआ ॥ (१२७६-१८, मलार, मः २)
सची कीमति पाइ तखतु रचाइआ ॥ (१२७६-१६, मलार, मः २)
दुनीआ धंधै लाइ आपु छपाइआ ॥ (१२७६-१६, मलार, मः २)

पन्ना १२८०

धरमु कराए कर्म धुरहु फुरमाइआ ॥३॥ (१२८०-१, मलार, मः २)

सलोक मः २ ॥ (१२८०-१)
सावणु आइआ हे सखी कंतै चिति करेहु ॥ (१२८०-१, मलार, मः २)
नानक झूरि मरहि दोहागणी जिन् अवरी लागा नेहु ॥१॥ (१२८०-२, मलार, मः २)
मः २ ॥ (१२८०-२)
सावणु आइआ हे सखी जलहरु बरसनहारु ॥ (१२८०-२, मलार, मः २)
नानक सुखि सवनु सोहागणी जिन् सह नालि पिआरु ॥२॥ (१२८०-३, मलार, मः २)
पउड़ी ॥ (१२८०-३)
आपे छिंझ पवाइ मलाखाड़ा रचिआ ॥ (१२८०-३, मलार, मः २)
लथे भड़थू पाइ गुरमुखि मचिआ ॥ (१२८०-४, मलार, मः २)
मनमुख मारे पछाड़ि मूरख कचिआ ॥ (१२८०-४, मलार, मः २)
आपि भिड़ै मारे आपि आपि कारजु रचिआ ॥ (१२८०-४, मलार, मः २)
सभना खसमु एकु है गुरमुखि जाणीऐ ॥ (१२८०-५, मलार, मः २)
हुकमी लिखै सिरि लेखु विणु कलम मसवाणीऐ ॥ (१२८०-५, मलार, मः २)
सतसंगति मेलापु जिथै हरि गुण सदा वखाणीऐ ॥ (१२८०-६, मलार, मः २)
नानक सचा सबदु सलाहि सचु पछाणीऐ ॥४॥ (१२८०-६, मलार, मः २)
सलोक मः ३ ॥ (१२८०-७)
ऊंनवि ऊंनवि आइआ अवरि करेंदा वंन ॥ (१२८०-७, मलार, मः ३)
किआ जाणा तिसु साह सिउ केव रहसी रंगु ॥ (१२८०-७, मलार, मः ३)
रंगु रहिआ तिन् कामणी जिन् मनि भउ भाउ होइ ॥ (१२८०-८, मलार, मः ३)
नानक भै भाइ बाहरी तिन तनि सुखु न होइ ॥१॥ (१२८०-८, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८०-९)
ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै नीरु निपंगु ॥ (१२८०-९, मलार, मः ३)
नानक दुखु लागा तिन् कामणी जिन् कंतै सिउ मनि भंगु ॥२॥ (१२८०-१०, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८०-१०)
दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥ (१२८०-१०, मलार, मः ३)
बेद बाणी वरताइ अंदरि वादु घतिआ ॥ (१२८०-११, मलार, मः ३)
परविरति निरविरति हाठा दोवै विचि धरमु फिरै रैबारिआ ॥ (१२८०-११, मलार, मः ३)
मनमुख कचे कूड़िआर तिन्ी निहचउ दरगह हारिआ ॥ (१२८०-१२, मलार, मः ३)
गुरमती सबदि सूर है कामु क्रोधु जिन्ी मारिआ ॥ (१२८०-१२, मलार, मः ३)
सचै अंदरि महलि सबदि सवारिआ ॥ (१२८०-१३, मलार, मः ३)
से भगत तुधु भावदे सचै नाइ पिआरिआ ॥ (१२८०-१३, मलार, मः ३)
सतिगुरु सेवनि आपणा तिन्ा विटहु हउ वारिआ ॥५॥ (१२८०-१४, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८०-१४)
ऊंनवि ऊंनवि आइआ वरसै लाइ झड़ी ॥ (१२८०-१४, मलार, मः ३)
नानक भाणै चलै कंत कै सु माणे सदा रली ॥१॥ (१२८०-१५, मलार, मः ३)

मः ३ ॥ (१२८०-१५)
किआ उठि उठि देखहु बपुड़ें इसु मेघै हथि किछु नाहि ॥ (१२८०-१५, मलार, मः ३)
जिनि एहु मेघु पठाइआ तिसु राखहु मन माँहि ॥ (१२८०-१६, मलार, मः ३)
तिस नो मंनि वसाइसी जा कउ नदरि करेइ ॥ (१२८०-१७, मलार, मः ३)
नानक नदरी बाहरी सभ करण पलाह करेइ ॥२॥ (१२८०-१७, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८०-१८)
सो हरि सदा सरेवीऐ जिसु करत न लागै वार ॥ (१२८०-१८, मलार, मः ३)
आडाणे आकास करि खिन महि ढाहि उसारणहार ॥ (१२८०-१८, मलार, मः ३)
आपे जगतु उपाइ कै कुदरति करे वीचार ॥ (१२८०-१९, मलार, मः ३)
मनमुख अगै लेखा मंगीऐ बहुती होवै मार ॥ (१२८०-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२८१

गुरमुखि पति सिउ लेखा निबड़ै बखसे सिफति भंडार ॥ (१२८१-१, मलार, मः ३)
ओथै हथु न अपड़ै कूक न सुणीऐ पुकार ॥ (१२८१-१, मलार, मः ३)
ओथै सतिगुरु बेली होवै कढि लए अंती वार ॥ (१२८१-२, मलार, मः ३)
एना जंता नो होर सेवा नही सतिगुरु सिरि करतार ॥६॥ (१२८१-२, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८१-३)
बाबीहा जिस नो तू पूकारदा तिस नो लोचै सभु कोइ ॥ (१२८१-३, मलार, मः ३)
अपणी किरपा करि कै वससी वणु तृणु हरिआ होइ ॥ (१२८१-३, मलार, मः ३)
गुर परसादी पाईऐ विरला बूझै कोइ ॥ (१२८१-४, मलार, मः ३)
बहदिआ उठदिआ नित धिआईऐ सदा सदा सुखु होइ ॥ (१२८१-४, मलार, मः ३)
नानक अमृतु सद ही वरसदा गुरमुखि देवै हरि सोइ ॥१॥ (१२८१-५, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८१-५)
कलमलि होई मेदनी अरदासि करे लिव लाइ ॥ (१२८१-६, मलार, मः ३)
सचै सुणिआ कन्नु दे धीरक देवै सहजि सुभाइ ॥ (१२८१-६, मलार, मः ३)
इंद्रै नो फुरमाइआ वुठा छहबर लाइ ॥ (१२८१-७, मलार, मः ३)
अनु धनु उपजै बहु घणा कीमति कहणु न जाइ ॥ (१२८१-७, मलार, मः ३)
नानक नामु सलाहि तू सभना जीआ देदा रिजकु सम्बाहि ॥ (१२८१-७, मलार, मः ३)
जितु खाधै सुखु ऊपजै फिरि दूखु न लागै आइ ॥२॥ (१२८१-८, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८१-९)
हरि जीउ सचा सचु तू सचे लैहि मिलाइ ॥ (१२८१-९, मलार, मः ३)
दूजै दूजी तरफ है कूड़ि मिलै न मिलिआ जाइ ॥ (१२८१-९, मलार, मः ३)
आपे जोड़ि विछोड़िऐ आपे कुदरति देइ दिखाइ ॥ (१२८१-१०, मलार, मः ३)
मोहु सोगु विजोगु है पूरबि लिखिआ कमाइ ॥ (१२८१-१०, मलार, मः ३)
हउ बलिहारी तिन कउ जो हरि चरणी रहै लिव लाइ ॥ (१२८१-११, मलार, मः ३)

जिउ जल महि कमलु अलिपतु है ऐसी बणत बणाइ ॥ (१२८१-११, मलार, मः ३)
से सुखीए सदा सोहणे जिन्ही विचहु आपु गवाइ ॥ (१२८१-१२, मलार, मः ३)
तिन्ह सोगु विजोगु कदे नही जो हरि कै अंकि समाइ ॥७॥ (१२८१-१२, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८१-१३)
नानक सो सालाहीऐ जिसु वसि सभु किछु होइ ॥ (१२८१-१३, मलार, मः ३)
तिसै सरेविहु प्राणीहो तिसु बिनु अवरु न कोइ ॥ (१२८१-१३, मलार, मः ३)
गुरमुखि हरि प्रभु मनि वसै ताँ सदा सदा सुखु होइ ॥ (१२८१-१४, मलार, मः ३)
सहसा मूलि न होवई सभ चिंता विचहु जाइ ॥ (१२८१-१५, मलार, मः ३)
जो किछु होइ सु सहजे होइ कहणा किछू न जाइ ॥ (१२८१-१५, मलार, मः ३)
सचा साहिबु मनि वसै ताँ मनि चिंदिआ फलु पाइ ॥ (१२८१-१६, मलार, मः ३)
नानक तिन का आखिआ आपि सुणे जि लइअनु पन्नै पाइ ॥१॥ (१२८१-१६, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८१-१७)
अमृतु सदा वरसदा बूझनि बूझणहार ॥ (१२८१-१७, मलार, मः ३)
गुरमुखि जिन्ही बुझिआ हरि अमृतु रखिआ उरि धारि ॥ (१२८१-१७, मलार, मः ३)
हरि अमृतु पीवहि सदा रंगि राते हउमै तृसना मारि ॥ (१२८१-१८, मलार, मः ३)
अमृतु हरि का नामु है वरसै किरपा धारि ॥ (१२८१-१८, मलार, मः ३)
नानक गुरमुखि नदरी आइआ हरि आतम रामु मुरारि ॥२॥ (१२८१-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२८२

पउड़ी ॥ (१२८२-१)
अतुलु किउ तोलीऐ विणु तोले पाइआ न जाइ ॥ (१२८२-१, मलार, मः ३)
गुर कै सबदि वीचारीऐ गुण महि रहै समाइ ॥ (१२८२-१, मलार, मः ३)
अपणा आपु आपि तोलसी आपे मिलै मिलाइ ॥ (१२८२-२, मलार, मः ३)
तिस की कीमति ना पवै कहणा किछू न जाइ ॥ (१२८२-२, मलार, मः ३)
हउ बलिहारी गुर आपणे जिनि सची बूझ दिती बुझाइ ॥ (१२८२-३, मलार, मः ३)
जगतु मुसै अमृतु लुटीऐ मनमुख बूझ न पाइ ॥ (१२८२-३, मलार, मः ३)
विणु नावै नालि न चलसी जासी जनमु गवाइ ॥ (१२८२-४, मलार, मः ३)
गुरमती जागे तिन्ही घरु रखिआ दूता का किछु न वसाइ ॥८॥ (१२८२-४, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८२-५)
बाबीहा ना बिललाइ ना तरसाइ एहु मनु खसम का हुकमु मंनि ॥ (१२८२-५, मलार, मः ३)
नानक हुकमि मंनिऐ तिख उतरै चड़ै चवगलि वन्नु ॥१॥ (१२८२-६, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८२-६)
बाबीहा जल महि तेरा वासु है जल ही माहि फिराहि ॥ (१२८२-६, मलार, मः ३)
जल की सार न जाणही ताँ तूं कूकण पाहि ॥ (१२८२-७, मलार, मः ३)
जल थल चहु दिसि वरसदा खाली को थाउ नाहि ॥ (१२८२-७, मलार, मः ३)

एतै जलि वरसदै तिख मरहि भाग तिना के नाहि ॥ (१२८२-८, मलार, मः ३)
नानक गुरमुखि तिन सोझी पई जिन वसिआ मन माहि ॥२॥ (१२८२-८, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८२-९)
नाथ जती सिध पीर किनै अंतु न पाइआ ॥ (१२८२-९, मलार, मः ३)
गुरमुखि नामु धिआइ तुझै समाइआ ॥ (१२८२-१०, मलार, मः ३)
जुग छतीह गुबारु तिस ही भाइआ ॥ (१२८२-१०, मलार, मः ३)
जला बिम्बु असरालु तिनै वरताइआ ॥ (१२८२-१०, मलार, मः ३)
नीलु अनीलु अगम्मु सरजीतु सबाइआ ॥ (१२८२-११, मलार, मः ३)
अगनि उपाई वादु भुख तिहाइआ ॥ (१२८२-११, मलार, मः ३)
दुनीआ कै सिरि कालु दूजा भाइआ ॥ (१२८२-१२, मलार, मः ३)
रखै रखणहारु जिनि सबदु बुझाइआ ॥९॥ (१२८२-१२, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८२-१२)
इहु जलु सभ तै वरसदा वरसै भाइ सुभाइ ॥ (१२८२-१३, मलार, मः ३)
से बिरखा हरीआवले जो गुरमुखि रहे समाइ ॥ (१२८२-१३, मलार, मः ३)
नानक नदरी सुखु होइ एना जंता का दुखु जाइ ॥१॥ (१२८२-१३, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८२-१४)
भिन्नी रैणि चमकिआ वुठा छहबर लाइ ॥ (१२८२-१४, मलार, मः ३)
जितु वुठै अनु धनु बहुतु ऊपजै जाँ सहु करे रजाइ ॥ (१२८२-१५, मलार, मः ३)
जितु खाधै मनु तृपतीऐ जीआँ जुगति समाइ ॥ (१२८२-१५, मलार, मः ३)
इहु धनु करते का खेलु है कदे आवै कदे जाइ ॥ (१२८२-१६, मलार, मः ३)
गिआनीआ का धनु नामु है सद ही रहै समाइ ॥ (१२८२-१६, मलार, मः ३)
नानक जिन कउ नदरि करे ताँ इहु धनु पलै पाइ ॥२॥ (१२८२-१७, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८२-१७)
आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ (१२८२-१७, मलार, मः ३)
आपे लेखा मंगसी आपि कराए कार ॥ (१२८२-१८, मलार, मः ३)
जो तिसु भावै सो थीऐ हुकमु करे गावारु ॥ (१२८२-१८, मलार, मः ३)
आपि छडाए छुटीऐ आपे बखसणहारु ॥ (१२८२-१९, मलार, मः ३)
आपे वेखै सुणे आपि सभसै दे आधारु ॥ (१२८२-१९, मलार, मः ३)
सभ महि एकु वरतदा सिरि सिरि करे बीचारु ॥ (१२८२-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२८३

गुरमुखि आपु वीचारीऐ लगै सचि पिआरु ॥ (१२८३-१, मलार, मः ३)
नानक किस नो आखीऐ आपे देवणहारु ॥१०॥ (१२८३-१, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८३-२)
बाबीहा एहु जगतु है मत को भरमि भुलाइ ॥ (१२८३-२, मलार, मः ३)

इहु बाबींहा पसू है इस नो बूझणु नाहि ॥ (१२८३-२, मलार, मः ३)
अमृतु हरि का नामु है जितु पीतै तिख जाइ ॥ (१२८३-३, मलार, मः ३)
नानक गुरमुखि जिन्ही पीआ तिन्ह बहुड़ि न लागी आइ ॥१॥ (१२८३-३, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८३-४)
मलारु सीतल रागु है हरि धिआइऐ साँति होइ ॥ (१२८३-४, मलार, मः ३)
हरि जीउ अपणी कृपा करे ताँ वरतै सभ लोइ ॥ (१२८३-४, मलार, मः ३)
वुठै जीआ जुगति होइ धरणी नो सीगारु होइ ॥ (१२८३-५, मलार, मः ३)
नानक इहु जगतु सभु जलु है जल ही ते सभ कोइ ॥ (१२८३-५, मलार, मः ३)
गुर परसादी को विरला बूझै सो जनु मुकतु सदा होइ ॥२॥ (१२८३-६, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८३-७)
सचा वेपरवाहु इको तू धणी ॥ (१२८३-७, मलार, मः ३)
तू सभु किछु आपे आपि दूजे किसु गणी ॥ (१२८३-७, मलार, मः ३)
माणस कूड़ा गरबु सची तुधु मणी ॥ (१२८३-७, मलार, मः ३)
आवा गउणु रचाइ उपाई मेदनी ॥ (१२८३-८, मलार, मः ३)
सतिगुरु सेवे आपणा आइआ तिसु गणी ॥ (१२८३-८, मलार, मः ३)
जे हउमै विचहु जाइ त केही गणत गणी ॥ (१२८३-९, मलार, मः ३)
मनमुख मोहि गुबारि जिउ भुला मंझि वणी ॥ (१२८३-९, मलार, मः ३)
कटे पाप असंख नावै इक कणी ॥११॥ (१२८३-९, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८३-१०)
बाबीहा खसमै का महलु न जाणही महलु देखि अरदासि पाइ ॥ (१२८३-१०, मलार, मः ३)
आपणै भाणै बहुता बोलहि बोलिआ थाइ न पाइ ॥ (१२८३-११, मलार, मः ३)
खसमु वडा दातारु है जो इछे सो फल पाइ ॥ (१२८३-११, मलार, मः ३)
बाबीहा किआ बपुड़ा जगतै की तिख जाइ ॥१॥ (१२८३-१२, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८३-१२)
बाबीहा भिन्नी रैणि बोलिआ सहजे सचि सुभाइ ॥ (१२८३-१२, मलार, मः ३)
इहु जलु मेरा जीउ है जल बिनु रहणु न जाइ ॥ (१२८३-१३, मलार, मः ३)
गुर सबदी जलु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥ (१२८३-१३, मलार, मः ३)
नानक जिसु बिनु चसा न जीवदी सो सतिगुरि दीआ मिलाइ ॥२॥ (१२८३-१४, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८३-१४)
खंड पताल असंख मै गणत न होई ॥ (१२८३-१४, मलार, मः ३)
तू करता गोविंदु तुधु सिरजी तुधै गोई ॥ (१२८३-१५, मलार, मः ३)
लख चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ॥ (१२८३-१५, मलार, मः ३)
इकि राजे खान मलूक कहहि कहावहि कोई ॥ (१२८३-१६, मलार, मः ३)
इकि साह सदावहि संचि धनु दूजै पति खोई ॥ (१२८३-१६, मलार, मः ३)
इकि दाते इक मंगते सभना सिरि सोई ॥ (१२८३-१६, मलार, मः ३)

विणु नावै बाजारीआ भीहावलि होई ॥ (१२८३-१७, मलार, मः ३)
कूड़ निखुटे नानका सचु करे सु होई ॥१२॥ (१२८३-१७, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८३-१८)
बाबीहा गुणवंती महलु पाइआ अउगणवंती दूरि ॥ (१२८३-१८, मलार, मः ३)
अंतरि तेरै हरि वसै गुरमुखि सदा हजूरि ॥ (१२८३-१८, मलार, मः ३)
कूक पुकार न होवई नदरी नदरि निहाल ॥ (१२८३-१९, मलार, मः ३)
नानक नामि रते सहजे मिले सबदि गुरू कै घाल ॥१॥ (१२८३-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२८४

मः ३ ॥ (१२८४-१)
बाबीहा बेनती करे करि किरपा देहु जीअ दान ॥ (१२८४-१, मलार, मः ३)
जल बिनु पिआस न ऊतरै छुटकि जाँहि मेरे प्रान ॥ (१२८४-१, मलार, मः ३)
तू सुखदाता बेअंतु है गुणदाता नेधानु ॥ (१२८४-२, मलार, मः ३)
नानक गुरमुखि बखसि लए अंति बेली होइ भगवानु ॥२॥ (१२८४-२, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८४-३)
आपे जगतु उपाइ कै गुण अउगण करे बीचारु ॥ (१२८४-३, मलार, मः ३)
त्रै गुण सर्ब जंजालु है नामि न धरे पिआरु ॥ (१२८४-४, मलार, मः ३)
गुण छोडि अउगण कमावदे दरगह होहि खुआरु ॥ (१२८४-४, मलार, मः ३)
जूऐ जनमु तिनी हारिआ कितु आए संसारि ॥ (१२८४-५, मलार, मः ३)
सचै सबदि मनु मारिआ अहिनिसि नामि पिआरि ॥ (१२८४-५, मलार, मः ३)
जिनी पुरखी उरि धारिआ सचा अलख अपारु ॥ (१२८४-६, मलार, मः ३)
तू गुणदाता निधानु हहि असी अवगणिआर ॥ (१२८४-६, मलार, मः ३)
जिसु बखसे सो पाइसी गुर सबदी वीचारु ॥१३॥ (१२८४-७, मलार, मः ३)
सलोक मः ५ ॥ (१२८४-७)
राति न विहावी साकताँ जिन्हा विसरै नाउ ॥ (१२८४-७, मलार, मः ५)
राती दिनस सुहेलीआ नानक हरि गुण गाँउ ॥१॥ (१२८४-८, मलार, मः ५)
मः ५ ॥ (१२८४-८)
रतन जवेहर माणका हभे मणी मथंनि ॥ (१२८४-८, मलार, मः ५)
नानक जो प्रभि भाणिआ सचै दरि सोहंनि ॥२॥ (१२८४-९, मलार, मः ५)
पउड़ी ॥ (१२८४-९)
सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥ (१२८४-९, मलार, मः ५)
अंति खलोआ आइ जि सतिगुर अगै घालिआ ॥ (१२८४-१०, मलार, मः ५)
पोहि न सकै जमकालु सचा रखवालिआ ॥ (१२८४-१०, मलार, मः ५)
गुर साखी जोति जगाइ दीवा बालिआ ॥ (१२८४-११, मलार, मः ५)
मनमुख विणु नावै कूड़िआर फिरहि बेतालिआ ॥ (१२८४-११, मलार, मः ५)

पसू माणस चंमि पलेटे अंदरहु कालिआ ॥ (१२८४-११, मलार, मः ५)
सभो वरतै सचु सचै सबदि निहालिआ ॥ (१२८४-१२, मलार, मः ५)
नानक नामु निधानु है पूरै गुरि देखालिआ ॥१४॥ (१२८४-१२, मलार, मः ५)
सलोक मः ३ ॥ (१२८४-१३)
बाबीहै हुकमु पछाणिआ गुर कै सहजि सुभाइ ॥ (१२८४-१३, मलार, मः ३)
मेघु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ ॥ (१२८४-१४, मलार, मः ३)
बाबीहे कूक पुकार रहि गई सुखु वसिआ मनि आइ ॥ (१२८४-१४, मलार, मः ३)
नानक सो सालाहीऐ जि देंदा सभनाँ जीआ रिजकु समाइ ॥१॥ (१२८४-१५, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८४-१५)
चातृक तू न जाणही किआ तुधु विचि तिखा है कितु पीतै तिख जाइ ॥ (१२८४-१५, मलार, मः ३)
दूजै भाइ भरंमिआ अमृत जलु पलै न पाइ ॥ (१२८४-१६, मलार, मः ३)
नदरि करे जे आपणी ताँ सतिगुरु मिलै सुभाइ ॥ (१२८४-१७, मलार, मः ३)
नानक सतिगुर ते अमृत जलु पाइआ सहजे रहिआ समाइ ॥२॥ (१२८४-१७, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८४-१८)
इकि वण खंडि बैसहि जाइ सदु न देवही ॥ (१२८४-१८, मलार, मः ३)
इकि पाला ककरु भंनि सीतलु जलु हेंवही ॥ (१२८४-१८, मलार, मः ३)
इकि भसम चड़ावहि अंगि मैलु न धोवही ॥ (१२८४-१९, मलार, मः ३)
इकि जटा बिकट बिकराल कुलु घरु खोवही ॥ (१२८४-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२८५

इकि नगन फिरहि दिनु राति नींद न सोवही ॥ (१२८५-१, मलार, मः ३)
इकि अगनि जलावहि अंगु आपु विगोवही ॥ (१२८५-१, मलार, मः ३)
विणु नावै तनु छारु किआ कहि रोवही ॥ (१२८५-२, मलार, मः ३)
सोहनि खसम दुआरि जि सतिगुरु सेवही ॥१५॥ (१२८५-२, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८५-३)
बाबीहा अमृत वेलै बोलिआ ताँ दरि सुणी पुकार ॥ (१२८५-३, मलार, मः ३)
मेघै नो फुरमानु होआ वरसहु किरपा धारि ॥ (१२८५-३, मलार, मः ३)
हउ तिन कै बलिहारणै जिनी सचु रखिआ उरि धारि ॥ (१२८५-४, मलार, मः ३)
नानक नामे सभ हरीआवली गुर कै सबदि वीचारि ॥१॥ (१२८५-४, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८५-५)
बाबीहा इव तेरी तिखा न उतरै जे सउ करहि पुकार ॥ (१२८५-५, मलार, मः ३)
नदरी सतिगुरु पाईऐ नदरी उपजै पिआरु ॥ (१२८५-६, मलार, मः ३)
नानक साहिबु मनि वसै विचहु जाहि विकार ॥२॥ (१२८५-६, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८५-७)
इकि जैनी उझड़ पाइ धुरहु खुआइआ ॥ (१२८५-७, मलार, मः ३)

तिन मुखि नाही नामु न तीरथि न्हाइआ ॥ (१२८५-७, मलार, मः ३)
हथी सिर खोहाइ न भद्रु कराइआ ॥ (१२८५-८, मलार, मः ३)
कुचिल रहहि दिन राति सबदु न भाइआ ॥ (१२८५-८, मलार, मः ३)
तिन जाति न पति न करमु जनमु गवाइआ ॥ (१२८५-८, मलार, मः ३)
मनि जूठै वेजाति जूठा खाइआ ॥ (१२८५-९, मलार, मः ३)
बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥ (१२८५-९, मलार, मः ३)
गुरमुखि ओअंकारि सचि समाइआ ॥१६॥ (१२८५-१०, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८५-१०)
सावणि सरसी कामणी गुर सबदी वीचारि ॥ (१२८५-१०, मलार, मः ३)
नानक सदा सुहागणी गुर कै हेति अपारि ॥१॥ (१२८५-११, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८५-११)
सावणि दझै गुण बाहरी जिसु दूजै भाइ पिआरु ॥ (१२८५-११, मलार, मः ३)
नानक पिर की सार न जाणई सभु सीगारु खुआरु ॥२॥ (१२८५-१२, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८५-१२)
सचा अलख अभेउ हठि न पतीजई ॥ (१२८५-१२, मलार, मः ३)
इकि गावहि राग परीआ रागि न भीजई ॥ (१२८५-१३, मलार, मः ३)
इकि नचि नचि पूरहि ताल भगति न कीजई ॥ (१२८५-१३, मलार, मः ३)
इकि अन्नु न खाहि मूरख तिना किआ कीजई ॥ (१२८५-१४, मलार, मः ३)
तृसना होई बहुतु किवै न धीजई ॥ (१२८५-१४, मलार, मः ३)
कर्म वधहि कै लोअ खपि मरीजई ॥ (१२८५-१४, मलार, मः ३)
लाहा नामु संसारि अमृतु पीजई ॥ (१२८५-१५, मलार, मः ३)
हरि भगती असनेहि गुरमुखि घीजई ॥१७॥ (१२८५-१५, मलार, मः ३)
सलोक मः ३ ॥ (१२८५-१६)
गुरमुखि मलार रागु जो करहि तिन मनु तनु सीतलु होइ ॥ (१२८५-१६, मलार, मः ३)
गुर सबदी एकु पछाणिआ एको सचा सोइ ॥ (१२८५-१६, मलार, मः ३)
मनु तनु सचा सचु मनि सचे सची सोइ ॥ (१२८५-१७, मलार, मः ३)
अंदरि सची भगति है सहजे ही पति होइ ॥ (१२८५-१७, मलार, मः ३)
कलिजुग महि घोर अंधारु है मनमुख राहु न कोइ ॥ (१२८५-१८, मलार, मः ३)
से वडभागी नानका जिन गुरमुखि परगटु होइ ॥१॥ (१२८५-१८, मलार, मः ३)
मः ३ ॥ (१२८५-१९)
इंदु वरसै करि दइआ लोकाँ मनि उपजै चाउ ॥ (१२८५-१९, मलार, मः ३)
जिस कै हुकमि इंदु वरसदा तिस कै सद बलिहारै जाँउ ॥ (१२८५-१९, मलार, मः ३)

पन्ना १२८६

गुरमुखि सबदु सम्हालीऐ सचे के गुण गाउ ॥ (१२८६-१, मलार, मः ३)

नानक नामि रते जन निरमले सहजे सचि समाउ ॥२॥ (१२८६-१, मलार, मः ३)
पउड़ी ॥ (१२८६-२)
पूरा सतिगुरु सेवि पूरा पाइआ ॥ (१२८६-२, मलार, मः ३)
पूरै करमि धिआइ पूरा सबदु मंनि वसाइआ ॥ (१२८६-२, मलार, मः ३)
पूरै गिआनि धिआनि मैलु चुकाइआ ॥ (१२८६-३, मलार, मः ३)
हरि सरि तीरथि जाणि मनूआ नाइआ ॥ (१२८६-३, मलार, मः ३)
सबदि मरै मनु मारि धन्नु जणेदी माइआ ॥ (१२८६-४, मलार, मः ३)
दरि सचै सचिआरु सचा आइआ ॥ (१२८६-४, मलार, मः ३)
पुछि न सकै कोइ जाँ खसमै भाइआ ॥ (१२८६-४, मलार, मः ३)
नानक सचु सलाहि लिखिआ पाइआ ॥१८॥ (१२८६-५, मलार, मः ३)
सलोक मः १ ॥ (१२८६-५)
कुलहाँ देंदे बावले लैंदे वडे निलज ॥ (१२८६-५, मलार, मः १)
चूहा खड न मावई तिकलि बन्नै छज ॥ (१२८६-६, मलार, मः १)
देन्हि दुआई से मरहि जिन कउ देनि सि जाहि ॥ (१२८६-६, मलार, मः १)
नानक हुकमु न जापई किथै जाइ समाहि ॥ (१२८६-७, मलार, मः १)
फसलि अहाड़ी एकु नामु सावणी सचु नाउ ॥ (१२८६-७, मलार, मः १)
मै महदूदु लिखाइआ खसमै कै दरि जाइ ॥ (१२८६-८, मलार, मः १)
दुनीआ के दर केतड़े केते आवहि जाँहि ॥ (१२८६-८, मलार, मः १)
केते मंगहि मंगते केते मंगि मंगि जाहि ॥१॥ (१२८६-८, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८६-९)
सउ मणु हसती घिउ गुड़ु खावै पंजि सै दाणा खाइ ॥ (१२८६-९, मलार, मः १)
डकै फूकै खेह उडावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ (१२८६-१०, मलार, मः १)
अंधी फूकि मुई देवानी ॥ (१२८६-१०, मलार, मः १)
खसमि मिटी फिरि भानी ॥ (१२८६-१०, मलार, मः १)
अधु गुल्हा चिड़ी का चुगणु गैणि चड़ी बिललाइ ॥ (१२८६-११, मलार, मः १)
खसमै भावै ओहा चंगी जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ (१२८६-११, मलार, मः १)
सकता सीहु मारे सै मिरिआ सभ पिछै पै खाइ ॥ (१२८६-१२, मलार, मः १)
होइ सताणा घुरै न मावै साहि गइऐ पछुताइ ॥ (१२८६-१२, मलार, मः १)
अंधा किस नो बुकि सुणावै ॥ (१२८६-१३, मलार, मः १)
खसमै मूलि न भावै ॥ (१२८६-१३, मलार, मः १)
अक सिउ प्रीति करे अक तिडा अक डाली बहि खाइ ॥ (१२८६-१३, मलार, मः १)
खसमै भावै ओहो चंगा जि करे खुदाइ खुदाइ ॥ (१२८६-१४, मलार, मः १)
नानक दुनीआ चारि दिहाड़े सुखि कीतै दुखु होई ॥ (१२८६-१४, मलार, मः १)
गला वाले हैनि घणेरे छडि न सकै कोई ॥ (१२८६-१५, मलार, मः १)
मखीं मिठै मरणा ॥ (१२८६-१५, मलार, मः १)

जिन तू रखहि तिन नेड़ि न आवै तिन भउ सागरु तरणा ॥२॥ (१२८६-१५, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२८६-१६)
अगम अगोचरु तू धणी सचा अलख अपारु ॥ (१२८६-१६, मलार, मः १)
तू दाता सभि मंगते इको देवणहारु ॥ (१२८६-१६, मलार, मः १)
जिनी सेविआ तिनी सुखु पाइआ गुरमती वीचारु ॥ (१२८६-१७, मलार, मः १)
इकना नो तुधु एवै भावदा माइआ नालि पिआरु ॥ (१२८६-१७, मलार, मः १)
गुर कै सबदि सलाहीऐ अंतरि प्रेम पिआरु ॥ (१२८६-१८, मलार, मः १)
विणु प्रीती भगति न होवई विणु सतिगुर न लगै पिआरु ॥ (१२८६-१८, मलार, मः १)
तू प्रभु सभि तुधु सेवदे इक ढाढी करे पुकार ॥ (१२८६-१९, मलार, मः १)
देहि दानु संतोखीआ सचा नामु मिलै आधारु ॥१९॥ (१२८६-१९, मलार, मः १)

पन्ना १२८७

सलोक मः १ ॥ (१२८७-१)
राती कालु घटै दिनि कालु ॥ (१२८७-१, मलार, मः १)
छिजै काइआ होइ परालु ॥ (१२८७-१, मलार, मः १)
वरतणि वरतिआ सरब जंजालु ॥ (१२८७-२, मलार, मः १)
भुलिआ चुकि गइआ तप तालु ॥ (१२८७-२, मलार, मः १)
अंधा झखि झखि पइआ झेरि ॥ (१२८७-२, मलार, मः १)
पिछै रोवहि लिआवहि फेरि ॥ (१२८७-३, मलार, मः १)
बिनु बूझे किछु सूझै नाही ॥ (१२८७-३, मलार, मः १)
मोइआ रोंहि रोंदे मरि जाँहीं ॥ (१२८७-३, मलार, मः १)
नानक खसमै एवै भावै ॥ (१२८७-४, मलार, मः १)
सेई मुए जिनि चिति न आवै ॥१॥ (१२८७-४, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८७-४)
मुआ पिआरु प्रीति मुई मुआ वैरु वादी ॥ (१२८७-४, मलार, मः १)
वन्नु गइआ रूपु विणसिआ दुखी देह रुली ॥ (१२८७-५, मलार, मः १)
किथहु आइआ कह गइआ किहु न सीओ किहु सी ॥ (१२८७-५, मलार, मः १)
मनि मुखि गला गोईआ कीता चाउ रली ॥ (१२८७-६, मलार, मः १)
नानक सचे नाम बिनु सिर खुर पति पाटी ॥२॥ (१२८७-६, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२८७-७)
अमृत नामु सदा सुखदाता अंते होइ सखाई ॥ (१२८७-७, मलार, मः १)
बाझु गुरू जगतु बउराना नावै सार न पाई ॥ (१२८७-७, मलार, मः १)
सतिगुरु सेवहि से परवाणु जिन्ह जोती जोति मिलाई ॥ (१२८७-८, मलार, मः १)
सो साहिबु सो सेवकु तेहा जिसु भाणा मंनि वसाई ॥ (१२८७-८, मलार, मः १)
आपणै भाणै कहु किनि सुखु पाइआ अंधा अंधु कमाई ॥ (१२८७-९, मलार, मः १)

बिखिआ कदे ही रजै नाही मूरख भुख न जाई ॥ (१२८७-९, मलार, मः १)
दूजै सभु को लगि विगुता बिनु सतिगुर बूझ न पाई ॥ (१२८७-१०, मलार, मः १)
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए जिस नो किरपा करे रजाई ॥२०॥ (१२८७-१०, मलार, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२८७-११)
सरमु धरमु दुइ नानका जे धनु पलै पाइ ॥ (१२८७-११, मलार, मः १)
सो धनु मित्रु न काँढीऐ जितु सिरि चोटाँ खाइ ॥ (१२८७-११, मलार, मः १)
जिन कै पलै धनु वसै तिन का नाउ फकीर ॥ (१२८७-१२, मलार, मः १)
जिन्ह कै हिरदै तू वसहि ते नर गुणी गहीर ॥१॥ (१२८७-१२, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८७-१३)
दुखी दुनी सहेड़ीऐ जाइ त लगहि दुख ॥ (१२८७-१३, मलार, मः १)
नानक सचे नाम बिनु किसै न लथी भुख ॥ (१२८७-१३, मलार, मः १)
रूपी भुख न उतरै जाँ देखाँ ताँ भुख ॥ (१२८७-१४, मलार, मः १)
जेते रस सरीर के तेते लगहि दुख ॥२॥ (१२८७-१४, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८७-१४)
अंधी कम्मी अंधु मनु मनि अंधै तनु अंधु ॥ (१२८७-१४, मलार, मः १)
चिकड़ि लाइऐ किआ थीऐ जाँ तुटै पथर बंधु ॥ (१२८७-१५, मलार, मः १)
बंधु तुटा बेड़ी नही ना तुलहा ना हाथ ॥ (१२८७-१५, मलार, मः १)
नानक सचे नाम विणु केते डुबे साथ ॥३॥ (१२८७-१६, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८७-१६)
लख मण सुइना लख मण रुपा लख साहा सिरि साह ॥ (१२८७-१६, मलार, मः १)
लख लसकर लख वाजे नेजे लखी घोड़ी पातिसाह ॥ (१२८७-१७, मलार, मः १)
जिथै साइरु लंघणा अगनि पाणी असगाह ॥ (१२८७-१७, मलार, मः १)
कंधी दिसि न आवई धाही पवै कहाह ॥ (१२८७-१८, मलार, मः १)
नानक ओथै जाणीअहि साह केई पातिसाह ॥४॥ (१२८७-१८, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२८७-१९)
इकना गलीं जंजीर बंदि रबाणीऐ ॥ (१२८७-१९, मलार, मः १)
बधे छुटहि सचि सचु पछाणीऐ ॥ (१२८७-१९, मलार, मः १)

पन्ना १२८८

लिखिआ पलै पाइ सो सचु जाणीऐ ॥ (१२८८-१, मलार, मः १)
हुकमी होइ निबेड़ु गइआ जाणीऐ ॥ (१२८८-१, मलार, मः १)
भउजल तारणहारु सबदि पछाणीऐ ॥ (१२८८-१, मलार, मः १)
चोर जार जूआर पीड़े घाणीऐ ॥ (१२८८-२, मलार, मः १)
निंदक लाइतबार मिले हड़्वाणीऐ ॥ (१२८८-२, मलार, मः १)
गुरमुखि सचि समाइ सु दरगह जाणीऐ ॥२१॥ (१२८८-२, मलार, मः १)

सलोक मः २ ॥ (१२८८-३)
नाउ फकीरै पातिसाहु मूरख पंडितु नाउ ॥ (१२८८-३, मलार, मः २)
अंधे का नाउ पारखू एवै करे गुआउ ॥ (१२८८-३, मलार, मः २)
इलति का नाउ चउधरी कूड़ी पूरे थाउ ॥ (१२८८-४, मलार, मः २)
नानक गुरमुखि जाणीऐ कलि का एहु निआउ ॥१॥ (१२८८-४, मलार, मः २)
मः १ ॥ (१२८८-५)
हरणाँ बाजाँ तै सिकदाराँ एन्हा पड़्हिआ नाउ ॥ (१२८८-५, मलार, मः १)
फाँधी लगी जाति फहाइनि अगै नाही थाउ ॥ (१२८८-५, मलार, मः १)
सो पड़्हिआ सो पंडितु बीना जिन्ही कमाणा नाउ ॥ (१२८८-६, मलार, मः १)
पहिलो दे जड़ अंदरि जम्मै ता उपरि होवै छाँउ ॥ (१२८८-६, मलार, मः १)
राजे सीह मुकदम कुते ॥ (१२८८-७, मलार, मः १)
जाइ जगाइन्हि बैठे सुते ॥ (१२८८-७, मलार, मः १)
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ ॥ (१२८८-७, मलार, मः १)
रतु पितु कुतिहो चटि जाहु ॥ (१२८८-८, मलार, मः १)
जिथै जीआँ होसी सार ॥ (१२८८-८, मलार, मः १)
नकीं वढीं लाइतबार ॥२॥ (१२८८-८, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२८८-८)
आपि उपाए मेदनी आपे करदा सार ॥ (१२८८-९, मलार, मः १)
भै बिनु भरमु न कटीऐ नामि न लगै पिआरु ॥ (१२८८-९, मलार, मः १)
सतिगुर ते भउ ऊपजै पाईऐ मोख दुआर ॥ (१२८८-९, मलार, मः १)
भै ते सहजु पाईऐ मिलि जोती जोति अपार ॥ (१२८८-१०, मलार, मः १)
भै ते भैजलु लंघीऐ गुरमती वीचारु ॥ (१२८८-१०, मलार, मः १)
भै ते निरभउ पाईऐ जिस दा अंतु न पारावारु ॥ (१२८८-११, मलार, मः १)
मनमुख भै की सार न जाणनी तृसना जलते करहि पुकार ॥ (१२८८-११, मलार, मः १)
नानक नावै ही ते सुखु पाइआ गुरमती उरि धार ॥२२॥ (१२८८-१२, मलार, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२८८-१२)
रूपै कामै दोसती भुखै सादै गंढु ॥ (१२८८-१३, मलार, मः १)
लबै मालै घुलि मिलि मिचलि ऊंघै सउड़ि पलंघु ॥ (१२८८-१३, मलार, मः १)
भंउकै कोपु खुआरु होइ फकड़ु पिटे अंधु ॥ (१२८८-१३, मलार, मः १)
चुपै चंगा नानका विणु नावै मुहि गंधु ॥१॥ (१२८८-१४, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८८-१४)
राजु मालु रूपु जाति जोबनु पंजे ठग ॥ (१२८८-१४, मलार, मः १)
एनी ठगीं जगु ठगिआ किनै न रखी लज ॥ (१२८८-१५, मलार, मः १)
एना ठगन्हि ठग से जि गुर की पैरी पाहि ॥ (१२८८-१५, मलार, मः १)
नानक करमा बाहरे होरि केते मुठे जाहि ॥२॥ (१२८८-१६, मलार, मः १)

पउड़ी ॥ (१२८८-१६)
पड़िआ लेखेदारु लेखा मंगीऐ ॥ (१२८८-१६, मलार, मः १)
विणु नावै कूड़िआरु अउखा तंगीऐ ॥ (१२८८-१७, मलार, मः १)
अउघट रुधे राह गलीआँ रोकीआँ ॥ (१२८८-१७, मलार, मः १)
सचा वेपरवाहु सबदि संतोखीआँ ॥ (१२८८-१७, मलार, मः १)
गहिर गभीर अथाहु हाथ न लभई ॥ (१२८८-१८, मलार, मः १)
मुहे मुहि चोटा खाहु विणु गुर कोइ न छुटसी ॥ (१२८८-१८, मलार, मः १)
पति सेती घरि जाहु नामु वखाणीऐ ॥ (१२८८-१६, मलार, मः १)
हुकमी साह गिराह देंदा जाणीऐ ॥२३॥ (१२८८-१६, मलार, मः १)

पन्ना १२८६

सलोक मः १ ॥ (१२८६-१)
पउणै पाणी अगनी जीउ तिन किआ खुसीआ किआ पीड़ ॥ (१२८६-१, मलार, मः १)
धरती पाताली आकासी इकि दरि रहनि वजीर ॥ (१२८६-१, मलार, मः १)
इकना वडी आरजा इकि मरि होहि जहीर ॥ (१२८६-२, मलार, मः १)
इकि दे खाहि निखुटै नाही इकि सदा फिरहि फकीर ॥ (१२८६-२, मलार, मः १)
हुकमी साजे हुकमी ढाहे एक चसे महि लख ॥ (१२८६-३, मलार, मः १)
सभु को नथै नथिआ बखसे तोड़े नथ ॥ (१२८६-३, मलार, मः १)
वरना चिहना बाहरा लेखे बाझु अलखु ॥ (१२८६-४, मलार, मः १)
किउ कथीऐ किउ आखीऐ जापै सचो सचु ॥ (१२८६-४, मलार, मः १)
करणा कथना कार सभ नानक आपि अकथु ॥ (१२८६-४, मलार, मः १)
अकथ की कथा सुणेइ ॥ (१२८६-५, मलार, मः १)
रिधि बुधि सिधि गिआनु सदा सुखु होइ ॥१॥ (१२८६-५, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८६-६)
अजरु जरै त नउ कुल बंधु ॥ (१२८६-६, मलार, मः १)
पूजै प्राण होवै थिरु कंधु ॥ (१२८६-६, मलार, मः १)
कहाँ ते आइआ कहाँ एहु जाणु ॥ (१२८६-६, मलार, मः १)
जीवत मरत रहै परवाणु ॥ (१२८६-७, मलार, मः १)
हुकमै बूझै ततु पछाणै ॥ (१२८६-७, मलार, मः १)
इहु परसादु गुरू ते जाणै ॥ (१२८६-७, मलार, मः १)
होंदा फड़ीअगु नानक जाणु ॥ (१२८६-७, मलार, मः १)
ना हउ ना मै जूनी पाणु ॥२॥ (१२८६-८, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२८६-८)
पड़्हीऐ नामु सालाह होरि बुधीं मिथिआ ॥ (१२८६-८, मलार, मः १)
बिनु सचे वापार जनमु बिरथिआ ॥ (१२८६-६, मलार, मः १)

अंतु न पारावारु न किन ही पाइआ ॥ (१२८९-९, मलार, मः १)
सभु जगु गरबि गुबारु तिन सचु न भाइआ ॥ (१२८९-९, मलार, मः १)
चले नामु विसारि तावणि ततिआ ॥ (१२८९-१०, मलार, मः १)
बलदी अंदरि तेलु दुबिधा घतिआ ॥ (१२८९-१०, मलार, मः १)
आइआ उठी खेलु फिरै उवतिआ ॥ (१२८९-११, मलार, मः १)
नानक सचै मेलु सचै रतिआ ॥२४॥ (१२८९-११, मलार, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२८९-११)
पहिलाँ मासहु निंमिआ मासै अंदरि वासु ॥ (१२८९-११, मलार, मः १)
जीउ पाइ मासु मुहि मिलिआ हडु चम्मु तनु मासु ॥ (१२८९-१२, मलार, मः १)
मासहु बाहरि कढिआ मम्मा मासु गिरासु ॥ (१२८९-१२, मलार, मः १)
मुहु मासै का जीभ मासै की मासै अंदरि सासु ॥ (१२८९-१३, मलार, मः १)
वडा होआ वीआहिआ घरि लै आइआ मासु ॥ (१२८९-१३, मलार, मः १)
मासहु ही मासु ऊपजै मासहु सभो साकु ॥ (१२८९-१४, मलार, मः १)
सतिगुरि मिलिऐ हुकमु बुझीऐ ताँ को आवै रासि ॥ (१२८९-१४, मलार, मः १)
आपि छुटे नह छूटीऐ नानक बचनि बिणासु ॥१॥ (१२८९-१५, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२८९-१५)
मासु मासु करि मूरखु झगड़े गिआनु धिआनु नही जाणै ॥ (१२८९-१५, मलार, मः १)
कउणु मासु कउणु सागु कहावै किसु महि पाप समाणे ॥ (१२८९-१६, मलार, मः १)
गैंडा मारि होम जग कीए देवतिआ की बाणे ॥ (१२८९-१७, मलार, मः १)
मासु छोडि बैसि नकु पकड़हि राती माणस खाणे ॥ (१२८९-१७, मलार, मः १)
फड़ु करि लोकाँ नो दिखलावहि गिआनु धिआनु नही सूझै ॥ (१२८९-१७, मलार, मः १)
नानक अंधे सिउ किआ कहीऐ कहै न कहिआ बूझै ॥ (१२८९-१८, मलार, मः १)
अंधा सोइ जि अंधु कमावै तिसु रिदै सि लोचन नाही ॥ (१२८९-१९, मलार, मः १)
मात पिता की रकु निपन्ने मछी मासु न खाँही ॥ (१२८९-१९, मलार, मः १)

पन्ना १२९०

इसत्री पुरखै जाँ निसि मेला ओथै मंधु कमाही ॥ (१२९०-१, मलार, मः १)
मासहु निम्मे मासहु जम्मे हम मासै के भाँडे ॥ (१२९०-१, मलार, मः १)
गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पाँडे ॥ (१२९०-२, मलार, मः १)
बाहर का मासु मंदा सुआमी घर का मासु चंगेरा ॥ (१२९०-२, मलार, मः १)
जीअ जंत सभि मासहु होए जीइ लइआ वासेरा ॥ (१२९०-३, मलार, मः १)
अभखु भखहि भखु तजि छोडहि अंधु गुरू जिन केरा ॥ (१२९०-३, मलार, मः १)
मासहु निम्मे मासहु जम्मे हम मासै के भाँडे ॥ (१२९०-४, मलार, मः १)
गिआनु धिआनु कछु सूझै नाही चतुरु कहावै पाँडे ॥ (१२९०-४, मलार, मः १)
मासु पुराणी मासु कतेबीं चहु जुगि मासु कमाणा ॥ (१२९०-४, मलार, मः १)

जजि काजि वीआहि सुहावै ओथै मासु समाणा ॥ (१२६०-५, मलार, मः १)
इसत्री पुरख निपजहि मासहु पातिसाह सुलतानाँ ॥ (१२६०-५, मलार, मः १)
जे ओइ दिसहि नरकि जाँदे ताँ उन्ह का दानु न लैणा ॥ (१२६०-६, मलार, मः १)
देंदा नरकि सुरगि लैदे देखहु एहु धिङाणा ॥ (१२६०-७, मलार, मः १)
आपि न बूझै लोक बुझाए पाँडे खरा सिआणा ॥ (१२६०-७, मलार, मः १)
पाँडे तू जाणै ही नाही किथहु मासु उपन्ना ॥ (१२६०-७, मलार, मः १)
तोइअहु अन्नु कमादु कपाहाँ तोइअहु तृभवणु गन्ना ॥ (१२६०-८, मलार, मः १)
तोआ आखै हउ बहु बिधि हछा तोऐ बहुतु बिकारा ॥ (१२६०-८, मलार, मः १)
एते रस छोडि होवै संनिआसी नानकु कहै विचारा ॥२॥ (१२६०-९, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२६०-१०)
हउ किआ आखा इक जीभ तेरा अंतु न किन ही पाइआ ॥ (१२६०-१०, मलार, मः १)
सचा सबदु वीचारि से तुझ ही माहि समाइआ ॥ (१२६०-१०, मलार, मः १)
इकि भगवा वेसु करि भरमदे विणु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ (१२६०-११, मलार, मः १)
देस दिसंतर भवि थके तुधु अंदरि आपु लुकाइआ ॥ (१२६०-११, मलार, मः १)
गुर का सबदु रतन्नु है करि चानणु आपि दिखाइआ ॥ (१२६०-१२, मलार, मः १)
आपणा आपु पछाणिआ गुरमती सचि समाइआ ॥ (१२६०-१२, मलार, मः १)
आवा गउणु बजारीआ बाजारु जिनी रचाइआ ॥ (१२६०-१३, मलार, मः १)
इकु थिरु सचा सालाहणा जिन मनि सचा भाइआ ॥२५॥ (१२६०-१३, मलार, मः १)
सलोक मः १ ॥ (१२६०-१४)
नानक माइआ कर्म बिरखु फल अमृत फल विसु ॥ (१२६०-१४, मलार, मः १)
सभ कारण करता करे जिसु खवाले तिसु ॥१॥ (१२६०-१५, मलार, मः १)
मः २ ॥ (१२६०-१५)
नानक दुनीआ कीआँ वडिआईआँ अगी सेती जालि ॥ (१२६०-१५, मलार, मः २)
एनी जलीईं नामु विसारिआ इक न चलीआ नालि ॥२॥ (१२६०-१६, मलार, मः २)
पउड़ी ॥ (१२६०-१६)
सिरि सिरि होइ निबेड़ु हुकमि चलाइआ ॥ (१२६०-१७, मलार, मः २)
तेरै हथि निबेड़ु तूहै मनि भाइआ ॥ (१२६०-१७, मलार, मः २)
कालु चलाए बंनि कोइ न रखसी ॥ (१२६०-१७, मलार, मः २)
जरु जरवाणा कंन्हि चड़िआ नचसी ॥ (१२६०-१८, मलार, मः २)
सतिगुरु बोहिथु बेड़ु सचा रखसी ॥ (१२६०-१८, मलार, मः २)
अगनि भखै भड़हाड़ु अनदिनु भखसी ॥ (१२६०-१८, मलार, मः २)
फाथा चुगै चोग हुकमी छुटसी ॥ (१२६०-१९, मलार, मः २)
करता करे सु होगु कूड़ु निखुटसी ॥२६॥ (१२६०-१९, मलार, मः २)

सलोक मः १ ॥ (१२६१-१)
घर महि घरु देखाइ देइ सो सतिगुरु पुरखु सुजाणु ॥ (१२६१-१, मलार, मः १)
पंच सबद धुनिकार धुनि तह बाजै सबदु नीसाणु ॥ (१२६१-१, मलार, मः १)
दीप लोअ पाताल तह खंड मंडल हैरानु ॥ (१२६१-२, मलार, मः १)
तार घोर बाजिंत्र तह साचि तखति सुलतानु ॥ (१२६१-२, मलार, मः १)
सुखमन कै घरि रागु सुनि सुंनि मंडलि लिव लाइ ॥ (१२६१-३, मलार, मः १)
अकथ कथा बीचारीऐ मनसा मनहि समाइ ॥ (१२६१-३, मलार, मः १)
उलटि कमलु अमृति भरिआ इहु मनु कतहु न जाइ ॥ (१२६१-४, मलार, मः १)
अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ ॥ (१२६१-४, मलार, मः १)
सभि सखीआ पंचे मिले गुरमुखि निज घरि वासु ॥ (१२६१-५, मलार, मः १)
सबदु खोजि इहु घरु लहै नानकु ता का दासु ॥१॥ (१२६१-५, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२६१-६)
चिलिमिलि बिसीआर दुनीआ फानी ॥ (१२६१-६, मलार, मः १)
कालूबि अकल मन गोर न मानी ॥ (१२६१-६, मलार, मः १)
मन कमीन कमतरीन तू दरीआउ खुदाइआ ॥ (१२६१-७, मलार, मः १)
एकु चीजु मुझै देहि अवर जहर चीज न भाइआ ॥ (१२६१-७, मलार, मः १)
पुराब खाम कूजै हिकमति खुदाइआ ॥ (१२६१-८, मलार, मः १)
मन तुआना तू कुदरती आइआ ॥ (१२६१-८, मलार, मः १)
सग नानक दीबान मसताना नित चड़ै सवाइआ ॥ (१२६१-८, मलार, मः १)
आतस दुनीआ खुनक नामु खुदाइआ ॥२॥ (१२६१-९, मलार, मः १)
पउड़ी नवी मः ५ ॥ (१२६१-९)
सभो वरतै चलतु चलतु वखाणिआ ॥ (१२६१-१०, मलार, मः ५)
पारब्रह्मु परमेसरु गुरमुखि जाणिआ ॥ (१२६१-१०, मलार, मः ५)
लथे सभि विकार सबदि नीसाणिआ ॥ (१२६१-१०, मलार, मः ५)
साधू संगि उधारु भए निकाणिआ ॥ (१२६१-११, मलार, मः ५)
सिमरि सिमरि दातारु सभि रंग माणिआ ॥ (१२६१-११, मलार, मः ५)
परगटु भइआ संसारि मिहर छावाणिआ ॥ (१२६१-१२, मलार, मः ५)
आपे बखसि मिलाए सद कुरबाणिआ ॥ (१२६१-१२, मलार, मः ५)
नानक लए मिलाइ खसमै भाणिआ ॥२७॥ (१२६१-१२, मलार, मः ५)
सलोक मः १ ॥ (१२६१-१३)
धंनु सु कागदु कलम धंनु धनु भाँडा धनु मसु ॥ (१२६१-१३, मलार, मः १)
धनु लेखारी नानका जिनि नामु लिखाइआ सचु ॥१॥ (१२६१-१३, मलार, मः १)
मः १ ॥ (१२६१-१४)

आपे पटी कलम आपि उपरि लेखु भि तूं ॥ (१२६१-१४, मलार, मः १)
एको कहीऐ नानका दूजा काहे कू ॥२॥ (१२६१-१५, मलार, मः १)
पउड़ी ॥ (१२६१-१५)
तूं आपे आपि वरतदा आपि बणत बणाई ॥ (१२६१-१५, मलार, मः १)
तुधु बिनु दूजा को नही तू रहिआ समाई ॥ (१२६१-१६, मलार, मः १)
तेरी गति मिति तूहै जाणदा तुधु कीमति पाई ॥ (१२६१-१६, मलार, मः १)
तू अलख अगोचरु अगमु है गुरमति दिखाई ॥ (१२६१-१६, मलार, मः १)
अंतरि अगिआनु दुखु भरमु है गुर गिआनि गवाई ॥ (१२६१-१७, मलार, मः १)
जिसु कृपा करहि तिसु मेलि लैहि सो नामु धिआई ॥ (१२६१-१८, मलार, मः १)
तू करता पुरखु अगम्मु है रविआ सभ ठाई ॥ (१२६१-१८, मलार, मः १)
जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाई ॥२८॥१॥ सुधु ॥ (१२६१-१९, मलार, मः १)

पन्ना १२६२

रागु मलार बाणी भगत नामदेव जीउ की (१२६२-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६२-१)
सेवीले गोपाल राइ अकुल निरंजन ॥ (१२६२-२, मलार, भगत नामदेव जी)
भगति दानु दीजै जाचहि संत जन ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६२-२, मलार, भगत नामदेव जी)
जाँ चै घरि दिग दिसै सराइचा बैकुंठ भवन चित्रसाला सपत लोक सामानि पूरीअले ॥ (१२६२-२, मलार, भगत नामदेव जी)
जाँ चै घरि लछिमी कुआरी चंदु सूरजु दीवड़े कउतकु कालु बपुड़ा कोटवालु सु करा सिरी ॥ (१२६२-३, मलार, भगत नामदेव जी)
सु ऐसा राजा स्री नरहरी ॥१॥ (१२६२-४, मलार, भगत नामदेव जी)
जाँ चै घरि कुलालु ब्रह्मा चतुर मुखु डाँवड़ा जिनि बिस्व संसारु राचीले ॥ (१२६२-४, मलार, भगत नामदेव जी)
जाँ कै घरि ईसरु बावला जगत गुरू तत सारखा गिआनु भाखीले ॥ (१२६२-५, मलार, भगत नामदेव जी)
पापु पुन्नु जाँ चै डाँगीआ दुआरै चित्र गुपतु लेखीआ ॥ (१२६२-६, मलार, भगत नामदेव जी)
धर्म राइ परुली प्रतिहारु ॥ (१२६२-६, मलार, भगत नामदेव जी)
सो ऐसा राजा स्री गोपालु ॥२॥ (१२६२-७, मलार, भगत नामदेव जी)
जाँ चै घरि गण गंधरब रिखी बपुड़े ढाढीआ गावंत आछै ॥ (१२६२-७, मलार, भगत नामदेव जी)
सर्ब सासत्र बहु रूपीआ अनगरूआ आखाड़ा मंडलीक बोल बोलहि काछे ॥ (१२६२-८, मलार, भगत नामदेव जी)
चउर ढूल जाँ चै है पवणु ॥ (१२६२-८, मलार, भगत नामदेव जी)
चेरी सकति जीति ले भवणु ॥ (१२६२-९, मलार, भगत नामदेव जी)
अंड टूक जा चै भसमती ॥ (१२६२-९, मलार, भगत नामदेव जी)
सो ऐसा राजा तृभवण पती ॥३॥ (१२६२-९, मलार, भगत नामदेव जी)
जाँ चै घरि कूरमा पालु सहस्र फनी बासकु सेज वालूआ ॥ (१२६२-९, मलार, भगत नामदेव जी)
अठारह भार बनासपती मालणी छिनवै करोड़ी मेघ माला पाणीहारीआ ॥ (१२६२-१०, मलार, भगत नामदेव जी)

नख प्रसेव जा चै सुरसरी ॥ (१२६२-११, मलार, भगत नामदेव जी)
सपत समुंद जाँ चै घड़थली ॥ (१२६२-११, मलार, भगत नामदेव जी)
एते जीअ जाँ चै वरतणी ॥ (१२६२-११, मलार, भगत नामदेव जी)
सो ऐसा राजा तृभवण धणी ॥४॥ (१२६२-१२, मलार, भगत नामदेव जी)
जाँ चै घरि निकट वरती अरजनु ध्रू प्रहलादु अम्बरीकु नारदु नेजै सिध बुध गण गंधरब बानवै हेला ॥ (१२६२-१२, मलार, भगत नामदेव जी)
एते जीअ जाँ चै हहि घरी ॥ (१२६२-१३, मलार, भगत नामदेव जी)
सर्ब बिआपिक अंतर हरी ॥ (१२६२-१३, मलार, भगत नामदेव जी)
प्रणवै नामदेउ ताँ ची आणि ॥ (१२६२-१४, मलार, भगत नामदेव जी)
सगल भगत जा चै नीसाणि ॥५॥१॥ (१२६२-१४, मलार, भगत नामदेव जी)
मलार ॥ (१२६२-१४)
मो कउ तूं न बिसारि तू न बिसारि ॥ (१२६२-१४, मलार, भगत नामदेव जी)
तू न बिसारे रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६२-१५, मलार, भगत नामदेव जी)
आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ ऊपरि सभ कोपिला ॥ (१२६२-१५, मलार, भगत नामदेव जी)
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ कहा करउ बाप बीठुला ॥१॥ (१२६२-१६, मलार, भगत नामदेव जी)
मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति न जानै कोइला ॥ (१२६२-१६, मलार, भगत नामदेव जी)
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी पैज पिछंउडी होइला ॥२॥ (१२६२-१७, मलार, भगत नामदेव जी)
तू जु दइआलु कृपालु कहीअतु हैं अतिभुज भइओ अपारला ॥ (१२६२-१८, मलार, भगत नामदेव जी)
फेरि दीआ देहुरा नामे कउ पंडीअन कउ पिछवारला ॥३॥२॥ (१२६२-१८, मलार, भगत नामदेव जी)

पन्ना १२६३

मलार बाणी भगत रविदास जी की (१२६३-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६३-२)
नागर जनाँ मेरी जाति बिखिआत चम्मारं ॥ (१२६३-३, मलार, भगत रविदास जी)
रिदै राम गोबिंद गुन सारं ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६३-३, मलार, भगत रविदास जी)
सुरसरी सलल कृत बारुनी रे संत जन करत नही पानं ॥ (१२६३-३, मलार, भगत रविदास जी)
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं ॥१॥ (१२६३-४, मलार, भगत रविदास जी)
तर तारि अपवित्र करि मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं ॥ (१२६३-५, मलार, भगत रविदास जी)
भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं ॥२॥ (१२६३-५, मलार, भगत रविदास जी)
मेरी जाति कुट बाँढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा ॥ (१२६३-६, मलार, भगत रविदास जी)
अब बिप्र प्रधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥३॥१॥ (१२६३-७, मलार, भगत रविदास जी)
मलार ॥ (१२६३-८)
हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति तास सम तुलि नही आन कोऊ ॥ (१२६३-८, मलार, भगत रविदास जी)
एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ आन रे आन भरपूरि सोऊ ॥ रहाउ ॥ (१२६३-८, मलार, भगत रविदास जी)

जा कै भागवतु लेखीऐ अवरु नही पेखीऐ तास की जाति आछोप छीपा ॥ (१२६३-९, मलार, भगत रविदास जी)
बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ नाम की नामना सपत दीपा ॥१॥ (१२६३-१०, मलार, भगत रविदास जी)
जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा ॥ (१२६३-११, मलार, भगत रविदास जी)
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहू रे लोक परसिध कबीरा ॥२॥ (१२६३-११, मलार, भगत रविदास जी)
जा के कुटम्ब के ढेढ सभ ढोर ढोवंत फिरहि अजहु बन्नारसी आस पासा ॥ (१२६३-१२, मलार, भगत रविदास जी)
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति तिन तनै रविदास दासान दासा ॥३॥२॥ (१२६३-१३, मलार, भगत रविदास जी)
मलार (१२६३-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६३-१५)
मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते ॥ (१२६३-१६, मलार, भगत रविदास जी)
साधसंगति पाई पर्म गते ॥ रहाउ ॥ (१२६३-१६, मलार, भगत रविदास जी)
मैले कपरे कहा लउ धोवउ ॥ (१२६३-१६, मलार, भगत रविदास जी)
आवैगी नीद कहा लगु सोवउ ॥१॥ (१२६३-१७, मलार, भगत रविदास जी)
जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ ॥ (१२६३-१७, मलार, भगत रविदास जी)
झूठै बनजि उठि ही गई हाटिओ ॥२॥ (१२६३-१८, मलार, भगत रविदास जी)
कहु रविदास भइओ जब लेखो ॥ (१२६३-१८, मलार, भगत रविदास जी)
जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ ॥३॥१॥३॥ (१२६३-१८, मलार, भगत रविदास जी)

पन्ना १२६४

रागु कानड़ा चउपदे महला ४ घरु १ (१२६४-१)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१२६४-२)
मेरा मनु साध जनाँ मिलि हरिआ ॥ (१२६४-४, कानड़ा, मः ४)
हउ बलि बलि बलि बलि साध जनाँ कउ मिलि संगति पारि उतरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६४-४, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि कृपा करहु प्रभ अपनी हम साध जनाँ पग परिआ ॥ (१२६४-५, कानड़ा, मः ४)
धनु धनु साध जिन हरि प्रभु जानिआ मिलि साधू पतित उधरिआ ॥१॥ (१२६४-५, कानड़ा, मः ४)
मनूआ चलै चलै बहु बहु बिधि मिलि साधू वसगति करिआ ॥ (१२६४-६, कानड़ा, मः ४)
जिउं जल तंतु पसारिओ बधकि ग्रसि मीना वसगति खरिआ ॥२॥ (१२६४-७, कानड़ा, मः ४)
हरि के संत संत भल नीके मिलि संत जना मलु लहीआ ॥ (१२६४-७, कानड़ा, मः ४)
हउमै दुरतु गइआ सभु नीकरि जिउ साबुनि कापरु करिआ ॥३॥ (१२६४-८, कानड़ा, मः ४)
मसतकि लिलाटि लिखिआ धुरि ठाकुरि गुर सतिगुर चरन उर धरिआ ॥ (१२६४-९, कानड़ा, मः ४)
सभु दालदु दूख भंज प्रभु पाइआ जन नानक नामि उधरिआ ॥४॥१॥ (१२६४-९, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६४-१०)
मेरा मनु संत जना पग रेन ॥ (१२६४-१०, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति मनु कोरा हरि रंगि भेन ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६४-११, कानड़ा, मः ४)
हम अचित अचेत न जानहि गति मिति गुरि कीए सुचित चितेन ॥ (१२६४-११, कानड़ा, मः ४)

प्रभि दीन दइआलि कीओ अंगीकृतु मनि हरि हरि नामु जपेन ॥१॥ (१२६४-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि के संत मिलहि मन प्रीतम कटि देवउ हीअरा तेन ॥ (१२६४-१३, कानड़ा, मः ४)
हरि के संत मिले हरि मिलिआ हम कीए पतित पवेन ॥२॥ (१२६४-१३, कानड़ा, मः ४)
हरि के जन ऊतम जगि कहीअहि जिन मिलिआ पाथर सेन ॥ (१२६४-१४, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १२६५

जन की महिमा बरनि न साकउ ओइ ऊतम हरि हरि केन ॥३॥ (१२६५-१, कानड़ा, मः ४)
तुम्ह हरि साह वडे प्रभ सुआमी हम वणजारे रासि देन ॥ (१२६५-१, कानड़ा, मः ४)
जन नानक कउ दइआ प्रभ धारहु लदि वाखरु हरि हरि लेन ॥४॥२॥ (१२६५-२, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६५-३)
जपि मन राम नाम परगास ॥ (१२६५-३, कानड़ा, मः ४)
हरि के संत मिलि प्रीति लगानी विचे गिरह उदास ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६५-३, कानड़ा, मः ४)
हम हरि हिरदै जपिओ नामु नरहरि प्रभि कृपा करी किरपास ॥ (१२६५-४, कानड़ा, मः ४)
अनदिनु अनदु भइआ मनु बिगसिआ उदम भए मिलन की आस ॥१॥ (१२६५-५, कानड़ा, मः ४)
हम हरि सुआमी प्रीति लगाई जितने सास लीए हम ग्रास ॥ (१२६५-५, कानड़ा, मः ४)
किलबिख दहन भए खिन अंतरि तूटि गए माइआ के फास ॥२॥ (१२६५-६, कानड़ा, मः ४)
किआ हम किर्म किआ कर्म कमावहि मूरख मुगध रखे प्रभ तास ॥ (१२६५-७, कानड़ा, मः ४)
अवगनीआरे पाथर भारे सतसंगति मिलि तरे तरास ॥३॥ (१२६५-७, कानड़ा, मः ४)
जेती सृसटि करी जगदीसरि ते सभि ऊच हम नीच बिखिआस ॥ (१२६५-८, कानड़ा, मः ४)
हमरे अवगुन संगि गुर मेटे जन नानक मेलि लीए प्रभ पास ॥४॥३॥ (१२६५-९, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६५-९)
मेरै मनि राम नामु जपिओ गुर वाक ॥ (१२६५-९, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि कृपा करी जगदीसरि दुरमति दूजा भाउ गइओ सभ झाक ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६५-१०, कानड़ा, मः ४)
नाना रूप रंग हरि केरे घटि घटि रामु रविओ गुपलाक ॥ (१२६५-११, कानड़ा, मः ४)
हरि के संत मिले हरि प्रगटे उघरि गए बिखिआ के ताक ॥१॥ (१२६५-११, कानड़ा, मः ४)
संत जना की बहुतु बहु सोभा जिन उरि धारिओ हरि रसिक रसाक ॥ (१२६५-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि के संत मिले हरि मिलिआ जैसे गऊ देखि बछराक ॥२॥ (१२६५-१३, कानड़ा, मः ४)
हरि के संत जना महि हरि हरि ते जन ऊतम जनक जनाक ॥ (१२६५-१३, कानड़ा, मः ४)
तिन हरि हिरदै बासु बसानी छूटि गई मुसकी मुसकाक ॥३॥ (१२६५-१४, कानड़ा, मः ४)
तुमरे जन तुम्ह ही प्रभ कीए हरि राखि लेहु आपन अपनाक ॥ (१२६५-१४, कानड़ा, मः ४)
जन नानक के सखा हरि भाई मात पिता बंधप हरि साक ॥४॥४॥ (१२६५-१५, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६५-१६)
मेरे मन हरि हरि राम नामु जपि चीति ॥ (१२६५-१६, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि वसतु माइआ गड़ि वेड़ी गुर कै सबदि लीओ गड़ु जीति ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६५-१६, कानड़ा, मः ४)
मिथिआ भरमि भरमि बहु भ्रमिआ लुबधो पुत्र कलत्र मोह प्रीति ॥ (१२६५-१७, कानड़ा, मः ४)

जैसे तरवर की तुछ छाइआ खिन महि बिनसि जाइ देह भीति ॥१॥ (१२६५-१८, कानड़ा, मः ४)
हमरे प्रान प्रीतम जन ऊतम जिन मिलिआ मनि होइ प्रतीति ॥ (१२६५-१९, कानड़ा, मः ४)
परचै रामु रविआ घट अंतरि असथिरु रामु रविआ रंगि प्रीति ॥२॥ (१२६५-१९, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १२६६

हरि के संत संत जन नीके जिन मिलिआँ मनु रंगि रंगीति ॥ (१२६६-१, कानड़ा, मः ४)
हरि रंगु लहै न उतरै कबहू हरि हरि जाइ मिलै हरि प्रीति ॥३॥ (१२६६-२, कानड़ा, मः ४)
हम बहु पाप कीए अपराधी गुरि काटे कटित कटीति ॥ (१२६६-२, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि नामु दीओ मुखि अउखधु जन नानक पतित पुनीति ॥४॥५॥ (१२६६-३, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६६-४)
जपि मन राम नाम जगन्नाथ ॥ (१२६६-४, कानड़ा, मः ४)
घूमन घेर परे बिखु बिखिआ सतिगुर काढि लीए दे हाथ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-४, कानड़ा, मः ४)
सुआमी अभै निरंजन नरहरि तुम्ह राखि लेहु हम पापी पाथ ॥ (१२६६-५, कानड़ा, मः ४)
काम क्रोध बिखिआ लोभि लुभते कासट लोह तरे संगि साथ ॥१॥ (१२६६-५, कानड़ा, मः ४)
तुम्ह वड पुरख बड अगम अगोचर हम ढूढि रहे पाई नही हाथ ॥ (१२६६-६, कानड़ा, मः ४)
तू परै परै अपरम्परु सुआमी तू आपन जानहि आपि जगन्नाथ ॥२॥ (१२६६-७, कानड़ा, मः ४)
अदृसटु अगोचर नामु धिआए सतसंगति मिलि साधू पाथ ॥ (१२६६-७, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि कथा सुनी मिलि संगति हरि हरि जपिओ अकथ कथ काथ ॥३॥ (१२६६-८, कानड़ा, मः ४)
हमरे प्रभ जगदीस गुसाई हम राखि लेहु जगन्नाथ ॥ (१२६६-९, कानड़ा, मः ४)
जन नानकु दासु दास दासन को प्रभ करहु कृपा राखहु जन साथ ॥४॥६॥ (१२६६-९, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ पड़ताल घरु ५ ॥ (१२६६-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६६-११)
मन जापहु राम गुपाल ॥ (१२६६-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि रतन जवेहर लाल ॥ (१२६६-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि गुरमुखि घड़ि टकसाल ॥ (१२६६-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि हो हो किरपाल ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-१२, कानड़ा, मः ४)
तुमरे गुन अगम अगोचर एक जीह किआ कथै बिचारी राम राम राम राम लाल ॥ (१२६६-१३, कानड़ा, मः ४)
तुमरी जी अकथ कथा तू तू तू ही जानहि हउ हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥१॥ (१२६६-१४, कानड़ा, मः ४)
हमरे हरि प्रान सखा सुआमी हरि मीता मेरे मनि तनि जीह हरि हरे हरे राम नाम धनु माल ॥ (१२६६-१४, कानड़ा, मः ४)
जा को भागु तिनि लीओ री सुहागु हरि हरि हरे हरे गुन गावै गुरमति हउ बलि बले हउ बलि बले जन नानक हरि जपि भई निहाल निहाल निहाल ॥२॥१॥७॥ (१२६६-१५, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६६-१६)
हरि गुन गावहु जगदीस ॥ (१२६६-१६, कानड़ा, मः ४)

एका जीह कीचै लख बीस ॥ (१२६६-१७, कानड़ा, मः ४)
जपि हरि हरि सबदि जपीस ॥ (१२६६-१७, कानड़ा, मः ४)
हरि हो हो किरपीस ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-१७, कानड़ा, मः ४)
हरि किरपा करि सुआमी हम लाइ हरि सेवा हरि जपि जपे हरि जपि जपे जपु जापउ जगदीस ॥ (१२६६-१७, कानड़ा, मः ४)
तुमरे जन रामु जपहि ते ऊतम तिन कउ हउ घुमि घुमे घुमि घुमि जीस ॥१॥ (१२६६-१८, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १२६७

हरि तुम वड वडे वडे वड ऊचे सो करहि जि तुधु भावीस ॥ (१२६७-१, कानड़ा, मः ४)
जन नानक अमृतु पीआ गुरमती धनु धन्नु धनु धन्नु धन्नु गुरू साबीस ॥२॥२॥८॥ (१२६७-२, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६७-३)
भजु रामो मनि राम ॥ (१२६७-३, कानड़ा, मः ४)
जिसु रूप न रेख वडाम ॥ (१२६७-३, कानड़ा, मः ४)
सतसंगति मिलु भजु राम ॥ (१२६७-३, कानड़ा, मः ४)
बड हो हो भाग मथाम ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-४, कानड़ा, मः ४)
जितु गृहि मंदरि हरि होतु जासु तितु घरि आनदो आनंदु भजु राम राम राम ॥ (१२६७-४, कानड़ा, मः ४)
राम नाम गुन गावहु हरि प्रीतम उपदेसि गुरू गुर सतिगुरा सुखु होतु हरि हरे हरि हरे हरे भजु राम राम राम ॥१॥ (१२६७-५, कानड़ा, मः ४)
सभ सिसटि धार हरि तुम किरपाल करता सभु तू तू तू राम राम राम ॥ (१२६७-६, कानड़ा, मः ४)
जन नानको सरणागती देहु गुरमती भजु राम राम राम ॥२॥३॥९॥ (१२६७-७, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६७-७)
सतिगुर चाटउ पग चाट ॥ (१२६७-८, कानड़ा, मः ४)
जितु मिलि हरि पाधर बाट ॥ (१२६७-८, कानड़ा, मः ४)
भजु हरि रसु रस हरि गाट ॥ (१२६७-८, कानड़ा, मः ४)
हरि हो हो लिखे लिलाट ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-८, कानड़ा, मः ४)
खट कर्म किरिआ करि बहु बहु बिसथार सिध साधिक जोगीआ करि जट जटा जट जाट ॥ (१२६७-९, कानड़ा, मः ४)
करि भेख न पाईऐ हरि ब्रह्म जोगु हरि पाईऐ सतसंगती उपदेसि गुरू गुर संत जना खोलि खोलि कपाट ॥१॥ (१२६७-१०, कानड़ा, मः ४)
तू अपरम्परु सुआमी अति अगाहु तू भरपुरि रहिआ जल थले हरि इकु इको इक एकै हरि थाट ॥ (१२६७-११, कानड़ा, मः ४)
तू जाणहि सभ बिधि बूझहि आपे जन नानक के प्रभ घटि घटे घटि घटे घटि हरि घाट ॥२॥४॥१०॥ (१२६७-१२, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६७-१३)
जपि मन गोबिद माधो ॥ (१२६७-१३, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि अगम अगाधो ॥ (१२६७-१३, कानड़ा, मः ४)

मति गुरमति हरि प्रभु लाधो ॥ (१२६७-१३, कानड़ा, मः ४)
धुरि हो हो लिखे लिलाधो ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-१४, कानड़ा, मः ४)
बिखु माइआ संचि बहु चितै बिकार सुखु पाईऐ हरि भजु संत संत संगती मिलि सतिगुरू गुरु साधो ॥ (१२६७-१४, कानड़ा, मः ४)
जिउ छुहि पारस मनूर भए कंचन तिउ पतित जन मिलि संगती सुध होवत गुरमती सुध हाधो ॥१॥ (१२६७-१५, कानड़ा, मः ४)
जिउ कासट संगि लोहा बहु तरता तिउ पापी संगि तरे साध साध संगती गुर सतिगुरू गुर साधो ॥ (१२६७-१६, कानड़ा, मः ४)
चारि बरन चारि आस्रम है कोई मिलै गुरू गुर नानक सो आपि तरै कुल सगल तराधो ॥२॥५॥११॥ (१२६७-१७, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१२६७-१८)
हरि जसु गावहु भगवान ॥ (१२६७-१८, कानड़ा, मः ४)
जसु गावत पाप लहान ॥ (१२६७-१९, कानड़ा, मः ४)
मति गुरमति सुनि जसु कान ॥ (१२६७-१९, कानड़ा, मः ४)
हरि हो हो किरपान ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६७-१९, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १२६८

तेरे जन धिआवहि इक मनि इक चिति ते साधू सुख पावहि जपि हरि हरि नामु निधान ॥ (१२६८-१, कानड़ा, मः ४)
उसतति करहि प्रभ तेरीआ मिलि साधू साध जना गुर सतिगुरू भगवान ॥१॥ (१२६८-१, कानड़ा, मः ४)
जिन कै हिरदै तू सुआमी ते सुख फल पावहि ते तरे भव सिंधु ते भगत हरि जान ॥ (१२६८-२, कानड़ा, मः ४)
तिन सेवा हम लाइ हरे हम लाइ हरे जन नानक के हरि तू तू तू तू तू भगवान ॥२॥६॥१२॥ (१२६८-३, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ५ घरु २ (१२६८-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१२६८-५)
गाईऐ गुण गोपाल क्रिपा निधि ॥ (१२६८-६, कानड़ा, मः ५)
दुख बिदारन सुखदाते सतिगुर जा कउ भेटत होइ सगल सिधि ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-६, कानड़ा, मः ५)
सिमरत नामु मनहि साधारै ॥ (१२६८-७, कानड़ा, मः ५)
कोटि पराधी खिन महि तारै ॥१॥ (१२६८-७, कानड़ा, मः ५)
जा कउ चीति आवै गुरु अपना ॥ (१२६८-७, कानड़ा, मः ५)
ता कउ दूखु नही तिलु सुपना ॥२॥ (१२६८-८, कानड़ा, मः ५)
जा कउ सतिगुरु अपना राखै ॥ (१२६८-८, कानड़ा, मः ५)
सो जनु हरि रसु रसना चाखै ॥३॥ (१२६८-८, कानड़ा, मः ५)
कहु नानक गुरि कीनी मइआ ॥ (१२६८-९, कानड़ा, मः ५)
हलति पलति मुख ऊजल भइआ ॥४॥१॥ (१२६८-९, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६८-१०)

आराधउ तुझहि सुआमी अपने ॥ (१२६८-१०, कानड़ा, मः ५)
ऊठत बैठत सोवत जागत सासि सासि सासि हरि जपने ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-१०, कानड़ा, मः ५)
ता कै हिरदै बसिओ नामु ॥ (१२६८-११, कानड़ा, मः ५)
जा कउ सुआमी कीनो दानु ॥१॥ (१२६८-११, कानड़ा, मः ५)
ता कै हिरदै आई साँति ॥ (१२६८-११, कानड़ा, मः ५)
ठाकुर भेटे गुर बचनाँति ॥२॥ (१२६८-१२, कानड़ा, मः ५)
सर्ब कला सोई परबीन ॥ (१२६८-१२, कानड़ा, मः ५)
नाम मंत्रु जा कउ गुरि दीन ॥३॥ (१२६८-१२, कानड़ा, मः ५)
कहु नानक ता कै बलि जाउ ॥ (१२६८-१३, कानड़ा, मः ५)
कलिजुग महि पाइआ जिनि नाउ ॥४॥२॥ (१२६८-१३, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६८-१३)
कीरति प्रभ की गाउ मेरी रसनाँ ॥ (१२६८-१४, कानड़ा, मः ५)
अनिक बार करि बंदन संतन ऊहाँ चरन गोबिंद जी के बसना ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-१४, कानड़ा, मः ५)
अनिक भाँति करि दुआरु न पावउ ॥ (१२६८-१५, कानड़ा, मः ५)
होइ कृपालु त हरि हरि धिआवउ ॥१॥ (१२६८-१५, कानड़ा, मः ५)
कोटि कर्म करि देह न सोधा ॥ (१२६८-१५, कानड़ा, मः ५)
साधसंगति महि मनु परबोधा ॥२॥ (१२६८-१६, कानड़ा, मः ५)
तृसन न बूझी बहु रंग माइआ ॥ (१२६८-१६, कानड़ा, मः ५)
नामु लैत सर्ब सुख पाइआ ॥३॥ (१२६८-१६, कानड़ा, मः ५)
पारब्रह्म जब भए दइआल ॥ (१२६८-१७, कानड़ा, मः ५)
कहु नानक तउ छूटे जंजाल ॥४॥३॥ (१२६८-१७, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६८-१८)
ऐसी माँगु गोबिद ते ॥ (१२६८-१८, कानड़ा, मः ५)
टहल संतन की संगु साधू का हरि नामाँ जपि पर्म गते ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६८-१८, कानड़ा, मः ५)
पूजा चरना ठाकुर सरना ॥ (१२६८-१९, कानड़ा, मः ५)
सोई कुसलु जु प्रभ जीउ करना ॥१॥ (१२६८-१९, कानड़ा, मः ५)
सफल होत इह दुरलभ देही ॥ (१२६८-१९, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १२६९

जा कउ सतिगुरु मइआ करेही ॥२॥ (१२६९-१, कानड़ा, मः ५)
अगिआन भरमु बिनसै दुख डेरा ॥ (१२६९-१, कानड़ा, मः ५)
जा कै हृदै बसहि गुर पैरा ॥३॥ (१२६९-१, कानड़ा, मः ५)
साधसंगि रंगि प्रभु धिआइआ ॥ (१२६९-२, कानड़ा, मः ५)
कहु नानक तिनि पूरा पाइआ ॥४॥४॥ (१२६९-२, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६९-३)

भगति भगतन हूं बनि आई ॥ (१२६६-३, कानड़ा, मः ५)
तन मन गलत भए ठाकुर सिउ आपन लीए मिलाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-३, कानड़ा, मः ५)
गावनहारी गावै गीत ॥ (१२६६-४, कानड़ा, मः ५)
ते उधरे बसे जिह चीत ॥१॥ (१२६६-४, कानड़ा, मः ५)
पेखे बिंजन परोसनहारै ॥ (१२६६-४, कानड़ा, मः ५)
जिह भोजनु कीनो ते तृपतारै ॥२॥ (१२६६-५, कानड़ा, मः ५)
अनिक स्वाँग काछे भेखधारी ॥ (१२६६-५, कानड़ा, मः ५)
जैसो सा तैसो दृसटारी ॥३॥ (१२६६-५, कानड़ा, मः ५)
कहन कहावन सगल जंजार ॥ (१२६६-६, कानड़ा, मः ५)
नानक दास सचु करणी सार ॥४॥५॥ (१२६६-६, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६६-६)
तेरो जनु हरि जसु सुनत उमाहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-७, कानड़ा, मः ५)
मनहि प्रगासु पेखि प्रभ की सोभा जत कत पेखउ आहिओ ॥१॥ (१२६६-७, कानड़ा, मः ५)
सभ ते परै परै ते ऊचा गहिर गम्भीर अथाहिओ ॥२॥ (१२६६-८, कानड़ा, मः ५)
ओति पोति मिलिओ भगतन कउ जन सिउ परदा लाहिओ ॥३॥ (१२६६-८, कानड़ा, मः ५)
गुर प्रसादि गावै गुण नानक सहज समाधि समाहिओ ॥४॥६॥ (१२६६-६, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६६-१०)
संतन पहि आपि उधारन आइओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-१०, कानड़ा, मः ५)
दरसन भेटत होत पुनीता हरि हरि मंत्रु दृड़ाइओ ॥१॥ (१२६६-१०, कानड़ा, मः ५)
काटे रोग भए मन निर्मल हरि हरि अउखधु खाइओ ॥२॥ (१२६६-११, कानड़ा, मः ५)
असथित भए बसे सुख थाना बहुरि न कतहू धाइओ ॥३॥ (१२६६-११, कानड़ा, मः ५)
संत प्रसादि तरे कुल लोगा नानक लिपत न माइओ ॥४॥७॥ (१२६६-१२, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६६-१३)
बिसरि गई सभ ताति पराई ॥ (१२६६-१३, कानड़ा, मः ५)
जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-१३, कानड़ा, मः ५)
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥१॥ (१२६६-१४, कानड़ा, मः ५)
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥२॥ (१२६६-१४, कानड़ा, मः ५)
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥३॥८॥ (१२६६-१५, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१२६६-१६)
ठाकुर जीउ तुहारो परना ॥ (१२६६-१६, कानड़ा, मः ५)
मानु महतु तुम्हारै ऊपरि तुम्हरी ओट तुम्हारी सरना ॥१॥ रहाउ ॥ (१२६६-१६, कानड़ा, मः ५)
तुम्हरी आस भरोसा तुम्हरा तुमरा नामु रिदै लै धरना ॥ (१२६६-१७, कानड़ा, मः ५)
तुमरो बलु तुम संगि सुहेले जो जो कहहु सोई सोई करना ॥१॥ (१२६६-१७, कानड़ा, मः ५)
तुमरी दइआ मइआ सुखु पावउ होहु कृपाल त भउजलु तरना ॥ (१२६६-१८, कानड़ा, मः ५)
अभै दानु नामु हरि पाइओ सिरु डारिओ नानक संत चरना ॥२॥६॥ (१२६६-१६, कानड़ा, मः ५)

कानड़ा महला ५ ॥ (१३००-१)
साध सरनि चरन चितु लाइआ ॥ (१३००-१, कानड़ा, मः ५)
सुपन की बात सुनी पेखी सुपना नाम मंत्रु सतिगुरू दृड़ाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३००-१, कानड़ा, मः ५)
नह तृपतानो राज जोबनि धनि बहुरि बहुरि फिरि धाइआ ॥ (१३००-२, कानड़ा, मः ५)
सुखु पाइआ तृसना सभ बुझी है साँति पाई गुन गाइआ ॥१॥ (१३००-३, कानड़ा, मः ५)
बिनु बूझे पसू की निआई भ्रमि मोहि बिआपिओ माइआ ॥ (१३००-३, कानड़ा, मः ५)
साधसंगि जम जेवरी काटी नानक सहजि समाइआ ॥२॥१०॥ (१३००-४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३००-५)
हरि के चरन हिरदै गाइ ॥ (१३००-५, कानड़ा, मः ५)
सीतला सुख साँति मूरति सिमरि सिमरि नित धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३००-५, कानड़ा, मः ५)
सगल आस होत पूरन कोटि जनम दुखु जाइ ॥१॥ (१३००-६, कानड़ा, मः ५)
पुन्न दान अनेक किरिआ साधू संगि समाइ ॥ (१३००-६, कानड़ा, मः ५)
ताप संताप मिटे नानक बाहुड़ि कालु न खाइ ॥२॥११॥ (१३००-७, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ३ (१३००-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३००-८)
कथीऐ संतसंगि प्रभ गिआनु ॥ (१३००-९, कानड़ा, मः ५)
पूरन पर्म जोति परमेसुर सिमरत पाईऐ मानु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३००-९, कानड़ा, मः ५)
आवत जात रहे स्रम नासे सिमरत साधू संगि ॥ (१३००-१०, कानड़ा, मः ५)
पतित पुनीत होहि खिन भीतरि पारब्रह्म कै रंगि ॥१॥ (१३००-१०, कानड़ा, मः ५)
जो जो कथै सुनै हरि कीरतनु ता की दुरमति नास ॥ (१३००-११, कानड़ा, मः ५)
सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥२॥१॥१२॥ (१३००-११, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३००-१२)
साधसंगति निधि हरि को नाम ॥ (१३००-१२, कानड़ा, मः ५)
संगि सहाई जीअ कै काम ॥१॥ रहाउ ॥ (१३००-१२, कानड़ा, मः ५)
संत रेनु निति मजनु करै ॥ (१३००-१३, कानड़ा, मः ५)
जनम जनम के किलबिख हरै ॥१॥ (१३००-१३, कानड़ा, मः ५)
संत जना की ऊची बानी ॥ (१३००-१३, कानड़ा, मः ५)
सिमरि सिमरि तरे नानक प्रानी ॥२॥२॥१३॥ (१३००-१४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३००-१४)
साधू हरि हरे गुन गाइ ॥ (१३००-१४, कानड़ा, मः ५)
मान तनु धनु प्रान प्रभ के सिमरत दुखु जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३००-१४, कानड़ा, मः ५)
ईत ऊत कहा लुोभावहि एक सिउ मनु लाइ ॥१॥ (१३००-१५, कानड़ा, मः ५)
महा पवित्र संत आसनु मिलि संगि गोबिदु धिआइ ॥२॥ (१३००-१६, कानड़ा, मः ५)

सगल तिआगि सरनि आइओ नानक लेहु मिलाइ ॥३॥३॥१४॥ (१३००-१६, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३००-१७)
पेखि पेखि बिगसाउ साजन प्रभु आपना इकाँत ॥१॥ रहाउ ॥ (१३००-१७, कानड़ा, मः ५)
आनदा सुख सहज मूरति तिसु आन नाही भाँति ॥१॥ (१३००-१८, कानड़ा, मः ५)
सिमरत इक बार हरि हरि मिटि कोटि कसमल जाँति ॥२॥ (१३००-१८, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०१

गुण रमंत दूख नासहि रिद भइअंत साँति ॥३॥ (१३०१-१, कानड़ा, मः ५)
अमृता रसु पीउ रसना नानक हरि रंगि रात ॥४॥४॥१५॥ (१३०१-१, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०१-२)
साजना संत आउ मेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०१-२, कानड़ा, मः ५)
आनदा गुन गाइ मंगल कसमला मिटि जाहि परेरै ॥१॥ (१३०१-३, कानड़ा, मः ५)
संत चरन धरउ माथै चाँदना गृहि होइ अंधेरै ॥२॥ (१३०१-३, कानड़ा, मः ५)
संत प्रसादि कमलु बिगसै गोबिंद भजउ पेखि नेरै ॥३॥ (१३०१-४, कानड़ा, मः ५)
प्रभ कृपा ते संत पाए वारि वारि नानक उह बेरै ॥४॥५॥१६॥ (१३०१-४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०१-५)
चरन सरन गोपाल तेरी ॥ (१३०१-५, कानड़ा, मः ५)
मोह मान धोह भर्म राखि लीजै काटि बेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०१-६, कानड़ा, मः ५)
बूडत संसार सागर ॥ (१३०१-६, कानड़ा, मः ५)
उधरे हरि सिमरि रतनागर ॥१॥ (१३०१-६, कानड़ा, मः ५)
सीतला हरि नामु तेरा ॥ (१३०१-७, कानड़ा, मः ५)
पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥२॥ (१३०१-७, कानड़ा, मः ५)
दीन दरद निवारि तारन ॥ (१३०१-७, कानड़ा, मः ५)
हरि कृपा निधि पतित उधारन ॥३॥ (१३०१-८, कानड़ा, मः ५)
कोटि जनम दूख करि पाइओ ॥ (१३०१-८, कानड़ा, मः ५)
सुखी नानक गुरि नामु दृड़ाइओ ॥४॥६॥१७॥ (१३०१-८, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०१-९)
धनि उह प्रीति चरन संगि लागी ॥ (१३०१-९, कानड़ा, मः ५)
कोटि जाप ताप सुख पाए आइ मिले पूरन बडभागी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०१-९, कानड़ा, मः ५)
मोहि अनाथु दासु जनु तेरा अवर ओट सगली मोहि तिआगी ॥ (१३०१-१०, कानड़ा, मः ५)
भोर भर्म काटे प्रभ सिमरत गिआन अंजन मिलि सोवत जागी ॥१॥ (१३०१-११, कानड़ा, मः ५)
तू अथाहु अति बडो सुआमी कृपा सिंधु पूरन रतनागी ॥ (१३०१-११, कानड़ा, मः ५)
नानकु जाचकु हरि हरि नामु माँगै मसतकु आनि धरिओ प्रभ पागी ॥२॥७॥१८॥ (१३०१-१२, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०१-१३)
कुचिल कठोर कपट कामी ॥ (१३०१-१३, कानड़ा, मः ५)

जिउ जानहि तिउ तारि सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०१-१३, कानड़ा, मः ५)
तू समरथु सरनि जोगु तू राखहि अपनी कल धारि ॥१॥ (१३०१-१४, कानड़ा, मः ५)
जाप ताप नेम सुचि संजम नाही इन बिधे छुटकार ॥ (१३०१-१४, कानड़ा, मः ५)
गरत घोर अंध ते काढहु प्रभ नानक नदरि निहारि ॥२॥८॥१६॥ (१३०१-१५, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ४ (१३०१-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०१-१६)
नाराइन नरपति नमसकारै ॥ (१३०१-१७, कानड़ा, मः ५)
ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ आपि मुकतु मोहि तारै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०१-१७, कानड़ा, मः ५)
कवन कवन कवन गुन कहीऐ अंतु नही कछु पारै ॥ (१३०१-१८, कानड़ा, मः ५)
लाख लाख लाख कई कोरै को है ऐसो बीचारै ॥१॥ (१३०१-१८, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०२

बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥ (१३०२-१, कानड़ा, मः ५)
कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥२॥१॥२०॥ (१३०२-१, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०२-२)
न जानी संतन प्रभ बिनु आन ॥ (१३०२-२, कानड़ा, मः ५)
ऊच नीच सभ पेखि समानो मुखि बकनो मनि मान ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०२-२, कानड़ा, मः ५)
घटि घटि पूरि रहे सुख सागर भै भंजन मेरे प्रान ॥ (१३०२-३, कानड़ा, मः ५)
मनहि प्रगासु भइओ भ्रमु नासिओ मंत्रु दीओ गुर कान ॥१॥ (१३०२-४, कानड़ा, मः ५)
करत रहे क्रतज्ञ करुणा मै अंतरजामी ग्यान ॥ (१३०२-४, कानड़ा, मः ५)
आठ पहर नानक जसु गावै माँगन कउ हरि दान ॥२॥२॥२१॥ (१३०२-५, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०२-६)
कहन कहावन कउ कई केतै ॥ (१३०२-६, कानड़ा, मः ५)
ऐसो जनु बिरलो है सेवकु जो तत जोग कउ बेतै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०२-६, कानड़ा, मः ५)
दुखु नाही सभु सुखु ही है रे एकै एकी नेतै ॥ (१३०२-७, कानड़ा, मः ५)
बुरा नही सभु भला ही है रे हार नही सभ जेतै ॥१॥ (१३०२-७, कानड़ा, मः ५)
सोगु नाही सदा हरखी है रे छोडि नाही किछु लेतै ॥ (१३०२-८, कानड़ा, मः ५)
कहु नानक जनु हरि हरि हरि है कत आवै कत रमतै ॥२॥३॥२२॥ (१३०२-८, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०२-९)
हीए को प्रीतमु बिसरि न जाइ ॥ (१३०२-९, कानड़ा, मः ५)
तन मन गलत भए तिह संगे मोहनी मोहि रही मोरी माइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०२-९, कानड़ा, मः ५)
जै जै पहि कहउ ब्रिथा हउ अपुनी तेऊ तेऊ गहे रहे अटकाइ ॥ (१३०२-१०, कानड़ा, मः ५)
अनिक भाँति की एकै जाली ता की गंठि नही छोराइ ॥१॥ (१३०२-११, कानड़ा, मः ५)
फिरत फिरत नानक दासु आइओ संतन ही सरनाइ ॥ (१३०२-११, कानड़ा, मः ५)
काटे अगिआन भरम मोह माइआ लीओ कंठि लगाइ ॥२॥४॥२३॥ (१३०२-१२, कानड़ा, मः ५)

कानड़ा महला ५ ॥ (१३०२-१३)
आनद रंग बिनोद हमारै ॥ (१३०२-१३, कानड़ा, मः ५)
नामो गावनु नामु धिआवनु नामु हमारे प्रान अधारै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०२-१३, कानड़ा, मः ५)
नामो गिआनु नामु इसनाना हरि नामु हमारे कारज सवारै ॥ (१३०२-१४, कानड़ा, मः ५)
हरि नामो सोभा नामु बडाई भउजलु बिखमु नामु हरि तारै ॥१॥ (१३०२-१४, कानड़ा, मः ५)
अगम पदार्थ लाल अमोला भइओ परापति गुर चरनारै ॥ (१३०२-१५, कानड़ा, मः ५)
कहु नानक प्रभ भए कृपाला मगन भए हीअरै दरसारै ॥२॥५॥२४॥ (१३०२-१६, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०२-१७)
साजन मीत सुआमी नेरो ॥ (१३०२-१७, कानड़ा, मः ५)
पेखत सुनत सभन कै संगे थोरै काज बुरो कह फेरो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०२-१७, कानड़ा, मः ५)
नाम बिना जेतो लपटाइओ कछू नही नाही कछु तेरो ॥ (१३०२-१८, कानड़ा, मः ५)
आगै दृसटि आवत सभ परगट ईहा मोहिओ भर्म अंधेरो ॥१॥ (१३०२-१८, कानड़ा, मः ५)
अटकिओ सुत बनिता संग माइआ देवनहारु दातारु बिसेरो ॥ (१३०२-१९, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०३

कहु नानक एकै भारोसउ बंधन काटनहारु गुरु मेरो ॥२॥६॥२५॥ (१३०३-१, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०३-१)
बिखै दलु संतनि तुम्हरै गाहिओ ॥ (१३०३-२, कानड़ा, मः ५)
तुमरी टेक भरोसा ठाकुर सरनि तुमारी आहिओ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०३-२, कानड़ा, मः ५)
जनम जनम के महा पराछत दरसनु भेटि मिटाहिओ ॥ (१३०३-३, कानड़ा, मः ५)
भइओ प्रगासु अनद उजीआरा सहजि समाधि समाहिओ ॥१॥ (१३०३-३, कानड़ा, मः ५)
कउनु कहै तुम ते कछु नाही तुम समरथ अथाहिओ ॥ (१३०३-४, कानड़ा, मः ५)
कृपा निधान रंग रूप रस नामु नानक लै लाहिओ ॥२॥७॥२६॥ (१३०३-४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०३-५)
बूडत प्रानी हरि जपि धीरै ॥ (१३०३-५, कानड़ा, मः ५)
बिनसै मोहु भरमु दुखु पीरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०३-५, कानड़ा, मः ५)
सिमरउ दिनु रैनि गुर के चरना ॥ (१३०३-६, कानड़ा, मः ५)
जत कत पेखउ तुमरी सरना ॥१॥ (१३०३-६, कानड़ा, मः ५)
संत प्रसादि हरि के गुन गाइआ ॥ (१३०३-७, कानड़ा, मः ५)
गुर भेटत नानक सुखु पाइआ ॥२॥८॥२७॥ (१३०३-७, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०३-८)
सिमरत नामु मनहि सुखु पाईऐ ॥ (१३०३-८, कानड़ा, मः ५)
साध जना मिलि हरि जसु गाईऐ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०३-८, कानड़ा, मः ५)
करि किरपा प्रभ रिदै बसेरो ॥ (१३०३-९, कानड़ा, मः ५)
चरन संतन कै माथा मेरो ॥१॥ (१३०३-९, कानड़ा, मः ५)

पारब्रह्म कउ सिमरहु मनाँ ॥ (१३०३-९, कानड़ा, मः ५)
गुरमुखि नानक हरि जसु सुनाँ ॥२॥९॥२८॥ (१३०३-१०, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०३-१०)
मेरे मन प्रीति चरन प्रभ परसन ॥ (१३०३-१०, कानड़ा, मः ५)
रसना हरि हरि भोजनि तृपतानी अखीअन कउ संतोखु प्रभ दरसन ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०३-११, कानड़ा, मः ५)
करननि पूरि रहिओ जसु प्रीतम कलमल दोख सगल मल हरसन ॥ (१३०३-११, कानड़ा, मः ५)
पावन धावन सुआमी सुख पंथा अंग संग काइआ संत सरसन ॥१॥ (१३०३-१२, कानड़ा, मः ५)
सरनि गही पूरन अबिनासी आन उपाव थकित नही करसन ॥ (१३०३-१३, कानड़ा, मः ५)
करु गहि लीए नानक जन अपने अंध घोर सागर नही मरसन ॥२॥१०॥२९॥ (१३०३-१४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०३-१४)
कुहकत कपट खपट खल गरजत मरजत मीचु अनिक बरीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०३-१५, कानड़ा, मः ५)
अहं मत अन रत कुमित हित प्रीतम पेखत भ्रमत लाख गरीआ ॥१॥ (१३०३-१५, कानड़ा, मः ५)
अनित बिउहार अचार बिधि हीनत मम मद मात कोप जरीआ ॥ (१३०३-१६, कानड़ा, मः ५)
करुण कृपाल गोपाल दीन बंधु नानक उधरु सरनि परीआ ॥२॥११॥३०॥ (१३०३-१७, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०३-१८)
जीअ प्रान मान दाता ॥ (१३०३-१८, कानड़ा, मः ५)
हरि बिसरते ही हानि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०३-१८, कानड़ा, मः ५)
गोबिंद तिआगि आन लागहि अमृतो डारि भूमि पागहि ॥ (१३०३-१८, कानड़ा, मः ५)
बिखै रस सिउ आसकत मूड़े काहे सुख मानि ॥१॥ (१३०३-१९, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०४

कामि क्रोधि लोभि बिआपिओ जनम ही की खानि ॥ (१३०४-१, कानड़ा, मः ५)
पतित पावन सरनि आइओ उधरु नानक जानि ॥२॥१२॥३१॥ (१३०४-१, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०४-२)
अविलोकउ राम को मुखारबिंद ॥ (१३०४-२, कानड़ा, मः ५)
खोजत खोजत रतनु पाइओ बिसरी सभ चिंद ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०४-२, कानड़ा, मः ५)
चरन कमल रिदै धारि ॥ (१३०४-३, कानड़ा, मः ५)
उतरिआ दुखु मंद ॥१॥ (१३०४-३, कानड़ा, मः ५)
राज धनु परवारु मेरै सरबसो गोबिंद ॥ (१३०४-३, कानड़ा, मः ५)
साधसंगमि लाभु पाइओ नानक फिरि न मरंद ॥२॥१३॥३२॥ (१३०४-४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ५ (१३०४-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०४-५)
प्रभ पूजहो नामु अराधि ॥ (१३०४-६, कानड़ा, मः ५)
गुर सतिगुर चरनी लागि ॥ (१३०४-६, कानड़ा, मः ५)
हरि पावहु मनु अगाधि ॥ (१३०४-६, कानड़ा, मः ५)

जगु जीतो हो हो गुर किरपाधि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०४-६, कानड़ा, मः ५)
अनिक पूजा मै बहु बिधि खोजी सा पूजा जि हरि भावासि ॥ (१३०४-७, कानड़ा, मः ५)
माटी की इह पुतरी जोरी किआ एह कर्म कमासि ॥ (१३०४-७, कानड़ा, मः ५)
प्रभ बाह पकरि जिसु मारगि पावहु सो तुधु जंत मिलासि ॥१॥ (१३०४-८, कानड़ा, मः ५)
अवर ओट मै कोइ न सूझै इक हरि की ओट मै आस ॥ (१३०४-९, कानड़ा, मः ५)
किआ दीनु करे अरदासि ॥ (१३०४-९, कानड़ा, मः ५)
जउ सभ घटि प्रभू निवास ॥ (१३०४-९, कानड़ा, मः ५)
प्रभ चरनन की मनि पिआस ॥ (१३०४-१०, कानड़ा, मः ५)
जन नानक दासु कहीअतु है तुम्हरा हउ बलि बलि सद बलि जास ॥२॥१॥३३॥ (१३०४-१०, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ६ (१३०४-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०४-१२)
जगत उधारन नाम प्रिअ तेरै ॥ (१३०४-१३, कानड़ा, मः ५)
नव निधि नामु निधानु हरि केरै ॥ (१३०४-१३, कानड़ा, मः ५)
हरि रंग रंग रंग अनूपेरै ॥ (१३०४-१३, कानड़ा, मः ५)
काहे रे मन मोहि मगनेरै ॥ (१३०४-१३, कानड़ा, मः ५)
नैनहु देखु साध दरसेरै ॥ (१३०४-१४, कानड़ा, मः ५)
सो पावै जिसु लिखतु लिलेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०४-१४, कानड़ा, मः ५)
सेवउ साध संत चरनेरै ॥ (१३०४-१४, कानड़ा, मः ५)
बाँछउ धूरि पवित्र करेरै ॥ (१३०४-१५, कानड़ा, मः ५)
अठसठि मजनु मैलु कटेरै ॥ (१३०४-१५, कानड़ा, मः ५)
सासि सासि धिआवहु मुखु नही मोरै ॥ (१३०४-१५, कानड़ा, मः ५)
किछु संगि न चालै लाख करोरै ॥ (१३०४-१६, कानड़ा, मः ५)
प्रभ जी को नामु अंति पुकरोरै ॥१॥ (१३०४-१६, कानड़ा, मः ५)
मनसा मानि एक निरंकेरै ॥ (१३०४-१६, कानड़ा, मः ५)
सगल तिआगहु भाउ दूजेरै ॥ (१३०४-१७, कानड़ा, मः ५)
कवन कहाँ हउ गुन प्रिअ तेरै ॥ (१३०४-१७, कानड़ा, मः ५)
बरनि न साकउ एक टुलेरै ॥ (१३०४-१७, कानड़ा, मः ५)
दरसन पिआस बहुतु मनि मेरै ॥ (१३०४-१८, कानड़ा, मः ५)
मिलु नानक देव जगत गुर केरै ॥२॥१॥३४॥ (१३०४-१८, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०५

कानड़ा महला ५ ॥ (१३०५-१)
ऐसी कउन बिधे दरसन परसना ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०५-१, कानड़ा, मः ५)
आस पिआस सफल मूरति उमगि हीउ तरसना ॥१॥ (१३०५-१, कानड़ा, मः ५)
दीन लीन पिआस मीन संतना हरि संतना ॥ (१३०५-२, कानड़ा, मः ५)

हरि संतना की रेन ॥ (१३०५-२, कानड़ा, मः ५)
हीउ अरपि देन ॥ (१३०५-३, कानड़ा, मः ५)
प्रभ भए है किरपेन ॥ (१३०५-३, कानड़ा, मः ५)
मानु मोहु तिआगि छोडिओ तउ नानक हरि जीउ भेटना ॥२॥२॥३५॥ (१३०५-३, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०५-४)
रंगा रंग रंगन के रंगा ॥ (१३०५-४, कानड़ा, मः ५)
कीट हसत पूरन सभ संगा ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०५-४, कानड़ा, मः ५)
बरत नेम तीर्थ सहित गंगा ॥ (१३०५-५, कानड़ा, मः ५)
जलु हेवत भूख अरु नंगा ॥ (१३०५-५, कानड़ा, मः ५)
पूजाचार करत मेलंगा ॥ (१३०५-५, कानड़ा, मः ५)
चक्र कर्म तिलक खाटंगा ॥ (१३०५-६, कानड़ा, मः ५)
दरसनु भेटे बिनु सतसंगा ॥१॥ (१३०५-६, कानड़ा, मः ५)
हठि निग्रहि अति रहत बिटंगा ॥ (१३०५-६, कानड़ा, मः ५)
हउ रोगु बिआपै चुकै न भंगा ॥ (१३०५-७, कानड़ा, मः ५)
काम क्रोध अति तृसन जरंगा ॥ (१३०५-७, कानड़ा, मः ५)
सो मुकतु नानक जिसु सतिगुरु चंगा ॥२॥३॥३६॥ (१३०५-७, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ७ (१३०५-९)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०५-९)
तिख बूझि गई गई मिलि साध जना ॥ (१३०५-१०, कानड़ा, मः ५)
पंच भागे चोर सहजे सुखैनो हरे गुन गावती गावती गावती दरस पिआरि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०५-१०, कानड़ा, मः ५)
जैसी करी प्रभ मो सिउ मो सिउ ऐसी हउ कैसे करउ ॥ (१३०५-११, कानड़ा, मः ५)
हीउ तुम्हारे बलि बले बलि बले बलि गई ॥१॥ (१३०५-११, कानड़ा, मः ५)
पहिले पै संत पाइ धिआइ धिआइ प्रीति लाइ ॥ (१३०५-१२, कानड़ा, मः ५)
प्रभ थानु तेरो केहरो जितु जंतन करि बीचारु ॥ (१३०५-१२, कानड़ा, मः ५)
अनिक दास कीरति करहि तुहारी ॥ (१३०५-१३, कानड़ा, मः ५)
सोई मिलिओ जो भावतो जन नानक ठाकुर रहिओ समाइ ॥ (१३०५-१३, कानड़ा, मः ५)
एक तूही तूही तूही ॥२॥१॥३७॥ (१३०५-१४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ८ (१३०५-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०५-१५)
तिआगीऐ गुमानु मानु पेखता दइआल लाल हाँ हाँ मन चरन रेन ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०५-१६, कानड़ा, मः ५)
हरि संत मंत गुपाल गिआन धिआन ॥१॥ (१३०५-१६, कानड़ा, मः ५)
हिरदै गोबिंद गाइ चरन कमल प्रीति लाइ दीन दइआल मोहना ॥ (१३०५-१७, कानड़ा, मः ५)
कृपाल दइआ मइआ धारि ॥ (१३०५-१८, कानड़ा, मः ५)
नानकु मागै नामु दानु ॥ (१३०५-१८, कानड़ा, मः ५)

तजि मोहु भरमु सगल अभिमानु ॥२॥१॥३८॥ (१३०५-१८, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०५-१९)
प्रभ कहन मलन दहन लहन गुर मिले आन नही उपाउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०५-१९, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०६

तटन खटन जटन होमन नाही डंडधार सुआउ ॥१॥ (१३०६-१, कानड़ा, मः ५)
जतन भाँतन तपन भ्रमन अनिक कथन कथते नही थाह पाई ठाउ ॥ (१३०६-१, कानड़ा, मः ५)
सोधि सगर सोधना सुखु नानका भजु नाउ ॥२॥२॥३९॥ (१३०६-२, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ९ (१३०६-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०६-३)
पतित पावनु भगति बछलु भै हरन तारन तरन ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०६-४, कानड़ा, मः ५)
नैन तिपते दरसु पेखि जसु तोखि सुनत करन ॥१॥ (१३०६-४, कानड़ा, मः ५)
प्रान नाथ अनाथ दाते दीन गोबिद सरन ॥ (१३०६-५, कानड़ा, मः ५)
आस पूरन दुख बिनासन गही ओट नानक हरि चरन ॥२॥१॥४०॥ (१३०६-५, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०६-६)
चरन सरन दइआल ठाकुर आन नाही जाइ ॥ (१३०६-६, कानड़ा, मः ५)
पतित पावन बिरदु सुआमी उधरते हरि धिआइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०६-७, कानड़ा, मः ५)
सैसार गार बिकार सागर पतित मोह मान अंध ॥ (१३०६-७, कानड़ा, मः ५)
बिकल माइआ संगि धंध ॥ (१३०६-८, कानड़ा, मः ५)
करु गहे प्रभ आपि काढहु राखि लेहु गोबिंद राइ ॥१॥ (१३०६-८, कानड़ा, मः ५)
अनाथ नाथ सनाथ संतन कोटि पाप बिनास ॥ (१३०६-९, कानड़ा, मः ५)
मनि दरसनै की पिआस ॥ (१३०६-९, कानड़ा, मः ५)
प्रभ पूरन गुनतास ॥ (१३०६-९, कानड़ा, मः ५)
कृपाल दइआल गुपाल नानक हरि रसना गुन गाइ ॥२॥२॥४१॥ (१३०६-१०, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०६-१०)
वारि वारउ अनिक डारउ ॥ (१३०६-१०, कानड़ा, मः ५)
सुखु प्रिअ सुहाग पलक रात ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०६-११, कानड़ा, मः ५)
कनिक मंदर पाट सेज सखी मोहि नाहि इन सिउ तात ॥१॥ (१३०६-११, कानड़ा, मः ५)
मुकत लाल अनिक भोग बिनु नाम नानक हात ॥ (१३०६-१२, कानड़ा, मः ५)
रूखो भोजनु भूमि सैन सखी प्रिअ संगि सूखि बिहात ॥२॥३॥४२॥ (१३०६-१२, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०६-१३)
अहं तोरो मुखु जोरो ॥ (१३०६-१३, कानड़ा, मः ५)
गुरु गुरु करत मनु लोरो ॥ (१३०६-१३, कानड़ा, मः ५)
प्रिअ प्रीति पिआरो मोरो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०६-१४, कानड़ा, मः ५)
गृहि सेज सुहावी आगनि चैना तोरो री तोरो पंच दूतन सिउ संगु तोरो ॥१॥ (१३०६-१४, कानड़ा, मः ५)

आइ न जाइ बसे निज आसनि ऊंध कमल बिगसोरो ॥ (१३०६-१५, कानड़ा, मः ५)
छुटकी हउमै सोरो ॥ (१३०६-१५, कानड़ा, मः ५)
गाइओ री गाइओ प्रभ नानक गुनी गहेरो ॥२॥४॥४३॥ (१३०६-१६, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा मः ५ घरु ६ ॥ (१३०६-१६)
ताँ ते जापि मना हरि जापि ॥ (१३०६-१६, कानड़ा, मः ५)
जो संत बेद कहत पंथु गाखरो मोह मगन अहं ताप ॥ रहाउ ॥ (१३०६-१७, कानड़ा, मः ५)
जो राते माते संगि बपुरी माइआ मोह संताप ॥१॥ (१३०६-१७, कानड़ा, मः ५)
नामु जपत सोऊ जनु उधरै जिसहि उधारहु आप ॥ (१३०६-१८, कानड़ा, मः ५)
बिनसि जाइ मोह भै भरमा नानक संत प्रताप ॥२॥५॥४४॥ (१३०६-१८, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०७

कानड़ा महला ५ घरु १० (१३०७-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०७-२)
ऐसो दानु देहु जी संतहु जात जीउ बलिहारि ॥ (१३०७-३, कानड़ा, मः ५)
मान मोही पंच दोही उरझि निकटि बसिओ ताकी सरनि साधूआ दूत संगु निवारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०७-३, कानड़ा, मः ५)
कोटि जनम जोनि भ्रमिओ हारि परिओ दुआरि ॥१॥ (१३०७-४, कानड़ा, मः ५)
किरपा गोबिंद भई मिलिओ नामु अधारु ॥ (१३०७-४, कानड़ा, मः ५)
दुलभ जनमु सफलु नानक भव उतारि पारि ॥२॥१॥४५॥ (१३०७-५, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ घरु ११ (१३०७-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०७-६)
सहज सुभाए आपन आए ॥ (१३०७-७, कानड़ा, मः ५)
कछू न जानौ कछू दिखाए ॥ (१३०७-७, कानड़ा, मः ५)
प्रभु मिलिओ सुख बाले भोले ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०७-७, कानड़ा, मः ५)
संजोगि मिलाए साध संगाए ॥ (१३०७-८, कानड़ा, मः ५)
कतहू न जाए घरहि बसाए ॥ (१३०७-८, कानड़ा, मः ५)
गुन निधानु प्रगटिओ इह चोलै ॥१॥ (१३०७-८, कानड़ा, मः ५)
चरन लुभाए आन तजाए ॥ (१३०७-९, कानड़ा, मः ५)
थान थनाए सर्ब समाए ॥ (१३०७-९, कानड़ा, मः ५)
रसकि रसकि नानकु गुन बोलै ॥२॥१॥४६॥ (१३०७-९, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०७-१०)
गोबिंद ठाकुर मिलन दुराईं ॥ (१३०७-१०, कानड़ा, मः ५)
परमिति रूपु अगम्म अगोचर रहिओ सर्ब समाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०७-१०, कानड़ा, मः ५)
कहनि भवनि नाही पाइओ पाइओ अनिक उकति चतुराई ॥१॥ (१३०७-११, कानड़ा, मः ५)
जतन जतन अनिक उपाव रे तउ मिलिओ जउ किरपाई ॥ (१३०७-१२, कानड़ा, मः ५)

प्रभू दइआर कृपार कृपा निधि जन नानक संत रेनाई ॥२॥२॥४७॥ (१३०७-१२, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०७-१३)
माई सिमरत राम राम राम ॥ (१३०७-१३, कानड़ा, मः ५)
प्रभ बिना नाही होरु ॥ (१३०७-१४, कानड़ा, मः ५)
चितवउ चरनारबिंद सासन निसि भोर ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०७-१४, कानड़ा, मः ५)
लाइ प्रीति कीन आपन तूटत नही जोरु ॥ (१३०७-१४, कानड़ा, मः ५)
प्रान मनु धनु सरबसुो हरि गुन निधे सुख मोर ॥१॥ (१३०७-१५, कानड़ा, मः ५)
ईत ऊत राम पूरनु निरखत रिद खोरि ॥ (१३०७-१५, कानड़ा, मः ५)
संत सरन तरन नानक बिनसिओ दुखु घोर ॥२॥३॥४८॥ (१३०७-१६, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०७-१६)
जन को प्रभु संगे असनेहु ॥ (१३०७-१७, कानड़ा, मः ५)
साजनो तू मीतु मेरा गृहि तेरै सभु केहु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०७-१७, कानड़ा, मः ५)
मानु माँगउ तानु माँगउ धनु लखमी सुत देह ॥१॥ (१३०७-१७, कानड़ा, मः ५)
मुकति जुगति भुगति पूरन परमानंद पर्म निधान ॥ (१३०७-१८, कानड़ा, मः ५)

पन्ना १३०८

भै भाइ भगति निहाल नानक सदा सदा कुरबान ॥२॥४॥४९॥ (१३०८-१, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा महला ५ ॥ (१३०८-१)
करत करत चरच चरच चरचरी ॥ (१३०८-१, कानड़ा, मः ५)
जोग धिआन भेख गिआन फिरत फिरत धरत धरत धरचरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०८-२, कानड़ा, मः ५)
अहं अहं अहै अवर मूड़ मूड़ मूड़ बवरई ॥ (१३०८-३, कानड़ा, मः ५)
जति जात जात जात सदा सदा सदा सदा काल हई ॥१॥ (१३०८-३, कानड़ा, मः ५)
मानु मानु मानु तिआगि मिरतु मिरतु निकटि निकटि सदा हई ॥ (१३०८-४, कानड़ा, मः ५)
हरि हरे हरे भाजु कहतु नानकु सुनहु रे मूड़ बिनु भजन भजन भजन अहिला जनमु गई ॥२॥५॥५०॥१२॥६२॥ (१३०८-४, कानड़ा, मः ५)
कानड़ा असटपदीआ महला ४ घरु १ (१३०८-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३०८-६)
जपि मन राम नामु सुखु पावैगो ॥ (१३०८-७, कानड़ा, मः ४)
जिउ जिउ जपै तिवै सुखु पावै सतिगुरु सेवि समावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०८-७, कानड़ा, मः ४)
भगत जनाँ की खिनु खिनु लोचा नामु जपत सुखु पावैगो ॥ (१३०८-८, कानड़ा, मः ४)
अन रस साद गए सभ नीकरि बिनु नावै किछु न सुखावैगो ॥१॥ (१३०८-८, कानड़ा, मः ४)
गुरमति हरि हरि मीठा लागा गुरु मीठे बचन कढावैगो ॥ (१३०८-९, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर बाणी पुरखु पुरखोतम बाणी सिउ चितु लावैगो ॥२॥ (१३०८-९, कानड़ा, मः ४)
गुरबाणी सुनत मेरा मनु द्रविआ मनु भीना निज घरि आवैगो ॥ (१३०८-१०, कानड़ा, मः ४)
तह अनहत धुनी बाजहि नित बाजे नीझर धार चुआवैगो ॥३॥ (१३०८-११, कानड़ा, मः ४)

राम नामु इकु तिल तिल गावै मनु गुरमति नामि समावैगो ॥ (१३०८-११, कानड़ा, मः ४)
नामु सुणै नामो मनि भावै नामे ही तृपतावैगो ॥४॥ (१३०८-१२, कानड़ा, मः ४)
कनिक कनिक पहिरे बहु कंगना कापरु भाँति बनावैगो ॥ (१३०८-१२, कानड़ा, मः ४)
नाम बिना सभि फीक फिकाने जनमि मरै फिरि आवैगो ॥५॥ (१३०८-१३, कानड़ा, मः ४)
माइआ पटल पटल है भारी घरु घूमनि घेरि घुलावैगो ॥ (१३०८-१४, कानड़ा, मः ४)
पाप बिकार मनूर सभि भारे बिखु दुतरु तरिओ न जावैगो ॥६॥ (१३०८-१४, कानड़ा, मः ४)
भउ बैरागु भइआ है बोहिथु गुरु खेवटु सबदि तरावैगो ॥ (१३०८-१५, कानड़ा, मः ४)
राम नामु हरि भेटीऐ हरि रामै नामि समावैगो ॥७॥ (१३०८-१६, कानड़ा, मः ४)
अगिआनि लाइ सवालिआ गुर गिआनै लाइ जगावैगो ॥ (१३०८-१६, कानड़ा, मः ४)
नानक भाणै आपणै जिउ भावै तिवै चलावैगो ॥८॥१॥ (१३०८-१७, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१३०८-१७)
जपि मन हरि हरि नामु तरावैगो ॥ (१३०८-१७, कानड़ा, मः ४)
जो जो जपै सोई गति पावै जिउ ध्रू प्रहिलादु समावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०८-१८, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १३०९

कृपा कृपा कृपा करि हरि जीउ करि किरपा नामि लगावैगो ॥ (१३०९-१, कानड़ा, मः ४)
करि किरपा सतिगुरू मिलावहु मिलि सतिगुर नामु धिआवैगो ॥१॥ (१३०९-१, कानड़ा, मः ४)
जनम जनम की हउमै मलु लागी मिलि संगति मलु लहि जावैगो ॥ (१३०९-२, कानड़ा, मः ४)
जिउ लोहा तरिओ संगि कासट लगि सबदि गुरू हरि पावैगो ॥२॥ (१३०९-३, कानड़ा, मः ४)
संगति संत मिलहु सतसंगति मिलि संगति हरि रसु आवैगो ॥ (१३०९-३, कानड़ा, मः ४)
बिनु संगति कर्म करै अभिमानी कढि पाणी चीकड़ु पावैगो ॥३॥ (१३०९-४, कानड़ा, मः ४)
भगत जना के हरि रखवारे जन हरि रसु मीठ लगावैगो ॥ (१३०९-५, कानड़ा, मः ४)
खिनु खिनु नामु देइ वडिआई सतिगुर उपदेसि समावैगो ॥४॥ (१३०९-५, कानड़ा, मः ४)
भगत जना कउ सदा निवि रहीऐ जन निवहि ता फल गुन पावैगो ॥ (१३०९-६, कानड़ा, मः ४)
जो निंदा दुसट करहि भगता की हरनाखस जिउ पचि जावैगो ॥५॥ (१३०९-६, कानड़ा, मः ४)
ब्रह्म कमल पुतु मीन बिआसा तपु तापन पूज करावैगो ॥ (१३०९-७, कानड़ा, मः ४)
जो जो भगतु होइ सो पूजहु भरमन भरमु चुकावैगो ॥६॥ (१३०९-८, कानड़ा, मः ४)
जात नजाति देखि मत भरमहु सुक जनक पगीं लगि धिआवैगो ॥ (१३०९-८, कानड़ा, मः ४)
जूठन जूठि पई सिर ऊपरि खिनु मनूआ तिलु न डुलावैगो ॥७॥ (१३०९-९, कानड़ा, मः ४)
जनक जनक बैठे सिंघासनि नउ मुनी धूरि लै लावैगो ॥ (१३०९-१०, कानड़ा, मः ४)
नानक कृपा कृपा करि ठाकुर मै दासनि दास करावैगो ॥८॥२॥ (१३०९-१०, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१३०९-११)
मनु गुरमति रसि गुन गावैगो ॥ (१३०९-११, कानड़ा, मः ४)
जिहवा एक होइ लख कोटी लख कोटी कोटि धिआवैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३०९-१२, कानड़ा, मः ४)
सहस फनी जपिओ सेखनागै हरि जपतिआ अंतु न पावैगो ॥ (१३०९-१२, कानड़ा, मः ४)

तू अथाहु अति अगमु अगमु है मति गुरमति मनु ठहरावैगो ॥१॥ (१३०६-१३, कानड़ा, मः ४)
जिन तू जपिओ तेई जन नीके हरि जपतिअहु कउ सुखु पावैगो ॥ (१३०६-१४, कानड़ा, मः ४)
बिदर दासी सुतु छोक छोहरा कृसनु अंकि गलि लावैगो ॥२॥ (१३०६-१४, कानड़ा, मः ४)
जल ते ओपति भई है कासट कासट अंगि तरावैगो ॥ (१३०६-१५, कानड़ा, मः ४)
राम जना हरि आपि सवारे अपना बिरदु रखावैगो ॥३॥ (१३०६-१५, कानड़ा, मः ४)
हम पाथर लोह लोह बड पाथर गुर संगति नाव तरावैगो ॥ (१३०६-१६, कानड़ा, मः ४)
जिउ सतसंगति तरिओ जुलाहो संत जना मनि भावैगो ॥४॥ (१३०६-१७, कानड़ा, मः ४)
खरे खरोए बैठत ऊठत मारगि पंथि धिआवैगो ॥ (१३०६-१७, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर बचन बचन है सतिगुर पाधरु मुकति जनावैगो ॥५॥ (१३०६-१८, कानड़ा, मः ४)
सासनि सासि सासि बलु पाई है निहसासनि नामु धिआवैगो ॥ (१३०६-१८, कानड़ा, मः ४)
गुर परसादी हउमै बूझै तौ गुरमति नामि समावैगो ॥६॥ (१३०६-१९, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १३१०

सतिगुरु दाता जीअ जीअन को भागहीन नही भावैगो ॥ (१३१०-१, कानड़ा, मः ४)
फिरि एह वेला हाथि न आवै परतापै पछुतावैगो ॥७॥ (१३१०-१, कानड़ा, मः ४)
जे को भला लोड़ै भल अपना गुर आगै ढहि ढहि पावैगो ॥ (१३१०-२, कानड़ा, मः ४)
नानक दइआ दइआ करि ठाकुर मै सतिगुर भसम लगावैगो ॥८॥३॥ (१३१०-२, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१३१०-३)
मनु हरि रंगि राता गावैगो ॥ (१३१०-३, कानड़ा, मः ४)
भै भै त्रास भए है निर्मल गुरमति लागि लगावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३१०-४, कानड़ा, मः ४)
हरि रंगि राता सद बैरागी हरि निकटि तिना घरि आवैगो ॥ (१३१०-४, कानड़ा, मः ४)
तिन की पंक मिलै ताँ जीवा करि किरपा आपि दिवावैगो ॥१॥ (१३१०-५, कानड़ा, मः ४)
दुबिधा लोभि लगे है प्राणी मनि कोरै रंगु न आवैगो ॥ (१३१०-६, कानड़ा, मः ४)
फिरि उलटिओ जनमु होवै गुर बचनी गुरु पुरखु मिलै रंगु लावैगो ॥२॥ (१३१०-६, कानड़ा, मः ४)
इंद्री दसे दसे फुनि धावत त्रै गुणीआ खिनु न टिकावैगो ॥ (१३१०-७, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर परचै वसगति आवै मोख मुकति सो पावैगो ॥३॥ (१३१०-८, कानड़ा, मः ४)
ओअंकारि एको रवि रहिआ सभु एकस माहि समावैगो ॥ (१३१०-८, कानड़ा, मः ४)
एको रूपु एको बहु रंगी सभु एकतु बचनि चलावैगो ॥४॥ (१३१०-९, कानड़ा, मः ४)
गुरमुखि एको एकु पछाता गुरमुखि होइ लखावैगो ॥ (१३१०-९, कानड़ा, मः ४)
गुरमुखि जाइ मिलै निज महली अनहद सबदु बजावैगो ॥५॥ (१३१०-१०, कानड़ा, मः ४)
जीअ जंत सभ सिसटि उपाई गुरमुखि सोभा पावैगो ॥ (१३१०-११, कानड़ा, मः ४)
बिनु गुर भेटे को महलु न पावै आइ जाइ दुखु पावैगो ॥६॥ (१३१०-११, कानड़ा, मः ४)
अनेक जनम विछुड़े मेरे प्रीतम करि किरपा गुरू मिलावैगो ॥ (१३१०-१२, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर मिलत महा सुखु पाइआ मति मलीन बिगसावैगो ॥७॥ (१३१०-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि कृपा करहु जगजीवन मै सरधा नामि लगावैगो ॥ (१३१०-१३, कानड़ा, मः ४)

नानक गुरू गुरू है सतिगुरु मै सतिगुरु सरनि मिलावैगो ॥८॥४॥ (१३१०-१४, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१३१०-१५)
मन गुरमति चाल चलावैगो ॥ (१३१०-१५, कानड़ा, मः ४)
जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे गुर अंकसु सबदु दृड़ावैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३१०-१५, कानड़ा, मः ४)
चलतौ चलै चलै दह दह दिसि गुरु राखै हरि लिव लावैगो ॥ (१३१०-१६, कानड़ा, मः ४)
सतिगुरु सबदु देइ रिद अंतरि मुखि अमृतु नामु चुआवैगो ॥१॥ (१३१०-१६, कानड़ा, मः ४)
बिसीअर बिसू भरे है पूरन गुरु गरुड़ सबदु मुखि पावैगो ॥ (१३१०-१७, कानड़ा, मः ४)
माइआ भुइअंग तिसु नेड़ि न आवै बिखु झारि झारि लिव लावैगो ॥२॥ (१३१०-१८, कानड़ा, मः ४)
सुआनु लोभु नगर महि सबला गुरु खिन महि मारि कढावैगो ॥ (१३१०-१६, कानड़ा, मः ४)
सतु संतोखु धरमु आनि राखे हरि नगरी हरि गुन गावैगो ॥३॥ (१३१०-१६, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १३११

पंकज मोह निघरतु है प्रानी गुरु निघरत काढि कढावैगो ॥ (१३११-१, कानड़ा, मः ४)
त्राहि त्राहि सरनि जन आए गुरु हाथी दे निकलावैगो ॥४॥ (१३११-२, कानड़ा, मः ४)
सुपनंतरु संसारु सभु बाजी सभु बाजी खेलु खिलावैगो ॥ (१३११-२, कानड़ा, मः ४)
लाहा नामु गुरमति लै चालहु हरि दरगह पैधा जावैगो ॥५॥ (१३११-३, कानड़ा, मः ४)
हउमै करै करावै हउमै पाप कोइले आनि जमावैगो ॥ (१३११-३, कानड़ा, मः ४)
आइआ कालु दुखदाई होए जो बीजे सो खवलावैगो ॥६॥ (१३११-४, कानड़ा, मः ४)
संतहु राम नामु धनु संचहु लै खरचु चले पति पावैगो ॥ (१३११-४, कानड़ा, मः ४)
खाइ खरचि देवहि बहुतेरा हरि देदे तोटि न आवैगो ॥७॥ (१३११-५, कानड़ा, मः ४)
राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो ॥ (१३११-६, कानड़ा, मः ४)
नानक दइआ दइआ करि दीनी दुखु दालदु भंजि समावैगो ॥८॥५॥ (१३११-६, कानड़ा, मः ४)
कानड़ा महला ४ ॥ (१३११-७)
मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो ॥ (१३११-७, कानड़ा, मः ४)
लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइ आवैगो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३११-८, कानड़ा, मः ४)
सतिगुरु महा पुरखु है पारसु जो लागै सो फलु पावैगो ॥ (१३११-८, कानड़ा, मः ४)
जिउ गुर उपदेसि तरे प्रहिलादा गुरु सेवक पैज रखावैगो ॥१॥ (१३११-६, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर बचनु बचनु है नीको गुर बचनी अमृतु पावैगो ॥ (१३११-१०, कानड़ा, मः ४)
जिउ अम्बरीकि अमरा पद पाए सतिगुर मुख बचन धिआवैगो ॥२॥ (१३११-१०, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर सरनि सरनि मनि भाई सुधा सुधा करि धिआवैगो ॥ (१३११-११, कानड़ा, मः ४)
दइआल दीन भए है सतिगुर हरि मारगु पंथु दिखावैगो ॥३॥ (१३११-११, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर सरनि पए से थापे तिन राखन कउ प्रभु आवैगो ॥ (१३११-१२, कानड़ा, मः ४)
जे को सरु संधै जन ऊपरि फिरि उलटो तिसै लगावैगो ॥४॥ (१३११-१३, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि हरि हरि हरि सरु सेवहि तिन दरगह मानु दिवावैगो ॥ (१३११-१३, कानड़ा, मः ४)
गुरमति गुरमति गुरमति धिआवहि हरि गलि मिलि मेलि मिलावैगो ॥५॥ (१३११-१४, कानड़ा, मः ४)

गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥ (१३११-१५, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥६॥ (१३११-१५, कानड़ा, मः ४)
साकत नर सतिगुरु नही कीआ ते बेमुख हरि भरमावैगो ॥ (१३११-१६, कानड़ा, मः ४)
लोभ लहरि सुआन की संगति बिखु माइआ करंगि लगावैगो ॥७॥ (१३११-१७, कानड़ा, मः ४)
राम नामु सभ जग का तारकु लगि संगति नामु धिआवैगो ॥ (१३११-१७, कानड़ा, मः ४)
नानक राखु राखु प्रभ मेरे सतसंगति राखि समावैगो ॥८॥६॥ (१३११-१८, कानड़ा, मः ४)
छका १ ॥ (१३११-१९)

पन्ना १३१२

कानड़ा छंत महला ५ (१३१२-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३१२-१)
से उधरे जिन राम धिआए ॥ (१३१२-२, कानड़ा, मः ५)
जतन माइआ के कामि न आए ॥ (१३१२-२, कानड़ा, मः ५)
राम धिआए सभि फल पाए धनि धंनि ते बडभागीआ ॥ (१३१२-२, कानड़ा, मः ५)
सतसंगि जागे नामि लागे एक सिउ लिव लागीआ ॥ (१३१२-३, कानड़ा, मः ५)
तजि मान मोह बिकार साधू लगि तरउ तिन कै पाए ॥ (१३१२-३, कानड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक सरणि सुआमी बडभागि दरसनु पाए ॥१॥ (१३१२-४, कानड़ा, मः ५)
मिलि साधू नित भजह नाराइण ॥ (१३१२-५, कानड़ा, मः ५)
रसकि रसकि सुआमी गुण गाइण ॥ (१३१२-५, कानड़ा, मः ५)
गुण गाइ जीवह हरि अमिउ पीवह जनम मरणा भागए ॥ (१३१२-५, कानड़ा, मः ५)
सतसंगि पाईऐ हरि धिआईऐ बहुड़ि दूखु न लागए ॥ (१३१२-६, कानड़ा, मः ५)
करि दइआ दाते पुरख बिधाते संत सेव कमाइण ॥ (१३१२-६, कानड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक जन धूरि बाँछहि हरि दरसि सहजि समाइण ॥२॥ (१३१२-७, कानड़ा, मः ५)
सगले जंत भजहु गोपालै ॥ (१३१२-८, कानड़ा, मः ५)
जप तप संजम पूरन घालै ॥ (१३१२-८, कानड़ा, मः ५)
नित भजहु सुआमी अंतरजामी सफल जनमु सबाइआ ॥ (१३१२-८, कानड़ा, मः ५)
गोबिदु गाईऐ नित धिआईऐ परवाणु सोई आइआ ॥ (१३१२-९, कानड़ा, मः ५)
जप ताप संजम हरि हरि निरंजन गोबिंद धनु संगि चालै ॥ (१३१२-१०, कानड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक करि दइआ दीजै हरि रतनु बाधउ पालै ॥३॥ (१३१२-१०, कानड़ा, मः ५)
मंगलचार चोज आनंदा ॥ (१३१२-११, कानड़ा, मः ५)
करि किरपा मिले परमानंदा ॥ (१३१२-११, कानड़ा, मः ५)
प्रभ मिले सुआमी सुखहगामी इछ मन की पुन्नीआ ॥ (१३१२-११, कानड़ा, मः ५)
बजी बधाई सहजे समाई बहुड़ि दूखि न रुन्नीआ ॥ (१३१२-१२, कानड़ा, मः ५)
ले कंठि लाए सुख दिखाए बिकार बिनसे मंदा ॥ (१३१२-१३, कानड़ा, मः ५)
बिनवंति नानक मिले सुआमी पुरख परमानंदा ॥४॥१॥ (१३१२-१३, कानड़ा, मः ५)

कानड़े की वार महला ४ मूसे की वार की धुनी (१३१२-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३१२-१५)
सलोक मः ४ ॥ (१३१२-१६)
राम नामु निधानु हरि गुरमति रखु उर धारि ॥ (१३१२-१६, कानड़ा, मः ४)
दासन दासा होइ रहु हउमै बिखिआ मारि ॥ (१३१२-१६, कानड़ा, मः ४)
जनमु पदारथु जीतिआ कदे न आवै हारि ॥ (१३१२-१७, कानड़ा, मः ४)
धनु धनु वडभागी नानका जिन गुरमति हरि रसु सारि ॥१॥ (१३१२-१७, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१२-१८)
गोविंदु गोविदु गोविदु हरि गोविदु गुणी निधानु ॥ (१३१२-१८, कानड़ा, मः ४)
गोविदु गोविदु गुरमति धिआईऐ ताँ दरगह पाईऐ मानु ॥ (१३१२-१८, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १३१३

गोविदु गोविदु गोविदु जपि मुखु ऊजला प्रधानु ॥ (१३१३-१, कानड़ा, मः ४)
नानक गुरु गोविंदु हरि जितु मिलि हरि पाइआ नामु ॥२॥ (१३१३-२, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१३-२)
तूं आपे ही सिध साधिको तू आपे ही जुग जोगीआ ॥ (१३१३-२, कानड़ा, मः ४)
तू आपे ही रस रसीअड़ा तू आपे ही भोग भोगीआ ॥ (१३१३-३, कानड़ा, मः ४)
तू आपे आपि वरतदा तू आपे करहि सु होगीआ ॥ (१३१३-३, कानड़ा, मः ४)
सतसंगति सतिगुर धन्नु धनो धन्न धन्न धनो जितु मिलि हरि बुलग बुलोगीआ ॥ (१३१३-४, कानड़ा, मः ४)
सभि कहहु मुखहु हरि हरि हरे हरि हरि हरे हरि बोलत सभि पाप लहोगीआ ॥१॥ (१३१३-५, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१३-६)
हरि हरि हरि हरि नामु है गुरमुखि पावै कोइ ॥ (१३१३-६, कानड़ा, मः ४)
हउमै ममता नासु होइ दुरमति कढै धोइ ॥ (१३१३-६, कानड़ा, मः ४)
नानक अनदिनु गुण उचरै जिन कउ धुरि लिखिआ होइ ॥१॥ (१३१३-७, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१३-७)
हरि आपे आपि दइआलु हरि आपे करे सु होइ ॥ (१३१३-७, कानड़ा, मः ४)
हरि आपे आपि वरतदा हरि जेवडु अवरु न कोइ ॥ (१३१३-८, कानड़ा, मः ४)
जो हरि प्रभु भावै सो थीऐ जो हरि प्रभ करे सु होइ ॥ (१३१३-९, कानड़ा, मः ४)
कीमति किनै न पाईआ बेअंतु प्रभू हरि सोइ ॥ (१३१३-९, कानड़ा, मः ४)
नानक गुरमुखि हरि सालाहिआ तनु मनु सीतलु होइ ॥२॥ (१३१३-१०, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१३-१०)
सभ जोति तेरी जगजीवना तू घटि घटि हरि रंग रंगना ॥ (१३१३-१०, कानड़ा, मः ४)
सभि धिआवहि तुधु मेरे प्रीतमा तू सति सति पुरख निरंजना ॥ (१३१३-११, कानड़ा, मः ४)
इकु दाता सभु जगतु भिखारीआ हरि जाचहि सभ मंग मंगना ॥ (१३१३-११, कानड़ा, मः ४)
सेवकु ठाकुरु सभु तूहै तूहै गुरमती हरि चंग चंगना ॥ (१३१३-१२, कानड़ा, मः ४)

सभि कहहु मुखहु रिखीकेसु हरे रिखीकेसु हरे जितु पावहि सभ फल फलना ॥२॥ (१३१३-१३, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१३-१४)
हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ (१३१३-१४, कानड़ा, मः ४)
जो इछहि सो फलु पाइसी गुर सबदी लगै धिआनु ॥ (१३१३-१४, कानड़ा, मः ४)
किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ (१३१३-१५, कानड़ा, मः ४)
गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रह्मु पछानु ॥ (१३१३-१५, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥१॥ (१३१३-१६, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१३-१७)
हरि हरि नामु पवितु है नामु जपत दुखु जाइ ॥ (१३१३-१७, कानड़ा, मः ४)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन मनि वसिआ आइ ॥ (१३१३-१७, कानड़ा, मः ४)
सतिगुर कै भाणै जो चलै तिन दालदु दुखु लहि जाइ ॥ (१३१३-१८, कानड़ा, मः ४)
आपणै भाणै किनै न पाइओ जन वेखहु मनि पतीआइ ॥ (१३१३-१८, कानड़ा, मः ४)
जनु नानकु दासन दासु है जो सतिगुर लागे पाइ ॥२॥ (१३१३-१९, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१३-१९)

पन्ना १३१४

तूं थान थनंतरि भरपूरु हहि करते सभ तेरी बणत बणावणी ॥ (१३१४-१, कानड़ा, मः ४)
रंग परंग सिसटि सभ साजी बहु बहु बिधि भाँति उपावणी ॥ (१३१४-१, कानड़ा, मः ४)
सभ तेरी जोति जोती विचि वरतहि गुरमती तुधै लावणी ॥ (१३१४-२, कानड़ा, मः ४)
जिन होहि दइआलु तिन सतिगुरु मेलहि मुखि गुरमुखि हरि समझावणी ॥ (१३१४-२, कानड़ा, मः ४)
सभि बोलहु राम रमो स्री राम रमो जितु दालदु दुख भुख सभ लहि जावणी ॥३॥ (१३१४-३, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१४-४)
हरि हरि अमृतु नाम रसु हरि अमृतु हरि उर धारि ॥ (१३१४-४, कानड़ा, मः ४)
विचि संगति हरि प्रभु वरतदा बुझहु सबद वीचारि ॥ (१३१४-५, कानड़ा, मः ४)
मनि हरि हरि नामु धिआइआ बिखु हउमै कढी मारि ॥ (१३१४-५, कानड़ा, मः ४)
जिन हरि हरि नामु न चेतिओ तिन जूऐ जनमु सभु हारि ॥ (१३१४-६, कानड़ा, मः ४)
गुरि तुठै हरि चेताइआ हरि नामा हरि उर धारि ॥ (१३१४-६, कानड़ा, मः ४)
जन नानक ते मुख उजले तितु सचै दरबारि ॥१॥ (१३१४-७, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१४-८)
हरि कीरति उतमु नामु है विचि कलिजुग करणी सारु ॥ (१३१४-८, कानड़ा, मः ४)
मति गुरमति कीरति पाईऐ हरि नामा हरि उरि हारु ॥ (१३१४-८, कानड़ा, मः ४)
वडभागी जिन हरि धिआइआ तिन सउपिआ हरि भंडारु ॥ (१३१४-९, कानड़ा, मः ४)
बिनु नावै जि कर्म कमावणे नित हउमै होइ खुआरु ॥ (१३१४-९, कानड़ा, मः ४)
जलि हसती मलि नावालीऐ सिरि भी फिरि पावै छारु ॥ (१३१४-१०, कानड़ा, मः ४)
हरि मेलहु सतिगुरु दइआ करि मनि वसै एकंकारु ॥ (१३१४-११, कानड़ा, मः ४)

जिन गुरमुखि सुणि हरि मंनिआ जन नानक तिन जैकारु ॥२॥ (१३१४-११, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१४-१२)
राम नामु वखरु है ऊतमु हरि नाइकु पुरखु हमारा ॥ (१३१४-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि खेलु कीआ हरि आपे वरतै सभु जगतु कीआ वणजारा ॥ (१३१४-१२, कानड़ा, मः ४)
सभ जोति तेरी जोती विचि करते सभु सचु तेरा पासारा ॥ (१३१४-१३, कानड़ा, मः ४)
सभि धिआवहि तुधु सफल से गावहि गुरमती हरि निरंकारा ॥ (१३१४-१४, कानड़ा, मः ४)
सभि चवहु मुखहु जगन्नाथु जगन्नाथु जगजीवनो जितु भवजल पारि उतारा ॥४॥ (१३१४-१४, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१४-१५)
हमरी जिहबा एक प्रभ हरि के गुण अगम अथाह ॥ (१३१४-१५, कानड़ा, मः ४)
हम किउ करि जपह इआणिआ हरि तुम वड अगम अगाह ॥ (१३१४-१६, कानड़ा, मः ४)
हरि देहु प्रभू मति ऊतमा गुर सतिगुर कै पगि पाह ॥ (१३१४-१६, कानड़ा, मः ४)
सतसंगति हरि मेलि प्रभ हम पापी संगि तराह ॥ (१३१४-१७, कानड़ा, मः ४)
जन नानक कउ हरि बखसि लैहु हरि तुठै मेलि मिलाह ॥ (१३१४-१७, कानड़ा, मः ४)
हरि किरपा करि सुणि बेनती हम पापी किर्म तराह ॥१॥ (१३१४-१८, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१४-१९)
हरि करहु कृपा जगजीवना गुरु सतिगुरु मेलि दइआलु ॥ (१३१४-१९, कानड़ा, मः ४)
गुर सेवा हरि हम भाईआ हरि होआ हरि किरपालु ॥ (१३१४-१९, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १३१५

सभ आसा मनसा विसरी मनि चूका आल जंजालु ॥ (१३१५-१, कानड़ा, मः ४)
गुरि तुठै नामु दृड़ाइआ हम कीए सबदि निहालु ॥ (१३१५-१, कानड़ा, मः ४)
जन नानकि अतुटु धनु पाइआ हरि नामा हरि धनु मालु ॥२॥ (१३१५-२, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१५-३)
हरि तुम् वड वडे वडे वड ऊचे सभ ऊपरि वडे वडौना ॥ (१३१५-३, कानड़ा, मः ४)
जो धिआवहि हरि अपरम्परु हरि हरि हरि धिआइ हरे ते होना ॥ (१३१५-३, कानड़ा, मः ४)
जो गावहि सुणहि तेरा जसु सुआमी तिन काटे पाप कटोना ॥ (१३१५-४, कानड़ा, मः ४)
तुम जैसे हरि पुरख जाने मति गुरमति मुखि वड वड भाग वडोना ॥ (१३१५-४, कानड़ा, मः ४)
सभि धिआवहु आदि सते जुगादि सते परतखि सते सदा सदा सते जनु नानकु दासु दसोना ॥५॥ (१३१५-५, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१५-६)
हमरे हरि जगजीवना हरि जपिओ हरि गुर मंत ॥ (१३१५-६, कानड़ा, मः ४)
हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि हरि मिलिआ आइ अचिंत ॥ (१३१५-७, कानड़ा, मः ४)
हरि आपे घटि घटि वरतदा हरि आपे आपि बिअंत ॥ (१३१५-७, कानड़ा, मः ४)
हरि आपे सभ रस भोगदा हरि आपे कवला कंत ॥ (१३१५-८, कानड़ा, मः ४)
हरि आपे भिखिआ पाइदा सभ सिसटि उपाई जीअ जंत ॥ (१३१५-८, कानड़ा, मः ४)

हरि देवहु दानु दइआल प्रभ हरि माँगहि हरि जन संत ॥ (१३१५-९, कानड़ा, मः ४)
जन नानक के प्रभ आइ मिलु हम गावह हरि गुण छंत ॥१॥ (१३१५-१०, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१५-१०)
हरि प्रभु सजणु नामु हरि मै मनि तनि नामु सरीरि ॥ (१३१५-१०, कानड़ा, मः ४)
सभि आसा गुरमुखि पूरीआ जन नानक सुणि हरि धीर ॥२॥ (१३१५-११, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१५-१२, कानड़ा, मः ४)
हरि ऊतमु हरिआ नामु है हरि पुरखु निरंजनु मउला ॥ (१३१५-१२, कानड़ा, मः ४)
जो जपदे हरि हरि दिनसु राति तिन सेवे चरन नित कउला ॥ (१३१५-१२, कानड़ा, मः ४)
नित सारि समाले सभ जीअ जंत हरि वसै निकटि सभ जउला ॥ (१३१५-१३, कानड़ा, मः ४)
सो बूझै जिसु आपि बुझाइसी जिसु सतिगुरु पुरखु प्रभु सउला ॥ (१३१५-१३, कानड़ा, मः ४)
सभि गावहु गुण गोविंद हरे गोविंद हरे गोविंद हरे गुण गावत गुणी समउला ॥६॥ (१३१५-१४, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१५-१५)
सुतिआ हरि प्रभु चेति मनि हरि सहजि समाधि समाइ ॥ (१३१५-१५, कानड़ा, मः ४)
जन नानक हरि हरि चाउ मनि गुरु तुठा मेले माइ ॥१॥ (१३१५-१६, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१५-१६)
हरि इकसु सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥ (१३१५-१६, कानड़ा, मः ४)
जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥२॥ (१३१५-१७, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१५-१८)
पंचे सबद वजे मति गुरमति वडभागी अनहदु वजिआ ॥ (१३१५-१८, कानड़ा, मः ४)
आनद मूलु रामु सभु देखिआ गुर सबदी गोविदु गजिआ ॥ (१३१५-१८, कानड़ा, मः ४)
आदि जुगादि वेसु हरि एको मति गुरमति हरि प्रभु भजिआ ॥ (१३१५-१९, कानड़ा, मः ४)
हरि देवहु दानु दइआल प्रभ जन राखहु हरि प्रभ लजिआ ॥ (१३१५-१९, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १३१६

सभि धन्नु कहहु गुरु सतिगुरू गुरु सतिगुरू जितु मिलि हरि पड़दा कजिआ ॥७॥ (१३१६-१, कानड़ा, मः ४)
सलोकु मः ४ ॥ (१३१६-२)
भगति सरोवरु उछलै सुभर भरे वहंनि ॥ (१३१६-२, कानड़ा, मः ४)
जिना सतिगुरु मंनिआ जन नानक वड भाग लहंनि ॥१॥ (१३१६-२, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१६-३)
हरि हरि नाम असंख हरि हरि के गुन कथनु न जाहि ॥ (१३१६-३, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि अगमु अगाधि हरि जन कितु बिधि मिलहि मिलाहि ॥ (१३१६-४, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि जसु जपत जपंत जन इकु तिलु नही कीमति पाइ ॥ (१३१६-४, कानड़ा, मः ४)
जन नानक हरि अगम प्रभ हरि मेलि लैहु लड़ि लाइ ॥२॥ (१३१६-५, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१६-६)
हरि अगमु अगोचरु अगमु हरि किउ करि हरि दरसनु पिखा ॥ (१३१६-६, कानड़ा, मः ४)

किछु वखरु होइ सु वरनीऐ तिसु रूपु न रिखा ॥ (१३१६-६, कानड़ा, मः ४)
जिसु बुझाए आपि बुझाइ देइ सोई जनु दिखा ॥ (१३१६-७, कानड़ा, मः ४)
सतसंगति सतिगुर चटसाल है जितु हरि गुण सिखा ॥ (१३१६-७, कानड़ा, मः ४)
धनु धन्नु सु रसना धन्नु कर धन्नु सु पाधा सतिगुरू जितु मिलि हरि लेखा लिखा ॥८॥ (१३१६-८, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१६-९)
हरि हरि नामु अमृतु है हरि जपीऐ सतिगुर भाइ ॥ (१३१६-९, कानड़ा, मः ४)
हरि हरि नामु पवितु है हरि जपत सुनत दुखु जाइ ॥ (१३१६-९, कानड़ा, मः ४)
हरि नामु तिनी आराधिआ जिन मसतकि लिखिआ धुरि पाइ ॥ (१३१६-१०, कानड़ा, मः ४)
हरि दरगह जन पैनाईअनि जिन हरि मनि वसिआ आइ ॥ (१३१६-११, कानड़ा, मः ४)
जन नानक ते मुख उजले जिन हरि सुणिआ मनि भाइ ॥१॥ (१३१६-११, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१६-१२)
हरि हरि नामु निधानु है गुरमुखि पाइआ जाइ ॥ (१३१६-१२, कानड़ा, मः ४)
जिन धुरि मसतकि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (१३१६-१२, कानड़ा, मः ४)
तनु मनु सीतलु होइआ साँति वसी मनि आइ ॥ (१३१६-१३, कानड़ा, मः ४)
नानक हरि हरि चउदिआ सभु दालदु दुखु लहि जाइ ॥२॥ (१३१६-१४, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१६-१४)
हउ वारिआ तिन कउ सदा सदा जिना सतिगुरु मेरा पिआरा देखिआ ॥ (१३१६-१४, कानड़ा, मः ४)
तिन कउ मिलिआ मेरा सतिगुरू जिन कउ धुरि मसतकि लेखिआ ॥ (१३१६-१५, कानड़ा, मः ४)
हरि अगमु धिआइआ गुरमती तिसु रूपु नही प्रभ रेखिआ ॥ (१३१६-१६, कानड़ा, मः ४)
गुर बचनि धिआइआ जिना अगमु हरि ते ठाकुर सेवक रलि एकिआ ॥ (१३१६-१६, कानड़ा, मः ४)
सभि कहहु मुखहु नर नरहरे नर नरहरे नर नरहरे हरि लाहा हरि भगति विसेखिआ ॥९॥ (१३१६-१७, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१६-१८)
राम नामु रमु रवि रहे रमु रामो रामु रमीति ॥ (१३१६-१८, कानड़ा, मः ४)
घटि घटि आतम रामु है प्रभि खेलु कीओ रंगि रीति ॥ (१३१६-१९, कानड़ा, मः ४)
हरि निकटि वसै जगजीवना परगासु कीओ गुर मीति ॥ (१३१६-१९, कानड़ा, मः ४)

पन्ना १३१७

हरि सुआमी हरि प्रभु तिन मिले जिन लिखिआ धुरि हरि प्रीति ॥ (१३१७-१, कानड़ा, मः ४)
जन नानक नामु धिआइआ गुर बचनि जपिओ मनि चीति ॥१॥ (१३१७-१, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१७-२)
हरि प्रभु सजणु लोड़ि लहु भागि वसै वडभागि ॥ (१३१७-२, कानड़ा, मः ४)
गुरि पूरै देखालिआ नानक हरि लिव लागि ॥२॥ (१३१७-३, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१७-३)

धनु धनु सुहावी सफल घड़ी जितु हरि सेवा मनि भाणी ॥ (१३१७-३, कानड़ा, मः ४)
हरि कथा सुणावहु मेरे गुरसिखहु मेरे हरि प्रभ अकथ कहाणी ॥ (१३१७-४, कानड़ा, मः ४)
किउ पाईऐ किउ देखीऐ मेरा हरि प्रभु सुघड़ु सुजाणी ॥ (१३१७-४, कानड़ा, मः ४)
हरि मेलि दिखाए आपि हरि गुर बचनी नामि समाणी ॥ (१३१७-५, कानड़ा, मः ४)
तिन विटहु नानकु वारिआ जो जपदे हरि निरबाणी ॥१०॥ (१३१७-५, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१७-६)
हरि प्रभ रते लोइणा गिआन अंजनु गुरु देइ ॥ (१३१७-६, कानड़ा, मः ४)
मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥१॥ (१३१७-७, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१७-७)
गुरमुखि अंतरि साँति है मनि तनि नामि समाइ ॥ (१३१७-७, कानड़ा, मः ४)
नामु चितवै नामो पड़ै नामि रहै लिव लाइ ॥ (१३१७-८, कानड़ा, मः ४)
नामु पदारथु पाईऐ चिंता गई बिलाइ ॥ (१३१७-८, कानड़ा, मः ४)
सतिगुरि मिलिऐ नामु ऊपजै तृसना भुख सभ जाइ ॥ (१३१७-९, कानड़ा, मः ४)
नानक नामे रतिआ नामो पलै पाइ ॥२॥ (१३१७-९, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१७-१०)
तुधु आपे जगतु उपाइ कै तुधु आपे वसगति कीता ॥ (१३१७-१०, कानड़ा, मः ४)
इकि मनमुख करि हाराइअनु इकना मेलि गुरू तिना जीता ॥ (१३१७-१०, कानड़ा, मः ४)
हरि ऊतमु हरि प्रभ नामु है गुर बचनि सभागै लीता ॥ (१३१७-११, कानड़ा, मः ४)
दुखु दालदु सभो लहि गइआ जाँ नाउ गुरू हरि दीता ॥ (१३१७-१२, कानड़ा, मः ४)
सभि सेवहु मोहनो मनमोहनो जगमोहनो जिनि जगतु उपाइ सभो वसि कीता ॥११॥ (१३१७-१२, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१७-१३)
मन अंतरि हउमै रोगु है भ्रमि भूले मनमुख दुरजना ॥ (१३१७-१३, कानड़ा, मः ४)
नानक रोगु वञाइ मिलि सतिगुर साधू सजना ॥१॥ (१३१७-१४, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१७-१४)
मनु तनु तामि सगारवा जाँ देखा हरि नैणे ॥ (१३१७-१४, कानड़ा, मः ४)
नानक सो प्रभु मै मिलै हउ जीवा सदु सुणे ॥२॥ (१३१७-१५, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१७-१५)
जगन्नाथ जगदीसर करते अपरम्पर पुरखु अतोलु ॥ (१३१७-१५, कानड़ा, मः ४)
हरि नामु धिआवहु मेरे गुरसिखहु हरि ऊतमु हरि नामु अमोलु ॥ (१३१७-१६, कानड़ा, मः ४)
जिन धिआइआ हिरदै दिनसु राति ते मिले नही हरि रोलु ॥ (१३१७-१६, कानड़ा, मः ४)
वडभागी संगति मिलै गुर सतिगुर पूरा बोलु ॥ (१३१७-१७, कानड़ा, मः ४)
सभि धिआवहु नर नाराइणो नाराइणो जितु चूका जम झगड़ु झगोलु ॥१२॥ (१३१७-१८, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१७-१८)
हरि जन हरि हरि चउदिआ सरु संधिआ गावार ॥ (१३१७-१९, कानड़ा, मः ४)
नानक हरि जन हरि लिव उबरे जिन संधिआ तिसु फिरि मार ॥१॥ (१३१७-१९, कानड़ा, मः ४)

मः ४ ॥ (१३१८-१)
अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखंन्हि ॥ (१३१८-१, कानड़ा, मः ४)
जे करि दूजा देखदे जन नानक कढि दिचंन्हि ॥२॥ (१३१८-१, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१८-२)
जलि थलि महीअलि पूरनो अपरम्परु सोई ॥ (१३१८-२, कानड़ा, मः ४)
जीअ जंत प्रतिपालदा जो करे सु होई ॥ (१३१८-२, कानड़ा, मः ४)
मात पिता सुत भ्रात मीत तिसु बिनु नही कोई ॥ (१३१८-३, कानड़ा, मः ४)
घटि घटि अंतरि रवि रहिआ जपिअहु जन कोई ॥ (१३१८-३, कानड़ा, मः ४)
सगल जपहु गोपाल गुन परगटु सभ लोई ॥१३॥ (१३१८-४, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१८-४)
गुरमुखि मिले सि सजणा हरि प्रभ पाइआ रंगु ॥ (१३१८-४, कानड़ा, मः ४)
जन नानक नामु सलाहि तू लुडि लुडि दरगहि वंञु ॥१॥ (१३१८-५, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१८-५)
हरि तूहै दाता सभस दा सभि जीअ तुम्हारे ॥ (१३१८-६, कानड़ा, मः ४)
सभि तुधै नो आराधदे दानु देहि पिआरे ॥ (१३१८-६, कानड़ा, मः ४)
हरि दातै दातारि हथु कढिआ मीहु वुठा सैसारे ॥ (१३१८-६, कानड़ा, मः ४)
अन्नु जंमिआ खेती भाउ करि हरि नामु सम्हारे ॥ (१३१८-७, कानड़ा, मः ४)
जनु नानकु मंगै दानु प्रभ हरि नामु अधारे ॥२॥ (१३१८-७, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१८-८)
इछा मन की पूरीऐ जपीऐ सुख सागरु ॥ (१३१८-८, कानड़ा, मः ४)
हरि के चरन अराधीअहि गुर सबदि रतनागरु ॥ (१३१८-८, कानड़ा, मः ४)
मिलि साधू संगि उधारु होइ फाटै जम कागरु ॥ (१३१८-९, कानड़ा, मः ४)
जनम पदारथु जीतीऐ जपि हरि बैरागरु ॥ (१३१८-९, कानड़ा, मः ४)
सभि पवहु सरनि सतिगुरू की बिनसै दुख दागरु ॥१४॥ (१३१८-१०, कानड़ा, मः ४)
सलोक मः ४ ॥ (१३१८-१०)
हउ ढूंढेंदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥ (१३१८-११, कानड़ा, मः ४)
जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥१॥ (१३१८-११, कानड़ा, मः ४)
मः ४ ॥ (१३१८-१२)
नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिसु बिनु रहणु न जाई ॥ (१३१८-१२, कानड़ा, मः ४)
सतिगुरु मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ॥२॥ (१३१८-१२, कानड़ा, मः ४)
पउड़ी ॥ (१३१८-१३)
कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै ॥ (१३१८-१३, कानड़ा, मः ४)
जनम जनम की मलु उतरै मन चिंदिआ पावै ॥ (१३१८-१३, कानड़ा, मः ४)

आवणु जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै ॥ (१३१८-१४, कानड़ा, मः ४)
आपि तरहि संगी तराहि सभ कुटम्बु तरावै ॥ (१३१८-१४, कानड़ा, मः ४)
जनु नानकु तिसु बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै ॥१५॥१॥ सुधु ॥ (१३१८-१५, कानड़ा, मः ४)
रागु कानड़ा बाणी नामदेव जीउ की (१३१८-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३१८-१६)
ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥ (१३१८-१७, कानड़ा, भगत नामदेव जी)
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३१८-१७, कानड़ा, भगत नामदेव जी)
बसै घटा घट लीप न छीपै ॥ (१३१८-१७, कानड़ा, भगत नामदेव जी)
बंधन मुकता जातु न दीसै ॥१॥ (१३१८-१८, कानड़ा, भगत नामदेव जी)
पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥ (१३१८-१८, कानड़ा, भगत नामदेव जी)
नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥२॥१॥ (१३१८-१८, कानड़ा, भगत नामदेव जी)

पन्ना १३१९

रागु कलिआन महला ४ (१३१९-१)
ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१३१९-२)
रामा रम रामै अंतु न पाइआ ॥ (१३१९-४, कलिआन, मः ४)
हम बारिक प्रतिपारे तुमरे तू बड पुरखु पिता मेरा माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३१९-४, कलिआन, मः ४)
हरि के नाम असंख अगम हहि अगम अगम हरि राइआ ॥ (१३१९-५, कलिआन, मः ४)
गुणी गिआनी सुरति बहु कीनी इकु तिलु नही कीमति पाइआ ॥१॥ (१३१९-५, कलिआन, मः ४)
गोबिद गुण गोबिद सद गावहि गुण गोबिद अंतु न पाइआ ॥ (१३१९-६, कलिआन, मः ४)
तू अमिति अतोलु अपरम्पर सुआमी बहु जपीऐ थाह न पाइआ ॥२॥ (१३१९-७, कलिआन, मः ४)
उसतति करहि तुमरी जन माधौ गुन गावहि हरि राइआ ॥ (१३१९-७, कलिआन, मः ४)
तुम् जल निधि हम मीने तुमरे तेरा अंतु न कतहू पाइआ ॥३॥ (१३१९-८, कलिआन, मः ४)
जन कउ कृपा करहु मधसूदन हरि देवहु नामु जपाइआ ॥ (१३१९-९, कलिआन, मः ४)
मै मूरख अंधुले नामु टेक है जन नानक गुरमुखि पाइआ ॥४॥१॥ (१३१९-९, कलिआन, मः ४)
कलिआनु महला ४ ॥ (१३१९-१०)
हरि जनु गुन गावत हसिआ ॥ (१३१९-१०, कलिआन, मः ४)
हरि हरि भगति बनी मति गुरमति धुरि मसतकि प्रभि लिखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३१९-१०, कलिआन, मः ४)
गुर के पग सिमरउ दिनु राती मनि हरि हरि हरि बसिआ ॥ (१३१९-११, कलिआन, मः ४)
हरि हरि हरि कीरति जगि सारी घसि चंदनु जसु घसिआ ॥१॥ (१३१९-१२, कलिआन, मः ४)
हरि जन हरि हरि हरि लिव लाई सभि साकत खोजि पइआ ॥ (१३१९-१२, कलिआन, मः ४)
जिउ किरत संजोगि चलिओ नर निंदकु पगु नागनि छुहि जलिआ ॥२॥ (१३१९-१३, कलिआन, मः ४)
जन के तुम् हरि राखे सुआमी तुम् जुगि जुगि जन रखिआ ॥ (१३१९-१४, कलिआन, मः ४)
कहा भइआ दैति करी बखीली सभ करि करि झरि परिआ ॥३॥ (१३१९-१४, कलिआन, मः ४)
जेते जीअ जंत प्रभि कीए सभि कालै मुखि ग्रसिआ ॥ (१३१९-१५, कलिआन, मः ४)

हरि जन हरि हरि हरि प्रभि राखे जन नानक सरनि पइआ ॥४॥२॥ (१३१९-१६, कलिआन, मः ४)
कलिआन महला ४ ॥ (१३१९-१६)

पन्ना १३२०

मेरे मन जपु जपि जगन्नाथे ॥ (१३२०-१, कलिआन, मः ४)
गुर उपदेसि हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख दुख लाथे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२०-१, कलिआन, मः ४)
रसना एक जसु गाइ न साकै बहु कीजै बहु रसुनथे ॥ (१३२०-२, कलिआन, मः ४)
बार बार खिनु पल सभि गावहि गुन कहि न सकहि प्रभ तुमनथे ॥१॥ (१३२०-२, कलिआन, मः ४)
हम बहु प्रीति लगी प्रभ सुआमी हम लोचह प्रभु दिखनथे ॥ (१३२०-३, कलिआन, मः ४)
तुम बड दाते जीअ जीअन के तुम जानहु हम बिरथे ॥२॥ (१३२०-३, कलिआन, मः ४)
कोई मारगु पंथु बतावै प्रभ का कहु तिन कउ किआ दिनथे ॥ (१३२०-४, कलिआन, मः ४)
सभु तनु मनु अरपउ अरपि अरापउ कोई मेलै प्रभ मिलथे ॥३॥ (१३२०-५, कलिआन, मः ४)
हरि के गुन बहुत बहुत बहु सोभा हम तुछ करि करि बरनथे ॥ (१३२०-५, कलिआन, मः ४)
हमरी मति वसगति प्रभ तुमरै जन नानक के प्रभ समरथे ॥४॥३॥ (१३२०-६, कलिआन, मः ४)
कलिआन महला ४ ॥ (१३२०-७)
मेरे मन जपि हरि गुन अकथ सुनथई ॥ (१३२०-७, कलिआन, मः ४)
धरमु अर्थु सभु कामु मोखु है जन पीछै लगि फिरथई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२०-७, कलिआन, मः ४)
सो हरि हरि नामु धिआवै हरि जनु जिसु बडभाग मथई ॥ (१३२०-८, कलिआन, मः ४)
जह दरगहि प्रभु लेखा मागै तह छुटै नामु धिआइथई ॥१॥ (१३२०-९, कलिआन, मः ४)
हमरे दोख बहु जनम जनम के दुखु हउमै मैलु लगथई ॥ (१३२०-९, कलिआन, मः ४)
गुरि धारि कृपा हरि जलि नावाए सभ किलबिख पाप गथई ॥२॥ (१३२०-१०, कलिआन, मः ४)
जन कै रिद अंतरि प्रभु सुआमी जन हरि हरि नामु भजथई ॥ (१३२०-१०, कलिआन, मः ४)
जह अंती अउसरु आइ बनतु है तह राखै नामु साथई ॥३॥ (१३२०-११, कलिआन, मः ४)
जन तेरा जसु गावहि हरि हरि प्रभ हरि जपिओ जगन्नथई ॥ (१३२०-१२, कलिआन, मः ४)
जन नानक के प्रभ राखे सुआमी हम पाथर रखु बुडथई ॥४॥४॥ (१३२०-१२, कलिआन, मः ४)
कलिआन महला ४ ॥ (१३२०-१३)
हमरी चितवनी हरि प्रभु जानै ॥ (१३२०-१३, कलिआन, मः ४)
अउरु कोई निंद करै हरि जन की प्रभु ता का कहिआ इकु तिलु नही मानै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२०-१४, कलिआन, मः ४)
अउर सभ तिआगि सेवा करि अचुत जो सभ ते ऊच ठाकुरु भगवानै ॥ (१३२०-१४, कलिआन, मः ४)
हरि सेवा ते कालु जोहि न साकै चरनी आइ पवै हरि जानै ॥१॥ (१३२०-१५, कलिआन, मः ४)
जा कउ राखि लेइ मेरा सुआमी ता कउ सुमति देइ पै कानै ॥ (१३२०-१६, कलिआन, मः ४)
ता कउ कोई अपरि न साकै जा की भगति मेरा प्रभु मानै ॥२॥ (१३२०-१६, कलिआन, मः ४)
हरि के चोज विडान देखु जन जो खोटा खरा इक निमख पछानै ॥ (१३२०-१७, कलिआन, मः ४)
ता ते जन कउ अनदु भइआ है रिद सुध मिले खोटे पछुतानै ॥३॥ (१३२०-१८, कलिआन, मः ४)

तुम हरि दाते समरथ सुआमी इकु मागउ तुझ पासहु हरि दानै ॥ (१३२०-१८, कलिआन, मः ४)
जन नानक कउ हरि कृपा करि दीजै सद बसहि रिदै मोहि हरि चरानै ॥४॥५॥ (१३२०-१९, कलिआन, मः ४)

पन्ना १३२१

कलिआन महला ४ ॥ (१३२१-१)
प्रभ कीजै कृपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥ (१३२१-१, कलिआन, मः ४)
हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२१-२, कलिआन, मः ४)
हम बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥ (१३२१-२, कलिआन, मः ४)
सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥१॥ (१३२१-३, कलिआन, मः ४)
जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥ (१३२१-३, कलिआन, मः ४)
मोहि दूजी नाही ठउर जिसु पहि हम जावहगे ॥२॥ (१३२१-४, कलिआन, मः ४)
जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥ (१३२१-४, कलिआन, मः ४)
जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥३॥ (१३२१-५, कलिआन, मः ४)
हरि आपे होइ कृपालु आपि लिव लावहिगे ॥ (१३२१-५, कलिआन, मः ४)
जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥४॥६॥ (१३२१-६, कलिआन, मः ४)
छका १ ॥ (१३२१-६)
कलिआनु भोपाली महला ४ (१३२१-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३२१-७)
पारब्रह्मु परमेसुरु सुआमी दूख निवारणु नाराइणे ॥ (१३२१-८, कलिआन भोपाली, मः ४)
सगल भगत जाचहि सुख सागर भव निधि तरण हरि चिंतामणे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२१-८, कलिआन भोपाली, मः ४)
दीन दइआल जगदीस दमोदर हरि अंतरजामी गोबिंदे ॥ (१३२१-९, कलिआन भोपाली, मः ४)
ते निरभउ जिन स्रीरामु धिआइआ गुरमति मुरारि हरि मुकंदे ॥१॥ (१३२१-१०, कलिआन भोपाली, मः ४)
जगदीसुर चरन सरन जो आए ते जन भव निधि पारि परे ॥ (१३२१-१०, कलिआन भोपाली, मः ४)
भगत जना की पैज हरि राखै जन नानक आपि हरि कृपा करे ॥२॥१॥७॥ (१३२१-११, कलिआन भोपाली, मः ४)
रागु कलिआनु महला ५ घरु १ (१३२१-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३२१-१३)
हमारै एह किरपा कीजै ॥ (१३२१-१४, कलिआन, मः ५)
अलि मकरंद चरन कमल सिउ मनु फेरि फेरि रीझै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२१-१४, कलिआन, मः ५)
आन जला सिउ काजु न कछूऐ हरि बूंद चातृक कउ दीजै ॥१॥ (१३२१-१४, कलिआन, मः ५)
बिनु मिलबे नाही संतोखा पेखि दरसनु नानकु जीजै ॥२॥१॥ (१३२१-१५, कलिआन, मः ५)
कलिआन महला ५ ॥ (१३२१-१६, कलिआन, मः ५)
जाचिकु नामु जाचै जाचै ॥ (१३२१-१६, कलिआन, मः ५)
सर्ब धार सर्ब के नाइक सुख समूह के दाते ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२१-१६, कलिआन, मः ५)
केती केती माँगनि मागै भावनीआ सो पाईऐ ॥१॥ (१३२१-१७, कलिआन, मः ५)

सफल सफल सफल दरसु रे परसि परसि गुन गाईऐ ॥ (१३२१-१७, कलिआन, मः ५)
नानक तत तत सिउ मिलीऐ हीरै हीरु बिधाईऐ ॥२॥२॥ (१३२१-१८, कलिआन, मः ५)

पन्ना १३२२

कलिआन महला ५ ॥ (१३२२-१)
मेरे लालन की सोभा ॥ (१३२२-१, कलिआन, मः ५)
सद नवतन मन रंगी सोभा ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२२-१, कलिआन, मः ५)
ब्रह्म महेस सिध मुनि इंद्रा भगति दानु जसु मंगी ॥१॥ (१३२२-१, कलिआन, मः ५)
जोग गिआन धिआन सेखनागै सगल जपहि तरंगी ॥ (१३२२-२, कलिआन, मः ५)
कहु नानक संतन बलिहारै जो प्रभ के सद संगी ॥२॥३॥ (१३२२-३, कलिआन, मः ५)
कलिआन महला ५ घरु २ (१३२२-४)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३२२-४)
तेरै मानि हरि हरि मानि ॥ (१३२२-५, कलिआन, मः ५)
नैन बैन स्रवन सुनीऐ अंग अंगे सुख प्रानि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२२-५, कलिआन, मः ५)
इत उत दह दिसि रविओ मेर तिनहि समानि ॥१॥ (१३२२-५, कलिआन, मः ५)
जत कता तत पेखीऐ हरि पुरख पति प्रधान ॥ (१३२२-६, कलिआन, मः ५)
साधसंगि भ्रम भै मिटे कथे नानक ब्रह्म गिआन ॥२॥१॥४॥ (१३२२-६, कलिआन, मः ५)
कलिआन महला ५ ॥ (१३२२-७)
गुन नाद धुनि अनंद बेद ॥ (१३२२-७, कलिआन, मः ५)
कथत सुनत मुनि जना मिलि संत मंडली ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२२-८, कलिआन, मः ५)
गिआन धिआन मान दान मन रसिक रसन नामु जपत तह पाप खंडली ॥१॥ (१३२२-८, कलिआन, मः ५)
जोग जुगति गिआन भुगति सुरति सबद तत बेते जपु तपु अखंडली ॥ (१३२२-९, कलिआन, मः ५)
ओति पोति मिलि जोति नानक कछू दुखु न डंडली ॥२॥२॥५॥ (१३२२-१०, कलिआन, मः ५)
कलिआनु महला ५ ॥ (१३२२-१०)
कउनु बिधि ता की कहा करउ ॥ (१३२२-११, कलिआन, मः ५)
धरत धिआनु गिआनु ससत्रगिआ अजर पदु कैसे जरउ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२२-११, कलिआन, मः ५)
बिसन महेस सिध मुनि इंद्रा कै दरि सरनि परउ ॥१॥ (१३२२-१२, कलिआन, मः ५)
काहू पहि राजु काहू पहि सुरगा कोटि मधे मुकति कहउ ॥ (१३२२-१२, कलिआन, मः ५)
कहु नानक नाम रसु पाईऐ साधू चरन गहउ ॥२॥३॥६॥ (१३२२-१३, कलिआन, मः ५)
कलिआन महला ५ ॥ (१३२२-१३)
प्रानपति दइआल पुरख प्रभ सखे ॥ (१३२२-१४, कलिआन, मः ५)
गरभ जोनि कलि काल जाल दुख बिनासनु हरि रखे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२२-१४, कलिआन, मः ५)
नाम धारी सरनि तेरी ॥ (१३२२-१५, कलिआन, मः ५)
प्रभ दइआल टेक मेरी ॥१॥ (१३२२-१५, कलिआन, मः ५)
अनाथ दीन आसवंत ॥ (१३२२-१५, कलिआन, मः ५)

नामु सुआमी मनहि मंत ॥२॥ (१३२२-१५, कलिआन, मः ५)
तुझ बिना प्रभ किछू न जानू ॥ (१३२२-१६, कलिआन, मः ५)
सर्ब जुग महि तुम पछानू ॥३॥ (१३२२-१६, कलिआन, मः ५)
हरि मनि बसे निसि बासरो ॥ (१३२२-१६, कलिआन, मः ५)
गोबिंद नानक आसरो ॥४॥४॥७॥ (१३२२-१७, कलिआन, मः ५)
कलिआन महला ५ ॥ (१३२२-१७)
मनि तनि जापीऐ भगवान ॥ (१३२२-१७, कलिआन, मः ५)
गुर पूरे सुप्रसन्न भए सदा सूख कलिआन ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२२-१८, कलिआन, मः ५)
सर्ब कारज सिधि भए गाइ गुन गुपाल ॥ (१३२२-१८, कलिआन, मः ५)
मिलि साधसंगति प्रभू सिमरे नाठिआ दुख काल ॥१॥ (१३२२-१६, कलिआन, मः ५)
करि किरपा प्रभ मेरिआ करउ दिनु रैनि सेव ॥ (१३२२-१६, कलिआन, मः ५)

पन्ना १३२३

नानक दास सरणागती हरि पुरख पूरन देव ॥२॥५॥८॥ (१३२३-१, कलिआन, मः ५)
कलिआनु महला ५ ॥ (१३२३-१)
प्रभु मेरा अंतरजामी जाणु ॥ (१३२३-१, कलिआन, मः ५)
करि किरपा पूरन परमेसर निहचलु सचु सबदु नीसाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२३-२, कलिआन, मः ५)
हरि बिनु आन न कोई समरथु तेरी आस तेरा मनि ताणु ॥ (१३२३-२, कलिआन, मः ५)
सर्ब घटा के दाते सुआमी देहि सु पहिरणु खाणु ॥१॥ (१३२३-३, कलिआन, मः ५)
सुरति मति चतुराई सोभा रूपु रंगु धनु माणु ॥ (१३२३-४, कलिआन, मः ५)
सर्ब सूख आनंद नानक जपि राम नामु कलिआणु ॥२॥६॥६॥ (१३२३-४, कलिआन, मः ५)
कलिआनु महला ५ ॥ (१३२३-५)
हरि चरन सरन कलिआन करन ॥ (१३२३-५, कलिआन, मः ५)
प्रभ नामु पतित पावनो ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२३-५, कलिआन, मः ५)
साधसंगि जपि निसंग जमकालु तिसु न खावनो ॥१॥ (१३२३-६, कलिआन, मः ५)
मुकति जुगति अनिक सूख हरि भगति लवै न लावनो ॥ (१३२३-६, कलिआन, मः ५)
प्रभ दरस लुबध दास नानक बहुड़ि जोनि न धावनो ॥२॥७॥१०॥ (१३२३-७, कलिआन, मः ५)
कलिआन महला ४ असटपदीआ ॥ (१३२३-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३२३-८)
रामा रम रामो सुनि मनु भीजै ॥ (१३२३-६, कलिआन, मः ४)
हरि हरि नामु अमृतु रसु मीठा गुरमति सहजे पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२३-६, कलिआन, मः ४)
कासट महि जिउ है बैसंतरु मथि संजमि काढि कढीजै ॥ (१३२३-१०, कलिआन, मः ४)
राम नामु है जोति सबाई ततु गुरमति काढि लईजै ॥१॥ (१३२३-१०, कलिआन, मः ४)
नउ दरवाज नवे दर फीके रसु अमृतु दसवे चुईजै ॥ (१३२३-११, कलिआन, मः ४)
कृपा कृपा किरपा करि पिआरे गुर सबदी हरि रसु पीजै ॥२॥ (१३२३-११, कलिआन, मः ४)

काइआ नगरु नगरु है नीको विचि सउदा हरि रसु कीजै ॥ (१३२३-१२, कलिआन, मः ४)
रतन लाल अमोल अमोलक सतिगुर सेवा लीजै ॥३॥ (१३२३-१२, कलिआन, मः ४)
सतिगुरु अगमु अगमु है ठाकुरु भरि सागर भगति करीजै ॥ (१३२३-१३, कलिआन, मः ४)
कृपा कृपा करि दीन हम सारिंग इक बूंद नामु मुखि दीजै ॥४॥ (१३२३-१४, कलिआन, मः ४)
लालनु लालु लालु है रंगनु मनु रंगन कउ गुर दीजै ॥ (१३२३-१४, कलिआन, मः ४)
राम राम राम रंगि राते रस रसिक गटक नित पीजै ॥५॥ (१३२३-१५, कलिआन, मः ४)
बसुधा सपत दीप है सागर कढि कंचनु काढि धरीजै ॥ (१३२३-१५, कलिआन, मः ४)
मेरे ठाकुर के जन इनहु न बाछहि हरि मागहि हरि रसु दीजै ॥६॥ (१३२३-१६, कलिआन, मः ४)
साकत नर प्रानी सद भूखे नित भूखन भूख करीजै ॥ (१३२३-१७, कलिआन, मः ४)
धावतु धाइ धावहि प्रीति माइआ लख कोसन कउ बिथि दीजै ॥७॥ (१३२३-१७, कलिआन, मः ४)
हरि हरि हरि हरि हरि जन ऊतम किआ उपमा तिन्ह दीजै ॥ (१३२३-१८, कलिआन, मः ४)

पन्ना १३२४

राम नाम तुलि अउरु न उपमा जन नानक कृपा करीजै ॥८॥१॥ (१३२४-१, कलिआन, मः ४)
कलिआन महला ४ ॥ (१३२४-१)
राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥ (१३२४-१, कलिआन, मः ४)
हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२४-२, कलिआन, मः ४)
सुरग मुकति बैकुंठ सभि बाँछहि निति आसा आस करीजै ॥ (१३२४-२, कलिआन, मः ४)
हरि दरसन के जन मुकति न माँगहि मिलि दरसन तृपति मनु धीजै ॥१॥ (१३२४-३, कलिआन, मः ४)
माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ (१३२४-४, कलिआन, मः ४)
मेरे ठाकुर के जन अलिपत है मुकते जिउ मुरगाई पंकु न भीजै ॥२॥ (१३२४-४, कलिआन, मः ४)
चंदन वासु भुइअंगम वेड़ी किव मिलीऐ चंदनु लीजै ॥ (१३२४-५, कलिआन, मः ४)
काढि खड़गु गुर गिआनु करारा बिखु छेदि छेदि रसु पीजै ॥३॥ (१३२४-६, कलिआन, मः ४)
आनि आनि समधा बहु कीनी पलु बैसंतर भसम करीजै ॥ (१३२४-६, कलिआन, मः ४)
महा उग्र पाप साकत नर कीने मिलि साधू लूकी दीजै ॥४॥ (१३२४-७, कलिआन, मः ४)
साधू साध साध जन नीके जिन अंतरि नामु धरीजै ॥ (१३२४-८, कलिआन, मः ४)
परस निपरसु भए साधू जन जनु हरि भगवानु दिखीजै ॥५॥ (१३२४-८, कलिआन, मः ४)
साकत सूतु बहु गुरझी भरिआ किउ करि तानु तनीजै ॥ (१३२४-९, कलिआन, मः ४)
तंतु सूतु किछु निकसै नाही साकत संगु न कीजै ॥६॥ (१३२४-९, कलिआन, मः ४)
सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥ (१३२४-१०, कलिआन, मः ४)
अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥७॥ (१३२४-१०, कलिआन, मः ४)
मेरा ठाकुरु वडा वडा है सुआमी हम किउ करि मिलह मिलीजै ॥ (१३२४-११, कलिआन, मः ४)
नानक मेलि मिलाए गुरु पूरा जन कउ पूरनु दीजै ॥८॥२॥ (१३२४-१२, कलिआन, मः ४)
कलिआनु महला ४ ॥ (१३२४-१२)
रामा रम रामो रामु रवीजै ॥ (१३२४-१३, कलिआन, मः ४)

साधू साध साध जन नीके मिलि साधू हरि रंगु कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२४-१३, कलिआन, मः ४)
जीअ जंत सभु जगु है जेता मनु डोलत डोल करीजै ॥ (१३२४-१४, कलिआन, मः ४)
कृपा कृपा करि साधु मिलावहु जगु थम्मन कउ थम्मु दीजै ॥१॥ (१३२४-१४, कलिआन, मः ४)
बसुधा तलै तलै सभ ऊपरि मिलि साधू चरन रुलीजै ॥ (१३२४-१५, कलिआन, मः ४)
अति ऊतम अति ऊतम होवहु सभ सिसटि चरन तल दीजै ॥२॥ (१३२४-१५, कलिआन, मः ४)
गुरमुखि जोति भली सिव नीकी आनि पानी सकति भरीजै ॥ (१३२४-१६, कलिआन, मः ४)
मैनदंत निकसे गुर बचनी सारु चबि चबि हरि रसु पीजै ॥३॥ (१३२४-१७, कलिआन, मः ४)
राम नाम अनुग्रहु बहु कीआ गुर साधू पुरख मिलीजै ॥ (१३२४-१७, कलिआन, मः ४)
गुन राम नाम बिसथीरन कीए हरि सगल भवन जसु दीजै ॥४॥ (१३२४-१८, कलिआन, मः ४)
साधू साध साध मनि प्रीतम बिनु देखे रहि न सकीजै ॥ (१३२४-१८, कलिआन, मः ४)
जिउ जल मीन जलं जल प्रीति है खिनु जल बिनु फूटि मरीजै ॥५॥ (१३२४-१९, कलिआन, मः ४)

पन्ना १३२५

महा अभाग अभाग है जिन के तिन साधू धूरि न पीजै ॥ (१३२५-१, कलिआन, मः ४)
तिना तिसना जलत जलत नही बूझहि डंडु धर्म राइ का दीजै ॥६॥ (१३२५-१, कलिआन, मः ४)
सभि तीर्थ बरत जग्य पुन्न कीए हिवै गालि गालि तनु छीजै ॥ (१३२५-२, कलिआन, मः ४)
अतुला तोलु राम नामु है गुरमति को पुजै न तोल तुलीजै ॥७॥ (१३२५-३, कलिआन, मः ४)
तव गुन ब्रह्म ब्रह्म तू जानहि जन नानक सरनि परीजै ॥ (१३२५-३, कलिआन, मः ४)
तू जल निधि मीन हम तेरे करि किरपा संगि रखीजै ॥८॥३॥ (१३२५-४, कलिआन, मः ४)
कलिआन महला ४ ॥ (१३२५-५)
रामा रम रामो पूज करीजै ॥ (१३२५-५, कलिआन, मः ४)
मनु तनु अरपि धरउ सभु आगै रसु गुरमति गिआनु दृड़ीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२५-५, कलिआन, मः ४)
ब्रह्म नाम गुण साख तरोवर नित चुनि चुनि पूज करीजै ॥ (१३२५-६, कलिआन, मः ४)
आतम देउ देउ है आतमु रसि लागै पूज करीजै ॥१॥ (१३२५-६, कलिआन, मः ४)
बिबेक बुधि सभ जग महि निर्मल बिचरि बिचरि रसु पीजै ॥ (१३२५-७, कलिआन, मः ४)
गुर परसादि पदारथु पाइआ सतिगुर कउ इहु मनु दीजै ॥२॥ (१३२५-८, कलिआन, मः ४)
निरमोलकु अति हीरो नीको हीरै हीरु बिधीजै ॥ (१३२५-८, कलिआन, मः ४)
मनु मोती सालु है गुर सबदी जितु हीरा परखि लईजै ॥३॥ (१३२५-९, कलिआन, मः ४)
संगति संत संगि लगि ऊचे जिउ पीप पलास खाइ लीजै ॥ (१३२५-९, कलिआन, मः ४)
सभ नर महि प्रानी ऊतमु होवै राम नामै बासु बसीजै ॥४॥ (१३२५-१०, कलिआन, मः ४)
निर्मल निर्मल कर्म बहु कीने नित साखा हरी जड़ीजै ॥ (१३२५-११, कलिआन, मः ४)
धरमु फुलु फलु गुरि गिआनु दृड़ाइआ बहकार बासु जगि दीजै ॥५॥ (१३२५-११, कलिआन, मः ४)
एक जोति एको मनि वसिआ सभ ब्रह्म दृसटि इकु कीजै ॥ (१३२५-१२, कलिआन, मः ४)
आतम रामु सभ एकै है पसरे सभ चरन तले सिरु दीजै ॥६॥ (१३२५-१२, कलिआन, मः ४)
नाम बिना नकटे नर देखहु तिन घसि घसि नाक वढीजै ॥ (१३२५-१३, कलिआन, मः ४)

साकत नर अहंकारी कहीअहि बिनु नावै ध्रिगु जीवीजै ॥७॥ (१३२५-१४, कलिआन, मः ४)
जब लगु सासु सासु मन अंतरि ततु बेगल सरनि परीजै ॥ (१३२५-१४, कलिआन, मः ४)
नानक कृपा कृपा करि धारहु मै साधू चरन पखीजै ॥८॥४॥ (१३२५-१५, कलिआन, मः ४)
कलिआन महला ४ ॥ (१३२५-१६)
रामा मै साधू चरन धुवीजै ॥ (१३२५-१६, कलिआन, मः ४)
किलबिख दहन होहि खिन अंतरि मेरे ठाकुर किरपा कीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२५-१६, कलिआन, मः ४)
मंगत जन दीन खरे दरि ठाढे अति तरसन कउ दानु दीजै ॥ (१३२५-१७, कलिआन, मः ४)
त्राहि त्राहि सरनि प्रभ आए मो कउ गुरमति नामु दृड़ीजै ॥१॥ (१३२५-१७, कलिआन, मः ४)
काम करोधु नगर महि सबला नित उठि उठि जूझु करीजै ॥ (१३२५-१८, कलिआन, मः ४)
अंगीकारु करहु रखि लेवहु गुर पूरा काढि कढीजै ॥२॥ (१३२५-१९, कलिआन, मः ४)
अंतरि अगनि सबल अति बिखिआ हिव सीतलु सबदु गुर दीजै ॥ (१३२५-१९, कलिआन, मः ४)

पन्ना १३२६

तनि मनि साँति होइ अधिकाई रोगु काटै सूखि सवीजै ॥३॥ (१३२६-१, कलिआन, मः ४)
जिउ सूरजु किरणि रविआ सर्ब ठाई सभ घटि घटि रामु रवीजै ॥ (१३२६-२, कलिआन, मः ४)
साधू साध मिले रसु पावै ततु निज घरि बैठिआ पीजै ॥४॥ (१३२६-२, कलिआन, मः ४)
जन कउ प्रीति लगी गुर सेती जिउ चकवी देखि सूरीजै ॥ (१३२६-३, कलिआन, मः ४)
निरखत निरखत रैनि सभ निरखी मुखु काढै अमृतु पीजै ॥५॥ (१३२६-४, कलिआन, मः ४)
साकत सुआन कहीअहि बहु लोभी बहु दुरमति मैलु भरीजै ॥ (१३२६-४, कलिआन, मः ४)
आपन सुआइ करहि बहु बाता तिना का विसाहु किआ कीजै ॥६॥ (१३२६-५, कलिआन, मः ४)
साधू साध सरनि मिलि संगति जितु हरि रसु काढि कढीजै ॥ (१३२६-६, कलिआन, मः ४)
परउपकार बोलहि बहु गुणीआ मुखि संत भगत हरि दीजै ॥७॥ (१३२६-६, कलिआन, मः ४)
तू अगम दइआल दइआ पति दाता सभ दइआ धारि रखि लीजै ॥ (१३२६-७, कलिआन, मः ४)
सर्ब जीअ जगजीवनु एको नानक प्रतिपाल करीजै ॥८॥५॥ (१३२६-८, कलिआन, मः ४)
कलिआनु महला ४ ॥ (१३२६-८)
रामा हम दासन दास करीजै ॥ (१३२६-८, कलिआन, मः ४)
जब लगि सासु होइ मन अंतरि साधू धूरि पिवीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२६-९, कलिआन, मः ४)
संकरु नारदु सेखनाग मुनि धूरि साधू की लोचीजै ॥ (१३२६-९, कलिआन, मः ४)
भवन भवन पवितु होहि सभि जह साधू चरन धरीजै ॥१॥ (१३२६-१०, कलिआन, मः ४)
तजि लाज अहंकारु सभु तजीऐ मिलि साधू संगि रहीजै ॥ (१३२६-११, कलिआन, मः ४)
धर्म राइ की कानि चुकावै बिखु डुबदा काढि कढीजै ॥२॥ (१३२६-११, कलिआन, मः ४)
भरमि सूके बहु उभि सुक कहीअहि मिलि साधू संगि हरीजै ॥ (१३२६-१२, कलिआन, मः ४)
ता ते बिलमु पलु ढिल न कीजै जाइ साधू चरनि लगीजै ॥३॥ (१३२६-१२, कलिआन, मः ४)
राम नाम कीर्तन रतन वथु हरि साधू पासि रखीजै ॥ (१३२६-१३, कलिआन, मः ४)
जो बचनु गुर सति सति करि मानै तिसु आगै काढि धरीजै ॥४॥ (१३२६-१४, कलिआन, मः ४)

संतहु सुनहु सुनहु जन भाई गुरि काढी बाह कुकीजै ॥ (१३२६-१४, कलिआन, मः ४)
जे आतम कउ सुखु सुखु नित लोड़हु ताँ सतिगुर सरनि पवीजै ॥५॥ (१३२६-१५, कलिआन, मः ४)
जे वड भागु होइ अति नीका ताँ गुरमति नामु दृड़ीजै ॥ (१३२६-१६, कलिआन, मः ४)
सभु माइआ मोहु बिखमु जगु तरीऐ सहजे हरि रसु पीजै ॥६॥ (१३२६-१६, कलिआन, मः ४)
माइआ माइआ के जो अधिकाई विचि माइआ पचै पचीजै ॥ (१३२६-१७, कलिआन, मः ४)
अगिआनु अंधेरु महा पंथु बिखड़ा अहंकारि भारि लदि लीजै ॥७॥ (१३२६-१८, कलिआन, मः ४)
नानक राम रम रमु रम रम रामै ते गति कीजै ॥ (१३२६-१८, कलिआन, मः ४)
सतिगुरु मिलै ता नामु दृड़ाए राम नामै रलै मिलीजै ॥८॥६॥ (१३२६-१९, कलिआन, मः ४)
छका १ ॥ (१३२६-१९)

पन्ना १३२७

ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१३२७-१)
रागु परभाती बिभास महला १ चउपदे घरु १ ॥ (१३२७-३)
नाइ तेरै तरणा नाइ पति पूज ॥ (१३२७-४, प्रभाती बिभास, मः १)
नाउ तेरा गहणा मति मकसूदु ॥ (१३२७-४, प्रभाती बिभास, मः १)
नाइ तेरै नाउ मन्ने सभ कोइ ॥ (१३२७-४, प्रभाती बिभास, मः १)
विणु नावै पति कबहु न होइ ॥१॥ (१३२७-५, प्रभाती बिभास, मः १)
अवर सिआणप सगली पाजु ॥ (१३२७-५, प्रभाती बिभास, मः १)
जै बखसे तै पूरा काजु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२७-५, प्रभाती बिभास, मः १)
नाउ तेरा ताणु नाउ दीबाणु ॥ (१३२७-६, प्रभाती बिभास, मः १)
नाउ तेरा लसकरु नाउ सुलतानु ॥ (१३२७-६, प्रभाती बिभास, मः १)
नाइ तेरै माणु महत परवाणु ॥ (१३२७-६, प्रभाती बिभास, मः १)
तेरी नदरी करमि पवै नीसाणु ॥२॥ (१३२७-७, प्रभाती बिभास, मः १)
नाइ तेरै सहजु नाइ सालाह ॥ (१३२७-७, प्रभाती बिभास, मः १)
नाउ तेरा अमृतु बिखु उठि जाइ ॥ (१३२७-७, प्रभाती बिभास, मः १)
नाइ तेरै सभि सुख वसहि मनि आइ ॥ (१३२७-८, प्रभाती बिभास, मः १)
बिनु नावै बाधी जम पुरि जाइ ॥३॥ (१३२७-८, प्रभाती बिभास, मः १)
नारी बेरी घर दर देस ॥ (१३२७-८, प्रभाती बिभास, मः १)
मन कीआ खुसीआ कीचहि वेस ॥ (१३२७-९, प्रभाती बिभास, मः १)
जाँ सदे ताँ ढिल न पाइ ॥ (१३२७-९, प्रभाती बिभास, मः १)
नानक कूड़ु कूड़ो होइ जाइ ॥४॥१॥ (१३२७-९, प्रभाती बिभास, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२७-१०)
तेरा नामु रतनु करमु चानणु सुरति तिथै लोइ ॥ (१३२७-१०, प्रभाती, मः १)
अंधेरु अंधी वापरै सगल लीजै खोइ ॥१॥ (१३२७-१०, प्रभाती, मः १)
इहु संसारु सगल बिकारु ॥ (१३२७-११, प्रभाती, मः १)

तेरा नामु दारू अवरु नासति करणहारु अपारु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२७-११, प्रभाती, मः १)
पाताल पुरीआ एक भार होवहि लाख करोड़ि ॥ (१३२७-१२, प्रभाती, मः १)
तेरे लाल कीमति ता पवै जाँ सिरै होवहि होरि ॥२॥ (१३२७-१२, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३२८

दूखा ते सुख ऊपजहि सूखी होवहि दूख ॥ (१३२८-१, प्रभाती, मः १)
जितु मुखि तू सालाहीअहि तितु मुखि कैसी भूख ॥३॥ (१३२८-१, प्रभाती, मः १)
नानक मूरखु एकु तू अवरु भला सैसारु ॥ (१३२८-२, प्रभाती, मः १)
जितु तनि नामु न ऊपजै से तन होहि खुआर ॥४॥२॥ (१३२८-२, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२८-३)
जै कारणि बेद ब्रह्मै उचरे संकरि छोडी माइआ ॥ (१३२८-३, प्रभाती, मः १)
जै कारणि सिध भए उदासी देवी मरमु न पाइआ ॥१॥ (१३२८-३, प्रभाती, मः १)
बाबा मनि साचा मुखि साचा कहीऐ तरीऐ साचा होई ॥ (१३२८-४, प्रभाती, मः १)
दुसमनु दूखु न आवै नेड़ै हरि मति पावै कोई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२८-५, प्रभाती, मः १)
अगनि बिम्ब पवणै की बाणी तीनि नाम के दासा ॥ (१३२८-५, प्रभाती, मः १)
ते तस्कर जो नामु न लेवहि वासहि कोट पंचासा ॥२॥ (१३२८-६, प्रभाती, मः १)
जे को एक करै चंगिआई मनि चिति बहुतु बफावै ॥ (१३२८-६, प्रभाती, मः १)
एते गुण एतीआ चंगिआईआ देइ न पछोतावै ॥३॥ (१३२८-७, प्रभाती, मः १)
तुधु सालाहनि तिन धनु पलै नानक का धनु सोई ॥ (१३२८-७, प्रभाती, मः १)
जे को जीउ कहै ओना कउ जम की तलब न होई ॥४॥३॥ (१३२८-८, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२८-८)
जा कै रूपु नाही जाति नाही नाही मुखु मासा ॥ (१३२८-९, प्रभाती, मः १)
सतिगुरि मिले निरंजनु पाइआ तेरै नामि है निवासा ॥१॥ (१३२८-९, प्रभाती, मः १)
अउधू सहजे ततु बीचारि ॥ (१३२८-१०, प्रभाती, मः १)
जा ते फिरि न आवहु सैसारि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२८-१०, प्रभाती, मः १)
जा कै करमु नाही धरमु नाही नाही सुचि माला ॥ (१३२८-१०, प्रभाती, मः १)
सिव जोति कन्नहु बुधि पाई सतिगुरू रखवाला ॥२॥ (१३२८-११, प्रभाती, मः १)
जा कै बरतु नाही नेमु नाही नाही बकबाई ॥ (१३२८-११, प्रभाती, मः १)
गति अवगति की चिंत नाही सतिगुरू फुरमाई ॥३॥ (१३२८-१२, प्रभाती, मः १)
जा कै आस नाही निरास नाही चिति सुरति समझाई ॥ (१३२८-१२, प्रभाती, मः १)
तंत कउ परम तंतु मिलिआ नानका बुधि पाई ॥४॥४॥ (१३२८-१३, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२८-१४)
ता का कहिआ दरि परवाणु ॥ (१३२८-१४, प्रभाती, मः १)
बिखु अमृतु दुइ सम करि जाणु ॥१॥ (१३२८-१४, प्रभाती, मः १)
किआ कहीऐ सरबे रहिआ समाइ ॥ (१३२८-१५, प्रभाती, मः १)

जो किछु वरतै सभ तेरी रजाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२८-१५, प्रभाती, मः १)
प्रगटी जोति चूका अभिमानु ॥ (१३२८-१५, प्रभाती, मः १)
सतिगुरि दीआ अमृत नामु ॥२॥ (१३२८-१६, प्रभाती, मः १)
कलि महि आइआ सो जनु जाणु ॥ (१३२८-१६, प्रभाती, मः १)
साची दरगह पावै माणु ॥३॥ (१३२८-१६, प्रभाती, मः १)
कहणा सुनणा अकथ घरि जाइ ॥ (१३२८-१७, प्रभाती, मः १)
कथनी बदनी नानक जलि जाइ ॥४॥५॥ (१३२८-१७, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२८-१८)
अमृतु नीरु गिआनि मन मजनु अठसठि तीर्थ संगि गहे ॥ (१३२८-१८, प्रभाती, मः १)
गुर उपदेसि जवाहर माणक सेवे सिखु सुो खोजि लहै ॥१॥ (१३२८-१८, प्रभाती, मः १)
गुर समानि तीरथु नही कोइ ॥ (१३२८-१९, प्रभाती, मः १)
सरु संतोखु तासु गुरु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२८-१९, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३२९

गुरु दरीआउ सदा जलु निरमलु मिलिआ दुरमति मैलु हरै ॥ (१३२९-१, प्रभाती, मः १)
सतिगुरि पाइऐ पूरा नावणु पसू परेतहु देव करै ॥२॥ (१३२९-१, प्रभाती, मः १)
रता सचि नामि तल हीअलु सो गुरु परमलु कहीऐ ॥ (१३२९-२, प्रभाती, मः १)
जा की वासु बनासपति सउरै तासु चरण लिव रहीऐ ॥३॥ (१३२९-२, प्रभाती, मः १)
गुरमुखि जीअ प्रान उपजहि गुरमुखि सिव घरि जाईऐ ॥ (१३२९-३, प्रभाती, मः १)
गुरमुखि नानक सचि समाईऐ गुरमुखि निज पदु पाईऐ ॥४॥६॥ (१३२९-४, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२९-४)
गुर परसादी विदिआ वीचारै पड़ि पड़ि पावै मानु ॥ (१३२९-५, प्रभाती, मः १)
आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अमृतु नामु ॥१॥ (१३२९-५, प्रभाती, मः १)
करता तू मेरा जजमानु ॥ (१३२९-६, प्रभाती, मः १)
इक दखिणा हउ तै पहि मागउ देहि आपणा नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२९-६, प्रभाती, मः १)
पंच तस्कर धावत राखे चूका मनि अभिमानु ॥ (१३२९-७, प्रभाती, मः १)
दिसटि बिकारी दुरमति भागी ऐसा ब्रह्म गिआनु ॥२॥ (१३२९-७, प्रभाती, मः १)
जतु सतु चावल दइआ कणक करि प्रापति पाती धानु ॥ (१३२९-८, प्रभाती, मः १)
दूधु करमु संतोखु घीउ करि ऐसा माँगउ दानु ॥३॥ (१३२९-८, प्रभाती, मः १)
खिमा धीरजु करि गऊ लवेरी सहजे बछरा खीरु पीऐ ॥ (१३२९-९, प्रभाती, मः १)
सिफति सर्म का कपड़ा माँगउ हरि गुण नानक रवतु रहै ॥४॥७॥ (१३२९-९, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२९-१०)
आवतु किनै न राखिआ जावतु किउ राखिआ जाइ ॥ (१३२९-१०, प्रभाती, मः १)
जिस ते होआ सोई परु जाणै जाँ उस ही माहि समाइ ॥१॥ (१३२९-११, प्रभाती, मः १)
तूहै है वाहु तेरी रजाइ ॥ (१३२९-११, प्रभाती, मः १)

जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करणा जाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२६-१२, प्रभाती, मः १)
जैसे हरहट की माला टिंड लगत है इक सखनी होर फेर भरीअत है ॥ (१३२६-१२, प्रभाती, मः १)
तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उस की वडिआई ॥२॥ (१३२६-१३, प्रभाती, मः १)
सुरती कै मारगि चलि कै उलटी नदरि प्रगासी ॥ (१३२६-१४, प्रभाती, मः १)
मनि वीचारि देखु ब्रह्म गिआनी कउनु गिरही कउनु उदासी ॥३॥ (१३२६-१४, प्रभाती, मः १)
जिस की आसा तिस ही सउपि कै एहु रहिआ निरबाणु ॥ (१३२६-१५, प्रभाती, मः १)
जिस ते होआ सोई करि मानिआ नानक गिरही उदासी सो परवाणु ॥४॥८॥ (१३२६-१५, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३२६-१६)
दिसटि बिकारी बंधनि बाँधै हउ तिस कै बलि जाई ॥ (१३२६-१६, प्रभाती, मः १)
पाप पुन्न की सार न जाणै भूला फिरै अजाई ॥१॥ (१३२६-१७, प्रभाती, मः १)
बोलहु सचु नामु करतार ॥ (१३२६-१७, प्रभाती, मः १)
फुनि बहुड़ि न आवण वार ॥१॥ रहाउ ॥ (१३२६-१८, प्रभाती, मः १)
ऊचा ते फुनि नीचु करतु है नीच करै सुलतानु ॥ (१३२६-१८, प्रभाती, मः १)
जिनी जाणु सुजाणिआ जगि ते पूरे परवाणु ॥२॥ (१३२६-१९, प्रभाती, मः १)
ता कउ समझावण जाईऐ जे को भूला होई ॥ (१३२६-१९, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३३०

आपे खेल करे सभ करता ऐसा बूझै कोई ॥३॥ (१३३०-१, प्रभाती, मः १)
नाउ प्रभातै सबदि धिआईऐ छोडहु दुनी परीता ॥ (१३३०-१, प्रभाती, मः १)
प्रणवति नानक दासनि दासा जगि हारिआ तिनि जीता ॥४॥९॥ (१३३०-२, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३३०-२)
मनु माइआ मनु धाइआ मनु पंखी आकासि ॥ (१३३०-२, प्रभाती, मः १)
तस्कर सबदि निवारिआ नगरु वुठा साबासि ॥ (१३३०-३, प्रभाती, मः १)
जा तू राखहि राखि लैहि साबतु होवै रासि ॥१॥ (१३३०-३, प्रभाती, मः १)
ऐसा नामु रतनु निधि मेरै ॥ (१३३०-४, प्रभाती, मः १)
गुरमति देहि लगउ पगि तेरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३०-४, प्रभाती, मः १)
मनु जोगी मनु भोगीआ मनु मूरखु गावारु ॥ (१३३०-५, प्रभाती, मः १)
मनु दाता मनु मंगता मन सिरि गुरु करतारु ॥ (१३३०-५, प्रभाती, मः १)
पंच मारि सुखु पाइआ ऐसा ब्रह्मु वीचारु ॥२॥ (१३३०-६, प्रभाती, मः १)
घटि घटि एकु वखाणीऐ कहउ न देखिआ जाइ ॥ (१३३०-६, प्रभाती, मः १)
खोटो पूठो रालीऐ बिनु नावै पति जाइ ॥ (१३३०-७, प्रभाती, मः १)
जा तू मेलहि ता मिलि रहाँ जाँ तेरी होइ रजाइ ॥३॥ (१३३०-७, प्रभाती, मः १)
जाति जनमु नह पूछीऐ सच घरु लेहु बताइ ॥ (१३३०-८, प्रभाती, मः १)
सा जाति सा पति है जेहे कर्म कमाइ ॥ (१३३०-८, प्रभाती, मः १)
जनम मरन दुखु काटीऐ नानक छूटसि नाइ ॥४॥१०॥ (१३३०-९, प्रभाती, मः १)

प्रभाती महला १ ॥ (१३३०-९)
जागतु बिगसै मूठो अंधा ॥ (१३३०-९, प्रभाती, मः १)
गलि फाही सिरि मारे धंधा ॥ (१३३०-१०, प्रभाती, मः १)
आसा आवै मनसा जाइ ॥ (१३३०-१०, प्रभाती, मः १)
उरझी ताणी किछु न बसाइ ॥१॥ (१३३०-१०, प्रभाती, मः १)
जागसि जीवण जागणहारा ॥ (१३३०-११, प्रभाती, मः १)
सुख सागर अमृत भंडारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३०-११, प्रभाती, मः १)
कहिओ न बूझै अंधु न सूझै भोंडी कार कमाई ॥ (१३३०-११, प्रभाती, मः १)
आपे प्रीति प्रेम परमेसुरु करमी मिलै वडाई ॥२॥ (१३३०-१२, प्रभाती, मः १)
दिनु दिनु आवै तिलु तिलु छीजै माइआ मोहु घटाई ॥ (१३३०-१२, प्रभाती, मः १)
बिनु गुर बूडो ठउर न पावै जब लग दूजी राई ॥३॥ (१३३०-१३, प्रभाती, मः १)
अहिनिसि जीआ देखि सम्हालै सुखु दुखु पुरबि कमाई ॥ (१३३०-१३, प्रभाती, मः १)
करमहीणु सचु भीखिआ माँगै नानक मिलै वडाई ॥४॥११॥ (१३३०-१४, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३३०-१५)
मसटि करउ मूरखु जगि कहीआ ॥ (१३३०-१५, प्रभाती, मः १)
अधिक बकउ तेरी लिव रहीआ ॥ (१३३०-१५, प्रभाती, मः १)
भूल चूक तेरै दरबारि ॥ (१३३०-१६, प्रभाती, मः १)
नाम बिना कैसे आचार ॥१॥ (१३३०-१६, प्रभाती, मः १)
ऐसे झूठि मुठे संसारा ॥ (१३३०-१६, प्रभाती, मः १)
निंदकु निंदै मुझै पिआरा ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३०-१६, प्रभाती, मः १)
जिसु निंदहि सोई बिधि जाणै ॥ (१३३०-१७, प्रभाती, मः १)
गुर कै सबदे दरि नीसाणै ॥ (१३३०-१७, प्रभाती, मः १)
कारण नामु अंतरगति जाणै ॥ (१३३०-१७, प्रभाती, मः १)
जिस नो नदरि करे सोई बिधि जाणै ॥२॥ (१३३०-१८, प्रभाती, मः १)
मै मैलौ ऊजलु सचु सोइ ॥ (१३३०-१८, प्रभाती, मः १)
ऊतमु आखि न ऊचा होइ ॥ (१३३०-१८, प्रभाती, मः १)
मनमुखु खूल्हि महा बिखु खाइ ॥ (१३३०-१९, प्रभाती, मः १)
गुरमुखि होइ सु राचै नाइ ॥३॥ (१३३०-१९, प्रभाती, मः १)
अंधौ बोलौ मुगधु गवारु ॥ (१३३०-१९, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३३१

हीणौ नीचु बुरौ बुरिआरु ॥ (१३३१-१, प्रभाती, मः १)
नीधन कौ धनु नामु पिआरु ॥ (१३३१-१, प्रभाती, मः १)
इहु धनु सारु होरु बिखिआ छारु ॥४॥ (१३३१-१, प्रभाती, मः १)
उसतति निंदा सबदु वीचारु ॥ (१३३१-२, प्रभाती, मः १)

जो देवै तिस कउ जैकारु ॥ (१३३१-२, प्रभाती, मः १)
तू बखसहि जाति पति होइ ॥ (१३३१-२, प्रभाती, मः १)
नानकु कहै कहावै सोइ ॥५॥१२॥ (१३३१-३, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३३१-३)
खाइआ मैलु वधाइआ पैधै घर की हाणि ॥ (१३३१-३, प्रभाती, मः १)
बकि बकि वादु चलाइआ बिनु नावै बिखु जाणि ॥१॥ (१३३१-४, प्रभाती, मः १)
बाबा ऐसा बिखम जालि मनु वासिआ ॥ (१३३१-४, प्रभाती, मः १)
बिबलु झागि सहजि परगासिआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३१-५, प्रभाती, मः १)
बिखु खाणा बिखु बोलणा बिखु की कार कमाइ ॥ (१३३१-५, प्रभाती, मः १)
जम दरि बाधे मारीअहि छूटसि साचै नाइ ॥२॥ (१३३१-६, प्रभाती, मः १)
जिव आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ॥ (१३३१-६, प्रभाती, मः १)
मनमुखि मूलु गवाइआ दरगह मिलै सजाइ ॥३॥ (१३३१-७, प्रभाती, मः १)
जगु खोटौ सचु निरमलौ गुर सबदीं वीचारि ॥ (१३३१-७, प्रभाती, मः १)
ते नर विरले जाणीअहि जिन अंतरि गिआनु मुरारि ॥४॥ (१३३१-८, प्रभाती, मः १)
अजरु जरै नीझरु झरै अमर अनंद सरूप ॥ (१३३१-८, प्रभाती, मः १)
नानकु जल कौ मीनु सै थे भावै राखहु प्रीति ॥५॥१३॥ (१३३१-९, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३३१-९)
गीत नाद हरख चतुराई ॥ (१३३१-९, प्रभाती, मः १)
रहस रंग फुरमाइसि काई ॥ (१३३१-१०, प्रभाती, मः १)
पैन्णु खाणा चीति न पाई ॥ (१३३१-१०, प्रभाती, मः १)
साचु सहजु सुखु नामि वसाई ॥१॥ (१३३१-१०, प्रभाती, मः १)
किआ जानाँ किआ करै करावै ॥ (१३३१-११, प्रभाती, मः १)
नाम बिना तनि किछु न सुखावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३१-११, प्रभाती, मः १)
जोग बिनोद स्वाद आनंदा ॥ (१३३१-११, प्रभाती, मः १)
मति सत भाइ भगति गोबिंदा ॥ (१३३१-१२, प्रभाती, मः १)
कीरति कर्म कार निज संदा ॥ (१३३१-१२, प्रभाती, मः १)
अंतरि रवतौ राज रविंदा ॥२॥ (१३३१-१२, प्रभाती, मः १)
पृउ पृउ प्रीति प्रेमि उर धारी ॥ (१३३१-१३, प्रभाती, मः १)
दीना नाथु पीउ बनवारी ॥ (१३३१-१३, प्रभाती, मः १)
अनदिनु नामु दानु ब्रतकारी ॥ (१३३१-१३, प्रभाती, मः १)
तृपति तरंग ततु बीचारी ॥३॥ (१३३१-१४, प्रभाती, मः १)
अकथौ कथउ किआ मै जोरु ॥ (१३३१-१४, प्रभाती, मः १)
भगति करी कराइहि मोर ॥ (१३३१-१४, प्रभाती, मः १)
अंतरि वसै चूकै मै मोर ॥ (१३३१-१५, प्रभाती, मः १)
किसु सेवी दूजा नही होरु ॥४॥ (१३३१-१५, प्रभाती, मः १)

गुर का सबदु महा रसु मीठा ॥ (१३३१-१५, प्रभाती, मः १)
ऐसा अमृतु अंतरि डीठा ॥ (१३३१-१५, प्रभाती, मः १)
जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ ॥ (१३३१-१६, प्रभाती, मः १)
नानक ध्रापिओ तनि सुखु होइ ॥५॥१४॥ (१३३१-१६, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३३१-१७)
अंतरि देखि सबदि मनु मानिआ अवरु न राँगनहारा ॥ (१३३१-१७, प्रभाती, मः १)
अहिनिसि जीआ देखि समाले तिस ही की सरकारा ॥१॥ (१३३१-१७, प्रभाती, मः १)
मेरा प्रभु राँगि घणौ अति रूड़ौ ॥ (१३३१-१८, प्रभाती, मः १)
दीन दइआलु प्रीतम मनमोहनु अति रस लाल सगूड़ौ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३१-१८, प्रभाती, मः १)
ऊपरि कूपु गगन पनिहारी अमृतु पीवणहारा ॥ (१३३१-१९, प्रभाती, मः १)
जिस की रचना सो बिधि जाणै गुरमुखि गिआनु वीचारा ॥२॥ (१३३१-१९, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३३२

पसरी किरणि रसि कमल बिगासे ससि घरि सूरु समाइआ ॥ (१३३२-१, प्रभाती, मः १)
कालु बिधुंसि मनसा मनि मारी गुर प्रसादि प्रभु पाइआ ॥३॥ (१३३२-२, प्रभाती, मः १)
अति रसि रंगि चलूलै राती दूजा रंगु न कोई ॥ (१३३२-२, प्रभाती, मः १)
नानक रसनि रसाए राते रवि रहिआ प्रभु सोई ॥४॥१५॥ (१३३२-३, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३३२-४)
बारह महि रावल खपि जावहि चहु छिअ महि संनिआसी ॥ (१३३२-४, प्रभाती, मः १)
जोगी कापड़ीआ सिरखूथे बिनु सबदै गलि फासी ॥१॥ (१३३२-४, प्रभाती, मः १)
सबदि रते पूरे बैरागी ॥ (१३३२-५, प्रभाती, मः १)
अउहठि हसत महि भीखिआ जाची एक भाइ लिव लागी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३२-५, प्रभाती, मः १)
ब्रह्मण वादु पड़हि करि किरिआ करणी कर्म कराए ॥ (१३३२-६, प्रभाती, मः १)
बिनु बूझे किछु सूझै नाही मनमुखु विछुड़ि दुखु पाए ॥२॥ (१३३२-६, प्रभाती, मः १)
सबदि मिले से सूचाचारी साची दरगह माने ॥ (१३३२-७, प्रभाती, मः १)
अनदिनु नामि रतनि लिव लागे जुगि जुगि साचि समाने ॥३॥ (१३३२-८, प्रभाती, मः १)
सगले कर्म धर्म सुचि संजम जप तप तीर्थ सबदि वसे ॥ (१३३२-८, प्रभाती, मः १)
नानक सतिगुर मिलै मिलाइआ दूख पराछत काल नसे ॥४॥१६॥ (१३३२-९, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३३२-१०)
संता की रेणु साध जन संगति हरि कीरति तरु तारी ॥ (१३३२-१०, प्रभाती, मः १)
कहा करै बपुरा जमु डरपै गुरमुखि रिदै मुरारी ॥१॥ (१३३२-१०, प्रभाती, मः १)
जलि जाउ जीवनु नाम बिना ॥ (१३३२-११, प्रभाती, मः १)
हरि जपि जापु जपउ जपमाली गुरमुखि आवै सादु मना ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३२-११, प्रभाती, मः १)
गुर उपदेस साचु सुखु जा कउ किआ तिसु उपमा कहीऐ ॥ (१३३२-१२, प्रभाती, मः १)
लाल जवेहर रतन पदार्थ खोजत गुरमुखि लहीऐ ॥२॥ (१३३२-१२, प्रभाती, मः १)

चीनै गिआनु धिआनु धनु साचौ एक सबदि लिव लावै ॥ (१३३२-१३, प्रभाती, मः १)
निरालम्बु निरहारु निहकेवलु निरभउ ताड़ी लावै ॥३॥ (१३३२-१४, प्रभाती, मः १)
साइर सपत भरे जल निरमलि उलटी नाव तरावै ॥ (१३३२-१४, प्रभाती, मः १)
बाहरि जातौ ठाकि रहावै गुरमुखि सहजि समावै ॥४॥ (१३३२-१५, प्रभाती, मः १)
सो गिरही सो दासु उदासी जिनि गुरमुखि आपु पछानिआ ॥ (१३३२-१५, प्रभाती, मः १)
नानकु कहै अवरु नही दूजा साच सबदि मनु मानिआ ॥५॥१७॥ (१३३२-१६, प्रभाती, मः १)
रागु प्रभाती महला ३ चउपदे (१३३२-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३३२-१७)
गुरमुखि विरला कोई बूझै सबदे रहिआ समाई ॥ (१३३२-१८, प्रभाती, मः ३)
नामि रते सदा सुखु पावै साचि रहै लिव लाई ॥१॥ (१३३२-१८, प्रभाती, मः ३)

पन्ना १३३३

हरि हरि नामु जपहु जन भाई ॥ (१३३३-१, प्रभाती, मः ३)
गुर प्रसादि मनु असथिरु होवै अनदिनु हरि रसि रहिआ अघाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३३-१, प्रभाती, मः ३)
अनदिनु भगति करहु दिनु राती इसु जुग का लाहा भाई ॥ (१३३३-२, प्रभाती, मः ३)
सदा जन निर्मल मैलु न लागै सचि नामि चितु लाई ॥२॥ (१३३३-२, प्रभाती, मः ३)
सुखु सीगारु सतिगुरू दिखाइआ नामि वडी वडिआई ॥ (१३३३-३, प्रभाती, मः ३)
अखुट भंडार भरे कदे तोटि न आवै सदा हरि सेवहु भाई ॥३॥ (१३३३-४, प्रभाती, मः ३)
आपे करता जिस नो देवै तिसु वसै मनि आई ॥ (१३३३-४, प्रभाती, मः ३)
नानक नामु धिआइ सदा तू सतिगुरि दीआ दिखाई ॥४॥१॥ (१३३३-५, प्रभाती, मः ३)
प्रभाती महला ३ ॥ (१३३३-६)
निरगुणीआरे कउ बखसि लै सुआमी आपे लैहु मिलाई ॥ (१३३३-६, प्रभाती, मः ३)
तू बिअंतु तेरा अंतु न पाइआ सबदे देहु बुझाई ॥१॥ (१३३३-६, प्रभाती, मः ३)
हरि जीउ तुधु विटहु बलि जाई ॥ (१३३३-७, प्रभाती, मः ३)
तनु मनु अरपी तुधु आगै राखउ सदा रहाँ सरणाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३३-७, प्रभाती, मः ३)
आपणे भाणे विचि सदा रखु सुआमी हरि नामो देहि वडिआई ॥ (१३३३-८, प्रभाती, मः ३)
पूरे गुर ते भाणा जापै अनदिनु सहजि समाई ॥२॥ (१३३३-९, प्रभाती, मः ३)
तेरै भाणै भगति जे तुधु भावै आपे बखसि मिलाई ॥ (१३३३-९, प्रभाती, मः ३)
तेरै भाणै सदा सुखु पाइआ गुरि तृसना अगनि बुझाई ॥३॥ (१३३३-१०, प्रभाती, मः ३)
जो तू करहि सु होवै करते अवरु न करणा जाई ॥ (१३३३-१०, प्रभाती, मः ३)
नानक नावै जेवडु अवरु न दाता पूरे गुर ते पाई ॥४॥२॥ (१३३३-११, प्रभाती, मः ३)
प्रभाती महला ३ ॥ (१३३३-११)
गुरमुखि हरि सालाहिआ जिन्ना तिन सलाहि हरि जाता ॥ (१३३३-१२, प्रभाती, मः ३)
विचहु भरमु गइआ है दूजा गुर कै सबदि पछाता ॥१॥ (१३३३-१२, प्रभाती, मः ३)
हरि जीउ तू मेरा इकु सोई ॥ (१३३३-१३, प्रभाती, मः ३)

तुधु जपी तुधै सालाही गति मति तुझ ते होई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३३-१३, प्रभाती, मः ३)
गुरमुखि सालाहनि से सादु पाइनि मीठा अमृतु सारु ॥ (१३३३-१४, प्रभाती, मः ३)
सदा मीठा कदे न फीका गुर सबदी वीचारु ॥२॥ (१३३३-१४, प्रभाती, मः ३)
जिनि मीठा लाइआ सोई जाणै तिसु विटहु बलि जाई ॥ (१३३३-१५, प्रभाती, मः ३)
सबदि सलाही सदा सुखदाता विचहु आपु गवाई ॥३॥ (१३३३-१५, प्रभाती, मः ३)
सतिगुरु मेरा सदा है दाता जो इछै सो फलु पाए ॥ (१३३३-१६, प्रभाती, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई गुर सबदी सचु पाए ॥४॥३॥ (१३३३-१६, प्रभाती, मः ३)
प्रभाती महला ३ ॥ (१३३३-१७)
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन तू राखन जोगु ॥ (१३३३-१७, प्रभाती, मः ३)
तुधु जेवडु मै अवरु न सूझै ना को होआ न होगु ॥१॥ (१३३३-१८, प्रभाती, मः ३)
हरि जीउ सदा तेरी सरणाई ॥ (१३३३-१८, प्रभाती, मः ३)
जिउ भावै तिउ राखहु मेरे सुआमी एह तेरी वडिआई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३३-१८, प्रभाती, मः ३)
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिन की करहि प्रतिपाल ॥ (१३३३-१९, प्रभाती, मः ३)

पन्ना १३३४

आपि कृपा करि राखहु हरि जीउ पोहि न सकै जमकालु ॥२॥ (१३३४-१, प्रभाती, मः ३)
तेरी सरणाई सची हरि जीउ ना ओह घटै न जाइ ॥ (१३३४-१, प्रभाती, मः ३)
जो हरि छोडि दूजै भाइ लागै ओहु जम्मै तै मरि जाइ ॥३॥ (१३३४-२, प्रभाती, मः ३)
जो तेरी सरणाई हरि जीउ तिना दूख भूख किछु नाहि ॥ (१३३४-२, प्रभाती, मः ३)
नानक नामु सलाहि सदा तू सचै सबदि समाहि ॥४॥४॥ (१३३४-३, प्रभाती, मः ३)
प्रभाती महला ३ ॥ (१३३४-४)
गुरमुखि हरि जीउ सदा धिआवहु जब लगु जीअ परान ॥ (१३३४-४, प्रभाती, मः ३)
गुर सबदी मनु निरमलु होआ चूका मनि अभिमानु ॥ (१३३४-४, प्रभाती, मः ३)
सफलु जनमु तिसु प्रानी केरा हरि कै नामि समान ॥१॥ (१३३४-५, प्रभाती, मः ३)
मेरे मन गुर की सिख सुणीजै ॥ (१३३४-६, प्रभाती, मः ३)
हरि का नामु सदा सुखदाता सहजे हरि रसु पीजै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३४-६, प्रभाती, मः ३)
मूलु पछाणनि तिन निज घरि वासा सहजे ही सुखु होई ॥ (१३३४-६, प्रभाती, मः ३)
गुर कै सबदि कमलु परगासिआ हउमै दुरमति खोई ॥ (१३३४-७, प्रभाती, मः ३)
सभना महि एको सचु वरतै विरला बूझै कोई ॥२॥ (१३३४-८, प्रभाती, मः ३)
गुरमती मनु निरमलु होआ अमृतु ततु वखानै ॥ (१३३४-८, प्रभाती, मः ३)
हरि का नामु सदा मनि वसिआ विचि मन ही मनु मानै ॥ (१३३४-९, प्रभाती, मः ३)
सद बलिहारी गुर अपुने विटहु जितु आतम रामु पछानै ॥३॥ (१३३४-९, प्रभाती, मः ३)
मानस जनमि सतिगुरू न सेविआ बिरथा जनमु गवाइआ ॥ (१३३४-१०, प्रभाती, मः ३)
नदरि करे ताँ सतिगुरु मेले सहजे सहजि समाइआ ॥ (१३३४-१०, प्रभाती, मः ३)
नानक नामु मिलै वडिआई पूरे भागि धिआइआ ॥४॥५॥ (१३३४-११, प्रभाती, मः ३)

प्रभाती महला ३ ॥ (१३३४-१२)
आपे भाँति बणाए बहु रंगी सिसटि उपाइ प्रभि खेलु कीआ ॥ (१३३४-१२, प्रभाती, मः ३)
करि करि वेखै करे कराए सर्ब जीआ नो रिजकु दीआ ॥१॥ (१३३४-१२, प्रभाती, मः ३)
कली काल महि रविआ रामु ॥ (१३३४-१३, प्रभाती, मः ३)
घटि घटि पूरि रहिआ प्रभु एको गुरमुखि परगटु हरि हरि नामु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३४-१३, प्रभाती, मः ३)
गुपता नामु वरतै विचि कलजुगि घटि घटि हरि भरपूरि रहिआ ॥ (१३३४-१४, प्रभाती, मः ३)
नामु रतनु तिना हिरदै प्रगटिआ जो गुर सरणाई भजि पइआ ॥२॥ (१३३४-१५, प्रभाती, मः ३)
इंद्री पंच पंचे वसि आणै खिमा संतोखु गुरमति पावै ॥ (१३३४-१६, प्रभाती, मः ३)
सो धनु धनु हरि जनु वड पूरा जो भै बैरागि हरि गुण गावै ॥३॥ (१३३४-१६, प्रभाती, मः ३)
गुर ते मुहु फेरे जे कोई गुर का कहिआ न चिति धरै ॥ (१३३४-१७, प्रभाती, मः ३)
करि आचार बहु सम्पउ संचै जो किछु करै सु नरकि परै ॥४॥ (१३३४-१७, प्रभाती, मः ३)
एको सबदु एको प्रभु वरतै सभ एकसु ते उतपति चलै ॥ (१३३४-१८, प्रभाती, मः ३)
नानक गुरमुखि मेलि मिलाए गुरमुखि हरि हरि जाइ रलै ॥५॥६॥ (१३३४-१८, प्रभाती, मः ३)
प्रभाती महला ३ ॥ (१३३४-१९)
मेरे मन गुरु अपणा सालाहि ॥ (१३३४-१९, प्रभाती, मः ३)

पन्ना १३३५

पूरा भागु होवै मुखि मसतकि सदा हरि के गुण गाहि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३५-१, प्रभाती, मः ३)
अमृत नामु भोजनु हरि देइ ॥ (१३३५-१, प्रभाती, मः ३)
कोटि मधे कोई विरला लेइ ॥ (१३३५-२, प्रभाती, मः ३)
जिस नो अपणी नदरि करेइ ॥१॥ (१३३५-२, प्रभाती, मः ३)
गुर के चरण मन माहि वसाइ ॥ (१३३५-२, प्रभाती, मः ३)
दुखु अन्हेरा अंदरहु जाइ ॥ (१३३५-३, प्रभाती, मः ३)
आपे साचा लए मिलाइ ॥२॥ (१३३५-३, प्रभाती, मः ३)
गुर की बाणी सिउ लाइ पिआरु ॥ (१३३५-३, प्रभाती, मः ३)
ऐथै ओथै एहु अधारु ॥ (१३३५-४, प्रभाती, मः ३)
आपे देवै सिरजनहारु ॥३॥ (१३३५-४, प्रभाती, मः ३)
सचा मनाए अपणा भाणा ॥ (१३३५-४, प्रभाती, मः ३)
सोई भगतु सुघड़ु सोजाणा ॥ (१३३५-४, प्रभाती, मः ३)
नानकु तिस कै सद कुरबाणा ॥४॥७॥१७॥७॥२४॥ (१३३५-५, प्रभाती, मः ३)
प्रभाती महला ४ बिभास (१३३५-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३३५-६)
रसकि रसकि गुन गावह गुरमति लिव उनमनि नामि लगान ॥ (१३३५-७, प्रभाती बिभास, मः ४)
अमृतु रसु पीआ गुर सबदी हम नाम विटहु कुरबान ॥१॥ (१३३५-७, प्रभाती बिभास, मः ४)
हमरे जगजीवन हरि प्रान ॥ (१३३५-८, प्रभाती बिभास, मः ४)

हरि ऊतमु रिद अंतरि भाइओ गुरि मंतु दीओ हरि कान ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३५-८, प्रभाती बिभास, मः ४)
आवहु संत मिलहु मेरे भाई मिलि हरि हरि नामु वखान ॥ (१३३५-९, प्रभाती बिभास, मः ४)
कितु बिधि किउ पाईऐ प्रभु अपुना मो कउ करहु उपदेसु हरि दान ॥२॥ (१३३५-९, प्रभाती बिभास, मः ४)
सतसंगति महि हरि हरि वसिआ मिलि संगति हरि गुन जान ॥ (१३३५-१०, प्रभाती बिभास, मः ४)
वडै भागि सतसंगति पाई गुरु सतिगुरु परसि भगवान ॥३॥ (१३३५-११, प्रभाती बिभास, मः ४)
गुन गावह प्रभ अगम ठाकुर के गुन गाइ रहे हैरान ॥ (१३३५-१२, प्रभाती बिभास, मः ४)
जन नानक कउ गुरि किरपा धारी हरि नामु दीओ खिन दान ॥४॥१॥ (१३३५-१२, प्रभाती बिभास, मः ४)
प्रभाती महला ४ ॥ (१३३५-१३)
उगवै सूरु गुरमुखि हरि बोलहि सभ रैनि समालहि हरि गाल ॥ (१३३५-१३, प्रभाती, मः ४)
हमरै प्रभि हम लोच लगाई हम करह प्रभू हरि भाल ॥१॥ (१३३५-१४, प्रभाती, मः ४)
मेरा मनु साधू धूरि रवाल ॥ (१३३५-१४, प्रभाती, मः ४)
हरि हरि नामु दृड़ाइओ गुरि मीठा गुर पग झारह हम बाल ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३५-१५, प्रभाती, मः ४)
साकत कउ दिनु रैनि अंधारी मोहि फाथे माइआ जाल ॥ (१३३५-१५, प्रभाती, मः ४)
खिनु पलु हरि प्रभु रिदै न वसिओ रिनि बाधे बहु बिधि बाल ॥२॥ (१३३५-१६, प्रभाती, मः ४)
सतसंगति मिलि मति बुधि पाई हउ छूटे ममता जाल ॥ (१३३५-१७, प्रभाती, मः ४)
हरि नामा हरि मीठ लगाना गुरि कीए सबदि निहाल ॥३॥ (१३३५-१७, प्रभाती, मः ४)
हम बारिक गुर अगम गुसाई गुर करि किरपा प्रतिपाल ॥ (१३३५-१८, प्रभाती, मः ४)
बिखु भउजल डुबदे काढि लेहु प्रभ गुर नानक बाल गुपाल ॥४॥२॥ (१३३५-१९, प्रभाती, मः ४)
प्रभाती महला ४ ॥ (१३३५-१९)
इकु खिनु हरि प्रभि किरपा धारी गुन गाए रसक रसीक ॥ (१३३५-१९, प्रभाती, मः ४)

पन्ना १३३६

गावत सुनत दोऊ भए मुकते जिना गुरमुखि खिनु हरि पीक ॥१॥ (१३३६-१, प्रभाती, मः ४)
मेरै मनि हरि हरि राम नामु रसु टीक ॥ (१३३६-२, प्रभाती, मः ४)
गुरमुखि नामु सीतल जलु पाइआ हरि हरि नामु पीआ रसु झीक ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३६-२, प्रभाती, मः ४)
जिन हरि हिरदै प्रीति लगानी तिना मसतकि ऊजल टीक ॥ (१३३६-३, प्रभाती, मः ४)
हरि जन सोभा सभ जग ऊपरि जिउ विचि उडवा ससि कीक ॥२॥ (१३३६-४, प्रभाती, मः ४)
जिन हरि हिरदै नामु न वसिओ तिन सभि कारज फीक ॥ (१३३६-४, प्रभाती, मः ४)
जैसे सीगारु करै देह मानुख नाम बिना नकटे नक कीक ॥३॥ (१३३६-५, प्रभाती, मः ४)
घटि घटि रमईआ रमत राम राइ सभ वरतै सभ महि ईक ॥ (१३३६-५, प्रभाती, मः ४)
जन नानक कउ हरि किरपा धारी गुर बचन धिआइओ घरी मीक ॥४॥३॥ (१३३६-६, प्रभाती, मः ४)
प्रभाती महला ४ ॥ (१३३६-७)
अगम दइआल कृपा प्रभि धारी मुखि हरि हरि नामु हम कहे ॥ (१३३६-७, प्रभाती, मः ४)
पतित पावन हरि नामु धिआइओ सभि किलबिख पाप लहे ॥१॥ (१३३६-८, प्रभाती, मः ४)
जपि मन राम नामु रवि रहे ॥ (१३३६-८, प्रभाती, मः ४)

दीन दइआलु दुख भंजनु गाइओ गुरमति नामु पदारथु लहे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३६-९, प्रभाती, मः ४)
काइआ नगरि नगरि हरि बसिओ मति गुरमति हरि हरि सहे ॥ (१३३६-९, प्रभाती, मः ४)
सरीरि सरोवरि नामु हरि प्रगटिओ घरि मंदरि हरि प्रभु लहे ॥२॥ (१३३६-१०, प्रभाती, मः ४)
जो नर भरमि भरमि उदिआने ते साकत मूड़ मुहे ॥ (१३३६-११, प्रभाती, मः ४)
जिउ मृग नाभि बसै बासु बसना भ्रमि भ्रमिओ झार गहे ॥३॥ (१३३६-११, प्रभाती, मः ४)
तुम वड अगम अगाधि बोधि प्रभ मति देवहु हरि प्रभ लहे ॥ (१३३६-१२, प्रभाती, मः ४)
जन नानक कउ गुरि हाथु सिरि धरिओ हरि राम नामि रवि रहे ॥४॥४॥ (१३३६-१३, प्रभाती, मः ४)
प्रभाती महला ४ ॥ (१३३६-१३)
मनि लागी प्रीति राम नाम हरि हरि जपिओ हरि प्रभु वडफा ॥ (१३३६-१४, प्रभाती, मः ४)
सतिगुर बचन सुखाने हीअरै हरि धारी हरि प्रभ कृपफा ॥१॥ (१३३६-१४, प्रभाती, मः ४)
मेरे मन भजु राम नाम हरि निमखफा ॥ (१३३६-१५, प्रभाती, मः ४)
हरि हरि दानु दीओ गुरि पूरै हरि नामा मनि तनि बसफा ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३६-१५, प्रभाती, मः ४)
काइआ नगरि वसिओ घरि मंदरि जपि सोभा गुरमुखि करपफा ॥ (१३३६-१६, प्रभाती, मः ४)
हलति पलति जन भए सुहेले मुख ऊजल गुरमुखि तरफा ॥२॥ (१३३६-१७, प्रभाती, मः ४)
अनभउ हरि हरि हरि लिव लागी हरि उर धारिओ गुरि निमखफा ॥ (१३३६-१७, प्रभाती, मः ४)
कोटि कोटि के दोख सभ जन के हरि दूरि कीए इक पलफा ॥३॥ (१३३६-१८, प्रभाती, मः ४)
तुमरे जन तुम ही ते जाने प्रभ जानिओ जन ते मुखफा ॥ (१३३६-१९, प्रभाती, मः ४)
हरि हरि आपु धरिओ हरि जन महि जन नानकु हरि प्रभु इकफा ॥४॥५॥ (१३३६-१९, प्रभाती, मः ४)

पन्ना १३३७

प्रभाती महला ४ ॥ (१३३७-१)
गुर सतिगुरि नामु दृड़ाइओ हरि हरि हम मुए जीवे हरि जपिभा ॥ (१३३७-१, प्रभाती, मः ४)
धनु धन्नु गुरू गुरु सतिगुरु पूरा बिखु डुबदे बाह देइ कढिभा ॥१॥ (१३३७-२, प्रभाती, मः ४)
जपि मन राम नामु अरधाँभा ॥ (१३३७-३, प्रभाती, मः ४)
उपजंपि उपाइ न पाईऐ कतहू गुरि पूरै हरि प्रभु लाभा ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३७-३, प्रभाती, मः ४)
राम नामु रसु राम रसाइणु रसु पीआ गुरमति रसभा ॥ (१३३७-४, प्रभाती, मः ४)
लोह मनूर कंचनु मिलि संगति हरि उर धारिओ गुरि हरिभा ॥२॥ (१३३७-४, प्रभाती, मः ४)
हउमै बिखिआ नित लोभि लुभाने पुत कलत मोहि लुभिभा ॥ (१३३७-५, प्रभाती, मः ४)
तिन पग संत न सेवे कबहू ते मनमुख भूम्भर भरभा ॥३॥ (१३३७-६, प्रभाती, मः ४)
तुमरे गुन तुम ही प्रभ जानहु हम परे हारि तुम सरनभा ॥ (१३३७-६, प्रभाती, मः ४)
जिउ जानहु तिउ राखहु सुआमी जन नानकु दासु तुमनभा ॥४॥६॥ (१३३७-७, प्रभाती, मः ४)
छका १ ॥ (१३३७-७)
प्रभाती बिभास पड़ताल महला ४ (१३३७-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३३७-८)
जपि मन हरि हरि नामु निधान ॥ (१३३७-९, प्रभाती बिभास, मः ४)

हरि दरगह पावहि मान ॥ (१३३७-९, प्रभाती बिभास, मः ४)
जिनि जपिआ ते पारि परान ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३७-९, प्रभाती बिभास, मः ४)
सुनि मन हरि हरि नामु करि धिआनु ॥ (१३३७-१०, प्रभाती बिभास, मः ४)
सुनि मन हरि कीरति अठसठि मजानु ॥ (१३३७-१०, प्रभाती बिभास, मः ४)
सुनि मन गुरमुखि पावहि मानु ॥१॥ (१३३७-१०, प्रभाती बिभास, मः ४)
जपि मन परमेसुरु प्रधानु ॥ (१३३७-११, प्रभाती बिभास, मः ४)
खिन खोवै पाप कोटान ॥ (१३३७-११, प्रभाती बिभास, मः ४)
मिलु नानक हरि भगवान ॥२॥१॥७॥ (१३३७-११, प्रभाती बिभास, मः ४)
प्रभाती महला ५ बिभास (१३३७-१३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३३७-१३)
मनु हरि कीआ तनु सभु साजिआ ॥ (१३३७-१४, प्रभाती बिभास, मः ५)
पंच तत रचि जोति निवाजिआ ॥ (१३३७-१४, प्रभाती बिभास, मः ५)
सिहजा धरति बरतन कउ पानी ॥ (१३३७-१४, प्रभाती बिभास, मः ५)
निमख न विसारहु सेवहु सारिगपानी ॥१॥ (१३३७-१५, प्रभाती बिभास, मः ५)
मन सतिगुरु सेवि होइ पर्म गते ॥ (१३३७-१५, प्रभाती बिभास, मः ५)
हरख सोग ते रहहि निरारा ताँ तू पावहि प्रानपते ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३७-१५, प्रभाती बिभास, मः ५)
कापड़ भोग रस अनिक भुंचाए ॥ (१३३७-१६, प्रभाती बिभास, मः ५)
मात पिता कुटम्ब सगल बनाए ॥ (१३३७-१६, प्रभाती बिभास, मः ५)
रिजकु समाहे जलि थलि मीत ॥ (१३३७-१७, प्रभाती बिभास, मः ५)
सो हरि सेवहु नीता नीत ॥२॥ (१३३७-१७, प्रभाती बिभास, मः ५)
तहा सखाई जह कोइ न होवै ॥ (१३३७-१७, प्रभाती बिभास, मः ५)
कोटि अप्राध इक खिन महि धोवै ॥ (१३३७-१८, प्रभाती बिभास, मः ५)
दाति करै नही पछुोतावै ॥ (१३३७-१८, प्रभाती बिभास, मः ५)
एका बखस फिरि बहुरि न बुलावै ॥३॥ (१३३७-१८, प्रभाती बिभास, मः ५)

पन्ना १३३८

किरत संजोगी पाइआ भालि ॥ (१३३८-१, प्रभाती बिभास, मः ५)
साधसंगति महि बसे गुपाल ॥ (१३३८-१, प्रभाती बिभास, मः ५)
गुर मिलि आए तुमरै दुआर ॥ (१३३८-१, प्रभाती बिभास, मः ५)
जन नानक दरसनु देहु मुरारि ॥४॥१॥ (१३३८-२, प्रभाती बिभास, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३३८-२)
प्रभ की सेवा जन की सोभा ॥ (१३३८-२, प्रभाती, मः ५)
काम क्रोध मिटे तिसु लोभा ॥ (१३३८-३, प्रभाती, मः ५)
नामु तेरा जन कै भंडारि ॥ (१३३८-३, प्रभाती, मः ५)
गुन गावहि प्रभ दरस पिआरि ॥१॥ (१३३८-३, प्रभाती, मः ५)

तुमरी भगति प्रभ तुमहि जनाई ॥ (१३३८-४, प्रभाती, मः ५)
काटि जेवरी जन लीए छडाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३८-४, प्रभाती, मः ५)
जो जनु राता प्रभ कै रंगि ॥ (१३३८-४, प्रभाती, मः ५)
तिनि सुखु पाइआ प्रभ कै संगि ॥ (१३३८-५, प्रभाती, मः ५)
जिसु रसु आइआ सोई जानै ॥ (१३३८-५, प्रभाती, मः ५)
पेखि पेखि मन महि हैरानै ॥२॥ (१३३८-५, प्रभाती, मः ५)
सो सुखीआ सभ ते ऊतमु सोइ ॥ (१३३८-६, प्रभाती, मः ५)
जा कै हृदै वसिआ प्रभु सोइ ॥ (१३३८-६, प्रभाती, मः ५)
सोई निहचलु आवै न जाइ ॥ (१३३८-६, प्रभाती, मः ५)
अनदिनु प्रभ के हरि गुण गाइ ॥३॥ (१३३८-७, प्रभाती, मः ५)
ता कउ करहु सगल नमसकारु ॥ (१३३८-७, प्रभाती, मः ५)
जा कै मनि पूरनु निरंकारु ॥ (१३३८-७, प्रभाती, मः ५)
करि किरपा मोहि ठाकुर देवा ॥ (१३३८-८, प्रभाती, मः ५)
नानकु उधरै जन की सेवा ॥४॥२॥ (१३३८-८, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३३८-८)
गुन गावत मनि होइ अनंद ॥ (१३३८-९, प्रभाती, मः ५)
आठ पहर सिमरउ भगवंत ॥ (१३३८-९, प्रभाती, मः ५)
जा कै सिमरनि कलमल जाहि ॥ (१३३८-९, प्रभाती, मः ५)
तिसु गुर की हम चरनी पाहि ॥१॥ (१३३८-९, प्रभाती, मः ५)
सुमति देवहु संत पिआरे ॥ (१३३८-१०, प्रभाती, मः ५)
सिमरउ नामु मोहि निसतारे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३८-१०, प्रभाती, मः ५)
जिनि गुरि कहिआ मारगु सीधा ॥ (१३३८-११, प्रभाती, मः ५)
सगल तिआगि नामि हरि गीधा ॥ (१३३८-११, प्रभाती, मः ५)
तिसु गुर कै सदा बलि जाईऐ ॥ (१३३८-११, प्रभाती, मः ५)
हरि सिमरनु जिसु गुर ते पाईऐ ॥२॥ (१३३८-१२, प्रभाती, मः ५)
बूडत प्रानी जिनि गुरहि तराइआ ॥ (१३३८-१२, प्रभाती, मः ५)
जिसु प्रसादि मोहै नही माइआ ॥ (१३३८-१३, प्रभाती, मः ५)
हलतु पलतु जिनि गुरहि सवारिआ ॥ (१३३८-१३, प्रभाती, मः ५)
तिसु गुर ऊपरि सदा हउ वारिआ ॥३॥ (१३३८-१३, प्रभाती, मः ५)
महा मुगध ते कीआ गिआनी ॥ (१३३८-१४, प्रभाती, मः ५)
गुर पूरे की अकथ कहानी ॥ (१३३८-१४, प्रभाती, मः ५)
पारब्रह्म नानक गुरदेव ॥ (१३३८-१४, प्रभाती, मः ५)
वडै भागि पाईऐ हरि सेव ॥४॥३॥ (१३३८-१५, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३३८-१५)
सगले दूख मिटे सुख दीए अपना नामु जपाइआ ॥ (१३३८-१५, प्रभाती, मः ५)

करि किरपा अपनी सेवा लाए सगला दुरतु मिटाइआ ॥१॥ (१३३८-१६, प्रभाती, मः ५)
हम बारिक सरनि प्रभ दइआल ॥ (१३३८-१६, प्रभाती, मः ५)
अवगण काटि कीए प्रभि अपुने राखि लीए मेरै गुर गोपालि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३८-१७, प्रभाती, मः ५)
ताप पाप बिनसे खिन भीतरि भए कृपाल गुसाई ॥ (१३३८-१७, प्रभाती, मः ५)
सासि सासि पारब्रह्मु अराधी अपुने सतिगुर कै बलि जाई ॥२॥ (१३३८-१८, प्रभाती, मः ५)
अगम अगोचरु बिअंतु सुआमी ता का अंतु न पाईऐ ॥ (१३३८-१९, प्रभाती, मः ५)
लाहा खाटि होईऐ धनवंता अपुना प्रभू धिआईऐ ॥३॥ (१३३८-१९, प्रभाती, मः ५)

पन्ना १३३९

आठ पहर पारब्रह्मु धिआई सदा सदा गुन गाइआ ॥ (१३३९-१, प्रभाती, मः ५)
कहु नानक मेरे पूरे मनोरथ पारब्रह्मु गुरु पाइआ ॥४॥४॥ (१३३९-२, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३३९-२)
सिमरत नामु किलबिख सभि नासे ॥ (१३३९-२, प्रभाती, मः ५)
सचु नामु गुरि दीनी रासे ॥ (१३३९-३, प्रभाती, मः ५)
प्रभ की दरगह सोभावंते ॥ (१३३९-३, प्रभाती, मः ५)
सेवक सेवि सदा सोहंते ॥१॥ (१३३९-३, प्रभाती, मः ५)
हरि हरि नामु जपहु मेरे भाई ॥ (१३३९-४, प्रभाती, मः ५)
सगले रोग दोख सभि बिनसहि अगिआनु अंधेरा मन ते जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३९-४, प्रभाती, मः ५)
जनम मरन गुरि राखे मीत ॥ (१३३९-५, प्रभाती, मः ५)
हरि के नाम सिउ लागी प्रीति ॥ (१३३९-५, प्रभाती, मः ५)
कोटि जनम के गए कलेस ॥ (१३३९-५, प्रभाती, मः ५)
जो तिसु भावै सो भल होस ॥२॥ (१३३९-६, प्रभाती, मः ५)
तिसु गुर कउ हउ सद बलि जाई ॥ (१३३९-६, प्रभाती, मः ५)
जिसु प्रसादि हरि नामु धिआई ॥ (१३३९-६, प्रभाती, मः ५)
ऐसा गुरु पाईऐ वडभागी ॥ (१३३९-७, प्रभाती, मः ५)
जिसु मिलते राम लिव लागी ॥३॥ (१३३९-७, प्रभाती, मः ५)
करि किरपा पारब्रह्म सुआमी ॥ (१३३९-७, प्रभाती, मः ५)
सगल घटा के अंतरजामी ॥ (१३३९-८, प्रभाती, मः ५)
आठ पहर अपुनी लिव लाइ ॥ (१३३९-८, प्रभाती, मः ५)
जनु नानकु प्रभ की सरनाइ ॥४॥५॥ (१३३९-८, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३३९-९)
करि किरपा अपुने प्रभि कीए ॥ (१३३९-९, प्रभाती, मः ५)
हरि का नामु जपन कउ दीए ॥ (१३३९-९, प्रभाती, मः ५)
आठ पहर गुन गाइ गुबिंद ॥ (१३३९-९, प्रभाती, मः ५)
भै बिनसे उतरी सभ चिंद ॥१॥ (१३३९-१०, प्रभाती, मः ५)

उबरे सतिगुर चरनी लागि ॥ (१३३६-१०, प्रभाती, मः ५)
जो गुरु कहै सोई भल मीठा मन की मति तिआगि ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३६-१०, प्रभाती, मः ५)
मनि तनि वसिआ हरि प्रभु सोई ॥ (१३३६-११, प्रभाती, मः ५)
कलि कलेस किछु बिघनु न होई ॥ (१३३६-११, प्रभाती, मः ५)
सदा सदा प्रभु जीअ कै संगि ॥ (१३३६-१२, प्रभाती, मः ५)
उतरी मैलु नाम कै रंगि ॥२॥ (१३३६-१२, प्रभाती, मः ५)
चरन कमल सिउ लागो पिआरु ॥ (१३३६-१२, प्रभाती, मः ५)
बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ (१३३६-१३, प्रभाती, मः ५)
प्रभ मिलन का मारगु जानाँ ॥ (१३३६-१३, प्रभाती, मः ५)
भाइ भगति हरि सिउ मनु मानाँ ॥३॥ (१३३६-१३, प्रभाती, मः ५)
सुणि सजण संत मीत सुहेले ॥ (१३३६-१४, प्रभाती, मः ५)
नामु रतनु हरि अगह अतोले ॥ (१३३६-१४, प्रभाती, मः ५)
सदा सदा प्रभु गुण निधि गाईऐ ॥ (१३३६-१४, प्रभाती, मः ५)
कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥४॥६॥ (१३३६-१५, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३३६-१५)
से धनवंत सेई सचु साहा ॥ (१३३६-१५, प्रभाती, मः ५)
हरि की दरगह नामु विसाहा ॥१॥ (१३३६-१६, प्रभाती, मः ५)
हरि हरि नामु जपहु मन मीत ॥ (१३३६-१६, प्रभाती, मः ५)
गुरु पूरा पाईऐ वडभागी निर्मल पूरन रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (१३३६-१६, प्रभाती, मः ५)
पाइआ लाभु वजी वाधाई ॥ (१३३६-१७, प्रभाती, मः ५)
संत प्रसादि हरि के गुन गाई ॥२॥ (१३३६-१७, प्रभाती, मः ५)
सफल जनमु जीवन परवाणु ॥ (१३३६-१८, प्रभाती, मः ५)
गुर परसादी हरि रंगु माणु ॥३॥ (१३३६-१८, प्रभाती, मः ५)
बिनसे काम क्रोध अहंकार ॥ (१३३६-१८, प्रभाती, मः ५)
नानक गुरमुखि उतरहि पारि ॥४॥७॥ (१३३६-१९, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३३६-१९)
गुरु पूरा पूरी ता की कला ॥ (१३३६-१९, प्रभाती, मः ५)

पन्ना १३४०

गुर का सबदु सदा सद अटला ॥ (१३४०-१, प्रभाती, मः ५)
गुर की बाणी जिसु मनि वसै ॥ (१३४०-१, प्रभाती, मः ५)
दूखु दरदु सभु ता का नसै ॥१॥ (१३४०-१, प्रभाती, मः ५)
हरि रंगि राता मनु राम गुन गावै ॥ (१३४०-२, प्रभाती, मः ५)
मुकतो साधू धूरी नावै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४०-२, प्रभाती, मः ५)
गुर परसादी उतरे पारि ॥ (१३४०-२, प्रभाती, मः ५)

भउ भरमु बिनसे बिकार ॥ (१३४०-३, प्रभाती, मः ५)
मन तन अंतरि बसे गुर चरना ॥ (१३४०-३, प्रभाती, मः ५)
निरभै साध परे हरि सरना ॥२॥ (१३४०-३, प्रभाती, मः ५)
अनद सहज रस सूख घनेरे ॥ (१३४०-४, प्रभाती, मः ५)
दुसमनु दूखु न आवै नेरे ॥ (१३४०-४, प्रभाती, मः ५)
गुरि पूरै अपुने करि राखे ॥ (१३४०-४, प्रभाती, मः ५)
हरि नामु जपत किलबिख सभि लाथे ॥३॥ (१३४०-४, प्रभाती, मः ५)
संत साजन सिख भए सुहेले ॥ (१३४०-५, प्रभाती, मः ५)
गुरि पूरै प्रभ सिउ लै मेले ॥ (१३४०-५, प्रभाती, मः ५)
जनम मरन दुख फाहा काटिआ ॥ (१३४०-५, प्रभाती, मः ५)
कहु नानक गुरि पड़दा ढाकिआ ॥४॥८॥ (१३४०-६, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३४०-६)
सतिगुरि पूरै नामु दीआ ॥ (१३४०-६, प्रभाती, मः ५)
अनद मंगल कलिआण सदा सुखु कारजु सगला रासि थीआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४०-७, प्रभाती, मः ५)
चरन कमल गुर के मनि वूठे ॥ (१३४०-८, प्रभाती, मः ५)
दूख दरद भ्रम बिनसे झूठे ॥१॥ (१३४०-८, प्रभाती, मः ५)
नित उठि गावहु प्रभ की बाणी ॥ (१३४०-८, प्रभाती, मः ५)
आठ पहर हरि सिमरहु प्राणी ॥२॥ (१३४०-९, प्रभाती, मः ५)
घरि बाहरि प्रभु सभनी थाई ॥ (१३४०-९, प्रभाती, मः ५)
संगि सहाई जह हउ जाई ॥३॥ (१३४०-९, प्रभाती, मः ५)
दुइ कर जोड़ि करी अरदासि ॥ (१३४०-१०, प्रभाती, मः ५)
सदा जपे नानकु गुणतासु ॥४॥९॥ (१३४०-१०, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३४०-१०)
पारब्रह्मु प्रभु सुघड़ सुजाणु ॥ (१३४०-११, प्रभाती, मः ५)
गुरु पूरा पाईऐ वडभागी दरसन कउ जाईऐ कुरबाणु ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४०-११, प्रभाती, मः ५)
किलबिख मेटे सबदि संतोखु ॥ (१३४०-१२, प्रभाती, मः ५)
नामु अराधन होआ जोगु ॥ (१३४०-१२, प्रभाती, मः ५)
साधसंगि होआ परगासु ॥ (१३४०-१२, प्रभाती, मः ५)
चरन कमल मन माहि निवासु ॥१॥ (१३४०-१३, प्रभाती, मः ५)
जिनि कीआ तिनि लीआ राखि ॥ (१३४०-१३, प्रभाती, मः ५)
प्रभु पूरा अनाथ का नाथु ॥ (१३४०-१३, प्रभाती, मः ५)
जिसहि निवाजे किरपा धारि ॥ (१३४०-१४, प्रभाती, मः ५)
पूरन कर्म ता के आचार ॥२॥ (१३४०-१४, प्रभाती, मः ५)
गुण गावै नित नित नित नवे ॥ (१३४०-१४, प्रभाती, मः ५)
लख चउरासीह जोनि न भवे ॥ (१३४०-१४, प्रभाती, मः ५)

ईहाँ ऊहाँ चरण पूजारे ॥ (१३४०-१५, प्रभाती, मः ५)
मुखु ऊजलु साचे दरबारे ॥३॥ (१३४०-१५, प्रभाती, मः ५)
जिसु मसतकि गुरि धरिआ हाथु ॥ (१३४०-१५, प्रभाती, मः ५)
कोटि मधे को विरला दासु ॥ (१३४०-१६, प्रभाती, मः ५)
जलि थलि महीअलि पेखै भरपूरि ॥ (१३४०-१६, प्रभाती, मः ५)
नानक उधरसि तिसु जन की धूरि ॥४॥१०॥ (१३४०-१६, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३४०-१७)
कुरबाणु जाई गुर पूरे अपने ॥ (१३४०-१७, प्रभाती, मः ५)
जिसु प्रसादि हरि हरि जपु जपने ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४०-१७, प्रभाती, मः ५)
अमृत बाणी सुणत निहाल ॥ (१३४०-१८, प्रभाती, मः ५)
बिनसि गए बिखिआ जंजाल ॥१॥ (१३४०-१८, प्रभाती, मः ५)
साच सबद सिउ लागी प्रीति ॥ (१३४०-१९, प्रभाती, मः ५)
हरि प्रभु अपुना आइआ चीति ॥२॥ (१३४०-१९, प्रभाती, मः ५)
नामु जपत होआ परगासु ॥ (१३४०-१९, प्रभाती, मः ५)

पन्ना १३४१

गुर सबदे कीना रिदै निवासु ॥३॥ (१३४१-१, प्रभाती, मः ५)
गुर समरथ सदा दइआल ॥ (१३४१-१, प्रभाती, मः ५)
हरि जपि जपि नानक भए निहाल ॥४॥११॥ (१३४१-१, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३४१-२)
गुरु गुरु करत सदा सुखु पाइआ ॥ (१३४१-२, प्रभाती, मः ५)
दीन दइआल भए किरपाला अपणा नामु आपि जपाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४१-३, प्रभाती, मः ५)
संतसंगति मिलि भइआ प्रगास ॥ (१३४१-३, प्रभाती, मः ५)
हरि हरि जपत पूरन भई आस ॥१॥ (१३४१-४, प्रभाती, मः ५)
सर्ब कलिआण सूख मनि वूठे ॥ (१३४१-४, प्रभाती, मः ५)
हरि गुण गाए गुर नानक तूठे ॥२॥१२॥ (१३४१-५, प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ घरु २ बिभास (१३४१-६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३४१-६)
अवरु न दूजा ठाउ ॥ (१३४१-७, प्रभाती बिभास, मः ५)
नाही बिनु हरि नाउ ॥ (१३४१-७, प्रभाती बिभास, मः ५)
सर्ब सिधि कलिआन ॥ (१३४१-७, प्रभाती बिभास, मः ५)
पूरन होहि सगल काम ॥१॥ (१३४१-७, प्रभाती बिभास, मः ५)
हरि को नामु जपीऐ नीत ॥ (१३४१-८, प्रभाती बिभास, मः ५)
काम क्रोध अहंकारु बिनसै लगै एकै प्रीति ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४१-८, प्रभाती बिभास, मः ५)
नामि लागै दूखु भागै सरनि पालन जोगु ॥ (१३४१-८, प्रभाती बिभास, मः ५)

सतिगुरु भेटै जमु न तेटै जिसु धुरि होवै संजोगु ॥२॥ (१३४१-९, प्रभाती बिभास, मः ५)
रैनि दिनसु धिआइ हरि हरि तजहु मन के भर्म ॥ (१३४१-९, प्रभाती बिभास, मः ५)
साधसंगति हरि मिलै जिसहि पूरन कर्म ॥३॥ (१३४१-१०, प्रभाती बिभास, मः ५)
जनम जनम बिखाद बिनसे राखि लीने आपि ॥ (१३४१-१०, प्रभाती बिभास, मः ५)
मात पिता मीत भाई जन नानक हरि हरि जापि ॥४॥१॥१३॥ (१३४१-११, प्रभाती बिभास, मः ५)
प्रभाती महला ५ बिभास पड़ताल (१३४१-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३४१-१२)
रम राम राम राम जाप ॥ (१३४१-१३, प्रभाती बिभास, मः ५)
कलि कलेस लोभ मोह बिनसि जाइ अहं ताप ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४१-१३, प्रभाती बिभास, मः ५)
आपु तिआगि संत चरन लागि मनु पवितु जाहि पाप ॥१॥ (१३४१-१३, प्रभाती बिभास, मः ५)
नानकु बारिकु कछू न जानै राखन कउ प्रभु माई बाप ॥२॥१॥१४॥ (१३४१-१४, प्रभाती बिभास, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३४१-१५)
चरन कमल सरनि टेक ॥ (१३४१-१५, प्रभाती, मः ५)
ऊच मूच बेअंतु ठाकुरु सर्ब ऊपरि तुही एक ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४१-१५, प्रभाती, मः ५)
प्रान अधार दुख बिदार दैनहार बुधि बिबेक ॥१॥ (१३४१-१६, प्रभाती, मः ५)
नमस्कार रखनहार मनि अराधि प्रभू मेक ॥ (१३४१-१७, प्रभाती, मः ५)
संत रेनु करउ मजनु नानक पावै सुख अनेक ॥२॥२॥१५॥ (१३४१-१७, प्रभाती, मः ५)

पन्ना १३४२

प्रभाती असटपदीआ महला १ बिभास (१३४२-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३४२-१)
दुबिधा बउरी मनु बउराइआ ॥ (१३४२-२, प्रभाती बिभास, मः १)
झूठै लालचि जनमु गवाइआ ॥ (१३४२-२, प्रभाती बिभास, मः १)
लपटि रही फुनि बंधु न पाइआ ॥ (१३४२-२, प्रभाती बिभास, मः १)
सतिगुरि राखे नामु दृड़ाइआ ॥१॥ (१३४२-३, प्रभाती बिभास, मः १)
ना मनु मरै न माइआ मरै ॥ (१३४२-३, प्रभाती बिभास, मः १)
जिनि किछु कीआ सोई जाणै सबदु वीचारि भउ सागरु तरै ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४२-३, प्रभाती बिभास, मः १)
माइआ संचि राजे अहंकारी ॥ (१३४२-४, प्रभाती बिभास, मः १)
माइआ साथि न चलै पिआरी ॥ (१३४२-४, प्रभाती बिभास, मः १)
माइआ ममता है बहु रंगी ॥ (१३४२-५, प्रभाती बिभास, मः १)
बिनु नावै को साथि न संगी ॥२॥ (१३४२-५, प्रभाती बिभास, मः १)
जिउ मनु देखहि पर मनु तैसा ॥ (१३४२-५, प्रभाती बिभास, मः १)
जैसी मनसा तैसी दसा ॥ (१३४२-६, प्रभाती बिभास, मः १)
जैसा करमु तैसी लिव लावै ॥ (१३४२-६, प्रभाती बिभास, मः १)
सतिगुरु पूछि सहज घरु पावै ॥३॥ (१३४२-६, प्रभाती बिभास, मः १)

रागि नादि मनु दूजै भाइ ॥ (१३४२-७, प्रभाती बिभास, मः १)
अंतरि कपटु महा दुखु पाइ ॥ (१३४२-७, प्रभाती बिभास, मः १)
सतिगुरु भेटै सोझी पाइ ॥ (१३४२-७, प्रभाती बिभास, मः १)
सचै नामि रहै लिव लाइ ॥४॥ (१३४२-७, प्रभाती बिभास, मः १)
सचै सबदि सचु कमावै ॥ (१३४२-८, प्रभाती बिभास, मः १)
सची बाणी हरि गुण गावै ॥ (१३४२-८, प्रभाती बिभास, मः १)
निज घरि वासु अमर पदु पावै ॥ (१३४२-८, प्रभाती बिभास, मः १)
ता दरि साचै सोभा पावै ॥५॥ (१३४२-९, प्रभाती बिभास, मः १)
गुर सेवा बिनु भगति न होई ॥ (१३४२-९, प्रभाती बिभास, मः १)
अनेक जतन करै जे कोई ॥ (१३४२-९, प्रभाती बिभास, मः १)
हउमै मेरा सबदे खोई ॥ (१३४२-९, प्रभाती बिभास, मः १)
निर्मल नामु वसै मनि सोई ॥६॥ (१३४२-१०, प्रभाती बिभास, मः १)
इसु जग महि सबदु करणी है सारु ॥ (१३४२-१०, प्रभाती बिभास, मः १)
बिनु सबदै होरु मोहु गुबारु ॥ (१३४२-१०, प्रभाती बिभास, मः १)
सबदे नामु रखै उरि धारि ॥ (१३४२-११, प्रभाती बिभास, मः १)
सबदे गति मति मोख दुआरु ॥७॥ (१३४२-११, प्रभाती बिभास, मः १)
अवरु नाही करि देखणहारो ॥ (१३४२-११, प्रभाती बिभास, मः १)
साचा आपि अनूपु अपारो ॥ (१३४२-१२, प्रभाती बिभास, मः १)
राम नाम ऊतम गति होई ॥ (१३४२-१२, प्रभाती बिभास, मः १)
नानक खोजि लहै जनु कोई ॥८॥१॥ (१३४२-१२, प्रभाती बिभास, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३४२-१३)
माइआ मोहि सगल जगु छाइआ ॥ (१३४२-१३, प्रभाती, मः १)
कामणि देखि कामि लोभाइआ ॥ (१३४२-१३, प्रभाती, मः १)
सुत कंचन सिउ हेतु वधाइआ ॥ (१३४२-१४, प्रभाती, मः १)
सभु किछु अपना इकु रामु पराइआ ॥१॥ (१३४२-१४, प्रभाती, मः १)
ऐसा जापु जपउ जपमाली ॥ (१३४२-१४, प्रभाती, मः १)
दुख सुख परहरि भगति निराली ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४२-१५, प्रभाती, मः १)
गुण निधान तेरा अंतु न पाइआ ॥ (१३४२-१५, प्रभाती, मः १)
साच सबदि तुझ माहि समाइआ ॥ (१३४२-१५, प्रभाती, मः १)
आवा गउणु तुधु आपि रचाइआ ॥ (१३४२-१६, प्रभाती, मः १)
सेई भगत जिन सचि चितु लाइआ ॥२॥ (१३४२-१६, प्रभाती, मः १)
गिआनु धिआनु नरहरि निरबाणी ॥ (१३४२-१७, प्रभाती, मः १)
बिनु सतिगुर भेटे कोइ न जाणी ॥ (१३४२-१७, प्रभाती, मः १)
सगल सरोवर जोति समाणी ॥ (१३४२-१७, प्रभाती, मः १)
आनद रूप विटहु कुरबाणी ॥३॥ (१३४२-१८, प्रभाती, मः १)

भाउ भगति गुरमती पाए ॥ (१३४२-१८, प्रभाती, मः १)
हउमै विचहु सबदि जलाए ॥ (१३४२-१८, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३४३

धावतु राखै ठाकि रहाए ॥ (१३४३-१, प्रभाती, मः १)
सचा नामु मंनि वसाए ॥४॥ (१३४३-१, प्रभाती, मः १)
बिसम बिनोद रहे परमादी ॥ (१३४३-१, प्रभाती, मः १)
गुरमति मानिआ एक लिव लागी ॥ (१३४३-१, प्रभाती, मः १)
देखि निवारिआ जल महि आगी ॥ (१३४३-२, प्रभाती, मः १)
सो बूझै होवै वडभागी ॥५॥ (१३४३-२, प्रभाती, मः १)
सतिगुरु सेवे भरमु चुकाए ॥ (१३४३-२, प्रभाती, मः १)
अनदिनु जागै सचि लिव लाए ॥ (१३४३-३, प्रभाती, मः १)
एको जाणै अवरु न कोइ ॥ (१३४३-३, प्रभाती, मः १)
सुखदाता सेवे निरमलु होइ ॥६॥ (१३४३-३, प्रभाती, मः १)
सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥ (१३४३-४, प्रभाती, मः १)
जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥ (१३४३-४, प्रभाती, मः १)
जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥ (१३४३-४, प्रभाती, मः १)
सची रहत सचा सुखु पाए ॥७॥ (१३४३-५, प्रभाती, मः १)
सुखदाता दुखु मेटणहारा ॥ (१३४३-५, प्रभाती, मः १)
अवरु न सूझसि बीजी कारा ॥ (१३४३-५, प्रभाती, मः १)
तनु मनु धनु हरि आगै राखिआ ॥ (१३४३-५, प्रभाती, मः १)
नानकु कहै महा रसु चाखिआ ॥८॥२॥ (१३४३-६, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३४३-६)
निवली कर्म भुअंगम भाठी रेचक पूरक कुम्भ करै ॥ (१३४३-६, प्रभाती, मः १)
बिनु सतिगुर किछु सोझी नाही भरमे भूला बूडि मरै ॥ (१३४३-७, प्रभाती, मः १)
अंधा भरिआ भरि भरि धोवै अंतर की मलु कदे न लहै ॥ (१३४३-७, प्रभाती, मः १)
नाम बिना फोकट सभि करमा जिउ बाजीगरु भरमि भुलै ॥१॥ (१३४३-८, प्रभाती, मः १)
खटु कर्म नामु निरंजनु सोई ॥ (१३४३-९, प्रभाती, मः १)
तू गुण सागरु अवगुण मोही ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४३-९, प्रभाती, मः १)
माइआ धंधा धावणी दुरमति कार बिकार ॥ (१३४३-९, प्रभाती, मः १)
मूरखु आपु गणाइदा बूझि न सकै कार ॥ (१३४३-१०, प्रभाती, मः १)
मनसा माइआ मोहणी मनमुख बोल खुआर ॥ (१३४३-१०, प्रभाती, मः १)
मजनु झूठा चंडाल का फोकट चार सींगार ॥२॥ (१३४३-११, प्रभाती, मः १)
झूठी मन की मति है करणी बादि बिबादु ॥ (१३४३-११, प्रभाती, मः १)
झूठे विचि अहंकरणु है खसम न पावै सादु ॥ (१३४३-१२, प्रभाती, मः १)

बिनु नावै होरु कमावणा फिका आवै सादु ॥ (१३४३-१२, प्रभाती, मः १)
दुसटी सभा विगुचीऐ बिखु वाती जीवण बादि ॥३॥ (१३४३-१३, प्रभाती, मः १)
ए भ्रमि भूले मरहु न कोई ॥ (१३४३-१३, प्रभाती, मः १)
सतिगुरु सेवि सदा सुखु होई ॥ (१३४३-१३, प्रभाती, मः १)
बिनु सतिगुर मुकति किनै न पाई ॥ (१३४३-१४, प्रभाती, मः १)
आवहि जाँहि मरहि मरि जाई ॥४॥ (१३४३-१४, प्रभाती, मः १)
एहु सरीरु है त्रै गुण धातु ॥ (१३४३-१४, प्रभाती, मः १)
इस नो विआपै सोग संतापु ॥ (१३४३-१५, प्रभाती, मः १)
सो सेवहु जिसु माई न बापु ॥ (१३४३-१५, प्रभाती, मः १)
विचहु चूकै तिसना अरु आपु ॥५॥ (१३४३-१५, प्रभाती, मः १)
जह जह देखा तह तह सोई ॥ (१३४३-१६, प्रभाती, मः १)
बिनु सतिगुर भेटे मुकति न होई ॥ (१३४३-१६, प्रभाती, मः १)
हिरदै सचु एह करणी सारु ॥ (१३४३-१६, प्रभाती, मः १)
होरु सभु पाखंडु पूज खुआरु ॥६॥ (१३४३-१७, प्रभाती, मः १)
दुबिधा चूकै ताँ सबदु पछाणु ॥ (१३४३-१७, प्रभाती, मः १)
घरि बाहरि एको करि जाणु ॥ (१३४३-१७, प्रभाती, मः १)
एहा मति सबदु है सारु ॥ (१३४३-१८, प्रभाती, मः १)
विचि दुबिधा माथै पवै छारु ॥७॥ (१३४३-१८, प्रभाती, मः १)
करणी कीरति गुरमति सारु ॥ (१३४३-१८, प्रभाती, मः १)
संत सभा गुण गिआनु बीचारु ॥ (१३४३-१९, प्रभाती, मः १)
मनु मारे जीवत मरि जाणु ॥ (१३४३-१९, प्रभाती, मः १)
नानक नदरी नदरि पछाणु ॥८॥३॥ (१३४३-१९, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३४४

प्रभाती महला १ दखणी ॥ (१३४४-१)
गोतमु तपा अहिलिआ इसत्री तिसु देखि इंद्रु लुभाइआ ॥ (१३४४-१, प्रभाती दखणी, मः १)
सहस सरीर चिहन भग हूए ता मनि पछोताइआ ॥१॥ (१३४४-१, प्रभाती दखणी, मः १)
कोई जाणि न भूलै भाई ॥ (१३४४-२, प्रभाती दखणी, मः १)
सो भूलै जिसु आपि भुलाए बूझै जिसै बुझाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४४-२, प्रभाती दखणी, मः १)
तिनि हरी चंदि पृथमी पति राजै कागदि कीम न पाई ॥ (१३४४-३, प्रभाती दखणी, मः १)
अउगणु जाणै त पुन्न करे किउ किउ नेखासि बिकाई ॥२॥ (१३४४-३, प्रभाती दखणी, मः १)
करउ अढाई धरती माँगी बावन रूपि बहानै ॥ (१३४४-४, प्रभाती दखणी, मः १)
किउ पइआलि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछानै ॥३॥ (१३४४-४, प्रभाती दखणी, मः १)
राजा जनमेजा दे मतीं बरजि बिआसि पड़्हाइआ ॥ (१३४४-५, प्रभाती दखणी, मः १)
तिन्हि करि जग अठारह घाए किरतु न चलै चलाइआ ॥४॥ (१३४४-६, प्रभाती दखणी, मः १)

गणत न गणंी हुकमु पछाणा बोली भाइ सुभाई ॥ (१३४४-६, प्रभाती दखणी, मः १)
जो किछु वरतै तुधै सलाहंी सभ तेरी वडिआई ॥५॥ (१३४४-७, प्रभाती दखणी, मः १)
गुरमुखि अलिपतु लेपु कदे न लागै सदा रहै सरणाई ॥ (१३४४-७, प्रभाती दखणी, मः १)
मनमुखु मुगधु आगै चेतै नाही दुखि लागै पछुताई ॥६॥ (१३४४-८, प्रभाती दखणी, मः १)
आपे करे कराए करता जिनि एह रचना रचीऐ ॥ (१३४४-८, प्रभाती दखणी, मः १)
हरि अभिमानु न जाई जीअहु अभिमाने पै पचीऐ ॥७॥ (१३४४-९, प्रभाती दखणी, मः १)
भुलण विचि कीआ सभु कोई करता आपि न भुलै ॥ (१३४४-९, प्रभाती दखणी, मः १)
नानक सचि नामि निसतारा को गुर परसादि अघुलै ॥८॥४॥ (१३४४-१०, प्रभाती दखणी, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३४४-११)
आखणा सुनणा नामु अधारु ॥ (१३४४-११, प्रभाती, मः १)
धंधा छुटकि गइआ वेकारु ॥ (१३४४-११, प्रभाती, मः १)
जिउ मनमुखि दूजै पति खोई ॥ (१३४४-११, प्रभाती, मः १)
बिनु नावै मै अवरु न कोई ॥१॥ (१३४४-१२, प्रभाती, मः १)
सुणि मन अंधे मूरख गवार ॥ (१३४४-१२, प्रभाती, मः १)
आवत जात लाज नही लागै बिनु गुर बूडै बारो बार ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४४-१२, प्रभाती, मः १)
इसु मन माइआ मोहि बिनासु ॥ (१३४४-१३, प्रभाती, मः १)
धुरि हुकमु लिखिआ ताँ कहीऐ कासु ॥ (१३४४-१३, प्रभाती, मः १)
गुरमुखि विरला चीन्है कोई ॥ (१३४४-१४, प्रभाती, मः १)
नाम बिहूना मुकति न होई ॥२॥ (१३४४-१४, प्रभाती, मः १)
भ्रमि भ्रमि डोलै लख चउरासी ॥ (१३४४-१४, प्रभाती, मः १)
बिनु गुर बूझे जम की फासी ॥ (१३४४-१५, प्रभाती, मः १)
इहु मनूआ खिनु खिनु ऊभि पइआलि ॥ (१३४४-१५, प्रभाती, मः १)
गुरमुखि छूटै नामु सम्हालि ॥३॥ (१३४४-१५, प्रभाती, मः १)
आपे सदे ढिल न होइ ॥ (१३४४-१६, प्रभाती, मः १)
सबदि मरै सहिला जीवै सोइ ॥ (१३४४-१६, प्रभाती, मः १)
बिनु गुर सोझी किसै न होइ ॥ (१३४४-१६, प्रभाती, मः १)
आपे करै करावै सोइ ॥४॥ (१३४४-१७, प्रभाती, मः १)
झगड़ु चुकावै हरि गुण गावै ॥ (१३४४-१७, प्रभाती, मः १)
पूरा सतिगुरु सहजि समावै ॥ (१३४४-१७, प्रभाती, मः १)
इहु मनु डोलत तउ ठहरावै ॥ (१३४४-१८, प्रभाती, मः १)
सचु करणी करि कार कमावै ॥५॥ (१३४४-१८, प्रभाती, मः १)
अंतरि जूठा किउ सुचि होइ ॥ (१३४४-१८, प्रभाती, मः १)
सबदी धोवै विरला कोइ ॥ (१३४४-१९, प्रभाती, मः १)
गुरमुखि कोई सचु कमावै ॥ (१३४४-१९, प्रभाती, मः १)
आवणु जाणा ठाकि रहावै ॥६॥ (१३४४-१९, प्रभाती, मः १)

भउ खाणा पीणा सुखु सारु ॥ (१३४५-१, प्रभाती, मः १)
हरि जन संगति पावै पारु ॥ (१३४५-१, प्रभाती, मः १)
सचु बोलै बोलावै पिआरु ॥ (१३४५-१, प्रभाती, मः १)
गुर का सबदु करणी है सारु ॥७॥ (१३४५-१, प्रभाती, मः १)
हरि जसु करमु धरमु पति पूजा ॥ (१३४५-२, प्रभाती, मः १)
काम क्रोध अगनी महि भूंजा ॥ (१३४५-२, प्रभाती, मः १)
हरि रसु चाखिआ तउ मनु भीजा ॥ (१३४५-२, प्रभाती, मः १)
प्रणवति नानकु अवरु न दूजा ॥८॥५॥ (१३४५-३, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३४५-३)
राम नामु जपि अंतरि पूजा ॥ (१३४५-३, प्रभाती, मः १)
गुर सबदु वीचारि अवरु नही दूजा ॥१॥ (१३४५-४, प्रभाती, मः १)
एको रवि रहिआ सभ ठाई ॥ (१३४५-४, प्रभाती, मः १)
अवरु न दीसै किसु पूज चड़ाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४५-४, प्रभाती, मः १)
मनु तनु आगै जीअड़ा तुझ पासि ॥ (१३४५-५, प्रभाती, मः १)
जिउ भावै तिउ रखहु अरदासि ॥२॥ (१३४५-५, प्रभाती, मः १)
सचु जिहवा हरि रसन रसाई ॥ (१३४५-६, प्रभाती, मः १)
गुरमति छूटसि प्रभ सरणाई ॥३॥ (१३४५-६, प्रभाती, मः १)
कर्म धर्म प्रभि मेरै कीए ॥ (१३४५-६, प्रभाती, मः १)
नामु वडाई सिरि करमाँ कीए ॥४॥ (१३४५-७, प्रभाती, मः १)
सतिगुर कै वसि चारि पदार्थ ॥ (१३४५-७, प्रभाती, मः १)
तीनि समाए एक कृतारथ ॥५॥ (१३४५-७, प्रभाती, मः १)
सतिगुरि दीए मुकति धिआनाँ ॥ (१३४५-८, प्रभाती, मः १)
हरि पदु चीन्हि भए परधाना ॥६॥ (१३४५-८, प्रभाती, मः १)
मनु तनु सीतलु गुरि बूझ बुझाई ॥ (१३४५-८, प्रभाती, मः १)
प्रभु निवाजे किनि कीमति पाई ॥७॥ (१३४५-९, प्रभाती, मः १)
कहु नानक गुरि बूझ बुझाई ॥ (१३४५-९, प्रभाती, मः १)
नाम बिना गति किनै न पाई ॥८॥६॥ (१३४५-९, प्रभाती, मः १)
प्रभाती महला १ ॥ (१३४५-१०)
इकि धुरि बखसि लए गुरि पूरै सची बणत बणाई ॥ (१३४५-१०, प्रभाती, मः १)
हरि रंग राते सदा रंगु साचा दुख बिसरे पति पाई ॥१॥ (१३४५-१०, प्रभाती, मः १)
झूठी दुरमति की चतुराई ॥ (१३४५-११, प्रभाती, मः १)
बिनसत बार न लागै काई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४५-११, प्रभाती, मः १)
मनमुख कउ दुखु दरदु विआपसि मनमुखि दुखु न जाई ॥ (१३४५-१२, प्रभाती, मः १)

सुख दुख दाता गुरमुखि जाता मेलि लए सरणाई ॥२॥ (१३४५-१२, प्रभाती, मः १)
मनमुख ते अभ भगति न होवसि हउमै पचहि दिवाने ॥ (१३४५-१३, प्रभाती, मः १)
इहु मनूआ खिनु ऊभि पइआली जब लगि सबद न जाने ॥३॥ (१३४५-१३, प्रभाती, मः १)
भूख पिआसा जगु भइआ तिपति नही बिनु सतिगुर पाए ॥ (१३४५-१४, प्रभाती, मः १)
सहजै सहजु मिलै सुखु पाईऐ दरगह पैधा जाए ॥४॥ (१३४५-१५, प्रभाती, मः १)
दरगह दाना बीना इकु आपे निर्मल गुर की बाणी ॥ (१३४५-१५, प्रभाती, मः १)
आपे सुरता सचु वीचारसि आपे बूझै पदु निरबाणी ॥५॥ (१३४५-१६, प्रभाती, मः १)
जलु तरंग अगनी पवनै फुनि त्रै मिलि जगतु उपाइआ ॥ (१३४५-१६, प्रभाती, मः १)
ऐसा बलु छलु तिन कउ दीआ हुकमी ठाकि रहाइआ ॥६॥ (१३४५-१७, प्रभाती, मः १)
ऐसे जन विरले जग अंदरि परखि खजानै पाइआ ॥ (१३४५-१८, प्रभाती, मः १)
जाति वरन ते भए अतीता ममता लोभु चुकाइआ ॥७॥ (१३४५-१८, प्रभाती, मः १)
नामि रते तीर्थ से निर्मल दुखु हउमै मैलु चुकाइआ ॥ (१३४५-१९, प्रभाती, मः १)
नानकु तिन के चरन पखालै जिना गुरमुखि साचा भाइआ ॥८॥७॥ (१३४५-१९, प्रभाती, मः १)

पन्ना १३४६

प्रभाती महला ३ बिभास (१३४६-२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३४६-२)
गुर परसादी वेखु तू हरि मंदरु तेरै नालि ॥ (१३४६-३, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदरु सबदे खोजीऐ हरि नामो लेहु सम्हालि ॥१॥ (१३४६-३, प्रभाती बिभास, मः ३)
मन मेरे सबदि रपै रंगु होइ ॥ (१३४६-४, प्रभाती बिभास, मः ३)
सची भगति सचा हरि मंदरु प्रगटी साची सोइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४६-४, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदरु एहु सरीरु है गिआनि रतनि परगटु होइ ॥ (१३४६-४, प्रभाती बिभास, मः ३)
मनमुख मूलु न जाणनी माणसि हरि मंदरु न होइ ॥२॥ (१३४६-५, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदरु हरि जीउ साजिआ रखिआ हुकमि सवारि ॥ (१३४६-६, प्रभाती बिभास, मः ३)
धुरि लेखु लिखिआ सु कमावणा कोइ न मेटणहारु ॥३॥ (१३४६-६, प्रभाती बिभास, मः ३)
सबदु चीन्हि सुखु पाइआ सचै नाइ पिआर ॥ (१३४६-७, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदरु सबदे सोहणा कंचनु कोटु अपार ॥४॥ (१३४६-७, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदरु एहु जगतु है गुर बिनु घोरंधार ॥ (१३४६-८, प्रभाती बिभास, मः ३)
दूजा भाउ करि पूजदे मनमुख अंध गवार ॥५॥ (१३४६-८, प्रभाती बिभास, मः ३)
जिथै लेखा मंगीऐ तिथै देह जाति न जाइ ॥ (१३४६-९, प्रभाती बिभास, मः ३)
साचि रते से उबरे दुखीए दूजै भाइ ॥६॥ (१३४६-९, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदर महि नामु निधानु है ना बूझहि मुगध गवार ॥ (१३४६-९, प्रभाती बिभास, मः ३)
गुर परसादी चीन्हिआ हरि राखिआ उरि धारि ॥७॥ (१३४६-१०, प्रभाती बिभास, मः ३)
गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥ (१३४६-११, प्रभाती बिभास, मः ३)
पवितु पावन से जन निर्मल हरि कै नामि समाइ ॥८॥ (१३४६-११, प्रभाती बिभास, मः ३)

हरि मंदरु हरि का हाटु है रखिआ सबदि सवारि ॥ (१३४६-१२, प्रभाती बिभास, मः ३)
तिसु विचि सउदा एकु नामु गुरमुखि लैनि सवारि ॥६॥ (१३४६-१२, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदर महि मनु लोहटु है मोहिआ दूजै भाइ ॥ (१३४६-१३, प्रभाती बिभास, मः ३)
पारसि भेटिऐ कंचनु भइआ कीमति कही न जाइ ॥१०॥ (१३४६-१३, प्रभाती बिभास, मः ३)
हरि मंदर महि हरि वसै सर्ब निरंतरि सोइ ॥ (१३४६-१४, प्रभाती बिभास, मः ३)
नानक गुरमुखि वणजीऐ सचा सउदा होइ ॥११॥१॥ (१३४६-१४, प्रभाती बिभास, मः ३)
प्रभाती महला ३ ॥ (१३४६-१५)
भै भाइ जागे से जन जाग्रण करहि हउमै मैलु उतारि ॥ (१३४६-१५, प्रभाती, मः ३)
सदा जागहि घरु अपणा राखहि पंच तस्कर काढहि मारि ॥१॥ (१३४६-१६, प्रभाती, मः ३)
मन मेरे गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (१३४६-१६, प्रभाती, मः ३)
जितु मारगि हरि पाईऐ मन सेई कर्म कमाइ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४६-१७, प्रभाती, मः ३)
गुरमुखि सहज धुनि ऊपजै दुखु हउमै विचहु जाइ ॥ (१३४६-१७, प्रभाती, मः ३)
हरि नामा हरि मनि वसै सहजे हरि गुण गाइ ॥२॥ (१३४६-१८, प्रभाती, मः ३)
गुरमती मुख सोहणे हरि राखिआ उरि धारि ॥ (१३४६-१९, प्रभाती, मः ३)
ऐथै ओथै सुखु घणा जपि हरि हरि उतरे पारि ॥३॥ (१३४६-१९, प्रभाती, मः ३)

पन्ना १३४७

हउमै विचि जाग्रणु न होवई हरि भगति न पवई थाइ ॥ (१३४७-१, प्रभाती, मः ३)
मनमुख दरि ढोई ना लहहि भाइ दूजै कर्म कमाइ ॥४॥ (१३४७-१, प्रभाती, मः ३)
ध्रिगु खाणा ध्रिगु पैन्णा जिन्ा दूजै भाइ पिआरु ॥ (१३४७-२, प्रभाती, मः ३)
बिसटा के कीड़े बिसटा राते मरि जम्महि होहि खुआरु ॥५॥ (१३४७-२, प्रभाती, मः ३)
जिन कउ सतिगुरु भेटिआ तिना विटहु बलि जाउ ॥ (१३४७-३, प्रभाती, मः ३)
तिन की संगति मिलि रहाँ सचे सचि समाउ ॥६॥ (१३४७-३, प्रभाती, मः ३)
पूरै भागि गुरु पाईऐ उपाइ कितै न पाइआ जाइ ॥ (१३४७-४, प्रभाती, मः ३)
सतिगुर ते सहजु ऊपजै हउमै सबदि जलाइ ॥७॥ (१३४७-४, प्रभाती, मः ३)
हरि सरणाई भजु मन मेरे सभ किछु करणै जोगु ॥ (१३४७-५, प्रभाती, मः ३)
नानक नामु न वीसरै जो किछु करै सु होगु ॥८॥२॥७॥२॥९॥ (१३४७-५, प्रभाती, मः ३)
बिभास प्रभाती महला ५ असटपदीआ (१३४७-७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३४७-७)
मात पिता भाई सुतु बनिता ॥ (१३४७-८, बिभास प्रभाती, मः ५)
चूगहि चोग अनंद सिउ जुगता ॥ (१३४७-८, बिभास प्रभाती, मः ५)
उरझि परिओ मन मीठ मोहारा ॥ (१३४७-८, बिभास प्रभाती, मः ५)
गुन गाहक मेरे प्रान अधारा ॥१॥ (१३४७-९, बिभास प्रभाती, मः ५)
एकु हमारा अंतरजामी ॥ (१३४७-९, बिभास प्रभाती, मः ५)
धर एका मै टिक एकसु की सिरि साहा वड पुरखु सुआमी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४७-९, बिभास प्रभाती, मः ५)

छल नागनि सिउ मेरी टूटनि होई ॥ (१३४७-१०, बिभास प्रभाती, मः ५)
गुरि कहिआ इह झूठी धोही ॥ (१३४७-१०, बिभास प्रभाती, मः ५)
मुखि मीठी खाई कउराइ ॥ (१३४७-११, बिभास प्रभाती, मः ५)
अमृत नामि मनु रहिआ अघाइ ॥२॥ (१३४७-११, बिभास प्रभाती, मः ५)
लोभ मोह सिउ गई विखोटि ॥ (१३४७-११, बिभास प्रभाती, मः ५)
गुरि कृपालि मोहि कीनी छोटि ॥ (१३४७-१२, बिभास प्रभाती, मः ५)
इह ठगवारी बहुतु घर गाले ॥ (१३४७-१२, बिभास प्रभाती, मः ५)
हम गुरि राखि लीए किरपाले ॥३॥ (१३४७-१२, बिभास प्रभाती, मः ५)
काम क्रोध सिउ ठाटु न बनिआ ॥ (१३४७-१३, बिभास प्रभाती, मः ५)
गुर उपदेसु मोहि कानी सुनिआ ॥ (१३४७-१३, बिभास प्रभाती, मः ५)
जह देखउ तह महा चंडाल ॥ (१३४७-१३, बिभास प्रभाती, मः ५)
राखि लीए अपुनै गुरि गोपाल ॥४॥ (१३४७-१४, बिभास प्रभाती, मः ५)
दस नारी मै करी दुहागनि ॥ (१३४७-१४, बिभास प्रभाती, मः ५)
गुरि कहिआ एह रसहि बिखागनि ॥ (१३४७-१४, बिभास प्रभाती, मः ५)
इन सनबंधी रसातलि जाइ ॥ (१३४७-१५, बिभास प्रभाती, मः ५)
हम गुरि राखे हरि लिव लाइ ॥५॥ (१३४७-१५, बिभास प्रभाती, मः ५)
अहम्मेव सिउ मसलति छोडी ॥ (१३४७-१५, बिभास प्रभाती, मः ५)
गुरि कहिआ इहु मूरखु होडी ॥ (१३४७-१६, बिभास प्रभाती, मः ५)
इहु नीघरु घरु कही न पाए ॥ (१३४७-१६, बिभास प्रभाती, मः ५)
हम गुरि राखि लीए लिव लाए ॥६॥ (१३४७-१६, बिभास प्रभाती, मः ५)
इन लोगन सिउ हम भए बैराई ॥ (१३४७-१७, बिभास प्रभाती, मः ५)
एक गृह महि दुइ न खटाँई ॥ (१३४७-१७, बिभास प्रभाती, मः ५)
आए प्रभ पहि अंचरि लागि ॥ (१३४७-१७, बिभास प्रभाती, मः ५)
करहु तपावसु प्रभ सरबागि ॥७॥ (१३४७-१८, बिभास प्रभाती, मः ५)
प्रभ हसि बोले कीए निआँएं ॥ (१३४७-१८, बिभास प्रभाती, मः ५)
सगल दूत मेरी सेवा लाए ॥ (१३४७-१८, बिभास प्रभाती, मः ५)
तूं ठाकुरु इहु गृहु सभु तेरा ॥ (१३४७-१९, बिभास प्रभाती, मः ५)
कहु नानक गुरि कीआ निबेरा ॥८॥१॥ (१३४७-१९, बिभास प्रभाती, मः ५)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३४७-१९)

पन्ना १३४८

मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥ (१३४८-१, प्रभाती, मः ५)
पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥ (१३४८-१, प्रभाती, मः ५)
करि इसनानु तनि चक्र बणाए ॥ (१३४८-१, प्रभाती, मः ५)
अंतर की मलु कब ही न जाए ॥१॥ (१३४८-१, प्रभाती, मः ५)

इतु संजमि प्रभु किन ही न पाइआ ॥ (१३४८-२, प्रभाती, मः ५)
भगउती मुद्रा मनु मोहिआ माइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४८-२, प्रभाती, मः ५)
पाप करहि पंचाँ के बसि रे ॥ (१३४८-३, प्रभाती, मः ५)
तीरथि नाइ कहहि सभि उतरे ॥ (१३४८-३, प्रभाती, मः ५)
बहुरि कमावहि होइ निसंक ॥ (१३४८-३, प्रभाती, मः ५)
जम पुरि बाँधि खरे कालंक ॥२॥ (१३४८-४, प्रभाती, मः ५)
घूघर बाधि बजावहि ताला ॥ (१३४८-४, प्रभाती, मः ५)
अंतरि कपटु फिरहि बेताला ॥ (१३४८-४, प्रभाती, मः ५)
वरमी मारी सापु न मूआ ॥ (१३४८-५, प्रभाती, मः ५)
प्रभु सभ किछु जानै जिनि तू कीआ ॥३॥ (१३४८-५, प्रभाती, मः ५)
पूंअर ताप गेरी के बसत्रा ॥ (१३४८-५, प्रभाती, मः ५)
अपदा का मारिआ गृह ते नसता ॥ (१३४८-६, प्रभाती, मः ५)
देसु छोडि परदेसहि धाइआ ॥ (१३४८-६, प्रभाती, मः ५)
पंच चंडाल नाले लै आइआ ॥४॥ (१३४८-६, प्रभाती, मः ५)
कान फराइ हिराए टूका ॥ (१३४८-७, प्रभाती, मः ५)
घरि घरि माँगै तृपतावन ते चूका ॥ (१३४८-७, प्रभाती, मः ५)
बनिता छोडि बद नदरि पर नारी ॥ (१३४८-७, प्रभाती, मः ५)
वेसि न पाईऐ महा दुखिआरी ॥५॥ (१३४८-८, प्रभाती, मः ५)
बोलै नाही होइ बैठा मोनी ॥ (१३४८-८, प्रभाती, मः ५)
अंतरि कलप भवाईऐ जोनी ॥ (१३४८-८, प्रभाती, मः ५)
अन्न ते रहता दुखु देही सहता ॥ (१३४८-९, प्रभाती, मः ५)
हुकमु न बूझै विआपिआ ममता ॥६॥ (१३४८-९, प्रभाती, मः ५)
बिनु सतिगुर किनै न पाई परम गते ॥ (१३४८-९, प्रभाती, मः ५)
पूछहु सगल बेद सिम्मृते ॥ (१३४८-१०, प्रभाती, मः ५)
मनमुख कर्म करै अजाई ॥ (१३४८-१०, प्रभाती, मः ५)
जिउ बालू घर ठउर न ठाई ॥७॥ (१३४८-१०, प्रभाती, मः ५)
जिस नो भए गोबिंद दइआला ॥ (१३४८-११, प्रभाती, मः ५)
गुर का बचनु तिनि बाधिओ पाला ॥ (१३४८-११, प्रभाती, मः ५)
कोटि मधे कोई संतु दिखाइआ ॥ (१३४८-११, प्रभाती, मः ५)
नानकु तिन कै संगि तराइआ ॥८॥ (१३४८-१२, प्रभाती, मः ५)
जे होवै भागु ता दरसनु पाईऐ ॥ (१३४८-१२, प्रभाती, मः ५)
आपि तरै सभु कुटम्बु तराईऐ ॥१॥ रहाउ दूजा ॥२॥ (१३४८-१२)
प्रभाती महला ५ ॥ (१३४८-१३)
सिमरत नामु किलबिख सभि काटे ॥ (१३४८-१३, प्रभाती, मः ५)
धर्म राइ के कागर फाटे ॥ (१३४८-१४, प्रभाती, मः ५)

साधसंगति मिलि हरि रसु पाइआ ॥ (१३४८-१४, प्रभाती, मः ५)
पारब्रह्मु रिद माहि समाइआ ॥१॥ (१३४८-१४, प्रभाती, मः ५)
राम रमत हरि हरि सुखु पाइआ ॥ (१३४८-१५, प्रभाती, मः ५)
तेरे दास चरन सरनाइआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४८-१५, प्रभाती, मः ५)
चूका गउणु मिटिआ अंधिआरु ॥ (१३४८-१५, प्रभाती, मः ५)
गुरि दिखलाइआ मुकति दुआरु ॥ (१३४८-१६, प्रभाती, मः ५)
हरि प्रेम भगति मनु तनु सद राता ॥ (१३४८-१६, प्रभाती, मः ५)
प्रभू जनाइआ तब ही जाता ॥२॥ (१३४८-१६, प्रभाती, मः ५)
घटि घटि अंतरि रविआ सोइ ॥ (१३४८-१७, प्रभाती, मः ५)
तिसु बिनु बीजो नाही कोइ ॥ (१३४८-१७, प्रभाती, मः ५)
बैर बिरोध छेदे भै भरमाँ ॥ (१३४८-१७, प्रभाती, मः ५)
प्रभि पुंनि आतमै कीने धरमा ॥३॥ (१३४८-१८, प्रभाती, मः ५)
महा तरंग ते काँढै लागा ॥ (१३४८-१८, प्रभाती, मः ५)
जनम जनम का टूटा गाँढा ॥ (१३४८-१८, प्रभाती, मः ५)
जपु तपु संजमु नामु सम्हालिआ ॥ (१३४८-१९, प्रभाती, मः ५)
अपुनै ठाकुरि नदरि निहालिआ ॥४॥ (१३४८-१९, प्रभाती, मः ५)
मंगल सूख कलिआण तिथाईं ॥ (१३४८-१९, प्रभाती, मः ५)

पन्ना १३४९

जह सेवक गोपाल गुसाई ॥ (१३४९-१, प्रभाती, मः ५)
प्रभ सुप्रसन्न भए गोपाल ॥ (१३४९-१, प्रभाती, मः ५)
जनम जनम के मिटे बिताल ॥५॥ (१३४९-१, प्रभाती, मः ५)
होम जग उरध तप पूजा ॥ (१३४९-२, प्रभाती, मः ५)
कोटि तीर्थ इसनानु करीजा ॥ (१३४९-२, प्रभाती, मः ५)
चरन कमल निमख रिदै धारे ॥ (१३४९-२, प्रभाती, मः ५)
गोबिंद जपत सभि कारज सारे ॥६॥ (१३४९-३, प्रभाती, मः ५)
ऊचे ते ऊचा प्रभ थानु ॥ (१३४९-३, प्रभाती, मः ५)
हरि जन लावहि सहजि धिआनु ॥ (१३४९-३, प्रभाती, मः ५)
दास दासन की बाँछउ धूरि ॥ (१३४९-४, प्रभाती, मः ५)
सर्ब कला प्रीतम भरपूरि ॥७॥ (१३४९-४, प्रभाती, मः ५)
मात पिता हरि प्रीतमु नेरा ॥ (१३४९-४, प्रभाती, मः ५)
मीत साजन भरवासा तेरा ॥ (१३४९-५, प्रभाती, मः ५)
करु गहि लीने अपुने दास ॥ (१३४९-५, प्रभाती, मः ५)
जपि जीवै नानकु गुणतास ॥८॥३॥२॥७॥१२॥ (१३४९-५, प्रभाती, मः ५)
बिभास प्रभाती बाणी भगत कबीर जी की (१३४९-७)

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३४९-७)
मरन जीवन की संका नासी ॥ (१३४९-८, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
आपन रंगि सहज परगासी ॥१॥ (१३४९-८, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
प्रगटी जोति मिटिआ अंधिआरा ॥ (१३४९-८, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
राम रतनु पाइआ करत बीचारा ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४९-९, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
जह अनंदु दुखु दूरि पइआना ॥ (१३४९-९, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
मनु मानकु लिव ततु लुकाना ॥२॥ (१३४९-९, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
जो किछु होआ सु तेरा भाणा ॥ (१३४९-१०, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
जो इव बूझै सु सहजि समाणा ॥३॥ (१३४९-१०, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु किलबिख गए खीणा ॥ (१३४९-१०, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
मनु भइआ जगजीवन लीणा ॥४॥१॥ (१३४९-११, बिभास प्रभाती, भगत कबीर जी)
प्रभाती ॥ (१३४९-११)
अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ॥ (१३४९-११, प्रभाती, भगत कबीर जी)
हिंदू मूरति नाम निवासी दुह महि ततु न हेरा ॥१॥ (१३४९-१२, प्रभाती, भगत कबीर जी)
अलह राम जीवउ तेरे नाई ॥ (१३४९-१२, प्रभाती, भगत कबीर जी)
तू करि मिहरामति साई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३४९-१३, प्रभाती, भगत कबीर जी)
दखन देसि हरी का बासा पछिमि अलह मुकामा ॥ (१३४९-१३, प्रभाती, भगत कबीर जी)
दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ॥२॥ (१३४९-१४, प्रभाती, भगत कबीर जी)
ब्रहमन गिआस करहि चउबीसा काजी मह रमजाना ॥ (१३४९-१४, प्रभाती, भगत कबीर जी)
गिआरह मास पास कै राखे एकै माहि निधाना ॥३॥ (१३४९-१५, प्रभाती, भगत कबीर जी)
कहा उडीसे मजनु कीआ किआ मसीति सिरु नाँएं ॥ (१३४९-१५, प्रभाती, भगत कबीर जी)
दिल महि कपटु निवाज गुजारै किआ हज काबै जाँएं ॥४॥ (१३४९-१६, प्रभाती, भगत कबीर जी)
एते अउरत मरदा साजे ए सभ रूप तुम्हारे ॥ (१३४९-१६, प्रभाती, भगत कबीर जी)
कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥५॥ (१३४९-१७, प्रभाती, भगत कबीर जी)
कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥ (१३४९-१७, प्रभाती, भगत कबीर जी)
केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥६॥२॥ (१३४९-१८, प्रभाती, भगत कबीर जी)
प्रभाती ॥ (१३४९-१८)
अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥ (१३४९-१९, प्रभाती, भगत कबीर जी)
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥१॥ (१३४९-१९, प्रभाती, भगत कबीर जी)

पन्ना १३५०

लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥ (१३५०-१, प्रभाती, भगत कबीर जी)
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठाँई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५०-१, प्रभाती, भगत कबीर जी)
माटी एक अनेक भाँति करि साजी साजनहारै ॥ (१३५०-२, प्रभाती, भगत कबीर जी)
ना कछु पोच माटी के भाँडे ना कछु पोच कुम्भारै ॥२॥ (१३५०-२, प्रभाती, भगत कबीर जी)

सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥ (१३५०-३, प्रभाती, भगत कबीर जी)
हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥३॥ (१३५०-३, प्रभाती, भगत कबीर जी)
अलहु अलखु न जाई लखिआ गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥ (१३५०-४, प्रभाती, भगत कबीर जी)
कहि कबीर मेरी संका नासी सर्ब निरंजनु डीठा ॥४॥३॥ (१३५०-४, प्रभाती, भगत कबीर जी)
प्रभाती ॥ (१३५०-५)
बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ॥ (१३५०-५, प्रभाती, भगत कबीर जी)
जउ सभ महि एकु खुदाइ कहत हउ तउ किउ मुरगी मारै ॥१॥ (१३५०-५, प्रभाती, भगत कबीर जी)
मुलाँ कहहु निआउ खुदाई ॥ (१३५०-६, प्रभाती, भगत कबीर जी)
तेरे मन का भरमु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५०-६, प्रभाती, भगत कबीर जी)
पकरि जीउ आनिआ देह बिनासी माटी कउ बिसमिलि कीआ ॥ (१३५०-७, प्रभाती, भगत कबीर जी)
जोति सरूप अनाहत लागी कहु हलालु किआ कीआ ॥२॥ (१३५०-७, प्रभाती, भगत कबीर जी)
किआ उजू पाकु कीआ मुहु धोइआ किआ मसीति सिरु लाइआ ॥ (१३५०-८, प्रभाती, भगत कबीर जी)
जउ दिल महि कपटु निवाज गुजारहु किआ हज काबै जाइआ ॥३॥ (१३५०-९, प्रभाती, भगत कबीर जी)
तूं नापाकु पाकु नही सूझिआ तिस का मरमु न जानिआ ॥ (१३५०-९, प्रभाती, भगत कबीर जी)
कहि कबीर भिसति ते चूका दोजक सिउ मनु मानिआ ॥४॥४॥ (१३५०-१०, प्रभाती, भगत कबीर जी)
प्रभाती ॥ (१३५०-११)
सुन्न संधिआ तेरी देव देवाकर अधपति आदि समाई ॥ (१३५०-११, प्रभाती, भगत कबीर जी)
सिध समाधि अंतु नही पाइआ लागि रहे सरनाई ॥१॥ (१३५०-११, प्रभाती, भगत कबीर जी)
लेहु आरती हो पुरख निरंजन सतिगुर पूजहु भाई ॥ (१३५०-१२, प्रभाती, भगत कबीर जी)
ठाढा ब्रह्मा निगम बीचारै अलखु न लखिआ जाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५०-१२, प्रभाती, भगत कबीर जी)
ततु तेलु नामु कीआ बाती दीपकु देह उज्यारा ॥ (१३५०-१३, प्रभाती, भगत कबीर जी)
जोति लाइ जगदीस जगाइआ बूझै बूझनहारा ॥२॥ (१३५०-१३, प्रभाती, भगत कबीर जी)
पंचे सबद अनाहद बाजे संगे सारिंगपानी ॥ (१३५०-१४, प्रभाती, भगत कबीर जी)
कबीर दास तेरी आरती कीनी निरंकार निरबानी ॥३॥५॥ (१३५०-१४, प्रभाती, भगत कबीर जी)
प्रभाती बाणी भगत नामदेव जी की (१३५०-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३५०-१६)
मन की बिरथा मनु ही जानै कै बूझल आगै कहीऐ ॥ (१३५०-१७, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
अंतरजामी रामु रवाँई मै डरु कैसे चहीऐ ॥१॥ (१३५०-१७, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
बेधीअले गोपाल गोसाई ॥ (१३५०-१८, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
मेरा प्रभु रविआ सरबे ठाई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५०-१८, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
मानै हाटु मानै पाटु मानै है पासारी ॥ (१३५०-१८, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
मानै बासै नाना भेदी भरमतु है संसारी ॥२॥ (१३५०-१९, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
गुर कै सबदि एहु मनु राता दुबिधा सहजि समाणी ॥ (१३५०-१९, प्रभाती, भगत नामदेव जी)

पन्ना १३५१

सभो हुकमु हुकमु है आपे निरभउ समतु बीचारी ॥३॥ (१३५१-१, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
जो जन जानि भजहि पुरखोतमु ता ची अबिगतु बाणी ॥ (१३५१-१, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
नामा कहै जगजीवनु पाइआ हिरदै अलख बिडाणी ॥४॥१॥ (१३५१-२, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
प्रभाती ॥ (१३५१-३)
आदि जुगादि जुगादि जुगो जुगु ता का अंतु न जानिआ ॥ (१३५१-३, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
सर्ब निरंतरि रामु रहिआ रवि ऐसा रूपु बखानिआ ॥१॥ (१३५१-३, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
गोबिदु गाजै सबदु बाजै ॥ (१३५१-४, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
आनद रूपी मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५१-४, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
बावन बीखू बानै बीखे बासु ते सुख लागिला ॥ (१३५१-५, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
सरबे आदि परमलादि कासट चंदनु भैइला ॥२॥ (१३५१-५, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला ॥ (१३५१-६, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
तू दइआलु रतनु लालु नामा साचि समाइला ॥३॥२॥ (१३५१-६, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
प्रभाती ॥ (१३५१-७)
अकुल पुरख इकु चलितु उपाइआ ॥ (१३५१-७, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
घटि घटि अंतरि ब्रह्मु लुकाइआ ॥१॥ (१३५१-७, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
जीअ की जोति न जानै कोई ॥ (१३५१-८, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
तै मै कीआ सु मालूमु होई ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५१-८, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
जिउ प्रगासिआ माटी कुम्भेउ ॥ (१३५१-८, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
आप ही करता बीठुलु देउ ॥२॥ (१३५१-९, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
जीअ का बंधनु करमु बिआपै ॥ (१३५१-९, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
जो किछु कीआ सु आपै आपै ॥३॥ (१३५१-९, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
प्रणवति नामदेउ इहु जीउ चितवै सु लहै ॥ (१३५१-१०, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
अमरु होइ सद आकुल रहै ॥४॥३॥ (१३५१-१०, प्रभाती, भगत नामदेव जी)
प्रभाती भगत बेणी जी की (१३५१-११)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३५१-११)
तनि चंदनु मसतकि पाती ॥ (१३५१-१२, प्रभाती, भगत बेणी जी)
रिद अंतरि कर तल काती ॥ (१३५१-१२, प्रभाती, भगत बेणी जी)
ठग दिसटि बगा लिव लागा ॥ (१३५१-१२, प्रभाती, भगत बेणी जी)
देखि बैसनो प्रान मुख भागा ॥१॥ (१३५१-१२, प्रभाती, भगत बेणी जी)
कलि भगवत बंद चिरांमं ॥ (१३५१-१३, प्रभाती, भगत बेणी जी)
क्रूर दिसटि रता निसि बादं ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५१-१३, प्रभाती, भगत बेणी जी)
नितप्रति इसनानु सरीरं ॥ (१३५१-१४, प्रभाती, भगत बेणी जी)
दुइ धोती कर्म मुखि खीरं ॥ (१३५१-१४, प्रभाती, भगत बेणी जी)

रिदै छुरी संधिआनी ॥ (१३५१-१४, प्रभाती, भगत बेणी जी)
पर दरबु हिरन की बानी ॥२॥ (१३५१-१४, प्रभाती, भगत बेणी जी)
सिल पूजसि चक्र गणेसं ॥ (१३५१-१५, प्रभाती, भगत बेणी जी)
निसि जागसि भगति प्रवेसं ॥ (१३५१-१५, प्रभाती, भगत बेणी जी)
पग नाचसि चितु अकरमं ॥ (१३५१-१५, प्रभाती, भगत बेणी जी)
ए लम्पट नाच अधरमं ॥३॥ (१३५१-१६, प्रभाती, भगत बेणी जी)
मृग आसणु तुलसी माला ॥ (१३५१-१६, प्रभाती, भगत बेणी जी)
कर ऊजल तिलकु कपाला ॥ (१३५१-१६, प्रभाती, भगत बेणी जी)
रिदै कूड़ु कंठि रुद्राखं ॥ (१३५१-१६, प्रभाती, भगत बेणी जी)
रे लम्पट कृसनु अभाखं ॥४॥ (१३५१-१७, प्रभाती, भगत बेणी जी)
जिनि आतम ततु न चीन्हिआ ॥ (१३५१-१७, प्रभाती, भगत बेणी जी)
सभ फोकट धर्म अबीनिआ ॥ (१३५१-१७, प्रभाती, भगत बेणी जी)
कहु बेणी गुरमुखि धिआवै ॥ (१३५१-१८, प्रभाती, भगत बेणी जी)
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥५॥१॥ (१३५१-१८, प्रभाती, भगत बेणी जी)

पन्ना १३५२

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१३५२-१)
रागु जैजावंती महला ९ ॥ (१३५२-३)
रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥ (१३५२-४, जैजावंती, मः ९)
माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥ (१३५२-४, जैजावंती, मः ९)
जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५२-४, जैजावंती, मः ९)
सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥ (१३५२-५, जैजावंती, मः ९)
बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥ (१३५२-५, जैजावंती, मः ९)
नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥ (१३५२-६, जैजावंती, मः ९)
छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥१॥ (१३५२-६, जैजावंती, मः ९)
जैजावंती महला ९ ॥ (१३५२-७)
रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥ (१३५२-७, जैजावंती, मः ९)
कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥ (१३५२-८, जैजावंती, मः ९)
बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५२-८, जैजावंती, मः ९)
सगल भर्म डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥ (१३५२-९, जैजावंती, मः ९)
अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥१॥ (१३५२-९, जैजावंती, मः ९)
बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥ (१३५२-१०, जैजावंती, मः ९)
नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥२॥२॥ (१३५२-१०, जैजावंती, मः ९)
जैजावंती महला ९ ॥ (१३५२-११)
रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥ (१३५२-११, जैजावंती, मः ९)

इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥ (१३५२-११, जैजावंती, मः ९)
बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५२-१२, जैजावंती, मः ९)
मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥ (१३५२-१२, जैजावंती, मः ९)
दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥१॥ (१३५२-१३, जैजावंती, मः ९)
नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥ (१३५२-१३, जैजावंती, मः ९)
सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥२॥३॥ (१३५२-१४, जैजावंती, मः ९)
जैजावंती महला ९ ॥ (१३५२-१४)
बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥ (१३५२-१४, जैजावंती, मः ९)
निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥ (१३५२-१५, जैजावंती, मः ९)
कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥ रहाउ ॥ (१३५२-१५, जैजावंती, मः ९)

पन्ना १३५३

असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥ (१३५३-१, जैजावंती, मः ९)
किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥१॥ (१३५३-१, जैजावंती, मः ९)
राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥ (१३५३-२, जैजावंती, मः ९)
नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥२॥४॥ (१३५३-२, जैजावंती, मः ९)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१३५३-४)
सलोक सहसकृती महला १ ॥ (१३५३-६)
पड़्हि पुस्तक संधिआ बादं ॥ (१३५३-७, सहसकृती, मः १)
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ (१३५३-७, सहसकृती, मः १)
मुखि झूठु बिभूखन सारं ॥ (१३५३-७, सहसकृती, मः १)
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ (१३५३-७, सहसकृती, मः १)
गलि माला तिलक लिलाटं ॥ (१३५३-८, सहसकृती, मः १)
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ (१३५३-८, सहसकृती, मः १)
जो जानसि ब्रहमं करमं ॥ (१३५३-८, सहसकृती, मः १)
सभ फोकट निसचै करमं ॥ (१३५३-८, सहसकृती, मः १)
कहु नानक निसचौ ध्यिावै ॥ (१३५३-९, सहसकृती, मः १)
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥१॥ (१३५३-९, सहसकृती, मः १)
निहफलं तस्य जनमस्य जावद ब्रहम न बिंदते ॥ (१३५३-९, सहसकृती, मः १)
सागरं संसारस्य गुर परसादी तरहि के ॥ (१३५३-१०, सहसकृती, मः १)
करण कारण समरथु है कहु नानक बीचारि ॥ (१३५३-१०, सहसकृती, मः १)
कारणु करते वसि है जिनि कल रखी धारि ॥२॥ (१३५३-११, सहसकृती, मः १)
जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं त ब्राहमणह ॥ (१३५३-११, सहसकृती, मः १)
ख्यत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं परा कृतह ॥ (१३५३-१२, सहसकृती, मः १)
सर्ब सबदं त एक सबदं जे को जानसि भेउ ॥ (१३५३-१२, सहसकृती, मः १)

नानक ता को दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥ (१३५३-१३, सहसकृती, मः १)
एक कृस्नं त सर्ब देवा देव देवा त आतमह ॥ (१३५३-१३, सहसकृती, मः १)
आतमं स्री बास्वदेवस्य जे कोई जानसि भेव ॥ (१३५३-१४, सहसकृती, मः १)
नानक ता को दासु है सोई निरंजन देव ॥४॥ (१३५३-१४, सहसकृती, मः १)
सलोक सहसकृती महला ५ (१३५३-१५)
ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१३५३-१५)
कतंच माता कतंच पिता कतंच बनिता बिनोद सुतह ॥ (१३५३-१७, सहसकृती, मः ५)
कतंच भ्रात मीत हित बंधव कतंच मोह कुटम्बयते ॥ (१३५३-१७, सहसकृती, मः ५)
कतंच चपल मोहनी रूपं पेखंते तिआगं करोति ॥ (१३५३-१८, सहसकृती, मः ५)
रहंत संग भगवान सिमरण नानक लबध्यं अचुत तनह ॥१॥ (१३५३-१८, सहसकृती, मः ५)

पन्ना १३५४

ध्रिगंत मात पिता सनेहं ध्रिग सनेहं भ्रात बाँधवह ॥ (१३५४-१, सहसकृती, मः ५)
ध्रिग स्नेहं बनिता बिलास सुतह ॥ (१३५४-१, सहसकृती, मः ५)
ध्रिग स्नेहं गृहारथ कह ॥ (१३५४-२, सहसकृती, मः ५)
साधसंग स्नेह सत्यिं सुखयं बसंति नानकह ॥२॥ (१३५४-२, सहसकृती, मः ५)
मिथ्यंत देहं खीणंत बलनं ॥ (१३५४-२, सहसकृती, मः ५)
बरधंति जरूआ हित्यंत माइआ ॥ (१३५४-३, सहसकृती, मः ५)
अत्यंत आसा आथित्य भवनं ॥ (१३५४-३, सहसकृती, मः ५)
गनंत स्वासा भैयान धरमं ॥ (१३५४-३, सहसकृती, मः ५)
पतंति मोह कूप दुरलभ्य देहं तत आस्रयं नानक ॥ (१३५४-३, सहसकृती, मः ५)
गोबिंद गोबिंद गोबिंद गोपाल कृपा ॥३॥ (१३५४-४, सहसकृती, मः ५)
काच कोटं रचंति तोयं लेपनं रक्त चरमणह ॥ (१३५४-४, सहसकृती, मः ५)
नवंत दुआरं भीत रहितं बाइ रूपं असथम्भनह ॥ (१३५४-५, सहसकृती, मः ५)
गोबिंद नामं नह सिमरंति अगिआनी जानंति असथिरं ॥ (१३५४-५, सहसकृती, मः ५)
दुरलभ देह उधरंत साध सरण नानक ॥ (१३५४-६, सहसकृती, मः ५)
हरि हरि हरि हरि हरि हरे जपंति ॥४॥ (१३५४-६, सहसकृती, मः ५)
सुभंत तुयं अचुत गुणज्ञं पूरनं बहुलो कृपाला ॥ (१३५४-७, सहसकृती, मः ५)
गम्भीरं ऊचै सरबगि अपारा ॥ (१३५४-७, सहसकृती, मः ५)
भ्रितिआ प्रिअं बिस्राम चरणं ॥ (१३५४-७, सहसकृती, मः ५)
अनाथ नाथे नानक सरणं ॥५॥ (१३५४-८, सहसकृती, मः ५)
मृगी पेखंत बधिक प्रहारेण लख्य आवधह ॥ (१३५४-८, सहसकृती, मः ५)
अहो जस्य रखेण गोपालह नानक रोम न छेद्यते ॥६॥ (१३५४-९, सहसकृती, मः ५)
बहु जतन करता बलवंत कारी सेवंत सूरा चतुर दिसह ॥ (१३५४-९, सहसकृती, मः ५)
बिखम थान बसंत ऊचह नह सिमरंत मरणं कदाँचह ॥ (१३५४-१०, सहसकृती, मः ५)

होवंति आगिआ भगवान पुरखह नानक कीटी सास अकरखते ॥७॥ (१३५४-१०, सहसकृती, मः ५)
सबदं रतं हितं मइआ कीरतं कली कर्म कृतुआ ॥ (१३५४-११, सहसकृती, मः ५)
मिटंति तत्रागत भर्म मोहं ॥ (१३५४-१२, सहसकृती, मः ५)
भगवान रमणं सरबत्र थान्यिं ॥ (१३५४-१२, सहसकृती, मः ५)
दृसट तुयं अमोघ दरसनं बसंत साध रसना ॥ (१३५४-१२, सहसकृती, मः ५)
हरि हरि हरि हरे नानक प्रिअं जापु जपना ॥८॥ (१३५४-१३, सहसकृती, मः ५)
घटंत रूपं घटंत दीपं घटंत रवि ससीअर नख्यत्र गगनं ॥ (१३५४-१३, सहसकृती, मः ५)
घटंत बसुधा गिरि तर सिखंडं ॥ (१३५४-१४, सहसकृती, मः ५)
घटंत ललना सुत भ्रात हीतं ॥ (१३५४-१४, सहसकृती, मः ५)
घटंत कनिक मानिक माइआ स्वरूपं ॥ (१३५४-१४, सहसकृती, मः ५)
नह घटंत केवल गोपाल अचुत ॥ (१३५४-१५, सहसकृती, मः ५)
असथिरं नानक साध जन ॥६॥ (१३५४-१५, सहसकृती, मः ५)
नह बिलम्ब धरमं बिलम्ब पापं ॥ (१३५४-१६, सहसकृती, मः ५)
दृड़ंत नामं तजंत लोभं ॥ (१३५४-१६, सहसकृती, मः ५)
सरणि संतं किलबिख नासं प्रापतं धर्म लख्यिण ॥ (१३५४-१६, सहसकृती, मः ५)
नानक जिह सुप्रसन्न माधवह ॥१०॥ (१३५४-१७, सहसकृती, मः ५)
मिरत मोहं अलप बुध्यं रचंति बनिता बिनोद साहं ॥ (१३५४-१७, सहसकृती, मः ५)
जौबन बहिक्रम कनिक कुंडलह ॥ (१३५४-१८, सहसकृती, मः ५)
बचित्र मंदिर सोभंति बसत्रा इत्यंत माइआ ब्यापितं ॥ (१३५४-१८, सहसकृती, मः ५)
हे अचुत सरणि संत नानक भो भगवानए नमह ॥११॥ (१३५४-१८, सहसकृती, मः ५)
जनमं त मरणं हरखं त सोगं भोगं त रोगं ॥ (१३५४-१६, सहसकृती, मः ५)
ऊचं त नीचं नान्ा सु मूचं ॥ (१३५४-१६, सहसकृती, मः ५)

पन्ना १३५५

राजं त मानं अभिमानं त हीनं ॥ (१३५५-१, सहसकृती, मः ५)
प्रविरति मारगं वरतंति बिनासनं ॥ (१३५५-१, सहसकृती, मः ५)
गोबिंद भजन साध संगेण असथिरं नानक भगवंत भजनासनं ॥१२॥ (१३५५-१, सहसकृती, मः ५)
किरपंत हरीअं मति ततु गिआनं ॥ (१३५५-२, सहसकृती, मः ५)
बिगसीध्यि बुधा कुसल थानं ॥ (१३५५-३, सहसकृती, मः ५)
बस्यिंत रिखिअं तिआगि मानं ॥ (१३५५-३, सहसकृती, मः ५)
सीतलंत रिदयं दृड़ु संत गिआनं ॥ (१३५५-३, सहसकृती, मः ५)
रहंत जनमं हरि दरस लीणा ॥ (१३५५-४, सहसकृती, मः ५)
बाजंत नानक सबद बीणाँ ॥१३॥ (१३५५-४, सहसकृती, मः ५)
कहंत बेदा गुणंत गुनीआ सुणंत बाला बहु बिधि प्रकारा ॥ (१३५५-४, सहसकृती, मः ५)
दृड़ंत सुबिदिआ हरि हरि कृपाला ॥ (१३५५-५, सहसकृती, मः ५)

नाम दानु जाचंत नानक दैनहार गुर गोपाला ॥१४॥ (१३५५-५, सहसकृती, मः ५)
नह चिंता मात पित भ्रातह नह चिंता कछु लोक कह ॥ (१३५५-६, सहसकृती, मः ५)
नह चिंता बनिता सुत मीतह प्रविरति माइआ सनबंधनह ॥ (१३५५-६, सहसकृती, मः ५)
दइआल एक भगवान पुरखह नानक सर्ब जीअ प्रतिपालकह ॥१५॥ (१३५५-७, सहसकृती, मः ५)
अनित्य वितं अनित्य चितं अनित्य आसा बहु बिधि प्रकारं ॥ (१३५५-८, सहसकृती, मः ५)
अनित्य हेतं अहं बंधं भर्म माइआ मलनं बिकारं ॥ (१३५५-८, सहसकृती, मः ५)
फिरंत जोनि अनेक जठरागनि नह सिमरंत मलीण बुध्यं ॥ (१३५५-९, सहसकृती, मः ५)
हे गोबिंद करत मइआ नानक पतित उधारण साध संगमह ॥१६॥ (१३५५-९, सहसकृती, मः ५)
गिरंत गिरि पतित पातालं जलंत देदीप्य बैस्वाँतरह ॥ (१३५५-१०, सहसकृती, मः ५)
बहंति अगाह तोयं तरंगं दुखंत ग्रह चिंता जनमं त मरणह ॥ (१३५५-११, सहसकृती, मः ५)
अनिक साधनं न सिध्यते नानक असथम्भं असथम्भं असथम्भं सबद साध स्वजनह ॥१७॥ (१३५५-११, सहसकृती, मः ५)
घोर दुख्यं अनिक हत्यं जनम दारिद्रं महा बिख्यादं ॥ (१३५५-१२, सहसकृती, मः ५)
मिटंत सगल सिमरंत हरि नाम नानक जैसे पावक कासट भसमं करोति ॥१८॥ (१३५५-१३, सहसकृती, मः ५)
अंधकार सिमरत प्रकासं गुण रमंत अघ खंडनह ॥ (१३५५-१३, सहसकृती, मः ५)
रिद बसंति भै भीत दूतह कर्म करत महा निरमलह ॥ (१३५५-१४, सहसकृती, मः ५)
जनम मरण रहंत स्रोता सुख समूह अमोघ दरसनह ॥ (१३५५-१४, सहसकृती, मः ५)
सरणि जोगं संत प्रिअ नानक सो भगवान खेमं करोति ॥१९॥ (१३५५-१५, सहसकृती, मः ५)
पाछं करोति अग्रणीवह निरासं आस पूरनह ॥ (१३५५-१६, सहसकृती, मः ५)
निर्धन भयं धनवंतह रोगीअं रोग खंडनह ॥ (१३५५-१६, सहसकृती, मः ५)
भगत्यं भगति दानं राम नाम गुण कीरतनह ॥ (१३५५-१६, सहसकृती, मः ५)
पारब्रह्म पुरख दातारह नानक गुर सेवा किं न लभ्यते ॥२०॥ (१३५५-१७, सहसकृती, मः ५)
अधरं धरं धारणह निरधनं धन नाम नरहरह ॥ (१३५५-१८, सहसकृती, मः ५)
अनाथ नाथ गोबिंदह बलहीण बल केसवह ॥ (१३५५-१८, सहसकृती, मः ५)
सर्ब भूत दयाल अचुत दीन बाँधव दामोदरह ॥ (१३५५-१९, सहसकृती, मः ५)
सरबग्य पूरन पुरख भगवानह भगति वछल करुणा मयह ॥ (१३५५-१९, सहसकृती, मः ५)

पन्ना १३५६

घटि घटि बसंत बासुदेवह पारब्रह्म परमेसुरह ॥ (१३५६-१, सहसकृती, मः ५)
जाचंति नानक कृपाल प्रसादं नह बिसरंति नह बिसरंति नाराइणह ॥२१॥ (१३५६-१, सहसकृती, मः ५)
नह समरथं नह सेवकं नह प्रीति पर्म पुरखोतमं ॥ (१३५६-२, सहसकृती, मः ५)
तव प्रसादि सिमरते नामं नानक कृपाल हरि हरि गुरं ॥२२॥ (१३५६-३, सहसकृती, मः ५)
भरण पोखण करंत जीआ बिस्राम छादन देवंत दानं ॥ (१३५६-३, सहसकृती, मः ५)
सृजंत रतन जनम चतुर चेतनह ॥ (१३५६-४, सहसकृती, मः ५)
वरतंति सुख आनंद प्रसादह ॥ (१३५६-४, सहसकृती, मः ५)

सिमरंत नानक हरि हरि हरे ॥ (१३५६-४, सहसकृती, मः ५)
अनित्य रचना निरमोह ते ॥२३॥ (१३५६-५, सहसकृती, मः ५)
दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते ॥ (१३५६-५, सहसकृती, मः ५)
बिपरीत बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते ॥२४॥ (१३५६-५, सहसकृती, मः ५)
बृथा अनुग्रहं गोबिंदह जस्य सिमरण रिदंतरह ॥ (१३५६-६, सहसकृती, मः ५)
आरोग्यं महा रोग्यं बिसिमृते करुणा मयह ॥२५॥ (१३५६-७, सहसकृती, मः ५)
रमणं केवलं कीरतनं सुधरमं देह धारणह ॥ (१३५६-७, सहसकृती, मः ५)
अमृत नामु नाराइण नानक पीवतं संत न तृप्यते ॥२६॥ (१३५६-८, सहसकृती, मः ५)
सहण सील संतं सम मित्रस्य दुरजनह ॥ (१३५६-८, सहसकृती, मः ५)
नानक भोजन अनिक प्रकारेण निंदक आवध होइ उपतिस्टते ॥२७॥ (१३५६-९, सहसकृती, मः ५)
तिरस्कार नह भवंति नह भवंति मान भंगनह ॥ (१३५६-९, सहसकृती, मः ५)
सोभा हीन नह भवंति नह पोहंति संसार दुखनह ॥ (१३५६-१०, सहसकृती, मः ५)
गोबिंद नाम जपंति मिलि साध संगह नानक से प्राणी सुख बासनह ॥२८॥ (१३५६-१०, सहसकृती, मः ५)
सैना साध समूह सूर अजितं सन्नाहं तनि निम्रताह ॥ (१३५६-११, सहसकृती, मः ५)
आवधह गुण गोबिंद रमणं ओट गुर सबद कर चरमणह ॥ (१३५६-१२, सहसकृती, मः ५)
आरूड़ते अस्व रथ नागह बुझंते प्रभ मारगह ॥ (१३५६-१२, सहसकृती, मः ५)
बिचरते निरभ्यं सत्रु सैना धायंते गोपाल कीरतनह ॥ (१३५६-१३, सहसकृती, मः ५)
जितते बिस्व संसारह नानक वस्यं करोति पंच तसकरह ॥२९॥ (१३५६-१३, सहसकृती, मः ५)
मृग तृसना गंधरब नगरं द्रुम छाया रचि दुरमतिह ॥ (१३५६-१४, सहसकृती, मः ५)
ततह कुटम्ब मोह मिथ्या सिमरंति नानक राम राम नामह ॥३०॥ (१३५६-१४, सहसकृती, मः ५)
नच बिदिआ निधान निगमं नच गुणग्य नाम कीरतनह ॥ (१३५६-१५, सहसकृती, मः ५)
नच राग रतन कंठं नह चंचल चतुर चातुरह ॥ (१३५६-१६, सहसकृती, मः ५)
भाग उदिम लबध्यं माइआ नानक साधसंगि खल पंडितह ॥३१॥ (१३५६-१६, सहसकृती, मः ५)
कंठ रमणीय राम राम माला हसत ऊच प्रेम धारणी ॥ (१३५६-१७, सहसकृती, मः ५)
जीह भणि जो उतम सलोक उधरणं नैन नंदनी ॥३२॥ (१३५६-१७, सहसकृती, मः ५)
गुर मंत्र हीणस्य जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥ (१३५६-१८, सहसकृती, मः ५)
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥३३॥ (१३५६-१८, सहसकृती, मः ५)
चरणारबिंद भजनं रिदयं नाम धारणह ॥ (१३५६-१९, सहसकृती, मः ५)

पन्ना १३५७

कीरतनं साधसंगेण नानक नह दृसटंति जमदूतनह ॥३४॥ (१३५७-१, सहसकृती, मः ५)
नच दुरलभं धनं रूपं नच दुरलभं स्वर्ग राजनह ॥ (१३५७-१, सहसकृती, मः ५)
नच दुरलभं भोजनं बिंजनं नच दुरलभं स्वछ अम्बरह ॥ (१३५७-२, सहसकृती, मः ५)
नच दुरलभं सुत मित्र भ्रात बाँधव नच दुरलभं बनिता बिलासह ॥ (१३५७-२, सहसकृती, मः ५)
नच दुरलभं बिदिआ प्रबीणं नच दुरलभं चतुर चंचलह ॥ (१३५७-३, सहसकृती, मः ५)

दुरलभं एक भगवान नामह नानक लबध्यिं साधसंगि कृपा प्रभं ॥३५॥ (१३५७-३, सहसकृती, मः ५)
जत कतह ततह दृसटं स्वर्ग मरत प्याल लोकह ॥ (१३५७-४, सहसकृती, मः ५)
सरबत्र रमणं गोबिंदह नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३६॥ (१३५७-५, सहसकृती, मः ५)
बिखया भ्यंति अमृतं द्रुसटाँ सखा स्वजनह ॥ (१३५७-५, सहसकृती, मः ५)
दुखं भ्यंति सुख्यं भै भीतं त निरभ्यह ॥ (१३५७-६, सहसकृती, मः ५)
थान बिहून बिस्राम नामं नानक कृपाल हरि हरि गुरह ॥३७॥ (१३५७-६, सहसकृती, मः ५)
सर्ब सील ममं सीलं सर्ब पावन मम पावनह ॥ (१३५७-७, सहसकृती, मः ५)
सर्ब करतब ममं करता नानक लेप छेप न लिप्यते ॥३८॥ (१३५७-७, सहसकृती, मः ५)
नह सीतलं चंद्र देवह नह सीतलं बावन चंदनह ॥ (१३५७-८, सहसकृती, मः ५)
नह सीतलं सीत रुतेण नानक सीतलं साध स्वजनह ॥३९॥ (१३५७-८, सहसकृती, मः ५)
मंत्रं राम राम नामं ध्यानं सरबत्र पूरनह ॥ (१३५७-९, सहसकृती, मः ५)
ज्ञानं सम दुख सुखं जुगति निर्मल निरवैरणह ॥ (१३५७-९, सहसकृती, मः ५)
दयालं सरबत्र जीआ पंच दोख बिवरजितह ॥ (१३५७-१०, सहसकृती, मः ५)
भोजनं गोपाल कीरतनं अलप माया जल कमल रहतह ॥ (१३५७-१०, सहसकृती, मः ५)
उपदेसं सम मित्र सत्रह भगवंत भगति भावनी ॥ (१३५७-११, सहसकृती, मः ५)
पर निंदा नह स्रोति स्रवणं आपु त्यिागि सगल रेणुकह ॥ (१३५७-११, सहसकृती, मः ५)
खट लख्यण पूरनं पुरखह नानक नाम साध स्वजनह ॥४०॥ (१३५७-१२, सहसकृती, मः ५)
अजा भोगंत कंद मूलं बसंते समीपि केहरह ॥ (१३५७-१३, सहसकृती, मः ५)
तत्र गते संसारह नानक सोग हरखं बिआपते ॥४१॥ (१३५७-१३, सहसकृती, मः ५)
छलं छिद्रं कोटि बिघनं अपराधं किलबिख मलं ॥ (१३५७-१४, सहसकृती, मः ५)
भर्म मोहं मान अपमानं मदं माया बिआपितं ॥ (१३५७-१४, सहसकृती, मः ५)
मृत्यु जनम भ्रमंति नरकह अनिक उपावं न सिध्यते ॥ (१३५७-१५, सहसकृती, मः ५)
निरमलं साध संगह जपंति नानक गोपाल नामं ॥ (१३५७-१५, सहसकृती, मः ५)
रमंति गुण गोबिंद नित प्रतह ॥४२॥ (१३५७-१६, सहसकृती, मः ५)
तरण सरण सुआमी रमण सील परमेसुरह ॥ (१३५७-१६, सहसकृती, मः ५)
करण कारण समरथह दानु देत प्रभु पूरनह ॥ (१३५७-१७, सहसकृती, मः ५)
निरास आस करणं सगल अर्थ आलयह ॥ (१३५७-१७, सहसकृती, मः ५)
गुण निधान सिमरंति नानक सगल जाचंत जाचिकह ॥४३॥ (१३५७-१७, सहसकृती, मः ५)
दुरगम सथान सुगमं महा दूख सर्ब सूखणह ॥ (१३५७-१८, सहसकृती, मः ५)
दुरबचन भेद भरमं साकत पिसनं त सुरजनह ॥ (१३५७-१९, सहसकृती, मः ५)
असथितं सोग हरखं भै खीणं त निरभवह ॥ (१३५७-१९, सहसकृती, मः ५)

पन्ना १३५८

भै अटवीअं महा नगर बासं धर्म लख्यण प्रभ मइआ ॥ (१३५८-१, सहसकृती, मः ५)
साध संगम राम राम रमणं सरणि नानक हरि हरि दयाल चरणं ॥४४॥ (१३५८-१, सहसकृती, मः ५)

हे अजित सूर संग्रामं अति बलना बहु मरदनह ॥ (१३५८-२, सहसकृती, मः ५)
गण गंधरब देव मानुख्यं पसु पंखी बिमोहनह ॥ (१३५८-२, सहसकृती, मः ५)
हरि करणहारं नमसकारं सरणि नानक जगदीस्वरह ॥४५॥ (१३५८-३, सहसकृती, मः ५)
हे कामं नरक बिस्रामं बहु जोनी भ्रमावणह ॥ (१३५८-३, सहसकृती, मः ५)
चित हरणं त्रै लोक गम्यं जप तप सील बिदारणह ॥ (१३५८-४, सहसकृती, मः ५)
अलप सुख अवित चंचल ऊच नीच समावणह ॥ (१३५८-४, सहसकृती, मः ५)
तव भै बिमुंचित साध संगम ओट नानक नाराइणह ॥४६॥ (१३५८-५, सहसकृती, मः ५)
हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥ (१३५८-६, सहसकृती, मः ५)
बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥ (१३५८-६, सहसकृती, मः ५)
अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥ (१३५८-७, सहसकृती, मः ५)
दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सर्ब जीअ रख्या करोति ॥४७॥ (१३५८-७, सहसकृती, मः ५)
हे लोभा लम्पट संग सिरमोरह अनिक लहरी कलोलते ॥ (१३५८-८, सहसकृती, मः ५)
धावंत जीआ बहु प्रकारं अनिक भाँति बहु डोलते ॥ (१३५८-८, सहसकृती, मः ५)
नच मित्रं नच इसटं नच बाधव नच मात पिता तव लजया ॥ (१३५८-९, सहसकृती, मः ५)
अकरणं करोति अखाद्यि खाद्यं असाज्यं साजि समजया ॥ (१३५८-१०, सहसकृती, मः ५)
त्राहि त्राहि सरणि सुआमी बिज्ञाप्ति नानक हरि नरहरह ॥४८॥ (१३५८-१०, सहसकृती, मः ५)
हे जनम मरण मूलं अहंकारं पापातमा ॥ (१३५८-११, सहसकृती, मः ५)
मित्रं तजंति सत्रं दृड़ंति अनिक माया बिस्तीरनह ॥ (१३५८-११, सहसकृती, मः ५)
आवंत जावंत थकंत जीआ दुख सुख बहु भोगणह ॥ (१३५८-१२, सहसकृती, मः ५)
भ्रम भ्यान उदिआन रमणं महा बिकट असाध रोगणह ॥ (१३५८-१२, सहसकृती, मः ५)
बैद्यं पारब्रह्म परमेस्वर आराधि नानक हरि हरि हरे ॥४९॥ (१३५८-१३, सहसकृती, मः ५)
हे प्राण नाथ गोबिंदह कृपा निधान जगद गुरो ॥ (१३५८-१३, सहसकृती, मः ५)
हे संसार ताप हरणह करुणा मै सभ दुख हरो ॥ (१३५८-१४, सहसकृती, मः ५)
हे सरणि जोग दयालह दीना नाथ मया करो ॥ (१३५८-१४, सहसकृती, मः ५)
सरीर स्वसथ खीण समए सिमरंति नानक राम दामोदर माधवह ॥५०॥ (१३५८-१५, सहसकृती, मः ५)
चरण कमल सरणं रमणं गोपाल कीरतनह ॥ (१३५८-१६, सहसकृती, मः ५)
साध संगेण तरणं नानक महा सागर भै दुतरह ॥५१॥ (१३५८-१६, सहसकृती, मः ५)
सिर मस्तक रख्या पारब्रहमं हस्त काया रख्या परमेस्वरह ॥ (१३५८-१७, सहसकृती, मः ५)
आतम रख्या गोपाल सुआमी धन चरण रख्या जगदीस्वरह ॥ (१३५८-१७, सहसकृती, मः ५)
सर्ब रख्या गुर दयालह भै दूख बिनासनह ॥ (१३५८-१८, सहसकृती, मः ५)
भगति वछल अनाथ नाथे सरणि नानक पुरख अचुतह ॥५२॥ (१३५८-१८, सहसकृती, मः ५)
जेन कला धारिओ आकासं बैसंतरं कासट बेसटं ॥ (१३५८-१९, सहसकृती, मः ५)
जेन कला ससि सूर नख्यत्र जोत्यिं सासं सरीर धारणं ॥ (१३५८-१९, सहसकृती, मः ५)

पन्ना १३५६

जेन कला मात गरभ प्रतिपालं नह छेदंत जठर रोगणह ॥ (१३५६-१, सहसकृती, मः ५)
तेन कला असथम्भं सरोवरं नानक नह छिजंति तरंग तोयणह ॥५३॥ (१३५६-२, सहसकृती, मः ५)
गुसाँई गरिष्ट रूपेण सिमरणं सरबत्र जीवणह ॥ (१३५६-२, सहसकृती, मः ५)
लबध्यं संत संगेण नानक स्वछ मारग हरि भगतणह ॥५४॥ (१३५६-३, सहसकृती, मः ५)
मसकं भगनंत सैलं करदमं तरंत पपीलकह ॥ (१३५६-३, सहसकृती, मः ५)
सागरं लंघंति पिंगं तम परगास अंधकह ॥ (१३५६-४, सहसकृती, मः ५)
साध संगेणि सिमरंति गोबिंद सरणि नानक हरि हरि हरे ॥५५॥ (१३५६-४, सहसकृती, मः ५)
तिलक हीणं जथा बिप्रा अमर हीणं जथा राजनह ॥ (१३५६-५, सहसकृती, मः ५)
आवध हीणं जथा सूरर नानक धर्म हीणं तथा बैसनवह ॥५६॥ (१३५६-५, सहसकृती, मः ५)
न संखं न चक्रं न गदा न सिआमं ॥ (१३५६-६, सहसकृती, मः ५)
अश्चरज रूपं रहंत जनमं ॥ (१३५६-६, सहसकृती, मः ५)
नेत नेत कथंति बेदा ॥ (१३५६-७, सहसकृती, मः ५)
ऊच मूच अपार गोबिंदह ॥ (१३५६-७, सहसकृती, मः ५)
बसंति साध रिदयं अचुत बुझंति नानक बडभागीअह ॥५७॥ (१३५६-७, सहसकृती, मः ५)
उदिआन बसनं संसारं सनबंधी स्वान सिआल खरह ॥ (१३५६-८, सहसकृती, मः ५)
बिखम सथान मन मोह मदिरं महाँ असाध पंच तसकरह ॥ (१३५६-८, सहसकृती, मः ५)
हीत मोह भै भर्म भ्रमणं अहं फाँस तीख्यण कठिनह ॥ (१३५६-९, सहसकृती, मः ५)
पावक तोअ असाध घोरं अगम तीर नह लंघनह ॥ (१३५६-१०, सहसकृती, मः ५)
भजु साधसंगि गोपाल नानक हरि चरण सरण उधरण कृपा ॥५८॥ (१३५६-१०, सहसकृती, मः ५)
कृपा करंत गोबिंद गोपालह सगल्यं रोग खंडणह ॥ (१३५६-११, सहसकृती, मः ५)
साध संगेणि गुण रमत नानक सरणि पूरन परमेसुरह ॥५९॥ (१३५६-११, सहसकृती, मः ५)
सिआमलं मधुर मानुख्यं रिदयं भूमि वैरणह ॥ (१३५६-१२, सहसकृती, मः ५)
निवंति होवंति मिथिआ चेतनं संत स्वजनह ॥६०॥ (१३५६-१२, सहसकृती, मः ५)
अचेत मूड़ा न जाणंत घटंत सासा नित प्रते ॥ (१३५६-१३, सहसकृती, मः ५)
छिजंत महा सुंदरी काँइआ काल कंनिआ ग्रासते ॥ (१३५६-१३, सहसकृती, मः ५)
रचंति पुरखह कुटम्ब लीला अनित आसा बिखिआ बिनोद ॥ (१३५६-१४, सहसकृती, मः ५)
भ्रमंति भ्रमंति बहु जनम हारिओ सरणि नानक करुणा मयह ॥६१॥ (१३५६-१४, सहसकृती, मः ५)
हे जिहबे हे रसगे मधुर प्रिअ तुयं ॥ (१३५६-१५, सहसकृती, मः ५)
सत हतं पर्म बादं अवरत एथह सुध अछरणह ॥ (१३५६-१६, सहसकृती, मः ५)
गोबिंद दामोदर माधवे ॥६२॥ (१३५६-१६, सहसकृती, मः ५)
गरबंति नारी मदोन मतं ॥ (१३५६-१६, सहसकृती, मः ५)
बलवंत बलात कारणह ॥ (१३५६-१७, सहसकृती, मः ५)
चरन कमल नह भजंत तृण समानि ध्रिगु जनमनह ॥ (१३५६-१७, सहसकृती, मः ५)

हे पपीलका ग्रसटे गोबिंद सिमरण तुयं धने ॥ (१३५९-१७, सहसकृती, मः ५)
नानक अनिक बार नमो नमह ॥६३॥ (१३५९-१८, सहसकृती, मः ५)
तृणं त मेरं सहकं त हरीअं ॥ (१३५९-१८, सहसकृती, मः ५)
बूडं त तरीअं ऊणं त भरीअं ॥ (१३५९-१९, सहसकृती, मः ५)
अंधकार कोटि सूर उजारं ॥ (१३५९-१९, सहसकृती, मः ५)
बिनवंति नानक हरि गुर दयारं ॥६४॥ (१३५९-१९, सहसकृती, मः ५)

पन्ना १३६०

ब्रह्मणह संगि उधरणं ब्रह्म कर्म जि पूरणह ॥ (१३६०-१, सहसकृती, मः ५)
आतम रतं संसार गहं ते नर नानक निहफलह ॥६५॥ (१३६०-१, सहसकृती, मः ५)
पर दरब हिरणं बहु विघन करणं उचरणं सर्ब जीअ कह ॥ (१३६०-२, सहसकृती, मः ५)
लउ लई तृसना अतिपति मन माए कर्म करत सि सूकरह ॥६६॥ (१३६०-२, सहसकृती, मः ५)
मते समेव चरणं उधरणं भै दुतरह ॥ (१३६०-३, सहसकृती, मः ५)
अनेक पातिक हरणं नानक साध संगम न संसयह ॥६७॥४॥ (१३६०-३, सहसकृती, मः ५)
महला ५ गाथा (१३६०-५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३६०-५)
करपूर पुहप सुगंधा परस मानुख्य देहं मलीणं ॥ (१३६०-६, गाथा, मः ५)
मजा रुधिर द्रुगंधा नानक अथि गरबेण अग्यानणो ॥१॥ (१३६०-६, गाथा, मः ५)
परमाणो परजंत आकासह दीप लोअ सिखंडणह ॥ (१३६०-७, गाथा, मः ५)
गछेण नैण भारेण नानक बिना साधू न सिध्यते ॥२॥ (१३६०-७, गाथा, मः ५)
जाणो सति होवंतो मरणो दृसटेण मिथिआ ॥ (१३६०-८, गाथा, मः ५)
कीरति साथि चलंथो भणंति नानक साध संगेण ॥३॥ (१३६०-८, गाथा, मः ५)
माया चित भरमेण इसट मित्रेखु बाँधवह ॥ (१३६०-९, गाथा, मः ५)
लबध्यं साध संगेण नानक सुख असथानं गोपाल भजणं ॥४॥ (१३६०-९, गाथा, मः ५)
मैलागर संगेण निम्मु बिरख सि चंदनह ॥ (१३६०-१०, गाथा, मः ५)
निकटि बसंतो बाँसो नानक अहं बुधि न बोहते ॥५॥ (१३६०-१०, गाथा, मः ५)
गाथा गुम्फ गोपाल कथं मथं मान मरदनह ॥ (१३६०-११, गाथा, मः ५)
हतं पंच सत्रेण नानक हरि बाणे प्रहारणह ॥६॥ (१३६०-११, गाथा, मः ५)
बचन साध सुख पंथा लहंथा बड करमणह ॥ (१३६०-१२, गाथा, मः ५)
रहंता जनम मरणेन रमणं नानक हरि कीरतनह ॥७॥ (१३६०-१२, गाथा, मः ५)
पत्र भुरिजेण झड़ीयं नह जड़ीअं पेड सम्पता ॥ (१३६०-१३, गाथा, मः ५)
नाम बिहूण बिखमता नानक बहंति जोनि बासरो रैणी ॥८॥ (१३६०-१३, गाथा, मः ५)
भावनी साध संगेण लभंतं बड भागणह ॥ (१३६०-१४, गाथा, मः ५)
हरि नाम गुण रमणं नानक संसार सागर नह बिआपणह ॥९॥ (१३६०-१४, गाथा, मः ५)
गाथा गूड़ अपारं समझणं बिरला जनह ॥ (१३६०-१५, गाथा, मः ५)

संसार काम तजणं नानक गोबिंद रमणं साध संगमह ॥१०॥ (१३६०-१५, गाथा, मः ५)
सुमंत्र साध बचना कोटि दोख बिनासनह ॥ (१३६०-१६, गाथा, मः ५)
हरि चरण कमल ध्यानं नानक कुल समूह उधारणह ॥११॥ (१३६०-१६, गाथा, मः ५)
सुंदर मंदर सैणह जेण मध्य हरि कीरतनह ॥ (१३६०-१७, गाथा, मः ५)
मुकते रमण गोबिंदह नानक लबध्यं बड भागणह ॥१२॥ (१३६०-१७, गाथा, मः ५)
हरि लबधो मित्र सुमितो ॥ (१३६०-१८, गाथा, मः ५)
बिदारण कदे न चितो ॥ (१३६०-१८, गाथा, मः ५)
जा का असथलु तोलु अमितो ॥ (१३६०-१८, गाथा, मः ५)
सोुई नानक सखा जीअ संगि कितो ॥१३॥ (१३६०-१९, गाथा, मः ५)
अपजसं मिटंत सत पुत्रह ॥ (१३६०-१९, गाथा, मः ५)
सिमरतब्य रिदै गुर मंत्रणह ॥ (१३६०-१९, गाथा, मः ५)

पन्ना १३६१

प्रीतम भगवान अचुत ॥ (१३६१-१, गाथा, मः ५)
नानक संसार सागर तारणह ॥१४॥ (१३६१-१, गाथा, मः ५)
मरणं बिसरणं गोबिंदह ॥ (१३६१-१, गाथा, मः ५)
जीवणं हरि नाम ध्यावणह ॥ (१३६१-२, गाथा, मः ५)
लभणं साध संगेण ॥ (१३६१-२, गाथा, मः ५)
नानक हरि पूरबि लिखणह ॥१५॥ (१३६१-२, गाथा, मः ५)
दसन बिहून भुयंगं मंत्रं गारुड़ी निवारं ॥ (१३६१-२, गाथा, मः ५)
ब्याधि उपाड़ण संतं ॥ (१३६१-३, गाथा, मः ५)
नानक लबध करमणह ॥१६॥ (१३६१-३, गाथा, मः ५)
जथ कथ रमणं सरणं सरबत्र जीअणह ॥ (१३६१-३, गाथा, मः ५)
तथ लगणं प्रेम नानक ॥ (१३६१-४, गाथा, मः ५)
परसादं गुर दरसनह ॥१७॥ (१३६१-४, गाथा, मः ५)
चरणारबिंद मन बिध्यं ॥ (१३६१-४, गाथा, मः ५)
सिध्यं सर्ब कुसलणह ॥ (१३६१-४, गाथा, मः ५)
गाथा गावंति नानक भब्यं परा पूरबणह ॥१८॥ (१३६१-५, गाथा, मः ५)
सुभ बचन रमणं गवणं साध संगेण उधरणह ॥ (१३६१-५, गाथा, मः ५)
संसार सागरं नानक पुनरपि जनम न लभ्यते ॥१९॥ (१३६१-६, गाथा, मः ५)
बेद पुराण सासत्र बीचारं ॥ (१३६१-६, गाथा, मः ५)
एकंकार नाम उर धारं ॥ (१३६१-६, गाथा, मः ५)
कुलह समूह सगल उधारं ॥ (१३६१-७, गाथा, मः ५)
बडभागी नानक को तारं ॥२०॥ (१३६१-७, गाथा, मः ५)
सिमरणं गोबिंद नामं उधरणं कुल समूहणह ॥ (१३६१-७, गाथा, मः ५)

लबधिअं साध संगेण नानक वडभागी भेटंति दरसनह ॥२१॥ (१३६१-८, गाथा, मः ५)
सर्ब दोख परंतिआगी सर्ब धर्म दृड़ंतणः ॥ (१३६१-८, गाथा, मः ५)
लबधेणि साध संगेणि नानक मसतकि लिख्यणः ॥२२॥ (१३६१-६, गाथा, मः ५)
होयो है होवंतो हरण भरण सम्पूरणः ॥ (१३६१-६, गाथा, मः ५)
साधू सतम जाणो नानक प्रीति कारणं ॥२३॥ (१३६१-१०, गाथा, मः ५)
सुखेण बैण रतनं रचनं कसुम्भ रंगणः ॥ (१३६१-१०, गाथा, मः ५)
रोग सोग बिओगं नानक सुखु न सुपनह ॥२४॥ (१३६१-११, गाथा, मः ५)
फुनहे महला ५ (१३६१-१२)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३६१-१२)
हाथि कलम्म अगम्म मसतकि लेखावती ॥ (१३६१-१३, फुनहे, मः ५)
उरझि रहिओ सभ संगि अनूप रूपावती ॥ (१३६१-१३, फुनहे, मः ५)
उसतति कहनु न जाइ मुखहु तुहारीआ ॥ (१३६१-१३, फुनहे, मः ५)
मोही देखि दरसु नानक बलिहारीआ ॥१॥ (१३६१-१४, फुनहे, मः ५)
संत सभा महि बैसि कि कीरति मै कहाँ ॥ (१३६१-१४, फुनहे, मः ५)
अरपी सभु सीगारु एहु जीउ सभु दिवा ॥ (१३६१-१५, फुनहे, मः ५)
आस पिआसी सेज सु कंति विछाईऐ ॥ (१३६१-१५, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ मसतकि होवै भागु त साजनु पाईऐ ॥२॥ (१३६१-१५, फुनहे, मः ५)
सखी काजल हार तम्बोल सभै किछु साजिआ ॥ (१३६१-१६, फुनहे, मः ५)
सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिआ ॥ (१३६१-१६, फुनहे, मः ५)
जे घरि आवै कंतु त सभु किछु पाईऐ ॥ (१३६१-१७, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ कंतै बाझु सीगारु सभु बिरथा जाईऐ ॥३॥ (१३६१-१७, फुनहे, मः ५)
जिसु घरि वसिआ कंतु सा वडभागणे ॥ (१३६१-१८, फुनहे, मः ५)
तिसु बणिआ हभु सीगारु साई सोहागणे ॥ (१३६१-१८, फुनहे, मः ५)
हउ सुती होइ अचिंत मनि आस पुराईआ ॥ (१३६१-१६, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ जा घरि आइआ कंतु त सभु किछु पाईआ ॥४॥ (१३६१-१६, फुनहे, मः ५)

पन्ना १३६२

आसा इती आस कि आस पुराईऐ ॥ (१३६२-१, फुनहे, मः ५)
सतिगुर भए दइआल त पूरा पाईऐ ॥ (१३६२-१, फुनहे, मः ५)
मै तनि अवगण बहुतु कि अवगण छाइआ ॥ (१३६२-१, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ सतिगुर भए दइआल त मनु ठहराइआ ॥५॥ (१३६२-२, फुनहे, मः ५)
कहु नानक बेअंतु बेअंतु धिआइआ ॥ (१३६२-३, फुनहे, मः ५)
दुतरु इहु संसारु सतिगुरू तराइआ ॥ (१३६२-३, फुनहे, मः ५)
मिटिआ आवा गउणु जाँ पूरा पाइआ ॥ (१३६२-३, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ अमृतु हरि का नामु सतिगुर ते पाइआ ॥६॥ (१३६२-४, फुनहे, मः ५)

मेरै हाथि पदमु आगनि सुख बासना ॥ (१३६२-४, फुनहे, मः ५)
सखी मोरै कंठि रतन्नु पेखि दुखु नासना ॥ (१३६२-५, फुनहे, मः ५)
बासउ संगि गुपाल सगल सुख रासि हरि ॥ (१३६२-५, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ रिधि सिधि नव निधि बसहि जिसु सदा करि ॥७॥ (१३६२-६, फुनहे, मः ५)
पर तृअ रावणि जाहि सेई ता लाजीअहि ॥ (१३६२-६, फुनहे, मः ५)
नितप्रति हिरहि पर दरबु छिद्र कत ढाकीअहि ॥ (१३६२-७, फुनहे, मः ५)
हरि गुण रमत पवित्र सगल कुल तारई ॥ (१३६२-७, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ सुनते भए पुनीत पारब्रह्मु बीचारई ॥८॥ (१३६२-८, फुनहे, मः ५)
ऊपरि बनै अकासु तलै धर सोहती ॥ (१३६२-८, फुनहे, मः ५)
दह दिस चमकै बीजुलि मुख कउ जोहती ॥ (१३६२-८, फुनहे, मः ५)
खोजत फिरउ बिदेसि पीउ कत पाईऐ ॥ (१३६२-९, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ जे मसतकि होवै भागु त दरसि समाईऐ ॥९॥ (१३६२-९, फुनहे, मः ५)
डिठे सभे थाव नही तुधु जेहिआ ॥ (१३६२-१०, फुनहे, मः ५)
बधोहु पुरखि बिधातै ताँ तू सोहिआ ॥ (१३६२-१०, फुनहे, मः ५)
वसदी सघन अपार अनूप रामदास पुर ॥ (१३६२-११, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ नानक कसमल जाहि नाइऐ रामदास सर ॥१०॥ (१३६२-११, फुनहे, मः ५)
चातृक चित सुचित सु साजनु चाहीऐ ॥ (१३६२-१२, फुनहे, मः ५)
जिसु संगि लागे प्राण तिसै कउ आहीऐ ॥ (१३६२-१२, फुनहे, मः ५)
बनु बनु फिरत उदास बूंद जल कारणे ॥ (१३६२-१२, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ तिउ हरि जनु माँगै नामु नानक बलिहारणे ॥११॥ (१३६२-१३, फुनहे, मः ५)
मित का चितु अनूपु मरम्मु न जानीऐ ॥ (१३६२-१३, फुनहे, मः ५)
गाहक गुनी अपार सु ततु पछानीऐ ॥ (१३६२-१४, फुनहे, मः ५)
चितहि चितु समाइ त होवै रंगु घना ॥ (१३६२-१४, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ चंचल चोरहि मारि त पावहि सचु धना ॥१२॥ (१३६२-१५, फुनहे, मः ५)
सुपनै ऊभी भई गहिओ की न अंचला ॥ (१३६२-१५, फुनहे, मः ५)
सुंदर पुरख बिराजित पेखि मनु बंचला ॥ (१३६२-१६, फुनहे, मः ५)
खोजउ ता के चरण कहहु कत पाईऐ ॥ (१३६२-१६, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ सोई जतन्नु बताइ सखी पृउ पाईऐ ॥१३॥ (१३६२-१६, फुनहे, मः ५)
नैण न देखहि साध सि नैण बिहालिआ ॥ (१३६२-१७, फुनहे, मः ५)
करन न सुनही नादु करन मुंदि घालिआ ॥ (१३६२-१७, फुनहे, मः ५)
रसना जपै न नामु तिलु तिलु करि कटीऐ ॥ (१३६२-१८, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ जब बिसरै गोबिद राइ दिनो दिनु घटीऐ ॥१४॥ (१३६२-१८, फुनहे, मः ५)
पंकज फाथे पंक महा मद गुंफिआ ॥ (१३६२-१९, फुनहे, मः ५)
अंग संग उरझाइ बिसरते सुंफिआ ॥ (१३६२-१९, फुनहे, मः ५)

है कोऊ ऐसा मीतु जि तोरै बिखम गाँठि ॥ (१३६३-१, फुनहे, मः ५)
नानक इकु स्रीधर नाथु जि टूटे लेइ साँठि ॥१५॥ (१३६३-१, फुनहे, मः ५)
धावउ दसा अनेक प्रेम प्रभ कारणे ॥ (१३६३-२, फुनहे, मः ५)
पंच सतावहि दूत कवन बिधि मारणे ॥ (१३६३-२, फुनहे, मः ५)
तीखण बाण चलाइ नामु प्रभ ध्याईऐ ॥ (१३६३-२, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ महाँ बिखादी घात पूरन गुरु पाईऐ ॥१६॥ (१३६३-३, फुनहे, मः ५)
सतिगुर कीनी दाति मूलि न निखुटई ॥ (१३६३-३, फुनहे, मः ५)
खावहु भुंचहु सभि गुरमुखि छुटई ॥ (१३६३-४, फुनहे, मः ५)
अमृतु नामु निधानु दिता तुसि हरि ॥ (१३६३-४, फुनहे, मः ५)
नानक सदा अराधि कदे न जाँहि मरि ॥१७॥ (१३६३-५, फुनहे, मः ५)
जिथै जाए भगतु सु थानु सुहावणा ॥ (१३६३-५, फुनहे, मः ५)
सगले होए सुख हरि नामु धिआवणा ॥ (१३६३-५, फुनहे, मः ५)
जीअ करनि जैकारु निंदक मुए पचि ॥ (१३६३-६, फुनहे, मः ५)
साजन मनि आनंदु नानक नामु जपि ॥१८॥ (१३६३-६, फुनहे, मः ५)
पावन पतित पुनीत कतह नही सेवीऐ ॥ (१३६३-७, फुनहे, मः ५)
झूठै रंगि खुआरु कहाँ लगु खेवीऐ ॥ (१३६३-७, फुनहे, मः ५)
हरिचंदउरी पेखि काहे सुखु मानिआ ॥ (१३६३-८, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ हउ बलिहारी तिन्न जि दरगहि जानिआ ॥१९॥ (१३६३-८, फुनहे, मः ५)
कीने कर्म अनेक गवार बिकार घन ॥ (१३६३-९, फुनहे, मः ५)
महा द्रुगंधत वासु सठ का छारु तन ॥ (१३६३-९, फुनहे, मः ५)
फिरतउ गरब गुबारि मरणु नह जानई ॥ (१३६३-९, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ हरिचंदउरी पेखि काहे सचु मानई ॥२०॥ (१३६३-१०, फुनहे, मः ५)
जिस की पूजै अउध तिसै कउणु राखई ॥ (१३६३-१०, फुनहे, मः ५)
बैदक अनिक उपाव कहाँ लउ भाखई ॥ (१३६३-११, फुनहे, मः ५)
एको चेति गवार काजि तेरै आवई ॥ (१३६३-११, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ बिनु नावै तनु छारु बृथा सभु जावई ॥२१॥ (१३६३-१२, फुनहे, मः ५)
अउखधु नामु अपारु अमोलकु पीजई ॥ (१३६३-१२, फुनहे, मः ५)
मिलि मिलि खावहि संत सगल कउ दीजई ॥ (१३६३-१३, फुनहे, मः ५)
जिसै परापति होइ तिसै ही पावणे ॥ (१३६३-१३, फुनहे, मः ५)
हरिहाँ हउ बलिहारी तिन्न् जि हरि रंगु रावणे ॥२२॥ (१३६३-१३, फुनहे, मः ५)
वैदा संदा संगु इकठा होइआ ॥ (१३६३-१४, फुनहे, मः ५)
अउखद आए रासि विचि आपि खलोइआ ॥ (१३६३-१४, फुनहे, मः ५)
जो जो ओना कर्म सुकर्म होइ पसरिआ ॥ (१३६३-१५, फुनहे, मः ५)

हरिहाँ दूख रोग सभि पाप तन ते खिसरिआ ॥२३॥ (१३६३-१५, फुनहे, मः ५)
चउबोले महला ५ (१३६३-१७)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३६३-१७)
सम्मन जउ इस प्रेम की दम क्यिहु होती साट ॥ (१३६३-१८, चउबोले, मः ५)
रावन हुते सु रंक नहि जिनि सिर दीने काटि ॥१॥ (१३६३-१८, चउबोले, मः ५)
प्रीति प्रेम तनु खचि रहिआ बीचु न राई होत ॥ (१३६३-१९, चउबोले, मः ५)
चरन कमल मनु बेधिओ बूझनु सुरति संजोग ॥२॥ (१३६३-१९, चउबोले, मः ५)

पन्ना १३६४

सागर मेर उदिआन बन नव खंड बसुधा भर्म ॥ (१३६४-१, चउबोले, मः ५)
मूसन प्रेम पिरम्म कै गनउ एक करि कर्म ॥३॥ (१३६४-१, चउबोले, मः ५)
मूसन मसकर प्रेम की रही जु अम्बरु छाइ ॥ (१३६४-२, चउबोले, मः ५)
बीधे बाँधे कमल महि भवर रहे लपटाइ ॥४॥ (१३६४-२, चउबोले, मः ५)
जप तप संजम हरख सुख मान महत अरु गरब ॥ (१३६४-२, चउबोले, मः ५)
मूसन निमखक प्रेम परि वारि वारि देंउ सर्ब ॥५॥ (१३६४-३, चउबोले, मः ५)
मूसन मरमु न जानई मरत हिरत संसार ॥ (१३६४-३, चउबोले, मः ५)
प्रेम पिरम्म न बेधिओ उरझिओ मिथ बिउहार ॥६॥ (१३६४-४, चउबोले, मः ५)
घबु दबु जब जारीऐ बिछुरत प्रेम बिहाल ॥ (१३६४-४, चउबोले, मः ५)
मूसन तब ही मूसीऐ बिसरत पुरख दइआल ॥७॥ (१३६४-५, चउबोले, मः ५)
जा को प्रेम सुआउ है चरन चितव मन माहि ॥ (१३६४-५, चउबोले, मः ५)
नानक बिरही ब्रह्म के आन न कतहू जाहि ॥८॥ (१३६४-६, चउबोले, मः ५)
लख घाटीं ऊंचौ घनो चंचल चीत बिहाल ॥ (१३६४-६, चउबोले, मः ५)
नीच कीच निमृत घनी करनी कमल जमाल ॥९॥ (१३६४-७, चउबोले, मः ५)
कमल नैन अंजन सिआम चंद्र बदन चित चार ॥ (१३६४-७, चउबोले, मः ५)
मूसन मगन मरम्म सिउ खंड खंड करि हार ॥१०॥ (१३६४-८, चउबोले, मः ५)
मगनु भइओ प्रिअ प्रेम सिउ सूध न सिमरत अंग ॥ (१३६४-८, चउबोले, मः ५)
प्रगटि भइओ सभ लोअ महि नानक अधम पतंग ॥११॥ (१३६४-९, चउबोले, मः ५)
सलोक भगत कबीर जीउ के (१३६४-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३६४-१०)
कबीर मेरी सिमरनी रसना ऊपरि रामु ॥ (१३६४-११, सलोक, भगत कबीर जी)
आदि जुगादी सगल भगत ता को सुखु बिस्रामु ॥१॥ (१३६४-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मेरी जाति कउ सभु को हसनेहारु ॥ (१३६४-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
बलिहारी इस जाति कउ जिह जपिओ सिरजनहारु ॥२॥ (१३६४-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर डगमग किआ करहि कहा डुलावहि जीउ ॥ (१३६४-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
सर्ब सूख को नाइको राम नाम रसु पीउ ॥३॥ (१३६४-१३, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर कंचन के कुंडल बने ऊपरि लाल जड़ाउ ॥ (१३६४-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
दीसहि दाधे कान जिउ जिन्ह मनि नाही नाउ ॥४॥ (१३६४-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसा एकु आधु जो जीवत मिरतकु होइ ॥ (१३६४-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
निरभै होइ कै गुन रवै जत पेखउ तत सोइ ॥५॥ (१३६४-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जा दिन हउ मूआ पाछै भइआ अनंदु ॥ (१३६४-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
मोहि मिलिओ प्रभु आपना संगी भजहि गोबिंदु ॥६॥ (१३६४-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सभ ते हम बुरे हम तजि भलो सभु कोइ ॥ (१३६४-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
जिनि ऐसा करि बूझिआ मीतु हमारा सोइ ॥७॥ (१३६४-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर आई मुझहि पहि अनिक करे करि भेस ॥ (१३६४-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
हम राखे गुर आपने उनि कीनो आदेसु ॥८॥ (१३६४-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सोई मारीऐ जिह मूऐ सुखु होइ ॥ (१३६४-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
भलो भलो सभु को कहै बुरो न मानै कोइ ॥९॥ (१३६४-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर राती होवहि कारीआ कारे ऊभे जंत ॥ (१३६४-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३६५

लै फाहे उठि धावते सि जानि मारे भगवंत ॥१०॥ (१३६५-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर चंदन का बिरवा भला बेड़्हिओ ढाक पलास ॥ (१३६५-१, सलोक, भगत कबीर जी)
ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥११॥ (१३६५-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बाँसु बडाई बूडिआ इउ मत डूबहु कोइ ॥ (१३६५-२, सलोक, भगत कबीर जी)
चंदन कै निकटे बसै बाँसु सुगंधु न होइ ॥१२॥ (१३६५-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर दीनु गवाइआ दुनी सिउ दुनी न चाली साथि ॥ (१३६५-३, सलोक, भगत कबीर जी)
पाइ कुहाड़ा मारिआ गाफलि अपुनै हाथि ॥१३॥ (१३६५-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जह जह हउ फिरिओ कउतक ठाओ ठाइ ॥ (१३६५-४, सलोक, भगत कबीर जी)
इक राम सनेही बाहरा ऊजरु मेरै भाँइ ॥१४॥ (१३६५-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर संतन की झुंगीआ भली भठि कुसती गाउ ॥ (१३६५-५, सलोक, भगत कबीर जी)
आगि लगउ तिह धउलहर जिह नाही हरि को नाउ ॥१५॥ (१३६५-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर संत मूए किआ रोईऐ जो अपुने गृहि जाइ ॥ (१३६५-६, सलोक, भगत कबीर जी)
रोवहु साकत बापुरे जु हाटै हाट बिकाइ ॥१६॥ (१३६५-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साकतु ऐसा है जैसी लसन की खानि ॥ (१३६५-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कोने बैठे खाईऐ परगट होइ निदानि ॥१७॥ (१३६५-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर माइआ डोलनी पवनु झकोलनहारु ॥ (१३६५-८, सलोक, भगत कबीर जी)
संतहु माखनु खाइआ छाछि पीऐ संसारु ॥१८॥ (१३६५-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर माइआ डोलनी पवनु वहै हिव धार ॥ (१३६५-९, सलोक, भगत कबीर जी)
जिनि बिलोइआ तिनि खाइआ अवर बिलोवनहार ॥१९॥ (१३६५-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर माइआ चोरटी मुसि मुसि लावै हाटि ॥ (१३६५-१०, सलोक, भगत कबीर जी)

एकु कबीरा ना मुसै जिनि कीनी बारह बाट ॥२०॥ (१३६५-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सूखु न एंह जुगि करहि जु बहुतै मीत ॥ (१३६५-११, सलोक, भगत कबीर जी)
जो चितु राखहि एक सिउ ते सुखु पावहि नीत ॥२१॥ (१३६५-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जिसु मरने ते जगु डरै मेरे मनि आनंदु ॥ (१३६५-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
मरने ही ते पाईऐ पूरनु परमानंदु ॥२२॥ (१३६५-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
राम पदारथु पाइ कै कबीरा गाँठि न खोल्ह ॥ (१३६५-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
नही पटणु नही पारखू नही गाहकु नही मोलु ॥२३॥ (१३६५-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ता सिउ प्रीति करि जा को ठाकुरु रामु ॥ (१३६५-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
पंडित राजे भूपती आवहि कउने काम ॥२४॥ (१३६५-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर प्रीति इक सिउ कीए आन दुबिधा जाइ ॥ (१३६५-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
भावै लाँबे केस करु भावै घररि मुडाइ ॥२५॥ (१३६५-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥ (१३६५-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥२६॥ (१३६५-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर इहु तनु जाइगा सकहु त लेहु बहोरि ॥ (१३६५-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
नाँगे पावहु ते गए जिन के लाख करोरि ॥२७॥ (१३६५-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर इहु तनु जाइगा कवनै मारगि लाइ ॥ (१३६५-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कै संगति करि साध की कै हरि के गुन गाइ ॥२८॥ (१३६५-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मरता मरता जगु मूआ मरि भी न जानिआ कोइ ॥ (१३६५-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३६६

ऐसे मरने जो मरै बहुरि न मरना होइ ॥२९॥ (१३६६-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मानस जनमु दुलम्भु है होइ न बारै बार ॥ (१३६६-१, सलोक, भगत कबीर जी)
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार ॥३०॥ (१३६६-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीरा तुही कबीरु तू तेरो नाउ कबीरु ॥ (१३६६-२, सलोक, भगत कबीर जी)
राम रतनु तब पाईऐ जउ पहिले तजहि सरीरु ॥३१॥ (१३६६-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर झंखु न झंखीऐ तुमरो कहिओ न होइ ॥ (१३६६-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कर्म करीम जु करि रहे मेटि न साकै कोइ ॥३२॥ (१३६६-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कसउटी राम की झूठा टिकै न कोइ ॥ (१३६६-४, सलोक, भगत कबीर जी)
राम कसउटी सो सहै जो मरि जीवा होइ ॥३३॥ (१३६६-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऊजल पहिरहि कापरे पान सुपारी खाहि ॥ (१३६६-५, सलोक, भगत कबीर जी)
एकस हरि के नाम बिनु बाधे जम पुरि जाँहि ॥३४॥ (१३६६-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बेड़ा जरजरा फूटे छेंक हजार ॥ (१३६६-६, सलोक, भगत कबीर जी)
हरूए हरूए तिरि गए डूबे जिन सिर भार ॥३५॥ (१३६६-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हाड जरे जिउ लाकरी केस जरे जिउ घासु ॥ (१३६६-७, सलोक, भगत कबीर जी)
इहु जगु जरता देखि कै भइओ कबीरु उदासु ॥३६॥ (१३६६-७, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर गरबु न कीजीऐ चाम लपेटे हाड ॥ (१३६६-८, सलोक, भगत कबीर जी)
हैवर ऊपरि छत्र तर ते फुनि धरनी गाड ॥३७॥ (१३६६-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गरबु न कीजीऐ ऊचा देखि अवासु ॥ (१३६६-९, सलोक, भगत कबीर जी)
आजु कालि भुइ लेटणा ऊपरि जामै घासु ॥३८॥ (१३६६-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गरबु न कीजीऐ रंकु न हसीऐ कोइ ॥ (१३६६-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
अजहु सु नाउ समुंद्र महि किआ जानउ किआ होइ ॥३९॥ (१३६६-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गरबु न कीजीऐ देही देखि सुरंग ॥ (१३६६-११, सलोक, भगत कबीर जी)
आजु कालि तजि जाहुगे जिउ काँचुरी भुयंग ॥४०॥ (१३६६-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर लूटना है त लूटि लै राम नाम है लूटि ॥ (१३६६-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
फिरि पाछै पछुताहुगे प्रान जाहिंगे छूटि ॥४१॥ (१३६६-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसा कोई न जनमिओ अपनै घरि लावै आगि ॥ (१३६६-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
पाँचउ लरिका जारि कै रहै राम लिव लागि ॥४२॥ (१३६६-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
को है लरिका बेचई लरिकी बेचै कोइ ॥ (१३६६-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
साझा करै कबीर सिउ हरि संगि बनजु करेइ ॥४३॥ (१३६६-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर इह चेतावनी मत सहसा रहि जाइ ॥ (१३६६-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
पाछै भोग जु भोगवे तिन को गुड़ु लै खाहि ॥४४॥ (१३६६-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मै जानिओ पड़िबो भलो पड़िबे सिउ भल जोगु ॥ (१३६६-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
भगति न छाडउ राम की भावै निंदउ लोगु ॥४५॥ (१३६६-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर लोगु कि निंदै बपुड़ा जिह मनि नाही गिआनु ॥ (१३६६-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
राम कबीरा रवि रहे अवर तजे सभ काम ॥४६॥ (१३६६-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर परदेसी कै घाघरै चहु दिसि लागी आगि ॥ (१३६६-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
खिंथा जलि कोइला भई तागे आँच न लाग ॥४७॥ (१३६६-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर खिंथा जलि कोइला भई खापरु फूट मफूट ॥ (१३६६-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
जोगी बपुड़ा खेलिओ आसनि रही बिभूति ॥४८॥ (१३६६-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३६७

कबीर थोरै जलि माछुली झीवरि मेलिओ जालु ॥ (१३६७-१, सलोक, भगत कबीर जी)
इह टोघनै न छूटसहि फिरि करि समुंदु सम्हालि ॥४९॥ (१३६७-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर समुंदु न छोडीऐ जउ अति खारो होइ ॥ (१३६७-२, सलोक, भगत कबीर जी)
पोखरि पोखरि ढूढते भलो न कहिहै कोइ ॥५०॥ (१३६७-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर निगुसाँएं बहि गए थाँघी नाही कोइ ॥ (१३६७-३, सलोक, भगत कबीर जी)
दीन गरीबी आपुनी करते होइ सु होइ ॥५१॥ (१३६७-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बैसनउ की कूकरि भली साकत की बुरी माइ ॥ (१३६७-४, सलोक, भगत कबीर जी)
ओह नित सुनै हरि नाम जसु उह पाप बिसाहन जाइ ॥५२॥ (१३६७-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरना दूबला इहु हरीआरा तालु ॥ (१३६७-५, सलोक, भगत कबीर जी)

लाख अहेरी एकु जीउ केता बंचउ कालु ॥५३॥ (१३६७-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गंगा तीर जु घरु करहि पीवहि निर्मल नीरु ॥ (१३६७-६, सलोक, भगत कबीर जी)
बिनु हरि भगति न मुकति होइ इउ कहि रमे कबीर ॥५४॥ (१३६७-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु ॥ (१३६७-७, सलोक, भगत कबीर जी)
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर ॥५५॥ (१३६७-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरदी पीअरी चून्नाँ ऊजल भाइ ॥ (१३६७-८, सलोक, भगत कबीर जी)
राम सनेही तउ मिलै दोनउ बरन गवाइ ॥५६॥ (१३६७-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनु न रहाइ ॥ (१३६७-९, सलोक, भगत कबीर जी)
बलिहारी इह प्रीति कउ जिह जाति बरनु कुलु जाइ ॥५७॥ (१३६७-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मुकति दुआरा संकुरा राई दसएं भाइ ॥ (१३६७-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
मनु तउ मैगलु होइ रहिओ निकसो किउ कै जाइ ॥५८॥ (१३६७-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसा सतिगुरु जे मिलै तुठा करे पसाउ ॥ (१३६७-११, सलोक, भगत कबीर जी)
मुकति दुआरा मोकला सहजे आवउ जाउ ॥५९॥ (१३६७-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ना मोहि छानि न छापरी ना मोहि घरु नही गाउ ॥ (१३६७-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
मत हरि पूछै कउनु है मेरे जाति न नाउ ॥६०॥ (१३६७-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मुहि मरने का चाउ है मरउ त हरि कै दुआर ॥ (१३६७-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
मत हरि पूछै कउनु है परा हमारै बार ॥६१॥ (१३६७-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ना हम कीआ न करहिगे ना करि सकै सरीरु ॥ (१३६७-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
किआ जानउ किछु हरि कीआ भइओ कबीरु कबीरु ॥६२॥ (१३६७-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सुपनै हू बरड़ाइ कै जिह मुखि निकसै रामु ॥ (१३६७-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
ता के पग की पानही मेरे तन को चामु ॥६३॥ (१३६७-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर माटी के हम पूतरे मानसु राखिओु नाउ ॥ (१३६७-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
चारि दिवस के पाहुने बड बड रूंधहि ठाउ ॥६४॥ (१३६७-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर महिदी करि घालिआ आपु पीसाइ पीसाइ ॥ (१३६७-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
तै सह बात न पूछीऐ कबहु न लाई पाइ ॥६५॥ (१३६७-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जिह दरि आवत जातिअहु हटकै नाही कोइ ॥ (१३६७-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
सो दरु कैसे छोडीऐ जो दरु ऐसा होइ ॥६६॥ (१३६७-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर डूबा था पै उबरिओ गुन की लहरि झबकि ॥ (१३६७-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३६८

जब देखिओ बेड़ा जरजरा तब उतरि परिओ हउ फरकि ॥६७॥ (१३६८-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर पापी भगति न भावई हरि पूजा न सुहाइ ॥ (१३६८-२, सलोक, भगत कबीर जी)
माखी चंदनु परहरै जह बिगंध तह जाइ ॥६८॥ (१३६८-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बैदु मूआ रोगी मूआ मूआ सभु संसारु ॥ (१३६८-३, सलोक, भगत कबीर जी)
एकु कबीरा ना मूआ जिह नाही रोवनहारु ॥६९॥ (१३६८-३, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर रामु न धिआइओ मोटी लागी खोरि ॥ (१३६८-४, सलोक, भगत कबीर जी)
काइआ हाँडी काठ की ना ओह चरहै बहोरि ॥७०॥ (१३६८-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसी होइ परी मन को भावतु कीनु ॥ (१३६८-४, सलोक, भगत कबीर जी)
मरने ते किआ डरपना जब हाथि सिधउरा लीन ॥७१॥ (१३६८-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर रस को गाँडो चूसीऐ गुन कउ मरीऐ रोइ ॥ (१३६८-५, सलोक, भगत कबीर जी)
अवगुनीआरे मानसै भलो न कहिहै कोइ ॥७२॥ (१३६८-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गागरि जल भरी आजु कालि् जैहै फूटि ॥ (१३६८-६, सलोक, भगत कबीर जी)
गुरु जु न चेतहि आपनो अध माझि लीजहिगे लूटि ॥७३॥ (१३६८-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कूकरु राम को मुतीआ मेरो नाउ ॥ (१३६८-८, सलोक, भगत कबीर जी)
गले हमारे जेवरी जह खिंचै तह जाउ ॥७४॥ (१३६८-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जपनी काठ की किआ दिखलावहि लोइ ॥ (१३६८-८, सलोक, भगत कबीर जी)
हिरदै रामु न चेतही इह जपनी किआ होइ ॥७५॥ (१३६८-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बिरहु भुयंगमु मनि बसै मंतु न मानै कोइ ॥ (१३६८-९, सलोक, भगत कबीर जी)
राम बिओगी ना जीऐ जीऐ त बउरा होइ ॥७६॥ (१३६८-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर पारस चंदनै तिन् है एक सुगंध ॥ (१३६८-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
तिह मिलि तेऊ ऊतम भए लोह काठ निरगंध ॥७७॥ (१३६८-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जम का ठेंगा बुरा है ओहु नही सहिआ जाइ ॥ (१३६८-११, सलोक, भगत कबीर जी)
एकु जु साधू मोहि मिलिओ तिन्हि लीआ अंचलि लाइ ॥७८॥ (१३६८-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बैदु कहै हउ ही भला दारू मेरै वसि ॥ (१३६८-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
इह तउ बसतु गुपाल की जब भावै लेइ खसि ॥७९॥ (१३६८-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर नउबति आपनी दिन दस लेहु बजाइ ॥ (१३६८-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
नदी नाव संजोग जिउ बहुरि न मिलहै आइ ॥८०॥ (१३६८-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ ॥ (१३६८-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
बसुधा कागदु जउ करउ हरि जसु लिखनु न जाइ ॥८१॥ (१३६८-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जाति जुलाहा किआ करै हिरदै बसे गुपाल ॥ (१३६८-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर रमईआ कंठि मिलु चूकहि सर्ब जंजाल ॥८२॥ (१३६८-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसा को नही मंदरु देइ जराइ ॥ (१३६८-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
पाँचउ लरिके मारि कै रहै राम लिउ लाइ ॥८३॥ (१३६८-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसा को नही इहु तनु देवै फूकि ॥ (१३६८-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि ॥८४॥ (१३६८-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनु हो बीर मसान ॥ (१३६८-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु निदान ॥८५॥ (१३६८-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३६९

कबीर मनु पंखी भइओ उडि उडि दह दिस जाइ ॥ (१३६९-१, सलोक, भगत कबीर जी)

जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ ॥८६॥ (१३६६-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जा कउ खोजते पाइओ सोई ठउरु ॥ (१३६६-२, सलोक, भगत कबीर जी)
सोई फिरि कै तू भइआ जा कउ कहता अउरु ॥८७॥ (१३६६-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि ॥ (१३६६-३, सलोक, भगत कबीर जी)
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि ॥८८॥ (१३६६-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर भार पराई सिरि चरै चलिओ चाहै बाट ॥ (१३६६-४, सलोक, भगत कबीर जी)
अपने भारहि ना डरै आगै अउघट घाट ॥८९॥ (१३६६-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बन की दाधी लाकरी ठाढी करै पुकार ॥ (१३६६-५, सलोक, भगत कबीर जी)
मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार ॥९०॥ (१३६६-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर एक मरंते दुइ मूए दोइ मरंतह चारि ॥ (१३६६-६, सलोक, भगत कबीर जी)
चारि मरंतह छह मूए चारि पुरख दुइ नारि ॥९१॥ (१३६६-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर देखि देखि जगु ढूंढिआ कहूं न पाइआ ठउरु ॥ (१३६६-७, सलोक, भगत कबीर जी)
जिनि हरि का नामु न चेतिओ कहा भुलाने अउर ॥९२॥ (१३६६-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु ॥ (१३६६-८, सलोक, भगत कबीर जी)
साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु ॥९३॥ (१३६६-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जग महि चेतिओ जानि कै जग महि रहिओ समाइ ॥ (१३६६-९, सलोक, भगत कबीर जी)
जिन हरि का नामु न चेतिओ बादहि जनमें आइ ॥९४॥ (१३६६-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास ॥ (१३६६-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
नरकि परहि ते मानई जो हरि नाम उदास ॥९५॥ (१३६६-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु ॥ (१३६६-११, सलोक, भगत कबीर जी)
चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकिओ चीतु ॥९६॥ (१३६६-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न करै सहाइ ॥ (१३६६-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ ॥९७॥ (१३६६-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥ (१३६६-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥९८॥ (१३६६-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी खाउ ॥ (१३६६-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
होनहारु सो होइहै साकत संगि न जाउ ॥९९॥ (१३६६-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु ॥ (१३६६-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
साकत कारी काँबरी धोए होइ न सेतु ॥१००॥ (१३६६-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए काँइ ॥ (१३६६-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
जो किछु कीआ सो मन कीआ मूंडा मूंडु अजाँइ ॥१०१॥ (१३६६-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर रामु न छोडीऐ तनु धनु जाइ त जाउ ॥ (१३६६-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
चरन कमल चितु बेधिआ रामहि नामि समाउ ॥१०२॥ (१३६६-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जो हम जंतु बजावते टूटि गईं सभ तार ॥ (१३६६-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
जंतु बिचारा किआ करै चले बजावनहार ॥१०३॥ (१३६६-१८, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर माइ मूंडउ तिह गुरू की जा ते भरमु न जाइ ॥ (१३६९-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७०

आप डुबे चहु बेद महि चेले दीए बहाइ ॥१०४॥ (१३७०-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराइ ॥ (१३७०-१, सलोक, भगत कबीर जी)
परगट भए निदान सभ जब पूछे धर्म राइ ॥१०५॥ (१३७०-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ बहुतु कुटम्बु ॥ (१३७०-२, सलोक, भगत कबीर जी)
धंधा करता रहि गइआ भाई रहिआ न बंधु ॥१०६॥ (१३७०-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै राति जगावन जाइ ॥ (१३७०-३, सलोक, भगत कबीर जी)
सरपनि होइ कै अउतरै जाए अपुने खाइ ॥१०७॥ (१३७०-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै अहोई राखै नारि ॥ (१३७०-४, सलोक, भगत कबीर जी)
गदही होइ कै अउतरै भारु सहै मन चारि ॥१०८॥ (१३७०-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर चतुराई अति घनी हरि जपि हिरदै माहि ॥ (१३७०-५, सलोक, भगत कबीर जी)
सूरी ऊपरि खेलना गिरै त ठाहर नाहि ॥१०९॥ (१३७०-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सोई मुखु धंनि है जा मुखि कहीऐ रामु ॥ (१३७०-६, सलोक, भगत कबीर जी)
देही किस की बापुरी पवित्रु होइगो ग्रामु ॥११०॥ (१३७०-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु ॥ (१३७०-७, सलोक, भगत कबीर जी)
जिह कुल दासु न ऊपजै सो कुल ढाकु पलासु ॥१११॥ (१३७०-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर है गइ बाहन सघन घन लाख धजा फहराहि ॥ (१३७०-८, सलोक, भगत कबीर जी)
इआ सुख ते भिख्या भली जउ हरि सिमरत दिन जाहि ॥११२॥ (१३७०-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सभु जगु हउ फिरिओ माँदलु कंध चढाइ ॥ (१३७०-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कोई काहू को नही सभ देखी ठोकि बजाइ ॥११३॥ (१३७०-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
मारगि मोती बीथरे अंधा निकसिओ आइ ॥ (१३७०-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
जोति बिना जगदीस की जगतु उलंघे जाइ ॥११४॥ (१३७०-११, सलोक, भगत कबीर जी)
बूडा बंसु कबीर का उपजिओ पूतु कमालु ॥ (१३७०-११, सलोक, भगत कबीर जी)
हरि का सिमरनु छाडि कै घरि ले आया मालु ॥११५॥ (१३७०-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साधू कउ मिलने जाईऐ साथि न लीजै कोइ ॥ (१३७०-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
पाछै पाउ न दीजीऐ आगै होइ सु होइ ॥११६॥ (१३७०-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जगु बाधिओ जिह जेवरी तिह मत बंधहु कबीर ॥ (१३७०-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
जैहहि आटा लोन जिउ सोन समानि सरीरु ॥११७॥ (१३७०-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हंसु उडिओ तनु गाडिओ सोझाई सैनाह ॥ (१३७०-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
अजहू जीउ न छोडई रंकाई नैनाह ॥११८॥ (१३७०-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर नैन निहारउ तुझ कउ स्रवन सुनउ तुअ नाउ ॥ (१३७०-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
बैन उचरउ तुअ नाम जी चरन कमल रिद ठाउ ॥११९॥ (१३७०-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सुरग नरक ते मै रहिओ सतिगुर के परसादि ॥ (१३७०-१७, सलोक, भगत कबीर जी)

चरन कमल की मउज महि रहउ अंति अरु आदि ॥१२०॥ (१३७०-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर चरन कमल की मउज को कहि कैसे उनमान ॥ (१३७०-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कहिबे कउ सोभा नही देखा ही परवानु ॥१२१॥ (१३७०-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर देखि कै किह कहउ कहे न को पतीआइ ॥ (१३७०-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
हरि जैसा तैसा उही रहउ हरखि गुन गाइ ॥१२२॥ (१३७०-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७१

कबीर चुगै चितारै भी चुगै चुगि चुगि चितारे ॥ (१३७१-१, सलोक, भगत कबीर जी)
जैसे बचरहि कूंज मन माइआ ममता रे ॥१२३॥ (१३७१-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर अम्बर घनहरु छाइआ बरखि भरे सर ताल ॥ (१३७१-२, सलोक, भगत कबीर जी)
चातृक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु ॥१२४॥ (१३७१-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति ॥ (१३७१-३, सलोक, भगत कबीर जी)
जो नर बिछुरे राम सिउ ना दिन मिले न राति ॥१२५॥ (१३७१-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर रैनाइर बिछोरिआ रहु रे संख मझूरि ॥ (१३७१-४, सलोक, भगत कबीर जी)
देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर ॥१२६॥ (१३७१-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सूता किआ करहि जागु रोइ भै दुख ॥ (१३७१-५, सलोक, भगत कबीर जी)
जा का बासा गोर महि सो किउ सोवै सुख ॥१२७॥ (१३७१-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सूता किआ करहि उठि कि न जपहि मुरारि ॥ (१३७१-६, सलोक, भगत कबीर जी)
इक दिन सोवनु होइगो लाँबे गोड पसारि ॥१२८॥ (१३७१-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सूता किआ करहि बैठा रहु अरु जागु ॥ (१३७१-७, सलोक, भगत कबीर जी)
जा के संग ते बीछुरा ता ही के संगि लागु ॥१२९॥ (१३७१-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर संत की गैल न छोडीऐ मारगि लागा जाउ ॥ (१३७१-८, सलोक, भगत कबीर जी)
पेखत ही पुन्नीत होइ भेटत जपीऐ नाउ ॥१३०॥ (१३७१-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साकत संगु न कीजीऐ दूरहि जाईऐ भागि ॥ (१३७१-९, सलोक, भगत कबीर जी)
बासनु कारो परसीऐ तउ कछु लागै दागु ॥१३१॥ (१३७१-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीरा रामु न चेतिओ जरा पहूंचिओ आइ ॥ (१३७१-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
लागी मंदिर दुआर ते अब किआ काढिआ जाइ ॥१३२॥ (१३७१-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कारनु सो भइओ जो कीनो करतारि ॥ (१३७१-११, सलोक, भगत कबीर जी)
तिसु बिनु दूसरु को नही एकै सिरजनहारु ॥१३३॥ (१३७१-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर फल लागे फलनि पाकनि लागे आँब ॥ (१३७१-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
जाइ पहूचहि खसम कउ जउ बीचि न खाही काँब ॥१३४॥ (१३७१-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ठाकुरु पूजहि मोलि ले मनहठि तीर्थ जाहि ॥ (१३७१-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
देखा देखी स्वाँगु धरि भूले भटका खाहि ॥१३५॥ (१३७१-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर पाहनु परमेसुरु कीआ पूजै सभु संसारु ॥ (१३७१-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
इस भरवासे जो रहे बूडे काली धार ॥१३६॥ (१३७१-१५, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर कागद की ओबरी मसु के कर्म कपाट ॥ (१३७१-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
पाहन बोरी पिरथमी पंडित पाड़ी बाट ॥१३७॥ (१३७१-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कालि करंता अबहि करु अब करता सुइ ताल ॥ (१३७१-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
पाछै कछू न होइगा जउ सिर परि आवै कालु ॥१३८॥ (१३७१-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसा जंतु इकु देखिआ जैसी धोई लाख ॥ (१३७१-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
दीसै चंचलु बहु गुना मति हीना नापाक ॥१३९॥ (१३७१-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मेरी बुधि कउ जमु न करै तिसकार ॥ (१३७१-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
जिनि इहु जमूआ सिरजिआ सु जपिआ परविदगार ॥१४०॥ (१३७१-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीरु कसतूरी भइआ भवर भए सभ दास ॥ (१३७१-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७२

जिउ जिउ भगति कबीर की तिउ तिउ राम निवास ॥१४१॥ (१३७२-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गहगचि परिओ कुटम्ब कै काँठै रहि गइओ रामु ॥ (१३७२-१, सलोक, भगत कबीर जी)
आइ परे धर्म राइ के बीचहि धूमा धाम ॥१४२॥ (१३७२-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साकत ते सूकर भला राखै आछा गाउ ॥ (१३७२-२, सलोक, भगत कबीर जी)
उहु साकतु बपुरा मरि गइआ कोइ न लैहै नाउ ॥१४३॥ (१३७२-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कउडी कउडी जोरि कै जोरे लाख करोरि ॥ (१३७२-४, सलोक, भगत कबीर जी)
चलती बार न कछु मिलिओ लई लंगोटी तोरि ॥१४४॥ (१३७२-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बैसनो हूआ त किआ भइआ माला मेलीं चारि ॥ (१३७२-५, सलोक, भगत कबीर जी)
बाहरि कंचनु बारहा भीतरि भरी भंगार ॥१४५॥ (१३७२-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर रोड़ा होइ रहु बाट का तजि मन का अभिमानु ॥ (१३७२-६, सलोक, भगत कबीर जी)
ऐसा कोई दासु होइ ताहि मिलै भगवानु ॥१४६॥ (१३७२-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर रोड़ा हूआ त किआ भइआ पंथी कउ दुखु देइ ॥ (१३७२-७, सलोक, भगत कबीर जी)
ऐसा तेरा दासु है जिउ धरनी महि खेह ॥१४७॥ (१३७२-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर खेह हूई तउ किआ भइआ जउ उडि लागै अंग ॥ (१३७२-८, सलोक, भगत कबीर जी)
हरि जनु ऐसा चाहीऐ जिउ पानी सरबंग ॥१४८॥ (१३७२-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर पानी हूआ त किआ भइआ सीरा ताता होइ ॥ (१३७२-९, सलोक, भगत कबीर जी)
हरि जनु ऐसा चाहीऐ जैसा हरि ही होइ ॥१४९॥ (१३७२-९, सलोक, भगत कबीर जी)
ऊच भवन कनकामनी सिखरि धजा फहराइ ॥ (१३७२-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
ता ते भली मधूकरी संतसंगि गुन गाइ ॥१५०॥ (१३७२-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर पाटन ते ऊजरु भला राम भगत जिह ठाइ ॥ (१३७२-११, सलोक, भगत कबीर जी)
राम सनेही बाहरा जम पुरु मेरे भाँइ ॥१५१॥ (१३७२-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गंग जमुन के अंतरे सहज सुन्न के घाट ॥ (१३७२-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
तहा कबीरै मटु कीआ खोजत मुनि जन बाट ॥१५२॥ (१३७२-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जैसी उपजी पेड ते जउ तैसी निबहै ओड़ि ॥ (१३७२-१३, सलोक, भगत कबीर जी)

हीरा किस का बापुरा पुजहि न रतन करोड़ि ॥१५३॥ (१३७२-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीरा एकु अचम्भउ देखिओ हीरा हाट बिकाइ ॥ (१३७२-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
बनजनहारे बाहरा कउडी बदलै जाइ ॥१५४॥ (१३७२-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीरा जहा गिआनु तह धरमु है जहा झूठु तह पापु ॥ (१३७२-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
जहा लोभु तह कालु है जहा खिमा तह आपि ॥१५५॥ (१३७२-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर माइआ तजी त किआ भइआ जउ मानु तजिआ नही जाइ ॥ (१३७२-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
मान मुनी मुनिवर गले मानु सभै कउ खाइ ॥१५६॥ (१३७२-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साचा सतिगुरु मै मिलिआ सबदु जु बाहिआ एकु ॥ (१३७२-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
लागत ही भुइ मिलि गइआ परिआ कलेजे छेकु ॥१५७॥ (१३७२-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक ॥ (१३७२-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
अंधे एक न लागई जिउ बाँसु बजाईऐ फूक ॥१५८॥ (१३७२-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर है गै बाहन सघन घन छत्रपती की नारि ॥ (१३७२-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७३

तासु पटंतर न पुजै हरि जन की पनिहारि ॥१५९॥ (१३७३-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर नृप नारी किउ निंदीऐ किउ हरि चेरी कउ मानु ॥ (१३७३-२, सलोक, भगत कबीर जी)
ओह माँग सवारै बिखै कउ ओह सिमरै हरि नामु ॥१६०॥ (१३७३-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर थूनी पाई थिति भई सतिगुर बंधी धीर ॥ (१३७३-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हीरा बनजिआ मान सरोवर तीर ॥१६१॥ (१३७३-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरि हीरा जन जउहरी ले कै माँडै हाट ॥ (१३७३-४, सलोक, भगत कबीर जी)
जब ही पाईअहि पारखू तब हीरन की साट ॥१६२॥ (१३७३-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर काम परे हरि सिमरीऐ ऐसा सिमरहु नित ॥ (१३७३-५, सलोक, भगत कबीर जी)
अमरा पुर बासा करहु हरि गइआ बहोरै बित ॥१६३॥ (१३७३-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु रामु ॥ (१३७३-६, सलोक, भगत कबीर जी)
रामु जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु ॥१६४॥ (१३७३-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जिह मारगि पंडित गए पाछै परी बहीर ॥ (१३७३-७, सलोक, भगत कबीर जी)
इक अवघट घाटी राम की तिह चड़ि रहिओ कबीर ॥१६५॥ (१३७३-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर दुनीआ के दोखे मूआ चालत कुल की कानि ॥ (१३७३-८, सलोक, भगत कबीर जी)
तब कुलु किस का लाजसी जब ले धरहि मसानि ॥१६६॥ (१३७३-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर डूबहिगो रे बापुरे बहु लोगन की कानि ॥ (१३७३-९, सलोक, भगत कबीर जी)
पारोसी के जो हूआ तू अपने भी जानु ॥१६७॥ (१३७३-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर भली मधूकरी नाना बिधि को नाजु ॥ (१३७३-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
दावा काहू को नही बडा देसु बड राजु ॥१६८॥ (१३७३-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर दावै दाझनु होतु है निरदावै रहै निसंक ॥ (१३७३-११, सलोक, भगत कबीर जी)
जो जनु निरदावै रहै सो गनै इंद्र सो रंक ॥१६९॥ (१३७३-११, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर पालि समुहा सरवरु भरा पी न सकै कोई नीरु ॥ (१३७३-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
भाग बडे तै पाइओ तूं भरि भरि पीउ कबीर ॥१७०॥ (१३७३-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर परभाते तारे खिसहि तिउ इहु खिसै सरीरु ॥ (१३७३-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
ए दुइ अखर ना खिसहि सो गहि रहिओ कबीरु ॥१७१॥ (१३७३-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कोठी काठ की दह दिसि लागी आगि ॥ (१३७३-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
पंडित पंडित जलि मूए मूरख उबरे भागि ॥१७२॥ (१३७३-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर संसा दूरि करु कागद देह बिहाइ ॥ (१३७३-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
बावन अखर सोधि कै हरि चरनी चितु लाइ ॥१७३॥ (१३७३-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर संतु न छाडै संतई जउ कोटिक मिलहि असंत ॥ (१३७३-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
मलिआगरु भुयंगम बेढिओ त सीतलता न तजंत ॥१७४॥ (१३७३-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मनु सीतलु भइआ पाइआ ब्रह्म गिआनु ॥ (१३७३-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
जिनि जुआला जगु जारिआ सु जन के उदक समानि ॥१७५॥ (१३७३-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सारी सिरजनहार की जानै नाही कोइ ॥ (१३७३-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कै जानै आपन धनी कै दासु दीवानी होइ ॥१७६॥ (१३७३-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर भली भई जो भउ परिआ दिसा गईं सभ भूलि ॥ (१३७३-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७४

ओरा गरि पानी भइआ जाइ मिलिओ ढलि कूलि ॥१७७॥ (१३७४-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीरा धूरि सकेलि कै पुरीआ बाँधी देह ॥ (१३७४-१, सलोक, भगत कबीर जी)
दिवस चारि को पेखना अंति खेह की खेह ॥१७८॥ (१३७४-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सूरज चाँद कै उदै भई सभ देह ॥ (१३७४-२, सलोक, भगत कबीर जी)
गुर गोबिंद के बिनु मिले पलटि भई सभ खेह ॥१७९॥ (१३७४-३, सलोक, भगत कबीर जी)
जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥ (१३७४-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कहिओ कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि ॥१८०॥ (१३७४-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जिनहु किछू जानिआ नही तिन सुख नीद बिहाइ ॥ (१३७४-४, सलोक, भगत कबीर जी)
हमहु जु बूझा बूझना पूरी परी बलाइ ॥१८१॥ (१३७४-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मारे बहुतु पुकारिआ पीर पुकारै अउर ॥ (१३७४-५, सलोक, भगत कबीर जी)
लागी चोट मरम्म की रहिओ कबीरा ठउर ॥१८२॥ (१३७४-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर चोट सुहेली सेल की लागत लेइ उसास ॥ (१३७४-६, सलोक, भगत कबीर जी)
चोट सहारै सबद की तासु गुरू मै दास ॥१८३॥ (१३७४-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मुलाँ मुनारे किआ चढहि साँई न बहरा होइ ॥ (१३७४-७, सलोक, भगत कबीर जी)
जा कारनि तूं बाँग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥१८४॥ (१३७४-८, सलोक, भगत कबीर जी)
सेख सबूरी बाहरा किआ हज काबे जाइ ॥ (१३७४-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जा की दिल साबति नही ता कउ कहाँ खुदाइ ॥१८५॥ (१३७४-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुखु जाइ ॥ (१३७४-१०, सलोक, भगत कबीर जी)

दिल महि साँई परगटै बुझै बलंती नाँइ ॥१८६॥ (१३७४-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जोरी कीए जुलमु है कहता नाउ हलालु ॥ (१३७४-११, सलोक, भगत कबीर जी)
दफतरि लेखा माँगीऐ तब होइगो कउनु हवालु ॥१८७॥ (१३७४-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर खूबु खाना खीचरी जा महि अमृतु लोनु ॥ (१३७४-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
हेरा रोटी कारने गला कटावै कउनु ॥१८८॥ (१३७४-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गुरु लागा तब जानीऐ मिटै मोहु तन ताप ॥ (१३७४-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
हरख सोग दाझै नही तब हरि आपहि आपि ॥१८९॥ (१३७४-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर राम कहन महि भेदु है ता महि एकु बिचारु ॥ (१३७४-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
सोई रामु सभै कहहि सोई कउतकहार ॥१९०॥ (१३७४-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर रामै राम कहु कहिबे माहि बिबेक ॥ (१३७४-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
एकु अनेकहि मिलि गइआ एक समाना एक ॥१९१॥ (१३७४-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जा घर साध न सेवीअहि हरि की सेवा नाहि ॥ (१३७४-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
ते घर मरहट सारखे भूत बसहि तिन माहि ॥१९२॥ (१३७४-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर गूंगा हूआ बावरा बहरा हूआ कान ॥ (१३७४-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
पावहु ते पिंगुल भइआ मारिआ सतिगुर बान ॥१९३॥ (१३७४-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ॥ (१३७४-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ॥१९४॥ (१३७४-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर निर्मल बूंद अकास की परि गई भूमि बिकार ॥ (१३७४-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७५

बिनु संगति इउ माँनई होइ गई भठ छार ॥१९५॥ (१३७५-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर निर्मल बूंद अकास की लीनी भूमि मिलाइ ॥ (१३७५-१, सलोक, भगत कबीर जी)
अनिक सिआने पचि गए ना निरवारी जाइ ॥१९६॥ (१३७५-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ ॥ (१३७५-२, सलोक, भगत कबीर जी)
साँई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ ॥१९७॥ (१३७५-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हज काबै होइ होइ गइआ केती बार कबीर ॥ (१३७५-४, सलोक, भगत कबीर जी)
साँई मुझ महि किआ खता मुखहु न बोलै पीर ॥१९८॥ (१३७५-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जीअ जु मारहि जोरु करि कहते हहि जु हलालु ॥ (१३७५-५, सलोक, भगत कबीर जी)
दफतरु दई जब काढि है होइगा कउनु हवालु ॥१९९॥ (१३७५-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जोरु कीआ सो जुलमु है लेइ जबाबु खुदाइ ॥ (१३७५-६, सलोक, भगत कबीर जी)
दफतरि लेखा नीकसै मार मुहै मुहि खाइ ॥२००॥ (१३७५-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर लेखा देना सुहेला जउ दिल सूची होइ ॥ (१३७५-७, सलोक, भगत कबीर जी)
उसु साचे दीबान महि पला न पकरै कोइ ॥२०१॥ (१३७५-७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर धरती अरु आकास महि दुइ तूं बरी अबध ॥ (१३७५-८, सलोक, भगत कबीर जी)
खट दरसन संसे परे अरु चउरासीह सिध ॥२०२॥ (१३७५-८, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥ (१३७५-९, सलोक, भगत कबीर जी)
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥२०३॥ (१३७५-९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥ (१३७५-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥२०४॥ (१३७५-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बिकारह चितवते झूठे करते आस ॥ (१३७५-११, सलोक, भगत कबीर जी)
मनोरथु कोइ न पूरिओ चाले ऊठि निरास ॥२०५॥ (१३७५-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर हरि का सिमरनु जो करै सो सुखीआ संसारि ॥ (१३७५-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
इत उत कतहि न डोलई जिस राखै सिरजनहार ॥२०६॥ (१३७५-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर घाणी पीड़ते सतिगुर लीए छडाइ ॥ (१३७५-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
परा पूरबली भावनी परगटु होई आइ ॥२०७॥ (१३७५-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर टालै टोलै दिनु गइआ बिआजु बढंतउ जाइ ॥ (१३७५-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
ना हरि भजिओ न खतु फटिओ कालु पहूंचो आइ ॥२०८॥ (१३७५-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
महला ५ ॥ (१३७५-१५)
कबीर कूकरु भउकना करंग पिछै उठि धाइ ॥ (१३७५-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
करमी सतिगुरु पाइआ जिनि हउ लीआ छडाइ ॥२०९॥ (१३७५-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
महला ५ ॥ (१३७५-१६)
कबीर धरती साध की तस्कर बैसहि गाहि ॥ (१३७५-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
धरती भारि न बिआपई उन कउ लाहू लाहि ॥२१०॥ (१३७५-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
महला ५ ॥ (१३७५-१७)
कबीर चावल कारने तुख कउ मुहली लाइ ॥ (१३७५-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
संगि कुसंगी बैसते तब पूछै धर्म राइ ॥२११॥ (१३७५-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
नामा माइआ मोहिआ कहै तिलोचनु मीत ॥ (१३७५-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
काहे छीपहु छाइलै राम न लावहु चीतु ॥२१२॥ (१३७५-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
नामा कहै तिलोचना मुख ते रामु सम्हालि ॥ (१३७५-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७६

हाथ पाउ करि कामु सभु चीतु निरंजन नालि ॥२१३॥ (१३७६-१, सलोक, भगत कबीर जी)
महला ५ ॥ (१३७६-१)
कबीरा हमरा को नही हम किस हू के नाहि ॥ (१३७६-२, सलोक, भगत कबीर जी)
जिनि इहु रचनु रचाइआ तिस ही माहि समाहि ॥२१४॥ (१३७६-२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कीचड़ि आटा गिरि परिआ किछू न आइओ हाथ ॥ (१३७६-३, सलोक, भगत कबीर जी)
पीसत पीसत चाबिआ सोई निबहिआ साथ ॥२१५॥ (१३७६-३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर मनु जानै सभ बात जानत ही अउगनु करै ॥ (१३७६-४, सलोक, भगत कबीर जी)
काहे की कुसलात हाथि दीपु कूए परै ॥२१६॥ (१३७६-४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर लागी प्रीति सुजान सिउ बरजै लोगु अजानु ॥ (१३७६-५, सलोक, भगत कबीर जी)

ता सिउ टूटी किउ बनै जा के जीअ परान ॥२१७॥ (१३७६-५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर कोठे मंडप हेतु करि काहे मरहु सवारि ॥ (१३७६-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कारजु साढे तीनि हथ घनी त पउने चारि ॥२१८॥ (१३७६-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जो मै चितवउ ना करै किआ मेरे चितवे होइ ॥ (१३७६-७, सलोक, भगत कबीर जी)
अपना चितविआ हरि करै जो मेरे चिति न होइ ॥२१९॥ (१३७६-७, सलोक, भगत कबीर जी)
मः ३ ॥ (१३७६-८)
चिंता भि आपि कराइसी अचिंतु भि आपे देइ ॥ (१३७६-८, सलोक, मः ३)
नानक सो सालाहीऐ जि सभना सार करेइ ॥२२०॥ (१३७६-९, सलोक, मः ३)
मः ५ ॥ (१३७६-९)
कबीर रामु न चेतिओ फिरिआ लालच माहि ॥ (१३७६-९, सलोक, भगत कबीर जी)
पाप करंता मरि गइआ अउध पुनी खिन माहि ॥२२१॥ (१३७६-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर काइआ काची कारवी केवल काची धातु ॥ (१३७६-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
साबतु रखहि त राम भजु नाहि त बिनठी बात ॥२२२॥ (१३७६-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर केसो केसो कूकीऐ न सोईऐ असार ॥ (१३७६-११, सलोक, भगत कबीर जी)
राति दिवस के कूकने कबहू के सुनै पुकार ॥२२३॥ (१३७६-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर काइआ कजली बनु भइआ मनु कुंचरु मय मंतु ॥ (१३७६-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
अंकसु ग्यानु रतनु है खेवटु बिरला संतु ॥२२४॥ (१३७६-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर राम रतनु मुखु कोथरी पारख आगै खोलि ॥ (१३७६-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कोई आइ मिलैगो गाहकी लेगो महगे मोलि ॥२२५॥ (१३७६-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर राम नामु जानिओ नही पालिओ कटकु कुटम्बु ॥ (१३७६-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
धंधे ही महि मरि गइओ बाहरि भई न बम्ब ॥२२६॥ (१३७६-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर आखी केरे माटुके पलु पलु गई बिहाइ ॥ (१३७६-१५, सलोक, भगत कबीर जी)
मनु जंजालु न छोडई जम दीआ दमामा आइ ॥२२७॥ (१३७६-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर तरवर रूपी रामु है फल रूपी बैरागु ॥ (१३७६-१६, सलोक, भगत कबीर जी)
छाइआ रूपी साधु है जिनि तजिआ बादु बिबादु ॥२२८॥ (१३७६-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर ऐसा बीजु बोइ बारह मास फलंत ॥ (१३७६-१७, सलोक, भगत कबीर जी)
सीतल छाइआ गहिर फल पंखी केल करंत ॥२२९॥ (१३७६-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर दाता तरवरु दया फलु उपकारी जीवंत ॥ (१३७६-१८, सलोक, भगत कबीर जी)
पंखी चले दिसावरी बिरखा सुफल फलंत ॥२३०॥ (१३७६-१९, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर साधू संगु परापती लिखिआ होइ लिलाट ॥ (१३७६-१९, सलोक, भगत कबीर जी)

पन्ना १३७७

मुकति पदारथु पाईऐ ठाक न अवघट घाट ॥२३१॥ (१३७७-१, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर एक घड़ी आधी घरी आधी हूं ते आध ॥ (१३७७-२, सलोक, भगत कबीर जी)
भगतन सेती गोसटे जो कीने सो लाभ ॥२३२॥ (१३७७-२, सलोक, भगत कबीर जी)

कबीर भाँग माछुली सुरा पानि जो जो प्रानी खाँहि ॥ (१३७७-२, सलोक, भगत कबीर जी)
तीर्थ बरत नेम कीए ते सभै रसातलि जाँहि ॥२३३॥ (१३७७-३, सलोक, भगत कबीर जी)
नीचे लोइन करि रहउ ले साजन घट माहि ॥ (१३७७-४, सलोक, भगत कबीर जी)
सभ रस खेलउ पीअ सउ किसी लखावउ नाहि ॥२३४॥ (१३७७-४, सलोक, भगत कबीर जी)
आठ जाम चउसठि घरी तुअ निरखत रहै जीउ ॥ (१३७७-५, सलोक, भगत कबीर जी)
नीचे लोइन किउ करउ सभ घट देखउ पीउ ॥२३५॥ (१३७७-५, सलोक, भगत कबीर जी)
सुनु सखी पीअ महि जीउ बसै जीअ महि बसै कि पीउ ॥ (१३७७-६, सलोक, भगत कबीर जी)
जीउ पीउ बूझउ नही घट महि जीउ कि पीउ ॥२३६॥ (१३७७-६, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर बामनु गुरू है जगत का भगतन का गुरु नाहि ॥ (१३७७-७, सलोक, भगत कबीर जी)
अरझि उरझि कै पचि मूआ चारउ बेदहु माहि ॥२३७॥ (१३७७-७, सलोक, भगत कबीर जी)
हरि है खाँडु रेतु महि बिखरी हाथी चुनी न जाइ ॥ (१३७७-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कहि कबीर गुरि भली बुझाई कीटी होइ कै खाइ ॥२३८॥ (१३७७-८, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जउ तुहि साध पिरम्म की सीसु काटि करि गोइ ॥ (१३७७-६, सलोक, भगत कबीर जी)
खेलत खेलत हाल करि जो किछु होइ त होइ ॥२३६॥ (१३७७-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जउ तुहि साध पिरम्म की पाके सेती खेलु ॥ (१३७७-१०, सलोक, भगत कबीर जी)
काची सरसउं पेलि कै ना खलि भई न तेलु ॥२४०॥ (१३७७-११, सलोक, भगत कबीर जी)
ढूंढत डोलहि अंध गति अरु चीनत नाही संत ॥ (१३७७-११, सलोक, भगत कबीर जी)
कहि नामा किउ पाईऐ बिनु भगतहु भगवंतु ॥२४१॥ (१३७७-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस ॥ (१३७७-१२, सलोक, भगत कबीर जी)
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास ॥२४२॥ (१३७७-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
कबीर जउ गृहु करहि त धरमु करु नाही त करु बैरागु ॥ (१३७७-१३, सलोक, भगत कबीर जी)
बैरागी बंधनु करै ता को बडो अभागु ॥२४३॥ (१३७७-१४, सलोक, भगत कबीर जी)
सलोक सेख फरीद के (१३७७-१५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३७७-१५)
जितु दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाइ ॥ (१३७७-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
मलकु जि कन्नी सुणीदा मुहु देखाले आइ ॥ (१३७७-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
जिंदु निमाणी कढीऐ हडा कू कड़काइ ॥ (१३७७-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
साहे लिखे न चलनी जिंदू कूं समझाइ ॥ (१३७७-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
जिंदु वहुटी मरणु वरु लै जासी परणाइ ॥ (१३७७-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
आपण हथी जोलि कै कै गलि लगै धाइ ॥ (१३७७-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
वालहु निकी पुरसलात कन्नी न सुणी आइ ॥ (१३७७-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आपु मुहाइ ॥१॥ (१३७७-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलाँ दुनीआँ भति ॥ (१३७७-१६, सलोक, सेख फरीद जी)

बंनि् उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥२॥ (१३७८-१, सलोक, सेख फरीद जी)
किझु न बुझै किझु न सुझै दुनीआ गुझी भाहि ॥ (१३७८-१, सलोक, सेख फरीद जी)
साँईं मेरै चंगा कीता नाही त हं भी दझाँ आहि ॥३॥ (१३७८-१, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जे जाणा तिल थोड़ड़े सम्मलि बुकु भरी ॥ (१३७८-२, सलोक, सेख फरीद जी)
जे जाणा सहु नंढड़ा ताँ थोड़ा माणु करी ॥४॥ (१३७८-२, सलोक, सेख फरीद जी)
जे जाणा लड़ु छिजणा पीडी पाईं गंढि ॥ (१३७८-३, सलोक, सेख फरीद जी)
तै जेवडु मै नाहि को सभु जगु डिठा हंढि ॥५॥ (१३७८-३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जे तू अकलि लतीफु काले लिखु न लेख ॥ (१३७८-४, सलोक, सेख फरीद जी)
आपनड़े गिरीवान महि सिरु नींवाँ करि देखु ॥६॥ (१३७८-४, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जो तै मारनि मुकीआँ तिना् न मारे घुंमि ॥ (१३७८-५, सलोक, सेख फरीद जी)
आपनड़ै घरि जाईऐ पैर तिना् दे चुंमि ॥७॥ (१३७८-५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जाँ तउ खटण वेल ताँ तू रता दुनी सिउ ॥ (१३७८-६, सलोक, सेख फरीद जी)
मरग सवाई नीहि जाँ भरिआ ताँ लदिआ ॥८॥ (१३७८-६, सलोक, सेख फरीद जी)
देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर ॥ (१३७८-७, सलोक, सेख फरीद जी)
अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि ॥९॥ (१३७८-७, सलोक, सेख फरीद जी)
देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु ॥ (१३७८-८, सलोक, सेख फरीद जी)
साँई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु ॥१०॥ (१३७८-८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा अखी देखि पतीणीआँ सुणि सुणि रीणे कन्न ॥ (१३७८-९, सलोक, सेख फरीद जी)
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वन्न ॥११॥ (१३७८-९, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा कालीं जिनी न राविआ धउली रावै कोइ ॥ (१३७८-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
करि साँई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ ॥१२॥ (१३७८-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
मः ३ ॥ (१३७८-११)
फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे ॥ (१३७८-११, सलोक, मः ३)
आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ ॥ (१३७८-११, सलोक, मः ३)
एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ ॥१३॥ (१३७८-१२, सलोक, मः ३)
फरीदा जिन् लोइण जगु मोहिआ से लोइण मै डिठु ॥ (१३७८-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
कजल रेख न सहदिआ से पंखी सूइ बहिठु ॥१४॥ (१३७८-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा कूकेदिआ चाँगेदिआ मती देदिआ नित ॥ (१३७८-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
जो सैतानि वंञाइआ से कित फेरहि चित ॥१५॥ (१३७८-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा थीउ पवाही दभु ॥ (१३७८-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
जे साँई लोड़हि सभु ॥ (१३७८-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
इकु छिजहि बिआ लताड़ीअहि ॥ (१३७८-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
ताँ साई दै दरि वाड़ीअहि ॥१६॥ (१३७८-१५, सलोक, सेख फरीद जी)

फरीदा खाकु न निंदीऐ खाकू जेडु न कोइ ॥ (१३७८-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
जीवदिआ पैरा तलै मुइआ उपरि होइ ॥१७॥ (१३७८-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जा लबु ता नेहु किआ लबु त कूड़ा नेहु ॥ (१३७८-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
किचरु झति लघाईऐ छपरि तुटै मेहु ॥१८॥ (१३७८-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जंगलु जंगलु किआ भवहि वणि कंडा मोड़ेहि ॥ (१३७८-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
वसी रबु हिआलीऐ जंगलु किआ ढूढेहि ॥१९॥ (१३७८-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा इनी निकी जंघीऐ थल डूंगर भविओम्हि ॥ (१३७८-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
अजु फरीदै कूजड़ा सै कोहाँ थीओमि ॥२०॥ (१३७८-१९, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा राती वडीआँ धुखि धुखि उठनि पास ॥ (१३७८-१९, सलोक, सेख फरीद जी)

पन्ना १३७९

धिगु तिन्हा दा जीविआ जिना विडाणी आस ॥२१॥ (१३७९-१, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जे मै होदा वारिआ मिता आइड़िआँ ॥ (१३७९-१, सलोक, सेख फरीद जी)
हेड़ा जलै मजीठ जिउ उपरि अंगारा ॥२२॥ (१३७९-२, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा लोड़ै दाख बिजउरीआँ किकरि बीजै जटु ॥ (१३७९-२, सलोक, सेख फरीद जी)
हंढै उंन कताइदा पैधा लोड़ै पटु ॥२३॥ (१३७९-३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥ (१३७९-३, सलोक, सेख फरीद जी)
चला त भिजै कम्बली रहाँ त तुटै नेहु ॥२४॥ (१३७९-४, सलोक, सेख फरीद जी)
भिजउ सिजउ कम्बली अलह वरसउ मेहु ॥ (१३७९-४, सलोक, सेख फरीद जी)
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥२५॥ (१३७९-४, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा मै भोलावा पग दा मतु मैली होइ जाइ ॥ (१३७९-५, सलोक, सेख फरीद जी)
गहिला रूहु न जाणई सिरु भी मिटी खाइ ॥२६॥ (१३७९-५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा सकर खंडु निवात गुड़ु माखिओु माँझा दुधु ॥ (१३७९-६, सलोक, सेख फरीद जी)
सभे वसतू मिठीआँ रब न पुजनि तुधु ॥२७॥ (१३७९-६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा रोटी मेरी काठ की लावणु मेरी भुख ॥ (१३७९-७, सलोक, सेख फरीद जी)
जिना खाधी चोपड़ी घणे सहनिगे दुख ॥२८॥ (१३७९-७, सलोक, सेख फरीद जी)
रुखी सुखी खाइ कै ठंढा पाणी पीउ ॥ (१३७९-८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा देखि पराई चोपड़ी ना तरसाए जीउ ॥२९॥ (१३७९-८, सलोक, सेख फरीद जी)
अजु न सुती कंत सिउ अंगु मुड़े मुड़ि जाइ ॥ (१३७९-९, सलोक, सेख फरीद जी)
जाइ पुछहु डोहागणी तुम किउ रैणि विहाइ ॥३०॥ (१३७९-९, सलोक, सेख फरीद जी)
साहुरै ढोई ना लहै पेईऐ नाही थाउ ॥ (१३७९-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
पिरु वातड़ी न पुछई धन सोहागणि नाउ ॥३१॥ (१३७९-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
साहुरै पेईऐ कंत की कंतु अगम्मु अथाहु ॥ (१३७९-११, सलोक, सेख फरीद जी)
नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥३२॥ (१३७९-११, सलोक, सेख फरीद जी)
नाती धोती सम्बही सुती आइ नचिंदु ॥ (१३७९-११, सलोक, सेख फरीद जी)

फरीदा रही सु बेड़ी हिंङु दी गई कथूरी गंधु ॥३३॥ (१३७६-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
जोबन जाँदे ना डराँ जे सह प्रीति न जाइ ॥ (१३७६-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा कितीं जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ ॥३४॥ (१३७६-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु ॥ (१३७६-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु ॥३५॥ (१३७६-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
बिरहा बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतानु ॥ (१३७६-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै सो तनु जाणु मसानु ॥३६॥ (१३७६-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा ए विसु गंदला धरीआँ खंडु लिवाड़ि ॥ (१३७६-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥३७॥ (१३७६-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा चारि गवाइआ हंढि कै चारि गवाइआ संमि ॥ (१३७६-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
लेखा रबु मंगेसीआ तू आँहो केरहे कंमि ॥३८॥ (१३७६-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा दरि दरवाजै जाइ कै किउ डिठो घड़ीआलु ॥ (१३७६-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
एहु निदोसाँ मारीऐ हम दोसाँ दा किआ हालु ॥३९॥ (१३७६-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
घड़ीए घड़ीए मारीऐ पहरी लहै सजाइ ॥ (१३७६-१९, सलोक, सेख फरीद जी)
सो हेड़ा घड़ीआल जिउ डुखी रैणि विहाइ ॥४०॥ (१३७६-१९, सलोक, सेख फरीद जी)

पन्ना १३८०

बुढा होआ सेख फरीदु कम्बणि लगी देह ॥ (१३८०-१, सलोक, सेख फरीद जी)
जे सउ वर्हिआ जीवणा भी तनु होसी खेह ॥४१॥ (१३८०-१, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा बारि पराइऐ बैसणा साँई मुझै न देहि ॥ (१३८०-१, सलोक, सेख फरीद जी)
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु लेहि ॥४२॥ (१३८०-२, सलोक, सेख फरीद जी)
कंधि कुहाड़ा सिरि घड़ा वणि कै सरु लोहारु ॥ (१३८०-२, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा हउ लोड़ी सहु आपणा तू लोड़हि अंगिआर ॥४३॥ (१३८०-३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा इकना आटा अगला इकना नाही लोणु ॥ (१३८०-३, सलोक, सेख फरीद जी)
अगै गए सिंञापसनि चोटाँ खासी कउणु ॥४४॥ (१३८०-४, सलोक, सेख फरीद जी)
पासि दमामे छतु सिरि भेरी सडो रड ॥ (१३८०-४, सलोक, सेख फरीद जी)
जाइ सुते जीराण महि थीए अतीमा गड ॥४५॥ (१३८०-५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ उसारेदे भी गए ॥ (१३८०-५, सलोक, सेख फरीद जी)
कूड़ा सउदा करि गए गोरी आइ पए ॥४६॥ (१३८०-६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा खिंथड़ि मेखा अगलीआ जिंदु न काई मेख ॥ (१३८०-६, सलोक, सेख फरीद जी)
वारी आपो आपणी चले मसाइक सेख ॥४७॥ (१३८०-७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा दुहु दीवी बलंदिआ मलकु बहिठा आइ ॥ (१३८०-७, सलोक, सेख फरीद जी)
गड़ु लीता घटु लुटिआ दीवड़े गइआ बुझाइ ॥४८॥ (१३८०-८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा वेखु कपाहै जि थीआ जि सिरि थीआ तिलाह ॥ (१३८०-८, सलोक, सेख फरीद जी)
कमादै अरु कागदै कुन्ने कोइलिआह ॥ (१३८०-९, सलोक, सेख फरीद जी)

मंदे अमल करेदिआ एह सजाइ तिनाह ॥४६॥ (१३८०-६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा कंनि मुसला सूफु गलि दिलि काती गुड़ु वाति ॥ (१३८०-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
बाहरि दिसै चानणा दिलि अंधिआरी राति ॥५०॥ (१३८०-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा रती रतु न निकलै जे तनु चीरै कोइ ॥ (१३८०-११, सलोक, सेख फरीद जी)
जो तन रते रब सिउ तिन तनि रतु न होइ ॥५१॥ (१३८०-११, सलोक, सेख फरीद जी)
मः ३ ॥ (१३८०-१२)
इहु तनु सभो रतु है रतु बिनु तंनु न होइ ॥ (१३८०-१२, सलोक, मः ३)
जो सह रते आपणे तितु तनि लोभु रतु न होइ ॥ (१३८०-१२, सलोक, मः ३)
भै पइऐ तनु खीणु होइ लोभु रतु विचहु जाइ ॥ (१३८०-१३, सलोक, मः ३)
जिउ बैसंतरि धातु सुधु होइ तिउ हरि का भउ दुरमति मैलु गवाइ ॥ (१३८०-१३, सलोक, मः ३)
नानक ते जन सोहणे जि रते हरि रंगु लाइ ॥५२॥ (१३८०-१४, सलोक, मः ३)
फरीदा सोई सरवरु ढूढि लहु जिथहु लभी वथु ॥ (१३८०-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
छपड़ि ढूढै किआ होवै चिकड़ि डुबै हथु ॥५३॥ (१३८०-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा नंढी कंतु न राविओ वडी थी मुईआसु ॥ (१३८०-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
धन कूकेंदी गोर में तै सह ना मिलीआसु ॥५४॥ (१३८०-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा सिरु पलिआ दाड़ी पली मुछाँ भी पलीआँ ॥ (१३८०-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
रे मन गहिले बावले माणहि किआ रलीआँ ॥५५॥ (१३८०-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा कोठे धुकणु केतड़ा पिर नीदड़ी निवारि ॥ (१३८०-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
जो दिह लधे गाणवे गए विलाड़ि विलाड़ि ॥५६॥ (१३८०-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥ (१३८०-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥५७॥ (१३८०-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा मंडप मालु न लाइ मरग सताणी चिति धरि ॥ (१३८०-१६, सलोक, सेख फरीद जी)

पन्ना १३८१

साई जाइ सम्हालि जिथै ही तउ वंञणा ॥५८॥ (१३८१-१, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जिन्ही कम्मी नाहि गुण ते कम्मड़े विसारि ॥ (१३८१-१, सलोक, सेख फरीद जी)
मतु सरमिंदा थीवही साँई दै दरबारि ॥५६॥ (१३८१-२, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा साहिब दी करि चाकरी दिल दी लाहि भराँदि ॥ (१३८१-२, सलोक, सेख फरीद जी)
दरवेसाँ नो लोड़ीऐ रुखाँ दी जीराँदि ॥६०॥ (१३८१-३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा काले मैडे कपड़े काला मैडा वेसु ॥ (१३८१-३, सलोक, सेख फरीद जी)
गुनही भरिआ मै फिरा लोकु कहै दरवेसु ॥६१॥ (१३८१-४, सलोक, सेख फरीद जी)
तती तोइ न पलवै जे जलि टुबी देइ ॥ (१३८१-४, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जो डोहागणि रब दी झूरेदी झूरेइ ॥६२॥ (१३८१-५, सलोक, सेख फरीद जी)
जाँ कुआरी ता चाउ वीवाही ताँ मामले ॥ (१३८१-५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा एहो पछोताउ वति कुआरी न थीऐ ॥६३॥ (१३८१-६, सलोक, सेख फरीद जी)

कलर केरी छपड़ी आइ उलथे हंझ ॥ (१३८१-६, सलोक, सेख फरीद जी)
चिंजू बोड़नि् ना पीवहि उडण संदी डंझ ॥६४॥ (१३८१-६, सलोक, सेख फरीद जी)
हंसु उडरि कोध्रै पइआ लोकु विडारणि जाइ ॥ (१३८१-७, सलोक, सेख फरीद जी)
गहिला लोकु न जाणदा हंसु न कोध्रा खाइ ॥६५॥ (१३८१-७, सलोक, सेख फरीद जी)
चलि चलि गईआँ पंखीआँ जिनी् वसाए तल ॥ (१३८१-८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा सरु भरिआ भी चलसी थके कवल इकल ॥६६॥ (१३८१-८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा इट सिराणे भुइ सवणु कीड़ा लड़िओ मासि ॥ (१३८१-९, सलोक, सेख फरीद जी)
केतड़िआ जुग वापरे इकतु पइआ पासि ॥६७॥ (१३८१-९, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा भन्नी घड़ी सवन्नवी टुटी नागर लजु ॥ (१३८१-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
अजराईलु फरेसता कै घरि नाठी अजु ॥६८॥ (१३८१-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा भन्नी घड़ी सवन्नवी टूटी नागर लजु ॥ (१३८१-११, सलोक, सेख फरीद जी)
जो सजण भुइ भारु थे से किउ आवहि अजु ॥६९॥ (१३८१-११, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा बे निवाजा कुतिआ एह न भली रीति ॥ (१३८१-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
कबही चलि न आइआ पंजे वखत मसीति ॥७०॥ (१३८१-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
उठु फरीदा उजू साजि सुबह निवाज गुजारि ॥ (१३८१-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
जो सिरु साँई ना निवै सो सिरु कपि उतारि ॥७१॥ (१३८१-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
जो सिरु साई ना निवै सो सिरु कीजै काँइ ॥ (१३८१-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
कुन्ने हेठि जलाईऐ बालण संदै थाइ ॥७२॥ (१३८१-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा किथै तैडे मापिआ जिनी् तू जणिओहि ॥ (१३८१-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
तै पासहु ओइ लदि गए तूं अजै न पतीणोहि ॥७३॥ (१३८१-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा मनु मैदानु करि टोए टिबे लाहि ॥ (१३८१-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
अगै मूलि न आवसी दोजक संदी भाहि ॥७४॥ (१३८१-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
महला ५ ॥ (१३८१-१७)
फरीदा खालकु खलक महि खलक वसै रब माहि ॥ (१३८१-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
मंदा किस नो आखीऐ जाँ तिसु बिनु कोई नाहि ॥७५॥ (१३८१-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख ॥ (१३८१-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
पवनि न इती मामले सहाँ न इती दुख ॥७६॥ (१३८१-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
चबण चलण रतन्न से सुणीअर बहि गए ॥ (१३८१-१९, सलोक, सेख फरीद जी)
हेड़े मुती धाह से जानी चलि गए ॥७७॥ (१३८१-१९, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥ (१३८१-१९, सलोक, सेख फरीद जी)

पन्ना १३८२

देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥७८॥ (१३८२-१, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बागु ॥ (१३८२-१, सलोक, सेख फरीद जी)
नउबति वजी सुबह सिउ चलण का करि साजु ॥७९॥ (१३८२-२, सलोक, सेख फरीद जी)

फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥ (१३८२-२, सलोक, सेख फरीद जी)
जिन्हा नैण नींद्रावले तिन्हा मिलणु कुआउ ॥८०॥ (१३८२-३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा मै जानिआ दुखु मुझ कू दुखु सबाइऐ जगि ॥ (१३८२-३, सलोक, सेख फरीद जी)
ऊचे चड़ि कै देखिआ ताँ घरि घरि एहा अगि ॥८१॥ (१३८२-४, सलोक, सेख फरीद जी)
महला ५ ॥ (१३८२-४)
फरीदा भूमि रंगावली मंझि विसूला बाग ॥ (१३८२-५, सलोक, सेख फरीद जी)
जो जन पीरि निवाजिआ तिन्हा अंच न लाग ॥८२॥ (१३८२-५, सलोक, सेख फरीद जी)
महला ५ ॥ (१३८२-६)
फरीदा उमर सुहावड़ी संगि सुवन्नड़ी देह ॥ (१३८२-६, सलोक, सेख फरीद जी)
विरले केई पाईअनि जिन्हा पिआरे नेह ॥८३॥ (१३८२-६, सलोक, सेख फरीद जी)
कंधी वहण न ढाहि तउ भी लेखा देवणा ॥ (१३८२-७, सलोक, सेख फरीद जी)
जिधरि रब रजाइ वहणु तिदाऊ गंउ करे ॥८४॥ (१३८२-७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा डुखा सेती दिहु गइआ सूलाँ सेती राति ॥ (१३८२-७, सलोक, सेख फरीद जी)
खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कपर वाति ॥८५॥ (१३८२-८, सलोक, सेख फरीद जी)
लम्मी लम्मी नदी वहै कंधी केरै हेति ॥ (१३८२-८, सलोक, सेख फरीद जी)
बेड़े नो कपरु किआ करे जे पातण रहै सुचेति ॥८६॥ (१३८२-९, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा गलंी सु सजण वीह इकु ढूंढेदी न लहाँ ॥ (१३८२-९, सलोक, सेख फरीद जी)
धुखाँ जिउ माँलीह कारणि तिन्हा मा पिरी ॥८७॥ (१३८२-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा इहु तनु भउकणा नित नित दुखीऐ कउणु ॥ (१३८२-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
कन्नी बुजे दे रहाँ किती वगै पउणु ॥८८॥ (१३८२-११, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा रब खजूरी पकीआँ माखिअ नई वहंन्हि ॥ (१३८२-११, सलोक, सेख फरीद जी)
जो जो वंञैं डीहड़ा सो उमर हथ पवंनि ॥८९॥ (१३८२-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआँ खूंडहि काग ॥ (१३८२-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग ॥९०॥ (१३८२-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु ॥ (१३८२-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ॥९१॥ (१३८२-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥ (१३८२-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥९२॥ (१३८२-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा गोर निमाणी सडु करे निघरिआ घरि आउ ॥ (१३८२-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
सरपर मैथै आवणा मरणहु न डरिआहु ॥९३॥ (१३८२-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
एनी लोइणी देखदिआ केती चलि गई ॥ (१३८२-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा लोकाँ आपो आपणी मै आपणी पई ॥९४॥ (१३८२-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
आपु सवारहि मै मिलहि मै मिलिआ सुखु होइ ॥ (१३८२-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा जे तू मेरा होइ रहहि सभु जगु तेरा होइ ॥९५॥ (१३८२-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
कंधी उतै रुखड़ा किचरकु बन्नै धीरु ॥ (१३८२-१८, सलोक, सेख फरीद जी)

फरीदा कचै भाँडै रखीऐ किचरु ताई नीरु ॥९६॥ (१३८२-१९, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा महल निसखण रहि गए वासा आइआ तलि ॥ (१३८२-१९, सलोक, सेख फरीद जी)

पन्ना १३८३

गोराँ से निमाणीआ बहसनि रूहाँ मलि ॥ (१३८३-१, सलोक, सेख फरीद जी)
आखीं सेखा बंदगी चलणु अजु कि कलि ॥९७॥ (१३८३-१, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा मउतै दा बन्ना एवै दिसै जिउ दरीआवै ढाहा ॥ (१३८३-२, सलोक, सेख फरीद जी)
अगै दोजकु तपिआ सुणीऐ हूल पवै काहाहा ॥ (१३८३-२, सलोक, सेख फरीद जी)
इकना नो सभ सोझी आई इकि फिरदे वेपरवाहा ॥ (१३८३-३, सलोक, सेख फरीद जी)
अमल जि कीतिआ दुनी विचि से दरगह ओगाहा ॥९८॥ (१३८३-३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा दरीआवै कन्नै बगुला बैठा केल करे ॥ (१३८३-४, सलोक, सेख फरीद जी)
केल करेदे हंझ नो अचिंते बाज पए ॥ (१३८३-४, सलोक, सेख फरीद जी)
बाज पए तिसु रब दे केलाँ विसरीआँ ॥ (१३८३-४, सलोक, सेख फरीद जी)
जो मनि चिति न चेते सनि सो गाली रब कीआँ ॥९९॥ (१३८३-५, सलोक, सेख फरीद जी)
साढे त्रै मण देहुरी चलै पाणी अंनि ॥ (१३८३-५, सलोक, सेख फरीद जी)
आइओ बंदा दुनी विचि वति आसूणी बंन्हि ॥ (१३८३-६, सलोक, सेख फरीद जी)
मलकल मउत जाँ आवसी सभ दरवाजे भंनि ॥ (१३८३-६, सलोक, सेख फरीद जी)
तिन्हा पिआरिआ भाईआँ अगै दिता बंन्हि ॥ (१३८३-७, सलोक, सेख फरीद जी)
वेखहु बंदा चलिआ चहु जणिआ दै कंन्हि ॥ (१३८३-७, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा अमल जि कीते दुनी विचि दरगह आए कंमि ॥१००॥ (१३८३-८, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा हउ बलिहारी तिन्ह पंखीआ जंगलि जिन्हा वासु ॥ (१३८३-८, सलोक, सेख फरीद जी)
ककरु चुगनि थलि वसनि रब न छोडनि पासु ॥१०१॥ (१३८३-९, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा रुति फिरी वणु कंबिआ पत झड़े झड़ि पाहि ॥ (१३८३-९, सलोक, सेख फरीद जी)
चारे कुंडा ढूंढीआँ रहणु किथाऊ नाहि ॥१०२॥ (१३८३-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा पाड़ि पटोला धज करी कम्बलड़ी पहिरेउ ॥ (१३८३-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
जिन्ही वेसी सहु मिलै सेई वेस करेउ ॥१०३॥ (१३८३-११, सलोक, सेख फरीद जी)
मः ३ ॥ (१३८३-११)
काइ पटोला पाड़ती कम्बलड़ी पहिरेइ ॥ (१३८३-११, सलोक, मः ३)
नानक घर ही बैठिआ सहु मिलै जे नीअति रासि करेइ ॥१०४॥ (१३८३-१२, सलोक, मः ३)
मः ५ ॥ (१३८३-१३)
फरीदा गरबु जिन्हा वडिआईआ धनि जोबनि आगाह ॥ (१३८३-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
खाली चले धणी सिउ टिबे जिउ मीहाहु ॥१०५॥ (१३८३-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा तिना मुख डरावणे जिना विसारिओनु नाउ ॥ (१३८३-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
ऐथै दुख घणेरिआ अगै ठउर न ठाउ ॥१०६॥ (१३८३-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा पिछल राति न जागिओहि जीवदड़ो मुइओहि ॥ (१३८३-१५, सलोक, सेख फरीद जी)

जे तै रबु विसारिआ त रबि न विसरिओहि ॥१०७॥ (१३८३-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
मः ५ ॥ (१३८३-१६)
फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥ (१३८३-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
अलह सेती रतिआ एहु सचावाँ साजु ॥१०८॥ (१३८३-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
मः ५ ॥ (१३८३-१७)
फरीदा दुखु सुखु इकु करि दिल ते लाहि विकारु ॥ (१३८३-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
अलह भावै सो भला ताँ लभी दरबारु ॥१०६॥ (१३८३-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
मः ५ ॥ (१३८३-१८)
फरीदा दुनी वजाई वजदी तूं भी वजहि नालि ॥ (१३८३-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
सोई जीउ न वजदा जिसु अलहु करदा सार ॥११०॥ (१३८३-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
मः ५ ॥ (१३८३-१६)
फरीदा दिलु रता इसु दुनी सिउ दुनी न कितै कंमि ॥ (१३८३-१६, सलोक, सेख फरीद जी)

पन्ना १३८४

मिसल फकीराँ गाखड़ी सु पाईऐ पूर करंमि ॥१११॥ (१३८४-१, सलोक, सेख फरीद जी)
पहिलै पहरै फुलड़ा फलु भी पछा राति ॥ (१३८४-१, सलोक, सेख फरीद जी)
जो जागंन्हि लहंनि से साई कन्नो दाति ॥११२॥ (१३८४-२, सलोक, सेख फरीद जी)
दाती साहिब संदीआ किआ चलै तिसु नालि ॥ (१३८४-२, सलोक, सेख फरीद जी)
इकि जागंदे ना लहन्हि इकन्हा सुतिआ देइ उठालि ॥११३॥ (१३८४-२, सलोक, सेख फरीद जी)
ढूढेदीए सुहाग कू तउ तनि काई कोर ॥ (१३८४-३, सलोक, सेख फरीद जी)
जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर ॥११४॥ (१३८४-४, सलोक, सेख फरीद जी)
सबर मंझ कमाण ए सबरु का नीहणो ॥ (१३८४-४, सलोक, सेख फरीद जी)
सबर संदा बाणु खालकु खता न करी ॥११५॥ (१३८४-४, सलोक, सेख फरीद जी)
सबर अंदरि साबरी तनु एवै जालेन्हि ॥ (१३८४-५, सलोक, सेख फरीद जी)
होनि नजीकि खुदाइ दै भेतु न किसै देनि ॥११६॥ (१३८४-५, सलोक, सेख फरीद जी)
सबरु एहु सुआउ जे तूं बंदा दिड़ु करहि ॥ (१३८४-६, सलोक, सेख फरीद जी)
वधि थीवहि दरीआउ टुटि न थीवहि वाहड़ा ॥११७॥ (१३८४-६, सलोक, सेख फरीद जी)
फरीदा दरवेसी गाखड़ी चोपड़ी परीति ॥ (१३८४-७, सलोक, सेख फरीद जी)
इकनि किनै चालीऐ दरवेसावी रीति ॥११८॥ (१३८४-७, सलोक, सेख फरीद जी)
तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि ॥ (१३८४-८, सलोक, सेख फरीद जी)
पैरी थकाँ सिरि जुलाँ जे मूं पिरी मिलंन्हि ॥११६॥ (१३८४-८, सलोक, सेख फरीद जी)
तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ (१३८४-६, सलोक, सेख फरीद जी)
सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी निहालि ॥१२०॥ (१३८४-६, सलोक, सेख फरीद जी)
हउ ढूढेदी सजणा सजणु मैडे नालि ॥ (१३८४-१०, सलोक, सेख फरीद जी)
नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देइ दिखालि ॥१२१॥ (१३८४-१०, सलोक, सेख फरीद जी)

हंसा देखि तरंदिआ बगा आइआ चाउ ॥ (१३८४-११, सलोक, सेख फरीद जी)
डुबि मुए बग बपुड़े सिरु तलि उपरि पाउ ॥१२२॥ (१३८४-११, सलोक, सेख फरीद जी)
मै जाणिआ वड हंसु है ताँ मै कीता संगु ॥ (१३८४-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
जे जाणा बगु बपुड़ा जनमि न भेड़ी अंगु ॥१२३॥ (१३८४-१२, सलोक, सेख फरीद जी)
किआ हंसु किआ बगुला जा कउ नदरि धरे ॥ (१३८४-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
जे तिसु भावै नानका कागहु हंसु करे ॥१२४॥ (१३८४-१३, सलोक, सेख फरीद जी)
सरवर पंखी हेकड़ो फाहीवाल पचास ॥ (१३८४-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
इहु तनु लहरी गडु थिआ सचे तेरी आस ॥१२५॥ (१३८४-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
कवणु सु अखरु कवणु गुणु कवणु सु मणीआ मंतु ॥ (१३८४-१४, सलोक, सेख फरीद जी)
कवणु सु वेसो हउ करी जितु वसि आवै कंतु ॥१२६॥ (१३८४-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
निवणु सु अखरु खवणु गुणु जिहबा मणीआ मंतु ॥ (१३८४-१५, सलोक, सेख फरीद जी)
ए त्रै भैणे वेस करि ताँ वसि आवी कंतु ॥१२७॥ (१३८४-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
मति होदी होइ इआणा ॥ (१३८४-१६, सलोक, सेख फरीद जी)
ताण होदे होइ निताणा ॥ (१३८४-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
अणहोदे आपु वंडाए ॥ (१३८४-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
को ऐसा भगतु सदाए ॥१२८॥ (१३८४-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
इकु फिका न गालाइ सभना मै सचा धणी ॥ (१३८४-१७, सलोक, सेख फरीद जी)
हिआउ न कैही ठाहि माणक सभ अमोलवे ॥१२९॥ (१३८४-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
सभना मन माणिक ठाहणु मूलि मचाँगवा ॥ (१३८४-१८, सलोक, सेख फरीद जी)
जे तउ पिरीआ दी सिक हिआउ न ठाहे कही दा ॥१३०॥ (१३८४-१९, सलोक, सेख फरीद जी)

पन्ना १३८५

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१३८५-१)
सवये स्री मुखबाक्य महला ५ ॥ (१३८५-३)
आदि पुरख करतार करण कारण सभ आपे ॥ (१३८५-४, सवये, मः ५)
सर्ब रहिओ भरपूरि सगल घट रहिओ बिआपे ॥ (१३८५-४, सवये, मः ५)
ब्यापतु देखीऐ जगति जानै कउनु तेरी गति सर्ब की रख्या करै आपे हरि पति ॥ (१३८५-५, सवये, मः ५)
अबिनासी अबिगत आपे आपि उतपति ॥ (१३८५-५, सवये, मः ५)
एकै तूही एकै अन नाही तुम भति ॥ (१३८५-६, सवये, मः ५)
हरि अंतु नाही पारावारु कउनु है करै बीचारु जगत पिता है स्रब प्रान को अधारु ॥ (१३८५-६, सवये, मः ५)
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रह्म समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (१३८५-७, सवये, मः ५)
हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥१॥ (१३८५-८, सवये, मः ५)
अमृत प्रवाह सरि अतुल भंडार भरि परै ही ते परै अपर अपार परि ॥ (१३८५-८, सवये, मः ५)
आपुनो भावनु करि मंतृ न दूसरो धरि ओपति परलौ एकै निमख तु घरि ॥ (१३८५-९, सवये, मः ५)
आन नाही समसरि उजीआरो निरमरि कोटि पराछत जाहि नाम लीए हरि हरि ॥ (१३८५-१०, सवये, मः ५)

जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रह्म समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (१३८५-११, सवये, मः ५)
हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥२॥ (१३८५-११, सवये, मः ५)
सगल भवन धारे एक थें कीए बिसथारे पूरि रहिओ स्रब महि आपि है निरारे ॥ (१३८५-१२, सवये, मः ५)
हरि गुन नाही अंत पारे जीअ जंत सभि थारे सगल को दाता एकै अलख मुरारे ॥ (१३८५-१३, सवये, मः ५)

पन्ना १३८६

आप ही धारन धारे कुदरति है देखारे बरनु चिहनु नाही मुख न मसारे ॥ (१३८६-१, सवये, मः ५)
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रह्म समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (१३८६-१, सवये, मः ५)
हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥३॥ (१३८६-२, सवये, मः ५)
सर्ब गुण निधानं कीमति न ज्ञानं ध्यानं ऊचे ते ऊचौ जानीजै प्रभ तेरो थानं ॥ (१३८६-३, सवये, मः ५)
मनु धनु तेरो प्रानं एकै सूति है जहानं कवन उपमा देउ बडे ते बडानं ॥ (१३८६-३, सवये, मः ५)
जानै कउनु तेरो भेउ अलख अपार देउ अकल कला है प्रभ सर्ब को धानं ॥ (१३८६-४, सवये, मः ५)
जनु नानकु भगतु दरि तुलि ब्रह्म समसरि एक जीह किआ बखानै ॥ (१३८६-५, सवये, मः ५)
हाँ कि बलि बलि बलि बलि सद बलिहारि ॥४॥ (१३८६-५, सवये, मः ५)
निरंकारु आकार अछल पूरन अबिनासी ॥ (१३८६-६, सवये, मः ५)
हरखवंत आनंत रूप निर्मल बिगासी ॥ (१३८६-६, सवये, मः ५)
गुण गावहि बेअंत अंतु इकु तिलु नही पासी ॥ (१३८६-७, सवये, मः ५)
जा कउ होंहि कृपाल सु जनु प्रभ तुमहि मिलासी ॥ (१३८६-७, सवये, मः ५)
धंनि धंनि ते धंनि जन जिह कृपालु हरि हरि भ्यउ ॥ (१३८६-८, सवये, मः ५)
हरि गुरु नानकु जिन परसिअउ सि जनम मरण दुह थे रहिओ ॥५॥ (१३८६-८, सवये, मः ५)
सति सति हरि सति सति सते सति भणीऐ ॥ (१३८६-९, सवये, मः ५)
दूसर आन न अवरु पुरखु पऊरातनु सुणीऐ ॥ (१३८६-९, सवये, मः ५)
अमृतु हरि को नामु लैत मनि सभ सुख पाए ॥ (१३८६-१०, सवये, मः ५)
जेह रसन चाखिओ तेह जन तृपति अघाए ॥ (१३८६-१०, सवये, मः ५)
जिह ठाकुरु सुप्रसन्नु भयो सतसंगति तिह पिआरु ॥ (१३८६-११, सवये, मः ५)
हरि गुरु नानकु जिन् परसिओ तिन् सभ कुल कीओ उधारु ॥६॥ (१३८६-११, सवये, मः ५)
सचु सभा दीबाणु सचु सचे पहि धरिओ ॥ (१३८६-१२, सवये, मः ५)
सचै तखति निवासु सचु तपावसु करिओ ॥ (१३८६-१२, सवये, मः ५)
सचि सिरज्यिउ संसारु आपि आभुलु न भुलउ ॥ (१३८६-१३, सवये, मः ५)
रतन नामु अपारु कीम नहु पवै अमुलउ ॥ (१३८६-१३, सवये, मः ५)
जिह कृपालु होयउ गोबिंदु सर्ब सुख तिनहू पाए ॥ (१३८६-१४, सवये, मः ५)
हरि गुरु नानकु जिन् परसिओ ते बहुड़ि फिरि जोनि न आए ॥७॥ (१३८६-१४, सवये, मः ५)
कवनु जोगु कउनु ज्ञानु ध्यानु कवन बिधि उस्तति करीऐ ॥ (१३८६-१५, सवये, मः ५)
सिध साधिक तेतीस कोरि तिरु कीम न परीऐ ॥ (१३८६-१६, सवये, मः ५)
ब्रहमादिक सनकादि सेख गुण अंतु न पाए ॥ (१३८६-१६, सवये, मः ५)

अगहु गहिओ नही जाइ पूरि स्रब रहिओ समाए ॥ (१३८६-१७, सवये, मः ५)
जिह काटी सिलक दयाल प्रभि सेइ जन लगे भगते ॥ (१३८६-१७, सवये, मः ५)
हरि गुरु नानकु जिन् परसिओ ते इत उत सदा मुकते ॥८॥ (१३८६-१८, सवये, मः ५)
प्रभ दातउ दातार परियउ जाचकु इकु सरना ॥ (१३८६-१८, सवये, मः ५)
मिलै दानु संत रेन जेह लगि भउजलु तरना ॥ (१३८६-१९, सवये, मः ५)
बिनति करउ अरदासि सुनहु जे ठाकुर भावै ॥ (१३८६-१९, सवये, मः ५)

पन्ना १३८७

देहु दरसु मनि चाउ भगति इहु मनु ठहरावै ॥ (१३८७-१, सवये, मः ५)
बलिओ चरागु अंध्यार महि सभ कलि उधरी इक नाम धर्म ॥ (१३८७-१, सवये, मः ५)
प्रगटु सगल हरि भवन महि जनु नानकु गुरु पारब्रह्म ॥९॥ (१३८७-२, सवये, मः ५)
सवये स्री मुखबाक्य महला ५ (१३८७-३)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३८७-३)
काची देह मोह फुनि बाँधी सठ कठोर कुचील कुगिआनी ॥ (१३८७-४, सवये, मः ५)
धावत भ्रमत रहनु नही पावत पारब्रह्म की गति नही जानी ॥ (१३८७-४, सवये, मः ५)
जोबन रूप माइआ मद माता बिचरत बिकल बडौ अभिमानी ॥ (१३८७-५, सवये, मः ५)
पर धन पर अपवाद नारि निंदा यह मीठी जीअ माहि हितानी ॥ (१३८७-५, सवये, मः ५)
बलबंच छपि करत उपावा पेखत सुनत प्रभ अंतरजामी ॥ (१३८७-६, सवये, मः ५)
सील धर्म दया सुच नास्ति आइओ सरनि जीअ के दानी ॥ (१३८७-७, सवये, मः ५)
कारण करण समरथ सिरीधर राखि लेहु नानक के सुआमी ॥१॥ (१३८७-७, सवये, मः ५)
कीरति करन सरन मनमोहन जोहन पाप बिदारन कउ ॥ (१३८७-८, सवये, मः ५)
हरि तारन तरन समरथ सभै बिधि कुलह समूह उधारन सउ ॥ (१३८७-९, सवये, मः ५)
चित चेति अचेत जानि सतसंगति भर्म अंधेर मोहिओ कत धंउ ॥ (१३८७-९, सवये, मः ५)
मूरत घरी चसा पलु सिमरन राम नामु रसना संगि लउ ॥ (१३८७-१०, सवये, मः ५)
होछउ काजु अलप सुख बंधन कोटि जनम्म कहा दुख भंउ ॥ (१३८७-१०, सवये, मः ५)
सिख्या संत नामु भजु नानक राम रंगि आतम सिउ रंउ ॥२॥ (१३८७-११, सवये, मः ५)
रंचक रेत खेत तनि निरमित दुरलभ देह सवारि धरी ॥ (१३८७-१२, सवये, मः ५)
खान पान सोधे सुख भुंचत संकट काटि बिपति हरी ॥ (१३८७-१२, सवये, मः ५)
मात पिता भाई अरु बंधप बूझन की सभ सूझ परी ॥ (१३८७-१३, सवये, मः ५)
बरधमान होवत दिन प्रति नित आवत निकटि बिखम्म जरी ॥ (१३८७-१३, सवये, मः ५)
रे गुन हीन दीन माइआ कृम सिमरि सुआमी एक घरी ॥ (१३८७-१४, सवये, मः ५)
करु गहि लेहु कृपाल कृपा निधि नानक काटि भरम्म भरी ॥३॥ (१३८७-१४, सवये, मः ५)
रे मन मूस बिला महि गरबत करतब करत महाँ मुघनाँ ॥ (१३८७-१५, सवये, मः ५)
सम्पत दोल झोल संगि झूलत माइआ मगन भ्रमत घुघना ॥ (१३८७-१६, सवये, मः ५)
सुत बनिता साजन सुख बंधप ता सिउ मोहु बढिओ सु घना ॥ (१३८७-१६, सवये, मः ५)

बोइओ बीजु अहं मम अंकुरु बीतत अउध करत अघनाँ ॥ (१३८७-१७, सवये, मः ५)
मिरतु मंजार पसारि मुखु निरखत भुंचत भुगति भूख भुखना ॥ (१३८७-१७, सवये, मः ५)
सिमरि गुपाल दइआल सतसंगति नानक जगु जानत सुपना ॥४॥ (१३८७-१८, सवये, मः ५)

पन्ना १३८८

देह न गेह न नेह न नीता माइआ मत कहा लउ गारहु ॥ (१३८८-१, सवये, मः ५)
छत्र न पत्र न चउर न चावर बहती जात रिदै न बिचारहु ॥ (१३८८-१, सवये, मः ५)
रथ न अस्व न गज सिंघासन छिन महि तिआगत नाँग सिधारहु ॥ (१३८८-२, सवये, मः ५)
सूर न बीर न मीर न खानम संगि न कोऊ द्रिसटि निहारहु ॥ (१३८८-३, सवये, मः ५)
कोट न ओट न कोस न छोटा करत बिकार दोऊ कर झारहु ॥ (१३८८-३, सवये, मः ५)
मित्र न पुत्र कलत्र साजन सख उलटत जात बिरख की छाँरहु ॥ (१३८८-४, सवये, मः ५)
दीन दयाल पुरख प्रभ पूरन छिन छिन सिमरहु अगम अपारहु ॥ (१३८८-५, सवये, मः ५)
स्रीपति नाथ सरणि नानक जन हे भगवंत क्रिपा करि तारहु ॥५॥ (१३८८-५, सवये, मः ५)
प्रान मान दान मग जोहन हीतु चीतु दे ले ले पारी ॥ (१३८८-६, सवये, मः ५)
साजन सैन मीत सुत भाई ताहू ते ले रखी निरारी ॥ (१३८८-६, सवये, मः ५)
धावन पावन कूर कमावन इह बिधि करत अउध तन जारी ॥ (१३८८-७, सवये, मः ५)
कर्म धर्म संजम सुच नेमा चंचल संगि सगल बिधि हारी ॥ (१३८८-८, सवये, मः ५)
पसु पंखी बिरख असथावर बहु बिधि जोनि भ्रमिओ अति भारी ॥ (१३८८-८, सवये, मः ५)
खिनु पलु चसा नामु नही सिमरिओ दीना नाथ प्रानपति सारी ॥ (१३८८-९, सवये, मः ५)
खान पान मीठ रस भोजन अंत की बार होत कत खारी ॥ (१३८८-९, सवये, मः ५)
नानक संत चरन संगि उधरे होरि माइआ मगन चले सभि डारी ॥६॥ (१३८८-१०, सवये, मः ५)
ब्रहमादिक सिव छंद मुनीसुर रसकि रसकि ठाकुर गुन गावत ॥ (१३८८-११, सवये, मः ५)
इंद्र मुनिंद्र खोजते गोरख धरणि गगन आवत फुनि धावत ॥ (१३८८-११, सवये, मः ५)
सिध मनुख्य देव अरु दानव इकु तिलु ता को मरमु न पावत ॥ (१३८८-१२, सवये, मः ५)
प्रिअ प्रभ प्रीति प्रेम रस भगती हरि जन ता कै दरसि समावत ॥ (१३८८-१३, सवये, मः ५)
तिसहि तिआगि आन कउ जाचहि मुख दंत रसन सगल घसि जावत ॥ (१३८८-१३, सवये, मः ५)
रे मन मूड़ सिमरि सुखदाता नानक दास तुझहि समझावत ॥७॥ (१३८८-१४, सवये, मः ५)
माइआ रंग बिरंग करत भ्रम मोह कै कूपि गुबारि परिओ है ॥ (१३८८-१५, सवये, मः ५)
एता गबु अकासि न मावत बिसटा अस्त क्रिमि उदरु भरिओ है ॥ (१३८८-१५, सवये, मः ५)
दह दिस धाइ महा बिखिआ कउ पर धन छीनि अगिआन हरिओ है ॥ (१३८८-१६, सवये, मः ५)
जोबन बीति जरा रोगि ग्रसिओ जमदूतन डन्नु मिरतु मरिओ है ॥ (१३८८-१७, सवये, मः ५)
अनिक जोनि संकट नरक भुंचत सासन दूख गरति गरिओ है ॥ (१३८८-१७, सवये, मः ५)
प्रेम भगति उधरहि से नानक करि किरपा संतु आपि करिओ है ॥८॥ (१३८८-१८, सवये, मः ५)
गुण समूह फल सगल मनोरथ पूरन होई आस हमारी ॥ (१३८८-१९, सवये, मः ५)
अउखध मंत्र तंत्र पर दुख हर सर्ब रोग खंडण गुणकारी ॥ (१३८८-१९, सवये, मः ५)

काम क्रोध मद मतसर तृसना बिनसि जाहि हरि नामु उचारी ॥ (१३८६-१, सवये, मः ५)
इसनान दान तापन सुचि किरिआ चरण कमल हिरदै प्रभ धारी ॥ (१३८६-२, सवये, मः ५)
साजन मीत सखा हरि बंधप जीअ धान प्रभ प्रान अधारी ॥ (१३८६-२, सवये, मः ५)
ओट गही सुआमी समरथह नानक दास सदा बलिहारी ॥६॥ (१३८६-३, सवये, मः ५)
आवध कटिओ न जात प्रेम रस चरन कमल संगि ॥ (१३८६-३, सवये, मः ५)
दावनि बंधिओ न जात बिधे मन दरस मगि ॥ (१३८६-४, सवये, मः ५)
पावक जरिओ न जात रहिओ जन धूरि लगि ॥ (१३८६-४, सवये, मः ५)
नीरु न साकसि बोरि चलहि हरि पंथि पगि ॥ (१३८६-५, सवये, मः ५)
नानक रोग दोख अघ मोह छिदे हरि नाम खगि ॥१॥१०॥ (१३८६-५, सवये, मः ५)
उदमु करि लागे बहु भाती बिचरहि अनिक सासत्र बहु खटूआ ॥ (१३८६-६, सवये, मः ५)
भसम लगाइ तीर्थ बहु भ्रमते सूखम देह बंधहि बहु जटूआ ॥ (१३८६-७, सवये, मः ५)
बिनु हरि भजन सगल दुख पावत जिउ प्रेम बढाइ सूत के हटूआ ॥ (१३८६-७, सवये, मः ५)
पूजा चक्र करत सोमपाका अनिक भाँति थाटहि करि थटूआ ॥२॥११॥२०॥ (१३८६-८, सवये, मः ५)
सवईए महले पहिले के १ (१३८६-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३८६-१०)
इक मनि पुरखु धिआइ बरदाता ॥ (१३८६-११, सवईए महले पहिले के, कल)
संत सहारु सदा बिखिआता ॥ (१३८६-११, सवईए महले पहिले के, कल)
तासु चरन ले रिदै बसावउ ॥ (१३८६-११, सवईए महले पहिले के, कल)
तउ पर्म गुरू नानक गुन गावउ ॥१॥ (१३८६-१२, सवईए महले पहिले के, कल)
गावउ गुन पर्म गुरू सुख सागर दुरत निवारण सबद सरे ॥ (१३८६-१२, सवईए महले पहिले के, कल)
गावहि गम्भीर धीर मति सागर जोगी जंगम धिआनु धरे ॥ (१३८६-१३, सवईए महले पहिले के, कल)
गावहि इंद्रादि भगत प्रहिलादिक आतम रसु जिनि जाणिओ ॥ (१३८६-१३, सवईए महले पहिले के, कल)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥२॥ (१३८६-१४, सवईए महले पहिले के, कल)
गावहि जनकादि जुगति जोगेसुर हरि रस पूरन सर्ब कला ॥ (१३८६-१५, सवईए महले पहिले के, कल)
गावहि सनकादि साध सिधादिक मुनि जन गावहि अछल छला ॥ (१३८६-१५, सवईए महले पहिले के, कल)
गावै गुण धोमु अटल मंडलवै भगति भाइ रसु जाणिओ ॥ (१३८६-१६, सवईए महले पहिले के, कल)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥३॥ (१३८६-१७, सवईए महले पहिले के, कल)
गावहि कपिलादि आदि जोगेसुर अपरम्पर अवतार वरो ॥ (१३८६-१७, सवईए महले पहिले के, कल)
गावै जमदगनि परसरामेसुर कर कुठारु रघु तेजु हरिओ ॥ (१३८६-१८, सवईए महले पहिले के, कल)
उधौ अक्रूरु बिदरु गुण गावै सरबातमु जिनि जाणिओ ॥ (१३८६-१९, सवईए महले पहिले के, कल)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥४॥ (१३८६-१९, सवईए महले पहिले के, कल)

पन्ना १३६०

गावहि गुण बरन चारि खट दरसन ब्रहमादिक सिमरंथि गुना ॥ (१३६०-१, सवईए महले पहिले के, कल)
गावै गुण सेसु सहस जिहबा रस आदि अंति लिव लागि धुना ॥ (१३६०-२, सवईए महले पहिले के, कल)
गावै गुण महादेउ बैरागी जिनि धिआन निरंतरि जाणिओ ॥ (१३६०-२, सवईए महले पहिले के, कल)
कबि कल सुजसु गावउ गुर नानक राजु जोगु जिनि माणिओ ॥५॥ (१३६०-३, सवईए महले पहिले के, कल)
राजु जोगु माणिओ बसिओ निरवैरु रिदंतरि ॥ (१३६०-४, सवईए महले पहिले के, कल)
सृसटि सगल उधरी नामि ले तरिओ निरंतरि ॥ (१३६०-४, सवईए महले पहिले के, कल)
गुण गावहि सनकादि आदि जनकादि जुगह लगि ॥ (१३६०-५, सवईए महले पहिले के, कल)
धंनि धंनि गुरु धंनि जनमु सकयथु भलौ जगि ॥ (१३६०-५, सवईए महले पहिले के, कल)
पाताल पुरी जैकार धुनि कबि जन कल वखाणिओ ॥ (१३६०-६, सवईए महले पहिले के, कल)
हरि नाम रसिक नानक गुर राजु जोगु तै माणिओ ॥६॥ (१३६०-६, सवईए महले पहिले के, कल)
सतजुगि तै माणिओ छलिओ बलि बावन भाइओ ॥ (१३६०-७, सवईए महले पहिले के, कल)
त्रेतै तै माणिओ रामु रघुवंसु कहाइओ ॥ (१३६०-८, सवईए महले पहिले के, कल)
दुआपुरि कृसन मुरारि कंसु किरतारथु कीओ ॥ (१३६०-८, सवईए महले पहिले के, कल)
उग्रसैण कउ राजु अभै भगतह जन दीओ ॥ (१३६०-९, सवईए महले पहिले के, कल)
कलिजुगि प्रमाणु नानक गुरु अंगदु अमरु कहाइओ ॥ (१३६०-९, सवईए महले पहिले के, कल)
स्री गुरू राजु अबिचलु अटलु आदि पुरखि फुरमाइओ ॥७॥ (१३६०-१०, सवईए महले पहिले के, कल)
गुण गावै रविदासु भगतु जैदेव तृलोचन ॥ (१३६०-१०, सवईए महले पहिले के, कल)
नामा भगतु कबीरु सदा गावहि सम लोचन ॥ (१३६०-११, सवईए महले पहिले के, कल)
भगतु बेणि गुण रवै सहजि आतम रंगु माणै ॥ (१३६०-११, सवईए महले पहिले के, कल)
जोग धिआनि गुर गिआनि बिना प्रभ अवरु न जाणै ॥ (१३६०-१२, सवईए महले पहिले के, कल)
सुखदेउ परीख्यतु गुण रवै गोतम रिखि जसु गाइओ ॥ (१३६०-१२, सवईए महले पहिले के, कल)
कबि कल सुजसु नानक गुर नित नवतनु जगि छाइओ ॥८॥ (१३६०-१३, सवईए महले पहिले के, कल)
गुण गावहि पायालि भगत नागादि भुयंगम ॥ (१३६०-१३, सवईए महले पहिले के, कल)
महादेउ गुण रवै सदा जोगी जति जंगम ॥ (१३६०-१४, सवईए महले पहिले के, कल)
गुण गावै मुनि ब्यासु जिनि बेद ब्याकरण बीचारिअ ॥ (१३६०-१४, सवईए महले पहिले के, कल)
ब्रह्मा गुण उचरै जिनि हुकमि सभ सृसटि सवारीअ ॥ (१३६०-१५, सवईए महले पहिले के, कल)
ब्रहमंड खंड पूरन ब्रह्मु गुण निरगुण सम जाणिओ ॥ (१३६०-१५, सवईए महले पहिले के, कल)
जपु कल सुजसु नानक गुर सहजु जोगु जिनि माणिओ ॥९॥ (१३६०-१६, सवईए महले पहिले के, कल)
गुण गावहि नव नाथ धंनि गुरु साचि समाइओ ॥ (१३६०-१७, सवईए महले पहिले के, कल)
माँधाता गुण रवै जेन चक्रवै कहाइओ ॥ (१३६०-१७, सवईए महले पहिले के, कल)
गुण गावै बलि राउ सपत पातालि बसंतौ ॥ (१३६०-१७, सवईए महले पहिले के, कल)
भरथरि गुण उचरै सदा गुर संगि रहंतौ ॥ (१३६०-१८, सवईए महले पहिले के, कल)
दूरबा परूरउ अंगरै गुर नानक जसु गाइओ ॥ (१३६०-१८, सवईए महले पहिले के, कल)

कबि कल सुजसु नानक गुर घटि घटि सहजि समाइओ ॥१०॥ (१३६०-१६, सवईए महले पहिले के, कल)

पन्ना १३६१

सवईए महले दूजे के २ (१३६१-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३६१-१)
सोई पुरखु धन्नु करता कारण करतारु करण समरथो ॥ (१३६१-२, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
सतिगुरू धन्नु नानकु मसतकि तुम धरिओ जिनि हथो ॥ (१३६१-२, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
त धरिओ मसतकि हथु सहजि अमिउ वुठउ छजि सुरि नर गण मुनि बोहिय अगाजि ॥ (१३६१-३, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
मारिओ कंटकु कालु गरजि धावतु लीओ बरजि पंच भूत एक घरि राखि ले समजि ॥ (१३६१-३, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
जगु जीतउ गुर दुआरि खेलहि समत सारि रथु उनमनि लिव राखि निरंकारि ॥ (१३६१-४, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥१॥ (१३६१-५, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
जा की दृसटि अमृत धार कालुख खनि उतार तिमर अज्ञान जाहि दरस दुआर ॥ (१३६१-६, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
ओइ जु सेवहि सबदु सारु गाखड़ी बिखम कार ते नर भव उतारि कीए निरभार ॥ (१३६१-७, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
सतसंगति सहज सारि जागीले गुर बीचारि निम्मरी भूत सदीव पर्म पिआरि ॥ (१३६१-८, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥२॥ (१३६१-८, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
तै तउ दृड़िओ नामु अपारु बिमल जासु बिथारु साधिक सिध सुजन जीआ को अधारु ॥ (१३६१-९, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
तू ता जनिक राजा अउतारु सबदु संसारि सारु रहहि जगत्र जल पदम बीचार ॥ (१३६१-१०, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
कलिप तरु रोग बिदारु संसार ताप निवारु आतमा तृबिधि तेरै एक लिव तार ॥ (१३६१-११, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥३॥ (१३६१-१२, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
तै ता हदरथि पाइओ मानु सेविआ गुरु परवानु साधि अजगरु जिनि कीआ उनमानु ॥ (१३६१-१३, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
हरि हरि दरस समान आतमा वंतगिआन जाणीअ अकल गति गुर परवान ॥ (१३६१-१३, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
जा की दृसटि अचल ठाण बिमल बुधि सुथान पहिरि सील सनाहु सकति बिदारि ॥ (१३६१-१४, सवईए महले दूजे के, कल सहार)

कहु कीरति कल सहार सपत दीप मझार लहणा जगत्र गुरु परसि मुरारि ॥४॥ (१३६१-१५, सवईए महले दूजे के, कल सहार)
दृसटि धरत तम हरन दहन अघ पाप प्रनासन ॥ (१३६१-१६, सवईए महले दूजे के, कल)
सबद सूर बलवंत काम अरु क्रोध बिनासन ॥ (१३६१-१६, सवईए महले दूजे के, कल)
लोभ मोह वसि करण सरण जाचिक प्रतिपालण ॥ (१३६१-१७, सवईए महले दूजे के, कल)
आतम रत संग्रहण कहण अमृत कल ढालण ॥ (१३६१-१७, सवईए महले दूजे के, कल)
सतिगुरू कल सतिगुर तिलकु सति लागै सो पै तरै ॥ (१३६१-१८, सवईए महले दूजे के, कल)
गुरु जगत फिरणसीह अंगरउ राजु जोगु लहणा करै ॥५॥ (१३६१-१८, सवईए महले दूजे के, कल)

पन्ना १३६२

सदा अकल लिव रहै करन सिउ इछा चारह ॥ (१३६२-१, सवईए महले दूजे के, कल)
द्रुम सपूर जिउ निवै खवै कसु बिमल बीचारह ॥ (१३६२-२, सवईए महले दूजे के, कल)
इहै ततु जाणिओ सर्ब गति अलखु बिडाणी ॥ (१३६२-२, सवईए महले दूजे के, कल)
सहज भाइ संचिओ किरणि अमृत कल बाणी ॥ (१३६२-३, सवईए महले दूजे के, कल)
गुर गमि प्रमाणु तै पाइओ सतु संतोखु ग्राहजि लयौ ॥ (१३६२-३, सवईए महले दूजे के, कल)
हरि परसिओ कलु समुलवै जन दरसनु लहणे भयौ ॥६॥ (१३६२-४, सवईए महले दूजे के, कल)
मनि बिसासु पाइओ गहरि गहु हदरथि दीओ ॥ (१३६२-४, सवईए महले दूजे के, कल)
गरल नासु तनि नठयो अमिउ अंतरगति पीओ ॥ (१३६२-५, सवईए महले दूजे के, कल)
रिदि बिगासु जागिओ अलखि कल धरी जुगंतरि ॥ (१३६२-५, सवईए महले दूजे के, कल)
सतिगुरु सहज समाधि रविओ सामानि निरंतरि ॥ (१३६२-६, सवईए महले दूजे के, कल)
उदारउ चित दारिद हरन पिखंतिह कलमल त्रसन ॥ (१३६२-६, सवईए महले दूजे के, कल)
सद रंगि सहजि कलु उचरै जसु जम्पउ लहणे रसन ॥७॥ (१३६२-७, सवईए महले दूजे के, कल)
नामु अवखधु नामु आधारु अरु नामु समाधि सुखु सदा नाम नीसाणु सोहै ॥ (१३६२-७, सवईए महले दूजे के, कल)
रंगि रतौ नाम सिउ कल नामु सुरि नरह बोहै ॥ (१३६२-८, सवईए महले दूजे के, कल)
नाम परसु जिनि पाइओ सतु प्रगटिओ रवि लोइ ॥ (१३६२-९, सवईए महले दूजे के, कल)
दरसनि परसिऐ गुरू कै अठसठि मजनु होइ ॥८॥ (१३६२-९, सवईए महले दूजे के, कल)
सचु तीरथु सचु इसनानु अरु भोजनु भाउ सचु सदा सचु भाखंतु सोहै ॥ (१३६२-१०, सवईए महले दूजे के, कल)
सचु पाइओ गुर सबदि सचु नामु संगती बोहै ॥ (१३६२-१०, सवईए महले दूजे के, कल)
जिसु सचु संजमु वरतु सचु कबि जन कल वखाणु ॥ (१३६२-११, सवईए महले दूजे के, कल)
दरसनि परसिऐ गुरू कै सचु जनमु परवाणु ॥९॥ (१३६२-११, सवईए महले दूजे के, कल)
अमिअ दृसटि सुभ करै हरै अघ पाप सकल मल ॥ (१३६२-१२, सवईए महले दूजे के, टल)
काम क्रोध अरु लोभ मोह वसि करै सभै बल ॥ (१३६२-१२, सवईए महले दूजे के, टल)
सदा सुखु मनि वसै दुखु संसारह खोवै ॥ (१३६२-१३, सवईए महले दूजे के, टल)
गुरु नव निधि दरीआउ जनम हम कालख धोवै ॥ (१३६२-१३, सवईए महले दूजे के, टल)

सु कहु टल गुरु सेवीऐ अहिनिसि सहजि सुभाइ ॥ (१३६२-१४, सवईए महले दूजे के, टल)
दरसनि परसिऐ गुरू कै जनम मरण दुखु जाइ ॥१०॥ (१३६२-१४, सवईए महले दूजे के, टल)
सवईए महले तीजे के ३ (१३६२-१६)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३६२-१६)
सोई पुरखु सिवरि साचा जा का इकु नामु अछलु संसारे ॥ (१३६२-१७, सवईए महले तीजे के, कल्य)
जिनि भगत भवजल तारे सिमरहु सोई नामु प्रधानु ॥ (१३६२-१७, सवईए महले तीजे के, कल्य)
तितु नामि रसिकु नानकु लहणा थपिओ जेन स्रब सिधी ॥ (१३६२-१८, सवईए महले तीजे के, कल्य)
कवि जन कल्य सबुधी कीरति जन अमरदास बिस्तरीया ॥ (१३६२-१८, सवईए महले तीजे के, कल्य)
कीरति रवि किरणि प्रगटि संसारह साख तरोवर मवलसरा ॥ (१३६२-१९, सवईए महले तीजे के, कल्य)
उतरि दखिणहि पुबि अरु पस्चमि जै जै कारु जपंथि नरा ॥ (१३६२-१९, सवईए महले तीजे के, कल्य)

पन्ना १३६३

हरि नामु रसनि गुरमुखि बरदायउ उलटि गंग पस्चमि धरीआ ॥ (१३६३-१, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥१॥ (१३६३-२, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सिमरहि सोई नामु जख्य अरु किंनर साधिक सिध समाधि हरा ॥ (१३६३-२, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सिमरहि नख्यत्र अवर ध्रू मंडल नारदादि प्रहलादि वरा ॥ (१३६३-३, सवईए महले तीजे के, कल्य)
ससीअरु अरु सूरु नामु उलासहि सैल लोअ जिनि उधरिआ ॥ (१३६३-४, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥२॥ (१३६३-४, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु सिवरि नव नाथ निरंजनु सिव सनकादि समुधरिआ ॥ (१३६३-५, सवईए महले तीजे के, कल्य)
चवरासीह सिध बुध जितु राते अम्बरीक भवजलु तरिआ ॥ (१३६३-६, सवईए महले तीजे के, कल्य)
उधउ अक्रूरु तिलोचनु नामा कलि कबीर किलविख हरिआ ॥ (१३६३-६, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥३॥ (१३६३-७, सवईए महले तीजे के, कल्य)
तितु नामि लागि तेतीस धिआवहि जती तपीसुर मनि वसिआ ॥ (१३६३-७, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु सिमरि गंगेव पितामह चरण चित अमृत रसिआ ॥ (१३६३-८, सवईए महले तीजे के, कल्य)
तितु नामि गुरू गम्भीर गरूअ मति सत करि संगति उधरीआ ॥ (१३६३-९, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु अछलु भगतह भव तारणु अमरदास गुर कउ फुरिआ ॥४॥ (१३६३-९, सवईए महले तीजे के, कल्य)
नाम किति संसारि किरणि रवि सुरतर साखह ॥ (१३६३-१०, सवईए महले तीजे के, कल्य)
उतरि दखिणि पुबि देसि पस्चमि जसु भाखह ॥ (१३६३-११, सवईए महले तीजे के, कल्य)
जनमु त इहु सकयथु जितु नामु हरि रिदै निवासै ॥ (१३६३-११, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सुरि नर गण गंधरब छिअ दरसन आसासै ॥ (१३६३-१२, सवईए महले तीजे के, कल्य)
भलउ प्रसिधु तेजो तनौ कल्य जोड़ि कर ध्याइअओ ॥ (१३६३-१२, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु भगत भवजल हरणु गुर अमरदास तै पाइओ ॥५॥ (१३६३-१३, सवईए महले तीजे के, कल्य)
नामु धिआवहि देव तेतीस अरु साधिक सिध नर नामि खंड ब्रहमंड धारे ॥ (१३६३-१३, सवईए महले तीजे के, कल्य)
जह नामु समाधिओ हरखु सोगु सम करि सहारे ॥ (१३६३-१४, सवईए महले तीजे के, कल्य)

नामु सिरोमणि सर्ब मै भगत रहे लिव धारि ॥ (१३६३-१४, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सोई नामु पदारथु अमर गुर तुसि दीओ करतारि ॥६॥ (१३६३-१५, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सति सूरउ सीलि बलवंतु सत भाइ संगति सघन गरूअ मति निरवैरि लीणा ॥ (१३६३-१६, सवईए महले तीजे के, कल्य)
जिसु धीरजु धुरि धवलु धुजा सेति बैकुंठ बीणा ॥ (१३६३-१६, सवईए महले तीजे के, कल्य)
परसहि संत पिआरु जिह करतारह संजोगु ॥ (१३६३-१७, सवईए महले तीजे के, कल्य)
सतिगुरू सेवि सुखु पाइओ अमरि गुरि कीतउ जोगु ॥७॥ (१३६३-१७, सवईए महले तीजे के, कल्य)
नामु नावणु नामु रस खाणु अरु भोजनु नाम रसु सदा चाय मुखि मिष्ट बाणी ॥ (१३६३-१८, सवईए महले तीजे के, कल्य)
धनि सतिगुरु सेविओ जिसु पसाइ गति अगम जाणी ॥ (१३६३-१९, सवईए महले तीजे के, कल्य)
कुल सम्बूह समुधरे पायउ नाम निवासु ॥ (१३६३-१९, सवईए महले तीजे के, कल्य)

पन्ना १३६४

सकयथु जनमु कल्युचरै गुरु परस्यिउ अमर प्रगासु ॥८॥ (१३६४-१, सवईए महले तीजे के, कल्य)
बारिजु करि दाहिणै सिधि सनमुख मुखु जोवै ॥ (१३६४-१, सवईए महले तीजे के, कल्य)
रिधि बसै बाँवाँगि जु तीनि लोकाँतर मोहै ॥ (१३६४-२, सवईए महले तीजे के, कल्य)
रिदै बसै अकहीउ सोइ रसु तिन ही जातउ ॥ (१३६४-२, सवईए महले तीजे के, कल्य)
मुखहु भगति उचरै अमरु गुरु इतु रंगि रातउ ॥ (१३६४-३, सवईए महले तीजे के, कल्य)
मसतकि नीसाणु सचउ करमु कल्य जोड़ि कर ध्याइअउ ॥ (१३६४-३, सवईए महले तीजे के, कल्य)
परसिअउ गुरू सतिगुर तिलकु सर्ब इछ तिनि पाइअउ ॥९॥ (१३६४-४, सवईए महले तीजे के, कल्य)
चरण त पर सकयथ चरण गुर अमर पवलि रय ॥ (१३६४-४, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
हथ त पर सकयथ हथ लगहि गुर अमर पय ॥ (१३६४-५, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
जीह त पर सकयथ जीह गुर अमरु भणिजै ॥ (१३६४-५, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
नैण त पर सकयथ नयणि गुरु अमरु पिखिजै ॥ (१३६४-६, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
स्रवण त पर सकयथ स्रवणि गुरु अमरु सुणिजै ॥ (१३६४-६, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
सकयथु सु हीउ जितु हीअ बसै गुर अमरदासु निज जगत पित ॥ (१३६४-७, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
सकयथु सु सिरु जालपु भणै जु सिरु निवै गुर अमर नित ॥१॥१०॥ (१३६४-७, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
ति नर दुख नह भुख ति नर निधन नहु कहीअहि ॥ (१३६४-८, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
ति नर सोकु नहु हुऐ ति नर से अंतु न लहीअहि ॥ (१३६४-९, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
ति नर सेव नहु करहि ति नर सय सहस समपहि ॥ (१३६४-९, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
ति नर दुलीचै बहहि ति नर उथपि बिथपहि ॥ (१३६४-१०, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
सुख लहहि ति नर संसार महि अभै पटु रिप मधि तिह ॥ (१३६४-१०, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
सकयथ ति नर जालपु भणै गुर अमरदासु सुप्रसन्नु जिह ॥२॥११॥ (१३६४-११, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ इकु करि इकु पछाणिओ ॥ (१३६४-११, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
नयणि बयणि मुहि इकु इकु दुहु ठाँइ न जाणिओ ॥ (१३६४-१२, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)

सुपनि इकु परतखि इकु इकस महि लीणउ ॥ (१३६४-१३, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
तीस इकु अरु पंजि सिधु पैतीस न खीणउ ॥ (१३६४-१३, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
इकहु जि लाखु लखहु अलखु है इकु इकु करि वरनिअउ ॥ (१३६४-१३, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
गुर अमरदास जालपु भणै तू इकु लोड़हि इकु मंनिअउ ॥३॥१२॥ (१३६४-१४, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
जि मति गही जैदेवि जि मति नामै सम्माणी ॥ (१३६४-१५, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
जि मति तृलोचन चिति भगत कम्बीरहि जाणी ॥ (१३६४-१५, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
रुकमाँगद करतूति रामु जम्पहु नित भाई ॥ (१३६४-१६, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
अम्मरीकि प्रहलादि सरणि गोबिंद गति पाई ॥ (१३६४-१६, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
तै लोभु क्रोधु तृसना तजी सु मति जल्य जाणी जुगति ॥ (१३६४-१७, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
गुरु अमरदासु निज भगतु है देखि दरसु पावउ मुकति ॥४॥१३॥ (१३६४-१७, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
गुरु अमरदासु परसीऐ पुहमि पातिक बिनासहि ॥ (१३६४-१८, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
गुरु अमरदासु परसीऐ सिध साधिक आसासहि ॥ (१३६४-१८, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
गुरु अमरदासु परसीऐ धिआनु लहीऐ पउ मुकिहि ॥ (१३६४-१९, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
गुरु अमरदासु परसीऐ अभउ लभै गउ चुकिहि ॥ (१३६४-१९, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)

पन्ना १३६५

इकु बिंनि दुगण जु तउ रहै जा सुमंतृ मानवहि लहि ॥ (१३६५-१, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
जालपा पदार्थ इतड़े गुर अमरदासि डिठै मिलहि ॥५॥१४॥ (१३६५-२, सवईए महले तीजे के, जल्य-जालप)
सचु नामु करतारु सु दृड़ु नानकि संग्रहिअउ ॥ (१३६५-२, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
ता ते अंगदु लहणा प्रगटि तासु चरणह लिव रहिअउ ॥ (१३६५-३, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
तितु कुलि गुर अमरदासु आसा निवासु तासु गुण कवण वखाणउ ॥ (१३६५-३, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
जो गुण अलख अगम्म तिनह गुण अंतु न जाणउ ॥ (१३६५-४, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
बोहिथउ बिधातै निरमयौ सभ संगति कुल उधरण ॥ (१३६५-५, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
गुर अमरदास कीरतु कहै त्राहि त्राहि तुअ पा सरण ॥१॥१५॥ (१३६५-५, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
आपि नराइणु कला धारि जग महि परवरियउ ॥ (१३६५-६, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
निरंकारि आकारु जोति जग मंडलि करियउ ॥ (१३६५-६, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
जह कह तह भरपूरु सबदु दीपकि दीपायउ ॥ (१३६५-७, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
जिह सिखह संग्रहिओ ततु हरि चरण मिलायउ ॥ (१३६५-७, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
नानक कुलि निम्मलु अवतरियउ अंगद लहणे संगि हुअ ॥ (१३६५-८, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
गुर अमरदास तारण तरण जनम जनम पा सरणि तुअ ॥२॥१६॥ (१३६५-८, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
जपु तपु सतु संतोखु पिखि दरसनु गुर सिखह ॥ (१३६५-९, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
सरणि परहि ते उबरहि छोडि जम पुर की लिखह ॥ (१३६५-९, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
भगति भाइ भरपूरु रिदै उचरै करतारै ॥ (१३६५-१०, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
गुरु गउहरु दरीआउ पलक डुबंत्यह तारै ॥ (१३६५-१०, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
नानक कुलि निम्मलु अवतरियउ गुण करतारै उचरै ॥ (१३६५-११, सवईए महले तीजे के, कीरतु)

गुरु अमरदासु जिन्‍ सेविअउ तिन्‍ दुखु दरिद्रु परहरि परै ॥३॥१७॥ (१३९५-११, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
चिति चितवउ अरदासि कहउ परु कहि भि न सकउ ॥ (१३९५-१२, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
सर्ब चिंत तुझु पासि साधसंगति हउ तकउ ॥ (१३९५-१३, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
तेरै हुकमि पवै नीसाणु तउ करउ साहिब की सेवा ॥ (१३९५-१३, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
जब गुरु देखै सुभ दिसटि नामु करता मुखि मेवा ॥ (१३९५-१४, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
अगम अलख कारण पुरख जो फुरमावहि सो कहउ ॥ (१३९५-१४, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
गुर अमरदास कारण करण जिव तू रखहि तिव रहउ ॥४॥१८॥ (१३९५-१५, सवईए महले तीजे के, कीरतु)
भिखे के ॥ (१३९५-१५)
गुरु गिआनु अरु धिआनु तत सिउ ततु मिलावै ॥ (१३९५-१५, सवईए महले तीजे के, भिखा)
सचि सचु जाणीऐ इक चितहि लिव लावै ॥ (१३९५-१६, सवईए महले तीजे के, भिखा)
काम क्रोध वसि करै पवणु उडंत न धावै ॥ (१३९५-१६, सवईए महले तीजे के, भिखा)
निरंकार कै वसै देसि हुकमु बुझि बीचारु पावै ॥ (१३९५-१७, सवईए महले तीजे के, भिखा)
कलि माहि रूपु करता पुरखु सो जाणै जिनि किछु कीअउ ॥ (१३९५-१७, सवईए महले तीजे के, भिखा)
गुरु मिल्यिउ सोइ भिखा कहै सहज रंगि दरसनु दीअउ ॥१॥१९॥ (१३९५-१८, सवईए महले तीजे के, भिखा)
रहिओ संत हउ टोलि साध बहुतेरे डिठे ॥ (१३९५-१९, सवईए महले तीजे के, भिखा)
संनिआसी तपसीअह मुखहु ए पंडित मिठे ॥ (१३९५-१९, सवईए महले तीजे के, भिखा)
बरसु एकु हउ फिरिओ किनै नहु परचउ लायउ ॥ (१३९५-१९, सवईए महले तीजे के, भिखा)

पन्ना १३९६

कहतिअह कहती सुणी रहत को खुसी न आयउ ॥ (१३९६-१, सवईए महले तीजे के, भिखा)
हरि नामु छोडि दूजै लगे तिन्‍ के गुण हउ किआ कहउ ॥ (१३९६-१, सवईए महले तीजे के, भिखा)
गुरु दयि मिलायउ भिखिआ जिव तू रखहि तिव रहउ ॥२॥२०॥ (१३९६-२, सवईए महले तीजे के, भिखा)
पहिरि समाधि सनाहु गिआनि है आसणि चड़िअउ ॥ (१३९६-३, सवईए महले तीजे के, सल्य)
ध्रम्म धनखु कर गहिओ भगत सीलह सरि लड़िअउ ॥ (१३९६-३, सवईए महले तीजे के, सल्य)
भै निरभउ हरि अटलु मनि सबदि गुर नेजा गडिओ ॥ (१३९६-४, सवईए महले तीजे के, सल्य)
काम क्रोध लोभ मोह अपतु पंच दूत बिखंडिओ ॥ (१३९६-४, सवईए महले तीजे के, सल्य)
भलउ भूहालु तेजो तना नृपति नाथु नानक बरि ॥ (१३९६-५, सवईए महले तीजे के, सल्य)
गुर अमरदास सचु सल्य भणि तै दलु जितउ इव जुधु करि ॥१॥२१॥ (१३९६-५, सवईए महले तीजे के, सल्य)
घनहर बूंद बसुअ रोमावलि कुसम बसंत गनंत न आवै ॥ (१३९६-६, सवईए महले तीजे के, भल्य)
रवि ससि किरणि उदरु सागर को गंग तरंग अंतु को पावै ॥ (१३९६-७, सवईए महले तीजे के, भल्य)
रुद्र धिआन गिआन सतिगुर के कबि जन भल्य उनह जुो गावै ॥ (१३९६-७, सवईए महले तीजे के, भल्य)
भले अमरदास गुण तेरे तेरी उपमा तोहि बनि आवै ॥१॥२२॥ (१३९६-८, सवईए महले तीजे के, भल्य)
सवईए महले चउथे के ४ (१३९६-१०)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१३९६-१०)
इक मनि पुरखु निरंजनु धिआवउ ॥ (१३९६-११, सवईए महले चउथे के, कल्य)

गुर प्रसादि हरि गुण सद गावउ ॥ (१३६६-११, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुन गावत मनि होइ बिगासा ॥ (१३६६-११, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतिगुर पूरि जनह की आसा ॥ (१३६६-१२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतिगुरु सेवि पर्म पदु पायउ ॥ (१३६६-१२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अबिनासी अबिगतु धिआयउ ॥ (१३६६-१२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
तिसु भेटे दारिद्रु न चम्पै ॥ (१३६६-१३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
कल्य सहारु तासु गुण जम्पै ॥ (१३६६-१३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
जम्पउ गुण बिमल सुजन जन केरे अमिअ नामु जा कउ फुरिआ ॥ (१३६६-१३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
इनि सतगुरु सेवि सबद रसु पाया नामु निरंजन उरि धरिआ ॥ (१३६६-१४, सवईए महले चउथे के, कल्य)
हरि नाम रसिकु गोबिंद गुण गाहकु चाहकु तत समत सरे ॥ (१३६६-१५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥१॥ (१३६६-१५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
छुटत परवाह अमिअ अमरा पद अमृत सरोवर सद भरिआ ॥ (१३६६-१६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
ते पीवहि संत करहि मनि मजनु पुब जिनहु सेवा करीआ ॥ (१३६६-१६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
तिन भउ निवारि अनभै पदु दीना सबद मात्र ते उधर धरे ॥ (१३६६-१७, सवईए महले चउथे के, कल्य)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥२॥ (१३६६-१८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतगुर मति गूड़्ह बिमल सतसंगति आतमु रंगि चलूलु भया ॥ (१३६६-१८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
जाग्या मनु कवलु सहजि परकास्या अभै निरंजनु घरहि लहा ॥ (१३६६-१९, सवईए महले चउथे के, कल्य)

पन्ना १३६७

सतगुरि दयालि हरि नामु दृड़्हाया तिसु प्रसादि वसि पंच करे ॥ (१३६७-१, सवईए महले चउथे के, कल्य)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥३॥ (१३६७-१, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अनभउ उनमानि अकल लिव लागी पारसु भेटिआ सहज घरे ॥ (१३६७-२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतगुर परसादि पर्म पदु पाया भगति भाइ भंडार भरे ॥ (१३६७-३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
मेटिआ जनमाँतु मरण भउ भागा चितु लागा संतोख सरे ॥ (१३६७-३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
कवि कल्य ठकुर हरदास तने गुर रामदास सर अभर भरे ॥४॥ (१३६७-४, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अभर भरे पायउ अपारु रिद अंतरि धारिओ ॥ (१३६७-४, सवईए महले चउथे के, कल्य)
दुख भंजनु आतम प्रबोधु मनि ततु बीचारिओ ॥ (१३६७-५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सदा चाइ हरि भाइ प्रेम रसु आपे जाणइ ॥ (१३६७-५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतगुर कै परसादि सहज सेती रंगु माणइ ॥ (१३६७-६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
नानक प्रसादि अंगद सुमति गुरि अमरि अमरु वरताइओ ॥ (१३६७-६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर रामदास कल्युचरै तैं अटल अमर पदु पाइओ ॥५॥ (१३६७-७, सवईए महले चउथे के, कल्य)
संतोख सरोवरि बसै अमिअ रसु रसन प्रकासै ॥ (१३६७-८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
मिलत साँति उपजै दुरतु दूरंतरि नासै ॥ (१३६७-८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सुख सागरु पाइअउ दिंतु हरि मगि न हुटै ॥ (१३६७-८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
संजमु सतु संतोखु सील सन्नाहु मफुटै ॥ (१३६७-९, सवईए महले चउथे के, कल्य)

सतिगुरु प्रमाणु बिध नै सिरिउ जगि जस तूरु बजाइअउ ॥ (१३६७-९, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर रामदास कल्युचरै तै अभै अमर पदु पाइअउ ॥६॥ (१३६७-१०, सवईए महले चउथे के, कल्य)
जगु जितउ सतिगुर प्रमाणि मनि एकु धिआयउ ॥ (१३६७-१०, सवईए महले चउथे के, कल्य)
धनि धनि सतिगुर अमरदासु जिनि नामु दृड़ायउ ॥ (१३६७-११, सवईए महले चउथे के, कल्य)
नव निधि नामु निधानु रिधि सिधि ता की दासी ॥ (१३६७-१२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सहज सरोवरु मिलिओ पुरखु भेटिओ अबिनासी ॥ (१३६७-१२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
आदि ले भगत जितु लगि तरे सो गुरि नामु दृड़ाइअउ ॥ (१३६७-१३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर रामदास कल्युचरै तै हरि प्रेम पदारथु पाइअउ ॥७॥ (१३६७-१३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
प्रेम भगति परवाह प्रीति पुबली न हुटइ ॥ (१३६७-१४, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतिगुर सबदु अथाहु अमिअ धारा रसु गुटइ ॥ (१३६७-१४, सवईए महले चउथे के, कल्य)
मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ ॥ (१३६७-१५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
आजोनी सम्भविअउ जगतु गुर बचनि तरायउ ॥ (१३६७-१५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अबिगत अगोचरु अपरपरु मनि गुर सबदु वसाइअउ ॥ (१३६७-१६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर रामदास कल्युचरै तै जगत उधारणु पाइअउ ॥८॥ (१३६७-१६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
जगत उधारणु नव निधानु भगतह भव तारणु ॥ (१३६७-१७, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अमृत बूंद हरि नामु बिसु की बिखै निवारणु ॥ (१३६७-१७, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सहज तरोवर फलिओ गिआन अमृत फल लागे ॥ (१३६७-१८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर प्रसादि पाईअहि धंनि ते जन बडभागे ॥ (१३६७-१८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
ते मुकते भए सतिगुर सबदि मनि गुर परचा पाइअउ ॥ (१३६७-१९, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर रामदास कल्युचरै तै सबद नीसानु बजाइअउ ॥९॥ (१३६७-१९, सवईए महले चउथे के, कल्य)

पन्ना १३६८

सेज सधा सहजु छावाणु संतोखु सराइचउ सदा सील सन्नाहु सोहै ॥ (१३६८-१, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर सबदि समाचरिओ नामु टेक संगादि बोहै ॥ (१३६८-२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अजोनीउ भल्यु अमलु सतिगुर संगि निवासु ॥ (१३६८-२, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुर रामदास कल्युचरै तुअ सहज सरोवरि बासु ॥१०॥ (१३६८-३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुरु जिन्ह कउ सुप्रसन्नु नामु हरि रिदै निवासै ॥ (१३६८-३, सवईए महले चउथे के, कल्य)
जिन्ह कउ गुरु सुप्रसन्नु दुरतु दूरंतरि नासै ॥ (१३६८-४, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुरु जिन्ह कउ सुप्रसन्नु मानु अभिमानु निवारै ॥ (१३६८-४, सवईए महले चउथे के, कल्य)
जिन्ह कउ गुरु सुप्रसन्नु सबदि लगि भवजलु तारै ॥ (१३६८-५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
परचउ प्रमाणु गुर पाइअउ तिन सकयथउ जनमु जगि ॥ (१३६८-५, सवईए महले चउथे के, कल्य)
स्री गुरू सरणि भजु कल्य कबि भुगति मुकति सभ गुरू लगि ॥११॥ (१३६८-६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतिगुरि खेमा ताणिआ जुग जूथ समाणे ॥ (१३६८-६, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अनभउ नेजा नामु टेक जितु भगत अघाणे ॥ (१३६८-७, सवईए महले चउथे के, कल्य)
गुरु नानकु अंगदु अमरु भगत हरि संगि समाणे ॥ (१३६८-७, सवईए महले चउथे के, कल्य)

इहु राज जोग गुर रामदास तुम् हू रसु जाणे ॥१२॥ (१३९८-८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
जनकु सोइ जिनि जाणिआ उनमनि रथु धरिआ ॥ (१३९८-८, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतु संतोखु समाचरे अभरा सरु भरिआ ॥ (१३९८-९, सवईए महले चउथे के, कल्य)
अकथ कथा अमरा पुरी जिसु देइ सु पावै ॥ (१३९८-९, सवईए महले चउथे के, कल्य)
इहु जनक राजु गुर रामदास तुझ ही बणि आवै ॥१३॥ (१३९८-१०, सवईए महले चउथे के, कल्य)
सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै दृड़ु तिन् जन दुख पापु कहु कत होवै जीउ ॥ (१३९८-१०, सवईए महले चउथे के, नल्य)
तारण तरण खिन मात्र जा कउ दृष्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु खोवै जीउ ॥ (१३९८-११, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जीअन सभन दाता अगम ज्ञान बिख्याता अहिनिसि ध्यान धावै पलक न सोवै जीउ ॥ (१३९८-१२, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जा कउ देखत दरिद्रु जावै नामु सो निधानु पावै गुरमुखि ज्ञानि दुरमति मैलु धोवै जीउ ॥ (१३९८-१३, सवईए महले चउथे के, नल्य)
सतिगुर नामु एक लिव मनि जपै दृड़ु तिन जन दुख पाप कहु कत होवै जीउ ॥१॥ (१३९८-१४, सवईए महले चउथे के, नल्य)
धर्म कर्म पूरै सतिगुरु पाई है ॥ (१३९८-१५, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जा की सेवा सिध साध मुनि जन सुरि नर जाचहि सबद सारु एक लिव लाई है ॥ (१३९८-१५, सवईए महले चउथे के, नल्य)
फुनि जानै को तेरा अपारु निरभउ निरंकारु अकथ कथनहारु तुझहि बुझाई है ॥ (१३९८-१६, सवईए महले चउथे के, नल्य)
भर्म भूले संसार छुटहु जूनी संघार जम को न डंड काल गुरमति ध्याई है ॥ (१३९८-१७, सवईए महले चउथे के, नल्य)
मन प्राणी मुगध बीचारु अहिनिसि जपु धर्म कर्म पूरै सतिगुरु पाई है ॥२॥ (१३९८-१७, सवईए महले चउथे के, नल्य)
हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥ (१३९८-१८, सवईए महले चउथे के, नल्य)
कवन उपमा देउ कवन सेवा सरेउ एक मुख रसना रसहु जुग जोरि कर ॥ (१३९८-१९, सवईए महले चउथे के, नल्य)
फुनि मन बच क्रम जानु अनत दूजा न मानु नामु सो अपारु सारु दीनो गुरि रिद धर ॥ (१३९८-१९, सवईए महले चउथे के, नल्य)

पन्ना १३९९

नल्य कवि पारस परस कच कंचना हुइ चंदना सुबासु जासु सिमरत अन तर ॥ (१३९९-१, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जा के देखत दुआरे काम क्रोध ही निवारे जी हउ बलि बलि जाउ सतिगुर साचे नाम पर ॥३॥ (१३९९-२, सवईए महले चउथे के, नल्य)
राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥ (१३९९-३, सवईए महले चउथे के, नल्य)
प्रथमे नानक चंदु जगत भयो आनंदु तारनि मनुख्य जन कीअउ प्रगास ॥ (१३९९-३, सवईए महले चउथे के, नल्य)

गुर अंगद दीअउ निधानु अकथ कथा गिआनु पंच भूत बसि कीने जमत न त्रास ॥ (१३९९-४, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुर अमरु गुरू स्री सति कलिजुगि राखी पति अघन देखत गतु चरन कवल जास ॥ (१३९९-५, सवईए महले चउथे के, नल्य)
सभ बिधि मान्यिउ मनु तब ही भ्यउ प्रसन्नु राजु जोगु तखतु दीअनु गुर रामदास ॥४॥ (१३९९-६, सवईए महले चउथे के, नल्य)
रड ॥ (१३९९-७)
जिसहि धारियउ धरति अरु विउमु अरु पवणु ते नीर सर अवर अनल अनादि कीअउ ॥ (१३९९-७, सवईए महले चउथे के, नल्य)
ससि रिखि निसि सूर दिनि सैल तरूअ फल फुल दीअउ ॥ (१३९९-८, सवईए महले चउथे के, नल्य)
सुरि नर सपत समुद्र किअ धारिओ त्रिभवण जासु ॥ (१३९९-८, सवईए महले चउथे के, नल्य)
सोई एकु नामु हरि नामु सति पाइओ गुर अमर प्रगासु ॥१॥५॥ (१३९९-९, सवईए महले चउथे के, नल्य)
कचहु कंचनु भइअउ सबदु गुर स्रवणहि सुणिओ ॥ (१३९९-९, सवईए महले चउथे के, नल्य)
बिखु ते अम्रितु हुयउ नामु सतिगुर मुखि भणिअउ ॥ (१३९९-१०, सवईए महले चउथे के, नल्य)
लोहउ होयउ लालु नदरि सतिगुरु जदि धारै ॥ (१३९९-११, सवईए महले चउथे के, नल्य)
पाहण माणक करै गिआनु गुर कहिअउ बीचारै ॥ (१३९९-११, सवईए महले चउथे के, नल्य)
काठहु स्रीखंड सतिगुरि कीअउ दुख दरिद्र तिन के गइअ ॥ (१३९९-१२, सवईए महले चउथे के, नल्य)
सतिगुरू चरन जिन्ह परसिआ से पसु परेत सुरि नर भइअ ॥२॥६॥ (१३९९-१२, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जामि गुरू होइ वलि धनहि किआ गारवु दिजइ ॥ (१३९९-१३, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जामि गुरू होइ वलि लख बाहे किआ किजइ ॥ (१३९९-१३, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जामि गुरू होइ वलि गिआन अरु धिआन अनन परि ॥ (१३९९-१४, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जामि गुरू होइ वलि सबदु साखी सु सचह घरि ॥ (१३९९-१४, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जो गुरू गुरू अहिनिसि जपै दासु भटु बेनति कहै ॥ (१३९९-१५, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जो गुरू नामु रिद महि धरै सो जनम मरण दुह थे रहै ॥३॥७॥ (१३९९-१५, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुर बिनु घोरु अंधारु गुरू बिनु समझ न आवै ॥ (१३९९-१६, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुर बिनु सुरति न सिधि गुरू बिनु मुकति न पावै ॥ (१३९९-१७, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुरु करु सचु बीचारु गुरू करु रे मन मेरे ॥ (१३९९-१७, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुरु करु सबद सपुन्न अघन कटहि सभ तेरे ॥ (१३९९-१८, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुरु नयणि बयणि गुरु गुरु करहु गुरू सति कवि नल्य कहि ॥ (१३९९-१८, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जिनि गुरू न देखिअउ नहु कीअउ ते अकयथ संसार महि ॥४॥८॥ (१३९९-१९, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥ (१३९९-१९, सवईए महले चउथे के, नल्य)

पन्ना १४००

तारण तरण सम्रथु कलिजुगि सुनत समाधि सबद जिसु केरे ॥ (१४००-१, सवईए महले चउथे के, नल्य)
फुनि दुखनि नासु सुखदायकु सूरउ जो धरत धिआनु बसत तिह नेरे ॥ (१४००-१, सवईए महले चउथे के, नल्य)
पूरउ पुरखु रिदै हरि सिमरत मुखु देखत अघ जाहि परेरे ॥ (१४००-२, सवईए महले चउथे के, नल्य)

जउ हरि बुधि रिधि सिधि चाहत गुरू गुरू गुरु करु मन मेरे ॥५॥९॥ (१४००-३, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥ (१४००-३, सवईए महले चउथे के, नल्य)
हुती जु पिआस पिऊस पिवन्न की बंछत सिधि कउ बिधि मिलायउ ॥ (१४००-४, सवईए महले चउथे के, नल्य)
पूरन भो मन ठउर बसो रस बासन सिउ जु दहं दिसि धायउ ॥ (१४००-४, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गोबिंद वालु गोबिंद पुरी सम जल्यन तीरि बिपास बनायउ ॥ (१४००-५, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गयउ दुखु दूरि बरखन को सु गुरू मुखु देखि गरू सुखु पायउ ॥६॥१०॥ (१४००-५, सवईए महले चउथे के, नल्य)
समरथ गुरू सिरि हथु धरयउ ॥ (१४००-६, सवईए महले चउथे के, नल्य)
गुरि कीनी कृपा हरि नामु दीअउ जिसु देखि चरन्न अघन्न हरयउ ॥ (१४००-६, सवईए महले चउथे के, नल्य)
निसि बासुर एक समान धिआन सु नाम सुने सुतु भान डरयउ ॥ (१४००-७, सवईए महले चउथे के, नल्य)
भनि दास सु आस जगत्र गुरू की पारसु भेटि परसु करयउ ॥ (१४००-८, सवईए महले चउथे के, नल्य)
रामदासु गुरू हरि सति कीयउ समरथ गुरू सिरि हथु धरयउ ॥७॥११॥ (१४००-८, सवईए महले चउथे के, नल्य)
अब राखहु दास भाट की लाज ॥ (१४००-९, सवईए महले चउथे के, नल्य)
जैसी राखी लाज भगत प्रहिलाद की हरनाखस फारे कर आज ॥ (१४००-९, सवईए महले चउथे के, नल्य)
फुनि द्रोपती लाज रखी हरि प्रभ जी छीनत बसत्र दीन बहु साज ॥ (१४००-१०, सवईए महले चउथे के, नल्य)
सोदामा अपदा ते राखिआ गनिका पड़्हत पूरे तिह काज ॥ (१४००-११, सवईए महले चउथे के, नल्य)
स्री सतिगुर सुप्रसन्न कलजुग होइ राखहु दास भाट की लाज ॥८॥१२॥ (१४००-११, सवईए महले चउथे के, नल्य)
झोलना ॥ (१४००-१२)
गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥ (१४००-१२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सबदु हरि हरि जपै नामु नव निधि अपै रसनि अहिनिसि रसै सति करि जानीअहु ॥ (१४००-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
फुनि प्रेम रंग पाईऐ गुरमुखहि धिआईऐ अन्न मारग तजहु भजहु हरि ग्यानीअहु ॥ (१४००-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
बचन गुर रिदि धरहु पंच भू बसि करहु जनमु कुल उधरहु द्वारि हरि मानीअहु ॥ (१४००-१४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जउ त सभ सुख इत उत तुम बंछवहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु प्रानीअहु ॥१॥१३॥ (१४००-१५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपि सति करि ॥ (१४००-१६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अगम गुन जानु निधानु हरि मनि धरहु ध्यानु अहिनिसि करहु बचन गुर रिदै धरि ॥ (१४००-१६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
फुनि गुरू जल बिमल अथाह मजनु करहु संत गुरसिख तरहु नाम सच रंग सरि ॥ (१४००-१७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सदा निरवैरु निरंकारु निरभउ जपै प्रेम गुर सबद रसि करत दृड़ु भगति हरि ॥ (१४००-१८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
मुगध मन भ्रमु तजहु नामु गुरमुखि भजहु गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु सति करि ॥२॥१४॥ (१४००-१९, सवईए महले चउथे के, गयंद)

पन्ना १४०१

गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥ (१४०१-१, सवईए महले चउथे के, गयंद)
उदधि गुरु गहिर गम्भीर बेअंतु हरि नाम नग हीर मणि मिलत लिव लाईऐ ॥ (१४०१-१, सवईए महले चउथे के, गयंद)
फुनि गुरू परमल सरस करत कंचनु परस मैलु दुरमति हिरत सबदि गुरु ध्याईऐ ॥ (१४०१-२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अमृत परवाह छुटकंत सद द्वारि जिसु ज्ञान गुर बिमल सर संत सिख नाईऐ ॥ (१४०१-३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
नामु निरबाणु निधानु हरि उरि धरहु गुरू गुरु गुरु करहु गुरू हरि पाईऐ ॥३॥१५॥ (१४०१-४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मन्न रे ॥ (१४०१-५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जा की सेव सिव सिध साधिक सुर असुर गण तरहि तेतीस गुर बचन सुणि कन्न रे ॥ (१४०१-५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
फुनि तरहि ते संत हित भगत गुरु गुरु करहि तरिओ प्रहलादु गुर मिलत मुनि जन्न रे ॥ (१४०१-६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
तरहि नारदादि सनकादि हरि गुरमुखहि तरहि इक नाम लगि तजहु रस अन्न रे ॥ (१४०१-७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
दासु बेनति कहै नामु गुरमुखि लहै गुरू गुरु गुरू गुरु गुरू जपु मन्न रे ॥४॥१६॥२६॥ (१४०१-८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि ॥ (१४०१-९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
करी कृपा सतजुगि जिनि ध्रू परि ॥ (१४०१-९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
स्री प्रहलाद भगत उधरीअं ॥ (१४०१-९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
हस्त कमल माथे पर धरीअं ॥ (१४०१-१०, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अलख रूप जीअ लख्या न जाई ॥ (१४०१-१०, सवईए महले चउथे के, गयंद)
साधिक सिध सगल सरणाई ॥ (१४०१-१०, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुर के बचन सति जीअ धारहु ॥ (१४०१-१०, सवईए महले चउथे के, गयंद)
माणस जनमु देह निस्तारहु ॥ (१४०१-११, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुरु जहाजु खेवटु गुरू गुर बिनु तरिआ न कोइ ॥ (१४०१-११, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुर प्रसादि प्रभु पाईऐ गुर बिनु मुकति न होइ ॥ (१४०१-१२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुरु नानकु निकटि बसै बनवारी ॥ (१४०१-१२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
तिनि लहणा थापि जोति जगि धारी ॥ (१४०१-१२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
लहणै पंथु धर्म का कीआ ॥ (१४०१-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अमरदास भले कउ दीआ ॥ (१४०१-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
तिनि स्री रामदासु सोढी थिरु थप्यउ ॥ (१४०१-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
हरि का नामु अखै निधि अप्यउ ॥ (१४०१-१४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अप्यउ हरि नामु अखै निधि चहु जुगि गुर सेवा करि फलु लहीअं ॥ (१४०१-१४, सवईए महले चउथे के, गयंद)

बंदहि जो चरण सरणि सुखु पावहि परमानंद गुरमुखि कहीअं ॥ (१४०१-१५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
परतखि देह पारब्रह्मु सुआमी आदि रूपि पोखण भरणं ॥ (१४०१-१५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥१॥ (१४०१-१६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जिह अमृत बचन बाणी साधू जन जपहि करि बिचिति चाओ ॥ (१४०१-१७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
आनंदु नित मंगलु गुर दरसनु सफलु संसारि ॥ (१४०१-१७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
संसारि सफलु गंगा गुर दरसनु परसन पर्म पवित्र गते ॥ (१४०१-१८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जीतहि जम लोकु पतित जे प्राणी हरि जन सिव गुर ज्ञानि रते ॥ (१४०१-१९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
रघुबंसि तिलकु सुंदरु दसरथ घरि मुनि बंछहि जा की सरणं ॥ (१४०१-१९, सवईए महले चउथे के, गयंद)

पन्ना १४०२

सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥२॥ (१४०२-१, सवईए महले चउथे के, गयंद)
संसारु अगम सागरु तुलहा हरि नामु गुरू मुखि पाया ॥ (१४०२-१, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जगि जनम मरणु भगा इह आई हीऐ परतीति ॥ (१४०२-२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
परतीति हीऐ आई जिन जन कै तिन्ह कउ पदवी उच भई ॥ (१४०२-३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
तजि माइआ मोहु लोभु अरु लालचु काम क्रोध की बृथा गई ॥ (१४०२-३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अवलोक्या ब्रह्मु भरमु सभु छुटक्या दिब्य दृष्टि कारण करणं ॥ (१४०२-४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥३॥ (१४०२-४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
परतापु सदा गुर का घटि घटि परगासु भया जसु जन कै ॥ (१४०२-५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
इकि पड़हि सुणहि गावहि परभातिहि करहि इसनानु ॥ (१४०२-६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
इसनानु करहि परभाति सुध मनि गुर पूजा बिधि सहित करं ॥ (१४०२-६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
कंचनु तनु होइ परसि पारस कउ जोति सरूपी ध्यानु धरं ॥ (१४०२-७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जगजीवनु जगन्नाथु जल थल महि रहिआ पूरि बहु बिधि बरनं ॥ (१४०२-८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सतिगुरु गुरु सेवि अलख गति जा की स्री रामदासु तारण तरणं ॥४॥ (१४०२-८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जिनहु बात निश्चल ध्रूअ जानी तेई जीव काल ते बचा ॥ (१४०२-९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
तिन्ह तरिओ समुद्रु रुद्रु खिन इक महि जलहर बिम्ब जुगति जगु रचा ॥ (१४०२-९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
कुंडलनी सुरझी सतसंगति परमानंद गुरू मुखि मचा ॥ (१४०२-१०, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सिरी गुरू साहिबु सभ ऊपरि मन बच क्रम्म सेवीऐ सचा ॥५॥ (१४०२-११, सवईए महले चउथे के, गयंद)
वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥ (१४०२-११, सवईए महले चउथे के, गयंद)
कवल नैन मधुर बैन कोटि सैन संग सोभ कहत मा जसोद जिसहि दही भातु खाहि जीउ ॥ (१४०२-१२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
देखि रूपु अति अनूपु मोह महा मग भई किंकनी सबद झनतकार खेलु पाहि जीउ ॥ (१४०२-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
काल कलम हुकमु हाथि कहहु कउनु मेटि सकै ईसु बम्यु ज्ञानु ध्यानु धरत हीऐ चाहि जीउ ॥ (१४०२-१४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥१॥६॥ (१४०२-१४, सवईए महले चउथे के, गयंद)

राम नाम पर्म धाम सुध बुध निरीकार बेसुमार सरबर कउ काहि जीउ ॥ (१४०२-१५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सुथर चित भगत हित भेखु धरिओ हरनाखसु हरिओ नख बिदारि जीउ ॥ (१४०२-१६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
संख चक्र गदा पदम आपि आपु कीओ छदम अपरम्पर पारब्रह्म लखै कउनु ताहि जीउ ॥ (१४०२-१७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥२॥७॥ (१४०२-१८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
पीत बसन कुंद दसन प्रिअ सहित कंठ माल मुकटु सीसि मोर पंख चाहि जीउ ॥ (१४०२-१९, सवईए महले चउथे के, गयंद)

पन्ना १४०३

बेवजीर बडे धीर धर्म अंग अलख अगम खेलु कीआ आपणै उछाहि जीउ ॥ (१४०३-१, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अकथ कथा कथी न जाइ तीनि लोक रहिआ समाइ सुतह सिध रूपु धरिओ साहन कै साहि जीउ ॥ (१४०३-१, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सति साचु स्री निवासु आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥३॥८॥ (१४०३-२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सतिगुरू सतिगुरू सतिगुरु गुबिंद जीउ ॥ (१४०३-३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
बलिहि छलन सबल मलन भग्ति फलन कान्ह कुअर निहकलंक बजी डंक चड़्ह्ह दल रविंद जीउ ॥ (१४०३-४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
राम रवण दुरत दवण सकल भवण कुसल करण सर्ब भूत आपि ही देवाधि देव सहस मुख फनिंद जीउ ॥ (१४०३-५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
जर्म कर्म मछ कछ हुअ बराह जमुना कै कूलि खेलु खेलिओ जिनि गिंद जीउ ॥ (१४०३-६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सतिगुरू सतिगुरू सतिगुर गुबिंद जीउ ॥४॥९॥ (१४०३-७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥ (१४०३-८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुर कहिआ मानु निज निधानु सचु जानु मंत्रु इहै निसि बासुर होइ कल्यानु लहहि पर्म गति जीउ ॥ (१४०३-८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
कामु क्रोधु लोभु मोहु जण जण सिउ छाडु धोहु हउमै का फंधु काटु साधसंगि रति जीउ ॥ (१४०३-९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
देह गेहु त्रिअ सनेहु चित बिलासु जगत एहु चरन कमल सदा सेउ द्रिड़ता करु मति जीउ ॥ (१४०३-१०, सवईए महले चउथे के, गयंद)
नामु सारु हीए धारु तजु बिकारु मन गयंद सिरी गुरू सिरी गुरू सिरी गुरू सति जीउ ॥५॥१०॥ (१४०३-११, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥ (१४०३-१२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कद का ॥ (१४०३-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)

ब्रह्मा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥ (१४०३-१३, सवईए महले चउथे के, गयंद)
चवरासीह लख जोनि उपाई रिजकु दीआ सभ हू कउ तद का ॥ (१४०३-१४, सवईए महले चउथे के, गयंद)
सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥१॥११॥ (१४०३-१५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
वाहु वाहु का बडा तमासा ॥ (१४०३-१५, सवईए महले चउथे के, गयंद)
आपे हसै आपि ही चितवै आपे चंदु सूरु परगासा ॥ (१४०३-१६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
आपे जलु आपे थलु थम्हनु आपे कीआ घटि घटि बासा ॥ (१४०३-१६, सवईए महले चउथे के, गयंद)
आपे नरु आपे फुनि नारी आपे सारि आप ही पासा ॥ (१४०३-१७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
गुरमुखि संगति सभै बिचारहु वाहु वाहु का बडा तमासा ॥२॥१२॥ (१४०३-१७, सवईए महले चउथे के, गयंद)
कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहिगुरू तेरी सभ रचना ॥ (१४०३-१८, सवईए महले चउथे के, गयंद)
तू जलि थलि गगनि प्यालि पूरि रह्या अम्रित ते मीठे जा के बचना ॥ (१४०३-१९, सवईए महले चउथे के, गयंद)
मानहि ब्रहमादिक रुद्रादिक काल का कालु निरंजन जचना ॥ (१४०३-१९, सवईए महले चउथे के, गयंद)

पन्ना १४०४

गुर प्रसादि पाईऐ परमारथु सतसंगति सेती मनु खचना ॥ (१४०४-१, सवईए महले चउथे के, गयंद)
कीआ खेलु बड मेलु तमासा वाहगुरू तेरी सभ रचना ॥३॥१३॥४२॥ (१४०४-२, सवईए महले चउथे के, गयंद)
अगमु अनंतु अनादि आदि जिसु कोइ न जाणै ॥ (१४०४-२, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
सिव बिरंचि धरि ध्यानु नितहि जिसु बेदु बखाणै ॥ (१४०४-३, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
निरंकारु निरवैरु अवरु नही दूसर कोई ॥ (१४०४-३, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
भंजन गड़्हण समथु तरण तारण प्रभु सोई ॥ (१४०४-४, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
नाना प्रकार जिनि जगु कीओ जनु मथुरा रसना रसै ॥ (१४०४-४, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
स्री सति नामु करता पुरखु गुर रामदास चितह बसै ॥१॥ (१४०४-५, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
गुरू समरथु गहि करीआ ध्रुव बुधि सुमति सम्हारन कउ ॥ (१४०४-५, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
फुनि ध्रम्म धुजा फहरंति सदा अघ पुंज तरंग निवारन कउ ॥ (१४०४-६, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
मथुरा जन जानि कही जीअ साचु सु अउर कछू न बिचारन कउ ॥ (१४०४-७, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
हरि नामु बोहिथु बडौ कलि मै भव सागर पारि उतारन कउ ॥२॥ (१४०४-७, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
संतत ही सतसंगति संग सुरंग रते जसु गावत है ॥ (१४०४-८, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
ध्रम पंथु धरिओ धरनीधर आपि रहे लिव धारि न धावत है ॥ (१४०४-९, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
मथुरा भनि भाग भले उन्ह के मन इछत ही फल पावत है ॥ (१४०४-९, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
रवि के सुत को तिन्ह त्रासु कहा जु चरन्न गुरू चितु लावत है ॥३॥ (१४०४-१०, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
निर्मल नामु सुधा परपूरन सबद तरंग प्रगटित दिन आगरु ॥ (१४०४-११, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
गहिर गम्भीरु अथाह अति बड सुभरु सदा सभ बिधि रतनागरु ॥ (१४०४-११, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
संत मराल करहि कंतूहल तिन जम त्रास मिटिओ दुख कागरु ॥ (१४०४-१२, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
कलजुग दुरत दूरि करबे कउ दरसनु गुरू सगल सुख सागरु ॥४॥ (१४०४-१३, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
जा कउ मुनि ध्यानु धरै फिरत सगल जुग कबहु क कोऊ पावै आतम प्रगास कउ ॥ (१४०४-१३, सवईए महले चउथे के, मथुरा)

बेद बाणी सहित बिरंचि जसु गावै जा को सिव मुनि गहि न तजात कबिलास कंउ ॥ (१४०४-१४, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
जा कौ जोगी जती सिध साधिक अनेक तप जटा जूट भेख कीए फिरत उदास कउ ॥ (१४०४-१५, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
सु तिनि सतिगुरि सुख भाइ कृपा धारी जीअ नाम की बडाई दई गुर रामदास कउ ॥५॥ (१४०४-१६, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
नामु निधानु धिआन अंतरगति तेज पुंज तिहु लोग प्रगासे ॥ (१४०४-१७, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
देखत दरसु भटकि भ्रमु भजत दुख परहरि सुख सहज बिगासे ॥ (१४०४-१८, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
सेवक सिख सदा अति लुभित अलि समूह जिउ कुसम सुबासे ॥ (१४०४-१८, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
बिद्यमान गुरि आपि थप्यउ थिरु साचउ तखतु गुरू रामदासै ॥६॥ (१४०४-१९, सवईए महले चउथे के, मथुरा)

पन्ना १४०५

तारयउ संसारु माया मद मोहित अमृत नामु दीअउ समरथु ॥ (१४०५-१, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
फुनि कीरतिवंत सदा सुख सम्पति रिधि अरु सिधि न छोडइ सथु ॥ (१४०५-१, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
दानि बडौ अतिवंतु महाबलि सेवकि दासि कहिओ इहु तथु ॥ (१४०५-२, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
ताहि कहा परवाह काहू की जा कै बसीसि धरिओ गुरि हथु ॥७॥४९॥ (१४०५-३, सवईए महले चउथे के, मथुरा)
तीनि भवन भरपूरि रहिओ सोई ॥ (१४०५-३, सवईए महले चउथे के, बल्य)
अपन सरसु कीअउ न जगत कोई ॥ (१४०५-४, सवईए महले चउथे के, बल्य)
आपुन आपु आप ही उपायउ ॥ (१४०५-४, सवईए महले चउथे के, बल्य)
सुरि नर असुर अंतु नही पायउ ॥ (१४०५-४, सवईए महले चउथे के, बल्य)
पायउ नही अंतु सुरे असुरह नर गण गंध्रब खोजंत फिरे ॥ (१४०५-५, सवईए महले चउथे के, बल्य)
अबिनासी अचलु अजोनी सम्भउ पुरखोतमु अपार परे ॥ (१४०५-५, सवईए महले चउथे के, बल्य)
करण कारण समरथु सदा सोई सर्ब जीअ मनि ध्याइयउ ॥ (१४०५-६, सवईए महले चउथे के, बल्य)
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि पर्म पदु पाइयउ ॥१॥ (१४०५-६, सवईए महले चउथे के, बल्य)
सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ ॥ (१४०५-७, सवईए महले चउथे के, बल्य)
अंगदि अनंत मूरति निज धारी अगम ज्ञानि रसि रस्यउ हीअउ ॥ (१४०५-८, सवईए महले चउथे के, बल्य)
गुरि अमरदासि करतारु कीअउ वसि वाहु वाहु करि ध्याइयउ ॥ (१४०५-९, सवईए महले चउथे के, बल्य)
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि पर्म पदु पाइयउ ॥२॥ (१४०५-९, सवईए महले चउथे के, बल्य)
नारदु ध्रू प्रहलादु सुदामा पुब भगत हरि के जु गणं ॥ (१४०५-१०, सवईए महले चउथे के, बल्य)
अम्बरीकु जयदेव तृलोचनु नामा अवरु कबीरु भणं ॥ (१४०५-११, सवईए महले चउथे के, बल्य)
तिन कौ अवतारु भ्यउ कलि भिंतरि जसु जगत्र परि छाइयउ ॥ (१४०५-११, सवईए महले चउथे के, बल्य)
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि पर्म पदु पाइयउ ॥३॥ (१४०५-१२, सवईए महले चउथे के, बल्य)
मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं ॥ (१४०५-१२, सवईए महले चउथे के, बल्य)
बाचा करि सिमरंत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं ॥ (१४०५-१३, सवईए महले चउथे के, बल्य)
कर्म करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ ॥ (१४०५-१४, सवईए महले चउथे के, बल्य)

स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि पर्म पदु पाइयउ ॥४॥ (१४०५-१४, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिह सतिगुर सिमरंत नयन के तिमर मिटहि खिनु ॥ (१४०५-१५, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिह सतिगुर सिमरंथि रिदै हरि नामु दिनो दिनु ॥ (१४०५-१६, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिह सतिगुर सिमरंथि जीअ की तपति मिटावै ॥ (१४०५-१६, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिह सतिगुर सिमरंथि रिधि सिधि नव निधि पावै ॥ (१४०५-१७, सवईए महले चउथे के, बल्य)
सोई रामदासु गुरु बल्य भणि मिलि संगति धंनि धंनि करहु ॥ (१४०५-१७, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिह सतिगुर लगि प्रभु पाईऐ सो सतिगुरु सिमरहु नरहु ॥५॥५४॥ (१४०५-१८, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिनि सबदु कमाइ पर्म पदु पाइओ सेवा करत न छोडिओ पासु ॥ (१४०५-१९, सवईए महले चउथे के, बल्य)
ता ते गउहरु ग्यान प्रगटु उजीआरउ दुख दरिद्र अंध्यार को नासु ॥ (१४०५-१९, सवईए महले चउथे के, बल्य)

पन्ना १४०६

कवि कीरत जो संत चरन मुड़ि लागहि तिन्ह काम क्रोध जम को नही त्रासु ॥ (१४०६-१, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिव अंगदु अंगि संगि नानक गुर तिव गुर अमरदास कै गुरु रामदासु ॥१॥ (१४०६-२, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिनि सतिगुरु सेवि पदारथु पायउ निसि बासुर हरि चरन निवासु ॥ (१४०६-३, सवईए महले चउथे के, बल्य)
ता ते संगति सघन भाइ भउ मानहि तुम मलीआगर प्रगट सुबासु ॥ (१४०६-३, सवईए महले चउथे के, बल्य)
ध्रू प्रहलाद कबीर तिलोचन नामु लैत उपज्यो जु प्रगासु ॥ (१४०६-४, सवईए महले चउथे के, बल्य)
जिह पिखत अति होइ रहसु मनि सोई संत सहारु गुरू रामदासु ॥२॥ (१४०६-५, सवईए महले चउथे के, बल्य)
नानकि नामु निरंजन जान्यउ कीनी भगति प्रेम लिव लाई ॥ (१४०६-५, सवईए महले चउथे के, बल्य)
ता ते अंगदु अंग संगि भयो साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई ॥ (१४०६-६, सवईए महले चउथे के, बल्य)
गुर अमरदास की अकथ कथा है इक जीह कछु कही न जाई ॥ (१४०६-७, सवईए महले चउथे के, बल्य)
सोढी सृष्टि सकल तारण कउ अब गुर रामदास कउ मिली बडाई ॥३॥ (१४०६-७, सवईए महले चउथे के, बल्य)
हम अवगुणि भरे एकु गुणु नाही अमृतु छाडि बिखै बिखु खाई ॥ (१४०६-८, सवईए महले चउथे के, बल्य)
माया मोह भर्म पै भूले सुत दारा सिउ प्रीति लगाई ॥ (१४०६-९, सवईए महले चउथे के, बल्य)
इकु उतम पंथु सुनिओ गुर संगति तिह मिलंत जम त्रास मिटाई ॥ (१४०६-९, सवईए महले चउथे के, बल्य)
इक अरदासि भाट कीरति की गुर रामदास राखहु सरणाई ॥४॥५८॥ (१४०६-१०, सवईए महले चउथे के, बल्य)
मोहु मलि बिवसि कीअउ कामु गहि केस पछाड़्यउ ॥ (१४०६-११, सवईए महले चउथे के, सल्य)
क्रोधु खंडि परचंडि लोभु अपमान सिउ झाड़्यउ ॥ (१४०६-११, सवईए महले चउथे के, सल्य)
जनमु कालु कर जोड़ि हुकमु जो होइ सु मन्नै ॥ (१४०६-१२, सवईए महले चउथे के, सल्य)
भव सागरु बंधिअउ सिख तारे सुप्रसन्नै ॥ (१४०६-१२, सवईए महले चउथे के, सल्य)
सिरि आतपतु सचौ तखतु जोग भोग संजुतु बलि ॥ (१४०६-१३, सवईए महले चउथे के, सल्य)
गुर रामदास सचु सल्य भणि तू अटलु राजि अभगु दलि ॥१॥ (१४०६-१३, सवईए महले चउथे के, सल्य)
तू सतिगुरु चहु जुगी आपि आपे परमेसरु ॥ (१४०६-१४, सवईए महले चउथे के, सल्य)
सुरि नर साधिक सिध सिख सेवंत धुरह धुरु ॥ (१४०६-१४, सवईए महले चउथे के, सल्य)

आदि जुगादि अनादि कला धारी तृहु लोअह ॥ (१४०६-१५, सवईए महले चउथे के, सल्य)
अगम निगम उधरण जरा जंमिहि आरोअह ॥ (१४०६-१५, सवईए महले चउथे के, सल्य)
गुर अमरदासि थिरु थपिअउ परगामी तारण तरण ॥ (१४०६-१६, सवईए महले चउथे के, सल्य)
अघ अंतक बदै न सल्य कवि गुर रामदास तेरी सरण ॥२॥६०॥ (१४०६-१६, सवईए महले चउथे के, सल्य)
सवईए महले पंजवे के ५ (१४०६-१८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१४०६-१८)
सिमरं सोई पुरखु अचलु अबिनासी ॥ (१४०६-१९, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
जिसु सिमरत दुरमति मलु नासी ॥ (१४०६-१९, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
सतिगुर चरण कवल रिदि धारं ॥ (१४०६-१९, सवईए महले पंजवें के, कल्य)

पन्ना १४०७

गुर अरजुन गुण सहजि बिचारं ॥ (१४०७-१, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर रामदास घरि कीअउ प्रगासा ॥ (१४०७-१, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
सगल मनोरथ पूरी आसा ॥ (१४०७-१, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
तै जनमत गुरमति ब्रह्मु पछाणिओ ॥ (१४०७-२, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
कल्य जोड़ि कर सुजसु वखाणिओ ॥ (१४०७-२, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
भगति जोग कौ जैतवारु हरि जनकु उपायउ ॥ (१४०७-२, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
सबदु गुरू परकासिओ हरि रसन बसायउ ॥ (१४०७-३, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर नानक अंगद अमर लागि उतम पदु पायउ ॥ (१४०७-३, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ ॥१॥ (१४०७-४, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
बडभागी उनमानिअउ रिदि सबदु बसायउ ॥ (१४०७-४, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
मनु माणकु संतोखिअउ गुरि नामु द्रिड़्हायउ ॥ (१४०७-५, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
अगमु अगोचरु पारब्रह्मु सतिगुरि दरसायउ ॥ (१४०७-५, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अनभउ ठहरायउ ॥२॥ (१४०७-६, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
जनक राजु बरताइआ सतजुगु आलीणा ॥ (१४०७-६, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर सबदे मनु मानिआ अपतीजु पतीणा ॥ (१४०७-७, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुरु नानकु सचु नीव साजि सतिगुर संगि लीणा ॥ (१४०७-७, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास अपरम्परु बीणा ॥३॥ (१४०७-८, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
खेलु गूड़्हउ कीअउ हरि राइ संतोखि समाचरियओ बिमल बुधि सतिगुरि समाणउ ॥ (१४०७-८, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
आजोनी सम्भविअउ सुजसु कल्य कवीअणि बखाणिअउ ॥ (१४०७-९, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुरि नानकि अंगदु वरयउ गुरि अंगदि अमर निधानु ॥ (१४०७-१०, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुरि रामदास अरजुनु वरयउ पारसु परसु प्रमाणु ॥४॥ (१४०७-१०, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
सद जीवणु अरजुनु अमोलु आजोनी सम्भउ ॥ (१४०७-११, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
भय भंजनु पर दुख निवारु अपारु अनम्भउ ॥ (१४०७-११, सवईए महले पंजवें के, कल्य)

अगह गहणु भ्रमु भ्राँति दहणु सीतलु सुख दातउ ॥ (१४०७-१२, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
आसम्भउ उदविअउ पुरखु पूरन बिधातउ ॥ (१४०७-१२, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
नानक आदि अंगद अमर सतिगुर सबदि समाइअउ ॥ (१४०७-१३, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
धनु धन्नु गुरू रामदास गुरु जिनि पारसु परसि मिलाइअउ ॥५॥ (१४०७-१३, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
जै जै कारु जासु जग अंदरि मंदरि भागु जुगति सिव रहता ॥ (१४०७-१४, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुरु पूरा पायउ बड भागी लिव लागी मेदनि भरु सहता ॥ (१४०७-१५, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
भय भंजनु पर पीर निवारनु कल्य सहारु तोहि जसु बकता ॥ (१४०७-१५, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
कुलि सोढी गुर रामदास तनु धर्म धुजा अरजुनु हरि भगता ॥६॥ (१४०७-१६, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
ध्रम्म धीरु गुरमति गभीरु पर दुख बिसारणु ॥ (१४०७-१७, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
सबद सारु हरि सम उदारु अहम्मेव निवारणु ॥ (१४०७-१७, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
महा दानि सतिगुर गिआनि मनि चाउ न हुटै ॥ (१४०७-१८, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
सतिवंतु हरि नामु मंत्रु नव निधि न निखुटै ॥ (१४०७-१८, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर रामदास तनु सर्ब मै सहजि चंदोआ ताणिअउ ॥ (१४०७-१९, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर अरजुन कल्युचरै तै राज जोग रसु जाणिअउ ॥७॥ (१४०७-१९, सवईए महले पंजवें के, कल्य)

पन्ना १४०८

भै निरभउ माणिअउ लाख महि अलखु लखायउ ॥ (१४०८-१, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
अगमु अगोचर गति गभीरु सतिगुरि परचायउ ॥ (१४०८-१, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर परचै परवाणु राज महि जोगु कमायउ ॥ (१४०८-२, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
धंनि धंनि गुरु धंनि अभर सर सुभर भरायउ ॥ (१४०८-२, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर गम प्रमाणि अजरु जरिओ सरि संतोख समाइयउ ॥ (१४०८-३, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर अरजुन कल्युचरै तै सहजि जोगु निजु पाइयउ ॥८॥ (१४०८-३, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
अमिउ रसना बदनि बर दाति अलख अपार गुर सूर सबदि हउमै निवारयउ ॥ (१४०८-४, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
पंचाहरु निदलिअउ सुन्न सहजि निज घरि सहारयउ ॥ (१४०८-५, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
हरि नामि लागि जग उधरयउ सतिगुरु रिदै बसाइअउ ॥ (१४०८-५, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
गुर अरजुन कल्युचरै तै जनकह कलसु दीपाइअउ ॥९॥ (१४०८-६, सवईए महले पंजवें के, कल्य)
सोरठे ॥ (१४०८-७)
गुरु अरजुनु पुरखु प्रमाणु पारथउ चालै नही ॥ (१४०८-७, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
नेजा नाम नीसाणु सतिगुर सबदि सवारिअउ ॥१॥ (१४०८-७, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
भवजलु साइरु सेतु नामु हरी का बोहिथा ॥ (१४०८-८, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
तुअ सतिगुर सं हेतु नामि लागि जगु उधरयउ ॥२॥ (१४०८-८, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
जगत उधारणु नामु सतिगुर तुठै पाइअउ ॥ (१४०८-९, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
अब नाहि अवर सरि कामु बारंतरि पूरी पड़ी ॥३॥१२॥ (१४०८-९, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायउ ॥ (१४०८-१०, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)

ता ते अंगदु भ्यउ तत सिउ ततु मिलायउ ॥ (१४०८-१०, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
अंगदि किरपा धारि अमरु सतिगुरु थिरु कीअउ ॥ (१४०८-११, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
अमरदासि अमरतु छत्रु गुर रामहि दीअउ ॥ (१४०८-११, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
गुर रामदास दरसनु परसि कहि मथुरा अमृत बयण ॥ (१४०८-१२, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
मूरति पंच प्रमाण पुरखु गुरु अरजुनु पिखहु नयण ॥१॥ (१४०८-१२, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
सति रूपु सति नामु सतु संतोखु धरिओ उरि ॥ (१४०८-१३, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
आदि पुरखि परतखि लिख्यउ अछरु मसतकि धुरि ॥ (१४०८-१३, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
प्रगट जोति जगमगै तेजु भूअ मंडलि छायउ ॥ (१४०८-१४, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
पारसु परसि परसु परसि गुरि गुरू कहायउ ॥ (१४०८-१५, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
भनि मथुरा मूरति सदा थिरु लाइ चितु सनमुख रहहु ॥ (१४०८-१५, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
कलजुगि जहाजु अरजुनु गुरू सगल सृष्टि लगि बितरहु ॥२॥ (१४०८-१६, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
तिह जन जाचहु जगत्र पर जानीअतु बासुर रयनि बासु जा को हितु नाम सिउ ॥ (१४०८-१६, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
पर्म अतीतु परमेसुर कै रंगि रंग्यौ बासना ते बाहरि पै देखीअतु धाम सिउ ॥ (१४०८-१७, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
अपर परम्पर पुरख सिउ प्रेमु लाग्यौ बिनु भगवंत रसु नाही अउरै काम सिउ ॥ (१४०८-१८, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
मथुरा को प्रभु स्रब मय अरजुन गुरु भगति कै हेति पाइ रहिओ मिलि राम सिउ ॥३॥ (१४०८-१९, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)

पन्ना १४०९

अंतु न पावत देव सबै मुनि इंद्र महा सिव जोग करी ॥ (१४०९-१, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
फुनि बेद बिरंचि बिचारि रहिओ हरि जापु न छाड्यिउ एक घरी ॥ (१४०९-१, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
मथुरा जन को प्रभु दीन दयालु है संगति सृष्टि निहालु करी ॥ (१४०९-२, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
रामदासि गुरू जग तारन कउ गुर जोति अरजुन माहि धरी ॥४॥ (१४०९-३, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
जग अउरु न याहि महा तम मै अवतारु उजागरु आनि कीअउ ॥ (१४०९-३, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
तिन के दुख कोटिक दूरि गए मथुरा जिन्ह अमृत नामु पीअउ ॥ (१४०९-४, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
इह पधति ते मत चूकहि रे मन भेदु बिभेदु न जान बीअउ ॥ (१४०९-५, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
परतछि रिदै गुर अरजुन कै हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ ॥५॥ (१४०९-६, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
जब लउ नही भाग लिलार उदै तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ ॥ (१४०९-६, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ ॥ (१४०९-७, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
ततु बिचारु यहै मथुरा जग तारन कउ अवतारु बनायउ ॥ (१४०९-८, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ ॥६॥ (१४०९-८, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
कलि समुद्र भए रूप प्रगटि हरि नाम उधारनु ॥ (१४०९-९, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
बसहि संत जिसु रिदै दुख दारिद्र निवारनु ॥ (१४०९-१०, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
निर्मल भेख अपार तासु बिनु अवरु न कोई ॥ (१४०९-१०, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)

मन बच जिनि जाणिअउ भयउ तिह समसरि सोई ॥ (१४०९-१०, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
धरनि गगन नव खंड महि जोति स्वरूपी रहिओ भरि ॥ (१४०९-११, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
भनि मथुरा कछु भेदु नही गुरु अरजुनु परतख्य हरि ॥७॥१९॥ (१४०९-१२, सवईए महले पंजवें के, मथुरा)
अजै गंग जलु अटलु सिख संगति सभ नावै ॥ (१४०९-१२, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
नित पुराण बाचीअहि बेद ब्रह्मा मुखि गावै ॥ (१४०९-१३, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
अजै चवरु सिरि ढुलै नामु अमृतु मुखि लीअउ ॥ (१४०९-१३, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
गुर अरजुन सिरि छत्रु आपि परमेसरि दीअउ ॥ (१४०९-१४, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
मिलि नानक अंगद अमर गुर गुरु रामदासु हरि पहि गयउ ॥ (१४०९-१४, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
हरिबंस जगति जसु संचरयउ सु कवणु कहै स्री गुरु मुयउ ॥१॥ (१४०९-१५, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
देव पुरी महि गयउ आपि परमेस्वर भायउ ॥ (१४०९-१६, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
हरि सिंघासणु दीअउ सिरी गुरु तह बैठायउ ॥ (१४०९-१६, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
रहसु कीअउ सुर देव तोहि जसु जय जय जम्पहि ॥ (१४०९-१७, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
असुर गए ते भागि पाप तिन्ह भीतरि कम्पहि ॥ (१४०९-१७, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
काटे सु पाप तिन्ह नरहु के गुरु रामदासु जिन्ह पाइयउ ॥ (१४०९-१८, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)
छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ ॥२॥२१॥९॥११॥१०॥१०॥२२॥६०॥१४३॥ (१४०९-१८, सवईए महले पंजवें के, हरिबंस)

पन्ना १४१०

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥ (१४१०-१)
सलोक वाराँ ते वधीक ॥ (१४१०-३)
महला १ ॥ (१४१०-३)
उतंगी पैओहरी गहिरी गम्भीरी ॥ (१४१०-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
ससुड़ि सुहीआ किव करी निवणु न जाइ थणी ॥ (१४१०-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
गचु जि लगा गिड़वड़ी सखीए धउलहरी ॥ (१४१०-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
से भी ढहदे डिठु मै मुंध न गरबु थणी ॥१॥ (१४१०-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सुणि मुंधे हरणाखीए गूड़ा वैणु अपारु ॥ (१४१०-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पहिला वसतु सिञाणि कै ताँ कीचै वापारु ॥ (१४१०-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
दोही दिचै दुरजना मित्राँ कूं जैकारु ॥ (१४१०-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जितु दोही सजण मिलनि लहु मुंधे वीचारु ॥ (१४१०-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
तनु मनु दीजै सजणा ऐसा हसणु सारु ॥ (१४१०-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
तिस सउ नेहु न कीचई जि दिसै चलणहारु ॥ (१४१०-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक जिन्ही इव करि बुझिआ तिन्हा विटहु कुरबाणु ॥२॥ (१४१०-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जे तूं तारू पाणि ताहू पुछु तिड़न्न् कल ॥ (१४१०-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
ताहू खरे सुजाण वंञा एन्ही कपरी ॥३॥ (१४१०-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
झड़ झखड़ ओहाड़ लहरी वहनि लखेसरी ॥ (१४१०-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)

सतिगुर सिउ आलाइ बेड़े डुबणि नाहि भउ ॥४॥ (१४१०-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक दुनीआ कैसी होई ॥ (१४१०-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सालकु मितु न रहिओ कोई ॥ (१४१०-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
भाई बंधी हेतु चुकाइआ ॥ (१४१०-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
दुनीआ कारणि दीनु गवाइआ ॥५॥ (१४१०-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
है है करि कै ओहि करेनि ॥ (१४१०-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
गल्हा पिटनि सिरु खोहेनि ॥ (१४१०-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नाउ लैनि अरु करनि समाइ ॥ (१४१०-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक तिन बलिहारै जाइ ॥६॥ (१४१०-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
रे मन डीगि न डोलीऐ सीधै मारगि धाउ ॥ (१४१०-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पाछै बाघु डरावणो आगै अगनि तलाउ ॥ (१४१०-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सहसै जीअरा परि रहिओ मा कउ अवरु न ढंगु ॥ (१४१०-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक गुरमुखि छुटीऐ हरि प्रीतम सिउ संगु ॥७॥ (१४१०-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
बाघु मरै मनु मारीऐ जिसु सतिगुर दीखिआ होइ ॥ (१४१०-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
आपु पछाणै हरि मिलै बहुड़ि न मरणा होइ ॥ (१४१०-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)

पन्ना १४११

कीचड़ि हाथु न बूडई एका नदरि निहालि ॥ (१४११-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक गुरमुखि उबरे गुरु सरवरु सची पालि ॥८॥ (१४११-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
अगनि मरै जलु लोड़ि लहु विणु गुर निधि जलु नाहि ॥ (१४११-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जनमि मरै भरमाईऐ जे लख करम कमाहि ॥ (१४११-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जमु जागाति न लगई जे चलै सतिगुर भाइ ॥ (१४११-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक निरमलु अमर पदु गुरु हरि मेलै मेलाइ ॥९॥ (१४११-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
कलर केरी छपड़ी कऊआ मलि मलि नाइ ॥ (१४११-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
मनु तनु मैला अवगुणी चिंजु भरी गंधी आइ ॥ (१४११-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सरवरु हंसि न जाणिआ काग कुपंखी संगि ॥ (१४११-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
साकत सिउ ऐसी प्रीति है बूझहु गिआनी रंगि ॥ (१४११-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
संत सभा जैकारु करि गुरमुखि करम कमाउ ॥ (१४११-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
निरमलु न्हावणु नानका गुरु तीरथु दरीआउ ॥१०॥ (१४११-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जनमे का फलु किआ गणी जाँ हरि भगति न भाउ ॥ (१४११-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पैधा खाधा बादि है जाँ मनि दूजा भाउ ॥ (१४११-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
वेखणु सुनणा झूठु है मुखि झूठा आलाउ ॥ (१४११-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक नामु सलाहि तू होरु हउमै आवउ जाउ ॥११॥ (१४११-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
हैनि विरले नाही घणे फैल फकड़ु संसारु ॥१२॥ (१४११-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक लगी तुरि मरै जीवण नाही ताणु ॥ (१४११-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)

चोटै सेती जो मरै लगी सा परवाणु ॥ (१४११-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जिस नो लाए तिसु लगै लगी ता परवाणु ॥ (१४११-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पिर्म पैकामु न निकलै लाइआ तिनि सुजाणि ॥१३॥ (१४११-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
भाँडा धोवै कउणु जि कचा साजिआ ॥ (१४११-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
धातू पंजि रलाइ कूड़ा पाजिआ ॥ (१४११-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
भाँडा आणगु रासि जाँ तिसु भावसी ॥ (१४११-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पर्म जोति जागाइ वाजा वावसी ॥१४॥ (१४११-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
मनहु जि अंधे घूप कहिआ बिरदु न जाणनी ॥ (१४११-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
मनि अंधै ऊंधै कवल दिसनि खरे करूप ॥ (१४११-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
इकि कहि जाणनि कहिआ बुझनि ते नर सुघड़ सरूप ॥ (१४११-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
इकना नादु न बेदु न गीअ रसु रसु कसु न जाणंति ॥ (१४११-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
इकना सिधि न बुधि न अकलि सर अखर का भेउ न लहंति ॥ (१४११-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक ते नर असलि खर जि बिनु गुण गरबु करंत ॥१५॥ (१४११-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सो ब्रह्मणु जो बिंदै ब्रह्मु ॥ (१४११-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जपु तपु संजमु कमावै करमु ॥ (१४११-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सील संतोख का रखै धरमु ॥ (१४११-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
बंधन तोड़ै होवै मुकतु ॥ (१४११-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सोई ब्रह्मणु पूजण जुगतु ॥१६॥ (१४११-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
खत्री सो जु करमा का सूरु ॥ (१४११-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पुन्न दान का करै सरीरु ॥ (१४११-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
खेतु पछाणै बीजै दानु ॥ (१४११-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सो खत्री दरगह परवाणु ॥ (१४११-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
लबु लोभु जे कूड़ु कमावै ॥ (१४११-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
अपणा कीता आपे पावै ॥१७॥ (१४११-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि ॥ (१४११-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी सम्हालि ॥१८॥ (१४११-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)

पन्ना १४१२

सभनी घटी सहु वसै सह बिनु घटु न कोइ ॥ (१४१२-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक ते सोहागणी जिन्हा गुरमुखि परगटु होइ ॥१९॥ (१४१२-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥ (१४१२-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥ (१४१२-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ (१४१२-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥२०॥ (१४१२-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नालि किराड़ा दोसती कूड़ै कूड़ी पाइ ॥ (१४१२-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)

मरणु न जापै मूलिआ आवै कितै थाइ ॥२१॥ (१४१२-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
गिआन हीणं अगिआन पूजा ॥ (१४१२-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
अंध वरतावा भाउ दूजा ॥२२॥ (१४१२-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
गुर बिनु गिआनु धर्म बिनु धिआनु ॥ (१४१२-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सच बिनु साखी मूलो न बाकी ॥२३॥ (१४१२-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
माणू घलै उठी चलै ॥ (१४१२-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सादु नाही इवेही गलै ॥२४॥ (१४१२-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
रामु झुरै दल मेलवै अंतरि बलु अधिकार ॥ (१४१२-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
बंतर की सैना सेवीऐ मनि तनि जुझु अपारु ॥ (१४१२-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सीता लै गइआ दहसिरो लछमणु मूओ सरापि ॥ (१४१२-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक करता करणहारु करि वेखै थापि उथापि ॥२५॥ (१४१२-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
मन महि झूरै रामचंदु सीता लछमण जोगु ॥ (१४१२-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
हणवंतरु आराधिआ आइआ करि संजोगु ॥ (१४१२-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
भूला दैतु न समझई तिनि प्रभ कीए काम ॥ (१४१२-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक वेपरवाहु सो किरतु न मिटई राम ॥२६॥ (१४१२-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
लाहौर सहरु जहरु कहरु सवा पहरु ॥२७॥ (१४१२-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
महला ३ ॥ (१४१२-११)
लाहौर सहरु अमृत सरु सिफती दा घरु ॥२८॥ (१४१२-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
महला १ ॥ (१४१२-१२)
उदोसाहै किआ नीसानी तोटि न आवै अन्नी ॥ (१४१२-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
उदोसीअ घरे ही वुठी कुड़िईं रन्नी धम्मी ॥ (१४१२-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सती रन्नी घरे सिआपा रोवनि कूड़ी कम्मी ॥ (१४१२-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जो लेवै सो देवै नाही खटे दम्म सहम्मी ॥२९॥ (१४१२-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पबर तूं हरीआवला कवला कंचन वंनि ॥ (१४१२-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
कै दोखड़ै सड़िओहि काली होईआ देहुरी नानक मै तनि भंगु ॥ (१४१२-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जाणा पाणी ना लहाँ जै सेती मेरा संगु ॥ (१४१२-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
जितु डिठै तनु परफुड़ै चड़ै चवगणि वन्नु ॥३०॥ (१४१२-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
रजि न कोई जीविआ पहुचि न चलिआ कोइ ॥ (१४१२-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
गिआनी जीवै सदा सदा सुरती ही पति होइ ॥ (१४१२-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
सरफै सरफै सदा सदा एवै गई विहाइ ॥ (१४१२-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक किस नो आखीऐ विणु पुछिआ ही लै जाइ ॥३१॥ (१४१२-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
दोसु न देअहु राइ नो मति चलै जाँ बुढा होवै ॥ (१४१२-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
गलाँ करे घणेरीआ ताँ अन्ने पवणा खाती टोवै ॥३२॥ (१४१२-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
पूरे का कीआ सभ किछु पूरा घटि वधि किछु नाही ॥ (१४१२-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)
नानक गुरमुखि ऐसा जाणै पूरे माँहि समाँही ॥३३॥ (१४१२-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः १)

सलोक महला ३ (१४१३-१)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१४१३-१)
अभिआगत एह न आखीअहि जिन कै मन महि भरमु ॥ (१४१३-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिन के दिते नानका तेहो जेहा धरमु ॥१॥ (१४१३-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अभै निरंजन पर्म पदु ता का भीखकु होइ ॥ (१४१३-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिस का भोजनु नानका विरला पाए कोइ ॥२॥ (१४१३-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
होवा पंडितु जोतकी वेद पड़ा मुखि चारि ॥ (१४१३-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नवा खंडा विचि जाणीआ अपने चज वीचार ॥३॥ (१४१३-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
ब्रहमण कैली घातु कंञका अणचारी का धानु ॥ (१४१३-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
फिटक फिटका कोड़ु बदीआ सदा सदा अभिमानु ॥ (१४१३-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
पाहि एते जाहि वीसरि नानका इकु नामु ॥ (१४१३-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सभ बुधी जालीअहि इकु रहै ततु गिआनु ॥४॥ (१४१३-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
माथै जो धुरि लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥ (१४१३-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक जो लिखिआ सो वरतदा सो बूझै जिस नो नदरि होइ ॥५॥ (१४१३-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिनी नामु विसारिआ कूड़ै लालचि लगि ॥ (१४१३-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
धंधा माइआ मोहणी अंतरि तिसना अगि ॥ (१४१३-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिन्हा वेलि न तूम्बड़ी माइआ ठगे ठगि ॥ (१४१३-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुखि बंन्हि चलाईअहि ना मिलही वगि सगि ॥ (१४१३-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
आपि भुलाए भुलीऐ आपे मेलि मिलाइ ॥ (१४१३-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक गुरमुखि छुटीऐ जे चलै सतिगुर भाइ ॥६॥ (१४१३-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सालाही सालाहणा भी सचा सालाहि ॥ (१४१३-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक सचा एकु दरु बीभा परहरि आहि ॥७॥ (१४१३-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक जह जह मै फिरउ तह तह साचा सोइ ॥ (१४१३-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जह देखा तह एकु है गुरमुखि परगटु होइ ॥८॥ (१४१३-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
दूख विसारणु सबदु है जे मंनि वसाए कोइ ॥ (१४१३-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर किरपा ते मनि वसै कर्म परापति होइ ॥९॥ (१४१३-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक हउ हउ करते खपि मुए खूहणि लख असंख ॥ (१४१३-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुर मिले सु उबरे साचै सबदि अलंख ॥१०॥ (१४१३-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिना सतिगुरु इक मनि सेविआ तिन जन लागउ पाइ ॥ (१४१३-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर सबदी हरि मनि वसै माइआ की भुख जाइ ॥ (१४१३-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
से जन निर्मल ऊजले जि गुरमुखि नामि समाइ ॥ (१४१३-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक होरि पतिसाहीआ कूड़ीआ नामि रते पातिसाह ॥११॥ (१४१३-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिउ पुरखै घरि भगती नारि है अति लोचै भगती भाइ ॥ (१४१३-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

बहु रस सालणे सवारदी खट रस मीठे पाइ ॥ (१४१३-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिउ बाणी भगत सलाहदे हरि नामै चितु लाइ ॥ (१४१३-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनु तनु धनु आगै राखिआ सिरु वेचिआ गुर आगै जाइ ॥ (१४१३-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
भै भगती भगत बहु लोचदे प्रभ लोचा पूरि मिलाइ ॥ (१४१३-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४१४

हरि प्रभु वेपरवाहु है कितु खाधै तिपताइ ॥ (१४१४-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुर कै भाणै जो चलै तिपतासै हरि गुण गाइ ॥ (१४१४-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
धनु धनु कलजुगि नानका जि चले सतिगुर भाइ ॥१२॥ (१४१४-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुरू न सेविओ सबदु न रखिओ उर धारि ॥ (१४१४-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
धिगु तिना का जीविआ कितु आए संसारि ॥ (१४१४-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमती भउ मनि पवै ताँ हरि रसि लगै पिआरि ॥ (१४१४-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नाउ मिलै धुरि लिखिआ जन नानक पारि उतारि ॥१३॥ (१४१४-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
माइआ मोहि जगु भरमिआ घरु मुसै खबरि न होइ ॥ (१४१४-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
काम क्रोधि मनु हिरि लइआ मनमुख अंधा लोइ ॥ (१४१४-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गिआन खड़ग पंच दूत संघारे गुरमति जागै सोइ ॥ (१४१४-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नाम रतनु परगासिआ मनु तनु निरमलु होइ ॥ (१४१४-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नामहीन नकटे फिरहि बिनु नावै बहि रोइ ॥ (१४१४-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक जो धुरि करतै लिखिआ सु मेटि न सकै कोइ ॥१४॥ (१४१४-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखा हरि धनु खटिआ गुर कै सबदि वीचारि ॥ (१४१४-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नामु पदारथु पाइआ अतुट भरे भंडार ॥ (१४१४-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि गुण बाणी उचरहि अंतु न पारावारु ॥ (१४१४-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक सभ कारण करता करै वेखै सिरजनहारु ॥१५॥ (१४१४-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखि अंतरि सहजु है मनु चड़िआ दसवै आकासि ॥ (१४१४-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिथै ऊंघ न भुख है हरि अमृत नामु सुख वासु ॥ (१४१४-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक दुखु सुखु विआपत नही जिथै आतम राम प्रगासु ॥१६॥ (१४१४-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
काम क्रोध का चोलड़ा सभ गलि आए पाइ ॥ (१४१४-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
इकि उपजहि इकि बिनसि जाँहि हुकमे आवै जाइ ॥ (१४१४-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जम्मणु मरणु न चुकई रंगु लगा दूजै भाइ ॥ (१४१४-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बंधनि बंधि भवाईअनु करणा कछू न जाइ ॥१७॥ (१४१४-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिन कउ किरपा धारीअनु तिना सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (१४१४-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुरि मिले उलटी भई मरि जीविआ सहजि सुभाइ ॥ (१४१४-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक भगती रतिआ हरि हरि नामि समाइ ॥१८॥ (१४१४-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख चंचल मति है अंतरि बहुतु चतुराई ॥ (१४१४-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
कीता करतिआ बिरथा गइआ इकु तिलु थाइ न पाई ॥ (१४१४-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पुन्न दानु जो बीजदे सभ धर्म राइ कै जाई ॥ (१४१४-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिनु सतिगुरू जमकालु न छोडई दूजै भाइ खुआई ॥ (१४१४-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जोबनु जाँदा नदरि न आवई जरु पहुचै मरि जाई ॥ (१४१४-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
पुतु कलतु मोहु हेतु है अंति बेली को न सखाई ॥ (१४१४-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुरु सेवे सो सुखु पाए नाउ वसै मनि आई ॥ (१४१४-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक से वडे वडभागी जि गुरमुखि नामि समाई ॥१९॥ (१४१४-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख नामु न चेतनी बिनु नावै दुख रोइ ॥ (१४१४-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४१५

आतमा रामु न पूजनी दूजै किउ सुखु होइ ॥ (१४१५-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हउमै अंतरि मैलु है सबदि न काढहि धोइ ॥ (१४१५-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक बिनु नावै मैलिआ मुए जनमु पदारथु खोइ ॥२०॥ (१४१५-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख बोले अंधुले तिसु महि अगनी का वासु ॥ (१४१५-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बाणी सुरति न बुझनी सबदि न करहि प्रगासु ॥ (१४१५-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
ओना आपणी अंदरि सुधि नही गुर बचनि न करहि विसासु ॥ (१४१५-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गिआनीआ अंदरि गुर सबदु है नित हरि लिव सदा विगासु ॥ (१४१५-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि गिआनीआ की रखदा हउ सद बलिहारी तासु ॥ (१४१५-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखि जो हरि सेवदे जन नानकु ता का दासु ॥२१॥ (१४१५-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
माइआ भुइअंगमु सरपु है जगु घेरिआ बिखु माइ ॥ (१४१५-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिखु का मारणु हरि नामु है गुर गरुड़ सबदु मुखि पाइ ॥ (१४१५-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन सतिगुरु मिलिआ आइ ॥ (१४१५-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मिलि सतिगुर निरमलु होइआ बिखु हउमै गइआ बिलाइ ॥ (१४१५-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखा के मुख उजले हरि दरगह सोभा पाइ ॥ (१४१५-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जन नानकु सदा कुरबाणु तिन जो चालहि सतिगुर भाइ ॥२२॥ (१४१५-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुर पुरखु निरवैरु है नित हिरदै हरि लिव लाइ ॥ (१४१५-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
निरवैरै नालि वैरु रचाइदा अपणै घरि लूकी लाइ ॥ (१४१५-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अंतरि क्रोधु अहंकारु है अनदिनु जलै सदा दुखु पाइ ॥ (१४१५-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
कूड़ु बोलि बोलि नित भउकदे बिखु खाधे दूजै भाइ ॥ (१४१५-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिखु माइआ कारणि भरमदे फिरि घरि घरि पति गवाइ ॥ (१४१५-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बेसुआ केरे पूत जिउ पिता नामु तिसु जाइ ॥ (१४१५-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि हरि नामु न चेतनी करतै आपि खुआइ ॥ (१४१५-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि गुरमुखि किरपा धारीअनु जन विछुड़े आपि मिलाइ ॥ (१४१५-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जन नानकु तिसु बलिहारणै जो सतिगुर लागे पाइ ॥२३॥ (१४१५-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नामि लगे से ऊबरे बिनु नावै जम पुरि जाँहि ॥ (१४१५-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक बिनु नावै सुखु नही आइ गए पछुताहि ॥२४॥ (१४१५-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

चिंता धावत रहि गए ताँ मनि भइआ अनंदु ॥ (१४१५-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर प्रसादी बुझीऐ सा धन सुती निचिंद ॥ (१४१५-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिन कउ पूरबि लिखिआ तिन्हा भेटिआ गुर गोविंदु ॥ (१४१५-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक सहजे मिलि रहे हरि पाइआ परमानंदु ॥२५॥ (१४१५-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुरु सेवनि आपणा गुर सबदी वीचारि ॥ (१४१५-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुर का भाणा मंनि लैनि हरि नामु रखहि उर धारि ॥ (१४१५-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
ऐथै ओथै मन्नीअनि हरि नामि लगे वापारि ॥ (१४१५-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखि सबदि सिञापदे तितु साचै दरबारि ॥ (१४१५-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सचा सउदा खरचु सचु अंतरि पिरमु पिआरु ॥ (१४१५-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जमकालु नेड़ि न आवई आपि बखसे करतारि ॥ (१४१५-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४१६

नानक नाम रते से धनवंत हैनि निरधनु होरु संसारु ॥२६॥ (१४१६-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जन की टेक हरि नामु हरि बिनु नावै ठवर न ठाउ ॥ (१४१६-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमती नाउ मनि वसै सहजे सहजि समाउ ॥ (१४१६-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
वडभागी नामु धिआइआ अहिनिसि लागा भाउ ॥ (१४१६-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जन नानकु मंगै धूड़ि तिन हउ सद कुरबाणै जाउ ॥२७॥ (१४१६-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
लख चउरासीह मेदनी तिसना जलती करे पुकार ॥ (१४१६-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
इहु मोहु माइआ सभु पसरिआ नालि चलै न अंती वार ॥ (१४१६-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिनु हरि साँति न आवई किसु आगै करी पुकार ॥ (१४१६-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
वडभागी सतिगुरु पाइआ बूझिआ ब्रह्मु बिचारु ॥ (१४१६-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिसना अगनि सभ बुझि गई जन नानक हरि उरि धारि ॥२८॥ (१४१६-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
असी खते बहुतु कमावदे अंतु न पारावारु ॥ (१४१६-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि किरपा करि कै बखसि लैहु हउ पापी वड गुनहगारु ॥ (१४१६-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि जीउ लेखै वार न आवई तूं बखसि मिलावणहारु ॥ (१४१६-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर तुठै हरि प्रभु मेलिआ सभ किलविख कटि विकार ॥ (१४१६-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिना हरि हरि नामु धिआइआ जन नानक तिन्ह जैकारु ॥२९॥ (१४१६-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
विछुड़ि विछुड़ि जो मिले सतिगुर के भै भाइ ॥ (१४१६-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जनम मरण निहचलु भए गुरमुखि नामु धिआइ ॥ (१४१६-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर साधू संगति मिलै हीरे रतन लभंन्हि ॥ (१४१६-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक लालु अमोलका गुरमुखि खोजि लहंन्हि ॥३०॥ (१४१६-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख नामु न चेतिओ धिगु जीवणु धिगु वासु ॥ (१४१६-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिस दा दिता खाणा पैनणा सो मनि न वसिओ गुणतासु ॥ (१४१६-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
इहु मनु सबदि न भेदिओ किउ होवै घर वासु ॥ (१४१६-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुखीआ दोहागणी आवण जाणि मुईआसु ॥ (१४१६-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

गुरमुखि नामु सुहागु है मसतकि मणी लिखिआसु ॥ (१४१६-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि हरि नामु उरि धारिआ हरि हिरदै कमल प्रगासु ॥ (१४१६-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुरु सेवनि आपणा हउ सद बलिहारी तासु ॥ (१४१६-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक तिन मुख उजले जिन अंतरि नामु प्रगासु ॥३१॥ (१४१६-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सबदि मरै सोई जनु सिझै बिनु सबदै मुकति न होई ॥ (१४१६-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
भेख करहि बहु कर्म विगुते भाइ दूजै परज विगोई ॥ (१४१६-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक बिनु सतिगुर नाउ न पाईऐ जे सउ लोचै कोई ॥३२॥ (१४१६-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि का नाउ अति वड ऊचा ऊची हू ऊचा होई ॥ (१४१६-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अपड़ि कोइ न सकई जे सउ लोचै कोई ॥ (१४१६-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मुखि संजम हछा न होवई करि भेख भवै सभ कोई ॥ (१४१६-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर की पउड़ी जाइ चड़ै करमि परापति होई ॥ (१४१६-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अंतरि आइ वसै गुर सबदु वीचारै कोइ ॥ (१४१६-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४१७

नानक सबदि मरै मनु मानीऐ साचे साची सोइ ॥३३॥ (१४१७-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
माइआ मोहु दुखु सागरु है बिखु दुतरु तरिआ न जाइ ॥ (१४१७-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मेरा मेरा करदे पचि मुए हउमै करत विहाइ ॥ (१४१७-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुखा उरवारु न पारु है अध विचि रहे लपटाइ ॥ (१४१७-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जो धुरि लिखिआ सु कमावणा करणा कछू न जाइ ॥ (१४१७-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमती गिआनु रतनु मनि वसै सभु देखिआ ब्रह्मु सुभाइ ॥ (१४१७-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक सतिगुरि बोहिथै वडभागी चड़ै ते भउजलि पारि लंघाइ ॥३४॥ (१४१७-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिनु सतिगुर दाता को नही जो हरि नामु देइ आधारु ॥ (१४१७-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर किरपा ते नाउ मनि वसै सदा रहै उरि धारि ॥ (१४१७-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिसना बुझै तिपति होइ हरि कै नाइ पिआरि ॥ (१४१७-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक गुरमुखि पाईऐ हरि अपनी किरपा धारि ॥३५॥ (१४१७-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिनु सबदै जगतु बरलिआ कहणा कछू न जाइ ॥ (१४१७-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि रखे से उबरे सबदि रहे लिव लाइ ॥ (१४१७-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक करता सभ किछु जाणदा जिनि रखी बणत बणाइ ॥३६॥ (१४१७-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
होम जग सभि तीरथा पड़्हि पंडित थके पुराण ॥ (१४१७-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिखु माइआ मोहु न मिटई विचि हउमै आवणु जाणु ॥ (१४१७-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुर मिलिऐ मलु उतरी हरि जपिआ पुरखु सुजाणु ॥ (१४१७-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिना हरि हरि प्रभु सेविआ जन नानकु सद कुरबाणु ॥३७॥ (१४१७-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
माइआ मोहु बहु चितवदे बहु आसा लोभु विकार ॥ (१४१७-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुखि असथिरु ना थीऐ मरि बिनसि जाइ खिन वार ॥ (१४१७-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
वड भागु होवै सतिगुरु मिलै हउमै तजै विकार ॥ (१४१७-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

हरि नामा जपि सुखु पाइआ जन नानक सबदु वीचार ॥३८॥ (१४१७-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु ॥ (१४१७-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि ॥३६॥ (१४१७-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
लोभी का वेसाहु न कीजै जे का पारि वसाइ ॥ (१४१७-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अंति कालि तिथै धुहै जिथै हथु न पाइ ॥ (१४१७-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख सेती संगु करे मुहि कालख दागु लगाइ ॥ (१४१७-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मुह काले तिन्ह लोभीआँ जासनि जनमु गवाइ ॥ (१४१७-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतसंगति हरि मेलि प्रभ हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (१४१७-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जनम मरन की मलु उतरै जन नानक हरि गुन गाइ ॥४०॥ (१४१७-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ ॥ (१४१७-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जीउ पिंडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ ॥ (१४१७-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ ॥ (१४१७-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बाहरि पाखंड सभ कर्म करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ ॥ (१४१७-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
खेति सरीरि जो बीजीऐ सो अंति खलोआ आइ ॥ (१४१७-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४१८

नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ ॥४१॥ (१४१८-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मन आवण जाणु न सुझई ना सुझै दरबारु ॥ (१४१८-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
माइआ मोहि पलेटिआ अंतरि अगिआनु गुबारु ॥ (१४१८-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तब नरु सुता जागिआ सिरि डंडु लगा बहु भारु ॥ (१४१८-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखाँ कराँ उपरि हरि चेतिआ से पाइनि मोख दुआरु ॥ (१४१८-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक आपि ओहि उधरे सभ कुटम्ब तरे परवार ॥४२॥ (१४१८-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सबदि मरै सो मुआ जापै ॥ (१४१८-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर परसादी हरि रसि ध्रापै ॥ (१४१८-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि दरगहि गुर सबदि सिञापै ॥ (१४१८-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिनु सबदै मुआ है सभु कोइ ॥ (१४१८-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुखु मुआ अपुना जनमु खोइ ॥ (१४१८-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि नामु न चेतहि अंति दुखु रोइ ॥ (१४१८-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक करता करे सु होइ ॥४३॥ (१४१८-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु ॥ (१४१८-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सदा सदा हरि गुण रवहि अंतरि सहज धिआनु ॥ (१४१८-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
ओइ सदा अनंदि बिबेक रहहि दुखि सुखि एक समानि ॥ (१४१८-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिना नदरी इको आइआ सभु आतम रामु पछानु ॥४४॥ (१४१८-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिन्हा अंतरि हरि सुरति नाही ॥ (१४१८-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
विचि हउमै कर्म कमावदे सभ धर्म राइ कै जाँही ॥ (१४१८-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ ॥ (१४१८-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
ओना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइ ॥ (१४१८-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ ॥ (१४१८-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ ॥४५॥ (१४१८-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बुरा करे सु केहा सिझै ॥ (१४१८-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
आपणै रोहि आपे ही दझै ॥ (१४१८-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुखि कमला रगड़ै लुझै ॥ (१४१८-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखि होइ तिसु सभ किछु सुझै ॥ (१४१८-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक गुरमुखि मन सिउ लुझै ॥४६॥ (१४१८-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिना सतिगुरु पुरखु न सेविओ सबदि न कीतो वीचारु ॥ (१४१८-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
ओइ माणस जूनि न आखीअनि पसू ढोर गावार ॥ (१४१८-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
ओना अंतरि गिआनु न धिआनु है हरि सउ प्रीति न पिआरु ॥ (१४१८-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख मुए विकार महि मरि जम्महि वारो वार ॥ (१४१८-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जीवदिआ नो मिलै सु जीवदे हरि जगजीवन उर धारि ॥ (१४१८-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक गुरमुखि सोहणे तितु सचै दरबारि ॥४७॥ (१४१८-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि मंदरु हरि साजिआ हरि वसै जिसु नालि ॥ (१४१८-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमती हरि पाइआ माइआ मोह परजालि ॥ (१४१८-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि मंदरि वसतु अनेक है नव निधि नामु समालि ॥ (१४१८-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
धनु भगवंती नानका जिना गुरमुखि लधा हरि भालि ॥ (१४१८-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
वडभागी गड़ मंदरु खोजिआ हरि हिरदै पाइआ नालि ॥४८॥ (१४१८-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख दह दिसि फिरि रहे अति तिसना लोभ विकार ॥ (१४१८-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४१९

माइआ मोहु न चुकई मरि जम्महि वारो वार ॥ (१४१९-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुरु सेवि सुखु पाइआ अति तिसना तजि विकार ॥ (१४१९-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जनम मरन का दुखु गइआ जन नानक सबदु बीचारि ॥४९॥ (१४१९-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि हरि नामु धिआइ मन हरि दरगह पावहि मानु ॥ (१४१९-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
किलविख पाप सभि कटीअहि हउमै चुकै गुमानु ॥ (१४१९-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुखि कमलु विगसिआ सभु आतम ब्रह्मु पछानु ॥ (१४१९-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि हरि किरपा धारि प्रभ जन नानक जपि हरि नामु ॥५०॥ (१४१९-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
धनासरी धनवंती जाणीऐ भाई जाँ सतिगुर की कार कमाइ ॥ (१४१९-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तनु मनु सउपे जीअ सउ भाई लए हुकमि फिराउ ॥ (१४१९-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जह बैसावहि बैसह भाई जह भेजहि तह जाउ ॥ (१४१९-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
एवडु धनु होरु को नही भाई जेवडु सचा नाउ ॥ (१४१९-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सदा सचे के गुण गावाँ भाई सदा सचे कै संगि रहाउ ॥ (१४१९-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पैनणु गुण चंगिआईआ भाई आपणी पति के साद आपे खाइ ॥ (१४१९-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिस का किआ सालाहीऐ भाई दरसन कउ बलि जाइ ॥ (१४१९-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुर विचि वडीआ वडिआईआ भाई करमि मिलै ताँ पाइ ॥ (१४१९-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
इकि हुकमु मंनि न जाणनी भाई दूजै भाइ फिराइ ॥ (१४१९-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
संगति ढोई ना मिलै भाई बैसणि मिलै न थाउ ॥ (१४१९-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक हुकमु तिना मनाइसी भाई जिना धुरे कमाइआ नाउ ॥ (१४१९-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिन्ह विटहु हउ वारिआ भाई तिन कउ सद बलिहारै जाउ ॥५१॥ (१४१९-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
से दाड़ीआँ सचीआ जि गुर चरनी लगंन्हि ॥ (१४१९-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अनदिनु सेवनि गुरु आपणा अनदिनु अनदि रहंन्हि ॥ (१४१९-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक से मुह सोहणे सचै दरि दिसंन्हि ॥५२॥ (१४१९-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मुख सचे सचु दाड़ीआ सचु बोलहि सचु कमाहि ॥ (१४१९-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सचा सबदु मनि वसिआ सतिगुर माँहि समाँहि ॥ (१४१९-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सची रासी सचु धनु उतम पदवी पाँहि ॥ (१४१९-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सचु सुणहि सचु मंनि लैनि सची कार कमाहि ॥ (१४१९-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सची दरगह बैसणा सचे माहि समाहि ॥ (१४१९-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक विणु सतिगुर सचु न पाईऐ मनमुख भूले जाँहि ॥५३॥ (१४१९-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बाबीहा प्रिउ प्रिउ करे जलनिधि प्रेम पिआरि ॥ (१४१९-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुर मिले सीतल जलु पाइआ सभि दूख निवारणहारु ॥ (१४१९-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
तिस चुकै सहजु ऊपजै चुकै कूक पुकार ॥ (१४१९-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक गुरमुखि साँति होइ नामु रखहु उरि धारि ॥५४॥ (१४१९-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बाबीहा तूं सचु चउ सचे सउ लिव लाइ ॥ (१४१९-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बोलिआ तेरा थाइ पवै गुरमुखि होइ अलाइ ॥ (१४१९-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सबदु चीनि तिख उतरै मंनि लै रजाइ ॥ (१४१९-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४२०

चारे कुंडा झोकि वरसदा बूंद पवै सहजि सुभाइ ॥ (१४२०-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जल ही ते सभ ऊपजै बिनु जल पिआस न जाइ ॥ (१४२०-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक हरि जलु जिनि पीआ तिसु भूख न लागै आइ ॥५५॥ (१४२०-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बाबीहा तूं सहजि बोलि सचै सबदि सुभाइ ॥ (१४२०-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सभु किछु तेरै नालि है सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥ (१४२०-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
आपु पछाणहि प्रीतमु मिलै वुठा छहबर लाइ ॥ (१४२०-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
झिमि झिमि अमृतु वरसदा तिसना भुख सभ जाइ ॥ (१४२०-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
कूक पुकार न होवई जोती जोति मिलाइ ॥ (१४२०-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक सुखि सवन्हि सोहागणी सचै नामि समाइ ॥५६॥ (१४२०-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
धुरहु खसमि भेजिआ सचै हुकमि पठाइ ॥ (१४२०-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

इंदु वरसै दइआ करि गूड़ी छहबर लाइ ॥ (१४२०-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बाबीहे तनि मनि सुखु होइ जाँ ततु बूंद मुहि पाइ ॥ (१४२०-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अनु धनु बहुता उपजै धरती सोभा पाइ ॥ (१४२०-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
अनदिनु लोकु भगति करे गुर कै सबदि समाइ ॥ (१४२०-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
आपे सचा बखसि लए करि किरपा करै रजाइ ॥ (१४२०-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि गुण गावहु कामणी सचै सबदि समाइ ॥ (१४२०-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
भै का सहजु सीगारु करिहु सचि रहहु लिव लाइ ॥ (१४२०-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक नामो मनि वसै हरि दरगह लए छडाइ ॥५७॥ (१४२०-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बाबीहा सगली धरती जे फिरहि ऊडि चड़हि आकासि ॥ (१४२०-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सतिगुरि मिलिऐ जलु पाईऐ चूकै भूख पिआस ॥ (१४२०-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जीउ पिंडु सभु तिस का सभु किछु तिस कै पासि ॥ (१४२०-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा किसु आगै कीचै अरदासि ॥ (१४२०-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक घटि घटि एको वरतदा सबदि करे परगास ॥५८॥ (१४२०-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक तिसै बसंतु है जि सतिगुरु सेवि समाइ ॥ (१४२०-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि वुठा मनु तनु सभु परफड़ै सभु जगु हरीआवलु होइ ॥५९॥ (१४२०-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सबदे सदा बसंतु है जितु तनु मनु हरिआ होइ ॥ (१४२०-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक नामु न वीसरै जिनि सिरिआ सभु कोइ ॥६०॥ (१४२०-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक तिना बसंतु है जिना गुरमुखि वसिआ मनि सोइ ॥ (१४२०-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरि वुठै मनु तनु परफड़ै सभु जगु हरिआ होइ ॥६१॥ (१४२०-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
वडड़ै झालि झलुम्भलै नावड़ा लईऐ किसु ॥ (१४२०-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नाउ लईऐ परमेसरै भन्नण घड़ण समरथु ॥६२॥ (१४२०-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हरहट भी तूं तूं करहि बोलहि भली बाणि ॥ (१४२०-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
साहिबु सदा हदूरि है किआ उची करहि पुकार ॥ (१४२०-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जिनि जगतु उपाइ हरि रंगु कीआ तिसै विटहु कुरबाणु ॥ (१४२०-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
आपु छोडहि ताँ सहु मिलै सचा एहु वीचारु ॥ (१४२०-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
हउमै फिका बोलणा बुझि न सका कार ॥ (१४२०-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
वणु तृणु तृभवणु तुझै धिआइदा अनदिनु सदा विहाण ॥ (१४२०-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
बिनु सतिगुर किनै न पाइआ करि करि थके वीचार ॥ (१४२०-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

पन्ना १४२१

नदरि करहि जे आपणी ताँ आपे लैहि सवारि ॥ (१४२१-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक गुरमुखि जिन्ही धिआइआ आए से परवाणु ॥६३॥ (१४२१-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जोगु न भगवी कपड़ी जोगु न मैले वेसि ॥ (१४२१-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक घरि बैठिआ जोगु पाईऐ सतिगुर कै उपदेसि ॥६४॥ (१४२१-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
चारे कुंडा जे भवहि बेद पड़हि जुग चारि ॥ (१४२१-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)

नानक साचा भेटै हरि मनि वसै पावहि मोख दुआर ॥६५॥ (१४२१-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक हुकमु वरतै खसम का मति भवी फिरहि चल चित ॥ (१४२१-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
मनमुख सउ करि दोसती सुख कि पुछहि मित ॥ (१४२१-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
गुरमुख सउ करि दोसती सतिगुर सउ लाइ चितु ॥ (१४२१-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
जम्मण मरण का मूलु कटीऐ ताँ सुखु होवी मित ॥६६॥ (१४२१-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
भुलिआँ आपि समझाइसी जा कउ नदरि करे ॥ (१४२१-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
नानक नदरी बाहरी करण पलाह करे ॥६७॥ (१४२१-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ३)
सलोक महला ४ (१४२१-८)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१४२१-८)
वडभागीआ सोहागणी जिना गुरमुखि मिलिआ हरि राइ ॥ (१४२१-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अंतरि जोति परगासीआ नानक नामि समाइ ॥१॥ (१४२१-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वाहु वाहु सतिगुरु पुरखु है जिनि सचु जाता सोइ ॥ (१४२१-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जितु मिलिऐ तिख उतरै तनु मनु सीतलु होइ ॥ (१४२१-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वाहु वाहु सतिगुरु सति पुरखु है जिस नो समतु सभ कोइ ॥ (१४२१-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वाहु वाहु सतिगुरु निरवैरु है जिसु निंदा उसतति तुलि होइ ॥ (१४२१-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वाहु वाहु सतिगुरु सुजाणु है जिसु अंतरि ब्रह्मु वीचारु ॥ (१४२१-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वाहु वाहु सतिगुरु निरंकारु है जिसु अंतु न पारावारु ॥ (१४२१-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वाहु वाहु सतिगुरू है जि सचु दृड़ाए सोइ ॥ (१४२१-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक सतिगुर वाहु वाहु जिस ते नामु परापति होइ ॥२॥ (१४२१-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हरि प्रभ सचा सोहिला गुरमुखि नामु गोविंदु ॥ (१४२१-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अनदिनु नामु सलाहणा हरि जपिआ मनि आनंदु ॥ (१४२१-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वडभागी हरि पाइआ पूरन परमानंदु ॥ (१४२१-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जन नानक नामु सलाहिआ बहुड़ि न मनि तनि भंगु ॥३॥ (१४२१-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मूं पिरीआ सउ नेहु किउ सजण मिलहि पिआरिआ ॥ (१४२१-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हउ ढूढेदी तिन सजण सचि सवारिआ ॥ (१४२१-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सतिगुरु मैडा मितु है जे मिलै त इहु मनु वारिआ ॥ (१४२१-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
देंदा मूं पिरु दसि हरि सजणु सिरजणहारिआ ॥ (१४२१-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक हउ पिरु भाली आपणा सतिगुर नालि दिखालिआ ॥४॥ (१४२१-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हउ खड़ी निहाली पंधु मतु मूं सजणु आवए ॥ (१४२१-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
को आणि मिलावै अजु मै पिरु मेलि मिलावए ॥ (१४२१-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)

पन्ना १४२२

हउ जीउ करी तिस विटउ चउ खन्नीऐ जो मै पिरी दिखावए ॥ (१४२२-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक हरि होइ दइआलु ताँ गुरु पूरा मेलावए ॥५॥ (१४२२-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अंतरि जोरु हउमै तनि माइआ कूड़ी आवै जाइ ॥ (१४२२-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)

सतिगुर का फुरमाइआ मंनि न सकी दुतरु तरिआ न जाइ ॥ (१४२२-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नदरि करे जिसु आपणी सो चलै सतिगुर भाइ ॥ (१४२२-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सतिगुर का दरसनु सफलु है जो इछै सो फलु पाइ ॥ (१४२२-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिनी सतिगुरु मंनिआँ हउ तिन के लागउ पाइ ॥ (१४२२-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानकु ता का दासु है जि अनदिनु रहै लिव लाइ ॥६॥ (१४२२-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिना पिरी पिआरु बिनु दरसन किउ तृपतीऐ ॥ (१४२२-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक मिले सुभाइ गुरमुखि इहु मनु रहसीऐ ॥७॥ (१४२२-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिना पिरी पिआरु किउ जीवनि पिर बाहरे ॥ (१४२२-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जाँ सहु देखनि आपणा नानक थीवनि भी हरे ॥८॥ (१४२२-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिना गुरमुखि अंदरि नेहु तै प्रीतम सचै लाइआ ॥ (१४२२-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
राती अतै डेहु नानक प्रेमि समाइआ ॥९॥ (१४२२-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमुखि सची आसकी जितु प्रीतमु सचा पाईऐ ॥ (१४२२-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अनदिनु रहहि अनंदि नानक सहजि समाईऐ ॥१०॥ (१४२२-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सचा प्रेम पिआरु गुर पूरे ते पाईऐ ॥ (१४२२-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
कबहू न होवै भंगु नानक हरि गुण गाईऐ ॥११॥ (१४२२-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिन्हा अंदरि सचा नेहु किउ जीवन्हि पिरी विहूणिआ ॥ (१४२२-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमुखि मेले आपि नानक चिरी विछुंनिआ ॥१२॥ (१४२२-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिन कउ प्रेम पिआरु तउ आपे लाइआ करमु करि ॥ (१४२२-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक लेहु मिलाइ मै जाचिक दीजै नामु हरि ॥१३॥ (१४२२-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमुखि हसै गुरमुखि रोवै ॥ (१४२२-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जि गुरमुखि करे साई भगति होवै ॥ (१४२२-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमुखि होवै सु करे वीचारु ॥ (१४२२-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमुखि नानक पावै पारु ॥१४॥ (१४२२-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिना अंदरि नामु निधानु है गुरबाणी वीचारि ॥ (१४२२-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
तिन के मुख सद उजले तितु सचै दरबारि ॥ (१४२२-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
तिन बहदिआ उठदिआ कदे न विसरै जि आपि बखसे करतारि ॥ (१४२२-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक गुरमुखि मिले न विछुड़हि जि मेले सिरजणहारि ॥१५॥ (१४२२-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुर पीराँ की चाकरी महाँ करड़ी सुख सारु ॥ (१४२२-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नदरि करे जिसु आपणी तिसु लाए हेत पिआरु ॥ (१४२२-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सतिगुर की सेवै लगिआ भउजलु तरै संसारु ॥ (१४२२-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मन चिंदिआ फलु पाइसी अंतरि बिबेक बीचारु ॥ (१४२२-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक सतिगुरि मिलिऐ प्रभु पाईऐ सभु दूख निवारणहारु ॥१६॥ (१४२२-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मनमुख सेवा जो करे दूजै भाइ चितु लाइ ॥ (१४२२-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
पुतु कलतु कुटम्बु है माइआ मोहु वधाइ ॥ (१४२२-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
दरगहि लेखा मंगीऐ कोई अंति न सकी छडाइ ॥ (१४२२-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)

बिनु नावै सभु दुखु है दुखदाई मोह माइ ॥ (१४२३-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक गुरमुखि नदरी आइआ मोह माइआ विछुड़ि सभ जाइ ॥१७॥ (१४२३-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमुखि हुकमु मन्ने सह केरा हुकमे ही सुखु पाए ॥ (१४२३-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हुकमो सेवे हुकमु अराधे हुकमे समै समाए ॥ (१४२३-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हुकमु वरतु नेमु सुच संजमु मन चिंदिआ फलु पाए ॥ (१४२३-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सदा सुहागणि जि हुकमै बुझै सतिगुरु सेवै लिव लाए ॥ (१४२३-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक कृपा करे जिन ऊपरि तिना हुकमे लए मिलाए ॥१८॥ (१४२३-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मनमुखि हुकमु न बुझे बपुड़ी नित हउमै कर्म कमाइ ॥ (१४२३-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
वरत नेमु सुच संजमु पूजा पाखंडि भरमु न जाइ ॥ (१४२३-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अंतरहु कुसुधु माइआ मोहि बेधे जिउ हसती छारु उडाए ॥ (१४२३-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिनि उपाए तिसै न चेतहि बिनु चेते किउ सुखु पाए ॥ (१४२३-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक परपंचु कीआ धुरि करतै पूरबि लिखिआ कमाए ॥१९॥ (१४२३-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमुखि परतीति भई मनु मानिआ अनदिनु सेवा करत समाइ ॥ (१४२३-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अंतरि सतिगुरु गुरू सभ पूजे सतिगुर का दरसु देखै सभ आइ ॥ (१४२३-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मन्नीऐ सतिगुर पर्म बीचारी जितु मिलिऐ तिसना भुख सभ जाइ ॥ (१४२३-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हउ सदा सदा बलिहारी गुर अपुने जो प्रभु सचा देइ मिलाइ ॥ (१४२३-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक करमु पाइआ तिन सचा जो गुर चरणी लगे आइ ॥२०॥ (१४२३-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिन पिरीआ सउ नेहु से सजण मै नालि ॥ (१४२३-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अंतरि बाहरि हउ फिराँ भी हिरदै रखा समालि ॥२१॥ (१४२३-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जिना इक मनि इक चिति धिआइआ सतिगुर सउ चितु लाइ ॥ (१४२३-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
तिन की दुख भुख हउमै वडा रोगु गइआ निरदोख भए लिव लाइ ॥ (१४२३-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुण गावहि गुण उचरहि गुण महि सवै समाइ ॥ (१४२३-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक गुर पूरे ते पाइआ सहजि मिलिआ प्रभु आइ ॥२२॥ (१४२३-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥ (१४२३-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥ (१४२३-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ (१४२३-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
कर्म धर्म सुचि संजमु करहि अंतरि लोभु विकार ॥ (१४२३-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक मनमुखि जि कमावै सु थाइ न पवै दरगह होइ खुआरु ॥२३॥ (१४२३-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सभना रागाँ विचि सो भला भाई जितु वसिआ मनि आइ ॥ (१४२३-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
रागु नादु सभु सचु है कीमति कही न जाइ ॥ (१४२३-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
रागै नादै बाहरा इनी हुकमु न बूझिआ जाइ ॥ (१४२३-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक हुकमै बूझै तिना रासि होइ सतिगुर ते सोझी पाइ ॥ (१४२३-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सभु किछु तिस ते होइआ जिउ तिसै दी रजाइ ॥२४॥ (१४२३-१९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)

सतिगुर विचि अमृत नामु है अमृतु कहै कहाइ ॥ (१४२४-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमती नामु निरमलो निर्मल नामु धिआइ ॥ (१४२४-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अमृत बाणी ततु है गुरमुखि वसै मनि आइ ॥ (१४२४-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हिरदै कमलु परगासिआ जोती जोति मिलाइ ॥ (१४२४-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक सतिगुरु तिन कउ मेलिओनु जिन धुरि मसतकि भागु लिखाइ ॥२५॥ (१४२४-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अंदरि तिसना अगि है मनमुख भुख न जाइ ॥ (१४२४-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मोहु कुटम्बु सभु कूड़ु है कूड़ि रहिआ लपटाइ ॥ (१४२४-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
अनदिनु चिंता चिंतवै चिंता बधा जाइ ॥ (१४२४-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जम्मणु मरणु न चुकई हउमै कर्म कमाइ ॥ (१४२४-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुर सरणाई उबरै नानक लए छडाइ ॥२६॥ (१४२४-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सतिगुर पुरखु हरि धिआइदा सतसंगति सतिगुर भाइ ॥ (१४२४-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सतसंगति सतिगुर सेवदे हरि मेले गुरु मेलाइ ॥ (१४२४-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
एहु भउजलु जगतु संसारु है गुरु बोहिथु नामि तराइ ॥ (१४२४-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरसिखी भाणा मंनिआ गुरु पूरा पारि लंघाइ ॥ (१४२४-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरसिखाँ की हरि धूड़ि देहि हम पापी भी गति पाँहि ॥ (१४२४-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
धुरि मसतकि हरि प्रभ लिखिआ गुर नानक मिलिआ आइ ॥ (१४२४-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जमकंकर मारि बिदारिअनु हरि दरगह लए छडाइ ॥ (१४२४-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरसिखा नो साबासि है हरि तुठा मेलि मिलाइ ॥२७॥ (१४२४-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरि पूरै हरि नामु दिड़ाइआ जिनि विचहु भरमु चुकाइआ ॥ (१४२४-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
राम नामु हरि कीरति गाइ करि चानणु मगु देखाइआ ॥ (१४२४-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हउमै मारि एक लिव लागी अंतरि नामु वसाइआ ॥ (१४२४-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमती जमु जोहि न सकै सचै नाइ समाइआ ॥ (१४२४-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
सभु आपे आपि वरतै करता जो भावै सो नाइ लाइआ ॥ (१४२४-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जन नानकु नाउ लए ताँ जीवै बिनु नावै खिनु मरि जाइआ ॥२८॥ (१४२४-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
मन अंतरि हउमै रोगु भ्रमि भूले हउमै साकत दुरजना ॥ (१४२४-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
नानक रोगु गवाइ मिलि सतिगुर साधू सजणा ॥२९॥ (१४२४-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुरमती हरि हरि बोले ॥ (१४२४-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हरि प्रेमि कसाई दिनसु राति हरि रती हरि रंगि चोले ॥ (१४२४-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
हरि जैसा पुरखु न लभई सभु देखिआ जगतु मै टोले ॥ (१४२४-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
गुर सतिगुरि नामु दिड़ाइआ मनु अनत न काहू डोले ॥ (१४२४-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)
जन नानकु हरि का दासु है गुर सतिगुर के गुल गोले ॥३०॥ (१४२४-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ४)

पन्ना १४२५

सलोक महला ५ (१४२५-१)
੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१४२५-१)
रते सेई जि मुखु न मोड़ंन्हि जिन्ही सिञाता साई ॥ (१४२५-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
झड़ि झड़ि पवदे कचे बिरही जिन्हा कारि न आई ॥१॥ (१४२५-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
धणी विहूणा पाट पटम्बर भाही सेती जाले ॥ (१४२५-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
धूड़ी विचि लुडंदड़ी सोहाँ नानक तै सह नाले ॥२॥ (१४२५-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
गुर कै सबदि अराधीऐ नामि रंगि बैरागु ॥ (१४२५-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
जीते पंच बैराईआ नानक सफल मारू इहु रागु ॥३॥ (१४२५-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
जाँ मूं इकु त लख तउ जिती पिनणे दरि कितड़े ॥ (१४२५-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
बामणु बिरथा गइओ जनम्मु जिनि कीतो सो विसरे ॥४॥ (१४२५-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सोरठि सो रसु पीजीऐ कबहू न फीका होइ ॥ (१४२५-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक राम नाम गुन गाईअहि दरगह निर्मल सोइ ॥५॥ (१४२५-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
जो प्रभि रखे आपि तिन कोइ न मारई ॥ (१४२५-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
अंदरि नामु निधानु सदा गुण सारई ॥ (१४२५-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
एका टेक अगम्म मनि तनि प्रभु धारई ॥ (१४२५-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
लगा रंगु अपारु को न उतारई ॥ (१४२५-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
गुरमुखि हरि गुण गाइ सहजि सुखु सारई ॥ (१४२५-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक नामु निधानु रिदै उरि हारई ॥६॥ (१४२५-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
करे सु चंगा मानि दुयी गणत लाहि ॥ (१४२५-९, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
अपणी नदरि निहालि आपे लैहु लाइ ॥ (१४२५-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
जन देहु मती उपदेसु विचहु भरमु जाइ ॥ (१४२५-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
जो धुरि लिखिआ लेखु सोई सभ कमाइ ॥ (१४२५-१०, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सभु कछु तिस दै वसि दूजी नाहि जाइ ॥ (१४२५-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक सुख अनद भए प्रभ की मंनि रजाइ ॥७॥ (१४२५-११, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
गुरु पूरा जिन सिमरिआ सेई भए निहाल ॥ (१४२५-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक नामु अराधणा कारजु आवै रासि ॥८॥ (१४२५-१२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
पापी कर्म कमावदे करदे हाए हाइ ॥ (१४२५-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक जिउ मथनि माधाणीआ तिउ मथे ध्रम राइ ॥९॥ (१४२५-१३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नामु धिआइनि साजना जनम पदारथु जीति ॥ (१४२५-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक धर्म ऐसे चवहि कीतो भवनु पुनीत ॥१०॥ (१४२५-१४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
खुभड़ी कुथाइ मिठी गलणि कुमंत्रीआ ॥ (१४२५-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक सेई उबरे जिना भागु मथाहि ॥११॥ (१४२५-१५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सुतड़े सुखी सवंन्हि जो रते सह आपणै ॥ (१४२५-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)

प्रेम विछोहा धणी सउ अठे पहर लवंन्हि ॥१२॥ (१४२५-१६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सुतड़े असंख माइआ झूठी कारणे ॥ (१४२५-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक से जागंन्हि जि रसना नामु उचारणे ॥१३॥ (१४२५-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
मृग तिसना पेखि भुलणे वुठे नगर गंध्रब ॥ (१४२५-१७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
जिनी सचु अराधिआ नानक मनि तनि फब ॥१४॥ (१४२५-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
पतित उधारण पारब्रह्मु सम्म्रथ पुरखु अपारु ॥ (१४२५-१८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)

पन्ना १४२६

जिसहि उधारे नानका सो सिमरे सिरजणहारु ॥१५॥ (१४२६-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
दूजी छोडि कुवाटड़ी इकस सउ चितु लाइ ॥ (१४२६-१, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
दूजै भावीं नानका वहणि लुड़ंदड़ी जाइ ॥१६॥ (१४२६-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
तिहटड़े बाजार सउदा करनि वणजारिआ ॥ (१४२६-२, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सचु वखरु जिनी लदिआ से सचड़े पासार ॥१७॥ (१४२६-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
पंथा प्रेम न जाणई भूली फिरै गवारि ॥ (१४२६-३, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
नानक हरि बिसराइ कै पउदे नरकि अंध्यार ॥१८॥ (१४२६-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
माइआ मनहु न वीसरै माँगै दम्माँ दम्म ॥ (१४२६-४, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सो प्रभु चिति न आवई नानक नही करंमि ॥१९॥ (१४२६-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
तिचरु मूलि न थुड़ंीदो जिचरु आपि कृपालु ॥ (१४२६-५, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सबदु अखुटु बाबा नानका खाहि खरचि धनु मालु ॥२०॥ (१४२६-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
खम्भ विकाँदड़े जे लहाँ घिन्ना सावी तोलि ॥ (१४२६-६, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
तंनि जड़ाँई आपणै लहाँ सु सजणु टोलि ॥२१॥ (१४२६-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
सजणु सचा पातिसाहु सिरि साहाँ दै साहु ॥ (१४२६-७, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
जिसु पासि बहिठिआ सोहीऐ सभनाँ दा वेसाहु ॥२२॥ (१४२६-८, सलोक वाराँ ते वधीक, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ (१४२६-९)
सलोक महला ९ ॥ (१४२६-१०)
गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ (१४२६-१०, सलोक, मः ९)
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥ (१४२६-१०, सलोक, मः ९)
बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥ (१४२६-११, सलोक, मः ९)
कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥ (१४२६-११, सलोक, मः ९)
तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ (१४२६-१२, सलोक, मः ९)
कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥ (१४२६-१२, सलोक, मः ९)
बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥ (१४२६-१३, सलोक, मः ९)
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥ (१४२६-१३, सलोक, मः ९)
धनु दारा सम्पति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ (१४२६-१४, सलोक, मः ९)
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥५॥ (१४२६-१४, सलोक, मः ९)

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ (१४२६-१५, सलोक, मः ९)
कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥ (१४२६-१५, सलोक, मः ९)
तनु धनु जिह तो कउ दीओ ताँ सिउ नेहु न कीन ॥ (१४२६-१६, सलोक, मः ९)
कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥ (१४२६-१६, सलोक, मः ९)
तनु धनु सम्पै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥ (१४२६-१७, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥ (१४२६-१७, सलोक, मः ९)
सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥ (१४२६-१८, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥ (१४२६-१८, सलोक, मः ९)

पन्ना १४२७

जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥ (१४२७-१, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥ (१४२७-१, सलोक, मः ९)
पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ (१४२७-२, सलोक, मः ९)
जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥ (१४२७-२, सलोक, मः ९)
घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ (१४२७-३, सलोक, मः ९)
कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥ (१४२७-३, सलोक, मः ९)
सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ (१४२७-४, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥ (१४२७-४, सलोक, मः ९)
उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ (१४२७-५, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥ (१४२७-५, सलोक, मः ९)
हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ (१४२७-६, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥ (१४२७-६, सलोक, मः ९)
भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ (१४२७-७, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥ (१४२७-७, सलोक, मः ९)
जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ (१४२७-८, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥ (१४२७-८, सलोक, मः ९)
जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥ (१४२७-९, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रह्म निवासु ॥१८॥ (१४२७-९, सलोक, मः ९)
जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ (१४२७-१०, सलोक, मः ९)
कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥ (१४२७-१०, सलोक, मः ९)
भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ (१४२७-११, सलोक, मः ९)
निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥ (१४२७-११, सलोक, मः ९)
जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ (१४२७-१२, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥ (१४२७-१२, सलोक, मः ९)
जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ (१४२७-१३, सलोक, मः ९)

कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥ (१४२७-१३, सलोक, मः ६)
जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ (१४२७-१४, सलोक, मः ६)
इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥ (१४२७-१४, सलोक, मः ६)
निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ (१४२७-१५, सलोक, मः ६)
कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥ (१४२७-१५, सलोक, मः ६)
जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ (१४२७-१६, सलोक, मः ६)
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥ (१४२७-१६, सलोक, मः ६)
प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ (१४२७-१६, सलोक, मः ६)
कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥ (१४२७-१७, सलोक, मः ६)
जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥ (१४२७-१७, सलोक, मः ६)
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥ (१४२७-१८, सलोक, मः ६)
माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ (१४२७-१८, सलोक, मः ६)
कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥ (१४२७-१९, सलोक, मः ६)
जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ (१४२७-१९, सलोक, मः ६)

पन्ना १४२८

हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥ (१४२८-१, सलोक, मः ६)
मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥ (१४२८-१, सलोक, मः ६)
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥ (१४२८-२, सलोक, मः ६)
प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ (१४२८-२, सलोक, मः ६)
कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥ (१४२८-३, सलोक, मः ६)
सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ (१४२८-३, सलोक, मः ६)
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥३२॥ (१४२८-४, सलोक, मः ६)
जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ (१४२८-४, सलोक, मः ६)
कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥ (१४२८-५, सलोक, मः ६)
जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ (१४२८-५, सलोक, मः ६)
दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥ (१४२८-६, सलोक, मः ६)
बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ (१४२८-७, सलोक, मः ६)
कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥ (१४२८-७, सलोक, मः ६)
करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥ (१४२८-८, सलोक, मः ६)
नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥ (१४२८-८, सलोक, मः ६)
मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ (१४२८-९, सलोक, मः ६)
नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥ (१४२८-९, सलोक, मः ६)
नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥ (१४२८-१०, सलोक, मः ६)
चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥ (१४२८-१०, सलोक, मः ६)

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥ (१४२८-११, सलोक, मः ९)
कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥ (१४२८-११, सलोक, मः ९)
जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ (१४२८-१२, सलोक, मः ९)
कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥ (१४२८-१२, सलोक, मः ९)
झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ (१४२८-१३, सलोक, मः ९)
इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥ (१४२८-१३, सलोक, मः ९)
गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ (१४२८-१३, सलोक, मः ९)
जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥ (१४२८-१४, सलोक, मः ९)
जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ (१४२८-१४, सलोक, मः ९)
तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥ (१४२८-१५, सलोक, मः ९)
एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ (१४२८-१५, सलोक, मः ९)
जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥ (१४२८-१६, सलोक, मः ९)
सुआमी को गृहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ (१४२८-१६, सलोक, मः ९)
नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥ (१४२८-१७, सलोक, मः ९)
तीर्थ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ (१४२८-१८, सलोक, मः ९)
नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥ (१४२८-१८, सलोक, मः ९)
सिरु कंपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ (१४२८-१८, सलोक, मः ९)
कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥ (१४२८-१८, सलोक, मः ९)

पन्ना १४२९

निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ (१४२९-१, सलोक, मः ९)
नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥ (१४२९-१, सलोक, मः ९)
जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ (१४२९-२, सलोक, मः ९)
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥ (१४२९-२, सलोक, मः ९)
रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ (१४२९-३, सलोक, मः ९)
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥ (१४२९-३, सलोक, मः ९)
चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ (१४२९-४, सलोक, मः ९)
इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥ (१४२९-४, सलोक, मः ९)
जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ (१४२९-४, सलोक, मः ९)
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥ (१४२९-५, सलोक, मः ९)
दोहरा ॥ (१४२९-५)
बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ (१४२९-६, सलोक, मः ९)
कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥ (१४२९-६, सलोक, मः ९)
बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ (१४२९-७, सलोक, मः ९)
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥ (१४२९-७, सलोक, मः ९)

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ (१४२६-८, सलोक, मः ६)
कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥ (१४२६-८, सलोक, मः ६)
नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥ (१४२६-६, सलोक, मः ६)
कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥ (१४२६-६, सलोक, मः ६)
राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥ (१४२६-१०, सलोक, मः ६)
जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥ (१४२६-१०, सलोक, मः ६)
मुंदावणी महला ५ ॥ (१४२६-११)
थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ (१४२६-१२, मुंदावणी, मः ५)
अमृत नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ (१४२६-१२, मुंदावणी, मः ५)
जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥ (१४२६-१३, मुंदावणी, मः ५)
एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ (१४२६-१३, मुंदावणी, मः ५)
तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रह्म पसारो ॥१॥ (१४२६-१४, मुंदावणी, मः ५)
सलोक महला ५ ॥ (१४२६-१४)
तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ (१४२६-१४, मुंदावणी, मः ५)
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ (१४२६-१५, मुंदावणी, मः ५)
तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ (१४२६-१५, मुंदावणी, मः ५)
नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥ (१४२६-१६, मुंदावणी, मः ५)
ੴ सतिगुर प्रसादि (१४२६-१८)
राग माला ॥ (१४२६-१६)
राग एक संगि पंच बरंगन ॥ (१४२६-१६, माला, -)
संगि अलापहि आठउ नंदन ॥ (१४२६-१६, माला, -)
प्रथम राग भैरउ वै करही ॥ (१४२६-१६, माला, -)

पन्ना १४३०

पंच रागनी संगि उचरही ॥ (१४३०-१, माला, -)
प्रथम भैरवी बिलावली ॥ (१४३०-१, माला, -)
पुंनिआकी गावहि बंगली ॥ (१४३०-१, माला, -)
पुनि असलेखी की भई बारी ॥ (१४३०-१, माला, -)
ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ (१४३०-२, माला, -)
पंचम हरख दिसाख सुनावहि ॥ (१४३०-२, माला, -)
बंगालम मधु माधव गावहि ॥१॥ (१४३०-२, माला, -)
ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भाँति ॥ (१४३०-३, माला, -)
असट पुत्र भैरव के गावहि गाइन पात्र ॥१॥ (१४३०-३, माला, -)
दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ (१४३०-४, माला, -)
संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ (१४३०-४, माला, -)

गोंडकरी अरु देवगंधारी ॥ (१४३०-४, माला, -)
गंधारी सीहुती उचारी ॥ (१४३०-५, माला, -)
धनासरी ए पाचउ गाई ॥ (१४३०-५, माला, -)
माल राग कउसक संगि लाई ॥ (१४३०-५, माला, -)
मारू मसतअंग मेवारा ॥ (१४३०-६, माला, -)
प्रबलचंड कउसक उभारा ॥ (१४३०-६, माला, -)
खउखट अउ भउरानद गाए ॥ (१४३०-६, माला, -)
असट मालकउसक संगि लाए ॥१॥ (१४३०-६, माला, -)
पुनि आइअउ हिंडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ (१४३०-७, माला, -)
उठहि तान कलोल गाइन तार मिलावही ॥१॥ (१४३०-७, माला, -)
तेलंगी देवकरी आई ॥ (१४३०-८, माला, -)
बसंती संदूर सुहाई ॥ (१४३०-८, माला, -)
सरस अहीरी लै भारजा ॥ (१४३०-८, माला, -)
संगि लाई पाँचउ आरजा ॥ (१४३०-९, माला, -)
सुरमानंद भासकर आए ॥ (१४३०-९, माला, -)
चंद्रबिम्ब मंगलन सुहाए ॥ (१४३०-९, माला, -)
सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ (१४३०-९, माला, -)
गावहि सरस बसंत कमोदा ॥ (१४३०-१०, माला, -)
असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ (१४३०-१०, माला, -)
पुनि आई दीपक की बारी ॥१॥ (१४३०-१०, माला, -)
कछेली पटमंजरी टोडी कही अलापि ॥ (१४३०-११, माला, -)
कामोदी अउ गूजरी संगि दीपक के थापि ॥१॥ (१४३०-११, माला, -)
कालंका कुंतल अउ रामा ॥ (१४३०-११, माला, -)
कमलकुसम चम्पक के नामा ॥ (१४३०-१२, माला, -)
गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ (१४३०-१२, माला, -)
असट पुत्र दीपक के जाना ॥१॥ (१४३०-१२, माला, -)
सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ (१४३०-१३, माला, -)
पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ (१४३०-१३, माला, -)
बैरारी करनाटी धरी ॥ (१४३०-१३, माला, -)
गवरी गावहि आसावरी ॥ (१४३०-१४, माला, -)
तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ (१४३०-१४, माला, -)
सिरीराग सिउ पाँचउ थापी ॥१॥ (१४३०-१४, माला, -)
सालू सारग सागरा अउर गोंड गम्भीर ॥ (१४३०-१४, माला, -)
असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुम्भ हमीर ॥१॥ (१४३०-१५, माला, -)
खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ (१४३०-१५, माला, -)

पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ (१४३०-१६, माला, -)
सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ (१४३०-१६, माला, -)
पुनि गावहि आसा गुन गुनी ॥ (१४३०-१६, माला, -)
ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ (१४३०-१७, माला, -)
मेघ राग सिउ पाँचउ चीनी ॥१॥ (१४३०-१७, माला, -)
बैराधर गजधर केदारा ॥ (१४३०-१७, माला, -)
जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ (१४३०-१८, माला, -)
पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ (१४३०-१८, माला, -)
मेघ राग पुत्रन के नामा ॥१॥ (१४३०-१८, माला, -)
खसट राग उनि गाए संगि रागनी तीस ॥ (१४३०-१९, माला, -)
सभै पुत्र रागन्न के अठारह दस बीस ॥१॥१॥ (१४३०-१९, माला, -)